प्रार्थना !

चरखा-जयंती के इस पुनीत अवसर पर "भूदान-यज्ञ" का छठे वर्ष में प्रवेश हो रहा है। गांधीजी का जीवन सत्य और अहिंसा की सतत साधना में बीता। इस साधना की प्रक्रिया को उन्होंने सत्याग्रह का नाम दिया। अहिंसक उपायों से एक गुलाम मुल्क आज की अति-संगठित और अति बलशाली सरकार के मुकाबले में भी किस तरह राजनैतिक आजादी हासिल कर सकता है, यह उन्होंने सिद्ध करके बताया। गांधीजी से पहले राज्य-क्रान्तियाँ हिंसा से ही हुई थीं। लोगों की–जिनमें सामान्य जन और 'पंडित', दोनों शामिल हैं–यह आम धारणा थी कि इसके सिवाय दूसरा कोई रास्ता हो नहीं सकता। पर वह दूसरी राह बापू ने खोली और एशिया तथा अफ्रीका के बहुत से मुल्कों की जनता के मन में नयी आशाओं का संचार हुआ। उसी तरह सामाजिक और आर्थिक अन्याय का प्रतिकार और न्याय की स्थापना, अर्थात् समाज-क्रान्ति भी, कानून के बिना–जो अन्ततोगत्वा दण्ड-बल ही है–नहीं हो सकती, यह मान्यता आज भी कायम है।

आजादी के बाद गांधीजी के जीवन का यह आखिरी और महत्त्वपूर्ण मोड़-'लास्ट फेज'-शुरू हुआ। अहिंसक उपायों से सामाजिक अन्याय दूर होकर एक सुखी और समृद्ध समाज कैसे कायम हो सकता है, इसका प्रयोग उन्होंने नोआखाली से शुरू किया। पर ईश्वर की योजना कुछ दूसरी ही थी। गांधीजी उसके चन्द महीनों के बाद ही हमारे बीच से उठा लिये गये। गांधीजी का बलिदान स्वयं इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि एक शान्ति-सैनिक अपने प्राणों की आहुति देकर देशव्यापी आग को कैसे बुझा सकता है। पर हमने उसे एक व्यक्ति के जीवन का 'चमत्कार' ही माना। इस तरह का प्रयत्न और साधना सामूहिक भी हो सकती है, इसे सिद्ध करने का मौका बापू को नहीं मिला।

इतिहास के कदम आगे बढ़े और विनोबा ने इस कड़ी को पूरा करने का बीड़ा उठाया। भूदान-आरोहण के रूप में सत्याग्रह की सौम्य प्रक्रिया शुरू हुई। कुछ काम हुआ। पर सौम्य से सौम्यतर और सौम्यतम प्रक्रिया—'सत्याग्रही' से 'सत्यग्राही' बनने की प्रक्रिया—की खोज अभी जारी है, क्योंकि काम अभी बना नहीं है। राजनैतिक आजादी में भी हजारों गुना मुश्किल यह काम है, क्योंकि उसमें दूसरे से लड़ना था। इसमें अपने से, अपने विकारों से, अपने जज्बात से लड़ना है। प्रेम और करुणा के जल से अपने को शुद्ध करते जाना है और दूसरों के दिलों को भी द्रवित करना है। यह सिद्ध करना है कि प्रेम और करुणा से क्रान्ति हो सकती है।

"भूदान-यज्ञ" इस अहिंसक क्रान्ति के लिए समर्पित है। 'आदर्श' ऊँचा है, लेकिन पग कमजोर हैं; पर "भूदान-यज्ञ" भी हमारी देशव्यापी साधना की एक महत्त्व की कड़ी है, ऐसा हम सब समझेंगे और अन्य सब कड़ियों के साथ-साथ इस कमजोर कड़ी को मजबूत बनाने में अपना-अपना योग देंगे, तो सारी साधना बलवती बनेगी। चरखा-जयंती के इस अवसर पर बापू का पुण्य-स्मरण हमें इस कर्तव्य को पूरा करने की प्रेरणा और बल दे। ग्राम-स्वराज्य का उनका स्वप्न, जो आज के युग की माँग है, वह पूरा हो, ऐसी प्रार्थना हम सब करें।

—सिद्धराज ढड्ढा

गांधी-चरित की याद

काशिनाथ त्रिवेदी

नब्बे साल पहले इस देश में एक बालक ने जन्म लिया। कौन जानता था कि इस बालक के जन्म से दुनिया का इतिहास ही बदल जायगा! बरस बीतते गये। बालक बड़ा होता गया। पढ़-लिख कर बालक कुछ होशियार हुआ। आगे एक दिन आया, जब वही बालक जवान होकर ऊँची पढ़ाई के लिए विलायत जाने को तैयार हुआ। माँ को डर था कि वहाँ परदेश में जाकर लड़का गुमराह न हो जाये। माँ ने बेटे के सामने अपने दिल का डर रखा। बेटे ने माँ के पैर पकड़ कर प्रतिज्ञा की कि परदेश में माँस मिट्टी नहीं खाऊँगा, शराब नहीं पीऊँगा, और पराई स्त्री को माँ-बहन समझूँगा। माँ को तसल्ली हुई। बेटा विदा हुआ। बेटा विलायत पहुँचा और पढ़ाई में मशगूल हो गया। तीन बरस देखते देखते बीत गये। पढ़ाई चलती रही। जीवन बनता रहा। माँ की याद बनी रही। बेटा अपना धरम नहीं भूला। बात पर डटा रहा। जब तब कुछ झटके लगे, पर बेटा सम्हल झाड़ कर हर बार होशियारी पकड़ता रहा। अभी पढ़ाई पूरी भी नहीं हो पायी थी कि भगवान ने माँ को अपने पास बुला लिया। बेटे को किसी ने खबर तक नहीं भेजी। सोचा, माँ के जाने का दुःख बेटे से सहा नहीं जायेगा और उसकी पढ़ाई बिगड़ेगी। आखिर बेटा बारिस्टर बना और अपने देश में वापस आया। देश की धरती पर पैर रखते ही पता चला कि अब इस दुनिया में माँ से भेंट नहीं हो पायेगी। बेटा घर आया, पर घर सूना मिला! माँ नहीं, बाप नहीं। बेटे ने अपने को अनाथ सा पाया। एक भाई का सहारा बचा था, उसी के भरोसे बेटा आगे बढ़ा। उसने अपना धंधा बम्बई में शुरू किया। राजकोट में किया। पर देखा कि वहाँ धंधा जमता नहीं है, कमाई का रास्ता खुलता-निकलता नहीं है। घरवालों का ख्याल था, विलायत पढ़ कर आया है। बारिस्टर बना है। खूब कमायेगा और घरवालों की खूब मदद करेगा। पर बात मन की मन में ही रही। बारिस्टर धन नहीं कमा सका!

दाना पानी उठा! और एक दिन छोटा भाई बड़े भाई से विदा होकर दक्षिण अफ्रीका के लिए चल पड़ा। एक मशहूर मोमिन सेठ का मुकदमा था। दो भाइयों के बीच का झगड़ा बरसों से चला आ रहा था। दोनों तरफ से बड़े-बड़े बारिस्टर गोरे और काले, मेहनत कर रहे थे, पर कोई नतीजा नहीं निकल रहा था। दोनों तरफ दिलों में खींचा-तानी बढ़ रही थी। दोनों तरफ के दिल भारी थे और परेशान थे! हमारे इन बारिस्टर भाई ने सब कुछ देखा, सुना, समझा, सोचा और तय किया कि घर का झगड़ा घर की रीति से मिटाना चाहिए, कोर्ट-कचहरी की रीति से नहीं और विलायत से बारिस्टरी सीख कर आया हुआ यह नौजवान नये रास्ते से आपस का झगड़ा मिटाने में अपनी पूरी ताकत लगाने लगा। लोगों को अचम्भा हुआ। झगड़ेवालों को झगड़ा मिटाने का एक नया रास्ता मिला। झगड़ा निपट भी गया। दोनों तरफ के लोगों को ऐसा लगा, मानो छाती पर से पूरे एक पहाड़ का बोझ उतर गया हो! दोनों पक्षों के दिल से कड़वाहट गयी। मन में मिठास जागी। जीवन में भाईचारा जागा। अपने इस नये वकील को पाकर दोनों तरफ के लोग खुश थे। दोनों की आँखों से अमृत बरस रहा था। सब निहाल हुए।

हमारे नौजवान बारिस्टर ने सोचा, जिस काम से परदेश आये थे, वह काम तो पूरा हुआ। अब देश वापस पहुँचना चाहिए। लौटने की तैयारी चल ही रही थी कि अचानक एक बड़ा सवाल सामने आ गया। सवाल पेचीदा था और सबको छूने वाला, सब पर गहरा असर डालने वाला था। साथियों ने कहा, रुक जाओ। जो सवाल खड़ा हो गया है, उसे सुलझा लो। फिर जाओ। सबने तैयारी दिखाई—मेहनत करने की, मदद करने की। बात जँची और बारिस्टर रुके। पैसा कमाने के लिए आया हुआ बारिस्टर छिप गया, सेवा के लिए अपने को खपाने वाला एक नया बारिस्टर वहाँ प्रकट हुआ। दीन, दुखी, दलित, पीड़ित, अपमानित, सब आ-आकर अपनी अपनी राम-कहानी सुनाने लगे। दिन-रात एक करके बारिस्टर दुखियों के दुःख मिटाने में डूब गये। जमाना वह था, जब उस देश में हिन्दुस्तानी को आदमी नहीं, जानवर से भी गयाबीता माना जाता था। सारे हिन्दुस्तानी कुली कहलाते थे। सब गोरे उनसे नफरत करते थे। गोरों के साथ बैठना, बात करना, रहना, चलना और कामकाज करना कालों के लिए जान की बाजी लगाने के बराबर था! पग-पग पर अपमान होता था। रेलों में, होटलों में, कोर्ट कचहरियों, हाट-बाजार में, कहीं भी काला आदमी गोरे की बराबरी से बैठा कि मुसीबत आयी। गोरों की बस्ती में कालों का आना जाना तक बन्द था। फिर वहाँ घर बसा कर रहने की तो बात ही क्या थी! हमारे बारिस्टर ने यह सब कुछ देखा, सुना, सहा और तय किया कि इस लानत से औसत हिन्दुस्तानी को ही नहीं, बल्कि हर काले आदमी को छुड़ाने के लिए सही तरीकों से जो भी कुछ किया जा सकता है, सब गुजरना चाहिए। वैसा ही किया गया, और उसमें काफी कामयाबी मिली।

यों, अपनी भरी जवानी के बीस साल वहाँ बिता कर और एक बड़ी हद तक सफलता पाकर बारिस्टरी का अपना साहबी बाना छोड़ कर और सेवकाई का नया ... धारण करके एक दिन परदेश का यह प्रवासी फिर अपने देश में आ पहुँचा।

सन् '१४ से लेकर सन् '४८ तक वह यहाँ भी, यहाँ वालों के लिए अपनी पूरी ताकत से जूझता-खपता रहा। शुरू में लोगों ने उसे कर्मवीर कहा, कर्मयोगी कहा। फिर जैसे-जैसे उसका काम बढ़ता गया, नाम फैलता गया और देश की आजादी के लिए लोगों में नया जोश, नयी भावना पैदा होती गयी, परख बढ़ती गयी, लोग अपने इस कर्मवीर को महात्मा कहने लगे। यह वह जमाना था, जब अंग्रेजों का राज इस देश में पूरी पकड़ जमा चुका था। ऐसे कठिन समय में हमारे कर्मवीर ने, जिसे अब देशवाले 'महात्मा' कहने लगे थे, एक दिन डंके की चोट ऐलान किया कि अंग्रेजों का राज हमें हिन्दुस्तान से हटाना है। लोगों ने बात सुनी, उन्हें जँची और वे नये रास्ते चल पड़े। सरकार के साथ अहिंसक असहयोग का एक नया और अनोखा आन्दोलन सारे देश में इस छोर से उस छोर तक फैल गया। वह सन् '२०-२१ का जमाना था। एक जोरदार हवा बनी और उसने देश के बच्चे बच्चे में एक नयी जान फूँक दी। कल के दबे हुए, हजारों टुकड़ों में बँटे हुए, बेजबान और बेदम माने जाने वाले लोगों में एक अजीब सी ताकत जागी। वे खुल कर बोलने लगे और बड़ी हिम्मत के साथ कड़ी-से कड़ी मुसीबतों को हँसते हँसते झेलने लगे। जिस जेल के नाम से लोगों की रूह काँपती थी, उस जेल में लोगों ने—भाइयों ने और बहनों ने, जवानों और बूढ़ों ने—राजी खुशी जाना शुरू किया। लाखों जेलों में गये। हजारों बरबाद हुए। सैकड़ों ने फाँसी के तख्तों पर अपनी जानें कुरबान कर दीं। महात्मा ने नये नये रास्ते सुझाये। कहा—सब मिल कर रहो, जात-पाँत, ऊँच नीच, छूत-अछूत, अमीर गरीब, मालिक-मजदूर वगैरा के भेदों से ऊपर उठो। अपने पाँवों पर खड़े रहो। स्वदेशी धरम पालो। अपनी भाषा बोलो। अपनी वेश-भूषा न छोड़ो। अपना बनाया कपड़ा पहनो। अपना पीसा खाओ। अपना घर सम्हालो। अपना गाँव सम्हालो। बस फिर क्या था? देश में चरखे चले। खादी बनी। चक्कियाँ चलीं। सरकार के गलत कानूनों को न मानने की तैयारी चली। सन् '३० में नमक का कानून टूटा। एक बड़ी आँधी उठी। ऐसा लगा कि अंग्रेजों का राज अब गया, तब गया। सारे देश में हरिजनों के लिए एक हवा बनी। 'हरिजन' पत्र निकला। सारे देश में घूम घूम कर लोगों को समझाया। देश में जगह-जगह हरिजनों के लिए मन्दिर खुले, हाट बाट-घाट के रास्ते खुले। दिलों की दूरी मिटी। दिल कुछ ऊँचे उठे।

सन् '४२ का अगस्त आया। महात्मा ने कहा—'अंग्रेजो, भारत छोड़ो!' सारे देश के कोने-कोने में ~~महात्मा की आवाज गूँज उठी।~~ करोड़ों कंठों से पुकारें उठीं—'अंग्रेजो! भारत छोड़ो!' 'अंग्रेजो! भारत छोड़ो!' सरकार ने पकड़-धकड़ शुरू की। एक ही रात में हजारों जेलों के अन्दर बन्द कर दिये गये। लाठियाँ चलीं! गोलियाँ चलीं! सारे देश में बगावत की प्रचण्ड आँधी उठ खड़ी हुई। गुलामी की जंजीरें जगह जगह से टूटने लगीं। लोगों ने अपना जोर लगाया। सरकार ने अपनी ताकत दिखाई। धन जन का भीषण संहार हुआ। आखिर महात्मा छूटे। उनके साथी छूटे। अंग्रेजों ने भी गहराई में उतर कर कुछ सोचा। उन्हें लगा, झगड़ा बढ़ाने में सार नहीं। जिसका जो हक है, उसे वह दे ही देना चाहिए। मीन्स आये। पैथिक लारेन्स आये। माउण्टबेटन आये। चर्चाएँ चलीं। फैसले हुए। दिन ठहरा, समय निश्चित हुआ। सारी विधि सोच ली गयी। पर एक बहुत ही अनचाही बात नागजी के साथ माननी पड़ गयी। देश के दो टुकड़े हुए! १५ अगस्त, '४७ को एक तरफ नया और आजाद हिन्दुस्तान जागा, दूसरी तरफ पाकिस्तान खड़ा हो गया। लोगों ने सोचा था, आजादी सुख लायेगी, चैन लायेगी। आबादी और बेहतरी लायेगी। पर बदकिस्मती से आजादी ने नया ही गुल खिलाया। आजादी के पहले दौर में इन्सान इन्सान न रह गया। वह हैवान और शैतान बन गया! खूँख्वार जानवरों से भी ज्यादा बुरी हालत में जा फँसा। बसा बसाया देश उजड़ने लगा। दिल टूटने लगे। हिम्मतें पस्त होने लगीं। भरोसा छूटा। आसरा घटा। जिधर देखो, उधर हाहाकार ही हाहाकार मच उठा। पड़ोसी का पड़ोसी पर और दोस्त का दोस्त पर कोई एतबार न रहा। मानवता दानवता में बदल गयी। मनुष्य का सर कुछ अपमानित हो गया। आजादी की खुशी मातम में बदल गयी। महात्मा की आत्मा रो पड़ी। वह रोतों को हँसाने और दुखियों का दुःख भुलाने के लिए नंगे पैर निकल पड़े। जिस स्वराज्य के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन तिल तिल कर खपाया था, उसका ऐसा घिनौना और भद्दा रूप देख कर उनकी आत्मा कराह उठी।

महात्मा देश में पैदा हुई बरबादी और खूँख्वारी का इलाज खोजते रहे। अपनों को और जो कल तक अपने ही थे, पर आज अपने नहीं रहे थे, उन्हें भी समझाते रहे। कुछ ने सुना। कइयों ने नहीं भी सुना। कड़वाहट बढ़ती गयी। मानवता घटी, दानवता प्रकट हुई और आखिर वह महात्मा की बलि लेकर ही शान्त हो पायी। अन्त में एक दिन! यह कर महात्मा ने इस संसार से विदा ली। दुनिया रोयी। वह मुसकराया। आज हमारे उसी महात्मा का, जिसे हमने गांधी कहा, बापू कहा, मोहन कहा, और अन्त में राष्ट्रपिता कहा, जन्मदिन है। नब्बे साल पूरे हुए हैं। ••

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

बापू की राह !

•वीनोबा

अपने देश को आजादी प्राप्त हुअी। अिस आजादी को हासील करने का अपना अेक नया ढंग था। दूसरे देशों में आजादी पाने के लीअे लड़ाअीयां हुअीं। लेकीन हमारे यहां लड़ाअी नहीं हुअी। अीटली में बहुत कशमकश चली, तब वह आजाद हुआ। लेकीन आजाद होते ही वह दूसरे देशों को अपने कब्जे में लेने लगा। अुसका साम्राज्य बना। यही बात जापान में हुअी। जापान की आजादी के लीअे हम लोग गाना गाते थे। जब जापान आजाद हुआ, तब हमें बहुत खुशी हुअी। वही जापान आजाद होते ही साम्राज्यवादी देश बन गया। अुसने दूसरे देशों पर हमला कीया। चीन में आज क्या हो रहा है? यह सब अीसलीअे होता है की अुनका आजादी पाने का तरीका दूसरा था, और वह था हींसा का। हींसा का रस अुन्हें मील गया। अीसलीअे वे अहींसा का, प्रेम का तत्वज्ञान नहीं समझ सके। शेर सामान्यत आदमखोर नहीं होता। वह अेक बार आदमी को मार कर खा लेता है, तब अुसे आदमी खाने की आदत हो जाती है। वैसे ही, जीसने तलवार से आजादी हासील की, वह आगे जाकर हमलावर बन जाता है।

आजादी प्राप्त करने का हींदुस्तान का अपना खास तरीका था। यहां महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाअी लड़ी गअी। गांधीजी अहींसा में वीश्वास करते थे। वे चाहते थे की हम शुद्ध अहींसक रह कर आजादी की लड़ाअी लड़ें। लेकीन हमने अहींसा का पूरा-पूरा पालन नहीं कीया, टूटा-फूटा पालन कीया। वह भी अीसलीअे की हम लाचार थे, कमजोर थे, डरपोक थे। अंग्रेजों ने हमारे हाथ से शस्त्र छीन लीये थे। गांधीजी वीरों की अहींसा चाहते थे। लेकीन हमने मजबूरी की अहींसा स्वीकार की। यदी हमने वस्तुतः सच्ची अहींसा स्वीकार की होती, तो आज जो हर क्षेत्र में गीरावट दीख रही है, अीन्सानीयत लांछीत हो रही है, नीती नष्ट हो रही है, वह नहीं होती। आज की हालत दूसरी ही होती। खैर, हमने गांधीजी को समझा नहीं, अहींसा को समझा नहीं। फीर भी हमने अुन्हें नेता माना और हम अुनके पीछे-पीछे गये। अीससे हमारा आजादी हासील करने का तरीका दूसरे देशों से अलग हो गया। यही वजह है की आजादी प्राप्त करने के बाद भी आज अींग्लैंड और हींदुस्तान में दोस्ती है। अगर हमने दूसरे देशों का तरीका अख्तीयार कर लीया होता, तो यह दोस्ती कैसे रह सकती थी? हींदुस्तान को आजादी मीली है, तो नया युग आरंभ हुआ है। यह नया युग लाने के लीअे गांधीजी का पुरुषार्थ लगा। वे हींदुस्तानी सभ्यता के प्रतीक बन गये। हम अैसे कंबख्त नीकले हैं की अुनकी बात पर आज नहीं चलते। यदी हम बापू की बात पर न चलें, तो खतरा है।

(कटरा, ६-९-'५९)

* लिपि-संकेत : ि = ी; े = ॆ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

प्रश्नोत्तर

• इंजिन की जरूरत ?

• परिवार-नियोजन की समस्या ?

प्रश्न : विनोबा ने कहा है कि "एक मनुष्य का जीवन उठाने के लिए इंजिन आवश्यक हो, तो क्यों न उसका लाभ लिया जाय!" इस कथन के आधार पर सर्वोदय समाज व्यवस्था और प्रचलित समाजवादी अर्थ-व्यवस्था में क्या अन्तर रह जायगा? समाज के हर आदमी को रोटी देने का काम आज कम्युनिस्ट मुल्क—रूस, चीन आदि तथा पूँजीवादी मुल्क—अमेरिका, इंग्लैंड आदि ने सिद्ध कर दिया है। तब आपका वह सिद्धान्त कहाँ रह जायगा कि समाज के हाथ में ऐसा साधन मत दो, जिससे शोषण करने का मौका मिले?

उत्तर : आपने विनोबा के उस कथन का उल्लेख तो किया है, लेकिन *विनोबा का दूसरा कथन है कि प्रकृति और समाज के हर साधनों का सम विभाजन यानी सबके समान इस्तेमाल के लिए होना चाहिए।* तो अगर हरएक आदमी को, अपना जीवन उठाने के लिए वे साधन मुहैया हों, तो वह सर्वोदय है। अगर नहीं, तो विशिष्टोदय है। अतः उस कथन को परिस्थिति के अनुसार इस्तेमाल करना होगा। जिस देश में आबादी इतनी हो कि सारे कच्चे माल को पक्का बनाने में इंजिन का इस्तेमाल आवश्यक है, वहाँ पर इंजिन का इस्तेमाल करने का मतलब यह है कि कुछ लोगों को उन्नति का अवसर देना और बाकी लोगों को उससे वंचित करना। अतएव इंजिन का इस्तेमाल करना अगर आवश्यक है, तो उसका प्रकार कैसा होगा, यह सोचना होगा और कौनसी शक्ति उसे चलायेगी, कहाँ से वह निकलेगी, इस पर ध्यान देना होगा। *मान लीजिये कि टोटल कच्चे माल को पक्का करने के लिए* कुल एक हजार मन शक्ति की आवश्यकता है और उतनी शक्ति देश के लोगों के हाथ में से आसानी से मिल सकती है, तो इंजिन क्या चाहिए! हरएक चीज में गणित देखने की आवश्यकता है। गणित में आप समझ लें कि हरएक मनुष्य को कितना अवसर चाहिए, कितना समय अध्ययन के लिए चाहिए, कितना मनोरंजन के लिए चाहिए, कितना आराम के लिए चाहिए, कितना नित्य काम के लिए चाहिए इत्यादि।

मतलब यह है कि केवल इंजिन कहने से काम नहीं चलेगा। कैसी इंजिन, किस यंत्र को चलायेगी, उसको चलाने की शक्ति कहाँ से आयेगी इत्यादि के वैज्ञानिक विश्लेषण के साथ मिलान करना होगा। सर्वोदय विचार के अनुसार एक दूसरी बात भी देखनी होगी। उत्पादन की प्रक्रिया ही सांस्कृतिक विकास का माध्यम हो, यह आवश्यक है, नहीं तो सांस्कृतिक विकास सर्वजनसुलभ नहीं होगा। इसलिए उत्पादन *की योग्यता बिना कम किये, मनुष्य के हाथ से चल सके, ऐसे औजारों का आविष्कार* करना होगा। सर्वोदय की यह माँग वैज्ञानिकों को चुनौती है। उन्हें ऐसे औजारों का आविष्कार करना होगा, जिसकी योग्यता पूर्ण रूप से जरूरत को पूरी कर सके *और साथ ही साथ वह औजार इतनी कम शक्ति से चले, ताकि बच्चे और बूढ़े भी* दिलचस्पी और आनन्द के साथ उसे अपना सकें। हाथ का औजार केवल कारीगर की जीविका का उपादान ही नहीं होता है, वह उसका जीवन-साथी भी होता है। यही कारण है कि कारीगर अपने औजारों को चूमता है और उसे प्यार भी करता है। इस किस्म की भावना ही संस्कृति की जननी होती है। समाजवाद ऐसा विचार नहीं करता है। वह केन्द्रित शक्ति द्वारा केन्द्रीय व्यवस्था से उत्पादन कर सारे समाज को केन्द्रीय संचालन में रखना चाहता है, जिसकी परिणति से सबका कल्याण भले ही हो, सर्वोदय नहीं हो सकेगा, क्योंकि सर्वोदय केवल आर्थिक उदय नहीं है, वह सबका सर्वांगीण उदय चाहता है।

प्रश्न : आज का विश्व जनसंख्या-वृद्धि से भयभीत है और कृत्रिम साधनों द्वारा परिवार नियोजन के कार्यक्रम में व्यस्त है। लेकिन दुनिया के एक-चौथाई हिस्से में ही धरती है, जहाँ मनुष्य का निवास है, बाकी में पानी है, *जिसमें मछली* की प्राप्ति काफी मात्रा में हो सकती है। परन्तु आज इस दिशा में दुनिया का कोई मुल्क नहीं सोच रहा है। तो सर्वोदय की दृष्टि से परिवार-नियोजन किस दृष्टि से होगा और उसके लिए कौनसा कार्यक्रम अपनाया जायेगा?

उत्तर : परिवार नियोजन के लिए साधना की आवश्यकता है। सर्वोदय की दृष्टि से ऐसी साधना का प्रचार करना चाहिए, जिसका मूल संयम से है। लेकिन केवल संयम करने से वह नहीं होगा। एक विचार के रूप में संयम की बात कही जाती है, लेकिन उसके शास्त्र और अभ्यासक्रम का भी व्यापक प्रचार करना होगा। अभी इस दिशा में हमारे देश के लोगों का ध्यान नहीं गया है। लेकिन जिस तरह दूसरे किस्म की आधुनिक संतान नियोजन की व्यापक चेष्टा के बावजूद लोक संख्या बढ़ रही है, उसी तरह सर्वोदय-प्रणाली की चेष्टा के बावजूद लोकसंख्या बढ़ेगी ही। इसलिए प्रकृति के गर्भ में से अधिक से अधिक सार निकाला जाय, इसकी निरन्तर खोज करने की आवश्यकता है। समुद्र की मछली तो है ही, इसके अलावा कृषि के अनाज और धरती पर जो पानी है, उसकी मछलियों में भी काफी वृद्धि की गुँजाइश है। इस ओर मनुष्य को निष्ठा और परिश्रम से लगना होगा।

—धीरेन्द्र मजूमदार

'सहजीवन' की टेक्निक : २.

● देवी प्रस

(१) संकल्पमय जीवन : *अच्छे और मजबूत चरित्रवाले जीवन की एक बड़ी बात* यह है कि उसमें व्रतों और संकल्पों का विशेष महत्त्व होता है। एक सामाजिक 'पैटर्न' विशेष का निर्माण तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि उसके बुनियादी उसूलों पर संकल्प के साथ न चला जाय। एक मामूली सी बात है—ग्रामोद्योग व्रत की। हम ग्रामोद्योगों का विकास तब तक नहीं कर सकेंगे, जब तक कि उनकी प्रबल आवश्यकता महसूस न हो। आज ग्रामोद्योगी शक्कर का व्रत नहीं लिया हो, तो सहज ही दानेदार चीनी का व्यवहार चलता रहेगा और ग्रामोद्योगी शक्कर के लिए प्रयत्न नहीं होगा। अगर बापू ने खादी का संकल्प हमें न दिलवाया होता, तो आज खादी का जो विकास हुआ है, वह न हुआ होता। यह आम तौर पर देखने में आता है कि खादी को छोड़ कर बाकी कम ही चीजों का संकल्प हमारे परिवारों व समाज में चलता हो। खादी भी जीवन में कितनी उतरी है, यह हम स्वयं समझ लेंगे, *अगर अपने अपने ट्रंक खोल कर हर कपड़े का निरीक्षण करें!*

जब तक सहजीवन का एक आधार संकल्पमय जीवन नहीं होगा, तब तक उस समाज में 'कैरेक्टर' नहीं आयेगा। हाँ, यह खूब सोच समझ कर तय किया जाय कि क्या-क्या संकल्प लें। इनका आधार सैद्धान्तिक होगा, व्यावहारिक नहीं। हाँ, जहाँ वह असम्भव हो, वहाँ बात अलग है। इस प्रश्न पर गुरुजनों ने काफी कह रखा है, अधिक चर्चा की आवश्यकता नहीं।

(२) शरीरश्रम : यह भी एक संकल्प ही है, परन्तु इसका विशेष महत्त्व और आवश्यकता है, इसलिए खास तौर पर विचारणीय है। शरीरश्रम विधेयात्मक, 'पॉजिटिव' चीज है। यह व्यक्तिगत साधना तो है ही, *परन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सामाजिक* वस्तु भी है। इसका शरीर, उपयोगिता *है और प्राण, ऐक्य-निर्माण।* भौतिक पहलू उत्पादन है और आध्यात्मिक पहलू समता। शरीरश्रम के संकल्प के पीछे इन दोनों बातों की भूमिका होनी चाहिए। जो भी शरीरश्रम करूँ, वह प्रथम तो समाज के समत्व का निर्माण करने की दृष्टि से और साथ साथ उसके द्वारा कुछ उत्पादन कर के समाज की सम्पदा में वृद्धि हो, इस विचार से करूँगा।

कभी-कभी हम शरीरश्रम करने का जो सोचते हैं, वह दुर्भाग्यवश अभावात्मक दृष्टि से करते हैं। मन में रहता है कि क्योंकि समाज के सभी लोग शरीरश्रम नहीं करते, तो हमें करते हुए देख कर वे भी *करने लगेंगे! या, हमारे शरीरश्रम करने* से समाज में शरीरश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस तरह की वृत्ति से जो शरीरश्रम किया जायगा, वह न तो व्यक्तिगत साधना ही बन पायेगा और न ही समाज में शरीरश्रम के प्रति कोई मानसिक परिवर्तन ही ला सकेगा। इस वृत्ति की बुनियाद में अहंकार (ईगो) है, उसके पीछे एकत्व का दर्शन नहीं है। इसलिए वह बुनियाद में ही गलत होने के कारण कारगर होने के *बदले नुकसानदेह हो जाती है।*

शरीरश्रम के बारे में कुछ और स्पष्टीकरण होना लाजमी है। उसका मतलब यह नहीं हो कि उसमें उम्र और शक्ति का लिहाज ही न हो। मैं यह मानता हूँ कि *श्रम का प्रकार व्यक्ति स्वयं चुने।* कुछ ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं, जो जरा भी भारी काम नहीं कर सकते। उनके लिए सैकड़ों ऐसे सामाजिक कार्य होते हैं, जो वे आराम से अपनी जगह बैठे-बैठे हो कर सकते हैं। कताई तो उनमें सबसे अच्छा कार्य है। जिल्दसाजी भी है, यहाँ तक कि लिफाफे बनाने का काम तो अत्यन्त सरल है। अगर लिफाफे काटने का काम भी कोई नहीं कर सकता, तो कटे हुए कागजों को चिपका कर *लिफाफा तो बना ही सकता है।* इस प्रकार अनेक काम हैं, जो उपयोगी और आवश्यक होते हैं और बड़ी उम्र में किये जा सकते हैं। जवान और *पहलवान व्यक्ति तो कठिन और पसीना निकालने वाले काम ही अधिक करेंगे।* लाजमी यह है कि शरीरश्रम एक तो उत्पादन की दृष्टि से हो। उत्पादन का अर्थ भी संकुचित नहीं होना चाहिए। अगर एक व्यक्ति बढ़ई विभाग में जाकर कुछ बच्चों के खिलौने बनाता हो या मिट्टी विभाग में जाकर कलात्मक ढंग के बर्तन या बच्चों के लिए खिलौने बनाता हो या एक व्यक्ति फूल-बगीचे में जाकर बागवानी का काम करता हो, तो वह सब सच्चा शरीरश्रम ही है। *फूल-बगीचे का काम शरीरश्रम हो* नहीं सकता और फलागीची की बागवानी का काम शरीरश्रम है, यह दृष्टि छोटी है। इस दृष्टि के द्वारा जहाँ काम होगा, वहाँ श्रम में (क्रियेटिविटी) सृजनात्मकता का और आनन्द का विकास नहीं हो सकता।

एक और चीज शरीरश्रम की बुनियाद में होनी चाहिए। शरीरश्रम चाहे *वह व्यक्तिगत हो, चाहे सामूहिक, एक निर्धारित समय होगा। इस समय हर व्यक्ति* की वृत्ति एक श्रमिक की होनी चाहिए। चाहे मैं किसी विभाग, कर्मशाला या संस्था का व्यवस्थापक ही क्यों न हूँ, उस समय तो मुझे यह सब भूल कर श्रम करना चाहिए। मैं केवल अपना ही काम देखूँ और उसे एक सामान्य कारीगर, मजदूर की हैसियत से करूँ। जिस तरह सच्ची प्रार्थना करने वाले से पूछा जाय कि आज प्रार्थना में कौन कौन नहीं आया था, *बता सकते हो? तो वह कहेगा कि उसे मालूम* नहीं। इसी प्रकार मैं कर्मशाला में जाऊँ, पर दूसरा गया या नहीं, इसकी मुझे श्रम के समय कोई चिन्ता न रहे। वहाँ मैं साधक हूँ—अध्यक्ष या मैनेजर नहीं।

(३) सातत्य : तीसरी आवश्यकता सहजीवन के विकास के लिए सातत्य की है। व्यक्तिगत तौर पर या सामूहिक तौर पर जो भी काम लें, वह पूरा हो। इससे आत्म-विश्वास बढ़ता है। जहाँ हाथ में लिये गये काम, 'प्रोजेक्ट' को पूरा करने से पहले दूसरा काम ले लिया जाय, या किसी हाथ के काम को यह कह कर कि वह न *यह काम अधिक महत्त्वपूर्ण है, छोड़ दिया जाय, तो उसमें न तो व्यक्तिगत साध*ना ही होती है और न सामूहिक साधना। काम की परम्परा बनाने में भी इस [illegible] के कारण मुश्किलें आती हैं। साधारण-सी बात है कि एक व्यक्ति गोशाला का *काम करता है, अगर कुछ समय के बाद उसे दफ्तर में 'डिस्पैच' का काम दि*या जाय और फिर कुछ दिन बाद सरंजाम विभाग में, तो उससे न तो उस व्यक्ति का विकास होगा और न उस काम की 'एफिशिएँसी' बढ़ सकेगी।

दरअसल किसी समाज का स्तर ऊँचा करने के लिए यह जरूरी है कि उस समाज के व्यक्तियों को अपने-अपने जीवन में समाधान का बोध हो। कार्य समाधान और कुशलता बिना सातत्य के विकास नहीं कर सकती है। *जिस समाज* में, कर्मकुशलता और व्यक्तिगत समाधान के बारे में विचार नहीं किया जायगा, उस समाज में एक-सूत्रता नहीं आ सकेगी। सह-जीवन के लिए एक-सूत्रता अत्यन्त *आवश्यक गुण है।*

(४) समीक्षा : सहजीवन की टेक्निक का प्राण समीक्षा है—आत्म समीक्षा और आपसी समीक्षा। जिस मनुष्य की बस्ती में यह नहीं होता है, चाहे वे एक घर के रोटीवाले हों, चाहे सभी एक गुरु के शिष्य, वहाँ सहजीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। बाहर से देखने पर वह पारिवारिक जीवन वाला समाज लगेगा, पर उसके *अन्दर पारिवारिक भावना का किंचित् मात्र आभास तक नहीं होगा।*

अभय गुण सब गुणों की बुनियाद है। हालाँकि सत्य गुण, पहला और आखिरी गुण है, फिर भी उसका विकास करने के लिए अभय गुण अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रश्न पर बापू और विनोबा ने इतना कहा और लिखा है कि उसकी यहाँ चर्चा अनावश्यक और विशेष तौर पर मेरे लिए अनधिकार पूर्ण भी होगी।

भय केवल अधिकार या सत्ताधारियों का ही नहीं होता। भय मित्रता खोने का भी हो सकता है। भय न्यून भाव, "इनफिरिआरिटी काम्प्लेक्स" के कारण भी हो जाता है। भय उम्र का लिहाज करने के रूप में भी हो सकता है। इस तरह समाज में भय का स्वरूप कई प्रकार का होता है। सब प्रकार के भयों के कारण ही समाज का वातावरण खुला और स्पष्ट नहीं हो पाता। यह जब तक नहीं मिटेगा, तब तक न तो व्यक्तियों का विकास हो सकेगा और न ही समाज का।

यह निर्भय वृत्ति कैसे विकसित हो सकती है? इसकी एक पद्धति है। समीक्षा—आत्म-समीक्षा और आपसी समीक्षा। जिसे अंग्रेजी में 'सेल्फ क्रिटिसिज्म' और 'म्युच्युअल क्रिटिसिज्म' कहा जाता है। यह क्रिया 'प्रोसेस', केवल अभय वृत्ति का विकास करने के लिए ही है, ऐसी बात नहीं। इसका उद्देश्य अधिक व्यापक है। समाज का बौद्धिक स्तर ऊँचा उठाने में भी यह क्रिया कारगर होती है। इसका विकास योरप की कम्युनिटियों (समाजों) में खूब हुआ है।

किसी समाज में रविवार को गिरजाघर में जाकर सुबह प्रार्थना की जाती है। *उनके समाज में एक सुन्दर परम्परा डाली गयी है। उनका कहना है कि जब तक* तुम्हारा हृदय साफ नहीं है, तब तक तुम्हें प्रार्थना करने का अधिकार नहीं। गिरजाघर में पवित्र हृदय से प्रवेश करना चाहिए। सप्ताह भर में हो सकता है कि हमारे आपसी सम्बन्धों में कुछ त्रुटियाँ, अशुद्धि रह गयी हों। इसलिए वे शनिवार को बैठ कर आपस में उसकी सफाई कर लेते हैं, और रविवार को प्रार्थना में तभी जाते हैं, जब कि आपस में किसी के प्रति कुछ भी खटका न रह गया हो। यह केवल खुली चर्चा और आपसी समीक्षा से ही सम्भव हो सकता है।

योरप के दूसरे एक समाज के बारे में सुना है कि उनकी साप्ताहिक बैठक होती है। उसमें सबसे पहले हर सदस्य अपनी खुद की समीक्षा करता है। उसने पिछले हफ्ते में कुछ गलती की हो या कुछ उससे विशेष अच्छा काम भी हुआ हो, तो भी उसे समाज के सामने रखता है। उसके बाद वे आपसी समीक्षा करते हैं, जिसमें एक दूसरे की कोई गलती हो, तो उसे नम्रता और संवेदना के साथ कहते हैं। इस तरह उस पर चर्चा होती है। अगर व्यक्ति अपनी गलती को तब भी *महसूस न कर* पाये और समाज के बाकी सब सदस्य जानते हों कि वह गलती है, तो वह उसे इस आशा से कि बाद में समझ आयेगा, स्वीकार कर लेता है।

यह एक बड़ी बात है। इससे व्यक्ति का तब तो लाभ होता ही है, जब वह गलती नासमझी के कारण या अनजाने कर देता है, परन्तु इस प्रक्रिया से उसका भी लाभ होता है, जो स्वभाव के या कमजोरी के *कारण गलती कर बैठता है। ऐसी*

वास्तविक भक्ति तो दरिद्रनारायण की सेवा ही है !

• विनोबा

दुनिया भर में कहा जाता है और हम लोग भी महसूस करते हैं कि हिन्दुस्तान में परमेश्वर के लिए भक्तिभाव बहुत है। वैसे तो परमात्मा को मानने वाले दुनिया भर में हैं ही, याने यह किसी देश का ठेका नहीं हो सकता कि वही परमात्मा की भक्ति करे, फिर भी परमात्मा की भक्ति हिंदुस्तान की एक खुसूसियत मानी जाती है। यहाँ के लोगों का रुझान परमात्मा की तरफ है। मैं मानता हूँ कि यह बात सही है। यहाँ जगह जगह मन्दिर, गिरजाघर, गुरुद्वारा, मस्जिदें हैं। जब कोई अच्छा टीला देखा, तो लोगों ने वहाँ मन्दिर खड़ा कर दिया। इन सबके अलावा भी घर घर में भगवान् की भक्ति करने का रिवाज है। लेकिन आज तक भक्ति का जो रंग था, अब उसमें फर्क करने की जरूरत है।

दरअसल भक्ति का मानी क्या है? भगवान् रहते कहाँ हैं? क्या वे अमरनाथ, बद्री केदार, काशी, रामेश्वर या जेरुसलेम या मक्का मदीना में रहते हैं? वहाँ भी रहते हैं, इसमें कोई शक नहीं है, ये सारी भगवान् की ही जगहें हैं। अनेक साधु, सत्पुरुष, फकीर वहाँ यात्रा के लिए, जियारत के लिए गये और उन्होंने वहाँ काफी तपस्या की है। ऐसी सब जगहों पर जाकर मनुष्य को कुछ तसल्ली मिलती है, साधु-संगति मिलती है और लाभ होता है, यह मैं कबूल करता हूँ। किन्तु हमें यह भी साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि काशी, कैलाश, मक्का आदि सारी जगहें परमात्मा की खास जगहें नहीं हैं। उसकी खास जगह अगर कोई है, तो वह है इन्सान का दिल। अन्तर्यामी दिल के अन्दर ही रहता है। इस बात को हिंदू, मुसलमान, ईसाई वगैरह सभी मानते हैं। लेकिन अफसोस है कि इस पर अमल नहीं करते हैं।

हम इस बात को अभी तक समझे नहीं हैं कि परमेश्वर की सबसे बढ़कर और आसान जो पूजा, इबादत, भक्ति हम कर सकते हैं, वह है—दुःखी, रोगी, गरीबों की सेवा, गिरे हुओं को मदद देना। हिंदुस्तान में कुष्ठरोगियों की सेवा अक्सर ईसाई करते हैं। ईसाई लोग दूर दूर के देशों में जाकर सेवा करते हैं, यह उनके लिए इज्जत की चीज है। लेकिन हमारे देश के लोग अभी तक उस काम में नहीं पड़े हैं। बीमारों की सेवा में जिंदगी खर्च करना भगवान् की पूजा है, पूजा या समझ कर हम उस काम को करते हैं? बहुत थोड़े लोग इस काम में लगे हैं।

हमने मेहतरों का एक ऐसा वर्ग पैदा किया है, जो सफाई करता है। हम अपना काम इतना ही समझते हैं कि घर में कचरा पड़ा हो, तो रास्ते पर फेंक देना। उसे उठाना मेहतर का काम है। इन मेहतरों को हमने अछूत भी मान रखा है। दरअसल हमें समझना चाहिए कि सफाई करना याने परमेश्वर की पूजा है, सेवा है। मैंने काशी में तथा प्रयाग में गंगा के किनारे पर देखा है कि वहाँ बड़ी फजर में एक ओर तो सन्यासी संध्योपासना कर रहा है और उससे ३०-४० कदम पर दूसरी ओर एक मनुष्य पाखाने बैठा है! लोग नदी के किनारे को गंदा बना देते हैं। उसमें हमें ऐसा महसूस नहीं होता है कि हमने गलत काम किया! नदियों में नहाने में लोग बड़ा धर्म मानते हैं, लेकिन इस बात को नहीं समझते कि वहाँ की गदगी को साफ करना भी धर्म है। हमें समझना चाहिए कि किसी जगह को गंदा बनाना अधर्म है, भगवान् के प्रति द्रोह है, और ठीक इसके विपरीत गंदगी उठाना, सफाई करना, भगवान् की पूजा है। याने सेवा करना ही दरअसल में भगवान् की इबादत है।

हम इस बात को नहीं समझते हैं कि अपने गाँव के गरीबों को ही मदद देना भगवान् की पूजा है। अक्सर होता यह है कि हमने अपनी आँखों के सामने कहीं बहुत ज्यादा दुःख देखा, तो आँखों की लाचारी की वजह से, विवश होकर दया के मारे हम कुछ दे देते हैं। उस समय क्या हम यह समझते हैं कि सामने किसी गरीब को देखा है याने हमें परमात्मा का दर्शन हुआ है? हमारे सामने भूखा, प्यासा भगवान् खड़ा है। उसकी भूख और प्यास मिटाना यही भगवान् की पूजा है। वैसे हम कभी-कभी दया के काम कर लेते हैं, लेकिन नित्य पूजा की तरह क्या हम महसूस करते हैं कि हमें गाँव गाँव घूमना है और घर घर जाकर ढूँढ़ना है कि कौन दुःखी है, गरीब है, पीड़ित है, बीमार है और किसे मदद की जरूरत है? जरूरतमन्दों को मदद पहुँचाने की कोशिश करेंगे, तभी हमारे हाथ से भगवान् की पूजा होगी। अब मूर्तिपूजा के दिन लद गये हैं। अभी भी हम अपनी भावना को सिर्फ मूर्ति तक सीमित रखते हैं, निठुर बनते हैं, व्यवहार में दूसरों को ठगते हैं, सूद ज्यादा लेते हैं। हम यह भी नहीं समझते कि यह भगवान् का द्रोह है। आज हर चीज में मिलावट होती है। खाने की चीज में और दवा में भी मिलावट होती है। इस तरह एक तरफ तो हम ऐसी मिलावट करके चीजें बेचते हैं और दूसरी तरफ थोड़ा धर्म का काम कर लेते हैं, तो दिल को तसल्ली हो जाती है!

हम परमेश्वर का नाम लेते हैं और रिश्वत के तौर पर उस परमेश्वर को कुछ देकर फायदा उठाना चाहते हैं। किसी पर कोई आफत आयी, तो वह भगवान् की मिन्नत करेगा कि यह आफत चली जायगी, तो मैं बकरे की बलि दूँगा या ब्राह्मणों को भोजन कराऊँगा। यह भगवान् को ठगने की बात हुई। इस तरह हम भगवान् के साथ सौदा भी करते हैं। मेरे इस कहने का भाव आप यह समझ लीजिये कि हम सिर्फ मूर्तिपूजा करेंगे, बड़ी फजर उठ कर नहा धोकर चंदन लगायेंगे, ग्रंथपाठ करेंगे, मगर इतने से भक्ति नहीं होती। आसपास के दुःखी लोगों की सेवा करने की बात हमें सूझनी चाहिए। जब हम इस बात को समझेंगे कि दुःखितों की सेवा से ही भक्ति होती है, तब हमारी भक्ति का सारा जज्बा (भावना) सेवा में लगेगा। आज हम भगवान् का नाम लेते हैं, लेकिन उतने से दिल पाक नहीं बनता है, क्योंकि भगवान् की भक्ति का असली रूप क्या है, इसे हम समझे नहीं हैं।

आज एक भाई ने हमसे कहा, आप भूदान के काम में लगे हैं, यह ठीक है, लेकिन कुछ धार्मिक काम भी उठावें और लोगों को धर्म की बातें समझावें। मैंने उनसे पूछा, धर्म का क्या माने समझते हैं आप? एक गरीब भाई है। उसके बाल-बच्चे भी हैं, परन्तु उसके निर्वाह के लिए न जमीन है, न काम का जरिया है। फिर हम उसे जमीन देते हैं, तो यह धर्म का काम होता है या इक्तसादी (आर्थिक) सुधार का काम होता है? सरकार हमसे टैक्स लेकर अस्पताल खोलती है, इससे उसने तो दया का काम कर लिया, लेकिन हमारी दया, धर्म बढ़ा नहीं! हम बीमार की सेवा की कोशिश करेंगे, तभी हमारा धर्म बढ़ा, ऐसा माना जायगा। जहाँ मनुष्य के गुणों का विकास होता है, वहाँ धर्म होता है। सहयोग, प्रेम, सत्यनिष्ठा, हिम्मत, दया आदि सारे सद्गुण बढ़ेंगे, तभी धर्म बढ़ेगा। मैं मजाक में कहा करता हूँ कि हम पत्थर की पूजा करते हैं, तो हमारा दिल भी पत्थर के जैसा निठुर बन जाता है। इस तरह पत्थरदिल बन जायँ, तो ऐसी पूजा से क्या फायदा? अगर यह अनुभव हो कि दिल नर्म बन रहा है, दिल में प्यार, रहम, मेहर पैदा हो रही है, हिम्मत, सत्यनिष्ठा बढ़ रही है, तब वह सच्ची भक्ति होगी। क्या भूदान का काम माली हालत सुधारने का ही काम है? वह काम तो सरकार करती ही है। लेकिन हम लोगों को समझाते हैं कि आपको अपने दुःखी भाइयों के लिए अपनी चीज का एक हिस्सा समझ-बूझ कर, प्यार से देना चाहिए। यह धर्म नहीं तो क्या है? परमेश्वर की भक्ति के मानी आप क्या समझते हैं?

फलाना काम भक्ति का है और फलाना भक्ति का नहीं है, इस तरह जिन्दगी के टुकड़े नहीं हो सकते हैं। प्यार से रसोई बना कर अतिथि को खिलाना, एक बड़ा यज्ञ है। अगर हम इसे ठीक से समझे होते, तो आज हिन्दुस्तान की गिरी हुई हालत नहीं होती, यहाँ पर इतना लोभ नहीं होता, सफेद बाजार भी काला बाजार नहीं बनता, एक बाजू अमीरी और दूसरी बाजू गुर्बत, यह हालत नहीं रहती। अगर लोगों के दिल में सच्ची भक्ति होती, तो ऐसी गुर्बत न होकर एक-दूसरे को मदद देने की वृत्ति होती। हम एक-दूसरे को मदद नहीं देते हैं।

लोग बड़ी श्रद्धा से यात्रा करेंगे, उसके लिए पैसा खर्च करेंगे, लेकिन उन्हें ही खादी पहनने को कहा जाय, तो वे कहेंगे कि खादी महँगी है। जरा सोचिये तो, अगर आप साल भर में मिल का कपड़ा खरीदते हैं, तो दस रुपये में मिलता है और खादी खरीदते हैं, तो बीस रुपये में। जो दस रुपया ज्यादा खर्च हुआ, वह धर्म के काम में खर्च हुआ, ऐसा क्यों नहीं समझते? तुम अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हो, उसमें पचास रुपये खर्च करते हो और उसे धर्म मानते हो। लेकिन आपके गाँव की एक गरीब औरत चरखा कातती है, उसे घर बैठे रोजी मिलती है, उसके बच्चों को खाना मिलता है, तो उसके सूत की बनी हुई महँगी खादी खरीदने में आप धर्म क्यों नहीं समझते? मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आप इतनी बात भी नहीं समझते, तो दूसरे काम में पैसा खर्च करने से धर्म कैसे हो जायगा? एक भाई बिहार से अमरनाथ की यात्रा के लिए आया, तो उसने रेलवे को पैसा दिया और यहाँ आकर होटलवाले को भी दिया। फिर घोड़े पर बैठ कर अमरनाथ गया। उसका सारा सवाब (पुण्य) तो घोड़े ने ही खा लिया! अगर वह अमरनाथ पैदल जाता, तो दूसरी बात थी। लेकिन ट्रेन में, मोटर में, घोड़े पर या गधे पर बैठ कर जाने में क्या धर्म है? आप खादी नहीं खरीदेंगे, तो गाँव की गरीब औरत और उसके बच्चे भूखों मरेंगे। इसलिए क्या खादी खरीदने में धर्म नहीं है?

अतः, तीर्थयात्रा वगैरह सब छोटी चीजें हैं। ये आप न करें, तो भी कोई पर्वाह नहीं है। लेकिन गरीबों के, दुःखियों के दिल को तसल्ली देने का काम आपको करना चाहिए। आपकी दौलत, जमीन, अक्ल, वक्त, इल्म, सब आपको दुःखियों की सेवा में लगाना चाहिए। भूदान ग्रामदान का काम सिर्फ माली हालत सुधारने का काम नहीं है, बल्कि यह तो हिन्दुस्तान में धर्म-स्थापना करने का, देश को सच्ची भक्ति सिखाने का काम चल रहा है। (जम्मू, ११ सितम्बर, '५९)

पूसा सघन-क्षेत्र का अगला कदम

● ध्वजाप्रसाद साहू

गत २७, २८ और २९ जून १९५९ को बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के पूसा केन्द्र में अ० भा० सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति एवं अ० भा० खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड की संयुक्त बैठक हुई थी। इस बैठक में विभिन्न राज्यों के राज्य खादी बोर्ड के अध्यक्ष भी शरीक थे। उस संयुक्त बैठक में खादी एवं ग्रामोद्योग सम्बन्धी चर्चाएँ हुई थीं और उन चर्चाओं के फलस्वरूप एक निवेदन प्रकाशित किया गया था। उस निवेदन के द्वारा सारे देश की रचनात्मक संस्थाओं से यह अपेक्षा की गयी थी कि वे अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार सघन क्षेत्र बना कर खादी और ग्रामोद्योग के साथ कृषि एवं गोपालन का कार्यक्रम भी हाथ में लें। उस निवेदन में यह भी कहा गया था कि—"भूखों और नंगों की समस्या सामाजिक समस्या है और वह सामाजिक न्याय से गहरा सम्बन्ध रखती है। सामाजिक न्याय में हर व्यक्ति को सन्तुलित भोजन, आवास, शिक्षा, चिकित्सा और विश्राम का अवसर सुलभ होना शामिल है। हर गाँव में खादी-उद्योग के विचार-प्रवेश के साथ, गाँववालों का सामूहिक अभिक्रम जाग्रत होकर, यह स्थिति बननी चाहिए कि सबको रोजगार मिले, उपर्युक्त प्राथमिक आवश्यकताएँ पूरी हों और सामाजिक न्याय की स्थापना हो।"

पूसा क्षेत्र के तीन सौ गाँवों में, जिसकी आबादी करीब तीन लाख की है, वस्त्र-स्वावलम्बन का काम शुरू कर दिया गया है। इस दिशा में, बहुत गाँवों में, अच्छी प्रगति हुई है। पूसा-सम्मेलन के बाद, ग्राम स्वराज्य की दिशा में गाँवों को अभिमुख करने के लिए संयुक्त बैठक के निवेदन के अनुसार बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ ने इस क्षेत्र के लिए खादी, ग्रामोद्योग, कृषि, गोपालन, शिक्षा एवं स्वास्थ्य का कार्यक्रम अपनाया है। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम को व्यापक एवं तीव्र गति से चलाने की दृष्टि से यह निश्चय किया गया है कि पूसा क्षेत्र के तीन सौ गाँवों में वस्त्र स्वावलम्बन का काम तो व्यापक रूप से पूरा किया जाय, परन्तु इस क्षेत्र के २६ गाँवों में, जिसकी जनसंख्या करीब तीस हजार होगी, बैठक के निवेदन के सम्पूर्ण कार्यक्रम को चलाया जाय। वस्त्र-स्वावलम्बन संकल्प के द्वारा इस क्षेत्र के गाँव की जनता में अभिक्रम जाग्रत हुआ है। इसकी झलक सम्मेलन के अवसर पर जिन लोगों ने गाँवों में जाकर देखा था, उन्हें भली प्रकार मिली थी। इस क्षेत्र के गाँवों में ग्रामोदय सहयोग समितियाँ बनी हैं और गाँववाले अच्छी तरह से चला रहे हैं। इससे ग्राम-स्वावलम्बन की ओर उनका पुरुषार्थ एवं ग्राम राज्य की ओर उनकी जिज्ञासा जाग्रत हुई है ऐसा दीख पड़ता है। बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ का सहयोग उन्हें प्राप्त है, लेकिन अभिक्रम गाँववालों का ही है।

बैठक के निवेदन के अनुसार सम्पूर्ण कार्यक्रम सरलतापूर्वक इस क्षेत्र में चलाया जा सके, इसके लिए बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ ने अपने पूसा केन्द्र में कृषि, गोपालन, खादी एवं ग्रामोद्योग आदि के लिए एक-एक निष्णात कार्यकर्ता रखने का निश्चय किया है। ये निष्णात (विशेषज्ञ) कार्यकर्ता गाँववालों के अभिक्रम में वांछित मदद कर सकेंगे।

आरम्भिक अवस्था में शिक्षण-कार्य के सम्बन्ध में यह निश्चय किया गया है कि गाँवों में बच्चों के लिए 'एक घण्टे' का विद्यालय और प्रौढ़ों के लिए 'एक घण्टे' का महाविद्यालय चलाया जाय। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र के सभी विद्यालयों में अच्छी कताई चले, इसके लिए शिक्षकों का सम्मेलन बुलाया जाय। विद्यालयों में छात्रों द्वारा कताई अच्छी प्रकार हो, इसके लिए उन्हें तालीम दी जाये। कताई की तालीम देने के लिए प्रत्येक विद्यालय में संघ की ओर से कताई कला में निपुण एक-एक कार्यकर्ता कुछ समय के लिए दिया जाय। प्रत्येक गाँव में बालवाड़ी चलायी जाने की व्यापक योजना है और उस आधार पर कई गाँवों में बालवाड़ी चलायी जा रही है।

इस क्षेत्र में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य संवर्धन योजना के लिए संघ ने यह निश्चय किया है कि प्रत्येक गाँव में प्राकृतिक चिकित्सा का व्यापक प्रचार किया जाय। प्रचार के क्रम में प्राकृतिक चिकित्सा के महत्त्व का विचार ग्रामीणों के मानस तक पहुँचाया जाय। इस क्रम में जिन ग्रामीणों की रुचि इस ओर हो, वैसे चुने हुए ग्रामीणों को प्राकृतिक चिकित्सा का प्रारम्भिक शिक्षण देने की व्यवस्था की जाये और उन्हीं शिक्षित ग्रामीणों के द्वारा गाँव में प्राकृतिक चिकित्सा का प्रबन्ध प्रारम्भिक स्तर पर किया जाय। इस क्षेत्र के गाँवों से चुने हुए कार्यकर्ताओं को प्राकृतिक चिकित्सा का प्रारम्भिक ज्ञान देने की दृष्टि से संघ ने अपने प्राकृतिक चिकित्सा गृह, मुजफ्फरपुर में एक छात्रावास बनाने का भी निश्चय किया है।

इस क्षेत्र के जिन गाँवों में ग्रामोदय सहयोग समितियाँ बन गयी हैं, उन गाँवों में 'सहकारिता' पर सहकारिता शास्त्र के विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान-माला का आयोजन किया गया है। इन व्याख्यानों के द्वारा ग्रामीणों को सहकारिता क्या है, इसके उद्देश्य क्या हैं आदि विषयों की जानकारी दी जाती है। इस प्रकार ग्रामीण स्तर पर सहकारिता सम्बन्धी तालीम का कार्यक्रम अपनाया गया है।

इस प्रकार बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ का पूसा केन्द्र (लक्ष्मीनारायणपुरी), जहाँ अभी तक सारे प्रदेश के लिए सरंजाम बनाने का काम होता था, अब वह शनैः शनैः बन्द कर दिया जायेगा और वह केन्द्र उस क्षेत्र के तीन सौ गाँवों के लिए शिक्षण केन्द्र में परिणत हो जायेगा तथा वहाँ विभिन्न उद्योगों का शिक्षण-कार्य सम्पादन होगा।

सामाजिक न्याय की प्रतिष्ठा, मालकियत विसर्जन की भावना के बिना, सम्भव नहीं दीख पड़ती है। लेकिन ऐसा विश्वास किया जाता है कि गाँव की आत्मा जब जगेगी और गाँव के लोग एक-दूसरे के दुःख में दुःखी और सुख में सुखी होना अनुभव करने लगेंगे, तो वे स्वयं ऐसा कदम उठायेंगे, जिससे सामाजिक न्याय की स्थापना सहज ही में सुलभ हो सकेगी। पूसा क्षेत्र में जो कुछ काम हो रहा है, वह गाँव की आत्मा को जगाने की कल्पना से ही किया रहा है।

जिनका अनादर होता है!

आज के समाज में एक भंगी, बाजारों में अखबार बेचने वाला नन्हा बच्चा और रेलवे प्लेटफार्म का एक कुली, इन तीनों के बारे में उपेक्षित नजर है, कहीं कहीं तो ये नफरत से देखे जाते हैं! मगर ये ही भारतीय संतानों में ऐसे हैं, जिनके अंदर करुणा, श्रमनिष्ठा, ईमानदारी भरपूर भरी पड़ी है।

गत साल की घटना है। बेंगलूर में मल्लेश्वरम् मोहल्ले में झाड़ू लगाते समय एक झाड़ूवाले के हाथ एक लिफाफा मिला, जिसके अंदर ७५ रुपयों के नोट थे। भंगी के मन में करुणा जाग उठी—'एक गरीब की गाढ़ी कमाई होगी, बेचारा कितना बेचैन होगा, उसके बाल-बच्चे क्या खायेंगे!' बस, म्युनिसिपल इन्स्पेक्टर के पास वह रकम उसने जमा की। दूसरे ही दिन उसके मालिक का पता लगा और रुपये वापस उनको पहुँचाये गये। भंगी, तू ही सच्चे अर्थ में भारतीय संस्कृति का मर्मदर्शी है!

बेंगलूर की दूसरी घटना। एक प्रवासी ने एक बच्चे के पास से अखबार खरीदा। छुट्टा पैसे लाने उसके हाथ में एक रुपया दिया गया। लड़का जो चला गया, सो दो दिन तक उसका पता नहीं! प्रवासी मन में सोचने लगा—'गया मेरा रुपया, ये बदमाश बच्चे' आदि आदि। दो दिन के बाद वही लड़का उस प्रवासी की खोज में बस स्टैण्ड पर घूम रहा था। पाँव में मलहम पट्टी लगी थी। छुट्टा पैसे लाने थोड़ी दूर गया, वहाँ साइकिल से टक्कर हुई। घायल होकर अस्पताल भेजा गया था। दवाखाना में पड़े पड़े उसको पैसे लौटा देने की चिन्ता थी, प्रवासी की असुविधा और गलत खयाल से उसकी करुणा चैन से उसे सोने नहीं देती थी! पैसे लौटाये, तब उसके मन में शान्ति हुई।

चार आठ आने कमाने वाले बच्चों में यह करुणा! कौन नहीं कहेगा कि ये ही भारतीय संस्कृति के सच्चे अर्थ में धर्मदर्शी हैं। हे समाज! तूने कभी भी इन बच्चों को प्यार से आदर से अपनाया है?

अब एक रेलवे 'कुली' की कहानी पढ़िये। गत मास की घटना है। ता० १७ जून को हुबली-विजयवाड़ा रेलगाड़ी गदग जंक्शन पर ठहरी। रेलवे कुली को प्लेटफार्म पर एक सफेद लिफाफा मिला। उसके अंदर ६०० रुपयों के नोट थे। यमनप्पा हमाल, जिसके हाथ यह रकम मिली, वह सीधा पुलिस अधिकारियों के पास पहुँचा और उनके दफ्तर में रुपये जमा कर दिये। हे समाज! तू जब कुली, हमाल करके चिल्लाता है, उसकी ओर देखता है, तब उसके प्रति तेरा क्या भाव रहता है, ही सोच! कुली! हमाल, तुममें से तू ही भविष्य के उज्ज्वल भारत के श्रमनिष्ठ, करुणाप्रधान असंख्य युगपुरुष निर्माण होंगे, इसमें क्या शक है।

—द. मं. सुरदे

भविष्य वाणी!

मनुबहन गांधी से बापू ने एक दिन कहा—

"यदि मैं किसी रोग से या छोटी-सी फुन्सी से भी मरूँ, तो तू जोर-शोर से दुनिया से कहना कि यह दंभी महात्मा रहा। तभी मेरी आत्मा को, भले ही वह कहीं हो, शान्ति [illegible] और यदि कोई मुझे गोली मार दे और मैं उसे गोली [illegible] । इसमें भारतीय जनता का कल्याण ही होगा।"

भूवितरण और हमारा पुरुषार्थ

● शिवेन्द्रशरण
(जमुई, बिहार)

भूदान आन्दोलन के बढ़ते चरण ग्रामदान-आन्दोलन तक पहुँचे हैं। एक प्रक्रिया से सामाजिक व्यवस्था का स्पष्ट स्वरूप 'ग्राम स्वराज्य' में प्रकट है।

सम्प्रति, आन्दोलन के प्रथम चरण के रूप में भूवितरण के गर्भ से अद्भुत बाधाएँ और मानवीय अभिक्रम से उनके निदानों की ओर संकेत करना हमारा लक्ष्य है।

कई वर्ष बीते, जब भूदान यज्ञ के तपःपूत विधाता आचार्य विनोबा को कोटि-कोटि भूखे, अधनंगे मानव के प्रतिनिधि के रूप में हमने दान पत्र समर्पित किये। जिस वातावरण में पुण्य के जिस प्रवाह में भूमिदान समर्पण किया था, समय के क्रम से वह पुण्य उतरता गया। कहते हैं, उत्साह भी सागर में उठने वाले फेन की तरह होता है। ऐसा हमने प्रत्यक्ष देखा और पाया कि 'भूमि की मालिकी नहीं रहेगी, भूमिहीन कोई न रहेगा' की मौजूं स्थिति उत्पन्न हो गयी। मालकियत के भाव मिटने लगे। भूमि-समस्या का निदान मानो मिल गया। परन्तु समय के प्रवाह में जन मन का उत्साह उतरता गया, जोश ढीले होते गये। अब इसी स्थिति में हमारे पुरुषार्थ को अवसर मिला है। अवसर आया है और विधायक, रचनात्मक मन को जन-मानस में प्रवेश कराने का दायित्व बढ़ा है। रचना करनी है—जीवन की दृष्टि-मूल्य परिवर्तन! परन्तु पराक्रम को तब बल मिलता है, जब जल की धारा को सामने चट्टान मिलती है।

एतदर्थ हमारा अभिक्रम आरम्भ तब होता है, जब हम कागज के सहारे जमीन पर जाते हैं। अमीन भाइयों के साथ वहाँ पहुँचते ही प्रतिकूलता का आवेग उमड़ आता है।

आज के गाँव तो निर्जन हैं, उजाड़ हैं—महाकवि गोल्डस्मिथ का "डेज़र्टेड विलेज़" हैं। वहाँ जीवन नहीं है। उजाड़ पड़े गाँव की उजड़ी जिन्दगी है—दुर्दिन की छाया है! वहाँ का मानव नरकंकाल मात्र है। धँसी आँखें, चिपटे गाल, पीठ में समाये पेट, चेहरे पर दैन्यता, उजाड़ वातावरण और इसी पृष्ठभूमि में भूमिहीनों को भूमिवान बनाना है। उन्हें लगता है, जैसे अंधे को आँख देना। उन्हें भरोसा होता नहीं। बिना दाम के भी कहीं जमीन मिली है? शोषण की चक्की में घुट घुट कर जीने वाले को कभी त्राण है क्या? पता नहीं, यह भी शोषण का कोई कारगर तरीका हो!

यह कैसी दुरवस्था है! अच्छा है, बाँटने जाने वाली टोली के धैर्य की परीक्षा हो रही है। हम भूमिहीनों के घर जाते हैं। दो चार बार हम के पुकार तक तो वे अनसुने रहते हैं, फिर कहीं बाहर आते हैं! भूमि के वे पुत्र अपनी माता को पहचान नहीं पाते या जानो अनजानी कर आते हैं! कौन कहे! हमारे मन को लगता है, ये कहीं कर्ण और माता कुन्ती की भूमिका में तो नहीं खड़े हैं? फिर हमारी ओर से आरजू होती है, मिन्नतें होती हैं, हम अपना दिल उँड़ेल देते हैं और तब कहीं उनका दिल जगता है, भावना जगती है। वे हमारे यहाँ आते हैं। उनका आना भी निरापद नहीं। निहित स्वार्थ में लिपटे लोगों में खलबली मच जाती है। उनके कान खड़े हो जाते हैं। ये मुट्ठी भर लोग अपने निहित स्वार्थ में जकड़े कम तूफान नहीं मचाते हैं। कारण प्रत्यक्ष है। भूमिदान में जमींदारों से मिली बड़ी-बड़ी भूमि के चक्के पर अब इन्हीं का हक, इनके रोब का हक जमता जा रहा है। अच्छी जमीन के टुकड़े तो बड़ी खेती चौहद्दी की खेतों में हजम भी कर लिये गये। दूसरी ओर छोटे दाताओं से मिली जमीन की कहानी बड़ी करुण है। करुणा से अभिप्रेरित, सन्त की अमृत वाणी से अभिषिक्त, अभिसिंचित पुण्य के लिए उन्होंने जमीनें दी थीं—अपना पेट काट कर। परन्तु अर्से के बाद इनकी भी ममता जग जाती है। यह स्वाभाविक है। हमने अभी तक जमीनें इनसे ली नहीं हैं। परन्तु थोड़ा-सा प्यार भरा दुलार इनके मन के मैल के परत को धो देता है। इसके अतिरिक्त, दान में मिली सरकारी जमीन, पहाड़ी जमीन, नदी, आहर पोखरा, ताल तलैया, इन सबका जिम्मा तो आसानी से करके हम भगवान के खाते में दर्ज कर देते हैं। इस तरह एक ओर तो हमारे धैर्य की परीक्षा होती है और दूसरी ओर मायाविदों की आव-भगत शुरू होती है। हम छोटे छोटे कार्यकर्ता करें, तो क्या करें!

अस्तु, भूमिहीनों के मन को बाँध-बाँध कर जरीब और नक्शा लेकर अमीनों के साथ हम जमीन पर जाते हैं। साथ में हमारे भूमिहीनों से अधिक रोब के हकदारों का टिड्डी-सा दल चलता है! 'यह' आपका नहीं, 'वह' आपका नहीं! कई तरह की दलीलें, नाप करने में अड़चन, डग डग पर अड़चन! एक तरफ निस्नेहता, असहयोग, दूसरी ओर अड़चन, भेद प्रभेद के पाटों के बीच सही सही जमीन निकाल कर दे जाना है। हाँ, लंका में विभीषण तो थे ही, और राम की चढ़ाई के लिए हनुमान, अंगदादि तो मिल ही गये! इस भू-आरोहण में भी हनुमान और विभीषण से तत्व निकलते हैं। सम्बलहीन कार्यकर्ताओं, जनसेवकों को विनोबा की ऋषि वाणी का पीयूष यहीं मिलता है। सर्वोदय के प्रथम सोपान के रूप का यह दर्शन बड़ा प्रभावोत्पादक होता है। मनुष्य मात्र पर विश्वास, उनकी दुर्बलता और निर्मलता का दर्शन सौम्य से सौम्यतर के चरण चिह्न हैं।

इस क्रम से जमीन की नाप शुरू होती है। भूमिहीनों की रुचि तैयार होती है और हम फिर जमीन से पलट कर कागज पर आते हैं! प्रमाण पत्र वितरण का छोटा, पर अति सुन्दर समारोह मनाया जाता है। बाज दफा समूचे गाँव में एक भी आदमी अपना दस्तखत तक करना नहीं जानता है! मन को चोट लगती है। फिर आदमी ढूँढे जाते हैं—साक्षर, वितरण समारोह के अध्यक्ष-पद के लिए। वितरण समारोह यानी भूमिपुत्रों का यज्ञ। यह बड़ा पावन प्रसंग है। यहीं पर आज तक के भूमिहीनों की भूमिका बदलती है। अब हमारी जिम्मेवारी का भार सरक कर इन नये कंधों पर आता है। भूमिहीनों का दायित्व आरम्भ होता है। गैर आबाद जमीन, जो प्रायः गाँवों से दूर रहती है और जो इन ग्रामीणों के मनोनिवेश में भुतहा जमीन के नाम से प्रसिद्ध है। इनके गले की नयी घंटी है, उनकी जिम्मेवारी बहुत बढ़ जाती है। यदा-कदा इस जमीन को लेकर आपस के भाइयों में आना-कानी होती है, तो कभी एक आदाता दूसरे आदाता से जमीन की किस्मों के लिए उलझता है। इन नये भूमिपुत्रों के दुर्दैव का अन्त यहीं नहीं है। "कल्याणकारी राज्य" के ५५ लाख बेकाम लोगों की एक बड़ी जमात आखिर यहीं तो समाती है। बड़ी विचित्र मानसिक धरातल है इनकी! इस आबोहवा से इनके मन को अकारण ही चोट लगती है। ऐसा चोट खाया हुआ मन नये-नये कुचक्र रचता है। जमीन बँटी नहीं कि इनका लगान शुरू हो जाता है। उनके कागज और हमारे कागज में कहीं मेल नहीं बैठा, कुछ गड़बड़ी रह गयी, कुछ छूट रह गयी, तो सब किये-कराये पर पानी फिर जाता है! यह तो प्रत्यक्ष की कार्रवाई है। अप्रत्यक्ष में तो और भी भयावह स्थिति है। सरकारी कागजों के सिरिश्ते उनके पास हैं, फिल्ड बुझारत का दौर है, फिर एक एक कलम से उसी जमीन के कितने कागजी हकदार बात-बात में तैयार हो जाते हैं!

दूसरी अनवस्था भूमिहीनों की साधनहीनता है, जो सभी किये कराये पर तुषारापात कर जाती है। अगर जमीन को तोड़ना है। भूमि दे देने भर से क्या होता है? रोज पेट भी चले और कुछ समय निकल आये, इतनी भर की रोजगारी तो मुहैया होनी ही चाहिए। साग, पत्ती, बाँस की कोमल करील खाकर, बेदाना बथानी अँतड़ी सुखा कर रहने वाला अभ्यस्त गरीब कितना, क्या कर लेगा? मन से मरा, शरीर से अधमरा, समाज में त्रसित घृणित, सरकारी कारकुनों से ग्रसित, भाग्य से अभिशप्त इस नये मानव की कितनी निरीह अवस्था है!

परन्तु यह और ऐसी ही घोर दुरवस्था के तमिस्र मलिन क्षितिज पर आशा की किरण फूटती है। किसी ने ठीक ही कहा है "साहस द्वारा इतिहास के भाल पर लिखी गयी लिपि की ज्योति कभी मंद नहीं होती।" जरूरत है एक मन एक प्राण होकर लगे रहने की। सिर्फ जमीन बाँट भर देने से हमारे कर्तव्य की इति नहीं हो जाती। हम नये बिरवे को सींचना होगा—अपने हृदय के रक्तदान से! तथागत की मर्म भरी वाणी "त्रिविध दुःख विनिवृत्ति हेतु, बाँधु अपना पुरुषार्थ सेतु"—हम छोटे कार्यकर्ताओं को "पुरुषार्थ सेतु" बाँधना होगा। सिन्धु को पाटना है न! समाज की दरारें भरेंगी कैसे?

बड़ी विचित्र वय सन्धि में हम खड़े हैं। हमारी बड़ी भूल होगी कि हम "तराजू के तौल में आन्दोलन का फल आँकें"। नवोदित 'इजराइल' पर प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्री अशोक मेहताजी के निबन्ध, 'सहश्रम का नन्दनवन" के कुछ अंशों का उद्धरण यहाँ प्रस्तुत है, शायद हमारा समाधान हमें मिल जाये। "संसार का भविष्य श्रम के स्वेद बिन्दुओं से ही लिखा जायगा और सच्चा श्रमिक वह है, जो भूमि पर बसे और उसमें से रोजी पैदा करके खाये। 'जब तक देश की मिट्टी से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं जोड़ता, तब तक उस देश को अपना कहने का उसे अधिकार नहीं। भूमि के साथ एक प्राण होकर ही कोई व्यक्ति अपनी भावनाओं की इमारत में उस देश को खड़ा करने में समर्थ हो सकता है। प्रखर जीवनोन्मेष की इन्हीं भावनाओं के पोषण में आज के इजराइल के निर्माण की ईंट रखी गयी है।" यह संकेत है कि हम एक तन एक मन होकर अपना सीधा सम्बन्ध मिट्टी से जोड़ लें। हम भी देश की इमारत खड़ी करने में समर्थ हो सकेंगे, ललकार दे सकेंगे। अन्यथा इस नये निष्प्राण मानव को अकेला छोड़ कर अगर हम दूर बढ़ गये आगे निकल आये, तो भूल होगी। आखिर 'ग्राम-स्वराज्य' की प्रथम उर्मि तो यहाँ से फूटने वाली है। राजनीति के विकल्प के रूप में लोकनीति की हमारी कल्पना अधूरी रह जायगी। जमीन बाँट भर देना, राहत का काम रह जायगा, इन्कलाब नहीं!

कश्मीर में विनोबाजी

कुसुम देशपांडे

'दोमेल' कोई बहुत बड़ा गाँव तो नहीं था, चार-पाँच मिठाई की और अन्य चीजों की छोटी छोटी दूकानें थी और दस बीस झोंपड़ियाँ दीखती थी। जम्मू-श्रीनगर के रास्ते पर रोज सौ दो सौ मोटरें दौड़ती हैं, वे यहाँ थोड़ा आराम करके आगे बढ़ती हैं। ऐसे छोटे-से गाँव में एक छोटे-से टीले पर दो कमरे का एक मकान रखा था। दिन भर के कार्यक्रम में तो बारिश ने कोई बाधा नहीं पहुँचायी। लेकिन जैसे ही दिन ढलने लगा, गर्जना करते हुए काले बादल आकाश में मंडराने लगे और देखते-देखते वर्षा का जोर से आरंभ हुआ। साथी अपना अपना सामान 'टेंट', तंबू में संभाल रहे थे, वहाँ ऊपर से पानी चूता था, वहीं अंदर पानी का प्रवेश हो रहा था और बाबा के कमरे में तो चारों कोने में पानी ही पानी हो गया था। मुश्किल से चार-पाँच लोग वहाँ बैठ सकते थे। करीब दो महीने हुए अपने सामान को विनोबाजी ने कैंची लगायी है! एक-एक चीज कम करते ही गये। उसमें महादेवी ताई ने बहुत कुशलतापूर्वक बनायी हुई 'फोल्डिंग कॉट' भी कम हो गयी है! धरती का लाल अपनी माता की गोद में ही आराम पाता है। लेकिन बारिश का जोर और कमरे में आये हुए पानी को देख कर सब चिंतित हो रहे थे। महादेवी ताई की फिकर सबको स्पर्श करती थी। सब मिल कर जोर लगा रहे थे:

"बाबा, आज तो आपको खटिया पर ही सोना चाहिए। गाँव में खटिया मिल सकती है!"

"नहीं रे! बहुत अच्छी है जगह। मैं आराम से सो जाऊँगा।"

"लेकिन रात में पानी का जोर बढ़ गया और अगर ज्यादा पानी आया तो...?"

"बारिश रहेगी, तो मैं एक दिन रात में नहीं सोऊँगा, भगवत् चिंतन करता रहूँगा। संसार में पड़े हुए जीवों को कभी बीमार बच्चे की सेवा के कारण, कभी और किसी कारण से रात में जागना ही पड़ता है। ३६५ दिनों में कितने ही दिन बेचारों को नींद नहीं मिलती है! मैं एक दिन नहीं सोया, तो क्या बिगड़ा?

"बाबा आपको रोज कितना चलना कितना काम ...।"

"तुम घबड़ाओ मत! बारिश को अक्ल नहीं है क्या? वह रात को क्यों आयेगी?"

सब निराश हो रहे थे। बाबा को कैसे मनाया जाय? आखिर एक साथी ने अक्ल चलायी और धीरे से पूछा—"पर बाबा! क्या नीचे जमीन पर सोना विज्ञान को मान्य है? उसके अनुकूल है?"

क्षण का भी विलंब न लगाते हुए विनोबाजी ने कहा—"विज्ञान के अनुकूल नहीं है, पर आत्मज्ञान के अनुकूल है।"

* * *

पहाड़ों से उतरते हुए देखा, दूर तवी नदी के किनारे, टीले पर जम्मू शहर के आलीशान मकान दिखायी दे रहे थे। विनोबाजी का दुबारा स्वागत करने का मौका इस आठ साल की पदयात्रा में 'जम्मू' शहर को ही मिल रहा था। जम्मू का दर्शन होते ही विनोबाजी ने कहा—"जंबुद्वीप से 'जंबु' बना और 'जंबु' का 'जम्मू'! यहीं से 'जंबुद्वीप' शुरू होता है। मैं यहाँ दुबारा आया हूँ, तो मेहमान बन कर नहीं आया हूँ। आपके घर का बन कर आ रहा हूँ।"

जम्मू शहरवासी इन शब्दों से फूले नहीं समाये। उनको अपने प्रेम का प्रदर्शन किये बिना चैन कहाँ?

'११ सितंबर' का समारोह आयोजित किया। सुबह की प्रभात फेरी के बाद शहरवासी नागरिक, बच्चे, बहनें अपने हृदय में शुभकामना लेकर आये। फूलों की माला अर्पण करते हुए बच्चों ने कहा: "बाबा, आज का दिन बार बार आये। हम आपको मुबारकबाद देते हैं!" जम्मू की सनातन धर्म सभा के सदस्यों ने रामधुन के बाद एक भजन गाया। उसकी एक पंक्ति ने विनोबाजी का ध्यान खींचा: "जो आया है सो जायेगा!" उन्होंने कहा: "आपने एक मधुर गीत गाया: 'जो आया है सो जायेगा!' यह हम सब जानते हैं। लेकिन फिर भी हम सब भूल जाते हैं। इस दुनिया में हम सब मुसाफिर के तौर पर आये हैं। एक दिन हमें जाना ही है। पैगंबर नूह की कहानी है। उनकी जिन्दगी कोई दो हजार साल की थी। एक छोटी सी झोंपड़ी में रहते थे। किसी ने पूछा 'आप मकान क्यों नहीं बनाते?' तो उन्होंने कहा था—'भाई! दो हजार साल ही तो जीना है, उसके लिए मकान की क्या जरूरत?' अपना जीवन क्षणिक है, यह वे समझ गये थे। काल अनंत है। हम उसमें एक मुसाफिर हैं, यह समझ कर सारा जीवन सेवा में लगाना चाहिए। हमारी जिंदगी एक दिन खत्म होने वाली है, यह मुसाफरी है, यह जिसके ध्यान में आयेगा, वह हरि के काम में रंगा हुआ रहेगा और अपनी वासना नहीं बढ़ायेगा। आपके भजन से हमें याद आया। हमारे साथी, गोपालबाबू, लक्ष्मीबाबू एक के बाद एक जा रहे हैं। नये आने वाले आ रहे हैं। गुरु नानक ने कहा है: 'केते आखहि आखणि ...। केते कहि कहि उठि उठि जाहि।'—कुछ ऐसे हैं, जो भगवान की महिमा गा रहे हैं। कुछ ऐसे होते हैं, जो भगवान की महिमा गाते गाते जा रहे हैं और कुछ ऐसे होते हैं, जो भगवान की महिमा गाकर इस दुनिया को छोड़ कर चले जाते हैं। यह ख्याल हमें हमेशा रखना चाहिए।"

विनोबाजी को 'पत्रं पुष्पं फलं तोयं' रिवाज के मुताबिक अर्पण किया था। विनोबाजी ने कहा: "लेकिन आज आपने मुझे एक सबसे बड़ी भेंट दी है, देन दी है, वह है डोगरी भाषा का 'गीता प्रवचन'! डोगरी भाषा बोली ही है। लेकिन उसमें 'गीता प्रवचन' का अनुवाद करने की प्रेरणा एक भाई को होती है, यह बड़ी बात है।"

* * *

कश्मीर-यात्रा में विनोबाजी को कई दोस्त और भक्त हासिल हुए हैं। अहमदुदीन एक गुजर भाई है, जो विनोबाजी के भक्त हैं। गुजर मुसलमान होते हैं और 'गो सेवा' का, गोपालन का काम करते हैं और दूध, दही, मक्खन बेच कर गुजारा करते हैं। अहमदुदीन कुछ दिन यात्रा में गाय लेकर रहे थे और विनोबाजी को अपनी गाय का दूध भक्ति से देते थे। उनके प्यार ने और भक्ति ने विनोबाजी को भटिंडी नाम के गाँव में खिंचाया। भटिंडी जम्मू से तीन मील दूर है, पर वहाँ जाने के लिए दो तीन नाले लाँघने पड़ते हैं और कंकड़-पत्थरों से भरी हुई जमीन पर, क्योंकि वहाँ जाने के लिए रास्ता ही नहीं है, चलना पड़ता है। उस दिन रास्ते में बीच-बीच में वर्षा भी आती रही, जिससे कई बार पाँव फिसलने का मौका आता रहा। अहमदुदीन के मिट्टी के घर में विनोबाजी का निवास रहा। दोपहर में ११ बजे विनोबाजी जब गाँव में घूमने निकले थे, तब अहमदुदीन यहाँ की कहानी सुना रहा था: "१९४७ में यहाँ के हिंदुओं ने हमें कत्ल किया, हमारे कुनबे के सभी लोग मारे गये। भारत सरकार की फौज आयी, इसलिए हम बचे, नहीं तो हम सब खत्म होते। हम हिन्दुस्तान सरकार के बड़े शुक्र-गुजार हैं। उन्होंने हमें बचाया। उस वक्त अल्लाह ने अपना नूर दिखाया कि मैं मार भी सकता हूँ और बचा भी सकता हूँ।" अनपढ़ गुजर के छोटे-छोटे जुमलों में भी जो ज्ञान था, वह बता रहा था कि वह उस पुण्य भूमि में पैदा हुआ है, जहाँ की मिट्टी में आज भी प्राचीन ऋषि-मुनियों की तपस्या की गंध है और जिस भूमि को दस हजार साल का तजुर्बा है। वह तपस्या और तजुर्बे उस अनपढ़ गुजर के छोटे मुँह से बड़ी बातें बुलवा रहे थे। वह आगे बोल ही रहा था: "हम गरीब हैं। हमें यहाँ पानी की बड़ी तकलीफ है जी। तीन चार मील से पानी लाना पड़ता है। गर्मी में तो जम्मू जाकर वहाँ की तवी नदी से पानी लाना पड़ता है। पानी न हो, तो इन्सान कैसे पीये, नहाये धोये कैसे, जिस्म को साफ कैसे करे? जानवर को भी पानी चाहिए। पानी न हो, तो मिट्टी भी पत्थर, ढेला बन जाती है।"

इस गाँव से रोज सुबह लोग दूध, घी लेकर जम्मू को खिदमत में पेश करते हैं और लौटते हुए मवेशियों के लिए घास और अपने लिए अनाज बाँध लाते हैं। धूप तेज हो रही थी। विनोबाजी शांति से घूम रहे थे। कई लोग जम्मू से लौट रहे थे। सिर पर बोझ था। विनोबाजी ने उनमें से दो तीन भाइयों का बोझ सिर पर उठा कर देखा—४० पौंड वजन था। अहमदुदीन कह रहा था: "ये लोग सवेरे आपका दर्शन करने नहीं आ सके। इन्हें जम्मू जाना लाजमी था। दूध लेकर नहीं जाते, तो गाय को खाने को नहीं मिलता। फिर वह दूध नहीं देती। ये लोग दिन में दो दफा दूध, घी ले जाते हैं। जम्मू के लोग 'गोजरी (गुजरों का) घी' बहुत मानते हैं और चाहते भी हैं। वे मुँह से दूध घी खाते तो हैं, पर नजर से नहीं देखते हैं कि लाने वालों की हालत क्या है, उन्हें क्या तकलीफ है। इधर कोई न आता है, न हमारी तकलीफ देखता है। आप इतनी तकलीफ उठा कर यहाँ आये। हम आपके शुक्रगुजार हैं।"

उस दिन गाँव में करीब तीन मील घूमना हुआ। किसी ने कहा: "बाबा, आपने सुबह छह सात मील और अब तीन मील! इस मील तो घर ही लिया।"

बाबा ने कहा—"सुबह का घूमना अलग था। अब यह तो चाँदनी में घूमना हुआ!" अहमदुदीन ने कहा: "लेकिन इस चाँदनी को आप ही बरदाश्त कर सकते हैं। दूसरा कोई नहीं कर सकता है।"

* * *

एक दिन रास्ते में किसी ने पूछा—"देश की ताकत कैसे बढ़ेगी?" विनोबाजी ने कहा: "देश को ज्यादा से ज्यादा नैतिक शक्ति बढ़ानी होगी। भौतिक शक्ति ज्यादा तो आप बना ही नहीं सकते हैं। नैतिक शक्ति बनाने के लिए चार बुनियादी बातें करनी होंगी: (१) 'पार्टी पोलिटिक्स' न हो। पक्षों से मुक्ति हो। चुनाव पार्टी बेसिस पर न लड़े जायें। (२) समाज और राज्य व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण। (३) समन्वय धर्म की स्थापना। सब धर्मों के जो 'कॉमन एलिमेन्ट्स' (एक अनुभव) हैं, उनके आधार पर नीति धर्म बनाना। (४) शान्ति-सेना का निर्माण। इसके मानी यह नहीं है कि गांधीजी के जमाने में जो चला, उसी को हम चलायें, बल्कि उसका विकास करें।"

भूदान-यज्ञ, रजिस्टर्ड नंबर ए. ३५४ [पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त, लायसेन्स नं० ए. ३४] २ अक्टूबर, '५९

संघ के नये अध्यक्ष

ता० २३ सितम्बर को पठानकोट में श्री विनोबाजी की उपस्थिति में नवगठित सर्व सेवा संघ की पहली सभा हुई। कई दृष्टियों से वह सभा महत्त्वपूर्ण ही नहीं, ऐतिहासिक थी, ऐसा कहने में अत्युक्ति नहीं है। कोई घटना इतिहास बनने वाली है, इसका एहसास उस घटना में शामिल रहने वालों को अक्सर नहीं होता, उसके ऐतिहासिकत्व का भान समय जाने पर होता है। नये सर्व सेवा संघ की सभा के बारे में शायद बाद में कुछ लिखने का बनेगा। इस नोट में तो एक बात का ही जिक्र करके संतोष मानना होगा।

सभा में सर्वप्रथम कार्यक्रम संघ के अध्यक्ष निर्वाचन का था। शुरू में ही श्री दादा धर्माधिकारी ने अपनी यह राय जाहिर की कि सार्वजनिक क्षेत्र में हमें यह परम्परा डालनी चाहिए कि अमुक उम्र के बाद व्यक्ति, पद की जिम्मेदारी खुद न उठावें, नये लोगों को पदाधिकार देकर अपना जनम सफल करे—जैसे राजकुमार राम को राजपाट देकर अपना जनम सफल करने का फैसला राजा दशरथ ने किया। और दादा ने सुझाया कि इसलिए "बुजुर्ग लोग" नये सर्व सेवा संघ में कोई पदग्रहण न करके इस परंपरा का शुभारंभ करें। संघ के नवनिर्वाचित श्री वल्लभस्वामी ने अध्यक्ष स्थान पर बैठने के बाद के संबोधन में दादा की उपरोक्त सलाह का जिक्र करते हुए कहा कि कभी कभी बड़े बड़े तत्त्वज्ञानी भी गलती कर बैठते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि "मेरे जैसे व्यक्ति को संघ के अध्यक्ष का पद स्वीकार करना पड़ा।"

बड़े लोग भी गलती कर सकते हैं, परन्तु सम्यक् कामना से और शुद्ध भावना से कभी उनसे गलती हो भी जाय, तो भी उसका परिणाम शुभ ही आता है, यह इस प्रसंग से भी साबित होता है। वल्लभस्वामी से जो परिचित हैं और पठानकोट की सभा में जिन्होंने उनका प्रथम अध्यक्षीय भाषण सुना, उनमें से किसी को शंका नहीं होगी कि दादा ने अगर "गलती" की, तो उसका परिणाम भी बहुत ही "शुभ" आया है। हजारों सेवकों की पिछले कुछ वर्षों की निष्काम तपस्या और खासकर विनोबा के शांतिपूर्ण सौम्य सत्याग्रह से देश में इस जमात से कुछ अपेक्षा लोगों को हुई है। ऐसी परिस्थिति में सर्व सेवा संघ का अध्यक्षपद अपनी एक अहमियत रखता है। अगर इस जिम्मेदारी को वहन करने के लिए धीर गंभीर होना जरूरी है, तो वह गुण वल्लभस्वामी में पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। अगर संघ के अध्यक्ष के लिए देशभर में फैले हुए हजारों कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत परिचय और आत्मीय स्नेह होना जरूरी है, तो उसकी उनमें कमी नहीं है। वे हमारे बीच "अजातशत्रु" ही कहे जा सकते हैं, ऐसी बड़ी जिम्मेदारी से आदमी बोझ न महसूस करे और दब न जाय, इसके लिए अगर उसमें बेफिक्री और विनोदशीलता (सेन्स आफ ह्यूमर) होने की जरूरत है, तो वह वल्लभस्वामी में है, और सभा-संचालन की कुशलता और सभा चातुर्य भी उनमें पर्याप्त मात्रा में है, यह एक से अधिक बार हमने देखा है।

एक बड़ी बात यह है कि अक्सर ऐसे पदों के लिए "वजनदार" और "नामवान" लोगों को ढूँढने में हम परेशान होते रहते हैं। वल्लभस्वामी का निर्वाचन जिस सहूलियत और आसानी से हुआ और उससे जिस नयी परंपरा का निर्माण हुआ वह भी एक नयी और शुभ दिशा का सूचक है।

—सिद्धराज ढड्ढा

संवाद-सूचनाएँ :

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की नयी प्रबंध समिति

(१९५९-६०)

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष, श्री वल्लभस्वामी ने नीचे लिखे अनुसार संघ की नयी प्रबंध समिति की घोषणा की।

१ श्री धीरेन्द्र मजूमदार
२ श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे
३. श्री शंकरराव देव
४ श्री जयप्रकाश नारायण
५. श्री सिद्धराज ढड्ढा
६ श्री राधाकृष्ण बजाज
७ श्री बबनभाई
८ श्री नारायण देसाई
९ श्री कमलप्रभा दास
१० श्री आशादेवी आर्यनायकम्
११ श्री ब्रजदेव वाजपेयी
१२ श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी
१३ श्री विश्वनाथ चौधरी
१४ श्री नवकृष्ण चौधरी
१५ श्री मनमोहन चौधरी
१६ श्री प्रभाकरजी
१७ श्री काशिनाथजी त्रिवेदी
१८ श्री गजु पाटणकर
१९ श्री ओमप्रकाशजी त्रिखा
२० श्री गोविन्दराव शिंदे
२१ श्री एस जगन्नाथन्
२२. श्री इ. डब्ल्यू. आर्यनायकम्
२३ श्री राधाकृष्णन्, मद्रास
२४ श्री पूर्णचंद्र जैन, मंत्री
२५ श्री वल्लभस्वामी, अध्यक्ष

श्री निर्मला देशपांडे को भी संघ का सहमंत्री मनोनीत किया गया।

अखिल भारत शांति-सेना मंडल

पठानकोट में ता २४ सितम्बर को सर्व सेवा संघ की आम सभा में श्री विनोबाजी ने अखिल भारतीय शांति सेना मंडल की घोषणा की। सदस्यों के नाम नीचे दिये जा रहे हैं।

१. श्री धीरेंद्रभाई
२ श्री जयप्रकाश नारायण
३ श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे
४ श्री शंकरराव देव
५ श्री रविशंकर महाराज
६. श्री नवकृष्ण चौधरी
७ श्री केलप्पन
८. श्री अण्णासाहब पटवर्धन
९ श्री ब्रजदेव वाजपेयी
१०. श्रीमती कमलप्रभा दास
११. ,, विमला ठकार
१२ ,, मार्जरी साइक्स
१३ ,, आशादेवी

युगोस्लाविया में डाक-सेवाओं का विकेन्द्रीकरण

युगोस्लाविया में डाक-सेवाओं का शीघ्र ही विकेन्द्रीकरण किया जायगा क्योंकि ऐसे पुनर्गठन के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ निर्मित हो चुकी हैं।

ऐसे विकेन्द्रीकरण का उद्देश्य डाक-तार विभाग की बुनियादी इकाइयों को स्वसंचालन की दृष्टि से मजबूत बनाने का है, ताकि देश के अन्य आर्थिक संगठनों के समान हम भी स्वावलम्बी हो सकें।

इस प्रकार के पुनर्गठन से बहुत से काम, जो डाइरेक्टर जनरल द्वारा किये जाते थे, अब निम्न स्तर की डाक-संस्थाओं द्वारा किये जायेंगे। इस प्रकार का विकेन्द्रीकरण 'कम्यून्स' के स्तर पर किया जायगा। ऐसा करने में यातायातिक संचालन का भी पुनर्गठन होगा और जिलों के डाक-घर आर्थिक दृष्टि से पूरी तरह स्वावलम्बी हो जायेंगे। यांत्रिक तथा स्वचालित प्रणाली को भी इसमें जोड़ने का प्रस्ताव किया गया है, ताकि सेवाओं में सुगमता तथा कुशलता की वृद्धि की जा सके।

सर्वोदय साहित्य का समग्र सेट खरीदिये

७५ रुपये की पुस्तकें ६० रुपये में

ता० २ अक्टूबर १९५९ से भूदान आन्दोलन ... ७५ रु० मूल्य का समग्र सेट ६० रु० में दिया जायगा। इस सेट में हिन्दी भाषा की, लगभग ७५ पुस्तकें हैं। बापू विनोबा, धीरेन्द्रभाई, जाजूजी, कुमारप्पाजी, दादा धर्माधिकारी, महात्मा भगवानदीनजी, जयप्रकाश नारायण तथा अन्य सुप्रसिद्ध और अनुभवी सर्वोदयी विचारकों की विचारधारा का सर्वांगीण अध्ययन वर्तमान विश्व की परिस्थितियों में आपको नयी प्रेरणा और उत्साह प्रदान करेगा।

६० रु० भेज देने पर अन्य कोई खर्च नहीं करना होगा।

अपना पता और स्टेशन का नाम स्पष्ट लिखिये।

—अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी

विनोबाजी का पता :

मार्फत—श्री अवतारचंद मेहता, पो० पठानकोट (पंजाब), फोन ५८, तार : MEHTA

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : गोलघर, वाराणसी, टे० नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति २ आना

पठानकोट का संदेश

सिद्धराज ढड्ढा

पठानकोट की सर्व सेवा संघ की सभा में संघ के नये सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री विनोबाजी ने देश के सार्वजनिक जीवन में सबके स्थान और सर्वोदय कार्यकर्ताओं से अपेक्षा के बारे में जो कुछ कहा है वह हम सबके लिए गहराई से सोचने जैसा है। उन्होंने अपनी सचोट भाषा में और गहरे विश्लेषण के जरिये हिन्दुस्तान की आज की भयानक स्थिति का चित्र खींचा है। उनकी पैनी नजर ठीक रोग की जड़ पर पहुँची है। आज आम लोगों से ही नहीं, बल्कि देश के जिम्मेदार माने जाने वाले लोगों से भी हम अक्सर सुनते हैं कि मुल्क में जो परिस्थिति बन रही है उसका इलाज शायद फौजी शासन ही हो। इसका कारण यह है कि लोगों का एक-दूसरे के ऊपर से विश्वास उठ गया है। विनोबाजी के शब्दों में, शब्द की शक्ति को हम खो बैठे हैं। राजनैतिक पार्टियों की रोजमर्रा की आपसी धुक्का फजीहत, चुनाव के वक्त एक दूसरे से बढ़कर बोली लगाने और एक-दूसरे को गिराने की चेष्टा, राजनीति में सामने वाले पर सन्देह करके ही चलने की और उसे झूठा साबित करने की नीति—इन सबके कारण आज देश के ऊँचे-से-ऊँचे राजनैतिक नेता से लगा कर नीचे किसी भी पार्टी का ऐसा कोई नहीं बचा है, जिसकी बात पर सब लोगों को भरोसा बाकी रहा हो। अभी केरल के मामले में यह अच्छी तरह जाहिर हो चुका है।

ऐसी स्थिति में लोकशाही का ढोल पीटने या सिर्फ उसके बाहरी ढाँचे की रक्षा करने की कोशिश करने का कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि लोकशाही की बुनियाद ही "शब्द" का भरोसा, या लोगों का एक-दूसरे पर और नेताओं पर विश्वास है। इस प्रकार के विश्वास के बिना लोकशाही टिक ही नहीं सकती। जब शब्द पर भरोसा नहीं रहेगा तो शस्त्र ही दूसरी चीज है, जिस पर लोगों को भरोसा हो सकता है, क्योंकि शस्त्र-बल से चीज तुरन्त बनती हुई नजर आती है, चाहे आगे जाकर कुछ भी हो। यह स्थिति देश के लिए खतरनाक है यह जाहिर है।

सर्वोदय का काम करने वालों ने बहुत कुछ किया हो या न किया हो, आगे भी उनसे बहुत कुछ बनेगा ऐसी आशा चाहे लोगों को हो या न हो, फिर भी एक बात स्पष्ट है कि पिछले वर्षों में हमारे काम और बरताव के कारण आम लोगों को हमारे शब्द के बारे में कुछ कुछ भरोसा है। हमें चाहिए कि हम अपने बारे में इस विश्वास को उत्तरोत्तर बढ़ावें, खोवें नहीं। हमारे शब्द की कीमत बढ़े इसके लिए यह जरूरी है कि हम जो बोलें वह मिथ्या तो नहीं ही हो, पर वह व्यर्थ भी न हो। हम जो बोलें वह ऐसी बात न हो जो निरर्थक जाय। आजकल हम लोग आपस में ही आन्दोलन की मीमांसा करते हुए अक्सर ऐसा सोचते हैं कि जितनी चाहिए उतनी तेजी से हमारे काम का असर नहीं हो रहा है, इसलिए हमें प्रतिरोधात्मक शक्ति प्रकट करनी चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे आन्दोलन की गति तीव्र होनी चाहिए, हमारे काम में सातत्य आना चाहिए और हमारी वाणी में तेज प्रकट होना चाहिए। यह भी ठीक है कि अन्याय का प्रतिकार करने की शक्ति हमें खोनी नहीं चाहिए, बढ़ानी चाहिए, पर इस शक्ति को बढ़ाने के नाम पर हम भी केवल अक्षमा-नीति अपनाने वाले या व्यर्थ की बकवास करने वाले न बन जायँ, यह ध्यान रखना जरूरी है। यह सावधानी हमने बरती तो हमारी जमात आज भले ही छोटी हो, आज चाहे उसका वजन समाज पर पड़ता हुआ न दीखता हो, पर वह आगे जाकर देश को बचाने वाली साबित हो सकती है।

पठानकोट की सभा में दूसरी महत्त्व की बात संघ का वह वक्तव्य था, जिसमें राजनैतिक पार्टियों से यह प्रार्थना की गयी है कि वे सब मिल कर सार्वजनिक जीवन और आन्दोलन के सम्बन्ध में लोकशाही के बुनियादी सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए एक सर्वमान्य आचार मर्यादा तय करें, जिससे देश में अशान्ति, उच्छृंखलता और अव्यवस्था का वातावरण न बढ़े। सर्व सेवा संघ द्वारा स्वीकृत यह निवेदन इसी पृष्ठ पर दिया गया है। आज सार्वजनिक क्षेत्रों में जिस प्रकार की हिंसक प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं उनसे कैसा खतरा पैदा हो सकता है, यह बात दुर्भाग्यवश इस निवेदन के स्वीकृत होने के दूसरे ही दिन श्री लंका के प्रधान मंत्री श्री भंडारनायक पर हुए हमले से मर्मान्तक रोशन हो गयी। इस घटना पर अपने उद्गार प्रकट करते हुए पंडित जवाहरलालजी ने ठीक ही कहा था कि अगर हम सार्वजनिक जीवन में बढ़ती हुई हिंसा की इस वृत्ति को नहीं रोकेंगे और "लोग इस वृत्ति का मुकाबला नहीं करेंगे" तो हमारे मुल्कों का सत्यानाश हो जायगा। सर्व सेवा संघ ने अपना उपरोक्त वक्तव्य सब राजनैतिक दलों की सेवा में भेज कर यह प्रार्थना की है कि वे अपने आपस में कुछ ऐसी बातों पर सहमत हो जायें, जिससे सार्वजनिक आन्दोलनों में इन हिंसक वृत्तियों को पनपने का मौका न मिले। सर्व सेवा संघ ने यह प्रार्थना देश की वित्तोदय स्थिति को ध्यान में रख कर ही अत्यन्त नम्रता की भावना से की है, उपदेश या अपने आपको ऊँचा दिखाने की भावना से नहीं। हम आशा करते हैं कि राजनैतिक पार्टियाँ और जन-मन सर्व सेवा संघ के सुझाव का स्वागत करेगा और उसे कार्यान्वित करने की ओर देश में कदम बढ़ेंगे। ●●●

लोकतांत्रिक व्यवहार की आचार-मर्यादा

सर्व सेवा संघ द्वारा पठानकोट में स्वीकृत निवेदन

[देश में बढ़ती हुई हिंसक प्रवृत्तियों के विषय में आज सब विचारशील क्षेत्रों में चिन्ता प्रगट की जा रही है। इन हिंसक प्रवृत्तियों के बढ़ने के कई कारण हैं, कुछ बुनियादी, कुछ तात्कालिक। राजनैतिक पार्टियों द्वारा आज जिस प्रकार सार्वजनिक आन्दोलन चलाये जाते हैं, वे भी इन प्रवृत्तियों को बढ़ाने में मददगार साबित हुए हैं। अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने ता. २३, २४ सितम्बर को पठानकोट में हुई अपनी सभा में इस विषय पर एक निवेदन सर्वसम्मति से स्वीकार किया है, जो नीचे लिखे अनुसार है। इस निवेदन में सब राजनैतिक पार्टियों से प्रार्थना की गयी है कि सार्वजनिक कार्य में अपने व्यवहार और कार्यपद्धति के बारे में वे आपस में मिल कर कुछ ऐसी मर्यादाएँ तय कर लें, जो उन सबको मान्य हों, ताकि भविष्य में उन मर्यादाओं के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र में व्यवहार हो और हिंसक कार्रवाइयाँ देश में न बढ़ें। —सं०]

हिंसक और गैरकानूनी कार्रवाइयों की बढ़ती हुई भावना पर देश में जो चिन्ता प्रगट की जा रही है, उसमें सर्व सेवा संघ भी शरीक है। हालाँकि संघ की मान्यता है कि मानव समाज में हिंसा की समस्या का बुनियादी हल हिंसा की जड़ पर प्रहार करने का है, जैसा कि भूदान ग्रामदान आन्दोलन करने का प्रयत्न कर रहा है, संघ यह भी महसूस करता है कि सार्वजनिक अव्यवस्था को बढ़ाने वाले जो तात्कालिक कारण हैं, उन्हें भी दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

मुल्क में जो परिस्थिति पैदा हुई है उसके कई कारण हैं, पर इससे भी सब सहमत होंगे कि राजनैतिक दलों में आपस में जो संघर्ष चलता है और उसके फलस्वरूप जो तनाव और दलबन्दी का वातावरण प्रगट होता है, उसका भी इस परिस्थिति को पैदा करने में कम हिस्सा नहीं है।

सामाजिक अशान्ति की परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए संघ ने विनोबाजी की प्रेरणा से और उनके मार्गदर्शन में मुल्क के सामने शान्ति-सेना और सर्वोदय-पात्र का द्विविध कार्यक्रम रखा है।

लेकिन संघ की यह दृढ़ मान्यता है कि राजनैतिक दलों के आपसी संघर्ष से जो अशान्ति पैदा होती है, उसे दूर करने में राजनैतिक दल स्वयं बहुत मदद पहुँचा सकते हैं—अगर वे सार्वजनिक जीवन में लोक-तांत्रिक व्यवहार के बारे में एक सर्व मान्य आचार-मर्यादा अपने आपस में तय कर लें।

इस सम्बन्ध में संघ यह महसूस करता है कि कम से कम नीचे लिखी बातों के बारे में राजनैतिक दलों को सहमत हो जाना चाहिए :—

१ राजनैतिक पार्टियाँ अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिंसक तरीके काम में नहीं लायेंगी।

२ किसी राजनैतिक दल से सम्बन्धित कोई व्यक्ति या गिरोह हिंसक कार्यवाहियों में भाग लेता है, तो सम्बन्धित राजनैतिक दल उस कार्यवाही का खंडन करे और अपने सदस्यों को ऐसी कार्यवाहियों से रोके।

३ सार्वजनिक आन्दोलनों के सिलसिले में पुलिस या मिलिटरी द्वारा गोली चलाने को सरकार भरसक टालने की कोशिश करे। अगर किसी मौके पर सरकार को गोली चलाने के लिए बाध्य होना पड़े तो ऐसी हर घटना की "ज्युडिशियल" जाँच होनी चाहिए।

४ ग्राम पंचायतों तथा सहकारी समितियों के चुनावों में राजनैतिक पार्टियाँ अपने उम्मीदवार खड़े न करें और इन संस्थाओं का व्यक्तिगत या दलीय हित के लिए उपयोग करने से सदस्यों को रोकें।

५ राजनैतिक पार्टियाँ अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षण संस्थाओं का उपयोग न करें।

६ राजनैतिक पार्टियाँ आन्दोलनकारी या दलीय उद्देश्यों की पूर्ति के कामों में विद्यार्थियों का उपयोग न करें और विद्यार्थी समाज को दलीय संगठनों में विभाजित न करें।

७ अभी हाल ही में देश में जो घट राजनैतिक घटनाएँ घटी हैं, उन्हें ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक मालूम होता है कि सार्वजनिक आन्दोलनों के स्वरूप और पद्धति की मर्यादाओं के बारे में भी राजनैतिक पार्टियाँ लोकशाही के बुनियादी उसूलों के अनुकूल कुछ आदर्श समझौता करें।

नया प्रकाशन

सर्वोदय-विचार (ले० श्री नारायण देसाई) : प्रस्तुत पुस्तक युवक समाज और सर्वोदय के युवक कार्यकर्ताओं को ध्यान में रख कर लिखी गयी है। इसमें सर्वोदय-तत्त्व को विभिन्न मत प्रणालियों की तुलना के प्रकाश में स्पष्ट किया गया है। पृष्ठ १५४, मूल्य ७५ नये पैसे। प्रकाशक—अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी

हम किधर जा रहे हैं ?

मालूम हुआ है कि भारत सरकार राष्ट्रीय बचत योजना के अन्तर्गत इनामी बांड जारी करने की सोच रही है। जिस तरह लॉटरी के टिकटों पर इनाम बाँटा जाता है, उसी तरह सरकार जो बचत-पत्र–सेविंग्स बॉंड–जारी करेगी, उन पर हर छहमाही या समय समय पर इनाम बाँटा जायगा। लॉटरी में जो नंबर आ गया, उस नंबर का बचत-पत्र जिसने खरीदा हुआ होगा, उसे इनाम मिलेगा। इस तरह इनाम के लालच से ज्यादा लोग सरकारी बचत-पत्र खरीदेंगे ऐसा अनुमान है।

एक तरफ तो आये दिन सरकार के मंत्रीगण और राष्ट्र के नेता इस बात पर जोर देते हैं और अपेक्षा रखते हैं कि लोगों में सहकारिता और सहयोग की भावना बढ़े। वे यह भी कहते हैं कि वे इस मुल्क में समाजवादी व्यवस्था कायम करना चाहते हैं। दूसरी तरफ वे लोगों में लालच की वृत्ति को बढ़ावा देने वाली ऐसी योजना बनाते हैं या उन योजनाओं को आशीर्वाद देते हैं। हर शख्स अपने फायदे की सोचेगा तो समाजवादी समाज कैसे बनेगा? व्यक्ति समाज के हित के सामने अपना हित गौण मानेगा, तभी समाजवाद बनेगा न! लोभ, लालच, स्वार्थ और संग्रह की भावनाओं को हम बढ़ावा देते रहेंगे और फिर चाहेंगे कि लोग स्वेच्छा से एक-दूसरे से सहकार और सहयोग करें तथा समाज के हित को प्राथमिकता दें, यह कैसे संभव होगा? यह हम क्यों नहीं समझ पाते कि सद्गुणों और दुर्गुणों का अपना अपना परिवार और अपनी अपनी शृंखला होती है? एक दुर्गुण के सहारे दूसरा दुर्गुण पनपता है और एक सद्गुण के सहारे दूसरा सद्गुण! दुर्गुणों की तरफ आकर्षण होना बहुत आसान है, सद्गुणों का विकास मुश्किल। हमें फैसला करना होगा कि आखिर हम चाहते क्या हैं? समाज को किधर ले जाना चाहते हैं? भौतिक विकास हो, उत्पादन बढ़े, लोगों का जीवनमान ऊँचा हो, इन बातों की हम लंबी-चौड़ी योजनाएँ बनाते हैं तो प्रजा में गुण विकास के लिए कोई योजनाबद्ध काम क्या हम नहीं कर सकते? या हम समझते हैं कि गुण-विकास के लिए परस्पर संगत योजनाओं की जरूरत नहीं है, वह काम तो उपदेशों से ही हो जायगा!

—सिद्धराज ढड्ढा

फौज

महात्मा भगवानदीन

जहाँ तक हमारी नजर जाती है, हमें तो यह दिखाई देता है कि फौज का जन्म रक्षा के लिए नहीं, आक्रमण के लिए है। जंगली अवस्था में आदमी इतना बलवान था कि वह जंगली जानवरों का अकेले सामना कर सकता था। उसके बाद वह कबीलों में रहने लगा। कबीलों को 'फौज' संज्ञा नहीं दी जा सकती। कबीले का हरएक व्यक्ति जंगली जानवर का मुकाबला कर सकता था। इसलिए कबीला भी जंगली जानवरों से रक्षा के लिए नहीं बना था, वह बना था आक्रमण के लिए, याने समूह रूप से जंगली जानवरों का सफाया करने के लिए।

राम से पहले का इतिहास नहीं मिलता। उसकी हमें जरूरत भी नहीं। वाल्मीकि को पढ़ने से पता लगता है कि रावण की फौजों ने भारत के दक्षिणी भाग पर अधिकार जमाया। इस अधिकार जमने से पहले भारत की ओर से लंका पर कभी कोई आक्रमण हुआ हो, ऐसा लिखा हुआ नहीं मिलता। इसलिए मानना पड़ेगा कि रावण की फौजें रक्षा या सुरक्षा के लिए नहीं थीं, लूट पाट या आक्रमण के लिए थीं।

दशरथ के चारों लड़के जनक की लड़कियों से ब्याहे थे। दोनों मिल कर बहुत बड़ी ताकत बन गये थे। लेकिन दोनों ने कभी लंका पर चढ़ाई की बात नहीं सोची। राम ने लंका पर चढ़ाई की। राम राजा नहीं था, देश से निकाला हुआ एक मामूली आदमी था। उसकी मामूली आदमी से भी कम हैसियत रह गयी थी। राज चिह्न तो राजचिह्न, सीता के तन पर कोई गहना भी नहीं था। वाल्मीकि, तुलसीदास या कोई और कवि उसे गहना पहना दें, तो यह काव्य की भाषा होगी, गणित की नहीं हो सकती।

राम की सीता हरी गयी। रानी नहीं हरी गयी। यह कोरा काव्य है–"भारत की लक्ष्मी स्वरूपिणी जनक-सुता को लिया उबार।" और यह भी काव्य है–"नर स्त्री उस परमेश्वर का राम-नाम भज बारबार।" सीता हरी गयी, मानों एक महिला उठा ली गयी। दक्षिणी भारत में यह काम आये दिन होता रहता था। पर किसी में आक्रमण के लिए फौज-संग्रह का बल नहीं था। नहीं तो लंका पर सीता हरण से पहले कई आक्रमण हो चुके होते। फिर चाहे वे असफल ही क्यों न रहे होते।

राम ने जो फौजें इकट्ठी कीं, वह आक्रमण के लिए, रक्षा के लिए नहीं। सीता-हरण से पहले अगर फौजें संग्रह की जातीं, तो सुरक्षा के लिए मानी जातीं। पर ऐसा करते ही भरत के कान खड़े हो जाते। फौजें संग्रह होने से पहले ही तितर बितर कर दी जातीं।

मतलब यह कि फौजें जब भी इकट्ठी की जाती हैं, आक्रमण के लिए इकट्ठी की जाती हैं। आक्रमण ही फौजों का धर्म है। आक्रमण की जानकारीरहित फौज, फौज नहीं है, भीड़ है। फौजी जनरल यह जानते हैं और राजा तो इस बात से परिचित है। अगर आक्रमण करने के लिए देश नहीं होते, तो फौजें खुद ही दो दलों में बँट जाती हैं और एक-दूसरे पर नकली आक्रमण करती रहती हैं। जिस तरह [illegible] को हमेशा सुलगती रखना पड़ता है, उसी तरह फौजों को नकली आक्रमण करते रहने पड़ते हैं।

रक्षा, सुरक्षा भी फौजों का काम है, पर धर्म नहीं। वह आक्रमण का ही अनावश्यक भाग है, जैसे धन बिजली, ऋण बिजली।

पांडव वनवास में रहे। फौजें इकट्ठी नहीं कर सकते थे। साथ में द्रौपदी। द्रौपदी पर बलात्कार हुआ। फौजें इकट्ठी करके विराट् राज्य पर हमला नहीं किया गया। कीचक उसी का सेनापति था। कीचक का वध किया गया। द्रौपदी भी सीता से कम पवित्र नारी नहीं। सीता के लिए लंका का विध्वंस हो सकता था, विराट् नगरी भी विध्वंस की जा सकती थी। पर फौज संग्रह नहीं की जा सकती क्योंकि दुर्योधन उन्हें संग्रह होने से पहले ही खतम कर देता।

पांडवों ने फिर फौजें इकट्ठी कीं, सुरक्षा के लिए नहीं, आक्रमण के लिए, राज्य प्राप्ति के लिए।

सिकन्दर ने सुरक्षा के लिए फौजें इकट्ठी नहीं कीं, आक्रमण के लिए कीं। यूनान छोड़ कर सिकन्दर साहब हिन्दुस्तान भागे चले आ रहे हैं। क्या ये यूनान की रक्षा कर रहे हैं? हमें तो यह शक करने का अधिकार है कि सिकन्दर अगर यूनान नहीं लौट पाया और काबुल में ही उसका शरीरान्त हो गया, तो अजब नहीं, इसके पीछे कोई षड्यन्त्र हो, जिसकी जड़ यूनान में हो। अरस्तू का हाथ हो, न भी हो।

बाबर फौजें इकट्ठी करता है; फरगना की रक्षा के लिए नहीं, काबुल पर आक्रमण करने के लिए। वह हिन्दुस्तान आता है, सहायक या रक्षक की हैसियत से नहीं, आक्रामक की हैसियत से। उसकी फौजें आक्रमणकारी हैं, रक्षा करने वाली नहीं।

पुराण या इतिहास के किसी पन्ने को पढ़ जाइये, आप इसी नतीजे पर पहुँचेंगे कि फौज और आक्रमण अविनाभावी हैं।

इसलिए यही कहना पड़ेगा कि जो भी देश फौज रखता है, वह आक्रामक है क्योंकि आक्रमण की नियत रखता है—फिर वह देश चाहे समाजवादी हो, चाहे साम्यवादी, चाहे प्रजातन्त्र हो, चाहे राजसत्तावाला। जिस तरह फौज और आक्रमण अविनाभावी हैं, उसी तरह शासन और फौज भी अविनाभावी हैं। इसलिए यह कहने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि शासन और आक्रमण भी अविनाभावी हैं।

भारत या तो यह साबित करे कि उसने किसी पर आक्रमण किया है और वह विजयी हुआ है, नहीं तो वह चौथे पाँचवें दर्जे का राष्ट्र बना रहेगा। जापान की गिनती बड़े राष्ट्रों में उस वक्त हुई, जब उसने रूस पर आक्रमण करके दिखा दिया और कोरिया पर अपनी सत्ता जमा ली। आग तो आग, जो चिनगारी दहकती नहीं, वह आग नाम नहीं पा सकती। फौज का डिसिप्लिन तो डिसिप्लिन, फौज का हल्ला भी अगर आक्रमण करना नहीं जानता और कभी कभी आक्रमण नहीं कर बैठता, तो वह फौज का दस्ता नहीं हो सकता, भेड़ों का दस्ता हो सकता है।

पुलिस ऐक्शन आक्रमण का ही दूसरा नाम है। जिस तरह राजदूत और हाई कमिश्नर एकार्थवाची शब्द हैं, वैसे ही आक्रमण और पुलिस ऐक्शन एकार्थवाची हैं।

अब 'यूनो' बन गया है, और उसकी है एक सुरक्षा समिति। उसमें पाँच देश हमेशा मौजूद रहते हैं। कुछ और भी आ मिलते हैं। वे पाँच देश हैं: रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन के नाम पर एक छोटा सा टापू फारमोसा, जिसका असली नाम ताईवान है। इनमें से कोई दो तीन मिल कर 'यूनो' के नाम पर, पुलिस ऐक्शन के नाम से बड़े-से-बड़ा आक्रमण कर गुजर सकते हैं और एक से ज्यादा बार ऐसा कर चुके हैं।

पुलिस-ऐक्शन, आक्रमण एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। वे हथियार, जो दूर की मार करते हैं, वे तो किसी तरह सुरक्षा के हथियार नहीं माने जा सकते और जिन फौजों के पास वे हथियार हैं, वे सब फौजें आक्रमणकारी हैं। फौज रखना सरासर अन्याय है। पर यह अन्याय सब देश कर रहे हैं। इसलिए इसका प्रतिकार नहीं हो सकता। आक्रमण सुरक्षा से ज्यादा खर्चीला होता है। ज्यादा जोखिमवाला होता है। कहावत है "चूहे के शिकार के लिए हाथी में जाना पड़ता है।" इसके आधार पर आक्रमण के खर्च का अन्दाजा लगाया जा सकता है और जोखिम का अन्दाज भी [illegible] जाँच की जा सकती है। और हम में यह समझ आ सकती है कि यह कितना नुकसानकारी है, कितना खिलवाड़ पैदा करता है और इसके कारण बड़े से बड़े और छोटे से छोटे देश दुखी हैं। पर न जाने क्यों, दुःख से चिपटे हुए हैं। न इससे बचने की हिम्मत करते हैं, न इसका उपाय सोचते हैं।

फौज कैसे खतम की जाय, यह अलग विषय है। इस पर अलग ही विचार किया जा सकता है।

राष्ट्र-निर्माण की बुनियादी बातें

काशिनाथ त्रिवेदी

निर्माण का काम एकाग्रता, कुशलता, सुव्यवस्था और संयोजन की अपेक्षा रखता है। सातत्यपूर्वक की गयी साधना के बिना निर्माण/संभव ही नहीं है। निर्माण व्यक्ति का हो, चाहे राष्ट्र का हो, *उसके लिए कुछ मूलभूत गुणों की उपासना बहुत* जरूरी है। जब तक जीवन में इन गुणों का ठीक ठीक विकास नहीं होता, तब तक निर्माण की दिशा में किये गये यत्न उतने सफल नहीं होते, जितने अमल में होने चाहिए। व्यक्ति और समष्टि मिल कर ही एक राष्ट्र बनता है। व्यक्ति का निर्माण राष्ट्र पर और राष्ट्र का व्यक्ति पर आधारित है। दोनों एक-दूसरे के सहारे ही आगे बढ़ते और ऊँचे उठते हैं। व्यक्ति राष्ट्र की चिन्ता न करे, और राष्ट्र व्यक्ति की चिंता न करे, तो निर्माण या विकास का कोई काम आगे बढ़ ही न सके। आरंभ तो *व्यक्ति को ही करना होगा, क्योंकि वही एक व्यक्त अथवा प्रकट है, राष्ट्र तो एक* भावात्मक वस्तु है, विचार है। व्यक्तियों के विशाल समुदायों से राष्ट्र का रूप बनता है, और इन समुदायों के सहजीवन तथा सहकार्य से राष्ट्रीयता का विकास होता है। सहजीवन और सहकार्य के लिए आपसी समानता की आवश्यकता होती है। समानशील, समान व्यसन, समान विचार और समान लक्ष्य की डोर से बंधे व्यक्तियों का अपना जो जीवन प्रतिदिन बीतता और प्रकट होता है, उसीमें से राष्ट्रीय जीवन के लिए पोषक शक्तियों का विकास होता चलता है। इसलिए असल में राष्ट्र निर्माण की बात व्यक्ति के निर्माण की ही बात है।

अब प्रश्न यह है कि व्यक्ति का निर्माण किन आधारों पर हो? यदि व्यक्ति को विशाल और व्यापक बनना है, और राष्ट्र से आगे बढ़कर विश्व तक फैलना है, तो उसके जीवन को बनाने वाले आधार भी उतने ही व्यापक, विशाल और सर्व समावेशक होने चाहिए। ब्रह्मांड को पिण्ड में समा लेने की और पिण्ड में ब्रह्मांड के दर्शन करने की कठिनतम साधना से ही व्यक्ति के विकास का आरंभ होना चाहिए। आज के विज्ञानप्रधान युग में जीवन की ऐसी व्यापक दृष्टि रख कर सोचने, काम करने और जीने से जिस व्यक्तित्व का विकास होगा, वही राष्ट्र कार्य के लिए हमारी सबसे बड़ी पूंजी होगी। संकुचित, संकीर्ण आधारों पर बना कोई जीवन हमें राष्ट्र कार्य के लिए अथवा राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए तैयार नहीं कर सकेगा। आज के जागतिक संदर्भ में तो राष्ट्र भी अब एक बहुत छोटी चीज रह गयी है। मानव-जीवन के समुचित विकास की दृष्टि से *आज राष्ट्रीयता का विचार भी दिन पर दिन पुराना,* कमजोर और अंगीकृत कार्य की सिद्धि के लिए अक्षम सा बनता जा रहा है। जैसे जैसे विज्ञान के विकास के कारण दुनिया छोटी होती जाती है, वैसे वैसे मानव के विकास की सीमाएँ भी फैलती जाती हैं। *इन सब बातों को ध्यान में रख कर ही हमें व्यक्ति* के निर्माण के विषय में सोचना होगा। अगर व्यक्ति का सही निर्माण हुआ, तो उसकी मदद से राष्ट्र या संसार का सही निर्माण करने की शक्ति समाज में आ सकेगी।

मेरे नम्र विचार में राष्ट्र निर्माण के लिए *कुछ इस प्रकार की बुनियादी बातों* को पकड़ कर आगे बढ़ने का यत्न हमें करना होगा। मुख्य वस्तु व्यक्ति की शुद्धि है, और व्यक्ति की शुद्धि के लिए शुद्ध समाज की आवश्यकता है। व्यक्ति को देखने से समाज का और समाज को देखने से व्यक्ति का *सही दर्शन हो सके, इतनी समरसता* दोनों के बीच होनी जरूरी है। इसके लिए आवश्यक पुरुषार्थ का आरंभ दोनों ओर से करना होगा। एकांगी यत्न से काम नहीं चलेगा। एकसाथ सबका अनुसंधान करना हो, तो शक्ति भी सबकी एकसाथ, एक जगह लगनी चाहिए।

इस बुनियादी बातों को ध्यान में रख कर अब हम अपने भारतीय राष्ट्र के नव निर्माण के विषय में थोड़ा विचार करें। इसमें सन्देह नहीं कि हमारा इतिहास और हमारी परम्पराएँ बहुत ही पुरानी हैं। *इतिहास ने और परम्पराओं ने हमें आज* तक जो कुछ दिया है, उसमें हमारी मानवता के समुचित विकास की विपुल और सारभूत सामग्री विद्यमान है। परन्तु सदियों की गुलामी ने हमें अपने इतिहास और परम्परा से बहुत दूर फेंक दिया है। नतीजा यह हुआ है कि हम अपने असल रूप को जानने समझने की अपनी शक्ति खो बैठे हैं। हममें आचार विचार और उच्चार की कुछ ऐसी मान्यताएँ घर कर बैठी हैं कि उनसे ऊपर उठ कर जीने की हमारी तैयारी ही नहीं रही है। यही कारण है कि स्वतन्त्रता के इन बारह वर्षों में हम अपने राष्ट्रीय जीवन का न तो कोई रूप स्थिर कर पाये और न अपने राष्ट्रीय जीवन को कोई खास निखार ही दे पाये। आज हमें देख कर या हमारे निकट रह कर कोई यह नहीं कह सकता कि हम अपना रोज का जीवन एक जागरूक भारतवासी के नाते बिता रहे हैं। हमारे आज के जीवन में असल इतना कम और नकल इतना अधिक है कि *हम हम ही नहीं रह गये हैं।* हमारी इस दुर्बलता ने हमें देश के अन्दर और बाहर, दोनों जगह प्रभावशून्य बना दिया है। जिसके जीवन में कोई अपनापन नहीं, वह दूसरों को अपनी ओर खींचे क्या और प्रभावित करे क्या? हकीकत यह है कि आज इस देश का औसत पढ़ा-लिखा, समझदार और जिम्मेदार माना जाने वाला आदमी देश में ही पराया बन कर जी रहा है। *और, तिस पर तुर्रा यह है कि उसे न तो इस परायेपन का भान है, न* दर्द है, न शरम है। क्या शहरों में और क्या गाँवों में, सब कहीं, हमारा जोर और झुकाव नकल पर ज्यादा है, असल की ओर देखने की, उसे समझने की, अपनाने और उसी का आग्रह रखने की हमारी भावना मुरझा सी गयी है। *स्वतंत्रता के बारह* बरसों में हम अपने असली रूप को चमका नहीं पाये, उसकी जड़ में हमारे राष्ट्र की यह व्यापक जड़ता और परमुखापेक्षिता ही है।

गांधीजी ने हमारी इन्हीं घनीभूत दुर्बलताओं को ध्यान में रख कर हमें व्यक्ति और राष्ट्र के नवनिर्माण की कुछ स्पष्ट दिशाएँ सूचित की थीं, कुछ सूत्र दिये थे, *कुछ कार्यक्रम हमारे सामने रखे थे, कसौटियाँ हमें सौंपी थीं।* जो कुछ उन्होंने हमसे कहा, सो सब उन्होंने अपने जीवन में करके दिखाया भी। ऐसी कोई चीज उन्होंने हमारे सामने नहीं रखी, जिसे हम असंभव या अव्यावहारिक कह कर भुला सकें। फिर भी हमने उनकी कही हुई और की हुई बातों पर अपनी निष्ठा जमाने का प्रामाणिक प्रयत्न नहीं किया। हमने उनकी बातों को सुना और पढ़ा तो बहुत, पर उन पर अमल करने में हम कच्चे साबित हुए। यही कारण है कि आज देश में न तो गांधीजी का सुझाया कोई रचनात्मक *काम सही ढंग से आगे बढ़ रहा* है, न उनका दिखाया हुआ आदर्श हमारे जीवन में कहीं कोई जगह बना पा रहा है। अपने समय में तो गांधीजी ने मिट्टी में से मर्द पैदा किये, शून्य में से *एक सारी नयी सृष्टि का सृजन किया, सोये हुए राष्ट्र को जगाया, छिन्न भिन्न* मानवता को प्रेम के एक धागे से बांध कर तप, त्याग और बलिदान के रास्ते पर चलने के लिए तैयार किया, और असंभव को संभव करके दिखाया। जो इतिहास में कभी नहीं हुआ, वह गांधीजी ने अपने समय में अपनी रीति से किया और कराया। पर अपनी व्यक्तिगत और राष्ट्रगत कमजोरियों के कारण हम गांधी के इस प्रसाद का स्वाद नहीं ले पाये, और न उनके जीवन-दर्शन की कोई झाँकी ही कर पाये। एक अभिशप्त सी स्थिति में हमारा निजी और राष्ट्रीय जीवन बीता चला जा रहा है। इस दुःखद स्थिति के मूल में हमारे सजग पुरुषार्थ की और प्रामाणिक प्रयत्न की कमी ही मुख्य है। नर करनी करे तो नारायण हो जाय, यह इस देश का एक सिद्ध अनुभव है। पिछले दस हजार वर्षों से हम अपने देश में इस सत्य का का साक्षात्कार करते आ रहे हैं। फिर भी इस पर हमारा विश्वास जमा नहीं है। यही कारण है कि आज भी हमारे यहाँ करनी और कथनी में अन्तर रख कर जीने पर ही अधिक जोर दिया जाता है, और इसके बचाव में मानव मन और जीवन की दुर्बलताओं को आगे रखा जाता है। करनी और कथनी की एकता को हमने जीवन का आम नियम नहीं माना, इसलिए जिन्होंने अपने जीवन में इनकी एकता सिद्ध की, वे समाज में अपवाद माने गये, और उसी रूप में उनकी प्रतिष्ठा तथा पूजा चलती रही। इस विचारधारा के चलते समाज के अन्दर कुछ व्यक्ति तो ऊपर उठे, पर समूचे समाज को एकसाथ ऊपर उठने और आगे बढ़ने की प्रेरणा नहीं मिल पायी। गांधीजी ने बहुत जोर दिया, समझाया, जँचाया, फिर भी समाज की प्रतीति नहीं हो पायी। फलत, समूह ने उनके जीवन मूल्यों को यथावत् अपनाने का कोई प्रबल उद्योग ही नहीं किया। गांधी के गुणों का गान चलता रहा, पर गांधी जीवन का अनुसरण और अनुगमन करने की भावना जन जन के मन में पुष्ट नहीं हो पायी। आधार सारे पुराने, परिस्थितियाँ सारी नयी। आवाहन नया, वाहन पुराना। ऐसी एक विलक्षण सी स्थिति में आज हम अपने को पा रहे हैं। *आज नवनिर्माण की दिशा में हमारे जो* डग आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं, इसमें उल्लास, उमंग, उत्साह, प्रेरणा, पुरुषार्थ आदि की जो कमी दीख रही है, उसके मूल में हमारा अस्पष्ट जीवन दर्शन और हमारी दुर्बल जीवन निष्ठा ही है।

ऐसे गहन और व्यापक अंधकार को भेद कर प्रकाश की जो एक पुनीत रेखा हमारे लोकजीवन में *इधर प्रकट हुई है, उससे हम अपने भविष्य के विषय में थोड़े* आश्वस्त हो सके हैं। प्रकाश की उस रेखा को प्रकाश पुंज में बदलने का पुरुषार्थ हमारे बीच शुरू हो चुका है। सन्त विनोबा का तप पूत जीवन और महान् मिशन उसका आधार है। उनकी वाणी को अपना वाहन बना कर वह प्रकाश आज देश विदेश में चारों ओर अपना विस्तार कर रहा है। राष्ट्र के नव निर्माण की सही दिशा भी हमें इसी प्रकाश के सहारे सूझ रही है। सर्वोदय उसका मूलाधार है। सब कुछ भगवान् का है, हमारा कुछ नहीं, इस सूत्र के सहारे जीवन का नया रास्ता खुलता है, और सब हमारे हैं और हम सबके हैं इस मंत्र को सिद्ध करने का बल हमें मिलता है। *जितनी गहराई और सचाई के साथ हम इस सूत्र को पकड़ेंगे* और मन्त्र को सिद्ध करेंगे, उतनी ही गहरी और सच्ची बुनियाद हम अपने बीच अपनी और अपने राष्ट्र के नव निर्माण की रख सकेंगे और आगे उसी में से मानवता के नव-निर्माण का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

('भूमि-क्रान्ति' से)

पठानकोट की झाँकियाँ !

हिन्दुस्तान जैसा बड़ा देश, जिसमें सामान्य तौर से भी एक जगह से दूसरी जगह का सफर लंबा, खर्चीला और कष्टप्रद होता है। उसमें भी पठानकोट तो करीब-करीब देश के एक सिरे पर ही था। दक्षिणी छोर से करीब १७०० मील, पश्चिमी किनारे से १००० मील और पूरब में आसाम से करीब १५०० मील! सर्व सेवा संघ के नये विधान के अनुसार पहली सभा थी। जिला प्रतिनिधियों के जो नाम आये थे, उनमें अधिकांश नये सदस्य थे। इससे पहले की सभाओं में तो जो लेना चाहते, उन सदस्यों को आने-जाने का सफर खर्च भी मिलता था। 'जनाधार' और सदस्य-संख्या में काफी वृद्धि हो जाने के कारण इस बार से वह सहूलियत भी नहीं थी। इसके अलावा इन्हीं दिनों ज्यादा बारिश के कारण दक्षिण और मध्य हिन्दुस्तान में कई जगह रेलों का यातायात अव्यवस्थित हो गया था। 'अण्णासाहब' को तो बेचारों को ५४ घंटे रेल में रहना पड़ा! कुल मिला कर थोड़े ही लोग पठानकोट की सभा में पहुँचेंगे ऐसा अनुमान था। पर वहाँ तो दृश्य दूसरा ही था। करीब दो सौ से ऊपर सदस्य-प्रतिनिधि तथा अन्य लोकसेवक मिला कर—सभा में हाजिर थे और उनमें भी अधिकतर लोग नये! *पंजाब के हमारे बुजुर्ग साथी लाला अचिंत रामजी को शिकायत रहती है कि सर्व सेवा संघ की मीटिंग में हमेशा वही की वही और उतनी-सी ही शक्लें दिखाई देती हैं। इस बार अपने ही सुदूर प्रदेश में इतनी* तादाद में और इतने नये लोगों को देख कर उन्हें जरूर संतोष हुआ होगा। भूदान आरोहण एक जानदार मुहिम है इसका सबूत पठानकोट की सभा दे रही थी।

◆ ◆ ◆

दुबले-पतले आदमियों को अपना वजन बढ़ाने की अक्सर बहुत चिन्ता रहती है। उरली के प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में तो सुबह शाम के अभिवादन में एक-दूसरे से पहला सवाल ही यह होता है कि आज वजन कितना बढ़ा या कितना घटा! विनोबा नयी नयी ईजाद करते रहते हैं। *वे भी पर्याप्त रूप से दुबले पतले हैं—शायद* जरूरत से ज्यादा हो! उन्होंने अपना वजन बढ़ाने का *नया तरीका निकाला है, जो अनुकरणीय है। सर्व सेवा संघ की सभा में उन्होंने* यह नुस्खा सबको बतलाया—वे आजकल पदयात्रा में पीठ पर १०-१२ पौंड अपना सामान लेकर चलते हैं और उनका वजन रोज १०० पौंड से ११० पौंड तो हो ही जाता है!

◆ ◆ ◆

पठानकोट की सभा के 'श्रीगणेश' में ही—दादा ने देश के पुरुषों से दो अपेक्षाएँ प्रकट कीं। अमुक उम्र पार कर जाने के बाद *कम से कम दो बातें वे नहीं* करें—एक तो वे किसी संस्था में कोई पद या अधिकार ग्रहण न करें और दूसरे, विवाह न करें! कम से कम 'लोकसेवकों' को तो अब अपनी पाँच निष्ठाओं में ये दो और जोड़ने की तैयारी रखनी चाहिये!

◆ ◆ ◆

सर्व सेवा संघ के इतिहास में पहली बार सदस्यों को अपना अध्यक्ष सचमुच चुनने का अवसर पठानकोट *में मिला था।* सभा में करीब दो सौ लोग हाजिर थे, 'चुनाव' भी सर्वसम्मति से करना था! जिस चुनाव की हम सरेआम बुराई करते रहे हैं, उसका प्रश्न हमारे ही बीच आने पर कहीं हमारी पोल न खुल जाय! यह अन्देशा भी था। दादा ने यह फतवा पहले ही दे दिया था कि "पुराने" लोग कोई पद ग्रहण न करें, वे न चुने जायँ। लोग ऐसी तरकीब निकालने के लिए अपना अपना दिमाग लगा रहे थे कि "साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे!" चुनाव भी हो, सर्वसम्मति भी हो, "पुराना" भी न चुना जाय और एकदम नये को तो अध्यक्ष चुनें भी कैसे!

आखिर 'पुरानों' ने अपना हाथ दिखाया ही। बिहार के वैद्यनाथ बाबू ने सुझाया कि उपस्थित लोग अध्यक्ष पद के लिए अपने-अपने सुझाव लिख कर दे दें, और राजस्थान के गोकुलभाई ने उसमें जोड़ा कि इस तरह जिन जिन के नाम आयें, वे ही आपस में अपने में से एक को 'पार्जी' कर लें! इन सुझावों के आने पर सबने राहत की साँस ली, और फलस्वरूप, हमारे नये अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामी के निज के शब्दों में, "दृष्टिावतार" का जन्म हुआ!

◆ ◆ ◆

आन्ध्र के प्रभाकरजी भी छोटे 'बाबा' ही हैं। हर सभा में कोई न कोई नया शिगूफा छोड़ते हैं। *इस बार सर्व सेवा संघ के सामने चुनाव ही चुनाव* की बहार थी। जिले जिले से प्रतिनिधि का चुनाव, फिर पठानकोट में अध्यक्ष का चुनाव! संन्यासी शादी भी करे तो उसे नाम तो *कुछ नया दे! प्रभाकरजी ने* रास्ता निकाल दिया। और जमातों में चुनाव होते हैं तो चुने जाने के लिए होड़ लगती है, पर 'निष्काम' लोकसेवक तो बेचारे किसी पद के लिए *अपना नाम* आने पर उससे बचा हमेशा पर पीछे हटेंगे, ऐसा प्रभाकरजी को अन्देशा था हो, आन्ध्र में जिला-प्रतिनिधि होने के लिए लोगों को मनाना पड़ा। इस तरह 'चुनाव' 'मनाव' में बदल गया और संन्यासी का संकट टल गया!

◆ ◆ ◆

सर्व सेवा संघ का नया विधान बना और नये विधान के अन्तर्गत संघ की यह पहली सभा थी। दादा ने एक भविष्यद्रष्टा की तरह, सभा में उपस्थित लोगों *पर से अपनी नजर आगे को बढ़ा कर क्षितिज पर डालते* हुए, कुछ वेदना के साथ कहा कि "सर्व सेवा संघ के इतिहास में आज संविधान का युग प्रारंभ हो रहा है।" मालूम नहीं हमारे राधाकृष्णजी 'भाईजी' ने दादा की यह बात सुनी या नहीं, पर इसके तुरन्त बाद ही सभा की *कार्रवाई आगे बढ़ने से पहले वे उठ खड़े हुए और उन्होंने* अपनी राय जाहिर की कि संघ के नए विधान के मुताबिक हरएक लोक सेवक संघ की सभा में 'सदस्य की हैसियत से' और सब बातों में तो भाग ले सकता है, लेकिन अध्यक्ष के चुनाव में नहीं! हजारों मील से थक कर आये हुए बेचारे लोकसेवकों के अरमानों पर पानी फिरने ही वाला था—अगर सभा के अध्यक्ष श्री शंकररावजी 'शंकर' का काम न करते और इस 'आपत्ति' को अपने *में ही पचा कर लोक-सेवकों का रास्ता साफ न कर देते!*

◆ ◆ ◆

अपनी कार्यकारिणी और मंत्री आदि की 'टीम' की घोषणा अध्यक्ष का काम था। लोग सोचते थे मंत्री तो सिद्धराजजी होंगे, पर जब अध्यक्ष ने नामों की घोषणा की, *तो बात दूसरी ही निकली! लोगों ने समझा सिद्धराजजी* भी 'पुरानों' के साथ बह गये। पर दूसरे ही दिन सर्व सेवा संघ के हिन्दी अंग्रेजी मुखपत्रों के संपादक के रूप में वे प्रगट हो गये। शंकरम्मोरे को आखिर शंकर मिल ही जाते हैं!

◆ ◆ ◆

विनोबा ६४ साल के हुए हैं। पर सर्व सेवा संघ की पठानकोट की सभाओं में एकसाथ दो ऐसी बातें हुईं जैसी, उन्होंने कहा, उनके जीवन में पहले कभी नहीं हुई थीं। पहली बात तो यह कि उन्होंने अपने जीवन में पहली बार अपनी ओर से किसी महत्त्वपूर्ण काम के लिए *अखिल भारतीय शान्ति* नियुक्त की। शांति-सेना के 'सुप्रीम कमाण्डर' की हैसियत से इस सभा में उन्होंने अपनी ओर से नियुक्त एक *'अखिल भारतीय* शांति-सेना मंडल' की घोषणा की थी। दूसरी बात, अपने जीवन में पहली बार वे उस दिन एक 'चुनाव' में हाजिर रहे और उसके साक्षी हुए। विनोबा ने कहा, ऐसा 'संकट' उनके जीवन में पहले कभी नहीं आया था और सभा में बैठे-बैठे कितनी ही बार उनके मन में आया कि यहाँ से उठ कर भाग चला जाय। पर वे बैठे इसलिए रह सके कि "संकटमोचन हनुमान" उनके साथ ही थे! और सभा में इसका बयान करते हुए विनोबा ने काशी के संकटमोचन हनुमान और 'हनुमान चालीसा' के गुणगान शुरू कर दिये। 'काकभुशुंडि' जैसों को *बड़ा अटपटा* लग रहा था कि आखिर विनोबा को हो क्या गया! पर आखिर में सारी सभा की हँसी में दिमाग का यह बोझ बह गया, जब विनोबा ने कहा कि 'चुनाव' के साक्षी होने के संकट में से वे अपने चरखे के कारण पार उतर गये!

—काकभुशुंडि

[लोकशाही की बुनियाद]

[पृष्ठ ७ का शेष]

उसकी चर्चा धीरे-धीरे तटस्थ बुद्धि से की जा सकती है। ऐसा *सत्यग्राही समाज बनाना है। सत्यग्राही* वह होगा, जो सत्य को ग्रहण करने वाला, उससे चिपके रहने वाला होगा। अपने पास सत्य का जो अंश है, उसे न छोड़ने वाला होगा और सामने वाले के पास जो सत्य का अंश है उसे ग्रहण करने की उसकी तैयारी होगी। ऐसा सत्यग्राही मन और समाज हम बनाना चाहते हैं। यह सत्यग्राही शब्द मुझे बंगाल और उड़ीसा के भक्ति साहित्य में चलने वाले भावग्राही शब्द से सूझा। उसमें कहा गया है कि भगवान भावग्राही होते हैं, भाव को ग्रहण करते हैं। मैं शब्द की खोज में था तो 'मुझे *यह नया सत्यग्राही शब्द सूझा, जिससे मुझे तसल्ली* हुई। मैं चाहता हूँ कि हम सब सत्यग्राही बनें। हमने अपने सत्य के साथ चिपके रहने और सामने वाले के पास जो सत्य है, उसको ग्रहण करने की तैयारी रखने की जो बात है, वह मन के ऊपर उठे बगैर संभव नहीं है।

मेरे पास है वही सत्य है, सामने वाले के पास सत्य नहीं है, ऐसा वृत्ति में से युद्ध पैदा होता है। ऋग्वेद में युद्ध के लिए कई शब्द आये हैं, उनमें एक शब्द है—"मम सत्यम्"। शास्त्राचार्य ने कहा है "मम सत्य युद्धम्" युद्ध याने 'मम सत्य'। हमने देखा कि पिछले महायुद्ध में दोनों पक्ष ईसाई राष्ट्र थे, जो अपनी जगह हो, इसलिए परमेश्वर के पास मदद माँगते थे। दोनों पक्ष युद्ध में मेरी मदद माँगते हैं, ऐसा ऋग्वेद में भी *में भी आता है। उसमें युद्ध के लिए 'मम सत्य'* शब्द आता है। सत्य मेरा ही है, सामने वाले का सत्य नहीं है—सत्य मेरे बाप की जायदाद है, सामने वाले का उस पर कोई हक नहीं है—इस तरह जब आप सोचते और मानते हैं तो लड़ाई के सिवाय चारा नहीं है। *फिर उस लड़ाई को आप कि तरह लड़ाई का* रूप दें तो भी वह लोकशाही नहीं कहला सकता।

हमारी जमात की इस तरह की लोकशाही बुनियाद हो तो हमारी जमात छोटी होने पर भी हिन्दुस्तान की बहुत सेवा करेगी। आपकी जमात एक ऐसी जमात हो कि *जिसके शब्दों पर लोग विश्वास करें।* हम और कुछ कर पायें या न कर पायें, वह दूसरी बात है, लेकिन लोग हमारे शब्दों पर विश्वास ही करते हैं इतना भी हम कर सकें तो अहिंसा के लिए, सर्वोदय के लिए और आगे इन बातों के लिए कुछ न कुछ काम कर सकेंगे।

(सर्व सेवा संघ की बैठक में, पठानकोट, २२-९-'५९)

राजस्थान में 'लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण'

बद्रीप्रसाद स्वामी
(मकराना)

हाल ही में राजस्थान में एक महत्त्वपूर्ण अधिनियम के अन्तर्गत पंचायत समितियों तथा जिला परिषदों का निर्माण किया गया है, जिनको २ अक्टूबर से उस अधिनियम के अनुसार अपने अपने क्षेत्र के विकास का कार्य सौंपा जा रहा है। विकास कार्य के साथ साथ प्रारंभिक शिक्षा तथा स्वास्थ्य रक्षा का काम भी इनके सुपुर्द किया जायगा। इन समितियों तथा परिषदों को अपने कार्य-संचालन के लिए कुछ टैक्स (कर) लगाने का भी अधिकार दिया गया है। पंचायत समितियाँ मौजूदा सभी गाँवों के सरपंचों तथा उनके द्वारा कुछ लोग नामजद किये गये सदस्यों द्वारा बनायी गयी हैं तथा जिला परिषदें पंचायत समितियों के अध्यक्ष, जिले के विधायकों तथा संसद-सदस्य तथा इन सबके द्वारा कुछ अन्य नामजद सदस्यों को लेकर निर्माण की गयी हैं। यह जो कुछ भी रचना एक अधिनियम के अन्तर्गत की गयी है, उसका नाम लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण दिया जा रहा है तथा इसका बड़ा धुआँधार प्रचार व प्रशंसा चारों तरफ की जा रही है। इसलिए सर्वप्रथम तो हमें यह अच्छी प्रकार समझ लेना है कि वास्तव में यह लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण है या नहीं?

वास्तव में देखा जाय, तो हमारे देश में अभी लोकतंत्र की स्थापना ही नहीं हो पायी है। जो कुछ चल रहा है, वह तो प्रतिनिधि तंत्र है और उसमें भी कितने प्रतिनिधि वास्तव में लोकशक्ति के आधार पर ही चुने गये हैं, इसमें भी काफी सन्देह है। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि देश में लोकशक्ति को जाग्रत व संगठित करने के पूर्व ही पाश्चात्य चुनाव प्रणाली ने उसको कुंठित कर दिया। इसलिए लोकशक्ति का निर्माण कर उसके द्वारा सही लोकतंत्र की स्थापना करना तो अभी बाकी है।

जिस तंत्र के जरिये यह विकेन्द्रित विकास कार्य किया जाने वाला है, वह भी लोकतंत्र का कोई सही स्वरूप नहीं है और न उसमें लोकशक्ति ही जाग्रत होने वाली है। मौजूदा पंचायतों से गाँव गाँव में जनता कितनी असंतुष्ट है, यह सबको भली प्रकार विदित है। करीब-करीब सभी पंचायतें पार्टीबाजी और जातिवाद के झगड़े से बची हुई नहीं हैं। इस प्रकार जाति, पार्टी और बहुमत के आधार पर जो सरपंच बने हुए हैं, वे अधिकतर साधनसम्पन्न और भूमिवान व्यक्ति ही हैं। उनके दिल में अत्यंत दीन और अभावग्रस्त, पिछड़े लोगों के लिए सद्भावना और सहयोग की आकांक्षा होना मुश्किल ही है। इसके अलावा अपने आपको पंच बनाने और बनने के बाद अपनी पंचाई बनाये रखने में कितनी नैतिकता बरती जाती है, यह भी किसी से छिपा नहीं है। भावी पंचायत समितियाँ, जिनके द्वारा समाज का नैतिक तथा भौतिक विकास अपेक्षित है, उसके लिए ये सरपंच सदस्य बनाये गये हैं। इन सदस्यों द्वारा जो नामजद सदस्य लिये गये हैं तथा अध्यक्ष का चुनाव किया गया है, उसमें भी बहुमत को स्थान देकर क्या भूल नहीं की गयी है? क्या एक पंचायत समिति के २०-२२ जिम्मेदार सरपंच अपने अध्यक्ष का चुनाव सर्वसम्मति से नहीं कर सकते? तो फिर विकास के कार्य में एक राय कैसे होंगे? जहाँ तक नामजद सदस्य लेने का प्रश्न था, वे सदस्य भी इन पंचों द्वारा नामजद करवाने का अधिकार देकर इन समितियों में गुटबंदी का बीजारोपण कर दिया गया है। वास्तव में जो भी नामजद सदस्य लेने थे, वह उन उन क्षेत्रों की भिन्न भिन्न संगठन व संस्थाओं से प्रतिनिधि स्वरूप लेना ज्यादा अच्छा रहता। अभी तो वास्तव में अध्यक्ष बनने के ख्वाहिशमंद व्यक्तियों ने उनकी हाँ में हाँ मिलाने वाले अमुक-तमुक स्त्री पुरुषों को सदस्य स्वरूप ले लिया गया है। इसके उपरांत सबसे बड़ा खेद की बात तो यह है कि राजनैतिक पार्टी तथा उसके नेताओं ने इनके निर्माण में पूरा पूरा दखल दिया है तथा जिला परिषदों में तो उन्होंने अपना पूरा कब्जा सा ही कर लिया है। ऐसी समितियों तथा परिषदों से भला क्या आशा रखी जा सकती है और इन्हें किस प्रकार लोकतांत्रिक कहा जा सकता है?

देश में पिछले १० वर्षों से प्रथम व द्वितीय योजनान्तर्गत जो विकास कार्य सरकारी विकास अधिकारियों द्वारा संचालित हुआ, उससे कोई संतोषजनक प्रगति नहीं हो पायी। और उसका मुख्य कारण यही माना गया कि विकास-कार्य में जनसहयोग का अभाव है। चारों तरफ करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद भी समाज में विकास के प्रति जो असंतोष जनता में बढ़ता जा रहा था, उससे बचने के लिए विकास का कुछ कार्य, जो आज-तक सिर्फ अधिकारियों के ही बल बूते पर चलता था, उन समितियों तथा विकास परिषदों को सौंपा जा रहा है। यह विकेन्द्रीकरण बदजें-लाचारी एक अधिनियम के अन्तर्गत किया जा रहा है, न कि संगठित जनशक्ति की आवाज तथा माँग पर। इसीलिए तो आज राजस्थान की सर्वसाधारण ग्रामीण जनता को इस सारे नाटक का कुछ भी पता नहीं है। सिर्फ इनेगिने सरपंचों तक ही यह बात सीमित है, जिनमें भी अधिकतर सरपंचों को अभी तक यह पता नहीं है कि हमें वास्तव में क्या सौंपा जा रहा है और क्या करना है? ऐसी हालत में जन सहयोग तो दूर रहा, पंच और सरपंचों का सही और समझ-बूझ कर सहयोग मिल सकेगा या नहीं, इसमें भी शक है। इधर सरकारी विकास कर्मचारियों के मानस में इस कदम से कोई विशेष तब्दीली नहीं हो पायी है। पंचों की अज्ञानता का जिस प्रकार आज तक वे फायदा उठाते रहे, उसमें आगे कोई ठीक कमी हो जाय, ऐसी कोई संभावना नहीं है।

अब रहा प्रश्न विकास योजना और कार्य का। सो तो निश्चित है केन्द्रीय सरकार द्वारा बनाये जाने वाले मूलभूत सिद्धांतों पर ही आधारित रहने वाला है, जब तक कि जनता स्वयं अपनी योजना अपनी शक्ति से बना कर चलाने की तैयारी न कर ले। ग्रामीण जनता को मौजूदा टैक्सेज तो बराबर देने ही हैं। इसके अलावा विकास के लिए और टैक्सेज लगाये जाने वाले हैं, इससे जनता में असंतोष ही बढ़ने वाला है। अर्थ और योजना के बारे में पंचायतें, परिषदें व समितियाँ सदा सरकाराभिमुख ही रहने वाली हैं। सरकार द्वारा निर्मित समितियाँ व परिषदें सत्ता व सरकार का ही विशेष ध्यान रखेंगी, न कि समाज का। ऐसी हालत में इस विकेन्द्रीकरण के बावजूद भी सरकारी कर्मचारी और सत्ता का कोई प्रभाव कम नहीं होने वाला है और न कर्मचारी व उनके व्यवस्था खर्च में कमी आने वाली है।

ऐसी परिस्थिति में सत्ता व पक्ष से परे रह कर सोचने वाले सज्जनों का क्या कर्तव्य हो सकता है, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। आज के शासन का जो भी स्वरूप है, उसमें जो भी अधिकार उक्त समिति व परिषदों का निर्माण करके सौंपे गये हैं, उन अधिकारों का किस प्रकार सदुपयोग हो तथा किस प्रकार विकास कार्य में जनसहयोग अधिक से अधिक प्राप्त हो, यह एक मुद्दा है, जिस पर हमें ध्यान देना है। हमें हर गाँव व नगर में विचार गोष्ठी व सभाएँ आयोजित करके इस लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के सारे स्वरूप का विश्लेषण करके आम जनता को समझाना होगा। इसके सदस्यों से भी आग्रह करना होगा तथा पंचायत समितियाँ व जिला-परिषद् के सदस्यगण मनमानी न कर सकें, इसके लिए जनता को जागरूक व संगठित करना होगा। इसके अलावा ग्रामीण जनता अपने-अपने गाँव की स्वयं अपनी योजना बना कर उसके अनुसार समितियों से सहायता प्राप्त करें, यह भी उन्हें समझाना होगा। ग्राम योजना को ठुकराने पर या समितियों द्वारा गलत कदम उठाये जाने पर अहिंसात्मक असहयोग की कला भी ग्रामीण जनता को सिखानी होगी। यह तो रहा हमारे कर्तव्य का एक पहलू। इसके अलावा हमें सही लोकतंत्र और लोकयोजना तथा लोकशक्ति के निर्माण हेतु सर्वोदय-समाज-रचना का बुनियादी विचार लोगों को समझाते हुए गाँव गाँव और नगर नगर में ग्राम-स्वराज्य तथा नगर-स्वराज्य लोकशक्ति द्वारा निर्मित करने के लिए अथक प्रयास करना होगा। इस विचार के आधार पर जब नगर नगर व गाँव गाँव में जनता स्वयं अपनी शक्ति द्वारा अपनी योजनाएँ बनायेगी तथा अपना विकास कार्य अपनी योजनानुसार चलायेगी, तभी समाज का सही विकास हो सकेगा।

अणुबम फल है वृक्ष है हिंसा बीज, केन्द्रित व्यवस्था

नेमिशरण मित्तल
(जयपुर)

सोवियत संघ (रूस), संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन समय समय पर अणु और उद्जन बमों का परीक्षण करने के लिए विस्फोट किया करते हैं। ऐसे विस्फोटों को लेकर संसार में बहुत विरोध खड़ा होता है, फिर भी ये विस्फोट चलते हैं, क्योंकि ये आज की व्यवस्था के अनिवार्य फल हैं। आश्चर्य इस बात का नहीं कि ये विस्फोट होते हैं, अचरज तो यह है कि विरोध होता है और स्वयं विरोधियों के आचरण में कोई अन्तर नहीं आता। जो बड़ी हिंसा करने के योग्य नहीं, वे छोटी हिंसा करते हैं, उसे छोड़ नहीं पाते।

मूल प्रश्न

अणु और उद्जन बम मानव के सामने कोई प्रश्न बन कर नहीं खड़े हुए हैं। मूल प्रश्न तो यह है कि हमारे जीवन में जो व्यापक असत्य व्यवहार और हिंसा का प्रवेश हुआ है, उसका निराकरण कैसे होगा? जब तक असत्य का आचरण हम करते रहेंगे, तब तक हमें उस व्यवहार की रक्षा के लिए हिंसा करनी पड़ेगी। असत्य न तो स्वयंभू है, न स्वाश्रयी। उसमें अपने आप टिकने की सामर्थ्य नहीं है। वह किसी सत्य का बहाना लेकर उसकी ओट में सामने आता है और उसकी रक्षा के लिए हिंसा यानी पशुबल की आवश्यकता रहती है। जहाँ असत्य होता है, वहाँ निश्चिन्तता नहीं होती। झूठा व्यक्ति बेफिक्र नहीं हो सकता, वह हमेशा भयभीत रहता है। असत्य सदा सत्य से डरता है। इतना ही नहीं, एक एक असत्य दूसरे असत्य से भी डरता है। असत्य का आचरण करने वालों में परस्पर अविश्वास और द्वेष रहता है, जिसके कारण वह हमेशा आपस में एक-दूसरे से डरते हैं। जो डरता है, वह बाहर की किसी शक्ति की तलाश करके उसकी शरण लेता है। शक्ति की यह दौड़ इस सीमा तक बढ़ जाती है कि बेकाबू शक्ति इकट्ठा हो जाती है और मनुष्यता का नाश होने लगता है। आज दुनिया की यही हालत है।

मौलिक असत्य

जिन देशों के हाथों में आग्नेय अस्त्र आ गये हैं, आज उनकी प्रतिष्ठा है। कहा जाता है कि ये शक्तिशाली राष्ट्र हैं। यदि प्रतिष्ठा का आधार सर्वनाश की शक्ति ही है, तो अणुबम और उद्जनबम संसार की सर्वोच्च प्रतिष्ठा के प्रतीक होने चाहिए। तब फिर इनका विरोध क्यों हो रहा है? हो सकता है कि जिन राष्ट्रों के पास यह शक्ति इकट्ठी नहीं हो पायी है, वे राष्ट्र इस शक्ति की निन्दा करके 'लोमड़ी के लिए अंगूर खट्टे हैं' वाली लोकोक्ति को चरितार्थ करते हैं। अन्ततोगत्वा इन अभाव-ग्रस्त राष्ट्रों की निन्दा से हिंसा की यह बाढ़ घटने के बजाय बढ़ती ही जायेगी।

आग्नेय अस्त्रों की निन्दा करने से हम इनके प्रयोग को नहीं रोक सकते। हमें देखना होगा कि ये फल जिस हिंसा वृक्ष पर फलित हो रहे हैं, वह किस बीज में से पैदा हुआ है। संसार में से हिंसा मिटेगी, तभी संहारक शस्त्र मिटेंगे। हो सकता है कि हिंसा को कायम रख कर इन शस्त्रों पर *कुछ समय के लिए पाबन्दी लगायी जा* सके, लेकिन यह स्थायी व्यवस्था नहीं होगी, उससे *हिंसा* की शक्ति भीतर ही भीतर पनपती रहेगी।

इस स्थिति को रोकने का एकमेव मार्ग यह है कि हिंसक राज्य व्यवस्था, समाज और अर्थव्यवस्था की अप्रतिष्ठा करके हम उसके साथ असहयोग करें और अपने-अपने देश में ऐसी व्यवस्था को जन्म दें, जिसकी जड़ें सत्य की धरती में फैली हुई हों। हिंसा की व्यवस्था का सम्मान करना और हिंसा के प्रत्यक्ष दर्शन या आक्रमण पर प्रलाप करना, यह तो भयग्रस्त मानव का क्रन्दन है, सशक्त मनुज की चुनौती नहीं। हमें पशु-शक्ति का सामना मानवीय शक्ति से करना है, हिंसा को चुनौती देनी है।

हिंसक व्यवस्था का बीज केन्द्रीकरण है। केन्द्रीकरण सृष्टि का एक भारी असत्य है। इस मौलिक असत्य पर प्रहार करना होगा। इसके बिना हम हिंसा को चुनौती नहीं दे सकेंगे। प्रकृति में ईश्वर ने विकेन्द्रीकरण की योजना रखी है। धरती पर सब जगह मानव विकेन्द्रित है, पानी, आकाश और हवा बिखरी पड़ी है, धरती बिखरी पड़ी है, पशु-पक्षी, खनिज, पहाड़, नदी, समुद्र, ये सभी यत्र-तत्र, सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। भूख विकेन्द्रित है और भोजन-उत्पादन के साधन भी विकेन्द्रित हैं। इस विकेन्द्रीकरण की योजना को हम पहचानेंगे, तभी हम सुखी हो सकेंगे।

आज हमने बड़े बड़े राज्य बनाये हैं, उन राज्यों में जनतन्त्र चलाया, फिर भी शासन की सत्ता आखिर एक आदमी के हाथ में रख दी। बड़ी बड़ी मिलें चलायीं, भीमकाय मशीनें लगायीं और मनुष्य को बेकार रहने के लिए या हिंसा के साधन खोजने के लिए खुला छोड़ दिया। खेती के क्षेत्र में केन्द्रित व्यवस्था, बड़े बड़े फार्म आदि का प्रयोग किया और मनुष्य के बजाय वस्तु की प्रतिष्ठा पैदा की। जब तक हम यह सब नहीं छोड़ेंगे, तब तक हिंसा नहीं मिटेगी।

विकेन्द्रित व्यवस्था : एकमेव मार्ग

इन सबसे बचने का एक ही रास्ता है। यह रास्ता विशुद्ध मानवीय और ईश्वरीय है। वह मार्ग है विकेन्द्रीकरण। इसे सर्वोदय या सबके उदय का विचार कहते हैं। इस विचार में मनुष्य कभी भी मनुष्य के खिलाफ खड़ा नहीं होता। यह विचार राष्ट्रीयता के संकीर्ण घेरे को तोड़ कर विश्व-मानव की दृष्टि से चिन्तन करता है। इस विचार में केन्द्रीकरण की कोई गुन्जाइश नहीं है। इस विचार की मूल विशेषता यह है कि यह आत्मज्ञान और विज्ञान के सन्देशों का समन्वय करके कहता है कि "मैं मेरे की तंग दीवारों को तोड़ कर अपनत्व का क्षेत्र उतना विस्तीर्ण कर लेना चाहिए, जितना विस्तीर्ण यह गगन है, जितनी विस्तीर्ण यह धरा है।" सुख-दुःख सब कुछ बाँट कर भोगने के लिए जब मानव समाज तैयार हो जायेगा एवं मानव जीवन में से होड़ एवं विरोध का अन्त होगा, तभी मानवता सच्चे अर्थों में प्रतिष्ठित होगी, तभी संसार में सुख फैलेगा और शान्ति हो सकेगी।

मूल इकाई गाँव

मानव समाज की संगठित मूल इकाई गाँव है। विश्व शान्ति का कोई भी आयोजन हमें मनुष्य और उसके गाँव से आरम्भ करना होगा। जो कुछ गाँव में होगा, उसका बड़ा स्वरूप ही संसार में होगा। गाँव में द्वेष और विग्रह है तथा 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का नियम (वर्तमान युग में—'जिसका बहुमत उसका शासन') चालू है, तो संसार में अणु और उद्जन बम का होना स्वाभाविक है। परन्तु यदि गाँव में प्रेम, सेवा, शान्ति, सहकार और सुख है, तो संसार में भी वही होगा। अतः हमें गाँव से आरम्भ करना है। हमारी अशान्ति की मूल जड़ है सम्पत्ति का झगड़ा। व्यक्तिगत मालकियत रहेगी, तब तक हम एक होकर नहीं रह सकेंगे। अतः इस राक्षस का वध करना चाहिए। गाँव की सारी धरती पर गाँव के सब लोगों का बराबर हक है। यह पहला कदम है—इसे ग्रामदान कहते हैं। इसके बाद गाँव एक परिवार यानी ग्रामपरिवार बने। पीछे ग्राम संकल्प प्रकट हो। ग्राम-संकल्प का अर्थ यह है कि गाँव के लोग आवश्यकता के अनुसार उत्पादन, व्यसन मुक्ति और कच्चे माल का बन सके, वहाँ तक गाँव में ही पक्का माल बनाने का संकल्प करें। अपने गाँव के उत्थान के लिए खुद योजना बनावें, उसे क्रियान्वित करें और ग्राम लक्ष्मी को गाँव के बाहर जाने से रोकें। बच्चों को उद्योग [illegible] और धर्म की शिक्षा दें तथा ग्रामराज का आदर्श चरितार्थ करें। तभी विश्व शान्ति की स्थापना होगी। विश्वशान्ति की स्थापना के लिए विश्वराज नहीं, ग्रामराज चाहिए।

"स्वगत"

मोतीलाल केजरीवाल

विचित्र मनस्थिति में पड़ा हूँ। कुछ प्रकट न करूँ तो आत्मद्रोह माना होता है। प्रकट करूँ, तो डर है कि बुद्धिभेद उत्पन्न हुआ सा कहीं न दीख पड़े! फिर भी नम्रतापूर्वक विचार प्रकट कर रहा हूँ।

सन् १९२० के पहले इस देश में सार्वजनिक सेवा की भावना भिन्न-भिन्न रूपों में दीखती थी। कहीं शुद्ध सामाजिक सेवा के रूप में, या कहीं साहित्यिक [illegible] का ओढ़ना ओढ़ कर, तो कहीं धार्मिक बाना धारण करके वह प्रकट होती थी। कुछ युवक देश सेवा की भावना में मस्त हुए देह, धन और प्राणों की आसक्ति न रख कर क्रान्तिकारी बन कर अपने सिर का सौदा करते हुए घूम रहे थे। गांधी एक मशाल लेकर आया। फलतः आत्मशुद्धि, त्याग, सेवा आदि की पावन भावना से लोग ओत-प्रोत हो गये।

तत्कालीन वायसराय के पास बापू ने सन् १९३० में जो ऐतिहासिक पत्र भेजा था, उसमें शासनकर्ताओं के शाही खर्च, शान शौकत तथा भारत की गरीबी और बेबसी का एक सुन्दर चित्र खींचा गया था। गांधीजी ने उस पत्र में अपने हृदय को उँड़ेला था और प्रकट किया था कि उस समय का शासन खर्च, शासकों का वेतन आदि भारत की आर्थिक दुरवस्था को अधिक बढ़ाने वाला एवं अनैतिक है। इसी आधार पर तत्कालीन विदेशी शासन को उन्होंने शैतानी शासन के नाम से सम्बोधित किया था। सन् १९३४ की कराची कांग्रेस के अधिवेशन ने मौलिक अधिकारों का संकेत करते हुए कुछ ऐसी ऐतिहासिक बातें रखी थीं, जिनसे हमें यह प्रतीत होता था कि आजादी के बाद भारत का शासन-खर्च कम से कम होगा। तत्कालीन राष्ट्रीय समाचार-पत्रों ने उस समय के बढ़े हुए खर्च को जी भर भर कर कोसा। "कोई हरिजन लड़की राष्ट्रपति हो"—ऐसे लेख पू० गांधीजी ने लिखे। किसीने कुछ भी समझा हो, मैंने यही समझा था कि गांधी के नेतृत्व में चलने वाले कांग्रेस के कार्यकर्ता निष्कपट होकर त्याग का मन्त्र जप रहे हैं और इसके फलस्वरूप जो स्वराज्य आयेगा, उसमें कम खर्च से प्रशासन चलाया जायगा और, गांधी के शब्दों में, देश के करोड़ों मूक मानवों की बात पहले सोची जायगी।

लगभग चालीस वर्ष का एक जमाना बीत गया। काफी पानी गंगा-यमुना की नदियों में बह गया। गांधी नाम से अभिहित करोड़ों मूक मनुष्यों का भी-भार गांधी चला गया। हम आजाद भी हो गये। आज भी देश में अनेक संस्थाएँ विभिन्न विचारों को लेकर देश की सेवा का नाम ले रही हैं। उनका जिक्र मुझे नहीं करना है। पर मेरे मन में बात यह आयी कि गांधी के प्रति परम श्रद्धा तथा बात-बात में उनका नाम उच्चारण करने वाले व्यक्तियों की दो धाराएँ इस देश में बन गयीं। जगद्गुरु भगवान् शंकराचार्य का नामोच्चारण करके वेदान्त एवं अद्वैत का पाठ सुनाने वाले जैसे भिन्न-भिन्न गद्दियों के मालिक बन कर करोड़ों पर अधिकार रखने वाले बन गये, वैसे ही गांधी वालों में से कुछ शासन विभाग हाथ में लेकर इन्द्र के स्वर्ग वैभव के भोगने वाले बन गये और कुछ रचनात्मक कामों के नाम पर करोड़ों रुपयों का वारा-न्यारा करने वाले बन गये।

मैंने देखा कि जो लोग हाथ में पुनी और कन्धे पर रुई का झोला लेकर देहातों में घूमते थे, वे हवाई जहाज तथा वातानुकूलित गाड़ियों से कम में सफर नहीं करते। पहले दर्जे की टिकट से कम में तो चलना ही नहीं है। एक जगह एक रचनात्मक कार्य संबन्धी शिविर का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन कर्ता वातानुकूलित गाड़ी से आये और सभामन्दिर को सुशोभित करने के लिए आमन्त्रित महानुभाव हवाई जहाज से आये। सौ मील से अधिक की यात्रा करके तो कई मोटरें आयी थीं।

मन ही मन सोचता हूँ कि तुम्हें तुम्हारे गुरु द्वारा भी बेवकूफ बनाते हैं। कन्धे पर आठ सेर का झोला लिये हुए तुम देहातों में चक्कर लगाते हो। कहीं खाने को रूखा भोजन मिला और कहीं उसके लिए भी एकादशी! जिस ग्रामस्वराज्य के लिए तुम जूझ रहे हो, उसकी भी तो कभी यही दशा न हो जायगी? दूसरी तरह के ये भाव जो ऊँचे गगन में उड़ रहे हैं—वह जवाब देते हैं कि "हमारी आलोचना न करो और विचारों का प्रचार करते हुए प्राणों की आहुति उसके करने में दे दो, जिसका कि यह प्राण है।" फिर भी एक विचार यह आता है कि दुराचार, दुष्प्रवृत्ति, दुर्मार्ग का विरोध तो अवश्य करना चाहिए। गांधीजी ने भी शासन के बढ़े हुए खर्च एवं गरीबों की उपेक्षा करने वाली नीति का विरोध करने के लिए ही तो अपनी आवाज बुलन्द की थी। अब हम क्यों नहीं करें?

नागोर जिले का कार्य-विवरण

देश के सामाजिक कार्यकर्ताओं में गांधीजी के चले जाने के बाद जो मायूसी-सी आ गयी थी, भूदान यज्ञ के द्वारा उनमें नयी जान-सी आयी और गांधीजी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय दर्शन को फलित करने के फलस्वरूप उक्त कार्यक्रम पर सब जुट गये। भारत के सभी प्रांतों में भूदान आंदोलन संचालित होने लगा। राजस्थान में भी इसका संयोजन करने के लिए प्रांतीय भूदान-समितियाँ बनीं, जिसके संयोजक श्री गोकुलभाई भट्ट बने तथा इन्हीं की प्रेरणास्वरूप इस जिले में १५ दिसंबर '५३ को भूदान यज्ञ का प्रादुर्भाव श्री बद्रीप्रसाद स्वामी वकील द्वारा हुआ।

पदयात्राएँ : जिले में करीब करीब सभी तहसीलों में पदयात्राओं द्वारा लोगों में अहिंसक पद्धति से अपनी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक समस्याएँ सुलझाने के लिए विचार प्रचार किया गया। फलस्वरूप भूदान यज्ञ में हजारों बीघा जमीन प्राप्त हुई। ग्रामदान का भी विचार प्रचार किया। अभी तक जिले में अधिक ग्रामदान नहीं हुए हैं। फिर भी इस दिशा में प्रयास जारी है। जिले में भूदान, ग्रामदान और सम्पत्तिदान के कार्य को बढ़ावा देने के फलस्वरूप देश के महान नेता स्व. श्री श्रीकृष्णदास जाजू, श्री जयप्रकाश नारायण और सुश्री विमला बहन ने समय-समय पर यात्राएँ कीं। नागोर तहसील के २०० गाँवों में सघन पदयात्राएँ भी आयोजित की गयी थीं। जिले में २६ जनवरी से ८ मार्च '५७ तक जिला-व्यापी अखण्ड पदयात्रा श्री बद्रीप्रसाद स्वामी, जिला निवेदक के संयोजकत्व में करीब ६० गाँवों में की गयी थी। ६ मार्च से १० मार्च '५९ तक विनोबाजी की पदयात्रा भी परबतसर, मकराना, कुचामन सिटी, नीमोद, डाबड़ा आदि ग्रामों में हुई थी, जिसमें जिले के सभी मंत्रीगण, एम. एल. ए., एम. पी. व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उनकी पदयात्रा में साथ रह कर विचारविमर्श द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान किया।

शिविर-सम्मेलन : कार्यकर्ताओं में आन्दोलन के प्रति जो भी वैचारिक कमियाँ हैं, उनका निवारण करने, आगे की कार्य-योजना बनाने और जिले में आन्दोलन को व्यापक बनाने के संबंध में जिला, शहर व ग्रामीण स्तर पर शिविर व सम्मेलन समय समय पर आयोजित किये गये। सर्वप्रथम चाडी ग्राम में ग्रामराज सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री गोकुलभाई भट्ट ने की। लोगों में आन्दोलन के प्रति काफी निष्ठा जाग्रत हुई तथा भूदान यज्ञ में भूमि भी अर्पित की गयी। ३० दिसंबर '५५ से १ जनवरी '५६ तक जिले का सर्वोदय शिविर व सम्मेलन मकराना में आयोजित किया गया था, जिसमें जिले के सभी दलों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और अपना अधिक समय भूदान में लगाने का संकल्प किया।

राजस्थान प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन भी मकराना में २७ से ३१ अक्टूबर '५६ तक श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में हुआ। देश के कई सुप्रसिद्ध विचारक इसमें सम्मिलित हुए थे। इस अवसर पर एक खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शिनी भी आयोजित की गयी थी।

नागोर तहसील के गाँवों में एक सघन पदयात्रा भी आयोजित की गयी थी। इसी अवसर पर, ३० अप्रैल '५७ को नागोर में ग्राम स्वराज्य सम्मेलन भी किया गया था। उसमें तहसील के करीब-करीब सभी गाँवों के पंच व सरपंच इकट्ठे हुए थे, जिन्होंने इस क्रान्ति-यज्ञ में अपना सहयोग देने का संकल्प किया। नागोर तहसील के करीब-करीब सभी गाँवों ने अपनी तहसील से भूमिहीनता मिटाने के लिए थोड़ी थोड़ी जमीन दान में दी, जिसका वितरण कुछ का हाथों हाथ और कुछ का बाद में कर दिया गया। इस अवसर पर गाँव मुनवासो तथा पीथोलाव ग्रामदान भी हुए।

राष्ट्रीय पर्वों पर सामूहिक कार्य होते रहे। १८ अप्रैल '५७ को परबतसर, १८ अप्रैल '५८ को गोरावा में ग्रामस्वराज-सम्मेलन आयोजित किये गये, जिनमें जिले के काफी कार्यकर्ता व जनता ने भाग लिया।

ग्राम-विकास क्षेत्र तथा ग्राम-निर्माण : जिले में जो ग्रामदान हुए हैं, उनमें सर्वोदय दृष्टिकोण से विकास कार्य करने के लिए ६ ग्रामदान विकास क्षेत्र बनाये गये : (१) मुनवासी क्षेत्र, (२) श्रीरघुनाथपुर, (३) भवानी गाँव, (४) गोरावा, (५) श्रीकृष्णपुरा और (६) मांगवा। प्रथम पाँच सेवा केन्द्रों को राजस्थान समग्र सेवा संघ व मांगवा सेवा-केन्द्र को राजस्थान गांधी स्मारक निधि संचालित कर रही है।

गाँव मुनवासी में एक विद्यालय भवन व पानी का पक्का टाँका सरकारी व गाँव की सहायता से बना है। गोरावा में राजस्थान समग्र सेवा संघ की ओर से दो कमरे व एक हौज निर्मित हुआ है। श्रीकृष्णपुरा में एक तालाब और एक सर्वोदय विद्यालय भवन निर्माण हुआ है। श्रीरघुनाथपुर में सरकारी सर्विस बनायी गयी है, जिसके पूरा के लिए प्रयत्न चल रहा है। इस क्षेत्र में दो और नये गाँव ग्रामदान हुए हैं तथा करीब करीब सभी गाँवों में ग्राम संकल्प भी हो गये हैं। जिले की जो सर्वोदय संस्था निर्मित हुई, उसके द्वारा यहाँ वस्त्र स्वावलंबन का कार्य चालू करने का सोचा जा रहा है।

सर्वोदय विचार प्रसार : जिले के केन्द्र नागोर में सर्वोदय स्वाध्याय मंडल का निर्माण १ जनवरी '५८ से हुआ है। मकराना में भी सर्वोदय विचार-केन्द्र चल रहा है। सर्वोदय कार्यालय की तरफ से १ जनवरी '५८ से एक मासिक सर्वोदय-बुलेटिन भी प्रकाशित किया जाता है। उसमें जिले के कार्य की प्रगति, विनोबा के मुख्य विचार दिये जाते हैं।

इस तरह जिले में सर्वोदय विचार को लोगों में प्रसारित करके उसके कार्यक्रम, भूदान ग्रामदानादि की जो फलश्रुति हुई है, वह इस तरह है :

(१) भूदान-दाता	२०३४	भूमि दान, बीघा ५४६७०
(२) वितरित भूमि	३७८०४ बीघा	१४७७ परिवारों में
(३) ग्रामदान	१८	गोरावा, भवानी गाँव, तिलोकपुरा, श्रीकृष्णपुरा, उबाजुवास की ढाण, कलकत्तों की ढाणी, धोकलिया, गुढा, चारणवास, श्रीरघुनाथपुर, बाडोलाई की ढाणी, रायसिंहपुरा, श्यामपुरा, रोडी खीन्वसी, मुनवासी, पीथोलाव, जूसरी, हरनावा,
(४) पदयात्रा	८०० गाँवों में	२ हजार मील
(५) सर्वोदय-पात्र चालू	१६९	७ जगह

(६) शांति सैनिक १६, लोक सेवक १३, ग्राम संकल्प २६ गाँव

जिला सर्वोदय कार्यालय, मकराना

—मोहनलाल शर्मा

—०—

विनोबाजी की पदयात्रा से

सितंबर के दूसरे सप्ताह में सुश्री विमलाबहन योरप की यात्रा से लौटीं और सीधी विनोबाजी के पास पहुँची थीं। श्री दादा धर्माधिकारी, हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री जैनेन्द्रकुमारजी भी चन्द दिन साथ रह कर गये। श्री ढेबर भाई, श्री राधाकृष्ण बजाज, श्रीमती मदालसाबहन, तीनों 'गोसेवा संघ' की चर्चा के लिए आये थे। इन मेहमानों के साथ विनोबाजी की विभिन्न विषयों पर चर्चा हुआ करती थी।

सुश्री विमलाबहन से विनोबाजी ने पूछा—"योरप में हमें (सर्वोदय-सेवकों के) सबक लेने लायक कौनसी चीजें हैं?" विमलाबहन ने कहा—"वहाँ 'क्वेकर्स' के काम का मुझ पर बहुत अच्छा असर रहा। उन लोगों के साथ मैंने चन्द दिन बिताये। उनकी कोई खास संघटना नहीं है, फिर भी वे एक साथ काम करते हैं। एक मन से (युनानिमसली) निर्णय लेते हैं। बैठक में किसी विषय पर मतभेद हो, तो पाँच मिनट सब मौन रखते हैं और बाद में 'युनानिमसली' निर्णय लेते हैं। अगर मतभेद न मिटे हों, तो वह विषय स्थगित रखते हैं। उनका मौन, शान्ति के लिए उनकी कोशिश, यह सब सराहनीय है। 'क्वेकर' यह नाम उनके विरोधकों ने दिया है। भक्ति से 'क्वेकर' की बॉडी (शरीर) 'क्वेक' होती थी, इसलिए उपहास से उनको यह नाम दिया है। अब वे अपने को 'फ्रेंड्स' (मित्र) कहलाते हैं। हिन्दुस्तान में भी कुछ 'क्वेकर्स' हैं। हमारे सर्वोदय सेवकों को इनसे बहुत लाभ मिलेगा।"

विनोबाजी ने 'क्वेकर्स' के काम की सराहना करते हुए कहा—"'क्वेकर' याने 'विप्र'। विप्र में 'विप्' धातु है। इसका अर्थ है ज्ञानी, प्रकाश देने वाला। शरीर का कंप (भक्ति से) हो, यह भी अर्थ है और भक्तिमान, ऐसा भी अर्थ है। ये तीनों अर्थ 'विप्र' शब्द में समाये हैं। इसलिए उनके लिए यह बिलकुल सार्थक शब्द है।" आगे कहने लगे—"संस्कृत का हरएक शब्द मुझसे बोलता है। मराठी अब मेरी मातृभाषा ही है, इसलिए मुझे वह आती है। परन्तु संस्कृत के जैसा हरएक मराठी शब्द मुझसे नहीं बोलता है। संस्कृत में हरएक शब्द धातु से बना है, इसलिए वह बोलता है। दूसरी किसी भी भाषा में ऐसा नहीं है।"

—कुसुम देशपांडे

—

आरोहण के चरण

प० बंगाल अखंड पदयात्रा

पं० बंगाल की अखंड पदयात्रा वर्षा काल के कारण श्री चारुचंद्र भंडारी ने स्थगित की थी। वह पुनः ४ जुलाई से श्री दिनेशचंद्र मुखोपाध्याय द्वारा चल रही है। ९ सितंबर तक की बीरभूम जिले की २०३ मील की पदयात्रा में विचार-प्रचार किया गया।

तमिलनाड अखंड पदयात्रा की प्रगति

१६ मई को श्री जगदकाशर्मा द्वारा तमिलनाड अखंड भूदान पदयात्रा का शुभारंभ हुआ था। पार्टी दल ने ८ सितंबर तक की ६६९ मील की पदयात्रा में २०२ गाँवों में प्रचार किया। २१६ भूमिहीनों में ३६५ एकड़ भूमि वितरित की गयी। ४० एकड़ भूमि का नया भूदान मिला, श्री ४ व्यक्तियों को उसी जगह वितरित कर दिया। करीब ११८ रु० की साहित्य बिक्री हुई। अभी मदुराई जिले में पदयात्रा चल रही है। रामनाड जिले के मदूर तालुका में अधिवीरन-पट्टी गाँव का ग्रामदान जाहिर हुआ।

ग्राम-निर्माण

महाराष्ट्र : बेलगाँव जिले में मेहलगाँव केंद्र के ९ परिवारों को फसल के लिए बैंक से कर्ज मिला। लेकिन कानूनी कारणों से और परिवारों को नहीं मिल सका। फिर भी इन ९ परिवारों ने अन्य ६ निराश्रित परिवारों को अपना ही मान कर प्राप्त कर्ज का बँटवारा करके गाँव के सामूहिक जिम्मेदारी पर कर्ज वापस करने का निर्णय लिया। बरसात के लिए सिर्फ ३-४ घरों में ही थोड़ा सा अनाज संग्रह है। इस विकट परिस्थिति में कुछ परिवारों ने थोड़ा थोड़ा अनाज देकर गाँव के लिए अनाज-भांडार शुरू किया। इंग्लैंड से प्राप्त संपत्तिदान की सहायता से लोगों ने श्रमदान द्वारा एक कुआँ बाँध कर तैयार किया। गाँव के झगड़ों का निपटारा गाँव में ही होता है। गाँव के लिए आवश्यक ट्रैक्टर सामूहिक रूप से खरीद कर वितरित किये गये। उक्त जिले के कुसूर केंद्र में गाँव के १२० एकड़ भूमि की फसल को सब गाँव वालों ने मिल कर काटा। एक एकड़ भूमि में सामूहिक परिश्रम करके प्राप्त फसल से गाँव के लिए अनाज भांडार चलाने का संकल्प किया गया। श्रमदान से गाँव का रास्ता बनाया जा रहा है। केंद्र-कार्यालय के लिए भी श्रमदान किया गया।

कोल्हापुर जिले के ग्रामदानी गाँव, चिजूर में इस वर्ष २७ एकड़ धान की फसल जापानी पद्धति से की गयी है। अन्य ग्रामदानी गाँवों में भी इस वर्ष जापानी पद्धति के प्रयोग हो रहे हैं।

प० खानदेश जिले के अक्राणी-अक्कलकुआँ के ग्रामदानी क्षेत्र में अभी अनाज वितरण कार्य हुआ। अब तक १७५ परिवारों में १२५ मन अनाज वितरित किया गया। यहाँ सुधरी हुई पद्धति से खेती करने का प्रयत्न भी हो रहा है। उस दृष्टि से २५० कंपोस्ट गड्ढे बनाये गये। इस क्षेत्र की योजना तैयार करने के लिए १५ गाँवों का सर्वे किया गया। वृक्षारोपण, प्रौढ़ शिक्षा, सामूहिक खेती आदि नवनिर्माण-कार्य चल रहे हैं।

बिहार : जिन आदाताओं को भूदान प्राप्त जमीन से बेदखल कर दिया गया था, उनकी समस्याओं को सुलझाने में दरभंगा जिले के ग्रामोदय संघ, कोइलख ने मदद की। ग्रामोदय समितियों द्वारा पाँच स्थानों पर बालवाड़ी चलायी जा रही हैं। कोइलख गाँव की हरिजन बस्ती के हरएक परिवार में चरखा चल रहा है।

सर्वोदय-पात्र

बिहार : सारन जिले के कुछ गाँवों में सर्वोदय पात्र का कार्य सघन रूप से हो रहा है। कार्यकर्ता स्थायी रूप से काम कर रहे हैं।

दरभंगा जिले के ग्रामोदय संघ, कोइलख द्वारा अगस्त में १५० सर्वोदय-पात्र स्थापित किये गये।

महाराष्ट्र : पूना शहर में डॉ॰ सौ॰ ताराबाई लिमये गत वर्ष से सर्वोदय पात्र का कार्य कर रही हैं। १०० घरों में सर्वोदय-पात्र रखवाये। उनमें से ३० घरों की महिलाएँ स्वयं हर माह अनाज केंद्र में पहुँचाती रहीं। ५० घरों से अनाज इकट्ठा करना पड़ता था। २० महिलाएँ कभी अनाज देतीं और कभी असमर्थता बताती रहीं। इस तरह १ जुलाई '५८ से १ जुलाई '५९ तक १०० पात्रों द्वारा प्राप्त अनाज से ४३४ रु० ६१ न० पै० जमा हुए। उसमें से महाराष्ट्र सर्व सेवा संघ को भेजा गया। ३२५ रु० शांति सैनिकों को दिया, ४८ न० पै० अक्राणी महाल के कार्यकर्ताओं को भेजे और ३६ रु० ८० न० पै० गत वर्ष की बाकी जमा है।

सौ॰ सीताबाई दातार भी पूना में सर्वोदय पात्र का कार्य करती हैं। इसलिए गत वर्ष के और इस वर्ष के, इस तरह कुल १८२ सर्वोदय पात्र नियमित चल रहे हैं। मार्च '५९ से जुलाई '५९ के अंत तक सर्वोदय-पात्रों द्वारा २४१ रु० ८३ न० पै० जमा हुए। विनोबा जयंती के अवसर पर पूना में २५ नये सर्वोदय पात्र स्थापित किये गये।

प० खानदेश के चालीसगाँव शहर में ११ सर्वोदय पात्र चल रहे हैं।

प. बंगाल : हुबली शहर में श्री ललितमोहन घोष सर्वोदय पात्र आंदोलन चला रहे हैं। अनाज खुद इकट्ठा करके कार्यकर्ताओं को उसके द्वारा सहायता देते हैं। श्री घोष कलकत्ता के टाटा कंपनी में काम करते हैं। अभी तक ७२ सर्वोदय पात्र उन्होंने स्थापित किये। वे सर्वोदय पात्र का सारा हिसाब हर माह नियमित रूप से भूदान कार्यालय को भेजते हैं।

विनोबाजी की पंजाब के कांगड़ा जिले की पदयात्रा का कार्यक्रम

अक्टूबर ता० १४ धागियारी, १५ कांगड़ा, १६ ज्वालामुखी रोड, १७ बनखंडी, १८ देहरा गोपीपुर, १९ ज्वालामुखी, २० नादौन, २१ गरली, २२ प्रागपुर।

विनोबाजी का पता :

मार्फत—श्री अवतारचंद मेहता, पो० पठानकोट (पंजाब)

तार : MEHTA, फोन २५२

शांति-सेना

असम राज्य शांति-सेना शिविर और लोकसेवक सम्मेलन

कामरूप जिले के अन्तर्गत मध्य बारका गेरुवा गाँव के बारका बुनियादी निकेतन में १५ सितम्बर से १७ सितम्बर तक असम राज्य शांति सेना शिविर हुआ। शांति-सेना शिविर में राज्य के विभिन्न जिलों के १५ शांति सैनिकों ने भाग लिया। शांति सैनिकों की योग्यता बढ़ाने की दृष्टि से जिला और प्रांतीय रूप से तीन शिविर चलाने का निर्णय किया गया है। भूदान ग्रामदान और सर्वोदय विचार का व्यापक प्रचार करने के लिए हर जिले में एक शांति सैनिक के नेतृत्व में जिला पदयात्री दल का संगठन करने का निश्चय हुआ। शांति-सैनिकों की सर्वसम्मति से प्रांत के शांति सेना संयोजक की जिम्मेदारी श्री रविकांत सन्दिकेजी को सौंपी गयी है।

१८ सितम्बर से २० सितम्बर तक असम राज्य के लोकसेवकों का सम्मेलन हुआ। राज्य के ७ जिलों से ७९ लोकसेवक और सेविकाओं ने सम्मेलन में भाग लिया। नेतृत्व श्री द्वारिका बरुवाजी ने किया। असम राज्य सर्वोदय-मंडल की संयोजिका श्री अमलप्रभा दास को सर्वसम्मति से चुना गया। मंडल की योजना बनाने के लिए ६ सदस्यों की एक समिति बनायी गयी है। जिले में सर्वोदय-विचार का व्यापक प्रचार करने की जिम्मेवारी हर जिले के लोकसेवकों को सौंपी गयी।

सम्मेलन के कार्यक्रम के समय में ही १६ ता० को गेरुवा और आसपास के ८ गाँवों के करीब डेढ़ सौ प्रमुख लोगों को बुलाकर ग्राम-नेता सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। २० ता. को नजदीक के बागानपारा गाँव में इस अंचल के लोगों की सभा में विचार प्रचार किया गया। अंत में २१ सितम्बर को सम्मेलन के बाद शांति-सैनिकों और कुछ लोकसेवकों की एक बैठक हुई, जिसमें प्रत्यक्ष काम में आने वाली असुविधाएँ, पदयात्री दल का संगठन और कामरूप जिले के व्यापक प्रचार के संबंध में चर्चा हुई।

समाचार-सूचनाएँ :

गैस प्लैंट प्रशिक्षण-शिविर

गांधी स्मारक निधि की भंगी-मुक्ति समिति की ओर से ता० १४ से २१ नवंबर '५९ तक सफाई विद्यालय, क्यारा में एक गैस प्लैंट प्रशिक्षण शिविर शुरू होगा। शिविर में प्रात्यक्षिक के साथ गोबर और मलमूत्र से गैस बनाने वाले गैस प्लैंट के बारे में पूरी जानकारी दी जायगी। रचनात्मक संस्थाएँ, कम्युनिटी प्रोजेक्ट, ब्लॉक डेवलपमेन्ट एरिया आदि की तरफ से आने वाले और बांध-काम में सामान्य जानकारी रखने वाले सज्जनों को शिविर में प्राथमिकता दी जायगी। लेकिन खुद की हैसियत से आने वाले व्यक्तियों को भी प्रवेश मिलेगा।

शिविरार्थियों की ठहरने तथा भोजनादि की व्यवस्था विद्यालय की तरफ से की जायगी। ठहरने का शुल्क रु० तीन आवेदन-पत्र के साथ भेजना पड़ेगा, जो प्रवेश न मिला, तो वापस भेज दिया जायगा। भोजन और जलपान का शुल्क प्रतिदिन रु० १ और पूरे सत्र का रु० पंद्रह पेशगी देना पड़ेगा।

प्रवेश के लिए आवेदन पत्र श्री आचार्य, सफाई विद्यालय, पो० क्यारा, जि० सूरत के नाम पर ता० २५ अक्टूबर '५९ के पहले पहुँच जाने चाहिए। याद रहे कि बिना लिखित पूर्वसूचना के कोई भी सीधे आ पहुँचने का कष्ट न करें।

गांधी निधि भंगी-मुक्ति समिति —कृष्णदास शाह, मंत्री

फतेहपुर जिले का ५१००० गुण्डियों का संकल्प

१७ सितंबर को फतेहपुर नगर (उ० प्र०) के प्रमुख नागरिकों, विभिन्न पक्षों और संस्थाओं के नेताओं तथा हरिजनों की संयुक्त बैठक में संकल्प किया गया कि २ अक्टूबर से १२ फरवरी तक ५१००० गुण्डियाँ श्रद्धांजलि रूप में अर्पित की जाय।

मुंगेर जिला सर्वोदय-सम्मेलन

मुंगेर जिला (बिहार) सर्वोदय-सम्मेलन १६-१७ अक्टूबर को करने का निश्चय किया गया है। पचबीर गाँव के भाइयों ने यह सम्मेलन अपने यहाँ आयोजित करने का आमंत्रण दिया है।

क्षमा-याचना

ता० २५ सितम्बर के "भूदान-यज्ञ" में पृष्ठ १० पर "खाद्य समस्या और उसका स्थायी हल" शीर्षक से जो लेख छपा है, उसमें दूसरे कॉलम में ऊपर से ५ वीं पंक्ति में 'पिकेटिंग' और उसके बाद के पैरा की आखिरी से पहली पंक्ति के अन्त में 'प्रदर्शन' ये शब्द गलती से छपे हैं। उसके लिए क्षमाप्रार्थी हैं। —संपादक

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, टे० नं० ११९१
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति २ आना

हिमाचल की गोद में

मनमोहन चौधरी

कश्मीर यात्रा पूरी करके विनोबाजी ने फिर पंजाब, राजस्थान होकर भारत के मध्य की ओर लौटने के पहले हिमाचल प्रदेश के छोटे-से राज्य की यात्रा पूरी कर लेना तय किया। पठानकोट में नये सर्व सेवा संघ की बैठक के लिए तीन दिन रुकने के बाद वे हिमालय की ओर बढ़े। वैसे हिम के अंचलों का राज्य तो पठानकोट के बाद ही शुरू हो गया था, लेकिन हिमाचल प्रदेश में प्रवेश २८ सितंबर को हुआ। उसके पहले के पड़ाव पर ही हिमाचल के अग्रगण्य सर्वोदय सेवक श्री धर्मवीर शास्त्री, कस्तूरबा-निधि की प्रान्तीय संचालिका श्री गौरा माता, भूतपूर्व मुख्य मंत्री पं० पद्मदेवजी वगैरह स्वागत के लिए आ गये थे।

हिमाचल एक छोटा-सा राज्य है। कुल पाँच जिले हैं। जनसंख्या सिर्फ ११ लाख है, जो दूसरे किसी राज्य के एक जिले की आबादी के बराबर है। राज्य हिमालय की गोद में ही बसा हुआ है। चारों ओर ऊँचे पहाड़ ही पहाड़! पहाड़ों के बीच छोटी-छोटी नदियों में कल कल, छल-छल करती, पत्थरों से टकराती, उछलती गिरि नदियाँ या खड्ड। उसी के आस-पास और पहाड़ों के गात्र पर बड़ी मेहनत से बनायी गयी सीढ़ियों के मुआफिक सँकरी क्यारियों के सहारे यहाँ के थोड़े से मेहनती और सरल किसान जीते हैं। उनके गाँव भी पहाड़ के ढाल पर दो तीन या चार पाँच घरों की छोटी छोटी बस्तियाँ होती हैं। ये घर भी सीढ़ी के जैसे एक के ऊपर एक। कहीं छत के पीछे थोड़ी-सी जमीन उसके साथ समतल,*मानों छत पर ही मकई के खेत! हाँ, कहीं-कहीं बड़े गाँव भी हैं। खास कर के बड़ी सड़कों के किनारे। यहाँ व्यापारी बसते हैं। सरकारी दफ्तर, बंगले, डाक-घर आदि भी यहाँ होते हैं। लोगों का मुख्य आधार खेती है। जंगल से लकड़ी आदि का संग्रह कर के भी कुछ लोग बेचते हैं। भारत के दूसरे कई राज्यों की तुलना में यद्यपि यहाँ के गरीब उतने गरीब नहीं हैं, न बहुत बड़े अमीर ही यहाँ हैं, फिर भी लोगों की हालत अच्छी नहीं है। जमीन तो थोड़ी ही है, और काफी बँटी हुई है। कुछ थोड़ी सी जमीन भी अब घटती जा रही है। जैसे श्री धर्मदेव शास्त्री ने बताया, यहाँ हर साल हजारों एकड़ जमीन कट कर बरबाद हो रही है। मृत्तिकाक्षय यहाँ की एक बड़ी भारी समस्या है।

विनोबाजी की यात्रा इस राज्य के एक ही जिला, चंबा में चल रही है। यहाँ से वे फिर पंजाब में कांगड़ा जिले के रास्ते प्रवेश करेंगे। हिमाचल का पहला पड़ाव ककिरा गाँव में था। यह गाँव बड़ा है। इससे नजदीक बकलोह में फौजी छावनी है। विनोबाजी के आगमन के कारण गाँव उत्साह और आनन्द से भरा हुआ था। जिले के मुख्य सरकारी अधिकारीगण राज्य की सरहद पर स्वागत के लिए गये हुए थे। गाँव के प्रवेश-पथ पर स्त्री पुरुष तथा लड़के लड़कियाँ कतार बाँध कर व्यवस्थित खड़े थे और रामधुन गा रहे थे। पदयात्रियों की टोली नजदीक आयी तो जय जगत् की गूँज सुनायी दी। फूल तथा सूत की मालाएँ लेते हुए विनोबाजी आगे बढ़े। साथ चलने के लिए या दर्शन के लिए लोगों में जरा सी भी धक्का-धुक्की नहीं थी। जिस शान्त, व्यवस्थित, उत्साह का दर्शन यहाँ हुआ उसकी पुनरावृत्ति हर पड़ाव पर देखने को मिलती। यह हिमाचलवासियों का एक सौम्य-गुण है।

ककिरा में सुबह की सभा में विनोबाजी ने हिमाचल प्रदेश में आने के आनंद को व्यक्त करते हुए कहा कि "आज नहीं, पचास साल पहले ही बचपन में मेरी यह इच्छा थी कि मैं घर छोड़ कर कभी हिमालय की यात्रा करूँगा। हिमालय के नाम से ही मैंने घर छोड़ा और काशी आया। वहीं से गांधीजी के साथ मेरा संपर्क हुआ। और मैं जो चीज हिमालय से हासिल करना चाहता था, वही मुझे आश्रम के कामों में से मिल गयी। फिर भी हिमालय की बात मेरे मन में सतत रही है। जब मैंने पीर-पंजाल लाँघा तब भी यह बात मेरे मन में थी। वहाँ से १३॥ हजार फुट की ऊँचाई पार करनी पड़ी। सैलाब (बाढ़) के कारण मार्ग तो बहुत ही कठिन बन गया था। फिर भी ईश्वर-कृपा से हम पार उतरे। अब हिमाचल प्रदेश के पहले पड़ाव पर हम पहुँचे हैं। जिस हिमाचल के नाम से मैंने घर छोड़ा था, वहाँ पहुँच कर मुझे कितना आनन्द हो रहा है, आप ही उसकी कल्पना करें। हिमाचल के नैसर्गिक सौंदर्य के लिए नहीं, लेकिन उसकी ब्रह्म विद्या की खोज में मैं हिमाचल में आना चाहता था। मेरी ब्रह्म-विद्या की भूख तो शान्त हुई है, मगर उसकी सामूहिक साधना की तमन्ना आजकल मुझे बहुत है।"

फिर परंधाम में ब्रह्म विद्या मंदिर की स्थापना का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि "भारत में ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ निकलेंगी तो पुरुषों ने जो धर्म-विचार फैलाया है उसमें पूर्ति होगी और उसकी त्रुटियाँ सुधरेंगी। उन्होंने बताया कि मैंने तो अपनी जिंदगी के बत्तीस साल ध्यान, धारणा, सेवा, अध्ययन आदि में बिताये और अब गांधीजी की तरह ही सत्याग्रह शक्ति की खोज में निकल पड़ा हूँ। आज जैसे घर बैठे ही बम के बड़े-बड़े अस्त्रास्त्र पृथ्वी के इस पार से उस पार भेजे जा सकते हैं, वैसे ही हमें अहिंसा की ऐसी शक्ति खोज निकालनी होगी, जिसका प्रयोग एक स्थान पर किया जाय तो सारी दुनिया पर असर होगा। दान-प्रवृत्ति में मुझे इस शक्ति की कुछ झाँकियाँ मिली हैं।"

उन्होंने यह आशा प्रगट की कि हिमाचल में हजारों वर्षों से अगणित ऋषियों ने जो तपस्या की है, उसका असर यहाँ की हवा में भरा पड़ा होगा और वह अब काम करेगा। सारा हिमाचल प्रदेश ग्रामदान में मिलने पर उसकी नैतिक ताकत भी बढ़ेगी और सत्याग्रह-शक्ति भी प्रगट होगी। कोरापुट के साथ उसकी तुलना करते हुए उन्होंने बताया कि पहाड़ के लोगों को मिलजुल कर काम करने की आदत होती है, इसलिए यहाँ भी हजारों ग्रामदान आसानी से मिल सकते हैं। हिमाचल की यात्रा में यही उनके प्रवचनों का ध्रुव पद रहा है।

हिमाचल में यात्रा का आरंभ बहुत ही शुभ रहा। प्रथम दिन १०० एकड़ भूदान तथा दो गाँवों के ग्रामदान घोषित किये गये। ककिरा में विनोबाजी का निवास श्री हरिगिरि महाराज की देखरेख में संचालित अद्वैत आश्रम में था। महाराजजी यहाँ कई वर्षों से आ बैठे हैं और अपने आश्रम के जरिये आस पास के गाँवों से संबंध भी रखते हैं। विनोबाजी से उनकी वेदांत के सिद्धान्तों के बारे में चर्चा हुई। शाम की सभा में विनोबाजी ने बहुत ही प्रांजल तथा मार्मिक ढंग से समझाया कि श्री शंकराचार्य का अद्वैत सिर्फ पारिभाषिक नहीं है वह अनुभव सिद्ध है। "अविनयमपनय विष्णो"—श्लोक का विवेचन करते हुए उन्होंने कहा कि उसमें श्री शंकर ने 'भूतदया विस्तारय' यह प्रार्थना की है और एक दूसरे प्रख्यात श्लोक में "नारायण करुणामय शरणं ते" कहा है। इसलिए चित्त का करुणादिक गुणों के विकास से ही अद्वैत की साधना सिद्ध होगी और मन के ऊपर उठने से ही चित्त शांत होगा। भूदान ग्रामदान आदि कार्यक्रम इसी अद्वैत साधना के सोपान हैं।

श्री महाराजजी की चेष्टा से ही निकट का एक ग्रामदान मिला था। अब विधिवत् लोक-सेवक बन गये और उन्होंने घोषित किया कि उनके आश्रम का उपयोग अब लोक सेवक तथा शांति-सैनिकों की तालीम के लिए होगा। वे अगले पड़ाव तक साथ चले और सभा में उन्होंने ग्रामदान का विचार बहुत ही सरल और मार्मिक ढंग से समझाया।

श्री गंगारामदासजी एक दूसरे सन्यासी हैं, जो १०-१५ साल से महाराष्ट्र से आकर हिमाचल की सरहद के नजदीक पंजाब के धार गाँव में बसे हैं। उन्होंने वहाँ गाँवों की सेवा काफी की है और सार्वजनिक प्रयत्न से बड़े-बड़े जिनाहर आदि बनाये हैं। ये भी लोक-सेवक बने हैं। तीसरे हैं बनीखेत के—जो हिमाचल का तीसरा पड़ाव था—श्री सच्चिदानंदजी महाराज। ये भी यहाँ एक छोटा-सा आश्रम चलाते हैं। विनोबाजी उनके आश्रम का दर्शन लेने के लिए गये थे। महाराजजी भी लोक सेवक बने हैं। इस प्रकार से हिमालय की गोद में छिपे हुए साधकों का योग अब सर्वोदय आरोहण का मिल रहा है और विनोबाजी को बहुत आनंद है कि इस तरह से अच्छे अच्छे गहरे विचार के लोक सेवक आज यहाँ मिल रहे हैं।

मनोला, यात्रा का चौथा पड़ाव था। यहाँ के ग्राम पंचायत के अन्दर ११ गाँव हैं। उसके अध्यक्ष श्री लक्ष्मण देवजी एक उत्साही, कार्यक्षम तथा भावनावान सज्जन हैं। खबर मिली कि यह सारा पंचायत ग्रामदान हो सकता है और शायद डलहौजी से रात को ही यहाँ रवाना हो गये। आधी रात तक यहाँ लोगों से चर्चा चली और मनोला की ग्राम पंचायत ने सारे पंचायत को ग्रामदान करने का संकल्प किया। विनोबाजी ने पंचायत के पंचों को ग्रामदान की बारीकियाँ समझा के बतायीं, और आखिर पंचायत का संकल्प एक प्रस्ताव के रूप में शाम की प्रार्थना-सभा में घोषित किया गया। श्री लक्ष्मण देवजी ने ग्रामदान की भावना को चालना देने के लिए शुरू में ही अपनी थोड़ी-सी जमीन का पूरा का पूरा दान कर दिया। वे अध्यक्ष भी लोक सेवक बने हैं। वे जिला के पंचायतों की सभा के भी अध्यक्ष हैं और उनको पूरा आत्म विश्वास है कि अपने पंचायत में ग्रामदान का नमूना कर दिखाने पर वे पूरे जिले के सारे पंचायतों को ग्रामदान के लिए राजी करा सकेंगे। इन्हीं जैसे पुराने लोक सेवकों के साथ इस प्रकार के नये लोक-सेवकों के दम से हिमाचल प्रदेश के बारे में विनोबाजी की आशा कुछ मजबूत होती जा रही है। कार्यकर्ताओं की ओर उनके लिए सर्वोदय-पात्र की योजना अब उनकी मुख्य मांग है। हर पड़ाव पर सर्वोदय पात्र का काम भी शुरू हो रहा है और कुछ न कुछ पात्र भी मिल रहे हैं। विनोबाजी इसको चालू रखने की जिम्मेवारी बहनों पर डाल रहे हैं। यहाँ सभाओं में बहनें जिस संख्या में तथा उत्साह से भाग ले रही हैं, उससे यह आशा बंध रही है कि वे इस काम को आगे चलायेंगी। ●●●

हो। तो फिर प्रेमक्षेत्र बनाने के लिए हमारी रोजमर्रा की सेवा क्या होगी? जाहिर है कि इस सेवा का सम्बन्ध उनकी रोजमर्रा की समस्याओं से ही हो सकता है।

इसलिए मेरे खयाल से सवाल यह नहीं है कि हम लोगों की रोजमर्रा की समस्याओं में दिलचस्पी लें या न लें, वह तो हमें जरूर लेना चाहिए, पर सवाल यह है कि उनमें दिलचस्पी लेने का हमारा तरीका क्या हो? राजनैतिक कार्यकर्ता अपना चुनाव क्षेत्र बनाते हैं। लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए वे उनकी दैनंदिन समस्याओं में दिलचस्पी लेते हैं। पर उनका तरीका क्या है? वे लोगों के अभाव-अभियोग सुन लेते हैं, और फिर सरकार के जरिये, उन चीजों को दूर करने की कोशिश करते हैं। उनके लिए यही तरीका हो सकता है, क्योंकि वे उसमें मानते हैं और उसी काम के लिए जनता के सामने पेश होते हैं। हमारी दृष्टि से उसका नतीजा अच्छा नहीं होता, राज्य का विस्तार बढ़ता जाता है, उसका जाल मजबूत होता जाता है और लोगों का परावलम्बन बढ़ता जाता है—यह दूसरी बात है। पर हम क्या कह कर चले हैं? हम यही कहते हैं न कि लोक-शक्ति का विस्तार होना चाहिए, लोगों को अपनी ताकत बनानी चाहिए और उस ताकत से ही उन्हें अपने मसले हल करने चाहिए। तो मसलों से हम बेखबर या तटस्थ तो नहीं होंगे, लेकिन हम उन मसलों को लेकर बाहर से उन्हें हल करने की कोशिश में लगने की बजाय लोगों को ऐसी तरकीबें सुझायेंगे, जिससे वे मिलजुल कर, अपनी ताकत से अपने मसलों को हल कर सकें। अगर हम भी उनका अभाव-अभियोग लेकर इधर उधर दौड़ते रहें, कभी इस महकमे में तो कभी उस महकमे में, कभी इस अफसर के पास तो कभी उस अफसर के पास, तो हमें उसमें यश तो मिलेगा ही नहीं, क्योंकि हम उस खेल से बाहर हैं, लेकिन उलटे हम लोकनीति की अपनी बात को ही काट देंगे। इस तरह हम दोनों तरह से निकम्मे साबित होंगे।

अतः हमें रोजमर्रा की समस्याओं में नहीं उलझना चाहिए, इसका मतलब यही है कि आज उन समस्याओं को सुलझाने के जो प्रचलित तरीके हैं, उनमें नहीं उलझना चाहिए। हमें अपनी सारी शक्ति, बुद्धि और कुशलता का उपयोग करके अपने विचार और आदर्श के अनुकूल उनके हल खोज कर लोगों के सामने रखने चाहिए और इस तरह उन्हें हल करने में लोगों की पूरी मदद करनी चाहिए। फिर आज लोगों की तात्कालिक समस्याओं में और हमारे कार्यक्रम में हमें अन्तर दीखता है वह नहीं रहेगा। हम लोगों की ताकत से ही उनके मसले हल करवाना चाहते हैं, इसका मतलब भी यह नहीं है कि लोगों की समस्याओं को सुलझाने के लिए आज जो सरकारी या बाहरी मदद उपलब्ध है वह हम न लें। पर उसीसे मसला हल होगा, इसलिए उसके पीछे दौड़ने में अपनी ताकत लगाने की बजाय हम पहले लोगों में मिल-जुल कर उस समस्या का मुकाबला करने की ताकत और परिस्थिति पैदा करें। फिर बाहरी मदद भी अपना स्थान ले लेगी। मिसाल के लिए बीमारी के इलाज की बात लीजिये। गाँव में इलाज की व्यवस्था नहीं है। सरकार या जिला बोर्ड या ब्लाक आदि विभागों के पास उसका कुछ बजट और योजना रहती है। हम सब जानते हैं कि वह योजना और वह पैसा हर गाँव में नहीं पहुँच सकता, उसके लिए वह नाकाफी है। वह काफी हो भी नहीं सकता। तो हम सरकार के पास या सम्बन्धित महकमे के पास गाँववालों की अर्जी ले जाने के बजाय उनको इस बात के लिए प्रोत्साहित करेंगे कि गाँव में ही मिलजुल कर कम से कम सामान्य चिकित्सा की योजना वे खड़ी कर लें। जो अपने पाँवों पर खड़ा होता है, उसकी मदद करने के लिए भगवान को भी दौड़ना पड़ता है, ऐसा कहते हैं। तो निश्चय मानिये कि फिर सरकार तो खुशामद करेगी और मदद देगी। आगे जाकर जब इस तरह जगह जगह ज्यादा लोग इस काम को उठा लेंगे, तो इस तरह के कामों में मदद करने का काम ही सरकार छोड़ देगी। वही हम चाहते भी हैं। इसी तरह शहर में सफाई की समस्या लीजिये। म्युनिसिपैलिटी को तो अपना काम करना ही है। पर पहला काम हम यह करें कि लोग अपने अपने घरों और मुहल्लों की सफाई की योजना बनायें और चालू करें। मैंने छोटी और आसान बातों की मिसालें पहले जानबूझ कर ली हैं। आसान चीजों को हल करते हुए हम आगे बढ़ें तो मुश्किल समस्याओं को हल करने की ताकत भी लोगों में पैदा होती जायगी। उदाहरण के लिए बेकारी की मुश्किल समस्या! हम गाँववालों को इस बात के लिए प्रेरित करेंगे कि वे मिलजुल कर सोचें कि गाँव में सबको काम मिले। इसके लिए ग्रामोद्योग के संकल्प करायेंगे और उन्हें पूरा करने में भरसक मदद करेंगे।

घूसखोरी, छोटे मोटे सरकारी कर्मचारियों का आतंक इत्यादि जो चीजें हैं, वे लोगों में चेतना आने से अपने आप कम हो जायेंगी। लोगों में उनका मुकाबला करने की ताकत भी आपस के संगठन से बढ़ेगी। छिटपुट मामले लेकर उनके पीछे पड़ने की कोशिश हम करेंगे तो हम उलझ जायेंगे। मौका [illegible] और जिन कामों में तुरन्त सहकार हो सकता है, उन कामों में लोगों का सहकार शुरू करा देंगे तो हम देखेंगे कि इस तरह की समस्याएँ भी अपने आप सुलझती जायेंगी।

इस तरह अगर हम सोचेंगे तो हम समझ जायेंगे कि हमें लोगों की दैनंदिन समस्याओं की उपेक्षा नहीं करना है, बल्कि उनके बारे में सचेत और सक्रिय रहना है। मैं समझता हूँ, आन्दोलन की यह मनशा कतई नहीं है कि हम लोगों की [illegible] से उदासीन रहें। पर यह सावधानी हमें जरूर बरतनी चाहिए कि हम राजनैतिक कार्यकर्ताओं की तरह उन्हें सुलझाने के परम्परागत तरीकों में न उलझ जायें। हम उन समस्याओं को सुलझाने के ऐसे तरीके सोचें, निकालें और चलायें, जिनका हमारे विचार के साथ अनुबन्ध हो। ऐसा हम करेंगे तो हम देखेंगे कि सर्वोदय पात्र, शांति सेना आदि कार्यक्रम भी इन रोजमर्रा की समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक कदम मालूम होंगे। फिर हमें यह शिकायत नहीं रहेगी कि लोग हमारी सुनते नहीं हैं, हम सर्वोदय-पात्र की बात उनसे कैसे करें? हमारा सारा काम एक ही [illegible] से अनुप्राणित होगा कि लोग अपनी खुद की ताकत महसूस करें, उसे संगठित [illegible] और उसके जरिये अपनी समस्याएँ हल करने के लिए आगे बढ़ें। फिर सर्वोदय पात्र, शान्ति सेना, ग्रामदान सब उसमें से आयेगा ही। इस तरह सर्वोदय विचार का अनुबन्ध लोगों की रोजमर्रा की समस्याओं के हल के साथ बिठाने की कला हमें सीखनी होगी।

दूसरे प्रश्न याने कार्यक्रम के प्रतिकारात्मक पहलू की चर्चा हम अगले अंक में करेंगे।

विनोबाजी के पत्रों से • निर्मला देशपांडे

गुजरात के महान तपस्वी रविशंकर महाराज, जो विनोबाजी से आठ साल बड़े हैं, अखंड पदयात्रा करते हुए सर्वोदय-पात्र का काम कर रहे हैं। विनोबाजी कहते हैं कि "महाराज मेरे लिए एक स्फूर्ति-स्थान हैं। अहमदाबाद में वे घर-घर में पहुँचते हैं, तीसरी-चौथी मंजिल पर भी चढ़ जाते हैं और घर घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना करवाते हैं। यह सारा मुझे बड़ा प्रेरणादायी मालूम होता है।" हाल ही में गुजरात के एक कार्यकर्ता को लिखे हुए पत्र में विनोबाजी ने कहा: "रविशंकर महाराज जिस निष्ठा से काम करते हैं, उसका अंश भी हमारे तरुण कार्यकर्ताओं को मिले तो पहाड़ जैसा काम होगा।

◆ ◆ ◆

ओरिसा के ७५ साल के वृद्ध अंधे तपस्वी आचार्य हरिहर दास की पदयात्रा का स्मरण तो विनोबा को गद्गद कर देता है। श्री मनमोहन चौधरी को लिखे हुए पत्र में विनोबाजी ने कहा: "आचार्य हरिहर दास की यात्रा हम सबके लिए बड़ा स्फूर्ति-स्रोत है। जिसने शरीर को अपने से अलग पहचान लिया, वह कभी अंधा होता ही नहीं।"

◆ ◆ ◆

सर्वोदय पात्र के बारे में विनोबाजी ने एक कार्यकर्ता को लिखा: "लोग कहते हैं कि सर्वोदय पात्र का कार्यक्रम उत्पादक नहीं है। लेकिन मैं कहता हूँ कि वह बुद्धिवर्धक है। आचार्य चाणक्य कहते हैं कि मेरा सब कुछ जाये, लेकिन बुद्धि न जाये 'बुद्धिस्तु मा गान्मम'। हम सिर्फ एक ही दफा लोगों के पास जायें और यह अपेक्षा करें कि लोग सतत सर्वोदय पात्र में अनाज डालते रहें, तो हमें लाभ क्या मिलेगा? मैं मानता हूँ कि सर्वोदय पात्र का कार्यक्रम एक सौम्य सत्याग्रह का नमूना है। हमें उसे बुनियाद पर स्थिर करना चाहिए।"

◆ ◆ ◆

विनोबाजी १९५१ में जब उत्तर प्रदेश की यात्रा कर रहे थे, तब तमिलनाड का एक युवक कार्यकर्ता, जिसके दिल में शांति की लगन थी, उनके पास पहुँचा। उसने देखा कि लोग बड़े प्यार से जमीन का दान दे रहे हैं। बड़े जमींदार चाहे दान दें या न दें, छोटे किसान सुदामा के चावल दे रहे हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का इनकार कौन कर सकता है? फिर भी उसका दिल कहता था कि तमिलनाड में यह नहीं हो सकता है। 'गंगा के किनारे जो हो सकता है, वही कावेरी के किनारे भी हो सकता है?' विनोबाजी की यह दलील उसकी बुद्धि ने मान ली। लेकिन जब वह तमिलनाड लौटा तो कावेरी पुत्रों ने उसकी [illegible] भूदान से और दिल श्रद्धा से भर दिया। यह था जगन्नाथन्, जिसने तमिलनाड में भूदान का झंडा उठाया। पाँच साल बाद जब विनोबाजी तमिलनाड पहुँचे, तब [illegible] ग्रामदान' वाली बात की। [illegible] जिले में ग्रामदान की गंगा शुरू निकली। लेकिन जगन्नाथन्‌जी के मन में [illegible] [illegible] दुनिया भर में ग्रामदान की बात करूँ और अपने ही गाँव में ग्रामदान न हो तो मैं किस मुँह से जनता के सामने पेश आऊँ?' उनके गाँव के बहुत सारे किसान राजी हो रहे थे, लेकिन एक धनी किसान अड़ा हुआ था। वह धनी किसान था, [illegible] के रिश्तेदार! जगन्नाथन्‌जी अपने रिश्तेदार को विनोबाजी के पास ले आये [illegible] कामयाब हुए, लेकिन विनोबाजी रिश्तेदार को समझाने में नाकाम रहे। यह सन् १९५६ की घटना है, जब विनोबाजी कन्याकुमारी में थे।

सन् १९५९ में कश्मीर में हिमालय के [illegible] पर विहार करते हुए विनोबाजी के पास एक तार पहुँचा: "हमारे गाँव का ग्रामदान हुआ। मेरे रिश्तेदार ने [illegible]

के लिए आपको कन्याकुमारी से कश्मीर, ढाई हजार मील चलना पड़ा। –जगन्नाथन्' विनोबाजी ने उन्हें तार द्वारा बधाई दी।

◆ ◆ ◆

विनोबाजी ने कर्नाटक की यात्रा समाप्त कर महाराष्ट्र में प्रवेश किया, तब से नाटक के दो युवक कार्यकर्ता, श्री अरैयर और कुट्टी अखण्ड पदयात्रा करते हुए [illegible] गाँव में संदेश पहुँचा रहे हैं। विनोबाजी ने उनकी उस उपासना को बल [illegible] ने वाला पत्र लिखा : "अब यह समझ लीजिये कि आध्यात्मिक श्रद्धा की बुनियाद [illegible]र जो खड़े हैं, वे ही भूदान ग्रामदान की क्रान्ति में आगे टिकने वाले हैं। इधर [illegible] ने पहाड़ी रुद्र रूप धारण कर लिया था और पीर पंजाल, जो कि १३५[illegible] ऊँचा है, हमें लाँघना था। लेकिन परमात्मा ने सब तरह से हमारी रक्षा की और [illegible] पहाड़ हम आसानी से लाँघ सके। यह एक संकेत है। हमको बहुत बड़ा आध्यात्मिक पहाड़ चढ़ना है। मैंने उसके लिए कमर कस ली है। और जो उत्साह की ज्योति आठ साल पहले मेरे दिल में प्रज्वलित हुई थी, उससे आज कई गुना तेज हो गयी है। कोई साथी छोड़ कर जाते हैं, तो मेरे दिल में हँसी आती है। मैं यह ईश्वर की लीला समझता हूँ। महाकवि टेनिसन का वाक्य है—Men may come and men may go, but I go on for ever—लोग आयें, लोग जायें, मैं तो सतत बहता ही रहूँगा। बोल रहा है, एक झरना। वह झरना क्या है, साधक के गतिमान जीवन का और साधना का एक मूर्तिमान संकेत है।

"मेरे प्यारे साथियो, तुम निडर रहो, भगवान तुम्हारे साथ है। सब तरह से वह तुम्हें सम्हालेगा। और ॐ ॐ का गीत गाते हुए बढ़े चलो, बढ़े चलो। मैं इधर कश्मीर में घूम रहा हूँ, तुम कर्नाटक में घूमते चलो। यह निश्चित समझो कि तुम्हारे और हमारे बीच फासला देखने में १२०० मील का है, पर अन्दर में शून्य मील है, बल्कि एक इंच भी नहीं है। 'यथा प्रदीप्तात् पावकात् विस्फुलिंगा'—एक पावक प्रदीप्त हुआ है, उसका एक स्फुलिंग विनोबा है, दूसरा कुट्टी, अरैयर है। शकल में हमारी एक छोटी सी जमात है, लेकिन जैसे एक छोटा सा अग्नि स्फुलिंग कपास की राशि को भस्म कर सकता है, वैसे हमारे अंतर की ज्योति सब प्रकार की निराशाओं को भस्म करने वाली है। तुकाराम ने लिखा है—'जेथें जातो तेथें, तू माझा सांगाती।' (मैं जहाँ जहाँ जाता हूँ, तू मेरे साथ है।)"

◆ ◆ ◆

आध्यात्मिक साधना की लगन वाली एक बहन को विनोबाजी ने लिखा : "यह निश्चित समझना चाहिए कि अगर भक्तिपूर्वक तप करोगी तो सद्गुरु तुम्हारी खोज में ढूँढ़ते हुए वहाँ पहुँचेंगे, और वे नहीं पहुँचेंगे तो उनके बाप पहुँचेंगे, जिसे हम परमेश्वर कहते हैं, जो कि अंतर्यामी है।"

◆ ◆ ◆

एक कार्यकर्ता ने अपने दिल का दर्द सुनाते हुए लिखा था कि कमजोर शरीर उसके हर अरमान को मिट्टी में मिला देता है। विनोबाजी ने पत्रोत्तर में लिखा : 'परमेश्वर की क्या लीला है! कमजोर शरीर में भावनावान आत्मा की स्थापना करके उस आत्मा को तड़पते हुए देखने में ईश्वर को क्या खुशी मालूम होती है, वही जानता है!"

◆ ◆ ◆

कश्मीर यात्रा की समाप्ति निकट आ रही थी। किसी ने कहा कि 'अब हिमाचल प्रदेश की यात्रा में भी फिर से पहाड़ चढ़ना होगा।' विनोबाजी हँसते हुए कहने लगे : "अब पीर पंजाल लाँघने के बाद मामूली पहाड़ चढ़ना कोई बात ही नहीं है। अब तो हमें माँट एवरेस्ट, नन्दादेवी आदि के ही बारे में सोचना होगा।"

◆ ◆ ◆

पदयात्रा के साथ विनोबाजी का चिन्तन चक्र भी चलने लगता है। एक साथी से उन्होंने कहा : "भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा था कि तुम बहुजनहिताय बहुजनसुखाय चरथ भिक्खवे (विहार) करते रहो। हमारे कार्यकर्ता भी उस आदेश का पालन करेंगे तभी काम होगा। गुरु नानक ने लिखा है '[illegible] [illegible] सच्चाइ। नानक [illegible] [illegible]।' भगवान ने जिसे भगवद् गुणगान की प्रेरणा और शक्ति दी, वह बादशाहों का बादशाह है। भगवान ने नारद को, तुलसीदास को यह प्रेरणा दी थी, तो वह आपको और [illegible] वैसी प्रेरणा क्यों नहीं देगा! ईश्वर गुणगान हमारा प्रमुख कार्य है। जो [illegible] तुम कहो वहीं घूमेंगे। फिर भूदान, ग्रामदान का काम उसके 'बाय प्रोडक्ट' के तौर पर होगा। नारद ब्राह्मण था, [illegible] था। मीराबाई रानी थी, फिर भी निरन्तर [illegible] [illegible]।' यहाँ [illegible] हम क्यों नहीं रखते हैं! उधर वे लोग चन्द्रमा पर [illegible] भेज रहे हैं, तो हमें ऐसी भक्ति होनी चाहिए कि हम ब्रह्माण्ड में ही नहीं, बल्कि उसके उस पार भी भगवान का नाम ले जायेंगे। लोग के वैसे भजन [illegible] सुनेंगे और देखेंगे क्या [illegible] है!"

एक संस्मरण

सर्वोदय-आंदोलन के लिए एक फ्लचर : कुष्ट-सेवा!

रविवार, २० सितंबर '५९! प्रातःकाल की बेला! बिहार के गया जिले में नवादा से कादिरगंज की ओर जाने वाली सड़क पर बिहार प्रांतीय अखण्ड पदयात्री दल अग्रसर हुआ। पाँच छः मील चल कर शांत, एकांत स्थान में नित्य की भाँति सभी यात्री 'गीता प्रवचन' पढ़ने के लिए रुके। नजदीक में एक गाँव दिखाई दे रहा था। मालूम करने पर पता चला कि यह "पौरा" गाँव है।

पौरा गाँव का नाम आते ही २ वर्ष पुरानी एक तसवीर आँखों के सामने आ गयी। कुष्ट सेवा केन्द्र, कसलिया का कार्य विस्तार पर था। लेकिन उपचार के लिए तथा रोगियों के लिए आज की तरह व्यवस्थित मकानों का निर्माण नहीं हो पाया था। उसी समय एक नवयुवक देखने में सुशील, शिक्षित, संस्कारवान, उस स्थान पर अपने पिता के साथ आया। उस नवयुवक का चेहरा तमतमा रहा था, कानों पर कगूरे लदे थे। हाथ पैर सूने और वेदनाशून्य थे। कुष्ट रोग की ज्वालाएँ अपने पूर्ण रूप में जल रही थीं। शरीर से भी ज्यादा उसका मन झुलसा हुआ था। चारों ओर से नैराश्य लेकर घृणा पात्र बन कर और घर वालों के लिए बोझ बने हुए उस नवयुवक को अपना सारा भविष्य अंधकार से परिपूर्ण दीख रहा था। डाक्टरों के पास गया तो वहाँ से भी उपेक्षा ही लेकर लौटा! रुपया भी खर्च किया, लेकिन निष्पत्ति कुछ नहीं निकली। कुष्ट रोग से पीड़ित अपने नवजवान बेटे को देख कर पिता परेशान था। सामाजिक प्रताड़ना, लाञ्छना और अवज्ञा पाकर बाप का दिल रोता था कि बेटे के कुष्ट हो जाने के कारण अब मेरे ब्राह्मण कुल में लड़कियों की शादी का क्या होगा? जवान बेटे की जिन्दा मौत देख रहा था बाप! एक दिन उन लोगों ने कुष्ट सेवा केन्द्र कसलिया के बारे में सुना। वे हमारे पास आये। पिता ने अपने बेटे को मुझे सौंपते हुए जो कुछ कहा, उस समय उसकी वाणी में बाप की विवशता बोल रही थी, माँ की मजबूरी बोल रही थी और बोल रहा था, नव विवाहिता षोडशी का करुण क्रन्दन! हमने इस जवान को अपने यहाँ रखा। ईश्वर की कृपा से वह दो वर्ष कुष्ट सेवा केन्द्र कसलिया में रह कर इस रोग से सर्व चिह्न मुक्त, जीवाणु मुक्त और स्वस्थ होकर वापस अपने परिवार में चला गया।

यह पौरा गाँव उसी भाई का गाँव है। कई बार मुझे इस गाँव में आने के लिए प्रेम भरा निमंत्रण मिल चुका था। आसपास के कुष्ट-रोगियों के लिए यह उदाहरण प्रत्यक्ष प्रमाण का काम करता है। इस प्रान्तीय अखण्ड सर्वोदय पदयात्रा टोली का आज का पड़ाव मंजोर था, जो पौरा गाँव से २ मील आगे है। इस गाँव से होकर सर्वोदय के कुछ कार्यकर्ता पदयात्रा करते हुए गुजरेंगे, इसकी जानकारी गाँव वालों को पर्चे आदि से हो चुकी थी। लेकिन इस टोली में कसलिया के डाक्टर भी आ रहे हैं, यह वे कैसे जानते? "गीता प्रवचन" पढ़ने के लिए बैठने से पहले इसकी व्यवस्था की गयी और केशव भाई के दो अग्रदूत तेज गति से आगे बढ़ गये। गाँव छोटा-सा ही था। खबर लगते ही जो उत्साह का संचार हुआ, उसको जिसने देखा उसीने जाना! नाश्ते की तैयारियाँ होने लगीं। हमें देखते ही नवयुवक किशन पाण्डे की माँ का वात्सल्य फूट पड़ा। उसकी पत्नी ने चूल्हे पर कड़ाई चढ़ा दी। लेकिन हम लोगों को तो वहाँ ठहरना था नहीं। सूर्य भी तेजी से तपता जा रहा था। पड़ाव पर पहुँचने का कार्यक्रम समय पर पूरा होना चाहिए था। गाँव के बाहर ही से स्वागत किया गया। आखिर समझौता किया गया और हलका जलपान स्वीकार करना पड़ा। घर पर जब जाना हुआ, तो माँ ने प्रेम भरे दिल से आँखों में प्रेमाश्रु छलका कर अत्यन्त सरलता के साथ स्वागत किया। ऐसा लगा मानो वर्षों से प्रतीक्षा में था पूरा परिवार! पर्दे के कारण पुत्रवधू को बाहर नहीं आते देख माँ ने कहा—'आजा बेटी, बाहर आजा। आज तेरे घर तेरे जीवन-दाता जो आये हैं, इनसे कैसा पर्दा!" यह वाक्य सुन कर हम लोगों के भी दिल भर गये और आँखों में पानी आ गया!

गरीब घर में इतनी जल्दी २०-३० व्यक्तियों के लिए दूध-दही जुटाना कितना कठिन होता है! लेकिन कितने उत्साह से गाँव भर से इकट्ठा करके इन लोगों ने हमें नाश्ता दिया! मकई का भूंजा भी उस दिन इतना मीठा लगा कि तृप्ति ही नहीं होती थी। केशव भाई ने आखिर अपनी दक्षिणा भी माँग ली। "भूदान-यज्ञ" के दो ग्राहक तुरंत उस छोटे-से गाँव में बन गये। सचमुच ही, दुखियों की सेवा का काम थोड़ा किया हुआ भी अनन्त गुना होकर फलता है, उसका यह एक दर्शन था।

कुष्ट सेवा का फ्लचर इस आन्दोलन के लिए किस तरह लग सकता है, इसका यह एक उदाहरण है। कुष्ट-सेवा से भी सर्वोदय का ही काम हो रहा है। यह सेवा भी आन्दोलन को बल दे रही है, इसका प्रमाण देने की अब आवश्यकता नहीं है।

कुष्ट सेवा केंद्र, कसलिया (गया) —रविशंकर शर्मा

शान्ति-सेना मंडल और हमारा कर्तव्य

विनोबा

शांति सेना का विचार तो पुराना ही है। यह शब्द भी बापू का है, कल्पना भी उनकी है। उसके लिए उन्होंने कोशिश भी की थी। वे ही उसके पहले सेनापति थे और वे ही पहले सैनिक भी थे। सेनापति के नाते 'करो या मरो' का हुक्म उन्होंने दिया और सैनिक के नाते उस पर उन्होंने अमल किया। याने उसका एक पूर्ण चित्र उन्होंने हमारे सामने कृति से, जीवन से रखा। वैसे उन्होंने शब्दों से कम नहीं समझाया, फिर भी शब्द से कम समझाया जाता है। लेकिन जहाँ तक कृति का, जीवन का ताल्लुक था, उन्होंने एक परिपूर्ण चित्र हमारे सामने रखा। जब मैं शिवरामपल्ली के सम्मेलन के लिए अकेला निकल पड़ा था, तब वहाँ से लौटते समय तेलंगाना होकर जाने का तय किया था। उस वक्त मैंने पहले ही जाहिरा तौर पर कहा था कि मैं एक शांति-सैनिक के नाते जा रहा हूँ। भूदान-यज्ञ तो फिर उसमें से बाद में निकला। परन्तु मेरा विचार शांति-सैनिक के नाते परिस्थिति को देखने का और अगर कुछ बन सकता हो तो कोशिश करने का था। इस तरह शांति-सेना का विचार मेरे मन में सतत रहा है। बापू के जाने के बाद मुझे डेढ़ साल हिन्दुस्तान भर में घूमने का मौका मिला था। वह पैदल यात्रा नहीं थी, वाहनों की थी। उस वक्त जगह जगह मैंने सर्वोदय के विषय में कहा था। उसकी एक छोटी-सी किताब छपी थी, जिसका नाम रखा गया था "शांति यात्रा"।

इस तरह यह कल्पना तो पृष्ठभूमि में थी, लेकिन स्पष्टतः शांति सेना की योजना मुझे करनी पड़ेगी, करने का प्रसंग आया है, ऐसा दर्शन मुझे केरल में हुआ। उस वक्त जब मुझसे पूछा जाता था कि यहाँ की कौनसी परिस्थिति देख कर आपने यह सोचा? तो मैं उत्तर देता था कि आज की वर्तमान परिस्थिति देख कर मुझे यह विचार नहीं सूझा, लेकिन उसमें एक भावी दर्शन था। अब वह भावी प्रकट हुआ है। वह केरल में ही प्रकट हुआ, यह अलग बात है। हिन्दुस्तान की परिस्थिति ऐसी स्फोटक है कि कहीं भी स्फोट होना संभव था, लेकिन केरल में जो हुआ, उसकी तरफ सारे हिन्दुस्तान का ध्यान खींचा गया, यद्यपि दूसरे प्रान्तों में भी कुछ-न-कुछ होता ही है। मैं तो आगे का एक और दर्शन देख रहा था कि हमारा कुछ काम याने ग्रामदान, मिल्कियत मिटाना वगैरा शांति के ढंग से क्रांति करने का काम नहीं हो सकेगा, अगर उसके साथ साथ लोगों के लिए हम याने हमारा विचार आज की हालत में भी, याने विषमता कायम रहते हुए जो हालत रहेगी उस हालत में भी, रक्षक है, ऐसा लोग महसूस नहीं करेंगे। विषमता, उच्च-नीचता वगैरा जो अशांति के कारण हैं, वे जायेंगे तो अशांति मिटेगी इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन हम इतना कह कर अपने मन को शान्त रखेंगे कि कहीं अशांति हुई तो हम क्या कर सकते हैं? हमने तो एक रास्ता ले लिया है मिल्कियत मिटाने का, रचनात्मक काम का, जो लोगों के सामने रखा है, उसे लोग मानते हैं तो ठीक, न मानें तो आज की विषम परिस्थिति में अशांति के बीज फूट ही निकलेंगे तो उसका हम क्या करें? हमने एक रास्ता सामने रखा है, उस पर लोग नहीं चलते हैं तो उसके बुरे फल उनको चखना पड़ता है, इसमें हम क्या करें? यों कह कर हम शांत रहेंगे तो शांतिमय मार्ग के हमारे शब्द शब्द ही रहेंगे। वह चीज जनता में नहीं पैठ सकेगी। उससे जनता का हृदय प्रभावित नहीं हो सकेगा और उससे अपने हृदय को भी अन्तःसमाधान नहीं हासिल हो सकेगा। इसलिए हमने क्रांति की शांतिमय प्रक्रिया जो चलायी है, उसकी भी वृद्धि के लिए जरूरी था कि हम शांति का जिम्मा उठायें। इसके मानी यह नहीं माने जायँ कि हम कोई ऐसी ताकत रखते हैं कि दुनिया को बचायें। हम तो ताकत नहीं रखते हैं, लेकिन अहिंसा [illegible] विचार वह ताकत रखता है। ऐसी शक्ति अहिंसा में है। तो उस विश्वास के साथ हमें उस दिशा में कोशिश करनी चाहिए। यों समझ कर मैंने केरल में शांति सेना का विचार प्रकट किया और तदनुसार एक छोटी-सी शांति-सेना, जिसमें केलप्पनजी भी थे, वहाँ बनायी और उसकी घोषणा की।

लोगों ने उस पर कई शंकाएँ पेश कीं और कहा कि आपने एक नया कार्यक्रम देश के सामने रखा है, तो कार्यकर्ताओं का चित्त तितर बितर होगा, उसमें चंचलता आयेगी, एकाग्रता नहीं रहेगी। हमने कहा कि ऐसी बात नहीं है, अपने काम में से ही ऐसी चीज निकलती है और इसके बिना क्रांति की प्रक्रिया आगे बढ़ना संभव नहीं है, तो उसको करने से एकाग्रता भंग हुई ऐसा नहीं कहा जा सकता। उसके बाद, शांति-सेना के लिए लोगों की सम्मति चाहिए तो उसमें से सर्वोदय पात्र का विचार निकला। इस तरह धीरे धीरे विचार आगे बढ़ता गया। देश में कुछ थोड़े शांति सैनिक बने और उन्होंने जगह-जगह कुछ थोड़ा काम किया। काम तो इतना थोड़ा था कि कुल मिला कर उसकी तरफ लोगों का ध्यान नहीं खींचा गया। लेकिन फिर भी कुछ काम हो रहा है। कहीं कुछ उपवास किये गये, कहीं कार्यकर्ताओं ने लोगों में जाकर काम किया। तमिलनाड, अहमदाबाद, बड़ौदा, उत्तर-प्रदेश, ओरिसा और बिहार में सीतामढ़ी वगैरा कई जगह कुछ छोटे मोटे शांति के काम किये गये।

लेकिन मैं सोचता था कि अब यह शांति सेना का कार्य, जगह जगह शांति सैनिक और लोक सेवक करेंगे, खादी के कार्यकर्ता भी करेंगे, उसमें दूसरे लोग चाहे पक्ष वाले भी हों, कुछ मदद देंगे, आम जनता भी मदद देगी। अब सर्व सेवा संघ का नया स्वरूप बना है तो जगह जगह जो शांति सैनिक हैं, वे वहाँ की परिस्थिति देख कर कुछ न कुछ करेंगे। यह उनका धर्म हो है। इस तरह स्थानीय लोगों पर ही काम की मुख्य जिम्मेवारी आती है। फिर भी अखिल भारत के लिए एक योजना हो, यह मैंने सोचा। इस तरह हमने यह एक मंडल बनाया जिसमें ऐसे लोग हैं, जो इस दृष्टि से सोचने वाले हैं और सब लोग उनसे सलाह-मशविरा कर सकते हैं। कभी कोई बात पूछनी हो तो पूछ सकते हैं। कभी कोई शिकायत हो तो मंडल के पास आ सकती है। इस तरह जो मंडल बना है, वह सलाह देने, कहीं कुछ हुआ तो उसका निरीक्षण करने और मार्गदर्शन करने का, काम कर सकता है, कुछ उपाय भी सुझा सकता है, और एक सर्वसामान्य वातावरण सारे भारत में पैदा कर सकता है। भारत के लोगों को उसमें कुछ इतमीनान हो सकता है कि कहीं सलाह करने का मौका [illegible] तो एक मंडल है। रेफरेंस, सन्दर्भ का एक स्थान है। इसमें ज्यादा भी यह मंडल कर सकता है। जहाँ वह जिम्मेदारी समझेगा, वहाँ अपनी ओर से कुछ कदम भी उठा सकेगा। लेकिन मामूली तौर पर प्रत्यक्ष काम की जिम्मेवारी मुख्यतः याने स्थानीय लोगों का रहेगी। उनके लिए एक 'कौंसलर' यह 'अखिल भारत शांति-सेना मंडल' रहेगा।

मेरे लिए यह पहला ही मौका है कि अपनी ओर से मैंने एक ऐसा अखिल भारत मंडल जाहिर किया है। यह जो मैंने जिम्मेवारी महसूस की वह बापू की विरासत है, जिसे टालना मेरे लिए असंभव था। अब मैं तो पैदल यात्रा कर रहा हूँ, लेकिन इसके मानी यह नहीं कि जगह जगह जो अशांति के काम बनेंगे, उसकी जिम्मेवारी से मैं अपने को बरी मान सकूँगा, यों कह कर कि मेरी यात्रा एक कोने में चलती है। इसकी जिम्मेवारी मैं अपनी मानता हूँ और उस जिम्मेवारी में हाथ बँटाने के लिए यह मंडल बना है। उन लोगों की मुझ पर कृपा है, जिन्होंने मंडल में रहना स्वीकार किया है। अगर वे इस बात को नहीं मानते तो सारी जिम्मेवारी मुझ पर आती, जिसे निभाना मेरे लिए मुश्किल हो जाता। उसके लिए कुछ आध्यात्मिक उपाय किये जा सकते थे, लेकिन वे आत्यंतिक उपाय होते हैं। हर समय आत्यंतिक उपाय करना समाज के लिए और करने वाले के लिए भी कठिन होता है। इसलिए उस जिम्मेवारी में हाथ बँटाने वाली एक संस्था बन जाती है, तो मेरे लिए जरा राहत होती है। मानसिक राहत नहीं, लेकिन स्थूल राहत होती है। इसलिए यह मंडल बनाया।

अब आपकी जिम्मेवारी स्पष्ट है। अब आपको और हमको बहुत गंभीरता से सोचना चाहिए। ऊपर ऊपर से सोचेंगे तो हम पर कौनसी जिम्मेवारी है, इसका एहसास नहीं होगा। आज हालत यह है कि हम पर जो जिम्मेवारी है, उसके लिए हम छोटे पड़ते हैं। लेकिन गणपति को चूहा ही वाहन पसंद आया। उस तरह इस महान विचार को हम ही वाहन मिले, ऐसी एक विलक्षण दशा आज हिन्दुस्तान में है। बापू ने बड़े वाहन की कोशिश की थी और बड़े वाहन पर यह बोझ हो इसका उन्होंने कोशिश की, लेकिन वह नहीं बना। इसलिए हम जैसे छोटे वाहन पर उसका बोझ पड़ा। इस हालत में हम बहुत सावधान होना चाहिए। सोचने में बहुत ध्यान रखना चाहिए।

उदाहरण के लिए, यहाँ पर एक भाई ने कहा कि मिल का कपड़ा जला दिया जाय। गांधीजी ने उनके जमाने में परदेशी कपड़ा जलाया था उसका विरोध गुरुदेव ने और एण्ड्रूज ने भी किया था और उसकी कई दफा बापू के साथ मेरी भी चर्चा हुई थी। लेकिन आज मिल का कपड़ा जलाना गांधीजी की उस कृति के साथ कोई सरोकार नहीं रखता है। उसके साथ इसकी कोई तुलना नहीं हो सकती है। हालाँकि गांधीजी के उस विचार में गुरुदेव और एण्ड्रूज ने दोष देखा, मुझे भी कुछ शंका आयी, जो मैंने बापू के सामने नम्रतापूर्वक रखी, लेकिन फिर भी वह कार्यक्रम अहिंसा में आता था। लेकिन आज मिल का कपड़ा जलाने का काम हिंसा में आयेगा। आज देश में अपने मजदूरों द्वारा पैदा किया हुआ कपड़ा जलाना, जिसके लिए लोकमत भी अनुकूल नहीं है, ऐसे कपड़े को जलाना याने परिश्रम को जलाना है। यह अहिंसा हिंसा की दिशा में ले जाने वाली प्रक्रिया है।

इसलिए हमें अधिक गंभीरता से सोचना सिखना चाहिए, जब कि हम शांति-सैनिक होने का दावा करते हैं और एक अखिल भारतीय शांति सेना मंडल की हमने स्थापना की है। विचार में जब शुद्धि रहती है तो वह वाणी में और कृति में आती है। लेकिन विचार में ही हिंसा हो तो वाणी और कृति गलत रास्ते पर जाती है, इसलिए विचार की हिंसा ज्यादा खतरनाक है। इस बात को हम समझें। (पठानकोट, २८-९-'५९)

एक नया देश : इजराइल–४

द्वारको सुन्दरानी

इजराइल में एक तरफ तो सहकार, सहयोग की धुन है, परंतु दूसरी तरफ राजनीतिक दलों की भी भरमार है। यहाँ हिब्रू में एक कहावत है–"जहाँ यहूदी दो हों, वहाँ तीन पार्टियाँ रहती हैं।" दो की दो पार्टी और दोनों मिल कर एक नयी पार्टी। "हिस्ताद्रुत" एक विशाल, स्वतंत्र-सहकारी मजदूर-संस्था है। मैं समझता हूँ कि रचनात्मक काम करने वाली मजदूर-संस्था, दुनिया में शायद यही एक होगी, परंतु इसमें दलबन्दी है। 'क्विुत्ज' सामूहिक-परिवार यहाँ २२५ हैं। उनकी केंद्रीय संस्थाएँ हैं। परंतु उनमें भी कई पार्टियाँ हैं। एक प्रमुख केंद्रीय संस्था में मैं गया। कुछ जानकारी हासिल की। उसके बाद १७ दिन एक 'क्विुत्ज' में जाकर रहा। हर रोज सुबह ७ से १२ बजे तक श्रम करता था। संध्या समय तक पढ़ता था और रात में किसी-न-किसी व्यक्ति के घर जाकर चर्चा करता था। यह 'क्विुत्ज' ३० साल का पुराना है। परंतु ७ साल पहले इसमें दो दल पैदा हुए हैं। दोनों दल समाजवादी। आखिर बँटवारा हुआ। पहली बसाहत बेची गयी, और नयी बसाहत अलग अलग बनायी गयी। अब की बसाहत सात साल की है। नाम है 'एनाट'। कुल जनसंख्या है ६१३ और जमीन है ११०० एकड़, गायें १८०, मुर्गियाँ ४०,००० रु० की हैं। उद्योगों में बेकरी, जूता बनाना, मधुमक्खी-पालन, बढ़ईगिरी, गैरेज आदि हैं। हर व्यक्ति के पीछे पूँजी है १५,८०० रुपये। खेती पटाने के लिए चार बड़े कुएँ हैं। हरएक खेत से साल में लगभग १६८ फसल लेते हैं। उत्पादक श्रम में १३५ सदस्य भाग लेते हैं। लगभग ८५ मजदूर लगाते हैं, जो उनके तत्त्व के विरुद्ध है और कुछ मदद स्कूल के विद्यार्थियों से भी हर रोज उत्पादक श्रम में लेते हैं। बाकी लोग रसोई आदि सेवा-कार्य में रहते हैं। हरएक सदस्य पर लगभग रोज १२ रुपये खर्च करते हैं और उसके द्वारा १४॥ रुपये उत्पादन होता है। हरएक सदस्य के ३६५ दिनों में से लगभग १४१ दिन उत्पादक श्रम में, २१० अनुत्पादक श्रम में और १४ दिन व्यवस्था और दफ्तर में लगते हैं। खेती में केला, नारंगी, सेब, अंगूर आदि फल मुख्य हैं। कपास, जौ, गेहूँ और गाय का घास गौण फसल है। सारी खेती मशीन के बल पर है। अतः सख्त मेहनत नहीं है।

मैंने यहाँ के लोगों के साथ काम किया, तो गहराई में जाने का अवसर मिला। सब सदस्य १८ साल से ऊपर के हैं। हर 'शब्बात' की रात में आम सभा होती है और वहाँ दिल खोल कर चर्चा करते हैं। अगले हफ्ते का काम, आपसी उलझनें, आय-व्यय आदि चर्चा के विषय रहते हैं। फैसले बहुमत से करते हैं। दो वर्ष में एक बार चुनाव करते हैं। एक मंत्री, एक खजांची, एक श्रम नियोजक, एक रसोई व्यवस्थापक और चार सदस्य इनकी प्रबंध-समिति होती है, जो बुधवार की रात में मिलती है। इसके अलावा हरएक विभाग का एक व्यवस्थापक होता है। श्रम नियोजक का काम है, हरएक विभाग को आवश्यक श्रम-शक्ति देना और सदस्यों को काम बाँटना। यह नियोजक संध्या समय भोजन-घर में आकर बैठेगा और दूसरे रोज के लिए काम बतलायेगा। नये सदस्य को एक साल शिक्षण दिया जाता है। बाद में उसकी वृत्ति देख कर बहुमत से फैसला करते हैं। अगर कोई पुराना सदस्य ठीक नहीं बरतता, तो पहले मंत्री व्यक्तिगत रूप से समझायेगा, नहीं तो प्रबंध-समिति उसको बुलायेगी। अगर वह भी कुछ न कर सकी, तो आम सभा में उसको बुलाया जायगा। ऐसा करना अपमान समझा जाता है और वहाँ का फैसला अंतिम माना जाता है।

स्त्री-पुरुषों में पूर्ण समानता है। किसी भी तरह पुरुष को ज्यादा अधिकार नहीं है, यहाँ तक कि कमरे की सफाई भी दोनों मिल कर करते हैं। व्यवहार में भी समानता है। आरंभ में काम भी उत्पादक, अनुत्पादक साथ ही करते थे, परंतु अनुभव यह आया कि स्त्रियों को उसमें शारीरिक कष्ट होता है। अब रसोई घर, तालीम, कपड़े की सिलाई धुलाई, फल-बगीचा और खेती के कुछ हलके काम स्त्रियों को दिये जाते हैं। काम में ढिलाई नहीं दीखती। कुल १५० कुटुम्ब हैं। सबका भोजन आदि सामूहिक है। केवल जेब खर्च के लिए हरएक सदस्य को साल में १२५ रु०, और बच्चों को उम्र के हिसाब से कम-ज्यादा भी मिलता है। कपड़े के लिए भी बजट है।

'क्विुत्ज' में पुरुष सुखी है। वह काम करता है। परिवार की कोई चिंता उसे नहीं। बच्चा पैदा हुआ, तब से लेकर विवाह तक, पालन पोषण, शिक्षण की व्यवस्था समूह करेगा। विवाह में वर वधू अपना चुनाव खुद करेंगे। समूह नया घर, सामान, कपड़े और शादी का प्रबंध करेगा। पिता पर कोई बोझ नहीं। बच्चों के लिए बगीचे, सिनेमा, तैरने के लिए तालाब, खेल-कूद आदि का प्रबंध और जेब-खर्च भी समूह देगा। हाईस्कूल तक तालीम सबको मिलती है। विश्वविद्यालय के लिए बच्चे की लियाकत और परिवार की जरूरत आदि का विचार किया जाता है।

कोई काम नीचा ऊँचा नहीं समझा जाता है। काम के समय पुरुष और स्त्री छोटा अंडरवेयर और बनियान पहनते हैं। संध्या समय सुन्दर कपड़े पहन कर आते हैं। सारे परिवार का प्रयत्न है आर्थिक उन्नति और जीवन की सुविधाएँ प्राप्त करना। हर घर में रेडियो है। हरएक सदस्य के पास घड़ी है। प्रयत्न है हरएक घर में एक रिफ्रेजरेटर लाने का। इसके बाद शायद मोटरकार! दिन भर काम में मस्त! किसीको फुरसत नहीं। रात में भोजन और उसके बाद, एक-दूसरे के घर जाना, मिलना, गाना, नाचना आदि। रात को १२ बजे सोयेंगे, सुबह ६ बजे उठेंगे।

एक स्थान पर मैं १७ दिन रहा। लोगों के साथ काम करता रहा। लोग प्रेमी हैं और 'सोशल' भी हैं। अतः खुल करके बातें होती हैं। धर्म के प्रति उपासना की दृष्टि यहाँ नहीं है। गोशाला में गाय को भी यंत्र बना रखा है! दूध तो खूब बढ़ाया है। दूध के हिसाब से गाय को खाना देते हैं, माँ का दूध कुछ दिन देंगे, वो भी स्तन से पीने न देकर दुह कर बाल्टी में देंगे! उस बछड़े को थोड़े दिन के बाद अमेरिका का 'मिल्क पावडर' पानी में घोल कर देंगे और उसके बाद दाने, घास पर [illegible] गाय जहाँ रखते हैं, वहाँ से गोबर, पेशाब उठायेंगे नहीं। उसके ऊपर [illegible] डाल देंगे। बदबू और मक्खियाँ खूब! तीन मास के बाद ट्रैक्टर आकर उठा लेगा। पूछने पर कहते हैं, पहले तो रोज साफ करके धोते थे, पर इसमें बहुत समय और पैसा लगता है। श्रम यहाँ महँगा है!

यहाँ सारा खेती का काम मशीन के बल पर है। बड़े से बड़े फार्म हैं। जमीन का पोत अच्छा नहीं, गहराई भी नहीं। ऊपर-ऊपर मिट्टी है, नीचे पत्थर है और जमीन ऊँची नीची है। देश भर में जमीन के कई प्रकार हैं। यहाँ इन लोगों के चार कुएँ हैं, पानी पाइप लगा कर फुहारे से देते हैं। खर्च काफी हो जाता है, पर पैदावार खूब लेते हैं। कपास में सब खर्च काट कर ५२० रु० एकड़ के लगभग पैदा करते हैं। शास्त्रीय ढंग से खेती करते हैं। एक छोटे खेत पर गया था। वहाँ हाथ के अच्छे औजार देखे। एक अनाज बोने का औजार था, जिसमें दो बीज बीच की दूरी कम-ज्यादा कर सकते हैं। एक आदमी आठ घंटे में सवा एकड़ खेत [illegible] सकता है। एक औजार निराई का, दूसरा खाद देने का था। इस तरह छोटे छ औजार भी हैं। अगर एक मनुष्य का निर्वाह ३ घंटे के उत्पादक श्रम करने होना चाहिए, तो उत्पादन के साधनों में हमें सुधार करना होगा। यहाँ के औज़ार देख कर वह संभावना लगती है।

कपड़े भी मशीन पर धोते हैं। सीने वाली मशीन भी बिजली पर ही चलती है। काम में 'स्पेशलाइजेशन' है। अंगूर के खेत में काम करने वाला बरसों [illegible] काम करेगा। एक बहन है, उसका काम है बरसों आठ घंटे कपास के खेत घूमना और रोग देखना। किसी एक काम के वे विशेषज्ञ हो जाते हैं।

काम और जीवन में आनन्द लाने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम करते हैं। अपना नाटक-घर, सिनेमा-घर है। हरएक सदस्य को साल में १५ दिन छुट्टी है कहीं भी जाकर आराम करे, तो उसका खर्च परिवार करता है। दो परिवारों [illegible] एक दैनिक पत्रिका देते हैं। एक खासा अच्छा पुस्तकालय है। 'युथ मुवमें' (युवक संगठन) से लोगों को बुलाते हैं और खुद श्रम भी करते रहते हैं। इन लो[गों] के पास तैरने का तालाब बनाने के लिए पैसे नहीं थे। योजना बनी कि ४० ह[जार] रुपये खर्च होगा। हिसाब लगा कि हरएक सदस्य अगर चार शनिवार को, 'शब्बात' छुट्टी का दिन है, उस दिन श्रमदान करें तो तालाब बन सकता है। [illegible] सारे सदस्य जुट गये। स्कूल के विद्यार्थियों ने भी ४-५ शनिवार श्रमदान किय[ा।] सबने मिल कर सामूहिक शक्ति का प्रतीक सुन्दर तालाब बना डाला।

समूह-बसाहट का जीवन १९४७ तक एक प्रकार का था और आज दूसरे प्र[कार] का है। आरंभ में ये आदर्शवादी बन कर आये थे, उनके सामने एक आदर्शवाद क्रांति की धुन थी। इस क्रांति के लिए वे हर प्रकार की कुरबानी करने को तैयार [थे।] ये लोग जो पहले आये, वे यूरप-अमेरिका में व्यापार करते थे, बड़े शहरों में रहते परंतु भला कभी व्यापारियों से देश बना है! तब उन दिनों के एक आदर्श[वादी] श्री ए. डी. गारडन ने इस कौम के सामने तीन आदर्श रखे। अपना देश, अर्थात् [य]ह देश इजराइल, दूसरा समाजवादी समाज, तीसरा नया मानव। इन आदर्शों पर पहुँ[चने] के लिए उन्होंने आवाहन किया कि यहूदी लोगों को अगर अपना देश बनाना तो जमीन को पकड़ना है, याने अपना संबंध जमीन से रखना है। समाजवाद चा[हिए] तो शोषण मुक्ति चाहिए, अर्थात् उत्पादक श्रम चाहिए, याने खेती चाहिए। [नया] मानव बनाना है, तो सहकारी जीवन चाहिए। स्पर्धा मानव को मिटा देगी, [इसलिए] सहकार चाहिए। ऊँच नीच का भेदभाव मिटा कर समानता का भाव [होना] चाहिए। अतः उन्होंने लिंग भेद, वर्ण भेद मिटाने का आदर्श रखा। शहरों में [रहने] वाले व्यापारियों ने पिछले ५० वर्षों में अपने जीवन परिवर्तन, त्याग और मेहनत [से] इस आदर्श को जीवन में उतारने की जो कोशिश की, उसका यह रूप है 'क्विुत्ज' सामूहिक जीवन। परंतु १९४८ में उनका अपना देश बना। एक मंजिल तय की। [illegible] कदम बढ़ने लगे हैं। यह इन्सानी फितरत है। अपने देश में भी आज़ाद[ी के] सिपाही आराम में लगे हैं। कुछ तो उम्र और शरीर शक्ति का भी कारण है। 'क्विुत्ज' में अपना जीवन कैसे सुखी बने, इसका विचार चलता है।

१९४७ के पहले जो आदर 'क्विुत्ज' वालों को देश में पहले था, वह आज [नहीं] रहा। गत दस वर्ष में बहुत ही थोड़े लोग 'क्विुत्ज' की तरफ बढ़े हैं। जितने भी लोग आते हैं, वे शहरों में 'मोशाव' में आते हैं। मैं समझता हूँ कि यह मान[व की] कमजोरी है। परंतु अगर भूदान जैसे मानवीय मूल्यों को क्रान्ति के साथ जोड़ दें [तो] फिर यह जीवन आगे बढ़े।

———

भावी कार्यक्रम : कुछ सुझाव

हरिवल्लभ परीख
(आनन्द निकेतन, रंगपुर)

सुमन किसीकी राह नहीं देखता। वह नियमित रूप से अपनी राह काटता रहता है। समय का तकाजा है कि हम सर्वोदय की दिशा में शीघ्र और सक्रिय कदम उठायें, जिससे नये मूल्यों की स्थापना हो, नया इन्सान बने, नये मार्ग खुलें। इस दृष्टि से नीचे लिखे अनुसार कुछ कदम हमें तुरन्त उठाने चाहिए —

(१) प्रजा में प्रेमक्षेत्र की स्थापना और उसका विस्तार।

(२) साथियों में स्नेह-संचार, मुक्त विचार व चिंतन और परस्पर विश्वास बढ़ाने के कार्यक्रम।

(३) सर्व सेवा संघ के नवगठन की इकाई को मजबूत करना। यह संगठन ग्राम, जिला, प्रांत व देश के सारे प्रश्नों को समझ कर चल सके, ऐसा हो।

(४) भूदान, ग्रामदान, संपत्तिदान, बुद्धिदान, शान्ति-सेना और सर्वोदय पात्र आदि के सब कार्यक्रमों को समाज परिवर्तन के अंग मान कर व्यवस्थित किये जायँ।

(५) हम सिर्फ हमारे सूचित कार्यक्रमों को ही नये मूल्यों की स्थापना का साधन न मानें, परन्तु समाज में, राष्ट्र में, आये दिन होने वाले राष्ट्रीय व सामाजिक प्रश्नों के हल करने के तरीकों से भी नये मूल्यों की स्थापना कैसे हो, यह कला हमें सीखनी चाहिए।

(६) लोकनीति की स्थापना के लिए लोकमत अनुकूल बनाना अनिवार्य है। इसलिए साहित्य प्रचार को व्यापक बनाया जाय। जो प्रेरणा शब्दों को पढ़ कर व कागज पर चित्रों को देख कर मिल सकती है, उससे कई गुना अधिक प्रेरणा जीवित चित्रों को देख कर मिल सकती है। अतएव व्यापक प्रचार के साथ विभिन्न क्षेत्रों में ग्राम-स्वराज्य व लोकनीति आधारित श्रमनिष्ठ समाज का दर्शन भी कराने का यत्न करें।

उपरोक्त मुद्दों को कुछ स्पष्ट कर दूँ।

प्रेमक्षेत्र की स्थापना और उसका विस्तार

स्वराज्य आंदोलन में शरीक बहुत कम लोग हुए, किन्तु 'भारत छोड़ो' की भाषा चार साल के मुन्ने से लगा कर साठ साल के बूढ़े दादा भी बोलते थे, यानी इस विचार को सबका समर्थन प्राप्त था।

किन्तु यह साफ है कि बापू के कार्यक्रमों को हम प्रजा का समर्थन प्राप्त नहीं करा सके हैं। और तो और, किन्तु उनके नजदीक वालों ने भी इसे निष्ठापूर्वक नहीं पकड़ रखा है। परिणाम यह है कि आजादी के बाद मुल्क गांधीजी की राह पर नहीं बढ़ रहा है, बल्कि उल्टी दिशा में जा रहा मालूम होता है। विनोबाजी की अखण्ड यात्रा और अनेक नामी, अनामी कार्यकर्ताओं की तपश्चर्या ने हमारे सामने एक अवसर खोल दिया है। इस अवसर से हम साल दो साल में फायदा न उठा सके तो फिर गांधीजी और सर्वोदय विचार के लिए निकट भविष्य में लंबे अरसे तक अंधकार के सिवा कुछ भी हाथ नहीं आयेगा।

इसलिए हम साथियों को नम्रतापूर्वक सुझाना चाहते हैं कि बिना विलंब किये हरएक लोकसेवक शान्तिसैनिक या सर्वोदय प्रेमी अपना प्रेमक्षेत्र निश्चित करे। कोई यह न माने कि वह इससे बँध जायेगा। प्रेम में बंधन नहीं होता, बल्कि उसे यहीं से बल मिलेगा। 'पिंडे सो ब्रह्मांडे'। प्रेमक्षेत्र के प्रश्नों द्वारा वह देश और दुनिया के प्रश्नों को ठीक समझ सकेगा। आज तक हमारा ज्यादातर चिंतन सिर्फ तन्त्र चिंतन रहा है। हम सीधे लोकसंपर्क का काम उठायें। प्रेमक्षेत्र के लोगों को बराबर मिलते रहें। विनोबाजी की यात्रा के समाचारों से अवगत करें। सर्व सेवा संघ के कार्यक्रमों से उन्हें परिचित रखें। देश व दुनिया के प्रश्नों को सुलझाने का सर्वोदय-दृष्टिकोण क्या है, यह बारबार बताते रहें। यह काम सिर्फ एकाध मीटिंग या ग्राम में भाषण देने से नहीं होगा और न पत्र पत्रिका में एकाध लेख लिखाने से ही होगा। श्री कुमारप्पाजी, श्री किशोरलालभाई आदि अधिकारी लेखकों ने ग्रामोद्योग के बारे में, गांधीजी के विचार के बारे में अपने दिनों में कम नहीं लिखा। किन्तु हम उसे जनता तक कम पहुँचा पाये। इस अनुभव से लाभ उठा कर अब हम सीधे लोगों के पास जायें, अपने प्रेमक्षेत्र के लोगों के पास जायें। मौके पर सेवा शुश्रूषा करें। सामाजिक व आर्थिक उत्कर्ष के कार्यों का संचालन उन्हीं के द्वारा हो। हम उनमें न फँसें। हमारी सेवा से उनके बीच स्नेह द्वारा और हमारे पास कुछ हो तो उस ज्ञान से उनकी मदद करें। इस प्रकार जो प्रेम स्थापित होगा, वह लोकसेवक का आधार बनेगा। इसी आधार पर नये समाज की इमारत बन सकेगी।

साथियों में स्नेह और विश्वास

मकान जैसी स्थूल वस्तु को भी मजबूत सीमेंट की जरूरत रहती है। हम अपने को नये समाज की बुनियाद और आधारस्तंभ मानते हैं। अगर हमारे बीच ताल मेल न बैठे हों, ताल से न चलते हों, दिल में दो भाव (द्विधा) हों, दिमाग टकराते हों, तो सर्वोदय का सुमधुर संगीत हम कैसे सुन पायेंगे? हम ही हमारी नहीं सुनेंगे, तो दूसरों द्वारा उसके सुनने की अपेक्षा कैसे रखेंगे? हम गाँववालों को, शहरवालों को हिलमिल कर एक परिवार की तरह रहने का आये दिन उपदेश देते हैं। हमारी

मेरा ख्याल है कि हम विश्व में प्रेम के बल पर समाज बनाना चाहते हैं। पर क्या हमने भारत के मुख्तलिफ हिस्सों में काम करने वालों में से कुछ परिवारों के साथ भी अपना पारिवारिक संबंध नये संदर्भ में स्थापित किया है? क्या अपने प्रांत या जिले के साथियों के संबंध भी हम पारिवारिक बना पाये हैं? हमने उनके कष्टों को अपना कष्ट माना है? सिवा संमेलन, सभा, मीटिंग के और कभी तफसील से मिले भी हैं? सभा, संमेलन व मीटिंग ये सब विचार-प्राकट्य के स्थान हैं, स्नेह-वृद्धि करने के ये स्थान नहीं हैं। मुक्त विचारों के कारण हमारी अलग-अलग रायें हो सकती हैं। स्नेह की वृद्धि होती है साथ-साथ काम करने से, दुःख सुख को साथ बिताने से। इसके अभाव में हम आज एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। गुरुजनों को इसकी चिन्ता है। आये दिन वे इसके बारे में हमारा ध्यान खींचते हैं। दो शक्तियाँ साथ रह कर दुगुना चौगुना काम करने के बजाय टकराती हैं। गुरुजनों को निर्णय करना पड़ता है कि ऐसी शक्तियों को साथ नहीं, अलग रखो। यह हमारे लिए चुनौती है। ये सब हमारी कमजोरियाँ हैं, इस बात का हमें स्पष्ट इकरार करना चाहिए। हाँ, सिर्फ कमजोरियाँ ही कमजोरियाँ हममें भरी पड़ी हैं ऐसी बात नहीं है, और यह भी नहीं है कि हम सर्वोदय विचार के योग्य प्रचारक नहीं बन सकते। हम जरूर बन सकते हैं। आज यही जमात है, जिससे इस प्रकार की आशा है और उस जमात के हम आशास्पद अंकुर हैं, जो जरा सी सावधानी बरतने पर गहरी जड़ जमा सकेंगे।

सिर्फ इतना करें कि हम कार्यकर्ताओं का ऐसा पारिवारिक संबंध हो, जिससे लोग तमीज न कर सकें कि ये लोग अलग अलग हैं। इस तरह के संबंध बनाने के लिए हमें एक दूसरे के साथ बिना विशेष कार्यक्रमों के कुछ दिन रहना चाहिए। साथ रहने से ही कार्यक्रम भी सूझेंगे, परस्पर विश्वास बढ़ेगा, कार्यशक्ति बढ़ेगी। बच्चों की तालीम का प्रबंध साथ हो।

सर्व सेवा संघ का नवगठन

सवाल यह है कि सर्व सेवा संघ अब मजबूत कैसे हो? व्यापकता के साथ व्यवस्थितता भी आये और स्वयम् नियंत्रण का वह आदर्श नमूना बन सके। संघ की इकाई है लोकसेवक। वह जितना तैयार होगा, संघ उतना ही व्यापक कार्य कर सकेगा। संघ ने सर्वसाधारण के लिए सेवा के द्वार खोल दिये हैं। आज तक सेवा का क्षेत्र भी सीमित सा था। कम पढ़े या अनपढ़ सेवा के क्षेत्र में बहुत ही कम आते थे। मध्यम वर्ग ही सेवा क्षेत्र में अग्रसर रहा, पर अब पंचनिष्ठा को पूर्ण करने वाला श्रमिक भी लोकसेवक हो सकता है। ऐसे १० सेवकों का एक प्राथमिक मंडल बनेगा। लोकसेवक अपनी शक्ति व भक्ति के अनुसार प्रेमक्षेत्र तैयार करेंगे। प्राथमिक मंडल के संयोजक का काम होगा कि वह बराबर इन दसों लोकसेवकों से अपना संबंध बनाये रखे। इनकी ज्ञानवृद्धि हो, जानकारी बढ़े, श्रद्धा और विश्वास बढ़े, इस तरह के कार्यक्रम उसे बनाने होंगे। वह इन दस को अपने साथी, सहअध्यायी समझे। समाज सेवा के कामों द्वारा इनकी तालीम बढ़ाये। प्राथमिक सर्वोदय मंडल हर सप्ताह मिले। अपने क्षेत्र में सर्वोदय पात्र के काम को ठीक चलाने की चर्चा करे। जिला, प्रांत या सर्व सेवा संघ से आयी सूचनाओं की जानकारी हो। विनोबा प्रवचन या भूदान पत्रों के विशेष लेखों का अध्ययन करके उस पर चर्चा हो। इस बीच जो भी सेवा शुश्रूषा के काम बन पड़े वे भी वह करेगा।

भावी कार्यक्रम

ऊपर व्यक्ति और संगठन के बारे में कहा गया है। ये हमारे धनुष हैं। भूदान, ग्रामदान, श्रमदान, संपत्तिदान, बुद्धिदान, शान्ति सेना, सर्वोदय पात्र, साहित्य प्रचार आदि सारे हमारे बाण होंगे, जो कि लक्ष्य की दिशा में लक्ष्य करके हम छोड़ेंगे। जहाँ हमारा प्रेमक्षेत्र बना, वहाँ सर्वोदय पात्र रखवाना और उसे चलाना लोकसेवक का प्रथम कार्य होगा। प्रेमक्षेत्र में सर्वोदय पात्र घर घर हों और वे बराबर चलते रहें। उस क्षेत्र में जितना भी भूदान मिला है, उसे वह दान की बातों में बँट पायेगा, क्योंकि दायरा छोटा होगा। अगर वहाँ ग्रामदान हुए हैं तो उनके हल्ला को पक्का करेगा, और ग्राम-स्वराज्य की दिशा में गाँव आगे बढ़ें इसके लिए नवनिर्माण के कामों में श्रमदान, संपत्तिदान व बुद्धिदान का संयोजन करायेगा।

विचार हमारा मुख्य शस्त्र है, इसलिए वह अपने क्षेत्र में घर घर सर्वोदय साहित्य पहुँचाने का प्रयत्न करेगा। पत्र पत्रिका भी वह पहुँचायेगा, और सेवक को साहित्य द्वारा स्थान प्राप्त होगा। साहित्य को सेवक द्वारा पढ़ा जायेगा, समझा जायेगा, और तभी सच्ची भावना से लोग सेवक का सत्कार करेंगे यानी उसके द्वारा उसके पीछे रहे हुए विचार का।

'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' वाली उक्ति सदा मेरे सामने रही है। इसलिए प्रयत्न यही रहता है कि वही लिखूँ या बोलूँ, जो कुछ मैंने अपने अनुभव से प्रत्यक्ष पाया हो। ऊपर जो भावी कार्यक्रम बताया है, उसे हमने अपने छोटे दायरे में जिस प्रकार शुरू किया है, उसका संक्षिप्त ब्यौरा देकर इसे समाप्त करूँगा।

असम में ग्राम-निर्माण कार्य

[देश भर में ग्रामदानों की संख्या अब तक लगभग ५००० तक पहुँची है। भूमि-समस्या के हल के लिए आज तक जो भी उपाय सुझाये गये, उन सबमें ग्रामदान श्रेष्ठ है ऐसा विचारक लोगों ने आम तौर पर स्वीकार किया, पर ग्रामदान का महत्व इससे भी कहीं बढ़कर है। ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य की राह खुल जाती है। और एक प्रेम और शांतिमय समाज के निर्माण की नींव पड़ती है—अगर गांववालों को उचित सलाह और मदद मिलती रहे। इस दृष्टि से ग्रामदान के बाद उन गावों में किस तरह काम चला है, गांव वाले सहयोगी जीवन की ओर कितना बढ़ पाये हैं, यह बात महत्वपूर्ण है। देश के विभिन्न हिस्सों में जो ग्रामदान हुए, वहाँ के काम की जानकारी इस स्तंभ में देने का प्रयत्न रहेगा।

असम प्रांत के कुछ अंचलों में काफी अच्छा काम हुआ है। एक बार समूचा चित्र पाठकों के सामने आ जाय, इस दृष्टि से प्रांत के काम की संक्षिप्त, संकलित जानकारी इस अंक में दी जा रही है। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के काम की विस्तृत जानकारी आगे दी जायेगी। आशा है, दूसरे प्रांतों से भी कार्यकर्तागण वहाँ के काम का विवरण भेजते रहेंगे। —सं०]

असम प्रदेश में अब तक लगभग १७२ ग्रामदान हो चुके हैं। इन ग्रामदानी गाँवों की आर्थिक असमानता ने समानता की ओर पग बढ़ाते हुए नागरिक उत्साह और जिस सांस्कृतिक चेतना का परिचय दिया है, वह अपने में एक बड़ी ही प्रेरक कहानी है। यह सारा निर्माण कार्य स्थानीय कार्यकर्ताओं की शक्ति और लोक-संग्रह की कला से हुआ है। जो भी थोड़ा कार्य हर गाँव में हुआ है, वह बाहर की किसी भी मदद के बिना हुआ है, यह विशेषता है। नॉर्थ लखीमपुर सबडिविजन के उत्साही नवयुवकों का दल सन् '५५ में संगठित हुआ। इनमें से ५ कार्यकर्ताओं ने खादीग्राम से निर्माण कार्य की ट्रेनिंग ली है।

प्रान्त के बरदलनी अंचल में कुल ३३ ग्रामदान हुए हैं। सन् '५० के भूकंप और बाढ़ के कारण इस क्षेत्र की सारी जमीन काश्त के उपयुक्त नहीं रही थी। इस जमीन को बाढ़ से बचाने के लिए सरकार से अनुरोध किया गया, किन्तु कुछ बन नहीं पाया। "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं", इसलिए उन्होंने परावलंबन का त्याग कर वहाँ एक संरक्षण समिति बनायी और जनशक्ति के आधार पर इस मौजे की जमीन को पानी से बचाने के लिए एक बाँध बनाने का काम शुरू किया। इस काम के लिए सरकार की ओर से भी पंद्रह हजार रुपयों की सहायता स्वीकृत हुई। यह बाँध ह. फर्लांग बन जाय तो इस मौजे के करीब १८ ग्रामदानी गाँव पानी से बच सकते हैं और इन गाँवों की करीब सात हजार बीघा जमीन आबाद हो सकेगी। इन ग्रामदानी गाँवों की जन शक्ति से करीब पाँच लाख घनफुट मिट्टी बाँध में डाली गयी। दुर्दैव से जियाधोल नदी की फिर बाढ़ आयी और यह बाँध पाँच सौ फुट टूट गया। फिर से यहाँ के लोगों ने उसे सुधार लिया। इसके प्रमुख श्री लक्ष्मीनाथ बरुआ थे। जनता को अपनी शक्ति का भान अब होता जा रहा है। इन लोगों ने सामूहिक रूप से बाँध निर्माण कर के करीब पाँच हजार रुपयों का उपार्जन किया। मानवीय सहजीवन का यह एक सुन्दर चित्र है।

इस प्रदेश में लोग छिट-पुट इधर-उधर झोंपड़ियाँ डाल कर बस गये, जिन्हें बस्ती या गाँव कहने में संकोच होता है, पर ग्रामदान की सहजीवनमयी प्रेमिल भावना ने उन्हें फिर परस्पर के निकट ला दिया है। इन्होंने अपने आवागमन के सुख-सुविधा के लिए तीन फर्लांग का रास्ता अपने अभिक्रम से, गाँव का काम अपना काम मान कर बनाया। जहाँ पुल बनाने की जरूरत हुई वहाँ निकट के जंगल से बाँस लेकर कुल ५३२ फुट लम्बे पुल बनाये। बाढ़ से बचने के लिए ११५० फुट का बाँध बाँधा गया।

सभी ग्रामदानी गाँवों में सहजीवन का दौर चल रहा है। उनके सम्मिलित प्रयत्न से ग्राम निर्माण का कार्य हो रहा है। कहीं-कहीं तो बनाने लायक बड़े-बड़े काम हैं। जैसे दाघरा नामक गाँव के सभी लोगों ने सर्वानुमति से समग्र पद्धति पर खेती करने का तय किया और अपने इस शुभ संकल्प को निभाया भी, पर फिर भी गाँव के हरएक आदमी की रोजी-रोटी की समस्या पूरी नहीं हुई, तो लोगों ने गाँव की अपनी दूकान, सामूहिक अन्न भंडार की स्थापना करने का सोचा। मिस्त्री ने गाँव-सभा की सर्वानुमति से पड़ोसी गाँव का एक मकान बनाने का एक हजार रुपये का ठेका लिया और इसे समूचे गाँव का समझा गया। गाँव के उन सभी लोगों को काम मिला, जो बेकार बैठे थे या जिनके पास काम कम था, उन सबको मजदूरी देने के बाद ठेके में जो बचत हुई, उससे गाँव का सामूहिक कर्ज चुकाया गया।

ग्राम निर्माण के काम को आगे बढ़ाने के लिए यहाँ के कार्यकर्ता प्रयत्नशील हैं। गाँव में अधिकांश लोगों को पूरी रोजी नहीं मिल पाती। पूरी रोजी देने के लिए सरकार से कर्ज लेकर लोगों को आर्थिक सहायता देकर अन्नोत्पादन का काम बढ़ाना है। शिवसागर जिले के तीन गाँवों की जमीन सामूहिक रूप से उत्पादन शक्ति को बढ़ाने लक्ष्य रख कर जोती गयी। आशा है, इससे लोगों को पूरी रोजी मिल[illegible] बेकारी तथा [illegible] दूर होगा।

इसी तरह बरारठवा गाँव में लोगों ने गाँव के सारे खेतों पर एकसाथ मेहनत की। अभी इस एक-एक खेत पर उमंग और उत्साह के साथ चले। एकसाथ फसल बोयी गयी, काटी गयी और परिवार के व्यक्तियों के अनुपात से बराबर बाँटी गयी। बाढ़-काल के लिए ग्राम-पूंजी के रूप में २०० मन अनाज बचा भी लिया गया।

यहाँ पर वस्त्र-स्वावलंबन का निश्चय किया गया। तदनुसार अंडी और कपास का काम करने का सोचा गया है। इस क्षेत्र में मूँगा, अंडी और पटसन का काम बहुत घरों में होता है। भकत कैवर्त ग्राम के जितने घरों में करघे हैं, सब चलाने का तय किया गया। समग्र सेवा संघ की ओर से चार ग्रामदानी गाँवों में अंबर चरखा परिश्रमालय खोले गये, जिनमें ३१ छात्रों को अंबर शिक्षा दी गयी।

शिवसागर जिले में दोलाबरिया गाँव में कुल २४६ बीघा जमीन और ३१ परिवार हैं। मधुमक्खी-पालन और खिलौने बनाने के गृहोद्योग यहाँ चलते हैं। केन्द्र के लिए श्रमदान से मकान बनाया गया। ४ व्यक्तियों ने मूँगा पालने का कार्य शुरू किया है।

पद्मपुर में कुल २२४ बीघा भूमि और १४ परिवार हैं। २० बीघा भूमि सामूहिक खेती के लिए अलग रख कर शेष भूमि वितरित की। सामूहिक खेती से १०० मन धान की फसल आयी, जिसमें से ५० मन धान बेच कर कुल जमीन का लगान चुकाया और बाकी ५० मन ग्राम पूंजी के रूप में ग्राम-विधान सभा के पास रखी। गाँव से ६-७ मील दूरी पर जाकर लोगों ने और २० बीघा जमीन से ६० मन सरसों की फसल निकाली। वह भी ग्रामविधान सभा के पास जमा की गयी। हरएक परिवार ने सब्जी मिलने की दृष्टि से एक कट्ठा जमीन में आलू की फसल बोयी।

रंगटी गाँव में कुल जमीन ४०४ बीघा और १४ परिवार हैं। सब लोगों ने श्रमदान द्वारा एक कार्यालय-भवन बनाया। वस्त्र-स्वावलंबन की दृष्टि से अंडी, मूँगा और सिल्क के कीड़ों के पोषण के लिए घर-घर पौधे लगाये गये हैं। ६४ बीघा भूमि की ५०० मन फसल में से ६० मन परिवारों में बाँटी गयी, ६० मन बेच कर प्राप्त पैसे बाँट लिये, बाकी अनाज गाँव पूँजी के रूप में जमा किया गया।

दाधरा गाँव में कुल जमीन ३३५ बीघा और ७२ परिवार हैं। इधर रुई की फसल प्रायः नहीं के बराबर है। रुई बाहर से मँगानी न पड़े, इसलिए २ बीघा भूमि में कपास की फसल की गयी। गाँव के एक निराधार विधवा के लिए सबने अपने परिश्रम से एक मकान बना दिया। अम्बर चरखा केन्द्र चलाने के लिए एक मकान का दान भी मिला। गाँव के एक मृत आदमी का श्राद्ध आदि कार्य सबने मिल-जुल कर किया। गाँव के एक सज्जन ने स्वयंप्रेरणा से अकाल के समय ३० मन अनाज बाँट कर लोगों को राहत पहुँचायी। यहाँ १३ सर्वोदय-पात्र स्थापित हुए।

ग्रामदान के पहले ही बरमौनि के लोगों ने २८ बीघा भूमि में धान की फसल की। प्राप्त २३० मन फसल गाँव के सब, याने आठ परिवारों ने समान रूप से बाँट ली। इस प्रकार लोगों के हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रथम दर्शन हुआ। सामूहिक रूप से तालाब-सफाई की गयी। अनाज का भंडार बनाया। ८१ बीघे की ५०० मन की फसल गाँव-पूंजी के रूप में संग्रह की गयी। आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग होता रहता है। गाँववालों ने बाहर जाने वाला मुनाफा रोकने की दृष्टि से हमेशा के उपयोगों की वस्तुओं की एक दुकान भी शुरू की। इस तरह गाँव की लक्ष्मी गाँव में ही रह कर गाँव समृद्धशाली बन सकेगा। बरसात से बचने के लिए लोगों ने २५०० पूलियाँ घास काट कर गाँव के सब मकान ठीक किये। सब छात्रों के लिए पढ़ाई की सामूहिक व्यवस्था भी की गयी।

उपरोक्त गाँवों के अतिरिक्त बहुत से गाँवों में कुछ जमीन के एक भाग पर सामूहिक खेती की व्यवस्था हुई है। 'गाँव दुखी तो हम दुखी' की भावना ने जोर पकड़ा है। प्रादेशिक पदयात्रा के अलावा जिलों में भी जिला-पदयात्राएँ चल रही हैं। प्रादेशिक दल नॉर्थ लखीमपुर सब-डिविजन के जिला दान के प्रयत्न में है। वह ८०० गाँवों में से करीब २०० गाँवों में घूम चुका है। नॉर्थ लखीमपुर में जिला पदयात्री दल भी सक्रिय है। उनकी रिपोर्ट है कि १५०० सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हो चुकी है। उन्होंने काफी साहित्य प्रचार किया। पाँच निष्ठावान् शांति-सैनिक भी मिले हैं। सर्वोदय-पात्रों से निरन्तर संपर्क न रहने से वे बन्द हो जाते हैं, अतः तीन गाँवों का एक सर्कल लेकर कुछ कार्यकर्ताओं ने काम करना शुरू किया है।

—माणिकचंद्र राहढ़िया, मंत्री
समग्र सेवा संघ, नॉर्थ लखीमपुर

विनोबा और गांधी-जयंती के कार्यक्रम

गत २ अक्टूबर को सर्वत्र उत्साहपूर्वक गांधी-जयंती का समारोह मनाया गया। उसमें मुख्यतया प्रभात फेरी, सफाई, अखंड सूत्र-यज्ञ, प्रार्थना, कताई-प्रतियोगिता, साहित्य प्रचार के कार्यक्रम हुए। नीचे लिखे स्थानों के विवरण प्राप्त हुए हैं।

जिला सर्वोदय कार्यालय, नयी बस्ती (बिजनौर); अम्बर चरखा केन्द्र, भालीपुरा निवारी (बैतुल, म. प्र.); बिहार : सारण जिला सर्वोदय-मंडल, छपरा, सर्वोदय आश्रम करीम, ताजपुर, श्रीनगर (सारण); दरभंगा जिला सर्वोदय मंडल, लहेरियासराय।

राजस्थान : शिवदासपुरा (जयपुर) के खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय परिवार ने ९० घंटे का अखंड सूत्रयज्ञ किया। ४० सहयोगियों ने २ अम्बर चरखों और ४ किसान चरखों पर रुई की क्रिया से आरंभ कर ४०१ गुंडी, १ लटी और १३० तार सूत काता। ग्रामनिर्माण केन्द्र, भूदानपुरा में विनोबा-जयंती से गांधी-जयंती तक ५ लोकसेवक बने। क्षेत्रीय सर्वोदय मंडल व कताई मंडल स्थापित किया। ६ सहायक शांति सैनिक बने। २० व्यक्तियों ने वस्त्र स्वावलंबन की प्रतिज्ञा की। बांसवाड़ा जिला सेवा संघ व सर्वोदय कार्यालय, परतापुर ने अपने अपने जिले में १५ अगस्त से २ अक्टूबर तक गांधी-जयंती का कार्यक्रम जिले के कार्यकर्ता व लोकसेवकों ने अपने-अपने क्षेत्रों के भिन्न भिन्न गाँवों में बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। मड़कोला, भूंगिया व भूदानपुरा क्षेत्रों के १५ गाँवों के दौरे में १४ नये लोकसेवक, ६ कताई मंडल, ८ स्वावलंबी सदस्य, ४ क्षेत्रीय लोकसेवक मंडल, ३ शांति सैनिक बने। १५० भाई-बहनों को कताई सिखायी। १०५ गाँवों में कार्यकर्ता व लोकसेवकों ने ९०० मील की पदयात्रा की। ९० घंटे गांधी आश्रम परतापुर में और २४ घंटे मड़कोला व भूदानपुरा में अखंड सूत्रयज्ञ हुआ। रोहिड़ा में गोप्रदर्शनी की गयी।

सीकर जिले के कार्यकर्ताओं ने विनोबा जयंती जयरामपुरा में मनायी और वहाँ से पदयात्रा करते हुए गांधी जयंती के दिन खंडेला गाँव में पहुँचे। विनोबा-जयंती पर अध्यापकों और छात्राओं द्वारा १०१ गुंडियाँ भेंट में मिलीं। गांधी जयंती के अवसर पर १०१ रु० दान में मिले। सर्वश्री मनभावती देवी और देवदत्त निडर आदि कार्यकर्ताओं ने यह कार्यक्रम सफल किया।

मध्यप्रदेश : छतरपुर में ९० घंटे के अखंड सूत्रयज्ञ में ८५ गुंडियाँ सूत काता गया। तेलघानी एवं खादी ग्रामोद्योग सप्ताह भी मनाया गया। आदर्श अंबर सहकारी मंडल, उज्जैन द्वारा खादी-ग्रामोद्योगी वस्तुओं एवं सर्वोदय-साहित्य की सफल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

उत्तर प्रदेश : गांधी स्मारक निधि के तत्वावधान विनोबा-जयंती से गांधी जयंती तक सर्वोदय विचार प्रचार लखनऊ शहर में किया गया। इस बीच नगर में ६५ सर्वोदय-सभाओं का आयोजन हुआ। चरखा प्रतियोगिता, श्रमदान, सर्वोदय साहित्य बिक्री, हरिजन बस्ती में सफाई आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। फतेहपुर में १० पेटी चरखा और १० अंबर चरखों द्वारा २४ घंटे अखंड सूत कताई की गयी।

कलकत्ता : सर्वोदय सूत्र-यज्ञ मंडल की ओर से १० घंटे का अखंड सूत्र यज्ञ हुआ। ४० सहयोगियों ने ८७॥ गुंडियाँ सूत काता।

महाराष्ट्र : प. खानदेश जिले के धुलिया शहर में २९ सितंबर की सुबह से २ अक्टूबर तक रोज १२ घंटे की अखंड सूत-कताई में ६० गुंडियाँ सूत काता गया। ता० २९ को सर्वोदय अभ्यास मंडल की ओर से प्रश्नोत्तरिनिरुद्ध का कार्यक्रम हुआ। आचार्य श्री शोळ, श्री वि० वा० नेने, श्री बापूभाई मेहता और श्री दामोदर दासजी मूँदड़ा ने क्रमशः शिक्षण, मजूर, खादी ग्रामोद्योग और निसर्गोपचार इन विषयों पर प्रश्नोत्तर-रूप से चर्चा की। ता० ३० सितम्बर और १ अक्टूबर को सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा गांधीजी के जीवन पर निबन्ध लेखन स्पर्धा हुई। विभिन्न भाषाओं के कवियों द्वारा रचित गांधीजी से सम्बंधित गीत गाये गये। २ अक्टूबर को सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामी की अध्यक्षता में जाहिर सभा हुई। स्नातक नयी तालीम केंद्र, सरकारी ट्रेनिंग कॉलेज और गर्ल्स हाई स्कूल के सहयोग से २९ प्राइमरी स्कूलों के करीब १३००० छात्रों में गांधीजी के जीवन बोध का सक्रिय प्रचार करके गांधी-जयंती मनायी गयी। बाढ़ग्रस्त लोगों के लिए घर-घर से अनाज, कपड़े इकट्ठे किये गये।

धुलिया शहर में विनोबा जयंती के अवसर पर छात्र छात्राओं की प्रभात फेरी निकली। दोपहर में श्री दामोदरदास मूँदड़ा द्वारा विनोबाजी के विद्यार्थी जीवन पर भाषण हुआ। इसी समय 'विद्यार्थी विचार कला-मंडल' का उद्घाटन हुआ। शाम को निमंत्रित मित्रों की भावी कार्यक्रम के बारे में चर्चा हुई। जाहिर सभा में प्रार्थना, भजन और गीत गाये गये। श्री मूँदड़ाजी ने विनोबाजी के बालजीवन से लेकर अब तक का इतिहास सुनाया। श्री बापूभाई मेहता ने विनोबाजी की बुद्धिमत्ता, गीता पर दृढ़ श्रद्धा, सर्वधर्म का अभ्यास, विशाल दृष्टि आदि का विश्लेषण किया। श्री गोविन्दरावजी द्वारा हालैंड से मिली एक हजार रु० की भेंट, महाराष्ट्र के नवापुर तहसील व रनाळे से सर्वोदय-सम्मेलन को मिली निधि, बंबई के तरुण श्री प्रवीणचंद्र शाह की ओर से आने वाली [illegible] मदद व जयंती के दिन प्राप्त हुए संपत्तिदान का आभार उल्लेख किया गया।

सर्वोदय-पात्र

राजस्थान : ग्रामनिर्माण केन्द्र भूदानपुरा में विनोबा-जयंती से गांधी-जयंती तक स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा १५९ सर्वोदय-पात्र स्थापित किये गये। रोहिड़ा गाँव में ८५ प्रतिशत घरों में सर्वोदय-पात्र रखवाये गये हैं। बांसवाड़ा जिला सेवा संघ और सर्वोदय कार्यालय परतापुर द्वारा आयोजित गांधी जयंती के कार्यक्रम के अंतर्गत अलग-अलग गाँवों में ५२५ सर्वोदय-पात्र रखे गये। नागौर जिले में मकराना में ७७ सर्वोदय-पात्र जारी हैं। लाडनूं में १२५ सर्वोदय-पात्रों द्वारा ६६ रु० प्राप्त हुए।

बिहार : दरभंगा जिले में विनोबा-जयंती के अवसर पर १०० सर्वोदय पात्र रखे गये। पूर्णियाँ जिला अखंड पदयात्रा टोली द्वारा सितंबर माह में १४ सर्वोदय पात्र स्थापित किये गये। १८ अप्रैल को ५०० सर्वोदय पात्र रखवाये थे। पटना जिले में ५० सर्वोदय-पात्र जिला अखंड पदयात्री टोली द्वारा रखे गये।

उड़ीसा : कटक में सर्वोदय पात्र से साढ़े बाइस मन अनाज इकट्ठा हुआ। इसके कीमत का पचास सर्व सेवा संघ को भेजा गया है।

उत्तर-प्रदेश : वाराणसी जिले में जून जुलाई में ६२ सर्वोदय पात्र रखे गये थे। मथुरा जिले में जुलाई अगस्त में ८४ सर्वोदय पात्रों से डेढ़ मन अनाज इकट्ठा हुआ। सर्वोदय स्वाध्याय मंडल, तमकुही रोड (देवरिया) ने २५ सर्वोदय पात्र रखवाये हैं।

पंजाब : फिरोजपुर जिले के मुलसर ग्राम में २५ और हिसार जिले में ५० सर्वोदय पात्र रखे गये। सर्वोदय-पात्र से १३४ रु० प्राप्त हुए।

गुजरात : महेसाणा जिले में १२३ सर्वोदय पात्र चल रहे हैं।

बंबई शहर : जुलाई माह तक का बंबई के सर्वोदय पात्रों का हिसाब :

	पात्र	रु० न० पै०		पात्र	रु० न० पै०
दिसंबर	५४८	१३४-१३	अप्रैल	१८८	११३-८५
जनवरी	२५०	७६-४८	मई	५०५	१४६-०६
फरवरी	६८९	२७३-८७	जून	४३५	१५३-२५
मार्च	८६८	४१६-८३	जुलाई	१०६१	५७७-८८

समाचार-सूचनाएँ :

हिमाचल प्रदेश में श्री विनोबाजी

हिमाचल प्रदेश की यात्रा के दौरान में श्री विनोबाजी ४ अक्टूबर को चम्बा पहुँचे। यहाँ तक सड़क का रास्ता था। इससे आगे पगडंडी का रास्ता है, जो ८००० फुट की ऊँचाई पर जाता है। ता० ६ को चम्बा से विनोबाजी का प्रस्थान था। पर रात्रि में ही जोर की वर्षा शुरू हुई। वर्षा के बावजूद विनोबाजी अपनी पदयात्रा टोली के सहित कार्यक्रम के अनुसार सवेरे चम्बा से रवाना हुए। तेज बारिश में भीगते हुए सब यात्री २ मील तक गये। पर आगे एक नाला था, जो वर्षा के बाढ़ के कारण पार नहीं किया जा सका और यात्री-दल को वापस लौट कर चंबा आना पड़ा। श्री विनोबाजी चंबा से फिर दूसरे दिन रवाना हो गये। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश का कार्यक्रम और एक दिन बढ़ाना पड़ा है। अब ता० १८ को बजाय विनोबाजी ता० १७ को पंजाब के कांगड़ा जिले में प्रवेश करेंगे।

नया प्रकाशन

"जाजूजी : जीवन और साधना"

स्व० श्रीकृष्णदासजी जाजू की पुण्यतिथि २१ अक्टूबर को पड़ रही है। इस अवसर पर उनका जीवन-चरित्र प्रकाशित हो रहा है। उनका जीवन जितना निस्पृह, मादर्शमय और मर्यादा [illegible] की तरह कल्याणमय था, उतना ही विनोदमय, [illegible] और गंभीर भी था। उनके जीवन के सर्वांगीण गुणों का [illegible] श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट की कुशल तथा सरल लेखनी से हुआ है। [illegible] रुपया।

—अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

विनोबाजी का पंजाब के होशियारपुर जिले का कार्यक्रम

अक्टूबर, ता० २३ [illegible], २४ [illegible], २५ [illegible], २६ [illegible], २७ [illegible], २८ [illegible]। विनोबाजी का पता :

मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल, पो० [illegible], जि० [illegible] (पंजाब)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० ११९१
वार्षिक मूल्य ५) एक प्रति ३ आना

भूदान-यज्ञ

वाराणसी, शुक्रवार

२३ अक्टूबर '५९

वर्ष ६ अंक ४

भूदान-यज्ञ-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

सम्पादक : सिद्धराज ढड्ढा

आत्म-निवेदन

१९२३ में "महाराष्ट्र धर्म" मासिक शुरू करते हुए पू० विनोबाजी ने लिखा था। भक्ति मार्ग में आत्म-निवेदन यह आखिर की सीढ़ी है, लेकिन लोक-सेवा में वह पहली सीढ़ी होती है। उसके अनुसार गुरुजनों और साथियों की सेवा में कुछ निवेदन कर रहा हूँ।

पठानकोट में आप सबने मुझे अध्यक्ष बनाया। तब से कइयों ने मेरा अभिनन्दन किया। उन सबको अलग-अलग जवाब देना कठिन है। मैं सबका आभारी हूँ। अभिनन्दन से ज्यादा गुरुजनों के आशीर्वाद और साथियों की शुभाशा की अपेक्षा मुझे है। और मैंने यह माना है कि अभिनंदन प्रचलित शब्द होने के कारण वह उपयोग में लिया गया है। फिर भी आप सबके मन में मेरे लिए आशीर्वाद और शुभाशा है। उसी बल पर यह जिम्मेवारी निबाहने की कोशिश मुझसे हो सकती है।

अध्यक्ष बनने पर कइयों ने पूछा कि अब मेरा सदर मुकाम-हेड-क्वार्टर-बेंगलूर ही रहेगा या वाराणसी? मेरा सदर-मुकाम बेंगलूर ही रहेगा। यद्यपि बीच-बीच में वाराणसी जरूर रहूँगा। कइयों की यह माँग है कि उनके प्रान्त या क्षेत्र में मुझे घूमना चाहिए। उस माँग की उपयोगिता मैं समझ सकता हूँ। लेकिन मुझे डर है कि अपेक्षा पूरी नहीं कर सकूँगा। मैं बेंगलूर में करीब दो साल से हूँ। वहाँ का काम अभी प्रारंभिक अवस्था में ही है। इसलिए उसकी ओर विशेष ध्यान और समय देना जरूरी है। फिर भी सभा-सम्मेलनों के निमित्त मुझे कुछ अधिक घूमना पड़ेगा। तब आते जाते हुए कई स्थानों को कुछ समय दिया जा सकता है। उसके लिए यह जरूरी है कि भिन्न-भिन्न प्रान्त और क्षेत्रवाले अपने यहाँ के कार्यक्रमों की जानकारी ठीक-ठीक पहले से मुझे देते रहें, जिससे कि यथा-संभव मैं उसमें भाग ले सकूँ। प्रान्तीय सर्वोदय मंडल की बैठकें, प्रान्तीय सम्मेलन या इसी स्वरूप के आयोजनों की तारीखें और किन विषयों की चर्चा उसमें होगी इसकी जानकारी मुझे बेंगलूर के पते पर मिलती रहे। जानकारी की दो नकलें भेज सकें तो अच्छा होगा, जिससे कि एक नकल मैं प्रवास में जहाँ होऊँ वहाँ तुरंत भेजी जा सके।

सर्वोदय सम्मेलन के कारण और संघ के सहमंत्री के नाते अनेकों से परिचय होता रहा है। अब वह और भी बढ़े ऐसी अपेक्षा स्वाभाविक है। बाबा ने बातचीत में मुझे मानो निर्देश ही दिया कि दस हजार लोगों के नाम आदि मालूम होने चाहिए। परिचय का मानी है नाम-रूप ध्यान में रहना। कई मित्र कहते हैं कि मैं काफी संख्या में वह ध्यान में रख सकता हूँ। लेकिन उनको यह मालूम नहीं कि कितनों के नाम-रूप मैं भूलता हूँ। परसों ही एक भाई ने कहा कि पहचान पाती है? मैंने कहा कि नहीं। तो उन्होंने कहा कि भूदानवाले अपने लोगों को याद न रख पायें तो काम कैसे बनेगा? उनका कहना बिलकुल सही था। लेकिन एकाध बार ही जिसका संबंध आया हो, उस व्यक्ति को भूल जायें, तो क्षम्य माना जायगा न? जिनसे घना परिचय नहीं है, वे भाई-बहन मिलने पर अपना नाम और पहले कहाँ मिले थे वगैरह का जिक्र करें तो आसानी होगी।

आज सर्वोदय-आरोहण जिस स्थिति में से गुजर रहा है, उसमें मेरी अपेक्षा अधिक विचारवान और कार्यक्षम अध्यक्ष होता तो अच्छा होता। अब तो जो नाटक का पार्ट अदा करने का हम सबने तय किया है उसको निबाहने की हम सब पूरी कोशिश करें। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह हम सबको अधिकाधिक बुद्धि दे, जिससे कि आत्म-ज्ञान, विज्ञान और विश्वास जिन तीन शक्तियों का बाबा बार-बार आवाहन करते हैं, वे हम सबके जीवन में अधिकाधिक प्रकट हों और हम अहिंसात्मक क्रांति के हम उचित दूत बनें।

गांधीनगर, बेंगलूर-९

—वल्लभस्वामी

पुण्य स्मृति में

चार वर्ष हुए, आज ही के दिन, २३ अक्टूबर १९५५ को श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू ने अपना पार्थिव शरीर छोड़ा था। हममें से बहुतों के लिए जाजूजी मार्गदर्शक थे। उन्होंने स्वयं किसी चीज को या आदर्श को केवल भावना में या समय के प्रवाह के कारण या गांधी विनोबा जैसे व्यक्ति के प्रभाव से प्रभावित होकर नहीं, बल्कि अपनी बुद्धि से पूरी तरह से जँच जाने पर ही स्वीकार किया। इसी कारण एक बार कोई चीज स्वीकार कर लेने पर फिर वह उनकी रग रग में उतर जाती थी, रोजमर्रा के जीवन में व्याप्त हो जाती थी। और इसलिए वे निरन्तर गतिशील रहे। हर चीज को सहसा स्वीकार न करके अपनी बुद्धि की कसौटी पर कसते थे और फिर एक एक कदम मजबूती के साथ उसे जीवन में उतारते थे। इस प्रकार उनका जीवन सतत साधना और विकास का जीवन रहा। जवानी के दिनों में अपनी जाति के सामाजिक सुधार में लगा हुआ एक प्रसिद्ध वकील अपने जीवन की सन्ध्या में एक शान्तिदूत बन कर देश में चारों ओर सामाजिक और आर्थिक विषमता के नाश का पैगाम फैलाने में अपनी सारी शक्ति लगा देगा यह उस समय कम ही लोगों ने सोचा होगा। जीवन के आखिरी दिनों में भूदान-सम्पत्ति-दान विचार को जिस तरह उन्होंने ग्रहण किया और उसके प्रचार के लिए अपनी गिरती हुई सेहत का भी खयाल न करके जिस तरह देश के एक कोने से दूसरे कोने तक अनवरत रूप से वे घूमते रहे यह सचमुच एक प्रेरणादायी वस्तु थी। सम्पत्तिदान-यज्ञ के विचार के प्रचार को उन्होंने विशेष तौर से अपने जीवन का ध्येय बनाया था।

उनकी मृत्यु की इस पाँचवीं बरसी के अवसर पर सर्व सेवा संघ ने जाजूजी के जीवन और साधना के सम्बन्ध में एक पुस्तक प्रकाशित की है। उनका जीवन हमें निरन्तर प्रेरणा देता रहे और हमारा पथ प्रशस्त करता रहे यही प्रार्थना है।

—सिद्धराज

इस अंक में

प्रतिरोधात्मक कार्यक्रम

सिद्धराज ढड्ढा

पिछले अंक में मैंने इस बात का जिक्र किया था कि आन्दोलन में काम करने वाले साथियों के मन में अक्सर यह प्रश्न उठता है कि हमारे काम का असर जितना चाहिए उतना समाज पर नहीं हो रहा है। इसका कारण एक तो यह बताया जाता है कि लोगों की रोजमर्रा की समस्याओं से हम उदासीन रहते हैं, इसलिए लोग हमारी ओर आकृष्ट नहीं होते। इस प्रश्न की चर्चा हमने पिछले अंक में की थी। दूसरी बात लोगों को यह महसूस होती है कि हमारे कार्यक्रम में प्रतिकार का पहलू नहीं है, इसलिए लोगों में उसके प्रति उत्साह नहीं पैदा होता। इस प्रश्न की चर्चा हम इस अंक में करेंगे।

प्रतिकार का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विचार कई पहलुओं से होना आवश्यक है। अन्याय का प्रतिकार अवश्य होना चाहिए, इसमें क्रान्तिकारी की दो राय नहीं हो सकती। अन्याय के प्रतिकार की तड़प दिल में होना क्रान्तिकारी का लक्षण है, इतना ही नहीं, वह उसका भूषण भी है। आज समाज में चारों ओर अन्याय, हिंसा और शोषण व्याप्त है। हम इन चीजों को दूर करके एक नये समाज के निर्माण का स्वप्न देखते हैं। इसीलिए हम अपने आपको क्रान्तिकारी मानते हैं। इस प्रकार की अन्याय के प्रतिकार की तड़प और समाज-परिवर्तन की आकांक्षा कोई नयी चीज नहीं है। मानव-जाति के इतिहास में हमेशा ऐसे क्रान्तिकारी रहे हैं और यह कहना अनुचित नहीं होगा कि उन्हीं के बल पर मानव जाति आगे बढ़ी है।

पर हम एक बात अक्सर भूल जाते हैं कि गांधी के युग से स्वयं क्रान्ति ने एक नया मोड़ लिया है। गांधीजी ने क्रान्ति की कल्पना में ही क्रान्ति की। गांधीजी ने कहा कि हम समाज-परिवर्तन चाहते हैं, अर्थात् समाज में से अन्याय और हिंसा को निकालना चाहते हैं, तो इस उद्देश्य की पूर्ति के साधन भी हमारे अहिंसा और सत्य पर ही आधारित होने चाहिए। गांधीजी के पहले तक साधन शुद्धि का विचार इतनी गहराई तक नहीं पहुँचा था। इसीलिए युद्ध को लगाज मानते हुए भी उसमें से 'धर्म युद्ध' की कल्पना निकली। हिंसा खराब है, फिर भी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए, बल्कि धर्म की स्थापना के लिए भी, कुछ मर्यादाओं में उसका उपयोग किया जा सकता है, यह विचार भी प्रचलित रहा। आज भी वह है। पर गांधीजी ने इस बात पर जोर दिया कि साधन साध्य के अनुरूप ही होने चाहिए, अन्यथा साध्य की सिद्धि भी असम्भव है।

सत्य और अहिंसा की, वैसे ही साधन शुद्धि की बात भी दीखने में इतनी स्वाभाविक और सरल मालूम देती है कि हम उसे गृहीत ही मान कर चलते हैं। पर वास्तव में व्यवहार में हमेशा हम उल्टा ही करते रहते हैं और हमें भान भी नहीं होता कि हम कोई बहुत गलत बात कर रहे हैं। लेकिन गांधीजी के लिए साधन शुद्धि की बात बुनियादी थी। आजादी की लड़ाई जिस समय पूरे जोश पर थी उस समय किसी ने गांधीजी से पूछा कि अगर अहिंसात्मक तरीके से आजादी हासिल करना सम्भव न हो तो अहिंसा और आजादी में से आप किसे चुनेंगे? एक क्षण भी झिझके बिना गांधीजी ने उत्तर दिया कि मैं अहिंसा को चुनूँगा। यह एक क्रान्तिकारी दृष्टिकोण था। दुनिया के इतिहास में अब तक आजादी की जितनी लड़ाइयाँ हुईं उसमें उस लड़ाई के नेता ने कभी ऐसा नहीं कहा था। क्योंकि, आजाद होना अपने आप में एक उद्देश्य था, वह साध्य था, फिर साधन उसके लिए कोई भी इस्तेमाल किया जा सकता था। गांधीजी ने इस [illegible]

समाज-परिवर्तन की आज की हमारी क्रान्ति उसी विचार का आगे का कदम है। हम समाज-परिवर्तन अवश्य चाहते हैं, वह जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी करना चाहते हैं, अन्याय को बरदाश्त नहीं करना चाहते, लेकिन यह सब प्रेम के जरिये करना चाहते हैं, क्योंकि अब तक का अनुभव हमें यह बताता है कि समाज परिवर्तन की जो भी क्रान्तियाँ हिंसा और द्वेष के माध्यम से हुईं वे सफल नहीं हो सकीं। हमने इसीलिए समस्त युग का वर्ग-संघर्ष का रास्ता छोड़ा है। जालिम के खिलाफ मजलूमों को उभाड़ना आसान है, पर उससे जुल्म खतम नहीं होता। फिर वही मजलूम खुद जालिम बनते हैं। यह आज तक का अनुभव है। इससे कभी समाज में शांति और समानता की स्थापना नहीं हो सकती। शांति और समानता मानवीय हृदय के मूल्य हैं। हिंसा से, संघर्ष से या दबाव से हम इन मूल्यों की स्थापना समाज में नहीं कर सकते। इसीलिए कोई हमसे यह पूछे भी कि संघर्ष और द्वेष के बिना, कम-से-कम निकट भविष्य में, समाज परिवर्तन सम्भव न हो तो क्या आप समाज परिवर्तन का काम छोड़ देंगे? तो हमें प्रतिगामी कहलाये जाने की सम्भावना मान कर भी गांधीजी की तरह निर्भयतापूर्वक और नम्रतापूर्वक कहना होगा। हम वैसा समाज-परिवर्तन नहीं चाहते। जिन्हें वह अभीष्ट हो वे वैसा जरूर करें, हम अपने ढंग से अपना काम करते जायेंगे।

मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि आज जो हमारा कार्यक्रम या कार्यपद्धति है उसमें किसी तरह के परिवर्तन की गुंजाइश नहीं है। हमें लगता है कि हमारी बात या कार्यक्रम के प्रति जनता की अपेक्षाकृत प्रतिक्रिया नहीं हो रही है तो हम उसके लिए सोचें, आवश्यक लगे तो परिवर्तन भी करें। अन्याय के प्रतिकार का कोई ज्यादा कारगर तरीका भी सोचें। पर यह सब सोचते समय हम यह बुनियादी बात न भूलें कि हम किसी भी व्यक्ति या वर्ग पर शारीरिक या मानसिक दबाव डाल कर कोई परिवर्तन कराना नहीं चाहते, बल्कि हरेक के हृदय में पैठ कर, उसके हृदय में दबी हुई प्रेम और करुणा की भावनाओं को जाग्रत करके ही, परिवर्तन लाना चाहते हैं। इसके लिए धैर्य की नितान्त आवश्यकता है। आज के हमारे उपाय नाकाफी लगते हों तो उनमें संशोधन करने का जरूर सोचें। पर यह संशोधन किस दिशा में हो इसका ध्यान रखें। अक्सर लोग दलील देते हैं कि गांधीजी ने सत्याग्रह का जो तरीका बतलाया था उसे भी हम छोड़ रहे हैं। ऐसी दलील देने वालों को हम नम्रतापूर्वक यह याद दिलाना चाहते हैं कि सत्याग्रह का सिद्धान्त एक चीज है और उसकी प्रक्रिया दूसरी। विचारों में भी उत्तरोत्तर विकास होता है, पर प्रक्रिया तो जड़ वस्तु है, उसमें तो समय और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन अनिवार्य है। गांधीजी ने स्वयं कहा था कि सत्याग्रह का शास्त्र अभी अधूरा है, उसमें उत्तरोत्तर विकास की आवश्यकता है। सवाल इतना ही है कि विकास किस दिशा में हो। स्पष्ट है कि सत्याग्रह के उत्तरोत्तर ऐसे विकसित प्रकार सोचने होंगे कि हम अधिकाधिक आसानी से सामने वाले के हृदय में प्रवेश कर सकें और परिवर्तन की भावना जाग्रत कर सकें।

अक्सर यह कहा जाता है कि इस तरह व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय परिवर्तन के प्रयोग तो अब तक हजारों वर्षों से बराबर चले आये हैं। इस प्रकार के प्रयोगों से समाज परिवर्तन सम्भव नहीं है। पर गांधीजी की विशेषता यही थी कि उन्होंने व्यक्तिगत गुणों के विकास को सामूहिक आन्दोलन का स्वरूप दिया, जिससे समाज में एक नैतिक शक्ति का निर्माण होकर समाज परिवर्तन का रास्ता खुल सका। विनोबाजी ने भूदान आंदोलन के जरिये इस प्रक्रिया को और आगे बढ़ाया है। व्यक्तिगत मालकियत खतम हो इसके लिए उन्होंने हर व्यक्ति के अन्दर समाज के लिए अपनी मालकियत का त्याग करने की प्रेरणा की। इस आन्दोलन का रूप दिया और इस तरह व्यक्तिगत गुण विकास को समाज परिवर्तन का साधन बना दिया।

प्रतिकार के प्रश्न का विचार एक दूसरे पहलू से भी करना चाहिए। जैसे हिंसक प्रतिकार के लिए पूर्व तैयारी आवश्यक है उसी तरह अहिंसक प्रतिकार के लिए भी पूर्व तैयारी आवश्यक है। अहिंसक प्रतिकार के लिए लोगों में प्रेम-भावना का विस्तार और सहयोग पर आधारित संगठन की शक्ति जाग्रत होना जरूरी है। जितने हम रचनात्मक काम करते हैं, वे काम इस प्रकार की भावना और संगठन को पैदा करने के साधन हैं। गांधीजी ने सत्याग्रह की जब-जब बात की तब-तब रचनात्मक काम के जरिये लोगों का [illegible] बढ़ाने पर भी उतना ही जोर दिया था। पर जैसा हमेशा होता है, गांधीजी की बात का अनुकूल अंश हमने ले लिया, बाकी की परवाह नहीं की। हम मनुष्य-बल से या पशु-बल से परिवर्तन करना नहीं चाहते, तो हमारा एक यही उपाय है कि लोग स्वयं अपने संकल्प के बल पर आगे बढ़ें। यह रचनात्मक दृष्टिकोण से ही सम्भव है, वस्तुस्थिति के लिए केवल दूसरे को जिम्मेदार मान कर उस पर दबाव डालने से नहीं। इस प्रकार जब पूर्व तैयारी होगी तो प्रतिकार के मौके भी समाज में कम होते जायेंगे और जो मौके बाकी रहेंगे वे सामने आने पर लोग अहिंसात्मक तरीके से उनका अहिंसक प्रतिकार कर सकेंगे।

ऊपर के विवेचन से इस बात का निषेध नहीं है कि सर्वोदय विचार और उसकी सिद्धि के खिलाफ आज समाज में जो बातें चल रही हैं, उनका प्रतिकार किया जाए और लोगों को उन बातों से आगाह किया जाए। सरकार द्वारा जो कुछ हो रहा है उसका भी समावेश इसमें हो जाता है। हमें वस्तुस्थिति को स्पष्ट करते हुए, नम्रतापूर्वक और स्पष्ट, वर्ग या दल निरपेक्ष दृष्टि से लोगों के सामने रखना चाहिए। पर अगर यह याद रखें कि हमारी इन बातों का परिणाम जहाँ भाषा से होगा, जिस भाषा में हमारे शब्दों के पीछे प्रेम, सेवा और निष्पक्षता होगी वहीं उसका असर होगा, और जनता में प्रेम, सद्भाव और [illegible] हुई होगी तो हम संघर्ष के विवाद में नहीं पड़ेंगे। [illegible] निशानी नहीं है।

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

* लोकनागरी लिपि

परमात्मा में हम सब एक हों !

वीनोबा

गांव में हींदू, मुसलमान, सीख वगैरह सब मजहबों के लोग भगवान का नाम लेने में प्यार से अेकट्ठा हों। रूहानीयत और साअीन्स, दोनों के लीअे यह जरूरी है। मुझे कभी-कभी यह देख कर दुःख होता है की और कामों के लीअे तो हम अेकट्ठा हो सकते हैं, लेकीन जहां भगवान का नाम लेने का मौका आता है, वहां हींदू, मुसलमान, सीख सब अलग-अलग हो जाते हैं। मैं सोचता हूं की भगवान के बख्त कैसा है की अुसका नाम लेने का मौका आया, तो हमें अलग होना पड़ता है। मैं कहना चाहता हूं की और कामों में अलग होना मैं समझ सकता हूं, लेकीन परमात्मा का नाम लेने में हमें अेक होना चाहीअे। अीस तरह हम हर गांव में परमात्मा का नाम लेने में अेकट्ठा हों और अुस वक्त कुरानशरीफ, गीता, ग्रंथ साहब, धम्मपद, बाअीबील वगैरह कीताबों का मुताला मील कर करें। अेक मीला-जुला समाज बनायें। कुरानशरीफ में कहा है, 'अुम्मतुन वाहीद'—तुम सब अेक अुम्मत हो। जीतने भी पैगंबर, नबी, वली अृषी, मुनी, साधु, महापुरुष हो गये, अुन सबकी अेक ही जमात है, अेक ही कौम है। यह अीजहार कुरानशरीफ ने दीया है। गीता में भी कहा है की तुम कहीं से भी आते हो, मेरी तरफ ही आते हो। "मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।" हे अर्जुन, सब अीन्सान सब बाजुओं से मेरी तरफ ही आ रहे हैं, यानी बीलकुल कुरानशरीफ ने जो बात कही—'कुल्लुन अीलैना राजीअुन' वही बात गीता कहती है। सब अच्छे-अच्छे धर्मग्रंथ अेक ही बात कहते हैं। हम सब प्यार से अेकसाथ बैठ कर अुन धर्मग्रंथों का मुताला करें। हम अेकसाथ गायें, अेकसाथ खायें, अेकसाथ खेलें, कूदें, नाचें, अेक-दूसरे पर खूब प्यार करें और जाते समय हंसते-हंसते चले जायें। मेरी सीर्फ अेक ही ख्वाहीश है की परमेश्वर के पास जाते समय रोने का मौका न आये, हम हंसते हंसते चले जायें। यो सोच कर की हम भगवान से मीलने जा रहे हैं, हमें खुशी होनी चाहीअे। हमें अंदर से यह यकीन होना चाहीअे की हम भगवान के पास पहुंच रहे हैं तो अब अुनका प्यार हमें हासील होने वाला है। हम अुनके हुकम बरदार हैं, अुनके कदमों की खीदमत करने की हमने कोशीश की है, अीसलीअे हमें कोअी खौफ नहीं है, कोअी डर नहीं है। बीलकुल बेखौफ बेडर, जैसा की कुरानशरीफ ने कहा है—'ला खौफ, अलैहीम वलाहुम यहजनून।' नीर्भय होकर हम परमात्मा के पास हंसते-हंसते चले जायें।

(जम्मू, कश्मीर, २०-९-'५९)

* लिपिसंकेत : ि = ी; ु = ू; ... संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

टिप्पणियाँ

खादी-ग्रामोद्योग संबंधी एकांगी दृष्टिकोण

वाराणसी में एक खादी-भण्डार का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री सम्पूर्णानन्दजी ने खादी सम्बन्धी अपने कुछ विचार प्रकट किये हैं। उन्होंने कहा कि हाल ही में गांधी-जयंति सप्ताह का उद्घाटन करते हुए लखनऊ में भी ऐसे ही कुछ विचार उन्होंने जाहिर किये थे। विचारों में स्पष्टवादिता थी, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। लेकिन जो कुछ उन्होंने कहा वह अगर काँग्रेसजन और काँग्रेस-नेतृवर्ग के चिन्तन तथा दृष्टिकोण का प्रतीक माना जा सकता है, तो वह खेदजनक ही कहा जायगा। श्री सम्पूर्णानन्दजी एक चालू दर्जे के राजनीतिक नेता ही नहीं, विचारक भी माने जाते हैं। इसलिए खादी ग्रामोद्योगों सम्बन्धी उनकी मान्यताएँ तथा धारणाएँ यों ही कही गयी या दरगुजर कर दी जानेवाली नहीं रह जाती। उनका दृष्टिबिन्दु गांधीजी की कल्पना की विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था और काँग्रेस जिसे अपने लक्ष्य के रूप में दोहराती है उस पंचायती राज-व्यवस्था के बहुत कुछ विरोध सा दिखाई दे तो वह एक तरह परेशानी में डालने वाली और दुःखपूर्ण, शोचनीय स्थिति का सूचक होगा।

उनके कहने का सार यह था कि आजादी की लड़ाई के वक्त खादी की एक वर्दी के रूप में प्रतिष्ठा थी। अब आजादी के बाद उसका वैसा स्थान बने रहने की आवश्यकता नहीं है। जनता की रुचि और व्यावसायिक पहलू को नजरअंदाज कर उसे सरकारी, अर्धसरकारी, मदद पर चलाते रहना चम्मच-चम्मच गिजा देकर जिलाने (spoon feeding) जैसी बात है, जो गलत है और अधिक समय तक चल नहीं सकती। गांववालों की भी माली हालत पिछले वर्षों में सुधरी है और उनसे कपड़े के नये डिजाइन, नये पहनाव की एवज खादी से चिपटे रहने की अपेक्षा करना ठीक नहीं है। खादी के स्टाक आज बढ़ रहे हैं और उनके निकालने की चिन्ता व तजवीज अधिक कमीशन, हुण्डी-बिक्री वगैरह के जरिये की जाती है। खादी की तरह मिलों में भी गाँठें पड़ी रहती हैं या माल नहीं बिकता है तो लाखों मजदूरों की बेरोजगारी के सवाल को देखते हुए उस सब पर ध्यान देना भी सरकार के लिए जरूरी है। भावुकता के सहारे खादी को जिंदा नहीं रखा जा सकता है, नहीं रखा जाना चाहिए। खादी के संबंध में केवल कुछ भावना, कुछ प्रतिष्ठा, उसके द्वारा स्वर्ग व खुशहाली ला सकने की आकांक्षा वगैरह से वे बिलकुल इत्तफाक नहीं करते, इत्यादि। शब्द ये ही नहीं हैं। लेकिन समझने में कोई गलती न हुई हो तो उनके पूरे भाषण का सार और खादी संबंधी विचार का मध्य-बिन्दु यही था कि एक तरह वे खादी को देश की अर्थ-रचना में विशेष स्थान नहीं मानते और गाँव को, किसानों वगैरह को, कुछ अतिरिक्त आमदनी का जरिया चरखा, खादी वगैरह से मिल जाता है, उस एक सीमा तक खादी की आंशिक उपयोगिता वे मानते हैं।

भावुकता और आजादी की लड़ाई के वक्त की प्रतिष्ठा की बात को छोड़ा जाय। आर्थिक और औद्योगिक केन्द्रीकरण से सत्ता का केन्द्रीकरण कितना बढ़ जाता है, लोकशाही की हत्या होकर तानाशाही कैसे बढ़ता है, शोषण और विषमता के अवसर किस प्रकार बढ़ जाते हैं, इस सबको भी छोड़ा जाय। समता पर आधारित समाज और स्वाभिमानी सामूहिक जीवन के लिए सत्ता और आर्थिक साधनों का विकेन्द्रीकरण बहुत जरूरी है और खादी-ग्रामोद्योग के मूल में गांधीजी की मानवीय मूल्यों की रक्षा के साथ आर्थिक जीवन विकास की यही दृष्टि थी, इस बुनियादी विचार पर भी जोर न देकर खेती के धंधे पर मूलतः आधारित और ग्राम-संस्कृति वाले हिन्दुस्तान जैसे देश की बड़ी जनसंख्या के सीधे और स्थूल रोजगार के सवाल को लें, तब भी खादी ग्रामोद्योग का देश की अर्थ-रचना में बड़ा व प्रमुख स्थान है, यह देश के योजनाकार और अर्थशास्त्री आज मानने लगे हैं, इसे कैसे भुलाया जा सकता है! मिलों में आखिर कितने मजदूर होंगे और उन्हें रोजगार का संरक्षण देना है तो क्या गाँव-गाँव में फैले इनसे संख्या में कई गुनी अधिक, किन्तु स्थिति में कम दशा गिरी हुई जनता के जीने मरने की ओर क्या कोई ध्यान नहीं देना है!

बदकिस्मती यह है कि आज का राजनीतिक और विचारक शहरी बनता जा रहा है। शहरों के वर्ग-संगठन, उनके आयोजित प्रदर्शन व विरोध, निहित स्वार्थों के संगठित प्रयत्न व षड्यंत्र से लोहा लेना उसके लिए मुश्किल हो रहा है। सामान्य जन-जीवन से सरकें भी आज के राजनैतिक पक्षों व नेताओं का काम हो गया है और जनता स्वयं इस चकाचौंध व बुद्धि-भेद के चक्र में गुमराह की जा रही है। यदि विदेशी सत्ता और आर्थिक शोषण से बचा कर स्वराज्य और अन्न-वस्त्र-स्वावलंबन के लिए विदेशी वस्त्र के बहिष्कार, उसकी होली और देश की मिलों व कारखानों को संरक्षण, सहायतादि देने की बात सोची जा सकती थी, उसकी मांग की जा सकती व लड़ाई लड़ी जा सकती थी, तो आज की परिस्थिति और बढ़ती हुई शिक्षितों व अशिक्षितों की बेकारी का तकाजा है कि गाँव के धंधे, उद्योग वगैरह के संरक्षण के लिए सब कुछ किया जाय।' राष्ट्रीय सरकार का यह फर्ज हो जाता है कि आज वह देश की मिलों व कारखानों से इन्हें बचायें।

लेकिन वस्तुतः सारी बात जनता के स्तर के सोचने-समझने की है। आज का शासन शहरों और बड़े कारखानों से कितना दबा है, यह देश की ग्रामीण जनता

को आँख खोल कर देखना और नेतृवर्ग के खादी-ग्रामोद्योग वगैरह सबंधी दृष्टिकोण से समझना चाहिए। पैसे पर आधारित अर्थ-व्यवस्था ने यह महँगे-सस्ते का गोरखधंधा खड़ा किया है और खेदजनक यह है कि विचारक श्रेणी के गांधी-विचारधारा को मानने का दावा करने वाले व्यक्ति भी जनता को मार्गदर्शन देकर इस चक्र से निकलने की एवज इसमें स्वयं फँस रहे हैं और देश को भ्रम में डाल रहे हैं। देश की अर्थ नीति अनिश्चयात्मक क्यों बनी है, उसके कारण इन विचारों में मिलेंगे। देश की खादी ग्रामोद्योग में लगी संस्थाओं को इस स्थिति को गंभीरता से समझने की कोशिश करनी चाहिए। खादी-कार्य को नया मोड़ देने की ऐसे समय में और आज ही बड़ी आवश्यकता है। चारों ओर के प्रहार को रोक कर मजबूत नींवों पर देश की अर्थ व्यवस्था कायम करने के लिए खादी-ग्रामोद्योग के सामने एक चुनौती है। श्री सम्पूर्णानंदजी की स्पष्टवादिता सारी स्थिति का पूरा चित्र प्रस्तुत करती है और एक तरह सत्तारूढ़ पक्ष की बड़ी संख्या के दृष्टिकोण को बिना रंग के खोल कर रख देती है। इस पर से देश की जनता को और खादी-कार्यकर्ताओं को अपनी स्थिति और अपना रास्ता साफ समझना, खोजना है।

—पूर्णचन्द्र जैन

एक प्रेरणादायी प्रयोग

इसी अंक में अन्यत्र बिहार के एक गाँव, हाँसी, में समग्र नयी तालीम के प्रयोग का एक दिलचस्प विवरण दिया जा रहा है।

हाँसी गाँव के प्रयोग की यह कहानी कई दृष्टियों से प्रेरणादायी है। गाँववालों के अपने अभिक्रम और पुरुषार्थ से गाँव के छः से चौदह वर्ष के सब बालक-बालिकाओं की शिक्षा, और गाँव के सभी निवासियों की 'समग्र नयी तालीम' याने "नित्य कुछ सीखें, नित्य कुछ दोषों को छोड़ें तथा नित्य बढ़ें,"—इन दोनों बातों की व्यवस्था, देश के सब गाँवों के लिए और गाँवों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक है। आज हर गाँव हरएक चीज के लिए सरकारी सहायता का मुखापेक्षी रहता है। हाँसी गाँव का यह प्रयोग न सिर्फ इस बात की प्रेरणा देता है कि "गाँव जिस दशा में है, उससे ऊपर उठने के लिए स्वयं कुछ करें और बाहर के भरोसे हाथ पर हाथ रख कर बैठे न रहें," बल्कि ऐसा करना मुश्किल नहीं है, यह भी सिद्ध करता है।

दूसरी महत्त्व की बात हाँसी के प्रयोग से यह स्पष्ट होती है कि सही दृष्टि से किया हुआ कोई भी रचनात्मक काम गाँव की समग्र उन्नति का अर्थात् ग्राम-स्वराज्य की सिद्धि का साधन बन जाता है। किसी भी एक काम के लिए गाँव में सहयोग की शक्ति और सामूहिक प्रवृत्ति जाग्रत हो जाने से सहज ही उसका उपयोग जीवन के दूसरे अंगों में भी हो सकता है। नयी तालीम के इस प्रयोग के लिए जो संकल्प गाँव में जाग्रत हुआ उसका उपयोग आगे वस्त्र स्वावलम्बन के संकल्प, सूतदान, सर्वोदय-पात्र आदि के लिए किया जा रहा है और इस तरह हाँसी गाँव के कदम ग्राम-स्वराज्य की दिशा में बढ़ रहे हैं। इसी तरह जहाँ खादी का काम हो रहा हो, या जहाँ हरिजन सेवा का काम हाथ में लिया गया हो, वे काम भी समग्र दृष्टि से किये जायँ तो निश्चय ही वे ग्राम स्वराज्य के साधन हो सकते हैं। वे ऐसे होंगे तभी वे चिरस्थायी हो सकेंगे। हाँसी के प्रयोग की जानकारी मार्गनिर्माण के काम में लगे हुए साथियों के लिए बहुत उपयोगी और उत्साहवर्धक सिद्ध होगी ऐसी आशा है।

प्रेमक्षेत्र बनायें

सर्व सेवा संघ का नया विधान लागू होने के साथ देश के विभिन्न हिस्सों में नये नये से बहुत बड़ी संख्या में लोक-सेवक बने हैं। 'भूदान-यज्ञ' के इस अंक में प्रकाशित ताजा आँकड़ों के अनुसार यह संख्या छः हजार से ऊपर पहुँची है। इन लोक सेवकों के लिए एक सर्वसुलभ सर्वसामान्य कार्यक्रम क्या हो यह अक्सर पूछा जाता है। ये लोक-सेवक शहरों में, गाँवों में, भिन्न भिन्न परिस्थितियों में, भिन्न भिन्न कामों में लगे हुए हैं, उनकी योग्यता और प्रभाव में भी एक-दूसरे में काफी अन्तर है। पर हमारा सबका ध्येय अहिंसक क्रान्ति का है इसके प्रतीक के तौर पर, तथा एक सर्वसामान्य बुनियादी कार्यक्रम की दृष्टि से इनमें से करीब-करीब हरएक अपने आसपास एक 'प्रेम-क्षेत्र' निर्माण करने का कार्यक्रम हाथ में ले सकता है। जैसा विनोबा ने पिछले दिनों सुझाया है, हर लोक-सेवक अपने क्षेत्र में, जिसमें वह रहता और काम करता है, कम से कम एक सौ परिवारों से अपना प्रेम सम्बन्ध जोड़े, उनसे सतत् सम्पर्क रखे और बातचीत, प्रत्यक्ष सेवा, पत्र पत्रिकाओं तथा साहित्य के जरिये उन तक सर्वोदय-विचार पहुँचायें। इस प्रकार के प्रेम-सम्बन्ध से उन परिवारों में सर्वोदय-पात्रों की स्थापना भी आसानी से हो सकेगी और आगे के काम का रास्ता भी खुल जायगा। यह कार्यक्रम हर कोई उठा सके इतना आसान भी है और अहिंसक क्रान्ति की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। छः हजार लोक सेवक इस तरह आसानी से छः लाख परिवारों में पहुँच सकते हैं। यह कार्यक्रम ऐसा है जो हमारे आज के चालू कामों के साथ हो सकता है। इस कार्यक्रम को हम अभी से हाथ में लें तो आगामी सर्वोदय-सम्मेलन तक फिर से देश में एक हवा बन सकती है।

—सिद्धराज ढड्ढा

जंगम विद्यापीठ में ● निर्मला देशपांडे

इस्लाम और पुनर्जन्म

प्रार्थना, घर के गगनस्पर्शी वृक्षों की छाया में एक छोटा-सा काफिला रुका था। कुल दो हजार फुट की चढ़ाईवाला रास्ता तय हो चुका था, और उतना ही बाकी था। विनोबाजी ने सहज पूछा : "हमें कहीं भरती करनी है तो सबसे अहम चीज क्या है?" किसीने जवाब दिया 'पानी'। विनोबाजी ने कहा : "वर्ल्डस्थान में आठ देवता माने गये हैं, जिन्हें वसु कहते हैं। गीता में कहा है कि उनमें सर्वश्रेष्ठ है अग्नि। जब अग्नि पैदा हुआ तब इन्सान को उसका बहुत ही ताज्जुब हुआ, क्योंकि सूरज, वायु, आसमान, पानी जैसे बाकी के देवता उसके पैदा किये हुए नहीं थे, पर अग्नि को उसने पैदा किया। कुरानशरीफ, में जो बीमारी के वक्त बोला जाता है, उस सूरे यासीन के आखिर में आता है कि "जिसने हरी चीज में से यानी पेड़ की लकड़ी में से अग्नि पैदा की, यह क्या तुम्हें फिर से जिला नहीं सकता है? तुम क्यों डरते हो कि तुम मरोगे? तुम्हें फिर से पैदा होना होगा, काम करना होगा। 'मुलाकात' करना होगा। वहाँ तुम्हारे अच्छे-बुरे काम देखे जायेंगे और उसके मुताबिक फल मिलेगा।"

"अब इसमें से एक पेचीदा सवाल पैदा होता है। क्या इसके मानी यह है कि मरने के बाद हम गोर में (कब्रस्तान) पड़े रहेंगे और फिर रोजे कयामत के आखिरी दिन फैसला होगा या यह है कि मरने के बाद हम बार-बार जन्म लेंगे और वो करते-करते पूरा विकास होकर फिर आखिरी दिन फैसला होगा? मेरे मन में विचार आता है कि इस जन्म में अच्छे-बुरे कर्मों का फल मिलेगा यह बात तो ठीक है। लेकिन क्या एक बच्चा पैदा होने पर दो घंटे में मर गया। तो वह अब अल्लाह के सामने खड़ा होगा तो अल्लाह उसके अच्छे-बुरे काम क्या देखेगा? जिसे कर्म करने का मौका ही नहीं मिला, उसका क्या फैसला होगा? इसलिए कम-से-कम उसे तो फिर से जन्म मिलना चाहिए और अच्छे या बुरे कर्म करने का मौका मिलना चाहिए। मैं अपने मुसलमान भाइयों से कहता हूँ कि जब आप मानते हैं कि 'अल्लाह मिट्टी में से मनुष्य पैदा कर सकता है, लकड़ी में से अग्नि पैदा कर सकता है, तो क्या वह आदमी दुबारा पैदा नहीं कर सकता है? इसलिए कुरानशरीफ में से पुनर्जन्म की बात निकलती ही नहीं, यह मानना ठीक नहीं है। इस पर चर्चा करनी चाहिए। ईसाइयों ने भी ईसा मसीह को फिर से उठाया है। यूनस मछली के पेट में रहा था और फिर पैदा हुआ यानी उसका पुनर्जन्म हुआ, ऐसी एक कहानी है। इसके मानी है कि पुनर्जन्म नहीं है, ऐसी बात तय नहीं हुई है, उस पर अभी सोचना बाकी है।"

● ● ●

शांति सैनिक संन्यासी नहीं है

सर्वोदय-पात्र पर चर्चा चल रही थी। एक भाई ने कहा कि "उसमें गहरी दृष्टि है। सर्वोदय पात्र पर रहना याने संन्यासी बनना है।" विनोबाजी ने इस विचार का खण्डन करते हुए कहा : "क्या आपकी फौज के सिपाही संन्यासी होते हैं? शांति-सैनिक तो सिपाही ही है। सारा समाज जिस स्तर का है, उसी स्तर के शांति-सैनिक हैं। वो समय पर हरएक का उसके लिए मुहा भर देना चाहिए और यों समझ कर ही उसे लेना चाहिए। इसमें ऊँचे स्तर की अपेक्षा करना गलत है। फिर पास पड़ी हुई कुरान की किताब खोल कर विनोबाजी ने सुनाया : "जब मुहम्मद से पूछा गया—'तू काहे का पैगम्बर है, तू तो साधारण मनुष्य जैसा है,' तब उसके जवाब में अल्लाह ने कहा कि 'हमने तेरे पहले भी कुछ ऐसे पैगंबर भेजे हैं, जिनकी स्त्रियाँ थीं, बाल बच्चे थे।' धर्म-प्रचार के लिए ब्रह्मचारी की जरूरत है, लेकिन शांति-सैनिक के लिए वह अपेक्षा बहुत ज्यादा है। आज तक जितने संत हुए, उनमें ब्रह्मचारी जितने थे और बाल बच्चों वाले जितने थे, यह देखा जायेँ तो बाल-बच्चों वाले संत ही ज्यादा निकलेंगे।"

● ● ●

साइन्स के लिए अंग्रेजी आवश्यक नहीं

एक भाई ने सवाल किया "क्या आप मानते हैं कि साइन्स के लिए अंग्रेजी जबान लाजमी है?" विनोबाजी ने कहा : "जी नहीं। बल्कि मैं तो मानता हूँ कि जब तक धर्म संस्कृत में था, तब तक वह आम जनता में नहीं पैठा। जब वह प्राकृत भाषाओं में आया, तब जनता में पैठा। वैसे ही जब तक साइन्स अंग्रेजी के जरिये ही पढ़ाया जायेगा, तब तक वह जनता में नहीं पैठेगा। मैं साइन्स का भक्त हूँ, मैं चाहता हूँ कि हमारे गाँव का बच्चा बच्चा साइन्सदाँ (वैज्ञानिक) बने। इसलिए मैं कहता हूँ कि साइन्स मादरी जबान (मातृभाषा) के जरिये पढ़ाना चाहिए।

आम जबान एक बात है और साइन्स की जबान दूसरी बात है, जिसमें 'टेक्निकल टर्म' का सवाल आता है। दुनिया में सिर्फ पाँच जबानें ऐसी हैं, जो बुनियादी हैं जिनके शब्द चले हैं। वे हैं—संस्कृत, अरबी, लैटिन, चीनी और ग्रीक। इसलिए साइन्स की परिभाषा बनानी हो तो इन पाँचों में से किसी एक जबान का आधार लेना होगा। बंगलादेश की भाषा में आज हिन्दी और उर्दू दोनों इन

इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन साइन्स की परिभाषा के लिए आपको संस्कृत या अरबी में से एक को ही कबूल करना पड़ेगा। वैसे हिन्दुस्तान में दो परिभाषाएँ भी बन सकती हैं। लेकिन मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान में साइन्स की परिभाषा बनानी हो तो संस्कृत के सिवाय चारा नहीं।

राष्ट्रभाषा तो हिन्दुस्तानी ही होगी। लेकिन उसके लिए मैं एक सुझाव पेश करता हूँ। भारत की चौदह ज़बानों के चौदह शब्दकोश बनाये जायँ, उनमें जितने शब्द समान मिलते हैं, उनकी एक फेहरिस्त बनायी जाय और जो शब्द चौदह ज़बानों में मिलते हैं, उनको पहला 'प्रिफरन्स' (प्राथमिकता) दिया जाये, जो तेरह में मिलेंगे, उन्हें दूसरा 'प्रिफरन्स' दिया जाये। इस तरह देख कर शब्द लिये जायें तो कोई झगड़ा नहीं होगा। जैसे 'परमात्मा' शब्द आपको चौदह ज़बानों में मिलेगा तो उसे लिया जाये। इस विषय की तरफ वैज्ञानिक दृष्टि से देखना चाहिए। लेकिन हम लोग वैज्ञानिक ढंग से सोचते नहीं, मध्ययुगीन दिमाग लेकर सोचते हैं, इसलिए हरएक का अपना अपना अभिमान और गुस्सा चलता है।

इन्सान का परिचय कब होता है?

एक भाई से नाम पूछते हुए विनोबाजी ने कहा कि "आपका नाम तो याद था। लेकिन रूप नहीं था। नाम, रूप, कर्म और गुण, ये चार चीजें जानने पर किसी का पूरा परिचय हो जाता है। नाम परिचय तो आरम्भ है, फिर रूप का, कर्म का और आखिर में गुणों का परिचय होता है। गुण सूक्ष्म होते हैं, दूर से उनका पता नहीं चलता है। नाम, रूप और कर्म का दूर से पता चल सकता है। लेकिन गुण-परिचय तो साक्षात् सम्बन्ध से ही होता है। दूर से तो गलतफहमी भी हो सकती है।"

मन्त्री महोदय ने एक पंजाबी कहावत सुनायी, जिसके मानी हैं कि रास्ता पड़े या वास्ता पड़े तो इन्सान का परिचय होता है। विनोबाजी ने कहा, "जेल में और पदयात्रा में अच्छा परिचय हो जाता है। वहाँ वास्ता पड़ता था और यहाँ रास्ता। लेकिन मेरी यह खूबी है कि मुझे पहले से ही गुण परिचय होता है। उसमें बड़ा आनन्द मालूम होता है। वह मनुष्य को सब प्रकार से बचा लेता है।"

केरल पर एक प्रगट चिन्तन

के. केलप्पन

कोई भी अपनी राय दिल खोल कर प्रगट नहीं कर सकता, ऐसी परिस्थिति आज केरल में है। लेकिन उसकी जरूरत भी आज ही सबसे ज्यादा है। इसलिए मैं दूसरों की गलतफहमी और गालियों की परवाह न करते हुए अपनी राय प्रकट करता हूँ। आज केरल का भविष्य एक अनिश्चित स्थिति में है, यह बनने जा रहा है। अगले चुनाव के लिए कम से कम अभी पाँच महीने का समय है। तब तक मतदाता अपनी राय तय कर लें। साम्यवादी लोग निराश हुए हैं, क्योंकि उनकी सरकार को निश्चित मुद्दत के पहले ही खतम करना पड़ा। प्रतिपक्ष वाले अपनी विजय मनाने में मग्न हैं। अहंकार के नशे में वे आपे से बाहर हो गये हैं। इसलिए दोनों पक्षवाले (साम्यवादी और प्रतिपक्ष) यह सुनने तक को तैयार नहीं हैं कि दूसरे लोग क्या कहना चाहते हैं। फिर भी मैं अपना दिल खोलूँ।

कम्युनिस्टों की तत्त्व-संहिता के बारे में या उनकी दृष्टि में होने वाले अवश्यंभावी ऐतिहासिक सत्य के बारे में मैं यहाँ कुछ भी कहना नहीं चाहता। कुछ धार्मिकों को अपने धर्म पर जितनी अंधश्रद्धा होती है उतनी ही अंधश्रद्धा कम्युनिस्टों को अपनी राजनीति में है। चर्चा करने से यह नहीं बदलेगा अनुभव से ही बदल सकता है।

इसमें शक नहीं कि साम्यवादी पक्ष गरीबों का मित्र है। लेकिन साम्यवादियों ने एक गलती की। केरल में जब उनकी सरकार थी, तब उन्होंने सारे गरीबों (Have-nots) को पाँच साल के अंदर कम्युनिस्ट बना डालने की जल्दबाजी की। हर जमाने में भौतिक ऐश आराम से बढ़कर आजादी और नैतिक मूल्यों को महत्त्व देने वाले व्यक्ति किसी के भी बीच पैदा होते हैं। उनकी संख्या बहुत कम होने पर भी वे किसी भी समाज और किसी भी सरकार को सही रास्ते से चलने की प्रेरणा देते हैं। साम्यवादी पक्ष यह भूल ही गया कि दुनिया में धार्मिक मूल्यों का स्थान तो धर्म और नीति के लिए निर्भयता के साथ जान को न्यौछावर कर देने वाले व्यक्तियों के आधार से ही आँका जायगा। साम्यवादी लोग ऐसी गफलत में पड़े कि भौतिक चीजें प्राप्त करने व अपने नैतिक विश्वासों व मूल्यों की आहुति देने के लिए हर कोई तैयार होंगे। लोकशाही में हृदय परिवर्तन के लिए जोर-जबरदस्ती नहीं चलेगी। इसलिए कम्युनिस्ट सरकार ने लोभ, लालच और तिरस्कार के दूसरे तीन उपायों से गरीबों को कम्युनिस्ट बनाने की जल्दबाजी की। "Have-nots" गरीबों को जो भी सहूलियतें दी जा सकती हैं, वे सब कम्युनिस्ट पार्टी में दाखिल होने के बाद ही दी जाती थीं। नीति-न्याय भी उन्हीं को प्राप्त होता था। किसी का खून हुआ हो, मार पीट हुई हो, उसमें अगर गुनहगार कम्युनिस्ट है, तो उसकी मदद सरकार के पक्षवाले करने लगे। सरकारी दफ्तर से अगर कोई इन्साफ चाहता है, तो उसे कम्युनिस्टों के जरिये पेश होना पड़ता था। ताड़ियों (Tappers) की सहकारी संस्था हो या सड़क के काम करने वालों का संघ हो, उन सभी में कम्युनिस्टों का ही हाथ था। साम-दाम-दंड-भेद के जरिये बहुत से लोगों को कम्युनिस्ट पार्टी में दाखिल किया गया होगा। इन सबके परिणामस्वरूप प्रांत भर में कम्युनिस्ट सरकार ने विरोध पैदा किया है। फलस्वरूप आम जनता भी दो टुकड़ों में बँट गयी: एक साम्यवादी और दूसरा साम्यवाद के प्रतिपक्ष वाले।

इन सबके अलावा तालीम के कानून और भूमि-सुधार बिल आदि से खुदगर्ज लोगों की शत्रुता भी कम्युनिस्ट सरकार ने हासिल की।

मतदान के जरिये कम्युनिस्ट लोगों के अधिकार जमाने का यह पहला मौका था। विरोधियों का खून करके ही आज तक वे शासन हथियाते रहे। लोकशाही में उनके लिए स्थान नहीं है। अब विरोध का मौका बना रहा। नतीजा यह हुआ कि खुदगर्ज लोग, गैरकम्युनिस्ट और [illegible] आम जनता कम्युनिस्ट सरकार के विरुद्ध हो गये, जिसने आखिर में "मुक्ति की लड़ाई" का रूप ले लिया। खुदगर्ज (Vested Interests) लोगों ने उसका नेतृत्व किया। कम्युनिस्ट लोग कहेंगे कि यह 'मुक्ति की लड़ाई' मतदान पेटी से सधी हुई क्रान्ति के विरुद्ध है। स्कूल-पिकेटिंग, मोटर पिकेटिंग, सरकारी दफ्तर पिकेटिंग, आग लगाना, छुरी चलाना, मार डालना आदि हिंसामय तरीके अपनी कार्यसिद्धि के लिए विरोधी पक्ष ने अपनाये थे। पर खुदगर्ज लोग ही उस लड़ाई में हिस्सेदार थे, सो नहीं है। सभी राष्ट्रीय व साम्प्रदायिक संस्थाएँ उसमें शरीक थीं। किसान व मजदूर भी उसमें शामिल थे, जो 'कम्युनिस्ट पार्टी' में नहीं थे। विद्यार्थियों का हिस्सा उसमें कम नहीं था। संक्षेप में कहा जाय तो वह आम लोगों का समर था। अतः केन्द्रीय सरकार इस मामले में कूद पड़ी। लेकिन केन्द्र के हस्तक्षेप का कई विधान-विशारदों ने प्रतिषेध प्रकट किया है।

अगले चुनाव से पता चलेगा कि उस समय केन्द्र का हस्तक्षेप अनिवार्य था या नहीं। अगले चुनाव यह भी सिद्ध करेंगे कि एक बड़ा बहुमत कम्युनिस्ट सरकार के दरअसल विरुद्ध था या नहीं। Vested Interests (खुदगर्ज लोग) और राष्ट्रीय संस्थाओं वाले अगले चुनाव में एक होकर रह सकते हैं। अगर उन्हें बहुमत मिलता है तो उनकी सरकार लोक कल्याण के लिए कहाँ तक सार्थक होगी, यह देखा जायगा। अगर उनकी संयुक्त सरकार अपने-अपने Vested Interest, स्वार्थ का ही संरक्षण करती है तो यह निश्चित है कि कम्युनिस्ट पार्टी की शक्ति और बढ़ेगी। अगर कम्युनिस्टों को कमजोर करना है, तो 'विमोचन समर' वाले (मुक्ति की लड़ाई वाले) अपने Vested Interests, निहित स्वार्थों को भूल कर देश की भलाई के लिए राज करें।

'मुक्ति की लड़ाई' में कई समुदाय व राष्ट्रीय पार्टियों के लोग शामिल थे। पक्षातीत होने का यह सुवर्णावसर है। ये अपने अपने पक्ष के नाम पर असेंब्ली में प्रवेश करें तो भी, अगर लोक कल्याण के लिए ये काम करेंगे तो आम लोग एक पहले कदम के तौर पर उसका स्वागत करेंगे।

इस तरह की एक सरकार के लिए और देश को कमजोर करने वाले झगड़े से बचाने के लिए सर्वोदयवाले जोर से प्रचार करें। पक्षगत राजनीति और पक्षगत स्वार्थ का त्याग करने के लिए जो तैयार हों, ऐसे पक्षों की मदद हम कर सकते हैं। साम्यवादी पक्ष अपने वैदेशिक नेतृत्व और स्वेच्छा शासन का त्याग करके लोकशाही पक्ष बन जाय तो उन्हें अलग करने की जरूरत नहीं है। पक्षवाले यह तय करें कि 'लोकल' याने स्वशासन-संस्थाओं के चुनाव में पार्टी के नाम पर उम्मीदवारों को खड़ा नहीं करेंगे।

असेंब्ली के अगले चुनाव में मतदाता आगे आयें। चुनाव के झगड़े टालने ही चाहिए। उसके लिए एक रास्ता है। असेंब्ली में प्रतिनिधियों को भेजना मतदाताओं का फर्ज है। इसलिए मतदाताओं के जरिये जगह-जगह पर आम सभाएँ बुलायी जायँ। अपने चुनावक्षेत्र से चुनाव के लिए खड़े होने वाले सभी पार्टियों के उम्मीदवारों को एक ही दिन एक ही जगह मतदाता अपने अपने क्षेत्र में बुलायें। उस सभा में हर पार्टीवाले अपना अपना व्याख्यान दें। लेकिन आपस में गाली-गलौज न करें। कोई गाली देने लगे तो मतदाता शांतिपूर्वक उसे बैठने के लिए कहेंगे। उम्मीदवारों के व्याख्यान मतदाता ध्यान से सुनेंगे। फिर उस जगह उस चुनाव के लिए कोई अलग सभा नहीं होगी। चुनाव के दिन मतदाता अपनी अपनी इच्छानुसार मतदान पेटी में अपना मत डालेंगे। चुनाव संबंधी उन आम सभाओं में कौन से नारे लगायें, इसकी भी एक सूची हमें मतदाताओं के साथ बैठ कर बनानी चाहिए। सर्वोदय आदर्शों के अनुरूप यह चुनाव कैसा हो, इसका प्रचार सर्वोदयवाले शीघ्र से शीघ्र करें।

(मूल मलयालम के आधार पर)

बारह साल के तजरबे से सबक लें

विनोबा

स्वराज्य-प्राप्ति को अब बारह साल हो गये हैं। बारह साल में अपने देश ने काफी अनुभव लिये हैं। इस जमाने के बारह साल यानी पुराने जमाने के पचास साल की बराबरी के हैं। यह साइन्स का जमाना है, जिसमें समाज में बहुत जल्दी फर्क पड़ता है, बहुत जल्दी तब्दीली लायी जा सकती है। इस लिहाज से यह छोटा अरसा नहीं माना जायगा। बारह साल में हमें जो तजरबे हुए, उनसे हमें क्या-क्या सबक मिले, इस पर नागरिकों को सोचना चाहिए।

दूसरा तरीका ढूँढ़ना होगा

इन बारह सालों में मुख्तलिफ सूबों में और मुल्क में जो राज्य चल रहा है, उससे सबको तसल्ली नहीं है। यह बात ठीक है कि यह हमारा राज्य है, हमारे नुमाइन्दे राज चलाते हैं और अच्छे से अच्छे लोग जो मुहैया थे, उन्हींमें से हमने जगह-जगह राज्य चलाने के लिए भेजे हैं। वे लोग अपनी पूरी अक्ल और ताकत देश की खिदमत में लगा रहे हैं, इसमें शक नहीं है। उन्होंने जो काम किया, उसकी दुनिया के दूसरे देशों के साथ तुलना करें तो कहना पड़ेगा कि हिन्दुस्तान जैसे देश में जो कि करीब ढाई सौ साल दूसरे लोगों के हाथ में था, बाहरवालों की हुकूमत में था, जिसे अपना कारोबार देखने की अक्ल नहीं रही है, वह देश स्वराज्य का नये सिरे से आयोजन कर रहा है। उस लिहाज से इन्होंने इन बारह सालों में काफी अच्छा काम किया है, ऐसा मानना पड़ेगा। तिस पर भी जो राज्य चला है, उससे बहुत ज्यादा समाधान नहीं हुआ है, यह कह सकते हैं। इसमें किसीका कोई खास दोष नहीं है। हमने जो चन्द लोग राज्य चलाने के लिए भेजे हैं, वे नालायक हैं, इसलिए दूसरे लोगों को भेजा जाय तो काम ठीक चलेगा—ऐसी आशा कोई रखे तो वह बिलकुल बेबुनियाद आशा होगी, जो सफल नहीं होगी। आज जो आदमी हुकूमत में भेजे गये हैं, उनसे बेहतर आदमी हिन्दुस्तान में नहीं हैं, ऐसी भी बात नहीं है। परन्तु जो भेजे गये हैं, वे भी अच्छे आदमी हैं। तिस पर भी जो अनुभव आया, जो नतीजा देखा गया, उस पर से ध्यान में आता है कि हिन्दुस्तान में राज्य चलाने का दूसरा कोई तरीका ढूँढ़ना होगा।

यह तरीका नहीं चलेगा

हिन्दुस्तान में राज्य का जो तरीका हमने अपनाया, वह यहाँ की आबोहवा के लिए, हालात के लिए माकूल नहीं साबित हुआ। इसके माने यह नहीं कि लोकशाही का मौजूदा तरीका कतई गलत है। दुनिया में राज्य चलाने के जो तरीके हैं, उनमें लोकशाही एक बेहतरीन तरीका है, यह मानी हुई बात है। उसमें दो रायें नहीं हैं। इस पर भी समझना चाहिए कि परदेश से आयी हुई चीज हम अपनी देश में रखते हैं तो उसका रूप कुछ बदलना पड़ता है। कुछ बदलने पर ही वह चीज यहाँ काम देती है। उसे यहाँ की आबोहवा के लिए अनुकूल बनाना पड़ता है। लोकशाही में कुछ ऐसी चीज है, जिससे हम नफरत करते हैं, ऐसी बात नहीं है। लोकशाही अच्छी होते हुए भी यहाँ की आबोहवा के मुताबिक इसमें फर्क करना जरूरी है।

लोकशाही का बुनियादी तत्त्वज्ञान हमें जिन लोगों से मिला है, उनमें फ्रान्स के तत्त्वज्ञानियों की गिनती है। फ्रान्स एक ऐसा देश है, जहाँ एक उम्दा ख्याल है, जिसमें डेमोक्रेसी के अच्छे विचार प्रकट हुए हैं और वहाँ से दुनिया भर में फैले हैं, जिनका दुनिया के राजनीतिक चिंतन पर असर हुआ। ऐसे दुनिया के दस पाँच विचारकों में फ्रान्स के दो-चार नाम होना लाजमी है। इस तरह से जिस फ्रेंच साहित्य ने दुनिया पर असर डाला है, उस फ्रान्स की आज क्या हालत है? वहाँ पर कोई भी राज्य स्थिर नहीं रहा, हालत डाँवाडोल रही। लोकशाही में चुनाव के बाद चुनाव होते गये और आखिर एक शख्स के हाथ में राज सौंप दिया गया और वह जैसा चल रहा है, उससे बेहतर राज चलाने की ताकत डेमॉक्रेसी के ख्याल से वहाँ के लोग नहीं महसूस करते हैं। यह फ्रान्स की हालत है, जो डेमॉक्रेसी के ख्याल में एक ऊँचा देश माना जाता है। दूसरे बहुत से मुल्कों की बात तो मैं छोड़ देता हूँ, क्योंकि वे राष्ट्र ऐसे बड़े उसूल पर शायद नहीं बने थे।

लोग क्या चाहते हैं?

सोचने की बात यह है कि इन मुल्कों के लोगों को किसी राज्य-पद्धति का आग्रह है, राज्य चलाने का फलाना तरीका ही चलना चाहिए, ऐसा आग्रह है क्या? लोगों को किस बात की फिक्र है? दुनिया में इलाज करने वाले तरह-तरह के लोग होते हैं। एलोपैथी, होमियोपैथी, नेचरोपैथी वगैरह दस पाँच पैथीज हैं, जिनके अभिमानी लोग अपनी-अपनी पैथी की स्तुति के राग अलापते रहते हैं। लेकिन क्या बीमार को किसी पैथी का अभिमान या आग्रह होता है? उसे तो इसी बात का आग्रह होता है कि किसी तरह उसकी बीमारी मिटे। कोई ऐसा उसूलवाला बीमार भी होता है, जो कहता है कि मैं फलानी पैथी की ही दवा लूँगा, दूसरी पैथी की दवा नहीं लूँगा। लेकिन दुनिया में ऐसे लोग थोड़े हैं। बाकी सब लोगों का यही आग्रह रहता है कि उनकी बीमारी मिटे। इसी तरह

जनता का किसी खास राज्य पद्धति का आग्रह नहीं होता है। जनता का यही आग्रह रहता है कि उनकी जिंदगी अच्छी बने। डेमोक्रेसी ही चलनी चाहिए, या सोशियालिज्म, कम्युनिस्ट स्टेट, वेल्फेयर स्टेट, मिलिटरी राज्य, प्रेसिडेंट की डिक्टेटरशिप या और किसी की डिक्टेटरशिप का आग्रह उन्हें नहीं है। भूखों को यह आग्रह है कि उन्हें खाना मिले। बेकारों का यह आग्रह है कि उनकी बेकारी मिटे। बीमारों का यह आग्रह है कि उनकी बीमारी मिटे। दुखियों का यह आग्रह है कि उनका दुख मिटे। कमजोरों का यह आग्रह है कि उनकी ताकत बढ़े। अशिक्षितों का यह आग्रह है कि उन्हें तालीम मिले। बेघरबार लोगों का यह आग्रह है कि उन्हें अच्छे घर मिलें। इसके सिवाय लोगों का और किन्हीं चीजों का आग्रह है, यह आप देखेंगे तो पता चलेगा कि अपनी जिंदगी ठीक चले, यही उनका आग्रह है और कोई आग्रह नहीं है।

इसलिए जो भी पद्धति अच्छी होने का दावा करेगी, उसे अपनी अच्छाई का सबूत यही पेश करना होगा कि वह लोगों के मुताबिक, माँगें पूरी करे। जो पद्धति उनके मुताबिक पूरे करने में कामयाब साबित होगी, उसे लोग मानने के लिए राजी हैं। यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका में यही चीज दिखायी दे रही है। आखिर हमें सोचना चाहिए कि हमारे लिए पद्धति—"सिस्टम" है या सिस्टम के लिए हम हैं। हमारे लिए दवा है या दवा के लिए हम हैं? आपके दवा के तजरबे हम पर चलें, आप अपने प्रयोग हमारे शरीर पर करें, यह हम नहीं चाहते हैं। हमें समझना चाहिए कि कोई भी राज्य-पद्धति हमारे लिए है, न कि हम पद्धति के लिए।

पुराने विचार नहीं चलेंगे

लोगों से बार-बार कहा जाता है कि तुम्हें अपने देश के लिए मर मिटना चाहिए। पहले के जमाने में इधर सैकड़ों की और उधर भी सैकड़ों की फौजें हुआ करती थीं। फिर हजारों की, लाखों की फौजें आमने-सामने खड़ी होने लगीं और अब तो करोड़ों की फौजें मैदानेजंग में, रणक्षेत्र में आमने-सामने खड़ी होती हैं। इस आज की हालत में लोगों से कहा जाय कि देश के लिए मर मिटो तो कहेंगे कि अब फिर और देश कौन बचा है? हम ही तो देश हैं। हम मर मिटेंगे तो बचा क्या? अब देश के करोड़ों लोगों के लिए हजार लोगों के मर मिटने की बात कही जाती थी, तब तो ठीक था, लेकिन अब करोड़ों को ही मर मिटने के लिए कहा जाता है, तब वे पूछेंगे कि हम और हमारे बाल-बच्चों के अलावा देश में और कौन है? किनके बचाव के लिए हम मर मिटें? क्या पेड़ों के, पहाड़ों के, पत्थर के बचाव के लिए मर मिटें? हम ही तो देश हैं। इसलिए मर मिटने की बात पुराने जमाने में चलती थी, लेकिन इस 'टोटल वार', सम्पूर्ण युद्ध के जमाने में देश के लिए मर मिटो, इस कहने का कोई मानी ही नहीं है।

पिछले महायुद्ध में चर्चिल से पूछा गया था कि लड़ाई का मकसद जाहिर करो, तब लड़ने में बल आयेगा। चर्चिल इसका जवाब नहीं देता था, लेकिन एक दिन उसने सोचा कि जवाब देना ही चाहिए। उसने कहा कि "तुम कैसे मूर्ख हो? पूछते हो कि लड़ाई का मकसद क्या है? लड़ाई का मकसद क्या हो सकता है, सिवाय इसके कि जंग जीती जाय। क्या लड़ाई हारने के लिए होती है?" लड़ाई जीतना, यही उसका मकसद है। इसी तरह

हमारे यहाँ भी इलेक्शन का मकसद, घोषणा जाहिर किया जाता है, लेकिन उसमें हिस्सा लेने वाले यही समझते हैं कि इलेक्शन का मकसद है—इलेक्शन जीतना। इलेक्शन जीतने के लिए जिन तरीकों को काम में लाना जरूरी होता है, वे सब तरीके बरते हैं, फिर चाहे [illegible] [illegible] हों। यह तो किसी का [illegible] नहीं हो सकता है कि इलेक्शन हारा जाय। इसलिए कहा जाता है कि "पुरानी किताब [illegible] [illegible]"। कहते हैं कि इलेक्शन का नाजायज फायदा नहीं उठाना चाहिए। लेकिन इसका जवाब मिलता है कि इलेक्शन में जो भी करना है, जायज ही है।

इसलिए मैं मानता हूँ कि चर्चिल का जवाब सही [illegible] था, इसमें कोई शक नहीं। क्योंकि जहाँ करोड़ों लोग आमने-सामने खड़े होते हैं, वहाँ सवाल पैदा होता है कि हमें किसका बचाव करना है। इस हालत में पुराने जो देशभक्ति के, पेट्रियाटिज्म, नेशनलिज्म आदि के विचार थे, वे सब छोड़ देने पड़ेंगे। अब उन विचारों में यह ताकत नहीं रही है कि उनके लिए लोगों से मर मिटने के लिए कहा जाय।

मरने का ठीक ढंग

एक जमाना था, जब लोगों से कहा जाता था कि देश के लिए मर मिटो। लेकिन आज के युग में

पंद्रह साल के तजरबे से सबक लें...

में जाओगे, परियाँ यहाँ आकर तुम्हें स्वर्ग ले जायेंगी। अब लोग पूछते हैं कि धर्म क्या है ? बताओ। धर्म की व्याख्या करते करते व्यास भगवान थक गये। उन्होंने इसकी तीनों व्याख्याएँ कीं और आखिर कह दिया, "धारणात् धर्मः"–जिससे प्रजा का धारण होता है, वह धर्म है। इस पर लोग कहेंगे कि हमारा धारण हो ना, यही धर्म है। तो हम नहीं कहें यही बेहतर धर्म है। इसलिए आज धर्म के लिए मर मिटने की बात चली गयी है। अब इन्सान इन्सान के साथ जीये और भल-मनसाहत के साथ रहे, यही हम चाहते हैं। क्या वे स्वर्गवाले पुराने सारे ढकोसले अब चलेंगे ? कहा जाता था कि स्वर्ग में जाओगे तो मेवे चखने को मिलेंगे और नर्क में जाओगे तो दुःख भुगतना पड़ेगा। इस तरह इधर आग, उधर बाग। इधर जन्नत, उधर जहन्नुम। आग का डर और बाग का लालच। यह सब क्या अब चलेगा ? हमें समझना चाहिए कि हमने जिस अक्ल से यहाँ पर जिंदगी बितायी, उसी अक्ल को लेकर जन्नत या जहन्नुम में जायेंगे। जिस अक्ल से हम अमृतसर में रहते थे, उसी अक्ल को लेकर लाहौर गये तो क्या फर्क पड़ने वाला है ? वहाँ भी वही जिंदगी रहेगी। अगर आप यहाँ बेवकूफ साबित हुए हैं, आपने अपने गाँव को नर्क बनाया होगा, गदगी वैसी ही रहने दी होगी, तो मरने के बाद आप जहाँ जायेंगे, वहाँ क्या साफ-सुथरे रह पायेंगे ? वहाँ भी आपको वही नर्क मिलेगा। क्योंकि आपकी अक्ल वैसी ही थी। लेकिन अगर आपने यहाँ पर साफ-सुथरी जिंदगी बितायी होगी, तो मरने के बाद आप स्वर्ग में जायेंगे और वहाँ आपको वही साफ-सुथरी जिंदगी दीखेगी। मरने के बाद की जिंदगी याने जिंदगी की 'एक्सटेन्शन सर्विस' विस्तार योजना है, और 'कम्युनिटी प्रोजेक्ट' यहाँ का जीवन है। मरने के बाद भी जिंदगी कायम रहती है, यह कहना ठीक है, लेकिन वहाँ पर आप किस किस्म की जिंदगी बितायेंगे, इसका लक्षण आप यहीं दिखा रहे हैं। इसलिए मरने के बाद आपको डरा कर या ललचा कर बेजा लड़ाई के लिए तैयार किया जाय, यह बात अब होने वाली नहीं है। अब मजहब के लिए मरने वाली बात नहीं रही। इसी तरह राष्ट्र के लिए मर मिटने को कहा जाय तो भी लोग कहेंगे कि हम जन्म पाये हैं तो काहे को मरें ? लोगों से कहा जाता है कि 'योर्स इज नॉट टु क्वेश्चन हाई, योर्स इज बट टु ऐन्ड डाई।' जो कोई आता है, लोगों को यही सुनाता है कि अरे तुम जन्मे हो तो मरने वाले हो ही, इसलिए फलानी चीज के लिए मर मिटो। लेकिन लोग कहेंगे कि हमसे बार बार मरने की बात क्यों कहते हो ? हम जानते हैं कि हम मरने वाले हैं, लेकिन हम ठीक ढंग से मरना चाहते हैं। वह ढंग हमें बताओ।

इस डर से मुक्ति कैसे ?

हमें समझना चाहिए कि

अब लोग वही राज्यपद्धति पसन्द करेंगे, जिसमें इन्सान और इन्सानियत भी रहेगी। जो लोग यह वादा करेंगे, उन्हें अपना वादा साबित करना पड़ेगा। आज तो लोगों से कहा जाता है कि हमें चुनो तो आपको कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। हम आपको ऐसे ही स्वर्ग में ढकेल देंगे। हमें चुनोगे तो हम आपको मालामाल कर देंगे। हर कोई आकर यही कहता है कि आइए मनोज आजमाइये। लेकिन क्या हम भेड़ हैं कि किसी गड़रिये पर अपना मनोज सौंप दें ? अब इस तरह से नहीं चल सकता है।

हमारा बारह साल का अनुभव कह रहा है कि जिनके हाथ में हमने बागडोर सौंपी थी, वे अच्छे ही लोग थे, लेकिन जो तरीका हमने चलाया, वह गलत था। अभी आपने केरल में एक तमाशा देखा कि वहाँ लोकशाही का क्या हाल हुआ ! सब रथी, महारथी, अतिरथी वहाँ पहुँच गये। वहाँ के एक मन्त्री ने हमें तार दिया कि कृपा करके आप केरल आइये। उस वक्त हम पीर-पंजाल लाँघ कर गुलमर्ग पहुँचे थे। हमने कहा कि और सब तो वहाँ पहुँच गये, अब हमारा ही जाना बाकी रहा है। हम कश्मीर में ही रहे तो हमारी इज्जत रहेगी, इसलिए आखिर हम वहाँ नहीं गये, कश्मीर में ही रहे और हमारी इज्जत रह गयी। आखिर वहाँ पर राष्ट्रपति का राज्य आया तो छुटकारा हुआ, ऐसा माना गया। हम पूछना चाहते हैं कि अगर इसमें छुटकारा है तो पहले से आखिर तब छुटकारा ही क्यों न रहने दिया ! बीच में क्यों फिर से पड़े ! लेकिन राष्ट्रपति का राज याने लाचारी है, ऐसा माना जाता है। वहाँ पर फिर से चुनाव होने वाले हैं। अगर भाड़ जैसी हालत होगी और बार-बार चुनाव करने की नौबत आयेगी, तो यह कहना कठिन है कि फिर-फिर से चुनाव करने का यह सिलसिला कब तक जारी रहेगा ? फिर से जन्म और फिर से मरण, यही चलता रहा तो इस जन्म-मरण के फेर से हमें मुक्ति, नजात कैसे मिलेगी ?

सभी मतदाताओं का प्रतिनिधित्व हो

केरल का प्रयोग बता रहा है कि आज की राज्य पद्धति में फर्क करना जरूरी है। इंग्लैंड की आबोहवा में जो पेड़ फलता फूलता था, वह यहाँ की आबोहवा में सूखता जा रहा है। हमें यह समझ में ही नहीं आता है कि ५१ लोगों ने हमें वोट दिया तो हम बाकी के ४९ पर अपनी सेवा क्यों लादें ? ५१ ने कहा कि हमारी सेवा करो तो हमारी याने किनकी ? १०० लोगों की क्यों ? ५१ की ही क्यों नहीं ? इसकी कोई वजह नहीं कि ५१ लोगों ने वोट दिया तो जिन ४९ ने हमें वोट नहीं दिया, उन पर हम अपनी सेवा लादें। ५१ ने राम को वोट दिया और ४९ ने जॉन को दिया तो राम ५१ की सेवा करे और जॉन ४९ की करे। राम अपनी सेवा ४९ पर क्यों लादे ! जिन ५१ ने हमें वोट दिया, उनकी सेवा करने का अधिकार तो हमें प्राप्त होता है, लेकिन हम अपनी सेवा १०० लोगों पर लादना चाहते हैं और मिलिटरी के आधार पर सेवा लादी जाती है। इसकी कोई वजह है ? हमें समझना चाहिए कि

हमें इस प्रकार की कोई राज्य-व्यवस्था अपनानी होगी कि जिन्होंने मतदान किया, उन सबका प्रतिनिधित्व हो। खिचड़ी बने। खालिस दाल हम खायें तो वह हजम नहीं होती है और लोटा लेकर दौड़ना पड़ता है। सिर्फ चावल खायें तो दस्त साफ नहीं होता है। इसलिए खिचड़ी बनायें तो लोटा लेकर भी दौड़ना नहीं पड़ेगा और दस्त भी साफ आयेगा। फिर फिर से चुनाव करना याने लोटा लेकर दौड़ने जैसा ही है। दिन में एक दफा शौच साफ हो, यह ठीक है। पाँच साल में एक दफा शौच हो, यह ठीक है। लेकिन हर आठ-दस महीनों में हमें लोटा लेकर दौड़ना पड़े, तो कहना होगा कि सेहत ठीक नहीं है। दाल हजम नहीं होगी। इसलिए खिचड़ी पकानी पड़ेगी।

डेमॉक्रेसी के विचार में हम हुकूमत चलाने के लिए हुकूमत नहीं चलाते हैं, बल्कि सेवा के लिए हुकूमत हाथ में लेते हैं। इसलिए सबकी रजामन्दी चाहिए। सिर्फ मेजॉरिटी, बहुमत से काम नहीं चलेगा। एक जमाना था, जब अल्पमत का, अकलियत का राज चलता था। चाहे राजा का राज हो, सरदारों का हो, रोम के नागरिकों का राज हो या क्षत्रिय जमात का राज हो। आखिर वह अल्पमत का ही राज्य था। उसका 'रीएक्शन', प्रतिक्रिया होकर अब मेजॉरिटी का, अक्सरियत का, मायनॉरिटी पर याने अकलियत पर राज चल रहा है। यह सर्कस चल रहा है। कभी घोड़े पर कुत्ता खड़ा होता है तो कभी कुत्ते पर घोड़ा खड़ा होता है ! हमें सोचना चाहिए कि आखिर मेजॉरिटी के राज्य के मानी क्या है ? हम अपने नुमाइंदे चुन कर भेजते हैं।

ज्यादा लोग जिनको चुनते हैं वे नुमाइंदे बनते हैं। लेकिन हम पूछना चाहते हैं कि ज्यादा लोग ज्यादा अक्लवाले होते हैं या कम अक्लवाले ? आपका तजरबा क्या है ? ज्यादा लोग चुनेंगे याने मामूली अक्लवाले लोग ही चुने जायेंगे। कोई असाधारण पुरुष नहीं चुना जायगा। क्या गुरु नानक आज होते तो चुने जाते, मिनिस्ट्री में लिये जाते, उनको कितने वोट मिलते ? महाज्ञानी चुने नहीं जा सकते हैं, क्योंकि महाज्ञानी को पहचानने के लिए भी अक्ल चाहिए, उतनी अक्ल मुहैया न हो तो औसत अक्लवाले लोग चुने जायेंगे, जो डेयरी के दूध के जैसे होंगे। डेयरी का दूध एक अच्छी-से-अच्छी गाय के दूध की बराबरी भी नहीं करता है और खराब-से-खराब गाय के दूध की बराबरी भी नहीं करता है। इसी तरह आज के राज्य चलाने वाले लोग औसत अक्लवाले होते हैं। औसत अक्लवालों से सर्वोत्तम राज्य चलेगा, यह नामुमकिन है।

बहुमत नहीं, सर्वमत हो

साइन्स के जमाने में औसत अक्लवालों के हाथ में मिलिटरी रही तो बड़ा खतरा है। तुलसी रामायण में रामराज्य का वर्णन करते हुए कहा है, 'दंड जतिन कर।' सन्यासियों के हाथ में दंड था। आज तो सिपाहियों को ३२ इंच की छाती देख कर उनके हाथ में दंडा दिया जाता है। इस दंडे से राज चलता है तो वह किस अक्ल का राज होगा ? दंड-शक्ति अगर किसी के हाथ सौंपनी है तो औसत अक्लवाले आदमियों के हाथ में सौंपना गलत है। अगर सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों के हाथ में सौंपी जाय तो दंड शक्ति का कम-से-कम उपयोग होगा और जो उपयोग होगा, वह ठीक होगा। अब तो हिन्दुस्तान में यह चलता है कि इधर से पत्थर फेंके जाते हैं और उधर से गोलियाँ चलायी जाती हैं। कम्युनिस्टों से पूछा जाता है कि तुमने कम्युनिस्ट होकर भी केरल में गोली क्यों चलायी ? वे जवाब देते हैं कि तुमने उधर जितनी गोलियाँ चलायीं, हमने उससे कम ही चलायीं ! इसका माने यह हुआ कि कम गोली चलाने वाला ज्यादा अक्लमंद साबित हुआ। गोली कतई नहीं चलनी चाहिए, ऐसी बात कोई नहीं करता। आज की लोकशाही की पद्धति में औसत लोग ही चुने जायेंगे तो उसमें कम-से-कम इतना तो हो कि सबकी राय ली जाय। अगर ऊँचे लोगों का मार्गदर्शन नहीं मिल रहा है, औसत लोगों का ही मिल रहा है तो औसत में ५१ लोगों की ही राय क्यों लेते हो ? सौ की क्यों नहीं लेते ?

महापुरुषों के हाथ में सत्ता देने में भलाई है, भगवान के हाथ में, स्थितप्रज्ञ के या महाज्ञानी के हाथ में सत्ता रहे तो हमारी भलाई होगी। माँ की गोद में सोते हैं तो अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं, लेकिन वह न हो और औसत अक्ल से राज चलाना पड़ता हो तो १०० की राय क्यों नहीं लेते हो, ५१ की ही क्यों लेते हो, इसका कोई उत्तर मुझे आज तक किसी ने नहीं दिया। मुझसे पूछा जाता है कि या तो आप ५१ का राज पसन्द करो या ४९ का। दूसरा कोई 'चॉयस' है ही नहीं।

मुझे पुराना किस्सा याद आता है। हम जब स्कूल में पढ़ते थे तो मास्टर साहब ने एक हिसाब रखा, जिसका उत्तर बीस लड़कों ने गलत लिखा और तीन लड़कों ने सही लिखा। इसलिए मास्टर साहब ने बीस लड़कों को नम्बर नहीं दिये, तीन को ही दिये। उन बीस में से एक लड़का खड़ा होकर बोला कि क्या हम बीसों गलत हैं और वे तीन ही सच्चे हैं? हम बीस एक बाजू हैं तो भी क्या गलत हैं? जहाँ मेजॉरिटी का राज चलता है, वहाँ इस प्रकार की हास्यास्पद बात चलती है। पुराने जमाने में मायनॉरिटी का राज चलता था और मेजॉरिटी की परवाह नहीं की जाती थी तो आज उसकी प्रतिक्रिया में मेजॉरिटी का राज चलता है और मायनॉरिटी की परवाह नहीं की जाती है।

सबकी अकल इकट्ठी हो

हमें तो ऐसा तरीका ढूँढ़ना होगा, जिसमें राज्य के सब लोगों का प्रतिनिधित्व हो और सबकी मिली-जुली राय से काम चले। इसके लिए जरूरी है कि सबका कोई मिला-जुला प्रोग्राम बनाया जाय। क्या कम्युनिस्ट पार्टी, जन संघ, पी० एस० पी०—सब मिल कर कोई 'कॉमन ग्राउण्ड' नहीं है, सबका 'कॉमन प्रोग्राम' नहीं बन सकता है? चुनाव में उनके जो 'मैनिफेस्टो' निकले हैं, उनमें आप देखेंगे कि हर कोई कहेगा कि हमारे हाथ में राज्य आयेगा तो हम गुर्बत मिटायेंगे, राज-कारोबार का खर्च कम करेंगे। हर मैनिफेस्टो में आपको यही चीजें मिलेंगी। याने राम नाम लिए बगैर किसी का नहीं चलता है, फिर चाहे वह होटल कीपर हो या भजन-मण्डली हो। फिर यह क्यों नहीं होता है कि सबके मैनिफेस्टो में जो कॉमन बातें हैं, उन्हीं का एक कॉमन प्रोग्राम बना कर उतना ही लेकर राज्य चलाया जाय और उसी पर जोर दिया जाय। ऐसा होगा, तभी हिन्दुस्तान में कुछ काम बनेगा और यह पिछड़ा हुआ देश आगे बढ़ेगा। नहीं तो

> हर पाँच साल में फिर-फिर से अपना नसीब आजमाने की बात चलेगी तो यही होगा कि इधर प्लानिंग भी बढ़ रही है और उधर बेकारी भी। एक पंच-सालाना योजना खत्म हुई, दूसरी खत्म हो रही है, तीसरी की तैयारी है, फिर भी बेकारी बढ़ ही रही है। इसलिए सर्वोदय का यह विचार है कि राज्य चलाने में सबके विचारों का समान अंश होना चाहिए और उसमें सबकी अकल इकट्ठी होनी चाहिए।

इसके लिए हमें गाँव-गाँव के लोगों को समझाना होगा कि आज जिस तरह तुम अपने नुमाइन्दों पर सभी मुख्य बातें सौंपते हो, वैसा मत करो। मुख्य बातें अपने हाथ में रखो और गौण बातें उनपर सौंपो। आज तो नुमाइन्दों के हाथ में सब कुछ है। मिलिटरी उनके हाथ में, व्यापार व्यवहार उनके हाथ में, शिक्षण, समाज सुधार, धर्म सुधार, म्यूजिक, साहित्य अकादमी—सब कुछ उनके हाथ में है। याने जीवन की कुछ की कुछ शाखाएँ हम उनके हाथ में सौंपते हैं। मगर वे ऐसे कौन अकल वाले होते हैं, जो यह सब करने में समर्थ हों? उनके हाथ में सब कुछ सौंप कर लोग अपने हाथ में सिर्फ खाना पीना रखते हैं। वह भी नुमाइन्दों पर सौंपते तो ठीक होता।

कौनसा काम खुद करना, कौनसा मुनीम से करवाना, कौनसा नौकर से करवाना, यह अक्ल सेठजी नहीं रखेंगे, तो वे नाममात्र के सेठजी रहेंगे और सारी सत्ता मुनीमजी के हाथ में आयेगी। इसलिए हमने जो 'डिलिगेटेड डेमोक्रेसी' चलायी है, जिसमें सारी की सारी सत्ता नुमाइन्दों को सौंपी जाती है, उसके बजाय हम यह करें कि मुख्य सत्ता अपने हाथ में रख कर कम बातें नुमाइन्दों को सौंपें।

को-ऑपरेशन बनाम ऑपरेशन

गाँव-गाँव के लोगों को इकट्ठा होकर अपना कारोबार चलाना होगा। विकेन्द्रित राज्य-रचना, विकेन्द्रित समाज रचना और विकेन्द्रित अर्थ-रचना करनी होगी। ऊपर की सत्ता में सिर्फ जोड़ने की बात रहे, बाकी सारी सत्ता गाँव की हो। गाँव-गाँव स्वराज्य का एक छोटा नमूना हो। गाँव-गाँव में पूर्ण स्वराज्य लाया जाय। जैसा उपनिषद् के ऋषि गाते हैं—'पूर्णमदः पूर्णमिदम्'—यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है। इस तरह हमें जगह-जगह पूर्णों का नमूना पेश करना चाहिए। इन पूर्णों को जोड़ने वाला एक परिपूर्ण भी रहे। आज तो अपूर्णों को पूर्ण बनाने की बात चलती है। शहरवाले लंगड़े हैं और गाँववाले अन्धे। लंगड़ा अन्धे के कन्धे पर बैठता है और मार्गदर्शन करता है। शहरवाले गाँववालों से कहते हैं कि तुम हमारी अक्ल से चलो, तुम्हारा और हमारा को-ऑपरेशन होगा। लेकिन इस को-ऑपरेशन में दोनों का 'ऑपरेशन' चल रहा है। यह भी माना जाता है और यह भी। इस तरह पशुओं का, आदमी का, अवयवों का, अपूर्णों का सहयोग करके पूर्ण बनाने की बात चलाना ठीक नहीं है। ऐसे अपूर्णों के सहयोग से किसी का समाधान नहीं हो सकता। अपूर्णों के सहयोग से पूर्ण बनाने के बजाय पूर्णों के सहयोग से परिपूर्ण बनाना ही को-ऑपरेशन का वेदान्तीय तरीका है।

(पठानकोट, २२-९-'५९)

ग्राम-स्वराज्य की दिशा में

अक्राणी का ग्राम-स्वराज्य का प्रयोग

ठाकुरदास बंग

[पिछले अंक में हमने असम के ग्राम निर्माण कार्य की संक्षिप्त, संकलित जानकारी इस स्तंभ में दी थी। अब यहाँ बम्बई राज्य के अक्राणी और अक्कलकुआ तहसील के कार्य का संक्षिप्त ब्यौरा दे रहे हैं। आशा है, दूसरे प्रांतों से भी कार्यकर्तागण वहाँ के काम का विवरण भेजते रहेंगे।

श्री विनोबाजी की महाराष्ट्र-पदयात्रा के दरमियान पिछले वर्ष पश्चिम खानदेश के अक्राणी और अक्कलकुआ तहसील के १५० गाँवों में से १०० ग्रामदान हुए। हिन्दुस्तान के पूर्वी किनारे पर उड़ीसा के कोरापुट क्षेत्र की तरह इस क्षेत्र में भी दोहरा काम था—सदियों से दलित पड़े आदिवासियों को मानव की हैसियत में लाना और साथ-साथ ग्राम-स्वराज्य का विकास करना। विनोबाजी ने इस मुश्किल काम की जिम्मेदारी श्री ठाकुरदास बंग को तथा उनके साथियों को सौंपी। प्रस्तुत लेख में श्री बंगजी ने अक्राणी-अक्कलकुआ के पिछले वर्ष के काम का सजीव, मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक चित्र खींचा है। साथ में उन्होंने देश के नौजवानों से उनके धैर्य, और कुछ 'घर गुसाने' की भावना को चुनौती देने वाले इस काम में अधिक नहीं तो ५ वर्ष का समय देने की माँग की है। आशा है, देश के कुछ तरुण-तरुणियाँ इस चुनौती को स्वीकार करेंगे। जिन्हें इस विषय में दिलचस्पी हो वे मंत्री, सातपुड़ा सर्वोदय मंडल, पोस्ट धड़गाँव, जिला पश्चिम खानदेश से संपर्क करें। —सं०]

पिछले साल सितंबर में पश्चिम खानदेश में इन्हीं दिनों विनोबाजी ने प्रवेश किया। उस समय सारी सृष्टि नयन-मनोहर थी। 'सृष्टि की भाँति उदार बनो', यह संदेश विनोबा ने वहाँ के लोगों को दिया। धरती के उदार पुत्रों ने अपने गाँव ग्रामदान किये। इस प्रकार अक्राणी व अक्कलकुआ तहसीलों के १५० गाँवों में से १०० गाँव ग्रामदान हुए। देश का यह प्रथम सलग ग्रामदान-क्षेत्र देश के गौरव का और महाराष्ट्र के अभिमान का विषय बना। विनोबा-यात्रा को अब एक साल हो गया है। अतः इस एक साल का लेखा जोखा यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

सातपुड़ा सर्वोदय-मंडल

ग्रामदान में से ग्राम स्वराज्य विकसित करने के लिए विनोबाजी एक सप्ताह तक वहीं रहने के बारे में लगातार सोचते रहे। लेकिन दौरों को कश्मीर का रास्ता पकड़ना पड़ा। महाराष्ट्र छोड़ने के पूर्व उन्होंने पाँच कार्यकर्ताओं का एक मंडल आगे के काम के लिए बनाया। इसीका विकसित स्वरूप यानी इस काम के लिए 'सातपुड़ा सर्वोदय मंडल' नाम की संस्था बनायी गयी। बाद ऐसी हुई कि ग्रामदान होने के बाद अक्राणी के आदिवासी नेता विनोबाजी से मिले और उन्होंने अपना मन्तव्य उनसे कहा : "महाराज, तुम्ह चालल्या। तुम्ह पगे पगे दूर जाल्या। तुम्ह जाणकार पड़े हो। पण आमाने वाट कोण दिखाडसी। आमु छवी, आमु काम करसा। हमने माटी हाइडो।" (महाराज, आप आज, आप पदयात्रा करते हुए दूर चले जायेंगे। आपको तो जाना ही पड़ेगा। पर हमें कौन रास्ता बतायेगा? हम कर्मठ हैं। हम काम करेंगे। आप अपने आदमी यहाँ भेजिये।) इस प्रकार आदिवासी नेताओं की माँग पर कार्यकर्ता यहाँ आये और सातपुड़ा सर्वोदय मंडल की ओर से काम का प्रारंभ हुआ। श्री रामचन्द्र भाई सातपुड़ा सर्वोदय-मंडल के मंत्री हैं।

सब आये अथवा साहूकार के पास जाओ, दुगुनी कीमत से अनाज लाओ और फिर आगे की फसल रेहन रखो।

ऐसी परिस्थिति में हमने वितरण किये हुए गाँवों में १५० बोरे अनाज कर्ज रूप से दिया। सरकार ने भी सोसाइटी मार्फत कर्ज एवं अनाज बाँटा। इसलिए व्यापारियों का अनाज पड़ा रहा और अनाज के बढ़े हुए दाम नीचे आये। साहूकार का ब्याज समाप्त हुआ। अनाज बाँटने के कारण लोग उत्साह से काम करने लग गये हैं। जिसका काम पीछे रहा, उसे भी सब लोग मदद करने के लिए जाते हैं और वह भी सबको भोजन अपने घर पर कराता है। साहूकार एव व्यापारियों के निहित स्वार्थ को इस प्रकार धक्का लगने के कारण कहीं-कहीं उनका विरोध भी होने लगा है। कार्यकर्ता अपना-अपना बोझा खुद ही उठाने के कारण बेगार के आदी ये लोग आश्चर्यचकित होते हैं और कार्यकर्ता 'मेहरना माटी' (दया का आदमी), भूदानवाला माटी (भूदान का आदमी), मास्तोर (मास्टर) कहने लगे हैं।

ऊपर लिखा गया है कि कुछ कार्यकर्ता यहाँ आकर काम करने लगे हैं। कुछ आर्थिक मदद भी मिली है। पैसा तो और भी मिलेगा। लेकिन इतने कार्यकर्ताओं से काम नहीं चलेगा। यहाँ के आदिवासी भाइयों की उदारता और परस्पर-सहयोग की वृत्ति को जानने वाले और इनके दोष—शराब, अनेक पत्नियाँ करना, परपीड़ा—जानने वाले कार्यकर्ता बड़ी तादाद में चाहिए।

भोले आदिवासियों ने विनोबा पर श्रद्धा रख कर ग्रामदान किया। इनको भाँति सादगी में आनन्द मानने वाले और इन्हें कृषि, ग्रामोद्योग, वनोद्योग, गोपालन, शिक्षा आदि के बारे में तात्त्विक ज्ञान देने योग्य तज्ञ चाहिए, भाई चाहिए, बहनें चाहिए। आज बहुत-से पढ़े-लिखे लोग सरकारी नौकरी में या आराम के धंधों में लग कर अपना-अपना छोटा-सा कुटुम्ब सुखी बनाने में लगे हुए हैं। ऐसे समय यदि कुछ शिक्षित, स्वार्थत्यागी नौजवान आगे आते हैं और निम्नतम निर्वाह-व्यय लेकर इनकी सेवा में पाँच वर्ष बिताते हैं तो इनका नैतिक एवं भौतिक विकास करना और इनकी परंपरागत उदारता एव परस्पर-सहायता की वृत्ति ज्ञानमूलक बनाना संभव है।

दुगुनी आमदनी, प्राथमिक आवश्यकताएँ अपने ही गाँव में पैदा करना, सहकारी एवं व्यापारियों के शोषण से मुक्ति, पूरा काम, बेगार का उच्चाटन, शराबबंदी—इन तत्त्वों के आधार पर यहाँ की पंचवर्षीय ग्राम-स्वराज्य की योजना बनायी है। इस योजना के अनुसार काम करने के लिए यहाँ के निवासी तैयार हैं। सीखने की भूख उनको है। पैसा जनता से, सरकार से मिलेगा। अभाव है बुद्धिमान् अनुशासन में एक सेना की भाँति काम करने वाले कार्यकर्ताओं का। इतने बड़े ग्रामदान क्षेत्र में से ग्राम-स्वराज्य प्रकट करने के लिए कुछ नौजवान तरुण, कार्यकर्ता आगे आयेंगे क्या?

कार्पोरेशन के चुनाव में मर्यादा-पालन का संकल्प

आगरे के नागरिकों का सराहनीय कदम

[उत्तर प्रदेश के पाँच बड़े नगरों में कार्पोरेशन व नगरपालिका चुनाव लम्बे अरसे के बाद हो रहे हैं। इन नगरों में वर्षों से, एक जगह तो बीस-पच्चीस वर्षों से, ये संस्थाएँ भंग हो गयी या कर दी गयी थीं। चुनाव की निरन्तर माँग के बावजूद वह टाला जाता रहा। इन नगरों में अब एकसाथ ही चुनाव हो रहे हैं।

जंग और प्रेम की भाँति, यह माना जाने लगा कि चुनाव के समय भी एक गरमी—आतुरता, उत्कटता—आ जाती है। अच्छा बुरा, वाजिब-नावाजिब का ध्यान नहीं रह जाता। जाति, धर्म, सम्प्रदाय के भेदों के अलावा आज की लोकतंत्र पद्धति और राजनैतिक पक्ष के भेद ने इस स्थिति को ज्यादा बिगाड़ दिया है।

सर्व सेवा संघ ने हाल ही में इस बढ़ती हुई बुराई की रोक-थाम की दृष्टि से राजनैतिक पक्षों को कुछ आधारभूत मर्यादाएँ मानने, निबाहने के लिए एक निवेदन जाहिर किया है। पक्ष कितना, क्या ऐसी मर्यादाओं पर ध्यान देते और उन्हें अमल में लाते हैं, वस्तुतः इस पर इस देश में लोकशाही का बचाव या गिराव बहुत कुछ निर्भर करेगा।

खुशी की बात है कि आगरा के नागरिकों ने विभिन्न पक्षों के मुख्य कार्यकर्ताओं व स्वतन्त्र जिम्मेवार व्यक्तियों ने अपने यहाँ कार्पोरेशन-चुनाव के समय कुछ मर्यादाएँ निबाहने की जाहिर घोषणा की है। मन को पवित्र व समाजोपयोगी रखना है तो उसे वस्तुतः धोखा, दबाव और प्रलोभन से बचाना ही चाहिए। उत्तर प्रदेश के अन्य नगरों में भी ऐसा कुछ होगा तो चुनावों का स्तर ऊँचा होगा, नागरिकों को लोकशाही की सही ट्रेनिंग का मौका मिलेगा और सारा वातावरण ऐसे समय जो जहर से भर जाता है, उससे बचेगा। आगरा में जो महत्त्वपूर्ण और अनुकरणीय सामूहिक संकल्प जाहिर किया गया है, वह यहाँ ज्यों का-त्यों दिया जाता है। —सं०]

"चुनाव हमारे जनतन्त्र के अभिन्नतम अंग हैं। किन्तु आज चुनाव जिस प्रकार से लड़े जाते हैं उससे समाज का वातावरण अत्यन्त दूषित हो जाता है और आपस में वैमनस्य और कटुता बहुत दिनों तक चलती रहती है। इसके अनेक दुष्परिणाम होते हैं और जन हित के कार्यों में अकारण विरोध और बाधा उपस्थित होती है। हालत आज यह है कि यदि किसी क्षेत्र की शान्ति भंग करनी हो तो वहाँ चुनाव कर दिया जाय। यह हमारी राजनैतिक अपरिपक्वता का ही सूचक है। देश के लिए ऐ. स्थिति कल्याणप्रद नहीं हो सकती।

करीब २४ वर्ष बाद अक्टूबर माह में इस शहर में नगर-निगम का . होने जा रहा है। यह हमारे सबके हित में है कि वह ऐसे ढंग से लड़ा जाय, सार्वजनिक जीवन का स्तर ऊँचा उठे, हममें आपस में सद्भावना बनी रहे जनता का वास्तविक मत बिना किसी धोखा, दबाव व प्रलोभन के व्यक्त हो सके.

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम सब दलों के प्रतिनिधि तथा अन्य उपरि . लोग एकमत से निश्चय करते हैं कि इस चुनाव में—

(१) ऐसे साधनों का उपयोग नहीं करेंगे, न होने देंगे जो नैतिकता के विरुद्ध हों
(२) आलोचना सिद्धान्त व कार्य प्रणाली की होगी। किसी की नीयत व चरि. पर आक्षेप नहीं किया जायगा।
(३) मिथ्या प्रचार तथा ऐसी असभ्य भाषा और नारों का प्रयोग नहीं किया जायगा जिससे लोगों में भ्रम और उत्तेजना फैले और शान्ति भंग होने की संभावना हो जाय। यदि किसी पक्ष के लोगों की ओर से शांति भंग हो तो उस पक्ष का नेतृत्व ही उसकी निन्दा करेगा।
(४) चौदह वर्ष से कम उम्र के बालकों का जुलूस, प्रदर्शन और नारों के लिए प्रयोग नहीं किया जायगा।
(५) चुनाव में यथा संभव कम से-कम पैसा खर्च किया जायगा।
(६) मत प्राप्त करने के लिए शराब इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जायगा।

जनता से हमारी अपील और अपेक्षा है कि उसका हमें पूर्ण सहयोग मिलेगा और वह किसी व्यक्ति अथवा पार्टी द्वारा उपर्युक्त बातों का उल्लंघन सहन नहीं करेगी, बल्कि करने वालों को चेतावनी दे देगी कि इसका परिणाम विपरीत होगा।

हमें अत्यन्त आशा और विश्वास है कि इस प्रकार से लड़ा गया चुनाव नगर में एक अत्यन्त स्वस्थ वातावरण उत्पन्न करेगा तथा निगम के लिए सेवा का मार्ग प्रशस्त करेगा।"

सेठ अचल सिंह, कांग्रेस,	सोहनलाल जैन,	रोशनलाल गुप्त,
रामभरोसे लाल,	किशन दयाल एडवोकेट पी० एस० पी०	श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, स्वतन्त्र पार्टी
रामकिशन,	प्रीतम सिंह नागपाल,	बालकृष्ण बाजोरी, जनसं
के० पी० सक्सेना,	सत्यप्रकाश मित्तल	डा० जगदीशचन्द्र जैन,
रमाशंकर अग्रवाल,	सूर्यपाल सिंह लोकर,	स्वामी कृष्णस्वरूप
प्रेमदत्त पालीवाल, प्रधान, मजदूर यूनियन,	देहाती से संघ	सर्वोदय सेवा मंडल,
सी० पी० गुप्त, कम्युनिस्ट	दामोदरदास कदम, रि०पा०	गोपालनारायण शिरोमणि
शंभूनाथ चतुर्वेदी,	कन्हैयालाल अग्रवाल, वकील,	चिम्मनलाल जैन

चुनावों में शांति बनाये रखने की अपील

उत्तर प्रदेश की पाँच महानगरियों—कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, आगरा, लखनऊ में कार्पोरेशन या महापालिकाओं के चुनाव ता० २५ अक्टूबर को हो रहे हैं। श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी तथा श्री सुरेशराम, जो दोनों ही उत्तर प्रदेश के प्रमुख सर्वोदय-कार्यकर्ता हैं तथा शांति-सेना के काम से संबंधित हैं, उन्होंने एक वक्तव्य में विभिन्न राजनैतिक पक्षों, उनके उम्मीदवारों, नेताओं तथा कार्यकर्ताओं और स्वतंत्र उम्मीदवारों से इन चुनावों में शांति बनाये रखने की अपील करते हुए नीचे लिखे सुझाव पेश किये हैं :—

(१) चुनाव प्रचार में गाली या अपशब्द का प्रयोग न हो।
(२) नाबालिगों यानी बच्चों और छात्रों से इसमें काम न लिया जाय, न उनके जुलूस निकाले जायँ, न उनसे झंडा उठवाया जायँ और न नारे लगवाये जायँ।
(३) रात के दस से सुबह के पाँच बजे तक लाउड स्पीकर का प्रयोग न हो, ताकि सभी चैन से सो सकें।
(४) अगर कहीं शांति-भंग हो तो सबके सब उसे दूर करने में लगें और जिस पक्ष के लोगों की तरफ से शांति भंग हो वह पक्ष गृह उस पर खेद प्रकट करें और आगे ऐसा न होने दें।
(५) किसी वोटर या मतदाता पर रुपये पैसे का या किसी तरह का अनुचित दबाव न डाला जाय।

विनोबा और गांधी जयंती के कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश : वाराणसी जिला सर्वोदय मंडल की ओर से जिले में विनोबा-जयंती से चरखा-जयंती तक पदयात्रा का कार्यक्रम आयोजित हुआ था। चैयदराजा में श्री त्रिवेणी हरिजी ने और सघन विकास क्षेत्र अजगरा में श्री शिवरामजी ने कार्यक्रमों में भाग लिया। सेवापुरी बुनियादी शाला में कताई-प्रतियोगिता हुई। वाराणसी शहर में पाण्डेपुर, मजुरी, दौलतपुर, नयी बस्ती, चेतगंज और टाउन हॉल में विशेष कार्यक्रम रखे गये थे। सेवाग्राम में एक सप्ताह महिला चरखा प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। टाउन हॉल में अखंड सूत्रयज्ञ और हरिजन बस्ती में सफाई कार्यक्रम हुआ।

बिहार : जिला सर्वोदय मंडल, दरभंगा की ओर से 'विनोबा जयंती सप्ताह' जिले में मनाया गया। विभिन्न स्थानों पर प्रभात फेरी, सफाई, साहित्य-प्रचार, सर्वोदय-पात्रों की स्थापना और सूत्र-यज्ञ आदि के कार्यक्रम हुए। गुल्टोनाडा में लगभग ४०० व्यक्तियों ने श्रमदान किया।

राजस्थान : डूंगरपुर जिले में राजकीय माध्यमिक शाला वरदा, प्राथमिक शाला टामटा आदि के छात्र, शिक्षकों ने और गांधी स्मारक निधि सेवा केंद्र, नोकना और सघन क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने गांधी-जयंती मनायी।

मध्यप्रदेश : मंदसौर जिले में सर्वोदय-पक्ष संपन्न हुआ। मंदसौर को सर्वोदय की दृष्टि से सघन क्षेत्र बनाये जाने का निश्चय सर्वसम्मति से हुआ। तदनुसार नगर के एक मुहल्ले में कार्य आरंभ हुआ है। घर-घर जाकर १७१ रु० की साहित्य बिक्री की गयी।

आरोहण के चरण

पूर्णियाँ जिला अखंड पदयात्रा-टोली

पूर्णियाँ जिला (बिहार) रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में भाग लेकर अखंड पदयात्रा-टोली ने १ सितम्बर को श्री अनिरुद्धप्रसाद सिंह के मार्गदर्शन में कुरसेला से पुनः अपनी पदयात्रा शुरू की। टोली ने सितंबर में बरारी और धमदाहा थाने की यात्रा की। सर्वोदय मित्र मंडली बनाने का एक नया कार्यक्रम अपनाया है। गाँव में वस्त्र स्वावलंबन, सर्वोदय पात्र की स्थापना और ग्रामदान का वातावरण तैयार करने में यह सर्वोदय मित्र मंडली बहुत उपयुक्त मानी गयी है। हर पड़ाव पर टोली को जनता द्वारा सब कार्यक्रमों में काफी सहयोग मिलता है। [illegible] मील की पदयात्रा में खादी, ग्रामोद्योगी चीजें और सर्वोदय-साहित्य की कुल २०४३ रु० की बिक्री हुई। १० गाँवों में सर्वोदय मित्र मंडली की स्थापना की गयी।

उ० प्र० अखंड पदयात्रा-टोली का वार्षिक विवरण

स्व० श्री बाबा राघवदासजी की पुण्य स्मृति में मुरादाबाद से १५ अगस्त '५८ को श्री पुजारी रायजी के मार्गदर्शन में जो उत्तर प्रदेशीय भूदान अखंड पदयात्रा-टोली निकली, वह ३२ जिलों की यात्रा समाप्त कर अब आगरा जिले में पदयात्रा कर रही है। इस समय पदयात्री दल में ४ पुरुष और १ महिला हैं। वर्ष भर में ३२ जिलों में २७०८ मील की पदयात्रा के बीच ३७७ पड़ाव हुए। साधन दान में लगभग ३०० रु० और २५ गज खादी मिली। ५२४४ रु० का साहित्य प्रचार हुआ। १२४ बीघा भूदान मिला। स्वागत में १५१८ सूत-गुंडियाँ प्राप्त हुईं। 'भूदान यज्ञ' साप्ताहिक के ३८४ ग्राहक बने। प्रतिदिन १ घंटे के अनुसार ३०९ घंटे का समय-दान मिला। १० कार्यकर्ता प्राप्त हुए। ६१८ सर्वोदय-पात्र रखे गये।

सर्वोदय-पात्र

बिहार : जिला सर्वोदय मंडल की ओर से 'विनोबा जयंती सप्ताह' में दरभंगा शहर में ९७ सर्वोदय पात्रों की स्थापना की गयी।

महाराष्ट्र-विदर्भ : नागपुर में ८० तथा काटोल तहसील के मोहगाँव ग्राम में ५८ सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। नासिक में नवंबर '५८ से जुलाई '५९ तक सर्वोदय-पात्रों से ६३३ रु० प्राप्त हुए। प० खानदेश में ३७ सर्वोदय-पात्र शुरू हुए। पूर्व खानदेश जिले में १५० सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं। शिरज शहर की ४ दिन की नगर-यात्रा में १२५ सर्वोदय-पात्र स्थापित किये। अकोला जिले के उरळ ग्राम में नये ५१ सर्वोदय-पात्र चालू हुए। पुराने ५० सर्वोदय पात्र के अनाज का संग्रह किया गया।

बंबई : शंकरबारी लेन के सर्वोदय-पात्री भाइयों ने अपने मोहल्ले के दो निराधार परिवारों को काम धंधा देने की दृष्टि से प्रारंभिक पूँजी जुटा दी है। बम्बई शहर में जगह-जगह सर्वोदय-विचार अध्ययन मंडल की स्थापना हो रही है।

मध्यप्रदेश : टीकमगढ़ जिले में विनोबा-जयंती के अवसर पर ६५ सर्वोदय-पात्र रखे गये। मंदसौर नगर के पाँच हजार आबादी वाले, नयी बस्ती मोहल्ले को सघन कार्य के लिए चुना है। उसमें अभी तक १७५ सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। हरिजन छात्रावास में सामूहिक सर्वोदय-पात्र रखा गया है।

समाचार-सूचनाएँ :

उत्तर प्रदेश : जिला सर्वोदय मंडल, चित्रकूट बांदा में ८ अक्तूबर को एक बैठक हुई। सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधि श्री अर्जुन भाई और लोक-सेवक बंधुओं ने भाग लिया। श्री अर्जुन भाई ने सर्वोदय-पात्र की स्थापना गाँव गाँव, घर घर उसके द्वारा शांति-कार्यक्रम को व्यापक करने के लिए कहा। बैठक में पाँच सौ सर्वोदय पात्रों की स्थापना का संकल्प किया गया।

—सर्वोदय कार्यालय, फतेहपुर में ३० सितंबर को ३५ कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। बैठक में श्री छेदीसिंहजी और श्रीहरि प्रसादजी ने पटानकोट की [illegible]

—उ. प्र. कस्तूरबा ट्रस्ट की ओर से २० ग्राम-सेविकाओं तथा आरोग्य सेविकाओं का शिविर ६ से १० अक्तूबर तक रमरेपुर (वाराणसी) में हुआ। शिविर का उद्घाटन श्री रामदास गांधीजी द्वारा और समापवर्तन समारोह श्री शंकरराव देव द्वारा हुआ।

मध्यप्रदेश : इन्दौर सर्वोदयनगर बने, इस हेतु से विभिन्न क्षेत्रों में कार्यकर्ता शक्ति लगा रहे हैं। जेल रोड क्षेत्र में सर्वोदय-समिति का निर्माण हुआ है। मोहल्लेवार क्षेत्रीय समिति बनाना, सहकारी समितियों का निर्माण करना एवं सर्वोदय आरोग्य सहायता केन्द्र का आयोजन करना, इस लक्ष्य के अनुसार कार्यकर्ता कार्य कर रहे हैं।

साहित्यकार परिषद्

श्री विनोबाजी की उपस्थिति में श्रीनगर में साहित्यकार परिषद् करने को सोचा गया था। लेकिन कश्मीर की बाढ़ वगैरे के कारण यह आयोजन स्थगित करना पड़ा। वह अब अमृतसर में ता० ११-१२ नवंबर '५९ को श्री विनोबाजी की उपस्थिति में करना निश्चित हुआ है। गोष्ठी के लिए 'साहित्य का धर्म' यह विषय रहेगा।

अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन

अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन का ग्यारहवाँ अधिवेशन १९६० के फरवरी मास के अंत में आगरा के आस-पास होने की संभावना है।

राजस्थान प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलन

राजस्थान प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलन १४ से १५ नवंबर तक श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में शिवदासपुरा (जयपुर) में होगा। १२-१३ नवंबर को प्रांत के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का शिविर भी आयोजित किया गया है। इसी अवसर पर ग्रामदानी ग्रामों के निर्माण में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का शिविर भी होगा।

[illegible]

महाराष्ट्र के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का शिविर भी आयोजित किया गया है।

बिहार प्रांतीय चतुर्थ सर्वोदय-सम्मेलन

बिहार प्रांतीय चतुर्थ सर्वोदय-सम्मेलन १७ दिसम्बर से २२ दिसंबर तक सोनपुर (जि० सारन) में होगा। उस अवसर पर एक विशाल प्रदर्शनी भी होगी।

अ० भा० सर्व सेवा संघ के निर्वाचित सदस्यों की तालिका

सर्व सेवा संघ के नये विधान व नियमों के अन्तर्गत निर्वाचित प्रतिनिधियों और लोक-सेवकों की इस कार्यालय में प्राप्त अद्यतन संख्या नीचे लिखे अनुसार है।

प्रदेश	जिला-प्रतिनिधि	लोक सेवक	प्रदेश	प्रतिनिधि	लोक सेवक
१. असम	६	३२३	९ पश्चिम बंगाल	१४	२८८
२. आंध्र	१९	३०२	१० बंबई	१४	१०२
३ उत्कल	११	४११	११ बिहार	१६	११३०
४ उत्तर प्रदेश	४२	१०५०	१२ मध्यप्रदेश	२३	४४
५ केरल	८	४५९	१३ मैसूर	११	१८३
६. तमिलनाड	१०	४२८	१४. राजस्थान	११	१५५
७ दिल्ली	१	१८	१५ जम्मू-कश्मीर	१	११
८. पंजाब हिमाचल	१२	११८	कुल	२११	[illegible]

लगभग १७ जिलों में निर्वाचन की फिलहाल कोई संभावना नहीं होने की जानकारी प्राप्त हुई है। शेष जिलों की प्रतीक्षा है। —पूर्णचन्द्र जैन, मंत्री

विनोबाजी का पता :
मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल, पो० पट्टी कल्याण, जि० करनाल (पंजाब)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : गोलघर, वाराणसी, टे० नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ५) एक प्रति २ आना

वाराणसी, शुक्रवार

८ जनवरी '६०

वर्ष ६ अंक १५

सम्पादक : सिद्धराज ढड्ढा

श्री सुरेशराम का उपवास सम्पन्न

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की परिस्थिति से प्रभावित होकर श्री सुरेशराम भाई ने दो सप्ताह के जिस आत्मशुद्धि उपवास का प्रारम्भ गत १८ दिसंबर को किया था, वह १ जनवरी १९६० को प्रातःकाल समाप्त हुआ। श्री सुरेशराम भाई ने उपवास प्रारम्भ करने के पूर्व प्रस्तुत किये गये अपने निवेदन में बताया था कि विश्वविद्यालयों में अक्सर हिंसक दुर्घटनाओं का होना हमारी शिक्षा-दीक्षा पर, हमारी लोक-आराधना पर और मानव स्वभाव में हमारी श्रद्धा पर एक भारी चुनौती है। यह प्रश्न हमारे सामने उपस्थित है कि हम अपनी समस्याओं का समाधान किन तरीकों से करते हैं? क्या अब भी हिंसा का अर्थात् जंगल का कानून ही चलता रहेगा? मुझको इस विचार पर कँपकँपी होती है और इसलिए मैंने आत्मशुद्धि उपवास करने का निर्णय किया है। मेरा उपवास हिंसक साधनों के इस्तेमाल के लिए मात्र निषेधात्मक है।

१ जनवरी को प्रातःकाल प्रमुख नागरिकों और कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में यह उपवास सम्पन्न हुआ। मौन प्रार्थना और विभिन्न धर्मग्रन्थों के चौथ-मुख्यों के पाठ के उपरान्त श्री सुरेशराम ने कहा कि यह उपवास मेरे इस जीवन का पहला प्रयोग है। बहुत ही शांति तथा निश्चिंतता के साथ यह उपवास पूरा करने में मैं भगवत् कृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद से सफल हुआ हूँ। अब गुरुजन आगे के लिए मुझे आशीर्वाद दें कि मैं दरिद्रनारायण की सेवा में काम आऊँ।

उपवास काल में विनोबाजी, नेहरूजी, राधाकृष्णन्, दृगशास्त्रीजी, वैकुण्ठभाई, अशोक मेहता आदि के अलावा देश के प्रायः सभी प्रान्तों के प्रमुख सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के संदेश और आशीर्वाद प्राप्त हुए थे। अनेकों ने उपवास-काल में स्वयं इलाहाबाद आकर अपनी शुभ कामनाएँ प्रकट कीं।

अभी सुरेशराम भाई का स्वास्थ्य कमजोर है। धीरे धीरे स्वस्थ हो रहे हैं। वे प्रसन्न हैं।

सूचना:

"डायरी १९६०" समाप्त हो गयी है। फिर भी चारों ओर से बहुत माँग आ रही है। खेद है कि हम माँग की पूर्ति नहीं कर सकेंगे।

इस अंक में

विज्ञान के साथ अहिंसा अनिवार्य

विनोबा

मैं हाइड्रोजन बम, ऐटम बम, सबसे खुश हूँ। मुझे ज्यादा डर बन्दूक का, तलवार का, लाठी का है। क्योंकि ये बम अहिंसा के नजदीक हैं, पर ये दूसरे हथियार अहिंसा के नजदीक नहीं हैं। जहाँ संहार शक्ति की पराकाष्ठा हुई, वहीं संहार शक्ति का ही संहार होने वाला है। एक सर्कल (वृत्त) के दो आखिरी सिरे एक तरह से दूर हैं, पर दूसरी बाजू से देखेंगे तो बिलकुल नजदीक हैं। इस वास्ते गौतम बुद्ध का जमाना फिर से आने वाला है और दुनिया में फिर से लोग अहिंसा की स्थापना करने वाले हैं। इतनी बड़ी सृष्टि है, उसमें ढाई हजार साल का अरसा बड़ा नहीं है। इसलिए अभी तो बुद्धयुग की शुरुआत है। लोग कहते हैं, 'यह २० वीं शताब्दी है, १९ वीं शताब्दी है।' ऊपर मैंने जो कहा है, उसका खयाल किया जायगा तो यह कहा जायगा कि पहली शताब्दी में बुद्ध आये, उन्होंने यह संदेश सुनाया। दूसरी में महावीर आये, उन्होंने यह संदेश सुनाया। तीसरी में गांधीजी आये, उन्होंने यह सुनाया। बीच में हजारों महापुरुष आये, उनका कोई जिक्र नहीं होने वाला है। आज बच्चों को रटन करवाते हैं, फलाने-फलाने राजा महाराजा हो गये!

हिंदुस्तान के लोगों से पूछो कि तुम किस राजा को जानते हो, तो कहेंगे राजा राम! कृष्ण को भी वे राजा नहीं कहते। कृष्ण, गोपाल हमारा एक सेवक हो गया है, एक दोस्त हो गया है! एक गायें चराने वाला हो गया है—ऐसा जानते हैं। राजा सिर्फ राम को मानते हैं। और कोई राजा नहीं।

तो कालात्मा अपना काम कर रहा है। कितने ही आये और कितने ही चले गये। हम अभी कश्मीर में गये थे। तो देहात में पूछा, क्यों भाई, कोई नाम आपको याद है? तो कहने लगे 'लल्ला' नाम की याद है, जो मीरा की तरह वहाँ की एक भक्तिनी हो गयी है—कोई साढ़े छह सौ वर्ष पहले। इस तरह कश्मीर में दो ही नाम लोगों की जबान पर हैं—एक लल्ला, दूसरा [illegible]।

इतिहास में हमको स्कूल में सिखाया जाता था कि अकबर के जमाने में तुलसीदास हुआ। मैं पूछता हूँ, तुलसीदास के जमाने में अकबर हुआ या अकबर के जमाने में तुलसीदास? अकबर को आज कौन पूछता है, तुलसीदास तो हिंदुस्तान में घर-घर में पूजा जा रहा है। दुनिया अक्ल रखती है और पहचानती है कि कौन नाम याद रखने लायक है।

तो यह कालात्मा है। समय तो बदलने वाला है। राजा लोग आये और गये। उनका जमाना गया। इसी तरह सियासत का जमाना भी गया समझना चाहिए, पाकिस्तान में जनरल अयूब आया तो सभी सियासत खतम हो गयी, सब पार्टियाँ खतम! [illegible] उनकर। जो वहाँ हुआ आती है, वहाँ सब खतम हो जाते हैं, इसलिए मैं कहता हूँ? रशिया में क्या है? 'पावर' है। डिक्टेटरशिप है।

> हमने देश की रक्षा के लिए सेना बनायी है, पर अब हमारे सामने सवाल यह आता है कि सेना से देश को कौन बचायेगा? दुनिया में दो ही ताकतें बन सकती हैं—साइन्स की या अहिंसा की। आज साइन्स, विज्ञान मिलिटरी के हाथ में है। अहिंसा और साइन्स मिल जायँ तो मिलिटरी—सैन्यशक्ति—खतम हो सकती है।
>
> साइन्स को, विज्ञान को अहिंसा के साथ शामिल होना चाहिए तो दुनिया में शांति हो जाय।
>
> बाबा उस दिन की राह देख रहा है। वह दिन जरूर आयेगा। सियासत हमारे देखते-देखते खतम हो रही है, उसी तरह मिलिटरी की ताकत भी खतम होगी।

पाकिस्तानवाले कहते हैं कि जितना आनन्द अयूब के जमाने में आया, वह कभी नहीं आया था। क्योंकि डेमोक्रेसी चले या मत चले, लोगों को ना राग से मुक्ति मिलनी चाहिए। तो लोगों से पूछिये कि वे क्या चाहते हैं: कम्यूनिज्म या डेमोक्रेसी? वे यह कुछ नहीं चाहते। वे चाहते हैं, सुखी जीवन और शांति। लेकिन ये सियासतवाले आज भी क्या कहते हैं? इनको सुनें तो आपको स्वर्ग में ले जायेंगे और ये दूसरे आपको नरक में ले जायेंगे। क्या हमारा स्वर्ग-नरक उनके हाथ में है? क्या ताकत है उनकी?

रूहानियत और साइन्स की तरह एक तीसरी शक्ति और है। यह शब्द की शक्ति, साहित्य की शक्ति, जो दोनों ताकतों को जोड़ने वाली है। ऐसे अच्छे से अच्छे लेखक सामने आयेंगे, ऐसा साहित्य निर्माण करेंगे, जिससे रूहानियत और साइन्स, दोनों मिल जायँ और मिल कर काम करें। ये तीन जो ताकतें दुनिया को बचाने वाली हैं। ये ही उसे बचा सकती हैं। अन्यथा दुनिया खतम हो जायगी।

इसलिए जवानों से मेरी माँग है कि सियासत के पचड़े में न पड़ो। तुम तो रूहानियत और साइन्स को जानने की ताकत हासिल करो, उसे पहचानो। शब्द की ताकत सरस्वती से प्रकट होती है। वह सरस्वती हासिल करो। रूहानियत जिसकी की मदद का [illegible]—विज्ञानरूपक यन्त्र—है और साइन्स उसका 'एक्सेलेरेटर'—गति नियन्त्रक यन्त्र! इनके मिलने पर जीवन की गाड़ी बेखटके दौड़ पड़ी जायगी।

(श्रीनगर, २१-११-'५९)

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

पुरानी सीमाअें

अीस जमाने में पुराने जमाने की सीमाअें नहीं चलेंगी। पुरानी नदीयां की धार अपनी जगह से हट गयी है। अैसा माना जाता है की पुराने जमाने में हींदुस्तान की सरहद 'कंदाहार' तक यानें अफगानीस्तान तक थी, गांधारी कंदाहार की ही थी। आज की भाषा में कहें तो गांधारी पठान थी। अुपनीषद में गुरु शीष्य को कैसे ज्ञान देता है, अीसकी मीसाल दी है। वह बचपन से स्मशान तक सीखाने नहीं रहता। वह तो दीशा दर्शन कर देता है। अीसकी मीसाल देते हुअे अुपनीषद ने अेक कहानी बतायी है – अेक था मनुष्य। वह कहीं मुसाफरी के लीअे नीकला। बीच में चोरों ने अुसको पकड़ा। अुसकी आंखों पर पट्टी बांध दी और अुसके हाथ बांध कर जंगल में अुसे छोड़ दीया। अुसके पास जो धन था, वह लूट लीया। वह मनुष्य चील्लाने लगा–मेरी पट्टीयां खोलो। मेरे बंधन काटो। मुझे दीखता नहीं। अेक भाअी अुधर से जा रहा था, अुसने सुना तो वह नजदीक आया और अुसने आंखकी पट्टी खोल दी। अुसने कहा मुझे गांधार देश जाना है। वह कहता है–'अैसा दीशा पकड़ोगे तो'–अीस दीशा में गांधार देश है, अीस दीशा में जाओ। फीर वह पूछते-पूछते जाता है। यह अुपनीषद् कंदाहार में लीखा गया है। तो क्या में शासकों की वह अफगानीस्तान का हीस्सा हींदुस्तान में जोड़ें? नहीं। अीस दृष्टी से हम भारी समस्याओं पर वीचार करेंगे, तो आसानी से कीसी समाधान तक हम पहुंच सकेंगे। दृष्टी की व्यापकता के बीना कीसी की समस्या हल नहीं हो सकती। वह अधीकाधीक अुलझती ही जायेगी। भौगोलीक चीन की सीमानीर्धारण की समस्या के संबंध में हमें व्यापक और अनाग्रही दृष्टी से सोचना चाहीअे।

(कोसा, १७-१२-'५९)

—वीनोबा

*लिपिसंकेत : ि = ी; ी = ी, स = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

कृषि-सुधार की कुछ समस्याएँ

गोविन्द रेड्डी

आज तक के अनुभव से यह पाया गया है कि भारत की कृषि प्रणाली ९९ प्रतिशत ग्रामीण जनता पर आधारित है। परन्तु अब ऐसी स्थिति आ गयी है कि उनसे काम और आगे बढ़ने की ज्यादा सम्भावना नहीं है। इस काम को यदि आगे बढ़ाना हो तो मौजूदा शिक्षित समुदाय को कृषि की ओर झुकना होगा और पुराने अनुभवी किसानों के सहयोग से विचारपूर्वक कार्य हाथ में लेना होगा, तभी भारत की कृषि का सुधार अधिक हो सकेगा। आज तक का अनुभव यह बताता है कि करीबन सरकारी कृषि-विभाग में शिक्षित वर्ग ही है। उस विभाग की ओर से अनेक छोटे बड़े फार्म भी देश में चलाये जा रहे हैं। उन सबको चलाने वाला भी शिक्षित वर्ग ही है। परन्तु ये सब शिक्षित वर्ग के अधिकारी भी जनता के पास नहीं पहुँच सके हैं। जनता बहुत से कार्य-व्यवहार में अनुकूल न होने के कारण जनता उन पर अधिक विश्वास नहीं करती है। शिक्षित वर्ग तथा श्रमनिष्ठ देहाती वर्ग का मेल जब तक नहीं होता है तब तक कृषि-सुधार की बात दूर ही रहने वाली है। मध्यप्रदेश में मैं बैठा हूँ, यहाँ ज्यादातर गेहूँ, चना, मसूर, रबी की फसल होती है। वर्षा लगभग ६० इंच होती है। इस साल इधर-उधर काफी घूम कर देखा। बिना घास का एक भी खेत नहीं मिला। कई किसानों से भी इसके बारे में चर्चा की। घास यदि खेत में न रहे तो पैदावार बहुत कम मिलेगी, ऐसा करीबन सभी किसानों का कथन है। कुछ हद तक आज का शिक्षित वर्ग उपरोक्त विचार का समर्थन करता है। सबका कहना है कि यह सब बरसात में उगने वाला कूड़ा कचरा ही खाद बन कर खेत के काम में आता है। यदि घास तथा कूड़े कचरे से खाद बनती होती तो आज तक पैदावार कई गुना बढ़ जानी चाहिए थी। परन्तु अनुभव से तो यही पाया है कि पैदावार पहले की अपेक्षा घटी है। हम यह नहीं समझते हैं कि घास तथा कूड़े से क्या लाभ होता है? खेतों में कहीं भी बांध नहीं है। इसके कारण जमीन का स्तर बरसात में ३–४ माह नित्य बहता रहता है। घास उगने के कारण सब जमीन में ज्यों का त्यों बना रहता है। यही कारण है कि सदियों से भारत की जमीन कुछ भागों में उपज देती आ रही है। परन्तु मौजूदा कृषि रचना में बांध का स्थान क्यों नहीं है? फिर भी यदि चन्द स्थानों पर बांध है भी तो उनका और विकास क्यों नहीं होता है, यह हम नहीं सोचते। इसका मुख्य कारण यह है कि एक व्यक्ति का खेत यदि सुधारना हो तो उसके लिए उसके चारों तरफ के हजारों फुट जमीन से संबंध आता है। वहाँ 'मेरी' बुद्धि और पैसे का बल 'मेरे' के कारण से 'तेरी' (मेरी-तेरी) आगे नहीं चल पाता है। इसी कारण आज तक भाई-भाई में झगड़े चलते आये हैं। इसलिए मौजूदा जमीन की रचना तोड़े बिना कृषि-सुधार करना भारत के लिए बहुत विकट प्रश्न है। खासकर रबी की फसल लेने वाले प्रदेशों में यह अत्यन्त महत्व का प्रश्न है। यदि मौजूदा जमीन की रचना इस प्रकार बनायी जाय कि बरसात का पानी कहीं भी बाहर बह कर न जाय तो कूड़ा कचरा अपने आप सड़ जायगा और उपज भी आज की अपेक्षा ज्यादा मिल सकेगी। चन्द स्थानों पर ऐसे उदाहरण देखने को भी मिलते हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि एक पौंड गेहूँ के निर्माण के लिए ५०० पौंड पानी की आवश्यकता रहती है। करीबन सितम्बर अन्त तक वर्षा बन्द होती है। रबी की फसल मार्च अन्त तक कटती है। इस छह माह के समय में फसल को एक बूंद भी पानी नहीं दिया जाता है। इसी समय के दरमियान नदी नालों में काफी मात्रा में पानी बहता रहता है। इसका उपयोग भी आम जनता नहीं करती है। कहीं अपवादस्वरूप कुछ उदाहरण मिल भी सकते हैं। परन्तु गाँव का सहकार मिले बिना इस प्रकार का काम होना सम्भव नहीं है। आज सहकार की कमर तो करीब करीब टूटी ही है। स्वयं अपना उदाहरण मैं देता हूँ। जहाँ अभी हमने सिंचाई की व्यवस्था की है, वहाँ १९५२ में मैं पहली दफा आया था। मैंने उस स्थान पर सिंचाई की व्यवस्था करने का सुझाव रखा था। परन्तु नदी किनारे से १६० फुट छोड़ कर हमारी १६ एकड़ जमीन है। वह १६० फुट जमीन दूसरे की होने के कारण ७ साल तक रुकना पड़ा। आखिर उनके सहकार से ही उसकी जमीन में होकर सिंचाई की व्यवस्था की। इसलिए कृषि सुधार का नारा आज हम लोग लगाते हैं, परन्तु सबसे बढ़िया नारा है—"सहकार गाँव की एकता।" इसको छोड़ कर हम कितनी भी तरक्की करें, चाहे ट्रैक्टर लगायें, चाहे इंजन, आखिर सब असफल होने वाले हैं।

मध्यम वर्गीय किसान कृषि कार्य के लिए काफी हद तक मजदूरों पर अवलम्बित रहता है। मजदूर जैसा काम करना चाहिए, वैसा नहीं कर पाते हैं। इससे जमीन के अन्दर जो शक्ति है, उसका लाभ न मालिक को मिलता है, न समाज अथवा मजदूर को। इसका मुख्य कारण मालकियत की भावना है। इस भी चाहते हैं कि मालकियत रहे, परन्तु सिर्फ इतना ही फर्क हो कि मालिक व्यक्ति नहीं, समाज है। आज की व्यक्तिगत मालकियत की भावना मिटे बिना कृषि की उन्नति करने में काफी कठिनाई है।

कृषि की उन्नति के लिए कृषि शिक्षण तथा कृषि-कला का भी विशेष महत्त्व है। आज बहुत जगहों पर छोटे बड़े परिमाण में कृषि कालेज तथा विद्यालय चलते हैं। परन्तु आज तक अनुभव से यही पाया है कि देहाती तरीके के लिए अनुकूल कृषि प्रणाली का निर्माण नहीं हो पाया है। इसलिए कृषि शिक्षण की दृष्टि यह होनी चाहिए कि शिक्षित लोग देहाती कुशल किसानों के साथ ८–१० घंटा कुशलतापूर्वक काम करने में विशेष दक्षता प्राप्त करें। ऐसा होने पर ही शिक्षित लोगों का अन्य कृषि प्रणालियों की जानकारी भी सहज ही हो सकती। आजकल अन्य प्रणालियों के लिए ही ४–६ साल समय देते हैं, और वह भी पहले १८ साल तक सीखने के बाद भूलने के लिए।

मौजूदा कृषि प्रणाली दो तरह की है—सूखी और तरी। सूखी खेती सदियों से आम जनता करती आ रही है। परन्तु तरी की खेती, खासकर, बागवानी का काम चन्द जातिवाले ही करते आये हैं। उनके पास भी उच्च कोटि की कला है। उस कला को आज तक व्यापक रूप से समाज अथवा शिक्षित वर्ग ने नहीं अपनाया है। इसके अलावा अपनाने की कोशिश की गयी है, लेकिन बागवानी करने वाली जाति उसकी कला को आसानी से बतलाती नहीं है। इसलिए उपरोक्त दोनों कमियों दूर करने हों तो लड़के-लड़कियों को प्रारम्भ से ही देहात के अनुरूप कृषि प्रणाली का शिक्षण दिया जाना चाहिए।

[शेष पृष्ठ संख्या ११ पर]

एशिया में गणतंत्र के लिए संकट : २

नवकृष्ण चौधरी

फलकत्ते में खाद्य आन्दोलन हुआ। लेकिन किस तरह से खाद्य उत्पादन बढ़ेगा, उसके बारे में गंभीर विचार बहुत कम ही होता है। श्री प्रफुल्ल सेन (बंगाल के खाद्य-मंत्री) के हट जाने से, आन्दोलन करके कलकत्ते के सब लोग मरने से या कम्युनिस्ट सरकार आने से भी आज जैसा कारोबार चलता है, उससे क्या कभी खाद्य समस्या का हल निकलेगा ?

हमारी सारी शिक्षण-पद्धति तो उलटी दिशा में चल रही है। जो भी लड़का पढ़ा लिखा हो जाता है, वह किसी भी प्रकार की मेहनत करना नहीं चाहता। यही है आजकल का संस्कार। जो लड़के कृषि-महाविद्यालय में पढ़ कर आते हैं, वे भी खेती में मेहनत नहीं करते। इस जमाने में तो यह संभव नहीं कि सिर्फ ब्राह्मण, कायस्थ आदि ऊँची जाति के लोग ही पढ़ना लिखना सीखेंगे, और दूसरे लोग अशिक्षित रहेंगे। फिर भी विश्वविद्यालयों से जितने लड़के हर साल पास होते हैं, उनकी फेहरिस्त को जाँचा जाय तो यह पाया जायगा कि ब्राह्मण, कायस्थ आदि उच्च जाति के लोग ही आज भी अधिक संख्या में उसमें हैं। फिर भी शिक्षण का फैलाव दूर-दूर तक हो ही रहा है और होता रहेगा। इधर गाँव के बच्चों ने सूक्ष्म पर्यवेक्षण से यह जान लिया है कि असली बात विद्या में नहीं है। दिमाग में जरा भी विद्या न होते हुए भी अगर शरीर पर हैट कोट हो, तो शरीर-श्रम से मुक्ति मिल जायेगी। इसलिए गाँव के लड़के पेन्ट पहन कर खेती के काम से मुक्त हो रहे हैं। यही आज हमारी शिक्षण-व्यवस्था की हालत है।

फ्रान्स, इंग्लैंड, अमेरिका, रशिया आदि किसी भी दूसरे देश की शिक्षण-व्यवस्था के साथ तुलना करने से पता चलेगा कि उन देशों के बच्चे हमेशा शरीरश्रम करते हैं। लेकिन इस देश में वह नहीं चलता। इस-लिए बुनियादी तालीम लोकप्रिय नहीं हो रही है। शरीरश्रम के लिए हमारे देश में इतना अन्ध विरोध है कि विशेषज्ञों द्वारा बुनियादी तालीम की तारीफ करने पर भी कांग्रेसी सरकार उसको कार्यान्वित करने से डरती है। हमारे मध्यम वर्ग के परिवारों में बच्चों को कपड़ा धोना, बर्तन मलना या पानी अपने हाथ से लेकर पीना भी सिखाया नहीं जाता !

इंग्लैंड और अमेरिका को हम गुरु मान कर उनसे दूसरी सारी बातें सीखते हैं, लेकिन अपने हाथों से काम करना नहीं सीख रहे हैं। हमारे यहाँ अफसर लोग हाथ में एक फाइल भी लेकर जाना अपनी इज्जत के खिलाफ समझते हैं। जब मंत्री महाशय पधारेंगे, उस समय सिर्फ दरवाजा खोलने के लिए ही दो चार चपरासी वहाँ रखे जाते हैं ! परदेशी लोग यह सब देख कर आश्चर्यान्वित होते हैं और हँसते हैं।

इन सब परिस्थितियों के कारण भी इस देश में वास्तविक कर्तृत्व शक्ति रखने वाली सरकार सम्भव नहीं होती है। राजनैतिक क्षेत्र में हमारा व्यवहार किसी भी सर्वमान्य नीति को मान कर नहीं चलता है। इसके अभाव की वजह से केरल में कम्युनिस्ट सरकार को गिराने के लिए हर तरह के अगणतान्त्रिक साधनों का सहारा लिया गया था। गणतन्त्र को चलाने के लिए राजनैतिक पक्षों को जिन विषयों में नैतिक मूल्यों को सम्भालना जरूरी है, उनमें से एक है पार्टी के लिए पैसा इकट्ठा करने के साधन तरीकों के बारे में। लेकिन इस विषय में हमारी स्थिति क्या है ? जिस दल के हाथ में सत्ता है, वह धनवानों को टैक्स से कई प्रकार से राहत दिलवा कर पार्टी के लिए चन्दा इकट्ठा करती है। फिर दूसरी पार्टियाँ क्या करती हैं ! जिन धनिकों को सत्ताधारी पक्ष से सहूलियतें नहीं मिलती हैं, उनसे ये विरोधी पक्ष पैसा लेते हैं। दूसरे किसी उपाय से आम जनता से पार्टी के लिए समर्थन और सहायता प्राप्त होगी, इस संबंध में सोचा ही नहीं जाता।

फिर चुनावों में आजकल इतना खर्च करना पड़ता है कि झूठा हिसाब दिये बिना चलता ही नहीं ! गरीबों के लिए चुनाव में खड़ा होना सम्भव नहीं है। इसका किसी प्रकार का प्रतिकार न होने की वजह से मामा शिकता रहती नहीं है और गणतन्त्र की गाड़ी अटक जाती है। जिस समय मैं कांग्रेस-कार्यकारिणी समिति का मैं सदस्य था, उस समय मैंने एक दफा यह प्रश्न उठाया था। मेरी बात सुन कर नेताओं ने कहा—'तुम तो छोटे बच्चे जैसे सरल हो। तुमने एक अच्छा भाषण दे दिया !' बस, इतने से ही यह चर्चा स्थगित हुई। केरल में कम्युनिस्टों पर कई आरोप लगाये गये थे। लेकिन उनसे जो सीखने के लायक चीज थी, उसको किसी ने ग्रहण नहीं किया। उनका एक गुण यह था कि वहाँ की सरकार जो नीति तय करती थी, उसको वह अमल में ला सकती थी। हमारे यहाँ बँटाई से लेकर और जितने भी कानून बने, उनमें से एक भी कार्यकारी नहीं हो सका। कारण कांग्रेस में शृंखलाहीनता है। इसलिए कांग्रेस किसी नीति को स्वीकारती है तो कांग्रेसी सरकार उसको अमल में नहीं लाती। कहा जाता है, अमुक विषय कांग्रेस ने स्वीकार किया है, सरकार ने नहीं किया। इसका मतलब क्या है ? कांग्रेस में भी वही जवाहरलालजी, वही मुरारजी, पन्तजी वगैरह हैं या दूसरे कोई हैं ? एक मन्त्री ने कहा कि 'इस बात को तो मैंने ठीक समझा, लेकिन सरकार मानेगी तो अमल होगा।' फिर मन्त्री से अलग दूसरी कौन सरकार है ? तो पता चला कि सरकार याने डी० पी० आई०। वे मानेंगे तो मंत्री का चलेगा। इससे किस ढंग का गणतन्त्र चलने वाला है ? लेकिन कम्युनिस्ट पक्ष में शृंखला है, इसलिए वे केरल में अपनी निर्धारित नीति को अमल में ला सके।

इन कारणों से हमारे देश में गणतन्त्र आज एक अचल अवस्था में है। इसके कुछ कारण ऐतिहासिक हैं और कुछ कारण हमारी अपात्रता और दुर्बलता में हैं। इसका प्रतिकार कैसे हो, इस संबंध में बहुत लोग सोच रहे हैं। शासन का विकेन्द्रीकरण इसके प्रतिकार का एक रास्ता है, करीब-करीब सब लोग यह मानने लगे हैं। लेकिन इस दिशा में भी कोई प्रगति नहीं हो रही है। इस देश में जो जिला-मैजिस्ट्रेट हैं, वे जिलों के सर्वमय कर्ता स्वरूप हैं। दुनिया के किसी भी दूसरे देश में इस प्रकार के अफसर नहीं हैं। फ्रान्स में 'प्रिफेक्ट' पद्धति है। पर उसके साथ प्रतिनिधि-सभा भी है। अभी बीच में यह नियम हुआ था कि मन्त्रियों के मकान के ऊपर राष्ट्रीय झंडा नहीं उड़ेगा, लेकिन जिला मैजिस्ट्रेट के मकान पर उड़ेगा ! लोगों पर इसका मानसिक प्रभाव क्या होता होगा, यह सोचने की बात है।

राजनैतिक पक्षों का अभी जनता के ऊपर कोई स्वतंत्र प्रभाव नहीं है। सरकार के द्वारा जो काम किये जाते हैं, उसी का श्रेय लेने की कोशिश चलती है। इसलिए बी० डी० ओ० आदि को अपने अनुकूल रखने का प्रयत्न विधान-सभा के सदस्यगण करते हैं। इन सब कर्मचारियों के पीछे दौड़ना ही इन लोगों का काम हुआ है। जब मैं मुख्य मन्त्री था, उस समय एक जगह दौरे पर गया था। स्थानीय एम० एल० ए० तथा दूसरे सज्जनों से मिलने की मेरी इच्छा थी। मैंने देखा कि वहाँ की व्यवस्था करने वाले अफसर ने इसके लिए सिर्फ पाँच मिनट समय रखा है ! मेरे शिकायत करने पर उन्होंने कहा, अभी आप देखेंगे, इतने से ही सब ठीक हो जायगा, कोई चिन्ता नहीं। एम० एल० ए० आदि के आने पर वह अफसर उनको "और समय नहीं है" आदि इस तरह की सूरत में कहने लगा और उन लोगों ने भी इस तरह से दुम दबा कर इसे मान लिया कि मैं देख कर हैरान हो गया। इसका कारण यह है कि एम० एल० ए० अफसरों को अपने प्रति अनुकूल रखने के लिए इतने व्यस्त हैं कि उनकी किसी भी बात का विरोध करने की हिम्मत उनमें नहीं है। उनको हमेशा यह भय रहता है कि वे कुछ कहेंगे तो शायद वे अफसर उनकी निर्वाचन मंडली में कोई आफत खड़ी कर देंगे। इस तरह से आज कर्मचारी लोग श्रेष्ठ होकर बैठे हैं ! हम खुद इस यन्त्र को बना कर उसके कब्जे में फँसे हैं। जो लोग शासन में हैं, उनमें अपने से कुछ करने की ताकत नहीं है। विशेषज्ञों से जो सलाह मिलती है, उनको टालने की शक्ति उनमें नहीं है, इसलिए कराची, पेशावर, ढाका की विधान सभाओं में जैसे ताला लगाया गया, वैसे ही यहाँ भी कोई करेगा तो कितने लोग उसके लिए रोयेंगे ! वहाँ के फौजी लोग बड़े चतुर थे। जनता के मन को खींच लेने के लिए उन्होंने चतुरता से काम लिया। सेक्रेटरियट में अफसर लोग हमेशा देर से आते हैं। वहाँ निर्देश दिया गया कि सब अफसर हाफ पैंट पहन कर दस बजे अमुक जगह पर आकर इकट्ठे होंगे। मिलीटरी वाले उनको वहाँ से कतार से 'मार्च' करवाते हुए आफिस ले जायेंगे। कराची में दूध में पानी मिलाना बन्द हो गया। कई व्यापारियों को कड़ी सजा दी गयी। इस प्रकार के कई दिखावे उन लोगों ने किये।

मानसिक तैयारी का ऐन मौका (साइकोलॉजिकल मुवमेंट) देख कर कोई परिवर्तन किया जा सके, तो बहुत से काम हो जाते हैं। जब हमारी स्वतन्त्रता आयी, तब देश की जनता के अन्दर, सरकारी कर्मचारियों में, सर्वत्र एक आशा और आशंका थी कि अब अवश्य कई बुनियादी परिवर्तन होंगे। 'आई० सी० एस०' अफसर सोचते थे कि ये लोग तो हमारी तनख्वाह कम करायेंगे। हमसे बहुत मेहनत करायेंगे, क्या हम यह सब निभा सकेंगे ? नहीं निभा सकेंगे, तो नौकरी छोड़ देंगे और क्या करेंगे ? उस समय भारत के अर्थमन्त्री बनने के लिए एक गैर कांग्रेसी सज्जन को आवाहन किया गया था। उन्होंने अपनी स्मृतिकथा में लिखा है कि उस समय उनकी पत्नी और वे इस सोच में पड़े कि कांग्रेसी सरकार में मंत्री होने से बहुत ही सरल जीवन बिताना पड़ेगा, तो क्या हम वैसा कर पायेंगे ? इस प्रकार डरते डरते बहुत थोड़ा सामान लेकर मन को शान्त कर के वे दिल्ली पहुँचे। लेकिन थोड़े ही दिनों में उनकी आशंका मिट गयी ! अवश्य सौजन्य के कारण उन्होंने उस बात का जिक्र नहीं किया है। पर हम सब जानते हैं कि उस समय सरल जीवन बिताने वाले ही उलटे विलास में डूब गये ! देहली में इन आडम्बरों को हमारे प्रधान मन्त्री सहन नहीं कर पाते और कभी कभी ये सारे भद्दे, अभद्र (वल्गर) हैं, ऐसा कह भी देते हैं। फिर भी यह सब चलता है। इसमें भी गणतन्त्र के प्रति एक संकट की सूचना है। हम

अपने रहन-सहन में दुनिया के गरीब देशों की ओर न देख कर अमेरिका के वैभव का अनुकरण कर बैठे हैं। यह ठीक है कि हम अब चीन से सीखने की कोशिश कर रहे हैं। उस देश में क्यों सहकारी समितियाँ लाखों की तादाद में बन सकती हैं और यहाँ नहीं हो पातीं, यह समझने की कोशिश हम अब कर रहे हैं। एक बुनियादी बात हम भूल रहे हैं कि यहाँ अंग्रेजों के जमाने में असहयोग-आंदोलन के विरोध में एक उलटे आक्रमण के तौर पर सहकारी आन्दोलन सरकार की तरफ से शुरू हुआ था। उस समय उसका जो ढाँचा तैयार हुआ था, उसीको हमने अटूट रखा है, बदला नहीं। हमारे प्रधान मंत्री भी बीच-बीच में खूब जोरों से कहते हैं कि यह सब बदलना चाहिए। सहकारी आंदोलन लोगों के हाथों में आना चाहिए। नौकरशाही का उस पर से कब्जा हटना चाहिए वगैरह। लेकिन उनके कितने ही कहने पर भी कुछ होता-जाता नहीं। इसका प्रभाव लोगों पर यही होता है कि लोग विश्वास खो रहे हैं, सोचते हैं कि इनके द्वारा कुछ नहीं होगा। नेता लाचार हैं, इसलिए यह सारा मामला बिगड़ रहा है, ऐसा नहीं है। यह शासन-तन्त्र का दोष है। भारत तथा एशिया के दूसरे गरीब देशों की यही समस्या है। सामाजिक और आर्थिक जीवन में समानता लाने के लिए ईमानदारी के साथ प्रयत्न हो रहा है, इसका सबूत लोगों को मिलेगा तो उनमें उत्साह आयेगा। लेकिन यह सारा करने के लिए हमारे पास कोई तन्त्र नहीं है।

अस्पृश्यता मिटाने के लिए इतना पैसा खर्च होता है, लेकिन हरिजन बने रहना कुछ लोगों का स्थापित स्वार्थ (वेस्टेड इंटरेस्ट) बन चुका है। पिछड़े हुए वर्गों को जो विशेष सहूलियतें तथा रियायतें दी जाती हैं, उनका उपयोग इस तरह से किया जाता है, जिससे वे लोग हमेशा के लिए वैसे बने रहें और उनको सहूलियतें मुहैया करने के जरिये हम उनकी वोट हाथ में रखें। कुल शासन-तंत्र का दिमाग इस प्रकार चलता है। इस तरह लोकतांत्रिक मूल्यों का हर प्रकार से शोषण हो रहा है। अगर लोकतांत्रिक मूल्यों का स्वाद छोटे-छोटे क्षेत्र में पाये तो लोकतन्त्र का मूल्य वे समझते, लेकिन भारत-भर में कहीं ऐसा कुछ होने की आशा दिखती नहीं है। कारण गाँवों में मालिक-मजदूर, अनाज खरीद करवाने वाला, अनाज बेच कर कमाने वाला आदि इतने भेद हैं कि ग्राम-पंचायत वास्तव में लोकतांत्रिक ढंग से काम नहीं कर सकती। दादाभाई नौरोजी ने कहा था कि भारत के गाँवों का शोषण कर के ही यहाँ के शहर बढ़ते हैं। इस बात को अर्थनीतिज्ञ इससे पहले मानते नहीं थे, लेकिन अब स्वीकार कर रहे हैं। इंग्लैंड और दूसरे साम्राज्य जैसे उपनिवेशों से धन उगा कर समृद्ध हुए, बिलकुल उसी प्रकार आज हमारे शहर गाँवों को उपनिवेश की तरह लूट रहे हैं।

लोकतन्त्र को सफल करने के लिए प्रशासकीय क्षेत्र में सत्ता का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है और दलीय राजनीति का विरोध होना चाहिए। दूसरे देशों में भी इस प्रकार की अवस्था निर्माण हुई है। इसीलिए फ्रांस में डिगाल वहाँ की शासन-व्यवस्था को सुधारने की कोशिश कर रहे हैं। पहले हम सोचते थे कि वे तानाशाही चलायेंगे। लेकिन वे दलीय राजनीति के कब्जे में से वहाँ की राजनीति को उठाने की कोशिश कर रहे हैं, ऐसा मालूम होता है।

हमारे देश में भय के कारण कारण हैं, ऐसा कहने से हमारे स्वाभिमान को चोट लगेगी, पर अप्रिय सत्य को स्वीकार करना ही होगा। बहुत लोगों की धारणा है कि एक बार लोकतन्त्र का ढाँचा खड़ा हो जाने से

पुरानी व्यवस्था साफ हो जायगी। लेकिन हम सर्वोदय वाले ऐसी धारणा में विश्वास नहीं करते। हमारा विश्वास है कि देश में एक शक्तिशाली गणतांत्रिक आन्दोलन नीचे से शुरू होना चाहिए। आज जो नाममात्र का (फार्मल) गणतन्त्र चलता है, उसमें न जनता का स्वार्थ, न उसके विचार, न उसके मत प्रतिफलित होते हैं। जो इसको चला रहे हैं, वे 'यन्त्रारूढानि मायया,' यंत्र के कब्जे में रहने पर भी "कर्ताहमिति मन्यते।"

इस हालत को बदलने की शक्ति प्रशासकीय क्षेत्र में रहने वालों में ऊपरवालों में, नहीं है। इसके लिए उनको समय भी नहीं है। हमारे प्रधान मंत्री ने प्रशासन की जिम्मेवारी से छः महीनों के लिए छुट्टी लेनी चाही तो सब कोई ना-ना कर के दौड़ आये। इस विषय में सोचने का मौका उनको मिलता, तो वे कुछ कर पाते, लेकिन उनको छुट्टी नहीं मिली।

इस स्थिति से निकलने का उपाय सर्वोदय बताता है। सर्वोदय कहता है कि नीचे से छोटे छोटे लोगों को पकड़ो। गांधीजी ने स्वराज्य के लिए ऐसा ही किया था। सब देशों में बड़े बड़े आन्दोलन, बड़ी-बड़ी क्रान्तियाँ इस प्रकार के अज्ञात साधु, साधु, साधुओं के द्वारा ही हुई हैं। पाकिस्तान में फिर कभी गणतन्त्र लौट आयेगा तो वह नीचे से ही उठेगा। रशिया में भी हमने देखा कि स्टालिन के कठिन से कठिन दमन भी लोगों की स्फूर्ति को नष्ट नहीं कर पाये। लोगों में मेरी श्रद्धा है। लोगों को जाग्रत करने का काम नीचे से हो। यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि यह काम सरकारी आशीर्वाद से नहीं चल सकता। (समाप्त)

सहारनपुर जिले की चिट्ठी

१०-११ दिसम्बर '५९ को श्री वामनलालजी (रिटायर्ड जज) और श्री हरिप्रसादजी, भूदान कार्य के सिलसिले में सहारनपुर जिले में आये। पहले दिन रेवेन्यू अधिकारियों के साथ भूदान के काम में सरकारी कर्मचारियों से संबंधित आने वाली दिक्कतों के सम्बन्ध में चर्चा हुई, और उनकी ओर से आश्वासन मिला कि सरकारी अधिकारी उन दिक्कतों को दूर करने में सहयोग देंगे। शाम को श्री गांधी आश्रम, भूदान तथा अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओं की गोष्ठी में जज साहब का मार्मिक प्रवचन हुआ। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि "जिस काम को आप करना चाहते हैं, उसे अपने जीवन में स्वयं उतारें। गांधीजी की हम लोगों के लिए सबसे बड़ी यही देन है कि उन्होंने जो कहा, उसे स्वयं करके दिखाया। कार्यकर्ता को अध्ययनशील होना चाहिए। अध्ययन के साथ श्रद्धा और विश्वास भी होना चाहिए। कार्यकर्ता को अहंकारी नहीं होना चाहिए, बल्कि नम्र होना चाहिए।"

कार्यकर्ता आज की राजनीति में न पड़ें, इसकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने कहा कि यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि बाजार में और गणित शास्त्र में ५१ बराबर ५१ के होता है, और समाज-रचना में राजनीति के द्वारा ५१ बराबर १०० के मान लिया जाता है। फिर ४९ बराबर शून्य के मानना ही पड़ता है! सर्वोदय समाज रचना में एक व्यक्ति का भी मूल्य है, क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि बहुमत की राय ठीक ही हो। इसलिए सर्वोदय सर्वसम्मति यानी सर्वसम्मति की बात करता है। विनोद के रूप में उन्होंने कहा कि आज की डिमोक्रेसी वास्तव में 'डेमन'क्रेसी है, क्योंकि हम लोग अक्सर पढ़ा करते थे कि राक्षस अपने शरीर को बहुत बड़ा बना लेता है। उसी तरह आज का ५१ भी अपने को बढ़ा कर १०० कर लेता है। इसलिए वह भी राक्षस है, माना उसका है। इसलिए आज की डेमोक्रेसी को यदि 'डेमनक्रेसी' कहा जाय, तो अत्युक्ति नहीं होगी। ५१ को १०० मानना असत्य है, सो जब समाज रचना में ५१ को १०० माना जायगा, तो उसकी बुनियाद असत्य पर रहेगी। इस तरह परिणाम उसका सत्य कैसे हो सकता है? चुनाव कारणों में से यह बहुत बड़ा कारण समाज की बीमारी का है। आज का चुनाव भावकिरण से जुड़ा हुआ है और भावकिरण जुड़ी हुई है हिंसा से। कुरुक्षेत्र में चुनाव नहीं हुआ, क्योंकि उसमें भावकिरण की भावना नहीं थी। अब दुनिया में भावकिरण का

रही है और इसीलिए हिंसा को भी जाना होगा। ये दोनों, पराकाष्ठा पर पहुँच गये हैं। इनका नाश अवश्यंभावी है। गांधी और विनोबा की बात न भी सुनें तो जमाने की रफ्तार को हम कैसे नजरअन्दाज कर सकते हैं। इसलिए हमारे सभी झगड़े उसी पद्धति से निपटेंगे। भारत शुरू से ही धर्मक्षेत्र में लड़ता आ रहा है, अतः वह पंत के साथ कुरुक्षेत्र में लड़ना नहीं चाहेगा। वह धर्मक्षेत्र की लड़ाई का अभ्यस्त है, जिसमें विजय निश्चित होती है।"

दूसरे दिन आर्य कन्या पाठशाला इंटर कालेज की छात्राओं और अध्यापिकाओं के बीच जज साहब का प्रवचन हुआ। वहाँ की छात्राओं ने "खादी द्वारा ही देश की आर्थिक उन्नति सम्भव है" इस विषय पर बहुत ही सुन्दर वादविवाद किया। वादविवाद को सुन कर ऐसा लगा कि लड़कियों ने बहुत ही गहराई से इस विषय का अध्ययन किया है। उन्होंने आलोचना के हर पहलू को छुआ, जिससे जज साहब और हरिप्रसादजी तथा उनके साथ के जिले के अन्य कार्यकर्ता प्रसन्न हुए। यह पाठशाला एक आदर्श संस्था है। यहाँ की छात्राएँ और अध्यापिकाएँ अधिकांशतः खादी पहनती हैं और चरखा चलाती हैं। इससे पहले सर्वोदय-पात्र का शिलान्यास से हमारे जिले में प्रारम्भ हुआ। इन सब प्रवृत्तियों का श्रेय कालेज के व्यवस्थापक श्री राजदेव दुबे और आचार्या श्री कालाऊला राय को है, जिन्होंने अध्यापिकाओं और छात्राओं में इस प्रकार की प्रेरणा उत्पन्न की। वादविवाद प्रतियोगिता में खादी के विरोध का उत्तर देते हुए जज साहब ने कहा कि "पहले नींव बनेगी, तब न छत बनेगी! पहले चरखा रखिये, उसकी टेक्निक जानिये, तभी अपनी मशीन बना कर उसका प्रयोग किया जा सकेगा। यानी अगर मशीन की भी जरूरत पड़े तो पहले चरखा और छोटे उद्योग अपनाने आवश्यक हैं।"

जज साहब के इन सारे समारोहों में श्री केहूरामजी (एम० एल० सी०), श्री सुमनचन्दजी (एम० एल० ए०) तथा हमारे भूदान कार्यकर्ता श्री बलराम भाई, श्री राम निवासजी, श्री चन्द्रशेखर पांडे, श्री कैलाश नारायणजी, श्री कमलाकान्तजी, श्री सर्वेश्वर दयालजी, श्री मुरारजी शास्त्री, श्री राजदेव दुबे, श्री नाथी राम व श्री ओमप्रकाश आदि सभी साथी पूर्ण रूप से लगे रहे और उनके विचारों से पूरा लाभ उठाया।

बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ का कार्य

[एक संक्षिप्त अवलोकन]

बिहार प्रान्त के सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के कार्यकर्ताओं का वार्षिक सम्मेलन भी ता० १७ १८ दिसंबर को सीवान में हुआ था। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ देश की बड़ी और पुरानी खादी संस्थाओं में से है। सन् १९२५ में जब अखिल भारत कांग्रेस कमेटी ने पटना के अपने अधिवेशन में गांधीजी की प्रेरणा से देश में खादी के काम को फैलाने और संगठित करने के लिए एक स्वायत्त संस्था के रूप में अखिल भारत चरखा संघ की स्थापना की, तभी से उक्त संघ की शाखा बिहार में कायम हुई और वहाँ खादी-काम की शुरुआत की गयी। भारत के वर्तमान राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद बिहार में चरखा संघ के प्रतिनिधि बने और स्वर्गीय श्री लक्ष्मी बाबू शाखा के मंत्री। १९४२ के आंदोलन के बाद जब गांधीजी जेल से बाहर आये तो उन्होंने चरखा संघ के काम को विकेन्द्रित करने की बात देश के सामने रखी और फलस्वरूप १९४७ में बिहार की शाखा स्वतन्त्र संस्था में परिवर्तित हो गयी। खादी का काम भी इन वर्षों में बराबर बढ़ता गया। जब कि १९३७ ३८ में खादी का उत्पादन करीब ६॥ लाख रुपये का था, सन् १९५१-५२ में वह ४५॥ लाख से ऊपर पहुँच गया और सन् १९५८-५९ में एक करोड़ ४० लाख। आज बिहार के १७ में से १४ जिलों में करीब २०३ केन्द्रों और उपकेन्द्रों में बिहार खादी-संघ का काम फैला हुआ है। ढाई लाख से अधिक कत्तिन, बुनकर और ३२१७ कार्यकर्त्ता आज संघ के अन्तर्गत खादी के इस काम में लगे हुए हैं।

सीवान के सम्मेलन में करीब १५०० कार्यकर्त्ता इकट्ठे हुए थे और दो दिन उन्होंने खादी-काम का सिंहावलोकन और आगे के काम की दिशा के बारे में विचार-विनिमय किया। संघ के अध्यक्ष श्री ध्वजा प्रसाद साहू खादी-काम के अपने अनुभव से जिस नतीजे पर पहुँचे हैं, उसका जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि "बिना ग्रामस्वराज्य की स्थापना के खादी-ग्रामोद्योग को टिकाये रखना कठिन ही नहीं, बल्कि असंभव है। कुछ करोड़ रुपये की उत्पादन बिक्री करके क्या हम खादी को टिकाये रख सकते हैं? खादी-बिक्री की समस्या सदा मुँह बाये खड़ी रहती है।" खादी शहरों के बाजार के बल पर ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकती। वह तभी स्थायी हो सकती है, जब गाँवों के लोग यह समझ लें कि गाँवों का भविष्य खुद उनके हाथों में है और वे उसे बना-बिगाड़ सकते हैं। तब खादी अकेला कार्यक्रम न रह कर ग्राम-योजना का एक अंग बन जायगी। इस प्रकार ग्राम-स्वावलंबन की भावना ही खादी-ग्रामोद्योग का सही और ठोस आधार हो सकती है। इसे ध्यान में रखते हुए श्री ध्वजा बाबू ने इस बात पर जोर दिया कि संघ के सारे भंडारों और केन्द्रों को अपनी शक्ति और बुद्धि के अनुसार ग्राम स्वावलम्बन का काम उठा लेना चाहिए। "हमारे भंडार केवल उत्पत्ति बिक्री के काम का ही बजट न बनायें, बल्कि उसमें अपने क्षेत्र के दो चार गाँवों में उत्पादन-बिक्री के अथवा ग्रामस्वराज्य की ओर ले जाने वाले दूसरे कार्यक्रमों को भी गाँवों में समितियों की स्थापना करके उनको आगे बढ़ायें। गाँवों में जो भी कार्य हों, उन्हें ग्राम-समितियों के माध्यम से ही चलाने का प्रयत्न किया जाय। गाँवों में सभी को काम मिले इसकी योजना बनाना, निवास, भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य का प्रबन्ध करना, ग्राम-समितियों का कर्तव्य होगा। ये सब सेवाएँ ग्रामीणों को भलीभाँति उपलब्ध हो सकें, इसके लिए गाँव की समिति, गाँव के प्रत्येक घर से फसल के समय अन्न-संग्रह करे और उत्सवों आदि के मौकों पर दान ले। गाँव के जो लोग गाँव के बाहर दूसरे कामों से कमाते हों, उन्हें भी ग्रामोत्थान के काम में अपनी कमाई का कुछ हिस्सा देना चाहिए। घर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाय। उसका भी कुछ हिस्सा गाँव के कामों में लगाया जा सकता है। तात्पर्य यह कि प्रत्येक ग्रामवासी, समाज की सेवा के लिए अपनी कमाई का कुछ हिस्सा देना अपना कर्तव्य समझे। उन्हें इस तरह की तालीम और प्रेरणा देना प्रत्येक खादी कार्यकर्ता का एक सुनिश्चित कार्य होना चाहिए। अगर अपने क्षेत्र के अन्तर्गत सभी गाँवों में वे वैसा न कर सकें तो भी किसी न किसी गाँव को लेकर यह कार्य उन्हें सम्पन्न करना चाहिए। आज यही हमारे देश की माँग है। ऐसा करके हम आज विशृंखलता से दम तोड़ने वाले गाँवों में नवजीवन भर सकेंगे और ग्रामसमाज खड़ा करने में समर्थ हो सकेंगे। गाँव की उन्नति के साथ-साथ इससे कार्यकर्ताओं का भी सर्वतोमुखी विकास होगा। उत्पादन बिक्री का काम तो आज हमारा रोजमर्रा का साधारण काम 'रुटिन' हो गया है। इस तरह के 'रुटिन' में बँध कर काम करने से विकास संभव नहीं है। इससे विचार कुंठित हो जाते हैं। इसलिए हम कार्यकर्ताओं को अपने विचारों को विकसित करना चाहिए। अपने हृदय को विशाल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि गाँवों का सर्वांगीण कार्य उठा लेने के लिए हम सचेष्ट हों।"

मिल-उद्योगों का विकास ग्रामोद्योगों के ह्रास का इतिहास है। कारखानों के बने माल की अनुचित होड़ के कारण गाँव के उद्योग धन्धे एक एक करके कैसे नष्ट हो गये, इसका एक उदाहरण भागलपुर का रेशम उद्योग है। बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ के मंत्री श्री गजाननदास ने संघ का कार्य-विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि आज से २५ वर्ष पहले तक भागलपुरी कपड़ा, खासकर वहाँ का 'बाफ्ता' मशहूर था। भागलपुर के बुनकर उसके चलते खुशहाल थे। पर इस बीच नकली रेशम (रेयन) के प्रचार ने इस उद्योग पर जबर्दस्त आघात पहुँचाया और वहाँ के बुनकर मजबूरन रेयन बुनने को बाध्य हुए। आसपास के क्षेत्र की लाखों तसर कत्तिनें बेकार हो गयी, जिनमें अधिकांश बुनकर परिवारों की ही थीं। उधर रेयन बुनने में बुनकरों की मजदूरी भी बहुत कम हो गयी, क्योंकि अपने स्वतंत्र धन्धे के स्थान पर उन्हें किसी बड़े व्यापारी के साथ बंध कर मजदूरी करने के लिए बाध्य होना पड़ा। खादी संघ द्वारा तसर का काम हाथ में लिये जाने पर इनकी हालत में कुछ सुधार हुआ है।

उधर तसर-कोकून पैदा करने वाले किसानों की हालत भी अत्यन्त दयनीय है। यह फसल उनकी जीविका का मुख्य अंग है। पर उन्हें इसकी कीमत ठीक नहीं मिल पाती, क्योंकि फसल के समय बड़े बड़े व्यापारी इसे सस्ते में खरीद कर संग्रह कर लेते हैं और फिर ऊँचे भावों में बेचते हैं। श्री गजानन बाबू का सुझाव है कि खादी ग्रामोद्योग कमीशन की ओर से तसर गोटी (कोकून) का स्टाक रखवाने की व्यवस्था की जाय तो किसानों को वाजिब कीमत मिल सकती है। इसके बावजूद ऐसा करने से गोटी सस्ती पड़ेगी, उसका भाव साल भर स्थिर रखा जा सकेगा और अतः कपड़ा सस्ता पड़ने से बिक्री में भी मदद मिलेगी।

बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ ने कार्यकर्ताओं के बीच समवेतन का प्रयोग दाखिल करके देश की खादी तथा रचनात्मक संस्थाओं के सामने एक बड़ी मिसाल पेश की है। कार्यकर्ता किस प्रकार के काम में लगा हुआ है, इसका खयाल न करते हुए संघ के सभी कार्यकर्ताओं या श्रमजीवियों को पाँच वर्ष में क्रमशः एक सौ रुपया मासिक मिलता है। यह अपने ढंग का एक अनूठा और प्रेरणादायी प्रयोग है। संघ की ओर से अपने क्षेत्र में सूतांजली संग्रह का काम भी व्यवस्थित ढंग से चलता है और कार्यकर्ता सम्पत्तिदान भी देते हैं। खासकर दरभंगा, मुजफ्फरपुर और मुंगेर जिले में सर्वोदय-पात्र का काम भी काफी चल पड़ा है।

इस प्रकार बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ का काम देश की सभी खादी-संस्थाओं के लिए एक तरह से दिशादर्शन का काम करता है।

नागोर में पदयात्रा

नागोर जिले (राजस्थान) की डेगाना तहसील के करीब १०-१२ गाँवों में ६ से ११ दिसम्बर तक ग्रामस्वराज्य पदयात्रा आयोजित की गयी, जिसमें नागोर जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद स्वामी, श्री मोहनलाल शर्मा, श्री ओंकारलाल स्वामी, श्री भोलारा[म] तथा श्री सवाईसिंह सम्मिलित हुए। पहले पड़ाव, बनवाड़ा गाँव के निवासियों ने भूदान के विचार से प्रभावित होकर अपने गाँव के कुल १२ भूमिहीन परिवा[रों] में तुरन्त ही करीब २२५ बीघा भूमि वितरित कर अपने गाँव के भूमिहीनों की समस्या हल कर ली। गाँ[व] के एक उत्साही सज्जन श्री शंकरसिंहजी ने दूसरे दिन अ[पने] हरे-भरे चने के खेत में से २७ बीघा भूमि गाँव के विद्यालय व पंचायत घर आदि के निमित्त भेंट की। या[त्रा] के दूसरे दिन बनवाड़ा से करीब मील डेढ़ मील की दू[री] पर स्थित पाटणियाँ के छोटे से गाँव के समस्त ७ परि[वा]रों ने अपनी कुल जमीन की मालकियत को बस्ती [को] मंजूर कर ग्रामदान-संकल्प किया। इस गाँव के पड़ोसी गाँव के कुछ अन्य भूमिहीन मिल कर इस ब[स्ती] से सहकारी खेती का भी एक प्रयोग कर रहे हैं।

पदयात्रा का तीसरा पड़ाव मेहँदा, काफी बड़ा गाँव है। वहाँ राष्ट्रीय बचत योजना के लिए तहसी[ल] का नायब तहसीलदार जनता को बिना समझाये च[न्दे] के रूप में गरीब-अमीर सभी से डाट-डपट देकर र[कम] वसूल कर रहे थे, जिससे जनता बड़ी भयभीत थी। जनता ने पदयात्रियों को भी कांग्रेसवाले समझ कर य[ह] माना कि ये भी चन्दा वसूल करवाने में सहयोग दि[ला]ने आये हैं, परन्तु जब रात को सभा में ग्रामस्वरा[ज्य] का विचार समझाते हुए राष्ट्रीय बचत योजना की वास्तविकता बतायी गयी, तो लोगों में निर्भय[ता] का निर्माण हुआ और उन्होंने अपने गाँव की भूमिहीन की समस्या हल करने के लिए संकल्प करते हुए ६[...] बीघा भूमि भूमिहीनों को दी गयी। इस ग्राम के कर[ीब] १०० छात्रों ने अपने-अपने घर में सर्वोदय पा[त्र] स्थापित करने का निश्चय किया।

पदयात्रा के अन्य गाँव सायपुरा, निम्बोला, ढाणी[...] पुरा, थाँवला, रायधामणी तथा मोरियाणा में भी बड़े प्रेम से लोगों ने सैकड़ों की तादाद में शांति की टक[ोर ...] उपस्थित होकर ग्राम स्वराज्य के निम्न विचार को सुन[ा] व समझा : (१) गाँव के झगड़े गाँव में ही प्रेमपूर्वक समझा कर निपटवाना। (२) गाँव के विकास के लि[ए] गाँव के लोगों की राय से योजना बना कर कार्य करना (३) गाँव में हर मास गीताई सत्संग आयोजि[त] करना, जिसमें 'गीता प्रवचन' भी पढ़ कर सुनाना।

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, ८ जनवरी, '६०

कृषि-सुधार की कुछ समस्याएँ :

[पृष्ठ-संख्या २ से आगे]

कृषि प्रणाली याने सिर्फ जोतना, बोना तथा खाद देना आदि है, ऐसा मैं भी पहले मानता था। कुछ वैज्ञानिकों की इसी प्रकार की राय भी पढ़ने में आयी। परन्तु रोजमर्रा खेती की डायरी लिखते लिखते ३४ साल के दरमियान कृषि की प्रक्रियाएँ १८ निकलीं। इन सब प्रक्रियाओं को ठीक ढंग से समझ कर रोजमर्रा अपनी कृति में लायेंगे तो कृषि सुधार करने में तथा उन्नति करने में देर नहीं लगेगी। वे प्रक्रियाएँ ये हैं :

(१) जुताई (२) औजार
(३) गाय-बैलों की सेवा (४) खाद बनाना : कम्पोस्ट
(५) खाद ढुलाई व फैलाव (६) बुआई
(७) निंदाई (८) गुड़ाई
(९) सिंचाई (१०) रखवाली
(११) कटाई (१२) उन्नत बीज
(१३) अनाज-संग्रह व स्टोर (१४) जमीन की रचना और पानी का निकास
(१५) निरीक्षण
(१६) रेकार्ड तथा दैनंदिनी (१७) सार सम्भाल
(१८) अन्यान्य।

उपरोक्त सभी प्रक्रियाओं का वर्णन यहाँ करना संभव नहीं है, इसलिए केवल एक प्रक्रिया, उन्नत बीज का ही उदाहरणस्वरूप वर्णन कर देना काफी होगा।

फसल-वृद्धि में बीज का स्थान बहुत महत्त्व रखता है। बहुत से सरकारी फार्मों में बीजों की उन्नति करने के भरसक प्रयत्न हो रहे हैं। लेकिन इस काम को आगे बढ़ाने के लिए खुद किसान को भी सक्रिय भाग लेना चाहिए। मेरा विश्वास है कि उन्नतिशील बीज मिलेंगे, तो १५ प्रतिशत फसल-वृद्धि होगी। उन्नत बीज का निर्माण दो प्रकार से होता है : (१) वर्ण संकरों से और (२) भुट्टों तथा बालियों के चुनाव से। पहला प्रकार वैज्ञानिकों तथा सरकारी फार्मों द्वारा काम में लाया जाता है। दूसरा प्रकार सर्व साधारण जनता के लिए योग्य तथा अनुकूल है। इसके बारे में थोड़ा विस्तार से बतला रहा हूँ।

खड़ी फसल में से अच्छे भुट्टों का चुनाव करना चाहिए। जिन भुट्टों को बीज के लिए चुना हो, उन्हें धूप और हवा मिलती रहनी चाहिए। चुने हुए बीजों को सुखाने हुई चलनी में छान कर ३-४ दिन तक धूप में अच्छी तरह सुखा कर तथा रेंडी का तेल लगा कर रखना चाहिए। इससे कीड़े आदि नहीं लगते हैं। १ मन बीज के लिए १५ तोला रेंडी काफी होगा।

बीजों पर धूप का जादू जैसा असर होता है। यह प्रभाव निम्नलिखित परीक्षण से स्पष्ट हो जायगा। एक ज्वार के भुट्टे के दानों को एक जगह पर बोया। एक चौथाई पेड़ बहुत सुदृढ़ थे, बाकी आधे कमजोर थे। जोत, खाद, गुड़ाई, निंदाई आदि सब प्रक्रियाएँ समान होने पर भी पौधों की असमानता का कारण धूप ही थी। ज्वारी के कई भुट्टों का सूक्ष्म निरीक्षण करके देखा। भुट्टे के ऊपर और पश्चिम के दाने बहुत मोटे और चमकीले रहते हैं। पूर्व के दाने साधारण मोटे थे। दक्षिण और उत्तर के दाने कम मोटे थे और अन्दर के बहुत कमजोर थे। इसका कारण धूप ही है।

बीजों को उन्नतिशील करना हो तो भुट्टे के ऊपर ऊपर के दाने लेने चाहिए। ऐसा करने से श्रम अधिक लगेगा, परन्तु फसल की वृद्धि कई गुना अधिक होगी। सुखी हुई चलनी से बड़े परिमाण में उन्नत बीज छाँटने में मदद मिलती है। इसके लिए तीन प्रकार की चलनी का निर्माण किया गया है। एक ज्वारी के भुट्टे में ११११ दाने थे, छानने के बाद ३००० अच्छे दाने मिले। वैसे ही गेहूँ, चना, अरहर, तुअर आदि के लिए भी चलनियों का उपयोग किया जा सकता है। चलनियों से छानने के बाद एक तोला वजन में दानों की संख्या पायी गयी : गेहूँ २८०; ज्वारी २१२।

इसी साल हमने यहाँ एक प्रत्यक्ष अनुभव देखा। हमने लोगों से बीज बोने के बारे में पूछा, तो पता चला कि एक मुट्ठी भर अनाज एक हल के हरिस जितनी लम्बी जगह में बोना चाहिए। हरिस लगभग १० फुट लम्बा रहता है। एक मुट्ठी अनाज उन्हीं भाई से लेकर गिना तो उसमें १३०० गेहूँ के दाने थे। इसका मतलब यह हुआ कि प्रति इंच ११ दाने बोये जाते हैं। उपरोक्त दानों में करीब आधे बीज बोने लायक नहीं थे। इसलिए आज की मौजूदा कृषि-प्रणाली कहिये अथवा देहात की परम्परा कहिये, यह सब एकदम बदलना मुश्किल है। यदि शिक्षित लोग खेती करने लगेंगे तो वे सोचेंगे कि एक इंच में ११ दाने बोऊँ अथवा ११ इंच में १ बीज बोऊँ? ऐसा सोचते और करते करते ही मनुष्य एक दिन ११ इंच में एक दाना बोकर जितना आज ११ दाने एक इंच में बोकर पैदा होता है, उससे कई गुना ज्यादा पैदावार ले सकेगा।

साधना-केन्द्र में कुमारप्पा जयन्ती

गत ४ जनवरी '६० को अ. भा. सर्व सेवा संघ के साधना केन्द्र में शाम को ५ बजे डाक्टर कुमारप्पा की जयन्ती मनायी गयी। श्री प्यारेलालजी और श्री वल्लभ-स्वामी ने अपने रोचक संस्मरण सुनाते हुए यह कामना प्रकट की कि डाक्टर कुमारप्पा स्वस्थ और दीर्घायु हों।

समारोह में सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, वियोगी हरि, मनमोहन चौधरी, नारायण देसाई, रामेश्वर अग्रवाल, भोगीलाल गांधी तथा सर्वोदय-परिवार के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

श्री प्यारेलालजी ने बताया कि श्री कुमारप्पा का बापू से सर्वप्रथम परिचय कैसे हुआ। वे बड़ी श्रद्धा से बापू के पास आये और ऐसे आये कि फिर वहीं रह गये। उन्होंने सर्वोदय-अर्थशास्त्र का गम्भीर अध्ययन किया और उसे एक विशिष्ट स्थान दिलाया। राष्ट्रीय ऋण के सम्बन्ध में उनकी रिपोर्ट अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी। १९३० में जेल से निकलने के बाद गांधीजी ने कहा कि ग्राम पुनरचना से ही देश की पहचान दूर होगी। उसके लिए उन्होंने ग्रामोद्योग संघ को जन्म दिया और उसकी जिम्मेदारी कुमारप्पाजी को सौंपी। श्री कुमारप्पा अपने जीवन में दो बार अनेक दरख्वाओं से कुदरत होकर निकले हैं। अभी जब मैं वहाँ गया था तो मैं उनसे मिलने मद्रास चला गया था। देखा कि वे अत्यन्त अनासक्त भाव से जीवन की ओर देख रहे हैं। उनका त्याग, उनका शुद्ध चरित्र और अन्याय का तीव्र प्रतिकार हम सबके लिए प्रेरणादायक है। ईश्वर उन्हें चिरायु करे।

श्री वल्लभस्वामी ने श्री कुमारप्पा के प्रेरक जीवन की चर्चा करते हुए बताया कि गांधी विचार के मौलिक चिन्तकों में श्री कुमारप्पा अग्रगण्य हैं। ग्रामोद्योगों के लिए उनके हृदय में बड़ी तीव्र भावना है। सत्य के लिए उनका आग्रह, विचारों की दृढ़ता, निर्भीकता, गरीबों के लिए प्रेम और अन्याय के प्रति उनका पुण्य-प्रकोप हम सबके लिए अनुकरणीय है। ज्ञानेश्वर के अनुसार अन्धकार तो सूर्य भी दूर करता है, चन्द्र भी, पर सूर्य उग्र है और चन्द्र शान्त। कुमारप्पाजी सूर्य की भाँति प्रखर हैं। आज रोगशय्या पर पड़े रहते हुए भी उनकी प्रखरता कम नहीं हुई है। ईश्वर आपको शान्ति और दीर्घायु प्रदान करे।

विनोबा और 'एस्पराँटो'

मानव समाज की एकता की और सारी वसुधा एक कुटुम्ब है, इस भावना की अभिव्यक्ति वैसे तो नयी चीज नहीं है, पर पिछली दो शताब्दियों में विज्ञान की जो प्रगति हुई है, उससे इस भावना को साकार करने की ओर दुनिया के लोगों का ध्यान गया है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विश्व की एकता को मूर्त रूप देने के प्रयत्न होते रहे हैं। दुनिया के विभिन्न देशों के आपसी व्यवहार के लिए एक सर्वमान्य भाषा होनी चाहिए, इस विचार से प्रेरित होकर पोलैंड के एक मनीषी श्री जैमेनोव ने सन् १८८७ में 'एस्पराँटो' के नाम से एक नयी भाषा ईजाद की। ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाने की ओर भी प्रयत्न हुए और उन प्रयत्नों को चालना देने के लिए कई मुल्कों में संस्थाएँ भी बनी हैं।

एस्पराँटो एसोसिएशन की केन्द्रीय समिति के सदस्य युगोस्लाविया के निवासी एक भाई—श्री सिबोरे सेरेल—आजकल हिन्दुस्तान में आये हुए हैं और अभी विनोबा के साथ उनकी पदयात्रा में चल रहे हैं और उन्हें 'एस्पराँटो' सिखा रहे हैं। वे करीब २-३ सप्ताह विनोबा के साथ रहेंगे। विनोबा आजकल रोज थोड़ा समय इस काम के लिए दे रहे हैं।

इस विषय में विनोबा ने एक पत्र में जो लिखा है, वह पाठकों के लिए दिलचस्प होगा। विनोबा लिखते हैं—

" युगोस्लाविया के एक भाई मेरे पास आये हैं। चंद दिन यात्रा में रहेंगे। मुझे एस्पराँटो सिखाने के इरादे से आये हैं, जो सीखने का मैंने वादा किया था। जय जगत् के लिए एस्पराँटो सीखना अनिवार्य है सो नहीं। लेकिन एस्पराँटो के पीछे जय जगत् का ख्याल रहा है, ऐसा तो माना जाता है। इसलिए जिसने अनेक भाषाओं के ज्ञान का बोझ वहन किया है, उस गधे पर और थोड़ा बोझ लद जाय तो वह शिकायत नहीं कर सकता। जो अनेक भाषाएँ सीखने का लोभ रखता है वह शायद किसी भाषा को अच्छी तरह नहीं जानेगा। पर इसमें ज्ञान प्राप्ति की दृष्टि नहीं रही है, प्रेम की रही है और उतना बस जाता है।"

बिहार में सूतांजलि, सम्पत्ति-दान एवं सर्वोदय-पात्र का जिलेवार विवरण

जिला	सूतांजलि गुण्डी	सम्पत्ति-दान	सर्वोदय-पात्र
दरभंगा	१७,७६३	६१,८९३	९,२१५
मुजफ्फरपुर	१७,१८७	६,४५२	१,२४०
सारण	६,५४८	१,२३४	२७५
चम्पारण	२६,०६१	६११	५३
भागलपुर	७,५३९	९,८४१	१२३
मुंगेर	१७,५२७	५,३०२	१,००१
गया	१९,०४९	९१२	१२
पटना	७,०६०	३८०	
आरा	२,५९७	२०३	२९२
राँची	४०७	१५९	२
हजारीबाग	१,०१९		
सिंहभूमि	४२७	२१४	
धनबाद	३००	११२	
पलामू	८९२	१५९	
कुल	२,०४,३९३	८७,५०२	१२,२१३

विनोबाजी का पता :

मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल,
पो० पट्टी कल्याण, जिला करनाल (पंजाब)

लखनऊ में प्रमाण-पत्र-समिति की सभा

अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग-कमीशन की प्रमाणपत्र समिति की सभा तारीख २१,२२ दिसंबर, १९५९ को लखनऊ में हुई। समिति के अध्यक्ष श्री विचित्र नारायण शर्मा के अलावा समिति के सदस्य, सर्व सेवा संघ की खादी समिति के अध्यक्ष श्री ध्वजाप्रसाद साहू, श्री सिद्धराज ढड्ढा, श्री नारायणराव, श्री भीमसेन उपस्थित थे। सभा में प्रदेशीय खादी बोर्डों के मंत्री तथा खादी कमीशन के विभागीय संचालक भी निमंत्रित किये गये थे। उनमें से कई उपस्थित थे। इस समय देश में छोटी-बड़ी करीब ७५० खादी की प्रमाणित संस्थाएँ काम कर रही हैं, जिनमें कई सहकारी संस्थाएँ तथा प्रदेश सरकारों के खादी विभाग भी हैं। सन् १९५२ में अखिल भारत खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की स्थापना के बाद इन पिछले सात बरसों में खादी का काम करने वाली संस्थाओं की संख्या बहुत तेजी के साथ बढ़ी है। खादी का उत्पादन भी एक करोड़ रुपये से बढ़कर करीब दस करोड़ तक पहुँचा है।

पर साथ ही यह महसूस किया जा रहा है कि खादी का काम अब आगे जनता द्वारा स्वावलम्बन के संकल्प के आधार पर ही बढ़ सकता है। इसलिए खादी के काम का मुख्य जोर अब ग्राम स्वावलंबन और ग्राम संकल्प पर होना चाहिए। अतः अब आगे के लिए प्रमाण पत्र किस आधार पर दिये जायँ, यह सभा की चर्चा का एक मुख्य विषय था। आम तौर से सब लोग इस बात से सहमत थे कि गाँव गाँव में ग्रामोदय या ग्राम-स्वराज्य समितियाँ बना कर स्थानीय खपत के लिए उत्पादन को प्रोत्साहन दिया जाय। इसके अलावा जिन नयी संस्थाओं को प्रमाण-पत्र दिये जायँ, उनके लिए भी यह आवश्यक माना जाय कि वे अपने उत्पादन का अधिक-से-अधिक हिस्सा अपने क्षेत्र में ही बेच लें। २० प्रतिशत से शुरू करके उत्पादन का कम से कम ७५ प्रतिशत उसी क्षेत्र में बिक जाय, यह लक्ष्य रहना चाहिए। क्षेत्र मर्यादा, काम के लिए आवश्यक पूंजी, पर्याप्त उत्पादन की संभावना आदि कुछ अन्य कसौटियाँ भी नये प्रमाण पत्र देने के लिए तय की गयीं।

खादी भंडारों में ग्रामोद्योग की तथा हस्तकला की तरह-तरह की चीजें आज बिक्री के लिए रखी जाती हैं। खादी का मुख्य सिद्धान्त ग्रामोद्योगों को प्रोत्साहन देना तथा लोगों को रोजी के साथ साथ अपने काम का उचित मुआवजा मिले, यह है। उनकी गरज का फायदा उठा कर कम कीमत पर उनकी बनायी हुई चीज खरीद ली जाय, इस वृत्ति के बजाय उचित मजदूरी देकर उचित दामों पर वे चीजें बाजार में बिकें, यह इस सारे काम का उद्देश्य है। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए भंडारों में कौन-कौनसी चीजें किस तरह रखी और बेची जाय, इस सारे प्रश्न पर विचार करने के अपने सुझाव प्रमाण पत्र समिति के सामने पेश करने के लिए एक उप-समिति बनायी गयी है।

प्रमाणपत्र-समिति की सभा में कतवारियों की मजदूरी की दरों के प्रश्न पर भी चर्चा हुई। इस वक्त कताई की मजदूरी "आठ घंटे के कुशल काम के लिए आठ आने" के आधार पर तय की हुई है और सब प्रमाणित खादी संस्थाओं के लिए इसके अनुसार ही भिन्न भिन्न अंकों के सूत की कताई देना लाजमी है। पर आज की महँगाई को ध्यान में रखते हुए मजदूरी बढ़ायी जानी चाहिए, इस प्रश्न पर चर्चा हुई। खादी की बिक्री आज की सरकारी सबसिडी के बावजूद नहीं बढ़ रही है। मजदूरी की दरों को बढ़ाने से बिक्री पर और भी प्रतिकूल असर पड़ने का अन्देशा है, फिर भी कम से-कम जो कतवारियाँ कताई के धन्धे पर निर्भर करती हैं उनको तो पर्याप्त मजदूरी मि[illegible] ऐसी सिफारिश संस्थाओं से करने का तय हुआ मजदूरी की सर्वसामान्य दरों को बढ़ाने के प्रश्न[illegible] भी आगे चर्चा चलाई जाय तथा सर्व सेवा संघ[illegible] खादी समिति व अखिल भारत खादी ग्रामोद्योग कमी[illegible]शन को भी इस प्रश्न पर विचार करने के लिए निवे[illegible]दन किया जाय, यह सबकी राय रही।

उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ताओं का वार्षिक सम्मेलन

उत्तर प्रदेश में गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ताओं का वार्षिक सम्मेलन सेवापुरी में ता २१ से २४ दिसम्बर '५९ तक हुआ। इस अवसर पर प्रदेश में नवनिर्माण, तत्त्व-प्रचार और नयी तालीम में लगे हुए सभी कार्यकर्ताओं ने अपनी गोष्ठियाँ आयोजित कर अपने कार्य की समीक्षा, सिंहावलोकन और सहचर्चा या चिन्तन द्वारा भावी कार्यक्रम की रूपरेखा स्थिर की।

इस समय प्रदेश के जिन ३० ग्राम सेवा-केन्द्रों में ५७ भाई-बहनें ग्राम-सेवा-कार्य कर रही हैं, उनमें से २७ केन्द्रों के ५१ कार्यकर्ताओं ने सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन का शुभारम्भ प्रोफेसर आसरानी तथा श्री करण भाई ने किया। ४ दिनों तक हुई इस लगातार चर्चा में अपने सीमित साधनों द्वारा ग्राम-स्वावलम्बन साधने के मूल उद्देश्य की पूर्ति में ग्रामसेवक की निजी तैयारी क्या हो तथा भावी कार्यक्रम की क्या रूपरेखा हो, इस पर विचार किया गया। अंत में कार्यकर्ताओं ने अपने समग्र कार्यक्रम को गति देने के लिए एक अनुमान लक्ष्य-(टार्गेट) निर्धारित किया।

तत्त्व-प्रचार विभाग की गोष्ठी में भी जहाँ सम्प्रति वाराणसी, इलाहाबाद, गोरखपुर, लखनऊ, कानपुर, आगरा के केन्द्रों के कार्यकर्ता और संयोजक भाग ले रहे थे, अपने कार्यों की समीक्षा की और आगामी वर्ष की कार्य-योजना स्थिर की। यह स्मरणीय है कि गांधी स्मारक निधि ने जब सन् १९५३ में उत्तर प्रदेश में गांधी तत्त्व प्रचार विभाग की स्थापना की, तब से धीरे-धीरे काम सारे प्रदेश में व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ता जा रहा है। १९५३ से '५८ तक उ० प्र० के २० पूर्वी जिलों में १५० से अधिक सर्वोदय स्वाध्याय-मण्डलों की स्थापना हुई है। सारे उत्तर प्रदेश में ३५० से भी अधिक स्वाध्याय मंडलों की स्थापना हुई। निर्विवाद रूप से ये मंडल पुस्तकालय और वाचनालय ही नहीं, बल्कि अध्ययनशील और जिज्ञासु लोगों के लिए गांधी विचारधारा के मिलन स्थल और विचार-स्थल (मीटिंग ग्राउन्ड्स एण्ड फोरम) के रूप में विकसित किये गये हैं। विचार गोष्ठियों, परिचर्चाओं, व्याख्यान-मालाओं, गांधी और विनोबा-जयन्ती, सर्वोदय-पक्ष तथा अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ साथ इन स्वाध्याय-मण्डलों ने अपनी सार्थकता सिद्ध की और सारे प्रदेश में सर्वोदय की हवा बाँधने में इनका अनुपेक्षणीय स्थान रहा।

नयी तालीम गोष्ठी में, जिसका उद्घाटन २१ दिसम्बर '५९ को आदरणीय श्री करणभाई ने किया, सेवापुरी, टोडरीघाट, कौशाम्बी, रामगाँव, हरदानगर, शान्तिपुरी, जाजामऊ, सिल्यारा की बुनियादी शालाओं, हरिहरपुर बालवाड़ी और उत्तर बुनियादी विद्यालय सेवापुरी के भाई-बहनों ने भाग लिया। गोष्ठी में सभी केन्द्रों की प्रगति की समीक्षा काफी गहराई से चर्चा करते हुए की गयी तथा भावी पाठ्यक्रम और कार्यक्रम निश्चित किया गया। इस विचारक्रम में, "नयी तालीम शालाओं के आसपास के वातावरण के निर्माण-कार्य करने में शाला का योग और उसके माध्यम से शिक्षण का कार्यक्रम" इस विषय पर पर्याप्त चर्चा के बाद भावी कार्यक्रम स्थिर किये गये, जिससे गाँव के साथ हमारा सजीव सम्पर्क हो।

इन सभी गोष्ठियों और सम्मेलन का समापवर्तन समारोह २४ दिसम्बर '५९ को संध्या समय हुआ, जिसमें सर्वश्री वल्लभस्वामी, मास्टर सुन्दरलाल, करणभाई, प्रो० आसरानी आदि ने अपने बड़े ही तात्त्विक भाषणों द्वारा कार्यकर्ताओं के सम्मुख सर्वोदय और रचनात्मक विचार के व्यावहारिक पहलू उपस्थित किये।

बच्चों की कला और शिक्षा

(लेखक—देवी प्रसाद)

प्रस्तावना : नंदलाल बसु : डॉ जाकिर हुसेन

प्रकाशक : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी

मूल्य : सजिल्द, आधा कपड़ा-रुपया ८, सजिल्द, पूरा कपड़ा रु० १०, रजिस्ट्री डाक-खर्च ०-९६ न पै

"लेखक ने अनुभव के सोने पर प्रेम का सुहागा चढ़ा कर विचारों की चमक दमक ही नहीं बढ़ायी है, इनमें जीवन की गरमी भी डाल दी है"।

"यह कला में जीवन डालने और सारे जीवन को कला बनाने का हौसला रखना है। जो शिक्षक इस शिक्षा और इस दुनिया को समझना चाहता है, उसे इस पुस्तक से बहुत कुछ मिलेगा।

"बुनियादी पाठशालाओं और पुरानी तरीके की पाठशालाओं, दोनों ही के शिक्षकों को इसके पढ़ने से अपने काम के सुधार में सहारा मिलेगा। नये रास्ते सुझायी देंगे।

"मेरा विश्वास है कि जो शिक्षक इस किताब को पढ़ेगा, वह बहुत लाभ उठायेगा। उसकी समझ भी बढ़ेगी, दिल भी गरमायेगा और वह अपने काम में, कि जीवन-कला का काम है, जी से और हिम्मत से लग जायगा...।

"मुझे गर्व है कि एक हिन्दुस्तानी शिक्षक ने ऐसी सुन्दर, ऐसी रोशनी देने वाली, दिल को गरमाने वाली किताब अपने साथियों के लिए लिखी।"

(पुस्तक की प्रस्तावना में से)

—डॉ जाकिर हुसेन

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, टे० नं० २८५
वार्षिक मूल्य ५) एक प्रति १३ नये पैसे

विनोबा का अज्ञात-संचार

दिसम्बर का महीना और साल का आखिरी दिन। सवेरे ४ बजे का समय। कड़ाके की सरदी पड़ रही थी। दुबारा घंटी बजी। विनोबा के पदयात्रा पर रवाना होने का समय हो रहा था। पहली घंटी तो तीन बजे ही हो चुकी थी, जब शौच इत्यादि से निवृत्त होकर विनोबा प्रार्थना के लिए बैठने वाले थे। विनोबा के लिए तो सरदी, गरमी, बारिश सब बराबर है। आज नौ-नौ बरस होने आये, रोज सवेरे यही ढाई तीन बजे उठ कर, चार-साढ़े चार तक अगले पड़ाव के लिए रवाना होने की तैयारी! मैं पहले रोज शाम को ही विनोबा के पास पहुँचा था, सरदी के कारण पहली घंटी पर तो उठने की हिम्मत नहीं हुई। अब तो उठना ही था।

* * *

जब से विनोबा ने 'अज्ञातवास' या 'अज्ञात-संचार' शुरू किया, तब से मैं पहली बार पदयात्रा में पहुँचा था और पहली ही बार 'अज्ञात-संचार' का पूरा अनुभव मिला। काशी में अचानक विनोबा की ओर से तार मिला था कि ता० ३१ दिसम्बर को विनोबा का कार्य-क्रम एलनाबाद का तय हुआ है, जो पंजाब-राजस्थान की सीमा पर हिसार जिले का एक कसबा है, वहाँ पहुँचो। बाबा का यह संदेश पाकर मैं ता० २८ को काशी से रवाना हुआ। ता० २९ की रात को जब दिल्ली पहुँचा, तब स्टेशन पर मित्रों ने बताया कि विनोबा का पड़ाव ता० ३१ को नहीं, ता० २ को एलना-बाद में है। ऐसा तार उन्हीं के पास से कल मिला है। अब शंका शुरू हो गयी। पर मुझे भी विनोबा की ओर से ही निश्चित कार्यक्रम मिला था, मुझे तो आगे जाना ही था। सवेरे जब भटिंडा स्टेशन पर पहुँचा तो एक भाई ने जो पहले ही दिन हनुमानगढ़ से आये थे, बतलाया कि उस दिन याने ता० २९ को विनोबा का पड़ाव हनुमानगढ़ में था, जो एलनाबाद से करीब ४ पड़ाव की दूरी पर है। अतः अब यह तो निश्चित हो गया कि ता० ३१ का पड़ाव विनोबा का एलना-बाद में नहीं है। कल हनुमानगढ़ थे, पर आज वे कहाँ होंगे यह उस मित्र को भी नहीं मालूम था। मेरे सामने सिवा इसके कोई चारा नहीं था कि हनुमानगढ़ पहुँच कर ही मालूम करूँ कि विनोबा वहाँ से किस दिशा में बढ़े हैं और आज उनका पड़ाव कहाँ है। इस हनुमानगढ़ पहुँचने पर ही यह पता चला। इस तरह विनोबा के "अज्ञात संचार" का अच्छा अनुभव हुआ। ता० ३० दिसम्बर की शाम को चार बजे पता लगाता लगाता मैं विनोबा के पास पहुँचा।

* * *

सामने पहुँच कर चौनजर होते ही विनोबा हँसे और बोले, "अभी अप्रैल का महीना तो नहीं आया न! तुम कैसे आये?" एक क्षण के लिए मैं सकपका गया। उनके विनोद को समझा नहीं। पर तुरन्त ही बात मेरे ध्यान में आयी। "तो क्या आपने मुझे नहीं बुलाया था?"—मैंने पूछा। विनोबा ने फिर हँसते हुए कहा, "नहीं तो। मैंने तो तार में अपने संभावित कार्यक्रम की सूचना दी थी और यह लिखा था कि ता० ३१ को शायद मैं एलना-बाद पहुँच रहा हूँ—'मे रीच एलनाबाद'।" अब बात समझ में आ गयी। तारे बाबू ने तार लिखने में भी 'मे' शब्द छोड़ दिया था और मैं समझा बाबा का ... लिए अनेक धन्यवाद दिये, जिसके कारण मैं ...

संचार में पहली बार मैं उनके पास पहुँचा और साथ ही अज्ञात संचार का पूरा अनुभव भी हासिल किया।

* * *

यात्रा का असली स्वरूप तो ज्यों-का-त्यों है, पर उसका बाहरी ढाँचा बहुत कुछ बदल गया है। जब हफ्तों-महीनों पहले विनोबा का कार्यक्रम तय हो जाता था और वे किस रास्ते से किस दिन गुजरनेवाले हैं यह निश्चित होता था, तो स्वाभाविकतया ही रास्ते के और पड़ाव के गाँवों में स्वागत की तैयारियाँ चलती थीं। रास्ते में जगह जगह तोरण और स्वागत द्वार बनते थे। सड़क के दोनों ओर जगह-जगह लोगों की भीड़ जमा होती थी। अब वह द्वार और वह तोरण नजर नहीं आते, लोगों के स्वागत में कृत्रिमता कम मालूम होती है, पर भावों में कमी नजर नहीं आती। जहाँ विनोबा पहुँचते हैं, उस गाँव में उसी तरह की चहल-पहल नजर आती है। तीसरे पहर की प्रार्थना-सभाओं में भी उपस्थिति पहले की तरह ही नजर आती है।

पहले यात्रा-क्रम निश्चित होने से अक्सर पदयात्रा में काफी बड़ा समूह साथ में हो जाता था। कभी-कभी संख्या ५०-१०० तक पहुँच जाती थी, हालाँकि विनोबा बार-बार हो सके उतना उसे कम रखने का आग्रह करते थे। उस दिन हनुमानगढ़ के अगले पड़ाव, शेरेकाँ से जब हम रवाना हुए तब कुल मिला कर यात्रा में करीब १५ लोग थे। अब पदयात्रा अधिक सौम्य और अधिक स्वाभाविक मालूम होती है। विनोबा को भी चिन्तन का और स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ घुलने-मिलने का तथा काम की गहराई में जाने का पूरा मौका मिलता है। अभी अज्ञात-संचार को मुश्किल से दो महीने हुए हैं। उसका अनुभव कैसा रहा, यह पूछने पर विनोबा ने उसमें संतोष व्यक्त किया।

* * *

हमारी टोली ठीक ४॥ बजे पड़ाव से निकली। सरदी के दिन थे। सवेरा होने में अभी करीब-करीब दो घंटे थे। अमावस्या की रात्रि का प्रभात था। चारों ओर घना अन्धकार और निःस्तब्धता थी। ... चमकीले सितारों से जड़ा हुआ था। लालटेन की ... रोशनी के पीछे-पीछे हम लोग बढ़े जा रहे थे। यात्री-दल संख्या में बहुत छोटा था पर उसकी ... कोई कमी नहीं थी। कश्मीर, पंजाब, ... महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर-प्रदेश और बिहार प्रान्तों के लोग तो उस छोटी-सी टोली में थे ही, इंग्लैंड के हमारे साथी श्री डोनाल्ड ग्रुम और युगोस्लाविया के एक और विदेशी भाई भी थे। टोली में हिन्दू, ... ईसाई, सिक्ख, जैन; सब मजहब के भी लोग थे। विनोबा का विचार कितना व्यापक है और उनकी प्रेरणा ... विदेश में किस तरह लोगों को छूती है, यह टोली उसका एक नमूना थी।

* * *

शुरू में करीब एक घंटे विनोबा चुपचाप चलते, बातचीत नहीं होती। रास्ता कच्चा और ऊँचा-नीचा था, इसलिए बातचीत के अभाव से मदद ही मिलती थी। अत्यधिक शीत के कारण पाँव की उँगलियों का खून करीब-करीब जम गया था। और उँगलियों में दर्द होने लगा था। जबान भी ठीक काम नहीं कर रही थी, इसलिए भी चुप रहना अनुकूल था।

धीरे धीरे पूरब की ओर प्रकाश होने लगा। विनोबा एकाएक रास्ते में रुके और रास्ता छोड़ कर ... यात्री-दल एक ओर विनोबा के चारों ओर बैठ गया। विनोबा ने प्रार्थना शुरू की। उपनिषद् के मन्त्र, ... गुरुनानक के पंजाबी के कुछ भजन, फिर गुजराती ... मराठी के भजन। विनोबा खुद गा रहे थे। उधर ... में धीरे-धीरे प्रकाश बढ़ रहा था। सारा अनु... अविस्मरणीय था।

—सिद्धराज ढड्ढा

साहित्य-समादर :

जाजूजी : जीवन और साधना

लेखक : श्रीकृष्णदत्त भट्ट, प्रकाशक : अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी। मूल्य सवा रुपया, पृष्ठ संख्या १८८।

गांधीजी ने जब उन्हें भारत के वित्त-मन्त्री बनने का संदेश भेजा, तो उन्होंने कहा : "यह मेरा काम नहीं है।"

मध्यप्रदेश का मुख्य मंत्री बनने से इन्कार करने का कारण बताते हुए वे बोले—"राज्य चलाने में बहुत लोगों को खुश रखना होता है और इसके लिए असत्य और अन्याय से समझौता करना जरूरी होता है। इसीलिए मैंने यह जिम्मेवारी नहीं ली।"

* * *

पैंतीस वर्ष की ठोस सेवा करने वाले को एक लाख इकहत्तर रुपयों की एक भेंटी थैली अर्पित करने की तैयारियाँ शुरू हुईं। कुछ समाचार-पत्रों में इसकी विज्ञप्ति छपते ही उन्होंने संयोजक को लिख भेजा : "मैं ऐसी कोई बात पसंद नहीं करता। इसलिए कृपा कर आप यह प्रस्ताव वापस ले लें और जिन जिन अखबारों में आपने छपवाया है, उन्हें सूचित कर दें।"

"अवैतनिक कार्यकर्ताओं के मन में झूठा अहंकार होता है और उनके सहयोगियों को भी लगता है कि हमें तो वेतन लेना पड़ता है, पर यह अवैतनिक कार्यकर्ता हमसे अलग हैं। इसलिए मैंने इस अभिमान और अलगाव को दूर करने के लिए आज से १०० ... मासिक वेतन लेना निश्चित किया है।"

* * *

मेरा भाषण करवाना चाहते हो! तो ... "क्या फीस दोगे?" मारवाड़ी छात्रालय के ... बलराम ने कहा—"जो आप माँगें।"

उन्होंने एक कागज लेकर काँपते हाथों से लिखा—

(१) मैं अपनी विद्यार्थी दशा समाप्त होने तक ... कमरा स्वयं साफ करूँगा।

(२) कोट के अलावा सारे कपड़े स्वयं धोऊँगा।

(३) विदेशी वस्त्र नहीं पहनूँगा।

(४) सप्ताह में कम से कम एक बार ईश्वर की प्रार्थना करूँगा।

(५) स्पृश्यास्पृश्य के भेद को मन से निकाल दूँगा।

ऐसे ... जीवन और साधना में श्री जाजूजी की ... लड़ियाँ हों की भाँति ... मिलती है। उस ... के आलोक में अपने ... के लिए अवसर मिलता है। ... सदाशी पुरुष का यह ... हुआ है।

—...

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

राजस्थान में ग्रामदान-कानून

[राजस्थान विधान-सभा में 'राजस्थान ग्रामदान विधेयक, १९५९' प्रवर समिति की सिफारिशों के साथ १७ दिसम्बर को विचारार्थ प्रस्तुत हुआ और ता० १८ को कुछ मामूली संशोधनों के बाद स्वीकार कर लिया गया। इस विधेयक के बन जाने के बाद ग्रामदानी गाँवों में सर्वोदय की दिशा में आगे बढ़ने में जो कानूनी रुकावटें थीं वे कुछ हद तक दूर हो गयी हैं और रास्ता साफ हो गया है। इस प्रकार सर्वोदय की दिशा की ओर आगे बढ़ने में सहायता देने की दृष्टि से यह विधेयक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।
—संपादक]

लोकनागरी लिपि*

प्रेम से दील को जोड़ना सीखें

दील जोड़ने का काम कयी तरीकों से होता है। ऊँच-नीच का भेद मीटाना, मालीकों द्वारा बेजमीनों को जमीन देना, सर्वोदय-पात्र रखना, अेक-दूसरे से प्यार करना; ये सब दील जोड़ने के काम और तरीके हैं। सब मील कर अेकसाथ प्रार्थना करना जातीभेद मीटाने का काम है। सबको प्रेम से अेक बनाने के लीअे और अेक-दूसरे के सुख-दुःखों में शामील करने के लीअे मैं ये तमाम तरीके अपना रहा हूँ। आज देखा तो यह जाता है की भगवान की प्रार्थना के मौके पर सब अलग-अलग हो जाते हैं। ईसका मतलब यह होता है की भगवान तोड़ने वाला बन गया है, जो फीरकों में बाँटता है। क्या तोड़ने के लीअे भगवान की जरूरत थी? लेकीन ईस जमाने में यह हो रहा है। पुराने जमाने में गुरु नानक और कबीर ने अेक बनने का उपदेश दीया। लेकीन सीयासत ने भेद ही बढ़ाया है। जातीभेद मर रहा था, पर सीयासत ने ही ईसे पुनर्जीवीत कीया है। राममोहन राय से गांधीजी तक और दयानंद से मुन्शीराम तक सबने जाती-भेद पर प्रहार कीये। फीर भी आज जाती-भेद, फीरके, धर्म और सीयासत के फीरके बढ़ रहे हैं। गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अंदर ही अंदर झगड़े बढ़ रहे हैं। अैसे भेद और झगड़े बढ़ते रहे और अेक न बने, तो अब हम टीक नहीं सकेंगे। अगर आप 'जय जगत्' नहीं मानते और अेक नहीं होते तो ये झगड़े खत्म नहीं होंगे। ईसी कारण हम सब मील कर प्रार्थना करते हैं। हमारी प्रार्थना में स्त्री-पुरुष, हींदू, सीख, मुसलमान आदी सभी होते हैं। सबको साथ मील कर प्रार्थना करने का यह अेक मौका है और यही अेक बनने का सबसे अच्छा मौका है।

(गुरुहरसराय, २२-११-'५९) —वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

अपने पड़ोस में, अपने गाँव में, जो बेजमीन हो उसको अपनी जमीन में से कुछ अंश, हो सके तो छठा हिस्सा अर्पण करना, बाँट देना यह तरीका भूदान ने बताया।

संत विनोबा ने इसी विचार को आगे ले जाने का महान् कार्य अपनी करीब साढ़े आठ साल से चल रही पद-यात्रा द्वारा किया है। अहिंसक उपायों से भूमि समस्या सुलझाने का यह एक बड़ा कदम है। भूदान का कार्य जब से चला है, तब से जनमानस बदलने लगा है। राज्य भूमि-सुधार के जो कानून बनाती है, उस मार्ग को निष्कंटक करने का, उसके लिए वातावरण बनाने का अनोखा कार्य भूदान आंदोलन ने किया है। भूदान ने अनेक दान, त्यागवृत्ति के संस्कार समाज पर डाले हैं।

भूदान का शिखर है ग्रामदान। ग्रामदान वह है, जिसमें एक गाँव में रहने वाले एक-दूसरे को भाई, परिवार के आदमी, समझ कर व्यवहार करने लग जायें। गाँव में कोई बेजमीन न रहे, भूखा, प्यासा, नंगा न रहे। जो हो उसका प्रबंध गाँववाले सब साथ में बैठ कर कर लें, यह ग्रामदान की मंशा है।

ग्रामदान में गाँववाले अपनी जमीन पर मालकियत नहीं मानते हैं। भूमि भगवान की है, ऐसा समझ कर वे अपना मालिकाना अधिकार गाँव को याने भगवान के प्रतिनिधिस्वरूप ग्राम समाज को, सौंप देते हैं। त्याग का यह प्रथम चरण है। बाद में ग्रामजन अपनी ग्रामसभा बनाते हैं, अपने में से एक को मुखिया या अध्यक्ष बनाते हैं। अपने सब कामों के लिए एक प्रबन्ध कमेटी मुकर्रर करते हैं और अपना काम सुचारु रूप से चलाते हैं। आपस में राय का झगड़ा पैदा न हो, बहुमत अल्पमत का वाद खड़ा न हो, इसलिए अपनी कार्रवाई सर्वसम्मति से, या सर्वानुमति से करने की कोशिश करते हैं। सबकी राय न मिले वैसे सवाल मौकूफ (स्थगित) भी रखे जाते हैं, खिलाफ रायवाले लोगों को समझाया जाता है।

भूमि बाँटने से ही ग्रामसभा का काम पूरा नहीं हो जाता। कृषि सुधार, पशुपालन, उद्योग, सामाजिक सुधार, शिक्षा प्रसार, सफाई, स्वास्थ्य रक्षा, श्रमदान, कर्जमुक्ति आदि सब काम सबके कल्याण के लिए ग्रामसभा को करने होंगे, तब ही गाँव में सुख, शान्ति और सन्तोष के द्वारा ग्राम-स्वराज्य की स्थापना हो सकेगी। गाँव अपने आपको स्वावलम्बी बनायेगा, लेकिन वह अपने आपको दुनिया से अलग नहीं समझेगा। पड़ोसी गाँवों के, प्रांत के, देश के और दुनिया के भाग से वह जुड़ा हुआ है, ऐसी विश्व कुटुम्ब की भावना से यह काम करेगा। ऐसी ग्रामसभा को दीवानी, फौजदारी मामले निपटने के अधिकार मिलने हैं और राज्य सरकार ऐसी ग्रामसभा को पंचायत के अधिकार भी दे सकती है।

गाँव कितना बड़ा हो, तब ग्रामदान हो सकता है, यह सवाल भी साथ ही साथ समझ लेना चाहिए। जिन्हें हम आज गाँव कहते हैं बड़ा या छोटा, या जो गाँव का हिस्सा हो, मौहल्ला जिसे हम पट्टी, थोक, पट्टी, ढाणी, पुरा, फला, वास या ऐसे कुछ नाम से जानते हैं वे ग्रामदानी गाँव बन सकते हैं, सरकार की ओर से ग्रामदानी घोषित किये जा सकते हैं। मुख्य शर्तें ये हैं कि जो गाँव ग्रामदानी बनना चाहता हो : (१) वहाँ की जमीन का ५१ फी सदी मालिकाना हिस्सा गाँव को समर्पण होना चाहिए, (२) गाँव में रहने वाले भूमि के मालिकों में से ८० फीसदी मालिक अपनी भूमि की मालकियत गाँव को समर्पित करते हों, (३) गाँव में रहने वाले बालिग (२१ वर्ष से ऊपर के) लोगों में से ७५ फी सदी लोगों ने ग्रामदान-समुदाय में रहने की इच्छा लिखित रूप में व्यक्त कर दी हो।

ग्रामदान-कानून ऐसे गाँवों को ग्रामदानी मानेगा और वे अपना प्रबन्ध कानून के दायरे में रह कर चलायेंगे। गाँव में जिन्होंने अपनी भूमि का अधिकार ग्रामसभा को नहीं दिया है, उनकी भूमि पर ग्रामसभा का कोई दखल नहीं होगा। वे स्वतन्त्र होंगे, उन पर एक ही पाबन्दी होगी कि राज्य निर्धारित अपना लगान ग्रामसभा में जमा करवायेंगे। ग्रामदान में शामिल नहीं होने वाले भी ग्रामसभा के सदस्य तो रहेंगे ही और गाँव की उन्नति, व्यवस्था आदि सब कामों में समान हक से हिस्सा ले सकेंगे।

ग्रामसभा जो लगान वसूली हरएक काश्तकार से करेगी उसकी दरें वही होंगी, जो राज्य सरकार ने तय की है। उससे अधिक दर से लगान की रकम किसी से भी वसूल करने का अधिकार ग्रामसभा को नहीं है, यह बात भी कानून में स्पष्ट कर दी गयी है। ग्रामसभा किसी तरह की नयी जागीरदारी नहीं है, और न मध्यवर्ती व्यवस्थापिका ही। वह तो ग्राम-सेवा के लिए अपना कारोबार करेगी। यदि किसी कारण से ग्राम सभा के अध्यक्ष या प्रबन्ध समिति बेजा काम करे तो ग्राम सभा उन्हें हटा सकेगा, परन्तु कोई खास परिस्थिति पैदा हो जाय तो सरकार भूदान-बोर्ड की सलाह से, या उपनियमों के अनुसार ग्रामसभा की सलाह से भी हटा सकेगी। इस तरह की गुंजाइश कानून में है।

ग्रामदान-कानून क्यों, यह सवाल भी पूछा जा सकता है। राज्य के दफ्तर जब तक चलते रहेंगे, तब तक कानून जरूरी है। कानून से ग्रामदानी गाँवों का रास्ता साफ होता है, यह कानून किसी गाँव को मजबूर नहीं करता है कि तुम्हें ग्रामदान करना ही होगा, लेकिन यह सर्वोदय की, ग्राम-स्वराज्य की भावना को आगे बढ़ाने में मदद पहुँचाता है, क्योंकि दिल से जो काम जनता करती है वैसा काम कानून से नहीं होता है। भूमि सीमा निर्धारण, एकीकरण, चकबन्दी वगैरह पेचीदे काम ग्रामदान से सरल हो जाते हैं। ग्रामदान सहकारिता का स्रोत है। सहयोगी समाज, नये समाज की सीढ़ी ग्रामदान है। विधान सभा ने अपनी इस बैठक में सिद्धांत और व्यवहार को ध्यान में रख कर ग्रामदान विधेयक को पारित कर राजस्थान की ग्रामदान प्रवृत्ति को बल पहुँचाने का सुन्दर कार्य किया है। यह बधाई की पात्र है। बहस के दौरान में कुछ विधान सभासदों के भाषणों में, ग्रामदान के बारे में भ्रम, शंका दिखाई दी उसको सर्वोदय का, ग्रामदान का सही चित्र खींच कर कई विधान-सभासदों ने तथा राजस्व मंत्रीजी ने साफ किया, भ्रम का [illegible] किया।

—गोकुलभाई भट्ट

श्री जयप्रकाशजी के नये प्रबंध पर वाराणसी में विचार-विनिमय संपन्न

भारतीय राज्य-व्यवस्था में लोकतंत्र के नये आधार का अन्वेषण

वाराणसी में आयोजित सर्व सेवा संघ की गोष्ठियों में अन्य विविध विषयों के अतिरिक्त श्री जयप्रकाशजी के नये प्रबंध पर विस्तार से चर्चा हुई। हम यहाँ उस प्रबंध के कुछ स्थल पाठकों की जानकारी के लिए दे रहे हैं। श्री जयप्रकाशजी ने इस प्रबंध के प्रथम अध्याय में लोकतंत्र को आध्यात्मिक बुनियाद पर खड़ा करने की सिफारिश करते हुए लिखा है :

"आज का युग मुख्य रूप से भौतिकवादी है। समाज-विशेष चाहे पूँजीवादी हो, समाजवादी हो अथवा कम्युनिस्ट हो, यह निर्विवाद है कि जीवन के सभी तत्त्वों पर भौतिकवाद छा गया है। मनुष्य महत्त्वा पदार्थ और भावना का सम्मिश्रित रूप है। इसीलिए उसकी पदार्थगत अर्थात् भौतिक आवश्यकताएँ भी होती हैं, जिनकी पूर्ति आवश्यक है। इस दृष्टि से प्रत्येक मनुष्य का भौतिकवादी होना अनिवार्य है। परन्तु यदि उसकी भौतिक आवश्यकताएँ सीमा का बन्धन तोड़ दें तथा उसकी सारी क्रियाशीलता अधिकाधिक भौतिकवादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही हो, तो समाज में वैषम्य की स्थिति तो आ ही जाती है, स्वयं मानव जीवन में भौतिकवाद के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता। जिन महात्मा ईसा ने आध्यात्मिक जीवन यापन के सम्बन्ध में इतने उदात्त उपदेश दिये थे, उन्हींके धर्म में दीक्षित पश्चिमी देशों की आज ठीक यही अवस्था है।

लोग कहेंगे कि लोकतंत्र की समीक्षा के प्रसंग में इन अनर्गल बातों की चर्चा ही क्यों? लेकिन मैं इसे जरूरी समझता हूँ, क्योंकि मेरा यह दृढ़ मत है कि वर्तमान उद्योगवाद—फिर वह भले ही पूँजीवादी, समाजवादी या कम्युनिस्ट हो—ने और भी जिस भौतिकवादी प्रवृत्ति की सृष्टि कर रखी है, उसके साथ लोकतंत्र का मेल नहीं खाता। दोनों साथ नहीं चल सकते। मेरी मान्यता है कि यदि मनुष्य वास्तविक रूप में स्वतंत्रता और स्वशासन की स्थिति का उपभोग करना चाहता है, तो उसे स्वेच्छा से अपनी जरूरतें घटानी होंगी। अन्यथा और भी हाय हाय का परिणाम होगा : पारस्परिक संघर्ष, दमन, उत्पीड़न और युद्ध। साथ ही इससे उत्पादन-वृद्धि का ऐसा अव्यवस्थित क्रम चल पड़ेगा, जिससे लोकतंत्र लुंज पुंज होकर नौकरशाही का चरण चुम्बन करने लगेगा।"

इस निबंध में श्री जयप्रकाशजी ने वर्तमान अर्थशास्त्रीय पद्धतियों की भी आलोचना की है और कहा है कि—

"अब यहाँ हमें फिर अर्थशास्त्रियों और अर्थशास्त्र के उनके सिद्धान्तों से लोहा लेना पड़ेगा, क्योंकि यह सवाल तुरत उठाया जा सकता है कि आर्थिक समुत्थान के नियमों की अवहेलना नहीं की जा सकती। आर्थिक विकास का क्रम तो अपने प्रकृत मार्ग का अनुसरण करेगा ही और विज्ञान एवं प्रविधि की उपेक्षा नहीं की जा सकती। लेकिन एक बात मैं स्पष्ट कर दूँ कि आज के अर्थशास्त्रीय सिद्धान्त एक विशेष प्रकार की समाज-व्यवस्था को ध्यान में रख कर तैयार किये गये हैं, जो उस जीवन पद्धति द्वारा शासित होती है, जिस पर हम अभी विचार कर चुके हैं। वह पद्धति है, असीम भौतिक समृद्धि की। लेकिन अर्थशास्त्र के और भी तो सिद्धान्त हो सकते हैं, जो ऐसी समाज-व्यवस्था के लिए हों, जिसका नियमन भिन्न प्रकार के सामाजिक विधान द्वारा किया जाय।"

वे आगे डाक्टर ई० एफ० शूमाखेर के कथन का हवाला देते हुए कहते हैं—

"आज हम जिसे अर्थशास्त्र का सिद्धान्त (विज्ञान) कहते हैं, उसका आधार जीवन का केवल एक पहलू है, एक ही और दूसरा नहीं और वह है भौतिकवादी पहलू। विज्ञान अथवा सिद्धान्त के रूप में अर्थशास्त्र का विकास केवल पश्चिम में हुआ और वह भी तब, जब कि पाश्चात्य भौतिकवाद का संसार पर प्राधान्य हो चुका था। भौतिकवाद के विरोधी विचारक इतने दबे-से रहे कि वे अपनी दृष्टि से इस पर विचार न कर सकें। भौतिकवाद का तत्त्व भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयास नहीं, वरन् अविवेकपूर्ण ढंग से भौतिक पदार्थों का असीम उत्पादन है। चाहे कम्युनिस्ट देशों में हो या अन्यत्र, जो अर्थशास्त्र आज दुनिया भर में पढ़ाया जाता है, वह किसी प्रकार की सीमा का बन्धन नहीं मानता। इसलिए यह भौतिकवादी अर्थशास्त्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इसमें जिस जीवन को आधार मान कर चला गया है, वह विशुद्ध रूप से भौतिकवादी है। उसमें जीवन की और किसी पद्धति का समावेश नहीं किया जा सकता। पता नहीं, कब आज के अर्थशास्त्र के शिक्षक अपने विद्यार्थियों को यह सही बात बतायेंगे कि आज जिस अर्थशास्त्र की शिक्षा दी जा रही है, उसका आधार निर्भ्रान्त रूप से जड़वाद (भौतिकवाद) के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, जो अन्य बातों पर विचार करने का अवसर भी नहीं देता। पता नहीं, कब वे यह स्वीकार करेंगे कि अर्थशास्त्रीय विवेचन के और भी ढंग संभव एवं आवश्यक हैं तथा मूल रूप में वे विद्यमान भी हैं। मैं यहाँ एक ही विचारक का नाम उपस्थित कर रहा हूँ। वे हैं इस युग के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति महात्मा गांधी। क्या आज के अर्थशास्त्रवेत्ता और अध्यापक गांधीजी को अर्थशास्त्री के रूप में जानते हैं? लेकिन गांधीजी ने आर्थिक प्रश्नों पर बहुत कुछ कहा है। उन्होंने जिस आर्थिक सिद्धान्त का विवेचन किया है, वह हिन्दू-समाज से (और संभवतः बौद्ध-समाज से भी) मेल खाता है। ऐसी हालत में, जब कि भौतिकवाद के विरोधी आगे बढ़ जाने में असमर्थ हैं, मैं अर्थशास्त्र के विद्वानों, अध्येताओं और साथ ही राजनेताओं से अनुरोध करूँगा कि वे उसी ध्यान और तन्मयता से महात्माजी के आर्थिक विवेचन का अध्ययन करें, जिस लगन से वे भौतिकवादी अर्थव्यवस्था का अध्ययन करते हैं।"

इस प्रकार इस प्रथम अध्याय में लोकतंत्र की व्याख्याओं का विस्तार से वर्णन करने के साथ-साथ उपरोक्त बुनियादी सवाल भी उठाये गये हैं।

श्री जयप्रकाशजी के इस प्रबंध का दूसरा अध्याय है—"अतीत से प्रेरणा।" इस अध्याय में प्राचीन भारतीय गणराज्य का विस्तार से विवरण पेश करते हुए वे लिखते हैं—

"यह सर्वविदित है कि भारत की प्राचीन अथवा मध्यकालीन राजनीतिक आर्थिक व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में हमें बहुत ही कम साहित्य उपलब्ध है। फिर भी विद्वानों ने परिश्रम करके जो कुछ सामग्री प्रस्तुत की है, उससे भारतीय राज्य व्यवस्था पर काफी प्रकाश पड़ता है।

मेरा ख्याल है कि इस राज्य-पद्धति का और इसके प्रकाश में सम्पूर्ण भारतीय जीवन एवं संस्कृति का अध्ययन वर्तमान राजनीतिक व्यवस्थाओं के निर्धारण के लिए उपयोगी ही नहीं, आवश्यक भी है। इसमें सन्देह नहीं कि तब की अपेक्षा आज राजनीतिक विचारधारा काफी विकसित हुई है और संसदीय लोकतंत्र जैसी प्रणालियाँ व्यवहार में आने लगी हैं, जिनसे हमें बहुत कुछ सीखना है। फिर भी यह निश्चित है कि कोई भी विचारधारा या व्यवस्था तब तक सफल नहीं हो सकती या राज्य पद्धति के स्वस्थ विकास में सहायक नहीं हो सकती, जब तक कि उसकी भित्ति देशविशेष की परिस्थितियों, परम्पराओं और मान्यताओं पर खड़ी न हो।

हजारों वर्ष की लम्बी अवधि में भारतीय समाज को नाना प्रकार की परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़ा है। लेकिन इनके बावजूद हमारी मूल भावना सदा ही एक सी रही है और भारतीय जन जीवन की अखंड परम्परा अबाध गति से आगे बढ़ती रही है। भले ही कभी कभी देखने में—विशेषकर पराभव और पतन के काल में—सारी व्यवस्थाएँ उद्ध्वस्त हो गयी दिखायी पड़ती हों, परन्तु उनकी अन्तर्वृत्ति एवं भावना सदैव ही अकुंठित रही है।

आज एक बार पुनः भारत ऐसी ही पतनावस्था से उबर रहा है। इसलिए भावी भारत के निर्माताओं का यह कर्तव्य है कि वे उन स्रोतों का पता लगायें, जो शाश्वत भारतीय जन जीवन को गतिशील बनाये रखने में समर्थ हैं। आज जिस पद्धति का हम विधान करने चले हैं, उसकी संगति निश्चय ही भारत की शाश्वत भावना और अखंड परम्परा से बैठनी चाहिए।

कदाचित् कुछ लोग यहाँ कहें कि लोकतंत्र के मार्ग पर अग्रसर होने के प्रसंग में अतीत से प्रेरणा प्राप्त करने की बात बेतुकी-सी लगती है। किन्तु यह जान लेना चाहिए कि लोकतंत्र का जनक भारत ही रहा है और यहाँ के कई गणराज्य सौ हजारों वर्ष तक चलते रहे। बाद में राजतंत्र का उदय होने और भारतीय राज्य-व्यवस्था में उसका प्राधान्य हो जाने पर भी प्राचीन काल में राजा निर्वाचित होते थे और उन्हें क्षत्रियों के अभिजात तंत्र के अधीन रहना पड़ता था। यहाँ तक कि वंश-परम्परागत राजतंत्र का प्राधान्य हो जाने और समितियों (शासन) के समाप्त हो जाने पर भी ग्राम एवं नगर संघ, व्यवसायिक शिल्पिक-संघ, वर्ण-व्यवस्था, धर्माचरण विधान केन्द्रीय शासन के प्रभाव से सर्वथा मुक्त थे। केन्द्रीय शासन इनके कार्यों में कदाचित् ही कभी हस्तक्षेप करता हो। और ये सब सब मिल कर भारतीय राज्य-व्यवस्था के लिए सुदृढ़ लोकतंत्रात्मक आधार प्रस्तुत करते थे। ग्राम-समाज के ये लोकतांत्रिक संगठन इतने सुदृढ़ और सुव्यवस्थित थे कि ब्रिटिश शासन-काल तक चलते रहे। इसलिए आज लोकतंत्र का विधान करने के प्रसंग में प्राचीन भारत की राज्यपद्धति पर विचार करने की बात निरर्थक तो है ही नहीं, वह—विशेषकर उसके अन्तर्वर्ती सिद्धान्त—हमारे लिए अत्यधिक सहायक ही सिद्ध होंगी।"

तीसरे अध्याय में भारत के ग्राम-समुदायों का वर्णन है। प्राचीन इतिहासज्ञों के अनुसंधान का हवाला देते हुए इस अध्याय में अलग अलग प्रान्तों में प्रचलित ग्राम-व्यवस्था की झाँकी प्रस्तुत की गयी है और दक्षिण भारत के चिंगलपेट जिले में स्थित उत्तर मुरुर गाँव की प्राचीन व्यवस्था का इतिहाससम्मत उल्लेख किया गया है और वर्तमान ग्रामव्यवस्था के निर्माण में उस व्यवस्था से आवश्यक चीजों का अनुसरण करने की सिफारिश की गयी है।

चौथे अध्याय का नाम है—"मानव की सामाजिक प्रकृति और समुदाय"। इस अध्याय में श्री जयप्रकाशजी एक जगह लिखते हैं—

"सही ढंग की राज्य-व्यवस्था का विधान सामाजिक पुनस्संगठन की समस्या से सम्बद्ध है। यद्यपि यह सच है की पूर्वकाल में लोभ अथवा जीवन के अन्य मिथ्या मूल्यों ने मानव की सामाजिक प्रकृति की सक्रियता को ध्वस्त और विनष्ट किया, तथापि अब जब कि लोग सचेत होने लगे हैं, तो यह आवश्यक है कि मानव प्रकृति के अनुरूप आर्थिक, राजनीतिक एवं अन्य प्रकार की विधियों का इस ढंग से सर्जन किया जाय कि जीवन पुनः व्यवस्थित हो सके। आधुनिक उद्योगवाद और तज्जन्य अर्थवाद की भावना ने प्रत्येक मानवीय गुण को आँकने के लिए हानि-लाभ एवं तथाकथित आर्थिक विकास के जिस भाव की सृष्टि की है, उसके ही चलते मानव-समाज विघटित हुआ है तथा मनुष्य को अपने ही लोगों के बीच अपरिचित और विदेशी बना दिया है। यही नहीं कि सामुदायिक जीवन विघटित हो गया है, वरन् पश्चिम में तो परिवार भी छिन्न भिन्न होता जा रहा है। यहाँ तक कि जननी, जो परिवार की आत्मा थी, अपना मातृत्व और स्त्रीत्व खोती जा रही है। जैसा कि मदेरियागा ने कहा है: घर की जो विशेषता मिल जुल कर काम करने की, आमोद प्रमोद की, रुचि की, अनुभव प्राप्त करने की और 'पारिवारिक भावना' से युक्त होकर संगी-साथी बनाने की थी, वह समाप्त होती जा रही है। इसी प्रकार नारी अपना स्त्रीत्व भी तो खो रही है। आज वह सारी लज्जाशीलता और सुकुमारता त्याग कर अधरों के बीच सिगरेट दबाये, अपनी अस्त व्यस्त केशराशि पर पुरुषों के टोप धारण किये बस-कंडक्टर या स्टेशन का कुली बन विचरण कर रही है। नारी के रूप में वह सफल जीवन व्यतीत कर सकती थी, किन्तु नर का रूप धारण करते समय उसने जिस स्वतन्त्रता की कल्पना की थी, वह तो उसके हाथ लगी नहीं, मिली उसे केवल निराशा और नर के संघर्षमय जीवन की भ्रान्ति।

वर्तमान सभ्यता की सबसे बड़ी समस्या है, सामाजिक अलगड़ता। आज का मनुष्य एकाकी है, उसका नियन्त्रण दूसरों के हाथों में है। वह एक प्रकार का 'सस्ता मानव' है—ऐसा मानव है, जो अपनी बुद्धि, विवेक और नियन्त्रण के परे दूसरी शक्तियों द्वारा चलाया जाता है। यही स्थिति सर्वत्र है, चाहे वह लोकतन्त्र हो या अधिनायक तन्त्र। अतः आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य को मनुष्य के सम्पर्क में रखा जाय, जिसमें सभी मनुष्य सार्थक, सहानुभूतिपूर्ण और सम्मिलित जीवन व्यतीत कर सकें। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि हमारे सामने समस्या मानव समाज के पुनर्निर्माण की है, जिसमें वह सामुदायिक जीवन बिता सके।

भारत के लिए यह संयोग की बात है कि यहाँ समाज के विखण्डीकरण की प्रक्रिया बहुत आगे नहीं बढ़ पायी है और आज भी देश की ८० प्रतिशत जनता के आश्रयदाता हमारे ६ लाख गाँवों में कम-से-कम मूर्त रूप से यह स्थिति विद्यमान है कि हम सामुदायिक जीवन का सफलतया निर्माण कर सकें। पिछले अध्याय में प्राचीन भारत के सामुदायिक जीवन और ग्राम-समुदायों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। हजारों वर्षों के सामुदायिक जीवन और प्रशासन का यह अनुपम उदाहरण है, जिससे आज हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

इस प्रकार इस अध्याय में अलग-अलग सात नामों में सात युक्तियों से यह सिद्ध किया गया है कि भारत की समाज-व्यवस्था ग्रामप्रधान होगी और आज के बढ़ते हुए नगरीकरण को रोकना होगा।

पाँचवाँ अध्याय हम "भूदान यज्ञ" के पिछले अंक में प्रकाशित कर ही चुके हैं। छठे और सातवें अध्याय की कुछ जानकारी अगले अंक में देने का प्रयत्न किया जायेगा।

"ईश्वर ने शायद हमारी योग्यता का खयाल नहीं किया है"

अभी हाल ही में श्री रविशंकर महाराज को भेजे हुए पत्र में विनोबा लिखते हैं:

"चीन वगैरह के विषय में मैं बहुत चिंतन कर रहा हूँ। 'वगैरह' में कश्मीर, गोवा भी शामिल है। अभी अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों में सत्याग्रह शक्ति किस तरह काम करेगी, उसका शास्त्र बना नहीं है। सेना रखने वाली कोई भी सरकार अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सत्याग्रहियों को सत्याग्रह करने दे, यह नहीं हो सकता। उसमें उसे भारी खतरा मालूम होगा। इसके उपरान्त राष्ट्र के अन्दर भी जहाँ उपद्रव चलते हों और उन्हें रोकने में हम सामर्थ्य न बता सकते हों, वहाँ आगे के कदम की कल्पना या माँग नहीं की जा सकती। अलावा इसके अणु शस्त्रों के युग में सत्याग्रह कैसा हो, यह तो एक नया ही प्रकरण कहा जायगा। इन सबके विषय में बहुत गहरा चिंतन मेरा चल रहा है। एक प्रकार से यह भी कहा जा सकता है कि अभी का अज्ञातवास—नहीं, अज्ञातचार—उस प्रेरणा के कारण ही है।

अखिल भारत शांति सेना मंडल की स्थापना तो मैंने कर दी है, यह तो आपने देखा होगा। इस समय हमारे ऊपर ईश्वर ने बहुत जवाबदारी डाली है। हमारी योग्यता कितनी है, उसका खयाल उसने कुछ किया है, ऐसा नहीं लगता। उसकी मर्जी की बात है।"

जब हिमालय बोल उठा!

मैं उन महान आत्माओं में से नहीं हूँ, जो जाग्रति-स्वप्न-सुषुप्ति से परे किसी अवस्था में रहते हैं। इसलिए कभी मैं जाग्रति के छाया-प्रकाशमय दृश्य देखा करता हूँ, कभी स्वप्नों की दुनिया में संगतिशून्य घटना-चक्र का अनुभव करता हूँ, तो कभी सुषुप्ति की शांति में लीन हो जाता हूँ। लेकिन वह एक ऐसी अनोखी अनुभूति थी, जिसे न मैं जाग्रति कह सकता हूँ, न स्वप्न, न सुषुप्ति, न इन तीनों का अभाव, न तीनों का सम्मिश्रण। लेकिन थी वह ऐसी अनुभूति, जो दूसरी किसी भी अनुभूति से अधिक सत्य थी, जब हिमालय बोल उठा।

शांति ने जब चेतन रूप लेना चाहा तो वह शंकर बन गयी। जब उसने जड़ रूप लेना चाहा तो वह हिमालय बन गयी और जब अरूप बनना चाहा तब आसमान बन गयी। जब शांति का वह साकार रूप, हिमालय, बोल उठा तो मुझे लगा कि क्या यह प्रलय की पदध्वनि है या सर्वोदय का संदेश।

हिमालय ने मुझसे पूछा 'कस्त्वम्—तुम कौन हो?' दिल दिमाग से सलाह करने से पहले ही अंतर ने जवाब दिया—'शांति सैनिक'। हिमालय कुछ सोचने लगा—"अश्रुतपूर्व शब्द है यह। साफ बताओ कि क्या तुम उन ऋषियों में से हो, जो मेरी गोद में शांति की उपासना किया करते हैं या उन वीरों में से हो, जो किसी चीज की रक्षा के लिए मरने-मारने का संकल्प किया करते हैं।" मैंने दिल-दिमाग की सहायता लेकर हिम्मत से कहा—"जी नहीं। मैं शांतिमय क्रान्तिकारी हूँ। ऋषि-परंपरा और वीर परंपरा का समन्वय करने वाले महात्मा का सेवक हूँ।" हिमालय कुछ-कुछ समझ रहा था। फिर से बोला—"समन्वय को मैं खूब जानता हूँ। मेरी गोद में खेलने वाले बालक उसीके रंग में रंगे जाते हैं। लेकिन मेरे सामने जो समस्या उपस्थित है, उसका जवाब क्या तुम दे सकोगे?"

"हिमालय के सामने समस्या पेश हो और हम उसका जवाब दें! जो हिमालय स्वयं सब समस्याओं के समाधान का सदन है।"

"तुमने जिन शब्दों का उच्चारण किया। क्या उसके साथ आचरण भी है?"

मैंने डरते डरते कहा—"कुछ कोशिश है।"

"तो क्या तुम मेरी रक्षा करोगे?"

मैं चौंक गया! हिमालय की रक्षा! और हम करें!

"मैं पृथिवी का मानदंड कहलाता हूँ, मानव की मान-वता का भी मानदंड हूँ। उसने जो कुछ उदात्त, उत्तुंग, उन्नत का निर्माण किया, वह सारा मुझमें समाया है। हिमालय से ऊँचा पहाड़ नहीं और हिमालय के अंचल में पैदा हुई उपनिषद् से ऊँचा दर्शन नहीं।—वही हिमालय तुमसे पूछ रहा है, क्या तुम मेरी रक्षा करोगे?"

मैंने कहा—"तुम भारत से अलग होना नहीं चाहते हो तो भारत की सेना तुम्हारी अवश्य रक्षा करेगी।"

वह हँस पड़ा—"क्या जिसने गौतम और गांधी को पैदा किया, उस हिमालय की रक्षा कभी सेना कर सकती है? हिमालय की रक्षा के लिए खून बहाया जाये तो फिर वह हिमालय नहीं रहेगा, पत्थर का ढेर बनेगा! समस्त मानवों में ही नहीं, बल्कि चराचर विश्व में आत्म-तत्त्व का साक्षात्कार जिसकी सन्निधि में होता है, उसकी रक्षा के लिए एक भाई दूसरे भाई का खून बहाये!"

मैंने सहज कह दिया—"तो फिर तुम ही अपना बँटवारा कर लो, आधा भारत में, आधा उसके पड़ोसी के हाथ में।"

हिमालय मुस्कराते हुए बोला—"मैं तो अपनी ही जगह पर रहने वाला हूँ। मैं न भारत में हूँ, न उसके पड़ोसी चीन में। लेकिन तुमने अभी तक जवाब नहीं दिया। क्या तुम मेरी रक्षा करोगे? यदि तुम मेरी यानी जिस दर्शन को लेकर मैं खड़ा हूँ, उसकी रक्षा नहीं कर पाओगे, तो तुम न सैनिक रहोगे, न शांतिवादी।

"हम चाहते तो हैं, लेकिन आज हममें यह ताकत नहीं कि हम तुम्हारी रक्षा करें।"

"ऐसा न कहो भैया। हिरन जानता नहीं कि उसके पास कस्तूरी है।"

"हम तुम्हारी रक्षा के लिए मर मिटने के लिए तैयार हैं, लेकिन क्या उससे रक्षा होगी?"

"मर मिटने से नहीं होगी, जीने से होगी। मरने का डर छोड़ कर, मारने की अभिलाषा छोड़ कर, जीने से होगी। मेरी रक्षा के लिए जीना सीखो।"

"कौन सिखायेगा?"

"अचल हिमालय का दूसरा रूप, जो सतत संचारी है, उससे सबक लो।"

"यह सब आपके इस पार संभव है। लेकिन उस पार?"

"उसकी चिंता तुम मत करो। इस पार शांति की रक्षणकारिणी शक्ति प्रकट करो, तो उस पार भी उसका असर होगा। इस वक्त तुम मेरी रक्षा करोगे तो हिमालय मानव जाति का स्नेह-सूत्र बनेगा और यदि इस वक्त तुम हिम्मत हारोगे तो वही हिमालय मानव के लिए यमपाश बनेगा।"

• • •

क्या यह सारा स्वप्न था? नहीं, शायद यही जाग्रति थी और अन्य सब स्वप्न या सुषुप्ति।

—अनामी

एक पत्र से

भारत-चीन : एक विश्लेपण

—प्रबोध चोकसी

सर्व सेवा संघ का चीनी आक्रमण विषयक वक्तव्य देखा। संघ मानता है कि किसी भी हालत में शस्त्रों का प्रयोग अनिच्छनीय है और संरक्षण का सर्वोत्तम मार्ग अहिंसात्मक साधनों का प्रयोग ही है। महात्मा गांधी का यही विश्वास एवं बोध था। संघ ने विनोबा के नेतृत्व में शान्ति-सेना की नींव डालने की कोशिश की, परन्तु यह कार्य आज एकदम प्रारम्भिक अवस्था में है और लोगों को अहिंसक रक्षण के लिए नैतिक एवं संगठनात्मक दृष्टि से तैयार करने के लिए अपर्याप्त है। इस परिस्थिति में भारत सरकार उसकी सीमाओं के संरक्षणार्थ जो भी परंपरागत साधनों का प्रयोग करती है तो संघ के लिए उसका समर्थन किये बिना चारा नहीं है।

इस पर कई लोगों का आक्षेप हुआ है। उन्हें लगता है कि 'जय जगत्' के संत विनोबा के उद्घोष के बाद अब राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय सार्वभौमत्व के दिन लद गये हैं। विनोबा प्रत्येक को विश्वमानव बनाने का आवाहन दे रहे हैं। अणुशस्त्रों के बाद कोई समस्या राष्ट्रीय नहीं रहती। फिर भी संघ के वक्तव्य में विश्वप्रेम का प्रत्यय नजर नहीं आता। इससे भी अधिक, सरकार के परम्परागत कदमों का समर्थन किये बिना संघ और कोई चारा नहीं देखता। इससे कई लोगों को अत्यन्त क्लेश और पीड़ा का अनुभव हुआ है। अहिंसावाले अपनी कोशिशें दुगुनी कर दें, ऐसी आशा का उच्चारण मात्र करके संघ समाधान मान लेता है, वह उन्हें मंजूर नहीं है।

मेरी राय में सर्व सेवा संघ के प्रवक्ता और उनके आलोचक, दोनों के तरफ अपने-अपने सत्यांश हैं। परन्तु उन दोनों सत्यांशों का योग हो, फिर भी वर्तमान संयोगों में वे अहिंसा को बढ़ाने में अपर्याप्त सिद्ध हो सकते हैं।

सन्तुलित, समन्वित विचार के बजाय सर्वोदय में भी आज तक हम लोग विचार प्रतिविचार ही चला रहे हैं। 'जय जगत्' की बात कर ली, इससे मानों राष्ट्रप्रेम अभिशाप ही बन गया! अभी कल तक गांधीजी के नेतृत्व में हम लोग राष्ट्रीय लड़ाई करते रहे और अंग्रेजों के २०० वर्ष के आक्रमण को हटाया। तब राष्ट्रप्रेम और विश्वप्रेम के बीच कुछ भी विरोध नजर नहीं आया। लेकिन आज के आध्यात्मिक ढंग से हम बात करें, तो 'दूरे और अन्तिके' दोनों सत्य हैं। ब्रह्म एवं पिण्ड, विश्व एवं व्यक्ति, दोनों सत्य हैं। और जब तक विश्वसत्ता साकार नहीं हुई, तब तक राष्ट्र ही उस दूरे का प्रतिनिधि रूप मूर्त सत्य रहेगा।

हाँ, यह सही है कि अणुयुग से राष्ट्रीयता की वास्तविकता घिस रही है, लेकिन घिस चुकी नहीं है। विश्वप्रेम इष्ट आदर्श है और राष्ट्रप्रेम अनिवार्य परिस्थिति है। विश्वप्रेम को राष्ट्रीय पारतंत्र्य का नया बहाना नहीं बनने दिया जा सकता, जैसे राष्ट्रीय ऐक्य को ग्राम-स्वराज्य का गला घोटने वाला बहाना नहीं बनने दे सकते या जैसे ग्रामदान या सहकारी समिति को व्यक्ति-स्वातंत्र्य का मृत्यु-घंट नहीं बनने देते। अतः "आसाम में चीनी लोग आयेंगे तो हम कहेंगे कि आइये, आप भारत पर शासन करें, स्वागत क्यों न हैं?"—यों कहना मिथ्या सिद्धान्तवाद होगा। कारण, चीनी लोग सहज भारत पर शासन करने के लिए नहीं, बल्कि उनके ढंग के 'कम्यून' की स्थापना करके शासन करने के लिए आयेंगे। आपको अपना ढंग, अपनी रचना स्वयं चुनने का स्वातंत्र्य उसमें नहीं होगा और बिना स्वातंत्र्य धर्म होता ही नहीं। राष्ट्र-प्रेम में इतना तथ्य है। एक विश्व का संविधान सर्वस्वीकृत बने और उसमें भी ग्रामसमूह पूर्ण स्वतंत्र इकाई मानी जाय, इसके लिए हमें अवश्य पुरुषार्थ करना चाहिए। परंतु एक विश्व बने उसके पूर्व ही वह उपस्थित है, ऐसा समझ कर व्यवहार करना, यह तो मूर्ख पांडित्य की कृति हो जायगी। केवल मूर्ख पण्डित ही प्लेटफार्म आने से पहले ही गतिमान ट्रेन से नीचे उतरने का आदर्श क्रियान्वित कर सकता है। 'एक जगत्' के संकल्प को सर्वस्वीकृत बनाने की दीर्घ दृष्टि से संत से हमें जिन मंत्रों का वरदान मिला है, उनकी हमारे ही हाथों कभी विचित्र विकृति हो जायगी, ऐसा डर लग रहा है।

हिटलर और जापान को सत्याग्रह से रोकने के लिए गांधी अफ्रिका या मलाया दौड़ा नहीं था। ऐसा करता तब तो अंग्रेज उस पर लट्टू हो जाते। अमेरिका या इंग्लैंड में अहिंसा सिखाने गांधी नहीं दौड़ा—हीरोशिमा के बाद भी! जो अहिंसा स्वदेश में असिद्ध है, विदेश के मोर्चों पर उसका प्रयोग करने दौड़ना यह नम्रतारहित शेखी हो जायगी, विश्व की रणभूमि पर अपनी शान दिखाने की मोहिनी मानी जायेगी।

सर्व सेवा संघ के वक्तव्य के शब्द अचूक तो नहीं मालूम देते। जवाहरलाल सेना से देश की रक्षा करने पर आमादा हो जाते हैं, तो उसमें उनकी वीरता ही है। परन्तु सैनिक-कार्रवाई का समर्थन किये बिना अपना चारा नहीं है, ऐसा कहने से अहिंसा के संकल्प को ठेस लगती है। गांधीजी कहते थे उस प्रकार युद्ध-तत्पर लोगों को परावृत्त करने की हद तक हमारा युद्ध विरोध नहीं होगा। 'हम तो विकल्प पेश करेंगे। अनिवार्य धर्म-स्वरूप हिंसा के मार्ग में रोड़ा न बनना यह कोई अहिंसा का हार्द नहीं है। धर्म रूप हिंसा को निवार्य बनाने के लिए अहिंसा को तो नयी रचना करनी होगी। केवल हिंसा का विरोध यही अहिंसा का विकास नहीं है। अहिंसा में खंडन गौण है, मंडन मुख्य धर्म और अधर्म, राम और रावण ये दो आमने-सामने एकदम पृथक् और स्पष्ट हों तब अहिंसक विरोध चल सकता है। लेकिन जिस परिस्थिति में बातचीत के लिए गुंजाइश है, ऐसे सभा विवाद के अवसर पर आक्रामक अहिंसा धरना देने से अधिक प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो सकती, क्योंकि विवाद में दोनों पक्षों को अपनी सचाई का सही गलत इत्मीनान होता है। एक पक्ष का वकील दूसरे पक्ष का प्रेम या विश्वास हासिल किये बिना सत्याग्रह किस आधार पर करेगा! इसलिए विरोध जिसे समझ सके, और विरोधी के दिल को जो छू सके ऐसा रचनात्मक कार्य यह सत्याग्रह की अनिवार्य पूर्व शर्त बन जाती है।

समस्त विश्व पर जब ऐसी युयुत्सु युगतृष्णा की कालिमा छा रही है, उस वक्त दंगों के ऐन मौके पर 'शान्ति करो! शांति करो!' का नारा छिछला और प्रभावशून्य सिद्ध होता है, उसे दिन-ब-दिन अधिकाधिक प्रभावशून्य होता हुआ पायेंगे।

अतः गरीबी को तोड़ने वाला, श्रम पर आनन्द होने वाला, समाज का सिर बांधने वाला, भविष्य की हामी भरने वाला और संस्कृति को आदरणीय एवं अभयमूलक बनाने वाला एक सर्वांगीण निर्माण-कार्यक्रम अब अत्यन्त अपेक्षित है। ऐसा कार्यक्रम भी जब निहायत नामुमकीन हो, ऐसी प्रत्यक्षसिद्धि जब आ जायेगी, तब तो सिर्फ दो ही चारे रह जायेंगे—निरपेक्ष शांति-सेना का आत्मोत्सर्ग अथवा उदासीन उपेक्षा में निर्वाण। दोनों का आध्यात्मिक मूल्य उस क्षण सम्भवतः समान ही होगा, परन्तु आज की घड़ी में अभी शांति-सेना निरपेक्ष नहीं है। ऐसे ऐहिक कार्यक्रम की उसे अपेक्षा है।

चीन ने जो राष्ट्रीय संकट खड़ा कर दिया है, उसने इस युग प्रश्न को अधिक तीव्र और तात्कालिक कर दिया है। और उसी कारण शांति सेना के निर्माण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम की अपेक्षा में भी वृद्धि हुई है। और उस विवर्धित अपेक्षा की तुलना में सर्वोदय-आंदोलन के अब तक के, भूदान से लेकर सर्वोदय-पात्र तक के सब कार्यक्रम अपर्याप्त मालूम हो रहे हैं।

ग्रामदान, कोरापुट में और गुजरात में नवनिर्माण के उत्साह का संचार करा सके, उस हद तक कामयाब नहीं हुआ है। सर्वोदय पात्र शान्ति की आकांक्षा को मूर्त कर सके और कार्यकर्ताओं का भरण करे इतनी सिद्धि उसे नहीं मिली। अच्छे से-अच्छे कार्यकर्ता उसे सिद्ध करने में असफल रहे हैं। हाँ, अन्तर्-निरीक्षण करना चाहिए। और अंतर् निरीक्षण याने केवल कार्यकर्ता दोष-दर्शन नहीं है। ग्राम परिस्थिति के तराजू पर कार्यक्रम की माल जब लगातार फिसलती रहती हो, तब उसमें कर्त्ता का ही तो दोष नहीं होता। वैज्ञानिक अन्तर्निरीक्षण में समस्त क्रिया को आत्मसात् करके चिंतन करना पड़ता है। आदर्श जितना परिस्थिति निरपेक्ष होता है, उतना शुद्ध माना जाता है, परंतु कार्यक्रम तो जितना परिस्थिति के अनुरूप होगा, उतना ही कुशल माना जायेगा न! शुद्धतम आदर्श एवं कुशलतम कार्य, इन दो सिरों से ही योग सेतु की रचना होगी न!

पं० नेहरू के शब्दों में चीनवाली घटना ने हम लोगों को इतिहास के किनारे पर ला बिठाया है। इतिहास चक्र की गति किनारे पर अधिकतम होती है। और गति छिन्नविच्छिन्न करने वाली वस्तु भी है। ऐसे अवसर पर भारत भर में भूदान के निमित्त जाग्रत २४ हजार कार्यकर्ताओं को अधिक संगठित करने की और मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है। अन्यथा वे सब फिर से इधर उधर बिखर जायेंगे, अज्ञानवाद में लुप्त हो जायेंगे—विनोबा से भी आगे! ऐसी अवस्था में विनोबाजी से अधिक निकट और अधिक प्रत्यक्ष मार्ग-दर्शन की आकांक्षा पैदा होती है। उनके अपार संचार में बालक को escapism—पलायनवाद—का भास होता है। मनमोहन चौधरी को उन्होंने पढ़ा दिया कि अनामी प्रच्छन्न संतों का दूरगामी प्रभाव राज्य नेताओं के प्रत्यक्ष कार्यों ने इतिहास के निर्माण में कई गुना काम करता है। यह गलत भी तो नहीं था और उसी कारण तो करुणावान योगी भी हिमालय समाधि में निमग्न हो जाते थे और श्री अरविंद तक पांडिचेरी में बैठ गये थे। परन्तु मेरे बालचित्त को कुछ ऐसा भास होता है कि यह नित्य धर्म का सार हो सकता है, नैमित्तिक धर्म का नहीं। काल जब परिवर्तन पर तुलता है, तब योगी और नेता एकरूप होते हैं, अव्यक्त व्यक्त होता है, सत्य प्रत्यक्ष होता है, ईश्वर मनुष्य का देहधारी सारथी बनता है; क्योंकि ऐसी ईश्वर की घटिका में सांस्कृतिक मूल्य निर्माण एवं सामाजिक स्थिति परिवर्तन, ये दोनों अभिन्न व एक-रस प्रक्रिया ही बन जाते हैं। अतः मेरी राय में तो विनोबा आज अगम संचारी से बढ़के निकट सचारी बन जाते हैं तो अधिक अच्छा ही होगा।

———

ग्रामदान ही भूमिहीनों का मुक्ति-मार्ग

द. मं. गुरहे (बेंगलूर)

हमारे आश्रम के पड़ोस में अभी तीन साल पहले दस भूमिहीनों में दो-दो एकड़ जमीन सरकार ने वितरित की है। इस वितरण की एक करुण कथा भी है। आश्रम के लिए जो जमीन एक सज्जन ने दान दी है, उसमें यह बीस एकड़ भी हमें दी गयी थी। फर्क इतना ही कि वह दरख्वास्तवाली जमीन थी, जो दाता को सरकार से प्राप्त हुई थी। अन्न-उत्पादन बढ़ाने की एक योजनानुसार ही दी गयी थी, मगर हमारा सरकारी तन्त्र जो ठहरा, तहसील ऑफिस के केंद्रीय दफ्तर में हमारे नाम से दर्ज होना बाकी था! ऊपर जिक्र किये हुए दस भूमिहीन परिवारों के ३-४ साल के अथक परिश्रम के बाद और सरकारी अफसरों के इर्द गिर्द चक्कर लगाने के बाद यह २० एकड़ उनको देने का उपक्रम चला। कहते हैं कि लगातार चक्कर लगाने और भूमि प्राप्त करने में कुछ मेहनत-मजदूरी से इकट्ठा किया धन खर्च हुआ और जमीन मिल जायगी इस आशा से इन परिवारों को कुछ कर्ज भी निकालना पड़ा, ताकि अर्जें, दलीलें, दरख्वास्तें, मुलाकातें, अफसरों का आगत स्वागत का खर्च ठीक तरह से हो! अन्त में ठीक तीन साल पहले यह बीस एकड़ जमीन बाकायदा कागज-पत्र तैयार करा कर इन परिवारों में बाँट दी गयी। जमीन अच्छी है। जमीन तो मिली, मगर न बैल, न औजार, न टूटी झोंपड़ी! ऐसी अवस्था में खूब परिश्रम से करीब १५ एकड़ की काश्त इन परिवारों ने की। जमीन वितरण के दूसरे ही दिन से इन पर और एक धर्मसंकट सवार हो चुका था सो अलग। एक तो जमीन हमारी थी, मालिकी हमारी थी। आश्रम के व्यवस्थापक ने अफसरों को बार-बार समझाया, मगर झगड़े मारकाट तक बात पहुँचने का क्षण आ चुका था, क्योंकि एक तीसरा ही मालिक, जो शहर में रह कर व्यापार चलाता है, जाग उठा! पता चला कि यही जमीन कुछ दस साल पूर्व इस तीसरे मालिक को दी गयी थी। शिकायत आयी मेरे पास, सुझाव रखा गया मेरे सामने मेरे साथियों की ओर से, रात ही रात में उस जमीन पर हम एक झोंपड़ी खड़ी कर दें और अपना हक सिद्ध कर बीच में ही हम बैठ जायँ। मेरा साथी जिसने यह सुझाया, इस घटना से एकदम त्रस्त और उत्तेजित था। दूसरे दिन जो दो मालिकों के बीच लाठियाँ चलने वाली थीं, उनमें शान्ति करने का प्रयास तो दूर रहा, मेरे साथी भी अशान्ति मचाने में जाने अनजाने शरीक होने की पूरी तैयारी में थे। 'हम भूदान-यज्ञ के सैनिक हैं, २० एकड़ के वृथा मोह में फँस कर हमको झगड़े में शामिल नहीं होना चाहिए। २० एकड़ के साथ हमारी ५-१० एकड़ जमीन इन भूमिहीनों के पल्ले में पड़े तो भी हम शान्ति के साथ इसका न्याय्य फैसला करें!' इन शब्दों से मैंने मेरे उत्तेजित साथियों का समाधान किया। हमारे इस रुख से अब तक लगातार दो साल तो भूमिहीन सुख से जीये। खूब कष्ट उठा कर जमीन की काश्त में जुटे, आश्रम से बैलजोड़ी की मदद, बीज आदि की सुविधा भी उनको पहुँचायी गयी। इस वर्ष फसल अच्छी रही। ठीक इस मौके पर ऊपर जिक्र किया हुआ तीसरा मालिक लालच में पड़ा, कुछ सरकारी कागजात के बल पर इन भूमिहीन परिवारों को भगा देने की करतूत चली, दो एकड़ पर कब्जा जमा कर अपनी काश्त भी शुरू कर दी। धमकियाँ तो चलीं और बेचारे भूमिहीन घोर संकट में पड़े! परिवार का मुखिया मेरे पास दौड़ आया, करुण कहानी सुनाते हुए क्षण भर स्तब्ध रहा। मैं भी अवाक् हुआ! 'स्वामी, मैं कल बाजार से चूहे मारने का जहर लाऊँगा, घरवालों को भी खिला दूँगा और इस दुनिया से चल बसेंगे हम सब!' इन शब्दों में मुझे दर्द सुनाया गया। मुझसे सलाह माँगी। दूसरे दिन इनके सब सरकारी कागजात भी मँगाये और देखे, बात दुरुस्त थी। जमीन इन बेजमीनवालों के नाम ही दर्ज थी। हाँ, कानून कुछ अन्धा होता है! शरारतवालों के पास भी अपने पक्ष में सरकारी कागजात थे। एक दो दिन में भूमिहीन परिवार शरारतियों पर टूट पड़ेंगे, यह सम्भव था, मारपीट की तैयारी हो चुकी थी। इन भूमिहीनों का और हमारे आश्रम का प्रेम का नाता मजबूत था, श्रद्धा पनपी थी। मैंने इस मुखिया के मार्फत सभी को शान्त रहने के लिए समझाया और मामला राज्य सरकार के व्यवसाय विभाग के मन्त्री महोदय के पास सीधा भिजवा दिया। मन्त्री महोदय ने करुण कहानी सुनी, लेकिन सरकारी कागजात जो हों, उन्हींके शरण में मन्त्रीजी को जाना पड़ा! अन्याय प्रत्यक्ष दिख पड़ता था, मगर मन्त्री महोदय भी उनको अभयदान नहीं दे सके। गत तीन माह लगातार इन अभागे परिवारों को सरकारी न्याय मन्दिरों की, उनके छोटे बड़े महन्तों की प्रदक्षिणा करनी पड़ी, प्रवन्ध खर्च के लिए गाढ़ी कमाई भी साफ हो गयी। आशा निराशा, चिन्ता, भरोसा इनके चक्कर काटते काटते गत सप्ताह अंशतः निपटारा हुआ और खड़ी फसल फिलहाल उनके पल्ले पड़ी है, जो खतरे में थी। आगे का भगवान् जाने! जमीन का आधार भी टूटने का सम्भव है, विवशता के कारण ये भूमि-पुत्र फिर भूमिहीन भी बन जायँ, यह असम्भव नहीं। यदि ग्रामस्वराज्य होता तो रामराज्य नहीं सही, मगर ये भूमिपुत्र आराम से अपना जीवन बिता सकते थे। अन्त्योदय आसान होता, सर्वोदय की किरणें दीख पड़ती। कानून और सियासत के पक्षपाती कम से कम इस करुण कहानी से सबक लें।

सर्वोदय-पखवारा और सूतांजलि

'३० जनवरी' निकट आ रही है। ३० जनवरी से १२ फरवरी तक देश भर में सर्वोदय पखवारा मनाया जायेगा। १२ फरवरी को सूतांजलि-समर्पण के आयोजन होंगे और सर्वोदय मेलों के उत्सव मनाये जायेंगे।

बापूजी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का सरल और सर्वश्रेष्ठ साधन सूतांजलि है। विनोबाजी ने इसे सर्वोदय विचार के लिए वोट माना है। इसमें हर कोई अपने हाथ से कते सूत की एक गुंडी सर्वोदय विचार के समर्थन में अर्पित कर सकता है। सूतांजलि-समर्पण के इस विचार का प्रचार योजनापूर्वक गाँव-गाँव में कार्यकर्ताओं को करना चाहिए। खास तौर से कत्तिनों के विशाल कताई मेले आयोजित करके उन्हें एक-एक गुंडी सूत अर्पित करने की प्रेरणा देनी चाहिए। सभी खादी कार्यकर्ता तथा लोक सेवक अभी से इस ओर ध्यान दें तथा कार्यक्रम व प्रचार आरंभ कर दें।

दानी ग्रामों में विकास-कार्य

कारवार जिले (मैसूर राज्य) में कर्नाटक ग्राम-दान निर्माण समिति, कुसुर ने दो ग्रामदानी गाँवों—कुसुर और मेड्सागाँव—में कार्यारम्भ कर दिया है।

कुसुर मुंदगोड तालुका में है। इसमें १९ परिवार हैं। आबादी ११० है। गाँव में ११४ एकड़ ऐसी भूमि है, जिस पर खेती की जाती है और ३५ एकड़ ऐसी भूमि है, जो बंजर है। सन् १९५८-५९ में समिति ने अपने कार्यक्रम के जरिये लोगों को गाँव का सामूहिक विकास करने के लिए तैयार किया। फलतः उन्होंने श्रमदान के जरिये स्थानीय स्कूल के मकान की मरम्मत की और बड़ी सड़क तक पहुँचने के लिए एक छोटी-सी सड़क भी बनायी।

संयुक्त कृषि

इससे उत्साहित होकर ग्राम निवासियों ने ६० एकड़ भूमि पर संयुक्त खेती की और ३००० कार्य घंटों का सहकारी श्रम करके ८००रु० बचाये, अन्यथा ये रुपये बाहर के मजदूरों को देने पड़ते। सामुदायिक केन्द्र के लिए उन्होंने एक सुन्दर कुटीर भी बनाया तथा २५० कार्य घंटे का श्रमदान करके एक अस्थायी पुल भी बनाया।

गाँव की ग्राम सभा ने स्थानीय तालाब की मरम्मत का काम अपने ऊपर ले लिया है। इस तालाब के पूरे होने पर ८५ एकड़ भूमि की सिंचाई करने में मदद मिलेगी। गाँव के बच्चों से लेकर बुड्ढों तक ने ७,००० कार्य घंटों का श्रमदान करके गाँव के २,००० रु० की बचत की। गाँव में उन्नत तरीकों से खेती की गयी और प्राप्त विवरण के अनुसार करीब १२४ एकड़ भूमि पर उन्होंने २,३०० मन धान पैदा किया, जबकि पिछले वर्ष वे ११४ एकड़ भूमि पर १,४२० मन धान ही पैदा कर पाये थे।

एक गरीब गाँव

मेड्सागाँव में २० परिवार हैं और ११२ आदमी। यह गाँव मेड्सागाँव तालुका में है। कुसुर की अपेक्षा यह गाँव गरीब है, क्योंकि इसकी १०० एकड़ भूमि में २५ एकड़ ही गाँव के भूमिधारी किसानों के पास है। फिर भी, गाँववाले गाँव का सामूहिक विकास करने के लिए कृत संकल्प हैं। सामूहिक श्रम के जरिये गाँव के कुएँ का जीर्णोद्धार किया गया। इस श्रम का मूल्य ४०० रु० आँका गया। गाँव के १५ आदमियों ने दो दिन श्रमदान करके एक कच्ची पुलिया बनायी।

यद्यपि गाँववाले दो रुपये रोजाना मजदूरी पर गाँव से बाहर जाते हैं—लेकिन अब उन्होंने निश्चय किया है कि अगर गाँव में कोई काम हुआ, तो कोई भी बाहर नहीं जायेगा और गाँव में ही एक रुपया रोजाना की साधारण मजदूरी पर काम करेगा। गाँव में काम न होने पर गाँव के बाहर मजदूरी करने जाने की बाबत उन्होंने निश्चय किया कि जितने रुपये भी कमाई हो, उसमें से एक आना प्रति रुपया के हिसाब से गाँव के जनकल्याण कोष में जमा कराना चाहिए।

इस गाँव में भी खेती के उन्नत तरीके अपनाने और सामूहिक प्रयास करने के कारण धान की १,८६३ मन सालाना फसल बढ़कर २,१३२ मन हो गयी।

फिर भी, अभी बहुत कुछ करना शेष है। कृषि-उत्पादन बढ़ाने के लिए सन् १९६० की योजना तैयार कर ली गयी है। ग्रामोद्योगों और परम्परागत चरखों तथा अम्बर चरखों पर कताई शुरू करने की भी योजना है।

रामगंगा-सर्वोदय सघन सेवा-क्षेत्र, अल्मोड़ा

महादेव वाजपेयी

"बारह साल की तपस्या का यह हमारा पहला फल है, इन्हें सँभाल कर रखना। अच्छे सम्पन्न परिवारों से आयी हुई, ये हमारी लड़कियाँ हैं। लक्ष्मी आश्रम, कौसानी में इन्हें शिक्षा मिली है, अब तीन वर्ष तुम्हारे गाँव में रह कर, तुम्हारे ही दिये हुए भोजन, वस्त्र, निवास और सर्वोपरि, तुम्हारे प्यार को पाकर, ये तुम्हारी सेवा करेंगी।.. ये मेरी लड़कियाँ पैसे के लिए नहीं आयी, मान-मर्यादा और इज्जत के लिए भी नहीं आयी, तुम्हारे गाँव की सेवा के निमित्त, देश सेवा, विश्व-सेवा और अखिल मानव की सेवा का इनका लक्ष्य है। आज की इस भयानक दुनिया की शोषण की बुनियादों को उखाड़ने आयी हैं, प्यार भरी नयी दुनिया की बुनियाद बनाने आयी हैं।"—ये ये भाव भरे उद्गार तपस्विनी सरला बहन के, लक्ष्मी आश्रम-कौसानी, अल्मोड़ा की जन्मदात्री के। उन्होंने कहा कि आज से कई वर्ष पहले गांधीजी से जब उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि अल्मोड़ा जिले में इस प्रकार की शिक्षा संस्था खोल कर वे सेवा-कार्य करना चाहती हैं, तो उन्होंने कहा कि तुम्हें काफी सोच-समझ कर यह कदम उठाना चाहिए, जिससे अन्त में असफलता न हो। सरला बहन ने कहा कि 'इसका उत्तर मैं बीस वर्ष तपस्या करने के बाद दूँगी। इस बीच चाहे सारे लोग कहें कि तुम सफल हुई, अथवा सभी कहें कि असफल हुई, मैं किसीकी बात सच न मानूँगी, बीस वर्ष के बाद मेरा प्रयास स्वयं कहेगा कि मैं सफल हूँ, अथवा असफल।'

अपनी जन्मभूमि इंग्लैंड को छोड़ भारत में आये उन्हें लगभग तीस वर्ष हो चुके हैं। गांधीजी के सम्पर्क में आकर उन्होंने भारत भूमि को ही अपनी तपो-भूमि, सेवा-भूमि और मातृभूमि बना लिया है। सहज संकोचशील इनका स्वभाव, नम्र, मूक सेवा करना ही ये जानती हैं। लगभग साठ वर्ष की इनकी आयु, किन्तु आज भी अपनी पीठ पर भरे हुए सामान का अपना पीठू लाद कर, मुस्कराते हुए हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियों, ऊबड़-खाबड़ रास्तों, वन, पर्वत और नदियों को अकेले पार करने में आज भी नहीं हिचकती। भारत देश और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश का पर्वतीय अंचल तो सरला बहन का चिर ऋणी रहेगा। स्त्री-शक्ति की मूर्तरूपा वे स्वयं हैं, और भारतीय स्त्री शक्ति को प्रकट कराने की साधना में वे लगी हैं।

पर्वतों पर छोटे छोटे गाँव होते हैं, और दूर तक फैले होते हैं। इस क्षेत्र में १० गांव हैं और कुल जन संख्या २५०० और लगभग चार मील में फैला हुआ है, यह सारा क्षेत्र। तीन गाँवों में लक्ष्मी-आश्रम की तीन बहनें श्रुति, लीला और राधा समग्र ग्राम सेवा की दृष्टि से बैठी हैं। इनमें एक गांव बिलात ग्राम दानी है। तीन वर्ष अपने-अपने गाँव में सेवा-कार्य करने का इनका संकल्प है। इस अवधि में ग्राम स्वराज्य का सर्वोदयी दर्शन उस गाँव का होना चाहिए, और इसके बाद उस गाँव में किसी बाहरी सेवक की आवश्यकता नहीं रहनी चाहिए।

विगत जुलाई माह के प्रारम्भ में स्वयं सरला बहन इन तीनों बहनों को प्रत्येक गाँव में लेकर गयी थी और गाँव वालों को अपनी सारी योजना समझा कर लड़कियों को व्यवस्थित बैठा कर आयीं थी। समय-समय पर सहयोग, सहायता और मार्गदर्शन बहिनजी का, जिले के प्रमुख सर्वोदय-कार्यकर्ता श्री शेरसिंह कारकी तथा ग्रामदानी गाँव चकोड़ी में बैठे हुए ग्रामसेवक श्री लक्ष्मीचन्द्र का उपलब्ध होता रहता है।

नवम्बर के अन्त में मैं उस क्षेत्र में पहुँचा, किन्तु इस थोड़े से समय में जो कुछ इन बहनों ने वहाँ कर दिखाया, वह उत्साहवर्धक है। इन बहनों के लिए उन गाँवों में कितना प्यार है, कितना विश्वास है, कितनी श्रद्धा है, वह दर्शनीय है। इन लड़कियों के पीछे गाँव के भाई, बहिन और बच्चे 'सन्त विनोबा अमर हों,' 'बाँट के खाना धर्म हमारा' 'जय जगत्' इत्यादि नारों के साथ उत्साह और प्रसन्न मुखमुद्रा से हमारा स्वागत करने को मिले।

ग्राम-सफाई की ओर इनका ध्यान सबसे पहले गया। सार्वजनिक स्नान का स्थान, पानी का स्थान स्वच्छ रहना चाहिए, गाँव की सड़कें साफ़ रहनी चाहिए। गाँव वालों के श्रम सहयोग से यह काम हो गया। अपने अपने घरों और अपने घर के सामने की सड़क की सफ़ाई नित्य घर वाले करें, और सप्ताह में एक बार सारे गाँव के लोग मिल कर ग्राम सफाई करें। गाँवों में सड़क पर ही टट्टी जाने की बड़ी गन्दी प्रथा है। इन्होंने तुरन्त इस कुप्रथा की रोक थाम की। प्रत्येक परिवार के लिए एक या दो टट्टी के गड्ढे बनाये गये। पाखाना इसीमें एकत्र होता है, भर जाने पर बन्द कर दिया जाता है, और खाद तैयार हो जाने पर इसका उपयोग खेत में किया जायेगा। इ० बात को यदि गाँव वालों ने तुरन्त नहीं स्वीकार किया तो, पहले ये बहनें अपने प्रयोग के लिए ली हुई सब्जी की क्यारी में उसका स्वयं उपयोग कर लोगों को दिखायेंगी, तब धीरे-धीरे गाँव वालों की हिचक दूर होगी।

गाँव के छोटे-छोटे बच्चों पर तो इनका बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा है। साफ़, सुन्दर लड़के लड़कियाँ! न आँखों में कीचड़ और न नाक में घुसफुसाहट, हाथ पैर साफ़, हँसते हुए नन्हें मुन्ने, जय जगत्, कितना मधुर उनकी वाणी से लगता है। श्रम यज्ञ की यह उनकी हँसती हुई पल्टन भी। शाम की प्रार्थना के समय एक के बाद दूसरा बच्चा खड़ा होता है और बीते हुए सारे दिन की करतूत सबके सामने कहता है। कोई कहता है—मैंने झूठ बोला, कोई कहता है—मैंने छोटी बहन को पीटा, और सबके अन्त में—'हे भगवान! हमारी गलतियों को क्षमा करो।' चंचल बच्चों की प्रशान्त मुख मुद्रा, अपनी ग्राम साथिन, ग्राम सेविका अथवा गुरुजी के इशारों पर निछावर होने वाली बाल सेना दर्शनीय है। यह दर्शन इन बहनों की कुछ महीनों की बागवानी का परिणाम है।

शाम को नित्य प्रौढ़ शिक्षा भी चलती है। गाँव के लोग दिन भर काम करके और भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर एक निश्चित स्थान में एकत्र होते हैं। कभी-कभी समाचार-पत्र अथवा रामायण, गीता का पाठ होता है, 'भूदान यज्ञ' का भी पाठ होकर इन विषयों पर चर्चा होती है। ग्राम-व्यवस्था के सभी पहलुओं पर चिन्तन और चर्चा भी इसी समय होती है, और अन्त में सामूहिक प्रार्थना के बाद सब लोग अपने-अपने घर चले जाते हैं।

गाँव के प्रत्येक परिवार के लिए अपने खेत से साग सब्जी मिल सके, इसकी सबके लिए व्यवस्था हो गयी है। ताजी सब्जी की विशेष रुचि उत्पन्न हुई और इसका असर पास के अन्य गाँवों पर भी हुआ। वहाँ भी लोगों ने अपने-अपने खेतों में सब्जी उगाना प्रारम्भ कर दिया है। पपीता, सन्तरा, नींबू इत्यादि फलों के पेड़ भी लगाये गये हैं। दो गाँवों में सामूहिक सहकारी बाग की भी व्यवस्था हुई है।

कृषि-सुधार का भी इन बहनों ने प्रयोग प्रारम्भ किया। अपने लिए व्यक्तिगत साग-सब्जी उगाने अथवा कोई प्रयोग इत्यादि करने के लिए भी गाँव वालों ने इन बहनों को थोड़ी-थोड़ी जमीन दी है। इसमें वे स्वयं श्रम करती हैं, इसके अतिरिक्त वे नित्य दो घंटा गाँव वालों के साथ उनके खेत पर श्रम करती हैं। अच्छा बीज, अच्छी खाद, सिंचाई, खेत की तैयारी इत्यादि तमाम जानकारी गाँव वालों को उनके साथ स्वयं श्रम करते हुए बताती हैं। उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों में खेत जोतने का काम तो पुरुष करते हैं, इसके अतिरिक्त श्रम का कठिन से-कठिन काम तो बहनें ही करती हैं। दिन भर खेतों में, लकड़ी लाने के लिए जंगलों में, अथवा घास काटने के लिए दूर दूर पर्वतों पर बहनें ही बहनें दिखती हैं। कौसानी आश्रम की ये सेविका बहनें भी श्रम करने में उतनी ही वीर हैं।

गाँव के आरोग्य की भी चिन्ता इन्होंने जाते ही की। बच्चों से लेकर उनके माता पिताओं को सफ़ाई से रहने, नियमित स्नान, कपड़ों में साबुन लगाने इत्यादि की बात बतायी। रोगियों की सेवा और औषधि वितरण भी ये करती हैं। उपलब्ध आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक औषधियाँ ये वितरित करती हैं। स्थानीय जड़ी बूटियों के भी प्रयोग का प्रयास किया जाता है।

अभी इन गाँवों में ग्रामोद्योग कोई नहीं हैं। इतनी ऊँचाई पर कपास सम्भवतः पैदा न हो। ये गाँव लगभग ४ हजार फीट ऊँचाई पर बसे हैं। कपास उगाने का प्रयोग किया गया था, किन्तु अभी वह सफल नहीं हुआ। इनका अपना ऊन नहीं है, क्योंकि भेड़ें नहीं हैं। बाहर से ऊन खरीद कर कुछ ऊन कताई गाँव वाले करते हैं। बुनाई का भी प्रबन्ध नहीं है।

बीड़ी, चिलम और चाय इत्यादि व्यसन छुड़ाने का भी प्रयास किया। चाय का सेवन तो बहुत कम हो गया है। व्यसनों की पूर्ण समाप्ति का प्रयत्न चल रहा है।

इन बहनों का जीवन निर्वाह सर्वजन-आधार पर चल रहा है। गाँव के सभी घरों में एक एक दिन भोजन होता है। लोगों ने स्वयं ही उनके खाने के लिए तिथियाँ आपस में निश्चित कर ली हैं। उस घर में सहज जो बनता है, उसीको यह बहन भी खाती है। सम्पन्न घर है तो सन्तुलित आहार हुआ, और यदि किसी गरीब घर की बारी हुई तो उस दिन रूखा सूखा ही मिला। इस व्यवस्था में सन्तुलित आहार मिलना एक समस्या हो गयी है। ग्रामदानी' गाँव बिलात मुख्यतया गरीबों का गाँव है। सन्तुलित आहार नियमित न मिल सकने के कारण श्रुति बहन का स्वास्थ्य कुछ कमजोर हुआ है। राधा बहन तो बीच में बीमार ही हो गयी, जिससे उसके काम में रुकावट आयी। इस व्यवधान के कारण राधा बहन का काम बिखर गया। उसे अब फिर से गाँव में जमाने का प्रयास हो रहा है। लक्ष्मी-आश्रम कौसानी की बहनों के श्रमदान से इन बहनों के वस्त्रों की व्यवस्था होती है। वर्ष में एक बार अधिक-से-अधिक एक महीना के लिए अपने-अपने घर जाती हैं। इस सम्बन्ध में यातायात का व्यय लक्ष्मी-आश्रम ही देता है।

[अन्य कार्यकर्ता साथियों से निवेदन है कि अपने काम के संस्मरण इसी तरह से लिख कर "भूदान-यज्ञ" में प्रकाशनार्थ भेजा करें —सं०]

कताई-मजदूरी की दरें

खादी ग्रामोद्योग कमीशन की प्रमाण पत्र समिति की जो सभा अभी हाल ही में लखनऊ में हुई थी, उसमें खादी-काम में दी जाने वाली कताई बुनाई की मजदूरी की दरों के प्रश्न पर चर्चा हुई थी। आज खादी तैयार करने में लाखों कतवारियाँ और बुनकर काम कर रहे हैं और इनमें से अधिकतर व्यक्ति गरीब तबके के हैं। इसलिए यह जरूरी है कि खादी-जगत् का, खादी में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का ध्यान इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न की ओर जाय और वे इस बारे में जरा गहराई से सोचें।

गांधीजी ने जब हिन्दुस्तान में अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत की, उस वक्त तक इस देश का कताई बुनाई का पुराना और मशहूर उद्योग इंग्लैंड की मिलों के बने हुए कपड़े की होड़ के कारण पूरी तरह नष्ट हो चुका था। सन् १९१७ में गांधीजी को एक चरखा प्राप्त करने में महीनों लग गये थे। पर गांधीजी ने जिस दूरदर्शिता, संगठन-शक्ति और अदम्य निष्ठा के साथ हाथ-कताई बुनाई उद्योग की इस देश में पुनर्स्थापना की, वह सारे संसार के आर्थिक इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना है। असल में तो चरखा गांधीजी के लिए केवल उद्योग का एक औजार न रह कर एक नयी समाज-रचना का प्रतीक बन गया था और उसी दृष्टि से उन्होंने उसका पुनरुत्थान किया। सारे प्रचलित प्रवाह और अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों के खिलाफ, जबरदस्त आर्थिक और राजनीतिक ताकतों के विरोध के बावजूद जिस तरह खादी का उद्योग फिर खड़ा हुआ, वह सचमुच आश्चर्यजनक है। पर सबसे मुख्य बात यह है कि इस काम के जरिये गांधीजी ने उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में एक नये प्रकार के अर्थशास्त्र की नींव डाली। प्रचलित अर्थशास्त्र कहता था और आज भी कहता है कि उद्योग-व्यापार में व्यक्तिगत मुनाफा जायज है, मुनाफे की प्रेरणा न हो तो इन्सान काम ही क्यों करेगा, चीज पैदा करने वाले को या दुकानदार को ग्राहक से मनमाना या जितना ज्यादा से-ज्यादा दाम वह ले सके, लेने का और जिस मजदूर से वह काम लेता है, उसे कम से कम मजदूरी देने का हक है। गांधीजी ने खादी के उद्योग में इन सबसे विपरीत मानवीय मूल्यों की स्थापना की। उद्योग या व्यापार वैश्य का समाज-धर्म है। व्यक्तिगत मुनाफे के लिए वह नहीं है, उसमें से उसे भरण पोषण प्राप्त होता है, वह तो समाजोपयोगी किसी भी काम करने वाले को मिलना ही चाहिए। इसलिए व्यापार में न तो मनमाने भाव लेने की उसे छूट है, न मजदूरी कम देने की। खादी के काम में गांधीजी ने ये सब बातें दाखिल कीं। आज देश में करोड़ों रुपयों का खादी काम समाजहित में चल रहा है, व्यक्तिगत मुनाफे के लिए नहीं। अक्सर लोग हमसे कहते हैं कि आप ट्रस्टीशिप की बात तो करते हैं, पर यह व्यावहारिक नहीं है। क्या हिंदुस्तान में कहीं उसका नमूना भी है? आज देश भर में चल रहा खादी का काम इसका एक ज्वलंत उदाहरण है, पर हमारे भी ध्यान में अक्सर नहीं आता और हम उस सवाल से हतप्रभ से हो जाते हैं।

खादी के काम को गांधीजी ने व्यक्तिगत मुनाफे से तो ऊपर उठाया ही, उन्होंने उसमें "जीवन वेतन" का सिद्धान्त भी दाखिल किया। अर्थात् जो मनुष्य ईमानदारी और कुशलता के साथ दिन में आठ घंटे कोई भी समाजोपयोगी काम करता है, उसके बदले में वह समुचित आहार, आवश्यक कपड़ा, शिक्षा, चिकित्सा आदि प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त मजदूरी या मुआवजा पाने का हकदार है। गांधीजी ने सन् १९३५ में चरखा-संघ के सामने खादी काम में इस सिद्धान्त के अनुसार मजदूरी दिये जाने का प्रस्ताव रखा था। उस समय सामान्य मजदूरी की जो दरें प्रचलित थीं तथा चीजों के जो भाव थे उन्हें ध्यान में रखते हुए इस तरह के "जीवन-वेतन" का पैमाना गांधीजी ने आठ घंटे के कुशल काम का आठ आना याने प्रति घंटा कुशल काम का एक आना माना था। पर खादी बाजार में बेचने की आवश्यकता होने और मिल के कपड़े की होड़ होने के कारण खादी काम में इतनी मजदूरी दे सकना चरखा संघ को अव्यावहारिक मालूम हुआ और उन्होंने उस समय आठ आने प्रति दिन की बजाय तीन आने का पैमाना ही मंजूर किया। उसके बाद १९३९ में लड़ाई शुरू हो गयी और चीजों के भाव बढ़ते गये। अतः मजदूरी की दरें भी कुछ बढ़ानी पड़ीं, जो आज तीन आने की जगह आठ आने तक पहुँची हैं। आज खादी उद्योग में कताई की जो मान्य दरें हैं, वे आठ घंटे के काम के आठ आने के हिसाब से दी जा रही हैं।

पर १९३९ से इन बीस वर्षों में महँगाई कम से-कम चौगुनी हो गयी है। दूसरे शब्दों में, रुपये की कीमत चार आना रह गयी है। इस हिसाब से देखें तो आठ आने का मतलब आज बीस बरस पहले के पैमाने से दो आना होता है। जीवन वेतन की कसौटी पर तो बीस बरस पहले चरखा-संघ ने जो दरें स्वीकार की थीं, वे ही काफी नहीं थीं—आठ आने की जगह तीन आने ही स्वीकार किये गये थे। गांधीजी का बताया हुआ जीवन वेतन का सिद्धान्त अगर हम ध्यान में रखते तो हमें उस समय के तीन आने से कुछ आगे बढ़ना चाहिए था, पर उलटा यह हुआ है कि हम उससे भी पीछे हटे हैं। अगर पुराना पैमाना कायम रखते, तो भी आज तीन आने की जगह कम से कम बारह आने के हिसाब से मजदूरी की दरें होनी चाहिए थीं, जब कि आज वे आठ आने ही हैं। बल्कि कभी कभी हम यह भी सुनते हैं कि खादी आज के दामों में और सरकारी छूट के होते हुए भी बिक नहीं रही है, इसलिए खादी के दाम कम करने की कोशिश करनी चाहिए और वैसा हो सके, इसलिए और चीजों के साथ साथ मजदूरी की दरों में भी कुछ कमी करने का सोचना चाहिए। मजदूरी कम करने के पक्ष में यह दलील भी दी जाती है कि पिछले बरसों में कताई बुनाई के कुछ सुधरे हुए औजार काम में आने लगे हैं और इसलिए कम समय में ज्यादा काम हो सकता है, तो क्यों नहीं उस अनुपात में मजदूरी कम कर दी जाय? मानो, कत्तिन और बुनकर कोई यंत्र हैं, जिनके अन्दर जितना डाला उतना निकाल लिया! हम आये दिन जीवन स्तर बढ़ाने की जो बात करते हैं, वह क्या उन्हें लागू नहीं होती? उनका जीवन-स्तर ऊँचा करने की बात तो दूर है, मजदूरी की जो दरें बीस वर्ष पहले कायम की गयी थीं, उन्हें उसी स्तर पर कायम रखने का अभी तो सवाल है।

जीवन वेतन की ओर बढ़ने की बात छोड़ दें और जो पैमाना हमने बीस वर्ष पहले कायम किया था, वही कायम रखना हो तब भी कताई की मौजूदा दरें आठ आने प्रति दिन से बढ़ा कर कम से-कम बारह आने तक करनी चाहिए। सस्ती खादी के पीछे जिस शोषणयुक्त रचना की कल्पना है, उसे देखते हुए, जैसा विनोबा कहते हैं, हम खादी-कार्यकर्ताओं को हिम्मत के साथ लोगों से कहना चाहिए कि खादी इसलिए महँगी है कि उसमें दूसरे के श्रम की चोरी नहीं है। सस्ती चीज याने चोरी की चीज! आशा है, सर्व सेवा संघ की खादी-समिति तथा खादी कमीशन कताई की दरों के प्रश्न पर विचार करेंगे। बड़े-बड़े कारखानों में काम करने वाले मजदूर संगठित हैं। वे अपनी संगठित शक्ति के जरिये महँगाई के अनुपात में अपनी मजदूरी बढ़वाते रहते हैं। खादी उद्योग में काम करने वाली कतवारियों और बुनकरों का ट्रस्टी चरखा-संघ को गांधीजी ने माना था और आज उपरोक्त दोनों संगठन उसके उत्तराधिकारी के रूप में हैं।

आज कतवारियों में बहुत सी मध्यम वर्ग की स्त्रियाँ भी हैं, जिनकी आजीविका का मुख्य आधार कताई नहीं है। पर बहुत-सी ऐसी भी हैं, जो कताई-मजदूरी पर ही अपना और अपने बाल बच्चों का गुजारा करती हैं। अतः कताई की सामान्य दरें भले ही दिन के बारह आने के आधार पर तय की जायँ, लेकिन खादी-संस्थाओं को चाहिए कि ऐसी जो कत्तिनें हैं, जिनका आधार कताई पर ही हो, उन्हें कम से-कम आज की महँगाई के हिसाब से भरण-पोषण के लिए आवश्यक मजदूरी तथा जीवन-वेतन मिले।

आगरे के मेयर का बयान

आगरा शहर की महापालिका के नये चुने हुए मेयर श्री शंभुनाथ चतुर्वेदी ने आगरा की जनता को आश्वासन दिया है कि नगर प्रमुख के पद पर निर्वाचित होने के बाद "मैं किसी एक दल का प्रतिनिधि नहीं रहा, वरन् सारी जनता का प्रतिनिधि हूँ। मैं किसी भी बात को पार्टी के हित से नहीं, वरन् जनता के हितों की दृष्टि से देखूँगा।" श्री शंभुनाथ का आश्वासन एक ऐसे तथ्य की ओर संकेत करता है, जो पार्टियों के आधार पर कायम होने वाले आज के जनतंत्र में और उस आधार पर चलने वाली आज की राजनीति में भुला दिया गया है। आज की केन्द्रित व्यवस्था में शासन चलाने के लिए लोगों को प्रतिनिधियों का चुनाव करना होता है। सही तो यही है कि जो भी चुना जाता है, वह जनता का प्रतिनिधि है और चुनने के बाद उसे उसी तरह व्यवहार और काम करना चाहिए। पर आज चूंकि चुनावों में पार्टियों का दखल हुआ है—जो बहुत हद तक गैरजरूरी है—, पार्टियों की ओर से उम्मीदवार खड़े किये जाते हैं और चुनाव लड़ा जाता है, इसलिए चुने जाने के बाद भी प्रतिनिधि लोग अपने को पार्टी के हित से बंधा हुआ मानते हैं। सही चीज यही है कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी पार्टी विशेष की मदद से और उसके नाम पर चुनाव में जीता हो, वह चुने जाने के बाद अपने क्षेत्र की समूची जनता का प्रतिनिधि है और उसे अपने कार्यकाल में उसी भावना से काम करना चाहिए। हाँ, भले ही वह रहे जो उसकी पार्टी ने घोषित किया है। आज जिस तरह चुने जाने के बाद भी धारा-सभाओं, नगरपालिकाओं वगैरा में लोग एक पार्टी के नुमाइन्दे की तरह बरतते हैं और लोग भी इसे स्वाभाविक मानने लगे हैं वह गलत है, यह हमारे ध्यान में आना चाहिए। एक तरह से यह परम्परा जनतंत्र की सारी भावना और मनशा के खिलाफ है। श्री शंभुनाथ चतुर्वेदी ने यह घोषणा करके कि अब वे किसी पार्टी के रह कर काम नहीं करेंगे, सही दिशा में कदम उठाया है।

—सिद्धराज ढड्ढा

बाबा राघवदास !

सत्यदेव द्विवेदी

बाबा राघवदासजी से सारा देश, विशेषतः हिन्दी भाषी प्रान्त परिचित है। उत्तर प्रदेश में तो हर जिला, हर तहसील में सैकड़ों-हजारों व्यक्ति पुरुष और स्त्री ऐसे हैं, जो बाबा राघवदासजी के निकट सम्पर्क में रहे हैं। १९५५ के १३ अप्रैल से २ वर्ष तक उत्तर प्रदेश में भूदान-ग्रामदान का संदेश लेकर गाँव-गाँव, जिले-जिले में उन्होंने पदयात्रा की। मध्यप्रदेश में पदयात्रा करते हुए सिवनी पहुँच कर उन्होंने १५ जनवरी १९५८ को अपना यह पार्थिव शरीर छोड़ा।

बाबा राघवदास व्यक्ति नहीं, संस्था नहीं, अपने में संस्थाओं के समूह थे। जनहित का कोई भी काम आप सोचिये, उसमें बाबा राघवदास का नाम अवश्य जुड़ा हुआ मिलेगा। राजनीति, धर्म, समाज-सुधार, हिन्दी प्रचार, राष्ट्रभाषा, हरिजन-सेवा, गो-सेवा, महिला-उत्थान, हरिजनोध्दार, शिक्षा प्रचार, कुष्ठ सेवा, रेल और मोटर के यात्रियों की सेवा, प्राकृतिक चिकित्सा, खादी व ग्रामोद्योग, गीता व रामायण-प्रसार, भूदान, ग्रामदान, कोई काम उनसे अछूता नहीं था। वे 'उत्तर-प्रदेश के गांधी' के नाम से प्रसिद्ध थे। गोरखपुर जिले का तो कण-कण उनकी सेवाओं से सना हुआ है।

बाबा राघवदास के पारिवारिक जीवन का परिचय उनके जीवन काल में बहुत कम लोगों को था। आज भी इनेगिने लोग ही उस संबंध में जानकारी रखते हैं। बाबा राघवदासजी नाम और शरीर से परे थे। उन्होंने उसको कभी महत्त्व ही नहीं दिया। इसीलिए उनका पारिवारिक जीवन प्रकाश में नहीं आया। परमहंस बाबा राघवदासजी का शरीर महाराष्ट्र का था। उनके माता पिता ने उनका नाम रखा था राघवेन्द्र। राघवेन्द्र का जन्म महाराष्ट्र के प्रसिद्ध पाच्छापुरकर परिवार में हुआ था। पाच्छापुरकर परिवार पेशवाओं का साहूकार था। राघवेन्द्र अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। इनका जन्म सन् १८९६ के १२ दिसम्बर को हुआ था। इनसे बड़े ४ भाई थे। उनका नाम था नारायण, श्रीनिवास, व्यंकटेश व यादवेन्द्र। इनकी बड़ी ३ बहनें थीं, जिनका नाम क्रमशः तारा, शकुन्तला व पद्मिनी था। इनके पिता का नाम था शेषो दामोदर पाच्छापुरकर। राघवेन्द्र ५ वर्ष के थे, जब इनके पिता की मृत्यु हुई, और उसके ३ साल बाद इनकी माता भी स्वर्गवासिनी हुईं। और उसी वर्ष प्लेग में इनके ६ भाई-बहनों की मृत्यु हो गयी! बच गयी तारा व शकुन्तला। दो साल के बाद तारा का व सन् १९०७ में शकुन्तला का भी स्वर्गवास हुआ! इन घटनाओं ने राघवेन्द्र को घर से विरक्त कर दिया। तब राघवेन्द्र काशी और वहाँ से बरहज जाकर अनन्त महाप्रभु के सान्निध्य में 'राघवदास' बन गया। आजन्म ब्रह्मचारी रह कर बाल-सुलभ स्वभाव से अपनी मृत्यु पर्यन्त प्रेम और सेवा का जीवन बिताया। उन्होंने अपने जीवन में कितनी संस्थाओं को जन्म दिया, कितनी संस्थाओं को पनपाया, कितने लोगों का जीवन सुधारा, विकसित किया और ऊँचा उठाया, इसकी गिनती करना बड़ा कठिन है। उत्तर बापू ने उन्हें एक बार 'हनुमान' कहा था। उत्तर प्रदेश में वह विनोबा के हनुमान तो थे ही।

अपने अंतिम समय तक प्रतिदिन २४ घंटों में अठारह बीस घंटे काम करना, आवश्यकता पड़ने पर एक-एक दिन में पच्चीस तीस मील तक की पैदल यात्रा करना उन्होंने नहीं छोड़ा। भावुक वह इतने थे कि किसी गरीब का दुःख देख नहीं सकते थे। मथुरा में एक गाँव में यह पता लगा कि त्योहारों के दिन भी उस गाँव के कुछ बच्चों को मीठा खाने को नहीं मिला, तब उन्होंने किसी भी प्रकार का मीठा न खाने का नियम कर लिया। जिन दिनों सरकार ने गेहूँ और चावल पर नियंत्रण रखा था, जब तक नियंत्रण रहा, उन्होंने गेहूँ और चावल नहीं खाया। रेलवे में पानी और हाथ माँजने की मिट्टी की व्यवस्था बाबा राघवदास की स्मृति यात्रियों को सदा दिलाती रहेगी। भारत में बौद्ध तीर्थों का पुनरुद्धार, कुशीनगर का निर्माण कार्य, सारनाथ की इमारतें बाबा राघवदास के स्मारक ही तो हैं। मुरादाबाद में बर्तन के व्यापारी बाबा राघवदास को अपना जीवन-दाता इसलिए मानते हैं कि उनके आग्रह से भारत सरकार ने मुरादाबादी कलई के बर्तनों का नमूना अपने दूतावासों के द्वारा विदेशों को भेजा। फलस्वरूप आज लाखों रुपये के 'मुरादाबादी बर्तन' विदेशों में जाते हैं। गोरखपुर-देवरिया जिलों के अंचल में जूनियर हाईस्कूल और हायर सेकेन्डरी स्कूल, हर स्टेशन पर और हर प्रमुख केन्द्र पर बाबा राघवदास के ही आशीर्वाद के चिह्न हैं। बाबाजी जहाँ गये, जो काम उन्हें जनसेवा का दीखा, उसे उन्होंने उठा लिया। कुष्ठ-रोगियों की सेवा के कार्य को इस युग में महात्मा गांधी के बाद अगर किसीने प्राणवान बनाया तो वह था बाबा राघवदास। गोरखपुर का कुष्ठ सेवाश्रम और उसका कार्य बाबा राघवदासजी की प्रेरणा का परिणाम है। गोरखपुर का गीता प्रेस, कल्याण और गीता रामायण परीक्षा में बाबा राघवदास का सक्रिय सहयोग अंत तक रहा।

बाबा राघवदास ने जनहित का कौनसा काम नहीं किया, यह ढूँढ़ना कठिन है। क्या क्या उन्होंने किया, इसका पता लगाना और भी कठिन है। राजनीतिक क्षेत्र में १९३० में गोरखपुर-देवरिया में नमक सत्याग्रह के वही संचालक थे। १९४२ में तीन वर्ष तक अज्ञात रह कर आन्दोलन का उन्होंने संचालन किया।

ऐसे महापुरुष की पुण्यतिथि और श्रद्धांजलि दिवस के अवसर पर उनके चरणों में हमारा कोटि कोटि प्रणाम।

मंदसौर नगर में सर्वोदय-पात्र

मंदसौर नगर में गत तीन महीने से सर्वोदय कार्य सघन रूप से प्रारम्भ किया गया है। नगर में सर्वोदय-विचार-प्रचार, सर्वोदय पात्र तथा साहित्य बिक्री का कार्य सघन रूप से किया जा रहा है। सर्वप्रथम नगर में शान्ति सेना क्षेत्र के लिए नयी बस्ती को चुना गया। फलस्वरूप बस्ती में प्रभात फेरियाँ, सभाएँ साहित्य प्रचार तथा सर्वोदय-पात्र का कार्य प्रारम्भ किया गया। इस क्षेत्र में १५० सर्वोदय पात्र रखे गये हैं, जो ठीक से चल रहे हैं। प्रथम बार सर्वोदय पात्र के अनाज तथा सिक्कों से कुल ६५ रु० ६९ न० पै० एकत्रित हुए।

यहाँ सर्वोदय-पात्रों का प्रचार करना तो सरल है, परन्तु पात्रों का अनाज तथा सिक्कों का संग्रह एक कठिन कार्य प्रतीत हो रहा है। कारण जब तक सर्वोदय मित्र या अन्य कार्यकर्ता इस उत्तरदायित्व को नहीं सम्हाल लेते, तब तक प्रचार कार्य करना उपयुक्त नहीं होगा। अतः सर्वोदय पात्रों के प्रचार कार्य को स्थगित कर उन्हें व्यवस्थित करने तथा अग्रिम कार्य की आधार-भूमिका बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

कुमारप्पा-जयन्ती

नागपुर : ता ४ जनवरी को नागपुर में श्री कुमारप्पाजी की जयंती अम्बेडकर भवन में मनायी गयी। कताई, सफाई, प्रार्थना सभा आदि के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

खादीग्राम : खादीग्राम के पड़ोसी ग्रामदानी गाँव छलमटिया में श्री कुमारप्पाजी की जयंती के अवसर पर मौन सूत्रयज्ञ में लगभग दो सौ भाई-बहन उपस्थित थे। ५० गुण्डियाँ सूत मद्रास भेजा गया। सबकी ओर से कुमारप्पाजी के स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएँ भेजी गयीं।

गाजीपुर : श्री कुमारप्पा-जयंती के दिन कताई, प्रार्थना और सभा के आयोजन किये गये।

लहरियासराय : दरभंगा जिला सर्वोदय मंडल की ओर से लहरियासराय में श्री कुमारप्पा-जयंती का आयोजन किया गया और श्री कुमारप्पाजी के स्वास्थ्य और चिकित्सा में सहयोग देने की दृष्टि से एक समिति बना कर उस समिति पर अर्थ संग्रह का काम सौंपा गया। १२ जनवरी तक जितना भी अर्थ-संग्रह हो सकेगा, वह कुमारप्पाजी को भेज दिया जायेगा।

इसी तरह मोतिहारी में भी जिला सर्वोदय मंडल की ओर से जयंती मनायी गयी और सारन जिला सर्वोदय मंडल की ओर से भी श्री कुमारप्पा-जयंती का आयोजन किया गया।

ब्रजकिशोर सर्वोदय आश्रम, श्रीनगर (सीवान) जिला सारण (बिहार) में अखंड सूत्र-यज्ञ हुआ।

ग्राम निर्माण मंडल, खादी-ग्रामोद्योग समिति के प्रधान कार्यालय, नया गोदाम, गया ने एक प्रस्ताव स्वीकृत करके श्री कुमारप्पाजी के दीर्घायु की शुभ कामना प्रकट करते हुए उनकी कल्पना को साकार करने के लिए प्रयास करने का संकल्प किया है।

लक्ष्मीनारायण पुरी (पूसा रोड) जि० दरभंगा : सभी रचनात्मक कामों में लगे ६०० कार्यकर्ताओं ने सामूहिक सूत्रयज्ञ करते हुए श्री कुमारप्पाजी की जयंती मनायी।

दरभंगा : सर्वोदय स्वाध्याय केन्द्र में जयंती का आयोजन हुआ। आयोजन में स्थानीय विद्यालयों के शिक्षक भी काफी संख्या में उपस्थित थे।

इस प्रकार देश के विभिन्न भागों में कुमारप्पाजी की जयंती मनाई गई और उनके स्वास्थ्य के लिए कामना की गई।

सूचना :

"भूदान-यज्ञ" का सूतांजलि-अंक

३० जनवरी से १२ फरवरी तक सारे देश में सेवा और रचनात्मक कामों का प्रतीक सर्वोदय-सप्ताह मनाया जाता है। इस निमित्त 'भूदान-यज्ञ' का ता० २९ जनवरी का अंक 'सूतांजलि-अंक' के रूप में प्रकाशित होगा। अतः संबंधित विषय पर लेखकगण अपनी रचनाएँ यथाशीघ्र ता० २१ तक हमारे पास भेज दें। सूतांजलि के संबंध में विचार प्रचार की दृष्टि से यह अंक महत्त्वपूर्ण होगा। सूतांजलि के प्रचार की दृष्टि से काम करने वाले कार्यकर्तागण जितनी प्रतियाँ चाहते हों, उसकी सूचना कृपया शीघ्र भेज दें। सर्वोदय-संस्थाओं से अनुरोध है कि वे 'भूदान-यज्ञ' के इस अंक की सैकड़ों प्रतियाँ मंगा कर सूतांजलि का प्रचार करें। जितनी प्रतियाँ चाहते हों, उसका आर्डर और १३ नये पैसे प्रति अंक के हिसाब से उसकी रकम पेशगी भेजना आवश्यक है। —सं०

सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति की बैठक

तथा खादी-ग्रामोद्योग-समिति की बैठक

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति की बैठक दिनांक ५, ६, ७ जनवरी १९६० को वाराणसी में संघ के प्रधान कार्यालय में हुई। सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, वल्लभस्वामी (अध्यक्ष, सर्व सेवा संघ), शंकरराव देव, दादा धर्माधिकारी, अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, आर्यनायकम्‌जी आदि बीस सदस्य उपस्थित थे।

श्री जयप्रकाश नारायणजी ने सदस्यों को अपनी हाल की विदेश-यात्रा के समाचार सुनाये। इस यात्रा के समय इंग्लैंड में 'फ्रेंड्स ऑफ भूदान' नाम की एक संस्था की स्थापना हुई है, जिसके अध्यक्ष विश्व के विख्यात इतिहासज्ञ प्रोफेसर आर्नोल्ड टॉयनबी तथा श्री जयप्रकाश नारायण बनाये गये हैं। संस्था की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों में विख्यात लेखक आर्थर कोस्लर, 'संडे आबजर्वर' के संचालक डेविड ऐस्टर, डा० शूमाखर आदि प्रमुख व्यक्ति हैं। उस संस्था की तरफ से विदेशों में भूदान कार्य की जानकारी व प्रचार के अलावा भारत में चल रहे काम में सक्रिय योग देने का तय हुआ है। इस सहयोग के अंतर्गत मद्रास राज्य के बतलगुण्डु ग्रामदानी गाँवों के क्षेत्र की योजना तथा बम्बई में बेघरबार लोगों को स्वाश्रय तथा परस्पर सहयोग के आधार पर बसाने की योजना का काम विशेष रूप से लिया जायेगा। सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति ने संस्था का हार्दिक स्वागत करते हुए एक प्रस्ताव स्वीकृत किया है। प्रस्ताव में कहा है कि प्रबंध समिति मानती है कि 'फ्रेंड्स ऑफ भूदान' की स्थापना अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जिससे दुनिया के विभिन्न देशों की जनता को एक-दूसरे के निकट लाने में तथा उनमें एकता तथा बंधुता की भावना पैदा करने में सहायता होगी, जिसकी आज बहुत आवश्यकता है।

प्रबंध-समिति ने वाराणसी में एक "इन्स्टिट्यूट आफ गांधीयन स्टडीज"—गांधी अध्ययन प्रतिष्ठान की स्थापना का भी निर्णय किया, जो गांधी-दर्शन के अध्ययन का अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र बनेगा।

सर्व सेवा संघ की खादी समिति की बैठक ७ जनवरी से आरम्भ हुई, जिसमें श्री ध्वजा प्रसाद साहू, अध्यक्ष खादी-समिति, श्री प्राणलाल कापड़िया, सेक्रेटरी-खादी-कमीशन तथा अन्य सदस्य उपस्थित थे। तय हुआ है कि सर्व सेवा संघ की तरफ से सर्वश्री वैकुण्ठलाल मेहता, शंकरराव देव, ध्वजा प्रसाद साहू, विचित्र नारायण शर्मा तथा अण्णासाहब सहस्रबुद्धे भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू से मिलेंगे और खादी-कार्य की दिशा तथा गति के बारे में संघ के दृष्टिकोण से उन्हें वाकिफ करायेंगे।

सामुदायिक विकास-मंत्रालय के प्रतिनिधियों की तथा सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधियों की एक बैठक १९ और २० जनवरी को नयी दिल्ली में आयोजित की गयी है। सामुदायिक विकास-योजना के ग्रामदान के साथ सहयोग के बारे में अब तक जो प्रगति हुई है तथा जो कठिनाइयाँ आयी हैं, उस संबंध में विचार-विनिमय होगा और आगे के कार्यक्रम के संबंध में निर्णय किये जायेंगे।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की खादी ग्रामोद्योग-समिति की बैठक ता० ७, ८ तथा ९ जनवरी को साधना केन्द्र काशी में सम्पन्न हुई। पूसा निवेदन के संदर्भ में प्रान्तों में चल रहे काम के सिंहावलोकन के साथ आगे के काम की संयोजना की दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण निश्चय इस बैठक में किये गये। तीसरी पंचवर्षीय योजना में खादी ग्रामोद्योगों का स्थान, संस्थाओं को प्रमाण पत्र, ग्रामदानी गाँवों में वस्त्र-स्वावलम्बन सहायता, साहित्य-प्रचार तथा आज के खादी काम को ग्राम स्वराज्य की ओर मोड़ने आदि विषयों पर विस्तार से चर्चाएँ हुईं। समिति ने पूसा-निवेदन में निर्देशित खादी-काम के नये कार्यक्रम को व्यवहार में लाने के संबंध में एक प्रतिवेदन भी स्वीकृत किया।

खादी-समिति की इन बैठकों में सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, शंकरराव देव, वल्लभस्वामी, आर्यनायकम्‌जी, रा. कृ. पाटील, अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, प्राणलाल भाई कापड़िया, करणभाई, सिद्धराज ढड्ढा, पूर्णचन्द्र जैन, रामेश्वर अग्रवाल तथा कपिलभाई आदि सम्मिलित हुए। श्री ध्वजा प्रसाद साहू ने अध्यक्षता की।

समिति ने निर्णय लिया कि गाँव के अस्सी प्रतिशत लोग यदि ग्राम संकल्प की घोषणा करते हैं, तो उसे ग्राम संकल्पी गाँव माना जा सकता है। ऐसे गाँवों में भी खादी कमीशन वस्त्र-स्वावलम्बन के लिए समुचित सहायता दे, यह तय हुआ। खादी ग्रामोद्योग संस्थाओं को प्रमाण-पत्र दिये जाने का काम अब तक खादी-कमीशन के हाथ में था। समन्वय समिति के निश्चय के संदर्भ में खादी समिति ने इस उत्तरदायित्व को उठाने के लिए अपनी तैयारी व्यक्त की।

समिति ने सर्वोदय साहित्य प्रचार को खादी काम का आवश्यक अंग स्वीकार किया है। समिति ने खादी संस्थाओं से अपील की है कि वे इस प्रवृत्ति को तत्परता से आगे बढ़ायें। इसी प्रकार खादी ग्रामोद्योगों के प्रयोग कार्य तथा कार्यकर्ता प्रशिक्षण के संबंध में भी विचार विमर्श हुआ।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रम पर विस्तार से विचार करने के लिए एक समिति का गठन किया गया। यह समिति एक स्मरण-पत्र तैयार करेगी।

खादी-समिति के बढ़ रहे काम के सरल संचालन के लिए काशी में ही समिति का कार्यालय रखने का निश्चय रहा। सर्वश्री करणभाई तथा रामस्वरूप गुप्ता समिति के सहमंत्री मनोनीत किये गये।

सर्वोदय-सम्मेलन की तारीखें

पहले अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन का १२ वाँ अधिवेशन आगरा के पास होने वाला था। पर अब सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति ने यह निर्णय लिया है कि यह सम्मेलन सेवाग्राम (वर्धा) में किया जाय। इस निर्णय के अनुसार २२ से २४ मार्च १९६० तक सेवाग्राम में सर्वोदय सम्मेलन होगा। सम्मेलन संबंधी सारी कार्रवाई भी सेवाग्राम कार्यालय से ही होगी। कन्सेशन आदि की कार्रवाई भी शीघ्र ही पूरी की जा रही है। जिन जिन स्थानों से कन्सेशन सर्टिफिकेट प्राप्त किये जा सकेंगे, उन स्थानों की नामावली अगले अंक में प्रकाशित की जायेगी। सम्मेलन से पहले १६ से २१ मार्च तक अ० भा० सर्व सेवा संघ की आम सभा भी सेवाग्राम में ही होगी।

—राधाकृष्ण, सम्मेलन-मंत्री

गुजरात सर्वोदय-पदयात्रा

विनोबाजी के जाने के बाद गुजरात में एक नया जोश और उत्साह पैदा करने के लिए अखंड पदयात्रा का आयोजन हमने शुरू किया है। इस पदयात्रा में हम गाँव, कस्बा और नगरों का समावेश करते हैं। आवश्यकतानुसार ठहर कर सर्वोदय विचार कैसे फैले, इसका प्रयत्न करते हैं। गाँव और नगरों के बीच कैसे एकता और सहकार हो, यह बात हम विचार शिविर, लोक सभाएँ, वार्तालाप, गोष्ठियाँ और मोहल्ला-सभा के द्वारा समझाने की कोशिश करते हैं।

शब्द और कृति, दोनों की ताकत है। इसलिए जगह-जगह पर सफाई, स्वच्छता, रास्ता बनाना आदि समूह-श्रम के काम भी हम लोगों के साथ मिल कर करते हैं। भूदान, संपत्तिदान, श्रमदान, ग्रामदान, ग्रामस्वराज और शान्ति सेना का विचार समझा कर इसको चरितार्थ करने के लिए सर्वोदय मित्र और उनके मंडल बनाने की कोशिश करते हैं।

पदयात्रा का आयोजन श्री हरीश व्यास और श्री जगदीश लाखिया करते हैं। साथ में अलग-अलग जिले के पाँच सात भाई बहनें भी रहती हैं। इस यात्रा में अनेक विषयों पर अध्ययन भी यात्रियों के लिए होता है। इससे हमारे चिंतन की गहराई और उत्साह बढ़ता जाता है। यात्रा के खर्च की पूर्ति लोगों द्वारा और साहित्य बिक्री के द्वारा सहज ढंग से होता है।

अभी तक हमने कुल ३६ दिन में १०७ मील की पदयात्रा की है। १३ विचार-शिविर चलाये, १०८ सभा वार्तालाप, 'भूमिपुत्र'-'क्षितिज' आदि पत्रों के ४१० ग्राहक बनाये, ६०० रु० की साहित्य बिक्री की, गाँव के लोगों को इकट्ठा करके ९ दिन श्रमयज्ञ किये। स्व० किशोरलाल मशरूवाला की पुस्तक 'सत्यमय जीवन' का समूह में अभ्यास किया और कुछ अध्ययन वर्ग भी चले, जिसमें हमारे साथियों का प्रशिक्षण' का कार्य भी चला।

—सुमन्तभाई व्यास

•

'समन्वय-तीर्थ'

महाराष्ट्र के कुलाबा जिले में उरण नाम का एक गाँव है। सर्व सेवा संघ के पुराने कार्यकर्ता श्री गोविन्दराव ने इस गाँव में 'समन्वय-तीर्थ' के नाम से एक आश्रम की स्थापना की है। सहजीवन और सह-अध्ययन के प्रयोग की दृष्टि से इस आश्रम की प्रवृत्तियाँ चलेंगी। श्री गोविन्दराव लिखते हैं कि "सर्वोदय-साधना की गहराई में ले जाने के लिए ही इस आश्रम की स्थापना की गयी है। सर्वोदय के जीवन-तत्त्वों के संशोधन के लिए दुनिया भर में प्रयोग शालाओं की जरूरत है। उरण का यह आश्रम उसी दिशा में एक नम्र प्रयत्न है।"

•

सर्वोदय-पात्र

विकनवरा पूर्व खान क्षेत्र में पिछले चार माह के दरमियान २४० सर्वोदय पात्रों की स्थापना की गयी और १६५ रु० कीमत के चावल का संग्रह किया गया।

यहाँ नवम्बर माह में आयोजित शांति-सेना शिविर के दरमियान एक शांति सेना इकाई और एक महिला समाज की स्थापना की गयी। श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम्‌ ने उसका उद्घाटन किया। प्रत्येक शुक्रवार को आसपास के गाँवों में यह शांति-सेना सामूहिक प्रार्थना-सभा का आयोजन करती है। महिला समाज के निर्देश में एक बाल-मंदिर भी चल रहा है।

भूदान और श्री पंजाबराव देशमुख के विचार

दामोदरदास मूँदड़ा

दिल्ली में एक सभा में भाषण करते हुए कृषि-मंत्री श्री पंजाबराव देशमुख ने कहा :

"सीलिंग द्वारा प्राप्त होने वाली जमीन का बँटवारा भूमिहीनों में नहीं करके, छोटे भूमिवालों में करना चाहिए और इस प्रकार उनकी आर्थिक जोत पूरी करनी चाहिए। भूमिहीनों का बोझ भूमि पर बढ़ाने की बजाय उन्हें उद्योगों में काम दिया जाना चाहिए।"

उन्होंने आगे कहा :

"भूमिहीनों को भूमि प्राप्त करा देने का मानसिक संतोष प्राप्त करा देना काफी नहीं है। भूदानी कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वितरित जमीन में उत्पादन बढ़ता है या नहीं, इस ओर भी ध्यान दें।"

उपरोक्त समाचार 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के ता० २२ दिसम्बर के अंक में प्रकाशित हुए हैं।

भूमिहीनों को भूमि न देकर कम आर्थिक जोत वालों की आर्थिक जोत पूरा करने की कल्पना नयी नहीं है। प्रचलित अर्थशास्त्री सदा से यही कहते आये हैं। उत्तर प्रदेश में जब भूदान-कानून बनने को था तो पंतजी के सचिवालय ने भूदानी जमीन के बँटवारे के सम्बन्ध में भी यही बात उठायी थी। फिर लखनऊ में सचिवालय के अधिकारियों के साथ विनोबा का वार्तालाप हुआ। 'हरिजन' में वह वार्तालाप प्रकाशित हुआ है। उत्तर प्रदेश सरकार ने अंत्योदय की कामना को माना और भूदान-कानून में जमीन के बँटवारे की भूदानी-नीति का ही अवलंबन किया। बिहार सरकार ने तो घोषणा ही कर दी कि सरकारी जमीनें भी भूदान की नीति के अनुसार ही बँटेंगी। अन्य प्रान्तों में भी इसी नीति को अख्तियार किया गया है। बंगाल में विधान बाबू और दिल्ली में श्री पंजाबराव भिन्न राय रखते हैं।

यह भिन्न राय केवल जमीन के बँटवारे की हद तक महदूद नहीं है। सरकार और सर्वोदय, दोनों के दृष्टिकोण में मूलभूत फरक होने के कारण यह प्रश्न उठता है। सरकारी योजनाओं में श्रीमान् अधिक श्रीमान् होते हैं, गरीब अधिक गरीब होते हैं, ऐसा अनुभव पिछली दोनों योजनाओं का है। प्रारम्भ कहाँ से किया जाय, यह मूलभूत सवाल है। भूमिहीनों को जमीन देने की बात भी सरकार मान ले तो भी किसको पहले दी जाय? एक के पास बैल-जोड़ी मौजूद है, दूसरे के पास कुछ भी नहीं है। बैल-जोड़ी वाले को जमीन देना इसलिए लाभदायी है कि वह तत्काल उससे पैदावार ले सकेगा। बिना बैल-जोड़ी के भूदानी जमीन पर क्या पैदा होगा? भूदान का उत्तर है कि भूदानी जमीन पर पहला अधिकार अत्यन्त साधनहीन भूमिहीन का है। यह फैसला हमारा नहीं है, भूमिहीनों का है। जहाँ भूमि कम होती है और भूमिहीनों की संख्या अधिक होती है, वहाँ पहला हकदार कौन, इसका फैसला भूमिहीन ही आपस में करते हैं और सबसे अधिक साधनहीन का पहला हक माना जाता है। लोकन्यायालय का यह फैसला भी श्री देशमुख साहब को स्वयं जाकर देखना चाहिए।

दूसरा सवाल श्री देशमुख साहब ने उठाया है—भूदानी जमीन में पैदावार बढ़ाने के बारे में। उनकी इस राय से असहमत होने का कोई कारण ही नहीं है। जमीन दी ही इसलिए है कि उसमें पैदावार बढ़े। कैसी पैदावार बढ़ी है, इस बात की तसदीक प्लैनिंग कमीशन के प्रतिनिधियों ने स्वयं भूदानी गाँवों में जा-जाकर कर ली है। बोधगया के पास सेखवारा, कोशिला, जानीबिघा, गुरपावाँ आदि गाँवों में प्लैनिंग कमीशन के लोग हो आये हैं। अनेक गाँवों में यही अनुभव हुआ है। ऐसे कुछ गाँवों में चलने का कष्ट श्री देशमुखजी करें तो वे स्वयं भी इन परिणामों को देख सकेंगे।

लेकिन सवाल इतने से हल नहीं होता। भूदान द्वारा भूमि का वितरण होने के बाद उत्पादन निर्माण करने के लिए या तो उसे बढ़ाने के लिए साधनों की आवश्यकता होती है। बैल, बीहन, कुआँ आदि साधनों के अभाव में उत्पादन में वृद्धि नहीं की जा सकती। इस प्रकार साधन जुटाने में समाज के सभी घटक सहयोग दें, यह वांछनीय है। समाज के विभिन्न घटकों में सरकार का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। परन्तु अनुभव क्या आता है? भूमिपुत्र अपनी सहकारी समिति बनाते हैं तो उसे रजिस्टर करने में महीनों बीत जाते हैं। रजिस्ट्री होती भी है तो उस भूमिवान को कर्ज नहीं मिलता, क्योंकि उसके पास की भूदानी जमीन को कर्ज के लिए पर्याप्त 'सिक्यूरिटी' नहीं माना जाता। मंत्रियों के पास अर्जियाँ देकर महीनों बीत जाते हैं, उपयोग नहीं होता। कार्यकर्ता थक जाते हैं। वास्तव में किसी साधारण किसान को जो सुविधाएँ सरकार से उपलब्ध होती हैं वे सारी तुरत इस भूदानी किसान को भी हो सकनी चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं होता। क्या श्री देशमुख साहब इधर भी ध्यान देने का कष्ट करेंगे?

श्री देशमुखजी का एक प्रश्न और रह जाता है कि भूमि पर अधिक बोझ न बढ़ा कर भूमिहीनों को उद्योगों में लगाया जाय। भूदान को इसमें कोई विरोध नहीं है। परन्तु आज तो सरकारी नीति ऐसी है कि न तो भूमिहीनों को भूमि मिल रही है, न उद्योग। भूदान को केवल इतने से सन्तोष नहीं कि भूमि का बँटवारा कर दिया जाय। भूदान की नीति के अनुसार भूमिपुत्र को अपनी जमीन में पैदा होने वाले कच्चे माल से आवश्यकता का पक्का माल भी तैयार कर लेना है। गाँव में गाँव के उद्योग चलने चाहिए। भूमि की और बेकारी की समस्याएँ एकसाथ हल होने की इस प्रक्रिया की ओर अब तक देहलीवालों का ध्यान नहीं गया, यह देश का दुर्भाग्य है। क्या तीसरी पंचवार्षिक योजना बनाते समय इन बातों की ओर—जो प्रयोगावस्था में नहीं हैं, प्रमाण सिद्ध हैं—ध्यान दिया जायगा? देश की अर्थनीति तय पाये बिना देहातवालों का इधर ध्यान जाना कुछ कठिन ही प्रतीत होता है। भूदान-कार्यकर्ताओं की सच्ची कसौटी यहीं होने वाली है।

०००

उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय युवक-सम्मेलन

वाराणसी में आयोजित प्रदेशीय सर्वोदय युवक सम्मेलन के प्रथम वार्षिक अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव उत्तर प्रदेश की छात्र-समस्याओं के विषय में सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया :

"प्रदेशीय सर्वोदय युवक सम्मेलन, इस प्रस्ताव द्वारा, राज्य की वर्तमान छात्र-परिस्थितियों पर खेद प्रगट करता है और विश्वविद्यालय जैसी पवित्र संस्था में शासन द्वारा हस्तक्षेप किये जाने की प्रवृत्ति को अनुचित मानता है। सम्मेलन का विचार है कि छात्र-समुदाय के बीच जो कथित अनुशासनहीनता तथा उच्छृंखलता आदि समस्याएँ हैं, उनका कारण हमारे समाज की वर्तमान आर्थिक और सामाजिक असमानता है। दोषपूर्ण शिक्षा-पद्धति के कारण ही छात्रों का भविष्य अन्धकार में रहता है। सत्ता हथियाने के लिए राजनैतिक दलों द्वारा छात्रों पर अधिकार करने की प्रवृत्ति से छात्रों के बीच आपसी कटुता उत्पन्न होती है, जो आगे चल कर विकराल रूप धारण करती है। अध्यापक और शिष्य के बीच युगों से चले आ रहे पवित्र सम्बन्ध भी इन्हीं तमाम कारणों से बिगड़ते जा रहे हैं।

अतः सम्मेलन इस प्रस्ताव द्वारा राज्य-सरकार से अनुरोध करता है कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सीमा से सशस्त्र पुलिस हटा लें और यथाशीघ्र प्रदेश के दोनों प्रमुख विश्वविद्यालयों को खुलवाने की व्यवस्था करें, जिससे छात्रों के अध्ययन कार्य में बाधा न उत्पन्न हो सके। साथ ही साथ सम्मेलन यह भी माँग करता है कि ऐसे प्रयास सरकार, शिक्षाविदों तथा समाजसेवियों द्वारा किये जायँ, जिनसे वर्तमान शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन हो सके और छात्र-समुदाय अपने भविष्य की ओर विश्वास के साथ बढ़ सकें।

सम्मेलन छात्र बन्धुओं से भी विनम्र निवेदन करता है कि अपनी समस्याओं का समाधान आपसी सहयोग द्वारा शांतिपूर्ण प्रयासों से हल करें। हिंसा का प्रयोग अधिकारी या छात्र, दोनों के लिए ही गलत है और हमारी राष्ट्रीय एकता की भावना में घातक सिद्ध होगा।"

यह सम्मेलन वाराणसी के डी. ए. वी. कालेज में आयोजित किया गया था। सम्मेलन का शुभारंभ श्री प्यारेलालजी ने और समारोप श्री जयप्रकाश नारायण ने किया। अधिवेशन ने नये सत्र के लिए निम्नलिखित पदाधिकारियों का चुनाव सर्वसम्मति से किया—श्री अखिलेश कुमार (अध्यक्ष), श्री रामचन्द्र सिंह (उपाध्यक्ष), श्री शरदकुमार द्विवेदी (मंत्री), श्री विजयशंकर टंडन (प्रधानमंत्री) तथा श्री फौजदार सिंह त्यागी (कोषाध्यक्ष)।

विनोबाजी का अज्ञात संचार

जैसा कि पाठकों को मालूम है, विनोबाजी इस समय पंजाब और राजस्थान की सरहद पर पदयात्रा कर रहे हैं। ता० २९ दिसम्बर को उनका पड़ाव राजस्थान के हनुमानगढ़ कस्बे में था। वे २ जनवरी को पहलवाद में रहे और ७ जनवरी को सिरसा से १० मील दूर निरवाण गाँव में पड़ाव रहा।

विनोबाजी का पता :

मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल,

पो० पट्टी कल्याण, जिला करनाल (पंजाब)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, टे० नं [illegible]
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति १२ नये पैसे

भूदान-यज्ञ साप्ताहिक

संपादक
सिद्धराज ढड्ढा

सूतांजलि : सेतुबंध

चित्रकार : अनिल भाई

स्वतंत्र भारत की नीति क्या हो ?

भारत के लाभ के लिए किसी और देश को चूसने का पाप हम नहीं करेंगे, क्योंकि शोषण से हमारी जो बरबादी हुई है, उसका हमें पूरा अनुभव है। परन्तु कोई भी देश स्वतंत्र रूप से हमारी मदद मांगे तो हम अवश्य देंगे—लेकिन पड़ोसी-धर्म के रूप से, न कि किसी का शोषण करने के लिए।"

भारतवर्ष आजकल अमरीका को कच्चा माल भेजता है। इससे हमें कितनी हानि उठानी पड़ती है? हमारे तमाम उद्योगों का नाश हो गया है। परन्तु मैं तो यह अपेक्षा रखता हूँ कि अमरीका देश यह न समझे कि हिन्दुस्तान चूसने के लिए है परन्तु यह समझे कि अहिंसक और निःशस्त्र होने पर भी वह एक स्वतंत्र देश है। भारत से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना चाहिए। अगर आप मुझसे सम्मानपूर्ण व्यवहार की आशा रखते हैं, तो मुझे आपके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए। हम याचकता में कुशलता नहीं रखते। आप यदि ईसा का उपदेश मानें तो मुझे आपसे इतनी प्रार्थना करनी है कि हममें कुशलता की कमी हो तो हमारे लाभ के लिए आप हमें कुशलता सिखा जाइये, परन्तु [illegible] हमारा शोषण करके नहीं।

आज तो आपने हमें ऐसा बना दिया है कि आपकी मोटर के अभाव में और आपकी भोग-विलास की वस्तुओं के अभाव में हमारा काम नहीं चल सकता। हमें आपने इतना पंगु बना दिया है। इसके बजाय आप गाँवों में जाकर वहाँ के दुःख-सुख समझ कर उनका ठीक उपाय ढूँढ़ने का प्रयत्न करते, पाठशालाएँ, पुस्तकालय, दवाखाने आदि परोपकार के काम करते, तो वे निर्दोष माने जाते। ऐसा काम करते तो आपका भगवान ईसा के उपदेशानुसारी होने का दावा सच्चा ठहरता। परन्तु मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि इसमें न तो आपको कोई फायदा है, न हमें कोई फायदा है।

मैं तो अपने पर हमला करने वाले से कहूँगा कि आप मेरे स्थान का, मेरे घरबार का और मेरा भी नाश कर दें, तो भी मेरी आत्मा का नाश नहीं कर सकते। मैं किसी के हथियारों से अपने देश का बचाव नहीं करूँगा। मेरी चले तो पुलिस के हाथों में बन्दूकों के बजाय मैं कुदाली-फावड़ा दूँगा, जिससे वे खेती करने लग जायें। अहिंसक देश को इस बात की चिन्ता ही नहीं होगी कि कोई उस पर चढ़ाई करेगा, क्योंकि देश में प्रत्येक व्यक्ति को अपने को [illegible] होगी। मैं मानता हूँ कि अहिंसा केवल व्यक्तिगत सद्गुण नहीं है। व्यक्ति, समाज और देश सबके लिए वह आध्यात्मिक और राजनैतिक आचरण का एक सुगम मार्ग है।

(५-४-४७)

—गांधीजी

• ० •

सूतांजलि : एक राष्ट्रीय उपासना

गांधीजी ने गंगाबाई का एक भजन कहा था, "काचे तांतणे रे मने हरिये रे बांधी जेम ताणे तेम रहिये रे।"—एक कच्चा धागा है, कच्चे धागे में मुझे बांधा है और वह इतना मजबूत है कि उसके बल से भगवान मुझे खींचता है, उस पर मैं खिंच जाती हूँ, ऐसा गंगाबाई कहती है। गांधीजी ने कहा था कि देश के सामने एक ऐसी उपासना चाहिए कि देश के लिए बच्चा बच्चा कहे कि हम देश के लिए कुछ तो करते हैं। छोटा बच्चा भी कहे कि देश के वास्ते मैंने कुछ किया और फिर भोजन किया, ऐसी कोई राष्ट्रीय उपासना चाहिए। धार्मिक, पांथिक उपासनाएँ तो होती हैं, जो भेद पैदा करती हैं। पर सारे राष्ट्र में अभेद पैदा करने वाली एक उपासना होना चाहिए। इसका विचार कर उन्होंने कातने की उपासना हमें बतायी। यह इतनी आसान चीज है कि किशोरलाल भाई जैसा मनुष्य भी, जो रोज सुबह समझता था कि शाम तक शायद मर जाऊँगा और ऐसी हालत में जिसके बीसों वर्ष [illegible] बीते, कुछ न कुछ पैदावार करता गया, उत्पादन करता गया। मेरा ख्याल है कि अपने कपड़े के लिए वे काफी सूत कातते होंगे। हाँ, ऐसे कमजोर, बीमार मनुष्य भी उत्पादक बनें, ऐसा एक सुन्दर औजार उन्होंने हमारे सामने रखा और कहा कि यही राष्ट्रीय उपासना चले।

इसके भी गांधीजी की स्मृति में—यह एक निमित्त है—६४० तार, एक गुंडी, एक [illegible] हाथ से [illegible] है। अब इसका प्रचार आप सब लोग क्यों न करें!

—विनोबा

गांधीनिर्दिष्ट मार्ग

दादा धर्माधिकारी

बारह वर्ष पहले, ता० ३० जनवरी के दिन गांधीजी की विभूति विश्वात्मा में लीन हो गयी। इस बारह वर्ष की अवधि में हमने उनके बताये हुए सर्वकल्याण-कारी मार्ग पर कितनी प्रगति की है, इसका विचार अंतर्मुख होकर करना आवश्यक है।

जहाँ तक राज्यकर्ताओं का सम्बन्ध है, उनकी नीति और प्रत्यक्ष व्यवहार से तो यही प्रतीत होता है कि प्रशासन, सुप्रबन्ध और आर्थिक उत्कर्ष के लिए उन्होंने गांधीजी की नीति, कार्यक्रम और योजनाओं को अप्रस्तुत ही नहीं, बल्कि अश्रेयस्कर माना है। सेना, पुलिस, निरीक्षण, प्रेक्षण, न्यायालय तथा कारागारों का खर्च और प्रपंच उत्तरोत्तर कम होने के बदले नित्य बढ़ रहा है। सत्ताधारी कांग्रेस पक्ष यह संपूर्ण प्रामाणिकता के साथ कह सकता है कि उसने गांधीजी के मार्ग का स्वीकार संपूर्ण रूप से समाज-व्यवहार के नियामक तत्त्व के नाते कभी नहीं किया था, इसलिए आज उसकी नीति गांधीजी के प्रति या स्वयं अपने प्रति प्रवंचना या प्रतारणा की नहीं है।

इसके लिए हरएक सत्ताधारी पक्ष अपने समर्थन में गांधीजी के लेखों से या ग्रन्थों से प्रमाण उपस्थित कर सकता है। जब-जब लोकसमुदाय का प्रक्षोभ अनि-यंत्रित आसुरी हिंसा में प्रस्फुटित हुआ, ऐसे समय गांधीजी ने शासन द्वारा विधानविहित बल-प्रयोग का एकान्तिक निषेध नहीं किया। राष्ट्र रक्षण का प्रश्न उनसे कई बार पूछा गया, तब कुछ प्रसंगों में उन्होंने यह भी कहा कि भारत ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए अहिंसात्मक नीति का एक मर्यादित अवधि तक स्वीकार किया है। मैं नहीं जानता कि स्वतंत्रता के संरक्षण के लिए भी वह उसी का अवलम्बन करेगा या नहीं। इस प्रकार के उनके वाक्यों का आधार तो लिया ही जा सकता है। कहा जाता है कि कश्मीर-प्रकरण में भारत सरकार ने जब अपना सैन्य भेजा तो गांधीजी की अनुज्ञा से भेजा। दिल्ली और अन्य शहरों में मुसलमानों की जमात के साथ जब अत्याचारी व्यवहार होने लगा तो गांधीजी ने एकआध प्रसंग से यह भी कहा कि ऐसे समय पर सरकार को या तो अपनी पूरी शक्ति से काम लेना चाहिए, या फिर राज्य-संन्यास ही कर देना चाहिए। इस प्रकार के प्रसंगोपात्त उद्गारों का हवाला सचाई के साथ दिया जा सकता है।

लेकिन हम सबको यह मानना होगा कि कुछ अप-वादात्मक परिस्थितियों में तात्कालिक विवशता के कारण गांधीजी ने विधानसम्मत हिंसा के मर्यादित प्रयोग के लिए अनुमति भले ही दी हो, फिर भी कुल मिला कर उनका यह उद्देश्य और प्रयत्न रहा कि राज्य प्रबन्ध और प्रशासन में भी हिंसा की मात्रा यथाशीघ्र कम होती जाय। जो लोग गांधीजी के अहिंसा के तत्त्वज्ञान में विश्वास नहीं करते, वे भी यह तो मानते और कहते हैं कि सेना, पुलिस, जेलखाने और अदालतों का खर्च जिस अनुपात से कम होगा, उसी अनुपात में नागरिक जीवन में सभ्यता के संस्कारों का विकास होगा। इस दृष्टि से भी इन बारह वर्षों में राजनैतिक जीवन में हमारा जो मार्ग-क्रमण हुआ है, उसे पुच्छ प्रगति ही कहना होगा।

इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि सत्तावादी पक्षों ने सत्ता की प्राप्ति और संरक्षण के लिए वोट जुटाने की जितनी फिक्र की, उतनी फिक्र लोकमत की प्राण-प्रतिष्ठा और आदर करने की नहीं की। गरीबी और बेकारी दूर करने के लिए गांधीजी ने जिन व्यवहार-सुलभ तरीकों का निर्देश किया था, उनका स्वीकार भी नहीं किया गया। इसलिए किसान-मजदूर तथा दूसरे परिस्थितिपीड़ित साधारण नागरिकों के मन में लोक-राज्य के विषय में अभिमान और विश्वास पैदा नहीं हो सका। गांधीजी भारतवासियों के विधिवत् निर्वाचित प्रतिनिधि नहीं थे। वे भारतवासियों के हृदयासीन वास्तविक प्रतिनिधि थे। हमें अन्तर्मुख होकर यह सोचना चाहिए कि औपचारिक और वास्तविक प्रतिनिधित्व में यह जो अन्तर है, उसे पाटने का प्रयास हमने लोक-तन्त्र के क्षेत्र में कहाँ तक किया है।

दूसरी तरफ वे लोग हैं, जो लोकमत और लोकहित के नाम पर आये दिन सरकार का विरोध करते हैं और नानाविध स्वरूप के सत्याग्रहों का प्रयोग करते हैं। अपनी नीति और आचरण के समर्थन में प्राय. वे गांधीजी का यह वाक्य उद्धृत करते हैं कि कायरता से हिंसा बेहतर है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि गांधीजी ने किसी प्रसंग में आपाततः यह वाक्य कह दिया था। उस वाक्य में अहिंसा का मूलभूत सिद्धान्त ग्रथित है। इस दृष्टि से उसे सत्याग्रह की प्रक्रिया का सूत्र वाक्य भी कह सकते हैं। परन्तु उसमें हिंसा की प्रशस्ति नहीं है। भीरुता का धिक्कार है। जिस प्रकार हिंसा में क्रूरता, निर्घृणता और द्वेष हो सकता है, उसी प्रकार अहिंसा में कायरता, शिथिलता, जड़ता और मुर्दगी हो सकती है। जिस हिंसा में वैर वृत्ति न हो, क्रूरता और हृदयहीनता का अभाव हो, उस हिंसा में हिंसा की अपेक्षा वीरश्री का अंश अधिक होता है, उसके प्रयोग में यह निरन्तर और प्रामाणिक प्रयत्न होता है कि अपने लिए संकट तथा खतरा अधिक-से अधिक हो और प्रतिपक्षी की हानि तथा हिंसा कम से कम हो। ऐसी वीरश्रीयुक्त हिंसा को उन्होंने पुरुषार्थहीन नि सत्त्व अहिंसा से श्रेयस्कर बतलाया। अभिप्राय यह था कि शस्त्र-प्रयोग में और जो रणक्षेत्र में जो निर्भयता और वीरता होती है, कम से कम उतनी अहिंसात्मक आचरण में होनी चाहिए। क्योंकि उसके बाद उनका दूसरा वाक्य यह है कि हिंसा से अहिंसा अनन्त गुनी श्रेयस्कर है। तात्पर्य यह है कि जिस हिंसा में उत्सर्ग और बलिदान का भाव है उस हिंसा से भी द्वेषरहित और प्रेमप्रेरित अहिंसक प्रतिकार कहीं अधिक श्रेयस्कर है, क्योंकि वीर की हिंसा में भी किसी-न किसी अंश में शस्त्र निर्भरता होती है। सशस्त्र वीरता तभी परिनिष्ठित मानी जाती है, जब कि निःशस्त्र होने पर भी वह हतवीर्य नहीं होती, तेजोहीन नहीं होती। सशस्त्र वीरता की अंतिम प्रतिष्ठा शस्त्रनिरपेक्ष शूरता में ही है। शस्त्र-निरपेक्ष वीरता आत्मनिर्भर और आत्म-सम होती है। अतएव हमको अपना कदम कायरता से सशस्त्र वीरता की दिशा में बढ़ाने के बदले शस्त्र-निरपेक्ष आत्मप्रत्ययसम्पन्न वीरता की दिशा में बढ़ाना चाहिए। नि.शस्त्र प्रतिरोध भी हिंसक हो सकता है। निःशस्त्र प्रतिरोध भी उतना ही निर्दय, सहानु-भूतिशून्य और कुटिल तथा द्वेषयुक्त हो सकता है, जितना कि सशस्त्र प्रतिरोध। उस अवस्था में उस प्रतिरोध को कायरता से बेहतर समझ कर उसे उपादेय तथा प्रशस्त मानना बहुत बड़ा अनर्थ होगा। जहाँ लोग अत्यन्त अल्प संख्या में होते हुए भी साहस और शौर्य के साथ अपनी अपेक्षा अधिक संख्याबल तथा शस्त्रबल से सुसज्जित प्रतिपक्षियों का मुकाबला शस्त्रास्त्रों से करते हैं, वहाँ उन्हें शस्त्रबल की बनिस्बत आत्म-बल का ही भरोसा अधिक करना पड़ता है। ऐसी विशेष परिस्थिति में गांधीजी ने कहा था कि उन अल्पसंख्य और अल्पशस्त्रसम्पन्न लोगों का हिंसक प्रतिरोध भी अहिंसक प्रतिरोध के निकट का पर्याय माना जायेगा।

आज तो संसार के अधिकांश देशों के लिए सशस्त्र संरक्षण प्रायः अव्यवहार्य हो गया है। ऐसी परिस्थिति में यदि हम यह कहते रहें कि पुरुषार्थहीन निष्क्रिय अहिंसा से हिंसा अधिक श्रेयस्कर है, तो उससे लोगों में आत्मप्रत्यय और वीर वृत्ति का विकास नहीं होगा। आत्मप्रत्ययहीन हिंसा जब असफल होती है तो उसका परिणाम लोगों को हतबल बनाने में और सारे राष्ट्र के आत्मनाश में होता है। इस दृष्टि से इस अवसर पर हम सबका यही परम कर्तव्य है कि भारतवर्ष के निवासियों में स्वाभिमान, स्वतन्त्रता तथा आत्म मर्यादा के रक्षणार्थ बड़े से-बड़े त्याग और बलिदान के लिए तत्पर रहने की भावना का विकास करें। नागरिकों में जो पारस्परिकता और एकात्म भाव होता है वह राष्ट्र का अजेय दुर्ग है। इसके लिए गांधीजी के बतलाये हुए अहिंसात्मक पुरुषार्थ के सिवा दूसरा कोई कल्याण मार्ग नहीं है। विद्यार्थियों को, मजदूरों को, राजनैतिक दलों को और अन्य नागरिकों को अपने सभी आन्दोलनों में उस मार्ग की मर्यादाओं का सतत अभिमान रखना चाहिए। गांधीजी की द्वादशवर्षीय पुण्यतिथि मनाने का यही तरीका है।

काशी, २४-१-६०

तीस जनवरी १९४८

सिद्धराज ढड्ढा

उन दिनों मैं जयपुर में दैनिक 'लोकवाणी' का सम्पादन करता था। शाम होने आ रही थी। दिन में छपने वाले पृष्ठों का 'मेकअप' हो चुका था और रात के पृष्ठों का काम शुरू होने के पहले एक दो घंटे का जो अवकाश मिला था, उसमें योजना आदि करके रात को फिर से दो-चार घंटे काम पर लगने की तैयारी कर लेनी थी। कोई साढ़े पाँच बजे होंगे। मैं ऊपर के अपने कमरे में योजना कर रहा था। 'लोकवाणी' का प्रेस और कार्यालय आदि सब मेरे मकान में ही नीचे था। दफ्तर के लोग सब जा चुके थे, सिर्फ सम्पादकीय विभाग में मेरे एक सहायक काम कर रहे थे।

अचानक घबराई हुई सी आवाज में उन्होंने नीचे से पुकारा "भाईसाहब, भाईसाहब!" खाने-खाने ही उठ कर मैंने खिड़की में से पूछा—"क्या क्या है!" सहमी-सी आवाज में उन्होंने जवाब दिया—"गांधीजी मर गये!"

"हैं! क्या, कैसे?"—आवाज तो निकली, पर अन्दर कलेजा धक्-धक् कर रहा था। कानों ने सुना, पर कैसे कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था।

"मैं रेडियो पर खबरें सुनने की कोशिश कर रहा था। अभी-अभी बीच में रेडियो ने यह खबर दी। किसी ने महात्माजी को गोली मार दी।"—मेरे सहयोगी ने कहा।

अचानक जैसे बिजली गिरने से होता होगा, वैसा हुआ। सब सुन्न हो गया। इतने में टेलीप्रिंटर पर भी 'टप्-टप्' होने लगा और केवल दो पंक्तियों का वह समाचार करीब २०-२५ बार उस पर छपता रहा।

[शेष पृष्ठ-संख्या २ पर]

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

सूतांजली और सर्वोदय-पात्र

महात्मा गांधी अपने देश की सेवा करके परमात्मा के पास गये, अिस बात को बारह वर्ष हो गये। तीस जनवरी अुनके प्रयाण की तारीख है। अुनकी मृत्यु के बाद बारह फरवरी को श्राद्ध दीन नीयत कीया गया, तब से आज तक अिस दीन देश के हर सूबे में मेले लगते हैं। अिन मेलों में जाना अेक तीर्थयात्रा ही है। बारह फरवरी को वहां जो जा सकते हैं, अवश्य जायें। जो नहीं जा सकते, वे भी अपने-अपने गांव में, नगर में वीशेष रूप से कुछ अच्छा काम करें। सब मील कर भगवान का स्मरण करें, सफाअी करें। साल भर में अेक दीन अपने हाथ से कात कर सूत की अेक गुंडी सूतांजली के रूप में अर्पण करें। हम चाहते हैं की जो कातना नहीं जानते हैं, वे कातना सीखें और फीर कात कर दें। हर साल सूतांजली की गुंडीयां बढ़ती रहनी चाहीअें। यह सूतांजली समर्पण का कार्यक्रम सारे देश के सामने है। सबको सूतांजली का काम करना है।

याद रखीये साल भर में अेक बार करने का काम है सूतांजली और नीत्य करने का पवीत्र काम है सर्वोदय-पात्र। हर घर के छोटे बच्चे से शांती के लीअे वोट के रूप में अेक मुट्ठी अनाज डलवाना ही चाहीअे। यह रूप बहनों का काम है। यहां कोअी भीख मांगने नहीं आते। वह सर्वोदय के लीअे अेक वोट है। अिससे घर घर का प्रेम, हर घर का आशीर्वाद मीलेगा। काम में जान आयगी। अिस काम से अैसी ताकत हासील हो सकती है की बहुत से काम बन सकते हैं। अिसकी बड़ी महीमा है, यह हम सीद्ध करते हैं तो अहींसा की महान शक्ती खड़ी होगी। अिस तरह घर-घर सर्वोदय-पात्र के जरीये अहींसा के राज्य की बुनीयाद पड़ेगी।

—वीनोबा

*लिपि-संकेत : ि = ी, ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

चरखा और सूतांजलि

श्री शंकरराव देव के साथ एक साक्षात्कार

सतीश कुमार

श्री शंकररावजी पीठ की ओर से धूप-सेवन करते हुए चरखा कात रहे थे। चरखा कातते हुए चरखे के संबंध में ही विचार विमर्श करना सहज ही अनुकूल होता है। इसलिए मैंने बातचीत का आरंभ करते हुए पहला प्रश्न यही पूछा कि "चरखे का भविष्य क्या है ?"

मोटे फ्रेम वाले चश्मे के पीछे से झाँकते हुए और क्षण भर के लिए चरखा कातना बंद करते हुए श्री शंकररावजी ने कहा : "मैं नहीं जानता कि तुम्हारे मन में यह सवाल क्यों पैदा हुआ ? सवाल यह नहीं है कि चरखे का भविष्य क्या है ? बल्कि सवाल तो यह है कि हम एकनिष्ठ होकर इसे अपने जीवन का अविभाज्य अंग बना पाते हैं या नहीं ? यदि चरखा हमारी कल्पना के आदर्श समाज के लिए आवश्यक है, ऐसा हम मानते हैं और उसे अहिंसा का प्रतीक भी समझते हैं, तो उसका भविष्य कुछ भी तथा कैसा भी क्यों न हो, वह हमारी चिन्ता का विषय नहीं हो सकता। भगवान बुद्ध ने कभी चिन्ता नहीं की कि मेरे सिद्धांतों का भविष्य क्या होगा ? ईसा मसीह को भी इस बात की परेशानी नहीं थी कि उनके सिद्धान्तों का क्या होगा ? पर आज ढाई हजार साल के बाद दुनिया यह महसूस कर रही है कि भगवान बुद्ध के सिद्धान्त ही हमें बचा सकते हैं। इसी तरह ईसा मसीह को मारने वाले देश ही बाद में महसूस करने लगे कि उनके सिद्धांतों के बिना काम नहीं चल सकता। इसलिए चरखे का भविष्य क्या है ? इस चिन्ता में पड़ने की जरूरत ही क्या है ?"

"फिर हमें क्या करना चाहिए ?"—मैंने उसी संदर्भ को जोड़ते हुए पूछा।

श्री शंकररावजी दो मिनिट मौन हो गये। मैं उन्हें देख रहा था। छोटी, सफेद, पर घनी दाढ़ी के बीच से झाँकते हुए चेहरे पर गंभीरता नजर आ रही थी। मौन तोड़ते हुए उन्होंने कहा "तुम ठीक पूछ रहे हो। वास्तविक प्रश्न तो यही है कि हमें क्या करना चाहिए ? इसी प्रश्न का उत्तर हम सबको मिल कर ढूँढ़ना है। यदि हम चरखे के लिए कुछ कर सकेंगे, तो गांधीजी के लिए भी कुछ कर सकेंगे तथा सर्वोदय के लिए भी कुछ कर सकेंगे। चरखा हमारे सारे आन्दोलन की रीढ़ है। आज हम चरखे का सच्चा आदर नहीं कर रहे हैं। गांधीजी ने उसे अहिंसक समाज रचना का माध्यम बनाने की बात कही थी, पर हमने उसे व्यापार का माध्यम बना दिया। अब हमें फिर से उसको नयी दिशा की ओर ले जाना होगा। हमारा चरखा समग्र ग्राम निर्माण का साधन बने, इसके लिए हमें पुरजोर कोशिश करनी होगी। इसके लिए हमें अपना उत्सर्ग कर देना होगा। यदि इतना करने का साहस हममें हो, तो फिर यह सवाल ही नहीं उठेगा कि चरखे का भविष्य क्या है ?"

श्री शंकररावजी सूत भी कात रहे थे और मेरे साथ बातें भी करते जा रहे थे। हमारी बातें सर्व सेवा संघ के साधना केन्द्र में ऊपर के बरामदे में हो रही थीं। सिर्फ हम दोनों ही उस समय थे। कभी-कभी बीच में कोई भाई बहन शंकररावजी से कुछ पूछने आते तो हमारी बातों का क्रम टूटता।

श्री शंकररावजी ने कहना चालू रखते हुए बात आगे बढ़ायी—"हम चरखे को एकांगी नहीं बनाना चाहते। हम गाँव को शहर में बिकने वाली खादी का केवल उत्पादन केन्द्र बनाना नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि चरखा गाँव को कपड़ा दे, स्वावलंबन का मंत्र दे। नयी समाज-रचना का दिशा-बोध दे। हमारी खादी-संस्थाएँ करोड़ों की खादी पैदा करती हैं और शहरों में बेचती हैं। क्या गांधीजी ने चरखा इसीलिए निकाला था ? खादी संस्थाएँ गाँवों में नव जीवन लाने के लिए जब तक प्रयत्न नहीं करेंगी, तब तक चरखे का भविष्य अंधकारमय ही रहेगा।"

"३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय पक्ष मनाया जाता है और १२ फरवरी को सूतांजलि समर्पण का कार्यक्रम होता है। कृपया सूतांजलि के संबंध में कुछ बताइये।"—मैंने विषय को थोड़ा सा मोड़ देते हुए पूछा।

श्री शंकररावजी ने कहा : "आदर्श को प्रतीकों में बाँधने से आदर्श संकुचित हो जाता है। पर मानव-मन आज जिस स्थिति में है, उस स्थिति में कुछ प्रतीक कायम करने ही होते हैं। ऐसा ही एक प्रतीक है—सूतांजलि। गांधीजी को जो चीज सबसे अधिक प्रिय थी, वही चीज उनको अर्पित की जाय, यह स्वाभाविक ही है। चरखा गांधीजी के जीवन का संबल ही था। अतः गांधीजी की याद में स्वयं चरखा कात कर एक गुण्डी अर्पित करना उनके प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करने का माध्यम बन जाता है। इसलिए हम सूतांजलि की मार्फत गांधीजी का ही विचार जनता तक फैलाना चाहते हैं।"

"पर यह कार्यकर्ताओं के जीवन निर्वाह के साथ भी तो जुड़ी हुई है।"—मैंने पूछा।

"अब सवाल आता है कि सूतांजलि का विनियोग किस प्रकार हो ? निश्चय ही सूतांजलि का विनियोग उन्हीं कामों में हो सकता है, जो काम गांधीजी के मिशन को पूरा करने वाले हों। उस मिशन को पूरा करने के लिए जो कार्यकर्ता लगे हुए हैं, उनका निर्वाह भी उसी श्रेणी में आ जाता है। यद्यपि मेरी इस बात में श्रद्धा है कि कार्यकर्ताओं को अपना निर्वाह 'श्रम' से करना चाहिए। पर वे जिस मिशन के लिए लगे हुए हैं, उसके लिए भी समय तो जायेगा ही। साथ ही यह भी वस्तुस्थिति है कि आज हमारे जो कार्यकर्ता हैं, उनकी पूर्ण श्रमिक बनने की क्षमता नहीं है। उनकी शारीरिक, मानसिक और संस्कारों की क्षमता उस दृष्टि से अपर्याप्त है, उसे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। पर तब तक किसी निधि या अन्य संचित पूंजी से अपना निर्वाह करना हम लोगों ने अस्वीकार किया है। हम समाज की सेवा करते हैं, तो हमारा पालन भी समाज ही क्यों न करे ? फिर सूतांजलि के माध्यम से व्यापक संपर्क बढ़ाने का मार्ग ही हमें मिलता है।"

इस प्रकार लगभग आधे घन्टे तक हमारी बातें चलती रहीं। तीन बज रहा था। उनका किसी भाई के साथ अध्ययन का समय हो रहा था, अतः मैंने प्रणाम करके विदा ली।

सूतांजलि : उद्गम, विकास और विचार

सिद्धराज ढड्ढा

३० जनवरी १९४८ को गांधीजी का निधन हुआ। एक असाधारण ज्योति, जिसने लगभग आधी शताब्दी तक दुनिया को आलोकित किया था, लाखों, करोड़ों के मन में रही हुई सुप्त आकांक्षाओं और भावनाओं को जिसने जगाया और अनुप्राणित किया था—वह यकायक महाज्योति में विलीन हो गयी! घटना अचानक घटी थी, इसलिए सारा राष्ट्र स्तब्ध रह गया। दुनिया भर में एक कम्प सा हुआ। एक बड़े विस्फोट के बाद जैसे चारों ओर धुआं छा जाता है और कुछ साफ नजर नहीं आता, वैसा हुआ।

धीरे-धीरे वातावरण साफ हुआ। गांधीजी की आत्मा, गांधीजी के विचार अब एक शरीर में सीमित न रह कर मुक्त हो गये थे। अब उन्हें फैलने का मौका मिला। शरीर के कायम रहते हुए जिस स्मृति की आवश्यकता नहीं थी, शरीर न रहने पर अब लोकमानस में केवल वह स्मृति ही शेष रह गयी। उस स्मृति को कायम रखने की एक सहज स्फूर्ति लोगों के दिलों में पैदा हुई। हमारी संस्कृति में हजारों वर्षों की अनुभूत एक परम्परा चली आ रही है कि मृत्यु के कुछ दिन बाद, जब उस घटना से पैदा हुआ शोक सहज रूप से शांत हो जाता है और गये हुए व्यक्ति के केवल गुणों की स्मृति शेष रह जाती है, तब उसके प्रति श्रद्धा व्यक्त करके मरणोत्तर-क्रिया समाप्त की जाती है। १२ फरवरी को गांधीजी का श्राद्ध दिवस आया। सहज प्रेरणा से लोगों ने गांधीजी के शरीर की राख देश के कोने-कोने में ले जाकर जलाशयों या नदियों में प्रवाहित की।

सामान्य तौर पर व्यक्ति के गुणों या विचारों की याद भी धीरे-धीरे धुँधली पड़ जाती है। पर कुछ व्यक्ति होते हैं, जिनके विचारों का और कामों का लोक-जीवन पर इतना गहरा और व्यापक असर हुआ होता है कि उनकी याद न केवल बहुत समय तक बनी रहती है, बल्कि कभी-कभी तो वह समय बीतने के साथ-साथ और भी बलवती होती जाती है और करीब-करीब मानव-इतिहास में चिरस्थायी हो जाती है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद आदि ऐसे ही व्यक्ति हो गये, जिनकी छाप सदा के लिए इतिहास पर अंकित हो गयी और हजारों वर्षों के बाद आज भी जिनके जीवन, जिनके कार्यों और विचारों से असंख्य लोग प्रेरणा लेते हैं। गांधीजी के विचार की छाप भी उसी प्रकार आज लोक-मानस पर अंकित होती जा रही है। स्वाभाविक है कि उनकी स्मृति को ताजा रखने के लिए सहज रूप से लोगों को प्रेरणा हुई और गांधीजी की मृत्यु के कुछ दिन बाद तय किया गया कि गांधीजी के राख-विसर्जन के स्थानों में हर साल मेले लगें। अगले साल यानी १९४९ से इस प्रकार जगह-जगह मेले लगने शुरू हुए, जो सर्वोदय-मेलों के नाम से चल पड़े।

१२ फरवरी १९४९ के दिन इसी तरह वर्धा-सेवाग्राम के पास, जो पिछले वर्षों में गांधीजी का केन्द्र-स्थान रहा, परधाम में जहाँ विनोबा का आश्रम था और जहाँ गांधीजी की राख भी प्रवाहित की गयी थी, सर्वोदय मेला लगा। जिस तरह सहज स्फूर्ति से १२ फरवरी १९४८ के दिन देश के कोने-कोने में राख-विसर्जन हुआ तथा बाद में उस दिन हर साल सर्वोदय-मेलों को लगाने का तय हुआ, उसी तरह सहज रूप से गांधीजी की स्मृति में सर्वोदय मेले के दिन श्रद्धांजलि के रूप में सूत की गुंडी अर्पण करने का क्रम शुरू हुआ। सूत की गुंडी की यह श्रद्धांजलि 'सूतांजलि' के नाम से प्रसिद्ध हुई। सूतांजलि की इस कल्पना का उद्गम कैसे हुआ, इस बारे में विनोबाजी ने हिन्दी मासिक 'सर्वोदय' के नवम्बर १९४९ के अंक में लिखा है :—

"गांधीजी के राख विसर्जन के स्थानों में हर साल मेला लगेगा, ऐसा तय हुआ है। हिन्दुस्तान भर में १२ फरवरी को वैसे मेले इस साल (फरवरी १९४९) लगे भी थे। यहाँ धाम नदी के किनारे परधाम में इस साल जो मेला लगा, उसमें सूत की गुंडियाँ लोगों ने समर्पण कीं, यह मुझे अच्छी लगी। इस योजना का सबको पता नहीं था, वरना और लोग भी गुंडियाँ लाते। गुण्डी-समर्पण का यह कार्यक्रम अच्छा है। और उसे सुव्यवस्थित बनाना चाहिए। जिन्होंने दिया, उन्होंने काफी सूत वहाँ दिया। परन्तु मेरा खयाल है कि एक ही गुण्डी देने का रखना चाहिए। ज्यादा देना अनुचित नहीं है, लेना भी उचित है, पर इस प्रसंग पर एक ही गुण्डी बस है। बाकी जिसने काता है, वह अपने सूत का कपड़ा पहने या देना हो तो अलग दान दे। लेकिन उस अवसर पर एक एक गुण्डी दे तो कितने लोगों ने समर्पण किया, यह भी मालूम होगा। मैं चाहता हूँ कि हममें से जो-जो मेले के स्थान पर पहुँच सकते हैं, जरूर पहुँचें और अपने हाथ से गुण्डी समर्पण करें।

सूतांजलि कर्ममय उपासना का आधार है!

कार्यकर्ताओं को गाँव-गाँव घूमना चाहिए। समर्पण की कल्पना लोगों को समझानी चाहिए। अगर यह काम सफल हुआ तो एक मंगल प्रथा हो जायगी और हिन्दुस्तान का हरएक छोटा बच्चा भी उत्साहपूर्वक देश के लिए कुछ समर्पण करने की इच्छा रखेगा। आगे चल कर यह हो सकता है कि वहाँ (मेले के स्थान पर) बिना गुण्डी साथ लिये कोई पहुँचे ही नहीं। गुण्डी के अभाव में कोई वहाँ जाये ही नहीं, यह मुझे सुझाना नहीं है, लेकिन जब यात्रा की एक विधि बन जाती है, तो लोग उस विधि का अनुसरण करते हैं।

इस गुण्डी समर्पण से कर्ममय उपासना देश में जारी हो सकती है और एक सच्ची आध्यात्मिक दृष्टि लोगों को मिल सकती है। जैसे हम एक से अधिक गुण्डियाँ देने का विचार नहीं करते, वैसे यह विचार करना चाहिए कि पैसे वहाँ न दिये जायँ। सूत की एक गुण्डी देने का हेतु वस्त्र-स्वावलम्बन को उत्तेजन देते हुए, समान भक्ति-भाव प्रकट करने का है। पैसा न रखने में विचार यह है कि जो वस्तु हम शरीर परिश्रम से निर्माण करते हैं, वही समर्पण के लिए देना योग्य है—वही हवन द्रव्य बन सकता है। यह एक नया यज्ञ है, और यह यज्ञ पैसे को नहीं, परिश्रम को प्रतिष्ठा देता है, यह खयाल भी इसमें आयेगा। नहीं तो जहाँ भी ऐसे स्थान होते हैं, वहाँ पैसे के लालची लोग जमा हो जाते हैं और उसमें से सारी बुराई पैदा होती है। उन सबसे हम बच जायेंगे।"

इस प्रकार सूतांजलि की कल्पना प्रकट हुई और हर साल १२ फरवरी के दिन हर व्यक्ति गांधीजी की स्मृति में अपने हाथ से काते हुए सूत की एक पूर्ण (६४० तार) समर्पण करे, यह 'मंगल प्रथा' प्रचलि[त] हुई। विनोबाजी के उपर्युक्त सुझाव के अनुसार १२ फर[वरी] १९५० से सूतांजलि की योजना व्यवस्थित रूप [से] हुई और इन पिछले वर्षों में उसका विस्तार उत्त[रोत्त]र बढ़ता रहा है।

सूतांजलि की यह कल्पना कई दृष्टियों से अ[नूठी] है। विनोबा के शब्दों में सूत की गुण्डी के सम[र्पण] से बढ़कर गांधीजी का स्मारक दूसरा नहीं हो सकता। गांधीजी ने आज के युग में उत्तरोत्तर बढ़ते जा र[हे] जीवन के केन्द्रीकरण के खिलाफ विकेन्द्रित समा[ज] व्यवस्था का विचार दुनिया के सामने रखा। मान[व] समाज की आज की अधिकांश समस्याओं और बुराइ[यों] की जड़ केन्द्रीकरण में है, ऐसा गांधीजी ने स्पष्ट दे[खा] और युग के इस प्रवाह के खिलाफ आवाज उठायी। चरखा और खादी विकेन्द्रित समाज-व्यवस्था के [प्रतीक हैं]। अतः इस बगावत के प्रतीक हैं। इस प्रकार सूतांज[लि] गांधीजी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का अच्छे-से अच्छा माध्यम है। साथ ही वह अत्यन्त आसान भी है। बालक, बूढ़ा हर कोई उतना सूत कात कर अ[पने] श्रम से उत्पादित शुद्ध वस्तु श्रद्धा के रूप में दे सक[ता] है। इस प्रकार सूतांजलि राष्ट्रीय उपासना का ए[क] उत्तम प्रकार हो सकता है। श्रम निष्ठा और अपने 'नीचेवालों' के साथ समरस होने की भावना सूतांजलि में निहित है।

सूतांजलि का कार्यक्रम फैलता है तो वस्त्र स्वाव[लम्बन] और खादी की नींव भी मजबूत होती है। सूतांज[लि] का कार्यक्रम कार्यकर्ताओं को आम जनता के स[म्पर्क] में आने का मौका उपस्थित करता है। सूतांज[लि में] इकट्ठी होने वाली सूत गुण्डियों का उपयोग भी अ[हिंसक] समाज में गांधीजी के विचार के अनुसार अहिं[सक] क्रान्ति के काम को आगे बढ़ाने में होता है।

गांधीजी का नाम आज देश में सर्वत्र लि[या] जाता है। उनके नाम की आड़ में हम स्वार्थ साधना चाहें तो बात दूसरी है, वरना गांधीजी [के] विचार के लिए जिसके मन में कुछ भी निष्ठा है, उ[सके] लिए साल में एक बार गांधीजी की स्मृति में उ[नके] प्रति अपनी उस निष्ठा को व्यक्त करने का सूतांज[लि] से बढ़कर आसान और सार्थक कार्यक्रम दूसरा [नहीं] हो सकता।

सूतांजलि के बारे में नीचे लिखी बातें स्पष्ट[तया] पर समझ लेनी चाहिए :

(१) सूत अपने हाथ से कता हुआ हो। दू[सरे] का काता हुआ सूत लेकर अर्पण नहीं करना चाहि[ए]।

(२) एक व्यक्ति की एक ही गुण्डी देनी [चाहिए]। कोई अधिक गुण्डियाँ देना चाहता है, तो कभी वह दे सकता है। पर सूतांजलि के निमित्त हर व्य[क्ति] से एक ही गुण्डी अपेक्षित है।

(३) गुण्डी अधूरी न हो, पूरी ६४० तार की।

(४) श्रद्धा-स्वरूप जो चीज देनी हो, वह अ[च्छी] से-अच्छी तो देनी ही चाहिए, इसलिए सूतांजलि [में] दी जाने वाली गुण्डी अच्छी हो। सूतांजलि के लि[ए] ही वह ध्यानपूर्वक खास तौर से काती जाय, वांछनीय है।

गांधीजी की मृत्यु को १२ वर्ष होने आ रहे। हर साल उनके श्राद्ध दिवस पर उत्तरोत्तर बढ़ती संख्या में सूतांजलि इकट्ठी होती है। गांधीजी के [प्रति] लोगों के हृदय में अपार श्रद्धा और आदर है। इ[...]

काम यों ही कर लिया करते हैं। घड़ी को चाबी भी हम लोगों में से ही कोई दे दिया करता था। इसीलिए उन्होंने यह कहा। मैंने कहा कि "बापू! आपकी घड़ी बेचारी उपेक्षा से दुबली होती होगी।" इसीके उत्तर में उन्होंने यह बात कही। विनोद तो किया ही, पर साथ ही यह भी कहा कि "मुझे ऐसी देरी बिलकुल पसन्द नहीं।"

चाँद बहन को दिल्ली में ही रखने की बात कही। "अभी खुराक की मात्रा थोड़ी सी ही बढ़ायी है।" यद्यपि अनशन के बाद अनाज तो अभी शुरू करना ही नहीं है, "पर अब मकाई (वरुठ साग) कम करना है" ये बातें करते हुए प्रार्थना स्थल की सीढ़ियाँ चढ़े। कहने लगे: "प्रार्थना में दस मिनट देर हो गयी, इसमें आप लोगों का ही दोष है।" सरदार दादा दो-चार दिनों बाद आये थे और ऐसे गम्भीर प्रश्नों पर चर्चा कर रहे थे कि टोकने की हिम्मत ही नहीं हुई, यह भी बापू को पसन्द नहीं पड़ा। उन्होंने कहा: "नर्स का तो धर्म है कि साक्षात् ईश्वर भी बैठा हो, तो भी वे अपना धर्म, अपना कर्तव्य पूरा करें। किसी रोगी को दवा पिलाने का समय हो गया हो और किसी भी कारण यह विचार करते रहें कि उसके पास कैसे जाया जाय, तो रोगी मर ही जायगा। यह भी ऐसी ही बात है। प्रार्थना में एक मिनट की देर भी मुझे खल जाती है।"

यह नियम सा बन गया था कि प्रार्थना में जाते समय हम लोग ही बापू की लकड़ी का काम करती थीं। कभी हम लोग नाराज हो जायँ और इस नियम के अनुसार लकड़ी बनना न चाहें, तो बापू हम लोगों को जबरदस्ती पकड़ कर लकड़ी बना लेते थे। लौटते समय दूसरी लड़कियाँ रहती थीं।

बापू चार सीढ़ियाँ चढ़े और सामने रोज नियमानुसार हम लोगों के कन्धे पर से अपना हाथ उठाकर उन्होंने जनता को प्रणाम किया और आगे बढ़ने लगे। मैं उनके दाहिनी ओर थी। मेरी ही तरफ से एक हृष्ट-पुष्ट युवक, जो खाकी वर्दी पहने और हाथ जोड़े हुए था, भीड़ को चीरता हुआ एकदम घुस आया। मैं समझी कि यह बापू के चरण छूना चाहता है; रोज ऐसा ही हुआ करता था। बापू चाहे जहाँ जायँ, लोग उनका चरण छूने और प्रणाम करने के लिए पहुँच ही जाते थे। हम लोग भी अपने ढंग से उनसे कहा करते कि बापू को यह ढंग पसन्द नहीं। पैर छूकर चरण रज लेने वालों से बापू भी कहा ही करते कि "मैं तो साधारण मानव हूँ। मेरी चरण रज क्यों लेते हैं!" इसी कारण मैंने इस आगे आनेवाले आदमी के हाथ को धक्का देते हुए कहा: "भाई! बापू को दस मिनट देर हो गयी है, आप क्यों सता रहे हैं!" लेकिन उसने मुझे इस तरह जोर से धक्का मारा कि मेरे हाथ से माला, पीकदानी और नोटबुक नीचे गिर गयी। जब तक और चीजें गिरीं, मैं उस आदमी से जूझती ही रही। लेकिन जब माला भी गिर गयी, तो उसे उठाने के लिए नीचे झुकी। इसी बीच दन दन एक के बाद एक तीन गोलियाँ दगीं। अन्धेरा छा गया। वातावरण धूमिल हो उठा और गगनभेदी आवाज हुई. "हे राम! हे राम"

गांधीजी की हत्या से सारे भारत में व्याकुलता तथा वेदना की लहर दौड़ गयी। ऐसा जान पड़ता था कि जो तीन गोलियाँ गांधीजी के शरीर में लगी थीं, उन्होंने करोड़ों के मर्म का वेध डाला था! आधुनिक इतिहास में किसी व्यक्ति के लिए इतना गहरा और व्यापक शोक आज तक नहीं मनाया गया। अमरीका संयुक्त राज्यों के राज्य-सचिव जनरल जार्ज मार्शल ने कहा था, "महात्मा गांधी सारी मानव जाति की अंतरात्मा के प्रवक्ता थे।" लगभग सभी महत्वपूर्ण देशों तथा अधिकतर छोटे देशों के राजनैतिक नेताओं ने गांधीजी की मृत्यु पर सार्वजनिक रूप से शोक-प्रदर्शन किया। फ्रांस के समाजवादी लियोन्ब्लम ने वह बात लिखी, जिसे लाखों लोग महसूस करते थे। ब्लम ने लिखा, "मैंने गांधी को कभी नहीं देखा। मैं उसकी भाषा नहीं जानता। मैंने उसके देश में कभी पाँव नहीं रखा, परन्तु फिर भी मुझे ऐसा शोक महसूस हो रहा है, मानो मैंने कोई अपना और प्यारा खो दिया हो। इस असाधारण मनुष्य की मृत्यु से सारा संसार शोक में डूब गया है।"

संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपना झंडा झुका दिया, मानवता ने अपनी ध्वजा नीचे कर दी!

उपन्यास लेखिका पर्ल एस० बक ने गांधीजी की हत्या को 'ईसा की सूली' के समान बताया। न्यूयार्क में १२ साल की एक लड़की कलेवे के लिए रसोई घर में गयी हुई थी। रेडियो बोल रहा था और उसने गांधीजी पर गोली चलने का समाचार सुनाया। लड़की, नौकरानी और माली ने वहीं रसोई घर में सम्मिलित प्रार्थना की और आँसू बहाये। इसी तरह सब देशों में करोड़ों लोगों ने गांधीजी की मृत्यु पर ऐसा शोक मनाया, मानो उनकी व्यक्तिगत हानि हुई हो। गांधीजी के लिए शोक करने वाले लोगों को यही महसूस हुआ। उनकी मृत्यु की आकस्मिक कौंध ने अनन्त अन्धकार उत्पन्न कर दिया।

वह अपने देश पर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध और अपने ही देशवासियों की बुराइयों के विरुद्ध तीव्र गति के साथ और लगातार लड़े, परन्तु लड़ाई के बीच भी उन्होंने अपने दामन को बेदाग रखा। वह बिना वैमनस्य या कपट या द्वेष के लड़े।

• •

बापू के अन्तिम क्षण

[अमेरिकन विश्व विख्यात लेखक लुइस फिशर द्वारा लिखित गांधीजी के अंतिम दिन की कथा, मनु बहन ने जो बात अपनी डायरी में लिखी है, उसी घटना का एक दूसरा रूप।]

नयी दिल्ली में बिड़ला भवन के पिछवाड़े भाग में ३० जनवरी साढ़े चार बजे शाम जमीन में गांधीजी खाते जाते थे और स्वतन्त्र भारत की नयी सरकार के उपप्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल से बातें करते जाते थे। सरदार पटेल की पुत्री और उनकी मंत्री मणि बहन भी वहाँ मौजूद थीं। बातचीत महत्वपूर्ण था। पटेल और प्रधान मन्त्री नेहरू के बीच मतभेद की अफवाहें थीं। अन्य समस्याओं की तरह यह समस्या भी महात्माजी के पल्ले डाल दी गयी थी।

गांधीजी, सरदार पटेल और मणि बहन के पास अकेली बैठी आभा बीच में बोलने से सकुचा रही थी। परन्तु समय पालन के बारे में गांधीजी का आग्रह वह जानती थी। इसलिए उसने आखिर महात्माजी की निकल की घड़ी उठा ली और उन्हें दिखाई। गांधीजी बोले, "मुझे अब जाना होगा।" यह कहते हुए वह उठ गये। अब वह प्रार्थना स्थान के पास वाली दूब पर चल रहे थे। नित्य की सायंकालीन प्रार्थना के लिए करीब पाँच सौ की भीड़ जमा थी। गांधीजी ने बड़बड़ाते हुए कहा, "मुझे दस मिनट की देर हो गयी। देरी से मुझे नफरत है। मुझे यहाँ ठीक पाँच पर पहुँच जाना चाहिए था।" प्रार्थना-स्थान की भूमि पर पहुँचने वाली पाँच छोटी सीढ़ियाँ उन्होंने जल्दी से पार कर लीं। प्रार्थना के समय जिस चौकी पर वह बैठते थे, वह अब कुछ ही दूर रह गयी थी।

गांधीजी ने आभा और मनु के कन्धों से अपने बाजू हटा लिये और दोनों हाथ जोड़ लिये। ठीक इसी समय एक व्यक्ति भीड़ को चीर कर बीच के रास्ते में निकल आया। ऐसा जान पड़ा कि वह झुक कर भक्त की तरह प्रणाम करना चाहता है, चूँकि देर हो रही थी, इसलिए मनु ने उसे रोकना चाहा और उसका हाथ पकड़ लिया। उसने आभा को ऐसा धक्का दिया कि वह गिर पड़ी और गांधीजी से करीब २ फुट के फासले पर खड़े होकर उसने छोटी सी पिस्तौल से तीन गोलियाँ दाग दीं। ज्यों ही पहली गोली लगी, गांधीजी का उठा हुआ पाँव नीचे गिर गया, परन्तु वह खड़े रहे। दूसरी गोली लगी, गांधीजी के सफेद वस्त्रों पर खून के धब्बे चमकने लगे। उनका चेहरा सफेद पड़ गया। उनके जुड़े हुए हाथ धीरे धीरे नीचे खिसक गये और एक बाजू कुछ क्षण के लिए आभा की गरदन पर टिक गया। गांधीजी के मुँह से शब्द निकले "हे राम"। तीसरी गोली की आवाज निकली। शिथिल शरीर धरती पर गिर गया। उनकी ऐनक जमीन पर जा पड़ी, चप्पल उनके पाँवों से उतर गये। इसी समय उपस्थित समुदाय में खुसफुसाहट फैली। जवाहरलाल नेहरू दफ्तर से दौड़े हुए आये। गांधीजी के पास घुटनों के बल बैठ कर उन्होंने अपना मुँह खून से सने कपड़ों में छिपा लिया और रोने लगे। इसके बाद गांधीजी के सबसे छोटे पुत्र देवदास और मौलाना आजाद आये। इनके पीछे बहुत से प्रमुख व्यक्ति थे। बाहर भारी भीड़ जमा हो गयी थी और लोग महात्माजी के अन्तिम दर्शन की माँग कर रहे थे। इसलिए शव को सहारा देकर बिड़ला भवन की छत पर रख दिया गया और उस पर रोशनी डाली गयी। हजारों लोग हाथ मलते हुए और रोते हुए सामने से गुजरने लगे।

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, २९ जनवरी, '६०

चरखा : अन्नपूर्णा

मैंने हाथ-कताई के खातिर एक भी उपयोगी, प्राणदायक औद्योगिक प्रवृत्ति को छोड़ने की कल्पना तक नहीं की है, सलाह देना तो दूर रहा। चरखे की सारी बुनियाद ही इस तथ्य पर है कि भारत में करोड़ों अर्धबेकार लोग हैं और मुझे स्वीकार करना चाहिए कि अगर ऐसे लोग न हों, तो चरखे के लिए कोई स्थान न रहे। लेकिन हकीकत यह है कि सभी लोग, जिन्होंने हमारे देहात देखे हैं, जानते हैं कि उनके महीनों बेकारी म करते हैं, जो उनके लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। मध्यम श्रेणी से भी मैंने यज्ञार्थ कातने की जो अपील की है, वह उनके फुरसत के समय के लिए ही है। चरखा-आन्दोलन किसी भी उद्योग का विनाशक नहीं है। यह तो एक प्राणदायी प्रवृत्ति है और इसलिए मैंने उसे अन्नपूर्णा या रोटी के लिए मक्खन देने वाला या कमी पूरी करने वाला कहा है।

(यंग इण्डिया, २०-५-'२६) —महात्मा गांधी

सह-अध्ययन की मर्यादाओं का सीमांकन

दादा धर्माधिकारी

[सर्व सेवा संघ के प्रधान कार्यालय में जिस सह-अध्ययन शिविर का आरम्भ पिछली १४ जनवरी को हुआ था, वह शिविर दादा धर्माधिकारी और मार्जरी साइक्स की उपस्थिति में चल रहा है। दादा के प्रथम दिन के उद्घाटन भाषण का प्रथमांश पिछले अंक में दिया गया था। इस अंक में उसका अंतिम हिस्सा दिया जा रहा है।—सं०]

मैं अपना विचार दूसरे को समझाऊँगा। मुझमें समझाने की शक्ति नहीं हो तो मैं उस शक्ति को बढ़ाऊँगा। इसके बदले आज मनुष्य दूसरे को समझाने के लिए दूसरे के दिमाग पर प्रभाव डालने के प्रयोग करता है। उसे बुद्धिभ्रंश कहते हैं। यह भी एक अहंकार ही है कि मैं जो चीज समझता हूँ, वह चीज सबसे अधिक सही है, और दूसरा नहीं समझता है तो उसी की कमी है। तप से चित्त शुद्ध होता है। मेरी बुद्धि जितनी शुद्ध होगी, उतनी मेरी समझाने की शक्ति बढ़ेगी। लेकिन समझाने की और समझने की शक्ति स्वाध्याय से, अध्ययन से बढ़ती है। सह अध्ययन में हमें एक-दूसरे की बुद्धि का प्रत्यक्ष सहारा मिलता है, प्रत्यक्ष आदान-प्रदान होता है। उसमें सामुदायिक शक्ति बढ़ती है।

सामुदायिक शक्ति तीन प्रकार की होती है: (१) पहली सामुदायिक शक्ति सेना की है। यह आवश्यक नहीं है कि सेना का एक-एक सिपाही बहादुर हो। यह भी जरूरी नहीं है कि सिपाही लड़ाई के मैदान में बहादुर हो तो दूसरी जगह भी बहादुर ही हो। पर सेना की सामुदायिक शक्ति होती है। वहाँ व्यक्ति का विचार नहीं किया जाता है। (२) दूसरी शक्ति सामुदायिक प्रार्थना की है। प्रार्थना भावना की शक्ति है, संख्या की नहीं। उसमें सबकी भावना की सुगंध है। इसलिए सामुदायिक प्रार्थना में 'रेजीमेंटेशन' नहीं है। लाखों आदमी सामुदायिक प्रार्थना कर रहे हैं तो यह लाखों की संख्या नहीं है, लाखों के हृदय की भावना है। इस तरह वह भावनात्मक शक्ति है। (३) लेकिन विचार की तीसरी शक्ति संख्या और भावना की शक्ति से अधिक प्रबल होनी चाहिए। भावना में वेग है, 'पैशन' है। काम करने के लिए जिस वेग की जरूरत है, वह भावना से आता है। 'इमोशन' न हो तो वेग नहीं आयेगा। लेकिन उसके साथ-साथ विचार शुद्ध होना चाहिए। भावना का काम है विचार का अभिसिंचन, प्रोक्षण करना। विकार विचार को भ्रष्ट कर देता है, फाड़ देता है। जैसे दूध में खटाई डालने से दूध फट जाता है, वैसे विकारयुक्त बुद्धि से विचार फट जाता है। उसे शुद्ध करने के लिए हम सद्भावना से उसका अभिसिंचन, प्रोक्षण करते हैं। सद्भावना की यह शक्ति है। वह गति देती है। लेकिन विचार जब तटस्थ बुद्धि से किया जाता है, याने भावना से जो बुद्धि परिमार्जित होती है, उस बुद्धि से शुद्ध विचार होता है।

यहाँ पर हम जो विचार करने वाले हैं, उसमें सह-विचार, सह अध्ययन करने वाले हैं। इसलिए कि हमने हरएक की बुद्धि की शक्ति को स्वतंत्र माना है। हरएक की अपनी स्वतंत्र शक्ति है। वह आज कहीं-न-कहीं प्रतिबन्धित है, कुण्ठित है, कहीं ठिठकती है, कहीं अटकती है। जहाँ वह अटकती है, वहाँ उसकी रुकावटें हम एक-दूसरे के साथ बैठ कर दूर करेंगे। हमारा विश्वास यह है कि:

> हरएक व्यक्ति अपने में अपवाद है। व्यक्ति समाज का सदस्य भी है, लेकिन वह केवल समाज का सदस्य नहीं है। वह सदस्य है, सामान्य मानव है, लेकिन अपने में एक अपवाद भी है। "एवरी इन्डीविजुअल इज ऐन ऐसोसेशन ऐंड आल इन्डीविजुअल्स आर मेंबर्स आफ वन एनादर, मेंबर्स आफ सोसायटी" एक-दूसरे के सदस्य और समाज के सदस्य भी हैं। सदस्यता और अपवाद इन दोनों का संतुलन हमें इस समाज में प्रस्थापित करना है।

अपवाद से मतलब यह है कि हर व्यक्ति में कोई न कोई विशेषता है, जैसे हर व्यक्ति के शरीर में विशेषता होती है। यहाँ पर कोई 'सतीश' को खोजने आया और हमने 'लोकेन्द्र' को दिखाया और कहा कि यह सतीश है। "सतीश में और क्या है, दो आँखों के बीच एक नाक है, उसका कोई अवयव टूटा, फूटा नहीं है। तो फिर दोनों में क्या फर्क है!" पर वह कहेगा कि फिर भी फर्क है, जिससे कि हम पहचान लेते हैं कि यह सतीश है। तो जैसे शरीर की विशेषता होती है, वैसे ही हर मनुष्य की एक दूसरी भी विशेषता है, वह उसका व्यक्तित्व कहलाता है। हर मनुष्य का व्यक्तित्व अपवादात्मक होता है। उसके विकास के लिए समाज में अवसर होना चाहिए। मेरी तपस्या भी उसके विकास में बाधक नहीं होनी चाहिए।

हर व्यक्ति में कुछ विशेषता है, जो व्यक्त है, पर एक ऐसा भी हिस्सा है, जो अव्यक्त है, जिसे हम उसकी विभूति कहते हैं। इसलिए जो मनुष्य यह कहता है कि मैं दूसरे मनुष्य को पहचानता हूँ, वह बहुत अधिक दावा करता है। एक मनुष्य दूसरे को पूरी तरह से पहचान ले, यह असंभव है। अक्सर यह कहा जाता

हम मानव को परखना नहीं चाहते !

है कि अमुक व्यक्ति को मनुष्यों की बहुत परख थी। लेकिन परख थी याने इतना ही कि यह मेरे काम का पुर्जा है, इसे वह जानता था। वह बड़ा योजक था। याने किस आदमी को कहाँ भेजना, किस पुर्जे को कहाँ बिठाना यह वह जानता था। उसके लिए मनुष्य आयोजन के साधन, अनुष्ठान के उपकरण बन जाते थे। आपके अध्ययन में एक मर्यादा रहे कि हम मनुष्य को परखना नहीं चाहते हैं। ईसा ने कहा 'जज नॉट अदर्स,' दूसरों को परखो मत। प्रयोग में मनुष्य का परीक्षण करने की जो बात है, वह अध्ययन में कहीं नहीं आनी चाहिए। अध्ययन अपने में एक बहुत पवित्र क्षेत्र है। अपने में एक ऐसा विषय है जहाँ अक्षुण्ण आनन्द है।

मैं आपके सामने यह चीज रख रहा हूँ कि हर मनुष्य में, उसके व्यक्तित्व में एक ऐसा हिस्सा है, जिसे कोई नहीं पहचान सकता। 'मैन इज वन, देन ऐवरीवन ऐन्ड ऐ पार्ट।" अलेक्सिस कैरेल ने एक किताब लिखी है—'मैन दी अननोन।' तुम उसे क्या परखोगे! फ्रायड ने आदमी को परखा और कुछ का कुछ कह दिया, किसी दूसरे ने परखा और कुछ कहा। लेकिन कहने वाले का अपना मन किसी ने नहीं परखा!

> आज भी ऐसे लोग हैं, जो फ्रायड का अनुकरण करके ईसा, बुद्ध और गांधी तक का साइको-ऐनालिसिस करते हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि एक-दूसरे का 'साइको ऐनालिसिस' मत करो। मनुष्य के व्यक्तित्व में एक ऐसा अव्यक्त हिस्सा है, जो अव्यक्त भी है और अज्ञात भी है। इसलिए मैं उसे विभूति कहता हूँ। हर मनुष्य अपने में विभूति है और अपवाद भी है।

अब तक मनुष्य की दुष्टता ही व्यक्त हुई हो तो भी उसके व्यक्तित्व का दूसरा हिस्सा है, जो अव्यक्त है। आगे चल कर उसकी अभिव्यक्ति हो सकती है। आज तक अशुभ शक्ति ही प्रकट हुई तो भी शुभ शक्ति प्रकट करने की शक्यता उसमें है, जो आगे चल कर प्रकट हो सकती है, यह श्रद्धा हममें होनी चाहिए।

हम इस अध्ययन में क्या करना चाहते हैं, इसका मैंने जिक्र किया है। पहली चीज मैंने यह कही कि समाज में मनुष्य का जो संपर्क होता है, उसमें वे संपर्क बढ़ता रहे, संघर्ष टलता रहे, इस तरह की कोशिश हमें करनी चाहिए।

हमारे अध्ययन का दूसरा विषय है कि मन दो कारणों से दूषित होता है—वासना और विकार। अपने मन में कोई आकांक्षा, शुभ आकांक्षा हो कि हमें समाज में ऐसा परिवर्तन करना है, लोगों को सिर समझाना है। लेकिन हम कब तक विचार समझाते रहेंगे, इसलिए समझाना छोड़ कर हम मनवाने की तरफ झुकते हैं। मनवाने के दो-तीन प्रकार हैं। पहला है खुशामद। खुशामद करके दूसरे की मर्जी मिलाकर हम उससे काम करवायेंगे। वह कहेगा, क्या करें, इतनी खुशामद की कि लिहाज हो गया। दूसरा प्रकार है लालच और डीलर कराने का, इन सबका नाम है "प्रेशर टैक्टिक्स"। जहाँ पर बुद्धि से सह-विचार सह अध्ययन करना है वहाँ कोई प्रेशर नहीं, मॉरल प्रेशर भी नहीं होना चाहिए। तपस्या का दबाव भी नहीं होना चाहिए।

तीसरी बात यह कि हम 'माइन्ड कन्ट्रोल' नहीं चाहते हैं। मनुष्य के मनों का नियन्त्रण नहीं चाहते हैं। भावना का अपना मूल्य है। विचार, वासना, आकांक्षा, तीनों के दाग को हटाने वाली जो शुभ शक्ति है, वह सद्भावना 'इमोशन' है, वह बुद्धि को परिष्कृत करती है। ऐसी परिष्कृत बुद्धि जिन मनुष्यों की है, उनका यह विचार सह अध्ययन हम चाहते हैं।

हमारे अध्ययन का चौथा विषय यह है कि हर व्यक्ति सामान्य मानव भी है और एक अपवादात्मक व्यक्ति भी है। अपवादात्मक व्यक्तित्व का नाम है विशेषता, विशिष्टता। एक तरफ हम सामान्य मानवता, नागरिकता का भी विकास चाहते हैं और दूसरी तरफ विशेषता का भी विकास चाहते हैं। दोनों का संतुलन करना चाहते हैं। हर मनुष्य की एक विशेषता अभिव्यक्त है तो दूसरी विशेषता अभिव्यक्त नहीं है, जिसे हमने विभूतिमत्त्व कहा है। जिन महान व्यक्तियों को हम विभूति कहते हैं उनका विभूतिमत्त्व व्यक्त हुआ रहता है। परन्तु हर व्यक्ति में एक 'पोटेंशियलिटी' संभावना रहती है। एक छिपी हुई अव्यक्त शक्ति, छिपा हुआ विभूतिमत्त्व रहता है। उसके आविष्कार का भी हमें प्रयास करना चाहिए। यह भी हमारे अध्ययन और शोध का विषय है। आज दुनिया में जितने विज्ञानवादी हैं वे कहते हैं कि वैज्ञानिक चमत्कार से हम दूसरों को परास्त करेंगे। विज्ञान से अब परास्त की बात चलती है, लेकिन विज्ञान से निर्जीविता और विकृति नहीं होना चाहिए। आज मनुष्य विचार और बुद्धि से समझाने की तरफ जा रहा है, कुछ लोग यांत्रिक चमत्कार की तरफ और कुछ मानसिक (मैजिक) चमत्कार की तरफ, कि चमत्कार से वह दूसरों को परास्त कर सकें। हम इस एक मर्यादा रखें कि हमें मनुष्य को परखना नहीं चाहिए, विचारों का अध्ययन करना चाहिए।

● ●

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, २९ जनवरी,

सूतांजलि-संग्राहकों की सूची १९६०

प्रांत	नाम	पता
असम	श्री कमल प्रभा दास	पान बाजार रोड, गौहाटी (असम)
आन्ध्र	,, राघवन्	खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, काकीनाडा, आन्ध्र
उत्तर प्रदेश	,, कपिलभाई	गांधी आश्रम, हजरतगंज, लखनऊ
उत्कल	,, रमादेवी चौधरी	उत्कल खादी मंडल, चौरियासाही, कटक-१
कर्नाटक	,, तिमप्पा नाइक	ग्राम सेवा समिति, मदनगिरी, नार्थ कनरा
कच्छ	,, मणिलाल संघवी	गढ़सीसा, कच्छ
केरल	,, दिवाकरन् कर्था	सर्व सेवा संघ, पालघाट (केरल)
गुजरात	,, मंत्री	सर्वोदय मंडल, स्वराज्य आश्रम, बारडोली, सूरत
तामिलनाड	,, वी० रामचन्द्रन्	सर्व सेवा संघ, गांधीनगर, तिरुपुर, कोयम्बतूर
दिल्ली	,, कालिका भाई	गांधी आश्रम, चांदनी चौक, दिल्ली
नागविदर्भ	,, मंत्री	ग्राम सेवा मण्डल, नालवाडी, वर्धा
१२. पंजाब	,, हरिराम चोपड़ा	पंजाब चरखा संघ, आदमपुर दोआब, जालंधर
१३ पेप्सु	,, बीबी अम्तुस्सलाम	कस्तूरबा सेवा मन्दिर, राजपुरा, पटियाला
१४ बिहार	,, मंत्री	खादी ग्रामोद्योग संघ, मुजफ्फरपुर (बिहार)
१५ बंगाल	,, पंचानन बसु	मंत्री, खादी मंडल, ई ७५, कालेज स्ट्रीट मार्केट कलकत्ता
,,	,, नृपेन्द्रनाथ बोस	अभय आश्रम, सी २८, कालेज स्ट्रीट मार्केट कलकत्ता-१२
१६. बम्बई शहर और उपनगर	,, श्री वी० जेराजाणी ,, मणिबहन नाणावटी,	खादी ग्रामोद्योग भंडार, ३९६, कालबादेवी रोड, बम्बई ,, ,, ,, ,, ,,
१७ मद्रास	,, संचालक	६९-६६ रतन बाजार, मद्रास ३
१८ महाकोशल	,, रामानन्द दुबे	सर्व सेवा संघ, छत्तीसगढ़ विभाग, पोस्ट कुर्रा, रायपुर
१९. महाराष्ट्र	,, मंत्री	महाराष्ट्र सेवा संघ, ३६१, सदाशिव, पूना २
२०. मध्यभारत	,, काशिनाथ त्रिवेदी	ग्राम-पो० टवलाई, जिला-धार
२१ मैसूर	,, व्यंकटरमण अय्यर	खादी सम्रालय, फोर्ट, बैंगलोर-२
२२ राजस्थान	,, मंत्री	राजस्थान समग्र सेवा संघ, किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर (राजस्थान)
२३ विंध्यप्रदेश	,, चतुर्भुज पाठक	गांधी भवन, छतरपुर, मध्यप्रदेश
२४. सौराष्ट्र	,, कनु गांधी	राष्ट्रीय शाला, राजकोट मंत्री, सौराष्ट्र रचनात्मक समिति, राष्ट्रीय शाला राजकोट

पूज्य गांधीजी की रक्षा-विसर्जन स्थानों की सूची

आंध्र	विजयवाडा, राजमहेन्द्री।
असम	गौहाटी, तेजपुर (धुबरी), गोलपाड़ा, तेजपुर, सिलचर, शिलांग, कुक्लीमुख, देसांगमुख, शिवसागर, डिब्रूगढ़, सदिया इम्फाल, जोरहाट, कोहिमा, तूरा लाखी, परशुराम कुंड, मणिपुर, सिलहट।
उत्कल	कटक, पुरी, मयूरगाँव, ज्योंझर।
उत्तर प्रदेश	प्रयाग, काशी, हरिद्वार, मेरठ, मथुरा, देहरादून, एटा, कासगंज, अयोध्या, रामपुर, गढ़मुक्तेश्वर, बरनावा, बागेश्वर, कैलाश, मानसरोवर।
कर्नाटक	हरिहर, बेलगाँव, गोकर्ण।
गुजरात	पालनपुर, बड़ोदा, लुनावाडा, खम्भात, साबरमती, सूरत, दांडी, बारडोली, वेड़छी, गोधरा, कपडवंज, रूपापुरा, डाकोर।
दिल्ली	यमुनापुल के पास।
पूर्वी पंजाब	कपूरथला, फिल्लौर।
बिहार	पटना, गया, राँची, मोतिहारी, चंपारन, सुलतानगंज।
पश्चिम बंगाल	कलकत्ता (बारकपुर, रानाघाट)।
बम्बई	बम्बई, जुहू।
मद्रास	मद्रास, श्रीरंगम्, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, मंगलौर, तिरुकोईलूर।
केरल	कालीकट, तिरुनवाई, कोयम्बतूर के पास पेरूर पर नोयल नदी में।
मध्य प्रदेश	उज्जैन, इंदौर, धार, भोपाल, झाबुआ, ओरछा, अमरकंटक, जबलपुर।
विदर्भ	पवनार, अकोला।
महाराष्ट्र	पूना, नरसोबावाडी, पंढरपुर, कोल्हापुर, बल्लभ, मिरज (मल्ला), सांगली, गोआ, नासिक (रामकुंड) चिपलूण।
राजस्थान	अजमेर, जयपुर, बीकानेर, अलनगर, आबू सांभर झील, धोलपुर।
रियासतें	हैदराबाद, बैंगलोर, मैसूर, काश्मीर।
सौराष्ट्र	पोरबंदर, राजकोट, जूनागढ़, मोरवी, जामनगर, मांडल, भावनगर, विलम्बा वाडा, कच्छमांडवी।
पाकिस्तान	डेरा इस्माइलखाँ, ढाका (नारायणगंज)
बर्मा	रंगून, टकाव, मडाले।
लंका	कोलंबो, कदरागामा, ट्रिंकोमाली, आदिम कुटी में वेडी मलाई।
विदेश	दक्षिण अफ्रीका (डरबन), मलाया (सिंगापुर)

तीस जनवरी १९४८ [पृष्ठ-संख्या २ का शेष]

रेडियो भी बार-बार वह दुःखद समाचार बोल रहा था। अब तो शक का या न मानने का कोई सवाल ही नहीं था। मुझे मालूम नहीं मेरे सामने की उस थाली का क्या हुआ? मेरी पत्नी भी इस बीच आ गयी थी। उन्होंने सब कुछ सुन लिया था। हमारी चौनजर हुई। न मालूम क्यों दोनों की आँखें डबडबा आयी थीं और ओठ हिल रहे थे। गला रूँधा हुआ था। मैं तुरन्त नीचे उतर आया। अपने घर के दरवाजे के पास खड़ा हुआ जमीन टटोल रहा था। आँखें तर होने से सब धुंधला धुंधला सा नजर आता था।

इतने में दो-तीन नौजवान आकर सामने खड़े हो गये। "लोकवाणी के संपादक आप ही हैं?" "जी हाँ", मैं मुश्किल से जवाब दे पाया। "क्या हुआ, कोई बुरे समाचार मिले हैं क्या?"—और वे कनखियों से एक-दूसरे की तरफ देख कर कुछ मुस्कराये। मुझे बड़ा अजीब लगा। मालूम नहीं, मैंने उनको गांधीजी की मृत्यु का समाचार बताया या नहीं। उन्होंने भी एक-दो वाक्य और कहे, जिनमें स्पष्ट उपहास और व्यंग्य भरा हुआ था और वे मुड़ कर वापस चलने लगे। चलते-चलते एक ने हँस कर दूसरे से कहा—"कैसे रो रहे हैं, जैसे इनके बाप मर गये हैं!" उस वक्त तो मैं उनके इस सारे आश्चर्यजनक व्यवहार का मतलब कुछ भी समझ नहीं पाया। पर थोड़ी देर बाद सुना कि कुछ मोहल्लों में कहीं-कहीं मिठाई बाँटी जा रही है। फिर तो धीरे धीरे सारा षड्यंत्र प्रकट हो गया, जिसे दोहराने की अब जरूरत नहीं है।

उन नौजवानों के उस व्यंग्य में भी कितना बड़ा सत्य था! मेरा ही नहीं, सचमुच मेरे जैसे लाखों-करोड़ों लोगों का बाप मर गया था। तीस जनवरी की वह रात कितने असंख्य लोगों ने रोते-रोते बितायी होगी, और आज भी उस दिन की याद करके रोते होंगे!

* * *

रात को 'लोकवाणी' का ऊपर का मुखपृष्ठ और पीछे का आखिरी पृष्ठ तैयार होना बाकी था। शेष दो पेज अंदर के तैयार हो चुके थे। उस दिन का अग्रलेख मैं लिख चुका था और वह कम्पोज होकर अपनी जगह लगाया भी जा चुका था। पर जिस अंक में दुनिया को हिला देने वाला समाचार छप रहा था, उसमें अग्रलेख दूसरे ही किसी चालू विषय पर हो, यह कैसे सम्भव था! और अपने जीवन में उससे बढ़कर भावनापूर्ण और महत्त्व का दूसरा मौका तो संपादकीय लिखने का शायद आने वाला नहीं था। इसलिए तुरन्त प्रेस में अपने साथियों को कह कर मैंने पहलेवाला संपादकीय लेख तो निकलवा दिया। पर सबसे मुश्किल सवाल अब पेश हुआ कि दूसरा लिखा क्या जाय? जिस घटना ने मेरे हृदय को डाँवाँडोल कर दिया था और बुद्धि को कुंठित, तथा जो घटना इसी तरह मेरे हजारों पाठकों को उद्वेलित कर चुकी होगी और उनमें से दस-बीस व्यक्ति के अन्तस्तल को भी हिला चुकी होगी उसके बारे में मैं क्या और कैसे लिखूँ? घटना की असाधारणता के अनुपात में मैं जो कुछ भी लिखूँ वह फीका ही लगने वाला था। पर इस समस्या हल तो फिर भी हो जाता, लेकिन असल बात तो यह थी कि मैं उस समय कुछ भी लिख सकने की स्थिति में नहीं था। फिर भी कुछ लिखना तो था ही! कलम हाथ में लिये हुए मालूम नहीं मैं कितना देर बैठा रहा। बड़ी मुश्किल समस्या थी। आखिरकार दो पंक्तियाँ मैंने लिखीं और कम्पोज में दे दीं। मालूम नहीं पाठकों को क्या लगा होगा, पर मुझे उन दो पंक्तियों से काफी सन्तोष और समाधान हुआ था।

दूसरे दिन सवेरे 'लोकवाणी' में संपादकीय के दोनों कालम 'ब्लैंक'-खाली थे। बीच में सिर्फ ये दो पंक्तियाँ लिखी हुई थीं—

"कारज की ज्योति सदा ही जरै,
एक जन जाये दूजा आये, फिर भी ज्योति बढ़े"

* * *

सचाई की ज्योति सचमुच कभी नहीं बुझती। व्यक्ति आता है और जाता है, पर वह ज्योति सदा बढ़ती रहती है। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, ईसा, मोहम्मद, चैतन्य आदि जो व्यक्ति थे वे आये और गये, पर जो सत्य उन-उनके द्वारा प्रकट हुआ वह अमर हो गया और मानव [illegible]

[illegible]

गांधी हमारी बुद्धि कभी-कभी भले ही अधीर हो उठती हो, पर इसमें कोई सन्देह नहीं है, और इतिहास इस बात की ताईद करता है, कि 'गांधी' गये, पर गांधी द्वारा प्रज्वलित ज्योति युग-युगान्तर तक मानव का पथ आलोकित करती रहेगी।

सूतांजलि-संग्रह

साल	सूत-गुण्डियाँ
१९५१	४८,६०८
१९५२	१,०२,४९०
१९५३	१,८६,३२९
१९५४	२,६३,५१९
१९५५	४,०८,८६०
१९५६	६,२१,५०५
१९५७	४,३१,२९२
१९५८	७,३२,०१६
१९५९	६,४७,३९०

इस अंक में

विनोबाजी का पता :

मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल,
पो० पट्टीकल्याण, जिला–हिसार (पंजाब)

उत्तर प्रदेश और सूतांजलि-संग्रह

सर्वोदय-मंडल का निवेदन

[उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय-मंडल की ओर से पूरे प्रदेश में सूतांजलि-संग्रह की व्यवस्थित योजना बनायी गयी है। सेवापुरी से हमें इस सम्बंध में एक नोट मिला है, वह यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। —सं०]

३० जनवरी '४८ को बापू का देहावसान हुआ था। १२ फरवरी को उनकी पुण्यअस्थि का विसर्जन सभी पवित्र नदियों और तीर्थों में हुआ था। तभी से प्रति वर्ष राष्ट्रपिता बापू को श्रद्धांजलि स्वरूप इस देश के नागरिक ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पक्ष मनाते हैं और अपने हाथ से काता हुआ १ गुण्डी सूत समर्पण करते हैं। गांधीजी का विश्वास था कि चरखा व खादी हिन्दुस्तान के वर्तमान जीवन को सुखी, समृद्ध और स्वावलम्बी बनाने में समर्थ हो सकती है। यह सूतांजलि केवल बापू के प्रति श्रद्धामात्र नहीं, बल्कि एक जीवन दिशा का सूचक है। सभी लोग जो इस देश में बसते हैं, चाहे वे किसी भी उम्र, जाति, विचार के हों गांधीजी द्वारा प्रदर्शित इस नवजीवन के निर्माण में योग दे सकते हैं। बापू सर्वोदय-विचार के द्रष्टा रहे हैं, उनकी इच्छा व आशा को मूर्त रूप देने में उनके प्रति श्रद्धांजलि ही नहीं, बल्कि उसमें अपना बहुत बड़ा कल्याण है। यह तो स्पष्ट ही है कि सर्वोदय-विचार का प्रयोग यदि हिन्दुस्तान में असफल हुआ तो वह दिन दूर नहीं, जब कि हम अपनी पायी हुई स्वतंत्रता को खो बैठेंगे। एक गुण्डी सूत राष्ट्रपिता के विचारों की मान्यता के प्रतीक स्वरूप कुछ भी नहीं है। इसमें प्रत्येक नागरिक आसानी से योग दे सकता है। यह स्मरणीय है कि इस सूतांजलि का उपयोग देश में सर्वोदय विचार प्रचारक सेवकों का एक समूह खड़ा करने में सहायक होगा, जो परस्पर नागरिकों में सहयोग, प्रेम तथा समता का वातावरण निर्माण करने में समर्थ होगा।

उत्तर प्रदेश का यह सौभाग्य है, जो किसी भी अन्य प्रदेश से बापू के प्रति श्रद्धा, मान्यता में कभी पीछे नहीं रहा है। यह भारत का हृदय है। इससे लोगों को अधिक अपेक्षा रखना भी स्वाभाविक है। श्री विनोबाजी के शब्दों में—सूतांजलि की गुण्डी सर्वोदय-विचार के लिए नागरिकों की सम्मति (वोट) है। यह श्रद्धा की वस्तु है, इसमें कोई प्रतिबंध नहीं है। आज चरखे का महत्त्व सभी को मालूम है। बापू ने कहा था कि 'कातो, समझ बूझ कर कातो।' चरखे से सूत निकालने में श्रम की प्रतिष्ठा, श्रमिक की प्रतिष्ठा और व्यक्ति के स्वाभिमान का जागरण तो है ही, शोषण का उन्मूलन तथा सभी गुणों का समावेश भी है। हम नहीं समझते कि कोई भी भारतीय नागरिक या वर्ग से इस श्रद्धांजलि आयोजन में सम्मिलित होने से हिचकेगा।

उत्तर प्रदेश की श्री गांधी आश्रम, भूदान-यज्ञ समिति तथा सर्वोदय-मंडल और गांधी स्मारक निधि प्रभृति सभी रचनात्मक संस्थाओं के और सार्वजनिक कार्यकर्ता शिक्षा संस्थाओं के अध्यापक व अधिकारी राजनैतिक दलों के लोग सदा के समान ही इस वर्ष भी मिल कर सर्वोदय-पक्ष मनाने का आयोजन करें तो यह मर्यादा और परम्परा के अनुकूल होगा तथा इस कार्य को प्रेरणा और बल मिलेगा। अच्छा होगा कि कार्यकर्ता अपने जिले को कई भागों में विभाजित कर लें। इन विभाजित भागों में से ५ से १० कार्यकर्ताओं की टोलियाँ, बना कर एक-एक विभाग उन्हें दें। ये टोलियाँ बना कर उन भागों में ३० जनवरी को प्रातः ४ बजे से अपनी पैदल यात्रा प्रारम्भ करें और १२ फरवरी को सभी टोलियाँ जिले भर के एक स्थान पर मिलें। यह कार्यक्रम अपने अपने जिले की परिस्थिति के अनुसार बनाया जाय और यह ध्यान रखा जाय कि पैदल यात्रा की दूरी १० मील से अधिक न हो। यात्रा के दौरान में प्रातः ४ बजे प्रार्थना करते हुए पैदल यात्रा पर चल दिया जाय तथा [illegible] तौर पर ७ बजे तक निश्चित पड़ाव वाले गाँव पहुँच कर गाँव की सफाई, भूमि वितरण, मौन सामूहिक कताई की जाय तथा सर्वोदय-पक्ष, ग्रामदान व सूतांजलि का महत्त्व लोगों को समझाया जाय। वहाँ पर जो भूमि या सम्पत्तिदान मिले, उसका ऐलान कर फिर ईश्वर-प्रार्थना की जाय। सर्वोदय-साहित्य बिक्री की जाय तथा १२ फरवरी को सूतयज्ञ के लिए प्रयत्न किया जाय कि हर जिले से सूत गुण्डियाँ प्राप्त हों, सर्वोदय पक्ष में प्रत्येक गाँव में गांधी चबूतरे के निकट या अन्य उपयुक्त सार्वजनिक स्थान को लीप-पोत और स्वच्छ करके महात्मा गांधी का चित्र ऊँचे स्थान पर वहाँ रखें। और उपासनामय वातावरण बना कर सामूहिक कताई के लिए सभी भाई-बहन हर नित्य कम-से-कम अपना १ घंटा समय दें। यह [illegible] किया जा सकता है [illegible], जहाँ [illegible] शुरू हों, चरखे वहाँ रखे जायँ और अखण्ड कताई का आयोजन किया जाय तथा गाँव के भाई-बहन बारी-बारी से एक-एक घंटा उन चरखों पर कताई करें।

अपने अपने घरों में ही एक जगह लीप पोत स्वच्छ कर वहाँ पवित्र वातावरण में बैठ कर सब भाई-बहन नियमित रूप से एकसाथ या बारी-बारी करके १-१ घंटा कताई करें।

दोनों तरीकों में जहाँ जो सुविधाजनक हो, वहाँ उस तरह से सूत्रदान-यज्ञ किया जाय। राष्ट्रीय [illegible] सेना के अपने इस वार्षिक पर्व को घर घर और गाँव गाँव प्रत्येक भाई-बहन, बूढ़े बच्चे निष्ठापूर्वक [illegible] भाव से मनायें। यह प्रार्थना है कि फिर स्वयं काता हुआ एक-एक गुण्डी सूत, अपने नाम-पते और आयु के एक पुर्जे के साथ अपने क्षेत्र के सर्वोदय-केंद्र में पहुँचा दें अथवा सूतांजलि संग्रह के लिए जो भाई उस दौर में नियुक्त किये गये हों, उन्हें दे दें।

उत्तर प्रदेश में काशी, प्रयाग, अयोध्या, [illegible], गढ़मुक्तेश्वर, ऋषिकेश, हरद्वार, [illegible] वृन्दावन में प्रति वर्ष सर्वोदय मेला लगता है। हर वर्ष की भाँति इन जगहों में इस वर्ष भी मेले का आयोजन किया जाय। मेलों में टोलियाँ बना कर भजन गाते हुए लोग आयें। कीर्तन व सभाएँ की जायँ। सामूहिक कताई का कार्यक्रम रखा जाय और मेलों में ग्रामोद्योगी वस्तुएँ ही बिक्री के लिए आयें। इस प्रकार व्यवस्थित ढंग से इस बार सूतांजलि का कार्यक्रम योजना बद्ध रूप में सफल [illegible] कर सफल करना है। सर्वोदय मंडल की ओर से प्रदेश जिले का संयोजक भी [illegible] किया गया है। उनके अनुसार सभी कार्यक्रम इस बार में पूरा [illegible]।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन ४१२५
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,०२५ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,१५० । एक प्रति १३ नये पैसे

साप्ताहिक

भूदान-यज्ञ

वाराणसी, शुक्रवार
५ फरवरी '६०
वर्ष ६ अंक १९

भूदान-यज्ञ-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान, अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

सम्पादक : सिद्धराज ढड्ढा

रिहंद-गोलीकांड और उसका सामाजिक मूल्यांकन
सामाजिक अस्वास्थ्य का प्रकोप चारों ओर से उभर रहा है

डॉ. जे० सी० कुमारप्पा का देहान्त

सुविख्यात अर्थशास्त्रज्ञ और ग्रामसजीवन के प्रयोगों प्रवक्ता जे० सी० कुमारप्पा का मद्रास के बड़े अस्पताल में ता० ३० जनवरी, १९६० की शाम को देहान्त हो गया। गांधीजी के दिग्गजों में से एक प्रमुख दिग्गज ने 'गांधी निर्वाण' दिन और 'शहीद दिन' के पवित्र दिवस पर अपनी शरीरयात्रा समाप्त की। कुमारप्पाजी हमारे ज्येष्ठ स्वजन, समर्थ मार्गदर्शक और निर्भ्रान्त तत्त्व निर्देशक थे। आज का मानव जिस सम्पत्ति और समृद्ध की लालसा से पथभ्रष्ट हुआ है और स्वत्व खो बैठा है उस लालसा की शुद्ध अर्थ वैज्ञानिक दृष्टि से व्यर्थता उन्होंने सिद्ध की और मानव जीवन की तथा जीवनमात्र की अक्षुण्ण एवं अबाधित प्रतिष्ठा प्रस्थापित करने के लिए शाश्वत आर्थिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। संग्रहवादी अर्थरचना और निरंतर प्रवाहशील अर्थरचना का भेद कुमारप्पा ने विशद किया, अपहरण पर आधारित वैभव और श्रमाधारित समृद्धि के स्वरूप का पृथक्करण किया, उस दिशा में शास्त्रशुद्ध तथा नैष्ठिक प्रयोग किये और इस प्रकार मानवनिष्ठ तथा मानव केंद्रित अर्थरचना का व्यवहारसुलभ मार्ग प्रशस्त किया। 'शाश्वत अर्थरचना' और 'ग्राम-सजीवन' पर उन्होंने जो दो-दो पुस्तकें लिखी, उनमें मौलिकता और वैज्ञानिकता भी है।

मनुष्य की उत्पादनशीलता और उपभोगक्षमता का पोषण जो आर्थिक संयोजन करता है, वही मनुष्य की जीवनश्री और भाग्य-लक्ष्मी की प्राणप्रतिष्ठा करता है। यह [illegible]

[illegible]

श्री जे० सी० कुमारप्पा ने अपने निरूपण और प्रयोगों से विशद किया। इस अर्थ में वे 'वास्तविक लक्ष्मीपुत्र' थे। अभी ४ जनवरी को ही हमने उनकी वर्षगाँठ मनायी थी, किसे पता था कि इतनी जल्दी हम उन्हें खो बैठेंगे। हम उन्हें अत्यन्त पूज्य बुद्धि से अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

काशी, ३१-१-१९६० —दादा धर्माधिकारी

श्री कुमारप्पाजी के चित्र

श्री कुमारप्पाजी की ६९वीं वर्षगाँठ के अवसर पर गत ४ जनवरी को सर्वोदय स्वाध्याय मन्दिर, इंदौर ने श्री कुमारप्पाजी का एक बहुरंगा चित्र छपवाया है। चित्र का साइज ११"×९" है। मोटे कागज पर छपे हुए चित्र का दाम ४ आना और पतले कागज पर २ आना। चित्र प्राप्त करने का पता—सर्वोदय स्वाध्याय मंडल, प्राकृतिक चिकित्सालय, ५०, महात्मा गांधी रोड, इंदौर शहर (म० प्र०)।

अक्षय कुमार करण

[मिर्जापुर जिले के रिहंद बाँध-निर्माण स्थल पर गत १८ जनवरी को मजदूरों पर सरकार को गोली चलानी पड़ी और फलस्वरूप एक श्रमिक की मृत्यु हुई तथा कुछ श्रमिक घायल हुए। इस तरह के गोलीकाण्ड कई बार हमारे देश में हुए हैं और होते हैं। इस घरेलू हिंसा पर विजय पाये बिना व्यापक अहिंसा की बात करना कोई अर्थ नहीं रखता।

इस आन्दोलन के समय सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति के सदस्य और देश के जाने-पहचाने सर्वोदय-विचारक करणभाई घटना-स्थल पर उपस्थित थे और उन्होंने शान्ति-स्थापना का उल्लेखनीय कार्य किया। हजारों मजदूरों, सरकारी अधिकारियों तथा ठेकेदार कम्पनी के अधिकारियों के साथ निकट सम्पर्क साधते हुए लगभग दो सप्ताह का समय श्री करणभाई ने रिहंद बाँध के स्थान पर दिया। —सं०]

यह बाँध उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में बनने वाला पूर्वी देशों का सबसे बड़ा बाँध है। यहाँ १८० वर्गमील में पानी का बड़ा भंडार रहेगा और यहाँ से ३ लाख किलोवाट बिजली पैदा होगी तथा ५ हजार मील तक बिजली जायेगी। ४६ करोड़ रुपये खर्च करके यह बाँध बनाया जा रहा है। इस क्षेत्र के १०८ गाँवों के १० हजार परिवार विस्थापित होंगे और उनकी लगभग १० करोड़ की सम्पत्ति प्रतिग्रस्त होगी।

यहीं पर १८ जनवरी को गोली-कांड की घटना घटी। काफी खिंच और संघर्ष के बाद आखिर २६ जनवरी को दोनों दलों में समझौता हुआ तथा पूर्वस्थिति कायम हुई। मालिक और मजदूरों में समझौता होने के बाद अब शान्ति की स्थिति कायम हुई है।

इससे पहले कि इस घटना का पूरा इतिहास मैं लिखूँ, मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस तरह के आन्दोलनों को जान-बूझ कर गलत मोड़ दे दिया जाता है। जल्दबाजी और निहित स्वार्थ के कारण घटना वृहत् रूप धारण कर लेती है। क्षेत्र में काम करने वालों को सोचना

उनकी थोड़ी-सी अधीरता के कारण या नासमझी के कारण कहीं समाज का और आम जनता का नुकसान तो नहीं हो रहा है। जनतंत्र और स्वराज्य की हम बात करते हैं, पर जनतंत्र का महल हम जिस बुनियाद पर खड़ा करना चाहते हैं, उसकी दशा कैसी है?

रिहंद बाँध का ठीका बंबई के हिन्दुस्तान कन्स्ट्रक्शन कम्पनी को दिया गया है। उनकी तरफ से ही आज बाँध पर साढ़े छह हजार मजदूर इस समय काम कर रहे हैं। काम का काफी हिस्सा पूरा होने पर आया है। हिन्दुस्तान के सभी प्रदेशों के मजदूर काम पर हैं। जैसे जैसे काम पूरा होता जाता है, वैसे वैसे मजदूरों की छँटनी कम्पनी करती है। समस्या इसी में से खड़ी होती है। हिन्दुस्तान कन्स्ट्रक्शन कम्पनी के पास ४ प्रकार के काम करने वाले हैं: (१) व्यवस्थापक-वर्ग, जो इनके यहाँ स्थायी नौकर हैं और सारे प्रोजेक्ट की देख-भाल करते हैं। (२) स्थायी कार्यकर्ता, जो कई वर्षों से इनके यहाँ काम करते हैं और जिन्हें अनेक प्रकार की सुविधाएँ कंपनी देती है। (३) श्रमिक वेतन पर कार्य करने वाले कार्यकर्ता, जिनको कम्पनी 'शार्ट टर्म नोटिस' पर रखती है और एक प्रोजेक्ट समाप्त होते ही उनकी नौकरी खतम कर देती है। दूसरे प्रोजेक्ट पर जब काम करने जाते हैं, तो वे नये कार्यकर्ता माने जाते हैं। इन तीनों प्रकार के काम करने वालों को कम्पनी बोनस के रूप में साल में साढ़े तीन महीने का वेतन देती है। इन तीनों प्रकार के काम करने वालों की संख्या रिहंद बाँध पर करीब एक हजार होगी। सबसे बड़ी तादाद चौथे प्रकार के मजदूरों की है, जो दैनिक मजदूरी पर काम करते हैं। इनकी संख्या साढ़े पाँच हजार के लगभग है। इन दैनिक मजदूरों में भी दो प्रकार के मजदूर हैं। पहले वे जिनको कम्पनी ने अपनी तरफ से भिन्न-भिन्न प्रदेशों से बुलाया है। दूसरे वे, जो इन बुलाने वालों के सम्पर्क से यहाँ आकर भरती हुए हैं। जिनको कम्पनी ने बुलाया है, उन्हें कम्पनी काम खतम होने पर घर जाने का खर्च देती है। बाकी दैनिक मजदूरों को इस प्रकार की कोई सुविधा नहीं मिलती। दैनिक मजदूरी पर काम करने वाले जो लोग हैं, उनमें से अधिकांश मजदूर तीन चार वर्षों से काम कर रहे हैं। बहुतों को तो काम करते हुए दस दस, बारह बारह वर्ष हो गये, लेकिन वे दैनिक मजदूर की तरह से ही मजदूरी पाते हैं। अपने बाल बच्चों के साथ पड़े हैं। एक प्रोजेक्ट से दूसरे प्रोजेक्ट पर जब जाते हैं तो पहले प्रोजेक्ट पर उनका हिसाब साफ समझा जाता है और दूसरे प्रोजेक्ट पर नये मजदूरों में उनकी गिनती होती है। अपने सारे परिवार के साथ घूमते रहते हैं। मुख्य समस्या इन्हीं दैनिक मजदूरों की है। इस बार का झगड़ा इन्हीं से शुरू हुआ।

झगड़े का प्रारम्भ : उपरोक्त प्रकार के दैनिक मजदूरों में से कई मजदूरों को छँटनी में निकाला गया। उनमें असन्तोष हुआ। छँटे हुए मजदूर वहीं टिके रहे और असन्तोष का वातावरण फैलता रहा है। निकाले हुए मजदूरों में से तीन मजदूरों ने भूख हड़ताल शुरू की। प्रारम्भ में इन तीनों की व्यक्तिगत माँग थी। ५ जनवरी से भूख हड़ताल शुरू हुई। 'क्लेरो' के दफ्तर के सामने १५ जनवरी तक भूख-हड़ताल करते रहे। १४ जनवरी तक बाहर के किसी को यह पता नहीं था कि भूख-हड़ताल हो रही है। सूचना मिलने पर १५ जनवरी की दोपहर को जिला

रिहंद-गोलीकांड और उसकी पृष्ठभूमि

अधिकारी घटना-स्थल पर पहुँचे। सिविल सर्जन ने भूख हड़तालियों की हालत की जाँच की। एक की हालत विशेष चिन्ताजनक बतायी। उस समय तक भूख-हड़ताल का स्वरूप व्यक्तिगत माँग से बदल कर सार्वजनिक माँग हो चुका था। १५ तारीख की रात को हम रिहंद पर पहुँचे। हम लोग तो एक विशेष कार्य से ही पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गये थे। रिहंद बाँध बंध जाने से १०८ गाँव जलमग्न होंगे। दस हजार परिवार और पैंतालीस हजार की आबादी प्रभावित होगी। इन लोगों को इनकी पुश्तैनी जमीन, मकान तथा अन्य सम्पत्ति का मुआवजा मिलने, साथ ही इन सब गाँवों को नयी जगह बसाने का बहुत बड़ा प्रश्न है। इसी सिलसिले में हम लोग उस क्षेत्र में जाने के लिए वहाँ गये थे। जिलाधीश के साथ यह कार्यक्रम बहुत पहले हो चुका था। ता० १६ से २० तक हम लोग उस क्षेत्र में घूमने वाले थे, इसीलिए ता० १५ की रात को रिहंद पहुँचे। आश्रम पर पहुँचते ही श्रमिकों में अशान्ति होने की चर्चा सुनने को मिली। अधिक रात्रि हो जाने के कारण उस समय और विशेष जानकारी नहीं हो सकी।

ता० १६ जनवरी को प्रातःकाल ८ बजे हम दोनों सबसे पहले जिलाधीश से जाकर मिले। उनसे बात हुई कि तीन व्यक्ति जो भूख हड़ताल कर रहे थे, उनकी हालत चिन्ताजनक होने के कारण घटनास्थल से हटा दिया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि आज मजदूरों ने हड़ताल कर रखी है। उनसे बात करने के बाद हमने यह उचित समझा कि हम मजदूरों के बीच जायँ। इसलिए हम लोग सीधे लेफ्ट बैंक की ओर गये। वहाँ हजारों मजदूर एकत्रित थे। हम लोग सभा-स्थल पर पहुँचे। सबसे पहले हमने यह जानने का प्रयत्न किया कि इनका नेता कौन है। इनकी कोई कमेटी है या नहीं! मालूम हुआ कि मजदूरों ने इसी सभा में अपने १८ प्रतिनिधि चुने हैं। हमारे सामने ५ प्रतिनिधि और चुने गये। इस प्रकार कुल २३ प्रतिनिधि चुने गये। हम लोगों ने मजदूरों से अपील की कि वे शान्त रहें। उसी समय प्रोजेक्ट मैनेजर श्री सेनगुप्ता भी सभा में आये। उन्होंने भी मजदूरों से कहा कि 'आपकी जो माँग है, उसके लिए हम आपके प्रतिनिधि से बात करेंगे। आप लोग काम पर जाइये।' हमने फिर मजदूर भाइयों से शान्त रहने की अपील की। २३ प्रतिनिधियों को हमने इकट्ठा किया और उन्हें लेकर सुर्रा में, जहाँ हमारे वनवासी सेवाश्रम की शाखा है वहाँ गये, ताकि शान्ति से बात हो सके। एक कमरे में बैठक शुरू हुई। सैकड़ों मजदूर ,बाहर भी इकट्ठे हो गये थे। चर्चा के दौरान में मालूम हुआ कि पांडेय नाम के कोई एक नेता हैं, उनसे बात करने पर ही मसला सुलझ सकता है। उनकी अनुपस्थिति में किसी प्रकार के समझौते की बात नहीं हो सकती। हमने उन्हें समझाने की काफी कोशिश की और उनकी माँग क्या है, यह जानना चाहा। उन्होंने पाँच माँगें सामने रखीं और उन्होंने यह भी बताया कि ये माँगें वे कम्पनी के पास भी भेज चुके हैं तथा सरकार के सभी अधिकारियों के पास भी भेज दी गयी हैं। उनकी वे ५ माँगें ये थीं :

(१) फारेस्ट अलाउन्स (जंगल भत्ता)

(२) सिक लीव (बीमारी की छुट्टी)

(३) ग्रान्ट लीव

(४) कैजुअल लीव (आकस्मिक छुट्टी)

(५) रेलवे-भाड़ा

इन पाँचों माँगों के अलावा सबसे बड़ी माँग अब उनकी यह थी कि उनके तीन भूख हड़ताली साथी जो हटाये गये हैं, उनके बीच वापस लिये जायँ। श्रमिकों को पूरी आशंका थी कि कम्पनी ने उन मजदूरों को कहीं गायब कर दिया है और उनमें से एक मर भी गया है। हमने उनको समझाया कि हम जिलाधीश से बात कर चुके हैं। कम्पनी ने उनको नहीं हटाया, बल्कि जिला अधिकारियों ने उन्हें हटा कर उनकी जीवन रक्षा के निमित्त जिला-जेल भेज दिया है। पान्डेयजी से ही बात हो सकती है, यह फिर कुछ लोगों ने कहा। हमने उनसे कहा कि आप पान्डेयजी को बुलाइये या हम लोगों को ही उनके पास ले चलिये, ताकि उनकी सलाह से शान्तिपूर्वक मसला सुलझ सके। इस पर एक-दो ने यह प्रगट किया कि पान्डेयजी के यहाँ आने पर गिरफ्तारी का डर है। फिर भी हमने उन्हें आश्वासन दिया कि हम जिलाधीश से बात करेंगे, शान्ति-स्थापना के दौरान में ऐसी घटना नहीं होगी। इस पर दो भाई पान्डेयजी को बुलाने गये। कुछ देर बाद लौट कर आये और उन्होंने कहा कि पान्डेयजी नहीं आ सकते। सभी साथियों से भी उन्होंने कहा कि चलो, हम लोग चलें। एक एक कर सब लोग उठ कर कमरे के बाहर चले गये। हम लोग भी बाहर निकले। अलग-अलग लोगों को समझाने लगे। प्रतिनिधियों में परस्पर एक-दूसरे में विश्वास नहीं दिखायी पड़ता था। बहुत समझाने बुझाने पर फिर सब लोग एक कमरे में आकर बैठे। हमने उनके सामने परिस्थिति की गंभीरता रखी और उन्हें समझाया कि नेता वही है, जो सामने आकर नेतृत्व करे। जो सामने रहेगा वही सारी परिस्थिति को काबू में रख सकता है। छह हजार मजदूरों ने आप लोगों को प्रतिनिधि चुना है। आप लोगों को जिम्मेवारी से काम करना चाहिए। आप अपनी माँगों के बारे में कम्पनीवालों से मिल कर बात करें, और आप लोग ऐसी कोशिश करें, जिससे आपकी माँगें अधिक से अधिक पूरी हो और आपका सम्मान रहे। हमने उन्हें यह भी समझाया कि समझौते में लेन देन होता है, अकसर आन माँगें कभी पूरी नहीं होती। फिर सबने विचार शुरू किया। हमने उन्हें स्पष्ट यह भी बता दिया कि भूख हड़तालियों को वापस लाने की बात समझौता करने के बाद ही की जायँ। विचार करते हुए उन्होंने यह निश्चय किया कि भूख हड़तालियों के घर वालों तथा प्रतिनिधियों में से कुछ लोग भूख-हड़तालियों से मिलें। ऐसा उन्हें अवसर दिया जाय, ताकि उन्हें इतमीनान हो जाय, कि वे लोग सही-सलामत हैं। उनकी छः माँगों में से सबसे अव्वल माँग जो स्वीकार होनी ही चाहिए, वह उन्होंने रेलवे-भाड़े की रखी। मजदूरों की जब छँटनी की जाती है, उस समय उनको घर जाने के लिए रेल-किराया दिया जाय। इसके बाद भी और माँगों पर विचार हो। इतनी चर्चा के बाद सभी प्रतिनिधि उसी दिन शाम को साढ़े चार बजे के लगभग कम्पनी के अधिकारियों से मिलने के लिए चले। हम भी उनके साथ थे। प्रोजेक्ट मैनेजर श्री सेनगुप्ता से बात शुरू हुई। उन्होंने बताया कि जहाँ तक भूख-हड़तालियों से मिलने का सम्बन्ध है, जिलाधीश ही निर्णय कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने ही हटाया है। कम्पनी का इसमें कोई हाथ नहीं। माँग पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि रेलवे किराया देने की माँग की बात वे मंजूर करते हैं। उनके भत्ता स्वीकार करना उनके लिए कठिन होगा। फारेस्ट एलाउन्स के बारे में मैंने भी प्रतिनिधियों को समझाया कि वे यह माँग हटा लें। प्रतिनिधियों ने स्वीकार कर लिया। उस समय की चर्चा से ऐसा वातावरण दिखाई पड़ा कि रेल भाड़ा की माँग की स्वीकृति से उन्हें सन्तोष है और जे[illegible] अपने साथियों से मिलने के बाद लौट कर आ[illegible] समझौते का ऐलान कर देंगे और काम शुरू कर दें[illegible] उसी समय उन्होंने तय किया कि १७ तारीख प्रातःकाल भूख हड़ताल करने वाले परिवाले के [illegible] एक व्यक्ति तथा प्रतिनिधियों में से दो, कुल पाँच व्य[illegible] मिलने जायेंगे। कम्पनी उनके जाने के लिए स[illegible] भी देगी। सवारी का भी प्रबन्ध कर दिया। जिला[illegible] ने भी उन लोगों को जेल में जाकर मिलने के लि[illegible] आदेशपत्र दे दिया। लेबर-कमिश्नर भी उस दिन आ[illegible] थे। ऐसा वातावरण दिखाई दिया कि परिस्थिति सु[illegible] जायेगी और १७ तारीख की रात को काम शुरू [illegible] जायेगा। लेबर कमिश्नर यही आशा लेकर आये।

ता० १७ जून को प्रातःकाल ५ व्यक्ति मिरजा[illegible] भूख-हड़तालियों से मिलने रवाना हुए। आश्रम के ए[illegible] भाई भी उनके साथ गये, ताकि उन्हें वहाँ को[illegible] दिक्कत न हो। वे लोग शाम तक लौट कर आयें[illegible] इसलिए हम भी उस दिन रिहंद बाँध से डूबने वा[illegible] क्षेत्र में चले गये। हम यह आशा करते थे कि हम ५ बजे शाम तक वापस चले आवेंगे। लेकिन वहाँ भ[illegible] हजारों व्यक्ति दो दिनों से एकत्रित थे। परिस्थिति को समझने-बूझने तथा निरीक्षण करने में हम लोगों को समय लग गया। लौटने में हमें रात हो गयी। ८ बजे लौटे। कम्पनी का दफ्तर रास्ते में ही पड़ता है। हम लोग वहाँ गये। हमें आशा थी कि सभी प्रतिनिधि वहाँ मिलेंगे। ज्ञात हुआ कि वे लोग बहुत देर तक हम लोगों की प्रतीक्षा कर रहे थे और अभी-अभी सभी लोग जिलाधीश से मिलने के लिए गये हैं। हम भी व[illegible] वहाँ पहुँचे। वहाँ सभी प्रतिनिधि बाहर ही मिले। उस समय तक उनकी भेंट जिलाधीश से नहीं हुई थी। उनकी बातचीत से कुछ ऐसा लगा कि वे सब फिर उखड़े-उखड़े हैं। बनी-बनायी परिस्थिति फिर बिगड़ी है। मिरजापुर से जो लोग लौट कर आये, उन्होंने नया ही रुख अख्तियार कर लिया। वे लोग गरम दिखा[illegible] पड़े। भूख हड़ताली जब तक छूट नहीं आते, [illegible] तक कोई बात नहीं हो सकती, ऐसा मालूम हुआ तथाकथित मजदूर नेता मिरजापुर में उन्हें मिले थे उसी का यह असर है। हमने फिर सबसे मिल कर बात सुलझाने की कोशिश की। प्रतिनिधियों में [illegible] विचार अस्पष्ट दिखाई पड़े। उनकी बातों से मालूम हो गया कि फिर बाहरी ताकतें प्रभावित कर रही हैं। हमने फिर बहुत समझाया। प्रतिनिधियों में से दो व्यक्ति जिलाधीश से मिलने गये। जिलाधीश ने भी उनको समझाया, लेकिन मालूम हुआ कि मामला उलझता ही रहा। उस रात को कुछ बना नहीं। वातावरण बहुत गरम रहा। अधिकारियों के तरफ से पूरी सतर्कता बरती जा रही थी। जिले के प्रायः सभी प्रमुख अधिकारी पहुँच गये थे। पी० ए० सी० की फोर्स भी काफी तादाद में आ गयी थी। भिन्न-भिन्न सूत्रों से जो सूचना-अधिकारियों को मिल रही थी, उससे उनकी चिन्ता और सतर्कता बढ़ती ही जा रही थी। मजदूर-प्रतिनिधियों में भी कई एक में समझौते की भावना की अपेक्षा आवेश की भावना थी। हमने उनसे बहुत आग्रह और अनुरोध किया कि परिस्थिति को समझावें और शान्तिपूर्ण हल होने पर आवें। श्री दो प्रतिनिधि जिलाधीश से मिले। उन्होंने ३ भूख हड़तालियों को छोड़ने की माँग रखी। जिलाधीश ने कम्पनी से समझौता कर काम पर जाने के लिए जोर दिया। हमने जिलाधीश से मिल कर

[शेष पृष्ठ-संख्या ११ पर]

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि

सेना समाप्त हो

आज समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद, फैसीज़्म, आदि सभी वादों का और कल्याण-राज्य का भी यही निश्चय है कि जीवन के सब कामों में प्रेम और करुणा चाहिए, किन्तु रक्षण के लिए ये काम नहीं देते। रक्षण के लिए तो शस्त्रबल ही चाहिए। मुझे कहने में दुःख होता है कि लगभग ऐसा ही निश्चय गांधीवालों का भी है। वे कहते हैं कि "आज की स्थिति में तो सेना ही चाहिए। जब यह स्थिति न रहे तो सरकार सेना से मुक्त हो सकती है।" कम्युनिस्ट भी तो यही कहते हैं कि आखिर तो हिंसा मिटनी चाहिए और मिटेगी। आखिर में सत्ता नहीं रहेगी। किन्तु अभी के लिए अभी तो मजबूत राज्य बनाना ही होगा और उसके लिए उत्तम सेना तथा आधुनिक शस्त्रास्त्र चाहिए। फिर हममें और उनमें फर्क क्या रहा? सेना रखने से सत्य को अवकाश कम रहता है और सत्य अहिंसा ये दोनों स्वाभाविक तौर पर साथ-साथ ही रहते हैं। यदि हम अपनी स्कीम में सेना की गुंजाइश रखेंगे, तो सत्य में असत्य को भी रखना होगा। इसलिए अहिंसा का विचार मानने वाले हम, जो एक ओर गौतम बुद्ध का चित्र और दूसरी ओर गांधीजी का चित्र रखते हैं, कर्तव्य है कि समाजरचना में परिवर्तन कर दिखायें और समाज में स्वतंत्र जनशक्ति खड़ी कर सैन्य के बिना विकेन्द्रित राज्य चला कर बतायें। जब तक हम उसके पीछे अपनी सर्वस्व शक्ति अर्पण नहीं करते, तब तक रक्षण की सेना ही रहेगी। इसलिए हमारा सारा प्रयत्न ऐसा ही होना चाहिए कि समाज में स्वतंत्र जनशक्ति का निर्माण हो जाय और सेना और पुलिस की मदद के बिना ही अपना अपना कारोबार चला सकें।

—विनोबा

लिपि-संकेत : ि [illegible] ी, ी = ि, ख = ष, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

अज्ञातवास का ज्ञात कार्यक्रम

विनोबा का एक पत्र

लगभग पिछले ढाई महीने से विनोबाजी का अज्ञात संचार चल रहा है। कार्यक्रम दो-चार दिन से आगे का नहीं बनता और विनोबा अपने को आवश्यकतानुसार किधर भी जाने के लिए स्वतंत्र रखते हैं। पर पदयात्रा से जो समाचार मिले हैं, उनके अनुसार उन्होंने अभी-अभी इस अज्ञात संचार में एक अपवाद किया है। उन्होंने यह मंजूर किया है कि आगामी १२ फरवरी को वे जालंधर जिले के फिल्लौर नामक स्थान में उपस्थित होंगे। फिल्लौर वह जगह है, जहाँ हर साल गांधीजी के श्राद्ध दिवस, १२ फरवरी को सर्वोदय मेला लगता है और पंजाब के सब सर्वोदय-कार्यकर्ता इकट्ठे होते हैं। पंजाब की सूतांजलि वहीं समर्पित की जाती है। विनोबा ने १२ फरवरी को वहाँ मौजूद रहने की पंजाब के कार्यकर्ताओं की प्रार्थना इसलिए स्वीकार की है कि पंजाब में जो मुख्य कार्यक्रम उन्होंने कार्यकर्ताओं के सामने रखा है और जिसे पूरा करने की प्रेरणा देने के लिए वे उस प्रान्त में घूम रहे हैं, उसके लिए एक ही जगह इकट्ठे होने वाले पंजाब के कार्यकर्ताओं को वे सजग कर सकें। अपने अज्ञात संचार की शुरुआत के पहले से ही विनोबा पंजाब में सर्वोदय-पात्र के कार्यक्रम पर जोर देते रहे हैं। सारे पंजाब में करीब आठ हजार गाँवों में कुछ-न-कुछ खादी का काम चलता है और इस नाते रचनात्मक कार्यकर्ताओं का वहाँ के रहने वालों से संबंध ओतप्रोत होता है। विनोबा का आग्रह रहा है कि इनमें से हरएक गाँव में पहले कदम के तौर पर सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम उठा लिया जाना चाहिए। जिन गाँवों से उनका रात-दिन संबंध आता है, वहाँ के लोगों को समझा कर उनके घरों में सर्वोदय पात्र रखवाना कार्यकर्ताओं के लिए मुश्किल नहीं होना चाहिए। हर गाँव में अगर एक पात्र भी स्थापित हो तो पंजाब में सहज ही दो लाख पात्र हो सकते हैं, ऐसा विनोबा का कहना है।

इसी काम को प्रेरणा देने के लिए विनोबा ने अपने अज्ञात संचार में यह अपवाद किया है और २०-२५ दिन पहले से १२ फरवरी का फिल्लौर का कार्यक्रम तय किया है। यह जाहिर करता है कि सर्वोदय पात्र के कार्यक्रम को विनोबा हमारे सारे आंदोलन के लिए कितना जरूरी और बुनियादी कार्यक्रम मानते हैं। फिल्लौर के लिए किये गये अपवाद का जिक्र करते हुए विनोबा ने कहा—"कुछ लोग कहते हैं कि भूदान आन्दोलन मंद पड़ रहा है। लेकिन अगर पंजाब ने इस तरह सर्वोदय पात्र के कार्य को उठा करके दिखा दिया तो सारे देश में इससे एक नयी चेतना आ सकती है। सर्वोदय-पात्र के जरिये मैं लोगों की संगठित अहिंसक शक्ति प्रकट करना चाहता हूँ।" आगे चल कर विनोबा ने कहा,

"सरकार द्वारा लगाये गए टैक्स हर व्यक्ति को जबरदस्ती देने ही पड़ते हैं। मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि शांति और सर्वोदय में विश्वास रखनेवाले लोग स्वेच्छापूर्वक किस प्रकार टैक्स दे सकते हैं।"

विनोबा का कहना है कि यह शक्ति हम प्रकट कर सकें तो हम अहिंसा का साम्राज्य कायम कर सकते हैं। आज अहिंसा की बात लोग करते तो हैं, पर राज्य हिंसा का है। हिंसा रानी है, अहिंसा दासी है। हमारी आकांक्षा अगर यह है कि अहिंसा रानी बने तो हमें इस प्रकार अहिंसक शक्ति का व्यवस्थित स्वरूप प्रकट करने की कोशिश करनी ही होगी। स्वेच्छापूर्वक स्वीकार की गयी व्यवस्था और अनुशासन से ही अहिंसक शक्ति प्रकट हो सकती है। ऐसी शक्ति प्रकट होगी तभी हम केन्द्रित शासन, सेना और पुलिस तथा अदालतों आदि के पंजे से मुक्त हो सकेंगे।

इस संबंध में विनोबाजी का एक पत्र यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है:

"१२ फरवरी को हर साल गांधी मेला लगता है, फिल्लौर में सतलज के किनारे। पंजाब में यह एक ही मेला है। इस प्रकार के मेले हिंदुस्तान के हर सूबे में लगते हैं, कई जगह लगते हैं। पर पंजाब ने अच्छा किया कि एक ही स्थान पर तय किया। वह स्थान भी करीब करीब पंजाब के बीच में आता है। इस साल का मेला खास महत्त्व रखता है, क्योंकि गांधीजी के जाने को १२ साल पूरे होते हैं। पंजाब के कार्यकर्ताओं ने तय किया है कि इस मेले में अधिक-से-अधिक लोग जायेंगे, सूतांजलि का पहाड़ बनायेंगे और सर्वोदय-पात्र घर घर में रखवाने की कोशिश करेंगे। यह भी पंजाब के लिए एक सोचने की बात है कि इस साल हमारी भूदान यात्रा पंजाब में चल रही है। पिछले साल भी एक दफा हम पंजाब घूम चुके हैं। यह दुबारा यात्रा चल रही है, इसका पूरा लाभ उठाना सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का काम है। पूछ सकते हैं कि सर्वोदय कार्यकर्ता कौन है? मैं पूछूँगा कौन नहीं है। सबका भला चाहने वाला हिंदुस्तान में कौन नहीं है! इसलिए हर कोई सर्वोदय कार्यकर्ता हो सकता है। आशा करता हूँ कि जगह जगह हजारों की तादाद में काम करने वाले निकलेंगे और पंजाब में जहाँ शासनमुक्त समाज का नमूना हम दिखा सकें, ऐसे क्षेत्र भी तैयार करेंगे।

इस प्रकार का एक क्षेत्र मोगा भी बन सकता है। मोगा में सर्वोदय-पात्र का काम आरंभ हुआ है, पुस्तक भंडार की भी तैयारी की है। वहाँ से अनेक सेवक और शांति सैनिक मिल सकते हैं। और उनको मोगा के हर घर से बल मिल सकता है। मोगा आज तक के सब आंदोलनों में आगे रहा है, तो वहाँ से यह आशा करने का मुझे हक है कि वहाँ के हर घर में सर्वोदय पात्र रहे। शांति-सैनिकों की एक सेना वहाँ खड़ी हो और यह एक मरकज बने, जहाँ से सर्वोदय-विचार की रोशनी सब दूर फैले। इस बार की हमारी यात्रा अज्ञात संचार की है। बहुत दूर का प्रोग्राम हम तय नहीं करते हैं। फिर भी गांधी मेले के लिए हमें फिल्लौर जाना है तो उससे पहले या बाद जैसा बने, मोगा जाने का भी हमने सोचा है।"

• •

आपकी क्या राय है?

[illegible] 'भूदान-यज्ञ' में लोकनागरी लिपि में एक कालम दिया जाता है। कुछ पाठकों का ऐसा मंतव्य है कि साप्ताहिक या अग्रलेख की भाँति विशिष्ट स्थान पर जो विचार दिया जाता है, वह सामान्य सबके समझने लायक लिपि में न हो तो उचित नहीं रहता। हम इस संबंध में इन अपने पाठकों की आम राय जानना चाहते हैं और यह भी जानना चाहते हैं कि पाठक इस कालम को रुचिपूर्वक पढ़ते हैं या नहीं। ६ नये पैसे का एक पोस्टकार्ड ही भेजें और इस संबंध में अपनी राय भेजने की कृपा कीजिये। —संपादक

सूतांजलि और सर्वोदय-पात्र

वैकुंठलाल मेहता

आज से ११ वर्ष पूर्व अर्थात् १२ फरवरी सन् '४९ को वर्धा के निकट पवनार में पवित्र सलिला धाम नदी के तट पर विनोबाजी ने सर्वप्रथम सूतांजलि का सन्देश दिया। हम लोगों में से जिन लोगों ने वहाँ गांधीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की, उनसे विनोबाजी की यही कामना थी कि हम प्रतिवर्ष इस स्मरणीय दिवस पर उनकी पावन स्मृति में बढ़िया कते हुए सूत की एक गुण्डी भेंट करें। वे तब से इस सन्देश की याद दिलाते रहते हैं। अब उन्होंने इसकी नयी व्याख्या और इसका उच्च मूल्यांकन किया है। उन्होंने इसे सर्वोदय ढंग से समाज-निर्माण के प्रति जनता के मत-प्रदान की कसौटी माना है, जिसे चरितार्थ करने का स्वप्न गांधीजी देखा करते थे।

गांधीजी ने कई बार स्पष्ट और असंदिग्ध शब्दों में यह मत व्यक्त किया था कि चरखा अहिंसा का प्रतीक है और उनका यह विश्वास था कि हम चरखा कातने से वास्तविक स्वराज्य के निकट अपेक्षाकृत जल्द पहुँचेंगे। उनके चरण चिह्नों पर चलने का दावा करने वाले हम अनुयायियों का भी इस सम्बन्ध में कर्तव्य है। वह इस बात में है कि हम चरखा कातने की विचारधारा के प्रति दृढ़ बने रहें और प्रतीक के रूप में प्रतिवर्ष एक गुण्डी सूत राष्ट्र को प्रदान करें।

अब सर्व सेवा संघ ने यह निश्चय किया है कि अपने कार्य को अग्रसर करने के लिए वह चन्दा (धन) स्वीकार नहीं करेगा और वह उन सभी कार्यकर्ताओं एवं संस्थाओं के सद्भाव पर निर्भर रहेगा, जो गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम को इस ढंग से बढ़ाने के लिए अग्रसर होंगी कि इसके सिद्धान्तों से संघर्ष न हो। यदि चन्दा न लिया जाय तो प्रेम और निष्ठा के भाव से स्वेच्छया अर्पित श्रम के रूप में अपने हाथों से कते सूत की गुण्डी का सचमुच स्वागत है। अतः सर्व सेवा संघ ने सूतांजलि से प्राप्त अन्न धनादि द्वारा अपना खर्च निकालने का निश्चय किया है।

सर्व सेवा संघ उन व्यक्तियों की ऐच्छिक संस्था है, जो गांधीजी द्वारा निर्मित रचनात्मक कार्यक्रम की रूपरेखा विकसित करने को कृतसंकल्प हों। यह वह संस्था है, जो कई संस्थाओं के एकीकरण से बनी है और गांधीजी ने इसे अपने रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्ति के लिए स्थापित और संचालित किया था। इसलिए हम लोग गाँवों की उन्नति और कल्याण के हेतु जो प्रयत्न कर रहे हैं, उसके लिए यह संघ प्रकाश-स्तम्भ के रूप में कार्य कर रहा है।

श्री विनोबा ने सूतांजलि के साथ एक दूसरा उच्च भाव जोड़ा है, जिसके द्वारा हमारे हृदय में प्राचीन सेवा-भावना की अग्नि प्रज्वलित हुई है। यह भावना सर्वोदय-पात्र की है। विनोबाजी ने इसका आध्यात्मिक और भौतिक दोनों मूल्यांकन किया है। यह भावना आत्म-शुद्धि और नित्य आत्मसमर्पण की दृष्टि से कार्य रूप में परिणत करने योग्य है। 'अपनी तरह अपने पड़ोसी के साथ प्रेम रख', यह इस चिरन्तन आदेश के कार्यान्वयन की नित्य याद दिलाता है।

परिवार का सबसे छोटा सदस्य 'सर्वोदय पात्र' में एक मुट्ठी अन्न या एक छोटा-सा सिक्का डालेगा। 'सर्वोदय पात्र' में प्राप्त वस्तु के संग्रह से उस क्षेत्र में 'शान्ति-सैनिकों' का योगक्षेम होगा। इन सैनिकों ने भी अपने को मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है। इस संग्रह का उपयोग सर्व सेवा संघ के अन्य कार्यों के संचालन के लिए भी किया जायगा।

अतः सूतांजलि और सर्वोदय पात्र उस नये भाव को व्यक्त करता है, जिससे हमें राष्ट्र के समग्र गांधीजी द्वारा रखे गये उद्देश्यों को कार्यान्वित करने की प्रेरणा मिलती है। खादी और ग्रामोद्योग कमीशन से संबंधित सभी लोग, चाहे वे इससे किस हैसियत से सम्बन्धित हों, सर्वोदय कार्यक्रम के इस अंग को सफल बनाने में यथाशक्ति सहायता करना अपना कर्तव्य समझें। कमीशन, इसके केन्द्रीय कार्यालयों और कार्यक्षेत्रों से सम्बन्धित संस्थाओं को चाहिए कि वे १२ फरवरी के पवित्र अवसर पर अपने सदस्यों और कर्मचारियों को सूतांजलि और सर्वोदय-पात्र के कार्य प्रारम्भ करने के लिए प्रेरित करें।

• •

हिसार में विनोबाजी

१५ जनवरी को प्रातः भूदान के कार्यकर्ता हिसार पहुँचे, तो जनता ने विनोबाजी का भव्य स्वागत किया। विनोबाजी ने अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर लगभग एक घंटा भाषण दिया। दोपहर को फतेहचन्द महिला कालिज में स्त्रियों की विशाल सभा में भाषण करते हुए आपने कहा—"स्त्रियाँ देश का नैतिक उत्थान करने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती हैं। वे पुरुषों को हरएक बुराई से बचा सकती हैं और पारस्परिक झगड़े समाप्त करने के लिए उत्तम शान्ति सैनिक बन सकती हैं।"

१६ जनवरी को साढ़े पाँच बजे प्रातः बोरेस्टल जेल हिसार के कैदियों के सामने भाषण करते हुए विनोबाजी ने कहा कि "जेल में जीवन का सुधार नहीं हो सकता। अपराधियों को सन्तों के आश्रमों में भेजना चाहिए और उद्योग सिखाने चाहिए। प्रायः लोग बेकारी और भूख से तंग आकर अपराध करते हैं। यदि मेरे हाथ में कानून हो, तो मैं जेल भेजने की बजाय उन्हें तीन एकड़ जमीन काश्त करने के लिए दे दूँ। मनुष्य जब तक स्वयं अपने पापों के लिए अपने मन में प्रायश्चित्त नहीं करेंगे, उनका जीवन बदलना संभव नहीं। हाँ, नारद जैसे महात्मा के सत्संग में पड़ कर वाल्मीकि जैसे डाकू ने न केवल अपना उद्धार किया, बल्कि विश्व का उद्धार करने वाली पुस्तक 'रामायण' की भी रचना की।"

आपने स्कूलों और कालिजों के शिक्षक-अध्यापकों की बैठक में मानवता का इतिहास बताते हुए उनसे जीवन के नवीन मूल्यों को अपनाने तथा सर्वोदय विचारधारा का प्रसार करने की अपील की। विनोबाजी ने सर्वोदय पुस्तक भंडार का उद्घाटन किया। आपके साथ-साथ श्री बलवन्तराय तायल अध्यक्ष हिन्दी रिजनल कमेटी पंजाब, लाला अचिन्तरामजी संसद सदस्य, चौ० मनीराम गोदारा एम. एल. ए., पं० ओमप्रकाश त्रिखा संयोजक पंजाब सर्वोदय मंडल भी थे।

—जगदीशचन्द्र "जौहर"

• •

मध्य प्रदेश गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ताओं का वार्षिक शिविर

मध्यप्रदेश गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ताओं का वार्षिक शिविर एवं सम्मेलन ता० २० से २६ दिसम्बर १९५९ तक छतरपुर में हुआ। इस अवसर पर प्रदेश के सभी ग्राम सेवा केन्द्रों के ग्राम सेवक तत्त्व प्रचार एवं स्वाध्याय मंडलों के साथी कार्यकर्ताओं ने मिल कर अपने कार्य की समीक्षा, सिंहावलोकन और सहचर्चा द्वारा भावी कार्यक्रम की रूपरेखा स्थिर की।

शिविर में प्रदेश के १५ ग्रामसेवा-केन्द्रों के करीब ४० ग्रामसेवक, अधिकांश स्वाध्याय-मंडलों के संयोजक एवं तत्त्वप्रचार केन्द्र के संगठक उपस्थित थे।

शिविर का शुभारम्भ गांधी स्मारक निधि के संचालक श्री कृ० वा० दाते के मांगलिक प्रवचन से हुआ। इसके बाद तक हुई लगातार चर्चा-सभाओं में प्रत्येक ग्रामसेवक ने अपने केन्द्र के काम का वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया तथा इस प्रकार एक दूसरे के अनुभव से सबको लाभान्वित किया। शिविर में ग्राम सेवकों तथा कार्यकर्ताओं की समस्याओं पर भी विचार-विमर्श किया गया तथा अपने सीमित साधनों द्वारा ग्राम-स्वावलम्बन साधने के मूल उद्देश्य की पूर्ति में ग्रामसेवक की निजी तैयारी क्या हो, इस पर भी विचार किया गया।

इंदौर, सागर, जबलपुर, दमोह, रायपुर, उज्जैन इत्यादि स्वाध्याय-मंडलों एवं तत्त्वप्रचार केन्द्रों के संयोजक एवं संगठक साथियों ने भी अपने कार्यों की समीक्षा की तथा अनुभव सबके सम्मुख रखे। निधि का यह प्रयत्न है कि प्रदेश के एक लाख से ऊपर आबादी वाले शहरों में सभी जगह गांधी तत्त्व प्रचार केन्द्र कायम हों। परन्तु योग्य कार्यकर्ताओं के अभाव में यह काम रुका पड़ा है। फिलहाल प्रान्त में तीन जगह इंदौर, सागर तथा जबलपुर में तत्त्व प्रचार केन्द्र चल रहे हैं। ऐसे बड़े शहरों तथा कस्बों में २० स्वाध्याय-मंडल हैं। यद्यपि प्रदेश को देखते हुए ऐसे केन्द्रों की संख्या अत्यल्प है। परन्तु जहाँ भी ये चल रहे हैं, गांधी विचार में अभिरुचि रखने वाले मित्रों के मिलन एवं विचार स्थल के रूप में विकसित हो रहे हैं। विचार गोष्ठियाँ, परिचर्चा, सर्वोदय-मेले, व्याख्यान-मालायें तथा साहित्य प्रचार तथा सर्वोदय पक्ष, चरखा प्रचार एवं अन्य रचनात्मक कार्यों के द्वारा इन स्वाध्याय मंडलों एवं तत्त्व प्रचार केन्द्रों ने अपनी सार्थकता सिद्ध करने का भरसक प्रयत्न किया है।

प्रान्तीय सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष श्री दादाभाई नाइक ने भी शिविरार्थियों को संबोधित किया तथा अपने काम को भूदानमूलक बनाने की दिशा में प्रेरणा दी। शिविर में सभी केन्द्रों की प्रगति की चर्चा काफी गहराई से की गयी तथा भावी कार्यक्रम भी निश्चित किया गया।

एक हफ्ते तक सभी कार्यकर्ता के आपस सम्पर्क एवं तत्त्व-परिचय से एक पारिवारिक वातावरण बन गया था। शिविर-चर्चाओं में छतरपुर के कुछ नागरिक भी हिस्सा लेते रहे। २६ दिसम्बर की शाम को निधि के संचालक श्री दातेजी के मांगलिक एवं अन्तरी प्रवचन के पश्चात् शिविर समाप्त हुआ।

• •

सर्वोदय और चुनाव

श्री चारुचंद्र भंडारी

[केरल में फरवरी माह के पहले हफ्ते में होने वाले चुनाव को दृष्टि में रख कर प्रस्तुत लेख तैयार किया गया था। परन्तु समय से न आ सकने के कारण यह विलंब से प्रकाशित किया जा रहा है। प्रस्तुत लेख में जिस समस्या की ओर सर्वसाधारण और विशेषतः सर्वोदय के सेवकों का ध्यान आकृष्ट किया गया है, वह अत्यंत गंभीर है और हम समझते हैं कि उस पर व्यापक दृष्टि से विचार होना वांछनीय है। —सं०]

सर्वोदय का अन्तिम लक्ष्य है शासनमुक्त समाज की प्रतिष्ठा। इस आदर्श पर पहुँचने के लिए शुरू से ही इस तरह चलना होगा, जिससे शासन-सत्ता धीरे-धीरे शिथिल होती जाय और लोग सरकार निरपेक्ष अर्थात् स्वतंत्र रूप से चलने की नैतिक शक्ति प्राप्त करते जायें। आजकल दलीय बुनियाद पर चुनाव द्वारा सरकार बनती है। इसलिए अहिंसक तरीके से शासन-सत्ता को क्रमशः शिथिल करने का एक उपयुक्त कार्यक्रम होना चाहिए। ग्रामदान के माध्यम से ग्राम स्वराज्य की प्रतिष्ठा ही उसका विधायक कार्यक्रम है। उसका नेगेटिव (अभावात्मक) कार्यक्रम है—किसी तरह की सत्ता प्राप्ति के चुनाव में भाग न लेना। लेकिन जन-साधारण को (सारे सर्वोदय के मानने वालों को भी) इस पर राजी करने में समय लगेगा। शीघ्र ही यह होने वाला नहीं है। जैसे ग्राम स्वराज्य एक ही दिन में प्रतिष्ठित होने का कार्य नहीं है, उसी तरह लोगों को चुनाव में भाग न लेने के लिए तैयार करना भी एक दिन का काम नहीं है। जितना ही सर्वोदय का विधायक विचार जनता में घर करता जायगा उतना ही लोग और दूसरे दलवाले चुनाव के प्रति धीरे धीरे उदासीन होते जायेंगे। लोग चुनाव को किस दृष्टि से देखना सीखें और चुनाव के संबंध में उनका कर्तव्य क्या हो, इस विषय में विचार जनता के सामने रखने होंगे। इसी उद्देश्य से सर्व सेवा संघ ने विगत साधारण आम चुनाव से पहले चुनाव में सर्वोदय में विश्वास करने वाली जनता को किस तरह चलना उचित है, इस संबंध में एक उपदेशावली प्रकाशित और प्रचारित की थी। जो सर्वोदय के सेवक (लोकसेवक) हैं, वे तो चुनाव में किसी तरह का भाग ले ही नहीं सकते। वे खड़े भी नहीं हो सकते और चुनाव में वोट भी नहीं दे सकते। लेकिन सर्वोदय में अनुरागी जनसाधारण के लिए इतना निषेध अभी नहीं चल सकता। इसलिए सर्व सेवा संघ ने सुझाया था कि वे वोट दे सकते हैं, और किसी प्रार्थी विशेष के लिए प्रचार भी कर सकते हैं। लेकिन अगर वे किसी दल में हों तो भी प्रयोजनानुसार दल के ऊपर उठ सकें, इस तरह उनका चलना उचित होगा। पार्टी द्वारा मनोनीत प्रार्थी अगर उनके मतानुसार (व्यक्तिगत रूप से) अच्छा या उपयुक्त न हो, तो उसे वे वोट नहीं देंगे। सर्वोदय के काम के लिए यह जनशिक्षा का कार्य बहुत ही अच्छा है, इस विषय में संदेह नहीं। लेकिन प्रश्न यह है कि ये बातें जनता को कब बतायी जायें और किस समय उनमें इसका प्रचार किया जाय। हमें लगता है कि यही सबसे बड़ा प्रश्न है। लोगों को सर्वोदय के मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए चुनाव के प्रश्न पर प्रथम परहेज के तौर पर वे क्या कर सकते हैं या उन्हें क्या करना चाहिए, इसका महत्व निश्चय ही है। लेकिन मुमकिन है इस विषय में अधिक दिक्कत का सामना न करना पड़े। लेकिन इसका प्रचार जनता में किस समय किया जाना चाहिए, इस प्रश्न को लेकर ही गलतफहमी के खड़ी होने की अधिक संभावना है। इस विचार का या उपदेश का जनता में प्रचार करने का सही या अनुकूल समय चुनाव प्रचार के चलते रहने या उसके ठीक पहले नहीं है, ऐसा लगता है। चुनाव के समय विभिन्न राजनैतिक दलों के अनुयायियों और जनसाधारण का मत ऐसी भावावेश और अनुभूति-प्रवण अवस्था में रहता है कि उस समय अच्छी चीज को भी खराब समझने में देर नहीं लगती। इसलिए उस समय उसके प्रचार की खराब प्रतिक्रिया होने की संभावना अधिक रहती है। विगत आम चुनाव के समय सर्व सेवा संघ के चुनाव संबंधी उपरोक्त प्रस्ताव का प्रचार हमने किया था। उसकी प्रतिक्रिया राजनैतिक दलों या जनता, किसी के ऊपर भी अच्छी नहीं हुई। जिन सब निर्वाचन मंडलियों (कॉन्स्टीट्युएन्सीज) में कांग्रेसी प्रार्थी के जीतने की संभावना अधिक थी, वहाँ कांग्रेसियों को ऐसा लगा कि जो सर्वोदय कार्यकर्ता इसका प्रचार कर रहा है, वह भीतर से कांग्रेस विरोधी है और उसके दल के वोटदाता, जिसमें कांग्रेसी प्रार्थी को अयोग्य समझ कर उसे वोट न दें, इसके द्वारा उसीका चेष्टा चल रही है। जिस निर्वाचन मंडली में विरोधी दल का जोर अधिक था वहाँ तो सहज ही सोचा जाने लगा कि सर्वोदयवाले तो कांग्रेस के ही छिपे हुए लोग हैं,—विरोधी दल को हराना ही उनके काम का मूल उद्देश्य है। लेकिन यही विचार अगर दूसरे समय लोगों को समझाया गया होता, तो ऐसी गलतफहमी पैदा न होती और काम भी होता।

केरल के सर्वोदय मंडल ने अभी होने वाले चुनाव में सर्वोदय में विश्वास करने वाली जनता को किस तरह चलना उचित होगा, इस संबंध में एक विज्ञप्ति का प्रचार किया है। उसमें जो निर्देश और सलाह दी गयी है

चुनाव के समय हम क्या करें?

सर्वोदय की दृष्टि से वह ठीक हो सकती है। लेकिन नम्रता के साथ कहना पड़ता है कि उसमें दो एक बातें ऐसी हैं, जिनका आम चुनाव के मौके पर जनता में प्रचार करना गलतफहमी पैदा किये बिना नहीं रह सकता। उनमें से एक बात यह है

"सर्वोदय में विश्वास करने वाले जो वोट देना चाहेंगे, वे जिसको श्रेष्ठ प्रार्थी समझेंगे, उसको वोट देंगे। जिसको वोट देंगे, उसकी कार्य सूची तुलनात्मक रूप से सर्वोदय-आदर्श और पद्धति के अपेक्षाकृत निकट ही होनी चाहिए।

स्वतन्त्र प्रार्थियों को छोड़ कर दूसरे सभी प्रार्थियों की कर्म-सूची किसी-न किसी राजनैतिक दल की ही कार्य-सूची होगी। उसकी कोई निजी कर्म सूची नहीं हो सकती। अगर हो भी, तो किसी दलीय उम्मीदवार के लिए उसका कोई मूल्य नहीं। निर्देश को मनोयोग से पढ़ने और समझने से सहज ही देखा जा सकता है कि इस निर्देश के द्वारा किसी एक दल-विशेष के ही प्रार्थी को परोक्ष रूप से वोट देने के लिए कहा जा रहा है। चुनाव की लड़ाई के आवेश में ऐसी गलतफहमी का पैदा हो जाना बिलकुल ही अस्वाभाविक न होगा। फिर किस उम्मीदवार या दल की कर्म-सूची सर्वोदय आदर्श के अपेक्षाकृत निकट है या नहीं, यह साधारण वोट-दाता (सर्वोदय में विश्वासी होने पर भी) क्या खुद समझ सकेगा? सर्वोदयी कार्यकर्ता अगर उसे समझाने में लग जायें, तो वह खुद भी चुनाव के कीचड़ में फँस जा सकते हैं।

ऐसी हालत में ठीक चुनाव के मौके पर सर्वोदय में विश्वास करने वाले वोटदाताओं के कर्तव्य विषयक किसी इश्तहार का प्रचार करना संगत न होगा, ऐसा लगता है। जो कुछ होना चाहिए, उसमें अब चुनाव का नाम और बू भी नहीं, तो सर्वोदय के साधारण विचार-प्रचार के साथ ही साधारण रूप से समझा कर संतोष मानना होगा। उसी से स्थायी फल होगा। चुनाव के समय सर्व सेवा संघ हो या सर्वोदय-मंडल हो या साधारण कार्यकर्ता हो, उनके लिए बिलकुल तटस्थ और एकदम शांत रहना और परम उपेक्षा का प्रदर्शन करना उचित है।

बहुत से लोग सोचते हैं कि सर्वोदय की चुनाव के प्रति दृष्टि और विचार क्या है, इसके प्रचार करने का उपयुक्त मौका चुनाव के समय ही होता है। उनके विचार से उस समय लोगों का मन इस विषय में सुनने और ग्रहण करने के लिए तैयार हुआ रहता है। उससे अच्छा फल होता है। काम भी अच्छा होता है। लेकिन अनुभव से कहा जा सकता है कि उस समय लोग बातें सुनते जरूर हैं, लेकिन उनकी कुछ मिला कर प्रतिक्रिया अच्छी नहीं होती और उससे सर्वोदय की लोकप्रियता भी घटती है।

होमियोपैथी चिकित्सा शास्त्र के अनुसार ज्वर के प्रकोप के समय औषधि का प्रयोग निषिद्ध है। उस समय अच्छी तरह से निर्वाचित की हुई औषधि का प्रयोग भी अच्छा फल नहीं देता। ज्वर की उग्रता और जटिलता बढ़ता है और रोगी को बेकार कष्ट भोगना पड़ता है। ज्वर उतर जाने पर या ज्वर के मन्द पड़ जाने पर ही औषधि प्रयोग का उचित समय होता है। इसके अलावा पुरानी बीमारियों में किसी धातुगत औषधि का प्रयोग करना हो तो जिस समय पुरानी बीमारी बढ़ी हुई रहती है, उस समय उसका प्रयोग नहीं किया जा सकता। व्याधि की अपेक्षाकृत शांत अवस्था में ही उसका प्रयोग सफल होता है और औषधि तब सौम्य रूप से क्रिया करती हुई मरीज को बिना कष्ट पहुँचाये अच्छा कर देता है। हमारे सामूहिक जीवन में जो भेद और मनोमालिन्य की पुरानी बीमारियाँ हैं, वे चुनाव के समय अधिक उग्र हो उठती हैं, इसलिए उस समय औषधि प्रयोग का अच्छा नतीजा नहीं होता।

यहाँ जिस विचार का प्रतिपादन किया गया है, हो सकता है, बहुतों की राय उससे न मिले। तथापि सर्वोदय के लिए इस विषय में हमने जो उचित समझा है, उसको जाहिर न करना ठीक नहीं होता।

चुनाव के समय सर्वोदय का एकमात्र काम होगा शांति सेना का काम। क्रमशः चुनाव की लड़ाई जैसी उग्र और हिंसात्मक होती आ रही है, उसमें राजनैतिक दलों को एक सर्वसामान्य आचरण विधि (कोड आफ कॉन्डक्ट) के पालन करवाने की चेष्टा करना बहुत जरूरी हो गया है। केरल के तथाकथित-मुक्ति संग्राम के मौके पर केलप्पन जी के अनशन के फलस्वरूप वहाँ के राजनैतिक दलों के नेतागण एक साधारण आचरण विधि को मान कर चलने के लिए राजी हुए थे। अगर इस बार के चुनाव के मौके पर भी वे उस कायदे का पालन करके चलें तो वह सारे देश के लिए एक आदर्श बनेगा। सर्वोदय के कार्यकर्ता चुनाव के बारे में चुनाव के समय तटस्थ और शांत रह कर अगर केवल शांति-प्रतिष्ठा के काम में लगें तो शांति सहज ही बनी रहेगी।

शांति की राह पर बढ़ो !

विनोबा

इन दिनों हम अशांतवास में घूम रहे हैं, जिसके कारण हमारी खबरें तो बहुत दूर तक नहीं जातीं, लेकिन दुनिया की खबरें हम चाहें, या न चाहें तो भी हमें मिलती रहती हैं।

आईक और ख्रुश्चेव : शांति की तलाश में

चंद रोज पहले हिंदुस्तान में अमरीका के बड़े नेता आइजन हावर आये थे। कहा जाता है कि दिल्ली में उनके स्वागत में ऐसी सभा हुई जैसी शायद वहाँ पहले कभी नहीं हुई होगी। आठ-दस लाख लोग आये थे। इसमें कोई शक नहीं कि वे अमरीका के बड़े नेता हैं। वे बड़े सिपाही भी थे और उन्होंने बड़ी बहादुरी से लड़ाई का संचालन किया, जिसमें आखिर उन्हें फतह हासिल हुई। लेकिन उनका यहाँ पर जो स्वागत हुआ, उसका कारण यह नहीं था कि वे बड़े नेता हैं, या बड़े सिपाही थे। उसका मुख्य कारण तो यह था कि उन्होंने जाहिर किया कि वे शांति की तलाश में घूम रहे हैं। इस बड़े पुरुष के पास ऐसे बड़े-बड़े साधन हैं कि वह चाहे तो सारी दुनिया को खत्म कर सकता है। लेकिन फिर भी वह शांति की तलाश में घूमता है। आज खबर आयी है कि अब ख्रुश्चेव यहाँ आने वाला है। रूस के पास ऐसी ताकत है कि जो चाँद तक पहुँच सके। रूस में मंगल पर पहुँचने की भी तैयारी चल रही है। जिसकी ऐसी हवस और हाहस है, वह भी शांति की तलाश में दुबारा हिंदुस्तान आ रहा है।

शांति की शोध करने वाले यात्री

तीसरा एक छोटा आदमी साराबाक देश—जो हमारे अग्निकोण में है—से यहाँ आया है, वह वहाँ का राजा था, जो अपने राज्य का त्याग कर, शांति की तलाश में दुनिया भर में घूम रहा है। वह हमारे पास आया था और छह-सात दिन यात्रा में घूमा था। अब वह चीन गया है। अभी और एक आदमी यहाँ आया है, जिसका नाम टी बोर है, जो हमें शांति की भाषा सीखाने के लिए आया है। वह युगोस्लाविया का है, जहाँ हमारे देश की तरह नयी समाज रचना के नये नये प्रयोग हो रहे हैं। दस बारह दिनों से वह भी हमारे साथ घूम रहा है और मैं उसके पास रोज एस्परान्टो भाषा सीखता हूँ। उसकी इच्छा है कि दुनिया में एक राज्य बने और लोग एक भाषा बोलें। उसने सुना कि बाबा प्रेम का काम करता है तो वह मुझे अपनी भाषा सीखाने के लिए आ गया। उससे भी एक छोटा आदमी हमारे साथ घूम रहा है, डोनाल्ड ग्रूम। वह इंग्लैंड का बहुत ही छोटा आदमी है, जो हमारी सभा में हिन्दी में बोल रहा था। प्रेम के लिए वह हिंदी सीखा। अंग्रेजी तो हमारे यहाँ भी बहुत लोग सीखते हैं, लेकिन नौकरी के लिए! तो आज 'आइक' और ख्रुश्चेव से लेकर टी बोर और डोनाल्ड ग्रूम तक शांति के लिए घूमते हैं। ये सब ब्राह्मण बने हैं। ब्राह्मण का ही काम है ॐ शांतिः ॐ शांतिः ॐ शांतिः कहना।

सब जोड़ते हैं, इन्सान तोड़ता है

आज सोचने लायक बात यह है कि हिन्दुस्तान और चीन के बीच की ऐतिहासिक लंबी दीवार टूट गयी है। इन दोनों देशों के बीच अब संपर्क बन रहा है। पहले इनके बीच में हिमालय था, जो उन्हें जुदा रखता था। हिमालय तो आज भी मौजूद है, लेकिन अब वह दोनों को जोड़ रहा है। समुद्र भी आज कहता है कि पहले मैं तोड़ता था, लेकिन आज मैं जोड़ूँगा। एक बनाने वाले ऊँट अरबस्तान से सिंध और मुलतान आये और उधर पश्चिम में मोरक्को और स्पेन तक जाकर इन सबको जोड़ने का काम उन्होंने किया। आज ऊँट, घोड़े, हिमालय, आसमान, समुद्र सभी जोड़ते हैं। बस, एक कम्बख्त मनुष्य ही तोड़ता है! लेकिन इन सबके खिलाफ वह अकेला कब तक टिकेगा? इस जमाने में तोड़ने की बात टिकेगी नहीं।

जनता अपनी रक्षा खुद करें

संपर्क में शुरू-शुरू में संघर्ष भी होता है। नयी बहू घर में आती है तो उसे हम प्रेम के लिए ही लाते हैं। लेकिन फिर भी सास और बहू के बीच थोड़ा बहुत संघर्ष हो ही जाता है। वह आरंभ का संघर्ष होता है। उसी तरह राष्ट्र राष्ट्र के बीच भी जब संपर्क होता है, तब शुरू में गलतफहमी और संघर्ष हो जाते हैं। लेकिन इसमें डरने की कोई बात नहीं है। हिंदुस्तान और चीन का संपर्क बना है और बना रहेगा। इसके लिए आगे जाकर हमें दिल बड़ा करना होगा, दिमाग मजबूत करना होगा। और काम यह करना होगा कि ये जो बड़ी बड़ी हुकूमतें बनी हैं—दिल्ली की, पिकिंग की, मास्को की, वाशिंगटन और लंदन की उन्हें तोड़ना होगा। याने उन पर हम सबकी रक्षा की जो जिम्मेवारी आयी है, उससे उन्हें बचाना होगा। आज तो मेरी, आपकी, सबकी रक्षा की जिम्मेवारी नेहरू की है। रूस के सारे भाई बहनों की रक्षा की जिम्मेवारी ख्रुश्चेव की है और अमरीका की रक्षा की जिम्मेवारी आईक की है। करोड़ों की जिम्मेवारी के बोझ के नीचे बेचारों के दिमाग खत्म हो रहे हैं।

मुझ पर ऐसी जिम्मेवारी होती तो मैं आज की तरह दिल खोल कर आपसे बात नहीं कर पाता। मैं सोचता कि मेरे बोलने से किस पर क्या असर होता है, कहाँ-क्या परिणाम आता है? इन लोगों पर इतनी जिम्मेवारी डाली है कि वह हमारी बे-रहमी है। इसलिए हमें करना यह होगा कि गाँव-गाँव में हम अपनी जिम्मेवारी अपने आप उठा लें। हम पंडितजी से कह दें कि आप दिल को हलका करके व्यापक मन से चीन और पाकिस्तान से बातें कीजिये। हम गाँव-गाँव में प्यार से रहेंगे, झगड़ेंगे नहीं। हमारी हिफाजत किसीको करनी नहीं होगी और अगर परदेश का हमला हुआ तो हम उसे देखने के लिए चले जायेंगे, डरेंगे नहीं, भागेंगे नहीं। वे हमसे कोई बुरा काम करने के लिए कहेंगे, तो करेंगे नहीं। उसके लिए कोई सजा भुगतनी होगी तो भुगतेंगे, लेकिन भागेंगे नहीं। हम ऐसा करेंगे तो उनके हाथ मजबूत होंगे और दिमाग हलका होगा। आज तो उनके हाथ कमजोर हैं और उनके दिमाग पर बोझ है।

सिर्फ सेना नहीं लड़ सकेगी

आज हिन्दुस्तान में लड़ाई नहीं है, फिर भी १०० करोड़ रुपये का अनाज हर साल बाहर से मँगवाना पड़ता है। कल अगर लड़ाई छिड़ जाय तो क्या होगा, यह कहना मुश्किल है। देश में लोग भूखे हों, असंतोष हो, गाँव गाँव में अनाज न हो तो सिर्फ सेना क्या लड़ सकेगी?

इंग्लैंड के लोगों ने बहुत अकल से काम लिया था कि लड़ाई छिड़ने पर भी उसने खाने-पीने और दूध मक्खन के भाव १० % से बढ़ने नहीं दिये, जब कि दूसरे देशों में इनके भाव २०० से ३०० % तक बढ़ गये थे। उस देश की अक्ल का दूसरा नमूना यह था कि एक निश्चित तारीख का ऐलान करके उन्होंने हिन्दुस्तान का राज छोड़ा। माउन्टबेटन ने भी जाने की तैयारी कर ली थी। लेकिन गांधीजी से लेकर वल्लभभाई जैसे हमारे बड़े-बड़े नेताओं ने उनको कहा कि आप छह महीने रुक जायँ, तो वे रुके। यह घटना इंग्लैंड के इतिहास में सुवर्णाक्षरों में लिखी जायेगी। अगर यह इंग्लैंड देश किसी दिन जाहिर करे कि हम अपने सारे शस्त्र समुद्र में डुबा देंगे तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा और फिर दुनिया भर के लोग उनकी भाषा सीखना चाहेंगे।

दुनिया यह भाषा सीखेगी

मैंने टी बोर से कहा कि एस्परान्टो तो बनावटी भाषा है, लेकिन दुनिया में वह भाषा आसानी से चलेगी, जिसको बोलने वाले लोग शांति की राह दिखायेंगे। यह पराक्रम अगर हिन्दुस्तान ने किया तो सब प्रेम से हिन्दी सीखने आयेंगे। कल अगर हम फौज खतम कर दें, तो लोग हमें देखने के लिए आयेंगे। आज तो यह बात हमारे सामने आती नहीं। सरकार पर बोझ न रहे, इतना ही हम करें तो आज काफी है। गाँव में झगड़ा न रहे, कोई भूखा न रहे, भूमि बँट जाय, गाँव में स्वावलम्बन की योजना हो, तो उससे सरकार मजबूत बनेगी और चीन, पाकिस्तान, रूस और अमरीका के साथ बात करने की उसकी ताकत बढ़ेगी।

हमारे सामने बहुत मसले हैं। क्या चीन की सीमा के बारे में हम सोचते नहीं? सोचते तो जरूर हैं, लेकिन हमारे हाथ कहाँ मजबूत हैं? क्या पंजाब हमारे हाथ मजबूत नहीं करेगा? जिस पंजाब से लाखों सिपाही फौज में आते हैं, क्या तीन चार हजार सिपाही हमारी शांति-सेना में नहीं दे सकेगा? जहाँ वेद लिखे गये, जहाँ उपनिषद् बने वहाँ तीन-चार हजार सेवक नहीं बनेंगे?

(भट्टू, हिसार, १०-१-६०)

खादी केन्द्रीय सूर्य है

मैंने अक्सर कहा है कि खादी केन्द्रीय सूर्य है और दूसरे ग्राम-उद्योग ग्रहों की तरह उसके चारों ओर घूमते हैं। उनका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। इस तरह खादी भी दूसरे उद्योगों के बिना नहीं जी सकती। वे पूरी तरह परस्परावलम्बी हैं। सच तो यह है कि हमें गाँवों वाला भारत या शहरों वाला भारत, इन दो में से एक का चुनाव कर लेना है। गाँव तब से हैं, जब से भारत देश है; शहरों को विदेशी आधिपत्य ने पैदा किया है। आज तो शहरों का बोलबाला है और वे गाँवों को इस तरह चूस रहे हैं कि गाँव जर्जर होकर नष्ट होते जा रहे हैं। मेरी खादी-मनोवृत्ति मुझे बताती है कि जब यह आधिपत्य नहीं रहेगा, तब शहरों को गाँवों की मातहती करनी होगी। गाँवों का शोषण स्वयं एक संगठित हिंसा है। अगर हम चाहते हैं कि स्वराज्य का निर्माण अहिंसा के आधार पर हो, तो हमें गाँवों को उनका उचित स्थान देना पड़ेगा।

('हरिजन', २०-१-४०) —महात्मा गांधी

अविभाजित व्यक्तित्व के प्रतीक : बापू

जैन मुनि उपाध्याय अमरचन्द्रजी

गांधीजी भारतीय महापुरुषों की लंबी शृंखला में एक कड़ी की तरह हैं। यह कड़ी अपने आप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गांधीजी ने उस युग में जन्म लिया, जब भारत शताब्दियों की भयानक दासता के बन्धनों में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजों की दासता, राजाओं और जागीरदारों की दासता, शासकों और सूदखोरों की दासता, आर्थिक दासता, राजनैतिक दासताओं, धार्मिक दासता और न जाने कितनी ही दासताओं से भारत जकड़ा हुआ था। उस समय आजादी की बात करना भी अपराध माना जाता था। '*स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है*', ऐसा कहने भर से लोकमान्य तिलक को लोह-शृंखला में बन्द कर दिया गया था। वैसे समय में गांधीजी ने देश को एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाग्रत कर दिया। उन्हें दबाने के लिए बहुत से प्रयत्न किये गये, किन्तु वे ऐसी चिनगारी थे, जिस पर पड़ने वाली हर चीज स्वयं जल उठती थी और वह चिनगारी ज्वाला के रूप में परिवर्तित हो जाती थी। उन्हें दबाने के लिए जिन-जिन साधनों का इस्तेमाल किया गया, वे साधन अपने काम में न केवल असफल रहे, बल्कि उनका परिणाम जनता को और अधिक जाग्रत करने के रूप में हुआ। सोना ज्यों-ज्यों तपता है, त्यों-त्यों अधिक चमकदार बनता है, ज्यों-ज्यों उस पर हथौड़े की चोट पड़ती है, त्यों-त्यों वह अधिक निखरता है, उसी प्रकार गांधीजी के सामने ज्यों-ज्यों संघर्ष आते गये, कठिनाइयाँ आती गयीं, त्यों-त्यों वे आगे बढ़ते गये, विकास करते गये और आजादी की भावना अधिक प्रज्वलित करते गये। उनका जीवन गुफा में जीवन समाप्त होने के लिए नहीं था, बल्कि अनेक आपत्तियाँ सह कर भारत को आजाद करने के लिए था। उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता भी मिली।

एक बार जब गांधीजी से मेरी मुलाकात हुई, तो उन्होंने कहा कि मेरे पास नया कुछ नहीं है। मैंने जो कुछ कहा है और जो प्रयोग किये हैं, वे सब प्राचीन ऋषियों की वाणी से ही मुझे मिले हैं। यह गांधीजी की नम्रता एवं महानता थी कि वे अपने पुरुषार्थ का श्रेय भी भारतीय ऋषियों के चरणों में अर्पित कर देते थे। यह सही भी है कि उन्होंने नया कुछ नहीं कहा। केवल अब तक जो कुछ कहा गया, उसे कर के दिखा दिया। यही उनकी महानता और विशेषता थी। वे अन्य लोगों की तरह खंडित व्यक्तित्व वाले नहीं थे। आज साधारण जनता का जीवन, टुकड़े-टुकड़े हो गया है। एक टुकड़ा मंदिर के लिए, एक टुकड़ा धर्म के लिए, एक टुकड़ा घर के लिए, एक टुकड़ा दूकान या दफ्तर के लिए, एक टुकड़ा समाज या राज्य के लिए, इस तरह जीवन खंड-खंड विभक्त हो गया है। किन्तु इस जगत में मनुष्य का जीवन अखंड है और वह अखंड ही रहना चाहिए। गांधीजी का व्यक्तित्व अखंड व्यक्तित्व था। वे जिन विचार को धर्मस्थान और मंदिर में मानते थे, उन विचार को समाज और राजनीति के क्षेत्र में भी चलाते थे। जिन आदर्शों को उन्होंने अपने आश्रम में लागू किया, उन आदर्शों का पालन वे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ भी करते थे। उनके अलग-अलग रूप नहीं थे।

मनुष्य बहुरूपिया नहीं है। उसका रूप एक ही है। उसे अपने जीवन की पवित्रता का दर्शन कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में समान रूप से करना चाहिए। जो पैसा रख पवित्रता धर्म-स्थान में होती है, वह दूकान में क्यों नहीं होती? जो सौजन्य और विनय अपने घर और परिवार में होता है, वह सौजन्य समाज में क्यों नहीं होता? *भगवान के सामने दूसरा रूप, समाज में दूसरा रूप*, यह सब क्या है? ऐसे भिन्न-भिन्न रूपोंवाले व्यक्ति *समाज के लिए बहुत खतरनाक होते हैं*। ऐसे लोग कभी भी सफल नेता और शासक नहीं बन सकते। वे यदि ऊँची गद्दी पर बैठ जायेंगे, *अफसर बन जायेंगे* तो उस गद्दी और पद का महत्त्व सुरक्षित नहीं रह सकेगा। इसलिए जीवन को और व्यक्तित्व को खंडित करने वाली प्रवृत्तियों से निरन्तर बचे रहना चाहिए। भगवान महावीर ने यही कहा कि "गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा"—अर्थात् हे साधक, तू बहुरूपिया नहीं है। इसलिए गाँव में, नगर में, जंगल में, नींद में या जागृत अवस्था में सर्वत्र तुम्हारा आचरण एक ही जैसा होना चाहिए। जैसे गुलाब का फूल सदा *महकता ही रहता है*—चाहे उसे *घनघोर जंगल* में छोड़ दिया जाय, चाहे सुन्दर उपवन में लगा दिया जाय। कोई गुलाब से पूछे *कि तुम जंगल में* क्यों मुस्कुरा रहे हो? यहाँ तुम्हारी कद्र करने वाला कौन है? तो गुलाब क्या कहेगा? वह यही कहेगा कि मेरा मुस्कराना और महकना किसी को दिखाने के लिए नहीं है, यह तो मेरा स्वभाव ही है। उसी तरह मनुष्य को भी अपनी मनुष्यता का स्वभाव कभी नहीं छोड़ना चाहिए। महापुरुषों के जीवन की भी यही विशेषता होती है। वे पथ में जलने वाले दीपक की तरह निरन्तर जलते रहते हैं और अपने प्रकाश से पथिकों का पथ आलोकित करते रहते हैं। गांधीजी ने भी यही किया। उन्होंने राजनीति में भी धर्म, सत्य और अहिंसा का आचरण किया। उन्होंने कहा कि यदि व्यक्तिगत जीवन में और घरेलू जीवन में अहिंसा आवश्यक है तो सामाजिक और राजनैतिक जीवन में भी वह अनिवार्य होनी चाहिए। मैं उस राजनीति को स्वीकार करने को तैयार नहीं हूँ, जिसका आधार अविश्वास, दंभ आदि हो। जो राजनीति मनुष्य पर अविश्वास करना सिखाती है, वह राजनीति नहीं, दुर्नीति है। राजनीति को लोगों ने छल, कपट का अड्डा बना दिया था। वहाँ पुत्र अपने पिता का और पिता अपने पुत्र का विश्वास नहीं कर सकता था। राजनीति के क्षेत्र में भाई-भाई को शत्रु की निगाह से देखता था, पत्नी के हाथ से दिये हुए पानी में भी जहर की आशंका होती थी, उसी राजनीति में गांधीजी ने विश्वास और सत्य का अमृत घोल दिया। धर्म का राजनीति में यह प्रयोग सचमुच विलक्षण सिद्ध हुआ। उन्होंने राज्य में भी नीति को, ईमानदारी को और धर्म को समाविष्ट किया। राजनीति के मैदान में आज तक हजारों राजा-महाराजा, सम्राट आदि आये और चले गये, उन्हें कोई याद तक नहीं करता। *गांधीजी को सारी दुनिया इसलिए याद करती है*, क्योंकि उन्होंने राजनीति के साथ धर्म का सामंजस्य रखा। *उन्होंने किसी को अपना दुश्मन नहीं समझा।* उन्होंने किसी से लड़ाई भी नहीं की। उन्होंने गुलामी का *प्रतिकार हिंसा* से नहीं किया। वे अंग्रेजों से भी उतना ही प्यार करते थे, जितना भारतीयों से करते थे। उनकी दृष्टि में भारतीय, अंग्रेज, अफ्रीकी आदि के भेद नहीं थे। वे अंग्रेजों के खिलाफ नहीं लड़े, गुलामी के खिलाफ लड़े, शोषण के खिलाफ लड़े, साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़े, उन्होंने पाप से घृणा की और पापी को प्यार देकर उसे पाप से मुक्त होने की प्रेरणा दी। इसलिए हिन्दुस्तान जैसा बड़ा देश बिना रक्तपात के आजाद हो गया। आजादी के बाद भी भारत की अंग्रेजों के साथ दोस्ती कायम है। यदि गांधीजी के तरीके से हमने काम न लेकर हिंसा का तरीका अपनाया होता, तो अंग्रेजों के मन में भारतीयों के प्रति घृणा बैठ जाती। प्रेम और सौजन्य का आधार मिट जाता। गांधीजी ने देश को इस खतरे से बचा लिया।

अहिंसा और सत्य का मार्ग अपनाना साधारण बात नहीं है। जैसे तलवार की धार पर चलना आसान नहीं है, वैसे ही अहिंसा और सत्य के आचरण पर कायम रहना भी आसान नहीं है। तलवार की धार पर चलने से भी यह कार्य अधिक कठिन है। यह कठिन कार्य गांधीजी ने किया। इसलिए जनता उन्हें याद करती है, उन्हें प्रणाम करती है और उनके गुण गाती है।

हमारा लक्ष्य !

सीतामढ़ी के कार्यकर्ताओं का निवेदन

बिहार खादी ग्रामोद्योग-संघ के अध्यक्ष श्री ध्वजा प्रसाद साहू ने जनवरी के चौथे सप्ताह में सीतामढ़ी सबडिवीजन का भ्रमण किया। इस अवसर पर स्थानीय रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने वहाँ के काम की जानकारी *श्री ध्वजा बाबू को दी*। कार्यकर्ताओं ने बताया कि हम लोग स्वराज्य के बाद ग्राम-स्वराज्य की ओर आगे बढ़ना चाहते हैं। *सारे खादी काम को विकेन्द्रित* करके हम चाहते हैं कि हमारे सबडिवीजन के प्रत्येक *गाँव अन्न, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, गोपालन* उद्योग आदि में स्वावलम्बी होकर इन्हें स्वयं चलायें। इतने बड़े काम को करने में समय लगेगा। इसलिए खादी उत्पादन और बिक्री के जिस काम को हम करते आ रहे हैं, उन्हें करते हुए हम विकेन्द्रीकरण एवं ग्राम-स्वराज्य के लक्ष्य की ओर बढ़ाना चाहते हैं।

आज हमें गाँव में प्रवेश पाने के लिए एक बड़ा साधन अम्बर चरखा मिला है। अम्बर चरखा हम गरीब प्रमण्डल के लिए वरदान-स्वरूप है। इसके प्रादुर्भाव से मध्यमवर्गीय एवं बेकार-बेरोजगार लोगों में एक नयी आशा का संचार हुआ है और लोग *इसके प्रति बहुत आकृष्ट हुए हैं। आज जो इसमें कुछ* नये सुधार हुए हैं, उससे काफी आशा बँधी है कि *थोड़े से हेर फेर से अम्बर में प्रगति आयगी।*

हम चाहते हैं कि हम लोग ग्राम स्वराज्य लाने *के लिए क्षेत्रीय समिति तथा समन्वय समिति बनायें* और इसकी मदद से गाँव में पंच सूत्री कार्यक्रम रखें—*अन्न-यज्ञ, श्रम यज्ञ, वस्त्र-यज्ञ, भूमि-यज्ञ और शान्ति यज्ञ।* प्रत्येक गाँव में गाँव के प्रयास से एक स्वराज्य-भवन का निर्माण हो, जो *गाँव के केन्द्रीय स्थल में* रहे और सभी ग्रामीण आसानी से एकत्र हो सकें। जहाँ विभिन्न क्रियाएँ चलायी जा सकें, जैसे—चरखा, करघा, पुस्तकालय तथा ग्रामसभा की बैठकें आदि।

हम चाहते हैं कि महिलाओं के बीच ग्रामस्वराज्य की बातें भली प्रकार रखें, जिससे महिलाएँ आगे बढ़ सकें, महिलाओं के बीच विचार प्रचार चलता रहे तथा गाँव गाँव में महिला संगठन कायम हो, क्योंकि बिना उनकी मदद के *निर्माण का कार्य आगे बढ़ाना* कठिन मालूम पड़ता है।

भारतीय राज्य-व्यवस्था पर जयप्रकाश नारायण :

सामुदायिक अर्थ-व्यवस्था का नया ढाँचा बनाना होगा

[पाठक 'भूदान-यज्ञ' के पिछले अंकों में श्री जयप्रकाशजी के निबंध के पाँच अध्यायों का सार पढ़ चुके हैं। यहाँ उस निबंध के छठे अध्याय का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया जा रहा है। —सं०]

समुदाय परिवार का विस्तृत रूप है। परिवार की ही भाँति यह जीवन के शाश्वत प्रवाह का प्रतिनिधि है। जिस प्रकार परिवार जीवित सदस्यों की हित-कामना से ही प्रेरित न होकर आने वाली सन्तानों के बारे में भी सोचता है, उसी प्रकार समुदाय भी भावी पीढ़ियों के कल्याण की बात सोचता है। इसीलिए इसकी अर्थ-व्यवस्था में अपव्यय के लिए स्थान नहीं है। यह इस बात के प्रति बराबर सावधान रहता है कि प्रकृति के नये सिरे से अप्राप्य साधन बरबाद न होने पायें, जब कि आज के तथाकथित समुन्नत राष्ट्र इन्हें बुरी तरह नष्ट करने का बड़ा भारी अपराध कर रहे हैं। भावी पीढ़ियों और जीवन (न कि मृत्यु) के प्रति दिलचस्पी रखने वाली सन्तुलित अर्थ-व्यवस्था इस बात का बराबर ध्यान रखेगी कि प्रकृति से जो कुछ लिया जाय, वह उसे लौटाया भी जाय। इसीलिए पुनः प्राप्य साधनों के उपभोग पर यह यथासम्भव प्रतिबन्ध लगाने की चेष्टा करेगी और पुनर्प्राप्य (जो लौटाये नहीं जा सकते) साधनों का उपभोग यथासम्भव कम करेगी। समुदाय की अर्थव्यवस्था प्रकृति के साथ सहयोग और मेल की होगी, जब कि आज की अर्थ-व्यवस्था, चाहे पश्चिम की हो या पूर्व की, प्रकृति के साथ निरन्तर विनाशकारी युद्ध की है। डाक्टर शूमाखर का कहना है 'वन्य अथवा कार्बनिक पदार्थों-जैसे पुनर्प्राप्य साधनों के आधार पर खड़ी की गयी सभ्यता निश्चय ही उस सभ्यता से श्रेष्ठ है, जिसका आधार तेल, कोयला, लोहा (धातु) जैसे पुनर्प्राप्य साधन हैं। इसका कारण यह है कि प्रथम तो टिक सकती है और दूसरी नहीं। पहली प्रकृति के साथ सहयोग करती है, दूसरी उसे लूटती है। पहली में जीवन के लक्षण हैं, दूसरी में मृत्यु के। इसमें तनिक भी संशय नहीं कि 'तेल कोयला धातु-अर्थशास्त्र' का जीवन मानव-जाति के इतिहास में क्षणभंगुर ही रहेगा, क्योंकि उनका आधार पुनर्प्राप्य साधन है और यह भौतिकवादी होने से किसी प्रकार की सीमा या बन्धन नहीं मानता। अणुशक्ति के विकास का जो दानवी प्रयास चल रहा है, वह इस बात का प्रमाण है कि आधुनिक सभ्यतावादी अब इस बात को समझने लगे हैं और इसीलिए अपने हिंसात्मक तरीके से प्रकृति के साथ लड़ कर वे किसी भाँति अपनी सभ्यता को बचा ले जाने की फिक्र में हैं। तेल और कोयले का स्थान ग्रहण करने के उद्देश्य से 'शान्ति के लिए' अणु शक्ति के अत्यन्त व्यापक विकास का जो कार्यक्रम चल रहा है, वह अणु और उद्जन बमों से भी कहीं अधिक घातक है, क्योंकि यहाँ अविवेकी मनुष्य ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करने जा रहा है, जहाँ पहले से ही तख्ती टँगी है : दूर रहो।

समुदाय की अर्थ व्यवस्था जहाँ तक हो सके, आत्म-निर्भर होनी चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के युग में आत्मनिर्भरता की बात बहुतों को भाग्य, पार्थक्यवादी और प्रतिक्रियामूलक लगेगी। किन्तु समुदाय की दृष्टि से यह अत्यन्त स्वाभाविक है। समुदाय का पहला काम है, अपने सदस्यों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधन उपस्थित करना। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि वह सदस्यों के लिए भोजन, वस्त्र, आवास तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन करे। समुदाय का यह भी उत्तरदायित्व है कि देखे कि समुदाय के प्रत्येक शारीरिक-सामर्थ्यसम्पन्न व्यक्ति को उपयुक्त धन्धा मिल पाता है। यदि समुदाय की आर्थिक गतिविधि सदस्यों की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति से सम्बद्ध और प्रेरित नहीं होती, तो समुदाय को राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय हाट की मर्जी पर रहना पड़ेगा, जिसके परिणामस्वरूप समुदाय में बेकारी और उसकी आर्थिक बरबादी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। समाज की विकीर्णता के प्रश्न पर विचार करते समय हम यह देख चुके हैं कि किस प्रकार आधुनिक औद्योगिक अवस्था के चलते मानव ऐसे असहाय व्यक्ति की भाँति हो जाता है, जिसका अपनी शासक शक्तियों पर न कोई नियन्त्रण होता है और न जिन्हें वह समझ ही पाता है। यही कारण है कि हम इस बात पर जोर दे चुके हैं कि समाज की संस्थाओं और प्रक्रियाओं को इस ढब ढाला जाय कि वे मानव के उपयुक्त हो सकें और मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं नियामक बन सकें। इस विचार परम्परा का अनुसरण करते हुए हम जीवन के सामुदायिक स्वरूप पर पहुँच गये।

प्रारम्भिक अथवा मुख्य आवश्यकताओं के अतिरिक्त समुदाय के जिम्मे और काम भी होंगे। कोई भी समुदाय अपने लिए आवश्यक सभी वस्तुओं का उत्पादन नहीं कर सकेगा। यहाँ तक कि प्राथमिक आवश्यकता की सभी वस्तुएँ भी सब समुदाय नहीं पैदा

आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना होगा

कर सकेंगे। हर सामग्री की दृष्टि से प्रत्येक समुदाय आत्मनिर्भर नहीं हो सकेगा। तब सवाल उठता है कि अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति किस विधि हो?

समुदायवादी समाज का आर्थिक जीवन इस प्रकार सुव्यवस्थित रहेगा कि मानव जीवन के लिए आवश्यक सामग्री की पूर्ति जहाँ तक हो सके, निकटतम क्षेत्र समुदाय से हो। इसकी सीढ़ी इस प्रकार रहेगी प्राथमिक समुदाय, फिर क्षेत्रीय, जिला, प्रान्तीय, राष्ट्रीय और अन्ततः अन्तर्राष्ट्रीय। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक विस्तरणशील क्षेत्र, जहाँ तक सम्भव होगा, आत्मनिर्भर होता जायगा। इस प्रकार बहुत सी शक्ति, जिसका आवश्यक दुरुपयोग व्यापार और विज्ञापनादि की व्यवस्था में होता है, वह बच जायगी।

इस तरह नियोजन का भी एक ढाँचा तैयार हो जायगा। नियोजन प्राथमिक समुदाय से आरम्भ होकर आगे बढ़ता चलेगा। हमारी योजना के अनुसार क्षेत्रीय नियोजन अर्थात् क्षेत्रीय समुदाय की आयोजना ही धुरी—आधार—का काम करेगी। ग्रामसमुदाय इतना छोटा होगा कि उसको आधार मानने से काम न चल सकेगा। क्षेत्रीय समुदाय ही वह इकाई होगा, जिसके आधार पर सम्पूर्ण राष्ट्र की आयोजना का ढाँचा खड़ा होगा। बड़े बड़े असन्तुलित नगरों की अवस्थिति से सामुदायिक *नियोजन* पेचीदा हो जायगा। इसके लिए आवश्यक समन्वय की विधि बैठानी पड़ेगी। कस्बों को तो निश्चय ही क्षेत्रीय अथवा जिला-समुदाय के अन्तर्गत कर लिया जा सकता है, किन्तु शहरों की समस्या टेढ़ी है। इस सम्बन्ध में मैं पहले कह चुका हूँ कि जहाँ तक सम्भव होगा, बड़े-बड़े नगरों का पुनर्संगठित कर उन्हें समुदायों के स्तर का रूप दिया जा सकता है।

सभी प्राकृतिक साधनों पर समुदाय का स्वामित्व रहेगा। समुदायों में इनका विभाजन पारस्परिक समझौते से किया जा सकता है। सामान्यतया प्रत्येक समुदाय अपनी सीमा के भीतर पड़ने वाले प्राकृतिक साधनों का स्वामी होगा। किन्तु वन, खान आदि कितने ऐसे साधन हैं, जो काफी दूर तक फैले रहते हैं। इनका उपभोग पारस्परिक समझौते पर किया जायगा।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भूमि समुदाय की होगी और प्रत्येक प्राथमिक समुदाय अपने क्षेत्र में पड़ने वाली भूमि का स्वामी होगा।

भारी आर्थिक विषमता समुदाय की भावना से मेल नहीं खाती। एक सीमा तक ही आय और सम्पत्ति का अन्तर सहन किया जा सकता है। यह बात स्पष्ट करने के लिए विनोबाजी एक बोधगम्य उदाहरण देते हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य के हाथ की पाँचों उँगलियाँ भी छोटी-बड़ी हैं, किन्तु उनकी यह छोटाई बड़ाई विवेकसम्मत है। यही कारण है कि समान न होने पर भी वे एक साथ मिल कर काम कर सकती हैं। अगर यह छोटाई-बड़ाई काफी होती, अर्थात् एक उँगली कुछ इंच ही होती तथा दूसरी कुछ फुट, तो हाथ बिलकुल बेकाम हो जाता।

समुदाय में श्रमिक की स्थिति प्रधान होगी, क्योंकि समुदाय के लिए श्रम ही सबसे प्रधान वस्तु है। श्रम अथवा कार्य के बिना समुदाय चल नहीं सकता। इसलिए समुदाय का प्रत्येक वयस्क निवासी श्रमिक अथवा कार्यकर्ता होगा। साथ ही श्रम 'मानव-शक्ति (और सामर्थ्य) की सार्थक अभिव्यक्ति समझा जायगा, न कि निरर्थक प्रयास'; क्योंकि श्रम प्रक्रिया में श्रमिक जिम्मेदार, साझेदार माना जायगा। आवश्यकता से अधिक विशेषज्ञता प्राप्ति का प्रयास इसलिए त्याज्य समझा जायगा कि कहीं इससे श्रमिक की स्थिति यन्त्रवत् न हो जाय, बल्कि समुदाय का कार्मिक औद्योगिक जीवन उसे विविध प्रकार की सुविधा का आश्रय लेने का अवसर प्रदान कर सकता है।

मदेरियागा ने इस सम्बन्ध में एक बड़ा रोचक बात बतायी है। आपने लिखा है : मैंने एक दिन स्पेन के एक शैक्षिक दल के नेता से पूछा : 'आखिर श्रमिक चाहते क्या हैं?' इस पर उसने उत्तर दिया : 'वे श्रमिक बनना नहीं चाहते।' और मैं समझता हूँ कि श्रमिक-समस्या का मूल यही है। अपने हृदय के अन्तस्तल-प्रदेश में औद्योगिक श्रमिक यह अनुभव करता है कि उसका सभी प्रयास इसलिए नहीं है कि अपने वर्ग के लिए यह अथवा वह सुविधा प्राप्त कर ली जाय, वरन् इसलिए है कि उसका वर्ग रहे या नहीं। उसका सहज ज्ञान उसे यह बताता है कि सामाजिक संस्था में श्रमिक वर्ग कोई स्वाभाविक वर्ग नहीं है। यदि इस समस्या का रूप विकृत न होता, तो सामाजिक प्रकृति स्वयमेव श्रमिक-वर्ग जैसा कोई वर्ग पैदा न होने देती, मानव-समाज पर अर्थवाद और यन्त्रवाद द्वारा यह वर्ग लादने की गलती इसलिए की गयी कि कारखानों और शहरों में होते जा रहे (औद्योगिक) केन्द्रीकरण से निस्तार का कोई उपाय न था।" आगे इस प्रश्न का

बड़े रोचक ढंग से उदाहरण देने के पश्चात् अन्त में आप कहते हैं : सब कुछ कह और कर लेने के बाद श्रमिक की जीवन-पद्धति बदलने के लिए तीन प्रक्रियाओं की आवश्यकता है : उनके मन में अपनी सर्जना मक शक्ति का विकास करने के लिए रुचि हो तथा उसे इसका अवसर मिले, उसके श्रम में विविधता हो, वह पुनः प्रकृति के निकट लाया जाय। ये तीनों लक्ष्य इस रीति प्राप्त किये जा सकते हैं : उसका श्रम-दिन चार घण्टे का माना जाय, उसे रहने के लिए ऐसा घर दिया जाय, जिसमें उसके और उसके परिजनों के काम करने के लिए पर्याप्त भूमि हो, जिससे उस पर काम कर वह कारखाने की अपनी आय में वृद्धि कर सके। कैडोरेंडर दि मदेरियागा गाँधी के पीछे पागल गांधीवादी भारतीय नहीं, वरन् आधुनिक यूरोपीय विचारक हैं, जो आक्सफोर्ड में रहते हैं। ऐसी हालत में मैं समझता हूँ, उनके कथन का महत्त्व भलीभाँति समझा जा सकता है।

स्वामित्व की दृष्टि से किसी किस्म का भी आर्थिक संस्थान हो, वह अपने प्रदेश के समुदाय में मिला दिया जायगा, अर्थात् उसका अंग होकर रहेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि उसका संस्थान और विकास समुदाय की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर होगा। समुदाय द्वारा निर्धारित शर्तों पर ही वह काम करेगा, समुदाय के प्रति ही उत्तरदायी समझा जायगा।

इसका मतलब यह भी हुआ कि ये उपक्रम संगठन की दृष्टि से भी समुदाय के अंग होकर रहेंगे। प्राथमिक समुदाय में अंगीकरण में कोई कठिनाई न होगी, क्योंकि प्रत्येक संस्थान या संघ छोटे नहीं वे समुदाय में अंगीकरण हो जायगा। अन्य समुदायों में अंगीकरण की निम्नलिखित विधि कदाचित् उपयुक्त हो। इसमें प्रयोग के लिए काफी गुंजाइश है।

प्रत्येक सामुदायिक स्तर में (ग्रामीण, जिला आदि) प्रत्येक उद्योग अथवा अन्य प्रकार के व्यवसायों की किस्मों का संगठन ऐसे संघों के रूप में किया जायगा, जिनमें स्वामी-श्रमिक, अन्य प्रकार के श्रमिक और स्वामी, प्रबन्धक और विशेषज्ञ शामिल रहेंगे। मतलब यह कि प्रत्येक क्षेत्र, जिला, प्रान्त अथवा देश में विभिन्न प्रकार के संघ, जैसे भाग कंपनियों के, छोटे दलों के, बढ़इयों के, तेलियों के या उनकी सहकारी संस्थाओं के, गल्ला-व्यापारियों के, कृषि-यंत्र बनाने वाले कारखानों के, रहेंगे।

* ये सब प्रत्येक सामुदायिक क्षेत्र में संगठित आर्थिक-परिषद् में संगबद्ध होंगे। इसी प्रकार की आर्थिक परिषद् क्षेत्र, जिला, प्रान्त और देश के लिए भी हो सकती है। प्रत्येक समुदाय की आर्थिक-परिषद् [आर्थिक मामलों में] सम्बद्ध समुदाय की राजनैतिक संस्था को (पंचायत समिति, जिला परिषद् आदि) परामर्श देगी तथा उसमें परिषद् को प्रतिनिधित्व प्राप्त रहेगा।

निजी उद्योग धन्धों का प्रश्न भी विचारणीय है। जहाँ तक पुरुषार्थ का प्रश्न है, निजी उद्योगों के लिए समुदाय में काफी गुंजाइश रहेगी। अन्य बातें छोड़ दीजिये, तो भी इसका एक विशेष कारण यह है— और मदेरियागा ने बहुत अच्छी तरह इसे स्पष्ट कर दिया है कि 'सृजनात्मक शक्ति समाज की अपेक्षा व्यक्ति में कहीं अधिक होती है।' किन्तु समुदाय में रह कर मनुष्य को समुदाय की भावना से चलना पड़ेगा। इसलिए सामुदायिक समाज में निजी उद्यम को भी उसकी भावना ग्रहण करनी पड़ेगी और निजी और सामुदायिक, दोनों हितों को साधने के लिए तत्पर रहना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त निजी उद्योगों को यह बात भी स्वीकार करनी होगी कि स्वशासन, समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व तथा उसके साथ अंगीकरण का सिद्धान्त उन्हें मान्य है।

हिन्दी और योजना

"केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारें इस समय तृतीय पंचवर्षीय योजना का प्रारूप बनाने में संलग्न हैं। आर्थिक पहलू के सिवा सांस्कृतिक पहलू की ओर भी इस योजना में सर्वाधिक ध्यान रखना आवश्यक है, क्योंकि देश का राष्ट्रीय जीवन हमारी संस्कृति पर अवलंबित है। सांस्कृतिक कार्यों का मुख्य आधार भाषा होती है, अतः केन्द्र एवं हिन्दी भाषा भाषी चारों राज्यों, अर्थात् उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्यप्रदेश की सरकारों को अपनी योजनाओं में हिन्दी के कार्य के लिए पर्याप्त धन रखना आवश्यक होगा। हाल ही में मैंने 'हिन्दी चलाओ' योजना जनता और सरकार के सम्मुख रखी है। मुझे यह देख कर संतोष हुआ है कि इस योजना ने सभी का ध्यान आकृष्ट किया है और सब ओर से इस योजना को समर्थन मिल रहा है। इस योजना के अनुसार उपर्युक्त चारों हिन्दी भाषा भाषी राज्यों का सो समस्त कार्य ३१ मार्च १९६१ के बाद हिन्दी में ही होना चाहिए। परन्तु यह तब तक संभव नहीं है, जब तक केन्द्रीय सरकार और चारों हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों की सरकारें अपनी तृतीय पंचवर्षीय योजना में इस कार्य के लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था नहीं करतीं। मैं आशा करता हूँ कि केन्द्रीय सरकार और चारों राज्यों की सरकारें इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगी।"

—सेठ गोविन्ददास

साहित्य-समीक्षा

उच्च स्तर का विचार साहित्य पाठकों के लिए सुविधाजनक ढंग से उपलब्ध करना आज की सबसे बड़ी समस्या है। साहित्य जगत् में जो व्यापार की काली छाया चक्कर-लगाने लगी है, वह हमारे लिए एक दिन निश्चय ही खतरनाक साबित होगी। हमारे प्रकाशक बंधु यह कहने के लिए मुझे क्षमा करें कि आज का साहित्य पाठकों के विचार-निर्माण के लिए नहीं, बल्कि प्रकाशकों के लिए धन बटोरने का साधन बन गया है। प्रकाशक ऐसी ही चीजें छापना पसंद करते हैं, जो चीजें उन्हें पैसा दे सकें।

साथ ही आज का लेखक भी हमारे लिए चिन्ता का विषय है। लेखक उन चीजों का निर्माण करने के लिए जुट पड़ा है, जो प्रायः अधिक-से-अधिक कीमत देकर प्रकाशक खरीद सकें। लिखने का पेशा इस तरह से फैल रहा है कि आज बाजार में बेचारा लेखक और कवि अपनी किताब या कविता लिये खड़ा है! ग्राहक उससे मोल-तोल कर रहे हैं। 'यह कविता कितने में बेचोगे!'—यह है आज के प्रकाशक का प्रश्न!

इस परिस्थिति में पाठकों की सुरुचि का निर्माण तो होता ही नहीं, साथ ही अच्छे स्तर के साहित्य का निर्माण भी संभव नहीं हो पाता। इस विचार के प्रकाश में हम अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन और उसकी तीन नूतन प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा करना चाहते हैं। वे तीन पुस्तकें हैं :

(१) बच्चों की कला और शिक्षा
लेखक—देवीप्रसाद भाई

(२) एशियाई समाजवाद

(३) लोकतांत्रिक समाजवाद
लेखक—अशोक मेहता

अखिल भारत सर्व सेवा संघ द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बाजार में जाइये तो किसी भी दुकान में साधारणतः प्राप्त नहीं होंगी, जब कि यह सारा साहित्य उच्च कोटि का, अत्यन्त सस्ता और विचार निर्माण करने वाला होता है। सर्व सेवा संघ प्रकाशन व्यापार के लिए साहित्य नहीं छापता, बल्कि पाठक के मस्तिष्क को नवजीवन देने के लिए छापता है। फिर भी आम पाठकों के पास वह साहित्य नहीं पहुँच पाता।

इसका कारण संभवतः इतना ही है कि या तो यह साहित्य अत्यधिक उपदेशपूर्ण होता है, या एक सीमित मर्यादा के आसपास चक्कर लगाने वाला होता है। सस्ता होने पर भी इस साहित्य को खरीदने की आकांक्षा साधारण पाठकों को नहीं होती। इसका और भी क्या कारण है, इस संबंध में गहराई से सोचना चाहिए तथा बाजार की हर दुकान पर आम पाठकों की भीड़ सर्वोदय-साहित्य की माँग करे, ऐसी परिस्थिति का निर्माण करना चाहिए।

समालोच्य तीन पुस्तकें इस कसौटी पर कुछ खरी उतरने वाली हैं और इन तीनों पुस्तकों को देख कर मन में कुछ आशा का संचार होता है। श्री देवीप्रसाद भाई कला के साधक हैं और नयी तालीम के उपासक हैं। नयी तालीम के क्षेत्र में कला का प्रवेश जिस माध्यम से उन्होंने किया है, वह गौरव की चीज है। यह पुस्तक देख कर सहज ही प्रतीत होता है कि इसे तैयार करने में उन्हें सतत और कठिन श्रम करना पड़ा है। निश्चय ही सर्व सेवा संघ के मौलिक प्रकाशनों में इस पुस्तक का अपना विशिष्ट स्थान है। विशेष रूप से उल्लेखनीय बात यह भी है कि इस पुस्तक को सजाने में बहुत ही श्रम किया गया है। कपड़े की जिल्द ने पुस्तक को स्थायी महत्त्व दे दिया है। पुस्तक की पृष्ठ संख्या २०४ है। सजिल्द पूरे कपड़े वाली प्रति का मूल्य दस रुपये तथा आधे कपड़े की सजिल्द प्रति का मूल्य आठ रुपये है।

अशोक मेहता समाजवादी आन्दोलन के प्राणवान विचारक रहे हैं। उनकी जिन दो पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद सर्व सेवा संघ से प्रकाशित हुआ है, वे पुस्तकें पहले से काफी लोकप्रिय हैं। इन दोनों पुस्तकों के प्रकाशन से सर्व सेवा संघ ने अपने क्षेत्र को व्यापक करने की ओर कदम बढ़ाया है। हमें इस कदम का स्वागत करना चाहिए। यदि इन दोनों पुस्तकों को भी सजिल्द बना दिया जाता तो उसका सजीवपन के साथ ही टिकाऊपन भी बढ़ जाता। एशियाई समाजवाद २५० पृष्ठों की है और लोकतांत्रिक समाजवाद २३६ पृष्ठ का। इन दोनों पुस्तकों की कीमत डेढ़-डेढ़ रुपये है।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन ने साहित्य जगत् को जो नया मोड़ दिया है, वह तो गौरव की चीज है ही, पर साहित्य जगत् का या प्रकाशन जगत् का नेतृत्व अभी उसके हाथ में नहीं है। जब तक वह नेतृत्व उसके हाथ में नहीं होगा, तब तक साहित्य की सौदेबाजी कैसे रुकेगी? सर्व सेवा संघ का लक्ष्य केवल कुछ अमुक प्रकार की किताबें छाप देना ही नहीं है, बल्कि साहित्य और पुस्तक प्रकाशन को नया मोड़ देने की भी जिम्मेदारी उस पर है, यह हम इन पुस्तकों की समालोचना करने के निमित्त से कहना चाहते हैं।

—सतीश कुमार

राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि

बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष श्री ध्वजा प्रसाद साहू का निवेदन

गांधीजी का देहावसान ३० जनवरी १९४८ को हुआ। तब से साल व साल ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पक्ष मनाया जाता है। जगह-जगह पर इस अवधि में तरह-तरह के समारोह होते हैं, जिसमें मुख्यतया सूतांजलि-समारोह होता है, जो सर्वथा योग्य ही है। गांधीजी को चरखा प्रिय था और वे मानते थे कि चरखा अहिंसा का प्रतीक है। वे सच्चे अर्थ में प्रजातंत्र की स्थापना करना चाहते थे, जिसमें सबको उन्नति का समान अवसर मिल सके।

आज देश को आजाद हुए बारह वर्ष बीत गये। आजादी के पूर्व देश में जिस पुरुषार्थ का निर्माण हुआ था, वह इधर समाप्तप्राय: हो रहा है। जनता का कोई उपक्रम नहीं दीख पड़ता। जनता ने यह समझ लिया है कि जो काम होगा, वह सरकार द्वारा ही होगा। जनता स्वयं निश्चेष्ट हो गयी है। इसलिए देश के निर्माण में जो वातावरण होना चाहिए, वह नहीं बना। फलत: सरकार द्वारा अरबों रुपये खर्च करने के बाद भी देश की जनता दुःखी और निरीह बनी हुई है। जनता को जब तक सचेष्ट नहीं बनाया जायगा, देश की प्रगति नहीं होगी। बड़े बड़े कारखानों के बावजूद सारी जनता के लिए ऐसे कामों की तजवीज करनी होगी, जिन्हें वह कर सके और जिसके बारे में उसकी यह आस्था हो कि वह काम लाभप्रद भी है। चरखा एक ऐसा काम है, जो दोनों शर्तों को पूरा करता है। इसलिए यह उपयुक्त है कि राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अपने श्रम से उत्पादित एक गुंडी सूत देकर ही अर्पित की जाय। देश का स्वस्थ निर्माण हो, इसके लिए पूज्य बापू ने अनेकानेक कार्यक्रम देश के सामने रखे और उनके लिए संस्थाएँ भी बनायीं। उनके कार्यक्रमों में से एक कड़ी को भी निकाल दें, तो निर्माण की वह तसवीर पूरी नहीं निकलेगी। वे हर प्रकार के शोषण को खतम करना चाहते थे और एतदर्थ उन्होंने विभिन्न संस्थाओं का निर्माण किया था। हरिजन परिजन का भेद खत्म कर तथा समाज से शोषण दूर किया जा सकता है। हिंदू समाज में इसकी जड़ बहुत दूर तक जमी हुई है। इसलिए उन्होंने उस पर प्रहार किया और यह काम ढीला न पड़ जाय, इसके लिए उन्होंने हरिजन सेवक संघ का निर्माण किया। सबको काम मिले और देश की बेकारी दूर हो, इसके लिए चरखा-संघ और ग्रामोद्योग संघ का निर्माण किया। दरिद्र का नारायण होती है और इन संस्थाओं के द्वारा उन्होंने दरिद्रों को नारायण का दर्शन कराया। जो भूखा और नंगा है, उसके सामने ईश्वर की बात करना, उसका मखौल करना है। इसलिए राष्ट्रपिता ने जितने भी कार्यक्रम देश के सामने रखे, चरखे को उसका मध्यबिंदु बनाया।

सर्वोदय पक्ष में जब कि सारा राष्ट्र राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित करेगा, इस अवसर पर एक गुंडी सूत से सिवा दूसरा कार्यक्रम उपयुक्त नहीं होगा। हमारे भाई-बहन अपने राष्ट्रपिता की स्मृति में अपने हाथ का काता हुआ एक गुंडी सूत अर्पित करें और दरिद्र नारायण की सेवा का व्रत लें।

सर्वोदय-सम्मेलन के लिए रेलवे-कन्सेशन प्राप्त करने के लिए पते

[सम्मेलन की तारीखें : २५, २६, २७ मार्च १९६०]

असम : (१) सुश्री अमलप्रभा दास, मार्फत-कस्तूरबा ग्रामसेविका विद्यालय, शरानिया, पो० गौहाटी

आंध्र : (१) श्री दफ्तर मंत्री—आन्ध्र प्रदेश सर्वोदय मण्डल, गान्धी भवन, हैदराबाद द०
(२) व्यवस्थापक, खादी समिति, आन्ध्र रतन भवन, पो० बेजवाड़ा

उड़ीसा : (१) श्री मंत्री, उत्कल खादी मण्डल, चौधरीबाजार कटक–१ (उड़ीसा)
(२) अखिल भारत सर्व सेवा संघ, पो० बरपाली, जि० कोरापुट (उड़ीसा)

उत्तर प्रदेश : (१) श्री मंत्री, श्री गान्धी आश्रम, प्रधान दफ्तर, ९ डालीगंज रोड, लखनऊ
(२) अखिल भारत सर्व सेवा संघ, वाराणसी १.

कश्मीर : (१) श्री रामसुमेर उपाध्याय, श्री गान्धी आश्रम, श्रीनगर (कश्मीर)

केरल : (१) श्री संयोजक, केरल सर्वोदय मंडल, कोजीकोड-१ (केरल)

मद्रास : (१) श्री व्यवस्थापक, खादी-वस्त्रालय, १५।१६ रतन बाजार, मद्रास
(२) मंत्री, तामिलनाड सर्वोदय संघ, गान्धीनगर, पो० तिरुपुर, जि० कोयम्बतूर
(३) मंत्री, तामिलनाड सर्वोदय मंडल, गान्धी निकेतन, पो० टी० कल्लुपट्टी, जि० मदुराई

दिल्ली : (१) व्यवस्थापक, श्री गान्धी आश्रम, चान्दनी चौक, दिल्ली

पंजाब-पेप्सु : (१) मंत्री, पंजाब सर्वोदय मंडल, पो० पट्टी कल्याण, जि० करनाल (पंजाब)
(२) श्री लायलपुरी, पो० पठानकोट (पंजाब)

बिहार : (१) संयोजक, बिहार सर्वोदय मंडल, कदम कुआँ, पटना-३
(२) मंत्री, बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ, पो० सर्वोदयग्राम, जि० मुजफ्फरपुर

बंगाल : (१) सर्वोदय प्रकाशन समिति, सी–५२, कालेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता–१२

बंबई : (१) श्री गणपति शंकर देसाई, भूदान सेवा कार्यालय, मणिभवन, १९ लेबरनम रोड, गांवदेवी, बम्बई
(२) श्री मंत्री, सौराष्ट्र रचनात्मक समिति, राष्ट्रीय शाला, राजकोट (सौराष्ट्र)
(३) श्री सूर्यकान्त परीख, खादी ग्रामोद्योग प्रयोग समिति, हरिजन आश्रम, अहमदाबाद ११
(४) मंत्री, महाराष्ट्र सेवा संघ, ७२७ सदाशिव पेठ, पूना २ (बंबई राज्य)
(५) श्री चतुर्भुज भाई जसानी, पो० गोंदिया (बम्बई राज्य)

मध्य प्रदेश : (१) श्री [illegible] प्रसाद [illegible], कार्यालय मंत्री, मध्यप्रदेश भूदानयज्ञ मंडल (महाकौशल शाखा) कस्तूरबा नगर, पो० नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश)
(२) श्री काशीनाथ त्रिवेदी, ५, गान्धी भवन, [illegible] रोड, इन्दौर सिटी (मध्यप्रदेश)
(३) श्री मंत्री, विन्ध्य प्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड, [illegible] (मध्यप्रदेश)
(४) श्री रामानंद दुबे, जिला सर्वोदय कार्यालय, रायपुर (मध्यप्रदेश)

मैसूर : (१) अखिल भारत सर्व सेवा संघ, गान्धी नगर, बंगलोर ९

राजस्थान : (१) श्री मंत्री, राजस्थान समग्र सेवा संघ, किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार जयपुर

उत्तर प्रदेश भूदान यज्ञ अखण्ड पदयात्री टोली

स्वर्गीय बाबा राघवदासजी की पुण्य स्मृति में गत १७ महीनों से श्री कुमारी राधाजी अखण्ड पदयात्रा कर रहे हैं। इनके साथ कुछ [illegible] अखण्ड पदयात्री भी पदयात्रा कर रहे हैं, इनके नाम हैं [illegible] भाई, [illegible] भाई व [illegible] भाई। पदयात्रा में दो बहनें सुश्री [illegible] तथा सुश्री [illegible] भी समय-समय पर साथ में यात्रा करती रही हैं। इस पदयात्री दल ने उत्तर प्रदेश के ४० जिलों की यात्रा समाप्त कर अब [illegible] में आगे यात्रा प्रारंभ की है। १९ अगस्त १९५८ को [illegible] से प्रारंभ की गयी इस यात्रा में [illegible] पदयात्री दल [illegible] कर [illegible], प्रार्थना और [illegible] के बाद आगे के पड़ाव के लिए प्रात: ५ बजे प्रस्थान कर देता है। [illegible]

[illegible]

...हिंद गोलीकांड......

[पृष्ठ-संख्या २ से चालू]

अनुरोध किया कि शान्तिपूर्ण समझौते का अवसर दें। ता० १७ की रात इसी प्रकार बीती। समझाने पर प्रतिनिधियों ने स्वीकार किया कि दूसरे दिन प्रातःकाल फिर कोशिश होगी। किसी प्रकार की अशान्ति न हो, यह हमारी कोशिश प्रमुख थी।

ता० १८ जनवरी को प्रातःकाल साढ़े आठ बजे जहाँ सभी मजदूर इकट्ठे हुआ करते थे, वहाँ हम पहुँचे। साढ़े नौ बजे तक चारों तरफ से नारे लगाते हुए हजारों की संख्या में मजदूर इकट्ठे हुए। यह एक विशेषता दिखाई पड़ी कि लाल बहुत से निशान हाथ में लेकर लोग आये थे। हमारे आश्रम के साथी कार्यकर्ता भी चारों तरफ थे। लोग शान्त रहें, किसी प्रकार का रोष न हो, इसकी कोशिश में लगे रहे। साढ़े नौ बजे सभा की कार्यवाही शुरू हुई। एक भाई उठ कर खड़ा हुआ और उसने कागज पढ़ कर सुनाया: अब हमारी ६ माँगें नहीं, १३ माँगें हैं। वे १३ माँगें पढ़ कर उन्होंने सुना दीं। उसके बाद ही सभा में बाहर से आये हुए नये वक्ता सामने आये। अब तक उन्हें हमने नहीं देखा था। इन दोनों वक्ताओं ने उत्तेजना फैलाने वाली ही बातें कीं। इन दोनों वक्ताओं ने ही सूचना दी कि दफा १४४ लगेगा। हमने प्रतिनिधियों को फिर समझाया कि ऐसे भाषणों से परिस्थिति आपके काबू के बाहर चली जायेगी। कुछ प्रतिनिधियों ने रोकने की कोशिश भी की, पर सफल नहीं हुए। स्पष्ट मालूम हो गया कि प्रतिनिधियों में ही दो विचार उत्पन्न हो गये हैं और परिस्थिति उनके काबू के बाहर होती जा रही है। फिर भी हमने आजिजी से सबसे अनुरोध किया कि उत्तेजना न फैलायें। सभी प्रतिनिधि एक जगह इकट्ठे हों और फिर शान्ति से विचार करें कि आगे क्या करें। सब प्रतिनिधि मजमे से बाहर निकले। हम भी उनकी आग्रह से उनके साथ हुए। सब लोग कम्पनी के मेन आफिस में आकर बैठे। हमने फिर उनको समझाया। १३ माँगों पर विचार होने लगा। हमने उनसे आग्रह किया कि 'लड़ाई लड़ने का यह ढंग नहीं है। अगर आप लोग १३ माँगों पर जोर देंगे तो इसमें आप अविवेकपूर्ण साबित होंगे। विचार कर परिस्थिति को सुलझायें। शान्ति से बैठें और जो उचित हो, वही बात कम्पनी के सामने रखें।' इस पर सभी प्रतिनिधि पहाड़ी पर जाकर बैठ कर विचार करने लगे। थोड़ी देर बाद लौट कर आये तो उन्होंने बताया कि पिछली ६ माँगें और १३ माँगें काट कर अब मुख्यतया उनकी निम्न ४ माँगें हैं:

(१) नौकरी के साल में पंद्रह दिन के बजाय एक मास की जाय।

(२) छँटनी के समय एक मास की नोटिस दी जाती है, लेकिन एक मास में काम भी लिया जाता है। काम न लेकर एक मास का अग्रिम वेतन दे दिया जाय।

(३) छँटनी के बाद घर जाने का रेल भाड़ा दिया जाय।

(४) मासिक वेतन पाने वाले मजदूरों की तरह दैनिक मजदूरों को भी बख्शिश या बोनस दिया जाय।

यह सारी चर्चा प्रतिनिधियों तथा हम लोगों के बीच हो रही थी। अभी तक कम्पनी के कोई अधिकारी नहीं आये थे। फिर कम्पनी के जेनरल मैनेजर श्री सेनगुप्ता, डिवीजनल मैनेजर श्री राव, श्री वाजपेयी आदि आये। मजदूर प्रतिनिधियों ने श्री सेनगुप्ता के सामने अपनी ४ माँगों को रखा। कम्पनी के डिवीजनल मैनेजर श्री गोडबोले उस दिन विदेश यात्रा से लौट कर बम्बई से सिरी आ गये थे। श्री सेनगुप्ता आदि उनकी माँगें सुन कर उनसे सलाह करने चले गये। कुछ देर बाद लौट कर आकर श्री सेनगुप्ता ने बताया कि ४ माँगों में से पहली माँग कानूनन हम नहीं बढ़ा सकते, क्योंकि लेबर ला में १५ दिन प्रतिवर्ष की नौकरी के लिए निर्धारित किया गया है, वह मिलेगा। इसके बढ़ाने का कायदा तो सरकार ही बदल सकती है। दूसरी माँग, नोटिस पे एडवांस देने की उन्होंने स्वीकार कर ली। तीसरी माँग छँटनी के समय घर जाने का रेल भाड़ा भी उन्होंने स्वीकार कर लिया। चौथी माँग बोनस या बख्शिश के बारे में उन्होंने बताया कि यहाँ जितने अधिकारी हैं, वे इसके लिए निर्णय नहीं ले सकते, जनरल मैनेजर २५ जनवरी को आ रहे हैं। उनके सामने ये माँगें रखेंगे, कुछ-न-कुछ अवश्य होगा। इतना कहने के बाद कम्पनी के लोग बाहर चले गये। प्रतिनिधि आपस में विचार करने लगे कि कुछ प्रतिनिधियों की राय हुई कि माँगों में से चार छोड़ी माँगें स्वीकार की जा रही हैं और एक के लिए आश्वासन भी मिल गया है। इसलिए समझौता कर लेना चाहिए। पर इस पर सब एकमत नहीं हुए। हम लोगों ने भी बहुत समझाया कि सम्मानपूर्ण ढंग से समझौता कर लेने में ही मजदूर भाइयों की प्रतिष्ठा है। हम चाहते थे कि समझौता-वार्ता भंग न हो। कम्पनी के अधिकारियों से फिर हम बात करने गये, पर गोडबोले साहब ने कहा कि बख्शिश की बात तो जनरल मैनेजर ही तय कर सकते हैं। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे

मिले। उनकी आँखें अश्रुगैस से लाल हो गयी थीं। सन्नाटा था। इधर-उधर कुछ आदमी छुटपुट खड़े दिखायी पड़ रहे थे। सड़क पर तथा सिनेमा की सीढ़ियों पर खून भरा था। पत्थर भी सड़क पर काफी संख्या में बिखरे पड़े थे। हमारे साथी ने बताया कि वे लोग लेबर बैंक के समारस्थल की ओर थे। १४४ का ऐलान हो चुका था, लोगों में इसकी चर्चा हो रही थी। थोड़ी देर बाद ही कार से दो ट्रक भरे हुए नारा लगाते हुए ट्रक दिखाई पड़े। उसमें पुलिस भी थी और आदमी भी भरे थे। नारों की आवाज सुन कर लेबर बैंक के सड़क पर मजदूर इकट्ठे हो गये। उन्हें मालूम हुआ कि गिरफ्तार होकर आ रहे हैं तो वे लोग भी दौड़-दौड़ कर ट्रक में भरने लगे। पुलिस ने मजमे को तितर-बितर करने के लिए लाठी चलाना शुरू किया। लोगों को चोट आयी। ढेले भी इधर-उधर से चले, इस पर गोली चली। ३ व्यक्ति गोली से घायल हुए। एक स्त्री और दो पुरुष। स्त्री के पैर में गोली लगी और एक लड़के को बाँह में गोली लगी। मजमा तितर बितर हो गया। कुछ लोग आगे बढ़ने की कोशिश करने लगे। हमारे साथियों ने उन्हें समझाया और वे रुक गये। हमारे साथी दाहिने तट पर आये। वहाँ से चलने सिनेमाघर के पास पहुँचे। काफी मजमा सड़क पर इकट्ठा था। सिनेमाघर चित्त पानी बस्ती के पास है। एक तरफ ऊँची पहाड़ी है, जिस पर सिनेमाघर बना है। नीचे सड़क और सड़क के नीचे खाई, और खाई के बाद ऊपर बस्ती। हमारे साथियों ने समझाया कि लोग सड़क पर भीड़ न

दफा १४४ और गोलीकाण्ड

पूरी कोशिश करेंगे। श्री सेनगुप्ता और राव आदि मजदूर प्रतिनिधि के बीच आये, और उन्होंने आश्वासन दिया कि जनरल मैनेजर के आने पर वे पूरी कोशिश करेंगे। हमने भी बहुत जोर दिया, पर प्रतिनिधियों में से एक-दो एकदम उखड़ गये और उठ कर बाहर चले गये। सभी उठ कर बाहर चले गये। वार्ता भंग हो गयी। हमने बाहर निकल कर फिर उखड़े हुए लोगों से बातें करना चाहा, पर वे अपनी जगह कायम रहे। हम लाचार हो गये। सभी प्रतिनिधि अपने अपने घर की ओर चले गये। हम भी अपने आश्रम की ओर पैदल ही चले। उस समय ढाई बज चुके थे। आश्रम वहाँ से तीन मील दूर है। रास्ते में ही लेबर बैंक पड़ता है। वहाँ मजदूरों ने लंगर चला रखा था। काफी मजदूर खा-पीकर जा चुके थे, फिर भी एक हजार के लगभग मजदूर वहाँ थे। हम लोग सीधे आश्रम पहुँचे। साढ़े तीन बज गया था। पहुँचते ही ३-४ साथियों को तुरन्त हमने भेज दिया कि वे लोग जगह जगह जा कर परिस्थिति का अवलोकन करें। खाने खाने हम लोगों को साढ़े चार बज गये। खा-पीकर हम लोग बैठे थे कि थोड़ी देर बाद हम दो ट्रक में भरी हुई नारे लगाते हुए सड़क पर आवाज सुनाई पड़ी। हम लोग तुरन्त बाहर निकले। ट्रक आगे जा चुकी थी। दुर्गा बाजार की ओर हम लोग आगे बढ़े।

जब हम जा रहे थे, तो रास्ते में मालूम हुआ कि दफा १४४ लग गयी है और ट्रक में जो नारे लगाते हुए लोग गये हैं, वे गिरफ्तार होकर गये हैं। कुछ और आगे बढ़े तो मालूम हुआ कि गोली चल गयी। दुर्गा बाजार से जल्दी पहुँचने के लिए एक रेलवे बस पर बैठ गये, जो लेबर बैंक की तरफ जा रही थी। वहाँ मालूम हुआ कि सिनेमाघर के पास गोली चली है। सिनेमाघर के पास पहुँचे। वहाँ हमारे साथी भी

करें, किन्तु वहाँ सिनेमा के ऊपर दो भाई लोगों को उत्तेजना दे रहे थे। यह वही दोनों थे, जिन्होंने सभा में भी उत्तेजना पैदा की थी। भीड़ वहाँ काफी इकट्ठी हो गयी। लेबर बैंक की गोली की खबर यहाँ पहुँच चुकी थी। उससे और भी उत्तेजना लोगों में थी। गिरफ्तार व्यक्तियों को ट्रक जो भरी हुई जा रही थी उसे लोगों ने रोका, पर समझाने बुझाने पर ट्रक बढ़ जाने दिया। उसके थोड़ी देर बाद ही जिलाधीश की गाड़ी और उसके पीछे पी० ए० सी० की गाड़ी आयी। जिलाधीश की गाड़ी आगे बढ़ गयी। पी० ए० सी० की गाड़ी में पुलिस को देख कर भीड़ आगे बढ़ी। जिलाधीश की भी गाड़ी कुछ आगे जाकर रुक गयी। वे लोग नीचे उतर कर मजमे की ओर बढ़े। इधर पुलिस ने मजमे को तितर बितर करने के लिए अश्रुगैस का प्रयोग किया। किन्तु हवा प्रतिकूल होने के कारण अश्रुगैस उलटा उन्हीं की ओर गया। अतः कारगर नहीं हुआ। फिर पुलिस ने लाठी चार्ज शुरू किया। मजमा तितर बितर हो चुका था। इसी बीच ऊपर से पत्थर पड़े। पुलिस के एक सिपाही को सिर में चोट लगी, वह सड़क पर गिर गया। पुलिस कप्तान के हाथ में भी एक पत्थर लगा और उनका पिस्तौल नीचे गिरा। उन्होंने उसे उठा लिया। जिलाधीश ने फौरन गोली चलाने की आज्ञा दी। गोली चलने लगी। एक युवक तुरन्त ही सीढ़ी पर से लुढ़क कर नीचे गिरा और वहीं मर गया। वह बच्चन सिंह नाम का एक सिक्ख मजदूर २२ वर्ष का युवक था। ४ आदमी और घायल हुए। पुलिस ने मजमे को खदेड़ा। सिनेमा आपरेटर श्री रामनाथ के घर में जाकर उसे पीटा। उसे गहरी चोट आयी। उसकी पत्नी को बेहोश होकर गिर गयी। घर की औरतें वहाँ पहुँचीं। दोनों को अस्पताल पहुँचाया गया। साढ़े पाँच बजे तक यह

सारा कांड हो गया। गिरफ्तारी आठ बजे रात तक हुई। मजदूर स्वेच्छा से ही अधिक से अधिक गिरफ्तार हुए। हम लोग उस रात १२ बजे तक मजदूरों के मुहल्ले में घुमते रहे और लोगों को सांत्वना देते रहे। गोली-कांड से लोगों में क्षोभ था, आतंक भी छा गया था और निराशा भी थी। हमें भी ऐसा लगा कि यह सब जल्दीबाजी में हुआ।

मजदूरों में कई विचार के लोग हैं। रिहंद बाँध का मजदूर असंगठित दिखायी पड़ा। इस कारण कुविचारों का प्रभाव भी लोगों पर अवश्य था। बड़े नुकसान की भी आशंका थी। सिनेमाघर के स्थान पर तथाकथित बाहरी मजदूर नेताओं के भड़काने से ही गलत परिस्थिति पैदा हुई। तारीफ तो यह कि भड़काने वाले जनता को उत्तेजित कर स्वयं छिप गये। सम्हालने की जिम्मेवारी उन्होंने नहीं समझी।

अमन और कानून के नाम पर जो सभी जगह आजकल हो रहा है, वही यहाँ भी हुआ। दफा १४४, लाठी चार्ज, कुछ बहके लोगों का जनता के तरफ से पत्थर बरसाना, फिर गोलीबारी, मृत्यु, फिर आतंक और श्मशान की शान्ति। प्रजातन्त्र में यह गम्भीरता से सोचने की बात है कि ये चीजें कब तक दोहरायी जाती रहेंगी? सारी परिस्थिति को निरपेक्ष भाव से देखने से ऐसा लगता है कि दफा १४४ के लगाने में जल्दीबाजी हुई। हम लोग भी नहीं जान पाये। मौका भी नहीं मिला कि लोगों को हम कुछ कह-सुन सकें।

तथाकथित मजदूर नेताओं की भी गैरजिम्मेवारी की हद हो गयी। गोलीबारी के बाद उनमें से सभी गायब हो गये। मालूम हुआ कि एक नेता सिनेमाघर में एक जगह छिपे हुए पकड़े गये! और भड़काने वाले नेता तो गायब ही हैं।

गोलीबारी के बाद ता० १८ की रात तो हम घूमते ही रहे। १९ को प्रातः जिलाधीश से मिले। उनसे हमने अपना यह भाव प्रगट कर दिया कि उनके कल की कार्रवाई में जल्दीबाजी हुई है।

वहाँ से हम लोग मजदूर बस्तियों में गये। वहाँ उनमें आतंक था और क्षोभ भी। उन्हें पता नहीं था कि कितने लोग गिरफ्तार हुए। मृत्यु और घायलों के बारे में भी अटकलबाजियाँ लगायी जा रही थीं। सिनेमाघर के पास केवल एक ही व्यक्ति की मृत्यु हुई थी, ऐसा तो हमारे साथियों ने अपनी आँखों से ही देखा था और कहीं मृत्यु नहीं हुई। इसलिए हम विश्वास के साथ कह सके कि एक मृत्यु हुई है।

गोलीकांड के बाद परिस्थिति सुधरे, साधारण स्थिति आये और निर्माण कार्य चालू रहे, यह हमारी चिन्ता थी। मजदूर बस्ती के हरएक हिस्से में हमने तथा हमारे साथियों ने जा जाकर बातें कीं। मजदूरों में से ही कुछ बुजुर्ग हमें ऐसे मिले, जो हमारे साथ मजदूरों में घूम कर प्रयास करने लगे। रिहंद के अस्पताल में भी जाकर घायलों को देखा। जो पुलिस पत्थर से घायल हुआ था, उसे भी देखा। सिनेमा के आपरेटर तथा उसकी पत्नी से भी बातें हुईं। सिनेमा आपरेटर का बाजू टूट गया था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया था। पर बाद में उसे फिर छोड़ दिया। लेफ्ट बैंक पर जहाँ पहले गोली चली, वहाँ दूर बीबी के पाँव में जो गोली लगी थी, उसे भी हमारे साथियों ने देखा और अस्पताल में ले जाकर उसके मरहम-पट्टी की व्यवस्था की। अमरनाथ सिंह नामक युवक को भी बायें कन्धे में गोली लगी थी। वह भी अस्पताल में था। वह हरही गाँव, तहसील रावर्टसगंज का रहने वाला है। ४ घायल मजदूर मिरजापुर जेल में भेज दिये गये थे।

कम्पनी के मजदूर पाँच हिस्सों में रहते हैं: (१) बवैरी, (२) लेफ्ट बैंक टाप, (३) लेफ्ट बैंक बॉटम, (४) राइट बैंक और (५) चितपानी। अधिक मजदूर बवैरी से गिरफ्तार हुए। लेफ्ट बैंक टाप से भी झगड़े का कारण बवैरी से हुआ। हमारी पुरी कोशिश इसी बात की रही कि सभी जगह वातावरण में शान्ति रहे, जो लोग रह गये हैं वे ही लोग मिल कर किसी नतीजे पर पहुँचें।

ता० १९ की शाम को डिप्टी जनरल मैनेजर श्री गोडबोले से हमारी बातचीत फिर हुई। ४ माँगों में से बख्शिश की माँगों पर, जिस पर १८ तारीख को समझौता नहीं हो पाया, हमने फिर चर्चा शुरू की। काफी बात के बाद उन्होंने यह सिद्धान्त स्वीकार किया कि बख्शिश दी जायेगी। मजदूरों से भी बातें होती रहीं। २० की शाम को लखनऊ से खबर मिली कि रिहंद के कुछ मजदूर प्रतिनिधि लखनऊ पहुँच गये हैं। हमसे उनकी बातचीत फोन पर नहीं हो पायी। मालूम हुआ कि 'इन्टक' के अधिकारियों के साथ वे आ रहे हैं। ता० २१ को बवैरी के कुछ मजदूर गिरफ्तार हुए। बहुनों ने सत्याग्रह करना चाहा, पर फिर शान्ति हो गयी। सभी पार्टी के लोग भी अब वहाँ पहुँचने लगे। 'प्रसोपा' के नेता श्री शालिगराम जायसवाल, श्री कल्याणचन्द्र मोहिले तथा श्री शिवनाथ सिंह आये। वे हमारे साथ ही आश्रम पर ठहरे। मालूम हुआ कि कम्युनिस्ट नेतागण भी आये थे। उनमें से किसी से भी मुलाकात नहीं हो पायी। 'आज' पत्र के प्रतिनिधि भी वहाँ पहुँचे थे। हम चाहते थे कि उनसे हमारी बातें हों, किन्तु वह नहीं हो पायी।

में जनरल मैनेजर के साथ ६ मजदूर प्रतिनिधि की बातचीत शुरू हुई। दोनों पक्षों का आग्रह था कि हम रहें, इसलिए हम भी उपस्थित थे। जनरल मैनेजर के साथ कम्पनी के श्री गोडबोले, श्री राव और श्री बाणी उपस्थित थे। प्रोजेक्ट मैनेजर श्री सेनगुप्ता अस्वस्थ थे, अतः वे नहीं आये। जनरल मैनेजर ने सबके साथ अपना विचार रखा। उन्होंने बड़ा दुःख प्रकट किया कि उनकी कम्पनी में इस प्रकार की यह पहली घटना है। उन्होंने यह चाहा कि दोनों ओर से स्पष्ट बातें हों और आज जो कुछ भी निर्णय हो, उस पर दोनों ईमानदारी के साथ भविष्य में बरताव करें। ४ घंटे तक दिल खोल कर आपस में चर्चा हुई। जनरल मैनेजर चाहते थे कि गैरेज के भी एक प्रतिनिधि रहें। उस समय सभी प्रतिनिधियों ने मिल कर गैरेज का भी प्रतिनिधि चुना। फिर सातों प्रतिनिधियों ने मिल कर सर्वसम्मति से श्री मुहम्मद हुसेन को मुखिया मान्य किया। दो मुख्य सिद्धान्त मान्य हुए :

(१) (क) मजदूर प्रतिनिधियों ने मजदूरों की ओर से यह आश्वासन दिया कि मजदूरों की तरफ से किसी प्रकार का नाजायज बरताव नहीं होगा और भविष्य में निर्माण का काम निर्विघ्न चलेगा। यदि मजदूर कुछ नाजायज काम करेंगे तो वही लोग मिल कर उसको रोकेंगे, उसके विरुद्ध कार्रवाई करेंगे।

(ख) मजदूरों की जो शिकायत होगी उसे पहले ये सात आदमी मिल कर उसकी पूरी छानबीन करेंगे। उनकी दृष्टि में अगर वह शिकायत जायज हुई, तो उनकी ओर से ही कम्पनी के अधिकारियों के सामने बात रखी जायेगी।

मालिक और मजदूरों में प्रेमपूर्ण समझौता

ता० २१ जनवरी की रात को कांग्रेस के विधायक श्री अमरेशचन्द्र पान्डे और श्री अजीज इमाम भी पहुँचे। 'इन्टक' के प्रान्तीय मंत्री श्री राजाराम पान्डे तथा श्री जोखूराम त्रिपाठी भी पहुँच गये। इन लोगों ने मजदूरों से मिल कर वातावरण को सुलझाने में बड़ी कोशिश की। २२ जनवरी को दिन भर यह प्रयास चलता रहा। २३ जनवरी को सबेरे १० बजे सहायक लेबर कमिश्नर की उपस्थिति में मजदूरों के चुने हुए ६ प्रतिनिधि कम्पनी के डिप्टी जनरल मैनेजर श्री गोडबोले, श्री राव तथा श्री बाणी आदि के बीच समझौते की बातचीत शुरू हुई। श्री राजाराम पान्डे, श्री अजीज इमाम तथा हम लोग भी उपस्थित थे। १८ तारीख को चर्चा में जितनी बातें मान्य हुई थीं, उसी पर समझौता हुआ। अर्थात्

(१) नोटिस पे सरकारी कायदे के अनुसार, साल में १५ दिन के हिसाब से जो मिलनी चाहिए, वह कम्पनी देगी।

(२) नोटिस पे, एक माह का अग्रिम वेतन बगैर काम लिये हुए नोटिस देते समय ही कम्पनी दे देगी।

(३) छँटनी के समय घर लौटने के लिए रेल-किराया भी मजदूरों को मिलेगा।

(४) बख्शिश और हड़ताल काल की मजदूरी के सम्बन्ध में चर्चा हुई। और मजदूर-प्रतिनिधियों ने जनरल मैनेजर को पंच मान लिया। जनरल मैनेजर के आने पर बख्शिश और हड़ताल-मजदूरी के सम्बन्ध में वे जो निर्णय देंगे वह मान्य होगा।

उपरोक्त निर्णय के आधार पर यह भी मान्य हुआ कि दो बजे दिन से सभी मजदूर काम पर जायँ।

तदनुसार २३ जनवरी को दो बजे हड़ताल समाप्त हुई और मजदूर काम पर गये।

ता० २४ जनवरी की रात जनरल मैनेजर रिहंद आये। २६ जनवरी को साढ़े नौ बजे सबेरे मेन आफिस

(२) कम्पनी की ओर से जनरल मैनेजर ने यह आश्वासन दिया कि जितनी चीजें मान्य हो गयी हैं, उन्हें वे पूर्णतया पालन करेंगे और मजदूरों की जायज माँग बराबर स्वीकार की जायेगी। उनकी कोशिश होगी कि उनकी तरफ से कोई शिकायत न हो।

ता० २६ जनवरी के पवित्र अवसर पर प्रेमपूर्ण वातावरण में समझौता सम्पन्न हुआ। यह एक अपूर्व दृश्य था। जनरल मैनेजर ने सबसे हाथ मिलाया। सभी परस्पर गले मिले। १८ जनवरी को २ बजे क्षुब्ध वातावरण में लोग उठे थे। २६ जनवरी को २ बजे भाई भाई की तरह गले-गले मिले। काश, १८ तारीख की अप्रिय घटना न घटी होती, तो मजदूर-आन्दोलन के इतिहास में यह एक आदर्श नमूना होता, मालिक मजदूर के झगड़े का प्रेमपूर्ण अन्त देखते ही बनता था।

दफा १४४ भंग करने, शून्य हड़ताल करने तथा अशांति-भंग करने के अभियोग में लगभग ५७० मजदूर अभी जेल में हैं। वे सभी युवक हैं, अच्छे टेकनीशियन हैं। आकस्मिक परिस्थिति में वे सब पड़े। सरकार तथा जिला-अधिकारियों से भी हमारा अनुरोध है कि इस प्रेमपूर्ण वातावरण को और परिशुद्ध बनाने के लिए इन सब मजदूरों को भी रिहा कर दें, ताकि मालिक और मजदूर की तरह सरकार के प्रति भी अच्छी धारणा हो जाय। इन टेकनीशियनों की अनुपस्थिति में निर्माण कार्य भी ठीक ठीक नहीं चलेगा। दफा १४४ जो अभी वहाँ लगी हुई है, उसे भी शीघ्र हटा लेना चाहिए, ताकि साधारण वातावरण हो जाय।

१५ जनवरी की रात को हम लोग रिहंद बाँध पर पहुँचे। २६ जनवरी की शाम तक, जब तक मालिक मजदूर एक नहीं हो गये, हम वहाँ बने रहे। सर्वोदय के सेवक होने के नाते हम इस स्थिति को छोड़ भी नहीं सकते थे। मजदूर-आन्दोलन को भी निकट से देखा

अन्दर घुस कर देखने का मौका मिला। सारी स्थिति को गहराई से देखते हुए कुछ चीजें स्पष्ट दिखाई पड़ी, जिन्हें व्यक्त करना आवश्यक प्रतीत होता है।

१. मजदूर-संगठन : आज के मजदूर-नेता परिस्थिति बिगाड़ने और जनता को उत्तेजित करने में तो अगुवा बन जाते हैं, लेकिन परिस्थिति को काबू में रखने तथा समय पर उसे सम्हालने की जिम्मेवारी वे नहीं उठाते। परिस्थिति से जो घटना घटती है, उसका भी दिलेरी के साथ वे मुकाबला नहीं करते। यहाँ की परिस्थिति को देखते हुए हम कह सकते हैं कि मजदूर-नेताओं में जिम्मेवारी का अभाव है। सहायक कार्यक्रम तो लेते हैं, लेकिन मजदूरों को विचार परिपक्व करने तथा विधायक कार्यक्रम की योजना उनके पास नहीं। इसलिए मजदूर आज विशृंखल हैं। हर लड़ाई में उनकी हार होती है।

२. हमारे अखबार : अखबारों के द्वारा ही दुनिया को खबर मिलती है। रिहंद बाँध घटना के सम्बन्ध में अखबारों में जितनी भी खबरें छपी सब उत्तेजना बढ़ाने वाली थी। किसी ने भी ठीक ढंग से परिस्थिति को व्यक्त नहीं किया। संवाददाताओं की जो जिम्मेवारी होती है, उसका अत्यन्त अभाव दिखाई पड़ा। प्रेस प्रतिनिधि की बातें जनता के सामने सही समाचार और अनुकूल विचार रखने के लिए होती हैं, इस जिम्मेवारी का अभाव भी खटकता रहा।

३. राजनीतिक पार्टियाँ : कांग्रेस आज सत्ताधारी पार्टी है। दुर्भाग्यवश जनता का विश्वास ऐसी घटनाओं में कांग्रेस पर नहीं रहता। दूसरी राजनीतिक पार्टियाँ ऐसी समस्याओं में सही लोकमत व्यक्त करने में मददगार हो सकती हैं। लेकिन पिछले १० दिनों में हमारा यह अनुभव आया कि लोग आये, कुछ इधर मिले, कुछ उधर मिले, कुछ अधिकारियों से बातें की और फिर वहीं से चले गये। समस्या को सुलझाने में किसी की शक्ति नहीं लगी। रिहंद बाँध की समस्याओं में गोली-काण्ड तो एक घटना है। अगर यह घटना न घटी होती, तो शायद लोग वहाँ आते भी नहीं। इस बाँध से जो समस्याएँ खड़ी हुई हैं, जो इतना बड़ा विशाल निर्माण हो रहा है, उसमें से निकली हुए समस्याओं का रचनात्मक हल आज किसी के पास नहीं, यह एक बड़ी आश्चर्य की बात है। किसी संगठन का इस ओर ध्यान देने का प्रयत्न भी नहीं।

४. सरकार और अधिकारी : ऐसे निर्माण में करोड़ों रुपये खर्च हो रहे हैं। ये घटनाएँ निर्माण कार्य में कितनी बाधक होती हैं, रिहंद गोली-कांड ने इसे सिद्ध कर दिया। अमन और कानून के नाम पर आज जो कुछ हो रहा है, उसकी सीमा कहाँ तक रहे, यह निश्चय करना आवश्यक है। व्यक्तिगत अनुभव से हम नम्रतापूर्वक कह सकते हैं कि ऐसे अवसरों पर सशस्त्र पुलिस और फौज का प्रदर्शन जब होता है, तब आम जनता चाहे शान्त भी रहे, पर कुछ समाज विरोधी तत्त्वों को पीछे से आड़ में अपना खेल खेलने का मौका मिल जाता है। निर्दोष जनता पिस जाती है और सरकार की बदनाम होती है। यह भी शंका उत्पन्न होती है कि क्या गोली चलाने के अलावा अमन और कानून कायम करने के लिए कोई दूसरा तरीका नहीं है? ऐसी परिस्थितियाँ शान्त जनता को भी सरकारविरोधी बना देती हैं। गोली चलाने के सम्बन्ध में तो 'कोड आफ कन्डक्ट (आचरण विधि)' बननी ही चाहिए। अगर यह करेगा तो दूसरा उपाय सूझेगा। धैर्य और संतुलन रख कर बहुत कुछ काम बन सकेगा।

५. विधायक शक्तियाँ : आज सारे देश में बड़े-बड़े डैम बन रहे हैं। लाखों मजदूर आठ आठ, दस दस, वर्ष तक एक-एक प्रोजेक्ट पर काम करते हैं। रिहन्द बाँध पर भी पाँच वर्षों से काम हो रहा है। मजदूर बाल-बच्चों के साथ वहीं हैं। उनके इर्द-गिर्द जो वातावरण है, वह उन्हें ऊँचा उठाने में सहायक नहीं होता। मजदूर दो रुपया रोज से दस रुपया रोज तक मजदूरी पाते हैं। बीड़ी, सिगरेट, शराब, सिनेमा यह सहजसुलभ है। इस वर्ष रिहंद पर शराब की भट्ठी भी खुल गयी है। उसने और भी विभत्स दृश्य पैदा कर दिया है। हर मजदूर से बात कीजिये, सबके मुँह से शराब की बदबू आयेगी। सिगरेट बीड़ी पीने वाले तो शायद सौ फीसदी हों। सुविचार जाग्रत करने का कोई भी कार्यक्रम नहीं, उसकी योजना भी नहीं। करोड़ों रुपये खर्च करके भौतिक निर्माण की योजना तो बनती है, लेकिन जिस मनुष्य शक्ति से यह बन रहा है वह मनुष्य गिर रहा है और उसके साथ-साथ उसकी सन्तानें भी। यह गम्भीरता से सोचने की बात है। भौतिक निर्माण के साथ-साथ इस प्रकार के [illegible] में आन्तर शक्ति के निर्माण की भी योजना रहनी चाहिए तभी राष्ट्र उठ सकेगा।

वाराणसी में शोकसभा

श्री कुमारप्पाजी के देहान्त की दुःखदायी खबर ता० ३१ की सुबह वाराणसी पहुँच गयी थी। शाम को टाउन हाल में शोकसभा हुई, जिसमें सर्वश्री प्यारेलालजी, शंकरराव देव, दादा धर्माधिकारी, नगर के प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता आदि उपस्थित थे। श्री प्यारेलालजी ने अपने भाषण में कुमारप्पाजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा—"श्री कुमारप्पाजी अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे और अपरिग्रही थे। उन्होंने अपनी सारी विद्वत्ता अर्थशास्त्र को ऐसा रूप देने में लगायी, जिससे दरिद्रनारायण की सेवा हो सके। आजकल जो लोग विदेश जाते हैं, वे वहाँ की चीजों को स्याहीचूस कागज के जैसे चूस लेते हैं। लेकिन कुमारप्पाजी ने विदेश में जो सीखा उससे उन्होंने वही लिया, जिससे कि हिन्दुस्तान के गरीब लोगों का भौतिक और आध्यात्मिक विकास हो। इन्सान के लिए कौनसा जीवन अच्छा होगा, जिसमें वह अपना शरीर स्वास्थ्य भी टिका सके और आत्मदर्शन कर सके। इसकी खोज में उन्होंने सच्चे अर्थशास्त्र का निर्माण किया। वे कहते थे कि जो अर्थशास्त्र, ये दोनों बातें नहीं साध सकेगा, वह झूठा अर्थशास्त्र, अनर्थशास्त्र है।

"वे धर्म से ईसाई थे, पर उनकी ईसाइयत बहुत उदार थी। उन्होंने हजरत ईसा की तालीम पर एक पुस्तिका लिखी, जिसमें बताया है कि हजरत ईसा की तालीम का मध्यबिंदु है, अहिंसा। इसलिए ईसा का नाम लेकर युद्ध करना ईसाई धर्म पर लांछन है।"

श्री प्यारेलालजी के भाषण के पश्चात् दो मिनिट की मौन प्रार्थना हुई।

●

फैजाबाद में शोक-सभा

डा० जे० सी० कुमारप्पा के देहावसान के शोक में खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी जो फैजाबाद में गत २२ जनवरी से चल रही है, ता० ३१ जनवरी को बन्द कर दी गयी और प्रदर्शनी में लगी बंगाली भी बुझा दी गया। सवा सात बजे शाम को प्रदर्शनी के सभा-कक्ष में प्रदर्शनी में श्री डा० यशवन्त सिंह की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई। सभा में श्री कुमारप्पाजी के जीवन पर प्रकाश डाला गया और शोक प्रस्ताव पास करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की गयी कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा हम लोगों को शक्ति दे कि श्री कुमारप्पाजी के प्रदर्शित मार्ग पर चल कर उनके शेष काम को पूरा कर सकें।

●

श्रमभारती में सर्वोदय-गोष्ठी

गत १५ जनवरी को सर्वश्री धीरेन्द्र भाई के मार्गदर्शन में खादीग्राम (जि० मुंगेर) इस क्षेत्र के विभिन्न विचारों के लगभग २०० प्रमुख व्यक्तियों की एक सम्मिलित गोष्ठी हुई, जिसमें सर्वोदय-आन्दोलन और समाज में चलने वाले सभी प्रकार के रचनात्मक कार्यों में सामंजस्य कैसे हो सके, इसके ऊपर सारी गंभीरता से विचार विमर्श हुआ।

उपरोक्त कार्यों को व्यापक रूप से चलाने के उद्देश्य से उपस्थित लोगों की सम्मति से एक समन्वय समिति की स्थापना हुई, जिसमें २१ प्रमुख व्यक्तियों ने स्वेच्छा से अपने नाम दर्ज कराये।

—

अहमदनगर जिले की सूतांजलि में प्रगति

महाराष्ट्र प्रदेश में अहमदनगर जिले में सूतांजलि संग्रह का कार्य १९५० से चल रहा है। सर्वोदय-सम्मेलन, शिवरामपल्ली में विनोबाजी से प्रेरणा पाकर सन् '५२ में बेवाले में सर्वोदय-मेला का आयोजन किया था। उस समय २८११ सूतांजलि इकट्ठी हुई। इसके बाद हर साल वह बढ़ती आ रही है। सन् '५९ के सर्वोदय-मेले के लिए सूतांजलि प्राप्त करते समय सर्वोदय पात्र से नयी प्रेरणा मिली। उसे अनाज और वस्त्र स्वावलम्बन का प्रतीक मान कर सूतांजलि के साथ-साथ सर्वोदय-पात्र का भी प्रचार होता रहता है। अब इन दोनों विचार को लेकर दोनों काम साथ-साथ करने का तय हुआ और वैसा प्रचार भी शुरू हुआ है। इस संबंध में विनोबाजी को लिखा था, तो उनसे उत्तर मिला कि "१५००० सर्वोदय-पात्र और १५००० सूतांजलि, यह अहमदनगर जिले के लिए कम से-कम आँकड़ा है। १½ प्रतिशत मार्जिन देकर आपको काम किया जायगा।"

जिले की आबादी १४ लाख है। कुल गाँव करीब १३ सौ से अधिक हैं। कम से-कम एक प्रतिशत तो सूतांजलि समर्पित हों, ऐसी कोशिश जारी है। सूतांजलि के साथ ही सर्वोदय-पात्र के प्रचार में जिस तरह साहित्य-बिक्री होती है, उसी तरह जिस गाँव या क्षेत्र में खादी-बिक्री में वृद्धि होती जायगी वहाँ सूत गुण्डियों से खादी बुनवा कर सर्वोदय पात्र रखने वालों को श्रम मूर्ति के प्रतीक के रूप में खादी के कपड़े देते जायँ। घर घर सर्वोदय पात्र के साथ सूतांजलि, चरखा, ग्राम चक्की और ग्रामोद्योगी वस्तुओं के प्रचार के साथ ही अन्न-वस्त्र-स्वावलंबन की कल्पना देंगे। बाद में ग्राम-संकल्प के विचार का प्रचार करने का सोचा गया है।

वर्ष	सूतांजलि	वर्ष	सूतांजलि	वर्ष	सूतांजलि
१९५०	१०२	१९५४	७,२१०	१९५८	९,०५०
१९५१	२४६	१९५५	८,५२६	१९५९	११,५८१
१९५२	२,८११	१९५६	८,१६४		कुल ६१,०६१
१९५३	४,४२४	१९५७	८,७६३		

—अ. मा. दिवेलकर

संवाद-सूचनाएँ :

पदयात्रा करते हुए सेवाग्राम पहुँचिये

इस साल सर्वोदय-सम्मेलन ता० २६, २७ और २८ मार्च को सेवाग्राम में हो रहा है।

विनोबाजी चाहते हैं कि बापू के निर्वाण के बारह साल याने एक तप के बाद बापू की तपस्या-भूमि में होने वाले इस सम्मेलन में सब लोक-सेवक पदयात्रा करते हुए जायें और बापू के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करें। आप यह भी जानते हैं कि विनोबाजी पदयात्रा को अहिंसा की शोध का सर्वश्रेष्ठ साधन मानते हैं। आज जब कि जमाना अहिंसा के उपासकों को चुनौती दे रहा है, हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम सब एकसाथ विनोबाजी की इच्छा के अनुसार अहिंसा के इस साधन को अपनायें।

दूर दूर के प्रांतों के लोक-सेवकों के लिए पदयात्रा करते हुए ठीक समय पर सेवाग्राम पहुँचना शायद संभव नहीं होगा। इसलिए बीच की राह के तौर पर यह हो सकता है कि हर लोक-सेवक अपने प्रांत की सीमा तक पदयात्रा करें, वहाँ से रेल-यात्रा करें और सेवाग्राम से करीब पचास मील दूर से फिर से पदयात्रा करें। हर प्रांत से कम-से-कम एक टोली आरम्भ से अन्त तक पदयात्रा करते हुए सेवाग्राम पहुँचे।

सेवाग्राम के निकटवर्ती प्रदेश की यात्रा के आयोजन संबंधी सारी जानकारी श्री राधाकृष्णन् (सहमंत्री, सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम, जिला वर्धा, बम्बई राज्य) से प्राप्त होगी। सेवाग्राम के निकटवर्ती प्रदेश में मराठी बोली जाती है, इसलिए अन्य प्रांतों से आने वाली टोलियों का मराठी बोलने वाले प्रदेश में प्रवेश होते ही एक मराठी जानने वाला कार्यकर्ता टोली में शरीक हो जायेगा, जिससे कि अन्य भाषियों को कुछ सुविधा होगी।

सर्वोदय-मंडलों, संघ-सदस्यों एवं रचनात्मक संस्थाओं आदि से सविनय अनुरोध है कि पदयात्रा करते हुए सेवाग्राम पहुँचने का यत्न करें और आपके कार्यक्रम की जानकारी प्रांतीय सर्वोदय-मंडल तथा वाराणसी कार्यालय को देने की कृपा करें।

—निर्मला देशपांडे, सहमंत्री

बारहवाँ सर्वोदय-सम्मेलन, सेवाग्राम (वर्धा)

१ बारहवाँ वार्षिक सर्वोदय-सम्मेलन ता० २६ से २८ मार्च १९६० तक सेवाग्राम (जिला वर्धा, बंबई राज्य) में सेवाग्राम तथा वर्धा स्टेशन सेंट्रल रेलवे के देहली-मद्रास और बंबई-कलकत्ता मार्ग पर स्थित है। वर्धा स्टेशन से सेवाग्राम आश्रम पाँच मील दूरी पर है।

२. (क) सम्मेलन में निवास की व्यवस्था रहेगी। उसके लिए तीन रुपया प्रति व्यक्ति जमा करने पर निवास का प्रवेश पत्र तथा रेलवे कन्सेशन (रियायती किराया) सर्टिफिकेट प्राप्त किया जा सकेगा। इस सर्टिफिकेट को अपने क्षेत्र के रेलवे अधिकारी डी० टी० एम० या सी० टी० एम० (डिवजनल ट्रैफिक मॅनेजर, या चीफ ट्रैफिक मॅनेजर) के यहाँ भेज कर कन्सेशन-ऑर्डर प्राप्त करना होगा। तभी सेवाग्राम तक जाने के (रेलवे टिकट) खर्च में, जाने-आने की सहूलियत वाला रियायती टिकट मिल सकेगा।

(ख) निवास प्रवेश-पत्र तथा कन्सेशन सर्टिफिकेट सब प्रांतों के केन्द्रों से मिल सकेंगे। इन केन्द्रों के नाम और पते इसी अंक के पृष्ठ-संख्या १० पर प्रकाशित किये गये हैं।

(ग) बारह साल के नीचे के बच्चे का निवास शुल्क आधा याने डेढ़ रु० रहेगा।

(घ) निवास प्रवेश-पत्र तथा रेलवे कन्सेशन सर्टिफिकेट दिये जाने की अंतिम तारीख ५ मार्च '६० तक रहेगी।

(ङ) निवास प्रवेश पत्र प्राप्त व्यक्तियों के निवास की ही जिम्मेदारी सम्मेलन व्यवस्था-समिति लेगी। यह निवास-व्यवस्था ता० २५ मार्च, '६० के पहले और ता० २९ मार्च, '६० के बाद उपलब्ध नहीं रहेगी।

३ (क) सम्मेलन के तीन दिनों के दोनों समय का भोजन-शुल्क कुल रुपये पाँच रहेगा। जो व्यक्ति भोजन शुल्क के रुपये पाँच भेज देगा, उसके तीन दिन के दो दो वक्त के भोजन की व्यवस्था की जा सकेगी। भोजन शुल्क "मंत्री, सर्वोदय सम्मेलन स्वागत समिति सेवाग्राम (वर्धा)" को ता० ५ मार्च तक भेज दें।

(ख) भोजन में जिनको ग्रामोद्योगी वस्तुएँ लेने का आग्रह हो, गाय के दूध घी का प्रण हो, बिना नमक-मिर्च की सब्जी या किसी विशेष प्रकार की जरूरत हो, तो उसकी सूचना भोजन-शुल्क के साथ मंत्री, सर्वोदय-सम्मेलन स्वागत समिति, सेवाग्राम (वर्धा) को ता० ५ मार्च, '६० तक भेज दें।

(ग) बारह साल के नीचे के बच्चे का भोजन-शुल्क आधा ढाई रु० होगा।

(घ) जिन व्यक्तियों का भोजन शुल्क प्राप्त होगा, उन्हीं को भोजन देने की जिम्मेदारी सम्मेलन की व्यवस्था-समिति ले सकेगी।

सेवाग्राम पहुँचने की सूचना मंत्री सर्वोदय-सम्मेलन स्वागत समिति, सेवाग्राम, वर्धा (बंबई राज्य) को देने की कृपा करें।

सर्वोदय सम्मेलन, सेवाग्राम —मंत्री

सर्वोदय-संमेलन की निश्चित तारीखें

सर्वोदय-संमेलन, सेवाग्राम की तारीखें अब निश्चित हुई हैं। अतः 'भूदान यज्ञ' के १५ जनवरी के अंक में २२ से २४ मार्च और इसी अंक के पृष्ठ १० पर प्रकाशित २५ २६, २७ मार्च के बदले पाठक कृपया नोट कर लें कि सम्मेलन की निश्चित ता० २६ से २८ मार्च १९६० तय हुई है।

महाराष्ट्र प्रदेश के सूतांजलि-संग्राहक

'भूदान-यज्ञ' के गत २९ जनवरी के अंक सूतांजलि संग्राहकों की सूची में महाराष्ट्र का पता गलत छपा है। सही पता इस तरह है : श्री मंत्री, महाराष्ट्र सेवा संघ, ७२७ सदाशिव पेठ, पूना २

व्यवस्था संबंधी पत्र-व्यवहार का पता

व्यवस्था संबंधी सारा पत्रव्यवहार कृपया व्यवस्थापक, 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक, राजघाट, काशी, वाराणसी १ के पते से करें। —व्यवस्थापक

श्री गोकुलभाई की ६१ वीं वर्षगाँठ

राजस्थान समग्र सेवा संघ की कार्य समिति की एक आवश्यक बैठक ता० २२ जनवरी को जयपुर में श्री सिद्धराज ढड्ढा की अध्यक्षता में हुई। आगामी २५ फरवरी को श्री गोकुलभाई भट्ट की ६१ वीं वर्षगांठ का समारोह जयपुर में मनाना निश्चय हुआ। श्री जयप्रकाश नारायण ने इस समारोह की अध्यक्षता करना स्वीकार किया है। जयन्ती के पहले प्रान्त के विभिन्न जिलों में छोटी छोटी पदयात्राएँ भी करने का तय हुआ है। ता० २५ फरवरी को प्रान्त भर से जयन्ती के लिए आये हुए कार्यकर्ताओं की एक प्रभात फेरी शहर में निकाली जायगी और उसी दिन समग्र सेवा संघ के कार्यालय का नये स्थान में प्रवेश होगा।

उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष मास्टर सुन्दरलाल प्रान्त के विभिन्न जिलों का दौरा कर रहे हैं। बांदा जिले की सार्वजनिक सभा में नागरिकों द्वारा अभिनन्दन का उत्तर देते हुए उन्होंने ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए प्रयत्न करने का आवाहन किया। इस दौरे में विभिन्न स्थानों के कार्यकर्ताओं से भी आन्दोलन की प्रगति के बारे में चर्चा का मुख्य कार्यक्रम रहता है।

श्री गोकुलभाई भट्ट के लिए संगृहित निधि सहयोगार्थ बाँसवाड़ा जिला सेवा संघ द्वारा संचालित गांधी आश्रम परतापुर (राजस्थान) के छात्र छात्राओं ने शिवरात्रि तक हर रविवार को एक घंटा श्रम करने का निश्चय किया।

गांधी आश्रम के छात्र छात्राओं से प्रेरणा पाकर बाल आश्रम मड़कोला के छात्रों ने भी प्रत्येक रविवार को एक घण्टा श्रम करने का संकल्प किया है।

सर्वोदय-पात्र

श्रीमती शरयूताई धोत्रे ने पूना जिले और खानापुर तहसील में सर्वोदय-पात्र के विचार प्रचार के अम्बर चरखा परिश्रमालय के काम का निरीक्षण किया। खानापुर के परिश्रमालय का काम काफी सन्तोषजनक है। पूना शहर में स्त्री संगठन की सर्वोदय-पात्र रखने वाली बहनों की दो सभाओं में चर्चा हुई। आज के अशांतिमय वातावरण में बच्चों पर अच्छे संस्कार हों, इसलिए सर्वोदय-पात्र की स्थापना की आवश्यकता सबने महसूस की।

विनोबाजी का पता :
मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल,
पो० पट्टीकल्याण, जिला-करनाल (पंजाब)

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन ४२८५
वार्षिक मूल्य ५) • पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२२७५। एक प्रति १३ नये पैसे

वे आखिर तक देश भर के कार्यकर्ता और बापू के बीच की कड़ी बने रहे; बापू ने उन्हें विरासत संभालने को ही जो कहा था। ये सब कार्यकर्ता, उनकी बहुविध सामाजिक आर्थिक जिम्मेदारियाँ, दिक्कतें, सबको जमनालालजी ने विरासत ही समझा और उन सबके प्रति अपना कर्तव्य ठीक निभाया, ऐसा कि अब तक कोई ऐसा जमनालाल दूसरा नजर नहीं आया।

विनोबा के प्रति भक्ति

एक से अधिक पत्रों में जमनालालजी ने श्री जानकी देवीजी से आग्रहपूर्वक लिखा है कि बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध विनोबाजी की सलाह से करना। विनोबाजी में उनकी इतनी अद्भुत श्रद्धा थी कि उन्होंने अपने परिवारवालों से कह रखा था—किसी भी नैतिक प्रश्न पर मेरे और विनोबाजी के विचारों में अन्तर प्रतीत हो तो तुम लोग विनोबाजी की राय ही निर्णायक मानना। विनोबाजी के ब्रह्मदर्शी होने के बारे में उन्हें संदेह नहीं था। उनके कारण वे अपने को कितना गौरवान्वित समझते थे! विनोबा के लिए अपनी डायरी में उन्होंने यहाँ तक लिख रखा है कि 'मुझे विनोबा के संपर्क में अधिक रहना चाहिए। जीवन में सच्ची उत्साह तभी प्राप्त हो सकेगा। उसी से अपना मार्ग भी निष्कलंक हो सकेगा। उनका मन रागद्वेषातीत होने से उनके सम्पर्क और सहवास का परिणाम सदा ठीक ही आता है।'

मुसलमानों का प्रेम पाया

बापू की विरासत संभालना कोई मामूली काम नहीं था। जमनालालजी पूरी ताकत से बापू के एक-एक काम को सुसंगठित करते गये, खादी के लिए देशभर की यात्रा की, खुद घूमे, परिवारवालों को भी घुमाया। हिंदी के लिए कितना किया! जातीय एकता के उनके प्रयत्न तो अद्वितीय हैं। वर्धा में मुसलमानों का जो प्रेम उन्होंने हासिल किया, उसकी तो मिसाल नहीं। जमनालालजी के प्रति प्रेम और श्रद्धा का यह परिणाम था कि वर्धा के मुसलमानों ने गोवध बंद कर दिया था और जब शंकराचार्य, डा० कुर्तकोटी वर्धा गये, तो उन्होंने एक गाय को शृङ्गार कर उन्हें भेंट दी। मुसलमान नेताओं के साथ उनके कितने आत्मीयता के सम्बन्ध थे, यह तो इसी से जाहिर होता है कि खान बन्धुओं ने उनके घर को अपना घर मान लिया था! इस एकता के लिए जमनालालजी ने उत्साह से उर्दू लिपि और भाषा का अध्ययन किया।

इसी तरह राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार के लिए भी उनके प्रयत्न अद्भुत थे। देश की सभी राष्ट्रीय शिक्षण-संस्थाओं को उन्होंने मदद दी। इतना ही नहीं, अपने बालकों को सरकारी स्कूलों में भेजने से इन्कार कर दिया।

हरिजन-सेवा

बापू के सभी काम जमनालालजी को प्रिय थे, किन्तु उनकी अपनी कोई रुचि विशेष नहीं थी ऐसा नहीं। समाज में सबसे नीचे, सबसे अधिक गिरे हुए जो हमारे हरिजन भाई हैं, उनके लिए उनकी आत्मा सदा तड़पती रही। उन्हें सामाजिक न्याय और प्रतिष्ठा मिले, इसके लिए उन्होंने क्या नहीं किया! उनके घरों में जाकर भोजन किया और उसके लिए स्वयं जातिबहिष्कृत हुए। उनके घृणास्पद समझे जाने वाले कामों को खुद निःसंकोच किया। जेल में दो कानूनर का उत्सव उन्होंने हरिजन-भाइयों को खुद अपने हाथ से नहला कर मनाया; जैसे कोई पुजारी अपने भगवान की मूरत को अभिषेक करता हो! हरिजन-भाइयों की इस नयी अवस्था के लिए वे हिंदू समाज को और फलतः अपने को जिम्मेवार समझते। वर्धा शहर का लक्ष्मीनारायण-मंदिर हरिजनों के लिए खुलवा कर उस क्षेत्र में उन्होंने क्रान्ति कर दी। वर्धा के मारवाड़ी विद्यालय में अब तक हरिजनों को प्रवेश नहीं मिला, चैन नहीं ली। ग्राम-गाँव के विद्यालय में हरिजन बालक ही नहीं था, स्वयं एक हरिजन बालक को वहाँ ले जाकर उसे प्रवेश दिलाया। बाबासाहेब आंबेडकरजी को वर्धा लाकर महात्माजी से भेंट कराने में उनका प्रमुख भाग रहा। कितना आतिथ्य और सत्कार उन्होंने बाबासाहब का किया! उन्होंने समझ लिया था कि सर्वोदय बिना अंत्योदय के नहीं होगा। जिस काम के लिए बापू को कई बार उपवास करने पड़े, वह जमनालालजी का अत्यन्त प्रिय कार्य रहा। बापू ने इस बारे में लिखा है कि 'हरिजन सेवा भावना और तद्विषयक उनकी उत्कटता जमनालालजी की अपनी स्वयंभू प्रेरणा थी। उन्होंने वह मुझसे नहीं प्राप्त की। हम दोनों का उस क्षेत्र में साथ हुआ है।'

गो-सेवा में तन्मय

लेकिन बापू की विरासत में एक काम ऐसा था, जो सबसे ज्यादा कठिन समझा गया था। स्वयं बापू ने माना था कि स्वराज्य प्राप्त करना आसान है, परन्तु वह काम कठिन है। वह काम गोसेवा का था। जमनालालजी ने उस काम को उठा लिया और दिन-रात एक करके कुछ ही दिनों में ऐसी व्यवस्था कर दी कि बापू को भी आश्चर्य हुआ। गो सेवा के निमित्त उनकी जो एकाग्र साधना हुई, वह उनके अपरिग्रही जीवन की चरम सीमा थी। उनकी अहिंसा और भूतमात्र के प्रति उनके प्रेम ने उन्हें अद्वितीय गोसेवक बना दिया। अन्तिम क्षणों में भी जमनालालजी गोसेवा की ही योजना बनाते रहे, उसी काम का चिन्तन करते रहे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जमनालालजी के इस आदर्श अपरिग्रही जीवन की बुनियाद में बापूजी का 'ट्रस्टीशिप' का सिद्धांत बहुत प्रभावी रहा। बापूजी को भी जमनालालजी के कारण अपने इस सिद्धांत के प्रचार में बल मिलता रहा।

जमनालालजी के अवसान पर उन्होंने लिखा भी कि 'जब-जब मैंने धनवानों के लिए यह कहा था कि वे लोक कल्याण की दृष्टि से अपने धन के ट्रस्टी बन जायँ, तब मेरे सामने सदा ही वणिक् शिरोमणि जमनालालजी का उदाहरण मुख्य रहा।'

मिलन !

३० जनवरी १९६० की शाम। मद्रास के अस्पताल में एक चारपाई पर श्री कुमारप्पाजी का व्याधिग्रस्त शरीर पड़ा था। एक बहन ने, जो उनसे मिलने गयी थी, उनसे कहा: "मैं बापू की पुण्यतिथि की सभा में शरीक होना चाहती हूँ, इसलिए आपसे विदा लेती हूँ।" श्री कुमारप्पाजी सहज ही बोले: "मैं भी वहाँ हाजिर रहूँगा!" बहन सोचती ही रही कि यह जर्जर शरीर वहाँ तक कैसे जा पायेगा!

वे उस सभा में उपस्थित रहे थे, लेकिन शरीर से नहीं। बापू को श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए उपस्थित जनसमुदाय को बाद में खबर मिली कि बापू के भक्त बापू में विलीन हो गये! वियोग का एक तप पूरा होते ही भगवान् और भक्त का मिलन हुआ।

जमनालालजी का अभाव आज अधिक खटक रहा है। व्यापारी वर्ग की उनके प्रति अटूट श्रद्धा थी। वे भी उनके दुःख-सुख को पूरी तरह जानते थे। अगर वे आज होते तो आज की इस अद्भुत आर्थिक क्रान्ति के आरोहण में भारतीय उद्योगपतियों का सहयोग प्राप्त करने में कोई बात उठा नहीं रखते।

बापू और विनोबा का स्वप्न साकार करने के लिए जमनालालजी आज हमारे बीच नहीं रहे, परन्तु दोनों के हृदय सिंहासन पर वे परमोच्च पद प्राप्त कर चुके थे। इसका कारण था उनकी सचाई, उनकी अपार नम्रता।

नम्रता की मूर्ति

नम्रता की वे मूर्ति ही थे। गांधी सेवा संघ के संस्थापक होते हुए भी स्वयं उसके सदस्य रहने की अपनी योग्यता के बारे में वे सदा सशंक रहे। उस संघ के ट्रस्टी तक रहने में उन्हें संकोच होता। किशोरलाल भाई ने दलील की—'आपने गांधीजी को गुरु माना है, गांधी सेवा संघ की सदस्यता से कैसे हट सकते हैं?' जमनालालजी ने उत्तर दिया: 'मैंने उन्हें गुरु नहीं, पिता माना है। उनके पुत्रों में जैसे एक हरिलाल है, वैसे ही मैं भी हूँ। मैं गांधी सेवा संघ का न सदस्य होने के लायक हूँ, न ट्रस्टी।'

लेकिन बापू ने उन्हें ठीक चीन्हा था, उन्होंने जमनालालजी में आदर्श सत्याग्रही के दर्शन किये। जमनालालजी के नाम लिखे अपने एक ऐतिहासिक पत्र में उन्होंने लिखा था:

'स्त्री, पुत्र, मित्र, परिग्रह; ये सब सत्य के अधीन रहने चाहिए। सत्य की खोज में इन सबका संपूर्ण त्याग करने को सदा तत्पर हों, तभी हम सत्याग्रही बन सकते हैं। इस धर्म का पालन स्वाभाविक हो जाय, इस हेतु मैं इस प्रवृत्ति में पड़ा हूँ और तुम्हारे जैसों का बलिदान करने में नहीं हिचकिचाता!"

और हमने देखा कि किस तरह जमनालालजी ने सत्याग्रह की साधना से ही अपना बलिदान कर दिया।

बापू रो पड़े !

अपने इस महापुरुष का विरह स्वयं बापू के लि भी असह्य हो गया। बीमारी की खबर सुनते ही सेवाग्राम से दौड़े आये, इस कल्पना से कि आऊँ तब तक तो देखना पाऊँगा! परन्तु जमनालालजी ' महान् आत्मा तो अनन्त में विलीन हो चुकी थी। बा ने सती को साहस बंधाया, साथियों को सान्त्वना दी अपनी उपस्थिति में सारे अन्तिम संस्कार करवाये, कि जब सेवाग्राम लौटने लगे तो एक अनुभूत विरक्ति का अनुभव किया। दूसरे रोज जब सारा परिवार बापू के पास पहुँचा मार्ग-दर्शन के लिए, तो बापू की हिम हृदय की भी धीर-गंभीरता गंगा-यमुना के रूप में ब निकली! बहुत देर तो वे बोल ही नहीं सके। बड़ी मुश्किल से शब्द फूट पड़े: "मैं तो चला था, मेरे बाद वह यहाँ मेरे स्थान पर आकर बैठेगा! लेकिन आज मुझे ही—"

वातावरण पुनः निःशब्द हो गया। और उसकी वे धारायें और भी वेगवती बन गयीं। यह कितना करुण और पावन प्रसंग! कैसे बुढ़ापा का हृदय है! धन्य बापू और धन्य उनके अद्वितीय पुत्र जमनालालजी!

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्ति जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

श्री जे. कृष्णमूर्ति का मुक्त जीवन-दर्शन

दादा धर्माधिकारी

आज सत्ता निष्ठा का जमाना है। मनुष्य को और समाज को अपना अभीष्ट रूप देने का अमोघ साधन सत्ता माना जाता है। सत्ता जिन शीघ्र परिणामकारी उपायों का अवलम्बन करती है, उनमें दूसरों का मनोनियंत्रण और मस्तिष्क-प्रक्षालन बहुत सरल और व्यावहारिक उपाय माने गये हैं। इस सर्वतोमुखी सत्तावाद के युग में भी कृष्णमूर्ति के अपूर्व मुक्तजीवन का दर्शन मानव के लिए संजीवन मंत्र है। जिसे हम आध्यात्मिक क्षेत्र कहते हैं, उसमें मनुष्यों का मनोनियंत्रण और बुद्धिनिग्रह अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा बहुत अधिक हुआ है। धर्म ने मनुष्यों के मन और बुद्धि पर जितनी सर्वंकष सत्ता का प्रयोग किया है, उतना और किसी क्षेत्र में अन्य किसी तत्त्व ने नहीं किया है। कृष्णमूर्ति अध्यात्म और धर्म के क्षेत्र में वास्तविक तथा आमूलाग्र क्रांति के प्रवर्तक हैं। इसलिए उनका व्यक्तित्व इस युग के लिए और भी अधिक उपयुक्त है। टाल्सटाय, थोरो आदि के विषय में और कुछ अंशों में गांधी के विषय में भी यह कहा जाता है कि वे दार्शनिक अराज्यवादी थे। अध्यात्म के क्षेत्र में उसी प्रकार कृष्णमूर्ति सत्तावाद और प्रामाण्यवाद के विरोधी हैं।

उनके मुक्तजीवन-दर्शन—यदि उसे दर्शन कहना वे सहन करें तो—के कुछ मुख्य सिद्धांत इस प्रकार हैं :

संस्कारों से मुक्ति आवश्यक

(१) मनुष्य के लिए कोई ग्रंथ, गुरु या मंदिर प्रमाणभूत नहीं होना चाहिए। उसे इन तीनों की सत्ता से मुक्त रहना चाहिए।

(२) उसे अपने संस्कारों से भी मुक्त रहना चाहिए। संस्कार दो प्रकार के होते हैं : एक परम्परा प्राप्त, जैसे आनुवंशिक या सामाजिक। दूसरे, किसी व्यक्ति या परिस्थिति के प्रभाव से उत्पन्न। परम्परा और प्रभावजन्य संस्कारों से मुक्त निरुपाधिक चित्त होना चाहिए।

हम अपना रूप समझ लें

(३) मनुष्य कुछ है और उसे कुछ होना है, यह मान्यता अनर्थमूलक है। होना और बनना में अन्तर पड़ जाता है, एक अवास्तविक विरोध पैदा होता है। इस विरोध में से स्पर्धा की समस्या पैदा होती है। मैं जो कुछ हूँ, उसे सम्यक् रूप से समझ लूँ, इतना काफी है।

तुलना मत करो

(४) मैं कुछ हूँ और कुछ होना चाहता हूँ, इस आकांक्षा से तुलना पैदा होती है और तुलना से ईर्ष्या तथा मत्सर पैदा होता है। इसलिए हमें वस्तु-वस्तु में या मनुष्य-मनुष्य में तुलना नहीं करनी चाहिए। जिस समय जो वस्तु या व्यक्ति सम्मुख हो, उसके वास्तविक स्वरूप को समझने में तुलना बहुत बाधक है। काशी में गंगाजी के पुल पर से गंगाजी का प्रसन्न प्रवाह देखने में तन्मय होने के बदले यदि [illegible] और गंगाजी के विराट पाट से तुलना करने में हम लगें तो गंगा का सौंदर्य देख नहीं पाते। इस क्षण जिस व्यक्ति के साथ हमारा सम्पर्क या सम्भाषण हो रहा है, उसकी तुलना यदि अन्य व्यक्तियों से करने लगें तो मधुर और सजीव रसों से हम वंचित रह जाते हैं। इसलिए आनन्द की अनुभूति का रहस्य यह है कि तुलना न करें। तुलना नहीं होगी तो प्रतिस्पर्धा और [illegible] भी नहीं होंगे।

स्मृति-स्वप्नों में खतरा

(५) भूतकाल की स्मृतियों में और भविष्य की योजना, आकांक्षाओं में जीवन को लुप्त न होने दो। स्मृति मनुष्य को भूतकाल के साथ बाँधती है और आशा आकांक्षा भविष्यत् के पीछे घसीटती है। भूतकालीन सुख या दुःख की स्मृतियाँ उसे वर्तमान जीवन से विमुख कर देती हैं और भविष्य काल की रम्य आशाएँ प्रस्तुत जीवन से पराङ्मुख कर देती हैं। भूत की स्मृति और भविष्य की आशा में उसका वास्तविक जीवन उसी तरह खो जाता है, जिस तरह सरस्वती का प्रवाह मरुस्थली में लुप्त हो गया है।

(६) कालतत्त्व दो प्रकार का है : एक तो भावनात्मक—जैसे भूत, वर्तमान और भविष्यत् और दूसरा, व्यावहारिक या पंचांग का। समय अपने में भावनात्मक ही है, वह वस्तु नहीं है। फिर भी पंचांग या कैलेण्डर का समय नित्य व्यवहार की एक सुविधा है और इसलिए पंचांग के समय का उपयोग और पालन करते हुए भी भावनात्मक और आध्यात्मिक समय से मनुष्य को ऊपर उठना चाहिए। हरएक क्षण, अर्थात् वर्तमान क्षण भी अनन्त है। प्राप्त क्षण ही वास्तविक है। प्रति क्षण का जीवन ही अनन्त और निरवधिक जीवन है, कालातीत अमर जीवन है।

गुरुसत्ता का अंत कैसे होगा?

(७) जब हम कहते हैं कि परम्पराजन्य और प्रभावजन्य संस्कारों से मुक्त रहना चाहिए, तो उसका यह अर्थ भी है कि हमें किसी को प्रभावित भी नहीं करना चाहिए। शिक्षण में शिक्षक को प्रभाववाद (इम्प्रेशनिज्म) से बचना चाहिए। अन्यथा गुरु-सत्ता का अन्त नहीं होगा।

साक्षित्व आवश्यक

(८) किसी समस्या का हल नहीं खोजना होता है। प्रश्न और उत्तर, समस्या और समाधान, दो भिन्न कोटियाँ नहीं हैं। यदि सवाल-जवाब दो अलग बातें हुईं, तो दोनों का मुकाबला होगा और हर जवाब एक सवाल बनेगा। इसलिए समस्या का समाधान नहीं खोजना है, समस्या को समझना है। अपने आप को और विश्व को समझने के लिए निरंतर साक्षित्व और सावधानता चाहिए। निरंतर साक्षित्व और अखण्डित बोध (अवेअरनेस एण्ड अलर्टनेस) मुक्त जीवन के प्रत्यक्ष साधन हैं। इसी प्रकार प्रत्यक्ष और आदर्श व्यवहार और ध्येय की दो कोटियाँ बनेंगी, न [illegible] संघर्ष और विरोध के कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा।

साधना करनी नहीं है

(९) मनुष्य का कुछ से कुछ होना नहीं है, इसलिए साधना की आवश्यकता नहीं है। साधना होने और बनने में संघर्ष बनाये रखती है। इस विरोध और संघर्ष में न तो जीवन का आनन्द है और न शांति। इसलिए हर व्यक्ति अपने अपने स्वरूप को जाने और समझे, कुछ बनने की चेष्टा न करे। इसमें कोई किसी का मार्गदर्शक, गुरु या प्रमाणभूत व्यक्ति नहीं हो सकता। गुरु का पंथ अनावश्यक है।

(१०) हर व्यक्ति अपने में स्वतंत्र महत्त्व रखता है। व्यक्ति ही वास्तविक है। परन्तु निर्व्याज और निरपेक्ष प्रेम से दो या अधिक व्यक्तियों का सहजीवन मधुर तथा सुखद होता है। इसलिए विचार और वासनारहित प्रेम ही सहजीवन का आधार है। इसी का दूसरा नाम विनय है।

लोकनागरी लिपि*

आदर्श सेवक जमनालालजी

जमनालालजी की कुल प्रवृत्ती भूतदया और सेवा की थी। परीणामस्वरूप उन्हें कुल संपत्ती के प्रती वैराग्य पैदा हुआ और वे बापू की 'ट्रस्टीशीप' की कल्पना के अनुसार उसका उपयोग करने की हमेशा कोशीश करने लगे। संपत्ती के वीषय में उनका जो यह खयाल बना, वह बापू से मीलने के पहले की बात है। पहले वे शीक्षण, समाज-सुधार आदी सामाजीक काम करते रहे। समाज के लीओ जो भी सुधार बताये जायें, उनका अमल नीज के जीवन में, घर में होना चाहीओ, यह उनका हमेशा आग्रह रहा। बापू के संपर्क में आने के बाद तो वे खादी, ग्रामोद्योग आदी जो जो काम बापू उठाते गये, सबको आगे बढ़ाने और संरक्षण देने की चींता करने लगे। कींतु उनका अंतीम काम गोसेवा रहा। बापू ने जब यह काम सुझाया तो उन्हें बहुत आनंद हुआ। मेरा और उनका संबंध बहुत गहरा था। खासकर जब धुलीया जेल में हम दोनों छह महीने साथ थे, उस समय जो संबंध आया, वह कुल औरों में नहीं आया, क्योंकी उस समय मैं [illegible] था। "गीता-प्रवचन" सुनने वालों में जमनालालजी भी थे। जब जमनालालजी ने गोसेवा के बारे में मुझसे पूछा, तो मैंने कहा 'यह काम बहुत ही सुंदर होगा'। बड़ा ही सुंदर काम है। यह सुन कर उन्हें पूरा संतोष हुआ। गोसेवा ऐसा काम होगा, जो खेती का अंतीम और श्रेष्ठ काम है। काम में सेवा की दृष्टी से श्रेष्ठ-कनीष्ठ भाव नहीं होता, फीर भी गाय की सेवा में अक प्राणी की सेवा के साथ मानव की भी सेवा हो जाती है। इस तरह दुहरी सेवा का लाभ होता है। जमनालालजी अंत तक इसी में लगे थे। जीन दीन वे गये, उस दीन भी गौ की पूजा और सेवा करते रहे।

११ फरवरी, '५९

—वीनोबा

*लिपि-संकेत ि = ी, ु = ू, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

धनौरा का मूल्यांकन

रा० कृ० पाटिल

धनौरा उत्तर प्रदेश में देहाती क्षेत्र है। यहाँ खादी और ग्रामोद्योग कमीशन की सघन क्षेत्र-योजना के आधार पर ग्राम-विकास का एक प्रयोग चल रहा है। इस क्षेत्र की प्रगति और साथ ही उस प्रकार के क्षेत्रों की आम हालत का कुछ अध्ययन करने की दृष्टि से मैं श्री शंकरराव देव के साथ वहाँ गया था। हमने इस क्षेत्र का चुनाव इसलिए किया; क्योंकि यह सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ था। सघन क्षेत्र-योजना के सदस्य प्रमुख श्री झवेरभाई पटेल भी हमारे साथ थे।

हम गत २५ सितम्बर की शाम को दिल्ली से चले और उसी रात धनौरा पहुँच गये। दूसरे दिन सुबह हम कमेलपुर गये और वहाँ की सहकारी कृषि-समिति का अवलोकन किया। तत्पश्चात् हमें गो-सदन दिखाने ले जाया गया, जहाँ पास-पड़ोस के फालतू पशु रखे जाते हैं। कमेलपुर में हमने लोगों से बातचीत की और वहाँ से शाम को धनौरा लौटते समय एक दूसरे गाँव में भी गये। कार्यकर्ताओं से मिलने से पूर्व हमें एक 'वर्कशाप' दिखाया गया, जहाँ अम्बर चरखे, कृषि-औजार, रेशा कताई मशीन, कोल्हू आदि बनाये जाते हैं।

दूसरे दिन प्रातः हमने एक अन्य गाँव का अस्पताल, संग्रहालय व एक अन्य सहकारी कृषि की समिति देखी और ग्रामीणों को एक सभा में भाषण दिया। तत्पश्चात् हम एक दूसरे सघन क्षेत्र में गये और वहाँ लोगों से बातचीत कर और एक 'वर्कशाप' का अवलोकन कर गाड़ी से दिल्ली लौटे।

एक सघन क्षेत्र में करीब बीस हजार की आबादी होती है। अपने अवलोकन की समाप्ति पर हमने कुछ आँकड़े प्राप्त करने चाहे थे, लेकिन वे अभी तक नहीं मिले। इसलिए यह विवरण हमने वहाँ सामान्यतः जो कुछ देखा और तत्सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन किया, उसी पर आधारित है।

स्थानीय रूप से उपलब्ध व्यक्तियों को भर्ती कर उन्हीं पर भरोसा करना इस योजना की एक खास विशेषता है। प्रभावशाली तथा योग्य स्थानीय व्यक्तियों की नियुक्ति विभिन्न पदों पर की गयी है। उनके पास शैक्षणिक योग्यता अथवा विश्वविद्यालय की डिग्रियाँ हों या न हों, लेकिन उनका स्थानीय प्रभाव और प्रबन्धकारिणी क्षमता उनकी इस कमी को पूरा कर देती है। लोगों में नये विचारों का प्रचार करके उनके मन में नवीनीकरण कार्यक्रम की उपयोगिता पैदा करने और यहाँ तक कि उन्हें नवनिर्माण-कार्य को अपनाने के लिए तैयार करने में ऐसे व्यक्ति सर्वोत्तम माध्यम होते हैं। मेरे अपने मतानुसार वहाँ जो कुछ सफलता मिली, उसके लिए बहुत कुछ वहाँ के ग्रामजात नेताओं का सहयोग तथा गाँववालों की एकता ही जिम्मेदार है।

मेरे विचार से वहाँ ६-७ सहकारी कृषि समितियों के संगठन का श्रेय भी बहुत कुछ इसी स्थानीय कार्यकर्ता वर्ग को है। हमें पता चला है कि इस तरह के लोगों की संख्या और भी बढ़ने वाली है। संभाव्य परिणामों के प्रति स्थानीय कार्यकर्ताओं में उत्साह ही नहीं—कहना यह चाहिए—अत्यधिक उत्साह है। फलतः वे बेहतरीन संगठन, अधिक रोजी, सघन खेती आदि के प्रति आशान्वित हैं। स्वतंत्र श्रमिकों के बारे में कुछ कठिनाइयाँ महसूस कर चंद बड़े भू-स्वामी, किसान भी इन समितियों में शामिल हो गये हैं। ये समितियाँ हाल में ही संगठित की गयी हैं, इसलिए इनके भविष्य के सम्बन्ध में कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी, लेकिन यह सही है कि इस नवीनतम विचार को सघन क्षेत्र में अपनाने का श्रेय संगठकों तथा इस क्षेत्र में व्याप्त वातावरण को ही है।

'प्राविधिक दृष्टि से कर्मचारी वर्ग में एक कमी है। यहाँ इन समितियों को और आम तौर पर समूचे सघन क्षेत्र की जनता को सलाह-मशविरा देने योग्य कृषि और पशु-पालनसम्बन्धी अनुभवी कार्यकर्ताओं का अभाव है। यदि सघन क्षेत्र को सघनता के अर्थ में अपना नाम सार्थक करना है, तो फिर, चाहे वह उत्पादन वृद्धि के लिए हो अथवा फिर अधिक रोजी प्रदान करने के लिए, यह सघनता मुख्य रूप से कृषि और पशु पालन क्षेत्र में होनी ही चाहिए। लेकिन इस उद्देश्य-पूर्ति के लिए सघन क्षेत्र योजना के पास न तो प्राविधिक दृष्टि से योग्य कर्मचारी वर्ग है और न धन ही। स्पष्टतः ही क्षेत्र में पहले से ही कार्यरत अन्य सहकारी एजेंसियों से इसकी पूर्ति की जानी चाहिए। सहकारी एजेंसियों से इस प्रकार की सहायता प्राप्त करने में सघन क्षेत्र को स्थानीय लोगों की मदद करनी चाहिए। प्रत्यक्ष व्यवहार में इस प्रकार की व्यवस्था सन्तोषप्रद रूप से नहीं चलती। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्वयम् सघन क्षेत्र को इस प्रकार का कर्मचारी वर्ग और अर्थ उपलब्ध होना चाहिए, अन्यथा इस योजना को जितना सघन आयोजन और उसका कार्यान्वयन करना है, उतना नहीं हो सकता। मूल्यांकन समिति के प्रतिवेदन में इस प्रकार के उदाहरणों की भरमार है कि प्रत्याशाएँ पूर्ण नहीं हुईं, फलतः कृषि और पशु पालनसम्बन्धी लक्ष्य प्राप्त नहीं हो रहे हैं।

'अपेक्षाकृत कम लागत पूँजी से पूर्ण रोजी पैदा करना और अधिक संतुलित एवं बहुसंख्यक धंधों का वितरण करना' इन योजनाओं के शुरू करने का मूल उद्देश्य था। गाँव में काम के बेकार घण्टों का व्यवस्थित और पूर्ण सर्वेक्षण करने तथा इसके बाद इन बेकार घण्टों में कताई, बुनाई, धुनाई, खेती, पशु-पालन आदि जैसे धंधे प्रस्तुत करने की कोशिश करके सघन क्षेत्र में योजना ने इस उद्देश्य की प्राप्ति का प्रयत्न किया है। कम-से-कम ऐसे एक गाँव का भी पता लग जाता कि वहाँ यह योजना किस हद तक सफल हुई है, तो वह बड़ी दिलचस्प बात होती। इस बात का उल्लेख होना चाहिए कि योजना का ध्यान अधिक कृषि-उत्पादन पर केन्द्रित है या अन्य किसी उद्योग पर। तैयार चीजों को आयोजित रूप से खरीदने के लिए गाँव में या पास-पड़ोस के क्षेत्रों में कोई विशेष कदम उठाना आवश्यक नहीं समझा जाता। हमें बताया गया कि माल की इतनी कमी है कि जितना और जो कुछ भी पैदा किया जाता है, उसकी बिक्री हो जाती है। कुटीरोद्योगी उत्पादन के सम्बन्ध में, विशेष कर पूनियाँ, सूत या खादी तथा अन्य इसी प्रकार के उत्पादन सम्भवतः खादी और ग्रामोद्योग कमीशन निर्धारित दरों पर खरीद लेता है। यह ठीक है कि अन्य चीजों के अधिक उत्पादन की किसी एक दर पर स्थानीय रूप से खपत हो जाती है, लेकिन हो सकता है कि ऐसा करना हमेशा ही आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद न भी हो। इसके अलावा उत्पादन योजना और उपभोग योजना के बीच किसी व्यवस्थित शृंखला के अभाव में सही रूप से ग्राम-संकल्प नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें ग्रामीणों से कुछ त्याग करने की अपेक्षा की जाती है। गाँव के लिए नये स्रोतों के आधार पर किन्हीं अतिरिक्त गतिविधियों द्वारा एक ऐसी पूर्ण रोजी-प्रदायक योजना तैयार करने के लिए, जिसके जरिये हर परिवार अपनी सामान्य आय में कुछ वृद्धि कर सके, गाँववालों को किसी प्रकार का खर्च या त्याग नहीं करना पड़ता। यह तभी हो सकता है, जबकि अतिरिक्त उत्पादन की निर्धारित मूल्य पर गाँव में ही खपत हो जाये; क्योंकि प्रथम तो इन उत्पादनों की और विशेष कुटीरोद्योगी उत्पादनों की कीमत बाजार में ऐसे उत्पादनों से अपेक्षाकृत अधिक उपलब्ध होती है तथा यह भी संभव है कि इन उत्पादनों का गुण स्तर भी औसत दर्जे से कुछ कम हो।

धनौरा सघन क्षेत्र में हम पर सर्वप्रथम प्रभाव यह पड़ा कि वहाँ बाह्य स्रोतों की उपलब्धि काफी है। धनौरास्थित प्रादेशिक 'वर्कशाप' और अन्य केन्द्रों के 'वर्कशाप' आधुनिक मशीनों से परिपूर्ण हैं और उनकी उत्पादन-क्षमता भी काफी है। धनौरा 'वर्कशाप' कोल्हू, अम्बर चरखे और कृषि में काम आने वाले औजार बना सकते हैं। हमें बताया गया कि 'वर्कशाप' में काफी काम रहता है और इसे काफी संख्या में माल के लिए 'आर्डर' प्राप्त होते हैं। इसके भवन और मशीनों का मूल्य आसानी से दो लाख से ऊपर होगा। दूसरे दिन भी हमने एक इसी प्रकार का 'वर्कशाप' देखा। यह यद्यपि पहले की अपेक्षा कुछ छोटा था; फिर भी इसमें बिजली से चलने वाली 'आरी' लगी हुई थी। 'वर्कशाप' के नजदीक ही हाथ-कागज (विभाग) का आधा बना हुआ ओसारा भी था। इसमें पानी के लिए एक नलकूप (ट्यूबवेल) लगा हुआ था। वर्कशाप में लगभग ५०० अम्बर चरखों का स्टाक था, जो बहुत बड़ी संख्या है। कारखाना स्थानीय हाईस्कूल के लिए मेज और कुर्सियाँ तैयार कर रहा था।

एक सघन क्षेत्र में एक संगठक, एक उपसंगठक और ९ या १० सहायक होते हैं। इसके अलावा सा... तेलघानी आदि जैसी कमीशन की योजनाओं के अन्त... कमीशन द्वारा नियुक्त अपने कर्मचारी भी होते हैं। यद्यपि एक सघन क्षेत्र की आबादी २०-३० गाँवों में बसे लगभग बीस हजार व्यक्तियों की होती है, फिर भी कार्य अधिकतर ऐसे एक या दो गाँवों में ही केन्द्रित रहता है, जिनके लिए विस्तृत योजनाएँ बनायी जाती हैं। अन्य गाँवों में काम बहुत साधारण सा होता है। हमें बताया गया कि यद्यपि सघन क्षेत्र योजना सन् १९५४ में शुरू की गयी थी; लेकिन ग्रामदान आरम्भ कार्य तीन सघन क्षेत्रों के ५ या ६ गाँवों में ही शुरू हुआ है।

लेकिन यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि ग्राम आयोजन तैयार करने से पूर्व लोगों से सम्पर्क बैठाना, उनका विश्वास प्राप्त करना, वहाँ एक उपयुक्त वातावरण तैयार करना जैसे कठिन प्राथमिक कार्य करने में कुछ वर्ष लग जाते हैं और अब कार्यकर्ता यह सब तैयार कर लेते हैं, तो आशा की जा सकती है कि सर्व प्रगति की गति तीव्रतर हो सकेगी।

इन क्षेत्रों में आजकल जो ग्राम संकल्प की लहर चल रही है, वह गाँव के प्रत्येक परिवार द्वारा उसे स्वयं की भावनानुसार उत्पादन वृद्धि का ही दूसरा रूप है। इसमें न तो खर्च की ही और न त्याग की ही जरूरत होती है। ग्रामदान के संदर्भ में, जैसा हम उसे समझ पाये हैं, ग्राम द्वारा, इस बारे में किसी बाबत ग्राम-संकल्प किया हो, ग्राम निर्भर बनने का दृढ़ संकल्प किया जाता है। यदि यह बात के सन्दर्भ में हुआ, तो गाँव का प्रत्येक परिवार ग्राम में उत्पादित वस्तु ही खर्च करने का इकरार करता है। यही बात इस

आदि के सम्बन्ध में है। लेकिन सघन क्षेत्रों में ग्राम मण्डल के सिलसिले में गाँव के उत्पादन के प्रति सामूहिक अभिक्रम नहीं पाया जाता। अब तक जो काम हुआ है, उसका मूल्यांकन तब होगा, जब यहाँ इस प्रकार के अभिक्रम की शुरुआत होगी। ग्राम-आयोजनों के लिए यह कहना कि इनमें निहित स्वार्थों वाले व्यक्तियों के साथ संघर्ष होने की गुंजाइश नहीं रहती, इनसे स्थानीय अभिक्रम जाग्रत होता है, ग्राम अर्थव्यवस्था ठोस होती है और लोग ग्रामराज्य प्राप्त करने के लिए तैयार रहते हैं—तभी सही हो सकता है, जब कि यह दृष्टिकोण गाँव में विभिन्न वर्गों के लोगों में, जो बाह्य स्रोतों द्वारा असमानुपातिक रूप से लाभान्वित नहीं होते, बना जाये, जाग्रत हो जाये।

ग्राम-स्रोतों के समूह के अभाव में भी ग्राम आयोजनों द्वारा क्या कोई भिन्न और बेहतरीन काम हो सकता है? कृषि और पशु पालन जैसे क्षेत्रों में इसका जवाब है 'हाँ!', यद्यपि सघन क्षेत्र-अधिकारी इसकी जिम्मेवारी लेने को तैयार न होंगे, क्योंकि पूर्णरूपेण यह उनका क्षेत्र नहीं है।

मैंने यह महसूस किया है कि जब तक साधन सम्पन्न वर्ग कम साधन सम्पन्न वर्ग के कष्टों में हाथ बँटाने लगे, उनमें कम साधन सम्पन्न व्यक्तियों के आय-स्रोत बढ़ाने की भावना काम न करने लगे, तब तक सर्वसामान्य विकास-योजना के रहते हुए भी और [illegible] कार्यक्रम की मौजूदगी में यानी सबसे नीचे पड़े व्यक्ति को पहले लाभ पहुँचाने की सम्भावना के रहते हुए भी विषमताएँ बढ़ती ही रहेंगी। मुझे बताया गया कि यहाँ ऐसा नहीं है और इसके प्रमाणस्वरूप विभिन्न आय-वर्गों की दो वर्षों की आय के सम्बन्ध में सर्वेक्षण भी दिया गया कि उच्चतम आय-वर्ग की आमदनी में कमी हुई है और न्यूनतम आय वर्ग की आय में वृद्धि। मैं यह समझना चाहूँगा कि यह सब कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

इन क्षेत्रों में गांधीजी के 'सागर-वृत्त' वाले विचार को जिस रूप में कार्यान्वित किया गया है, उससे हमें कुछ सन्तोष हुआ। हायरार्किक ढाँचे के स्थान पर इस दल ने एक विकेन्द्रित सहकारी अर्थव्यवस्था की स्थापना की। यह दल घरेलू इकाइयों, ग्राम इकाइयों और प्रादेशिक इकाइयों के बीच वृत्त के रूप में उद्योगों की प्रक्रियाओं के वितरण का सिद्धान्त प्रस्तुत करता है और मूल्य-निर्धारण की मशीनरी के जरिये तीनों इकाइयों में सामञ्जस्य स्थापित करता है। ऐसा लगता है कि विभिन्न वृत्तों को ऐसे मद अपने हाथ में ले लेने होंगे, जो छोटे पैमाने पर लाभपूर्ण रूप से न चलाये जा सकें, लेकिन उन्हें लाभ और हानि के आधार पर नहीं, बल्कि सेवा भावना के आधार पर चलाना होगा। पर ऐसा अनुभव व्यवहार में अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। ये सभी गतिविधियाँ लाभ के आधार पर चलायी गयी हैं। लेकिन यदि यह भी मान लें कि यह आधार नहीं था, तो भी क्या ये गांधीजी के 'सागर-वृत्त' के अन्तर्गत आ सकती हैं? मेरे मतानुसार 'नहीं'। इसके दो कारण हैं—प्रथम तो यह कि ऊपर वाले पदों पर नियुक्त व्यक्तियों को 'सागर-वृत्त' वाली धारणा से अधिक पारिभाषिक शिक्षा है और दूसरा यह कि श्री प्यारेलालजी द्वारा लिखित 'लास्ट फेज' में इसका कुछ दूसरा ही अर्थ मिल सकेगा।

इसके सिवा मैं यह महसूस करता हूँ कि सघन क्षेत्र योजना का कर्तव्य है कि वह ऐसे कुछ ठोस नमूने प्रस्तुत करे, जिनका हम अधिक व्यापक पैमाने पर प्रयोग कर सकें। इस उद्देश्य के लिए इस योजना की सामुदायिक विकास मंत्रालय की योजना के साथ बहुत गहराई से तुलना की जानी चाहिए, ताकि इसका उचित ढंग

जान सकें कि अमुक पद्धति ने ग्राम विकास की दिशा में क्या काम किया है और अमुक ने क्या? ऐसा मालूम हुआ कि सामुदायिक विकास मंत्रालय ने कुछ अधिकारी भेजे, लेकिन उन्होंने कोई टिप्पणी नहीं लिखी और फलस्वरूप उसकी प्रतिक्रिया अज्ञात ही रही। मेरा यह मानना है कि [illegible] जैसा गाँव किसी [illegible] तक पहुँच गया होगा और वहाँ जिन तरीकों से काम किया गया है, हो सकता है, अब वहाँ इनसे अधिक फल न मिल सके। इसे नयी पृष्ठभूमि में सोचना है यानी एक परिवार के साधन स्रोतों को छोड़ कर समूचे गाँव के साधन-स्रोतों को पृष्ठभूमि में रखना है। सम्भवतः बहुउद्देशीय सहकारी कृषि समितियों के प्रसार के कारण अधिक उत्पादन करने और मालिकों को अधिक [illegible] प्रदान करने के काम में किसी नये दृष्टिकोण का परिचय मिल सके।

नगद धर्म

विनोबा

विनोबाजी की पंजाब की यात्रा में संपत्तिदान तथा साहित्य-प्रचार का काम अच्छी तरह से चल रहा है। संपत्तिदाताओं से संपत्ति-दानपत्र के साथ विनोबाजी उनसे प्रथम वर्ष का संपत्तिदान नगद ले लेते हैं। 'सर्वोदय साहित्य भंडार' भी स्थान-स्थान पर खुल रहे हैं, जिस पर इन दिनों विनोबाजी बहुत जोर दे रहे हैं।

हाल ही में संपत्तिदाताओं की एक छोटी-सी सभा में विनोबाजी ने कहा :

यह खुशी की बात है कि यहाँ पर संपत्तिदान का कुछ काम हुआ है। आप लोगों ने अपनी कमाई का एक हिस्सा प्रेम से देने का तय किया है और पहले वर्ष का तो आपने अभी दे दिया। धर्म हमेशा उधार नहीं, नगद होता है। ये मैं स्वामी रामतीर्थ के शब्द कह रहा हूँ। 'नगद धर्म' उनका शब्द है। प्राचीन साहित्य में साक्षात्, अपरोक्ष, प्रत्यक्षावगम वगैरह शब्द हैं।

धर्म परोक्ष नहीं

गुड़ तो खाने के साथ ही मीठा लगता है। उसके बाद उसका जो *परिणाम होने वाला है*, वह होता रहता है, लेकिन उसमें मिठास तुरत मालूम हो जाती है। उसी प्रकार हम ऐसा धर्म चाहते हैं, जिसका परिणाम तुरत मालूम हो। बाद में उस धर्म के गहराई के अनुभव तो मालूम होते ही रहेंगे। हमारे धर्मों की रचना परोक्ष धर्म के रूप में हुई। उनमें चित्तशुद्धि, समाधान आदि जो प्रत्यक्ष लाभ हैं, वे सब व्यक्ति के लिए हैं, सारे समाज के लिए उनमें कोई प्रत्यक्ष लाभ की योजना नहीं है। धर्म के नाम से हम या अज्ञाने हैं। उसका *परोक्ष परिणाम जो होने वाला होगा सो होगा। लेकिन प्रत्यक्ष परिणाम तो यह है कि उतना धन कम हुआ। इस प्रकार हम काल्पनिक लाभ की आशा कर परोक्ष धर्म लेकर बैठे हैं। उसका लाभ समाज-कल्याण के रूप में नहीं दिख पाता। कभी कभी तो हम चित्तशुद्धि और समाज-कल्याण, दोनों को छोड़ कर सीधा ही फल,* मरणोत्तर फल का विचार करते हैं।

चित्त-शुद्धि के लिए दान

आपने जो काम किया, उसके बारे में आप क्या जानते हैं? क्या आपने उपकार किया या बाबा को प्रसन्न करने के लिए किया या अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए किया? ऐसे विचार से यदि अच्छा काम भी हुआ हो तो उससे चित्तशुद्धि नहीं होगी। संपत्तिदान आप चित्तशुद्धि का साधन समझ कर ही दीजिये। हृदय में शुद्धि का अनुभव होगा तो उसके कारण दूसरे भी कई अच्छे काम होंगे। इंसान के पास देने की चीजें बहुत हैं। संपत्तिदान के अलावा वह और भी बहुत सारी चीजें दे सकता है। जो दें वह प्रेमचिह्न के तौर पर दें। अगर इस काम से आपकी *चित्तशुद्धि नहीं होगी तो नाहक अहंकार बढ़ेगा और आपकी शक्ति क्षीण होगी। अच्छा काम यदि अच्छे साधनों से नहीं किया जाता तो अन्त:समाधान नहीं* होता। आप चित्तशुद्धि का विचार करेंगे तो सोचेंगे कि मैं यह कमाई ठीक कर रहा हूँ, किसी को नुकसान तो नहीं पहुँचता है न? इस तरह सोच कर काम करने से आपकी कमाई १०,००० रु० के बदले में ५००० रु० हो जाय और हमारे हिस्से में १००० के बदले ५०० ही आयें, तो मुझे खुशी ही होगी, दु:ख नहीं होगा। ऐसा न करके *आप अपनी कमाई बढ़ाते जायें और मुझे बड़ा हिस्सा दें, तब तो आपने मुझे अपने पाप का हिस्सा दिया।*

साहित्य सर्वत्र उपलब्ध हो

मैंने अभी यह शुरू किया है कि ६००० रुपये संपत्तिदान में लेता हूँ और उसका सर्वोदय-पुस्तक भंडार खोलता हूँ। पंजाब के लोगों से एक बार मैंने पूछा कि मैं पंजाब के किसी जंगल में हूँ और मुझे बीड़ी की जरूरत हो तो उसके लिए मुझे कितना दूर जाना पड़ेगा? तो मुझे जवाब मिला कि आप किसी भी कोने में हों, पाँच मील के अन्दर से आपको बीड़ी मिल ही जायेगी। पर मैं कहता हूँ कि पाँच मील दूर से बीड़ी अगर मिल सकती है, तो पाँच न सही, दस ही सही, पंजाब के हर कोने से दस मील के अन्दर से क्या मुझे सर्वोदय-साहित्य मिल सकता है? इस तरह मैं पंजाब के हर बड़े स्थान पर एक सर्वोदय पुस्तक भंडार की माँग करता हूँ। आप लोग उसमें भी मदद कर सकते हैं।

(मद्र, १०-१-६०)

अहिंसक मशीनें

बेजान चीजों में क्या अच्छा, क्या बुरा—ये गुण दोष तो मनुष्य के उनके उपयोग के तरीकों से पैदा होते हैं। कोई चीज अच्छी है या खराब, यह तो इस बात पर निर्भर है कि हम उस वस्तु को अच्छे काम में लाते हैं या बुरे में। कोई यंत्र हिंसक है या अहिंसक यह तो इस बात से तय होता है कि हम उससे क्या काम लेते हैं? जिस चाकू से किसी पर आक्रमण किया गया हो, वह हिंसक हो जाता है और उसीको फल काटने के काम में लाने पर वह अहिंसक बन जाता है। यंत्र मालिक भी हो सकते हैं और नौकर भी। जब उनका इस्तेमाल दूसरे लोगों की मेहनत पर शोषण के लिए किया जाता है, तो वे मालिक, और वे जब अपनी कार्यक्षमता में वृद्धि करने में लागू किये जाते हैं तो वे नौकरों की श्रेणी में आ जाते हैं। मामूली तरह से हम जहर खाने का कतई विरोध करेंगे, लेकिन कुछ बीमारियों में दवा के तौर पर जहर दिया ही जाता है। उसी तरह से कुछ विशेष परिस्थितियों में और नियंत्रण में यंत्र भी मनुष्य की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए मशीनें काम में लायी जा सकती हैं। चरखा भी एक यंत्र है, लेकिन पुतलीघरों की तरह यह दूसरों की मजदूरी का शोषण नहीं करता। शोषण तो बिना मशीन के भी हो सकता है। बीड़ी बनाने में कोई मशीन नहीं लगती, फिर भी यह एक ऐसा धन्धा है, जिसमें शोषण की मात्रा बहुत ज्यादा है।

—जे० सी० कुमारप्पा

सह-अध्ययन-सत्र शिविरार्थियों के बीच

अहिंसक क्रांति की प्रक्रिया

दादा धर्माधिकारी

[दादा ने पूछा : "सबसे पहला सवाल हमारे सामने यह है कि हम समाज-परिवर्तन क्यों चाहते हैं ? आप लोगों में से जिसके मन में जो हो, वह कहें कि क्यों समाज-परिवर्तन हम चाहते हैं ?" इस प्रश्न पर शिविरार्थियों में से कुछ ने कहा : 'मनुष्य का पूरा विकास नहीं हो रहा है।' किसी ने कहा : 'मनुष्य का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास नहीं हो रहा है; समाज में विषमता है, समाज में सुख और शांति की कमी है, 'इन्टेलेक्चुअल रेजिमेंटेशन' है।' इन सब चीजों का स्पष्टीकरण दादा ने ता. २५ जनवरी के अपने इस भाषण में किया है। —सं०]

एक बात तो यह है कि मनुष्य हमेशा जो है, उससे असन्तुष्ट रहता है। मनुष्य बहुत दिनों तक अगर कढ़ीदार और रेशमी कपड़ा पहनता रहे तो यह सोचता है कि अब कुछ दिन सूत का कपड़ा पहने तो अच्छा है। जो आदमी मैदान में रहते हैं, वे हवाखोरी के लिए और थोड़ा-सा स्थान-परिवर्तन के लिए पहाड़ पर चले जाते हैं और वहाँ जाकर कहते हैं कि यहाँ सृष्टि-देवी का सौंदर्य अनन्त है, कितना रम्य स्थान है! लेकिन पहाड़ का आदमी कहता है कि मैदान कितना अच्छा होगा! मैदान देखा नहीं, वह बहुत ही खूबसूरत होगा! मनुष्य में उसका एक ऐसा स्वभाव धर्म है कि वह परिवर्तन चाहता है। वस्तुस्थिति से सन्तुष्ट नहीं रहता। तो, एक तो यह असन्तुष्टि एक तरह से 'पेरिनियल' है, निरंतर है। मनुष्य प्राप्त परिस्थिति से असन्तुष्ट रहता है। अगर प्रगति जैसी कोई चीज है, तो इसका बीज इसीमें है। यह असंतोष मनुष्य की प्रगति का जनक है।'

परिस्थिति से समझौता

अब जहाँ यह न हो, वहाँ क्या होगा? ऐसी कौन-सी अवस्था है, जिसमें यह असंतोष न हो? इसके दो जवाब हैं : एक तो जड़ता होगी या तो दूसरी, परिपूर्णता होगी। 'इदर ए गॉड ऑर बीस्ट'; 'स वै मुक्तोऽथवा पशुः'—या तो वह मुक्त होगा या पशु। कल कृष्णमूर्ति ने कहा कि सोचने में खतरा मालूम होता है, संकट मालूम होता है। ऐसा डर लगता है कि अपनी स्थिति से हम खिसक जायँगे। मनुष्य अपनी स्थिति से खिसकना नहीं चाहता, इसलिए 'एडजस्ट' कर लेता है, परिस्थितियों के साथ समझौता कर लेता है, अपने आप से समझौता कर लेता है। 'मेकिंग दी बेस्ट आफ दी बैड बार्गेन।' जो सौदा घाटे का हुआ है, उसे भी फायदे का समझ लेता है। नुकसान में भी अपना फायदा देख लेता है, हानि में भी हित देख लेता है, दुःख में सुख मान लेता है। इसे 'एडजस्टमेंट' कहते हैं। उन्होंने समझाया कि यह जो 'एडजस्टमेंट' है, वह मानसिक आलस्य का लक्षण है। मनुष्य विचलित नहीं होना चाहता, किसी तरह समय बिताना चाहता है। इसके लिए जिस शब्द का उन्होंने प्रयोग किया था, वह है 'स्लिदरिंग'। जिस तरह से पटिया पर से लड़के खिसकते हैं और उछलते हैं, वैसे ही मनुष्य किसी तरह खिसक कर, उछल कर पार हो जाना चाहता है, समस्या को समझना नहीं चाहता। यह आत्म-तुष्टि या कहिये स्वय-तुष्टि, मनुष्य को जड़ बना देती है। एक तो ऐसा मनुष्य है, जैसा पशु है। पशु प्रकृति के अधीन है, इसलिए पशु में अपने जीवन के परिवर्तन की आकांक्षा बहुत नहीं है। थोड़ी बहुत तो है, पर उत्कट नहीं है। पशु को अगर ठंड लगती हो तो वह धूप में चला जायगा और धूप लगती हो तो छाँह में चला जायगा, जहाँ पानी होगा, वहाँ चला जायगा, जहाँ घास होगी, वहाँ चला जायगा। इस तरह का थोड़ा बहुत परिवर्तन तो पशु भी करता रहता है। लेकिन हम इस अर्थ में परिवर्तन नहीं कह रहे हैं। यह परिवर्तन बिलकुल अलग चीज है।

साक्षी स्थिति का अनुमान

परिणत ज्ञानी की सिद्धावस्था क्या होती होगी, इसका पता मुझे नहीं है। कल्पना और अनुमान एक हद से आगे भी नहीं जा सकता। एक मनुष्य ने दूसरे से पूछा कि क्या तुम जानते हो कि विमान में बैठने से कैसा मालूम होता है? उसने कहा कि नहीं, लेकिन मैं कल्पना कर सकता हूँ कि कैसा लगता होगा। इस पर दूसरे ने कहा कि झूले में कभी कभी मैं बहुत ऊपर चला जाता हूँ, कभी सात तल्ले मकान पर चला जाता हूँ, कभी पहाड़ पर चला जाता हूँ। वहाँ से छोटे-छोटे घर और झाड़ियाँ दिखाई देती हैं। पहला मनुष्य कहता है कि और भी ऐसा-ऐसा होता है। दूसरा भी कल्पना करता है। हिंडोले में, एयर कंडिशन्ड ट्रेन में बैठा हो, ऐसा मालूम होता है! वह कहता है, आगे कोई वर्णन नहीं हो सकता। तुम स्वयं बैठ कर देखो। इसी तरह जिसकी साक्षी स्थिति होगी या परिणत स्थिति होगी, उसको हम नहीं जानते।

व्यग्रता और संतुष्टता

हमें पशु की अवस्था का अनुभव है। किसी तरह से हम वक्त निकाल लेना चाहते हैं। जिंदगी में आकर फँस गये हैं, उसको किसी तरह से काट लेना है। इस तरह का संतोष भी अपने में ठीक नहीं है। स्वयं संतुष्ट वृत्ति से भी मनुष्य का विकास नहीं होता, लेकिन निरंतर असंतोष एक ऐसी वस्तु है, जो जीवन में व्यग्रता पैदा करती है। जो है उसके साथ समरस नहीं होने देती। प्राप्त वस्तु के साथ उसका जीवन एकरस नहीं हो पाता। निरंतर असंतोष एक ऐसी वस्तु है, जो मनुष्य को आनन्द से वंचित कर देती है, व्यग्र रखती है। तो, यह नित्य व्यग्रता भी नहीं होनी चाहिए।

संतुलन साधने का यत्न नहीं करना है

नित्य व्यग्रता भी न हो और स्वयं संतुष्टि भी न हो—इस प्रकार का एक तटस्थ चित्त होना चाहिए, जिसे हम अहिंसक चित्त कहते हैं, जिसे गांधी ने अनासक्त चित्त कहा है। कल उसके लिए आपने शब्द सुना (श्री कृष्णमूर्ति से) ह्युमिलिटी—विनयशीलता। जिसमें व्यग्रता भी नहीं है और स्वयं संतुष्टि भी नहीं है। यह जो विनय है, वह क्या वस्तु है? उसको अहिंसा की परिभाषा में रखना चाहें तो 'तटस्थता' कहेंगे। जो चित्त व्यग्र होगा, उसमें विकार पैदा होगा। व्यग्र चित्त में बैलेन्स, संतुलन नहीं रहता। संतुलन रखने की चीज नहीं है। यह जरा थोड़ा पृथक् विचार है, लेकिन समझ लेना चाहिए। संतुलन जहाँ साधना पड़ता है, वहाँ संतुलन रखने में ही मनुष्य की शक्ति खतम हो जाती है। एक आदमी तार पर चल रहा है, हाथ में छाता लिये हुए है और संतुलन रख रहा है। उससे आप पूछिये, क्या कर रहे हो? वह कहेगा, तार पर चल रहा हूँ। आप पूछिये, क्यों चल रहे हो? वह कहेगा, चल रहा हूँ इसलिए चल रहा हूँ। किधर चलने का उद्देश है? क्या इलाहाबाद जा रहे हो? वह कहेगा, कोई 'डेस्टिनेशन' नहीं है। चलना ही है तार पर! क्या वह कहेगा कि मैं बैलेन्स साध रहा हूँ? जैसा दादा ने कहा था उस दिन आत्म परिचय में कि मुझसे कहा गया कि तुम असेम्बली में आओ और पावर ले लो। पावर लेकर क्या करेंगे? जो कुछ पावर के लिए लड़ते रहेंगे, तो संतुलन साधने में हमारी सारी शक्ति खर्च होगी। तो संतुलन रखने की चीज नहीं है, वह अपने आप आता है। तटस्थता जितनी होगी, उतना संतुलन होगा। आप संतुलन साधने की कोशिश करेंगे, तो जिन दो चीजों में संतुलन साधने की कोशिश रहेगी, वे दो चीजें नित्य सामने रहेंगी। एक मनुष्य है, वह अपनी प्रेमिका से कहता है कि मैं विदेश जा रहा हूँ। वह कहती है कि तुमको रात-दिन मेरी याद आयेगी, अध्ययन नहीं कर पाओगे, सार्वजनिक सेवा भी नहीं कर पाओगे। तो वह कहता है कि तुम्हें भूलने की कोशिश करूँगा। अध्ययन-सत्र में शिविरार्थी कहेगा कि मैं अपनी पत्नी को भूलने की कोशिश कर रहा हूँ। हर रोज पत्नी को पत्र में लिखेगा कि मैं तुम्हें भूलने की कोशिश कर रहा हूँ। जहाँ 'पार्टीसिपेशन' है, वहाँ उसका उस वस्तु के साथ तादात्म्य नहीं हो सकता। हमें सन्तुलन साधना नहीं है। जहाँ तटस्थता होगी वहाँ वह होगा। तटस्थता वहाँ आती है, जहाँ व्यग्रता न हो। नित्य असंतोष है तो व्यग्रता आती है। जहाँ संतुलन के लिए कोशिश करेंगे वहाँ उसके पीछे दौड़ेंगे। इस तरह से संतुलन का अभ्यास नहीं हो सकता। कल आपने सुना होगा कृष्णमूर्ति के भाषण में कि अभ्यास नहीं हो सकता। उसके पीछे मनुष्य जायगा। यह विषय इसलिए आया कि हमको समन्वय चाहिए, 'रेजिमेंटेशन' नहीं। समन्वय का मतलब है सबकी बात समझने की तैयारी।

क्रांतिकारी मन मुक्त हो

चित्त ऐसा मुक्त हो कि जो सबकी बात समझने के लिए तैयार हो, किसी की बात को दबाता नहीं है, क्रान्तिकारी का चित्त सबकी बात समझने के लिए तैयार है। इसे हम उन्मुक्त, खुला, चित्त कहते हैं 'ओपेन माइंड'। इसम से समन्वय अपने आप आता है। पर यह बहुत महत्त्व की चीज है। जो समझने के लिए तैयार नहीं होगा, उसमें समझाने का अधिकार नहीं होगा। आप अपनी बात समझाना चाहते हैं, इसका क्या मतलब है? दूसरे की बात समझने की तत्परता होनी है तब समझाने का अधिकार आता है। जिसे आप अहिंसा की क्रान्ति कहते हैं, वह समझने और समझाने की क्रान्ति है। हम समझेंगे और हम समझायेंगे। इसी का नाम 'परस्युएशन' है। 'परस्युएशन' का मतलब यह है कि हम दूसरे की बात समझने के लिए पहले तैयार रहेंगे, अपनी बात भी समझायेंगे। इसलिए उसको 'परस्युएशन' से क्रान्ति कहेंगे। अपनी बात समझायेंगे, उसकी बात समझेंगे। इसको खूब ध्यान में रखिये कि हमारा मुख्य साधन समझना और समझाना है। समझाने के लिए जो अवांतर उपाय हैं, उनसे जब काम लेते हैं तब हमको यह समझ लेना चाहिए कि दूसरा आदमी भी हमको समझाने के लिए इन उपायों से काम ले सकता है।

समझने की शक्ति और समझाने का अधिकार

आप कहते हैं कि मैंने हजार बार समझाया, लेकिन आपकी समझ में नहीं आता, इसलिए समझाने के लिए अब समझाने की बात को छोड़ कर दूसरा उपाय करूँगा, जिससे आपको किसी तरह की हानि न हो, कष्ट न हो, तकलीफ न हो, ऐसे उपायों से मैं काम लूँगा! इससे पहले हमको यह सोचना चाहिए

कि मैं समझाने के लिए इस उपाय से काम लेता हूँ तो समझने के लिए इससे काम क्यों नहीं लेता? एक आदमी कह रहा है कि जसवन्तराय भाईजी उपवास क्यों कर रहे हैं? दादा को अपनी बात समझाने के लिए भी उपवास होता है। ऐसा जो उपवास होता है, वह किस लिए होता है? हम जे० पी०, गांधी, राजुल का नाम नहीं लेते। जसवंतराय भाईजी का नाम लेते हैं। हम अपनी बात दूसरे के गले उतारना चाहते हैं। उसको समझाने के लिए इन अन्तर उपायों से काम लेते हैं। इसी लिए रुल उन्होंने कहा है, कि 'आऊ रिस इजरविश।' वाहियात है। कहते जरूर हैं कि मैं अपनी आत्मशक्ति बढ़ा रहा हूँ। लेकिन किसलिए? तो समझाने के लिए, 'नान वायलेंस' में अन्तर साधनों का प्रयोग अगर हो भी तो वह समझने की शक्ति बढ़ाने के लिए हो। यह हमको बहुत अच्छी तरह से जान लेना चाहिए कि समझने की शक्ति जितनी बढ़ती है, समझाने का अधिकार उतना प्राप्त होता है। 'अधिकार' शब्द संस्कृत का है। उसका मतलब है पात्रता। हिन्दी में अधिकार का मतलब इक कहाँ से आया, पता नहीं। समझाने की योग्यता उस अनुपात में प्राप्त होती है, जिस मात्रा में हमने समझने की योग्यता प्राप्त की हो। आज यह हो रहा है कि हम समझाने की अधिक कोशिश करते हैं, समझने की कम। इसलिए हमारे दर्शन में भी अहिंसा नहीं आ पाती, इसे उन्होंने 'ह्युमिलिटी' कहा।

इसमें है। उसने हमको यह शरीर दिया। परमीमकाय शरीर क्यों नहीं दिया? मदन जैसा रूप क्यों नहीं दिया? गन्धर्व की आवाज क्यों नहीं दी? वह सर्वशक्तिमान् था। उसने इतना भद्दा बनाया हमको, तो क्या पता तुम कैसे बनाओगे? जितनी तुम्हारी अक्ल होगी, उतना ही तो तुम बना पाओगे न? विज्ञानवादी स्थूल स्तर पर, स्थूल भूमिका से मनुष्य का और सृष्टि का निर्माण करना चाहता है, वैसे हम अध्यात्म से करना चाहेंगे तो अनर्थ ही होगा। यह 'रेजिमेंटेशन' है। समझना चाहिए कि इसे कहने का क्या मतलब है?

जो दुनिया होगी, उस दुनिया में मनुष्य को मनुष्य नहीं बनायेगा। हमने तो यहाँ तक आपसे कहा कि मनुष्य अपने को भी नहीं बनायेगा। एक मनुष्य दूसरे को बनायेगा, यह गलत चीज है। आज तो सब एक-दूसरे को बनाते हैं, एक 'डिप्लोमेट' दूसरे 'डिप्लोमेट' को बनाता है। 'डिप्लोमेसी' का अर्थ यह है कि मैं आपको बनाऊँ, आप मुझे। अंग्रेजी में इसे 'टेकिंग इन' कहते हैं: एक-दूसरे को अपने मतलब के लिए ठग लेना, बेवकूफ बनाना, बुद्धू बनाना। इस आन्दोलन में जिस तरह की प्रक्रिया का प्रयोग हम करना चाहते हैं, उसमें यह चीज नहीं आ सकती। आप कहेंगे कि इसमें कोई हिंसा तो है नहीं, किसी को डराया, धमकाया नहीं, जबरदस्ती नहीं की।

'इम्प्रेशनिज्म' याने अपना व्यक्तित्व अंकित करना। एक मनुष्य कहता है कि मैं आपको बना लूँगा। वह

इन्सान को ढाँचे में न ढाला जाये

अभी 'अहिंसा' शब्द ऐसा हो गया है कि उसके साथ बहुत-सी बातें मिल गयी हैं। उसका नाम लेते ही कई चीजें मन में पैदा होती हैं। बुद्ध, महावीर, गांधी, शाकाहार, सत्याग्रह, अनशन आदि सामने आ जाते हैं। इसलिए उस शब्द को अलग रख लें और 'विनयशीलता' या 'तटस्थता' शब्द ले लें। समाज-परिवर्तन में ऐसे उपायों से काम लेना चाहिए कि समझाने की कोशिश कम और समझने की कोशिश ज्यादा हो। नहीं तो यह होगा कि हम समझते हैं कि उसको अनुकूल बनाने की कोशिश करेंगे। कल आपने सुना होगा कि 'दे डोन्ट वान्ट ए न्यू मैन, दे डोन्ट वान्ट ए न्यू वर्ल्ड'—नया मनुष्य नहीं चाहिए, नयी दुनिया नहीं चाहिए। हरएक यह चाहता है कि मेरे दिमाग की दुनिया बने। ऐसा इन्सान कौन बने? ऐसा इन्सान गांधी के लिए देवदास आदि नहीं बने, पर विनोबा बने। आपका तनय अगर नहीं बन सकता, तो आपका शिष्य बन सकता है। अगर मेरा तनुज मेरे मन के मुताबिक नहीं बन सकता, तो कम से कम मेरा मानस पुत्र मेरे मन के अनुसार बने, उस 'पैटर्न' का, ढाँचे का बने, ऐसा हम चाहते हैं। अहिंसक क्रान्ति में इस बात की बहुत बड़ी आवश्यकता है कि हम पहले से सच लें कि दूसरा आदमी जो होगा वह हमारे ढाँचे में न ढले। हर व्यक्ति अपने में अपवाद भी है और अपने में विभूति भी है। हमारे एक बहुत बड़े मित्र हैं। पहले असेम्बली में थे। वैसे तो मुझसे छोटे हैं, लेकिन बड़े होशियार हैं। उन्होंने एक बार कहा कि आप आजकल किस दुनिया में रहते हैं? मैंने कहा, मैं उस दुनिया में रहता हूँ, जिसमें आप रहते हैं। उन्होंने कहा कि क्या तुम जानते हो कि अब तो हम मनुष्य को भी विज्ञान से बनायेंगे! आँख की जगह आँख, नाक की जगह नाक, हृदय की जगह हृदय, ब्रेन की जगह ब्रेन, यह तो होता होगा; पर अब तो पूरा मनुष्य ही बनायेंगे। अब आप क्या कहेंगे? तो हमने कहा कि अगर हमको दुबारा बनाना हो तो आप न बनाइये। जिस भगवान् ने हमको बनाया उसकी भी शिकायत

कहता है कि हम मनुष्य को बना सकते हैं। केवल शारीरिक धरातल पर इससे कहता है कि हम मनुष्य को बना सकते हैं। इसके बाद अब मैं आगे कह रहा हूँ, मानसिक धरातल पर एक आदमी दूसरे को बेवकूफ बना सकता है। एक आदमी के भोलेपन, उसकी विश्वासपरायणता, 'क्रेड्यूलिटी' से अगर हम लाभ उठा लेते हैं तो वह धोखा है। दूसरी बात मैंने कही कि आध्यात्मिक स्तर पर भी वह न बनायें। और एक प्रकार है—'मैस्मरिज्म', सम्मोहन। सम्मोहन की विद्या आपने सुनी होगी—'मैस्मराइज' कर दिया, 'हिप्नोटाइज' कर दिया। वाराणसी कैन्ट, इलाहाबाद या दूसरे किसी भी बड़े स्टेशन पर जाकर देखेंगे तो डेल कार्नेल की किताबें बिकती हैं—'हाउ टु इन्फ्लुएन्स पीपुल?' किसीको शादी करनी हो तो लड़का या लड़की का वशीकरण कैसे करे? यह विद्या 'विच क्राफ्ट' कहलाती है। ये सब वशीकरण के उपाय हैं। मन्त्र विद्या जिसे आप कहते हैं, वह सारा का सारा 'अथर्ववेद' है। मारण मोहन उच्चाटन वशीकरण का ताबीज है। २०-२५ रुपये भेज दें तो वशीकरण का एक ताबीज भेजेंगे। हमने कहा कि एक भेज दीजिये, हम लार्ड वाशिंगटन को वश करना चाहते हैं। तो उसने जवाब ही नहीं दिया। तुम कैसे करोगे? तो हमने कहा कि हम जाकर खड़े हो जायेंगे उसके सामने। बस, तुम्हारा ताबीज हमारे पास हो। उसे देखते ही वह बात मान लेगा। ये सारे अमानुषता और पुरुषार्थहीनता के काम हैं। इनमें 'मैनहुड' और 'ह्युमिलिटी' भी नहीं है। मर्दानगी और इन्सानियत नहीं। मर्दानगी इसलिए नहीं कि हम दूसरों को पस्त कर देना चाहते हैं, दूसरों को झुका देना चाहते हैं, दूसरों को परास्त कर देना चाहते हैं। यह पौरुष नहीं है। वीरता दूसरे की वीरता को खण्डित करने में नहीं है। एक दीपक दूसरे दीपक को बुझा नहीं सकता। एक दीया अगर दूसरे दीये को बुझाता है तो वह चिराग की तासीर, चिराग का लक्षण नहीं है। वीरता से वीरता पैदा होनी चाहिए। वीरता से अगर भय पैदा होता है, भीरुता पैदा होती है तो वीरता ने अपना गुण छोड़ दिया, अपनी असलियत को छोड़ दिया, इसीलिए वीरता में से कायरता पैदा हुई। वीरता ऐसी नहीं हो सकती कि जो भय पैदा करे। दूसरों के चित्त को अपने कब्जे में कर लेने वाली जितनी युक्तियाँ हैं, उनमें न मर्दानगी है, न इन्सानियत, न पुरुषार्थ है, न मानवता।

सफलता में खतरा

हम इसका प्रयोग क्यों नहीं करना चाहते हैं? इसमें से सफलता नहीं मिली तो न मिले। सफलता हमको व्यग्र कर देगी। व्यग्र एकाग्र से विरुद्ध है। फिर हमारा समझाने की तरफ ध्यान नहीं रहेगा, सफलता की तरफ ध्यान रहेगा। जहाँ सफलता की तरफ ध्यान गया वहाँ समझाने की तरफ का ध्यान हट जायगा। इसलिए जब मैंने कहा था कि आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आज कृष्णमूर्ति हमारे काम का आदमी है, क्योंकि वह हमें इस सफलता के विचार से बचाता है। और सारी बात हम नहीं मानते, लेकिन जो बातें काम की हैं, उनमें से यह एक काम की है। सफलता का विचार मनुष्य के मन में अधीरता पैदा कर देता है। फिर चित्त एकाग्र नहीं रहता और जहाँ एकाग्रता नहीं है, वहाँ नम्रता, विनयशीलता हो नहीं सकते। तो क्या हम कहेंगे कि समाज परिवर्तन नहीं हो सकता? हम असफल रह जायेंगे? इन रास्तों को छोड़ कर दूसरे रास्ते से जाना है तो जो जाने वाले हैं, उनके साथ हो जाना चाहिए। अलग रहने का आग्रह नहीं होना चाहिए। जिस रास्ते को हमने सही समझा उस रास्ते से जाने की ताकत अपने में नहीं पैदा हो, दूसरा रास्ता बनाना जरूरी हो तो दूसरे रास्ते पर 'डबल मार्च' करने वाले लोग पहले ही हैं, उनके साथ हो जाना चाहिए।

अनासक्ति से तटस्थता और एकाग्रता

आग्रह नहीं रखेंगे, इसका मतलब इतना ही है कि आग्रह अपना होता है। आग्रह किसी तत्त्व का नहीं होता। विनोबा वेद से एक शब्द देते हैं: 'मम सत्यम्।' असत्य का दूसरा लक्षण यह है। सत्य जब मेरा बन जाता है, तब उसका नाम है असत्य। तटस्थता जब आती है, तब अपने संस्कारों को अलग रखना चाहिए। मैं अपनी बात को लेकर दूसरे की बात नहीं समझ सकता। मेरा दिल कोरा नहीं है। यह मेरे साथ कई दफा होता है। मैं कहता हूँ कि इलेक्शन में वोट खरीदना नहीं चाहिए तो जिनके साथ मैं बात करता हूँ, वे दोनों एक दूसरे को गाली देते हैं। मैंने पूछा क्या? तो कहते हैं कि इन्होंने वोट खरीदे थे। और दूसरा कहता है कि इन्होंने वोट खरीदे थे! तो दोनों मेरी बात समझने के लिए मुक्त चित्त नहीं थे, खाली नहीं थे। आग्रह हमेशा अहंकार के साथ जुड़ा हुआ होता है। जितनी अहंता होगी, उतना आग्रह होगा। हम मनुष्य को जब कहते हैं कि 'रेजिमेंटेशन' नहीं होना चाहिए, तो क्या होना चाहिए? मानव-समाज आज ऐसी बौद्धिक और मानसिक अवस्था में पहुँच गया है कि इसके सिवा दूसरा कोई चारा नहीं रह गया। विज्ञान के कारण जीवन आज जितना समिध हो गया है और मनुष्य का मन अब जिस स्तर पर पहुँच गया है, वहाँ इसके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है: या तो 'रिजिमेंटेशन' होगा या अनाग्रह होगा। 'टाइम पैटर्न'—हर क्षण अपने में अनन्त है। 'इटरनिटी' कोई 'पीरियड' नहीं हो सकता। ऐसा होगा तो अवधि बन जायगी। क्षितिज को मर्यादित कर दें तो वह चौहद्दी हो गयी। यहाँ से क्षितिज नहीं दिखाई दे रहा है, सो वह यहीं है। हर क्षण अपने में अनन्त है। इमर्सन का एक वाक्य है: 'इटरनिटी इन्स्टाइन्स दी आवर, एण्ड दी आवर इन्स्ट्रक्ट्स इटरनिटी।' तो यह चीज

खींचने की नहीं है, समझाने की है। एक आदमी ने कह दिया कि आपका पत्र आया, बड़ा आनंद हुआ। उसने कहा, क्या वैसा ही आनंद हुआ, जब तुम परीक्षा में पास हुए थे ? उसने कहा : उस वक्त भी आनंद हुआ था, और अब भी हुआ है। वैसा आनंद हुआ, यह पूछो मत, समझ लो। कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो पकड़ लेनी चाहिए। आप स्वयं अगर समझ जायेंगे कि हम आग्रह नहीं चाहते, 'रेजिमेंटेशन' नहीं चाहते तो उसका मतलब यह है कि अपने विचार में से जितना हमारा अहंकार है, वह बाद करते जायेंगे। इसमें अपना इतना जो अहंकार है, उसमें से सफलता की आकांक्षा आती है कि यह काम मेरे हाथों होना चाहिए। बेटे की शादी मेरे हाथों होनी चाहिए। उसके पीछे पड़े हुए हैं कि शादी कर लो, शादी कर लो, नहीं तो मर जाऊँगा। तो क्या फिर शादी नहीं होगी ? लेकिन तब तो मैं मर जाऊँगा ! तो फिर तुम शादी क्यों नहीं करते ? आप सभी हँस दिये, क्योंकि ये बातें बेवकूफी की बातें हैं। इतनी बेवकूफी की बातें क्रान्तिकारी करता है : दुनिया मेरे हाथ से बदलनी चाहिए ! तेरे हाथ से क्यों ? *सफलता का आग्रह* जितना कम होगा, उतनी अनासक्ति के कारण काम में उत्कटता आती है, हृदय काम के साथ एकरूप होता है—उसमें एकाग्रता आती है, व्यग्रता कम होती जाती है। (क्रमशः)

तिब्बत, चीन और साम्यवाद

निर्मला देशपांडे

बाल अरुण की किरणों की स्वर्णिम आभा से मंडित हिंदुकुश के हिमशिखरों की तरफ देख कर लगा कि शांत तेजोमूर्ति ऋषिगण का प्रातः संध्यावंदन चल रहा है। ठंडी हवा चल रही थी। गुलमर्ग के आलीशान अतिथिगृह में विनोबाजी के साथ हमारी मुक्त चर्चा चल रही थी। किसी साथी की बीमारी की समस्या से लेकर अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं तक विविध विषय चर्चा की परिधि में समाये हुए थे। तिब्बत का सवाल आते ही उस छोटे-से कमरे ने मैदाने जंग का रूप ले लिया।

एक साथी ने आवेश के साथ कहा : "तिब्बत की दकियानूस लामा-पद्धति का समर्थन करना सर्वथा अनुचित है।"

दूसरे ने दुगुने आवेश से कहा : "वहाँ की जनता दलाई लामा को चाहती है। चीन को क्या हक है कि वह वहाँ की जनता पर अपनी तथा-कथित शांति के विचार जबर्दस्ती से लादे ?"

विनोबाजी ने परिस्थिति का विश्लेषण करते हुए गंभीरता से कहा : "तिब्बत के मसले पर सोचते समय हमें कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। जैसे हवा ठंडे प्रदेश से गर्म प्रदेश की ओर बहती है, वैसे विज्ञान में जो देश आगे बढ़े हुए हैं, उनका अविकसित देशों पर आक्रमण अपरिहार्य है। उसी तरह ज्यादा जनसंख्यावाले प्रदेश के लोगों का कम जनसंख्यावाले प्रदेश में जाना भी लाजमी है। फिर चाहे वे प्यार से जायें या आक्रामक बन कर जायें। शायद यह भी होगा कि चीन भय के कारण *अपनी सीमा को कस लेना चाहता होगा।* खैर, यह भी ध्यान में रखो कि हमें दुनिया का सारा ज्ञान अंग्रेजी भाषा के द्वारा हासिल होता है। चीनी-तिब्बती भाषा जाने बिना हम उन उन लोगों की भूमिका को कैसे समझ सकते हैं ?"

साथी ने कुछ गुस्से में कहा : "पीकिंग रेडियो भी कहता है कि तिब्बत में हजारों तिब्बती मारे गये। क्या हमें चीन की इस कृति का निषेध नहीं करना चाहिए ?"

विनोबाजी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया : "तिब्बती जनता चीन को नहीं चाहती, यह तो हम सब जानते ही हैं। चीन ने वहाँ जो कुछ किया वह अनुचित था, यह भी हम मानते ही हैं। लेकिन क्या उस सवाल पर गरम दिमाग से सोचना जरूरी है ? इस विज्ञान-युग में जो ठंडे दिमाग से तटस्थता से नहीं सोचेगा, वह मार खायेगा और हार खायेगा।"

"वह तो आप अभी हमें दे ही रहे हैं।"—कहते हुए साथी भी उनके साथ हँसने लगे।

विनोबाजी कहने लगे : "खूब याद रखिये कि यदि हिंसा को ही आधार माना जायेगा तो इस दुनिया में कमजोरों की कुछ भी नहीं चलेगी। जिनके पास हिंसा के बड़े बड़े हथियार हैं, उन्हींकी चलेगी। चीन तिब्बत को निगल गया, इससे हमें सबक लेना होगा कि अब छोटे और कमजोर राष्ट्र अपनी आजादी की रक्षा करना चाहते हैं, तो हिंसा के आधार पर कभी नहीं कर सकेंगे। अहिंसा की ताकत बनाने से ही कमजोरों की आजादी टिकेगी।"

बाहर देखा तो ऋषियों का संध्यावंदन कब का समाप्त हो चुका था। पता ही नहीं चला कि कब बारिश आरंभ हुई। हवा के साथ हमारे दिमाग भी ठंडे हो रहे थे।

एक ने कहा : "चीन भी बौद्ध राष्ट्र है और तिब्बत भी।" दूसरे ने कहा : "चीन बौद्धधर्मी कहाँ रहा है ? चीन का धर्म है साम्यवाद। चीन से लौटे हुए एक भाई कह रहे थे कि वहाँ अब मंदिर-चर्च आदि सब खाली पड़े हैं ! धार्मिकता को प्रतिक्रांतिवादी माना जाता है।"

विनोबाजी गंभीर हुए। उनके शब्दों से शांति के साथ दर्शन की दृढ़ता टपकती थी : "मैं कभी नहीं मान सकता कि चीन जैसे पाँच हजार साल की सभ्यता वाले प्राचीन देश में, साम्यवादी हुकूमत धर्म को खत्म कर सकती है। रूस की बात अलग है, लेकिन चीन पुराणप्रिय प्राचीन देश है, किसानों का देश है, किसान कभी अपनी परंपरा को नहीं छोड़ता। क्या चीन के हजारों साल के साहित्य का कोई असर नहीं रहेगा ? साम्यवादी हुकूमत के पास हजारों साल की परंपरा और संस्कृति को खत्म करने की ताकत है, इसमें मेरा बिलकुल विश्वास नहीं है। आप जरा ठहरिये। इतने थोड़े समय में अपनी राय मत बनाइये। जरा समय बीतने दें, फिर देखेंगे कि चीन का किसान अपनी हजारों साल की संस्कृति के साथ फिर से सिर उठा रहा है।"

टन "टन" टन ! भोजन की घंटी बजी।

मेरी भारतीय भावना को अकारण प्रतीत हुआ—जैसे किसी ने कहा हो : 'तथास्तु !'

श्री कुमारप्पा !

श्री जे० सी० कुमारप्पा के निधन से भारत के सामाजिक, आर्थिक क्रांति क्षेत्र के निर्भीक, स्पष्ट, तीव्र प्रभावकारी, ज्वलंत नेतृत्व में ऐसी कमी आयी है, *जिसकी पूर्ति अभी तो असंभव ही दिखाई देती है।*

पिछले ढाई वर्षों से वे *अत्यधिक अस्वस्थ थे।* एक तरह से उनका शरीर *जीवन और मृत्यु का संघर्ष-स्थल* बना हुआ था। लेकिन शरीर की इस पीड़ा के बावजूद उनका दिल व दिमाग हमेशा की भांति सतर्क, सूक्ष्मदर्शी, प्रखर व एक हद तक उग्र था।

उनका आखिरी दिन संयोग से उनके गुरु और उनके सखा पूज्य बापू का पुण्य दिवस भी था। उन्होंने उस दिन अपने सेवक-साथी से वेदना के साथ प्रश्न पूछा था कि बापू के बाद के इन बारह वर्षों हम उनके बताये हुए रास्ते पर कितने बढ़े। उस *कोई जवाब नहीं था।* यह आश्वासन दिये जाने प कि *बापू व उनके कुमारप्पा के अनुयायी उनके म* पर बढ़ने की *चेष्टा में हैं और उनकी आशाओ* कल्पनाओं को पूरा करने में लगे हैं, लगे रहेंगे, उन्होंने आह के साथ कहा कि ये झूठे आश्वासन हैं हमने बापू को भुला दिया है। उनका प्रश्न था कि मेरे पास अस्पताल में आने वालों में कितने खादी पहनने वाले हैं ? साधनदान, संपत्तिदान कौन कौन देते हैं ? क्यों न साफ लिख कर मेरे कमरे में लगा दिया जाय कि मिलने आने वाली हर माता-बहन *अपनी नाक, कान, सिर के जेवर साधन-दान की पेटी में* उनके समक्ष डाल जायें। उनका अभिप्राय था कि बापू ने गाँव-गाँव की सुख-समृद्धि का विचार दिया था, वह कितना पूरा हुआ, खादी-ग्रामोद्योग देश में कितने बढ़े, विषमता कितनी कम हुई, बापू के सपने का स्वराज्य कितना नजदीक आया ?

प्रश्न, उनका असमाधान, श्री *कुमारप्पा जैसे बारीकी में जाने वाले गहरे संवेदनशील व्यक्ति में* सारी स्थिति से तीव्र असंतोष और रोष, उन जैसे बहादुर योद्धा के मन में आखिर निराशा की रेखा, यह सब देश में क्रांति की आकांक्षा करने वालों के लिए एक गहरे विचार विमर्श का विषय है। सारे देश के गांधी-अनुयायी होने का दावा करने वालों के *लिए एक बड़ी चुनौती है।*

गांधी ने जगह जगह से जो रत्न बटोरे, जिन्होंने उन्हें सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने में मदद की, गांधी ने जिन्हें चमकाया और जिनसे गांधी स्वयं चमके, अपने क्षेत्र में असाधारण मौलिक चिंतन शक्ति और प्रतिभा गांधी के जिन अनुयायियों ने प्रत्यक्ष प्रकट की और दकियानूसी जीवन को पूरा छोड़ने का मकसद आदिरा *में कर दिखाया, उन व्यक्तियों में कुमारप्पा नंबर एक थे।*

खादी ग्रामोद्योग और ग्राम अर्थ-व्यवस्था के अथक हिमायती, वैज्ञानिक शोधक और समर्थक तथा आज की केंद्रित शोषणकारी राज्य व अर्थ-रचना के कटु, तीखे किन्तु ठोस प्रामाणिक आलोचक और प्रत्यक्ष प्रयोग से अपने *विचार व सिद्धान्त को व्यावहारिक सिद्ध करने वाले कर्मठ कार्यकर्ता व मार्गदर्शक के* रूप में वे बराबर याद किये जायेंगे।

उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि है और आकांक्षा है कि जिस संघर्ष में, नये समाज का चित्र प्रस्तुत करने के जिस प्रयत्न में, उन्होंने अपना जीवन होम दिया, वैभव, पदप्रतिष्ठा को छोड़ कर आजीवन ब्रह्मचारी रहते हुए जिस क्रांति कार्य में वे सतत लगे रहे, उस प्रयत्न में, सक्रिय योगदान की क्षमता गांधी के मानने वालों में बढ़े।

—पूर्णचन्द्र जैन

मद्रास, १-२-६०

इसलिए उस भ्रम को तोड़ नहीं सका। उसका फल यह हुआ कि मैं उनकी बातें करता रहा और समूचे देश में एक तेनाली को छोड़ कर कहीं भी सर्वोदय-पात्र का सफल प्रयोग नहीं हुआ। तेनाली की सफलता भी डॉ॰ सूर्यनारायण के व्यक्तिगत पुण्य का ही फल था।

"आप लोगों ने चालीसगाँव-सम्मेलन में जनाधारित बनने का प्रस्ताव किया, लेकिन उस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए किसीने पूरी ताकत आजमायी है क्या? पदयात्राएँ करीब-करीब बन्द हो चुकी हैं। देखने वालों ने आलोचना की कि सिर्फ 'पदयात्रा से कुछ नहीं होता।' लेकिन इस कदर 'सिर्फ' शब्द तो धर्म को लागू करके धर्म को भी हम निकम्मा ठहरा सकते हैं। फलतः पदयात्रियों ने देखने वालों को जवाब देना शुरू किया, "बैठने से फँस जायेंगे"। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे को काटते रहे। मैं कहता हूँ कि व्यापक प्रचार में चले जाइये, तब आपको सूझता है निर्माणकार्य में फँसने का। मैं कहता हूँ कि एक शासन-मुक्त क्षेत्र बनाइये, तब आपको सूझता है कार्यकर्ताओं को इजराइल भेजने का। याने मेरे और आपके स्वरों का मेल नहीं बैठ रहा है। इसलिए अज्ञात संचार में मैं नये तरीके–टेकनिक–खोज रहा हूँ। येलवाल के समय हमारे पास ग्रामदान की शक्ति थी। लेकिन, अगर इस समय मैं पंडितजी से मिलूँ भी तो मेरे पास कौन-सी शक्ति है? क्या हमने एक भी जिला ऐसा बनाया है, जहाँ पुलिस या फौज की आवश्यकता न रही हो? जिले को छोड़िये, एक तालुका भी ऐसा है क्या, जहाँ पर ५००० की आबादी में एक कार्यकर्ता लोकाधारित ढंग से रह कर १२-१५ साल तक लगातार घूमते रहने को तैयार हो?"

विनोबा की वेदना को शब्दबद्ध करने का प्रयत्न किया है, लेकिन इस गागर में ही सागर समाया है, ऐसा समझिये।

"१९६२ के बाद आपके लिए मौका नहीं है। आज कोई भी आपकी बात सुनेगा। लेकिन इस समय आप पूरी क्षमता से देश को जाग्रत नहीं कर पाये, तो आपकी बात उस अवधि के बाद कोई नहीं सुनने वाला है।" १९५७ तक इतना कार्य सिद्ध करो, ऐसा लक्ष्यांक वाला मानस इसमें नहीं था। तेज गति से भागते हुए काल प्रवाह की ओर ही इशारा था इसमें। उन्होंने कहा: "चीन के मामले के बाद आपको लगता है कि तीव्रता की जरूरत है। लेकिन मैं पहले से कहता आया हूँ। आप लोगों को जरूरत थी 'इमर्जेन्सी' (संकटकालीन अवस्था) की, मैं करता था बात अर्जेन्सी (तीव्रता) की।"

बाद में उन्होंने अपनी बात को और भी साफ करके समझाने का प्रयत्न करते हुए कहा: "होना चाहिए ऐसा कि और किसीको भी न हो उतनी जानकारी हिन्दुस्तान की आपको हो। सरकार को भी आँकड़े लेने के लिए आपके पास आना पड़े।" हमारा एक-एक घर के साथ जीवित संपर्क हो, यह उनकी व्यापक कल्पना है और इधर हालत यह है कि भूदान एवं रचनात्मक कार्यकर्ताओं का लोकसंपर्क आज बिलकुल कम हो गया है।

('भूमिपुत्र' से)

श्रेष्ठ सेवक कुमारप्पाजी की पुण्य-स्मृति!

गोपाल कृष्ण मल्लिक

श्रेष्ठ सेवक जे॰ सी॰ कुमारप्पाजी का पार्थिव शरीर अब इस लोक में तो नहीं रहा, किन्तु उनकी सिखावन आज भी स्मरणीय है। ९ साल पूर्व, १९५१ के फरवरी माह की बात है। बापू के अवसान के बाद रचनात्मक कार्य और कार्यकर्ताओं की गति में शिथिलता-सी आ गयी थी, कार्यक्रम धुंधला सा पड़ रहा था और श्री कुमारप्पाजी का तूफानी दौरा भी चल रहा था। वे कार्यकर्ताओं को ठोक-ठोक कर जगा रहे थे, उत्साह, प्रेरणा और स्फूर्ति भर रहे थे, सूक्ष्म सिखावन से सूक्ष्म एवं अन्तर्दृष्टि डाल रहे थे।

पू॰ किशोरलाल भाई की प्रेरणा और आज्ञा पाकर मैंने अपने देहात में एक सर्वोदय-शिक्षण-शिविर का आयोजन किया था। श्री शंकरराव देव ने शिविर का शुभारंभ किया था और श्री कुमारप्पाजी ने शुभ निर्देशपूर्ण समापन किया था। श्री कुमारप्पाजी का समय पहले से ही निश्चित और बँधा था, फिर भी शिविर में आने का मैंने बहुत अनुरोध किया था। उन्होंने लिखा—शिविर का समय दो दिन भी आगे बढ़ा सकते तो मैं आ सकता हूँ। किशोरलाल भाई के जरिये भी आग्रह कराया और शिविर के समापन-कार्यक्रम की बात स्वीकार करते हुए उन्होंने तार भेजा—"आसाम से वापस आते हुए दो दिन का समय तुम्हारे शिविर के लिए देता हूँ।"

शिविर रेलवे स्टेशन से ५ मील दूर एक गाँव में था। वे दोपहर की गाड़ी से उतरने वाले थे और उस दिन के दोपहर के कार्यक्रम में भी उनके समय का उपयोग हो और सुविधा की दृष्टि से भी उन्हें स्टेशन से लिवा लाने के लिए जीप भेजी गयी थी। पर उन्होंने जीप पर चढ़ कर रचनात्मक कार्यकर्ताओं के शिविर में आने के लिए साफ इनकार कर दिया और लिवा लाने वाले कार्यकर्ता की तालीम वहीं से शुरू हो गयी। उन्होंने कहा—"गाँव में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का यह शिविर है न! तो गाँव में उपलब्ध तथा उपयोग में लायी जाने वाली बैलगाड़ी मुझे चाहिए। नहीं तो चलो ऐसे ही।"

शिविर में पहुँच कर बिना नहाये धोये ही वर्ग में बैठ गये और तीव्रता में उन्होंने कहा—"रचनात्मक कार्यकर्ता ग्राम सेवा के लिए ग्रामोद्योग का तो मन लेते हैं, विचार तो बोलते हैं, पर वास्तविक और कठोर व्रत-पालन नहीं करते। ग्रामोद्योग की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि अहिंसा, मानवता, भूत दया तथा भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की दृष्टि से भी बैलगाड़ी एक आधारभूत बुनियाद है, बुनियादी आदर्श और मूलभूत सिद्धांत भी है। इसे छोड़ कर या बिना समझे-बूझे चलोगे तो तुम्हारी ग्राम सेवा की नाव बालू पर ही रहेगी, पानी में नहीं तैरेगी, फिर अहिंसा का, सत्य का यह सारा सिद्धांत और आदर्श ही डूब जायगा!"

रात में विश्राम के वक्त कहने लगे—"क्या इसी प्रेरणा, निष्ठा और संकल्प से गांधी का काम कर सकोगे? क्या इसी तरह समाज में अहिंसा की प्रतिष्ठा तक बढ़ा सकोगे? और समाज में, गाँव में क्या इसी तरह अहिंसक संस्कृति का निर्माण कर सकोगे?" मैं लज्जित हुआ, सकुचा गया।

सवेरे ही उन्होंने मुझे बुलाया और पूछा—"तुम किस गाँव में काम करते हो?"

"इसी गाँव में तो।"—मैंने कहा।

और उन्होंने फिर पूछा—"कितने दिनों से?"

"करीब साल भर से।"—मैंने कहा

और वे उठ खड़े हुए—"मैं इस गाँव में जाऊँगा, चलो।"

गाँव में नित्य ग्राम सफाई शिविरार्थी भी करते थे, इसलिए इसकी चिंता नहीं थी, पर कुमारप्पाजी की विलक्षण बुद्धि क्या नहीं खोज सकती, इसका भय एक छोटे विद्यार्थी की तरह लगा था।

गाँव की ओर बढ़ते हुए उन्होंने मुझ से सवाल पूछा—"किस श्रेणी का गाँव है?"

"अधिकतर निम्न खेतिहर श्रमिकों का।"—मैंने कहा।

"किस परिमाण में स्वावलम्बन इनके जीवन में सध पाया है?"

"अस्सी प्रतिशत।"—मैंने निर्भीकता से कहा।

और तब तक वे गाँव में प्रवेश कर चुके थे। उनकी तीक्ष्ण दृष्टि तम्बाकू और आलू की खेती पर गयी। वे भिन्ना उठे—"इन्हीं दोनों पर ही अस्सी प्रतिशत के स्वावलम्बन का तुम्हारा हिसाब है न!"

मैं अवाक् रह गया! अनुमान तो कर सकता था, पर सोचा तक नहीं था। कर इनाम नहीं, ठोकरें लगने लगीं! कुछ इस तरह के ही प्रश्न पूछे गये और बहुत दूर न जाकर लौट गये।

शिविर में उन्होंने कहा—"मुझे इस गाँव में सत्य अहिंसा की दृष्टि से स्वावलंबन सधता प्रतीत नहीं हुआ। तो फिर यहाँ ग्रामसेवा क्या होती है? गांधीजी गाँव को या मनुष्य-समाज को सुखी और स्वावलम्बी ही नहीं बनाना चाहते थे, बल्कि जीवन में पारस्परिक शांति, प्रेम, सेवा, सादगी, सह-अस्तित्व, समवेदना एवं करुणा तथा विवेक को भी प्रतिष्ठित करना चाहते थे, जिसका आधार सत्य अहिंसा है और जो संसार के लिए बिलकुल नयी चीज है, नयी देन है। पर है एकमात्र चीज, जिससे ही संसार में सुख शांति और स्वराज्य का वास्तविक रूप स्थापित होगा।"

ऐसा उनका उस शिविर का समापन भाषण हुआ, जिससे सभी कायल हो गये और उनकी इस शिक्षा के लिए उस गाँव के लोग आज भी उनकी याद करते हैं और उनकी सिखावन के कारण ही अपनी इस स्थिति एवं धंधे का क्रमशः सुधार करते रहे हैं। मैंने सेवाग्राम, मगनवाड़ी और वर्धा में उनसे बहुत शिक्षा पाने की चेष्टा की, किंतु उनकी यह शिक्षा मेरे जीवन की अमर सिखावन बनी सो बनी ही रही। मैं इस तरह ही उनके श्राद्ध में उत्सर्ग देने की चेष्टा करता हुआ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

श्री वल्लभस्वामीजी की पदयात्रा

अ॰ भा॰ सर्व सेवा-संघ के अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामीजी ता॰ २० फरवरी से १० मार्च तक पदयात्रा करके सर्वोदय-सम्मेलन में शरीक होने के लिए सेवाग्राम आयेंगे। समय के अभाव के कारण बंगलोर से सेवाग्राम पदयात्रा करना संभव नहीं होगा। इसलिए वे बेल्लारी से बीदर (मैसूर राज्य) तक [illegible] दिन की पदयात्रा करेंगे। बीदर से रेल द्वारा सेवाग्राम पहुँचेंगे।

पद-यात्रा में नव-दर्शन

[गुजरात में एक अखंड पदयात्रा चल रही है, जिसके युवक नेता श्री हरीश व्यास द्वारा विनोबाजी को लिखे गये पत्र का कुछ अंश यहाँ दिया जा रहा है, जो बड़ा ही उद्बोधक है। —सं०

हमारी पदयात्रा इन दिनों खेड़ा और अहमदाबाद जिलों में से गुजर रही है। टोली में स्थायी रूप से चलने वाले छह-सात साथी रहते हैं। हम रोज नये पड़ाव पर कुदाली, फावड़े और टोकरी लेकर लोगों को अपने साथ ३-४ घंटे के श्रम यज्ञ में शामिल करते हैं। कभी-कभी एक सौ से लेकर पाँच-छह सौ तक व्यक्ति शामिल होते हैं, तो सारे गाँव में हम भी कुछ कर सकते हैं, ऐसी हवा बन जाती है। रोज साधारणतया ७-८ मील चलते हैं। श्रमयज्ञ में रास्ता-दुरुस्ती, तालाब का किनारा बनाना, कुएँ की सफाई करना, गाँव की स्वच्छता आदि ऐसे काम करते हैं, जिनमें लोग आसानी से शरीक होते हैं। हमारे इस कार्यक्रम के [illegible] होता है।

होते हैं। शहरों और कस्बों के गाँवों में कार्य को दो से अधिक दिन रुकना पड़ता है। वहाँ हम विभिन्न वर्गों के लोगों से संपर्क स्थापित करके चर्चा, विचार-विनिमय करते हैं।

जमीन को नरम बनाना होगा

आज हम गुजरात के 'अर्नादछ' और 'कम डिवकाइन्ड' प्रदेश में से यात्रा कर रहे हैं। हम देखते हैं कि अभी मालकियत विसर्जन की प्रक्रिया कुछ मन्द पड़ गयी है। मालिकी की भावना दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इस परिस्थिति में हमारे पू० रविशंकर महाराज की बात याद आती है। वे कहते हैं, "जब जमीन कठिन हो जाती है, तब उसको नरम करनी पड़ती है।" तो हमें भी लगता है कि मालकियत-विसर्जन की प्रक्रिया को कामयाब बनाने के लिए हमें कुछ सौम्य तरीका आजमाना पड़ेगा, जो हमारे मुकाम की ओर जाने में हमें ज्यादा बल देगा।

हमें महसूस होता है कि पुराने जमाने से जिन स्थानिक स्वराज्य की संस्थाओं, ग्राम-पंचायतों आदि का विकास आज भी हो रहा है, उनको हम कामयाब बनायें। ग्राम सभा को ग्राम पंचायत उत्तरदायी हो और गाँव की बेकारी, गरीबी, उद्योग, आरोग्य, शिक्षा आदि समस्याओं के लिए वे जिम्मेवार बनें। कोई भी ७-८ घंटा काम करने वाला आदमी काम माँगे, काम के लिए साधन माँगे तो देने के लिए, इंतजाम करने के लिए पंचायत या म्युनिसिपैलिटी जिम्मेवार हो। पंचायत के चुनाव में सर्वसम्मति आनी चाहिए। हम भारत में कृषि-उद्योग समाज बनाना चाहते हैं, जिसे आप 'सीताराम का समाज' कहते हैं। इसके लिए गाँव गाँव में ग्राम संकल्प की भूमिका आवश्यक है। कृषि का सवाल हमने लिया है। मगर जब तक सामूहिक जिम्मेवार उद्योग की बुनियाद नहीं डालेंगे, तब तक ग्राम स्वराज्य की बात में जोर नहीं आयेगा।

सामाजिकता और उत्तरदायित्व

आज बिजली आदि गाँवों तक जा रही है। इसमें सामाजिकता और उत्तरदायित्व का तत्त्व आयेगा तो ग्राम स्वराज्य का नया आन्दोलन बन जायेगा और मालकियत विसर्जन की प्रक्रिया भी सरल और गति[शील] होगी। हमारे गाँव की गरीबी, दवाई, आरोग्य, बेकारी, शिक्षा आदि के लिए हम जिम्मेवार हैं, यह सामूहिक संकल्प लोक शक्ति की बुनियाद बन जायेगा। सहकारी प्रवृत्तियों में भी हम जिम्मेवारी की भावना लाकर सामाजिक उद्योग की शक्ति खड़ी कर सकते हैं।

कारखानों और उद्योगों में भी सामाजिक मालकियत और सामाजिक जिम्मेवारी होगी। इसलिए मजदूरों को जो बढ़ती या बोनस मिलता है, वह शेयर के रूप में परिवर्तित किया जाय तो उद्योग का आन्दोलन भी साथ-साथ बढ़ेगा। इस पदयात्रा में हम नये आन्दोलन के लिए काफी बातें लोगों के सामने रख रहे हैं। लोगों की ओर से सहकार भी मिल रहा है।

सेवक अफसर

खेड़ा जिले के उमरेठ शहर में २८००० की आबादी है। यहाँ हम ४ दिन ठहरे। खूब सुन्दर वातावरण बना है। यहाँ एक मजिस्ट्रेट बड़ा दिलदार आदमी है। उसने नरसी मेहता और मीरा का साहित्य बड़ी रुचि से पढ़ा है। बापू का असर भी उस पर है। उस शहर में ढाई महीने पहले बहुत गंदगी थी। मजिस्ट्रेट ने सोचा कि ऐसे गंदे शहर में क्यों रहें? यहाँ से दूसरी जगह तबादला करा लें। मगर अन्दर से आवाज आयी कि तू तो यहाँ से चला जायेगा, बाद में जो आयेगा, उसको भी यह गंदगी भुगतनी पड़ेगी! उन्होंने सोचा कि इसे कैसे मिटायें? शहर के वकील, डाक्टर, शिक्षक, प्रमुख व्यक्ति और बच्चों को बुला कर सभा की और सारी बातें बतायीं। म्युनिसिपैलिटी और शहर के लोगों ने उनको सम्मति दी और ढाई महीनों से यह श्रम-कार्य चल रहा है। ५०० मोटर-गाड़ियाँ भर कर सारी गंदगी का निवारण किया गया, जिसमें से अच्छी खाद बनेगी। जो आदमी आज तक कलम लेकर न्याय देता था, वह फावड़ा और कुदाली लेकर सामाजिक अन्याय के लिए दिल से काम में लग गया है। मैंने उनसे पूछा कि यह फुरसत कैसे मिली? तो उन्होंने कहा, "आज तक मैं एक अफसर के नाते सात-आठ घण्टे कोर्ट में ही काम करता था, अब नागरिक के नाते कुछ दो-चार घण्टे जनता का काम करता हूँ।" हमारे देश में जब यह अफसरपन नागरिकता में परिवर्तित होगा, तब कितनी बड़ी ताकत पैदा होगी? इस बात को दुहराते हुए हम अन्य अफसरों को भी जगाने की कोशिश कर रहे हैं।

पावन अनुभव

अहमदाबाद जिले में धोलका एक तालुका का शहर है। वहाँ हमारी यात्रा गयी तो कई शिक्षकों ने जिम्मेवार परिवार बढ़ाने के लिए विचार किया है। उन्होंने सोचा है कि हम एक दूसरों की बेकारी, शिक्षण और बीमारी के लिए जिम्मेवार बनेंगे। इसलिए उन्होंने हर महीने अपनी आय से एक हिस्सा समूह परिवार के लिए रखने का सोचा है। जैसे पचास रुपया कमाने वाला आठ आना दे और सौ रुपया कमाने वाला एक रुपया दे।

खेड़ा जिले में कपड़वंज बीस हजार की आबादी का शहर है। हमको मालूम नहीं था कि यहाँ सर्वोदय की प्रवृत्ति चल रही है। यहाँ एक शरणार्थी भाई ने छोटे पैमाने पर "विनोबा-सत्संग मंडल" बनाया है। सप्ताह में एक दिन बीस पचीस लोग मिल कर प्रार्थना करते हैं और "गीता प्रवचन" पढ़ते हैं। इन लोगों ने भी जिम्मेवार परिवार बनाने का सोचा है। इस मण्डल में दर्जी, मजदूर और व्यापारी आदि छोटे छोटे लोग अपनी इच्छा से आये हैं। सर्वोदय-पात्र रखने और रखवाने का काम भी ये करेंगे। एक दूसरे की आर्थिक जिम्मेवारी उठाने की बात उन्होंने सोची है। अपनी कमाई का एक हिस्सा परिवार के नाम पर रखने का भी सोचा है।

स्वच्छता के बाद उन्होंने आर्थिक आन्दोलन शुरू किया है। कुछ लोग गरीबों और हरिजनों में जाकर आर्थिक स्थिति की जानकारी हासिल करते हैं, इसके बाद आर्थिक संयोजन करना चाहते हैं। आज भी यहाँ करीब तीन सौ फीसदी सूद साहूकार लेता है, अतः ऋण-मुक्ति की बात भी ये सोचते हैं। साहूकारों को मिल कर समझाते हैं। कुछ लोग गरीबों को ऋण देने के लिए सम्पत्ति दान देने को तैयार हो गये हैं। हरिजनों को उद्योग और काम देने के लिए भी सोच रहे हैं। उनके व्यसन आदि मिटाने का भी प्रयत्न जारी है।

हमारी आवाज की प्रतिध्वनि

खेड़ा जिले में मासवा २५०० जनसंख्या का गाँव है। वहाँ कुछ नवयुवक और नवयुवतियों ने मिल कर एक युवक-मंडल बनाया है। गाँव में से बेकारी, अज्ञान, अनारोग्य, सस्ते मनोरंजन आदि का जिम्मा उन्होंने लिया है और इनको मिटाने की हरदम कोशिश करते हैं। शुरू में गाँव की स्वच्छता और मनोरंजन की जिम्मेवारी सामूहिक ढंग से उठायी। सिनेमा के द्वारा बहुत बुराई पैदा हो रही है। इससे गाँववालों को बचाने के लिए एक "ओपन एयर थियेटर" श्रम यज्ञ के द्वारा बना रहे हैं। वे गाँव में सामूहिक ढंग से नियमित प्रार्थना का आयोजन करते हैं। इन लोगों ने भी जिम्मेवार समाज बनाने की बात पूरे दिल से मानी है। हमें बड़ी खुशी है कि लोगों में यह विचार आ रहा है। मुझे तो अभी ऐसा लगता है कि अभी हम जनता के साथ सवारी (इन ट्युन) हो रहे हैं। हमारी बात धरती पर आ रही है।

फिर भी सर्व सेवा संघ और आप, दोनों मिल कर राष्ट्रीय स्तर पर परिषद् बुला कर राष्ट्रीय कार्यक्रम तय करेंगे, तो यह बात निश्चित होगी। लोकशाही की ताकत निर्माण की ओर जायेगी तो औपचारिक लोकशाही से हम रचनात्मक लोकशाही की ओर बढ़ेंगे, जिसमें लोकशक्ति आधारशिला होगी।

दूसरी बात यह महसूस होती है कि पूरे समय के कार्यकर्ता की अपेक्षा आंशिक समय देने वाले स्थानीय मित्र बढ़ायेंगे तो हमारी शक्ति और सुदृढ़ होगी। सर्वोदय-मित्रों की खोज करना, विचार विनिमय करना, सम्पर्क और सहयोग रखना मुझे आवश्यक लगता है। इसमें से ही जनशक्ति बनेगी और जन-आन्दोलन बनेगा।

पदयात्रा में तालीम

इस पदयात्रा में शरीक होने वाले तालीम, चिन्तन आदि भी करते हैं। इससे हमें गहराई में जाने का मौका मिलता है। इस यात्रा में इन विषयों का अध्ययन चला : साम्य विचार, योगसूत्र के चार विचार, लोकतंत्र का विकास, प्राचीन भारतीय लोकतंत्र, सर्वोदय लोकतंत्र, भारतीय लोकतंत्र की नवरचना, लोकशाही की पंचशिला, गुण विकास, प्रेरणा-तत्त्व का विकास, गांधी-विचार के प्रेरक बल, लोकराज और संस्कृति, कुटुम्ब नियोजन, चिन्तन की प्रक्रिया आदि।

बड़ौदा
२६-१-'६०

विनीत
हरीश व्यास

भूदान-यज्ञ रजिस्टर्ड नंबर ए. ३५४ [पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त, लायसेन्स नं० ए. ३४] १२ फरवरी, '६०

आरोहण के नये शिखरों की दिशा में

[अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध-समिति ने ५ से ७ जनवरी, '६० तक बैठकें करके दो मुख्य प्रस्ताव स्वीकृत किये हैं। उनमें से कार्यक्रम-सम्बन्धी प्रस्ताव सबकी जानकारी के लिए नीचे दिया जा रहा है। —सं०]

देश में सर्वोदय-आन्दोलन को नया वेग देने का अवसर आज पुनः आया है। १९५७ तक हमारा आन्दोलन उत्तरोत्तर व्याप्ति पाता रहा। बाद के दो वर्ष कार्य को संगठित और व्यवस्थित करने में लगे। सर्व-सेवा-संघ ने अब एक नया स्वरूप धारण किया है। स्वाभाविक ही अपेक्षा है कि आरोहण नये शिखर की ओर अग्रसर हो। इसके लिए तत्काल नीचे लिखा *न्यूनतम कार्यक्रम सुझाया जाता है :*

१. सारे देश में जगह-जगह प्राथमिक सर्वोदय-*मण्डलों को जल्द-से-जल्द संगठित* किया जाय और उन्हें क्षमतावान् तथा क्रियाशील बनाया जाय।

२. हमारे सारे काम के लिए लोक-सम्मति प्राप्त करने की दृष्टि से व्यापक विचार-प्रचार किया जाय। विचार-प्रचार का हमारा सर्वोत्तम साधन पदयात्रा है। देशभर में पदयात्राएँ आयोजित की जायँ। तमिलनाड में ग्रामदानी गाँवों के भाई-बहनों को एक गाँव से दूसरे गाँव तक की सामूहिक पदयात्राओं का अच्छा अनुभव हो रहा है। देश में जहाँ-जहाँ सम्भव हो, इस प्रकार की लोक-यात्राएँ शुरू की जायँ। पद-*यात्राओं द्वारा एकता, समता, निर्वैरता और निर्भयता* का वातावरण निर्मित किया जाय।

३. इससे शान्ति-सेना के व्यापक संगठन को बुनियाद मिलेगी। शान्ति सेना के कार्यक्रम को सघन रूप में बढ़ाया जाय।

४. *शान्ति सेना का कार्यक्रम तभी सफल होगा,* जब उसके साथ ही साथ देश में आर्थिक स्वावलम्बन का व्यापक आन्दोलन चलेगा। गाँव में कोई भूखा नहीं, गाँव में कोई बे-रोजगार नहीं, यह हमारे गाँवों की *पहली प्रतिज्ञा होनी चाहिए।*

५. *स्वामित्व विसर्जन के* कार्यक्रम के साथ ही सामूहिक सुरक्षितता (सोशल सिक्यूरिटी) के साधन भी उपलब्ध करने होंगे। इस दिशा में काम करने के लिए जगह-जगह उद्योगों की सामूहिक मालकियत के प्रयोग होने चाहिए। उद्योगों में आधुनिक वैज्ञानिक साधनों और नवीन शोधों का पूरा उपयोग हो और देश में मिलने वाली बिजली, तेल आदि की शक्ति का उपयोग भी व्यक्तिगत स्वामित्व का न रहते हुए ग्राम या क्षेत्र की मालिकी का हो, ऐसे प्रयोग किये जाने चाहिए।

६. प्रान्त-प्रान्त में नमूने के सघन-क्षेत्र बनाये जायँ, जहाँ सर्वोदय पात्र, भूदान, ग्रामदान और नव-*निर्माण का पूर्ण चित्र दिखाने का प्रयत्न हो* और यह भी प्रयत्न हो कि वहाँ की सारी जनता अपनी आन्तरिक शान्ति और सुरक्षा की जिम्मेवारी उठा ले।

७ सर्वोदय पात्र के लिए नीचे लिखे क्षेत्रों में विशेष रूप से सघन प्रयत्न किया जाय :

(१) ग्रामदानी गाँवों में,
(२) लोक सेवकों के प्रेम-क्षेत्र में,
(३) रचनात्मक *काम करने वाली संस्थाओं के* इर्द-गिर्द,
(४) नगरों में।

८ आगामी सर्वोदय सम्मेलन पूज्य बापू के निधन के और प्रथम सर्वोदय सम्मेलन के बारह वर्ष बाद सेवाग्राम में पहली बार हो रहा है। देश के कोने-कोने से सम्मेलन में लोकसेवकों व अन्य कार्यकर्ताओं के दल पदयात्रा करते हुए पहुँचें।

९. बारह फरवरी का पुण्य-दिवस निकट आ रहा है। सर्वोदय विचार में अपने विश्वास को दोहराने की दृष्टि से और सर्वजनाधार के सन्दर्भ में उस दिन अधिक-*से-अधिक सूत्रांजलि समर्पित की जाय।*

ऊपर के सारे कार्यक्रम सूचना स्वरूप हैं। विभिन्न प्रदेशों में वहाँ की परिस्थितियों के अनुसार इनमें आवश्यक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

'स्वामी का स्वामी !'

१९५६ के *दिसम्बर में जब विनोबाजी दक्षिण भारत* की पदयात्रा में कल्लुपट्टी पहुँचे, तब श्री कुमारप्पाजी ने उनको अपनी कुटिया पर पधारने का निमंत्रण दिया और उत्साह के साथ उन्हें अपनी हर छोटी मोटी चीजें दिखायीं। जब उन्होंने देखा कि विनोबाजी दीवार पर टँगी हुई बापू की तस्वीर की तरफ देख रहे हैं, तो वे बोले : "यह मेरे स्वामी (मास्टर) की तस्वीर है।" यह कहते ही निकटवाली दूसरी तस्वीर की तरफ इशारा करते हुए कहा, "और यह तस्वीर मेरे स्वामी के स्वामी की है (मास्टर्स मास्टर)।" विनोबाजी देखते ही रह गये। वह एक गरीब किसान की तस्वीर थी। वह भूखा था, नंगा था, फिर भी मुस्कुरा रहा था—दास को पाकर, दासानुदास को पाकर।

श्री कुमारप्पाजी के लिए शोक-सभाएँ

श्री जे० सी० कुमारप्पा के देहान्त की खबर मिलते ही देश की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं द्वारा जगह *जगह शोक सभाएँ हुईं और कुमारप्पाजी की आत्मा* को शांति प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके कार्य को बल मिलने की दृष्टि से प्रयत्न करने के संकल्प किये गये। हमारे पास निम्न *स्थानों से समाचार प्राप्त हुए हैं :*

गांधी ज्ञान मंदिर, वर्धा; नगर सर्वोदय समिति *और सर्वोदय युवक-सम्मेलन, कानपुर; बिहार खादी-*ग्रामोद्योग-संघ, राँची (बिहार)।

गुजरात अखंड पदयात्रा की प्रगति

अखंड गुजरात सर्वोदय-पदयात्रा खेड़ा और अहमदाबाद जिले में ४६ दिनों में छोटे-बड़े २० गाँव में गयी। १४६ मील की यात्रा में १३ प्रवचन, १८ सभाएँ, १० विचार शिविर और १११६६० की साहित्य बिक्री हुई। भूदान-पत्रों के ४२४ ग्राहक बनाये गये। ६१ गुण्डियों का सूत्रदान और १ कूपदान मिला। कुछ भूमि प्राप्त हुई और कुछ भूमि वितरित भी की गयी।

प्रयाग विश्व-विद्यालय खुला

इलाहाबाद युनिवर्सिटी की समस्या को प्रेम तथा शांति के उपायों से हल करने के नम्र प्रयास में श्री सुरेश राम भाई तथा श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी लगे हुए थे। *इस बीच वे भारत के प्रधानमन्त्री, उत्तर प्रदेश के* गवर्नर, मुख्य मन्त्री, शिक्षा मन्त्री, वाइस चान्सलर आदि से मिले और उन्होंने विद्यार्थी तथा अध्यापकों से बराबर संपर्क रखा। इस बीच श्री सुरेश राम भाई ने आत्मशुद्धि के लिए १५ दिन का उपवास *भी किया। सबके सहयोग से काम हुआ और* ५ फरवरी को इलाहाबाद युनिवर्सिटी फिर से खुल गयी। इस अवसर पर श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी द्वारा एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने अधिकारी गण, विद्यार्थी, अध्यापक तथा अन्य सब सज्जनों के प्रति जिनका सहयोग हासिल हुआ था, हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। श्री वाजपेयी ने अपने *वक्तव्य में कहा है कि 'देश के नवनिर्माण का जो महान* कार्य हमारे सामने है, उसमें आने वाली कई बाधाओं में से पुरानी तथा नयी पीढ़ी के बीच चलने वाला संघर्ष बड़ा दुखदायी है। यह समस्या काफी जटिल है और इसका *समाधान, अहिंसक समाज-रचना के प्रयास* में ही निहित है। इलाहाबाद में सबकी तरफ से जो स्नेह प्राप्त हुआ, उससे सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा है।'

विनोबाजी का यात्रा-क्रम

पंजाब : माह फरवरी, १९६० : ता० ५ और ६ मोगा (जिला फिरोजपुर), ७ धर्मकोट, ८ शाहकोट; ९ नकोदर, १० नूरमहल (रेलवे स्टेशन), ११ *बिलगा; ता०* १२ से १९ पंजाब सर्वोदय-सम्मेलन और सर्वोदय मेला फिल्लौर (मेन लाइन रेलवे स्टेशन)।

विनोबाजी का पता :
मार्फत—पंजाब सर्वोदय मंडल,
पो० पट्टीकल्याण, जिला-करनाल (पंजाब)

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन १२८५
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२२७१ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२१५० एक प्रति १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ५)

साप्ताहिक

भूदान-यज्ञ

भूदानयज्ञमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति का संदेशवाहक

वाराणसी, शुक्रवार • १९ फरवरी '६० • वर्ष ६ : अंक २१

सम्पादक : सिद्धराज ढड्ढा

पदयात्रा-टोलियों का प्रस्थान

उत्तर प्रदेश से

फतेहगढ़ जिला सर्वोदय-कार्यालय के मंत्री का संवाद है कि गत १२ फरवरी को मध्याह्न में मुरादाबाद के श्री गोपाल भाई के नायकत्व में जिले के १२ भाइयों की एक टोली सेवाग्राम के लिए रवाना हो गयी। टोली के अन्य पदयात्रियों के नाम ये हैं : सर्वश्री गयाप्रसाद (भैरवाँ कला), रामचन्द्र भाई (जि० गोंडा), श्रीमती महादेई देवी (मिर्जापुर), मैकी देवी (मिर्जापुर), रामचरन (छिवीर), रामदुलारे (बिजुरी), धीरू भाई (हुसैनगंज), गिरजानन्द (मिर्जापुर), दयालुराम (ऐंगी), मेहीलाल (जादूपुर, अजगवाँ), परागदत्त (पेरा बढ़ीवा)। पूर्वनिश्चित योजनानुसार दूसरे दिन टोली जमुना पार कर बाँदा जिले में पहुँच गयी। वहाँ से दमोह, जबलपुर, सिवनी, नागपुर होते हुए सेवाग्राम पहुँचने की योजना है।

प्रस्थान से पूर्व एक स्वागत-सभा का आयोजन हुआ, जिसमें सर्वश्री श्यामलाल पार्षद, हरिप्रसाद (जिला भूदान-समिति के संयोजक), छेदामिह (जिला-निरीक्षक) और जन-समूह ने शुभकामनाओं के साथ यात्रियों को बड़े उत्साह से विदाई दी। स्मरण रहे कि स्व० बाबा राघवदासजी ने अपनी पदयात्रा का आरंभ फतेहपुर से ही किया था।

श्री निर्मला देशपांडे की पदयात्रा

अ० भा० सर्व-सेवा-संघ की सहमंत्री श्री निर्मला देशपांडे ने पदयात्रा करते हुए सेवाग्राम पहुँचने की दृष्टि से १८ फरवरी की सुबह इलाहाबाद से दो-तीन साथियों के साथ पदयात्रा का शुभारंभ किया है। पदयात्रा का मार्ग इस तरह है : ता० १९ चौकठा २० कटरा, २१ मगनवाँ, २२ रीवाँ और आगे बेला, अमरपाटन, मैहर, कटनी, सिहोरा, जबलपुर, सिवनी, नागपुर होते हुए सेवाग्राम। इलाहाबाद से सेवाग्राम करीब ४५० मील है, प्रतिदिन १५ मील पदयात्रा करनी पड़ेगी।

गुजरात से

आगामी सर्वोदय-सम्मेलन बापू के जाने के १२ साल बाद सेवाग्राम में हो रहा है। सर्व-सेवा-संघ द्वारा पदयात्रा के लिए सूचना दी गयी थी और विनोबाजी भी इसको बहुत महत्त्व देते हैं। अतः गुजरात सर्वोदय मंडल की कार्यकारी समिति ने गुजरात से पदयात्राओं को संचालित करने का निश्चय किया है। दक्षिण, मध्य और उत्तर गुजरात से एक एक टुकड़ी सीधे सेवाग्राम तक जाय और ऐसी तीन टोलियाँ गुजरात के पूर्व, मध्य और पश्चिम विभाग से होते हुए व्यारा तक जाकर वहाँ से एक मार्ग द्वारा सेवाग्राम जाय, ऐसी योजना है।

महाराष्ट्र से

सातारा शहर से १२ फरवरी को ११ सेवकों की एक टोली पदयात्रा करते हुए सर्वोदय सम्मेलन में पहुँचने के लिए निकली है। पदयात्रा का मार्ग इस तरह है : सातारा, फलटण, बारामती, दौंड, अहमदनगर, औरंगाबाद, जालना, अकोला, अमरावती, आर्वी, वर्धा, सेवाग्राम।

जमीन की मालकियत पाप है!

जमीन पर हर तरह की मालकियत पाप है। सोचने की बात है, एक आदमी आखिर कितने मकान का मालिक होता है! जिस तरह धूप, हवा और पानी की मालकियत हो ही नहीं सकती, उसी तरह जमीन पर भी, जो भगवान् की दी हुई सामाजिक सम्पत्ति है, किसी एक का कब्जा नहीं माना जा सकता। जमीन तो सारे समाज के हित की दृष्टि से उपयोग में लाने की चीज है। जिस तरह प्रकाश, पानी, हवा वगैरा समाज के माने जाते हैं, उसी तरह जमीन भी समाज की मानी जानी चाहिए। किसी आदमी को उतनी ही जमीन दी जा सकेगी, जितनी का उपयोग वह समाज के हित के लिए करने की क्षमता रखता होगा। जमीन पर मालकियत तो समाज की ही होना चाहिए। पहले हमारे यहाँ ऐसा ही होता था। समूचा गाँव जमीन का मालिक माना जाता था और अलग अलग परिवारों को खेती के लिए जमीन दे दी जाती थी।

समाज ऐसा हो

मनुष्य की कमाई का हेतु केवल भौतिक सुख पाना नहीं है, बल्कि अपना आध्यात्मिक विकास करना भी है। अगर इस कमाई से मनुष्य के व्यक्तित्व का और उसकी आध्यात्मिकता का विकास होता है, तो उसका एक जबरदस्त असर हमारे समाज के ढाँचे पर और उसकी संस्कृति पर भी पड़ता है। हमारी समझ में तो एक ऐसी रचना खड़ी करनी है, जिसमें एक दूसरे का शोषण न हो और जिसमें न शोषण के बल पर कम मुट्ठी भर आदमी ऊँचे दर्जे की रहन सहन वाले बनते हों। यदि गांधीवादी आदर्श कायम रहना है तो उसके अनुसार एक उचित स्तर का भौतिक सुख या आराम हर किसी को मिलना चाहिए।

—जे० सी० कुमारप्पा

सर्वोदय-पात्र का सफल प्रयोग

'चहुटा' ग्राम मुजफ्फरपुर जिले के कटरा थाने में है। ५०० घरों की आबादी है, जिनमें से ४० घरों में सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। गत चार महीनों से इनसे अनाज वसूल होता है, जिससे प्रतिमास करीब १०-१५ रु० प्राप्त होते हैं। गाँव में एक लोक-सेवक काम कर रहा है।

पदयात्रा द्वारा सेवाग्राम पहुँचिये

—पूर्णचन्द्र जैन

[illegible]

इस अंक में

लिए आत्म-चिंतन और आत्म विश्लेषण का अवसर समय-समय पर मिलना चाहिए। एक युग की समाप्ति पर यह अवसर सहज माना जाना चाहिए। ऐसे विशेष अवसर पर और ऐसे महत्व के सम्मेलन के प्रसंग से तत्सम्बन्धी तैयारी और उसमें जन-जन का योगदान भी विशेषतापूर्ण होना चाहिए। पदयात्रा का कार्यक्रम इस दृष्टि से भी अपनाया जाना ठीक होगा।

विनोबाजी के पदयात्रा पर निकलने के बाद उनके भूदान-ग्रामदान के संदेश को लेकर देश के हर क्षेत्र में अनेक छोटी-बड़ी पदयात्राएँ पिछले कुछ वर्षों में आयोजित की जा चुकी हैं। कुछ अखंड पदयात्राएँ तो आज भी, श्री विनोबाजी की अखंड पदयात्रा के अलावा, चल रही हैं। इसलिए पदयात्रा की तैयारी, उसकी पद्धति वगैरह के बारे में कुछ नहीं कहना है। लेकिन सेवाग्राम-सम्मेलन के प्रसंग से पदयात्रा करते हुए लोग देश के कोने-कोने से एक समय पर और एक स्थान पर पहुँचें, इसके लिए पहले से विचारित और सुनियोजित संयोजना आवश्यक है। सेवाग्राम के आस-पास के जिलों और क्षेत्रों पर अचानक भार न पड़े और पदयात्रा-टोलियाँ अधिक-से-अधिक तादाद में सेवाग्राम पहुँचें, दोनों का तालमेल बिठाना बहुत जरूरी है। अन्यथा जिले के ग्रामवासियों को कठिनाई हो सकती है और पदयात्रा-टोलियों को भी असुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

सम्मेलन की तारीखें २६, २७ और २८ मार्च १९६० तय हुई हैं। उससे पहले सर्व-सेवा संघ की बैठक ता० २० से २५ मार्च तक होगी। सम्मेलन की दृष्टि से लोग २५ मार्च तक सेवाग्राम पहुँचना चाहेंगे। संघ-बैठक की दृष्टि से संघ के सदस्यों को, जिनमें सभी लोकसेवक एक तरह से शामिल हैं, १९ मार्च तक सेवाग्राम पहुँच जाना होगा। जितना समय अब रहा है, उसमें दूर के प्रांतों से पूरी पदयात्रा करके पहुँचना शायद संभव नहीं होगा। सेवाग्राम के निकट क्षेत्रों और पास-पड़ोस के प्रांतों से तो पदयात्रा द्वारा पहुँचने के लिए अभी भी काफी समय है। इस प्रकार दूरी, समय की आवश्यकता, सेवाग्राम और आस-पास के जिलों एवं क्षेत्रों पर पड़नेवाले भार वगैरह सभी दृष्टियों से पदयात्रा-कार्यक्रम के व्यवस्थित संयोजन की आवश्यकता है।

इस सिलसिले में निम्न कुछ सुझाव विचारणीय हैं :

(१) वर्धा या सेवाग्राम स्टेशन पर उतरने के बाद सम्मेलन में शामिल होने वाला हर व्यक्ति पदयात्रा द्वारा अर्थात् पैदल सेवाग्राम पहुँचे। वर्धा से सेवाग्राम सामान पहुँचाने की ठीक व्यवस्था हो।

(२) दूर प्रांत से आने वाले भाई-बहन पाँच सात-दस की टोलियाँ बना कर अपने प्रांत में ही विशेष-विशेष स्थान से पदयात्रा आरम्भ करें। वर्धा पहुँचने की तारीख से पदयात्रा की अवधि का अनुबंध जोड़ा जाय। अपने प्रांत में या उसके बाद भी दूसरे-दूसरे प्रांतों में जितने दिन तक पदयात्रा चल सकती हो, वह की जाय और अन्त में रेल द्वारा वर्धा पहुँचा जाय। इसलिए, दूर प्रांत से आने वालों को अपनी पदयात्रा टोली के सिलसिले में तीन बातें मुख्यतः तय करनी चाहिए : (अ) किस तारीख को वर्धा पहुँचना है? (आ) उस हिसाब से पदयात्रा किस तारीख को पूरी होनी चाहिए? (इ) किस स्टेशन से कौनसी रेल पकड़ना, ताकि सेवाग्राम निर्धारित तारीख पर पहुँचा जा सके। यह सब विचार करके प्रांत में हर पदयात्रा टोली निकले।

(३) सर्व-सेवा संघ की बैठक में भाग लेने वाले व्यक्तियों को वर्धा पहुँचने का समय १९ मार्च की शाम और केवल सम्मेलन में भाग लेने वालों को वहाँ पहुँचने का समय ता० २५ मार्च की शाम का मानना चाहिए और उसी के अनुसार पदयात्रा में वहाँ से रवाना होकर जितने दिन रहा जा सकता है, यह तय करना चाहिए।

(४) वर्धा जिले के और पास-पड़ोस के प्रांतवालों के पदयात्रा-कार्यक्रम की संयोजना ऐसी होनी चाहिए कि विभिन्न पदयात्रा-टोलियाँ वर्धा विभिन्न दिशाओं से यथासंभव इस तरह पहुँचें, ताकि वर्धा के आसपास के गाँवों पर प्रतिगाँव एक या दो से अधिक टोलियों का भार न पड़े।

(५) प्रबंध समिति की बैठक ता० १६-१७ मार्च को भी विनोबाजी के पास होगी, इसलिए प्रबंध-समिति के सदस्यों को पदयात्रा में ऐसी तारीख तक भाग लेना चाहिए कि जिस तारीख को वे रेल, बस वगैरह पकड़ कर ता० १४ मार्च की शाम या १५ को एकदम सवेरे तक दिल्ली पहुँच सकें। दिल्ली से १९ मार्च को भी विनोबाजी के पड़ाव के लिए रवाना होना होगा। प्रबंध समिति में शामिल होने वाले व्यक्ति पदयात्रा आरम्भ करके वर्धा की तरफ चल सकते हैं, पर दिल्ली पहुँचने की दृष्टि से अमुक तारीख को पदयात्रा छोड़ कर रेल या बस द्वारा उन्हें निर्दिष्ट समय पर दिल्ली पहुँचना चाहिए।

(६) पदयात्रा-मार्ग में आने वाले अपने व परस्पर के पड़ाव व वहाँ की व्यवस्था वगैरह के बारे में पहले से संबंधित कार्यकर्ताओं से संपर्क करें और व्यवस्था बिठायें। पदयात्रा-टोलियाँ अपने कार्यक्रम, मार्ग आदि की सूचना सर्व-सेवा संघ कार्यालय, वाराणसी और सम्मेलन कार्यालय, सेवाग्राम दोनों जगह दे दें। प्रांत-प्रांत के संबंधित कार्यकर्ताओं और सर्वोदय संगठनों को तो सूचना दी ही जाय।

> महान तपस्विनी राबिया को किसीने पूछा : "अम्मा, क्या आपका अल्ला ताला पर प्रेम है?"
>
> महान साध्वी राबिया ने उत्तर दिया, "हाँ"
>
> उसने फिर पूछा : "क्या आप शैतान को धिक्कारती हैं?"
>
> राबिया शांत स्वर में बोलीं : "खुदा के प्रेम में मैं इतनी डूबी रहती हूँ कि शैतान को धिक्कारने की फुरसत ही नहीं मिलती!"

(७) किसी भी क्षेत्र में एक से अधिक पदयात्रा-टोलियों का भार आ पड़ने से टोली और क्षेत्र के निवासियों, दोनों को कठिनाई हो सकती है। इसके लिए यह उपयुक्त होगा कि हर प्रांत में सम्मेलन-पदयात्रा संयोजन का जिम्मा किसी एक कार्यकर्ता या एक समिति को सौंपा जाय। वह प्रांत भर से सम्मेलन के लिए निकलने वाली पदयात्रा-टोलियों के मार्ग, तिथि-क्रम वगैरह का तो संयोजन करे, साथ ही दूसरे प्रांतों की पदयात्रा टोलियाँ, जो उस प्रांत से गुजरने वाली हों, उनका भी संयोजन करे।

(८) सम्मेलन में शामिल होने वाले हर कार्यकर्ता की दृष्टि यह रहे कि सम्मेलन में पहुँचने के लिए वह थोड़े या अधिक दिन की पदयात्रा अवश्य करे, ताकि देश भर में पदयात्रा का एक वातावरण बन जाय।

लखनऊ में शांति-कार्य

ता० १६ जनवरी, '६० को लखनऊ विश्वविद्यालय में पुलिस-दल के नियुक्त होने तथा नगर में धारा १४४ लग जाने के कारण छात्रों में उत्तेजना बढ़ गई। फलस्वरूप ता० १८ जनवरी को विश्वविद्यालय में सामूहिक प्रवेश करने के कारण पुलिस-दल ने लाठी-चार्ज करके छात्रों को भगाने का प्रयत्न किया। इस पर उत्तेजित छात्रों ने रोड़े-पत्थर चलाना प्रारम्भ किया। नगर के एक सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री कृष्णचन्द्र सहाय उस मौके पर उपस्थित थे। उन्होंने अकेले ही छात्रों की भीड़ में जाकर उन्हें समझाना शुरू किया कि तुम लोग ईंट-पत्थर चला कर जीत नहीं सकते। लेकिन 'खादीधारी' समझ कर श्री सहायजी को कुछ छात्रों ने मारने की कोशिश की। उनमें भी कुछ छात्र परिचित थे, क्योंकि हर कालेज से उनका गहरा सम्बन्ध है। अतः लड़कों ने बातें मान लीं। फिर भी जुलूस बराबर आते रहे और बीच-बीच में पत्थरबाजी होने लगती थी। इसी अवसर पर श्री प्रकाश मित्तल तथा श्री पतित पावनजी इन कार्यकर्ताओं ने भी शांति कायम करने का प्रयास किया।

पुलिस-अधिकारियों को भी सहायजी तथा अन्य भाइयों ने समझाया कि 'आप लोग शांत हो जाइये। हम छात्रों को शांत कर लेंगे।'

वहाँ का पुलिस अधिकारी उन लोगों की बातों से इतना प्रभावित हुआ कि एक पुलिस जब पत्थर उठा कर छात्रों को मारने को बढ़ा, तो इतने में पुलिस अधिकारी ने उस पुलिस नवजवान को डाँटा और कहा कि 'मैं तुम्हें रोक चुका हूँ कि पत्थर मत चलाओ। लोग व्यवस्था कर रहे हैं।'

तीन रोज कार्यकर्ताओं ने वातावरण शांत करने का सतत प्रयास किया। डी० ए० वी० कालेज के निकट श्री इन्द्रपाल सिंह गौतम, जिनके चोट भी लगी, तथा विक्टोरिया पार्क के पास श्री महेश चतुर्वेदी ने सराहनीय कार्य किया।

कार्यकर्ताओं को शांति व्यवस्था रखने में काफी सफलता प्राप्त हुई। नगर में रोड़े-पत्थर चलना बंद हो गये। केवल छुटे बालक ही गड़बड़ करते रहे।

ता० २१ जनवरी को स्टेडियम के पास श्री सहाय को पुलिस ने उस समय गिरफ्तार कर लिया, जब वे पुलिस वालों से कह रहे थे कि इनको मारो मत, जेल भेजो। थोड़े समय बाद ए० डी० एम० के आदेश पर उनके आदेश से श्री सहायजी रिहा कर दिये गये। मजिस्ट्रेट ने शांतिसैनिक के बिल्ले बनवाने को भी कहा। सर्वोदय मंडल की ओर से सर्वोदय शांति-सैनिक नाम के बिल्ले बनवाये गये।

—गणेशदत्त वाजपेयी

श्री कुमारप्पाजी के लिए शोक-सभाएँ

निम्न स्थानों से स्व० कुमारप्पाजी के लिए हुई शोक सभाओं के समाचार प्राप्त हुए हैं। सभाओं में उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के संकल्प किये गये।

श्री गांधी आश्रम, सेवापुरी, सर्वोदय मंडल, फैजाबाद, केसरदी लमकुही रोड, देवरिया, खादी भंडार, नरसिंहपुर, अन्त्योदय भवन, नागपुर; मोंटफा, इन्दौर सर्वोदय आश्रम, धीनाज (संथाल), ग्राम स्वावलम्बन क्षेत्र, बारचट्टी, गया, शाहबाद जिला सर्वोदय मंडल, आरा।

जीवन का प्रत्यय पाने की साधना

दादा धर्माधिकारी

[साधना-केन्द्र में चलने वाले सहअध्ययन-शिविर में ता० ३० जनवरी की सुबह एक समारोह का आयोजन हुआ। गांधीजी की पुण्यतिथि थी शंकररावजी का जन्म-दिन है, इसकी जानकारी एक दिन पहले ही मिली थी। इसका जिक्र करते हुए श्री दादा धर्माधिकारी का निम्न प्रवचन हुआ। —सं०]

आज त्रिविध संयोग है और शुभ संयोग भी है। आज पुण्यात्माओं का शहीद दिन है और कुछ संयोग ऐसा भी है कि हमारे इस परिवार के सबसे ज्येष्ठ व्यक्ति शंकररावजी का जन्मदिन भी है।

एक बात बार बार मेरे मन में उठती है कि मनुष्य ने मृत्यु का स्वीकार कभी नहीं किया। जिस दुनिया में हम रहते हैं, वहाँ कहा जाता है कि सबसे निश्चित घटना मृत्यु है। फिर भी जब से मनुष्य का विकास मैं जानता हूँ, तब से आज तक मनुष्य ने अब तक उसका स्वीकार नहीं किया है। दुनिया में यह सबसे बड़ा चमत्कार है। मनुष्य के पास ज्ञान है, अनुभव है, अवलोकन है, फिर भी सबसे सिद्ध होता है कि मनुष्य मृत्यु नहीं चाहता। इसमें दुर्दम्य जीवन निष्ठा है, इसे मैं मनुष्य का सत्त्व मानता हूँ।

मानव मिटना नहीं चाहता

मानव ने मृत्यु को भी मित्र बनाने की चेष्टा की है। मनुष्य मृत्यु को मित्र इसलिए बनाना चाहता है कि वह उससे प्रेम करना चाहता है, जीवन का साथी, सहायक, पोषक बनाना चाहता है। लेकिन उसकी आकांक्षा, सारा प्रयत्न जीवन की तरफ है। मैंने अपनी त्रिलोकिका में उल्लेख किया है कि दुनिया में ऐसा कौन है, जो नहीं जानता कि मेरी मृत्यु के बाद मैं विस्मृति में खो जाऊँगा। लेकिन यह होते हुए भी जिसकी गोद में वह मरता है, उसकी ओर इस तरह से देख कर जाता है, मानो पूछ रहा है कि मेरी मृत्यु के बाद मुझे याद तो करोगे न! मेरे शरीर के जाने के बाद भी कहीं न कहीं मेरा निवासस्थान रह जाय, यह उनकी आकांक्षा रहती है। प्रेमिका की आँखों में, माता के वात्सल्य में, पिता के स्नेह में, संत की करुणा में, कहीं-न कहीं मेरा निवास रहे। मनुष्य मिटना नहीं चाहता। अभी यहाँ भजन गाया, जिसका अर्थ है कि हड्डियाँ जलती हैं, बाल जलते हैं, मगर तू मरता नहीं। दूसरा भजन हुआ कि तुम पारस हो, मेरा स्पर्श करो तो सोना हो जायेगा! भगवान् शंकर की आरती गायी जाती है 'स्पर्शमणिर्मलिन माम् सुवर्णं कुरु'—तू स्पर्शमणि है, मैं मलिन लोहा हूँ, मेरा सोना बना दे। मैं मर्त्य हूँ, मुझे अमर बना दे। मनुष्य की यह आकांक्षा, प्रयत्न वस्तुस्थिति के विरुद्ध रहा है।

कालातीत जीवन

यह तो मनुष्य की मनुष्यता है। इस मनुष्यता में अमरता, अनन्त काल है, कोई अवधि नहीं है। इसलिए मनुष्य में काल की, समय की आकांक्षा नहीं है।

> शिशिरवसन्तौ पुनरायातौ,
> पुनरपि मासः पुनरपि वर्षः।

—शिशिर भी आता है, वसंत भी आता है। मास भी आता है, वर्ष भी आता है। 'पुनरपि रात्रिः पुनरपि दिवस'—रात दिन बार-बार आते हैं और जाते हैं।

शंकराचार्य ने कहा था कि सब आते हैं और जाते हैं, पर एक चीज आती तो है, फिर जाती नहीं और एक जाती है तो लौटकर आती नहीं। जवानी जाती है, तो आती नहीं और बुढ़ापा आता है, तो जाता नहीं। इसे सापेक्ष जीवन कहते हैं। निरुपाधिक जीवन कालातीत होता है, जिसमें काल-तत्त्व जीवन का भक्षण नहीं कर सकता। 'काल: क्रीडति, गच्छत्यायुः'—काल का खेल होता है और हमारी जान जाती है! इस तरह से काल जिसके जीवन के साथ खेल नहीं सकता, वह शुद्ध जीवन है।

प्रत्यय पाने का प्रयास

मैं तीन वर्षों से यहाँ देख रहा हूँ कि शंकरराव जी ने इस जीवन का प्रत्यय पाने की चेष्टा की है। किसने पाया है, किसने नहीं पाया, यह कहना बहुत मुश्किल है। सूरदास ने गाया है, "गूँगो मीठे फल को रस अंतर ही जाने।" गूँगे ने मीठा फल खाया तो वह क्या बतायेगा कि कैसा मीठा है, दूसरा ही बतायेगा कि यह प्रत्यय है। दर्द जिसे होता है उसे प्रत्यय होता है। अपना दर्द आप जानते हैं, दूसरे के दर्द का अनुमान हो सकता है।

फिर वहाँ से नहीं आना होगा

आज ३० तारीख है। उन्होंने जन्म दिन के अवसर पर उपवास का आरम्भ किया, इसलिए कि मृत्यु का साक्षात्कार करूँगा। उसके दरवाजे पर जाऊँगा और वहाँ से लौटूँगा। नचिकेता गया था। उसको वरदान माँगने के लिए कहा, तो उसने कहा कि तेरे पास आने के बाद वरदान क्यों! तेरे पास तो अभय है। "अभयं वै जनकः प्राप्तोऽसि।" यमराज ने कहा कि तू निर्भयता को प्राप्त हो गया। तो तेरे लिए ऐसी कोई भी जगह नहीं कि जहाँ जाना है, लौटना है। तुम्हें कल जाना था और आज नहीं है, ऐसी कोई जगह नहीं। ऐसा जीवन देश-काल से मुक्त है। यह एक नित्य जीवन है, जिस नित्यता का काल, घड़ी, पंचांग के साथ सम्बन्ध नहीं है।

द्वंद्वातीत अवस्था

शहीदों के बारे में यही सोचते हैं कि शहीद शरीर के समर्पण से अमर हो गये! अगर अमरपन के लिए शरीर छोड़ने की आवश्यकता है, तब तो शरीर है, वह अमर नहीं रह सकता। जिसका जीवन समर्पित है, वह अमर है।

> ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
> ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।। (गीता, ४.२४)

सारी अग्नि वही है, होता भी वही है, आहुति भी वही है, मन्त्र भी वही है। सब वही है। इसका अर्थ जीवन में जितने साधन हैं, उपकरण हैं, सर्व-साधन हैं, सारे-के सारे हमारे अपने जीवन के साथ घुल-मिल जाते हैं। दूसरा द्वन्द्व रहने नहीं पाता। एक मनुष्य मनुष्य में, दूसरा मनुष्य प्रकृति में और तीसरा मनुष्य तथा समाज में विरोध रह जाता है। अन्तिम विरोध है, मनुष्य के अपने व्यक्तित्व में। ये चतुर्विध वहाँ नहीं रह सकते, जहाँ स्नेह के रस में ये सब घुल जाते हैं। मिट्टी, मिश्री, नमक भी घुल जाता है। तीनों के रस उसमें समा जाते हैं। इस प्रकार के स्नेहमय, सार्वत्रिक व्यापक जीवन जो हो, उसको अमर जीवन कहा गया है। लड़की गा रही थी: "मन तोहि केहि विधि कर समझाऊँ सोना हो तो सुहाग मँगाऊँ।" यह करने की आवश्यकता तब नहीं, जब भास्वर प्रेम। सारे के सारे एकरस होकर घुल जाते हैं।

नया प्रकाश

यह सार्वजनिक प्रेम है, भावरूप प्रेम है, उसकी साधना नहीं हो सकती। उसका तो साक्षात्कार प्रत्यय हो सकता है। 'तस्य तावदेव चिरम्' साक्षात्कार के लिए तभी तक देर है, जब तक देखा नहीं। देखने के बाद कुछ देखने को रह नहीं जाता। यह प्रेम निर्मित नहीं होता, यह प्रेम भीतर है तो आवरण दूर होते ही उमड़ पड़ता है। इस तरह की एक वृत्ति जीवन में हो। जीवन की यह एक दिशा है। ईश्वर दोनों वर्षों से शंकररावजी की आज तक की सारी की सारी जीवन यात्रा में नया प्रकाश आ रहा है।

हम सब मिल कर भगवान् से प्रार्थना करें कि उनकी जो मनोकांक्षा है, उसकी परिपूर्ति हो; क्योंकि प्रेम का जो प्रकाश है, जो अपने को हृदय में प्रकाशित करता है और उसकी आभा दूसरे के हृदय में पैठती है, यह उसका गुणधर्म है।

वे समर्थ, सक्षम शरीर लेकर, जाग्रत और सावधान बुद्धि लेकर बहुत दिनों तक उसी मार्ग का आक्रमण करने के लिए रहें, यही हमारी भगवान् से अन्तिम प्रार्थना है।

> भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा।
> भद्रं पश्येमाक्षभिः यजत्राः।
> स्थिरैरङ्गैः तुष्टुवांसस्तनूभिः।
> व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

स्वतंत्र, स्वस्थ, विधायक सहचिंतन की प्रक्रिया

चर्चा करते समय बहुधा हम अपने मत के प्रति आग्रही बन जाते हैं। मतवैभिन्य की उदारता को भूल जाते हैं और अपने विचार को लादने की कोशिश करते हैं। यह भी हिंसा का ही एक प्रकार कहा जा सकता है। अपने मत का सही प्रतिपादन और उसके प्रति न्याय भी इस तरीके से नहीं हो सकता, इसलिए भी आवश्यक है कि हम चर्चा में अहिंसक और विचारों में सहिष्णु बनें। चर्चा के अहिंसात्मक विज्ञान का हमें विकास करना है। यूरोप में शान्तिवादियों का एक ऐसा समुदाय है, जो चर्चा करते वक्त निम्न-लिखित नियमों का खास तौर से पालन करते हैं।

(१) हम अपने विचारों के प्रति अनाग्रह भाव रखें।

(२) सब कोई कोशिश करें कि वह स्वयं कम से कम बोले और अधिक से अधिक सुने।

(३) चर्चा करने वाले सब सक्रिय श्रवणशील (ऐक्टिव लिसनर्स) रहें।

उपर्युक्त नियम विचारों की उदारता और सहिष्णुता के लिए आवश्यक है। इस प्रकार के अहिंसक सहचिंतन के लिए आवश्यक है कि जगह-जगह स्वाध्याय-मंडल प्रारम्भ हों और विभिन्न रुख तथा विचार रखने वाले साथी पक्षनिरपेक्ष भाव से एक जगह इकट्ठे होकर उस स्थान और समाज के मुख्य समस्याओं पर विधायक ढंग से सहचिन्तन करें। ऐसे स्वाध्याय-मंडल समाज में शोधकार्य का काम करेंगे।

—मणीन्द्रकुमार

सम्मेलन, संघ की बैठक और विचारणीय मुद्दे

बारहवाँ अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन २६, २७ और २८ मार्च १९६० को सेवाग्राम (वर्धा) में होगा। श्री विनोबाजी इस सम्मेलन में नहीं पहुँचेंगे। पदयात्रा का जो क्रम आज वे चला रहे हैं, उस कारण तो वे वहाँ पहुँच ही नहीं रहे हैं। इस बार सम्मेलन उनकी गैरहाजिरी में चले, यह भी उनकी इच्छा है। स्वाभाविक ही सम्मेलन का दायित्व इस कारण बढ़ जाता है।

इस दायित्व के बढ़ने का दूसरा भी महत्त्व का कारण है। गांधीजी के हमारे बीच से उठने के बाद शीघ्र ही सर्वोदय-विचार में श्रद्धा रखने वाले और उस क्षेत्र में काम करने वाले पहली बार सेवाग्राम में ही मिले थे। उसी समय सम्मेलन के विचार का जन्म हुआ था। बारह वर्ष बाद वहीं फिर सम्मेलन हो रहा है। एक छोटा युग इस बीच निकला है। सम्मेलन अर्थात् सर्वोदय के सेवकों के लिए आत्म-चिंतन, आत्मविश्लेषण, आत्म-परीक्षण, पूर्व का सिंहावलोकन और आगे के लिए सबल-संचय का यह एक सामयिक, सहज, आवश्यक अवसर है।

सम्मेलन संस्था नहीं है और न संस्था का कोई अधिवेशन-समारोह वह है। लेकिन संगठन न होते हुए भी सर्वोदय-विचार व कार्यक्रम के कार्यकारी संगठन-संचालक सर्व-सेवा-संघ के लिए वह एक तरह से प्रेरक और सचेतक है। सम्मेलन के अवसर पर और उसके माध्यम से विनोबाजी ने सर्वोदय-क्षेत्र की जीवन-गंगा की एक के बाद दूसरी धाराएँ दी हैं और सर्व सेवा-संघ उनमें अनुप्राणित हुआ है, बढ़ा है, विकसित हुआ है।

सम्मेलन का कोई औपचारिक स्वरूप या संगठन नहीं है। वह एक मेलामात्र है, जो भाईचारे के प्रदर्शन का, भाई-बहनों के मिलने, भेंटने, विचार विमर्श करने का वर्ष में एक बार अवसर प्रस्तुत कर देता है। विनोबाजी उसकी प्रेरकशक्ति और संघ उसकी संयोजना-सेविका है। विनोबाजी इस बार नहीं होंगे, इसलिए सर्व-सेवा संघ को सेवा-साधना के लिए अधिक सतर्क, अधिक मुस्तैद रहना होगा।

इस प्रकार इस बार सम्मेलन का विशेष रूप में महत्त्व है और सम्मेलन व सर्व-सेवा-संघ, दोनों पर विशेष दायित्व है।

पिछले एक-दो वर्ष से सम्मेलन के पूर्व सेमिनार या विचार गोष्ठी का आयोजन होता रहा है। इस बार संघ की ही चार-छः दिन जम कर बैठने की आयोजना है। संघ की बैठक सम्मेलन से तुरन्त पूर्व २० मार्च से २५ मार्च तक रखी गयी है।

इस प्रकार चार छः दिन जम कर बैठने की आज आवश्यकता है, यह ऊपर के संदर्भ से भी स्पष्ट है। संघ की इस बैठक की सफलता उसमें शामिल होने वाले भाई बहनों की उस निमित्त तैयारी और पूर्व से उस सम्बन्ध की चिन्तना तथा वहाँ चर्चा में सबके सक्रिय योगदान पर निर्भर है।

इस पूर्वचिन्तना के लिए कुछ विचार व सुझाव प्रस्तुत करना मेरे इस छोटे प्रबंध का अभिप्राय है।

(१) सबसे पहले "भूदानमूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति" के स्वरूप और तत्संबंधी कल्पना को एक बार पुनः स्पष्ट कर लेने की आवश्यकता है। नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विभिन्न क्षेत्रों में इस क्रांति की दृष्टि से हम क्या परिवर्तन चाहते हैं, यह एक बार फिर से विचार कर लिया जायगा तो ठीक होगा।

(२) उस परिवर्तन के लिए जो कार्यक्रम हमारा चलता रहा है, वह पर्याप्त है या उसमें नवीनता लाने की आज जरूरत है, यह सोचना होगा। यदि वैसी जरूरत है तो वह नवीन कार्यक्रम क्या होगा, उस सबको भी स्पष्ट करना चाहिए।

(३) विनोबाजी की पदयात्रा का अथवा उनका अन्य कार्यक्रम इस संदर्भ में कैसा क्या रहे, यह भी विचारणीय है और उससे बारे के स्पष्ट सुझाव उन्हें दिये जाने चाहिए। सर्वोदय क्रान्ति कार्यक्रम के प्रेरक आज विनोबाजी हैं, अतः आगे व संघ के और सम्मेलन के कार्य, सुझाव वगैरह केन्द्री निर्णायक वे ही हैं। फिर भी ठीक होगा कि सारे देश के संदर्भ में कुछ सुझाव रखें। विनोबाजी सम्मेलन से और संघ से खुद गैरहाजिर रह कर यही आशा व अपेक्षा रखते भी हैं।

(४) जागतिक व समय समय पर उठने वाले प्रश्नों व समस्याओं के बारे में संघ क्या कहे और क्या करे, उस कहने करने का तरीका क्या हो, यह भी संघ को सोचना व तय करना चाहिए।

मुख्यतः, निम्न कुछ मुद्दों पर उसकी ओर से स्पष्ट दृष्टि मिलनी चाहिए

(क) चीन-भारत, पाकिस्तान आदि के संबंध।

(ख) देश के आगामी चुनाव और समय-समय पर होने वाले संसद, धारासभा आदि के उपचुनाव तथा ग्रामपंचायत, जिला परिषद्, नगर-पालिका, कारपोरेशन आदि के छोटे बड़े चुनाव।

(ग) विद्यार्थी, मजदूर, महिला आदि वर्गों से संबंधित समस्याएँ।

(घ) खादी, ग्रामोद्योग, ट्रस्टीशिप आदि अर्थात् विकेंद्रित अर्थव्यवस्था के संदर्भ में देश की एक के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजनाएं।

(ङ) स्वावलंबी ग्राम समाज की कल्पना और कल्याणकारी योजनाओं का तालमेल।

(५) सर्वोदय समाज रचना संबंधी वर्तमान आन्दोलन व कार्यक्रम के संदर्भ में निम्न विषयों पर चर्चा करके आगामी रूपरेखा तय करना।

(क) भूदान, ग्रामदान, संपत्तिदान आदि की प्राप्ति का कार्यक्रम।

(ख) भूदान में अब तक प्राप्त भूमि का वितरण।

(ग) ग्रामदानी गांवों का निर्माण कार्य, उसकी पद्धति, उसके लिए साधन और कार्यकर्तावर्ग का तत्संबंधी दायित्व। ग्राम-स्वराज्य की ओर बढ़ने बढ़ाने की योजना।

(घ) ट्रस्टीशिप प्रयोग और तत्संबंधी स्पष्ट कुछ योजना।

(ङ) सर्वोदय कार्य व सर्वोदय-संगठनों की आर्थिक व्यवस्था का जनाधार का स्वरूप।

(च) सर्वोदय-साहित्य, पत्र-पत्रिका आदि का स्वरूप, उनके प्रचार का कार्यक्रम।

(छ) भारतीय राज्य को नया मोड़ देने संबंधी श्री जयप्रकाश नारायणजी का प्रबन्ध और तत्संबंधी अमली कार्यक्रम।

(ज) देश से बाहर सर्वोदय विचार में रुचि रखने वालों से संपर्क व हमारे कार्य में उनका योग।

(झ) सर्व-सेवा-संघ, लोकसेवक, शान्तिसैनिक, सर्वोदय-मंडल आदि का गठन, परस्पर संबंध, व्यवहार आदि।

(ञ) संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों व समितियों के कार्य, उनमें परस्पर संपर्क-सहयोग (कोआर्डिनेशन) उनके आर्थिक साधन व उनके लिए कार्यकर्ता शक्ति आदि का संयोजन।

इनमें मुख्य हैं: (१) नयी तालीम का कार्यक्रम (२) शान्ति-सेना-समिति, (३) गोसेवा समिति (४) खादी-ग्रामोद्योग-समिति, (५) प्रयोग-समिति, (६) साहित्य-प्रकाशन व संपादन समिति, (७) निर्माण-समिति, (८) समन्वय-आश्रम, गया, (९) सेवाग्राम-आश्रम, (१०) विश्वनीडम्, बंगलोर (११) साधना-केन्द्र, काशी, (१२) प्रधान केन्द्र।

संघ की बैठक में उपर्युक्त विषयों पर विस्तार से चर्चा होनी चाहिए। और उस चर्चा में से भावी कार्यक्रम की निष्पत्ति होनी चाहिए यह हुआ तो सम्मेलन को स्पष्ट चिन्तना व कार्रवाई में बड़ी मदद मिलेगी। इस पर साथियों को विस्तार से अपने विचार भेजने चाहिए।

वाराणसी —पूर्णचन्द्र जैन, मंत्री

ता० १३-२-६०

संमेलन में सफाई-प्रबन्ध के लिए

सफाई-शिक्षण शिविर

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सेवाग्राम में ६ मार्च से १९ मार्च तक एक सफाई शिविर होगा। शिविर का संचालन श्री कृष्णदास शाह करेंगे। शिविर में स्थानीय कार्यकर्ताओं के अलावा अन्य प्रान्तों से कुछ २५ जिम्मेवार कार्यकर्ता प्रवेश पा सकेंगे। आगामी सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर सुव्यवस्थित ढंग से बड़े पैमाने पर सफाई-कार्य करने की दृष्टि से इसका इस बार विशेष महत्त्व है। रचनात्मक संस्थाएँ अपनी ओर से एक जिम्मेवार कार्यकर्ता को, जो सफाई शिक्षण में रुचि रखता हो, इस शिविर में भेज सकती हैं। शिविरार्थी को ५ मार्च की शाम तक सेवाग्राम पहुँच जाना होगा। शिविरार्थी अपने साथ बिस्तर, पहनने के खादी के कपड़े, चरखा सरंजाम, नोटबुक और लेखन सामग्री आदि अवश्य लावें। आने-जाने का प्रवास खर्च संस्था को ही वहन करना होगा। शिविर की अवधि में भोजन और निवास का प्रबन्ध शिविर की ओर से किया जायगा।

सर्वोदय सम्मेलन, सेवाग्राम —राधाकृष्ण, मन्त्री

अहिंसक क्रांति की प्रक्रिया : २

दादा धर्माधिकारी

[गतांक से आगे]

शारीरिक और भौतिक स्तर पर मनुष्य मनुष्य को बनाने की आकांक्षा न रखें। सब मिल कर हर मनुष्य के स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए परिस्थिति पैदा करें। लेकिन एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को बनाने की आशा करे, यह गलत चीज है। इसका सम्बन्ध सर्जरी से, मेडिसिन से, औषध-उपचार से, शल्य क्रिया से, इन सबसे नहीं है। इसका सम्बन्ध विज्ञान से है। हम जब कहते हैं कि विज्ञान बनायेगा, वहाँ हम कहते हैं कि यह चीज गलत है। दूसरे अर्थ में भी गलत है। समझ लीजिये कि मुझे हृद्रोग हो गया और हार्ट 'पंपिंग' ठीक नहीं कर रहा है, बीच बीच में रुकता है। एक डाक्टर कहता है कि कोई दूसरा मनुष्य आज अभी-अभी मरा है, उसका कलेजा हम आपके शरीर में लगा देते हैं। लगा दीजिये। दूसरी दफा मेरा दिमाग खराब होने लगता है। डाक्टर कहता है कि दूसरा ब्रेन लगा देता हूँ। सी० वाय० चिंतामणि, जो 'लीडर' पत्र के पुराने संपादक थे, उनके बेटे की खोपड़ी चाँदी की है। इस तरह से वह दिमाग भी लगा देता है। तू दिल ही लगाना चाहता है तो फिर राणा प्रताप का लगा दे और दिमाग ही लगाना चाहता है तो आईन्स्टाइन का लगा दे। यह अगर हो सकता तो ऐसा करने वाले पहले अपने ही शरीर में वह दिल और दिमाग क्यों नहीं लगा देते, जिससे उन्हें सन्त का हृदय और प्रतिभाशाली मनुष्य का मस्तिष्क मिल जाता! यह आकांक्षा अपने में अधम आकांक्षा है, उत्तम आकांक्षा नहीं है। शरीर के स्वास्थ्य को ठीक कर देना है, यहाँ तक ठीक है; लेकिन शरीर पर कब्जा नहीं करना चाहिए। अपने लिए उसे शरीर नहीं बनाना चाहिए। मिट्टी के पुतलों को सिपाही बना लिया—अपने लिए। मृतकों को पोशाक पहना कर खड़ा कर दिया—अपने लिए। पर स्वास्थ्य और आरोग्य की परिस्थिति पैदा करनी है, वह अपने लिए नहीं। विज्ञान का उपयोग करना है, मनुष्य के शरीर पर अधिकार करने के लिए नहीं।

'प्रोपगंडा' नहीं, प्रकाशन हो

दूसरा स्तर यह है कि विज्ञान का उपयोग दूसरे की बात समझने के लिए हो, अपनी बात समझाने के लिए कम हो। अब यहाँ वह दूसरा शब्द आ जाता है, जिसका नाम है 'प्रोपगंडा'—अपनी बात समझाने की कोशिश। सारा का सारा 'प्रोपगंडा' अपनी बात समझाने की कोशिश के लिए है, दूसरे की बात समझने की कोशिश के लिए नहीं। यहाँ विनोबा का वाक्य आयेगा : 'प्रकाशन चाहिए, प्रसिद्धि नहीं।' प्रकाशन क्या करता है? अपनी बात के साथ साथ दूसरे की बात को भी प्रकाशित करता है। एक चिराग दूसरे चिराग को जलाता है। 'प्रोपगंडा' अपनी ज्योति को जलाता है, दूसरे की ज्योति बुझाता है।

अहिंसक 'रेजिमेंटेशन' से बचिये

'रेजिमेंटेशन' का मतलब हम यह समझ लेते हैं कि अपनी बात जबर्दस्ती से दूसरे पर लादना। लेकिन इतना ही मतलब नहीं। अन्तर साधनों के प्रयोगों, दीगर तरीकों से हम काम लेंगे। लेकिन दूसरे की बात को समझने के लिए, अपनी बात को समझाने के लिए नहीं, तभी रेजिमेंटेशन से बचेंगे। नहीं तो हम 'नान-वायलेंट रेजिमेंटेशन' बनायेंगे, जिसमें शस्त्र और सत्ता नहीं रहेगी। शस्त्र-निरपेक्ष, सत्ता निरपेक्ष 'रेजिमेंटेशन' होगा। वह भी हम नहीं चाहते। साइकोलाजिकली हम क्या चाहते हैं? दूसरे पर कब्जा करना। जहाँ सूक्ष्म दबाव होता है, जैसे कि आपने उपवास कर दिया, या किसी दूसरे ऐसे उपाय का प्रयोग किया कि जो देखने में और वास्तव में भी अहिंसक है, वहाँ भी वह समझाने का उपाय है, समझने का नहीं।

चमत्कार की महिमा

तीसरा स्तर धर्म का आता है, जिसको हमने आध्यात्मिक स्तर माना है। धर्म के सम्बन्ध में हम दो प्रकार के प्रयोग करते हैं। एक योगविद्या का और दूसरा सम्मोहन विद्या का। दोनों में चमत्कार है, आश्चर्य चमत्कार का है। मराठी भाषा में एक कहावत है कि 'चमत्काराशिवाय नमस्कार नाही!'—चमत्कार के बिना नमस्कार नहीं। आपके साधुत्व को मानने के लिए कोई तैयार नहीं है। या तो आप में चमत्कार की शक्ति हो या सम्मोहन की ही शक्ति हो। एक पतिव्रता स्त्री अपने पति की सेवा में लगी हुई थी। उस वक्त का यह धर्म था। परम धर्म में वह स्त्री लगी थी। उतने में एक बहुत बड़ा तपस्वी ब्राह्मण उसके दरवाजे पर अलख जगाता हुआ भिक्षा के लिए आया। लेकिन वह तो पति सेवा में लगी थी, इसलिए पाँच मिनट देर हो गयी भिक्षा देने में, तो वह ब्राह्मण रोका हो गया। वह आयी तो बेचारे ने आँखें बन्द कर लीं। झोली में भिक्षा ले ली और ऊपर देखा! पेड़ पर एक पक्षी बैठा था, वह मर गया! उसने कहा, 'देखो, अगर मैं आपकी तरफ देखता तो आपके साथ ऐसा ही होता।' इस तपस्वी ब्राह्मण की आँख में इतनी शक्ति थी। दूसरे दिन भी भिक्षा लेने आया। भिक्षा देने के बाद उस पतिव्रता स्त्री ने सूरज की तरफ देखा तो सूरज छिप गया। यह देखते ही तपस्वी ने नमस्कार किया और कहने लगा कि 'मैं हार गया। आपमें मुझसे ज्यादा शक्ति है।' आइजनहावर कहता है कि हमारे पास हैड्रोजन बम है, तुम्हारा कुछ नहीं चलेगा, तो क्रुश्चेव कहता है कि मेरे पास स्पुटनिक है! वैज्ञानिक आविष्कार का चमत्कार हो या योगक्रिया का चमत्कार हो या सम्मोहन का चमत्कार हो या तो कुछ मैजिक, हिप्नाटिज्म, विच क्रैफ्ट या फिर धर्म की सत्ता हो। यह भी 'रेजिमेंटेशन' की ही पद्धति है।

सबको समान सुविधाएँ मिलें

अन्त में हम आते हैं आध्यात्मिक स्तर पर, जिसे लोगों ने 'आयडिआलॉजिकल डोमिनेशन' या वैचारिक साम्राज्य कहा है— विश्व पर मेरा विचार छा जाय। विश्व वैसा बने, जैसा मैं चाहता हूँ। यह तो मेरी ही कल्पना का विश्व बनाना हुआ न! भगवान् प्रसन्न हो गये। वरदान माँगा। बहुत अच्छा आलीशान मकान हो, बगीचा हो, गैरेज हो, मोटर हो, ड्राइवर हो, दो रसोइये हों, घंटे-घंटे में सामने आकर हाथ जोड़ कर खड़े हों। यह आपकी कल्पना का जगत् हुआ। फिर विनोबा को कहेंगे कि यहाँ रहने आओ। तो वे कहेंगे कि मेरी तो तबीयत ही नहीं लगती यहाँ! फिर कहाँ रहोगे। मुझे जंगल में अच्छा लगता है, वहीं रहूँगा। तो क्या फिर हम आपके पास जंगल में आयें? यहाँ दोनों का झगड़ा शुरू हो गया। अब हरएक अपने अपने नक्शे को नारे बनाये। अब हरएक अपने अपने नक्शे में दूसरे को रखना चाहता है। 'आयडिआलाजिकल डोमिनेशन' अध्यात्म के क्षेत्र में होता है। आपने कहा कि हम दुःखी हैं। हम जैसा मकान चाहते हैं, वैसे मकान में नहीं रह सकते, मुझे जितना भोजन चाहिए, उतना नहीं मिलता। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जितनी आवश्यक सुविधाएँ हैं, उनको हम 'फीजिकल कंफर्ट' कहते हैं। उनका संयोजन सब मिल कर करेंगे। यह विवेक यहाँ शंकररावजी ने किया। जब यह साधना केन्द्र की बात आयी, तो उन्होंने कहा कि शारीरिक सुविधाओं का जहाँ तक सम्बन्ध है, वे सबके लिए समान होंगी। सबको प्राप्त हो सकेंगी। इसका मतलब यह नहीं है कि जबर्दस्ती सबको प्राप्त करनी ही पड़ेंगी। उपभोग आवश्यक नहीं है, सुलभता होनी चाहिए। जितनी सुविधाएँ हैं, सर्वसुलभ होंगी, एक हद तक सबके लिए समान होंगी। इसके आगे समझौता नहीं होगा। 'रेजिमेंटेशन' नहीं होगा, इसका मतलब है कि हम दूसरे के शरीर का उपयोग उसकी इच्छा के विरुद्ध नहीं कर सकेंगे। मनुष्य का मतलब संस्था भी और संस्था का मतलब समाज, राज्य सब। अब इसमें 'रेजिमेंटेशन' के साथ साथ क्या आया? 'कान्स्क्रिप्शन'—उसका अर्थ है, जबर्दस्ती सिपाही बनाना। युद्ध के समय हम कहते हैं कि हर व्यक्ति को सिपाही बनना ही पड़ेगा। हम क्या कहते हैं कि एक हाथ से आगे किसी मनुष्य के शरीर का उपयोग उसकी मर्जी के खिलाफ कोई नहीं कर सकेगा। हर क्या होगा? 'फीजिकल कम्फर्ट'-स्वास्थ्य और शारीरिक उपभोग के लिए जितना आवश्यक है, सबके लिए समान होगा। इससे आगे 'कान्स्क्रिप्शन' नहीं।

समाज-परिवर्तन हम करेंगे, इसका मतलब इतना ही है कि हम अपने लिए ऐसी स्थिति, ऐसी भूमिका प्राप्त कर लेंगे। 'हम' कह रहे हैं, तब मैं अकेला नहीं रह जाता हूँ। जब 'हम' कहते हैं तो सामाजिक पुरुषार्थ भी आ जाता है। यहाँ पर विनोबा और कृष्णमूर्ति में भेद मालूम होगा, वो वे दर्शन में एक-दूसरे के बहुत नजदीक हैं। लेकिन एक कहता है कि सामूहिक मुक्ति और सामूहिक पुरुषार्थ होना चाहिए, एक व्यक्ति दूसरे की परिस्थिति का निर्माण करे। यही नहीं, सबको साथ मिल कर करना चाहिए—सहकर्म, सहपुरुषार्थ, सहवीर्य। जिस परिस्थिति का निर्माण करना है, सब मिल कर करेंगे, क्योंकि परिस्थिति सबके लिए है। इसलिए उसमें स्थूल कर्म होना चाहिए, स्थूल पुरुषार्थ होना चाहिए या भोजन के बाद जिसे आप उपनिषद् में कहते हैं : 'सहवीर्यं करवावहै'। तब हम कहते हैं कि इसमें सहवीर्य होना चाहिए, क्योंकि क्लेश और कष्ट सामुदायिक हैं, संकट सामुदायिक हैं, इसलिए पुरुषार्थ सामुदायिक होना चाहिए। जो कोई दिक्कत है, सामुदायिक है। जैसे बाढ़ आती है, भूकम्प आता है, शहर में आग लग जाती है—ये सामुदायिक संकट हैं। उन्हें बचाने के लिए पुरुषार्थ भी सामुदायिक चाहिए। सामुदायिक अगर होगा और 'रेजिमेंटेशन' नहीं होगा, तो वह पुरुषार्थ सर्वसम्मत होना चाहिए। नहीं तो जो कम हैं, उन्हें जबर्दस्ती से जो ज्यादा हैं उनकी बात माननी पड़ेगी। इसलिए वह सर्वसम्मत होना चाहिए। सामुदायिक पुरुषार्थ सामुदायिक मौके के लिए है। इसलिए सामुदायिक पुरुषार्थ सर्व सम्मति से हो। अल्प-संख्या पर बहु-संख्या की सत्ता न हो। बहु संख्य अल्प संख्य को समझायें। समझाने के लिए पहले क्या करें? बहु-संख्य अल्प-संख्य को समझें। जिस व्यवस्था में समझना और समझाना अधिक से अधिक होता है, वह लोकतन्त्र कहलाता है। व्यवस्था होगी, लेकिन वह व्यवस्था 'साथ डिस्कशन', विचार विनिमय से होगी। [समाप्त]

भूदान पत्र-पत्रिकाएँ

पिछले नौ बरस के भूदान-आन्दोलन के कारण स्तान के सार्वजनिक जीवन में कम-से-कम एक परिणाम यह आया है कि भिन्न-भिन्न राजनैतिक और गुटों के लोग जिनका मामूली तौर पर एक इकट्ठा होना मुश्किल होता है, भूदान की ओं में एक ही मंच पर खुशी से आते हैं और उनमें लेते हैं। पैठवाड की ग्रामदान परिषद् इस माने एक अद्भुत बड़ी सिद्धि थी। उसमें कांग्रेस, प्रजा-लिस्ट पार्टी, कम्यूनिस्ट आदि दलों के और कुछ प्रमुख नेता भी विनोबाजी की उपस्थिति में एक जगह इकट्ठे हुए थे।

इसी तरह एक दूसरी निष्पत्ति इस आन्दोलन की हुई है कि हिन्दुस्तान की हर मुख्य भाषा में सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएँ निकलने लगी हैं। इस तरह ही विषय, विचार या आदर्श को लेकर शायद ही भाषा में इतनी पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हों।

समय साप्ताहिक, दशवारिक, पाक्षिक, मासिक स कर देशभर में सभी भूदान आन्दोलन से धित कुल १० पत्रिकाएँ निकलती हैं। सर्वोदय की ओर या एक एक अंग को लेकर निकलने वाली काएँ—जैसे 'मंगल प्रभात', 'नयी तालीम' आदि नहीं हैं।

हर भाषा में भूदान संबंधी पत्रिका निकलती है, ना ही नहीं, इन पत्रिकाओं के कारण एक-दूसरी षा के कुछ खास खास लेखकों का अन्य भाषा भाषी गों और साहित्यिकों में प्रवेश हुआ है और इससे जो हम देश की 'भावनात्मक एकता' (इमोशनल टिग्रेशन) कहते हैं, उसमें काफी मदद मिली है। नोबा ने तो यह सुझाव भी दिया है कि हर भाषा पत्रिका एक ही लिपि में—नागरी में छपे, जिससे न्न भिन्न भारत के लोगों का दूसरी भाषाओं से सहज परिचय हो सके और उन्हें जानने, समझने, पढ़ने की रुचि जागृत हो।

हिन्दुस्तान में एक लिपि का प्रश्न देश की भिन्न-भिन्न भाषाओं को परस्पर निकट लाने के लिए और देश की आन्तरिक एकता को मजबूत करने के लिए वैसे भी जरूरी है। यूरोप में भिन्न भिन्न भाषाएँ होते हुए भी अधिकतर की लिपि एक है। इसी तरह हिन्दुस्तान में भी देश की मुख्य-मुख्य भाषाओं की एक लिपि होने में दिक्कत नहीं होनी चाहिए। इस बीच विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होने वाली भूदान पत्रिकाओं को यह सुझाव दिया गया है कि वे हर अंक में खास-खास लेखों के शीर्षक नागरी लिपि और हिन्दी भाषा में भी दें, जिससे हर भाषा वालों को दूसरी भाषाओं के खास खास लेखों का परिचय हो सके। आगे आवश्यकतानुसार उनका अनुवाद भी एक दूसरी भाषा में दिया जा सकेगा, ऐसी आशा है।

"भूमि क्रान्ति"

हमारी पत्रिकाओं में इधर एक और स्वागत-योग्य वृद्धि हुई है। मध्य प्रदेश के सर्वोदय मंडल के मुख-पत्र के रूप में इन्दौर से "भूमिक्रान्ति" साप्ताहिक निकलने लगा है। वैसे तो यह पत्र करीब डेढ़ बरस से एक मासिक बुलेटिन के रूप में निकलता था, पर अभी हाल ही में यह साप्ताहिक बना दिया गया है और छपकर प्रकाशित होने लगा है। हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक और विचारक श्री काशिनाथ त्रिवेदी के सम्पादन में यह सुन्दर ढंग से निकल रहा है। सर्वोदय विचार और जीवन से सम्बन्धित एक एक पहलू को लेकर हर अंक में कुछ विशेष सामग्री दिये जाने के कारण पत्रिका और भी उपयोगी हो गयी है। इस प्रकार हिन्दी भाषा में तीन भूदान पत्रिकाएँ हो गयी हैं। हिन्दी भाषा के विशाल क्षेत्र को देखते हुए यह उचित ही है।

× × ×

भूदान-आन्दोलनसम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएँ

भाषा	नाम तथा पता	शुल्क
हिन्दी	भूदान यज्ञ (साप्ताहिक) राजघाट, वाराणसी	६)
"	ग्रामराज (दशवारिक) किशोर निवास, जयपुर	३)
"	भूमिक्रान्ति (साप्ताहिक) गांधी भवन, यशवन्त रोड, इन्दौर	४)
उर्दू	भूदान-तहरीक (पाक्षिक) राजघाट, वाराणसी	३)
"	सर्वोदय विचार-धारा (पाक्षिक) जालंधर (पूर्व पंजाब)	३)
अंग्रेजी	भूदान (साप्ताहिक) राजघाट, वाराणसी	६)
"	सर्वोदय (मासिक) २४, श्रीनिवासपुरम्, तंजोर (मद्रास)	४( )
गुजराती	भूमिपुत्र (दशवारिक) रावपुरा, बड़ौदा	३)
मराठी	साम्ययोग (साप्ताहिक) पवनार, वर्धा	४)
सिंधी	नयी दुनिया (पाक्षिक) ब्लॉक १२, आदीपुर (कच्छ)	३)
पंजाबी	भूदान (पाक्षिक) जालंधर (पूर्व पंजाब)	३)
बंगला	भूदान-यज्ञ (साप्ताहिक) नं० ५२, कॉलेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता १२	६)
तेलुगु	साम्यवाद (साप्ताहिक) कॉलेज स्ट्रीट, तेनाली, जि० गुन्टूर	६)
"	सर्वोदयम् (मासिक) २४, श्रीनिवासपुरम्, तंजोर	३)
तमिल	ग्रामराज्यम् (साप्ताहिक) गांधी स्मारक, रत्न बाजार, मद्रास-१	५)
मलयालम	भूदान कारहम् (साप्ताहिक) कोझीकोड-१	४॥)
कन्नड़	भूदान (साप्ताहिक) चामराज पेठ, बंगलौर	४)
उड़िया	ग्रामसेवक (साप्ताहिक) कानपुरबाजार, कटक	८)
"	ग्रामदान (मासिक) भूदान कार्यालय, अंगुल (उड़ीसा)	२)
असमी	भूदान यज्ञ (पाक्षिक) पान बाजार, गौहाटी	६)

पंजाब में विनोबा के साथ — पहला दिन

हम लोग २ फरवरी को लुधियाना स्टेशन से करीब २२ मील दूर विनोबाजी के पड़ाव पर, कमालपुरा पहुँचे। पंजाब में उन दिनों काफी सर्दी थी। जब हम लोग वहाँ पहुँचे, उस समय विनोबाजी धूप में कंबल ओढ़े लेटे हुए थे। थोड़ी देर बाद उठे। सर्वप्रथम श्री प्रभावती दीदी ने बाबा को प्रणाम किया। बाबा को उठते देख कर श्री जयप्रकाशजी मिलने के लिए उनके पास गये। इन दो महापुरुषों का मिलन देखते ही बनता था! एक का दूसरे के प्रति कितना आदर, कितना स्नेह और कितना विश्वास है, इसका अन्दाज दोनों के मिलन के समय ही लगाया जा सकता है! भीड़ हटी। दोनों ने चर्चा प्रारम्भ की। चर्चा के समय बाबा के साथ श्री जयप्रकाशजी, श्रीमती प्रभावती बहन, श्री दादा भाई तथा अमेरिकन मित्र प्रो० हरबर्ट फिशर विविध विषयों पर करीब घंटे भर चर्चा करते रहे।

* * *

'बाबा के वर्ग की घंटी बजे तो मुझे लौजियेगा,' ऐसी सूचना मुझे देकर श्री जयप्रकाशजी अपने बिस्तर पर कुछ पढ़ने लगे। तभी मुझे मालूम हुआ कि बाबा का वर्ग भी चलता है। वर्ग की प्रतीक्षा थी ही। ढाई बजे घंटी बजी। चंद मिनटों में पदयात्री दल तथा हम लोग बाबा के पास उनके विश्राम-स्थल पर एकत्रित हुए। श्री बालुभाई ने अपने उपस्थिति-रजिस्टर से लोगों की हाजिरी लगायी। बाबा के वर्ग में हम लोगों का दाखिला भी बिना 'प्रवेश शुल्क' के ही हो गया। २७ छात्र उपस्थित थे। आचार्य की वाणी से अनुभवसिद्ध, आचारयुक्त विचार धारा बहने लगी। आधे घण्टे तक सब उसमें गोते लगाते रहे।

बाबा ने कहा, "सूर्य अकेले चलता है। वह किसी का प्रतीक्षा नहीं करता, क्योंकि उसमें प्रकाश है। सूर्य की तरह वही व्यक्ति अकेला चल सकता है, जिसके अन्दर ज्ञान रूपी, विचार-रूपी सूर्य का प्रकाश और वैराग्य-रूपी अग्नि हो।"

शान्ति के सन्दर्भ में बाबा ने कहा, "आज हमारी क्रान्ति के तीन आधार होंगे: सर्वजनाधार, श्रमाधार और तीसरा निर्भयाधार।"

दाहिने हाथ की कलाई में दर्द होने के कारण आजकल बाबा सूतयज्ञ नहीं कर पाते। वैसे तो उनका स्वास्थ्य ठीक ही है। —कन्हैयाभाई

विनोबा का 'परिणामकारी संदेश'

महाराष्ट्र के पूर्व खानदेश जिले में जब 'सर्वोदय प्रचार सप्ताह' मनाया गया था, तब जिला प्रतिनिधि ने विनोबाजी से संदेश देने के लिए अनुरोध किया था। विनोबाजी ने उस भाई को लिखा—

"सर्वोदय प्रचार-सप्ताह के लिए आप मुझसे संदेश चाहते हैं। मैं क्या भेजूँ? १९५१ से सप्ताह मेरा सर्वोदय-प्रचार चल ही रहा है। इससे अधिक परिणामकारी सन्देश मैं क्या दे सकता हूँ?

लगभग सौ वर्ष हरिनाम करते हुए मनन शेष रहते पदयात्रा से विरोध अपने आप समाप्त हो जाता है।"

राजस्थान में भूमि-प्राप्ति, वितरण, नाकाबिल काश्त भूमि का विवरण

[दिसम्बर, '५९ अंत तक]

क्रम जिला	भूमि प्राप्ति एकड़	दाता	भूमि-वितरण एकड़	परिवार	अब तक खारिज भूमि एकड़	दाता	शेष भूमि	ग्रामदान
१. जयपुर	९,८०७	५५५	७,७३२	१,२०५	२,०७५	७६	–	१५
२. भरतपुर	२,१२५	१३६	९१०	२८१	३००	१	३,०१५	–
३. टोंक	१४,२८५	८७४	८,१५९	१,४४३	१५७	३०	५,९७४	२
४. सीकर	१,८६४	८७	१,१२४	१८४	२९	४	७११	२
५ अलवर	३६५	३६	१३८	४४	१२२	२	१०५	–
६. झुंझुनू	४१०	२०	११४	४४	३९६	५	–	१
७ सवाईमाधोपुर	४४९	७१	२५६	५९	१९३	४४	–	–
८. जोधपुर	८,३७६	२४३	५,०६५	१०६	३६४	२४	२,१४७	–
९. जैसलमेर	४,२२२	४३	२८०	३०	२२	२	३,९२५	–
१०. पाली	११,०९२	११२	४,२८२	३०२ वितरण नहीं		–	६,८१०	१
११ बाड़मेर	४६	३	–	–	,,		४६	–
१२. जालौर	६१८	३०	६१८	५३	,,		–	–
१३. सिरोही	२,९१७	१३३	१२०६	१३७	,,		१,७११	१
१४ नागौर	३४,३०७	२,०५६	१६,९०५	८११	८,३७७	८६७	९,०२५	२३
१५. बीकानेर	२,४७,३१६	१७२	७,२८३	३२० वितरण नहीं			२,३५,८३३	१
१६. चुरू	११,९९३	१,०७३	१,०६४	२६८	,,		६९२१	–
१७ गंगानगर	२,४००	७७	[illegible]	–	११७५	२	४२५	–
१८. चित्तौड़गढ़	१७,४०७	५३	१,००३	३५५	६१	१	१६,३४३	१५
१९. उदयपुर	८,८९५	८२	४,०२३	१०५४ वितरण नहीं			४,८४२	१३
२० भीलवाड़ा	१३,८६१	३०२	९,५५०	२४७८	,,		३,३११	६
२१. डूंगरपुर	१,९२६	७३	४६	१०	,,		१८८०	१३०
२२ बांसवाड़ा	२२,७९३	९७४	८,४६४	५२०	६२	४	१४,२२७	२२
२३ कोटा	७,२५०	३४४	३,००७	३८३ वितरण नहीं			४,२४३	१
२४ बूंदी	६२९	२३	५२३	८९	,,		१०६	–
२५ झालावाड़	१,२४३	१४०	३३३	८५	,,		९१०	–
२६ अजमेर	५,९१४	५९३	६१५	१०९	,,		५,२९९	१
कुल	४,३१,२५०	८,५९६	८५,६८५	१०,२३५	१३,१२८	१,०६२	३,३०,६३३	२३१

महाराष्ट्र ग्रामदान-नवनिर्माण समिति

बम्बई में महाराष्ट्र ग्रामदान नवनिर्माण-समिति की सभा ५ जनवरी को आचार्य भिसे की अध्यक्षता में हुई। सभा के सदस्य आचार्य भिसे, गोविन्दराव शिंदे, ठाकुरदास बंग, श्रीराम चिंचलीकर, गोपालराव देशपांडे, वसंतराव नारगोलकर और दामोदरदास मूँदड़ा उपस्थित थे। श्री गोविन्दराव शिंदे को संयोजक नियुक्त किया। पश्चिम खानदेश जिले के सातपुड़ा सर्वोदयमंडल के अंतर्गत अक्कलकुआ तहसील के ११४ ग्रामदानी गाँवों का एक 'ब्लाक' बनाया गया। ग्राम स्वराज्य की पंचवार्षिक योजना सरकार के पास भेजने के लिए तैयार की गयी थी, जिस पर चर्चा हुई। तय हुआ कि श्री शा० कृ० पाटिल योजना के लिए सरकार से यथाशीघ्र स्वीकृति प्राप्त कर लें, ताकि १ अप्रैल से प्रत्यक्ष काम शुरू हो। नवनिर्माण समिति के कार्य की जाँच करने के लिए श्री गोविंदराव शिंदे, श्रीराम चिंचलीकर और वसंतराव नारगोलकर की एक उपसमिति बनायी गयी। सब ग्रामदानी गाँवों में ग्रामस्वराज्य सोसाइटियाँ बनाने का काम श्री चिंचलीकरजी करेंगे। विकास-योजना बनाना और ग्राम सभाओं को मार्गदर्शन करने का काम श्री वसंतराव नारगोलकर करेंगे।

●

बिहार-प्रान्तीय अखण्ड पदयात्रा-टोली

बिहार प्रान्तीय अखण्ड सर्वोदय पदयात्रा टोली द्वारा धनबाद जिले में क्रमशः श्री वैद्यनाथ प्र० चौधरी, श्री ब्रजमोहन शर्मा एवं श्री गोपाल चौधरी के मार्गदर्शन में ता० १५ जनवरी से १ फरवरी तक १८ पड़ावों पर कुल १४६ मील की पदयात्रा हुई। फलस्वरूप १२८ गाँवों से सम्पर्क स्थापित हुआ। इस अवधि में 'भूदान यज्ञ' पत्रों के ५६ ग्राहक बने, १७३ रुपये की साहित्य एवं ७४० रुपये की खादी बिक्री हुई। टोली में १२ भाई निरन्तर घूमते रहे। जिला सर्वोदय मंडल के ७१ वर्ष के वृद्ध अध्यक्ष श्री शीतलप्रसाद तायल बराबर पदयात्रा में साथ रहे तथा खादी भंडार के कार्यकर्ताओं का भी पूरा सहयोग मिला। २ फरवरी से संताल परगना जिले में पदयात्रा प्रारम्भ हुई है। ३ मार्च को टोली का प्रवेश मुंगेर जिले में होगा। यद्यपि धनबाद औद्योगिक जिला है, फिर भी पदयात्रा में यह अनुभव हुआ कि सर्वोदय प्रचार के लिए लोगों की विशेष अनुकूलता है।

●

विनोबाजी का पता :
मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल,
पो० पट्टीकल्याण, जिला-करनाल (पंजाब)

सूचनाएँ :

खादीग्राम में शिक्षा की व्यवस्था

वर्तमान शिक्षा-पद्धति के दोष की बात आज सब करते हैं, लेकिन उसके स्थान पर कोई दूसरी शिक्षा न मिलने के कारण हम लोग अपने बच्चों को मजबूर होकर प्रचलित स्कूलों में ही भेजते हैं। फल यह होता है कि आज गाँव गाँव में शिक्षित जवानों की बेकारी बेहद बढ़ती जा रही है। इस कमी को पूरा करने के लिए श्रमभारती-खादीग्राम में एक विद्यालय प्रारम्भ किया गया है। हमारा यह प्रयत्न होगा कि इस विद्यालय से निकले छात्र शिक्षित हों और साथ ही अपने पुरुषार्थ से कमाई करने लायक भी हों। शिक्षा की अवधि आठ साल की होगी। इस अवधि में विद्यार्थियों को बढ़ईगिरी और लोहारी का पूरा ज्ञान दिया जायगा। साथ-साथ खेती-विज्ञान का इतना ज्ञान प्राप्त हो जायगा, जिससे ये विद्यार्थी अपने घर तथा गाँव की आमदनी में वृद्धि कर सकें। पढ़ाई मैट्रिक के स्तर तक करा दी जायगी। कोर्स पूरा करने पर 'उद्योग विशारद' का प्रमाण-पत्र दिया जायगा।

अपर प्राइमरी यानी दर्जा ४ (बेसिक या गैर बेसिक) लड़कों को प्रथम वर्ष में भर्ती किया जायगा। आयु १२ से १४ वर्ष तक की होनी चाहिए। विद्यार्थियों की सहायता के लिए इस तरह मासिक छात्रवृत्ति भी मिलेगी :

पहले वर्ष	५ रु.	दूसरे वर्ष	९ रु.
तीसरे वर्ष	१३ रु.	चौथे वर्ष	१७ रु.
पाँचवें वर्ष	२२ रु.	छठे वर्ष	२८ रु.
सातवें वर्ष	३४ रु.	आठवें वर्ष	४० रु.

छात्रवृत्ति के अलावा प्रत्येक छात्र के लिए अध्ययन की व्यवस्था रहेगी। विद्यालय के वर्ग १५ मार्च '६० से आरम्भ होंगे। दाखिल होने के लिए आवेदन-पत्र २८ फरवरी तक खादीग्राम में आ जाने चाहिए। [illegible] वर्ष बाहर के विद्यार्थियों के लिए छात्रावास की व्यवस्था की गयी है। खर्च की व्यवस्था विद्यार्थियों को स्वयं करनी होगी।

श्रमभारती, खादीग्राम (मुंगेर) —आचार्य

●

उ० प्र० सर्वोदय-सम्मेलन-विशेषांक

'भूदान-यज्ञ' का आगामी ता० २६ फरवरी '६० का अंक गाजीपुर शहर में २७ फरवरी से [illegible] फरवरी तक होने वाले उत्तर प्रदेशीय छठे सर्वोदय सम्मेलन के निमित्त विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा। इसमें उत्तर प्रदेश के ग्रामदान-भूदान आन्दोलन, निर्माण-कार्य, श्री गांधी-आश्रम, गांधी स्मारक-निधि आदि से संबंधित लेख रहेंगे।

●

सर्व सेवा संघ के प्रधान केन्द्र का नया पता

१ मार्च ई० से अखिल भारत सर्व सेवा संघ, प्रधान केन्द्र का कार्यालय [illegible] से स्थानांतरित हो रहा है। अब कार्यालय राजघाट स्थित नये भवन में आ रहा है, अतः [illegible], वाराणसी के पते पर डाक भेजी जाय। भविष्य में डाक भेजने का पता इस प्रकार रहेगा : अखिल भारत सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी १-

—मंत्री, सर्व सेवा संघ

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन १२८५
वार्षिक मूल्य ५) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२२५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११८७५ एक प्रति १३ नये पैसे

होकर उम्मीदवारों का चुनाव करें, चुनाव में होने वाली अन्य बुराइयों को रोकने के लिए सक्रिय कदम उठायें और पार्टी के आधार पर वोट न दें इत्यादि बातों का प्रचार करना जरूरी है।

श्री जयप्रकाशजी ने भारतीय राज्य-व्यवस्था की पुनर्रचना के बारे में जो सुझाव अभी हाल में रखे हैं, वे कैसे नीचे से कार्यान्वित हो सकते हैं, इसका निश्चित कार्यक्रम भी इसमें शामिल हो जाता है। १९६२ के आम चुनाव भी आ रहे हैं। ऐन चुनाव के मौके पर हम मतदाता के शिक्षण की कुछ बात सोचें और अपनी नीति तय करें, उसकी अपेक्षा इस सम्मेलन में ही हमें यह तय करनी चाहिए। आगे समय नहीं रहेगा।

यह कहने की जरूरत नहीं है कि यह सब हमें हमारे चुनाव में खड़े न होने की और पक्षातीत रहने की भूमिका कायम रख कर ही करना है।

उद्योगीकरण के खिलाफ जनमत का संगठन

(६) दूसरी बड़ी चीज, जो देश को तेजी के साथ गलत दिशा में ले जा रही है और जहाँ से फिर वापस मुड़ना उसके लिए कठिन होगा वह उद्योगीकरण की योजनाएँ हैं। विदेशों से लिये जाने वाले कर्जे, देशी और विदेशी पूँजीपतियों के गठबन्धन का जाल, बड़े-बड़े केन्द्रित उद्योगों के कारण होता जा रहा शहरीकरण और समाज का विघटन—ये सब थोड़े समय में ही प्रजा के हाथ पाँव बाँध कर उसे अपने के लिए उसे गुलाम बना देंगे। पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य ही भौतिक जीवन स्तर बढ़ाते जाने का यानी आवश्यकताओं और परिग्रह को अमर्यादित रूप में बढ़ाने का है। इस तरह का गलत आदर्श नौजवानों के सामने रख कर उन्हें विनाश की ओर ले जाया जा रहा है, जिसके नतीजे हम आये दिन होने वाली घटनाओं में देख रहे हैं। मुल्क को इस खतरे से आगाह करने और इस बाढ़ को यथासंभव रोकने का हमारा धर्म है।

सरकार की इस प्रकार की नीति, या नीति-शून्यता के खिलाफ हमें आवाज उठाना चाहिए, और जनमत को संगठित करना चाहिये।

उदाहरण के लिए देहात देहात में खुलने वाली तेल, चावल आदि की मिलें या कपड़े व जमाये हुए तेल आदि के कारखानों के खिलाफ जनता को सक्रिय कदम उठाने के लिए संगठित करना चाहिये। खादी-ग्रामोद्योग के काम के जरिये लाखों लोगों से हमारा संबंध आता है, उन्हें भी आज हम संगठित नहीं कर पाये हैं। यह सही है कि खादी-ग्रामोद्योग आदि को अच्छी सरक्षण माग जनता के अपने सकल्प से ही मिल सकता है और हमें उसमें अपनी मुख्य शक्ति लगानी चाहिये। परन्तु ऐसा समझ कर विरोधी योजनाओं का खंडन न करना बुद्धिमानी का काम नहीं होगा। जनता भी हमारी बातों को थोड़े दिन में सुनने से इन्कार कर देगी।

साहित्य की योजना

(७) विचार प्रचार हमारे सारे कार्यक्रम का आधार है। इसलिए साहित्य-निर्माण, प्रकाशन और उसके प्रचार की ओर हमें विशेष ध्यान देना चाहिये। इसके लिए एक सुनियोजित कार्यक्रम सोचना चाहिये। शुरू में साहित्य की जैसी बिक्री होती थी वह आज कम-सी गयी है। इस बारे में हमें गंभीरता से सोचना होगा। हमारी पत्रिकाओं का व्यापक प्रचार इसमें शामिल है।

इस प्रकार इस समविध कार्यक्रम पर अगर हम अपनी सारी शक्ति और ध्यान एक बार केन्द्रित कर लेते हैं, तो आगामी वर्ष में आन्दोलन की गति को आगे बढ़ा सकेंगे। अन्य जो विविध रचनात्मक काम आज चल रहे हैं उन्हें रोकने का सवाल नहीं है। वे तो चल ही रहे हैं। पर उनकी कार्य प्रणाली और दिशा भी हमें इस तरह बदलनी होगी, जिससे उपरोक्त त्रिविध कार्यक्रम में उससे मदद मिले और ग्रामस्वराज की ओर बढ़ने की शक्ति जनता में पैदा हो।

उपरोक्त कार्यक्रम सारे देश की दृष्टि से यानी हर प्रान्त के लिए है। देश भर में फैले हुए सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की संगठित शक्ति इस काम में लगनी चाहिये। इनके अलावा अन्य बहुत से काम हैं, जैसे मिसाल के लिए मजदूरों में काम, पुरुषार्थ का कार्य विस्तार, आदि जो अभी तक सेना संघ का केन्द्रीय संगठन वैचारिक या प्रयोग के स्तर पर हाथ में ले सकता है और लेना चाहिये। पर उनकी चर्चा इस सम्मेलन के अधिवेशन में जरूरी नहीं है। वे काम हर एक प्रदेश समिति के लिए छोड़े जा सकते हैं। देश आन्दोलन के और बहुत से पहलू हैं, पर जैसा मैंने शुरू में कहा था आगामी सम्मेलन और वर्ष की प्रवृत्ति में हम चर्चा और ध्यान को कुछ विशिष्ट मुद्दों पर केन्द्रित करेंगे, तो ज्यादा ठोस और कारगर नतीजों तक पहुँच सकेंगे।

उत्तर प्रदेश के सर्वोदय-सम्मेलन

[एक परिचय]

इस वर्ष छठवाँ उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय-सम्मेलन २७, २८ और २९ फरवरी को गाजीपुर में होने जा रहा है। गाजीपुर, बनारस-छपरा छोटी लाइन पर स्थित है।

प्रान्तीय सर्वोदय-सम्मेलन, अपने वर्ष भर के कार्यों का लेखा-जोखा लेने और अगले वर्ष के लिए कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए आयोजित किये जाते हैं। ऐसे अवसरों पर सहयोगी कार्यकर्ताओं के मिलन और विचारों के आदान-प्रदान से कार्य के लिए प्रेरणा और स्फूर्ति मिलती है। *पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हम कार्यकर्ताओं की समस्याओं,* शांति सेना के संगठन और कार्य, सर्वोदय पात्रों की स्थापना, संपत्ति-दान, सूतांजलि, विचार-प्रचार व साहित्य-प्रचार तथा ग्रामदान-निर्माण-कार्यों पर विचार करना है। इनके लिए विभिन्न गोष्ठियाँ बनायी जायेंगी। गोष्ठियों के संयोजन करने के लिए सर्वश्री ब्रह्मदेव वाजपेयी, करण भाई, कपिल भाई, सुरेश राम भाई, श्याम चरण शास्त्री, त्रिवेणी सहायजी आदि अनुभवी साथियों से प्रार्थना की गयी है। किन्तु गाजीपुर-सम्मेलन में विचार के लिए कुछ अन्य समस्याएँ भी उपस्थित हैं। विद्यार्थियों और विद्यालयों, विशेषकर विश्वविद्यालयों के अधिकारियों के बीच उठने वाले प्रश्न उग्र रूप ले चुके हैं। उनके हल के लिए सर्वोदय-दृष्टिकोण से विचार किया जाना आवश्यक है। दूसरे, हमारे आन्दोलन का स्वरूप भी अब अधिक नियोजित और गंभीर होता जा रहा है। *सर्वोदयवालों की एक जमात बनी है। अब संगठित और सुनियोजित प्रयासों का अभ्यास पड़ना चाहिए।* इस पर भी हमें विचार कर लेना है। इसी सदर्भ में सघन क्षेत्र चाहे उन्हें सर्वोदय प्रभाव क्षेत्र कहें, चाहे शान्ति-क्षेत्र ('पीस पाकेट') कहें अथवा प्रेम-क्षेत्र बना कर कार्य करने के विषय में गंभीरता से निर्णय लेना है।

उ० प्र० में श्री गांधी आश्रम के वार्षिक अधिवेशनों और अन्य रचनात्मक संस्थाओं द्वारा आयोजित सम्मेलनों तथा भूदान-आंदोलन आरम्भ होने के बाद समय-समय पर आयोजित शिविरों में प्रदेश के कार्यकर्ताओं के परस्पर मिलने और चर्चा करने के अवसर साल में एक-दो बार बराबर आते थे और यह क्रम अब भी जारी है, पर प्रदेशीय सर्वोदय-सम्मेलन के नाम से प्रदेश भर के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का पहला सम्मेलन सन् १९५५ के फरवरी मास में कानपुर जिला के नजदीक मर्दनपुर में हुआ। स्वराज्य आश्रम, कानपुर की ओर से उसकी व्यवस्था की गयी। श्री सम्पूर्णानन्दजी ने उसका उद्घाटन किया। पू० दादा धर्माधिकारी उस सम्मेलन के अध्यक्ष थे। सन् १९५६ में उझानी(?), जिला बदायूँ में दूसरा सम्मेलन पूज्य बाबा राघवदासजी की अध्यक्षता में हुआ। पूज्य बाबा राघवदासजी पदयात्रा करते हुए अपनी टोली के साथ यहाँ पहुँचे थे। सन् १९५७ में सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन झाँसी में श्री बाबा राघवदासजी की ही अध्यक्षता में हुआ। पूरे २ वर्ष १७ दिन की यात्रा करके इस प्रदेश की यात्रा पूज्य बाबाजी ने यहीं समाप्त की। प्रदेशीय सम्मेलन का चौथा अधिवेशन देहरादून में श्री पुजारी रायजी की अध्यक्षता में हुआ। पूज्य बाबा राघवदासजी की स्मृति में श्री पुजारी रायजी ने प्रदेश की अखण्ड पदयात्रा का संकल्प यहीं लिया। उत्तर प्रदेश सम्मेलन का पाँचवाँ अधिवेशन गोरखपुर में श्री कामतानाथ गुप्त की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन के पूर्व गोरखपुर में एक शांति-सेना शिविर का आयोजन किया गया था। अब छठवाँ अधिवेशन गाजीपुर में होने जा रहा है, इन सम्मेलनों में प्रदेश भर के भूदान, सर्वोदय कार्यकर्ता और प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता एकत्र होते हैं। तीन दिन का सहजीवन शिविर का-सा व्यतीत करते हैं और सफाई के साथ पिछले काम का सिंहावलोकन और आगे के काम की योजना पर चर्चा करते हैं। इन सम्मेलनों में हर प्रदेश के सरकारी मंत्री, राजनैतिक पक्षों के प्रमुख नेता आते हैं। सम्मेलन के साथ आरंभ से ही खादी ग्रामोद्योग-प्रदर्शनों का भी आयोजन होता है और प्रदेशीय स्तर पर कताई-धुनाई प्रतियोगिता भी आरंभ से सम्मेलन के कार्यक्रम का एक अंग रही है। इस वर्ष प्रदेश भर के लोकसेवक, रचनात्मक संस्थाओं के तथा भूदान कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त राजनैतिक दल और देश के विशिष्ट नेताओं को भी आमंत्रित किया गया है। आदरणीय श्री जयप्रकाश नारायणजी गाजीपुर सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। सम्मेलन का विस्तार प्रति वर्ष होता जा रहा है। इस वर्ष प्रदेश की समस्याओं और आंदोलन के संबंध में कई विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। प्रदेश भर के कार्यकर्ता इसमें भाग लेंगे और गाजीपुर के सम्मेलन से प्रदेश को एक नयी प्रेरणा मिलेगी, ऐसी आशा है।

उत्तर प्रदेश में ग्रामदान और नवनिर्माण

पू० विनोबाजी ने उत्तर प्रदेश की यात्रा शुरू ही की थी तथा इस प्रदेश में अभी १५-१६ दिन ही बीते थे कि २४ मई सन् १९५२ को एक अपूर्व घटना घटी। हमीरपुर जिले के इटेलिया पड़ाव पर उसी जिले के मंगरौठ गाँव के एक निष्ठावान समाज-सेवी किसान दीवान शत्रुघ्न सिंह ने कुछ दानपत्र भेंट किये। उन दानपत्रों में उसी जिले के मंगरौठ गाँव के एक को छोड़ कर, जो उस समय गाँव में उपस्थित नहीं था, उस गाँव के सभी भूमिवान किसानों ने उस गाँव की कुल भूमि का दान किया गया था। भूदान के इतिहास में और भारतवर्ष के इतिहास में इस प्रकार की यह पहली घटना थी। विनोबा स्तब्ध रह गये! *जिस प्रकार अनायास तेलंगाना में पोचमपल्ली में श्री रामचन्द्र रेड्डी के दान से* भूदान का आरम्भ हुआ, जो उत्तर प्रदेश में आकर आन्दोलन बन गया, उसी प्रकार मंगरौठ के दान से अकस्मात् ग्रामदान, 'सबै भूमि गोपाल की' का आरम्भ अनायास हुआ, जो तीन वर्ष बाद उड़ीसा में आन्दोलन बना। *यह भी हो सकता है कि गाँव के सभी लोग अपनी कुल भूमि का दान कर दें,* मालकियत का विसर्जन हो, यह प्रेरणा भगवान ने मंगरौठ में दी। देश के और संसार के अनेक लोगों ने उस गाँव में आकर मानव के हृदय-परिवर्तन के उतार-चढ़ाव को देखा है और आज वह गाँव शांति का तीर्थस्थल बन गया है। उसके बाद तीन वर्ष तक उत्तर प्रदेश में फिर कोई *दूसरा ग्रामदान नहीं हुआ, तीन वर्ष के* बाद जब विनोबा ने ग्रामदान के लिए देश का आवाहन किया, तब इस प्रदेश में भी ग्रामदान के काम को फिर से *प्रेरणा* मिली और उसके बाद अल्मोड़ा, फतेहपुर, उन्नाव, रायबरेली, मिर्जापुर, इलाहाबाद, गोरखपुर आदि जिलों में छोटे-बड़े ६० गाँवों ने ग्रामदान की घोषणा की।

इस प्रदेश में सबसे अधिक ग्रामदानों की संख्या मिर्जापुर जिले के दुद्धि तहसील के आदिवासी क्षेत्र में है। यह क्षेत्र आज विकास से अछूता, ईमानदारी, सच्चाई, सादगी और त्याग को सैकड़ों हजारों वर्षों से अपने अन्दर सजोये हुए है। बाहर की दुनिया ने उस क्षेत्र का स्पर्श किया है—केवल शोषण के लिए। उस क्षेत्र के लोग जितने शोषित, पीड़ित, रोगी और अभावग्रस्त हैं, उसकी कल्पना भी साधारणतः बिना उस क्षेत्र के सम्पर्क में आये करना कठिन है। पर उस उत्पीड़न में भी उनका हृदय महान है। उनमें *परस्पर प्रेम और सहानुभूति है।*

पहला ग्रामदानी गाँव मंगरौठ

२४ मई, १९५२ को विनोबा के आवाहन पर हिन्दुस्तान में सर्वप्रथम मंगरौठ ग्रामवासियों ने अपने स्वामित्व का विसर्जन करके *'सबै भूमि गोपाल की' अर्थात्* ग्रामदान की घोषणा की थी। तभी से मंगरौठ गाँव केवल हिंदुस्तान में ही नहीं, बल्कि विश्व में प्रख्यात हो गया है। अपनी इस घोषणा के आठ वर्ष बाद आज मंगरौठ किस गति से कहाँ पहुँचा है, इसकी जानकारी करने के लिए पहले हमें यह जान लेना अधिक लाभकर होगा कि ग्रामदान के समय मंगरौठ गाँव की स्थिति क्या थी।

उ० प्र० में हमीरपुर जिले की राठ तहसील में बेतवा नदी के किनारे राठ के उत्तर तथा उरई के दक्षिण, राठ से उरई जाने वाली कची सड़क पर दोनों स्थानों के बीच १६-१६ मील की दूरी पर मंगरौठ स्थित है। ग्रामदान के समय जो १०७ परिवार उस गाँव में बसते थे, उनकी कुल जनसंख्या ५८५ थी। गाँव की कुल आराजी ५१८८ एकड़ ४३ डि० में २४२८ एकड़ ४२ डि० मजरूआ, २०२१ एकड़ ७८ डि० बीहड़, ५०० एकड़ परती तथा २३८ एकड़ २३ डि० नदी-नाला आबादी वगैरह की जमीन थी। मजरूआ जमीन में ८२८ एकड़ २५ डि० मंगरौठ निवासियों की जोत में थी। १६०० एकड़ १७ डि० मजरूआ जमीन दूसरे गाँव वाले भी अरसे से जोतते चले आ रहे थे। यह स्मरणीय है कि *मंगरौठ निवासियों को अपनी यह* जमीन सन् १९३०-३२ में स्वतन्त्रता संग्राम के सिलसिले में नौकरशाही एवं जमींदारों को जायज-नाजायज तरीकों से खुश करने वाले अमन सभाइयों को देनी पड़ी थी। दान के समय केवल ३१-२८ एकड़ का यह एक काश्तकार गाँव में मौजूद नहीं होने के कारण उस जमीन दान नहीं कर सका था। मझेर में गाँव की समस्त बीहड़, परती और मंगरौठ निवासियों की जोत में चली आने वाली जो काश्त जमीन ३१ २८ एकड़ छोड़ कर बाकी सब दान में प्राप्त हुई।

सिंचाई के साधनों का अभाव, बरसाती पानी के जमा करने की व्यवस्था का अभाव, पूँजी की कमी,

जमीन के बटाव और उसकी नपैमाइश की नातुमरूती, खाद के उपयोग की अज्ञानता आदि [illegible] के दस्तूर को निभाना मात्र था। केवल [illegible] की एक फसल वे काटते थे। रबी, धान तथा तरकारी का उत्पादन वे संभव नहीं समझते थे। कुछ लोग बड़ा कठोर परिश्रम होते हुए भी वे पूरे पराश्रयी थे। कभी पशु-पालन, ऊन, चमड़ा-रंगाई का काम चलता था, ऐसा लोग बताते थे। पर दान के समय तो सहायक उद्योग में देशी शराब मात्र का निर्माण ही वहाँ हो रहा था। गाँव के १०७ परिवारों में ६७ परिवार भूमिवान और ४० परिवार पूर्ण भूमिहीन थे। इन ४० परिवारों में भी १३ परिवार तो मात्र. बेगार एवं मेहनत मजदूरी की नाम मात्र की कमाई पर ही गुजर बसर करते आये थे। लड़कों की प्रारंभिक शिक्षा मात्र के लिए एक प्राइमरी पाठशाला वहाँ थी। लड़कियों और औरतों की शिक्षा का तो फिर कहना ही क्या, औरतों की जीवन चर्या में चूल्हा चक्की के सिवा और कोई काम नहीं था! हाँ, कुएँ वहाँ बहुत गहरे होने के कारण ३४ घड़ा पानी भरने में नित्य औरतों का समय अवश्य व्यतीत होता था!

गाँव वालों पर उस समय २५ हजार रुपये का कर्ज था। दान के पूर्व मंगरौठ न केवल अभावग्रस्त और ऋणग्रस्त था, *प्रत्युत धंधाहीन, साधनहीन* तथा अकुशल भी था—जैसा कि ब्रिटिश शासन ने हमारे देश के अधिकांश देहातों को बनाया है। मंगरौठ की एक विशेषता अवश्य थी कि वह अभावग्रस्त था, किन्तु दीनहीन या विवश नहीं। इन तमाम परिस्थितियों में *सर्वोदय के लिए अंतःप्रेरणा तथा उत्साह से उनके दान* पत्र भर गये। ३ जून '५२ को विनोबाजी के पास निवेदन पहुँचा कि अब इस भूमि की व्यवस्था आप करें *हम तो दान कर चुके हैं। अतः भूमि का* पुनर्वितरण करने के लिए विनोबाजी ने पूज्य श्री राघवदासजी तथा श्री रामगोपालजी गुप्त को वहाँ भेजा।

वहाँ प्रत्यक्ष ग्राम निर्माण कार्य का आरम्भ उसके ठीक एक वर्ष बाद, मई १९५३ में हुआ। प्रारम्भ में काम करने की जो नीति अपनायी गई, उसमें मुख्य तीन बातें थीं। प्रथम बात थी, कार्यकर्ता स्थानीय हों पर्याप्त योग्यता के अभाव में उनका ही प्रशिक्षण किया जाय। दूसरे यह कि उनकी तात्कालिक समस्याओं की पूर्ति पर विशेष ध्यान दिया जाय तथा उन्हें प्रशिक्षित किये। तीसरे, [illegible] आवश्यक [illegible] हों, बाद [illegible] भी प्राप्त की जाय।

उस समय वहाँ भोजन की समस्या सबसे जटिल थी। गाँव की कुल पैदावार ८ माह के लिए थी, पूरी [illegible] अतः सर्वप्रथम अन्न व [illegible] की पैदावार की वृद्धि को प्राथमिकता दी गयी। इस प्रयत्न का परिणाम यह हुआ कि १९५३-५४ में जहाँ मंगरौठ में पैदावार [illegible] मन थी, वहाँ १९५८-५९ में [illegible] पहुँच गयी है। गाँव के प्रत्येक किसान के घर के [illegible] के अतिरिक्त उनके खेत के मेड़ों के पास [illegible] पौधे लगाये गये। गाँव का ३ एकड़ का एक [illegible] आदर्श [illegible] करने के लिए [illegible] किया गया है। [illegible]

[और करीदे के सैकड़ों पेड़ इस समय लहलहा है। गोधन की वृद्धि के साथ-साथ मई १९५५ में वस्त्रावलम्बन का काम हाथ में लिया गया। प्रयत्न में भी अच्छी सफलता मिली। १९५५ में ५३९ वर्गगज की उत्पत्ति प्रारम्भ में हुई, वह बढ़कर ५८ में २२४३ वर्गगज तक पहुँच गयी। इसके अलावा और जाजम आदि की बुनाई का भी काम किया ा। मार्च १९५७ में गाँव की अपनी दुकान खोली ी। इसके साथ-साथ वर्षों की दो कोल्हू घानी लगायी ी। आज यह दुकान गाँव की अधिकतर आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन बनती जा रही है।

रह गया है। इसी बीच अनुपात से पूँजीगत साधनों में भी वृद्धि हुई है। ग्रामदान के पूर्व ७०-७५ प्रतिशत बीज बाहर से कर्ज रूप में आता था। यह माँग अब २०-२५ प्रतिशत रह गया है। अब तो गाँव के सामुदायिक जमीन की पैदावार से एक 'गल्ला-बैंक' का भी शुभारम्भ किया जा चुका है। गाँव का दुकान एक हजार रुपये की पूँजी से प्रारम्भ की गयी थी।

न्याय या अन्य सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए भी गाँव आगे बढ़ा है। छोटे-मोटे सभी मामले गाँव में निपटा लिये जाते हैं। इसके लिए श्रम से अर्थ तक के दण्ड भी सर्वोदय-मण्डल अपने

सबसे प्रमुख समस्या भूमि-मालकियत के विसर्जन कर देने के बाद कर्ज देने वाले महाजनों की आयी। भूमि ही कर्ज लेने वाले किसानों की हैसियत थी, उसकी मालकियत छोड़ देने पर महाजनों को अपना कर्ज वसूल करने की चिन्ता हुई और उन लोगों ने सख्ती से तकाजा आरम्भ किया।

गाँव की दूसरी समस्या भोजन की थी। मगरौठ की भौगोलिक स्थिति, जमीन का प्रकार और जलवायु ऐसी है कि अलग-अलग प्रयत्न करके इस गाँव में

अन्न-वस्त्र में हुई प्रगति का परिणाम यह हुआ कि अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर लोगों की रुचि बढ़ी। मकान, पंचायतघर, कुएँ, तालाब, स्कूल और ग्रामोद्योग-भण्डारों का निर्माण हुआ। यह कार्य कुल ३४,६५० रु० का हुआ, जिसमें १३,-१५० रु० का ग्रामीणों ने श्रमदान किया तथा बाकी एन० ई० एस० प्लानिंग, डा० बी० तथा गांधी स्मारक निधि आदि संस्थाओं से सहायता प्राप्त की गयी। गाँव की १९ एकड़ भूमि जो सम्पूर्ण सींची जा सकती है, सामुदायिक खेती के लिए रखी गयी है। गाँव के लोग अपने हित व सामुदायिक भावनाओं के प्रति पूरी तरह जागरूक हो गये हैं। १९५३ में जहाँ २५ हजार रु० कर्ज था, वहाँ ५ वर्ष बाद यह १२ हजार रु० बाकी

विवेक से देता है। कई-एक मामलों में अपराधियों ने पुलिस के सामने अपने को निरपराध घोषित करके सर्वोदय-मण्डल के समक्ष स्वेच्छया अपनी गलती स्वीकार कर यथोचित दण्ड प्राप्त किया है। ग्राम-निर्माण व विकास की दिशा में सचेष्ट मगरौठ ग्राम की प्रतिनिधि संस्था का नाम सर्वोदय-मण्डल है। वार्षिक चुनाव के द्वारा इसके पदाधिकारियों का चुनाव होता है। इस समय मगरौठ में काम करने वाले गाँव के कर्मठ और भावुक ४ कार्यकर्ता हैं। ये ही सभी कामों की देखभाल, सञ्चालन, हिसाब-किताब आदि करते हैं। कस्तूरबा ट्रस्ट की एक ग्राम-सेविका आरोग्य-केन्द्र भी चला रही है। एक बालवाड़ी और बुनियादी शाला बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करती है।

जितना अन्न उपजता था, उससे गाँव के सब लोगों को पूरे साल भर भरपेट भोजन मिलना सम्भव नहीं होता था।

यहाँ तीसरी समस्या यह आयी कि गाँव की व्यवस्था व खेती किस प्रकार हो। विचार-मन्थन हुआ, तरह-तरह के विचार आये। गाँव में सर्वसम्मति से सर्वोदय-मंडल की स्थापना हुई। दान में प्राप्त सारी भूमि पर सर्वोदय-मंडल की मालकियत सौंपी गयी। गाँव के सर्वोदय-मंडल ने व्यक्तिगत कर्जों की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। महाजन आश्वस्त हुए। गाँव की भूमि-व्यवस्था की योजना बनी। उसे स्वीकार किया। गाँव में सबको खाने भर के लिए पूरा पूरा अन्न मिले, इसके लिए सामूहिक प्रयास आरम्भ हुआ। श्री लक्ष्मीन्द्र

नवनिर्माण-कार्य की ओर !

प्रकाश भाई ग्राम सर्वोदय-मंडल की सहायता के लिए और योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए उस गाँव में पहुँचे। उनके तथा अन्य बंधुओं के सहयोग से इस ओर आशातीत सफलता प्राप्त हुई। गाँव में एक सहकारी भंडार, उपभोक्ताओं की आवश्यकता की वस्तुओं की पूर्ति के लिए अनेक कार्य कर रहा है। एक सामूहिक बाग लगाया गया है, जिसमें आम, अमरूद, पपीता आदि के वृक्ष हैं। अन्न-वस्त्र में गाँव लगभग स्वावलंबी हो गया है।

अन्य केन्द्र

प्रान्त के अन्य कुछ ग्रामदानी गाँवों में भी रचनात्मक कार्य चल रहे हैं। खादी ग्रामोद्योग आयोग की सहायता से ९ ग्राम सहायकों को प्रशिक्षण दिलवाकर ग्रामदानी गाँवों के कुछ गाँवों को केन्द्र मान कर २५०० की आबादी में कार्य करने के लिए ९ केन्द्रों पर कार्यारंभ किया गया है।

(१) भैरवाँ कलाँ (फतेहपुर)
(२) बरनपुर (इलाहाबाद)
(३) चलमोड़ी (अल्मोड़ा)
(४) चम्हनी (मिर्जापुर)
(५) नवडीहा ,,
(६) जोरूखार ,,
(७) पुरुषोत्तम ग्राम (उन्नाव)
(८) कमासिन (बाँदा)
(९) शारदापुरी (पीलीभीत)

भैरवाँ कलाँ [फतेहपुर]

लगभग ५०० परिवारों के २००० जनसंख्या का यह गाँव है। यहाँ भूमिवान २७५ तथा भूमिहीन २२५ परिवार हैं। गाँव का क्षेत्रफल लगभग ४५०० बीघा है, जिनमें ३१७० बीघों में कृषि हो रही है। बीच में ग्रामवासी अपनी निष्ठा से कुछ विचलित हुए थे, परन्तु एक स्थानीय कार्यकर्ता श्रीगयाप्रसाद सिंह के सत्प्रयत्नों से, जो कि उन्होंने अपनी आत्म शुद्धि के लिए भगवान् से प्रार्थना एवं उपवास के रूप में अपनाये, गाँववालों की चेतना जागी तथा पुनः तहसील में जाकर ग्रामदान के रूप में अपनी समस्त भूमि की मालकियत का विसर्जन करने की घोषणा की।

बरनपुर (इलाहाबाद)

६६ परिवारों तथा ३०५ जनसंख्या के इस गाँव का क्षेत्रफल १२५१ एकड़ २५ डि० है। इसमें ७१२ एकड़ ७ डि० कृषि योग्य भूमि भूदान में प्राप्त हुई है। गाँव में बसने वाले २७ भूमिवान परिवारों में से १४ परिवारदान में सम्मिलित हो चुके हैं। यहाँ भी एक ग्राम-सहायक कार्य कर रहा है। गाँव कृषि में स्वावलंबी हो चुका है और वस्त्र-स्वावलंबन की ओर भी अग्रसर है। इस क्षेत्र में ५२ चरखे चल रहे हैं, जिनमें मुनई का पुरा, सिकटा, सीमी ग्राम तथा पवना भी सम्मिलित है। हरिजन-कल्याण विभाग की ओर से हरिजन-बस्ती, कूप-निर्माण आदि कार्य किया जा रहा है।

चलमोड़ी (अल्मोड़ा)

कुल १० परिवार के इस गाँव की जनसंख्या ८० है और क्षेत्रफल है ५० एकड़। इस गाँव को केन्द्र मान कर एक ग्राम सहायक यहाँ आस पास के गाँवों को मिला कर २५०० की आबादी के क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करने के लिए बहुत प्रयत्नशील है। संबद्ध गाँवों का सर्वेक्षण भी किया जा रहा है। सार्वजनिक कार्यों में रुचि पैदा करने तथा सामाजिक भावना जाग्रत करने के लिए गाँवों में सायंकालीन प्रार्थना, सामूहिक सफाई आदि के कार्यक्रम चालू किये गये हैं।

राघोवालमपुर (रायबरेली)

इस गाँव में ५८ परिवार हैं तथा क्षेत्रफल ११८ एकड़ है। यहाँ हरिजन-परिवार बसाये गये हैं। गाँव की सड़कें पक्की कर उन पर प्रकाश की व्यवस्था भी कर दी गयी है। गाँव के उपयोग के लिए एक एकड़ भूमि पर बाग लगाया गया है। अभी कृषि व्यक्तिगत रूप से ही चल रही है तथा गाँव स्वावलंबन की ओर अग्रसर है।

इन्द्रपुर (गोरखपुर)

इस ग्राम के ११ परिवार में से ९ परिवार ग्रामदान में सम्मिलित हुए हैं, जो लगभग १० बीघा भूमि पर खेती कर रहे हैं। गाँव में १४ चरखे चल रहे हैं। निकटवर्ती ग्राम शाला में गाँव के बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। सर्वोदय मण्डल की स्थापना हो गयी है।

शारदापुरी (पीलीभीत)

पूरनपुर तहसील में बैल्हा और बमनपुरा भगीरथ में भूदान में प्राप्त लगभग ७५०० एकड़ भूमि के एक भाग पर ५ गाँवों (विनोबा नगर, भगवानपुरी, राघवपुरी, नानकसर और नानक-नगर) में पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थी बसे हैं। इन लोगों ने स्वयं अपने परिश्रम से खेती प्रारंभ कर दी है। इनमें कुल ४११ परिवार हैं। गाँव में एक बीज भंडार भी बन चुका है। गाँव वालों की सर्व सम्मति से एक केन्द्रीय समिति बन गयी है, जो गाँवों की समस्याओं को सामूहिक रूप से हल करने का यत्न करती है। सामूहिक मालकियत के आधार पर यहाँ के निवासियों ने कृषि कार्य प्रारंभ कर दिया है। कुल १७ टोलियाँ बनायी गयी हैं, जिन्हें सहकारी समितियों के रूप में रजिस्टर्ड कराने का प्रयत्न चल रहा है।

नानक-नगरी गाँव में सामूहिक श्रमदान द्वारा ४॥ हजार गज लंबी सड़क तथा उसके दोनों ओर १॥ फुट चौड़ी और १॥ फुट गहरी नाली का भी निर्माण हो गया है। सर्वेक्षण तथा मार्टबंदी कार्य समाप्त है। अधिकांश निवासियों के झोपड़े नियोजित ढंग से बन चुके हैं। अन्य गाँवों में भी इसी प्रकार का कार्य शुरू हो गया है। अब तक कुल १७००० एकड़ भूमि तोड़ी गयी तथा निवासियों को बैल-जोड़ियाँ दिये जाने की व्यवस्था हो चुकी है। गाँव के लोग और कार्यकर्ता उत्साहपूर्वक तथा प्रेम के साथ सामूहिक मालकियत के आधार पर टोलियों में खेती करने चरखे द्वारा वस्त्र-स्वावलम्बन साधन और ग्रामद्योग कार्यों में सम्मिलित प्रयास कर रहे हैं।

शांतिपुरी (नैनीताल)

पूज्य विनोबाजी की पदयात्रा जिस समय उत्तर प्रदेश में चालू थी, उस समय प्रांत के मुख्य मंत्री माननीय श्री गोविंद वल्लभ पंत ने सरकार की ओर से नैनीताल जिले की किच्छा तहसील में लगभग ३००० हजार एकड़ भूमि भूमिहीनों को बसाने के लिए भूदान-समिति को दी थी। समिति ने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया तथा यहाँ प्रांत के वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्री पुरुषोत्तमदास टंडन की 'वाटिका गृह-योजना' के अनुसार २२२ भूमिहीन पचैडाय परिवारों के बसाने का कार्य प्रारंभ कर दिया। गांधी स्मारक-निधि द्वारा इस काम में आर्थिक सहायता दी गयी है। इन परिवारों ने सर्वोदय विचारधारा के अनुकूल निर्णय किया है कि वे ग्राम स्वावलंबन एवं ग्राम-स्वराज्य के आधार पर सामूहिक जीवन सहकारिता के सिद्धांत के अनुकूल बनायेंगे। दिवंगत श्री आदित्यन् भाई ने, जो कि कम्बोडिया के निवासी थे, सुनियोजित ढंग से यहाँ के निवास आदि बनाने में अथक परिश्रम किया था, उनके अतिरिक्त गांधी निधि की ग्राम सेविका सुश्री पुष्पलाली बहन तथा एक कर्मठ एवं निष्ठावान पारसी महिला मेहर बहन ने बड़ी लगन और सेवा से यहाँ के निवासियों को अनुप्राणित किया।

प्रत्येक परिवार को २७१८० वर्गफुट भूमि बसने के लिए और ७ एकड़ के हिसाब से खेती के लिए दी गयी। इसमें इन परिवारों की गोशाला, खाद के गड्ढे और शाक सब्जी के खेत हैं। दो घरों के बीच में २० फुट चौड़ा रास्ता छोड़ा गया है। अब तक कुल १६३८ एकड़ भूमि ट्रैक्टर से जोत कर कृषि योग्य बनायी जा चुकी है। कार्यकर्ता निवास बीज-भंडार तथा पाठशाला के भवन बाह्य संस्थाओं की सहायता और ग्राम-निवासियों के श्रम से बनाये गये हैं। पानी पीने के लिए ११ नल लग चुके हैं। १४ फर्लांग का सार्वजनिक मार्ग बन गया है। और ९ हजार पेड़ लगाये जा चुके हैं। हर ८ घरों के पीछे १ पेड़ पप लगाये जाने की योजना है।

विनोबापुरी (रायबरेली)

डालमऊ तहसील में प्राप्त ४२६ एकड़ भूमि पर पिछले लगभग ४ वर्षों से भूमिहीनों को बसाने का प्रयत्न हो रहा है। अब तक ३२ हरिजन-परिवार बसाये जा चुके हैं तथा १०० बीघा भूमि पर कृषि चल रही है। गृहवाटिका योजना के अनुसार इन परिवारों के घर बनाये जा रहे हैं। अब तक गाँवों में ५९५ वृक्ष लगाये जा चुके हैं। भूमि संरक्षण के लिए मेड़ों तथा अन्य उपयुक्त स्थानों पर विशेष प्रकार की घास तथा अन्य स्थानों में बबूल के वृक्ष लगाये गये हैं।

इसी प्रकार अरखा ग्राम में भी १४ परिवार बसाये जा चुके हैं।

पुरुषोत्तम ग्राम (उन्नाव)

१२०० बीघे के एक चक पर गृह-वाटिका योजना के आधार पर भूमिहीनों के ५२ परिवार बसाये गये, जिनकी कुल जन संख्या २८० थी। इन्होंने २३० बीघा भूमि पर खेती आरंभ कर दी थी। इन्होंने जंगल झाड़ी को साफ कर भूमि को कृषि योग्य बनाया है। कुछ स्थानीय समस्याओं के कारण अधिकतर परिवार गाँव छोड़ कर चले गये। अब पुनः इस गाँव को आबाद करने का यत्न किया जा रहा है। इस गाँव में एक पंपिंग सेट भी लगाया जा चुका है।

कमासिन (बाँदा)

यहाँ ३०१ एकड़ भूमि पर 'विनोबानगर' नामक ग्राम बसाया गया है, जहाँ ४० हरिजन परिवार बसाये जा चुके हैं। इस ग्राम में एक ग्राम सहायक है, जिसने यहाँ सर्वेक्षण का कार्य पूरा कर ग्राम विकास तथा ग्राम-निर्माण के कार्य का आयोजन प्रारंभ कर दिया है।

ग्राम-संकल्पी गाँवों का विकास-कार्य

नौनिहा (बहराइच)

इस ग्राम में ३५० एकड़ भूमि पर ५० परिवारों को बसाया गया है, जो पिछड़े वर्ग के हरिजन हैं। प्रत्येक परिवार को पाँच एकड़ भूमि दी गयी है। अब तक यहाँ ५७ परिवार बस चुके हैं, जिनकी जनसंख्या ९८ है। इन सबको कृषि में स्वावलंबी होने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

जमुनहाँ बसरवाँ (गोण्डा)

'गैलन ग्राट' तथा 'कृष्णनगर ग्राट' नामक भूखण्डों पर भूमिहीनों को बसाया गया है। इन दो स्थानों पर क्रमश ३७ और ५० परिवार बसाये जा चुके हैं। जमुनहाँ में ३५ एकड़ तथ बसरवाँ में १४१ एकड़ भूमि उपलब्ध है।

सहोगिया बुजुर्ग (हरदोई)

यहाँ ८२ एकड़ भूमि पर ३१ हरिजन-परिवार बसाये गये हैं। ७४ एकड़ भूमि *आश्रम बनाने* के लिए सुरक्षित रखी गयी है।

१२६ एकड़ भूमि पर, जो कि वाजिद नगर ग्राम में है, 'प्रेमनगर' नाम से एक गाँव बसाया गया है, जिसमें २९ परिवारों में से १८ हरिजन हैं। इसी प्रकार बकरा ग्राम में ११६ एकड़ भूमि पर २४ परिवार बसाये गये हैं, जिनमें २२ हरिजन परिवार हैं।

जयप्रकाशनगर (बलिया)

इस गाँव के ५० परिवारों ने निम्नलिखित संकल्प किये हैं :

(१) भूदान में प्राप्त २३ बीघा भूमि पर कृषि-कार्य करेंगे।

(२) वस्त्र के संबंध में स्वावलंबी होकर बाजार से वस्त्र नहीं खरीदेंगे।

(३) सभी परिवार गाँवों के अन्न-भंडार में अपनी पैदावार में से आधा सेर प्रति मन के हिसाब से स्वेच्छा-पूर्वक अन्न जमा करेंगे। बाहर रहने वाले व्यक्ति *अपनी आय का सौवाँ भाग, अर्थात् प्रति रुपया १ नया* पैसा जमा करेंगे। यह कोष तात्कालिक सार्वजनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के काम में लाया जायेगा।

(४) *सभी परिवार प्रति माह आठ घंटे ग्राम-निर्माण* के कार्य में श्रमदान करेंगे।

उपर्युक्त संकल्पित कार्यों के अतिरिक्त निम्नांकित स्थानों पर *भूमिहीनों को बसाये जाने की भी योजनाएँ* हैं और बसाया जाना प्रारंभ भी कर दिया गया है।

(१) सहारनपुर : भोगपुर गाँव में २०५ एकड़ भूमि पर 'तिलकपुरी' बसाये जाने का प्रयत्न जारी है। ४० परिवार बसाये जाने की योजना है।

(२) देहरादून : क्लीमेंट टाउन के समीप १२० एकड़ भूमि पर २० परिवार बसाये जायेंगे।

(३) लखनऊ : गोपाल खेड़ा तथा किसनपुर गाँवों में भूमिहीनों को बसाया जाना प्रारंभ हो गया है। यह सब सामूहिक कृषि के आधार पर कार्य करेंगे।

(४) बाराबंकी : दीनपनाह ग्राम में ४० परिवार बसाये जाने की योजना है, जिसका नाम 'विनोबा ग्राम' रखा जायेगा।

(५) कानपुर : टौंस ग्राम में १०० एकड़ भूमि पर ४२ परिवार बसाने जा रहे हैं। इस जिले के अन्य सात गाँवों में भी इसी प्रकार १५८ परिवार बसाये जा चुके हैं।

(६) शाहजहाँपुर : *नाहेल ग्राम में १० परिवार* बस चुके हैं। दूसरे गाँव इन्दलपुर में भी २४ परिवार बसाये गये हैं।

(७) हरदोई : *करमुआ ग्राट* की १७४ एकड़ भूमि पर भूमिहीनों को बसाये जाने की योजना है।

(८) बांदा : नौगवाँ में ८६० एकड़ भूमि पर *'नेहरूपुरी' तथा नं० २ कालिंजर ग्राम की १७८ एकड़* भूमिपर 'सर्वोदयपुरी' बसाये जाने की योजना है।

(९) नैनीताल : रामियाँ ब्लाक में भूदान में *प्राप्त भूमि पर ११० परिवार बसाये गये।*

काम कुछ परिवारों में चालू है, जिन्हें विकसित तथा संगठित किये जाने का प्रयत्न हो रहा है। आस पास के *निम्नलिखित गाँव केन्द्र से संबंधित* किये गये हैं।

महोली—सुई चहान, फुलवार, पारस पानी, *महुआडीह तथा गुलरिया इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र से* लगभग ढाई हजार की जनसंख्या संबंधित होती है, जिसमें ग्राम सहायक कार्य करता है।

उपर्युक्त ग्रामदानी गाँवों के अतिरिक्त रामीबारी गाँव में भी नये लोग बसाये जा रहे हैं। बाबा चेतनदास के प्रयास से ७१८ एकड़ भूमि पर लगभग *५६ परिवारों ने कृषि कार्य प्रारंभ कर दिया है।* इन परिवारों को सिंचाई का कष्ट है, मौजूदा टूटे-फूटे दो एक कुँओं को स्वयं के परिश्रम से ये परिवार मरम्मत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। एक छोटा-सा बाँध बाँधने की योजना भी है। ये लोग समीप के जंगल से लकड़ी काट कर लाने तथा उसे बेचने का धंधा भी करते हैं।

मिर्जापुर जिले में रचनात्मक कार्य

गोविंदपुर वनवासी सेवाश्रम

इस आश्रम की स्थापना सन् १९५४ में दुद्धि *तथा अगोरी क्षेत्र के आदिवासियों की सेवा* करने के उद्देश्य से २५० एकड़ भूमि पर हुई। ग्रामवासियों में फैली दरिद्रता तथा अज्ञान दूर करने का प्रयत्न किया जा रहा है। उनमें नैतिक साहस भरा जा रहा है तथा स्वावलंबी बनने के लिए अग्रसर होने की प्रेरणा दी जा रही है। मेड़बंदी आदि का काम देकर मजदूरी के रूप में तथा अन्य प्रकार की सहायता के रूप में गांधी निधि की ओर से काफी काम हो रहा है। गाँववालों ने श्रमदान द्वारा कुआँ तथा मकान आदि भी बनाये हैं। कृषकों को औजार, बैल आदि दिये जाने की व्यवस्था की गयी है। आदिवासियों को शिक्षा तथा स्वास्थ्य के संबंध में समुचित सहायता प्राप्त हो, इस उद्देश्य से आश्रम की ओर से पाठशाला तथा दवाओं के वितरण का भी प्रबन्ध किया है। गोशाला, वस्त्रोद्योग का भी प्रबंध आश्रम में है।

इस क्षेत्र के गाँव में निर्माण सहायक समिति की ओर से तीन ग्राम सहायक तथा गांधी निधि की ओर से पाँच ग्राम सेवक विभिन्न केन्द्रों में ग्राम विकास तथा ग्राम-रचना का काम कर रहे हैं। इस जिले में प्रांत में सबसे अधिक ग्रामदान प्राप्त हुए हैं, जिनकी कुल संख्या ४३ है। सभी गाँवों में ग्रामसभाएँ संगठित हो गयी हैं तथा ८० गाँवों में सहकारी-समितियाँ भी स्थापित हो चुकी हैं।

घम्हनी

इस ग्राम में ग्राम-सहायक द्वारा कार्य आरंभ कर *दिया गया है। केन्द्र पर कताई-शिक्षण आरंभ हो* गया है तथा ग्रामीणों को चरखे तथा अन्य उपकरण दिये गये हैं। अन्य ग्रामोद्योगों को चालू करने के लिए सर्वेक्षण किया जा रहा है। रोगियों को दवा दिये जाने का प्रबंध हो गया है।

नवडीहा

इस केन्द्र पर भी एक ग्राम सहायक कार्य कर रहा है। क्षेत्र का सर्वेक्षण किया जा रहा है। चरखे, हाथचक्की तथा तेल-घानी चालू करने का प्रबंध हो रहा है।

ओरुवार

इस केन्द्र पर भी एक ग्राम-सहायक सेवाकार्य कर रहा है। इस गाँव में कुल ११६ परिवार हैं तथा १८०० एकड़ भूमि है। इस क्षेत्र का भी सर्वेक्षण किया जा रहा है। चमड़े, कंघी तथा चटाई का

आदिवासी सेवा

उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर क्षेत्र में 'सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसायटी' की ओर से तथा जौनसार बावर क्षेत्र में अशोक आश्रम, कालसी की ओर से आदिवासी सेवा का काम होता रहा। मिर्जापुर हर दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र है। 'सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसायटी' की ओर से जो कार्य वहाँ होता है, वह कुछ स्कूल और औषधालय के रूप में है। श्री पन्तजी १९५३ में उस क्षेत्र में गये। वहाँ पर इस प्रकार का कार्य होना चाहिए, जिससे वहाँ के लोगों में सामाजिक आर्थिक परिस्थिति में आमूल परिवर्तन हो, यह उन्होंने महसूस किया। 'सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसायटी' यह कार्य नहीं कर सकती। इसलिए उनके आग्रह से ही एक नयी संस्था 'वनवासी सेवाश्रम' के नाम से स्थापित हुई। पिछले ४ वर्षों से आश्रम वहाँ काम कर रहा है। वनवासी सेवाश्रम अभी सीधे गांधी स्मारक निधि की देखरेख में चल रहा है। प्रारम्भ में उस क्षेत्र की कठिनाई और परिस्थिति *के कारण योग्य कार्यकर्ता जम नहीं पाये। अब पिछले* डेढ़ वर्ष से कुछ कार्यकर्ता जमे हैं, जिससे कार्य को थोड़ा स्वरूप मिला है। एक लाख की आबादी में पूरे रूप से निर्माण का काम करना है, जो भूखों और अपंगों को सहायता का ही अभी हो सकेगा। इन आदिवासियों के ही कुछ युवक शिक्षण पा रहे हैं और इनके कारण गाँव में संपर्क जमा। इस क्षेत्र का काम कठिन है। जैसे जैसे कार्यकर्ता अच्छे मिलेंगे, वैसे वैसे हम गहराई में जा सकेंगे।

•

अशोक आश्रम, कालसी

जौनसार बावर क्षेत्र में भी धर्मदेव शास्त्री के प्रयास से इस संस्था द्वारा सामाजिक चेतना पैदा करने का अच्छा काम हुआ। बेगारवृत्ति प्रथा, नशाबन्दी, छोटे मोटे ग्रामोद्योग, प्रौढ़ शिक्षा और कुष्ठ सेवा का कार्य इन्होंने उठाया और सभी क्षेत्रों में चेतना पैदा की। योग्य कार्यकर्ता के *अभाव में काम जितना* जमना चाहिए था, उतना जम नहीं पाया। आज भी योग्य कार्यकर्ताओं की जरूरत इस संस्था में है। इस संस्था का उस क्षेत्र के काफी गाँवों में अच्छा प्रभाव है और जो छोटे छोटे कार्यकर्ता हैं, वे निष्ठापूर्वक काम करते हैं।

गांधी स्मारक निधि, उत्तर प्रदेश शाखा का कार्य

[अब तक का संक्षिप्त कार्य-विवरण]

महात्मा गांधी के देहावसान के ठीक एक सप्ताह बाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य समिति ने निश्चय किया कि गांधीजी की स्मृति को बनाये रखने के लिए एक राष्ट्रीय स्मारक निधि शुरू की जाय, जिसे 'गांधी स्मारक निधि' कहा जायगा। इस निधि को जमा करने के लिए सभी प्राथमिक कदम उठाने के ध्येय से उसने डा० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में एक अस्थायी समिति भी नियुक्त की।

राष्ट्रपिता के श्राद्ध-दिन १२ फरवरी, १९४८ पर डा० राजेन्द्र प्रसाद के हस्ताक्षरों से एक अपील निकाली गयी। उस अपील में सुझाया गया था कि भारत का प्रत्येक नागरिक इस निधि के लिए कम-से-कम अपनी दस दिन की आमदनी दे। इस निधि के उपयोग की पद्धति बाद में तय की जाने वाली थी, मगर यह स्पष्ट किया गया था कि निधि का अधिकांश हिस्सा उन प्रान्तों या राज्यों में खर्च करने के लिए अलग रखा जायगा, जहाँ से वह जमा किया गया हो, और दाताओं को यह अधिकार होगा कि वे चाहें तो रचनात्मक कार्यक्रम के किसी विशेष कार्य के लिए अपने दान को अर्पित कर दें।

एक वर्ष के बाद, जब दो करोड़ रुपयों से अधिक निधि जमा हो चुकी थी, तब डा० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में एक ट्रस्टी मण्डल कायम किया गया, जिसमें उनके अतिरिक्त २३ सदस्य थे। 'ट्रस्ट डीड' (निधि का दस्तावेज) तैयार करके रजिस्टर्ड कराया गया। इस समय इसी 'ट्रस्ट डीड' के अनुसार सारे देश में कार्य हो रहा है। उत्तर प्रदेश में गांधी स्मारक निधि की शाखा १९५० में आरम्भ हुई। इस प्रदेश में कुल १,२६,१२,२३९ रु० संग्रहीत हुए। उस धन में से केन्द्रीय अंश काट कर ८३,०५,१८९ रु० उत्तर प्रदेश के हिस्से में मिला। आरम्भ से १९५९ के अन्त तक कुल ३१,१०,८२१ रु० के करीब व्यय हुए।

सन् १९५० में प्रदेशीय गांधी स्मारक निधि का कार्यालय गोरखपुर में था। पूज्य बाबा राघवदासजी संचालक रहे। उसी समय यह महसूस किया गया कि प्रदेशीय कार्यालय वहाँ रखा जाय, जहाँ कुछ रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलती हों, इसलिए प्रदेशीय कार्यालय सेवापुरी आया, तब से कार्यालय बनारस जिले में स्थित सेवापुरी आश्रम में है।

प्रारम्भ में विभिन्न संस्थाओं तथा व्यक्तियों से योजनाएँ आती थीं, उन पर विचार होता था और उसी के अनुसार संस्थाओं तथा व्यक्तियों को सहायता दी जाती थी। श्री पन्तजी के सक्रिय मार्गदर्शन और बाबा राघवदासजी के अथक परिश्रम के कारण कार्य को धीरे-धीरे एक योजना का स्वरूप मिला। १९५९ तक प्रदेश का कार्य एक सलाहकार मण्डल के द्वारा होता था। १९५९ के आरम्भ से प्रदेशीय मण्डल श्री विचित्र नारायण शर्मा की अध्यक्षता में गठित हुआ। अब प्रदेश का कार्य इसी मण्डल के मार्गदर्शन में चल रहा है।

ग्रामसेवा, तत्त्व-प्रचार, ग्राम निर्माण, आदिम जाति सेवा, हरिजन सेवा और नयी तालीम के प्रयोग; ये ६ कार्यक्रम हमारे निधि के मुख्य अंग बने। बीच में प्राकृतिक चिकित्सा, कृषि-विस्तार, भूदान और कुष्ट-सेवा का कार्य भी हाथ में लिया गया।

कृषि-विस्तार : यह कार्य 'अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन' में, विशेष रूप से जापानी ढंग के धान-उत्पादन के कार्य के लिए प्रारम्भ किया गया। प्रदेश भर में दो वर्ष तक योजना चली।

कुष्ठ सेवा : कुष्ठ सेवा के लिए 'कुष्ठ फाउण्डेशन' की स्थापना हुई और कुष्ठ-सेवा का कार्य केन्द्रीय संचालन में ही चलने लगा। अभी उत्तर प्रदेश में कुष्ठ-सेवाश्रम गोरखपुर सबसे अच्छी और मुख्य संस्था है, जो बाबा राघवदासजी की प्रेरणा से आरम्भ हुई थी और अभी भी चल रही है। केन्द्रीय फाउण्डेशन की ओर से संस्था को बहुत कम सहायता मिलती है, इसके अतिरिक्त ८-१० छोटी गैरसरकारी संस्थाएँ हैं, जो कुष्ठ सेवा का कार्य कर रही हैं, जिसके सम्बन्ध में विचार है कि 'बाबा राघवदास स्मारक' के रूप में सारे प्रदेश में कुष्ठ के सेवा-कार्य को गठित किया जाय।

प्राकृतिक चिकित्सा : इसके लिए दो-तीन केन्द्रों को प्रारम्भ से ही सहायता दी जाती रही। केन्द्रीय निधि ने प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में अपनी नीति बदली और केन्द्रीय निधि की नीति के निर्णयानुसार ही प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्रों को सहायता देना बन्द हो गया। फिर भी जिनको हम सहायता देते थे, उनमें से प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, अजगरा, जिला बनारस व बरहज, जिला देवरिया, ये दो केन्द्र अपने छोटे मोटे साधनों से चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त लखनऊ में आरोग्य निकेतन लखनऊ, जो डा० दिलकशजी चलाते हैं, उनको भी तीन वर्ष तक सहायता, विशेष रूप से हरिजन रोगियों के हेतु दी गयी।

भूदान-आन्दोलन

तेलंगाना की पदयात्रा के बाद विनोबाजी की पदयात्रा वर्धा से दिल्ली जाते हुए उत्तर प्रदेश में हुई। दिल्ली जाने के बाद भी उत्तर प्रदेश की यात्रा हुई। उत्तर प्रदेश में ही भूदान को देशव्यापी आन्दोलन का रूप मिला। पहले उत्तर प्रदेशीय गांधी-निधि के सलाहकार-मंडल के अनुरोध पर और बाद में सर्व सेवा संघ के अनुरोध पर गांधी स्मारक निधि ने भूदान-आन्दोलन में भी मदद की। ३ वर्ष तक भूदान-आन्दोलन में निधि की ओर से खर्च होता रहा और उसी की सहायता से सारे प्रदेश में भूदान का आन्दोलन खड़ा हुआ। सर्व सेवा संघ के निर्णयानुसार १९५६ के अन्त में भूदान-आन्दोलन के लिए खर्च लेना बन्द हुआ। इसी आन्दोलन के कारण ग्रामसेवक तैयार हुए तथा ग्रामसेवा-केन्द्र स्थापित हुए।

इसके अतिरिक्त गैस प्लान्ट, हड्डी का खाद बनाना आदि के प्रयोग भी निधि की ओर से प्रदेश में हुए तथा हो रहे हैं।

उपर्युक्त प्रवृत्तियाँ वे हैं, जो प्रारम्भ में प्रदेश में निधि की प्रेरणा और सहायता से ही चलती रहीं। अब उनमें निधि की ओर से कोई खर्च नहीं हो रहा है।

ग्रामसेवा, नयी तालीम, आदिवासी-सेवा, हरिजन-सेवा, तत्त्व प्रचार, ग्राम-निर्माण कार्यकर्ता प्रशिक्षण, इन प्रवृत्तियों के बारे में जो निधि की सहायता और मार्गदर्शन में अभी प्रदेश में चल रही हैं, यहाँ जानकारी दी जा रही है।

१९५१-'५२ में विनोबाजी ने उत्तर प्रदेश की यात्रा की। श्री पन्तजी ने काशी विद्यापीठ में पूज्य विनोबाजी के सामने यह विचार रखा कि ऐसे ग्राम सेवक गाँव में बैठें, जिनको जीविका उपार्जन से निश्चिन्त किया जाये तथा स्थानीय प्रेरणा से और सारी प्रवृत्तियाँ चलें और धीरे धीरे वे इस तरह से उन क्षेत्रों में जम जायँ कि निधि की सहायता न मिले, तब भी वे उस क्षेत्र के कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते रह सकें। १९५१ में ही इस योजना के आधार पर कार्य आरंभ हुआ। आरम्भ में ऐसे व्यक्ति मिले जो निष्ठावान थे और अपने जीवन से गाँव, समाज पर असर डाल सकते थे। बाद में पूज्य बाबा राघवदासजी के आग्रह से और अधिक कार्यकर्ता भाई-बहन जो गाँव में काम करने के लिए इच्छुक थे, जिन्होंने भूदान ग्रामदान आन्दोलन में कुछ काम भी किया था, उनको ग्रामसेवक के रूप में लिया गया। इससे संख्या बढ़ी। एक एक ग्रामसेवक भाई-बहन जगह-जगह बैठे। १९५३ में ग्रामसेवक भाई बहनों की संख्या १२ थी, जो बढ़ते-बढ़ते १२२ तक पहुँची। यह भी तय हुआ कि गाँव में काम करने के लिए नये युवकों को लिया जाय और उन्हें प्रशिक्षण देकर ग्रामसेवक के रूप में काम करने के लिए गाँव में बैठाया जाय। उस आधार पर सेवापुरी में ग्राम-रचना-विद्यालय आरम्भ हुआ। पहले जत्थे में ३१ लिये गये, अन्त तक १८ टिके, वे शिक्षण-समाप्ति के बाद अभी काम में लगे हुए हैं। दूसरा जत्था २६ का लिया गया। परिश्रम और जीवन देख कर १६ टिके हैं। इनका प्रशिक्षण दिसम्बर '५९ में समाप्त हुआ और उन्हें १९६० से विभिन्न केन्द्रों पर भेज दिया गया। अभी कुल ३० ग्रामसेवा केन्द्रों में ७४ ग्रामसेवक भाई-बहन हैं।

आगे का काम

२४ से २६ दिसम्बर १९५९ तक सभी ग्रामसेवक भाई-बहनों का एक सम्मेलन सेवापुरी में हुआ, जिसमें चर्चा के बाद निम्न निश्चय किये गये। अब आगे का कार्यक्रम इसी निश्चय के अनुसार चलेगा।

गाँवों में स्वावलम्बन साधने के मूल उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि ग्रामसेवक का जीवन श्रममूलक, वस्त्रस्वावलम्बी, सफाई एवं मलमूत्र के वैज्ञानिक उपयोग का सहज अभ्यास तथा नियमित स्वाध्याय की अभिरुचि रखने में पूर्ण सक्षम हो। प्रत्येक केन्द्र का अपना सेवा क्षेत्र ४ वर्गमील तक के घेरे में साधारणतया ५ हजार तक की आबादी का रहे। ग्रामसेवकों के आपसी सम्बन्ध और उनकी मर्यादा का ध्यान रखते हुए कार्यकर्ता को चाहिए कि वह प्रतिस्पर्धा के बदले सहयोग तथा केन्द्र में रहने वाले कार्यकर्ता के कार्य का विभाजन कर लें। इसी क्रम में यह भी निश्चय हुआ कि केन्द्र के अन्तर्गत या केन्द्र से सम्बन्धित रचनात्मक कार्य के संगठनों, जैसे सहकारी समितियों आदि में ग्रामसेवक पदाधिकारी की हैसियत से भाग न लें। इस दिशा में स्थानीय तौर पर ग्रामीणों को प्रोत्साहित करना ही श्रेयस्कर है। ग्रामसेवा का लक्ष्य पूर्ण करने के लिए नियोजन विभाग आदि का सहयोग मिल सके तो प्राप्त किया जाना चाहिए।

अपने बहुमुखी कार्यक्रम को अमल करने के लिए निम्न प्रकार से १९६० के लिए अनुमान-सीमा (टार्गेट) निर्धारित की गयी। प्रत्येक ग्रामसेवा केन्द्र इसे अपने सामने रख कर उसकी पूर्ति करेगा :

(१) बहुधन्धी साधन सहकारी समिति संगठित करना।

(२) क्षेत्र के दो-एक गाँवों में २५ प्रतिशत किसानों में समुन्नत कृषि की अभिरुचि और अभ्यास जागृत करना।

(३) क्षेत्र में २५ प्रतिशत उन्नत बीज प्रयुक्त हों, इसका प्रयत्न करना।

(४) प्रत्येक कृषक-परिवार के पीछे दो-दो कम्पोस्ट-पिट का निर्माण।

(५) केन्द्र पर बाल्टी, शौचालय, ट्रेन्च लैटरिन या बोरहोल शौचालयों, मूत्रालयों का निर्माण किया जाय तथा इसका उपयोग ग्रामीणों को समझाया जाय।

(६) ग्राम-स्वावलम्बन, अदालत-मुक्ति और व्यसन-मुक्ति के संकल्प कराये जायँ।

(७) प्रत्येक गाँव महीने में कम-से-कम १ दिन सार्वजनिक काम और सामूहिक सफाई के लिए दे, इसकी तैयारी की जाय।

(८) प्रौढ़ों के शिक्षण के लिए गाँव में रात्रि-पाठशाला तथा केन्द्र पर एक बालवाड़ी चलायी जाय। क्षेत्रस्थ इण्टर कालेज में एक स्वाध्याय मण्डल स्थापित हो तथा क्षेत्र में सभी राष्ट्रीय एवं धार्मिक त्योहारों के अवसर पर उन्हें सुसंस्कृत ढंग से मनाने की योजना की जाय।

(९) क्षेत्र के वस्त्र स्वावलम्बनार्थ कम-से कम तीन हजार वर्गगज खादी का उत्पादन करना।

(१०) सूतांजलि में कम से कम २०० गुण्डी सूत का एकत्रीकरण किया जाना चाहिए।

(११) कम से कम ६० रुपये के सर्वोदय साहित्य की बिक्री, 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक तथा 'गांधी मार्ग' के कम से कम १० सदस्य बनना।

(१२) १०० नये नियमित 'सर्वोदय-पात्रों' की स्थापना करना।

(१३) गाँवों में नवयुवक मण्डलों का गठन करना।

गांधीघर

प्रदेश में पाँच स्थानों पर 'गांधीघर' का निर्माण होना है, जिनमें ३ स्थानों का कार्य प्रायः पूरा हो चला है। गांधीघर, गाँव में गांधीज्ञान के अध्ययन-केन्द्र होंगे। यहाँ कताई मण्डल चलेंगे। बालवाड़ी, वाचनालय, पुस्तकालय आदि की व्यवस्था होगी। जयप्रकाशनगर (बलिया) का गांधीघर इस दिशा में प्रगति कर रहा है।

गांधी तत्त्व-प्रचार विभाग

गांधी स्मारक निधि ने जब १९५१ में उत्तर प्रदेश में गांधी तत्त्व प्रचार विभाग की स्थापना की, तब से धीरे धीरे सारे प्रदेश में व्यवस्थित रूप से काम आगे बढ़ता रहा है। १९५१ से '५८ तक उत्तर प्रदेश के २० पूर्वी जिलों में १५० से अधिक सर्वोदय स्वाध्याय मण्डलों की स्थापना हुई। सारे उत्तर प्रदेश में २५० से अधिक स्वाध्याय-मण्डल स्थापित हुए। निर्विवाद रूप से ये मण्डल पुस्तकालय एवं वाचनालय ही नहीं, बल्कि अध्ययनशील एवं जिज्ञासु लोगों के लिए गांधी-विचारधारा के मिलन-स्थल (मीटिंग प्वाइंट) और विचार स्थल (फोरम) के रूप में विकसित किये गये। विचार-गोष्ठियों, परिचर्चाओं, व्याख्यान मालाओं, गांधी और विनोबा-जयन्ती, सर्वोदय पक्ष तथा रचनात्मक कार्य-क्रमों के साथ इन स्वाध्याय-मण्डलों ने अपनी सार्थकता सिद्ध की और सारे प्रदेश में सर्वोदय को हरा बनाने में इनका अनुपेक्षणीय स्थान रहा। पूरे प्रदेश में सर्वोदय पक्ष, खादी, शान्तिसेना और सर्वोदय-पात्र, अस्पृश्यता निवारण तथा अन्य रचनात्मक काम के साथ-साथ व्याख्यानमालाएँ, भाषण, विचार-गोष्ठियाँ तथा शिक्षण-शिविर आदि का व्यापक आयोजन किया जाता रहा है। आगामी वर्ष के लिए निम्न कार्य-योजना स्थिर की गयी है:

(१) उपकेन्द्रों का संगठन और विकास, वैचारिक और रचनात्मक कार्यक्रम के आधार पर।

(२) व्याख्यानमालाएँ, भाषण, विचार-गोष्ठियाँ, परिचर्चाएँ, विचार-सभाएँ आदि।

(३) गांधी स्वाध्याय-संस्थान।

(४) खादी, शांतिसेना, सर्वोदय पात्र, साहित्य-प्रचार, स्वच्छता, हरिजन सेवा तथा अन्य ऐसे ही कार्यों में योगदान एवं प्रोत्साहन।

(५) पुस्तकालय एवं वाचनालय, मुख्य केन्द्रों एवं उपकेन्द्रों में।

(६) सामूहिक समारोह, जैसे गांधी और विनोबा-जयन्ती, सर्वोदय-पक्ष आदि।

(७) जनसम्पर्क।

हो तो उसके आगे भी पूरी तौर से प्रयोग चले, तदनुसार सेवापुरी में पूर्व-बुनियादी से लेकर उत्तर-बुनियादी तक का प्रयोग चल रहा है। कुल मिला कर प्रदेश में १२ जगहों के लिए नयी तालीम के लिये सहायता दी गयी।

प्रदेश के नयी तालीम संस्थाओं के अध्यापकों का सम्मेलन ता० २१ से २६ दिसम्बर तक सेवापुरी व बनारस में हुआ, जिसमें निम्न कार्यक्रम भविष्य के लिए तय किया गया:

(१) शिक्षक और विद्यार्थी आस-पास के गाँवों में कृषि, गोपालन और दूसरे उद्योगों को विकसित करने की दिशा में काम करें।

(२) गाँव के उत्सव व त्योहारों में शाला की ओर से निश्चित कार्यक्रम बनाया जाय।

नयी तालीम का व्यापक कार्यक्रम

मुख्य केन्द्र:

(अ) केन्द्रीय पुस्तकालय एवं वाचनालय।

(आ) भाषणों, विचार गोष्ठियों, व्याख्यानमालाओं, परिचर्चाओं तथा सामूहिक समारोहों का संगठन, संचालन-व्यवस्था।

(इ) उपकेन्द्रों का अनुबन्धन एवं मार्ग दर्शन।

(ई) जन सम्पर्क, उच्चस्तरीय छात्रों, विचारकों एवं विद्वानों का।

(उ) गांधी स्वाध्याय संस्थान।

सहयोग से खेती

नैनीताल जिले के 'शांतिपुरी' ग्राम के प्रति-परिवार से दो व्यक्ति कार्य करने खेत पर जाते हैं। रजिस्टर में ग्राम का सभापति हाजिरी रखता है। ग्राम के सदस्यों को हाजिरी देखने की छूट है। सहकारी खेती पर लोगों ने औसत ५॥ घंटे काम किया है। महीने की एक छुट्टी भी होती है। अपाहिजों की सेवा समिति करती है। आय के लिए समिति ने ग्राम की कृषि का इन्तजाम रखा है, जिसकी आमदनी इन दो वर्षों में २१८९ रु० की हुई। इस पूँजी में से हमारे गाँव के पास इस समय सुरक्षित पूँजी ८०० रु० की है। इसी पूँजी से ग्राम की एक सहकारी दुकान चल रही है। शेष पूँजी ग्राम निर्माण कार्य पर व्यय हो चुकी है।

इस प्रकार यहाँ के सहजीवन से लोग एक-दूसरे के दुःख सुख में शामिल होकर कार्य कर रहे हैं। दिन की कुल औसत आय प्रति व्यक्ति ३ रु० २० नये पैसे पड़ी है।

उपकेन्द्र:

(अ) पुस्तकालय और वाचनालय।

(ब) विचार चर्चाएँ एवं रचनात्मक कार्यक्रम।

(स) जन-सम्पर्क, रचनात्मक एवं जिज्ञासु लोगों से सम्पर्क।

प्रारम्भ में सलाहकार मण्डल में दो प्रकार की राय थी। कुछ सदस्यों की राय थी कि अधिक-से-अधिक शालाएँ खोली जायँ। कुछ सदस्यों की राय थी कि चुने हुए स्थानों में ही हम कार्य करें और प्रदेश में एक जगह जहाँ हर प्रकार की सुविधा हो, उन पर पूर्व बुनियादी से लेकर उत्तर-बुनियादी तक, संभव

(३) दीवारों पर साप्ताहिक समाचार लिखने का कार्यक्रम अपनाया जाय और चुने हुए वाक्य और सुभाषित पद तथा संत-वचन भी गाँवों में दीवारों पर लिखे जाँय।

(४) शिक्षकों की साप्ताहिक बैठक का आयोजन हो।

(५) गाँव के युवकों का जो सार्वजनिक काम में रुचि लें, संगठन हो और अत्याचार, शोषण से मुक्ति या रक्षण का कार्यक्रम बुद्धि-भेद के विरुद्ध बुद्धियोग के आधार पर अपनाया जाय।

(६) गाँव के लड़ाई-झगड़ों का निपटारा गाँव में ही हो सके, इस दिशा में हमारा प्रयत्न होना चाहिए।

(७) गाँव के विकास-कार्य की चर्चा और इस तरह के कार्यों का संगठन होना चाहिए। जहाँ सम्भव हो, वहाँ विद्यार्थियों के सहकारी भण्डार चलाने चाहिए।

(८) समय-समय पर शाला के कार्यों, गृहउद्योग और ग्रामोद्योग से सम्बन्धित प्रदर्शनी का आयोजन हो और गाँव के लोगों को उसमें आमंत्रित करें।

इस कार्यक्रम में दो दृष्टियाँ रखी गयी हैं: प्रथम तो यह कि गाँव में उपयुक्त वातावरण का निर्माण होगा और दूसरे, गाँववालों के विकास में हमारा सहयोग होगा। किन्तु इन कार्यों से विद्यार्थियों का शिक्षण हो, यह ध्यान में रखना चाहिए।

नयी तालीम में साहित्य बहुत कम है। जो साहित्य है, वह बच्चों की दृष्टि से पर्याप्त उपयोगी नहीं है। बाल साहित्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता समझी गयी। इस प्रकार प्रत्येक शाला में सभी कार्यकर्ताओं की अपनी साप्ताहिक अथवा पाक्षिक बैठक, संशोधन और परिमार्जन के बाद प्रथम वर्ष कम-से-कम ३० समवाय पाठ तैयार करना, प्रत्येक कार्यकर्ता का निजी तौर पर अपने काम की योजना का सामूहिक गोष्ठी में उपस्थित किया जाना, बच्चों की मासिक पत्रिका में छोटे और बड़े बच्चों की अलग-अलग हस्तलिखित प्रतियों का तैयार करना आदि बातों पर ध्यान देने का सोचा गया।

प्रदेश की नयी तालीम शालाओं का संक्षिप्त कार्य-विवरण इस प्रकार से है:

(१) सेवापुरी: पूर्व-बुनियादी से लेकर उत्तर-बुनियादी तक का क्रम यहाँ चलता है। योग्य कार्यकर्ता भी मिल गये हैं। प्रदेश के अन्य बुनियादी शालाओं के विद्यार्थी भी यहाँ उत्तर बुनियादी में आते

है। कृषि योग्य भूमि भी उत्तर-बुनियादी में १४ एकड़ है। ६ एकड़ भूमि की और आवश्यकता है। खादी-विद्यालय, चर्मोद्योग, साबुन-उद्योग का पूरा कार्य सेवापुरी में चल रहा है। इसीलिए-उत्तर बुनियादी के छात्र उसका लाभ उठाते हैं।

हरिजन गुरुकुल, दोहरीघाट : बुनियादी शाला यहाँ अच्छी चल रही है। यहाँ के निकले हुए छात्र सेवापुरी की उत्तर बुनियादी शाला में आते हैं। जीवन और अध्यवसाय इनमें मालूम होता है। इस जगह की यह विशेषता है कि यहाँ हरिजन छात्रों की प्रधानता है और हरिजन तथा सवर्ण छात्र घुलमिल कर रहते हैं।

कस्तूरबा महिला उत्थान मण्डल, कौसानी : सुश्री सरला बहन की देख रेख में यह संस्था चल रही है। सारे कुमाऊँ क्षेत्र की बहनें यहाँ आती हैं। ७ वर्ष से लड़कियाँ आती हैं और उत्तर बुनियादी तक का क्रम चलता है।

पर्वतीय नवजीवन मण्डल, सिल्यारा : श्री सुन्दर लाल बहुगुणा की देख-रेख में यहाँ नयी तालीम और ग्रामनिर्माण का काम पिछले ४ वर्षों से चल रहा है।

उपर्युक्त चारों केन्द्र बुनियादी तालीम के आधार पर चलते हैं और भविष्य में यहाँ नयी तालीम का प्रयोग अपने ढंग पर चल सकता है। इसके अतिरिक्त इन जगहों में भी अभी नयी तालीम के लिए सहायता देते हैं : रनौवाँ-फैजाबाद; श्रावस्ती-बहराइच, शहीदनगर-जालौन; बुनियादी शाला-मगरौठ। शांतिपुरी में दो वर्ष से बुनियादी शाला चल रही है।

ग्राम-निर्माण

भूदान की व्यापकता सबसे पहले उत्तर प्रदेश में हुई और पहला ग्रामदान भी उत्तर प्रदेश में ही मिला। इसीलिए ग्राम-निर्माण का कार्य भी सबसे पहले हमारे प्रदेश से ही आरम्भ हुआ। ग्राम-निर्माण के हमारे यहाँ दो स्वरूप हैं। पहला, पुराने गांव जो ग्रामदान में मिले हैं, उनमें नवनिर्माण काम और दूसरा, बड़े-बड़े भूखण्ड जो भूदान में मिले हैं, उनमें नये सिरे से गांव बसाने का काम। अभी सारे प्रदेश में निर्माण-कार्य की सात योजनाएँ चल रही हैं। मगरौठ गांव और मिर्जापुर क्षेत्र में ग्रामदानी गांवों की दृष्टि से और शांतिपुरी (नैनीताल), यह भूखण्ड पर नये गांव बसाने का काम है।

शांतिपुरी-नैनीताल

कीच्छा और खटकुआँ के बीच सरकारी नगला फार्म के सामने की ७००० एकड़ जमीन थी। निश्चय हुआ कि यहाँ भूदान के आधार पर भूमिहीन परिवार बसाये जायँ। उस समय के गांधी स्मारक निधि के मंत्री श्री धोत्रेजी तथा सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे यह क्षेत्र देखने के लिए आये। उन्होंने सारी परिस्थिति का अध्ययन किया। जैसी आर्थिक स्थिति इन लोगों की थी, उसको देखते हुए निश्चय हुआ कि ३०० भूमिहीन परिवार बसाये जायँ और सारी योजना में २००० रु० प्रति परिवार की योजना के हिसाब से खर्च किया जाय। इसमें कुछ रुपये गांधी स्मारक निधि दे और कुछ सरकार से लिये जायँ। जनवरी '५५ से वहाँ का कार्य हाथ में लिया गया। सारे गाँव की पूरी प्लानिंग हुई और उसी प्लान के अनुसार सारा गाँव बसा हुआ है। हर परिवार को आधी एकड़ जमीन मकान तथा वाटिका के लिए और हर परिवार के हिसाब से ७ एकड़ जमीन खेती के लिए दी गयी। २२० परिवार यहाँ बस चुके हैं। उन लोगों ने कृषि का आरम्भ सामूहिक खेती से किया। सामूहिक बीज गोदाम, बालवाड़ी, बुनियादी शाला, ऊन की कताई-बुनाई का काम हो रहा है। एक-दो वर्ष खेती करने के बाद वहाँ के लोगों ने तय किया कि खेती सहकारिता के आधार पर की जाय और १९५८ के अन्त तक वैसे ही होता रहा। परन्तु पिछले ६ माह से कुछ लोगों की फिर से व्यक्तिगत खेती और व्यक्तिगत मालकियत की ओर भावना गयी है। कुछ स्थानीय नेताओं के प्रोत्साहन के कारण व्यक्तिगत मालकियत का विचार रखने वालों को बढ़ावा मिला। अभी गाँव में दो दल हैं : व्यक्तिगत खेती और व्यक्तिगत मालकियत तथा सहकारी खेती और सामूहिक मालकियत वाले। बीच में परिस्थिति काफी असन्तुष्ट थी। अभी भी ठीक है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। प्रयास है और आशा है कि लोग समझेंगे और अच्छे ढंग से कार्य करने लगेंगे। खेती के साथ सिंचाई, ग्राम-उद्योग, शिक्षण एवं अन्य कार्य भी चल रहा है।

शारदापुरी-पीलीभीत

पूरनपुर तहसील में शारदा एवं सुहेली नदी के बीच भूदान में मिले ७५०० एकड़ भूखण्ड में ५०० परिवार बसाने की योजना है। पश्चिमी पाकिस्तान से आये हुए सिक्ख और जम्मू परिवार के लोग यहाँ बसे हुए हैं। ३५१ परिवारों का अभी प्रवेश हुआ है। शान्तिपुरी की तरह से सारे गाँव का प्लान बना है। लेकिन गाँव बसाने के लिए उपयुक्त भूमि को देखते हुए मकान के लिए प्रत्येक परिवार को आधे एकड़ के बजाय एक-चौथाई एकड़ जमीन दी गयी। ३५१ परिवार अपने अपने प्लाट में आकर बस गये हैं। यह सभी साधनहीन और परिश्रमी हैं। सारे गाँव की प्लानिंग उन्होंने अपने परिश्रम से की है। १९०० एकड़ जमीन भी उन्होंने अपने श्रम और साधनों से तोड़ी। शान्तिपुरी के अनुभव का फायदा उठा कर यहाँ हम आगे बढ़ रहे हैं। सहायता के रूप में इन्हें कम-से-कम मिले और काम अपने दम से आगे बढ़े इसका प्रयास है। जहाँ सरकार की ओर से इस क्षेत्र में 'कोलोनाइजेशन' में करोड़ों रुपये व्यय करने की योजना है, वहाँ भूदान में प्राप्त जमीन पर इस नये गाँव को बसाने का हमारा प्रयास है। कुल योजना पर ५०० परिवारों के बसाने में १० लाख के करीब व्यय होंगे, ऐसा हमारा अनुमान है।

शहीदनगर-जालौन

यहाँ पर २० परिवार बसाये गये हैं। श्री रामस्वरूप गुप्त की देखरेख में यहाँ का काम चल रहा है। एक ग्राम-सेवा केन्द्र भी यहाँ है और अब बुनियादी शाला की योजना भी यहाँ अमल में आ रही है।

गांधी-घर

केन्द्रीय निधि की योजना के अनुसार १० हजार रु० व्यय करके प्रदेश भर में 'गांधी-घर' बनाने की योजना थी, उसके आधार पर १५ गांधी-घर हमारे प्रदेश में बनना था। लेकिन हमारे सलाहकार मण्डल ने सारी परिस्थिति देख कर निम्न स्थानों पर गांधी-घर बनाने का निश्चय किया।

(१) [illegible]-बलिया,

(२) श्रावस्ती-बहराइच

(३) मकेड़-कानपुर

(४) [illegible]-देवरिया

(५) सेवा-सहारनपुर

इनमें से मकेड़, श्रावस्ती और [illegible] में गांधी-घर बन गये हैं। [illegible] गांधी स्मारक निधि का दान स्वरूप [illegible] है। इन सबका उद्घाटन 'सर्वोदय सम्मेलन' के समय में हुआ है।

सेवा-सहारनपुर में मकान का शिलान्यास हो गया है। कुछ समय से कार्य आरम्भ हुआ है।

स्वावलंबन और ग्राम-सेवा की ओर

संस्थाओं की तरफ से इस संस्था के कार्यकर्ताओं ने गैरसरकारी तरीके पर साथ दिया है।

खादी-कार्य का भी स्वतंत्रता आंदोलन व देश की राजनीतिक गतिविधियों के उतार-चढ़ाव के साथ ही संकोच व विस्तार होता रहा है।

स्वावलम्बन की ओर

सन् '५८ तक खादी-उत्पादन व बिक्री बढ़ती गयी है। सूती खादी दो करोड़, ऊनी बीस लाख, रेशम सत्रह लाख और कम्बल-कार्य तीस लाख रुपये का तथा पचास लाख रुपये का अन्य सरंजाम व ग्रामोद्योग की वस्तुएँ उत्पादित होकर उसकी बिक्री हुई। पर सन् '५८ के बाद उत्पत्ति के अनुपात में बिक्री नहीं चल सकी, क्योंकि देश में जनता और सरकार की तरफ से खादी के मूलभूत सिद्धांत कुछ भुलाये जाने लगे हैं।

फलतः आश्रम ने भी अपनी दिशा बिक्री के लिए उत्पादन की ओर से हटा कर स्वावलम्बन के लिए उत्पादन और ग्रामीणों में अभिक्रम जागृत करने हेतु नये मोड़ तथा ग्रामोदय-संघों की स्थापना करना प्रारंभ कर दिया है और अब तक नये मोड़ के ४२ केन्द्र और ४०४ ग्रामोदय-संघों की स्थापना हो चुकी है।

सन् '५७ '५८ में सब शाखाओं में खादी, ऊन, कम्बल, चरखे, ग्रामोद्योगी सामान आदि की कुल बिक्री २,२१,६१,५५८ रु की और सन् '५८-५९ में २,४१, ८८५ रु. की हुई है।

अम्बर-कार्य प्रसार

अम्बर-कार्य के प्रसार में भी आश्रम ने पूरा प्रयत्न किया और चालीस हजार चरखों का प्रशिक्षण और वितरण किया। पर क्षेत्र व वर्ग के चुनाव में शीघ्रता किये जाने के कारण यह कार्यक्रम पूरी तरह से सर्वत्र सफल न हो सका। फिर भी अम्बर की समर्थता, रोजगारी तथा उत्पादन की दृष्टि से कुछ क्षेत्रों में भलीभाँति अवश्य सिद्ध हो चुकी है। आश्रम इस कार्य को अब स्थायी और सुदृढ़ आधारों पर ही चलाये जाने की योजना बना रहा है। आश्रम में पाँच हजार कार्यकर्ता, तीन लाख कत्तिनें तथा बीस हजार अन्य कारीगर उत्तर प्रदेश, बंगाल, दिल्ली, कश्मीर जम्मू, पंजाब तथा मध्य प्रदेश में काम करते हैं।

सन् ५७-५८ में विभिन्न प्रकार के कुल २,८८,१८६ कारीगरों को १,०२,०३,५९५ रु० और सन् '५८-५९ में ३,१७,९२६ कारीगरों को १,३१,१८, ४६१ रु पारिश्रमिक दिया गया।

ग्राम-सेवा कार्य

आश्रम का उद्देश्य देश के ग्रामों की सर्वांगीण उन्नति व निर्माण होने के कारण जनसेवा की ओर सर्वदा अपना प्रमुख कार्यक्रम बनाता आया है। इस हेतु ग्रामसेवा केन्द्र रछना (मेरठ), रनीवाँ (फैजाबाद), बरौंव (इलाहाबाद), सेवापुरी (वाराणसी) तथा घाटेड़ा (सहारनपुर) और रामपुर (होशंगाबाद) में प्रारंभ किये गये। अब प्रमुख रूप से सेवापुरी, घाटेड़ा तथा रामपुर में प्रशिक्षण व ग्रामसेवा-कार्य चलता है।

ग्रामोद्योग

श्री गांधी आश्रम में हर प्रकार की सूती, ऊनी, रेशमी, खादी व उसकी भिन्न-भिन्न किस्मों के तैयारी की प्रक्रियाओं के अलावा ग्रामोद्योगों में हाथ-तेलघानी, मधुमक्खी पालन, चमड़ा-उद्योग, साबुन-उद्योग, कुम्हारी सरंजाम आदि कार्य भिन्न भिन्न स्थानों पर बड़े पैमाने पर चलाते हैं। आश्रम के खादी की मांग देश में सभी प्रदेशों के भंडारों से होती है।

कार्य-व्यवस्था

इसका प्रधान कार्यालय सन् '२७ तक बनारस, जुलाई सन् '५७ तक मेरठ और अगस्त '५७ से अब ९ शाहनजफ रोड, लखनऊ में है।

कुल बिक्री-शाखाएँ ३११, ग्रामोद्योग-केन्द्र ४०४

उत्पत्ति शाखाएँ ४३० एजेन्सी १५

सूती खादी के लिए-मेरठ, अकबरपुर जिला फैजाबाद, *मगहर जिला-बस्ती तथा बाँदा उ० प्र० में है।*

ऊनी स्टोर—श्रीनगर (कश्मीर) तथा नमक मंडी, *अमृतसर में है।*

रेशम स्टोर—(१) चांदनी चौक, देहली
(२) हजरतगंज, लखनऊ
(३) सोनामुखी, जिला-बांकुड़ा

कम्बल स्टोर—मेरठ में है।

संस्था का प्रबंध समय-समय पर चुनी जानेवाली *पन्द्रह सदस्यों की प्रबंध-समिति करती है।*

पाठकों को सूचना

प्रायः लोग एक ही पत्र में प्रकाशन, प्रधान केन्द्र और भूदान-पत्रिकाओं के सम्पादक और व्यवस्थापक को भिन्न भिन्न विषय लिख देते हैं। ऐसे पत्रों की पूरी कार्रवाई समय पर ठीक से नहीं हो पाती है और पत्र-प्रेषक को यह महसूस होता है कि हमारे पत्रों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। वास्तव में ऐसी बात नहीं है। एक ही पत्र में अनेक तरह के ऐसे अनेक काम लिखे जाते हैं, जिनका जवाब देना एक व्यक्ति के लिए मुश्किल होता है। नहीं तो परिणाम यह होता है कि ऐसे पत्रों की कोई कार्रवाई देर से हो पाती है। चाहिए यह कि अलग-अलग विभागों के लिए अलग अलग पत्र लिखे जायँ। इससे कार्य में सुविधा होगी और पत्र प्रेषक को असन्तोष न होगा। यह हो सकता है कि डाकखर्च कम करने के लिए सभी पत्र एक ही लिफाफे में भेज दें यहाँ से सारे पत्र सम्बन्धित विभागों या व्यक्ति को दे दिये जायेंगे।

सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी —कार्यालय-मंत्री

निःशस्त्रीकरण की ओर

ख्रुश्चेव

पिछले सितम्बर में सोवियत संघ ने विश्वव्यापी *निःशस्त्रीकरण की योजना संयुक्त राज्य संघ में पेश की* है। संयुक्त राष्ट्रीय सभा ने अपनी चौदहवीं बैठक में *विश्वव्यापी पूर्ण निःशस्त्रीकरण के पक्ष में, जो प्रस्ताव* किया है, उसे हम बहुत महत्त्व देते हैं। अब इसके लिए महाशक्तियों में बातचीत होने वाली है और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सोवियत संघ इस बात की पूरी कोशिश करेगा कि इस बातचीत के फलस्वरूप पूरी तरह से निःशस्त्रीकरण करने का समझौता हो जाय। हम अपनी ओर से ऐसे निःशस्त्रीकरण के लिए और इस पर कड़ी निगरानी की व्यवस्था के लिए तैयार हैं और अब इस समस्या का समाधान पश्चिम के देशों के हाथ में है।

दुनिया भर में पूरा निःशस्त्रीकरण हो जाने पर संसार में नया युग आ जायेगा, तब युद्ध का भय न रहेगा। स्थायी शान्ति रहेगी और संसार के सारे साधन मनुष्य की भलाई में लग सकेंगे। इससे गरीबी, बीमारी, भुखमरी और अशिक्षा को मिटाने में पूरी शक्ति लगायी जा सकेगी।

संयुक्त-राष्ट्रसंघ के विशेषज्ञों का अनुमान है कि पिछड़े देशों को उन्नत राष्ट्रों के बराबर आने के लिए प्रति वर्ष १४ अरब डालर लगाने पड़ेंगे। इस समय दुनिया के देशों को शस्त्रों की होड़ में हर वर्ष करीब १०० डालर खर्च करने पड़ते हैं। निःशस्त्रीकरण हो जाने पर क्या इन १०० अरब डालरों में से १५ या २० अरब डालर करोड़ों आदमियों को गरीबी और भूख से छुटकारा दिलाने के लिए न खर्च किये जा सकेंगे?

शिखर-सम्मेलन

हमें आशा है कि सोवियत संघ, अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस के शासनों के अध्यक्षों की जो बैठक होने वाली है, उसमें अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को, विशेषकर निःशस्त्रीकरण के प्रश्नों को तय करने में बुद्धिमानी से काम लिया जायेगा।

फौजों में कटौती

संसार भर में पूर्ण निःशस्त्रीकरण कराने के लिए सोवियत संघ प्रतिवर्ष अपने फौजी खर्च में कटौती करता आ रहा है। पिछले ४ वर्षों में सोवियत संघ ने स्वयं अपनी फौजों में २१ लाख ४० हजार सैनिक घटा दिये हैं। इसी जनवरी १५ को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत ने अपनी सेनाओं में १२ लाख आदमी और घटाने का अर्थात् एक-तिहाई कटौती करने का निश्चय किया है। इस कटौती के बाद हमारी सेना में २४ लाख २३ हजार आदमी रह जायेंगे। यह संख्या उस संख्या से कम है, जिसे पश्चिमी शक्तियों ने प्रस्ताव किया था कि सन् १९५६ में निःशस्त्रीकरण के पहले अध्याय में सोवियत और अमरीकन सेना में इतनी संख्या होनी चाहिए। इस प्रकार सोवियत संघ ने बिना दूसरे देशों की राह देखे स्वेच्छा से अपनी सेना प्रस्तावित संख्या से भी घटा दी है। सेना घटा कर हम पश्चिमी शक्तियों से फिर कहते हैं कि आओ, हम निःशस्त्रीकरण के बारे में समझौता कर लें, हथियार रोकने की कोशिश करें और सेनाओं और हथियारों को घटाने में एक दूसरे से होड़ करें, उन्हें बढ़ाने में नहीं।

हम सोवियत संघ के लोग आशा करते हैं कि दूसरे देश भी अपनी सेना घटायेंगे, जिससे पूरा निःशस्त्रीकरण हो सके। मनुष्य-जाति के सामने कितना उज्ज्वल भविष्य है! परन्तु इसके लिए हथियारों की होड़ को रोकना आवश्यक है। इसके लिए सभी देशों में उसी प्रकार की शांति और मित्रता आवश्यक है, जैसी भारत और सोवियत संघ में है। हमें यह देख कर बड़ा हर्ष होता है कि सोवियत संघ और भारत, दोनों संसार में स्थायी शांति स्थापित करना चाहते हैं। भारत ने इस महान आदर्श के लिए जो काम किया है, सोवियत संघ के लोग उसकी बहुत सराहना करते हैं। भारत और दूसरे [illegible] देशों ने [illegible] के [illegible] के लिए जो प्रयत्न किये हैं, उन्हें हम बहुत [illegible] समझते हैं। हमें आशा है कि दुनिया के [illegible] देशों और [illegible] के [illegible] प्रयत्न के सामने व [illegible] न ठहर सकेंगी, जो इस समय में [illegible] चाहती हैं और जो [illegible] की [illegible] को [illegible] करना चाहती हैं।

[११ जनवरी '६०, नयी दिल्ली]

उत्तर प्रदेश में भूदान-आंदोलन की प्रगति

आजादी के बाद प्रेरणा का नया स्रोत

प्रथम पंचवर्षीय योजना पर चर्चा करने के लिए योजना-कमीशन के निमन्त्रण पर विनोबाजी १२ सितम्बर १९५१ को अपने परधाम पवनार आश्रम से दिल्ली के लिए पैदल रवाना हुए। उसके पहले वे तेलंगाना में जमीन के लिए शुरू हुए उपद्रव को, दान में प्राप्त भूमि का भूमिहीनों में बँटवारा करके शांत करवा चुके थे। विनोबाजी ने ८ अक्तूबर '५१ को उत्तर प्रदेश में झाँसी जिला के नाइट गाँव में प्रवेश किया। इस प्रदेश की विधान सभा के २ सदस्य स्वर्गीय बाबा राघवदासजी और श्री करण भाई ने विनोबा की पदयात्रा की व्यवस्था के लिए और विनोबाजी ने भूदान प्राप्त करने का जो काम शुरू किया था, उसमें योग देने के लिए झाँसी पहुँच कर उनका स्वागत किया। पहले दिन १२०० एकड़ भूमि का दान-पत्र बाबा को अर्पण किया गया। पड़ाव पर पड़ाव पड़ते गये। दिल्ली पहुँचने के पूर्व १ नवम्बर १९५१ को विनोबाजी मथुरा पहुँचे। वहाँ प्रदेश भर के रचनात्मक कार्यकर्ताओं की एक बैठक बुलायी गयी थी। प्रदेश भर के रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने वहाँ निश्चय किया कि इस प्रदेश में ५ लाख एकड़ भूमि भूदान में प्राप्त करेंगे। भूदान आन्दोलन के इतिहास में यह सबसे पहला सामूहिक संकल्प था। इसने भूदान को एक आन्दोलन का रूप दिया और प्रदेश भर में भूदान के काम के लिए एक मानस तैयार हुआ। प्रदेश भर के प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता इस ओर आकर्षित हुए। विनोबाजी दिल्ली गये। योजना आयोग के सम्मुख अपनी बात पेश की। वहाँ पर उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं ने विनोबाजी से उत्तर प्रदेश की यात्रा करने का आग्रह किया। विनोबाजी ने उसे स्वीकार किया और उत्तर प्रदेश में उनकी यात्रा का क्रम चलने लगा। वही समय था कि जब विधान-सभाओं के लिए सदस्यों का निर्वाचन होने जा रहा था और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का मुख्य ध्यान निर्वाचन की ओर था। निर्वाचन समाप्त हुआ। जिन-जिन विधायकों ने विनोबाजी के आगमन पर विधान-सभा के काम के बजाय अलग भूदान में अपने को लगाया था, वे उम्मीदवार नहीं बने और अपने को भूदान के काम में ही लगा दिया। विनोबाजी उत्तर प्रदेश में एक के बाद दूसरे जिले की पदयात्रा करते हुए सन् १९५२ के अप्रैल महीने में बनारस जिले में आये। बनारस में श्री गांधी आश्रम, सेवापुरी में अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन का आयोजन हुआ। फलस्वरूप देश भर के सर्वोदय-विचारक और प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ता वहाँ इकट्ठा हुए। अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ ने भूदान के काम को अपना काम माना और उपस्थित कार्यकर्ताओं ने २ वर्षों में सारे देश में २५ लाख एकड़ भूमि भूदान में प्राप्त करने का निश्चय किया। इस प्रकार इसी प्रदेश में भूदान-आन्दोलन एक अखिल भारतीय आन्दोलन बना।

सरकार की सहानुभूति

अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ ने भूदान-आन्दोलन को चलाने के लिए उत्तर प्रदेश में एक भूदान यज्ञ समिति का गठन किया। उ० प्र० में उसका कार्यालय सेवापुरी में रहा। विनोबाजी के यात्रा-काल में कुछ जिलों पर लगभग ५ लाख एकड़ जमीन दान में मिलने की घोषणा हुई थी, उत्तर प्रदेशीय सरकार ने आरम्भ से ही भूदान-आन्दोलन में अपना रुख सहानुभूति, सहयोग और सहायता का रखा। राजस्व विभाग ने ता० २१ मई, सन् १९५२ को एक सरकारी आदेश द्वारा सभी जिलाधीशों को एक हिदायत की कि जहाँ-जहाँ विनोबाजी की पदयात्रा हो वहाँ राजस्व विभाग के कर्मचारी भूदान में प्राप्त भूमि का लेखा रखने, दाताओं की जमीन की खेत-संख्या, क्षेत्रफल आदि की जानकारी दर्ज करने में मदद करने के लिए हर पड़ाव पर उपस्थित रहें। सरकारी भूमि और 'कोर्ट आफ वार्ड्स' के अन्तर्गत व्यवस्था की जाने वाली भूमि में से कुछ भूमि भूदान में दिये जाने की घोषणा की गयी। इस प्रकार भूदान आन्दोलन उत्तर प्रदेश में केवल प्रदेश के लिए नहीं, बल्कि सारे देश के लिए एक आन्दोलन का रूप देने का कारण बना। विनोबाजी ने उत्तर प्रदेश के भूदान आन्दोलन के विकास को "ध्यानाकर्षण और निधि निर्माण" का नाम दिया है।

भूदान-कानून

उत्तर प्रदेश सरकार ने भूदान आन्दोलन को मान्यता दी और विनोबाजी की सहमति से 'भूदान-यज्ञ अधिनियम' का निर्माण किया और उसके अनुसार इस प्रदेश में भूदान यज्ञ समिति की स्थापना १९५२ में हुई। भूदान-यज्ञ के संबंध में उत्तर प्रदेश में ही सबसे पहिला कानून बना और उसी के आधार पर अन्य प्रदेशों में भी कानून बने। १९५७ में ही उत्तर प्रदेश में 'जमींदारी उन्मूलन अधिनियम' लागू हुआ। उसके अनुसार भूमि की व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए। जोत की जमीन पर जोतने वालों को अधिकार दे दिया गया। जंगल पर सरकारी अधिकार हुआ और गाँव की बंजर, परती भूमि पर गाँव-गाँव में भूमि-व्यवस्था समिति बना कर उसे अधिकार दिया गया। पर सरकार की ओर से यह आदेश जारी किया गया कि जमींदारी उन्मूलन के पूर्व जो भूमि तत्कालीन भूस्वामियों द्वारा भूदान में दे दी गयी है वह जंगल और बंजर, परती भूमि न तो सरकार के जंगल विभाग को हस्तान्तरित होगी और न गाँवों की भूमि-व्यवस्था समिति को। उन भूखण्डों पर भूदान समिति का ही अधिकार रहेगा।

जिले जिले में भूदान-यज्ञ समितियों का गठन हुआ और प्रदेश के प्रायः सभी जिलों में भूदान-यज्ञ समिति के संयोजक नियुक्त हुए और भूमि-प्राप्ति तथा वितरण का काम प्रदेश भर में होने लगा।

इस प्रदेश में आन्दोलन के काम के लिए अखिल भारत सर्व सेवा संघ द्वारा गठित भूदान-समिति और सरकार द्वारा बनायी गयी भूदान-यज्ञ समिति का अलग-अलग अस्तित्व न होकर एक साथ ही सब काम हुआ और १९५६ में पहले के निश्चयानुसार अखिल भारत सर्व सेवा संघ द्वारा गठित समितियाँ विसर्जित होने तक उनका काम साथ-साथ होता रहा।

बाबा राघवदासजी की पदयात्रा

सन् १९५५ में पूज्य बाबा राघवदासजी ने निश्चय किया कि सारे प्रदेश की वे पैदल यात्रा करेंगे। ११ अप्रैल १९५५ को फतेहपुर जिले के कौन गाँव से उन्होंने पदयात्रा आरंभ की। प्रारम्भ में उनका निश्चय केवल एक वर्ष का था, पर उनकी पदयात्रा पूरे प्रदेश में ७४७ दिन में सम्पन्न हुई। पूज्य बाबा राघवदासजी ने अपनी टोली के साथ ६७०१ मील की यात्रा की। ७४९ पड़ाव हुए। पूज्य बाबा राघवदासजी की पदयात्रा इस प्रदेश के भूदान आन्दोलन को बहुत प्रेरणादायक साबित हुई।

पूज्य बाबा राघवदासजी ने झाँसी में हुए उत्तर प्रदेशीय सम्मेलन के अवसर पर उत्तर प्रदेश की यात्रा समाप्त की। फिर वे विनोबाजी के आदेशानुसार भारतीय गणसेवकत्व करके अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन, कालड़ी के बाद मध्यप्रदेश में पदयात्रा करते हुए तिरली में १५ जनवरी, सन् १९५८ को ब्रह्म में लीन हुए।

निधि-मुक्ति के बाद का काम

अ० भा० सर्व सेवा संघ के पलनी के निधि मुक्ति और तंत्र मुक्ति के निश्चय से जिले में भूदान का जो एक तंत्र खड़ा हुआ था, वह विघटित कर दिया गया और एक बार भूदान कार्य शिथिल होता हुआ मालूम हुआ। पर धीरे धीरे जिले जिले में पुराने निष्ठावान कार्यकर्ताओं ने शक्ति संचय करके भूदान के कार्य के सातत्य को कायम रखा। प्रदेशीय भूदान यज्ञ-समिति ने प्रदेशीय सरकार से वितरण और भूदान के कार्य को चलाने के लिए धन की माँग की। प्रदेशीय सरकार ने जनवरी '५९ में १९५८-५९ के लिए पचास हजार रुपये और १९५९-६० के लिए पचास हजार रुपये समिति को प्रदान किये। प्रदेश भर में भूमि-प्राप्ति और वितरण का काम बराबर चलता रहा और अब इस बात का प्रयास हो रहा है कि प्रदेश भर में भूदान में प्राप्त भूमि में से कृषि योग्य भूमि शीघ्रातिशीघ्र भूमिहीनों में वितरित हो जाय। प्रदेशीय स्तर पर दो मुख्य वितरक और उनके साथ कार्यकर्ता रखे गये हैं, जो जिन जिलों में वितरण के लिए अधिक भूमि है, वहाँ जाकर वितरण का काम करते हैं। इन सात-आठ वर्षों में समय समय पर प्रांतीय सर्वोदय सम्मेलन, अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन तथा भूदान-यज्ञ समिति के जिला संयोजकों व प्रमुख कार्यकर्ताओं के शिविरों में कार्यकर्ता परस्पर मिलते रहे और भूदान के काम में जिन कठिनाइयों का अनुभव होता रहा, उनके निराकरण का प्रयास करते रहे। इसी प्रकार का एक शिविर १९५९ में नवम्बर मास में लखनऊ में हुआ, जिसमें प्रदेशीय सरकार के राजस्व विभाग के उच्च अधिकारियों ने भाग लिया। काम में जो कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं, उन पर खुल कर व्यापक चर्चा हुई। प्रदेशीय सरकार ने राजस्व विभाग की ओर से एक आदेश जारी करके जिलाधीशों को सरकारी विभाग से दूर हो सकने वाली कठिनाइयों को दूर करने का आदेश दिया।

प्रदेश भर में सभी जिलों में भूदान-समिति और सरकारी दफ्तरों के आँकड़ों का मिलान बहुत तेजी से हो रहा है। इससे भूदान-यज्ञ समिति और सरकारी दफ्तरों के प्राप्ति और वितरण के आँकड़ों में जो अन्तर रहता था, वह अब नहीं रह सकेगा।

उत्तर प्रदेश में पदयात्राएँ

पू० विनोबाजी ने जनसम्पर्क का और जन-जन के भीतर प्रवेश करने के लिए आन्दोलन का अभिनव रूप पदयात्रा द्वारा हमें बताया है। उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं ने इसे हर जिले में व्यवहार में लाने का प्रयत्न किया है। भूमि का वितरण करने के लिए तो कार्यकर्ता अधिकतर पदयात्रा करते हुए जाते ही हैं, *प्रचार के लिए भी समय-समय पर भूदान-सप्ताह,* भूजयन्ति, चरखा-जयन्ती पक्ष और सर्वोदय-पक्ष में विशेष रूप से पदयात्रा का कार्यक्रम रहता है। प्रदेशीय स्तर पर समय समय पर श्री चित्रे भाई, श्री करीक भाई, श्री करण भाई, श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी, श्री सुरेश राम भाई, श्री विश्वानंद, श्री सर्वेश्वरानंद, श्री सोहन लाल भूमिपुत्र आदि ने पदयात्राएँ की। कांजीवरम सर्वोदय-सम्मेलन के बाद सबलगढ़ में सघन पदयात्रा-शिविर में इस प्रदेश के चुने हुए १५ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और उसके बाद प्रदेशीय स्तर पर रायबरेली जिले में डलमऊ में सघन पदयात्रा-*शिविर हुआ, जिसमें प्रदेश भर के कार्यकर्ता आये थे।* उसके बाद ९ कमिश्नरियों में सघन पदयात्राएँ हुईं, जिनमें लगभग २५०-३०० कार्यकर्ता सघन पदयात्रा में सम्मिलित हुए। अब तक १२००० गाँवों में घर घर पहुँच कर जन-मानस पर भूदान-यज्ञ की स्नेह-मुद्राएँ वे अंकित कर चुके हैं। ७००० गाँवों के ६१०० दाताओं द्वारा ६००० एकड़ भूमि, ४०००तक साधन-दान तथा १०,००० सज्जनों से वार्षिक २५,००० रुपये व २४०० मन अनाज के सम्पत्तिदान-पत्र उन्होंने प्राप्त किये। भूदान यज्ञ के ९५० विचार सदस्य उन्होंने बनाये हैं तथा १०,००० रु० का साहित्य ग्रामीण बन्धुओं के हाथों में पहुँचाया है। साथ ही १,८०० एकड़ भूमि भूमिहीन परिवारों में वितरित की है।

परम पूज्य बाबा राघवदासजी ने उ० प्र० में १३ अप्रैल सन् १९५५ से पदयात्रा प्रारम्भ की और २ वर्ष १७ दिन तक कार्यक्रम के अनुसार एक दिन का भी व्यवधान हुए बगैर वह कार्यक्रम चलता रहा। बाबा राघवदासजी ने अपनी यात्रा में उत्तर प्रदेश के जन-जीवन के हर पहलू का अध्ययन किया और उसका अहिंसात्मक हल भी प्रदेश के सामने रखा। बाबा राघवदासजी ने अपनी यात्रा का आरंभ फतेहपुर जिले से किया था और अंत झाँसी जिले में। १५ जनवरी सन् १९५८ को बाबा राघवदासजी का स्वर्गवास मध्य प्रदेश में सिवनी में हो जाने के बाद इस प्रदेश में उनकी स्मृति को जीवित रखने के लिए कार्यकर्ताओं में गहरा अंतःमंथन हुआ और तय हुआ कि उनके अंतिम दिनों के कार्य को जारी रखना है। फलस्वरूप इस प्रदेश के निष्ठावान और कर्मठ *कार्यकर्ता श्री पुजारी रायजी* के नेतृत्व में १५ अगस्त १९५८ को मुरादाबाद से अखण्ड पदयात्रा आरंभ हुई, जो अब तक अबाधित रूप से चल रही है। इस पदयात्री टोली के अब तक की प्रगति का विवरण *यहाँ दिया गया है।*

श्री पुजारी राय

इन यात्राओं के अतिरिक्त ग्रामदान के लिए मिर्जापुर जिले में तीन मास तक सन् १९५८-५९ में ग्रामदान-अभियान के रूप में जिले की दुद्धि तहसील में वनवासी क्षेत्र में पदयात्राएँ हुईं।

गाजीपुर-सम्मेलन की अध्यक्षा

श्री सरला बहन : एक परिचय

श्री सरला बहन सन् '३८ में अपनी युवावस्था में गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर इंग्लैंड से भारत में आयी थीं। उनका ब्रिटिश नाम कैथरिन हैलीमन था। प्रारंभ में वे उदयपुर के विद्या भवन में *शिक्षिका का कार्य करती रहीं। वहाँ से सेवाग्राम आयीं* और सन् १९४१ तक गांधीजी के मार्गदर्शन में नयी तालीम का कार्य किया। सन् १९४२ में अस्वस्थता के कारण वे सेवाग्राम छोड़ कर कुमाऊँ, अल्मोड़ा में *आयीं। सन् १९४२ को आन्दोलन में उन्होंने इस जिले* में महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया। आन्दोलन में गिरफ्तार व्यक्तियों के परिवारों की सहायता और आंतरिक बल दे रही थीं। इसी समय गिरफ्तार कर ली गयीं और फिर जेल गयीं। सन् '४६ में उन्होंने कौसानी में कस्तूरबा महिला उत्थान मंडल की स्थापना की, जिसके द्वारा वे पहाड़ों में रहने वाली बहनों को नयी तालीम देकर *सामाजिक क्रांति के कार्य के लिए तैयार कर रही हैं।* श्री सरला बहन में ६० वर्ष की अवस्था में भी विनोबा के विचारों को व्यावहारिक रूप देने के लिए युवकों का सा उत्साह है। आज भी वे पीठ पर दस-बारह सेर का झोला लादे हुए पहाड़ों के दुर्गम पथ पर १०-१२ मील तक की पदयात्रा कर लेती हैं।

वे मानव-समाज की एक मूक सेविका हैं। उसके लिए उन्होंने अपना सारा जीवन दे दिया है। *व्यक्तिगत कुछ नहीं रखा है।*

•

१५ अगस्त १९५८ से ३१ दिसंबर १९५९ तक

पड़ाव	५३६	'भूदान-यज्ञ' की फुटकर बिक्री	१२८४ रु०
मील	३,८३२	टोली द्वारा कती स्वावलंबी गुंडियाँ	१९००
स्वागत में प्राप्त सूत की गुंडियाँ	५९८	भूदान प्राप्ति	१२४ बीघा, १८ बि०, ११ बि०
साधन दान	३०४ रु० २५ गज खादी	सर्वोदय-पात्र	६५१
'भूदान-यज्ञ' के ग्राहक	४४९	एक घंटे के समयदानी (प्रतिदिन)	९४९
साहित्य बिक्री	८२०९ रु०	कार्यकर्ता-प्राप्ति	१०

उ० प्र० में भूदान में प्राप्त और वितरित भूमि का विवरण [एकड़ों में]

[माह अक्टूबर १९५९ तक]

क्रम	जिला	प्राप्त भूमि	वितरित भूमि	शेष
१	अलीगढ़	२७३१	१९४०	७९२
२	अल्मोड़ा	७१	३५	६
३	आगरा	१६६१	३७४	१२८७
४	आजमगढ़	३३०९	९००	२४०९
५.	इलाहाबाद	३००५६	१४३४५	१५७११
६.	इटावा	९८१	——	९८१
७	उन्नाव	१४२०२	२५२८	११६७४
८	एटा	४३३४	२९९५	१३३९
९	कानपुर	१८२०९	६२२७	११९८२
१०	गोण्डा	८५४५	२४०६	६१३९
११.	गढ़वाल	८७	४	८३
१२.	गाज़ीपुर	१७९५	१२०२	५९३
१३.	गोरखपुर	१११७	२५५	८६२
१४	जौनपुर	५९५२	२६१	५६९१
१५	जालौन	१४३३३	४४२८	९९०५
१६	झाँसी	७५१०	६०८	६९०२
१७	देवरिया	१५०१४	३२९३	११७२१
१८	देहरादून	८१७	३७१	४४६
१९	टेहरी	५७	——	५७
२०	नैनीताल	१५२३	४८	१४७५
२१	प्रतापगढ़	९०५९	२१४६	६९१३
२२	पीलीभीत	५ २८६	३९८३	१९३०३
२३	फतेहपुर	५६००	२८००	२८००
२४	फर्रुखाबाद	८८८	२७७	६११
२५	फैजाबाद	४१६१	१३८१	२७८०
२६	बस्ती	११४०	४०७	७३३
२७	बरेली	१०३०	११७	९१३
२८	बलिया	१५८९	८३५	७५४
२९	बाराबंकी	४९६४	२७४४	२२२०
३०	बाँदा	२२४५१	५५६०	१६८९१
३१.	बिजनौर	६१५८	१७९३	४३६५
३२	बहराइच	७३८८	२३४९	५०३९
३३.	बदायूँ	१०९४	३४९	७४५
३४.	बुलन्दशहर	७६६१	——	७६६१
३५	मिर्जापुर	२५९८०	[illegible]	१७०६१
३६	मेरठ	१४७३	२४७	१२२६
३७	मैनपुरी	१२७१	४८३	७८८
३८	मुजफ्फरनगर	१७८	५७	१२१
३९	मुरादाबाद	६१८२	१४७२	४७१०
४०	मथुरा	२०३३	२४८	१७८५
४१	रामपुर	५५६	५२	५०४
४२	रायबरेली	२७७१७	६१५३	२१५६४
४३	लखनऊ	५२७०	१३४५	३९२५
४४	ललितपुर	९९५५	३६५१	६३०४
४५	वाराणसी	८१२२	३३३६	४७८६
४६.	शाहजहाँपुर	३०००	१३५४	१६४६
४७	सहारनपुर	२२३२	११२१	११११
४८	सुल्तानपुर	१८०००	६८३३	१११६७
४९	सीतापुर	१९१२	४०८	१५०४
५०	हमीरपुर	३८५५२	१६५३९	२२०१३
५१.	हरदोई	३९१४	१४९०	२४२४

कुल प्राप्त भूमि — ४,११,६०८ — वितरित भूमि — ९९,९८४ शेष भूमि, जो वितरित करना है — ३,११,६२४

२५ फरवरी को जिनकी ६१वीं जन्म-जयंति है!

निस्पृह तपस्वी श्री गोकुलभाई भट्ट!

[गांधीजी का जादू जिन पर सवार हुआ और गांधीजी की आंधी में देश-सेवा के लिए उड कर जो जूझ पड़े, उनमें श्री गोकुलभाई भट्ट का एक अग्रणी स्थान है। सिरोही के पास हाथल गांव में उनका जन्म हुआ, किन्तु उनका कार्यक्षेत्र राजस्थान ही नहीं, सारा देश समय-समय पर रहा। गांधीजी ने भारत में आकर देश के सार्वजनिक जीवन-सूत्र को संभाला, उस समय श्री भट्ट बम्बई में शिक्षा ले रहे थे और गांधीजी के आवाहन पर बी० एस-सी० की डिग्री का मोह छोड़ सेवा-क्षेत्र, या युद्धक्षेत्र में कूद पड़े। उसके बाद तो आश्रम जीवन, स्वयंसेवक-जीवन, जेल-जीवन में ही श्री भट्ट निरंतर व्यस्त रहे। राजनैतिक स्वातन्त्र्य-प्राप्ति में और देशी राज्यों की जनता के प्राथमिक अधिकारों की लड़ाई में जैसे वे बराबर जूझे, उसी प्रकार स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद के आर्थिक व सामाजिक स्वातन्त्र्य-संग्राम में भी वे एक निष्ठावान सेवक के रूप में नेतृत्व कर रहे हैं। देशी राज्यों के एकीकरण में उनका ऐतिहासिक हाथ था और उससे पूर्व रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना के प्रयत्नों में उनकी अपनी सेवाएँ थीं। वे कांग्रेस-कार्यकारिणी के सदस्य रहे, रियासत में उत्तरदायी शासन की स्थापना पर प्रधान मंत्री रहे। विधान बनाने वाली परिषद् और संसद् के सदस्य रहे। आन्दोलन का व सभा-समारोहों का नेतृत्व किया। फिर भी उनमें अभिमान छू तक नहीं गया है और वे एक सैनिक ही अपने आपको मानते हैं। आज वे राजस्थान भूदान-यज्ञ बोर्ड के अध्यक्ष व अनेक संस्थाओं के प्राण व कार्यकर्ताओं के मार्गद्रष्टा हैं। अवस्था व अनुभव की दृष्टि से राजस्थान के वरिष्ठतम व्यक्ति हैं, फिर भी बहुत सादा जीवन बिताते हैं और निरंतर सेवा-कार्य में लगे रहते हैं। अनेक सरकारी व अर्ध-सरकारी कमेटियों के चेयरमैन, सदस्य के रूप में उन्होंने काम किया है। राजनैतिक संगठन के वे सदस्य हैं, किन्तु अपना कार्य और चिंतन आज भी भूदान-ग्रामदान व सर्वोदय-विचार से ओतप्रोत रखते हैं। इसलिए अपवादस्वरूप वे विनोबाजी के मान्य शान्ति-सैनिक हैं, जिनका चिंतनसर्वस्व भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति के लिए समर्पित है और जो पक्ष या सत्ता की राजनीति में भाग नहीं लेते। विनोबा के शब्दों में *श्री गोकुलभाई का स्थान राजस्थान में अद्वितीय है और उनके जैसा निष्काम* सेवा करने वाला दूसरा व्यक्ति राजस्थान में बताना मुश्किल है। अन्य कई राज्यों की भांति राजस्थान की राजनीति, समाजनीति आलोच्य बनी है। फिर भी श्री गोकुलभाई ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें सब पक्ष व व्यक्ति समान श्रद्धा से देखते हैं।]

स्वच्छ शारदाकाश के सितारे!

सिद्धराज ढड्ढा

राजनीति और सार्वजनिक जीवन आजकल पर्याय शब्द-से बन गये हैं। राजनीति के अलावा भी कोई सार्वजनिक काम है या हो सकता है, ऐसा बहुत कम लोगों के ध्यान में आता है। अखबार और आजकल के "सर्वज्ञ" अखबारी लेखक भी राजनीति को ही सब कुछ समझते हैं। वे ही उपरोक्त भ्रम को फैलाने के लिए जिम्मेदार भी हैं। पर राजनीति हमारे जीवन का एक अंग है। सार्वजनिक जीवन और काम राजनीति से कहीं ज्यादा व्यापक और स्थायी महत्त्व की चीज है। राजनीति उसका सिर्फ एक पहलू है।

राजनीतिक क्षेत्र में चमकने वाले सितारे मानो मेघाच्छन्न आकाश के सितारे हैं। कभी चमकते हैं, कभी ओझल हो जाते हैं। कभी खूब तेजी से चमकते हैं, कभी उनकी ज्योति भी मंद पड़ जाती है। बादलों के बीच से एक बार चमक कर जब फिर ढँक जाते हैं, तब लोग उन्हें भूल जाते हैं। पर व्यापक सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति लोगों के दिलों पर अपना अपेक्षाकृत ज्यादा स्थायी प्रभाव डालते हैं। वे स्वच्छ शारदाकाश के चमकते सितारे हैं। कोई ज्यादा चमकीले तो कोई कम, पर उनकी चमक स्थायी होती है। लोग उन्हें पहचानने लगते हैं और उनके प्रकाश से अपनी दिशा भी निश्चित करते हैं।

गोकुल भाई ऐसे ही एक सितारे हैं। राजनैतिक क्षेत्र में भी वे चमके हैं। आधुनिक राजस्थान के इतिहास में उनकी याद सदा बनी रहेगी। अभी १२ साल भी पूरे नहीं होते हैं, जब आज का राजस्थान टुकड़ों टुकड़ों में बँटा हुआ था। कोई छोटे, कोई बड़े, कोई प्रगतिशील, कोई पिछड़े हुए, ऐसे अलग-अलग टुकड़े थे। इसमें शक नहीं है कि हिन्दुस्तान की आजादी से पैदा हुए जन-उल्लास और जन-उत्साह की बाढ़ में छोटे छोटे टुकड़े या कालग्रस्त राजशासन टिकने वाले नहीं थे, फिर भी नियति के हर काम में कुछ व्यक्ति निमित्त बनते हैं। महाभारत भी वैसे नियति का ही खेल था। अर्थात् उस समय की सारी पूर्व परिस्थितियों के कारण वह होने ही वाला था। पर कृष्ण ने अर्जुन को उसका निमित्त बनने का आह्वान किया—"निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्" अर्जुन नहीं होता तो कोई दूसरा निमित्त बनता। पर ऐसी नियति होते हुए भी निमित्त बनने वाले व्यक्ति का महत्त्व कम नहीं होता। गोकुल भाई भी राजस्थान प्रदेश के निर्माण में एक निमित्त बने। उस समय के जो "चार बड़े" थे, उनमें निःसन्देह गोकुल भाई भी बड़े थे।

> श्री गोकुलभाई भट्ट, जिन्होंने वफादार कांग्रेस-कार्यकर्ता के रूप में प्रसिद्धि पायी है, अहिंसा की भावना से ओत-प्रोत हैं।
>
> —गांधीजी
>
> जिस पुरुष का आप गौरव करने जा रहे हैं, उसका स्थान राजस्थान में अद्वितीय है। गोकुलभाई जैसा लम्बे समय से निष्काम सेवा करने वाला दूसरा व्यक्ति राजस्थान में बताना मुश्किल है।
>
> —विनोबा
>
> श्री गोकुल भाई जैसे व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा बढ़े तो वह अपने आप में बहुत ही बड़ा रचनात्मक और विधेयक कार्य होगा। गांधीजी के विचारों के आधार पर सर्वोदय आंदोलन द्वारा जिस समाज का निर्माण हम करवाना चाहते हैं, वह है मूल्य-परिवर्तन की क्रांति। उनके लिए आवश्यक है कि ऐसे लोकसंग्रही पवित्र आत्माओं की प्रतिष्ठा समाज में बढ़ायें।
>
> —जयप्रकाश नारायण

बराबर वालों में भी वे प्रथम थे : 'फर्स्ट अमांग इक्वल्स।' राजस्थान के निर्माण के इतिहास में गोकुल भाई का नाम सदा उल्लेखनीय रहेगा।

पर राजनीति, राजनैतिक पद-प्रतिष्ठा या सत्ता कभी गोकुल भाई के जीवन के आराध्य नहीं रहे, जैसे वे और बहुत से लोगों के होते हैं और हैं। राजनीति या सत्ता में गोकुल भाई नहीं रहे, सो बात नहीं है, पर वे चीजें सार्वजनिक सेवा के एक अंग के नाते ही जब जरूरी हुआ, उन्होंने स्वीकार कीं। सत्ता पर नहीं रहे, तब भी सार्वजनिक सेवा की उनकी लगन में या उत्साह में या काम में कोई कमी या फर्क नहीं आया। यह राजनीति उनके लिए जन-सेवा का माध्यम थी—साधन थी, अपने आप में साध्य नहीं। उनकी अनासक्ति सचमुच अनुकरणीय है। जरूरी हुआ तो न पद सम्हालने में कभी संकोच हुआ, न उसे छोड़ने में कोई ग्लानि। इसीलिए दूसरे लोगों की तरह गोकुल भाई ने कभी पद छोड़ने पर हीनभाव महसूस किया हो, ऐसा नहीं देखा। जन-सेवा उनके जीवन का सहज विषय बन गयी है, आसक्ति नहीं। पानी के सरल प्रवाह में जैसे आगे कोई रुकावट आती है तो वह बच कर निकल जाता है, पर निरन्तर बहता चला जाता है, उसी तरह गोकुल भाई हैं। पद तो उनके पास बहुत आते हैं और वे कभी इन्कार भी नहीं करते, पर मन उनका कहीं चिपका हुआ नहीं रहता, इसलिए उतनी ही आसानी से छोड़ भी देते हैं और छोड़ने की कसक भी दिल में नहीं रहती।

इस तरह सहज भाव का ही नतीजा है कि गोकुल भाई के जीवन में विज्ञापनबाजी या दिखावा बिल्कुल नहीं है। प्रसिद्धि के पीछे वे नहीं पड़ते। आत्म-प्रकाश उनके स्वभाव में है ही नहीं। यहाँ तक कि उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में बहुत कम लोग ज्यादा जानते होंगे। एक बार गोकुल भाई तत्कालीन सिरोही राज्य के, जहाँ उनका जन्म हुआ था, प्रधान शासक थे, पर मेरे जैसे लोगों को भी जो रात-दिन उनके साथ काम करते थे, महीनों तक इस 'रहस्य' का पता नहीं चला! जैसा उनका बाहरी दर्शन सीधा सादा और सरल है, वैसा ही उनका अन्तरंग भी है—आमविलयहित, सहज और सरल। जीवन की सादगी तो उनका अभिन्न स्वभाव बन गया है। और वह इतनी सहज है कि उसमें देखने वाले को भी कोई अस्वाभाविकता नहीं होती—उनको तो नहीं ही मालूम होती होगी। आज हममें से बहुत से लोग ऐसे हैं, जो वाणी से तो अपरिग्रह, सादगी आदि के गुण गान करते हैं, पर जीवन में वे जैसे कम नजर आती हैं। गोकुल भाई के लिए ये सब बातें कहने सुनने की वस्तु नहीं रही हैं। वे उनके जीवन में उतर गयी हैं। गोकुलभाई का व्यक्तित्व मुझे कभी कभी स्वर्गीय जाजूजी की याद दिलाता है। हालाँकि जाजूजी में ये सब गुण बहुत अधिक विकसित थे, पर ऐसा लगता था कि उन्हें इन सब गुणों के विकास के लिए बहुत प्रयत्न करना पड़ा।

गोकुल भाई की एक दूसरी विशेषता उनकी विनोदप्रियता और छोटे बड़े सबके साथ में समान रूप से घुल मिल जाने की है। वे छोटों के साथ छोटे और बड़ों के साथ बड़े सहज ही बन जाते हैं। इसके कारण सभी कार्यकर्ताओं के मन में उनके लिए स्नेह और आदर है। क्रांति के लिए उतावले नवजवानों को कभी कभी उनकी दलीलें शायद न जँचती हों, फिर भी यह भरोसा रहता है कि गोकुल भाई जो कुछ कहते हैं, वह नवजवानों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए

नहीं, लेकिन साथी के खतरों से उन्हें सावधान करने के लिए। भूदान-आंदोलन के सिलसिले में पिछले आठ वर्षों में मैंने देखा है कि गोकुल भाई शुरू में चाहे किसी नये कदम का विरोध भी करते हों, लेकिन धीरे-धीरे सचाई उनको पकड़ लेती है और उनका विरोध समाप्त हो जाता है। उनके मन में क्रांति की लगन किसी भी दूसरे व्यक्ति से कम नहीं है। पर वे सब बातों को सोच समझ कर कदम उठाते हैं। सर्वोदय-आंदोलन में पिछले दिनों पक्ष मुक्ति का विचार काफी विकसित हुआ है और आन्दोलन का एक मुख्य अंग बन गया है। स्वयं विनोबा ने एक बार गोकुल भाई को कहा कि जब वे भूदान-आंदोलन में इतनी दिलचस्पी के साथ लगे हुए हैं, तो फिर नाम के लिए भी पक्ष से जुड़े हुए क्यों हैं? उससे मुक्ति पा लें तो अच्छा है। गोकुल भाई के मन में इस विचार की प्रतीति पूरी नहीं हुई थी, इसलिए उस समय उन्होंने अपनी असमर्थता जाहिर की। पर धीरे-धीरे यह विचार उनके अमल में लाया गया और आज वैधानिक दृष्टि से पक्ष के सदस्य होते हुए भी एक प्रकार से वे उससे मुक्त हो गये हैं। विनोबा ने अजमेर-सम्मेलन में सार्वजनिक रूप से इसका जिक्र भी किया था और शान्ति-सैनिकों के लिए पक्ष मुक्ति की जो शर्त है, उसका गोकुल भाई के लिए अपवाद भी किया।

जैसा जयप्रकाशजी ने राजस्थान के पिछले सम्मेलन के वक्त कहा था, गोकुल भाई जैसे निस्पृह व्यक्ति का सम्मान उन मूल्यों का सम्मान है, जिन्हें हम समाज में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वालों का सारा जीवन उतना ही सहज, सरल और निस्पृह हो जाय, जितना गोकुल भाई का है, ऐसी प्रार्थना हम सब करें।

प्रस्तुत अंक

भूदान-ग्रामदान आन्दोलन ने देश के समस्त सर्वोदय और रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ जिस व्यापक समाज-परिवर्तन की प्रक्रिया का दिशा-निर्देश दिया है, उसमें उत्तर प्रदेश का अपना विशिष्ट और गौरवपूर्ण स्थान है। यहाँ की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं के माध्यम से अहिंसक क्रांति का यह कार्यक्रम उठाया गया है। इस सारे कार्यक्रम की एक ही स्थान पर संक्षिप्त जानकारी देने की दृष्टि से उत्तर प्रदेश के छठवें सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर 'भूदान-यज्ञ' का यह अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

किसी प्रान्त के काम की पूरी जानकारी देने के निमित्त से 'भूदान-यज्ञ' का यह प्रथम ही अंक है। हम यह जरूर चाहते हैं कि अन्य प्रान्तों के काम की जानकारी भी इसी तरह से प्रकाशित की जाय। इस अंक में कुछ बातें छूट गयी हैं, या कुछ कमियाँ रह गयी हैं, वे कमियाँ उन अगले अंकों में न रहें, इस पर हमारा ध्यान रहेगा। हम अपने पाठकों से भी यह जानना चाहेंगे कि वे इस तरह के "प्रदेशीय विशेषांक" में और किन किन बातों का समावेश देखना चाहते हैं, यह लिखें। पाठक हमारी कमियाँ सुझावें तथा आगे के लिए अपने सुझाव भेजने की कृपा करें।

उत्तर प्रदेश के काम की यह सारी जानकारी संकलित करके तैयार करने में हमें विशेष रूप से श्री कपिलभाई, श्री श्यामाचरण शास्त्री, श्री रघुनाथ दीक्षित और श्री सत्यदेव द्विवेदी आदि मित्रों का सहयोग मिला है। हम उनके आभारी हैं। —सुबोध कुमार

सर्वोदय-सम्मेलन, सेवाग्राम के लिए पदयात्रा-टोली

हमारे पास अनेक स्थानों से इस प्रकार की सूचनाएँ आ रही हैं कि सेवाग्राम में होने वाले आगामी सर्वोदय-सम्मेलन के लिए पदयात्राएँ या तो आरम्भ हो गयी हैं या आरम्भ होने जा रही हैं। ये पदयात्राएँ गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि प्रान्तों से निकल रही हैं।

पूर्णियाँ जिले के ७ लोकसेवकों ने पदयात्रा करके सेवाग्राम पहुँचने का तय किया है।

निर्मला बहन की पदयात्रा

सर्व सेवा संघ की सहमंत्री श्री निर्मला देशपांडे तारीख १८ फरवरी की सुबह इलाहाबाद से सेवाग्राम के लिए पदयात्रा पर रवाना होने वाली थीं। लेकिन ता० १७ को ज्वर आ जाने के कारण उस दिन रवाना नहीं हो सकीं। १९ ता० की शाम के पाँच बजे उन्होंने पदयात्रा शुरू की। पदयात्रा में ६ भाई हैं: एक बम्बई के, एक बिहार के, एक उत्तर-प्रदेश के बलिया जिले के श्री गांधी आश्रम सेवापुरी के कमलनाथ भाई और इलाहाबाद जिले के दादा लल्लूसिंह और राघव शुक्ल। रवाना होने से पूर्व एक पत्र में श्री निर्मला बहन लिखती हैं:

"आप सबके आशीर्वाद का संबल लेकर यहाँ आयी। लेकिन भगवान की इच्छा कुछ और थी। मुझे एक दिन अधिक रुकना पड़ा। अब बुखार नहीं है। चिन्ता का कोई कारण नहीं है। 'आगे-पीछे उभा राहे, सांभाळीत'—आगे-पीछे सम्हालने वाला खड़ा है। जिसने संकल्प कराया, वही उसे भी निभायेगा।

"आँखों के सामने सेवाग्राम की बर झूलती है। बीच में ४५० मील का फासला है और कमजोर कदम यह फासला तय करने वाले हैं। भगवान की लीला!"

पुरुलिया जिले से श्री एलीभूषण बनर्जी आदि ५ कार्यकर्ता पदयात्रा द्वारा सर्वोदय सम्मेलन में पहुँचेंगे।

बम्बई शहर से श्री शिवाजीराव तांबोटकर, श्री चंद्रकान्त शाह, श्री चन्द्रकान्त देसाई और श्री दैली रेमिंगटन पदयात्रा करके सर्वोदय सम्मेलन के लिए वर्धा पहुँचेंगे।

मध्यप्रदेश के देवरी (सागर) ग्राम से ता० १४ फरवरी को श्री तुलसीरामजी यादव ने सेवाग्राम-सम्मेलन पहुँचने के लिए पदयात्रा प्रारम्भ की।

श्री रविशंकर महाराज और सर्वोदय-पात्र

ता० २५ फरवरी, महाशिवरात्रि के शुभ दिन पूज्य श्री रविशंकर महाराज अपनी आयु के ७७ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। ईश्वर उन्हें दीर्घायु करें।

अहमदाबाद के सर्वोदय-पात्र और विचार-प्रचार के कार्यक्रम की पूर्णाहुति का समारोह श्री नवकृष्ण चौधरी की उपस्थिति में ता० २१ फरवरी को संपन्न हो रहा है।

अहमदाबाद शहर में सतत साल भर गली-गली, घर-घर जाकर सर्वोदय-संदेश पहुँचाने और सर्वोदय-पात्रों की स्थापना करने का काम श्री रविशंकर महाराज ने अपनी इस वृद्धावस्था में किया। अब तक शहर में कुल ४२ हजार सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हुई है। भारत के किसी भी अन्य शहर में इतनी अधिक संख्या में सर्वोदय-पात्र का कार्य नहीं हुआ। महाराज विनोबाजी के पास पहुँचेंगे, तब तक ५० हजार पात्रों की स्थापना होगी, ऐसी उम्मीद है। इसका मतलब यह होगा कि अहमदाबाद शहर के ५० हजार परिवारों ने शान्ति-स्थापना की प्रतिज्ञा करते हुए सर्वोदय के लिए अपना 'वोट' देने का संकल्प किया और साथ-साथ 'समाज को देने के बाद ही खुद खाने' के विचार का संस्कार ५० हजार बालकों में सक्रिय रूप से अमल में लाने की योजना बनायी है।

सर्व सेवा संघ की बैठक और सर्वोदय-सम्मेलन

बारहवें सर्वोदय-सम्मेलन, सेवाग्राम से पहले सेवाग्राम में ही ता० २० मार्च से २५ मार्च तक सर्व सेवा संघ की बैठक होगी। गत वर्ष की भाँति सर्वोदय-सम्मेलन के पहले परिसंवाद का आयोजन न कर संघ की बैठक रखना उचित माना है।

बैठक समाप्ति के बाद २६ मार्च से २८ मार्च तक सर्वोदय-सम्मेलन होगा।

उत्तर प्रदेश में "भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक

इन दिनों पूरे उत्तर प्रदेश में हिन्दी "भूदान यज्ञ" की ४२०६ प्रतियाँ जाती हैं। इन प्रतियों में से ५२० प्रतियाँ कानपुर जिले में जाती हैं, जो कि उत्तर प्रदेश के दूसरे सब जिलों से अधिक हैं। कम-से-कम प्रतियाँ बाराबंकी जिले में जाती हैं, जिनकी संख्या १३ है।

इस अंक में

विनोबाजी का पता:
मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल,
पो० भट्टीकल्याण, जिला-करनाल (पंजाब)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११८७५ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,९००
एक प्रति १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)

भूदान-यज्ञ-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

वाराणसी, शुक्रवार

४ मार्च '६०

वर्ष ६ : अंक २३

सम्पादक : सिद्धराज ढड्ढा

कृषि-उद्योगप्रधान नया समाज

अण्णासाहब सहस्रबुद्धे

सन् १९५८ में सर्व सेवा संघ की ओर से तीन माह के लिए कुछ लोग अन्तर्राष्ट्रीय 'कोआपरेटिव सेमिनार' के निमित्त इजराइल होकर वापस आये। इजराइल के बारे में इसके पहले भी हम लोगों ने काफी सुना था और इस निमित्त से भी हमें काफी सुनने तथा पढ़ने का मौका मिला। इजराइल के जीवन में सीखने लायक बहुत-सी चीजें हैं। हजार-हजार लोगों का सामूहिक और आर्थिक जीवन आज वहाँ चल रहा है। 'कम्यून'-सामूहिक परिवार-के रूप में वहाँ गाँवों की बुनियाद डाली गयी है और उनका जीवन भी सुख से बीत रहा है। भारतीय परिस्थिति में ऐसे जीवन की कितनी संभावना है, इसका हल मैं खोज रहा हूँ।

खेती जैसे शारीरिक श्रम का काम इजराइल में बड़े-बड़े उपाधिधारी, डाक्टर तथा इंजीनियर जैसे पढ़े-लिखे लोग करते हैं। अपनी बुद्धि और ज्ञान का उपयोग समाज को देने के साथ-साथ सामूहिक जीवन में कोई भी काम ८-१० घंटे करने वाले हजार-हजार लोगों के सामूहिक परिवार वहाँ आज अस्तित्व में हैं। आवश्यक पूँजी के आधार पर और संगठन के बल पर अपना जीवनमान का दर्जा भी वे बढ़ा सकते हैं। यह चीज भारत में कहाँ तक सम्भव है? खेती का उद्योग ही उत्पादन का प्रमुख साधन मान कर उसके आधार पर जो ग्रामोद्योग या अन्य छोटे उद्योग करने होंगे, उनके सहारे सौ-पचास युवक सामूहिक जीवन बितायेंगे। क्या हिंदुस्तान में यह हो सकता है? यदि कुछ लोग मिल कर ऐसा जीवन बिताने का निश्चय करते हैं, तो एक 'एग्रो इण्डस्ट्रीयल कम्युनिटी' का निर्माण करना होगा। सामूहिक श्रम के आधार पर जीवनमान का दर्जा ऊपर उठाना पड़ेगा, ज्ञानोपार्जन की लालसा बढ़ती रहे, इतनी फुर्सत भी निकालनी होगी। लेकिन इसकी सम्भावना यहाँ कहाँ तक है, इसके निर्माण के लिए बौद्धिक साधन-सम्पत्ति क्या लगेगी? इसमें पूँजी कितनी लगानी पड़ेगी? फिलहाल जो चालू उत्पादक साधन हैं, उनमें क्या परिवर्तन करने पड़ेंगे, संगठन तथा सामूहिक जीवन के आधारभूत नियम क्या रहेंगे? इन सबके बारे में पिछले एक साल से मैं सोच रहा हूँ।

काम के साथ श्रम-निष्ठा

भूदान-आन्दोलन पिछले आठ-नौ साल से चल रहा है। उसका हमें अनुभव यह आया कि भूमि प्राप्त हुई, ग्रामदान भी हुए, लेकिन निर्माण कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं का वर्ग आज हमारे पास उपलब्ध नहीं है। आवाहन करने से कार्यकर्ता मिलेंगे नहीं ऐसी बात नहीं, लेकिन ऐसे आने वालों के पास श्रमनिष्ठा नहीं है। काश्तकारों के साथ आठ-दस घंटे काम करने की या उनसे भी ज्यादा कुशलतापूर्वक परिश्रम से खुद के काम के द्वारा मार्ग-दर्शन करने की शक्ति उनमें नहीं है। हमारे 'टेक्निशियन्स' भी एक दृष्टि से व्यवस्थापक-वर्ग में से हैं। ग्रामीण लोगों के साथ वे एकरूप नहीं हो सकते। केवल उत्साह और विशिष्ट विषय का तात्त्विक ज्ञान आज देहात के निर्माण कार्य में पथप्रदर्शक नहीं हो सकता। ऐसे कार्यकर्ता राष्ट्र की माँग को स्वीकार करके यदि इकट्ठे हुए तो क्या इजराइल जैसी पढ़े लिखे लोगों की एक श्रमनिष्ठ कॉलनी अपने देश में खड़ी हो सकेगी? यदि ऐसी कॉलनी एकाध स्थान पर निर्माण हुई, तो क्या वह इस योजना का विस्तार करने में मददरूप होगी? और क्या ग्रामदान-आन्दोलन के निर्माण-कार्य में ये कॉलनी शिक्षा केन्द्र बन सकेंगी?

आज की आर्थिक स्थिति पर संतुलित ढंग से विचार करें और आगे बढ़ें!

खेती का उद्योग ही ऐसी कॉलनी की पार्श्वभूमि रहेगी। आज खेती पर निर्भर लोगों की संख्या हमारे देश में ७०-८० प्रतिशत है। खेती में काम करने वाले परिवार में प्रति व्यक्ति एक एकड़ जमीन उपलब्ध है और उसका दसवाँ हिस्सा जमीन बागायत है। यदि ऐसा मान लिया कि जमीन की कीमत हमने नहीं मानी हो, तो पाँच-छह एकड़वाले सामान्य काश्तकार को बैल, औजार और खेती चलाने की अन्य साधन सामग्री के लिए कुल मिला कर १००० रुपए की पूँजी आज उपलब्ध है। इसमें रहने के घरों का समावेश नहीं किया गया है। खेती के उद्योग से काम की मजदूरी से पैदावार का हिस्सा एक परिवार की वार्षिक आमदनी करीब ६०० रुपये की है। उन्हें खेत में साल में आठ महीना काम करना पड़ता है। उनके रहन सहन के दर्जे को ध्यान में रखते हुए विचार करना हो, तो अन्दाजन ६०-७० प्रतिशत खाने पर १०-१२ प्रतिशत कपड़े पर, ५ प्रतिशत मकान पर और ८-१० प्रतिशत अन्य चीजों पर खर्च होता है। खेती के उद्योग के बारे में इन सब बातों को आधारभूत मान कर मैं नीचे लिखे निष्कर्ष पर आया हूँ।

विकास-क्रम की दृष्टि से यदि विचार करना हो, तो परिवार को अपनी आय धीरे धीरे यहाँ तक बढ़ानी होगी कि जिससे उसका भोजन-खर्च घट सके। कपड़े पर पहले जैसे १०-१२ प्रतिशत वह खर्च करता रहेगा। मकान, फर्नीचर और घर में जो अन्य जरूरी चीजें हैं, उन पर २० प्रतिशत, बच्चों की शिक्षा पर १० प्रतिशत, दवा, आयु-बीमा-योजना इत्यादि चीजों पर १० प्रतिशत और शेष जो रहेगा वह प्रवास, किताबें और अन्य सामाजिक चीजों पर खर्च करेगा।

आज के पाँच आदमियों के परिवार में डेढ़ आदमी अधिक हैं। साल भर के काम का ४० प्रतिशत समय देकर उसकी अल्प-बचत कम होनी चाहिये। इसका दूसरा अर्थ यह होगा कि १०० काम करने वाले स्त्री-पुरुषों के समूह में ४० प्रतिशत लोग ही खेती में काम करेंगे और ४० प्रतिशत लोगों को अन्य उद्योगों में लगाना होगा। शेष २० प्रतिशत लोगों को सेवा, व्यवस्था, व्यापार, लेन देन इत्यादि काम करने होंगे। आज यदि हम औसत एक कुटुंब में डेढ़ आदमी के श्रम की मजदूरी और खेती के उद्योग का मुनाफा मिलाकर ६० रुपये मासिक की आय मानेंगे तो आगे चल कर वह औसत आय १५० रुपये तक होनी चाहिये। इसके माने आठ घण्टे के काम की मजदूरी ३-४ रुपये तक होगी। इस दृष्टि से इस कॉलनी का विकासक्रम धीरे धीरे योजनापूर्वक तैयार करना चाहिये।

दो रुपये की पूँजी लगाये तो १ रुपया आमदनी होती है। खेती उद्योग में पूँजी और उत्पादन का अनुपात यदि ऐसा माना जाय तो प्रत्येक पाँच आदमियों के परिवार की आमदनी आज के वस्तुओं के भावों की परिभाषा से सालाना १८०० रुपये होनी चाहिये। ऐसा यदि हम निकट का ध्येय मान लें, तो पाँच आदमियों के परिवार के लिए ३६०० से ४००० रुपये तक पूँजी हमें फँसानी होगी। ऐसी कॉलनी के उत्पादन का आज का लक्ष्य अपर्याप्त हो, तो पूँजी बढ़ानी होगी। जो योजना होगी उसका दृष्टिकोण सामान्यतः स्वावलंबी रहेगा। लेकिन ७० प्रतिशत तक, उनका जीवनमान जैसा बढ़ेगा उस अनुपात में इस कॉलनी को अतिरिक्त उत्पादन का निर्माण भी करना होगा।

किसी उत्पादन के स्वावलंबन से हमारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति होगी, इसकी सम्भावना बहुत कम है। ऐसी स्वावलंबन की दृष्टि अन्न-वस्त्र की समस्या के बारे में कॉलनी अवश्य रखेगी।

सामाजिक जीवन का रूप

इस कॉलनी में जो लोग शामिल होंगे, उनका सामाजिक जीवन किस प्रकार का रहेगा? सामुदायिक भोजन होगा या अलग-अलग विभक्त कुटुम्ब-पद्धति से जो लोग आयेंगे उनको वेतन दिया जायगा या उत्पादन का हिस्सा दिया जायगा? वेतन में समानता होगी या उसमें थोड़ी बहुत विषमता रहेगी? किस प्रकार के लोग इकट्ठे होंगे, और वे एक दूसरों के साथ कितने परिमाण में एकरूप होकर काम करेंगे? इन सब बातों पर ही कॉलनी के सामाजिक जीवन के नियम अवलंबित होंगे। ऐसा होते हुए भी हम थोड़ा बहुत इसके बारे में सोच सकते हैं।

ध्येयवाद से प्रेरित होकर और आठ घंटे कुशलतापूर्वक श्रम करने की आकांक्षा से ये लोग आते हैं, तो उनका सामूहिक जीवन चलना आसान होगा और वे एक-दूसरों से आनन्द निर्माण कर सकेंगे। पाण्डिचेरी में २०० लोगों की एक कॉलनी है। यद्यपि आज वह सम्पूर्णतया श्रमाधारित नहीं है, फिर भी उसका जीवन सामूहिक जीवन का उच्च आदर्श है। अध्यात्म भूमिका और आत्मसमर्पण की भावनाओं से उनका जीवन एक-दूसरों से बंधा हुआ है। इसराइल में आज ऐसी आदर्श कॉलनीज देखने को मिलती हैं। उनके मर्म में मातृभूमि के निर्माण की एक उत्कट प्रेरणा है। यहाँ जो सुशिक्षित और अशिक्षितों की मिश्र कॉलनी निर्माण होगा, उसमें

ऐसी उत्कट प्रेरणा नहीं होगी, इसलिए उस प्रकार का सामूहिक जीवन का निर्माण आज सहज साध्य नहीं है।

उदाहरण के लिए मान लें कि २०० एकड़ भूमि में रबी मौसम के लिए १०० एकड़ भूमि फसल-योग्य है और ५० एकड़ भूमि में गरमी की मौसमी उपज के लिए काम उपलब्ध है।

यहाँ पर दो ढाई सौ लोगों की एक कॉलनी निर्माण करने का यदि तय हो तो उनमें सौ आदमी काम करने वाले होंगे, ऐसा हम मानें। उसमें से ४० प्रतिशत लोग खेती में काम करेंगे और ४० प्रतिशत लोगों को उद्योगों में काम करना होगा। शेष २० प्रतिशत लोगों को अन्य काम करने होंगे। मौसम के अनुसार खेती और उद्योगों में जो लोग हैं, उनका एक-दूसरे का काम करने में बदल भी हो सकेगा।

इनमें से आधे लोग पढ़े लिखे होंगे और आधे श्रमजीवी तथा दोनों ने एक-दूसरों के लिए पूरक बनने का तो निश्चय किया हो है। हमें यह भी मानना होगा कि यहाँ २५० लोगों का सामूहिक जीवन और भोजन हो सकेगा। प्रारंभ में प्रति व्यक्ति २० रुपये भोजन-खर्च पड़ेगा, ऐसा मानना होगा। ५ आदमियों के स्वतंत्र परिवार के लिए, जिसमें कुल मिला कर ४५ रुपये और दूसरे आश्रितों के लिए प्रतिव्यक्ति १५ रु० की आवश्यकता माननी चाहिए। लेकिन किसी भी परिवार को १०० रु० से ज्यादा नहीं मिलेंगे। एक साल के लिए ऐसे कॉलनी को चालू खर्च का प्रबंध करना होगा। २०० एकड़ भूमि में, आज की हालत में प्रति साल, प्रति एकड़ १०० रुपये की मजदूरी मिल सकेगी, ऐसा मान लिया, तो मजदूरी से २० हजार रुपये प्राप्त होंगे। खेती-उद्योग के अतिरिक्त आज की स्थिति में चार महीने सामान्यतः उन्हें काम नहीं रहेगा। तो उस अवधि में प्रति व्यक्ति २० गज कपड़ा, अंबर चरखे पर सब लोगों के लिए ये लोग निर्माण कर सकेंगे। हर एक परिवार में पति-पत्नी और एक बालक है, ऐसा माना जाय, तो ६० रुपये खर्च होगा और ऐसे ७० परिवारों का करीब ५० हजार रुपये का सालाना खर्च होगा। अंदाजन ३० हजार रुपये का उत्पादन भी ये लोग करेंगे। अर्थात् 'बजेट' नुकसानी का होगा। आज हिन्दुस्तान की खेती और ग्रामोद्योगों की परिस्थिति ऐसी ही है। इसके उलटे, कम से-कम एक छोटे परिवार के लिए मासिक ६० रुपये प्राप्त होने चाहिए, ऐसा मान कर हिसाब किया गया है।

क्या यह योजना सेवाग्राम में चरितार्थ हो सकती है ?

इस संबंध में मैं आज विचार कर रहा हूँ कि क्या सेवाग्राम में ऐसी कॉलनी का निर्माण हम कर सकेंगे? ३०० एकड़ भूमि आज यहाँ है। उसमें १००-१५० एकड़ भूमि अच्छी है। २० कुएँ हैं। उन पर बिजली के पंप लगाये गये हैं। ८-१० हजार फीट की लंबी पाइप लाइन लगा कर १०० एकड़ जमीन को पानी देने का प्रबंध करना संभव है। *गरमी में ४०-५० एकड़ भूमि को पानी मिलने की संभावना है।* दो-ढाई सौ आदमियों के निवास के लिए आज यहाँ मकान भी बने हुए हैं। पर्याप्त परिमाण में ग्रामोद्योग और खेती के औजार उपलब्ध हैं। "हिंदुस्तानी तालीमी संघ" की सामूहिक जीवन की परंपरा भी इसके साथ है। संघ की ओर से जो मध्यवर्ती शिक्षण केंद्र का काम चलता आया है, वैसा *शिक्षण-केंद्र का काम आगे भी चलता रहेगा,* ऐसी अपेक्षा है। ऐसे शिक्षण-केंद्र के लिए आधारभूत खेती-ग्रामोद्योगप्रधान 'कॉलनी' यदि हम सफलता से निर्माण कर सकें, तो खेती, गोशाला की आमदनी चालीस-पचास हजार रुपये से लाख *सवा लाख रुपये तक बढ़ा सकेंगे और खेती को एक आदर्श स्थिति तक पहुँचा सकेंगे, तो यहाँ आने वाले विद्यार्थियों को, इस कॉलनी के द्वारा प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी और शिक्षा तो मिलेगी ही।*

तालीमी संघ में खादी-ग्रामोद्योग की शिक्षा प्रारम्भ की गयी है। लेकिन आठ घंटों के काम के लिए डेढ़ रुपया मजदूरी प्राप्त होगी, इस दृष्टि से उसकी योजना नहीं बनी। संभव है कि कुछ औजारों में सुधार करने होंगे। पिसाई-कुटाई की क्रियाएँ जो आज हाथ से की जाती हैं वे बैल या बिजली की सहायता से करनी होंगी। प्रत्येक की कार्यक्षमता बढ़ेगी, यही उद्देश्य रख कर कार्यक्रम की योजना तैयार करनी होगी।

ऐसा काम यदि यहाँ करना हो, तो मुख्यतः *जो स्थानीय नवयुवक हैं, उन्हें स्थान देना होगा। कुछ हद तक बाहर के लोग भी बुलाने होंगे, कुछ* श्रमजीवी होंगे, कुछ श्रम करने की इच्छा रखने वाले होंगे। कुछ किसान आयेंगे तो कुछ मध्यम-वर्ग के भी होंगे। सब लोगों का बौद्धिक स्तर एक नहीं रहेगा, ध्येयवाद की प्रेरणा भी एक जैसी नहीं होगी। काफी परिमाण में सदस्य नहीं आयेंगे, तो थोड़े थोड़े समय के लिए उसमें मजदूरों को काम करने के लिए बुलाना होगा। बहुतेरे लोगों के बारे में यह उम्मीदवारी का *समय माना जायगा। जिन्हें तज्ञ के नाते कायम रखा जायगा, उन्हें तुलना में वेतन भी ज्यादा देना* होगा। ऐसे भिन्न लोगों के समुदाय का *अनुबंध एक-दूसरों के साथ कैसे होगा? क्या उनका एक समाज निर्माण हो सकेगा? ऐसे समाज का बौद्धिक स्तर दस* साल के बाद भी क्यों न हो, समान किस तरह होगा, और उसके लिए ऐसे भिन्न लोगों के समुदाय की दिशा कैसी रखनी होगी, यह एक जटिल समस्या मेरे सामने खड़ी है। इसका आसानी से हल मिल सकेगा, ऐसा आज नहीं दीखता।

> फिर भी इस सम्बन्ध में मेरे
> विचार गहराई से चल रहा है

• • •

सर्वोदय के दृष्टिकोण • विनोबा

सर्वोदय या मनुष्योदय ?

प्रश्न :

सर्वोदय में प्राणीमात्र का उदय अपेक्षित है या केवल मनुष्य का? यदि प्राणीमात्र का है, और होना भी चाहिए, क्योंकि सर्वोदय का अर्थ ही 'सर्व' का उदय है, तो फिर हिंसक प्राणियों के साथ मनुष्य का क्या व्यवहार होगा? जैसे शेर, भालू और साँप आदि के साथ। *साथ ही उन मूक पशुओं के साथ क्या व्यवहार रहेगा,* जिन्हें मनुष्य अपनी जिह्वा के स्वाद के लिए, स्वास्थ्य रक्षा के नाम पर या चमड़े, सींग, खुर, आँत-दाँत एवं खून से बनी चीजों के प्रयोग के लिए निर्ममता से मौत के घाट उतारते हैं। और यदि केवल मनुष्य मात्र का ही उदय सर्वोदय है, तो इसे सर्वोदय नहीं, 'मनुष्योदय' क्यों नहीं कहना चाहिए?

उत्तर :

शुरू में तो हम मनुष्य का ही उदय करने का प्रयत्न करें, फिर प्राणीमात्र का। अभी तो मनुष्य मनुष्य ही एक-दूसरे का उदय नहीं चाहते, *तो प्राणीमात्र का उदय कैसे चाहेंगे? कम-से कम मनुष्य का शोषण न करे,* इतना तो हो। आज प्राणीमात्र के कल्याण की बात सोचने वाले मानवीय शोषण से भी दूर नहीं हो पाये हैं। अन्य प्राणियों में अभी हम गाय को मनुष्य जैसा स्थान देंगे। शेष प्राणियों के साथ क्या व्यवहार रहेगा, इसके संबंध में कहने में हम अभी असमर्थ हैं, *क्योंकि आज अधिकांश लोग मांसाहारी हैं। अब रहा यह सवाल कि सर्वोदय नहीं,* मनुष्योदय कहने का तो हम अपने लिए बढ़ने की गुंजाइश रखना चाहते हैं। धीरे धीरे प्राणीमात्र के उदय की बात करेंगे। इसलिए मनुष्योदय नहीं, सर्वोदय ही कहेंगे।

ईश्वर का स्वरूप

प्रश्न :

आज ईश्वर को लोग *अलग अलग नामों से मानते हैं और एक-दूसरे का* घोर विरोध करते हैं। राम-*कृष्ण* को मानने वाले ईसा, मुहम्मद का विरोध करते हैं, तो ईसा, मुहम्मद वाले राम-कृष्ण का। इस तरह एक-दूसरे का विरोध करते हैं, और लड़ते हैं। तो सर्वोदय की दृष्टि से ईश्वर का ऐसा कौनसा स्वरूप होगा, जो सर्वधर्मप्रिय एवं व्यवहार्य होगा? यदि सर्वोदय विचार ईश्वर का ऐसा कोई स्वरूप रख कर सका, तो सर्वोदय कैसे सफल होगा?

उत्तर :

ईश्वर का स्वरूप अमुक होगा, ऐसा बताने में हम असमर्थ हैं। अब तक लोगों को ईश्वर के जो-जो स्वरूप अनुभव हुए उन्हें वे मानते आये हैं। उन सबको मिला कर भी उसका पूर्ण-स्वरूप कोई नहीं हो सकता। किन्तु आज के लिए ईश्वर का स्वरूप प्राणी-मात्र की सेवा ही हो सकती है। अर्थात् मनुष्य की पूजा ही ईश्वर की पूजा है। आज न मूर्ति पूजा की *आवश्यकता है, न गुफा में जाकर तप करने की और न भूतोदय की आवश्यकता है।*

झंडे का सवाल

प्रश्न :

सब राष्ट्रों, धर्म-सम्प्रदायों तथा पार्टियों के अपने अलग अलग झंडे हैं और सब अपने-अपने झंडों की विजय चाहते हैं, तो फिर जय जगत् का मंत्र कैसे सफल होगा? इसलिए जय जगत् की सिद्धि के लिए *कौनसा झंडा होगा, जो सर्वमान्य होगा और जिसके सामने सब अपने अपने झंडे समर्पण कर उसी को मानेंगे?*

उत्तर :

झंडे की एक युक्ति प्रो० गोरा ने निकाली है। सब पार्टियों के झंडे लिये फिरते हैं, पर मेरी समझ में कोई भी झंडा न हो तो अधिक ठीक है।

धर्म नहीं बना

प्रश्न :

हम कहते हैं कि धर्म-संप्रदाय मिटने चाहिए और ठीक भी है, *क्योंकि जब तक साम्प्रदायिक झगड़े रहेंगे,* तब तक सर्वोदय असंभव है। परन्तु सर्वधर्म-संप्रदायों को मिटा कर जो धर्म होगा, उसका स्वरूप क्या होगा?

उत्तर :

वास्तव में अभी तक संसार में धर्म कोई बना ही नहीं। मैं कभी-कभी विनोद में कहता हूँ कि धर्म बनाने में ईश्वर भी असफल हो गया है! अब तक ईश्वर के हम जितने अवतार मानते हैं, वे सब एक-एक धर्म-पंथ बना गये हैं। किन्तु एक भी पंथ या धर्म-संप्रदाय सारे समाज ने स्वीकार नहीं किया है। दूसरों ने ही स्वीकार किया है। इसलिए वास्तव में तो धर्म अभी तक बना ही नहीं। आज का धर्म कोई हो सकता है तो "सत्य", "प्रेम", "करुणा" ही हो सकता है!

[illegible]: जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि*

पुलीस के कर्तव्य

हमारी भाषा में 'पुलीस' बिलकुल नया शब्द है, जो पांच पचास बरसों से ही सुनने को मिलता है। 'पुलीस' शब्द का अर्थ है लोगों के मित्र, रक्षक और सेवक। इस प्रकार जनता के साथ पुलीस के तीन संबंध हैं। उन्हें त्रिविध कर्तव्य पालन करने होते हैं। उसके लिए उन्हें वैसा ही शील भी बनाना होता है। उन्हें मित्र के समान परामर्श देने वाला, माता पिता के समान रक्षण-पालन करने वाला तथा सेवक के समान सेवा करने वाला होना चाहिए। स्वराज्य में पुलीस का कार्य एक बड़े सम्मान तथा प्रतिष्ठा का कार्य है। आज भी लंदन की पुलीस की बड़ी ख्याति है। वहां की जनता का अपनी पुलीस पर इतना विश्वास है कि एक बच्चा भी बिना झिझक बड़े भरोसे के साथ उनसे ऐसे जानकारी ले लेता है, जैसे अपने पिता से घर में कोई बात पूछता है।

सज्जनों को दुर्जनों से बचाने के लिए आप ऊपर से हृदय कठोर बनायें, परंतु भीतर से पिता की तरह उसे कोमल रखिये। पुलीस का हृदय सुकोमल होना चाहिए। परंतु सुधार करने के लिए विशेष अवसर पर माता-पिता की तरह उसमें कठोरता आनी चाहिए। हमारा शील मक्खन जैसा हो। ठंड में मक्खन भी सख्त होता है, लेकिन वास्तव में उसकी कोमलता तो उसमें होती ही है। यदि हमारा शील इसी प्रकार का रहेगा, तो परिणाम भी अच्छा ही निकलेगा। जैसे जैसे नेकी की शिक्षा बढ़ेगी, बुराई भी कम होगी। मुझे और आपको प्रसन्नता होगी, जब एक एक पुलीसवाले की संख्या कम होगी और एक-एक शिक्षक की संख्या बढ़ेगी। इस प्रकार धीरे-धीरे आप सब अच्छे शिक्षक बन जायेंगे।

—विनोबा

*लिपि-संकेत : [illegible]; संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

हमने अब तक क्या किया ?

सतीश कुमार

"भूदान-यज्ञ" के पिछले अंक में एक लेख सेवाग्राम-सम्मेलन के लिए विचारणीय मुद्दों के बारे में छपा है। उस लेख को पढ़ने के बाद हमें और हमारे अनेक मित्रों को यह लगा कि इस बार सर्व सेवा संघ के अधिवेशन में जो विचार-विमर्श होगा, वह अवश्य ही फलदायी होगा।

यह ठीक है कि बहुत अधिक विषयों में हमारा ध्यान बिखर जाता है और हम किसी बात का कोई निष्कर्ष नहीं निकाल पाते और न किसी अमली नतीजे पर ही पहुँच पाते हैं। इसलिए यह नितान्त आवश्यक है कि इस बार संघ के अधिवेशन में कुछ चुने हुए, अत्यावश्यक विषयों पर ही चर्चा हो और किसी निर्णय पर पहुँच कर सारे देश के कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन दिया जाय।

अब गगन चुम्बी आदर्शों से काम नहीं चलेगा !

यह कहने की धृष्टता क्षमा की जाय कि हमारे नेताओं और कार्यकर्ताओं में दौरा करने की और व्याख्यान देने की प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक हो गयी है। सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति के लोग यह तय करें कि वे सेवाग्राम-सम्मेलन से अगले सम्मेलन तक व्याख्यान और प्रवास में कम-से-कम समय देंगे और किसी एक निश्चित कार्यक्रम को कार्यान्वित करने का प्रयत्न करेंगे। सच तो यह है कि हमने अभी तक विचारों को आगे बढ़ाने का और गगन चुम्बी आदर्शों को प्रचारित करने का काम ही अधिक किया है। हमने इन सालों में कोई एक भी ऐसा ठोस काम करके नहीं दिखाया है, जिसके बल पर देश को नयी क्रांति का दर्शन हो सके।

जहाँ तक देश की विभिन्न शक्तियों के सहयोग का सवाल है, हमें अधिक-से-अधिक मिला है। अब तक के इतिहास में किसी भी आन्दोलन ने जनमानस की इतनी श्रद्धा हासिल नहीं की होगी, जितनी श्रद्धा विनोबाजी ने और हमारे सर्वोदय-आन्दोलन ने की है। येलवाल में समस्त दलों ने ग्रामदान के काम को अपना समर्थन प्रदान किया। सरकार का पूरा सहयोग हमारे साथ है ही। देश की समस्त खादी-संस्थाएँ, खादी-कमीशन और गांधी स्मारक निधि की सहानुभूति के अलावा आम जनता भी हमारे आन्दोलन को और न केवल हमदर्दी, बल्कि आशा भरी नजर से देखती है। एक शब्द में यही कहा जा सकता है कि इस देश में हमारा विरोध करने वाला कोई भी उल्लेखनीय वर्ग नहीं है। फिर भी हमें अब तक सफलता के जिस छोर तक पहुँचना चाहिए था, वहाँ तक हम नहीं पहुँचे हैं। कितना अच्छा हो, यदि सेवाग्राम के सम्मेलन में हम आत्मनिरीक्षण करके इसका कारण ढूँढ़ सकें।

"आपने हमारे लिए अब तक क्या किया ?"

आम जनता निश्चय ही हमसे यह सवाल पूछती है। क्या एक भी जिला ऐसा है, जहाँ प्रत्येक गाँव भूमिहीनता के अभिशाप से दूर हो ? क्या एक भी जिला ऐसा है, जहाँ जनशक्ति प्रगट हुई हो ? क्या एक भी जिला ऐसा है, जिसके प्रत्येक गाँव में कुआँ और सिंचाई का दूसरा साधन हो ? बिना किसी संकोच के हमें स्वीकार करना पड़ता है कि देश के तीन सौ जिलों में से एक भी जिला अभी तक ऐसा नहीं है। आखिर क्यों ? विनोबा जैसे चिन्तक हमारे नेता हैं। जे॰ पी॰ जैसे नेता हमारे साथ हैं। लक्ष्मी बाबू और बाबा राघवदासजी जैसे पदयात्री हमारे बीच रहे। वैकुण्ठ और नवकृष्ण बाबू जैसे कर्मठ लोग हमारे अगुआ हैं। शंकररावजी और दादा जैसे हमारे मार्गदर्शक हैं। कौन नहीं है हमारे साथ ? समय हमारे साथ है। युग की माँग हमारे साथ है। जनशक्ति हमारे साथ है। फिर भी हम किसी एक जिले में भी ग्राम स्वराज्य क्यों नहीं स्थापित कर सके ? क्या उत्तर है इस सवाल का हमारे पास ? ढूँढ़ना होगा हमें सेवाग्राम के इस सम्मेलन में।

जयप्रकाशजी गया जिले में प्रयोग करें

हम चाहते हैं कि घर-घर सर्वोदय-पात्र हो, तब हम जनशक्ति प्रगट करेंगे। क्या कभी ऐसा होता है कि पहले जनता हमारा साथ दे, तब हम कुछ करके दिखायेंगे ? नहीं ! पहले हमें कुछ करके दिखाना होगा। फिर तो जनता स्वयं हमारे पीछे दौड़ कर आयेगी।

गया जिले में स्वयं जयप्रकाशजी बैठे हैं। समन्वय आश्रम वहाँ है। अनेक तपे हुए कार्यकर्ता वहाँ हैं। क्यों नहीं तय किया जाय कि गया जिले के लोगों की सेवा का कोई खास कार्यक्रम अपना कर हम अगले सम्मेलन तक एक प्रयोग करेंगे। जयप्रकाशजी स्वयं भी यह तय करें कि वे एक साल तक कहीं बाहर नहीं जायेंगे, गया जिले में ही रहेंगे। फिर कार्यक्रम भी कोई ऐसा अपनाया जाय, जिसमें सहज जनशक्ति प्रगट हो सके। जैसे एक भूमि-सेना का संगठन बनाया जाय और इस सेना में जिले भर के लोगों को शामिल होने के लिए आह्वान किया जाय। फिर यह सेना यह तय करे कि जिले भर में जितनी बंजर और परती जमीन है, उसे यह उपजाऊ बनायेगी। अथवा जिले का आज जितना उत्पादन है, अगले साल उससे दुगुना हो जाय, ऐसा प्रयत्न करेगी, अथवा गया जिले का कोई भी गाँव पानी के लिए अभावग्रस्त नहीं रहेगा, अथवा गया जिले में कोई भी आदमी बेकार नहीं रहेगा। इनमें से यदि एक भी कदम सफल हो जाय तो देखते-देखते जनशक्ति प्रगट हो जायेगी।

इस तरह से अगले सम्मेलन तक हमें किसी-न-किसी मंजिल तक पहुँचना ही है, ऐसा कोई कार्यक्रम इस सम्मेलन से प्राप्त होना चाहिये। केवल भाषणों से और सभाओं से तो कुछ होगा नहीं !

ऊपर मैंने जो कुछ कहा है, उसके पीछे मेरे मन का दर्द छिपा हुआ है। केवल आलोचना के लिए आलोचना करना मेरा उद्देश्य नहीं है। मैं उन लोगों में से भी नहीं हूँ, जिन्हें आन्दोलन के भविष्य पर भरोसा न हो। मैं केवल यह चाहता हूँ कि उस समय को तीव्रता से हम समझें। बहुत से ऐसे हमारे कार्यकर्ता मित्र हैं, जिनके हृदय में किसी समय आन्दोलन के लिए अपार श्रद्धा थी, पर आज वे निराश हुए हैं और यह कहते हुए कि 'अब हमारे मन में किसी भी क्रांति के लिए तड़फन नहीं है !' वे आन्दोलन से दूर चले गये हैं। उस ओर हमारे सम्माननीय बुजुर्ग विचार करें, ऐसी मेरी नम्र प्रार्थना है।

आज का यह ग्रामराज्य

रामस्वरूप शर्मा
जमालपुर

ग्राम-पंचायतों के गीत बहुत गाये जा रहे हैं। पश्चिमी ढंग के मतदान-प्रणाली के आधार पर निर्विरोध निर्वाचन भी होते हैं, किन्तु जब तक सर्वसम्मत पंचायतों के पदाधिकारियों का निर्वाचन नहीं होता, तब तक वे जनता के सच्चे प्रतिनिधि एवं हितैषी नहीं माने जा सकते, यह निश्चित है। इसी विचार के आधार पर प्रस्तुत कहानी लिखी गयी है।

रामनाथपुर में बड़ी चहल-पहल है। कुछ लोग इधर तो कुछ उधर दौड़ते घूमते दिखाई दे रहे हैं। पाठशाला के प्रांगण में शामियाने तने हैं। फूलों-पत्तियों से सजाया भी गया है। टेबुल पर मालाएँ रखी हुई हैं। उसके पीछे विश्ववंद्य बापू की एक बड़ी तस्वीर टाँगी गयी है। रास्ते भी साफ-सुथरे दिखाई देते हैं। आज गाँव में स्वराज्य मिलने वाला है न! अपनी व्यवस्था आप करने, निष्पक्ष न्याय पाने, अधिकार का उपयोग और कर्तव्य भार निबाहने के अधिकारी आज से गाँववाले हो जायेंगे। कार्यपालिका और न्यायपालिका का विधिवत् संगठन हुआ है।

× × ×

गाँव के बुद्धिमान, कर्मठ एवं त्यागी व्यक्ति मुखिया चुने गये हैं। वे पूरी तत्परता से ग्राम विकास-कार्यों में लगे हैं। पुराने ईर्ष्यालु और मुकदमेबाजों की अब नहीं चल पाती। सभी को निष्पक्ष एवं यथार्थ न्याय मिल रहा है। वासुकी बाबू न्यायपीठ के सरपंच जो हैं। दोनों विभागों के सदस्य, मुखिया एवं सरपंच के हार्दिक सहयोग के कारण उत्तरोत्तर सफल हो रहे हैं। देखते ही देखते गाँव का कायापलट हो गया। जनमार्गों के निर्माण कार्य चल रहे हैं। प्रपंचियों द्वारा अब प्रवंचना का शिकार नहीं बनाया जा सकता। यद्यपि पंचायतों के पदाधिकारियों ने सभी के सहयोग की कामना की, उसे प्राप्त भी किया। योग्यतानुसार प्रभार-वितरण भी दिया गया था, तथापि शोषकों, पराश्रयियों के कार्यों में व्यवधान पड़ गया था। वे अन्दर ही अन्दर जल भुन रहे थे। मौके की तलाश में थे।

देखते ही देखते पाँच वर्ष व्यतीत हो गये! पुन: चुनाव की तैयारियाँ चलने लगीं। शोषकों एवं प्रपंचियों ने सोचा कि यदि ये ही पदाधिकारी फिर से हो गये, तो हमारा निस्तार नहीं! सम्मान प्रतिष्ठा के साथ साथ रोब और हेकड़ी भी गायब! लगभग चार सौ बीघियों को जिलाना आवश्यक माना। वे पिल पड़े पाशुपत अस्त्र लेकर! *सर्वत्र प्रचार किया जाने लगा कि शोभानाथ बाबू ने किया ही क्या है!* ये सभी तो मेरी प्रतिष्ठा एवं कीर्ति के कारण हो पाता था। वे तो केवल इधर-उधर किया करते थे। मैं ही वास्तव में सभी कुछ करता था, वे तो निमित्त मात्र थे।

कुछ लोगों को जातीयता के नाम पर उभाड़ा। कुछ को इधर-उधर की बातें बतायी गयीं। गाँव के अवांछनीय तत्वों को पेशा के नाम पर भड़काया गया। *अपनी अमलदारी के समय से ही आज तक की कर्मठता एवं सत्कार्य,* चाहे शोषण एवं स्वार्थ-साधन के लिए ही क्यों न हो, की दुहाई दी जाने लगी। निष्पक्ष न्याय को दण्डित व्यक्तियों के लिए अन्याय ठहराया गया और उनमें ऐसी बातें बढ़ा कर भावना को उभाड़ा गया कि "तुम्हारे साथ अन्याय किया गया है। इस बार यदि वे पदाधिकारी चुने *जायेंगे, मुखिया होंगे तो तुम्हारे साथ न्याय किया जायगा,* पासा पलट दिया जायगा।" इस प्रकार सभी व्यक्तियों को किसी न-किसी प्रकार से बरगलाया।

दूसरे प्रचारक ने, जो ठाकुर साहब के भाई हैं और प्र.फेसरी करते हैं, समझाया "यह लोकतंत्र का युग है। *मताधिकार के महान अस्त्र का प्रयोग करो! शोभानाथ या उसके साथी चारों खाने चित गिर जायेंगे! इस* बार यदि चूक गये तो पिस जाओगे।"

तीसरे ने कहा—"यह भी भला कोई बात है कि दीपावली ऐसे अवसर पर भी हम द्यूत-क्रीड़ा न कर सकें! अपनी परम्पराओं को परित्याग कर दें! *हे राम!* कैसा पापी है। न धर्म को मानता है और न अपना-पराया ही समझता है। कल्लू डोम और महन्त रघुनाथ दास, एक ही लाठी से सभी को हाँकना चाहता है। हद हो गयी। इनसे मुक्ति तो लेनी ही होगी।"

आखिर मनोनयन-पत्र दाखिल करने का दिन आया। वर्तमान पदाधिकारियों ने देखा, वातावरण विषाक्त है। वे जीत नहीं पायेंगे। हार की कड़ुवी घूंट पीने में शंकर की तरह वे समर्थ न हुए। सुधार एवं जनहित के बजाय प्रतिष्ठा का विचार अभी तक नहीं छूट सका था। वे लड़े ही नहीं हुए। परिणाम वही हुआ। ठाकुरसाहब एवं उनके चाटुकार मुखिया एवं पंच निर्विरोध निर्वाचित हो गये। कार्यपालिका का गठन भी मनमाने ढंग से किया गया। शोषण की चक्की को चलाना जो था!

अब गाँव में पुन: मक्कारों की बन आयी, चार सौ बीसी भी उठी। जमीन्दारी के नाम पर भले ही न हो, किन्तु पंचायत के नाम पर अपने और अपने सगे-सम्बन्धियों का घर भरने लगे। स्वार्थान्धता में रचनात्मक कार्य कहाँ गया! दिन रात अनाचार चलने लगे। मुखिया के घर के सामने ही जुए के अड्डे चलने लगे। सार्वजनिक भूमि अथवा सड़कों पर व्यक्तियों का अधिकार होता जा रहा है। हाँ, इतनी सतर्कता अवश्य बरती जाने लगी कि यदि विरोधी या अपने परिवार के भिन्न व्यक्ति कहीं कुछ जमीन दबाते हैं तो झट कार्यवाहियाँ कर दी जाती हैं। इस प्रकार पंचायत रेकार्ड बनाये जाते हैं। *और तो और, निम्नस्तरीय* स्वार्थ-साधना की जा रही है। चरखा, सूत, करघा, कुआँ आदि के पवित्र कार्यों के नाम पर भी अन्धेर खाता चलने लगा।

अब सर्वत्र निराशा एवं अनाचार व्याप्त हो गया है। लोग ठाकुरसाहब की स्वार्थपरता को समझने लगे हैं। *आगामी निर्वाचन में उन्हें मत नहीं देने की चर्चा समस्त गाँव में चलने लगी है। सभी जगह* विरोध परिलक्षित हो रहे हैं।

मुखिया ठाकुर साहब के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगी हैं, उनके शागिर्द तो और भी परेशान दीख पड़ते हैं। अब शोषण का साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने की सम्भावना हो गयी। खड़ा होने का कोई आधार *नजर नहीं आ रहा है। इसी अवसर पर झट एक धार्मिक टंटा खड़ा कर दिया गया।* एक ठाकुर बाड़ी में एक साधु को घुसा दिया। ऊपर से धर्म एवं जाति का गाढ़ा मुलम्मा चढ़ा कर प्रचारित किया जाने लगा। भूतपूर्व मुखिया ने धर्म निरपेक्षता एवं समुचित न्याय को अपनाया था, तो नास्तिक करार देकर काम बनाया गया, अवांछनीय तत्त्वों को उभाड़ा *था, इस बार पुन: धर्म को अस्त्र बनाया।*

यह है हमारे लोकतंत्र की प्राथमिक इकाई! राज्य के कर्णधारों को लोकतंत्र के समर्थकों को गंभीरता से इस पर विचार करना है कि आखिर किस प्रकार हम भारत में ग्राम-लोकतंत्र की स्थापना कर सकेंगे, धर्मनिरपेक्षता एवं प्रगतिशीलता को सार्थक बना *पायेंगे!*

खादी-काम को नयी दिशा

वैकुंठलाल मेहता

गांधीजी का कार्यक्रम व्यापक था। उनके रचनात्मक कार्यक्रमों का वैशिष्ट्य खादी-प्रवृत्ति थी। उनके कार्यक्रम कभी अवरुद्ध नहीं रहे, उनमें निरन्तर बदल होता रहा है। भूदान भी रचनात्मक कार्यक्रम है। *ग्राम-स्वराज्य की दृष्टि से खादी का क्या स्थान है, क्या मोड़* दिया जाये, यह सवाल है। पिछले दिनों में खादी का काम काफी बढ़ा है, लोगों को काम भी मिल रहा है, लेकिन ग्राम स्वराज्य की दृष्टि से उसको स्वावलम्बन का आधार नहीं मिला है। इसलिए इस विकास से *कार्यकर्ताओं के मन को समाधान नहीं मिल रहा है। उन्हें लगता है कि जो मूल उद्देश्य इसके पीछे है, वह* पूरा नहीं हो रहा है, इसलिए मोड़ देने की बात की जा रही है।

देहातों या शहरों में जो मजबूरी से बेकार पड़े हैं, उन्हें काम देना भी एक पवित्र कार्य है। *व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की दृष्टि से लोग बेकार या अर्धबेकार रहें,* यह अच्छी बात नहीं है। फिर भी बेकारी दूर करते समय कार्यकर्ता का ध्येय क्या है, यह बात मद्देनजर रख कर उसे कार्य करना होगा।

इस दृष्टि से एक तो यह हो सकता है कि नये *मोड़ की दृष्टि से जहाँ-जहाँ काम चल सकता हो, वहाँ* विकेन्द्रित आधार पर इस काम को शुरू किया जाय। राजनैतिक शक्ति के केन्द्रीकरण की तरह आर्थिक केन्द्रीकरण भी कम खतरनाक नहीं है। विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था से ही शोषणविहीन समाज का निर्माण सम्भव है। दूसरा यह कि जहाँ-जहाँ लोग स्वावलम्बन साधने का संकल्प लें, वहाँ भी संस्थाओं को काम प्रारम्भ *करना चाहिए। लोगों को इसका भान कराया जाना* चाहिए कि यह प्रवृत्ति देहाती प्रजा की है, संस्था की नहीं। आज जिन प्रवृत्तियों का विकास ऊपर की प्रेरणा से हो रहा है, उसके विरुद्ध काफी कहा जा रहा है। अब हमारी शक्ति देहातों को पनपाने की होनी ही चाहिए। देहात की शक्ति से ही काम का विकास होना *चाहिए। बाहर से सूचना मिले, मार्गदर्शन को कार्यकर्ता मिले,* काम जनता उठा ले, तभी जन शक्ति का विकास होगा।

बिहार और राजस्थान में नये मोड़ का जो अनुभव आया है, उस पर से इस पर श्रद्धा गहरी हुई है। ऐसा परिवर्तन करने से काम में 'मंदी' आयेगी, यह डर उचित नहीं है। नये मोड़ का अर्थ केवल क्षेत्रीय आधार पर सूत खरीदना और बुनाई की *व्यवस्था करना इतना ही नहीं है, देहात के बुनकरों के साथ* कार्यकर्ताओं का आत्मीय सम्बन्ध जुड़ना चाहिए। केवल उपदेश देकर नहीं, प्रत्यक्ष कार्य करते हुए जनता को शिक्षण देना है।

कुमारप्पाजी से आखिरी मुलाकात!

वल्लभस्वामी

स्वास्थ्य के कारण वर्धा छोड़ कर कुमारप्पाजी दक्षिण में रहने लगे, तब से आम तौर से जब कभी मैं दक्षिण में आता उनसे मिलता। ढाई साल से, मेरा सदर मुकाम बेंगलोर हुआ है। कुमारप्पाजी शायद तभी से या कुछ पहले से मद्रास के जनरल हास्पिटल में दाखिल हुए। जब कभी मद्रास जाता, अक्सर उनसे मिलता। पंजरस्थ सिंह के समान उनकी स्थिति थी। बापू के विचारों के विरुद्ध जो प्रवाह उनके ही अनुयायी कहलाने वाले सत्ताधारी बहा रहे हैं, वह देख कर उन्हें अत्यन्त वेदना होती थी। और अपनी वेदना वे कई बार प्रकट शब्दों में व्यक्त करते थे। उनकी प्रखर टीका में से सत्ताधारी, सेवाधारी, नामधारी, कामधारी शायद ही कोई छूटता! हमारी संस्थाओं की भी वे तीव्र आलोचना करते। मैं उस सबको "रोषोऽपि निर्मलधियां रमणीय एव, कश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या।"—केसर के कटुवेरान के समान निर्मल-बुद्धि पुरुषों का रोष भी रमणीय ही है, इस न्याय से आनन्द से सुनता। इस टीका में कई बार कुछ गलतफहमी भी कारण होती थीं, लेकिन उसको दुरुस्त करने में मैं नहीं पड़ता, क्योंकि उस प्रतिवाद से उनका 'ब्लड प्रेशर' (रक्तचाप) बढ़ने का खतरा हमेशा रहता।

लेकिन न मालूम कुछ महीनों पहले मिला था, तब ऐसी ही कुछ टीका करने के बाद खुद ही कहने लगे कि क्या इस टीका का कोई उपयोग है: आप लोग उसे पसन्द करते हैं या नहीं, क्यों लोगों को दुःख पहुँचाऊँ!

"नाभिनन्देत मरणम् नाभिनन्देत जीवितम्, कालमेव प्रतीक्षेत स्वामिन भृतको यथा।"—अभिनन्दन न मरण का करें, न जीवन का करें, जिस तरह सेवक अपने स्वामी के हुकुम की राह देखता है, वैसे ही काल की राह हम देखें। वैसी स्थिति कुछ सालों से और विशेषत कुछ महीनों से उनकी थी। लेकिन यह काल इतना जल्दी आयेगा, यह शायद उनको भी नहीं लगता होगा, मुझे तो नहीं लगता था। तमिलनाड के श्री जगन्नाथन् आदि मित्रों की माँग के अनुसार सम्पत्तिदान के काम के लिए ता० २७ दिसम्बर, १९५९ की सुबह तीन दिन के लिए मैं मद्रास पहुँचा। दोपहर को खादी-वस्त्रालय में बैठा था। हास्पिटल से कुमारप्पाजी के सेवक शिवरामकृष्णन् ने फोन पर कहा कि कुमारप्पाजी अपने कमरे में फिसल पड़े थे, कोई ईजा नहीं हुई है वगैरह। मेरे रिवाज के अनुसार उस दिन शाम को करीब पाँच बजे श्री जगन्नाथनजी के साथ मैं मिलने गया, तो वार्डबॉय से जानकारी मिली कि कुमारप्पाजी अक्सर तीन बजे उठते हैं, कुछ नाश्ता करके फिर से सो जाते हैं। छह बजे के करीब पेशाब आदि के लिए उठते हैं। इसके पहले वे किसी को भी, नर्स को भी अपने कमरे में नहीं चाहते हैं। २६ दिसम्बर की सुबह छह बजे के करीब वे पेशाब के लिए उठे, लेकिन कमरे में ही कमोड के पास फिसल पड़े। कोई ईजा नहीं हुई। लेकिन खुद होकर उठ नहीं सके। २०-२५ मिनट के बाद नर्स आयी, तब उठा कर खटिया पर लिटाया। उस दिन इसकी खबर किसी को नहीं देने दी। दूसरे दिन उनके भाई को और खादी-वस्त्रालय में खबर देने की इजाजत दी। लेने को दवा उनको दी गयी थी, दर्दहर और शायद फिसलने के कारण से भी चेहरे पर म्लानी दीखती थी। हम आये हैं, यह कहे

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, ४ मार्च, '६०

जाने पर आँखें खोल कर देखा। अंगुलियों से इशारा करके वहाँ गिरे वगैरह दिखलाया और आँखें बंद हो गयीं। शिवरामकृष्णन ने कहा—वे फिसल पड़े, यह 'पैरालिटिक अटैक' (लकवे का दौर) या 'थ्रम्ब' के कारण है, ऐसा अंदाज है। आठ-दस दिन में ठीक पता चलेगा। मुझे ऐसा नहीं लगा कि तबीयत गंभीर है। लेकिन जगन्नाथन् की राय उलटी थी। जो कुछ हुआ उसकी जानकारी वाराणसी दफ्तर को तार से मैंने दी। ता० २८ को मैं उनसे नहीं मिल सका। ता० २९ की शाम को उनसे विदा लेने के लिए गया। तबीयत के बारे में जानकारी मिली कि पैरों पर सूजन है, फेफड़े 'कनजेस्टेड' हैं, दो-तीन दिन से खुद होकर पेशाब नहीं हो रहा है। फिर भी परसों से तबीयत मुझे कुछ ठीक लगी। मैंने कहा कि संपत्तिदान के काम के लिए यहाँ आया था, दो-तीन दिन में कुछ पैसे इकट्ठे हुए, जिसमें से पाँच हजार रुपये बतलागुड्ड के लिए दिये हैं। वे कहने लगे कि पाँच मिनट में पाँच हजार रुपये यहीं इकट्ठे कर सकता हूँ, यहाँ बहुत-सी बहनें कान में मोती आदि पहन कर आती हैं! उनके कान काट लिये जायँ, या तो उनको कहा जाय कि कुमारप्पाजी से मिलना हो तो अपने जेवर देने होंगे। कुछ मिनटों तक यह बात दोहराते रहे और हाथ कान के पास लेकर काटने का अभिनय दिखलाते रहे। अपने सेवक को कहा-एक रजिस्टर रखना चाहिये की कौन क्या क्या जेवर पहने आये थे। थोड़ी देर के बाद कहने लगे कि बापू ऐसा करते कि उन लोगों को समझाते और उनसे जेवर ले लेते। लेकिन मेरा तरीका ज्यादा 'ड्रूरुथफुल' है। मैंने कहा कि बापू का तरीका था 'नॉनवायलेंट' (अहिंसक) है, तो बोले कि मेरा तरीका 'स्ट्रेट' है। तबीयत की इस हालत में भी यह विनोद वृत्ति देख कर मैं कहने जा रहा था कि मृत्यु आयेगी तो उससे भी आप विनोद करेंगे। लेकिन मृत्यु का स्मरण या उच्चारण करना ठीक न मान कर मैं नहीं बोला। कुछ देर तक उनके पास रुक कर हम बाहर आये। ना वेंकटाचलपत ने मुझे कहा कि कुमारप्पाजी कल मुझसे पूछ रहे थे कि वल्लभस्वामी का क्या 'इम्प्रेशन' रहा। मैंने पूछा 'किस बारे में?' वेंकटाचलपति भी यह नहीं कह सके, मैं भी अंदाज नहीं कर सका। लेकिन अब मुझे ऐसा लगता है कि तबीयत के बारे में ता० २७ की शाम को मिलने के बाद मेरा क्या 'इम्प्रेशन' रहा, यह पूछ रहे होंगे। पड़े-पड़े ही उनके मन में क्या विचार चलते थे, उसका अंदाज वेंकटाचलपति ने एक दो बातें बतायीं, उस पर से लगता है। सीढ़ियाँ उतरते हुये वेंकटाचलपति मुझे कह रहे थे कि कुछ दिनों पहले वे उनसे मिले तो कुमारप्पाजी बोले कि पिछले चौबीस घंटों में सैकड़ों लोग मेरे सामने से गुजरे, जिसमें से केवल दो खादी पहनने वाले थे! बापू को जाकर बारह साल होने के बाद भी यह स्थिति है। एक दिन कहने लगे—शायद उन्होंने पढ़ा होगा कि बीस हजार मोटरों की आयात हुई—कि बीस हजार × (गुना) इतने इतने गुना मोटरों के टायर इन मोटरों के लिए कितना खर्च कर रहे हैं। एक दिन कहने लगे कि दुनिया के ७ आश्चर्य हैं, ऐसा कहा जाता है, लेकिन उसमें आठवाँ आश्चर्य जोड़ना चाहिये कि जो लोग अनाज वगैरह

पैदा करते हैं, उनको पेट भर खाने को नहीं मिलता है और जो कुछ भी पैदा नहीं करते हैं, उनको जरूरत से ज्यादा खाने को मिलता है।

ता० ३० जनवरी के बेंगलोर के कार्यक्रम में मुझे हाजिर रहना था और कुमारप्पाजी की तबीयत के बारे में तुरन्त का खतरा न तो हमें और न डाक्टर को लगता था, इसलिए ता. २९ की रात को मद्रास से निकला। ३० की रात को करीब ग्यारह बजे फोन से मालूम हुआ कि कुमारप्पाजी का देहांत हुआ है। श्मशान-यात्रा कब शुरू होगी, इसका अंदाजा मालूम किया। ३१ की सुबह निकल कर तीन बजे मद्रास पहुँचा। सीधे हास्पिटल में कुमारप्पाजी के कमरे में गया। वहाँ कोई नहीं था। उनका शव बर्फ में 'मॉर्चुरी' में रखा है, ऐसी जानकारी मिली। इतवार होने से जिनसे अधिकृत जानकारी मिल सके, ऐसे कोई वहाँ नहीं थे। जहाँ ठहरता हूँ, उस मित्र के यहाँ गया। पूर्णचन्द्रजी से सम्पर्क स्थापित किया, तो मालूम हुआ कि १ तारीख की सुबह सात से नौ बजे तक शव को 'राजाजी हाल' के आँगन में दर्शन के लिए रखेंगे। साढ़े नौ बजे वहाँ से श्मशान-यात्रा शुरू होगी। १ ता० की सुबह नौ बजे के करीब मैं वहाँ पहुँचा, तो 'भजिस' चल रही थी। करीब चार पाँच सौ लोग थे। 'वैष्णव जन', धुन वगैरह चलती रही। अनेक हार अर्पित हुए। गवर्नर श्री मेधी, मुख्य मंत्री श्री कामराज भी आये थे। कुमारप्पाजी का चेहरा शांत था। समय होने पर शव का एक चौरस खादी गाड़ी पर रखा गया। गाड़ी को दो बैल खींचते थे। करीब सवा घंटे के बाद श्मशान पहुँचे। यह केवल हिन्दुओं का श्मशान था। लेकिन कुमारप्पाजी के लिए अपवाद किया गया। कुमारप्पाजी ने दहन किया जाय, ऐसी इच्छा पहले से ही बतायी थी। श्री भारतन् कुमारप्पाजी का भी दहन हुआ था। उनकी कुछ रक्षा उनके भाइयों ने अपनी माँ की कब्र के पास गाड़ कर रखी है। वैसा ही कुमारप्पाजी के बारे में करने वाले हैं। चिता पर गोबर के कंडे बिछाये थे। उस पर शव को रख कर फिर से कंडे बिछाये गये। चंदन घी आदि का उपयोग न किया जाय, ऐसी कुमारप्पाजी की इच्छा थी। मेरे हाथ से अग्नि संस्कार हो, ऐसी सभी लोगों की इच्छा दीखी। लेकिन मैंने सोचा कि श्री विनायक और शिवरामकृष्णन् उनके सेवक थे, उनमें से किसी के हाथ से हो। विनायक मेरे पास ही खड़ा था, उसको मैंने कहा। अग्नि देने के बाद श्री कामराज, दूसरे दो भाई और मैं कुमारप्पाजी के बारे में बोले।

समय की कसौटी

जब एक कार्यकर्ता ने शिकायत की कि मेरा समय बरबाद हो रहा है, न कुछ काम हो रहा है और न कुछ अध्ययन भी हो पा रहा है, तब विनोबाजी ने उसे लिखा :

"समय का बरबाद होना और उसका सदुपयोग होना याने क्या, इसकी एक कसौटी है। जिस क्षण में चित्त में कोई विकार न उठता हो उस क्षण का सदुपयोग हुआ। फिर चाहे बाह्य निष्पत्ति हो या न हो। इससे उलटे, जब कि बहुत काम होता है, लेकिन चित्त में विकार तरंग उठते हों, तो उतना सारा समय बरबाद हुआ, यही समझें। फिर चाहे दुनिया की दृष्टि में उतना समय काम में लगा, ऐसा भी क्यों न मानें त हो।"

सत्याग्रह का विश्वरूप

दादा धर्माधिकारी

"सत्याग्रह" शब्द संसार को गांधी ने दिया। उसमें तीन निष्ठाओं का समावेश है: सत्यनिष्ठा, मानवनिष्ठा, समाजनिष्ठा। मनुष्य-मनुष्य के पारस्परिक व्यवहार में ईमान और सचाई की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ती जाये, यह सत्यनिष्ठा का सामाजिक प्रयोजन है। इसके लिए पहले हर व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रामाणिकता का प्रयोग करना चाहिए। यह आचरण केवल इस अर्थ में सापेक्ष है कि व्यवहार के लिए दो व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। अन्यथा सत्यनिष्ठ व्यक्ति का सदाचरण निरपेक्ष होता है। वह दूसरे व्यक्ति के सदाचार या दुराचार पर निर्भर नहीं होता। अर्थात् सत्याग्रह का आरम्भ निरपेक्ष सदाचरण से होता है! सत्याग्रह को प्रायः लोगों ने प्रतिकार की एक पद्धति माना है। प्रतिकार हमेशा सापेक्ष होता है। जब तक कोई ऐसी परिस्थिति, वस्तु या व्यक्ति उपस्थित न हो, जिसका कि प्रतिकार आवश्यक है, तब तक प्रतिकार के लिए न तो कोई प्रयोजन होता है और न कोई अवसर। इसलिए जो लोग सत्याग्रह को केवल प्रतिकार की एक पद्धति या साधन मानते हैं, वे उसे जीवन-व्यापी निरपेक्ष सदाचार का तत्त्व नहीं मानते। इसीलिए जब कभी कोई सत्याग्रह की घोषणा करता है, तो हम यही मानते हैं कि वह किसी-न-किसी प्रकार के प्रतिकारात्मक उपाय की योजना अहिंसा की मर्यादा में करने के लिए प्रस्तुत है। गांधी के सत्याग्रह की विशेषता उसकी प्रतिकारात्मक भूमिका में अवश्य है, परन्तु उसका समग्र या यथार्थ स्वरूप इतना ही नहीं है। अहिंसात्मक प्रतिकार सहयोग की प्रक्रिया का ही एक आवश्यक पहलू है। अतः सत्याग्रही का नित्यधर्म सहयोग है और प्रतिकार उसका नैमित्तिक कर्तव्य। इसका यह अर्थ हुआ कि जहाँ-जहाँ किसी व्यक्तिगत, परिस्थितिगत या समाजगत दोष को दूर करने के लिए सत्याग्रह से काम लिया जायेगा, वहाँ इस बात का निरन्तर ध्यान रहेगा कि हमारे सामने जो खड़े हैं, उनके साथ यथार्थ रूप से सहयोग करने के उद्देश्य से हम उनकी कृतियों का विरोध कर रहे हैं। यह मानव-निष्ठा का एक पहलू है।

सत्याग्रही की भावना

सत्याग्रही जिसके विरुद्ध प्रतिकारात्मक उपायों का प्रयोग करता है, उसके लिए उसके मन में केवल सहानुभूति और सद्भाव ही नहीं, मातृरूप आस्था और आत्मीयता होती है। अगर ऐसा न हो, तो सत्याग्रह कभी विश्वव्यापी और मानवव्यापी सदाचार नहीं बन सकेगा। उस अवस्था में उसका प्रयोग केवल उन्हीं के लिए किया जा सकेगा, जिन्हें हम अनात्मीय मानते हैं, प्रतिपक्षी और पराये मानते हों। जिनको हम अपने स्वजन, आप्त और आत्मीय मानते हों, उनके लिए उसका प्रयोग विहित नहीं माना जायेगा। अर्थात् सत्याग्रह प्रतिकारात्मक होते हुए भी पक्षपातपूर्ण और संकुचित हो जायेगा। अतएव सत्याग्रही प्रतिकार की पहली शर्त यह है कि हमारे मन में अपने प्रत्येक प्रतिपक्षी के लिए भावरूप सहानुभूति हो, और उसके कल्याण की विधायक प्रेरणा हो। जहाँ प्रतिकार द्वन्द्वात्मक होता है, वहाँ योद्धा के हृदय में जितना उत्कट विजिगीषा हो, जितनी दुर्धर्ष युयुत्सा हो और जितना आवेश का आवेग हो, उतनी तीव्रता उसके संघर्ष में आती है। सत्याग्रह में ये भावनाएँ दोषरूप साबित होती हैं। ये सत्याग्रह की प्रभावशीलता को बढ़ाने के बदले उसे कम करती हैं। तात्पर्य यह कि सत्याग्रह के साधन को अधिक अमोघ और कल्याणकारी बनाने की दृष्टि से भी मानव-निष्ठा की आवश्यकता है।

मानव-निष्ठा का इससे अधिक सूक्ष्म और गंभीरतर एक दूसरा पहलू भी है। मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह दूसरे मनुष्य के या दूसरे जीवधारी के दुःख को देख कर द्रवित होता है। यह केवल भावनात्मक अवस्था नहीं है, यह मनुष्य के स्वभाव का उपादान है। यह वह द्रव्य है, जिससे उसका व्यक्तित्व उत्पन्न हुआ है और विकसित हुआ है।

क्रूर से क्रूर मनुष्य भी उन दूसरे व्यक्तियों या प्राणियों के दुःख से द्रवित होता है, जिन्हें वह अपने समझता है। वह जिन्हें अपने प्रतिपक्षी या पराये मानता है, उनको कष्ट देने में या उनके क्लेश देखने में, उसे एक प्रकार का आसुरी आनन्द अवश्य होता है। परन्तु मानवीय जीवन का यह स्वयंसिद्ध तत्त्व है कि अगर किसी कारण से कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को अपना नैसर्गिक प्रतिपक्षी नहीं मानता।

द्वेष और शत्रुता के लिए निमित्त या कारण की आवश्यकता होती है, वह मनुष्य का स्वभाव नहीं है। दूसरे के दुःख से दुःखित होना सदाचार का नियम नहीं है, सामाजिक शिष्टाचार का संकेत नहीं है, धर्मशास्त्र का अनुशासन नहीं है। वह हर मनुष्य का प्रत्यक्ष अनुभव है। इसलिए उसके समर्थन और प्रतिपादन में किसी युक्तिवाद या तर्क की आवश्यकता नहीं है। हमारे जीवन का यह एक अबाधित अनुभव है। अतएव सत्याग्रह का यह आधारभूत सिद्धान्त है कि हमारा प्रतिपक्षी भी स्वभाव से सहृदय और स्नेहशील है।

सत्याग्रह एक क्रियात्मक पुरुषार्थ है

धर्मयुद्ध, सामाजिक शासन, दण्ड तथा नि:शस्त्र प्रतिकार के पर्याय के रूप में सत्याग्रह का आविर्भाव हुआ है। उसमें केवल सहनशीलता और सहिष्णुता नहीं है। तितिक्षा और क्षमा मनुष्य के लिए आत्मशुद्धि के या उसके व्यक्तिगत सदाचार को बढ़ाने के साधन हो सकते हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वे किसी समाज या व्यक्ति की दुष्प्रवृत्ति या दुष्कर्म के प्रतिकार के प्रभावी साधन भी बनें। सत्याग्रह एक क्रियात्मक और विधायक पुरुषार्थ का साधन है। सत्याग्रही अपने साथ होनेवाला अन्याय सह ले, दूसरे का दिया हुआ क्लेश या यन्त्रणाएँ भी हँसते-हँसते बरदाश्त कर ले, तो इतने से ही उसके साहस और शौर्य का सबूत होगा। परन्तु किसी सामाजिक या वैयक्तिक दोष के प्रतिकार के लिए उतनी यह वृत्ति और वर्तन पर्याप्त नहीं है। दूसरे के क्लेश पर दुःख के निवारण की उत्कट भावना जिस प्रकार उसके हृदय में मानवीय सहानुभूति के कारण प्रकट हो उठती है, और वह उसे दुःखियों के दुःख दूर करने के लिए तत्पर करती है, उसी प्रकार अन्यायी व्यक्ति के अन्याय को देख कर और दुराचारी व्यक्ति के दुष्कृत्य को देख कर उस व्यक्ति के लिए दुर्दम्य सहानुभूति सत्याग्रही के हृदय में जाग्रत होती है, और उस सहानुभूति तथा कल्याण कामना से उसके प्रतिकार में खास सात्त्विक तेज और प्रभावक्षमता पैदा होती है। प्रतिकार का उद्देश्य और प्रयोजन दूसरे व्यक्ति को अपमानित करना, परास्त करना या कष्ट देना नहीं होता, बल्कि उसके लिए सत्याग्रही के मन में इतनी आस्था और मैत्री होती है कि वह उसे कम-से-कम कष्ट पहुँचा कर स्वयं अधिक-से-अधिक क्लेश सहने के लिए तत्पर रहता है। अर्थात् वह अपने स्वार्थ या मतलब के लिए प्रतिकार नहीं करता, बल्कि अपने प्रतिपक्षी के हित के लिए और समाज-कल्याण के लिए करता है। उसकी तितिक्षा का स्रोत द्वेष या संयम नहीं है, बल्कि स्नेहशीलता और सहानुभूति है। इस प्रकार सत्याग्रह का साधन विधायक है। वह सत्याग्रही का कल्याण करता है। उस व्यक्ति का भी कल्याण करता है, जिसके विरोध में सत्याग्रह किया गया हो, और साथ-साथ समाज में सार्वजनिक मर्यादाओं के परिपोषण द्वारा समाज-कल्याण भी करता है।

सभ्य समाज और सत्याग्रह

सभ्य समाज का प्रधान लक्षण यह है कि उस समाज के सदस्य सामाजिक मर्यादाओं का तथा अनुशासन का पालन स्वस्फूर्ति से तथा सहज भाव से करते हैं। कानून के दबाव से, दण्ड के भय से या पारितोषिक के लोभ से नहीं करते। कानून और सामाजिक मर्यादाओं का पालन करने की सहज प्रेरणा नागरिकों में जाग्रत करना सत्याग्रही का नित्यधर्म है।

इसलिए जब कभी वह अपनी आत्ममर्यादा के रक्षण के लिए, अपने स्वत्व के संवर्धन के लिए या सामाजिक मूल्यों की स्थापना के लिए किसी विधान, नियम, विधि या सामाजिक मर्यादा का विचारपूर्वक उल्लंघन करता है, तो उसकी उस अवज्ञा से या कानून-भंग से अन्य नागरिकों में नियम-पालन की प्रवृत्ति का ह्रास होने के बदले उसका विकास होना है। इसलिए उसकी अवज्ञा के साथ [illegible] या [illegible] विनयपूर्ण हुआ है।

[illegible], आदर, [illegible] या [illegible] कानून-भंग वह कानून-भंग है, जिससे नागरिकों की [illegible] [illegible], [illegible] और [illegible] का ह्रास होने के बदले विकास होता है। जहाँ ऐसे परिणाम निश्चय न होते हों, वहाँ सत्याग्रही को विचारपूर्वक यह समझ लेना चाहिए कि उसका प्रतिकार [illegible] [illegible] अहिंसात्मक नहीं है। वह [illegible] प्रतिकार हो सकता है, वैध भी हो सकता है, परन्तु [illegible] के लिए वह पात्र नहीं है।

[illegible] का एक वाक्य [illegible] [illegible] किया जाता है: "[illegible] के लिए [illegible] है।" यह [illegible] निरर्थक है। परन्तु इस वाक्य के [illegible] में एक निर्दोष भावना रही है। यह वाक्य [illegible] की [illegible] के लिए नहीं है, [illegible] की [illegible] के लिए है। उसमें यह प्रतिपादन नहीं किया गया है कि [illegible] है या [illegible] है, [illegible] यह कहा गया है कि [illegible] [illegible] है, [illegible] है, [illegible] है। आशय यह है कि [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] के लिए [illegible] पर [illegible] किया जाता है, वह [illegible] [illegible] [illegible]

है, क्योंकि उसमें वाक्य का तात्पर्य कुछ का कुछ हो जाता है। हिंसक साधनों का स्वीकार अभिप्रेत नहीं है, भीरुता का तिरस्कार अभिप्रेत है।

सत्याग्रह के तत्त्वज्ञान को समझिये !

सत्याग्रह के प्रयोग में विकासशीलता, प्रगतिशीलता और प्रयत्नशीलता होती है। देश जब परतंत्र था, लोगों के पास अपना सैन्य और अपने शस्त्र नहीं थे, तब परिस्थिति प्राप्त कार्यक्रम नीति के रूप में लोगों ने सत्याग्रह के साधन का विवेकपूर्वक अंगीकार किया। राष्ट्र की वह बुद्धिपूर्वक अंगीकृत नीति थी। परन्तु उसे परिस्थितिवश ही उपादेय माना गया। उसके पीछे जो तत्त्वज्ञान और दर्शन था, उसका विचारपूर्वक व्यापक रूप से स्वीकार राष्ट्र ने नहीं किया, इसलिए उसके प्रयोग में त्रुटियाँ रह गयीं, प्रमाद हुए और दोष भी पैदा हुए। आज देश में औपचारिक पद्धति से विधिवत् स्थापित लोकनिर्वाचित राज्य है। उस राज्य के अनेक विभागों में से दंड-प्रयोग और शस्त्र प्रयोग का विहित अधिकार पुलिस, सेना, कारागार और न्यायालयों के विभागों को दिया गया है। राष्ट्र के नागरिक इसे अपनी संमति भी देते हैं और उसके लिए धन का उपयोग करने की स्वीकृति देते हैं। सर्वसाधारण नागरिक यह चाहता है कि उनके अधिकारों के संरक्षण के लिए दंड तथा शस्त्र का प्रयोग विधिवत् रूप से किया जाय। जहाँ दंड और शस्त्र का प्रयोग उसकी इच्छा, स्वार्थ या विवेक-बुद्धि के प्रतिकूल होता हो, वहाँ कानून और सामाजिक अनुशासन का प्रतिकार करना वह अपना कर्तव्य मानता है। सारांश यह कि :

स्वराज्य के पूर्व जो सामाजिक संदर्भ और परिस्थिति थी, उसमें और स्वातंत्र्योत्तर कालीन और स्वराज्योत्तर कालीन सामाजिक परिस्थिति और संदर्भ में बहुत बड़ा अन्तर पड़ गया है।

इस दृष्टि से सत्र परिस्थिति और संदर्भ के अनुरूप सत्याग्रह के प्रयोग और प्रक्रिया में भी परिवर्तन होना आवश्यक है। लोकराज्य की परिस्थिति में भी व्यक्ति स्वातंत्र्य और अल्पमत की प्रतिष्ठा का अन्तिम तथा मुख्य आधार सत्याग्रही शक्ति ही है। जिस समाज-व्यवस्था में सत्ता और संपत्ति के आधार पर अल्पसंख्यकों के स्वार्थ सुप्रतिष्ठित हो गये हों, उस समाज रचना में सत्ता संपत्तिविरहित बहुसंख्यक सामान्य लोगों के लिए सत्याग्रह ही सबसे प्रभावशाली साधन रह जाता है। परन्तु उसके प्रयोग की पद्धति और स्वरूप नयी परिस्थिति और नये वातावरण के अनुकूल होने चाहिए। सत्याग्रही प्रतिकार बहुसंख्या या बहुमत की इच्छा तथा स्वार्थ की प्रस्थापना के लिए कदापि नहीं हो सकता। मानवीय व्यवहार में मानवता की प्रस्थापना और विकास के लिए ही वह हो सकता है। इसलिए सत्याग्रह के हर प्रयोग के परिणामस्वरूप सत्याग्रही समुदाय, पक्ष या वर्ग के हृदय में तथा उसके प्रत्यक्ष आचरण में शान्तिपरायणता, सहिष्णुता तथा व्यापक सहानुभूति का विकास होना चाहिए। यह सत्याग्रह की शुद्धता और कार्यक्षमता की परीक्षा है।

सहानुभूति और स्नेह निष्ठुर से निष्ठुर मनुष्य का भी नैसर्गिक गुण है। वह अपने लिए उसका विकास भी करना चाहता है। इसलिए हम उस गुण को मनुष्य का स्वभाव कहते हैं। पर मनुष्य जिनको अपना समझता है, उन्हीं तक अपनी सहानुभूति और स्नेह सीमित रखता है। विज्ञान की प्रगति ने देशों की नैसर्गिक सीमाओं को और राष्ट्रों की राजनैतिक सीमाओं को एक प्रकार से व्यर्थ सिद्ध कर दिया है।

विचारवान तथा विश्वभावना से प्रेरित लोकनेता, मनीषी तथा राजनेता भी अब यह कहने लगे हैं कि एक देश से दूसरे देश में प्रवास करने के लिए प्रमाण पत्र और प्रवेश-पत्र की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। ऐसी परिस्थिति में यह क्रमप्राप्त है कि मनुष्य की वैज्ञानिकता के साथ साथ उसकी व्यापकता की कक्षा भी बढ़ती चली जायगी। अतः यह कहना समुचित और समयोचित ही है कि सत्याग्रह ही एकमात्र विश्वव्यापी नैतिक व्यवहार नीति है।

(हैदराबाद से प्रकाशित सत्याग्रही पत्र-"कल्पना" से कृतज्ञतापूर्वक उद्धृत)

ये छात्र-उपद्रव !!

छीतरमल गोयल

आज देश भर में इस बात की चिंता व्याप्त है कि छात्र-वर्ग में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। जगह जगह झगड़े-विवाद, मारपीट, लूटपाट और गोलीबारी की वारदातें होती हैं। फिर जाँच और मुकदमें चलते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षार्थी के मन में अपने गुरुजनों के प्रति जो आदर भाव की परम्परा रही है, वह तो कहीं मिलने का सवाल ही नहीं, बल्कि आये दिन कालेज-युनिवर्सिटियाँ बंद होतीं और खुलती हैं। इस परिस्थिति का मुकाबला करने और ऐसे सब उपद्रवों को सख्ती के साथ दबाने की बात जिम्मेदार पदों पर आसीन लोग भी न केवल सोचते, बल्कि सार्वजनिक रूप से सरकार को इसकी सलाह भी देते हैं। इस प्रकार शिक्षा के नाम पर राष्ट्र के जीवन के साथ खिलवाड़ चलती है।

पर क्या यह इस भयंकर बीमारी का सही इलाज है? क्या यह एक कुचक्र नहीं, जिससे स्थिति को और भी विषम और भयावह बनाया जा सकता है? वास्तव में देखा जाय तो छात्रों के उपद्रव अपने आप में कोई बीमारी नहीं, बल्कि आज की समाज-व्यवस्था विशेषतः शिक्षित वर्ग की गहरी बीमारी के बाहरी चिह्न मात्र हैं। जो लोग इन चिह्नों को ही बीमारी मान कर बाहरी उपचार या चीर-फाड़ करेंगे वे निस्संदेह असफल तो होंगे ही, किंतु बीमारी भी बढ़ायेंगे। इस बीमारी की जड़ में आज की शिक्षा और जीवन-पद्धति है। जैसी रद्दी शिक्षा आज दी जाती है और विलासिता और मानव की दुर्वृत्तियों को उभाड़ने वाले वातावरण में वे छोड़ दिये जाते हैं, सदाचार और नैतिक विचारों को जिस प्रकार छूत की बीमारी की तरह दूर रखा जाता है, उसके फलस्वरूप ये सब उपद्रव कोई बड़ी बात नहीं!

समाज-व्यवस्था जिम्मेदार है

इस बेकार शिक्षा के अलावा आज की समाज व्यवस्था भी इसके लिए जिम्मेदार है। आज लाखों छात्र जो युनिवर्सिटी में शिक्षा लेते हैं, वे अधिकांश उच्च तथा मध्यम श्रेणी के परिवारों के होते हैं। कुछ उच्च वर्ग के लोगों को छोड़ कर अधिकांश इस पढ़ाई का खर्च बड़ी कठिनाई से ज्यों-त्यों पेट काट कर जुटा पाते हैं। विद्यार्थी के मन पर इस पारिवारिक परिस्थिति का एक धूमिल बोझ होता है, जिसे वह वर्षों तक ज्यों-त्यों ढोते हैं, तो ज्ञान की भूख बुझाने को नहीं, बल्कि इसी आशा और आकांक्षा में कि अमुक डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्हें अमुक ओहदा मिलेगा। डाक्टरों, वकीलों, प्रोफेसरों, इंजीनियरों, प्रशासकों आदि समाज के प्रतिष्ठित तबके की चोटी के कुछ लोगों की, जो आज आराम के जीवन की स्थिति है, वह उनके सामने होती है। उनकी मोटी तनख्वाहें, बड़े बड़े बंगले, चमकती कारें, आवभगत, ठाठ-बाट, काम कम और ऐशो आराम ही सब उनके भविष्य का सुनहरा सपने का दृश्य उन्हें आगे आगे मृगमरीचिका की तरह खींचता रहता है।

शिक्षा और रोजगार

पर शिक्षा के बाद सभी शिक्षितों को काम देने की अभी तक किसी ने कोई जिम्मेदारी नहीं ली है, जिससे परीक्षा के लिए परिश्रम करते हुए सामान्य विद्यार्थी के मन में रोजगार की चिंता बराबर बनी रहती है। इसके अलावा जिन छात्रों को रोजगार मिल पाता है, वे भी संतुष्ट नहीं होते, क्योंकि वह समान रूप से नहीं मिलता। इस प्रकार जब उनकी नींद टूटती है तो वे देखते हैं कि वे चुने हुए पद, जिनकी लालसा में उन्हें दौड़ते दौड़ते वर्ष बीत गये प्राप्त करना तो उनके वश की बात नहीं होती, बल्कि कुछ ही हजारों में दो-चार चुने हुए लोगों के लिए ही वे होते हैं, जिन्होंने प्रायः पहले ही अपनी किलेबंदी कर रखी होती है। उन्हें मजबूरन अपनी गुजारे लायक रोजी पर संतोष करना पड़ता है। ठंडी आहें भरना और उच्च पदों की ओर लालसा भरी दृष्टि से देखते रहने से जिंदगी में कहीं होड़, द्वेष और कहीं निराशा और ग्लानि पैदा होती है।

आज के विद्यार्थी अपने शिक्षाकाल में भी पुराने मित्रों की यह स्थिति आये दिन देखते-सुनते हैं और अपनी भी यही भावी परिस्थिति निश्चित रूप से अधिकांश छात्रों के समक्ष बहुत शीघ्र इस प्रकार आ जाती है, जैसे एक लंबी, सँकरी-अंधेरी गली में गुजरने के बाद एक बड़ी दीवार सामने का रास्ता बंद कर देती दीख पड़े। आगे का रास्ता पार करने के लिए दीवार से सिर टकराने जैसा वे महसूस करते हैं, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? इस परिस्थिति का मुकाबला करने की बेताबी अक्सर उनमें से अपने को कुछ हथियार मानने वाले छात्रों को राजनैतिक दलों के चक्कर में फँसाती है। वे लोग इनकी शक्ति का उपयोग अपने मतलब से पार्टी के लिए करना चाहते हैं और इस कार्य में उन्हें शिक्षक वर्ग का भी अप्रत्यक्ष रूप से योग मिलता है और स्वाभाविक तौर पर ये सब बातें मिल कर उनमें भी दलबंदी पैदा करती हैं। नतीजा यह होता है कि छात्र-जीवन काल की विषमताएँ, राग-द्वेष एक प्रकार से समाज में भावी जीवन की प्रतिछाया के रूप में उभड़ आते हैं और किसी भी सामान्य से प्रश्न पर मुठी कशमकश और टक्कर का रूप धारण करते हैं।

स्पष्ट है कि इस परिस्थिति का सही इलाज छात्रों को दोषी ठहराना या उन पर सख्ती बरतना नहीं, बल्कि उनमें निराशा और होड़ की भावना पैदा करने वाली परिस्थिति का उन्मूलन है। उनके जीवन का वातावरण सुधारना, खर्चों में कमी लाकर बिना शुल्क करना, उपयोगी शिक्षा देना तथा राजनैतिक दलों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए फँसाने पर प्रतिबंध, अनिवार्य आवश्यक कदम हो सकते हैं। पर यह सब तात्कालिक उपाय ही सिद्ध होंगे। असली और स्थायी उपाय तो आज की शिक्षा-व्यवस्था को आमदनी या वर्गों के बड़े-बड़े भेद पर आधारित सरकारी तंत्र से मुक्त करने और अंततोगत्वा आज की समाज-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन से ही हो सकता है।

हिमालय की मूक सेविका - सुश्री सरला बहिन

सुन्दरलाल

गाजीपुर में ता० २७ से २९ फरवरी तक हुए उत्तरप्रदेशीय छठवें सर्वोदय-सम्मेलन की अध्यक्षा सुश्री सरला बहिन की सरलता, सादगी और क्रांतिकारी की आँखों की स्वाभाविक चमक बरबस ही उनकी ओर आकर्षित कर देती है। विद्यार्थियों जैसे चुस्त, लेकिन सादे कुरते सलवार की वेश भूषा में, पीठ पर कम से-कम १०–१५ सेर का पीट्ठू (पीठ का थैला) लादे हुए जब सुश्री सरला बहिन हिमालय के दुर्गम पहाड़ी रास्तों से तेज कदम बढ़ाती हुई गुजरती हैं, तो किसी को विश्वास नहीं होता कि वे ६० वर्ष की होंगी। गांधी विनोबा के सपनों का आदर्श सर्वोदय समाज स्थापित करने के लिए उनमें आज भी युवकों जैसा उत्साह है, जिसके साथ-साथ उनके जीवन भर का अनुभव, कार्यकुशलता और व्यावहारिकता मिली हुई है।

सुश्री सरला बहिन का जन्म सन् १९०० में इंग्लैंड में हुआ था। उनका अंग्रेजी नाम कुमारी कैथरिन हैलिमन था। पिता जर्मन थे, इसलिए पहला विश्व महायुद्ध छिड़ते ही *नजरबन्द कर लिये गये।* छोटी कैथरिन और उसके छोटे भाई के ऊपर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। फिर भी इन बहादुर बच्चों ने अपने *परिश्रम और हिम्मत से इस विपत्ति को अपने लिए स्वावलंबी* बनने के सुयोग में बदल डाला। वे एक दफ्तर में हिसाब रखने की नौकरी करने लगीं।

गांधी की बेटी

पिता की नजरबन्दी और युद्ध की विभीषिका ने कैथरिन को तरुणावस्था में ही युद्ध विरोधी और शांति-प्रेमी बना दिया। उसने भारतीय विद्यार्थियों से गांधी और अहिंसा के बारे में सुना था। आखिर सन् १९३२ में भारत आने का अवसर मिल गया। वे उदयपुर के विद्या-भवन में शिक्षिका बन कर आयीं। बच्चों के साथ हिल-मिल कर उन्हें ज्ञानार्जन करने में मदद देना कैथरिन के स्वभाव में था, इसलिए वे कुछ ही दिनों में एक लोकप्रिय शिक्षिका बन गयीं, जो बच्चों के साथ हँसती खेलती और स्काउटिंग की टोलियों के साथ यात्रा में जाती।

सन् १९३७ में राष्ट्रपिता ने राष्ट्र के सामने बुनियादी शिक्षा की कल्पना रखी। कैथरिन उदयपुर को छोड़ कर इस नये प्रयोग की सफलता के लिए बापू के चरणों में पहुँच गयीं। उनके सरल स्वभाव के अनुरूप ही बापू ने उनका नया नामकरण 'सरला बहिन' किया। वे आर्यनायकम् दंपति के साथ बुनियादी शिक्षा की योजना को कार्यान्वित करने में जुट गयीं और सन् १९४१ तक वहीं रहीं।

सेवाग्राम की गरमी सरला बहिन के स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं थी, फिर भी नये प्रयोग के उत्साह के सामने उन्हें स्वास्थ्य की क्या चिन्ता थी। पर बापू यह कब देख सकते थे! उन्हें उत्तर प्रदेश के अल्मोड़ा जिले में भेज दिया। यहाँ पर श्री गांधी आश्रम के चनौदा गाँव में स्थित उत्पादन-केन्द्र में रहने लगीं। इन्हीं दिनों सन् '४२ का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। राजनैतिक कार्यकर्ताओं की धड़ाधड़ गिरफ्तारियाँ होने लगीं। उनके घर-बार तबाह होने लगे। इस आग के बीच में पीड़ित परिवारों को सहायता पहुँचाने और उनसे भी अधिक उनकी हिम्मत बढ़ाने के लिए सरला बहिन मैदान में कूद पड़ीं। जिस गाँव में वे पहुँच जातीं, वहाँ आत्मविश्वास की एक नयी लहर उमड़ उठती। ब्रिटिश नौकरशाही को सरला बहिन का काम प्रत्यक्ष आन्दोलन से भी अधिक भयंकर लगा। वे एक बार नहीं, दो बार गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दी गयीं।

हिमालय की मूक सेविका

कुमाऊँ के पहाड़ी गांवों में घूमते हुए सरला बहिन ने महसूस किया कि वहाँ की देहाती परिस्थिति बहुत पिछड़ी हुई है। हिमालय की अंधेरी से भी अंधेरी कन्दराओं में रहने वाली माताओं का कष्टमय जीवन उन्होंने देखा। वे दिन भर अपने कृषि व पशुपालन के काम में, खेत व जंगलों में रहती हैं। ऐसी स्थिति में कैसे नये युग का संदेश उन तक पहुँचाया जाये? जेल से छूटने के बाद यह सवाल सरला बहिन के दिमाग में घूमने लगा। इसका हल उन्होंने अपने इस संकल्प के रूप में पेश किया कि, लड़कियों को ऐसी शिक्षा देने की व्यवस्था की जाये कि वे बड़ी होकर अपनी निजी कृषि व गृहस्थी का काम करते हुए, अपनी ग्रामीण सहेलियों को आदर्श ग्रामीण जीवन का दृश्य दिखाते हुए नये युग का सन्देश व्यावहारिक रूप में पहुँचा कर फैला सकें।

अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में, जो अपने मनोहर प्राकृतिक दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है, उन्हें एक मकान और बगीचा दान में मिल गया। सन् १९४६ में इसी स्थान पर 'कस्तूरबा महिला उत्थान मंडल' और उसके अंतर्गत 'श्री लक्ष्मी आश्रम' की स्थापना हुई। बापू ने उन्हें, *कम से-कम २० साल तक भी अपने काम का परिणाम न दिखाई दे तो घबराना नहीं चाहिए, यह आशीर्वाद दिया। आश्रम में लड़कियों को पढ़ने लिए कौन भेजे? सरला बहिन अपना दवाई का झोला लटका कर गाँव गाँव घूमतीं और लड़कियों को पढ़ने भेजने के लिए राजी करतीं। कुछ ही दिनों में नयी तालीम की शाला चल पड़ी।* राजनैतिक पीड़ित परिवारों की ३-४ लड़कियाँ आश्रम में ही रहने लगीं। ज्यों ही आश्रम में हरिजन लड़कियों का प्रवेश हुआ, आस-पास के लोगों ने अपनी लड़कियों को भेजना बन्द कर दिया। वे बहिनजी को शंका की दृष्टि से देखते, "यह तो लोगा-बेटी एक करने (छुआछूत *मिटाने) आयी है। हमारा धर्म नष्ट करेगी।*" पर वे एक सच्चे सत्याग्रही की तरह गाँव के लोगों के प्रति अपना प्रेम बढ़ाती हुई, अपने उद्देश्य पर दृढ़ रहीं। आश्रम में रहने वाली लड़कियों की वह शिक्षिका ही नहीं, माँ भी थीं। सवेरे जाग कर कौसानी की सर्दी में स्वयं ठंडे पानी से स्नान करतीं, तो बालिकाओं को तब ही जगातीं जब मुँह हाथ धोने के लिए गरम पानी हो जाता। भोजन बनातीं, उनको नहलाती-धुलातीं, उनके कपड़े धोतीं और पढ़ातीं। आस-पास के लोगों ने तो आश्रम का बहिष्कार किया था, परन्तु कुमाऊँ के कोने-कोने से सभी जातियों की लड़कियाँ आश्रम में आयीं और कुटुम्ब की वृत्ति से एकसाथ रहने लगीं।

नया मोड़

कुमाऊँ में नयी तालीम के इस अभिनव प्रयोग का सर्वत्र स्वागत हुआ। जनता ने सरला बहिन को पहचाना और उनके काम को आगे बढ़ाने के लिए केवल पर्वतीय प्रदेश से ही नहीं, बाहर से भी आर्थिक सहायता मिली। प्रारम्भ में ४ लड़कियों के छोटे आश्रम में अब दूर दूर की ८० लड़कियाँ रहने लगीं। परन्तु सरला बहिन को इससे संतोष नहीं था। वे तो प्रत्यक्ष क्रान्ति के काम में कूदने के लिए व्याकुल थीं। विनोबा के आह्वान पर वे अपनी लड़कियों की टोलियाँ लेकर नयी क्रान्ति का संदेश पहुँचाने के लिए टिहरी, गढ़वाल, नैनीताल और अल्मोड़ा जिलों के गाँव गाँव में घूमीं, जनता ने संकोची और अपने को हीन समझने वाली नारी के स्थान पर आत्मविश्वास से परिपूर्ण कार्यकर्ताओं के दर्शन किये। पहाड़ों के सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का प्रवेश सरला बहिन की मूक तपस्या का पहला फल है।

भूदान यज्ञ आन्दोलन के *साथ-साथ सरला बहिन के विचारों में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन होता गया। वह प्रारम्भ से ही नयी तालीम का कार्य करती रही हैं, परन्तु नयी तालीम के जिस स्वरूप की हम आज कल्पना करते हैं, उसका दर्शन उन्होंने ४ वर्ष पहले कर लिया था। वे कहती थीं, "हालाँकि नयी तालीम अपनी मौजूदा तालीम से दस गुनी अच्छी है, लेकिन हमें उसका अपने मुल्क की परिस्थिति के लिए और अनुकूल बनाना है, तब हरएक गरीब का बच्चा बच्चा उससे फायदा उठा सकेगा। जहाँ तक गाँव वालों का सवाल है, हमें ज्यादा से ज्यादा इस बात का प्रयत्न करना है कि हम विद्यार्थियों के पास शिक्षा उन्हीं के काम के द्वारा पहुँचायें न कि वे शिक्षा लेने के लिए हमारे पास आयें।"*

जहाँ लोगों को नये नये आश्रम खोलने की धुन थी, उन्होंने स्वयं अपने आश्रम को छोटा करने का कार्य प्रारंभ कर दिया। अब वह केवल शांति के कार्य में प्रत्यक्ष रूप से कूद पड़ने का इरादा रखने वाली सैनिकाओं का प्रशिक्षण-केन्द्र बन रहा है, जहाँ पर वे स्वावलम्बन और सहजीवन का प्रयोग करती हैं। चार साल पहले उन्होंने यह लिखा था कि, "मैं तो अपने अनुभव से कहूँगी, कोई भी व्यक्ति आश्रम या छात्रावास जैसी चीज स्थापित करने की गलती न करे, तो अच्छा। मैं तो फँस गयी। यदि कोई मुझे छुटकारा दे सकता तो मैं सहर्ष स्वीकार करती। जाकर भूदान में या गाँवों में काम करती। आश्रम से व्यक्ति बँध जाता है। वह समग्र रचना का कार्य नहीं कर सकता। *आम जनता व उसके कार्य के बीच में एक ऐसी खाई हो जाती है, जिसे पार करना नामुमकिन है। असल काम तो ग्रामों का उत्थान है। वह तभी हो सकता है जब हम उन्हीं के बीच जाकर काम करें। वह भी इस रूप में कि उन्हें सिखाने की ख्वाहिश छोड़ कर खुद ही सर्वोदयी जीवन बिताना शुरू कर दें।*"

और हिमालय में सर्वत्र उनकी मूक सेवाओं के प्रसादी बिखरी हुई है! उत्तर प्रदेश के चारों पहाड़ी जिलों—टिहरी, गढ़वाल, अल्मोड़ा और नैनीताल—में उनकी शिष्याएँ अहिंसक क्रान्ति के कार्य में लगी हुई हैं।

खादी की राज्य-निर्भरता और आत्म-निर्भरता

जवाहिरलाल जैन

ये प्रश्न बार बार उठाये जाते हैं और राज्याधिकारियों, कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों और शिक्षित लोगों के द्वारा उठाये जाते हैं कि—सरकारी सहायता के बल पर खादी कब तक और कैसे चलेगी, सरकारी सहायता के बावजूद खादी सुस्थिर नहीं हो रही है क्या, सरकारी सहायता नहीं ली जानी चाहिए, खादी को अपने पैरों पर क्या नहीं खड़ा होना चाहिए? ये प्रश्न समाजवादी समाज में विश्वास रखने वाले भी उठाते हैं, पार्लियामेन्टरी लोकतंत्र के समर्थक भी उठाते हैं, गांधीजी के विचार को मानने वाले भी उठाते हैं, किसी भी विचार को न मानने और समझने वाले—केवल प्रवाह में बहने वाले भी उठाते हैं, तब थोड़ी हैरानी हो जाती है और लगता है कि हमारे देश में जबान से विचार कुछ भी प्रकट किये जायें, मनोवैज्ञानिक भूमिका आम तौर पर पश्चिमी तरीके की भौतिकवादी और पशुवादी ही है, जिसमें आज़ादी के पूर्व का राज्यविरोधी पुट भी शामिल है। इसी कारण न हम समाजवादी विचारधारा में स्वयं को ठीक-ठीक जमा पाते हैं, न सर्वोदय-विचार में और न आजाद लोकतंत्र के ढांचे में। इसलिए सबके प्रश्न इस संबंध में लगभग एक जैसे ही होते हैं।

जनता और सरकार

इन प्रश्नों पर हमें दो तीन दृष्टियों से विचार करना होगा। सबसे पहली बात तो यह है कि आज़ाद और लोकतांत्रिक भारत में सरकार और जनता एक दूसरे के विरोधी हैं, दुश्मन हैं, अलग हैं, सरकारी कृपा दूषित है, सरकारी अधिकारियों से दूर रहना ही पवित्रता, शुद्धता और देशभक्ति का लक्षण है, सरकार अछूत है—ये सारे स्वाधीनतापूर्व के विचार दूर हो जाने चाहिए। सरकारी मशीनरी दोषपूर्ण हो सकती है, कोई-कोई सरकारी अधिकारी भी बुरे हो सकते हैं, लेकिन सरकार आम जनता के मत से निर्वाचित और निर्मित है और सरकार के सभी लोग भारतीय नागरिक हैं, भारत का हित सोचने और भारत की सेवा करने की इच्छा उनकी है और वह सरकार के बाहर के अन्य नागरिकों से कम नहीं है।

खादी की महँगाई

दूसरी बात यह है कि खादी मानव श्रमप्रधान उद्योग है। इसके मुकाबले में मिल कपड़े का उद्योग है। मिलें मानव-श्रम को बचाने वाले यंत्रों से युक्त हैं, जिनमें उत्तरोत्तर सुधार होता जा रहा है, अर्थात् उत्तरोत्तर कम होते जाने वाले श्रमिकों से उत्तरोत्तर अधिक उत्पादन होता जा रहा है। मिलें यंत्र हैं, अर्थात् यंत्रों और साधनों की वृद्धि से उत्पादन की असीम वृद्धि हो सकती है, खादी का उद्योग मानव प्रधान है, मानव श्रमप्रधान है। वह मानव की सुख-शान्ति और कार्यक्षमता तथा कार्य की रुचि पर आधारित है। मानव से दो घंटे की बजाय चार घंटे काम लेकर बिल्कुल दुगुना या बारह घंटे काम लेकर बिल्कुल छह गुना काम नहीं लिया जा सकता। इसके अलावा मनुष्य-मनुष्य में और उसकी परिस्थिति-परिस्थिति में काफी अन्तर रहता है, जो यंत्र में नहीं रहता। इसलिए पूंजी प्रधान यंत्रोद्योग के मुकाबले में मानव प्रधान हस्त-उद्योग हमेशा महँगा ही रहेगा। वह उसके बराबर या सस्ता हो ही नहीं सकता। वह मनुष्य का शोषण करके या उसको भूखों मार कर या उसके जीवन की आवश्यकताएँ कम-कम से पूरा करके—जैसे जेल में या स्कूल में हो सकता है, इस प्रकार के उद्योग को सस्ता किया जा सकता है। अतः खादी मिल-कपड़े के मुकाबले में महँगी रहेगी, उसे किसी कृत्रिम उपाय से ही सस्ता किया जा सकेगा।

भयंकर गरीबी

भारत बड़ी और बढ़ती हुई आबादी का देश है। यहाँ की आबादी का अस्सी प्रतिशत भाग गाँवों में रहता है और खेती पर निर्भर है, जो प्रायः वर्षा पर आधारित है। जनता के पास अवकाश है, काम की कमी है, आंशिक और मौसमी बेरोजगारी और अपर्याप्त रोजगारी है। बढ़ती हुई आबादी के साथ बेरोजगारी भी बढ़ती जा रही है। पूँजी की कमी और श्रम की बहुलता है। देश में गरीबी इतनी भयंकर है कि इस देश में दो करोड़ लोगों की आमदनी दो आने रोज से भी कम है, चार करोड़ की चार आने रोज से कम है और छः करोड़ की पाँच आने रोज से कम है। अगर किसी उद्योग से दूर दूर गाँव में रहने वाले लोगों को उनके घर और झोंपड़े पर छह-आने-आठ आने रोज का भी काम मिल जाता है, तो शहरी और शिक्षित लोगों की दृष्टि में चाहे नगण्य हो, उपर्युक्त आमदनी वाले लोगों के लिए वरदान रूप ही होगा, इसमें संदेह नहीं।

सरकारी मदद : एहसान नहीं

इन तीनों तथ्यों को हम एकत्र करके देखें तो खादी-उद्योग के संबंध में हमारे दिमाग में साफ तस्वीर बन जायगी। भारत की भौगोलिक, आर्थिक और जनसंख्या की परिस्थिति की दृष्टि से ग्रामोद्योगों और मानव-श्रमप्रधान उद्योग की आवश्यकता और महत्त्व बहुत अधिक है। इन उद्योगों में वस्त्रोद्योग-खादी सबसे अधिक व्यापक, सरल और उपयोगी है। भारतीय जनता और जन-मानस को समझने वालों में सबसे तीक्ष्ण द्रष्टा और कुशल नेता गांधीजी ने समझ बूझ कर ही इसे इतना महत्त्व दिया था। खादी मिल-कपड़े या हैण्डलूम से महँगी रहने वाली ही है और रहनी ही चाहिए। इसे केवल कपड़े की दृष्टि से अन्य कपड़ों के मुकाबले में बाजार में टिकना है, तो इसे भावनात्मक और आर्थिक सहायता देते ही रहना होगा। यह आर्थिक सहायता समाज के समर्थ प्रतिनिधि के रूप में आज सरकार से ही बड़े पैमाने पर प्राप्त हो सकती है। केवल सरकारी होने के कारण ही इस सहायता में दोष नहीं माना जा सकता। यह जनता का ही धन है, जो सरकार के माध्यम से प्राप्त होता है। भारत की सरकार कोई भी हो, उसे खादी ग्रामोद्योग को मदद देनी ही होगी, क्योंकि भारत जैसे भारी आबादी और बेहद गरीबी वाले देश में रोजगार देने का इतना सस्ता साधन दूसरा नहीं हो सकता। आज सरकार खादी-ग्रामोद्योग को मदद देकर कोई कृपा या एहसान नहीं कर रही है, वह अपना कर्तव्य-पालन कर रही है। कोई सरकार बढ़ती हुई बेरोजगारी की उपेक्षा नहीं कर सकती और सरकारी धन की सहायता से खादी का काम करने वाले न कोई पाप कर रहे हैं और न किसी पाप में हिस्सेदार बन रहे हैं।

इस खादी में सरकार की सहायता की न जरूरत होगी और न वह उस पर आधारित होगी। व्यक्ति-स्वावलम्बन, परिवार-स्वावलम्बन और ग्राम-स्वावलम्बन इसकी प्रक्रिया होगी। यह ग्राम-आयोजन और क्षेत्र आयोजन का अंग होगी। यह न महँगी होगी और न सस्ती होगी। यह अपने क्षेत्र की अपनी चीज होगी, अपनी व्यवस्था होगी। यह अपने क्षेत्र के आयोजन के अनुसार अम्बर चरखे या साधारण चरखे से कती हुई हो सकती है, हाथ करघे पर बुनी हो सकती है। इसमें हाथ की शक्ति तो लग ही सकती है, जड़-शक्ति भी भाप से लेकर अणु तक की ग्राम-योजना या क्षेत्र-योजना के अनुसार लग सकती है। शर्त यह है कि वह शोषण नहीं करेगी, न अपने क्षेत्र के अन्तर्गत मानवों का और न अपने क्षेत्र के बाहर के मानवों का। यह व्यापार के लिए नहीं होगी, लेकिन अतिरिक्त का विनिमय हो सकता है, सामाजिक स्तर पर अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए। यह उद्योग-मात्र नहीं होगी, बल्कि अहिंसक मानव-संस्कृति और सभ्यता की सूचक होगी। यह भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करेगी, आध्यात्मिक साधना-स्रोत बन कर। गांधीजी ने इसी खादी का सपना देखा था, लेकिन वे केवल स्वप्न-द्रष्टा नहीं थे, इसलिए उन्होंने पहली खादी से आरम्भ किया। उनकी खादी गतिहीन (स्टेटिक) नहीं थी, वह अत्यन्त गतिशील (डैनामिक) थी। वे उसे बढ़ाना चाहते थे दूसरी ओर। विनोबा में इसी नयी खादी के लिए तड़प है, इसीलिए उन्हें पुरानी खादी से असन्तोष है।

आज की खादी पहले प्रकार की है। वह आज कपड़ा है, उद्योग है। लेकिन उसे बढ़ना है और निश्चित रूप से बढ़ना है दूसरी ओर। नहीं तो यह समुद्र में डुबकी लगा कर भी मोती के बजाय शंख निकालने जैसी बात होगी। ऐसा परिश्रम सार्थक नहीं होगा।

लेकिन हमें अपने विचार और तर्क में स्पष्ट रहना चाहिए। पहली खादी के सम्बन्ध की आशंकाओं और आलोचनाओं को दूसरी खादी पर आरोपित न करें और दूसरी खादी की अच्छाइयों और सम्भावनाओं के नाम से पहली खादी को मारने की भूल न करें। हम आज पहली खादी की स्थिति में हैं, इसमें से दूसरी खादी की तरफ बढ़ना है। पहली खादी की स्थिति छूटी नहीं है, दूसरी खादी की स्थिति आयी नहीं है। इसे चाहे त्रिशंकु की स्थिति कह कर व्यंग्य भले ही करें, लेकिन व्यंग्य कभी तर्क का स्थान नहीं ले सकता और न वह वास्तविक स्थिति को बदल सकता है, यह भी समझ लें। व्यंग्य कमजोरों का हथियार है, वह बुद्धिमानों का शस्त्र नहीं बन सकता और केवल आलोचना न बुराइयों को दूर कर सकती है और न नई अच्छाइयों का विकास कर सकती है। स्थिति का वास्तविक आकलन, ध्येय का स्पष्ट चित्र, बीच के कदमों का निश्चित ज्ञान और उन कदमों को गम्भीरता तथा दृढ़ता से उठाने की दृष्टि और धैर्य, ये प्रगति के मार्ग-स्तम्भ हैं।

हम उस दिव्यात्मा की संतान हैं!

राम प्रवेश शास्त्री

स्वराज्य की लड़ाई हुई—अहिंसात्मक लड़ाई, और स्वराज्य मिला भी। बड़ी खुशियाँ मनायी गयीं—इतनी कि हम सुध-बुध खो बैठे! लेकिन स्वराज्य-प्राप्ति से मानव कितना बदला, कितना विशाल बना, इसका भी किसी ने हिसाब लगाया? शायद, हमने इसे कोई महत्त्व ही नहीं दिया। लेकिन एक ऐसा व्यक्ति भी था, जिसे प्रतिक्षण अपनी स्थिति का पूरा पूरा ध्यान रहा। खुशी के मारे आत्मविभोर होने की जगह कर्तव्य की गुरुता ने उसे गम्भीर बना दिया—पहले से भी अधिक गम्भीर। सम्भवतः उसे चिंता भी हुई हो—दया भी आयी हो—हमारे छिछलेपन पर, हमारी विस्मृति पर और अंधा बना देने वाली भावुकता पर।

अंग्रेज, हमारी स्वतंत्रता के मार्ग में और प्रारम्भ में ही एक दीवार थे, रुकावट थे। यही तो! इस दीवार को, हमने-देश ने अपने पुरुषार्थ से गिरा दिया, रुकावट को तोड़ दिया और इसके बाद'''! हम वहीं बैठ गये। शायद थक गये थे। शायद, भ्रम में थे, कि गन्तव्य स्थान पर पहुँच गये हैं।

लेकिन उस व्यक्ति ने बार-बार इशारा किया, ललकारा भी कि अभी रास्ता लम्बा है, स्वराज्य काफी दूर है। हमने सब कुछ अनसुना कर दिया, क्योंकि उस दीवार के पार काफी ऐश्वर्य, काफी राहत मिली।

तो क्या हमारी स्वतंत्रता की कल्पना ऐसी ही थी? क्या इसी के लिए शहीदों ने हँसते हँसते फाँसी के फंदे को गले लगाया था, अपनी आहुति दी थी? शहीदों ही ने क्यों? हमने भी तो काफी त्याग किया था! क्या वह त्याग अभाव का परिणाम था? यदि नहीं, तो फिर वैभव की खाई में कूदे ही क्यों? शायद इतने थक गये थे कि उसे लांघने की क्षमता ही नहीं रही।

लेकिन दावा तो हमारा यही है कि उसे लाँघ गये हैं! क्या सत्य की खोज में अपना बलिदान देने वाले उस महात्मा, उस दिव्य पुरुष की छत्रछाया में रह कर हमने झूठ बोलना सीखा?

नहीं, कदापि नहीं।

वास्तविकता यह है कि हम उसके दिखलाये मार्ग को भूल गये हैं। सत्पथ से विचलित हो गये हैं।

उस दिव्यात्मा ने हमें सत्पथ पर चलना सिखाया। देश को एक राष्ट्र के रूप में गठित किया। राष्ट्रीयता की लहर फैलायी—उस राष्ट्रीयता की जो वसुधैव कुटुम्बकम् को चरितार्थ कर सके।

और हमने क्या किया?

उस दिव्यात्मा को राष्ट्र-पिता माना। यह सर्वथा उचित था वह इसके योग्य था। लेकिन क्या इतने ही से हमारा कर्तव्य पूरा हो गया? क्या हमने राष्ट्र-पिता के प्रति अपने कर्तव्यों पर भी कभी सोचा?

अपनी गतिविधि देख कर तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्षेत्र में हमने एक महापुरुष का—प्रह्लाद का अनुसरण किया। प्रह्लाद ने भी अपने पिता की अवहेलना की थी और हमने भी वही किया। शायद यह सोचने की भी आवश्यकता महसूस नहीं की कि प्रह्लाद के पिता और हमारे पिता में कोई अन्तर भी है। परन्तु पिता की अवहेलना से जहाँ एक ओर प्रह्लाद अमर बन गया, चिरन्तन बन गया—भगवान बन गया, वहाँ हम अवनति को पहुँच गये। क्या इतने पर भी हमारी आँखें बंद ही रहेंगी?

सामान्यतः जिसके पिता को जानते-पहचानते हैं, उस लड़के को पहली बार देख कर ही पहचान जाते हैं; क्योंकि लड़के की शक्ल सूरत बाप की शक्ल-सूरत से कुछ न कुछ अवश्य मिलती-जुलती रहती है। हमने उस दिव्यात्मा को राष्ट्रपिता माना। प्रश्न यह है कि क्या हमको भी देख कर कोई अपरिचित आदमी जो राष्ट्रपिता को जानता है, यह कह सकेगा कि हम उन्हीं की संतान हैं? एक बात विचारणीय है, राष्ट्रपिता ने हमारे भौतिक शरीर को तो जन्म दिया नहीं है। फिर शक्ल सूरत से मेल खाने का प्रश्न ही कहाँ उठता है? अतः कौनसी ऐसी चीज है जो हमें—हमारे राष्ट्र को उनका सपूत सिद्ध कर सकती है? हममें किन गुणों का समावेश लोगों को यह कहने के लिए बाध्य कर सकता है कि हम उसी दिव्यात्मा की सन्तान हैं?

उस दिव्यात्मा ने अपनी ओर, अपनी कमजोरियों की ओर देखना सीखा था और देश को भी यही सीख दी थी। इसीलिए तो जब दूसरे लोग देश की गुलामी की स्थिति पर बौखला उठे थे, अंग्रेजों को कट्टर शत्रु मान बैठे थे, तब उस दिव्यात्मा ने शान्त चित्त से, धैर्यपूर्वक इस गुलामी को स्वाभाविक बतलाया और वह अंग्रेजों को शुद्ध हृदय से अपना भाई मानता रहा। उसकी दूरदर्शिता और निष्पक्षता ने इस तथ्य पर पड़े परदे को हटाने में तनिक भी संकोच नहीं किया कि जब हम अपने जैसे अपने ही भाइयों के एक वर्ग को अस्पृश्य मान कर उन्हें घनघोर अन्धकार में ढकेलने का सतत प्रयत्न करते आ रहे हैं और यह कुकृत्य धर्म के नाम पर कर रहे हैं। फिर यदि कोई हमको गुलाम बनाता है, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। हम गुलाम होने के पात्र हैं। उसने बड़े उच्च स्वर से कहा कि यदि हम स्वतंत्र होना चाहते हैं तो सबसे पहले युगों से सताये गये इन अस्पृश्य कहे जाने वाले भाइयों को मुक्त करें, उन्हें गले लगायें, उनके साथ समानता का व्यवहार करें। यही नहीं, उसने तो यहाँ तक कह डाला कि अस्पृश्यता के रहते अगर स्वराज्य मिलना सम्भव भी हो, तो हम उसे नहीं स्वीकार करेंगे। वस्तुतः उसकी कल्पना की स्वतन्त्रता में अस्पृश्यता का कोई स्थान ही नहीं। उसमें तो मानव-मूल्यों की प्रतिष्ठा होगी। भेद भाव और नीच ऊँच की भावना इतिहास की वस्तु होगी।

एक दिन वह भी आया, जब वह दिव्यात्मा शरीर के एक अंग का दूसरे अंगों द्वारा बहिष्कार बर्दाश्त न कर सका और अपनी आहुति देने की ठान ली। उसने आमरण अनशन प्रारम्भ करके अपने प्राणों की बाजी लगा दी। हम घबरा उठे और सारे देश ने संकल्प किया कि अस्पृश्यता के कोढ़ से समाज शरीर को मुक्त करेंगे। क्या यह संकल्प उस दिव्यात्मा के पार्थिव शरीर की रक्षा के लिए किया गया था? अगर हाँ, तो यह हमारी भयंकर भूल थी। सम्भवतः इस लिए हम आज भी अपने उस संकल्प को पूरा करने में असफल हैं और उस दिव्यात्मा को पिता कहने के अधिकारी नहीं बन पाये हैं। क्या हमने भी कभी अपनी कमजोरियों की ओर देखने की कोशिश की है?

यदि हम उस दिव्यात्मा का अपने ऊपर कोई भी ऋण मानते हैं, तो उस ऋण के चुकाने का एक ही तरीका है—देश से, समाज से अस्पृश्यता के कोढ़ को मिटा कर, समाज-शरीर को स्वस्थ बनाना। इसके बिना हम अपने को अपने आप भले ही उनका पुत्र कह लें, दुनिया यह सुन कर आश्चर्य ही करेगी। अतः हम वैभव की खाई से निकल कर स्वतन्त्रता की मंजिल तक की दूरी तय करने के लिए कृतसंकल्प हो जायें और अस्पृश्यता को मिटा कर अपने और अपने पूर्वजों के अन्याय और पाप का सही अर्थों में प्रायश्चित्त करें। राष्ट्रपिता ने यही संदेश दिया था। यही आदेश उसने दिया था और इसी के लिए अपना बलिदान किया था। जिस दिन यह कार्य पूरा होगा, हम गर्व और गौरव के साथ यह कह सकेंगे और दुनिया इसे स्वीकार करेगी कि हम उस दिव्यात्मा की सन्तान हैं।

"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक का प्रकाशन-वक्तव्य

[न्यूजपेपर-रजिस्ट्रेशन ऐक्ट (फॉर्म नं० ४, नियम ८) के अनुसार हरएक अखबार के प्रकाशक को निम्न जानकारी पेश करने के साथ-साथ अपने अखबार में भी वह प्रकाशित करनी होती है। तदनुसार यह प्रतिलिपि यहाँ दी जा रही है। —सं०]

(१) प्रकाशन का स्थान	वाराणसी
(२) प्रकाशन का समय	सप्ताह में एक बार
(३) मुद्रक का नाम	श्रीकृष्णदत्त भट्ट
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	"भूदान यज्ञ" साप्ताहिक, राजघाट वाराणसी-१.
(४) प्रकाशक का नाम	श्रीकृष्णदत्त भट्ट
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	'भूदान यज्ञ' साप्ताहिक, राजघाट, वाराणसी-१
(५) सम्पादक का नाम	सिद्धराज ढड्ढा
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक, राजघाट, वाराणसी-१
(६) समाचार पत्र के संचालकों का नाम-पता	अखिल भारत सर्व सेवा संघ (सोसायटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट १८६० के सेक्शन २१ के अनुसार रजिस्टर्ड सार्वजनिक संस्था)

मैं श्रीकृष्णदत्त भट्ट यह स्वीकार करता हूँ कि मेरी जानकारी के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

—श्रीकृष्णदत्त भट्ट, प्रकाशक

वाराणसी, २१-२-६०

सर्वोदय-पक्ष और मेला

३० जनवरी, बापू के निर्वाण दिन से १२ फरवरी तक देश भर में सर्वोदय-पक्ष मनाया गया। सामूहिक सूत्र यज्ञ, सफाई, विचार-प्रचार, सूताजंलि-समर्पण आदि कार्यक्रम हुए। निम्न स्थानों से समाचार प्राप्त हुए हैं'

सिताबदियारा : यह श्री जयप्रकाशजी का जन्म-स्थान है। यहाँ १२ फरवरी को आचार्य कृपालानीजी के हाथों एक 'गांधीघर' का उद्घाटन हुआ तथा लगभग ९००० सूताजंलि अर्पित की गयी। इस दिन श्री जयप्रकाशजी और कृपलानीजी के अतिरिक्त आस-पास के हजारों लोग यहाँ आये और गांधीजी के विचारों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

बनारस : जिले भर के कार्यकर्ताओं ने सूतांजलि-समर्पण का कार्यक्रम आयोजित किया। 'बापू मंडप' में सजाये गये सूत-कूट की भव्यता देखते ही बनती थी। रात को बनारस के साहित्यकारों तथा कवियों की ओर से बापू को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

छतरपुर : प्रभात फेरी, श्रमयज्ञ, सफाई, साहित्य-बिक्री और विचार प्रचार के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा १२ फरवरी के सूताजंलि समर्पण और सूत्रयज्ञ का आयोजन हुआ।

रानीपतरा : ७ पदयात्री-टोलियों ने सर्वोदय-पक्ष में पदयात्रा की। सभी टोलियाँ ११ फरवरी को कुरसेला, जहाँ सर्वोदय-मेला लगता है, पहुँची। यहाँ जिले भर के ग्रामदानी तथा भूदानी किसानों का एक भव्य सम्मेलन हुआ। श्री धीरेन्द्र भाई ने उद्घाटन करते हुए कहा कि भूदानी किसानों पर सामाजिक क्रांति चरितार्थ करने का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है।

इन्दौर : सर्वोदय-पक्ष के कार्यक्रम के अन्तर्गत इन्दौर के विभिन्न मोहल्लों में ७ से १२ फरवरी तक नगर सर्वोदय विचार-प्रचार, लोक-सम्पर्क, सर्वोदय-पात्र स्थापना तथा साहित्य प्रचार का काम हुआ। शिविर में खादी ग्रामोद्योग विद्यालय, माचला के ३० भाई-बहन तथा नगर के १५ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। म० प्र० सर्वोदय मंडल के मंत्री श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त पूरे समय साथ रहे तथा शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया। सप्ताह बाद में १०० रुपये का सर्वोदय साहित्य बिका तथा १०० सर्वोदय पात्रों की स्थापना हुई।

मध्यप्रदेश गांधी स्मारक निधि के ग्राम सेवा केन्द्र, निब्बारा घाट, राजस्थान सेवा संघ डूंगरपुर, सीकर, वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी के तत्त्वावधान में पूर्णियाँ, सर्वोदय-मंदिर हुलमुड़ा, पुरुलिया, ग्राम-स्वावलंबन क्षेत्र बारसलीगंज, गया, मथुरा जिले में गोवर्धन, सादाबाद, सर्वोदय-मंडल चित्रकूट, बांदा, सारण जिला सर्वोदय-मंडल, छपरा की ओर से दियवारा, रामचक, मैरवा, कान्दर, श्री राजेन्द्र सर्वोदय आश्रम करोम, ग्रामदानी बस्ती गाँव, सनाल परगना गांधीग्राम, सजापुर, भागलपुर, गांधी भवन, म्हवा, श्रीनगर (कीवान), मावोर (चंडीगढ़), सर्वोदय समिति, इंदौर, मदसौर आदि स्थानों पर सर्वोदय पक्ष का कार्यक्रम मनाया गया।

—पद्मुक्तेश्वर तीर्थ पर पवित्र गंगा के किनारे विराट सूत्र-यज्ञ और सूताजंलि समर्पण समारोह हुआ।

—हुबली (धारवाड़) में श्री आर० आर० दिवाकर की उपस्थिति में सर्वोदय-मेले का आयोजन हुआ।

●

सहारनपुर जिले में श्री गांधी आश्रम घाटेड़ा के सघन क्षेत्र के ग्रामोदय केन्द्र छापेड़ी में २७-२८ जनवरी को श्री कपिलभाई के मार्गदर्शन में जिले के प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ताओं का शिविर हुआ। शिविर में ग्राम निर्माण समिति के सदस्य भी उपस्थित थे।

उत्तर प्रदेशीय सम्मेलन

जयप्रकाशजी द्वारा उद्घाटन

सुश्री सरला बहन की अध्यक्षता में उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय सम्मेलन २७, २८ और २९ फरवरी को गाजीपुर में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री जे० पी० ने किया।

सम्मेलन में विभिन्न गोष्ठियों का आयोजन हुआ और सर्वोदय पात्र, छात्र-समस्या, भूमि-वितरण, शांति-सेना, नयी तालीम आदि विभिन्न विषयों पर गहराई से विचार-विमर्श किया गया।

सर्वोदय युवक-सम्मेलन का अधिवेशन भी इस अवसर पर हुआ। यह सम्मेलन उत्तर प्रदेश के छात्रों में और नौजवानों में सर्वोदय-विचार की दृष्टि से काम करने वाले उत्साही युवकों की एक संस्था है। इसकी बैठक में ग्रीष्मावकाश के समय छात्रों में शिविर आदि कार्यक्रम करने का तय हुआ।

●

दुकानदार नहीं !

जिला झाँसी, तहसील मऊ के अन्तर्गत ग्राम स्यावरी के जूनियर हाईस्कूल में 'सतयुगी भंडार' नाम का एक छोटा-सा वस्तु-भंडार खोला जा रहा है, जिसमें विद्यार्थियों के काम में आने वाली वस्तुएँ कागज, कलम, पेन्सिल, फौन्टेनपेन, कापियाँ आदि बिक्री के लिए प्रस्तुत रहेंगी, पर बिक्री के लिए कोई मनुष्य नहीं रहा करेगा। विद्यार्थीगण अपनी इच्छित वस्तु उसमें से निकाल कर उसकी कीमत डिब्बे में डाल दिया करेंगे। वस्तुओं पर कीमत लिखी रहेगी, साथ ही विद्यार्थियों को यह बात भी आरम्भ में बतला दी जायगी कि अगर किसी विद्यार्थी द्वारा बिना कीमत रखे कोई वस्तु उठा ली जायगी और उसकी गलती का भेद प्रगट भी हो जायगा, तब भी उस बालक को कोई किंचित् दण्ड या किसी प्रकार की भर्त्सना नहीं की जायेगी।

सस्ता साहित्य मंडल के प्रकाशन

दशरथनन्दन श्रीराम

लेखक : राजगोपालाचारी, पृष्ठ ४३६,
मूल्य-पाँच रुपये।

भारत के घर घर में जो कथा सबसे अधिक प्रचलित है, वह है—रामायण। संस्कृत में वाल्मीकि रामायण, हिन्दी भाषी लोगों में तुलसी रामायण, दक्षिण में कम्बन की रामायण, इस तरह रामायण के विविध रूप विविध भाषाओं में प्रचलित हैं। हमारे देश के बहुश्रुत विद्वान चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने वाल्मीकि रामायण को मुख्य मान कर प्रस्तुत किताब तुलनात्मक दृष्टि से लिखी है। राजाजी ने तमिल भाषा में यह रचना तैयार की और उनकी सुपुत्री लक्ष्मी देवदास गांधी ने उसका सरल, सुबोध हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है।

इसी तरह का मंडल का दूसरा प्रकाशन है, **"तमिल साहित्य और संस्कृति"**, जिसके लेखक हैं—अवधनन्दन और ढाई सौ पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य है—साढ़े तीन रुपये। इस तरह की पुस्तकों के प्रकाशन से हिन्दी के पाठक अपने देश की अन्य भाषाओं में बिखरे समृद्ध साहित्य से परिचित हो सकेंगे। निश्चय ही इस प्रकार के प्रकाशन का अपना विशिष्ट महत्त्व है और इस योजना के लिए मंडल बधाई का पात्र है।

दो पुस्तकें मंडल की ओर से और भी सामने आयी हैं। एक है उपन्यास—**"प्रभु पधारे"** और दूसरी है यात्रा-वर्णन—**"उत्तराखण्ड के पथ पर।"** प्रस्तुत उपन्यास का महत्त्व दो दृष्टियों से है। एक तो इसलिए कि उपन्यास के लेखक गुजराती के बहुश्रुत उपन्यासकार हैं—झवेरचन्द मेघाणी। इसलिए गुजराती साहित्य से हिन्दी के पाठक परिचित होंगे। दूसरी विशेषता यह है कि उपन्यास पढ़ने से बर्मा देश की संस्कृति तथा सभ्यता से पाठक सहज परिचित हो जाता है। यदि यही परिचय सीधे तरीके से दिया जाता तो उतना रुचिकर नहीं होता, जितना औपन्यासिक ढंग से देने पर हुआ है। इसलिए इस पुस्तक में यदि औपन्यासिक प्रवाह शिथिल भी है, तब भी खटकता नहीं है। एक बात और भी है। इस उपन्यास को पढ़ने से व्यापार में किये जाने वाले शोषण के प्रति सहज नफरत पैदा होती है। इस तरह की भावना का निर्माण नवसमाज रचना में सहयोगी बनेगा। दूसरी पुस्तक यशपाल जैन ने अपनी यात्रा के संस्मरण प्रस्तुत करते हुए लिखी है। पुस्तक की भाषा और वर्णन-शैली प्रभावोत्पादक है। साथ ही जो लोग बदरीकेदार की यात्रा पर जाना चाहते हों, उनके लिए इस पुस्तक की विशेष उपयोगिता है। पर हमारे लेखक मित्र धार्मिक स्थानों के वर्णन में आवश्यकता से अधिक भावुक हो गये हैं।

मंडल की दो पुस्तकें खेती के संबंध में भी हैं। हमारा देश कृषि प्रधान है। पर साहित्य में कृषि संबंधी पुस्तकों का अभाव बहुत खटकता है। मंडल ने ये दो पुस्तकें छाप कर इस कमी को पूरा करने का जो प्रयत्न किया है, वह प्रशंसनीय है। **"खाद और उसके उपयोग"** नाम की पुस्तक शंकरराव जोशी ने लिखी है और **"खेती के साधन"** नाम की पुस्तक नारायण दुलीचंद व्यास ने उपस्थित की है। दोनों पुस्तकें संग्रहणीय हैं। खास तौर से कृषि के काम में रुचि रखने वाले तथा आश्रमों में विकसित ढंग से खेती करने वाले ये पुस्तकें अवश्य मंगायें।

मंडल ने एक लोककथा संग्रह भी प्रकाशित किया है। पुस्तक का नाम है—**"सतवंती"** संपादक हैं—चन्द्रशेखर दुबे। मालवा प्रदेश में प्रचलित २८ कथाएँ इस किताब में संग्रह की गयी हैं। उन्हीं में से एक कथा है—सतवंती, जिसके नाम से पुस्तक का नामकरण किया गया है। पृष्ठ हैं : सवा सौ और मूल्य है : डेढ़ रुपया।

—सतीश कुमार

पता-सुधार

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के प्रधान कार्यालय का स्थानांतरण के, ३३।४ गोलघर से राजघाट, काशी में गत ता० १८ फरवरी को हो गया है। अतः भविष्य में कृपया निम्नलिखित पते से पत्र-व्यवहार करें :
अखिल भारत सर्व सेवा संघ (प्रधान केन्द्र), राजघाट, काशी (उत्तर प्रदेश)

पक्षरहित लोकशाही के लिए प्रो० गोरा की पदयात्रा

पिछले तीन साल से प्रो० गोराजी पक्षरहित जनतंत्र और सत्याग्रह के बारे में अपने विचार देश के सामने रख रहे हैं। इस साल उसे कार्यक्रम का रूप देकर उन्होंने अमल में लाना शुरू किया है।

ता० २६ जनवरी से गोराजी ने अपने साथ और आठ साथियों को लेकर विजयवाडा (आंध्र) से पदयात्रा शुरू की है। गोराजी के साथ अभी सर्वश्री जे० रामकिशैया चेदिरी रंगन्ना, बी० रंगा रेड्डी, जास्ति वेंकट रामय्या, के० राजलक्ष्मीनि, गोपी रेड्डी, लक्ष्मी रेड्डी, वेंकट नरसैया हैं। रोज गोराजी और उनका दल ७ मील से १० मील तक चलते हैं, उनकी यह पद-यात्रा आन्ध्रप्रदेश के कृष्णा, नलगोंडा और हैदराबाद, इन तीन जिलों से गुजर रही है।

सभी पार्टियों के झंडे एक ही बण्डल में

हाल ही में आन्ध्र-प्रदेश में ग्राम-पंचायतों और जिला-परिषदों के लिए चुनाव हुए। आजकल चुनाव याने जातिवाद, गुटतंत्र और पैसा! इनके साथ फूट पैदा करना और विरोधियों पर अत्याचार करना, कहीं-कहीं ग्राम पंचायत के चुनाव में दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी तरफ से लाखों रुपये गाँवों में खर्च किये। पार्टियाँ नहीं थीं, वहाँ भी पार्टियाँ पैदा कीं! इन सबसे *साधारण जनता पार्टियों से और उनके व्यवहार* से ऊब गयी है। इसलिए जब गोराजी कहते हैं कि पार्टियाँ नहीं होनी चाहिए, तो उनकी यह बात सबको अच्छी तरह जँचती है। गोराजी यह साफ कहते हैं कि जब तक असेंबली में और पार्लमेंट में पार्टियाँ रहेंगी, *तब तक ग्राम में पक्षमुक्ति संभव नहीं है।* गोराजी से प्रश्न भी पूछे जाते हैं और वे उत्तर देते हैं। गोराजी अपने साथ सब राजनैतिक पक्षों के झंडे एक बंडल में बाँध कर ले जाते हैं। सब पक्षों को मिल कर जनहित की बात सोचनी है, इसका यह प्रतीक है। यह भी लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहा है और सोचने को प्रेरित कर रहा है।

हर गाँव में सब पार्टीवाले गोराजी के स्वागत-सत्कार में भाग लेते हैं। इंतजाम भी एक जगह एक पार्टी ने किया, तो दूसरी जगह दूसरी ने और तीसरी *जगह तीसरी ने। कहीं गोराजी के पुराने विद्यार्थियों* ने यह जिम्मेदारी उठा ली, तो कहीं मित्रों ने। गाँवों में राजनैतिक पक्ष तो रहते ही हैं, साथ-साथ गाँव के पक्ष बलवान होते हैं। राजनैतिक पक्षों से गाँवों के पक्षों को प्राण मिल रहा है।

ता० २८ फरवरी को हैदराबाद पहुँचने के बाद १० दिन तक अलग-अलग मुहल्लों में जनता में खूब प्रचार करेंगे और बाद में अपनी 'टोकन प्रोटेस्ट' प्रकट करने, 'पार्टी व्हीप्स' और 'विप्स' के विरोध में विधान सभा के पास जायेंगे।

गोराजी के साथ एक सप्ताह रहने के बाद श्री लवणम् हैदराबाद आ गये हैं और यहाँ भूमिका तैयार करने के काम में और इंतजाम देखने के काम में लगे हैं।

सर्वोदय-सम्मेलन, सेवाग्राम के लिए पदयात्रा-टोली

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष की पदयात्रा

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामी ३०० मील की पदयात्रा करके सर्वोदय-*सम्मेलन में भाग लेने के लिए सेवाग्राम पहुँचेंगे। इसी तरह भारत के कोने कोने से पदयात्रियों की* टोलियाँ रवाना हो रही हैं। कुछ स्थानों के समाचार यहाँ दिये जा रहे हैं।

बिहार :

पदयात्रा करते हुए सेवाग्राम पहुँचने वाली अनेक टोलियों में एक टोली यह भी है, जो ता० २ अक्टूबर १९५८ से ही बिहार के पूर्णियाँ जिले में अखंड पदयात्रा कर रही है। टोली के लोगों ने कुरसेला ग्राम से सेवाग्राम के लिए ता० १४ फरवरी को प्रस्थान किया। यह टोली मुकामाघाट, पटना, बक्सर, आरा होते हुए ता० १५ मार्च को मुगलसराय पहुँचेगी। मुगलसराय से नागपुर तक का मार्ग रेल से तय करके ता० १७ को नागपुर से फिर पदयात्रा करते हुए यह टोली २५ मार्च को सेवाग्राम पहुँचेगी।

इसी तरह पटना जिले से भी ४ लोकसेवकों की एक टोली १७ फरवरी को पटना शहर से *निकली है।*

धनबाद के लोकसेवक श्री शीतल प्रसाद तायल सूचित करते हैं कि इसी जिले से श्री शीतलप्रसाद तायल श्री योगेन्द्रकुमार शर्मा, श्री रमाशंकर तिवारी तथा श्री जीवेश्वर मिश्र, इन ४ लोकसेवकों की एक टोली ७ मार्च को पदयात्रा आरंभ करेगी। ३० मील की पदयात्रा कर रेल द्वारा नागपुर पहुँचेंगे। फिर नागपुर से सेवाग्राम तक पदयात्रा द्वारा जायेंगे।

उत्तर प्रदेश :

कानपुर के एक सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री सुरेन घोष २५ फरवरी को अकेले ही पदयात्रा करते हुए सेवाग्राम के लिए रवाना हुए हैं।

वाराणसी जिला सर्वोदय-मंडल के निवेदक श्री सरजू प्रसाद शर्मा तथा तीन और भाई २८ फरवरी *को सेवाग्राम के लिए रवाना हुए।* यह टोली चुनार, मिर्जापुर, कटनी जबलपुर, नागपुर, वर्धा होते हुए सेवाग्राम पहुँचेगी। औसत यात्रा १५ मील नित्य की रहेगी।

मध्य प्रदेश :

भिंड जिले के लोकसेवक श्री श्रीराम गुप्त १९ फरवरी को सेवाग्राम के लिए रवाना हो चुके हैं।

कर्नाटक :

धारवाड़ जिले से सात लोगों की एक पदयात्री टोली सेवाग्राम के लिए रवाना हुई।

हुबली (धारवाड़) से भी एक पदयात्री टोली १२ फरवरी को सेवाग्राम- के लिए रवाना हुई है।

विनोबाजी अपनी पदयात्रा के दौरान में ता. २, ३ और ४ मार्च को जालंधर शहर में रहेंगे।

संवाद-सूचनाएँ :

इजराइल के लिए अध्ययन-दल

ता० २२ से २५ फरवरी तक सेवाग्राम में भाइयों का शिविर हुआ है, जो छह महीने के लिए इजराइल में हो रहे *सामूहिक जीवन के प्रयोगों का अध्ययन* करने के लिए सर्व सेवा संघ की ओर से जा रहे हैं। यह दल २८ फरवरी को बम्बई से *हवाई जहाज* द्वारा रवाना हुआ। इस दल में देश के विभिन्न स्थानों के २२ व्यक्ति हैं। शिविर में इजराइल तथा अन्य देशों का भ्रमण करके हाल ही में *आये हुए श्री* हारकोले ने अपनी यात्रा के संस्मरण और इजराइल की जानकारी दी। इसके अलावा श्री पटवर्धन, अण्णा साहब और आर. के. पाटिल ने भी शिविर में भाग लिया। श्री वसंतराव नारगोलकर तथा श्री रेंदुलकर इस दल के नेता हैं।

श्री गोकुलभाई भट्ट का सम्मान

१ लाख १७ हजार रु० की थैली अर्पित

राजस्थान के सर्वोदयी नेता श्री गोकुलभाई भट्ट का ६१ वाँ जन्म दिन २७ फरवरी को जयपुर में मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री जयप्रकाश नारायण ने की। इस कार्यक्रम में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया, मंत्रिमंडल के सदस्य, प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष तथा विधान-सभा के अनेक सदस्यों ने *भाग लिया।*

इस अवसर पर राजस्थान की जनता की ओर श्री गोकुलभाई भट्ट को ६१,०४० रुपये तथा भि[illegible] की जनता की ओर से ५६,००० रुपये की थैली की गयी। सिरोही से उन्हें बड़ी मात्रा में सूत *गुण्डियाँ तथा सात गाँव प्राप्त हुए हैं।*

श्री भट्ट ने घोषणा की कि यह धन राजस्[illegible] में शिक्षा तथा भूदान-कार्यकर्ताओं के लिए खर्च कि[illegible] जायगा।

इस अंक में

विनोबाजी का पता :
मार्फत—पंजाब सर्वोदय-मंडल,
पो० पट्टीकल्याण, जिला-करनाल (पंजाब)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० १२८५

वार्षिक मूल्य ५) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,९०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,६५० एक प्रति १३ नये पैसे

साप्ताहिक
भूदान-यज्ञ
भूदान-यज्ञ-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

वाराणसी, शुक्रवार
११ मार्च '६०
वर्ष ६ : अंक २४

सम्पादक : सिद्धराज ढड्ढा

"जाल सूख चुके हैं !"

सिद्धराज ढड्ढा

एक बार फिर देश भर के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की आँखें सेवाग्राम की ओर लगी हैं। ता. २६ से २८ मार्च तक वहाँ बारहवाँ सर्वोदय-सम्मेलन होने जा रहा है। इस सम्मेलन को हम 'अखिल भारतीय' तो नहीं कहते, क्योंकि सर्वोदय का दायरा किसी एक मुल्क की सीमाओं से बँधा हुआ नहीं है, हालाँकि व्यवहार में हर वर्ष होने वाले ये सर्वोदय-सम्मेलन एक तरह से हिन्दुस्तान में ही होते हैं। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि सर्वोदय-विचार किन्हीं भौगोलिक या राजनैतिक सीमाओं से बँधा हुआ नहीं है।

गांधीजी ने मानव मात्र की आजादी, सामाजिक न्याय और उसकी प्राप्ति के लिए मौजूदा समाज-रचना में जो बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता सुझायी थी, वह दिन-ब-दिन दुनिया के अधिकाधिक लोगों का ध्यान खींच रही है। 'गांधी' और 'सर्वोदय' आज किसी एक देश की नहीं, दुनिया की चीजें हो गयी हैं। "सर्वोदय" समाज को उस आदर्श स्थिति का नाम है, जो गांधीजी के सिद्धान्तों पर चलने से प्राप्त होगी। वैसे तो आदर्श हमेशा सुन्दर और लुभावने ही होते हैं, पर आदर्श के मामले में भी सर्वोदय आज के दूसरे प्रचलित समाज-दर्शनों से आगे है। सर्वोदय सबके पूर्ण विकास और सबकी भलाई पर जोर देता है। सबका मतलब सबसे है, उसमें कोई अपवाद नहीं। "सबकी भलाई" का यह आदर्श "अधिकतम लोगों की अधिकतम भलाई" और "निहित स्वार्थ वाले चन्द पूँजीपतियों के खिलाफ सर्वहारा की जीत" के प्रचलित सिद्धान्तों से भिन्न और प्रगतिशील है। पूर्ण और उसका अंश—चाहे वह अंश कितना ही बड़ा क्यों न हो—एक चीज नहीं हैं। इसलिए सर्वोदय दूसरे प्रचलित सामाजिक आदर्शों से केवल आगे ही नहीं, बल्कि अपने सामाजिक परिणामों की दृष्टि से उनसे बुनियादी तौर पर भिन्न भी है।

गांधीजी की सबसे बड़ी देन तो साध्य नहीं, साधन के बारे में है। उन्होंने साधन-शुद्धि पर बहुत जोर दिया था। इस मामले में वे किसी प्रकार का समझौता करने को तैयार नहीं थे। मानव जाति के इतिहास में उनसे पहले भी और लोगों ने शुद्ध साधन इस्तेमाल करने पर जोर दिया है, पर अक्सर ऐसा हुआ कि विकट सामाजिक प्रश्नों पर जब कि शुद्ध साधन से तत्कालीन सफलता हाथ होती नजर नहीं आयी, तब या तो वे शुद्ध होने का व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भेद करके उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में साधन शुद्धि की बात को शुद्ध छोड़ दिया। व्यक्तिगत जीवन में वे साधन निषिद्ध माने गये, सामाजिक या सामूहिक क्षेत्र में वे क्षम्य। गांधीजी ने न तो ऐसा कोई भेद स्वीकार किया, न शुद्ध ही रहे। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में व्यवहार की एक नयी पद्धति को जन्म दिया। उनके लिए सत्य और अहिंसा केवल व्यक्तिगत जीवन के मूल्य नहीं थे, बल्कि समाज-परिवर्तन के श्रेष्ठ साधन भी थे। एक महान् सामाजिक क्रान्तिकारी की तरह उन्होंने इस नये विचार और उसकी प्रक्रिया का आविष्कार किया। उन्होंने क्रान्ति की परिभाषा ही बदल दी। गांधी के पहले मानव जाति को क्रान्ति का एक ही तरीका मालूम था—हिंसा और जबरदस्ती का।

गांधी ने राष्ट्रीय या राजनैतिक मामलों के लिए भी हिंसा को न केवल त्याज्य ठहराया, बल्कि दृढ़तापूर्वक इस बात का प्रतिपादन किया कि हिंसा का आसरा लेकर सच्ची शांति कभी हो ही नहीं सकती।

दुर्योग से गांधीजी अपने काम को पूरा करने के लिए जिंदा नहीं रहे। हिन्दुस्तान की आजादी उन्होंने अवश्य बिना हिंसा और छल कपट के तरीकों को अपनाये हासिल की, जो कि अपने-आप में मानव जाति के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थी। पर हिन्दुस्तान की आजादी से कहीं अधिक बुनियादी और कहीं अधिक कठिन जो दूसरा काम सत्य और अहिंसा के रास्ते से नयी शोषणविहीन समाज-रचना करने का था वह अधूरा रहा। गांधीजी के जाने के बाद इन पिछले बारह वर्षों में इस काम की अहमियत और उसकी तत्परता और भी ज्यादा बढ़ गयी है। नाम के लिए आजाद होने पर भी पृथ्वी के अधिकांश मनुष्य आज गुलाम हैं—ऐसे गुलाम जैसा शायद मनुष्य पहले कभी नहीं था। लाखों-करोड़ों आदमियों का जान और उनका जीवन आज चंद आदमियों की मुट्ठी में आ गया है। इसी प्रकार, जब कि एक ओर विज्ञान के विकास के कारण मानव जाति की समृद्धि के द्वार खुल गये हैं, उसका अधिकांश भाग आज भी गरीब और कंगाल है। मानव जाति को इस दोहरी गुलामी और दारिद्र्य से मुक्त करने का काम अत्यंत तात्कालिक महत्त्व का हो गया है। अगर यह नहीं हो सका तो इसका विकल्प सर्वनाश ही है। जैसा गांधी ने कहा था, यह क्रान्ति अगर हो सकती है तो सचाई और प्रेम के आधार पर ही हो सकती है, अन्यथा मानव जाति एक गड्ढे में से निकल कर दूसरे गड्ढे में गिरेगी। सत्य और अहिंसा की राह से यह बुनियादी सामाजिक परिवर्तन किस प्रकार हो सकता है, यह आज गांधी के विचारों को मानने वालों के लिए एक चुनौती है।

जैसा कि हम सब जानते हैं, हिन्दुस्तान की आजादी के बाद गांधीजी का चिन्तन तेजी के साथ सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति की सिद्धि की दिशा में चल रहा था। स्वयं उनकी प्रेरणा से ही यह तय हुआ कि सन् १९४८ के शुरू में सेवाग्राम में अहिंसक समाज-रचना में विश्वास रखने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हो। गांधीजी स्वयं उसमें हाजिर रहने वाले थे ही। सम्मेलन तो मार्च १९४८ में हुआ, लेकिन गांधीजी के बिना। उस सम्मेलन के सामने भी मुख्य प्रश्न यही था कि अहिंसा की ताकत को कैसे आगे बढ़ाया जाय, यानी शुद्ध साधनों से सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं का हल किस तरह से किया जाय। उस सम्मेलन के सामने बोलते हुए विनोबा ने कहा था :

"बापू ने अपनी जिंदगी भर हमें यही सिखाया कि जैसा हमारा साधन वैसा ही हमारा मकसद होगा। यानी साधनों का रंग मकसद पर चढ़ता है, इसलिए जरूरी होता है कि अच्छे मकसद के लिए साधन भी अच्छे ही होने चाहिए। अपना मकसद पूरा करने के लिए चाहे जैसे साधन, अगर मान्य समझे जाते हैं तो फिर किसका मकसद ठीक है और किसका बेठीक, यह कौन तय करेगा? हर एक को अपना मकसद ठीक ही लगता है।" बहुतों ने पं० जवाहरलालजी ने भी साधन-शुद्धि की अहमियत को समझा और उसी सम्मेलन में विनोबाजी की बातों की ताईद करते हुए कहा—"आज नतीजे पर से उपायों की अच्छाई या बुराई का फैसला किया जाता है...कहा जाता है कि अगर काम अच्छा है तो उसके लिए जिन अच्छे-बुरे उपायों का इस्तेमाल किया जाय, वे भी अच्छे हैं। मैं बहुत तकलीफ और दिमागी परेशानी उठाने के बाद इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि गलत कदम उठाने का नतीजा बुरा ही होता है। बात बिलकुल अदनी-सी है। लेकिन उसके नतीजे बहुत गहरे हो सकते हैं। जिंदगी के तमाम क्षेत्रों में यह उसूल बुनियादी है।"

आज उस सम्मेलन के ठीक बारह वर्ष बाद हम फिर सेवाग्राम में मिल रहे हैं। गरीबी और शोषण से पीड़ित मानव जाति शायद अपनी आखिरी साँस ले रही है। यह हमारे लिए न केवल एक चुनौती है, बल्कि शायद हमारे लिए आखिरी अवसर भी हो। एक चीनी कहावत है कि एक समय मछली पकड़ने का होता है और दूसरा जाल सुखाने का। हर आंदोलन में एक फिजा आती है, जब आन्दोलन तेजी के साथ आगे बढ़ता है और दूसरे कुछ क्षण आते हैं, जब हमें ठहर कर, आसपास नजर डाल कर, अब तक प्राप्त की हुई सिद्धि को जरा सम्हालना होता है। अब समय आया है, जब कि हम फिर आगे बढ़ने की तैयारी करें।

उपरोक्त चीनी कहावत की याद दिलाते हुए अंग्रेजी के एक प्रख्यात लेखक श्री आरथर कस्लर ने जयप्रकाशजी को अभी हाल में याद दिलाया था कि "अब जाल करीब-करीब सूख चुके हैं।" अब हमें फिर अपने सूखे हुए जाल को समुद्र में डाल कर आन्दोलन को एक नये दौर पर ले जाने की कोशिश करनी चाहिए।

स. मा. गर्ग

लोकतंत्रीय राज्यपद्धति के संबंध में जे. पी. के विचार

श्री जयप्रकाश नारायण ने भारत की वर्तमान परिस्थिति की जो विवेचना की है और उसका जो हल सुझाया है, उस पर विचार करने पर सबसे पहले यह बात ध्यान में आती है कि वर्तमान प्रातिनिधिक संस्थाओं और उनकी कार्यपद्धति में कई दोष हैं। खास कर स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं की कार्यपद्धति की ध्येय-दृष्टि, कार्यक्षमता और सुसूत्रता का अभाव स्पष्ट दिखता है। जिसे लोकतंत्र की नींव माना जाता है उस ग्रामपंचायत में पक्ष, जाति और व्यक्तिगत स्वार्थ की खींचातानी आज विद्यमान है। लोकतंत्र के उपासकों को यह एक भयानक खतरा मालूम होता है और यह स्वाभाविक है। पक्षनिष्ठा और जाति-निष्ठा के सामने लोकतंत्र की निष्ठा दुर्बल होती-सी दिखती है। जब समाज की नींव ही इस प्रकार ढीली हो, तो आगे का महल भी कमजोर और डगमगाने की स्थिति में रहेगा ही और नतीजा यह होगा कि बचा-खुचा लोकतंत्र भी गायब हो जायगा तथा सैनिक सत्ता अमल में आयगी।

सही समस्या-गरीबी या स्वतंत्रता ?

पार्लियामेण्टरी लोकराज्य के दोषों के संबंध में श्री जयप्रकाशजी के विचारों से मतभेद नहीं हो सकता है। लेकिन इन दोषों के कारणों के संबंध में उन्होंने जो विवेचन किया है, वह जरूर अटपटा है। उनकी राय में इन दोषों का कारण भौतिक परिस्थिति, खास कर मानव की भौतिक आवश्यकताओं की वृद्धि है। लेकिन जैसा जयप्रकाशजी कहते हैं उस प्रकार क्या यही हमारी सही समस्या है—सुविधा या स्वतंत्रता ? जयप्रकाशजी की समस्या का यह रूप है कि सुविधा चाहो तो तुम्हें स्वतंत्रता खोनी होगी। राज्यवाद और अधिनायकवाद के शिकंजे में कसा हुआ मानव स्वतंत्र नहीं रह सकता। लेकिन क्या सचमुच सुविधा और स्वतंत्रता परस्पर-विरुद्ध भूमिका पर हैं ? पर वस्तुस्थिति निश्चय ही विपरीत दिखती है। सही समस्या है—*गरीबी या स्वतंत्रता ? भौतिक आवश्यकताओं* को सीमित या नियंत्रित करने के बजाय प्राथमिक आवश्यकताएँ भी कैसे पूरी की जायँ, यह समस्या है। इस समस्या के सुलझने में जितनी देर होगी या कठिनाई होगी उतनी ही तेजी से अधिनायकवाद बढ़ता जायगा। उन्हीं देशों में आज लोकशाही की निष्ठा कम होती चली है, जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हैं, जहाँ औद्योगिक प्रगति नहीं हुई है और जहाँ का उत्पादन अधूरा है। एशिया के पिछड़े देशों में साम्यवाद का प्रसार जोरों से हो रहा है। कोरिया, इण्डोचायना इण्डोनेशिया, मलाया आदि देशों का गत दस वर्ष का इतिहास इसका साक्षी है। इसके विपरीत जिन देशों ने अपना उत्पादन जोरों से बढ़ाया, आर्थिक स्थिरता प्राप्त की, उन देशों में अधिनायकवाद की आशंका कम हुई है। पश्चिम यूरोप के देशों का उदाहरण इस संदर्भ में ले सकते हैं। ऐसी स्थिति में सही समस्या यह नहीं है-सुविधा या स्वतंत्रता ? परन्तु यही निष्कर्ष निकलता है कि जैसे-जैसे सुविधा बढ़ेगी वैसे-वैसे स्वतंत्रता के टिकने की संभावना भी बढ़ेगी। यह निष्कर्ष वस्तुस्थिति का निर्देशक है।

भारत की दृष्टि से विचार किया जाय तो यहाँ प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के अनुरूप उत्पादन बढ़ने में और भी कई साल लगेंगे। ज्यों ही अन्न, वस्त्र और आवास जैसी जीवनावश्यक आवश्यकता की पूर्ति होने लगेगी त्यों ही शिक्षण, आरोग्य, कलात्मकता, बौद्धिक पराक्रम के क्षेत्र आदि की पूर्ति की मांग पैदा होगी और इन सबकी पूर्ति के लिए कई वर्षों का समय, कई गुना उत्पादन-वृद्धि और अनेक प्रकार के प्रयत्नों की आवश्यकता है। इसलिए श्री जयप्रकाशजी की "आवश्यकताएँ कम करो" वाली घोषणा अनावश्यक लगती है और अप्रासंगिक तो जरूर ही लगती है।

प्राचीन समय का आकर्षण

पर अब एक बार भौतिक आवश्यकताओं को नियंत्रित करने का तत्त्व मान्य हुआ तो जिस समय इस प्रकार आवश्यकताएँ मर्यादित थीं, उस समय के प्रति और उस समय के संगठन के प्रति आकर्षण पैदा होना स्वाभाविक है। श्री जयप्रकाशजी ने पुरानी ग्राम-व्यवस्था के संबंध में जो विवेचन किया है और उस व्यवस्था का जो आदर्श सामने रख कर चलने का समर्थन किया है इस सबकी आवश्यकता का अन्वयार्थ उपर्युक्त विचार के संदर्भ में हो सकता है।

संसदीय लोकतंत्र के दोष स्पष्ट हैं। राजनैतिक पक्ष, राज्यवाद, चुनाव आदि अधिक प्रबल हो गये हैं। लोकतंत्र की मूलभूत नैतिक प्रेरणा शिथिल हुई है। इसलिए राज्य के संविधान में परिवर्तन करना जरूरी है। लेकिन इसका आदर्श प्राचीन ग्राम व्यवस्था नहीं हो सकेगा। खास बात तो यह है कि वह व्यवस्था आदर्श मानने जितनी श्रेष्ठ नहीं थी। उस व्यवस्था में आर्थिक दरिद्रता थी, सामाजिक विषमता थी और गजब का भाग्यवाद था। वह हजारों वर्ष टिकी, इसका अर्थ इतना ही हो सकता है कि वह जीवित थी। वह विकसित नहीं हो सकी। वह स्वावलंबी थी, इसका अर्थ यह है कि वह इने-गिने साधनों द्वारा मुट्ठी भर लोगों की आवश्यकताएँ पूरी करने योग्य थी। वह सुखी थी, इसका अर्थ यह कि उस पर इस विचार का दबाव था कि प्राप्त परिस्थिति में बने रहना समाधान है। यह सही है कि उसमें राजनैतिक पक्षों की बाधा न थी। पर निश्चित ही जातियों की बाधा उसमें थी। और यह राजनैतिक पक्षों की अपेक्षा अधिक दुखदायी थी। उस समय का जीवन अपूर्ण था, अलगथलग था और अविकसित था। आजकल आधुनिक यंत्रोत्पादन पद्धति के कारण कई दोष पैदा हुए हैं, इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। पर प्राचीन ग्राम-व्यवस्था-तंत्र से ये दोष दूर हो जायेंगे, ऐसा मानना गलत होगा। यह समझना कठिन है कि स्वयंपूर्ण ग्राम और स्वावलंबी अर्थ-व्यवस्था का समूचे देश के हित संबंधों के साथ मेल कैसे बैठेगा और कहाँ तक संभव होगा। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में नव-समाज-रचना का उपाय सोचें, तब तो विसंगति और अव्यावहारिकता ही अधिक स्पष्ट होती है।

इसी प्रसंग में विकेंद्रीकरण की मर्यादा का भी विचार करना होगा। सत्ता, संपत्ति और उत्पादन के साधनों का केंद्रीकरण होने से राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक दोष निर्माण हुए हैं, इसलिए विकेंद्रीकरण जरूरी है। लेकिन विकेंद्रीकरण की योजना सुझाते समय समूचे राष्ट्र के व्यवहार में एकसूत्रता कायम रखना जरूरी है। विकेंद्रीकरण की दृष्टि से स्वावलंबी और स्वयंपूर्ण गाँवों का कितना क्या उपयोग रहेगा ? इस्पात, बिजली जैसे मूलभूत उद्योगों का, यातायात के देशव्यापी साधनों का, संरक्षण की व्यवस्था का और विकेंद्रीकरण का मेल किस तरह बैठाया जाय, इस प्रश्न पर भी विचार करना जरूरी है।

राजनैतिक पक्षों की आवश्यकता

श्री जयप्रकाशजी के निबंध में एक और विवादास्पद विषय है पक्षपद्धति का। उन्होंने प्रतिपादन किया है कि पक्षनिष्ठ राजनीति के कारण लोकतंत्र के तत्त्व हट जाते हैं और उसका ढाँचा भर रह जाता है। इस प्रतिपादन का यह रूप है कि भरपूर आश्वासनों, मरकीले प्रचारों और अन्न में इनके द्वारा मतदाताओं में भ्रम का निर्माण ही इस पक्षपद्धति का परिणाम है। लेकिन राजनैतिक पक्षों ने लोकतंत्रीय देशों में क्या इतना ही काम किया है ? भारत में भी राजनैतिक पक्षों का क्या यही काम रहा है पर इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि राजकीय पक्षों ने एकता की भावना निर्माण करने में बहुत बड़ा योग दिया है। विभिन्न राष्ट्रीय समस्याओं की मतदाताओं को जानकारी कराने का काम भी पक्षों के प्रचार से ही हुआ है। पक्षों की यह ऐतिहासिक और लोकशिक्षणविषयक आवश्यकता अभी खतम हो गयी, ऐसा नहीं लगता। इसलिए पक्षरहित लोकतंत्र की कल्पना अभी तक नजरों के सामने आती नहीं है। श्री जयप्रकाशजी की यह राय जरूर जँचती है कि ग्राम पंचायत जैसे प्राथमिक चुनावों में राजनैतिक पक्ष भाग न लें। लेकिन इसके बाद विशिष्ट निष्ठा और कार्यक्रम के आधार पर पक्षों की जरूर आवश्यकता रहेगी, उनकी उपयोगिता अभी समाप्त नहीं हुई है।

अप्रत्यक्ष चुनाव न हों

चुनाव के संबंध में श्री जयप्रकाशजी के उपस्थित किये हुए मुद्दों का विचार होना चाहिए। उन्होंने यह प्रतिपादन किया है कि ग्राम-पंचायत के चुनाव प्रत्यक्ष-डाइरेक्ट-पद्धति से हों, पर आगे पंचायत समिति, जिला परिषद, प्रांतीय सभा और राष्ट्रसभा-इन सभी पदों के चुनाव अप्रत्यक्ष-इनडाइरेक्ट-पद्धति से हों। श्री जयप्रकाशजी के आक्षेप का यह रूप है कि राजनैतिक पक्ष प्रचार के जोश में कई तरह के आश्वासन देते हैं और मतदाताओं को भ्रम में डालते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बेचारे मतदाता के सामने इस पेटी में या उस पेटी में अपना मतपत्र छोड़ने के सिवा और कोई काम नहीं रहता है। लेकिन क्या अप्रत्यक्ष चुनाव से यह स्थिति बदल सकेगी ? बिलकुल नहीं। बल्कि वह और भी बढ़ेगी, क्योंकि प्रत्यक्ष चुनाव के समय हजारों मतदाताओं को अपने पक्ष की ओर मोड़ना हमेशा आसान नहीं होता है, पर अप्रत्यक्ष चुनाव में मुट्ठी भर प्रतिनिधियों को अपने अनुकूल बना लेना बहुत आसान हो जायगा। संख्या कम होने के कारण प्रतिनिधियों में फूट डालना, उन्हें विभिन्न प्रलोभन दिखा कर अपना करना सहज साध्य हो जायगा। इसके अलावा प्रत्यक्ष चुनाव के समय प्रचार के निमित्त से जनता को विविध प्रश्नों के बारे में समझाने का जो मौका मिलता है, वह भी अप्रत्यक्ष चुनाव के कारण नहीं रहेगा।

[शेष पृष्ठ ११, कालम १ पर]

हृदा सत्यं ज्ञात्वा स्मृतिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि*

आज के समाचार-पत्र !

लोकतंत्र में समाचार-पत्रों का स्थान महत्व का होता है। पर यदि वे अखबार लोकमानस के प्रतिनिधि न होकर किसी पार्टी-विशेष के प्रतिनिधि बन जायँ, तो उन अखबारों के जरिये लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक होती है। आज के अखबार राजनीति को अत्यधिक महत्व दे रहे हैं। इसी तरह राजपुरुषों का महत्व भी अखबारों ने बहुत अधिक बढ़ाया है। पर यह उचित नहीं है। राज्य में और राजपुरुषों से संस्कृति का और सांस्कृतिक पुरुषों का महत्व बेशक अधिक होता है। राजनीति तोड़ने का काम करती है और संस्कृति जोड़ने का काम करती है। इसलिए मैं अखबार वालों से कहना चाहता हूँ कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक महत्व के समाचारों को प्राथमिकता दें।

प्रायः अखबार मंत्रियों के उद्घाटन भाषणों से अथवा राजनैतिक 'स्टंट' के समाचारों से रंगे रहते हैं। मेरे जैसी रुचि वाले आदमी को उन अखबारों में पाठ्यसामग्री का बहुत अभाव रहता है। ऐसी स्थिति में क्या यह कहा जाय कि ये अखबार लोकमानस के प्रतिनिधि हैं? लोकमानस राजनीति से अधिक संस्कृति से जुड़ा हुआ होता है। निश्चय ही किसी मंत्री या राज्याधिकारी से किसी विचारक या साहित्यकार का महत्व अधिक है।

भारत में अनेक राजा महाराजा और सम्राट हुए, पर भारत की जनता उन राजाओं या उन सम्राटों को नहीं, बल्कि उन संतों, नबियों और साहित्यकारों को पूजती है, जिन्होंने भारतीय जीवन के सांस्कृतिक पहलू का निर्माण करने में हाथ बटाया।

बाड़पर, ३ मार्च, ६०

—विनोबा

*लिपि-संकेत : ि — ी; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

नये बजट में इनामी बांड

२९ फरवरी को श्री मोरारजी देसाई ने भारत सरकार के अगले वर्ष के बजट की घोषणा के साथ-साथ १ अप्रैल से 'इनामी बांड' जारी करने का निर्णय भी जाहिर किया है। आम जनता अपनी बचत की थोड़ी-थोड़ी रकम हर साल मुश्ताक रूप से सरकारी खजाने में दे सके और इस तरह जनता की बचत फिर देश के निर्माण के कामों में लगायी जा सके, इसके लिए सरकार 'अल्प बचत योजना' के अन्तर्गत छोटी छोटी रकमें स्वीकार करती है, उन पर निश्चित दरों से ब्याज देती है और जरूरत पड़ने पर लोग अपनी रकम अमुक अवधि के बाद चाहें तो आसानी से वापस ले सकें, इसकी सुविधा कर देती है। इस तरह की छोटी-छोटी रकमों की बचत को प्रोत्साहन देने के लिए अब सरकार ने 'इनामी बांड' की यानी लॉटरी की योजना जारी की है। इन इनामी बांडों पर ब्याज नहीं मिलेगा, पर हर तीसरे महीने लॉटरी निकाली जायगी और लॉटरी में निकलने वाले नम्बरों पर इनाम मिलेगा। योजना के मुताबिक हरएक करोड़ रुपये के बांडों (दस्तावेजों) पर साल भर में कुल ३ लाख ६८ हजार रुपया इनाम में बाँटा जायगा। दूसरे शब्दों में करीब पौने चार प्रतिशत ब्याज की जो रकम होती वही रकम ब्याज के रूप में न दी जाकर लॉटरी में जिनकी "किस्मत खुल जायगी" उनमें इनाम के रूप में बाँट दी जायगी। इस तरह लोगों का ही पैसा लोगों में बाँट दिया जायगा। साधारण तौर पर हरएक को ब्याज दिया जाय तो सब ही रुपये के सरकारी दस्तावेज पर पौने चार रुपया साल में मिले, पर 'इनामी बांड' की इस योजना में ब्याज तो किसी को नहीं मिलेगा, लेकिन हरएक बांड खरीदने वाले को यह लालच रहेगा कि अगर संयोग से उसके दस्तावेज का नम्बर लॉटरी में आ गया, तो एक ही दस्तावेज पर पचास हजार तक रुपया उसे इनाम में मिल सकता है। सरकार को आशा है कि इस लोभ में आकर ज्यादा लोग इनामी बांड खरीदेंगे और सरकार को अपने कामों के लिए ज्यादा पैसा मिल जायगा।

पिछले १ अक्टूबर, '५९ के "भूदान-यज्ञ" में जब पहली बार अखबारों में इन इनामी बांडों को जारी किये जाने की खबर छपी थी, तब हमने इस योजना का विरोध करते हुए कहा था कि इस तरह जनता में "बिना मेहनत के कमाई" करने की और लोभ की वृत्ति पैदा करना कहाँ तक उचित है, इस पर विचार करना चाहिए। इस बात का अक्सर गर्व के साथ जिक्र किया जाता है कि भारत की सरकार किसी एक धर्म या सम्प्रदाय की सरकार नहीं है। यह तो सराहनीय चीज है, लेकिन क्या सरकार का काम चलाने के लिए सामान्य नैतिकता को भी छोड़ देना वाजिब है? देश के नेता आये दिन इस बात पर दुःख प्रकट करते हैं कि देश के विकास के लिए जनता में त्याग, बलिदान, कर्तव्यपरायणता, परिश्रम आदि के जो सद्गुण चाहिए, उनका अभाव है। क्या इस तरह लोभ लालच और 'किस्मत के खेल' को प्रोत्साहन देकर हम स्वयं इन सद्गुणों की जड़ पर कुठाराघात नहीं कर रहे हैं? सरकार को और सरकार में रहे हुए देश के नेताओं को जरा गंभीरता से इस बात पर सोचना चाहिए। लोगों के सामने गलत आदर्श और प्रलोभन पेश करना और फिर राष्ट्र के काम चलाना इ ने पर और राष्ट्र का जीवन दूषित होने पर उसकी जिम्मेदारी जनता पर डालना या दोष देना है या दुर्भाग्य होगा।

—सिद्धराज ढड्ढा

साथियों की ओर से……

[देश में जगह-जगह सैकड़ों निष्ठावान कार्यकर्ता सर्वोदय-विचार के अनुसार समाज परिवर्तन के काम में लगे हुए हैं। अक्सर इन साथियों की रिपोर्टों में या पत्रों आदि में उनके अनुभवों का और उनके काम का उन पर खुद पर और आसपास के समाज पर होने वाली प्रतिक्रिया का दिलचस्प वर्णन रहता है, जो एक दूसरे के लिए उपयोगी साबित हो सकता है। —सं०]

"हरएक गाँव में परंपरा ऐसी थी कि बढ़ईगीरी, लुहारी, चमारी, कुम्हारी, खेती आदि सभी कामों से सम्बन्धित औजार गाँव में बनते थे। आज सरकार की ओर से जो नये-नये खर्चीले औजार देहातों में आ रहे हैं, वे गाँव के धनिक ही खरीद पाते हैं और वे फिर उन्हें गरीबों को किराये से देते हैं; जिससे शोषण को प्रोत्साहन मिल रहा है। …जो पुराने औजार करोड़ों रुपये के देहात में पड़े हैं, उनका नाश हो रहा है।"

—शंकर दिघोलकर, अहमदनगर

* *

"खादी उत्तरोत्तर बढ़ रही है ऐसे आँकड़े पेश किये जाते हैं, पर दूसरी ओर खादी के प्रति निष्ठा कम होती जा रही है। इसके कई कारण हैं—कुछ मनोवैज्ञानिक, कुछ ज्ञान की कमी के और कुछ सीधे खादी से सम्बन्धित।… मेरे कुछ सुझाव हैं।—(१) कुछ साल पहले, एक बार शायद विनोबा के ही सुझाव पर, सूत को दो बट करके काम में लाने की बात सामने आयी थी। इससे कपड़ा मजबूत होगा और मिल के सूत की मिलावट का खतरा नहीं रहेगा। लोगों को भ्रम है कि इससे कपड़ा महँगा पड़ेगा। पर मेरा सात साल का अनुभव इसके विपरीत है। (२) अम्बर चरखे को उन्हीं लोगों तक सीमित रखा जाय जो रोजगार की दृष्टि से सूत कातना चाहें या ग्रामदानी गाँवों में जहाँ धन्धों की व्यवस्था का सामूहिक चिन्तन हो।

जो रोजगार की दृष्टि से चलाना चाहें उनके लिए कन्ही से अच्छी रुई का प्रबन्ध किया जाय, ताकि वे महीन सूत कात सकें। उस कते हुए महीन सूत को सिर्फ धोती और साड़ी के काम में लाया जाय। जो वस्त्र-स्वावलम्बन की दृष्टि से चलाना चाहते हैं या पचास प्रतिशत भी खादी का व्यवहार करना चाहते हैं, उनके लिए साढ़े चरखे पर ही जोर दिया जाय, ताकि कम से कम पैसे में ज्यादा से ज्यादा परिवारों में खादी का प्रवेश हो सके और गाँव ही जिसे सँभाल सकें। साढ़े चरखे की पूँजी पैदा करने के लिए अम्बर चरखे की बेचनी बहुत उपयुक्त होगी। दो परिवारों पर एक बेचना बड़ा सुगमता के साथ साढ़े चरखे की पूँजी तैयार कर सकता है। इसका प्रयोग स्वयं मैं कर रहा हूँ। इस तरह २०-२२ रुपये के साधनों से परिवारों में वस्त्र-स्वावलम्बन हो सकता है, जब कि अम्बर चरखे के पीछे १००-१५० रुपये खर्च होते हैं। (३) आज जो कपड़े पर रिबेट (सरकारी सहायता) है, वह ठीक नहीं है। कपड़े पर रिबेट न देकर साधन पर ही रिबेट दें, तो ज्यादा लोग चरखा चलाना शुरू करेंगे। लोग सूत को दोबट करें और उनके लिए एक साल में दो साल तक की परिवार में ५० गज कपड़े की मुफ्त बुनाई का प्रबन्ध किया जाय।

—रामचन्द्र सिंह, सर्वोदय आश्रम,
दुर्दिहार (बिहार)

हमारा आन्दोलन जनशक्ति पर खड़ा हो !

द्वारको सुंदरानी

इन दिनों अपने देश में निर्माण-कार्य की योजनाएँ चल रही हैं। उस कार्य के भिन्न-भिन्न अनुभव आ रहे हैं। निर्माण-कार्य के संचालकों को पिछले दस-बारह बरसों के अनुभव से यह लगता है कि निर्माण-कार्य जन-शक्ति के आधार पर नहीं चल रहा है। जन-शक्ति जैसी विकसित होनी चाहिए, वैसी विकसित नहीं हो रही है। इस सम्बन्ध में लोकनेता और सरकारी अधिकारी सोच रहे हैं और योजनाएँ भी बना रहे हैं। आखिर इन योजनाओं का आधार क्या है? भारत में दो ऐसे भयानक भूत बैठे हैं, जिनका आपसी सहयोग जबरदस्त है। एक है गरीबी और दूसरा है अज्ञान। गरीबी और अज्ञान, दोनों परस्परावलम्बी हैं। अज्ञान है, इसलिए गरीबी जाती नहीं। अतः ऐसी कोई योजना बने, जिसमें इन दोनों भूतों पर एकसाथ हमला किया जाय तो काम बनेगा, और तब लोक-शक्ति के आधार पर निर्माण-कार्य हो सकेगा। ऐसी कोई योजना हो, जिससे अपने देश में जो अथाह श्रम-शक्ति पड़ी है, उसका उपयोग हो, और उसके साथ ज्ञान-उपार्जन भी हो, तो हमारी योजनाएँ लोगों में उत्साह पैदा कर सकेंगी।

युगोस्लाविया में श्रम-सेना

पिछले दिनों मैं युगोस्लाविया गया था, वहाँ श्रम-सेना का जो काम मैंने देखा, वह यहाँ बताना चाहता हूँ, जिससे हमें सोचने में मदद मिल सकती है।

युगोस्लाविया देश सन् १९४१ से '४५ तक युद्धग्रस्त था। इसके पहले भी इस देश में गुर्बत थी, परन्तु युद्ध ने तो स्थिति और भी बिगाड़ दी। देश के दस प्रतिशत लोग मारे गये। हर गाँव में कुछ-न-कुछ भौतिक क्षति हुई। देश कृषिप्रधान था। उन दिनों युद्ध के कारण जवान लोग खेती का काम नहीं कर सकते थे, जन-मुक्ति सेना में काम करते थे। खेतों में फसल खड़ी थी, काटने वाला कोई नहीं था। जन-मुक्ति सेना में देश के तरुण लड़के काम करते थे। उनको खाना पहुँचाना था, तो जवान लड़कियाँ खेतों में आयीं। दुश्मन की फौज का डर था, अतः वे छिप कर फसल काटती थीं और अनाज के बोरे पीठ पर लाद कर ले जाती थीं। हजारों मन अनाज, आलू आदि इन लड़कियों ने अपने लोगों तक पहुँचाया। इस तरह तरुण श्रम-दान सेना का कार्य युगोस्लाविया में शुरू हुआ।

युद्ध समाप्त होने के बाद अथाह काम था। सर्वत्र बरबादी थी। घर जलाये गये थे; विद्यालय, पुल, रास्ते आदि नष्ट हो चुके थे। देश को सम्भालना था। श्रम-दान-आन्दोलन ने जोर पकड़ा। अब तो न केवल लड़कियाँ, बल्कि देहात और नगर के लड़के भी आकर जुटे और काम में लगे। जब लाखों जवान इस काम में पड़े, तो सारे देश की फिज़ा ही बदल गयी। जो लड़के-लड़कियाँ कभी श्रम दान के लिए नहीं गयीं, वे अपने को समाज में हीन समझने लगे। "हम देश बनायेंगे, देश हमें बनायेगा," यह था नारा इस श्रम सेना का। १९४६ में जब फसल बोने का समय आया, तो बोने वाले ये बने। इस तरह एक के बाद एक काम यह श्रम सेना करती गयी, तब इन सैनिकों और देश के नेताओं को सामूहिक शक्ति का दर्शन हुआ। उन्होंने देखा कि सब जवान लड़के-लड़कियाँ साथ साथ रह कर काम करते हैं, अलग अलग देश के हिस्सों, धर्मों और संस्कृतियों से आकर आपस में मिलते हैं, तो आपसी प्रेम और सौहार्द बढ़ता है। युगोस्लाविया में ४-५ भिन्न-भिन्न कौमें हैं। परन्तु वे अब अपने को एक समझने लगी हैं। इस तरह जब बचपन में साथ रहने का संस्कार मिला, लोग व्यक्तिगत रूप में एक-दूसरे के निकट आये, तो एक भाईचारे और पारिवारिक वातावरण का निर्माण हुआ। नवजवानों में श्रम प्रतिष्ठा कायम हुई, अतः देश-निर्माण में बड़ी मदद मिली और ऊँच-नीच भेद का नाम नहीं रहा। जब देश के निर्माण की बेला थी, लड़ाई में से देश गुजरा था, तब कारीगरों की, विशेषज्ञों की जरूरत थी। इन लाखों जवानों में से हजारों जवानों ने काम में इतनी दिलचस्पी दिखाई कि काम को अपना रोजगार बनाया। शिक्षण लिया; कारीगर, मिस्त्री बन गये। इनके जो श्रम शिविर थे, वे एक प्रकार के पूरक विद्यालय थे। छह घण्टे प्रतिदिन काम करते थे और दो घण्टा अपनी रुचि के अनुसार काम सीखते थे। सबसे ज्यादा तो जवानों में आत्मविश्वास और पुरुषार्थ बढ़ा। जीवन के व्यक्तिगत तथा सामाजिक नये आदर्श सामने आये।

जन-शक्ति से रेल का निर्माण

श्रम-सेना अब सोचने लगी, देश के पुनर्निर्माण की योजनाओं के बारे में। एक स्थान पर कोयले की खदानें थीं। वहाँ अगर रेल का रास्ता बन जाय, तो देश के उद्योग विकसित होंगे, और वहाँ के लोगों को काम मिलेगा। नब्बे मील लम्बी यह रेल श्रम सेना ने बनानी आरम्भ की। मिट्टी काट कर लाइन पर डाली, पत्थर काट कर बिछाये। २२ पुल बनाये और दो 'टनेल' खोदे गये। ६२ हजार जवान और बाकी सरकारी विशेषज्ञों ने काम किया। श्रम था श्रम सेना का; योजना और विशेषज्ञ, मशीनें, माल था सरकार का। सात महीनों के अन्दर जब यह रेलवे लाइन तैयार हुई, तो नवजवान और नेताओं की सूरत ही बदल गयी। अब तो एक राह खुल गयी। सारे देश में सर्वत्र छोटी-बड़ी निर्माण योजनाएँ बनने लगीं। सन् १९४६ से '५२ तक ११ रेलवे लाइनें, १४ कारखाने, ८ बिजली घर स्टेशन, विद्यार्थी गृह, खेल कूद के मैदान आदि बनाये गये। अब लोग अपनी अपनी स्थानीय योजनाओं में ज्यादा रस लेने लगे। लोग कुछ सिखाने लगे। सन् '५८ में राष्ट्रपति टीटो की प्रेरणा से "नेशनल हाई वे" बनाने का काम आरम्भ हुआ। यह मार्ग देश के उत्तरी छोर से दक्षिणी छोर मध्य तक यूरप को योनान से मिलाने वाला ६७० मील लम्बा मार्ग होगा। जवानों ने जब यह सन्देश सुना, तो दो लाख नाम आ गये। केवल ५० हजार जवानों को ही काम मिल सका। सन् '६२ में यह कार्य खतम होने की सम्भावना है। जो कार्य सरकारी योजना के अनुसार दस बरस में समाप्त होता, वह श्रम-सेना चार वर्ष में पूरा करेगी।

इस वर्ष ५५ हजार तरुण-तरुणियाँ काम कर रहे थीं। ५०० सेवकों का एक 'कैम्प' रहता है। इनमें फिर टुकड़ियाँ रहती हैं। १०० सेवकों की एक टुकड़ी और १० सेवकों का एक दल। इनके फौजी तरीके पर ब्रिगेड, अफसर तथा निशान, तमगे रहते हैं। छह घंटे श्रम काम और दो घंटे बौद्धिक, कला तथा आत्मिक शिक्षण होता है। कालेज के विद्यार्थी तथा हाईस्कूल के विद्यार्थी अपनी आधी छुट्टी और किसान-मजदूर देहाती जवान दो महीने काम करते हैं, अगर वे चाहते हैं, तो कालेज, विद्यालय के प्राध्यापक आकर वहाँ रात में उनके वर्ग लेते हैं। शिविर लकड़ों के मकानों तथा तम्बुओं में रहता है, शिविर की सफाई, रसोई आदि सब काम श्रम सैनिक करते हैं। हर शिविर में दवाखाना, पुस्तकालय, खेलकूद का सरंजाम रहता है। उनको सिनेमा, टेलीविजन आदि दिखाया जाता है। हरएक शिविर का नाम और झंडा होता है। हर छह मील में दो शिविर बनाये जाते हैं। शिविर में सब प्रान्तों के लड़के-लड़कियाँ साथ मिल कर रहते हैं, जिससे आपसी परिचय और मेल मिलाप की वृद्धि होती है। ४४ प्रतिशत विद्यार्थी और ५६ प्रतिशत देहाती जवान और २० प्रतिशत लड़कियाँ भाग लेती हैं। हरएक शिविरार्थी को भोजन और काम करने के कपड़े मिलते हैं।

उत्साह का कारण

अंत में प्रश्न पूछा जा सकता है कि वहाँ इतना उत्साह कैसे, कहाँ से आता है, इसका जवाब देना कुछ कठिन तो है, फिर भी इतना कह सकते हैं कि देश के नेता समय समय पर जाकर इन लोगों से मिलते हैं, उनको भविष्य बनाने में श्रम-सेना का कार्य मदद करता है। वातावरण का भी एक असर होता है। हम एक कोयले की खान की मजदूर-बस्ती में गये। वहाँ भी वे लोग सप्ताह में एक घंटा गाँव का श्रमदान करते हैं। गाँव के बीच में एक नाला था, जो अव्यवस्थित था, उसको व्यवस्थित किया और पत्थरों से बाँध कर सुन्दर रूप दिया। पूछने पर पता लगा कि इस कम्पनी के डाइरेक्टर, मैनेजर आदि सप्ताह में दो घंटे श्रम करते हैं, और मजदूर एक घंटा। शिविरों में भी देखा कि कमाण्डर आदि व्यवस्थापक लोग छह घंटे श्रम करने के बाद ही व्यवस्था के काम में लगते हैं। जहाँ नेता काम में जुटा हुआ हो, वहाँ अवाम अवश्य जुटता है। इसके अलावा इन देशों में राष्ट्रीय निर्माण की एक विशेष प्रवृत्ति भी दिखायी पड़ती है।

इस तरह अगर हम भी विद्यार्थियों से, देहाती नवजवानों से महीने, दो महीने की माँग करें और कहें कि छह घंटे काम, दो घंटे पढ़ाई, तो बहुत कुछ किया जा सकता है। ग्रामदानी अथवा भूदानी गाँव में कोई परती जमीन तोड़ना, नहर खोदना, तालाब बनाना, रोड़ा-बन्दी करना आदि की योजनाएँ हम श्रमदान से पूरी करें, तो एक सम्पूर्ण निर्माण योजना होगी। काम में एक निर्माण कार्य होगा, आस-पास के लोगों के साथ सम्पर्क होगा, उनका शिक्षण होगा। विद्यार्थियों में एक रचनात्मक वृत्ति का निर्माण होगा। उनके साथ काम और शिक्षण द्वारा हर साल एक महीना रहने को मिले, तो कई समाज सेवक उनमें से निकलेंगे। विद्यार्थियों और देहातियों का आत्मविश्वास बढ़ेगा कि राष्ट्रीय निर्माण हम कर सकते हैं।

आजकल सारे सेवा क्षेत्र में अथवा देश भर में चर्चा चल रही है कि निष्ठावान समाज-सेवक नयी पीढ़ी में से आ नहीं रहे हैं। पुराने जो समाज-सेवक हैं, वे तो काल मर्यादा के कारण पूरा बोझ उठा नहीं सकते, नये आ नहीं रहे हैं। अतः देश में निर्माण कार्य नहीं हो रहा है। इसका कारण क्या है? एक कारण मुझे लगता है कि आजादी की लड़ाई में जब कोई आगे लगता था, तो नवजवान उमंग में आकर भाग लेते थे और निष्ठावान होते थे। वहाँ एक ही उत्कट तपस्या से जब वे नवजवान गुजरते थे, तो कमजोरियाँ कम होती थीं। फिर वहाँ पुराने देश-भक्तों की संगति में रह कर विचार और निष्ठा से पक्के बनते थे। पिछले बारह वर्षों में अपने देश के सामने ऐसा स्थान नहीं रहा, जहाँ श्रम, विचार और निष्ठा का विकास होता हो।

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, ११ मार्च, '६०

हमारी भावी योजना क्या हो ?

अब सेवाग्राम में बारह बरसों के बाद सम्मेलन हो रहा है, वहाँ सर्व सेवा संघ और सम्मेलन में देश-निर्माण के पिछले कार्य तथा भविष्य के कार्यक्रम पर चर्चा होगी। मेरी नम्र राय है कि पिछले भूदान-आंदोलन के इतिहास में समाज ने भर-भर के दिया है, देते ही गये हैं। जो हम ने माँगा, वह मिला है। परन्तु हमारा संगठन उसकी ठीक व्यवस्था न कर पाया। हमारे पास उतने कार्यकर्ता नहीं जुट पाये, जितना हमारा काम बढ़ा। हमने जो माँगा, वह समाज ने दिया। परन्तु हम विचार-प्रचार को छोड़ कर प्रत्यक्ष सेवा अथवा निर्माण काम नहीं कर सके। इस तरह का विचार करके मेरी सबसे नम्र प्रार्थना है कि दो चीजों पर सोचें।

(१) विद्यार्थियों तथा देहाती नवयुवकों में से श्रम-सेना बना कर उसे निर्माण कार्य में लगायें। यह कार्य वर्ष में दो-तीन महीनों से अधिक नहीं होगा। कालेज और हाईस्कूल के ऊपर के वर्ग के विद्यार्थी इसमें साथी छुट्टी लेकर आयेंगे। उसके बाद देहाती नवयुवकों को लें। उनका भी एक महीना देश को मिले। इसके साथ-साथ वे जो चाहें, वह शिक्षण दो घंटे का उनको देने का प्रबन्ध करें।

(२) हमारे जितने भी लोकसेवक हैं, रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता हैं, वे तय करें कि वर्ष में एक महीना देश के लिए देंगे। हमारे अपने काम, दफ्तर आदि उस महीने में बन्द रहेंगे। देश भर में सबके सब कार्यकर्ता, लोकसेवक भूदानी अथवा ग्रामदानी गाँवों में रहेंगे। ६ घंटे श्रमदान और दो घंटे विचार-शिविर रहेगा। मैं आग्रह कहना चाहता हूँ कि इसमें पुराने, अनुभवी लोकसेवक अवश्य पूरा समय दें। उनके साथ जब नये लोग रहने लगेंगे, तो आपसी प्रेम, मित्रता, अथवा विचार विकसित होंगे और फिर ग्यारह महीने कार्य में जुटे रहेंगे।

इस तरह की योजना से कार्यकर्ता तथा जन शक्ति का निर्माण हो सकेगा, ऐसा मुझे लगता है।

• •

विनोबा के विचार

कार्यकर्ताओं से !

कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा चल रही थी। आंदोलन के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक, दोनों पहलुओं पर विचार हो रहा था, तो चर्चा के दौरान में विनोबाजी ने कहा :

काफी अनुभव के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि हम अपनी आजीविका कहाँ से लेते हैं, यह बुनियादी सवाल है। मैं आपसे यही पूछूँगा कि आप खाते कहाँ से हैं ! "आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः।" हमारा जीवन लोगों से एकरस हो जाना चाहिए। लोगों को ऐसा महसूस हो कि ये हमारे सेवक हैं। मैं मानता हूँ कि लोकसेवक वह होगा, जो सरकार से तनख्वाह न लेता हो। हमारी आजीविका के जरिये सर्वोदय-पात्र, सूताञ्जलि, सम्पत्तिदान, मित्रों से मदद, श्रमदान और चरखे की कमाई आदि हो सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि ग्रामदानी गाँव वालों के जैसे हमारे दस बारह कार्यकर्ता भी अपना सम्मिलित परिवार बनायें। मैं यह नहीं कहता कि बिलकुल हिसाब ही से इनकी कमाई हो, बल्कि चाहता यह हूँ कि भ्रातृभाव हो।

\+ \+ \+

हमारे पास कुछ भारत के साथ परिचय करने की योजना होनी चाहिए। मैं चाहता हूँ कि हमारा 'पोस्ट' बने, याने हर जिले में हमारे कुछ घूमने वाले कार्यकर्ता हों, जो गाँव-गाँव जाकर हमारे आंदोलन की खबर सुनाते हों, हमारा अखबार पहुँचाते हों। हर गाँव में, महीने में एक दफा हमारा कार्यकर्ता हर गाँव में पहुँचे और अपनी खबरें सुना कर वहाँ की जानकारी हासिल करे। फिर यह होगा कि जहाँ सरकार के दूसरे कई नहीं पहुँच पाते हैं, वहाँ भी हम पहुँचेंगे।

\+ \+ \+

ईश्वर लोगों में भगवान में जो गहरी श्रद्धा है, वह हमारे कार्यकर्ताओं में नहीं है, नियमित प्रार्थना करने वालों में भी नहीं है। इसमें अन्ध श्रद्धा न हो, लेकिन गहरी श्रद्धा जरूर हो। हमारे समाज में वह गहरी श्रद्धा है। अगर वह नहीं होती तो इतना भी काम हम नहीं कर पाते।

पहले व्यक्ति पर श्रद्धा होती है, फिर वह विचार का रूप पकड़ती है। यह एक प्रक्रिया है। अब जो बनना है वह दो प्रकार का होना है (१) उन लोगों का संघ बनता है, जिनका एक-दूसरे पर व्यक्तिगत प्यार बहुत होता है। (२) उन लोगों का संघ बनता है, जिनमें प्यार [illegible] है और जो समझते हैं कि धर्म के लिए हमें इकट्ठा होना जरूरी है। आज लोगों में ये दोनों बातें होना चाहिए। परस्पर प्यार भी हो और वह इकट्ठा भी हो कि हमारे इकट्ठे हुए बगैर धर्म नहीं बढ़ेगा। कहा गया है कि वह झूठा है, जो कहता है कि मैं भगवान से प्यार करता हूँ, ले किन अपने भाइयों से प्यार नहीं करता है। अब कि वह उन भाइयों से प्यार नहीं करता है, जिन्हें उसने देखा है, तो वह उस भगवान से प्यार कैसे करेगा, जिसे उसने नहीं देखा है? परस्पर प्यार के लिए यह जरूरी है कि सम्मिलित ध्यान और सम्मिलित प्रार्थना के कार्यक्रम उठाये जायँ, जिससे भारत में हो।"

●

श्री धीरेन्द्र भाई अज्ञातवास करेंगे

"मैं अपनी नौकरी के 'इण्टरव्यू' में निकला हूँ।" श्री धीरेन्द्र भाई गाँव के लोगों से कह रहे थे। धीरेन्द्र भाई के यह कहने पर एक भाई ने कहा कि एक जगह तो बहुत अच्छी है, वहाँ आपकी शर्तें पूरी होने की उम्मीद है लेकिन वहाँ यातायात की असुविधा है। इस पर श्री धीरेन्द्र भाई ने कहा कि "कोई हर्ज नहीं। यदि हमारी शर्तें वह गाँव पूरी करता है, तो मैं वहाँ बैठ जाऊँगा। मैं तो ३ वर्ष का ऐसा अज्ञातवास करना चाहता हूँ कि किसी को हमारा पता ही न चले। सर्वोदय-आन्दोलन धीरेन्द्र भाई को भूल जाय।"

धीरेन्द्र भाई ने आगे कहा कि मैं अब गाँव में बैठ कर कुछ काम करना चाहता हूँ। केवल विचार-प्रचार से अब नहीं काम चलेगा।

"गाँव में बैठने की आपकी शर्तें क्या हैं?"— यह पूछने पर धीरेन्द्र भाई कहने लगे

(१) हर घर में सर्वोदय-पात्र (२) हर घर में चरखा

(३) गाँव की पूंजी-निर्माण (कैपिटल फॉरमेशन) के लिए धर्मगोला, जिसमें किसान पैदावार में से प्रति मन एक सेर अनाज देगा, मजदूर हमेशा रोज एक सेर अनाज और प्रति चरखे से १ गुंडी सूत प्रति माह देगा।

(४) मेरे और मेरे साथ रहने वाले एक परिवार भर के साल भर के खर्च के लिए [illegible] मन अनाज (इसमें कुछ [illegible], [illegible]) लेंगा।

(५) गाँव के सभी लोग गाँव व आदर्श सामूहिक खेती के लिए अपनी जमीन का कुछ हिस्सा निकालें। [illegible] एक या दो प्लाट में [illegible] सहकारी करके दिखायें। [illegible] [illegible] नहीं है। पैदावार का [illegible] बाँट कर इस तरह बाँटने की बात है

६०% मजदूरी की हाजिरी के अनुसार,

३०% जमीन के मालिक को जमीन के अनुपात से,

१०% जमीन की तरक्की के लिए यह अलग रखा जायगा।

(६) एक या दो परिवार के भरण-पोषण के लायक जमीन गाँव वाले ग्राम-स्वराज्य समिति को दान में दें, जिससे उनके साथ रहने वाले परिवार मेहनत करके अपनी आजीविका चला सकें। कितनी जमीन देना है, इसका निर्णय गाँव वाले जमीन की स्थिति के अनुसार करें।

(७) पूरा समय देने वाला एक अच्छा प्रभाव शाली कार्यकर्ता जो सारे काम की व्यवस्था आदि का पूरी जिम्मेदारी ले सके।

उन्होंने फिर स्पष्ट ही कहा : "यदि तुम लोग सरकार के पैसे आदि के प्रलोभन में पड़ कर अपने को न बचा सके, तो बाद में अपने विचारों के अनुकूल सरकार न बनने पर या तो तुम लोग सरकार के पेट में आओगे या तुम लोगों का 'प्रोग्राम' होगा। देश-निर्माण में हमारा अगला कदम हमारे आन्दोलन के जीवन-मरण का प्रश्न है। मैं जल्दी ही कहीं न-कहीं बैठना चाहता हूँ। एक-एक दिन की काफी कीमत है। [illegible] सर्वोदय सम्मेलन में अपने अज्ञातवास की [illegible] करना चाहता हूँ।" इसे हँस कर कहा कि 'घ[illegible] करके 'अज्ञातवास' करेंगे'। उन्होंने कहा 'फिर क्या' पूछने से पहले ही आज के जमाने का अज्ञातवास होगा। अब तो मान अज्ञातवास' करने का [illegible] है" वे [illegible] काफी स्वस्थ हैं और आन्दोलन के बारे में काफी चिंतित हैं। अब स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है। आजकल सूरत जिले में हैं।

—पारसनाथ

"लोकमानस को नयी तालीम के लिए तैयार करना होगा। लेकिन उसके लिए जो हम कार्यक्रम बना देते हैं, [illegible] उनसे [illegible] [illegible] पैदा होते हैं।

बच्चों को ले [illegible] [illegible] एक-दूसरे का ही [illegible] करने लग जाते हैं। इस अवस्था का हल है, [illegible], जाने [illegible] को पकड़ा कर बैठा। इन [illegible] बच्चों का सूत ता है कि हम इस दुनियादारी [illegible] रहे हैं।"

—विनोबा

●

भाषा सम्बन्धी नीति का सवाल

[गुजरात के वयोवृद्ध शिक्षा-शास्त्री श्री जुगतराम भाई दवे ने पिछले दिनों भारतीय भाषा संबंधी नीति के संबंध में काफी विचार किया है और सर्व-सेवा-संघ के अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामी को उन्होंने एक लंबा पत्र भी लिखा है। वह पत्र तथा उसके साथ भेजे हुए संबंधित प्रस्ताव प्रस्तुत किये जा रहे हैं। श्री जुगतराम भाई का सुझाव है कि सर्व सेवा संघ भाषा-संबंधी आन्दोलन देशव्यापी स्तर पर उठाये।—सं०]

प्रिय वल्लभस्वामी,

गुजरात नयी तालीम संघ की कार्यवाहक समिति गत ता० २० नवबर '५९ को साबरमती आश्रम में मिली थी, उसने खास प्रस्ताव प्रसारित करके सेवाग्राम-नयी तालीम-परिसंवाद के समक्ष यह विषय रखने की सूचना हमको दी थी।

कुछ महीनें पूर्व ता० २३ अगस्त '५९ के दिन लोकभारती सणोसरा में गुजरात नयी तालीम संघ की कार्यवाहक समिति की बैठक हुई थी। इसने एक विस्तृत प्रस्ताव में अंग्रेजी के संबध में अपनी राय प्रकट की।

इस प्रस्ताव में सर्व सेवा संघ को यह प्रश्न अखिल भारतीय प्रश्न बना कर हाथ में लेना चाहिए, ऐसी आशा रखी गयी है।

यथा स्थिति ही चल रही है

इस विषय में बंबई का राज्य कुछ प्रगतिशील रहा है। श्री बालासाहब खेर के मुख्यमन्त्री तथा शिक्षा-मन्त्री के पद-काल में बबई राज्य ने प्राथमिक शाला में से यानी सात कक्षा तक अंग्रेजी भाषा की पढ़ाई को हटाया था।

उन सरकारी पत्र-व्यवहार जिला स्तर पर प्रादेशिक भाषाओं में चलाने का आदेश अधिकारियों को दिया गया था। ऊपर के स्तर पर भी अंग्रेजी का व्यवहार हटाया जा सके, इस हेतु से नयें अधिकारी वर्गों के लिए राष्ट्रभाषा सीखने का नियमित कार्यक्रम बनाया गया था।

लेकिन केन्द्रीय सरकार ने तथा देश की और बहुत-सी राज्य-सरकारों ने इस प्रकार के कोई सुधार नहीं किये। वहाँ पर राज्य कारोबार में अंग्रेजी का भी व्यवहार जारी रहा। शिक्षण में भी प्राथमिक पाँचवी कक्षा से अंग्रेजी की पढ़ाई वैसी ही जारी रही, जैसी वह अंग्रेजों के राज्यकाल में थी।

बंबई राज्य की एवं देश के अन्य प्रदेशों की युनिवर्सिटियों ने इसी प्रकार बोधभाषा अंग्रेजी को ही कायम रखी जैसा ब्रिटिश राज्यकाल में था। अंग्रेजी न पढ़े हुए विद्यार्थियों के लिए अपना प्रवेश द्वार बंद रखने का उनका नियम कायम ही रहा।

सरकारी नौकरियों में भरती करने के लिए भी अंग्रेजी भाषा का ज्ञान पूर्ववत् आवश्यक रखने का नियम भी कायम ही रहा।

सारे देश में प्रवर्तमान इस परिस्थिति का बुरा असर बंबई राज्य में पड़े बिना कैसे रह सकता था?

युनिवर्सिटी वालों ने शोर मचाना शुरू किया कि दिन प्रतिदिन विद्यार्थियों का अंग्रेजी भाषा का ज्ञान कच्चा होता जा रहा है। उच्च शिक्षण प्रादेशिक तथा राष्ट्रभाषा में देना आरंभ करने के बनिस्बत, एवं इसकी पूर्वतैयारी में पाठ्यपुस्तकें आदि प्रादेशिक और राष्ट्रभाषाओं में बनाने का कार्यक्रम हाथ में लेने के बनिस्बत उन्होंने अंग्रेजी पक्की बनाने की माँग शुरू कर दी।

शहरों की हाईस्कूलों ने इस शोर को उठा लिया। पाँचवीं कक्षा से अंग्रेजी की पढ़ाई जारी किये बिना विद्यार्थियों का जीवन बरबाद हो रहा है, ऐसी अवाज उन्होंने भी उठायी।

धीरे-धीरे यह आवाज देहातों में भी पहुँच गयी। वहाँ पर खानगी व्यक्तियों तथा नाममात्र की संस्थाओं के हाथों से हाईस्कूलें बड़ी संख्या में निकलने लगीं। गाँवों में सात कक्षा तक की शिक्षा का प्रबंध जिला-स्कूल बोर्डों के हाथ में होने से और उनका शिक्षण बिना फीस का होने से देहाती हाईस्कूलों में सिर्फ आठवें दर्जे से ही विद्यार्थी जाते थे। पाँचवें दरजे से अंग्रेजी भाषा दाखिल कर दी जाय, तो पाँचवें दरजे में बच्चों का प्रवाह हाईस्कूलों में आकर्षित हो सकेगा और उनकी संख्या में अच्छी बाढ़ आ जायेगी, यह उनकी आशा थी। अगर विद्यार्थी-संख्या काफी बड़ी हो, तो अच्छी फीस और सरकारी 'ग्रांट' के कारण हाईस्कूल एक फायदे का धंधा हो गया है। हाईस्कूलों के अंग्रेजीतरफी आंदोलन के पीछे यह हेतु भी छिपा हुआ था।

अधिकारियों का रुख

सरकार के अधिकारी वर्ग ने, जिनका मानस पुराने गुलामी राज्य के संस्कार से भरा हुआ था, और विशेष कर शिक्षा विभाग के अधिकारी बंबई राज्य की अंग्रेजी विषयक राष्ट्रीय और प्रगतिशील नीति पर कभी भी राजी न थे। बिना मन से और मजबूरी से वे नयी नीति चला रहे थे, और सरकार की नीति फिर से पुरानी भूमिका पर आ जाय, इसके लिए दबाव डालते ही रहे।

भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री स्व० खेर के जाने के बाद बंबई राज्य की अंग्रेजी विषयक नीति ढीली होती चली। अश्रद्धावान् और स्वार्थपरायण लोगों ने अपना आंदोलन उग्र से उग्र बना दिया। नये मंत्रियों में भी राष्ट्रीय मानस और श्रद्धा का अभाव था।

बंबई राज्य में मराठवाड़ा और विदर्भ जैसे बड़े-बड़े भाग शामिल हुए। ये विभाग जिन राज्यों में पहले थे, वहाँ पर नयी तालीम तथा शिक्षा संबंधी प्रगतिशील नीतियाँ नहीं थीं, अंग्रेजी का शिक्षण पाँचवी कक्षा से चलता आया था।

जिस प्रकार शिक्षा में उसी प्रकार मद्यनिषेध जैसे सुधारों में भी ये राज्य प्रगतिशील नहीं थे। फिर भी बंबई राज्य ने इन प्रदेशों में अपनी मद्य-निषेध की नीति हिम्मत के साथ लागू की। लेकिन शिक्षा के सम्बन्ध में उसने अपनी प्रगतिशील नीति लागू नहीं की। बम्बई राज्य के अन्य भागों में इसके विरुद्ध कोई विशेष पुकार नहीं उठी, लेकिन गुजरात में भारी आन्दोलन हुआ। उसमें गुजरात नयी तालीम संघ ने मुख्य रूप से भाग लिया। दूसरी रचनात्मक संस्थाओं ने भी विरोध प्रदर्शित किया। इनमें रविशंकर महाराजजी की प्रेरणा से अनेक लोगों ने उपवास-परायण के द्वारा अपना विरोध जाहिर किया। कई विद्वानों ने और शिक्षण-शास्त्रियों ने भी आवाज उठायी। लेकिन बम्बई राज्य के गुजराती मन्त्रियों में से अधिकतर मंत्रियों ने अंग्रेजी सम्बन्धी नीति छोड़ना पसन्द नहीं किया। दूसरी ओर से बम्बई और अन्य शहरों के विद्यार्थियों के पालक लोगों की ओर से अंग्रेजी को बढ़ावा देने का आन्दोलन चलाया गया। शिक्षा मंत्री उनके आन्दोलन में फँसे और उसे लोकमत की आवाज मान कर राष्ट्रभाषा को बढ़ावा देने की नीति छोड़ने का उन्होंने ऐलान कर दिया।

अंग्रेजी बनाम रोटी

बम्बई सरकार का शिक्षण विभाग तो मानो इस निर्णय की प्रतीक्षा ही कर रहा था। उस विभाग ने अपनी परंपरागत ढिलाई को छोड़ कर शिक्षा-मंत्री के उपरोक्त निर्णय को तेजी से अमल में लाना आरम्भ कर दिया। और तुरन्त ही अपने सारे विभागों में यह सूचना भिजवा दी कि पाँचवें दर्जे से ही अंग्रेजी का अध्ययन चालू कर दिया जाय। पाठ्य पुस्तकों की भी उसी ढंग से रचना शुरू करवा दी गयी। शिक्षकों की भर्ती करने में भी उसी नीति को आधार माना गया। जिलों के स्कूलबोर्डों को कहा गया कि सरकार के इस सुधार को शीघ्रातिशीघ्र स्वीकार किया जाय। इस तरह से चारों ओर से यह प्रयत्न हुआ।

कई लोगों ने और शिक्षकों ने यह भी बताया कि हमको इस शैक्षणिक सुधार के साथ साधारणतः कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन यदि लड़के अंग्रेजी नहीं सीखते हैं, तो उन्हें नौकरियाँ नहीं मिलती हैं। साथ ही आगे बढ़ने के लिए उनका रास्ता भी बन्द हो जाता है। दूसरे राज्यों की स्पर्धा में हमारे राज्य के लड़के पिछड़ जाते हैं। इसलिए अंग्रेजी की पढ़ाई की ओर हमें ध्यान देना पड़ रहा है। यह हमारे लिए लाचारी है। हमारे लिए यह कोई शिक्षण की समस्या नहीं, बल्कि रोटी की समस्या है। हमारी रोटी अंग्रेजी के साथ जुड़ जाने के कारण हमें अंग्रेजी को प्रोत्साहन देना पड़ा है।

ईश्वर का उपकार है कि गुजरात के राष्ट्रभक्तों की प्रगतिशील आवाज सरकार ने गुजरात के लिए अभी मान ली है। संभव है, अब गुजरात का अलग राज्य होगा, तो अंग्रेजी के विषय में तथा सामान्यतः नयी तालीम के सम्बन्ध में लोगों को प्रगति के पथ पर ले जाना हम लोगों के लिए सुलभ होगा।

लेकिन जनता का मोह ऐसी वस्तु है, जो अफीम की तरह अथवा साँप के विष की तरह देखते-देखते प्रजारूपी शरीर में फैल सकती है। जिस ढंग से व्यवहार चल रहा है, राजकीय और अन्य जीवन बढ़ रहा है, सिद्धान्त में चारों ओर शिथिलता भी हो रही है, यह देखते हुए आलस्य में रहना सर्वथा अनुचित होगा।

मुझे आशा है कि सर्व सेवा संघ जैसी संस्था ऊपर से इस बात को हाथ में लेगी, तो देश के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में प्रादेशिक स्तर पर उसे आगे चलाने वाले हम अवश्य निकलेंगे। गुजरात में तो इसका स्वागत होगा ही।

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, ११ मार्च, '६०

नयी तालीम-परिसंवाद, सेवाग्राम में पेश किया गया प्रस्ताव

अंग्रेजी सम्बन्धी नीति

(१) नयी तालीम के जो अनेक तत्त्व श्रद्धा से सब स्वीकारने योग्य हैं, उनमें अंग्रेजी का वर्चस्व शिक्षा में से हटाना एक महत्त्व का तत्त्व है।

(२) लोगों को शासन से एव विश्वविद्यालयों से यह माँग करने का पूरा अधिकार है कि नीचे से ऊपर तक का तथा सब विद्याओं का शिक्षण देश के बच्चों का अपनी मातृभाषाओं में तथा राष्ट्रभाषा में ही दिया जाय। जनता को शासन से यह भी माँगने का पूरा अधिकार है कि न्यायालयों सहित राज्य संचालन का भाषा लोगों की मातृभाषा ही रहे, और शासन की नौकरियों के लिए जो परीक्षाएँ ली जायें, वे मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा में ही ली जायें।

(३) उपरोक्त बात जो राष्ट्र के विधान में स्वीकार की हुई है, और जिसे डाक्टर राधाकृष्णन्, यूनिवर्सिटी कमीशन जैसे अधिकारी मंडल ने भी दुहराया है, अमल में नहीं लायी जाने से जनता में अपने बच्चों के भविष्य के सम्बन्ध में चिन्ता रहना और उन्हें अंग्रेजी भाषा सिखाने की इच्छा रहना स्वाभाविक ही है। शासन तथा विश्वविद्यालयों की उलटी नीति से जन्मी हुई इस लोक इच्छा को लोकमत बता कर सत्ताधारी वर्ग शिक्षा में अंग्रेजी को रख रहा है। यह दुश्चक्र दिन प्रतिदिन आगे ही बढ़ रहा है और अंग्रेजी को पक्का बनाने के लिए उसे छोटे बच्चों के शिक्षण की प्राथमिक कक्षाओं तक भी ले जाने का आंदोलन किया जा रहा है और उसे लोकमत का नाम दिया जाता है। लेकिन यह सही लोकमत नहीं है। ऊपर बताये दुश्चक्र को तोड़ने से ही सही लोकमत प्रकट हो सकेगा।

(४) अंग्रेजी को बनाये रखने की इच्छा आजकल दाक्षिणात्य प्रदेश में व्यक्त की जा रही है, इसका कुछ समाधान शासनों और विश्वविद्यालयों का कार्य मातृभाषाओं में करने से हो सकेगा। लेकिन पूरा समाधान तो दाक्षिणात्य भाषाओं को उत्तर प्रदेशों में आदर के साथ सीखने का व्यापक प्रयत्न करने से ही हो सकेगा। महात्मा गांधी ने एक जमाने में जिस धर्मबुद्धि के साथ हिंदी का प्रचार दाक्षिणात्य प्रदेश में चलाया था, उसी धर्मबुद्धि के साथ दाक्षिणात्य भाषाओं का प्रेम उत्तर में बढ़ाने का काम अविलंब हाथ में लेना चाहिए।

(५) अंग्रेजी का आश्रय बनाये रखने के कारण देश में विभिन्न विद्याओं की परिभाषा और पाठ्य पुस्तक तैयार करने का प्रयत्न बहुत ही कम मात्रा में चला। यह प्रयत्न तीव्रता के साथ हाथ में लेकर खोये हुए समय का बदला प्राप्त कर लेना चाहिए।

(६) आज तक यह विचार सिर्फ स्थानीय संदर्भ में और राजकीय कारणों को आगे कर के निकलता रहा है। राष्ट्रीय दृष्टि से और विशेषतः शिक्षा व संस्कृति की दृष्टि से इसका प्रतिपादन कम हुआ है। इसका दुष्परिणाम बहुविध राष्ट्र-जीवन के स्तर में हम भुगत रहे हैं।

अ० भा० सर्व सेवा संघ अब राष्ट्र की नयी तालीम का संचालन अपने हाथ में लिया है, अतः उसके द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर इस विषय का लोक आंदोलन शुरू कर दिया जाय, ऐसी अपेक्षा की जाती है।

भाषा सम्बन्धी राष्ट्रव्यापी आन्दोलन

लोकशाही शानपूर्वक चले और लोगों का अंग्रेजी का मोह नष्ट हो, इसके लिए नीचे निर्दिष्ट आंदोलन सारे देश में चलाया जाय :—

(१) केन्द्र तथा राज्य सरकारों का सारा व्यवहार प्रादेशिक तथा राष्ट्रभाषाओं में चलाने की माँग करने का आंदोलन हाथ में लिया जाय।

(२) लोक संस्थाओं तथा व्यक्तियों के इस संबंधी विनति-पत्र सरकार को भेजे जायँ।

(३) अमुक मुद्दत में सरकार अपना व्यवहार न बदले तो उसका अंग्रेजी में आया हुआ पत्र व्यवहार वापस किया जाय।

(४) न्याय की भाषा का परिवर्तन करने में कुछ परिभाषा की कठिनाई रहेगी, ऐसा समझ कई वर्ष अदालतों का काम अंग्रेजी में चालू रखने का सोचा गया था। लेकिन वह कायमी सा मान कर ही आज तक व्यवहार में अंग्रेजी ही जारी है। आवश्यक मुद्दत देने के बाद अंग्रेजी में चलने वाली अदालतों का बहिष्कार करने तक जाना चाहिए।

(५) लोक संस्थाएँ भी आजकल सरकार के साथ तथा दूसरों के साथ अंग्रेजी में व्यवहार करती रहती है। उनमें प्रादेशिक और राष्ट्रभाषा का ही उपयोग करने का आंदोलन चलाया जाय।

(६) नौकरियों की परीक्षाओं के लिए अंग्रेजी भाषा का आग्रह छोड़ देने की माँग सरकार से लोग करें, ऐसा आंदोलन चलाने पर योग्य मुद्दत के बाद अंग्रेजी में ली जानेवाली परीक्षाओं में कोई न बैठे ऐसा आंदोलन किया जाय।

शिक्षा संबंधी आंदोलन

(१) प्राथमिक शिक्षा की सात या आठवीं कक्षा अंग्रेजी को स्थान लेश मात्र भी न दिया जाय, ऐसा आंदोलन देश भर में किया जाय।

गाँव-गाँव में लोगों की माँग सरकार के पास भिजवायी जाय।

स्कूलबोर्ड और संस्थाओं की भी वैसी माँग भिजवायी जाय।

उचित मुद्दत देने पर अंग्रेजी पढ़ाने वाले स्कूलों का बहिष्कार किया जाय और देशी भाषाओं में पढ़ने वाले गैर सरकारी स्कूल खड़े किये जायँ।

(२) माध्यमिक शिक्षा में भी अंग्रेजी की आवश्यकता आज है। इसको कम करने का आंदोलन जारी किया जाय।

अंग्रेजी के बदले यूरोप-एशिया की दूसरी भाषाएँ सीखने के लिए भी प्रोत्साहन दिया जाय। अंग्रेजी शिक्षा से कुछ समय बच कर राष्ट्रभाषा, पड़ोसी प्रदेश की भाषा, संस्कृत पर अधिक जोर दिया जाय।

अगर शिक्षा विभाग यह सुधार न करें, तो इन भाषाओं के अच्छे अध्ययन के लिए खास वर्ग खोले जायँ।

आखिर आवश्यक समय तक आन्दोलन करने के बाद माध्यमिक शालाओं तथा मैट्रिक परीक्षाओं के साथ असहयोग किया जाय।

(३) उच्च शिक्षा के महाविद्यालयों का शिक्षण प्रादेशिक तथा राष्ट्रभाषा में दिया जाय, ऐसी माँग विद्यार्थी तथा माता-पिताओं के माध्यम से करवाने का आंदोलन चलाया जाय।

विश्व-विद्यालयों की कार्यवाही समितियों में तथा साधारण सभाओं में भी यह आन्दोलन चलाया जाय।

आवश्यक समय तक आन्दोलन चलाने के बाद वर्तमान विश्वविद्यालयों के साथ असहयोग करके या इन विश्वविद्यालयों का बहिष्कार करके राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाय।

विश्व-विद्यालयों और शिक्षा-विभागों को सचेत किया जाय तथा देश के विद्वानों में आन्दोलन चला कर गैर सरकारी रीति से उनको इस महत्त्व के काम में सर्व सेवा संघ संयोजित करे।

राष्ट्रभाषा और दक्षिण भारत की भाषाएँ

स्वतन्त्रता के बाद दक्षिण भारत के लोगों में काफी भय बढ़ गया है। उत्तर भारत के लोगों की ओर से इस तरह का वातावरण भी बनाया गया है। इसलिए सर्व सेवा संघ का यह कर्तव्य है कि वह दक्षिण और उत्तर के बीच शंका तथा भय के वातावरण को दूर करे।

(१) देश की सभी प्रान्तीय भाषाओं की पुस्तकें तथा पत्र पत्रिकाएँ देवनागरी लिपि में प्रकाशित हों।

(२) उत्तर भारत के लोग दक्षिण की चार भाषाओं में से एक भाषा अवश्य सीखें, इसके लिए आवश्यक कार्यक्रम हाथ में लिया जाय।

(३) इसी तरह दक्षिण के लोग राष्ट्रभाषा सीखें ऐसा वातावरण तैयार किया जाय।

(४) शिक्षण संस्थाओं तथा सरकारी विभागों के माध्यम से इस तरह के आन्दोलन को खड़ा किया जाय।

●

विनोबा-पदयात्रा से

नूरमहल पंजाब से चल कर ११ फरवरी को प्रानगमटाली होते हुए विनोबा विलगा पहुँचे, तो वहाँ की जनता ने आपका भव्य हार्दिक स्वागत किया। सन्त रविदासजी के जयन्ती-उत्सव में विनोबा ने कहा कि "सन्तों की वाणी हिन्दुस्तान की अमूल्य निधि है। उसी वाणी ने हमें बचाया है। उसी सन्त-वाणी की कृपा से कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत की अनपढ़ बहनों को भी आत्मा-परमात्मा-जीवन-मृत्यु-लोक-परलोक का सुन्दर ज्ञान है। सन्तों का घर-घर जाकर दिया हुआ यह ज्ञान भारत की जनता के संस्कारों में ओतप्रोत है। लोग बड़े-बड़े बादशाहों के नाम को भूल गये हैं, परन्तु सूर-तुलसी, कबीर-नानक नामदेव-तुकाराम, चैतन्य महाप्रभु, मीरा आदि अनेक सन्तों के नाम उनके हृदय पर अंकित हैं।"

कार्यकर्ताओं की बैठक में बोलते हुए विनोबा ने कहा कि "मैंने पंजाब के ३७ लाख घरों से केवल दो लाख सर्वोदय-पात्रों की माँग की है। सब प्रान्तों की नजर अब पंजाब पर लगी है। यदि पंजाब इस छोटी सी माँग को पूरा न कर सके तो फिर हमें रचनात्मक कार्य और अहिंसक क्रान्ति की आशा छोड़ देनी चाहिए।"

शाम को विशाल जनसमूह में बोलते हुए विनोबा ने कहा, "बहनें भारी संख्या में आती हैं, यह बहुत अच्छी बात है। वे गांधीजी के सर्वोदय-मेवक दल की बात को अच्छे ढंग से पूर्ण कर दे सकती हैं। वे अपने ऊँचे तथा पवित्र, नैतिक प्रभाव से भाइयों को तोड़-फोड़ वाली राजनैतिक स्पर्धा से निकाल सकती हैं तथा उनको सर्वोदय के रचनात्मक कार्य में लगा सकती हैं।

● ●

समाज-रचना का नया वेदांत

आचार्य स० ज० भागवत

[केंद्रीय सरकार ने जिन दस ग्रामीण शिक्षण-संस्थाओं को मान्यता दी है और जिनको वह आर्थिक सहायता देती है, उनमें से महाराष्ट्र प्रदेश में कोल्हापुर के नजदीक गारगोटी में मौनी विद्यापीठ भी एक है। प्रस्तुत "विचार-धन" के सकलनकर्ता आचार्य भागवत उस संस्था के कुलपति हैं। —सं०]

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्।

भूदान के नव आन्दोलन का सिद्धांत लोगों को समझाते हुए विनोबाजी ने जीवन की ओर देखने की अपनी सात्त्विक दृष्टि उपर्युक्त सूत्र में ग्रथित कर दी है। अपना विचार-निष्कर्ष व्यक्त करते हुए उन्होंने यह भी कहा है कि अद्वैत और करुणा का समन्वय किये बिना आज का मानवीय जीवन सफल नहीं हो सकता। उन्होंने उपनिषदों का वेदांत और भगवान बुद्ध की करुणा के एकत्र आचरण पर जोर दिया है। आज बाह्य विश्व को मिथ्या मानने की एक भूल से हमारे यहाँ अनेक सामाजिक दोष पैदा हो गये हैं। मानव का सामाजिक जीवन समता और प्रेम पर खड़ा किये बगैर मानव धर्म-जीवन का आचरण न कर पायेगा। जब उसे यह अनुभव न हो कि 'जीवन एक शाप न होकर वरदान ही है', उसके जीवन में उत्साह पैदा ही नहीं हो सकता। आधे श्लोक में पुराने वेदांत का निष्कर्ष बतलाने के लिए 'ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः', यह रचना की गयी थी। उसे बदल कर विनोबाजी ने भारतीयों को उपर्युक्त नवीन श्लोकार्ध दिया है, जिसका अर्थ है: 'सत्य ही ब्रह्म है, जगत् सत्य का ही साकार रूप है और उस सत्य का अखंड शोध करते जाना ही मानव का धर्म-जीवन है।'

तैत्तिरीय उपनिषद् में अद्वैत की अनुभूति से होने वाले आनन्द की मीमांसा करते हुए सर्वसाधारण मानव के भौतिक जीवन के आनन्द का स्वरूप वर्णन किया गया है। और उसे 'मानुष आनन्द' कहा गया है। युवक यदि शीलवान् और विद्यावान् हो, तो वह इसे सहज ही प्राप्त कर सकता है। इसके लिए उसका हृदय आशावादिता से भरा होना चाहिए। उसकी बुद्धि में दृढ़ निश्चय की शक्ति अपेक्षित है और उसका शरीर सभी प्रकार के श्रम के लिए पर्याप्त बलवान होना चाहिए। शरीर, बुद्धि और हृदय, इन तीनों विभागों का समान पोषण हुए बिना व्यक्ति का जीवन पूर्ण नहीं हो सकता। इस प्रकार के जीवन शिक्षण से सम्पन्न किसी भी युवक को सारी पृथ्वी सम्पत्ति से परिपूर्ण दीखने लगती है और मानवीय जीवन के लिए आवश्यक समस्त भौतिक साधनों के निर्माण में उसे उच्च कोटि का आनन्द प्राप्त हो सकता है। वरुण कुमार भृगु को पता चला कि अन्न ही प्रथम ब्रह्म है, जो बड़ा ही महत्त्व का है। अन्न बाह्य विश्व का सबसे उपयुक्त पदार्थ है। सामाजिक जीवन जब तक भौतिक सुख-साधनों से सम्पन्न नहीं होता, तब तक वह उच्चतर आनन्द की ओर कदम नहीं बढ़ा सकता। भौतिक वस्तु को 'भौतिक' कह कर तुच्छ मानना एक भ्रामक आध्यात्मिकता समझनी चाहिए। कारण जीवन-तत्त्व में भौतिक और आत्मिक, इस तरह अटक भेद माना नहीं जा सकता। वे एक ही जीवन तत्त्व के अन्तरंग और बहिरंग रूप हैं। फिर भी अगर भौतिक सुख की साधना व्यक्ति तक सीमित रहती है, तो नाना प्रकार की विकृतियाँ पैदा होने लगती हैं। लेकिन यह आध्यात्मिक प्रेरणा स्वीकार करने पर कि 'भौतिक सुख-सुविधाएँ समाज के सभी व्यक्तियों के लिए सुलभ कर दी जानी चाहिए', किसी भी तरह की विकृति टिक नहीं सकती। भारतीय इतिहास में भगवान बुद्ध द्वारा उद्घोषित समता और मानव सेवा की साधना पुनः संशोधित करना हो जाय, तो आज की भारतीय समस्याएँ आसानी से हल हो सकती हैं।

भौतिक साधनों के विपुल मात्रा में निर्माण पर भारत को वर्षों तक जोर देना होगा। इन सुख साधनों के निर्माण से ही भारतीय समाज के अन्तर्गत सारी विषमताएँ नष्ट करने में मदद मिलेगी। इन दिनों कई जगह यह शिकायत सुनायी पड़ती है कि हमारे समाज का चारित्रिक अधःपतन बढ़ता जा रहा है। इन शिकायतों को जवाब देते हुए इधर विनोबाजी ने जो उद्गार व्यक्त किये हैं, वे बड़े ही मार्मिक हैं। उन्होंने अपना स्पष्ट मत व्यक्त करते हुए कहा कि 'आर्थिक विषमता का प्रश्न हल किये बगैर दुनिया का कोई भी आन्दोलन चारित्र्य-निर्माण नहीं कर सकेगा, अतः चारित्र्य निर्माण के लिए हमें भौतिक सुख साधनों के निर्माण की ओर मुड़ना चाहिए, लेकिन उन सुख साधनों का लाभ सभी जगह, सभी व्यक्तियों को सम परिमाण में उपलब्ध होना चाहिए, यही इसका निष्कर्ष है।

(मूल 'मराठी' से) ●●

सर्वोदय-तीर्थ

उपाध्याय अमर मुनि

'सर्वापदामन्तकरं निरन्तं
सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।'

आज से करीब पन्द्रह सौ वर्ष पहले भगवान् महावीर के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आचार्य समन्तभद्र ने उक्त पद्य की रचना की थी। इस रचना में उन्होंने भक्ति तथा समर्पण के साथ-साथ दर्शन और धर्म का विवेचन भी कर दिया। इस विवेचन में उन्होंने जिस शब्द का प्रयोग किया है, वह एक अद्भुत शब्द है। वह शब्द है सर्वोदय। आचार्य समन्तभद्र ने कहा: आपका तीर्थ, आपका शासन, आपका उपदेश सर्वोदय के लिए है, सबके कल्याण के लिए है। यह सर्वोदय तीर्थ कैसा है? "सर्वापदामन्तकर" *अर्थात् समस्त आपदाओं का अन्त करने वाला* है। "निरन्त" अर्थात् जिसका कहीं अन्त नहीं है। ये दो विशेषण बहुत ही गहरी विचारधारा व्यक्त करते हैं। वह सिद्धान्त या वह उपदेश कोई महत्त्व नहीं रखता, जो किसी अमुक वर्ग के कल्याण के लिए हो। सच्चा उपदेश तो वही है, जिसमें सारे विश्व के लिए कल्याण की भावना छिपी हो।

सुख-दुःख को बाँटें

आज यह 'सर्वोदय' शब्द काफी प्रचलित हो गया है। किन्तु यह शब्द बहुत पुराना है। भारतीय चिन्तन की प्रधान धारा सर्वोदयमूलक ही रही है। सबका उदय ही इस चिन्तन की सबसे बड़ी विशेषता है। सबके उदय का अर्थ यही है कि कोई भी सुख किसी एक व्यक्ति या वर्ग के लिए न होकर सबके लिए हो। सुख-दुःख सामाजिक है। इसलिए समाज का प्रत्येक व्यक्ति हर किसी व्यक्ति का सुख और दुःख बाँट ले, यह आवश्यक है। जब तक समाज में एक भी मानव अभावग्रस्त है, भूखा है, दुःखी है, तब तक चाहे समाज के किसी एक व्यक्ति के पास या किसी एक वर्ग के पास कितना भी धन हो, वैभव हो, सम्पन्नता हो, वह सर्वोदय नहीं हुआ। जब तक सर्वोदय नहीं होगा, तब तक भारतीय विचार का ठीक-ठीक मूल्यांकन और आदर भी नहीं होगा। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि सबका सुख एकसाथ संभव नहीं है। पर इस मान्यता को हम भारतीय मान्यता नहीं कह सकते। भारतीय मान्यता तो दृढ़तापूर्वक यही कहती है कि एक व्यक्ति, वर्ग या जाति के सुख में दूसरे व्यक्ति, वर्ग या जाति का सुख भी निहित रहना चाहिए। यदि एक वर्ग के सुख के कारण दूसरे वर्ग का शोषण होता हो, तो वह सुख सुख नहीं है। यही बात राष्ट्र के लिए भी है। एक राष्ट्र की समृद्धि दूसरे राष्ट्र के शोषण या अभाव के आधार पर खड़ी नहीं होनी चाहिए। प्रकाश को अपने साम्राज्य का महल अन्धकार की नींव पर खड़ा करते किसी ने नहीं देखा। क्या प्रकाश अन्धकार को अपना आधार बना सकता है? नहीं! तब शोषण के आधार पर सुख कैसे खड़ा रहेगा? अन्धकार और प्रकाश का जीवन में कोई मेल नहीं है। या तो प्रकाश ही रहेगा, या अन्धकार ही। दोनों का अस्तित्व एक जगह खड़ा नहीं किया जा सकता। किन्हीं की समृद्धि का महल किसी के शोषण पर यदि खड़ा होता है, तो आश्चर्य के साथ यह मानने को बाध्य होना पड़ेगा कि अन्धकार पर प्रकाश खड़ा हो रहा है।

भेद-भाव खत्म करो

समस्त विश्व की आत्माएँ एक समान हैं। चाहे कोई भी धर्म हो, सब धर्मों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि समस्त प्राणियों में एक ही जैसी चेतना [illegible] होता है। जब एक ही तरह की ये समस्त आत्माएँ हैं, तो उनमें एक आत्मा वाला नौकर हो, दूसरी आत्मा वाला मालिक हो, एक गुलाम हो, दूसरा अधिकारी हो, यह सब कैसे चल सकता है? हर एक जो अपना हित चाहता है, उसे पहले दूसरे का हित करना चाहिए। जो स्वयं सुख चाहता है, उसे दूसरों को सुख देना चाहिए। दूसरों की उन्नति में ही अपना हित भरा पड़ा है। जब सर्वोदय का यह व्यापक भावना मनुष्य के मन में पैठ जायगी, तब जाति के बंधन, वर्ग के बन्धन, प्रान्तों के बन्धन और राष्ट्रों के बन्धन अपने आप टूट जायँगे। फिर मनुष्य विश्व-मानुष बनने की ओर प्रवृत्त होगा। वह सर्वोदय "[illegible]।"

प्यार के बदले प्यारी जो [illegible] है। वह मरना नहीं चाहता। इसलिए किसी को मारने का प्रयत्न मत करो। किसी को सताओ मत। किसी को कष्ट मत पहुँचाओ। किसी के प्रति मन में घृणा का भाव मत रखो। जहाँ घृणा है, वहीं हिंसा है, वहीं पाप है, वहीं नरक है। यदि इस नरक से छुटकारा पाना है, तो सबके प्रति प्रेम करो। अज्ञान से अज्ञान नहीं मिटता। दुःख से दुःख दूर नहीं होता। अन्धकार से अन्धकार भागता नहीं। ज्ञान से अज्ञान मिटता है, सुख से दुःख [illegible] है, प्रकाश से अन्धकार भागता है। इसलिए यदि [illegible] पाप और नरक का संहार करना है, तो प्रेम का [illegible] प्रेम ही महान धर्म है। [illegible] है। घृणा को मिटाये बिना [illegible] नहीं हो सकता। [illegible] किसी व्यक्ति, जाति के प्रति घृणा हो या किसी राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के प्रति घृणा हो। ●●

पूँजीपति कौन ?

रामप्रवेश शास्त्री

यदि पूँजीपति व्यवस्था को दूर करना है तो पहले बिना "जीवाले पूँजीपतियों को सुधारना होगा। चूँकि अधिकांश पूँजीपति ऐसे ही हैं, अतः इनके सुधर जाने से चन्द करोड़पति अपने आप सुधर जायेंगे। जैसे भी हो, समाज से अधिकार तथा कर्तव्य की खरीद बिक्री बन्द की जानी चाहिए।

पूँजीपति शब्द का व्यवहार इतना अधिक बढ़ गया है कि इसे सर्वव्यापी की संज्ञा दी जा सकती है। कोई पूँजीपतियों को समाप्त कर देना क्रान्ति का मूल समझता है, तो कोई पूँजीपतियों को लूटकर समता लाने की बात करता है। इस तरह के और भी विचार व्यक्त किये जाते हैं। सामान्यतः सर्वोदय विचार के लोग जब जन-सामान्य से नयी सामाजिक व्यवस्था के निर्माणार्थ सहयोग की अपील करते हैं, तब दूसरे लोग सर्वत्र ऐसी टीका करते हुए पाये जाते हैं कि "ये लोग पूँजीपतियों के दलाल हैं। जिनके पास कुछ नहीं है, उन्हीं से त्याग करने की बात कहते हैं। इनमें इतना साहस नहीं है कि पूँजीपतियों से दान माँगें तथा त्याग करने के लिए कहें" इत्यादि। जो अपने को जितना बड़ा क्रान्तिकारी मानता है, उतना ही अधिक कटु और अप्रिय शब्दों के द्वारा इस बात को कह कर सन्तोष की साँस लेता है। कभी कभी तो ऐसी आलोचनाओं के बाद वह स्वयं को इतना गर्वान्वित महसूस करता है, जैसे सचमुच उसकी क्रान्ति सफल हो गयी हो। सर्वोदय की आलोचना कभी कभी ऐसे सूत्रों द्वारा की जाती है कि यह क्रान्ति की राह में रुकावट है, यह पूँजीवाद का पोषक है, इत्यादि। वस्तुतः पूँजीवाद, पूँजीपति सार्वत्रिक चर्चा का विषय बन कर, ढाँचा बन गये हैं।

"सर्वोदयवाले पूँजीपतियों से कुछ नहीं कहते"— ऐसी धारणा रखने वालों के सामने पूँजीपति का जो स्वरूप है, वही स्वरूप सर्वोदय वालों के भी सामने है—ऐसा प्रतीत नहीं होता। अथवा दूसरे लोग पूँजीपतियों को जितना खतरनाक और महत्त्वपूर्ण कारण सामाजिक एवं आर्थिक असमानता के लिए मानते हैं, सम्भव है सर्वोदय वाले उतना न मानते हों। या ऐसा हो सकता है कि जिस प्रकार अंगुलिमाल को गौतम बुद्ध मानते हुए दीख रहे थे, जब कि वे अपनी जगह पर खड़े थे, वैसे ही सर्वोदय वालों का पूँजीपतियों से कुछ न कहने वाली बात भी हो। खैर! ये सब सम्भावनाएँ हैं।

पूँजीपति की परिभाषा

लेकिन इन सम्भावनाओं को निश्चित बनाने के लिए पूँजीपति का स्वरूप निर्धारण आवश्यक है। इसके लिए 'पूँजीपति' की परिभाषा करनी होगी। सामान्यतः लोग करोड़पतियों को पूँजीपति मानते हैं। मेरा खयाल है कि ऐसे करोड़पतियों की संख्या समाज में बहुत कम होगी। यह खयाल पूर्णतः सत्य भी है। तो क्या आज की अन्यायात्मक व्यवस्था में पूँजीपतियों का बोलबाला केवल चन्द करोड़पतियों के कारण है। वस्तुतः यह एक भ्रम है।

विचारपूर्वक देखने पर ऐसा स्पष्ट लगता है कि समाज का एक क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वेच्छया अनिच्छापूर्वक उसमें सम्मिलित होना ही पड़ता है। वह क्षेत्र राजनीति का है। वहाँ विभिन्न राजनैतिक दल सत्ता प्राप्ति के लिए आपस में "परनिन्दा और आत्मस्तुति" की माला फेरते हुए राजनीति के शीर्ष स्थान पहुँचते हैं, वहीं जन-सामान्य को अपने अधिकार का उपयोग करने और कर्तव्य का पालन करने के लिए मतदाता के रूप में राजनीति का शिकार बनना पड़ता है। उल्लेखनीय यह है कि आज की राजनैतिक मैच-दुनिया में साधारण जन इस तरह लग गया है कि वह अपने अधिकार और कर्तव्य के बारे में बिलकुल अनभिज्ञ है और इन दोनों का पालन देश के राजनैतिक दल अपनी इच्छानुसार करवाने को धन तथा प्रलोभनों के प्रभाव द्वारा उनसे कराते

हैं। तात्पर्य यह है कि देश के प्रत्येक नागरिक का, चाहे वह करोड़पति हो अथवा महाकंगाल, पहलवान हो अथवा अस्पताल का मरीज, विद्वान हो अथवा निरक्षर भट्टाचार्य, यदि वह मानसिक रूप से अस्वस्थ नहीं है तथा दिवालिया इत्यादि राजनीतिक अधिकार-प्राप्त लोगों में अपवाद नहीं है, तो उसका राजनीति से सम्बन्ध निर्विवाद है।

जहाँ तक सर्वोदय के कार्यकर्ताओं का सम्बन्ध है, वे राजनीति से अपने को दूर रखते हैं, लेकिन मतदाता के रूप में एक नागरिक के कर्तव्य का पालन इन्हें भी करना पड़ता है। सिद्धान्ततः ये किसी उम्मीदवार का न तो प्रचार करते हैं और न उम्मीदवार बनते हैं। इनका मुख्य काम लोक-शिक्षण का काम है, जन जागरण का काम है और यह काम मौसमी नहीं अपितु सार्वकालिक और सतत चलने वाला है। सामान्य जनता कौतूहल की ओर जल्दी आकर्षित होती है। अतः राजनैतिक दीवाली के अवसर पर, जो पाँच वर्ष में एक बार आती है सभी राजनीतिक दल अपना दाँव लगाते हैं। इस दीवाली में इतना धूम-धाम, भागदौड़, होहल्ला और चकाचौंध पैदा की जाती है कि सामान्य जनता सतत चलने वाले शिक्षण का भूल-सी जाती है, कुछ दिनों के लिए स्थगित कर देती है और सभी उपाये खिलाड़ियों के बहकावे में अपना सब कुछ हार कर दिवाली पश्चात्ताप करती है। और अगली दिवाली में अपनी बाजी की सम्भावनापूर्ण कल्पना उसे इस दाँवबाजी से विमुख नहीं होने देती। लेकिन कुछ ऐसे भी लोग कहते हैं, जिन्हें हार्दिक पश्चात्ताप होता है और वे फिर इस कोलाहल में खो नहीं पाते। सर्वोदय वालों अथवा रचनात्मक कार्यकर्ताओं की राजनीतिक दीवाली के अवसर पर मौन रहना कुछ लोगों को अस्वाभाविक प्रतीत होता होगा। इसी मौन के कारण कदाचित् पराजित राजनैतिक दल यह लाछन भी लगाते हैं कि तथाकथित विजेता को विजयी बनाने के लिए ही यह मौन साधना थी। लेकिन वस्तुस्थिति कुछ और है। रचनात्मक कार्यकर्ता का काम उस डाक्टर की तरह है, जो मरीज का उपचार करने के बाद उसे उचित निर्देशन और संयम बरता कर अपने कर्तव्य को पूरा करता है। यदि मरीज उसकी बात की अवहेलना करना चाहे तो कर सकता है, लेकिन उस अवहेलना का परिणाम भी उसे ही भोगना पड़ेगा। यह दूसरी बात है कि समाज शरीर का अंग होने के नाते मरीज के कष्ट के कारण व्यापक अर्थों में समाज भी उसके बुरे परिणाम का शिकार बनता है। ऐसी स्थिति में सामाजिक कल्याण तथा स्वास्थ्य कल्याण की दृष्टि से डाक्टर पुनः उस मरीज का उपचार करेगा, लेकिन संयम तो मरीज को ही करना पड़ेगा।

बहुमत किधर ?

हमारी शासन-व्यवस्था बहुमत पर आधारित है। जिसको ओर अधिक हाथ उठे, अधिक सिर हिले, अधिक पर्चे पड़े वह विजेता हो गया और उसी की व्यवस्था मान्य हुई। अतः यह बड़ी विचित्र बात है कि बहुमत पर आधारित शासन-व्यवस्था में चन्द करोड़पतियों की नीति चले और पूरे समाज में असन्तोष व्याप्त रहे। इस विचित्रता का रहस्य उद्घाटित होना ही चाहिए।

लोगों का ऐसा मानना है कि पूँजीपति अपनी पूँजी के सहारे सर्वत्र छाया रहता है। यह कुछ अंश तक सही भी है। समाज में पैसे पर परिवर्तित होने वाले लोग मिलेंगे अवश्य। मिलते भी हैं, लेकिन यह नहीं माना जा सकता कि समाज का बहुमत पैसे का गुलाम है, जब कि पूँजीपति व्यवस्था से बहुमत त्रस्त हो। अगर यह मानना गलत है, तो इसमें सन्देह नहीं कि बहुमत का साथ दिखावटी है।

करोड़पतियों को पूँजीपति मानने का आधार ऐसा बतलाया जाता है कि वे कुछ संगठनों को सत्ता प्राप्त कराने में लाखों की मदद देते हैं। यह सही भी है। लेकिन यह भी सही है कि काठ की हँडिया दुबारा आग पर नहीं चढ़ती। अतः इसके पूरे कारण की जानकारी के लिए जनजीवन को देखना होगा। कहा जा सकता है कि गरीबी के कारण समाज अपने नैतिक धरातल से गिर गया है, और वह आसानी से पैसे के वश में आ जाता है। लेकिन भारतीय समाज की यह विशिष्टता कि गरीब-से गरीब व्यक्ति के भी घर जाने पर वह व्यक्ति कुछ देना ही चाहता है, माँगना नहीं—अभी लुप्त नहीं हुई है। अगर लुप्त हो रही है, तो इसके लिए कहीं-न-कहीं से प्रोत्साहन अवश्य मिल रहा है। अभी हाल की स्थिति इसके लिए सुन्दर दृष्टान्त है कि जिस अंग्रेज के राज्य में सूर्य नहीं डूबता था, उस अंग्रेज और उसकी सत्ता द्वारा सब प्रयास करने के बावजूद भी देश की जनता ने उस लँगोटी वाले का साथ दिया, जिसके पास अपनी एक कौड़ी भी नहीं थी। जनता ने साथ दिया—केवल तन से नहीं, बल्कि धन, मन, और जीवन से। शायद अंग्रेजों को भी विश्वास रहा हो कि भारतीय जनता अपनी नैतिकता को किसी भी मूल्य पर नहीं छोड़ सकती, अतः उन्होंने अपने को असमर्थ मान लिया हो।

राजनीति के साथ पूँजी का गठबंधन

आज भी जनता में वही शक्ति है। लेकिन आज के राजनैतिक दल उसके बीच में छोटे मोटे अनेक प्रलोभन लेकर जाते हैं। वहाँ मतों का मूल्यांकन रुपये में होता है। जातीय और साम्प्रदायिक आधार बनाये जाते हैं। यह सब इसलिए होता है कि विजय का सेहरा माथे पर बँधे। दुर्भाग्य की बात है कि एक भी पार्टी देश में इस तरह की नहीं है, जो कम से कम एक राजनैतिक दीवाली पर स्वयं दाँव न लगाये और इसके रहस्य को जनता में समझा कर उसे आगाह करे। यह रचनात्मक कार्यकर्ता का काम नहीं है। इसे कोई राजनैतिक दल ही कर सकता है अथवा स्वयं जनता, जब कि वह शिक्षण द्वारा पूर्ण आत्मक बन जाये। सौभाग्य की बात है कि विनोबाजी के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा आन्दोलन जनजागरण का रूप पकड़ रहा है और वह दिन भी आने ही वाला है जब जनता अपने को पहचानने लगेगी।

जहाँ करोड़पतियों से लाखों की सहायता तथा कथित राजनैतिक दीवाली की आतिशबाजी के लिए मिलती है, वहीं प्रायः सभी राजनैतिक उम्मीदवार छोटे-मोटे पैसों का प्रलोभन देकर मत खरीदने का काम करते हैं। स्पष्ट है कि मत देने वाला पूँजीपति कहलायेगा तो एक रुपया उस उद्देश्य के लिए देने वाला क्या कहलाया जायेगा ! • •

नये प्रकाशन

जय जगत् –विनोबा

'जय जगत्' विश्व एकता का नया स्नेह-सबक है। 'जय जगत्' की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक महत्ता का विवेचन इस पुस्तक में हुआ है।

यह नया संस्करण परिवर्धित और संशोधित है। पृष्ठ ८८, मूल्य ५० नये पैसे।

बाबा विनोबा –श्रीकृष्णदत्त भट्ट

युग संत विनोबा का व्यक्तित्व बाल्यकाल से ही अद्भुत और क्रांतिकारी रहा है। उनके जीवन का हर पहलू अनोखा, विस्मयजनक और आत्मबल समन्वित रहा है। जीवन के दीर्घ काल तक आत्मलीन रहने के उपरान्त इधर ८-१० वर्ष से ही जनता जनार्दन के बीच वे आये हैं। जनता की जिज्ञासा और अभिलाषा देख कर बाल सुलभ भाषा में भट्टजी की सिद्धहस्त लेखनी से विनोबाजी के जीवन तथा सिद्धांतों को समझने के लिए 'बाबा-विनोबा' नामक पुस्तक-माला का प्रकाशन हुआ है।

इसके *छह भाग प्रकाशित होंगे।* तीन भाग छप गये हैं। ४० से ४८ पृष्ठ तक की प्रत्येक पुस्तक का दाम केवल ३० नये पैसे है। अब तक प्रकाशित जीवनियों में अधिक आकर्षक, अधिक सरल और अधिक मार्मिक।

बोलती घटनाएँ –महात्मा भगवानदीन

महात्माजी अनुभूतियों को शब्द-परिधान पहनाने में जादूगर हैं। उनकी जानदार शैली घटना का जीवन्त चित्र पेश कर देती है।

'बोलती घटनाएँ' के तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं। *चौथा भी तुरंत ही बाहर आ रहा है। पाँचवाँ प्रेस* में जाने को है।

हर कहानी सत्य घटना पर आधारित है।

हम जीवन में जिन नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं, वे इसमें बड़ी सूक्ष्मता से उभरे हैं।

बालकों और परिवार की बहनों में यह पुस्तक विशेष प्रचारित होनी चाहिए।

प्रत्येक पुस्तक का दाम ५० नये पैसे है।

समग्र ग्राम-सेवा की ओर (भाग ३)

धीरेन्द्र मजूमदार

श्री धीरेन्द्र भाई की 'समग्र ग्राम-सेवा की ओर' पुस्तक से पाठक सुपरिचित हैं। उसके दो भाग पहले प्रकाशित हो चुके हैं। अब यह तीसरा भाग प्रयोग और अनुभूतियों के प्रकाश में लिखा गया है। संस्मरणात्मक शैली में पत्रों के रूप में लिखा गया यह ग्रंथ आँखें खोल देने वाला है। पृष्ठ ३००, मूल्य २)

पहला और दूसरा भाग भी संयुक्त रूप से पुनः प्रकाशित हो रहा है।

शिक्षण-विचार –विनोबा

'शिक्षण-विचार' विनोबा का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। *पाठक उससे सुपरिचित हैं।*

अब इसका चौथा संस्करण परिवर्धित रूप में प्रकाशित हो रहा है। पहले से अब सारी सामग्री बढ़ा दी गयी है और विनोबा के अद्यतन विचार जोड़ दिये हैं।

इस संस्करण का दाम ढाई रुपये है।

अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी

उत्तर प्रदेश में वस्त्र-स्वावलंबन कार्य

श्री गांधी आश्रम की ओर से उत्तर प्रदेश में बीस जिलों में करीब चार सौ ग्रामोदय-केन्द्र चल रहे हैं, जिनका प्रमुख काम वस्त्र-स्वावलम्बन है। इन केन्द्रों में खादी-काम की दिशा 'बिक्री के लिए उत्पादन' से हटा कर 'स्वावलम्बन के लिए उत्पादन' की ओर मोड़ने की कोशिश की जा रही है। गाँव के लोगों में खुद में इस काम के लिए अभिक्रम जाग्रत करने के लिए ग्रामोदय सभा बनाये जा रहे हैं। इन केन्द्रों में काम समग्र दृष्टि से करने की कोशिश की जा रही है। वस्त्र स्वावलम्बन मुख्य काम होते हुए भी कुछ केन्द्रों में अन्य उद्योग भी हाथ में लिये गये हैं। सर्वोदय-पात्र भी कुछ जगह रखे गये हैं और विचार-प्रचार भी हुआ है। फलस्वरूप कुछ गाँवों में ग्राम संकल्प की बात भी चली है।

नवम्बर १९५९ तक की प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार इन चार सौ केन्द्रों में करीब छः सौ कार्यकर्ता काम कर रहे हैं, जिनमें करीब साठ कार्यकर्ता बालवाड़ी चला रहे हैं। इन केन्द्रों के काम के दायरे में करीब ४३०० गाँव आते हैं। नवम्बर में करीब आठ लाख रुपये कीमत की छह लाख वर्गगज 'स्वावलम्बी' खादी इन केन्द्रों में तैयार हुई और करीब पौने तीन लाख रुपये की अन्य खादी भी यहाँ बिकी। ● ●

बस-दुर्घटना और सेवा-सैनिक!

विनोबाजी कहते हैं कि प्रत्येक शांति सैनिक सदा के लिए सेवा सैनिक होगा और वह किसी भी समय जन-सेवा के लिए उपलब्ध रहेगा। इसी कार्यक्रम के अनुसार पिछले दिनों छपरा के कार्यकर्ता श्री दिनेशचन्द्र प्रसाद ने बस-दुर्घटना में घायल लगभग ३० व्यक्तियों की सेवा में अपना समय लगाया। यह दुर्घटना काफी भयंकर थी। ७ व्यक्तियों की तो मृत्यु हो हो गयी और जो घायल हुए, उनको भी गहरी चोट आयी। ऐसे समय सर्वोदय कार्यकर्ता ने पूरी लगन के साथ सेवा कार्य किया।

इस अंक में

विनोबाजी का पता :
मार्फत : पंजाब सर्वोदय-मण्डल,
पो० पट्टीकल्याण, जि० करनाल, पंजाब

मुरादाबाद जिले में नया उत्साह

"तुम पूरे जिले में सर्वोदय-पात्र रखवाओ, तो मैं आ सकता हूँ। सर्वोदय-पात्र रखवाने का काम तुम्हारा और आने का काम मेरा, वह मैं करूँगा।"

इन शब्दों के साथ विनोबाजी ने श्री प्रभुदास गांधी, सुरेश गर्ग आदि कार्यकर्ताओं को मुरादाबाद जिले में सघन रूप से काम करने की प्रेरणा दी है। १२ फरवरी को इन कार्यकर्ताओं ने विनोबा के आदेश को पूरा करने का संकल्प किया और वहाँ साल भर की एक निश्चित *योजना बना कर काम में जुट गये हैं।*

विनोबाजी ने अपेक्षा की है कि प्रत्येक जिले *के लोग साल भर के काम की व्यवस्थित योजना* बनायें और उस योजना को कार्यान्वित करने का संकल्प करें। बिना योजना के अंधेरे में हाथ घुमाने से काम नहीं चलेगा। ● ●

श्रमभारती, खादीग्राम का आठवाँ वार्षिकोत्सव

अ० भा० सर्व सेवा संघ, श्रमभारती, खादीग्राम का आठवाँ वार्षिकोत्सव ता० २६ फरवरी '६० को मनाया गया। इस अवसर पर यहाँ उन कार्यकर्ताओं को आमन्त्रित किया गया, जो पिछले आठ वर्षों की अवधि में यहाँ आये और अब दूसरे क्षेत्रों में आन्दोलन के काम में किसी-न-किसी रूप में लगे हैं। इस अवसर पर श्रमभारती के भावी स्वरूप, बृहत्तर खादीग्राम तथा सामुदायिक सुरक्षा की समस्या पर चर्चाएँ हुईं। संध्या समय स्थानीय, ग्रामदानी एवं बाहरी [illegible] की एक गोष्ठी हुई। गोष्ठी के साथ ग्राम स्वराज्य सम्मेलन भी हुआ। इस शुभ अवसर पर श्रमभारती के संस्थापक पू० धीरेन्द्र भाई तथा बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष श्री ध्वजाप्रसाद साहू भी उपस्थित रहे। ● ●

मैं आपका आभारी हूँ

गुरुजनों ने, साथियों ने, मित्रों ने, स्नेहियों ने, परिचितों ने, संस्थाओं ने तथा पत्र-पत्रिकाओं ने मेरे निमित्त कार्यकर्ताओं पर जो आशीर्वाद, शुभ कामना का वर्षाव पत्र, लेख, संदेश, मानपत्र द्वारा बरसाया उसके लिए मैं क्या कहूँ और क्या लिखूँ! व्यक्तिगत रूप से आभार भेजना संभव नहीं है। राजस्थान समग्र सेवा संघ के नेतृत्व में जो सहकार-पूर्ति हुई, वह कार्यकर्ताओं की शक्ति का परिचायक है, और [illegible] है। सबका मेरा प्रेमपूर्वक प्रणाम, यही [illegible] प्रदर्शन का प्रतीक है।

जयपुर, २६ फरवरी, ६० —गोकुलभाई भट्ट

●

विनोबाजी का कार्यक्रम

[illegible] मार्च [illegible]

[illegible]

पिछले दिनों [illegible] प्रदेश सर्वोदय-मंडल के [illegible] श्री [illegible] ने [illegible] है, [illegible] के पहले इन्दौर पहुँचने की [illegible] आशा की जाती है कि विनोबाजी [illegible] मध्य प्रदेश पहुँचेंगे।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० [illegible] पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,२५० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,८७५ एक प्रति १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ५)

साप्ताहिक
भूदान-यज्ञ
लोकनागरी · ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक
वाराणसी, शुक्रवार
१८ मार्च '६०
वर्ष ६ : अंक २५
सम्पादक : सिद्धराज ढड्ढा

विद्यार्थी समस्या और राष्ट्रीय सेवा कार्य समिति की रिपोर्ट

देवी प्रसाद

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद विद्यार्थी समाज की ओर से जितनी सहायता राष्ट्र के निर्माण कार्यों में और देश के मानसिक स्वास्थ्य को ऊपर उठाने में मिलनी चाहिए थी, नहीं मिली है। हम यह कल्पना कर रहे थे कि स्वतन्त्रता प्राप्त नये भारत को लाखों नवयुवकों के लाखों हाथ और हृदय देश के उत्थान के लिए मिलेंगे। आशा यह की थी कि विद्यार्थी समाज राष्ट्र निर्माण की ध्वनि से गूंज उठेगा।

किन्तु यह नहीं हुआ। विद्यार्थियों ने मदद करने के बदले देश की काफी बड़ी शक्ति को उनके ऊपर पुलिस की निगरानी, पुलिस के डण्डे और गोलियाँ और अनेक दिशाओं से निन्दा पाने में लगा दी।

क्यों हुआ ऐसा ? उत्तर किसी से छिपा हुआ नहीं है, चाहे हम असलियत को तरह-तरह के वक्तव्यों या जनता का मानस तरह-तरह से रंगकर भूलने या भुलाने का प्रयत्न करते रहें।

• ● •

हमें उसके लिए समय नहीं मिलता

पिछले दिनों एक बड़े टेक्नालाजिकल इन्स्टीट्यूट के मैकेनिकल शाप को देखने का मौका मिला। वहाँ कई तरह के यंत्रों के साथ अनेक विद्यार्थी ऐसे मग्न थे, जैसे कोई निर्माता अपने काम में जुटा हुआ रहता है। मन ही मन सोचा कि ये विद्यार्थी भला कैसे और क्योंकर प्रदर्शन और डायरेक्ट एक्शन की बात सोचेंगे। उन्हीं दिनों एक दूसरे इंजीनियरिंग कॉलेज के कुछ विद्यार्थियों से पता चला कि जब उनकी युनिवर्सिटी में गड़बड़ हुई थी, तो उनके विभागवालों ने उसमें हिस्सा नहीं लिया था। उनमें से एक ने कहा, "हमको उसके लिए समय नहीं मिलता"।

क्या कारण है कि टेक्निकल दिशा में जानेवाले विद्यार्थियों के अन्दर दूसरे विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अनुशासन है।

ज्ञान-विज्ञान, सर्टिफिकेट, डिग्री के अलावा भी शिक्षा के दूसरे कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। एक तो आन्तरिक तृप्ति और आनन्द तथा दूसरा, शिक्षा समाप्ति के बाद उन्हें धन्धा मिलने का विश्वास। आज की शिक्षा इन दोनों चीजों को प्रदान करती ही नहीं। टेक्निकल लाइनवाले विद्यार्थियों को थोड़े प्रमाण में ये चीजें मिलती हैं और इसलिए उनका तथाकथित डिसिप्लिन कुछ परिमाण में कायम दीखता है। टेक्निकल शिक्षा लेने के बाद देश में इस तरह के लोगों की अभी आवश्यकता है और कुछ हद तक उनकी खपत भी हो जाती है। इसलिए उन्हें सुरक्षा का प्रश्न भी तुलना में कम ही सताता है।

कैसी तटस्थता ?

भले ही अनुशासन की दृष्टि से टेक्निकल लाइन वाले कम समस्यात्मक हों, किन्तु शिक्षा की दृष्टि से वे भी उतने ही पिछड़े पानी में हैं। एक योरोपीय लेखक ने अपने देश की शिक्षा के बारे में कुछ इस प्रकार लिखा था—

"विद्यार्थी अपने दिमाग को आवश्यक और विराट मानव के प्रश्नों में लगायें, इसका प्रयत्न तो नहीं होता। इतना ही नहीं, बल्कि इसके बारे में आज की युनिवर्सिटी शिक्षा का ध्यान भी नहीं जाता।

"विद्यार्थी अवस्था में "न्युट्रलिटि" के बहाने उनका मानस इस प्रकार गढ़ा जाता है कि वे सामाजिक और राजनैतिक प्रश्नों के बारे में सोचना छोड़ दें, जिससे कि उनमें स्थिति को बदलने का विचार भी न आये। उनके शिक्षण के एकांगी स्वरूप के कारण विद्यार्थी इस योग्य नहीं रह जाता कि वह जिम्मेदारी के साथ उद्देश्यपूर्ण जीवन की तैयारी अपनी शिक्षा के द्वारा कर सके। वह किसी महत्त्वपूर्ण प्रश्न के ऊपर जिम्मेदारी के साथ विवेकपूर्ण निर्णय भी नहीं ले पाता। उसकी शिक्षा के द्वारा उसमें यह गुण पैदा नहीं किया जाता कि वह जिस विषय का अध्ययन कर रहा है या जिस धन्धे की तैयारी कर रहा है, उसके पीछे भावना क्या है, उसका उद्देश्य क्या है, इस बात को बुद्धिपूर्वक काट छाँट कर समझ सके। उसके अन्दर वह शक्ति पैदा नहीं की जाती कि आध्यात्मिक, राजनैतिक और सामाजिक विचारों और विश्वासों को, जिन्हें वह सोचता है कि वह स्वयं मानता है, गहराई से समझ सके। सच कहा जाय, तो वह अशिक्षित ही रह जाता है।"

आज उन देशों की युनिवर्सिटी शिक्षा की यह हालत है, तो हम खुद ही समझ लें कि हमारी युनिवर्सिटी की शिक्षा कितने पानी में है।

शिक्षाजगत की इस दुर्घट संधि के संदर्भ में देश के सामने दो तरह के सुझाव आये हैं। डिसिप्लिन के बारे में जो कमेटी बनी थी, उसकी रिपोर्ट तो प्रकाशित नहीं हुई है, किन्तु उसके अध्यक्ष का वक्तव्य और शिक्षामंत्री के उद्गार प्रकाशित हुए हैं। 'शिक्षक और विद्यार्थियों के संबंध ठीक नहीं हैं,' 'पालक अपने लड़कों को सँभालते नहीं,' 'युनिवर्सिटी में दाखिला अधिक नहीं होना चाहिए' इत्यादि बातों के साथ कहा गया है, "ऐसे कदम तो लिये ही जायेंगे, उनके लिए समय भी अधिक लगेगा और जो लॉगरेंज योजना के हैं—जैसे, अधिक कालेज खोलना, इमारतें बनाना, अधिक शिक्षकों का इन्तजाम करना इत्यादि। किन्तु अभी तो यह जरूरी है कि बलवा करने वाले विद्यार्थियों के नेताओं को सजा ही दी जाये। जो कानून का भंग करता है, उसके लिए बचने का कोई रास्ता नहीं हो सकता। हो सकता है कि युनिवर्सिटी की तालीम में कुछ कमी रहने के कारण विद्यार्थियों में फ्रस्ट्रेशन आ गया हो। किन्तु फ्रस्ट्रेशन का बहाना लेकर अनुशासन भंग होने नहीं दिया जा सकता।"

शिक्षाजगत की वृत्ति

इसमें कोई शक नहीं कि शिक्षाजगत के लिए और राष्ट्र के लिए विद्यार्थियों के द्वारा ऐसा काम होना शोभाजनक चीज नहीं है। किन्तु क्या किशोर अवस्था और प्रारम्भिक युवावस्था को बरतने का तरीका सजा ही है ! और क्या धमकियों से जवानी का खून ठण्डा हो सकता है ! बगावत को भूल सकता है ! सौभाग्य से देश का जवान अभी जीवित है और विद्यार्थियों के ये कारनामे चाहे गैर-आदर्श ही क्यों न हों, यह सिद्ध करते हैं कि हमारे युवकों में अब भी जान है।

हमें बड़ा आनन्द और सन्तोष होता है, जब हम यह वाक्य उन उद्गारों के बीच पढ़ते हैं, "प्राब्लम ऑफ डिसिप्लिन इज ए ह्यूमन प्राब्लम ऍण्ड हैज टु बी सॉल्व्ड ऑनली इन ए ह्यूमन वे," हर अध्यक्ष आज शिक्षाजगत को अपनी वृत्ति में ऐसे मानवीय बदलनी चाहिए। अगर डण्डे के जोर से विद्यार्थियों में अनुशासन कायम भी कर लिया जाये, तो वह न तो टिकाऊ होगा और न कारगर। साथ-साथ यह भी कहा गया है कि विद्यार्थियों के संगठन अगर बनते हैं, तो उनकी प्रवृत्तियाँ केवल मनोरंजन, संस्कृति और पढ़ाई लिखाई के क्षेत्र तक ही सीमित रहें। अगर वे इस दायरे से बाहर नजर डालें या अपने आपको और बातों के बारे में जिम्मेदार महसूस करें, तो उन्हें तोड़ देना चाहिए। शिक्षाजगत के साथियो, इस तरह के निर्णयों में कोई सार नहीं। अगर हम इस तरह की दृष्टि रखेंगे, तो भला जिस लोकतान्त्रिक परम्परा की बुनियादें हम डालना चाहते हैं, वे कैसे पड़ेंगी !

अगर युवकों को दुनिया की परिस्थिति से परिचित कराना है और उन्हें आगे के लिए जिम्मेवारी से महत्त्वपूर्ण विषयों के बारे में निर्णय लेने की तैयारी करानी है, तो विद्यार्थी अवस्था से ही उनके सामने जिम्मेवारी के काम देने होंगे। उन्हें सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रश्नों के ऊपर विवेकपूर्ण चिन्तन करने का अभ्यास अभी से मिलना चाहिए। हमें तो विद्यार्थियों से कहना चाहिए कि आज तो नारा लगाना और डाइरेक्ट ऐक्शन राजनीति में भी आउट-आफ-डेट चीज हो गयी है। विद्यार्थियों को तो इस प्रकार सोचना ही नहीं चाहिए। उन्हें देश की समस्याओं के ऊपर विचार-गोष्ठियाँ, फोरम, आदि का संगठन करना चाहिए।

मानवीय तरीका

आज जो डर है और जो होता भी है कि राजनीति में हिस्सा लेने से विद्यार्थियों में अनुशासन की मात्रा घटती ही जाती है, उसकी जिम्मेवारी पार्टी के ऊपर आधारित राजनीति की है। इस सिलसिले में सर्व सेवा संघ ने राष्ट्र के सामने यह सुझाव रखा है कि सब राजनैतिक पार्टियाँ आपसी समझौते पर आयें और 'अगर वे राष्ट्र का भला चाहती हैं, तो आज जो युवक समाज में उनके द्वारा विद्वेष वातावरण बनता है, उसे हमेशा के लिए बन्द कर दें।

एक यह ही तरीके से हो सकता है और वह है "मानवीय तरीका"। वह

विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा मिलेगी, जो पहले कही गयी दो बातों को पूरा करे और राजनैतिक पार्टियाँ भी जब अपना उचित निर्णय ले लेंगी, तो वे विद्यार्थी संगठन अनुशासन-हीनता का प्रदर्शन करने के बदले रचनात्मक वृत्ति का प्रदर्शन करेंगे। तब हम कहेंगे कि हाँ, विद्यार्थियों के संगठन होने ही चाहिए।

चरित्र-निर्माण और सेवा

इस मानवीय तरीके से सोचा जा सकता है और सोचा जा भी रहा है। इसका धुँधला-सा उदाहरण उन राष्ट्रीय सेवाओं वाली कमेटी की रिपोर्ट से मिलता है। चिन्तनशील अनुभवी लोगों को यह लगने लगा है कि चरित्र-निर्माण के लिए सेवा की भी आवश्यकता होती है। सुझाया गया है कि माध्यमिक शिक्षा के लगभग एक वर्ष बाद हर विद्यार्थी को कहीं सेवा करने का मौका देना चाहिए। भावना ठीक है, किन्तु उसका विश्लेषण करके देखें। जिन लड़के-लड़कियों ने अपनी १७ साल की उम्र तक शरीरश्रम न किया हो, वे और उनके पालक भी क्या इस चार घंटे के श्रम को मंजूर करेंगे? इसका विरोध कुछ कम नहीं होगा और जिसे दबाना केवल सैनिक शक्ति से ही संभव होगा। कहा गया है कि इस योजना को चलाने में डिसिप्लिन बिलकुल सैनिक ढंग का होगा। कौन कह सकता है कि अनुशासन रहना नहीं चाहिए, किन्तु आज सैनिक अनुशासन की स्थापना करने के लिए सैनिक शिक्षक की आवश्यकता होगी। याने सारी योजना में मिलिटरीज्म की बू आयेगी। दूसरा प्रश्न है, लाखों विद्यार्थियों को काम देना, उनकी नियमित शिक्षा चलाना इत्यादि के लिए शक्ति हमारे पास कितनी है? खास तौर पर शिक्षा की दृष्टि रखने वाली शक्ति। इस योजना का रंग शैक्षणिक नहीं रहता है, तो इसमें कोई शक नहीं कि उसे मिलिटरी का रंग ही चढ़ेगा। हाँ, अगर इसके पीछे यही भावना है कि परिस्थिति का लाभ उठाकर देश को और खास तौर पर नवयुवकों को मिलिटराइज करना है, तो बात अलग है। पर उसपर भी आज देश को साफ-साफ निर्णय ले लेना चाहिए कि क्या वह उधर जाना चाहता है। आशा है, गांधी का देश अपने संकल्पों को भूलेगा नहीं। जिन विद्यार्थियों की माध्यमिक शिक्षा पूरी करने तक उनकी तालीम में सेवा, शरीर-श्रम, सामाजिक दृष्टि और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का भान नहीं आया है, वे बाद में चलकर उन चीजों को कहाँ तक ग्रहण करेंगे? उसके लिए जो विरोध खड़ा होगा और वातावरण को दूषित करेगा, उसकी हम अभी से कल्पना कर सकते हैं।

हमारे कहने का मतलब यह है कि जिस भावना से इस राष्ट्रीय सेवाकार्य का सुझाव रखा गया है, उसी भावना से पहले शिक्षा में आमूल परिवर्तन किये बिना हमारे किसी भी ऐसे कार्य में सफलता नहीं मिलेगी, जिसके पीछे सेवा, राष्ट्रीयता, मानवता और जिम्मेदारी से सोचने की वृत्तियों का आधार है। बालक को जो माध्यमिक शिक्षा मिलती है, उसी में नेशनल सर्विसेज को समन्वित करना चाहिए। शिक्षा का "कन्टेन्ट" इस प्रकार का होना चाहिए कि माध्यमिक शिक्षा के बाद ही अधिकतर नवयुवक राष्ट्र का खयाल रखते हुए किसी न किसी धन्धे में लग जायँ। साथ-साथ युनिवर्सिटी की शिक्षा को भी बदलना पड़ेगा। उसका स्वरूप ऐसा बनाना पड़ेगा कि उस स्तर की शिक्षा केवल वे ही विद्यार्थी लें, जो किसी उद्देश्य से आगे का अध्ययन करना चाहते हैं।

राष्ट्रीय सेवा और शिक्षा

स्कूल की शिक्षा में तो विषय ज्ञान और परीक्षाओं की तैयारी होती है और परीक्षा के बाद अधिकारियों को यह चिन्ता होती है कि इन पासशुदा लड़के-लड़कियों को किस प्रकार आत्मानुशासन और सेवा की वृत्ति दी जाये। यह कभी होनेवाला नहीं है। अगर ये वृत्तियाँ देनी हैं, तो शिक्षा का अंग मानकर ही इन्हें लिया जाये।

• •

निरपेक्ष सेवक

पेसारा उत्तरप्रदेश के जौनपुर जिले का एक गाँव है। ८ दिसंबर १९५७ को इस गाँव में एक ग्राम स्वराज्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस गाँव में सर्वोदय विचार के प्रवेश का श्रेय यहाँ के एक भाई श्री कैलाशनाथ को है, जो डाक विभाग में चिट्ठी-रसा (पोस्टमैन) का काम करते हैं। अपने काम से जो समय बचता है, वह इस क्षेत्र तथा ग्राम-परिवार के लिए देते हैं। गांधी आश्रम के सहयोग से इस गाँव में एक ग्रामोदय केन्द्र की स्थापना हुई थी। अभी पूरे समय का कोई खादी का कार्यकर्ता यहाँ नहीं है, लेकिन श्री कैलाश भाई समय मिलने पर काम सम्हालते हैं। इस क्षेत्र में सर्वोदय-पात्र भी रखना शुरू हो गया है और गाँव के लोगों से शान्ति सेना की चर्चा भी चलायी गयी है। गाँव ने ग्राम सेवा केन्द्र के लिए १॥ बीघा जमीन दी है। इस समय ग्रामोदय केन्द्र में १॥ मन से ऊपर सूत आ रहा है। बुनाई की समुचित व्यवस्था अभी नहीं हुई है।

गाँव में प्राथमिक सर्वोदय मंडल बनाने का सोचा जा रहा है।

नैतिक विश्व सरकार की स्थापना

अमरीकी दंपति से विनोबा की बातचीत

विनोबाजी ने आशा प्रकट की है कि निकट भविष्य में ही एक नैतिक विश्व सरकार की स्थापना हो सकेगी। क्योंकि दो विश्व-युद्धों में हुई भारी क्षति के पश्चात् लोगों की युद्ध में अभिरुचि नहीं रह गयी है।

विनोबाजी ने यह एक प्रश्न के उत्तर में कहा, जो एक अमरीकी दम्पति श्री और श्रीमती होल्किन्स ने वार्ता के दौरान में उनसे किया था। ये अमरीकी दम्पति न्यूयार्क से आये हैं तथा उनका उद्देश्य 'युद्ध और शान्ति' पर उनके विचार जानना था। उन्होंने विनोबाजी के साथ तीन दिन तक पदयात्रा की।

श्री होल्किन्स ने पूछा था : विश्व-शान्ति प्राप्त करने की दिशा में क्या आपका यह विश्वास नहीं कि प्रायः समूचे विश्व की जनता एक विश्व-सरकार के लिए तैयार है तथा उस विषय में राजनीतिक नेता जनता से बहुत पीछे हैं? और आप इस सम्बन्ध में बहुधा कहा करते हैं कि अपने विकास की दिशा में मनुष्य को स्वयं कोई बड़ा कदम उठाना चाहिए तथा उसे एक ऐसे आध्यात्मिक विकास के स्तर पर पहुँचना चाहिए, जो अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। क्या आपका यह विश्वास है कि इस प्रकार का परिवर्तन निकट भविष्य में ही आ सकेगा और क्या आप यह भी विश्वास करते हैं कि इस परिवर्तन की प्रक्रिया में एक विश्व-सरकार स्थापित की जानी चाहिए।

विनोबाजी ने कहा : जनता युद्ध नहीं चाहती तथा वह शान्ति के लिए उद्यत है। परन्तु कठिनाई यह है कि जनता *अभी तक यह अनुभव नहीं करती कि वही सरकार की सूत्रधार है।*

उन्होंने कहा : आपका यह कहना सच है कि जनता सरकार अथवा राजनैतिक लोगों से शान्ति के लिए अधिक उद्यत है। यों, वैसे सरकारें भी शान्ति की रट लगाये हुए हैं, परन्तु उनके लिए उन्हीं परिस्थितियों से बाहर निकलना मुश्किल हो रहा है, जिन्हें कि उन्होंने स्वयं बनाया है। इसी प्रकार नेता लोग भी शान्ति के सम्बन्ध में सोचने में निमग्न हैं, परन्तु उन्हें यह नहीं सूझ पा रहा है कि भय की भावना से कैसे मुक्ति पाई जाय। शान्ति-स्थापना के लिए शीतयुद्ध के विरुद्ध वातावरण बनाया जाये, क्योंकि शीत युद्ध एक नियमित युद्ध से भी बड़ा अभिशाप है।

विश्व सरकार से मेरा एक 'नैतिक विश्व सरकार' से तात्पर्य है, न कि एक आकार प्रकार युक्त सरकार से। यदि हम एक भौतिक सरकार की बात सोचेंगे, तो संसार के सामने फिर पेचीदी समस्याएँ पैदा हो जायेंगी; जिन्हें कि वह सरकार हल नहीं कर सकेगी। यदि वह कानून को सैन्यबल से लागू करती है, तो उससे फिर तनावपूर्ण स्थिति बनेगी और नयी समस्याएँ पैदा होंगी तथा फिर उनसे शान्ति स्थापना में कोई सहायता नहीं मिल पायेगी। कानून सदैव स्थानीय ढंग से होना चाहिए तथा केन्द्र में एक ऐसी सरकार स्थापित की जाये, जो परामर्श प्रदान करे।

जहाँ तक मनुष्य के आध्यात्मिक विकास का ताल्लुक है; हम आत्मज्ञान को हटाना नहीं, बल्कि उसकी वृद्धि करना चाहते हैं। चूँकि अब राष्ट्र विज्ञान के कारण एक दूसरे के निकट आ गये हैं, अतएव दूसरे राष्ट्रों को भी आध्यात्मिक विचार पहुँचायें जा सकते हैं तथा इसके लिए माध्यम भी उपलब्ध है।

बापू और संप्रदाय

गांधीजी की मृत्यु के बाद उनके नाम को किसी भी प्रकार की पंथनिष्ठ संस्था-निर्माण के अंकुश से बचाना ही चाहिए। उनके नाम पर यदि किसी पंथ या गुरु परम्परा का निर्माण हो गया, तो उनके सारे कामों पर पानी फिर जायेगा। इस प्रकार किसी पंथ के निर्माण से बापू की सत्यनिष्ठा का अपमान ही होगा। इसलिए उनके विचारों को आगे ले जाने वाले किसी पंथ की स्थापना नहीं होनी चाहिए। सिर्फ पंथ, सम्प्रदाय या संस्था के निर्माण से अपने पराये का भेद और न जाने कितने ही झगड़े खड़े हो जाते हैं। फिर अनुशासन का प्रश्न भी खड़ा होता है। ढंग से चलने के लिए हम पहरा बैठा देते हैं। लेकिन हम उनमें बराबर बदल किये जायें और इसके [illegible] काल हमारा दम घुटने लगे, तो हमें उसे फाड़कर फेंक ही देना होगा। संस्था और संगठन के लिए भी यही नियम लागू है। अदालतों के दायरे में रहकर धर्म अपना प्रभाव खो देता है। पार्टियों की गुटबंदी के कारण राजनीति भी दुष्प्रभावित हो गयी है। इसी तरह बापू के नाम से भी यदि हम किसी संप्रदाय का निर्माण करेंगे, तो गांधी विचार भी दूषित हो जायेगा।

—विनोबा

सेवाग्राम सम्मेलन १९४८

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

अपराध का कारण

हम तो जेल में भरोसा नहीं रखते। हम कहते हैं कि यदि किसी का गुनाह साबित हो गया, तो उन्हें आश्रमों में संत पुरुषों के पास रखें और उद्योग सिखायें। मैं मानता हूं कि गुनाह करने वालों को इस प्रकार आश्रमों में छोड़ दिया जाये, तो वे गुनाह नहीं करते। परंतु इस प्रकार जेल में जाने से वे बार-बार गुनाह करते हैं। हमारा ऐसा अनुभव है। हमने भी अपने जीवन के पांच वर्ष जेल में बिताये हैं। हमें याद है कि एक चोर कैदी का जेल में रहते-रहते अन्य कैदियों से प्रेम बन गया। सजा की अवधि समाप्त होने पर जब वह जेल से बाहर जाने लगा, तो उसने देखा कि साथी दुःखी हैं, उनके आंसू निकल रहे हैं। वह उन्हें सान्त्वना देते हुए बोला "फिक्र न करो, मैं एक हफ्ते के अंदर-अंदर फिर तुम्हारे पास आता हूं।" मैंने देखा कि वह एक हफ्ते में फिर जेल में आ गया। उसे जेल की बैरक के साथियों के पास आने के लिए फिर अपराध करना पड़ा। इस प्रकार जेल में आकर मनुष्य सुधरते नहीं, स्वभाव से चोर बनते हैं, पक्के चोर बनते हैं। इतना ही नहीं, जेल में रहते-रहते भी वे कुशलता से चोरी करते हैं। उन दोनों बीड़ी आदि पीने पर प्रतिबंध था, तो भी कैदी बड़ी कुशलता से साहसपूर्वक बीड़ी आदि मंगवाते थे।

हमें सोचना चाहिये कि चोरी क्यों होती है। मैं समझता हूं चोरी आदि अपराध एकाग्रता की भावना के कारण करते हैं। बहुत से अपने और बाल-बच्चों के पालन-पोषण के लिये भूख-प्यास और बेकारी के कारण करते हैं। —विनोबा

अहिंसा शक्ति की खोज में

सुरेश राम

[सेवाग्राम के लिए निकलने वाली पदयात्री टोलियों में एक टोली निर्मला देशपांडे की भी है। इस टोली ने इलाहाबाद से सेवाग्राम तक का फासला पदयात्रा से तय करने का कार्यक्रम बनाया है। श्री सुरेश राम भाई द्वारा इस पदयात्री टोली के मधुर संस्मरण यहां प्रस्तुत किये गये हैं। —सं०]

"यह बताइये बहनजी ! कि जब सब तरह के वाहन मौजूद हैं, आप इलाहाबाद से सेवाग्राम तक सारा सफर पैदल क्यों कर रही हैं ?" एक जिज्ञासु युवक ने पूछा।

"सच है, इतनी दूर पैदल आना अजीब-सा तो लगता है। लेकिन मेरे मित्र ! ऐसा करने के कई कारण हैं।"

"वही मैं जानना चाहता हूँ।"

"हाँ, जरूर ! तीन कारण हैं। पहला तो यह कि सुदूर देहात में रहने वालों और दीन-हीन, दुःखी जनों से सम्पर्क का सर्वोत्तम साधन पदयात्रा है। दूसरे, खुले आसमान के नीचे घूमने से प्रकृति से अनोखा तादात्म्य जुड़ता है और विचार-शुद्धि तथा हृदय-शोधन होता है और तीसरे, इस शोधन के आधार पर सामूहिक अहिंसा शक्ति की खोज में बड़ी मदद मिलती है। इस शक्ति के आधार पर ही आज की राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ हल की जा सकती हैं।"

सेवाग्राम की ओर प्रस्थान

इसी भावना से ओतप्रोत होकर, बहन निर्मला देशपांडे सेवाग्राम के लिए पदयात्रा पर निकल पड़ी हैं। उनके साथ में निष्ठावान और अनुभवी कार्यकर्ताओं की एक टोली है। और भी कई टोलियाँ इस तरह भिन्न-भिन्न प्रान्तों से निकल कर सेवाग्राम की तरफ बढ़ रही हैं।

निर्मला देशपांडे हमारे देश की उन थोड़ी सी कार्यकर्त्रियों में से हैं, जिन्होंने संत विनोबा की प्रेरणा से आजीवन ब्रह्मचर्य पालन का व्रत लिया है। वह नागपुर युनिवर्सिटी से राजनीति शास्त्र में एम० ए० पास करके वहीं प्राध्यापक हो गयी थीं। लेकिन भूदान ग्रामदान आन्दोलन से आकर्षित होकर एक ही झटके में उस काम को छोड़ दिया और आन्दोलन में कूद पड़ीं।

करीब १९-२ से वह विनोबाजी के साथ लगातार पदयात्रा में रही हैं। बीच-बीच में अलग हुईं तो, या तो स्वास्थ्यवश या विनोबाजी के सुझाये काम को करने के लिए। कश्मीर-यात्रा के बाद जब विनोबाजी ने अखंड संचार करने का निर्णय किया, तो आपने पदयात्री दल के सभी बहनों को क्षेत्र में काम करने भेज दिया। निर्मला बहन ने भी वर्षों ऐसा कर भी इस नयी के रूप में आकर काम सँभाला।

निर्मला बहन और उनकी टोली ने दो रातें इलाहाबाद जिले में बितायीं। तीसरे दिन शाम को रीवा जिले में प्रवेश किया। वह शहर में बहनों से बोलना पसंद करती थीं और लोगों से अलग भी मिलकर बात करती थीं। रात में जाकर सामने बच्चों से भी मिलतीं। उन्हें तो बड़ा ताज्जुब होता था कि एक औरत इतनी दूर पैदल कैसे निकल पड़ी। तो निर्मला बहन उन्हें समझाती थीं और फिर कहती थीं—"आपको अपने घर व बाल-बच्चों की तो चिन्ता करनी ही चाहिए। मगर उतने भर से आप का काम पूरा नहीं हो जाता। धर्म पालन की जिम्मेवारी भी आपको उठानी है और बच्चों तथा मर्दों में उसकी भावना पैदा करनी है। स्वराज्य में अपना धर्म क्या है, यह हमें समझना चाहिए। पड़ोसी के घर में जब बच्चे भूखे हों, तो भोग लगाकर अपने आप खा लेने से न धर्म निभेगा, न भगवान ही तुष्ट होगा। दूसरों को बिना खिलाये खुद खा लेना न भक्ति है, न उपासना। आज धर्म की माँग यह है कि दरिद्र नारायण को खिलाइये। दीन हीन के दुःख दर्द में शरीक होइये। इसी वजह से विनोबाजी भूदान सम्पत्तिदान माँगते हैं और घर-घर में सर्वोदय-पात्र चाहते हैं। इस काम को अगर हम औरतें उठायें, तो सहज ही क्रांति हो सकती है और गरीबी, बीमारी तथा आपसी कटुता जैसे सवाल हम हल कर सकेंगे।"

सार्वजनिक सभाओं में निर्मला बहन जनशक्ति के निर्माण की बात हर जगह समझाती थीं। जितना ज्यादा हम सरकार या उसके साधनों का आसरा लेंगे, उतना ही ज्यादा केन्द्रीकरण और दलीकरण बढ़ेगा। हमें जनशक्ति खड़ी करना चाहिए और उसका आधार करुणा ही हो सकती है।

टोली के सभी साथी सबेरे चार बजे उठ जाते हैं। साढ़े चार पर यात्रा शुरू होती है। चलते चलते प्रार्थना होती है। फिर सूर्योदय तक मौन रहते हैं और गुनगुनाते चलते हैं। रास्ते में कहीं खाद-कुर्सी। जगह पर आप पढ़ने के लिए बैठ जाते हैं। गीता उपनिषद् का पाठ होता है या बापू-विनोबा की किसी रचना का। उस पर थोड़ी चर्चा और फिर चल दिये। रास्ते में भजन, गीत और जयजयकार ! "जय जगत् !" "ग्रामदान जिन्दाबाद !" "ग्राम स्वराज्य जिन्दाबाद !"

पदयात्रा फैशन नहीं

विनोबाजी ने जालंधर में अपनी प्रार्थना सभा में कहा कि पदयात्रा आज काम फैशन बनती जा रही है। सम्भव है कि आगामी चुनावों में कभी मंत्री और बड़े-बड़े नेता भी पदयात्रा करके लोगों को यह दिखाने का प्रयत्न करें कि वे जनता के सबसे अच्छे सेवक हैं। पर जनता को यह जान लेना चाहिए कि वे सेवक अपने पद की सुरक्षा और चुनाव जीतने के लिए ही पदयात्रा करेंगे।

विनोबाजी ने आगे कहा कि मुझे भूमि प्राप्त करनी थी। इस उद्देश्य की सिद्धि भूमि पर चल कर ही सम्भव हो सकती थी। यदि मैं भी अन्य नेताओं की तरह वायुयानों में उड़ने को महत्त्व देता, तो मुझे वायु ही प्राप्त होती।

पदयात्रा का महत्त्व

इस तरह की पदयात्राओं का अपना महत्त्व है। देखने में तो यह ज्यादा जोरदार चीज नहीं लगती, लेकिन यह लोगों के दिल को छूने वाली चीज है। आज जहाँ देश में जाति, धर्म, भाषा, पक्ष आदि के नाम पर भेदभाव बढ़ रहा है, वहाँ संत विनोबा के ग्रामदान, शान्ति-सेना आन्दोलन से न केवल आर्थिक स्वराज्य को, बल्कि एकता की शक्तियों को बल मिलता है। इसका पूरा पता तो आगे चलकर ही मिल सकेगा। लेकिन साथ ही साथ एक बड़ा काम इसमें यह हो रहा है कि गण-सेवकत्व पैदा हो रहा है। विनोबा के शब्दों में "अब गण नेतृत्व का नहीं, गण सेवकत्व का युग है।" आज नेताओं में आस्था घट रही है। लेकिन सच्चे सेवकत्व का भविष्य उज्ज्वल है।

इसके अलावा इन पदयात्राओं से अहिंसा के शास्त्र का या शान्तिशक्ति का निर्माण होता है। आइक हों या ख्रुश्चेव, सभी शान्ति चाहते हैं, लेकिन जोर लगा रहे हैं अशान्ति की शक्ति बढ़ाने का। इसके विरुद्ध, ग्रामदान शान्तिसेना आन्दोलन का आधार अहिंसक साधनों पर है और शान्ति शस्त्र द्वारा शान्ति की स्थापना का निश्चय प्रयास है। संत विनोबा की पदयात्रा हो या इस तरह की दूसरी पदयात्राएँ हों, वे सबकी सब इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्न हैं।

• •

समाज और जीवन के संगम पर

नरेन्द्र भाई

समाज और जीवन, इन दो शब्दों में वे सब चीजें आ जाती हैं, जिन्हें हम विश्व के साथ जुड़ी हुई देखते हैं। पर इससे पहले कि समाज और जीवन की व्याख्या की जाय, उसके आधारभूत तीन प्रश्नों पर विचार कर लिया जाय।

(१) ऐसी कौनसी सामाजिक व्यवस्था होगी, जिसमें मानव अपने जीवन में धार्मिक, नैतिक और सदाचार आदि जीवन मूल्यों को बिना मुक्ति के लालच और दण्ड के भय के जीवन में व्यवहार कर सके?

(२) उस सामाजिक व्यवस्था में अनैतिक, अधार्मिक और दुराचारी व्यवहार को नियंत्रित रख कर एक सन्तुलित जीवन-विकास की जीवन पद्धति क्या होगी? और उसके लिए प्रेरणा शक्ति कहाँ से आयेगी?

(३) आज के जीवन के संदर्भ में उक्त दिशा में कदम बढ़ाने के लिए आधार क्या होगा और किस तरह उस ओर बढ़ा जाये?

आज की सामाजिक स्थिति को देखने से लगता है कि दुनिया में हर देश यह मानता है कि सामाजिक व्यवस्था चलाने के लिए एक सरकार होनी चाहिए। अब चाहे वह प्रजातान्त्रिक हो, समाजवादी हो, पूँजीवादी हो, तानाशाही हो या जो भी हो, पर इसमें सामान्यतया सब एक राय हैं कि सरकार हो। अब सरकार बनने के बाद क्या होता है? समाज-व्यवस्था चलाने के लिए इस सरकार को धन चाहिए, धन वसूल करने के लिए तरह-तरह के नियम बनाने होते हैं, अधिकार बाँटने होते हैं। व्यक्ति और सरकार के अधिकारों की रक्षा के नियम पालन न करने वालों को दण्ड देना पड़ता है। नियम पालन नहीं किया, यह साबित करने के लिए न्यायालयों की रचना करनी होती है। इस सबकी रक्षा के लिए दण्ड देने की शक्ति पुलिस और फौज के रूप में संगठित करनी होती है। फिर पुलिस और फौज को अच्छे-से-अच्छे हथियारों से सुसज्जित करना होता है। यह सारी व्यवस्था जितनी ही अधिक व्यवस्थित होती है, उतना ही अधिक टैक्स लगा कर धन संग्रह करना होता है। अधिक धन-संग्रह हो सके, उसके लिए उत्पादन बढ़ाना होता है। उत्पादन नियंत्रित दिशा में हो सके, इसके लिए उत्पादन के साधनों पर भी सरकारी नियंत्रण रखना पड़ता है। सरकार को इतना सब करने में अड़चन न पड़े और लोग राजी से यह सब करने दें, उसके लिए सरकार को लोगों की भलाई के काम भी अपने हाथ में लेने होते हैं। लोक-कल्याण के कार्य जितना अधिक सरकार अपने हाथ में लेती जाती है, उतना ही अधिक वह सरकार अच्छी समझी जाती है। साथ ही लोक-कल्याण के काम क्षमतापूर्वक सरकार कर सके, उतना ही अधिक नियन्त्रण लोक-जीवन पर उसे रखना पड़ता है। अब यह सारा कार्य करने का मौका किसको मिले, इसके लिए दुनिया वाले आपस में झगड़ते हैं। इस झगड़ने के मूल में अधिकार, असर और नियन्त्रण तीनों शक्तियाँ एक-दूसरे से आगे बढ़कर कार्य करती रहती हैं। पिछले हजारों वर्षों से यह क्रम चला आ रहा है। सहकार की प्रेरणा कहाँ से आयेगी? जीवन की सबसे बड़ी आकांक्षा मनुष्य में जीवन अस्तित्व कायम रखने की है, उसके लिए उसे प्रकृति पदार्थों का भोग करना पड़ता है, अतः सहकार की प्रेरणा सहभोग में से पैदा होगी। *सहचिन्तन, सहकार और सहभोग* की इस त्रिविध योजना में से एक नयी समाज-व्यवस्था का आधार मिलेगा, आज की परिस्थिति से ऐसा भान होता है।

अधिकार मेरा हो या तेरा, असर मेरा हो कि तेरा, नियंत्रण मेरा हो या तेरा और विचार मेरा चले या तेरा आदि आदि इस 'मेरा तेरा' की भावना की चरम सीमा आज आ गयी है। इसी से दुनिया में बड़े अधिकार, असर और नियंत्रण रखने वाले गुरुजन भी उसके खतरे को समझ कर (कोएक्जिस्टेन्स) सहअस्तित्व की बातें कर रहे हैं। इस परिस्थिति में से हमारे तीसरे सवाल का जवाब मिलता नजर आता है। इस सहअस्तित्व के बारे में से सहचिन्तन की प्रक्रिया निकलती है, अर्थात् लोग साथ बैठ कर सोचना शुरू करें, मुक्त मन से सोचना शुरू करें, पर एक बड़ा सवाल है कि सहचिंतन की परिस्थिति कैसे पैदा हो? वह होगी साथ-साथ मिलने के अधिक अवसर पैदा करने से, अर्थात् सहकार से।

आज राज्यशक्ति के साथ-साथ सैनिक-शक्ति और हथियारों का इतना विकास हुआ है कि सैनिक शक्ति और हथियारों के ठेकेदार ख्रुश्चेव व आइजनहावर भी कहने लगे हैं कि हथियारों को समुद्र में फेंक दो, क्योंकि इनके सामने अब सिद्ध हो गया है कि अब हथियार और सैनिक-शक्ति में समाज-रक्षण की क्षमता और शक्ति नहीं रह गयी है। इसलिए हाइड्रोजन और कोबाल्ट जैसे बमों के प्रयोग से सहमरण निश्चित है। ख्रुश्चेव साहब कहते हैं और ईमानदारी से परिस्थिति को समझ कर कहते हैं कि जब हथियार ही नहीं रखने हैं, तो सेना और पुलिस को रख कर ही क्या होगा? इतना सब होने पर भी साहस नहीं हो रहा है, क्योंकि मनुष्य के सामने उसके ही अन्दर बैठे असुर को नियंत्रित करने का सवाल उसके सामने खड़ा है।

छोटे परिवार में व्यक्ति के त्याग और पुरुषार्थ से पारिवारिक सुख-शान्ति कायम रहती है, उसी तरह परिवार के त्याग और पुरुषार्थ से गाँव की सुख-शान्ति कायम रहेगी, गाँव के त्याग और पुरुषार्थ से क्षेत्र की, क्षेत्र के *त्याग और पुरुषार्थ* से देश की और देश के त्याग और पुरुषार्थ से समस्त मानव समाज में सुख-शान्ति का वायुमंडल बनेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि इस सामूहिक पुरुषार्थ और त्याग में से वह शक्ति निर्माण होगी, जो शिव के नृत्य और ताण्डव का काम करेगी, जिसमें से समृद्ध जीवन का उदय होगा और मृत्यु की विकृतियों का शमन होगा। जीवन की समृद्धि और विकृतियों के शमन की प्रक्रिया से सहजीवन सम्भव हो सकेगा। अतः सैनिक शक्ति या राज्य शक्ति के स्थान पर सामूहिक पुरुषार्थ और सामूहिक त्याग की प्रेरणा सहजीवन की आकांक्षा में से आयेगी, क्योंकि व्यक्ति को सहमरण पसन्द नहीं है।

एक बात हमारे सामने बहुत साफ है कि आज दुनिया की कुल ऐसी *परिस्थिति है कि व्यक्ति या* समूह कोई भी न अकेले नष्ट हो सकता है और न अकेले विकास कर सकता है। इसलिए कुछ ऐसे जीवन-मूल्य, कुछ ऐसी जीवन निष्ठाएँ हमें खोजनी पड़ेंगी, जिनसे शारीरिक पोषण भी मिले और भावनाओं का भी उत्तरोत्तर विकास होकर मनुष्य में सांस्कृतिक जीवन की आकांक्षा भी पूरी हो।

आज तक जितने धर्म इस पृथ्वी पर आये, उन्होंने मनुष्य की भोग की आकांक्षाओं को स्वर्ग में स्थापित किया। इस लोक में त्याग-तपस्या का एक कर्मकांड बनाया। साथ ही कहा कि इस त्याग-तपस्या के कर्मकांड का पालन करने वाले को स्वर्ग मिलेगा। स्वर्ग में सारी भोग की वस्तुएँ स्थापित हैं। इस तरह स्वर्ग में सुख की आकांक्षाओं को स्थापित करके उसकी प्राप्ति के लिए त्याग तपस्या के जीवन की स्थापना की, ताकि समाज का संतुलन कायम रहे।

अब जैसे-जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण बना, ज्ञान, चिन्तन, मनन का सर्वव्यापी जोर हुआ है, तो वे सब भावनाएँ ढीली पड़ रही हैं और स्वर्ग में भोग की आकांक्षाएँ बेबुनियाद होती चली आ रही हैं। अब यह हथियार समाज-सन्तुलन के लिए भोथरा पड़ गया है। यों बहुत सारे 'रिफार्मरों' समाज सुधारकों ने शब्दों के नये अर्थ करने की कोशिश की है, पर आज तो दूसरे ही ढंग से सोचना होगा।

दूसरी ओर जैसे जैसे समाज संगठन मजबूत होता गया, समाज व्यवस्था के नियम जटिल से जटिलतर होते चले गये। नियम पालन न होने पर दण्ड व्यवस्था भी जटिल से जटिलतर होती गयी। दण्ड के प्रकारों में भी विकास हुआ। दण्ड को नियान्वित करने की शक्ति सेना और पुलिस के रूप में बढ़ी। इस शक्ति का उदय होने से प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने की आकांक्षा भी उत्तरोत्तर बढ़ती चली गयी। जैसे जैसे यह सब बढ़ा, मनुष्य में कानून को धोखा देकर गैरकानूनी तरीके से चलने की भावना बढ़ी। नतीजा यह हुआ कि कानून तोड़ा या नहीं, इसे साबित करने के लिए अदालतें बनीं। अदालतों के उदय से मनुष्य की नैतिकता सदा सर्वदा के लिए समाज से लुप्त कर गयी और समाज का सन्तुलन ऐसा असन्तुलित हुआ कि व्यक्ति को उस चक्र में से निकलने का रास्ता ही नहीं मिल रहा है। कहने का अर्थ यह है कि कोई सन्तुलित समाज बनाने में ये दोनों प्रधान साधन विफल हो रहे हैं। परन्तु समाज या तो सन्तुलित समाज होगा, अथवा असन्तुलित समाज का सर्वनाश निश्चित है। इसी परिस्थिति में से पहला प्रश्न उपस्थित हुआ है।

उपर्युक्त परिस्थिति ही नये समाज के मूल आधार की दिशा की ओर इशारा करती है। समाज में वैज्ञानिक दृष्टि को, ज्ञान, चिन्तन, मनन, सबको सामूहिक चिन्तन की कसौटी पर कसना होगा। इस सामूहिक चिन्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, ज्ञान, चिन्तन मनन को 'एवल्यूशन रिवीजन' निरन्तरता [illegible] में से गुजरना होगा। इस क्रिया से जो सद्धर्म की धारा निकलेगी, वह शुद्ध विवेक और कल्याणकारी होगी तथा इस कल्याणकारी सद्धर्म की धारा में [illegible] वस्तुओं का प्रवाह प्रवाहित होगा, वह सहयोग के सहारा और सुख होगा ही नहीं, जिससे जीवन समृद्ध और सुखी होगा।

सहचिन्तन की दिशा में से निकले हुए सहकार और सहभोग सामूहिक पुरुषार्थ और सामूहिक त्याग पर आधारित होंगे। इस सहभोग में से जो समाज निर्माण होगा, वह एक ऐसा सन्तुलित समाज होगा, जिसमें व्यवस्था की इकाई निरन्तर [illegible] के आधार पर निर्भर होगी।

• •

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का नया स्वरूप

स्पर्धात्मक सहअस्तित्व ! क्या एक विश्व-सरकार सम्भव है ?

महादेव वाजपेयी

अभी तक दुनिया की राजनीति शक्ति बढ़ाने की राजनीति रही है। वही राष्ट्र बड़ा समझा जाता था और उसी की सब पर धाक भी रहती थी, जिसकी सामरिक शक्ति सबसे अधिक हो। बड़ी बड़ी जल, स्थल और वायुसेनाएँ—हवाई जहाज, सबमेरीन, प्रक्षेपास्त्र, स्पुतनिक, एटम और हाइड्रोजन बम और इसके साथ चलता या शीतयुद्ध। नये नये अधिक विनाशकारी शस्त्रों की खोज की दौड़ और विज्ञान ने एक चरम सीमा पहुँचा दी है। इसने आधुनिक युद्धकला को नया स्वरूप दे दिया। अब बड़ी बड़ी सेनाओं की जरूरत नहीं। दुनिया का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र रूस आज अपनी सेना बहुत घटा रहा है। इसके अतिरिक्त रूस और अमेरिका दोनों ही राष्ट्र युद्ध सामग्री के सम्पूर्ण निरस्त्रीकरण के हामी हो गये हैं। जिस प्रकार युद्धकला में परिवर्तन हुआ, वैसे ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भी एक नया दग आया।

दुनिया में आज केवल दो सर्वोत्कृष्ट शक्तिशाली राष्ट्रगुट हैं। एक अमेरिकन—जिसमें पूँजीवादी अर्थ-रचना चलती है और दूसरा है रूसी, जिसमें साम्यवादी आर्थिक ढाँचा है। इन दो गुटों के अतिरिक्त कुछ राष्ट्र ऐसे भी हैं, जो इन दोनों गुटों से बाहर हैं। ये राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से बहुत पिछड़े हुए हैं। गरीब-बेकारी तो है ही, साथ ही जनसंख्या भी इनकी अधिक है और वह नित्य बढ़ रही है। सारी दुनिया में इस समय लगभग दो अरब और ७९ करोड़ मानव रहते हैं। इनमें से पूँजीवादी प्रगतिशील औद्योगिक राष्ट्रों में २०.५ प्रतिशत व्यक्ति रहते हैं और ३७.५ प्रतिशत साम्यवादी कैम्प में तथा ४२ प्रतिशत गरीब और पिछड़े हुए उद्योगों वाले राष्ट्रों में।

इस समय दुनिया के सम्पूर्ण उत्पादन का मूल्य लगभग १२०० बिलियन डालर आँका गया है। इसमें से पूँजीवादी विकसित औद्योगिक राष्ट्र ६० प्रतिशत उत्पादन करते हैं और साम्यवादी कैम्प २५ प्रतिशत और पिछड़े हुए राष्ट्र केवल १५ प्रतिशत उत्पादन करते हैं।

इसी प्रकार ७५ की सदी बिजली का उत्पादन पूँजीवादी प्रगतिशील राष्ट्रों में हुआ, २० फीसदी साम्यवादी कैम्प में और ५ प्रतिशत पिछड़े राष्ट्रों में। इसके अतिरिक्त इस्पात पूँजीवादी विकसित राष्ट्रों ने १८० मिलियन टन बनाया और साम्यवादी कैम्प ने ८० मिलियन टन तथा पिछड़े हुए राष्ट्रों ने १० मिलियन टन।

आज विश्व में एकाधिपत्य, एक साम्राज्य, एक सत्ता स्थापित करने का सपना है। इसी के लिए सारी राजनीति और सारी शस्त्रों की दौड़ है। किन्तु परम विनाशकारी शस्त्रों ने इस दौड़ को कुण्ठित कर दिया है, उसे रोक दिया है। दोनों का स्वरूप ही बदल दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सहअस्तित्व और पंचशील के सिद्धान्त का उदय हुआ। भिन्न आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था वाले राष्ट्र आपस में एक-दूसरे की स्वतंत्रता और समता की रक्षा करते हुए अपना अपना स्वतंत्र विकास और अस्तित्व रख सकते हैं। आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का स्वरूप स्पर्धात्मक सहअस्तित्व का है। पिछड़े हुए राष्ट्रों के विकास के लिए आर्थिक और औद्योगिक सहायता के बहाने से इस राजनीति का जन्म होता है।

लगभग ४२ प्रतिशत दुनिया की जनसंख्या वाले ये पिछड़े राष्ट्र हैं, इनमें से प्रायः ७९ करोड़ लोग तो हाल ही में साम्राज्यवादी राष्ट्रों के चंगुल से छूटे हैं। आर्थिक, औद्योगिक और राजनैतिक सभी प्रकार का पिछड़ापन इन राष्ट्रों में है। सर्वतोमुखी विकास की आवश्यकता इनको है। पूँजीवादी और साम्यवादी दोनों शक्तिगुट इनकी सहायता का दम भरते हैं। सहज ऊपर के देखने में सहायता का प्रारम्भ तथा उसका लक्ष्य आर्थिक और औद्योगिक उन्नति होता है, किन्तु इस सहायता का वास्तविक उद्देश्य राजनैतिक ही है। दोनों गुट इसलिए सहायता करते हैं कि पिछड़े राष्ट्र उनकी सहायता से प्रभावित होकर उनकी ओर आकृष्ट हों और इस प्रकार धीरे धीरे उनके सहगामियों की संख्या बढ़ते बढ़ते एक दिन सारी दुनिया में उनका अथवा उनकी विचारधारा का अथवा उनके आर्थिक और राजनैतिक संगठन और व्यवस्था वाले राष्ट्रों का एकाधिपत्य हो जाये।

पूँजीवादी राष्ट्र जब सहायता करते हैं, तो वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि सहायता पाने वाले राष्ट्रों में व्यक्तिगत मालकियत के आधार पर चलने वाली औद्योगिक उन्नति हो तथा पूँजीवादी अर्थरचना और तदनुकूल राजनैतिक व्यवस्था पनपे, इसलिए उनका सहयोग और सहायता प्रायः प्राइवेट सेक्टर में होती है। इसके विपरीत साम्यवादी कैम्प की सारी सहायता पब्लिक सेक्टर में होती है, इससे राज्यशक्ति अथवा सरकार की महत्ता और शक्ति बढ़ती है। इस परिस्थिति के कारण सहायता में भी स्पर्धा का जन्म होता है। स्पर्धा का स्वरूप प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर के संघर्ष के रूप में उपस्थित होता है।

इस प्रकार की सहायता का ध्येय तो यह रहता है कि अन्त में इसके द्वारा उनका दुनिया पर एकाधिपत्य स्थापित होगा। इसके कारण स्पर्धा का जन्म होता है, जिसका विकास संघर्ष और विश्वयुद्ध में होगा और अन्त में वही सर्वनाश। पहले दो बड़े गुटों के बीच जो शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का विचार उदय हुआ, जिसकी वजह से सारी दुनिया का विकास और जीवन सम्भव हो सकता था, उसे इस नयी राजनीति ने खत्म करके वही खतरा पैदा कर दिया। इसके अतिरिक्त अभी तक दुनिया में इस प्रकार की सहायता बहुत सफल भी नहीं हुई। रूस ने ईजिप्ट को सहायता दी, किन्तु वह साम्यवादी गुट से दूर ही होता जा रहा है और अमेरिका ने हिन्दुस्तान को आर्थिक सहायता दी, किन्तु भारत अमेरिकन गुट से अलग ही रहा। अक्सर यह देखा गया है कि इस प्रकार की सहायता देने वाले राष्ट्रों के प्रति सहायता पानेवाले राष्ट्रों में विरोध ही अधिक पनपा है। इस प्रकार की राजनीति और सहायता से युद्ध का खतरा फिर बढ़ रहा है।

हिंसाशक्ति के विकास से द्वेष, प्रतिहिंसा और स्पर्धा के सहारे अखिल विश्व साम्राज्य कभी स्थापित नहीं हो सकता। इससे तो विनाश ही सम्भव है। किन्तु विज्ञान ने आज ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी है, जिसमें मनुष्य अब तभी बच सकता है, जब दुनिया में सब कुछ सबका हो जाये। यह पृथ्वी, जमीन का बड़ा भारी गोला, हमारी माँ, इसके ऊपर रहने वाले सारे मानव एक पिता के सब बेटे—मनुष्य की श्रमशक्ति और बुद्धि, परमात्मा की दी हुई दिव्य अमूल्य शक्तियाँ—इनका उपयोग स्वार्थ-सम्पादन में नहीं, "सर्वजनहिताय" ही होगा। इनके उपयोग से जो कुछ जरूरत की सामग्री तैयार होगी, बाँट कर खायी जायेगी। यह थोड़े में अहिंसक समाज-रचना का स्वरूप होगा, जिसके आधार पर खड़ा होगा सम्पूर्ण मानव परिवार। इसमें अहिंसा शक्ति के रूप में विराजमान होगी। हम इसके द्वारा अपने सभी मसले हल कर सकेंगे। अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा और व्यवस्था के लिए फौज की आवश्यकता नहीं रहेगी, किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस रह सकती है। इस पुलिस के पास राइफल अथवा अन्य हिंसात्मक हथियार न होंगे। अहिंसात्मक असहयोग और अहिंसात्मक प्रतिकार तथा आत्म बलिदान, ये ही उस पुलिस के अस्त्र होंगे। आज दुनिया की जनसंख्या लगभग ८८,००० प्रति दिन के हिसाब से बढ़ रही है। यह वृद्धि प्रायः पिछड़े हुए और गरीब राष्ट्रों में ही है। इसकी वजह से परिस्थिति नित्य जटिल होती जा रही है, जिसके सुलझाव के लिए तीव्रता बढ़ रही है। अहिंसा पर शक्तिरूप में विश्वास करने वालों के लिए तथा जिन्होंने अपने जीवन को अहिंसा के शोध के लिए अर्पण कर दिया है, उनके लिए आज की स्थिति गम्भीर चुनौती है। यदि हम अपने देश में गरीबी और अमीरी की खाई पाट सकें, आपस के लड़ाई-झगड़ों को अहिंसात्मक तरीकों से तय कर सकें और अन्त में बाहरी राष्ट्रों के हिंसात्मक आक्रमणों को अहिंसात्मक प्रतीकार और अहिंसात्मक रक्षण द्वारा रोक सकें, तो दुनिया में एक साम्राज्य और एक सरकार बनाने की कुंजी हमें प्राप्त हो सकती है। आज विश्व के संदर्भ में अहिंसा शक्ति की खोज के लिए सारी परिस्थितियाँ अनुकूल हैं, सिर्फ जरूरत है निर्भय, वीर सिपाहियों की।

सबका आशीर्वाद

एक साथी कार्यकर्ता पूछते हैं कि सर्वोदय के काम में हम सबका सहयोग लेने की कोशिश करते हैं। पर क्या यह 'सबका आशीर्वाद' ही सर्वोदय के लिए अभिशाप नहीं बन रहा है ?

'लेकिन सबका आशीर्वाद सर्वोदय के लिए अभिशाप बन रहा है" यह विचार भी सर्वोदय की मनोवृत्ति का नहीं, पुरानी मनोवृत्ति का द्योतक है। सर्वोदय वाला को जरूर दूसरों से भिन्न नजर आना चाहिए, पर वह अपने आचरण के द्वारा, न कि काम-काज में या जीवन में अलग रहकर। हमें अलग नजर आना है, अलग रहना नहीं है। हम अगर अपने विचारों में और आचरण में पक्के हों, जैसा कि हमें होना चाहिए, तब फिर दूसरों के स्पर्श से डरने की जरूरत पैदा होती है। यह खिलना कि वह दिन आने वाला है, जब सर्वोदयवालों को इन सबके विपरीत खड़ा होना पड़ेगा, गलत है। वह दिन तो आज ही है, आगे क्या आयेगा ! सारी दुनिया का आचरण और वातावरण हमारे विचारों के प्रतिकूल है, इसलिए आज ही हमें उनसे भिन्न नजर आना है। उनके खिलाफ खड़े होने की बात गलत है। सौम्य से सौम्यतर वाली प्रक्रिया ही सर्वोदय की प्रक्रिया हो सकती है। उसे हम शिथिलता न समझें। शिथिलता में और सौम्यता में फर्क है। उत्कटता अलग चीज है और उतावलापन अलग चीज है। धारा हमारे अपने जीवन में प्रकट होनी चाहिए, दूसरों के सिर नहीं।

—सिद्धराज ढड्ढा

वर्धा जिले में नीरा और ताड़गुड़

अण्णा साहब सहस्रबुद्धे

विनोबाजी की इच्छा है कि वर्धा जिले में सर्वोदय की दृष्टि से कार्य होना चाहिए। सेवाग्राम को केन्द्र मानकर आसपास के देहातों की सर्वांगीण उन्नति करने के लिए विचार करना आवश्यक है। खेती, आरोग्य, शिक्षा और ग्रामोद्योग द्वारा ग्रामीण जीवन का विकास करने के लिए सेवाग्राम के आसपास के ३०-४० देहातों के बारे में आज हम विचार कर रहे हैं। इस क्षेत्र में शिंदी के हजारों झाड़ हैं। हाल ही में नीरा और ताड़गुड़ की दृष्टि से नया उपक्रम शुरू हुआ है। इस विषय की सामान्य जानकारी नीचे दी जाती है।

कल्पना गांधीजी की

२० वर्ष पूर्व गांधीजी सेवाग्राम आये। उस समय यहाँ के शिंदी के झाड़ देखकर उनके मन में बंगाल की तरह नीरा निकालने का विचार आया और ताड़गुड़ उद्योग को राष्ट्रीय स्वरूप देने का बीजारोपण अकस्मात् हो गया। उसी समय प्रांतों में कांग्रेस मंत्रिमंडलों की स्थापना हुई थी, जिससे बंबई, मद्रास, मध्यप्रदेश आदि प्रांतों में शराबबंदी कायदों की शुरुआत हुई। वर्धा जिला भी लगभग इसी समय निर्मद्य बन गया। झाड़ छेदन करने वालों के लिए बदली-धंधे के रूप में नीरा और ताड़गुड़ एक उत्कृष्ट साधन हो गया। इसके लिए कई प्रांतों में अनेक जगह शिक्षा केन्द्र खोले गये।

नीरा पौष्टिक पेय

परन्तु जनता के लिए नीरा एक नयी वस्तु थी। मादक ताड़ी (शिंदी) और नीरा एक ही झाड़ से निकलने के कारण आम जनता के लिए नीरा और ताड़ी का फरक समझना मुश्किल था। दबना, बुनना या चावल भरडना अथवा तेलघानी इन उद्योगों जितना सुलभ यह उद्योग नहीं था। शिंदी के झाड़ जंगल में बढ़ते हैं। झाड़-छेदन के पहले आबकारी खाते से लायसेंस की आवश्यकता होती है। जनता की गलतफहमी दूर करने के लिए जत्रा (मेले) प्रदर्शनियों आदि में नीरा रखी जाने लगी। उसके प्रत्यक्ष सेवन से लोगों को मालूम हो गया कि शुद्ध नीरा अति मधुर, आरोग्यकारक और पौष्टिक वस्तु है। सरकार की तरफ से सहूलियत प्राप्त करने की दृष्टि से ताड़ी के कायदे बदल कर धीरे-धीरे नीरा के नियम बनाये गये।

इसकी शिक्षा, व्यवस्था आदि के लिये संगठन की जरूरत थी। प्रथम सरकार की तरफ से कुछ केन्द्र खोले गये और आज सरकारी पद्धति से भारत वर्ष में हजारों जगह यह कार्य चल रहा है। ताड़गुड़ की अपेक्षा नीरा में त्रास कम और फायदा अधिक है। नीरा-बिक्री शहर में होती है। इसलिए नीरा जंगल से शहर में लाने और उसे टिकाऊ तथा दिखाऊ बनाने की ओर नीरा सेवकों का ध्यान केन्द्रित होने लगा। इससे नीरा का खूब बोलबाला हुआ। इसलिए पिछले पाँच वर्षों से एक नीरा बिक्री संघटना कायम है।

गत २०-२५ वर्षों में नीरा बिक्री अथवा ताड़गुड़ उद्योग के केन्द्र शहरों में ही स्थापित हुए। प्रथम ग्रामोद्योग संघ और बाद में खादी कमीशन की ओर से इस धंधे की शिक्षा दी गयी। शिक्षित लोगों की समितियाँ (सोसाइटियाँ) बनीं और उनके नीरा बिक्री केन्द्र शुरू हुए। देहातियों के साथ इनका संबंध प्रायः टूट गया। यह व्यवस्थापक वर्ग नीरा-बिक्री का धंधा करने लगा। खादी के उत्पत्ति केन्द्र जिस प्रकार देहातों में शुरू हुए और शहरों में बेचने का प्रयत्न किया गया, उसी प्रकार इस उद्योग में भी हुआ। सर्व सेवा संघ के चालीस गाँव प्रस्ताव के अनुसार तय हुआ कि खादी उद्योग ग्रामसभा की ओर से तथा वस्त्र स्वावलंबन की दृष्टि से चलाया जाय और गाँव की ओर से वस्त्र की बाबत ग्राम-संकल्प किया जाय। गाँव के सामुदायिक प्रयत्न से खादी-उत्पादन तथा विनियोग की व्यवस्था गाँव की तरफ से करने के लिए आज देश में अनेक स्थानों में कार्य शुरू हो गया है। सघन क्षेत्र योजनाएँ भी बनायी गयी हैं। इस नये दृष्टिकोण से नीरा और ताड़गुड़ उद्योग की ओर देखना भी आवश्यक है।

नैतिक बल आवश्यक

नीरा खट्टी होकर ताड़ी बन जाती है। इसलिए इस उद्योग को चलाने के लिए राज्य सरकार की तरफ से कई कायदे बनाये गये हैं। वृक्ष छेदन और गुड़ बनाने का एक तंत्र शुरू हो गया है। नीरा का दुरुपयोग न हो और उसकी ताड़ी न बनायी जाय, यही उद्देश्य इन सब नियमों के पीछे काम कर रहा है। अब ग्रामसभा की ओर से ही प्रत्येक कुटुम्ब को अपनी आवश्यकतानुसार शिंदी के झाड़ों का उपयोग करना चाहिए। नीरा ताजी निकाल कर प्रत्येक घर में पीनी चाहिए और उसका घर घर में गुड़ बनाना चाहिए। इस प्रकार गुड़ की बाबत गाँव की आवश्यकता पूरी की जाय। इस दृष्टि से इस उद्योग की पुनर्स्थापना करना जरूरी है और गाँव में सात्त्विक व नैतिक बल निर्माण होना आवश्यक है।

गत वर्ष श्री बापूराव कामत ने इस प्रकार का कार्य डहाणू (जि० ठाना) के पास ग्रामदानी क्षेत्र में शुरू किया। वहाँ के आदिवासियों ने नीरा को अपनाया। वहाँ आदिवासियों के लिए शिक्षा-केन्द्र की स्थापना की गयी। २५-३० लोगों को झाड़-छेदन तथा नीरा निकालने की शिक्षा दी गयी। ताजी नीरा गाँव वालों को मुफ्त पिलायी गयी। यह कार्य प्रयोग के रूप में एक छोटे से केन्द्र में हुआ। परन्तु आदिवासियों ने ताड़गुड़ बनाकर बेचने की बजाय नीरा पीने और सब गाँव वालों को जमा कर सामुदायिक तरीके से पीने के कार्यक्रम को अधिक पसंद किया। यदि नीरा का दुरुपयोग न हुआ तो गाँव गाँव में नीरा बने और रोज ताजी नीरा गाँव के लोग पीयें—इस प्रकार की नयी दिशा की ओर अगर हम इस उद्योग को ले जायें, तो बहुत संभव है कि गाँव गाँव में नीरा-केन्द्रों की स्थापना होकर आरोग्य दायक तथा शक्तिवर्धक पेय गाँववालों को उपलब्ध हो। गाँव की तरफ से सामुदायिक रीति से गुड़ भी बनाया जा सकेगा। तैयार किया हुआ गुड़ ग्राम परिवारों को बाँटने का काम भी ग्रामसभा के ही अधीन रहे। इस दृष्टि से सेवाग्राम के आसपास के शिंदी के झाड़ों का छेदन कर नीरा निकालने का काम आज श्री बापूराव कामत की मार्फत दिसंबर १९५९ से हाथ में लिया गया है।

सेवाग्राम में मुख्यतः नाले किनारे ही शिंदी के झाड़ हैं। वन (शिंदी के जंगल) के पास बस्ती रहती हो, ऐसी बात नहीं। देहातियों को नीरा व ताड़-गुड़ की शिक्षा देने के लिए उन्हीं देहातों को चुना गया, जिनके आसपास शिंदी के काफी झाड़ हैं।

सेवाग्राम क्षेत्र में पाँच केन्द्र

सेवाग्राम की पंचक्रोशी में अभी इस प्रकार के पाँच केन्द्र चुने गये हैं। प्रत्येक केन्द्र में एक पुराने बनकर (झाड़-छेदन करने वाला कार्यकर्ता) की नियुक्ति कर काम शुरू किया गया है। लायसेंस नवंबर में प्राप्त हुआ और दिसंबर अंत तक सब जगह नीरा निकालना शुरू हो गया। परन्तु किसानों के लिए यह समय हंगाम का होने की वजह से दिल में रहते हुए भी बहुत से किसान और मजदूर इस कार्य में सहभागी न हो सके। मजदूरों ने अगर इसमें संपूर्ण समय दिया, तो मजदूरी प्राप्ति का प्रारम्भिक अनुभव होने के लिए तथा जिनके लिए यह काम करना शक्य नहीं, उनको भी नीरा नियमित प्राप्त हो, इसके लिए आधा आना पौंड के हिसाब से जनवरी से नीरा बिक्री शुरू की गयी। इसके पहले सबको २-३ दिन नीरा मुफ्त पिलायी गयी। नीरा इतने कम से कम दर में बेचने का उद्देश्य यही है कि उससे ताड़गुड़ तैयार किया जाय, तो जो प्राप्ति होगी, उसी दर में यह बेची जाय। इस तरह निम्नतम आमदनी के लोगों को भी यह मिल सकती है और झाड़ छेदन करने वाले बनकर को भी रोजाना २-३ रुपये आसानी से प्राप्त हो सकते हैं। बनकर का एक अलग वर्ग न बनाया जाय, परन्तु सामान्यतः सब वर्गों के लोग नीरा शिक्षा प्राप्त कर सकें, इतनी छूट इसमें रखी जाय। फिर भी यदि गाँववालों ने बढ़ई, लोहार, तेली आदि जैसा ही बनकर को भी एक बलूतेदार के रूप में स्वीकार करने का तय किया, तो वैसी व्यवस्था भी होनी चाहिए। इसके लिए प्रयत्न चालू हैं। इस प्रकार व्यवस्थापक वर्ग न रखते हुए नीरा उत्पादक और पीने वाले इनका सीधा संबंध रहे, यही मुख्य उद्देश्य है। नीरा का दुरुपयोग न हो, इसके लिए गाँव के केन्द्रस्थान पर ही नीरा बेचने और पीने की व्यवस्था की गयी है।

आरंभ में कहा गया है कि शहर में नीरा बिक्री करने की दृष्टि से सरकार ने नीरा नियम बनाये हैं और उस पर प्रतिबंध तथा कर लगाये गये हैं। अगर नीरा सार्वत्रिक करनी है, तो ये नियम बदलने पड़ेंगे। इस वर्ष यहाँ प्राप्त होने वाले अनुभवों के बाद ही इन नियमों को बदलने की योजना सरकार के सामने रखना शक्य होगा। आज पुराने नियमों के अन्तर्गत ही हमने कार्य शुरू किया है। परन्तु यदि इस उद्योग का स्वरूप बदला, तो ये नियम भी बदलने पड़ेंगे, यह स्पष्ट है।

भविष्य में व्यापक प्रयोग

दिसंबर के अंत तक इन पाँच केन्द्रों में चार बुनकर शिक्षक का काम करते रहे हैं। १५-२० लोग अपनी अपनी सत्तूरी (शिंदी) नीरा पान के लिए अथवा बिक्री के लिए लेते हैं। विद्यार्थियों को नीरा निःशुल्क दी जाय अथवा क्या किया जाय, इसके बारे में हम विचार कर रहे हैं। जिनकी शिक्षा चालू है, वे लोग खेती के जोड़ धंधे के रूप में इसे करते रहेंगे और नीरा बिक्री गाँव के गाँव में ही रहेगी। खेती में प्राप्त होने वाली मजदूरी की अपेक्षा थोड़ी ज्यादा मजदूरी इस धंधे में कार्य करने वालों को मिलना रहेगा और पूरा गाँव सामुदायिक रीति से इस उद्योग का संगठन करेगा। इस दृष्टि से आज तक पाँच केन्द्रों में काम चालू है। ऐसे ५-१० केन्द्रों में इस तरह काम हो और फिर वर्धा जिले में व्यापक दृष्टि से काम हाथ में लिया जाय, ऐसा प्रयत्न करने का इरादा है।

परन्तु उपर्युक्त दृष्टि से इस उद्योग की रचना करनी हो, तो प्रथम गाँव का संगठन करना होगा। यदि संपूर्ण गाँव एक परिवार के रूप में काम कर सके, तो उपर्युक्त दृष्टि से इस उद्योग को चला दिया जा सकता है।

• • •

स्वावलम्बी सघन क्षेत्र, श्री गांधी आश्रम घाटेड़ा की प्रगति का प्रथम चरण

बलराम सिंह

श्री राजाराम भाई को आशा हुई कि घाटेड़ा में आस पास पूसा या अन्य सघन क्षेत्रों की भांति काम होना चाहिए और प्रगति का काम एक नये मोड़ में होना चाहिए। अतएव जरूरी हो गया कि जहाँ-जहाँ इस प्रकार का काम हो रहा है, उसकी कुछ जानकारी प्राप्त की जाये। अतएव पूसा, रैया आदि सघन क्षेत्रों की कुछ जानकारी पत्र पत्रिकाओं द्वारा मैंने प्राप्त की। इसके अतिरिक्त ११, १२, १३ जुलाई ५९ को घाटेड़ा आश्रम में हुए रचनात्मक कार्यकर्ताओं के शिविर में श्री शंकरराव देव द्वारा दिये गये प्रवचनों से पर्याप्त प्रकाश मिला।

नया मोड़ क्या है

जहाँ तक मैंने समझा है, नया मोड़ याने जीवन को नयी दिशा या जीवन की सारी शक्तियों का विकास। अब कर्म के साथ ज्ञान का भी संयोजन करना होगा। कोई भी काम ज्ञानपूर्वक करना होगा। गाँव का समग्र दृष्टि से संयोजन करना होगा। प्रचलित मूल्यों को बदलना होगा। केन्द्रीकरण की जगह विकेन्द्रीकरण करना होगा। राजनीति की जगह लोकनीति लानी होगी। हिंसा की जगह अहिंसा और घृणा की जगह करुणा को प्रश्रय देना होगा।

खादी सूर्य है, ऐसा गांधी जी मानते थे। इसलिए खादी-कार्य करते हुए, सब कामों की ओर देखना होगा। अब नये मोड़ में खादी का काम सिर्फ कपड़ा और भोजन देना ही नहीं, बल्कि सब लोगों को जीवन मान का वेतन मिले, ऐसी कोशिश करनी होगी। खादी कार्यकर्ताओं की दृष्टि इस ओर रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम ३० गज कपड़ा मिलना ही चाहिए। केवल लोगों का किसी तरह पेट भर सके, इतना ही काफी नहीं। बल्कि लोगों को बैलेन्स डायट (सन्तुलित भोजन) मिले, यह दृष्टि भी रखनी होगी। किसी की भी आय इतनी होनी ही चाहिए, जिस से परिवार का भरण-पोषण अच्छी प्रकार हो सके और बच्चों को समुचित शिक्षा मिल सके।

अब खादी कार्यकर्ता को एकांगी रहना नहीं करनी होगी, बल्कि उसे सर्वांगीण दृष्टिकोण सामने रखना होगा। अतएव नया मोड़ देने के लिए, गांवों के लिए हमने निम्नलिखित कार्यक्रम निर्धारित किया है

१ वस्त्र के मामले में गाँव पूर्ण स्वावलम्बी हो।

२ गाँव की खेती की उन्नति हो और गाँव के पास २ साल का अतिरिक्त अनाज जमा हो।

३ गोपालन को विशेष रूप से बढ़ावा दिया जाय।

४ गाँव के उद्योग धन्धों को फिर से चालू किया जाय।

५ गाँव की पूर्ण सफाई की व्यवस्था रहे। कूड़ा, कचरा, टट्टी व मल-मूत्र को खाद के रूप में प्रयोग किया जाय।

६ गाँव का अपना बीज भण्डार व दूकान हो।

अम्बर चरखे का प्रयोग

मैंने निश्चय किया कि जिस प्रकार वस्त्र-स्वावलम्बन को दृष्टि में रखते हुए, पूसा में बहुत व्यापक पैमाने पर अम्बर चरखे चलवाये गये हैं, उसी प्रकार मैं भी चलवाऊँ। इसलिए मैंने ७ अम्बर विद्यालय चलाने केन्द्र के लिए दिलाये और केन्द्र से कार्य शुरू कर दिया। एक-दो परिश्रमालय चलाने के बाद अनुभव हुआ कि परिश्रमालय ऐसी जगह चलाना चाहिए, जहाँ उस की माँग हो और कत्तिनें इस बात को स्वीकार करें कि अम्बर स्वावलम्बन के लिए ही है, उन्हें सूत के बदले में सिर्फ खादी ही मिलेगी, पैसा नहीं। जहाँ पर इस बात को कत्तिनों को समझाकर परिश्रमालय चलाया गया है, वहाँ की कत्तिनें पैसा नहीं माँगती। वे कपड़ा लेने में ही खुश रहती हैं। इसके लिए उमरी कलां (सहारनपुर) के परिश्रमालय की कत्तिनों का उदाहरण उपस्थित किया जा सकता है।

सघन क्षेत्र

मैंने अपने यहाँ सघन क्षेत्र के लिए घाटेड़ा, उमरी खुर्द, उमरी कलां, चकवाली, सढ़ौली हरिया, भौंकला, जखेड़ा, छररेड़ी और सवदलपुर कुल ९ गांवों को चुना है, जिनकी आबादी लगभग १८,००० की होगी। घाटेड़ा, जखेड़ा, सढ़ौली हरिया में अप्रैल से, छररेड़ी, उमरी खुर्द में अगस्त से और सवदलपुर में अक्तूबर ५९ से कार्यकर्ता बैठाये गये हैं।

ग्राम निर्माण समिति

काम करते हुए अनुभव हुआ कि जब तक गाँव के लोग खुद उपर्युक्त सारे कामों को नहीं चलाते हैं, तब तक नये मोड़ का उद्देश्य नहीं सिद्ध हुआ। अतएव यह निश्चय हुआ कि हर गाँव में ग्राम निर्माण समिति बने, जो उपर्युक्त काम करे और हमारा कार्यकर्ता उसका सहायक मात्र बन कर रहे। इस निर्णय के पश्चात् घाटेड़ा, उमरी खुर्द, भौंकला, छररेड़ी और सढ़ौली हरिया में ग्राम निर्माण समिति बनायी गयी।

खेती की उन्नति : खाद की समस्या

खेती की उन्नति के सम्बन्ध में ग्राम निर्माण समितियों से मिलने पर मालूम हुआ कि खेतों में खाद की कमी है, इसलिए पैदावार नहीं बढ़ रही है। अतएव हमने निश्चय किया है कि देश का जो मुख्य खाद उपले के रूप में रोटी बनाने और तम्बाकू पीने में नष्ट हो जाती है, उसे रोका जाय। अरहर और ढैंचा की खेती को प्रोत्साहन दिया जाय, ताकि ईंधन की समस्या न खड़ी हो। इसके अतिरिक्त लोगों से तम्बाकू पीना छुड़वाया जाय, जिससे गोबर और पैसे की बरबादी रुक जाय।

गोपालन की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। लोगों ने इधर ध्यान देना आरम्भ कर दिया है। जिन गाँवों में अच्छे साँड़ नहीं हैं, वहाँ अच्छी नस्ल के साँड़ मंगा कर दिये जायेंगे।

ग्रामोद्योग

उद्योग धन्धों में तेलघानी, चमड़े का काम, साँड़ सारी तथा धान-कुटाई का काम मुख्य रूप से इस क्षेत्र में चल सकता है। इस क्षेत्र के ९ तेलियों का पिछले वर्ष आश्रम में ट्रेनिंग हो चुकी है। कुछ तेलियों ने घानी लगायी भी है। पर धन के अभाव में उनका कोल्हू नहीं चल पा रहा है। तेलियों की सोसाइटी बन चुकी है। किन्तु इण्डस्ट्री डिपार्टमेन्ट द्वारा उन्हें कर्ज नहीं मिल पा रहा है। कर्ज मिलने से उनका काम चालू हो जायेगा। इन्हें तेली कुछ गांवों सावर शिरोई कर रहे हैं।

चमड़े का काम अच्छे पैमाने पर हो और फ्लेइंग सेण्टर चले, इसके लिए ग्रामसभा उमरी खुर्द ने ३॥ एकड़ भूमि आश्रम को देना स्वीकार कर लिया है। योजना यह है कि घाटेड़ा आश्रम के चारों ओर कोई न कोई ग्रामोद्योग चलाया जाय, ताकि लोगों को प्रत्यक्ष लाभ हो।

धान कुटाई उद्योग चलाने पर हाथ-कुटे चावल की बिक्री की समस्या होगी। पर उसके लिए व्यापक प्रचार करके और ग्रामोदय केन्द्रों पर स्वावलम्बी दूकान खोल कर (जिस पर सूत के बदले में सौदा दिया जायेगा) यह समस्या हल की जा सकती है। इस वर्ष घाटेड़ा आश्रम द्वारा ४० मन धान हाथ से कुटवाया गया।

बीज भण्डार

किसानों से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करने के बाद, यह तय किया है कि इस वर्ष मई ६० से ग्रामों में उनका अपना बीज भण्डार हो। उसकी योजना ३ ग्रामों में मैंने बनायी है। वह इस प्रकार है—जब खलिहान से गेहूँ उठने लगेगा, तब ग्राम निर्माण समिति हर किसान से एक-एक, दो-दो मन अनाज तीन चार साल के लिए बिना सूद के इकट्ठा करेगी। इस प्रकार शुरू में सौ डेढ़ सौ मन गल्ला इकट्ठा कर लिया जायेगा। उस गल्ले की जिम्मेदारी ग्राम निर्माण समिति की होगी। जब किसान गोदाम से गल्ला ले जाता है, तब १ मन का १। मन देता है। अगर गल्ला देने वाला ही व्यक्ति इस बीज भण्डार से गल्ला ले जायेगा, तो उससे भी १ मन का १। मन ही लिया जायेगा और उस १० सेर गल्ले में से ५ सेर उस ग्राहक के खाते में जमा हो जायेगा और ५ सेर ग्रामकोष में जमा होगा। इस प्रकार कुछ सालों में ग्राम का बीज भण्डार इतना बड़ा हो जायेगा, जो लोगों से लिये हुए गल्ले को वापस तो कर ही देगा और उसकी आय लगभग २००० रुपये से ३००० रुपये वार्षिक तक हो जायेगी। इसी पैसे से गाँव के लोगों को कर्ज दिया जायेगा। इसका एक प्रयोग रामपुर मनिहारन के पास के एक गाँव शेरपुर में किया गया है। उन्होंने ५० मन गल्ला ग्रामोदय केन्द्र द्वारा खरीद कर दिया है। इस योजना को गाँव वाले बहुत पसन्द कर रहे हैं। आशा है, हमारे सभी केन्द्रों में यह योजना शीघ्र लागू हो जायेगी।

परिवार का आय-व्यय

मेरा विचार है कि गाँवों में प्रति परिवार का अलग अलग आय व्यय विवरण तैयार कर के यदि उन्हें समझाया जाय कि वे परिवार की आमदनी बढ़ायें और अनावश्यक व्यय को कम कर दें या समाप्त कर दें, तो उन की समझ में बात आसानी से आ जाती है। इस सम्बन्ध में मैंने प्रयोग आरंभ कर दिया है। उनके तम्बाकू और शादियों के व्यय में काफी कमी की जा सकती है।

उमरी खुर्द में अब तक ग्राम निर्माण समिति ने ११ मुकदमे तय किये हैं। इन में से एक भी केस अदालत में नहीं गया। सारे केस गाँव में ही तय हुए। कुछ केस अदालत में गये थे, पर वापस मंगा लिये गये।

अभी सघन क्षेत्र में कुछ काम हुआ है, ऐसी बात तो नहीं है, पर काम करने की दिशा सूझी है। आशा है कि हमारे साथी कार्यकर्ता मार्गदर्शन देंगे।

पूर्णियां जिला सर्वोदय मण्डल का कार्य-विवरण

माह दिसम्बर, '५९ से १७ फरवरी, '६० तक

भूदान-ग्रामदान

पूर्णियां जिले में शुरू से आज तक कुल ३३११ गाँवों से २६०९३ दानपत्रों द्वारा कुल ८८०५४ एकड़ डिसमिल भूमि भूदान में प्राप्त हुई थी, जिसमें अब तक कुल ९६२ गाँवों के १४८०० आदाताओं के बीच २५१९४ एकड़ ४७ डिसमिल भूमि वितरित हुई है। इन भूदान किसानों को बैल, बीज आदि कृषि साधनों के रूप में अब तक कुल १०३९०५ रुपए की आर्थिक सहायता सरकार से दिलाई गयी है। जिले के विभिन्न स्थानों में अनेक दाताओं द्वारा तथा अन्य लोगों द्वारा भूदान किसानों को बेदखल करने का प्रयत्न हो रहा है। ऐसे बेदखल किसानों की ओर से इस अवधि में ५९ आवेदन पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से ४५ का फैसला भूदान किसानों के पक्ष में हो चुका है। भूदान सम्बन्धी उपर्युक्त कार्य जिला भूदान यज्ञ कार्यालय तथा सर्वोदय कार्यकर्ताओं के सहयोग से सम्पन्न हुआ है।

भूदान आन्दोलन ने सिर्फ भूमिहीनता और विपन्नता मिटाने का ही काम नहीं किया, अपितु जिले के हजारों घरों में प्रेम और करुणा का नव-सन्देश पहुँचाकर समाज-परिवर्तन की नयी भूमिका तैयार की और नव निर्माण के लिए हमें विशाल क्षेत्र दिया। आन्दोलन अब ग्रामदान के क्रान्तिकारी अध्याय में प्रवेश कर चुका है। पूर्णिया जिला ने भी इस क्रान्ति में हाथ बँटाया और उसके परिणाम स्वरूप अभी तक जिले के विभिन्न हिस्से में कुल २९ ग्रामदान प्राप्त हुए हैं, जिनमें से १२ गाँवों में ग्राम निर्माण का काम प्रारंभ किया जा चुका है। इन गाँवों में सम्मिलित होने वाले परिवारों की संख्या ६०३ है और कुल जमीन ५९२ एकड़ २० डिसमिल है।

ग्रामसंकल्प-ग्रामस्वावलम्बन

ग्राम-स्वराज्य की एकमात्र आधार शिला स्वावलम्बन है। इस दृष्टि से गाँवों को स्वावलम्बी बनाने के लिए खादी को आधार मानकर खादी ग्रामोद्योग विभाग, रानीपतरा ने संयोजन का कार्य किया। फलस्वरूप जिले में २८४ गाँवों ने ग्रामसंकल्प लिया, जिनमें से १७७ गाँवों में कार्य प्रारंभ किया जा सका है। स्वावलम्बन का कार्य मुख्य रूप से रुपौली, धमदाहा, बनमनखी, रानीगंज और नरपतगंज थाने में चल रहा है।

शान्तिसेना और सर्वोदयपात्र

रुपौली थाना के प्रत्येक गाँवों में घर-घर सर्वोदय-पात्र बैठाने की योजना की गयी है और कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। लगभग ५६९ पात्र बैठाये जा चुके हैं, जिसमें अब तक लगभग ३ मन अन्न संग्रह हो पाया है। बनमनखी थाना को सर्वोदय-पात्र के लिए सघन क्षेत्र बनाकर कार्य करने की योजना बनायी गयी थी तदनुसार ६ कार्यकर्ता वहाँ भेजे गये। इन कार्यकर्ताओं ने अपने लिए क्षेत्र चुनकर वहाँ इस अवधि में विचार प्रचार का ही काम किया, फिर भी उनके प्रयत्न से उन क्षेत्रों में लगभग २०९ पात्र बैठाये गये तथा उन पात्रों से एक मन चौदह सेर पाँच छटाँक अन्न भी संग्रह हुआ है।

साहित्य प्रचार

सर्वोदय साहित्य का प्रचार जिले में ठीक से हो, इस दृष्टि से जिला सर्वोदय मण्डल ने एक स्थाई पुस्तक "स्टाल" खोलकर कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इस अवधि में रुपये ६३८।१९ नये पैसे की साहित्य बिक्री हुई है।

पदयात्राएँ

पूर्णिया जिला सर्वोदय मण्डल के द्वारा देश के नव-निर्माण के लिए एक अखण्ड पदयात्रा टोली का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। भूदान, ग्रामदान, शान्तिसेना, सर्वोदय-पात्र, जो ग्रामस्वराज्य की नींव है, के पावन विचारों को जिले के कोने कोने में पहुँचाने के लिए टोली नित्य नये नये गाँवों में पहुँचकर नम्रता पूर्वक अपने संगीत एवं सर्वोदय साहित्य के द्वारा जन जन में पहुँचाने का काम कर रही है।

इस अवधि में पूर्णिया जिला सर्वोदय पदयात्रा टोली ने जिले के विभिन्न अंचलों में कुल ८०६ मीलों की पदयात्रा द्वारा १३५ पड़ावों पर पहुँचकर १३९ आम सभाओं के द्वारा २६,००० लोगों को गांधी और विनोबा का पावन विचार सुनाया तथा ५३ भूदान यज्ञ १७ भूदान तहरीक, १ भूदान यज्ञ अंग्रेजी और ४९ सर्वोदय संवाद के वार्षिक ग्राहक बनाये। ६२५ घरों में विश्वशांति के लिए सर्वोदयपात्र की स्थापना तथा सवा पाँच सौ रुपए का सर्वोदय साहित्य का प्रचार तथा सवा तीन सौ रुपए की खादी एवं ग्रामोद्योगी वस्तुओं की बिक्री की। सुदूर देहातों में सर्वोदय के सर्वांगीण विकास के लिए १६ गाँवों में मित्र मण्डल की स्थापना की गयी।

इस अवधि में ग्रामलक्ष्मी गाड़ी टोली के साथ न रहने के कारण खादी बिक्री का आँकड़ा बहुत कम है।

इस टोली के व्यवस्थापक श्री अनिरुद्ध प्रसाद सिंह जी अपने १२ साथियों के साथ पदयात्रा कर रहे हैं।

श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, सुभाष चन्द्र साह, श्री विन्देश्वर प्रसाद सिंह, बिन्दु, श्री महावीर झा, श्री नन्दकिशोर महाराज, श्री श्रीकृष्ण झा, महादेव प्रसाद गुप्ताजी ने पदयात्रा में शरीक होकर टोली के कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान किया है।

—नारायण प्रसाद मंडल

दिल दहलाने वाली यह दर्दनाक घटना !

प्रधान मंत्री नेहरू जी ने कांग्रेस अधिवेशन के लिए निर्मित सदाशिवनगर में १६ जनवरी को विद्यार्थियों की सभा में कहा कि बंगलोर में जब मैंने एक ओर हरिजन बस्तियों की गरीबी और दूसरी ओर सुंदर महल, सुंदर संस्थाओं और फैक्टरियों का दिल दहला देनेवाला अंतर देखा, तो मैं बिल्कुल ही सन्न रह गया। मुझे आश्चर्य है कि यह चीजें इन नगरनिवासियों एवं निगम अधिकारियों को क्यों नहीं चुभती हैं।

ठीक इसी दिन भारत की राजधानी दिल्ली में ही कुतुबरोड के समीप बावरियों की गरीब बस्ती में ऐसी ही दिल दहला देने वाली दर्दनाक घटना घटी! कुतुबरोड के समीप रेलवे लाइन पर स्थित बावरियों की १५० झोपड़ियों को पुलिस और रेलवे अधिकारियों ने रात को छापा मारकर तहस-नहस कर दिया। शीत की भयंकर रात को कितना कठिन कारुणिक और हृदय विदारक यह काम हुआ।

बेचारे गरीब और निःसहाय बावरी स्त्री-बच्चे समेत रात भर बिना किसी छाया के, छत्रछाया रहित निरीह जीव-सा ठिठुरते, काँपते, कराहते बरोते रहे, पर उनकी इस दर्दनाक स्थिति पर, बेज़ार बहते आँसू तक पर भी अधिकारियों ने तनिक खयाल नहीं किया। उनके घर में भी बूढ़े होंगे, बीबा, बच्चे होंगे, पर करुणा, विवेक, समवेदना और दया या उदारता, मनुष्यता अथवा मानवता नाम की चीज, धर्म तथा नैतिकता जैसा गुण उनके हृदय से बिल्कुल ही खाली हो गया। स्वतंत्र और आदर्श भारतीय नागरिकों के लिए ऐसा न्यायसंगत है क्या!

झोपड़ियों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया, उनके यत्किंचित् सामान को रेलवे लाइनों में फेंक दिया गया और गरीबी से जर्जरित, दरिद्रता की पराकाष्ठा उन झोपड़ियों में आग लगा दी गयी। सबेरा होने पर सरकारी अधिकारी तथा नगर निगम के एक सदस्य के समक्ष उन बावरियों ने रो रोकर अपनी दुःख-गाथा सुनायी, बच्चे, बूढ़े, स्त्री सभी रो रहे थे और सर्दी से ठिठुर, सारे दिन के भूखे बैठे रहे थे। उसी रात शीत की भयंकर सर्दी ने दो मासूम बच्चों को मरघट में काल-गर्त भेज दिया और उनकी माताओं की गोद सूनी करके सदा के लिए उन्हें मायूस बनने को बाध्य किया, ६ प्रसूताएँ बीमार हो गयीं। समाजवादी-समाज-रचना के युग की यह दिल दहलाने वाली दर्दनाक घटना, कैसी बीभत्स, कितना अत्याचार, विचारहीन और अविवेकपूर्ण है, क्या क्रूर भी!

वास्तव में ये बावरी गुजरात एवं सौराष्ट्र के मूल निवासी हैं। गरीबी एवं बेकारी से बेहाल यह बावरी समाज भटकता हुआ दिल्ली पहुँचा और दाइन, किराना थी, तथा पुराने कपड़े बेचकर अपना जीवन निर्वाह करने लगा। फिर सुविधा या असुविधा के कारण कुतुब के पास एवं दिल्ली के आसपास कई ऐसे स्थानों में इसी तरह अस्थायी रूप से बस गया। दिल्ली में इनकी संख्या ४ हजार है और जो प्रायः गंदी बस्तियों में ही रहते हैं। इनका एक वर्ग गायक भी है, जो राजघाट एवं अन्य उत्सवों पर भजन आदि गाता है। पहले ये जरायम पेशा थे। किंतु इन्हें संगठित करने, एक सूत्र में बाँधने आदि का काम श्री ईश्वर प्रसाद वर्मा जैसे कर्मठ कार्यकर्ता ने अवश्य किया है, किंतु अभाव एवं समस्याओं के युग-समूह उनके जीवन में आज भी अभाव और समस्याओं का यह समुंदर बना हुआ ही है। और भारत भी तो ऐसे गरीब समाजों का समुंदर है न।

प्रधान मंत्री नेहरू जी ने १ अप्रै १९५५ ई० को इनकी बस्तियों में इनकी दयनीय स्थिति का परिदर्शन तथा निरीक्षण किया था। लोकसभा के अध्यक्ष भी ३-४ बार इन गंदी बस्तियों में पधारे हैं। अब ये नागरिक नियम कानून के अन्तर्गत रहते और काम करते हैं। समस्त बावरी समाज को संगठित करने के लिए अखिल भारतीय स्तर से इनका संगठन भी किया गया है, जिसके प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर जी ने १९५६ में किया था। घोड़ेवाला में बावरी विद्यार्थियों का छात्रावास बनाने के लिए भारत सरकार ने २५ हजार रुपया अनुदान भी दिया है। प्रधान मंत्री, ढेबर भाई एवं अन्य नेताओं ने इनके आवास की व्यवस्था का आश्वासन कई बार दिलाया, फिर भी आज इनकी यह स्थिति है और इनके लिए यह दर्दनाक हृदयविदारक हुआ है। न इन्हें स्थान मिला, न इन्हें घरबार में बसाया गया। फिर इनका क्या दोष? इसके विपरीत इन्हें वहाँ से हटाने का बार बार प्रयास किया गया और फिर दिल को दहलाने वाली यह दर्दनाक घटना भी घटी। किन्तु बापू के आदर्श 'रामराज्य' की स्थापना के युग में या समाजवादी-समाज रचना के इस सर्वोदय निष्ठ युग में ऐसी दुर्दैव और दिल दहलानेवाली यह दर्दनाक घटना शोभनीय एवं न्यायपूर्ण है क्या!

—गोपाल कृष्ण मल्लिक

पार्टी या परिवार

प्रश्न :

हम कहते हैं कि पार्टियाँ टूटनी चाहिए। तो सब पार्टियों को तोड़ कर कौनसी पार्टी बने, जो निविवाद हो?

उत्तर :

सब पार्टियों को तोड़ कर पार्टी नहीं 'परिवार' बनेगा।

—विनोबा

सर्व सेवा संघ का अधिवेशन

ता० २० मार्च से २५ मार्च, १९६०

सर्व सेवा संघ का नया विधान स्वीकार होकर उसके अन्तर्गत संघ का नव गठन हुआ। उसके पहले से भी यह विचार चलता रहा है कि सर्व सेवा संघ की जो मीटिंग हो, वह एक अधिवेशन के रूप में बैठे। इसका अभिप्राय यह कि संघ के अन्तर्गत जो प्रवृत्तियाँ, आन्दोलन, कार्यक्रम चल रहे हैं तथा संघ अपने उद्देश्य के अनुसार समय समय पर जो रीति नीति निर्धारित करता और विचार-विमर्श का कार्यक्रम वगैरह सम्बधी निर्णय लेता है, उसके संदर्भ में कार्य कितना क्या आगे बढ़ रहा है, इस सबके बारे में अच्छी तरह चर्चा हो सके, इतना समय भर अपने हर अधिवेशन में लगाये। कल्पना यह है कि इस दृष्टि से संघ के कम से-कम दो अधिवेशन वर्ष में हों और आवश्यकता हो, तो एक-एक अधिवेशन सप्ताह, दो सप्ताह तक के लिए बैठे। विभिन्न क्षेत्रों में संघ के संघ के अन्तर्गत, उसकी विभिन्न समितियों के अन्तर्गत या उनके मार्गदर्शन में, प्राथमिक सर्वोदय मंडल व जिला, प्रदेश आदि इकाइयों द्वारा, जो कार्य चल रहे हों, या जो कार्यक्रम योजना आदि मंजूर कराके कार्यान्वित किये जानेवाले हों, उनका गहराई से सिंहावलोकन किया जावे। उन पर पूरी चर्चा हो और उसके भावी स्वरूप वगैरह के बारे में चर्चा के फलस्वरूप दिशा दर्शन मिले। निधि-मुक्ति के संदर्भ में संघ का जो स्वरूप बना है और उसके कार्य की जो पद्धति हो सकती है या होनी चाहिए, उसमें इस प्रकार के गहरे, व्यापक और अमकर (?) किये गये विचार विमर्श की आज अधिक आवश्यकता है।

वस्तुतः संघ की उपयोगिता इस प्रकार के सह चिंतन और कार्यक्रम सम्बधी इस प्रकार विचार विमर्श तथा संयोजन में ही है।

संघ का अधिवेशन इस अर्थ में सफल तब हो सकेगा, जबकि संघ के सब सदस्यों का, संगठन इकाइयों का और विभिन्न समितियों व कार्यकर्ताओं का इस विचार विमर्श और सह चिन्तन में पूरा योग मिले। विभिन्न मुख्य-मुख्य प्रवृत्तियों और कार्यक्रम सम्बधी चर्चा के लिए यथा सम्भव एक पूरी बैठक का समय अलग-अलग देने का सोचा गया है। अमुक अमुक प्रवृत्ति या कार्यक्रम से सम्बंधित समिति या उसके कार्यकर्ता से अपेक्षा है कि अपने कार्य के बारे में न सिर्फ आज तक की जानकारी व प्रगति की रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे, बल्कि जन सहयोग, साधन उपलब्धि वगैरह की दृष्टि से कैसी क्या अनुकूलता प्रतिकूलता रही, परिस्थितियों के संदर्भ में कार्य का भावी स्वरूप क्या हो सकता है या होना चाहिए, इत्यादि की सम्भावना और कल्पना भी चर्चा को आगे बढ़ाने की दृष्टि से उनके द्वारा रखी जायेगी। इसमें सम्बन्धित समितियों के अलावा क्षेत्र क्षेत्र के कार्यकर्ताओं और वहाँ की प्राथमिक, जिला, प्रदेश आदि संगठन इकाइयों को भी सक्रिय होना होगा। सदस्य अपने क्षेत्र का इस सब विषयक जानकारी व तैयारी बनायेंगे और उस आधार पर जिज्ञासा, आलोचना व चर्चा होगी, तो अधिवेशन के फलस्वरूप एक स्पष्ट मार्गदर्शन मिलेगा और सम्मेलन को सफल करने में सर्व सेवा संघ और संघ सदस्यों का बहुत बड़ा भाग होगा।

रविवार २० मार्च

अध्यक्ष का वक्तव्य और पिछली कार्रवाइयाँ

सोमवार, २१ मार्च

सुबह

सम्मिलन (?)

— वर्ष के कार्य की जानकारी, स्थिति, आगे की दिशा
— संगठन, प्रतिष्ठा, योगक्षेम
— सीमावर्ती क्षेत्रों में तथा विशेष अवसरों पर कार्य
— कार्यक्रम व बजट — विषय प्रवेश—श्री आशादेवी

दोपहर

नया कार्यक्रम

— शान्ति-सेना का कार्य
— शान्ति-सेना व सर्व सेवा संघ का संबंध
— संगठन कार्य व बजट — विषय प्रवेश—श्री धीरेन्द्र मजूमदार

मंगलवार, २२ मार्च

सुबह

नये आन्दोलन कार्य व प्रयोग कार्य

— नया मोड़
— सारे आन्दोलन सम्बन्धी जानकारी [illegible]
— प्रयोग कार्यक्रम
— आगे का कार्यक्रम व बजट — विषय प्रवेश—श्री [illegible]
श्री कृष्णदास गांधी

दोपहर

निर्माण

— कोरापुट, अलमोड़ा (?), बाठलागुंडु आदि का कार्यक्रम
— सामुदायिक विकास मंडल, खादी ग्रामोद्योग आयोग आदि का सहयोग
— आगे का कार्यक्रम व बजट — विषय प्रवेश—श्री रा० कृ० पाटील

बुधवार २३ मार्च

सुबह

भारतीय राज्य-व्यवस्था की पुनर्रचना

— लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण
— आगामी चुनाव
— कार्यक्रम व बजट — विषय प्रवेश—श्री जयप्रकाश नारायण

दोपहर

(क) विचार–प्रचार व प्रकाशन

— साहित्य
— भूदान पत्र पत्रिकायें
— कार्यक्रम व बजट — विषय प्रवेश—श्री राधाकृष्ण बजाज

(ख) कृषि गो सेवा कार्य

— कार्यक्रम व बजट — विषय प्रवेश—श्री ढेबर भाई

२४ और २५ मार्च

सुबह

संगठन

— लोकसेवक व प्राथमिक सर्वोदय-मंडल
— जिला व प्रादेशिक इकाइयाँ
— समग्र चर्चा के बाद प्रदेशवार रिपोर्ट

विषय प्रवेश—श्री पूर्णचन्द्र जैन

दोपहर

आगामी कार्यक्रम — विषय प्रवेश—श्री नारायण देसाई, श्री निर्मला देशपांडे

—पूर्णचन्द्र जैन
मंत्री

अहमद नगर में भूदान-आन्दोलन

भूदान-यज्ञ आन्दोलन की शुरुआत के बाद सन् १९५२ में श्री भाऊसाहेब फिरोदिया तथा अन्य सदस्यों ने कांग्रेस की बैठक में अपनी जमीन भूदान में देने का संकल्प जाहिर किया। श्री शंकर रावजी दिघोलकर ने जिले में पदयात्रा द्वारा प्रचार-कार्य किया। श्री दादा धर्माधिकारी की अध्यक्षता में श्री रामपुर में पहला भूदान सम्मेलन हुआ। दादा ने भाऊ साहब धर्माधिकारी तथा भाऊसाहब फिरोदिया के साथ कुछ स्थानों पर जाकर प्रचार किया। जिला कांग्रेस के अध्यक्ष श्री सहजानन्द भारती ने दौरा कर दान प्राप्त किया। महाराष्ट्र प्रान्त के अध्यक्ष श्री देवकीनन्दन और श्री कृष्णदास जी जाजू ने दौरा किया। १९५५ में राष्ट्र सेवा दल की तरफ से जिले में पदयात्रा हुई और श्री बाबूभाई मेहता ने भी पदयात्रा की। इन दोनों में श्री केळकर गुरुजी और श्री अंबूरे साथ रहे। इस प्रयत्न के फलस्वरूप ८०० एकड़ का भूदान प्राप्त हुआ। उसमें से ३३९,२९ एकड़ का वितरण हुआ। अब वितरण योग्य जमीन ८८,३७ एकड़ है। १३२,१३ एकड़ ऐसी जमीन है, जिसे दाताओं ने देने से इनकार कर दिया तथा दान देने के बाद बेची गयी जमीन १३५,३८ एकड़ है। बाकी जमीन या तो बाँटने योग्य नहीं है या उसमें झगड़ा है।

सम्पत्तिदान के कार्य में विशेष योग श्री मानिकचंद दोशी का रहा। शिविर लिये गये, प्रचारक तैयार किये गये। इन प्रयत्नों से रुपये ८०१७=३१ नये पैसे का सम्पत्तिदान मिला।

पू० विनोबा भावे की पदयात्रा के लिए भूदान समिति की तरफ से चंदा इकट्ठा किया गया। पदयात्रा में श्री रावसाहब पटवर्धन, भाऊसाहब फिरोदिया, वकील अण्णा पाटणकर, शंकरराव दिघोळकर, पूनमचंद भंडारी, प्रेमसुखजी झंवर आदि थे। इस समय सर्वोदय पात्र का भी प्रचार किया गया। अहमद नगर शहर में सर्वोदय-पात्र चालू है।

श्री केळकर गुरुजी जिला निवेदक नियुक्त किये गये। कुछ समय तक उन्होंने कार्य किया। परन्तु करीब डेढ़ साल से वे शांत हो गये हैं। यह सब कार्य भूदान-समिति ने तीन-चार कार्यकर्ताओं के जरिये किया।

विदेशों में शांति-कार्य

वर्ष के आरंभ में एक घटना इंग्लैण्ड में हेरिंगटन नामक स्थान पर घटी। राथवेल से ८३ व्यक्तियों की एक टोली थार क्षेप्यास्त्र अड्डे की ओर सविनय अवज्ञा करती हुई आगे बढ़ी, जो पारमाणविक अस्त्रों के निर्माण के विरोध में थी। आगे चल कर इस भीड़ में करीब ५०० व्यक्ति और मिल गये तथा उनके पीछे मोटरों का एक लम्बा काफिला चल पड़ा।

इसका आयोजन 'डाइरेक्ट ऐक्शन कमेटी' के द्वारा हुआ था, जिसका एकमात्र उद्देश्य पारमाणविक युद्ध का विरोध करना है। यह उस अभियान का परिचायक है, जो बड़ी ही तेजी से इंग्लैण्ड में चल रहा है, वह सेना को पारमाणविक अस्त्रों से मुक्त रखने का अभियान है।

पारमाणविक अस्त्रों की विभीषिका की संभावना रहते हुए प्रजातंत्र के साथ किसी भी तरह का समझौता नहीं हो सकता, भले ही उस प्रजातंत्र के अधिकांश लोग पारमाणविक अस्त्रों के निर्माण का समर्थन करते हों। विरोध न कर चुपचाप बैठे रहना हमारे सामने वही स्थिति ला सकता है, कंसेन्ट्रेशन कैम्प के विरोध करने पर जर्मनी को जिसका सामना करना पड़ा था। डाइरेक्ट ऐक्शन कमेटी को ऐसा लगा कि सिर्फ सभाएँ, प्रदर्शन आदि करना और पारमाणविक युद्ध के विरोध में प्रचार करना ही काफी नहीं। उन्हें कुछ ऐसा ठोस कदम उठाना चाहिए, जिससे उनके प्रत्यक्ष व्यवहारों को वे अधिकारी नोट कर सकें, जो पारमाणविक युद्ध के पक्ष में हैं। अतः उन्होंने निश्चय किया कि वे क्षेप्यास्त्र के अड्डे की ओर जायेंगे, सरकारी घेरे को पार कर अड्डे तक पहुँचेंगे। ये सभी कार्य अहिंसात्मक ढंग से करने का निश्चय हुआ। प्रदर्शन में चलने वाले लोगों की भीड़ भी कम करने का प्रयत्न किया गया, ताकि वे सरकारी तैनात व्यक्तियों के कार्यों का प्रतीकार घृणा और द्वेष से न कर सकें। सहानुभूति में आये व्यक्तियों से भी प्रार्थना की गयी कि वे शांतिमय ढंग *अपनायें और नियुक्त पुलिस या अन्य अधिकारियों को* अपशब्द न कहें।

जब इस कमेटी के कारनामों का पता सरकार को चला, तो उसने कमेटी के छहों सदस्यों को प्रदर्शन के पूर्व ही गिरफ्तार कर लिया। उनके खिलाफ मुकदमा चला और उन्हें गत १५ दिसम्बर को दो माह के सख्त कारावास का दण्ड दिया। इस कमेटी के छह सदस्य, जिनमें तीन पुरुष और तीन महिलाएँ हैं, *अभी तक दण्ड भुगत रहे हैं।*

वास्तविक प्रदर्शन २ जनवरी को हुआ। राथवेल की ओर कुछ घण्टे निरंतर चल लेने के पश्चात् जब सत्याग्रही अड्डे के पास पहुँचे, तो वे पुलिस द्वारा रोक लिये गये। उन्हें चेतावनी दी गयी कि उन्हें 'एयर मिनिस्ट्री' के सामानों को पार कर आगे बढ़ने नहीं दिया जायेगा। प्रदर्शनकारियों के नेता दो मिनट तक शान्त रहे। फिर 'डाइरेक्ट ऐक्शन कमेटी' के निर्णयों का *स्मरण कर आगे बढ़े।* एक तरफ कुछ सत्याग्रही 'एयर मिनिस्ट्री' का सामान बाँधने लगे, तो दूसरी ओर कुछ सत्याग्रही डाइरेक्ट ऐक्शन कमेटी के निर्णयों के पोस्टर हाथ में लिये खड़े थे। पारमाणविक निरस्त्रीकरण के इस प्रदर्शन ने यह तो स्पष्ट कर ही दिया है कि हालाँकि वे 'डाइरेक्ट ऐक्शन' नहीं चाहते, फिर भी उनकी श्रद्धा और सहानुभूति उन लोगों के प्रति है, जो इस तरह के कार्यों में योग दे रहे हैं। इसकी सहानुभूति में *बिना अलग* अधिनियम तोड़े 'कैम्पेन फार न्यूक्लियर डिसआर्मामेण्ट' के लोगों ने भी ऐसा ही जुलूस क्षेप्यास्त्र के अड्डे तक निकाला था। इसमें करीब करीब २५० व्यक्ति शामिल थे। पीछे-पीछे मोटरों का काफिला भी चल रहा था। अड्डे के सामने पहुँचते-पहुँचते उन्होंने झंडे झुका दिये और वे शान्तिपूर्वक अड्डे की ओर बढ़े। सारा का सारा कार्य उस समय सुनियोजित, शान्तिमय *और व्यवस्थित था। कुछ देर बाद ये प्रदर्शनकारी* गिरफ्तार कर लिये गये। उन पर ट्राफिक और पुलिस के कार्यों में व्यवधान पहुँचाने का आरोप लगा कर कैद कर लिया गया।

डाइरेक्ट ऐक्शन कमेटी द्वारा संचालित प्रदर्शनों में यह प्रदर्शन दूसरा था। गत वर्ष क्षेप्यास्त्र अड्डे तक जाने वाले मार्ग को रोकने के अभियोग में ४६ व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। इस वर्ष इन प्रदर्शनकारियों की संख्या दूनी हो गयी और सहानुभूति रखने वालों की भी संख्या उसी अनुपात में बढ़ी।

• •

पूजा गीत

धन्य धन्य हो बापु!

धन्य धन्य हो गांधी बापू धन्य तेरी कुरबानी।
भूल नहीं सकती है दुनिया, तेरी अमर कहानी॥
तू अँधियारे भारत में उजियाला लेकर आया।
घर घर जाकर तूने आज़ादी का दिया जलाया॥
तुझ से ही तो हमने अपनी कीमत है पहचानी।
जलती आग में कूदके तूने फूट की आग बुझायी॥
अपनी जान गँवाकर लाखों की है जान बचायी।
आखिर सत्य की जीत हुई, और हार झूठ ने मानी॥
अमर रहेगा, अमर रहेगा मौत से जो लड़ता है।
आज़ादी के नाम पर मरने वाला कब मरता है॥
जब तक दुनिया है गूँजेगी तेरी अमृत बानी।

—प्रेमधवन

अखिल भारत सर्व सेवा संघ का परिपत्र

सदस्यों, लोकसेवकों की सेवा में

प्रिय बन्धु,

आगामी सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर अखिल भारत सर्व सेवा संघ की बैठक ता० २० मार्च १९६० से सेवाग्राम में आरंभ होगी। सर्वोदय सम्मेलन २६ से २८ मार्च तक सेवाग्राम में हो रहा है। संघ बैठक के विस्तृत कार्यक्रम की जानकारी आपकी सेवा में भेजी जा चुकी है। यह अपेक्षा है कि इस बार सम्मेलन में अधिक-से-अधिक लोग पदयात्रा द्वारा पहुँचें। आपका इस प्रकार का कार्यक्रम हो, तब भी आप *संघ की बैठक में आरम्भ से ही सम्मिलित हो सकें,* इसका ध्यान रखने के लिए आपसे विशेष रूप से निवेदन है। इस बार पिछले एक दो सम्मेलनों की भाँति विभिन्न विषयों व कार्यक्रम वगैरह पर चर्चा करने के लिए सम्मेलन से तुरन्त पूर्व चार छह दिन की अलग 'सेमीनार' या विचार-गोष्ठी नहीं हो रही है। सर्व सेवा संघ की बैठक में ही मुख्यतः आन्दोलन की स्थिति, आगे के कार्यक्रम व अन्य विषयों पर विस्तृत चर्चा करनी और निर्णय लेने हैं। इस दृष्टि से भी संघ की बैठक में अधिक-से-अधिक सदस्यों, अर्थात् लोकसेवकों का शामिल होना और सक्रिय भाग लेना बहुत आवश्यक है।

प्रबंध समिति की सभा ता० १९ मार्च को ही आरंभ हो जायेगी।

—पूर्णचन्द्र जैन, मंत्री

•

पदयात्रा के समाचार

सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री ह. उ. पाटणकर ने करज गाँव से पदयात्रा प्रारंभ की है। श्री पाटणकर के साथ उनकी पत्नी के अलावा १ कार्यकर्ता तथा ५ बच्चे भी हैं। वे १८ मार्च को सेवाग्राम पहुँचेंगे।

आंध्र :

आन्ध्र प्रदेश के विभिन्न जिलों से बारह सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने ता० ५ मार्च, '६० से सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर सेवाग्राम पहुँचने के लिए पदयात्रा आरम्भ की है। ता० १५ मार्च को यह टोली मंचिरियाल पहुँचेगी। चूँकि समय कम है, यह टोली मंचिरियाल से चांदा ट्रेन द्वारा आयेगी। वहाँ ता० १६ को फिर पदयात्रा शुरू होगी और २५ ता० को सेवाग्राम पहुँचेगी।

बिहार :

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले से दो भाइयों ने सर्वोदय-सम्मेलन, सेवाग्राम में शरीक होने के लिए ता० २ मार्च से पदयात्रा आरम्भ कर दी है। ता० १५ मार्च से फिर करीब १६ व्यक्ति पदयात्रा पर निकलेंगे।

पूर्णिया जिले से एक अलग पदयात्रा टोली सर्वोदय सम्मेलन, सेवाग्राम के लिए निकली है। ता० ११ मार्च से १३ मार्च तक इस टोली में सर्वोदय-आश्रम, रानीपतरा के अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी गढ़मर, दिलदारनगर और गाजीपुर पड़ावों पर भाग लेंगे।

उत्तर प्रदेश :

कानपुर जिले के लोकसेवकों का एक जत्था, जिसमें श्री सुरेन्द्र घोष, जमुनाप्रसाद, श्यामसुन्दर पाण्डेय सम्मिलित हैं, ता० २१ फरवरी को प्रातःकाल बाबूपुरवा के शहीद पार्क से रवाना हुआ। सैकड़ों नागरिकों ने पूर्ण उत्साह से पदयात्री दल को विदाई दी।

• •

फैजाबाद में खादी-ग्रामोद्योग प्रदर्शनी

श्री गांधी आश्रम द्वारा फैजाबाद नगर में सुन्दर और शिक्षाप्रद खादी तथा ग्रामोद्योग प्रदर्शनी की गयी। प्रदर्शनी में १० हजार रु० की बिक्री हुई, जिसमें ७ हजार रु० की खादी बिक्री भी शामिल है। इस प्रदर्शनी में श्री गांधी आश्रम, ग्राम-स्वावलम्बन संस्थाओं, सघन क्षेत्र, सहकारी समिति तथा राज्य के उद्योग एवं नियोजन विभागों ने हिस्सा लिया। श्री धीरेन्द्र भाई ने प्रदर्शनी के कार्यकर्ताओं के बीच प्रवचन देते हुए खादी ग्रामोद्योगों को वर्तमान आर्थिक परिस्थिति के अनुकूल चलाने और ग्राम स्वावलम्बन तथा अधिक से अधिक विकेन्द्रीकरण की नीति को अपनाने की सलाह दी।

●

सर्वोदय-पात्र सौम्यतम सत्याग्रह ही है

कई कार्यकर्ता कहते हैं कि सर्वोदय पात्र के काम का अनुभव उत्साहवर्धक नहीं है। मैं कहता हूँ कि फिर भी वह बुद्धिवर्धक है। आचार्य शंकर ने कहा था कि मेरा सब कुछ भले ही चला जाय, लेकिन बुद्धि न चली जाय। हम कभी दबाव डाल लोगों के पास जाते हैं और उनसे यह अपेक्षा करते हैं कि वे सर्वोदय-पात्र में रोज अनाज डालते रहें, तो यह कैसे सम्भव होगा? मैं मानता हूँ कि सर्वोदय पात्र का कार्यक्रम सौम्यतम सत्याग्रह का एक प्रकार है।—विनोबा

•

साथियों की ओर से

तारीख २६ फरवरी के 'भूदान-यज्ञ' में "सम्मेलन के लिए कुछ विचारणीय मुद्दे" सुझाव के रूप में पेश किये गये थे। उस संबंध में एक भाई लिखते हैं:

"सक्रिय कार्य के बिना कोरा विचार-प्रचार लोगों पर असर नहीं करता। हमारा असली जीवन ही वह सक्रिय कार्य हो सकता है और असली विचार-प्रचार भी। हमारा जीवन जितना शुद्ध होगा, उतना ही हम अहिंसक क्रांति में सहायक हो सकेंगे, उतनी ही जनता को प्रेरणा मिलेगी।

"दूसरी बात प्रतीकारात्मक कार्यक्रम है। बुराइयों का प्रतीकार किये बिना रहना दूर रहेगी। प्रतीकार के कई तरीके हो सकते हैं। बापूजी ने हमें 'सत्याग्रह' का सीधा मार्ग बतलाया था। 'सत्याग्रह' देशी सरकार के खिलाफ नहीं होना चाहिए, ऐसा विचार चलता है। परन्तु जहाँ तक मैं समझा हूँ, 'सत्याग्रह' अपनों के खिलाफ तो पहले होना चाहिए। अपनी सरकार की गलत नीति को बदलवाने के लिए विनम्र सत्याग्रह करना अपनी सरकार से सहयोग करना ही है। दादा धर्माधिकारीजी के शब्दों में "सत्याग्रह ही एकमात्र विश्वव्यापी वैज्ञानिक व्यवहार नीति है।" इसकी अवहेलना से समाज का विकास रुक जायेगा। इस "सत्याग्रही" प्रतीकार को हमने अहिंसक क्रान्ति के लिए क्यों नहीं अपनाया, इसका विचार करना चाहिए। कार्यकर्ता आज विनोबाजी के पुरुषार्थ से खड़े हैं। पर मन से वे ऐसा कोई कार्यक्रम चाहते हैं, जिससे लोकमन जाग्रत और आकर्षित हो।"

ग्राम-गमठाली, [जालंधर] —दयाराम

गांधी पट्ट

यह उस गांधी पट्ट की रेखानुकृति है, जो कानपुर शहर के अंबर उद्योग मंदिर की विचार क्रांति योजना के अंतर्गत शहर के प्रमुख प्रमुख स्थानों में लगाये जायेंगे। गांधीजी का चित्र और "बापू ने कहा था" शीर्षक नियमित रहेगा तथा प्रतिदिन नीचे का वाक्य बदल दिया जायेगा। फिलहाल शहर के प्रमुख ११ स्थानों पर इस तरह का गांधी पट्ट लगाने की योजना है।

संघ और उसकी विभिन्न समितियों, उपसमितियों में परस्पर संपर्क

१–संघ के स्वरूप का जैसे-जैसे विकास हो रहा है, उससे स्पष्ट है कि संघ का सारा कार्य व्यवहार शुष्क तंत्र, संघारण और औपचारिकता पर आधारित न होकर उसके सदस्यों और उसकी समितियों, उपसमितियों वगैरह के परस्पर जीवित संपर्क व सहयोग पर आधारित होना चाहिए। विधान व नियमों के सूत्र से अधिक सौहार्द, एक दूसरे के विचारों के प्रति आदर और उन्हें समझने व स्थान देने (Accomodáte) करने की वृत्ति और इस प्रकार सर्व सम्मति या सर्वानुमति से काम किये जाने की भावना संघ के गठन तथा उसके कार्य का मुख्य आधार है। इसी संदर्भ में संघ और उसकी समितियों, उपसमितियों के परस्पर संबंध की भी परंपरा पड़नी और उसका विकास होना चाहिए।

२–इसके लिए संघ के सदस्यों तथा उसकी विभिन्न समितियों, उपसमितियों के सदस्यों में परस्पर निकटता बढ़नी चाहिए और उनके आपस में मिलने के आवश्यकतानुसार अवसर आते रहने चाहिए। इस दृष्टि से निम्न कुछ सुझाव कार्यान्वित किये जाने उपयुक्त होंगे:

(क) संघ का छह माह में कम-से कम एक अधिवेशन होना अपेक्षित है। हर छमाही अधिवेशन के लिए आवश्यक अवधि से पूर्व, विभिन्न उपसमितियों के कार्य का प्रगति विवरण प्राप्त किया जाये और संघ के सदस्यों को परिपत्रित कर दिया जाये, ताकि सदस्यगण समितियों के काम से परिचित हो जायें तथा संघ की बैठक में विभिन्न कार्यक्रमों के विषय में एक जीवित विचार विमर्श हो सके।

(ख) संघ के अधिवेशन में विभिन्न समितियों के पदाधिकारी या प्रमुख कार्यकर्ता स्थाई विशेष आमंत्रित हों। यह कार्यकर्ता समिति के कार्य से संबंधित पर्याप्त जानकारी, रेकार्ड वगैरह भी बैठक में साथ लायें, ताकि संघ में विशेष कोई जानकारी चाही जाये, तो वह दी जा सके

(ग) संघ का अधिवेशन सप्ताह दो सप्ताह जमकर बैठने की दृष्टि से हो तथा उसमें संघ की आन्दोलन संबंधी नीति के अलावा उसकी समितियों, उपसमितियों की मार्फत चलनेवाली प्रवृत्तियों के बारे में निश्चित व आवश्यकतानुसार हरएक प्रवृत्ति को दो-तीन दिन का समय देकर विस्तृत विचार विमर्श हो तथा अंगीकृत नीति के अनुसार पीछे के कार्य के सिंहावलोकन के साथ आगे के कार्यक्रम की रूपरेखा आदि पर चर्चा की जाये। इससे समितियों को अपने कार्यक्रम के निर्धारण में दृष्टि की स्पष्टता व सुविधा समय-समय पर प्राप्त हो सकेगी और संघ को अपने कार्य में एक समग्र दृष्टि मिलती रहेगी।

(घ) प्रबंध समिति का गठन करते समय समितियों के कार्यकर्ताओं (साधारणतः सेक्रेटरी) को सदस्य रूप में लेने का ध्यान रखा जाये। इसी प्रकार प्रबंध समिति की बैठकों में भी जिस समिति से संबंधित कार्य का विषय विचाराधीन हो, उसके एक दो अन्य कार्यकर्ताओं को भी आवश्यकतानुसार आमंत्रित किया जाये। कुछ समितियों के सदस्यों को स्थाई आमंत्रितों में रखा जा सकता है।

(ङ) समय समय पर संघ व समितियों के कार्य का विवरण प्रकाशित किया जाये और प्राथमिक सर्वोदय-मंडलों को परिपत्रित कर दिया जाये।

—पूर्णचन्द्र जैन, मंत्री

गांधी स्मारक निधि, राजस्थान

गांधी स्मारक निधि, राजस्थान शाखा की ओर से ८ ग्रामसेवा केन्द्रों में सघन काम किया जा रहा है। उन केन्द्रों के नाम इस प्रकार हैं—१ मरकोला २ नोकना ३ वल्लभ नगर ४ बख्तन नगर ५ बरगा ६ सोरी दुबोद ७. गांगवा ८ आवसर। इन केन्द्रों में कृषि सुधार, सफाई, औषध वितरण आदि का काम करने के साथ साथ किसानों का प्रशिक्षण, भूदान ग्रामदान का विचार प्रचार आदि काम भी होता है।

राजस्थान के प्रमुख नगर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, कोटा में सर्व-प्रचार योजना के अन्तर्गत गांधी अध्ययन केन्द्र चलते है, जहाँपर शहर के लोग सर्वोदय साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करते हैं और विभिन्न विषयों पर गोष्ठियाँ आयोजित होती हैं।

एकगरसराय थाने में सघन सर्वोदय कार्य

इस सेवाकेन्द्र ने अपनी अल्पविधि में २६ गाँवों का प्रेम क्षेत्र बनाया है, जिसकी जनसंख्या दस हजार (१००००) की है। प्रमुखतः अभी चार गाँवों में सघन रूप से काम चल रहा है, जिसमें नित्य प्रातः–सायं सामूहिक प्रार्थना, रामायण पाठ, भूदान यज्ञ पत्रिका का वाचन तथा एक घंटे का विद्यालय एवं महाविद्यालय चलता है। साथ ही सामूहिक ग्राम सफाई एवं पाखाना सफाई भी होती है। एक ग्रामोदय समिति स्थापित की गयी है, जिसके द्वारा एक हरिकीर्तन मंडली और नाट्य मंडली चल रही है। इस समिति के तत्त्वावधान में हाथ से धान कुटाई, आटा पिसाई के काम का संकल्प कराया गया है। वस्त्र स्वावलम्बन के लिए चर्खे की पर्याप्त व्यवस्था की जा रही है। यहाँ पाखाने से स्वर्ण खाद तथा मूत्र से हीरा खाद तैयार होती है। इस वर्ष से मिट्टी देने और पेड़ खोदने का काम नाट्य मंडली एवं हरिकीर्तन मंडली के सदस्यों ने उठाया है। केन्द्र द्वारा दस कम्पोस्ट के गड्ढे बनवाये गये हैं। हरिकीर्तन मंडली की ओर से २ बीघा भूमि पर सामूहिक खेती करायी गयी है। ५५ सर्वोदय-पात्र रखाया गया है, जिसके द्वारा अब तक दो मन चावल इकट्ठा हुआ है। पैंस गांधी-डायरी के साथ पाँच रुपये के साहित्य की बिक्री हुई है। आठ भूदान यज्ञ पत्रिका के ग्राहक बनाये गये हैं। चार-पाँच छोटे बड़े स्थानों पर सर्वोदय-गोष्ठियाँ हुईं। केन्द्र में कुछ दिन नाटक भी खेला गया है, जिसे दर्शकों ने बहुत पसन्द किया।

रविशंकर महाराज उद्घाटन करेंगे

१ मई को बंबई राज्य के विभाजन किये जाने की घोषणा हो चुकी है। समाचार पत्रों के सूत्र से ज्ञात हुआ है कि महागुजरात राज्य का उद्घाटन श्री रविशंकर महाराज के हाथों संपन्न होगा।

बिहार अखंड पदयात्रा

१ अप्रैल से १९ अप्रैल तक सहरसा जिले में यह टोली रहेगी और श्री जे॰ पी॰ के नेतृत्व में २० अप्रैल को पूर्णिया जिले में प्रवेश करेगी।

गोराजी गिरफ्तार किये गये

श्री रामचन्द्रराव गोरा, जो अपने पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हैदराबाद विधानसभा के सामने दलगत राजनीति के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे, आंध्र सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये।

"सर्वोदय-पात्र" : कैलेंडर १९६०-'६१

श्री बोदाणीजी ने भूदान-आन्दोलन में काफी दिनों तक काम किया है, खास तौर से सौराष्ट्र में। निधि मुक्ति के बाद प्रकाशन का काम करते हुए सर्वोदय विचार का प्रचार वे कर रहे हैं। सर्वोदय-पात्र का कैलेंडर इसी दृष्टि से प्रकाशित हुआ है।

भूदान आन्दोलन का प्रारम्भ-दिवस '१८ अप्रैल' है। इसलिए भाई श्री बोदाणीजी ने १८ अप्रैल से ३१ मार्च तक का १४"×१९" माप का सात रंगों में छपा एक सुन्दर "सर्वोदय-पात्र कैलेंडर" प्रस्तुत किया है। यह कैलेंडर, जिसका मूल्य पचहत्तर नया पैसा प्रति कापी है, न केवल देखने में सुन्दर, बल्कि हम नित्य एक मुट्ठी अन्न सर्वोदय पात्र में डालें, इसकी याद दिलाने वाला है। कैलेंडर का नमूना बाजू में दिया गया है।

श्री बोदाणीजी की यह कामना है कि विनोबाजी के अद्यतन कार्यक्रम सर्वोदय-पात्र के विचार को इस कैलेंडर के माध्यम से घर घर पहुँचाया जाये। इसलिए उन्होंने बारह पृष्ठों में चुने हुए २४ पैराग्राफ इस प्रकार के दिये हैं कि वे हमें शान्ति-सेना, सामाजिकता और सर्वोदय पात्र के विचार को समझाते हैं और बार-बार याद दिला कर उन्हें नियमित करने में मददगार होते हैं। ये कैलेंडर रश्मि प्रकाशन मंदिर, ७, सुन्दरम्, मनिनगर सोसाइटी, राजकोट (सौराष्ट्र) के पते पर उपलब्ध हैं।

●

मधेपुर थाने में भूदान-कार्य की प्रगति

बिहार के दरभंगा जिला सर्वोदय-मण्डल की देख-रेख में, मधेपुर थाने में जिला-स्तर पर भूदान का कार्य गत १५ जनवरी से सघन रूप में चल रहा है। एक अमीन और दो कार्यकर्ताओं के क्रम से १० टोलियाँ सम्पूर्ण थाने में फैल गयी हैं। भूदान में मिली कुल जमीन का लेखा-जोखा हो जाये, इस संकल्प के साथ जमीन का ब्यौरा हासिल करने से लेकर वितरित जमीन का प्रमाण-पत्र भी दे देने की व्यवस्था कर दी गयी है। वितरण की प्रक्रियाओं में उपस्थित कठिनाइयों को दूर करने के लिए तारीख १४ फरवरी को बीरपुर स्थान में थाने के दाता, आदाता, मुखियों एवं सभी राजनैतिक दलों के कार्यकर्ताओं का शिविर किया गया। शिविर में वितरण संबंधी कठिनाइयों के संबंध में विशेष चर्चाएँ हुईं। सर्वोदय से संबंधित विविध रचनात्मक कामों को करने के लिए थाने के विभिन्न राजनैतिक दलों और रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने मिल कर एक "समन्वय-समिति" का निर्माण किया।

दरभंगा जिला सर्वोदय-मण्डल के तत्त्वावधान में भू-वितरण का कार्यक्रम मधेपुर थाने में चल रहा है, जिसकी चर्चा चारों तरफ तो हो ही रही है। महन्त रामेश्वरदासजी के नाम की भी काफी चर्चा है। उनके संबंध में चर्चा का मुख्य कारण यह हुआ कि विनोबाजी के मधेपुर आने के समय उन्होंने जमीन का दान दिया। किसी कारणवश उनके दिये गये खसरा नम्बर में हेरफेर हो गया। सरकारी विभाग से दानपत्र का पुष्टीकरण भी हो गया। उन्होंने अपने मनोवांछित खसरा नम्बर देने के संबंध में कोर्ट में काफी दौड़धूप की। कहते हैं, लगभग चार सौ रुपये की बर्बादी हुई, फिर भी समस्या सुलझी नहीं! अन्ततोगत्वा उन्होंने "भूदान-यज्ञ कमेटी" से सुलह कर के मुकदमेबाजी की झंझटों से अपना पिण्ड छुड़ा लिया।

अब वे भूदान के समर्थक ही नहीं, उसके सक्रिय कार्यकर्ता हो गये हैं। अभी-अभी जो मधेपुर थाने में सघन वितरण का कार्य चल रहा है, जिसका दो-तीन दिनों का शिविर उनके स्थान पर हुआ है, कुल खर्च उन्होंने ही दिया। अब वे सर्वोदय के विचार से अधिकाधिक प्रभावित होते जा रहे हैं। अपने गाँव बीरपुर में "ग्रामोदय उद्योग समिति" के माध्यम से जनता की सेवा करना चाहते हैं। अतएव उसका "रजिस्ट्रेशन" कराने के लिए दौड़-धूप कर रहे हैं। उद्योग संबंधी औजारों को जुटाने के लिए पूसा, मुजफ्फरपुर आदि जगहों पर जा रहे हैं तथा अनुभवी कार्यकर्ताओं से सलाह मशविरा कर रहे हैं।

उनका स्थान छोटा है। फिर भी उनका उत्साह और सामाजिक प्रतिष्ठा बहुत बड़ी है। इस प्रकार महन्तजी का इस थाने के काम में पूरा सहयोग प्राप्त हुआ है।

इस थाने में १२१ गाँवों से कुल २९६२ बीघा भूमि भूदान में प्राप्त हुई। उसमें से ४० गाँवों के १२९१ आदाताओं में ९८६ बीघा भूमि का वितरण हुआ। बाकी में से ११०५ बीघा अयोग्य भूमि है। शेष ८७० बीघा भूमि शीघ्र ही वितरित होने जा रही है।

● •

श्रम और शर्म !

हमारे सहजीवन-शिविर से कोलकी गाँव में आश्चर्य और कुतूहल पैदा। विभिन्न जातियों के, पढ़े लिखे, सफेदपोश भाई-बहन अपने-अपने परिवारों के साथ आकर खेत पर एक झोपड़ी में हम एक ही परिवार के रूप में रहें और सारे दिन खेत पर काम करें, इस घटना से सामान्य जनमानस को आश्चर्य होना स्वाभाविक था।

कभी कभी कोई अपने खेत पर जाते समय या तो खास हमें देखने-मिलने आते रहते थे। धान काटते समय आज मनजी चाचा आये।

"क्यों चाचा, यह हमारा काम आपको कैसा लगता है?"

"अच्छा लगता है, उसमें पूछना ही क्या!"

"यह हमें आदत नहीं न! और आये मेहनत करने! इसलिए आप जैसे अनुभवी बुजुर्गों से जानना चाहते हैं कि इससे कैसा श्रम हो रहा है?"

"तो भी ठीक करते हैं, भाई..तुम सबकी शक्ति से तो ज्यादा ही..मेहनत करने की बहुत ख्वाहिश है न, इसलिए!"

"हाँ, लगे रहते हैं, फिर भी आदत नहीं, इसलिए किसान जितना थोड़ा ही काम कर सकते हैं!"

"हाँ, वह तो सच है; पर बिना शर्म के श्रम थोड़े ही हो सकता है!"

चाचा अपने काम पर गये और हम लगे धान काटने। काटते-काटते मन में भाव उठ रहे थे: "शर्म बिना श्रम कैसे!"

एक ओर तेज धारवाला हँसिया धान काटे जा रहा था; तो दूसरी ओर बुद्धि की तीक्ष्ण धार निकल रही थी। चाचा के मुँह से सहज रूप से निकले हुए वाक्य के पीछे का अर्थ मन में स्पष्ट हुआ:

मेरे जैसे जवान, आज की जवान पीढ़ी सब तरह से समाज से भर भर के पाती है; लेकिन आज तक जो पाया, उसके बदले में ऋण चुकाने की बुद्धि से अपनी पूरी शक्ति लगाकर कोई काम करता हो, ऐसा बहुत कम ही देखने में आता है। जब तक समाज के प्रति अपने कर्तव्य की भावना-बुद्धि नहीं जागेगी; तब तक ऐसा कहाँ से होगा? उसके लिए मन में शर्म न लगे, तब तक युवकों को श्रम करने की प्रेरणा कहाँ से मिलेगी?

—वसंत व्यास

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० ४२८५
वार्षिक मूल्य ५) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११-८९५ : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,६५० एक प्रति १३ नये पैसे

आश्रमों और संस्थाओं का स्वरूप

सतीश कुमार

सेवाग्राम में बारहवाँ सर्वोदय सम्मेलन होने जा रहा है। वहाँ अनेक विषयों पर कार्यकर्ताओं में तथा सर्व-सेवा-संघ के अधिवेशन में विचार-विनिमय होगा। आश्रमों और संस्थाओं के स्वरूप के सम्बन्ध में भी कई तरह के विचार चला करते हैं। अच्छा हो कि इस सम्बन्ध में भी गहराई से विचार किया जाय और संस्थाओं के क्रान्तिकारी होने का कोई सुविधाजनक मार्ग ढूँढ़ा जाय।

सभी रचनात्मक संस्थाएँ और आश्रम समग्र दृष्टि से अहिंसक समाज-रचना की प्रक्रिया को चरितार्थ करनेवाले साबित हों और सभी का उद्देश्य हर सम्भव उपाय से सर्वोदय-समाज की स्थापना हो, यह आवश्यक है। इसी सन्दर्भ में यहाँ कुछ विचार प्रस्तुत किये गये हैं।

—सम्पादक

- आश्रमों में कार्यकर्ताओं की संख्या अधिक न हो!
- जमीन, जायदाद आदि के परिग्रह पर नियंत्रण हो!
- आसपास के लोगों की भी सेवा करें!

"संस्था बनाने में बहुत खतरे हैं" यह बात १९४८ में सेवाग्राम के रचनात्मक कार्यकर्ता-सम्मेलन में सर्वोदय-समाज के निर्माण के समय विनोबाजी ने बहुत गम्भीरता से कही थी। क्योंकि जहाँ संस्था की बात आती है, वहाँ उसके साथ कुछ जमीन और मकान का परिग्रह जुड़ जाता है, सदस्यत्व का भी प्रश्न आता है। अपने पराये का भी भेद पैदा होता है। नियन्त्रण तथा अनुशासन का भी सवाल सामने आता है। इस तरह अनेक ऐसी बातें संस्था और आश्रमों के निर्माण के साथ जुड़ जाती हैं, जिनसे कई तरह के खतरे उत्पन्न हो सकते हैं।

पर खतरों से डरकर संस्था का निर्माण ही न करना, ऐसी बात नहीं है। सामूहिक जीवन के प्रयोग करने के लिए कार्यकर्ताओं के विश्राम तथा स्वाध्याय के लिए, समानधर्मी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर कार्यक्रम सोचने बनाने के लिए, विभिन्न स्थानों पर चलनेवाले कामों का आयोजन संयोजन करने के लिए संस्था बनानी पड़ती है, आश्रम का निर्माण करना होता है। लेकिन उस संस्था का, उस आश्रम का, उस संगठन का स्वरूप क्या होना चाहिए, यह तय करना तथा समझना आवश्यक है।

प्रेममय सेवा

'विनोबाजी ने अपनी गुजरात यात्रा में एक बार इस विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि "मैं १९१६ से अब तक आश्रम जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। इतने दिनों के अनुभव से मुझे लगता है कि प्रत्येक आश्रम में तीन बातें अवश्य होनी चाहिए। पहली बात है, आसपास के गाँववालों की प्रेममय सेवा। जिस तरह ठंड लगने पर लोग आग के अगल-बगल बैठ जाते हैं और वह अग्नि अपने पास आनेवालों की ठंड से रक्षा करती है, उसी तरह किसी भी कष्ट के समय आश्रमवालों को गाँव की रक्षा करनी चाहिए। इस रक्षा को सेवा इसलिए कहा जाये कि उसमें कहीं अहंकार न हो। किसी के भी दुःख में आश्रम की ओर से यदि हिस्सा, सहारा और दिलासा प्राप्त नहीं होती, तो उस आ[illegible] उपयोग ही क्या हुआ! आश्रमवाले लोग अपने काम में व्यस्त न रहें। आस पास के जीवन के साथ उनका न केवल गहरा सम्पर्क होना चाहिए, वरन् आश्रमवालों को अपना जीवन भी उसके अनुरूप बनाना चाहिए। अन्यथा आश्रमों का भी आगे चलकर वही रूप हो सकता है, जो रूप मठों आदि का हो गया है।

नित्य नयी ज्ञान-चर्चा

"दूसरी बात यह है कि प्रत्येक आश्रम को अपने आप में नयी तालीम का केन्द्र होना चाहिए। नयी-से नयी ज्ञान चर्चा आश्रम में चलती रहे और आस पास के गाँवों तथा शहरों के लोग आकर उन नये नये विचारों से लाभ उठाते रहें। निरन्तर ज्ञान चर्चा चलने से ही मनुष्य समाज प्रगति कर सकता है। नहीं तो जमाना आगे बढ़ जायेगा और मानव पीछे ही रह जायेगा। इसलिए आश्रम में जमाने की गति पहचानकर बिल्कुल आखिरी नये-से-नया विचार समझाने की कोशिश होनी चाहिए।

जीवन-संशोधन का केन्द्र

"तीसरी बात, आश्रम में जीवन-संशोधन का काम होना चाहिए। हमारी सभ्यता में बहुत से उत्तम विचार हैं। पर परम्परागत रूढ़िवादिता और जड़ता के दोष भी आ गये हैं। जीवन पर सामाजिक बुराइयों के पुराने मूल्य छा गये हैं। उनका निराकरण करके जीवन में नये मूल्यों की स्थापना करने का काम हमारे आश्रमों का है। नयी नयी जीवन-पद्धतियों का संशोधन और अन्वेषण हो। हमारे देश में जातिवाद, व्यसन, गंदगी, विषमता, सामाजिक रूढ़ियाँ आदि दोष भरे पड़े हैं। इन सब पुराने मूल्यों को बदलकर नये मूल्यों के संशोधन का काम यदि आश्रमों में नहीं होता, तो उनसे समाज को क्या लाभ होगा!"

हमारे आश्रम सचमुच क्रान्ति के घर बनने चाहिए। इस दृष्टि से विनोबाजी की उपर्युक्त बातें महत्त्व की हैं। यह क्रान्ति भी समग्र दृष्टि से चरितार्थ करनी पड़ेगी। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में नये मूल्यों की स्थापना करने का काम आश्रमों तथा संस्थाओं का है। चांडिल में सर्व-सेवा-संघ ने इसी दृष्टि से सभी रचनात्मक संस्थाओं को नया मोड़ देने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव उपस्थित किया था। आज इन संस्थाओं का स्वरूप कुछ जड़ सा हो रहा है। समग्र दृष्टि से अहिंसक समाज रचना के लिए सभी संस्थाएँ अपने अपने काम को नयी दिशा दें, यह आज की प्रथम आवश्यकता है।

सर्व सेवा-संघ और हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का जब संगम हुआ, तब समस्त रचनात्मक संस्थाओं को कुछ कार्यक्रम सुझाये गये थे। जैसे :

१ कम-से-कम एक घंटा उत्पादक शरीर-परिश्रम।

२ कम-से-कम एक घंटा किसी न-किसी को पढ़ाना।

३. संस्था में भंगी न रहें, सफाई स्वयं कार्यकर्ता ही करें।

४ स्वाध्याय और अध्ययन का नियमित आयोजन।

इस तरह संस्थाओं के स्वरूप को नया मोड़ देने के लिए कुछ और भी मुद्दे सोचे जा सकते हैं। खादी का काम करनेवाली संस्थाएँ भी खादी को क्रान्तिकारी तत्त्व के रूप में अपनायें, तभी उसका वास्तविक उद्देश्य सिद्ध हो सकता है।

संस्थाओं और आश्रमों को चेतावनी

इस सन्दर्भ में विनोबाजी का वह पत्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जो उन्होंने सर्व सेवा संघ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र मजूमदार को सेवाग्राम आश्रम के सम्बन्ध में लिखा था। यह पत्र एक तरह से हम सभी को चेतावनी देनेवाला पत्र है। उस पत्र में विनोबाजी ने जो बातें लिखी थीं, वे अन्य आश्रमों और संस्थाओं के लिए भी पूरी तरह लागू होती हैं :

"पहली बात तो यह कि कहीं भी कार्यकर्ताओं की बहुत ज्यादा संख्या इकट्ठी नहीं होनी चाहिए। अगर वे कार्यकर्ता प्रतिष्ठावाले होते हैं, तो उनकी आपस में बनती नहीं। क्योंकि क्षेत्र अनुचित पड़ता है। अगर वे प्रतिष्ठावाले नहीं होते, तो समाज पर बोझ पड़ता है। समाज से बाहर स्वतन्त्र रीति से काम करने में वे कायम के लिए असमर्थ बन जाते हैं।

"दूसरी बात, अपरिग्रह का विचार हम सिद्धान्त-रूपेण मानते हैं, पर संस्थाओं में परिग्रह रखते हैं। जमीन, मकान, जायदाद आदि सब की मालकियत भी रखते हैं और सार्वजनिक होने के नाम पर उसका बचाव करते हैं। भले ही कुछ बचाव हो जाये, पर चाहे सार्वजनिक हित के लिए या सार्वजनिक संस्था के नाम पर भी क्यों न हो, परिग्रह की मात्रा का खयाल करना जरूर ही है।

"तीसरी बात जहाँ भी हमारी संस्था हो, वह आस-पास के लोगों के लिए भी है, इसका खयाल 'अखिल भारत' के बहाने नजर से न हट जाये। इन तीन बातों की ओर ध्यान देना बहुत आवश्यक है।"

विनोबा जी की उपर्युक्त चेतावनी हमारी प्रत्येक संस्था के लिए और प्रत्येक आश्रम के लिए गंभीरता से सोचने की सामग्री देती है। ये मर्यादाएँ ठीक से निभायी जा रही हैं या नहीं, इस पर सब को सोचना चाहिए। संस्थाओं और आश्रमों के संचालन में यदि हम इस तरह से निरपेक्ष बुद्धि नहीं रखेंगे और वर्तमान स्वरूप को नयी दिशा में नहीं ले जायेंगे तो निश्चय ही संस्था बनाने में बहुत खतरे हैं।"

●

आन्ध्र-प्रदेश के जिला प्रतिनिधियों एवं लोक सेवकों की पहली बैठक ता० ९ फरवरी, १९६० को विजयवाड़ा में हुई। सर्व सेवा संघ के नये विधान को ध्यान में रखते हुए आन्ध्र प्रदेश के लिए एक प्रान्तीय सर्वोदय-मंडल के निर्माण के बारे में चर्चा हुई और यह तय हुआ कि प्रान्त के सारे जिला प्रतिनिधि, प्रत्येक जिला सर्वोदय-मंडल के संयोजक या अध्यक्ष और प्रत्येक प्रादेशिक सर्वोदय मंडल के संयोजक प्रान्तीय मंडल के सदस्य रहेंगे। ९ व्यक्तियों की एक प्रान्तीय कार्यकारिणी-समिति भी नियुक्त की गयी।

●

मंदिरों के जरिये शोषण

भारत-सरकार ने मन्दिरों की सम्पत्ति की जाँच करने के लिए एक समिति गठित की है। मंदिरों के संबंध में विनोबाजी के क्या विचार हैं, यह इस समिति के लिए और देश की जनता के लिए जानना उपयोगी होगा। इस संदर्भ में हम ४-९-'५६ को व्यक्त किये गये विनोबाजी के विचार यहाँ दे रहे हैं।—सं०

एक जमाना था, जब हिन्दुस्तान में जमीन काफी और जनसंख्या बहुत कम थी। लोगों के पास बहुत से धन्धे थे। उस समय कुछ धर्माचार्यों ने मठ और मन्दिर बनाये। उनके इर्द गिर्द तालीम, दवा आदि का इन्तजाम किया गया। इस तरह के सामाजिक उपयोग की दृष्टि से लोगों ने मन्दिरों को जमीन दी। सम्भव है, उस जमाने में यह व्यवस्था उपयोगी रही हो, पर आज हालत बदल *गयी है। जमीन कम है और जनसंख्या* बढ़ रही है। धन्धे टूट गये हैं और मन्दिरों के जरिये तालीम, सेवा आदि का काम भी नहीं हो रहा है। यह सब देखते हुए मन्दिरों के पास जमीन रहने का अर्थ क्या है? मन्दिरवाला खुद तो उसकी *काश्त नहीं करता।* ऐसे लोगों से वह खेती करवाता है, जिनका आधार जमीन हो तथा जिनके पास और कोई धन्धे न हों। याने मन्दिरवाले मुनाफाखोरी करते हैं। हमने देखा है कि मन्दिर के मालिक जितने निष्ठुर होते हैं, उतने शायद स्वतन्त्र *मालिक नहीं। मन्दिरवाले नगा चूस* चूस लेते हैं और कहते हैं कि "यह हमारा धार्मिक अधिकार है, इसलिए तुम्हें देना ही पड़ेगा।"

इसकी एक मिसाल जगन्नाथपुरी का जगन्नाथ-मन्दिर है। मन्दिर के आस पास की हजारों एकड़ जमीन मन्दिर की है। आस-पास कुछ गरीब लोग रहते हैं। सबके सब मन्दिर के नाम से गालियाँ देते हैं। क्योंकि वे उस जमीन पर खेती करते हैं। लेकिन उन्हें पूरा खाना तक मयस्सर नहीं होता। इसलिए आज की हालत में मन्दिरों के हाथों में जमीन और सम्पत्ति देने का अर्थ है, उन्हें शोषण का साधन देना।

मेरी राय में धार्मिक संस्थाओं के लिए आय का कोई भी स्थायी साधन *नहीं होना चाहिए।* क्योंकि उससे *लोग* धर्मभ्रष्ट हो जाते हैं। चाहे उन संस्थाओं से अच्छा काम भी क्यों न होता हो? धर्म-संस्थाओं के लिए आय का स्थायी साधन आलस्य और अकर्मण्यता भी पैदा करनेवाला है *तथा उससे लोगों का* शोषण भी होता है। मेरी राय तो यह भी है कि स्कूल आदि के लिए भी जमीन आदि स्थायी आय के साधन नहीं होने चाहिए। *अगर शिक्षक और विद्यार्थी* मिलकर जमीन पर स्वयं परिश्रम करके खेती करने के लिए तैयार हों, तो स्कूल को जमीन दी जा सकती है। क्योंकि उस हालत में खेती करना तालीम का ही *एक हिस्सा हो जायेगा। किन्तु मजदूरों* से खेती करवायी जाये और उसके मुनाफे पर स्कूल चले, तो वह शोषण ही है।

इसीलिए मन्दिरों के पास यदि जमीन रहती है, तो उसमें धर्म नहीं, अधर्म है। मजदूरों का चूसकर मन्दिरों को खड़ा *करना धर्म नहीं हो सकता। यह तो* जमींदारों का सा पापी जीवन ही है। इसलिए मन्दिरों के पीछे जमीन का होना या लाखों की सम्पत्ति का होना या मकानों का होना मन्दिरवालों को भ्रष्ट करना है और गरीबों का शोषण करना है।

—विनोबा

•

खाद्यान्नों में मिलावट

भारत के स्वास्थ्यमंत्री श्री करमरकर ने ता० ९ मार्च को राज्यसभा में यह स्वीकार किया कि इस देश में बिकनेवाली अधिकांश भोजन-सामग्री में *मिलावट होती है।* स्वास्थ्यमंत्री ने इस स्थिति की जिम्मेदारी लोगों के नैतिक पतन पर डालते हुए इस बात की असमर्थता जाहिर की कि सरकार इस मामले में अधिक कुछ कर सकती है।

सिद्धान्त में यह सही है कि समाज में फैली हुई कोई भी व्यापक बुराई अन्ततोगत्वा जनता के अपने प्रयत्नों से ही दूर हो सकती है। बाहरी दबाव या कानून उस बुराई का मूलो-छेद नहीं कर सकता। पर हर छोटी-मोटी बात में इस तरह सिद्धान्त की आड़ लेना एक तरह से अपनी अकर्मण्यता को छिपाना है। जब कभी व्यापक भ्रष्टाचार, चोरबाजारी या मिलावट आदि का सवाल आता है, तब अक्सर सरकार की ओर से उसकी जिम्मेदारी लोगों के सिर डालकर खुद अलग हो जाने की वृत्ति नजर आती है। यह सही है कि यह सब बुराइयाँ व्यापक रूप से फैल गयी हैं, पर यह भी सब जानते हैं कि विचारशील लोगों का बहुत बड़ा तबका इन बातों को बुरा मानता है और शामिल होनेवाले भी मजबूरी से ही इनमें शामिल होते हैं। इसमें कोई सन्देह *नहीं है कि अगर सरकार* इन बुराइयों को रोकने के लिए कड़े कदम उठाये, तो अधिकांश लोग उनका समर्थन करेंगे, क्योंकि लोग खुद इनसे परेशान हैं, हालाँकि अपनी ओर से इनके निराकरण के लिए कुछ कर सकने में अपने को लाचार पाते हैं। एक ओर शासन सँभालना और दूसरी ओर इस तरह अपनी जिम्मेदारी से बरी होना शोभनीय नहीं है। लोगों में अमुक बुराई व्यापक हो गयी है, इसलिए सरकार का उसके खिलाफ कोई कदम उठाना कारगर नहीं होगा, यह तर्क अजीब है। बल्कि सच तो यह है कि चूँकि सरकार कोई कदम नहीं उठाती, इसलिए ऐसी बुराइयाँ समाज में और ज्यादा फैलती जाती हैं। जनता की नाराजी का और वोट खोने का खतरा उठाकर भी सरकार को यह दुश्चक्र तोड़ना चाहिए और ऐसी समाज-विरोधी हरकतों के खिलाफ सख्त कदम उठाना चाहिए।

•

बंबई के राज्यपाल की कार्रवाई

लोकसभा में प्रधानमंत्री ने जो सफाई दी है, उसके बावजूद बंबई के राज्यपाल द्वारा नौसेना के एक अफसर के मामले में वहाँ के हाईकोर्ट के फैसले को स्थगित करने का जो हुक्म जारी *किया गया है, उसका किसी भी दृष्टि से* बचाव नहीं किया जा सकता। प्रधानमंत्री द्वारा इस निर्णय की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेने से इस कार्रवाई के अनौचित्य में एक रत्ती भी फरक नहीं पड़ता। कोई भी गलत और अदूरदर्शितापूर्ण कदम, *चाहे वह भी श्रीप्रकाश उठायें* या पंडित जवाहरलाल नेहरू, गलत ही है। निश्चय ही, पंडितजी का यह मतलब नहीं हो सकता कि ऐसा कोई काम, सिर्फ इसलिए कि वह उन्होंने किया है, सही हो जाता है। मुख्य बात यह है कि इस तरह न्यायालयों के फैसले में हस्तक्षेप करने से उनकी प्रतिष्ठा को तो धक्का लगता ही है, तथा जनता में न्यायालयों व फैसले के लिए जो आदर और उनके कारण एक प्रकार की सुरक्षा की जो भावना रहती है, वह भी नष्ट होती है और ऐसा होना जनतन्त्र के लिए खतरे की चीज है। अफसोस इस बात का है कि चाहे अनजान में ही सही, पंडित जवाहरलाल नेहरूजी जैसे व्यक्ति द्वारा पिछले दिनों कुछ इस तरह के काम हुए हैं, जिनसे न्यायालयों और न्यायाधीशों की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचा है। कुछ अर्से पहले इन्श्योरेन्स कारपोरेशनवाले मामले में उन्होंने पहले तो कुछ सम्माननीय न्यायाधीशों को जाँच के मामले सुपुर्द किये, पर बाद में उनके निर्णयों को अमान्य कर दिया। अब यह बंबई के राज्यपाल ने जो ताजा हुक्म निकाला है, वह तो कानूनी शासन के इतिहास में एक लगभग अभूतपूर्व घटना ही है और न्यायालयों के कारण लोगों को जो सुरक्षा महसूस होती है, उसे मिटानेवाली है। इस प्रकार न्यायालय के फैसले में हस्तक्षेप करने का जो कारण प्रधानमन्त्री ने दिया है, वह तो बिलकुल ही लचर है। किसी भी एक व्यक्ति की नौकरी न चली जाये, इसके लिए उच्च न्यायालय के फैसले को स्थगित करना सर्वथा अनुचित और अदूरदर्शितापूर्ण है।

—सिद्धराज ढड्ढा

•

शिक्षा और सरकार

बम्बई राज्य के शिक्षामंत्री श्री हितेन्द्र देसाई ने अभी हाल में अपने एक भाषण में जनता से ठीक ही अनुरोध किया है कि शिक्षा के क्षेत्र से राजनीति को दूर रखा जाये। *वास्तव में छात्रों* में व्याप्त अनुशासनहीनता देश के सभी उचित और निष्पक्ष ढंग से सोचनेवाले व्यक्तियों के लिए एक गंभीर वस्तु बन गयी है। विशेषकर गत दो वर्षों में कई बार ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हुईं, जब पुलिस को छात्रों पर *गोली चलानी* पड़ी और कुछ ऐसी घटनाएँ भी हुईं, जिनके कारण हमें लज्जा से सिर झुका लेना पड़ा। कई अनुरोधों के बावजूद राजनीतिक पार्टियों ने अपने और छात्रों के बीच के संबंध के बारे में किसी निश्चित *व्यवहार की सीमा नहीं बाँधी और न* उसकी जरूरत ही समझी। छात्रों और अध्यापकों आदि का पार्टीगत उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उपयोग बराबर जारी है। प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों और छात्रों की दशा तो और भी सोचनीय *है। स्थानीय बोर्ड के सदस्यों की इच्छा*नुसार कार्य न करने से अध्यापकों का स्थानान्तरण अपने घरों से कोसों दूर ऐसे स्थानों में कर दिया जाता है, जहाँ उन्हें काफी असुविधा होती है।

पर इन राजनैतिक प्रभावों के कारण सरकारी प्रभाव या हस्तक्षेप में कोई कमी नहीं आती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में भी स्वतंत्रता नहीं रह पायी है। सारा कार्यक्रम ऊपर से नियंत्रित है। शिक्षक निश्चित कार्यक्रम के अतिरिक्त एक भी घण्टा अपने मन से कोई विषय नहीं पढ़ा सकता, भले ही छात्रों के हितों को ध्यान में रखते हुए वह उसकी जरूरत क्यों न महसूस करता हो। उसे १२, १३ साल के छोटे बच्चों के सामने पंचवर्षीय योजनाओं, परिवार नियोजन आदि विषयों को समझाना पड़ता है, जब कि गीता, बाइबिल, कुरान आदि के उपदेशों की शिक्षा वह नहीं दे सकता। अनुशासन और अनुशासन के नाम पर शिक्षण-संस्थाओं को शिकंजे में कसा जा रहा है, लेकिन देखा जाता है कि इन शिक्षण-संस्थाओं में अनुशासन और कर्तव्य का जितना ह्रास हुआ है, उतना अन्यत्र नहीं।

इस समस्या का समाधान मामूली तरीकों से नहीं हो सकता, क्योंकि यह समस्या बुनियादी है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम जनतंत्र को चाहते हैं या नहीं, जो 'स्वतन्त्रता' का ही दूसरा नाम है। शिक्षा ही वह माध्यम है, जिसके जरिये हम लोकतांत्रिक जीवन के सही भाव लोगों में भर सकते हैं। तब क्या हम पार्टीगत प्रभावों या एकांगी आदर्शों से शिक्षा को दूषित करके उसकी महत्ता घटाना स्वीकार करेंगे? फिर आखिर इसका क्या निराकरण है?

हावर्ड कमेटी ने, जिसके बारह सिद्ध शिक्षाशास्त्री सदस्य थे, ठीक ही कहा है कि हमें शिक्षा को राजनीति के नियंत्रण से और उसके चंगुल से मुक्त करने के लिए एक बहुत बड़ा जेहाद करना पड़ेगा। शिक्षकों की नियुक्ति और उनकी गतिविधि, यहाँ तक कि वे क्या पढ़ायें, क्या न पढ़ायें, इन सब बातों पर जो नियंत्रण है, उसे हटाना होगा।

इस विषय पर अखिल भारत कांग्रेस कमेटी के समय बारामपुर में नेहरू और विनोबाजी के बीच काफी महत्त्वपूर्ण बातचीत हुई थी। नेहरूजी ने विनोबाजी के इस विचार के महत्त्व को स्वीकार किया था कि शिक्षा पर से राज्य का नियंत्रण उठा लिया जाये, उसकी जगह एक स्वतंत्र बोर्ड की नियुक्ति हो, जो उसकी देख-रेख करे और उसकी मुख्य जिम्मेवारी जनता स्वयं उठा ले। इस सिलसिले में विनोबाजी ने ब्रिटेन की शिक्षा-पद्धति का भी जिक्र किया था।

मालूम नहीं है कि सरकारी स्तर पर इस बारे में क्या सोचा जा रहा है। पर हमें आशा करनी चाहिए कि जिनके हाथ में शासन है, वे शीघ्र ही इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि शिक्षा को राज्य के नियंत्रण से मुक्त रखा जाये। पर तब तक जनता इन्तजार नहीं कर सकती। अतः उसे स्वयं गम्भीरतापूर्वक विचार करना है कि तब तक के लिए उसके पास इस परिस्थिति का कोई इलाज है या नहीं।

ग्रामदानी गाँवों के लोगों से यह अपेक्षा है कि वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की योजना करें। उसमें शिक्षा की योजना भी सम्मिलित है। ऐसे गाँवों की ग्रामसभाएँ राजनीति से दूर होती हैं। उन्हें अपने बच्चों की शिक्षा व्यवस्था का पुनर्गठन करने में विशेष दिक्कत नहीं होनी चाहिए। देश की परम्पराओं के अनुकूल शिक्षा देने और आगे चलकर ये बच्चे जनतंत्र की जिम्मेवारियाँ अपने सिर पर उठाने योग्य बन सकें, ऐसी व्यवस्था कर सकते हैं, जिसकी वास्तव में आज की शिक्षा में सबसे बड़ी कमी है।

—दामोदरदास मूँदड़ा

मकराना के संगमरमर-उद्योग पर आयी मुसीबत का सौम्य प्रतीकार

हाल ही में राजस्थान सरकार ने २५ जनवरी '६० से माइनर मिनरल कंसेशन रूल्स लागू करके मकराने के संगमरमर पर रायल्टी की पुरानी दरों को लगभग तिगुना बढ़ा दिया था। इससे मकराना के इस उद्योग में लगे करीब १० हजार लोगों पर बड़ा गहरा असर पड़ा। मकराना का उद्योग वैसे ही आर्थिक अभाव, [illegible] तथा बिना बिजली के अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पा रहा है। पिछले २ वर्ष से भारत सरकार द्वारा इटालियन संगमरमर का आयात बन्द कर देने से कुछ राहत अवश्य मिली है। अब राजस्थान-सरकार के इस कदम से उद्योग के सामने एक बड़ा संकट उपस्थित हो गया। इसके लिए नगर के सभी संगठनों के प्रतिनिधियों का एक मंडल बनाया गया तथा उसके कुछ प्रतिनिधि दिनांक १४-२-६० को राज्य के मुख्यमंत्री से मिले। मुख्यमंत्री ने नयी रेट को रोकने से तो इनकार कर दिया, परन्तु २६-२-६० को जयपुर में पुनः मिलने को कहा। नयी रेट्स के स्थगित न होने से नागरिकों में काफी असन्तोष छा गया। आखिरकार सब खान व कारखाने के ठेकेदार व मजदूर आदि ने जनता के सहयोग से समस्त कट कारखाने बन्द करके आम हड़ताल करने का विचार किया। परन्तु उन्हें जब यह समझाया गया कि मुख्यमंत्री ने बातचीत करने का एक और मौका दिया है, इसलिए ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिये और साथ ही नयी रेट्स देकर माल भी बाहर नहीं भेजना चाहिये, तो इस पर सब लोगों ने मिलकर तय किया कि जब तक रायल्टी रेट्स का फैसला नहीं हो जाता, मकराने से पत्थर की कोई भी गाड़ी बाहर नहीं भेजेंगे।

ता० २६-२-६० को मुख्यमंत्री से प्रतिनिधि-मण्डल मिला। उन्होंने मकराने की माँगों को कुछ हद तक स्वीकार किया। पुरानी रेट्स को करीब २५ प्रतिशत के आस-पास बढ़ाया। इस परिवर्तन से मकराने के लोगों को समाधान हुआ और जनता ने पहली बार यह महसूस किया कि संगठित जन-शक्ति में सरकार से अधिक ताकत होती है, वह अपनी सही माँगों की पूर्ति करा सकती है।

—बद्रीप्रसाद स्वामी

रद्दी में से रद्दी!

आंध्र के एक जिले में, किसी व्यापारी की दुकान पर रद्दी की तरह इस्तेमाल होते हुए कुछ सरकारी कागजात मिले, तब मालूम हुआ कि सरकारी दफ्तर से पुराने रेकार्ड रद्दी के तौर पर बेच दिये गये। सरकार की ओर से इस बात की जाँच की जा रही है कि ये सरकारी कागजात किसी कर्मचारी ने पैसों की लालच में चोरी से बेच दिये या संबंधित अधिकारी की जानकारी में जान-बूझकर रद्दी में बेच दिये गये।

सरकारी रेकार्ड में सभी कागजात सुरक्षित रखने लायक होते हों या इतिहास की दृष्टि से जरूरी होते हों, सो बात नहीं है और कागज का इस्तेमाल भी शासन तथा समाज-व्यवस्था का केन्द्रीकरण होने और उसके उत्तरोत्तर जटिल होने के साथ इतना बढ़ गया है कि सब कागजों का सुरक्षित रखा जाना भी असम्भव हो गया है। अगर कागजात समय-समय पर नष्ट न किये जायँ, तो शायद दफ्तरों में या मकानों में उनको रखने की जगह भी न रहे। इसके अलावा आंध्र के उस जिला-कर्मचारी ने तो 'बड़ों' का ही अनुकरण किया है।

अभी उस दिन लोकसभा के सदस्य हमारे एक मित्र से बात हो रही थी। हमने उनसे प्रार्थना की कि एक सभा के सदस्य के नाते उनको सरकारी योजनाओं, प्रवृत्तियों आदि के जो विवरण मिलते हैं, उन्हें हमारे सन्दर्भ-पुस्तकालय के लिए वे दे दें, तो कृपा होगी। उन्होंने माफी चाही और कहा कि वे स्वयं हर कागज का संग्रह करते हैं और अपने सन्दर्भ के लिए सुरक्षित रखते हैं। इस पर हमने उनसे कहा कि उनकी निगाह में दूसरे कोई उनके साथी संसद सदस्य ऐसे हों, जो स्वयं रेकार्ड न रखते हों तो उन तक वे हमारी प्रार्थना पहुँचा दें। हमारे मित्र हँसे और उन्होंने कहा कि आप भोले हैं। अधिकांश सदस्य तो इन कागजात को रद्दी में बेचकर पैसा पैदा करते हैं, वे आपको क्यों देंगे? आगे पूछने पर पता चला कि लोकसभा और राज्यसभा दोनों के मिलाकर कुल ७५० सदस्यों में से सिर्फ ६० या ७० ऐसे हैं, जो पार्लियामेंट के कागजात को जिल्द बँधाकर सुरक्षित रखते हैं। हमें विश्वास है कि पार्लियामेंट में आंध्र के उस जिले के रेकार्ड बेचे जाने पर सरकार से जवाब तलब किया जायेगा और इस प्रश्नोत्तर के कारण पार्लियामेंट के सदस्यों को रद्दी में बेचने के लिए कुछ और कागज मिल जायेंगे!

—'काकभुशुंडी'

चिन्तन के क्षणों में

जीवन और मरण!

जीवन और मरण एक ही वस्तु के दो रूप या एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सच पूछा जाय, तो मुझे सुख और जीवन की अपेक्षा दुःख और मृत्यु का रूप अधिक समृद्ध लगता है। मुसीबतों और कष्टों के बिना जीवन किस काम का? रामायण में सीता और राम के दुःखों, कष्टों और तपश्चर्या के सिवा और क्या है? मैं तो चाहता हूँ कि आप जीवन से मृत्यु और दुःख की कीमत ज्यादा आँकें और हमारे मन के मैल को धोने की जो शक्ति इनमें है, उसे समझें।

—मो० क० गांधी

विनोबा-आश्रम

सन् १९१६ में जब मैं गांधीजी के पास उनके आश्रम में पहुँचा, तब से अभी तक मैं आश्रम में ही हूँ। आठ-नौ साल से मैं घूमता हूँ तो भी अभी मैं आश्रम में ही हूँ। मेरा पता 'विनोबा आश्रम' ही है। क्योंकि इस प्रवास में भी हमारा जीवन सर्वथा आश्रम पद्धति से ही चलता है। समय पर सोना, समय पर उठना, समय पर खाना, सुबह शाम प्रार्थना, संतुलित भोजन, सेवा, आदि सब प्रवृत्तियाँ आश्रम-जीवन की तरह ही चलती हैं। इन ४४ सालों में मैंने नियमित आश्रम जीवन बिताया है।

—विनोबा

दूसरों को हमेशा क्षमा करो
परन्तु स्वयं को कभी नहीं।

बापू के संस्मरण

जब किसीने विनोबाजी से प्रार्थना की कि वे बापू के संस्मरण लिखें, तो विनोबाजी ने लिखा:

"बापू के विषय में मेरे संस्मरण मैं भगवान को अर्पण कर चुका हूँ। अब वहाँसे वापस लाकर 'टेप रेकार्ड' में मैं बिठाना नहीं चाहता। बापू का नाम मेरे लिए रामनाम ही है, जो उन्होंने अंतिम क्षण में लिया था। उसीमें लीन हो जाऊँ, यही एक कामना है।"

भूदान : एक आलोचनात्मक समीक्षा

भूदान आंदोलन ही आज ऐसी प्रवृत्ति है, जिसके जरिये गांधीजी जीवित हैं, पर अपनी त्रुटियों को सुधार कर हम निरन्तर आगे बढ़ें !

लोकबन्धु डोनाल्ड

'लोकबंधु डोनाल्ड'—जो नया नाम विनोबा ने श्री डोनाल्ड ग्रूम को बड़े प्यार से दिया है—भूदान-आंदोलन को इस प्रकार की समीक्षा के लिए, जो उन्होंने इस लेख में की है, अत्यधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं। बीस बरस से एक शांति-कार्यकर्ता की हैसियत से श्री डोनाल्ड हिन्दुस्तान में हैं। स्वाभाविक ही गांधीजी के विचारों का उन पर गहरा प्रभाव है। चार बरस से वे भूदान-आंदोलन में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। एक बरस तक उन्होंने सतत मध्यप्रदेश के गांवों में श्री दादा भाई नाईक के साथ पदयात्रा भी की। इस प्रकार वे आंदोलन की गतिविधि से खूब अच्छी तरह परिचित हैं। पर साथ ही एक 'बाहरी' व्यक्ति जैसी तटस्थता भी उन्होंने रखी है। इस प्रकार वे 'बाहरी' और 'भीतरी' दोनों हैं। अतः उनकी इस समीक्षा में आंदोलन की पिछली बातों को परखने के लिए हमें मूल्यवान सामग्री मिलेगी, ऐसी आशा है। —सं०

●

भूदान आन्दोलन को शुरू हुए ९ वर्ष बीत रहे हैं और सर्वोदय कार्यकर्ताओं और प्रेमियों का वार्षिक सम्मेलन इस साल सेवाग्राम में हो रहा है, जहाँ गांधीजी की मृत्यु के बाद सर्वोदय-आन्दोलन का एक तरह से नया युग शुरू हुआ था। भूदान-आन्दोलन के प्रारंभ के बाद यह पहला ही सम्मेलन होगा, जब कि विनोबाजी उसमें न होंगे। विनोबाजी की इच्छा और आशा है कि यह सम्मेलन सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के लिए नयी प्रेरणा और शक्ति देने वाला साबित हो।

हम सब लोगों के लिए, जो इस आन्दोलन में लगे हुए हैं, सेवाग्राम का यह सम्मेलन पिछले ९ वर्षों की हमारी गतिविधियों को आलोचनात्मक दृष्टि से परखने का अच्छा अवसर है। मैंने जान-बूझकर "आलोचनात्मक दृष्टि" कहा है, क्योंकि मैंने अक्सर पाया है कि इस आन्दोलन में लगे हुए कार्यकर्ता मन ही मन तो आन्दोलन के बारे में काफी आलोचनात्मक विचार रखते हैं। लेकिन कहीं उनकी निष्ठा के बारे में शंका न की जाये, इस डर से अपने विचारों को जाहिर करते हुए हिचकिचाते हैं। आलोचनात्मक दृष्टि से मेरा मतलब केवल तटस्थ विश्लेषण से है।

एक प्रकाश

गांधीजी की मृत्यु के बाद, लेकिन उन्हीं की प्रेरणा से, सन् १९४८ में सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-संघ की स्थापना के साथ जो सर्वोदय-आन्दोलन शुरू हुआ, उसका मकसद लोगों के रोज-मर्रा के जीवन में बुनियादी मानवीय मूल्यों को दाखिल करने का और जीवन के हर क्षेत्र में उनकी उन्नति करने का रहा है। विनोबाजी भी, खास तौर से १९५१ में शिवरामपल्ली के सम्मेलन के बाद से आज तक, जो संदेश देते रहे हैं, उसका सार भी यही है। शांति की स्थापना और लोगों की रोजमर्रा की समस्याओं के हल के लिए उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक शक्ति का विकास, यही विनोबाजी की पदयात्रा का मकसद था। पोचमपल्ली में एक भूमिवान द्वारा भूमिहीनों की मांग पूरी करने के लिए जो १०० एकड़ का पहला दान मिला, उससे विनोबाजी को एक प्रकाश मिला कि गांवों के लोग स्वयं किस तरह भूख और गुलामी की समस्याओं का मुकाबला अपने अभिक्रम से कर सकते हैं। इसके बाद तो भूदान का प्रवाह निरन्तर बढ़ने लगा, क्योंकि विनोबाजी की मांग और उनका सन्देश लोगों की परम्परा और उनकी सनातन भावनाओं के अनुकूल था। उपनिषदों की सिखावन लोगों के खून में समायी हुई है और इसलिए विनोबाजी के इस सन्देश को, जिसका उपनिषदों की सिखावनों से मेल खाता है, लोगों ने उसी प्रकार ग्रहण कर लिया, जैसे बच्चे अपनी स्वाभाविक खुराक को ग्रहण कर लेते हैं। विनोबाजी की मांग होती थी और लोग देते थे। विनोबाजी की पुकार देश भर में फैले हुए सर्वोदय कार्यकर्ताओं की पुकार बन गयी। गांधीजी ने अहिंसात्मक आन्दोलन का जो तरीका राजनैतिक क्षेत्र में अपनाया था, उसी तरीके को विनोबाजी ने आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र में अपनाया। कार्यकर्ताओं में एक नया उत्साह पैदा हुआ, एक तरह का नशा सा सवार हुआ। आजादी के बाद गांधीजी के सिद्धान्तों और तरीकों में जो लोगों की निष्ठा थी, उसकी पूरी कसौटी हुई। पर इस नये आन्दोलन से उस निष्ठा को पुनः आधार मिला। कार्यकर्ताओं को यह भरोसा नहीं रहा था कि गांधीजी ने लोगों में जो त्याग की भावना और शक्ति जाग्रत की थी, वह फिर से जगायी जा सकती है। यह भरोसा अब उनमें फिर से पैदा हुआ। थोड़े दिनों में ही भूदान खूब बढ़ा, काफी परिमाण में जमीन का दान मिला।

गांवों में जो हमारा खास मोर्चा था, जहाँ जमीन प्राप्त करने का और बांटने का काम हमारा इन्तजार कर रहा था, उसे जहाँ का तहाँ छोड़ कर हम भी विनोबाजी की तरह आगे बढ़े। ज्यों ज्यों आन्दोलन के विचार का विकास होता गया, त्यों त्यों कार्यकर्ता भी लोकप्रियता के प्रवाह से अलग न पड़ जाने के डर से पुराने काम को छोड़ कर आगे बढ़ते गये। चाहिए तो यह था कि भूदान से जो वातावरण पैदा हुआ था, उसका फायदा उठा कर गांवों में संगठन को मजबूत करने में कार्यकर्ता सारी शक्ति लगाते। एक भी गांव ऐसा न रहता, जहाँ कम से कम सप्ताह में एक बार उनका सम्पर्क न होता और वे लोगों की रोजमर्रा की समस्याओं का स्थानीय तौर पर हल करने की लोगों की आकांक्षा के सक्षम वाहन न बनते। विनोबाजी के सामने सर्वोदय-समाज का जो भव्य चित्र उत्तरोत्तर स्पष्ट हो रहा था, उसके कारण कार्यकर्ताओं को यह प्रेरणा मिलनी चाहिए थी कि वे भूदान की नींव पर आगे के काम को खड़ा करते, न कि उसको छोड़ कर विनोबाजी द्वारा समय-समय पर बताये गये कार्यक्रमों को अलग-अलग और असम्बद्ध रूप में उठाते जाते। नतीजा यह हुआ है कि आज शांतिसेना, सर्वोदय पात्र, ग्रामदान, सम्पत्ति-दान आदि की वास्तविक शक्ति प्रगट करने के लिए हमें हमारी कल्पना द्वारा आसमान में बनाये गये प्लेटफार्म से वापस उतर कर फिर वहीं से शुरू करना पड़ता है, जहाँ से हम चले थे, बजाय इसके कि गांव-गांव में खड़े किये हुए ठोस संगठन की चट्टान पर बने हुए प्लेटफार्म से हम आगे बढ़ते। हमें समझना चाहिए कि भूदान की जो मूल पुकार थी, वही इस देश के हर गांव में धर्मभावना फिर से जाग्रत करने की पुकार थी। ऐसी भावना और मूल्यों को जाग्रत करने की, जो उपनिषत् काल से ईश्वर द्वारा उसकी सृष्टि के साथ मनुष्य के सम्बन्धों का स्पष्ट निर्देश करते आ रहे हैं। भूदान की ही यह प्रक्रिया है, जो ग्रामदान और सर्वोदय तक हमें ले जा सकती है। विनोबाजी जैसे व्यक्ति के लिए यह कितना स्वाभाविक है कि वे दिन-ब-दिन ईश्वर के और जनता की आवश्यकताओं के उत्तरोत्तर स्पष्ट दर्शन से प्रेरित हों और उस प्रेरणा से आविर्भूत अत्यन्त महत्त्व की बातें नये-नये शब्दों में हमारे सामने रखें। लेकिन हमारे जैसे लोगों के लिए यह उतना ही आसान है कि हम उनके शब्द-विन्यास में खो जायें और उनके सही मतलब को जनता तक न पहुँचा सकें। विनोबाजी के शब्दों का सही अर्थ हम इतना कम समझे और समझा सके हैं और उनका उपयोग हमने वास्तविकता के बजाय उसके ऊपरी आवरण की सिद्धि में ही किया है कि अब यह लगभग जरूरी मालूम होता है कि हम उन शब्दों को एक तरफ रख कर आगे बढ़ें।

सम्पत्तिदान भूदान का स्वाभाविक फलित था। उन लोगों के लिए, जिनके पास जमीन नहीं थी, पर दौलत या दूसरी आमदनी थी, वे भी उसके जरिये समाज की शुद्धि के यज्ञ में हिस्सा ले सकें, इसका रास्ता सम्पत्तिदान ने खोल दिया। जिस प्रकार भूमिवानों के लिए यह अपेक्षा है कि जमीन वास्तव में ईश्वर की है, इस सिद्धान्त की सचाई को वे महसूस करें, उसी प्रकार सम्पत्ति वालों से भी यह अपेक्षा है कि वे धीरे-धीरे इस तथ्य को समझ जायेंगे कि जो कुछ उनके पास है, वह ईश्वर का है और वे उसके ट्रस्टीदार हैं, तथा यह समझ कर अपनी स्वेच्छा से वे खुद गांवों और शहरों में रहने वाले दूसरे लोगों की जरूरतों को पूरा करेंगे। चूंकि सर्वोदय के कार्यकर्ता गांवों में काम करते हैं और उनकी स्थिति से परिचित हैं, इसलिए उनका इतना ही कर्त्तव्य था कि वे लोगों की आवश्यकताओं को मर्यादाओं को बतायें और उनमें से प्राथमिकता किस क्रम से हो जाये, यह भी सुझायें। इससे आगे बढ़ कर यह अपेक्षा नहीं था कि सम्पत्तिदान के जरिये रकमें इकट्ठी की जायें और फिर किसी केन्द्रीय व्यवस्था के जरिये उनका उपयोग हो। सम्पत्तिदान का मुख्य उपयोग तो लोगों की भावना को और उनके अन्दर मंदी हुई

पर इसके बाद का जो काम भूमिहीनों को जमीन बाँटने का था और बराबर प्यार के साथ भूमिवानों के दरवाजे खटखटाते रहने का था, जिस पर कि अहिंसक क्रांति का सारा आधार था, वह कार्यकर्ताओं को उतना आकर्षक और क्रांतिकारी नहीं मालूम हुआ !

अब तक के सर्वोदय-सम्मेलन

श्री राजेन्द्र बाबू
१९४१
राऊ (मध्यप्रदेश)

श्री काका कालेलकर
१९५०
अनगुल (उड़ीसा)
१९५१
शिवरामपल्ली (हैदराबाद)

श्री कृष्णदास जाजू
१९५२
सेवापुरी (उत्तर प्रदेश)

श्री अप्पासाहब पटवर्धन
१९५६
कांचीपुरम् (तमिलनाड)

श्री दादा धर्माधिकारी
१९५७
कालडी (केरल)

सर्वोदय-सम्मेलनों के स्थान

अजमेर १९५४
सेवापुरी १९५२
राऊ-१९४९
चांडिल
अनुगुल-१९५०
पुरी-१९५५
शिवरामपल्ली १९५१
पंढरपुर १९५८
कांचीपुरम १९५६
कालडी १९५७

और उनके मनोनीत अध्यक्ष

श्री धीरेन्द्र मजूमदार
१९५३
चांडिल (बिहार)

श्री आशा देवी आर्यनायकम्
१९५४
बोधगया (बिहार)

श्री रविशंकर महाराज
१९५५
जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)

रमादेवी चौधरी
१९५८
पंढरपुर (महाराष्ट्र)

के० केलप्पन
१९५९
अजमेर (राजस्थान)

राष्ट्रतीर्थ : वर्धा-सेवाग्राम ! जहाँ १२ वाँ सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है !

इस बार का सर्वोदय सम्मेलन सेवाग्राम (वर्धा) में हो रहा है। अब तक ये सम्मेलन किसी न किसी धार्मिक तीर्थ-स्थान पर होते रहे हैं और ऐसे तीर्थों की यात्रा तथा दर्शनों का 'पुण्य' प्राप्त करने के लिए कार्यकर्ताओं के अलावा हजारों परिवार भी पहुँचते रहे हैं, लेकिन इस बार के सर्वोदय सम्मेलन के लिए विनोबाजी का सुझाव सेवाग्राम का रहा। उन्होंने कहा कि पूज्य बापू को गये अब बारह साल हो रहे हैं। एक युग बीत रहा है। बापू ने हमारे देश में जो ज्योति जगायी थी, उसके बारे में हमें *आत्म निरीक्षण* करना है।

स्व० जमनालालजी बजाज बापू को वर्धा लाने और बसाने में सफल हुए थे। बापू ने उनको पाँचवा बेटा स्वीकार कर लिया था और यह पाँचवा पुत्र ऐसा निकला कि बापू की कर्मसिद्धि के लिए अपना सब कुछ समर्पण करने के लिए प्रतिपल सन्नद्ध रहा।

सेवाग्राम का पुराना नाम सेगाँव था। बापू की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ सेवा की बुनियाद पर ही खड़ी हुई थीं, अतः *इस गाँव का नाम सेवाग्राम रखा गया।* आज यही सेवाग्राम राष्ट्रतीर्थ बन गया है। सेवाग्राम आने वाला यात्री एक विशिष्ट और अनोखी भावना लेकर आता है। अन्य सब धार्मिक तीर्थों की अपनी-अपनी महत्ता और शोभा है, लेकिन सेवाग्राम तीर्थ की महत्ता और शोभा को आत्मसात् करने के लिए हृदय में देश-भक्ति की भावना जरूरी है। यह उधार तीर्थ नहीं है, नकद तीर्थ है और लाभ-प्राप्ति की नहीं, लोभ मुक्ति की प्रेरणा देता है। गरीबी को सम्पन्नता में बदलने की कीमिया यह तीर्थ बताता है। आइये, जरा इस तीर्थ का दर्शन कर लें।

हम वर्धा को ही लेंगे। वर्धा बहुत बड़ा नगर या शहर नहीं है। आबादी लगभग चालीस हजार है। बम्बई, कलकत्ता या दिल्ली, मद्रास के रेल मार्ग पर बीच में का जंक्शन है। पहले तो यह एक देहात मात्र था और नाम था पालकवाड़ी। सन् १८५९ में नागपुर जिले से अलग करके वर्धा जिला बनाया गया। जिले का स्थान बनाने के कारण *इस गाँव का नाम वर्धा रखा गया* और धीरे धीरे विकास होता गया। वर्धा शहर से लगभग बीस मील पर वर्धा नामक नदी है, जो पश्चिम की ओर वर्धा जिले की सीमा बनाती हुई बहती है। नदी के नाम पर ही इस राष्ट्रतीर्थ का नाम वर्धा रखा गया है।

स्टेशन पर उतरते ही सवारी के लिए ताँगे मिलते हैं। वर्धा में ताँगों का किराया और शहरों की अपेक्षा कुछ अधिक है, जो स्वाभाविक है। आजकल वर्धा के दो भाग हैं। एक *भाग को* रामनगर कहते हैं, दूसरा शहर है। रामनगर नयी आबादी का क्षेत्र है।

वर्धा में आपको सब तरफ चौराहे ही चौराहे दिखाई देंगे। वर्धा भले ही छोटा सा शहर हो, पर चौराहे की वह पाँत देश के बड़े बड़े शहरों में नहीं मिलेगी। बड़ा खुला शहर है, किसी भी सड़क से आप अपने स्थान पर आसानी से पहुँच सकते हैं।

वर्धा में मुख्यतया नीचे लिखी संस्थाएँ हैं :

मगनवाड़ी : ग्रामोद्योग, धंधों को प्रोत्साहन देने, ग्रामीणों की नैतिक और आर्थिक उन्नति करने तथा गाँवों को सुखी तथा सम्पन्न और स्वच्छ बनाने की दृष्टि से १४ दिसंबर १९३४ को अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ की स्थापना हुई थी। मगनवाड़ी नाम मगनलाल भाई गाँधी की स्मृति में रखा गया था। ग्रामोद्योग संघ का संचालन डा० जे. सी कुमारप्पाजी करते थे। आजकल मगनवाड़ी में खादी-ग्रामोद्योग कमीशन की ओर से *रिसर्च का काम चलता है।* ग्रामोद्योग संघ सर्व सेवा संघ में विलीन हो गया। इस रिसर्च केंद्र में अनेक प्रकार के ग्रामोद्योग प्रधान अन्वेषण और प्रयोग होते हैं। मगनवाड़ी का विकास अब भिन्न रूप में हो रहा है।

मगन-संग्रहालय : मगनवाड़ी से *पूर्व की ओर यह संग्रहालय है, जिसका* उद्घाटन गांधीजी ने ६ दिसम्बर *१९३८ को किया था। यह अपने ढंग का* अनूठा संग्रहालय है। इस संग्रहालय में कपास, सूत, खादी, बिनौले, मिट्टी, चूल्हे, चरखे, लैंप, वनस्पति आदि विभिन्न वस्तुओं का ग्रामोद्योग की दृष्टि से संग्रह और तैयार करने की विधियाँ बतायी गयी हैं। मगनवाड़ी स्टेशन से आधे मील पर है।

बाल-मन्दिर : महिलाश्रम की ओर से *संचालित यह बाल-मंदिर अपने ढंग का* अनोखा है। मगनवाड़ी के सामने इसकी भव्य इमारत और बच्चों की आनन्द क्रीड़ा दर्शनीय है। इसका उद्घाटन डा० राजेन्द्र-प्रसादजी ने किया है। मीरा बहन भूँदड़ा के अथक परिश्रम से यह बालमन्दिर सबके आकर्षण का केंद्र है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति : मगनवाड़ी से पश्चिम की ओर आधे मील *पर राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति का एक* प्रांगण और इमारतें दिखाई पड़ती हैं। गांधीजी के रचनात्मक कार्यों में राष्ट्रभाषा का प्रचार था। यह समिति हिंदी साहित्य-सम्मेलन के अन्तर्गत पिछले २५ वर्षों से निरंतर प्रगति करती रही है। अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार इसका उद्देश्य है। आजकल समिति के मंत्री श्री मोहनलालजी भट्ट तथा परीक्षामंत्री रामेश्वरदयालजी दुबे हैं।

लक्ष्मी-नारायण-मन्दिर : इस मंदिर का ऐतिहासिक महत्त्व है। *स्व० जमनालालजी बजाज के पितामह* स्व० सेठ बच्छराजजी ने सन् १९०५ में इसे बनवाया था। मंदिर तो देश में दो हजारों हैं, लेकिन इसका महत्त्व इसलिए है कि देश का यह पहला मंदिर है, जो *हरिजनों के लिए खुला।* गांधीजी ने उस अवसर पर कहा था : "ऐसे स्थान *में अंत्यज भाइयों* का निर्विघ्न मंदिर-प्रवेश यह सूचित करता है कि अस्पृश्यता की जड़ अच्छी तरह हिल गयी है।"

गांधी-चौक : मंदिर की बगल में यह चौक है, जो सन् १९२१ में बना था। वर्धा में आने वाले कांग्रेसी नेताओं के *भाषण इसी चौक में होते थे।* ११ अगस्त १९४२ को जगलू नामक हमाल यहीं पर शहीद हुआ था। इसी चौक में बच्छराज भवन है, जिसमें जमनालालजी बजाज की फर्मों का कारोबार चलता है।

गांधी ज्ञान-मन्दिर : स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्व० जमनालालजी के बंगले के सामने गांधी-ज्ञान मंदिर की स्थापना सन् १९५४ में हुई है। इस ज्ञान मंदिर में गांधी-तत्त्वज्ञान का अध्ययन करने के लिए विद्वान् लोग आते हैं। इस इमारत के निर्माण में मध्यप्रदेश-सरकार ने काफी दिलचस्पी ली है और प्रधान-मंत्री नेहरूजी ने उद्घाटन किया था। *स्थान दर्शनीय है।*

बजाजवाड़ी : ज्ञानमंदिर के ठीक सामने जमनालालजी बजाज का निवास स्थान है। इसे बजाजवाड़ी कहते हैं। *कांग्रेस के तथा अन्य सब तरह के नेता गण यहीं ठहरा करते थे और कांग्रेस की* वर्किंग-कमेटी की बैठकें भी यहीं होती थीं।

संपत्तिदान-यज्ञ के कार्य में पूरी तरह जुट जाने वाले जमनालालजी के प्रिय साथी श्री कृष्णदासजी जाजू का निवास भी इसी बजाजवाड़ी में था।

महिलाश्रम : सेवाग्राम के रास्ते पर महिलाश्रम पड़ता है। छात्राओं में बुनियादी *शिक्षण* द्वारा आत्मश्रद्धा जाग्रत करना महिलाश्रम का प्रधान उद्देश्य है। स्व० जमनालालजी द्वारा स्थापित और पूज्य विनोबाजी की प्रेम-दृष्टि से संचालित यह महिलाश्रम दिन पर दिन प्रगति कर रहा है। श्री आता बाई रानीवाला इसकी अधिष्ठात्री हैं और श्रीमती रमा बहन रुइया मंत्रिणी हैं।

काकावाड़ी : सेवाग्राम की सड़क पर महिलाश्रम के सामने काकावाड़ी है। काकासाहब कालेलकर के नाम पर इसका नाम काकावाड़ी पड़ा है। यहीं पहले हिन्दुस्तानी-प्रचार सभा का दफ्तर था।

अभी हम सेवाग्राम की सड़क को छोड़कर वापस शहर की ओर मुड़ते हैं *और कचहरी के पास से होकर नागपुर-*सड़क पर चलते हैं। वर्धा-नागपुर-रोड पर पड़नेवाली संस्थाओं को देखे बिना राष्ट्रतीर्थ की यात्रा अधूरी ही रह जाती है।

गोपुरी : काकावाड़ी से पगडंडी के रास्ते केवल दो फर्लांग पर गोपुरी है। यहीं पर वर्धा के महाप्राण स्व० जमनालालजी ने अपने अंतिम दिनों में गो-सेवा का महान् व्रत लेकर कार्य किया था। जहाँ वे रहते थे, उसे *शांति कुटीर* कहते हैं। उसके सामने स्व० जमनालालजी बजाज और स्व० किशोरलाल भाई मशरूवाला की समाधियाँ हैं।

गोपुरी की प्रधान संस्था ग्राम सेवा-*मंडल है।* सन् १९३० से १९३४ के मध्य वर्धा तहसील में विनोबाजी द्वारा *स्थापित सत्याग्रहाश्रम की ओर से* प्रचार-कार्य के लिए प्रचारक-मंडल की स्थापना हुई थी। उस कार्य को स्थायी रूप देने की दृष्टि से ६ मई १९३४ को प्रचारक-मंडल का रूपान्तर ग्राम-सेवा-मंडल में हुआ। ग्राम-सेवा-मंडल की प्रवृत्तियाँ तामकर ये हैं : १ खादी विभाग, २. *ग्रामसेवा व वस्त्र-स्वावलंबन,* ३ सरंजाम कार्यालय, ४ गोशाला, खेती, बागवानी, ५ गोसेवा चर्मालय, ६. प्रकाशन-विभाग (मराठी) ७ ताड़गुड़-विभाग, ८ तेलघानी।

शहर में स्वराज्य-भंडार के नाम से एक खादी आदि ग्रामोद्योगी *वस्तुओं का बिक्री भंडार है।* आजकल ग्रामसेवा मंडल की ओर से एक प्रेस भी चल रहा है, जो परमधाम-आश्रम में है और भाऊ पानसे उसके व्यवस्थापक हैं। ग्राम सेवा-मण्डल का कार्य मोहन-लालजी छाजेड़ देखते हैं। राधाकृष्णजी बजाज ग्राम सेवा-मण्डल के अध्यक्ष हैं।

कुष्ठधाम, दत्तपुर : वर्धा से लगभग ढाई मील और गोपुरी से डेढ़ मील की *दूरी पर महारोगी सेवा मण्डल स्थित है।* इसे दत्तपुर का कुष्ठधाम कहते हैं। सन् *१९३६ में इसकी स्थापना हुई थी।* तब से यह संस्था कुष्ठरोग निवारण का कार्य श्री मनोहरजी दिवाण के संचालन में, बराबर करती आ रही है।

संस्था खुली और रम्य स्थान पर है। श्री परचुरे शास्त्री इस संस्था के प्रथम *रोगी थे, जिनकी सेवा स्वयं बापू ने की थी। अब तो इस कार्य की प्रेरणा और* लोगों को भी मिल रही है। श्री मनोहरजी दिवाण की निष्ठा और *त्याग इस संस्था* के कण कण में है।

परमधाम (पवनार) : कुष्ठधाम से आगे चलकर लगभग तीन मील पर पवनार गाँव आता है। धाम नदी के तट पर विनोबाजी की

आश्रम है। इसे 'परमधाम' कहते हैं। बरसों तक विनोबाजी यहीं रहे हैं। धाम नदी के तट पर पूज्य बापू की छत्री भी है। यहीं उनकी रक्षा भी विसर्जित की गयी थी। हरवर्ष यहाँ सर्वोदय-मेला लगता है।

परमधाम में आजकल ब्रह्मविद्या-मंदिर चल रहा है, जहाँ कुछ बहनें शिक्षण पाती हैं। संस्था को केरल की राजम्मा बहन और विनोबाजी के छोटे भाई श्री शिवाजी भावे की सेवाएँ उपलब्ध हैं। विनोबाजी चाहते हैं कि ब्रह्मविद्या-मंदिर की स्नातिकाएँ अध्यात्म और विज्ञान में तेजस्वी और प्रवीण बनें। यहाँ की बहनें अपना सारा कार्य अपने हाथों करती हैं।

यहीं एक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र भी चलता है, जो रेड्डीजी चलाते हैं।

ग्राम-सेवा-मंडल का एक प्रेस भी है। यह प्रेस शिक्षण और प्रयोग के रूप में चलता है।

पवनार प्राचीन स्थान माना जाता है। कहते हैं, हनुमान के पिता पवनंजय की यह नगरी रही। एक विशाल मूर्ति भी यहीं प्राप्त हुई है, जो परमधाम-आश्रम के द्वार पर रखी है।

अब हम सेवाग्राम चलते हैं।

वर्धा से पाँच मील की दूरी पर यह स्थित है। पहले इसका नाम सेगाँव था। बाद में बापूजी ने 'सेवाग्राम' नाम रख दिया। बापूजी का निवासस्थान होने के कारण सेवाग्राम को तीर्थस्थान का रूप प्राप्त हो गया और आज दूर दूर से यात्री सेवाग्राम-आश्रम के दर्शनों के लिए आते हैं। सेवाग्राम तो लाखों गाँवों का प्रकाश स्तंभ है। सेवाग्राम के कण कण में सेवा, त्याग व निःस्वार्थ भावना का अद्भुत मिश्रण है। यह युगों तक हमारी भावी संतानों को स्फूर्ति व प्रेरणा देता रहेगा।

सत्य व अहिंसा के सिद्धांतों का पाठ गांधीजी ने पढ़ाया था, जिसके द्वारा विश्व में शांति व सुख की स्थापना हो सकती है। बापूजी भारत में रामराज्य चाहते थे। उनकी रामराज्य की कल्पना इस प्रकार थी : "धर्म की परिभाषा में इसका अर्थ होगा पृथ्वी पर ईश्वर का राज्य।" राजनीति की भाषा में इसका अनुवाद किया जाये, तो इसकी व्याख्या होगी : "एक ऐसा लोकतंत्र, जिसमें गरीब अमीर, स्त्री और पुरुष, गोरे और काले, जाति या मजहब के कारण असमानता मिट गयी हो, ऐसे राज्य में सब जमीन व सत्ता जनता के हाथ में होगी। न्याय शीघ्र, शुद्ध व सस्ता होगा। उपासना, वाणी और प्रेस की स्वतंत्रता होगी और इन सबका आधार होगा स्वेच्छा से वरण धर्म का पालन।

"ऐसे राज्य की रचना सत्य और अहिंसा पर ही हो सकती है। गाँव, कस्बे, शहर और देहात और देश, सबके सब उसके इच्छुक होंगे। चाहे यह स्वप्न कभी भी सिद्ध न हो सके, परंतु इस स्वप्न जगत् में रहने और इसका जल्दी से जल्दी निर्माण करने के प्रयत्न में ही मेरे जीवन का आनंद है।"

सेवाग्राम तो रचनात्मक कार्य की प्रयोगशाला है। इसके व्यवस्थापक श्री चिमनलाल भाई हैं। आप गांधीजी के पुराने साथियों में से हैं।

कस्तूरबा-दवाखाना : बिरला भवन में यह कस्तूरबा दवाखाना है। यह पहले गांधीजी की कुटिया के पास एक कमरे में था। इसे डा० सुशीला नायर ने सन् १९३७ में शुरू किया था। कार्य बढ़ जाने से बिरला भवन में लाया गया है। शुरू से ही श्री प्रभाकरजी ने इस अस्पताल में अपनी सेवाएँ अर्पित की हैं। सेवाग्राम के आसपास के करीब ७५ गाँवों के लोग यहीं से दवाई ले जाते हैं। पाँच से दस मील तक के घेरे के रोगी आते हैं।

सेवाग्राम गाँव में शिशु संगोपन गृह है, जो फरवरी '४९ में शुरू किया गया है। सूतिका गृह का कार्य भी अच्छा चलता है।

कस्तूरबा दवाखाने के मेडिकल आफिसर डा० आर० बी० वारदेकर हैं। इनके अलावा डा० रानडे, सावनी बहन, श्रीमती आटले भी अस्पताल को अपनी सेवाएँ अर्पित करती हैं।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ : बापू ने हर दिशा में क्रांति की है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में जो अहिंसक क्रांति की है। उन्होंने 'नयी तालीम' की ऐसी महान देन दी है, जिसके द्वारा बच्चों का मानसिक विकास होगा और वे कुछ करके सीखेंगे। नयी तालीम द्वारा बच्चे स्वावलंबी हो जाते हैं। सच्ची शिक्षा वही है जिसे पाकर मनुष्य अपने शरीर, मन और आत्मा के उत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास कर सके और उन्हें प्रकाश में ला सके। साक्षरता न तो शिक्षा का अंतिम ध्येय है और न उससे शिक्षा का आरंभ ही होता है। वह तो स्त्री-पुरुषों को शिक्षित बनाने के अनेक साधनों में से एक साधनमात्र है। यह 'नयी तालीम' पैसों पर निर्भर नहीं है। वह अपना खर्च स्वयं निकालती है। सच्ची तालीम वही है, जिससे बच्चे अपने जीवन में कुछ कर सकें और स्वावलंबी हो जायें।

इसकी स्थापना १९३८ में हुई थी। आचार्य आर्यनायकम् इसके मंत्री हैं और श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् सहायक मंत्री। इन दोनों ने 'नयी तालीम' के कार्य को गति दी है व निष्ठापूर्वक कार्य कर रहे हैं। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का जो रूप आज है, उसे बनाने में आर्यनायकम्जी का बहुत बड़ा हाथ है। वे उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री व बाल-मनोविज्ञान के ज्ञाता हैं।

गांधीजी की कुटिया : गांधीजी की कुटिया बहुत ही सादी बनी हुई है। बापू का सामान जैसा उनके समय में रखा रहता था, ठीक उसी तरह अब भी रखा हुआ है। कुटिया के दर्शन कर ऐसा मालूम होता है कि बापू बस अब आने ही वाले हैं। दीवालों पर हे राम व ओम् लिखा हुआ है। श्री हरि कुटिया की देखभाल करता है। हरि बापूजी की सेवा करता था।

बापू की कुटिया से दस कदम पर प्रार्थनास्थल है, जहाँ बापू रोज शाम को प्रार्थना करते थे। बापू के जीवन में प्रार्थना को बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान था। प्रार्थना के बारे में पूज्य गांधीजी ने कहा था कि "मैं प्रार्थना को इसलिए महत्त्व देता हूँ, क्योंकि मैं एक उच्चतर सत्ता में विश्वास करता हूँ। जीवन केवल एक घटनामात्र नहीं है। जीवन और मृत्यु ईश्वर के हाथों में है। यदि हम पूरे दिनभर ईश्वर का चिन्तन किया करें, तो बहुत अच्छा। किन्तु चूँकि यह सम्भव नहीं है, इसलिए हमें प्रतिदिन कम से कम कुछ घण्टों के लिए तो उसका स्मरण करना चाहिए। प्रार्थना आश्रम की नींव का मुख्य भाग है। इसलिए इस वस्तु को हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। प्रार्थना मन से न हो, तो सब व्यर्थ है।

प्रार्थना स्थल के पास बा की कुटिया है। सामने रसोड़ा व कुछ दूर हटकर आश्रम के पाखाने। आश्रमवासी अपने ही हाथों से पाखाना-सफाई करते हैं।

आश्रम का जीवन पवित्र है और आश्रमवासी दिन-रात रचनात्मक कार्य करते रहते हैं। श्री मुन्नालाल शाह, श्री बलवन्त सिंह, श्री कृष्णचन्द्र जी आदि आश्रम की देखभाल करते रहते हैं।

सेवाग्राम गांधीजी का महान स्मारक है, जो युगों तक विश्व को स्फूर्ति व प्रेरणा देगा।

सेवाग्राम गांधीजी का महान् स्मारक है, जो युगों तक विश्व को स्फूर्ति व प्रेरणा देगा।

आश्रम में एक डाकखाना भी खोला गया है। गोशाला भी है। आश्रम में खेती भी होती है। 'आश्रमवासी आसपास के देहातों में सेवाकार्य करते हैं। बापूजी की कुटिया के पास स्व० महादेव भाई देसाई की कुटिया है, जहाँ बापूजी रोज शाम को सूत कातने जाते थे।

राष्ट्रतीर्थ : इसके अतिरिक्त वर्धा में छोटी-मोटी और भी संस्थाएँ हैं। सर्व धर्म-समन्वय की दृष्टि से 'सत्याश्रम' देखने योग्य स्थान है। सत्यभक्तजी प्रतिभाशाली और कर्मठ विचारक हैं। सत्याश्रम में सत्येश्वर का मन्दिर है, जिसमें सब धर्मों के आराध्यों की मूर्तियाँ हैं। यह बोरगाँव में है।

यों तो हमारा सारा देश ही धूल वालों का है। पूज्य गांधीजी के प्रभाव से यहाँ की मिट्टी का कण-कण पवित्र है और वह रज अपने आप हमारे सिर पर चढ़ती आती है, यह बड़ी बात है। पर आजकल इसमें सुधार हो गया है। प्रायः सब सड़कें पक्की कर दी गयी हैं। सिटी भी चलने लगी हैं, इसलिए घूमने-फिरने में आसानी हो गयी है।

मौसम की दृष्टि से वर्धा इतना अच्छा है कि जीवन की सन्ध्या के लिए लोग इसे चुनकर खुश हो सकते हैं।

—जमनालाल जैन

नया मानव

बद्रीप्रसाद स्वामी

क्रांतिकारी! जरा ठहरो।
क्या करने जा रहे हो?
क्रांति! समग्र क्रांति!! सार्वत्रिक क्रांति!!!
आखिर मकसद क्या?
नया स्वतंत्र स्वावलंबी समाज बनाने।
साधन क्या? विचार परिवर्तन।
तो क्या अपने विचारों के साँचे में ढाल कर?
तो फिर नया समाज कैसा?
स्वतन्त्र समाज कैसा?
आपके विचारों का गुलाम समाज हुआ।
स्वावलम्बी समाज भी कैसा?
आपके विचारावलम्बी समाज हुआ।
क्या इसीका नाम क्रांति है?
दूसरा बदलें जिसे हम वैचारिक परावलम्बन,
परतन्त्रता को और वैचारिक साम्राज्यवाद को।
आपको बनाने का अधिकार नहीं, स्वयं बनना है।
आपको समझाने का अधिकार नहीं, स्वयं समझना है।
नया इन्सान बनाना नहीं, स्वयं बनना है।
इसी का नाम क्रांति है।

[एक समालोचक की दृष्टि]

औद्योगीकरण न हो

शांतिप्रिय द्विवेदी

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि सेवाग्राम में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए भूदान के कार्यकर्ता देश के कोने-कोने से पैदल चल पड़े हैं। यह पदयात्रा बापू के उस ग्राम्य-संस्थान के प्रति श्रद्धा के अनुरूप है। कांग्रेस ने पदयात्रा का शाब्दिक प्रस्ताव पास किया था, किन्तु उससे वर्षों पहले विनोबाजी ने जो पदारोहण किया, उसका व्यावहारिक अनुसरण सर्वोदय के श्रद्धालु ही कर रहे हैं। यह पदयात्रा सूचित करती है कि लोकमङ्गल का पथ यातायात के वैज्ञानिक साधनों की तरह कृत्रिम नहीं है। केवल यातायात में ही नहीं, जीवन के सभी प्रयत्नों में हमें इस वैज्ञानिक युग की कृत्रिमताओं से मुक्त होने का दृष्टान्त उपस्थित करना है। २६ फरवरी के 'भूदान यज्ञ' में सम्पादक श्री सिद्धराज ढड्ढा ने इस ओर ध्यान आकृष्ट किया है। 'सर्वोदय सम्मेलन के लिए विचारणीय मुद्दे' के अन्तर्गत उन्होंने लिखा है :

"दूसरी बड़ी चीज, जो देश को तेजी के साथ गलत दिशा में ले जा रही है और जहाँ से फिर वापस मुड़ना उसके लिए कठिन होगा, वह औद्योगीकरण की योजनाएँ हैं। विदेशों से लिये जाने वाले कर्जे, देशी और विदेशी पूँजीपतियों के गठबन्धन का जाल, बड़े-बड़े केन्द्रित उद्योगों के कारण होता जा रहा शहरीकरण और समाज का विघटन, ये सब थोड़े समय में ही प्रजा के हाथ-पाँव बाँध कर लम्बे अरसे के लिए उसे गुलाम बना देंगे।'

"... देहात-देहात में खुलने वाली तेल, चावल आदि की मिलें या कपड़े व जमाये हुए तेल आदि के कारखानों के खिलाफ जनता को सक्रिय कदम उठाने के लिए सङ्गठित करना चाहिए। विरोधी योजनाओं का खण्डन न करना बुद्धिमानी का काम नहीं होगा। जनता भी हमारी बातों को थोड़े दिन में सुनने से इनकार कर देगी।"

सर्वोदय सम्मेलन के लिए विचारणीय मुद्दों में ढड्ढाजी का यह मुद्दा ही बुनियादी मुद्दा है। इसको सफल बनाने में ही सर्वोदय सम्मेलन की सफलता है।

एक जमाना था, जब भारत ने गांधीजी के नेतृत्व में विदेशी-वस्त्र का बहिष्कार किया था। मिल के कपड़ों के स्थान पर खादी को स्थान दिया गया। मिलें तो भारत में भी थीं, उनसे बने कपड़ों का भी बहिष्कार क्यों किया गया? असल में खादी यन्त्रोद्योगों के बहिष्कार का प्रतीक थी, मानव के सजीव स्वावलम्बन की प्रेरक थी। किन्तु आज उसकी जो अधोगति हो रही है, उससे ज्ञात होता है कि लोगों ने ठीक-ठीक उसका अभिप्राय नहीं समझा। एक दिन गांधीजी के नेतृत्व में जिन लोगों ने कभी खादी को अपनाया था, आज शासनारूढ़ हो जाने पर उन्हीं लोगों ने यन्त्रोद्योगों से पुराने उद्योग-धन्धों को नीचे दबा दिया है।

इस युग में राजनीति की तरह, जब कि औद्योगिक नीति भी अन्तर्राष्ट्रीय हो गयी है, तब किसी एक देश का स्वतन्त्र निर्माण दुष्कर हो गया है। सबके सामने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, विज्ञान और अर्थशास्त्र का व्यवधान आ गया है। यदि कोई देश यह व्यवधान हटा कर मानव के सजीव स्वावलम्बन को अग्रसर कर सके, तो वह सारे संसार के लिए आदर्श उपस्थित कर सकेगा। गांधीजी की स्मृतिछाया में यह आदर्श हमारे देश को ही उपस्थित करना है।

हमारे अधिकांश नेता ग्रामराज और राजनीति, जीवन्त उद्योग (ग्रामोद्योग), यन्त्रोद्योग, सामाजिक सहयोग और व्यापारिक अर्थशास्त्र में समझौता करके काम चलाना चाहते हैं। विनोबा, कुमारप्पा और जयप्रकाश की नीति भी समझौते की नीति है। यह कामचलाऊ नीति आसान है, किन्तु इससे गाँवों का उद्धार नहीं हो सकता।

तर्क से क्या नहीं सिद्ध किया जा सकता। विनोबा और कुमारप्पा भी तार्किक की भूमि पर ही हैं। कुमारप्पा जी ने कहा : "बेजान चीजों में क्या अच्छा, क्या बुरा, ये गुण दोष तो मनुष्य के उनके उपयोग के तरीकों से पैदा होते हैं।' ' मामूली तरह से हम जहर खाने का कतई विरोध करेंगे, लेकिन कुछ बीमारियों में दवा के तौर पर जहर दिया ही जाता है। उसी तरह से कुछ विशेष परिस्थितियों में और नियन्त्रण में रख कर मनुष्य की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए, मशीनें काम में लायी जा सकती हैं। चरखा भी एक यन्त्र है, लेकिन पुतलीघरों की तरह यह दूसरों की मजदूरी का शोषण नहीं करता। शोषण तो बिना मशीन के भी हो सकता है। बीड़ी बनाने में कोई मशीन नहीं लगती, फिर भी यह एक ऐसा धन्धा है, जिसमें शोषण की मात्रा बहुत काफी है।"—('भूदान यज्ञ', १२ फरवरी)।

कुमारप्पाजी के उक्त शब्दों से यह निष्कर्ष निकलता है कि 'उपयोग का तरीका' या उद्देश्य अच्छा हो, तो वर्जनीय वस्तु भी उपयोगी हो जाती है और यदि शोषण न करे, तो चरखे की तरह पुतलीघर भी उपादेय है। इस विचार में नैतिकता (उपयोगिता) पर तो ध्यान दिया गया है, किन्तु नैतिकता के साधन की समीचीनता पर ध्यान नहीं दिया गया है। चरखा और पुतलीघर एक नहीं हैं, जैसे मनुष्य और मशीनी पुतला। यदि चरखे को भी यन्त्र मान लें, तो वह पुतलीघर की तरह जहर नहीं है, मानव के स्वाभाविक पुरुषार्थ का अमृत है। उसमें कृत्रिम विद्युत् शक्ति नहीं, सजीव शरीर से सञ्चारित स्वाभाविक सञ्जीवनी शक्ति है। किसी विशेष बीमारी में जहर की उपयोगिता मान लेने पर भी उसे चिरवैकल्पिक नहीं बनाया जा सकता। प्रयत्न यह करना चाहिए कि न वह बीमारी रहे, न वह जहर रहे। गांधीजी शारीरिक व्याधियों की तरह आज की औद्योगिक (वैज्ञानिक) व्याधियों की भी प्राकृतिक चिकित्सा करना चाहते थे। ग्रामीण कृषि और कुटीर-उद्योग ही वह प्राकृतिक चिकित्सा है। चरखा इत्यादि उसी चिकित्सा के अमृत-साधन हैं।

आज के अस्वास्थ्यकर वातावरण में हमारे सामने यह प्रश्न आ उपस्थित हुआ है कि हम ग्रामीण युग में रहें या वैज्ञानिक युग में? यह प्रश्न जीवन के साध्य और तदनुकूल साधन का निर्णय चाहता है। यदि हम सरकारों की तरह अग्रगामी वैज्ञानिक देशों के यन्त्रोद्योगों (कल-कारखानों) की नकल नहीं करना चाहते हैं, तो सभी पिछड़े देशों की जनता को आत्मविश्वासपूर्वक अपने पुराने उद्योग-धन्धों को ही बढ़ावा देना चाहिए।

जैसा कि कुमारप्पाजी ने कहा है : 'शोषण तो बिना मशीन के भी हो सकता है।' हाँ, मध्ययुग में ग्रामीण कृषि और उद्योग धन्धों के रहते हुए भी सामन्तवाद द्वारा मनुष्य का शोषण होता था। चरखा श्रमिक का शोषण नहीं करता। वह उसे उसके श्रम का वरदान देता है, यही बात पुतलीघरों या किसी भी यान्त्रिक प्रयास के सम्बन्ध में कम्युनिज्म भी कह सकता है। फिर गान्धी मार्ग और कम्युनिज्म में क्या अन्तर है? किसी भी यान्त्रिक प्रयास से प्रकृति का शोषण होता है। आज जैसे मजदूर हड़ताल करते हैं, वैसे ही प्रकृति भी हड़ताल कर सकती है (करने लगी है)। सभी भौतिक साधनों की जननी प्रकृति ही है। यदि प्रकृति शोषित होती रही, यन्त्रोद्योगों पर से पूँजीवाद का अधिकार हट जाने पर भी कम्युनिज्म मनुष्य का पोषण नहीं कर सकेगा, क्योंकि साधन चुक जाने पर मजदूरों की हड़ताल के बिना ही मशीनें बेकार हो जायेंगी। पुरानी कृषि और उद्योग-धन्धा (जिसका प्रतीक हल, बैल और चरखा है) प्रकृति का शोषण नहीं करता। यही कारण है कि साम्यवाद से पोषित होकर भी मनुष्य और उसके साथी मनुष्येतर प्राणी जीते चले आ रहे हैं।

आज हमें प्रकृति को भी शोषण से मुक्त करना है और मनुष्य तथा मनुष्येतर प्राणियों को भी शोषण से मुक्त करना है। यन्त्रोद्योगों से छुटकारा पाकर प्रकृति तो शोषण से मुक्त हो जायेगी, किन्तु जब तक सारे संसार में टकसाली अर्थशास्त्र बना हुआ है, तब तक मनुष्य शोषण से मुक्त नहीं हो सकेगा। मशीनों की तरह ही हमें टकसाली अर्थशास्त्र से भी छुटकारा लेना होगा। यह कैसे सम्भव है? हमें इस प्रकार रास्ता निकालना चाहिए।

सरकारों के टैक्स और बाजार के सौदे के लिए टकसाली अर्थशास्त्र (रुपया-पैसा, डालर पौण्ड आदि का) अनिवार्य बना हुआ है। यह अर्थशास्त्री इनामी सांड की तरह ही मनुष्य को अकर्मण्य बनाता है। यदि खादी बाजार में बिकती है, तो उसे टकसाली अर्थशास्त्र का मुखापेक्षी बनाना पड़ेगा। बाजार में आकर कोई भी जीवनोपयोगी वस्तु (चाहे वह धान हो, अन्न हो, वस्त्र हो) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से बँध जाती है। इस दृष्टि से ग्रामीण कृषि और उद्योग धन्धों को कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं मिल सकता, उसका घरेलू समाज नहीं बन सकता। हमें विनिमय का मनुष्य की तरह ही कोई सजीव माध्यम ढूँढ़ना है। यही माध्यम अराजकतावादी प्रिन्स क्रोपाटकिन लेबर चेक चलाकर और गांधीजी खादी पर सूत लेकर प्रचलित करना चाहते थे।

शहरीकरण और यन्त्रीकरण से गाँवों को बचाने की समस्या बहुत पेचीदी समस्या है। ढड्ढाजी ने तो एकदेशीय प्रासंगिक रूप में इसे उपस्थित किया है। वैसे यह सर्वदेशीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। समय रहते यदि इसका समाधान नहीं किया गया, तो फिर कुछ सोचने विचारने और करने-धरने के लिए नहीं रह जायेगा। ग्रामीण कृषि और पुराने उद्योग धन्धों के विनाश से बिना युद्ध के ही प्राणिमात्र का विनाश हो जायेगा। अभी हाल में (८ मार्च को) टेलिविजन पर बर्ट्रेण्ड रसल ने कहा है: "प्रत्येक प्राविधिक प्रगति विश्व के लिए दुर्भाग्यप्रद है और इस प्रकार बड़े-बड़े देश अपनी अपनी अतिरिक्त शक्तियाँ परस्पर एक दूसरे को समाप्त करने के लिए उन्मुख कर रहे हैं।"

इस विनाशकारी स्थिति से उद्धार के लिए सभी देशों के प्रकृतिप्रेमी मनीषियों और पिछड़े देशों के पुराने उद्योग-धन्धों के साधकों का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन करना चाहिए। सेवाग्राम का सर्वोदय-सम्मेलन इसी विश्व-सम्मेलन का शुभारम्भ हो।

यही स्थिति रही, तो सारे रचनात्मक काम टूट जानेवाले हैं ! गांधी-जन एक होकर जनशक्ति का काम उठायें

आंदोलन के संबंध में विनोबाजी द्वारा किया गया प्रकट चिंतन

इन पंक्तियों में हम विनोबाजी के वे विचार-कण संगृहित करके प्रस्तुत कर रहे हैं, जो उन्होंने विभिन्न अवसरों पर प्रगट चिन्तन करते हुए व्यक्त किये हैं। इन्हें पढ़ने से हमें अन्दाज मिलेगा कि विनोबा हमसे, कार्यकर्ताओं से आंदोलन से और गांधी परिवार से क्या चाहते हैं ? गांधीजी की तपोभूमि सेवाग्राम में १२ वर्षों के बाद एकबार फिर सारा गांधी परिवार एकत्रित होने जा रहा है। उस अवसर पर यह विचारप्रवाह हमारे लिए प्रेरणादीपका काम करेगा।

—संपादक

गांधी परिवार से अपेक्षा

गांधीजी ने हमारे सामने जो सर्वोदय का कार्यक्रम रखा था, उसे चरितार्थ करने के लिए हम सतत घूम रहे हैं। गांधी विचार में श्रद्धा रखनेवालों के सामने हमारी प्रार्थना है कि वे इस काम में हमारी पूरी ताकत लगाकर मदद करें। इतिहास में यह नहीं कहा जाना चाहिए कि कुछ लोगों की ताकत नहीं मिली, इसलिए असफलता मिली। बल्कि यही कहा जाना चाहिए कि सबने पूरा साथ दिया। गांधी-विचार का यह प्राण-कार्य चल रहा है।

हमें सबका और खासतौर से गांधी-विचार माननेवालों का पूरा सहयोग अपेक्षित है। हमें तो "एकला चलो रे, एकला चलो" बहुत प्रिय है किंतु हम अकेले चलें इसमें सबके लिए शोभा नहीं है, केवल अकेले चलनेवाले की शोभा होगी। हम नहीं चाहते कि खाली हमारी शोभा हो। बल्कि यही चाहते हैं कि सबकी शोभा हो।

हमारी जिम्मेदारी

हमारी आत्मा कहती है कि जो राह गांधीजी ने दिखायी, उस पर चलने की हमने सोलह आने कोशिश की। हमने प्रयत्नों की पराकाष्ठा की। पिछले सालों में एक क्षण भी ऐसा याद नहीं है, जब हम असावधान रहे हों। फिर भी हम जाहिर करना चाहते हैं कि हम यशस्वी नहीं हो रहे हैं। हमारी बहुत बुरी तरह हार हुई है। शायद लोगों के ध्यान में नहीं आ रहा होगा कि मैं क्या बोल रहा हूँ। जब कि लाखों एकड़ जमीन मिली है, लाखों लोगों ने दान दिया है, सैकड़ों ग्रामदान मिले हैं, लोगों में आशा भी उत्पन्न हुई है—यह सब हुआ, इसमें कोई शक नहीं। फिर भी हम बहुत दुःखी हैं और अपनी हार महसूस कर रहे हैं।

हमारी हार का स्पष्ट लक्षण तो यह है कि आज भी देश में शांति नहीं है। भूदान को हमने शांति का एक साधन माना था। पर जिन प्रदेशों में हमें काफी जमीन मिली, काफी ग्रामदान मिले, वहाँ भी आज अशांति का राज्य है। लोगों में हिंसा फैली है।

भूदान का असर गाँवों पर अवश्य हुआ, लेकिन हम कबूल करना चाहते हैं कि शहरों पर हम असर नहीं डाल सके। शहरों में आज भी उसी हवा का असर है, जो महायुद्धों से सारी दुनिया में फैली है।

मेरा चित्त बहुत व्यथित है। हम ऐसी गलतफहमी में, ऐसे भ्रम में न रहें कि हमें स्वराज्य हासिल हुआ, तो हम सुरक्षित हो गये। यह स्वराज्य क्षणभंगुर साबित हो सकता है। यह स्वराज्य बिलकुल खतरे में है। हम सब सेवकों और कार्यकर्ताओं को यह निश्चय करना चाहिए कि हिन्दुस्तान में जो भी मसले हैं, उन्हें हम शांति से ही हल करेंगे।

हमें इस बात का भी दुःख है कि लोगों की तरफ से जहाँ हिंसा होती है, वहाँ सरकार की ओर से भी अवश्य होता है। पर अपराध किस ओर का होता है, इस विचार-विश्लेषण में मैं पड़ना नहीं चाहता। मैं तो यही कहूँगा कि यह अपराध भूदान यज्ञ का है, यानी हमारा है। इसके लिए हम अपने को ही गुनहगार मानते हैं। हमें ऐसी हवा का निर्माण करना चाहिए, जिसका असर सारी दुनिया पर पड़े।

हम निराश नहीं ! दीपक निराश नहीं होता !!

हम निराश नहीं हैं और न निराश होने का कोई कारण ही है। बल्कि हमारा स्वभाव तो निराशा के विरुद्ध ही है। बाहर जितना अंधकार बढ़ता है, उतना ही हमारा उत्साह बढ़ता है। अंधकार को देख हमें खुशी होती है कि हमारा छोटा सा दीपक भी मार्गदर्शन करेगा। हमें साहस से काम करना है, जहाँ हम नहीं पहुँचे हैं, वहाँ पहुँचना होगा। घर-घर साहित्य पहुँचाना होगा। अंधकार प्रकाश पर हमला नहीं करता, बल्कि प्रकाश ही अंधकार पर हमला करता है। प्रकाश के सामने अंधकार टिकेगा नहीं।

युद्धभूमि में कूदिये

हम प्रचार करते हैं, तो कुछ काम होता है, कुछ हवा भी तैयार होती है, किन्तु यह क्रांति तो साक्षात् युद्ध की सी बात है। समरस्थल पर गये बिना युद्ध नहीं होता, इसी तरह जब तक हम प्रत्यक्ष क्षेत्र में नहीं आयेंगे, तब तक क्रांति को चरितार्थ होते कैसे देख सकेंगे ? इसलिए हममें से हरएक के जिम्मे एक-एक जिला होना चाहिए। यह नहीं कि हरएक जिले के लिए किसी मनुष्य को खड़ा किया जाये। हममें से कुछ लोग, जो ताकत रखते हैं, वे कहें कि हम अमुक जिले में अपनी जिम्मेवारी महसूस करते हैं। इस तरह हमारे आन्दोलन के जितने मुख्य लोग हैं, वे अपना-अपना संबंध एक-एक जिले से जोड़ लें।

हमारी बुनियाद कहाँ है ?

हमारा कुल सर्वोदय विचार जन-शक्ति के अभाव में टूट जायेगा। हमें हर तरह से सरकारी मदद मिलेगी, पर वह जितनी ज्यादा मिलेगी, सर्वोदय विचार उतना ही ज्यादा टूटता जायेगा। इसका मतलब यह नहीं कि सरकार की मदद नहीं मिलनी चाहिए। हम तो कहेंगे कि सरकार ही सर्वोदय की बन जाये, परन्तु सरकार की मदद हजम करने के लिए कुछ अपनी भी तो चीज मजबूत हो।

नहीं तो हमें वह मदद जितने परिमाण में मिलती जायेगी, उतने ही परिमाण में हम ढीले ही पड़ते जायेंगे। रचनात्मक कामों की जितनी बातें इन दिनों में सुनता हूँ, उनकी कोई बुनियाद मुझे नहीं दीखती।

हम अपने को तौलें, तो मालूम होगा कि हम ऊपर-ऊपर से समानता की कुछ बातें कर लेते हैं, परन्तु वह बिलकुल नकली साम्य है। हमारी संस्थाएँ भी बहुत शुष्क बन गयी हैं। उनमें कोई आत्मतत्त्व नहीं है। नयी तालीम, खादी-ग्रामोद्योग आदि में सारा ऊपर का टेक्निक चलता है। जिन मनुष्यों को हम साथ रखते हैं, उनको भी लाचारी से साथ रखते हैं। कर्म प्रधान होकर उनका उपयोग करते हैं और फिर कोशिश करते हैं कि उन्हें सिद्धान्तों और विचारों का स्पर्श हो। लेकिन हम ऐसी कोशिश नहीं करते कि जिन्हें ऐसे विचार मान्य हों, वे कर्म निरपेक्ष होकर इकट्ठा हों और कर्म की जरूरत मालूम होने पर कर्म शुरू करें। यह करने की बजाय हम पहले कर्म लेते हैं, फिर मनुष्य ढूँढ़ते हैं याने कि सब काम कर्मप्रधान होता है। इसीसे मैं परेशान हूँ।

यह सब देख कर मेरा जी घबड़ा उठता है। इन दिनों कभी-कभी मैं कठोर बोलता हूँ, जैसा कि अक्सर नहीं बोलता था। इसका कारण यह है कि मैं अपने से असंतुष्ट हूँ। मेरी यात्रा चलती है, उससे भी मैं असंतुष्ट हूँ। जब से ब्रह्मविद्या मंदिर का आरंभ हुआ है, तभी से मुझे लगता है कि मेरी यात्रा भी ब्रह्मविद्या मंदिर होनी चाहिए। परन्तु नहीं होती। लोगों में इतनी उदारता है कि उन पर साधुत्व का असर तो होता ही है, पर साधुत्व के ढोंग का भी असर होता है। साधुत्व का ढोंग होने पर भी वे इतने उदार होते हैं कि उससे भी कुछ-न-कुछ पाते ही हैं। कुछ लोगों का तो सिर्फ साधु का वेश ही होता है। फिर हमने कुछ न कुछ तपस्या की ही है और कुछ बापू का नाम भी साथ है। इसलिए हमारा कुछ न कुछ असर हो ही जाता है। फिर भी आज हमारे चित्त में बेचैनी है और आगे सत्याग्रह का चिंतन करने में रुकावट पैदा हो रही है। मैंने अपने साथियों से कहा कि हमारी यात्रा का जनता पर कुछ भी असर हो, लेकिन मैं जब ध्यान करने बैठ जाता हूँ, तो उसमें जो दर्शन होना चाहिए, वह नहीं होता। इससे मैं व्याकुल हो उठता हूँ। लोग मेरी यात्रा पर जो टीका करते हैं, वह बिलकुल सौम्य है। मैं स्वयं अपने पर उससे बहुत ज्यादा टीका करता हूँ।

[बापू–नेहरू पत्र-व्यवहार का संदर्भ]

आत्म-निरीक्षण की घड़ी

सिद्धराज ढड्ढा

सन् १९४८ में गांधीजी की मृत्यु के साथ इतिहास का एक अध्याय समाप्त हुआ और दूसरे की शुरुआत हुई। जब वे जिन्दा थे, तब न केवल वे स्वयं सारी प्रेरणा के आदिस्रोत थे, बल्कि सर्वोदय की सिद्धि के लिए जितनी प्रवृत्तियाँ शुरू की गयी थीं और चल रही थीं, उन सबके केन्द्र-बिन्दु और परस्पर की कड़ी थे। राजनैतिक आजादी की लड़ाई गांधीजी के लिए सामाजिक और आर्थिक अन्याय तथा शोषण, गरीबी और असमानता को मिटाने की व्यापक लड़ाई का एक अंग ही थी। वे बार बार हमें याद दिलाते रहते थे कि "आजादी की लड़ाई केवल अपने-आपमें ध्येय वस्तु नहीं थी। राजनैतिक आजादी का कोई मूल्य नहीं है, अगर उसके फलस्वरूप सामान्य मनुष्यों का युग शुरू न हो, अर्थात् उनका उदय न हो।

आजादी आम जनता के उद्धार की पहली सीढ़ी मात्र है।" (पृ ५४३) *

जवाहरलालजी से पत्र-व्यवहार

जब आजादी की लड़ाई का अन्त निकट आता दिखाई दिया, तब वे इस बात के लिए और भी चिन्तित हो उठे कि जब हिन्दुस्तान को राजनैतिक सत्ता प्राप्त हो जाये, तो वह आम जनता की भलाई के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही काम में लायी जाये। इस बारे में वे किसीके भी मन में जरा सी भी शंका बाकी न रहने देना चाहते थे कि वे किस ध्येय के लिए लड़ रहे हैं और उनकी दृष्टि से आजादी के बाद हिन्दुस्तान को कौन-सा रास्ता अख्तियार करना चाहिए। वे इस बात का पूरा यकीन कर लेना चाहते थे कि उनकी बात को लोग पूरा-पूरा समझ लें और उसके अनुसार काम करें।

"मैं चाहता हूँ कि हम दोनों एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ लें.... मैंने तुम्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया है, लेकिन यह जरूरी है कि मैं अपने उत्तराधिकारी को समझ लूँ और मेरा उत्तराधिकारी मुझे अच्छी तरह समझ ले।"

यह गांधीजी ने सन् १९४५ के अक्तूबर में एक पत्र में पं० जवाहरलाल नेहरू को लिखा था। कांग्रेस की वर्किंग-कमेटी में यह चर्चा उठी थी कि आजादी के बाद कांग्रेस का राजनैतिक और आर्थिक ध्येय क्या रहेगा। यह अच्छी तरह से विदित ही है कि गांधीजी और उनके राजनैतिक साथियों में, जिनमें जवाहरलालजी प्रमुख थे, इस मामले के बारे में मतभेद चला करता था। लेकिन तब तक इन मतभेदों का महत्त्व केवल सैद्धान्तिक था। पर जब यह स्पष्ट मालूम हो गया कि आजादी अब सन्निकट है, तब इन सब बुनियादी बातों की चर्चा और इनके बारे में निर्णय गांधीजी के लिए एक अत्यन्त व्यावहारिक महत्त्व का प्रश्न बन गया। केवल आपस में एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ लेने की दृष्टि से ही गांधीजी ने उस समय जवाहरलालजी से यह पत्र-व्यवहार शुरू किया हो, ऐसी बात नहीं थी। वे यह भी चाहते थे कि

"अगर हम लोगों में कोई बुनियादी मतभेद है, तो जनता को भी वह मालूम होना चाहिए। यह स्वराज्य के हमारे काम के लिए हानिकारक होगा, अगर हम जनता को इन बातों के बारे में अँधेरे में रखें।" (पृ० ५३४)

क्या आज वही हो रहा है, जो गांधीजी चाहते थे ?

इससे साफ जाहिर होता है कि गांधीजी इन सारी बातों को कितना महत्त्व देते थे और उनके लिए ये बातें कितनी बुनियादी थीं। संयोग ऐसा था कि उनकी मृत्यु हिन्दुस्तान के इतिहास के भी एक महत्त्व के सन्धिकाल पर हुई। कई वर्षों की राजनैतिक गुलामी का अन्त हुआ ही था और हिन्दुस्तान के लिए अपनी मर्जी से अपनी राह बनाने का और अपनी समाज-रचना करने का एक नया युग शुरू हुआ था। आज, जब कि गांधीजी हमारे बीच में नहीं हैं और जब कि मुल्क तेजी के साथ विकास की एक अमुक दिशा में कदम बढ़ा रहा है, तब यह जरूरी है कि हम बारबार अपने-आपको इस बात की याद दिलाते रहें कि गांधीजी हिन्दुस्तान से वास्तव में क्या चाहते थे। ताकि न सिर्फ हम, जो गांधीजी के सपनों का समाज स्थापित करने के लिए कोशिश करते रहते हैं, बल्कि आम जनता भी इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि क्या मुल्क उसी राह पर चल रहा है, जिस पर गांधीजी उसको ले जाना चाहते थे।

चूँकि आज देश की सरकार में बहुत-से लोग ऐसे हैं, जिन्होंने गांधीजी के साथ वर्षों तक काम किया है और जो उनके नेतृत्व में आजादी की लड़ाई में लड़े हैं, और चूँकि ये लोग अपनी नीति और कामों के बारे में अक्सर गांधीजी के नाम का हवाला देते हैं, इसलिए लोगों में आम तौर पर यह भ्रम पैदा होना स्वाभाविक है कि आज इस मुल्क में सरकार के द्वारा जो कुछ हो रहा है, वह वैसा ही हो रहा है, जैसा गांधीजी चाहते थे।

अतः हम लोगों को यह जान लेना जरूरी है कि गांधीजी खुद हिन्दुस्तान के लिए और हिन्दुस्तान की मार्फत सारी दुनिया के लिए, कैसी आर्थिक और सामाजिक रचना चाहते थे। ऊपर पं० नेहरू को लिखे गये गांधीजी के जिस पत्र का जिक्र है, उसमें आगे चल कर उन्होंने कहा था :

"मुझे इस बारे में कोई शंका नहीं है कि अगर हिन्दुस्तान को सच्चे माने में आजाद होना है, और हिन्दुस्तान की मार्फत दुनिया को, तो आगे या पीछे हमें इस तथ्य को स्वीकार करना ही होगा कि लोगों को गाँवों में रहना है, शहरों में नहीं, झोपड़ियों में रहना है, महलों में नहीं। करोड़ों लोग शहरों और महलों में कभी एक-दूसरे के साथ शान्ति-पूर्वक नहीं रह सकते, ऐसा होगा, तो हिंसा और असत्य का सहारा लेने के सिवा और कोई दूसरा चारा नहीं रहेगा।

"मेरी यह भी मान्यता है कि सत्य और अहिंसा के बिना मानव जाति के लिए विनाश के सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है और सत्य और अहिंसा को हम ग्रामीण जीवन की सादगी में ही प्राप्त कर सकते हैं तथा वह सादगी चरखे में और चरखे से जिन तमाम मूल्यों का हमें भान होता है, उन्हीं में पायी जा सकती है। मुझे इस बात से कोई डर नहीं है कि दुनिया आज गलत रास्ते पर जा रही है। हो सकता है कि हिन्दुस्तान भी उसी रास्ते पर जाये और जैसे पतंगा दीपक की लौ के चारों ओर उत्तरोत्तर अधिक तेजी के साथ नाचता है और अन्ततोगत्वा उसीमें भस्म हो जाता है, उस तरह वह भी भस्म हो जाये। लेकिन अपनी आखिरी साँस तक हिन्दुस्तान को और हिन्दुस्तान के माध्यम से तमाम दुनिया को इस दुर्गति से बचाने का मेरा धर्म है।

"मैंने जो कुछ कहा है उसका सार यह है कि मनुष्य को वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति में सन्तोष मानना चाहिए और उसके लिए आत्म-निर्भर होना चाहिए। अगर मनुष्य इतना संयम नहीं कर सकता है, तो वह अपने को सर्वनाश से नहीं बचा सकेगा।"

समाज-रचना का विवाद

यह पत्र-व्यवहार और यह विवाद कि हिन्दुस्तान पश्चिमी ढंग की केन्द्रित उद्योग प्रधान शहरी सभ्यता की ओर बढ़े, जैसा कि आज बढ़ रहा है या ऐसी सरल आर्थिक रचना की ओर, जो छोटी-छोटी स्वावलम्बी गाँव इकाइयों पर आधारित है, कुछ वर्षों तक चलता रहा। पं० नेहरू की इन दलीलों के बावजूद कि आधुनिकतम यांत्रिक आविष्कारों का हमें उपयोग करना चाहिए और देश की सुरक्षा आदि की दृष्टि से वैसा करना और केन्द्रित उद्योग कायम करना जरूरी है, गांधीजी अपने विचारों पर दृढ़ रहे। जैसा कि अक्सर होता है, जहाँ तक सत्य का प्रश्न था, गांधीजी और पं० नेहरू की बहुत कुछ समान भूमिका थी, लेकिन गांधीजी ने उन्हें फिर लिखा—और इस बार और भी अधिक स्पष्ट और निश्चित भाषा में कि जिस ध्येय के बारे में गांधीजी और वे दोनों सहमत थे, उसकी पूर्ति का भी सिवा उसके और कोई दूसरा मार्ग नहीं है, जो गांधीजी बता रहे थे :

* इस लेख के सारे संदर्भ श्री प्यारेलालजी लिखित अंग्रेजी 'लास्ट फेज' भाग दो के हैं।

"१—तुम्हारी दृष्टि से असली सवाल यह है कि मनुष्य का उच्चतम बौद्धिक, आर्थिक, राजनैतिक और नैतिक विकास किस तरह साधा जाय। मैं तुमसे पूर्णतया सहमत हूँ।

२—इस मामले में तमाम व्यक्तियों को समान अधिकार और अवसर होना चाहिए, यह तो स्पष्ट ही है।

३—दूसरे शब्दों में कहें, तो खाने-पीने, कपड़ा और जीवन की दूसरी बातों के बारे में गाँवों और शहरों के लोगों के बीच समानता होनी चाहिए। इस समानता को प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि लोग जीवन की अपनी आवश्यकताओं को अर्थात् वस्त्र, भोजन, निवास, रोशनी और पानी को खुद पैदा कर सकें या उनकी व्यवस्था कर सकें।

४—मनुष्य अकेला रहने के योग्य पैदा नहीं हुआ है। वह एक सामाजिक प्राणी है, जो आजाद भी है और परस्परावलम्बी भी। पर किसीको भी दूसरे की पीठ पर सवार होने का न तो अधिकार है और न उसे वैसा करना ही चाहिए। अगर हम इस प्रकार के जीवन के लिए आवश्यक परिस्थिति का निर्माण करना चाहें, तो हम बरबस इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि समाज की इकाई गाँव होना चाहिए या लोगों का ऐसा एक छोटा सा समूह, जो अन्ततोगत्वा अपनी बुनियादी आवश्यकताओं में स्वावलम्बी हो और आपसी सहयोग और परस्परावलम्बन के सूत्र में बँधा हुआ हो।"

कसौटी का समय ही अब है

लेकिन दुर्भाग्य से इस बारे बरस। कोई खास नतीजा नहीं निकला।

पाठकों को बापू के आखिरी दिनों की याद दिलाना जरूरी नहीं है। न इस बात की याद दिलाना जरूरी है कि आखिरी दिनों में वे इस बात से कितने दुखी हुए कि जिस आलीशान इमारत को बनाने के लिए उन्होंने जिन्दगी भर मेहनत की, उसकी एक के बाद दूसरी ईंट ढीली होती गयी और गिरने लगी। लेकिन फिर भी उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी थी। उन्हीं दिनों रचनात्मक कार्यकर्ताओं के साथ एक बातचीत में उन्होंने कहा था कि "अगर वे यह सोचते हों कि कांग्रेस की सरकार के हाथ में सत्ता आयी है, इसलिए उनकी सारी जिम्मेदारी खत्म हो गयी है तथा सारी जिम्मेदारी सरकार की ही है और यदि सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाती है, तो सिवा इसके कि निराश होकर बैठ रहें और कोई चारा नहीं है, तो यह एकदम गलत बात होगी। बल्कि यह कहना चाहिए कि उनकी (रचनात्मक कार्यकर्ताओं की) कसौटी का समय ही अभी आया है। अगर उनमें धीरज, अध्यवसाय और निष्ठा होगी, तो भविष्य उनका है।" (पृष्ठ ६८४)

उन बातों को १२ साल का अर्सा गुजर गया है और अब फिर सेवाग्राम में देशभर के सर्वोदय कार्यकर्ता मिल रहे हैं। इस लम्बे अर्से में बहुत कुछ हुआ है। गांधीजी ने जो मशाल जलायी थी, उसे लेकर विनोबाजी गाँव-गाँव घूम रहे हैं। लेकिन हम "रचनात्मक कार्यकर्ताओं" के लिए यह अवसर आया है, जब हम इस पिछले अर्से के काम का लेखा जोखा लें और देखें कि क्या हम उस 'कसौटी' में खरे उतरे हैं, जो गांधीजी ने हमारे लिए निर्धारित की थी? यह हमें भी देखना है कि मुल्क की विकास-योजनाओं के संदर्भ में जिस विषय पर गांधीजी ने इतने साफ और दर्दभरे शब्दों में अपनी राय जाहिर की थी, हमारी क्या जिम्मेदारी और क्या कर्तव्य है?

•

संशोधन

"भूदान यज्ञ" के ता० १९ फरवरी के अंक पृष्ठ ७ पर सब भाषाओं की भूदान पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गयी थी। उस सूची में तेलगू भाषा के साप्ताहिक "ग्रामसेवकम्" के बाद तन्जोर से निकलने वाले मासिक सर्वोदय का जिक्र है। गलती से उसकी भाषा तेलगू बतलाई गई है। यह पत्र तमिल भाषा में निकलता है उसी सूची में उड़िया भाषा में मासिक "ग्रामदान" निकलने का जिक्र है, पर वह मासिक बन्द हो चुका है।

इसी तरह से बिहार के पूर्णिया जिले से सर्वोदय समाचार और मुंगेर जिले से सर्वोदय संदेश नाम के दो पत्र भी जिला स्तर पर निकलते हैं। —सम्पादक

१९४८ का रचनात्मक कार्यकर्ता-सम्मेलन : एक ऐतिहासिक पृष्ठ का अध्ययन

गांधी-सेवा संघ का आखिरी अधिवेशन १९४० में मालिकान्दा में हुआ था। उस समय संघ की आन्तरिक स्थिति और देश की बाहरी परिस्थिति देखकर गांधी सेवा संघ को समेट-सा लिया गया। उसके बाद गांधी परिवार के लोगों का एक स्थान पर मिलने का कई बार सोचा जाता रहा। लेकिन वह टलता रहा। स्वराज्य प्राप्ति के बाद तो यह उत्सुकता चारों ओर से प्रकट की गयी कि गान्धी परिवार के लोगों का एक सम्मेलन हो। आखिर फरवरी में यह सम्मेलन किया जाय, यह सोचा गया और इसमें स्वयं बापू भी भाग लें, यह तय हुआ। पर जैसे ओठों तक पहुँचा हुआ ग्रास छिन जाता है, उसी तरह ऐन मौके पर वह दुर्घटना हुई, जिसे याद करने मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लेकिन बापू के निर्वाण के बाद तो सम्मेलन के बारे में उत्सुकता और भी बढ़ गयी। इसलिए १३, १४ और १५ मार्च १९४८ को सेवाग्राम में यह सम्मेलन हुआ। जिसमें गांधी परिवार के लगभग सभी मुख्य कुटुम्बी सम्मिलित हुए थे।

उसके बारह साल बाद फिर उसी स्थान पर बारहवाँ सर्वोदय-सम्मेलन होने जा रहा है। याने फिर से उसी स्थान पर हम गांधी-परिवार के लोग सर्वोदय आन्दोलन के अतीत और भविष्य के बारे में विचार करने के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। विनोबाजी इस सम्मेलन में उपस्थित नहीं रहेंगे। इसलिए हमारी और हमारे नेताओं की जिम्मेदारी और भी अधिक हो जाती है।

हम यहाँ १९४८ में हुए उस सम्मेलन की जानकारी बहुत संक्षेप में दे रहे हैं।

उस सम्मेलन के सामने मुख्य रूप से २ बातों पर विचार करने का सवाल था। एक तो, गांधीजी के विचारों का फैलाव करने के लिए और दूसरे देशों के लिए गांधी विचार का नमूना पेश करने के लिए कोई संगठन बनाया जाय या नहीं। दूसरा सवाल यह था कि गांधीजी द्वारा स्थापित जितनी भिन्न भिन्न रचनात्मक संस्थाएँ हैं, उनका आपसी समन्वय कैसे हो। इन दो प्रश्नों पर खूब गहराई से चर्चा हुई।

राजेन्द्रबाबू:

हमारा ध्येय तो अहिंसक समाज की रचना है ही, यही हमारी चर्चा का आधार है। इस संबंध में जो लोग कुछ कहना चाहते हों, वे कहें।

धोत्रेजी :

हम अहिंसक समाज की रचना रचनात्मक कामों के माध्यम से करने की कोशिश में हैं। यहाँ मुख्य सवाल यह आता है कि रचनात्मक कार्य सरकार की सहायता के बिना उन्नति कर सकेगा या नहीं। हमारे कार्यकर्ता सरकारी मदद की जरूरत महसूस करने लगे हैं। परन्तु बापूजी का खयाल कुछ दूसरी तरह का था। वे कहते थे कि हम सरकार की मदद न चाहें, बल्कि उसकी मदद करें। इस तरह दो भिन्न विचार धाराएँ हमारे सामने हैं। इसलिए हमें यह तय करना है कि सरकार से हमारा संबंध किस तरह का हो।

श्री विचित्र भाई :

यह प्रश्न बहुत महत्व का है। हमारा ध्येय तो अहिंसक समाज की रचना ही है। लेकिन उसके लिए हम प्रवृत्ति करें, यह विचारणीय विषय है। स्वतंत्र रूप से जो करते हैं और स्टेट या कांग्रेस से जो कराना चाहते हैं, उसका मेल कहाँ तक बैठेगा। स्टेट की, कांग्रेस की और हमारी नीति कहाँ तक एकरूप होगी, इस संबंध में हमको स्पष्ट नीति तय करनी चाहिए।

विनोबा

हमको जो सोचना है, वह यह है कि आज हमारी श्रद्धा कितनी गहरी है। अहिंसा का एक तरीका है। जनता और सरकार उसके लिए अनुकूल नहीं होती। ऐसी स्थिति में हमारी अपनी श्रद्धा क्या कहती है? क्या हम भी नीचे उतरकर समाज के हिंसक तरीके को अपनायेंगे या अपनी श्रद्धा के अनुकूल रहकर मर मिटेंगे? किसीको शायद लगेगा कि दो-चार आदमियों के मर मिटने की अपेक्षा यह बेहतर है कि कुछ नीचे उतरें। अपनी श्रद्धा में थोड़ासा पानी मिला दें। लेकिन मेरी श्रद्धा तो यही कहती है कि हम मर मिटें, लेकिन नीचे न उतरें।

जे सी कुमारप्पा :

हम अहिंसा की बुनियाद पर नये सिरे से पुनः संगठन करना चाहिए। हमारा दैनिक जीवन याने हमारा खाना-पीना, व कपड़ा और मकान आदि तमाम बातों का आयोजन उस धरातल पर से होना चाहिए।

बापू को गोली गोडसे ने नहीं मारी, बल्कि हमने मारी। गोडसे में सहनशक्ति, साहस और बलिदान का माद्दा था। उसके जैसे और भी हजारों नौजवान हैं, जिनमें त्याग वृत्ति और बलिदान की

शक्ति है। हमें उस शक्ति का उचित दिशा में उपयोग करना चाहिए। हमने इन नवयुवकों का कोई सदुपयोग नहीं किया, यह हमारा कसूर है। इसलिए अब हमें एक ऐसा संगठन बनाना चाहिए, जो इन सब युवकों की शक्ति का सदुपयोग कर सके।

आर्यनायकम् :

जब मैंने तालीमी संघ का काम अपने हाथ में लिया, उस वक्त बापू ने मुझसे पूछा, तुम्हारी श्रद्धा क्या है? क्या तुम यह समझते हो कि लोगों को महज एक उद्योग सिखाने के लिए शिक्षण का यह एक नया तरीका निकाला है या यह अहिंसक समाज कायम करने का मेरा साधन है? यदि तुम्हारा यह विश्वास हो कि बुनियादी तालीम अहिंसक समाज की स्थापना का साधन है, तो इस काम में रहो, नहीं तो उसे छोड़ दो।

हमारी रचनात्मक संस्थाओं में समग्रता की दृष्टि नहीं है। हाथी किसी ने नहीं देखा। चरखा-संघ ने हाथी का पाँव ले लिया। इसी तरह किसी ने कान, किसी ने सूँड़, सब ने अपनी अपनी अलग-अलग खिचड़ी पकायी। इन संस्थाओं में कोई पारस्परिक संपर्क नहीं रहा। हम आपसी जीवन में भी अहिंसा का विकास नहीं कर सके। बापू के सपने का जो हिन्दुस्तान था, उसे हम जब तक अपने में चरितार्थ नहीं कर सकते, तब तक सफलता की कोई उम्मीद नहीं।

विनोबा :

हम जब कोई संघ या मंडल बनाते हैं, तो वहाँ सांप्रदायिकता का भय लगा रहता है। संघ में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का भी हनन होता है। संघ में रहकर निर्णय न मानने की स्वतंत्रता मनुष्य को नहीं मिलती। इसलिए हम जो संघटन बनायें, उसमें व्यक्ति और वाद के नाम पर आनेवाली सांप्रदायिकता से बचाव होना चाहिए। मैं बंधु भावना का कायल हूँ, लेकिन बंध-भावना नहीं चाहता।

रचनात्मक संस्थाओं के एकीकरण की बात तो सुहावनी है, किन्तु एकीकरण से काम का बोझ बढ़ेगा और फलस्वरूप काम में ढिलाई आयेगी। इसलिए यह देखना होगा कि इन कामों की उन्नति के लिए एकीकरण कहाँ तक उपयोगी है और कहाँ तक बाधक।

आशादेवी :

तालीमी संघ का काम एक ऐसा काम है, जिसमें सारे संघों के काम आ जाते हैं। इसलिए मैं समझती हूँ कि इस एकीकरण का साधन तालीमी संघ हो सकता है।

श्री रामचन्द्रन् :

बापू हमारे लिए एकीकरण के बिन्दु थे। अब वह जिम्मेवारी उठाने की किसी की हिम्मत नहीं होगी। विनोबाजी शायद उस शर्त को पूरा कर सकें। उनमें वह योग्यता है। लेकिन वे भी तैयार होंगे या नहीं,—इसमें शक है। ऐसी हालत में जो काम बापू करते थे, वह एक संस्था ही कर सकती है। तालीमी संघ ऐसी संस्था हो सकती है।

प्यारेलालजी :

लोक सेवा संघ की योजना कांग्रेस के लिए बनायी गयी थी। बापू को यह डर था कि कांग्रेस जिस तरह आज चल रही है, इसी तरह चलती रही, तो वह निःसत्व और बेजान हो जायेगी। कांग्रेस आज सत्ता की लड़ाई में पड़ गयी है। इसलिए वह अपनी ताकत खो रही है। सत्ता की होड़ में कांग्रेस के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे। इसलिए वे कांग्रेस का रूप बदलना चाहते थे। पर कांग्रेस उस योजना को ग्रहण न कर सकी, तो न सही। हमें उस काम को अपने हाथ में लेना चाहिए।

इस तरह से विनोबाजी आदि ने अपने विचार रखे। किशोरलाल भाई, मगर अली सोख्ता आदि ने भी इसी बात को ताईद किया। मगन भाई देसाई ने भी कहा : "हमें शास्त्रार्थ और सांप्रदायिकता से बचकर विचारों के विकास की भूमिका पर आना है।" अपरिग्रह की बात पर बहुत गंभीरता के साथ जोर दिया गया। ऐसा कहा गया कि हमने देखा है कि कई जबर्दस्त परिग्रही भी बापूजी के अनुयायी होने का दावा करते हैं। सत्य और अहिंसा के नाम पर भारी से भारी परिग्रह रखते हैं, यह एक असंगत-सी बात है। श्री कृपलानीजी ने भी भाईचारा संघ और ढीले संगठन की बात को स्वीकार किया। आखिर में जयप्रकाशजी ने कहा, संगठन का आधार युवक शक्ति ही हो सकती है। जबतक इसमें नये नये युवक शामिल नहीं होंगे, तब तक इस काम में जान नहीं आयेगी। इस ओर भी बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है।

विषय नियामक समिति में इस विषय पर गहरी चर्चा होने के बाद एक छोटीसी उपसमिति गठित की गयी। इस उपसमिति ने नये संगठन के नाम, उद्देश्य आदि के संबंध में एक मसविदा बनाया। काफी विचार के बाद दो नाम सामने आये। एक 'सत्याग्रह मंडल' और दूसरा 'सर्वोदय समाज'

इस तरह से सर्वोदय-समाज का रूप सामने आया। इतिहास बहुत लम्बा है। जो इस इतिहास में दिलचस्पी रखते हैं, वे गांधी-सेवा संघ द्वारा प्रकाशित उस सम्मेलन की रिपोर्ट पढ़ें।

इस सम्मेलन में जवाहरलालजी भी उपस्थित थे। विनोबाजी और पंडितजी का पहला घनिष्ठ परिचय भी इसी सम्मेलन में हुआ। जवाहरलालजी के सामने रचनात्मक कामों की कठिनाइयाँ पेश की गयीं। जवाहरलालजी ने कहा : "हमारा ध्यान अभी बुनियादी कामों की ओर जाना चाहिए। बुनियादी प्रश्न यह है कि हमने जिस आजादी को प्राप्त किया है, उसे किस तरह स्थायी बनाया जाय?" जवाहरलालजी ने उसी समय यह महसूस किया था "सिर्फ सरकार की ताकत से सब सवाल हल नहीं हो सकते, मैं सरकार में हूँ। दिल्ली में रहता हूँ। रात दिन पहरे में रहना पड़ता है। बाहर निकलूँ, तो आगे सिपाही, पीछे सिपाही होते हैं। यह इन्सान की जिन्दगी नहीं है, मैं परेशान हूँ। मुझे पिंजड़े में रहना पड़ता है। मेरे लिए अहमदनगर या दूसरे कैदखानों से बड़ा कैदखाना यह है। अगर यही हाल रहा, तो मैं पागल हो जाऊँगा"

मौलाना साहब ने इस सम्मेलन में कहा था कि यह बेकार चर्चा करने का नहीं, बल्कि मैदान में आने का है। घर जल रहा है, आग बुझ रही है, अब इन्सान की खिदमत करना ही हमारा एकमात्र धर्म है।

इस तरह से १९४८ का वह रचनात्मक सम्मेलन हुआ। उस रिपोर्ट को पढ़ने से मुझे ऐसा लगा कि आज हम जो बात प्रत्यक्ष देख रहे हैं, वह उसी समय महसूस की गयी थी। दलगत राजनीति के बारे में उसी समय यह महसूस किया गया था "आज राजनैतिक पक्षभेद भी साम्प्रदायिक धार्मिक और जातीय भेदों के समान भयंकर रूप धारण करने लगे हैं। सही हो या गलत, मेरी पार्टी ही प्रमाण है। ऐसी पक्षान्धता पक्षभेद पर आधारित राजनीति के कारण दिखाई देने लगी है। दो सज्जनों के बीच पक्षभेद बाधक होने लगा है।" कितना पहले इस तथ्य को महसूस कर लिया गया था।

विनोबा की मौलिकता भी इस सम्मेलन में प्रगट हुई थी। संगठन बनाने के बारे में ऊपर जो उनके विचार दिये गये हैं, वे तो मानो सबको भा ही गये। विनोबा ने अपने बारे में कहा कि "मैं तो बापू का पाला हुआ एक जंगली जानवर हूँ।" दादा धर्माधिकारी ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा था "इन शब्दों में बड़ा गंभीर अर्थ है। इसका माने है कि बापू का पाला होकर भी मैं एकदम पालतू और गँवार नहीं हूँ।"

खेल लम्बा हो रहा है। वर्णन पूरा होना नहीं चाहता। वास्तव में तो उस सम्मेलन की और किसी भी सम्मेलन की पहचान यही होती है कि एक परिवार के लोग एक जगह मिलते हैं। विनोबाजी ने इसीलिए जवाहरलालजी से कहा था कि "जवाहरलालजी को सरकार के प्रतिनिधि की हैसियत से मैं नहीं देख रहा हूँ। मैं उन्हें गांधीजी के कुटुम्ब का एक सदस्य ही समझता हूँ। इसलिए सरकारी प्रतिनिधि की हैसियत से उनको देखने के लिए मेरा दिल नहीं होता। इसलिए मैं उनसे कोई काम करवाने या करार नहीं करना चाहता। वे हमारे बीच आते हैं। हम एक दूसरे के निकट आयें, मिल बैठें तो गायें, हँसें, खायें, पीयें, इस तरह कुछ समय साथ साथ आनन्द से बितायें, यही हमारे मिलने का सबसे बड़ा काम है।" —सतीशकुमार

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० ४२८५
वार्षिक मूल्य ५) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,६५० इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,१०० एक प्रति १३ नये पैसे

अब हमें जनशक्ति के निर्माण की दिशा में काम करना है

सेवाग्राम : बारहवाँ सर्वोदय-सम्मेलन संपन्न

देश के भिन्न-भिन्न स्थानों के चार हजार प्रतिनिधियों का संगम

बापू के निधन के १२ वर्ष बाद दूसरी बार उनकी तपोभूमि सेवाग्राम में बापू-परिवार के साथियों का सम्मेलन अपने ऐतिहासिक महत्त्व के साथ गत २६, २७ और २८ मार्च को चार अधिवेशनों के रूप में संपन्न हुआ। गंभीर चर्चाओं तथा ओजस्वी भाषणों के सुन्दर समन्वय में यह सम्मेलन अपने आपमें अनूठा था। श्री जयप्रकाशजी के तेजस्वी भाषण ने कार्यकर्ताओं के हृदयों को उमंगों से भर दिया। नारायण देसाई, जी. रामचन्द्रन, शंकरराव देव और श्री धीरेन्द्र भाई के संतुलित तथा अर्थगंभीर सामयिक व्याख्यानों ने प्रतिनिधियों के लिए काफी विचार-सामग्री प्रस्तुत की।

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

वाराणसी, शुक्रवार ८ अप्रैल ६० वर्ष ६ : अंक २७

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

सर्वोदय सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य हरिहर शास्त्री भाषण दे रहे हैं। श्री सतीश रेड्डी उनके दाएँ बैठे हैं।

इस सम्मेलन में विनोबाजी उपस्थित नहीं थे। पर उनकी अनुपस्थिति के बावजूद जिस गंभीरता तथा उपयोगी निष्कर्षों के साथ सम्मेलन संपन्न हुआ, वह सर्वोदय के भविष्य का स्पष्ट परिचायक है। सम्मेलन के मनोनीत अध्यक्ष आचार्य हरिहर ने तो विनोबाजी की अनुपस्थिति पर संतोष ही व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि 'इससे हममें आत्मावलम्बन की शक्ति बढ़ेगी और हम स्वयं इन सब कामों को करना सीखेंगे।

सर्व-सेवा-संघ ने १२ साल के अपने कार्य का तथा तात्कालिक परिस्थितियों का जो सिंहावलोकन अपने निवेदन में दिया, वह ठोस ऐतिहासिक सामग्री कही जा सकती है। सम्मेलन में भाग लेने के लिए आनेवाले विभिन्न प्रान्तों की पदयात्रियों की २२ टोलियाँ तो सम्मेलन के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र थीं।

सम्मेलन का प्रबन्ध अत्यन्त सादगीपूर्ण, पर सुनियोजित और सुव्यवस्थित था। भोजन की व्यवस्था, पानी और सफाई का प्रबंध, स्वयंसेवकों की तत्परता आदि सभी प्रशंसनीय था। खादी-प्रदर्शन में जहाँ शुद्ध ग्रामोद्योगी वस्तुओं का अच्छा संग्रह था, वहीं आसपास के कुछ चित्रों ने बापूजी की मोटी भावनाओं और जीवन का प्रबंध भी कर रखा था, जो आन्दोलन की पारिवारिक भावना का एक अच्छा निदर्शन था। तुकायपदभा के गीतों की तो हर सम्मेलन में धूम रहती ही है। इस बार बंगाल की टोली ने रवि बाबू के सुमधुर गीतों से भी समा बाँध दिया। इसी तरह राजस्थान की गीत मंडली के साथियों ने भी वातावरण को उल्लासपूर्ण बनाये रखा था।

सर्वोदय-आन्दोलन का १२ वर्षों का इतिहास देशभाई तथा उनके साथी कलाकारों ने पोस्टरों पर अतिसुन्दर ढंग से चित्रित किया था। १९४८ के सम्मेलन से लेकर भूदान-ग्रामदान और शांतिसेना तक पूरे आन्दोलन का एक रेखाचित्र इन पोस्टरों में अंकित किया गया था।

सबसे अधिक आनन्ददायक और दिलचस्प था, स्नान का प्रबन्ध। गोशाला की जगह इसके लिए चुनी गयी थी। बांध में पानी भरा था, मानो गंगा ही बह रही हो। उन्मुक्त स्नान का दृश्य सचमुच अनुपम था।

श्रमदान का आयोजन तो अभूतपूर्व ही था। श्रम की प्रतिष्ठा का यह क्रम हर सम्मेलन-शिविर में रहा करे तो उसमें एक अजीब लज्जत आ जाया करेगी, जिसका कि यहाँ पूरा अनुभव हुआ। हजारों लोगों ने तालाब खोदने के काम में श्रमदान दिया। कितना सुन्दर! कितना व्यवस्थित! और कितना उत्साहवर्धक!

धीरेन्द्रभाई सम्मेलन नहीं, बल्कि 'नाहक मिलन' चाहते हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि अब हमें नाहक मिलन का आयोजन करना होगा। उनका आशय इस बात से था कि कार्यकर्ताओं को मनोवैज्ञानिक स्तर पर एक दूसरे के निकट आना चाहिए और एक दूसरे के जीवन में शामिल होना चाहिए।

श्री रामचन्द्रन को व्याख्यान-विनोदी कहना उचित होगा। उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से राजनीति और लोकनीति का विवेचन किया। उन्होंने कहा कि "यदि राजनीतिज्ञों में किसी को नंबर देने का काम मुझे सौंपा जाय, तो मैं पहला नंबर जयप्रकाश को दूँगा। क्योंकि जनशक्ति की तथा सेवा की राजनीति कल की और परसों की राजनीति है। यह केवल भारत की नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति है। जयप्रकाश ने इसी राजनीति को अपनाया है जिसे विनोबा लोकनीति कहते हैं।"

नयी तालीम और शांतिसेना के काम पर इस सम्मेलन में सबसे अधिक जोर दिया गया। सारे देश का जिस तरह से सैनिकीकरण हो रहा है और आज की तालीम जिस तरह से युवकों के भविष्य को अंधकारमय बना रही है, उस पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त की गयी। प्रायः सभी वक्ताओं ने इन दोनों बातों की तरफ विशेषरूप से सबका ध्यान खींचा।

इस प्रकार विभिन्न महत्त्वपूर्ण चर्चाओं और निष्कर्षों के साथ यह ऐतिहासिक सम्मेलन सानन्द सम्पन्न हुआ।

सर्व-सेवा-संघ का निवेदन सम्मेलन में उपस्थित करते हुए श्री राधाकृष्ण, श्री धीरेन्द्र मजूमदार और श्री शंकरराव देव विचार-विनिमय करते हुए।

प्रश्न यह है कि हमने क्रांति के लिए पूरा प्रयत्न किया या नहीं ? प्रश्न यह नहीं है कि क्रांति हुई या नहीं ?

जयप्रकाश नारायण

[२६ मार्च को सर्व-सेवा-संघ के अधिवेशन में दिया गया भाषण]

आज हमारे कार्यकर्ताओं में भी और आप लोगों में भी यह एक धारणा सी बन गयी है कि हमारा आन्दोलन शिथिल हो गया है। बहुत से लोग मुझे कहते हैं कि "जे. पी., अब तो आप लोगों ने जमीन के प्रश्न को छोड़ ही दिया है। आप लोग ढीले पड़ गये हैं इत्यादि।" मुझे नहीं मालूम है कि इतिहास में ऐसा कोई भी आन्दोलन है, जिसका कि यदि ग्राफ बनाया जाय, तो वह नीचे से ऊपर ही ऊपर उठता चला जाय। बराबर चढ़ाव-उतार होता है, यह सब जानते हैं। आज सर्वोदय के लिए देश भर में उस प्रकार से एक राय नहीं है, जिस प्रकार से आजादी के समय थी। अभी तो कुछ समाजवाद के पक्ष में, कुछ साम्यवाद के पक्ष में, कुछ पूँजीवाद के पक्ष में, इस तरह से लोगों के भिन्न भिन्न विचार हैं। लेकिन स्वराज्य के समय तो देश में बहुत थोड़े लोग थे, जो पूर्ण स्वराज्य के उद्देश्य से विमुख हों, कितनी बड़ी राष्ट्रीयता का प्रश्न था और महात्मा गांधी जैसे एक अद्भुत नेता देश को प्राप्त थे। लेकिन उस समय भी वे जेल में जाते थे, ६ महीने भी नहीं गुजर पाते थे कि आपस में इसी तरह की अनेक चर्चाएँ शुरू हो जाती थीं।

मैंने पहले कहा था कि यह काम कोई ऐसा काम नहीं है कि चंद दिनों में ही पूरा हो जाय। इसमें तो बहुत से लोगों के जीवन लगेंगे और बहुत दिनों में पूरा होगा। समाजशास्त्री की हैसियत से मैं इस पर कुछ दावा कर सकता हूँ तथा कुछ कह सकता हूँ। यह जो सफलता ९ वर्ष में प्राप्त हुई है, यह एक आश्चर्य की बात है। जितना भी काम इन परिस्थितियों में हुआ, स्वराज्य के बाद जैसी हवा बही, जैसी धारा बही, उसके बावजूद आज जितना कुछ हुआ, यह सब आश्चर्य की बात है।

शुरू में जब भूदान प्राप्त हो रहा था और अमुक महीने में इतना लाभ हुआ, अमुक महीने में इतना लाभ हुआ, ऐसी खबरें आती थीं। लोगों को लगता था कि क्रांति हो रही है। अब ऐसा नहीं हो रहा है। लेकिन इसमें ऐसी बात हम लोगों के अन्दर नहीं होती है, जिसमें कि कोई निराशा हो। इसका यह मतलब नहीं है कि काम में हम मन्द पड़ जायँ। जो विचार हैं, उसको हम समझ लेंगे, मान लेंगे, तो वह हमें चुप बैठने नहीं देगा, और जिसके हृदय में यह विचार है उसका चेहरा कभी मुर्झाया सा प्रतीत नहीं होगा, सदैव प्रफुल्लित ही मालूम पड़ेगा। सन् ५१ से ६० तक का मुकाबला किया जाय, तो मुझे लगता है कि सन् ५१ में गांधीजी का और सर्वोदय का जितना काम हो रहा था, उससे १० गुना आज काम हो रहा है। जो काम आज हो रहे हैं, सन् ५१ में उनकी कल्पना भी नहीं थी। कहीं एक बीघा का भूदान नहीं था। अब लाखों एकड़ भूमि की प्राप्ति हुई, नयी बस्तियाँ बसने लगीं, नये शांति सैनिक तैयार हुए। आज सर्वोदय सम्मेलन के लिए लोग पदयात्रा कर-कर आ रहे हैं, ये सब बातें सन् ५१ में कहाँ थीं? फिर भी जनता ने जिस प्रकार से शुरू में भाग लिया, पीपुल्स पार्टीसिपेशन हुआ, जिसके जरिये आन्दोलन मच गया, वह आज नहीं है। जनता बहुत बड़े पैमाने पर भाग नहीं ले रही है। इसकी कुंजी विनोबा भी तलाश कर रहे हैं। हम और आप सब कर रहे हैं।

प्रत्येक लोकसेवक अहिंसा का संशोधक है

लोकसेवक और सर्वोदय मंडल, प्राथमिक से लेकर प्रांतीय तक तथा अखिल भारतीय तक, को इस बात पर जोर देना चाहिए कि हर लोकसेवक अहिंसा का संशोधक है। स्वतन्त्र रूप से वह अपना काम करता है, सुझाव देता है, जैसा बाबा करते हैं, वैसा ही वह भी करता है। हम सब लोगों के अन्दर यह इच्छा रही है कि बाबा से कुछ मिलेगा—जैसे कि आज यह सम्मेलन हो रहा है, यहाँ से *कुछ मिलेगा—यह नहीं होना चाहिए।* हम सब लोग यह नहीं सोचते कि हर बार बाबा से ही कोई नयी चीज मिलती रहेगी। जितने विचार तथा जितने कार्यक्रम आगे के लिए सोचे जा रहे हैं या सोचते हैं, वह सब हम और आपको मिलकर सोचना है। मुझे तो बहुत खुशी हुई। जब मैंने बाबा का भाषण पढ़ा, जिसमें उन्होंने कहा कि अब हमारे पास देने को कुछ नहीं रहा। भूदान से सर्वोदयपात्र तक सारा जो विकास हुआ, उसने क्या कुछ दिया नहीं! यह अपेक्षा कि हर रोज कुछ मिले, कुछ मिले, यह ठीक नहीं है।

जो सम्मेलन आज हो रहा है, उसके बारे में मेरी तो बराबर यह धारणा रही है कि सम्मेलन में सब एक-दूसरे से साल भर के बाद मिलते हैं, यही सम्मेलन का महत्त्व है। मुझे तो लगता है कि निवेदन वगैरह का सिलसिला भी बंद हो जाय तो और भी अच्छा रहेगा। मेरे कहने का यह मतलब नहीं कि सभा न हो, मीटिंग न हो, कोई कार्यक्रम न बने। पर प्रेरणा व्यक्ति को होती है, संस्था को नहीं हो सकती। हमें चाहिए कि हम सब एक-दूसरे से मिलें तथा मिलकर एक दूसरे के विचारों को लेकर स्वयं कार्यक्रम बनायें। *किसकी कितनी शक्ति एवं लगन है, यह* देख करके तय कर सकते हैं। कुछ बातें ऐसी भी कह सकते हैं, जिनका कि अगले साल देशव्यापी ढंग से प्रभाव पड़े। हम और आपको कुछ पता नहीं कि कब क्या होगा शायद कल एक आन्दोलन फिर से शुरू हो जाय। देश विदेश की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ कब किसी संयोग से एक हो जायगी और कब हम एक क्रान्ति के प्रतिनिधि की तरह बन जायेंगे, यह कहना कठिन है।

किसे पता था कि १९४७ में हम आजाद हो जायेंगे। इसी तरह रूस में भी क्रान्ति कुछ परिस्थितियों के संयोग से हो गयी और यदि कुछ संयोग न हुए होते तो क्रान्ति न भी होती। १९१७ में यह सब संयोग मिला न होता, तो असम्भव था कि क्रान्ति होती। उसमें क्रान्ति-कार्य तो थोड़ा रहा, पर परिस्थिति का निर्माण हुआ, जार की फौजों में हार हुई। फौजी लोग भागने लगे। मार्क्स ने पूछा क्या हुआ? लेनिन ने कहा—वोट दे दिया। फिर पूछा वह कैसा? लेनिन ने कहा—पैर का वोट, क्योंकि फौजी भागे चले आ रहे हैं।

आशाजनक परिस्थिति

हमें अहिंसा एवं अहिंसक उपायों से समाज का मनःपरिवर्तन करना है, यह तो आप सबको प्रतीत है। जरा सोचिये, दुनिया में इतने बड़े पैमाने का काम हुआ नहीं। यदि शान्तिक्रान्ति का स्वरूप आप देखना चाहते हैं, तो हमारी तैयारी कुछ ऐसी होनी चाहिए, जैसे जमीन में खाद डाली जाती है और उस खाद का पता भी नहीं चलता, पर पेड़-पौधे उगते हैं तथा आदमी उनसे अपना पालन-पोषण कर लेता है। उस तरह से हमें खाद बनकर काम करना है, बहुत उत्साह और लगन से हमें काम करना चाहिए।

पिछले १२ वर्षों में गांधीजी के जाने के बाद जो कुछ हुआ है, अहिंसा की दृष्टि रखने वालों के लिए वह बहुत ही आशाजनक हुआ है। कुछ मिला करके हमारे लिए उत्साहजनक परिस्थिति का निर्माण हुआ है।

निर्माण-कार्य और कार्यकर्ताओं का निर्वाह

मैं निश्चित विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि पिछले ९ वर्षों में हमारे *सारे रचनात्मक कामों का नया दर्शन* हुआ है। निर्माण का काम भी होते रहा है। क्रान्ति का काम और निर्माण का काम अलग अलग नहीं है। यह भी हमें समझना चाहिए।

मुझे जगह-जगह के लोगों से मिलना होता है, देश और विदेश के लोग भी यहाँ आते हैं, तो सबकी यह एक माँग होती है कि कहीं कुछ काम होता दिखायें। किस प्रकार किसी एक क्षेत्र में इन सब विचारों का आचरण होता है। यदि किसी एक गाँव में ग्रामदान होता है, तो इतने मात्र से लोगों का समाधान नहीं होता है।

निर्माण कार्य तथा किसी एक क्षेत्र में कुछ ठोस काम करके दिखाने में अभी हम विशेष सफल नहीं हुए हैं, इसका कारण हमारी अपनी कमजोरी या शक्ति का अभाव ही है। हमें सर्वांगीण करने का काम उठाना होगा

वाला यह आन्दोलन हमारे ही इर्द-गिर्द चक्कर लगाता रह जायगा। हमारे कार्यकर्ताओं के निर्वाह आदि का भी प्रश्न है, उसकी तरफ ध्यान देना परम आवश्यक है। हम सभी चाहते हैं कि अनासक्त भाव से यह काम हो सके, तो इसके लिए ईमानदारी से काम देना चाहिए। जिन कार्यकर्ताओं का ग्रामों के कुछ हिस्सों से या ग्राम से कुछ संपर्क है, वे कार्यकर्ताओं के निर्वाह की कुछ सुविधा करें। उनके ऊपर जिम्मेदारी आती है और इस तरह के आदमी उन जिम्मेदारियों को हल करें। मैं समझता हूँ कि यह कठिन काम नहीं है।

कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के बारे में बहुत चर्चा हो रही है, पर मैं समझता हूँ कि जितना ध्यान उसके ऊपर केन्द्रित होना चाहिए था, उतना नहीं हुआ। उस पर विशेष ध्यान दिया जाय। सबको शान्तिसैनिक हम मानते हैं, ऐसे अगर हम बनें, तब तो फिर सबके लिए विशेष प्रशिक्षण होना ही चाहिए। इस प्रकार से हम ऐसा कार्यक्रम अच्छे ढंग से चला सकते हैं। इस तरह उत्साह से हम काम करेंगे, तो जनता बहुत बड़े पैमाने पर भाग लेने लगेगी, जिसको हम आन्दोलन कहेंगे। लेकिन यह मान करके भी कि आन्दोलन की आँधी अभी संभव नहीं, अपने काम को हमें करते ही जाना है। आपस में बातचीत करके, संशोधन करके, कार्यक्रम बना करके, अपने इन कामों को हमें बढ़ाते ही जाना है। हमारा मन कभी निराश न हो, आशारहित न हो। मैं समझता हूँ कि जब आदमी में निष्ठा हो, विचार की समझ हो, तो वे सब अनुत्साह की बातें कभी हो नहीं सकतीं, कभी कोई निराशा का कारण ही नहीं दिखाई दे सकता।

जाल बुन चुके हैं

अभी जब मैं इंग्लैंड गया था, तो अपने एक मित्र आर्थर कारटर के यहाँ ठहरा था। वे भारत भी आ चुके हैं और बाबा के साथ कुछ दिन रहे भी हैं। उन्होंने इंग्लैंड जाकर सर्वोदय और इन के बारे में एक लेखमाला भी लिखी। उनसे मेरी बातें हो रही थीं। भूदान आंदोलन जल्दी से जल्दी सफल हो, यह उनकी हार्दिक अभिलाषा है। दुनिया में जो कुछ चल रहा है, उसका उत्तर इस आंदोलन में है। इसलिए उनके मन में भी एक गहरी तड़प है।

उन्होंने कहा कि "जे॰ पी॰, क्या बात है! आंदोलन शिथिल-सा क्यों हो रहा है?" तब मैंने उनसे कहा कि "अभी आंदोलन को कन्सोलिडेट करने का यानी पक्का करने का समय है।" इस पर कारटर ने कहा कि "ठीक है! चीन में एक कहावत है कि एक समय मछली पकड़ने का होता है और दूसरा समय जाल सुखाने का होता है। शायद आप लोगों का यह समय जाल सुखाने का समय है।" इस तरह वे कहने लगे। फिर जब मैं वहाँ से भारत के लिए रवाना होने लगा, तो उन्होंने अपनी एक पुस्तक मुझे भेंट की। उस पर उन्होंने लिखा "अब जाल करीब-करीब सूख चुके हैं।" फिर उन्होंने कहा था कि आप मेरा यह संदेश विनोबा को और उनके साथ काम करनेवाले सभी साथियों को दीजिये। बाबा ने कहा कि "शांति की नहीं आना, वह तो हमी है।" इस बात में बहुत सार है। इसलिए हम शांति के लिए इस तरह परेशान न हों। स्वयं अहिंसा और सत्य के संशोधक बनें। उस दिशा में आगे बढ़ें। अपना निष्ठा पक्का करें। फिर क्रांति तो होगी ही। हमारे लिए फल से भी अधिक महत्त्व कर्म का है। प्रश्न यह नहीं कि क्रांति हुई या नहीं, प्रश्न यह है कि हमने क्रांति के लिए पूरा प्रयत्न किया या नहीं। यह विनोबा नहीं बतायेंगे। आपका अपना हृदय ही बतायेगा।

एक ही लक्ष्य : ग्राम-स्वराज्य

सिद्धराज ढड्ढा

कार्यक्रम जो हमारे सामने पिछले वर्षों में अनेक आये। उनकी कमी हमारे पास नहीं है। रास्ते की भी कमी नहीं है। बहुत तरह और विचार भी हमारे पास हैं। इसलिए कार्यक्रम हमारे क्या हो, क्या न हो, इसकी एक लम्बी तालिका बन सकती है। मेरा निवेदन आप सब साथियों से यह है कि आगे के साल के लिए एक, दो, तीन, चार जो कार्यक्रम तय करते हैं, उन पर हमारा ध्यान केंद्रित करके हम यहाँ से जायें। बहुत व्यापक हमारा चिन्तन और चर्चा रहेगी, तो एक ठोस कार्यक्रम यहाँ से लेकर हम नहीं जा सकेंगे। सब साथियों से और प्रबन्ध-समिति से भी यह कहना चाहूँगा कि जो दो, चार, पाँच चीजें हैं, उन पर वे सोचें।

यह एक ऐसा मौका आया है, जब कि बारह वर्ष बाद हम लोग यहाँ मिले हैं। भूदान आंदोलन के नौ वर्ष बीत चुके हैं। इसका अब असेसमेंट होना चाहिए। आगे का कार्यक्रम बनाना चाहिए। उससे पहले यह लगता है कि पिछले आठ-नौ वर्षों पर एक नजर डालें, तो दो बातों पर हम सब लोग शायद सहमत होंगे और न चाहें ये हैं कि पिछले वर्षों में कार्यक्रम एक के बाद एक आते गये। ज्यों-ज्यों बाबा के विचार बढ़ते गये, स्पष्ट होता गया, वैसा विचार और उसके साथ-साथ कार्यक्रम हमारे सामने आते गये और हम अपने पैर जमा कर कायम नहीं रह सके। अब भूदान को छोड़कर जहाँ से हम चले थे, वहीं पर हमें फिर आना है। पिछले साल आठ वर्षों में जितने कार्यक्रम आये, एक के बाद एक लेते गये। एक को लिया और दूसरे को छोड़ दिया। तो एक-एक कार्यक्रम को न लेकर, भूदान, ग्रामदान, सर्वोदय पात्र, शांति सेना, खादी आदि सब कार्यक्रमों को साथ लेकर चलें और दर्शन हमारे सामने ग्राम-स्वराज्य का हो। जो परिस्थितियाँ हैं, उनको साथ में लेकर ग्राम-स्वराज्य तक पहुँचने का हम प्रयास करें। ग्राम-स्वराज्य एक शिखर है। सब चीजों को साथ में लेकर ग्राम-स्वराज्य के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उसका चित्र जनता के सामने हमें पेश करना है।

जिस प्रकार माला में मणियों के नीचे सूत होता है, उसी प्रकार हमारे सारे कार्यक्रमों के बीच ग्राम-स्वराज्य का सूत है। उसकी ओर हम अपना ध्यान दें, हमारा कार्यक्रम सर्वोदय-पात्र, शांति सेना इत्यादि का हो, पर इन सबका लक्ष्य एकमात्र ग्राम-स्वराज्य की स्थापना ही है। देश में ही नहीं, देश के बाहर भी दुनिया में जो परिस्थिति है, जो समस्याएँ हैं, उनका यदि कोई भी हल हो सकता है, तो वह ग्राम-स्वराज्य ही है। इसके लिए—प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण सक्रिय होना चाहिए। मैं तो उन व्यक्तियों में से नहीं हूँ, जो यह मानते हों कि हमारा कार्यक्रम पूरा नहीं हुआ। जिन भाई-बहनों ने इसमें मेरा साथ दिया और इन वर्षों में भाग लिया है और जो यहाँ उपस्थित हैं, वे खुद यह महसूस करेंगे कि जो कहा जाता है कि आन्दोलन व कार्यक्रम में मन्दता आयी है, यह सही नहीं है। इतने भाई-बहन देश के कोने-कोने से आये हुए हैं और अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद हजारों कार्यकर्ता इस काम में लगन से जुटे हुए हैं, यह अपने आप इस बात का सबूत है कि इस आन्दोलन में जान है और यह कार्यक्रम आगे बढ़ने वाला है। इस विश्वास के साथ आप और हम सर्वोदय के विचारों को अपने साथ ले जायेंगे तथा जो कार्यक्रम हम तय निश्चित करेंगे, उसका हम यहाँ पालन करेंगे।

जो भी कार्यक्रम हम लोग तय करें, वह सुव्यवस्थित रूप से चलना चाहिए, व्यवस्थित रूप से सारे काम का नक्शा बनना चाहिए। अपनी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हम ऐसा कार्यक्रम बनायें, जिसको ४-६ महीने में पूरा किया जा सके। इसके जरिये हम कार्यकर्ताओं की शक्ति बढ़ेगी। राजस्थान के कार्यकर्ताओं ने २-४ महीने का कार्यक्रम अपने सामने रखा था। वह पूर्ण सफल रहा तथा उससे कार्यकर्ताओं का साहस और भी बढ़ा। जो भी कार्यक्रम आप बनायें, वह स्पष्ट, सीमित और निश्चित कार्यक्रम होना चाहिए। जो कार्यक्रम व्यवस्थित ढंग से चलेगा, उससे आगे के लिए शक्ति मिलेगी।

इस अवसर पर मैं एक और महत्त्व की बात आपके सामने रखना चाहता हूँ। यह बात कार्यकर्ताओं के अपने जीवन के संबंध में है। क्योंकि कोई भी काम उसके कार्यकर्ताओं के आधार पर ही तेजस्वी होता है। कार्यकर्ता ही आंदोलन के हथियार तथा औजार हैं। यदि उनकी धार भोथरी नहीं होगी, तेज होगी, तो सारे आंदोलन में वह तेज प्रकट होगा। आंदोलन शिथिल हुआ है या नहीं, इसकी चिन्ता न करें। हम स्वयं तेजस्वी हैं या नहीं, हमारा जीवन हमारे आदर्शों के अनुरूप है या नहीं, इसकी अधिक चिन्ता करें। हमारे स्वयं के जीवन में यदि पुराने मूल्य पर टिके रहेंगे, तो हम नये मूल्यों की स्थापना समाज में कैसे कर सकेंगे। आंदोलन में जो थोड़ी बहुत शिथिलता दीख पड़ती है, उसका कारण कार्यक्रम का अभाव या कार्यक्रम की मंदता नहीं, बल्कि हमारा अपना जीवन क्रांतिकारी न होना ही है।

•••

विदेशों से सबक लें

गांधीजी ने जिस सर्वोदय-समाज की कल्पना रखी थी। उनका विचार सिर्फ हिन्दुस्तान में ही नहीं, बाहर के देशों में भी फैल रहा है। पिछले अजमेर सम्मेलन में इंग्लैंड से एक भाई आये थे और वे एक मिल के मालिक थे। उन्होंने कहा था कि उनके मिल में जो मजदूर हैं, जो काम करनेवाले हैं उनको उस मिल के साझेदार बनाया गया है। इंग्लैंड में भी सुनता हूँ कि कार्यकर्ताओं का इस प्रकार मिल-जुलकर काम करने का प्रयत्न हो रहा है। चीन में भी सब मिलकर काम करके संपत्ति बढ़ाने का प्रयत्न हो रहा है। अमेरिका में लोग सत्याग्रह का प्रयोग कर रहे हैं। मुझे डर है कि वट के पेड़ जैसी स्थिति न हो जाय। कभी-कभी उसकी जड़ें जो होती हैं वे तन हो जाती हैं और मूल तन ही नष्ट हो जाता है। ऐसा ही अगर हो जाय कि यह विचार सारी दुनिया में चारों ओर फैले और जिस हिन्दुस्तान से यह विचार निकला, वहीं अगर न पनपे तो यह बहुत दुःखजनक स्थिति होगी। इसलिए सारी परिस्थिति को ध्यान में रखकर हमें विचारपूर्वक इस काम को आगे बढ़ाना चाहिए।

—आचार्य हरिहर

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-द्वारा

बारहवें अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर जाहिर किया गया निवेदन

सेवाग्राम–२७ मार्च १९६०

•

गांधीजी के निर्वाण के बाद सेवाग्राम में उनके साथियों का एक सम्मेलन हुआ था। उसके बाद हर साल सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है। बारह साल के बाद हम फिर से सेवाग्राम में मिल रहे हैं। इस अवधि में देश तथा दुनिया गांधीजी की राह पर कहाँ तक आगे बढ़ी है, इसका लेखा-जोखा देना उचित होगा।

गांधीजी का विचार व्यक्ति या देश की सीमाओं से बँधा हुआ नहीं है। वह सर्वोदय का विचार है, जो सार्वभौम है। यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि बावजूद नये-नये हिंसक शस्त्रों के आविष्कारों के और शीतयुद्ध के वातावरण के, जगत् कुल मिलाकर गांधीजी के दिखाये हुए मार्ग की ओर प्रवृत्त हुआ है। भारत की स्वतन्त्रता का और उसकी प्राप्ति के अहिंसक साधन का असर एशिया तथा अफ्रीका के कई मुल्कों पर पड़ा है। दुनिया में शांति की आकांक्षा पहले से अधिक तीव्र हुई है। युद्ध की तैयारी में तथा उत्तरोत्तर अधिक विनाशक शस्त्रों की खोज में लगे हुए राष्ट्र भी आज निःशस्त्रीकरण का विचार गंभीरता से करने लगे हैं। विज्ञान की प्रगति ने समस्याओं के हल के लिए हिंसा को निरर्थक सिद्ध कर दिया है और शान्तिमय उपाय ढूँढ़ने के लिए बाध्य किया है।

इन दिनों एक और शुभ लक्षण यह भी दिखायी दिया है कि दुनिया के किसी भी एक क्षेत्र में अन्याय या अत्याचार होने पर उसके खिलाफ कई मौकों पर दुनिया भर के लोगों का पुण्य-प्रकोप प्रकट हुआ है और जागतिक लोकमत की इस अभिव्यक्ति का असर भी हुआ है। दुनिया के कुछ देशों में अहिंसक प्रतीकार के प्रत्यक्ष प्रयोग भी हुए हैं। इस सिलसिले में हमें अमेरिका में नीग्रो जाति के सामान्य नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए किये सत्याग्रह का तथा आणविक शस्त्रों के खिलाफ यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका में किये गये प्रतीकारों का विशेष स्मरण होता है। कुछ जगह लोगों ने सामूहिक जीवन में सर्वोदय-विचार को अपनाने के प्रयोग भी शुरू किये हैं।

दुनिया की यह अपेक्षा स्वाभाविक ही थी कि गांधीजी की भूमि—भारत, अहिंसा की दिशा में विशेष प्रयोग करेगा। लेकिन देश की आजादी के साथ ही देश विभाजन के कारण जो बुराइयाँ प्रकट हुईं, उनसे लोक मानस में उथल पुथल मच गयी और समस्त जीवनमूल्यों पर प्रहार हुआ। साम्प्रदायिक संघर्ष की आग भभक उठी और उसने गांधीजी का बलिदान लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध का असर भी भारत पर था। इन कारणों से देश के नैतिक स्तर में अवनति दिखाई दी। आजादी की लड़ाई के समय सेवा और त्याग की जो भावना व्यक्त हुई थी, उसके बदले स्वार्थवृत्ति प्रकट हुई। पुरुषार्थ के बदले सरकार पर अवलंबित रहने की प्रवृत्ति लोगों में बढ़ी। इन सबके होते हुए भी यह कहना होगा कि भारत का लोकहृदय मूलतः शुद्ध है।

अहिंसा की दिशा में दो प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। एक तो यह कि हमारी विदेश नीति में मैत्री, तटस्थता तथा शांति का आग्रह रखा गया है। यह विश्वशांति की दिशा में एक बड़ी देन है और उससे देश का गौरव बढ़ा है।

दूसरी महत्त्व की बात भूदान-ग्रामदान-आंदोलन की है। इसमें लाखों दाताओं ने प्रेम तथा करुणा की माँग स्वीकार कर अपनी जायदाद का हिस्सा समाज को समर्पित किया। इस आंदोलन ने मूस्वामित्व की जड़ ढीली कर दी, देश में नैतिक वातावरण के निर्माण का यत्न किया और समाज की समस्याओं के अहिंसक हल का एक नया मार्ग दिखाया। देश के रचनात्मक काम तथा कार्यकर्ताओं में भूदान-आंदोलन ने फिर से अपने लक्ष्य का भान कराया और नयी चेतना पैदा की। इस आंदोलन के कारण देश में स्वतन्त्र लोक-शक्ति का स्रोत खुला है तथा विभिन्न राजनैतिक पक्षों को एकत्रित होकर काम करने का मौका भी मिला।

इन दो मुख्य चीजों के अलावा देश की प्रगति में कुछ और भी बातें हैं। बुनियादी नागरिक स्वातन्त्र्य, कानून की सत्ता, बालिग मताधिकार के आधार पर बने हुए संविधान का निर्माण तथा जनता में लोकतांत्रिक अधिकारों का एहसास जनतन्त्र के समकालीन इतिहास में एक विशेष घटना है। आजादी के बाद देशी रियासतों के शांतिमय विलीनीकरण से तथा जमींदारी-उन्मूलन के कानून से, सदियों से चली आयी सामंतशाही नष्ट हुई और स्वस्थ समाज जीवन की नींव डाली गयी। शासन की तरफ से भौतिक विकास का जो प्रयास चल रहा है, उसमें देश के निर्माण के लिए गाँव बुनियादी महत्त्व रखता है, इस चीज का स्वीकार सामुदायिक विकास योजना के द्वारा हुआ है तथा सत्ता के विकेन्द्रीकरण की ओर भी ध्यान आकर्षित हुआ है।

खादी ग्रामोद्योग आयोग तथा देशभर में फैली हुई स्वतंत्र संस्थाओं के द्वारा खादी व ग्रामोद्योग का कार्य इस अर्थ में बढ़ा है। इस क्षेत्र में काम करनेवालों का ध्यान ग्राम स्वराज्य के लक्ष्य तथा उसकी पूर्ति के साधनस्वरूप ग्राम स्वावलंबन की ओर गया है। यह नया मोड़ विशेष रूप से स्वागत-योग्य है।

देश के विभिन्न राजनैतिक दलों को समाज-परिवर्तन की प्रक्रिया में वैधानिक और शांतिपूर्ण तरीकों का महत्त्व मान्य हुआ है। यह भी एक हर्ष का विषय है।

पर इन सबके बावजूद यह कहना होगा कि आजादी के बाद गांधीजी के भारत से जो अपेक्षा की गयी थी, वह पूरी नहीं हुई। गांधी-विचार के अनुसार आर्थिक विकेन्द्रीकरण के आधार पर जिस प्रकार के समाज की रचना होनी चाहिए थी, वह नहीं हुई, बल्कि गाँव-गाँव में परंपरा से चले आ रहे ग्रामोद्योगों को धक्का पहुँचा है। इस प्रकार से स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद समाज व अर्थरचना में मूलभूत परिवर्तन का जो मौका मिला था, उससे देश फायदा नहीं उठा पाया।

देश के आन्तरिक प्रश्नों के हल के लिए शान्तिमय साधनों के उपयोग की नीति का प्रत्यक्ष व्यवहार नहीं हुआ। जरा-जरा सी बात पर देश में पत्थर और गोली चलती है। हम अभी तक आतरिक शांति के मामले में स्वावलंबी नहीं हो सके हैं। परिणामस्वरूप पुलिस एवं सेना की आवश्यकता कायम रही है।

भूमि समस्या जैसी देश की बुनियादी समस्या अभी तक हल नहीं हो पायी तथा नियोजन के बावजूद बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही है। देश अभी तक अनाज के मामले में स्वावलंबी नहीं बन सका है, जिसके फलस्वरूप हर साल करोड़ों रुपयों का अनाज विदेशों से मँगवाना पड़ता है।

हालाँकि केन्द्र और राज्य सरकारों ने बुनियादी तालीम को उसूलन स्वीकार कर लिया है, फिर भी प्रत्यक्ष अमल में शिक्षा की नीति में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है। शिक्षण न देश के निर्माण का पूरक बना है, न उसमें नैतिकता का तत्त्व आया है। इसलिए छात्रों के लिए सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन में पुरुषार्थ के अवसर नहीं रह गये हैं।

राज्य-सरकारों का कारोबार प्रादेशिक भाषा में तथा अन्तरप्रादेशिक व्यवहार राष्ट्रभाषा में चलना चाहिए—इस दिशा में कोई खास प्रगति नहीं हुई है। बल्कि अंग्रेजी की प्रतिष्ठा बढ़ी है। जहाँ तक अस्पृश्यता निवारण का संबंध है, कानून से जो प्रयत्न हो सकता था, वह किया गया है, लेकिन अस्पृश्य वर्ग को अपने में समरस करने के लिए सामाजिक क्षेत्र में पर्याप्त प्रयत्न नहीं हुआ।

शराबबन्दी की नीति राष्ट्रव्यापी तौर पर नहीं अपनायी गयी है। जहाँ पर वह अपनायी गयी है, वहाँ उसके अमल में शिथिलता है। समाज में उसके लिए कोई प्रभावशाली नैतिक वातावरण नहीं बन सका है। भारत की संस्कृति तथा अहिंसा के क्रम को देखते हुए इस देश में गोहत्या बन्द होनी चाहिए थी, वह पूर्णरूपेण नहीं हुई है तथा गो संवर्धन के कार्यक्रम को भी, जो इस देश की आर्थिक रचना में महत्त्व की कड़ी है, योग्य प्रोत्साहन नहीं मिल सका है।

यह स्थिति जनता तथा सर्वोदय में श्रद्धा रखनेवाले सेवकों के लिए चुनौती है। हम मानते हैं कि सर्वोदय की राह पर चल कर इन सारी समस्याओं का हल निकल सकता है। भारत की जनता ने गांधीजी के नेतृत्व में बड़ी बड़ी समस्याओं का सामना किया है। आज भी उस अपरिमेय पुरुषार्थ की संभावना जनता में भरी पड़ी है। भूदान ग्रामदान आन्दोलन के दौरान में उसकी झाँकी मिली है। इसमें सन्देह नहीं कि भारत की जनता अपनी इस शक्ति को पहचान कर यदि पूर्णरूप से जाग उठे, तो सर्वोदय-समाज रचना का वह स्वरूप प्रकट होगा, जो मानव के इतिहास में अनोखा रहेगा तथा इससे विश्वशांति की मानव-मानव के बीच मधुर संबन्धों की एवं निरपवादी भूमिका का निर्माण होगा। इस शक्ति के आवाहन के लिए और इस नव जागरण के लिए जनता की सेवा में सर्वार्पण का संकल्प आज बापू के निर्वाण के बारहवें साल में हमारा परिपूर्ण धर्म हो रहा है।

•

भूदान-यज्ञ, इन्दौर, ८ अप्रैल, '६०

हमारे काम की दिशा

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ, सेवाग्राम-अधिवेशन का प्रस्ताव

ता० २० से २६ मार्च '६०

हमारे सर्वोदय-सम्मेलन लोक सेवकों के लिए अपने काम का मूल्यांकन कर भावी कार्यक्रम तय करने के अवसर हैं।

पिछले ९ वर्षों में भूदान यज्ञ के रूप में जो बीज बोया गया, उसका एक विशाल वृक्ष बना है, जिसमें से विविध कार्यक्रमों की शाखा प्रशाखाएँ निकली हैं। आन्दोलन का इस प्रकार का विकास स्वाभाविक ही था। हमारे काम का आरम्भ करुणा के कार्यक्रम से हुआ। उसे हिंसा की शक्ति से उसमें न्याय-भावना मिली, ग्रामदान ने भूमिसंबंधी हमारी कल्पना को पूरा कर दिया। किन्तु केवल भूमि के पुनर्वितरण का कार्यक्रम अपने में पर्याप्त नहीं था, उसके साथ जनता के विकास के अन्य कार्यक्रम—जैसे कि ग्रामोद्योग, नयी तालीम, स्वास्थ्य, न्याय आदि जुड़ने की भी जरूरत थी। ग्रामस्वराज्य ने हमारे कार्यक्रम को समग्रता दी। ग्रामस्वराज्य की कल्पना के साथ ही ग्रामरक्षण और देश के संरक्षण का विचार आया, जिसमें से शांतिसेना की कल्पना निकली। इस प्रकार पूर्ण रूप लेनेवाले इस कार्यक्रम को व्यापक जनसम्मति देने के विचार से सर्वोदय पात्र आया। यों आज हमारे पास एक संपूर्ण क्रांति का कार्यक्रम मौजूद है।

हमारी एक कमजोरी रही कि हमने इस समग्र कार्यक्रम को अविच्छिन्न नहीं माना। फलतः ज्यों ज्यों नये नये कार्यक्रम आते गये, त्यों त्यों पुराने कार्यक्रमों में दुर्लक्ष्य होता गया। विचार के विकास के साथ हमारे प्रत्यक्ष कर्म का विकास नहीं हो सका। हम जो कार्यक्रम की योजना बनायें, उसमें इस चीज का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे कार्यक्रम के अंग-प्रत्यंग परस्पर पूरक हों।

अब, जब कि हमारे पास कार्यक्रम के इतने विविध पहलू उपस्थित हैं, तब यह भी ध्यान देना होगा कि हम अपनी मर्यादित शक्ति के अनुसार काम का केन्द्रीकरण करें, अन्यथा उसमें शक्ति के बिखर जाने की भी संभावना है।

कार्यक्रम के बारे में योजना बनाते समय एक और महत्वपूर्ण चीज का ख्याल रखना चाहिए कि हमारी योजना वैज्ञानिक हो। उसमें वास्तविक परिस्थिति का ध्यान हो, बार बार काम का मूल्यांकन करने की व्यवस्था हो, तथा अपनी मर्यादा के ज्ञान के साथ ही कार्यक्रम के द्वारा ही उस दिशा में वृद्धि करने की [illegible] रखा हो।

इसके अलावा और एक महत्वपूर्ण [illegible] यह रहा है कि [illegible] इस कार्यक्रम [illegible] अखिल [illegible] द्वारा इस [illegible] होते रहे हैं, [illegible] व्यापक जनता के [illegible] [illegible]।

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, ८ अप्रैल, '६०

कार्यक्रम ऐसा हो, जिसे जनता स्वयं धीरे-धीरे उठा ले और भावी कार्यक्रम भी क्रमशः जनता का बनता जाय।

यह स्पष्ट है कि कोई भी कार्यक्रम प्रत्येक तफसील में भारत जैसे विशाल देश को लागू नहीं हो सकता। सर्व सेवा संघ की ओर से तो कार्यक्रम की दिशा ही दिखायी जा सकती है और प्रादेशिक तथा जिला सर्वोदय-मंडलों द्वारा उसे कार्यान्वित करने की तफसीलवार योजना बननी चाहिए।

इस समय संघ के अधिवेशन में विभिन्न प्रान्तों ने अपने कार्यक्रम की योजनाएँ दीं। उनके आधार पर नीचे लिखा कार्यक्रम सूचित करना है।

हमारा सारा कार्यक्रम ग्रामस्वराज्य—जिसमें नगरों में बसनेवाले, विशिष्ट समुदाय भी शामिल हैं—के कार्यक्रम पर एकाग्र हो। कार्यक्रम का जो कदम उठाया जाय, वह इस ध्येय को नजर रखकर उठे। इस चीज का भी बराबर ध्यान रहे कि ग्राम-स्वराज्य की नींव तभी पड़ेगी, जब भूमि की मालकियत गाँव की होगी।

ग्रामस्वराज्य में भी हमारी शक्ति एकाग्रता से व्यापक विचार प्रचार सघन कार्यक्रम, कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण तथा आन्दोलन के खर्च की व्यवस्था में लगे।

व्यापक विचार प्रचार: हमारे काम के दो मुख्य अंग हैं। उसकी व्यापकता तथा उसकी गहराई, ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, बाधक नहीं। यह स्पष्ट है कि जब तक हवा सर्वत्र नहीं बदलता, तब तक काम का कोई [illegible] नमूना नहीं बन सकता और दूसरी ओर व्यापक काम को गहराई से बाहर किये हुए काम से [illegible] मिलता है।

व्यापक काम दो प्रकार के हों। एक जनता द्वारा तथा दूसरा लोक सेवक द्वारा।

पंचायती राज के नये प्रयोग के आरम्भ से अब गाँव-गाँव में सर्वोदय विचारों को कार्यान्वित करने का द्वार खुल सकता है। इसे कार्यान्वित करने में सबसे बड़ी बाधा है विषमता। उसे दूर करने के लिए [illegible] और अनिवार्य कार्यक्रम अवश्य शुरू उठाये। [illegible] के आर्थिक विषमता के कारण पंचायती राज बेकार न बन जाय, इसलिए [illegible] निम्नलिखित बातें हैं:

१. गाँव में कोई भूखा न रहे।

२ गाँव में हर किसी को काम देने की योजना बने।

३. एक साल का गल्ला संग्रहीत करने की व्यवस्था हो।

४ जमीन-मालिक की आय गाँव को मिले।

५ ग्राम की योजना गाँव द्वारा बनाई जाय।

राजनैतिक विषमता गाँवों में प्रवेश न कर पाये, इसलिए:

१ ग्राम तथा जनपद या म्युनिसिपालिटी के स्तर पर पक्ष-पद्धति का चुनाव दाखिल न हो, इसके विशेष प्रयत्न किये जायँ।

२ सारे निर्णय सर्वानुमति से या सर्वसम्मति या दोनों की असफलता पर अन्य किसी सर्वसम्मत तरीके से हों।

३ अन्न, वस्त्र, न्याय, स्वास्थ्य, शिक्षण के संबंध में स्वावलंबी बनने के लिए ग्राम सफल हों।

लोकसेवक व्यापक प्रचार की दृष्टि से नीचे लिखा कार्यक्रम उठायें:

१ अखंड पदयात्रा।

२ सामूहिक पदयात्रा।

३ साहित्य प्रचार।

पदयात्राओं में भूदान तथा संपत्तिदान माँगा जाय, ग्रामस्वराज्य, ग्रामपरिवार तथा ग्राममंडल का विचार समझाया जाय, राष्ट्र के तात्कालिक तथा स्थानीय प्रश्नों के सर्वोदय दृष्टि से जो हल हों, वे भी सुझाये जायँ। दानपत्र बनाये जायँ तथा उनके जरिए भूमिप्राप्ति का कार्यक्रम किया जाय। समस्त ग्रामदानी गाँवों से तथा भूदान किसानों (आदाताओं) से सतत संपर्क रखने का यत्न किया जाय, उनमें निर्माण काम को यथासंभव किया जाय। जनता का नैतिक स्तर उठाने के लिए मद्यपान निषेध आदि के जनआन्दोलन का समर्थन किया जाय।

देशभर में प्राप्त भूमि का वितरण या वितरण के लिए प्राप्त भूमि को [illegible] करने की बात, भारत के सभी प्रान्त अगले साल इस काम को पूरा करने का [illegible] करें। इस काम को पूरा करने के लिए रचनात्मक संस्थाओं से [illegible] तथा [illegible] आवश्यक सहायता ली जाय।

प्रथम कार्य यही हम मानते हैं, कम से कम एक [illegible] जनशक्ति के क्षेत्र में समग्र कार्यक्रम की [illegible] दृष्टि [illegible] के कार्यक्रम के [illegible] बने हों। इसमें ग्रामदान, ग्रामोद्योग, जिनमें विज्ञान की दृष्टि हो, नयी तालीम आदि का प्रयोग हो। सारे क्षेत्र में शोषणमुक्ति की दृष्टि से शांतिसेना का गठन हो तथा व्यापक जनसंमति के लिए सर्वोदय-पात्र की स्थापना हो। इस प्रयास को सफल करने के लिए रचनात्मक कार्यकर्ता तथा सामूहिक विकास-योजना आदि से सहायता प्राप्त की जाय। यह सारा काम जनाधारित हो, इसका ध्यान रहे।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण: इस सारे कार्यक्रम के लिए यह जरूरी है कि हमारा सारा काम नयी तालीम के रास्ते पर चले। कार्यकर्ताओं की योग्यता का विकास हो। इन कारणों में एक ओर जहाँ कार्यकर्ताओं ने अनन्य निष्ठा दिखायी है, वहाँ दूसरी ओर हमारे में परस्पर भाईचारे की भावना की कमी भी दीख पड़ी है, अतएव इसकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। पूरा समय देनेवाले कार्यकर्ताओं की अपेक्षा आंशिक समय देनेवाले कार्यकर्ता भी बढ़ाये जायँ तथा उनको काम देने की व्यवस्था हो।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण में हमें यह ध्यान में रखना होगा कि प्रत्यक्ष तालीम के काम से भी सारे कार्यक्रम को वेग मिले, उसमें कार्यकर्ता बँध न जायँ। कार्यक्रम द्वारा तालीम (इन सर्विस ट्रेनिंग) यह हमारी विशेषता बन जानी चाहिए। आम लोगों के शिक्षण की दृष्टि से श्रम शिविर आदि कार्यक्रमों को आयोजित कर नये नेतृत्व का निर्माण करने की कोशिश की जाय। परस्पर गुणविकास में सहायक बनना चाहिए, परस्पर के दोषों का हिस्सेदार बनना चाहिए और एक दूसरे के योगक्षेम के सहयोगी बनना चाहिए।

आन्दोलन का खर्च: यह जरूर है कि आन्दोलन का काम आर्थिक कठिनाई के कारण ही रुक न जाय। [illegible] आर्थिक [illegible] के कारण हमारी तत्परता भी कम नहीं होनी चाहिए। आर्थिक आवश्यकता पूरी करने की दृष्टि से संपत्तिदान, सर्वोदय पात्र, [illegible], सूतदान, श्रमदान तथा मित्रों से सहायता प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न हों। आवश्यकतानुसार चंदा भी इकट्ठा किया जा सकता है। परन्तु यह सच है कि अभी तक हमने अपने कार्यक्रम के इस अंग पर यथावश्यक ध्यान नहीं दिया है। अगले साल केवल इस कारण से आन्दोलन में रुकावट न आये, इस ओर हम ध्यान देना चाहिए। जिला और प्रान्त के स्तर के कार्यकर्ता इस संबंध में विशेष रूप से सहायक हों।

कार्यक्रम [illegible] तथा आर्थिक [illegible] के कार्यक्रम की दृष्टि से कुछ [illegible] कार्यकर्ताओं से भी सहायता मिलनी चाहिए। सर्व सेवा संघ [illegible] इसके लिए विशेष [illegible] बनाकर उसे कार्यान्वित करे। ● ●

सर्व-सेवा-संघ के २१ मार्च के अधिवेशन में नयी तालीम के संबंध में विचार-विनिमय

शिक्षा को बदले बिना समाज नहीं बदलेगा

'नयी तालीम' पर चर्चा का आरंभ करते हुए श्री ई० डब्ल्यू० आर्यनायकम् ने देश की वर्तमान शिक्षा-जगत् की परिस्थिति पर प्रकाश डाला। स्वराज्य के बाद भी बुनियादी शिक्षा को अपेक्षित स्थान नहीं मिला है, इस बात पर उन्होंने खेद प्रगट किया। उसके बाद तालीमी संघ और सर्व-सेवा-संघ के संगम पर बोलते हुए नायकम् जी ने कहा:

••

तालीमी-संघ और सर्व सेवा संघ का संगम हुआ, यह एक महत्त्व की घटना इस वर्ष हुई। लेकिन इससे तालीम का काम तेज होना चाहिए। गंगा और जमुना का संगम देखिये। दोनों प्रवाहों के रंग भिन्न हैं। जहाँ इन दोनों का संगम होता है, वहाँ एक तेज धार बहने लगती है। आज जब सर्व-सेवा-संघ और तालिमी-संघ इनका संगम होता है, तब तालिमी संघ का जो काम हो रहा है, वह और तेजी के साथ आगे बढ़ना चाहिए। अगर वह नहीं बढ़ता है तो वह खतम हो जायगा।

अब मेरे सामने एक काम है। जब तक लड़की का बाप होता है, तब तक परिवार वाले उसकी चिन्ता करते हैं। आज मैं नयी तालीम का बाप हूँ। मैं देखूँगा कि इस संगम में हमारी बेटी नयी तालीम डूबी तो नहीं। अब नयी तालीम का कार्य आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी आप सबकी है। इसलिए आप सबको इसके बारे में पूरा ज्ञान होना चाहिए, अनुभव होना चाहिए और प्रेरणा होनी चाहिए कि इसको आगे कैसे लेकर चलना चाहिए।

सरकार और बुनियादी शिक्षा

और एक पहलू है। गैरसरकारी नयी तालीम का काम चल रहा है, उसका असर तामिलनाड में अच्छा हुआ है। वहाँ पर इसका काम बहुत अच्छी तरह से चल रहा है। उसमें एक ताकत है। वहाँ की सरकार भी इसे मान्यता देती है। कुछ स्टेट में तो इसका कुछ भी काम नहीं हो रहा है। इस बारे में एक भाई ने लिखा कि यह सरकार का जो व्यवहार है, वह अच्छा व्यवहार नहीं है। सर्व-सेवा-संघ की ओर से हर स्टेट में नयी तालीम को शक्तिमान बनाने के लिए पूरा प्रयत्न होना चाहिए। मैंने दो ग्रामदानी एरिया का दौरा किया। असम में नार्थ लखीमपुर का और दक्षिण भारत में तिरुमंगलम् का। इस ग्रामदानी एरिया में नयी तालीम का काम अच्छी तरह से हो सकेगा। वहाँ के लोग नया समाज बनाना चाहते हैं, आर्थिक समानता भी चाहते हैं। असम में सरकार के जो बेसिक स्कूल हैं, उनके बारे में वहाँ के लोग कहते हैं कि हमें सरकार के बेसिक स्कूल नहीं चाहिए। हम गांधीजी की बुनियादी शिक्षा चाहते हैं।

गांधीजी की तालीम में सत्य, प्रेम और करुणा का दर्शन है। तो जो ग्रामदानी इलाके हैं, वहाँ पर यह काम क्या अच्छी तरह से चलेगा। इस तालीम के जरिये वहाँ पर जो ग्रामवासी हैं, उनको बलवान बनाना होगा। शिक्षित लोगों ने आज ग्रामवासियों को दबाकर रखा है। उन ग्रामवासियों का सिर ऊपर उठाना चाहिए। वह उठाने के लिए उनको एक स्टेटस मिला है। शिक्षित कौन है? जो आदमी अपने श्रम से अपना पालन-पोषण करता है, वह शिक्षित है। जो आदमी इस डेफीनेशन में नहीं बैठता है, वह शिक्षित नहीं है, आज श्रमिकों की प्रतिष्ठा नहीं है। होना यह चाहिए कि श्रमिक किसानों के साथ साझेदारी कर सकें और उन्हें प्रतिष्ठा मिले।

आज हममें से जो लोग देहात में जाकर काम करते हैं, वहाँ पर ग्राम विश्वविद्यालय बनाना चाहिए, विनोबा ने भी यह बात कही, जिस पर सोचते-सोचते मैं एक ग्राम में गया, और कहा कि ठीक है गाँवमें ग्राम विश्वविद्यालय होगा, वहा पर लोगों की रुचि के विषय भी पढ़ाये जायेंगे और आर्थिक पहलू में सोशल साइंस, मेडिसीन, आदि विषय भी पढ़ाये जायेंगे।

सबको रोटी मिले

आखिर में हम लोगों की दृष्टि मनुष्य पर जाती है। आज देश में एक बात के ऊपर हम लोगों को जोर देना चाहिए। भगवान ने मनुष्य के लिए हवा दी है, पानी दिया है, ये दोनों मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक चीजें हैं। खाना भी बाद का सवाल नहीं है, वह भी हर मनुष्य को आवश्यकता के अनुसार मिलना चाहिए। १९२४ में इग्लैंड में जो लेबर मिनिस्टर था, उसने जो आदमी काम नहीं करता था, उसको मुफ्त में भोजन दिलाने का प्रबंध किया था। मुझे माफ करिये, आज देहातों में एक मोटर जाती है और सारा दूध इकट्ठा करके बेच देते है। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या गाँव के बच्चे को दूध की आवश्यकता नहीं होती है? गाँव के बच्चों को दूध से वंचित रखना यही सर्वोदय है? हम लोगों ने इस चीज को नहीं समझा है, विदेश में वेलफेयर सोसाइटी हैं, क्यों है? क्योंकि वहाँ के लोग यह समझ गये हैं कि इन चीजों की आवश्यकता सबको समान होती है, यह कॉन्शसनेस जिसमें है वह, नयी तालीम का शिक्षक है। अभी जाते वक्त एक लड़का देखा, उसको खाना चाहिए था। मैं उसे घर ले जाकर खिलाता हूँ, तो मुझे खुशी होती है, यह कॉन्शसनेस सारे यूरोप में घूमकर देखने पर मुझपर यह असर हुआ है। लोग कहते हैं कि ये महारोगी है, जो व्यक्ति गरीब को देखकर उनके बारे में कुछ सहानुभूति नहीं रखते हैं, उनकी सेवा नहीं करते हैं, तो वह रोगी ही नहीं, महारोगी है।

●

अण्णासाहब सहस्रबुद्धे ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा:

आज मजदूरों को लाचारी से मजदूरी के लिए आठ-आठ दस-दस मील दूर जाना पड़ता है, यह चीज जितने जल्दी खत्म हो जायेगी, उतना अच्छा है, इस चीज को तीव्रता से उठाने की कोशिश हम करें। यही नई तालीम की दिशा है।

हरेक को खाना मिले और हरेक बच्चों और बुड्ढों को सिर्फ खाना ही नहीं, बल्कि अच्छे से अच्छा भोजन मिले और जितनी आवश्यक चीजें हैं, वे पूरी हों। इन आवश्यकताओं की निर्मिति का जो कार्यक्रम है, वही नयी तालीम या ग्राम की शिक्षा है। खादी काम हमलोग करते आये हैं, ग्रामोद्योगों का भी काम किया है। गो-सेवा-संघ के द्वारा गायों के नस्लसुधार का भी काम हुआ। इतनी प्रवृत्तियों के द्वारा ग्रामीण जीवन का स्तर उठाने का प्रयास हम देश में कम-से-कम तीस साल से चल रहा है। उस काम को भले ही आप शासन का काम समझें या निर्माण का काम समझें, या गाँव के विकास का काम समझें, लेकिन इन सारी प्रवृत्तियों के द्वारा आज देशभर में यही सवाल हल करने की कोशिश हो रही है। फिर भी हम देखते हैं कि इस कोशिश को हम हल करना चाहते हैं, उसका जवाब आज के हमारे कामों से नहीं मिलता। गाँव के सारे बच्चों को दूध नहीं मिलता, तो गाँव के बाहर दूध ले जाने का अधिकार नहीं है। पहले गाँव की आवश्यकता पूरी हो और फिर जितना अतिरिक्त दूध रहता हो, उतना ही गाँव के बाहर भेजा जाय। यही अर्थशास्त्र की नींव खादी और ग्रामोद्योगों से डालने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन हमें सही जवाब नहीं मिल रहा है। आज के हमारे कामों से और हम देख रहे हैं कि ग्रामदान होने के बाद वहाँ के अर्थशास्त्र या निर्माण का काम जो होगा, वहीं उसका जवाब मिलेगा और वही गाँव की प्रौढ़ तालीम होगी या वो नयी तालीम होगी। जब मैं इस संबंध में सोचता हूँ और गहराई में सोचता हूँ, तो मुझे यह लगता है कि आज हमारी परिश्रम करने की शक्ति सामान्यतः सारे देश में इस हद तक गिर गयी है कि इस देश में मनुष्य के श्रम का मूल्य आज कुछ रहा ही नहीं। आपके पास काम रहता है। एक आदमी आता है और कहता है कि आप मुझे काम दीजिये। हम देखते हैं कि आठ घंटे के काम से उसकी आवश्यकता भी पूरी नहीं होती है। तब हम उसको क्या काम देते हैं और वह काम देने का तरीका ठीक है या नहीं, इसके बारे में

नयी तालीम की शाला हमारे आर्थिक और सामाजिक जीवन की प्रयोगशाला हो

२१ मार्च को सर्व-सेवा-संघ के अधिवेशन में नयी तालीम पर विशद विचार-विनिमय हुआ, जिसमें सर्वश्री आर्यनायकम, अरुणा साहब, काशीनाथजी, सिद्धराजजी, राधाकृष्णजी, मार्जरी साइक्स, अरुणाचलम्, क्षितीश चौधरी, मनमोहन चौधरी आदि ने भाग लिया

• •

संतुलन करने का समय आज आ गया है। आज के हमारे उद्योग, साधन जो हैं, उनमें जब तक हम परिवर्तन करने की तैयारी नहीं करेंगे, तब तक आठ घंटे के काम से भी दो आदमियों की रोजी नहीं मिलती। आज मैं सेवाग्राम में रहता हूँ, इसलिए सेवाग्राम की मिसाल देता हूँ।

वर्धा जिले में १२ लाख एकड़ जमीन है। उसमें से ६ लाख एकड़ जमीन की जो आमदनी प्राप्त होती है, वह सालाना ५० रुपये भी नहीं है। इस तरह की खेती के ऊपर जिनका जीवन चल रहा है, उनकी आमदनी क्या होगी! जिस परिस्थिति में वे रहते होंगे और उनके विकास के कार्यक्रम क्या होंगे—इसके बारे में जब गहराई से सोचने लगते हैं, तब अँधेरा-सा सामने आ जाता है। देश में प्रतिव्यक्ति एक एकड़ भी भूमि हो और पचास रुपये की आमदनी साल भर में होती हो तो इस तरह से इस देश में हमारी आर्थिक परिस्थिति कैसे सुधरेगी और हरेक को पुष्टिकर भोजन कैसे दे सकेंगे और नयी तालीम कैसे शुरू कर सकेंगे!

औजारों में सुधार तथा नये औजारों का स्वीकार

इसलिए आज के साधनों में हमें खास सुधार करना पड़ेगा। मान लीजिये, हम यहाँ सफाई करते हैं, छोटा सा झाड़ू होता है, उससे शरीर को कष्ट होता है, बड़ा डंडा लगाया हुआ झाड़ू इस्तेमाल करेंगे, तो ज्यादा काम होता है, अच्छा होता है और कष्ट भी नहीं होता। लेकिन इसका अमल हम लोग अभी तक ग्राम में नहीं कर पाये हैं। यह एक दृष्टान्त के लिये कह दिया। हरेक चीज में यह परिवर्तन हो सकता है, घास कटाई या फसल कटाई का काम हम करते हैं, उसका जो औजार होता है, दूसरे देशों में उसकी मुठिया जो होती है, किसी की छह इञ्च की, किसी की एक फुट की और कहीं तीन फीट की होती है। हमने यह कोशिश इस देश में नहीं की है। हमारे नयी तालीम के केन्द्रों में ये सारे प्रयोग होने चाहिए जिससे दो चार गुना काम करने की शक्ति हममें और बूढ़ा में पैदा हो।

आज पन्द्रह करोड़ की खादी अगर एक साल में बनेगी, तो वह बेचने की शक्ति नहीं है। एक तरफ अम्बर चरखा है खादी के लिए और दूसरी तरफ हम देखते हैं कि कपड़े के दाम आज के जो हमारे साधन हैं, उनके कारण मिल की अपेक्षा ढाई गुना ज्यादा हो जाते हैं। हमारे साधनों में इसका संशोधन होना चाहिए कि कौन-सी क्रिया बिजली से चलाने के और कौन-सी क्रिया हाथ से चलाने से आदमी को काम ज्यादा से ज्यादा दे सकेंगे और चीज सस्ती से सस्ती बना सकेंगे और गाँव को दे सकेंगे।

यदि गाँव की सही तालीम आगे चलानी हो, तो इन सारे सवालों के जवाब देने की ताकत हममें पैदा होनी चाहिए, तब हममें सच्चे शिक्षक की लियाकत आयेगी।

यह भाव जरूर रहा कि जो साधन सारे गाँव को उपलब्ध नहीं होते हैं, उसका उपयोग हम नहीं करेंगे, लेकिन शिक्षक संस्था में [गाँव को शिक्षण संस्था बनाना चाहिए] इन साधनों का उपयोग हम नहीं करेंगे, हम नये साधनों के बारे में सोचते नहीं तो आगे नहीं बढ़ेंगे, है।

सर्व-सेवा-संघ के सहमंत्री श्री राधाकृष्णजी ने चर्चा में कहा :

नयी तालीम के कार्यकर्ता इस देश में इने-गिने हैं, जो यहाँ जो बैठे हैं, जो नहीं आये हैं और सर्वोदयी जमातवाले हैं, वे कुछ के कुछ नयी तालीम के कार्यकर्ता हैं। हम सब नयी तालीम के कार्यकर्ता हैं। नयी तालीम की तो चालीस दूसरी संस्थाएँ भी हैं। सिर्फ उन्हीं का ही यह काम नहीं है। जितने सर्वोदयी प्रवृत्तिवाले हैं, वे सब नयी तालीमवाले हैं।

नयी तालीम का काम चार दीवारों में नहीं हो सकता। गाँव की सारी समस्याएँ नयी तालीम की हैं। ग्राम-राज्य की कल्पना में भूमि की, अन्न की जितनी समस्याएँ हैं, वे सब शिक्षा की समस्याएँ हैं ऐसा मानकर नयी तालीम की पद्धति से उसका हल निकालना चाहिए। हमारे सब कामों पर तालीम का रंग आना चाहिए। नयी तालीम का रंग क्या है? जब तक हम यह महसूस नहीं करेंगे कि हम सब नयी तालीम के कार्यकर्ता हैं, तब तक वह रंग नहीं आयेगा। पद्धतियों में फर्क होगा, सबकी छाप उन पर पड़ेगी। आम तौर पर मुख्य बातें कर सकेंगे, ऐसा करने से नयी तालीम की पद्धति सरल हो सकेगी। नयी तालीम का जो उद्देश्य है, वह सबके सामने रखें, ग्राम स्वराज्य के सिलसिले में जो नयी तालीम का काम है, वह आगे कैसे बढ़ाया जाय, यह मुख्य समस्या है।

नयी तालीम में काम की टेकनीक होनी चाहिए। संस्थाओं में अनुसंधान और साहित्य तैयार करने का काम करना चाहिए। एक संस्था अपने आसपास के क्षेत्र के साथ कैसे प्रौढ़ शिक्षक तैयार करे और जन-जीवन का विकास करे। जितनी रचनात्मक संस्थाएँ हैं, वे सब इस अनुसंधान के काम पर सोचें। इन सब संस्थाओं का हक उन सारी संस्थाओं में जो काम होता है, जिस पद्धति से होता है, उन पद्धतियों का संशोधन करने में है।

देश में जो नयी तालीम की तैयारी हो रही है, उसे आगे बढ़ाने की दृष्टि से सोचना चाहिए। जो अन्य ४० संस्थाएँ हैं, उनको एक साथ करके उनकी एक बिरादरी बनायी जाय। हिन्दुस्तानी तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ के संगम के बाद इस नयी तालीम के काम में कमी नहीं पड़नी चाहिए। चाहे तो सर्व सेवा-संघ इस काम को करने के लिए एक समिति बनाये। खासतौर से अपने क्षेत्र में प्रौढ़ शिक्षा के तौर पर वहाँ के प्राब्लेम्स हैं, उनको अपना समझ करके वैज्ञानिक दृष्टि से, जन जीवन के विकास की दृष्टि से और शिक्षण की दृष्टि से वहाँ की संस्थाओं से कुछ हल निकले तो सोचना चाहिए। इस सबके लिए हमारी संस्थाओं में तैयारी होनी चाहिए। ये जो संस्थाएँ हैं, वे अपने-अपने सीमित क्षेत्रों में इन्टेन्सिव काम तो करेंगी ही, लेकिन बिना आन्दोलन के यह का[म] नहीं होगा। **सिर्फ सरकार के भरोसे न रखकर प्रत्यक्ष जनता के पास आकर नयी तालीम की अच्छी बातें बतायेंगे तो जनता में जागृति को अराउज़ हम कर सकेंगे।**

कुछ ऐसी भी चीजें हैं, जो सरकार के साथ मिलकर करनी चाहिए। पिछले दिसम्बर में जो परिसंवाद हुआ था, उसमें यह प्रस्ताव हुआ कि हम काम करते हैं, अपने क्षेत्र में और जो विचार प्रचार करते हैं तो कुछ अड़चनें आती हैं। सरकारी इम्तहान में इस शाला के विद्यार्थी नहीं बैठ सकते हैं, इसलिए ऊँची तालीम के लिए कुछ सुविधाएँ उपलब्ध होना चाहिए।

इसके लिए एक छोटी सी समिति सरकार के साथ बातें करने के लिए और प्रान्तीय समस्याओं को हल ढूँढ़ने के लिए बनायी थी। तालीम की क्वालिटी चाहे बुनियादी हो, चाहे कालेज की, वह कैसे आगे बढ़ सके, इसके बारे में हम सब मिलकर कोशिश करें।

हम सब एक राय हों। नयी तालीम की बातें समझने की कोशिश हो। एक-दो साल के अन्दर कुछ कान्सन्ट्रेशन हो। जो संस्थाएँ आज हैं, उनमें काफी कार्यकर्ता मौजूद हैं। उन संस्थाओं को हमारे कार्यकर्ता के प्रशिक्षण का माध्यम बनाना चाहिए। इसके लिए नये कार्यकर्ताओं को ढूँढ़ने की कोशिश हो। उन संस्थाओं में सब साधन उपलब्ध हैं, इसलिए वहाँ पर अनुसंधान का काम होना चाहिए।

•

साहित्यिकों से सम्पर्क

मैं एक बात और कहना चाहता हूँ। हमने भारत में आठ साल में थोड़े बहुत काम किये। बापूजी की मृत्यु को अब बारह साल हो रहे हैं। इन बारह सालों में हमने क्या किया और क्या नहीं किया, इस पर सोचेंगे तो ध्यान में आयेगा कि जितना किया, उससे ज्यादा नहीं किया। हम जो कर सके, ऐसी चीजें कम निकलेंगी और जो नहीं कर सके, ऐसी चीजें ज्यादा निकलेंगी। इस सिलसिले में हमने शिक्षण की बात कही थी। वैसे ही जान बूझकर नहीं, लेकिन फिर भी, हमने साहित्यिकों की और साहित्य प्रवृत्ति की उपेक्षा की है। मैं जहाँ जहाँ गया, मुझे आश्चर्य हुआ कि साहित्यिकों ने इस विचार के साथ बहुत ही सहानुभूति दिखाई। जितने बड़े बड़े साहित्यिक मिले, वे कुछ सर्वोदय-विचार की ओर इतने आकर्षित हैं कि कहते हैं कि यही चीज है, जो साहित्यिक को नवजीवन दे सकती है, अन्यथा साहित्य को जीवन देनेवाली दूसरी कोई चीज नहीं है।

—विनोबा

अजमेर से सेवाग्राम एक विहंगावलोकन

पूर्णचन्द्र जैन
मन्त्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ

गत वर्ष २७, २८ फरवरी और १ मार्च १९५९ को अजमेर में सर्वोदय-सम्मेलन हुआ था। उसके बाद २६, २७ और २८ मार्च को सेवाग्राम में १२ वाँ सम्मेलन हुआ। इस बीच हुई आन्दोलन की प्रगति का एक रेखा-चित्र नीचे की पंक्तियों में दिया जा रहा है। सर्व-सेवा-संघ के मन्त्री श्री पूर्णचन्द्रजी जैन द्वारा सम्मेलन में प्रस्तुत रिपोर्ट के आधार पर यह संकलित किया गया है। पूरी रिपोर्ट २५ नये पैसे में सर्व-सेवा-संघ, राजघाट, काशी से उपलब्ध है।

—सम्पादक

शान्ति-सेना

अजमेर सम्मेलन की परिसमाप्ति के दूसरे दिन २ मार्च १९५९ को प्रातःकाल ५ बजे "शान्ति के सिपाही चले, शान्ति के सिपाही चले" के आह्लादपूर्ण गान के साथ पंक्तिबद्ध ८७० शान्ति-सैनिकों का दल आने में एक हृदयग्राही दर्शन था। उसे देख कर श्री विनोबाजी ने कहा : "मैंने आशा की थी कि इस रैली में ५०० सैनिक आयेंगे। पर यहाँ ८७० उपस्थित हैं और जो शान्ति-सैनिक काम में लगे हैं, वे नहीं आ सके हैं। उन सबको ध्यान में रखकर देखा जाय तो शान्ति-सैनिकों की संख्या लगभग १००० के आसपास पहुँच जाती है। मैं आशा करता हूँ कि हिन्दुस्तान का दुःख मिटाने में यह सेना कामयाब होगी।

शान्ति-सेना रैली के दर्शन तथा गगवाना के शान्ति-सेना-सम्मेलन से सभी साथियों के मन में शान्ति-सेना के भविष्य के सम्बन्ध में एक ऊँची और महत्त्वपूर्ण कल्पना बनी। कुछ प्रदेशों में वहाँ की समस्याओं के सन्दर्भ में काफी काम हुआ। केरल में श्री केलप्पन और उनके साथियों ने सतत कई महीने तक अशान्त वातावरण को शान्त रखने का काम किया। शान्ति-सेना-मण्डल की संयोजिका श्रीमती आशा देवी ने एक अरसे के लिए वहाँ डेरा डाल दिया। बिहार में अरना (सीतामढ़ी) तथा उसके समीपवर्ती गाँवों में जब पारस्परिक विरोध की आँधी अचानक गाँव के गाँव जलाने लग गयी, उस समय श्री बैद्यनाथ बाबू तथा बिहार सर्वोदय-मण्डल और बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ के साथियों ने उस बढ़ती आग को बुझाने और द्वेष को मिटाकर दिलों को मिलाने का प्रशंसनीय कार्य किया। उत्तर प्रदेश में शिक्षा विद्यालयों के विद्यार्थी उत्पात के समय श्री सुन्दरराम और श्री बलदेव वाजपेयी ने अपने काम में आशातीत सफलता प्राप्त की। बिहार गाँव के झगड़े में भी करुणभाई ने समय पर पहुँच कर काफी काम किया। बंगलौर (मैसूर) में भी विद्यार्थी आन्दोलन को शान्तिपूर्वक हल करने में वहाँ के कार्यकर्ताओं का प्रयत्न अच्छा रहा। अन्य प्रदेशों में भी समय समय पर शान्ति-सेना प्रशिक्षण शिविर तथा सफाई शिविर होते रहे हैं।

विनोबाजी की पदयात्रा

अजमेर से गगवाना की ओर बढ़ते हुए विनोबाजी ने कहा था कि "मैं शान्ति-सैनिक के नाते ही घूम रहा हूँ। कश्मीर जाने की सोचता हूँ। उसमें भी मेरी वही दृष्टि होगी। मैं अपनी कश्मीर यात्रा से बहुत ज्यादा अपेक्षा नहीं रखता हूँ। केवल निरीक्षण की ही अपेक्षा लिये हुए वहाँ जा रहा हूँ।" गगवाना से आगे सीकर, चुरू, झुंझुनू होते हुए नूराना ग्राम से उन्होंने पंजाब प्रदेश में प्रवेश किया। श्री विनोबाजी की पदयात्रा एक चलता फिरता विद्यालय तो है ही, बीच-बीच में सभा-सम्मेलनों से उसकी विशिष्टता और भी बढ़ जाती है। सीकर का कृषि-गोसेवा-सम्मेलन ऐसा ही एक महत्त्व का कार्यक्रम था। इस सम्मेलन में देश भर के कृषि गोसेवा कार्य के पारस्परिक परिचय के अलावा आगे के काम के लिए गहराई से सोचा विचारा गया और तय हुआ कि स्वतन्त्र गोसेवा-संघ बनाने के बजाय संघ की कृषि गोसेवा-समिति को सशक्त किया जाय।

पठानकोट में संघ ने विनोबाजी की उपस्थिति में संघ के नये विधान की रूपरेखा पर विचार करके इसका पहला वाचन स्वीकृत किया एवं देश के राजनैतिक दलों से आचार मर्यादा सम्बन्धी एक निवेदन किया। पंजाब की पदयात्रा के बाद जब श्री विनोबाजी जम्मू पहुँचे वहाँ हिन्दुस्तानी तालीमी संघ और सर्व-सेवा संघ के संगम का उल्लेखनीय कार्य हुआ। उस समय विनोबाजी ने सभी लोकसेवकों को नयी तालीम का एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाने के लिए सक्रिय कार्यक्रम सुझाया।

एक समय से ही विनोबाजी के मन में अज्ञात सञ्चार की कल्पना चल रही थी। पर उनका कश्मीर का कार्यक्रम बन चुका था। इस बार कश्मीर में असाधारण वर्षा और बाढ़ रही, पर इन सबके बीच उनकी पदयात्रा सतत चलती रही। कश्मीर में पूँच नामक स्थान पर तो वे भीषण वर्षा-आँधी में फिसलकर एक बार गिर पड़े, फिर भी उनके कदम आगे बढ़ते गये। वहाँ की यात्रा में उन्होंने सभी-साथी भी कम कर दिये और कुछ बोझा खुद ही उठाने का आग्रह रखा। इसमें उनकी मुख्य दो दृष्टियाँ थीं। एक तो यह कि श्रम निष्ठा लोगों में बढ़े और बोझा उठाने का काम भी प्रतिष्ठा का माना जाय। दूसरे, यात्रा में बहुत अधिक व्यक्ति न रहें। कश्मीर की घाटियों में सामान अधिकतर मजदूरों के सिर पर चलता था। इसलिए वहाँ साथ के व्यक्तियों की संख्या कम करने का विशेष महत्त्व व आवश्यकता भी एक तरह से थी।

अज्ञात संचार

कश्मीर में सत्य, प्रेम, करुणा और मैत्री का सन्देश देकर लौटते समय पंजाब के प्रसिद्ध नगर अमृतसर में साहित्यकार-परिषद् का आयोजन हुआ। उसमें देश के प्रमुख साहित्यकारों ने भाग लिया। अमृतसर में सिक्खों के गुरुद्वारा स्वर्ण मन्दिर में भी वे आमन्त्रित किये गये। अमृतसर पड़ाव और वहाँ की साहित्यकार परिषद् पदयात्रा कार्यक्रम में ऐतिहासिक स्थान और प्रसंग रहेंगे, क्योंकि वहाँ से ही विनोबाजी ने अज्ञात सञ्चार आरम्भ किया। इसकी सूचना देते हुए उन्होंने संघ को लिखा था—"आसाम छोड़कर बाकी सब प्रदेशों में हमारी पदयात्रा गये साढ़े आठ वर्षों में हो चुकी। इसको तो वह जनयाम, लेकिन पुरानी भाषा में उसे वनयाम भी कह सकते हैं।

"अब जरूरत है मेरे लिए अज्ञातयाम की। इससे होनेवाली हानियाँ स्पष्ट ही हैं, पर लाभ आध्यात्मिक और ध्यान करके अहिंसा की शोध की दृष्टि से हो सकते हैं। अज्ञातयाम में मनुष्य कहीं से कहीं भी जा सकता है, पर इंदौर की दिशा मेरे मन में है। पृथ्वी प्रदक्षिणा करके इंदौर पहुँचूँ या शुक्लतीर्थ की स्ट्रेट लाइन की व्याख्या के अनुसार पहुँचूँ, यह नजदीकवाला व कर्तृत्व पर या प्रवाह पर निर्भर रहेगा।" कर्तृत्व तो भी ही स्वा नहीं बना गया है और प्रवाह भी अभी तो विनोबाजी को बड़ी प्रदक्षिणा के रास्ते ले जा रहा है।

अज्ञात सञ्चार के बारे में विनोबाजी ने बताया कि "यात्रा जारी रहेगी। भारत को इतनी खबर बस होगी कि यात्रा पंजाब में चल रही है।" इसका अर्थ सिर्फ यह नहीं है कि पहले की भाँति कई दिनों तक के यात्रा के पड़ाव आदि अब पूर्व निश्चित नहीं हैं। नगर में पड़ाव रखने से भी उन्होंने परहेज किया है। सिर्फ यही नहीं, वरन रिपोर्टिंग तथा लाउडस्पीकर का प्रयोग भी वे अवाञ्छनीय कहते हैं। बल्कि बात भी सम्भवतः इन सबसे गहरी है। असम को छोड़ देश के सब प्रदेशों में वे पदयात्रा कर चुके हैं। पंजाब से दूसरा दौर उनका शुरू हुआ है। क्रान्ति के विचार और कार्य के नाते में वे बहुत बढ़ चुके हैं। अब मानो वे विशेष निर्गुण, सूक्ष्म कार्य की खोज में हैं। और, इसलिए कार्यक्रम तथा कार्यकर्ता दोनों से अधिक निरपेक्ष, अधिक गहरे जा रहे हैं। पहले महीनों तक के बने कार्यक्रम में चलना ही अपना था। देश की परिस्थिति या वहाँ के कार्यकर्ताओं की इच्छा, सुविधा रखने की आवश्यकता पर भी इतना ध्यान नहीं होता था।

प्रादेशिक पदयात्राएँ

विनोबाजी की अखण्ड पदयात्रा की तरह कुछ प्रदेशों में वहाँ के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा प्रादेशिक तथा स्थानीय पदयात्राएँ समय-समय पर आयोजित हुई हैं। यद्यपि पहले की अपेक्षा इस वर्ष में इनकी संख्या कम रही है, फिर भी उत्तर-प्रदेश में गत डेढ़ वर्ष से चल रही श्री-सुन्दरी राव की पदयात्रा, बिहार में बिहार सर्वोदय मण्डल द्वारा आयोजित भारत प्रदेशीय पदयात्रा—जिसमें समय-समय पर प्रदेश के श्रेष्ठ कार्यकर्ता सम्मिलित होते रहे हैं, उड़ीसा में आचार्य हरिहरदास की पदयात्रा, गुजरात और फिर अहमदाबाद नगर में श्री रविशंकर महाराज की पदयात्रा, केरल में श्री केलप्पन तथा उनके साथियों की पदयात्रा, बंगाल में श्री चारुचन्द्र भण्डारी की पदयात्रा, मैसूर की अखिल कर्नाटक सामूहिक पदयात्रा तथा तमिलनाड में वहाँ के ग्रामदानी गाँवों के निवासियों द्वारा एक गाँव से दूसरे गाँव तक की सामूहिक ग्रामदान पदयात्रा के एक या दूसरे प्रकार के क्रम चलते रहे हैं। इनके अलावा समय-समय पर भू-क्रान्ति-सप्ताह, भू-जयन्ती, गांधी जयन्ती एवं सर्वोदय पर्वों में स्थानीय कार्यकर्ताओं की पदयात्राएँ हुई हैं। श्री गोराजी ने पक्षातीत लोकनीति की स्थापना के उद्देश्य से आन्ध्र में पदयात्रा की और हैदराबाद में वे गिरफ्तार किये गये और फिर छोड़ दिये गये हैं।

संघ का नया रूप

जैसा कि ऊपर लिखा गया है संघ के भावी स्वरूप और संगठन के बारे में अजमेर सर्वोदय-सम्मेलन से पहले इंदुवती परिसंवाद में चर्चा उठी थी। चर्चा के आधार पर नये स्वरूप का ढाँचा तैयार करने के लिए उस समय श्री ठाकुरदास बंग के संयोजकत्व में एक समिति बनायी गयी थी। समिति ने मसविदा तैयार किया। वह परिपत्रित किया गया। बाद में संघ की राजपुरा (पंजाब) बैठक में ता. २७, २८ अप्रैल १९५९ को विधान के बारे में काफी चर्चा हुई और ता० २८ जून १९५९ को पूसा-रोड (बिहार) में संघ ने नया विधान स्वीकृत किया।

कुछ लोगों को लगता है कि तन्त्रमुक्ति के बाद फिर से यह कोई दूसरा तन्त्र खड़ा हुआ है, लेकिन ऐसा नहीं है। तन्त्रमुक्ति का अभिप्राय वस्तुतः मुक्त तन्त्र में अर्थात् स्वानुशासन में काम करना है। अहिंसक

आंदोलन और सर्व-सेवा-संघ

समाज में संगठन का स्वरूप व कार्य-व्यवहार कैसा हो, इसे ध्यान में रखते हुए ही कुछ दूरगामी परिवर्तन किये गये हैं। पारस्परिक संपर्क और एकसूत्रता की दृष्टि से संयोजक संघ के रूप में इसकी संघटना हुई। इस विधान में नीचे से ऊपर संकीर्ण होते-होते केंद्रित और कुछ व्यक्तियों में संगठन को सीमित कर देने जैसी बात नहीं है। वरन् प्रत्येक लोकसेवक भी संघ-बैठक में सदस्य की हैसियत से भाग ले सकता है, ऐसा नियम रखा गया है।

अल्पमत बहुमत के बजाय निर्णयों के लिए सर्वसम्मति अथवा सर्वानुमति का आधार लिया गया है। गांधीजी ने कहा था कि संगठन अहिंसा की कसौटी है। (Organisation is the test of non-violence) संघ का नया विधान उस दिशा में विनम्र कदम कहा जा सकता है। वास्तव में सब को बताना है कि एक अहिंसक-समाज में एक सार्वजनिक संगठन के विधान, उसके नियम-उपनियम संगठनगत परस्पर व्यवहार, प्रक्रिया वगैरह का क्या स्वरूप होना चाहिए या हो सकता है।

अध्ययन-दलों की विदेशयात्रा

पिछली बार श्री. जयप्रकाशनारायण और श्री. सिद्धराज ढड्ढा जब विदेश गये तो वे इजराइल भी गये थे और वहाँ की सहकारी खेती और सामूहिक जीवन के प्रयोगों को उन्होंने बारीकी से देखा था। ग्रामदानी क्षेत्रों के निर्माण कार्य वगैरह में उस कार्यक्रम व जीवनचर्या का उपयोग देखकर श्री जयप्रकाशनारायण का सुझाव था तथा इजराइल सरकार की भी प्रार्थना थी कि कार्यकर्ताओं के एकाधिक दल वहाँ भेजे जाँय। इस विचार से दस कार्यकर्ताओं का एक दल पहले भेजा गया जो करीब तीन महीने वहाँ रहा। दूसरा ३५ कार्यकर्ताओं का दल वहाँ भेजना तय किया। यूगोस्लाविया में वहाँ की निर्दलीय जनतांत्रिक शासन-व्यवस्था के अध्ययन के लिए श्री रा० कृ० पाटिल, विमला बहन आदि ५ व्यक्तियों का दल भेजा जाना तय हुआ। यह दल लौट आया है। इजराइल के लिए वहाँ के अध्ययन, अनुभव वगैरह की दृष्टि से २३ कार्यकर्ता ता. २८ फरवरी १९६० को रवाना हुए हैं।

नयी तालीम कार्यक्रम

गांधीजी ने व्यक्ति और समाज-जीवन के हर पहलू को स्पर्श किया। तालीम का क्षेत्र भी अछूता नहीं रह सकता था। सन् १९३७ में शिक्षा-क्षेत्र की अहिंसक क्रांति के लिए गांधीजी के मार्गदर्शन में तालीमी संघ की स्थापना हुई। श्री ई. डब्ल्यू आर्यनायकम् और श्री आशादेवी आर्यनायकम् की देख-रेख में इसका कार्य शुरू हुआ और चला। २२ वर्षों में संघ का कार्य चलता रहा है। केंद्रीय सरकार तथा कुछ एक प्रादेशिक सरकारों द्वारा भी नयी तालीम का विचार मान्य हुआ। कुछ काम जहाँ-तहाँ लोगों की ओर से भी शुरू किये गये, पर देशव्यापी पैमाने पर उसका असर नहीं दिखाई दिया।

नयी तालीम को राष्ट्रव्यापी रूप देने के लिए विनोबाजी ने तालीमी-संघ और सर्व-सेवा-संघ के संगम पर जोर दिया। आज गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम व गांधी-विचारधारा के व्यवहार के खिलाफ समाज का सारा प्रवाह मानो संगठित होकर खड़ा है, ऐसी स्थिति में सम्मिलित शक्ति लगाना आवश्यक है। तालीमी-संघ के अलावा अन्य सब चरखा-संघ, ग्रामोद्योग-संघ, गोसेवा-संघ आदि सर्व-सेवा-संघ में पहले ही मिल चुके थे। ग्रामदान, 'ग्रामस्वराज्य के व्यापक कार्यक्रम में सब प्रवृत्तियों पर नयी तालीम का रंग चढ़ना जरूरी था। विनोबाजी ने अपने प्रवचनों में कहा "ग्रामदान, सर्वोदय-पात्र और शांति-सेना के साथ-साथ मैं नयी तालीम का काम भी उठाना चाहता हूँ। शांति-सेना के लिए नयी तालीम जरूरी है। इस तरह उस पर दुगुना सोचकर जोर देना जरूरी है, इसलिए मुझे लगता है कि सर्व-सेवा-संघ की पूरी ताकत उसमें लगे।"

ता. ९,१० जून '५९ को जम्मू नगर में विनोबाजी की उपस्थिति में अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ की प्रबंध-समिति तथा हिंदुस्तानी तालीमी संघ की संयुक्त बैठक के अवसर पर तालीमी संघ ने संगम का आखिरी फैसला किया जो इस वर्ष की घटनाओं में विशेष महत्त्वपूर्ण है। संगम के बाद दोनों संघों की संयुक्त सभा में बोलते हुए विनोबाजी ने कहा : "अब वह समय नहीं रहा है जब कि अलग-अलग ट्रस्टों में बँटकर नयी तालीम के काम को किया जाय। अब सारे रचनात्मक कार्यकर्ताओं की शक्ति एक साथ नयी तालीम के काम को उठाये, यह आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है। अब वह समय आ गया है जब कि हमें सारे देश में इस काम के लिए शंख फूँकना पड़ेगा, वातावरण तैयार करना पड़ेगा, जनशक्ति खड़ी करनी पड़ेगी।" विनोबाजी के इस अभिप्राय को देखते हुए दोनों संघों की संयुक्त बैठक में संगम के संदर्भ में नयी तालीम का आगे का कार्यक्रम बनाना तय हुआ।

रचनात्मक प्रवृत्तियाँ

खादी-ग्रामोद्योग आदि रचनात्मक कार्य केवल बेरोजगारी निवारण या राजनैतिक स्वाधीनता-संग्राम के पोषक [illegible] नहीं थे, वरन् गांधीजी इन्हें भी सामाजिक परिवर्तन के व्यापक कार्यक्रम का ही अंग मानते थे। उनकी दृष्टि से खादी, सत्य, अहिंसा और स्वाधीनता की प्रतीक थी। पर उसे उस तरह पूरे तौर पर नहीं अपनाया गया। फलतः वह आज विचार की प्रतीक नहीं रही है और उसकी वह प्रतिष्ठा भी नहीं है। खादी की तरह ही अन्य ग्रामोद्योगों का भी हाल है। ये प्रवृत्तियाँ क्रांति का वाहन होनी चाहिए। ग्रामदान के संदर्भ में यह आवश्यकता पुनः उभरकर जाहिर हुई। इस दृष्टि से चालीसगाँव में संघ ने रचनात्मक कार्यों को नया मोड़ देने के बारे में विचार किया था। पूसारोड में उसका कार्यक्रम तय किया। बिहार में पहले से ही इस काम की शुरुआत हो गयी थी। वहाँ के पूसाक्षेत्र में अंबर चरखा और नयी तालीम के माध्यम से ग्राम-स्वराज्य की ओर अग्रसर होने का प्रयास चल रहा है। वहाँ गाँव-गाँव और घर-घर चरखे का प्रयोग एक क्षेत्र में किया गया है। गाँव में वस्त्र-स्वावलंबन और अधिक वस्त्र के ग्राम व जिलास्तर पर विनियोग की योजना वहाँ की जा रही है। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ ने स्वावलंबी खादी की दिशा में अपने-अपने काम को एक सीमा तक विकेंद्रित भी किया है। राजस्थान में क्षेत्र स्वावलंबन और छोटी इकाइयों के द्वारा खादी ग्रामोद्योग कार्य चलाये जाने की दिशा में कदम बढ़ाया गया है। उत्तर प्रदेश में खादी काम की सबसे बड़ी रचनात्मक संस्था श्री गांधी-आश्रम ने आठ जिलों के अपने काम को विकेंद्रीकरण की योजना के आधार पर चलाना तय किया है। आंध्र और तमिलनाड में भी नये मोड़ की दृष्टि से वहाँ के काम को बदलने का विचार हुआ है। ग्रामदानी गाँवों में इस नये मोड़ का अधिक महत्त्व है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि इस नये मोड़ के कार्यक्रम में श्री शंकरराव देव, श्री [illegible] साहू आदि साथियों की दिलचस्पी रही है और आशा है कि इनके प्रयत्न से खादी ग्रामोद्योग संबंधी नीति को सरकारी व गैर-सरकारी सब क्षेत्रों में एक स्पष्ट दिशा मिलेगी। खादी ग्रामोद्योग आयोग का कार्यकाल समाप्त हो रहा है। खादी-ग्रामोद्योग कार्यक्रम संबंधी रीति-नीति, आयोग के पुनर्गठन वगैरह के सिलसिले में प्रबंध समिति व खादी-ग्रामोद्योग समिति के निश्चयानुसार श्री वैकुंठ भाई, श्री शंकरराव देव आदि का शिष्टमंडल श्री जवाहरलाल नेहरू और लालबहादुर शास्त्री से मिला था। औद्योगिक क्षेत्र में विकेंद्रीकरण के साथ ग्रामोद्योगों के उपकरणों, औजारों में निरंतर शोध-सुधार की भी आवश्यकता है। इसके लिए संघ ने एक खादी ग्रामोद्योग प्रयोग समिति बनायी है। अभी वह स्वतंत्र समिति के रूप में कार्य कर रही है। उसके संयोजक श्री कृष्णदास गांधी एक साधक की भाँति अहमदाबाद में इस काम में लगे हैं। हमारा देश इतना बड़ा है और जलवायु, भौगोलिक स्थिति, कच्चे माल वगैरह संबंधी परिस्थितियाँ इतनी भिन्न भिन्न हैं कि ऐसे शोध, अन्वेषण और सुधार-केन्द्र कई जगह चलने की जरूरत है। बढ़ती हुई टेक्नालाजी और अणु-शक्ति के युग में ग्रामोद्योगों के औजार और टेक्नीक में भी सुधार वैज्ञानिक दृष्टि से होने चाहिए। बिजली और अब अणु-शक्ति का उपयोग होने लगे तो उसके विकेंद्रित उपयोग के बारे में भी सोचना चाहिये।

सर्वोदय-पात्र

हमारे आंदोलन के वर्तमान रूप में शांति-सेना और सर्वोदय-पात्र का सर्वोपरि स्थान है। यह कार्यक्रम आरोहण का आज द्वार हो गया है और विनोबाजी की शक्ति व चिंतन इस पर केंद्रित देखना चाहते हैं।

सर्वोदय पात्र लोकसम्मति का निदर्शक है। जनाधार की दृष्टि से और शांति सैनिक के प्रेमक्षेत्र या चेतन-संपर्क की दृष्टि से इसका बड़ा महत्त्व है। अभी यह विचार जनभावना को पकड़ नहीं पाया है और यह भी मानना होगा कि जितनी शक्ति और त्वरा से इस कार्य को उठाया जाना चाहिए उस प्रकार यह बहुतसी जगह जहाँ उठाया भी नहीं गया है। व्यवस्थित रूप से इस कार्य को लिया गया वहाँ के परिणाम स्पष्ट ही उत्साह बढ़ानेवाले हैं। आंध्र के तेनाली, गुंटूर, विजयवाड़ा आदि क्षेत्र में यह कार्य चल रहा है और बड़ा सफल सिद्ध हो रहा है। सेवा-सैनिक सर्वोदय-पात्र का धान्य इकट्ठा करने के अलावा रिक्शावालों के लिए रात्रिशाला चलाते हैं, हिंदी और संस्कृत के प्रौढ़वर्ग चलाते हैं, महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई के वर्ग सिखाते हैं, [illegible] पर कताई वर्ग चलाते हैं, मोहल्ला-सफाई, बीमारों की सेवा, गरीबों के बच्चों को नहलाना धुलाना उनमें स्वच्छता की भावना उत्पन्न करना आदि कार्यक्रम भी चलाते हैं। इन सब कार्यों में जितने सेवा-सैनिक अपना समय लगाते हैं उनका निर्वाह सर्वोदय पात्र से चलता है। प्रतिदिन कुछ समय पात्र का धान्य इकट्ठा करने में और शेष अधिकांश समय सेवा, संपर्क तथा विचार प्रचार में लगाया जाता है। [illegible] इकट्ठा करने का [illegible] सर्वोदय मित्र [illegible] करने की योजना है। समाज सेवा करते हुए उसी क्षेत्र से सर्वोदय-[illegible] निर्वाह व आंदोलन चलाने की [illegible] की जो कल्पना है उसका एक [illegible] कारी सफल यह उदाहरण माना जा सकता है।

हैदराबाद, [illegible], [illegible], राजमंत्री और [illegible] जिले में [illegible] दस हजार सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हुई

है वहाँ २० कार्यकर्ता सेवा-सैनिक के रूप में कार्य कर रहे हैं। उपर्युक्त सघन क्षेत्रों में सर्वोदयपात्रों से ३०,६१०८० का धान ११ मास में इकट्ठा हुआ है और लगभग इतना ही सेवा-सैनिकों के निर्वाह पर खर्च हुआ है। इस प्रकार विनोबाजी की सर्वजन-आधार की कल्पना का वहाँ एक दर्शन दिखायी पड़ता है।

गुजरात में श्री रविशंकर महाराज की प्रेरणा से सूरत जिले के गांवों में तथा अहमदाबाद नगर में सर्वोदयपात्र का सर्वांगीण काम हुआ है। अन्यत्र भी कुछ जगह सर्वोदयपात्र का कार्यक्रम थोड़े पैमाने पर ही सही, लेकिन सघन ढंग से चला है।

श्री जयप्रकाशजी का प्रबंध

गांधी विचारधारा या सर्वोदय-समाज रचना के समर्थकों, व भूदान, ग्रामदान-आंदोलन में लगे व्यक्तियों से अक्सर यह कहा जाता है कि नये समाज की अर्थ व्यवस्था का, शासन का कैसा स्वरूप हम चाहते हैं वह कुछ सामने रखा जाय। इस दृष्टि से सर्व-सेवा-संघ ने एक प्लान (सर्वोदय-प्लान) देश के सामने रखा था। उसमें एक विहंगम चित्र था। वह काफी समय पहले प्रकाशित हुआ था और उसके नव संस्करण की आवश्यकता है। खुशी की बात है कि भारतीय राज्य-व्यवस्था की पुनर्रचना का सुझाव एक प्रस्ताव के रूप में श्री जयप्रकाशनारायण ने देश को दिया है। उसमें सत्ता के विकेंद्रीकरण, ग्रामराज, पक्ष व 'दलबन्दी' से मुक्त तथा सर्वसम्मत निर्वाचन, सामुदायिक जीवन वगैरह के सुझाव और तत्सम्बन्धी कार्यक्रम हैं। उस प्रबंध पर १ जनवरी से ३ जनवरी १९६० तक सर्व-सेवा-संघ ने एक तीन-चार व्यक्तियों का परिसंवाद आयोजित किया। इसी प्रकार के दो-तीन परिसंवाद और किये जाने की बात है, ताकि देश के मान्य विचारकों का अभिमत मालूम हो सके तथा अधिकांश विचारक देश की राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना चाहते हैं तो वह कैसा अच्छा स्वरूप होगा तथा श्री जयप्रकाश नारायण का सुझाव उस दृष्टि से कितना ठीक व व्यवहार्य है या उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है, यह सब मालूम हो सके। इस प्रकार का विचार विमर्श चालू परिस्थितियों के बीच समाज में राज्यव्यवस्था का क्या स्वरूप हो, वह कैसे लायी जा सकती है उस बारे में दृष्टिकोण को व्यावहारिक रूप से कुछ स्पष्ट करेगा।

ग्राम-निर्माण

ग्रामदानी और ग्राम-बहुली गाँवों में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से ग्राम निर्माण का काम चल रहा है। निर्माण-समिति की सलाह व मार्गदर्शन तो सब जगह आवश्यकतानुसार है ही। कोरापुट में सर्व-सेवा-संघ द्वारा संघ के भूतपूर्व महामंत्री श्री अण्णा सहस्रबुद्धे के मार्गदर्शन में कार्य चला था। अब कार्य का वह स्वरूप बदला है और स्थानिक समितियाँ बनाकर जिला या ऐसे क्षेत्र के आधार पर कार्य का जिम्मा उन्हें सौंपा जा रहा है। एक पायलट प्रोजेक्ट प्रादेशिक सरकार के प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं की मिली-जुली समिति हाथ में ले रही है। महाराष्ट्र के अमरावती, अक्कलकुआँ के ग्रामदानी क्षेत्र में श्री ठाकुरदास बंग के मार्गदर्शन में पुनर्रचना कार्य हो रहा है। कोरापुट जैसे ही यहाँ भी एक पायलट लेने, प्रोजेक्ट लेने की बात चल रही है। आसाम के उत्तर लखीमपुर क्षेत्र में श्री अमलप्रभा बहन सघन कार्यकर्ता-शक्ति जुटा रही हैं और नयी तालीम व ग्राम-स्वावलंबन की योजना बना रही है। बिहार के बेराई गाँव में निर्माण कार्य सतत रूप से चल रहा है और वहाँ गत फरवर '५८ से दिसम्बर '५९ तक खेती, गोपालन, कताई, धान कुटाई, शहर की मजदूरी, भवन, बाँध, तालाब, कुएँ निर्माण तथा वृक्षारोपण से गाँव में लगभग साढ़े अठारह हजार रुपये की आमदनी की है जो प्रति व्यक्ति लगभग ८८ रुपये वार्षिक पड़ती है जबकि ग्रामदान के पूर्व औसत लगभग ४५ रुपये वार्षिक का था। ग्रामदान के बाद १९५८ में यह रु. ६७ वार्षिक हुआ और अब बराबर बढ़ रहा है। रचनात्मक संस्थाओं, सरकार तथा सहयोग-समिति से कर्ज व अनुदान का उपयोग बर्बाद होनेवाली श्रमशक्ति को बचाने में तथा पूँजी के निर्माण व आय बढ़ाने एवं आर्थिक प्रयत्नों को संगठित करने में किया है।

इस तरह ग्राम-स्वराज्य की दिशा में बेराई गतिशील है। बेराई के अलावा बिहार के अन्य ६० गाँवों में योजनापूर्वक निर्माण काम चल रहा है।

आन्ध्र के रहण्णा क्षेत्र के १० ग्रामदानी गाँवों को लेकर नमूने के तौर पर सघन ग्राम पुनर्रचना का कार्य करने की योजना है। कर्नाटक के धारवार और कारवार जिले के कुछ गाँवों में काम हो रहा है। तमिलनाड के बाल्लागुट्टु ग्रामदानी क्षेत्र में श्री जगन्नाथन् कार्य कर रहे हैं। वहाँ पर गाँववालों ने ही स्वयं के अभिक्रम से बाँध का निर्माण कार्य उठा लिया है। उन्होंने एक कुएँ के आसपास के किसानों का ग्रुप बनाकर उसमें भूमिहीनों को शामिल किया है। अभी तमिलनाड के १० ग्रामदानी गाँवों में सघन कार्य चल रहा है। इंग्लैंड में फ्रेन्ड्स आफ भूदान सोसायटी श्री जयप्रकाशनारायण की अभी दूसरी विदेश यात्रा के समय बनी। उसने बाल्लागुट्टु के निर्माण कार्य के लिए आर्थिक सहायता देने की इच्छा जाहिर की है। अन्य कुछ प्रदेशों के कार्य का विशेष विवरण नहीं मिल सका है। मध्यप्रदेश के सरगुजा क्षेत्र में निर्माण कार्य आरंभ होने को था, पर परिस्थितियों के कुछ बदल जाने से अभी वहाँ कार्य की प्रगति नहीं हुई है।

मैं आपका स्वागत करता हूँ

दिनांक २६ मार्च १९६० के दिन मध्यान्होत्तर ढाई बजे सूत-यज्ञ के साथ बारहवें सर्वोदय-सम्मेलन का समारम्भ हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री चिमनलाल भाई ने देश के कोने-कोने से समागत लगभग चार हजार प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए जो भाषण दिया, वह यहाँ दिया जा रहा है।

श्री चिमनलाल भाई बापू के पुराने आश्रमवासी सहयोगियों में से हैं। १९३६ से अब तक वे लगातार सेवाग्राम-आश्रम की व्यवस्था संभाल रहे हैं। २० साल से रेल में जिन्होंने सफर नहीं किया, ऐसे एकनिष्ठ सेवक श्री चिमनलाल भाई हैं।

—संपादक

अहिंसा की साधना के लिए पद-यात्रा के रूप में बहुत अच्छा साधन हमें पूज्य विनोबाजी ने दिया है। अनेक भाई-बहन, बच्चे, बूढ़े श्रद्धापूर्वक पदयात्रा करते करते आये हैं। उनका अनुभव आज सुबह आश्रम में प्रार्थनाभूमि पर सुनने को मिला। वह बहुत उत्साहप्रद मालूम हुआ। खास करके बच्चों को पदयात्रा द्वारा जीवन-शिक्षण मिल रहा है, वह बहुत आशाप्रद है।

आप सब पूज्य बापू के प्रति श्रद्धा से यहाँ पधारे हैं, सबको मेरे भक्तिभाव पूर्वक नमस्कार है।

[आपकी यथायोग्य सेवा हमसे हो, यही मेरे साथियों की हृदय की भावना है। रात दिन देखे बगैर उन्होंने अपने कामों को करने की कोशिश की है। तो भी यह भावना कितनी पूरी होगी, मैं नहीं जानता। हमारी कई मर्यादाओं के कारण कहीं अक्षम्य कमी न रह जाय यह मेरे मन की चिन्ता है। मेरे सब साथियों से मेरी नम्रतापूर्वक प्रार्थना है कि आपकी सेवा में कोई कमी न आने दें।]

१९३७ सितम्बर में जब मैं सेवाग्राम आया तब देखा कि शाम की प्रार्थना में एक गुजराती भजन में सब एक साथ गाते थे। वह भजन है

"हरिने भजता हजि कोईनी लाज
जती-नथी जाणी रे
जेनी सुरता शामळीया साथ वदे
वेद वाणी रे।

इस भजन का अर्थ है प्रभु की, सत्य की आराधना करनेवाले किसी भी व्यक्ति को सफलता न मिली हो, ऐसा इतिहास में वेदकाल से आज तक पाया नहीं गया है। हमारा काम भी सत्य की पूजा यानी सर्वोदय की साधना का है। हम विवेक और तपपूर्वक आगे बढ़ते जायँ, तो जैसे ऊपर के भजन में गाया है, हमें अवश्य सफलता मिलेगी।

हमारा काम सर्वोदय का होने से सबका आशीर्वाद दिलाने वाला है। जिस किसी कार्य में सबका आशीर्वाद होता है, वह सफल हुए बगैर नहीं रहता।

१९२० में बापूजी स्वराज्य प्राप्ति के महाप्रयत्न में लगे थे। देश को स्वराज्य के लिए तैयार करना था। उस वक्त बहुतों को लगता था कि बापू का यह प्रयत्न हाथी को उठाने का चींटी के प्रयत्न जैसा है।

उन दिनों अपने एक पत्र में बापू ने लिखा था कि वे एक मन्त्र का अहर्निश जप किया करते थे।

वह मन्त्र है :

"सीयराम प्रेम पीयूष पूरण होत जनम न भरत को। मुनिमन अगम यम नियम शम दम विषम व्रत आचरत को। दुख दोष दारिद्र, दंभ दूषण, सुयश मीस अपहरत को। कलिकाल तुलसी से शठ हि हठी राम सन्मुख करत को॥"

मन्त्र में बताये उस महातपस्वी भरत के आदर्शानुसार पूज्य बापू ने रात-दिन तपश्चर्या की और महाभारत का काम करके दिखाया। आज हमारे परम पूज्य विनोबा इसी आदर्श पर काम कर रहे हैं। हम उनको तन मन से साथ देते रहें। हमें अवश्य सफलता मिलेगी।

एक और बात आपको याद दिलाने का दिल होता है।

पूज्य बापू दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह के इतिहास के द्वितीय खण्ड की प्रस्तावना में लिखते हैं :

"मेरा दृढ़ विश्वास है कि जैसा दक्षिण अफ्रिका में हुआ, वैसा ही भारत में भी होगा। कारण यह है कि तपश्चर्या पर, सत्य पर, अहिंसा पर मेरी अविचल श्रद्धा है। १ मैं इस बात को अक्षरशः सत्य मानता हूँ कि सत्य का पालन करनेवालों के सामने सम्पूर्ण जगत् की समृद्धि रहती है और वह ईश्वर का साक्षात्कार करता है। २ अहिंसा के सान्निध्य में वैरभाव टिक नहीं सकता। इस वचन को भी मैं अक्षरशः सत्य मानता हूँ। ३ कष्ट सहन करनेवालों के लिए कुछ भी अशक्य नहीं होता। इस सूत्र का मैं उपासक हूँ। इन तीनों वस्तुओं का मेल मैं कितने ही सेवकों में पाता हूँ। उनकी साधना निष्फल नहीं होती, यह मेरा निरपवाद अनुभव है।"

बापू का यह निरपवाद अनुभव हमारे लिए आश्वासन रूप है। आज हमारी सेना में सत्य, अहिंसा और कष्ट सहना इन तीनों महाव्रतों से विभूषित कई सेवक हैं। हमारे महर्षि बाबा राघवदास, ठक्कर बापू, गोपबाबू, कुमारप्पाजी आदि इसी साधना में मर मिटे हैं। उनके द्वारा बोये हुए बीज को हम विवेक और तपश्चर्या से सतत सिंचित करते रहें, यही प्रार्थना है।

अगर हम ट्रैक्टराइजेशन की बात करें तो हिंदुस्तान को चालीस लाख ट्रैक्टर चाहिए। यह कच्चा अंदाज़ बात करते हैं। हर साल पाँच से सात लाख नये ट्रैक्टर चाहिए। हिन्दुस्तान की जो समस्या है, उस समस्या में बिना बैल के खेती नहीं हो सकती, बिना बैल के किसान नहीं रह सकते। हमारी दो योजनाएँ पूरी हुई हैं। योजना में हमने हैवी इण्डस्ट्रीज पावर के बारे में सोचा है। अब एग्रिकल्चर और प्रोडक्शन के लिए कितना हार्स पावर चाहिए, यह सोचना बाकी है। हिन्दुस्तान में ३२ करोड़ एकड़ जमीन है। साइंटीफिक खेती करनी हो तो ५ करोड़ हार्स पावर की आवश्यकता है। आज देखता हूँ कि जितनी एनर्जी, जो सात करोड़ बैल हिन्दुस्तान में हैं, उनसे मिलती है, उसके बदले उतनी एनर्जी लाने के लिए ट्रैक्टर लाने के लिए कई अरब रुपया लग जायगा। एक तो समझना चाहिए कि यह सवाल एक बुनियादी सवाल है। भावनात्मक पहलू भी इसमें है, लेकिन ८० फीसदी तो एक साइंटिफिक और इकानामिक पहलू है।

हिन्दुस्तान में गाय की हालत के बारे में सोचा जाय, तो तीन किस्म के क्षेत्र हैं। एक, जहाँ गाय आज भी इकानामिक है, जैसे कि राजस्थान, गुजरात, मालवा, कुछ खानदेश का इलाका—यहाँ गाय आज भी इकानामिक है। राजस्थान में बीकानेर के इलाके में करीब करीब चालीस लाख गायें हैं। तो एक तो इस क्षेत्र को भैंस से सुरक्षित रखना होगा। जहाँ गाय इकानामिक है, वहाँ भैंस क्यों ले जाय? हिन्दुस्तान में जो चार-पाँच नस्लें हैं, उन गायों की उस क्षेत्र में रक्षा की जाय। दूसरा क्षेत्र ऐसा है जहाँ न गाय है, न बैल है। जैसे—असम। अब वहाँ भी गाय की पूरी उन्नति हो रही है और तीसरा क्षेत्र ऐसा है, जहाँ गाय और भैंस दोनों ही हैं। ऐसे क्षेत्र में गाय को सुरक्षित रखना चाहिए। एक तो हमने यह तय किया और उस हिसाब से गवर्नमेंट के साथ हमारे जो अलग अलग क्षेत्र में गोसेवा का काम करनेवाले हैं, वे संपर्क बढ़ायें। सब का जो फार्मूला है यह ठीक से समझ कर उस दिशा में काम करने का तय किया है। आज मैं देखता हूँ कि गवर्नमेंट की सहानुभूति हमारी तरफ है।

इस काम के लिए हिन्दुस्तान की मनोवृत्ति अनुकूल है। हिन्दुस्तान में जो किसान हैं, वे भी अनुकूल हैं। शासन कहीं कहीं विरोधी हो सकता है, कहीं-कहीं तटस्थ भी हो सकता है और कहीं कहीं उदासीन भी हो सकता है। शासन को भी हम अनुकूल करके इस काम को आगे बढ़ा सकते हैं। गाय के जरिये हम करीब-करीब ढाई से तीन अरब रुपये तक का काम दे सकते हैं! जिस मुल्क में अर्ध बेकार लोग पड़े हैं, उस मुल्क में यह एक नया जरिया है काम देने का।

गोसेवा के काम का महत्त्व समझें !

ढेबर भाई

जितने ही लोग मानते हैं कि गोसेवा का सवाल या तो 'सेंटीमेंटल' भावुक लोगों का सवाल है या जो लोग राजनैतिक फायदा उठाना चाहते हैं, उनका सवाल है। इन दोनों विचारों के बीच में हम खड़े हैं।

अगर गाय न हो तो हिन्दुस्तान जिंदा नहीं रह सकता है, हिंदुस्तान का आधार अगर कृषि पर है, तो कृषि का आधार गाय पर है।

•

हिन्दुस्तान की जो राष्ट्रीय आमदनी है, वह आधी खेती से आती है और खेती में १।३ हिस्से से ज्यादा पशु-पालन का भाग है। इतना किसी भी हिन्दुस्तान की इण्डस्ट्री से नहीं मिलता है, जितना पशुपालन से। इसमें दो करोड़ लोगों को पार्ट-टाइम काम मिलता है। हिन्दुस्तान में पशुसंख्या बड़ी है। जो अभ्यास किया, उससे लगता है कि जो संख्या बड़ी है, उसका पूरी तरह *उपयोग अगर किया गया, तो हिन्दुस्तान की आमदनी में काफी मदद* होती है।

एक बाजू खेती है और दूसरी बाजू ग्रामोद्योग हैं। बीच में यह गोपालन है। हिन्दुस्तान की खेती को इस हालत में ऊपर उठाना है तो गाय को उठाये *बिना खेती नहीं उठा सकते। आज तो* हालत यह है कि किसी को खेती मिलती है, तो किसी को बैल मिलता है। आज ऊपर ऊपर खेती हो रही है। जो जमीन है, उसको बदलनी होगी। चीन में एक किताब लिखी गयी, उसमें लिखा है कि पशुपालन के लिए एक एक पशु की ओर विशेष ध्यान दिया गया। तीन साल में इन्होंने पशुरक्षा के लिए जो 'फुट एंड माउथ डिसीजेस' (पैर तथा मुँह की बीमारी) है, उसे जानने की कोशिश की। पशुरक्षा का संबंध खाद के साथ भी जुड़ा हुआ है।

जब तक खाद नहीं मिलती, तब तक जमीन से पूरा फायदा नहीं उठा सकते।

हमारे जो साथी इसमें श्रद्धा नहीं रखते हैं उनको यह समझाना होगा और *सिर्फ विचार-परिवर्तन से* हमारा काम नहीं होगा, बल्कि इस काम को इज्जत देनी होगी। जिस तरह से गांधीजी ने स्वयं खादी अपनायी और फिर उनके साथियों ने अपनायी और उसको प्रतिष्ठा प्राप्त हुई, वैसे ही गोपालन का काम भी उठाना होगा।

जहाँ तक विचार परिवर्तन का सवाल है, एक पूरी तरह का अभ्यास करके हिन्दुस्तान में यह पहुँचाना है—गाँव-गाँव तक और खास तौर से पढ़े लिखे लोगों में। जो लोग पूरे शिक्षित होते हैं, उनसे गायों को कोई खतरा नहीं है, जो कम पढ़े हैं, उनसे भी नहीं है, लेकिन जो अपने को शिक्षित मानते हैं, उन लोगों से गायों को खतरा है। इसलिए हमें एक विचार-परिवर्तन का आन्दोलन करना *विचार-परिवर्तन के लिए जितनी कोशिश* जमीन के बारे में की है, उतनी कोशिश इसके लिए करेंगे, तो आधी समस्या हल होगी। दस साल में तो मिलनेवाले नहीं हैं और मिलेंगे भी वे कमजोर मिलेंगे। *आज जिस बैल* की आयु होगी दस साल काम करने की, वह सात साल में खत्म हो जायगा। मेरी प्रार्थना है कि इस प्रश्न की गहराई में पूरी तरह से पहुँचें और जिस तरह *भूमि का सवाल उठाया, उस तरह* इसे उठायें।

•

पदयात्राओं के अनुभव

सर्व सेवा संघ के आह्वान में इस साल देश के विभिन्न प्रान्तों से कई टोलियाँ पदयात्रा करके सम्मेलन के अवसर पर सेवाग्राम गयी थीं। इस वर्ष के आगे के कार्यक्रम में भी पदयात्राओं द्वारा व्यापक विचार-प्रचार के कार्यक्रम को प्रमुख स्थान दिया गया है। इस बार की पदयात्राओं के अनुभव के आधार पर नीचे लिखे कुछ उपयोगी सुझाव सम्मेलन में दिये गये—

—प्रतिदिन की पदयात्रा ८-१० मील से ज्यादा नहीं होनी चाहिए, वरना, ज्यादा समय लग जाता है और थकान के कारण गाँवों में कुछ काम नहीं हो सकता, केवल जाना आना ही होता है।

—पदयात्रा दोपहर के बाद शुरू करनी चाहिए। *शाम तक दूसरे पड़ाव* पर पहुँच कर *गाँव परिक्रमा की* जाय और रात को सभा की जाय तथा फिर सबेरे उठकर रात के विचार-प्रचार का फायदा घर घर जाकर। सबेरे गाँवों में कुछ श्रम कार्य भी किया जा सकता है।

—यात्रा का ढंग आध्यात्मिक होना चाहिए—सौम्य और शान्त नारे भी हमारे सौम्य होने चाहिए।

यात्रा के दौरान में पदयात्रियों को अपने शिक्षण का *अच्छा मौका मिलता* है, इस मौके का पूरा फायदा उठाना चाहिए।

हमारी पदयात्राएँ *अब सीधी रेखा की तरह* न होकर वृत्ताकार होनी चाहिए *अर्थात्* एक सीमित क्षेत्र में सघन रूप से पदयात्रा होनी चाहिए।

पूर्णिया जिले की कार्यदिशा

बिहार के प्रमुख सेवक श्री वैद्यनाथ बाबू, जिनका पूर्णिया जिले में रानीपतरा में आश्रम है, विनोबाजी से मिले और पूर्णिया जिले के आगे के काम की दिशा के बारे में चर्चा की।

पूर्णिया जिले के रुपौली थाने में बढ़िया नामका एक गाँव है। इसी गाँव में धीरेन्द्र भाई बैठेंगे।

२० अप्रैल को पूर्णिया जिले की पदयात्री टोली के साथ श्री जे० पी० भी बढ़िया आयेंगे।

पोलीटिकल पार्टी जो खड़े होते हैं उनकी कोशिश यह रहती है कि हर प्रांत में और हर जिले में हमारे *पार्लमेंट मेम्बर हों।*

इलेक्शन के लिए जितने खड़े किये जा सकते हैं, करें। कुछ देश पर असर डालने की कोशिश वे करते हैं।

उसके बाद उनके *मास पौकेट्स* होते हैं। हमारा यह चल रहा है कि हम कुछ पौकेट्स बना रहे हैं। सारे देश पर असर डाले बगैर कुछ पौकेट्स बनाने में काम एकांगी बनता है। *कुछ प्रान्त पर असर डालने के लिए* यह जरूरी है कि जिला निवेदक सक्रिय हों। और वह हर दो चार रोज हमेशा घूमते रहें।

१. हमारा मुख्य विचार यह है! सरकार का जो मुख्य कार्य है उसकी जरूरत महसूस न हो। यानी पुलिस, शासन और कोर्ट के बिना काम चले।

२. पार्टियों की वजह से गाँव में टूटना बंद हो।

३. हर घर से हमारा परिचय हो।

४. सर्वोदयपात्र रेगुलर चलते हों।

५. कम-से-कम ढाई सौ कन्ट्रीब्यूटर कार्यकर्ता लोकसेवा में लगे हों।

सर्व-जनआधार, संपत्ति-आधार, और श्रम आधार।

ता० १५-३-'६०

•

सर्व सेवा संघ के प्रस्ताव और निवेदन

भारत-चीन सीमाविषयक प्रस्ताव

अणु अस्त्रों के इस युग में समस्याओं के समाधान के लिए हिंसा सर्वथा निरर्थक सिद्ध हो चुकी है। इसलिए भारत-चीन की सीमा का प्रश्न अहिंसा में विश्वास करनेवालों के लिए न सिर्फ एक चुनौती है, बल्कि युद्ध का अहिंसक विकल्प ढूँढ़ने का अवसर भी प्रस्तुत करता है। हमारा यह धर्म है कि अहिंसक शक्ति के निर्माण के काम में हम अपना सर्वस्व समर्पित करें। सेना के द्वारा रक्षण करना हो, तो भी भूख, बेरोजगारी तथा आतरिक अशांति का निवारण आवश्यक हो जाता है। फिर अहिंसक रक्षण के लिए तो वह अनिवार्य है ही। इसलिए ग्राम-स्वराज्य तथा शान्तिसेना के कार्यक्रम को हम राष्ट्ररक्षा का साधन मानते हैं। अन्याय करनेवाले के प्रति पूरा प्रेम रख कर अन्याय के साथ असहयोग करने का सबक भी हमने गाधीजी से सीखा है। हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू की शांति, तटस्थता और मैत्री की अन्तर्राष्ट्रीय नीति भी गाधीजी के अहिंसा के विचार से प्रभावित है। हम मानते हैं कि निर्भयता और निर्वैरता की वृत्ति ही सबसे बड़ी शक्ति है, जो दुश्मन बनकर आनेवाले को भी दोस्त बना सकती है। इसीलिए आज हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम देश में वह हालत पैदा करें, जब कि देश सिर उठाकर कहेगा कि सारी दुनिया में हमारे दोस्त ही हैं और सेना की कोई जरूरत नहीं है। फिर भी कोई आक्रामक बनकर आये, तो अहिंसक प्रतीकार करते हुए हम भले ही मर जायँगे, लेकिन न गुलाम बनेंगे, न शस्त्र उठायेंगे।

अफ्रीका के हत्याकाण्ड पर प्रस्ताव

अखिल भारत सर्व सेवा-संघ को दक्षिण अफ्रीका में हुए हत्याकाण्ड के समाचारों से अत्यन्त वेदना का अनुभव हुआ है। इस घटना में जिन स्त्री-पुरुषों, बालकों की जानें गयी हैं, उनके परिवारवालों तथा स्वजनों के प्रति संघ अपनी हार्दिक सहानुभूति और सवेदना प्रकट करता है।

मानव-मानव के बीच भेद डालनेवाला विचार, चाहे उसका आधार रंग, जाति, वर्ण या अन्य किसी भी बात पर हो, कितना क्रूरतम और भयावह परिणाम ला सकता है, इस बात का यह घटना एक ज्वलन्त उदाहरण है। यह दुर्भाग्य की बात है कि दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने दुनिया के करीब करीब सभी अन्य देशों की राय का अवहेलना करके अब तक मानव मात्र की एकता और समानता के बुनियादी तत्त्व को मानने से इनकार किया है और अपनी रंग-भेद की नीति चालू रखी है। इस घटना को लेकर पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जो सहज क्षोभ और ग्लानि प्रकट हुई है, वह इस बात को जाहिर करती है कि दुनिया का जनमत रंग भेद की नीति के खिलाफ है और उसकी सहानुभूति इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठानेवाले अफ्रीका के मूल निवासियों के साथ है।

सर्व सेवा-संघ को विश्वास है कि सैकड़ों निहत्थे और शान्तिमय प्रदर्शनकारियों का यह बलिदान व्यर्थ नहीं जायगा। इस बलिदान से दक्षिण अफ्रीका की सरकार को भी अपनी नीति पर फिर से सोचने की प्रेरणा मिलेगी और जिन पर अन्याय हो रहा है, उन्हें दूने उत्साह और तत्परता के साथ उस अन्याय का मुकाबला करने की शक्ति प्राप्त होगी। सर्व सेवा संघ दक्षिण अफ्रीका के निवासियों को याद दिलाना चाहता है कि महात्मा गाधी ने पहले पहल उसी देश में अहिंसात्मक प्रतीकार के शस्त्र का सगठित और सफल प्रयोग किया था। संघ को सन्तोष है कि दक्षिण अफ्रीका के निवासी शान्ति के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं तथा संघ को आशा है कि वे अपने ऊपर होनेवाले अन्याय का मुकाबला अहिंसात्मक प्रतीकार से करते रहेंगे।

ग्रामनिर्माण-चर्चा का सार

१ हमारे काम में और सरकारी विकास के काम में फरक यह है कि हमारे काम में खर्च कम, काम ज्यादा, गाँव का अभिक्रम और एक कुटुम्ब की भावना, ये चार बातें होंगी।

२ हमारी क्रान्ति की भावना कायम रहेगी, यदि उसमें आन्दोलन की भावना कायम रहे और इसलिए वे खुद पदयात्रा में निकलें, गाँव-गाँव जमीन माँगें आदि। हमारा काम गाँव के नेतृत्व के मार्फत हो। कार्यकर्ताओं के मार्फत न हो।

३ गाँव के बाहर से कर्ज और मदद दोनों अन्य तत्सम देश के गाँवों को जितना मिलता है, उतना दिया जाय। हमें बिलकुल मदद नहीं देनी है और सम्पूर्ण मदद मिले, इसके बीच का रास्ता हमें निकालना होगा। मदद उत्पादन के साधनों के रूप में हो। मदद का स्वरूप ऐसा रहे कि गाँव के लोगों का अभिक्रम उससे जाग्रत हो सके, जो काम श्रमशक्ति के बल पर हो सकते हैं, वे मदद मिलने में देरी लगने के कारण रुके न रहें।

४ पैसों के बिना हो सकने वाले काम—श्रम के और नैतिक—अवश्य हाथ में लिये जायँ, ऐसे कामों में मद्यनिषेध का काम एक है।

५ ग्रामदानी गाँवों में अन्नोत्पादन में एवं वस्त्रोत्पादन में वृद्धि हो। अगले पाँच वर्षों में ग्रामदानी गाँवों में अन्नोत्पादन दुगुना हो, अन्त्योदय की दृष्टि से तथा 'ग्राम एक कुटुम्ब है', यह दोनों दृष्टियों से कार्य हो।

६ अन्त्योदय की दृष्टि से जिन कुटुम्बों की आमदनी प्रतिवर्ष ३०० रुपये से कम हो, उनकी आमदनी ६०० रुपये की जाय। अन्य लोगों की आमदनी की भी वृद्धि हो और आर्थिक विषमता कम हो।

७ इन गाँवों में नैतिक वातावरण कायम रहे और बाँट-बाँट कर खाने की इच्छा कायम रहे। जमीन की तरक्की होने के कारण व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना न बढ़े, बल्कि सामुदायिकता बढ़े।

८ समाज-विकास मन्त्रालय और सर्व-सेवा-संघ में जो सरकार का निर्णय हुआ, तदनुसार ग्रामदानी गाँवों में योग्य अनुकूल अधिकारी भेजे जायँ।

९ ग्रामदानी गाँवों को राजनैतिक पक्षबाजी से बचाया जाय।

१० ग्रामदान कानून छोटा और सरल हो और वह जल्द पास कराया जाय।

११. ग्रामदानी गाँवों को एक विशेष निधि से कर्ज दिया जाय। वैसे ही पुराने कर्जों को ३ साल तक मोराटोरियम किया जाय।

१२ सम्पूर्ण रोजगार का काम ग्रामदानी गाँवों में किया जाय।

१३ निर्माण समिति को अनुसंधान का काम करना चाहिए।

१४ जहाँ बड़े-बड़े सघन क्षेत्र मिले हैं, वहाँ अच्छा काम कर सारे सामुदायिक योजनाओं का रास्ता खुल सकता है और देश का सब पैसा योग्य काम में लगाया जा सकता है।

१५ ग्रामदान-समिति अपने कार्य क्षेत्र में ग्राम-परिवार और भूदान भूमिधारियों के प्रश्नों को अन्तर्भावित करें।

खादी-ग्रामोद्योग समिति निवेदन का सार

गाधीजी ने खादी ग्रामोद्योग को नयी समाज रचना का प्रतीक माना था। १९४४ में चरखा संघ के नवसंस्करण के रूप में गाधीजी की इस विषय की कल्पना स्पष्ट होती है। चालीसगाँव, सेवाग्राम व पूसा का प्रस्ताव उसी कल्पना को कार्यान्वित करने की ओर हमें प्रेरित करता है। भूदान-ग्रामदान आदोलन ने पिछले आठ वर्षों में बड़ी शक्यता तथा संभावनाएँ पैदा की हैं। अहिंसक क्रांति व सर्वोदय समाज रचना के लिए हमारा मार्ग आज अधिक प्रशस्त दिखाई पड़ता है। गाधीजी अहिंसक क्रांति या सर्वोदय समाज रचना के लिए खादी ग्रामोद्योग और विधायक कार्यक्रम को एक बड़ा साधन मानते थे। अतः स्वाभाविक ही आज यह अपेक्षा है कि विधायक कार्यक्रम सर्वोदय समाज स्थापना का साधन बने। आवश्यकता है कि हम सारे रचनात्मक कार्य को ऐसा मोड़ दें, जिससे सर्वोदय-समाज की ओर बढ़ने तथा सही माने में ग्रामस्वराज्य स्थापित करने में हम सफल हो सकें।

खादी-समिति ने तीसरी पंचवर्षीय योजना के अवसर पर पिछले सारे कार्यों पर विचार करना आवश्यक समझा है। सारी बातों को दृष्टि में रखते हुए खादी ग्रामोद्योग समिति इस निष्कर्ष पर पहुँची है कि चालीसगाँव के निर्णय के अनुसार सेवाग्राम और पूसारोड में जो दिशा निर्धारित हुई, खादी और रचनात्मक कार्य की वही सच्ची दिशा है। हम सब लोगों का प्रयास अपने सारे काम को वेग के साथ इस ओर मोड़ देने का होना चाहिए। अब समय आया है कि इसके लिए हम निश्चित कार्यक्रम निर्धारित करें।

१ खादी ग्रामोद्योग का आगे का काम ग्राम इकाई को ही आधार मानकर समग्र विकास की दृष्टि से ग्रामस्वावलम्बन और क्षेत्र स्वावलम्बन साधने के लिए ग्राम इकाई का संयोजन इस प्रकार हो कि सारा ग्राम परिवार के रूप में अपने सारे कार्य का संयोजन करे, विशेषतः अपनी बुनियादी आवश्यकताएँ जैसे अन्न, वस्त्र, आवास, शिक्षण और आरोग्य में गाँव स्वावलम्बी और स्वाश्रयी हो। और सब लोग एक दूसरे के सुख दुःख में हाथ बँटायें। गाँव में सबको भोजन और सबको काम मिले, यह जिम्मेदारी गाँव वाले समझें, इसके लिए संगठन का स्वरूप निम्न प्रकार हो।

(अ) ग्राम समिति : पाँच हजार तक की आबादी वाले हर गाँव या गाँव समूह में ग्राम समिति या बहुधंधी सहकारी समितियाँ बनायी जायँ और वे ही इकाई संगठन का मूलभूत आधार बनें।

(ब) क्षेत्रसमिति : साठ हजार से एक लाख के लगभग तक की आबादी को साधारणतया आज के क्षेत्र-विकास की इकाई मानी जाती है, हमारे संगठन का भी आधार बने। उस स्तर पर सभी ग्राम समितियों या सहकारी समितियों को ध्यान में रखकर समग्र विकास की दृष्टि से काम करें।

(क) जिला तथा प्रांतीय सब क्षेत्र समितियों को मिलाकर सुविधानुसार जिला या प्रांतीय स्तर पर संघ बनाये जायँ।

२ उपर्युक्त आधार नये मोड़ का है। सारे नये काम तो इसी आधार पर खड़े होंगे ही, परन्तु अब तक जो काम चल रहे हैं, उनको चलाने वाली संस्थाएँ भी अपने सारे काम को इसी ओर मोड़ने का प्रयत्न करें।

● ●

विनोबा की तड़फ को समझना हमारा काम है !

ता० २०-३-'६० को सेवाग्राम के सर्व-सेवा-संघ के अधिवेशन में श्री वल्लभस्वामी द्वारा दिया गया अध्यक्षीय भाषण

सर्व-सेवा-संघ का यह अधिवेशन हमारी दूसरी बैठक है। पठानकोट में हम मिले थे, उसके बाद आज यहाँ हम लोग मिल रहे हैं। यहाँ पर सबसे पहले हमारा काम स्व० कुमारप्पाजी को श्रद्धांजलि अर्पण करने का होगा। बारह साल पहले जब यहाँ सम्मेलन हुआ था, उस समय सर्व-सेवा-संघ का ढाँचा बनाने का सारा काम कुमारप्पा को सौंपा गया था। उनकी याद आज आती है। देश की, जनता की और सर्व सेवा-संघ की सेवा में उन्होंने अपना सारा जीवन लगाया है, उनको श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए हम सब दो मिनट शान्ति से अपने मन में उनके लिए प्रार्थना करें।

[उसके बाद दो मिनट तक मौन रहा। इसके बाद फिर श्री वल्लभस्वामीजी ने भाषण आरंभ किया। —सं०]

• •

बारह साल पहले

सेवाग्राम में बारह साल पहले यहाँ सम्मेलन हुआ था, उस समय हम सब विशेष शोक की छाया में इकट्ठा हुए थे। बापू के बलिदान को दो महीने भी नहीं हुए थे। बापू के जाने के बाद सारे देश में, जैसा कि जवाहरलालजी ने कहा था, एक अंधेरा छाया हुआ था। आम जनता में ही नहीं, उनके अनुयायी कहलानेवाले लोगों में भी वह अंधेरा था। लेकिन ईश्वर की रचना में कहीं केवल अंधेरा ही नहीं होता और कहीं केवल उजाला ही नहीं होता है। अंधेरे में एक प्रकाश की किरण होती है। एक संतोष था कि बापू के बाद हमको विनोबाजी मिले।

बापू के निकटवर्ती शिष्यों में से विनोबा भी एक शिष्य थे। बापू के जाने के बाद पहला निवेदन उन्होंने पवनार में दिया था। उसमें उन्होंने हमें आगे क्या करना चाहिए, हमारी वृत्ति क्या हो, यह व्यक्त किया था।

इस बार बाबा ने कहा कि सम्मेलन में मैं नहीं आऊँगा। जिस तरह बापू की करुणा और प्रेम उस प्रथम सम्मेलन के वातावरण में था, उसी तरह बाबा की करुणा, प्रेम और प्रेरणा आज के वातावरण में है, ऐसा मैं मानता हूँ। जैसे तैरनेवाले को पानी में छोड़ दिया जाता है, वैसा ही बाबा ने इस बार सोचा, ऐसा मुझे लगा। आज जो उन्होंने हमें इस तरह से बिना उनकी उपस्थिति के सम्मेलन करने के लिए कहा है, उससे वह स्वावलम्बन की दीक्षा दे देना चाहते हैं।

उन दो महापुरुषों की प्रेरणा तो हमारे साथ है ही। लेकिन उसके साथ तीसरी नदी भी बहती है। बारह साल के पहले हम यहाँ इकट्ठा हुए। सर्वोदय-समाज की स्थापना हुई। उसके बाद उसी काम के लिए बाबा तेलंगाना गये और वहीं से भूदान यज्ञ आदि निकला। इन आठ-नौ सालों में हमने कुछ तपस्या की। बारह साल के काल को संस्कृत में एक तप कहते हैं। इस तप-काल में हमने एक तपश्चर्या की, और वह प्रेरणा लेकर आज हम यहाँ इकट्ठा हुए हैं। हमारे सामने बहुत सी जिम्मेदारियाँ हैं। हममें कमजोरी भी है। इसके बावजूद हम आगे बढ़ते रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

लोक-सेवक-संघ

पठानकोट में जो विधान हमने स्वीकार किया, उसके बाद सर्व सेवा संघ एक तरह से 'लोक-सेवक-संघ' बना है। बापू की कल्पना में यह भी कल्पना थी और कइयों ने यह कहा कि यह इस नव विधान के बाद एक तरह से बापू की कल्पना का लोक सेवक-संघ बना है या बन रहा है। उसके कारण हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ी है। पहले भी थी। लेकिन पहले ऐसा लगता था कि ठीक है, सर्व सेवा संघ है, उसकी प्रबन्ध-समिति है, कुछ निर्णय करती है और अमल में लाती है। आज हमने जो सर्वसम्मति की बात रखी है वह भी सर्व सेवा संघ के अमल में बहुत कुछ अंश में आयी। जब कभी हम नया सदस्य लेते थे और भी सदस्यों से चर्चा में कोई विरोध हो या अनुकूलता न हो, तो वह निर्णय हम नहीं करते थे। हम जो तय करेंगे, उसको निभाने की जिम्मेदारी हम सबकी है। कोई मार्गदर्शन भी चाहेगा। वह भी मिलेगा, लेकिन हम सब सह-चिन्तन करेंगे और अमल में लाने की हमारी सबकी जिम्मेदारी है, यह हमको ध्यान में लेना चाहिए।

कार्य-विवरण भेजना

इस दृष्टि से दो बातें हम लोगों को करने की जरूरत है। एक तो अपना जो केन्द्रीय दफ्तर है, उसको सब तरह की जानकारी मिलती रहनी चाहिए। जो कार्य आपने किया, जो प्रवास आपने किया है, जो आपको अनुभव मिले, इस सबकी जानकारी दफ्तर में पहुँचनी चाहिए। फिर जो कुछ आपने किया, उसकी रिपोर्ट आपके सामने भी पेश की जायगी। आज हम कई बातों के बारे में आपको कह नहीं सकते, क्योंकि हमको उसकी जानकारी ही नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि हम लोगों में लिखने की आदत बहुत कम है। इस आदत को हमें बढ़ाना होगा।

दूसरे यह भी होता है कि कई बार आप में से कई लोग विनोबा को लिखते हैं और बातें भी करते हैं। यह बहुत अच्छी बात है। ऐसा होना ही चाहिए। लेकिन कार्यकर्ता इतने से ही समाधान मान लेते हैं। बाबा ही हमारे सूत्रधार हैं, मार्गदर्शक हैं, प्रेरक हैं तो उन्हें उसकी जानकारी देने से ही समाधान हो जाता है, ऐसी भी वृत्ति है। फिर इसके बारे में अब बाबा हमसे पूछते हैं। वे कहते हैं कि देखो, वहाँ ऐसा काम हुआ है, यह जो व्यक्ति लिखता है, उसको मैं लायक हूँ, वगैरह। तो हम कहते हैं कि हमें तो कोई जानकारी ही नहीं मिलती, तो क्या करें ? इस तरह केन्द्रीय दफ्तर की दोहरी मुसीबत होती है। इसलिए हममें संघनिष्ठा भी बढ़नी चाहिए। हममें संघनिष्ठा न हो तो हम जो करना चाहते हैं, हमारी जो जिम्मेदारी है वह हम अदा नहीं कर सकेंगे।

सामयिक प्रश्न और सर्व-सेवा-संघ

एक बात जो पिछले साल हुई है, वह यह कि देश विदेश के प्रश्नों में भी अब संघ बोलने लगा है। पहले कुछ लोग बोलते थे, चर्चा भी होती थी, लेकिन एक मर्यादा मान ली थी। लेकिन अब साल दो साल में संघ अच्छी तरह से बोलने लगा। केरल के सवाल के बारे में कुछ सोचा, कुछ किया भी। संघ ने दादा को और मुझे वहाँ भेजा। आशा बहन भी गयीं। चीन के बारे में एक वक्तव्य भी निकाला। कइयों ने उसका स्वागत भी किया। गलतियाँ हो सकती हैं और उन्हें दुरुस्त भी किया जा सकता है। जो करेगा नहीं, वह गिरेगा क्या ? लेकिन उसमें एक बात आप ध्यान में रखें कि विचार में कहीं भी भेद नहीं है। वक्तव्य की भाषा चाहे जो कुछ भी हो, लेकिन विचार का भेद नहीं है।

चीन और केरल के सवाल की तरह पठानकोट की बैठक में सर्व-सेवा-संघ ने एक 'कोड आफ-कान्डक्ट' देश के सामने रखा। मुख्य-मुख्य पक्षों के नेताओं को बुलाया और उनकी सम्मति भी प्राप्त की। कोड आफ कान्डक्ट की जो चीज है वह इस साल नयी है।

पाँच पावर-हाउस

एक बात और हुई है—काशी केन्द्र की। बाबा ने इसे पावर हाउस कहा है। श्री शंकररावजी वहाँ के अधिष्ठाता हैं। [अधिष्ठाता शब्द पर श्री शंकरराव जी द्वारा आपत्ति उठाने पर भी वल्लभस्वामी ने कहा :—सं०] वे वहाँ रहते हैं। वहाँ पर सह-अध्ययन भी शुरू हुआ है। संघ का प्रधान दफ्तर भी वहीं है। दादा का भी मुख्य निवास-स्थान वहीं रहेगा। इन दिनों चार सौ, पाँच सौ मील का अन्तर कम ही माना जाता है। श्री धीरेन्द्र भाई और श्री जयप्रकाशजी भी नजदीक ही हैं। इसी तरह बिहार का पावर हाउस समन्वयाश्रम बने, ऐसा बाबा चाहते हैं। तीसरे स्थान का नाम है सरणा(पठानकोट) जिसकी नींव बाबा ने कश्मीर यात्रा से लौटते समय डाली। पंजाब के यशपाल मित्तल, जिन्होंने सारे पंजाब की पदयात्रा की, उन्होंने वहाँ आश्रम शुरू किया था। उसे ही बाबा ने कहा कि इस तरह का एक केन्द्र करना चाहिए। वह एक ऐसा स्थान है जहाँ से चारों ओर नजर रख सकते हैं, चारों ओर प्रेम का सन्देश पहुँचा सकते हैं। वहाँ पर पहले से यशपाल मित्तल वगैरा तो थे ही। वहाँ पर फिर सत्यम् भाई गये। चौथा स्थान यह सेवाग्राम और परमधाम है। बाबा ने परमधाम में ब्रह्म विद्या मंदिर शुरू किया है। श्री शिवाजी भावे वहाँ हैं। उसी तरह से सेवाग्राम तो अपना है ही। यहाँ की जिम्मेदारी बाबा ने स्वीकार की है। मुख्य कल्पना तो उनके मन में यह है कि एक शासनमुक्त समाज का नमूना कहीं होना चाहिए। उस तरह का क्षेत्र यह बने। वर्धा जिले तक यह क्षेत्र हो। इस तरह से चौथा क्षेत्र परमधाम सेवाग्राम है। पाँचवाँ है बैंगलोर का विश्व-नीडम्। अभी तो वह शुरू नहीं हुआ है, लेकिन उसका नाम फैल गया है। धीरे धीरे वहाँ काम शुरू होगा।

गांधी-अध्ययन संस्थान

ऐसे पाँच स्थान हमारे स्फूर्तिस्थान, पावर हाउस या अध्ययन-स्थान हैं। उसी दिशा में और एक चीज होने जा रही है। वह है गांधीयन इन्स्टिट्यूट। जयप्रकाशजी अभी विदेश गये थे।

वहाँ के मित्रों से उन्होंने बात की। बाबा हमेशा कहते हैं कि जमाना आत्मज्ञान और विज्ञान के संगम का है। इतना कहने से काम नहीं होता, हमें कुछ प्रकट भी करना होगा। आज हिन्दुस्तान के हाथ में कुछ आत्म ज्ञान की पूँजी है और पश्चिम के देश विज्ञान में बहुत आगे हैं। इसलिए दोनों का संगम होना चाहिए। ऊँचे-ऊँचे विचारकों को एक जगह मिलना होगा। आजकी परिभाषाओं में आज की समस्याएँ और आजके हल रखने होंगे। विचारक्रांति के लिए अद्यतन परिभाषा में समस्या और उसके हल रखने होंगे।

दो तीन टोलियाँ हमने बाहर युगो-स्लाविया में भेजीं, इजराइल भी भेजी। इन दिनों संघ का एक अधिष्ठान भी बना है। अब तक हमारा संघ घूमता हुआ था। वहाँ से उठा आफिस और वहाँ गया। मुझे लोग पूछते थे कि तुम्हारा आफिस कहाँ है, तो मैं जवाब देता था कि हमारा आफिस हमारे थैले में है। अब वह काशी में स्थायी रूप से चला गया है। एक अधिष्ठान जम गया है। सिद्धराजजी ने वहाँ के संचालन का काम सम्हाला है। आफिस भी धीरे-धीरे जम रहा है, यह एक महत्त्व की घटना हुई। सर्व सेवा संघ और तालीमी संघ का संगम हुआ है, यह एक बहुत बड़ा कार्य और हुआ है।

विनोबा आउट ऑफ ट्यून

लक्ष्मी बाबू, गोप बाबू,' कुमारप्पा, राघवदासजी गये, उससे हमारी जिम्मेदारी बढ़ती जाती है। इस सबके अलावा और एक चीज हमारे सबके मन को परेशान कर रही है। बाबा ने कहा कि 'भाई मैं भी आउट आफ ट्यून हूँ, ऐसा मानिये।' दूसरी बार हम जब गये तब भी इस बारे में कुछ चर्चा हुई थी। इस बार भी हमने चर्चा की। जहाँ तक मैं उनकी बात को समझ सका हूँ, वे 'आउट ऑफ ट्यून हूँ' ऐसा कहते हैं, लेकिन वह जिस अर्थ में हमने लिया है, उस अर्थ में नहीं है। उनकी एक तीव्रता है। उन्होंने दो कार्यक्रम देश के सामने रखे। शांति सेना और सर्वोदय-पात्र, उसमें हमारी प्रगति होनी चाहिए। वह नहीं हो रही है। हम सबकी शक्ति उसमें नहीं लग रही है। इसीलिए वे कहते हैं कि "मुझे दूसरा कुछ नहीं सूझ रहा है, इसलिए मैं कहता हूँ कि मैं आउट आफ ट्यून हुआ।"

अभी इस बार चर्चा हुई तो हमने पूछा कि 'बाबा, बताइए हम क्या करें?' बाद में फिर वैद्यनाथ बाबू ने अच्छी तरह से कहा कि 'आप बताइए कि हमें क्या करना चाहिए। सैंतीस हजार गाँवों में जमीन मिली है और पंद्रह हजार गावों में भूमि-वितरण हुआ है। उसके बाद हम सघन काम में लग गये हैं। अब हमें क्या करना चाहिए यह आप हमें बताइए। हम इतने बड़े जमींदार बन गये कि हमें पंद्रह हजार फाईलें आफिस में रखनी पड़ती हैं।' इस पर बाबा और वैद्यनाथ बाबू दोनों ही हँसने लगे। बाबा ने कहा कि 'हाँ, वह काम भी तो छोड़ना नहीं चाहिए। लेकिन हमारा मुख्य काम क्रान्ति का है।'

शाम को बाबा से बात हो रही थी तो उन्होंने कहा कि "एक कार्यकर्ता हमें सुना रहे थे कि मुझे आपने वहाँ भेजा था। जब आपने मुझे वहाँ काम करने के लिए भेजा तो मुझसे पूछना तो चाहिए था। वहाँ के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने मुझसे सहकार नहीं किया। इस पर मैंने कहा कि मैं जिन्हें भेजता हूँ उनका वहाँ जमेगा ही ऐसा मुझे लगता है, इसलिए मैंने नहीं पूछा। यह भी एक कारण आउट ऑफ ट्यून होने का है। लोक-सेवा और स्वराज्य का काम आत्म-दर्शन और सत्य-दर्शन के लिए है। हम दूसरा हिस्सा भूल गये।" कार्यकर्ताओं में मनमुटाव बढ़ता है। इससे बाबा को लगता है कि वे आउट ऑफ ट्यून हो गये। इसीलिए उनको कुछ सूझता नहीं है। वे ब्रह्म विद्या की ओर ज्यादा बढ़ रहे हैं। उन्होंने अपने साथियों की संख्या भी कम कर दी। रिपोर्टिंग बन्द कर दिया। उन्होंने कहा कि जिसमें ब्रह्म-विद्या की लगन हो, वह मेरे पास प्रेम से काम कर सकता है।

वे सब से कोई उदासीन हो रहे हैं ऐसा मैं नहीं मानता। उनका कार्यक्रम मोटे तौर पर तय हुआ है। अप्रैल के चौथे हफ्ते में या जून के पहले सप्ताह में वे इन्दौर पहुँचेंगे। उनके आगे के कार्यक्रम के बारे में मैंने पूछा तो उन्होंने कहा कि इन्दौर के आगे का कार्यक्रम सर्व सेवा संघ की राय से किया जायगा।

उन्होंने कहा कि "आज हर पार्टी आती है और कहती है कि हमारे इतने-इतने वोटर्स हैं। आपके कितने वोटर्स हैं? कहाँ हैं? हमें भी अपने वोटर्स बनाने चाहिए। इसके लिए सर्वोदयपात्र का उपयोग किया जाय। अगर सर्वोदय-पात्र में दिक्कत हो सूत्रांजलि का आधार ले लीजिये। इस तरह से कुछ न कुछ वोटर्स तो अपने होने ही चाहिए।"

तीसरी एक बात उन्होंने कही थी कि "एक ऐसा क्षेत्र हो, देश में पाँच से दस लाख की आबादी का कि, जहाँ हम शासन मुक्त समाज का दर्शन करायें। इसमें कई साल लग सकते हैं। वहाँ शान्ति सेना होगी। और फिर हमारा अर्थ-शास्त्र, समाज शास्त्र और हमारा सर्वोदय समाज का जो चित्र है वह वहाँ बनायेंगे। ऐसा एक क्षेत्र हिन्दुस्तान में हमें करना है।" यह बात बाबा दो साल से कहते आये हैं। उन्होंने कहा कि वहाँ पर अगर मुझे बुलाते हैं तो मैं वहाँ जाने के लिए तैयार हूँ।

●

अखिल भारत सर्व सेवा संघ राजघाट काशी, (वाराणसी)

आन्दोलन सम्बन्धी आंकड़े माह– फरवरी २९, १९६०

क्रमांक	नाम प्रान्त	भूमि-प्राप्ति	भूमि वितरण	ग्राम दान	सर्वोदय पात्र संख्या, रकम प्राप्त		शान्ति सैनिक	लोकसेवक	प्रतिनिधि
१	आसाम	२३११६	२२५	१७२			५	४६२	६
२	आन्ध्र	२४११९७०	१५२७८	४८३	२१३७५ (तार से)		६५	३३३	१९
३	उत्कल	३९६४६६	११८३३५	१९४६		२४०९०	८८	३८०	११
४	उत्तर प्रदेश	४११४८४	११७८३५	६१		६०८००	२३८	११४९	४३
५	केरल	२९०२११	२१२६	७४३			८	५०४	८
६	तमिलनाड	७०८२३	३३४१	२१२ (तार से)	४००० (तार से)	५९००	२१	४०२	१२
७	दिल्ली	३९६	१५७					१८	१
८	पंजाब पेप्सू	२२१५०	४२१७	१६ (पत्र से)	६२५७ (पत्र से)	४४२७५	८	२४१	१२
९	बिहार	२१०६३८२	२४६११९८	१५२ (तार से)	२०,००० (तार से)	१५२३५	४४	१०३५	१६
१०	बम्बई	२३७२२७०४	८५८८८७६	६०३		६२०.१२	२४७	५९०	३४
११	बंगाल	१२११२८१	२९७२८०	२६	१०५० (तार से)	१९७६८	५८	३११	१८
१२	मध्य प्रदेश	४०८७०३५७	८१२७०८८	७४		२०५१२	२१	४२०	२८
१३	मैसूर	११९३२	२१२७	६६		२२६५५	५३	१५२	१२
१४	राजस्थान	४३४६१४	१०३९१२	२३५		२३६१	३५	२६१	१४
१५	हिमाचल-प्रदेश	१५५८	३१			१०००			
	कुल	४४,१२२३६०४३	८८११३६८.४४	४८३१		२७८६.०८	१०७	६०६९	२३८

समानता, स्वतंत्रता और बन्धुता

[एक पत्र]

[समता, समानता और बन्धुता के बारे का अनुसरण करनेवाले देश अधाधुन्ध उद्योगीकरण की ओर बढ़े और शोषणयुक्त की किसी दिशा में फँस गये, क्या हम भी उसी तरफ जाना चाहते हैं ? —स०]

प्रिय भाई,

आपने अपने पत्र में पूछा है कि सर्वोदय की दृष्टि से आर्थिक और सामाजिक रचना का स्वरूप कैसा होगा तथा उसमें मानव मात्र की समानता कैसे सधेगी ?

निश्चय ही यह हम सब लोगों के लिए सोचने समझने का प्रश्न है। मैं मानता हूँ कि आज की परिस्थिति में साम्य या समानता का मूल्य सबसे अधिक है। मैं खुद इस मूल्य को बहुत महत्त्व देता हूँ। आर्थिक असमानता और शोषण, जो इसके कारण हैं, दूर होने चाहिए। यह तभी हो सकेगा, जब समाज में बन्धुता की भावना फैलेगी। बाहरी नियंत्रण से असमानता मिटाना संभव नहीं होगा, सम्भव हुआ, तब भी स्थायी नहीं होगा। नियंत्रण का जहाँ सवाल आता है, वहाँ मनुष्य की स्वतंत्रता का प्रश्न भी खड़ा हो जाता है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि बाहरी नियंत्रण बिलकुल ही नहीं होना चाहिए, पर अन्ततोगत्वा स्वतंत्रता (अच्छे माने में स्वतंत्रता, स्वच्छन्दता के माने में नहीं) सारी व्यवस्था का मापदण्ड होना चाहिए। अतः समानता के साथ-साथ स्वतंत्रता का मूल्य भी हमें ध्यान में रखना होगा। इन दोनों मूल्यों की स्थापना बन्धुता के आधार पर ही हो सकती है। इस तरह समानता, स्वतंत्रता और बन्धुता [इक्वेलिटी, लिबर्टी एण्ड फ्रेटर्निटी] यह पुराना क्रांति-उद्घोष आज भी हमारी क्रांति का उद्घोष होना चाहिए।

इन मूल्यों की स्थापना के लिए कुछ बाहरी या परिस्थितिजन्य नियंत्रण उपयोगी और जरूरी हो सकते हैं, पर ऐसे नियंत्रणों में हमेशा प्रश्न यह उठता है कि नियंत्रक का नियंत्रण कौन करे और कैसे हो ? आज तक का अनुभव हमें यह बताता है कि समाज में परस्परविरोधी हितों के बीच तराजू समतोल रखने के बहाने नियंत्रण करने वाला ही पीड़क बन जाता है। रक्षक भक्षक बन जाता है। आज के युग में, जब कि विज्ञान की बहुत प्रगति हुई है, किसी केन्द्रीय सत्ता या व्यक्ति के हाथ में नियंत्रण का अधिकार देना बहुत खतरनाक हो गया है। एक बार केन्द्रित सत्ता के हाथ में नियंत्रण देकर अगर केन्द्रित सत्ता की आवश्यकता हम स्वीकार कर लेते हैं, तो फिर उत्तरोत्तर अधिकाधिक केन्द्रित नियंत्रण के तर्कसिद्ध नतीजे से हम बच नहीं सकते।

केन्द्रीकरण हमेशा असमानता और शोषण का जनक तथा आजादी का हनन करनेवाला होता है। इसलिए आज की मुख्य समस्या इस प्रकार का कोई आटोमैटिक नियंत्रण ईजाद करने की है, जिससे असमानता और शोषण पर अपने आप अंकुश लगे और मनुष्य की स्वतंत्रता का हनन भी न हो।

हम जब यूरोप गये थे, तब कई समाजवादी मित्रों से चर्चाएँ हुईं। उनके सामने भी समस्या यही है। वे दूसरे शब्दों में इसे व्यक्त करते थे कि समानता, स्वतंत्रता और बन्धुता के समाजवादी मूल्य बिना भौतिक और आध्यात्मिक आधार के प्राप्त नहीं हो सकते। अब तक समाजवाद ने केवल भौतिक और बाहरी नियंत्रण पर जोर दिया और इसलिए अब वह "कल्याणकारी राज्य" की बन्द गली (ब्लाइण्ड एली) में पहुँचकर रुक गया है।

मेरे खयाल से इस आटोमैटिक नियंत्रण के लिए सामाजिक और आर्थिक रचना छोटी इकाइयों के आधार पर ही करनी होगी। छोटी छोटी स्वावलम्बी विकेन्द्रित इकाइयों में ही समानता, स्वतंत्रता और बन्धुता के मूल्य पनप सकते हैं। स्वावलम्बन का अर्थ बहुत संकुचित न लिया जाय। शायद मार्क्स ने भी यह कहा था कि उत्पादन का जैसा तरीका हम इस्तेमाल करते हैं, वैसा ही मनुष्य का मानस बन जाता है। उत्पादन का तरीका ऐसा हो, जिसमें उत्पादक और उपभोक्ता का संबंध सीधा न आकर बाजार बीच में आता हो, तो निश्चय ही बन्धुता की भावना कम हो जायेगी और शोषण की संभावना अधिक। ऐसे परस्परावलम्बी समाज में ही बन्धुता पनप सकती है।

इसलिए उत्पादन केवल छोटी इकाइयों में होना काफी नहीं है, वह उत्पादन यथासंभव उपभोग के लिए याने स्वावलम्बन के आधार पर होना चाहिए। इस प्रकार हर पहलू से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि आर्थिक रचना विकेन्द्रित और स्वावलम्बी पद्धति की होनी चाहिए।

इस सिलसिले में यह सवाल अक्सर उठाया जाता है कि इस प्रकार के ढाँचे में उत्पादन कम हो जायेगा, विज्ञान का हम पूरा उपयोग नहीं कर सकेंगे और हमारा समाज, जैसा आपने लिखा है, समान रूप से पिछड़े हुए लोगों का समाज बन जायेगा। मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ कि ऐसा मानना केवल भ्रम है। आज तक विज्ञान के उपयोग की दिशा (जायगेन्टिजिज्म) बृहदीकरण की ओर रही है। उसके कारण स्वयं विज्ञान में निहित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक कारण हैं। अधिक से अधिक मुनाफा प्राप्त करना चाहे पूँजीपति के लिए, चाहे सरकार के लिए और लड़ाई के लिए अधिकाधिक संहारक हथियार तैयार करना, इस सामाजिक परिस्थिति में से विज्ञान का विकास इस दिशा में हुआ। पर समझ-बूझ कर विज्ञान को इस दिशा में मोड़ा जा सकता है कि वह छोटे छोटे ऐसे औजारों का निर्माण करे, जो घर-घर और गाँव गाँव में चल सकें। बिजली ने और उससे भी ज्यादा अणुशक्ति के आविष्कार ने विकेन्द्रित शक्ति मुहैया करना संभव कर दिया है। जानकार लोग कहते हैं कि आज यंत्र विज्ञान (टेक्नालाजी) भी विकेन्द्रित औजारों की ओर बढ़ रही है। सर्वोदय किसी भी प्रकार के यंत्र और किसी भी प्रकार की शक्ति के उपयोग के खिलाफ नहीं है, बशर्ते कि "बाजार" बीच में न आये और वह दूसरे व्यक्ति, गिरोह या देश के शोषण का साधन न बन जाये।

आपका

—सिद्धराज ढड्ढा

खादी के प्रति निष्ठा

दीनानाथ प्रबोध

घन-घन की मधुर ध्वनि से वातावरण बिलकुल शांत और स्निग्ध था। सभी चर्खों की ध्वनि के साथ मस्त हो स्वावलम्बन तथा नयी क्रान्ति की प्रेरणा ले रहे थे। कहीं कहीं से कुछ लोगों के परस्पर वार्तालाप की ध्वनि स्पष्ट आ रही थी। मैंने भी अपना चर्खा खोलकर चलाना प्रारम्भ किया।

करीब सौ चर्खों के बीच एक मेरा ही चर्खा था, जो घन घन की आवाज के बदले घर्र घर्र की आवाज देता था। तंग आकर मैंने वहीं निकट में बैठे अम्बर तथा क्षेत्रीय विद्यालय के प्राचार्य से पूछा : कहिये तो आचार्यजी ! इसमें क्या गड़बड़ी है, जिससे यह इस तरह की आवाज करता है।

"तो क्या आप इतना भी नहीं समझ सकते कि आपके चर्खे में क्या गड़बड़ी है !"—प्राचार्य महोदय ने मुस्कुराते हुए कहा।

मैं चुप था।

"लाइये तो, देखें क्या गड़बड़ी है।" और मेरे सामने से चर्खा लेकर उन्होंने उसे चलाना शुरू किया।

घर्र घर्र की आवाज ही आती थी उससे। वे तो समझ गये, पर मुझसे वे कहते न थे। उन्होंने पुनः पूछा "आप तो कहिये, इसमें क्या गड़बड़ी है। आप तो चर्खा रिसर्च विभाग में काम करते हैं न !" (उस समय मैं चर्खा रिसर्च विभाग में काम करता था।) मैं चुप था। उत्तर दूँ, तो क्या दूँ। शरीर पर इसी चर्खे से काती सूत का वह सफेद पाजामा और कुरता। लगता तो था जैसे किसी ग्रामस्वावलम्बी गाँव का युवक हो, जो अवश्य ही नित्य प्रति अपने वस्त्र के योग्य कताई कर लिया करता हो।

सचमुच खादी पहनते आज मुझे नौ वर्ष बीत रहे थे। करीब सात वर्षों तक मैंने बुनियादी तथा सर्वोदय विद्यालय में शिक्षा पायी, फिर भी इस छोटी गड़बड़ी का उत्तर न दे सकना मेरे लिए शर्म की बात तो अवश्य थी। आज जिसकी बुनियाद पर, जिस चर्खे के सम्बल पर हम एक क्रान्तिकारी नवयुग का नवनिर्माण करने जा रहे हैं, उसीका एक कार्यकर्ता होकर चर्खे की एक छोटी गड़बड़ी को न पहचान सकना शर्म की बात नहीं तो और क्या थी। शर्म से मेरा सिर झुका जा रहा था।

"क्या आप सचमुच नहीं जानते।" —प्राचार्य महोदय ने ऊँचे स्वर में पूछा।

मुझे लगा, मानो मुझपर कोई प्रहार किया जा रहा हो। क्योंकि अगल बगल के सारे लोग मेरी ओर ही एक टक से देख रहे थे। चर्खा भी सामने रहता, तो किसी बहाने कातना शुरू कर देता। पर चर्खा तो वे अपने सामने रखे हुए थे। सोच रहा था कि यदि कोई यह कहकर बुलाने आ जाये कि संचालकजी अमुक काम से बुला रहे हैं, तो इससे छुटकारा अवश्य मिल जाये। इसी बीच उन्होंने पूछा "कोई दूसरा तकुआ है" ! मैं चौंक गया और बिना किसी उत्तर के ही मैंने तकुआ निकालते हुए उनके हाथ में दे दिया।

उन्होंने इस तकुए को चर्खे में फिट करते हुए कहा : "देखिये, आपका यह तकुआ टेढ़ा है। अब यह अवश्य ही घन घन की आवाज देगा।" और उन्होंने उस तकुए को लगाकर मुझे चलाने को कहा। अब मेरा चर्खा भी अन्य लोगों की भाँति घन घन की आवाज करते हुए अपनी गति पर बढ़ रहा था।

"अब तो ठीक हो गया न !"—प्राचार्य महोदय ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"जी"—कहकर मैं लज्जा से अपना सिर नीचे करते हुए विचार करने लगा तथा अपने बीते अमूल्य समय पर पश्चात्ताप करने लगा कि यदि मैंने पाठशाला में शिक्षकों को कताई के समय धोखा न दिया होता, तो आज इतने आश्रमवासियों के बीच मेरी यह दशा न होती। साथ ही साथ मैंने यह भी निश्चय किया कि जो अपने से प्रतिदिन सूत न कातता हो, उसे खादी पहनने में लज्जा होना है।

दो ही मार्ग : सत्याग्रह और रचनात्मक काम !

अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन, सेवाग्राम में श्री शंकरराव देव द्वारा आन्दोलन का सिंहावलोकन

बारह वर्ष का काल एक युग तक का काल माना जाता है और यह बारह वर्ष का समय न केवल पर्व, लेकिन अगर सिद्धि भी हासिल करने के लिए पर्याप्त माना जाता है। किस हद तक हमने उस सिद्धि की प्राप्ति की है और किस हद तक अन्य अथवा सिद्धि की प्राप्ति की है, इसका कुछ हम सिंहावलोकन या मूल्यांकन करें तो कम से कम उसमें से एक नयी दृष्टि हमको मिलेगी और एक नयी प्रेरणा लेकर यहाँ से हम आगे के काम के लिए रवाना होंगे। जहाँ तक सिंहावलोकन का सवाल है, उसके तीन पहलू या तीन अंग हैं : पराक्रम, पराजय और पलायन। देखने की जो दृष्टि है वह एक दृष्टि यह कहती है कि पराक्रम ही पराक्रम है। एक दृष्टि कहती है पलायन ही पलायन है और तीसरी दृष्टि है जो कहती है पराजय ही पराजय है। इस सिंह से इसमें जो चीज लेने लायक है वह लें और यदि मनन-चिन्तन करके लेने की कोशिश करेंगे तो मुझे पूरी उम्मीद है कि यह काम सफल हो जायगा। जो लोग कहते हैं कि यह सारा पलायन है, उनके बारे में मुझे कहने की आवश्यकता नहीं है।

हमारी सफलता और असफलता

हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि जिन मुख्य सवालों के बारे में जो हमारा फर्ज था, धर्म था वह फर्ज और धर्म हमने अदा नहीं किया है। उस धर्म का हमने पूरा पालन नहीं किया है। इसलिए जो लोग कहते हैं कि आप पराजित हुए, उनका कहना भी मैं कुछ हद तक मानता हूँ लेकिन हमारे पराक्रम का इतिहास भी गौरवपूर्ण है। क्योंकि जो आन्दोलन शुरू हुआ वह भूदान से शुरू हुआ और उसका विकास ग्रामदान में हुआ। तो भूदान से ग्रामदान तक हम गये। बीच में सम्पत्तिदान, साधनदान, बुद्धिदान, समयदान की एक प्रणाली हमारे सामने आयी। लोगों ने इस पर यह इलजाम लगाया कि दान जो है वह कोई क्रांतिकारक चीज नहीं है। वह एक चैरिटी, एक गुडविल, एक रिलीफ, एक राहत का काम हो सकता है। उसमें कुछ दया भी है, लेकिन दया से क्रांति हो सकती है यह न इतिहास बतलाता है, न आज हमको भी इतनी श्रद्धा है कि ऐसा हम महसूस करें। यह एक चुनौती थी कि दया या करुणा क्रांति का साधन बने। नैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन करने का एक क्रांतिकारी साधन दया बन सकती है—यह श्रद्धा, यह विश्वास आज मानवीय अन्तःकरण में नहीं है। हमने उस चुनौती को स्वीकार किया। कुछ समय के लिए ऐसा लगा कि यह चुनौती का स्वीकार जो हमने किया है उसमें हम सफल हो जायेंगे। क्योंकि आखिर देश में जो एक अपेक्षा पैदा हुई और लोगों को लगा कि यह जो काम दया से शुरू हुआ है वह अन्त में पूरे तौर से आर्थिक परिवर्तन करने में सफल होगा। पर लोगों को लगा कि आन्दोलन के आरम्भ के समय जो इन्कलाब आरम्भ हुआ था, जो तूफान उठा था, वह अब कुछ-कुछ ठंडा पड़ गया है।

इस सारी परिस्थिति के सदर्भ में अन्तर्मुख होकर के हम देखेंगे कि क्या कारण है कि जो हम करना चाहते थे वह हम नहीं कर सके। कोई हमसे कहता है कि आप पराजित हुए तो उससे निराश होने की आवश्यकता नहीं है। उससे हमारे दिल में मायूसी भर जाय, कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि इन्सान को दिमाग मिला है और इन्सान वैज्ञानिक ढंग से अपने जीवन के कार्य और काम को देखे। यह उससे अपेक्षा रखी जाती है तो जो कुछ नहीं हुआ है, उसके न होने के कारण समझ करके उनको दूर करने की हम कोशिश करें, तो न निराशा और न मायूसी के लिए कोई स्थान या कोई आवश्यकता है।

पराक्रम का इतिहास

हम मानते हैं कि हमने कुछ पराक्रम किया है और हम कुछ सफल भी हुए हैं। वह सफलता सामाजिक, आर्थिक या नैतिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने में जिस मात्रा तक हमको मिलनी चाहिए वह नहीं मिली है। तो भी वैचारिक क्षेत्र में और सर्वोदय का एक पूरे, सम्पूर्ण रचनात्मक प्रोग्राम के विकास में हम मानते हैं कि हम पूरे सौ फी सदी सफल रहे। यह बहुत बड़ी चीज है आगे के लिए, आगे का जो काम हमको करना है उसके लिए यह बहुत आशादायक मजबूत स्तंभ है। जो कुछ आलोचना होती है, विवेक से हम उसका परीक्षण करें, विश्लेषण करें तो पता लगता है कि कहाँ हम असफल हुए हैं और कहाँ सफल हुए हैं। उस असफलता में ही भविष्य की सफलता के बीज किस तरह से हैं यह हम समझ सकते हैं और हमारी श्रद्धा दृढ़ बन सकती है। इसलिए जहाँ तक सर्वोदय समाज और उस की स्थापना या उस के निर्माण के लिए जो एक संपूर्ण विचार, रचनात्मक कार्यक्रम की आवश्यकता थी, वह साध्य और वह साधन हमारे सामने सम्पूर्णतया, अपने पूर्ण स्वरूप में आया है।

आमतौर पर माना जाता है और वह ठीक माना जाता है कि सत्याग्रह ही समाज-परिवर्तन का तरीका है। क्योंकि गांधीजी ने सत्याग्रह का ही उपयोग किया और राजनैतिक क्षेत्र में जो संबंध थे उनमें परिवर्तन लाने की उन्होंने कोशिश की। पूरा परिवर्तन वे ला सके और पूरा परिवर्तन आया, यह हम नहीं कह सकते हैं। जो सत्ताधारी अंग्रेज थे, उस संबंध में परिवर्तन आया, सत्ता बदली हुई। पर सत्ता और हममें जो संबंध है उसमें बहुत परिवर्तन आया है, ऐसा हम नहीं मानते।

कहना है, लेकिन सारी दुनिया का अनुभव भी हमको यही कहता है। जिन्होंने यह माना कि सत्ता के जरिये हम स्वातन्त्र्य, समता, बन्धुत्व आदि जो जीवन के मूल्य हैं, उन मूल्यों की स्थापना कर सकेंगे—वह गलत साबित हुआ।

सत्ता और सेवा

हम सर्वोदय-विचार के आधार पर सत्ता को हटाना चाहते हैं और सेवा को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। भले ही आप इसे राजनीति कहें। हमारी यह लोकनीति ही राजनीति है। हम जीवन-मूल्यों को बदलनेवाली राजनीति को मानते हैं। यह राजनीति हृदय-परिवर्तन के माध्यम से जीवन-मूल्यों को बदल कर ही लायी जा सकती है, सत्ता के माध्यम से कभी नहीं। सत्ता कितनी ही लोकमान्य हो वह वेलफेयर स्टेट हो, वह कम्युनिस्ट स्टेट हो, वह सोशलिस्ट स्टेट हो, कोई भी स्टेट, कोई भी सत्ता जीवनमूल्यों में परिवर्तन लाने में साधन नहीं हो सकती वह कुछ अंशों में मददगार

हम समग्र दृष्टि रखते हुए एकाग्र चित्त से काम करें

यह सोचने की बात है। सत्ताधारी और हम, अंग्रेज और भारतीय के जो संबंध थे उनमें परिवर्तन हुआ, लेकिन भारतीय और सत्ता के संबंध में जो परिवर्तन आना जरूरी था—अपेक्षित था वह परिवर्तन अभी नहीं आया इसका कारण हमें खोजना चाहिए। आज सत्ता का इतना आकर्षण क्यों है? मैं यह नहीं मानता हूँ कि व्यक्तिगत प्रलोभन या लाभ के लिए सत्ता का आकर्षण है। वे समझते हैं कि सत्ता से हम परिवर्तन ला सकेंगे। आर्थिक, सामाजिक, नैतिक क्षेत्रों में जो संबंध है, जो ढाँचा है, वह जो तंत्र रचा है उसको हम बदल देंगे, ऐसा वे मानते हैं। पर हमारा यह निश्चित विचार है कि सत्ता सेवा के लिए और परिवर्तन लाने के लिए काम आ सकती है—यह बात वास्तविक नहीं है। इसमें यह सत्य नहीं है कि सत्ता के जरिये हम सेवा और परिवर्तन करेंगे। हृदय परिवर्तन करके सामाजिक संबंधों में परिवर्तन लायेंगे, यह बात जितनी हम समझते हैं कि वास्तविक है उतनी वह नहीं है। यह न केवल भारतीयों का बल्कि सारी दुनिया का सत्ता के उपयोग का अनुभव हमको

हो सकती है, पर वह साधन नहीं बन सकेगी। फिर साधन क्या है? गांधीजी कहते थे कि "मैं जब कहता हूँ तो लोग तो हाँ कहते हैं, लेकिन जब करने का समय आता है तो पीठ मोड़ते हैं। रचनात्मक प्रोग्राम का आकर्षण लोगों को नहीं है। जेल में जाना, आन्दोलन करना, आदि में लोगों को रस आता है।" यह गांधीजी के सारे जीवन की समस्या थी। वे चाहते थे कि रचनात्मक प्रोग्राम रचनात्मक काम सारा राष्ट्र करेगा तो एक आदर्श समाज की स्थापना होगी इसमें कोई शक नहीं। उनका दावा था कि रचनात्मक काम देश करेगा और उसको अपना पूरा साधन, सही साधन मानेगा तो कानून-भंग और असहयोग की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इसलिए मैं इस पुनीत अवसर पर यह कहना चाहता हूँ कि हमारे आन्दोलन को सफल करने के दो ही मार्ग हैं, सत्याग्रह और रचनात्मक कार्यक्रम। इन दोनों को हम मजबूती से पकड़ कर आगे बढ़ेंगे तो निश्चय ही हम सफल हो सकेंगे।

पदयात्राएँ

एक जमाना था, जब ऋषि मुनियों की साधना एकांत में चलती थी। लोगों से दूर, वनवास में रहकर वे तपस्या करते थे। अब युग बदल रहा है। वनवास के बदले 'जनवास' में रहकर 'साधना' करने का युग आया है। सामूहिक साधना का युग आया है। गांधीजी की तपोभूमि में होनेवाले स्नेह सम्मेलन के अवसर पर भारत भर से लोग पदयात्रा करते हुए आये। देश में विनोबाजी की पदयात्रा बहती हुई गंगा के समान अखंड, अविरत चल रही है। उनके आदेश के अनुसार करीब हर प्रांत से लोग आये।

[illegible] से जो टोली निकली, वह पोचमपल्ली ग्राम की मिट्टी [illegible] में ले आयी। वह पात्र सेवाग्राम में बापू की कुटी में रखा गया। इसमें दो बहनें भी शामिल थीं। इसी तरह गुजरात से भी तीन टोलियाँ चलीं। एक टोली देहली से सेवाग्राम आयी और दूसरी दो टोलियों ने प्रदेश की पदयात्रा की थी। गुजरात की एक टोली में ८७० भूदानपत्रिका के ग्राहक बने। इसी तरह से अलग-अलग प्रदेशों से टोलियाँ आयीं।

पदयात्रियों में अनूठा उत्साह नजर आता था। "यह विचार प्रचार के लिए तो पदयात्रा का एकमात्र साधन है ही। पर आत्मशुद्धि और अहिंसा की खोज का भी पदयात्रा एक प्रकार का साधन है" इस तरह का विचार प्रायः सभी यात्रियों ने प्रकट किया। इस तरह कुल ४८ टोलियाँ चलीं। ३२३ पदयात्री उसमें थे। कुल यात्रा १५७ एक लाख मील की हुई।

खतरनाक खेल

ग्राम सिरोंधा, परगना ललितपुर, जिला झांसी में पहले आम चुनाव (सन् १९५२) में पार्टीबंदी चली थी, जिसका राजीनामा दूसरे आम चुनाव तक हो पाया था, किन्तु दूसरे आम चुनाव में फिर पार्टी पड़ गयी। उसका राजीनामा अब (३ साल बाद) हो सका है। पर अब तीसरा आम चुनाव सामने आ रहा है। आम चुनाव का नाम सुनकर ही जनता भयभीत है, क्योंकि लड़ते गाँव के मुखिया हैं, पर पिसती जनता है।

इसी परगने के ग्राम उमरिया में पिछले आम चुनाव में पार्टीबन्दी हो गयी। गाँव में स्कूल था। एक पार्टी ने मास्टर की शिकायत कर दी और अपने लड़कों को पढ़ाना बन्द कर दिया। इस पर से मास्टर ने विद्यार्थी कम होने की रिपोर्ट दे दी और स्कूल टूट गया।

—श्री रामगुप्त, संयोजक, जि० भिण्ड।

नये प्रकाशन

विश्व-शांति क्या संभव है?

ले० श्रीमती कैथलिन लांसडल

आज विश्व का हर देश और हर नेता विश्वशांति तथा स्थायी शांति की बात करता है। हिंसा, युद्ध और तानाशाही से सब ऊब गये हैं।

इस पुस्तक में लेखिका ने विश्व-शांति की समस्या पर अनेक पहलुओं से अपना चिन्तन प्रस्तुत किया है।

पृष्ठ १८०, मूल्य १।) सवा रुपया मात्र।

एक भेंट (नाटक) ले० रामाश्रय दीक्षित

श्री रामाश्रय दीक्षित के नाटक इधर काफी लोकप्रिय हुए हैं। यह नाटक भूदान आंदोलन और ग्राम निर्माण की भूमिका में श्री धीरेन्द्र भाई के मार्गदर्शन में तैयार किया गया है। पृष्ठ १०६, मूल्य ६२ न०पै०।

सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों का विशाल समूह

कार्यकर्ताओं का शिक्षण

हमारे कार्यकर्ता अच्छे और सच्चे दिलवाले हैं, लेकिन उन्हें चिंतन का ढंग सीखना है। इसलिए हमारे कार्यकर्ताओं के शिक्षण का आयोजन हमें करना चाहिए। सिर्फ स्थूल शिक्षण की बात नहीं, बल्कि चरित्र, भक्ति, ज्ञान आदि के साथ संबंध रखनेवाला शिक्षण और उसके साथ साथ विज्ञान, सामाजिक विचार और मूलभूत आध्यात्मिक तत्त्व इन सबका उचित बोध जिसमें हो ऐसा शिक्षण देने की योजना करनी चाहिए।

सम्मेलन के अवसर पर श्रमदान का नियमित आयोजन हुआ। श्रमदान का एक दृश्य

इस अंक में

पाठकों से

सेवाग्राम सम्मेलन संबंधी जानकारी और भाषण आदि का संग्रह पूरे तौर पाठकों तक पहुँचाना चाहते हुए भी ऐसा संभव नहीं हो सका। अंक के प्रकाशन में भी विलंब हुआ। अगले अंक में शेष सामग्री देने का हम प्रयत्न करेंगे। —सं०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० १२८५
वार्षिक मूल्य ५) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२१०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११५०० एक प्रति १३ नये पैसे

धर्म और राजनीति, दोनों आज के युग में 'आउट आफ डेट' हैं !

धर्म और राजनीति, दोनों को आदर के साथ जला दो !

पंजाब की सार्वजनिक सभा में विनोबाजी का संदेश

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

वाराणसी, शुक्रवार १५ अप्रैल '६० वर्ष ६ : अंक २८

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

हिन्दुस्तान एक पुराण पुरुष है, लेकिन दूसरी बाजू से वह छोटा बालक है। वह किसी बात में बुजुर्ग है और किसी बात में बच्चा है, यह समझना चाहिए। यह देश विज्ञान में बच्चा है और रूहानियत में बुजुर्ग है। साइंस यहाँ नहीं था, ऐसा नहीं, पर योरप, अमेरिका में इन दिनों साइंस का जोरदार अंकुर फूट निकला है। और आज दुनिया की जिन्दगी पर विज्ञान का असर है। दिन-ब-दिन वह असर बढ़ने वाला है, इसलिए हमें पश्चिम से साइंस सीखना है और हमारे देश में जो रूहानी संपत्ति है, वह हमें दुनिया को देनी है। वह हमारे बाप-दादाओं की संपत्ति है। अपनी विरासत हम न सँभालें, तो लोगों को क्या दे सकेंगे? इसलिए पुराने ऋषियों के पास जो रूहानियत की ताकत थी, उसको अच्छी तरह सँभालना होगा, उसको मजबूत बनाना होगा और बाद में उसे दुनिया को देना होगा।

दुनिया का एक हिस्सा कमजोर और बाकी हिस्सा मजबूत हुआ, तो दुनिया कमजोर ही रहेगी। मान लीजिये मेरा जिस्म अच्छा है, मगर एक फेफड़ा कमजोर हो गया, तो मैं मर ही जाऊँगा। हिन्दुस्तान साइंस में कमजोर है यानी चींटी है और अमेरिका है हाथी। वहाँ विज्ञान को वे पचा नहीं सकते हैं, तो इससे इन्सानियत पनपेगी नहीं। क्योंकि विज्ञान ज्यादा विकसित होने के कारण उसका बोझ इतना बढ़ जायगा कि सारा समय उसी में चला जायगा। अमेरिका में इ [illegible] मोटर से वह खेत पर जायगा, वहाँ जाकर [illegible] उसी तरह उन जगहों में रेडियो भी रखे [illegible] दिया है। लेकिन इन कवरतों ने अँधेरे को भी आग लगा दी है, चारों तरफ रोशनी ही रोशनी कर दी है। फिर रात को लोग सिनेमा देख कर सोते हैं। स्वप्न भी उसी का देखते हैं। नींद भी हराम। विज्ञान के विकास के कारण शान्ति से बैठने का मौका मनुष्य को नहीं मिलता। चिन्तन के लिए फुरसत नहीं, ध्यान करते नहीं, चित्त में चंचलता है—यह हालत है अमेरिका की।

इधर हिन्दुस्तान में पेट भी खाली और दिमाग भी खाली! देहात में प्राणविहीन मनुष्य दीखते हैं। जीते क्यों हैं? मरते नहीं, इसीलिए जीते हैं!

यानी यहाँ भी असन्तोष और योरप तथा अमेरिका में भी असन्तोष। इन्सान के दिल को तसल्ली तभी होगी, जब सारी दुनिया के समाज की व्यवस्था एक-सी होगी। मान लीजिये, एक चार मंजिल वाले मकान में हिन्दुस्तान पहली मंजिल है। दूसरी मंजिल योरप है। तीसरी मंजिल में है अमेरिका। अब ऊपर की मंजिल खूब मजबूत होगी और नीचे की कमजोर होगी, तो क्या वह मकान गिरेगा नहीं? अमेरिका आजकल क्या करता है? दुनिया के पिछड़े हुए देशों को मदद पहुँचाता है। अमेरिका के ध्यान में आता है कि हम जिनके कन्धे पर बैठे हैं वे कमजोर ही रहेंगे और हम मजबूत बनते जायेंगे तो गिर जायेंगे। इसलिए इनको मजबूत बनाना होगा। इसलिए कहते हैं "मदद लो! मदद लो!" तो बात यह है कि जो विज्ञान अमेरिका में विकसित हुआ है, हिन्दुस्तान में भी उसका विकास होना चाहिए और अगर इस देश में रूहानी ताकत है, तो वह जिस देश में नहीं है उनको देनी पड़ेगी। साइंस और रूहानियत में सभी देश समान मजबूत बनेंगे, तभी इन्सानियत पनपेगी।

अगर किसी देश में विज्ञान कम विकसित है, तो कुल दुनिया में खतरा है और उस देश के लिए भी खतरा है। इसी तरह रूहानियत भी अगर कहीं कम है, तो भी दुनिया को खतरा है और उस स्थान को भी खतरा है, मकान के एक हिस्से को खतरा यानी पूरे मकान को खतरा है, इसलिए साइंस और रूहानियत कुल दुनिया में समान रूप से बढ़नी होगी।

हमारा दूसरा कर्तव्य यह है कि जिस तरह साइन्स और रूहानियत बढ़ानी होगी उसी तरह कुछ बातें हमको तोड़नी भी होंगी। हिन्दुस्तान में अनेक मजहब हैं। एक जमाने में इन अलग-अलग मजहबों ने लोगों को इकट्ठा करने में मदद की थी। मजहब लोगों को नजदीक लाने का जरिया था। वह जोड़ने का काम करता था। पर अब वह तोड़ने का काम करता है। अब इन मजहबों को खतम करना होगा। हिन्दू सूर्य की तरफ मुँह करके प्रार्थना करेगा। मुसलमान काबा की तरफ मुँह करके प्रार्थना करेगा। हिन्दू कहेगा, आपने सूर्य की तरफ पीठ की। मुसलमान कहेगा, मैंने काबा की तरफ मुँह किया। दूसरी बात लीजिये, लोग कहते हैं स्वराज्य में इतवार को छुट्टी क्यों? मैंने कहा, इससे हर्ज क्या? सारी दुनिया में इतवार चलता है, तो यहाँ भी चले। कहते हैं, तमद्दुन के खिलाफ है। तो एक देश में इतवार को, दूसरे में सोमवार को और तीसरे में शनिवार को छुट्टी करते हैं, तो उससे परस्पर सम्बन्ध घटेगा। अब दुनिया एक कुटुम्ब बनने जा रही है, उसमें ये मजहब विघ्न डालते हैं, तो इन मजहबों को तोड़ना होगा। अब वे "आउट आफ डेट" हुए हैं, वे झगड़े पैदा करते हैं। एक जमाने में मजहब जरूरी थे। अब उनकी जरूरत नहीं है, इसलिए आदर के साथ उनको जला दो, नफरत के साथ नहीं। जैसे हमारे पिताजी मर जाते हैं, तो उनकी लाश हम आदर के साथ जलाते हैं, पिताजी की लाश है, इसलिए घर में नहीं रख सकते। उनसे नफरत भी नहीं करते, क्योंकि वह पिताजी की लाश है। उसे आदर के साथ जलाते हैं। उसी तरह पुराने मजहबों को प्रणाम करके कहेंगे कि आपने बहुत काम किया है, अब आप रुखसत हो जाइये। उनकी जगह फिर आप किसको देंगे? उनकी जगह आप रूहानियत को स्थान देंगे।

दूसरी चीज जो दुनिया को तकलीफ दे रही है, वह है सियासत। एक जमाने में पार्टी पॉलिटिक्स की जरूरत थी। वह मनुष्यों को इकट्ठा होने में मदद देती थी। पर अब वही तोड़ रही है। विज्ञान आया है, इसलिए सियासत तकलीफ दे रही है। आज साइंस के जमाने में हिन्दुस्तान आपका नहीं है, कुल दुनिया का हो गया है। अब गुजरात में पेट्रोल निकला, तो गुजरात उसे 'हमारा' पेट्रोल कहेगा, तो क्या भारत उसे सहन कर सकेगा? मैं कहता हूँ कि चन्द दिन के बाद वह पेट्रोल दुनिया का कहलायेगा। लेकिन इसमें पुरानी सियासत बाधा डालेगी। सियासत को पकड़ने वाले कहते हैं कि यह रहनी चाहिए। मैं कहता हूँ कि यह सियासतवाली बात १० वर्ष पुरानी हो गयी है, इस पुरानी बात को नहीं छोड़ेंगे तो मार खाना पड़ेगा और हार खाना पड़ेगा। सियासत और मजहब की दुनिया को हटाना पड़ेगा। साइंस और रूहानियत को मजबूत बनाना पड़ेगा।

यह बात सच है कि हमें पैदावार बढ़ानी है, लेकिन साथ साथ अखलाकी, रूहानी तरक्की भी करनी है। वही है सच्ची तरक्की। चाहे हम अमीर हों या गरीब, हमारा एक दूसरे के प्रति प्रेम है क्या? क्या हम बाँट कर खाते हैं? उपनिषद् में कहा है "तेन त्यक्तेन भुंजीथा:"—त्याग करके भोग करो।

[ता० १३ मार्च, '६०]

एक उड़ती नजर

सेवाग्राम का सर्वोदय-सम्मेलन

पूर्णचन्द्र जैन

सेवाग्राम सम्मेलन के बारे में अनेक विचार शंकाएँ दिलों में उठते थे। कुछ आशंकाएँ भी उसकी सफलता के बारे में की जाती थीं। लेकिन जो सम्मेलन में पहुँचे थे वे सब एक मत से मानते हैं कि दूसरे सम्मेलनों से यह उन्नीस नहीं रहा, बल्कि इक्कीस ही रहा होगा।

विचार उठता था कि सम्मेलन में विनोबा नहीं रहेंगे। सर्वोदय सम्मेलन और विनोबा के बगैर ! कुछ अटपटापन लोगों को अनुभव होता था।

लेकिन विनोबा ही नहीं रहे, उनका सदेश भी नहीं मिला। जानबूझ कर वे नहीं रहे। जहाँ नहीं पहुँच सकते थे वहाँ नहीं सम्मेलन करने को उन्होंने कहा। और जानबूझ कर कोई सदेश उन्होंने नहीं दिया। यों कायिक सान्निध्य और सामयिक या तात्कालिक मार्गदर्शन दोनों से, सेवाग्राम में इकट्ठा हुआ सर्वोदय समाज, एक तरह से वंचित रहा।

लेकिन कौन कह सकता है कि विनोबा वहाँ नहीं थे ! उनका वाङ्मय चारों तरफ भरा, बिखरा था। अनेक कण्ठ उनके विचार, उनकी वाणी को मुखरित करते थे। और लगभग सारे मस्तिष्क उनके पिछले वर्षों में दिये गये सदेश से आच्छादित तथा सारे हृदय उनके कारुण्य, उनकी तड़प, उनकी सतत चल रही साधना की स्मृति से ओतप्रोत थे।

गांधी मौजूद नहीं हो सकते थे। विनोबा मौजूद न रहने का तय कर चुके थे। लेकिन फिर भी सारा वातावरण, सारा चिन्तन, सारा निष्कर्ष, सारा जीवन-व्यवहार मानो गांधी विनोबामय था।

सेवाग्राम का असर इसे मानें तो वह नगण्य सी बात होगी। सेवाग्राम में न होकर सम्मेलन अन्यत्र कहीं होता, तो वहाँ भी गांधी विनोबा यों ही छाये हुए दिखते, इसमें शायद ही किसी को संदेह हो। आयंदा सम्मेलन सेवाग्राम या ऐसे किसी गांधी से जुड़े स्थान पर ही होंगे नहीं, विनोबा की मौजूदगी अधिक से अधिक संदिग्ध ही रहने वाली है, लेकिन यह असंदिग्ध है कि सम्मेलन गांधी-विनोबा से परिपूर्ण ही होंगे। यह स्थिति आशामय है, शुभ है, लेकिन यह बात वस्तुतः मंगलकारी हो, हवा में छायी रहने से अधिक प्रत्यक्ष जीवन दर्शिणी हो और हो हृदय में स्पष्ट व्यक्त चमकती हुई, इसके लिए सर्वोदय के सेवकों को, गांधी विनोबा के विचार मानने वालों को, अभी बहुत करना होगा।

* * *

सेवाग्राम सम्मेलन की सफलता का एक बड़ा कारण सर्व सेवा सघ के अधिवेशन का कार्यक्रम है। परिसवाद की दृष्टि यह सघ के चार-छह दिन जम कर बैठने व विभिन्न प्रश्नों और मुद्दों पर सामूहिक व्यवस्थित चिन्तन करने का प्रोग्राम सम्मेलन के सारे टोन व उसके स्वरूप को अच्छी और मोड़ने में आधारभूत और बड़ा मददगार रहा। पदयात्राओं के क्रम ने एक प्रेरणा दी, वातावरण ने एक नवचेतन दिया और सघ के अधिवेशन ने सम्मेलन में व्यवस्थितता तथा एकाग्रता पैदा कर दी। कार्यालय की ओर से अधूरे, बिलकुल ऐन वक्त पर दिये गये, सूचन संदेश और प्रदेश-संगठनों, समितियों उपसमितियों, सघ सदस्यों व प्रवृत्तियों से संबंधित कार्यकर्ताओं या मुक्त लोकसेवकों की अपूर्ण तैयारी के बावजूद सघ का अधिवेशन बहुत ठीक चला। इसका श्रेय उसमें शामिल होने वाले सैकड़ों भाई-बहनों को है। सघ-अधिवेशन का यह क्रम ठीक है तथा आयंदा यह अधिक सफल हो, इसके लिए कार्यालय को और संगठन इकाइयों तथा प्रवृत्तियों से संबंधित कार्यकारिणी को काफी पहले से इस ओर ध्यान देना व सक्रिय होना होगा। कार्यालय पूरी व स्पष्ट सूचनाएँ विविध विषयों व प्रवृत्तियों के बारे में पहिले से दे तथा संबंधित कार्यकर्ता व विचारक-चिन्तकगण पूर्वतैयारी के साथ आयें तो अधिवेशन के थोड़े समय में बहुत अधिक काम हो सकता है।

* * *

चीन भारत सीमा संबंधी प्रश्न के प्रसंग से विचारों की पुख्तगी की एक झाँकी सघ-अधिवेशन में मिली। यह स्पष्ट हुआ कि पेसिफिस्ट या अन्य तरह की हिंसा में अविश्वास पर आधारित, सर्वोदय वालों का चिन्तन नहीं है और अहिंसा में उनका विश्वास कुछ अधिक गहरी बुनियाद पर आधारित है। विवेक का उसे आधार है। एक छोटा ही प्रस्ताव सघ ने स्वीकार किया, लेकिन मंजूर करना चाहिए कि प्रबंध समिति के अधिकांश साथियों का जैसा एप्रोच इस प्रश्न पर था, उससे वह काफी भिन्न है। अहिंसा में निष्ठा और अहिंसा के मार्ग की प्रगति की दृष्टि से यह भिन्नता और परिवर्तन शुभ है, किन्तु यह ध्यान में रहना चाहिए कि इसने अहिंसा के सिपाहियों की जिम्मेवारी उस अर्थ में बढ़ा दी है कि उन्हें वैयक्तिक या सामूहिक अनाचार, अत्याचार का अहिंसक हल, उसकी अहिंसक प्रतिरोध शक्ति को अब जल्दी खोज निकालना और प्रकट कर देना है। विनोबा के शब्दों को और बार बार दी जाने वाली उनकी चेतावनी को याद रखना होगा कि आये दिन के जीवन में, चारों तरफ रोज ब रोज आँखों के सामने होने वाली घटनाओं के समय हमारी यह अहिंसक शक्ति प्रकट और चरितार्थ होनी चाहिए।

* * *

निवेदन और कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव के बाद विभिन्न प्रवृत्तियों व समितियों से संबंधित चर्चाओं के निचोड़ अलग प्रस्ताव रूप जाहिर किये जायें यह अनावश्यक लगता है। चर्चाएँ अच्छी रहीं, किन्तु जनरल कार्यक्रम के प्रसंग से और प्रवृत्तियों व समितियों से संबंधित विषयों को लेकर कई विचार एक से अधिक बार दोहराये गये। वस्तुतः विभिन्न विषयों की चर्चाओं के निचोड़ का निचोड़ ही कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव होना चाहिए। सैद्धान्तिक विचार-दर्शन या मन्तव्य की दृष्टि से जनरल निवेदन और स्पष्ट कार्य या प्रोग्राम-दर्शन की दृष्टि से कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव, सम्मेलन के अवसर पर होने वाले सघ-अधिवेशन के ये दो ही वक्तव्य काफी होने चाहिए।

* * *

सम्मेलन का, विशेषतः सघ अधिवेशन का सारा कार्य और सब लोगों का इकट्ठा होना परिवार-भावना पर आधारित था। यह जब तब, जगह जगह प्रकट हो रहा था। प्रार्थनाएँ, चर्चा, भाषण वगैरह में आखिर तक बैठने व दिलचस्पी लेने आदि से साफ जाहिर होता था कि सब मानो अपने घर व्यवहार, भाईचारे के काम में ही लगा है। कुछ तेज बातें, गरम कहा सुना और फिर इसके लिए स्वतः मन में पछतावा और जाहिर भी क्षमायाचना पारिवारिक भूमिका को चरितार्थ करती थी। घर परिवार में, समाज में और विभिन्न प्रकार के लोगों के समुदाय में भी, साधारणतः सिद्धान्तों पर बुनियादी कुछ बातों को लेकर मत भेद नहीं होता। पर खान पान रहन सहन, प्रत्यक्ष कार्य और कार्यक्रम के ब्यौरे में वे विस्तार में जाते हैं तो कुछ भेद व भिन्नता प्रकट होती है। इसका सामंजस्य और समन्वय ही वस्तुतः पारिवारिकता और सैद्धान्तिक एकता की कसौटी है। सम्मेलन वगैरह के अवसरों पर इस कसौटी द्वारा परीक्षण का मौका सामने आता है। अन्य विचारों की बात छोड़ें, लेकिन गांधी या सर्वोदय के लिए ऐसी परीक्षाओं में पास होना नितान्त जरूरी है। उनका फेल होना मानो समन्वय व अहिंसा की शक्तियों का कारगर सिद्ध न होना या उनसे जो आशा-अपेक्षाएँ हैं, उनकी सम्भावनाएँ कम होती जाना ही है। इस दृष्टि से सघ के अधिवेशन और सर्वोदय सम्मेलन हमारे प्रशिक्षण या साधना के अवसर व स्थान हैं।

* * *

सघ अधिवेशन और सम्मेलन की सफलता वस्तुतः इसमें है कि उसके बाद कौन कितनी नयी ताकत, नयी स्फूर्ति, नव-शक्ति सचय का अनुभव करता है। आगे का कार्यक्रम अधिक स्पष्ट हुआ या नहीं, समाज परिवर्तन के मार्ग पर चलते जाने के लिए संबल कुछ जुटा-जुड़ा या नहीं, सामूहिक शक्ति अधिक बनी या नहीं, इन प्रश्नों का उत्तर जितने अधिक लोगों को मिल गया, उतना ही कार्यक्रम सफल हुआ, यह मानना चाहिए। व्यापक विचार प्रचार और सदेश फैलाने का काम पिछले अरसे में कुछ ढीला हुआ। उसे फिर बढ़ाया जाय, लेकिन इससे अधिक सबने समवेत यह अनुभव किया कि क्षेत्र चुन कर सघन प्रयोग करना चाहिए। वह अवसर आया है, जब कि गाँव-समाज के स्वरूप की जो कल्पना हमारी है, उसका कुछ दर्शन कराने की दिशा में सुनिश्चित प्रयत्न एक, दो, चार जगह किया जाय। करने वाला गाँव-समाज ही है, जनशक्ति के द्वारा ही वह होना है, लेकिन कुछ समदर्शी सेवक जुट कर कहीं बैठें, गाँव-समाज को साथ लें, नक्शा बदलने की दिशा में वहाँ की शक्ति को मोड़ दें, यह आज आवश्यक और अभीष्ट है।

सरकार ने भी गाँव समाज को कुछ नक्शा दिया है, कुछ अधिकार दिये हैं, कुछ साधन उपलब्ध किये हैं। लेकिन अधिकार, साधन वगैरह मिलना एक बात है और उनके उपयोग की क्षमता खड़ी होना, उनका उपयोग किया जाना, उनके उपयोग के लिए कमर कस ली जाना दूसरी बात है। बल्कि यही एकमेव ज्यादा जरूरी है। नक्शे तो अधिकतर वे ही गांधी के नाम पर और गांधी के बताये हुए हैं, पर कुछ 'घोड़े' हैं, जो सजे सजाये या नंगी पीठ गाँव में चक्कर लगाते हैं और नक्शों का बोझ वहाँ तक स्वयं न ढोकर सारी 'गधे' के लिए वह छोड़ रखते हैं। जरूरत है कि गधा बोझ से दब कर मरने से बचे और घोड़े को अपनी जिम्मेवारी का एहसास हो, ताकि वक्त पर गाँव समाज को नक्शा और मदद मिल सके। इस दृष्टि से ग्राम स्वराज्य का नक्शा खड़ा करने का पुरुषार्थ लोगों में जगना चाहिए और पचायती राज के साथ जिन बुराइयों के गाँव गाँव, घर-घर में घुस जाने का खतरा सामने आया है, उससे बचने की ताकत या 'रेसिस्टिंग पावर' लोगों में पैदा होनी चाहिए। व्यावहारिक और तात्कालिक कार्यक्रम की दृष्टि से इस ओर ध्यान दिया जायगा, तब गांधी विनोबा का नाम और विचार वस्तुतः सार्थक हो सकेगा।

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

अन्तरप्रान्तीय तनाव की समस्या ! एक-दूसरे प्रान्त के लोग आपसी संपर्क बढ़ायें

श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे का सामयिक प्रस्ताव

अन्तरप्रान्तीय संपर्क अत्यन्त आवश्यक है। वरना हम अपनी स्वतंत्रता का पूरा आनन्द नहीं उठा सकेंगे। इस दृष्टि से अण्णासाहब ने सर्व सेवा संघ के सामने एक योजना पेश की है। इस योजना पर हम चाहते हैं कि खुला विचार विनिमय किया जाय। हमारे सुविज्ञ लेखक गण अपने विचार इस संबंध में भेजेंगे तो उनका स्वागत किया जायगा। —संपादक

आज भारत में कई प्रकार के द्वेष बढ़ रहे हैं। प्रान्तीयता, भाषा विषयक अहंकार, जातीयता आदि भेदों को उत्तेजन देने वाली प्रवृत्तियाँ भी बढ़ती जा रही हैं। चुनाव इस तरह के भेद निर्माण करने में मदद रूप होता है। इसको रोकने की आवश्यकता है और दो प्रान्तों में अथवा दो राज्यों में प्रेम, सहकार बढ़ाने की कोशिश भी करना आवश्यक है। मैं जो प्रस्ताव रखना चाहता हूँ उसके अमल के द्वारा इस आपसी मतभेद व द्वेष को मिटाने में मदद हो सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक देश दूसरे देश के साथ प्रेम तथा मित्रता बढ़ाने के लिए प्रयत्न करता है। जैसे कि इंग्लैंड में भारत के २५-३० भूदान ग्रामदान आन्दोलन में काम करने वाले कार्यकर्ताओं को ६ महीने के अध्ययन के लिए बुलाया गया है। जापान ने भी विश्वबन्धुत्व की दृष्टि से भारतीय लोगों को वहाँ बुलाने का और वहाँ के लोग यहाँ भेजने का सुझाव रखा है और थोड़े प्रमाण में उसका अमल भी किया है। कई स्थानों में लिखा-पढ़ी से भी मित्रता बढ़ाने (पेनफ्रेन्ड्स) की योजना अमल में लायी जाती है। वैसे ही मैं सोचता रहा कि हम सर्व सेवा संघ की तरफ से हर साल सौ दो सौ विद्यार्थियों को एक राज्य से दूसरे राज्य में किसी परिवार के साथ रहने के लिए क्यों न बुलायें। ये विद्यार्थी संख्या में बँट कर एक निश्चित समय तक उस परिवार के साथ रह सकते हैं। कालेज से पदवी लेकर निकले हुए नवयुवक अध्ययन की दृष्टि से भी एक राज्य से दूसरे राज्य में जाकर किसी परिवार में महीने-दो महीने रह सकते हैं और वहाँ की स्थानीय भाषा को सीखने की कोशिश कर सकते हैं। विद्यार्थी उस परिवार के साथ रह कर उस प्रान्त के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अभ्यास भी कर सकता है। अन्तर्प्रान्तीय तनाव (टेन्शन) आज जो बढ़ रहा है, अन्तर्प्रान्तीय समस्याओं के झगड़े भी आज होते हैं उनको सुलझाने का काम दो राज्यों को आपस में बैठ कर ही तय करना पड़ेगा, लेकिन इस योजना को कार्यान्वित करने से आज जो द्वेष की अग्नि चारों ओर फैलती जा रही है उसे बुझाने का काम किया जा सकता है। लोग एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में आकर रहेंगे तो उसमें अन्तर्प्रान्तीय जीवन बढ़ाने में मदद होगी।

सर्व सेवा संघ की तरफ से इस योजना के ऊपर सोचा जाय और इस दिशा में कुछ करना चाहिए, ऐसा हमें यदि लगता हो तो इस योजना को अमल में लाने की दृष्टि से कार्यक्रम बनाना चाहिए। इसमें खर्च का सवाल नहीं है। आने वाला आने-जाने का खर्च करेगा ही। जिस परिवार में वह व्यक्ति जाकर रहेगा उस परिवार की भी स्वीकृति पहले से प्राप्त की गयी होगी और जब तक वह परप्रान्तीय मित्र उस परिवार में रहेगा तब तक उसका खर्च उस परिवार की ओर से बर्दाश्त किया जा सकेगा। अन्तर्प्रान्तीय दृष्टि से इस तरह के आदान प्रदान की योजना आपसी प्रेम सम्बन्धों को मजबूत बनाने व सौमनस्यता का वातावरण निर्माण करने में काफी मदद-रूप हो सकती है, ऐसा मुझे लगता है।

मध्यप्रदेश का कार्य और विनोबा-यात्रा

प्रादेशिक सर्वोदय-संगठनों को भेजा गया संघ-परिपत्र

मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल ने पूज्य श्री विनोबाजी की प्रेरणा से और उनकी इच्छा के अनुसार इन्दौर नगर तथा महेश्वर तहसील को मिला कर पाँच लाख की आबादी के इस क्षेत्र को एक प्रेमक्षेत्र बनाने और उस दृष्टि से उसमें सघन काम करने का निश्चय किया है। श्री विनोबाजी शीघ्र ही पंजाब से इन्दौर नगर की तरफ बढ़ने वाले हैं और जून आखिर या जुलाई आरंभ तक उनके वहाँ पहुँच जाने की संभावना है। श्री विनोबाजी इस क्षेत्र में पहुँचें, उसके पूर्व मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल उस क्षेत्र में विशेष तैयारी करना चाहता है और उस निमित्त विशेष कार्यक्रम चलाने की योजना बना रहा है। स्वाभाविक ही इस पूर्वतैयारी में वहाँ के सर्वोदय मंडल को बाहर से भी पूरी शक्ति व सहायता मिलनी चाहिए।

मोटे तौर पर योजना यह है कि जून के दूसरे सप्ताह से चौथे सप्ताह तक पदयात्रा व शिविरों का सघन कार्यक्रम पूर्वतैयारी की दृष्टि से उस क्षेत्र में चले। उस कार्यक्रम में सब प्रदेशों के जितने अधिक हो सकें, सर्वोदय-कार्यकर्ता भाग लेने के लिए वहाँ पहुँचें। सारे कार्यक्रम का समारोप श्री विनोबाजी द्वारा उनके वहाँ पहुँचने पर किया जाय। यह सघन कार्यक्रम इन्दौर के चारों ओर इर्दगिर्द के लगभग २५०-३०० गाँवों में चलेगा।

प्रबंध समिति की सेवाग्राम बैठक में इस विषय पर चर्चा हुई थी और मध्यप्रदेश के साथियों ने अपने कार्यक्रम की रूपरेखा बनाते हुए निवेदन किया था कि संघ का इसमें पूरा सहयोग मिलना चाहिए। प्रबंध समिति ने भी तय किया है कि विभिन्न प्रदेशों के सर्वोदय संगठनों और कार्यकर्ताओं को इन्दौर नगर व उसके आसपास आयोजित किये जाने वाले इस सघन कार्यक्रम में सक्रिय योगदान के लिए निवेदन किया जाय।

उपर्युक्त विषय की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए यह पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। आपसे निवेदन है कि अपने क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को सप्ताह, दो सप्ताह के लिए इन्दौर व उसके आसपास के क्षेत्र में भिजवाने की आवश्यक कार्रवाई आप करें। जो कार्यकर्ता भाई बहन इस कार्यक्रम में भाग लेने को आयें, उनके जाने आने के सफर खर्च की व्यवस्था वे स्वयं करें अथवा यह व्यवस्था प्रदेश को करनी चाहिए। प्रेमक्षेत्र में जो कुछ व्यवस्था होगी, उसके खर्चे का जिम्मा मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल ने उठाना स्वीकार किया है।

मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल की ओर से कार्यक्रम के विषय में विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको मिलेगी तथा भूदान पत्र-पत्रिकाओं में भी निकलेगी। आशा है, इन सूचनाओं के अनुसार आप आवश्यक कार्रवाई करेंगे तथा इन्दौर नगर व उसके आसपास के क्षेत्र में आयोजित इस महत्त्वपूर्ण सघन कार्यक्रम को सफल करने में आपका पूरा सहयोग मिलेगा। इस संबंध में विशेष जानकारी वगैरह की दृष्टि से आप मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री दादाभाई नाइक या मंत्री श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त से इन्दौर पत्र व्यवहार करने की कृपा करें। इस पत्र की पहुँच तथा इस विषय में आप क्या कार्रवाई कर रहे हैं, उसकी सूचना यहाँ प्रधान केन्द्र को तथा मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल के मंत्रीजी को देने का कष्ट करें।

—पूर्णचन्द्र जैन, मंत्री

लोकनागरी लिपि*

श्रम की मुद्रा

"बारटर" पद्धती पुराने ज़माने की चीज़ है। अन्तरराष्ट्रीय व्यापार में "बारटर" सीद्धांत अब भी अपनाया जाता है। सामान के बदले कच्चा माल या अन्य सामान लीया जाता है। नासीक में छपे हुओ कागज़ों को लेकर दूसरे देश के लोग क्या करेंगे? व्यापारी क्षेत्र में "बारटर" पद्धती चलाने की ज़रूरत नहीं। "बारटर" पद्धती के जाने का मुझे कोई दुःख नहीं। मैं तो ऑतना ही चाहता हूं की कागज़ी मुद्रा की बजाय श्रम-मुद्रा चले। अभी वस्तुओं के हीसाब से भाव रहता है। दूध कम हो, तो उसका भाव बढ़ता है। जो लोग ज़्यादा पैसा दे सकते हैं, उन्हें ही दूध मीलता है। औसे में कुदरती पद्धती मानता हूं। यदी वस्तु की कमी हो, तो वह उसी अनुपात से बंटनी चाहीओ। जो जीतना श्रम करे, उसे उतनी ही चीज़ें मीलें। दूध कम होगा, तो कम मात्रा में मीलेगा, पर मीलेगा तो सबको।

तो हम चाहते हैं, (१) वीकेंद्रीत अर्थव्यवस्था, (२) उत्पादन के अनुपात से बंटवारा, (३) श्रम-मुद्रा गांव के भीतर ही चलेगी। दूसरे गांव से व्यवहार के लीओ सामान्य मुद्रा चलेगी, गांव में वह कम से कम चले, जैसा की वीदेशी व्यापार में होता है। बुनीयादी चीज़ों का भाव स्थीर रहना चाहीओ। यह श्रम-मुद्रा से ही होगा। —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि=ी, ु:ू, ॆ=ए=ओ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

टिप्पणियाँ

हिन्दी-विरोधी हिन्दी-प्रेम

नयी बनी स्वतन्त्र पार्टी के संस्थापक [illegible]र नेता श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी [illegible]लिए आयोजित वाराणसी की बड़ी [illegible]म सभा में कुछ लोगों ने जो रवैया [illegible]ख्तियार किया और हिन्दी में ही उनका [illegible]षण सुनने का आग्रह रख कर अन्ततो[illegible]त्वा उनको जिस प्रकार नहीं बोलने [illegible]या गया यह एक खेदजनक, अशोभ[illegible]य और असभ्यतापूर्ण घटना है। पक्ष-[illegible]द और दल-आधारित जनतन्त्र के इस [illegible]ग में आम सभाओं के बिना कार्यवाही [illegible] बिखर जाने की घटना असाधारण [illegible]हीं है, लेकिन भाषा-राष्ट्रभाषा के नाम [illegible]र यह सब किया जाना और होना भाषा विषयक राग द्वेष का एक नया खतरा ही साबित होगा। वाराणसी अपने युगों से प्रसिद्ध परम्परा और प्राचीनता के कारण एक आदर्श नगरी सिद्ध होनी चाहिए। विद्वान का आदर और विरोधी विचार के प्रति भी सहिष्णुता का भाव यह सुस[illegible]स्कृति और सुनागरिकता की कसौटी है। कहना नहीं होगा कि वाराणसी के हजारों नागरिक सभा में आये और उन्होंने अपने नगर को इस कसौटी पर खोटा सिद्ध होने दिया। ऐसे अवसर पर अक्सर कह दिया जाता है कि सभा को कुछ चन्द शरा[illegible]रती लोगों ने बिगाड़ दिया या काम में विघ्न खड़ा कर दिया। लेकिन हजारों नागरिकों के बीच चन्द शरारतियों की कामयाबी किसकी असहायता, गैरजिम्मे[illegible]दारी और बुजदिली साबित करती है! जहाँ तक जानकारी है, अंग्रेजी में भाषण न सुनने की आवाज उठाने वाले चन्द शरारती नहीं, बल्कि अच्छे पढ़े लिखे नागरिक भी थे। यह और भी अधिक खेदजनक है, क्योंकि ऐसे व्यवहार ने लोकशाही और नागरिकता के मूल पर ही चोट की है। श्री राजगोपालाचारी जैसे लम्बे अनुभव वाले और तीक्ष्ण बुद्धि[illegible]शाली चतुर व्यक्ति का अपनी ८२ वर्ष की अवस्था में दलगत राजनीति के दलदल में पुनः पड़ना तथा देश व दुनिया में मौजूदा लोकतन्त्र-प्रणाली के आये दिन दुर्दशा के दृश्य देखते हुए भी पक्षातीत लोकशाही की ओर न मुड़ना आश्चर्य[illegible]कारी ही है। पिछले दिनों उनके भाषा विषयक विचार भी एक दुराग्रह की हद तक पहुँचे मालूम देते हैं और आगे शायद कल्पना नहीं करेंगे कि एक वक्त ये महापुरुष गांधीजी के दक्षिण हिन्दी प्रचार कार्यक्रम के बड़े स्तम्भ थे। लेकिन श्री राजगोपालाचारी का भाषा, राजनीति आदि सम्बन्धी दृष्टिकोण, व्यव[illegible]हार व आचरण जो भी हो, हिन्दी भाषा क्षेत्र के बीच अहिन्दी-भाषी प्रदेश के एक नागरिक और देश के बड़े मान्य व्यक्ति के प्रति हिन्दी भाषियों द्वारा असहिष्णुता का व्यवहार न हिन्दी-प्रेम का परिचय देने वाला है और न हिन्दी के प्रति अहिन्दी भाषियों के प्रेम और आकर्षण को बढ़ाने वाला है, बल्कि ऐसे व्यवहार का विपरीत परिणाम होता आया है तथा जैसा कि श्री राजगोपालाचारी ने जाहिर किया, इससे हिन्दी का पक्ष मजबूत नहीं होगा, इस पर बुरा ही असर होगा। इस सारी घटना में सभा [illegible] नहीं हुई, बल्कि हिन्दी भाषी [illegible] हुए हैं।

—पूर्णचन्द्र जैन

बिजली की रोशनी और गांधीजी का आश्रम

सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर हजारों लोग सेवाग्राम पहुँचे थे और वहाँ बापुकुटी व उसके इर्दगिर्द जो आश्रम क्षेत्र है, उसका दर्शन भी वे बराबर [illegible] कर अवलोकन करते थे। सुबह-शाम प्रार्थना होती तथा उसमें भी सैकड़ों भाई-बहन शामिल होते थे। प्रश्न उठा था कि बिजली की रोशनी का आश्रम के अहाते में उपयोग किया जाय या नहीं। अब हर विषय पर दो रायें तो हो ही सकती हैं और हरएक को अपनी अपनी राय ही ठीक जँचती है तथा उसके लिए हरएक पास एक से अधिक दलीलें भी हो सकती हैं, लेकिन कुछ लोगों का बापुकुटी ही नहीं, आश्रम के पूरे अहाते में बिजली की रोशनी का उपयोग न करने का जो विचार रहा, उसके पीछे कोई औचित्य और बुद्धिसंगत दृष्टिकोण काफी सोचने पर भी नहीं दिखाई दिया। यदि [illegible] बिजली की रोशनी का [illegible] उपयोग [illegible] किया जा रहा था, बल्कि आश्रम के [illegible] कुओं में पानी के लिए बिजली का पम्प लगाने के बारे में कोई एतराज नहीं रह गया था, [illegible] के क्षेत्र में [illegible] ही सहज उपलब्ध साधनों का उपयोग रखना ठीक है और [illegible] लालटेन या [illegible] बत्ती का ही इस कारण उपयोग करते रहें, ऐसे [illegible] का [illegible] है। बिजली उस समय [illegible] होती, तो उसका रोशनी [illegible] के लिए वे उपयोग करते या [illegible] नहीं, यह प्रश्न भी पूछा जा सकता है। लेकिन पानी के लिए आदमी व बैल की जोड़ी को हटा कर बिजली की मशीन लगाना मंजूर किया जाय और हजारों व्यक्ति आश्रम-दर्शन को आवें, तब आवश्यकतानुसार बिजली की रोशनी का उपयोग न किया जाय, यह भावनाओं के आदर और आदर्श के पालन की दृष्टि से कुछ अनुचित तथा असामयिक लगता है। बापूकुटी व आश्रम के [illegible] अर्थात् गांधीजी के समय के स्वरूप का हूबहू दर्शन कराना हो, तब तो आश्रम के अहाते के कुँओं में से पानी निकालने की नयी पद्धति का प्रवेश भी गलत होगा। ऐसा कोई आग्रह न हो तब कुछ बातें करना और कुछ को विशेष परिस्थिति की आवश्यकता के बावजूद न करना सर्वथा गलत है।

बापूकुटी और उनके काम में आने वाली वस्तुओं के भौतिक अवशेष या स्मृति चिह्नों को सुरक्षित रखने की बात भी काफी विचारणीय है। व्यक्ति के लेख, भाषण, विचार वगैरह का संकलन और उन्हें सुरक्षित रखना उचित काम है और व्यक्ति के भौतिक शरीर के सिवाय भौतिक पदार्थों की रक्षा करते रहने का विचार बिल्कुल भिन्न। पहली बात संभव भी है, उचित भी है और मानवीय विकास की दृष्टि से कारगर और उपयोगी भी है। लेकिन दूसरा विचार न विशेष कुछ उचित व उपयोगी है और नहीं कुछ समय के बाद संभव न होने से वांछनीय। देश भर के [illegible] और खास तौर से गांधीजी से प्यार रखने वाले भाई-बहनों को ऐसे विषयों में दृष्टि स्पष्ट करनी और समुचित निर्णय लेने चाहिए। गांधीजी को गये बारह वर्ष का एक युग बीता है। अब इससे सम्बन्धित ऐसे अनेक प्रश्नों के बारे में चिन्तन हो जाना उपयुक्त होगा।

—पूर्णचन्द्र जैन

अर्थवैषम्य का निराकरण

आर्थिक समता का प्रश्न केवल आमदनी या आमदनी के साधनों के समान बँटवारे का प्रश्न नहीं है। आर्थिक विषमता के निराकरण का सही उपाय ढूँढ़ने के लिए हमें मानव-स्वभाव की गहराई में जाना होगा।

आर्थिक विषमता की जड़ में [illegible] की भावना है। [illegible] मूल भावना नहीं है। [illegible]

[illegible]

—[illegible]

हो रहा है। अतः आर्थिक समता चाहने वाले व्यक्ति का सर्वप्रथम कर्तव्य है युद्ध और युद्ध के कारणों के खिलाफ सक्रिय कदम उठाना, जिनसे मनुष्य जाति का अभाव दूर हो सके और फलस्वरूप पैदा होने से संग्रह की वृत्ति का एक बड़ा कारण भी।

दूसरी बात जो मनुष्य को संग्रह के लिए प्रेरित करती है, वह है जीवन में आने वाले आकस्मिक प्रसंगों पर होने वाले अतिरिक्त खर्च की चिन्ता। आदमी का सामान्य जीवन तो चलता रहता है, पर शादी, बीमारी, बुढ़ापा, मौत आदि प्रसंगों पर अक्सर विशेष खर्च होता है। हमारी पुरानी समाज-व्यवस्था में इन सब प्रसंगों पर होने वाले खर्च का बहुत-सा भार आसपास का समाज या जाति वहन करती थी। पिछले वर्षों में उद्योगीकरण के कारण जो 'बेसिर पैर' की शहरी बस्तियाँ निर्मित हुई हैं, उनके कारण सामाजिक सुरक्षा का यह पुराना ढाँचा बिल्कुल टूट गया है और अब व्यक्ति को स्वयं को ही अपने और अपने परिवार के लिए यह सारी चिन्ताएँ करनी पड़ती हैं। आज समाज नाम की कोई चीज वास्तव में रही नहीं है। आज जिसे समाज कहते हैं, वह तो आदमियों का एक झुण्ड मात्र रह गया है, जैसे जंगल में जानवरों का झुण्ड रहता है। आर्थिक जीवन की एकता छिन्न भिन्न हो गयी है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की संग्रह की इच्छा होना स्वाभाविक है।

इस प्रकार समाज की मौजूदा स्थिति में व्यक्ति के लिए संग्रह की आवश्यकता व्यापक हो गयी है। इस संग्रह की वृत्ति की कोई मर्यादा न रहने से आर्थिक विषमता अत्यधिक बढ़ गयी है और बढ़ती जा रही है। कुछ समाजवाद ने पिछले १०० वर्षों में इस परिस्थिति का मुकाबला करने की कोशिश की है, लेकिन आर्थिक व्यवस्था के केन्द्रीकरण और उससे पैदा होने वाली जटिलता के कारण समाजवाद के प्रयत्न करीब-करीब बेमानी हो गये हैं। कल्याणकारी राज्य हो या साम्यवादी सरकार, व्यक्ति समाज की विशालता में खो-सा गया है। शिक्षा, चिकित्सा आदि की कुछ सुविधाएँ भले ही राज्य की ओर से उसे मिल जाती हैं, पर सुविधाओं के साथ-साथ उसकी भावनाओं के परिष्कार और उनके पोषण के लिए जो मानवीय हमदर्दी उसे चाहिए, वह नहीं मिल रही है। उस हमदर्दी से होने वाली तुष्टि की कमी को वह अपने जीवन की भौतिक सुविधाओं को बढ़ा कर और तरह-तरह के सामान अपने आसपास बटोर कर पूरी करना चाहता है। फलतः आज के समाज की धारा व्यक्तिगत संग्रह और परिग्रह की ओर बढ़ रही है। "जीवन स्तर बढ़ाते जाना" यह मनुष्य-जीवन का साध्य और धर्म ही हो गया है।

इन सब परिस्थितियों के कारण संग्रह की भावना और फलस्वरूप आर्थिक विषमता उत्तरोत्तर बढ़ रही है। उसका निराकरण करना हो, तो केवल आमदनी या सम्पत्ति का बँटवारा करने से या उत्पादन का समाजीकरण या राष्ट्रीयकरण करने से कोई नतीजा नहीं निकलेगा। मनुष्य के जीवन में सन्तोष और समाधान पैदा करना होगा, तभी वह संग्रह और आर्थिक विषमता के चक्कर में से निकल सकता है। वह संतोष और समाधान पैदा करने के लिए समाज की व्यवस्था बदलनी होगी, जीवन के मूल्य भी बदलने होंगे।

—सिद्धराज ढड्ढा

सर्वसम्मति और सभा-संचालन

सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर सेवाग्राम में पूरे ७ दिन तक सर्व सेवा संघ का अधिवेशन चला। संघ के नव-संस्करण के बाद एक तरह से यह उसकी पहली ही सभा थी। नया विधान लागू होने के पहले सर्व सेवा संघ की सदस्यता देश के गिने-चुने थोड़े से कार्यकर्ताओं तक सीमित थी। नये विधान के अन्तर्गत न सिर्फ हर जिले के लोक सेवकों द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि सर्व सेवा संघ के सदस्य हैं, बल्कि हर लोकसेवक भी संघ की सभा में पूरे सदस्य की हैसियत से भाग लेने का अधिकारी है। सेवाग्राम की पिछली सभा में संघ की इस व्यापक सदस्यता का अच्छा दर्शन हुआ। प्रतिनिधि सदस्यों के अलावा सैकड़ों लोकसेवक भाई-बहन अधिवेशन में भाग लेने के लिए आये थे।

सर्व सेवा संघ के अधिवेशन की दूसरी विशेष बात इस बार यह थी कि न केवल संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों के बारे में बल्कि देश विदेश के अन्य महत्त्व के प्रश्नों पर भी सभा में चर्चा हुई। एक ओर विषयों की विविधता और सभा में भाग लेने वालों की बड़ी संख्या तथा दूसरी ओर सर्वसम्मति से निर्णय लेने का हमारा सिद्धान्त—इन कारणों से सभा संचालन की व सभा में चर्चा की पद्धति का प्रश्न हमारे लिए काफी महत्त्वपूर्ण हो गया है। सामान्य सभाओं में जहाँ फैसले बहुमत-अल्पमत के आधार पर होते हैं, वहाँ निर्णय के पहले हर व्यक्ति के समाधान की खास आवश्यकता नहीं रहती। पर जब निर्णय सर्व-सम्मति से लेने हों और उस चर्चा में भाग लेने वालों की संख्या भी सैकड़ों की हो, तब सभा संचालन का कोई ऐसा तरीका ढूँढना होगा, जिससे बड़ी संख्या में लोग सभा में सक्रिय भाग भी ले सकें, सबका समाधान भी हो और फिर निर्णय सर्व-सम्मति से लिया जा सके।

सेवाग्राम में ७ दिन तक सर्व सेवा संघ का अधिवेशन चला। कई विषयों पर चर्चा हुई और निर्णय भी 'सर्व-सम्मति' से लिये गये। पर कई लोगों को ऐसा लगा कि चर्चा और निर्णय की हमारी पद्धति में हमें कुछ सुधार करना चाहिए। सर्व सेवा संघ ने अहिंसात्मक संगठन की ओर एक नया कदम बढ़ाया है, तो साथ ही साथ सभा संचालन की पद्धति में भी हमें नये-नये प्रयोग और शोध करने होंगे। अगर सब सदस्यों को न्याय देना हो, तो हम सभी को अपने अपने ऊपर थोड़ा संयम भी रखना होगा। यह नये सर्व सेवा संघ का पहला ही अधिवेशन था, अब इतने लोग उपस्थित थे और इतने विविध विषयों पर चर्चा हुई। इसलिए कुछ कमियाँ रहना स्वाभाविक था, पर ज्यों ज्यों अनुभव आगे बढ़ता जायगा, त्यों त्यों सर्व सम्मति के तत्त्व और सब लोगों के पूरे समाधान का मेल बिठाने लायक नयी प्रक्रिया हमारे हाथ लगती जायगी, ऐसा विश्वास है।

इस बार के अधिवेशन में भी कार्यक्रम की चर्चा के सिलसिले में विचार-विनिमय की जो पद्धति अपनायी गयी, उसके अनुभव अच्छे रहे। सभा में करीब ३०० से अधिक संख्या में लोग उपस्थित थे। इन्हें करीब ३० टुकड़ियों में बाँट दिया गया। हर टुकड़ी में १०-१५ या २० लोग थे। कोशिश यह की गयी थी कि हर टुकड़ी में हर प्रान्त के एक-एक, दो दो कार्यकर्ता आ जायँ। हर टुकड़ी के लिए दो नायकों के नाम निश्चित कर लिये गये थे, जिन पर टुकड़ियों में चर्चा का संचालन करने तथा फिर उसके निर्णय आदि का नोट तैयार करने का जिम्मा सौंपा गया था। हर टुकड़ी ने कार्यक्रम के प्रस्ताव पर गहराई के साथ चर्चा की। १०-१५ व्यक्तियों के समूह में हर व्यक्ति को अपने विचार प्रगट करने का मौका आसानी से मिला, जो पूरी सभा में हरएक को मिलना सम्भव भी नहीं था और मिलना तो भी इतने बड़े समुदाय में बोलने की झिझक के कारण सब लोग शायद उसका उपयोग भी न कर पाते। टुकड़ियों में बैठकर चर्चा करने की पद्धति अपनायी जाने से हर व्यक्ति को चर्चा में भाग लेने का मौका मिला, समाधान हुआ और सबकी सम्मिलित राय से सर्व सम्मत कार्यक्रम बनाया जा सका।

सेवाग्राम की सभा में बहुत से भाई-बहन उपस्थित थे। अच्छा हो, सभा-संचालन और चर्चा आदि की पद्धति के बारे में आगे सुधार करने की दृष्टि से अपने-अपने सुझाव भेजें। हमें ऐसी पद्धति खोज निकालनी है कि काफी बड़ी संख्या में जो लोक सेवक आगे भी हमारे अधिवेशनों में आयेंगे, वे सब चर्चा में सक्रिय भाग ले सकें और समाधानपूर्वक सर्व-सम्मति में अपनी राय शामिल कर सकें।

—सिद्धराज ढड्ढा

अंग्रेजी भाषा सम्बंधी नीति

अंग्रेजी भाषा के उपयोग और शिक्षा में उसके स्थान के सम्बन्ध में देश में समय समय पर जो चर्चाएँ उठती रहती हैं, उनको ध्यान में रख कर इस विषय में स्पष्ट मार्गदर्शन करना सब को आवश्यक मालूम होता है।

जाहिर है कि केन्द्र और प्रान्तों की सरकारों के व्यवहार में और नौकरियों की परीक्षाओं में अंग्रेजी का महत्त्व कायम रहा है। इसके कारण लोगों के मन में बुद्धिभेद पैदा होता रहता है और यह डर बना रहता है कि बिना अंग्रेजी के उनके बालक पीछे रह जायेंगे। इसके परिणामस्वरूप लोकमानस पर एक प्रकार का राष्ट्र-विरोधी और स्वार्थी प्रभाव पड़ रहा है। एक स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए यह स्थिति बहुत ही शोचनीय और चिन्ताजनक है। इसलिए सब सरकारों को अपना राज काज प्रान्तीय भाषा और राष्ट्रभाषा में चलाने का निश्चय तुरन्त ही करना चाहिए। यह इष्ट है कि लोकशाही सरकार जनता का विश्वास और उसकी समझदारी बढ़ाने के लिए जनता की अपनी भाषा में राज-काज चलाने का उत्साह दिखाये।

बम्बई राज्य का प्राथमिक शालाओं में सातवीं या आठवीं कक्षा तक अंग्रेजी की शिक्षा न देने का जो सुधार किया गया था, वह शिक्षा का बुनियादीकरण करने की दिशा में एक उम्दा कदम था। उसमें पीछे हटना और अंग्रेजी को फिर दाखिल करना सही काम नहीं है। समाज के कुछ वर्गों की ओर से अंग्रेजी की जो माँग की जाती है, उसका एकमात्र कारण यह है कि सरकार ने राज काज में और नौकरियों के लिए परीक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजी का आग्रह रखा है। इसलिए इस विषय में सुधार करना ही सही कदम होगा।

किसी भी एक राज्य के लिए ऐसा सुधार करना मुश्किल है। फिर भी बम्बई राज्य ने जो पहल की थी, उसे वह छोड़ रहा है, यह बहुत ही खेदजनक है। इस घटना से सावधान होकर देश के सब प्रादेशिक राज्यों में प्राथमिक शिक्षा की सातवीं या आठवीं कक्षा तक अंग्रेजी को दूर रखने का सुधार एकसाथ अपनाना बहुत ही आवश्यक बन गया है।

सार्वजनिक संस्थाओं की ओर देश के सब नेताओं तथा कार्यकर्ताओं को भी सरकार के साथ के व्यवहार में और अपने आपसी व्यवहारों में प्रान्तीय भाषाओं तथा राष्ट्रभाषा का उपयोग करने का आग्रह रखना चाहिए। अंग्रेजी में व्यवहार न करने से अपने काम के बिगड़ने का डर रखना राष्ट्रभक्ति के विरुद्ध समझा जाना चाहिए।

[सर्व सेवा संघ के सेवाग्राम-अधिवेशन में पारित प्रस्ताव]

लोग करने वालों को मुक्त मन की जरूरत होती है। व्यक्ति के साथ सम्बन्ध तो रहेगा ही क्योंकि बातचीत, भावों का आदान प्रदान, प्रश्न आदि से बहुत सारी बातें निकलती हैं। लेकिन संस्थागत होकर सोचने से चिन्तन निर्गुण ढंग का हो जाता है। वैसे तो शान्ति सेना के लिए अखिल भारतीय संस्था बनी है, वह चलेगी। उसमें जो व्यक्ति काम करते हैं वे सवाल पूछेंगे, चर्चा करेंगे तो चर्चा चलेगी पर इन्तजामी चर्चा नहीं होगी।

पवनार का मेला

"मैंने जितना लिखा सामाजिक, आध्यात्मिक विषय पर लिखा। साहित्य भी है उसमें, पर सारे लिखने का टोन (Tone) आध्यात्मिक है। अब पवनार में बारह साल हुए हर साल गान्धी-मेला लगता है। हर साल यात्री वहाँ आते हैं। इस साल मेले के दिन कई यात्री वहाँ जो ब्रह्मविद्या मन्दिर बना है उसके बगीचे के अन्दर घुस गये और सब सब्जा नष्ट कर दी, जो खा सके खायी बाकी उखाड़ कर वहीं फेंक दी। यह सारा जो हुआ है वह समाज के लिए उन्नतिकारक हरगिज नहीं है। यह समाज को पतन की ओर ले जाने का चिह्न है। इससे हमारे समाज की रुचि का परिचय मिलता है। यह मेला बारह साल से वहाँ लग रहा है। मैंने सोचा इसे अब बन्द करने के लिए क्यों न कहूँ। क्योंकि मेरे रहते हुए जब इसका यह हाल हुआ है तब पीछे इस मेले में न जाने क्या-क्या हो सकता है। वह मेला जूए का अड्डा भी बन सकता है। इस प्रकार के विचार मन में आते हैं तो लगता है इस पर ही मैं कुछ लिखूँ। लोग जिसको महत्त्व का सवाल मानते हैं, मुझे उसमें कुछ भी महत्त्व का मालूम नहीं होता। मुझे तो यह बगीचे वाली बात अत्यन्त महत्त्व की लगती है कि वह एक बुनियादी सवाल है। लेकिन, उदाहरण के लिए, केरल के इलेक्शन में मुझे बिल्कुल रुचि नहीं है। जो भी हो, लिखने की तरफ अब रुचि पैदा हो रही है।

पदयात्रा में ब्रह्मविद्या मंदिर

"हमारी अखण्ड यात्रा चलती है। पर मुझे अब तक उसमें समाधान नहीं है। समाधान न होने का कारण ढूँढ़ता रहता हूँ। अब तो लाउडस्पीकर छोड़ दिया है। उसकी पीड़ा गयी। ये लाउडस्पीकर, मोटर आदि लेकर मैं घूमता हूँ और दूसरे जो हमारे छोटे-छोटे साथी घूमते हैं वे देखते उनके मन में आता होगा—बाबा तो इतनी सारी व्यवस्था के साथ घूमता है। हमारे लिए इन्तजाम कहाँ से होगा! इसलिए मेरी यात्रा का स्वरूप जितना सादगी का है उतना अच्छा। और भी कुछ सुधार आगे करना होगा ऐसा लगता है। अब हमारे यहाँ जो पुस्तकें बिकती हैं वह दुकान दिन भर क्यों खुली रहे! उसका भी समय निश्चित किया जाय। चार घण्टे ही दुकान खुली रहेगी। उसी समय के अन्दर लोग किताब खरीद सकते हैं। इस यात्रा को मैं चलता फिरता ब्रह्मविद्या मन्दिर कहता हूँ। तो लगता है दिन भर में एक निश्चित समय निकाल कर ब्रह्मविद्या मन्दिर को क्यों न चलाऊँ! फिर हस्ताक्षर करने में भी बहुत समय जाता है। लोग 'आटोग्राफ' मांगते थे तो मैंने 'गीता प्रवचन' पर हस्ताक्षर करने का रिवाज निकाला, ताकि एक अच्छी चीज उनके पास रहे। अब उसमें भी काफी समय जाता है। अमृतसर में पूरे दो घण्टे 'गीताप्रवचन' पर हस्ताक्षर करने में गये। अब हस्ताक्षर का समय भी निर्दिष्ट कर सकते हैं, लोगों से मिलने का समय भी हमको कम करना होगा। ये सब बातें धीरे धीरे होंगी।"

यह तपश्चर्या किसलिए

लेकिन ये सब आखिर है किसलिए! हम जो अपने को उनके अनुगामी मानते हैं हमारे लिए ही तो यह तीव्र वेदना और तपश्चर्या है। सन् १९४० में रामगढ़ में अखिल भारतीय कांग्रेस की विषय निर्वाचनी सभा हो रही थी। मौलाना आजाद अध्यक्ष थे, रात को करीब दो बजे बापू पैदल चल कर सभा में आये। लुकछिप कर अंधेरे में आये, ताकि उनको लोग देख सकें और लोगों की भीड़ न हो, मगर शहद की मक्खियाँ जिस तरह अपनी रानी की सुगंध पहचान कर उसके चारों ओर झुंड बना लेती हैं, वैसे ही बापू रास्ते में पकड़े गये और चारों ओर से घेरे गये। व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू होने की पूर्वतैयारी शायद मन में चलती होगी, सभा में आकर कहने लगे—"मैं अभी पैदल चल कर आया तो लोगों ने मुझे घेर लिया। मैंने उनकी आँखें देखीं, और समझ गया कि वे मेरे हैं और मैं उनका हूँ। लेकिन बीच में आप लोग जो पड़े हैं वे सारी गड़बड़ कर रहे हैं। इस दफा आप लोग मेरी बात के अनुसार काम नहीं करेंगे तो मैं आप लोगों को सत्याग्रह के लिए कतई बुलाने वाला नहीं हूँ।" आज पू. विनोबाजी की वेदना और बेचैनी देख कर ऐसा ही महसूस होता है कि सिर्फ यह लाउडस्पीकर नहीं, हम भी जनता और उनके बीच दीवार बन रहे हैं क्या! यह सवाल सामने खड़ा हुए बगैर रहता नहीं। हमारी जड़ता, निष्क्रियता तथा निर्जीवता दूर करने के लिए, हम सब पथ से संभल जाने के लिए ईश्वर हमें शक्ति दे!

गान्धी ज्ञान-मन्दिर, वर्धा

वंशीधर "राजू"

'गान्धी ज्ञान मन्दिर' गान्धी-विचार सम्बन्धी साहित्य का पुस्तकालय और गान्धीवाद के अध्ययन तथा संशोधन का केन्द्र है। वह दिन दूर नहीं जब यह 'गान्धियन एकडमी' के रूप में परिणत होगा, जिसमें सारी दुनिया के जिज्ञासु गान्धीवादी जीवन पथ के दृष्टिकोणों का आदान प्रदान और अध्ययन करने के लिए एकत्रित हुआ करेंगे और गान्धीजी के उद्देशों का प्रचार करने में सहायक बनेंगे।

सर्वप्रथम इस प्रकार के केन्द्र की कल्पना सन् १९३७ में स्वर्गीय श्री जमनालालजी बजाज के मन में जगी थी। इस योजना को साकार करने की भावना स्व० श्री महादेव भाई देसाई ने की। गान्धीजी का आशीर्वाद इसे प्राप्त हुआ। तुरन्त ही योजना को अमल में लाने के लिए स्वर्गीय श्री जमनालाल बजाज फण्ड इकट्ठा करने में जुट गये। लोगों ने दिल खोल कर चन्दा दिया। परन्तु राष्ट्र का स्वातन्त्र्य-संग्राम समाप्त होने तक भवन-निर्माण का कुछ भी कार्य नहीं किया जा सका। १९४२ में श्री जमनालाल बजाज का अचानक स्वर्गवास हो जाने से योजना का काम रुक गया।

सन् १९४८ में गान्धीजी का स्वर्गवास हो जाने से इस योजना की आवश्यकता अधिक महसूस हुई। भूमि और साधन की समस्या से लेकर अन्य अनेक कठिनाइयाँ सामने आयीं। श्री कमलनयन बजाज और श्री श्रीमन्नारायण के यत्नों के कारण यह योजना कार्य रूप में परिणत हुई।

गान्धी ज्ञान-मन्दिर स्थापन का मुहूर्त स्वर्गीय श्री जमनालाल जी बजाज की माता बीरदी बाई बजाज के कर कमलों द्वारा हुआ और इस भवन का शिलान्यास राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के कर कमलों द्वारा ३१ दिसम्बर १९५० रविवार को हुआ।

गांधी ज्ञान मन्दिर भवन का उद्घाटन श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा हुआ। भवन के उद्घाटन के अवसर पर विनोबाजी ने सन्देश देते हुए कहा—"वर्धा के गांधी ज्ञान-मन्दिर का उद्घाटन पंडितजी के करकमलों द्वारा होने जा रहा है, यह खुशी की बात है। यह 'गांधी ज्ञान' क्या चीज है जरा समझने की जरूरत है। अपने देश में आत्मज्ञान का उदय प्राचीनकाल में ही हुआ था और उसकी परम्परा आज तक यहाँ अनवच्छिन्न चली आ रही है। विज्ञान का भी उदय अपने यहाँ हुआ था, पर उसकी परम्परा अखंडित नहीं चली और आधुनिक जमाने में विज्ञान का विकास पश्चिम में हुआ। आत्मज्ञान और विज्ञान के संयोग से सामूहिक अहिंसा का जन्म हुआ है। उसे 'गांधी ज्ञान' कहते हैं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि उसी से दुनिया का भला होने वाला है। इतना ही नहीं उससे हम इस दुनिया में स्वर्ग ला सकते हैं। जैसे हाइड्रोजन और और आक्सीजन मिल कर पानी बनता है वैसे आत्मज्ञान और विज्ञान मिल कर 'सर्वोदय' या 'साम्ययोग' बनता है। मैं आशा करता हूँ कि गांधी ज्ञान मन्दिर इस तरह के समग्रजीवन का केन्द्र साबित होगा।"

भवन के भीतर कक्ष में प्रवेश करते बायें हाथ की तरफ दिवाल की आलमारी में गांधीजी के बचपन से लेकर अब तक के कई चित्र देखने को मिलते हैं। उसके पास ही एक बड़ा चित्र अब्राहम लिंकन का भी है। इसी के पास ही शीशे की आलमारी में गांधी साहित्य-सम्बन्धी पुस्तकें रखी हुई हैं जिनको बाहर ही से बिना खोले हुए आसानी से देखा जा सकता है। द्वितीय कक्ष में वाचनालय है। जहाँ पर हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी इत्यादि कई भाषाओं की पत्रिकाएँ आती हैं।

तृतीय कक्ष में दीवार की आलमारियों में बच्चों की पुस्तकें प्रदर्शनी की तरह रखी हुई हैं। उसी में बच्चों के लिए छोटा-छोटा लम्बा मेज और बैठने के लिए कुर्सी है, ताकि छोटे बच्चे उस पर बैठ कर आसानी से अध्ययन कर सकें। बच्चों के लिए प्रायः हर विषय की पुस्तक इस कक्ष में संग्रह करके रखी गयी है।

चतुर्थ कक्ष में तेरह हजार पुस्तकों का संग्रह है। पुस्तकें गुजराती, उर्दू, संस्कृत, मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली, तेलगु, आसामी इत्यादि कई भाषाओं की है। इतने भाषाओं की पुस्तकों का संग्रह कम ही पुस्तकालयों में देखने को मिलता है। स्थान की कमी होने के कारण बहुत-सी पुस्तकें मेज पर रखी हुई हैं। इसी कक्ष में रंगे की दो आलमारियों में चित्र, पुस्तकें और मानपत्र मंजूषा में सुरक्षित रखे हुए हैं। जो मानपत्र इसमें रखे हुए हैं वे महात्मा गांधी, कस्तूरबा गांधी, अब्दुल गफ्फार खाँ, जमनालाल बजाज आदि लोगों को समय-समय पर अर्पित किये गये थे।

गांधी ज्ञान-मन्दिर पुस्तकालय में छोटे से लेकर बड़े तक को पुस्तक पढ़ने की व्यवस्था की गयी है।

संस्था ने इतने अल्प समय में ही काफी उन्नति की है। गांधीजी के का सेवाग्राम सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार में इसका स्थान अति महत्त्वपूर्ण है।"

नयी तालीम का काम

गत मई १९५९ में पठानकोट में सर्व सेवा संघ और हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने अपने काम का और अपनी संस्थाओं का संगम करने का निश्चय किया था। उस समय समूचे सर्वोदय आन्दोलन के सन्दर्भ में नयी तालीम के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गयी थी। संघ ने इस कार्यक्रम को अमली रूप देने के बारे में विचार किया है और निकट भविष्य में इसके लिए क्या कदम उठाये जाने चाहिए इस पर खास तौर से सोचा है।

नयी तालीम का विचार एक अलग कार्यक्रम के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे तत्त्व के रूप में लिया जाना चाहिए, जिसका तकाजा है कि सर्व सेवा संघ के खादी, खेती, गो-सेवा, ग्रामोद्योग आदि सारे कार्यों का मुख्य लक्ष्य एक ही हो, मानव-निर्माण। ग्राम-स्वराज्य हमारा लक्ष्य है, लेकिन आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि सभी पहलुओं से ग्राम स्वराज्य तभी सिद्ध हो सकता है, जब उसके लिए परिपक्व बुद्धि के और पूरी तरह विकसित मनुष्यों का समाज यत्नशील हो। इसलिए सर्व सेवा संघ के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक कार्यक्रम मुख्यतः शैक्षणिक कार्यक्रम होने चाहिए।

इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि अगले वर्ष के लिए सर्व सेवा संघ और प्रान्तीय सर्वोदय मण्डल अपने काम की योजना इन मुख्य लक्ष्यों को सामने रख कर बनायें :

१ अपने मौजूदा और नये भर्ती होने वाले कार्यकर्ताओं के नवसंस्कार के लिए प्रशिक्षण की ऐसी व्यवस्था हो, जिससे वे अपने कार्यक्षेत्र में शैक्षणिक दृष्टि से काम करने के लिए तैयार हो सकें।

२ हर लोकसेवक को और रचनात्मक कार्य की समस्त शाखाओं में काम करने वाले हर कार्यकर्ता भाई बहन को अपनी यह जिम्मेदारी महसूस करनी चाहिए कि सर्वोदय विचार के प्रति आम लोगों की सहानुभूति जगाना उसका अपना काम है। समाज के नैतिक स्तर से और राष्ट्रीय शिक्षा के गुणधर्म से संबंध रखने वाले सारे मामलों के बारे में, फिर वे स्थानीय स्वरूप के हों या राष्ट्रीय स्वरूप के, हमें जनता में आवश्यक जागृति पैदा करने की जरूरत है। इस सम्बन्ध में हमारा दृष्टिकोण केवल आलोचनात्मक न हो, बल्कि जिन बुराइयों के प्रति हम अपना दुःख प्रकट करते हैं, उनके निराकरण के लिए भावात्मक सुझाव वाली हो।

शिक्षा की दृष्टि से जिन बुराइयों के बहुत गम्भीर परिणाम आ सकते हैं, उनमें से ये कुछ हैं :

शिक्षा-संस्थाओं में हिंसा के प्रति अनुराग पैदा करने का एक व्यापक वातावरण बन रहा है और बालकों के साथ व्यवहार के मामले में एक बड़े पैमाने पर यह माना जा रहा है कि उनमें राष्ट्रीय सेवा के लिए आवश्यक अनुशासन तभी उत्पन्न हो सकेगा जब उसके लिए फौजी तरीके अपनाये जायेंगे।

पाठशालाओं के प्रबन्ध में और उनके रोज रोज के जीवन में छोटे छोटे अप्रामाणिक व्यवहारों का व्यापक प्रचार।

पाठशालाओं की वर्तमान परीक्षा-पद्धति और निरीक्षण पद्धति के दुष्परिणाम।

३. हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की देखरेख में जो संस्थाएँ सेवाग्राम में अथवा दूसरे स्थानों में विकसित हुई हैं और ग्रामदान या ग्रामसंकल्प के कारण जिन क्षेत्रों में सघन काम शुरू हुआ है, उन सबका सर्वेक्षण इस दृष्टि से किया जाय कि जिससे उनके शैक्षणिक साधनों का अधिक उपयोग हो सके। जैसे केन्द्रों को अपनी दृष्टि कृषि-उद्योग के क्षेत्र में, सामाजिक शिक्षण के काम में, उच्च शिक्षण के क्षेत्र में, उत्तम बुनियादी के स्वरूप निर्माण करने के काम में और अनुसन्धान के काम में केन्द्रित करनी चाहिए। एक अहिंसक और शोषणहीन समाज के सन्दर्भ में आज इस बात की विशेष आवश्यकता है कि विज्ञान का उपयोग औजारों और कार्यपद्धति के सुधार में किया जाय।

सर्व सेवा संघ अपनी प्रबन्ध समिति से निवेदन करता है कि वह तुरन्त ही एक ऐसी विशेष कामचलाऊ समिति नियुक्त करे जो इस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने में संघ की और प्रान्तीय सर्वोदय-मण्डलों की सहायता कर सके और इसकी आर्थिक जिम्मेदारियों पर भी विचार करे।

[सर्व सेवा संघ के सेवाग्राम-अधिवेशन में पारित प्रस्ताव]

●

एक समाजशास्त्री की हैसियत से मैं कह सकता हूँ कि जो सफलता हमें पिछले नौ वर्षों में मिली है और हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया जिस तरह बराबर बढ़ती गयी है, वह प्रोत्साहक है। स्वराज्य के बाद जैसी धारा बह रही है उसके खिलाफ आज तक जो कुछ हुआ, वह अद्भुत था तथा निराशा का कोई कारण मैं नहीं देखता।

क्रान्तिकारक उपायों से समाज का परिवर्तन करना है, यह आपकी प्रतिज्ञा है। अब फिर हमको तो भाई बन कर काम करना है। हमारा नाम भी बाकी न रहे, कोई हमारा नामलेवा न रहे, फिर भी वैसा ही उत्साह कायम रहे, ऐसा मनुष्य एक नजर आने पर होता है, ऐसी तैयारी हमको रखनी चाहिए।

●

—जयप्रकाश नारायण

किताबें

ऐसा भी क्या जीना ?

लेखक-पेरी बर्गेस : अनुवादक-बैजनाथ महोदय

पृष्ठ संख्या २०७, मूल्य २ रुपये। सर्वसेवासंघ प्रकाशन, काशी

नेड की यह करुण आत्मकथा हमारे मानव-समाज के उस अंग की करुण कथा है, जिसके रोम-रोम से एक ही ध्वनि निकलती है :

ऐसा भी क्या जीना!

कुष्ठरोगियों के अनुभवी सेवक पेरी बर्गेस की अमर रचना 'हू वाक एलोन' पत्थर को भी द्रवित करने वाली है। इसमें कुष्ठ रोग से पीड़ित उन अभागे भाई-बहनों के जीवन की सुख दुःख की और छटपटाहट की कहानी है, जिन्हें समाज छूना भी नहीं चाहता, जिन्हें अपने पास भी फटकने नहीं देना चाहता और जिनकी छाया से भी वह मुँह सिकोड़ता है।

समाज से निर्वासित होकर, समाज से ठुकराये जाकर भी वे जीवित रहते हैं, रहना चाहते हैं—इसका क्या रहस्य है, इसकी झाँकी हमें इस पुस्तक के पृष्ठ-पृष्ठ में मिलेगी।

महारोग से पीड़ित ये असंख्य भाई बहन हमारी सहानुभूति और करुणा, दया और उदारता के पात्र हैं। इनकी सेवा मानवता की सर्वोत्तम सेवा में से एक है।

हमारा विश्वास है कि इस आत्मकथा से हमारे देशवासियों का ध्यान महारोग की इस भयंकर समस्या की ओर आकृष्ट होगा और ईसा, गांधी जैसे महापुरुषों के चरणचिह्नों पर चलकर कुछ महान सेवक इस उपेक्षणीय सेवा क्षेत्र की ओर आकृष्ट होंगे।

पेरी बर्गेस पुस्तक का परिचय देते हुए स्वयं अपने निवेदन में लिखते हैं :

यह एक अमेरिकन सैनिक की कहानी है। फिलीपाइन टापुओं में स्पेन के साथ अमेरिका का युद्ध हुआ था, उसमें वह एक सैनिक के रूप में गया था। वहाँ से स्वदेश लौटने के कई वर्ष बाद उसे कोढ़ दिखाई दिया। इस दुर्भाग्य ने केवल उसी को नहीं सताया, वरन् उस समर के अमेरिकन सैनिकों में से तीस से भी अधिक आदमी फिलीपाइन टापुओं के कूलियन या हेरू के कोढ़िखानों में या अमेरिका के लुसियाना राज्य के कुठाउल में बन्दों की तरह पर रहे थे।

भाई नेड का वृत्तान्त मैंने केवल इसीलिए पेश किया है कि मैं उसे अच्छी तरह जानता था। दूसरा कारण यह है कि इस रोग से संघर्ष करने का इसका काम पूरा हो चुका है और अब वह इस रोग से लड़ते लड़ते वीरगति को प्राप्त हो चुका है। किन्तु मुख्य कारण तो यह है कि इस रोग से आक्रान्त हो जाने पर उस भयानक संसार में प्रवेश करने के कारण जिस नयी परिस्थिति के साथ उसे संघर्ष करना पड़ा और उसमें उसने जो विजय प्राप्त की, वह मानव जाति के इतिहास की एक अद्भुत वीरगाथा है, ऐसा मुझे लगा। मैं ऐसे बहुत से अमेरिकन योद्धाओं को तथा अन्य वासियों लोगों को व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ, जिन्होंने अत्यन्त निराशाजनक परिस्थितियों में पहुँचने पर भी रोगग्रस्त होने पर इस नये संसार में नेड के समान ही बहादुरी के साथ अपना जीवन बिताया है।

यह पुस्तिका भाई नेड की स्मृति को अर्पित है। किन्तु उनके साथ साथ यह उन सभी को अर्पित है, जो दुर्भाग्य से मनुष्य पर आने वाले इस अत्यन्त दुःखप्रद संसार में अकेले हाथों लड़े हैं या अब भी लड़ रहे हैं। नेड के जीवन के जिन प्रसंगों का वर्णन मैंने यहाँ किया है, वे अधिकांश में उन्हीं पर गुजरे हैं। किन्तु बहुत थोड़े प्रसंग उन दूसरे जीवित और मेरे परिचित व्यक्तियों के जीवन में से भी इसमें जोड़ दिये गये हैं, ताकि भाई नेड तथा इन दूसरे व्यक्तियों को भी कोई न पहचाने, क्योंकि वे अज्ञात बने रहना चाहते हैं।

पुस्तक आत्मकथा की भाषा में लिखी गयी है। यह इसलिए कि भाई नेड, लैंगफर्ड, उनके कुत्ते, उनका मकान, उनका कारोबार, जिस झण्डे को उन्होंने अपनी सेवाएँ अर्पित कीं, उसीकी छाया में अपने को विसर्जन कर देने की उनकी अभिलाषा और शिकारों में मारे हुए उनके तमाम जानवर—ये सब मेरे लिए इतने सच्चे प्रत्यक्ष हैं कि जितने हो सकते हैं। एक दिन वह और उनके साथी बाब्ड हार्पीवाल की बीड़ से तीन जंगली सूअर मार कर लाये, तब मैं भी उनके साथ था। शिकार के शौकीनों में आम तौर पर जो उत्साह, जोश और उमंगें होती हैं, वह उनकी रग-रग में थी। नेड अपने पिता के बारे में कहा करते थे कि वे एक मर्द आदमी थे। यही नेड के बारे में भी कहा जा सकता है।

●

जमीन का मसला हल करने की हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें

२७ मार्च, '६० को सर्वोदय-सम्मेलन सेवाग्राम में श्री अण्णासाहब का भाषण

भूदान-आंदोलन शुरू होने के पहले विधायक कार्यक्रम में काम करने वाले दस-बीस हजार कार्यकर्ता इस देश में थे। स्वराज्य के बाद विधायक कार्यक्रम का एक कान्टेक्स्ट बदल गया था और हम लोग सोच रहे थे कि नयी परिस्थिति में हमारा काम किस तरह से चलेगा और उसको शक्ति या प्रेरणा कैसे प्राप्त होगी। इस अंधकार में ही हम घूम रहे थे कि उसी समय विनोबाजी ने भूदान का आन्दोलन शुरू किया। एक आशा दिलों में पैदा हुई कि इसी में से जनशक्ति जाग्रत करने का और चालीस करोड़ लोगों को आंदोलन की दिशा में ले जाने का रास्ता मिलेगा। जो विधायक कार्यकर्ताओं की जमात थी, उनको एक प्रेरणा इसमें से मिलती गयी और धीरे-धीरे इस आंदोलन का आरोहण शुरू हुआ।

भूदान हुआ, भूदान के बाद विचार की दृष्टि से भी हम आगे बढ़े, ग्रामदान तक पहुँचे। ग्रामदान होने के बाद निर्माण का काम देश में शुरू हुआ। इस दिशा में कुछ अनुभव लेने का मौका सारे देश को मिला। आंदोलन जब शुरू हुआ, तब इस आंदोलन की मदद बहुत बड़े भारी हिस्से में गांधी स्मारक निधि ने की। मेरा खयाल है कि चालीस-पचास लाख रुपये सारे देश भर में मिलाकर गांधी स्मारक' निधि ने इसमें खर्च किए। लेकिन हम खुद महसूस करते थे, कि इस तरह से हमारा बल नहीं बढ़ रहा है और यह आंदोलन जनआधारित करना हो, तो हमें भी यथाशीघ्र जन-आधारित बन जाना चाहिए। फिर उस दिशा में जाने की कोशिश हुई और पाँच हजार या दस हजार जो कार्यकर्ता थे तो उनकी संख्या भी कुछ घट गयी। लेकिन जो आज ढाई-तीन हजार लोग भूदान-आंदोलन में काम करने वाले रहे हैं और देश भर में गत नौ साल से जिन लोगों का काम चल रहा है, उनको चाहे मित्रों की मदद रहे या जिस क्षेत्र में वे काम करते हैं, उस क्षेत्र में लोगों की किसी न-किसी रूप में मदद होती रहे, लेकिन सारे देश की दृष्टि से आंदोलन चलाने का एक व्यापक रास्ता उसमें से निकला। पर एक बड़ी समस्या देश के सामने खड़ी हुई कि प्राप्त भूमि का वितरण कैसे हो? आज वह प्रश्न कठिन समस्या के रूप में हम लोगों के सामने उपस्थित है। एक आंदोलन का यह भी स्वरूप आया, जो वांछनीय नहीं था, कि वह जन आंदोलन नहीं बन सका। पाँच-पचीस हजार कार्यकर्ताओं का ही आंदोलन बन गया। उनके द्वारा ही जो कुछ काम होगा और सारी जनता भी मानने लगी कि यह इनका काम है हम उनको मदद करेंगे, लेकिन जिम्मेदारी उन लोगों की है। इसी में से हमारी दुर्बलता भी पैदा हुई। शुरू शुरू में इस तरह का विचार जरूर किया जाता था कि जिस गाँव में जमीन मिली है, उसी गाँवसभा की तरफ से जमीन का बँटवारा हो। लेकिन जब बहुत बड़े पैमाने पर जमीन मिलती रही, तो कार्यकर्ता वहाँ पहुँचे, ग्रामसभा बुलायी जाय और बाकायदा जमीन के सारे प्रश्न को वहाँ सोचा जाय। यह काम न कार्यकर्ताओं की तरफ से हुआ, न गाँव गाँव में यह महसूस किया गया कि यह हमारे गाँव में जो जमीन मिली है, वह हमें ही बाँटनी चाहिए।

इस दिशा में जनता बेभान रही और हम भी हमारी जितनी शक्ति थी, उस शक्ति के अनुसार जिम्मेदारी सँभालने की कोशिश करते रहे। लेकिन यह काम किसी एक छोटे कार्यकर्ताओं की जमात से बनने वाला नहीं था। धीरे धीरे जब लोगों ने देखा कि इस तरह से चन्द कार्यकर्ता इस तरह के एक बड़े व्यापक आन्दोलन को सभाल नहीं पायेंगे, तब फिर दाताओं के संगठन का भी विचार इस आंदोलन के सामने आया। गाँव गाँव में दाताओं को इकट्ठा करना और उनके द्वारा ही जमीन का बँटवारा करना इस दृष्टि से हम लोग सोचने लगे और बहुत जगह पर उसका नतीजा अच्छा भी आया। लेकिन पहले से यह विकेन्द्रित व्यवस्था रहती, जिस गाँव में दान पत्र मिले हैं उसी गाँव में उसी समय गाँव की पंचायत या सभा बना कर दानपत्र उन्हीं के पास छोड़ देते, उनके ऊपर जिम्मेदारी डालकर ही हम आगे बढ़ते; तो संभव है गाँववाले भी इस आंदोलन को उठाने की दिशा में कदम बढ़ाते और फिर गाँव में जितना भूदान मिला है, उससे भूमिहीनों की समस्या हल होने वाली नहीं है। तो आगे बढ़ने का काम भी हमें करना है, इस दिशा में गाँववाले सोचते। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

धीरे-धीरे आंदोलन वैचारिक दृष्टि से विकसित होता गया और सिर्फ भूमि मिलने से ही भूमि की समस्या हल न होगा। उसके बदले जब तक सारा गाँव इस दिशा में नहीं सोचता है, तब तक भूमि-समस्या इस देश की हल होने वाली नहीं है, इस निर्णय पर वैचारिक दृष्टि से हम लोग आये। ग्रामदान से विचार विकसित हुआ, लेकिन भूदान जो हमारे आंदोलन की नींव थी उसकी तरफ हमारा ध्यान जितना रहना चाहिए था उतना नहीं रहा। लोग मानने लगे कि ग्रामदान से ही सारा मसला हल होगा, भूदान की आवश्यकता नहीं। यहाँ भी हम लोगों ने गलती की। आन्दोलन का वायुमण्डल पैदा करने का काम भूदान ने ही किया और उस वायुमण्डल को हमेशा के लिए प्रेरणादायी रखने का काम भूदान का आन्दोलन चलाने से ही हो सकता है। आज जो पाँच हजार ग्रामदान मिले हैं वे तो हमारे एक प्रयोगक्षेत्र बने हैं। और प्रयोग क्षेत्र की दृष्टि से उनका बहुत महत्त्व है। निर्माण का काम भी नयी तालीम की दृष्टि से किस तरह से चलाना है उसकी खोज में हम आज निर्माण-काम गाँव-गाँव में करना चाहते हैं और करते हैं। पर बिलकुल निर्माण काम की ही तरफ हमारा ध्यान चला जाता है और आन्दोलन की दिशा में गाँव को आगे ले जाने का विचार पीछे रह जाता है। इस तरह निर्माण का काम भी एक शुद्ध काम बन जाता है, लेकिन वैचारिक दृष्टि से एक बड़ी रास्ता इन पाँच हजार ग्रामदानी गाँवों में हम लोगों को मिल सकता है। और सारे गाँव का अपने पाँव पर खड़े रहने की प्रेरणा इस काम में से कैसे मिले, इसकी खोज आज जहाँ-जहाँ निर्माण काम चल रहा है वहाँ हो भी रही है। उसका पूरा रास्ता हमें मिला ही है, ऐसा नहीं, पर भविष्य उज्ज्वल है। ग्रामदानी गाँवों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने संगठन इस तरह बनायें, जिससे कि दूसरे गाँवों को एक उदाहरण मिल सके। जिस उदाहरण को सामने रख कर दूसरे गाँव आगे बढ़ सकें। बावजूद इस सारी परिस्थिति के इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम वैचारिक दृष्टि से एक बहुत लम्बा रास्ता तय करके आगे बढ़ आये हैं। यहाँ से हम सारे निर्माण कार्य की दिशा बदल सकते हैं। हमारे कार्यक्रम को आखिर कार सर्विस कोआपरेटिव, कोआपरेटिव फार्मिंग, सीलिंग आदि के रूप में देश के लगभग सभी विचारवान लोगों ने मान लिया है, यह हमारी बहुत बड़ी सफलता है। गाँव का काम कैसे चले, इसका शास्त्र हमने अवश्य विकसित किया है।

आज जो निर्माण-काम हो रहा है, वह प्राथमिक अवस्था में है। उसके कुछ नतीजे देश के सामने पेश करने की आज परिस्थिति नहीं है। आज जो लोगों में एक आम धारणा पैदा हुई है कि धीरे धीरे आन्दोलन का प्रभाव कम होता जा रहा है। उसका कारण यह है कि जो एक सर्वांगीण चीज थी उसको उस दृष्टि से देखने के बदले एक एक पहलू से हमने देखना शुरू किया। उससे इस आन्दोलन को क्षति पहुँची है। यदि हमारा दिमाग और विचार साफ रहा और भूदान जो हमारे आन्दोलन की नींव थी उसको ही पाँच लाख देहातों में प्रचार करने का काम हम करते और भूदान तब तक चलने वाला है जब तक गाँव में भूमिहीन को जमीन नहीं मिलती है इस विचार को ही देश में स्थायी विचार के रूप में हम आगे ले जाते तो संभव है कि आन्दोलन एक आईना का धारण कर लेता और यह ग्रामदान और उसके साथ-साथ और दूसरे विचार व दूसरे कार्यक्रम देश के सामने आते तो उनको भी गति मिलती।

यदि हम अब भी इस बारे में नयी योजना चाहते हैं तो हमें अपने एक अर्सें से समस्या का हल ढूँढ़ कर देश के सामने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी होगी। जब तक हम जमीन का मसला हल नहीं करेंगे, तब तक दूसरा कोई मसला हल होने वाला नहीं है। इसलिए इस दिन से हमें यह तय करना चाहिए कि हम इसी बीच में जमीन की समस्या हल करने का प्रयत्न करेंगे।

● ● ●

भगवान ने मनुष्य के लिए हवा, पानी, मिट्टी सब दिया है, पर खाना भी मनुष्य को जरूरत के हिसाब से मिलना चाहिए। हिन्दुस्तान में इस बात की अहमियत को हमने अभी महसूस नहीं किया है। हम वर्गविहीन समाज बनाने की बात करते हैं, लेकिन हमारे लिए घी-दूध चाहिए, दूसरों के लिए डालडा और तीसरों के लिए चाय। यह 'बैलान्स्ड डायट' नहीं है।

आज देहातों में मोटर जाती है और वहाँ का सारा दूध इकट्ठा करके बेचने के लिए शहरों में ले आती है। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या गाँव में बच्चे नहीं हैं, जिन्हें दूध चाहिए? क्या गाँव के बच्चों को दूध की आवश्यकता नहीं होती? हम लोगों ने इस चीज को अभी समझा नहीं और 'बैलान्स्ड डायट' की बातें करते हैं। लोग कोढ़ियों को महारोगी कहते हैं, पर 'महारोगी' तो वे हैं, जिनको कि गरीबों को देख कर नहीं दिखता।

—आर्यनायकम्

आन्दोलन की असफलता विनोबा की असफलता नहीं,

बल्कि वह जनशक्ति की असफलता है !

राज्यशक्ति से नहीं, लोकशक्ति से राष्ट्र बनेगा।

सर्वोदय-सम्मेलन के खुले अधिवेशन में श्री जयप्रकाशजी का भाषण

यह निःसंदेह है कि आज राजनीति का बोलबाला अपने देश में है और सबका ध्यान राजनीति की तरफ है। प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू की तरफ, यशवन्तराव चह्वाण या कांग्रेस पक्ष की तरफ है, जिसके सभापति हम सबके साथ हैं—श्री संजीव रेड्डी और भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ढेबर भाई भी हैं, जिनका एक पैर राजनीति में है और दूसरा लोकनीति में है! बहुत सुन्दर है। ये समन्वय साधते हैं। हममें भी कुछ भाई ऐसे हैं। शायद पक्षपात लगे कहने में, लेकिन आप सबकी तरफ से मैं जरूर यह आशा व्यक्त करना चाहता हूँ कि श्री ढेबर भाई के दोनों ही पैर हमारे साथ लोकनीति में आ जायँ। [हर्षध्वनि]

यह परिस्थिति है अपने देश की शासन व्यवस्था की। जो नागरिक यहाँ बैठे हैं, उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया के इतिहास में और आज के वर्तमान जगत् में ऐसी कोई मिसाल नजर आती है। क्या किसी देश का विकास केवल राजनीति के द्वारा हुआ है? इस पर अगर आप गम्भीरता से विचार करेंगे, कुछ अध्ययन करेंगे, कुछ नजर दौड़ायेंगे, तो बिलकुल स्पष्ट हो जायगा आपके लिए कि ऐसी कोई भी मिसाल नहीं है। यह हो नहीं सकता, हो नहीं रहा है। चाहे राज्य की व्यवस्था किसी भी प्रकार की हो, कैसी भी हो—लोकशाही हो, तानाशाही हो या और कोई शाही हो—कोई भी राज्य अकेला अपने सामर्थ्य से, अपने साधनों पर यह काम सम्पन्न नहीं कर सकता।

स्वराज्य हो गया, तो क्या हो गया? क्या पंडित जवाहरलाल नेहरू मुँह में लड्डू डालेंगे? राजगद्दी पर बैठ कर पंडित जवाहरलाल क्या ज्यादा कर सकते हैं? वह व्यक्ति हमारे नेता हैं, जो नेतृत्व कर रहे हैं। कोई भी वहाँ बैठें—महात्मा गांधी और विनोबा बैठें या आप वहाँ बैठें—तो क्या करेंगे?

कितना पैसा है आपके पास? कितने साधन हैं? कितनी शक्ति है? हिन्दुस्तान की ३६ करोड़ जनता हाथ पर हाथ दिये बैठी रहे कि राजनीति हमें लड्डू देगी, बगैर संगठन के, बगैर लोक शक्ति के निर्माण के यदि दिल्ली के तख्त पर बैठ गये, तो क्या कर लेंगे? जो महत्व का काम है, वह है जनशक्ति का निर्माण करना। यह जन शक्ति का निर्माण कैसे होगा? इसका एक जवाब नहीं है। लेकिन यह समझना चाहिए कि लोक शक्ति का निर्माण किया जाय। आज जो विनोबा का आन्दोलन चल रहा है, उसका एकमात्र उद्देश्य है जन शक्ति का निर्माण। यहाँ लोकसभा में बैठे हैं, चन्द सवाल पूछते हैं—इससे क्या होता है? और फिर हमें लोग पूछते हैं कि 'जे० पी०, आप राजनीति छोड़ कर क्यों चले गये हैं?' लेकिन मैं कहना यह चाहता हूँ कि जनता में आज कितनी शक्ति है, इसकी प्रतीति हमें होनी चाहिए। हम क्या नहीं कर सकते? आज हम हिमालय को भी तोड़ सकते हैं—यह विश्वास जनता में पैदा हो, इसलिए यह आन्दोलन है—लोकशक्ति का, लोकनीति का।

लोक-नीति और राजनीति में क्या अन्तर है? जो सीधा-सादा फर्क है, वह यह है कि राजनीति कहती है कि मैं राज्य करूँगी। मुझे सत्ता दो। जो राजनैतिक लोग हैं, वे कहते हैं कि हम राज करेंगे। कानून बनायेंगे, स्कूल खोलेंगे, सड़क बनायेंगे, अस्पताल खोलेंगे—सब कुछ करेंगे। और लोकनीति क्या कहती है? वह कहती है कि लोग राज करेंगे। सब काम लोग करें। हम काम नहीं करेंगे। हम तुम्हारी सेवा करेंगे। तुम्हारे साथ रहेंगे। तुम्हारी मदद करेंगे। लेकिन सारा काम तुम करो, हम नहीं करेंगे।

इसमें कोई शक नहीं है कि आज देश को जो नुकसान हो रहा है, वह आज राजनीति और राजनैतिक पक्षों का जो रवैया है, उसकी वजह से हो रहा है। ये जनता के पास जाकर यह कहते हैं कि बस, तुम्हारा काम सिर्फ यह है कि तुम हमारा समर्थन करो, हमारे पक्षों को वोट दो। बाकी सब काम हम करेंगे। इस रवैये से जनता निष्क्रिय हो जाती है। जो अभिक्रम है जनता का वह पैदा नहीं हो पाता। फिर जो सत्तारूढ़ पक्ष है, उसके विरोधी क्या कहते हैं जनता को? वे कहते हैं कि तुम इस तरह से रो रहे हो, भरपेट खाना भी नहीं मिलता, बेकारी की चक्की में फँसे जा रहे हो। इसके लिए जिम्मेदार कौन है? तुम स्वयं इसके जिम्मेदार हो, क्योंकि राज्य की बागडोर तुमने गलत लोगों को सौंप दी है। अब की बार राज्य हम पर सौंपो। हमें अपने वोट दो, तो हम राज्य में दूध की नदियाँ बहा देंगे!

राजनीति को जो पार्ट अदा करना चाहिए, वह करे। लेकिन लोगों में इस तरह के भाव नहीं लाने चाहिए। इससे आज जन-मानस ऐसा बना है कि जनता नागरिकता की जिम्मेदारी ओढ़ने को तैयार नहीं है। हमारी सबकी जिम्मेदारी लेकर पंडित नेहरू दिल्ली के तख्त पर बैठ जायँ, यह लोकतन्त्र नहीं है। जब लोग मुझे कहते हैं कि आन्दोलन ठप हो गया है, तब मैं कहता हूँ, तुम ठप हो गये हो। तुममें राष्ट्र के प्रति प्रेम नहीं है। तुममें बुद्धि नहीं है, विचार नहीं है। तुम चुपचाप बैठे हो, आलस्य में डूबे हो, हम मुट्ठी भर लोग तुम्हारी आँखें खोलना चाहते हैं।

आज भारत का दुनिया के किसी भी देश में जो आदर है, वह किसलिए? क्या उसका आदर इसलिए है कि हिन्दुस्तान में भाखरा नांगल बना है या भिलाई प्लांट है? इसके लिए उसका आदर नहीं है। ऐसी तो कई चीजें हैं विदेशों में। भारत का आदर इसलिए है कि यह गांधीजी का देश है, जिसके कदमों पर चलने को दुनिया उत्सुक है। अलबामा, अफ्रिका और योरप के देशों में गांधीजी के लिए लोग कितने पागल बने हैं और यह हमारा राष्ट्र देखिये, इस धर्मा जिले ने कितना काम किया है? यह हमारा दुर्भाग्य है कि इतना सौभाग्य होते हुए भी कि गांधीजी ने यहाँ तप किया, उनसे सम्पर्क हुआ, उनका उपदेश सुना और फिर भी कुछ काम नहीं कर पाये अब तक। एक ऐसे व्यक्ति का लाभ मिला है, जिसके हाथ में सारी दुनिया की राजनीति थी। मैं कहना चाहता हूँ कि एक महान देश का भाग्य और मानव-समाज का भविष्य अहिंसा में छिपा हुआ है। जिस हद तक अहिंसा का विकास होगा उस हद तक हमारा मानव समाज आगे बढ़ सकेगा। हमारे उस सौभाग्य को हम भूल गये हैं। इतना अभागा देश दुनिया में कोई नहीं होगा। बारह वर्ष अगर गांधीजी के रास्ते पर यह देश चला होता, तो वह कितना आगे बढ़ चुका होता, इसका कुछ ठिकाना नहीं है।

कभी-कभी भावों से मेरा हृदय भर आता है। जब गांधीजी थे, तब उनके चरणों में मैं सीख सकता था, लेकिन वह नहीं सीखा। उस वक्त मैं मार्क्सवादी था और समझता था कि इसके आगे और कोई चीज दुनिया में नहीं है। काश, उसी समय मैं गांधीजी के चरणों में बैठ कर कुछ सीखने का प्रयत्न करता!

राष्ट्र-निर्माण का जो सबसे बुनियादी काम है, वह सर्वोदय-आन्दोलन और सर्व सेवा संघ करने का प्रयास कर रहा है। हम देखते हैं कि हमारा आन्दोलन बढ़ नहीं रहा है, वह जन आन्दोलन नहीं हो रहा है। यह तो जनता का काम है। जनता को हमें उठाना चाहिए। दुःख की बात यह है कि हमारी आँखें आज बन्द हैं! बाहर से भगवान भी गुजर जाय, तो भी होश नहीं है कि दर्शन हो जाय। इस तरह की बेहोशी आज देश में छायी हुई है। इसको मिटाने के लिए यह सारा आन्दोलन चल रहा है।

हमारे अस्सी करोड़ हाथ हैं, इतना बड़ा आधार है। संसार में ऐसी कोई पूँजी नहीं है, जो बिना श्रम से पैदा हुई हो और श्रम-शक्ति हमारे पास भरी पड़ी है। सब कुछ हम कर सकते हैं, सिर्फ समझने की जरूरत है। सबके दिल जुड़ जाने की जरूरत है। आज विनोबा आपके दिलों को जोड़ना चाहते हैं।

एक घटना का जिक्र आम सभा में मैं किया करता हूँ। एक बार पटना से मैं आश्रम जा रहा था। साथ में जापान के एक बन्धु थे। जीप से जा रहे थे। पचास-साठ मील गये। उन्होंने कहा "जे० पी०, आप तो कहते थे कि भारत अत्यन्त गरीब देश है!" हमने कहा कि "क्या है आपको? कौनसा गाँव मिला, जहाँ आपको अमीरी नजर आयी?" "मैं नहीं मानता कि आपका देश गरीब है", उन्होंने कहा, "यहाँ के लोग तो बहुत सुखी हैं। जिस सड़क के किनारे से हम लोग गुजरे, वहाँ देखा कि लोग बैठे हैं चुपचाप। कोई दालान में बैठा है, कोई पेड़ के नीचे बैठा है, कोई हुक्का पी रहा है, कोई खटिया पर सो रहा है। ये लोग दिन में भी बैठे हैं, तो खाने का काफी इन्तजाम होगा। जापान में जाकर देखें, तो आपको नजर आयेगा कि कोई आदमी दिन को बैठा नहीं है।" इस पर मुझे शर्म आयी। मैंने कहा कि "बेकारी की समस्या है।" तो उन्होंने कहा कि "आपको याद नहीं कि जहाँ हम पानी पी रहे थे, कुएँ पर वहाँ पर बहुत गंदगी थी। उसे लोग साफ क्यों नहीं करते, कम्पोस्ट क्यों नहीं बनाते? तो बेकारी की समस्या कहाँ है?" क्या जवाब है हमारे पास इसका? कोई काम नहीं है, यह कहना आलस्य है। काम को पैदा करना चाहिए।

महावीर-जयन्ती, ९ अप्रैल, के अवसर पर

महावीर के काम को आगे बढ़ायें

बनारस के टाउनहाल की सार्वजनिक सभा में श्री शंकरराव देव का भाषण

आज भगवान् महावीर का जन्म-दिवस है। वे एक महान धर्म के महान समर्थक थे। उन्होंने समाज में इस तरह की परिस्थितियों का निर्माण किया, कि व्यक्ति संघ के रूप में अहिंसा और धर्म की उपासना कर सके। उस जमाने की परिस्थितियों में, जब कि धर्म निश्चित व्यक्तिगत साधना की चीज बन गया था, उसे सामूहिक रूप देना सचमुच बहुत बड़ी बात थी। व्यक्ति अकेला ही नहीं, बल्कि कुछ व्यक्तियों का समूह मिल कर धर्म की साधना करे, यह सामूहिक साधना का स्वरूप हुआ।

लेकिन अहिंसा का विकास निरन्तर होता ही रहना चाहिए। महावीर की अथवा बुद्ध की अहिंसा केवल संघ में ही बँध गयी, यानी अहिंसा का विकास संघ की मर्यादा में रुक गया। उसका स्रोत सामाजिक स्वरूप धारण न कर सका। अनिवार्य हिंसा के नाम पर समाज को हिंसा की छूट दी गयी और पूर्ण अहिंसा का पालन करने वाले भिक्षुओं का संघ अलग बन गया। ये भिक्षु स्वयं हिंसा नहीं करते, लेकिन समाज जो हिंसा करता था, उसका उपयोग स्वयं के लिए अवश्य कर लेते। खेती करना हिंसा है और भोजन पकाना भी हिंसा है, इसलिए भिक्षु-समाज उत्पादन नहीं करेगा, न खाना पकायेगा। लेकिन जो गृहस्थ-समाज है, उस पर यह जिम्मेदारी है कि ठीक १२ बजे भिक्षुओं के भोजन की व्यवस्था हो जाय। यह कैसी विडम्बना है! स्वयं हिंसा न करना, लेकिन हिंसा के परिणामों का उपभोग करना, फिर भी अहिंसक बने रहने का दावा करना, यह चिन्तन का असंतुलन नहीं, तो और क्या है? धर्म ने समाज की समस्याओं से मुँह मोड़ लिया। उसने व्यक्ति को केवल निर्वाण या मोक्ष का रास्ता बताया। जीवन की आधारशिला अर्थ और काम पर टिकी हुई है। लेकिन धर्म ने इन दोनों विषयों पर मौन धारण कर लिया।

जीवन की चुनौती मोक्ष या निर्वाण नहीं, बल्कि जीवन की चुनौती अर्थ और काम है। आदमी मोक्ष के बिना रह सकता है, जी सकता है, परन्तु रोटी के बिना, कपड़े के बिना, आवास के बिना जी नहीं सकता। उस सम्बन्ध में जब धर्म चुप रहा, तब मोक्ष और संसार के बीच एक गहरी दीवार खड़ी हो गयी। आदमी मन्दिर में जाकर पूजा तथा आरती करके, भिक्षुओं को नमस्कार करके उन्हें भिक्षा देकर के यह मानने लगा कि वह निर्वाण का अधिकारी हो गया है, किन्तु दूकान में बैठ कर उसे झूठ बोलना है, चोरी करना है और हर सम्भव उपाय से अपने लिए अर्थोपार्जन करना है, क्योंकि अहिंसात्मक ढंग से अर्थोपार्जन कैसे हो, काम-तृप्ति कैसे हो, यह धर्म नहीं बताता। इससे होता यह है कि धर्म के उपदेशक दूकान पर किये जाने वाले काम की निन्दा करते हैं और कहते हैं कि यह पापकारी है, हम इन कामों को नहीं करेंगे। ठीक उसी तरह, जैसे दो भाई भाई हों, एक भाई दूकान पर बैठता हो और दूसरा घर में रहता हो, दूसरा भाई पहले से कहे कि तुम दूकान में बैठते हो, वहाँ असत्य का व्यवहार करते हो, यह पाप है, मैं यह पाप न करूँगा। लेकिन दूकान की आमदनी के घर में आते ही वह उसका उपभोग शुरू कर देता हो। यही हालत भिक्षु संघ की और समाज की है। भिक्षुओं के भरण-पोषण की सारी जिम्मेदारी समाज पर है। अर्थोपार्जन के बारे में भिक्षु चुप हैं।

हिन्दू धर्म ने चार आश्रम गिनाये हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इनमें से केवल एक गृहस्थ-आश्रम ही ऐसा है, जो उत्पादन करता है। बाकी तीनों आश्रम वाले उत्पादन में कोई हिस्सा नहीं लेते, केवल उपभोग करते हैं। अब सोचने की बात यह है कि एक आदमी को अगर चार आदमियों के लिए पैदा करना पड़े, तो उसे कितनी मुसीबत होगी! ये मठ और मन्दिर क्यों नहीं इस विषय का अनुसन्धान करने की प्रयोगशाला हों? आज मठों और मन्दिरों में बसने वाले भिक्षु लोग न तो मानव हैं, न जानवर। मैं नहीं कह सकता कि वे क्या हैं! क्योंकि मानव सामाजिक प्राणी होता है। पर इन साधुओं का समाज की दैनंदिन समस्याओं के साथ कोई संबंध नहीं आता।

हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि इस समस्या का हल धर्म ने अब तक नहीं दिया है। आज महावीर-जयन्ती के इस अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि अहिंसा और धर्म का सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में हम प्रयोग करें और इस बात की खोज करें कि अहिंसक उपायों से शासन चलाना संभव है या नहीं तथा अहिंसात्मक उपायों से अर्थोपार्जन हो सकता है या नहीं? अनिवार्य हिंसा के नाम पर इस प्रश्न से मुँह मोड़ लेना या तो पलायन है या असफलता है, जो व्यक्ति धर्म को सामाजिक कार्यों से अथवा राजनैतिक कार्यों से अलग समझता है तथा धर्म के रास्ते को या निर्वाण के रास्ते को समाज या संसार के रास्ते से भिन्न मानता है, उसने या तो धर्म को समझा ही नहीं है या उसका धर्म बहुत ही दकियानूस धर्म है। हमें उस धर्म का अनुसन्धान करना है, जो धर्म राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का हल पेश कर सके।

यदि महावीर स्वामी जैसे क्रान्तिकारी पुरुष के जन्मदिन के अवसर पर हम इस तरह का संकल्प लें और महावीर ने जिस काम को प्रारम्भ किया, उस काम को विश्वव्यापक बनाने का काम आरम्भ करें, तो उनकी जयन्ती मनाना वास्तव में सफल होगा।

महावीर तथा बुद्ध ने जो काम आरंभ किया था, उस काम को महात्मा गांधी ने आगे बढ़ाया, बुद्ध और महावीर ने समाज में एक ऐसा वातावरण बनाया कि अहिंसा की साधना कुछ व्यक्ति मिल कर भी कर सकते हैं। गांधीजी ने उसी सूत्र को व्यापक बना कर कहा कि अहिंसा की साधना सारा विश्व कर सकता है और अहिंसा के माध्यम से सारा विश्व बदला जा सकता है। धर्म को, चाहे वह बौद्ध, वैष्णव, जैन, ईसाई या दूसरे किसी भी नाम से पुकारा जाता हो, अब यह क्रान्तिकारी नारा स्वीकार करना होगा—यदि वह क्रान्तिकारी नहीं बनेगा, तो उसे स्वयं मिटना होगा, क्योंकि विज्ञान ने अहिंसा को अनिवार्य बना दिया है। यदि सारा संसार अहिंसा के मार्ग पर नहीं चलेगा, तो उसे सर्वनाश के गर्त की ओर जाना होगा। अतः जो काम धर्म नहीं कर पाया, उसे विज्ञान करेगा। फिर क्यों न धर्म को अपना स्वरूप क्रान्तिकारी बनाना चाहिए।

विज्ञान आज सारे संसार को जोड़ रहा है, लेकिन धर्म सारे संसार को तोड़ने का काम कर रहा है। अमेरिका और हिन्दुस्तान के आदमी को विज्ञान ने नजदीक ला दिया है, लेकिन पास पास बैठे हुए हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे से बहुत दूर हैं। इस तरह के भेदभाव पर आधारित धर्म का भविष्य उज्ज्वल नहीं है, यह कटु सत्य हम जितना जल्दी समझ सकेंगे उतना ही हमें अधिक लाभ होगा। ● ●

सर्व सेवा संघ के अधिवेशन और सर्वोदय-सम्मेलन की चर्चा में कुछ वक्ताओं के भाषणों का सार या जिस भाव पर उन्होंने जोर दिया वह अब एक-एक शब्द में अगर व्यक्त करना हो तो नीचे लिखे अनुसार किया जा सकता है :

श्री आर. केथान	—	'पोटेन्शियेलिटी'—सम्भावना
श्री अण्णासाहब	—	विज्ञान
श्री शंकररावजी	—	समर्पण
श्री जयप्रकाशजी	—	जनशक्ति
श्री नारायण देसाई	—	विवेक
श्री सिद्धराजजी	—	ग्रामस्वराज्य
श्री जी. रामचंद्रन	—	राष्ट्र का फौजीकरण
श्री धीरेन्द्रभाई	—	स्याद्वाद

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० ४२८५
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,५०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,५००   एक प्रति १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ५)

मानव मात्र को स्वतंत्रता से जीने का हक है!

तिब्बत तथा उपनिवेशवाद का सवाल मानवीय अधिकारों का सवाल है

श्री जयप्रकाशजी की अध्यक्षता में अफ्रेशियाई तिब्बत-सम्मेलन

निर्मला देशपांडे

जिसने अपने-पराये का भेद मिटाया उस महात्मा के लिए परपीड़ा अपनी ही पीड़ा बन जाती है। कहा जाता है कि किसी ने भैंसे पर प्रहार किया तो संत ज्ञानेश्वर की पीठ पर उसका निशान पड़ा। आज तक यह अनुभूति महात्माओं की मिलकियत रही। लेकिन अब जमाना आया है कि जब सामान्य मानव को भी उस अनुभूति का स्पर्श हो रहा है। परिवारग्रस्त और तरह-तरह के संकटों से ग्रस्त मानव के मन में भी आज परपीड़ा से न सिर्फ अनुभूति, बल्कि कृति का रूप लेने वाली करुणा पैदा हो रही है।

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

वाराणसी, शुक्रवार २२ अप्रैल '६० वर्ष ६ : अंक २९

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

नई दिल्ली में 'विज्ञान-भवन' के मंच पर भिन्न-भिन्न मानव-समूहों के प्रतिनिधियों के मुख से वही करुणा की ध्वनि सुनाई दे रही थी। 'एफ्रोएशियन कन्वेन्शन ऑन टिबेट' का जलसा चल रहा था। कृष्णवर्ण अफ्रिका वाला उठ खड़ा हुआ और उसने तिब्बतियों के दुःखों के साथ समवेदना प्रकट की। उस पर भी कुछ वैसी ही गुजर रही थी और 'घायल की गत घायल जाने' के अनुसार वह कह रहा था कि मानव को मानवीय अधिकार हासिल होने ही चाहिए। पश्चिम एशिया के टर्की और लेबनान के प्रतिनिधियों ने भी उसी स्वर में कहा कि अन्याय की छूत तेजी से फैली है, इसलिए दुनिया में कहीं भी अन्याय हो तो उसके खिलाफ आवाज उठाना हर मानव का धर्म है। जार्डन के प्रतिनिधि ने कुरान शरीफ का बोध वाक्य सुनाया, जिसमें पैगम्बर ने कहा है कि "तुम किसी गलती करने वाले की मदद करना चाहते हो तो उसे गलत रास्ते से हटाने से ही वैसा कर सकेंगे।" जापान के भाई ने कहा, हमें स्वतन्त्रता की रक्षा सर्वत्र करनी है। इंडोनेशिया वाले भाई को उस जमाने का स्मरण हुआ, जब इंडोनेशिया को स्वतन्त्रता के लिए एशिया भर के मुल्कों ने भारत के नेतृत्व में आवाज उठायी थी। उसने आशा प्रकट की कि उसी भारत के नेतृत्व में तिब्बत जैसे पीड़ित राष्ट्रों के दुःख दूर करने का काम होगा। मलाया और बर्मा के प्रतिनिधियों ने दरेसी 'चीन' की लाल हुकूमत की करतूतों से सबको आगाह करते हुए कहा कि हम लाल और सफेद दोनों किस्म के उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ना चाहते हैं। सिलोनवाले ने जोश के साथ कहा कि जो राष्ट्र पर होने वाले अन्याय का प्रतिकार नहीं करेगा, वह स्वयं अपनी स्वतन्त्रता भी खो बैठेगा। पाकिस्तान के भाई ने भी जयप्रकाशजी के नेतृत्व का गौरवपूर्ण उल्लेख करते तिब्बत के साथ सहानुभूति प्रकट की।

इटली के चीनी प्रतिनिधि के भाषण में वेदना थी, ग्लानि थी, अंत:करण का संशोधन था। वह बोल रहा था—"मेरा दिल टूट रहा है, क्योंकि मैं यहाँ खड़ा हूँ, मेरे चीन की करतूत की निन्दा करने के लिए। अन्याय अन्याय ही है, चाहे वह हमारे अपनों ने ही क्यों न किया हो। लेकिन मैं आपसे अर्ज करना चाहता हूँ कि यह चीनी साम्यवादियों का अपराध है, चीन का नहीं। 'हम चाहते हैं कि तिब्बत को स्वयनिर्णय का हक हासिल हो।"

मेरे मानस-पटल पर चीन के पाँच हजार साल के इतिहास की चित्ररेखा दिखाई दे रही थी। चीन को अपनी सभ्यता पर गर्व था, क्योंकि उसी सभ्यता ने सब आक्रामकों को जीत लिया था। उस प्राचीन सभ्यता की पहली बार हार हुई, जब पश्चिम के विज्ञान और नव विचार से उसका मुकाबला हुआ था। उस तिब्बत की सभ्यता और बुद्ध धर्म के सारे दर्शन की भी हार हुई थी। क्या इतिहास चक्र की गति में यह सब अपरिहार्य था? यह आवश्यक भी होगा। अब कभी-कभी इतिहास में अन्याय, असफलता, दुःख गुरु बन कर आते हैं।

श्री जयप्रकाशजी के विस्तृत भाषण में एक अति प्राचीन, लेकिन फिर भी नवीन ध्वनि थी—"हम अन्याय का प्रतिकार करना चाहते हैं, अन्याय करने वाले के प्रति पूरा प्रेम रख कर। चीनियों के प्रति मेरे मन में जरा भी प्रतिकूल भावना नहीं है। हम चाहते हैं कि तिब्बतियों को अपने भविष्य के निर्णय का अधिकार मिले, उनके दुःख दूर हों।" भाषण के अन्त में उन्होंने 'जय जगत्' का उद्घोष करते हुए सूचित किया कि कोई ऐसा भी तरीका हो सकता है, जिससे तिब्बत और चीन दोनों की जान होगी।

अलावा अफ्रिका तथा आस्ट्रिया के अठारह राष्ट्रों के प्रतिनिधि, लोकप्रतिनिधि-सरकारों के प्रतिनिधि नहीं—उपस्थित थे, जिनमें इंडोनेशिया के भूतपूर्व विदेश मंत्री, लेबनान के भूतपूर्व प्रेसीडेंट, चायनीज तुर्किस्तान के भूतपूर्व गवर्नर जनरल आदि थे। सभी प्रतिनिधियों का अपने-अपने देश के समाज जीवन में विशेष स्थान था। इस कन्वेन्शन की यह विशेषता

अन्याय का प्रतिकार अहिंसा तथा शान्तिमय उपायों से किया जाय

नई दिल्ली में ता० ९, १० और ११ अप्रैल को श्री जयप्रकाशजी की अध्यक्षता में 'एफ्रो एशियन कन्वेन्शन' सम्पन्न हुआ। खुले अधिवेशन का आरंभ तिब्बती लामाओं की प्रार्थना से हुआ। फिर दलाई लामा का संदेश सुनाया गया, जिसमें उन्होंने आशा प्रकट की कि तिब्बत का मसला शांतिमय तरीके से हल होगा। श्री राजाजी ने आशीर्वचन में कहा कि "यह जरूरी नहीं कि अन्याय के प्रतिकार के लिए युद्ध ही करना पड़ता है। जैसे ईजिप्त पर इंगलैंड ने हमला किया, लेकिन जागतिक जनमत के प्रक्षोभ का यह असर हुआ कि इंगलैंड को कदम वापस लेना पड़ा। उसी तरह तिब्बत के लिए भी दुनिया का लोकमत जाग्रत करना चाहिए।" कन्वेन्शन के लिए भारत के

थी कि यह पूर्णतया गैरसरकारी था। श्री जयप्रकाशजी ने इसका जिक्र करते हुए कहा कि इसमें भारत की लोकशाही का गौरव है।

दो दिन तक प्रतिनिधि तथा निरीक्षक तिब्बती प्रश्न के राजनैतिक पहलू, उसके मानवीय अधिकारों के पहलू तथा उपनिवेशवाद का प्रतिकार इन तीन विभागों की गोष्ठी में बँटे और उन्होंने खुले दिल से चर्चा की। सब चर्चाओं में एक-दूसरे का दृष्टिकोण जानने की इच्छा, नजर आयी और एक दूसरे से सर्वथा भिन्न विचार रखने वालों की भी एक-दूसरे के नजदीक आने की कोशिश रही, जिसके परिणामस्वरूप सब प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुए। अन्त में केनिया के प्रतिनिधि का काउंसिल के प्रस्ताव पर पदत्याग की एक अप्रिय घटना घटी, जिसका सबको दुःख रहा। लेकिन फिर भी सारी दुनिया के मानवों में जो सहयोग प्रेरणा है, उसका विशेष दर्शन हुआ।

तिब्बत के सवाल का प्रथम स्थान रहा, फिर भी दुनिया भर में फैले हुए उपनिवेशवाद के प्रतिकार का भी अपना स्थान रहा, जैसा कि कन्वेन्शन के उद्देश्यों में कहा गया था। एशिया तथा अफ्रिका की जनता उपनिवेशवाद की शिकार रही, इसलिए स्वाभाविक था उस भूभाग के प्रतिनिधि एकत्रित हुए थे, फिर भी विरोधभावना के विरोध वृत्ति नहीं दिखाई दी, बल्कि 'जय-जगत्' की दिशा में कदम उठाने की आकांक्षा ही नजर आयी।

इस अंक में

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवन सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

टिप्पणियाँ

सम्मेलन के बाद—अब आगे ?

सेवाग्राम-सम्मेलन के अवसर पर इस बार देश भर से आये हुए कार्यकर्ताओं ने आगामी वर्ष के अपने काम के बारे में काफी व्यवस्थित रूप से चिन्तन किया और कुछ निर्णय भी दिये। यों तो हर साल सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर कार्यक्रम की कुछ चर्चा होती है, पर इस बार शायद पहला मौका था, जो सबने यह महसूस किया कि एक सर्व सामान्य कार्यक्रम देश के सामने रख देने के बजाय हम खुद साल भर में कितना और क्या काम कर सकते हैं, वह हमें सोचना और निश्चित करना चाहिए। भूदान-आन्दोलन के जो विविध पहलू हैं वे सब तो हमारे सामने हैं ही, लेकिन फिर भी इस वर्ष के लिए क्रमशः किन कामों में मुख्यतः शक्ति लगाना जरूरी है, इस आधार पर कार्यक्रम की कुछ मदें तय की गयीं।

सम्मेलन समाप्त होने के बाद वहाँ पर आये हुए हजारों भाई बहन अपने प्रान्तों को वापस गये हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि हर प्रान्त में, और उसके बाद हर जिले में, जल्दी-से-जल्दी प्रमुख कार्यकर्ता इकट्ठे हों और सेवाग्राम में जो कार्यक्रम सोचा गया है, उसके प्रकाश में अपने क्षेत्र के काम की अगले साल भर के लिए व्यवस्थित योजना बनायें। अखिल भारतीय सम्मेलन में तो केवल विचार ही सम्भव था, वह इस बार गहराई से और व्यवस्थित रूप से किया गया। अब उस विचार के प्रकाश में व्यवस्थित योजना बनाना जरूरी है, जो प्रान्तीय और जिले के स्तर पर ही बन सकती है। सम्मेलन में जो कुछ हमने तय किया है, उसे अगर इस वर्ष पूरा करना है तो समय जाने न देकर हमें तुरन्त प्रान्त-प्रान्त में अपने काम की योजना बनानी चाहिए। यह खुशी की बात है कि १८ अप्रैल को "भूदान दिवस" के निमित्त का लाभ उठा कर कुछ प्रान्तों ने और कुछ जिलों ने अपने-अपने यहाँ सम्मेलनों का आयोजन किया है। आशा है, इन सम्मेलनों का लाभ वे कार्यक्रम की अगली योजना बनाने में उठायेंगे। अन्य प्रान्त भी जल्दी ही इस प्रकार के कार्यकर्ता-सम्मेलन बुला कर आगे के काम की व्यवस्थित योजना बनायें तो अच्छा होगा।

अभी उस दिन काकासाहब कालेलकर से बात हो रही थी। काकासाहब का कहना था कि हिन्दुस्तान जैसे बड़े मुल्क में अगर अखिल भारतीय सम्मेलनों का पूरा फायदा उठाना हो तो इस प्रकार के सम्मेलन से पहले हर प्रान्त में कार्यकर्ताओं को मिलना चाहिए तथा पिछले वर्ष के अपने काम के अनुभव के प्रकाश में और काम की मौजूदा स्थिति तथा समय की माँग का ध्यान रखते हुए आगामी वर्ष के लिए कार्यक्रम के बारे में विचार-विनिमय करके अपनी राय बनानी चाहिए। इस प्रकार प्रान्त प्रान्त में जो चिंतन हो, वह अखिल भारतीय सम्मेलन की चर्चाओं के लिए अच्छी और आवश्यक पूर्वतैयारी होगी। उस पूर्वतैयारी के आधार पर अखिल भारतीय सम्मेलन में जो चर्चाएँ होंगी, वे ठोस और व्यवस्थित होंगी। फिर अखिल भारतीय स्तर पर पूरे देश और आन्दोलन की स्थिति को ध्यान में रखते हुए जो कार्यक्रम तय हो, उसकी जानकारी क्षेत्र में काम करने वाले सब कार्यकर्ताओं तक पहुँचाने की दृष्टि से अखिल भारतीय सम्मेलन के बाद भी हर प्रान्त में, और फिर जिले जिले में, कार्यकर्ताओं के सम्मेलन आयोजित करने चाहिए। इन सम्मेलनों में सबको अखिल भारतीय स्तर पर हुए चिंतन और निर्णयों की जानकारी देने के साथ साथ वहाँ के फैसलों के आधार पर कार्यक्रम की अगली योजना बनायी जानी चाहिए। इस प्रकार अखिल भारतीय सम्मेलन के पहले और बाद में दोनों बार प्रांतीय और जिले के कार्यकर्ताओं को मिलना चाहिए, तब हमें व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

—सिद्धराज ढड्ढा

वितरण में कानूनी कठिनाई

पिछले सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर आगे के साल के लिए जो कार्यक्रम सोचा गया है उसमें भूदान की शेष जमीन के वितरण को मुख्य स्थान दिया गया है। यह बहुत जरूरी और उचित है कि इस साल सारी जमीन का वितरण पूरा हो जाय। कम से कम उत्तर भारत में यह काम अगले दो-तीन महीने में ही बहुत-सा समाप्त हो जाना चाहिए। क्योंकि बारिश के दिनों में वितरण का काम नहीं हो सकेगा।

पर ऐसा अनुभव आया है कि वितरण के काम में सबसे बड़ी कठिनाई उन्हीं कानूनों और नियमों के जरिये खड़ी हो रही है, जो हमने वितरण की सहूलियत के लिए बनवाये थे। इसी अंक में अन्यत्र भूदान-आन्दोलन और कानून के संबंध में श्री बद्रीप्रसाद स्वामी का एक लेख दिया गया है, जिसमें उन्होंने इस बात का विवेचन किया है। अन्य प्रान्तों में भी कार्यकर्ताओं को ऐसी कठिनाइयाँ महसूस हुई हैं, ऐसा कार्यकर्ताओं की ओर से कई बार जिक्र किया गया है।

असल में होना यह चाहिए था कि ज्यों-ज्यों जमीन मिलती गयी त्यों-त्यों उसका बँटवारा भी हो जाता। अब भी सामान्य तौर पर यही होना चाहिए कि जिस गाँव में जमीन मिली है वहाँ गाँव के लोगों को इकट्ठा करके उनके सामने और उनकी सहमति से वहीं बँटवारा कर दिया जाय और फिर सरकार उसे मान्यता दे तथा अपने रिकार्ड में दाखिल-खारिज की उचित कारवाई कर ले। आन्दोलन के शुरू के दिनों में ही पूज्य विनोबाजी ने वितरण के लिए सरल और दुरुपयोग की सम्भावना से रहित नियम बना दिये थे। सरकार द्वारा बनाये नियमों और कानूनों में थोड़ी पेचीदगी होना स्वाभाविक है, पर हमें हमारे बुनियादी नियमों के अनुसार वितरण कर देना चाहिए। कानून में दान-पत्रों के जाँच आदि के जो नियम हैं वे दुरुपयोग को रोकने की सावधानी के तौर पर हैं और उनका अपना स्थान है। पर हर मामले में अक्षरशः वह प्रक्रिया अपनायी जाय, यह जरूरी नहीं होना चाहिए। आज कानूनों का इतना जाल बिछा हुआ है कि अगर सब कानूनों का अक्षरशः पालन किया जाय तो जीवन का एक कदम भी आगे चलना मुश्किल हो जाय। इसलिए प्राप्त जमीन के मामले में जहाँ कोई पेचीदगी नहीं है वहाँ हमारे नियमों के अनुसार हमें तुरन्त वितरण कर देना चाहिए। कानून के अन्तर्गत प्रान्त प्रान्त में जो भूदान बोर्ड बने हुए हैं, वे इस वितरण को मान्य कराने की आवश्यक कारवाई करें।

कुछ जगह, खास कर बिहार में, ऐसा है कि दान पत्रों में जमीन की तफसील नहीं दी गयी है। इस तफसील को जानने के लिए तो दाता से सम्पर्क आवेगा और वह कारवाई पहले कर लेनी पड़ेगी। पर मुख्य बात यह है कि कानून की कार्रवाइयों में न उलझ कर हमें वितरण का काम जल्दी से जल्दी समाप्त कर देना चाहिए।

—सिद्धराज ढड्ढा

लोकनागरी लिपि *

भूमी-समस्या

दुनीया में अभी तक जमीन कानून से छीन कर और कत्ल करके ली गयी है। प्रेम से लेने में दील मीलते हैं। अीसके नैतीक और आध्यात्मीक मूल्यों का महत्व है। कीसीको यह ध्यान नहीं था की लोग कलीयुग में भी दान देंगे। माताओं अपने बच्चों से कहेंगी की बेटा, हमारे पास कोअी जमीन नहीं थी, अैसी हालत में कोअी परोपकारी आया और भाअीयों को समझाया और हमें यह जमीन मीली। अेक दीन की बात है, अेक नेता आकर कहने लगे की दीन भर की काफी मेहनत के बाद १५ अेकड़ जमीन मीली। तब हमने अुन्हें अेक कहानी सुनाअी की अेक मजदूर था, जो थोड़ी मजदूरी में पेट काट कर बचाता था। १५-२० साल में थोड़ा-थोड़ा बचा कर अुसने ५ अेकड़ जमीन खरीदी। मुझसे जब वह मीला, तो मैंने अुससे पूछा की क्या आपके जीवन का समाधान हो गया ? अुसने प्रत्युत्तर में 'हाँ' कहा। जीवन में समाधान अुन महापुरुषों को होता है, जो नीष्काम सेवा करते हैं। मेरे पूछने पर अुसने कहानी सुनाअी की भगवान ने अेक बेटा दीया है, अुसके लीअे ५ अेकड़ जमीन बचा ली है। तो मैंने नेता भाअी से कहा की अुसने जीवन के २२ साल की कठीन मेहनत के बाद ५ अेकड़ जमीन प्राप्त की है और आपने अेक दीन में १५ अेकड़ प्राप्त कर ली है, जीससे ३ परीवारों को जीवन प्राप्त होगा।

(मंगरोड़ी, २८-२-'६०)

* लिपि संकेत ि=ी; ी; ी, = ा =ब, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

भूदान-आन्दोलन और कानून :

बद्रीप्रसाद स्वामी, राजस्थान

भूदान-ग्रामदान में मिली जमीन के वितरण तथा व्यवस्था के बारे में कुछ कानून का होना आवश्यक है। कई प्रान्तों में भूदान-एक्ट बने हैं—ग्रामदान-एक्ट भी बनने जा रहे हैं। पर यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि नियमों का उद्देश्य काम में सहूलियत पैदा करने का है, न कि उसमें रुकावट पैदा करने का। यह जरूरी है कि नियम कम-से-कम हों, और अत्यन्त सरल हों। भूदान-ग्रामदान आन्दोलन से सम्बन्धित नियमों को यह और भी ज्यादा लागू होता है, क्योंकि इनका सम्बन्ध लाखों की तादाद में ग्रामीण लोगों से आता है।

जब से भूदान-यज्ञ का प्रारम्भ हुआ, लोगों ने हजारों बीघा जमीन स्वेच्छा से भूमिहीनों के लिए दी और प्राप्त जमीन के वितरण करने की समस्या सामने आयी। वितरण करते समय सरकारी रेकार्ड में 'दाखिल खारिज' की प्रक्रिया का प्रश्न उपस्थित हुआ। इस परिस्थिति में से भूदान में प्राप्त भूमि की व्यवस्था सम्बन्धी कुछ ऐसे नियमों की आवश्यकता हुई, जिनसे सरकारी कागजात में भूदान-भूमि के वितरण के इन्दराजात हो सकें। कई प्रान्तों में इस सम्बन्ध में भूदान-यज्ञ एक्ट व नियम पारित हुए तथा उनके अंतर्गत प्रान्त प्रान्त में विनोबाजी द्वारा मनोनीत सदस्यों के भूदान-यज्ञ बोर्ड निर्मित हुए, जो भूदान-यज्ञ में प्राप्त भूमि के वितरण की व्यवस्था करते हैं। भूदान-यज्ञ के एक्ट व नियमों के पारित होने के पूर्व अधिकतर भूमि का वितरण-कार्य सरल था। सम्बन्धित सरकारी विभागों द्वारा उस समय आवश्यक सहयोग प्राप्त होता था, उन लोगों को रेवेन्यू विभाग द्वारा कानूनी कार्यवाही के लिए कुछ मामूली आवश्यक हिदायतें जारी की हुई थीं, परन्तु भूदान यज्ञ एक्ट और नियम बनने के बाद उसमें निर्धारित पद्धति के अनुसार जाँच आदि की कार्यवाही शुरू होने के कारण वितरण में कई प्रकार की बाधाएँ उपस्थित होने लगी तथा हो रही हैं।

अधिकारियों का योग

जिन सरकारी अधिकारियों से इस कार्य का सम्बन्ध आता है उनकी इस आन्दोलन के प्रति जहाँ अनुकूल भावना है, वहाँ तो कुछ सहयोग अवश्य प्राप्त हुआ, बाकी अधिकतर जगह आज तक दाखिल-खारिज की कार्यवाहियाँ नहीं हो पायी हैं। दाखिल खारिज की कार्यवाहियाँ हो गयी हैं तो बेनामा होकर कब्जे नहीं दिये गये हैं। अधिकतर जहाँ कार्यवाहियाँ हो गयी हैं वहाँ सरकारी अधिकारियों की भावना तथा कार्यकर्ताओं के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण हो पायी हैं। तहसीलों में उसका न कोई व्यवस्थित रेकार्ड है और न अन्य अत्यधिक काम होने के कारण उनको इसको करने की फुरसत ही है। नियमानुसार सम्बन्धित अधिकारी के गाँव में उपस्थित न होने के कारण कई बार एक ही गाँव में वितरण के लिए दो-दो, तीन तीन बार जाना पड़ा है। इन सब कठिनाइयों से यह अनुभव आया कि आखिरकार व्यवस्था के नियमादि इतने पेचीदे नहीं होने चाहिए कि आन्दोलन में ही रुकावट पैदा कर दें। नियम कम-से-कम हों और उनमें भी लिखित रूप में और भी कम। और जो भी हों, वे अत्यन्त सरल और स्पष्ट तथा आन्दोलन के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुकूल हों।

भूदान की तरह ग्रामदानी गाँवों की भूमि व्यवस्था तथा वितरण व्यवस्था के लिए भी कुछ कानून व नियमों की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने इस सम्बन्ध में एक ग्रामदान अधिनियम का मसविदा भी तैयार करके भारत सरकार को प्रस्तुत किया, जिसके आधार पर भिन्न-भिन्न प्रान्त जहाँ काफी ग्रामदान हो चुके हैं उस मसविदे के आधार पर अपने-अपने प्रान्त में ग्रामदान-एक्ट पारित करने का सोच रहे हैं। राजस्थान-सरकार ने हाल ही में इस सन्दर्भ में एक विधेयक पारित किया है, जो शीघ्र ही राजस्थान में लागू होने वाला है। इसमें कोई शक नहीं कि राजस्थान सरकार ने समयानुसार सराहनीय कदम उठाया है, परन्तु हमें यह अवश्य ध्यान में रखना है कि सरकारों द्वारा पारित किये जाने वाले ग्रामदान-अधिनियम और नियम आंदोलन के मूलभूत सिद्धान्तों के विपरीत न हों, तथा काम में रुकावट पैदा करने वाले न हों।

इसमें कोई शक नहीं कि ग्रामदानी गाँवों की वितरण व्यवस्था तथा आगे के कार्य को चालू रखने के लिए अधिनियम व नियमों की आवश्यकता जरूर है, परन्तु वह आवश्यकता हमीं को है या सरकार को भी। आन्दोलन का लक्ष्य जनशक्ति द्वारा सारी व्यवस्था हो, इस ओर जाने का है। ऐसी हालत में ग्रामदान गाँवों में भूमि के वितरण और व्यवस्था के बारे में सब जगह एक-से नियम लागू नहीं हो सकते। फिर भी कुछ नियम ऐसे हो सकते हैं, जो सब जगह सामान्य होंगे, वे नियम अभी तक ग्रामदानी गाँवों में भूमि के वितरण और व्यवस्था के लिए सामान्यतया जो मान्यताएँ बन पायी हैं, उन्हीं के आधार पर कम से कम बनेंगे तो आगे होने वाले ग्रामदानों के लिए कम-से-कम बाधक होंगे। इसके अलावा ये नियम भी आन्दोलन की व्यापकता से उत्पन्न वातावरण से प्रभावित होकर सरकार को बनाने पड़ें ऐसी परिस्थिति का निर्माण हमें करना चाहिए, न कि कुछ ग्रामदान हो गये और सरकार हमारे प्रभाव में है, इसलिए जैसे-तैसे हम जो कुछ भी कल्पना कर रहे हैं, उसके अनुसार नियम व अधिनियम बनवा लें, यह उचित नहीं होगा। उससे आगे चल कर ग्रामदान-आन्दोलन के सामने कई बाधाएँ उपस्थित होंगी।

राजस्थान ग्रामदान-कानून

राजस्थान प्रान्त में हाल ही में जो ग्रामदान-एक्ट पारित किया गया है, उसमें मेरी दृष्टि से कुछ कमियाँ रह गयी हैं। एक्ट की धारा ४ के अनुसार जो किसान सरकार से सीमित अधिकार प्राप्त जमीन को ग्रामदान में देना चाहेगा उसे देने के पूर्व राजस्थान-सरकार से स्वीकृति प्राप्त करना होगा। इस स्वीकृति प्राप्त करने के लिए किसान को बार बार सरकारी अधिकारी के दरवाजे खटखटाने पड़ेंगे। होना तो यह चाहिए कि गाँव के अन्य लोग जब अपनी भूमि गाँव-समाज को अर्पित करने को तैयार हैं, तो सरकार को स्वयं आगे होकर ऐसी सीमित अधिकारों पर दी गयी जमीन को गाँव समाज को सौंप देना चाहिए। हर हालत में इसकी सारी व्यवस्था भूदान-यज्ञ बोर्ड को अपने ऊपर लेनी चाहिए, किसान पर नहीं छोड़नी चाहिए। इसी धारा के अन्तर्गत ग्रामदान के घोषणा-पत्रों की जाँच करने के लिए जो व्यवस्था की गयी है वह भी सरल होनी चाहिए और वह भी भूदान यज्ञ बोर्ड द्वारा कायम किये गये अधिकारी व प्रतिनिधियों द्वारा पूरी की जानी चाहिए, न कि तहसीलदारों द्वारा उनमें तो बोर्ड और उसके प्रतिनिधियों को समय समय पर आवश्यकतानुसार सहयोग मिलते रहना चाहिए। सम्बन्धित घोषणा पत्र भी सरल तथा कम से कम होने चाहिए।

उक्त अधिनियम की धारा ५ के अनुसार गाँव के अस्सी प्रतिशत भूमिवानों की घोषणा के अलावा गाँव के सभी वालिग निवासियों की स्पष्टतर अनिच्छा की लिखित घोषणा भी आवश्यक मानी गयी है, जो कि परिवार-भावना के खिलाफ पड़ती है। परिवार के मुखिया की स्वीकृति के बाद उसके घर से हर बालिग स्त्री-पुरुष के हस्ताक्षर कराने से हम स्वयं उनमें एक-दूसरे में अविश्वास की भावना का निर्माण करते हैं। इसके अलावा गाँवों के आपस लोगों से बार बार भिन्न-भिन्न प्रकार के फार्मों पर हस्ताक्षर कराना भी अव्यावहारिक और अविश्वास का द्योतक है।

धारा १० के अनुसार ग्रामसभा के सभापति का गाँव-सभा द्वारा अलग से चुना जाना उचित नहीं है। कार्यकारिणी द्वारा ही कार्य-सयोजन के लिए सभापति चुना जाना चाहिए। यहाँ हमें यह ध्यान रखना होगा कि हमें सबसे अधिक प्राथमिकता ग्रामसभा को, इसके बाद कार्यकारिणी को तथा सबसे कम दाम सभापति को देनी है। ऐसी हालत में सभापति का गाँव द्वारा अलग से चुना जाना ठीक नहीं है। इसके अलावा सभापति व कार्यकारिणी के चुनाव तथा उनके द्वारा किये जाने वाले निर्णय आदि के लिए सर्वानुमति के अलावा बहुमत को भी स्थान दिया है, जो हमारे मूल सिद्धांत के खिलाफ है, बहुमत की प्रथा को हमने एक बार ज्यों ही स्थान दिया त्यों ही गाँव में गुटबंदी को स्वीकार कर लिया ऐसा मानना होगा। बहुमत की बीमारी से हमें ग्रामदान गाँवों को बचाना होगा।

भूदान ग्रामदान आन्दोलन में भूमि वितरण और व्यवस्था के हेतु बने नियम व अधिनियमों के संबंध में आने वाली कुछ कठिनाइयों की ओर मैंने ध्यान आकर्षित किया है। प्रान्तों की सरकारें व सर्वोदय मंडल अपने-अपने प्रान्तों में भविष्य में पारित किये जाने वाले ग्रामदान अधिनियमों को सरल व स्पष्ट बनाने में उपर्युक्त बातों का ध्यान रखेंगे।

विनोबाजी के प्रवचन

विनोबाजी के रोजाना के प्रवचन पहले छप कर सब पत्रिकाओं का मिलते थे। विनोबाजी के [illegible] के कार्यक्रम के कारण वह सिलसिला बंद हो गया था। सर्वोदय सम्मेलन के [illegible] के अवसर पर सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति में यह तय हुआ कि फिर से ऐसी व्यवस्था चालू की जाय, जिससे कि कम-से-कम प्रत्येक भाषा की भूदान-पत्रिकाओं को विनोबाजी के प्रवचन बार बार उपलब्ध हो सकें।

इस निर्णय के अनुसार यह व्यवस्था की गयी है कि कुछ कार्यकर्ता अर्थ [illegible] बारी बारी से पूज्य विनोबाजी के साथ रहें और उनके प्रवचन तथा बातों का चयन आदि कार्बन-कापी की भेजते रहें। यहाँ से यह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उधर राष्ट्र का फौजीकरण हो रहा है
और

हम चुपचाप बैठे हैं !

जी. रामचन्द्रन् के भाषण का सारांश, जिसमें उन्होंने कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में फौजी शिक्षा के खिलाफ आवाज बुलंद की।

शांति-सेना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चीज है। इसकी पकड़ हम अभी नहीं समझ पाये हैं। हमारी शांति सेना अभी तक बहुत ही अधकचरी हालत में है। हमारी शांति-सेना का तो कहना चाहिए कि ठीक से जन्म भी नहीं हुआ है। यह ऐसा भ्रूण है, बालक है, जो हम कह नहीं सकते कि आगे कैसे बढ़ेगा और आगे इसका कैसे विकास होगा। केरल में थोड़े दिनों तक आशादेवी के साथ काम करने का मुझे मौका मिला। मैं अलग बैठ कर देखता रहा कि वे क्या करती हैं, कैसे काम चलाती हैं। उनको शांति-सेना का काम ऐसी जगह करते देख कर मेरा शिक्षण हुआ और बहुत आनन्द हुआ। आशादेवी को जीवन का असली काम अब मिल गया है और नयी तालीम के बाद वे शांति सेना में आ रही हैं, यह बहुत ही न्याययुक्त और सही चीज है। लेकिन आज हमारी शांति-सेना का देश में कोई महत्त्व नहीं है और किसीको चिन्ता नहीं है कि चीन-सीमा-संघर्ष के बारे में हमारी क्या राय है? हम क्या कहते हैं? लोग हमारी बात तभी सुनेंगे, जब हमारी शांति-सेना वास्तविकता बन जायगी।

पर जब तक हमारी शांति सेना नहीं बनती है, तब तक हमको कुछ न-कुछ काम करना चाहिए उसके लिए बैठा नहीं रहा जा सकता। दुनिया के जो शांतिवादी याने 'क्वेकर्स' हैं, वे गांधीजी के इस वाक्य का कि—अगर हिंसा और कायरता में से मुझे कोई चीज पसन्द करना हो तो मैं हिंसा पसन्द करूँगा—शायद गलत माने समझ जाते हैं या गलत माने लगा बैठते हैं। गांधीजी की दिलचस्पी हिंसा और अहिंसा में उतनी नहीं थी, जितनी कि काम करने में और नहीं करने में, सक्रियता और निष्क्रियता में थी।

> बापू का सबसे बड़ा संदेश यही था कि सक्रिय बनो, काम करो, तुरन्त करो, अभी करो, खाली मत बैठो और निर्भीकता के साथ काम करो और आगे बढ़ो।

हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए गांधीजी ने सन् '२४ में उपवास किया था और उसके पहले का एक जिक्र है। एँड्रूज का हाथ पकड़ कर एक छोकरे की तरह मैं बापू के पास गया। कुछ भाई उत्तर पश्चिम सीमाप्रान्त से आये हुए थे। वहाँ कुछ संकट आया था, उसमें भाग कर वे चले आये थे। वे रो रहे थे और अपनी छाती पीट रहे थे! वे कह रहे थे कि हमारी बहनों के साथ बलात्कार हो रहा है, हमारे मकान जलाये जा रहे हैं, बेइज्जत किये जा रहे हैं। उपवास करने वाला महात्मा बिस्तर से कूद पड़ा और कहा कि तुम लोग—पठान जिन्दा कैसे आ गये, मुझसे कहने आये हो कि ऐसा हो रहा है! तुमने अपनी जान वहीं पर क्यों नहीं खत्म कर दी, बजाय इसके कि मैं को मीलों दूर शिकायत लेकर यहाँ मेरे पास आये।

करो! करो!! करो!!!

इस तरह बापू की सबसे बड़ी खुसूसियत यह थी कि हमारे सामने जो मिशन है उसकी दृष्टि से सक्रिय रूप से निर्भयता के साथ, बहादुरी के साथ जो काम करना है उसे करें और कदम उठायें। अहिंसा की शक्ति का आविष्कार करने वाले उसके सबसे बड़े दुनिया को देने वाले महात्मा के सामने हमेशा यही चीज रहती थी कि हमको काम करना चाहिए और कोई परिस्थिति आती थी तो यह नहीं कि हम चुपचाप बैठे रहें और कायरता कबूल करें, बल्कि कुछ काम करें और वह काम अहिंसक रूप लेगा और अगर हम कहते हैं कि हम नहीं कर सकते तो वे कहते थे कि कुछ हाथ उठाओ। संदेश उनका यही था कि काम करो, जोरों से काम करो और बेधड़क होकर काम करो। और हम जो सर्व सेवा संघ वाले हैं, जो अपने को सर्वोदय-कार्यकर्ता कहते हैं, मुझे कभी-कभी लगता है कि हम सर्वोदय-कार्यकर्ता कहने के हकदार भी नहीं हैं, तो ऐसा महसूस होता है कि हमारे सामने जो सवाल आ रहे हैं, उनका हिम्मत के साथ जी जान से मुकाबला हम नहीं कर रहे हैं। बहुत ही संकोच और नम्रता के साथ मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आज जो हमारे सामने सवाल हैं उनको छोड़ रहे हैं, जो असलियत है, उससे मुँह मोड़ रहे हैं।

फौजी राष्ट्र की ओर

एक सवाल है, जिसको आपके सामने पेश करता हूँ। मुझे नहीं मालूम कि हमने इसके खिलाफ आवाज उठायी है या नहीं कि हमारे नवजवान, हमारे नवयुवक और नवयुवतियाँ कॉलेज में जो जाते हैं, उनको फौजी तालीम दी जाय। अगर किसी ने आवाज उठायी हो और दूर तक पहुँचायी हो तो मुझको इसकी जानकारी नहीं है। एक बहुत ही खतरनाक चीज का आयोजन किया जा रहा है। मुझे ताज्जुब होता है कि इनके मन में क्या है, आगे के लिए क्या सोच रहे हैं। बड़ी बेहयाई के साथ नोजवानों को फौजी अनुशासन या मिलीटरी ट्रेनिंग दी जा रही है और इस काम के लिए करोड़ों रुपया खर्च किया जा रहा है। इसको मैं कहूँगा कि हिंदुस्तान के शिक्षित समुदाय को जबर्दस्ती, नाजायज तरीके से फौज में भर्ती करने की कोशिश है। धीरे-धीरे राष्ट्र का फौजीकरण हो रहा है। हमारे युवकों के लिए शिक्षा की तरह ही सैनिक-शिक्षा भी अनिवार्य की जा रही है। और हम तथा आप यहाँ बैठे हैं और लाखों नवजवान और लाखों लड़के और लड़कियों को कॉलेज और युनिवर्सिटी में फौजी शिक्षा दी जा रही है। फौजी मन्त्रालय के एक प्रतिनिधि ने मुझसे कहा कि 'आप नहीं जानते कि हमारी पार्लियामेंट है, जो इस बात पर जोर दे रही है कि जो 'नेशनल कैडेट कोर' नवजवानों का है उसको फौजी रूप दिया जाय। आप यहाँ और वहाँ शांति सेना खड़ी करेंगे। कुछ नवजवान जो अपने विचार के पक्के हैं, वे उसमें शामिल हो जायेंगे, और बहुत धीरे-धीरे यह गाड़ी चलेगी। लेकिन इसी दौरान में इसी अरसे में सारे देश में फौजी शिक्षण लागू हो जायगा। लेकिन सवाल है कि इस समय हम क्या चीज रख कर आगे बढ़ रहे हैं? या तो हम इसका सामना करने से डरते हैं या चुपचाप 'मौन सम्मतिलक्षणम्'। हो सकता कि हम देश को आवाहन करें तो पता नहीं, कितने नवजवान हमारे उस आवाहन को स्वीकार करेंगे। फिर भी इस विषय पर हमारे दिमाग बिलकुल साफ होने चाहिए।

लेकिन यह आप तभी कर सकते हैं जब आप शांति-सेना बना लें। अगर शांति सेना नहीं बनती, तब यह काम हरगिज नहीं कर सकते। अगर शांति सेना का विकल्प आप नहीं पेश करते हैं, तब तक हम जवाहरलालजी के पास बैठ कर किसी भी गंभीर विषय पर चर्चा नहीं कर सकते। हमको विदेशी आक्रमण का मुकाबला करना पड़ेगा और उसका मुकाबला हमको अगर हम अपने प्रति सच्चे हैं और कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं है, तो अहिंसा से उसका मुकाबला करना पड़ेगा। इसलिए शांति-सेना के लिए हमें निश्चित कदम उठाना चाहिए। कोई वेतन नहीं मिलेगा, कोई प्रशिक्षण विद्यालय नहीं होंगे; बल्कि हमारा सारा रचनात्मक काम इस प्रशिक्षण की पृष्ठभूमि बनेगा। हर रचनात्मक कार्यकर्ता को कहना होगा कि मैं शांति-सैनिक हूँ। लेकिन सिर्फ यह मान लेना कि मैं शांति सैनिक हूँ, इससे काम नहीं चलने वाला है। शांति सेना अपने आप नहीं बन जायगी, हमको प्यार और विषमता दूर करने के सबब में ऐसे सवाल उठाने होंगे, उन सवालों के जरिये हमको शांति सेना को खड़ा करना होगा। इसलिए बहुत सावधानीपूर्वक हमको शांति-सेना खड़ी करनी है।

विनोबाजी तीसरी बार उत्तर प्रदेश में

विनोबाजी ने ८ अप्रैल को मेरठ जिले में प्रवेश किया। विनोबाजी का उत्तर प्रदेश में यह तीसरी बार प्रवेश है। पहली बार विनोबाजी झाँसी मथुरा होते हुए दिल्ली जाते समय अक्टूबर नवम्बर १९५१ में आये थे। ५ लाख एकड़ भूमि प्राप्त करने का पहला सामूहिक संकल्प मथुरा में ही हुआ था। उसके बाद कुछ दिन दिल्ली में बिता कर विनोबाजी ने उत्तर प्रदेश की यात्रा प्रारंभ की। मई १९५१ के पहले सप्ताह में यह यात्रा आरंभ हुई और १५-१६ दिन ही बीते थे कि मगरौठ का पहला ग्रामदान भी मिला। फिर १९५२ के अप्रैल महीने में सेवापुरी में सर्वोदय-सम्मेलन हुआ तथा उस सम्मेलन में २५ लाख एकड़ भूमि प्राप्त करने का संकल्प सर्व सेवा संघ ने किया। विनोबाजी ने भूदान आंदोलन के विकास को "ध्यानाकर्षण व निधि-निर्माण" का नाम दिया था। १२ सितम्बर १९५२ के दिन उन्होंने यहाँ से विदा ली थी।

उत्तर प्रदेश के बाद बिहार बंगाल उड़ीसा, आन्ध्र, मद्रास, केरल, मैसूर, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब, कश्मीर और हिमाचल प्रदेश की यात्रा हुई। यह पूरा जनजागृति के निमित्त धुंआधार देश भ्रमण समाप्त करके करीब करीब ७ वर्ष ७ माह के बाद फिर से विनोबाजी उत्तर प्रदेश में आये हैं। इस बार यद्यपि वे उत्तर प्रदेश का दर्शन मात्र ही करेंगे और थोड़ा समय देकर ही मध्यप्रदेश की ओर बढ़ जायेंगे, फिर भी इस अल्प समय का लाभ यहाँ के कार्यकर्ताओं को पूरा पूरा उठाना है। वैसे विनोबाजी ने अब अपना कार्यक्रम बाँधना तो छोड़ ही दिया है और वे अज्ञात-सञ्चार कर रहे हैं, इसलिए यह किसको ज्ञात है कि उ. प्र. के लोग उनको यहाँ रोक न लें और विनोबा उत्तर प्रदेश में रुक न जायँ! फिर भी समय तो सीमित ही है। उन्हें इन्दौर भी पहुँचना है।

—सतीश कुमार

बुद्धिस्वातन्त्र्य कायम रखने के लिए तालीम को--

विनोबा

आज मैं यहाँ जो मन्दिर देख कर आया, वहाँ दीवार पर भगवद्गीता के वचन लिखे हुए हैं। सैकड़ों लोग मेरे सामने मन्दिर के अन्दर आये और देवमूर्ति को नमस्कार करके चले गये। मन्दिर में जाने के समय शान्त रहना चाहिए। लेकिन वैसी तालीम हम लोगों को नहीं मिली है। जैसे म्युजियम वगैरह देखने के लिए जाते हैं, वैसी तरह हम मन्दिर में जाते हैं। कोई भी मूर्ति देखते हैं तो उसे प्रणाम करने की आदत हमारे यहाँ है ही, पर उससे चित्त पर कोई असर नहीं पड़ता। मूर्ति पर मेरी श्रद्धा तो है, मगर हममें जो जड़ श्रद्धा बैठी है, वह समाज को सोचने नहीं देती, उसे आगे नहीं बढ़ने देती। अच्छी श्रद्धा की पहचान यह है कि श्रद्धा उत्पन्न होते ही चिन्तन के लिए मनुष्य प्रेरित होता है। इसके उलटा जहाँ चिन्तन खतम हो जाता है या कुण्ठित हो जाता है, वह श्रद्धा नहीं है, मूढ़ कल्पना मात्र है। उससे थोड़ा फायदा तो होता होगा, मगर फायदे से नुकसान ज्यादह होता है। इसलिए हमारे मन्दिर में जब तक अच्छी श्रद्धा की प्रतिष्ठा नहीं होगी और हमें चिन्तन करने की प्रेरणा नहीं मिलती, तब तक मन्दिर बनाने का प्रयोजन सार्थक नहीं होगा।

हिन्दू धर्म की विशेषता

मन्दिर के चारों तरफ दीवार पर कुछ की कुछ गीता अंकित की गयी है। वह देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसका उद्देश्य एक भावना निर्माण करने का है। लेकिन यह सोचने की बात है कि हिन्दू धर्म की विशेषता यह है कि वह किसी पुस्तक पर खड़ा नहीं है। वेद, उपनिषद्, योगसूत्र, रामायण, महाभारत, योगवासिष्ठ आदि बहुत से शास्त्र संस्कृत में हैं। इसके अलावा भिन्न-भिन्न भाषाओं में भी धर्म-ग्रन्थ हैं। लेकिन हिन्दू धर्म का यह आग्रह नहीं है कि फलाना ग्रन्थ कोई मानता है तभी वह हिन्दू है, और फलाना ग्रन्थ मान्य न किया तो वह हिन्दू नहीं है। जिसको बाइबिल मान्य नहीं वह खिस्ती नहीं, जिसको कुरान कबूल नहीं वह मुसलमान नहीं। याने क्रिश्चियनों का एकमात्र ग्रन्थ बाइबिल है, मुसलमानों का एकमात्र ग्रन्थ कुरान है। लेकिन हिन्दू धर्म का एक मात्र ऐसा कोई ग्रंथ नहीं है। हिन्दू धर्म में यहाँ तक माना गया है कि जब तक मनुष्य किसी एक किताब के दायरे में कैद बना रहता है तब तक उसका विकास नहीं होता, इसलिए आखिरी स्थिति में उस किताब का भी त्याग करना होगा। हिन्दू धर्म ने यहाँ यह भी नहीं माना है कि हमको अपनी बुद्धि के खिलाफ कोई चीज कबूल करनी चाहिए। शंकराचार्य ने भाष्य में कहा है कि अग्नि अनुष्ण है, ठंडी है—ऐसा कहने वाली सौ श्रुतियाँ निकलें तो भी वह प्रमाण नहीं होगा कि अग्नि ठंडी है।

"नहि श्रुति शतमपि अग्नि अनुष्ण इति ब्रुवत् प्रामाण्यमुपैति।"

याने प्रत्यक्ष अनुभव के खिलाफ कोई भी शास्त्र-वचन मानने की जिम्मेदारी हम पर नहीं है।

विज्ञान और हिन्दू धर्म

योरप में जब विज्ञान का विकास हुआ तो धर्म और साइन्स के बीच विरोध पैदा हो गया। हिन्दू धर्म के साथ साइन्स का इस तरह का विरोध कभी नहीं हुआ। बात यह है कि वस्तु-स्थिति के साथ ज्ञान का विरोध हो ही नहीं सकता। शंकराचार्य ने 'ब्रह्मसूत्र' में कहा है—'ज्ञानं वस्तुतन्त्रं न पुरुषतन्त्रम्'। ज्ञान किसी पुरुष के हाथ में नहीं होता, वह तो वस्तुस्थिति के हाथ में होता है। अग्नि का ठंडा होना, पृथ्वी का घूमना, ये सब मेरे हाथ में नहीं हैं। हिन्दू धर्म ने हम लोगों को इस तरह की दिमागी आजादी दे रखी है। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को सारा ज्ञान समझाने के बाद आखिर कह दिया—'विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।' (गीता अ. १८ श्लो ६३) 'तुझको जो जँचता है वही कर।' इसके माने यह है कि बुद्धि की स्वतंत्रता नहीं खोनी चाहिए। इसलिए हिंदू धर्म में परस्पर विरोधी विचार भरा पड़ा है। इसलिए छह-छह दर्शन निकले। सांख्य-दर्शन निरीश्वरवादी है, फिर भी कपिलमुनि हिंदू हैं। पातंजलि ईश्वर को मानता है, वह भी हिंदू है। जैमिनी कर्म को मानता, लेकिन ईश्वर को नहीं मानता। कर्म ही फल देता है, इसलिए ईश्वर की जरूरत क्यों है, ऐसा वह मानता है, फिर भी वह हिन्दू है। बादरायण ने कहा—कर्म जड़ है, इसलिए वह फल नहीं दे सकता, इसलिए ईश्वर की जरूरत है। वह बादरायण भी हिन्दू है। इन सब के हिन्दुत्व में किसी ने भी शंका प्रकट नहीं की। उन्हीं में से वेदान्त पैदा हुआ है। इससे और आगे बढ़कर गीता कहती है—"त्रैगुण्य-विषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।" वेद त्रिगुणात्मक है, पर तू तीनों गुणों से परे हो जा। उपनिषद् कहता है—ज्ञानी जन के लिए पिता पिता नहीं रहता, माता माता नहीं रहती, लोक लोक नहीं रहते, इसी तरह "वेदा अवेदा भवन्ति"—वेद अवेद बन जाते हैं। ज्ञानी मुक्तात्मा बन जाता है। हमारे विकास की पूर्णता तब तक नहीं होगी, जब तक हम एक किताब का दायरा नहीं छोड़ेंगे। "वेदानपि संन्यसति।" नारद कहता है, आखिर वेद को भी गंगाजल में समर्पण कर दो! क्या आपको यह मालूम है कि कोई भी क्रिश्चियन बाइबिल को गंगा में अर्पण करेगा? कोई मुसलमान कुरान को गंगा में अर्पण करेगा? मैंने कश्मीर में कहा था कि मैं वेद, बाइबिल, कुरान किसी भी किताब को अपने सिर पर उठाने के लिए राजी नहीं हूँ। मैं उन सबका सार लेता हूँ। जैसे धान का छिलका निकाल कर उसके अन्दर का चावल लेते हैं, गन्ने का सिर्फ रस लेते हैं, सन्तरे की छाल उतार कर उसका बाकी का हिस्सा भी फेंक कर सिर्फ रस सेवन करते हैं। उसी तरह मैं हरएक धर्मग्रंथ का सार लेता हूँ। इस सत्व को, सार को ग्रहण करने के लिए जो अध्ययन करना पड़ता है, उसमें विवेक की जरूरत होती है उसे उर्दू में 'तमीज' कहते हैं।

हिन्दू धर्म ने यह एक बड़ी बात हमारे सामने रखी है कि दिमाग को आजाद रखना चाहिए, बुद्धि स्वातन्त्र्य रहना चाहिए। गीता कहती है—"यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके", याने जो ज्ञानी पुरुष है, उसके लिए वेद कुएँ जैसे बन जाते हैं। इसलिए मनुष्य को अपनी प्रगति जारी रखनी चाहिए। पुरानी बातें जो हमारी प्रगति में बाधा डालती हैं, उन्हें छोड़ देना चाहिए। गुरु भी अपने शिष्य को यही उपदेश देता है कि गुरुगृह में लड़का १२ साल तालीम पाता है। १२ साल के बाद वह जब गुरु से अलग होता है तब समावर्तन-विधि में गुरु उसे कहता है: "यानि अस्माकं सुचरितानि तानि उपास्यानि नो इतराणि।" हमारे सुचरित को लेना चाहिए। हमारे गलत काम को ग्रहण नहीं करना चाहिए। गुरु नहीं कहता कि हमारे सारे सब विचार मानने चाहिए। वह बार बार कहता है कि हमारे गलत कामों का अनुकरण नहीं करना चाहिए। इस तरह उस जमाने में गुरु पूर्ण दिमागी आजादी देते थे।

शिक्षा और सरकार

लेकिन इन दिनों में अपने देश में और दुनिया में एक गलत तरीका चल रहा है। आज सबसे बड़ा खतरा यह है कि तालीम सरकार के हाथ में है। सरकार का शिक्षा-विभाग जो किताबें तय करेगा, विद्यार्थी को उनको ही पढ़ना पड़ेगा। शंकराचार्य, रामानुज, नानक, कबीर के जमाने में यह नहीं था। उनके शिष्य चाहे सो पढ़ते थे और चाहे वह छोड़ सकते थे। लेकिन अब सरकार जो किताब तय करेगी वह जरूर पढ़नी होगी। फिर, अंग्रेजों के जमाने में स्वतन्त्र बुद्धि से शिक्षा के जो थोड़े से प्रयोग हमारे देश में चलते थे, स्वराज्य के बाद उनका भी क्या हाल हुआ है! रवींद्रनाथ का शान्ति-निकेतन, श्रद्धानन्द का गुरुकुल आदि अब क्या है? जैसे दूसरी संस्थाएँ चलती हैं वैसे ही वे अब मामूली संस्थाएँ बन गयी हैं। सौराष्ट्र में मैंने गुरुकुल देखा उसमें संध्या इत्यादि कुछ करते हैं, बाकी सब आखिरी ही अंग्रेजी तालीम चल रही है। वेदाभ्यास आदि कुछ नहीं है। मालवीयजी की हिन्दू युनिवर्सिटी का क्या हाल है! शान्ति-निकेतन में भी कुछ संगीत, कला वगैरह विशेष सिखाते हैं, और क्या विशेषता वहाँ है? आजादी हासिल होने के १२ साल के बाद भी हमने उस दिशा में क्या किया? पिछले दिनों केरल में शिक्षा के बारे में कुछ हेरफेर किया तो सारे देश में होहल्ला हुआ। मैंने कहा—आखिर उन्होंने किया ही क्या? आप जो करते हैं उसीको उन लोगों ने भी ग्रहण कर लिया है। आपका सूबों का टाइमटेबल भी तो ऊपर से ही लिख कर आता है कि फलाना विषय इतने घण्टे पढ़ाया जायगा। जो किताबें तय हुई हैं वे ही पढ़ायी जायेंगी। इससे बढ़कर खतरा दूसरा नहीं है। क्या यह डेमोक्रेसी है? डेमोक्रेसी तब प्रकट होगी जब तालीम मुक्त होगी। अब तालीम का जो ढाँचा बन गया है उस ढाँचे को तोड़ना होगा। उपनिषदों में जो विचार स्वातंत्र्य था वह आज नहीं है। आज तो अखबारों ने वेद का स्थान ले लिया है। हरएक पार्टी का अलग-अलग अखबार! फलानी पार्टीवाला फलाना अखबार ही पढ़ेगा। यहाँ अखबार उसके लिए प्रमाण है, चीन के बारे में हिन्दुस्तान के अखबार में पढ़ेगा और उसीको पढ़ कर चीन के बारे में हम वैसा सोचेंगे, चीन के अखबार में हिन्दुस्तान के बारे में जो लिखेंगे चीन की जनता उसीको प्रमाण मानती है। हम चीन को दूसरी बाजू देखते ही नहीं। यह सारा देख कर मैं कहता हूँ कि आज

सरकार की कैद से मुक्त करना होगा !

का आदर भी उसके बिना, विचार किये बिना नहीं मानना चाहिए। अपने दिमाग को जो जँचता है वही करना चाहिए। आज के जमाने में साइन्स इस तरह से बढ़ रहा है और दुनिया का अन्तर कम होता जा रहा है कि अगर दिमाग को मुक्त नहीं रखेंगे तो आगे के जमाने में नालायक साबित होंगे। इस जमाने में अब वस्तु भी जो तोड़ती थी वह जोड़ने वाली बनी है। जो प्रशान्त महासागर अमेरिका से जापान को तोड़ता था अब वह जापान को जोड़ता है। अमेरिका अब जापान को अपना पड़ोसी मानता है। वह १५ हजार मील का लम्बा फासला छोटा हो गया है। उसे पार करने के लिए १२-१५ घण्टे लगते हैं। इतना अन्तर जहाँ मिटने लगा है, वहाँ पुराने विचार को जैसे के तैसे लेकर बैठने से चलेगा नहीं।

युग को पहचानो

शिवाजी ने सैकड़ों किले बनवाये। आज देश की रक्षा के लिए किले बनायेंगे तो क्या देश की रक्षा होगी? उलटा उन किलों के ऊपर बम गिराना आसान होगा। इस जमाने में शिवाजी का अनुकरण करना है तो उन्होंने जो किले बनाये, उसका नहीं, बल्कि उनके पराक्रम और धर्म भावना का अनुकरण करना चाहिए। इसी तरह के विचार को सनातन धर्म कहते हैं। शास्त्र में सनातन की व्याख्या बतायी है—"सनातन नित्यनूतनः।" सनातन की व्याख्या ही है कि वह नित्यनूतन है। यह सृष्टि बदलती रहती है। धूप में, बारिश में नया-नया रूप धारण करती है। इसलिए सृष्टि सनातन है। पिता जाता है, तो पुत्र आता है, पुत्र जाता है, तो उसका पुत्र आता है। इस तरह सृष्टि बदलती रहती है। परिस्थिति देख कर जो बदल नहीं सकता, वह सनातन नहीं है।

मेरे प्यारे भाइयो! मैं चाहता हूँ कि हमारा दिमाग मुक्त बने। वह किसी मजहब, सियासत, पंथ, ग्रंथ का आश्रय न ले। उन सबको हम पढ़ें, पर आटे को जैसे छलनी से छानते हैं उसी तरह छान कर रख लें। पुराने शास्त्रों से जो छोड़ना हो विचार करके छोड़ दें। भगवद्गीता में से भी कुछ छोड़ना हो तो छोड़ें। पुराने विचार उस जमाने के लिए ठीक थे, लेकिन आज हम आगे बढ़ चुके हैं, हमारे लिए उनको पूरा का पूरा वैसा ही लेना ठीक न होगा। पुराने ऋषियों की योग्यता क्या थी, यह मैं नहीं जानता। लेकिन हमारा जमाना उस जमाने से आगे है और मैं उनका पुत्र होने के नाते उनसे छोटा हूँ, इसलिए उनके कंधे पर हूँ और उनसे ज्यादा दूर देख सकता हूँ। ऋषि कहता है "पुत्रात् इच्छेत् पराजयम्, शिष्यात् इच्छेत् पराजयम्।" पुत्र से पराजय की कामना की जाती है; शिष्य से पराजय की कामना की जाती है। क्योंकि पुत्र तथा शिष्य उनसे आगे बढ़ें यही पिता और गुरु चाहते हैं। पुराने जमाने के बड़े-से-बड़े गणितज्ञों से आज का विद्यार्थी ज्यादा जानता है, क्योंकि गणित की जो नयी-नयी खोजें हुई हैं पुराने लोगों को वह मालूम नहीं थीं।

आज का विद्यार्थी न्यूटन से भी ज्यादा गणित जानता है। पुराने जमाने में जब युधिष्ठिर जुए में हारे और द्रौपदी को दासी बनने की नौबत आयी, तब भरी सभा में द्रौपदी ने पूछा कि क्या मेरे पति हार गये, इसलिए मुझे दासी बनना पड़ेगा? उस समय भीष्म, द्रोण, विदुर आदि इस सवाल को पेचीदा समझते थे। आज के जमाने में इस केस को क्या कोई सुप्रीम कोर्ट में भेजना चाहेगा? युधिष्ठिर महाराज धर्मशील थे। उन्होंने धर्म नियम माना था कि कोई जुआ खेलने के लिए बुलाये तो ना नहीं करना चाहिए। क्या आज कोई इसको धर्म मानेगा? मनु ने स्मृति में लिखा है कि बार बार चोरी करने वाले का हाथ काट डालना चाहिए। क्या आज इस सजा को कोई कबूल करेगा?

हमारे पूर्वजों ने अच्छी-अच्छी चीजें तो दी हैं, उसके साथ कुछ गलत चीजें भी दी हैं।

बात यह है कि हर चीज में श्रेयस् और प्रेयस् होता है। अच्छी चीजें हैं वे लेनी चाहिए और बुरी चीजों को छोड़ना चाहिए और अच्छा-बुरा पहचानने का विवेक हमको हासिल करना चाहिए।

कुरुक्षेत्र,
२७।३।६०

• •

श्री धीरेन्द्र भाई का अज्ञातवास

श्री धीरेन्द्र भाई ने पूर्णिया जिले में रुपौली थाने के बरिया गाँव में बैठ कर आत्मसाधना का प्रयोग करने की योजना बनायी है। इस योजना के अनुसार ४ अप्रैल को वे खादीग्राम से विदा हुए। उन्होंने अपने इस प्रयोग को 'अज्ञातवास' कहा है। विदाई के बारे में श्री धीरेन्द्र भाई के निकटवास में रहे हुए श्री राममूर्ति भाई का एक पत्र यहाँ दिया जा रहा है। उस पत्र में राममूर्ति भाई लिखते हैं :

पूज्य धीरेन भाई यह कह कर गये, कि मैं क्रान्ति की खोज में जा रहा हूँ।

विदाई के उपलक्ष में सुबह सामूहिक श्रम रखा गया था। जिसने श्रम की साधना को ईश्वर की उपासना माना हो, उसे इस तरह के कार्यक्रम से कितना आनन्द आया होगा, हम समझ सकते हैं। दोपहर को डेढ़ बजे से पैंतालीस मिनट की सामूहिक कताई थी। उसके बाद 'श्रमभारती' की ओर से मुक्त करने का काम मेरे जिम्मे था। खड़ा हुआ तो यही बात मुँह से निकली कि अब कौन नीलकंठ हम लोगों के कुसंस्कारों और कुविचारों के विष को पीयेगा और अमृत हमें पिलायेगा! सोचता रहा कि आखिर वह कौनसी क्रान्ति है, जिसकी तलाश में श्री धीरेन्द्र भाई पूर्णिया जिले के बरिया गाँव में बैठने जा रहे हैं।

मैंने कहा कि आज तक मनुष्य ने क्रान्ति अपनी मुक्ति के लिए की है, लेकिन आज क्रान्ति को ही मुक्त करने की परिस्थिति पैदा हो गयी है। आज क्रान्ति स्वयं बन्दी हो गयी है। यह प्रतीति श्री धीरेन्द्र भाई को १९५६ में ही हो गयी थी। अगर क्रान्ति के बन्धन टूट जायँ तो वह अपनी शक्ति से सम्पन्न हो सकती है। राजा का वैभव, पुरोहित की धर्मान्धता, जाति की संकीर्णता, वर्ग और वर्ण के झगड़े, मनुष्य के अपने कुविचार और कुसंस्कार कोई-न-कोई ऐसी परिस्थिति रचते ही हैं, जो क्रान्ति को बन्दी बना लेती है, और उसे मुक्त करने के लिए मनुष्य हिंसा के विभिन्न साधनों का उपयोग करता रहता है। लेकिन क्रान्ति का विकासक्रम यह बता रहा है कि अब कानून या संघर्ष अथवा दबाव या प्रचार से क्रान्ति बन्धनमुक्त नहीं होगी। क्रान्ति की मुक्ति के लिए कोई न कोई सामाजिक, शैक्षणिक प्रक्रिया होनी चाहिए।

मनुष्य द्वारा मुक्ति की चेष्टा क्रान्ति का इतिहास है। भूख और प्यास से लेकर तरह तरह के भयों से मुक्त होने की कोशिश मनुष्य ने हमेशा की है। अज्ञात के भय से मुक्त होने के लिए उसने भगवान की सृष्टि की। शत्रु के आक्रमण से बचने के लिए उसने राजा और सरदार बनाये। जिन शक्तियों पर उसका बस नहीं चला, उनको खुश रख कर अनिष्ट से बचने के लिए उसने पुरोहित का निर्माण किया। इसी तरह अभाव से परेशान होकर उसने सेठ-साहूकार का सहारा लिया और पड़ोसों से परेशान होकर सरकार का। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इनमें से किसी भी सहारे ने मनुष्य को पूर्ण मुक्ति नहीं दी है, यद्यपि मनुष्य ने सबको एकसाथ या हर-एक को बारी बारी से ग्रहण किया है। विज्ञान ने जिस तरह विचार को भ्रम और रूढ़ि से मुक्त किया है, उसी तरह हमें [illegible] जनता के अन्दर यह प्रतीति पैदा करनी है कि तुम्हारी मुक्ति तुम्हारे ही हाथ में है।

इतने दिन के अनुभव से हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि पैसा या सरकार मनुष्य की रोटी की समस्या भले ही हल कर दे, लेकिन मनुष्य की मुक्ति जो उसकी चिरन्तन आकांक्षा है, वह नहीं दिला सकती। उसके लिए तो जनता को स्वयं निरपेक्ष और आत्मनिष्ठ पुरुषार्थ करना पड़ेगा। जनता के पुरुषार्थ में पैसा साथ और सरकार पीछे चलेगी। आज तमाम दुनिया में सरकार की भगवान से भी बड़ी शक्ति हो गयी है। विज्ञान की शक्ति को अपने हाथों में केन्द्रित करके उसने समाज के भविष्य को गिरवी रख लिया है और सरकार यह कहती है कि उसके द्वारा जनता का जो कल्याण होता है वही उसकी मुक्ति है। अगर यह बात सही है तो क्रान्ति सरकार के पैसे और योजना में बन्दी बन गयी है और करुणा सेठ-साहूकार के दरवाजे पर भिखारिनी बनी दिखाई देती है। हमारे रचनात्मक काम आज अधिनायकवाद या पराधीनता को लोकप्रिय बनाने के माध्यम बनते जा रहे हैं। मुक्ति जनता की और पैसा सेठ और सरकार का, इस मेल से मुक्ति की क्रान्ति कैसे प्रकट होगी? वास्तव में क्रान्ति बन्दी है। जन क्रान्ति का अब यही अर्थ है कि जनता जान ले कि उसे मुक्ति दिलाने वाली क्रान्ति कब से, कानून और पूँजी के हाथों में बन्दी हो गयी है। पर जनता जाने कैसे, यही तो हम सबके सामने मुख्य प्रश्न है। क्रान्ति को मुक्त कैसे किया जाय, यही समस्या है।

श्री धीरेन भाई जनता को उसकी क्रान्ति सौंपने गये हैं, क्रान्ति को सभी बाहरी शक्तियों से मुक्त करने गये हैं। शायद निधिमुक्ति का यही अर्थ है। लोकक्रान्ति लोकशक्ति से होगी और लोकशक्ति लोक-नेता के जगाये जगेगी। श्री धीरेन भाई जनता के थे, जनता में मिलने गये हैं।

सर्वोदय-पात्र

बिहार के छपरा जिले में सर्वोदय-पात्र का व्यापक प्रचार इन आश्रमों के द्वारा हो रहा है : सर्वोदय आश्रम कशिना, गांधी आश्रम ताजपुर, सर्वोदय आश्रम गोरयापुर, सर्वोदय आश्रम मैरवलिया, ब्रजकिशोर सर्वोदय आश्रम बीजनगर।

उपर्युक्त आश्रमों पर तीन-तीन, चार-चार कार्यकर्ता रह कर सर्वोदय-पात्र का प्रचार करते हैं। अक्टूबर से जनवरी तक छपरा शहर में भूदान पत्रिकाओं की बिक्री की गयी। सर्वोदय युवक-सम्मेलन का संगठन थाना के आधार पर किया जा रहा है।

एकता के नये क्षितिज

भँवरमल सिंघी

विज्ञान ने हमारे सामने जीवन का जो नया क्षितिज उद्घाटित किया है, उसके आलोक में हम एकता का निर्माण करें। उस क्षितिज की ओर चलें।'''नये भारत का आलोक इन नये क्षितिजों पर दिखाई पड़ रहा है, जिनकी ओर चलने पर ही जीवन का तेज उपलब्ध हो सकेगा।

भारतवर्ष बहुत बड़ा देश होने के कारण यहाँ एक भाग की प्रकृति और जलवायु दूसरे से नहीं मिलती। इस प्राकृतिक भिन्नता ने मनुष्यों के रहन-सहन, खान-पान और भाषा में भी विभिन्नता उत्पन्न कर दी है। पर अक्सर कहा जाता है कि देश की आत्मा एक है। आध्यात्मिक या भावात्मक दृष्टि से 'भिन्नता में एकता' का यह सूत्र सही हो सकता है, पर जीवन-व्यवहार में भिन्नताएँ ही मानो परम सत्य होकर खड़ी हैं। उक्त भौगोलिक स्थिति के कारण या जिसको भारत की धार्मिक-सांस्कृतिक परम्परा कहते हैं, उसके कारण यहाँ सामाजिकता का विकास भी टुकड़ों या खण्डों में हुआ है। 'एक-भारतीयता' का अभिप्राय 'एक-सामाजिकता' नहीं है। हमारे धर्म ग्रंथ दक्षिण से उत्तर तक और पूर्व से पश्चिम तक—आसेतु हिमाद्रि—चाहे एक से ही हों, पर सामाजिक जीवन भेदों और भिन्नताओं से भरा हुआ रहा है। सामाजिक जीवन की संहिता सारे भारतवर्ष के लिए एक नहीं है। और दुर्भाग्य से इन भिन्नताओं को कायम रखने को ही सांस्कृतिक महत्ता प्रदान की गयी। इसी का परिणाम है कि आज ये भिन्नताएँ राष्ट्रीयता के लिए खतरा बन गयी हैं। सीमा विवाद, भाषा-विवाद, जाति विवाद, सम्प्रदाय विवाद, और न जाने कितने दूसरे विवाद आज राष्ट्रीय जीवन को ग्रसित किये हुए हैं। जब स्वाधीनता प्राप्ति के बाद वास्तविक अर्थों में एकता की बात आयी, तो केवल 'भिन्नताओं में एकता' के भावात्मक सूत्र से काम न चल सका। यथार्थ जीवन की भिन्नताएँ, पृथकताएँ, और संकुचितताएँ ही बड़ी साबित हुईं। आज राष्ट्र को उनसे लड़ने में कितनी ताकत लगानी पड़ रही है, यह किसी विचारशील व्यक्ति से छिपा नहीं है।

प्राचीन समय में जैसी भी हालत रही हो, आज के युग में इस स्थिति के रहते हम दुनिया के सामने सिर ऊँचा नहीं रख सकते। कितना ही विशाल क्यों न हो यह देश, आज के विज्ञान युग में समय और स्थान की दूरी रह ही नहीं गयी। सुबह कलकत्ते से दिल्ली जाकर वहाँ दिन भर काम कर, रात को वापस कलकत्ता लौट कर घर पर भोजन किया जा सकता है। विमान ने हजारों मीलों की दूरी खत्म कर दी, पर हमारे सोचने-विचारने के तरीके और रहन-सहन के ढंग में दूरी कायम है। आज भी चाहे रेलें हमें साथ बैठने को बाध्य करें, विमान साथ लेकर उड़ाये चले, नौकरी और व्यवसाय सारी सीमाओं को तोड़ कर नजदीक ला दे, पर सामाजिकता आज भी दूरियों और दरारों में विभक्त है। कलकत्ता जैसे शहरों को लें, जहाँ जीविकोपार्जन के लिए आकर नौकरी और व्यवसाय में अलग-अलग प्रान्तों के लोग साथ काम करते हैं, दफ्तरों और दुकानों में मिलते हैं, और अमुक प्रकार का विनिमय भी होता है। पर जहाँ घर की और समाज की चहारदीवारी में पहुँचे कि सब कुछ भिन्न हो जाता है। वर्षों के वर्ष इस प्रकार रहते-गुजरते कट जाते हैं। 'भिन्नताओं में एकता' के जिस सूत्र की बात हमने ऊपर कही, उसी के शब्दों में कहें, तो कलकत्ता एक है, समस्त भिन्नताओं को लेकर भी। पर कलकत्ते की यह एकता पार्थिव अथवा भौतिक अथवा तो अर्थोपार्जन की एकता है, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की एकता नहीं है। विनिमय वस्तुओं का होता है, जीवन-मूल्यों और संस्कारों का नहीं। यह बात आज की है, बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की, जब कि हम अणु-युग में प्रवेश कर रहे हैं, चन्द्रमा और मंगल तक पहुँचने के प्रयास हो रहे हैं। आज भी पंजाब का व्यक्ति बंगाल में और बंगाल का मद्रास में वर्षों के वर्ष रह कर भी पंजाबी, बंगाली और मद्रासी बना रहता है। भिन्नताएँ यदि ऊपर की सतह पर ही हों, तो जब आपस में रगड़ खाकर घुल जायें, तब तो भारतीयता का दर्शन होना चाहिए, यदि सचमुच भिन्नताओं के मूल में एकता निहित है। सच तो यह है कि भारतीय जीवन को जितना ही खुरचेंगे, भिन्नताएँ ही अधिक उभर कर सामने आयेंगी। धर्म ही, जो मानवता के विकास की बात कहता है, मानव-जीवन के उदात्तीकरण की महिमा का बखान करता है, एक नहीं हो सका। तब दूसरी एकताओं की तो बात ही क्या! वास्तव में, सही माने में एकता को हमने समझा ही नहीं। भिन्नताओं में ही हमारा अभिमान पोषण पाता रहा। इन भिन्नताओं को मिटाकर जीवन की विशाल एकता में अपने सामाजिक और प्रादेशिक व्यक्तित्व को खो देने का खतरा हम नहीं उठा सके। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमें जिस प्रकार के व्यक्तित्व की आवश्यकता हुई, उसका हमने गठन नहीं किया था और उसके अभाव में समस्त देश के हितों की दृष्टि से जैसा व्यवहार हमारा होना चाहिए, वैसा नहीं हुआ।

दुर्भाग्य से हमारे मनीषियों ने इन भिन्नताओं को तोड़ने के बजाय कायम रखते हुए या तो इनसे डरकर अथवा इनको ही जीवन का सार समझ कर भावात्मक एकता की बात कह कर संतोष कर लिया। आज भी सामान्य तौर से यही स्थिति है। यदा-कदा कुछ लोग इन भिन्नताओं के कारण उत्पन्न होने वाले संघर्षों और विग्रहों पर आँसू बहा लेते हैं, आलोचना कर लेते हैं, परन्तु इसकी बुनियाद को खत्म करने की बात पर वे भी कुछ नहीं करते। जब तक सारा भारतवर्ष एक समाज नहीं बन जाता, रहन सहन, पढ़ाई-लिखाई, खान-पान और शादी-विवाह में समान विचार और मूल्य नहीं ग्रहण कर लिये जाते, तबतक एकता की बात आकाश-कुसुमवत् ही रहेगी। हम जानते हैं कि हर आदमी दूसरे के समान ही खाने-पहनने और दूसरे मामलों में बाध्य नहीं किया जा सकता, रुचि-भिन्नता ही रहेगी।

पर वह रुचि-भिन्नता ही रहे—कोई मांस खायेगा और कोई नहीं खायेगा, कोई चावल खायेगा, तो कोई गेहूँ पसन्द करेगा, किसी लड़के का विवाह दक्षिण की युवती से होगा और किसी लड़की का विवाह उत्तर प्रदेश के युवक से होगा। यदि कहा जाय—"मुझे अमुक लड़की पसंद आयी, उसके और मेरे बीच मित्रता हुई और मैंने विवाह कर लिया, मुझे शाकाहार अच्छा लगता है, इसलिए मैं मांस-मछली नहीं खाता" यहाँ तक तो ठीक, पर कहा तो यह जाता है कि "मैं उस लड़की से विवाह नहीं कर सकता, क्योंकि वह मेरी जाति और प्रान्त की नहीं है, मैं यह खाना कैसे खाऊँ, तो यह हमारे समाज में नहीं खाया जाता; मैं उन पर कैसे विश्वास करूँ, वे मेरी भाषा नहीं बोलते।" व्यक्तिगत आधार पर अन्तर रहेगा और सब जगह होता है, पर समाज या प्रदेश के आधार पर भिन्नताओं का पोषण जब तक होगा, तब तक जिस एकता की हम कल्पना करते हैं, और जिसके बिना हमारी नई राजनीतिक व्यवस्था चल ही नहीं सकती, वह असंभव है।

अतीत के अनुभव और प्रति पल, प्रति मुहूर्त विकसित होते हुए विज्ञान ने हमारे सामने जीवन का एक नया क्षितिज उद्घाटित किया है और एकता का निर्माण भी हमें इस नये क्षितिज के आलोक में करना होगा। आज तक हम कहते रहे हैं, 'भिन्नताओं में एकता' पर अब कहना चाहिए—'एकता में भिन्नताएँ।'

इस विपर्यय में बहुत फर्क नहीं मालूम होता, पर शायद हमारा दृष्टिकोण उस विश्लेषण की पार्श्वभूमि में एक नई चेतना, एक नया चिन्तन और नया आलोक प्राप्त कर सके। और हम एक नई सामाजिक एकता ला सकें, जिसके आधार पर ही सच्ची राष्ट्रीय एकता और मानवीय एकता का विकास हो सकेगा, जिसमें पृथकताएँ व्यक्तियों की रुचि और रुझान तक सीमित रहेंगी, समाजों, जातियों, धर्मों, भाषाओं, और प्रदेशों में विभक्त नहीं रहेगी।

यह तभी हो सकता है, जब हम देश की सम्पूर्ण इकाइयों का सामाजिक रूप में समीकरण करें। एकता के नये क्षितिज खुले हैं। उनकी ओर चलें। हमारे विचारों और जीवन यापन के तौर-तरीकों में जो परिवर्तन अपेक्षित है, उनको क्रियान्वित करें, तभी हम अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। नये भारत का आलोक इन नये क्षितिजों पर दिखाई पड़ रहा है, जिनकी ओर चलने पर ही जीवन का तेज उपलब्ध हो सकेगा।

विनोबाजी की मध्यप्रदेश-यात्रा

पिछले दिनों सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति के सदस्यों से और उत्तर प्रदेश के साथियों से बातचीत करते हुए विनोबाजी ने यह संकेत दिया कि वे मई के मध्य में उत्तर प्रदेश से छोड़कर मध्यप्रदेश में प्रवेश करेंगे और २२ जून, '६० तक इन्दौर पहुँचना चाहेंगे। उनकी मध्यप्रदेश-यात्रा का आरम्भ सम्भवतः आगरा-धौलपुर-क्षेत्र के बाद मुरैना से होगा।

विनोबाजी का पता : प्रान्तीय सर्वोदय-मंडल, पीपली बाजार, आगरा।

तेनाली में सर्वोदय-पात्र

सर्वोदय-पात्र के कार्य की प्रेरणा और अनुभव

'एलवाल' की ऐतिहासिक गोष्ठी समाप्त होने के पश्चात् विनोबाजी बंगलोर पहुँचे। इसी बीच में डा० सूर्यनारायणजी (तेनाली) को उनका बुलावा गया कि 'तुम बंगलोर शहर में आकर मुझसे मिलो।' इसलिए पूज्य बाबाजी का यह आदेश पाकर निश्चित समय पर डाक्टर साहब बंगलोर पहुँचे। अभी तक विनोबाजी को सर्वोदय-पात्र का साक्षात्कार नहीं हुआ था। हो सकता है कि उनके हृदय में उसके साक्षात्कार की झलक दिखाई दे रही हो। वहाँ ता० २४-१०-'५७ के ब्राह्म मुहूर्त के तीन बजे विनोबाजी डा० सूर्यनारायणजी को अपने पास बुला कर बातें करने लगे।

बाबा बोले—"सूर्यनारायण! तुम्हारे तेनाली, गुंटूर और विजयवाडा ये तीनों शहर एक-दूसरे से १८-२० मील के फासले पर एक त्रिकोण में बसे हुए हैं। करीब ३१ साल से तुम लोग तेनाली शहर में विशेष प्रकार की सेवा कर ही रहे हो। अतः मेरा विचार है कि तुम इन तीनों शहरों में भी पन्द्रह-पन्द्रह या सोलह सोलह कार्यकर्ताओं को नियुक्त करके जन सेवा के कुछ काम करते रहो। इनके भरण-पोषण के लिए जो खर्च होगा, उसको भरने के लिए हरएक घर से पाँच-पाँच आने वसूल किया करो। चूँकि हमारा खयाल है कि प्रत्येक घर में पाँच व्यक्तियों की औसत संख्या होती है इसलिए फी आदमी एक आने के हिसाब से पाँच आने की रकम हर गृहस्थ से वसूल करना ठीक होगा। इसके जरिये प्रत्येक कार्यकर्ता को अपना परिवार चलाने के योग्य जीवन निर्वाह देने की व्यवस्था हो सकती है।"

विनोबाजी जो कहते हैं, सो डाक्टर साहब के लिए परम प्रमाण है। अपने व्यक्तिगत एवं कौटुंबिक जीवन में बाबाजी के वचन के अनुसार आचरण करके उसके मधुर फल का उपभोग करना डाक्टर साहब को बहुत पसंद है। अक्सर वे कहा करते हैं कि पहली ही बार जब ता० २५-२-१९३१ को मैंने विनोबाजी का दर्शन किया, तभी से उनके प्रति मेरी ऐसी हार्दिक श्रद्धा और भक्ति जम गयी है। अतः बाबाजी से यह नयी प्रेरणा लेकर डाक्टर साहब तेनाली लौट आये।

तेनाली में सर्वोदय-पात्र की आधार-भूमि

श्री वेंकट सूर्यनारायणजी आँख के विशेषज्ञ डाक्टर हैं, जो आन्ध्र भर में विख्यात हैं। उनके दिल में ऐसी तड़पन उठी कि डाक्टर की राह पर चलते हुए विस्तृत क्षेत्र में जनता की सेवा कैसे कर पाऊँ? इसके लिए उपयुक्त मार्ग प्रदर्शन की माँग करते हुए उन्होंने पूज्य बापूजी के नाम पत्र लिखा था। इसके उत्तर में यद्यपि गांधीजी ने विस्तृत सेवा-कार्य के लिए कुछ उपयोगी सुझाव लिख भेजे, तथापि उनके सहारे अपने कार्य के संचालन के लिए वे कोई संतोषजनक योजना तैयार नहीं कर सके। इसलिए उनका मन दिन-ब-दिन बेचैन होता रहा। जब संयोगवश दिल्ली में विनोबाजी से उनकी भेंट हुई, तब उन्होंने अपनी हृद्गत वेदना को प्रकट किया। इस वक्त डाक्टरजी के विचार तथा सेवा करने की उनके दिल की तड़पन मालूम करके विनोबाजी ने ऐसी एक योजना उनके सामने रखी, जिससे पता लगता है कि उन्होंने ऐसे कई अस्पतालों को चला कर गहरा अनुभव पाया होगा। उनकी योजना इस प्रकार है कि अस्पताल में चाहे कोई भी रोगी आये, उससे निश्चित शुल्क ही वसूल किया जाय, वह फीस इतनी ही हो जितने में अस्पताल का काम चल सके और यदि कोई धनवान यहाँ की चिकित्सा से संतुष्ट होकर निश्चित शुल्क से ज्यादा रकम दे तो उसे गरीब रोगियों की सेवा में खर्च किया जाय।

उस दिन से लेकर आज तक डाक्टर साहब विनोबाजी की बतायी योजना के अनुसार ही अपना अस्पताल चलाते आ रहे हैं। रोगी कम से कम फीस देकर उत्तम से उत्तम सेवा को प्राप्त कर रहे हैं। अब आन्ध्र प्रदेश के कोने कोने से यहाँ असंख्य रोगी आकर चिकित्सा का लाभ उठा रहे हैं और व्यापक क्षेत्र में सेवा करने की डाक्टर साहब की आकांक्षा दिन प्रतिदिन प्रबल हो रही है।

गांधीजी तथा विनोबाजी को अपना पथ प्रदर्शक मानने के कारण डाक्टर साहब की जिन्दगी नियम तथा संयम की सीमाओं के भीतर ही चल रही है। आप प्रतिदिन प्रातःकाल साढ़े चार बजे और सायंकाल के छह बजे नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं, नियम से चरखा चलाते हैं तथा खादी पहनते हैं। मन, वचन एवं कर्म से सत्य का आचरण करने का दृढ़ निश्चय, सेवा करने की तीव्र उत्कंठा, जाति वर्ण अथवा धर्मगत भेदों को न मानना, संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करना, इत्यादि उत्तम गुणों ने उनकी सेवा को एक विशिष्ट रूप दिया और उनके अस्पताल में आश्रमी वातावरण पैदा किया। उनके सभी प्रयोगों में उनकी धर्मपत्नी भी उनकी परछाईं सी उनके साथ साथ चलती हैं। अस्पताल के सारे कार्यकर्ता भी नियमित रूप से प्रातः एवं सायंकालीन प्रार्थनाओं में सम्मिलित होते हैं, सूत कातते हैं, खादी पहनते हैं और विनम्र सेवा में रुचि रखते हैं, अतएव इस पृष्ठभूमि पर सर्वोदय-पात्र का काम उठाने का बल और उत्साह डाक्टर साहब को उपलब्ध हुआ।

विनोबा का संदेश

आपका तेनाली का जो सर्वोदय-पात्र का काम चला है, उसकी जानकारी अनेकों ने मुझे दी है। उससे कुछ समाधान होता है, पर पूरा समाधान तभी होगा, जब तेनाली के हर घर में सर्वोदय-पात्र होगा और मैं मानता हूँ इतनी सद्भावना तेनाली में है ही। मुझे उसमें कोई संदेह नहीं। तेनाली को पहली मरतबा जब मैंने देखा तभी से वहाँ के श्रद्धामय वातावरण का मुझ पर असर रहा है। आप लोगों ने तेनाली की कुछ सेवा की है और आगे बहुत कुछ होने की उम्मीद है। इसलिए तेनाली के नागरिकों से मेरी अपील है कि हर घर में सर्वोदय-पात्र रख कर तेनाली के नागरिक सर्वोदय-विचार को सौ फीसदी मतदान दें। तेनाली, गुण्टूर, बेजवाडा, यह एक ऐसा त्रिकोण है जो कि केरल, कश्मीर, कामरूप (आसाम) वाले भारतीय त्रिकोण का नमूना बन सकता है। हमारे स्वयंसेवकों या शांति-सैनिकों को मेरा संदेश सुनाइये कि वे अपने काम में सत्य, प्रेम, करुणा को कभी न भूलें, बल्कि उनका काम इन गुणों का प्रकाशक बने।

सर्वोदय-पात्र का श्रीगणेश

बंगलोर में विनोबाजी ने जो प्रेरणा दी, वह डा० सूर्यनारायणजी के लिए दीक्षा-मंत्र प्रतीत हुआ। इस कारण से वे घर लौटते ही अपने संगी-साथियों के साथ उसके संबंध में विचार विनिमय करने लगे। काफी लंबी-चौड़ी चर्चाएँ हुईं। घर घर से पाँच आने वसूल करके किस प्रकार के सेवाकार्य कराये जायें? कैसे काम करने से लोग खुश हो सकते हैं? सेवाव्रत को लेकर लगन से काम करने वाले कार्यकर्ता कहाँ से प्राप्त होंगे? इन सारी समस्याओं के विषय में संतोषदायक समाधान के लिए गंभीर चिंतन चला। लगभग छह-सात महीने रास्ता टटोलने में ही बीत गये। वर्तमान सामाजिक समस्याओं का अध्ययन चलता रहा। देखा जाता है कि आजकल के मध्यवित्त परिवारों के लोग एक प्रकार के मिथ्याभिमान के वश में होकर कितनी ही कठिनाइयों का सामना करते रहते हैं। इन परिवारों में प्रायः एक ही व्यक्ति कमाने वाला होता है और खाने वाले अधिक हुआ करते हैं। अपनी आर्थिक दशा अच्छी न होने की वजह से न तो ये श्रीमानों के जैसे ठाट बाट के साथ रह पाते और न अपने से कम आमदनी कमाने वाले मजदूरों के जैसा सादा जीवन भी बिता सकते। यह तो इनकी एक प्रकार की जटिल समस्या है। अब रही मेहनत-मजदूरी करने वाले गरीब लोगों की बात। उनके हर एक परिवार के छोटे-बड़े सभी लोग भोर से शाम तक जी तोड़ मेहनत करते हैं तो भी वे पेट भर खाना और तन भर कपड़ा नहीं पाते। इसके अलावा साल भर के पूरे दिनों में उन्हें काम नहीं मिलता। ऐसी परिस्थितियों में समाज की सेवा करना सेवा सैनिकों के लिए सचमुच टेढ़ी-खीर ही है। इसलिए सोचा गया कि ये सेवासैनिक अनाथ रोगियों की सेवा और कुछ सामूहिक उत्सवों के अवसरों पर स्वयं सेवा (वालण्टरी सर्विस) करने से संतुष्ट न होकर, उपर्युक्त परिस्थितियों में मध्यवित्त एवं दरिद्र जनता की कठिनाइयों में हाथ बँटाने की, उन्हें रोजी-रोटी दिलाने की कोशिश करने के द्वारा जब जनता से एकरूप हो जाते हैं तभी इस कार्यक्रम के प्रति लोगों की रुचि उत्पन्न हो सकती है।

इस सेवा कार्य के प्रारंभ के रूप में डा० सूर्यनारायणजी के "श्रीकृष्ण आँख-अस्पताल" के आँगन में ही खादी कमिशन के सहयोग से अंबर चरखे का एक शिक्षण-वर्ग तीन महीने तक चलाया गया। इस शिक्षण को चलाने का यह भी एक मकसद था कि इसमें से हमारे काम के लिए कुछ उपयोगी कार्यकर्ता मिल सकेंगे।

इतने में उधर विनोबाजी को सर्वोदय-पात्र के विचार का साक्षात्कार हुआ और उन्होंने अपने प्रवचनों में इसका यों स्पष्टीकरण किया कि 'एक द्रष्टा के रूप में, मैंने इस सर्वोदय-पात्र को पाया।' इस विचार को बाबा के प्रवचनों के द्वारा मालूम करने पर डा० सूर्यनारायण तथा इनके साथियों को लगा कि इस कार्यक्रम का हम सफल प्रयोग कर सकेंगे। अतः तेनाली में सर्वोदय-पात्र का श्रीगणेश करने का निश्चय हुआ।

(अपूर्ण)

सेनापति के शिविर से

श्री अन्नपूर्णा महाराणा

• •

श्री वल्लभस्वामी के आदेशानुसार ता० १९ मार्च की शाम को लुधियाना में हाजरी बजानी थी, यहाँ पहुँचते ही प्रथम दर्शन उन्हींके हुए। फिर पू० विनोबाजी के पड़ाव पर पहुँच कर देखा तो श्री धीरेन्द्र मजूमदार भी मौजूद हैं। बिहार के श्री वैद्यनाथजी चौधरी भी आ पहुँचे। उत्तर प्रदेश के श्री बाजपेयीजी, केरल की राममा बहन, सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्रजी, बंगाल-आसाम का प्रतिनिधित्व करने के लिए आशादेवी, तमिलनाड की कृष्णम्मा, याने करीब-करीब हर मोर्चे के मार्शल, फील्ड् मार्शल सलाह मशविरा करने के लिए हाजिर हो गये थे। दूसरे दिन जब पू० विनोबाजी रास्ते में जाते समय भिन्न भिन्न प्रान्त का हालचाल पूछने लगे और फिर पड़ाव पर ये सब मुख्य कार्यकर्ता परिवेष्टित होकर बैठ गये, तब लगा लड़ाई के मैदान में सेनापति के तम्बू के अन्दर का दृश्य देख रहे हैं।

पड़ाव में सामने हिंदुस्तान का नक्शा तो खुला पड़ा ही रहता था, फिर पू० विनोबाजी का बोलने का ढंग भी उसी तरह का था। श्री वैद्यनाथ बाबू से कह रहे थे—"हजारीबाग जिले में ५२,००० एकड़ जमीन बँटी। वहाँ कितनी रोचक घटनाएँ घटी होंगी, कितना आनन्द मिला होगा, इसकी कुछ भी जानकारी किसीको नहीं। सारे हिन्दुस्तान में तो यह बात फैल जानी चाहिए थी। उधर कोरापुट में ५,००० एकड़ जमीन मिली और पाँच साल के बाद जब वहाँ जमीन बाँटने गये, तब २०–२५ एकड़ जमीन को छोड़ कर बाकी सब जमीन बँट गयी। यह खबर बिहार वालों को भी मालूम होनी चाहिए न? किसक लड़ाई में क्या होता है? कई मोर्चे लड़ाई के होते हैं। बहुत सारे मोर्चों पर अगर सिपाही हार खाते हों और किसी एक में थोड़ा-सा आगे बढ़े हों, तो हर मोर्चे को यह खबर फौरन पहुँचायी जाती है कि फलानी जगह पर हमारी जीत हुई है, ताकि हार खाने वालों में भी जोश पैदा हो। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। भूवितरण के काम में जहाँ जहाँ कुछ अच्छी-अच्छी घटनाएँ घटती हों उन्हें हिन्दुस्तान भर में फैला देना चाहिए।"

हमारे भिन्न भिन्न प्रान्तों में भूमि-वितरण का जो थोड़ा-बहुत काम हो रहा है, उसका पूरा विवरण देश को तथा उनको मिलता नहीं है, इसका असंतोष उनके मन में है। इसी कारण उन्होंने उपसेनापतियों के सामने यह शंका भी प्रकट की कि कहीं हमारे सिपाही क्रान्ति की राह छोड़ कर विकास के काम में तो नहीं फँसे? लेकिन बिहार और उत्तर प्रदेश के बापू के जमाने से लड़ते आने वाले श्री वैद्यनाथ बाबू तथा पू० धीरेन्द्र भाई ने अपने काम का पूरा परिचय देकर उनमें यह विश्वास पैदा कर दिया कि उन्हीं के द्वारा सौंपे गये काम में ही उनका पूरा समय जाता है और वे (पू० विनोबाजी) चाहेंगे, तो वे सारे काम वे फौरन छोड़ने के लिए तैयार हैं, क्योंकि शान्ति-सेना में जो भरती हो चुके हैं।

आखिर सेनापतिजी ने श्री वैद्यनाथ बाबू को अपना फैसला सुनाया कि जो काम वे कर रहे हैं वही चालू रखें।

(क) किसी एक जिले में या दो-तीन जिलों को लेकर पाँच दस लाख आबादीवाले सघन क्षेत्र में इस तरह का काम शुरू करें कि उस क्षेत्र में अदालत तथा पुलिस का कम-से-कम दखल हो।

(ख) सर्वजन-आधार, सन्मित्र-आधार तथा श्रमाधार से लाई की कार्यकर्ता खड़े करें।

(ग) हर घर में सर्वोदय-पात्र रखने की योजना हो।

(घ) हमारे कार्यकर्ताओं का हर घर से गहरा परिचय हो।

फिर उन्होंने हँसते हुए कहा कि सर्वोदय साहित्य का प्रचार अच्छी तरह से होना चाहिए। 'पंजाब में मैंने पूछा था कि पहाड़ी, जंगल में भी सिगरेट कितने मील के फासले पर मिलती है? मुझे जवाब मिला कि हर पाँचवें मील के अन्दर सिगरेट जरूर मिलेगी।' तो मैंने कहा कि हमारा सर्वोदय साहित्य भी कम से कम हर दस मील के अन्दर तो मिल जाना चाहिए।"

यहाँ पंजाब में उस ओर प्रयत्न भी हो रहा है। स्थानीय लोगों से पैसा इकट्ठा कर श्री ओमप्रकाश त्रिखा भण्डार खोलने का इन्तजाम कर देते हैं। किताब की गाड़ी तो उनके साथ ही रहती है। गाड़ी की किताबें नये भण्डार में रख कर दूसरे ही दिन भण्डार का उद्घाटन शुरू कर देते हैं। श्री वैद्यनाथ बाबू तथा पूज्य धीरेन्द्र भाई ने पूर्णिया जिले को इन सारे कामों के लिए अनुकूल क्षेत्र माना।

पड़ाव शाहपुर, २४-३-६०

हमारा मंत्र : जय जगत् हमारा तंत्र : जय ग्रामदान

ता० १ अप्रैल को पानीपत से नारायणा के पड़ाव पर जाते समय रास्ते में एक जगह गाँववालों ने "जय जगत्" का नारा लगाया। एक ने कहा, "हमारा मंत्र" कई कंठों से आवाज निकली—"जय जगत्!" विनोबाजी ने उस समय एक नया नारा शुरू किया—"हमारा तंत्र : जय-ग्रामदान!" फिर नारायणा में शाम को प्रार्थना-प्रवचन में इसका जिक्र करते हुए कहा :

"हम जिसको ध्यान में रख कर काम करते हैं, वह है मंत्र। एक बड़े विचार को मंत्र कहते हैं और उसे अपनाने के लिए, उसके अनुसार अपना जीवन बनाने के लिए, जो तरकीब अपनायी जाती है, उसे कहते हैं तंत्र। आज हमने रास्ते में आते समय सहज ही कह दिया—"हमारा तंत्र—जय ग्रामदान!" पहले हम "जय-हिन्द" बोलते थे, लेकिन "जय-जगत्" के पेट में "जय हिन्द" आ ही जाता है। अब तक हमारा मंत्र देश या समाज-सेवा और तंत्र परिवार-सेवा था। अब इस जमाने में हमें विचार को व्यापक करना होगा। अब हमें इस तरह से काम करना होगा, जिससे दूसरे देश का हम कुछ बिगाड़ें नहीं। हम इस तरह से सेवा करेंगे, जिससे दूसरे देश को कुछ हानि न पहुँचे और हमारे देश की इस तरह से मदद करेंगे, जिससे दूसरे देश का कुछ बिगड़े नहीं। अब विज्ञान के जमाने में हमें यह करना ही होगा। इसलिए अब तक परिवार के लिए जो हम करते थे, वह हमें गाँव के लिए करना होगा और जो देश के या हमारे आस-पास के समाज के लिए करते थे, वह जगत के लिए। हमारा मंत्र अब बड़ा बना है—"जय हिन्द" से "जय जगत्"; तो तंत्र भी अब बड़ा बनाना होगा।"

•

भूदान-आन्दोलन सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएँ

क्रम	भाषा	नाम तथा पता		मूल्य	संख्या
१	हिन्दी	भूदान-यज्ञ, राजघाट, वाराणसी १	(साप्ताहिक)	५)	१२,४७६
२	,,	ग्रामराज, किशोर निवास, जयपुर (राजस्थान)	(दशवारिक)	३)	६,०००
३	,,	नई तालीम, सेवाग्राम, वर्धा	(मासिक)	४)	४,०००
४	,,	भूमिक्रान्ति, गांधी भवन, यशवंत रोड, इन्दौर (म० प्र०)	(साप्ताहिक)	४)	७३०
५	उर्दू	भूदान-तहरीक, राजघाट, वाराणसी १ (उ० प्र०)	(पाक्षिक)	३)	१,०६६
६	,,	सर्वोदय विचार परिषद्,-जालंधर (पूर्व पंजाब)	(पाक्षिक)	३)	४००
७	अंग्रेजी	भूदान, राजघाट, वाराणसी १	(साप्ताहिक)	६)	१,३१७
८	,,	सर्वोदय २४ श्रीनिवासपुरम, तंजौर (मद्रास)	(मासिक)	४॥)	१,६००
९	गुजराती	भूमिपुत्र, रावपुरा, बड़ौदा (गुजरात)	(दशवारिक)	३)	५,०००
१०	मराठी	साम्ययोग, गोपुरी, वर्धा	(साप्ताहिक)	४)	४६०१
११	सिंधी	धरती माता, वार्ड १३, आदीपुर (कच्छ)	(पाक्षिक)	३)	२,५६०
१२	पंजाबी	भूदान, जालंधर, (पूर्व पंजाब)	(पाक्षिक)	३॥)	६००
१३	बंगला	भूदान यज्ञ, बी-२२, कालेज स्ट्रीट मार्केट, कलकत्ता १२	(साप्ताहिक)	६)	१,८१०
१४	तेलगू	साम्ययोगम्, ऑफिस [illegible], तेनाली, जि० गुंटूर (आंध्र)	(साप्ताहिक)	६)	६,०००
१५	तमिल	सर्वोदयम, २४ श्रीनिवासपुरम, तंजौर	(मासिक)	३)	३,०००
१६	,,	ग्रामराज्यम्, खादी वस्त्रालय, रास बाजार, मद्रास १	(साप्ताहिक)	६)	१,०००
१७	मलयालम	भूदान [illegible], कोझीकोड-१	(साप्ताहिक)	४॥)	१,४००
१८	कन्नड	भूदान, [illegible] पेट, बंगलौर	(पाक्षिक)	४)	१,६००
१९	उड़िया	ग्रामसेवक, [illegible], कटक (उड़ीसा)	(दशवारिक)	४)	३,६००
२०	असमिया	भूदान यज्ञ, पान बाजार, गुवाहाटी (असम)	(पाक्षिक)	३)	६००
				कुल	५५,६८१

सत्यमित्र संघ का अधिवेशन

"फैलोशिप ऑफ फ्रेंड्स ऑफ ट्रूथ" (सत्यमित्र संघ) का सातवाँ वार्षिक अधिवेशन ता० २८, २९ और ३० अप्रैल १९६० को गांधीग्राम (मदुराई, दक्षिण भारत) में श्री जी. रामचन्द्रन् की अध्यक्षता में होने जा रहा है। यह संस्था करीब दस बरस पहले गांधीजी की प्रेरणा से कुछ ईसाई मित्रों ने बनायी थी और डा० कुमारप्पा के मित्र तथा सहयोगी श्री एस. के. ज्योर्ज शुरू में सात वर्ष तक इस संस्था के मन्त्री रहे। अब करीब दो वर्षों से श्री ज्योर्ज काफी बीमार हैं। वे इस समय गांधीग्राम में ही रहते हैं। श्री ज्योर्ज ने भारतीय ऐंग्लीकन चर्च (ईसाई धर्म-संगठन) में पादरी का काम सँभालने के लिए शिक्षण पाया था। पर बाद में साम्प्रदायिक संगठन के दायरे में बँधना पसन्द न होने से उन्होंने दीक्षा लेना नामंजूर कर दिया था।

फैलोशिप के इस आगामी अधिवेशन में चर्चा का मुख्य विषय 'सर्व धर्म-समन्वय' रहेगा, जिसमें खास तौर से हिन्दू, बौद्ध, ईसाई और इस्लाम धर्म के तत्त्वों पर चर्चा होगी। श्री एस. के. ज्योर्ज के कार्यों से सम्बन्धित और उनके सम्मिलित संघ के अंग्रेजी त्रैमासिक का एक विशेषांक भी इस अवसर पर प्रकाशित हुआ है, जो इस अधिवेशन में श्री ज्योर्ज को भेंट किया जायगा।

●

विद्यार्थियों का अन्तर्राष्ट्रीय शिविर, बंगलौर

आगामी १५ मई से ३० मई, '६० तक सर्वोदय-आश्रम, विश्वनीडम्, बंगलौर में सर्वोदय विचार और गांधी-विचार के अध्ययन के लिए विद्यार्थियों के एक अन्तर्राष्ट्रीय शिविर की योजना की गयी है। शिविर का स्थान बंगलौर-मागडी-मार्ग पर बंगलौर नगर से आठ मील दूर है। इस शिविर में ५० से ७५ तक शिविरार्थी रहेंगे। इनमें २५ प्रतिशत सर्वोदय आन्दोलन में काम करने वाले कार्यकर्ता रहेंगे, जो विद्यार्थी नहीं होंगे। हिन्दुस्तान के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले विदेशी विद्यार्थी भी इसमें सम्मिलित हो सकेंगे।

शिविर के दैनिक कार्यक्रम में स्वाध्याय, चर्चा, शरीरश्रम, पर्यटन, सफाई, रसोई बनाना, पास के गाँवों में जाना आदि कार्य रहेंगे। शिविरार्थी स्वयं ही इनकी योजना और व्यवस्था करेंगे। जाने-आने का यात्रा-खर्च शिविरार्थियों को स्वयं करना होगा। निवास और भोजन की व्यवस्था शिविर के संयोजक करेंगे। शिविर में शाकाहारी भोजन की व्यवस्था रहेगी।

इस शिविर में भरती होने की इच्छा रखने वाले भाई-बहनों से निवेदन है कि वे अपने पूरे नाम-पते और परिचय के साथ अपना आवेदन पत्र संयोजक, अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी शिविर, अ० भा० सर्व सेवा संघ, ४थी 'कॉसरोड, गांधी-नगर, बंगलौर को भेजें। आवेदन-पत्र की स्वीकृति की सूचना १ मई, '६० तक भेज दी जायेगी।

●

इजराइल में भूदान-कार्यकर्ता

अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ और इजराइल के 'हिस्तादृत' के सहयोग से भूदान में लगे २२ कार्यकर्ताओं का एक समूह फरवरी के अन्त में इजराइल के लिए रवाना हुआ। यह दल वहाँ सहकारिता और सामूहिक जीवन का अध्ययन करेगा। इस दल में प्रायः भारत के हर प्रान्त के लोग गये हैं। बाद में इस दल में चार और लोग शामिल हुए। इस दल में दो महिलाएँ भी हैं। यह दल ६ माह तक इजराइल का भ्रमण करेगा।

हाल की मिली सूचनाओं के अनुसार इस दल के प्रथम तीन महीनों का कार्यक्रम इस प्रकार है:

- मार्च २ से १३ तक प्रारंभिक ज्ञान
- १४ से २० तक इजराइल के उत्तरी भागों का भ्रमण और सहकारी कार्यों का निरीक्षण।
- २१ से १० अप्रैल तक इजराइल के लोगों के सहकारी जीवन और सामूहिक जीवन का विशद अध्ययन।
- अप्रैल ११ से १९ तक 'क्विबुत्स्' के सामुदायिक जीवन का व्यावहारिक अध्ययन।
- " २० से २५ तक दक्षिणी इजराइल के नये विकसित क्षेत्रों का अध्ययन, जो प्रायः ऊसर और वीरान थे।
- " २७ से ३ मई तक 'मोशाव' प्रकार के सामुदायिक जीवन का व्यावहारिक अध्ययन।
- मई ४ से १० तक 'मोशाव शितूफी' प्रकार के जीवन का व्यावहारिक अध्ययन।
- " १२ से २० तक 'मोशाव' प्रकार का आयोजन।
- " २१ से २६ तक चर्चा का अन्त और विवरण की तैयारी।
- " २७ से २८ तक विचार-गोष्ठी।
- " ३१ अन्तिम बैठक

इसके साथ ही साथ इजराइल के सामूहिक जीवन का व्यक्तिगत अध्ययन भी चलेगा।

●

रेल के डिब्बे में!

वर्धा स्टेशन से 'जनता' ट्रेन में चढ़ा, डिब्बे में देखा तो छः अंधी बहनें! साथ वाले भाई ने बताया कि ये छः बहनें तमिलनाड की हैं और देहरादून के प्रशिक्षण-केन्द्र में शिक्षा पाने जा रही हैं।

नजदीक में ही सीट मिल गयी थी, दिन भर उनकी हलचल देखता रहा।

रात के करीब साढ़े दस बज चुके थे। इटारसी स्टेशन की प्रतीक्षा करता बैठा था। उन बहनों में से एक सो गयी थी और पाँच जाग रही थीं, दो इस छोर पर थीं, तीन उस छोर पर।

तीन में से दो ने पटरी के नीचे हाथ डाल कर एक थैली निकाली। खोल कर अन्दर से 'मठरी'-नमकीन पूरी-निकाली। तीसरी पास ही बैठी देख रही थी—अरे, कैसे देख ली, वह तो अंधी थी! पास थी फिर भी उतनी ही दूर थी!

सहज ही दिल में विचार आया, इन लोगों को दुनिया में यह सुख है! दोनों अकेली खायेंगी, तीसरी नजदीक वाली को और दो दूर वाली को पता भी नहीं चलेगा। न देखना, न जलना! लेकिन 'वह लड़की जिसके हाथों में पूरी थी उठ खड़ी हुई, टटोली और तीसरी को पाकर उसके हाथ में पूरी थमा दी। मैं सोच में ही था—देखने वाले का जो दिमाग था! इतने में वह आगे बढ़ी अन्य दोनों बहनों को भी ढूँढ़-ढूँढ़ कर एक एक पूरी दी।

मैं सोचने लगा, हम जो देखने वाले हैं, अंधे नहीं हैं वे भी गाड़ी में खाते तो हैं। अंधे न एक होते हैं, न सामने वाले। इसलिए देखने वालों की ओर पीठ फेर लेते हैं। यह तो व्यक्तिगत जीवन की और आम बात है। लेकिन सामाजिक जीवन में भी हम क्या करते हैं!—ज्यादा खाने के लिए और अकेले खाने के लिए! दुहाई देते हैं 'इफिसिएन्सी'—क्षमता की—दुहाई देते हैं व्यक्तिगत मिल्कियत की पवित्रता की, और दुहाई देते हैं मालकियत की भावना की, प्रेरणा शक्ति-इनिशियेटिव—अभिक्रम की!

ज्यादा देखने वाले औरों को अंधे बनाने के लिए ताकते रहते हैं। आम लोगों की नजर पर बड़ी-बड़ी बातों का पर्दा डाल कर कोशिश करते हैं समानता की, बात को आँख से ओझल करने की! लेकिन शायद पर्दा डालते डालते पड़ जाता है उनकी मानवीय दृष्टि पर!

—चुन्नीभाई वैद्य

●

खादी-समिति के अध्यक्ष का दौरा

सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति के अध्यक्ष श्री ध्वजा प्रसाद साहू ने मैसूर राज्य में ता० २९ मार्च से ७ अप्रैल तक दौरा किया। इन १० दिनों में श्री ध्वजा बाबू ने मैसूर राज्य के करीब ११ जिलों में भ्रमण किया। उस क्षेत्र में काम करने वाले खादी कार्यकर्ताओं की कई सभाओं में उन्होंने खादी-कार्य के आधार स्वरूप सर्वोदय की भावना के सम्बन्ध में चर्चा की। मैसूर राज्य में अधिकांश खादी कार्य जिला एवं तालुका स्तर पर हो रहा है। कार्यकर्ताओं ने खादी काम को नयी दिशा में ले जाने की कोशिश के प्रति काफी रुचि प्रकट की।

●

सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध-समिति

सर्व सेवा संघ के मन्त्रीजी सूचित करते हैं कि संघ की प्रबन्ध समिति की अगली बैठक १०, ११ और १२ मई, '६० को संघ के प्रधान केन्द्र, राजघाट, काशी में होगी। इस बैठक में संघ के प्रधान केन्द्र, संघ की प्रवृत्तियों और उसकी समितियों और उपसमितियों के सन् १९६०-'६१ के बजट पर विचार होगा। सेवाग्राम अधिवेशन में स्वीकृत निवेदन, प्रस्ताव आदि के सिलसिले में करने योग्य विशेष कार्यवाही पर भी विचार किया जायेगा।

●

आसाम सर्वोदय-मंडल, गुवाहाटी

आसाम प्रान्त में सर्व सेवा संघ के विधान के अनुसार बने हुए लोकसेवकों के द्वारा निर्मित विधान व नियम दो बैठकों में स्वीकृत होने के बाद गत ९ फरवरी को कोकोडाहार (गोवालपारा) के तिवागुरि में 'आसाम सर्वोदय मंडल' गठन हुआ। अध्यक्ष का चुनाव भी ५ मार्च '६० को शिवसागर के आइदेवाली में हुआ और ११ सदस्यों की एक कार्यकारिणी समिति भी बनी। खुशी की बात है कि इस प्रान्त में आज ७ सालों के बाद यही अधिकारी रचनात्मक संस्था बनी। आशा है, अब यहाँ की सारी रचनात्मक प्रवृत्तियाँ अच्छी तरह चलेंगी।

यहाँ ग्राम निर्माण, प्रकाशन, खादी-ग्रामोद्योग, ग्राम स्वराज्य, नयी तालीम, कृषि-गोसेवा आदि सारे काम आसाम सर्वोदय मण्डल द्वारा ही चलने वाले हैं। ये तमाम काम मण्डल के समिति व उपसमितियाँ करेंगी।

●

हिन्दुस्तान की सब भाषाओं के लिये नागरी लिपि मान्य हो

नागरी लिपि सब भाषाओं में चले, इसका मतलब दूसरी लिपियों का निषेध नहीं है, दोनों लिपियाँ चलेंगी।

रोमन लिपि के बारे में विनोबा का मत

"नागरी लिपि परिपूर्ण है ऐसा नहीं है। उसमें सुधार की जरूरत है। पर पहले नागरी सुधारी जाय और बाद में वह भारतीय भाषाओं में लागू की जाय इस विचार में मैं खतरा देखता हूँ।" लिपि-सुधार का मेरा सुझाव है, आग्रह नहीं। लिपि-प्रचार का मेरा आग्रह है। 'आग्रह' के माने यह न समझा जायँ कि मैं यह लादना चाहता हूँ।"

भूदानयज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी, शुक्रवार, २९ अप्रैल '६० : वर्ष ६ : अंक ३०

भारत की राष्ट्रीय एकता और परस्परिक व्यवहार के लिए राष्ट्रभाषा के तौर पर हिन्दी को भारतीयों ने मान्यता दी है। दक्षिण वाले भी वैसे हिन्दी के विरोध में नहीं हैं। जरा मुहलत माँगते हैं। पर यथासमय हिन्दी केन्द्र स्थान में अधिष्ठित होगी, यह बात उन्होंने भी मानी है। मुहलत दक्षिण के लोग जितनी माँगेंगे उतनी देने का विचार भी सबों ने मान लिया है। इसलिए अब उस बारे में कोई वाद नहीं रहा।

लेकिन जिन कारणों से 'सबकी बोली' के तौर पर हिंदी को मान्यता दी गयी, उन्हीं कारणों से नागरी को 'सबकी लिपि' के तौर पर मान्यता मिलनी चाहिए। लेकिन अभी तक वैसी मान्यता नहीं मिली। राष्ट्रभाषा हिंदी नागरी में लिखी जायेगी इसमें कोई दुविधा नहीं। लेकिन हिन्दुस्तान की अन्यान्य भाषाएँ भी नागरी में लिखी जायँ, यह निर्णय अभी होने को बाकी है। वैसा निर्णय होने पर दूसरी भाषाओं के लिए आज जो लिपियाँ चल रही हैं, उनका निषेध नहीं होगा। वे लिपियाँ भी चलेंगी और नागरी भी चलेगी, इतना ही निर्णय का अर्थ होगा।

कुछ लोग यह स्थान नागरी को देने के बजाय रोमन को देने का सुझाते हैं। मैंने इस पर बहुत सोचा है, और तटस्थ भाव से सोचा है। रोमन लिपि में अनेक गुण हैं इसमें कोई शक नहीं। लेकिन इसमें भी शक नहीं कि उसमें अनेक दोष भी हैं। और वे दोष इतने समर्थ हैं कि उनसे तंग आकर बर्नार्ड शॉ ने अंग्रेजी के लिए नई लिपि का आविष्कार चाहा। और उसके लिए अपनी इस्टेट में से कुछ पैसा भी रखा। बर्नार्ड शॉ की माँग के अनुसार जो लिपि सुझायी गयी उसका नमूना अभी 'लंदन टाइम्स' में मुझे देखने को मिला। तो क्या पाया? रोमन के साथ जिसका कुछ भी साम्य नहीं ऐसी लिपि वह थी, और उसमें नागरी के गुण लाने की चेष्टा की गयी थी। और इधर हमारे लोग हिन्दुस्तान की भाषा के लिए रोमन लिपि सुझाना चाहते हैं!

इसके मानी यह नहीं कि नागरी परिपूर्ण लिपि है, या उसमें सुधार की गुंजाइश नहीं। नागरी लिपि में सुधार की जरूरत है ऐसा मानने वालों में मैं भी शुमार हूँ। और 'लोक-नागरी' लिपि मेरे नाम से लोगों को थोड़ी-बहुत अवगत भी हो गयी है। 'भूदान-यज्ञ' में एकाध कालम मैटर उसमें प्रति सप्ताह दिया भी जाता है। लेकिन नागरी में सुधार किये बिना आज की हालत में वह देश की भाषाओं के लिए लागू नहीं हो सकती, या लागू नहीं करनी चाहिए, ऐसा मैं नहीं मानता। बल्कि पहिले नागरी सुधारी जाय और बाद में वह भारतीय भाषाओं में लागू की जाय, इस विचार में मैं खतरा देखता हूँ। आज की हालत में भी नागरी भारतीय भाषाओं के लिए चल सकती है और चलनी चाहिए ऐसी मेरी राय है। और तद्नुसार मैंने 'गीता-प्रवचन' के अनेक भाषाओं के तर्जुमे नागरी लिपि में छपवा दिये हैं। अभी दो-तीन भाषाओं के बाकी हैं, शेष सब हो गये हैं। उनका उपयोग करके अनेक भाषाएँ आसानी से सीख सकते हैं, ऐसा भी अनुभव आया है।

अगर हमने नागरी को भारत भर में चलाया तो आगे जाकर उसका भारत के बाहर भी उपयोग होने का संभव मैंने देखा। मिसाल के तौर पर, मेरी इस पदयात्रा के दरमियान भिक्षु जपानी इमाई के पास से मुझे जपानी भाषा सीखने का मौका मिला तो मैंने देखा कि जपानी भाषा की रचना हिन्दुस्तान की भाषाओं के समान है। याने पहिले कर्ता, पीछे कर्म, अन्त में क्रियापद यह हमारा वाक्य-विचार, और शब्दयोगी अव्यय संज्ञा के बाद में लगाने का हमारा सम्प्रदाय जपानी भाषा में चलता है। जपानी लोग नई लिपि की तलाश में हैं, क्योंकि उनकी लिपि जो चित्रलिपि है और असंख्य चिन्हों से बनती है, प्रचार के लिए अनुकूल नहीं पड़ती। ऐसी हालत में अगर नागरी हमारे देश में हम चलायें तो जपानी के लिए भी वह चलेगी ऐसा सम्भव है। यही बात चीनी भाषा को भी लागू है। इस तरह नागरी एशिया के पूर्व भाग की लिपि आसानी से बन सकती है। लेकिन उतनी व्यापक वह बने या न बने, भारत भर में वह चले तो भी हमारा बहुत कुछ काम बन जायेगा।

यहाँ सवाल हो सकता है कि अगर ऐसे मेरे विचार हैं, तो नागरी लिपि में सुधार पेश करके लोक-मानस को क्या मैंने दुविधा में नहीं डाला? यह आक्षेप मुझ पर लागू हो सकता है यह मैं कबूल करता हूँ। और इसीलिए सफाई के वास्ते मैंने यह लेख लिखा है। लिपि-सुधार का मेरा सुझाव है, आग्रह नहीं। लिपि-प्रचार का मेरा आग्रह है। 'आग्रह' के माने यह न समझा जाय कि वह मैं किसी पर लादना चाहूँगा। लादने वाली बात अहिंसा में आती ही नहीं, यह तो सब समझ सकते हैं।

अनूपशहर, २३-४-६०

इस अंक में

ग्रामदान!

महाराष्ट्र सर्वोदय-मंडल के मंत्री श्री गोविंद शिंदे ने हाल ही में 'गागोदे' के आसपास के गाँवों में दौरा किया। गागोदा विनोबाजी का जन्म स्थान है। इस दौरे में चार गाँवों—'हेमडीची वाडी,' 'भड्केवाडी', 'रानसोई' और 'शेडार्शी' का ग्रामदान हुआ। इनमें से दो गाँवों ने सामूहिक खेती करने का निर्णय किया है। चारों गाँवों में बड़े उत्साह से काम आरंभ हुआ है।

विज्ञान में विकेन्द्रीकरण अनिवार्य

उत्तर प्रदेश में प्रवेश करने के अवसर पर बागपत में विनोबा का सन्देश

अब विश्व में सर्वोदय-विचार का अवतार हो चुका है

• एक जमाना था जब दुनिया भर में छोटे-छोटे गाँव थे और उनका एक-दूसरे से बहुत ज्यादा संबंध नहीं था, यहाँ तक कि एक समाज दूसरे समाज को जानता भी नहीं था। गाँव अपना-अपना कारोबार चलाते थे और अपनी मर्यादा में जीवन व्यतीत करते थे। धीरे-धीरे लोग एक-दूसरे के नजदीक आने लगे और एकसाथ अनेक गाँवों की व्यवस्था करना जरूरी मालूम हुआ। उसमें से राज्य-संस्था विकसित हुई। राज्य-संस्था की तरफ से कारभार किया जाने लगा और लोगों का संरक्षण आदि करने के नाम पर वह कुछ करने लगी। उसका काम बाहर के हमलों से बचाव करने का था।

राज्य-संस्था तरह-तरह की बनी। राजाओं का राज्य, सरदारों का राज्य, कुछ खास जमातों का राज्य, क्षत्रिय वर्ग का राज्य, रोम शहर के नागरिकों का राज्य, इस तरह अनेक प्रकार निकले। कुछ मिला कर उस सबका सार रहा अल्पसंख्या का राज्य। उससे भी लोगों का समाधान नहीं हुआ, तो फिर बहुसंख्या का अल्पसंख्या पर राज्य निकला, जिसे 'लोकशाही' कहते हैं। आज दुनिया के बहुत सारे देशों में लोकशाही का ही प्रयोग चल रहा है, जिसमें चुनाव होते हैं और जिस पार्टी को या मनुष्यों को ज्यादा वोट हासिल होते हैं, वे राज्य कारोबार हाथ में ले लेते हैं। जनता टैक्स देती है और वे जनता का रक्षण, पोषण, शिक्षण सब तरह से करने की कोशिश करते हैं। दुनिया भर में 'वेलफेयर स्टेट'—कल्याणकारी राज्य—चल रहा है। उसमें कुछ सत्ता देहली जैसे एक मरकज़ (केन्द्र) में आ जाती है और जीवन की शाखा-उपशाखाओं का नियमन बहुसंख्या के नाम पर वहीं से होता है। लेकिन आखिरी सत्ता चंद लोगों के हाथ में ही रहती है और वही पुराना स्वरूप, थोड़े लोगों का बहुसंख्या पर राज्य, खड़ा हो जाता है।

अणुशक्ति और विकेन्द्रीकरण

उधर राज्य-व्यवस्था का इस तरह विकास हुआ और इधर विज्ञान का विकास हुआ। पहले अग्नि की खोज हुई। फिर भाप की, उसके बाद बिजली की खोज हुई और अब अणुशक्ति आ रही है। इन शक्तियों की खोज जैसे जैसे होती गयी, वैसे वैसे समाज व्यवस्था और राज्य-व्यवस्था में फर्क पड़ा। अब अणुशक्ति आने वाली है, तो समाज-शास्त्र में एक नया विचार आया है कि फिर से सत्ता विकेन्द्रित हो, गाँव-गाँव में सत्ता आये और गाँवों को जोड़ने वाली कड़ी के तौर पर ऊपर की सत्ता रहे। अणुशक्ति के आने से गाँव-गाँव स्वावलंबी हो सकते हैं, याने हर गाँव में एक परिपूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो सकता है। इसलिए अब विचारचक्र दूसरी दिशा में जा रहा है और केन्द्रित सत्ता के बदले विकेन्द्रित सत्ता की बात सोची जा रही है। यह माना जा रहा है कि जो काम गाँव कर सकते हैं, वे सब गाँवों में पूर्ण हों और ऊपर की सत्ता सिर्फ सलाह देने वाली हो। मैंने तो यहाँ तक कहा है कि हर गाँव में यूनिवर्सिटी होनी चाहिए, याने पहले से आखिर तक की तालीम का इंतजाम होना चाहिए और हो सकता है।

चिंतन और मंथन

दुनिया भर में इस दिशा में कुछ चिंतन चल रहा है और हमारे देश में भी बारह साल के खट्टे मीठे अनुभवों के बाद आज भिन्न भिन्न पार्टियों का चिंतन चल रहा है। कुछ दावे सोचते हैं, तो कुछ बायें। मैं उसे चिंतन और मंथन कहता हूँ। दीखने में तो यह दीखता है कि लोगों में असंतोष है, भिन्न-भिन्न पार्टियों के नेता एक-दूसरे के खिलाफ लोगों को समझाते हैं, तो कुल मिला कर दिमाग की सफाई के बदले उलझन बढ़ रही है। पर मुझे खुशी होती है, क्योंकि यह मंथन है, इसमें से सद्विचार सूझेगा।

अपने देश में इस वक्त सब पार्टियाँ सोच रही हैं और महसूस कर रही हैं कि पार्टियों की उलझन बढ़ी है, एक पार्टी में कई ग्रुप होते हैं और उसके अंदर भी और ग्रुप, जिससे उत्तर प्रदेश वाले तो अच्छी तरह से परिचित हैं। शहर बड़े बनते चले जा रहे हैं और तालीम बढ़े तो भी खतरा, न बढ़े तो भी खतरा ऐसी हालत है। क्योंकि तालीम बढ़ेगी तो बेकारी बढ़ेगी और तालीम नहीं बढ़ेगी तो निरक्षरता रहेगी। भूमि-समस्या के

जनता महसूस कर रही है कि देश की हालत में स्वराज्य के बाद भी कोई अंतर नहीं आया है

देश में स्वराज्य के बाद जो मसले पैदा हुए थे वे सारे वैसे-के-वैसे कायम हैं और नये नये मसले पैदा हो रहे हैं। कोई खास मसला हल हुआ हो, ऐसा एहसास नहीं हो रहा है। कुछ थोड़ा फर्क पड़ा हो, फिर भी गरीबी कायम है, बेकारी बढ़ रही है, भोग विलास की भावना और आरामतलबी भी बढ़ रही है, विषमता घटी नहीं, बल्कि बढ़ी है। ऊँच-नीच भेद मिटा नहीं, मजदूरों में असंतोष है, विद्यार्थियों को कुछ सूझता नहीं है कि आगे क्या किया जाय, उनकी आँखों के सामने अंधेरा है, हरिजनों की हालत सुधरी नहीं और इस लाक के लिए उन्हें और सहूलियतें देना तय हुआ है, आदिवासी अपने स्थान पर ही हैं, उनमें कुछ खास प्रगति नहीं हुई। हर साल सौ करोड़ रुपये का अनाज बाहर से मंगवाना पड़ता है। पड़ोसी के साथ पहले जो मसले थे वे कायम हैं और नये मसले पैदा हो रहे हैं। देश के अंदर

बारे में हम नौ साल से सोच रहे हैं, कुछ कर रहे हैं। अब कुछ 'सीलिंग' की बात हो रही है और 'कोआपरेटिव सेती' के नाम पर उसे टालने की बात भी हो रही है। बड़े-बड़े फार्म बने हैं और 'सीलिंग' बनेगा तो भी उन्हें बरी रखा जायेगा। याने भूमि समस्या हल नहीं हुई। गाँवों के उद्योग टूट रहे हैं, ग्रामोद्योग बनाने की कुछ बात चल रही है, कुछ करते भी हैं। पैसा देते भी हैं, लेकिन ग्रामोद्योग बनाने में पैसा देते हैं और ग्रामोद्योग तोड़ने में भी पैसा देते हैं। दाहिने हाथ से भी देते हैं और बायें हाथ से भी देते हैं, जिससे कि सरकार, ग्रामोद्योग बनाने वालों का भी, और तोड़ने वालों का भी संतोष हो। उन्होंने यह माना है कि ग्रामोद्योग भी कुछ रोजगार देंगे और यंत्रोद्योग भी देंगे। इसलिए दोनों चलते हैं। हम सबने माना यह है कि कुछ सूझ नहीं रहा है, दिमाग में सफाई नहीं है। अब तो लोग, आम लोग नहीं खास लोग, यह भी मांग कर रहे हैं कि हमारी बाहर-सीमा मजबूत होनी चाहिए। सेना मजबूत होनी चाहिए, उसमें जरा भी ढील नहीं होनी चाहिए। सेना पर खर्चा बढ़ा सकते हैं, इस तरह की सरकार को चेतना, पार्लियामेंट में बहुत सारे लोग दे रहे हैं।

"आप एग्रेसिव बनिये"

ऐसा सारा दृश्य हम भारत में देख रहे हैं तो उससे हममें बहुत सारा उत्साह पैदा होता है। लगता है कि संकट हो तो ऐसा ही हो। तभी काम करने में जोर आता है। संकट न हो तो जीवन रसविहीन मालूम होता है। सामने जब पहाड़ दीखता है तो कवि कहता है—"मंदी गति न पड़े जो राही!" अपने जो संकट के काले बादल दीख रहे हैं, वे बड़े तो हैं, लेकिन "हिम्मत से न बड़े"। इसीलिए इन दिनों हममें बड़ा उत्साह आ रहा है। जिधर देखो उधर लगता है कि कोई काम ही नहीं बन रहा है। हमारा कोई लाभ पराक्रम हुआ है इसलिए नहीं, बल्कि इसलिए कि दूसरों से कुछ ही नहीं हो रहा है। लोगों ने हमारे लिए आशा रखी है, जो बढ़ रही है। देश में सर्वोदय का कुछ काम हुआ है और आशा पैदा हुई कि शायद यह तरीका चले। इसलिए कि दूसरे तरीके करीब नाकामयाब साबित हुए हैं और दूसरे तरीकों से कुछ होगा, ऐसा भरोसा नहीं रहा है। जगह जगह लोग मुझसे कहते हैं कि आप जरा 'एग्रेसिव आक्रमणकारी' बनिये। कल जब एक नेता ने भी मुझसे यही कहा तो मैंने पूछा आक्रमणकारी बनना याने क्या करना होगा। तो उन्होंने कहा कि 'पोलिटिकल पार्टी' बनाइये और मैदान में, अखाड़े में आइये। जब उन्होंने 'अखाड़े में आइये' कहा तो मुझे लगा कि 'गड्ढे में आइये' कहा। फिर मैंने कहा कि आप लोगों के चार पैले [नेहरू, जयप्रकाश, राजाजी, कृपलानीजी] आमने-सामने में चल रहे हैं, अब मैं भी आऊँ तो बड़ा मजा कि पाँच पैले चल रहे हैं। (क्रमशः)

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

सामुदायिक विकास-योजना की असफलताओं के कारण

उस दिन लोकसभा में सामुदायिक विकास-योजनाओं की अनुदान की रकम पर विचार हो रहा था। बहस के सिलसिले में स्वभावतः सदस्यों ने इस योजना की सफलता-विफलता पर अपने अपने विचार प्रकट किये। सयोजन जब ऊपर से और ऐसे लोगों द्वारा होता है, जिन्हें काम का और समस्याओं का भीतरी और बुनियादी ज्ञान नहीं होता, तब कैसी-कैसी भूलें होती हैं और समस्या के हल के उपाय कैसे और कितने गलत होते है, यह इस बहस को देखने से ज्ञात हो सकता है। एक सदस्य ने कहा बताते है कि सामुदायिक विकास-योजनाओं का एक स्वतंत्र मंत्रालय होना चाहिए, तब इसका काम ठीक चलेगा। इस विभाग के स्वयं मंत्री श्री एस. के. डे साहब के भाषण के जो समाचार छपे है, यदि वे ठीक हैं तो दुःख के साथ कहना पड़ता है कि शायद वे भी इस योजना की असफलता या कम सफलता की तह में नहीं जा सके हैं। यद्यपि ऐसा कहना दुःसाहस ही है। बहस में उन्होंने असफलता के कारण बताये। एक तो यह कि अभी किसानों को पूरी-पूरी अनुकूलताएँ नहीं मिल सकी हैं। जब उन्हें रासायनिक खाद, लोहा, इस्पात और सुधरे बीज आदि पर्याप्त मात्रा में मिलने लग जायेंगे, तब धीरे-धीरे अपने आप उत्पादन बढ़ जायेगा।

दूसरा कारण श्री डे साहब से यह बताया कहा जाता है कि सरकार का यह विकास कार्यक्रम कुछ स्वार्थी लोगों को पसंद नहीं आया, जो उसे विफल करने पर तुले हुए हैं। इन लोगों को पंचायती राज, सहकार संस्थाएँ और सत्ता का विकेन्द्रीकरण काँटे की तरह चुभ रहा है। इसके कारण उनके द्वारा किये जाने वाले शोषण में बड़ी बाधा पड़ जाती है। इसलिए ये लोग इन योजनाओं को सफल नहीं होने देना चाहते। (ये ठीक उनके शब्द नहीं, सार मात्र है।)

विकास-योजना का उद्देश्य

सामुदायिक विकास योजना का मुख्य उद्देश्य था ग्रामीण जनता में स्वावलम्बन को प्रोत्साहन देना। इसीलिए तीन वर्ष का कार्यक्रम बनाया गया था। हेतु यह था कि इस अवधि में जनता का मार्गदर्शन, प्रोत्साहन वगैरह इस प्रकार कर दिया जाय कि फिर वह स्वयं इन कामों को उठा ले और अपनी बुद्धि और साधनों से काम चला ले जाये। इस हेतु से प्रत्येक क्षेत्र में उसका मार्गदर्शन करने के लिए योजना-अधिकारी और ग्राम सेवक भी नियुक्त किये गये और विकास-रकावी वगैरह के रूप में काफी धन भी वहाँ खर्च किया गया। परन्तु इसका परिणाम क्या हुआ? क्या लोग स्वावलम्बी हुए? मुझे भय है कि जो अपेक्षा की गयी थी और जितना धन बहाया गया है, उसका दसवाँ हिस्सा भी सफलता नहीं मिली है। पहले जो थोड़ा-बहुत अपने पैरों पर खड़ा रहने और पुरुषार्थ करने की प्रवृत्ति लोगों में थी, वह भी बढ़ने के बजाय कम हुई है। सहायता भी उन्हीं लोगों को मिली है, जो पहले से साधनवान थे। जिनके पास कुछ नहीं था, वे देखते ही रहे। इन भाग्यवानों के खेत, खलिहान या कुएँ पर कुछ काम बढ़ गया हो और उस कारण कुछ काम मिल गया हो तो भले ही। अन्यथा साधनहीन ग्रामीणों को व्यापक रूप से कोई गृहोद्योग का काम मिल गया हो, ऐसा शायद ही कहीं हो।

तो सामुदायिक विकास-योजनाओं के अमल में मुख्य दोष रहा है, स्वावलम्बन की वृत्ति के विकास की कमी अथवा अभाव और दूसरे जो सचमुच सहायता या सहारा पाने के अधिकारी थे, उनका ज्यों-का त्यों असहाय ही रह जाना।

कार्यकर्ताओं का जीवन

इन क्षेत्रों में जो अधिकारी या कार्यकर्ता पहुँचे हैं, वे भी प्रायः शहरी क्षेत्रों के सफेदपोश वर्गों से ही लिये गये हैं, जिन्हें पुस्तकी ज्ञान हो तो स्वयं काम करने का अभ्यास नहीं, ऐसे लोगों के हाथों में सघन काम की योजनाएँ कैसे सफल होंगी? जिस मार्ग से प्रत्यक्ष काम का अनुभव और सूझ-बूझ वाले प्रत्येक क्षेत्र के कार्यकर्ता मिल सकते हैं, उस पर, अर्थात् बुनियादी शिक्षा पर अभी भलीभाँति शासन का और समाज का भी ध्यान केन्द्रित नहीं हुआ है। उसका उच्चारण तो हो जाता है, परन्तु अमल से अभी हम दूर ही हैं। पूज्य विनोबा कहा करते हैं कि राज्य परिवर्तन होते ही जिस प्रकार झंडा और सिक्का बदलता है, उसी प्रकार शिक्षा भी बदलनी चाहिए। शिक्षा के बदले बगैर केवल झंडे और सिक्के का बदलना निष्फल रह जाता है। इसी कारण तो स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद भी स्वावलम्बी नागरिकों के राष्ट्र की हैसियत से हम अभी तक लगभग वहीं के वहीं हैं।

राष्ट्र में हमारे पास बहुत बड़ी-बड़ी रसायनशालाएँ (रिजिकल लेबोरेटरीज)

हैं, जिनमें संशोधन कार्य होते रहते हैं। केन्द्रीय प्राक्कलन-समिति ने इनके संबंध में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा है कि हमारे देश में विज्ञान की जो शिक्षा दी जाती है, उसमें बुनियादी फर्क करने की जरूरत है। यह शिक्षा एक खास लक्ष्य को लेकर हो और उससे कुछ निष्पत्ति भी होनी चाहिए। निरुद्देश्य पुस्तकी शिक्षा बेकार है।

समिति ने इसके उदाहरण के रूप में कहा है कि देश में वनस्पति अर्थात् जमे हुए तेल के दोषों के बारे में इतने वर्षों से विवाद चल रहा है, और समाज में बड़ा असंतोष है। उसकी माँग है कि वनस्पति की रासायनिक जाँच हो और उसको कोई ऐसा रंग दे दिया जाय, असली घी में उसकी मिलावट नहीं हो सके, ताकि जो लोग असली घी खाना चाहते हैं, उन्हें वह मिल सके।

इसी प्रकार उद्योगों के अन्य क्षेत्र में भी विज्ञान का पूरा पूरा उपयोग होना चाहिए, जो नहीं हो रहा है। इस पर इस समिति ने क्षोभ प्रकट किया है और विज्ञान की शिक्षा को सही मोड़ देने के बारे में एक कमीशन की नियुक्ति की सिफारिश की है। परन्तु कमिटियों और कमीशनों की नियुक्तियाँ तथा हर छोटी बड़ी बात के लिए इनका विदेशों में भेजा जाना भी स्वयं एक रूढ़ि सी बन गया है। दूसरों से ज्ञान प्राप्त करना बुरा नहीं। जितना ज्ञान हमें है उसी पर यदि हम शोधक बुद्धि से अमल करें और उसके बाद आगे की बात जानने के लिए जरूरत हो तो भले ही बाहर जायँ, यह कुछ समझ में आ सकता है। परन्तु अपने घर को हम देखना भूल जाते हैं और दौड़ते रहते हैं। और एक के बाद एक कमीशन नियुक्त करते जाते हैं। एक का प्रतिवेदन आता है, उस पर पूरा या अधूरा भी अमल नहीं होता और तब तक दूसरे की नियुक्ति हो जाती है। और दूसरे प्रतिवेदन को भी जिल्दें अलमारियों की शोभा बढ़ाने लगती हैं। थोड़े दिन बाद ये दोनों पुरानी चीजें हो जाती हैं और फिर तीसरी कमिटी या कमीशन की नियुक्ति की चिन्ता होती है। असल में जरूरत है हर क्षेत्र में लगन के साथ और गहराई के साथ काम करने की। यदि यह हम करने लगेंगे तो सफलताएँ घर बैठे आयेंगी।

—वैजनाथ महोदय

लोकनागरी लिपि *

मजहबों के दिन गये !

हिंदू और सिक्ख साथ-साथ रहें और साथ-साथ पढ़ें, यह बड़ी बात तो नहीं है, परंतु आज दोनों बड़ी बात हो गयी है। हमने देखा कि गुरुद्वारे में सिक्खों ने आपस में कृपाण दिखाई। पता नहीं कौन बीच में पड़ा तो लड़ाई शांत हुई। होली के अवसर पर भी पटियाला में हिंदुओं और सिक्खों में दंगे हुए थे। हमने सिक्खों की सभा में कहा था कि अब कृपाण नहीं, कृपा चलेगी। कृपाण आपस में चल सकती है। पर सायंस-आणविक जमाने में कृपाण नहीं चल सकती। संस्कृत में एक शब्द आया है, जिसका अर्थ भाई भी है और शत्रु भी। आज जितनी भी दुश्मनी होती है, वह भाई-भाई के बीच में ही होती है। यदि हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच झगड़ा होता है तो वह भाई-भाई का झगड़ा है।

कुछ लोग विद्या पढ़ते हैं, काम नहीं करते और कुछ लोग काम करते हैं, विद्या नहीं पढ़ते। ऐसे दो टुकड़े हो गये हैं। प्राचीन काल में ऐसा नहीं था, परंतु बीच के जमाने में ही यह भेद बढ़ा है। हमारे यहाँ अंग्रेज आये। फलस्वरूप, ज्ञानी-भेद की दीवार खड़ी हो गयी। पढ़े-लिखे काम नहीं करते, यह तीसरी दीवार खड़ी हो गयी। कर्म विरुद्ध ज्ञान और ज्ञान विरुद्ध कर्म का जोर बढ़ा। ऐसे तीन झगड़े पड़े। तीन की गाँठ पड़ गयी। अंग्रेज तो गये, पर अंग्रेजीयत रह गयी।

(३ अप्रैल '६०)

* लिपि-संकेत ि = ी, ी ; ी, = रु = ऌ,

सहज सूझ की नई तालीम

जुगतराम दवे

ग्रामदानी गाँव देखने और गांधी-निधि के सेवक भाइयों से मिलने के लिए मैं वड़नगर गया था। वहाँ के स्थानीय कार्यकर्ता डा. द्वारकादास जोशी ने मुझको वड़नगर शहर की कुछ झाँकी कराने की दृष्टि से एक छोटी सी सभा बुलायी थी। सभा छोटी सी थी, लेकिन सभी सार्वजनिक जीवन में रस रखने वाले थे।

मैं गुजरात नई तालीम-संघ की गुंदी की बैठक से सीधा ही आ रहा था, जहाँ गुजरात का नया राज्य अपना कारोबार गुजराती भाषा में ही चलावे, ऐसा प्रस्ताव किया गया था। इसलिए मैंने स्वाभाविक ही इस प्रस्ताव के पीछे की भूमिका समझाने की कोशिश की। प्रतिनिधिस्वरूप की इस सभा में वर्तमान सरकार की अंग्रेजशाही नीति को नापसंद करने वाले विचार सुन कर मुझे सानंद आश्चर्य हुआ।

चर्चा के दौरान में बुनियादी शिक्षा पर चारों ओर से काफी प्रहार हो रहे थे :

"यह तो सिर्फ नाम के साइनबोर्ड दिये हैं। शिक्षा-प्रणाली में तो कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है।"

"आजकल बुनियादी तालीम भी एक फैशन बन गयी है, हमारा जिला भी इस दिशा में आगे है, ऐसा दिखाने मात्र की दृष्टि से ही शालाओं की संख्या बढ़ा-चढ़ा कर बतायी जाती है।"

"कातने-बुनने का धंधा हमारे बच्चों के जीवन में कभी उपयोग में नहीं आने वाला है, तो फिर उन्हें ऐसा पेशा सिखाने से क्या फायदा?"

"बुनियादी शालाएँ तो खोल देते हैं, लेकिन तालीम पाये हुए शिक्षक नहीं भेजे जाते।"

"साधन-सरंजाम तो देते नहीं, फिर बुनियादी शिक्षा कैसे दी जाय?"

यह सब सुन कर मैंने भाषा संबंधी चर्चा को बुनियादी तालीम में बदल दिया।

सभा अपनी चर्चा में मग्न थी। नई तालीम का सर्वांग संपूर्ण चित्र मुझसे शांति से कोई सुनने वाला नहीं था। यह प्रसंग भी नहीं था। पर बीच बीच में समय देख कर मैं नई तालीम के मुख्य मुख्य सिद्धांत रख देता था।

हम उस सभा से उठने ही वाले थे कि एक शिक्षक भाई आते दीख पड़े। डा. जोशी ने कहा, "आइये, आइये, हम आपकी ही इन्तजार में थे। आपके शिक्षा के अनुभव सुनाइये।" कुछ आग्रह के बाद इन भाई ने अपनी बात शुरू की :—

"गाँव में जाकर मैंने देखा तो रजिस्टर में तो ७० बच्चों के नाम थे, लेकिन रोजाना आते थे सिर्फ २०। इनमें से भी कभी-कभी माँ-बाप आकर अपने खेती काम के लिए बच्चों को ले जाते थे। मैं सोच रहा था कि इस परिस्थिति में मैं कैसे काम करूँगा और किस ढंग से संस्था चलाऊँगा।

दूसरी भी एक बात देखी, गाँव के बच्चे मवेशी चराते थे। चराते चराते वे शाला के कम्पाउण्ड में ले आते थे और शाला का घास-चारा डालते थे। शाला जब बंद हो तो उसकी दीवार पर भी मवेशी चढ़ जायें। ऐसी परिस्थिति में अब मैं क्या करूँ? क्या इन बच्चों को डाँटने लगूँ? उनके माता पिता के पास शिकायत करूँ? मैंने ऐसा कुछ भी न किया। मेरे एक साथी शिक्षक हैं, उनसे मैंने कहा, क्या हम स्वयं बाड़ बना लेंगे? मुझे तो हाथ से काम करने की आदत नहीं थी। लेकिन मेरे मित्र उत्साही थे। वे तुरन्त काम में लग गये, फिर तो मैंने भी हाथ बँटाया। हम लोगों को काम करते देख कर बच्चे भी मदद में पहुँच गये। मैंने देखा, इस काम में तो ये बच्चे हमसे कहीं होशियार थे। कुछ ही दिनों में बाड़ बन गयी और मवेशियों की परेशानी का इस तरह से अन्त हुआ।

फिर हमने सोचा कि केवल पढ़ाने-लिखाने से बच्चों में रस पैदा नहीं हो सकता, खेल-कूद शुरू करना चाहिए। नजदीक ही मैदान था, लेकिन उस पर कूड़ा, कंकड़, काँटे पड़े थे, जमीन समतल नहीं थी। थोड़े दिन के लिए परिश्रम करें तो सुन्दर मैदान तैयार हो सकता है। प्रार्थना के बाद मैंने कुछ कुछ बोलना शुरू किया था। वातावरण निर्माण करने में इससे बहुत फायदा हुआ। इस ढंग से लड़के उत्साहित हो गये। आखिर सबने मिल कर मैदान तैयार कर लिया।

गाँव के लोग यह सब देखते थे। वे लोग आपस में चर्चा करते थे कि यह कोई नये ढंग का शिक्षक है। गाँव के लोग जब शाला में आते थे तो हम दिखाते थे कि बच्चे काम के साथ गणित की पढ़ाई भी करते हैं।

मैदान तैयार हो गया और खेल-कूद में रंग आ गया। अब हमने कुआँ खोदने का नया काम शुरू किया। हम लोग काफी गहराई तक पहुँचे थे, लेकिन पानी नहीं निकला। हम निराश हो गये, पानी की आशा छोड़ कर इस काम को बंद करने वाले थे, इतने में हममें से किसी ने कहा—एक दिन और नसीब को आजमायें। उसी दिन पानी की धारा फूट निकली। हमने गाँव के लोगों को इकट्ठा किया, नारियल आदि बाँट कर उत्सव मनाया।

नये गाँव का यह मेरा सात मास का अनुभव है। लोगों का प्रेम हमें मिला। लड़के उमंग से आने लगे। हमारी इस मेहनत का कैसा जादू हुआ! लड़कों से जबरन काम नहीं कराना पड़ा। गाँव के लोगों को भी सहायता के लिए हम बुलाने नहीं गये। स्वयं अपने आप आकर काम में सहायता पहुँचाने लगे।

शाला के चौगान में अब तो हमने एक छोटा सा बगीचा लगाया है। इसमें गलगोटे के फूल भी खिले हैं। अपने हाथों से लगाये इन पौधों से फूल तोड़ने का नियम विद्यार्थी आप ही पालन करते हैं। फूल परिपक्व होने के बाद शाला की छात्राओं को देने का अब हमने निर्णय किया है। बारी बारी से उनको फूल मिलते हैं। जिनकी बारी आती है बाल सँवार कर वे बड़े शौक से अपने बालों में लगाती हैं।

आगे जाकर मैंने यह भी सूचना दी कि हरएक लड़का नहा धो कर नित्य अपने माता पिता को प्रणाम करता रहे। छोटे छोटे बच्चों को इस तरह प्रणाम करते देख माँ बाप की खुशियाँ नहीं समाती। यह सब देख कर भीतर ही भीतर कहते सुनायी पड़ते हैं कि यह आदमी कोई अजीब शिक्षक है।"

शिक्षक भाई ने बहुत स्वाभाविक ढंग से अपनी ये सब बातें रखीं। उनकी बातों में न कोई शब्दों का आडम्बर था न घबराहट थी।

उनके बैठ जाने पर तुरन्त मैंने कहा "भाइयो, इसी का नाम सहज सूझ की नई तालीम है। आप लोगों को विश्वास हो जायेगा कि शिक्षक अगर अपना हृदय उँडेल कर काम करें तो नई तालीम बहुत ही सरल और स्वाभाविक है। नई तालीम बहुत पढ़े-लिखे व्यक्ति ही चला सकेंगे, और इसमें ज्यादा खर्च लगता है, यह हमारा वहम मात्र है। यह वहम इस अनुभव को सुन कर दूर हो जाता है।"

मुझे जो कुछ कहना था, वह सब इन शिक्षक मित्र की बातों में बहुत स्वाभाविक ढंग से आ जाता है। नई तालीम के शिक्षक को केवल 'मास्टरपन' छोड़ कर शरीर श्रम का वायु-मंडल निर्माण करना चाहिए, यह मुद्दा कितने सुन्दर ढंग से आ गया। नई तालीम के शिक्षक को भक्तिभाव के मार्ग से रस लेकर उनमें परिवर्तन लाने में रस लेना चाहिए। इससे बच्चों को उनकी ओर से प्रोत्साहन मिल सकेगा। मैं यह समझाना चाहता था कि शिक्षकों को अपनी शाला को ग्राम-निर्माण का केन्द्र बनाना चाहिए। बहुत से लोगों को शंका होती है कि अगर शिक्षक इन सब कामों में लग जायेगा तो फिर पढ़ायेगा कब? लेकिन अभी हमने जो सुना, इससे हमें विश्वास हो जाता है कि शिक्षक अपने स्वाभाविक ढंग से यह सब कुछ कर सकता है। उस पर या विद्यार्थियों पर कुछ बोझ नहीं पड़ता। उलटे इन कामों को अपने जीवन में आनन्द ही मिलता है।

●

शिक्षा का लक्ष्य

"सुदामा : गुरुदेव, यह बतलाने की कृपा कीजिये कि जीवन का लक्ष्य क्या है?

सन्दीपन : सुदामा, उसकी बुनियाद सचाई में है। उसका ताज करुणा और प्रेम है। बहुतेरे लोग धन और नाम की चिंता करते हैं। वे भूल जाते हैं कि जीवन के दो बुनियादी नियम, *सचाई और प्रेम* हैं।

सुदामा : कृपा कर शिक्षा का रहस्य बतलाइये।

सन्दीपन : आत्मसंयम, जीवनी शक्तियों का नियंत्रण।

सुदामा : सचाई के लक्षण क्या हैं?

सन्दीपन : एक लक्षण है, विशाल दृष्टिकोण। वह भटकने वालों का दृष्टिकोण नहीं है, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति का दृष्टिकोण है, जो अपने को यात्री मानता है, जो परमात्मा में ही अपना निवास पहचानने का प्रयत्न करता रहता है।

सुदामा : मैं किस प्रकार परमात्मा में अपना निवास पाने का यत्न कर सकता हूँ?

सन्दीपन : विचार और आचार, दोनों में अपने और अपने साथियों के साथ—वे साथी जो जीवन के मार्ग में ही तुम्हें अनायास मिलते रहते हैं—सचाई का बर्ताव करने का यत्न करो।

सुदामा : गुरुदेव, आप शिष्यों के लिए कौनसी मुख्य शिक्षा मानते हैं?

सन्दीपन : अपने ही पैरों पर खड़े रहना। किसी की नकल नहीं *करना।* अपने पर ही निर्भर रहना। हरएक चीज को *अपनी ही* आँखों से परखना। अपने मन को खुला रखो। मनुष्य के लिए कोई सत्य (वास्तविकता) पराया नहीं है। सत्य किसी भी *दिशा से सामने* क्यों न आये, उसका स्वागत करो। तब तुम जीवन के मार्ग में गाना गाते गाते-आगे बढ़ सकोगे।

सुदामा : लेकिन जीवन में *हमें संघर्ष* और सन्ताप का सामना करना पड़ता है।

सन्दीपन : यह तो सच है। लेकिन *कभी नहीं भूलना* चाहिए कि संघर्ष और सन्ताप के द्वारा ही हमारी शक्तियों का विकास होता है। इससे हम सच्चे अर्थ में मनुष्य बनते हैं। *ये भावी जीवन में* सामने आने वाली परिस्थितियों और कष्टों का सामना करने के *लिए हमें तैयार* करते हैं।"

[उपनिषदों की कथा के आधार पर]

नारायण देसाई

विवेक ही हमारे आन्दोलन की कसौटी है

सत्याग्रह, एकात्मभाव और बंधुभाव के संशोधन पर बल देने वाले श्री नारायण देसाई के सेवाग्राम-सम्मेलन में दिये गये व्याख्यान पर आधारित एक बोधप्रद विवेचन।

मुझे लगता है कि कार्यक्रम के बारे में हमें जो करना है उसे एक शब्द में यदि रखना हो तो वह है 'विवेक'। हमें विवेक करना है, एकाग्रता और समग्रता के बीच हमें विवेक करना है, गति और स्थिति के बीच। और यह विवेक अगर हम साध सकें तो हमारे कार्यक्रम में चित्त-शुद्धि की शक्ति और क्रांति की शक्ति, इन दोनों का समन्वय हो सकेगा। दृष्टि समग्र होनी चाहिये, काम एकाग्र होने चाहिये, गति होनी चाहिये, लेकिन स्थिति को समझते हुए। इन दोनों चीजों को अगर हम जोड़ते हैं तो उससे हमारी नजर क्षितिज तक व्यापक होगी। लेकिन कदम अपनी भूमि पर कायम रहेंगे। सारे कार्यक्रम को हम विवेक की कसौटी से हम तौलते जायें तो हम सही दिशा में अवश्य आगे बढ़ सकेंगे।

समग्रता और एकाग्रता, इन दोनों का विचार थोड़ा सा गहराई में जाकर करना चाहिये। मेरा खयाल है कि जब तक कार्य के बारे में अनासक्ति नहीं आती, तब तक दृष्टि के बारे में समग्रता नहीं आयेगी। कार्यक्रम चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, देश में उथल पुथल मचाने वाला, जगत् को दिशा देने वाला, लेकिन यदि वह हमको बांधता करता है, बाँधता है, तो उसमें समग्र दृष्टि आना असंभव सा लगता है और मुझे लगता है कि हम सब कार्यकर्ता यहाँ चिन्तन करने के लिए इकट्ठे हुए हैं तो इस चीज की ओर ध्यान दें कि हमें अपना कार्यक्रम कहीं बाँध तो नहीं रहा है। दूसरी चीज समग्रता के लिए हमें यह सोचनी होगी कि हमें कोई 'लेबल' तो नहीं लग रहा है? विश्व मानव बन कर ही हम सोचें। ये दोनों चीजें मेरा खयाल है कि मूल में शिक्षण की हैं। समग्रता एक बार शिथिल हो जाने के बाद, कुछ कार्यक्रम में पड़ जाने के बाद बहुत आसानी से नहीं आती। गुजराती में कहावत है, एक बार मटकी जब पक्की हो जाती है तो उसके बाद ऊपर का सिर बाँधा नहीं जाता। अपनी मटकी जब कच्ची हो, तभी से समग्रता आनी चाहिये।

शोध की जरूरत

जिसके लिए मुझे आवश्यक लगती है, अपने गुट की तैयारी की और शोध की। उस शोध के लिए तीन विषयों का जिक्र मैं यहाँ करना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि केवल तड़फड़ाहट से वह शोध नहीं होगी। उसके लिए तीन चीजों की शोध होनी चाहिए। एक है, सत्याग्रह के सबंध में हमारी कुछ शोध हो। दूसरी है, हम एक हैं या एक दल हैं, छोटा गुट है, झुण्ड है, उसमें से सबसे कैसे मिलें, उसके तरीकों की शोध और तीसरी है, भाईचारे की शोध। ये तीनों चीजें हमारे कार्यक्रम के साथ सीधा सबंध रखती हैं।

सत्याग्रह का स्वरूप

कांग्रेस-नगर में हर जगह यह विचार चल रहा है कि हमारे पास प्रतिकार का कोई साधन चाहिये। प्रतिकार करने का कोई आन्दोलन उठाना चाहिये। सत्याग्रह में दो बाजू हैं और दोनों बाजुओं का महत्त्व एक-सा है। होता यह है कि कभी एक बाजू का महत्त्व अधिक होता है, कभी दूसरे बाजू का, और इसीलिए वह सत्याग्रह संतुलित नहीं होता। अन्याय का प्रतिकार, यह उसका एक हिस्सा है और दूसरा हिस्सा अन्यायी का सहकार है। एक ओर से असहकार करना है अन्याय के साथ और दूसरी ओर से सहकार करना है, उसको आगे बढ़ाने में मदद करनी है, सहायता करनी है अन्यायी के साथ। कभी कभी सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम के विचार में हम अन्यायी को साथ रखने के विचार में प्रतिकार का अंश भूलते हैं। कभी कभी प्रतिकार के अंश का विचार करते हुए उसका सौम्य के स्वरूप का अंश भूल जाते हैं। दोनों पहलुओं का महत्त्व समान है और इसलिए दोनों पहलुओं का साथ साथ चिन्तन होना चाहिये।

समाज के साथ एकात्मभाव

दूसरी शोध हमें करनी होगी कि हम एक वर्ग हैं, कुछ छिटपुट कार्यकर्ता हैं, वह बदले और हमारा समाज के साथ एकात्मभाव कैसे हो? हमारा आन्दोलन जनता का आन्दोलन कैसे बने? जयप्रकाशजी ने इसको बहुत ही सुन्दर ढंग से समझाया था कि यह केवल अपने हाथ की बात नहीं। परिस्थिति में कोई ऐसा क्षण आ सकता है कि जब बिजली की तरह असर हो और सारी परिस्थिति अपने अनुकूल हो जाय। उसके लिए तो हमको खुली आँखें रख कर उसके सुयोग आते हैं या नहीं उसको देखते हुए अपेक्षा ही करनी होगी, इन्तजार करना होगा। लेकिन फिर भी यह चीज भूल नहीं जायें कि व्यक्ति की व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को छूए बिना नहीं रहती। समाजव्यापी कार्यक्रम बनाना हो तो हृदय में अन्दर अपने बारे में तीव्रता चाहिये। उसके बिना हमारा कार्यक्रम समाजव्यापी होगा, ऐसा मुझे नहीं लगता। हमारी तीव्रता इस विषय में है कि

> हमारा कार्यक्रम समाजव्यापी नहीं होता। लेकिन अन्याय नहीं मिटता है। उस अन्याय को मिटाने के लिए मेरी ओर से कोई कोशिश हो नहीं रही है। उसके बारे में तीव्रता नहीं होती है। आन्दोलन नहीं बढ़ रहा है इसके बारे में फिकर है, लेकिन उसको बढ़ाने के लिए मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ, उसकी फिकर कुछ कम होती है।

मेरा खयाल है कि इसकी तीव्रता जितनी बढ़ेगी उतनी ही आन्दोलन में व्यापकता आनी संभव है। और एक चीज, हमारा आन्दोलन भूमिहीनों को स्पर्श करने तक गया है, लेकिन भूमिहीनों में हमें समरस करने तक पहुँच नहीं पाया है। क्या जब हम भूदान-पदयात्रा में जाते हैं, तब भूमिहीनों के साथ रहते हैं? गाँव का जो सबसे बड़ा आदमी होता है, उसी के यहाँ रहने का अक्सर प्रबंध होता है। इस तरह हम उनके साथ मिल नहीं पाते। उनके साथ मिलने के 'टेकनिक' हमें ढूढ़ने होंगे, और यह भी नहीं भूलना चाहिये कि यह केवल भूमिहीनों का ही कार्यक्रम नहीं है, भूमिवान, सब किसान उन सबमें भी मिलने के कार्यक्रम होने चाहिये। होता यह है कि हम भूमिवान से भी भिन्न, भूमिहीन से भी भिन्न ऐसे एक स्वतंत्र, अलग कार्यकर्ता, एक नया गोत्र बनाते हैं। क्या मध्यम वर्ग की समस्या हम अपनी समस्या बना सकते हैं? क्या पूँजीपति की जो दिक्कतें हैं उनके साथ हमारे दिल में सहानुभूति है? मुझे लगता है कि हमारे दिल में तिरस्कार ही कभी-कभी व्यक्त होता है, सहानुभूति की कमी दीखती है।

> सहानुभूति की अगर कमी रही तो मुझे भय है कि हम अहिंसा की दिशा में कदम नहीं उठा सकेंगे और अगर अहिंसा की दिशा में कदम नहीं उठा, तो इस क्रांति में हमें कोई दिलचस्पी नहीं। उसके लिए और एक चीज करनी होगी कि हम खुद सामान्य जन ही रहें, विशिष्ट जन न बनें।

विशिष्ट जन बनने के दो प्रकार हो सकते हैं। आदमी जान बूझकर, याद कर विशिष्ट बनने का प्रयत्न करता है, तब भी वह विशिष्ट जन बनता है। मैं विशिष्ट सरह से रहूँगा और धोती को थोड़ी और छोटी करने की कोशिश करूँगा, बाल को मुँड़ाने की कोशिश करूँगा और एक ही कुरता पहनूँगा, यह भी एक विशिष्ट जन बनने का ही प्रकार होता है और इसमें भी हम कभी कभी अहंकार करते हैं। क्या हम सर्वसामान्य जन जैसे हैं वैसे, सर्वसामान्य जन बन सकते हैं, रह सकते हैं। यह अगर होंगे, उसकी अर्थ में तो मैं मानता हूँ कि आन्दोलन अपना नहीं रहेगा, सर्वसामान्य जनता का होगा।

बंधुभाव का विकास

हम सब काम के लिए जाने में हमें भाईचारे को बढ़ाना होगा और भाईचारे के बारे में संशोधन करने होंगे। हमारी इस दिशा में गति है, ऐसा मैं नहीं मानता। उसके अलग-अलग साधन हो सकते हैं, जो मैं मानता हूँ कि उनमें से बहुत सारे हमको 'वेस्ट' से मिल सकते हैं। उनकी कुछ पचासों प्रकार की मीटिंगें होती हैं। मीटिंग होती है प्रार्थना के लिए, मीटिंग होती है बिजिनेस के लिए। दोनों को वे 'मीटिंग' ही कहते हैं! असल में मिलन जो होता है वह हमारा नहीं होता। एक तो बड़े समूह के कारण और दूसरा उसका 'टेकनिक' नहीं मिला है, उसके कारण। शायद उसकी थोड़ी टेकनिक आ जाय, तो हम लोग भी खुब मिल सकते हैं। इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।

इसके लिए पदयात्रा एक बेहतरीन कार्यक्रम है।

मैं यह कहता हूँ कि क्या पदयात्रा का कार्यक्रम जेल जाने के कार्यक्रम से कम पराक्रम करने की दृष्टि से देता है? २१ दिन उपवास करके एक आदमी बिछौने पर रहे, उसको हम सत्याग्रह मानते हैं और नौ साल से लगातार पेट भर खाना भी न खाकर घूमता रहे, उसे क्या हम सत्याग्रह नहीं मानेंगे? मुझे लगता है कि पदयात्रा में पराक्रमशीलता व बन्धुभाव की जो सम्भावना है, उसका लाभ हमें उठाना चाहिए। ● ●

प्रांत-प्रांत के अंचल से :

उत्कल में सर्वोदय-आन्दोलन

१९५७ में तन्त्रमुक्ति के बाद उत्कल में सर्वोदय आरोहण करीब डेढ़ साल तक सेवकों के अनौपचारिक सलाह-मशविरा के द्वारा चलता रहा। लेकिन धीरे-धीरे एक औपचारिक व्यवस्था की आवश्यकता महसूस की गयी और मई, १९५८ में प्रांतीय सर्वोदय-मण्डल की स्थापना हुई। उस समय उसका काम सिर्फ विचार विमर्श तथा सलाह देने तक ही सीमित था। सर्व सेवा संघ के नवविधान के अनुसार सन् १९५९ में जिला सर्वोदय-मंडलों की स्थापना हुई और उस समय प्रांतीय मण्डल की भी पुनर्रचना की गयी। उसका विधान सर्व सेवा संघ के नये विधान के ढाँचे पर बनाया गया। कार्यकर्ताओं की तालीम, प्रकाशन तथा प्रांतीय कार्यक्रमों का संयोजन मंडल की मुख्य जिम्मेवारियाँ बनीं।

लोकसेवक तथा शांति-सेना

उत्कल में कुल ४९४ लोकसेवक हैं तथा उनमें से ११५ शांति सैनिक बने हैं। इनमें से कितने क्रियाशील हैं, यह बताना मुश्किल है। कारण, अधिकतर लोगों से नियमित कार्य-विवरण मिल नहीं पाता है। वैसे प्रांत भर में ५५-६० लोकसेवक हैं, जो पूरा समय विचार-प्रचार, सर्वोदय-पात्र, शांति-सेना आदि आन्दोलनात्मक कार्यों में लगे हैं। पचास एक ऐसे लोकसेवक हैं, जो नई तालीम, आदिवासी सेवा, खादी, प्रकाशन तथा निर्माण के काम में नवजीवन मंडल, खादी मंडल, खादी कमीशन आदि के माध्यम काम में लगे हैं। आन्दोलन में भी उनसे समय-समय पर मदद मिलती है, पर इनका पूरा समय अपनी संस्थागत जिम्मेवारियाँ निभाने में ही जाता है।

यहाँ १३ जिलों में से ११ जिलों में जिला सर्वोदय मंडल बने हैं। बाकी दो जिलों में लोकसेवक नहीं हैं।

प्राथमिक सर्वोदय-मंडल पुरी में १०, कटक में ३, बालेश्वर में २ तथा कोरापुट में ३ बने हैं। गन्जाम, बलांगीर, सुन्दरगढ़ तथा ढेंकानाल जिले में सक्रिय लोकसेवक इतने कम हैं कि जिला-मंडल ही प्राथमिक मंडल की तरह काम करते हैं।

सेवकों में भाईचारे का सम्बन्ध हो और आपसी सलाह से काम किया जाय, इस पर जोर दिया गया है। एक हद तक आपसी मेल और भाईचारा बढ़ा है। आपसी सलाह से काम करने की आदत भी कुछ बढ़ी है, मगर इस दिशा में अब काफी प्रगति करनी है। हमारा पुराना समाज 'अथारिटेरियन' रहा है और अधिकतर लोग किसी गुरुजन के आदेश से काम करने के आदी हैं। इसलिए उनमें स्वतन्त्र चिन्तन शक्ति तथा कर्तृत्व का विकास पूर्ण रूप से नहीं हुआ है। हमारे सेवक भी आम लोगों में से ही हैं। अतः हममें भी यह आदत काफी मात्रा में है। भाईचारा तथा गण-सेवकत्व के विकास में यह बाधक हो रहा है। सेवकों के आध्यात्मिक विकास के अन्तर्गत यह एक बड़ी समस्या है, जिसको हल किये बिना हम आगे बढ़ नहीं पायेंगे। हमारा आन्दोलन गुरु-पंथत्व में न फँस जाय, इसका भय बराबर रहता है।

सेवकों का निर्वाह

करीब साठ सेवकों का निर्वाह सर्वोदय-पात्र, मित्रों की मदद, चन्दा आदि से जैसे तैसे चलता आया है। पर यह भी पूरा नहीं पड़ता। सर्वोदय-पात्र का काम कई जगह बड़े पैमाने पर शुरू किया गया था। कोरापुट में वैसे हिसाब में तो ८००० के करीब पात्र हैं—मगर इनमें से १० प्रतिशत चालू होंगे। पर केउँझर तथा ढेंकानाल में काफी पात्र चालू हैं, जिनकी संख्या चार-चार सौ के करीब है। कटक शहर में पिछले साल ५०० पात्र चालू हुए थे। अब इसकी संख्या ७०० तक बढ़ी है। ये सब व्यवस्थित रूप से नियमितता से चल रहे हैं।

आर्थिक समस्या के समाधान के लिए सामान्य चन्दा तथा अनाज दान इकट्ठा करना हमने तय किया है और इस दिशा में काम शुरू हुआ है। एक-एक रुपया या एक-एक पायली अनाज हरएक से वसूल करने का कार्यक्रम सोचा गया है। विचार यह है कि यथासम्भव हरएक सेवक इस काम में भाग ले। यह न हो कि कुछ निधि इकट्ठा करने वाले अलग और अवलम्बित कार्यकर्ता अलग बन जायें।

सेवकों की तालीम के लिए कटक तथा गोपालवाड़ी (कोरापुट) में कुछ काम हुआ है। कटक में पिछले साल १२ भाई बहनों को तालीम मिली। गोपालवाड़ी में तालीम सर्व सेवा संघ के आधार पर चली थी। दो टोलियों ने तालीम पायी। अब इन दोनों केन्द्रों को प्रांतीय मंडल की ओर से व्यवस्थित ढंग से चलाना तय हुआ है।

इसके अलावा काम में लगे हुए सेवकों के शिक्षण तथा अध्ययन के लिए भी योजना सोची गयी है। अक्टूबर १९५९ में अनगुल में १५ दिन का एक शिविर श्री नवबाबू के मार्ग-दर्शन में लिया गया था। उसका अनुभव अच्छा आया। उस प्रकार के शिविर आगे चलाने का विचार है। सेवकों को पुस्तकें उपलब्ध कराने तथा इस उद्देश्य से खास पुस्तकें लिखने की भी योजना सोची गयी है।

ऐसा अनुभव होता है कि उच्च योग्यता रखने वाले १०० कार्यकर्ता प्रांत भर में तैयार होने चाहिए, जो समाज के दूसरे क्षेत्रों में उच्चतम योग्यता रखने वाले तथा उच्चतम जिम्मेवारियाँ निभाने वाले व्यक्तियों के समकक्ष हों। इस प्रकार की एक टोली बनेगी तो शांति-सेना के संगठन की नींव दृढ़ होगी।

प्रांतीय पदयात्रा

सन् '५८ के १५ अगस्त को आचार्य श्री हरिहर ने प्रांत की अखण्ड पदयात्रा शुरू की। यह सारे प्रान्त के लिए प्रेरणा का स्रोत तथा दीपस्तम्भ-स्वरूप रही। १९६० की २१ जनवरी को उन्होंने १३ जिलों की एक परिक्रमा पूरी करके पदयात्रा अस्थायी रूप से स्थगित की है। इस काल में उन्होंने ४९०० पड़ावों से गुजर कर २००० मील की यात्रा की। पदयात्रा के दौरान में ३००० रु० का साहित्य बिका और जगह जगह सर्वोदय पात्र स्थापित हुए। सर्वश्री नवकृष्ण चौधरी, मालती देवी, ईश्वरलाल व्यास, पंडित कृपासिंधु होता आदि भी समय-समय पर पदयात्रा में साथ रहते थे।

सन् '५९ का प्रान्तीय सर्वोदय-सम्मेलन १८-१९ अप्रैल को पुरी जिले के बाहाबाहोला गाँव में अनुष्ठित हुआ। इसकी अध्यक्षता श्री ईश्वर लाल व्यास ने की। प्रान्त भर में काम के संचालन के बारे में महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

भूदान-ग्रामदान

पिछले साल भूदान या ग्रामदान-प्राप्ति के लिए कोई प्रयत्न नहीं हुआ। फिर भी कोरापुट में भूमि-वितरण के समय अनायास ३०० एकड़ भूमि दान में मिली है। बालेश्वर जिले में दो नये ग्रामदान भी मिले हैं।

सरकारी नीति के साथ मतभेद के कारण कानूनी भूदान-समिति के मन्त्री श्री शरतचन्द्र महाराणा ने इस्तीफा दे दिया था और तब से करीब तीन साल तक भूदान-समिति निष्क्रिय रही। सन् '५९ में उसका पुनर्गठन हुआ और भूदान तथा ग्रामदानों का वितरण करने में जो व्यवस्था का अभाव था, वह दूर होने की सूचना मिली। नई समिति में उत्कल-सरकार के भूतपूर्व राजस्व-मन्त्री श्री सदाशिव त्रिपाठी मन्त्री तथा श्री मदनमोहन साहू सहमन्त्री हैं। समिति की ओर से हर जिले में एक एक, बालेश्वर में दो, कोरापुट में तीन अमीन तथा उतने ही सहकारी नियुक्त होकर बँटवारे के काम में लगे हैं।

कोरापुट, गन्जाम, केउँझर, बालेश्वर, मयूरभंज, पुरी तथा सुन्दरगढ़ जिलों के ग्रामदानी गाँवों में निर्माण का काम चल रहा है। कोरापुट में मुख्यतया खादी-कमीशन के तीन सघन क्षेत्र काम कर रहे हैं तथा तीन ग्राम-सेवक केंद्र हैं। गान्धी निधि की ओर से चार केन्द्र चल रहे हैं।

मयूरभंज में भी खादी-कमीशन का एक सघन क्षेत्र है। बालेश्वर में प्रांतीय खादी बोर्ड की सहायता से खादी तथा ग्रामोद्योग का काम चल रहा है।

शहरों में काम

सन् '५८ के अन्त में श्री रमादेवी के मार्गदर्शन में कटक शहर में शान्ति-सेना तथा सर्वोदय पात्र स्थापना का काम शुरू हुआ। ६ से १० तक भाई बहन समय-समय पर काम करते रहे। कस्तूरबा निधि से पाँच बहनों को इस काम में लगाया गया था। अब चार भाई तथा दो बहनें इस काम में हैं।

शहर में इस समय ७०० सर्वोदय पात्र हैं। एक साल में १०० मन अनाज इकट्ठा हुआ है, जिसका ब्याज सर्व सेवा संघ को १६४ रु० भेजा है।

शहर में दुर्गा पूजा आदि के अवसर पर मुहल्लों में होने वाले कुछ छोटे मोटे झगड़े निपटाये गये। मेडिकल कालेज के विद्यार्थियों की एक हड़ताल में भी श्री रमादेवी तथा श्री नवबाबू ने हस्तक्षेप किया और इससे शान्ति निर्माण करने में मदद मिली।

शहर के एक मुहल्ले में बेकारी निवारण के लिए सामूहिक प्रयत्न से कुछ हाथ चक्कियाँ चालू हुई हैं। एक डाक्टर ने सेवा के लिए समय-दान दिया है, जिसके आधार से सामूहिक आरोग्य की एक योजना ५० परिवारों को लेकर शुरू होने वाली है। विद्यार्थी-समाज की दृष्टि से विचार विनिमय तथा अध्ययन के लिए एक 'अभिभावक चक्र' शुरू किया गया है। हरिजन बस्ती में एक पाठशाला तथा एक बालवाड़ी चल रही है।

मूर्तिपूजा का इस वर्ष, अब तक हमें कुल ८१२९ [illegible] का हिसाब मिला है।

आंदोलन की गतिविधियाँ

पंजाब में सर्वोदय-आन्दोलन

विनोबा की पंजाब-पदयात्रा से

पंजाब की ८ महीने की पदयात्रा समाप्त करके विनोबा ने ८ अप्रैल को उत्तरप्रदेश में प्रवेश किया। ता० २२ जून तक इन्दौर पहुँचने की उनकी इच्छा है। अज्ञात संचार में भी इतना-सा अपवाद करके उन्होंने अपनी यह इच्छा जाहिर की है।

इस पदयात्रा के दरमियान पंजाब में १३६७ एकड़ भूदान मिला। १६ ग्रामदान मिले, जिनमें से १३ कांगड़ा जिले में हैं और ३ होशियारपुर जिले में हैं। ग्रामदानी गाँवों के लिए एक निर्माण-समिति कायम हुई है, जिसने ग्रामदानी गाँवों में कुएँ आदि खेती-विकास के काम का आरम्भ किया है। इसके अलावा ग्रामदानी गाँवों में गाँव की ओर से दुकानें खोली गयी हैं। उनकी पूँजी गाँवों ने दान देकर खड़ी की है। बाबा ने यहाँ पर संपत्तिदान के बारे में 'नकद धर्म' चलाया, जिसके फलस्वरूप करीब ५० हजार रुपये मिले।

'ओम राम सोम सलाम' का नया मंत्र

आज पंजाब प्रान्त में भूदान का पूरा समय काम करने वाले ३३ कार्यकर्ता हैं। इसके अलावा सर्वोदय पात्र का काम करने वाले ६२ कार्यकर्ता हैं। ये ६२ कार्यकर्ता और सर्वोदय-पात्र का काम खादी-संस्थाओं के मातहत है। यहाँ खादी संस्थाएँ तीन हैं: (१) खादी-ग्रामोद्योग संघ, (२) खादी आश्रम और (३) कस्तूरबा सेवा मण्डल। आज तक पंजाब के ३२ लाख घरों में से २ लाख घरों में सर्वोदय पात्र की स्थापना होनी चाहिए, ऐसी इच्छा विनोबा ने व्यक्त की थी और जिला जालंधर में कुछ सघन काम हो, ऐसा भी सुझाया था। कार्यकर्ताओं के प्रयत्न से अब तक जालंधर जिले में बाईस हजार के करीब सर्वोदय पात्र स्थापित हो सके हैं और बाकी जिलों में कुल मिला कर इक्कीस हजार सर्वोदय-पात्र स्थापित हुए हैं। श्री ओमप्रकाश त्रिखा, जिनसे ये आँकड़े मैंने लिये, उनका कहना है कि बाबा के व्यक्तित्व के कारण इतना बड़ा काम हुआ है। उनके जाने के बाद क्या होगा, यह देखना है। इन पात्रों को स्थिर करके आगे के काम का आयोजन कर सकेंगे।

लोक सेवकों की संख्या इस समय करीब १६५ है। उनमें से १५ लोक सेवक ऐसे हैं, जो किसी भी संस्था से जुड़े हुए नहीं हैं और स्वतन्त्र रूप से यह काम करते हैं। १५० के करीब लोकसेवक खादी या अन्य रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता हैं। इसके अलावा एक और प्रकार भी है। कुछ ऐसे लोग हैं, जो सर्वोदय निष्ठा रखते हैं और अपनी गृहस्थी सम्हालते हुए इस काम के लिए १ घण्टा, २ घण्टे या ३ घण्टे रोजाना समय देने को राजी हुए हैं।

पंजाब सर्वोदय मण्डल ने पिछले तीन दिनों में बैठ कर भावी कार्यक्रम के बारे में कुछ रूपरेखा तैयार की है। उसमें नगरयात्रा का आयोजन, आगामी तीन महीने में ढाई हजार रुपये का साहित्य बेचना, प्रत्येक कार्यकर्ता भूदान-पत्रिका के १५ ग्राहक बनायें, जालंधर जिले का पचास हजार सर्वोदय पात्र का 'कोटा' पूरा किया जाय, बाकी जिलों में हरएक में पाँच हजार सर्वोदय पात्र रखवाना, भूमि-वितरण पूरा कर देना आदि संकल्प किये हैं। तीन महीने के बाद इन्दौर में बाबा की उपस्थिति में पंजाब सर्वोदय-मण्डल की बैठक होगी और ५० कार्यकर्ताओं का शिविर भी करने का सोचा है।

प्रदेश सर्वोदय मण्डल की रचना हो चुकी है और उसमें निम्न सदस्य हैं —

श्री ओमप्रकाश त्रिखा—अध्यक्ष, सदस्य: सर्वश्री हरिराम चोपड़ा, सोमभाई, उदयचन्दजी, महात्मा मुन्शीराम, दादा गणेशीलाल, बनारसीदास, बीबी अमतुस्-सलाम, यशपाल मित्तल, सुशीलभाई, ओंकारचन्द, डा० रामरखामल धीर, श्री उजागर सिंह।

स्थायी निमन्त्रित: सर्वश्री कमला-नन्द, डा० शामलाल, श्री मूलचन्द, डा० गोपीचन्द भार्गव, लाला अचिंतराम।

यहाँ के रचनात्मक कार्यकर्ताओं में एकता की भावना पैदा हो, सबका काम कुल मिला कर एक हो, ऐसी परिस्थिति के लिए बाबा ने काफी प्रयत्न किये और सद्भाग्य से वे सफल भी हुए हैं। उन्होंने यहाँ की रचनात्मक कार्य की शक्ति को एक सूत्र में पिरो दिया और उसकी परिणति उपरोक्त सर्वोदय मण्डल है। एक सूत्र-रचयिता की सहजता से बाबा ने यहाँ की रचनात्मक शक्ति को सूचित करने वाला एक सूत्र बनाया है: 'ओम राम सोम सलाम' ओम यानी ओमप्रकाश त्रिखा, राम यानी हरिराम चोपड़ा, सोम यानी सोम-भाई और सलाम यानी बीबी अमतुस्सलाम 'ओम राम, सोम सलाम।'

—चुनीभाई वैद्य

मैसूर में सर्वोदय-आन्दोलन

मैसूर राज्य में अजमेर-सम्मेलन से सेवाग्राम-सम्मेलन तक कार्यकर्ताओं ने भूदान, ग्रामदान और सर्वोदय-विचार का प्रचार करने की दृष्टि से अनवरत प्रयत्न किया। अखंड पदयात्राएँ भी चलीं। एक महिला पदयात्री ने अजमेर-सम्मेलन से पहले तो मैसूर राज्य में अखंड पदयात्रा की थी, पर अभी वे ब्रह्मविद्या मंदिर, पवनार में हैं। पर दूसरे दो कार्यकर्ताओं ने अपनी अखंड पदयात्रा चालू रखी।

सर्वोदय-पात्र का काम व्यापक करने की दृष्टि से काफी प्रयत्न किया। इस समय मैसूर राज्य के पाँच जिलों में ११३६ सर्वोदय-पात्रों की संख्या है। जहाँ कार्यकर्ताओं का अभाव है, वहाँ भी सर्वोदय-पात्र आन्दोलन काफी प्रभावकारी रूप में चल रहा है—यद्यपि सर्वोदय-पात्र के अनाज का ठीक से संग्रह और उसका विनियोग करने की व्यवस्था अभी पूरी तरह नहीं हो पायी है।

इस राज्य में बीस हजार एकड़ जमीन प्राप्त हुई थी। उसमें से अभी तक केवल तीन हजार एकड़ जमीन का वितरण हो सका है। पर जितना भी वितरण हुआ है, वह पक्का और प्रभावकारी रूप में हुआ है।

साहित्य प्रचार और प्रकाशन की दृष्टि से भी काफी काम हुआ। बैंगलोर शहर के घर घर में साहित्य पहुँचाने का काम हाथ में लिया गया। अन्य जिलों में भी साहित्य-प्रचार का काम शुरू किया गया। फलस्वरूप इस साल बीस हजार रु० का साहित्य मैसूर राज्य में आम जनता के बीच बेचा गया।

मैसूर राज्य के खादी ग्रामोद्योग मंडल ने अपने सभी भंडारों और उत्पत्ति-केन्द्रों में सर्वोदय-साहित्य की बिक्री का प्रबन्ध कर के साहित्य-प्रचार के काम में बहुत बड़ी मदद की है।

यहाँ से भूदान-पत्रिका का प्रकाशन होता है। उसके ग्राहकों की संख्या तेरह सौ है तथा तीन सौ प्रतियाँ फुटकर बिकती हैं। यद्यपि जितनी अपेक्षा है, उतनी मात्रा में भूदान पत्रिका का प्रचार नहीं हो पा रहा है। फिर भी इस ओर पाठकों की रुचि उल्लेखनीय है। प्रान्त के मुख्य-मुख्य दैनिक व साप्ताहिक अखबार हमारी भूदान पत्रिका में से लेख व सामग्री लेकर अपने-अपने अखबारों में छापते रहते हैं।

इस साल जयप्रकाशजी की मैसूर राज्य की यात्रा हमारे काम को प्रभाव शाली बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण साबित हुई। ६ दिनों तक जयप्रकाशजी ने मैसूर राज्य के विभिन्न स्थानों का दौरा किया। १० और ११ जून को जयप्रकाशजी की उपस्थिति में हुबली में प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन हुआ, जिसमें प्रान्त भर के लगभग १५० रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

इसके अलावा जून में बैंगलोर के पास देवरायदुर्ग में सर्वोदय विद्यार्थी शिक्षण-शिविर भी हुआ। एक दूसरा शिविर बैंगलोर में महिलाओं के लिए हुआ तथा तीसरा शिविर सर्वोदय-विचार को समझने की इच्छा रखने वाले लोगों को बेलगाँव शहर में अक्टूबर मास में हुआ। इस तरह सम्मेलन और शिविरों के माध्यम से सर्वोदय-विचार के काम को गहराई में ले जाने का प्रयत्न हुआ।

कर्नाटक में लोक-सेवकों की सेना तैयार करना, उनमें से सर्व सेवा संघ के लिए प्रतिनिधियों का चुनना भी इस साल बहुत महत्त्व का कार्य रहा। मैसूर राज्य में १८३ लोक-सेवक बने। १२ जिलों से सर्व सेवा संघ के लिए प्रतिनिधि चुने गये। ११ प्राथमिक मंडलों की रचना हुई। इस तरह से लोक-सेवक और सर्व सेवा संघ के प्रतिनिधियों को चुनने का काम सम्पन्न हुआ।

इस साल सूतांजलि संग्रह का काम भी मुस्तैदी के साथ किया गया। ७,३९२ गुंडियाँ सूतांजलि में प्राप्त हुईं। सर्वोदय-मंडल ने सूतांजलि के काम को व्यापक पैमाने पर करने का भार उठाया है। खादी-ग्रामोद्योग का काम करने वाली संस्थाओं के सहयोग से इस काम को और अधिक व्यापक बनाना है।

येलवाल सम्मेलन के बाद सामुदायिक विकास-योजना और ग्रामदान आन्दोलन के बीच निकट संपर्क बढ़ाने का जो निश्चय हुआ था, उसके अनुसार सामुदायिक विकास योजना के अधिकारियों से विशेष संपर्क किया गया और योजना विभाग में ७ या ९ प्रतिनिधियों को भेजने का तय किया गया।

महाराष्ट्र में सर्वोदय-आंदोलन

१९५९ का कार्य-विवरण

अजमेर सर्वोदय-सम्मेलन के दौरान में महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं की एक सभा आगे के काम के बारे में विचार करने के लिए बुलायी गयी थी। इस सभा का एक प्रमुख निर्णय यह था कि जो जमीन अब तक बँटने को बाकी है, उसका शीघ्रता से वितरण किया जाय और हर जिले में यही कार्यक्रम हाथ में लिया जाय। इस निर्णय के अनुसार खानदेश, नगर, नासिक, सोलापुर, पूना, कोल्हापुर आदि क्षेत्रों में जो जमीन बाँटने लायक थी, उसका वितरण कार्यकर्ताओं ने किया। श्री बाबूलाल गांधी ने हरएक जिले में जाकर वहाँ के कार्यकर्ताओं की मदद की। अन्य जिलों में यही काम हो रहा है। मई १९६० के अंत तक हर जिले में जमीन वितरण का काम पूरा करने में कार्यकर्ता लगे रहेंगे।

सन् '५९ के १८ अप्रैल, भूदान-आंदोलन के जन्मदिन के अवसर पर यवतमाळ के कार्यकर्ताओं ने श्री नेहरूजी को निमन्त्रण देकर एक लाख एकड़ भूमि प्राप्ति और भू वितरण, ५१ सहकारी संस्था और २५ हजार सर्वोदय पात्र स्थापित करने का संकल्प किया। अन्य जिलों के कार्यकर्ता भी यवतमाळ के कार्यकर्ताओं की सहायता के लिए गये। फलस्वरूप एक लाख चार हजार एकड़ जमीन इकट्ठी हुई। ७६ सहकारी संघ और २८ हजार सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हुई। यवतमाळ जिले में जो एक लाख चार हजार एकड़ जमीन वितरण के लिए उपलब्ध हो गयी है, उसका विवरण इस तरह है : ४८ हजार एकड़ का भूदान इस कार्यक्रम के पहले ही हुआ था। ३० हजार एकड़ जमीन भूहीनों को देने का निश्चय सरकार ने जाहिर किया है, ९ हजार एकड़ में ग्रामदानी गाँवों का क्षेत्र और अन्य आश्वासन समाविष्ट हैं। बाकी १७ हजार एकड़ जमीन इस कार्यक्रम के अवसर पर प्राप्त हुई, जिसमें से ८७४५ एकड़ का वितरण तुरन्त हो चुका है।

पदयात्राएँ

उत्तर व दक्षिण सातारा, कोल्हापुर और रत्नागिरी जिले के कुछ कार्यकर्ताओं ने श्री शंकरराव पाटिल के नेतृत्व में ता० २० जून से एक अखण्ड पदयात्रा शुरू की। हमेशा दस कार्यकर्ता इस पदयात्रा में रहे। उत्तर सातारा, दक्षिण सातारा और कोल्हापुर जिले में यात्रा हुई। हर पड़ाव पर आदर्श-सफाई का प्रात्यक्षिक दिखाया जाता था, जिसके प्रति लोगों ने काफी उत्सुकता दिखायी। हर रोज एक घण्टा श्रमदान, जाहिर सभा और घर घर जाकर लोगों से सम्पर्क, यह कार्यक्रम रहता था।

बम्बई शहर के एक शान्ति सैनिक श्री एली गनकर के नेतृत्व में बम्बई के कुछ कार्यकर्ताओं ने १८ अप्रैल '५९ से एक महीने की कुलाबा जिले की पदयात्रा की। यात्रा के मार्ग में मुख्य शहर तथा ग्रामदानी गाँव भी थे। महिला सभा और विद्यार्थी सभा के द्वारा ग्रामदान और शान्ति-सेना का विचार समझाया गया। १७५ रु० की साहित्य-बिक्री हुई।

इसके अलावा हाल ही में सेवाग्राम में होनेवाले सर्वोदय-सम्मेलन के लिए बम्बई से कार्यकर्ताओं की एक पदयात्रा निकली थी। सातारा से और एक पदयात्रा तथा साइकिल फेरी कार्यकर्ताओं ने सेवाग्राम सम्मेलन में जाने के लिए निकाली।

सन् '५९ में महाराष्ट्र प्रदेश के विविध क्षेत्रों में शहर तथा ग्रामदानी क्षेत्र आदि के विविध सम्मेलन, शिविर, परिसंवाद आदि द्वारा प्रचार का काम हुआ।

सफाई-आन्दोलन

ता० २० फरवरी '६० से श्री अप्पासाहब पटवर्धन की प्रेरणा से रत्नागिरी जिले में 'कमोड संडास मुहिम' शुरू हुई। श्री सेनापति बापट ने इस मुहिम का उद्घाटन किया। आज मेहतर लोगों को जिस गन्दगी में काम करना पड़ता है और जो सदैव अपमानित जीवन बिताना पड़ता है, उससे उनका छुटकारा हो और सफाई की समस्या का भी हल हो, यह इस मुहिम का उद्देश है। हरएक तालुका के प्रमुख गाँव में २५-३० स्वयंसेवक श्री अप्पासाहब के नेतृत्व में मेहतरों के साथ सवेरे सफाई का काम करते हैं। दोपहर को कमोड संडास का प्रचार करते हैं। हर गाँव में कम-से-कम ४०-५० कमोड संडासों की स्थापना करने का प्रयत्न होता है। मेहतर की आवश्यकता न रहते हुए स्वच्छतापूर्वक संडास सफाई का प्रश्न कैसे हल हो सकता है, इसका एक मार्ग श्री अप्पासाहब जनता के सामने पेश कर रहे हैं। इस दृष्टि से यह योजना क्रान्तिकारी है।

कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण

ग्रामदानी गाँवों में जाकर जो कार्यकर्ता काम करना चाहते हैं, वे वहाँ जाकर कुछ ठोस काम कर सकें, इस दृष्टि से उनके प्रशिक्षण के लिए रत्नागिरी जिले में एक ग्रामदानी कार्यकर्ता-प्रशिक्षण वर्ग दिसम्बर, '५८ से जून, '५९ तक छह महीने तक चलाया गया। अभ्यासक्रम में अम्बर किशन (कताई) यह मुख्य विषय रहा और साथ साथ खेती तथा तीन अन्य ग्रामोद्योगों का भी ज्ञान दिया गया। अनेक विद्वानों ने आकर बौद्धिक और प्रात्यक्षिक के द्वारा विविध विषयों की जानकारी दी। ग्रामदान होने के बाद उस गाँव में एक टाम्बर, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि लेकर यह कार्यकर्ता जा सके और उस गाँववालों के साथ एकरूप हो सके यह उद्देश रहा। कु० चन्द्राम्बन शिक्षोरकर ने इस वर्ग का संचालन किया। इस वर्ग में २५ कार्यकर्ता शामिल हुए। ता० १८ जून, '५९ को यह वर्ग समाप्त हुआ। इस वर्ग की आर्थिक जिम्मेवारी अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने उठायी। इसी प्रकार का एक वर्ग ठाना जिले में वैनाड गाँव में चलाया गया, जिसमें २५ कार्यकर्ता शामिल हुए थे। इस वर्ग का उद्घाटन सौ. कुसुम नागवेकर ने किया।

इन दोनों वर्गों के विद्यार्थियों ने वहाँ का अध्ययन पूरा करने के बाद तीन मास क्षेत्रीय-प्रशिक्षण में बिताये। आज इनमें से अनेक कार्यकर्ता अमरावती, अक्कलकुवा, सातारा, रत्नागिरी, कुलाबा और ठाना के ग्रामदानी क्षेत्रों में काम कर रहे हैं।

ग्रामदानी गाँवों में जाकर जो सेविकाएँ काम करना चाहती हैं, उनके प्रशिक्षण के लिए कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट की ओर से पूना के पास सासवड के ग्राम-सेविका विद्यालय में व्यवस्था की गयी है। एक वर्ष का अभ्यासक्रम निश्चित किया गया। ग्रामसेवा, अम्बर चरखा, और बालसंगोपन की जानकारी, बाल-संगोपन, सर्वोदय-विचार आदि विषय अभ्यासक्रम में अन्तर्भूत हैं। महाराष्ट्र की दस सेविकाएँ यह शिक्षण ले रही हैं।

कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए उत्तर सातारा के श्री माणिकचन्द दोशी ने सातारा शहर में ता० १४ नवम्बर से 'मानवता शिक्षा मन्दिर' शुरू किया है। इसमें चार कार्यकर्ता शामिल हुए हैं। अब ये कार्यकर्ता ग्रामदानी गाँवों में जाकर काम करेंगे। इस वर्ग का खर्च धर्मादान और अन्य आर्थिक मदद से होता है।

रत्नागिरी जिले में देवरुख गाँव के 'मातृमन्दिर' संस्था की ओर से प्रसूति-गृह, बालवाड़ी, बालसंगोपन आदि प्रवृत्तियाँ चलायी जाती हैं। इस संस्था के सर्वोदय-विचार का एक प्रमुख केन्द्र बना है। कार्यकर्ता यहाँ आकर कुछ दिन तक रह कर अध्ययन कर सकते हैं।

आर्वी के जो सेवा ग्राम के पास है, उन्हें सर्वोदय-विचार का परिचय देने की दृष्टि से मागान जिला अमरावती में जो कस्तूरबा सेविका विद्यालय है, उसमें कार्यकर्ताओं की, स्त्रियों और बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करने की व्यवस्था है। अभी १०-१२ सेविकाएँ यहाँ शिक्षा पा रही हैं।

इस साल महाराष्ट्र की जनता और कार्यकर्ताओं को श्री वल्लभस्वामी, श्री दादा धर्माधिकारी, श्रीमती सरूताई घोत्रे, श्री अण्णासाहब, श्री शंकरराव देव आदि का मार्गदर्शन मिला। इनके प्रवास दौरे हुए तथा शिविर सम्मेलनों के सह चिन्तन में भी इन्होंने भाग लिया।

विधायक कार्य को नया मोड़

पुसाखेड़ के निर्णय के अनुसार महाराष्ट्र में जो भिन्न भिन्न विधायक संस्थाएँ काम कर रही हैं, उनमें नव संस्करण का विचार फैलाने की दृष्टि से मराठवाड़ा, विदर्भ, कोल्हापुर, सोलापुर, उत्तर व दक्षिण सातारा, ठाना, कुलाबा आदि जिलों में विधायक कार्यकर्ताओं के शिविर व सम्मेलन किये गये। श्री शंकरराव देव, श्री रावसाहब पटवर्धन, श्री द्वारकानाथ लेले आदि का मार्गदर्शन मिला। महाराष्ट्र सेवा संघ ने प्रचार की जिम्मेवारी ली। करीब करीब सब जिलों में प्रचार हुआ। इसीलिए से विधायक कार्यकर्ताओं का एक प्रातःस्मरणीय शिविर लेने का विचार किया और परिणामस्वरूप सेवाग्राम सर्वोदय सम्मेलन के पहले दो दिन ता० ६ और ७ अक्टूबर, '५९ को महाराष्ट्र के भिन्न भिन्न विधायक संस्थाओं में काम करनेवाले कार्यकर्ताओं का शिविर हुआ, जिसमें श्री अप्पासाहब पटवर्धन, श्री शंकररावजी, श्री केसरी आदि का मार्गदर्शन मिला। दो दिन पूरा विचारमंथन होने के बाद इस शिविर की ओर से महाराष्ट्र में काम करनेवाले विधायक संस्थाओं का आवाहन किया गया।

आश्रम : जीवन-दर्शन की प्रयोगशाला

'विश्वनीडम्' के उद्घाटन के अवसर पर बालकोबाजी का सन्देश

इस आश्रम का उद्घाटन मेरे हाथ से हो, ऐसा जब श्री वल्लभस्वामी ने मुझे कहा, तब पूज्य विनोबाजी को मैंने पत्र लिखा और बताया कि मुझसे ज्यादा योग्यता जिनकी है, उनसे यह उद्घाटन कराया जाय तो अच्छा होगा। जवाब में पूज्य विनोबाजी ने लिखा कि वल्लभस्वामी की विशेष भावना है, उसकी कद्र करनी चाहिये और उद्घाटन करने का स्वीकार करना चाहिए। तो इस तरह पूज्य विनोबाजी की आज्ञा समझ कर उद्घाटन करने का मैंने स्वीकार किया।

आज जिस आश्रम का उद्घाटन होने जा रहा है, उसका नाम "विश्वनीडम्" रखा गया है। इस शब्द के साथ 'आश्रम' नाम नहीं जोड़ा है, यानी "विश्वनिडमाश्रम" ऐसा नाम नहीं रखा है। वैसे 'आश्रम' शब्द का हमें बहुत आकर्षण रहता है, मगर यहाँ संयम से काम लिया गया, ऐसा लगता है।

मुझे खुदको 'आश्रम' शब्द का आकर्षण बहुत रहा है, क्योंकि 'आश्रम' शब्द के साथ पूज्य गांधीजी की विशेष कल्पना रही है। वह विशेष कल्पना है सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय अपरिग्रह इन पंचमहाव्रतों की साधना और उसके साथ जन-सेवा और इन दो के द्वारा आत्मानुभव, आत्म-दर्शन अथवा आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान, प्राप्त करना। इन तीन चीजों का समावेश 'आश्रम' शब्द में है।

प्राचीन जमाने में चार आश्रम की कल्पना थी। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास, लेकिन इन आश्रमों के साथ जन सेवा का सम्बन्ध जुड़ा था। शायद उस जमाने की वह माँग नहीं होगी।

प्राचीन काल में पंचमहाव्रतों की साधना व्यक्तिगत तौर पर चलती रही है। तद्द्वारा आत्मानुभव लेने का लक्ष्य भी रखा गया है। मगर उसके साथ साधना के तौर पर जन-सेवा का अपरिहार्य सम्बन्ध मानना यह गांधीजी की विशेष कल्पना है। गांधीजी की यह कल्पना रही है कि सार्वजनिक सेवा की कोई भी सात्त्विक प्रवृत्ति हो, उसकी बुनियाद में ये पंचमहाव्रत होने चाहिये। व्रत निरपेक्ष जन सेवा चक्षु विहीन यानी अंधी और सेवा निरपेक्ष व्रतनिष्ठा पंगु मान लें, तो दोनों का समन्वय अपरिहार्य मानना पड़ेगा।

आश्रम का अन्तिम ध्येय आत्मानुभव प्राप्त करना है, यह बात बहुतों के ध्यान में नहीं आती। इस विषय में मैं अपना उदाहरण पेश करके स्पष्ट करता हूँ। सन् १९२४ में मैंने पहले पहल भगवद्-गीता पढ़ी। उसमें से आत्मानुभव लेने की तीव्र जिज्ञासा पैदा हुई। मुझे एकान्त में जाने की प्रबल इच्छा हुई। यदि मैं गांधीजी को इस बारे में पूछता हूँ, तो मुझे डर था कि वे इजाजत नहीं देंगे। इसलिए उनको बिना पूछे मैं आश्रम से भागा। मेरे भाग जाने का असर गांधीजी पर हुआ। उन्होंने पत्र लिख कर बताया कि 'तुम्हारे जाने से मुझे दुःख हुआ। दुःख इस बात के लिए हुआ कि मैंने यह आश्रम आत्म-दर्शन के लिए ही बनाया है। सेवा इसका बाह्य अंग है। व्रत पालन इसका अन्तरंग है। मूल उद्देश्य आश्रम का हरि-दर्शन ही है। इस हालत में तुम हरि-दर्शन की लालसा से बाहर क्यों चले गये, यह मैं समझ नहीं पाया।'

आश्रम का नाम रखने में गांधीजी ने बड़ी सावधानी रखी है। आत्म-दर्शन का ध्येय रखते हुए भी साधकाश्रम आदि नाम उन्होंने पसन्द नहीं किया। साधकाश्रम, ब्रह्म-विद्याश्रम आदि नाम रखने में दम्भ दाखिल होने का सम्भव रहता है और उसमें आत्मानुभव प्राप्त करने के साधन का बोध नहीं होता। सत्याग्रहाश्रम नाम में यह बड़ी भारी खूबी है कि यह शब्द ब्रह्मज्ञान का साधन बताता है और साध्य भी है।

सत्य शब्द एक ओर परमेश्वर वाची है और दूसरी ओर परमेश्वर प्राप्त करने के लिए साधन क्या हो सकता है, यह बतलाने वाला भी है। सत्याग्रह आश्रम नियमावली में गांधीजी ने पहले परमेश्वर सत्य है, ऐसा लिखा था। मगर बाद में उन्होंने "सत्य यही परमेश्वर है", ऐसी व्याख्या सुधार दी है। सत्य में अहिंसा आदि अन्य व्रतों का समावेश हो ही जाता है। सत्य में से ही अन्य सब व्रत निकलते हैं, ऐसा उन्होंने स्पष्ट किया है।

आश्रम का अंतिम ध्येय परमात्मा का अनुभव है, यह स्पष्ट हुआ। आश्रम-जीवन का तरीका ऐसा होना चाहिए कि जिससे यह ध्येय हासिल हो सके। जीवन में जब तक रजोगुण और तमोगुण की प्रबलता रहती है, तब तक सत्त्वगुण का उत्कर्ष नहीं होता और सत्त्वगुण के उत्कर्ष के बिना परमात्म दर्शन की सच्ची जिज्ञासा प्राप्त नहीं होती। हमारी जीवन-पद्धति ऐसी होनी चाहिए कि उसमें सत्त्वगुण का उत्कर्ष हो। अस्तेय व्रत पालन करना हो तो यह दूसरी जरूरत है कि रोटी के लिए आवश्यक उतना परिश्रम होना चाहिए। इसलिए गांधीजी ने आश्रम में ८ घंटे सार्वजनिक सेवा का आग्रह रखा। मगर ८ घंटे परिश्रम करने में दूसरी महत्व की चीज यह समझना है कि तमोगुण के लिए उसमें गुंजाइश नहीं रहती। तमोगुण उसमें छँट ही जाता है।

बालकोबा-परिचय

विनोबा, बालकोबा और शिवबा या शिवाजी इन तीन भाइयों में बालकोबा मझले भाई हैं। तीनों ब्रह्मचारी रह कर सेवा में लगे हुए हैं। बालकोबा विनोबाजी के छोटे भाई हैं, यह उनका कम-से-कम वर्णन है। राम और भरत का जो सम्बन्ध था, वह विनोबा और बालकोबा का है और यह बालकोबा का सही वर्णन है। साठ एक साल की उम्र, श्याम वर्ण, पतला और ऊँचा शरीर बढ़े हुए बाल और दाढ़ी यह है बालकोबा का बाहरी रूप। इस रूप के भीतर छिपी है भगवान को साकार, सगुण करने वाली चित्रकला और संगीत-कला। और उसके भीतर भरा है विनोबा का अनुसरण करने वाला भरत-का जीवन।

बचपन में बालकोबा ने बड़ोदा में संगीत और चित्रकला का अध्ययन किया। विनोबाजी गांधीजी के पास आश्रम में पहुँचने के बाद दो-एक साल में सन् १९०८ के करीब, बालकोबाजी साबरमती आश्रम पहुँचे। हिन्दुस्तान का सबसे पहला खादी-विद्यालय सन् १९२२ के करीब साबरमती आश्रम में शुरू हुआ। बालकोबाजी उसके गृहपति गिने जा सकते हैं। बापू की इच्छा के अनुसार वर्धा का आश्रम चलाने के लिए विनोबाजी सन् १९२१ में वहाँ गये। कुछ साल के बाद बालकोबाजी वर्धा-आश्रम में आये। सन् '३०-'३२ के आन्दोलन में विनोबाजी और बहुत से आश्रमवासी जेल में गये, बालकोबा को आश्रम सम्भालने के लिए पीछे रहने का आदेश हुआ। राम के वनवास के समय भरत ने अयोध्या में वनवास किया, उसी तरह बालकोबा ने आश्रम को जेलधाम बनाया। आश्रम-जीवन में शरीरश्रम रहता ही है। जेल के समान बिना घी-दूध का आहार भी उसमें जुड़ गया और शायद उसी के कारण बालकोबा क्षय के शिकार हुए। दरिद्रनारायण की सेवा करने के बजाय सेवा लेनी पड़ती है, उसका दुःख उनको हमेशा होता। बापू की इजाजत वे चाहते, जंगल में जाने के लिए, दुरुस्त होने पर जन-सेवा में आने के लिए, नहीं तो यमवास के लिए। बारह साल की उपचार-तपस्या के आखिर में पूना के डा० दीनशाह मेहता के निसर्गोपचार से वे दुरुस्त हुए और अपना जीवन निसर्गोपचार में लगाने का उन्होंने संकल्प किया। गांधीजी ने अपने आखिर दिनों में पूना के पास उरली में

था। उरली के वातावरण में उसकी झाँकी हम मिलती है।

विनायक और बालकृष्ण को मराठी नामों की तरह बापू ने 'विनोबा' और 'बालकोबा' ये नाम दिये। महाराष्ट्र ने जिन पुण्य पुरुषों की देन बापू को दी, उनमें से विनोबाजी को आज सारी दुनिया जानती है। विनोबाजी के जीवन से प्रभावित होकर भरत बनने का सफल प्रयत्न जिन्होंने किया, उन बालकोबा को दिनों दिन अधिक लोग जानेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

—वल्लभस्वामी

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

समता अपनायें

भक्त प्रह्लाद को पूछा गया की 'भगवान की भक्ती कौन प्रकार होगी ?' प्रह्लाद ने जवाब दीया—"समत्वम् आराधनम्"—सबके साथ समत्व से बरताव करना ही भगवान की भक्ती है।

अब गांव के लोग समता के आधार पर गांव को खड़ा करें। सबको सम्हालना है। हरीजन, आदीवासी, बैंबा, बच्चे, बूढ़े, बीमार; जो कोओ भी कीसी भी कारण से दुःखी हैं, अुसकी अच्छी तरह से देख भाल करनी है। गांव अुनका जीम्मा अुठाये और समता से व्यवहार करे। गांव का अेक परीवार बने, अेक कुनबा बने। तभी जाकर गांव सुखी होगा। हम लोगों ने कर यह रखा है की कोओ खास सवाल भूतदया का आ गया, तो थोड़ा दान धरम भी कर लेते हैं। साल भर दो-तीन दीन धरम करने के रख लीये हैं। रामनवमी आयी, अुपवास कर लीया। कृष्णाष्टमी आयी, अुपवास कर लीया। अीस तरह हमने थोड़े में धरम का समाधान बना लीया। दो-तीन दीन धरम का काम और घर का काम ३६१ दीन। यह अेक बड़ी गलती है। अीस प्रकार अपने जीवन को नंगा कर देना, संकुचीत कर देना और समाज के बारे में कतअी न सोचना, यह आज के जमाने में नहीं चलेगा। दान हमेशा देने की चीज है। अगर हम रोज खाते हैं, तो गांव को लौटे देना भी रोज चाहीये।

(५-४-'६०) —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि=ी; ु=ू; ओ,=य=ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

गुजरात का सर्वोदय-सम्मेलन

अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन के तुरन्त बाद ही गुजरात के कार्यकर्ताओं ने अपना प्रादेशिक सम्मेलन बुला कर एक सराहनीय काम किया है। गुजरात प्रान्त का यह छठा सर्वोदय सम्मेलन ता० १८ अप्रैल 'भूमि क्रान्ति दिवस' को साबरमती आश्रम में सम्पन्न हुआ। सेवाग्राम-सम्मेलन के सुझावों के संदर्भ में गुजरात के कार्यकर्ताओं ने काम की सुविधा की दृष्टि से प्रांत को तीन भागों में विभाजित करके हर प्रान्त के लिए वहाँ की परिस्थिति के अनुकूल कार्यक्रम बनाया है। आशा है, अन्य प्रान्तों में भी कार्यकर्ता अपने-अपने यहाँ का निश्चित कार्यक्रम तय करेंगे। जैसा सर्व सेवा संघ के मन्त्री श्री पूर्णचन्द्रजी जैन ने अपने वक्तव्य में सुझाया है, सितम्बर में जब सर्व सेवा संघ का अगला अधिवेशन हो, तब इस बीच किये हुए काम का लेखा-जोखा हर प्रान्त के कार्यकर्ता दे सकें, ऐसी तैयारी होनी चाहिए।

गुजरात का सर्वोदय सम्मेलन दूसरे एक प्रसंग के कारण भी बहुत समयोचित रहा। यह अंक पाठकों के हाथ में पहुँचेगा, उससे पहले ही अभी तक का संयुक्त बम्बई राज्य विभाजित होकर गुजरात और महाराष्ट्र के दो नये भाषावार राज्य बन चुकेंगे। मनुष्य के लिए अभिव्यक्ति का और पारस्परिक सम्पर्क का अद्वितीय साधन भाषा है। इसीलिए गांधीजी का यह आग्रह था कि स्वराज्य मिलने के बाद भाषावार प्रांतों की रचना होनी चाहिए, पर जैसा दूसरे कुछ मामलों में हुआ, देश के अन्य नेताओं ने अपनी बुद्धिमानी से दूसरा ही रास्ता अख्तियार किया। स्वराज्य के तुरन्त बाद, जब कि देशप्रेम की भावना अभी ताजी थी और निहित स्वार्थों ने उतना सिर नहीं उठाया था, जितना कि आज, अगर भाषावार प्रान्त-रचना कर दी गयी होती, तो बाद में इस प्रश्न को लेकर जितनी बदमजगी मुल्क में पैदा हुई, वह शायद न होती। बहुत देर बाद जब भाषावार प्रान्त-रचना हुई भी, तब किन्हीं कारणों से जिनमें अब जाने की जरूरत नहीं है, बम्बई ही एक राज्य ऐसा बाकी छोड़ दिया गया, जो द्विभाषी था। इसके बाद जो कुछ हुआ, वह इतिहास की घटना बन गयी है। यह खुशी की बात है कि देर से ही सही, आखिरकार जो बिलकुल स्वाभाविक और उचित था, वह हुआ और गुजरात तथा महाराष्ट्र के दो नये राज्य बने।

नये राज्यों का निर्माण

इन दोनों राज्यों के निर्माण के अवसर पर जनता में जो सहज उल्लास और उत्साह का वातावरण नजर आया, वह इस बात का प्रमाण है कि दोनों क्षेत्रों की जनता की आन्तरिक इच्छा अब पूरी हुई है। गुजरात-महाराष्ट्र के प्रश्न को लेकर आवश्यक तनाव और संघर्ष पैदा हुआ, उसके बावजूद इन राज्यों के निर्माण के समय जो आपसी सद्भाव और प्रेम का वातावरण कायम रहा और सब ओर से जैसी उदात्त भावनाएँ प्रकट हुईं, वह भी इसका प्रमाण है कि जो कुछ हुआ है वह बहुत शुभ हुआ है।

नयी रचना के लिए मंगल अवसर

गुजरात राज्य की प्रथमसंध्या की वेला में सर्वोदय कार्य-कर्ताओं का यह सम्मेलन हुआ, इस कारण यह स्वाभाविक था कि सम्मेलन का ध्यान इस ओर जाता कि नये जन्म का फायदा उठा कर "गांधी के गुजरात" में ऐसी क्या-क्या बातें होनी चाहिए, जिनसे लोगों की जो अपेक्षा और आकांक्षा है, वह पूरी हो। इस अवसर का फायदा उठा कर गुजरात सर्वोदय सम्मेलन ने एक विस्तृत निवेदन जाहिर किया है, जिसमें न केवल सर्वोदय समाज-रचना की झलक दिखाने की कोशिश की गयी है, बल्कि नये राज्य के लिए कुछ निश्चित कार्यक्रम भी सुझाये गये हैं। गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन का यह निवेदन इस अंक में अन्यत्र प्रकाशित किया गया है।

हार्दिक अभिनन्दन

सर्वोदय का सिद्धांत किसी एक राज्य या क्षेत्र के लिए ही नहीं है। सब प्रदेशों के लिए वह समान रूप से लागू होता है, इसलिए हमें आशा है कि कम-से-कम गुजरात और महाराष्ट्र के नये राज्यों में शासन की पुनर्रचना का फायदा उठा कर गुजरात सर्वोदय सम्मेलन द्वारा सुझाये गये कार्यक्रम कार्यान्वित किये जायेंगे। इस प्रसंग पर हम गुजरात तथा महाराष्ट्र, दोनों नये राज्य की जनता का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि, देर से ही सही, सब लोगों की सम्मति प्राप्त हुई और अस्वाभाविक परिस्थिति का इस प्रकार सुन्दर अन्त हुआ।

—सिद्धराज ढड्ढा

भारतीय भाषा-परिषद्

कभी कभी ऐसा होता है कि सीधी और सरल बातें भी वादविवाद के कारण मुश्किल और जटिल बन जाती हैं। सहज बुद्धि से जिन बातों का तुरन्त जवाब दिया जा सकता है वही बातें विद्वानों की बहस में पड़ कर उलझन भरी समस्याएँ बन जाती हैं। हमारे देश में भाषा का यानी शिक्षा और राजकाज के कारोबार का माध्यम कौनसी भाषा हो, यह सवाल पेचीदा हो गया है। अंग्रेजी शासन के डेढ़ सौ दो सौ वर्ष में इस देश में अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व रहा, वही राजकाज की भाषा भी रही। इसलिए एक सीधा-सा सवाल भी आज जटिल बन गया है। सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति भी तुरन्त जवाब दे सकता है कि शिक्षण और राजकाज का माध्यम वही होना चाहिए, जो प्रजा की अपनी भाषा है। पर आज इस सहज-सी बात को मनवाने के लिए और अमल में लाने के लिए बड़ी-बड़ी दलीलें देनी पड़ रही हैं, यह देश का दुर्भाग्य ही समझना चाहिए। देश में कुछ वजनदार लोग हैं, जो किसी न किसी बहाने अंग्रेजी का प्रभुत्व बनाये रखना चाहते हैं।

हम गुजरात नई तालीम संघ का अभिनन्दन करते हैं कि उन्होंने भाषा के इस सवाल की तरफ देश का ध्यान आकर्षित किया है। संघ ने अभी अहमदाबाद में भारतीय भाषा परिषद् का आयोजन किया था। उस परिषद् ने भाषा सम्बन्धी नीति के बारे में जो प्रस्ताव स्वीकृत किया है, वह इसी अंक में अन्यत्र दिया गया है। वह प्रस्ताव और भाषा-नीति संबंधी यह सारा प्रश्न अपने आप में इतना सीधा और सरल है कि उसके बारे में किसी लम्बी चौड़ी दलील की आवश्यकता नहीं है। जैसा परिषद् के शुरू में मंगल-प्रवचन करते हुए काका साहब कालेलकर ने कहा, 'भाषा और साहित्य प्रजा के सांस्कृतिक सामर्थ्य और समृद्धि के उत्तम वाहन हैं। प्रजा को एकदम, एकजीव और एकमहल करने की जितनी शक्ति भाषा में है उतनी किसी मानवी संस्था में नहीं है।...आज जो राज्य चल रहा है उसे अगर सचमुच 'स्वराज्य' बनाना है तो प्रजा समझ सके, व्यवहार में ला सके ऐसी भाषा में ही राज्य चलना चाहिये। तभी उसे 'स्वराज्य' कहा जा सकता है।" शिशु बालक बालिकाओं की तालीम मातृभाषा और प्रदेश की भाषा में होनी चाहिये। इस बारे में भी दो राय नहीं होनी चाहिये, पर आज हमारे दुर्भाग्य से है। दुनिया में इतने राष्ट्र हैं, इतनी विविध भाषाएँ हैं, उनमें से कुछ भाषाएँ हैं और उनकी लिपियाँ इतना विकसित भी नहीं हैं, फिर भी वहाँ प्रजा की अपनी भाषा के सिवाय दूसरी भाषा में शिक्षा देने का विचार ही नहीं उठता। अन्तर-

संघ-अधिवेशन और सम्मेलन को महीना पूरा हुआ है

साथी गण काम को कसौटी पर कसें

सर्व सेवा संघ के अधिवेशन और सेवाग्राम-सम्मेलन को हुए एक महीना पूरा हो चुका है। सम्मेलन-समाप्ति पर भाई-बहिन सेवाग्राम से रवाना हुए तब सभी के चेहरों पर सम्मेलन की सफलता की दृष्टि से एक संतोष और प्रसन्नता की रेखा थी। बाद में भूदान पत्र-पत्रिकाओं में तथा अन्यत्र जो विचार उद्‌गार कार्यकर्ता व अन्य बंधुओं द्वारा जाहिर किये गये, उससे भी यही ध्वनि निकली कि संघ-अधिवेशन और सम्मेलन सफल रहे।

मिले, चर्चाएँ हुईं, लेखा-जोखा लिया, निर्णय किये, यह सब ठीक है। लेकिन सचमुच में सफलता इस पर निर्भर है और रहेगी कि जो कुछ निर्णय किया उसे अमल में लाने का संकल्प हमारा कितना मजबूत हुआ तथा उसके लिए तुरंत आज हम करने क्या लगे हैं और आयन्दा क्या करते जानेवाले हैं।

कार्यक्रम के संबंध में संघ ने कुछ ज्यादा लम्बा, लेकिन बहुत स्पष्ट और असंदिग्ध प्रस्ताव स्वीकार किया है। अधिक और नानाविध कार्यों की एवज साल भर के लिए गिने-चुने पाँच सात काम गिनाये जाते और उन्हीं पर शक्ति, समय केन्द्रित करने का आवाहन रहता तो ज्यादा ठीक होता। क्षेत्रों के कार्यक्रम की विविधता के कारण जो दुविधा हो जाया करती है वह भी कम होती। लेकिन जो हुआ वह बहुत ठीक है तथा विविधता का एक फायदा यह है कि विभिन्न क्षेत्रों और साथियों के सामने अपने यहाँ की परिस्थिति, साधन, शक्ति उत्साह, प्रेरणा की दृष्टि से काम के बारे में अपनी-अपनी पसंदगी करने की ज्यादा गुंजाइश है। कार्यक्रम का जो भी अंग अपनाया जाय, समग्रता की दृष्टि तो रहनी ही चाहिए।

आज जरूरत बराबर दिल टटोलने और यह जाँचने की है कि जो आशा और उत्साह तथा सफलता की संतुष्टि लेकर सेवाग्राम से चले उसके अनुसार वेग हर क्षेत्र और हर साथी द्वारा आन्दोलन या आरोहण का जो कार्यक्रम चल रहा था उसमें लाया गया या नहीं? या फिर नये तौर से काम शुरू कर दिया गया या नहीं?

उदाहरणतः भूमिदान में मिली जमीन के बँटवारे की ओर ध्यान देने की बात थी। साथी देखें कि अमुक अपने क्षेत्र में सबने मिल कर उसके लिए क्या निश्चित कार्यक्रम बनाया और आज सेवाग्राम के सामूहिक निर्णय को महीना पूरा होने पर बँटवारा सम्बन्धी कितना काम हुआ।

देश भर में हो सके तो हर प्रदेशीय स्तर पर, अन्यथा दो-चार जगह अखिल भारतीय स्तर पर सघन प्रयोग करने, ग्राम स्वराज्य का चित्र खड़ा करने की दृष्टि से प्रेमक्षेत्र बना कर काम किये जाने की बात थी। उसके बारे में प्रदेशों में क्या सोचा गया? प्रदेश में कोई ऐसा क्षेत्र है या नहीं? उसमें प्रदेश की शक्ति-साधन ऐसे प्रयोग के लिए काफी हैं या नहीं? नहीं हैं तो बाहर से क्या सहयोग, सहायता अपेक्षित है? अखिल भारतीय स्तर पर इस कार्य को उठाने की दृष्टि से प्रदेश में कौनसा क्षेत्र सुझाया जा सकता है? इत्यादि के बारे में जगह-जगह चिन्तन चलना चाहिए। जरूरत तो यह थी कि महीना पूरा होते, न होते, लिखा जाता कि इस क्षेत्र में ऐसी तैयारी है और यह योजना है तथा ऐसा ऐसा सहयोग, सहायता बाहर से भी अपेक्षित है।

संघ-अधिवेशन के सब प्रस्ताव और चर्चाओं के निचोड़ भूदान पत्र पत्रिकाओं में निकल चुके हैं। विभिन्न क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं को, प्राथमिक जिला व प्रदेश सर्वोदय-संगठनों को मिलजुल कर अपने क्षेत्र के व्यापक व सघन कार्य के बारे में जल्दी निर्णय करने चाहिए। सर्व सेवा संघ का अगला अधिवेशन चार-पाँच महीने बाद हो, उस समय तो तय किये गये कार्यक्रम में कहाँ कितनी प्रगति हुई, क्या अनुभव हुए, क्या परिणाम सामने आये यह सब बताने की स्थिति लोकसेवकों व साथियों की होनी चाहिए।

आशा है, इस दृष्टि से सब साथी सोच रहे होंगे और अपने अपने काम की जानकारी संघ को भेजेंगे तथा भूदान पत्र पत्रिकाओं में भी लिखेंगे ताकि परस्पर लाभ मिले। —पूर्णचन्द्र जैन

प्रान्तीय व्यवहार और राष्ट्र के केन्द्रीय राजकाज के लिए अंग्रेजी का उपयोग छोड़ कर 'सबकी बोली' के रूप में हिन्दी को अपनाया जाय यह भी उतना ही स्वाभाविक और उचित है।

लिपि का सवाल

भाषा से सम्बन्धित उतना ही महत्त्व का सवाल लिपि का है। 'भूदान यज्ञ' के पिछले अंक में विनोबाजी ने इस प्रश्न पर अपनी राय जाहिर करते हुए दृढ़तापूर्वक इस बात का प्रतिपादन किया है कि हिन्दुस्तान की सब भाषाओं के लिए नागरी लिपि का उपयोग जारी करना चाहिये। जैसा उन्होंने स्पष्ट किया है उसका मतलब यह नहीं है कि आज हिन्दुस्तान की जिन भाषाओं की अपनी भिन्न लिपि है उसका निषेध हो, बल्कि इतना ही है कि सब भाषाओं के लिए नागरी लिपि का व्यवहार भी चालू किया जाय, जिससे एक भाषा और दूसरी भाषा के बीच आदान प्रदान सरलता से हो सके और राष्ट्रीय एकता की ओर एक और आवश्यक कदम बढ़े। दुर्भाग्य की बात है कि लिपि के प्रश्न पर भी आज देश में कुछ व्यक्ति यह वातावरण बना रहे हैं और सुझा रहे हैं कि भारतीय भाषाओं के लिए रोमन लिपि (अंग्रेजी जिसमें लिखी जाती है वह लिपि) स्वीकार की जाय। विनोबाजी ने खास तौर से इस विषय पर लिख कर प्रकाशित होने के लिए भेजे हुए अपने लेख में जो कुछ कहा है उससे ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि देश का हित चाहने वाले लोग ऐसे प्रश्नों के बारे में समय रहते सचेत हों और ऐसी किसी भी योजना के बारे में अपनी स्पष्ट राय जाहिर करें जो सांस्कृतिक, शैक्षणिक या राष्ट्रीय दृष्टि से देश का अहित करनेवाली हो।

—सिद्धराज ढड्ढा

प्रजा-हृदय को जोड़ने वाली शक्ति

"...भाषा और साहित्य प्रजा के सांस्कृतिक सामर्थ्य और समृद्धि के उत्तम वाहन हैं और प्रजा के पुरुषार्थ को अदम्य प्रेरणा देने की उनकी शक्ति अमर्याद है। धार्मिक जीवन, सामाजिक संगठन तथा पुरुषार्थ और राजनैतिक सामर्थ्य का विकास करने की या उन्हें बिगाड़ने की शक्ति जितनी साहित्य-क्षेत्र में है उतनी दूसरे किसी भी क्षेत्र में नहीं है। और प्रजा को एकहृदय, एकजीव और एकसंकल्प करने की जितनी शक्ति भाषा में है उतनी दूसरी किसी भी मानवी संस्था में नहीं है।

भिन्न भिन्न धर्मों ने, हमारी असंख्य जातियों ने और नये-नये राजनैतिक पक्षों ने समाज में भेद डालने की जो संकुचित प्रवृत्ति हजारों बरसों से चलायी है उसे दबा कर मानव को सद्‌विचार करने का अवसर अगर दिया हो तो वह भाषा और साहित्य ने ही दिया है।

भाषा की इस शक्ति को पहचान कर ही गांधीजी ने इस विविधता बहुल देश में भाषावार प्रान्त-रचना करने का सुझाया था। और उन्होंने यह भी सुझाया था कि इन भाषाओं के आपस में विराट कौटुम्बिक भावना को दृढ़ करने और वर्तमान राजनैतिक एकता को कायम रखने के लिए एक सर्वसाधारण, सर्वसमन्वयकारी स्वदेशी भाषा को स्वीकार करना चाहिये। और फिर सब भाषाओं को मिल कर इस शिरोमणि भाषा को समर्थ बनाने का पुरुषार्थ हाथ में लेना चाहिए।"

"...जो आज चल रहे राज्य को वास्तव में स्वराज्य बनाना हो तो आज जो वह प्रजा के वोट के बल पर चलता है, प्रजा के प्रतिनिधि उसे चलाते हैं, इतना पर्याप्त नहीं है। प्रजा समझ सके और व्यवहार में ला सके ऐसी भाषा में जब राज्य चलेगा तभी उसको 'स्वराज्य' कहा जा सकता है।" —काका साहब

मद्यनिषेध के लिए प्रचार-यात्रा

आंध्र प्रदेश के ग्यारह जिलों में मद्यनिषेध कानून लागू है, लेकिन तेलंगाना के नौ जिलों में (पुराना हैदराबाद राज्य) अभी तक मद्यनिषेध का कोई कानून नहीं है। जिन जिलों में मद्यनिषेध लागू है, वहाँ पर भी 'नीरा' के नाम पर चोरी से ताड़ी बेची जाती है! इसलिए समूचे आंध्र प्रदेश में संपूर्ण मद्यनिषेध का कानून लागू करने के लिए आवश्यक जनजागृति पैदा करने का काम गत दो साल से आंध्र प्रदेश सर्वोदय-मंडल के सदस्य श्री साधु सुब्रह्मण्यम् करते आ रहे हैं। इस बारे में प्रदेश की सरकार के कर्ता धर्ताओं से भी साधुजी तथा सर्वोदय मंडल की ओर से वार्तालाप हुआ। कुछ मास पहले प्रदेश सरकार ने मुनगाला परगना को कृष्णा जिले से निकाल कर नलगोंडा जिले में मिलाया। कृष्णा जिले में शराबबंदी है और नलगोंडा जिले में शराबबंदी नहीं है। अब मुनगाला में भी ताड़ी निकाल कर बेची जा रही है। इसके लिए श्री साधु सुब्रह्मण्यम्‌जी ने प्रदेश की सरकार से 'प्रोटेस्ट' भी किया, इस पर भी जब प्रदेश सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया, तो ता० १२ मार्च १९६० से श्री साधुजी ने गांधीदळ के १५ साथियों के साथ कडप्पा जिले के ग्रामदानी गाँव नरसिंहपुरम् से पदयात्रा शुरू की। रोज १५-२० मील पैदल चलते हुए ५०० मील सफर करके ता० १४ अप्रैल को रेपाला (मुनगाला परगना) पहुँचे। इनकी यह यात्रा कडप्पा, नेल्लूर, गुंटूर, कृष्णा और नलगोंडा जिलों में हुई। यात्रा के दौरान में मद्यनिषेध का प्रचार करते हुए आये।

ता० १५ अप्रैल को मुनगाला में उस परगाना के सर्वोदय कार्यकर्ताओं, ग्रामपंचायत अध्यक्षों एवं अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की एक सभा हुई। सभा में सर्वसम्मति से यह निर्णय किया गया कि शराब एवं ताड़ी से आर्थिक, शारीरिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत प्रकार के नुकसान हैं, इसलिए पूरे राष्ट्र में मद्यनिषेध का कानून लागू होना चाहिए।

ता० १८ अप्रैल को सुबह सात बजे मुनगाला में जहाँ कानून के खिलाफ भी ताड़ी निकाल कर बेची जा रही है, वहाँ पिकेटिंग आरंभ किया गया। पिकेटिंग की सूचना पूर्ववत् स्थानीय पुलिस-अधिकारियों को एवं प्रदेश-सरकार को भी दी गयी।

ता० १८ अप्रैल को मुनगाला परगना में जहाँ कानूनोल्लंघन हो रहा है, वहाँ अनुशासन अमल में लाने के लिए श्री साधु सुब्रह्मण्यम्‌जी ने अपने १५ साथियों के साथ ताड़ी निकालने के स्थानों पर और बेचने के अड्डों पर धरना दिया।

गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन

"दूसरी भूदान-जयंती के दिन हरिजन आश्रम साबरमती में गुजरात का सर्वोदय-सम्मेलन प्रारंभ हो रहा है। यह अनेक तरह से एक शुभ संयोग है। जिस स्थान से गांधीजी ने अपनी जगत्प्रसिद्ध दांडीयात्रा शुरू की, उसी स्थान पर एकत्र होकर गुजरात में सर्वोदय का काम करने वाले लोक-सेवक अन्तर्निरीक्षणपूर्वक अपने भावी कार्यक्रम की दिशा का विचार करें तथा दो सप्ताह बाद ही जन्म लेने वाले गुजरात के नये राज्य के समक्ष जो प्रश्न आयेंगे, उन पर अपने मन्तव्य नम्रतापूर्वक प्रगट करें, यह सर्वथा उचित है।

सर्वोदय की मान्यता है कि हमारा चिंतन जगतव्यापी हो और हमारा संयोजन गाँवों की भूमिका के ऊपर हो। गुजरात के नये राज्य के कारण ये दोनों काम सरल होंगे, ऐसी आशा है।

जगत की दृष्टि से, आज विज्ञान और अहिंसा के सुमेल की आवश्यकता है। राष्ट्र की दृष्टि से, हमारी जनता का विधायक पुरुषार्थ जगे और वह अपने संरक्षण की जिम्मेदारी खुद उठा ले, उस दिशा में जाने की आवश्यकता है, गुजरात राज्य की दृष्टि से, मितव्ययी और कार्यक्षम बनें, यह आवश्यक है। गाँवों की दृष्टि से, आज से ही हम समानता की दिशा में निश्चित कदम उठायें, यह जरूरी है।

आर्थिक संयोजन

हमारे संयोजन का आरंभ भूख, बेकारी, गरीबी, असमानता और अज्ञान के निवारण से होना चाहिए। इन अनिष्ट चीजों का निवारण प्रजा के प्रत्यक्ष पुरुषार्थ से ही हो सकता है। शासन उसके रास्ते की बाधाएँ दूर कर सकता है तथा उसके लिए योग्य सुविधाएँ खड़ी कर सकता है। इसके लिए वातावरण बनाने का काम लोक-सेवकों का है। आज का यह पवित्र दिवस सब सर्वोदय-सेवकों को भूख, बेकारी, गरीबी, असमानता और अज्ञान दूर करने के लिए एक बार फिर कटिबद्ध होने का, और वह दूर न हो, तब तक चैन न लेने की प्रतिज्ञा करने का दिन बने।

प्रजा का मुख्य उद्योग खेती होते हुए भी गुजरात आज अन्न के मामले में स्वावलम्बी नहीं है। उसके बहुत से कारणों में से एक कारण यह भी है कि भूमिहीन खेत-मजदूरों को अपनी खेती उत्पादन में कोई हक हासिल नहीं है। जब तक हमारे गाँव से गरीब मनुष्य के पास काम न हो, तब तक हमारा राज्य या हमारा देश प्रगति नहीं कर सकेगा। काम देने का बड़ा से बड़ा साधन भूमि है। गाँव की सारी जमीन समस्त गाँव की है, यही न्यायपूर्ण और वैज्ञानिक व्यवस्था है। इसका आरम्भ गाँव के छठे हिस्से की जमीन गाँव के भूमिहीनों के लिए देने से होना चाहिए। कोई भी भूखा न रहे, ऐसे संकल्प गाँव-गाँव में होने चाहिए। गाँव इस प्रकार के संकल्प ले सकें, इसके लिए राज्य को योग्य साधन सुविधाएँ उन्हें उपलब्ध करनी चाहिए। आज जमीन रखने की अधिकतम मर्यादा (सीलिंग) का विचार चल रहा है। उसके कारण जमीनवालों में जमीन अपने रिश्तेदारों को बाँट देने की प्रवृत्ति बढ़ रही है और उद्यम ज्यादा जितनी हो सके उतनी जमीन रखने का प्रयास हो रहा है। गुजरात राज्य में ऐसा न हो, इसके लिए कानूनी सावधानी रखने की आवश्यकता है. परन्तु सर्वोदय का प्रयत्न तो स्वेच्छिक त्याग द्वारा जमीन रखने की न्यूनतम मर्यादा (फ्लोरिंग) बाँधने का होना चाहिए। खेती पर ही निर्भर रहने वाले, दूसरा कोई धंधा जिनके पास नहीं है, ऐसे गाँव के भूमिहीनों के लिए कुछ-न-कुछ परिमाण में जमीन सुरक्षित रखने की दिशा में सक्रिय कदम उठाये जाने चाहिए। सामान्य तौर पर गाँव की कुल जमीन के छठे हिस्से के जितनी यह जमीन होगी तो काम चलेगा।

खेती जितनी आवश्यक है उतने ही ग्राम के उद्योग भी हैं। आज देश में उद्योगों की बाढ़ आ रही है, उनका उपयोग व्यक्तिगत शोषण बढ़ाने वाले पूंजीवादी तरीके पर हो रहा है, या तो इसके विकल्प के रूप में शासन की पकड़ अधिक मजबूत करनेवाला उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का विचार सूझता है। सर्वोदय विचार के पास इन दोनों अनिष्टों से मुक्त रहने वाला तीसरा विकल्प है, वह है, उद्योग तथा व्यापार का ग्रामीकरण। गाँव-गाँव में नये उद्योगों के विकास के लिए गाँव की पूंजी इकट्ठी हो, नये उद्योगों को या बिजली आदि शक्ति को मालकियत गाँव की सामूहिक मानी जाय तथा रेल, कोयला इत्यादि जो राष्ट्रीय महत्त्व के उद्योग तथा व्यापार हैं उनमें गाँव इकाइयों का हिस्सा हो। विज्ञान का उचित उपयोग कर सकें, ऐसे सार्वजनिक परिश्रमालय गाँवों में शुरू हों। पेट्रोल, केरोसिन, शक्कर, सीमेन्ट इत्यादि का व्यापार व्यक्तिगत पूंजीवाद को बढ़ाने वाला नहीं, बल्कि गाँव के छोटे-से-छोटे आदमी का, जिसमें हिस्सा हो, ऐसी ग्राम सहकारी समिति का हो। इस प्रकार की व्यवस्था से खेती पर से हटने वाले आज के अनुत्पादक व्यक्तियों को भी सुरक्षा प्राप्त होगी और गाँव-गाँव में नये-नये काम करने का अन्तिम आदर्श होगा। इस संदर्भ में उद्योग दान के विचार की ओर सर्वोदय-मंडल सबका ध्यान आकर्षित करना चाहता है।

खेती और उद्योग दोनों की बुनियाद सर्वोदय की दृष्टि से श्रमनिष्ठा का विचार है। जब तक यह निष्ठा नहीं बढ़ेगी तब तक खेती और उद्योग की सच्ची बुनियाद नहीं पड़ेगी। प्रजा में श्रमनिष्ठा की भावना बढ़नी चाहिए और लोक-सेवकों के जीवन में वह प्रत्यक्ष प्रगट होनी चाहिए।

राजनैतिक कार्यक्रम

लोकनीति की दृष्टि से अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने पठानकोट की अपनी सभा में लोकतांत्रिक आचार-मर्यादा के संबंध में जो निवेदन जाहिर किया था, वह अत्यन्त महत्त्व का है। गुजरात के सब राजनैतिक पक्ष उसे अमल में लाने के लिए सक्रिय कदम उठायें, यह वांछनीय है।

हमारी ग्रामपंचायतों, लोकल बोर्डों तथा म्युनिसिपैलिटियों में से पक्षों के आधार पर होनेवाले चुनाव की प्रथा हमें तत्काल दूर करनी चाहिए। स्वयं उम्मीदवारी से अलग रहते हुए, सर्वोदय-सेवकों को गुजरात राज्य के किसी एक क्षेत्र में इस स्तर पर पक्ष-निरपेक्ष चुनाव हो, इसके लिए आन्दोलन खड़ा करना चाहिए।

प्राथमिक इकाइयों में निर्णय सर्व-सम्मति से अथवा पंच फैसले के तौर पर हों, दोनों ही तरीके सफल न होने पर किसी और सर्वसम्मति व्यक्त करने वाले उपाय द्वारा निर्णय होने चाहिए।

चाहे जैसी मुश्किल परिस्थिति में भी शान्तिमय साधनों का ही उपयोग करने के लिए प्रजा प्रतिज्ञाबद्ध हो, इस लिए सब राजनैतिक पक्षों को सक्रिय कदम उठाने चाहिए। अशान्ति के प्रसंग ही खड़े न हों, ऐसा प्रयत्न सर्वोदय सेवकों को करते रहना चाहिए और अशान्ति के मूलभूत कारणों को दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। ऐसा करते हुए भी अगर अशांति के प्रसंग आ ही जायें तो अपने प्राणों की आहुति दे देने की तैयारी के साथ अशान्ति दूर करने के प्रयत्न उन्हें करने चाहिए।

राज्य की भी प्रजा में ऐसा भय उत्पन्न न हो, उसके लिए आवश्यक निर्णय लेने चाहिए। गुजरात के नये राज्य में राजकर्ताओं का मोह नहीं बढ़ाने और कारणवश वैसा करना अनिवार्य ही हो जाय तो तुरन्त उसकी खुली जाँच करवाने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

नये राज्य का शासन कम खर्चीला होगा, ऐसी अपेक्षा तो हर किसी को है। मंत्रियों के वेतन, प्रवास तथा उनके रहन सहन में सादगी रहेगी, ऐसा विश्वास है। राज्य में छोटे-से-छोटे मनुष्य की आवाज की सुनवायी होनी चाहिए। इसके लिए राज्य का सारा कारोबार गुजराती भाषा में होना चाहिए। न्याय की व्यवस्था अधिक-से-अधिक विकेन्द्रित होनी चाहिए तथा शासन के अधिकारियों से सार्वजनिक रूप में प्रश्न पूछे जा सकें तथा उनका उत्तर मिल सके, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। नये राज्य में नगरों और गाँवों के बीच की खाई घटनी चाहिए। दोनों के अनिष्ट दूर होकर नये कृषि उद्योगाधारित ग्राम-समुदाय खड़े होने चाहिए।

नये राज्य में शिक्षा-पद्धति में आमूल परिवर्तन होना चाहिए। आज हमारे शिक्षण में श्रम की प्रतिष्ठा नहीं है। विद्यार्थियों की पुरुषार्थ वृत्ति को योग्य दिशा मिले, ऐसा कार्यक्रम उसमें नहीं है। विद्यार्थियों में साहित्य के विकास को भी योग्य अवकाश नहीं है। इसके अलावा आज शिक्षा मुख्य तौर पर डिग्री और नौकरी को लक्ष्य में रख कर ही और दी जाती है। शिक्षा में से उपर्युक्त दोष दूर होने चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी आमूल क्रांति होगी, तभी हमारे आर्थिक या राजनैतिक विकास के कार्यक्रमों को सफलता मिल सकेगी।

लोक-संस्कार के माध्यम स्वरूप सिनेमा इत्यादि आज व्यक्तिगत मालकियत के अन्तर्गत हैं उसके बदले वे स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं के अन्तर्गत होने चाहिए।

प्रजा में आज लाचारी की भावना दीखती है, वह दूर होनी चाहिए। उसके लिए अन्याय को सहन न करने के तथा उसके शांतिसौम्य प्रतिकार करने के प्रयोग भी होने चाहिए।

गांधीजी के गुजरात से सर्वोदय की दिशा में ऐसे सक्रिय कदम उठाये जाने की अपेक्षा स्वाभाविक है। इन सब बातों के लिए प्रचंड पुरुषार्थ की आवश्यकता है। सर्वोदय मंडल का मानना है कि गुजरात का लोक-हृदय इस प्रकार के पुरुषार्थ के लिए मूक में तैयार है। जनता-जनार्दन के अन्दर ये गुण जाग्रत हो सकते हैं, इस विश्वास से पूर्ण श्रद्धा भक्तिपूर्वक लोगों के अन्तर में जागने वाले स्वर की आवाज के वाहन बनने का और साबरमती के तट से गांधीजी के ग्राम स्वराज्य का स्वप्न पूरा करने के लिए हमारी पूरी शक्ति अर्पित करने का संकल्प हम लें।"

जंगम विद्यापीठ में

निर्मला देशपांडे

"माया की काली रात में काला रूप लेकर आँखमिचौनी खेलने वाले उस मायावी प्रभु को कोई पहचान नहीं सकता है। लेकिन मैं ठीक उसी की ओर खींची जाती हूँ। उस काली रात में कहाँ है इतनी शक्ति कि वह मुझे रोक सके!"—दिन विदा ले रहा था, रात की धीमी आहट सुनाई दे रही थी। विनोबाजी एकाग्रता से सुन रहे थे। 'ज्ञानदेव चिंतनिका' का पठन हो रहा था। "इन दिनों धर्मग्रन्थ के तौर पर हम यह पढ़ते हैं।"—कहते हुए उन्होंने मुझे भी बैठने का इशारा किया। ज्ञानोबा की मधुर मराठी को विनोबा ने मधुरतर बना दिया था और सुनने वाला मेरा मन मधुरतम रस की अनुभूति ले रहा था।

पठन समाप्त होते ही देखा तो पूर्वपरिचित, सुपरिचित, अपरिचितों की जमात इकट्ठी हुई थी। दूर से आयी हुई एक वृद्धा भूदान देना चाहती थी। निकट के शहर से आयी हुई एक प्रौढ़ स्त्री पदयात्रा में साथ रहना चाहती थी, शान्ति-सेना के काम का कुछ सोच रही थी, कुछ सोचने वाली थी। विनोबाजी ने हँसते हुए कहा—"इन दिनों हम बहनों को नाहीं नहीं कहते हैं। जो भी हमारे साथ रहना चाहे, आ सकती हैं।"—उस जमात में कहीं छिप कर बैठे हुए एक पूर्वपरिचित को विनोबाजी की आँखों ने देख लिया। "के दर्शन तो बरसों के बाद हो रहे हैं।" भाई सकुचाते हुए पास आकर बैठे जो एक प्रोफेसर हैं, सम्पत्तिदाता हैं। कहने लगे—"मैं कुछ काम तो नहीं करता हूँ, कैसे आऊँ आपके पास?" विनोबाजी सुनना नहीं, सुनाना चाहते थे—"अच्छा यह बताओ, तुम्हारे शहर की आबादी क्या है? ढाई लाख? तो फिर यहाँ ६० शान्ति-सैनिक निकलने चाहिए। उनके लिए इन्तजाम करना तुम्हारा काम। तुम्हारे जैसे पचास सम्पत्तिदाता लाओ!" भाई ने कुछ संकोच से कहा—"बाबा, सम्पत्तिदाता मुश्किल से निकलते हैं।" "तो फिर हर साल दस रुपया देने वाले ढाई हजार व्यक्तियों की फेहरिस्त बनाओ और उनसे *शान्ति-सैनिकों के लिए हर साल दस रुपया हासिल करो।*"—"यह कुछ आसान मालूम होता है।"—भाई ने कुछ उत्साह से कहा। "हमारे पास आसान तरकीब भी है, कठिन भी है। चाहे सो करो, लेकिन तुम्हारे शहर में शांति-सेना बननी चाहिए।"

दूसरे दिन पदयात्रा में फिर वही बात चली। विनोबाजी करणभाई से कहने लगे—"और तुम्हारी काशी में क्या होगा? 'विश्वविख्यात काशी', दुनिया को प्रकाश देने वाली काशी में तो शान्ति-सेना बननी ही चाहिए।

मेरा ख्याल है कि वहाँ पर ६० शान्ति सैनिकों की जरूरत होगी। उनके योगक्षेम के लिए हर साल करीब ७५ हजार रुपया वहीं से हासिल करना होगा। वे सैनिक स्वच्छ काशी आंदोलन चलायेंगे, घर-घर जाकर परिचय प्राप्त करेंगे, सबका प्रेम और विश्वास हासिल करेंगे, बीमारों की सेवा करेंगे, घर-घर में सर्वोदय पात्र रखवायेंगे। जमीन के मामले में आप लोगों की (भूदान कार्यकर्ताओं की) इज्जत बढ़ी है। आपने दस लाख एकड़ जमीन बाँटी है, जो न किसी पार्टी ने किया है, न सरकार भी कर सकी है। अब शांति-सेना बनाओगे, तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र पर भी आपका असर हो सकेगा। मुझे शान्ति-सेना के लिए इतनी तीव्रता मालूम हो रही है कि मैंने एक व्याख्यान में कह दिया कि लोगों को शान्ति सेना बनाने की प्रेरणा नहीं हो रही थी, इसलिए भगवान ने चीन वाला मसला खड़ा कर दिया, ताकि लोग जाग जायें।"

"मैं कहना चाहता हूँ कि आप फौज के जरिये देश की रक्षा करना चाहते हो तो आपको शान्ति सेना बनानी चाहिए और आप बिना फौज के रक्षा करना चाहते हो, तो आपको *शांति-सेना बनानी ही चाहिये।* देश में अशान्ति हो और अन्तर्गत शांति के लिए फौज की जरूरत पड़े तो कोई फौज देश की रक्षा नहीं कर सकती है और *अहिंसक रक्षा के लिए तो शांति-सेना अनिवार्य ही है।* आप फौज के जरिये देश की रक्षा करना चाहते हो तो आपको ग्राम दान करके गाँव गाँव को स्वावलम्बी बनाना होगा और आप अहिंसा से रक्षा करना चाहते हो तब तो आपको ग्रामदान करना ही होगा। हमारा काम ऐसा है जो दोनों हालत में जरूरी है।"

उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले में यात्रा चल रही थी। धूप तेज न होने से यात्रा सुखद मालूम हो रही थी। बीच बीच में मोरों के झुण्ड दिखाई दे रहे थे। उनको देखते ही 'गीता-प्रवचन' के दसवें अध्याय का स्मरण हुआ। मोर भी भगवान की विभूति ही तो है। एक कार्यकर्ता अपने पाँच साल के बच्चे को कंधे पर ले आ रहा था। उसकी तरफ देख कर विनोबाजी ने कहा—"बच्चे पैदा करना उनकी परवरिश करना, उनके लिए त्याग करना, उनको जिलाने के लिए खुद मर जाना आदि यह जो सारी इच्छा है, यह अमृतत्त्व की ही प्रेरणा है। अमृतत्त्व की प्राप्ति का यह 'क्रूड मेथड' [भोंडा तरीका] है।"

पदयात्रा में चलने वाली ज्ञानचर्चा प्रकृति और संस्कृति की सुन्दरता का मनोहर सम्मिश्रण उपस्थित कर देती है। आँखें प्रकृति की तरफ, कान संस्कृति की तरफ और मन कभी इधर तो कभी उधर! साथ चलने वाले प्रोफेसर भाई ने पूछा, "आपने यह कैसे कहा कि कम्युनिस्ट मनुष्य स्वभाव की अच्छाई में विश्वास करते हैं?" विनोबाजी ने कहा—"जो 'विदरिंग अवे ऑफ दी स्टेट' (राज्य के विलयन) में मानते हैं, उनको यह मानना ही होगा कि मनुष्य-स्वभाव अच्छा है। यदि वे वैसा नहीं मानते, तो दंड की, शासन की आवश्यकता महसूस करते। दूसरे कुछ ऐसे विचारक हैं, जो कहते हैं कि चाहे शासन कम से कम हो, विकेन्द्रित हो, लेकिन हरहालत में शासन की आवश्यकता तो रहेगी ही।" फिर मुस्कुराते हुए कहने लगे "कम्युनिस्ट अपने ही तत्त्वज्ञान को नहीं जानते हैं। उनके तत्त्वज्ञान को जानने का ठेका हमने ले लिया है।"

समाजवाद और व्यक्तिवाद की चर्चा चली। विनोबाजी ने कहा—"मुक्ति की कल्पना में समाजवाद की परमावधि परिणति है। मुक्ति याने अपने को शून्य बनाना। ऐसे शून्य बने हुए समाज में लीन हुए व्यक्ति में परमोच्च आदर्श दिखाई देता है।"

भाईसाहब ने सवाल किया—"आप ग्रामदान में जो विचार रख रहे हैं, क्या वह साधारण मानव के लिए सम्भवनीय है?"

विनोबाजी ने कहा—"हम यह नहीं कहते हैं कि सबको सुख दुःख से परे जाना चाहिये। सुख दुःख से परे तो कोई एकाध व्यक्ति ही जा सकता है। सामान्य मनुष्य सुख दुःख का अनुभव करेगा ही। लेकिन हम इतना ही कहते हैं कि दूसरों के सुख दुःख में हिस्सा लीजिये। दूसरों के सुख से सुखी होना और दुःख से दुःखी होना साधारण मनुष्य के लिए सम्भवनीय है, बल्कि हम तो मानते हैं कि वही मनुष्य का लक्षण है।"

गर्मी के दिन, ग्यारह मील का सफर। पड़ाव पर पहुँचते ही स्वागतार्थ आयी जनता को प्रणाम करके बाबा अपने कमरे में चले गये। कह रहे थे कि 'मैं थका नहीं। मेरी चलने की शक्ति जरा भी कम नहीं हुई है।' जयदेव भाई ने कहा—'आराम कीजिये'; पर नहीं माना, बैठे ही रहे। मैं भी पास बैठ गयी। चर्चा चलती रही। मैंने कहा—"जगह-जगह कई मसले पैदा हो रहे हैं जैसे *भाषावार प्रांतरचना का मसला* और लोग अपने ढंग से उन्हें हल करने की कोशिश भी करते हैं। क्या उन मसलों का अहिंसक हल बताना हमारा कर्तव्य नहीं है?" बाबा ने हँसते हुए कहा—"अरे, वे मसले हैं ही नहीं। वे तो झगड़े हैं।" फिर गहराई में ले जाते हुए कहा—"सत्याग्रह में दोनों की जीत होती है याने दोनों पक्षों में जो कुछ सत्य होता है, उसकी जीत होती है। सत्याग्रही यह कभी नहीं कहेगा कि सारा सत्य हमारे ही पक्ष में है, दूसरे पक्ष में कतई सत्य नहीं है।

"वेद में युद्ध को 'मम सत्य' याने मेरा सत्य कहा है। मेरे ही पक्ष में सत्य है, यह कहना याने युद्ध की भूमिका है। सत्याग्रही यही मानता है कि दूसरे पक्ष में भी कुछ सत्य होगा, उसको हमें ग्रहण करना चाहिए। जब हम हृदय-परिवर्तन की बात करते हैं तो उसके माने यह नहीं कि दूसरे का ही हृदय परिवर्तन करना है, बल्कि यह है कि हमारा भी हृदय परिवर्तन हो सकता है।"

शब्द अर्थ भाव प्रभाव की प्रक्रिया बाबा ने कोरापुट की यात्रा में समझायी थी, उसका स्मरण हुआ। मेरा मन कह रहा था कि हम 'अहिंसा' के विषय में अभी 'शब्द' की भूमिका पर ही हैं, अर्थ की भूमिका हमसे कोसों दूर है। लेकिन गीता ने आश्वासन दिया है—"न हि कल्याणकृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति!"

• •

बेलगाँव में शांति-सेना शिविर

ता. १४ अप्रैल, '६० को बेलगाँव (मैसूर राज्य) में शान्ति सेना शिविर का उद्घाटन श्री अप्पासाहब पटवर्धन ने किया। इस अवसर पर शहर के सभी पक्षों के प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस शिविर में महाराष्ट्र तथा मैसूर, दोनों राज्यों के शान्ति-सैनिक प्रशिक्षण ले रहे हैं। बेलगाँव दोनों राज्यों की सीमा पर बसा हुआ शहर है, जो दोनों राज्यों के बीच एक वादग्रस्त विषय बना हुआ है।

श्री अप्पासाहब ने अपने भाषण में कहा—"हम दोनों पक्षों की भूमिका जानना चाहते हैं। हम कोई 'जज' नहीं हैं कि निर्णय दे सकें। हम इतना ही चाहते हैं कि जो भी काम हो, शांति से हो। और किसी भी पक्ष की तरफ से सभ्यता की मर्यादा का अतिक्रमण न हो।"

विनोबा के साथ

सुर्नामाई

पिछले पन्द्रह दिन के फलक पर नजर डालती हूँ, तो लगता है कि पुनर्जीवन-प्राप्ति का वह काल था। वहाँ उस गंगोत्री का दर्शन किया कि जिसमें से यह नौ साल लम्बी भूदान-गंगा भारतवर्ष के जनमानस में उसकी संस्कृति का नीर भरती हुई बही। उस गंगोत्री में गोता लगा कर, मायूसी और थकावट को दूर छोड़ कर नई स्फूर्ति पाकर आना सचमुच में एक पुनर्जीवन-प्राप्ति का अवसर था।

वहाँ से दिल्ली और दिल्ली से पट्टीकल्याणा। दिल्ली से पट्टीकल्याणा ४० मील की दूरी पर है। पट्टीकल्याणा में विनोबा ने डेरा डाला और विनोबा का महत्त्व दिल्ली को लगा। कारों का ताँता सतत लगा रहा। विनोबा से मिलने के लिए लोकसभा के कुछ सदस्य आये हुए थे। प्रश्नों के जवाब में जो कुछ भी सुना उससे अत्यन्त प्रभावित हो कर कहने लगे, "विनोबाजी, आप दिल्ली जरूर आइये।" बहुत आग्रह होता है, तब आग्रह को टालने की कला विनोबा की ही माननी होगी। विनोबा ने कहा—"देखिये, होशियार आदमी जो होता है, वह खुद उस जगह पर नहीं जाता है, वह तो उसकी प्रदक्षिणा करके उसको अपने कब्जे में कर लेता है। देखिये, यह रही दिल्ली। और मैं उसको दाहिनी ओर रख कर [प्रदक्षिणा जिसकी होती है, उसको दाहिनी ओर रखना पड़ता है] इस प्रकार जा रहा हूँ।" एक कुशल सेनापति की भाँति उन्होंने अपना व्यूह मेज पर दिखाया। फिर भी आग्रह जारी रहा, तब कहा—"क्यों आग्रह करते हो भाई? मैं इसलिए आना टाल रहा हूँ कि जो दिल्ली आता है, सो लौटता ही नहीं, वहीं खो जाता है।" बाबा के इस कटाक्ष पर इतनी जोरों की हँसी उठी कि उसमें आग्रह सारा डूब गया!

दिल्ली की सीमा को तो नहीं छूआ, लेकिन उसकी हृदय-वीणा के तारों को विनोबा की लहर कैसे छुए बगैर रहती? पण्डित नेहरू, राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, प्लानिंग कमीशन के सदस्य, लोकसभा के कई सदस्य, अमेरिकन राजदूत श्री बंकर, फ्रांस के राजदूत, सीलोन के राजदूत, गांधी-निधि के श्री दिवाकरजी और श्री रामचन्द्रन् आदि बड़ों के साथ-साथ छोटे मोटे कार्यकर्ता आकर मिले। सर्वोदय सम्मेलन भी खतम हुआ था, इसके कारण सर्व सेवा संघ के भी कई कार्यकर्ता बाबा से मिलने के लिए आते रहे। इसके कारण सारा समय अत्यन्त व्यस्त था।

पंजाब की यात्रा के आखिरी दिन थे। भावनाएँ उच्चतम, पराकाष्ठा को छू रही थीं। पंजाब के कार्यकर्ताओं में भक्ति का जो दर्शन हुआ, उसको कभी भी नहीं भूल सकूँगा। आन्दोलन में सफलता निष्फलता तो परमात्मा के हाथ है। लेकिन विनोबा ने जो कहा, वह यह था : "हिन्दुस्तान में मैं जहाँ कहीं भी गया, वहाँ के लिए श्रद्धा और प्रेम लेकर गया। लेकिन सबसे ज्यादा श्रद्धा लेकर मैं पंजाब और कश्मीर गया। जिन ग्रन्थों के अध्ययन में मेरी जिन्दगी के कई वर्ष बीते, उनका जन्मस्थान यही यह धरती है। वेद, उपनिषद्, गीता यहाँ प्रकटे। हिन्दी का जन्मस्थान भी यही माना जायगा। गुरुवाणी भी यहीं बनी तो इससे बढ़कर ज्यादा ताकत वाली चीज और कहीं भी नहीं मिल सकती है। दुनिया के तत्त्वज्ञान की धारा यहीं से बहा, जैसे कि सब नदियों की धारा।"

उसी भाषण में विनोबा ने ज्ञानी और भक्त के बीच का फर्क दिखाते हुए कहा, "ज्ञानी भगवान से कुछ दूर रहता है, इसलिए उसका वर्णन कर सकता है। लेकिन भक्त भगवान में लीन हो जाता है, जैसे कि नदी समुद्र में। वह देखती सोचती नहीं रहती कि समुद्र कितना गम्भीर है और कितना गहरा।' वैसे ही कार्यकर्ताओं की आँखों से उन नदियों की धारा की भाँति भक्ति के अश्रुओं की धारा बह कर उस समुद्र-में लीन होती रही और विनोबा ने पंजाब को छोड़ा-यमुना पार करके।

यह पारवाला मामला अच्छा है। पंजाब वाले उत्तर प्रदेश वालों को 'पारवाले' कहते हैं और उत्तर प्रदेश वाले पंजाबवालों को 'पारवाले' बताते हैं। दोनों को परस्पर के लिए आदरभाव(!) उतना ही। उधर पंजाब में पाजामा, कोट, पगड़ी और सलवार, तो इधर साड़ी, धोती और टोपी। वहाँ फारसी प्रचुर-वाली भाषा और इधर संस्कृत के प्रभाव वाली भाषा। रहन सहन में भी फरक, रूपरंग में भी फरक। देख कर पता चलता था कि एक जमाने में भौगोलिक रचनाओं का कितना जबरदस्त असर संस्कृति पर पड़ता था।

जमीन के मसले के बारे में सरकार की ओर से जो पंगु प्रयत्न हो रहे हैं, उनसे अपने को तीव्र असन्तोष है, सो व्यक्त करते हुए विनोबाजी ने लोकसभा के सदस्यों के सामने स्पष्ट शब्दों में कह दिया, "इससे मुझे कतई समाधान नहीं है भाखड़ा बाँध का पानी जिस जमीन को मिलता है, वहाँ पर 'नागपुर प्रस्ताव' को न लागू कर सीलिंग के कारण मिलने वाली जमीन का नीलाम किया जायेगा और मिलने वाली सूखी जमीन के बारे में 'नागपुर-प्रस्ताव' लागू किया जायेगा, ऐसा सुना था।" बाबा ने तीव्रतापूर्वक अपना विरोध प्रकट करते कहा, 'अगर यह सही है तो वह 'नागपुर प्रस्ताव'-के शब्द और स्पिरिट के खिलाफ है। ऐसी हालत में अगर 'ब्लडी रिवोल्युशन-खूनी क्रान्ति आ गयी तो उसको रोकने में मैं अपने को असमर्थ पाऊँगा, सिवा कि मैं उसमें आत्म समर्पण कर दूँ।" युग की इस चुनौती को किसी-न किसी को तो उठाना ही पड़ेगा। मेरठ में रचनात्मक कार्यकर्ताओं को विनोबा ने कहा : "सरकार ने भूमि के क्षेत्र को छोड़ा है, ऐसा समझ कर हमें उसको उठा लेना होगा। अगर भूमि का मसला हल नहीं कर सकते तो आप सार्वजनिक क्षेत्र में मुँह दिखाने के काबिल नहीं रह सकेंगे।"

बीच में प्लानिंग कमीशन के सदस्य मिलने आये थे। काफी चर्चाएँ हुईं। विनोबा ने ज्यादातर सुना। कोई विशेष आलोचना विनोबाजी की ओर से नहीं हुई। ऐसा कहा गया मालूम होता है कि सीलिंग करके भी भारत-सरकार राज्य सरकारों के द्वारा ४.५ लाख एकड़ जमीन मुश्किल से प्राप्त कर सकेगी। यह एक हैरान कर देने वाली बात है। इतना सारा मंथन और उसके बाद इतना जरा-सा मक्खन और वह मक्खन भी क्या होगा! रद्दी से रद्दी जमीन वे लोग सरकार के हाथ में जाने देंगे। वेलफेयर स्टेट परिषद में कहा गया था कि बावजूद इसके कि ग्रामदान एक बहुत ही अच्छा आन्दोलन है और उससे देश का भौतिक एवं नैतिक उत्थान हो सकता है। सरकार उस आन्दोलन के भरोसे पर रह नहीं सकती, भूमि की समस्या के बारे में उसकी अपनी जिम्मेवारी है और वह उसको महसूस भी करती है। उस जिम्मेवारी को पूरा करने के लिए वह अपनी ओर से पूरी तरह से कारवाई करेगी! ऐसा ऐलान करने के बाद भी अगर इतना ही होने की आशा है, तो सहज ही तुलना हो जाती है। केवल एक पुरुष के नौ साल के पुरुषार्थ से लोक-शक्ति का एक अंश मात्र जाग्रत हुआ, उसमें ४२ लाख एकड़ का तो दान मिल चुका। करीब ५००० ग्राम-दान मिले और १० लाख एकड़ भूमि वितरित करके उस पर किसान आबाद भी किये गये। इतना सारा तब हुआ जब सारी राजनैतिक पार्टियाँ प्रथम तो इसके प्रति कुछ व्यंग्य भाव से देखती और बोलती रहीं और बाद में सचमुच में तटस्थ देखती रहीं 'तीरे ऊभा जुए तमाशो'—किनारे खड़ा रह कर तमाशा देखती रहीं। लेकिन कवि ने आगे कहा है 'तीरे ऊभा जुए तमाशो, ते कोडी नव पामे जो ने!'—जो किनारे खड़ा रह कर तमाशा ही देखता है वह कौड़ी भी नहीं पायेगा, क्योंकि 'हरिनो मारग छे शूरानो'—हरि का मार्ग पुरुषार्थियों का है, जो सर पर कफन बाँध कर बिना सोचे परिणाम निकलते हैं, क्रान्ति वही कर सकती है और बिना उसके आधार दंड-शक्ति, कानून कितना पंगु होता है, इसका बेहतर उदाहरण और कहाँ मिलेगा!

आजकल विनोबा गांधी-परिवार के संगठन पर बहुत जोर दे रहे हैं। पंजाब में गांधी-परिवार को एक बनाने में वे सफल हुए, उसके बारे में मैं लिख चुका हूँ। उत्तर प्रदेश में वह काम उनका जारी है। मेरठ में रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सामने उन्होंने कहा : "हम अलग-अलग रहेंगे तो फीके पड़ जायेंगे — अगर हम सब एक सेना हैं, ऐसा समझ कर इन सभी सेवकों को मिला देंगे, तो हमारी एक बहुत बड़ी ताकत बनेगी। गांधीजी के जमाने में एक अधिष्ठान था, जिसको सब रचनात्मक कार्यकर्ता एवं संस्थाएँ मानती थीं और उसके कारण रचनात्मक काम में लगी थीं। और एक सियासत थी स्वराज्य की, जिसके कारण सब एक बने हुए थे। आज भी अगर हम सोचें तो पूरा रचनात्मक काम एक अधिष्ठान पर खड़ा है, जिसके बिना खादी खादी नहीं, एक मामूली कपड़ा है और यह सूत एक धागा है, जो कि मील के सूत से बहुत कमजोर है और हमारी सियासत भी है—लोकनीति की। इन दो चीजों को हम समझेंगे तो इसमें से एक बड़ी भारी ताकत बन सकती है।"

विनोबा ने उत्तर प्रदेश में प्रवेश किया। यमुना के तट पर बारीक कृष्ण व श्वेत बालू के पट पर बैठ कर आँखें मूंद कर श्रीकृष्ण के दर्शन किये और बंसी की वह टेर सुनी, जो एक जमाने में यमुना के इन किनारों को अपने मीठे सुरों से गुंजित करती थी : "आज भी हम यहाँ यमुना के तट पर श्रीकृष्ण को बालू में खेलता देख रहे हैं और अब भी वह बंसी बजा रहा है। यही, वह रेत है, जिसमें वह खेला करता था, यही वह चीज है, जहाँ भगवान वंशी की नाद के साथ नाच रहे थे और गोपियों को नचा रहे थे। आज भी वह नाच रहा है और गोपियों को नचा रहा है।" साक्षात्कार की जैसी वाणी रोम रोम में रोमांच का संचार करती थी।

(क्रमशः)

सर्वोदय क्या है, इसे हम सबको ठीक से समझना होगा

सबके द्वारा सबके लिए सबका राज्य ही इस जमाने का सर्वोदय अवतार है

['अब विश्व में सर्वोदय-विचार का अवतार हो चुका है' शीर्षक से पिछले अंक में पृष्ठ-२ पर प्रस्तुत भाषण का पूर्वार्ध छप चुका है। उसके आगे का अंश यहाँ दिया जा रहा है। —संपादक]

मैंने अखबार वालों से एक दफा कहा था कि मुझे कॉलम-दान दीजिये, चाहे उस कालम में अनुकूल लिखिये या प्रतिकूल। लेकिन अगर मैं पार्टी बनाऊँ तो मुझे बिना मांगे कॉलम-दान मिलेगा। अखबार वालों का उससे अच्छा चलेगा। पर हम पार्टी बनाते हैं तो देश का और एक टुकड़ा बनते हैं। आज ही देश में कितने टुकड़े हैं, जातिभेद मिटा नहीं, मालिक-मजदूर का भेद कायम है, जबानों के झगड़े चल रहे हैं। इस हालत में हम पार्टियों के झगड़े बढ़ाते हैं तो उससे देश के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे, देश छिन्न विच्छिन्न हो जायेगा, बात नहीं बनेगी। कुछ लोग कहते हैं कि यह ठीक है, लेकिन आप जिस ढंग से काम करते हैं, उससे देर लगेगी। तो मैं कहता हूँ कि मेरे सामने समस्या है कि देर लगा कर काम बनाऊँ या जल्दी बिगाड़ूँ। आप क्या चाहते हैं? काम बने यह चाहते हैं या यह चाहते हैं कि काम जल्द हो, चाहे बने या बिगड़े!

अवतार-प्रेरणा

इस वक्त लोगों को इच्छा हो रही है कि भगवान अवतार लें, जिसे मैं पुरानी भाषा में 'अवतार प्रेरणा' कहता हूँ। तुलसीदासजी ने वर्णन किया है कि पृथ्वी संत्रस्त होकर गोरूप धारण कर भगवान से प्रार्थना करती है कि हे भगवान आइये, हमें बचाइये। भारत को आज मैं उस मनस्थिति में देख रहा हूँ, जिस मनस्थिति में अवतार की आकांक्षा होती है। *यह जरूरी नहीं है* कि मनुष्य का अवतार होगा। विचार का भी अवतार होता है, बल्कि विचार का ही अवतार होता है। लोग समझते हैं कि रामचन्द्र एक अवतार था, कृष्ण, बुद्ध, अवतार थे। लेकिन उन्हें हमने अवतार बनाया है। वे आपके और मेरे जैसे मनुष्य ही थे। लेकिन उन्होंने एक विचार का प्रचार सृष्टि में किया और वे उस विचार के मूर्तरूप बन गये, इसलिए लोगों ने उन्हें अवतार माना। हम अपनी प्रार्थना के समय लोगों से सत्य, प्रेम, करुणा का चिंतन करने के लिए कहते हैं। भारत की तरफ ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो जहाँ सत्य शब्द का उच्चारण होता है, वहाँ असंख्य लोगों को प्रभु राम का स्मरण होता है, जहाँ प्रेम शब्द का उच्चारण होता है वहाँ करोड़ों लोगों को कृष्ण भगवान की याद आती है और जहाँ 'करुणा' शब्द का उच्चारण होता है, वहाँ गौतम बुद्ध का स्मरण होता है। राम, कृष्ण और बुद्ध ये ही तीन अवतार हिंदुस्तान में माने गये हैं। लेकिन वे तो निमित्तमात्र हैं। *दरअसल भगवान ने सत्य, प्रेम, करुणा के रूप में अवतार लिया था।*

विचारों का अवतार

भगवान किसी न किसी गुण या विचार के रूप में अवतार लेता है और उस गुण या विचार को मूर्त रूप देने में, जिनका अधिक-से-अधिक परिश्रम लगता है, उन्हें जनता अवतार मान लेती है। यह अवतार-मीमांसा है। वास्तव में अवतार व्यक्ति का नहीं, विचार का होता है और विचार के वाहन के तौर पर मनुष्य काम करते हैं। किसी युग में *सत्य की महिमा प्रकट हुई*, किसी में प्रेम की, किसी में करुणा की तो किसी *में व्यवस्था की। इस तरह भिन्न-भिन्न* युगों में भिन्न भिन्न गुणों की महिमा प्रकट हुई है।

दुनिया भर में समान प्रेरणा

ढाई हजार साल के पहले दुनिया में जहाँ-तहाँ *धर्मस्थापना हुई। भारत* में कृष्ण, बुद्ध हुए, उधर ईसा, मूसा, अरस्तु, चीन में *लाओत्से और कनफ्युशियस* हुए। इस तरह ५०० साल के अंदर दुनिया में सब दूर धर्म-संस्थापक पैदा हुए। आज विज्ञान के कारण इधर से उधर खबरें पहुँचाना आसान है, लेकिन उस जमाने में विज्ञान नहीं था, फिर भी दुनिया में धर्मसंस्थापक क्यों हुए? इसलिए कि एक आवश्यकता थी, समाज-धारणा के लिए धर्म की कल्पना आवश्यक थी, जिससे मानवधर्म की कल्पना पैदा हुई। वह धर्मसंस्थापकों का युग था। जैसे मध्ययुग में हिंदुस्तान में संतों की परंपरा खूब चली, वैसे उसी समय योरप में और चीन जापान में भी अनेक संत पैदा हुए। उस समय सब दूर वही ध्यान धारणा की बात चली, तो दुनिया भर में एक हवा पैदा हुई। इस तरह परमेश्वर से एक विचार की लहरें निकलती हैं और सबको छूती हैं। इसीलिए जब विज्ञान नहीं था, तब भी सबको एक ही प्रेरणा होती थी।

सामाजिक समाधि का युग

दो सौ साल पहले दुनिया में सबको स्वतंत्रता की प्रेरणा हुई। यद्यपि आज भी थोड़े देश स्वतंत्र होने बाकी हैं, फिर भी अब स्वतन्त्रता का जमाना बीत रहा है और नया जमाना, सहयोग का जमाना आ रहा है, जिसमें यह भाना आवेगा कि हर व्यक्ति और देश को स्वतंत्रता हो, लेकिन सबका सहयोग हो। विज्ञान की नई नई खोजों के कारण इंसान, इंसान के नजदीक आना चाहता है, कौम कौम के, देश देश के नजदीक आना चाहता है। इस संपर्क में कुछ संघर्ष भी हो सकता है। लेकिन अन्योन्य संपर्क की यह जो चाह है, यह सहयोग की प्रेरणा है। इसीलिए आज कुल दुनिया को सामूहिक साधना का विचार जँच रहा है। व्यक्तिगत साधना का विचार पुराने जमाने में चला। लेकिन आज के नये नये विचारक सामूहिक साधना की बात करते हैं। बंगाल की यात्रा में जब हमने विष्णुपुर में वह स्थान देखा, जहाँ रामकृष्ण परमहंस की प्रथम समाधि लगी थी, तब मैंने कहा था कि "इस युग की जो प्रेरणा है, वह मुझे स्फूर्ति दे रही है। उस समय मैंने 'सामाजिक *समाधि' शब्द का उच्चारण किया था।* तब से लोग मुझे पूछते हैं कि समाधि *के मानी क्या? क्या ऐसी कोई तरकीब* है, कोई गैस है, जिससे सबका ध्यान लगे। इस जमाने के दूसरे विचारकों के ग्रन्थ में देखता हूँ, तो दीखता है कि उन्हें भी करीब-करीब वे ही विचार सूझते हैं, जो मुझे सूझते हैं। हमने एक-दूसरे की किताबें पढ़ी भी नहीं। इस सबके मानी यह हैं कि भगवान एक विचार के रूप में अवतार लेता है।

मेरा इसमें विश्वास हो गया है कि सर्वोदय विचार इस जमाने का अवतार है। *पहले अल्पसंख्या का बहुसंख्या पर राज्य चलता था (Rule by minority), जिसकी प्रतिक्रिया के रूप में* बहुसंख्या अल्पसंख्या पर राज्य (Rule by majority) आया, (Rule by all) सबका राज्य, सबके लिए, सबके द्वारा राज्य यह जो सर्वोदय का विचार है, यह बिलकुल thesis (थिसिस) antithesis (एंटी-थिसिस), Synthesis (सिंथेसिस) के न्याय से आ रहा है। अल्पसंख्या का राज्य थिसिस है। 'बहुसंख्या' का राज्य 'एन्टी थिसिस' है और सर्वोदय 'सिंथेसिस' है। इसमें अनेक एकांगी विचारों का समन्वय हो रहा है। और अनेक एकांगी विचार पूर्ण हो रहे हैं। इसीलिए जनता को इस विचार के लिए आशा है। हमने कुछ काम किया है, उतने से यह आशा नहीं पैदा हो रही है, बाकी के लोगों के काम से अतृप्ति, असंतोष है इतना ही कारण नहीं है। हमारा काम एक ऐसा कारण होगा। दूसरी पार्टियों के रवैये से असंतोष दो-चार आने कारण होगा। लेकिन मुख्य कारण यह है कि इस जमाने का विचार सर्वोदय विचार है। विज्ञान और रूहानियत दोनों का इसमें समाधान है। समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद, कल्याणकारी राज्यवाद जैसे किसी वाद से इस जमाने का समाधान नहीं हो रहा है। सर्वोदय से ही इस जमाने का समाधान हो रहा है। इसलिए वह इस जमाने का अवतार है।

पुरानी भाषा में जिसे अवतार कार्य कहते हैं या आधुनिक भाषा में जिसे क्रान्तिकार्य कहते हैं, ऐसे इस काम को करने का भाग्य जिन्हें हासिल होगा वे इसके औजार बनेंगे। पुराणों में वर्णन आता है कि अवतार के साथ देवतागण नीचे उतरे। जिसका सार यह है कि यह काम होने का है। एक अवतार कार्य होने वाला है। एक विचार आया है उसे आगे बढ़ाने में *जो निमित्त होंगे*, वे इस क्रान्ति के औजार होंगे।

'संमेलन-विनोबा संमेलन+विनोबा'

१८ अप्रैल को भूदान यज्ञ को नौ साल पूरे होंगे। अब मैं लोगों के सामने जमीन की बात नहीं रखता हूँ। इन नौ सालों में कुछ जमीन मिली है। उसमें से कुछ बँटी है, कुछ बँटने को बाकी है। लेकिन *मैंने मान लिया है कि कुछ* जमीन मेरी है। वह मेरे हाथ आये बिना *नहीं रहेगी। लेकिन मैं* चाहता हूँ कि यह विचार लोगों के पास पहुँचे और कार्यकर्ताओं के ध्यान में यह आवे कि सर्वोदय के औजार बनने में हम जितनी देरी करेंगे उतना एक बहुत बड़ा भाग्य खोयेंगे। इस काम में आने की प्रेरणा किसी को हो तो उसका वह बड़ा भाग्य है। और उसे बहुत समाधान हासिल होगा। इसकी प्रक्रिया अभी लोगों ने सेवाग्राम में देखी। अज्ञात—यात्रा के कारण मैं तो वहाँ नहीं जा सका, जब मुझे अज्ञात-यात्रा का विचार सूझा तब मैंने लिखा था अज्ञात यात्रा के शुभ परिणाम तो आयेंगे ही। लेकिन एक नुकसान मैंने मान लिया है कि मैं सम्मेलन में उपस्थित नहीं रह सकूँगा। इस तरह मैंने अज्ञात-यात्रा का यह नुकसान मान ही लिया था। लेकिन अभी सम्मेलन में जो लोग गये थे, उन्होंने मुझे सुनाया कि सम्मेलन बहुत अच्छा रहा। लोगों को जिम्मेवारी का भान हुआ। चर्चाएँ ऊँचे स्तर की हुईं। पैंगले अच्छे रहे, और लोग श्रद्धा लेकर गये। जो लोग अक्सर आलोचना करते हैं उन्होंने भी मुझे सुनाया कि इस सम्मेलन के अनुभव से हमें आश्चर्य मालूम हुआ। जब मैंने यह सुना तब कहा कि इसके मानी यह है कि मेरे जैसे लोग आयेंगे और जायेंगे, लेकिन यह विचार चलेगा। विचार मेरे पर निर्भर नहीं है। मैं तो पहले से ही यह मानता था। लेकिन यह सबको अनुभव हुआ कि विचार में ताकत है। नहीं तो राजनैतिक पक्षों के सम्मेलनों में उनके मुख्य लोग नहीं रहते

है तो नब्बे फीसदी रस चला जाता है। लेकिन सेवाग्राम में वैसा नहीं हुआ। मैंने एक भाई से कहा कि [समेलन माइनस विनोबा इज इक्वल टु संमेलन प्लस विनोबा]' सम्मेलन-विनोबा-सम्मेलन + विनोबा। यह एक समीकरण मैंने बनाया। इसके मानी यह है कि विनोबा शून्य हो सका। गणित-शास्त्र के अनुसार वही 'क्वान्टीटी' 'माइनस' और 'प्लस' करने से फर्क नहीं पड़ता है तो वह 'क्वान्टीटी' ० शून्य है। या तो गणित-शास्त्र के अनुसार सम्मेलन 'इन्फिनिट-क्वान्टिटी' (अनंत) बन गया। इस तरह या तो सम्मेलन में अनंत ताकत आयी या विनोबा शून्य बना। दो में से एक भी हो तो बहुत हर्ष की बात है। यह इसलिए हो सका कि सर्वोदय का अवतार हो चुका है और वह सबको प्रेरणा दे रहा है।

संमेलन का अनोखा दृश्य

इसका एक और सबूत वहाँ मिला। गांधीजी के जमाने में यह होता था कि गांधीजी जो विचार रखते थे समन्वयुक्त, अहिंसायुक्त, शांतिमय विचार रखते थे। लेकिन जवान उससे असंतुष्ट हो जाते थे। उन्हें वह विचार पानी वाला मालूम होता था। वे उसमें कुछ जोश का, हिंसा का माद्दा लाना चाहते थे। उसको आक्रमणकारी बनाना चाहते थे। लेकिन इस सम्मेलन में ऐसा दृश्य दिखाई दिया कि जो बुजुर्ग थे वे 'हिंसा के साथ थोड़ा समझौता' करने को तैयार थे। लेकिन जवान अहिंसा पर तुले हुए थे। बुजुर्गों का सेना के साथ मेल बैठ सकता था, वे सेना का कुछ बचाव भी कर सकते थे। लेकिन जवान सेना का कतई बचाव नहीं कर सकते थे, यह कोई छोटा दृश्य नहीं है। आज जवान अहिंसा के विषय में बुजुर्गों से आगे बढ़े हुए हैं। यह साफ दिखा रहा है कि सर्वोदय का अवतार हो चुका है और हमें उसका औजार बनना है।

मातृवृत्ति सर्वोदय की वृत्ति

इस हालत में यह बहुत जरूरी है कि हम ठीक से समझें कि सर्वोदय के मानी क्या है। नहीं तो इन दिनों 'सर्वोदय होटल' भी खुलता है। अब यह शब्द इतना व्यापक बन गया है कि रामजी के नाम के मुताबिक पापी और पुण्यवान, दोनों को सबको उसका नाम लेने का हक है। इसलिए हमें समझना चाहिए कि सर्वोदय के मानी क्या है। एक सर्वोदय वह होता है, जो सरकार का है। एक सर्वोदय रचनात्मक कार्यकर्ताओं का है। और एक सर्वोदय गांधीजी का है, गांधीजी ने जो सर्वोदय-विचार बनाया, उसे ठीक समझना चाहिए। उन्होंने दो-तीन शब्दों में उसकी व्याख्या करते हुए कहा कि सर्वोदय में वकील और हजाम दोनों की फीस समान होगी। वैसे सर्वोदय का प्रमेय एक सामान्य कल्याणकारी राज्य के करीब भी जाता है। लोगों का कुछ भला हो, उपज बढ़ायी जाय, लोगों को राहत मिले आदि सब बातें सर्वोदय में आती हैं। लेकिन उतनी ही नहीं आती हैं, उसमें और भी बातें हैं जो बुनियादी हैं। एक बुनियादी बात यह है कि सबका भला हो। दूसरे का पहले हो, मेरा पीछे हो। जैसे माँ कहती है कि बच्चे को पहले खाना मिले और पीछे मुझे मिले। यह जो मातृवृत्ति है, वह सर्वोदय की वृत्ति है। सर्वोदय में मुख्य विचार यह है कि भोग-प्राप्ति में मैं सबसे पीछे रहूँ और बाकी के लोग आगे रहें, लेकिन कर्तव्य में मैं सबसे आगे रहूँ। इस दृष्टि से सर्वोदय के बारे में सोचना चाहिए, जिससे उसकी असलियत का पता चलेगा।

उत्तर प्रदेश में आध्यात्मिक मित्रमंडल बने

इस बार उत्तर प्रदेश की यात्रा में मेरा मुख्य विचार एक आध्यात्मिक मित्र-मंडल बनाने का है। अगर यह हो सका तो बहुत ताकत बढ़ेगी। फिर सर्वोदय-विचार हमारे जरिये आगे बढ़ेगा। नहीं तो वह आगे तो बढ़ेगा ही, लेकिन हमारे जरिये नहीं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि वैष्णवों में जैसा परस्पर-प्रेम और आकर्षण था वैसा हममें पैदा हो। इसी में मेरी यात्रा की सफलता है। महापुरुषों ने वैष्णवों को आदेश दिया था कि *तुम्हारा सारी दुनिया पर प्यार होना चाहिए*। लेकिन उसमें भी वैष्णवों पर पराकोटि का प्रेम होना चाहिए। इस तरह का परम प्रेम हममें होगा तो हम समाजरूपी दूध का दही बनाने में समर्थ होंगे।

पड़ाव-बागपत
जिला-मेरठ, ८ अप्रैल, '६०

मेरी विदेश-यात्रा

ले० जयप्रकाश नारायण

प्रकाशक—अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी, उ० प्र०
मूल्य: ६२ नये पैसे

जयप्रकाशजी के जीवन में शुरू से ही एक प्रेरणा ने सतत काम किया है, वह है स्वातन्त्र्य की प्रेरणा। जीवन के उषःकाल में भारत की तत्कालीन परिस्थिति के कारण वह राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लक्ष्य पर उत्सर्ग हो जाने की प्रेरणा बनकर आयी। पर जब सन् १९२२ से १९२९ तक वे अमेरिका में विद्याध्ययन कर रहे थे, तब स्वातन्त्र्य की प्रेरणा ने व्यापक रूप ग्रहण किया और उनके सारे विचार तथा आचार का केन्द्रबिन्दु यह बन गया कि अन्याय और शोषण से पीड़ित मानव-समाज के दलित वर्ग को उससे मुक्ति कैसे मिले। अमेरिका में ही वे मार्क्सवाद के प्रभाव में आये, मार्क्सवाद का गहरा अध्ययन किया और समाजवादी क्रांति की प्रेरणा लेकर वापस भारत आये। पर मानव स्वातन्त्र्य की निरन्तर खोज उन्हें साम्यवाद से लोक तांत्रिक समाजवाद और फिर उससे सर्वोदय तक ले आयी।

एक समाजवादी विचारक के नाते जयप्रकाशजी का नाम यूरोप और अमेरिका के शिक्षित वर्ग में प्रसिद्ध रहा है, हालांकि सन् १९२९ में अमेरिका से लौटने के बाद वे लगभग ३० वर्ष यानी इस विदेश यात्रा तक बर्मा छोड़ कर भारत से बाहर नहीं गये थे। पर उन देशों के समाजवादी विचारकों और मजदूर-संगठनों से उनका सम्पर्क बराबर रहा। सन् १९५६ के नवम्बर में जब बम्बई में एशियाई मुल्कों के समाजवादियों का सम्मेलन हुआ, उस मौके इंग्लैंड, आस्ट्रिया, इजराइल आदि देशों से भी कुछ समाजवादी मित्र उसमें आये थे। उस सम्मेलन में जयप्रकाशजी ने पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी श्रोताओं के सामने बड़ी दृढ़ता और स्पष्टता के साथ अपना यह विचार रखा था कि सर्वोदय का मार्ग ही वास्तविक समाजवाद है। राजसत्ता के जरिये समाजवाद लाने की कोशिश ज्यादा-से-ज्यादा 'कल्याणकारी राज्य' तक ही मानव-जाति को ले जा सकती है, मनुष्यमात्र की आजादी, समता और भाईचारे के जो आदर्श हैं, *उन तक नहीं।* इस सिलसिले में भूदान-आन्दोलन द्वारा चल रहे लोक-शक्ति को जागृत करने के प्रयत्न और उसके बल पर सच्चे समाजवाद की स्थापना होने की सम्भावना की ओर विदेशों से आये हुए समाजवादियों का ध्यान जयप्रकाशजी ने आकर्षित किया।

जयप्रकाशजी के विचारों से और लोकनीति की नयी पद्धति के प्रति उनकी अडिग निष्ठा और विश्वास के कारण विदेश के समाजवादियों में इन बातों की ओर भी गहराई से समझने की और इनके बारे में ज्यादा विचार-विनिमय करने की उत्सुकता पैदा होना स्वाभाविक था। फलस्वरूप कई मित्रों ने उन्हें यूरोप आने का फिर से आग्रह किया। इंग्लैंड की दो-तीन शांतिवादी तथा समाजवादी संस्थाओं की ओर से बाकायदा निमंत्रण भी मिला और फलस्वरूप १९५८ के अप्रैल महीने के अन्त में हम लोग यूरोप गये।

इस यात्रा में करीब ४॥ महीने हम लोग यूरोप और पश्चिम एशिया के विभिन्न मुल्कों में घूमे। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, हॉलैंड, डेनमार्क, बेल्जियम, नार्वे, स्वीडन, आस्ट्रिया, इटली और ग्रीस के अलावा पोलैंड और युगोस्लाविया इन दो कम्युनिस्ट देशों में भी हम लोग गये। इजिप्ट और पश्चिमी एशिया के अरब मुल्कों तथा इजराइल में भी कुछ दिन बिताये। करीब-करीब सभी मुल्कों में वहाँ के प्रमुख राजनैतिक नेताओं के अलावा वैज्ञानिक, समाजशास्त्रियों और अन्य प्रमुख विचारकों से भी बातचीत तथा विचार-विनिमय का मौका आया। करीब-करीब ५० आम सभाओं में भी जयप्रकाशजी के भाषण हुए। प्रसिद्ध अणु वैज्ञानिक प्रो० नील्स बोर और प्रो० ओपेनहायमर, नोबेल पुरस्कार प्राप्त विख्यात फ्रेंच साहित्यकार आल्बेर कामू, गांधीवादी विचारक श्री विल्फ्रेड वैलाक, इटली के श्री दैनिलो दोल्ची और इगनेजियो सिलोने आदि कई लोगों से वर्तमान समस्याओं और मानवीय आदर्शों के बारे में व्यक्तिगत विचार विनिमय भी हुआ। इस यात्रा में एक विशेष कार्यक्रम ऐसी संस्थाओं में जाने का भी था, जहाँ अहिंसा और शांति के आदर्शों में विश्वास रखनेवाले लोग अपने जीवन में इन आदर्शों को उतारने का प्रयोग कर रहे हैं। पश्चिम जर्मनी में न्यूरेमर्ग का मेंडाशार हाउस, नामदन इंग्लैंड में सेनावाद ऑव् बर्दर्स का केन्द्र, पेरिस में श्री आबे पियर की प्रेरणा से चल रहा 'चिथड़ा बटोरने वालों का परिवार' और दक्षिण फ्रांस में गांधी तथा विनोबा के पुराने समर्थक श्री लांझा देलवास्तो का आश्रम—इन मजार की संस्थाएँ थीं, जिनमें हम गये।

सर्वोदय-विचार एक सार्वभौम विचार है। किसी एक देश या परिस्थिति के लिए वह नहीं है। वह एक जीवन-दर्शन है। इसलिए वह भारत तक सीमित नहीं है। विज्ञान की प्रगति ने भी आज सारी दुनिया को एक बना दिया है। इसलिए अब जो भी चिन्तन होगा, वह समस्त मानव जाति को एक मानकर ही होगा और होना चाहिए। सर्वोदय-विचार को व्यापक बनाने में जयप्रकाशजी की इस विदेश-यात्रा का महत्त्व ज्यों-ज्यों समय बीतेगा, त्यों-त्यों और भी स्पष्ट होगा। अतः जयप्रकाशजी के खुद के शब्दों में उनकी विदेश-यात्रा के अनुभवों और चर्चाओं का पुस्तक के रूप में यह वर्णन सर्वोदय विचार के प्रसार के इतिहास में अपना एक विशेष स्थान रखेगा।

—सिद्धराज ढड्ढा

भारतीय भाषा-परिषद्

गत १७ अप्रैल, '६० को अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ में भारतीय भाषा-परिषद् का जो अधिवेशन हुआ, उसमें भाषा-संबंधी राष्ट्रीय नीति के बारे में नीचे लिखा प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

राष्ट्रीय भाषा-नीति

अखिल भारतीय दृष्टि से विचार करके समस्त भारतीय भाषाओं के और अंग्रेजी के उपयोग के बारे में कौनसी व्यापक नीति अपनानी चाहिए, इस पर स्पष्ट मार्गदर्शन करने के लिए आयोजित यह परिषद् अपनी सम्मति नीचे लिखे अनुसार प्रकट करती है :

१ भारत की भाषा-संबंधी नीति का मुख्य कार्यसूत्र यह है कि अंग्रेजों के शासनकाल में उनकी भाषा ने देश की राष्ट्रीय भाषाओं का स्वाभाविक स्थान ले लिया था, अब उसे उसकी जगह से हटा कर भारतीय भाषाओं को फिर उनके सम्मानपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित करना है।

२. मुख्यतः ऐसे दो स्थान हैं, जो सबके जाने पहचाने हैं :–

(१) शिक्षा-क्षेत्र,

(२) देश के राजकाज का क्षेत्र (जिसमें प्रशासन के अलावा न्यायालय और विधान सभाएँ भी सम्मिलित हैं।)

३ भारतीय भाषा नीति का मूल सूत्र यह है कि इन क्षेत्रों में अंग्रेजी ने माध्यम के रूप में गौरव का स्थान ग्रहण करके देश को जो बेहिसाब नुकसान पहुँचाया है, उससे अब बचना चाहिए।

४ इस मूलभूत सिद्धांत का अनुसरण करके गांधीजी ने एक पीढ़ी तक लोकमत तैयार किया था। राष्ट्रीय कांग्रेस ने उसके आधार पर अपने रचनात्मक कार्यक्रम में इसे सम्मानित स्थान दिया है, और अब भारत के संविधान में भी इसे स्थान मिला है।

५. इसलिए यह परिषद् निश्चय करती है कि इस प्रकार जो सिद्धांत व्यापक रूप से राष्ट्रमान्य हुआ है, उसके अनुसार अब देश की सब सरकारों को और युनिवर्सिटियों को अपना व्यवहार शुरू कर देना चाहिए और इसके लिए नीचे लिखी राष्ट्रव्यापी नीति अपनायी जानी चाहिए।

(१) प्रांतीय सरकारें अपना सारा राजकाज अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं में चलायें। संविधान में सूचित मर्यादा के अन्दर रह कर विधान-सभाओं का और हाईकोर्टों का कामकाज भी प्रादेशिक भाषाओं में ही चले, इसके लिए आवश्यक कानूनी व्यवस्था की जाय।

(२) देश की सब युनिवर्सिटियाँ शिक्षा और परीक्षा का अपना काम अपनी-अपनी प्रांतीय भाषा में करने के लिए सक्रिय बनें। इसी के साथ केन्द्रीय सरकार ऐसी नीति अपनाये, जिससे उसकी नौकरियों की परीक्षाएँ प्रांतीय भाषाओं में भी दी जा सकें।

(३) केन्द्रीय सरकार का अन्तःप्रान्तीय और अखिल भारतीय व्यवहार अंग्रेजी के बदले नागरी लिपि के साथ हिन्दी में चलना चाहिए। संविधान द्वारा निर्धारित इस नीति को यथासम्भव शीघ्रता से कार्यान्वित करने के लिए प्रांतीय सरकारों को अपने यहाँ हिन्दी-प्रचार का काम सक्रिय रूप से शुरू कर देना चाहिए।

(४) हिन्दी-प्रचार के इस काम के हेतु उन्हें बालक को उसकी १४ साल की उम्र तक अनिवार्य शिक्षा देने के लिए संविधान द्वारा सूचित अवधि में कम से-कम अन्तिम तीन साल तक हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में सिखाने की व्यवस्था करनी चाहिए। जहाँ प्रांतीय भाषा हिन्दी है, उन राज्यों में हिन्दी के बदले देश की दूसरी कोई प्रांतीय भाषा सिखाने की व्यवस्था हो।

(५) अनिवार्य शिक्षा की उपर्युक्त वय मर्यादा में इस समय जो अंग्रेजी सिखायी जाती है, वह बन्द की जाय और उसे तीसरी भाषा के रूप में तथा ऐच्छिक रीति से सिखाने का काम बालक की अनिवार्य शिक्षा की अवधि के समाप्त होने पर अर्थात् आठवीं कक्षा से शुरू किया जाय।

(६) व्यवस्था कुछ ऐसी की जा सकती है कि जो अंग्रेजी न लेना चाहें, वे संस्कृत आदि के जैसी प्राचीन भाषाओं में से अथवा तमिल, तेलुगु, बंगला आदि देश अथवा विदेश की अर्वाचीन प्रान्तीय भाषाओं में से कोई एक भाषा ले सकें।

(७) यह परिषद् भारत की सब सरकारों से और रचनात्मक काम करनेवाली संस्थाओं से अनुरोध करती है कि वे ऊपर बताये ढंग से सक्रिय काम करें।

अखिल भारतीय प्रयत्न

यह परिषद् मानती है कि भारतीय भाषा-नीति को लोकप्रिय बनाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर प्रयत्न शुरू करना अत्यन्त आवश्यक और अनिवार्य है। इस दृष्टि से सोचते हुए हाल ही में अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ ने जो प्रस्ताव स्वीकार किया है, यह परिषद् उसका स्वागत करती है और आशा रखती है कि संघ इस दिशा में जल्दी ही सक्रिय बनेगा। इस काम को अखिल भारतीय स्तर पर व्यापक रूप से उठाने के लिए क्या क्या करना जरूरी है, इसका विचार करने के लिए और उस दिशा में कार्य का उचित आरम्भ करने के लिए यह परिषद् नीचे लिखे सज्जनों से विनति करती है। वे अपनी इच्छा से अधिक सदस्य बढ़ा सकेंगे।–

१ श्री काकासाहेब कालेलकर
२. श्री उ. न. ढेबर
३. श्री नवकृष्ण चौधरी
४. श्री गोकुलभाई भट्ट
५. श्री मगनभाई देसाई
६ श्री काशिनाथ त्रिवेदी
७. श्री रावसाहेब पटवर्धन
८. श्री जुगतराम दवे
९ श्री उमाशंकर जोशी
१०. श्री मनुभाई पंचोली
११. श्री नारायण देसाई
१२. श्री ठाकुरदास बंग
१३. श्री सिद्धराज ढड्ढा
१४. श्रीमती [illegible]
१५ श्री वजुभाई शाह (संयोजक)

परिषद् की राय है कि आरम्भ में इस कार्य के लिए गुजरात में विशेष प्रयत्न करना जरूरी है। इसलिए परिषद् यह चाहती है कि उपर्युक्त समिति के गुजराती सदस्य नीचे लिखे अतिरिक्त सदस्यों के साथ गुजरात में इस कार्य को शुरू करने के लिए जल्दी कदम उठावें। ये भी अपनी इच्छानुसार सदस्य बढ़ा सकेंगे। ऊपर की सूची के गुजराती सदस्यों के अलावा इसमें ये सदस्य और होंगे :–

१. श्री बबलभाई मेहता
२. श्री [illegible]भाई [illegible]
३. श्री नवलभाई शाह
४ श्री [illegible]
५. श्रीमती [illegible] मेहता

भारतीय भाषा परिषद् को दिया गया
विनोबाजी का सन्देश

शिक्षा में अंग्रेजी के स्थान के बारे में विचार-विनिमय करने के लिए गुजरात के कार्यकर्ता मिल रहे हैं, उस मौके पर मैं अपने विचार रखूँ तो अच्छा रहेगा, ऐसा वजुभाई ने सुझाया। तदनुसार दो शब्द लिखवा रहा हूँ।

पहले सात या आठ साल का जो अनिवार्य शिक्षणक्रम समग्र जनता के लिए माना जायेगा उसमें अंग्रेजी को स्थान देना मेरे अभिप्राय में शिक्षण-दृष्टि से और जन-मानस के विकास की दृष्टि से बड़ी गलती होगी। उसमें अंग्रेजी भाषाज्ञान को विशेष लाभ नहीं पहुँचेगा, बल्कि मातृभाषा के और दूसरे विषयों के अध्ययन को हानि पहुँचेगी। मातृभाषा का उत्तम ज्ञान जिसे प्राप्त हुआ है वह परकीय भाषा कम समय में अच्छी तरह सीख सकता है। यह मैंने अनेक प्रयोग करके देख लिया है। इसलिए अनिवार्य शिक्षण के बाद के वर्षों में जो ऐच्छिक तौर पर अंग्रेजी लेना चाहते हैं, उनको समय-पत्रक में थोड़ा अधिक समय दिया जाय तो अंग्रेजी का ज्ञान भी आसानी से हो सकता है।

एक बात सोचने की रह जाती है कि अन्य प्रान्तों में जिस तरह से सोचा जायगा उससे भिन्न कोई एक प्रान्त सोचेगा यह ठीक होगा? मेरा जवाब है, ऐसे विषय में सबके साथ साथ जायँ ऐसी अपेक्षा से सही बात को आगे ढकेलना मूल उद्देश्य को काटने जैसा होगा। इसलिए गुजरात जैसा प्रान्त, जिसने गांधीजी के नेतृत्व में भारत को अहिंसा के रास्ते पर ले जाने में अगुआपन किया, वह अगर इस विषय में पहल कर सके तो सारा देश आज नहीं तो कल उसका अनुसरण करेगा, इसमें मुझे कोई शक नहीं। मुझे उम्मीद है, गुजरात इस मौके पर समग्र दृष्टि से सोचेगा और देश को योग्य मार्ग दिखायेगा।

मेरठ, १३-४-६०

ज्ञान का साहित्य और शक्ति का साहित्य

इतिहास, दर्शन, विज्ञान आदि विद्याएँ ज्ञान के साहित्य के अन्दर आती हैं। *किन्तु जातियाँ केवल ज्ञान के साहित्य से नहीं बढ़ती।* अपने आत्मिक और सांस्कृतिक उत्थान के लिए उसे शक्ति का साहित्य यानी काव्य, नाटक, उपन्यास और रहस्य-चिन्तन भी चाहिए। ज्ञान का साहित्य आप विदेशी भाषा में भी लिख सकते हैं। किन्तु शक्ति यानी रस का साहित्य आप केवल अपनी भाषा, अपने देश की भाषा में ही लिख सकते हैं। तरुदत्त, सरोजिनी और अरविंद ने जो रस-साहित्य लिखा, उससे भारतीय जनता को कुछ भी नहीं मिला, न इंग्लैंड वालों ने अपने साहित्य में उसे स्थान दिया। किन्तु रवीन्द्रनाथ ने बंगला में काम करके भारत *की सभी भाषाओं में जागरण पैदा कर दिया और लोकमान्य ने "गीता रहस्य" की रचना तो मराठी में की, किन्तु उनके विचार* आनन-फानन सभी भाषाओं में फैल गये। भारत की सभी भाषाएँ परस्पर एक हैं और उनकी आपसी एकता जितनी बड़ी है, वह एकता भारत की किसी भी भाषा से अंग्रेजी की नहीं हो सकती......।

—दिनकर

भारत सफाई-मंडल

आज देश के कोने-कोने में ऐसे कई सज्जन बिखरे हुए हैं, जो सफाई के विषय में तीव्र भावनाएँ रखते हैं, कुछ जानकारी भी रखते हैं और उस काम में लगे हुए भी रहते हैं। लेकिन उनके उद्देश्यों की सफलता के लिए यह जरूरी है कि उनके ज्ञान, भक्ति और कर्म का संगठन और सघटन हो। आज वे अलग-अलग तन्तु जैसे हैं। वे मंडल के सदस्य होंगे, अपने काम के विवरण केन्द्रीय दफ्तर में भेजते रहेंगे, कभी कभी और जगह जगह शिविर-सम्मेलन और सामूहिक काम भी करते रहेंगे, तो उनके काम का प्रभाव कुछ और ही होगा। एक तो "संघे शक्तिः कलौ युगे" है; दूसरा, यों ही काम करना और समझ-बूझ कर नित्य कर्म के तौर पर यज्ञ भावना से काम करना, इसके बीच जमीन आसमान का अन्तर पड़ जाता है। इधर लाखों बहनें रात दिन और बड़ी मात्रा में सूत कातती थीं, उधर गांधीजी हर दिन आधा घंटा ही नियमपूर्वक कातते थे, लेकिन गांधीजी के चरखे में जो शक्ति थी, वह उन लाखों चरखों में नहीं थी। इसलिए गांधीजी कहा करते थे कि "कातो समझ-बूझ कर कातोगे तो चरखे में अहिंसक शक्ति प्रकट होगी।"

तीनों महादुःखों को मिटाने के लिए सफाई-यज्ञ

भारत के आलस्य, दारिद्र्य और संकुचित स्वार्थ भावनाओं को मिटाने के लिए गांधीजी ने जैसे हर दिन आधा घंटा कातने का व्रत लिया था और वे नित्य सूत्र-यज्ञ करते थे, वैसे ही भारत की गंदगी और अनारोग्य, हमारे मेहतर भाइयों के काम का घिनौनापन और उनका बहिष्कृत तथा अपमानित जीवन और भारत की अन्न की त्रुटि—इन तीनों महादुःखों को मिटाने के लिए और स्वच्छ, स्वस्थ, समृद्ध, संगठित निर्माण करने के लिए हम भी नियम से और सामाजिक कर्तव्य के तौर पर 'सफाई यज्ञ' करें। उनकी निशानी चरखा था, हमारी निशानी झाड़ू रहे। गांधीजी ने राष्ट्रीय झंडे पर भी चरखे को दाखिल किया था, हमारी भी कोशिश रहे कि हमारी झाड़ू राष्ट्रीय झंडे पर सवार हो। चरखा अहिंसा का प्रतीक रहा, वैसे हमारी झाड़ू भी भक्ति, सेवा, शुचिता और खासकर नम्रता की प्रतीक होगी। वह हमारा राष्ट्रीय चिह्न बने यह सदा वांछनीय है। लेकिन वह राष्ट्रीय चिह्न पार्लमेंट में प्रस्ताव लाने से नहीं, बल्कि अनगिनत सेवकों की तपश्चर्या से ही बन पायेगा।

हम सब अखिल भारतीय म्युनिसिपैलिटी के सदस्य

गांधीजी भी म्युनिसिपैलिटियों के सदस्यों को बार बार कहा करते थे कि: "जब तक आप खुद अपने हाथ में झाड़ू नहीं लेंगे, तब तक आपका नगर साफ-सुथरा बनने वाला नहीं है।" हम सारे नागरिक अखिल भारतीय म्युनिसिपैलिटी के सदस्य ही तो हैं और हमें चाहिए कि हमारे राष्ट्रनगर के शौच-स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि उसके स्वाभिमान की रक्षा के लिए भी हम खुद झाड़ू उठायें। सफाई जैसा पवित्र काम हीन माना गया उसके परिणामस्वरूप हमारे नगर और गाँव गंदे और रोगों के अड्डे बन गये हैं और दुनिया भर में हमारे देश की बेइज्जती होती है।

सफाई के दो साधन: झाड़ू और खुरपी

हर दिन पन्द्रह मिनिट सफाई काम करने में हमें मुश्किल नहीं होगी। अपने-अपने स्थान में तो हम सफाई कर ही सकेंगे। बल्कि मुसाफिरी में तो सफाई काम के मौके और भी आसानी से मिलेंगे। ट्रेन में हम अपने डिब्बे की फर्श की और पाखाने की सफाई कर सकते हैं। जहाँ हमारा पड़ाव हो वहाँ की सफाई भी कर सकते हैं। इसके लिए एक झाड़ू और खुरपी की जोड़ी साथ में रखना जरूरी होगा। झाड़ू म्यान में रहे और खुरपी एक छोटी-सी थैली में। हम अपना चरखा या तकली साथ में रखते हैं वैसे झाड़ू और खुरपी भी नित्य साथ में रखनी होगी।

इसलिए हम चाहते हैं कि भारतभर के हमारे सब साथी, बड़े और छोटे, सफाई करना शुरू करें और अपने अपने नाम हमारे पास भेज दें।

फिलहाल सब सज्जन निम्नलिखित पते पर मेरे साथ संपर्क करें:

पो० गोपुरी,
जि० रत्नागिरी, महाराष्ट्र

—अप्पा पटवर्धन

•

विनोबाजी का जन्मग्राम गागोदे प्रगति पथ पर

गत एक साल से विनोबाजी का जन्मस्थान-गागोदे (जिला कुलाबा, महाराष्ट्र) में भाई दवण के नेतृत्व में सर्वोदय आश्रम का कार्य चल रहा है। पिछले मास आश्रम के प्रथम वर्षगाँठ-समारोह के अवसर पर गाँववालों ने संकल्प किया कि गाँव में पूरी शराबबंदी होगी।

"विश्वनीड़म्" का उद्घाटन

बेंगलोर शहर से ७ मील के फासले पर 'विश्वनीड़म्' के नाम से एक अन्तर्राष्ट्रीय सर्वोदय केन्द्र का उद्घाटन ता० १८ अप्रैल को श्री बालकोबाजी के द्वारा सम्पन्न हुआ। 'विश्वनीड़म्' दक्षिण में सर्व सेवा संघ का केन्द्र है और संघ के वर्तमान अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामी का मुख्य स्थान। समशीतोष्ण आबहवा, चारों ओर छोटी छोटी पहाड़ियों के दृश्य और बेंगलोर जैसे केन्द्र स्थान के नजदीक होने से एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र के लिए 'विश्वनीड़म्' एक आदर्श स्थान है। ता० १८ अप्रैल को, जिस दिन ९ वर्ष पहले भूदान-यज्ञ-आन्दोलन का जन्म हुआ था, मैसूर के राज्यपाल श्री मंगलदास पकवासा की अध्यक्षता में वेदघोष और भजन के साथ श्री बालकोबाजी ने इस केन्द्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री बालकोबाजी ने आश्रम सम्बन्धी गांधीजी की कल्पना और आश्रम जीवन के बुनियादी तत्त्वों के बारे में सारगर्भित विवेचन किया। श्री बालकोबाजी का भाषण इसी अंक में अन्यत्र छपा है।

'विश्वनीड़म्' के उद्घाटन के अवसर पर सन्देश भेजते हुए पूज्य विनोबाजी ने कहा—'१८ अप्रैल को, जिस दिन भूदान यज्ञ का आरम्भ हुआ था, उसी दिन 'विश्वनीड़म्' का उद्घाटन एक मंगल घटना है। यह बेंगलोर के शान्ति सैनिकों का आश्रय-स्थान होगा और बेंगलोर को सर्वोदयनगर बनाने में मददगार होगा। यह केन्द्र केवल दक्षिण भारत के ४ राज्यों का संगम स्थान ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति का एक प्रतीक होगा। समस्त विश्व से सम्पर्क स्थापित करने का भी यह एक अच्छा माध्यम होगा।'

जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट ने ३०० एकड़ भूमि, जिसमें यह आश्रम बना है, 'विश्वनीड़म्' के लिए भेंट की है। इस केन्द्र पर कार्यकर्ताओं के शिक्षण का प्रबन्ध करने की भी योजना है।

•

जिला सर्वोदय-मण्डल

हिसार (पंजाब)

संक्षिप्त रिपोर्ट:

पंजाब के हिसार जिले में प्रत्यक्ष आन्दोलन में लगे कार्यकर्ताओं का खर्च, जिनकी संख्या ९ है, संपत्तिदान तथा रचनात्मक संस्थाओं पर अवलंबित है। जिले भर में लगभग २५०० सर्वोदय पात्र चल रहे हैं। जहाँ तक भूमि वितरण का सवाल है, अभी तक २१,४१९ बीघों में से ६७२५ बीघे जमीन बंट पायी है। कार्यकर्ताओं का आपसी सहयोग अच्छा है। उनका अध्ययन भी बराबर चलता है।

—गणेशीलाल, संयोजक

सप्ताह के समाचार

—दक्षिणी कोरिया के राष्ट्रपति डा० सिंगमन री ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। डा० री के विरुद्ध पिछले एक महीने से आन्दोलन चल रहा था। प्रबल जनमत के सामने आखिर डा० री को झुकना पड़ा। जब से दक्षिणी कोरिया गणतन्त्र हुआ है, डा० री ही राष्ट्रपति होते आये हैं।

• • •

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और पत्रकार तथा स्वतन्त्रता-संग्राम के वीर सिपाही श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का २९ अप्रैल को तीसरे पहर नई दिल्ली में देहावसान हो गया। हिन्दी साहित्य की नवीनजी द्वारा की गयी सेवाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

• • •

१ मई से महाराष्ट्र और गुजरात के रूप में बम्बई राज्य का विभाजन होकर दो प्रदेश अस्तित्व में आ गये। महाराष्ट्र का शुभारम्भ पं० नेहरू ने और गुजरात का शुभारम्भ श्री रविशंकर महाराज ने किया।

•

१८ अप्रैल "भू-क्रांति दिवस"

—१८ अप्रैल को जहाँ से भूदान-आन्दोलन प्रारंभ हुआ, उसी पोचमपल्ली गाँव में गत १२ अप्रैल से १८ अप्रैल तक 'भूक्रान्ति सप्ताह' मनाया गया। १८ अप्रैल को नौवीं वर्षगाँठ मनाते हुए श्री दामोदरम् संजीवैया तथा श्री प्रभाकरजी ने आन्दोलन की प्रगति से लोगों को परिचित किया।

—खंडवा में नगर के प्रमुख नागरिकों ने १८ अप्रैल का दिन 'भूक्रांति दिवस' के रूप में मनाया।

—जयपुर जिले के चंदलाई ग्राम में इस दिन पदयात्री प्रो० रामकुमार और खादी-संघ के उपाध्यक्ष श्री जवाहिरलाल जैन ने कार्यक्रमों में भाग लिया।

—सीकर में 'भूक्रान्ति दिवस' का आयोजन किया गया और साहित्य प्रचार, सार्वजनिक सभा आदि कार्यक्रम हुआ।

—पुरुलिया के निवेदक श्री फणीभूषण बनर्जी और उनके साथियों ने विचार-प्रचार का विशेष आयोजन किया।

—इसी तरह जिला सर्वोदय मंडल सारन और गांधी अध्ययन केन्द्र, जोधपुर की ओर से भी भूक्रांति दिवस मनाया।

बिहार सर्वोदय-मंडल के कार्य-विवरण से—

प्रान्तीय पदयात्रा टोलियों का कार्यक्रम पूर्ववत् चलता रहा।

"सर्वोदय पखवारे में मुंगेर जिले से २४ हजार गुण्डियाँ प्राप्त हुईं।

कुछ जिलों में शिविरों का आयोजन किया गया। भागलपुर जिले के बड़ीपुर गाँव में कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में एक समन्वय समिति का गठन हुआ। दरभंगा जिले के कुछ स्थानों में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

पूर्णियाँ, पलामू और मुजफ्फरपुर जिलों में एक-एक ग्रामदान मिला।

भूमिवितरण-कार्य के सिलसिले में पुनर्वास की सहायता के रूप में हजारीबाग जिले में एक लाख पाँच हजार रु० की स्वीकृति करायी गयी।

नई तालीम की दिशा में पूसा क्षेत्र में १५२ गाँवों में वाणी-पक्ष मनाया गया। कुछ गाँवों में एक घण्टे का महाविद्यालय तथा कुछ गाँवों में एक घण्टे की ग्रामशाला व बालवाड़ी तथा कुछ गाँवों में सांस्कृतिक मण्डलियाँ चलाने की तैयारी की गयी।

मुजफ्फरपुर शहर में सफाई का एक अभियान चलाया जा रहा है।

(पृष्ठ संख्या १, कालम ४ से आगे)

श्रीकृष्ण भगवान के बाद महिलाओं में इतनी ताकत लगाने वाले और उनसे इतनी आशा रखने वाले बापू ही निकले। उनकी उस आशा का स्पर्श बहनों को हो जाय तो वे खूब काम कर सकती हैं। एक जमाना था जब "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी" कहा जाता था। लेकिन रणसंग्राम में तो एकाध ही बहन जुट सकती है। लेकिन शांति-सेना में हर बहन काम कर सकती है। इसमें करना ही क्या है? सिर्फ शान्ति से रहना है। गुस्सा करना हो तो भी कुछ करना पड़ता है। आँख फाड़नी पड़ती है। लेकिन यहाँ कुछ ही नहीं करना, शांति से खड़े रहना। इसलिए मैं चाहता हूँ कि बहनें लोकसेवक संघ बनायें और पुरुषों से कहें कि तुम बच्चे सियासी पार्टी बना कर लड़ते रहो, लेकिन हम माताएँ नहीं लड़ेंगी, शांतिसेना का काम करेंगी। यह स्त्रियों के लिए आवाहन है।

जब मैं शान्ति-सेना के बारे में बोलता हूँ तो मुझे लगता है कि मेरा सिर स्वर्ग में है। इस विचार में इतनी ताकत है जो मैं महसूस करता हूँ। शांति-सेना में बूढ़े, बच्चे और बीमार भी काम कर सकते हैं। मैंने देश के सामने यह जो सवाल पेश किया है उसका जवाब उत्तर प्रदेश से मिलना चाहिए।

सिराना, ९४-'६०

गुजरात सर्वोदय-मण्डल के निर्णय

१८ अप्रैल १९६०, दसवीं भूदान जयंती के दिन हरिजन आश्रम, साबरमती में गुजरात प्रांत का छठा सर्वोदय-सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुजरात सर्वोदय मंडल की बैठक भी हुई, जिसमें भावी कार्यक्रम के संबंध में निर्णय लिये गये।

गुजरात राज्य के उत्तर, दक्षिण, पश्चिम, इस प्रकार ३ विभाग करके भूदान आन्दोलन के काम का आयोजन करने का निर्णय हुआ। सूरत, भरुच, बड़ौदा, खेड़ा और पंचमहाल जिलों से बने हुए दक्षिण विभाग के कार्यकर्ताओं ने अपनी पूरी शक्ति रंगपुर के ग्रामदानी क्षेत्र के १०० गाँवों में, बड़ौदा शहर में और बड़ौदा के आसपास १०-१२ लाख की बस्ती के क्षेत्र में लगाने का निर्णय किया। इस विभाग की आगामी वर्ष की योजना में ग्रामदान, नगर का काम और उद्योग-दान की दृष्टि से पूर्वतैयारी, ये मुख्य काम होंगे। उत्तर और पश्चिम विभागों में अखंड पदयात्रा चलाने के निर्णय किये गये।

पारडी तालुका में भूमि की समस्या को लेकर किसानों में जो असंतोष फैला हुआ है, उस प्रश्न का अध्ययन करके सलाह देने की तथा आवश्यक हो तो सरकार के साथ बातचीत करने की जिम्मेदारी भी सर्वोदय मंडल ने ली है। मई के तीसरे सप्ताह के बाद एक सामूहिक पदयात्रा प्रारंभिक जानकारी इकट्ठी करने के लिए इस क्षेत्र में चलायी जायगी।

ता० ८-९ जून को हरिजन आश्रम, साबरमती में उद्योगों के प्रति सर्वोदय नीति के प्रश्न की चर्चा के लिए सर्वोदय-मंडल की एक बैठक होगी।

१० हजार किलोमीटर की शान्ति-यात्रा

ऐसे गैरसरकारी प्रयत्नों में जो शान्ति के स्थापनार्थ किये जाते हैं, उनमें विशाल प्रदर्शन प्रमुख हैं, जिनसे सत्तारूढ़ लोगों पर जनमत का दबाव पड़ता है। अतः इस कौंसिल ने अपने आगामी विश्व सम्मेलन के अवसर पर पूरे जापान में शान्ति-यात्रा चलाने की बात सोची।

इन पदयात्रियों की यात्रा का ऐसा कार्यक्रम बनाया गया है, जिससे सारे जापान में उत्तर से दक्षिण तक पदयात्रा संभव हो सके। इन यात्राओं में पदयात्री गाँव गाँव से होते हुए ५ अगस्त तक टोकियो पहुँचेंगे, जहाँ विश्व-सम्मेलन प्रारंभ होगा। ऐसी उम्मीद की जाती है कि अपने तरह का यह सबसे बड़ा प्रदर्शन होगा। इस विश्व-सम्मेलन की साधारण बैठक २ अगस्त से ४ अगस्त तक होगी। इसमें जापान के और अन्य देशों के प्रतिनिधि भाग लेंगे, ५ अगस्त को ये पदयात्रियों का स्वागत होगा और ६ अगस्त से सम्मेलन का खुला अधिवेशन प्रारंभ हो जायगा।

कमलजी की पदयात्रा

श्री रामकुमार 'कमल', जो करीब २ साल से भारत के विभिन्न प्रांतों में सर्वोदय और भूदान का प्रचार कर रहे हैं, उनकी पदयात्रा पिछले ३ महीनों से राजस्थान में चल रही है। इस अर्से में बीकानेर, चूरू, सीकर आदि जिलों की पदयात्रा करते हुए ता० १३ अप्रैल को उनकी टोली जयपुर शहर और में पहुँच आस पास के क्षेत्र में ९ दिन तक पड़ाव रहा, जहाँ भूदान-ग्रामदान के संबंध में कई सभाएँ हुईं। जयपुर से देवली, भीलवाड़ा, चित्तौड़ होते हुए उदयपुर, डूंगरपुर की ओर आने का उनका कार्यक्रम है। पदयात्रा के दौरान में विभिन्न राजनैतिक संस्थाओं तथा विद्यालयों में उनका विशेष कार्यक्रम रहा। फिलहाल श्री रामकुमार 'कमल' का पता: मार्फत-श्री केशर पुरी गोस्वामी, संचालक, गांधी स्मारक निधि राजस्थान, भीलवाड़ा यह रहेगा।

विनोबाजी का पता :

मार्फत-उ० प्र० सर्वोदय-मंडल, प्रधान कार्यालय, घटिया, मामूभानजा, आगरा (उ० प्र०)

भूल-सुधार

भूदान-पत्रों की ग्राहक-संख्या

ता० २२ अप्रैल के "भूदान-यज्ञ" के पृष्ठ-संख्या १० पर भूदान-आन्दोलन संबंधी पत्र पत्रिकाओं की तालिका मय उनकी ग्राहक-संख्या के छपी है। उस तालिका में क्रम-संख्या १६, "दक्षिण ग्रामराज्यम्" के आगे ग्राहक संख्या भूल से १ हजार छपी है। वह १० हजार होनी चाहिए।

उसी तरह क्रम संख्या ६, उर्दू "सर्वोदय विचार पत्रिका" की ग्राहक-संख्या भूल से ४०० छपी है। वह ११०० चाहिए। क्रम संख्या १२ पंजाबी "भूदान" की ग्राहक संख्या २०० की जगह ४११ चाहिए।

इस संशोधन के फलस्वरूप भूदान पत्र-पत्रिकाओं की कुल ग्राहक-संख्या ५९,९८१ के बजाय अब ६९,८८१ समझनी चाहिए। —सं०

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० १९८९
वार्षिक मूल्य ५) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,४२५ : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,५७५ एक प्रति १३ नये पैसे

मद्यपान बन्द न करने पर सत्याग्रह का आदेश !

उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं के बीच विनोबाजी

काशी क्षेत्र में कुल ताकत लगाइये !

उत्तर प्रदेश के लिए क्षेत्र कौनसा चुना जाय, यह सवाल उठाया जा रहा है। अगर हमारा यह दावा है कि हमें हिंदुस्तान का कुल का कुल क्षेत्र-हिंदुस्तान ही नहीं, बल्कि दुनिया का कुल क्षेत्र-सर्वोदय-क्षेत्र बनाना है, तो वहाँ क्षेत्र के चुनाव में बहुत ज्यादा सोचना नहीं है। क्षेत्र का चुनाव ऐसे तत्त्व के आधार पर करना है, जो तत्त्व हवा में मौजूद है, जमीन पर नहीं। जमीन को देख कर किसी स्थान की अनुकूलता-प्रतिकूलता देख कर हिंसा में काम करना होता है, अहिंसा में नहीं। अहिंसा में जमीन का नहीं, हवा का आधार लिया जाता है। मुझे उत्तर प्रदेश के लिए क्षेत्र चुनना हो, तो मैं काशी शहर और बनारस जिले का क्षेत्र चुनूँगा। हिंदुस्तान की सबसे अधिक आध्यात्मिक शक्ति जितनी काशी के साथ जुड़ी हुई है, उतनी दूसरे किसी क्षेत्र के साथ नहीं जुड़ी है। जिसके साथ असंख्य सत्पुरुषों के स्मरण, असंख्य संस्कार जुड़े हुए हैं, ऐसे काशी क्षेत्र से मुझे तो बहुत प्रेरणा मिलती है। सयोगवशात् अखिल भारत सर्व सेवा संघ का दफ्तर भी वहाँ पर है। अगर सिर्फ वह दफ्तर वहाँ रहता है और उसके साथ उत्तर प्रदेश के लोग जुड नहीं जाते हैं, तो वहाँ पर सिर्फ राहु (धड़) रहेगा। फिर रुंड और मुंड दोनों बेकार साबित होंगे। इसलिए बिलकुल स्वाभाविकतया वह क्षेत्र चुनना चाहिए।

कश्मीर की यात्रा मे अखिल भारत साधु-समाज के कुछ भाई हमसे मिले। उन्होंने कहा कि 'हमारा दफ्तर देहली मे है।' तो मैंने विनोद मे पूछा कि 'साधु समाज और देहली का क्या ताल्लुक है? साधु-समाज का दफ्तर काशी या प्रयाग में बनाते तो बात समझ में आती।' खैर! मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमारे लिए काशी क्षेत्र ही स्वाभाविक है। वह स्थान सब तरह से मध्यवर्ती भी है। बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश तीनों का संबंध जोड़ने वाला वह क्षेत्र है। चौदह करोड़ लोगों के साथ उसका सीधा संबंध है। इसलिए उस क्षेत्र को चुनना चाहिए और उसमें अपनी कुल ताकत लगानी चाहिए और बाकी बची हुई ताकत में उत्तर प्रदेश के दूसरे हिस्सों में सर्वसामान्य वातावरण बनाना चाहिए। वैसा वातावरण हम नहीं बनाते हैं और सिर्फ एक ही क्षेत्र में काम करते हैं तो उस तरह का धाम 'एयर कंडीशन्ड' [वातानुकूलित] क्षेत्र बनाना मुश्किल हो जाता है।

भूदानयज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी, शुक्रवार, १३ मई, '६० : वर्ष ६, अंक ३२

इसलिए पदयात्रा से और साहित्य-प्रचार आदि के द्वारा सारे उत्तर प्रदेश में वातावरण बनाना चाहिए और काशी में ताकत लगानी चाहिए। उसके बाद ताकत बचती है, तो उत्तर प्रदेश के मुख्य शहरों में लगानी चाहिए।

काशी से लौटना नहीं है

काशी में जो कार्यकर्ता जायेंगे, उन्हें दो-चार साल की बात सोच कर नहीं जाना चाहिए, बल्कि यही सोच कर जाना चाहिए कि "यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।" वहाँ जाने पर लौटना नहीं है। कहा जाता है कि "काश्यान्ते मरणे मुक्तिः"-काशी जाकर मरने में मुक्ति है, वहाँ से वापस लौटने में नहीं है। यह निर्वाण-क्षेत्र है, इसलिए वहाँ जो जायेंगे उन्हें अन्त तक वहीं पर काम करना चाहिए।

भगवती गंगा को अर्पण

मैं जब हिमालय जाने के लिए घर छोड़ कर निकला था, तब कुछ दिन काशी में रहा था। उन दिनों में मैं रात को बारह बजे तक बहुत प्रेम से गंगा के किनारे बैठा करता था। नदी के पानी में आसमान के सितारे प्रतिबिंबित होते हुए दिखाई देते थे। बिलकुल शांत होकर ध्यान करते हुए मैं वहाँ पर पद्य लिखता था। दो-तीन दिन मेहनत करके कविता सुन्दर बनी, ऐसा विश्वास हो जाता था, तब मैं प्रसन्न होकर भगवती गंगा को वह कविता अर्पण करता था। बचपन में मराठी में लिखता था और कुछ थोड़ा संस्कृत में। उसके पहले मैंने यही किया घर में भी किया करता था। सर्दी के दिनों में तापने को मेरी माँ के लिए चूल्हे के पास बैठा करता था और कविता बना कर वह सुंदर बनी है, ऐसा मालूम होने पर उसे अग्निनारायण को अर्पण करता था। इस पर मेरी माँ यह नहीं कहती थी कि तुम बेठीक कर रहे हो, बल्कि यही कहती थी कि तुम ठीक कर रहे हो, अग्निनारायण तुम पर प्रसन्न होगा। लेकिन पहले मुझे सुनाते जाओ और फिर कविता को चूल्हे में डालते जाओ। तो फिर मैं उसको सुना कर फिर कविता को चूल्हे में डालता था! मैं कहना यह चाहता हूँ कि काशी पर जितनी अपनी श्रद्धा नहीं रखी ऐसे लोग हिंदुस्तान में बिलकुल थोड़े ही होंगे।

स्वच्छ काशी और शराबबंदी आंदोलन

दूसरी दफा उत्तर प्रदेश की यात्रा में जब मैं चातुर्मास के लिए काशी में रुका था, तब रोज सुबह चार से साढ़े आठ तक काशी के घाट-घाट पर और पंचकोशी में घूमता था। उस वक्त मैंने स्वच्छ काशी-आंदोलन उठाया था। और एक दिन ऐसा देवदुर्लभ दर्शन हुआ कि वहाँ पर कुछ लोग सफाई में लग गये। उस वक्त मैंने कहा था कि शराबबंदी तो वैसे देश भर में होनी चाहिए, लेकिन काशी में तो जरूर होनी ही चाहिए। मैंने वहाँ पर देखा कि स्नान करके घाट चढ़ कर ऊपर आने पर विदेशी शराब की दुकानें दिखाई देती हैं। अब हमें स्वच्छ काशी का और शराबबंदी का आंदोलन उठाना चाहिए, जो बुनियादी काम है।

कहा जाता है कि 'लोभ मूलानि पापानि।' सब पापों के मूल में अर्थ-लोभ है। वह अर्थ-लोभ सिर्फ व्यापारी को ही नहीं, बल्कि सरकार को भी सताता है। जहाँ अर्थ लोभ आया, वहाँ सरकार भी शराब के लिए पचासों दलीलें पेश करती है। मैं कहना चाहता हूँ कि काशी में शराबबंदी हो, इसके लिए सारे कॉन्स्टिट्युशनल [वैधानिक] काम करने पर, फिर जरूरत पड़ी तो हमें सत्याग्रह भी करना चाहिए। सम्पूर्णानंदजी जैसे धार्मिक पुरुष के होते हुए भी वहाँ पर शराबबंदी न हो, तो जरूर सत्याग्रह करना चाहिए।

अच्छे संन्यासियों के साथ संपर्क

इन दो कामों के अलावा वहाँ घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखवाने चाहिए, वहाँ के संन्यासियों के साथ संपर्क रखना चाहिए। मुझे यह सुन कर खुशी हुई कि ये लोग साधना केन्द्र में कभी दक्षिणामूर्ति को बुलाते हैं, तो कभी आनंदमयी माँ के पास जाते हैं। मैंने देखा है कि काशी में जितने संन्यासी हैं, उनमें कई स्वच्छ हृदय के और जीवन के हैं। मुक्ति की कोशिश में लगे हैं। उनमें कुछ ढोंगी भी हैं, लेकिन ढोंगी इसलिए हैं कि वहाँ पर कुछ अच्छे भी हैं। जहाँ पर अच्छे लोग नहीं होते हैं, वहाँ ढोंगी नहीं रह सकते हैं। फलानी जगह पर ढोंगी मिले, तो मान लो कि वहाँ पर अच्छे होने ही चाहिए। उन अच्छे संन्यासियों की ताकत इकट्ठा करेंगे तो साधना केन्द्र सुरक्षित होगा और उसकी ताकत बनेगी। (आगरा, ७ मई, '६०)

इस अंक में

उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय कार्यकर्ता-सम्मेलन

सतीश कुमार

विनोबा ५ मई को प्रातः लगभग आठ बजे आगरा पहुँचे। विनोबा करीब एक सप्ताह के बाद ही उत्तर प्रदेश छोड़ कर मध्यप्रदेश में प्रवेश करने वाले हैं। अतः यहाँ उनकी उपस्थिति में प्रदेश सर्वोदय-मंडल ने उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय-कार्यकर्ता-सम्मेलन का आयोजन किया था। सम्मेलन का कार्यारंभ १२ बजे मध्याह्न से हुआ। श्री करण भाई ने प्रारंभिक निवेदन उपस्थित करते हुए कहा कि 'पिछले नौ वर्षों में हमारे सभी कार्यकर्ता एकसाथ इतनी बड़ी संख्या में एकत्रित नहीं हुए थे। विनोबाजी के सान्निध्य में हम इस रूप में यहाँ मिले हैं, इसका उद्देश्य है अपने सेनापति से प्रत्यक्ष मार्गदर्शन प्राप्त करना। लग भी ऐसा ही रहा था—मानो सेनापति अपने सिपाहियों को मोर्चे पर आने वाली कठिनाइयों का भान कराते हुए भी उनके मन में जोश भर रहा हो तथा सारे शांति-सैनिक ठीक सिपाही की तरह ही उनकी बातें सुन कर मोर्चे पर लड़ने की तैयारी कर रहे हों।

विनोबाजी के पास का यह दृश्य इसलिए और भी स्वाभाविक हो जाता है, क्योंकि उनके मन में अभी केवल शांति-सेना के काम को संगठित करने की ही तड़प है। वे समझते हैं कि चीन की समस्या और आज की जागतिक परिस्थितियाँ हमारे लिए एक चुनौती है और यदि शांति-सेना का मजबूत तथा व्यापक संगठन नहीं करेंगे, तो हमारा काम अथवा सर्वोदय-विचार यशस्वी नहीं हो सकेगा।

विनोबाजी ने कहा कि हमें अपनी शक्ति की मर्यादा समझ लेनी चाहिए। हम बहुत थोड़े से लोग हैं। ऐसी स्थिति में यदि अपने काम को बिखरा हुए रखेंगे तो किसी नतीजे तक नहीं पहुँच पायेंगे। इसलिए हमारी सेना को उस मोर्चे पर हमला अधिक दृढ़ता के साथ करना है, जहाँ हमें सफलता की अधिक आशा हो। हमें ऐसे मोर्चे ढूँढ लेने चाहिए। तीन या चार शहर चुन लिये जायँ। इसी प्रकार एक या दो जिले चुन लिये जायँ। वहाँ प्रदेश भर के कार्यकर्ताओं की शक्ति लगे। वहाँ कोई परिणाम निकल सके, ऐसा प्रयोग हो। वहाँ पर काम करने वाले हमारे कार्यकर्ता अथवा शांति सैनिक लोकाधारित हों। यदि यह शर्त मान्य नहीं होगी, तो काम में से स्थायी परिणाम नहीं निकलेगा। ऐसे शहर और जिले, जिन्हें विनोबाजी 'मोर्चा' कहते हैं, कौनसे हैं, यह तय कर लिया जाय। उन मोर्चों पर पूरी ताकत के साथ तथा एकाग्रता के साथ काम हो। इस तरह आंदोलन की बुनियादें मजबूत होंगी।

इस सम्मेलन में एक और बात पर विशेष जोर दिया गया—विनोबाजी की ओर से भी तथा कार्यकर्ताओं की ओर से भी। सर्वोदय परिवार या गांधी-परिवार के लोग आज अलग-अलग संस्थाओं में, या काम में बँट गये हैं, अथवा राजनीति में या शासन में चले गये हैं, वे सब लोग हमारे ही परिवार के हैं। रुचि की भिन्नता के कारण वे अलग-अलग काम कर रहे हैं। उनमें एकसूत्रता कायम हो। वे सब एक ही परिवार के हैं, यह मान कर सब काम करें। यदि सब एक ही रुचि तथा एक ही विचार के लोग होते, तो यह गांधी-परिवार समुद्र नहीं होता, बल्कि एक छोटी नदी होता। किन्तु यह परिवार तो एक समुद्र है, जिसमें सभी रुचि के कार्यकर्ता हैं। उनको दूर न समझें, अलग न समझें। सबको जोड़ने वाला, एक ही माला में पिरोने वाला यह विचार है। सर्वोदय का विचार सबको जोड़ता है, तोड़ता नहीं है। यही इस विचार की सबसे बड़ी विशेषता है।

इस प्रकार इस कार्यकर्ता-सम्मेलन के सामने उपरोक्त दो बातें मुख्य विचार के लिए उपस्थित थीं।

आगरा-सम्मेलन का रूप

•

विनोबाजी ने उत्तर प्रदेशीय कार्यकर्ता-सम्मेलन के लिए ता० ५, ६ और ७ मई का समय दिया। यह सम्मेलन था तो प्रान्तीय ही, पर विनोबाजी ने कहा कि उत्तर प्रदेश कोई प्रान्त नहीं, बल्कि यह तो अन्य प्रांतों के बनने के बाद शेष बचा प्रदेश है। मुझे इस प्रदेश में पूरे भारत के दर्शन हो जाते हैं।

इस सम्मेलन में हुआ भी यही। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष, मंत्री और सहमंत्री इस सम्मेलन में उपस्थित थे। श्री कृष्णदास भाई गांधी और श्री रामेश्वरजी अग्रवाल गुजरात और राजस्थान की याद दिलाते थे। पंजाब के तो अनेक कार्यकर्ता थे। सर्वश्री ढेबरभाई, श्रीमन्नारायण, दातार साहब आदि के अलावा श्री पंतजी भी आये। श्री सम्पूर्णानंदजी और विचित्र भाई तो प्रदेश की दृष्टि से थे ही। महाराष्ट्र, केरल और बिहार के साथी भी जहाँ तहाँ नजर आ रहे थे। उत्तर प्रदेश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं का जमघट, मिल कर काम करने की उनकी भावना और काम के प्रति जोश दर्शनीय था।

श्री गांधी आश्रम व गांधी-निधि के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में आये थे। श्री करिक भाई ने जाहिर किया कि श्री गांधी आश्रम के कार्यकर्ता प्रारंभ से ही भूदान के काम के लिए संपत्ति दान देते आये थे। बीच में कुछ समय यह काम थोड़ा मंद हो गया। पर अब फिर से यह चालू हो गया है। लगभग १९ हजार रुपये का सम्पत्ति-दान तो प्राप्त हो गया है। इसमें से १२ हजार रुपया अगले साल का सम्पत्ति दान पेशगी प्राप्त हुआ है।

इस सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के लगभग सभी जिलों के मुख्य मुख्य कार्यकर्ता आये थे। करीब छह सौ प्रतिनिधि बाहर के थे। सम्मेलन में कार्यकर्ताओं ने अपने मन की बातें खुल खुल कर पेश कीं। विनोबाजी का एक बात पर खास जोर था कि काशी को सघन क्षेत्र चुना जाय। हमारे कार्यकर्ता जो भी वहाँ जायँ, वे वापस आने के लिए न जायँ। उन्हें वहाँ खप जाना है, यह सोच कर जायँ। जम कर बैठे बिना कोई ठोस काम नहीं होगा। अरविन्द २५ साल तक पांडिचेरी में जम कर बैठे, तब आज का रूप प्रकट हुआ। "भाग-दौड़ से काम नहीं होगा," यह विनोबा ने कहा। जहाँ बैठें वहाँ खप जाना है, तभी काम होगा। ८ मई को सबेरे विनोबा ने आगरा से प्रस्थान किया।

युवक-सम्मेलन का प्रस्ताव

•

उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय युवक सम्मेलन की एक गोष्ठी ७ मई को आगरा में विनोबा शिविर में हुई। इस गोष्ठी में युवकों द्वारा सर्वोदय-आंदोलन में किस प्रकार सहयोग दिया जा सकता है, इस पर विचार हुआ। सभी साथियों ने यह सोचा कि युवकों को सर्वोदय की ओर आकृष्ट करने के लिए एक विधायक कार्यक्रम, वर्तमान शिक्षाप्रणाली में आमूल परिवर्तन करने का रखा जाय। इसके दो पहलू हैं—एक तो हम मौजूदा शिक्षा पद्धति को बदलने का आंदोलन चलायेंगे और दूसरे में उसके स्थान पर गांधीजी द्वारा प्रतिपादित जीवनोपयोगी नई तालीम प्रतिष्ठित हो, ऐसा प्रयत्न करेंगे।

आज की शिक्षा प्रणाली ने हमारे जीवन को अंधकारमय बना कर हमें बेकारी के भयानक दुश्चक्र में फँसा दिया है, इसे सभी स्वीकार करते हैं। इसलिए यह युवक-सम्मेलन सरकार से और जनता से यह माँग करता है कि

> ५ वर्ष के अंदर-अंदर इस शिक्षा पद्धति को बदल कर उसके स्थान पर नई तालीम हो, इसका प्रबन्ध किया जाय।

•

डाकू-समस्या और विनोबाजी

पिछले दिनों अखबारों में इस तरह के काफी समाचार प्रकाशित होते रहे हैं कि विनोबाजी डाकुओं द्वारा आतंकित क्षेत्र का दौरा करेंगे और वहाँ बड़ी संख्या में डकैत लोग विनोबाजी को अपना आत्म-समर्पण करेंगे। इस सम्बन्ध में विनोबाजी ने आगरा में स्पष्टीकरण करते हुए यह कहा कि "मैंने इस त[...] की कोई तात्कालिक अपेक्षा नहीं [...] है और न कोई मेरा इस तरह का [...] कार्यक्रम ही है। मैं तो अपने [...] स्वाभाविक ढंग से जा रहा हूँ। बीच [...] मुझे भिंड-मुरैना का रास्ता भी [...] करना है।"

भिंड-मुरैना का क्षेत्र डाकुओं [...] नहीं, बल्कि सज्जनों का ही क्षेत्र है। [...] भी विनोबाजी ने स्पष्ट किया कि [...] डाकू कौन है, यह तो परमेश्वर ही [...] कर सकता है। हो सकता है कि [...] तथाकथित डाकुओं से भी वे अधि[...] गुनहगार साबित हों, जो समाज की [...] से डाकू नहीं माने जाते। पर परमेश्[...] की दृष्टि से वे बच नहीं सकते।

इस सम्बन्ध में डा० काटजू (मुख्य[...] मंत्री, मध्यप्रदेश) ने विनोबाजी को पू[...] सहायता करने का आश्वासन दिया है। आगरा में उत्तर प्रदेश के मुख्य मं[...] श्री सम्पूर्णानंदजी से भी विनोबाजी की [...] सम्बन्ध में चर्चा हुई।

विनोबाजी १३ मई को मध्यप्रदेश [...] में प्रवेश करेंगे।

•

श्री आर्यनायकमजी की विदेशयात्रा

श्री आर्यनायकमजी लगभग ८ महीने के लिए योरोप और अमेरिका की यात्रा पर जा रहे हैं। अपने विद्यार्थी काल में जब वे अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में पढ़ते थे, उस समय कनाडा के प्रसिद्ध ईसाई पादरी डाक्टर डार्मन के ईसा के उपदेशों से सम्बन्धित परिसंवाद में उन्होंने भाग लिया था। अभी डार्मन की मृत्यु के बाद उनके काम को आगे बढ़ाने के लिए डार्मन ट्रस्ट की स्थापना हुई है। आगामी जून के अन्त में इस ट्रस्ट के अन्तर्गत होने वाले परिसंवाद में भाग लेने के लिए श्री नायकम जी अमेरिका जा रहे हैं। करीब ३ महीने अमेरिका में बिताने के बाद वे इंग्लैंड और योरोप आयेंगे। ३ महीने इंग्लैंड और दो महीने योरोप के अन्य देशों में भ्रमण के बाद दिसम्बर के अन्त तक नायकमजी वापस भारत लौट कर आयेंगे।

•

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ
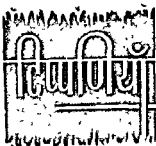
तोड़ने का नहीं, जोड़नेका काम

बहुत से लोग आज मेरी बातों को पुरानी बातों से जोड़ते हैं और कहते हैं कि 'आप पुरानी बातों को दोहरा रहे हैं।' दूसरी ओर अन्य लोग हैं, जो कहते हैं कि 'आप यह न समझ में आने वाली बातें क्यों कहते हैं? कैसे होगा यह सब? ऐसा तो अबतक किसी ने नहीं कहा।' तो मेरा दावा पुराना होते हुए भी नया है। जो दकियानूसी बातें हैं, उनको फेंक देने से शक्ति का ह्रास नहीं होता, तो मुझे कोई उज्र नहीं है, उनको फेंक देने में। व्यर्थ उनसे चिपके रहने से लाभ नहीं, बल्कि हानि होती है। हम समझते हैं कि यह क्रांति का काम है। नये मूल्यों को हम स्थापित करते हैं, तो उत्साह मिलता है। दूसरी ओर, पुराना काम भी इसके अंदर आ जाता है। तो नये और पुराने को मिल कर एक रूप आता है। इस रूप को देख कर लगता है कि हम कुछ कर रहे हैं और यह करने योग्य है। पर समझना चाहिए कि मूल में यह जोड़ने का काम है; खंडन करने का, तोड़ने का नहीं। अगर हम खंडन करें, सामने वालों को कायल करने के लिए लड़ने लगें, तो वह बात उचित नहीं होगी। यह हिंसा के नजदीक बात होगी और दूसरे के दिल पर उलटे बुरा असर डालने वाली होगी, इसलिए मैं दूसरा रास्ता अपनाना पसंद करता हूं, ताकि लोग इसे तोड़ना या झगड़ना न समझ कर जोड़ना समझें। तब वे भी सहयोग करेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

(बराल, ९-४-'६०) —विनोबा

इनामी बॉन्ड

सरकार ने जो इनामी बॉन्ड जारी किये हैं उनका औचित्य सिद्ध करने के लिए वित्तमन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने कानून के शब्द की शरण ली है। लॉटरी लगाने की प्रथा से वास्तविक मेहनत से उत्पादन करने की प्रवृत्ति की बजाय लोगों में घर बैठे तकदीर-आजमाई की वृत्ति बढ़ती है, इसलिए सरकार ने कुछ दिनों पहले कानून बना कर लॉटरी का आयोजन बन्द किया था। अब जनता से रुपये बटोरने के लिए सरकार ने ही जब इनामी बॉन्ड की योजना जारी की और नैतिक आधार पर उसका विरोध किया गया, तब श्री मोरारजी भाई ने यह कह कर उसका बचाव किया कि इनामी बॉन्ड लॉटरी की कोटि में नहीं आते हैं, क्योंकि इनमें लगाया हुआ धन वापस मिल जाता है, जब कि लॉटरी में वह नहीं मिलता। कानून की शाब्दिक परिभाषा में यह अन्तर ठीक हो सकता है, पर जहाँ तक अन्तर्निहित भावना का सवाल है, कोई भी यह कह सकता है कि दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

लॉटरी लगाना या इनामी बॉन्ड में पैसा लगाना बुरा नहीं है, यह राय किसी की हो सकती है, पर एक को बुरा मानते हुए केवल शाब्दिक आधार पर दूसरे का समर्थन करना मानसिक ईमानदारी नहीं है। चाहे व्यक्ति लगाया हुआ मूल धन खोये या इसके सूद को दाव पर लगाये, बात एक ही है। मुख्य चीज दोनों में यह है कि भविष्य में संयोग से अधिक धन पाने की इच्छा से व्यक्ति अपनी आय से कुछ रुपया दाव पर लगाता है। बिना कुछ भी किये लाभ उठाने की और तकदीर आजमाई की यह वृत्ति ही लॉटरी का वह सारतत्त्व है, जिसके कारण वह नैतिक दृष्टि से बुरी मानी जाती है और यही वृत्ति इनामी बॉंड के पीछे भी है।

जहाँ तक जनता का सम्बन्ध है वह अवश्य ही इस जाल में फँसने वाली है। पहले दिन ही बिक्री के लिए रखे गये सभी बॉन्ड चंद घंटों में ही बिक गये और कहीं कहीं तो उनकी बिक्री में चोरबाजारी भी हुई! श्री मोरारजी देसाई ने अपनी योजना की सफलता की खुशी में तुरन्त यह वादा भी किया कि वे और इनामी बॉन्ड छपवायेंगे। प्रोफेसर असरानी ने अपने नोट में हिसाब लगा कर बतलाया है कि *इनाम जीतने के चांस कितने कम हैं।*

दूसरी चीज जो ध्यान देने योग्य है, वह यह है कि हालाँकि कहने को तो लोग अपना मूल धन नहीं खोयेंगे और आज जो धन वे बॉन्डों के खरीदने में लगायेंगे वह धन उन्हें पाँच वर्ष बाद वापस मिल जायगा, पर रुपयों का मूल्य जो आज है वह पाँच वर्ष बाद उतना नहीं रह जायगा! हम लोगों ने यह गत कई वर्षों से रुपये के गिरते हुए मूल्य को देखा है—आज से *बीस साल पहले की अपेक्षा आज* चीज उससे चार गुना महँगी हो गयी है और यह निश्चय है कि ज्यों-ज्यों राष्ट्र में अनुत्पादक काम बढ़ेंगे, त्यों-त्यों रुपये का मूल्य अवश्य ही घटेगा।

आज के सौ रुपये की क्रय शक्ति निश्चय ही पाँच वर्ष बाद घटी हुई पायी जायगी। अतः जो लोग इनामी बॉन्ड खरीदेंगे, उन्हें सिर्फ सूद का ही नुकसान नहीं होगा, वरन मूल धन का भी कुछ हिस्सा खोना पड़ेगा।

—सिद्धराज ढड्ढा

इनामी बॉन्ड और लॉटरी !

इनामी बॉन्डों और लॉटरी को लेकर *सरकारी लोगों में भी दो मत हैं!* केन्द्रीय मालमंत्री श्री गोपाल रेड्डी ने गत ८ अप्रैल को राज्यसभा में ऐसे इनामी बॉन्डों के प्रचलन की नैतिक आधार पर टीका की। ठीक उसी दिन केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री मोरारजी देसाई *ने लोकसभा में कहा कि यदि जरूरत* हुई तो और इनामी बॉन्ड छापे जायेंगे।

श्री गोपाल रेड्डी ने ठीक ही कहा कि ऐसी लॉटरियाँ लोगों के मस्तिष्क में मेहनत करके धन पैदा करने के *विचार का परित्याग करवा देंगी।* उनके कथनानुसार नया धन लोगों के अथक परिश्रम द्वारा ही तैयार होता है। साथ ही उन्होंने यह भी बतलाया कि अर्थव्यवस्था नैतिकता से अलग नहीं सोची जा सकती। पर श्री मोरारजी *दूसरे ही ढंग से सोचते हैं।*

हालाँकि यह कहा जा सकता है कि कानूनी दृष्टि से लॉटरी और इनामी बॉन्डों में अन्तर है, पर दोनों में एक बात यह समान है कि उसमें धन ऐसी योजना में लगाया जाता है, जिससे बिना मेहनत किये सिर्फ संयोग से अपार धन प्राप्त हो सके। अतः इनामी बॉन्डों में रुपये लगाना लॉटरी में रुपये लगाने से भिन्न नहीं।

साधन-शुद्धि का भी तकाजा है कि सही फल प्राप्ति के हेतु सही तरीकों का ही उपयोग करना चाहिए। राष्ट्र की सब से बड़ी जरूरत लोगों को परिश्रम करके रोजी कमाने की शिक्षा देने की है। दूसरी ओर भ्रष्टाचार से, कृपाभाजन बनकर, *या चोरबाजारी और बेईमानी से* आसानी से पैसा कमाया जा सकता है, जो आजकल काफी प्रचलित है। यही कारण है कि देश के नैतिक वातावरण में उपरोक्त बुराइयों की बू आती है। इनामी बॉन्ड इन्हीं तरीकों की कोटि का यह एक नया तरीका है। आसानी से पैसे पैदा करने का यह एक आकर्षक उपाय है।

सरकार बॉन्ड खरीदने वालों को काफी लालच बता रही है, पर जनता को यह भी आगाह करना जरूरी है कि इस लॉटरी में जीतने की सम्भावना बड़ी कम है। पाँच रुपये का बॉन्ड खरीदने वाला प्रति दिन यह दिवास्वप्न देख सकता है कि एक दिन वह *७५०० रुपये इनाम में पायेगा!* पर उसे यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि गणित के नियमानुसार ५० रु० वाला इनाम प्राप्त करने का मौका भी १९×२७१ यानी ५२८२ हर दस लाख बॉन्डों पर है, अर्थात् करीबन २०० बॉन्डों में सिर्फ १ बॉन्ड पर ही इनाम मिलने की सम्भावना है और यह भी सबसे छोटा ५० रु० का इनाम! बड़े इनामों का मौका तो और भी कम आयेगा। अर्थात् २०० व्यक्तियों में से १९९ व्यक्ति १ रु० प्रति पाँच रुपये के बॉन्ड का ५ वर्ष का सूद ४ रु० से खोयेंगे। ठीक उसी तरह से १०० रु० के बॉन्डों पर छोटा से छोटा इनाम १३२ व्यक्तियों में एक व्यक्ति पा सकेगा और १३१ व्यक्तियों में से हर व्यक्ति ४ प्रतिशत की दर से ५ वर्ष में २० रु० सूद खोयेगा।

लोकसभा में भी यह सन्देह व्यक्त किया गया था कि इनामी बॉन्ड निकाल कर गलत ढंग से पैसे पैदा करने के ढंग को सरकार प्रोत्साहन दे रही है। चाहे जो भी हो, सरकार कम से कम दिवास्वप्न और भाग्यावलम्बन की प्रवृत्ति को जरूर प्रोत्साहन दे रही है। वास्तव में वह राष्ट्र के लिए हितकर नहीं है।

—प्रो. यू. ए. असरानी

आश्रम : जीवन-दर्शन की प्रयोग शाला : बालकोबा

[गतांक से आगे]

सन् १९२६ में साबरमती-आश्रम में मैं था, तब मुझ पर श्रद्धा रखने वाले एक कार्यकर्ता ने मुझसे कहा कि मुझे ध्यान करना सिखाइये। उस कार्यकर्ता की ध्यान के लिए भूमिका नहीं थी, यह मैं जानता था। मगर मैं उसे ना कहता तो ख्वामख्वाह वे निराश हो जाते, इसलिए मैंने अनुभव के अनुसार किस तरह ध्यान किया जा सकता है, यह बताया। वे आसन पर बैठें और ध्यान करने लगे। जैसे ही वे ध्यान करने जाते थे, उन्हें फौरन नींद आ जाती थी। उन्होंने मुझसे कहा, ध्यान करने जाता हूँ और नींद घेर लेती है। मैंने कहा, तभी तो गांधीजी ने यह आठ घण्टे का परिश्रम रखा है, उसमें तमोगुण पर विजय प्राप्त करना, यह एक उद्देश्य है। गांधीजी ने आश्रम में और एक महत्त्व की चीज यह दाखिल की कि सुबह से रात तक का सारा कार्यक्रम बंधा हुआ होना चाहिए, यह आग्रह रखा। सार्वजनिक सेवा आठ घंटे करने के बाद अपने निजी समय में चाहे जिस तरह हम नहीं चल सकते। निजी समय भी पूरा बँधा हुआ होना चाहिए। इस तरह आश्रम के पूरे बँधे हुए कार्यक्रम को पूज्य विनोबाजी ने 'कार्यक्रम-योग' ऐसा नाम दिया है। गीता के १७ वें अध्याय में आश्रम का पूरा कार्यक्रम-योग माना है, ऐसा पूज्य विनोबाजी मानते हैं। वे बताते हैं कि १७ वें अध्याय के शुरू में श्रद्धा आती है। ईश्वर-श्रद्धा यानी हमारी सुबह की प्रार्थना। प्रार्थना में स्वाध्याय का समावेश आ जाता है। कार्यारंभ के पूर्व प्रार्थना जरूरी है। प्रार्थना के बाद स्वाध्याय, स्वाध्याय के बाद नाश्ता दिया जाता है। श्रद्धा के बाद आहार का वर्णन गीता में आता है। फिर यज्ञ, दान, तप का वर्णन आता है। नाश्ते के बाद आश्रम का आठ घण्टे का कार्य-यज्ञ, दान, तप का ही रहता है। फिर आखिर में 'ओम् तत्सत्' आता है। आश्रम में सायंप्रार्थना यह आखिरी कार्य रहता है। यज्ञ, दान, तप का सारा कार्य अंत में परमात्मा की प्रार्थना करके यानी परमात्मा को अर्पण करके करने की कल्पना इसमें है।

सुबह से शाम तक बँधा हुआ कार्यक्रम हो, तो तमोगुण आहिस्ता-आहिस्ता क्षीण हो जाता है। अस्तेय-व्रत-पालन में आठ घंटे सार्वजनिक सेवा-कार्य का समावेश है। मगर अस्तेय-व्रत इससे आगे चला जाता है। पूज्य विनोबाजी ने इसे 'भिक्षा' नाम दिया है। भिक्षा, धंधा, चोरी ऐसे तीन वर्ग उन्होंने किये हैं। समाज की ज्यादा-से-ज्यादा सेवा करके उसके बदले में समाज से कम-से-कम लेना, यह भिक्षा का अर्थ उन्होंने बतलाया है। आश्रम में इस भिक्षा वृत्ति से रहने की कोशिश है। धंधे में समाज की सेवा प्रामाणिकता से की जाती है। और इसके बदले में जितना जरूरी है, उतना समाज से लेने का प्रयत्न है। चोरी में समाज की कम-से-कम सेवा करके उसके बदले में समाज से ज्यादा-से-ज्यादा लेने की कोशिश है।

तमोगुण क्षीण करने के लिए आश्रम का 'कार्यक्रम-योग' यह जिस तरह एक साधन है ऐसा मान सकते हैं, उसी तरह रजोगुण पर विजय पाने के लिए व्रत, नियम-पालन यह एक साधन मान सकते हैं। व्रत-नियमपालन-निरपेक्ष समाज-सेवा जब शुरू हो जाती है, तब उसमें लोभ, महत्त्वाकांक्षा, खटपट आदि रजोगुण दाखिल हो जाते हैं। जन सेवा का बाह्य कार्य रजोगुणमुक्त रखने के लिए उस पर सत्य, अहिंसा आदि व्रतों का नियंत्रण होना चाहिए। इन पंचमहाव्रतों की साधना से नियंत्रित जीवन में रजोगुण, तमोगुण क्षीण होने पर सत्वगुण का उत्कर्ष होगा। सत्वगुण के उत्कर्ष से ईश्वरस्वरूप की पहचान हो। इस प्रकार की कल्पना गांधीजी द्वारा स्थापित हुए आश्रम के बारे में मैंने की है।

व्रत-निरपेक्ष जन-सेवा का कार्य जैसे मिथ्या हो जाता है, वैसे ही व्रत-निरपेक्ष ध्यान आदि की साधना भी मेरे खयाल से मिथ्या हो जाती है। इसलिए जीवन में बुनियादी चीज मेरे मन से व्रत नियम-पालन की निष्ठा ही है। इन पंचमहाव्रतों की पहचान गांधीजी ने अपनी 'मंगल प्रभात' किताब में करायी है। उसका अति सुन्दर प्रासादिक पद्यानुवाद पूज्य विनोबाजी ने "अभंग व्रतें" नाम की अपनी मराठी किताब में किया है। इस किताब के आखिरी पृष्ठ पर पूज्य विनोबाजी गांधीजी की 'मंगल प्रभात' किताब के बारे में इस प्रकार लिखते हैं : "गांधीजी ने बहुत लिखा है। उसमें मौलिक साहित्य भी बहुत है। तथापि उन सबका मथित यानी सार यह छोटी-सी किताब है। आज इसका उतना स्पष्ट भान लोगों को नहीं है। मगर सौ साल के बाद बापू की 'मंगल-प्रभात' का जितना स्मरण लोग रखेंगे, उतना शायद ही और साहित्य का रखेंगे। हमारे लिए जो उन्होंने लिख रखा है, वह सारा इतिहास में दाखिल होगा। मगर जो थोड़ा-सा साहित्य हमेशा के लिए उपयोगी साबित होगा, उसमें 'मंगल प्रभात' शिरोमणि है। उसमें जो व्रत कहे हैं वे नये नहीं हैं, मगर उनके बारे में उनकी कल्पना मौलिक है।"

आश्रम यह एक प्रयोगशाला है। इसमें व्रत नियम-पालननिष्ठा, श्रमनिष्ठा, स्वाध्याय, दोनों समय की प्रार्थना आदि के प्रयोग चलते हैं। उन प्रयोगों से फलित जो चीजें निकलेंगी, उनका लाभ जनता को मिलना चाहिए।

पूज्य गांधीजी ने व्रत-नियम-पालन का आग्रह सत्याग्रहाश्रम-जीवन में जितने हद तक रखा उतना आग्रह उन्होंने चरखा संघ, ग्रामोद्योग-संघ, बुनियादी तालीम आदि संघ, या संस्थाएँ स्थापित की, उसमें वे नहीं रख सके। उतना आग्रह न रखते हुए भी इन संघों के सामने ध्येय तो यही रहना चाहिए। इन संघों की बुनियाद में यदि ये पंच-महाव्रत न रहे, तो जो चीज समाज में हम दाखिल करना चाहते हैं, वह नहीं दाखिल कर पायेंगे। मेरा मानना है कि यह पंचमहाव्रतों का अनुष्ठान सिर्फ आश्रम वासियों के लिए ही है और लोगों के लिए नहीं है, ऐसी गलत धारणा इन संघों के कार्यकर्ताओं के मन में बैठ गयी है।

भूदान जैसा अलौकिक आंदोलन हिन्दुस्तान में शुरू हुआ। हजारों की संख्या में कार्यकर्ता त्याग करके उसमें जुट गये। गाँव गाँव जाकर तपश्चर्या के साथ इसका संदेश जनता में फैलाने में प्रवृत्त हुए। एक अभूतपूर्व कार्य किया है, इसमें संदेह नहीं। मगर यह कार्य करते हुए पंचमहाव्रतों के अनुष्ठान का खयाल कार्यकर्ताओं के सामने है, ऐसी छाप मुझ पर नहीं पड़ी है। सब कार्यकर्ताओं ने व्रतों को भली भाँति समझ लिया है, ऐसा मुझे नहीं लगता है। अहिंसक समाज क्रान्ति करने का ध्येय हमने रखा है। उसको हम टीक टीक रटते भी जाते हैं। मगर अहिंसा का ब्रह्मचर्य के साथ पूरा संबंध है, यह गांधीजी की कल्पना हमारे ध्यान में नहीं रही है ऐसा मुझे लगा है। सत्य की साधना अहिंसा के पालन बिना नहीं और अहिंसा की साधना ब्रह्मचर्य के पालन बिना नहीं, ऐसी उनकी कल्पना थी। उन्होंने 'मंगल-प्रभात' में लिखा है कि अहिंसा का जिसे पालन करना है, वह विवाह नहीं कर सकता। कितना ऊँचा विचार नजर के सामने रखा! मगर जिन्होंने विवाह किया उनका क्या? क्या वे कभी सत्य, अहिंसा का पालन नहीं कर सकते? गांधीजी जवाब देते हैं, अवश्य पालन कर सकते हैं। इसके लिए हमारा रास्ता निकाला हुआ ही है। विवाहित, अविवाहित जैसे रहने लग जायँ। सन् १९१९ की बात है लन्दन में गांधीजी का स्खलन हुआ। उन्हें भारी पश्चाताप हुआ। उन्हें चिन्ता इस बात की हुई कि ब्रह्मचर्य का सूक्ष्म पालन यदि मैं नहीं कर सका तो अहिंसा का साक्षात्कार हिन्दुस्तान को मैं किस तरह करा सकूँगा? लेकिन भूदान कार्यकर्ताओं का ध्यान ब्रह्मचर्य की तरफ आकृष्ट हुआ है, ऐसी मेरे मन पर छाप नहीं है। इस संबंध में उनके सामने कुछ योजना है, ऐसा भी लगता नहीं है। अखिल भारत सर्व सेवा संघ से किताबों का प्रकाशन होता रहता है। उसमें ब्रह्मचर्य पर कोई किताब जो भूदान कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन कर सकती है, अब तक प्रकाशित नहीं हुई है। पूज्य विनोबाजी का चार आश्रमों के बारे में जो मौलिक विचार है, वह कार्यकर्ताओं के सामने है, ऐसा नजर नहीं आता। पूज्य विनोबाजी कहते हैं, २० से २५ साल तक की उम्र तक ब्रह्मचर्याश्रम हो, ४० से ४५ तक की उम्र तक गृहस्थाश्रम हो। उसमें दो संतान और दो ही संगम हों। बाद में ७० साल तक की उम्र तक वानप्रस्थ जीवन हो और ८० साल तक की उम्र तक संन्यास। ८० साल के आयुष्य की उन्होंने कल्पना की है और उसका बँटवारा किस तरह होना चाहिए, यह उपर्युक्त रीति से बताया है। यह ध्येय कितने कार्यकर्ताओं के सामने है?

एक तपोनिष्ठ पुराने कार्यकर्ता जो फिलहाल भूदान-कार्यकर्ता हैं, मेरे पास सहज मिलने आये थे। उनकी उम्र ६५ साल की है। मैंने उन्हें सहज पूछा, आपका वानप्रस्थ जीवन होगा ही। कब से है? उन्होंने जो जवाब दिया, वह सुन कर मैं चकित रह गया। उन्होंने कहा, मैं वानप्रस्थी नहीं हूँ और अब तक इस पर मैंने सोचा ही नहीं है। मैंने कहा, यह कैसे चलेगा? मैंने पूज्य गांधीजी का और पूज्य विनोबाजी का विचार बतलाया। वे सोचने लगे। उन्हें गांधीजी की चीज पट गयी। उन्होंने वानप्रस्थ ले लिया और विनोबाजी को खबर दी।

और दूसरा दृष्टान्त देता हूँ। जो उदाहरण मैं पेश कर रहा हूँ, इसमें टीका करने का मेरा उद्देश्य नहीं है। मुझे इतना अवश्य बताना है कि ब्रह्मचर्य का अहिंसा के साथ अटूट संबंध है, यह कार्यकर्ताओं के ध्यान में आये। हमारे निसर्गोपचार आश्रम में एक भूदान-कार्यकर्ता अपनी पत्नी के साथ प्राकृतिक चिकित्सा सीखने आये। साथ में अपनी पत्नी का इलाज भी उन्हें करवाना था। मेरे पास उनका रोज स्वाध्याय चलता रहा। उसमें से उन्हें ब्रह्मचर्य की प्रेरणा मिली।

[शेष पृष्ठ संख्या ११, कालम १ पर]

कृषि-उत्पादन-वृद्धि में खादों की उपयोगिता

गोविंद रेड्डी

अप्रैल १९६० के 'किसानी समाचार' में कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर के प्राध्यापक श्री गो. प्रा. शर्माजी ने कृषि-उत्पादन-वृद्धि में खादों की उपयोगिता के बारे में विदेशों के आँकड़े देकर एक लेख लिखा है। उनकी राय में अपने देश में भी रासायनिक खाद का अधिक उपयोग करना चाहिए। तालिका के रूप में उन्होंने जो आँकड़े दिये हैं, उनका उल्लेख करना उचित होगा।

देश	प्रति एकड़ उर्वरकों का प्रयोग पौंड में	प्रति एकड़ औसत उपज पौंड में
नीदरलैंड	३९५·८	३१३२
जापान	२२३५	२९४३
स्विटजरलैंड	१४९·३	२९२५
ब्रिटेन	११३·८	२५०२
फ्रान्स	६३·७	२०५२
अमेरिका	३०·७	१६८३
भारतवर्ष	१०	९४५

भारत ने प्रति एकड़ एक पौंड उर्वरक का उपयोग करके ९४५ पौंड अनाज प्राप्त किया, जब कि नीदरलैंड ने प्रति एकड़ करीब ४०० पौंड उपयोग करके भारत की अपेक्षा साढ़े तीन गुनी पैदावार की।

आजकल कृषिज्ञों का एक ही राग है कि भारत की जमीन बेकस हुई है, जिसके लिए कृत्रिम खाद का ज्यादा-से-ज्यादा उपयोग करना चाहिए। आज देश में जितने सरकारी फार्म हैं, उनके पास सैकड़ों एकड़ जमीन है, परन्तु उसके मुकाबले में गोबर की खाद नगण्य-सी है। इसलिए ये सब फार्म रासायनिक खाद का ही उपयोग ज्यादा करते हैं।

अपने देश में कई सदियों से खेती चलती आ रही है। खेती की रचना ऐसी है कि जमीन से प्राप्त होने वाला नाइट्रोजन तथा जमीन के उपजाऊपन को कायम रखने की कुदरती प्रक्रिया में पूरा संतुलन है। परन्तु अत्यधिक बरसात, बाढ़ तथा धूप आदि से जमीन के क्षार धुल जाने के कारण जमीन में उनकी कमी हो जाती है। तब गोबर के खाद के साथ कुछ मात्रा में रासायनिक खाद देना जरूरी हो जाता है। जैसे दवा बीमारी की हालत में दी जाती है, तभी रोगी को फायदा पहुँचाती है, उसी प्रकार से जमीन को यदि रासायनिक खाद देना हो तो उसके लिए जमीन का डाक्टर होना चाहिए। ऐसे डाक्टर आज के शहरी स्कूलों से निकले कठिन ही हैं। आज के शहरी पढ़े लोग 'गाइड' होकर गाँव में किसानों को सुझाव देते हैं कि 'कम्पोस्ट' तैयार करने में बड़ा फायदा है। परन्तु आज तक अनुभव यही आया कि वह किसान उसे अपनाता नहीं है, क्योंकि उसका जो तरीका है वह मेहनतवाला और खर्चीला है। जमीन के उपजाऊपन को बनाने के लिए लम्बे समय की जरूरत होती है, साथ ही मेहनत भी चाहिए। अपने यहाँ विदेशों द्वारा अपने से आकर्षक का असर ज्यादा होता जा रहा है। हम लोग तुरन्त फायदा चाहने लगे हैं। रासायनिक खाद से ज्यादा फसल मिल सकती है, परन्तु वह अपने देश के लिए उपयोगी साबित नहीं होने वाली है। भारत की खेती अधिकतर बरसात पर अवलम्बित है। ऐसी हालत में गहरी जुताई करना और रासायनिक खाद देना जुआ जैसा खेल है। खाद इतना महँगा है कि साधारण किसान उसे ज्यादा खरीद नहीं सकता।

जमीन का पोत उमदा बनाना हो और उसकी उर्वरा-शक्ति को स्थिर रखनी हो, तो इसके लिए जानवरों का मल-मूत्र, कूड़ा-कचरा और जुताई आदि जरूरी है। इन सबके साथ साथ थोड़ी मात्रा में रासायनिक खाद का भी उपयोग हो सकता है। आजकल दंभ और अभिमान के कारण जानवरों का मल-मूत्र इकट्ठा करना तुच्छ माना जाता है। जिस गाँव में मैं बैठा हूँ, उसमें कोई मर्द गोबर नहीं उठाते हैं। यही हाल सारे प्रदेश में कम-बेश है। जुलाई से ४ माह तक बैल तथा दुधारू पशुओं का गोबर बाड़े में जमा करके अव्यवस्थित फेंक देना है। नवम्बर से ५ माह तक उपले बनाती हैं। अप्रैल से ३ माह तक मवेशी घर में नहीं बाँधते हैं, और न गोबर मिलता है। पशु जानवर बरसात में जंगल में भेज देते हैं। वहाँ सारा गोबर व्यर्थ हो जाता है। कुछ भाइयों से चर्चा करने पर पता चला कि उन्होंने कभी अपने खेत में खाद दिया ही नहीं, फिर भी प्रति एकड़ ५-७ मन पैदावार मिलती है।

अब बरसात को देखें। यहाँ गत साल कुल ६४ दिन वर्षा हुई। जिसमें से ३५ दिन तो आधा इंच से भी कम पानी पड़ा। इतना पानी काश्त और फसल की दृष्टि से उपयोगी नहीं है। गरमी में इतना पानी २-३ घंटों में सूख जाता है तथा बरसात में इतने पानी से नमी हमेशा बनी रहती है, जिससे निराई, गुड़ाई आदि कुछ नहीं हो सकता है। ३ दिन ५ से ६ इंच वर्षा हुई। यह भी फसल को नुकसान ही देती है। बाकी बचे २६ दिन, जिनमें कि १ से ३ इंच तक वर्षा हुई। यह २६ दिन मई २, जून १, जुलाई ७, अगस्त ११ तथा तथा सितम्बर ५ है। इस साल सितम्बर १४ को वर्षा बन्द हुई। अक्टूबर की वर्षा धान में तथा ज्वारी में मदद देती है। दिसम्बर की वर्षा रबी की फसल को काफी लाभ देती है। रबी की फसल बोने के बाद २५ दिन के अन्दर यदि वर्षा हुई तो फसल दुगुनी हो जाती है।

भारत में जितनी जमीन है, उसका १७ प्रतिशत सिंचित है। ८-१० साल के अनुभव के बाद इस नतीजे पर आया हूँ कि अपने देश में बड़े परिमाण से रासायनिक खाद का उपयोग लाभदायक नहीं है। इसके लिए सबसे पहले सिंचाई की सुविधा होनी चाहिए। भारत में कुल ३० इंच वर्षा होती है, उसमें से २२॥ इंच पानी बह जाता है, १२ इंच जमीन के अंदर उतर जाता है तथा फसल को मिलता है। इस २२॥ इंच पानी का उपयोग व्यवस्थित ढंग से बाँध डाल कर किया जा सकता है। परन्तु जमीन की व्यक्तिगत मालकियत की भावना इस प्रकार की रचना करने में सबसे बड़ी रुकावट है। १२॥ इंच पानी का लाभ लेने के लिए लाखों-करोड़ों कुएँ-तालाब होने चाहिए। इसमें आलस्य सबसे बड़ी रुकावट है। ऐसी परिस्थिति गाँवों में अत्यधिक मात्रा में रासायनिक खाद का उपयोग करने की सलाह देना उचित नहीं लगता है।

श्री बनवारीलालजी चौधरी, नटाया ग्राम, होशंगाबाद जिला, एकाध साल के लिए जापान गये थे। वहाँ से लौट कर वहाँ की खेती के बारे में उन्होंने एक पुस्तक लिखी है। किताब का नाम है 'जापान की खेती।' ज्यादातर तरकारी के बारे में उन्होंने लिखा है : "जापान में तरकारी में एक-दो सप्ताह में दवा बराबर डाली जाती है। कई प्रकार के कीड़े और रोग हर प्रकार की तरकारी पर आक्रमण करते हैं। हर किसान के पास दवा डालने के साधन हैं। एक एक पत्ती को देख कर रोग निर्मूल करते हैं। उत्पादन का ४॥ प्रतिशत खर्च दवा पर होता है।" जापान में १४७ लाख एकड़ काश्त की जमीन है, प्रति एकड़ २० रुपये के हिसाब से करीब ३० करोड़ रुपयों का खर्च सिर्फ दवा पर होता है। हर तरकारी में कितना किस प्रकार का खाद देना चाहिए, इसके बारे में पुस्तक में आँकड़े भी दिये गये हैं।

श्री शर्माजी के आरम्भ में दिये गये आँकड़ों से यह पता चलता है कि जापान ने भारत की अपेक्षा २२३ गुना उर्वरक दिया और ३ गुनी पैदावार ली। इसलिए जापान के अनुभव के आधार पर भी यहाँ कृत्रिम खाद का उपयोग करने की सलाह देना उचित नहीं लगता है।

भारत का फसल-चक्र ऐसा है कि अन्य देशों में मिलना मुश्किल है। आजकल लालच के मारे फसल का वह चक्र टूट गया है। अतः धीरे-धीरे बीमारियाँ बढ़ने लगी हैं। हमें यह समझना चाहिए कि शरीर, पौधे और जमीन एक जैसे ही हैं। जैसे शरीर को कुदरत के जितना नजदीक रखेंगे उतना ही वह स्वस्थ रहेगा, वैसा ही इनके बारे में भी है। जमीन मूक है, उसे बुद्धिपूर्वक खाद और समय पर पानी यदि देंगे तो उसके अन्दर छिपी प्रचंड शक्ति का पता चलेगा।

अखिल भारत सर्व सेवा संघ के नेतृत्व में हर प्रान्त में एक कृषि केन्द्र चलाने की योजना यदि बने तो उचित होगा। आज तक हम लोगों का काम मेहमान जैसा ही रहा है। मेहमान चार दिन का होता है, वैसे ही हम भी दो-चार साल काम करके बन्द कर देते हैं। अगर कृषि में कोई प्रयोग करना हो तथा उसका महत्त्व जनता को बताना हो—समझाना हो तो एक एकड़ को फसल-चक्र के अनुसार कम से कम पाँच बार बोना चाहिए। एक चक्र में तीन साल लगते हैं, इस प्रकार के एक प्रयोग में १५ साल लग जाते हैं। इतनी एकाग्रता और निष्ठा से यदि कृषि के प्रयोग किये जायेंगे तभी लोग समझने लग सकेंगे।

ब्राह्मी का गुण

कलकत्ते के रामकुमार गोयनका नाम के एक सज्जन लिखते हैं :—

"मैंने ८० वें वर्ष में प्रवेश किया है, पर देखने वाले ६०-६५ से अधिक नहीं बतलाते हैं। २० वर्ष पहले मैंने अंग्रेजी के "स्टेट्समैन" पत्र में ब्राह्मी के उपयोग के बारे में एक नोट पढ़ा था, तब से मैंने रोज दो पत्ते ब्राह्मी के खाना शुरू कर दिया और वह अब तक जारी है।

ब्राह्मी के गुणों का वर्णन आयुर्वेद में तो है ही, अंग्रेजी की 'इण्डियन मेडिसिनल प्लान्ट्स' नामक पुस्तक में भी ४५ पृष्ठों में इस वनस्पति का वर्णन किया गया है। पर एक बात जो किसी पुस्तक में नहीं मिलती। वह है केवल एक या दो पत्ते का खाना यानी "होमियोपैथी मात्रा" में। वैद्य लोग तो बहुत अधिक मात्रा में इसका सेवन बतलाते हैं। उनके मत से एक या दो पत्ते नहीं के बराबर हैं। ब्राह्मी के बड़े पत्ते तीन इंच तक के और छोटे आधी इंच करीब होते हैं। छोटे पत्तों वाली को मंडूक-पर्णी भी कहते हैं। दोनों का गुण एक ही बतलाया गया है। यह गमलों में लगायी जा सकती है।"

संरक्षण का स्थायी उपाय !

• अहद फातमी

[हिन्दी-चीन समस्या पर विनोबा के खयालात]

२० अप्रैल को, जब कि दुनिया के दो बड़े और पुराने देश, चीन और हिन्दुस्तान, के प्रधान मन्त्री भारत की राजधानी, दिल्ली में हिन्द-चीन सरहदी-मसले पर समझौते की बातचीत आपस में कर रहे थे, उसी समय दिल्ली से चालीस मील दूर—बुलन्दशहर में—विनोबा की वाणी गूँज रही थी। एक की भूमिका थी सियासत, दूसरे की रूहानियत और विज्ञान। जय जगत् की चट्टान पर खड़ा विनोबा न सिर्फ हिन्द और चीन के बीच के आज के तनाव का हल पेश कर रहा था, बल्कि दुनिया के सामने स्थायी शांति का नुस्खा भी पेश कर रहा था—एक ऐसा नुस्खा, जिसे अपना लेने के बाद न आक्रमण का भय बाकी रह जाता है, न पराजय का डर !

भारत-चीन-सीमा के प्रश्न पर विनोबा के सोचने में संकुचित राष्ट्रियता की न कहीं भावुकता है, न भावना। उनकी निगाह, इस सवाल पर सौ की सदी साइंसी है, बिलकुल वैज्ञानिक ! दिल की भावना को भी वे देखते हैं और साइंस की ताकत-आज के जमाने की मांग-को भी महसूस करते हैं।

विनोबाजी की दृष्टि से आज कोई भी देश युद्ध नहीं चाहता और पहले जमाने में जो—पहाड़ और समुद्र—देशों को तोड़ने वाली ताक़तें थीं, वही अब इस जमाने में जोड़ने वाली शक्तियाँ बन गयी हैं। इन सचाइयों को देखते हुए विनोबा को विश्वास है कि जिस तरह बारह हजार मील लम्बे पैसेफिक सागर ने सुदूर पूर्व के जापान और सुदूर पश्चिम के अमेरिका को आज पड़ोसी देश बना दिया है। उसी तरह हिन्द-चीन को अलग रखने वाला हिमालय अब इन दो देशों को जोड़ने वाली कड़ी का काम करेगा। विनोबा के शब्दों में—"चीन का और हमारा सम्पर्क अब बन रहा है, बनने वाला है। चीन-भारत का प्रत्यक्ष रूप में सम्बन्ध दीख पड़ेगा। यह कयामत की बात नहीं; दो चार साल में ही होने वाला है और हमेशा क़ायम रहेगा।"

फिर, आज की यह अन-बन क्यों ?

विनोबा इसका जवाब देते हैं—"आज तक हम अलग अलग थे। अब पड़ोसी होने जा रहे हैं। अब दोनों के सम्पर्क जुड़ रहे हैं। सम्पर्क जुड़ता है तो वह हमेशा मीठा ही नहीं होता; खट्टा भी होता है, खट्टा-मीठा भी होता है।"

इस संदर्भ में, कुछ महीने पहले, उन्होंने एक दूसरी बड़ी सुन्दर उपमा दी थी। उन्होंने इसकी मिसाल ताली से दी थी। कभी-कभी ताली बजाने में ऐसा होता है कि एक हाथ दूसरे पर जोर से पड़ जाता है। दोनों हाथ आपस में मिलना चाहते हैं, पर मिलने से पहले आपस में टकराते हैं।

विनोबाजी यह भी कहते हैं कि "संपर्क के कारण अगर क्षोभ पैदा हो, तो उसमे शीत युद्ध, 'कोल्ड वार' होगा। इसे खतरा समझना चाहिए। इसलिए सम्पर्क मीठा होना चाहिए। यह समझना चाहिए कि संबंध मीठा बनाना है। इसके मानी यह भी नहीं कि जो दावे हैं, उन्हें हम छोड़ दें, मैं यह नहीं कहता। सही दावे हों तो वे माँगें।"

लेकिन, मान लीजिये, चीन हमारे सही दावे को भी मंजूर नहीं करता और मुकाबले की नौबत आ ही जाती है, उस समय मुकाबला हम किस तरह करेंगे ?

बाबा के शब्दों में—"लड़ना ही हमको है, तो कैसे लड़ेंगे ? सिर्फ थोड़ी सी फौजें नहीं लड़ेंगी। आज लड़ाई जब होती है, जब कुछ या कुछ राष्ट्र एक तरफ और दूसरी तरफ दूसरे राष्ट्र की कुछ शक्ति। लड़ना है तो नागरिकों की शक्ति से लड़ना होगा।"

नागरिकों में वह शक्ति पैदा कैसे होगी ? उसके लिए बाबा एक चौमुखी प्रोग्राम देश के सामने पेश करते हैं.

पहली बात—"लड़ने के लिए कठोरता, बहादुरी और हिम्मत होनी चाहिए। मृदु जीवन से लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। आरामतलबी छोड़नी होगी। आरामतलब लोग लड़ाई में टिक नहीं सकते। इसलिए आराम-तलबी की पढ़ाई भी दूर होनी चाहिए। माता पिता के सौ डेढ़ सौ रुपये माहवार खर्च करके पढ़ने वाले आरामतलब बनते हैं; उनसे क्या उम्मीद की जा सकती है ? मशक्कत (कठिनाई) बर्दाश्त करने का प्रयोग करना होगा और इन्द्रियों पर जब्त (संयम) रखना होगा। ऐसा देश बनेगा, तो गाँव-गाँव मुकाबला करेगा। हिम्मत तो ऐसी होनी चाहिए कि केवल फौजें ही नहीं, गाँव-गाँव में लोग लाठियों से लड़ेंगे।"

दूसरी बात—"गाँव-गाँव को अपने पाँव पर खड़ा करना होगा। जब गाँवों को संभाल नहीं पायेंगे, तो लड़ेंगे कैसे ? आज हर साल सौ करोड़ का अनाज बाहर से मँगाना पड़ता है। लड़ाई के दिनों में यह आशा नहीं रख सकते कि यह अनाज मिलता रहेगा। इस वास्ते अनाज सिर्फ पूरा ही नहीं होना चाहिए, बल्कि साल डेढ़ साल का अनाज स्टाक में भी रखना होगा। चीन अपनी जरूरत की कुछ चीजें पैदा करता है, बल्कि कुछ मात्रा में 'एक्सपोर्ट'—निर्यात—भी करता है। हिन्दुस्तान भी वह कर सकता है; पर उसके लिए कोशिश करनी होगी।

"पैदावार बढ़ाओ, यह पाँच साला योजना नहीं बोल रही है, उपनिषद् कह रहा है। बाँध, कुआँ, तालाब, नहर—जिस किसी साधन से भी अन्न की पैदावार बढ़ती हो, बढ़ाइये; बाबा को कोई एतराज़ नहीं। उपनिषद् कहता है कि जिस किसी विधि से अनाज बढ़ता हो बढ़ाओ। अगर हमको लड़ाई में जाना है, तो अन्न पैदा करना ही होगा। लड़ाई छिड़ती है, तो बड़े मुल्क को उतने ही पैमाने पर प्रबन्ध करना पड़ता है। मैं कहता हूँ कि हमें पहले गाँव का प्रबन्ध करना होगा। गाँव में पाँच किस्म के जो लोग हों—बीमार, बूढ़े, बच्चे बेवाएँ और बेकार—इन सबकी जिम्मेदारी गाँव-समाज को उठानी है। इस वास्ते हम चाहते हैं कि गाँव गाँव स्वराज्य पहुँच जाय, ग्राम-स्वराज्य हो। यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

"अगर लड़ाई लड़नी है, तब भी ग्राम-स्वराज्य करना होगा, और अगर लड़ाई टालनी है, तब भी ग्राम-स्वराज्य चाहिए। क्योंकि जब आपमें ताकत होगी, तभी गाँव अपने पाँव पर खड़े होंगे, तब किसी की भी हिम्मत नहीं जो टेढ़ी आँख भी हम पर उठा सके; ऐसी हिम्मत ही नहीं होगी उसे !"

तीसरा काम—"हमें यह करना होगा कि आत्मरक्षा के लिए हर जगह शांति सैनिक रखने होंगे, शांति सेना खड़ी करनी होगी। हर जगह हम खड़े होंगे। दुश्मन आयेगा तो हम बता देंगे कि हम समर्पण करना नहीं जानते। बाबा डेढ़-दो साल से इस बात को कह रहा था, पर लोग ध्यान नहीं दे रहे थे, तब लगता है, भगवान ने बाबा के काम की मदद की है। अब लोगों को सोचना पड़ रहा है। दुश्मन के साथ आप लाठी से भी लड़ सकते हैं, बाबा को एतराज़ नहीं। पर सामने वाला लाठी लेकर नहीं, दूसरी चीजें लेकर आयेगा, तो उसके सामने सहयोग न करने का, 'नान कोआपरेशन' का तरीका ही चल सकता है—हम समर्पण नहीं करेंगे, नष्ट कर जाइये, गाँव के गाँव को तबाह कर दीजिये, तब आप सफल होंगे, अन्यथा नहीं।"

चौथा सवाल है कौमी एकता का—"लोग कहते हैं पंडित जी जोर से बोलना। पर पंडितजी जोर से बोलेंगे किस तरह ? क्या आप में, जनता में शक्ति है ? वह होगी तो निश्चित भाव से बात कर सकेंगे। लेकिन आज तो लोगों की शक्ति एक दूसरे की बुराई करने में, एक-दूसरे की काट करने में नष्ट होती है। नेता लोग एक-दूसरे की इज्जत गिराने का प्रयत्न करते हैं और ऊपर से कहते हैं कि मुसीबत और आक्रमण के समय हम सब एक हो जायेंगे। पर मैं पूछता हूँ, आपके एक होने के लिए क्या मुसीबत का आना जरूरी है ? क्या उसके बगैर हम एक नहीं हो सकते ? क्या हम यह कहेंगे कि आग जब लगेगी तभी कुआँ खोदेंगे ?"

और फिर बाबा कहते हैं—"हमें अपने सब मतभेदों को खतम करके एक होना होगा। 'कॉमन प्रोग्राम' पर काम करना होगा, चाहे भेद बने रहें—पर दो, हम सब एक हो चुके, दो नहीं रहे।"

इस तरह आज विनोबा न सिर्फ हिन्द चीन सीमा-विवाद का हल बता रहा है, बल्कि स्थायी संरक्षण का एक अचूक नुस्खा भी देश के सामने पेश कर रहा है। काश, हम, हमारा देश, इसे समझ सके, इस पर अमल कर सके !

•

अन्तरप्रान्तीय सम्पर्क योजना

"अन्तरप्रान्तीय सम्पर्क सम्बन्धी श्री अण्णासाहब का प्रस्ताव 'भूदान यज्ञ' में पढ़ा। यह अच्छा है कि अन्तरप्रान्तीय सम्पर्क बढ़े, हम एक-दूसरे के निकट आयें और आपसी सद्भावना में वृद्धि हो।

अन्तरप्रान्तीय तनाव सदा की नहीं, अपितु आज की समस्या है। प्रश्न यह उठता है कि जब यह तनाव नहीं था तब क्या लोग इस तरह योजनाबद्ध होकर एक दूसरे से मिलते थे ? वास्तव में ये समस्याएँ उठी नहीं, अपितु उठायी गयी हैं, और वह भी अपना राजनैतिक उल्लू सीधा करने के लिए ! तो फिर हम क्यों न मूलभूत कारण की ही चिकित्सा करें !

मेरी दृष्टि से यह तनाव तभी समाप्त हो सकता है, जब देशवासी यह समझने लग जायें कि यह सम्पूर्ण राष्ट्र और विश्व मात्र भी अपना ही है। भाषा, जाति, सम्प्रदाय आदि की विभिन्नता एक छोटी-सी दीवार मात्र है, जो हमारी सद्भावना से ऊँची कदापि नहीं है। और इसलिए हम जनता को राजनैतिक पचड़े से दूर वास्तविकता की जमीन पर लाने का प्रयास करें, जो अन्तरप्रान्तीय सम्पर्क की भारी भरकम योजना से नहीं, अपितु उन्हें सच्चे आलोक का दर्शन कराने से होगा, जो सर्वोदय कार्यकर्ता ग्राम सेवा के सच्चे स्वरूप द्वारा कर सकते हैं।"

सेवरही, देवरिया —डॉ. भोलानाथ द्विवेदी

•

विनोबा के साथ

[गतांक से समाप्त]

चुनीभाई

५१ जिलों के उत्तर प्रदेश की आबादी करीब ७ करोड़ है। विनोबा के शब्दों में 'सब प्रकार से वह एक राष्ट्र की योग्यता रखता है। चूँकि सरकार ने उसका एक प्रान्त मान रखा है, हमने भी उसको एक प्रान्त मान लिया।' लेकिन इतने बड़े प्रांत में काम करने के लिए एक ही सर्वोदय-मंडल में ५-७ आदमियों की समिति नाकाफी है, ऐसा विनोबा का स्पष्ट अभिप्राय है। बागपत में उन्होंने कहा, "इतने बड़े प्रान्त के लोक-क्रान्ति के कार्य के लिए ५-७ या १० मनुष्यों की समिति हो, इसके माने यह हुआ कि या तो उसमें जितने लोग हैं, वे ऐसे नेता हैं कि जिनके शब्दों का वजन आम जनता पर है; या तो वह एक मिथ्या अहंकार मात्र है। लोकक्रांति करने के लिए लोक हृदय में प्रवेश करना जरूरी है।" जिन्होंने इस प्रकार लोक-हृदय में प्रवेश करके लोकक्रान्ति की, उनके उदाहरण उन्होंने दिये. 'ईसा मसीह इजराइल के जिस प्रदेश में घूमे वह मुश्किल से हिंदुस्तान के तीन-चार जिलों के बराबर होगा। गौतम बुद्ध भी गया से लेकर इधर बस्ती तक करीब सात-आठ जिलों में पैंतीस साल तक घूमते रहे, तब जाकर लोक हृदय में उनका प्रवेश हुआ।'

इस प्रकार जब कभी विनोबा गहराई में चले जाते हैं, तब वही गंगोत्री के मूल स्रोत में पहुँच जाते हैं, एक गोता, और क्षण भर में उनकी आवाज स्फूर्ति से भर जाती है, वाणी में उत्साह भर आता है और सुनने वालों को भी पल भर उस गंगोत्री के दर्शन होकर उस स्फूर्ति का स्पर्श भी होता है।

उन्होंने कहा, "आज के जमाने में हमारे पास विज्ञान के कारण व्यापक प्रचार के लिए बहुत साधन उपलब्ध हैं और कार्यकर्ताओं की संख्या भी काफी बड़ी है।" 'लेकिन लोक हृदय के स्पर्श के लिए जो अंतःगुण चाहिए, उसके अभाव में संख्या या साधन से काम नहीं बनेगा। भारत में सिकंदर से लेकर अनेक राजनीतिक और धार्मिक ताकत की विनाशकारी शक्तियाँ आयीं और गयीं, फिर भी भारत क्यों टिका हुआ है?"

आगे उन्होंने कहा, "इस लिहाज से जब मैं सोचता हूँ, तब एक ही आशा दीख पड़ती है। भारत के हृदय में, वातावरण में एक ऐसा अंत प्रवाह बह रहा है, जो इन सब विनाशकारी शक्तियों के आक्रमण के बावजूद टिक रहा है। उसको कोई छू नहीं रहा है, उसकी पकड़ अगर मिल जाय तो काम बन जायगा। उस गहराई में गये बगैर सर्वोदय का काम होनेवाला नहीं है।"

एक दिन उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं के बीच बोलते हुए कहा: "हम लोगों के चित्त-तंत्र जड़ हो गये हैं। कितनी अद्भुत घटनाएँ एक के बाद एक घटती जाती हैं, फिर भी हमारे दिमाग पर उनका असर नहीं होता है। देशव्यापी भूदान समितियों को तोड़ने की घटना दुनिया के इतिहास की बड़ी घटना मानी जा सकती है। येलवाल की परिषद् एक ऐसी ही बड़ी घटना थी। पंडित नेहरू ने आसाम में कहा कि हमारा देश एक अद्भुत देश है और उसमें कई प्रकार की घटनाएँ घटती रहती हैं। अभी मैं एक विचित्र सम्मेलन में से आ रहा हूँ कि जिसमें सभी पक्षों के लोग मिले थे। लेकिन उसका भी महत्त्व हमने नहीं पहचाना। उसके बाद सरकार ने सर्व सेवा संघ को बुला कर उससे चाहा कि कम्युनिटी प्रोजेक्ट के देशव्यापी काम में हर स्तर पर सर्व सेवा संघ सरकार से सहयोग करे, उसके शिविरों में हम लोग जायें और वे लोग हमारे साहित्य का प्रचार करेंगे। इतनी बड़ी सरकार और वह एक देशव्यापी काम के लिए हमारा सहयोग माँगे, यह कितनी अद्भुत घटना थी! सम्मेलन में मैं गैरहाजिर रहा, फिर भी वह इतने सुंदर ढंग से सम्पन्न हुआ। बीस साल से जो काम कर रहा है और जिसके काम का व्याप इतना बड़ा हो चुका है, ऐसा तालीमी संघ एक प्रस्ताव करके सर्व सेवा संघ में विलीन हो जाता है। सर्व सेवा संघ एक प्रस्ताव करता है कि हमारे हर काम को नई तालीम का रंग देंगे। क्या इसका अर्थ समझते हैं आप? उसके बाद चाहिए था कि हम लोग गाँव गाँव चले जाते और लोगों को यह प्रस्ताव सुना कर उसका अर्थ समझाते। हमारे दफ्तर में कार्यकर्ता ८ घंटा काम करते हैं, तो हमें चाहिए था कि वह काम ७ घंटे का कर दें और १ घंटा कार्यकर्ताओं के अध्ययन में लगाया जाय। उसके लिए व्यवस्था की जाय, लेकिन एक के बाद एक ऐसे अद्भुत प्रस्ताव हम करते चले जाते हैं और उसका महत्त्व भी हम नहीं समझते। जनाधार का प्रस्ताव, लोकाधार का प्रस्ताव! आप समझते हैं कि इसका अर्थ क्या है? हमें एक करोड़ घरों में प्रवेश करना है। अगर मैं इन प्रस्तावों के बारे में लिखने बैठूं तो ऐसा महाकाव्य होगा, जो कि आने वाली पीढ़ियाँ बड़े चाव से पढ़ेंगी।"

कश्मीर से बाबा ने एक बात पर जोर देना शुरू किया है। और इस विषय में दिन-ब-दिन उनकी तीव्रता बढ़ती जा रही है: "अब सियासत और मजहबों के दिन लद गये! उनको तोड़ना होगा।" कश्मीर में एक बहुत बड़ी सभा में उन्होंने कह दिया था कि किसी भी ग्रंथ को हम पूरा का पूरा प्रमाण मानने को राजी नहीं हैं। उसमें जो अच्छा अंश होगा सो हम लेंगे। उनके इस कथन पर साथी लोग घबड़ाते थे कि आपने यहाँ यह क्या कह दिया! लेकिन बाबा के मुख से युग बोल रहा है और उसी का बल है, जो कि उनके लिए रास्ता खोल देता है। कश्मीर के भाइयों ने उनकी बात को 'एप्रिशिएट' किया, उसकी कद्र की। मेरठ में बोलते हुए उन्होंने अपनी तीव्रता प्रकट की। उन्होंने कहा, "एक जमाने में इस सियासत और यह मजहब ने जोड़ने का काम जरूर किया था, लेकिन आज वे तोड़ने का काम कर रहे हैं, इसलिए उनको तोड़ना होगा, उस काम में शहीद होना पड़े, तो मैं उसके लिए भी तैयार हूँ।" और विचारक क्षेत्र में उनके इस विचार ने 'एवरेस्ट' लाँघ लिया है। पंडित नेहरू ने बाबा के ये विचार पढ़े थे और उसका जिक्र दिल्ली की एक सभा में करते हुए उन्होंने बताया कि 'विनोबा के ये विचार बिलकुल ठीक हैं, आगे आने वाले जमाने में यह पुरानी सियासत और ये मजहब नहीं टिकेंगे।'

लेकिन इन बातों में से बाबा की गहराई का थाह नहीं चलता है। एक ओजस्वी वक्ता अपने अत्यंत प्रभावशाली वक्तृत्व से और अकाट्य तर्क से श्रोताओं को स्तब्ध करता हुआ, ऊँचा उठता दिखाई देता है। लेकिन वह उनकी सच्ची पहचान नहीं है। तत्त्वज्ञान, अध्यात्म और भक्ति की बातों में उनकी गहराई की कुछ झलक दिखाई देती है। पंद्रह दिन के छोटे से 'पिरियड'-समय में भी कम-से-कम ५-७ बार उनका इस प्रकार का परिचय मिला। यहाँ एकाध का जिक्र संक्षेप में करूँगा।

एक दिन उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं के बीच बोलते हुए उन्होंने कहा: "एक आध्यात्मिक विचार है कि मनुष्य के संकल्प से कुछ होता नहीं है। उसके साथ जब ईश्वरीय संकल्प जुड़ जाता है, तभी काम बनता है और तभी क्रांति हो सकती है। वह ईश्वरीय संकल्प उस व्यक्ति के साथ जुड़ कर काम करता है, उससे अपना काम निकाल लेता है। लेकिन वह हमेशा के लिए उसके साथ जुड़ा हुआ रहता है, ऐसा नहीं है। परशुराम भगवान एक अवतार ही थे। ईश्वरीय संकल्प जहाँ तक उनमें जुड़ा रहा, उनका काम बनता रहा। लेकिन उनकी जिंदगी के पिछले दिनों में वह ईश्वरीय संकल्प उनके साथ नहीं रहा था। वह संकल्प उनसे निकल कर राम के साथ जुड़ गया है, वह भी वे पहचान नहीं पाये और उन्होंने राम का विरोध भी किया। लेकिन जब उन्होंने राम का पराक्रम देखा तब वे शांत हुए। मैं मानता हूँ कि राम के साथ भी ईश्वरीय संकल्प बचपन से लेकर रावण-वध तक था, बाकी का उनका जीवन एक व्यक्ति राम का था। अर्जुन के साथ भी ईश्वर संकल्प युद्ध जीतने तक था। उसके बाद वही अर्जुन, वही धनुष्य और वही बाण रहते हुए हिरसार के लोगों ने उसको पीटा और लूटा।

"ईश्वरीय संकल्प साथ होता है, तब तक शब्द में शक्ति रहती है। शब्द की शक्ति दो प्रकार की होती है। शब्द की एक शक्ति है, लोक हृदय में विश्वास पैदा करने की। लोक हृदय में श्रद्धा हो कि जो शब्द बोला गया है, उसमें और बोलने वाले की मानसिक भावना के बीच अंतर नहीं है, जैसा मन में है ठीक वैसा ही बोला गया है। गांधीजी के पहले राजनीतिज्ञों के बारे में जनता को इस प्रकार का विश्वास नहीं था। जनता समझती थी कि इन लोगों के दिल में एक बात होती है और बाहर कानून से बचने के लिए कुछ और बोलते हैं। आरंभ में गांधीजी के बारे में भी लोगों की यही मान्यता रही और हम लोग जनता को समझाने जाते थे, तो लोग उलटा हमही को समझाते थे कि 'युधिष्ठिर क्या कहता है, उसका अर्थ भीम समझता है।' यानी युधिष्ठिर के शब्दों का रहस्य भीम ही जानता है। और समझते थे कि गांधी ऊपर ऊपर से कुछ भी कहे, अहिंसा की बात करता रहे, लेकिन अगर हम कुछ दंगा करके आयेंगे तो वे खुश ही होंगे और लोगों ने दंगा किया भी। लेकिन जब-जब भी ऐसा हुआ गांधीजी ने उपवास किये, खुद को कष्ट दिया, सत्याग्रह रोक दिया और इस प्रकार उन्होंने प्रतिष्ठा कायम की।

"शब्द की दूसरी शक्ति है प्रेरणा-शक्ति। मनुष्य बोलता है और उसके शब्दों से प्रेरणा पाकर हजारों लोग काम में जुट जाते हैं। उसके शब्दों से वे प्रेरित होते हैं, काम में लगते हैं और एक युग कार्य का निर्माण होता है।"

लेकिन भक्ति की बात आती है तब बाबा की गहराई की झलक दिखाई देती है। रामनवमी के दिन का उनका वह भाषण भी ऐसा ही था। भक्ति आँसू बन कर श्रोताओं के हृदयों को पखारती हुई बही। उसका स्पर्श वहाँ बैठे हरएक को हुआ कि एक विशेष दुनिया में जाकर हम लौटे हैं।

और यही है वह गंगोत्री, जहाँ से वह भूदान गंगा निकलती है और बहती है। गंगोत्री अपने हिमालय में ही रह कर जीवन की सार्थकता पा नहीं सकती थी, इसलिए निकल पड़ी जनपदों को सींचने और बन गयी पतित पावनी।

वारसलीगंज में सघन योजना

बिहार प्रान्त के वारसलीगंज क्षेत्र में समग्र आधार पर विकास-कार्य सम्पन्न किया जा रहा है। इसका निर्णय ग्रामनिर्माण मण्डल, खादी-ग्रामोद्योग समिति, गया ने एक प्रस्ताव पारित कर ४ जून, सन् १९५९ को ही लिया, परन्तु कई कारणों से इस उद्देश्य की दिशा में काम का स्थूल रूप में आरम्भ १५ अक्टूबर, सन् १९५९ को अंबर चरखा-परिश्रमालय के उद्घाटन द्वारा हुआ। इसके पहले विचार-प्रचार तथा लोकसम्मति प्राप्त करने की दिशा में काम हुआ। शुरू में कुछ अधिक समय काम की भूमिका लोगों को बतलाने और इस क्षेत्र की बाह्य परिस्थिति की जानकारी प्राप्त करने में गया।

साधनाभाव के कारण जनवरी, १९६० तक नौ गाँवों में अंबर चरखों के कुल २०० परिश्रमालय चल रहे थे। शीघ्र ही यहाँ करीब ४०० परिश्रमालय हो जायेंगे। योजना यह है कि तीन वर्ष में साढ़े दस हजार परिश्रमालय चलाकर इस क्षेत्र के प्रत्येक गाँव के हर घर में अम्बर चरखा पहुँचा दिया जाये।

ग्रामोदय-समितियाँ

इस तरह के काम के पहले इस क्षेत्र में खादी ग्रामोद्योग के काम का एक मुख्य केन्द्र वारसलीगंज में और दूसरा उसीका उपकेन्द्र चालकोचा में था। काम के फैलाव की दृष्टि से दूसर और तीन उपकेन्द्र खोले गये हैं तथा दो उपकेन्द्र शीघ्र ही खोलने की योजना है, ताकि इन उपकेन्द्रों के मार्फत उन गाँवों में, जो उपकेन्द्र से सम्बंधित होंगे, ग्राम-स्वराज्य की भूमिका में विकेन्द्रित खादी-निर्माण तथा अन्य ग्रामोद्योगी वस्तुओं का निर्माण होगा। साथ ही इन उपकेन्द्रों के मार्फत यह भी प्रयत्न होगा कि जितने भी गाँवों में काम होता है, उन सभी में ग्रामोदय समितियों का निर्माण हो और उन ग्राम निर्माण समितियों को इतनी तालीम—'टेक्निकल और वैचारिक'—दे दी जाये कि वे उन गाँवों में खादी निर्माण, ग्रामोद्योगी वस्तुओं का निर्माण तथा उनका विनियोग एवं गाँव के अन्य प्रकार के व्यापार—जिससे गाँव के समाज का शोषण न हो—का काम उठायें। बाद में सहयोगी खेती, तालीम आदि कामों का सम्पादन कर सकें। इन उपकेन्द्रों की पूरी सफलता तब मानी जायेगी, जब सम्बंधित सब गाँव अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं के विचार से स्वावलम्बी हो जायें और उन गाँवों के हर व्यक्ति को अपना सम्पूर्ण विकास करने का अवसर ग्राम-समाज की ओर से हो।

खादी-उत्पादन में कुछ प्रगति हुई है। अक्टूबर सन् १९५८ से जनवरी १९५९ के बीच, जहाँ २९,१२८ रु० की खादी का उत्पादन हुआ था, वहाँ सन् १९५९-६० की इसी अवधि में ३१,६१० रु० की खादी का उत्पादन हुआ। सूत का उत्पादन इसी अवधि में १०० प्रतिशत से भी अधिक बढ़ गया। वह १८,४७५ रु० से बढ़कर २८,०११ रु० हो गया। खादी की बिक्री ५०,२७० रु० से बढ़कर ५२,९८४ रु० हो गयी।

खादी-बुनाई

इस क्षेत्र में बुनकर-परिवार ३०० हैं, जिनमें ३० परिवार खादी की बुनाई करते हैं, २० परिवार मिल-सूत की बुनाई और २५० परिवारों ने अपना बुनने का धन्धा छोड़ दिया है और वे दूसरे काम में लगे हैं। इस सघन योजना के मार्फत यह प्रयत्न किया जा रहा है कि सभी बुनकर, जिन्होंने अपना धन्धा छोड़ दिया है, वे पुनः अपने धन्धे पर लौट आयें और जो मिल-सूत से कपड़े की बुनाई करते हैं, वे भी शुद्ध खादी की बुनाई करें।

यहाँ पहले से काम होता है, उसमें धोती, साड़ी, गमछा, बिछावन के चादर की बुनाई होती है। यह भी प्रयास हो रहा है कि ग्रामीण तथा शहरी लोगों की माँग के अनुसार चेक, डोरिया, दो सूती चादर तथा मसलिन सूत की भी बुनाई हो। इस काम के लिए खादी-ग्रामोद्योग-कमीशन से एक बुनाई निरीक्षक प्राप्त हुआ है। वे खुद भी बुनाई के काम में निष्णात हैं। उन्होंने बुनकरों से सम्बन्ध स्थापित किया है और उन लोगों को नये डिजाइन के कपड़े तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया है। साथ ही साथ इसके लिए करघों में आवश्यक सुधार की भी व्यवस्था की है।

नये बुनकरों का निर्माण

प्रत्येक गाँव के वस्त्र-स्वावलम्बन के विचार से यह आवश्यक है कि उन गाँवों में बुनकरों का निर्माण हो, इस सिलसिले में गाँव-गाँव घूम-घूम कर ग्रामस्वराज्य करवाने का अभियान चल रहा है। ग्राम स्वराज्यी गाँवों में अम्बर-परिश्रमालय चलवाने के साथ ही उन गाँवों के लोग बुनाई का भी प्रशिक्षण प्राप्त करें, ऐसी योजना है।

ग्रामस्वावलम्बी संकल्पी गाँवों के २,५०० की आबादी पर समग्र ग्राम-विकास के काम की दृष्टि से एक कार्यकर्ता बैठाने की योजना खादी ग्रामोद्योग कमीशन की है। इस काम के लिए क्षेत्रीय अनुभव प्राप्त करने के लिए दो कार्यकर्ता कमीशन की ओर से यहाँ आये हैं। उनके क्षेत्रीय अनुभव की अवधि पूरी हो गयी है। अब वे लोग अलग-अलग ढाई हजार की आबादी वाले के गाँवों में समग्र निर्माण के लिए कार्य करेंगे।

विनोबाजी से एक भेंट

देवेन्द्रकुमार गुप्ता

मेरठ से दस मील दूर मवाना-के-रास्ते के पास २०० घरों का एक छोटा-सा गाँव है—फफिंडा। ता० ११ अप्रैल को यहाँ विनोबाजी का पड़ाव था। उस दिन उनके पास पहुँचने का सौभाग्य मिला। इन्दौर के बारे में बाबा के मन में बड़ी उम्मीद और आकर्षण है। उन्होंने कहा कि मेरे वहाँ (इन्दौर) आने से पहले कम-से-कम पूरे समय के कार्यकर्ता शांति सैनिक के रूप में नगर के लिए मिल जाने चाहिए तथा उनकी आर्थिक व्यवस्था भी नागरिकों को उठा लेनी चाहिए। मध्यप्रदेश का नक्शा लेकर उन्होंने भली भाँति समझा और बोले-'यह नगर देश के मध्य भाग में स्थित है और हर दिशा से लोग आसानी से वहाँ पहुँच सकते हैं—रेल, मोटर, विमान सभी के मार्ग पर स्थित है।'

बाबा ने कहा—'इन्दौर नगर में भी राजनीतिक और दूसरे झगड़े होते रहते हैं, परन्तु इसी आबादी के दूसरे शहरों की अपेक्षा वह शांत है। यदि प्रेम की शक्ति वहाँ लगेगी तो अवश्य वहाँ की संस्थाओं पर सर्वोदय का विचार हावी होगा। नगर हमारे स्वाभाविक केन्द्र हैं, नर्व सेन्टर्स हैं। उनमें शांत और प्रेम का वातावरण बनेगा, तो सब ओर उसका असर होगा।'

मैंने जब पूछा कि हम लोग किस प्रकार का काम नगर में करें, तो उन्होंने बतलाया कि 'विश्वमित्र' बनो। कार्यकर्ताओं को क्षेत्र बाँट कर परिवारों से सम्पर्क बढ़ाना चाहिए। लोगों का समय देख कर उनसे विचार-विनिमय करना चाहिए, मित्रता बढ़ाना चाहिए। उनके सुख दुःख को समझ कर उसमें भाग लेना चाहिए। धीरे धीरे सर्वोदय का साहित्य उनके घरों में पहुँचेगा, सर्वोदय पात्र या सम्पत्तिदान के रूप में धन का अविरत योग इस अहिंसक आन्दोलन के लिए मिलने लगेगा। फिर 'सर्वोदय मित्र' के नाते कुछ लोग सत्य, प्रेम और करुणा के सामाजिक कामों में भाग भी लेंगे। हम स्वयं राजनीति में भाग नहीं लेंगे, पर हमारे कार्य के कारण हमारी बात का प्रभाव राजनीति पर पड़ेगा। इसी में से रास्ता निकलेगा।

उन्होंने बतलाया कि आज हमारे देश में चीन की ओर से आक्रमण की-सी स्थिति का आभास हो लोगों को हिंसा का सहारा लेने को प्रवृत्त कर रहा है। धीरे-धीरे स्कूलों के बच्चों को अनिवार्य फौजी शिक्षण की भी माँग करेंगे। हिंसा का मनोविज्ञान इतना फैल जायगा कि हमारी बात सुनने को भी लोग राजी नहीं होंगे। आज हमारे पास समय है। लोगों में अहिंसा की शक्ति का भान करा सकते हैं। आतंरिक मामलों को प्रेम से हल करने की कीमिया हमें निकालना है। शांति-सेना का नाम का काम उसीका अंग है। अच्छी से-अच्छी शक्तियाँ इसमें लगनी चाहिए, अन्यथा जमाना हमें माफ नहीं करेगा।

इन्दौर के काम के लिए समाचार-पत्र और साहित्यिकों का योग भी बहुत आवश्यक है। 'भूमिक्रांति' साप्ताहिक के कम-से-कम तीन हजार ग्राहक मेरे आने से पहले हो जाने चाहिए। साहित्यिकों का उसमें पूरा योग हो।

विनोबाजी ने इन्दौर के नगर क्षेत्र के अलावा महेश्वर के ग्राम क्षेत्र के बारे में भी पूरी जानकारी ली और बतलाया-वहाँ गाँववालों को समझाने का काम हमारा रहेगा कि बेकार, बीमार, बुड्ढे, बच्चे और बेघर, इन पाँच बकों का जिम्मा केवल परिवारवाले नहीं—गाँव भर को उठाना चाहिए। वहाँ भी कार्यकर्ताओं को प्रेम बनाना होगा।

विनोबाजी इन्दौर आने के बाद कार्यकर्ताओं को प्रत्यक्ष मार्गदर्शन देंगे, परन्तु उनके आने के पहले निम्न चार काम तो हमें कर ही लेने चाहिए।

(१) २५-३० पूरे समय के शांति-सैनिक इन्दौर नगर में लग जायँ।

(२) आन्दोलन के लिए आवश्यक धन संचय हो जाय।

(३) 'भूमिक्रांति' साप्ताहिक के कम से कम तीन हजार ग्राहक बन जाय।

(४) इन्दौर और महेश्वर के दोनों क्षेत्रों में हर परिवार के पास पहुँच कर सर्वोदय की भूमिका पहुँचा दी जाय।

यदि इतना काम हुआ तो बाबा से मार्गदर्शन प्राप्त करने के हम हकदार होंगे। अन्यथा उनके ही शब्दों में—'यदि यहाँ काम नहीं हुआ तो मैं सौ की रफ्तार जाने वाला बाऊँगा।'

लघु सरंजाम

एक लघु सरंजाम-केन्द्र की शुरुआत १ फरवरी को कर दी गयी। जिसका इस सरंजाम केन्द्र के मार्फत क्षेत्रीय चरखों के पुर्जों की माँग की पूर्ति के साथ १० हेतु अम्बर चरखों का उत्पादन करने की योजना है।

इस सघन क्षेत्र के अन्तर्गत अधुआरी ग्राम में ११ जनवरी से ९ फरवरी तक गया जिले के अम्बर कार्यकर्ताओं का एक शिविर हुआ था, जिसमें अम्बर चरखे के कच्ची कताई में जो हाल में सुधार हुए हैं, उन सारी प्रक्रियाओं को कार्यकर्ताओं को बतलाया गया है। इस शिविर की समाप्ति के बाद वे कार्यकर्ता अपने क्षेत्र के कत्तिनों का शिविर करके, कत्तिनों को प्रशिक्षित कर रहे हैं।

—कर्मवीर

तेनाली में सर्वोदय-पात्र

सर्वोदय-पात्र के कार्य की प्रेरणा और अनुभव

[२९ अप्रैल के अंक से समाप्त]

सूत कातने वाली कत्तिनों की गुण्डियाँ खादी भंडार में देकर उनके बदले रुई, पूनी या कपड़ा ला देना, चरखों और अंबर चरखों की मरम्मत करना, कातना सिखाना, रात्रि-पाठशालाएँ चलाना, गरीब बच्चों का नहला-धुला कर साफ रखने की कोशिश करना, कपड़े की सिलाई और कसीदा काढ़ने का काम बहनों को सिखाना, सामूहिक उत्सवों तथा मेलों के अवसर पर स्वयंसेवकों का काम करना आदि सेवा-कार्यों में हमारे सेवा-सैनिक भाग लिया करते हैं।

जब विविध सेवाकार्यों में सेवा सैनिक भाग लेने या शान्ति-कार्य करने जाते हैं, तब जनता द्वारा पहचानने के लिए शुरू में पीले कपड़े का चार इंच लंबा और दो इंच चौड़ा टुकड़ा कंधे पर पहनने का रिवाज चलाया गया, किन्तु इसके द्वारा दूर से सेवा सैनिकों को आसानी से पहचानना संभव नहीं हुआ। अतः तीन अंगुल चौड़ा और डेढ़ गज लंबा पीला कपड़ा 'बैज' के रूप में सिला कर बायें कंधे के ऊपर से दाहिने हाथ के नीचे तक पहनने की बात निश्चित हुई। इसके कारण दूर रहने पर भी आगे या पीछे से सेवा-सैनिकों को पहचानने में सुविधा हो गयी। इस 'बैज' के सामने के हिस्से पर पहाड़ों के बीच में से उगते हुए सूरज और पानी में विकसित होते कमल के चित्र का चिह्न अंकित किया हुआ कागज का एक टुकड़ा चिपकाया जाता है। इस निशान से सेवा-सैनिक का यह आदर्श व्यक्त होता है कि वह सूर्य के समान ज्ञान-प्रकाश से संपन्न तथा निरंतर सेवा कर्मरत हो और विकसित कमल की भाँति विकास-शीलता, निर्लिप्तता तथा स्वच्छता का प्रतीक बने।

तेनाली और आसपास के गांवों में ७५०० सर्वोदय पात्र हैं। यहाँ कुल ११ कार्यकर्ता काम करते हैं। ता० १ अप्रैल, ५९ से लेकर ता० १ मार्च, ६० तक सर्वोदय पात्रों के द्वारा वसूल किये चावल की कीमत ३४११० रुपये है। कार्यकर्ताओं की जीवन-भृति के निमित्त २०९४ रुपये देने के बाद बची हुई रकम फुटकर खर्च, मार्ग व्यय, सर्वोदय पात्रों की तैयारी, कार्यालय-व्यवस्था इत्यादि के लिए खर्च हुई।

सेवा-सैनिकों ने १२० किसान चरखे चालू करवाये, २० लोगों को अंबर चरखा कातना सिखाया और छह तकुओं से चलने वाले चार अंबर चरखों का सफल प्रयोग किया। इन कार्यकर्ताओं के द्वारा एक मुहल्ले में रात्रि पाठशाला चला कर शिक्षा सीखने वाले २० लोगों को तेलुगु पढ़ने लिखने का साधारण ज्ञान दिया गया। दूसरे एक मुहल्ले में अब एक रात्रि पाठशाला चलायी जा रही है, जिसमें २५ लोग शिक्षा पा रहे हैं। संस्कृत पाठशाला चला कर २० लड़के-लड़कियों को संस्कृत की प्रारंभिक शिक्षा दी गयी। तेनाली में दो जगहों पर और पास के दो गाँव में ७० लड़के लड़कियों को हिन्दी सिखाने की व्यवस्था हुई और वे द० भा० हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। एक जगह पर ३० महिलाओं को सिलाई का काम सिखाया जा रहा है। अंबर चरखे के काम में निपुण दो बहनें हरएक मुहल्ले में जाकर अंबर चरखों की मरम्मत का काम करती हैं। ये सेवा-सैनिक भूले-भटके बच्चों को अपने घर पहुंचाना, अनाथ रोगियों की सेवा करना आदि काम करते हैं। तेनाली में होने वाले उत्सवों में आस-पास के गाँवों से लगभग एक लाख जनता एकत्रित होती है, जिसको क्रम से बिठाने और दूसरे प्रकार की आवश्यक सेवाएँ करने के लिए सेवा-सैनिक तत्पर रहते हैं। अब तक कई बार इन सैनिकों ने ऐसी सेवाएँ की हैं।

पेदरावूरु में घर घर किसान-चरखे रखवाने और खादी का प्रचार करने का अथक परिश्रम किया जा रहा है। जब गत वर्ष यहाँ अग्निकाण्ड हुआ, तब सेवा-सैनिकों ने अपनी जान पर खेल कर उसको बुझाने में बड़ी मदद पहुँचायी।

दुग्गिराला में १५ बहनों को सिलाई का काम सिखाया जाता है। ३५ लड़के-लड़कियों को तेलुगु की शिक्षा के साथ सर्वोदय विचार सिखाये जाते हैं।

विजयवाड़ा: इस शहर में अब कुल ५१०० सर्वोदय पात्र रखे गये हैं। १० कार्यकर्ता यहाँ काम कर रहे हैं। १ अप्रैल ५९ से ता० १ मार्च ६० तक सर्वोदय पात्रों से वसूल हुए कुल चावल की कीमत ७१५८ रुपये है। इसमें कार्यकर्ताओं की जीवन भृति के रूप में कुल ५१७४ रुपये खर्च हुए। बाकी रकम फुटकर खर्च, मार्ग-व्यय, सर्वोदय पात्रों की तैयारी, सिलाई की मशीन का दाम आदि के लिए खर्च हुई।

इस शहर के दो तीन विभागों में ५५ स्त्री-पुरुषों को हिंदी सिखाई जा रही है। शहर के सभी विभागों में कुल मिला कर १५१ लड़के लड़कियों को तेलुगु पढ़ना लिखना और सूत कातना सिखाया जा रहा है, जिनमें अधिकांश ऐसे हैं जो कोई-न कोई मजदूरी करके अपने माँ-बाप को मदद पहुँचा रहे हैं। एक मुहल्ले के एक स्थान में प्रायोगिक रूप में एक महाराज बना जाता है, जहाँ पर उस मुहल्ले के करीब ६० घरों के लड़के-लड़कियाँ हर हफ्ते में अपने घरों के सर्वोदय पात्रों का चावल मुट लाकर देते हैं। एक मुहल्ले में गरीब परिवारों के नंगे लड़के-लड़कियों को लाकर हर रोज नहलाया धुलाया जाता है और उनसे प्रार्थना करायी जाती है। उन लोगों को अंदर भरने की शिक्षा दी जाती है। नगर में एक महीने पहले ही महिलाओं के लिए एक सर्वोदय पुस्तकालय शुरू किया गया है। दो जगहों में सिलाई का काम सिखाने की व्यवस्था हुई। हर हफ्ते में अलग अलग मुहल्लों में प्रार्थना की बैठकें हुआ करती हैं, जिनमें स्थानीय प्रमुख व्यक्ति भी सम्मिलित होते रहते हैं। सामूहिक उत्सव, जुलूस आदि की भीड़ में इन सेवा सैनिकों के द्वारा शांति और सुरक्षा कायम रखने की चेष्टा की जाती है।

गुण्टूर: यहाँ अब कुल ४५०० सर्वोदय पात्र हैं और १० कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। श्री पुट्टा वराहय्या यहाँ के प्रधान कार्यकर्ता हैं। १ अप्रैल '५९ से ता० १ मार्च '६० तक सर्वोदय-पात्रों से जमा हुए चावल की कुल कीमत ६६१२ रुपये मिली। इसमें कार्यकर्ताओं की जीवन भृति के निमित्त ५३८२ रुपये खर्च हुए और बाकी रकम फुटकर खर्च, मार्गव्यय, सर्वोदय पात्रों की तैयारी, मशीन की खरीदी में खर्च हुई।

इस शहर के एक विभाग में सिलाई का काम सिखाने की व्यवस्था हुई, जहाँ २५ बहनें काम सीख रही हैं। यहाँ की हरिजन बस्ती में २० गरीब बालक बालिकाओं को पढ़ाने का इन्तजाम हुआ। इन बच्चों को हफ्ते में एक दफे नहला कर साबुन, तेल आदि देने का प्रबन्ध भी किया गया। एक मुहल्ले में रात्रि-पाठशाला चला कर शिक्षा सीखने वाले २० व्यक्तियों को तेलुगु पढ़ायी जाती है। आस पास के गाँवों से यहाँ के जनरल हास्पिटल में इलाज पाने के लिए आने वाले गरीब मरीजों को ले जाकर उनकी चिकित्सा के लिए जरूरी इन्तजाम कर पाने में सहायक होते हैं। गुंटूर में हर साल "रामकोटि" के जो उत्सव बड़े धूम-धाम से पाँच दिन तक मनाये जाते हैं उस समय इन सेवासैनिकों द्वारा वहाँ आने वाले हजारों लोगों को ठीक तरह से बिठाना, खोये हुए बच्चों को माँ-बापों के पास पहुँचाना, उस तीर्थक्षेत्र की सफाई का काम करना आदि सेवाएँ की जाती हैं, जिनके कारण यहाँ के कार्यकर्ता स्थानीय लोगों की प्रशंसा के पात्र बने हैं। गुंटूर से पाँच मील की दूरी पर "कारणि" नाम का जो प्रसिद्ध क्षेत्र है, उसके अधिकारियों का निमन्त्रण पाकर हर रविवार को ये सेवा सैनिक वहाँ जाते हैं और बाहर से आने वाले हजारों लोगों की सेवा करते हैं।

बापटला—यहाँ कुल १५७० सर्वोदय पात्र हैं और ९ कार्यकर्ता काम करते हैं। यहाँ ता० २०-९-१९५९ से ता० १-३-१९६० तक सर्वोदय-पात्रों से वसूल किये गये चावल की कीमत १८०० रु० मिली। इसमें कार्यकर्ताओं की जीवन भृति के लिए १०८१ रुपये खर्च हुए। बाकी रकम फुटकर, मार्गव्यय, सर्वोदय-पात्रों की तैयारी और सिलाई की मशीन को खरीदने में खर्च हुई। इस शहर में अम्बर और किसान चरखों का प्रचार चल रहा है। ९ बहनें सिलाई का काम और ५६ बालक बालिकाएँ हिन्दी सीख रही हैं। एक रात्रि-पाठशाला भी यहाँ चल रही है।

चिराला: यहाँ कुल ८०० सर्वोदय पात्र हैं और ४ कार्यकर्ता काम करते हैं।

ता० २४ दिसम्बर '५९ को ग्रामदान नवनिर्माण समिति के संयोजक श्री आर० के० पाटिल तेनाली पधारे, तब उपर्युक्त सारे केन्द्रों के सभी सेवा सैनिकों ने तेनाली से चार मील की दूरी पर स्थित कुरिंपालेम गाँव जाकर नहर के किनारे में पड़े हुए गड्ढों को पाटने का श्रमदान किया।

गत ८ फरवरी '६० से १२ फरवरी तक विजयवाड़ा में, जहाँ पवित्र कृष्णा नदी में गांधीजी की चिताभस्म का निमज्जन हुआ, सभी केन्द्रों के सेवा सैनिकों ने मिल कर, स्थानीय प्रमुख सज्जन तथा अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओं के सहयोग से गांधीजी की जयन्ती के उत्सव और सर्वोदय-मेले को बड़े उत्साह के साथ मनाया। इसी के उपलक्ष्य में एक मुहल्ले में लगभग दो फर्लांग की कच्ची सड़क बनाने का श्रमदान किया गया।

सेवा-सैनिकों के विविध सेवा कार्यों के अतिरिक्त डा० सूर्यनारायणजी भी भिन्न भिन्न गृहस्थों के पारिवारिक कलहों को मिटा कर उनके घरों में शांतिपूर्ण वातावरण को कायम रखने का प्रयास किया करते हैं।

पूज्य विनोबाजी के आशीर्वाद को संबल के रूप में पाकर तेनाली में सर्वोदय पात्र का जो कार्य प्रारम्भ हुआ, वह दिन दूना रात चौगुना होकर विशेष लोकप्रिय होता जा रहा है।

साहित्यकारों के सम्मेलन के अवसर पर जब डा० सूर्यनारायणजी अमृतसर गये, तब पूज्य विनोबाजी ने उन्हें यह आशीर्वाद दिया कि "तुम्हारा तेनाली, गुण्टूर और विजयवाड़ा का कार्य पूर्ण सफल होगा।" अतः हमारी आशा है कि हम उस महान सत्पुरुष की दिव्य वाणी को अवश्य कार्यान्वित कर पायेंगे और इसके लिए सारी जनता और सभी कार्यकर्ताओं का संपूर्ण सहयोग हमें उपलब्ध हो सकेगा।

यह है आपकी दुनिया

अखबारों में छपे एक समाचार के अनुसार दिल्ली के कालेजों की कुछ लड़कियाँ दिल्ली से १२ मील दूर बरवाला गाँव में समाज-सेवा शिविर के सिलसिले में गयी थीं। उन्होंने वहाँ देखा कि "बरवाला और दिल्ली में जमीन-आसमान का अन्तर है। गाँवों में चारों ओर गंदगी और कूड़ा-करकट है। मक्खियों के झुण्ड के झुण्ड घरों के आस-पास मँडरा रहे हैं। बीमारियाँ व्यापक रूप से फैली हुई हैं।"

कालेज में पढ़ने वाली हमारी बहनों को इस खोज के लिए दिल्ली से १२ मील दूर बरवाला में जाने की जरूरत नहीं थी। दिल्ली में ही अपने घरों, कालेजों और नयी दिल्ली की [illegible]निदार इमारतों की छाया में उन्हें [illegible] सब देखने को मिल सकता है। [illegible]ज के शहर गाँवों के शोषण पर [illegible] ही रहे हैं, पर शहरों में भी एक वर्ग [illegible] आलीशानवाली, उसके ऐश इशरत, उसकी सुख सुविधाएँ, उसकी प्रसन्नता और विलासिता, उसके नाचरंग और मनोरंजन, उसकी कला और साहित्य—ये सब उसी शहर में रहने वाले दूसरे लोगों की मेहनत-मशक्कत, उनकी गरीबी और भुखमरी, उनके रोग और गन्दगी, उनकी अज्ञानता और जहालत, उनके खून और पसीने के आधार पर कायम है।

दिल्ली के 'मिरांडा हाउस', 'लेडी इरविन कालेज' और 'इन्द्रप्रस्थ कालेज' की उन छात्राओं को इस बात का बड़ा *ताज्जुब हुआ कि वे तो गाँव में सेवा* और सफाई के काम के लिए जाती हैं, पर गाँव के लोग इस बात का स्वागत नहीं करते। बल्कि उन लड़कियों का वहाँ जाना उन्हें कुछ बुरा मालूम होता है। अखबार में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, "एक नौजवान लड़की को इस बात की शिकायत थी कि गाँव की औरतें अपने खुद के घर की सफाई करने में भी उनके साथ सहयोग नहीं करतीं। ...सच तो यह है कि गाँवों में इस तरह की तमाम कल्याणकारी प्रवृत्तियों के प्रति अन्दर ही अन्दर एक विरोध-सा है। सामान्य तौर पर बच्चों में पोषण की कमी नजर आती थी। चेचक गाँव में घर-घर फैली हुई थी। गाँव के अधिकांश बच्चों की आँखें 'दुखनी आयी हुई' थीं और ऐसा लगता था कि किसी को उनकी मक्खियाँ उड़ाने की फुरसत भी नहीं है।"

दिल्ली शहर में रहने वाली और कालेजों में पढ़ने वाली हमारी बहनों को इस बात का ताज्जुब होना स्वाभाविक था कि गाँव के बच्चों की आँखों पर बैठने वाली मक्खियों को उड़ाने की फुरसत भी किसी को नहीं थी, पर उन्हें ज्यादा देर ताज्जुब नहीं करना पड़ा। गाँव की एक स्त्री से जब उन्होंने पूछा कि वह अपने बीमार बच्चे की तीमारदारी क्यों नहीं करती, तो उसने सहज ही जवाब दिया, "मैं खेत में खड़ी फसल की देख-भाल करूँ या अपने बच्चों की!" गाँव की एक अनपढ़ सीधी सादी स्त्री के इस वाक्य में हमारी *सामाजिक व्यवस्था का सारा चित्र* आ जाता है। हमारी मौजूदा समाज-व्यवस्था, हमारे विकास कार्य, हमारे देश की सारी प्रगति के खिलाफ इस एक वाक्य से बढ़कर और क्या आरोप है! हम आशा करते हैं कि हमारे नौजवान बहन और भाई उस 'गँवार' औरत के वाक्य पर गहराई से विचार करेंगे। आज के नौजवान के सामने हमारे देश के नेता मेहनती जीवन की प्रेरणा के लिए *जीवन स्तर बढ़ाने का ध्येय रख रहे हैं।* क्या कठोर परिश्रम, सेवा मन, त्याग और बलिदान की प्रेरणा के लिए गाँव की उस स्त्री का यह एक वाक्य काफी नहीं है!

—सिद्धराज ढड्ढा

लन्दन में आणविक अस्त्रों के विरुद्ध प्रदर्शन

*गत १८ अप्रैल को ९ हजार प्रदर्शन*कारियों का एक समूह ट्रैफल्गर स्क्वायर, लन्दन में पहुँचा। यह प्रदर्शन अपने ढंग का अनूठा था, जो हाइड्रोजन बम के विरोध में किया गया था। प्रदर्शनकारियों में लगभग १० हजार व्यक्तियों ने बर्कशायर के 'आल्डर-मास्टन' स्थान से ट्रैफल्गर स्क्वायर तक की ५० मील की दूरी पैदल तय की। 'आल्डर मास्टन' से यात्रा का प्रारम्भ शुक्रवार को हुआ। बीच बीच में प्रदर्शनकारियों की सहानुभूति में उपस्थित थे। सभी लोग एक स्वर में पुकार रहे थे—"बम पर नियन्त्रण लगाओ।" ट्रैफल्गर स्क्वायर की सभा में बम-प्रयोग तथा युद्ध के विरोध में कैनन कॉलिन्स तथा अन्य लोगों ने भाषण दिये।

'भूदान-यज्ञ' के पाठक पाश्चात्य देशों के शांति और अहिंसा प्रेमियों के उन प्रयत्नों से परिचित हैं जो युद्ध और युद्ध में आणविक अस्त्रों के प्रयोग के विरोध में जनमत तैयार कर रहे हैं और ऐसी प्रवृत्तियों का विरोध कर रहे हैं। जनमत तैयार करने के लिए वे सामूहिक प्रदर्शन कर रहे हैं, पदयात्राएँ कर रहे हैं और सैनिक महत्त्व के अड्डों पर धरना दे रहे हैं साथ ही बड़ी-बड़ी सभाओं का भी आयोजन कर रहे हैं। ●

प्रांत-प्रांत के अंचल से

[कार्यकर्ताओं के पत्रों से संकलित]

श्री धीरेन्द्रदास गुप्ता की अध्यक्षता में पश्चिमी बंगाल सर्वोदय मण्डल की एक बैठक गत ७ और ८ अप्रैल को हुई। इसमें अ० भा० सर्व सेवा संघ के *मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन भी उपस्थित* थे। इस बैठक में चालू वर्ष के अन्दर *ही भूदान में प्राप्त सारी भूमि का वितरण* करने का निश्चय किया गया। यह कार्य हर जिले के कुछ *कार्यकर्ताओं पर सौंपा* गया है। पश्चिमी बंगाल सर्वोदय मण्डल के संयोजक श्री चारुचन्द्र भण्डारी ने बतलाया कि हालाँकि बंगाल में *भूमि कम ही प्राप्त हुई है, पर जो भूमि प्राप्त हुई उसमें अधिकांश बहुत अच्छी है।*

श्री पूर्णचन्द्र जैन ने अपने भाषण में कहा कि प्रान्त में कुछ ऐसे आदर्श केन्द्रों का निर्माण करना चाहिए, जहाँ सर्वोदय समाज का कुछ चित्र दिखाया जा सके जहाँ पुलिस की जरूरत न पड़े और जहाँ हर व्यक्ति सम्मानपूर्वक अपनी जीविका अर्जित कर सकें।

● ● ●

केरल में १ मई से १५ दिन की पदयात्रा हरएक तालुके में शुरू हुई है। पदयात्राओं का आयोजन कल्लेप्पी जिले के अध्यापक श्री पंकजाक्ष कुरुप कर रहे हैं। सर्वश्री केळप्पनजी, इक्का वारियर आदि भी इसमें भाग ले रहे हैं।

● ● ●

राजस्थान के *नागौर जिला खादी*-ग्रामोद्योग संघ तथा जिला सर्वोदय-*मंडल की बैठकों में निर्णय किया गया* कि जिले की बची हुई भूदान में प्राप्त *भूमि का वितरण शीघ्र किया जाय।* इसके अलावा ऊन और सूती खादी-उत्पादन-कार्य ग्रामदानी और ग्राम-संकल्पी गाँवों में करेंगे। हर लोकसेवक और शांति-सैनिक कम से कम सौ घरों से सम्पर्क करें तथा दस दस शांति-सहायक और 'सर्वोदय मित्र' बनायें। इस प्रकार ११ मित्रों की मंडली आसपास के एक हजार परिवारों में शिक्षण प्रचार और झगड़ों के निपटारे का कार्य करेगी। इसके लिए सर्वोदय-पात्र स्थापना, *सम्पत्तिदान और एक घंटे का श्रमदान* की बात समझायी जाय। जिले की मकराना पंचायत समिति क्षेत्र में *ग्राम*-स्वराज्य की दृष्टि से सघन कार्य आरंभ करने का भी संकल्प किया गया।

● ● ●

गत एक साल में सर्व सेवा संघ के नवसंगठित होने के बाद जि० शाहाबाद में लोकसेवक तो ५२ बने, पर वे गाँव-गाँव में बिखरे होने से जिला सर्वोदय-मंडल व अलावा प्राथमिक सर्वोदय-*मंडलों का गठन अभी न हो सका।*

हाल ही में सदेश थाने के ग्राम कांधरपुर के लोकसेवक श्री देवसिंह शर्मा *ने, जो सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ता हैं,* ता० ११ अप्रैल १९६० से संपर्क कर सर्वोदय-पात्रों की स्थापना करायी। चरखों का प्रबंध करके गाँव में सामूहिक कताई की व्यवस्था भी की। जिन लोगों ने सामूहिक कताई करके वस्त्र स्वावलंबन का संकल्प किया है, उन्होंने परस्पर श्रम-सहकार का भी निश्चय किया है, और अध्ययन के लिए एक स्वाध्याय-मंडल की भी भूमिका तैयार हुई है। आपस में भाईचारे के नाते सुख के साथ दुःख में भी साझेदारी के लिए उन्होंने अपना एक सामूहिक कोष बनाया है। सारे गाँव को एक परिवार मानने की भावना से प्रति शुक्रवार ग्रामसफाई का आयोजन एक-दूसरे को निकट ला रहा है और उन सबकी इस मंगल भावना का पड़ोसी गाँवों पर अनकहे ही असर पड़ रहा है।

ग्राम कांधरपुर और उसके समीपवर्ती गाँवों में १० कार्यकर्ता भी लोकसेवक व सेवा सैनिक के रूप में तैयार हुए हैं, *और सब, मिल कर एक थाना* सर्वोदय मंडल के रूप में संगठित हो रहे हैं।

● ● ●

आंध्र प्रदेश में जिला-कडप्पा के चार तालुकों में ९७ ग्रामदान की घोषणा की गयी।

● ● ●

सर्वोदय साहित्य के प्रचार के लिए *बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के द्वारा* 'सर्वोदय साहित्य सदन' नाम की दुकान पटना में खोली गयी, जिसकी मार्च १९५९ में ७२००० रु० की बिक्री हुई।

● ● ●

पंजाब के 'इकनामिक और स्टेटिस्टिकल आर्गनाइजेशन' की हाल की खोजों से पता चलता है कि मशीनों द्वारा की गयी खेती पुराने हल द्वारा की जानेवाली खेती से ज्यादा महँगी पड़ती है। मशीन द्वारा कृषि करने में मशीनों की मरम्मत, उनके पुर्जों का अभाव, कुशल चालकों की *कमी, तेल* के बढ़े हुए दाम आदि दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, जो ऐसी खेती को बहुत महँगा बना देते हैं।

मशीनरी द्वारा की गयी खेती पर करीब १७१ रु० प्रति एकड़ खर्च पड़ता है, जबकि हल से की जाने वाली खेती पर १०६ प्रति एकड़। *अधिकांश* जगहों में हल द्वारा की *गयी खेती* उत्पादन की दृष्टि से भी ज्यादा लाभ*प्रद सिद्ध हुई है।*

आश्रम···प्रयोगशाला

[पृष्ठ-संख्या ४ से चालू]

वे गृहस्थ थे और तीन सन्तान उनके हो चुके थे। पूज्य विनोबाजी के उपर्युक्त विचार और संतान की मर्यादा के बारे में उन्होंने बराबर ज्ञान लिया और मेरे सामने वानप्रस्थ जीवन की उन्होंने प्रतिज्ञा ली। प्रतिज्ञा-पत्र मैंने उन्हें लिख दिया और दोनों ने मेरे सामने पढ़ा। दोनों ने मुझे साक्षी रखा। जिस संस्था से वे आये थे, उनके आचार्य मुझसे मिलने पर कहते हैं, 'आपके पास हमने इन्हें प्राकृतिक चिकित्सा के शिक्षण के लिए भेजा था और आपने यह क्या कर डाला? वानप्रस्थ का व्रत उनसे दिला दिया! इसके लिए तो आपके पास हमने इन्हें भेजा नहीं था।' व्रत लेने में बहुत जल्दबाजी हुई हो, ऐसा शायद उन्हें लग रहा हो। चाहे जैसा हो, पर संस्था के आचार्य होते हुए भी जिस ढंग से उन्होंने मुझसे बात की, मुझे आश्चर्य हुआ। अहिंसा-पालन के लिए ब्रह्मचर्य नितान्त जरूरी है, ऐसी यदि उनकी दृढ़ श्रद्धा होती, तो वे अन्य रीति से मुझसे बात करते। वे इस प्रकार मुझसे कहते कि 'आपने एक अच्छा कार्य किया है, लेकिन थोड़ा-सा मुझे यह पूछना है कि व्रत दिलाने में जल्दबाजी तो नहीं हुई? वैसे तो आपने बहुत ही विचारपूर्वक यह कार्य किया होगा। लेकिन फिर भी व्रत लेने पर वे किस तरह आगे बढ़ें, यह आप मुझे सुनायेंगे तो मुझे यथार्थ कल्पना आयेगी।' इस तरह की बात वे करते तो बात करने का ढंग अहिंसक जाना जाता।

इस पर से यह ध्यान में आयेगा कि हम कार्यकर्ताओं के सामने पंच-महाव्रतों के पालन के साथ जन सेवा का कार्य करने का आग्रह शायद नहीं है। पंचमहाव्रतों का पालन कठिन है, ऐसा समझ कर हम उसे छोड़ देते हैं, तो पंचमहाव्रतों का हम इन्कार नहीं करते। हमारे ध्यान में यह बात आनी चाहिए कि हमारे जन-सेवा कार्य की बुनियाद पंचमहाव्रतों पर खड़ी होनी चाहिए, अन्यथा हमारे कार्य में हम सफल नहीं होंगे।

(अगले अंक में समाप्त)

•

गुजरात राज्य का जन्म

ता० १ मई को प्रातःकाल सूर्योदय के समय हरिजन आश्रम साबरमती के उपासना मन्दिर में, जहाँ गांधीजी प्रार्थना किया करते थे, नये गुजरात राज्य का उद्घाटन श्री रविशंकर महाराज ने किया। समारोह सर्वधर्म प्रार्थना से शुरू हुआ। उसके बाद गुजरात के प्रथम राज्यपाल नवाब मेंहदी नवाबजंग को उन्होंने पद की शपथ दिलायी गयी और फिर उन्होंने नये राज्य के मुख्य मंत्री डा० जीवराज मेहता और मंत्रिमंडल के अन्य सदस्यों को शपथ दिलायी।

•

सप्ताह के समाचार

ताड़गुड़-उद्योग

दिल्ली में अखिल भारतीय ताड़ गुड़ कार्यकर्ता सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने इस बात पर जोर दिया कि ताड़गुड़-उद्योग को ग्राम विकास के कार्यक्रम में प्राथमिकता मिलनी चाहिए। उन्होंने बतलाया कि इस समय देश भर में करीब ४० लाख एकड़ बढ़िया जमीन गन्ने की खेती के नीचे है। अगर ताड़-गुड़ उद्योग को बढ़ावा दिया जाय, तो इस जमीन का बहुत-सा भाग अन्न उत्पादन के लिए गन्ने की खेती में से छुड़ाया जा सकता है। श्री राजेन्द्र बाबू ने अपना निजी अनुभव बतलाते हुए कहा—"मैंने बिहार में जो प्रयोग किये, उनके आधार पर मैं स्वयं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि अगर बिहार में आज जितने ताड़ के पेड़ हैं, उन सबको गुड़ और शक्कर बनाने के लिए छोड़ा जाय और काम में लिया जाय तो इतनी शक्कर पैदा हो सकती है, जितनी आज बिहार की तमाम शक्कर की मिलें मिल कर पैदा करती हैं।" श्री राजेन्द्र बाबू ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि देश में करोड़ों ताड़ के वृक्ष हैं, जिनका आज उपयोग नहीं हो रहा है। इसके अलावा, उन्होंने इस बात पर जोर दिया चूंकि यह वृक्ष आसानी से हर कहीं लगाया जा सकता है और कायम रह सकता है, आज जो बहुत सी जमीन बेकार पड़ी हुई है, उसका उपयोग भी ताड़-वृक्ष लगाने में किया जाना चाहिए, मसलन रेलवे लाइन के दोनों किनारों की जमीन पर।

मालूम हुआ है कि रेलवे बोर्ड ने देश भर की रेलवे लाइनों के दोनों किनारे ताड़-वृक्ष के लगाने के कार्य क्रम को सिद्धान्त स्वीकार कर लिया है।

भारत के ताड़ गुड़ उद्योग के पुरस्कर्ता श्री गजानन नायक ने बतलाया कि १९५९ ई० के वर्ष में ताड़-गुड़ का उत्पादन २१३ लाख मन तक पहुँच गया था और ४० लाख गैलन नीरा पीने के काम में लिया गया था। आज यह उद्योग बहुत छोटे पैमाने पर चल रहा है, पर आज भी १.०५ लाख व्यक्तियों को इस उद्योग से रोजी मिल रही है।

•

पंतजी विनोबाजी से मिले

ता० ७ मई को आगरा में भारत सरकार के गृहमंत्री पंडित गोविन्द वल्लभ पंत आचार्य विनोबा से मिले।

•

विनोबाजी मध्यप्रदेश में

ता० १९ मई '६० को विनोबाजी अपने दल के साथ मुरैना जिले के रछेड़ नामक गाँव से प्रातः मध्यप्रदेश राज्य की सीमा में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर राज्य के वरिष्ठ अधिकारियों, मंत्री मंडल के सदस्यों तथा प्रांत की प्रमुख रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं सर्वोदय-सेवकों द्वारा पूज्य विनोबाजी का स्वागत किया जायगा। विनोबाजी अपनी ऐतिहासिक भूदान पद-यात्रा के संदर्भ में कोई दो हफ्ते भिण्ड-मुरैना के डाकू-पीड़ित क्षेत्र में ग्रामीणों के बीच व्यतीत करेंगे और संभवतः डाकुओं तथा उनके परिवार-जनों से भी मिलेंगे।

आज से कोई नौ दस वर्ष पूर्व तेलंगाना के कम्युनिस्ट आक्रांत क्षेत्र में शांति-यात्रा एवं पोचमपल्ली में भूदान गंगोत्री के उद्गम के पश्चात् अपने परंधाम आश्रम पवनार होकर प्रधान मंत्री पंडित नेहरू के निमंत्रण पर 'योजना आयोग' से सलाह-मशविरा करने पैदल यात्रा करते हुए दिल्ली जा रहे थे, तब वे एक बार भिण्ड मुरैना के जिलों से गुजर चुके हैं। पद-यात्रा के दौरान में तब उन्होंने प्रेम और अहिंसा के रास्ते डाकू-समस्या समाप्त करने की कामना की थी। अब वे मध्यप्रदेश करीब पंद्रह दिन का समय उस क्षेत्र में दे रहे हैं। जम्मू-कश्मीर राज्य लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष मेजर जनरल श्री यदुनाथ सिंहजी अपने ढंग से भिण्ड-मुरैना के क्षेत्र में पूर्वतैयारी कर रहे हैं। विनोबाजी की पदयात्रा का मार्गदर्शन कर्नल यदुनाथ सिंहजी स्वयं करेंगे।

ता० १३ मई को विनोबाजी के पड़ाव तहसील केन्द्र अम्बाह में मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल और उसकी प्रबंध समिति की बैठकें होंगी।

यदि डाकूपीड़ित क्षेत्र में निर्धारित समय से अधिक समय न देना पड़ा तो ता० २८ मई को पूज्य विनोबाजी ग्वालियर पर पहुँचेंगे।

[स प्रे स]

•

विनोबाजी का स्वास्थ्य

इन दिनों विनोबाजी का स्वास्थ्य काफी ठीक है। विनोबाजी ने आगरा में बोलते हुए कहा, "हिन्दुस्तान में साठ साल के बाद मरने का 'पासपोर्ट' मिल जाता है। मेरी उम्र पैंसठ वर्ष की है। इस समय भी मैं बारह मील चलने के बाद कोई थकान महसूस नहीं कर रहा हूँ, यह मेरी स्वस्थता का लक्षण है। मैंने भारत माता के मन्दिर की प्रदक्षिणा (पदयात्रा) का प्रारंभ जब से किया है, तब से मेरा शारीरिक स्वास्थ्य तो सुधरा ही है, साथ ही मानसिक स्वास्थ्य भी सुधरा है। मेरी स्मरण शक्ति भी तेज हुई है। पहले एक श्लोक कंठस्थ करने में मुझे दस मिनट का समय लगता था, पर आजकल मैं दो मिनट में ही याद कर लेता हूँ।"

एक शांति-सैनिक !

पिछले दो महीनों में बेलगाँव फिर अखबारों में चमक उठा है। यह जिला मैसूर राज्य में है। उसका कुछ हिस्सा महाराष्ट्र में आना चाहिए, ऐसी माँग वहाँ के मराठी भाषी कर रहे हैं। उसके लिए कुछ गाँवों में लगान-बंदी का आंदोलन चलाया गया। फरवरी और मार्च में जनता और पुलिस के बीच कई जगह संघर्ष हुआ। फलतः लाठी और गोली चली। सेवाग्राम सम्मेलन के समय सघ में इसकी चर्चा हुई और शांति सेना मंडल की ओर से एक शांति सेना शिविर बेलगाँव में ता० १४ अप्रैल को उद्घाटित हुआ, जिसमें महाराष्ट्र और कर्नाटक के सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने इकट्ठे होकर जन-मानस की जाँच की।

रत्नागिरी के श्री अप्पासाहब पटवर्धन और कारवार के श्री तिम्मप्पा नायक के मार्गदर्शन में शिविर चला। शिविर में कर्नाटक के एक पदयात्री श्री शिवराम गुरुजी भी शामिल हुए। २० शिविरार्थी थे। वे सब छोटी टोलियों में बँट कर इर्दगिर्द के देहातों में और बेलगाँव शहर की गलियों में घूमे।

श्री शिवरामजी गुर्लगुनी गाँव में गये। वहाँ एक बच्चे और बूढ़ों को भी पुलिस की मार का शिकार होना पड़ा था और कई जगह अनेक लोगों को पीटा गया था! इससे उनके हृदय को चोट पहुँची और २१ दिन का उपवास करने का मानस लेकर वे शिविर में वापस लौटे। इसी समय, ता० २३ अप्रैल को श्री वल्लभस्वामी बेलगाँव आये। इस बात को सौम्य स्वरूप देने की दृष्टि से उन्होंने सुझाया कि उपवास एक हफ्ते का हो। गुरुजी ने यह बात मान ली। ता० २६ अप्रैल से श्री शिवराम गुरुजी ने एक सप्ताह का उपवास बेलगाँव में किया।

श्री शिवराम गुरुजी की उम्र ४८ साल की है। सन् '३० से वे जनसेवा में लगे हैं। १९३८ के कारावास के बाद वर्धा गये। कुछ समय पूज्य बापू ने उन्हें सेवाग्राम में रखा था। वहाँ से लौट कर गुरुजी कर्नाटक की आश्रम प्रवृत्ति में ही लगे रहे। किसी संस्था का आश्रय लिये बिना ब्रह्मचर्य से जनसेवा करने का उनका उदाहरण अतीव प्रेरणादायी है। सरकार से या गुंडों से जब जनता को पीड़ा पहुँची, तब जनशक्ति को जगाकर उन्होंने अहिंसक प्रतिकार किया है। भूदान आंदोलन में १९५८ में आश्रम बंद करके निकले तब से घूमते ही रहे हैं। सेवाग्राम-सम्मेलन में वे १० साथियों को लेकर पैदल कर्नाटक से आये थे और १४ ता० को शिविर में शामिल होने की दृष्टि से सायकिल से वापस गये।

—पीयूष कामत

•

बिहार की अखंड पदयात्रा-टोली की प्रगति

१ अप्रैल से १९ अप्रैल तक सहर्षा जिले में बिहार प्रादेशिक अखंड सर्वोदय-पदयात्रा-टोली द्वारा क्रमशः श्री जयप्रकाश नारायण, श्री श्याम सुन्दर प्रसाद एवं श्री ब्रजमोहन शर्मा के नेतृत्व में १९ पड़ावों के द्वारा १३८ मील की पदयात्रा हुई। ८० ग्रामों से सम्पर्क तथा पन्द्रह हजार लोगों के बीच सर्वोदय-विचार का प्रचार हुआ।

श्री जयप्रकाश बाबू १९ अप्रैल को गर्मी की कड़ी धूप में १२ बजे दिन में श्री प्रभावती देवी एवं एक अमेरिकन बहन के साथ मजौरा पड़ाव पर पहुँचे। शाम को पाँच बजे प्रार्थना सभा में लगभग पाँच हजार की भीड़ में देश-विदेश की वर्तमान परिस्थिति, सर्वोदय की आवश्यकता, पंचायती राज्य का प्रयोग, ग्रामस्वराज्य एवं शान्ति सेना की आवश्यकता आदि विषयों पर दो घंटे तक प्रवचन किया।

कार्यकर्ताओं की बैठक में सहर्षा जिले के काम से बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ दस-बारह कार्यकर्ता अपनी मालकियत-विसर्जन करके एक परिवार बना कर और आश्रम में रहते हुए सहजीवन बिताते हैं। साथ ही ग्रामदानी ग्राम महावारी की दयनीय स्थिति सुन कर दुःख और आश्चर्य हुआ, क्योंकि उस ग्राम को तोड़ने में जिले के सारे धनी लोगों की शक्ति एवं कुछ पक्ष के लोग जी-जान से लगे हैं। इसके निराकरण के लिए श्री वैद्यनाथ बाबू पर भार दिया गया। पदयात्रा में श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी एवं श्री महेन्द्र नारायण सिंह साथ रहे।

श्री जयप्रकाश बाबू की पदयात्रा

२० अप्रैल को सुबह पाँच बजे प्रार्थना के पश्चात् श्री जयप्रकाश बाबू के नेतृत्व में टोली का प्रस्थान आरती और मंगल गान के साथ हुआ। अपूर्व दृश्य था वह। आगे श्री जयप्रकाश बाबू, पीछे छाया की तरह श्रीमती प्रभावती देवी, उनके पीछे श्री फिलिस अमेरिकन बहन पाँव बढ़ा रही थीं। सूर्योदय के समय सहर्षा और पूर्णिया की सीमा पर पूर्णिया की जनता ने रामधुन के साथ स्वागत किया। गीता-प्रवचन के पाठ के पश्चात् ७ बजे बलिया पड़ाव पर पहुँचे। उस ग्राम में श्री धीरेन भाई प्रेम क्षेत्र बना कर बैठे हैं। सर्वप्रथम श्री जयप्रकाशजी ने १० मिनिट तक हल चला कर उद्घाटन किया। पैर में साटिका के दर्द के बावजूद भी प्रतिदिन [illegible]ार से छह मील तक की पदयात्रा [illegible] बजे सुबह से ९ बजे रात्रि तक सभी [illegible]र्यक्रमों में भाग लेना तथा पूर्णिया जि[illegible] के लोक सेवकों के शिविर में मार्गदर्शन करना नित्य का काम था।

२० अप्रैल से २३ अप्रैल तक बलिया, डुमरा, हलारी और भवानीपुर तक २० मील की पदयात्रा हुई। इस अवधि में 'भूदान-यज्ञ' के १०१ ग्राहक बने तथा पचीस हजार लोगों के बीच विचार-प्रचार हुआ। टोली में ५० भाई-बहन निरंतर साथ रहे।

—ब्रजमोहन शर्मा,

•

सरकार का काम और भूदान का काम

"मैंने पाँच करोड़ एकड़ भूमि की माँग देश के सामने रखी थी, पर केवल पचास लाख एकड़ जमीन मिली। उसमें से भी कुछ जमीन खराब थी, बाँटी तो दस लाख एकड़ ही गयी। इसका मतलब यह हुआ कि हमें केवल दस प्रतिशत नंबर मिले। हम 'पास' नहीं हो सके, 'फेल' हुए। परन्तु जब मैंने अपनी शक्ति और सरकार की शक्ति की तुलना करके सरकार के काम को देखा, तो मैं हैरत में पड़ गया।

योजना-कमीशन के सदस्य मुझे मिले थे। उन्होंने बताया कि भूमि की अधिकतम सीमा-निर्धारण के फलस्वरूप अधिक-से-अधिक दस लाख एकड़ भूमि सरकार को मिलेगी। सरकार की कितनी शक्ति, उसके पास कितने अधिकार, उसके लिए कितना खर्च और उसका फल केवल दस लाख एकड़, वह भी प्रेम से नहीं, नैतिक बल से नहीं, कानून और अधिकार के बल पर! इधर विनोबा और उसके मुट्ठी भर छोटे छोटे कार्यकर्ता, जिनके पीछे कानून का या धन का बल नहीं। उनके प्रयत्न पर प्रेम से पचास लाख एकड़ भूमि की प्राप्ति!

इससे जाहिर होता है कि सरकार का काम कितना मन्द गति वाला है और भूदान का काम यानी जनशक्ति का काम कितना प्रभावशाली है।"

—विनोबा

•

सघन क्षेत्र में क्या हो?

विनोबा आजकल इस बात पर बहुत जोर दे रहे हैं कि हर प्रांत में कम से-कम एक क्षेत्र ऐसा चुना जाय, जहाँ कि ग्रामस्वराज्य की दृष्टि से संगठित और योजनाबद्ध प्रयोग किया जा सके। अभी हाल ही में पूर्णिया (बिहार) जिला द्वितीय सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर, जो गत २३-२४-२५ अप्रैल को सम्पन्न हुआ, पूर्णिया जिले के बारे में विनोबा ने जो आशाएँ प्रकट कीं उनसे जाहिर होता है कि वे सघन क्षेत्र के काम के बारे में क्या अपेक्षाएँ रखते हैं:

"(१) हम यहाँ ऐसा व्यापक क्षेत्र तैयार करें, जिसमें लोगों को पुलिस, अदालत की जरूरत महसूस न हो।

शासनमुक्ति का यह पहला कदम गाँव-गाँव के लोग समझ-बूझ कर उठायें।

(२) पार्टियों के कारण गाँव में फूट न पड़े।

(३) हर घर से हमारा परिचय हो और लोगों के परिवार के हम अंग ही बन जायँ।

(४) सर्वोदय पात्र नियमित चलते हों। हमारी सेवा-सेना, कि जो मौके पर शान्ति सेना होगी, का आयोजन सर्वोदय-पात्र के आधार, सम्मति-आधार और अखबार पर हो।

(५) गाँव गाँव के लोग प्रेम से जमीन का छठा हिस्सा भूमिहीनों को देकर ग्राम स्वराज्य की बुनियाद डालें।"

•

टिहरी में युवक-शिविर

उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय युवक सम्मेलन की ७ मई की, आगरा की बैठक में यह सोचा गया कि ५ जून से २० जून तक टिहरी क्षेत्र में युवक कार्यकर्ताओं का एक शिविर हो। इस शिविर में उत्तर प्रदेश के चुने हुए २५ युवक कार्यकर्ता भाग लें। उत्तर प्रदेश और बाद में पूरे भारत में सर्वोदय युवक-आंदोलन को संगठित करने की दृष्टि से इस शिविर में गहराई से विचार विनिमय किया जायगा।

इस संबंध में युवक और विद्यार्थीगण निम्नोक्त पते पर सम्पर्क स्थापित करें। पता—मंत्री, सर्वोदय युवक सम्मेलन, ७४।१०४ धनकुट्टी, कानपुर

—गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष श्री आर० आर० दिवाकर ने एक वक्तव्य में कहा है कि लोगों के पास गांधीजी द्वारा लिखित जो भी पत्र या अन्य सामग्री हो उसे वे गांधी स्मारक निधि, राजघाट, नई दिल्ली के पते से भेज दें। इन पत्रों और पांडुलिपियों के चित्र ले लिये जायेंगे, जिनका उपयोग भविष्य में जीवनी-लेखक और इतिहासकार कर सकें।

जो लोग पत्र या पाण्डुलिपि भेजेंगे उनको एक फोटो-प्रति उनके पास भेज जायगी। यदि वे पत्रों को या पाण्डुलिपियों को वापस चाहेंगे तो उन्हें वापस भी कर दिया जायगा। अब तक ऐसे ५६०० पत्रों और पाण्डुलिपियों का संकलन किया जा चुका है। •

—मध्यभारत भूदान यज्ञ पर्षद के अन्तर्गत श्री नारायणराव शर्मा, श्री कृष्णकान्त जोशी तथा श्री गेंदालालजी सुराणा की टोली ने [illegible] के द्वितीय और तृतीय सप्ताह में देव[illegible] के ३८ गाँवों के ८० भूमिहीन किसानों में भूदान में प्राप्त १२५ एकड़ जमीन वितरित की। ८० भूमिहीन परिवारों में से करीब ४० परिवार हरिजनों के थे। यह भी ज्ञात हुआ है कि जिले के कुछ भूदान दाताओं ने भूदान में दी गयी प्रमाणित जमीनों को बिक्री कर दिया है, जो नियम विरुद्ध है। •

कार्यकर्ता-गोष्ठी

ता० ५ मई को दोपहर से उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं की आपसी चर्चाएँ आगरा में आरंभ हुईं। कार्यकर्ताओं ने कहा कि "हम लोग जो काम करते हैं, वह बहुत असरकारक साबित नहीं हो पाता, अतः प्रान्त के जो बुजुर्ग हैं, नेता हैं, वे अपना अपना एक एक क्षेत्र चुन लें। वहाँ स्थायी रूप से बैठ कर उनके मस्तिष्क में जो ग्रामस्वराज्य का चित्र है, उसको साकार करके दिखायें। इस प्रकार आन्दोलन 'कन्सोलिडेट' होगा। अब व्यापक पैमाने पर प्रचार करने की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी इस बात की कि कुछ नमूने के क्षेत्र तैयार किये जायँ।"

कार्यकर्ताओं की बैठक में काफी युवकों ने भाग लिया। जिले जिले में काम करने वाले युवकों का उत्साह देखते बनता था। वे कह रहे थे कि "हमारे मन में काम की तड़प है, लगन है, हम कुछ करना चाहते हैं। पर न जाने कहाँ और क्यों हमारे कदम रुक जाते हैं, आगे नहीं बढ़ पाते। विनोबाजी ने शान्ति सेना का कार्यक्रम देकर युवकों के सामने एक चुनौती उपस्थित कर दी है। हम लोग इस चुनौती को उठा लेने के लिए तैयार हैं, पर सतत मार्गदर्शन की आवश्यकता है।"

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता: राजघाट, वाराणसी, फोन नं० १२८५
वार्षिक मूल्य ५) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,५७५ : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,०७५ एक प्रति १३ नये पैसे

और आकर्षक होते हैं। एक भाई ने मेरे पास एक कविता की किताब भेजी, जिसमें एक पन्ने पर थोड़ी लाइन थी और बाकी हिस्सा खाली था। मैंने कहा कि आपकी कविता सुन्दर है, लेकिन काले अंश से सफेद अंश मुझे ज्यादा सुन्दर मालूम हुआ। सफेद अंश में जो काव्य भरा हुआ था, वह अद्भुत था। उसमें मनुष्य जितनी कल्पनाएँ करना चाहता है, कर सकता है। लेकिन आप चित्र को अंकित करना चाहते हैं तो काली लकीरें आनी ही हैं। केवल सफेद अंश का चित्र नहीं बन सकता। वैसे ही बिना दोष के गुण संभव नहीं है। गुण के साथ दोष रूपी छाया होनी ही है। इसलिए वह चित्र प्रकट होता है। इसीलिए हम उसे दोष नहीं मानते हैं। जैसे मेरे मन में आलस्य भरा हुआ है, जिसे लोग नहीं जानते हैं। वैसे मैं घूमा करता हूँ, फिर भी आध्यात्मिक जीवन के कारण जो निवृत्ति की प्रेरणा है, उसमें आलस्य भी भरा हुआ है। अगर किसी ने गलत सवाल पूछा तो स्वाभाविक ही इच्छा होती है कि उसका तीव्र उत्तर दिया जाय, लेकिन आलस्य के कारण मैं उत्तर भी नहीं देता हूँ। उत्तर देना तो तीव्र देना और नुकसान होता। लेकिन आलस्य के कारण मैं बच जाता हूँ। मुझे अहिंसा का, निवृत्ति का, सत्य का विचार पसन्द आता है, क्योंकि मुझमें आलस्य है। मुझे लगता है कि झूठ बोलूँ, तो उस झूठ की रक्षा के लिए कितना आडंबर खड़ा करना होगा, षड्यंत्र रचना होगा। लेकिन सीधा, सरल सच बोल दूँ तो आसान होगा, कुछ भी नहीं करना होगा। गुस्सा करना हो तो आँखें चढ़ानी होंगी, हाथ उठाना होगा, कुछ बोलना होगा, लेकिन गुस्सा न करने में कुछ भी नहीं करना होगा। अल्पतम श्रम होगा। मैं इस तरह सोचता हूँ, क्योंकि मुझमें आलस्य भरा पड़ा है। सत्वगुणी, दृढ़निश्चयी मनुष्यों के साथ-साथ कुछ अहंकार जुड़े हुए रहते हैं, जिन्हें वे नहीं छोड़ सकते हैं। मुझे अक्सर लोग पूछते हैं कि सात्विक लोगों का आपस-आपस में क्यों नहीं बनता है। रजोगुणी लोग इकट्ठा होते हैं, उनका 'एसोसिएशन' बनता है लेकिन सात्विक लोगों का 'एसोसिएशन' क्यों नहीं बनता है? इसका कारण यह है कि सात्विक लोगों में जो अहंकार होता है, उसका छोड़ना बहुत कठिन होता है। यह बहुत ऊँची, ब्रह्मविद्या की बात है। अहंकारमुक्त सत्वगुण हो, इसके लिए आत्मविद्या की जरूरत है और किसी चीज से अहंकार को तोड़ा नहीं जा सकता है। इसीलिए सात्विक लोगों को इकट्ठा करने में मुसीबत आती है।

मैं चाहता हूँ कि उत्तर प्रदेश में आप एक क्षेत्र चुनें और आप लोग उसमें ताकत लगायें, तो एक दर्शन होगा कि हम भी इकट्ठा हो सकते हैं। सिर्फ हिंसा पर श्रद्धा रखने वाले ही नहीं, बल्कि हम अहिंसावाले भी, रजोगुणी ही नहीं, बल्कि सत्वगुणी भी इकट्ठा हो सकते हैं, यह हम दिखायें।

(उ० प्र० कार्यकर्ताओं से, आगरा, ६-५-'६०)

• • •

उत्तर-प्रदेश के शांति-सैनिकों के बीच विनोबाजी

शांति-सैनिक हुक्मबरदार है !

शांति-सेना के मामले में अब तक देश में बहुत अराजक चल रहा है और अव्यवस्था है। अब यह काम निर्मला को सौंपा है। उसका यह काम होगा कि सब शांति-सैनिकों का रजिस्टर ठीक से रखना, सबका सम्पर्क रखना, उसकी मदद के लिए कोई मनुष्य चाहिए तो वह किसी भी शांति-सैनिक को बुला सकती है और जिसको बुलाया जाय, उसको जाना होगा। जितने भी शांति-सैनिक हैं वे हुक्म आते ही कहीं भी चले जायेंगे। शांति सैनिक बिलकुल हुक्मबरदार होंगे। आपको समझना चाहिए कि शांति-सेना का वाराणसी का आफिस मेरी जगह पर है। वहाँ से कोई 'कमांड' आयी तो मुझसे आयी, ऐसा समझना होगा। शांति-सैनिक को मैं पीर-बबर्ची-भिश्ती-खर मानता हूँ। इसलिए उसको जहाँ भी जरूरत पड़ी, वहाँ उसको जाना होगा। यह एक नैतिक शक्ति है, कोई बाह्य शक्ति नहीं है। लेकिन नैतिक शक्ति जबर्दस्त होती है। हरएक शांति-सैनिक का जीवन-वृत्तान्त कार्यालय के पास होना चाहिए। फिर वहाँ पर सबका 'हू'ज हू' (परिचय-पत्र) तैयार किया जायगा। यह सारा बहुत बड़ा काम है। इसलिए निर्मला ने संकल्प किया है कि वह ज्यादा-से-ज्यादा समय काशी में देगी।

बहुतों का खयाल है कि दफ्तर का काम गौण है। लेकिन मैं तो मानता हूँ कि वह एक ऐसा केन्द्र है, जहाँ पर से हिन्दुस्तान भर में सब तरह की आज्ञाएँ फैलेंगी। वहाँ सुव्यवस्थित ढंग से काम होना चाहिए। वहाँ ऐसे ही कारकुन होंगे, जो शांति-सैनिक होंगे। उनकी योग्यता 'फ्रन्ट' पर काम करने वाले शांति-सैनिकों के जैसी ही होगी। शांति-सैनिकों की तालीम का काम केन्द्र या प्रदेश के द्वारा होगा। अधिकतर कार्य प्रांत ही करेगा। लेकिन सर्व सेवा संघ आदेश देगा। यह काम आशादेवी का है। वह घूमती रहेंगी। लेकिन जानकारी इकट्ठा करना, सबको हिदायत भेजना, यह निर्मला का काम है। इस तरह एक व्यक्ति अखिल भारत से सम्पर्क रखेगा और एक व्यक्ति अखिल भारतीय कार्यालय का जिम्मा उठायेगा, जो आज्ञाएँ जारी करेगा। इसके अलावा हमने एक अखिल भारतीय शांति-सेना मंडल बनाया है, जिसकी जिम्मेवारी परिस्थिति का निरीक्षण और अध्ययन करने की है। इस तरह शांति-सैनिकों के लिए हमने एक परिपूर्ण योजना बनायी है।

काशी में ताकत लगाइये

मैं चाहता हूँ कि उत्तर प्रदेश के शांति-सैनिकों की ज्यादा ताकत काशी जिले में लगी जाय। हर पाँच हजार व्यक्तियों के लिए एक व्यक्ति की जरूरत रहेगी। वैसे तो काशी-क्षेत्र से ही कार्यकर्ता मिलेंगे, लेकिन काशी-क्षेत्र कुल दुनिया भर के लिए है। दुनिया भर के लोग काशी आते हैं। 'काश्यां मरणात् मुक्ति'—काशी में मरने से मुक्ति हासिल होती है।

आपने मौका खोया

इस बक्त पंजाब की यात्रा में [illegible] की तरफ घूमते हुए हमारे मन में एक विचार आया था कि हम [illegible] हिन्दुस्तान और चीन की सीमा पर जायें और इधर-उधर जाने के लिए दोनों देशों की इजाजत माँगें। हमने कश्मीर में देखा कि 'यू० एन० ओ०' वालों को इस तरह इधर-उधर जाने की इजाजत मिली है। उस वक्त मौसम भी अनुकूल था। फिर से दुबारा हम कब उधर जायेंगे, पता नहीं। इसलिए [illegible] से हम उस बारे में सोच रहे थे, लेकिन अभी तक [illegible] देना बनी नहीं। अगर [illegible] जगह काम करती होती, तो हम वहाँ चले जाते। जैसे [illegible] के [illegible] हम जा सकते थे। लेकिन [illegible] के [illegible] जाना दूसरी बात है। अकेला [illegible] सैनिक शक्ति से कहीं जाय, वह अलग बात है। नैतिक शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है, लेकिन उसके साथ [illegible] जरूरी है तो ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय मामले में शक्ति प्रकट होती है, लेकिन वह ताकत [illegible] नहीं थी। इसलिए हम रह गये। मैं कहना यह चाहता हूँ कि आपने एक मौका खोया।

आपको समझना चाहिए कि इससे आगे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी हम प्रवेश करेंगे। उसके लिए जरूरी है कि देश में कहीं भी गड़बड़ हुई तो जिम्मेवारी हमारी है। काशी में गड़बड़ी की [illegible] का मौका आया, तो वह हमारी जिम्मेवारी है। हमारा केन्द्र वहाँ रहते हुए भी ऐसी घटना [illegible] इसका बुरा असर पहुँचा। इसलिए [illegible] कि अब [illegible] काम [illegible] होगा। इसमें ढील नहीं चलेगी।

आज्ञापालन की आवश्यकता

[illegible] इसलिए शांति-सैनिक के अपने [illegible] अनुशासन में रहेंगे, [illegible] हम काशी की [illegible] और [illegible]। अगर [illegible] को हम [illegible] में [illegible] जाने के लिए कहेंगे, तो उसे जाना होगा। [illegible] है कि [illegible] में [illegible] रहना होगा। [illegible] हुक्म [illegible] नहीं है। [illegible] नहीं [illegible] है कि [illegible] रहना होगा। [illegible] तो नहीं होते, फिर भी वे वहाँ जाते हैं। [illegible] में भी वे वहीं रहते हैं।

जैसे 'कायद-बुवेद' की योजना 'त्रिवेंद्रिय मिशन' के तौर पर होती है, उसी तरह से वहाँ पर [illegible] है। शांति-सैनिक भी [illegible] नहीं सकता है कि मुझे [illegible] जगह भेजा जा रहा है तो वहाँ जाने की क्या जरूरत है। मैं शांति-सैनिक को समझाता हूँ, इसलिए हम समझायेंगे लेकिन अगर कोई कहेगा कि मैं इस वक्त नहीं जा सकता हूँ, घर में कोई बीमार है या ऐसा ही कोई काम है, कुछ दिन बाद जाऊँगा, तो समझना चाहिए कि शांति-सैनिक की योजना टूट ही गयी। [illegible] को हुक्म आते ही [illegible] होना। अगर यह होगा तो [illegible] काम करेगा।

[illegible] शांति-आश्रम [illegible] कार्यकर्ता अपनी [illegible] का काम करेंगे, लेकिन हम [illegible] जाने के लिए [illegible] [illegible] कि उस हम कहीं भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] रहना होगा।

•

'भूदान तहरीक'

[उर्दू पाक्षिक]

[illegible]

[illegible]

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि •

डाकू-क्षेत्र नहीं, सज्जनों का क्षेत्र

यहां से हम भींड, मुरैना के इलाके में जाने वाले हैं। आज सवेरे हमसे कीसी ने पूछा की क्या आप डाकूओं के क्षेत्र में जाने वाले हैं? तो हमने कहा की जी नहीं, डाकूओं के क्षेत्र में जाने का हमारा वीचार नहीं है। हम भींड-मुरैना के क्षेत्र में जरूर जाना चाहते हैं। लेकीन उस क्षेत्र को हम सज्जनों का क्षेत्र समझते हैं। जैसे कुल हींदुस्तान सज्जनों का क्षेत्र है, वैसा वह भी है। और डाकू कौन है और कौन नहीं है, इसका फैसला तो परमेश्वर के पास होने वाला है। यह जरूरी नहीं है की जो डाकू माने जाते हैं, वे ही डाकू होते हैं। दूसरे भी बहुत-से डाकू होते हैं और मुमकीन है की परमेश्वर की नीगाह में अधीक गुनहगार दूसरे ही साबीत होंगे। हम कहना चाहते हैं की हम वहां पर कोई मसला हल करने के लीये नहीं जा रहे हैं, बल्की सज्जनों के एक सेवक के नाते जा रहे हैं, और ऐसे नाते हम सारे हींदुस्तान में घूम रहे हैं। हमने बहुत दफा कहा है की एक दीन हमारा ही मसला हल होने वाला है। राम, कृष्ण और बुद्ध आये, लेकीन मसले बने ही रहे। तो हम नहीं मानते की हमसे कोई मसला हल होगा।

(आगरा, ५-५-'६०) —वीनोबा

• लिपि-संकेत : ि=ी; ु; ू, = ष = क्ष, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

नये मोड़ के संदर्भ में

ध्वजा प्रसाद साहु

खादी का जन्म सन् १९२१ में, असहयोग-आन्दोलन के साथ ही हुआ था। लेकिन इसका बाजाब्ता संगठन सन १९२५ में चरखा-संघ के कायम होने पर हुआ। स्वराज्य के आन्दोलन को गांव-गांव में, देहाती जनता के प्रत्येक घर में ले जाना था, इसलिए कोशिश यह हुई कि गरीब देहाती जनता के हाथ में दो-चार पैसे किस प्रकार दिये जायें। इस प्रयत्न में जनता को यह समझने में देर न लगी कि स्वराज-आन्दोलन उनके फायदे के लिए है। उन्होंने यह भी समझा कि स्वराज्य होने पर उनकी मुक्ति हो जायेगी। धीरे-धीरे खादी ने व्यापार का रूप लिया और गांधीजी ने कांग्रेस के प्रत्येक सदस्य को खादी पहनना लाजिमी करके, इसके लिए सुरक्षित बाजार दे दिया। खादी में जीवन-वेतन का सिद्धान्त लागू किया गया और जिस खादी के बनाने में जीवन-वेतन का ध्यान नहीं रखा गया, वह खादी अप्रमाणित करार कर दी गयी। इस प्रकार चरखा-संघ तथा उसके द्वारा प्रमाणित संस्थाएं करोड़-डेढ़ करोड़ की खादी प्रतिवर्ष बनाने लगीं, और लाखों रुपये मजदूरी के रूप में कारीगरों के बीच में बांटने लगीं।

सन् १९४२ में "भारत छोड़ो" का आन्दोलन आया और सारा देश 'करो या मरो' का संकल्प लेकर स्वराज्य की लड़ाई में जुट पड़ा। खादी-संस्थाएं जब्त हुईं और चरखों का चलना बन्द हो गया। १९४४ में जब गांधीजी जेल से बाहर आये, तब उन्होंने खादी को छिन्न-भिन्न अवस्था में पाया। उन्होंने कहा, 'यदि चरखा घर-घर में लोगों द्वारा चलाया जाता, तो चरखे को कोई शक्ति मार नहीं सकती थी।' चूंकि यह काम संगठित संस्थाओं के द्वारा चलाया जा रहा था, इस कारण संस्थाओं को सरकार द्वारा जब्त कर लेने पर सारा काम ठप हो गया। विकेन्द्रीकरण का विचार तभी से खादी वालों के सामने आया।

इतने साल व्यतीत हो गये, और आज सन १९६० में भी देखते हैं कि विकेन्द्रीकरण को जितना महत्व देना चाहिये था, उतना हम नहीं दे सके हैं बल्कि संस्थाएं पहले से और अधिक केन्द्रीत रूप से काम कर रही हैं। १९४२ में हमें जो धक्का लगा, उससे हमारी आंखें खुली नहीं हैं। आज फिर विचारने का मौका आया है, जब कि हम देखते हैं कि करीब ४० वर्षों तक खादी का काम करने के बाद समूचे देश में एक साल में केवल १३ करोड़ की खादी हम बना पाये हैं और ८ करोड़ की बेच पाये हैं। हजारों कार्यकर्ता इसमें लगे हैं, लेकिन हम कौनसी समस्या को हल कर रहे हैं? खादी-उत्पादन और बिक्री के आंकड़ों से प्रकट है कि कपड़े की पूर्ति की समस्या के हल के किनारे को भी हम नहीं छू सके हैं। खादी बिक्री के आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि उत्पादन किसी तरह हम बढ़ा भी लें, तो भी उसकी बिक्री करना कठिन है। खादी महंगी जो पड़ती है। सामाजिक मूल्यों के बिना परिवर्तन किये खादी-आन्दोलन में रुपये प्राप्त करने पर भी खादी के काम को हम आगे नहीं बढ़ा सकते। चालीसगांव की सभा में १९५८ के अन्तिम महीने में पूज्य विनोबाजी के सामने खादी-संस्थाओं ने यह निर्णय लिया था कि खादी और चरखा नयी समाज-रचना का प्रतीक है, जिसमें एक ऐसा समाज बनाना है, जहां व्यापार के लिए उत्पादन नहीं होगा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति उद्योगशील होगा और उद्योग राज्य-निर्भर नहीं, बल्कि लोकनिर्भर होंगे। जून १९५९ में पूसा के सम्मेलन में हमने इससे भी आगे बढ़कर यह निर्णय लिया कि "नवसमाज-रचना के लिए रचनात्मक कार्यक्रम की संयोजना गांव के सारे जीवन को सामने रख कर ही होनी चाहिये। केवल बेकारी-निवारण की दृष्टि से रचनात्मक कार्यक्रम चलाया जायेगा, तो एक सीमा से आगे नहीं बढ़ा जा सकेगा।" हमने पूसा के निवेदन में यह भी निर्णय लिया कि "हर गांव में खादी-उद्योग व विचार के प्रवेश के साथ गांववालों का सामूहिक अभिक्रम जाग्रत होकर यह स्थिति बननी चाहिये कि सबको रोजगार मिले, प्राथमिक आवश्यकताएं—हर व्यक्ति को सन्तुलित भोजन, आवास, शिक्षा, चिकित्सा और विश्राम का अवसर पूरी तरह हासिल हो और सामाजिक न्याय की स्थापना हो। इस प्रकार भूदान-मूलक ग्रामोद्योग-प्रधान, अहिंसक क्रान्ति के लक्ष्य की ओर बढ़ना इस समय कार्यक्रम की निश्चित दिशा हो जाती है।"

चालीसगांव और पूसा की सभाओं ने दिशा निर्धारित कर दी है। उस ओर बढ़ने के लिए ग्राम या ग्रामसमूह इकाई के स्तर पर काम करना होगा। इस ओर जब खादी-संस्थाओं का प्रयास होगा, तभी खादी पनपेगी और आज के जमाने में टिक सकेगी। इस काम का आरम्भ हम इस प्रकार कर सकते हैं कि जिन गांवों में चरखे चलते हैं, वे चरखे सतत चलते रहें इसका उत्तरदायित्व गांववाले उठा लें, ऐसा समझाने का प्रयत्न करना चाहिए। गांवों में आज अन्नसंकट, वस्त्रसंकट, शिक्षा एवं आवास का अभाव, बीमारी इत्यादि जितने प्रकार के दुःख हैं, वे सबके सब दूर किये जा सकते हैं यदि गांव वाले यों कहें कि ग्रामवासी अपने स्वत्व को पहचानें। समाज में यह आत्मविश्वास दिलाने का काम खादी-संस्थाएं चरखे के द्वारा कर सकती हैं। यह आत्मविश्वास जब गांवों में हम जाग्रत कर सकें, तो खादी की खपत का सवाल बहुत हद तक हल हो जाये। चालीस करोड़ की आबादीवाले देश में खादी-संस्थाएं अपने भंडारों द्वारा केवल आठ करोड़ की खादी बेच पायी हैं—अर्थात् प्रति व्यक्ति तीन आने की खादी बिक सकी है। हमारा आरम्भिक प्रयास इससे आगे बढ़ा कर प्रति व्यक्ति रुपया-दो रुपया तक लाने का होना चाहिए। यह बात नहीं भूलना चाहिए कि गांव में जब एक बार अभिक्रम जाग्रत हो जाता है तब वह रुकता नहीं है। उसकी गति सर्वांगीण होती जाती है।

शहरों एवं कस्बों में खादी-बिक्री के लिए हम दूकान चलाते हैं। लाखों की तादाद में खादी पहनने वाले हमारे ग्राहक हैं। उनका और हमारा सम्बन्ध आज खरीददार और विक्रेता का रह गया है। स्वराज-आन्दोलन के दिनों में प्रत्येक खादी पहनने वाले के साथ खादी-संस्थाओं का अपनापन था और वे भी इसे अपनी संस्था मानते थे, क्योंकि हम दोनों एक ही पथ के पथिक थे और स्वराज-प्राप्ति के लिए एक ही साथ तकलीफ उठाते थे। आज वह सम्बन्ध टूट गया है। और वे खादी इसलिए पहनते हैं, चूंकि इसे बहुत दिनों से पहनते आये हैं। हमको उनके साथ पुनः पुराना सम्बन्ध स्थापित करना होगा और वे संस्था को अपना समझें, इसके लिए समय-समय पर उनका सम्मेलन बुलाना और उनमें अपने कार्य-विकास में राय-मशविरा तथा सहायता लेना आवश्यक होगा। उन्हें यह भी समझाना होगा कि खादी अहिंसा का प्रतीक है और एक विशेष समाज-रचना के आदर्श को सामने रख कर खादी-संस्थाएं काम कर रही हैं। हमने चालीसगांव और पूसा में जो निर्णय लिये, उसको सामने रख कर अपने सारे व्यवहार को हमें चलाना होगा और अपने से सम्बन्ध रखने वाले जितने कत्तिन-बुनकर और ग्राहक हैं, उनको अपनी ओर खींचना होगा। फिर खादी हमारे लिए समस्या नहीं रह जायेगी, बल्कि वह अपनी ताकत से आगे बढ़ेगी।

आश्रम : जीवन-दर्शन की प्रयोगशाला

• बालकोबा

[गतांक से समाप्त]

एक सवाल यह भी खड़ा होता है कि कार्यकर्ताओं के सामने ध्येय के रूप में ये व्रत रखने चाहिए या नहीं ? वैसे ही आम जनता के सामने जीवन के ध्येय के तौर पर ये पंचव्रत रखे जा सकते हैं या नहीं ? मेरा नम्र निवेदन है कि रखे जा सकते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि रखने चाहिए। जनता के सामने जीवन-दृष्टि से कुछ भी ऊँचा ध्येय न रहे, तो उसे मैं बड़ी भारी कमी समझता हूँ। मेरे सामने यह प्रश्न आता है कि सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह यह ध्येय जनता के सामने न रहे, तो क्या असत्य, हिंसा, अब्रह्मचर्य, स्तेय, परिग्रह ये ध्येय के रूप में रखना है ? असत्य, हिंसा, अब्रह्मचर्य, स्तेय, परिग्रह ये ध्येय के रूप में नहीं रखे जा सकते हैं, तो यह स्वाभाविक ही सिद्ध हो जाता है कि सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह ; ये महासिद्धान्त आम जनता के सामने ध्येय के रूप में होने चाहिए। ध्येय हासिल करना तो अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार ही होगा। उसमें जबरदस्ती का कोई प्रश्न नहीं है। लेकिन कुछ ध्येय ही नजर के सामने न हो, तो हम जीवन में क्या प्राप्त कर सकेंगे ? अपार समुद्र में जहाज मुसाफरी के लिए निकलता है, तब किस स्थान पर जाना है, यह उसके सामने निश्चित रहता है। और अंतिम मंजिल पर पहुँचने के लिए उसे सतत दिग्दर्शक की तरफ देख कर चलना पड़ता है, तभी अंत में मुकाम पर वह पहुँच पाता है। वैसे ही जन-समुदाय के सामने कुछ बुनियादी सिद्धान्त हमेशा रहने चाहिए, और उसके अनुसार ही सारा जीवन बिताने की उसकी चेष्टा होनी चाहिए।

सार यह निकला कि आश्रम का ध्येय इस प्रकार का पंचविध कार्यक्रम रहेगा :

(१) परमात्मा का अनुभव प्राप्त करना। (२) उसके लिए आंतरिक साधना के तौर पर पंचमहाव्रत और नियम-पालन की चेष्टा करना। (३) बाह्य साधन के तौर पर आठ घंटे सार्वजनिक सेवा-कार्य करना। (४) इन सबके लिए निरंतर स्वाध्याय करना। (५) दोनों समय ध्यानमयी प्रार्थना करना।

अब हम आश्रम के इतिहास पर नजर डालें। आश्रम-स्थापना की कल्पना पहले-पहल दक्षिण अफ्रीका में पूज्य गांधीजी को सूझी। वहाँ फिनिक्स में उन्होंने आश्रम स्थापित किया था। फिनिक्स में आश्रम का दिन-क्रम किस प्रकार था, इसकी जानकारी कोशिश करने पर भी नहीं मिली। दक्षिण अफ्रीका के बाद हिन्दुस्तान में गांधीजी ने अहमदाबाद के पास कोचरब में सन् १९१५ में आश्रम की स्थापना की। सन् १९१६ में इस आश्रम में पूज्य विनोबाजी दाखिल हुए। मैं भी ११ दिन तक आश्रम में रहा था। उन ११ दिनों में आश्रम-जीवन की मेरे पर इतनी गहरी छाप पड़ी कि घर जाने पर मैंने घर में आश्रम-जीवन शुरू कर दिया।

कोचरब-आश्रम में गांधीजी का शरीर बहुत मजबूत था। आश्रम में सुबह करीब साढ़े पाँच बजे तक चक्की पीसने का कार्यक्रम रहता था। उसमें हम और वे बिना भूले भाग लिया करते। मेरा शरीर उस वक्त बहुत ही हट्टा-कट्टा था। लेकिन गांधीजी को १५ मिनिट तक बिना हाथ बदले पीसते देख कर मुझे बड़ा अचम्भा होता था, और अपना हाथ बदलने में मुझे बहुत संकोच-भाव महसूस हुआ करता था। यह भाव उनके ध्यान में आ गया हो, या यों ही उन्होंने मुझे बताया कि 'हालाँकि मैं जल्दी हाथ नहीं बदलता हूँ, तो भी तुम हाथ बदलने में संकोच मत रखो। चाहे जब हाथ बदलते जाओ।' वे खुद सुबह से रात तक सेवा-कार्य में व्यस्त रहते थे। सुबह खुद सामूहिक रसोई बनाने में मशगूल रहते थे। सब आश्रम-वासियों के लिए आठ घंटे काम लाजिमी और जरूरी था। उस समय मिल का सूत बुना जाता था। हाथ का सूत बुनना तो साबरमती में शुरू हुआ।

आहार के बारे में उस वक्त बड़े-बड़े नियम थे। दूध, घी, छाछ तो रहता ही नहीं था। मिर्च, मसाले, अचार आदि को स्थान नहीं था। नमक ऊपर अलग से दिया जाता था।

सन् १९१७ में स्थान बदल कर जब आश्रम साबरमती में आया तब पूज्य गांधीजी ने आहार में परिवर्तन कर दिया। दूध, घी, छैना शुरू हुआ। गुड़ भी मिलने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि कोचरब में लोग जल्दी बीमार पड़ते थे, उसमें फर्क पड़ गया। साबरमती आश्रम में आठ घंटे सार्वजनिक काम का आग्रह बराबर रखा गया था और दोनों समय प्रार्थना तो थी ही। साबरमती-आश्रम के बाद गांधीजी सेवाग्राम में आ बसे, तब उनकी कल्पना साबरमती-आश्रम की तरह आश्रम चलाने की नहीं थी। इसलिए आठ घंटे सेवा-कार्य का आग्रह गांधीजी ने नहीं रखा।

साबरमती-आश्रम की तरह वर्धा में श्री जमनालालजी की इच्छा से सत्याग्रहाश्रम की स्थापना हुई थी। इसका संचालन पूज्य विनोबाजी करते थे। कार्यकर्ताओं का दैनिक कार्यक्रम किस तरह होना चाहिए, इस संबंध में बड़ी अच्छी कल्पना विनोबाजी ने रखी है "चौबीस घंटे समय के यानी सारे दिन के तीन विभाग किये जायँ—विश्राम, कार्य और स्वकृत्य हरएक विभाग आठ घंटे का हो।

(१) विश्राम में नींद, बातचीत, गाना, सितार बजाना, अखबार पढ़ना इतना समाविष्ट हो।

(२) कार्य में उत्पादक शरीर-परिश्रम और सार्वजनिक कार्य, इन दो चीजों का समावेश हो।

(३) स्वकृत्य में दो विभाग हैं, आत्म-कृत्य और देहकृत्य। आत्मकृत्य में प्रार्थना, तकली की उपासना, स्वाध्याय, लेखनोपासना, यानी हर रोज के अनुभव, विचार लिखना इतना समाविष्ट है। देहकृत्य में स्वयंपाक, व्यायाम, स्नान, भोजनादि दैहिक।

अब इसका बँटवारा इस प्रकार हो।

विश्राम	
निद्रा	७ घंटे
मनोरंजन	½ घंटे
अखबार	½ घंटे
	कुल ८ घंटे

कार्य	
उत्पादक श्रम	४ घंटे
सार्वजनिक	४ घंटे
	कुल ८ घंटे

आत्मकृत्य	
प्रार्थना	१ घंटे
तकली उपासना	½ घंटे
स्वाध्याय	१ घंटे
लेखनोपासना	½ घंटे
देहकृत्य	
गृहकृत्य	१ घंटे
व्यायाम	१ घंटे
स्नान-भोजनादि दैहिक	३ घंटे
	कुल ८ घंटे

आश्रम जैसी ध्येयवान संस्था पूज्य गांधीजी या पूज्य विनोबाजी जैसे विभूति के बिना चल सकते हैं या नहीं, यह एक दूसरा बुनियादी सवाल है। यदि नहीं चला सकते, तो आश्रम-जीवन का प्रचार जनता में हम नहीं कर पायेंगे। मेरा यह अनुभव है कि आश्रम-संस्था विभूति के बिना चलाना आसान नहीं है, बहुत ही कठिन चीज है, इसमें संदेह नहीं। फिर भी आश्रम के जीवन-सिद्धान्त हमको पट गये हों और वे आचरण में लाने के लिए हम कुछ चंद लोग उत्सुक हों, तो ऐसे उत्सुक सज्जन आश्रम चला सकते हैं। आश्रम-संस्था चलाने में महत्त्व की बात यह ध्यान में रखनी होगी कि एक के हाथ में आश्रम की सारी सत्ता न रहे। आश्रम में रहे प्रमुख व्यक्तियों की एक समिति हो और वह सारे आश्रम का कारोबार चलावे। कोई भी उच्च ध्येयवान संस्था चलाना हो तो उस संस्था के कुछ आजीवन सदस्य होने चाहिए। उन आजीवन सदस्य की प्रतिज्ञा होनी चाहिए कि हम आश्रम को कभी छोड़ेंगे नहीं। अद्वैत साधने की हमेशा हम कोशिश करेंगे। द्वैत को साधने की चीज नहीं है, क्योंकि जब से हमें अलग देह मिला है, तब से द्वैत शुरू हुआ है। इसलिए साधने की कोई चीज हो तो वह अद्वैत ही है। अद्वैत साधने के लिए नर-देह हमें मिला है, ऐसा मैं समझता हूँ। पशु-देह में अद्वैत नहीं साध सकते। सिर्फ मनुष्य-देह में ही यह चीज सध सकती है। कार्य करते हुए आपस-आपस में मतभेद अवश्य होंगे। लेकिन अद्वैत की मर्यादा वे न छोड़ें, तो मत-भेद रहने में कोई हर्ज नहीं। अलग-अलग मणी रहते हैं, उनमें डोरा पिरोया जाता है, तो माला बनती है। डोरा नहीं पिरोया, तो मणियों की माला नहीं बन सकती। मत-भेद रूपी मणियों में अद्वैत का डोरा पिरोया रहेगा, तो ऐक्य रूपी माला कायम रहेगी, अन्यथा संस्था टूटेगी।

सत्ता और सेवा में संघर्ष चलता रहता है और प्रायः सत्ता की सेवा पर विजय होती है। ये दोनों वृत्तियाँ आदमी में रहा करती हैं। वास्तव में सेवा की सत्ता पर विजय होनी चाहिए। जिस संस्था में सेवा की सत्ता पर विजय होगी। वह संस्था सुचारू रूप से चलेगी, लेकिन सत्ता की सेवा पर विजय होते ही संस्था टूटेगी। सेवा में जितनी सत्ता का सहज समावेश रहता है, उतने से हरएक सेवक को पूरा संतोष होना चाहिए।

आश्रम-संस्था में गीता आदि अध्यात्म-विषयक ग्रंथों के अध्ययन की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। आध्यात्मिक जीवन बिताने वाले सज्जन संस्था में होने चाहिए। ऐसे व्यक्तियों से आध्यात्मिक वातावरण संस्था में बना रहता है। इसके अभाव में संस्था निष्प्राण रहेगी या टूटेगी।

आश्रम में कुछ विभाग होंगे। उन उन विभागों के व्यवस्थापकों को अपने विभाग में स्वातंत्र्य होगा। लेकिन संस्था की जो कार्यवाहक समिति होगी, उसका नियंत्रण विभाग-व्यवस्थापक मान्य करें, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

आश्रम की प्रवृत्ति बढ़ाने में मर्यादा रखनी चाहिए। आश्रम के ध्येय के साथ अनुसंधान रखने वाली योजना चलाने में [illegible] कारी हो तो उस पर कदम रखने की कोशिश करनी चाहिए। [illegible] प्रवृत्ति को हम इतनी बढ़ा देते हैं कि हम ध्यान को उसमें खो देते हैं और हमारा

इससे कार्य झटपटयुक्त और अज्ञानमूलक बनता रहता है, कार्यक्षमता कम हो जाती है, ढीलापन आ जाता है। प्रवृत्ति बढ़ाने के बाद उसे कम करना असंभव हो जाता है। इसलिए प्रवृत्ति बढ़ाने में पहले से बहुत सावधानी रखनी चाहिए।

आश्रम में हम बीमार हो जाते हैं, यह बड़ी खामी है। गांधीजी ने हमको यह विचार सिखाया कि बीमार होना पाप है। मैं इसे मानता हूँ, फिर भी मैं बीमार पड़ा और बहुत दिनों तक बीमार रहा, तो इसका क्या कारण है? वैसे देखा जाय तो आश्रम में जल, वायु, खुराक अच्छी रहती है। संयमयुक्त जीवन रहता है। ऐसी स्थिति में हमें बीमार नहीं होना चाहिए। तो इसका कारण मुझे यह लगा है कि आरोग्य कायम रखने में सहायता देने वाला प्राकृतिक चिकित्सा संबंधी ज्ञान प्राप्त करने की कोई व्यवस्था हमारे आश्रम में नहीं रही है। प्राकृतिक चिकित्सा के विषय में आज मुझे जो ज्ञान मिला है, वह पहले होता तो मैं बीमार नहीं पड़ता। इसलिए आश्रम में लोग बीमार न पड़ें, इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा के विषय में पूरी जानकारी मिलनी चाहिए।

जिस आश्रम का, 'विश्वनीडम्' का उद्घाटन आज हो रहा है, उसके संबंध में १२ अप्रैल, '५८ को श्री वल्लभस्वामी ने निम्नलिखित पत्र लिखा था

"(१) यह आश्रम दक्षिण प्रान्त के कार्यकर्ताओं का शिक्षण-केन्द्र हो।

(२) हो सके तो देश के कार्यकर्ताओं का विश्राम-केन्द्र भी हो, जहाँ शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य के लिए वे कुछ दिन रह सकें।

(३) भिन्न भिन्न देशों के गांधी-दर्शन का आधार और अध्ययन करने वालों के लिए भी स्थान हो।

(४) इसके अलावा ग्रामसेवा के बुनियादी प्रयोग आदि के प्रयोग हों।

(५) बैंगलोर शहर के सर्वोदयप्रेमी बीच-बीच में आश्रम-जीवन बिताना चाहें, उनके लिए भी सहूलियत हो।

(६) बैंगलोर शहर के शांति-सैनिक और हम कार्यकर्ताओं का हो सके उतना निवास-स्थान भी हो।

ऐसी कई कल्पनाएँ हैं। जितनी व्यवहार में आयेंगी उतनी सही। बाकी के लिए प्रयत्न रहेगा।

संस्था स्वावलम्बी नहीं रहेगी। श्रम-दान, संपत्ति-दान और शिक्षण के लिए निधि आदि से मदद का भी उपयोग किया जायगा। उत्तर और दक्षिण को जोड़ने वाली कड़ी यह आश्रम बने, यह उद्देश्य जरूर है। शुरू में स्थायी सेवक पाँच से ज्यादा नहीं होंगे। शिविर या ट्रेनिंग के लिए दस-बीस से लेकर पचास-साठ तक लोग आते-जाते रहेंगे।"

आश्रम के संबंध में श्री वल्लभस्वामी ने जो कल्पना की है, वह बहुत अच्छी है। श्री वल्लभस्वामी पूज्य विनोबाजी के पास आश्रम में ४१ साल पहले आये। उनकी उम्र तब १२-१३ साल की होगी। पूज्य विनोबाजी के पास एक निष्ठा से रहे। उनका सारा शिक्षण विनोबाजी के पास हुआ। उनका व्रतनियम-निष्ठापूर्ण जीवन बना। ऐसे योग्यतावान पुरुष जहाँ इस आश्रम के संचालक रहेंगे, वहाँ आश्रम अच्छा चलेगा। आश्रम में जो भी रहेंगे, उन्हें पंचमहाव्रत-पालन की दीक्षा मिले, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। सब आश्रम निवासियों को पहले पंचमहाव्रतों की पहचान करानी चाहिए।

पूज्य विनोबाजी के "अभंग-व्रतें" नाम की किताब का हिंदी अनुवाद नहीं हुआ है, वह होना चाहिए। पूज्य विनोबाजी ने बड़ा प्रासादिक अनुवाद किया है उसमें नई नई चीजें उन्होंने डाली हैं। इस किताब का अध्ययन हरएक को करना चाहिए।

पवनार में ब्रह्मविद्या-मंदिर

शिवाजी भावे

विनोबाजी ब्रह्मविद्या की खोज के लिए ही पवनार से बाहर निकले हैं। भूदान-यज्ञ के मूल में उनका यही विचार काम कर रहा है। पद-यात्रा के दौरान में जब वे राजस्थान में थे, तब उन्हें यह विचार आया कि ब्रह्मविद्या-मंदिर की स्थापना होनी चाहिए। इसके परिणामस्वरूप यहाँ आश्रम में कुछ साधना इस दिशा में चलती है। राजस्थान में जमनालालजी के जन्म-स्थान [काशी का बास, सीकर] में इस विचार ने मूर्त रूप लिया था। पवनार में मुख्यतया बहनों के लिए ब्रह्मविद्या-मंदिर की स्थापना की गयी है।

ब्रह्मचर्य का अर्थ

यह पवनार-आश्रम धाम नदी के किनारे पर स्थित है। ब्रह्मविद्या का सम्बन्ध ब्रह्मचर्य से है। आजकल ब्रह्मचर्य के बारे में बड़ा भ्रम है। लोग समझते हैं कि इन्द्रियनिरोध का नाम ब्रह्मचर्य है। असल में जीवनतत्त्व ही ब्रह्मचर्य है। जो घर की सोचता है वह गृहचारी, जो ग्राम की सोचता है वह ग्रामचारी, उसी प्रकार प्रान्तचारी, देशचारी और अन्तर्राष्ट्रीयचारी है। चारी का आदर्श है भेद से निकल कर व्यापक बनते जाना। बृहत् कल्याण के विचार में सतत आगे बढ़ते जाना, इस प्रक्रिया में एक क्षण भी रुकावट नहीं होनी चाहिए। ब्रह्मचारी के लिए इस प्रकार जब जगत् का मन भी छोटा पड़ता है, क्योंकि वह जगत से भी आगे 'सर्वभूत हिते रत' की भावना से प्रतिक्षण बिना रुके आगे बढ़ता जाता है। ऐसे ब्रह्मचारी के जो अनुभव होते हैं, वे ही आगे जाकर जीवन के गूढ़ तत्त्वों को प्रकट करते हैं।

स्त्री-पुरुष समान, केवल प्रकृति-भेद

स्त्री में विशेष शक्ति है, या वह अबला है, ये दोनों ही विचार गलत हैं। स्त्री और पुरुष में केवल प्रकृति-भेद है विचार-भेद नहीं। हमें सारी अच्छी बातें स्त्रियों में ही मिलेंगी, यह भी गलत है। बच्चे बूढ़े, स्त्री और पुरुष सभी में कुछ-न-कुछ अच्छी बातें हैं और वे ग्रहण करनी चाहिए। बच्चों में स्फूर्ति है तो उनसे स्फूर्ति में और बड़ों में अनुभव है तो उनसे अनुभव प्राप्त करें। आज समाज में स्त्री का सीमित क्षेत्र माना जाता है, आत्म-दृष्टि से यह गलत बात है। दोनों में एक ही आत्मा है। आज का मूल तत्त्व क्या है, यह समझना होगा। यह समानता का युग है। पंडित नेहरू को भी एक वोट का अधिकार और उनके बावर्ची को भी एक वोट का अधिकार है—इसका क्या मतलब है? क्या पंडित नेहरू और बावर्ची की बुद्धि बराबर ही है? यदि नहीं, तो फिर क्या बात है? इसका जवाब यही हो सकता है कि दोनों की आत्मा एक है।

कमी-पूर्ति के लिए सहकार आवश्यक

सर्वोदय-समाज में सब समान हैं। यह समानता आत्मा की नींव पर खड़ी है। सबको यह अभेदता ध्यान में रखनी चाहिए। पुरुष और स्त्री, दोनों में से पूर्ण कोई नहीं है। इस जगत् में परिपूर्ण तो केवल ईश्वर ही है। इसलिए जहाँ भी कमी है, उसकी पूर्ति के लिए हमें प्रयत्न करना होगा। स्त्री की कमी को पुरुष पूरा करे और पुरुष की कमी को स्त्री। एक-दूसरे के सहकार से जीवन को परिपूर्ण बनाना होगा। हममें कमियाँ रहेंगी और इसलिए हमें जीवन भर सहकार करना पड़ेगा। जीवन की परिपूर्णता ही जीवन का सुन्दर संगीत है और उस संगीत से सारा समाज आनन्दित होता है। सहकार करते हुए किसी को भी बड़ा-छोटा नहीं समझना है। न कोई श्रेष्ठ, न कोई कनिष्ठ। काल के प्रवाह में किसी का स्थान आगे है तो किसी का पीछे। सहकार करते हुए भी हम सामंजस्य बैठाना होगा।

मूल्य कैसे बदलें?

आज जो स्त्री-शक्ति के विकास की बात कही जाती है, वह केवल शिक्षा में करने से काम नहीं चलेगा। उसका विकास स्त्री और पुरुष, दोनों में होना चाहिए। इसके लिए आज के समाज में प्रचलित मूल्यों को बदलना होगा। विधवा को आज किसी भी मांगलिक कार्य में भाग नहीं लेने दिया जाता, तो हमें इस मूल्य को बदल कर विधवा को मंगल स्थान पर लाकर बिठाना होगा। जितने भी मांगलिक काज हों, वे विधवाओं द्वारा सम्पन्न कराये जायें, तो समाज में एक मूल्य बदलेगा। उसी प्रकार पुत्र-पुत्री में भेद किया जाता है। पुत्र से पुत्री को आज कम हीन माना जाता है, इस पर हम विचार करें। पुत्री को हमें शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं, अन्य क्षेत्रों में भी आगे बढ़ाकर इस मूल्य को बदलना चाहिए। ऐसा करेंगे तभी हम जीवन की परिपूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं, यह माना जायगा।

जनशक्ति और राज्यशक्ति का संबंध

हमने जन-शक्ति और राज्य-शक्ति में क्या सम्बन्ध होना चाहिए, इसका एक चित्र बनाया है, जो सम्बन्ध आसन में और डंडी में होना चाहिए, वही सम्बन्ध जन-शक्ति और राज्य-शक्ति में होना चाहिए। डंडी में दम हुआ चाहिए। डंडी गड़ी हो और उसमें थोड़ा-सा आसन लगा दिया, तब सुबह सुन्दर दही मिलेगा कल को। जो जन-शक्ति है, वह है डंडी का हुआ। भारत की डंडी जन-शक्ति के आधार से गड़ी हो और फिर उसमें राजनीति का थोड़ा-सा आसन डाल दिया। अगर डंडी में दम हो और डंडा ही हो कि डंडी में ही गर्मी और उसमें आसन डाल दिया गया, दूसरे दिन सुबह देखा, तो दही नहीं। फिर उसमें आसन डाल दिया और दूसरे दिन देखा, फिर भी दही नहीं, तब डंडी को बदलेंगे। यही हाल आज हो रहा है। .... कहती है कि समु-दायिक विकास के लिए जितना पैसा और शक्ति लगी है उस अनुपात में निष्पत्ति कम हुई है क्योंकि जन-शक्ति का अभाव है। जन-शक्ति नहीं है और ऊपर से पैसा बरस रहा है। इसलिए उसमें बू आती है। क्या इस पर कन्ट्रोल करने वाला कोई है? पण्डित नेहरू कहाँ-कहाँ देखेंगे? क्या उनको एक कोटी आँखें हैं, जो वे देख सकें कि कहाँ क्या होता है? अगर जनशक्ति हो, तो एक-एक पाई का सदु-पयोग हो सकता है।

बिहार के बेराई नाम के एक गाँव ने यह तय किया कि हम अपने पेट के लिए जितना काम करना हो करेंगे, उसके अलावा रोज दो घंटे गाँव के लिए, समाज के लिए श्रमदान करेंगे। बहुत ही नतीजा निकल सकता।

उस गरीब गाँव में, जहाँ पूँजी की कमी थी और जिस गाँव में केवल ८३ घर हैं, एक साल में वहाँ दस हजार रुपयों की पूँजी बन गयी। इस अनुपात में हर गाँव में काम हो, तो पाँच सौ करोड़ रुपयों की पूँजी बन सकती है।

—जयप्रकाश नारायण

शांति-सेना-समाचार

"मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।"
[सब जीव मेरी तरफ मित्र की दृष्टि से देखें। मैं सब जीवों की तरफ मित्र की दृष्टि से देखूँगा।]

पूज्य विनोबाजी की सूचना के अनुसार 'शांति सेना' का स्वतंत्र स्तंभ आपकी सेवा में उपस्थित है। सब शांति-सैनिकों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपने काम के समाचार, अनुभव तथा सूचनाएँ इस स्तंभ के लिए भेजते रहने की कृपा करें। —निर्मला देशपांडे

'तब शांति-सेना बनेगी'

अँधेरी रात में अपने दिल को जला कर कोई अकेला जा रहा था, उजड़े हुए घर बसा रहा था, टूटे हुए दिलों को जोड़ रहा था! क्या वह कोई पागल शायर था, जो करुणा की कलम से जीवन की कविता लिख रहा था? क्या वह कोई फकीर था, जो तपस्या की आग में तन-मन-प्राणों को परिशुद्ध कर रहा था? क्या वह कोई क्रांतिकारी था, जो बेजबानों की जबान बना था, और बेजानों की जान? यह सब तो वह था ही, लेकिन वह कुछ और था। ओंकार की तीन मात्राओं से भी अधिक शक्तिशाली वह आधी मात्रा होती है, जो कुछ और कहती है। वह शांति-सैनिक था।

गोवर्णं के मंदिर के निकट डूबते हुए सूरज को अपने हृदय में अर्पित करने वाले पश्चिम सागर की सन्निधि में विनोबाजी बोल रहे थे। दिन था सूत्रांजलि-समर्पण का।

'बापू शांति-सेना के प्रथम सेनापति थे और प्रथम सैनिक भी। सेनापति के नाते उन्होंने आज्ञा दी और सैनिक के नाते उसका पालन करके वे चले गये!"

सेना बन चुकी थी, एक का अंक लिखा गया था। संख्या को बढ़ाने के लिए शून्यों की आवश्यकता थी। दस साल बीतने पर अंक के आगे शून्य चढ़ने लगे। अजमेर-सम्मेलन के समय दिखाई दिया, दो शून्य चढ़े थे, हजार सैनिक बने थे।

शांति-सेना के सेनापति ने सैनिकों से कहा: "जब तक किसी एक बिंदु पर बहुविध दिमाग से; लेकिन एकहृदय से सम्मिलित शक्ति लगाने की ताकत जो हिंसा दिखाती है, वह ताकत अहिंसा नहीं दिखायेगी, तब तक वह नहीं पनपेगी। अहिंसा सलाह देती है, हुक्म नहीं। लेकिन यह सलाह हुक्म से भी ज्यादा जोरदार होती है। स्वेच्छा से स्वेच्छात्याग हो। जब पूरी आजादी के साथ हर व्यक्ति आज्ञा का पालन करेगा, तब अहिंसा का राज्य आयेगा।"

हम 'शून्य' बन कर उस 'एक' के पीछे जायेंगे, तब सेना बनेगी और बढ़ेगी।

—निर्मला देशपांडे

बेलगाँव शांति सेना-शिविर

महाराष्ट्र और मैसूर राज्यों में जो सीमा का विवाद उपस्थित हुआ है, उसका रूप दिन-ब-दिन तीव्र होता जा रहा है। मैसूर राज्य की सीमा पर स्थित बेलगाँव जिले के कई हिस्सों में मराठी भाषा-भाषी बहुसंख्या में हैं, जो चाहते हैं कि उस हिस्से को महाराष्ट्र के साथ मिलाया जाय। मैसूर तथा महाराष्ट्र राज्यों की सीमा के प्रश्न को लेकर गत दो-तीन साल से बेलगाँव में आन्दोलन चल रहा है। पिछले दो-तीन महीनों में आन्दोलन के नेताओं ने लगान-बंदी (नो टैक्स) का कार्यक्रम उठाया है। उस सिलसिले में गत फरवरी और मार्च में वहाँ की जनता और पुलिस के बीच संघर्ष हुए और पुलिस-अधिकारियों ने लाठी और गोली चलायी, जिससे वातावरण प्रक्षुब्ध हुआ। सेवाग्राम सर्वोदय-सम्मेलन के समय महाराष्ट्र तथा कर्नाटक के लोक-सेवकों ने शांति-सेना-समिति की मर्यादिका श्रीमती आशादेवी को परिस्थिति से अवगत कराया। उन्हींके मार्गदर्शन में दोनों प्रदेश के शान्ति-सैनिकों का एक केन्द्र बेलगाँव में स्थापित करने का निर्णय हुआ।

बेलगाँव के कार्यकर्ता श्री प्रभाकर मराठे ने शांति-सेना शिविर की पूर्वतैयारी का काम किया। ता० १४ अप्रैल, '६० से शिविर का आरंभ हुआ, जिसमें दोनों प्रदेशों के दस-दस कार्यकर्ता उपस्थित थे। शांति-सैनिकों की दृष्टि, नीति तथा मर्यादाओं पर विचार हुआ और चार बातें तय हुईं।

(१) मुख्य उद्देश्य शांति-स्थापना का होगा, जिसके लिए बेलगाँव प्रदेश के दोनों भाषा-भाषियों (मराठी और कन्नड) के बीच परस्पर-सौहार्द तथा बंधुता की भावना दृढ़ हो, ऐसी कोशिश की जाय। सीमा-प्रश्न आपस की बातचीत से हल हो और जो भी आन्दोलन चलाया जाय, वह शांतिमय मार्ग से ही चलाया जाय, ऐसा वातावरण निर्माण करने की कोशिश हो।

(२) कोई भी पक्ष ऐसा कभी न माने कि सीमा-प्रश्न जीवन-मरण का प्रश्न है; बल्कि दोनों पक्ष भी इस बात को समझें कि मराठी और कन्नड भाषा-भाषी एक ही भारत माता के संतान हैं। इस विचारधारा का प्रचार करने की जनता में कोशिश हो।

(३) बेलगाँव का प्रदेश किस राज्य में रहे, इसका फैसला देने का काम शांति-सैनिकों की मर्यादा के बाहर का काम है। इसलिए शांति-सैनिकों का काम केवल इतना ही रहेगा कि मसले का हल स्नेह तथा बंधुता से हो।

(४) गत फरवरी-मार्च माह में पुलिस की तरफ से जो अत्याचार हुए, उनके बारे में विधिवत् जाँच करना और निर्णय देना भी शांति-सैनिकों का काम नहीं है। लेकिन परिस्थिति को समझना और लोगों के सुख-दुख को जान लेना शांति-सैनिकों का काम है।

ता० १४ अप्रैल को श्री अप्पासाहब पटवर्धन ने शिविर का उद्घाटन किया। सब राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ताओं को शिविर के लिए निमंत्रण गया था।

सैनिकों ने घर-घर में सफाई का काम किया और घर-घर जाकर शांति-सेना की विचारधारा लोगों को समझाने की कोशिश की। सैनिकों की चार टोलियाँ बनायी गयी थीं। हर टोली में दो मराठी और दो कन्नड भाषा-भाषी सैनिक थे। प्रतिदिन शाम को सब सैनिक इकट्ठे होकर अपने अनुभव सुनाते थे। महाराष्ट्र आन्दोलन-समिति के जो नेता जेल में थे, उनसे भी ये सैनिक मिले और जिला-पुलिस-प्रमुख से भी मिले।

सैनिक बेलगाँव जिले के उन देहातों में भी घूमे, जहाँ पर पुलिस की तरफ से अत्याचार हुए थे और लोगों की भावनाएँ जानने की कोशिश की। कुल मिला कर सैनिकों को लगा कि यद्यपि जनता की तरफ से कुछ गलत काम हुए हैं, लेकिन पुलिस-अधिकारियों ने जनता को भयभीत करके काफी अत्याचार किये हैं।

सैनिकों ने शहर के तटस्थ और सौम्य व्यक्तियों की सभा बुलाने की कोशिश की, लेकिन उसमें विशेष सफलता नहीं हासिल हुई।

सैनिकों की अंतिम सभा में यह तय हुआ कि निष्पक्ष जाँच के लिए कमेटी नियुक्त हो, ऐसी सरकार से माँग की जाय और यदि सरकार उसे स्वीकार न करे तो सर्व सेवा संघ कमेटी बनाये। समस्या के मूलभूत हल के लिए राजनीति अलग, तटस्थ और ऊँचे दर्जे के व्यक्ति की एक पंचकमेटी सरकार की तरफ बनायी जाय, जिसका निर्णय सब मान्य करें। सैनिकों ने यह भी तय किया कि बेलगाँव में एक शांति-सेना केन्द्र कायम किया जाय, जिसमें दो कन्नड और दो मराठी भाषा-भाषी सैनिक रहें, जो उस क्षेत्र को सर्व प्रेम-क्षेत्र बनाने की कोशिश करें। समाज के सभी तबकों के सज्जन लोगों को एक लाने की दृष्टि से विविध कार्यों को चलाया जाय—जैसे साने गुरुजी की कल्पना के अनुसार "अन्तरभारती" का केन्द्र चला कर कन्नड और मराठी, दोनों भाषाओं का अध्ययन तथा सद्साहित्य का प्रचार करना, सर्वोदय-विचार का प्रचार करना तथा जो अल्पसंख्यक लोग हैं, उनके लिए मातृभाषा में शिक्षण तथा अन्य सहूलियतें हासिल कर देने की तथा उनकी शिकायतें के निवारण करने की कोशिश करना।

शिविर-समाप्ति के दिन शहर में आम सभा हुई, जिसमें श्रोताओं ने बहुत शांति से सर्वोदय विचार सुना। शिविर के लिए सर्वश्री वल्लभस्वामी, शिरगापुर नायक, सदाशिवराव भोसले, बापू वाघत, गोविंदराव शिंदे, बापूभाई ठोरे आदि का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

अ० भा० शांति-सेना मंडल की बैठक

अखिल भारतीय 'शांति-सेना मंडल' की बैठक ता० ११ मई '६० को 'साधना केन्द्र' काशी में हुई। सर्वश्री जयप्रकाश नारायण तथा शंकरराव देव के अलावा सर्वश्री वल्लभस्वामी, बैद्यनाथ प्रसाद चौधरी भी उपस्थित थे। मंडल ने शांति-सेना के संगठन, प्रशिक्षण तथा कार्यक्रम पर विचार किया। संगठन के बारे में यह तय हुआ कि शांति-सेना के काम के लिए हर प्रदेश के शांति-सैनिक मिल कर दो-चार व्यक्तियों की एक शांति-सेना समिति बनें, जो प्रांतीय सर्वोदय-मंडल से संबद्ध हों, लेकिन स्वतंत्र अस्तित्व से काम करें। हर प्रदेश में शांति-सैनिकों की एक रैली हो।

प्रशिक्षण के लिए, नमूने के तौर पर एक पाठ्यक्रम बनाया जाये, जो सबके पास भेजा जाये। जहाँ तक संभव हो, प्रशिक्षण का काम प्रांत में ही हो। लेकिन जहाँ पर यह संभव नहीं है, उन प्रांतों के सैनिकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था काशी में की जाये। प्रशिक्षण का कार्य शीघ्र आरंभ हो।

मंडल ने भारत की उत्तरी सीमा के प्रदेश में सेवाकार्य करने के लिए कुछ कार्यकर्ताओं को स्थायी रूप से या कम-से-कम पाँच साल के लिए भेजने का भी निर्णय किया। उस प्रदेश की जानकारी हासिल करने के लिए विशेष कार्यकर्ताओं को दो महीने के लिए उस प्रदेश में भेजने का भी निर्णय हुआ।

शांति-सेना-समाचार

बिहार शांति-सैनिकों की रैली

मुजफ्फरपुर जिले के जिस क्षेत्र में एक साल पहले अशान्ति की आग भभक उठी थी और शान्ति-सैनिकों के सफल प्रयास के कारण उस आग का शमन हुआ था, उसी क्षेत्र में अप्रैल ता० २८-२९ ३० को प्रदेश के शान्ति-सैनिकों की रैली का आयोजन किया गया था। 'बैरगनिया' गांव में श्री जयप्रकाशजी की अध्यक्षता में श्री शंकरराव देव ने शिविर का उद्घाटन किया। दूसरे दिन शान्ति सैनिक तथा शान्ति-सहायक, जिन्होंने अशान्ति-शमन के कार्य में हिस्सा लिया था, मार्च करते हुए अधवारा गांव में गये, जहाँ किसी समय आग लगी हुई थी। वहाँ पर आग बुझाने के बाद सेवाकार्य बराबर जारी रखा गया था। उस क्षेत्र में गांधी-निधि के तत्त्व-प्रचार विभाग की ओर से एक स्थायी केन्द्र चल रहा था, जहाँ पर दो भाई तथा एक बहन साल भर से विचार-प्रचार का काम कर रहे थे। केन्द्र के मकान का उद्घाटन श्री जयप्रकाशजी ने किया।

शिविर में शान्ति-सेना के संगठन, प्रशिक्षण तथा कार्यक्रम के बारे में चर्चा हुई। वहाँ पर सब शान्ति-सैनिकों ने मिल कर प्रांतीय शान्तिसेना-समिति बनायी, जिसके संयोजक श्री विद्यासागर और सदस्य सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, गोखले चौधरी तथा श्यामबहादुर है। यह तय हुआ कि शान्तिसेना-समिति प्रांतीय सर्वोदय-मंडल से सम्बद्ध रहेगी, लेकिन स्वतन्त्र अभिक्रम से काम करेगी। यह भी निश्चय हुआ कि कुल नागरिकों को शान्ति-सहायक माना जाये और अशान्ति के मौके पर जो भी काम करना चाहेंगे, उन्हें सहायक के नाते साथ लिया जाये। उस अवसर के लिए सहायकों को शान्तिसेना के बैज दिये जावें, जो काम खतम हो जाने पर वापस लिये जायेंगे।

प्रशिक्षण के बारे में यह सोचा गया कि प्रशिक्षण-पत्र की प्रथम पांच निष्ठाओं के बारे में, जो लोक-सेवक की भी निष्ठाएँ हैं, न सोचते हुए छठी निष्ठा के बारे में विशेष रूप से सोचा जाय। शान्ति-सैनिक अन्य लोकसेवकों की भांति नित्य सेवाकार्य करता ही रहेगा। लेकिन विशेष मौके पर उसे सैनिक के नाते जो काम करना होगा, उसके लिए आवश्यक तालीम दी जाये, जिसमें एकत्रित होकर काम करना, प्राथमिक उपचार, आग बुझाना आदि की तालीम दी जायेगी।

शान्ति-सैनिकों ने देखा कि उस क्षेत्र में यद्यपि अशान्ति नहीं रही थी, फिर भी उसके बीज मौजूद थे। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि जनता उनके काम को चाहती है, जिससे वहाँ पर एकत्रित हुए सभी शान्ति-सैनिक प्रेरणा तथा अपनी जमात बढ़ाने का संकल्प लेकर वहाँ से विदा हुए।

शांति-सैनिकों की सेवा में

प्रिय बन्धु,

पूज्य विनोबाजी चाहते हैं कि हरएक शान्ति-सैनिक का जीवन-वृत्तान्त "शान्ति-सेना कार्यालय" के पास हो, जिसके आधार पर 'हूज हू' बनाया जाय। अतएव आपसे सविनय प्रार्थना है कि अपने बारे में निम्नलिखित जानकारी हमारे कार्यालय के पास शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

(१) नाम और पता
(२) आयु और स्वास्थ्य
(३) खानदान का परिचय तथा परिवार
(४) शैक्षणिक योग्यता तथा भाषाओं का ज्ञान
(५) आपकी प्रिय किताबें तथा प्रिय विषय
(६) खेल, योगासन आदि के प्रति रुचि
(७) कताई, बुनाई आदि उद्योगों का ज्ञान
(८) संक्षेप में पूरा जीवन-वृत्तान्त
(९) आज का मुख्य कार्य

इस जानकारी के साथ आप अपनी एक फोटो भी भेजने की कृपा कीजियेगा।

शान्ति-सेना कार्यालय,
सर्व सेवा संघ,
राजघाट-काशी,
ता० १३-५-'६०

विनीत,
निर्मला देशपांडे

[नोट: करीब दो वर्ष पहले सर्व सेवा संघ के दफ्तर में जिला निवेदकों से उनके चित्र व जानकारी आदि मंगायी गयी थी। जानकारी तो अद्यतन भेजना आवश्यक है। चित्र आपने पहले भेजा हो, तो अब भेजने की आवश्यकता नहीं है।]

सीमा-प्रदेश में विशेष कार्य

उत्तर प्रदेश के टिहरी गढवाल के प्रमुख कार्यकर्ता श्री सुन्दरलाल बहुगुना ने जब विनोबाजी से पूछा कि 'क्या मुझे भी काशी जाना होगा', तो विनोबाजी ने कहा "नहीं, मैं ही तुम्हारे पास आने वाला था। तुम तो अपने ही क्षेत्र में काम करो। तुम्हें सबसे आखिर में बुलाया जायेगा।"

टिहरी गढवाल के तिब्बत की सीमा से सटे हुए प्रदेश में श्री सुन्दरलालजी विशेष शक्ति लगाने वाले हैं। विनोबाजी ने उनकी सहायता के लिए प्रदेश के अन्य हिस्सों से कार्यकर्ता भेजने के लिए कहा है।

* * *

नूतन 'महाराष्ट्र' राज्य को छह ग्रामदानों की भेंट

जब कि महाराष्ट्र के कोने-कोने में राज्य के जन्मोत्सव का समारोह चल रहा था, रत्नागिरी और कोल्हापुर जिले के कार्यकर्ता गाँव-गाँव में ग्रामस्वराज्य का सन्देश सुनाते हुए घूम रहे थे। सावंतवाडी में अप्रैल के अन्त में कार्यकर्ताओं का एक शिविर हुआ, जिसमें श्री वल्लभस्वामी, श्री अप्पासाहब पटवर्धन आदि का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। शिविर में छह गाँवों का ग्रामदान घोषित किया गया।

ग्राम-निर्माण मंडल, सर्वोदय-आश्रम, सोखोदेवरा का वार्षिक समारोह

ता० २ मई, १९६० को श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा संस्थापित ग्राम-निर्माण-मंडल और सर्वोदय-आश्रम, सोखोदेवरा (गया) का वार्षिक समारोह श्री शंकरराव देव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह में श्री जयप्रकाश नारायण, श्री गौरीशंकर शरण सिंह, अध्यक्ष–बिहार भूदान यज्ञ कमिटी, श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, मंत्री–बिहार भूदान यज्ञ-कमिटी, श्री सरयू प्रसाद, संचालक-गांधी स्मारक निधि, बिहार शाखा, श्री नगेन्द्र नारायण सिंह, मंत्री–बिहार हरिजन सेवक संघ, श्री श्याम सुन्दर प्रसाद, संयोजक–बिहार सर्वोदय-मंडल, सघन क्षेत्र योजना के अन्वेषण-पदाधिकारी श्री व्ही० एन० टेकमाला, भारत सरकार के कृषि-यन्त्र विशेषज्ञ डा० खेडेकर आदि उपस्थित थे।

वार्षिकोत्सव के बारे में श्री जयप्रकाश बाबू ने प्रकाश डाला। फिर श्री शंकरराव देव ने अध्यक्षीय भाषण दिया और श्री गीता बाबू ने ग्राम निर्माण मंडल का वार्षिक कार्य-विवरण पेश किया। इस प्रसंग पर श्री वैद्यनाथ बाबू ने आंदोलन का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया तथा सोखोदेवरा की प्रगति का मूल्यांकन किया। उन्होंने सबका ध्यान एक विशेष बात की ओर खींचते हुए कहा

"विनोबाजी चाहते हैं कि कार्यकर्ताओं के निर्वाह का प्रबन्ध केन्द्रीय निधि से न होकर श्रम-आधार, मित्र आधार और जन-आधार से होना चाहिए। इस दिशा में हमारी प्रगति बहुत कम है। हमारे आन्दोलन से जनशक्ति जो प्रकट होनी चाहिए थी, वह नहीं हो पायी है। हाल में गया जिले का वार्षिक सर्वोदय-सम्मेलन हुआ। उस अवसर पर गया जिले के लिए कार्यक्रम बनाये गये हैं। उन कार्यक्रमों को भी आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी मंडल के ऊपर है। विनोबाजी का एक संदेश पूर्णियाँ जिले के हाल में हुए वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर मिला था। उन्होंने उस संदेश में जिस कार्यक्रम की ओर संकेत किया है, उसमें भूमिहीनता मिटाने का भी एक कार्यक्रम है। बहुत प्रसन्नता की बात है कि यह काम आपने पूरा कर लिया है। खादी के काम करने वाले, उत्पादन बढ़ाने और बिक्री करने मात्र से संतुष्ट हो जाते हैं। विनोबाजी ग्राम-स्वराज्य की दृष्टि से इस काम को करना चाहते हैं। अब खादी के काम को ग्राम-स्वराज्य की दिशा में हमें ले जाना है।"

बिहार हरिजन सेवक संघ के मंत्री श्री नगेन्द्र बाबू ने कहा "यहाँ के काम से सिर्फ इस क्षेत्र का ही नहीं, बल्कि सारे प्रान्त और सारे देश को मार्गदर्शन स्वयं श्री जयप्रकाशजी कर रहे हैं। आज ग्राम-निर्माण करने की होड़ लगी हुई है। लेकिन जिस बुनियाद पर निर्माण होना चाहिए, वह नहीं हो रहा है। मैं आशा करता हूँ कि यहाँ के अनुसंधान और शोध से देश में ग्राम-निर्माण कार्य को नेतृत्व मिलेगा।"

सघन क्षेत्र-योजना के अन्वेषण पदाधिकारी श्री व्ही० एन० टेकमाला ने कहा "देश में प्रति व्यक्ति आय कम है। बिहार में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय २१० रुपये है और अन्य प्रान्तों में करीब ३०० रुपये। हमारे देश की जनता बड़ी कठिनाइयाँ झेल रही है। यहाँ खादी-ग्रामोद्योग कमीशन की तरफ से एक सघन क्षेत्रीय योजना चलायी जा रही है। इस योजना का उद्देश्य प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने और उनका सांस्कृतिक विकास करने का है। इसी तरह के काम यहाँ इस आश्रम के माध्यम से चल रहे हैं। आज देश का वास्तविक काम गाँवों के पुनर्निर्माण का ही है। उसी काम में आप और हम जुटे हैं।"

अंत में भारत सरकार के कृषि-यन्त्र विशेषज्ञ डा० खेडेकरजी ने सरकार के कृषि-यन्त्रों के शोध-सम्बन्धी कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला।

इस प्रकार एक छोटे, पर सुन्दर समारोह के साथ सोखोदेवरा-आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

●

गोधन की उन्नति

राजस्थान गोसेवा-संघ के सुझाव

राजस्थान में विकेन्द्रीकरण-व्यवस्था कायम होने पर निर्माण हुई परिस्थिति के अनुरूप गोवंश उन्नति की बाबत जयपुर के राजस्थान गोसेवा-संघ ने राजस्थान-सरकार के समक्ष तीन महत्त्वपूर्ण सुझाव रखे हैं

(१) ग्राम-पंचायतों के लिए सांड पालना, जो कि अब ऐच्छिक है, उसके स्थान पर अब उसे अनिवार्य कर दिया जाय। (२) सांडों की कमी का प्रश्न हल करने के लिए हरएक जिला-परिषद एक सांड-पालन केन्द्र चलाये, जिसमें स्थानीय वंश के उत्तम बछड़े लाकर उन्हें बड़ा किया जाय तथा वे सांड तैयार होने पर पंचायत-समितियों को बेच दिये जायें, जो उन्हें जरूरतमन्द गांवों में दे दें। (३) हर जिला-परिषद में एक सेवाभावी गोसेवक की नियुक्ति की जाय, जो सांड-पालन केन्द्र चलाये तथा गांवों में गोपालन की बातें गोपालकों को बताये व उनकी समितियों का निर्माण करने में यथाशक्ति मदद करे।

●

सेवाग्राम के बारे में मैं क्या सोच रहा हूँ ?

अण्णा सहस्रबुद्धे

सन् '५९ में ता० ३ से ६ दिसम्बर तक सेवाग्राम में हुए नई तालीम-परिसंवाद के सामने सेवाग्राम के काम की भावी योजना के बारे में मैंने एक निवेदन पेश किया था, जिसके अन्तिम परिच्छेद में यह स्पष्ट लिख दिया था कि वह निवेदन योजना का कोई अन्तिम रूप नहीं है, पूरी योजना का आखिरी चित्र एकाध साल में तैयार हो सकेगा। परिसंवाद में हुई विभिन्न चर्चाओं के संदर्भ में मेरा अब तक जो कुछ चिन्तन हुआ है, उसे इस नोट में दे रहा हूँ। इसके पहले भी मैंने कुछ विचार एक लेख के रूप में लिखे थे, जो हिन्दी "भूदान-यज्ञ" के ४ मार्च, '६० के अंक में प्रकाशित हुए हैं। इसे भी प्रथम नोट का परिपूरक ही समझना चाहिए।

सेवाग्राम के आस-पास के चालीस-पचास गाँवों से चार-पाँच साल का खेती का अच्छा अनुभव रखने वाले बीस-पचीस श्रमिक नवयुवकों को यहाँ की कृषि-योजना में शामिल करने का मैंने सोचा है। ऐसे नवयुवकों के लिए कोई इस प्रकार की शर्त नहीं है कि वे पढ़े-लिखे ही हों, मातृभाषा का प्रारम्भिक ज्ञान उन्हें हो, तो अच्छा है; पर वे आठ घंटे ईमानदारी से शरीर-परिश्रम करने वाले और योजना में पूरी तरह दिलचस्पी लेने वाले हों, इस बात का चुनते समय विशेष ध्यान रखा जायगा। इस दिशा में काम भी प्रारम्भ किया गया है। इन युवकों की मानसिक तथा शारीरिक तैयारी को परखने की दृष्टि से उन्हें दस-पंद्रह रोज के लिए यहाँ बुलाया जाय और यहाँ के कार्यकर्ताओं के साथ वे काम की योजना के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे, ऐसा यदि लगता है, तो रख लिया जाता है।

पारिश्रमिक व अन्य सहूलियतें

जितनी मजदूरी आज एक पुराने मजदूर को मिलती है, उतनी मजदूरी (तीस रुपये) नये आये हुए लोगों को पहले साल मिलेगी। उनके काम की प्रगति के साथ-साथ उनकी मजदूरी भी बढ़ती जायगी और उनको ३० से ५० रुपये प्रति मास तक दिये जा सकेंगे। ऐसे लोग यदि परिवार के साथ आते हैं, तो उनकी पत्नियों को भी आठ आने प्रति दिन के हिसाब से मजदूरी दी जायगी। विशेष अच्छा काम करने वाली बहनों को ९-१० आने प्रति दिन की मजदूरी मिल सकेगी। बाहर के दस-पाँच अच्छे शिक्षित परिश्रमनिष्ठ कार्यकर्ताओं को बुलाने का विचार मैंने किया है। दो-चार पुराने कार्यकर्ता आज यहाँ खेती में काम कर ही रहे हैं। ऐसे कार्यकर्ताओं को मासिक ६० रुपये दिये जायेंगे। वे यदि अपने परिवार को यहाँ लाना चाहेंगे, तो उनकी पत्नियों को भी उनकी शक्ति और योग्यता के अनुसार काम करने का अवसर दिया जायगा।

इन कार्यकर्ताओं को एक साल के बाद दो-चार एकड़ जमीन भी दी जायगी, जिस पर वे अतिरिक्त पैदावार कर सकेंगे। पहले तीन साल मजदूरों व कार्यकर्ताओं की मजदूरी में विषमता रहेगी, पर तीन साल के बाद मजदूरों को भी ६० रुपये और अन्य सर्वसामान्य सहूलियतें मिल सकेंगी। इन नवयुवकों की विशेष योग्यता को देखने के बाद उन पर आश्रित परिवार के दो वृद्ध व्यक्तियों को यहाँ बुलाने और उन्हें भी यहाँ की कृषि-योजना की तरफ से १५ रुपये प्रति व्यक्ति के हिसाब से २० रुपये तक की सहायता देने की गुंजाइश रखी जायगी। ये लोग प्रत्यक्ष खेती में काम करेंगे, ऐसी अपेक्षा नहीं रखी गयी है, लेकिन ऐसे लोग पहले कम संख्या में रहें, इसकी ओर ध्यान दिया जायगा और यह खर्च कृषि-उत्पादन से निकालने का प्रयत्न समुदाय करेगा, अर्थात् यह सामुदायिक बोझ माना जायगा। इस तरह की सुविधा फिलहाल कार्यकर्ताओं के लिए रहेगी। लेकिन दो साल के बाद जब कृषि की पैदावार व आमदनी बढ़ जायगी, तब यह सहूलियत मजदूरों के लिए भी खुल जायगी और वहीं से समानता के आधार पर कृषि-उद्योगप्रधान जीवन का श्रीगणेश होगा।

खेती में कितनी पूँजी लगानी पड़ेगी, उसकी भी एक मोटी कल्पना मैंने कर ली है। यदि खेती से ८० हजार रुपये की वार्षिक आमदनी प्राप्त करनी हो, तो १ लाख ६० हजार रुपये स्थायी पूँजी के रूप में लगाने पड़ेंगे। अर्थात् आय और पूँजी का अनुपात १ : २ का रहेगा। इसके अतिरिक्त लगभग ४० हजार की पूँजी चालू खर्च के लिए लगेगी। कुल २ लाख की पूँजी यदि हम लगायेंगे, तो तीन साल में लगभग ८० हजार रुपये की आमदनी होगी। खेती में मनुष्य-शक्ति का उपयोग आज मैंने ५० लोगों का माना है। सम्भव है कि आगे चल कर यह संख्या १४० तक ले जानी पड़ेगी और अन्त में आज की लगभग ३०० एकड़ भूमि पर ७० परिवार रह सकेंगे। हमारी कार्यक्षमता और उपकरणकुशलता इतनी बढ़ानी होगी कि पाँच साल के बाद प्रति परिवार को ८ घंटे के परिश्रम से मासिक १५० रुपये तक की आय हो सके।

यंत्र-शक्ति का उपयोग

यान्त्रिक उपकरणों का यहाँ किस हद तक उपयोग किया जायगा, उसका साफ चित्र आज मेरे सामने नहीं है। यहाँ की जमीन को देखते हुए ऐसा लगता है कि पहले दो-तीन साल तक ट्रैक्टर का विशेष रूप से उपयोग करना पड़ेगा और मुख्यतः जमीन तोड़ने का और सुधारने का और उस पर बाँध डालने का ही काम रहेगा। गहरी जुताई (डीप प्लाउइंग) करनी पड़ेगी। अच्छी खेती बनाने के लिए करीब १५ बार जुताई करनी पड़ती है, जो आवश्यकतानुसार ट्रैक्टर व हल से होती रहेगी। सिंचाई का प्रबन्ध आठ दस हजार फुट पाइप बिछा कर किया जायगा। फिर भी सम्भव है कि ३ एकड़ में से १ ही एकड़ को पानी मिल सकेगा।

सामुदायिक जीवन

यहाँ की कृषि-योजना में सामुदायिक भोजनालय चलाने को महत्त्व नहीं दिया जायगा। सामुदायिक रसोईघर में भोजन करना, न करना ऐच्छिक रहेगा, पर खेती में आठ घंटे का काम सबके लिए अनिवार्य रहेगा। इसके अलावा एक-दो घंटे उनका शिक्षण भी चलता रहेगा। इससे ज्यादा सामूहिक जीवन की अपेक्षा मैंने नहीं रखी है। शारीरिक श्रम और बौद्धिक श्रम के समान मूल्य के विषय में सोचते समय हमें वर्तमान सामाजिक व आर्थिक परिस्थिति को सामने रख कर ही सोचना चाहिए। आज हमारे देश में बौद्धिक श्रम को शारीरिक श्रम की अपेक्षा आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से इतना अधिक महत्त्व दिया जाता है कि दोनों की तुलना नहीं हो सकती। पर हमारे यहाँ की "एग्रो इण्डस्ट्रियल कम्युनिटी" में दोनों प्रकार के श्रम को समान महत्त्व दिया जायगा। हमारी यह अपेक्षा रहेगी कि बौद्धिक श्रमवाले भी अपने श्रम का मूल्य फिलहाल दो रुपये रोज से अधिक न मानें, अर्थात् ५०-६० रुपये मासिक से अधिक अपेक्षा वे न रखें। आत्मिक भाईचारे की भावना हमारे सभी कामों की बुनियाद है, लेकिन जिस "एग्रो इण्डस्ट्रियल कम्युनिटी" की कल्पना की जाती है, उसमें यह जल्दी व्यवहार में नहीं लाया जा सकेगा। फिर भी हमारा प्रयत्न उस दिशा में अवश्य रहेगा।

वस्त्र-स्वावलम्बन

खेती में एक-दो साल इतना काम रहेगा कि दूसरे उद्योगों की ओर ध्यान देने का मौका हम लोगों को नहीं मिलेगा या तो बहुत कम मिलेगा। लेकिन खेती के साथ-साथ खेती में काम करने वाले सभी लोगों के लिए वस्त्र सेवाग्राम में ही बना लेने की योजना हमने रखी है। जब खेती में काम नहीं रहेगा, तब अम्बर चरखे के ऊपर सूत कातने का काम हर-एक बहन को दिया जायगा और उस काम की रोजी भी खेती में जो रोजी मिलती है, फिलहाल उतनी ही रहेगी। हम मानते हैं कि बहनों के साल में २५० दिन काम के माने जायें, तो उनके १२५ दिन खेती-मजदूरी में रहेंगे और १२५ रोज वे अम्बर चरखे पर कताई करेंगी। सीखने का समय इसी में शामिल है।

तीन-चार वर्ष भी हम यहीं चलाना चाहते हैं। इस बुनाई-उद्योग के कार्यकर्ता को भी खेती विभाग के कार्यकर्ता को जितनी ही मजदूरी दी जायगी। उनसे उतना काम निकलता है या नहीं, यह देखने का उत्तरदायित्व इस सामुदायिक समाज पर रहेगा। समुदाय सुविधा के लिए अपने में से एकाध व्यक्ति को चुन लेगा, जो व्यवस्थापक के नाते देखभाल करता रहेगा। व्यवस्थापक के रूप में काम करने वाले व्यक्ति का वेतन भी ६० रुपये से अधिक नहीं रहेगा और वह भी सब लोगों के साथ ६-८ घंटे काम करता रहेगा। यहाँ पर जो कपड़ा तैयार किया जायगा, वह प्रति व्यक्ति दस या पंद्रह गज तक मिल के दाम से हर परिवार में दिया जायगा। कपड़ा बनाने में अधिक खर्च जो लगेगा, वह खेती के ही खर्च का एक हिस्सा माना जायगा। इसलिए यद्यपि पहले साल सामान्य सा वेतन रहेगा, फिर भी कई तरह की सहूलियतें यहाँ रहेंगी, जिससे कार्यकर्ताओं के जीवन में आशा पैदा हो सकेगी और काम करने का उत्साह बढ़ेगा। वस्त्र बनाने में कार्डिंग, रोविंग तथा ड्राइंग की क्रियाओं के लिए बिजली-शक्ति का उपयोग करने का मैंने सोचा है, जिससे खादी के दाम जो आज हैं, उसकी अपेक्षा आधे पर आयेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।

आटा-चक्की

आटा-चक्की यहाँ बिजली से चलाने का मैंने निश्चय किया है और वह शुरू भी की गयी है। आज की ही चक्की को एक मिनिट में चालीस-पचास बार घूमने के बदले सौ से एक सौ चालीस बार घुमाने की गति लायी गयी है। इस नयी पद्धति से एक घंटे में अच्छा आटा १० से १२ पौंड मिलेगा। अनाज चक्की के ऊपर 'फनेल' में रख दिया जायगा और फिर एक घंटे तक उसको देखने की आवश्यकता नहीं रहेगी। १ 'हॉर्स पावर' पर तीन चक्कियाँ एकसाथ चलेंगी, जो हमारे यहाँ के पूरे समाज के आटे की आवश्यकता पूरी कर सकेंगी। आटा-पिसाई का काम खेती-विभाग की तरफ से मुफ्त किया जायगा। वैसे ही प्रति व्यक्ति एक पाव तरकारी जब हमारी खेती में पैदा होगी तब काम करने वालों को मुफ्त दी जायगी। अतिरिक्त भाजी चार आने सेर बेची जायगी।

इस "एग्रो इण्डस्ट्रियल कम्युनिटी" में जो परिवार होंगे, उनके बच्चों की तालीम की पूरी जिम्मेदारी भी इस समाज के अन्तर्गत ली जायगी और वे जो उसमें काम करेंगे, उनका समान वेतन की दृष्टि से जो भार अधिक बोझ होगा, वह इस

संस्कृति, इतिहास और अर्थशास्त्र में उ रुचि रह जाती है। उसका अध्ययन उन्हें करना चाहिए। इस प्रकार वे। अपने प्रदेश के सांस्कृतिक दूत बन उस प्रदेश में रुचि रखने वालों को कुछ सिखा सकते हैं और स्वयं उस प्र के लोगों से सहानुभूतिपूर्ण प्रेममय द्वारा बहुत कुछ सीख सकते हैं।

सर्व सेवा संघ इस पारस्परिक अध्य और स्नेह-संवर्धन को एक विचार आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाने में मदद दे सकता है। इसमें भारत के प्रदेशों के उच्च कोटि के कार्यकर्ता शामि हैं और भूदान-आन्दोलन के परिणामस्वरू इसके सहानुभूति-क्षेत्र का विस्तार भार के हरएक प्रान्त में हजारों गाँवों औ लाखों लोगों तक हुआ है। हमारा मानन है कि गांधीजी और काँग्रेस के बाद अग देश में सबसे अधिक प्रचारित और जा हुए कोई हैं, तो वे विनोबा और सर्वोद वाले ही हैं। इस दृष्टि से श्री अण्णासाहब का सुझाव कि सर्व सेवा संघ को प्रादेशिक स्नेह-संवर्धन के कार्य में पहल करन चाहिए, बहुत उचित है। आवश्यकता इस बात की है कि इस उद्देश्य और कार्यक्रम में रुचि और सहानुभूति रखने वाली सभी शक्तियों का सहयोग प्राप्त करके इस प्रश्न पर और गहराई तथा विस्तार से विचार किया जाय और इसके कार्यक्रमों के अधिक फलप्रद और बलशाली संयोजन का प्रयत्न किया जाय। ● ●

अन्तर्प्रान्तीय आत्मीयता और स्नेह-संवर्धन

जवाहिरलाल जैन

इस महादेश में प्राचीन काल में संचार और चेतना के अल्प साधनों के कारण और आधुनिक समय में इनकी बहुलता के कारण सदा से अनेक राज्य, प्रान्त रहे हैं, जिनकी अपनी-अपनी और अलग-अलग प्राकृतिक और मानवीय परिस्थितियाँ रही हैं। इन विभिन्नताओं के बीच एकता की खोज इस महादेश में बराबर होती रही है और हजारों वर्षों की साधना के परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक एकता और राजनैतिक एकता की सिद्धि कुछ अंशों में हुई है, लेकिन मानव की वैयक्तिक और सामूहिक सिद्धि का स्वरूप ही कुछ ऐसा है कि वह सिद्धि कभी पूर्ण नहीं होगी, बल्कि जितनी होती है, उसे न खो देने और आगे की स्थिति प्राप्त करने की साधना व्यक्ति और समाज में चलती ही रहनी चाहिए; नहीं तो ह्रास और पतन की संभावना बराबर सामने ही रहती है। इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि सांस्कृतिक और राजनैतिक एकता की साधना का कार्यक्रम इस महादेश में निरन्तर चलना ही चाहिए।

इस कार्यक्रम का मूल स्वरूप केवल एक ही हो सकता है और वह है मानव-मानव का परिचय, सहानुभूति और आत्मीयता। इसके तरीके प्रत्येक युग की परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं और बदलते रहने चाहिए। फिर भी *इन सब तरीकों को इन भागों में बाँट* सकते हैं।

पहला तरीका सांस्कृतिक और राजनैतिक एकता की दार्शनिक व वैचारिक भूमिका के निर्माण का था। इसके अन्तर्गत देश के भूगोल, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, दर्शन और संस्कृति की शोध, अध्ययन, अध्यापन और शिक्षण के द्वारा इस एकता की खोज *और सिद्धि का प्रयत्न चलता रहे। इसका* आशय यह है कि देश के सभी श्रेणी के शिक्षक और शिक्षार्थियों तथा शिक्षण-संस्थाओं और शिक्षा-शास्त्रियों को यह जिम्मेदारी उठानी है। उन्हें इस प्रकार *आयोजन करने चाहिए, जिनसे शिक्षकों को* और शिक्षार्थियों को क्रमशः अपने पास-पड़ोस के और देश के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक के प्रदेशों का और वहाँ के नागरिकों का सहानुभूतिपूर्ण परिचय प्राप्त हो। कुछ थोड़ा-बहुत ज्ञान अल्पकालीन यात्राओं से हो सकता है, लेकिन वह ज्ञान बहुत-सी बार भ्रम फैलाने वाला भी होता है और अधूरा तो अवश्य होता है, क्योंकि उसमें निकटता और आत्मीयता शायद ही सध पाती है। इसलिए थोड़े समय की तूफानी यात्राओं पर अधिक निर्भर न रहा जाय, बल्कि महीने-दो-महीने के लिए अपने अध्ययन और रुचि के क्षेत्र की मुख्य प्रवृत्तियों के केन्द्रों में शिक्षार्थियों और शिक्षकों के साथ या अन्य परिवारों के साथ पारिवारिक रूप में रहने और सहानुभूतिपूर्वक *आत्मीयता प्राप्त करने का प्रयत्न* किया जाय तो अधिक लाभ होगा, परन्तु इसके लिए उस क्षेत्र के इतिहास, संस्कृति, रीति-रिवाज, शिष्टाचार, भाषा आदि की कुछ पूर्व जानकारी अत्यन्त आवश्यक होगी।

प्राचीन काल में इस आत्मीयता और परिचय के *कार्यक्रम को चलाने के लिए* तीन महत्त्वपूर्ण तरीके थे। एक तरीका बड़े-बूढ़ों द्वारा धार्मिक यात्राएँ करना था। *वे यात्राएँ* प्रायः बड़े-बूढ़ों द्वारा जीवन के आखिरी समय में परिवारवालों से अन्तिम विदा लेकर की *जाती थीं,* अतः इनसे उन बड़े-बूढ़ों को जो ज्ञान और अनुभव मिलता *था, उसका समाज को बहुत लाभ प्रायः* नहीं मिल पाता था, क्योंकि संभवतः थोड़े लोग ही यात्राएँ सकुशल समाप्त कर घर वापस पहुँच पाते थे और पहुँच कर भी कुछ ज्ञान लोगों को दे सकें, ऐसी *शारीरिक या मानसिक स्थिति में प्रायः नहीं* रहते थे।

दूसरा तरीका साधु-संन्यासियों द्वारा निरन्तर परिव्रजन का था। साधु-संन्यासी अवश्य ही हमारे देश में अन्तर्प्रान्तीय स्नेह-संवर्धन के बहुत महत्त्वपूर्ण सूत्र थे। इनके द्वारा हमारे देश में सांस्कृतिक एकता और ज्ञान प्रचार का जितना बड़ा काम हुआ है, इसका अनुमान लगाना बहुत कठिन है। *लेकिन आज न तो केवल बड़े-बूढ़े ही यात्रा* करें, यह आवश्यक है और न यही जरूरी है कि वे पदयात्रा ही करें, न यही अनिवार्य है कि केवल साधु-संन्यासी ही यह काम करें, बल्कि विद्यार्थी, युवक और प्रौढ़, गृहस्थ *और संन्यासी* सभी पद, रेल या वायुयान, सभी साधनों द्वारा यथा अनुकूलता और आवश्यकता यात्रा करें और इसे शिक्षण तथा ज्ञान-प्राप्ति और शिक्षण तथा ज्ञान देने का प्रमुख तरीका मानें। और देश में इस बात को प्रोत्साहन दिया जाय कि अनुभवी और प्रौढ़ कार्यकर्ताओं का अपने प्रान्त में पड़ोस के प्रान्तों में या सारे देश में घूमने सीखने और सिखाने द्वारा मानव को स्नेह प्रदान करने और स्नेह प्राप्त करने को अपने आप में जीवन का श्रेष्ठ कार्यक्रम माना जाय।

तीसरा तरीका पुराने जमाने में राजा-महाराजाओं *या कभी-कभी बड़े-बड़े साहू*-कारों द्वारा अपने प्रदेश से बाहर किये गये विवाहों का था, जिनके परिणामस्वरूप योद्धाओं, विद्वानों, गुणियों का आदान-प्रदान स्थायी अथवा *अल्पकालीन रूप में होता* रहता था। आज राजा-महाराजा और उनके द्वारा विवाह आदि का तरीका नहीं रहा, उसके बजाय चेतनाशील व्यक्तियों और कार्यकर्ताओं द्वारा अन्तर्प्रान्तीय विवाहों के *क्रम को प्रोत्साहित* करने की आवश्यकता है, क्योंकि सहभोज और सहविवाह प्रान्तीय संकुचितताओं *और अलगाव को* मिटाने में और स्नेह तथा आत्मीयता को बढ़ाने में बहुत बड़ी सहायता करते हैं।

इस दिशा में परिपक्व तरीके के पत्र-*मित्रों के संगठन (पेनफ्रेन्ड्स आर्गनाइजेशन)* लाभदायक हो सकते हैं। जिस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत-चीन मैत्री-संघ, भारत-रूस मैत्री-संघ, भारत-अमेरिका मैत्री-संघ काम करते हैं, उससे अधिक *आवश्यकता हमारे देश में राजस्थान-गुजरात* मैत्री-मण्डल, राजस्थान महाराष्ट्र मैत्री-मण्डल, राजस्थान-पंजाब मैत्री-मण्डल आदि की है। इस प्रकार के संगठन, खासकर प्रान्तों की राजधानियों में सरलता से बन सकते हैं, क्योंकि आज तो प्रायः हरेक प्रान्तीय राजधानी में भारत के बाकी के सभी राज्यों के उच्च शिक्षित और बहुश्रुत नागरिक मिल सकते हैं, जिन्हें अपने प्रदेश की भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाज, इतिहास आदि की जानकारी हो सकती है और जिस प्रान्त में वे जाकर बसे हैं, उस प्रान्त की भाषा,

ब्राह्मी का प्रभाव

इस संबंध में कलकत्ते के श्री रामकुमार गोयनका का एक पत्र पिछले अंक में छपा था। उसका कुछ अंश छूट गया था, जिसके बिना पूरी बात स्पष्ट नहीं होती। अतः छूटे हुए अंश के साथ पूरा पत्र यहाँ दिया जा रहा है :

"मैंने ८०वें वर्ष में पाँव रख दिया है, पर देखने वाले ६०-६५ से अधिक नहीं *बतलाते हैं।* २० वर्ष पहले मैंने अंग्रेजी के 'स्टेट्समैन' पत्र में ब्राह्मी के उपयोग के बारे में एक नोट पढ़ा था, तब से मैंने रोज दो पत्ते ब्राह्मी के खाना शुरू कर दिया और वह अब तक जारी है।

ब्राह्मी के गुणों का वर्णन आयुर्वेद में तो है ही, अंग्रेजी की 'इण्डियन मेडिसिनल प्लान्ट्स' नामक पुस्तक में भी ४-५ पृष्ठों में इस वनस्पति का वर्णन किया गया है। पर एक बात जो किसी पुस्तक में नहीं मिलती। वह है केवल एक या दो पत्तों का खाना यानी "होमियोपैथी मात्रा" में। *वैद्य लोग तो बहुत अधिक मात्रा में इसका* सेवन करवाते हैं। उनके मत से एक या दो पत्ते नहीं के बराबर हैं। ब्राह्मी के बड़े पत्ते तीन इंच तक के और छोटे आधे इंच करीब होते हैं। छोटे पत्तों वाली को 'मण्डूक-पर्णी' भी कहते हैं। दोनों का गुण एक ही बतलाया गया है। यह गमलों में लगायी *जा सकती है।*

मैंने जितनी उम्र पायी है, उतनी कम *लोग ही पाते हैं।* ईश्वर की कृपा पर महान हुआ है, मेरे न कोई बीमारी है, न आँख, कान आदि किसी अंग में कोई खामी है, न कोई अंग कमजोर है। नींद अच्छी आती है और भूख लगती है। मैं चाय, तम्बाकू, आदि कोई नशीली चीज *नहीं खाता,* एक मील के करीब रोज टहलता हूँ और २-४ मिनिट पेट और रीढ़ की हल्की-सी कसरत करता हूँ। इन सबके होते हुए भी मैं यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि यह सब केवल ब्राह्मी का प्रभाव है क्योंकि मैं और भी कई तरह के साधन करता रहा हूँ—४० वर्ष से एकादशी का उपवास, उषःपान आदि। ज्यादातर प्राकृतिक रहता हूँ। फिर भी मेरे शरीर पर ब्राह्मी का प्रभाव भी अवश्य मालूम होता है। अभी हाल में मैं बस से गिर पड़ा था और मेरी ३ पसलियाँ टूट गयी थीं। डाक्टरों ने कहा कि इस उम्र में हड्डी जुड़ने में कम-से-कम पाँच हफ्ते लगेंगे, *पर तीन हफ्तों में जुड़ गयी।* यह ब्राह्मी का ही प्रभाव समझना चाहिए। २० वर्ष ब्राह्मी खाते रहने के बाद इन दिनों ऐसा अनुभव है कि [illegible] हो रहा है। [illegible] आदि की पुरानी शिकायतें बहुत कम हो रही हैं और [illegible] की [illegible] बढ़ी है। मेरे इतने वर्ष के अनुभव से कोई भाई लाभ उठाना चाहें तो [illegible] बैनर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता ७ के पते से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।"

●

हमारी सहकारी समिति

लेखक—सुन्दरलाल : प्रकाशक : पर्वतीय नवजीवन मंडल, सिल्यारा (टिहरी गढ़वाल)

आजकल सहकार की बातें आम तौर से चलती रहती हैं। गाँव-गाँव में सहकारी समितियाँ खड़ी हो रही हैं। इसलिए सीधी, सरल भाषा में इन समितियों की जानकारी और उसके पीछे की स्वस्थ पृष्ठभूमि क्या हो, इसकी चर्चा आवश्यक हो गयी है। भाई श्री सुन्दरलालजी की प्रस्तुत पुस्तक इस कमी को पूरा करेगी। ३० पृष्ठों की यह लघुकाय पुस्तक मोटे टाइप में होने के कारण ग्रामीण भाइयों के लिए उपयोगी है।

●

योग के द्वारा कब्ज-निवारण

लेखक-प्रो॰ चिम्मनलाल कपूर तथा राधाकृष्ण नेवटिया

प्रकाशक : जैमिनी प्रकाशन, कलकत्ता-७

इस छोटी-सी पुस्तक में योग के द्वारा कब्ज को, जो कि सभी रोगों की जड़ है, कैसे दूर किया जा सकता है, इस सम्बन्ध में सचित्र विवरण देकर समझाने की चेष्टा की गयी है। अवश्य ही दवाइयों से छुटकारा पाने के लिए योगासनों का अभ्यास प्रचलित होना उचित है। इस दिशा का हमारे कार्यकर्ताओं को भी ज्ञान होना चाहिए। केवल पचास नये पैसे में उपलब्ध यह पुस्तक—कमरा नं॰ १२१, गांधी भवन, ११६।११९, हरीसन रोड, कलकत्ता-७, से प्राप्य है।

●

स्मृति-विज्ञान

लेखक-मुनिश्री श्रीचंदजी 'कमल'

प्रकाशक : तेरापंथी महासभा, ३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१

शतावधान एक विद्या जरूर है, पर उसका आजकल तो दुरुपयोग ही हो रहा है। अवधानों के प्रदर्शन की सर्वत्र धूम है। शतावधान के संबंध में यह पुस्तक जानकारी देती है। शतावधान एक गणित का फार्मूला ही है। उसकी साधना हो सकती है, प्रदर्शन नहीं।

●

ग्रामोदय की ओर

(मासिक सर्वोदय-डाइजेस्ट)

करोल बाग, नई दिल्ली से लगभग चार साल से यह मासिक प्रकाशित होता आ रहा है। पर मई अंक से इसका रूप-रंग देखते ही ऐसा लगता है, जैसे 'नवनीत' ही हो। सर्वोदय-विचार का एक साहित्यिक मासिक यह बने, ऐसी हमारी कामना है। यदि इस पत्र के संपादकगण भारत की सभी भाषाओं से संपर्क साध कर उनका सहयोग हासिल कर सकें, तो पत्र का भविष्य उज्ज्वल है। छपाई, गेटअप आदि सुन्दर है। सामग्री का संचय भी कुशलतापूर्ण है। संपादक-मंडल में सर्वश्री रामस्वरूप गुप्त, अक्षयकुमार करण, प्रो॰ रामसरन, एम॰ पी॰, नवाब सिंह चौहान और ओमप्रकाश हैं। वार्षिक मूल्य पाँच रुपया और एक प्रति का पचास नया पैसा है।

—सं॰ कु॰

●

गांधी-निधि भंगी-मुक्ति समिति द्वारा संचालित

सफाई-विद्यालय

जब श्री साहब गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष हुए, तब वे विनोबाजी से मिलने आये और चर्चा के दौरान में पूछा कि निधि की ओर से ऐसा क्या काम किया जाय, जो गांधी-विचार का स्थायी स्मारक हो। इसका उत्तर देते हुए विनोबाजी ने भंगी-मुक्ति का कार्यक्रम सुझाया। किसी एक वर्ग को अनिवार्य रूप से भंगी का काम करना पड़े, इस मजबूरी को दूर कैसे किया जाय तथा हर व्यक्ति स्वयं किस तरह सफाई में हिस्सा ले, इसकी शोध-खोज की जाय।

इसके बाद गांधी-निधि की ओर से एक भंगी-मुक्ति समिति बनायी गयी और उस समिति की ओर से कुछ काम चला। ब्यारा में उसी की ओर से सफाई विद्यालय चलता है, जिसमें सफाई के काम का प्रशिक्षण दिया जाता है। श्री अप्पासाहब पटवर्धन भंगी-मुक्ति आन्दोलन चला रहे हैं और उन्होंने इस बारे में काफी चिंतन किया है। सूरत जिले के ब्यारा गाँव में श्री कृष्णदास भाई शाह की देखरेख में यह विद्यालय चलता है।

अभी ता॰ १ जुलाई से सफाई-विद्यालय ब्यारा का प्रशिक्षण-सत्र आरम्भ हो रहा है। इसके दो विभाग हैं 'प्रगत' और 'क्रियात्मक।'

इसमें से पहला प्रशिक्षण ११ महीने का होगा। यह सत्र १ जुलाई १९६० से आरम्भ होकर ३१ मई १९६१ तक चलेगा, दूसरे प्रशिक्षण के दो सत्र चलेंगे। पहला सत्र १ जुलाई, '६० से प्रारम्भ होकर १५ दिसंबर, '६० को समाप्त हो जायगा। फिर अगला सत्र १६ दिसम्बर, '६० से ३१ मई, '६१ तक चलेगा।

'प्रगत' शिक्षाक्रम में मैट्रिक या तत्सम परीक्षा में उत्तीर्ण भाई-बहनें शिक्षा लेंगी और 'क्रियात्मक' शिक्षा-क्रम में उससे कम पढ़े-लिखे भाई-बहनें भाग ले सकेंगी। इस शिक्षाक्रम में जो भी शामिल होना चाहें, वे नीचे के पते से आवेदन-पत्र मंगा कर आवश्यक जानकारी बोध-पत्र आदि प्राप्त कर लें।

पता : आचार्य, सफाई-विद्यालय,
पो॰ ब्यारा (जि॰सूरत, पश्चिम रेल्वे)

प्रशिक्षणार्थियों को ४५ रुपये प्रति माह छात्र-वृत्ति मिलेगी। आवेदन-पत्र-स्वीकृति की अंतिम ता॰ १५ जून '६० है।

●

नागोर में खादी-कार्य प्रारम्भ

राजस्थान में नागोर जिले की खादी-ग्रामोद्योग-संस्था ने जिले में खादी-ग्रामोद्योग कार्य को नई दृष्टि से प्रारम्भ कर दिया है। संस्था ने निश्चय किया है कि इस जिले में एक ही फसल होने के कारण व्यापक अर्धबेकारी है, उसे दूर करने के लिए गाँव-गाँव में प्राप्त होने वाले कच्चे माल, ऊन को गाँव-गाँव में ही कतवा कर तथा बुनवा कर जिले की आवश्यकता की पूर्ति करते हुए जिले से बाहर ऊन न जाने देकर ऊन का तैयार माल ही जाने देना है। इसके अलावा जो-जो गाँव वस्त्र-स्वावलम्बन का संकल्प करते जा रहे हैं, सिर्फ उन्हीं में सूती वस्त्र-उत्पादन का कार्य प्रारम्भ करना है। उक्त विचार को ध्यान में रख कर संघ ने हाल ही में जिले के ग्रामदानी व ग्राम-संकल्पी क्षेत्र में अंबर-परिश्रमालय प्रारम्भ करने का निश्चय किया है तथा फिलहाल नागोर तहसील में ऊनी खादी-उत्पादन-कार्य प्रारम्भ किया गया है। नागोर तथा मकराना में अभी प्रारम्भ में दो स्थान पर खादी-ग्रामोद्योग वस्तुएँ तथा सर्वोदय-साहित्य भंडार शीघ्र स्थापित करने का भी निश्चय किया गया है।

●

नरसिंहपुर के कार्यकर्ताओं का निर्णय

बिहार में मुजफ्फरपुर जिले के खादी सदन, नरसिंहपुर के कार्यकर्ताओं की बैठक ता॰ २ मई, '६० को मंत्री श्री नन्दकिशोर ठाकुर के सभापतित्व में हुई। इस क्षेत्र में १००० घरों में सर्वोदय-पात्र पहुँचाने का संकल्प किया गया। मई माह में २५० सर्वोदय-पात्रों की स्थापना से कार्य प्रारम्भ करने का निश्चय हुआ। स्थानीय पुस्तकालय के द्वारा सर्वोदय-विचार के प्रचारार्थ सर्वोदय-स्वाध्याय-केन्द्र चलाने का विचार सर्वसम्मति से हुआ। क्षेत्र के लोगों के पास आसानी से सर्वोदय-साहित्य पहुँचाया जाय, उसके लिए सर्वोदय-साहित्य का स्टाक रखने तथा उसके प्रचार के लिए यहाँ एक सर्वोदय-साहित्य भंडार की स्थापना करने का भी निश्चय हुआ। अम्बर चरखा के कार्यक्रम को सुसंगठित कर सूत-उत्पादन बढ़ाने के लिए संकल्प किया गया।

●

खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय शिवदासपुरा में

१ जुलाई से नया सत्र

खादी-ग्रामोद्योग प्रवेश-अभ्यासक्रम का नया सत्र ता॰ १ जुलाई, १९६० से राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग-विद्यालय, शिवदासपुरा में प्रारम्भ होने जा रहा है, जिसमें कताई, अम्बर-कताई, तेलघानी व साबुनसाजी इत्यादि का प्रशिक्षण दिया जायेगा। इस सत्र की अवधि चार माह की होगी। प्रवेश के लिए कम-से-कम योग्यता हाईस्कूल उत्तीर्ण या उसके समकक्ष होनी चाहिए। इस सत्र में प्राथमिक-माध्यमिक शालाओं के शिक्षक, जो कताई का प्रत्यक्ष व शास्त्रीय ज्ञान लेना चाहते हैं, प्रवेश ले सकेंगे। इसमें १५ स्थान बहनों के लिए सुरक्षित हैं। जो भाई-बहन इस अभ्यासक्रम में प्रशिक्षित होना चाहते हैं, उन्हें ३१ मई तक आचार्य, राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, शिवदासपुरा (जयपुर) के नाम छपे हुए आवेदन-पत्र पर प्रार्थनापत्र भिजवाने चाहिए। छपे हुए आवेदन-पत्र एक रुपया भिजवाने पर उपरोक्त पते से प्राप्त हो सकेंगे।

●

गया जिले में श्री जयप्रकाशजी का कार्यक्रम

श्री जयप्रकाशजी १८ मई से ७ जून तक गया जिले के विभिन्न स्थानों का दौरा करेंगे। ता॰ २ और ३ मार्च को गया जिले का सर्वोदय-सम्मेलन अरवल में हुआ था। उस समय सभी कार्यकर्ताओं ने यह तय किया कि गया जिले में सघन रूप से काम किया जाय।

(१) घर-घर में सर्वोदय-पात्र हो।
(२) शांति-सेना का गठन हो।
(३) कोई भी झगड़ा कचहरी में न जाकर गाँव में ही सुलझ जाय।
(४) सर्वसम्मति से चुनाव की परम्परा डाली जाय।
(५) गाँव में कोई भी भूखा तथा बेकार न रहे, इसकी जिम्मेदारी गाँव उठाये।

यह पंचविध कार्यक्रम लेकर जिले भर में काम करने का तय हुआ है। इसी संदर्भ में श्री जयप्रकाशजी का यह कार्यक्रम बनाया गया है।

●

विनोबाजी का पता

विनोबाजी ने १३ मई को मध्यप्रदेश में प्रवेश किया। इस समय उनकी यात्रा चम्बल घाटी में चल रही है।

उनका वर्तमान पता—

मध्यभारत भूदान-यज्ञ पर्षद,
सरदार पाटनकर का बाड़ा,
लश्कर (ग्वालियर) म॰ प्र॰

●

सप्ताह के समाचार

ता० १३ मई को प्रातः विनोबाजी ने ओमेत घाट से चम्बल नदी पार कर मध्यप्रदेश के डाकूग्रस्त जिला मुरैना में प्रवेश किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि "मैं गंगा और यमुना पार कर चुका, अब चंबल पार की है। ये नदियाँ जन-जन के लिए ऐक्य और सुख का संदेश पहुँचाने वाली हैं। मेरी अभिलाषा है कि मेरी यात्रा भी इन नदियों की धारा के समान ही सुखप्रद हो।"

● ● ●

सन् १९६५ के बाद हिंदी राज्य-भाषा होगी, यह राष्ट्रपति ने राजभाषा संबंधी संसदीय समिति की सिफारिश स्वीकार कर ली है। सन् '६५ के बाद भी अंग्रेजी सहायक राजभाषा के रूप में चलती रहेगी। राष्ट्रपति ने यह भी स्वीकार किया है कि उच्चतम न्यायालय की भाषा अन्ततः हिंदी ही हो।

● ● ●

लंदन में हुए राष्ट्रमंडलीय प्रधान मंत्रियों के संमेलन की एक विज्ञप्ति में अफ्रीकी जातिभेद के प्रश्न पर हुई अनौपचारिक वार्ता का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि राष्ट्रमंडल स्वयं बहुजातियों का संघ है, इसलिए सदस्य देशों तथा राष्ट्रमंडल की जनता में अच्छा संबंध बनाये रखने की निहायत आवश्यकता है।

● ● ●

बिहार राज्य ने गायों और तीन साल से कम उम्र के बछड़ों का वध दंडनीय अपराध घोषित किया है। एक सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि इस नियम का उल्लंघन करने वाला छह मास की कैद या एक हजार रुपये तक का जुर्माना अथवा उभय दंड भोगने का भागी होगा।

● ● ●

कराची वकील-संघ के अध्यक्ष ने संघ के वार्षिक अधिवेशन में कहा कि राष्ट्र के कानून में फौजी सैनिक-शासन तुरत ऐसा संशोधन करे, जिससे जनता स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचार व्यक्त कर सके और उसके समक्ष कोई खतरा न रहे। कराची वकील-संघ के अध्यक्ष जे० एच० रशीदी(?) हैं। इन्होंने समाचार-पत्रों पर सवार घबराहट को भी दूर करने का अनुरोध किया।

गुजरात राज्य की सरकार ने यह आदेश दिया है कि सचिवालय से डिविजनल और जिला-कार्यालयों को जो भी पत्र भेजे जायँ, वे देवनागरी लिपि में लिखित गुजराती भाषा में हों।

●

सूचना :

ग्रीष्मकालीन स्कूल

भारतीय संस्कृति और सर्वोदय के सिद्धान्तों का ज्ञान कराने के लिए एक विद्यालय गान्धी-विचार परिषद, रामविलास रोड, मैसूर में खोला गया है, जो इस ग्रीष्मावकाश में चलेगा। वहाँ निम्नलिखित विषय पढ़ाये जायेंगे :

(१) भारतीय संस्कृति की दार्शनिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि।

(२) प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक गठन।

(३) आधुनिक समाज में भारत के आदर्श सुझाव।

(४) भारतीय जागृति का युग (गांधी जी की अमूल्य देन)।

(५) हिंसाविरोधी विश्व के विचार और सर्वोदय-समाज का गठन।

सप्ताह के चार दिनों में ये कक्षाएँ शाम को एक घंटे चलेंगी। छात्रों की सुविधा के लिए एक अध्ययन-कक्ष और एक वाचनालय की भी व्यवस्था की गयी है। इस वाचनालय में छात्रों के उपयोग की लगभग १००० पुस्तकें संग्रहीत हैं। इस स्कूल का पहला सत्र १५ अप्रैल से १५ मई तक चला और दूसरा १७ मई से १७ जून सन् १९६० तक चलेगा। जो लोग इसमें शामिल होना चाहते हैं, वे निम्नलिखित पते पर लिखें :

श्री एम० के० नारायण स्वामी
मंत्री—गांधी स्मारक निधि
रामविलास रोड, मैसूर

●

इजराइल में भूदान-कार्यकर्ता

इजराइल से प्राप्त दूसरी सूचना के अनुसार २१ मार्च से २ अप्रैल तक इजराइल भेजे गये भूदान-कार्यकर्ताओं ने इजराइल में चल रहे सहकारी जीवन और उन सभी परिस्थितियों का गहन अध्ययन किया, जिनकी वजह से इजराइल में सहकारी जीवन का विकास हुआ। साथ ही अन्य देशों में चल रहे सहकारी जीवन के प्रयोगों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया।

इस तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा इन सहकारी संस्थाओं के गठन और उनके आपसी कार्य-व्यापार का भी अच्छा परिचय मिला। साथ ही इन कार्यकर्ताओं ने यह भी देखा कि आखिर ये कितनी ज्यादा सुविधाएँ अपने यहाँ के कृषकों को देती हैं।

इस अध्ययन के अतिरिक्त इस अवधि में इन कार्यकर्ताओं ने बहुत-सी सरकारी संस्थाओं का भी निरीक्षण किया।

●

शांति-सैनिकों की संख्या

ता० १५-४-'६० को कार्यालय से हरएक प्रान्त के शान्ति-सैनिकों की जिलेवार सूची पूरे नाम व पते सहित प्राप्त करने के संबन्ध में एक परिपत्र भेजा गया था। कुछ प्रान्तों—दिल्ली, बम्बई, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, आंध्र तथा बिहार की अपूर्ण सूचियाँ आयी हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :

प्रान्त	शान्ति-सैनिक	शान्ति-सहायक
दिल्ली	२६	४०
बम्बई	१५	८
उत्तर प्रदेश	१६४	—
कर्नाटक	४५	—
राजस्थान	१३९	—
आंध्र	७५	—
बिहार	१६०	—

निवेदन है कि शेष प्रान्त अपने प्रदेश के शान्ति-सैनिकों की पूरी सूची यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें।

—मंत्री

●

प० जर्मनी में भूदान-चलचित्र

गत १९ अप्रैल को एक सप्ताह के एशियाई फिल्मी मेले के दौरान में "दी सेन्ट एण्ड दी पेजेन्ट" नामक चलचित्र का प्रदर्शन फ्रैंकफुर्ट पश्चिम जर्मनी में हुआ। इस फिल्म में विनोबाजी की पदयात्रा और भूदान-क्रान्ति का परिचय कराया गया है। यह फिल्मी मेला पश्चिम जर्मनी की सरकार और वहाँ की प्रान्तीय हेसेन की सरकार के सौजन्य से मनाया गया।

उपरोक्त फिल्म का निर्माण अखिल भारत सर्व सेवा संघ और खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के सम्मिलित प्रयास से हुआ है। श्री० ए० डी० शरण ने खादी-ग्रामोद्योग समिति का प्रतिनिधित्व किया। साथ ही इनसे इस फिल्मी मेले का उद्घाटन भी कराया गया। हेसेन शहर के प्रमुख व्यक्तियों ने इस मेले में भाग लिया।

●

कलकत्ता में सर्वोदय-प्रचार की योजना

ता० २४ अप्रैल को भूदान-कार्यालय, कलकत्ता में सर्वोदय-सेवक संघ की ओर से कार्यकर्ता-सम्मेलन हुआ। उसमें एक साल के अन्दर कलकत्ता शहर के हरएक वार्ड में सर्वोदय-स्वाध्याय-मंडल तथा साहित्य-भंडार की स्थापना करने की योजना बनायी गयी है। इसके लिए कलकत्ता में सर्वोदय-सहायक समिति की स्थापना करने का निर्णय हुआ। आगामी भू-क्रांति तक बंगला 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक के ५०० ग्राहक बनाने का भी निश्चय हुआ।

●

बलरामपुर में कार्यकर्ता-सम्मेलन

बंगाल के दिनाजपुर जिले में बलरामपुर के अभय आश्रम के कार्यकर्ताओं का ता० १४ से १६ अप्रैल तक वार्षिक सम्मेलन हुआ। अभय आश्रम बंगाल में खादी तथा रचनात्मक कार्य करने वाली एक प्रमुख संस्था है। इसी अवसर पर कई ग्राम-कार्यकर्ताओं और कस्तूरबा-ग्रामसेविकाओं का सम्मेलन भी हुआ। डॉ० श्री प्रफुल्लचन्द्र घोष, प्रो० त्रिपुरारि चक्रवर्ती, श्रीमती [illegible] श्री [illegible] चौधरी और डॉ० [illegible] ने सर्वोदय, नई तालीम, रचनात्मक कार्य आदि विषयों पर मार्गदर्शन किया।

●

महाकोशल में भूमि-वितरण

मार्च अप्रैल '६० के अंत तक महाकोशल क्षेत्र में ४७,९३० दानदाताओं द्वारा प्राप्त १,१८,९०३ एकड़ भूमि में से ५३,८३० एकड़ भूमि १६,००१ परिवारों में वितरित की जा चुकी है। १८०१ एकड़ भूमि बाँटने योग्य [illegible] द्वारा [illegible] वितरण कार्य जारी है।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी, फोन नं० [illegible] एक प्रति १३ नये पैसे
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,[illegible] : इस अंक की छपी प्रतियाँ १०,[illegible]
वार्षिक मूल्य ६)

धर्म क्षेत्र...

शक्ति का सुन्दर उपयोग हो सकता है।

चंबल-अंचल की यह घटना शान्ति-सेना के प्रयोग का एक जीवित प्रत्यक्ष उदाहरण है। 'शान्ति-दूत क्या कर सकता है, उसका आभास व प्रत्यक्ष दर्शन इससे मिलता है। शान्ति-स्थापना और अशान्ति के निवारण का कार्य सातत्य से किये जाने पर ही टिकेगा व सफल होगा, यह भी आज बराबर समझे जाने की जरूरत है। चाहे नगरों में विद्यार्थी, मजदूर आदि के शक्तिशाली, किन्तु विस्फोटक क्षेत्र की बात हो अथवा गांव देहात में डाकू आदि की समस्या की बात हो, अमुक गलत परिस्थिति को बदलने के बाद भी जन-जन से सम्पर्क व उनके बीच कार्य करते रहने की बड़ी आवश्यकता है। चंबल-क्षेत्र में आज डाकुओं से पीड़ित ही परिवार नहीं हैं, बल्कि मुखबिर, पुलिस आदि के द्वारा पीड़ित भी परिवार जगह-बजगह मिल सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि डाकुओं का आतंक खत्म हुआ, वैसे परस्पर का अविश्वास, भय व उत्पीड़न की आशंका सब लोगों में से दूर हो। डाकू व उनके परिवार भी न डरें, चाहे डाकुओं को न्याय की तुला में कड़ा-से कड़ा दण्ड मिले और दूसरे लोग जो किसी समय विभिन्न कारणों से भयग्रस्त थे, वे भी अब बिलकुल न डरें। केवल डर ही दूर न हो, परस्पर-सौहार्द, एक-दूसरे पर विश्वास और एक-दूसरे को परिवार का साथी मान मददगार होने की भावना लोगों में बढ़नी चाहिए। मुखबिर और पुलिस के लोगों के प्रति और उनके मन में दूसरों के प्रति परस्पर सद्भावना का उदय होना चाहिए। विनोबा के प्रयोग से यह सहज साध्य है। आवश्यकता यही है कि उनके इस बीजारोपण के बाद क्षेत्र में पौधे को बढ़ाने, पनपाने, फलयुक्त करने का कार्य सतत चले। इसमें स्थानिक, प्रदेश की और बाहर की सरकारी, गैर-सरकारी सब प्रकार की साधन-शक्ति लगनी चाहिए। सर्व सेवा संघ को इस विषय में सोचना चाहिए। *सर्वोदय व अहिंसा के प्रेमियों का इसमें योगदान होना चाहिए।* लेकिन साफ है कि यह और ऐसे कार्य विनोबा, सर्व सेवा संघ या सर्वोदय विचार में श्रद्धा रखने वाले समुदाय तक सीमित नहीं है। सिर्फ उनके लगे रहने से वे समाज-परिवर्तन के कार्य आगे भी नहीं बढ़ सकते। इसलिए इसमें जब भूमि तैयार हुई है, उसी समय से सबकी सम्मिलित शक्ति लगनी चाहिए।

भिण्ड, मुरैना, आगरा, बाह, धोलपुर के डाकू-क्षेत्र को धर्म-क्षेत्र, साधु-क्षेत्र, सज्जन-क्षेत्र का रंग विनोबा ने आज दे दिया है। उस रंग को कायम रखना, अभी भी जो बड़ी संख्या में डाकू बाहर हैं, उनके हृदय को बदल कर उस रंग को गहरा करना, उसे देशव्यापी करना, आज शान्ति-सैनिकों, सर्वोदय-प्रेमियों, देश के सज्जनों की और देश की समस्त जनशक्ति पर निर्भर है। काल-पुरुष की आज की चुनौती का युग-पुरुष ने जो उत्तर प्रस्तुत किया है, उसे उठा लेना, उसका व्यापक उद्घोष करना, उसे क्रियान्वित करना जन-जन का कर्तव्य होना चाहिए।

●

बिहार प्रादेशिक शान्ति-सेना मंडल

श्री विद्यासागर द्वारा प्रेषित समन्वय आश्रम, बोधगया में संपन्न बैठक की कार्यवाही का सार

नवगठित बिहार प्रादेशिक शान्ति-सेना मंडल की प्रथम बैठक विगत १५ और १६ मई को समन्वय आश्रम, बोधगया में श्री जयप्रकाश बाबू की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस अवसर पर मंडल के सदस्यों के अतिरिक्त आमंत्रित प्रान्त के गण्यमान्य सर्वोदयी नेताओं एवं संयोगवश अखिल भारतीय नेताओं की उपस्थिति का लाभ भी प्राप्त हुआ। इनमें मंडल के सदस्यों श्री जयप्रकाश नारायण, श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, श्री गोखले चौधरी, श्री श्याम बहादुर सिंह और श्री विद्यासागरजी, संयोजक के अतिरिक्त सर्वश्री रा० कृ० पाटिल, संयोजक–अ० भा० निर्माण समिति, श्री के० वैद्यनाथनजी, अधिकारी–ग्राम-स्वावलम्बन विभाग, खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, श्री गौरीशंकर शरण सिंह, अध्यक्ष–बिहार भूदानयज्ञ कमिटी, रामदेव ठाकुर, अध्यक्ष–बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ, श्री श्याम सुन्दर प्रसाद, संयोजक–बिहार सर्वोदय-मंडल, श्री गोपालजी झा शास्त्री, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

विगत बैरगनियाँ प्रादेशिक शान्ति-सेना शिविर में प्रादेशिक स्तर पर शान्ति-सेना के कार्य को संगठित करने और इसके द्वारा हमारे आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक जीवन में प्रविष्ट हिंसात्मक संस्कारों व व्यवहारों को एवं आये दिन फूट पड़ने वाले हिंसात्मक विस्फोटों को शान्ति-सेना द्वारा सफलतापूर्वक नियंत्रित करने के लिए अनेक मूल्यवान सुझाव हमारे सामने प्रस्तुत किये गये थे। इस बैठक में उन सुझावों के प्रकाश में शान्ति-सेना के संगठन, प्रशिक्षण, कार्यक्रम, आर्थिक व्यवस्था और शहरों में शान्ति-कार्य इन विषयों पर विचार-विमर्श हुआ एवं सभी निर्णय सर्वसम्मति से किये गये।

● **शान्ति-सहायक** शान्ति-सेना के उपद्रवग्रस्त क्षेत्र में शान्ति-स्थापन-कार्य एवं पीड़ितों की सेवा में सहयोग देने वाले स्थानीय व्यक्तियों को 'शान्ति-सहायक' कहा जायगा। शान्ति-सहायकों का संगठन संकटकालीन और अस्थायी होगा।

● **बैज** : शान्ति-सैनिक का सम्पूर्ण देश में एक ही प्रकार का बैज हो, जो अ० भा० शान्ति-सेना मंडल द्वारा निर्धारित हो। इस सम्बन्ध में इस समिति की ओर से शान्ति-सेना के स्तर पर काम के लिए पीले रंग का रूमाल और कंधे पर लगाने के लिए पीले कपड़े का एक बिल्ला रखने का सुझाव अ० भा० शान्ति-सेना मंडल को देना तय हुआ। शान्ति-सहायकों का रूमाल और बिल्ला बिहार प्रदेश में नीले रंग का रखना निश्चित हुआ।

● **गीत और नारे** शान्ति-सैनिकों के गाने के लिए गीत-रचना करने के निमित्त श्री दिनकरजी और श्री दुखायलजी से पत्र द्वारा अनुरोध करना तय हुआ। साथ ही 'शान्ति के सिपाही चलें, शान्ति के सिपाही चलें,' के अतिरिक्त मौजूदा भूदान गीतों में से कुछ अनुकूल गीतों का चुनाव करना निश्चित हुआ।

● संयोजक प्रत्येक जिले में एक जिला शान्तिसेना संचालक मनोनीत करें, यह तय हुआ।

● युवकों और विद्यार्थियों के स्थान-स्थान पर शान्ति-दल का गठन करना तय हुआ।

● **प्रशिक्षण** : शान्ति-सैनिकों के प्रशिक्षण के लिए एक माह की अवधि का शिविर आयोजित किया जाय। कम से कम दो मासिक प्रशिक्षण-शिविरों का आयोजन प्रान्त के अलग अलग भागों में किया जाय अथवा यदि योग्य शिक्षकों का अपेक्षित समय उपलब्ध हो सके, तो तीन शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण-शिविर का अभ्यास-क्रम शान्ति-सैनिकों के विशेष कार्यों को मद्दे नजर रखते हुए नैमित्तिक, नित्य और जीवन शोधन इन तीन दृष्टिकोणों से इस प्रकार का बनाया गया।

नैमित्तिक : उत्तेजित भीड़ और तनावपूर्ण वातावरण में लोगों की मनोवृत्ति को समझने की कला, दंगाई क्षेत्र में घुस कर शान्ति-स्थापन की कला, संगीत नारे या कुछ समयोचित प्रदर्शन द्वारा उत्तेजित भीड़ का ध्यान दूसरी दिशा में खींचने और आतंक-शमन की कला, आग बुझाने तथा पानी में डूबते हुए को बचाने की कला, प्रथम उपचार आदि का ज्ञान दिया जाय।

सामूहिक प्रार्थना और गीत, कवायद, सिगनलिंग और स्काउटिंग आदि का अभ्यास कराया जाय।

नित्य : रचनात्मक काम–सफाई व सफाई का शास्त्र व कला, रोगी की सेवा-शुश्रूषा की सामूहिक रूप से कठिन श्रमसाध्य सेवा-कार्य, (दुर्गति-सम्बन्धी गृह-निर्माण, बांध-सड़क निर्माण) आदि का अभ्यास कराया जाय।

बौद्धिक : विश्व के शान्ति-आन्दोलनों का इतिहास (बापू के सत्याग्रह-आन्दोलनों का, क्वेकर समाज का, ईसाई समाज के अन्तर्गत ऐसे कार्यों का, मार्टिन लूथर किंग के प्रयास का, विश्व के प्राचीन व अर्वाचीन महान व्यक्तियों के व्यक्तिगत प्रयासों का आदि), रचनात्मक कार्य का विकास और अहिंसक समाज-रचना के सम्बन्ध की भूमि-व्यवस्था और सहकारिता का, ग्राम-आयोजन और कृषि-गो-सेवा, उत्तेजित भीड़ व हिंसात्मक कार्रवाही में संलग्न व्यक्तियों के मनोविज्ञान का लोक शिक्षण (जन मानस निर्माण) का ज्ञान दिया जाय।

कार्यक्रम : विदेशी आक्रमण की परिस्थिति में शान्ति-सैनिकों द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से यह निश्चय हुआ कि राष्ट्रीय सीमा-क्षेत्र की स्थिति का अध्ययन कर वहाँ रचनात्मक सेवा-कार्य का आयोजन किया जाय। इस उद्देश्य से समिति के संयोजक श्री विद्यासागरजी और उनके साथ समिति के एक सदस्य श्री [illegible] चौधरी तथा बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के एक कार्यकर्ता (जिसे संघ के अध्यक्ष श्री ध्वजाप्रसाद साहु मनोनीत करेंगे) को इस बिहार प्रदेश के निकटस्थ सिक्किम और भूटान के राष्ट्रीय सीमा-क्षेत्र में भेजने का निश्चय किया गया।

यह निश्चय हुआ कि प्रदेश के हर शान्ति-सैनिक से समिति के संयोजक सम्पर्क स्थापित कर सीधे स्थापित करें और उनके कार्यक्षेत्र की जानकारी प्राप्त करें। इस प्रकार प्रदेश भर में फैले शान्ति-सैनिकों एवं उनके कार्य-क्षेत्र का ब्यौरा [illegible] संयोजक के पास रहे।

अशान्ति फूट पड़ने के पूर्व उसके आसार प्रकट होते ही जिला शान्ति-सेना संचालक को इसकी तत्काल सूचना प्राप्त हो और वे तत्परतापूर्वक उसके निवारण के लिए आवश्यक कार्रवाई करें, ऐसी व्यवस्था की जाय। आवश्यकता पड़ने पर इस काम में पुलिस-अधिकारियों की भी सहायता ली जा सकती है।

(४) शहरों में शान्ति-सेना के स्तर कार्य की दृष्टि से पटना शहर को लेने का निश्चय किया गया।

● ●

सर्वं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

टिप्पणियाँ

देवनागरी लिपि *

दुःखियों के आंसू पोंछें

नौ साल पहले ठीक इन्हीं दिनों अप्रैल, मई और जून महीनों में हम तेलंगाना में घूमते थे। वहां की जो समस्याएं हैं, जो दुःख की कहानियां हमने वहां सुनीं, वैसी ही यहां सुन रहे हैं। उससे पहले महात्मा गांधी के जाने के बाद शरणार्थियों को बसाने का काम हम कर रहे थे। लाखों लोग पाकिस्तान से हिंदुस्तान आये थे, लाखों हिंदुस्तान से पाकिस्तान गये थे। पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, बंबई, मद्रास जहां जाते, वहां की कहानियां सुनते। दुःख की कहानियां सुनते-सुनते हमारा दिल कठोर बनने लगा। उसके पहले गांधीजी की आज्ञा से हम ग्रामों में बैठकर देहातियों की सेवा करते थे। तब भी किसानों की दुःखभरी कहानियां सुना करते थे। पाकिस्तान बनने के बाद की दुःखगाथाएं, तेलंगाना के दुःख और यहां की डाकुओं की समस्याएं; इन सारे दुःखों को सुनते-सुनते हमारा दिल निठुर बन गया, क्योंकि ये सब सुन-सुनकर अब हमारी आंखों में आंसू नहीं आते। भगवान का स्मरण करते हैं या महापुरुषों को याद करते हैं, तो आंसू आते हैं; मगर इन दुःखों को सुनकर नहीं। बात यह है कि यहां आंसू बहाने से काम नहीं चल सकता। किसी को रोते हुए देखकर, दुःख आना ठीक नहीं। हम दुःखियों के आंसू पोंछ सकें, तब ही ठीक है।

पोरसा (मुरैना)
१६ मई, '६०
—विनोबा

* लिपि-संकेत : ि=ी; ी=ी, ख=ख, संयुक्ताक्षर हलन्त चिह्न से।

ग्रामरक्षा-समितियाँ

चम्बल-घाटी की अपनी यात्रा के दौरान में पूज्य विनोबाजी ने राष्ट्रीय नीति से संबंधित एक महत्व के मुद्दे की ओर ध्यान आकर्षित किया है। डाकुओं के डर से भयभीत जनता की रक्षा के लिए सरकार ने उस क्षेत्र के गांवों में रक्षा-समितियां कायम कीं और उन रक्षा-समितियों के सदस्यों को डाकुओं का मुकाबला करने के लिए हथियार भी दिये। इस तरह की सैकड़ों रक्षा-समितियां इस क्षेत्र में कायम हुईं। आज भले ही लगता हो कि ये "रक्षा-समितियां" 'डाकुओं' से जनता की रक्षा करेंगी, पर जैसा विनोबाजी ने कहा है, इस तरह लोगों को हथियार बांटने से कभी भी समस्या का हल नहीं हो सकता। अब तक का दुनिया का अनुभव बतलाता है कि समाज में रक्षा करने का भार जब कुछ खास लोगों के हाथ में दिया जाता है, तो उसके दो नतीजे होते हैं। एक तो यह कि वह लोग जनता के रक्षक बनते हैं और जनता खुद रक्षित। इस प्रकार जनता में कायरता और बुजदिली की भावना बनी रहती है। जैसे विनोबा ने कहा, "यह तो पहले भी हुआ है कि कुछ लोग रक्षक बने और स्त्रियां रक्ष्य। फिर जब पुरुष रक्षा करने में असमर्थ हुए तो स्त्रियों ने अपने-आपको जला दिया, ताकि वे शत्रु के हाथ में न पड़ें।" राजस्थान के इतिहास में बहनों के अपने-आपको इस प्रकार जला देने के कई उदाहरण हैं। इसी तरह ग्राम रक्षक गांव की रक्षा करेंगे तो बाकी लोग स्त्रियों की हैसियत में आ गये समझो।"

जब रक्षा करने के लिए कुछ लोगों के हाथ में हथियार दिये जाते हैं तो दूसरा नतीजा यह होता है कि समय पाकर वे "रक्षक" ही जनता के 'भक्षक' बन जाते हैं। पहले भारतवर्ष में क्षत्रिय वर्ग को रक्षक बनाया गया था। समय पाकर वे उन्मत्त हो गये, प्रजा-पीड़क बन गये। भिण्ड-मुरैना के उपरोक्त क्षेत्र में कई जगह इस अनुभव की पुनरावृत्ति और पुष्टि हुई है। हथियार मिल जाने के बाद इन रक्षा-समितियों के कुछ सदस्य या तो स्वयं डाका डालने लगे या बागियों के साथ मिल गये या अपने हथियार उनको बेच दिये। सुरक्षा के प्रश्न को चाहे वह जनता की आंतरिक सुरक्षा का प्रश्न हो, चाहे समूचे देश की रक्षा का, हल करने का सही और कारगर तरीका यह कभी नहीं हो सकता कि कुछ लोगों के हाथ में हथियार दे दिये जायें। आज तक यह तरीका नाकामयाब और बेकार सिद्ध हुआ है। जिसके हाथ में हथियार आता है, वही कालान्तर में जनता का पीड़क बन जाता है। इस समस्या का असली हल जनता में प्रेम की शक्ति जागृत करने और निर्भयता के साथ अहिंसक तरीके से हर संभव अन्याय और अत्याचार का मुकाबला करने की वृत्ति और शक्ति पैदा करने का है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए ही आज विनोबाजी शांतिसेना के संगठन पर इतना जोर दे रहे हैं। उन्होंने भिण्ड-मुरैना के क्षेत्र में स्थापित ग्रामरक्षा-समितियों के सदस्यों से और आम जनता से इसीलिए यह अपील की है कि वे शस्त्रों का भरोसा त्याग कर शांति-सेना में शामिल हों।

—सिद्धराज ढड्ढा

असहनीय उदासीनता !

विनोबाजी से लेकर छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता तक का मुख्य चिन्तन आजकल शांति-सेना के विचार की ओर केंद्रित है। शांति-सेना पर वे जोर भी दे रहे हैं। विनोबाजी कहते हैं कि "शांति-सेना के बिना यानी निष्काम सेवकों की जमात खड़ी हुए बिना हमारा सारा आंदोलन टूट जाने वाला है। इसलिए मेरे मन में निष्काम सेवकों की एक सेना तैयार करने की हवस जारी है।"

हम कई बार इस संबंध में गहराई से सोचते हैं। पर समाज और राष्ट्र की परिस्थितियों को हम देखते हैं, तो लगता है कि सब जगह सामाजिकता के भाव शतखंड होकर बिखर गये हैं। बिना सामाजिकता की मजबूत भावना के समाज आगे नहीं बढ़ सकेगा। वह निरंतर बिखरता ही जायेगा।

पिछले दिनों नई दिल्ली के प्रमुख बाजार कनाट सर्कस में कत्ल की जो लगातार दो घटनाएं हुईं, वे हृदय को चौंका देने वाली हैं। दो व्यक्तियों के बीच झगड़ा हुआ। तू-तू मैं-मैं के बाद हाथापाई भी हुई। सैकड़ों आदमी जमा हो गये। सब लोग तमाशा देखते रहे। झगड़ा यहां तक बढ़ा कि एक ने दूसरे के पेट में छुरा भोंक दिया और छुरा भोंकने वाला सबके देखते-देखते भाग गया। किसी ने कुछ नहीं किया। दूसरे दिन भी कई सौ व्यक्तियों की उपस्थिति में दिन-दहाड़े इसी तरह की दूसरी हत्या हुई। इन दोनों मामलों में न तो कोई गवाह है और न हत्या करने वाले पकड़े जा सके, बावजूद इसके कि वहां अच्छी खासी भीड़ जमा थी।

घटना आश्चर्यजनक है। आम लोग सामाजिक जीवन के प्रति कितने उदासीन हैं, अपने पड़ोसी के कत्ल से कितने लापरवाह हैं और अमानवीय घटनाओं से किस तरह बेभान रहते हैं, यह इस घटना में साफ जाहिर हो जाता है।

कनाट सर्कस राजधानी का सबसे सुन्दर कहलाने वाला सुनियोजित तथा सुव्यवस्थित बाजार है। जब वहां के इन स्थापित सभ्य एवं शिक्षित नागरिकों का यह हाल है, तब देश के अन्य भागों में क्या अपेक्षा की जाय?

इसी तरह की दो घटनाएं उत्तर प्रदेश के दो बड़े शहरों में और हुईं। हिंदुस्तान की सबसे अधिक सांस्कृतिक मानी जाने वाली नगरी काशी में कबीर चौरा के चौक पर, हास्पिटल के पास ही एक बीस वर्षीय युवक को छुरा मार कर सैकड़ों आदमियों के देखते-देखते हत्या कर दी गयी। इस छुरेबाजी का कारण सिनेमा में सीटी बजाने के प्रश्न पर दो दलों में हुआ झगड़ा बताया जाता है। जिस युवक की हत्या हुई, उसकी शादी हुए अभी केवल २४ दिन हुए थे।

न केवल काशी के नागरिकों के लिए, बल्कि यहां पर शांति-सेना का काम करने वालों के लिए भी यह घटना एक विचारणीय परिस्थिति खड़ी कर देती है और यह घटना हमें यह सबक सिखाती है कि यहां लोकशिक्षण की और शांति-सेना के काम की कितनी अधिक जरूरत है। पांच हजार के पीछे एक शांति-सैनिक हो और वह इस तरह के लोकशिक्षण का आयोजन करे, जिससे कि इस तरह की दुर्घटनाओं का होना असंभव हो जाय। यदि कहीं कुछ लोग जोश में आकर झगड़ा भी कर बैठें, तो आसपास खड़े लोग उसमें सक्रिय रूप से दखलंदाजी करके झगड़े को प्रारंभिक अवस्था में ही मिटा दें।

दूसरी घटना लखनऊ में कचहरी के पास हुई। दो आदमियों में झगड़ा था। उन दोनों का केस कचहरी में था। कचहरी के बाहर वे दोनों आपस में उलझ गये और एक ने दूसरे की हत्या कर दी। आश्चर्य यह कि यहां भी दिल्ली और काशी की तरह ही घटना-स्थल पर सैकड़ों लोगों की भीड़ खड़ी थी।

दो-चार दिन के अन्दर ही घटी हुई ये चारों घटनाएं स्वाभाविक ही हमारा ध्यान खींचती हैं। इन घटनाओं के पीछे मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो दो-तीन कारण सामने आते हैं। एक तो यह कि शहरों में मनुष्य-मनुष्य से या एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से इतना दूर हो गया है कि एक-दूसरे को पूरा पहचानना भी नहीं है, एक-दूसरे के दुःख में शामिल होना बहुत बड़ी बात है। दूसरा कारण है हत्याप्रधान, सनसनीखेज और विकारों को उभाड़ने वाले सिनेमाओं और साहित्य का अमर्यादित प्रचार। इन सिनेमाओं और ऐसे साहित्य के कारण युवकों का मानस अप्रत्यक्ष रूप से विकृत होता जा रहा है। तीसरा कारण है, कोर्ट-कचहरियों में आपसी झगड़ों का अमर्यादित फैलाव। इन तीनों मोर्चों पर शांति-सैनिकों को आक्रमण करने की तैयारी करनी है।

ये सब दुर्घटनाएं हमारे काम की अनिवार्यता को सिद्ध करती हैं और हमें जी-जान से अपने काम की ओर जुट जाने की प्रेरणा देती हैं।

—सतीश कुमार

तीन टिप्पणियाँ :

अवसर न खोयें

ता० १ मई को महाराष्ट्र और गुजरात के दो नये राज्य बने। यो तो जीवन सतत-प्रवाही है, गुजरात और महाराष्ट्र के राज्य भी एकदम नये नहीं बने हैं। दोनो मिल कर पुराना बम्बई राज्य था ही और उसका संचालन भी उन्हीं लोगों के हाथ में था, जिनके हाथ में आज विभाजन के बाद वह है। महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री चव्हाण सम्मिलित बम्बई राज्य के मुख्य मंत्री थे, और डा० जीवराज मेहता, जो आज गुजरात के मुख्य मंत्री हैं, वे भी बम्बई राज्य के मंत्री-मंडल के प्रमुख सदस्य और वित्त-मंत्री थे। फिर भी नये राज्यों की स्थापना जैसे प्रसंगों पर परिवर्तन के लिए स्वाभाविक अपेक्षा निर्माण हो जाती है और एक मनोवैज्ञानिक भूमिका भी बन जाती है।

अत यह स्वाभाविक है कि महाराष्ट्र और गुजरात, इन दोनों राज्यों के बनने के *बाद से लोग इनके हर कदम की ओर* उत्सुकता के साथ देखें। हमारी मनशा *दूसरे प्रान्तों की अवहेलना करने की नहीं* हैं, लेकिन यह आम तौर पर जाहिर है कि *भूतपूर्व बम्बई प्रान्त पहले भी कई दृष्टियों* से हिन्दुस्तान के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा प्रगतिशील रहा है। इसके अलावा, महाराष्ट्र और गुजरात, दोनों प्रान्तों में जनता की उत्कट इच्छा अपने अलग भाषिक राज्य बनाने की थी। वह इच्छा पूरी हुई, इसलिए *जनता में भी उमंग और उत्साह है।* सौभाग्य से महाराष्ट्र और गुजरात दोनों, *ही प्रांतों में पिछले वर्षों कुछ ऐसे महापुरुष* पैदा हुए हैं, जिनकी वहाँ के जन-जीवन पर *अमिट छाप पड़ी है। महाराष्ट्र में लोक*मान्य तिलक और गुजरात में गांधी, दोनों *ही असाधारण व्यक्तित्ववाले पुरुष थे।* आज दोनों राज्यों के जो मुख्यमंत्री हैं, *उनकी व्यक्तिगत योग्यता, क्षमता और* ईमानदारी के बारे में भी लोगों को शक नहीं है।

इन सब कारणों से महाराष्ट्र और *गुजरात के सामने एक नये युग की शुरुआत* का मौका उपस्थित हुआ है। वैसे तो दोनों ही राज्य भारत के अंग हैं और इसलिए वे अपनी नीति में बहुत बुनियादी परिवर्तन अपने-आप से नहीं कर सकते हैं, फिर भी ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जिनमें परिवर्तन हो सकता है और जिनसे जनता की रोजमर्रा की कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं। सन् '४७ में जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ, उस वक्त सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की एक ऐसी ही अनुकूल मनोवैज्ञानिक घड़ी हमारे देश के लिए आयी थी। कारण कुछ भी रहे हों, आज १३ वर्ष बाद बहुत लोगों को लगता है कि उस घड़ी का पूरा उपयोग हम नहीं कर पाये। हम आशा करते हैं कि महाराष्ट्र और गुजरात के सामने जो इस प्रकार का एक और अवसर आता है, उसे वे हाथ से नहीं जाने देंगे।

यह संतोष की बात है कि दोनों ही राज्यों ने अपने प्रारम्भ के दिनों में कुछ अच्छे निर्णय किये हैं। महाराष्ट्र और गुजरात, दोनों ने राज्य का कारोबार स्थानीय भाषा में चलाने का निर्णय किया है। गुजरात ने एक कदम और आगे बढ़कर यह भी निर्णय किया है कि कारोबार की भाषा गुजराती होगी, लेकिन लिपि देवनागरी होगी। मराठी की लिपि पहले से ही देवनागरी है।

एक और अच्छा कदम महाराष्ट्र ने उठाया है। मालूम हुआ है कि वहाँ के के मुख्य-मंत्री श्री चव्हाण की प्रेरणा से मंत्रियों ने मिल कर यह तय किया है कि *जिस तरह आये दिन हर छोटी-मोटी चीज* के उद्घाटन और शिलान्यास आदि के लिए *मंत्रियों को बुलाया जाता है, वैसे समारोहों* में अब वे भाग नहीं लेंगे। हमें यह कहने के *लिए क्षमा किया जाय, लेकिन पिछले वर्षों* में मंत्रियों को 'खुश करने का' यह एक *आमतरीका ही बन गया है। मंत्रियों* के लिए भी ऐसे प्रसंग अपनी लोक*प्रियता की छाप डालने के अच्छे मौके* उपस्थित करते हैं। पर यह प्रथा बहुत ही *विकृत हो गयी है। मंत्रियों का बहुत-सा* समय, जो शासन के कामों में लगना *चाहिए ऐसे उद्घाटनों, शिलान्यासों और* स्वागत-समारोहों आदि में ही जाता है। *अधिकारियों और लोगों का समय, शक्ति* और पैसा भी इन कामों में काफी खर्च *होता है। महाराष्ट्र के मंत्रियों ने उपरोक्त* निर्णय करके अभिनन्दनीय काम किया है।

गुजरात राज्य के उद्घाटन का मंगल समारोह भी बहुत सादगी के साथ हुआ। इतना ही नहीं, उसने एक नयी परम्परा का निर्माण भी किया। यह समारोह राजभवन में न होकर आश्रम में हुआ। गुजरात *में जिस प्रकार का जनमानस बना हुआ है* और वहाँ के नेताओं की जो मनःस्थिति है, उसे देखते हुए यह भी आशा बनी है कि गुजरात राज्य का कारोबार खर्चीला नहीं होगा, बल्कि किफायत से चलेगा। पर *हमें कहना चाहिए कि गुजरात राज्य के* मंत्रियों और उपमंत्रियों के जो वेतन आदि निश्चित किये गये हैं, उससे हमें निराशा हुई है। मंत्रियों का वेतन ग्यारह सौ रुपये मासिक और उपमंत्रियों का *साढ़े* सौ पचास रुपये मासिक होगा। इसके *अलावा सवारी-खर्च के ढाई सौ रुपये* प्रति माह तथा राज्य की ओर से बिना *किराये सजा-सजाया मकान सबको मिलेगा।* हमें लगता है कि गुजरात के मुख्य मंत्री ने *अपने पहले वक्तव्य में ही मंत्रियों के सादे* रहन-सहन की जो आशा दिलायी थी, वह इस निर्णय पर से सही साबित नहीं हुई। उनकी मजबूरी जो कुछ भी रही हो, पर हमें लगता है कि यह निर्णय अच्छा नहीं हुआ और गुजरात मंत्रि-मंडल ने एक बुनियादी मामले में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से गलत कदम उठाया।

• •

यह हथियार-परस्ती !

सशस्त्र ग्राम-रक्षा समितियों की स्थापना आज मुल्क में दिनोंदिन बढ़ती जाती हथियार-परस्ती की वृत्ति का एक अंग है। मुल्क की रक्षा के लिए हथियारों से सुसज्जित सेना रखने के अलावा, पिछले दिनों विभिन्न नामों से ऐसी योजनाएँ राष्ट्र में जारी की गयी हैं और की जा रही हैं, जिनके द्वारा जनता में शस्त्रों के उपयोग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है और अधिकाधिक लोगों के हाथ में शस्त्र दिये जा रहे हैं। देश-भक्ति और अनुशासन को प्रोत्साहन देने के नाम पर हमारी शिक्षण-संस्थाओं में और नौजवान लड़के-लड़कियों में जिस प्रकार हथियारों के उपयोग की तालीम का विस्तार किया जा रहा है, उसकी ओर पिछले सर्वोदय-सम्मेलन में गांधी स्मारक निधि के मंत्री श्री जी० रामचन्द्रन् ने बड़े वेदना भरे शब्दों में ध्यान आकर्षित किया था। इतना ही नहीं, इस समय एक और योजना सरकार के विचाराधीन है, जिसके अनुसार हर नौजवान लड़के-लड़कियों को, जो माध्यमिक शिक्षा समाप्त करके उच्च शिक्षा के लिए कालेज में दाखिल होना चाहें, मजबूरन शस्त्रों के साथ सैनिक तालीम लेनी पड़ेगी। पिछले वर्षों में "राइफल क्लब्स" के नाम से भी शस्त्रों के उपयोग को काफी प्रोत्साहन दिया जा रहा है और इन क्लबों की सदस्यता के नाम पर व्यक्तियों को हथियार रखने के लाइसेन्स दिये जा रहे हैं।

वक्त आया है, अब कि राष्ट्र को गम्भीरता से सोचना चाहिए कि वह किधर जाना चाहता है। बाहरी आक्रमण से देश की रक्षा के लिए मजबूरन सेना रखनी पड़े और उसे अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित रखना पड़े, यह एक बात है और देश के नागरिकों में हथियार-परस्ती की मनोवृत्ति को प्रोत्साहन देना और रक्षा हथियार से ही हो सकती है, यह भावना उनमें पैदा करना दूसरी बात है। हथियार-परस्ती को बढ़ाना ही हो, और यह सब समझ-बूझ कर किया जा रहा हो, तब तो हमें कुछ कहना नहीं है—पर हमारा ऐसा खयाल नहीं है—बल्कि इस विषय पर राष्ट्र के नेताओं को थोड़ी गहराई से सोचना चाहिए। अभी भिण्ड-मुरैना के क्षेत्र में एक प्रवचन में विनोबाजी ने कहा था, "अगर मुझे गुस्सा आयेगा, तो मैं क्या करूँगा ? ज्यादा-से-ज्यादा यह करूँगा कि कुछ जोर से बोलूँगा। जिसके हाथ में लाठी है, उसे गुस्सा आयेगा तो वह सामने वाले का सिर फोड़ सकता है, और जिसके हाथ में बंदूक है, वह उसकी जान ले सकता है। बंदूक वाले को गुस्सा आया और सामने वाला मरा तो हम सजा मारने वाले को देते हैं, पर असल में कसूर बंदूक का है। गुस्सा तो सबको आता है।" हथियार से अगर आदमी अपनी रक्षा कर सकता है, तो दूसरे को झटपट मार भी सकता है। विनोबाजी ने इस खतरे की ओर इशारा करते हुए भिण्ड की प्रार्थना-सभा में [illegible] था कि, 'जिस रफ्तार से लोगों में हथि[illegible] बाँटे जा रहे हैं, उसे देखते हुए ताज्जुब [illegible] होगा अगर जल्दी ही समाज में शान्ति [illegible] सुरक्षा कायम रखना एक जटिल समस्या हो जायगी। ये ही 'रक्षक' एक दिन जन[illegible] के पीड़क बन सकते हैं। सुरक्षा की समस्या का हल बिना हथियार के ही हल करने [illegible] कोशिश होनी चाहिए !'

आज आये दिन शहरों में सुनने [illegible] जो छुरेबाजी की घटनाएँ होती हैं, क्या हमारी आँखें खोलने के लिए पर्याप्त न[illegible] हैं ? *और क्या वे हमको इस बात की चेतावनी नहीं देती हैं कि लोगों में हथियार-परस्ती की भावना को बढ़ावा देने के बजाय* हमें उनमें यह भावना मजबूत करनी चाहि[illegible] *कि हर हालत में शस्त्रों का उपयोग त्याज्य है* और अपनी रक्षा भी निःशस्त्र, पर[illegible] *निर्भय रह कर की जा सकती है।*

•

सामयिक चेतावनी

घाना (अफ्रीका) के प्रधान मन्त्री डा० अंक्रूमा ने दुनिया की वर्तमान राजनीति के एक ऐसे पहलू की ओर इशारा किया है, जो अक्सर ध्यान में नहीं रहता। आज दुनिया की राजनीति पर वे राष्ट्र हावी हैं, जिनके पास लड़ाई की ताकत है, खास करके इंग्लैंड, फ्रांस, रूस और अमरीका, ये चार बड़े कहे जाने वाले राष्ट्र, जिन्होंने आणविक हथियार तैयार कर लिये हैं और जो लड़ाई या संहारक शक्ति में जिनका मुकाबला दुनिया के दूसरे मुल्क आज नहीं कर सकते। डा० अंक्रूमा ने दुनिया के इन दूसरे मुल्कों को, जो मिल कर वास्तव में मानव-जाति *का ज्यादा बड़ा हिस्सा है, सावधान किया* है कि उन्हें अब ऐसे कदम उठाने चाहिए, *जिससे 'ये चार बड़े राष्ट्र, सिर्फ इसलिए* कि उनके हाथ में आणविक शस्त्र हैं, *दुनिया की तकदीर के साथ खिलवाड़ न* कर सकें। दुनिया के इतिहास की यह घड़ी बहुत महत्त्व की है, जब कि छोटे राष्ट्रों को मिल कर अपनी सम्मिलित आवाज बुलन्द करनी चाहिए। यह गलत है कि ये चार बड़े राष्ट्र, चाहे वे आपने आप में कितने भी शक्तिशाली हों या महत्त्व रखते हों, अपनी [illegible] चालों से दुनिया के भविष्य का फैसला करते जायें और दुनिया के दूसरे मुल्क लाचार बैठे देखते रहें और वैसा होने दें।"

इन चार 'बड़े' राष्ट्रों को भी समझना है कि ऐसी हालत में जब शान्ति [illegible] ही दुनिया में सब कुछ माना जाता था, भले ही यह स्थिति स्वाभाविक नहीं थी, पर अब समूचे जगत में [illegible] की [illegible] नई [illegible] रही है और दुनिया एक नये, [illegible] और [illegible] युग में प्रवेश कर रही है।

—सिद्धराज ढड्ढा

•

हिंसा से मसला हल नहीं होता !

विनोबा

जब लोगों ने मुझसे पूछा कि डाकुओं के क्षेत्र में जाने पर आपका काम करने का तरीका क्या होगा, तब मैंने कहा कि मैं डाकुओं के क्षेत्र में नहीं, सज्जनों के क्षेत्र में जा रहा हूँ। सज्जनों की मंडली बनाना यही मेरा काम रहेगा। निष्काम सेवकों की एक सेना भारत में खड़ी हो जाय, यही मेरी इच्छा है।

आज तीन बातों की तरफ ध्यान देना आवश्यक है : निष्काम सेवक बने, भूदान का कार्य चले और डाकुओं की समस्या का हल हो। डाकुओं की समस्या डरपोकों की समस्या है। कंजूसों की समस्या है, इन्द्रियनिग्रह की समस्या है। कंजूस ही चोरों को पैदा करते हैं। हमने तेलंगाना में देखा कि इसी प्रकार के अपकृत्य जो वहाँ चल रहे थे, उदारता से समाप्त हो गये। उदारता, निर्भयता और इन्द्रियों पर अंकुश रखने का शिक्षण, इसी से यहाँ की समस्या का हल होगा। निर्भयता आत्मा की भूमिका पर ही आती है। हमारी यह धारणा होनी चाहिए कि गिरेगा तो शरीर ही गिरेगा, आत्मा तो अमर ही है।

मैं डाकुओं की समस्या को हल करने के लिए नहीं, बल्कि प्रेम का सन्देश देने के लिए घूम रहा हूँ। डाकू कौन है और कौन नहीं, इसका निर्णय तो परमेश्वर के पास होगा। यहाँ के डाकुओं की तरह जो डाका नहीं डालते हैं, वे डाकू नहीं हैं, ऐसा नहीं कह सकते हैं। जिन्हें हम माननीय, गण्य-मान्य कहते हैं, उनमें क्या डाकुओं की जमात नहीं है? बम्बई या दिल्ली में जितने डाकू हैं, उतने भिंड में नहीं हैं। भिंड-मुरैना के जो डाकू हैं, वे बच्चे हैं, लेकिन बम्बई और दिल्ली में जो डाकू हैं, वे डाका डालते हैं, लेकिन फिर भी सभ्य माने जाते हैं! तुलसीदासजी ने कहा है, "सुमति-कुमति सबके उर बसही।" सुमति और कुमति सबके उर में रहती है। इसलिए फलाना डाकू और फलाना साहु है, ऐसा भेद नहीं किया जा सकता।

एक विचारणीय बात यह है कि देश को बाहरी हमलों से बचाने के लिए हम सेना बनाते हैं, मगर सेना के हमले से बचने के लिए हम क्या करेंगे? यह मसला बहुत पुराना है। प्राचीन काल में क्षत्रियों को रक्षक बनाया गया था। लेकिन फिर वे उन्मत्त हो गये, प्रजा को तकलीफ देने लगे, इसलिए परशुराम ने निःक्षत्रिय भूमि करने का तय किया और ब्राह्मण होते हुए भी हाथ में परशु लेकर वे स्वयं क्षत्रिय बन गये। इसीलिए इक्कीस बार निःक्षत्रिय पृथ्वी करने पर भी क्षत्रिय बचे रहे, जब कि परशुराम स्वयं क्षत्रिय बने थे, तो क्षत्रियरहित पृथ्वी कैसे होती? यहाँ भी कहा जाता है कि डाकू नष्ट कर दिये गये, फिर भी दूसरे डाकू कहाँ से आये? समझना चाहिए कि डाकू तो नष्ट हुए, मगर डाकू-वृत्ति नष्ट नहीं हुई। अहिरावण के शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरती थीं, उतने ही अहिरावण पैदा होते थे। इसलिए शस्त्रों के द्वारा डाकुओं को नष्ट करने का तरीका गलत है। शस्त्र हमेशा चंद लोगों के हाथों में ही रहते हैं। लेनिन ने कहा था कि हम एक बार शस्त्र उठा कर कुछ लोगों को खतम करेंगे और फिर शस्त्र प्रजा के हाथों में दे देंगे। लेकिन रूसी क्रांति के ४३ साल बाद, आज भी शस्त्र कुछ खास लोगों के हाथ में ही हैं। आज भी वहाँ पर ख्रुश्चेव जो कहता है, वही होता है। शस्त्र कभी भी आम जनता के हाथों में नहीं जा सकते हैं। इसलिए समझना चाहिए कि शस्त्रों के द्वारा कोई मसला हल नहीं हो सकता है। गाँव के लोगों को चाहिए कि पुलिस के आधार पर सुरक्षित बनने के बजाय वे अपने ही आधार पर स्वरक्षित बनें।

यह भूमि का इन्सान है !

जब बाग उजड़ा देख कर, बुलबुल वहाँ से उड़ चला,
जब दीप ठंडा देख कर, पथ में पतंगा मुड़ चला,
जब एक कोमल हाथ फिर करुणा लिये आया वहाँ
तब फूल ने खिल कर कहा, यह भूमि का इन्सान है!
तब दीप ने जल कर कहा, यह भूमि का इन्सान है!
जब एक मधु के घूँट पर, सब सुर-असुर लड़ने लगे,
जब एक विष के बूँद पर, सबके हृदय डरने लगे,
मधु बाँट कर विष चाट कर, जब एक मुस्काया वहाँ
तब व्योम ने झुक कर कहा, यह भूमि का इन्सान है!
तब वायु ने रुक कर कहा, यह भूमि का इन्सान है!
रवि हाथ मलता ही रहा, कब पार तम का पा सका!
शशि शीश धुनता ही रहा, निज दाग तक न छुड़ा सका,
जब एक मीठी तान पर, गूँजा गगन, नाचा भुवन
तब सूर्य ने छिप कर कहा, यह भूमि का इन्सान है!
तब चाँद ने छिप कर कहा, यह भूमि का इन्सान है!

—रघुराज सिंह

चम्बल-घाटी में विनोबा

सुरेश राम

आगरा जिले की बाह तहसील में होने के बाद, विनोबाजी इन दिनों चम्बल की घाटी में घूम रहे हैं—मध्यप्रदेश के मुरैना और भिण्ड जिलों में। यह इलाका चम्बल नदी का है, जो अपने कटान के लिए सरनाम है। आगरा से झांसी जाते हुए जिस किसी की निगाह इन पर पड़ेगी, वह चकित हुए बिना नहीं रह सकता। देश की किसी भी अन्य नदी के ऐसे विचित्र कटान नहीं हैं।

हर कोई जानता है कि पिछले नौ साल से सन्त विनोबाजी भूदान-ग्रामदान का सन्देश लेकर पदयात्रा कर रहे हैं। आसाम को छोड़ कर वे देश के सभी प्रान्तों में हो आये हैं। इस तरह लगभग तीस-बत्तीस हजार मील पैदल चले हैं और दो करोड़ से अधिक जनता से मिल चुके हैं। सरल सहज भाव से उनकी पदयात्रा चलती है। सत्य, प्रेम और करुणा के लिए जन चेतना को जाग्रत करते हुए विनोबा एक गाँव से दूसरे गाँव बढ़ते चले जा रहे हैं—और उनका संकल्प है कि जब तक देश में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक पैदल घूम-घूम कर मैं अपना सन्देश देता रहूँगा।

जाहिर बात है कि किसी इलाके को डाकुओं का कह कर बदनाम करना गलत और अन्याय है। वहाँ भी वैसे ही और उसी तरह लोग रहते हैं, जैसे अन्य किसी जगह पर। सुख-दुख, जन्म-मरण के शिकार वे भी उसी ढंग से होते हैं, जैसे हम सब। शादी-ब्याह, लेन-देन, खान-पान आदि उनमें वैसे ही चलते हैं, जैसे और सबमें। इसलिए किसी तरह की विशिष्ट संज्ञा उन्हें देना उचित नहीं कहा जा सकता।

पिछली पाँच मई को जब विनोबा से किसी ने पूछा कि अब क्या आपकी यात्रा डाकुओं के क्षेत्र में चलेगी। तो उन्होंने जवाब दिया—"जी नहीं, मेरी यात्रा सज्जनों के क्षेत्र में चलेगी और अपना यह सारा देश सज्जनों का देश है। दुनिया में डाकू कौन है, कौन नहीं, इसका फैसला तो परमेश्वर के पास जाने पर ही होता है। यह जरूरी नहीं कि जो डाकू माने जाते हों वे ही डाकू हों। परमेश्वर की निगाह में दूसरे लोग कहीं ज्यादा गुनाहगार हो सकते हैं, जो सभ्य और शरीफ समझे जाते हैं।"

'क्या आपका इरादा डाकुओं की समस्या हल करने का है?'

विनोबाजी ने कहा कि "हम कोई मसला हल करने नहीं जा रहे हैं। एक दिन आयेगा, जब हमारा ही मसला हल हो जायगा। हम ही हल हो जायेंगे। न हमने यह माना कि इस दुनिया के मसले कभी खत्म होने वाले हैं। राम आये, कृष्ण आये, बुद्ध आये, ईसा आये, मुहम्मद आये, कबीर और तुलसी आये, इन दिनों श्री रामकृष्ण और महात्मा गांधी आये, पर मसले बने ही हैं। जब तक इन्सान रहेगा, तब तक मसले रहेंगे। हमने कोई ठीका नहीं लिया है। सज्जनों के सेवक के नाते, परमेश्वर के सेवक के नाते हम घूम रहे हैं।"

इससे स्पष्ट हो जाता है कि विनोबा की भूमिका क्या है और किस उद्देश्य से उनकी पदयात्रा चल रही है। किसी चमत्कार की आशा रखना या अचानक कुछ हो जाने की कामना करना निराधार है। विनोबा आये हैं—सर्वोदय का अलख जगाने, शान्ति की शक्ति को प्रेरणा देने, लोक-मानस को जाग्रत करने। हमारी भलाई-बुराई हमारे अपने हाथ है, न कि सरकार के, या राजनीतिक पक्षों के या मन्दिर-मस्जिद-गिर्जे के पुजारियों, मौलवियों और पादरियों के। हमको अपने पैरों पर खड़े होकर, करुणा और प्रेम के आधार पर अपना काम करना चाहिए।

इसलिए जब विनोबा आगरा से चल कर बमरौली कटारा नाम के गाँव पहुँचे, तो उन्होंने ग्राम की सार्वजनिक सभा में अपील भी की कि जो चाहे हमसे मिल सकता है, कोई रोक-टोक नहीं, कोई परहेज नहीं, सबके लिए हमारा दरवाजा खुला है।

आगे चल कर कहा कि "मेरा विश्वास है कि जो डाकू कहलाता है, सो ही डाकू है। और जो डाकू नहीं कहलाता वह डाकू नहीं है, ऐसा भी मेरा विश्वास नहीं है। कितने खूनी, डाकू, चोरों को मैंने बेगुनाह पाया है, कितने मीठे अनुभव मेरे जीवन में आये हैं!

इस तरह चम्बल की घाटी में संत विनोबा ने प्रवेश किया है। इस चम्बल घाटी की बुनियादी समस्या गरीबी भी है। अशिक्षा की यहाँ कोई थाह नहीं है। आवागमन के साधन तो सारे मध्यप्रदेश में कम हैं, यहाँ कटाव के कारण और भी कम। आर्थिक असमानताओं और भेदभाव के कारण लोग बहुत दुखी हैं। स्वराज्य के बाद अपनी सरकार आने पर भी इनकी मुसीबत कम नहीं हुई। उल्टे, 'डालडा' का चलन बढ़ गया, ग्रामोद्योग कमजोर पड़ गये और आडम्बर आ घुसा। सरकारी तंत्र और जटिल बना, लेकिन जनता को न तो निर्भय कर सका, न उसका प्रेम प्राप्त कर सका।

अशान्ति, अविश्वास और आशंका का वातावरण है। एक दूसरे पर शक बड़ी तादाद में है और इस वास्ते जान का भी खतरा महसूस होता है। ऐसी हालत में निर्दोषों को सताया जाना स्वाभाविक है।

इस वातावरण में विनोबा ने सत्य, अहिंसा के सेनानी के नाते काम किया है।

'न हि वेरेण वेराणि सम्मन्तीध कुदाचन
अवेरेण च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो'

वैर से वैर का शमन कभी नहीं हो सकता है।
निर्वैरता से ही वैर का शमन होता है, यही सनातन धर्म है।

—बुद्ध

शान्तिसेना की स्थापना हो चुकी है। बापू उसके प्रथम सैनिक थे और प्रथम सेनापति भी। सेनापति के नाते उन्होंने आज्ञा दी और सैनिक के नाते उसका पालन करके वे चले गये

—विनोबा

सेनापति के क़दम !

शांति-सेना के सेनापति के द्वारा शांति की शक्ति का आविष्कार फिर से एक बार दुनिया ने देखा। तेलंगाना की यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय ही विनोबाजी ने कहा था कि मैं एक शांति-सैनिक के नाते वहाँ जा रहा हूँ। तेलंगाना की यात्रा में 'भूदान-यज्ञ' के रूप में जो विचारदीप प्रज्वलित हुआ था, उसके प्रकाश में अशांति का अन्धकार मिट गया। अशांति के कारणों की तरफ दुनिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए विनोबाजी सतत जप करते रहे कि जब तक आज की समाज-रचना में बुनियादी परिवर्तन नहीं होता है, तब-तक अशांति बनी रहेगी।

चंबल-घाटी के चमत्कार ने भी जैसे अशांति-शमन की प्रक्रिया का आरंभ कर दिया, वैसे ही 'डाकू कौन है, और कौन नहीं है ?' 'देहली और बंबई में रहने वाले सभ्य और गण्यमान्य कहलाये जाने वाले डाकुओं का परिवर्तन इससे कठिन है' आदि वचनों ने अशांति की जड़ों को उखाड़ फेंकने की आवश्यकता की ओर फिर से सबका ध्यान आकर्षित किया। अशांति के निराकरण के तात्कालिक तथा बुनियादी, दोनों उपाय पेश करके सेनापति तो आगे बढ़ चुका है। अब सेना को उसके नक्शेकदम पर चल कर 'चमत्कार को देख कर नमस्कार' करने वाले जगत् को शांति का साक्षात्कार कराना होगा।

—निर्मला

राष्ट्रपति द्वारा विनोबाजी को बधाई !

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने आचार्य विनोबा को उनके डाकू (चम्बल घाटी) की शांति-यात्रा की अभूतपूर्व सफलता पर बधाई-सन्देश भेजा है। राष्ट्रपति ने संदेश में कहा है:

"आज सारा राष्ट्र आपके उस कार्य की ओर आशा एवं प्रसन्नता की दृष्टि से देख रहा है, जिसके द्वारा आप डाकुओं में उत्तम एवं नैतिक भावना जागृत करने में सफल हुए हैं, और जिसके द्वारा उन्होंने उत्साहित होकर आत्म-समर्पण किया है।

आपके प्रयत्न इन व्यक्तियों के लिए उस नैतिक भावना के सफल एवं उत्तम परिणाम हैं, जिनके द्वारा गलत मार्ग पर चले हुए व्यक्ति उत्तम मानव बनने को अग्रसर हो रहे हैं। मैं आपके उद्देश्यों की पूर्ण सफलता के लिए कामना करता हूँ एवं आपके प्रति अपनी सद्भावना व सम्मान प्रकट करता हूँ।

एक अलग टेलीग्राम में राष्ट्रपति ने मेजर जनरल यदुनाथ सिंह को जो कि पहिले राष्ट्रपति के सैनिक सेक्रेटरी थे एवं आजकल डाकुओं के आत्म-समर्पण के कार्य में अपना पूर्ण सहयोग दे रहे हैं, बधाई-पत्र भेजा है।

आप उत्तम मानव बनाने के काम में अग्रसर हो रहे हैं। मैं आपके उद्देश्यों की पूर्ण सफलता के लिए कामना करता हूँ एवं आपके प्रति अपनी सद्भावना व सम्मान प्रकट करता हूँ।"

शांति-सेना के एक अभिनव प्रयोग की कहानी

गुरुशरण

२२ मई, १९६० ! संध्या समय सात बजे !

खुले आकाश के नीचे चौकी पर विनोबाजी और उनके सामने तथाकथित बागी व अगल-बगल सहयात्री व भूदान-कार्यकर्ता ! बड़ा ही अद्भुत दृश्य था वह, जब कि बागी विद्याराम ने सायं-प्रार्थना के पहले "रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम" की हृदय-स्पर्शी रामधुन गाते हुए संक्षेप में पूरी राम-कथा भावविभोर होकर सुनायी। जोर-जोर से तालियाँ बज रही थीं। स्वरों का आरोहण लय के अनुरूप चल रहा था।

आज की सायंप्रार्थना में स्थितप्रज्ञ के श्लोक अर्थ-भरे हो गये थे। प्रार्थना समाप्त होते ही यात्री-दल की बहनों ने बागियों के मस्तक पर तिलक लगाया तथा हाथ में राखी बाँधी। विनोबाजी ने सद्बुद्धिपूर्वक रहने का उन्हें उपदेश दिया और वे सब खुशी-खुशी पुलिस की खुली गाड़ी में रात के लगभग साढ़े आठ बजे भिंड जिला-जेल के लिए रवाना हुए। पुलिस-अधीक्षक के अलावा अन्य कोई पहरेदार नहीं था। न उनके हाथ में हथकड़ियाँ थीं, न पैरों में बेड़ियाँ! १८ व्यक्ति, जिनके नाम पहले से ही वारंट थे—पातीराम, श्रीकृष्ण, मोहरमन, लच्छी, लुक्का, तेजसिंह, भगवानसिंह, भूपसिंह, दुर्जन, कन्हई, विद्याराम, डम्मसिंह, मटरेसिंह, जंग बहादुर, रामसनेही, बदनसिंह, रामदयाल और प्रभुसिंह इनके अलावा उन्नीसवें श्री चरणसिंह स्वेच्छा से जाने के लिए तैयार थे, पर पुलिस ने उन्हें लेने से इन्कार कर दिया; क्योंकि उनके नाम वारन्ट नहीं था !

इन लोगों ने जेल में अपने-अपने "ठाकुरजी" (इष्ट देवता) की मूर्ति ले जाने की अनुमति चाही थी और पूजा करने की सहूलियत। इसका मध्य प्रदेश राज्यपाल की ओर से उन्हें आश्वासन मिल गया था और वे सब खुशी-खुशी विनोबा यात्री-दल से विदाई ले रहे थे, जिनके साथ पाँच दिन रहते-रहते उन्हें बहुत स्नेह हो गया था। बिछुड़ते समय लग रहा था कि बहुत बड़ी अमूल्य सम्पत्ति से बिछुड़ रहे हैं! कुछ की आँखें भर आयी थीं और कुछ के आँसू रोके नहीं रुक रहे थे।

मैं उनके भविष्य के बारे में पूछने का लोभ संवरण न कर पाया और उनका उत्तर पाकर अभिभूत हो उठा। उनका कहना था कि फाँसी भी हो जाय, तो कोई चिन्ता नहीं। इस पुण्य के आगे सब फीका है।

कौनसा पुण्य ?

"देख नहीं रहे हो ? लोग अब लुटेरा न कह कर 'लोकमान्य' कह रहे हैं, 'लोकमान्य दीक्षित' कह कर पुकार रहे हैं! जयकार बुल रही है। इससे बढ़कर और क्या होगा ? पिछले कर्मों का तो भोग भोगना ही है। पर सबसे बड़ी बात यह है कि अब चार लोग हमारे घरवालों की फिक्र करने वाले हैं। हम लोग उनको पुलिस के भय के मारे पैसा भी दे नहीं पाते थे, पर फिर भी वे लोग आये दिन सताये जाते थे। हमारा रुपया तीसरे आदमी के पास रहता रहा है। अगर उसकी नियत बदले तो हमारा रुपया और हमारे ऊपर सरकारी इनाम का लालच उसे हमारे प्राणों का ग्राहक बना देता है। कचहरी, कानून में भी हजारों रुपया चला जाता है।"

× × ×

हम २२ मई के प्रात ही उस दिन के पड़ाव भिंड पर विनोबाजी के साथ पहुँच गये थे। दिन भर की घटनाएँ एवं चर्चाएँ कल्पित के समस्त आँखों के आगे अभी भी घूम रही हैं। उत्तर प्रदेश की सीमा से पहले पहल आत्म-समर्पण करने वाले बागी रामऔतार विनोबा यात्री-दल का स्वयंसेवक बना गये पर लोग इसकी याद में चल रहा था। अन्य १९ बागियों में भूपसिंह अपने ग्राम, अटाई घरवालों से मिलने गये हुए थे। शेष सब साथ-साथ पैदल चल रहे थे, जिन्हें देख कर गौतम बुद्ध के साथ चलने वाले अंगुलिमाल का सहज ही स्मरण हो आता था। आँखें न जाने बहुमूल्य सम्य-धन्य विनोबाजी को खोज लिये थे और सब उनकी ही दृष्टि निर्णीत विचर रहे थे।

प्रात लगभग आठ बजे विनोबाजी ने भिंड शहर में प्रवेश करते समय अपने प्रारम्भिक भाषण में कहा, "...

चम्बल-घाटी के चमत्कार की प्रतिक्रिया

• निर्मला देशपांडे.

"आप डाकुओं का मसला कैसे हल करेंगे ?"—आगरा निकट आते ही विनोबाजी से बार-बार यही सवाल पूछा जा रहा था, जिसका जवाब देते हुए उन्होंने आगरे के प्रवचन में कहा : "मैं कोई मसला हल करने वाला नहीं हूँ। मेरा ही मसला किसी भी दिन हल हो सकता है। राम, कृष्ण और बुद्ध आये, फिर भी मसले बाकी ही रहे, तो मैं क्या मसले हल करूँगा ?" विनोबाजी की भूमिका भगवान के हाथ का औजार बने हुए भक्त की थी, जिसे शिक्षित कहलाने वाला जगत शायद ही समझ सकता था। और इसीलिए चम्बल-घाटी में डाकुओं के आत्मसमर्पण की जो घटना बनी, उसके बारे में 'आकाशवाणी' को दिये गये संदेश में जो उन्होंने कहा कि आज तक डकैतियाँ करने वाले पश्चात्ताप की वृत्ति से मेरे पास आये और उन्होंने पुराना रवैया छोड़ने का संकल्प किया, यह भगवान का ही चमत्कार है; जिसने उनके हृदय में परिवर्तन लाया। इस वक्त मैं परमात्मा के प्रति कृतज्ञता ही व्यक्त कर सकता हूँ, जिसके भरोसे मैं सत्य, प्रेम, करुणा के पथ पर चलने का नम्र प्रयास कर रहा हूँ।" विनोबाजी के इन शब्दों का भाव वे ही समझ सकते थे. जो भारतभूमि में जन्म लेकर भी 'अभारतीय' नहीं बने थे।

काशी के प्रमुख दैनिक पत्र 'आज' ने संत की भूमिका को ग्रहण करते हुए लिखा : "हृदय-परिवर्तन की शक्ति काल्पनिक नहीं, वास्तविक है। भयंकर डाकू अधिकारहीन, निरस्त्र-दुबले पतले विनोबा के सामने आत्म समर्पण कर देते हैं, जब कि विनोबाजी की तरफ से उन्हें कोई आश्वासन नहीं दिया गया था।"

'आज' ने विनोबाजी को डाकुओं को दी गयी 'बागी' संज्ञा को भी ठीक-ठीक पहचानते हुए उन्हीं के भाव को व्यक्त किया कि आज की गलत समाज-व्यवस्था ही ऐसे डाकुओं को पैदा करती है। अंत में उसने यह भी कहा कि बड़े शहरों में रहने वाले 'सफेदपोश डाकुओं का' परिवर्तन कठिन होते हुए भी अत्यावश्यक है।

बम्बई के 'टाईम्स' ने इसी घटना की ओर ठीक विपरीत दृष्टि से देखा। उनके लिए विनोबाजी का यह प्रयास सद्हेतु-मूलक, लेकिन सर्वथा गलत था, जिसने डाकुओं के साथ गत कई वर्षों से लड़ने वाली पुलिस के नैतिक धैर्य पर प्रहार किया। उनकी निगाह में विनोबाजी की तारीफ करने वाले पत्रकार तथा जनता, 'हिरो' बने हुए डाकू और उनके लिए निःशुल्क सहायता देने का वादा करने वाले ग्वालियर के वकील आदि सब मिल कर बिगड़ी हुई परिस्थिति को और बिगाड़ रहे हैं। गत तीन सालों में किसी भी विनोबा के बिना समर्पण करने वाले २०० डाकुओं की संख्या के सामने यह २० की संख्या उन्हें बिल्कुल ही नगण्य सी मालूम होती है। उन्हें विनोबाजी की चंबल-घाटी-यात्रा, नोआखाली की यात्रा का भद्दा अनुकरण लगता है।

लखनऊ के 'पायोनियर' का यद्यपि अहिंसक तरीके में विश्वास नहीं है, फिर भी गांधीजी की नोआखाली-यात्रा का स्मरण दिलाने वाली विनोबाजी की चंबल-घाटी यात्रा को वह एक बहुत बड़ी सफलता मानता है। गुरुदेव के 'एकला चलोरे' के अनुसार निःशस्त्र दुबले-पतले व्यक्ति के नैतिक तथा भौतिक धैर्य की सराहना किये बगैर उससे रहा नहीं जाता है। पर बगैर किसी आश्वासन के डाकुओं ने जो आत्मसमर्पण किया, उसको एक महान् घटना मानते हुए भी पायोनियर का कहना है कि जिन बेगुनाहों को डाकुओं ने मार डाला, उनके परिवारों का क्या होगा। डाकुओं का 'हिरो' बनना भी उन्हें अच्छा नहीं लगा।

देहली के 'स्टेट्समन' दैनिक ने भी इसी संदेह को दुहराते हुए कहा कि विनोबाजी ने डाकुओं की वीरता तथा प्रामाणिकता की तो प्रशंसा की, लेकिन पुलिसवालों की वीरता के बारे में कुछ नहीं कहा, जब कि उनका काम अधिक कठिन था। आत्म-समर्पण को प्रधानता देना भी उसकी निगाह में अनुचित था। यद्यपि वे मानते नहीं कि डाकुओं का हृदय-परिवर्तन हुआ, फिर भी स्वीकार करते हैं कि विनोबाजी की यात्रा का उस क्षेत्र पर अच्छा असर हुआ। विनोबाजी की यह पदयात्रा उन्हें भी नोआखाली की याद दिलाती है, जिसकी विशेषता थी, बुराई का भलाई से प्रतिकार। इस यात्रा को वे भूदान का अंग न मान कर विनोबाजी के द्वारा किया गया बुद्धिदान मानते हैं।

पंजाब के 'ट्रिब्यून' ने आवेशयुक्त शब्दों में कहा कि विनोबाजी के कार्यक्रम को यूटोपिया मानने वाले 'डाऊटिंग टॉमसों' को याने संदेहशील लोगों को इस पदयात्रा से ठीक-ठीक जवाब मिला है। उन्होंने यह भी कहा कि इससे आगे न्याय और करुणा के बीच जो संघर्ष पैदा होगा, उसे मिटाना कठिन होगा। और "चंबलघाटी क्षेत्र की समस्या का वास्तविक हल क्रांतिकारी सुधारों में तथा नई विकास-योजना में है, नहीं तो फिरसे नये डाकू पैदा होंगे।"

पत्रकार-जगत् के इस अनुवाद-प्रतिवाद में न पड़ कर तटस्थता से कुछ बातों की तरफ सबका ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। जैसा कि आरंभ में कहा है, विनोबाजी ने डाकू-समस्या को हल करने के इरादे से चंबल-घाटी में प्रवेश नहीं किया था। डाकुओं का आत्मसमर्पण आध्यात्मिक शक्ति के विजय का एक दृश्य परिणाम है, यद्यपि उस शक्ति के कई ऐसे अदृश्य महान परिणाम हैं, जो मानव की मामूली आँखों को नहीं दिखाई देते हैं। चंबल घाटी का चमत्कार विनोबाजी की भूमिका के अनुसार 'भगवत् प्रसाद' है, जो बिना मांगे मिला है।

इस चमत्कार की खबर सुनते ही आम जनता को वाल्मीकि तथा अंगुलीमाल का स्मरण हुआ, लेकिन डाकुओं के जेल जाने की खबर सुनते ही कुछ दूसरी ही प्रतिक्रिया दिखाई दी। 'क्या शरणागत को जेल भेजना धर्म है', यहाँ तक के विचार सुनाई दिये। इस बारे में भी यह जानना आवश्यक है कि विनोबाजी ने डाकुओं को कभी भी कोई आश्वासन नहीं दिया था, बल्कि समर्पण के बाद कानून के अनुसार सजा भुगतनी पड़ेगी, इस बात को ठीक से समझ कर ही डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया था, जिससे उस घटना का महत्त्व और बढ़ जाता है। अपने कुकर्मों का प्रायश्चित्त करना आवश्यक है, इसे डाकू खूब समझते थे और इसीलिए वे स्वेच्छा से खुशी से जेल गये।

डाकुओं के 'हिरो' बनने पर तथा पुलिस के 'मोराल' पर प्रहार किये जाने पर रोष प्रकट करने वालों को विनोबाजी ने देहली तथा बम्बई के 'डाकुओं' का जिक्र करके आत्मशोधन करने के लिए प्रवृत्त किया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि डाकुओं ने भयानक कुकर्म किये हैं, लेकिन जैसा कि विनोबाजी ने कहा. "डाकू कौन है और कौन नहीं है, इसका फैसला तो भगवान के दरबार में ही होगा।" आज के समाज में नाकामयाब सिपाही डाकू या बागी कहलाता जाता है, लेकिन ज्यों ही उसे कामयाबी हासिल होती है, त्यों ही वह राज्यकर्ता बनता है। उसका काम एक 'वास्तविक घटना' बनती है, जिसे सारी दुनिया को स्वीकृति देनी पड़ती है।

दुनिया की सब रक्तरंजित क्रान्तियों के रूप में भी समाज में फूट निकलने वाली हिंसा समाज-शरीर की व्याधि का प्रतीक होती है। इसका भान इन्सान को नहीं हुआ तो क्या कहा जाये ? तेलंगाना में साम्यवादियों की हिंसा का उन्मूलन करने पर तुली हुई फौज से विनोबाजी ने कहा था : "कम्युनिस्ट कोई शेर नहीं है, जो उनका मुकाबला बंदूक से किया जाय !" गाँव-गाँव जाकर परिस्थिति का अध्ययन करके उन्होंने उसी समय कहा था कि "इस हिंसा का निराकरण जमीन के बँटवारे से होगा। जब तक अन्याय, विषमता और गरीबी कायम रहेगी, तब तक समाज में कभी भी शांति नहीं रह सकती है।" डाकू-पीड़ित क्षेत्र की घटनाओं ने फिर से आज की समाज-रचना को कायम रखने वालों के चिन्तन चक्र को एक धक्का दिया है।

• •

उड़ीसा प्रान्तीय सर्वोदय-सम्मेलन

श्रमभारती (बिहार) के आचार्य श्री राममूर्तिजी की अध्यक्षता में बहरामपुर में गत १३ और १४ अप्रैल को उड़ीसा प्रान्तीय सर्वोदय-सम्मेलन हुआ। अतिथियों में प्रोफेसर गोरा प्रमुख थे। श्री राममूर्तिजी ने सर्वोदय के ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डाला और बतलाया कि जब प्रचलित समाज-व्यवस्था के प्रति जनता की आस्था घट जाती है, तभी किसी नई क्रान्ति का जन्म होता है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि आज की हमारी सबसे बड़ी जरूरत एक ऐसे तरीके की खोज करना है, जो देहातों में फैले ऊँच-नीच का भाव मिटा कर उनमें सहजीवन के भाव भरे। हमारे रचनात्मक कार्यों की यही कसौटी है।

इस सम्मेलन में सेवाग्राम-सम्मेलन में लिए गये निर्णयों के आधार पर प्रान्त के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया गया, जो नीचे लिखे अनुसार है।

(१) ता० २९ अप्रैल से सघन पद-यात्रा चले। इस पदयात्रा के संचालन का भार आचार्य हरिहरदास ने लिया। पद-यात्रा मयूरभंज जिले से प्रारंभ होगी।

(२) सर्वोदय-कार्यों के संचालन के लिए २५००० रुपयों की एक थैली २६ जून को आचार्य हरिहरदासजी को भेंट की जायगी।

(३) लोकसेवकों के प्रशिक्षण के लिए तत्काल दो केन्द्र कटक और गोपालबाड़ी (कोरापुट) में खोले जायें।

(४) भूमि-वितरण का कार्य तुरन्त सम्पन्न हो।

(५) निधि एकत्र करने के कार्य के तुरन्त बाद ग्रामस्वराज्य की स्थापना के लिए सघन कार्य के लिए क्षेत्र चुना जाय।

(६) ग्रामदान-क्षेत्रों से सम्पर्क स्थापित रखा जाय।

इस सम्मेलन के पहले इसी जगह उत्कल नवजीवन-मंडल का वार्षिकोत्सव मनाया गया। इसकी अध्यक्षता श्री गुणराम देव ने की। यह मंडल आदिवासी क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य कर रहा है। इस मंडल ने कुछ ग्रामदानी गाँवों में पुनर्निर्माण कार्य करने की जिम्मेवारी ली है। भविष्य के कार्यक्रम की मंडल की इस बैठक में हुए। इस मंडल ने प्रान्तीय सरकार की कृषि-सुधार और भूमिसंबंधी सम्बन्धी कानून के प्रति अपना असन्तोष प्रकट किया।

इन सम्मेलनों की अवधि में ४ दिनों तक कार्यकर्ताओं ने श्रमदान किया। प्रतिनिधियों ने दो बार भोजन हरिजनों के घर किया।

•

पुलिसवालों का धर्म : वे वीर और साधु बनें!

• विनोबा

करीब तीन माह हुए हम पंजाब में थे। वहाँ फिरोजपुर में अनेक प्रांतों के पुलिस-कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए इकट्ठा किया गया था। उनके सामने मुझे बोलने का मौका मिला था। उसके पहले भी पुलिस के सामने बोलने के मौके मिले हैं। आज एक खास प्रसंग है। यहाँ डाकुओं की समस्या है। इसलिए पुलिस काफी तादाद में तैनात है। सालों से यह व्यवस्था चल रही है। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि आज आपके सामने बोलने का मुझे मौका मिला है। अभी यहाँ के अधिकारी डी० आई० जी० पुलिस ने एक बात कही, जो मुझे मालूम नहीं थी। आज से तीन साल पहले उन्होंने बाबा को यहाँ बुलाने का सुझाव सरकार को दिया था। यह बड़ी बात है। भारत क्षत्रिय धर्म के लिए मर मिटना अपना काम समझता था। इसलिए धर्म जानने वालों की सदा मदद लेता था। यहाँ का क्षत्रिय वर्ग ब्रह्मविद्या का सदा उपासक रहा है। उपनिषद् में महाज्ञानी क्षत्रियों ने ब्राह्मणों को उपदेश दिया है। गीता में उपदेश देने वाले भगवान भी क्षत्रिय हैं और सुनने वाला अर्जुन भी क्षत्रिय है। भगवान ने कहा कि प्राचीन काल में यह ब्रह्म-विद्या क्षत्रियों को मालूम थी : "एवं परंपरा प्राप्तम् इमं राजर्षयो विदुः।" क्षत्रियों ने सत्पुरुषों की मदद सदा अपने काम में ली है। अधिकारी महोदय के भाषण से आज इसकी स्मृति जाग उठी।

पुलिसवालों का कठिन काम

पुलिस का काम कठिन है। उन्हें अपना दिल नरम रखना है और हाथ से सख्त काम करना है। पुलिस से संतों का काम आसान है। उसका दिल नरम रहता है, तो हाथ भी नरम ही रहते हैं। पुलिस को इसके साथ मर्यादा का ख्याल भी रखना होता है। फौज का काम इतना कड़ा नहीं है। उससे कोई नहीं पूछेगा कि विरोधी पर इतना सख्त हमला क्यों किया? उसका जितना भर काफी है, मगर जहाँ पाँच सेर ताकत लगाने की जरूरत है; वहाँ पुलिस साढ़े पाँच सेर ताकत का उपयोग नहीं कर सकती। इसके लिए उसे सफाई देनी होगी। योग-साधना के समान यह कठिन काम है। अन्तर में नरम, ऊपर सख्ती और बुद्धि में मर्यादा का ध्यान। माँ-बाप अपने बच्चों को ताड़ना देते समय ऐसा ही करते हैं। ऊपर, ताड़ना ज्यादा न हो, अन्दर से बहुत प्यार हो। नागरिकों की खिदमत में अपनी जान को जोखिम में डालने के लिए सदा तैयार रहना, लोकपीड़कों के साथ सख्ती से बरतना और उसमें भी ज्यादती न होने देना, यह तो योगी का-सा काम है।

गाँव का रक्षण कैसे होगा?

किसी रिपोर्टर ने अखबारों में छपवा दिया कि "बाबा कहता है कि यहाँ से पुलिस हटा दी जाय।" बाबा को बुद्धि रखता है। वह ऐसी गलत बात कैसे कहेगा? हाँ, लोग अपनी रक्षा खुद करें और मान करें कि पुलिस की सेवा की हमें जरूरत नहीं, हम कब तक पुलिस की रक्षा लेते रहेंगे? हम स्वयं रक्षक बने रहें। अपने रक्षक स्वयं बनें—यह दूसरी बात है। गाँव-गाँव में रक्षक-दल बनाने पर भी गाँव के लोग आपस में प्यार करना नहीं सीखेंगे, तो रक्षक दल से गाँव मजबूत नहीं बनेगा। गाँव में वैसा न हो, इसके लिए यह दल क्या करेगा? आपके अधिकारी महोदयने कहा कि सत्पुरुषों की मदद के बिना यह काम नहीं होगा। मगर सत्पुरुष तो हाथ में ही पैदा होने चाहिए। आगरा में मैंने मांग की थी कि हमें निष्काम सेवा करनेवाले सज्जन पुरुष चाहिए। जो सज्जन अब तक ध्यान-धारणा में समय बिताते थे, उनको भी अब सामाजिक काम में हिस्सा लेने की जिम्मेवारी लेनी होगी।

पुलिसवाले साधु और वीर बनें

पुलिस में मैं यो चाहूँगा कि उनका दिल हमदर्दी से भरा हो। उनमें जोश न रहे, वे हिसाब से काम करें। दिमाग हमेशा समतोल रखें। हमेशा बन्दूक चलाना ही उनका काम नहीं है, औरों की रक्षा के लिए मर मिटना भी उनका काम है। इसलिए पुलिस को साधु पुरुष का और वीर पुरुष का, दोनों का काम करना होता है जब कि फौज को केवल वीरपुरुष का ही काम करना होता है। सिर्फ बत्तीस इंच छाती की चौड़ाई देख लेने से काम नहीं चलेगा। चौड़ाई के साथ उतनी ही गहराई भी भीतर चाहिए। किस मौके पर क्या करना, इसकी समझ भी चाहिए।

समर्पण करने वालों के साथ सख्ती न हो

अब मेरा जो काम है—मिशन है, उसमें आप मेरी मदद किस प्रकार करेंगे? एक तो जहाँ मैं जाऊँ, मेरे साथ घूमें नहीं। जो भी मेरे पास आये निर्भीक होकर खुले तौर पर आ सके। मालूम नहीं, कौन-कौन हमारे पास आयगे। जब एक बार उन्हें आपके हाथ में सौंप दिया जाय तो आप उनसे सख्ती न करें। यदि कोई सजा के लायक है, तो न्यायाधीश उसे सजा देगा ही। जिसे पश्चात्ताप होगा, वह दंड से नहीं डरना चाहेगा। किसी को माफ करनेवाला तो भगवान है। भगवान पाप का दण्ड तोल-तोल कर देता है, पर पुण्य का फल बेतौल देता है। वह दो सेर पाप का दो सेर दण्ड देता है। पर एक सेर पुण्य का फल मन भर देता है। वह दण्ड हिसाब से देता है। मगर ईनाम देने में बेहिसाब है। वह सजा देता है सुधार के लिए। ईनाम में उदार और सजा में कंजूस इसी नीति का प्रयोग पुलिस को करना है। कल सायं के डिप्टी मिनिस्टर साहब ने बड़ी मौजूं और वाजिब बात कही कि जो हमें आत्मसमर्पण करेगा, उसके साथ सख्ती नहीं बरती जायगी।

तो आपका और मेरा काम एक-सा है। आपको ऐसा बनना है—पहले मक्खन, पीछे भी मक्खन, बीच में कठोर। बहुत ठण्डा होने पर मक्खन कुछ सख्त बनेगा। पर आखिर पत्थर तो बन नहीं सकता। पुलिस की शक्ति अग्नि की नहीं, बरफ की शक्ति हो।

आपको गीता, रामायण, गुरु ग्रन्थ साहिब का अध्ययन करना चाहिए। हमें सोचना है—"मैं सेवक सचराचर रूप राशि भगवंत।" आप सब रामजी के सैनिक हैं। रामजी के सैनिक क्या शराब पीते हैं? वे तो फल खाते थे। आपको सात्विक आहार करना चाहिए। सत्य निष्ठा और मर्यादा का पालन करना चाहिए। आपका काम कठिन है। कदम कदम पर आपकी परीक्षा होगी। प्रभु करे—आप देश के सच्चे सेवक साबित हों।

आत्म-समर्पण का घटना-क्रम

[चम्बल-घाटी के 'डाकुओं' के आत्म-समर्पण की कहानी इतिहास का एक अमर पृष्ठ बन गयी है। इसी अंक में पृष्ठ ६ पर भाई गुरुशरण द्वारा इस कहानी के तत्कालीन आखिरी दौर का अच्छा चित्र खींचा गया है। नीचे श्री कृष्णदत्तजी भट्ट के पत्र से पाठकों को इस घटना की पृष्ठभूमि और आरंभ के घटना-क्रम का थोड़ा परिचय होगा। —सं०]

"८ मई से बाबा ने उस क्षेत्र में प्रवेश किया, जिसे 'डाकू क्षेत्र' कहा जाता है। यों तो उन्होंने आगरा में ही कह दिया था कि "कहा नहीं जा सकता कि डाकू कौन है, पर ८ मई से १२ मई तक उत्तर प्रदेश में रहते तक बाबा निरंतर स्पष्ट शब्दों में कहते रहे कि यह डाकुओं का नहीं, सज्जनों का क्षेत्र है। यदि किसी भाई से कोई गलती हो गयी है, तो वह निधड़क बाबा के पास आ सकता है। पुलिस उसके मार्ग में कोई बाधा न डालेगी। उन्होंने कहा कि 'बाबा माने बाप की इस्टेट।'

१० मई को इसका परिणाम दृष्टिगोचर हुआ। राम औतार सिंह नामक व्यक्ति ने फतेहाबाद में बाबा के समक्ष आत्म-समर्पण किया और कहा कि भविष्य में ऐसा काम नहीं करूँगा। तब से यह भाई हम लोगों के साथ पदयात्रा कर रहा है। १३ मई, को चम्बल पार कर हम लोगों ने मध्य प्रदेश में प्रवेश किया १७ मई को मगरा में पानीराम, श्रीकृष्ण और मोहरमन नायक, इन तीन बागियों ने एक बन्दूक के साथ आत्म-समर्पण किया। इनमें पानीराम पर ५०० रुपये का इनाम था। १८ मई को लक्ष्मीनारायण 'लच्छी' नामक प्रसिद्ध बागी ने बाबा के समक्ष आत्म समर्पण किया। उस पर ५००० रुपये का इनाम था। यह बंबई से चल कर सीधा यहाँ आया था। उसने अखबारों में यहाँ का समाचार पढ़ा और आत्म-समर्पण के लिए बाबा के पास आ गया। उसके साथ प्रभुनायक बागी ने भी आत्म-समर्पण किया।

सबसे हृदयस्पर्शी दृश्य तो तब का था, जब यहाँ के प्रसिद्ध बागी मुरकर 'लोकमान्य दीक्षित' के नायकत्व में ११ बागियों ने आत्म-समर्पण किया। बन्दूकें और तमाम कारतूस भी उन्होंने भेंट किये। एक बन्दूक दूरबीनवाली भी थी। इस दल के बागियों के नाम हैं—दुक्का, तेजसिंह, भगवानसिंह, भूपसिंह, दुर्जन, कन्हई, सियाराम, दम्रू, मक्खे, जंगी, रामसनेही। यह दल रूपा और मानसिंह का प्रसिद्ध अवशिष्ट दल माना जाता है।

स्थिति बड़ी आशाजनक है। यही कारण है कि लोगों ने और पुलिस ने बाबा से आग्रह किया कि वे भिंड के क्षेत्र में कुछ दिन और ठहरें। फलतः बाबा ने आठ दिन और यहाँ देने का निश्चय किया। आशा है कि इस बीच कुछ और अच्छे परिणाम दिखाई पड़ेंगे। आज सुबह तीन बागी और भी आ गये हैं और उन्होंने बाबा के समक्ष आत्म-समर्पण किया।" विनोबा-पड़ाव, २०-५-६०

राष्ट्रभाषा सम्बन्धी राष्ट्रपति के निर्देशों पर वक्तव्य

[काशी नागरी प्रचारिणी सभा की प्रबन्ध-समिति द्वारा राष्ट्रभाषा विषयक संसद-समिति की संमति पर दिये गये राष्ट्रपतिजी के निर्देशों के सम्बन्ध में प्रकाशित वक्तव्य का सार।]

विदेशियों का शासन चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, किसी भी अवस्था में वांछनीय नहीं हो सकता, उसी प्रकार हमारी दृष्टि में, विदेशी भाषा का शासन भी प्रयोग, हमारे लिए बौद्धिक और मानसिक दासता का भी सूचक है और वह प्रत्येक स्थिति में अवांछनीय है। जब तक हम उसके—अंगरेजी भाषा के—साम्राज्य से भी मुक्त नहीं होते, तब तक हमारी स्वाधीनता अर्थहीन है, हमारा स्वराज्य अधूरा है और लोकतंत्र खोखला है। इस दृष्टि से, अपने ऊपर अनिश्चित काल तक अंगरेजी का, किसी भी रूप में लदे रहने का हम समर्थन नहीं कर सकते। फिर भी, हम इस तथ्य से भी आँखें नहीं मूँद सकते कि देश के कुछ थोड़े से यथास्थितिवादी अंगरेजी के पक्षपातियों तथा कतिपय राजनीतिज्ञों के क्रियाकलापों ने, कुछ हिंदीतर भारतीय भाषाभाषियों के मन में हिंदी के प्रति आशंका का भाव उत्पन्न कर दिया है। हम स्वीकार करते हैं कि वर्तमान परिस्थितियों के फलस्वरूप राष्ट्रपति ने इस सम्बन्ध में जो निर्देश किया है, वह अपने स्थान पर उचित प्रतीत होता है।

राष्ट्रपति के निर्देश में, जहाँ इसका संकेत है कि संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार १९६५ के उपरान्त हिंदी भारत की प्रधान आधिकारिक (राजकीय) भाषा होगी, उसका हम स्वागत करते हैं। हमारा विश्वास है कि यह व्यवस्था लोगों में इस अभिप्राय का मनोवैज्ञानिक परिवर्तन उत्पन्न कर सकेगी कि हिंदी राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो गयी। यद्यपि हम जानते हैं कि अंगरेजी के हिमायती तथा यथास्थितिवादी चुप नहीं बैठे रहेंगे और भरसक यह प्रयत्न करते रहेंगे कि हिंदी को पूर्णतः राजभाषा बनने का अवसर मिल ही न सके। फिर भी हमें पूरा विश्वास है कि सरकार किन्हीं भी विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में पूर्णतः समर्थ हो सकेगी।

राष्ट्रपति के भाषा सम्बन्धी निर्देश का हम इस अंश में भी स्वागत करते हैं कि उसमें संसद-समिति का यह सुझाव मान लिया है कि हिंदी को अपने पद पर प्रतिष्ठित कराने के लिए उचित तैयारी की आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए व्यापक रूप से गृहमंत्रालय से कहा गया है कि वह इस सम्बन्ध में नियोजना प्रस्तुत कर उसे कार्यान्वित करने की चेष्टा करे। इसी प्रकार इस तैयारी के सभी अंगों पर संसद-समिति के सुझावों के अनुसार गृहमंत्रालय, शिक्षा-मंत्रालय, वैज्ञानिक अनुसंधान और संस्कृति-मंत्रालय, विधि-मंत्रालय एवं प्रतिरक्षा-मंत्रालय को निर्देश दिये गये हैं। फिर भी हमें यह देख कर और आश्चर्य होती है कि राष्ट्रपति के निर्देश में अंग्रेजी जारी रहने की अवधि के सम्बन्ध में जितनी स्पष्टता तथा दृढ़ निश्चय दिखाई देता है, वह हिंदी के सम्बन्ध में परिलक्षित नहीं होता। हिंदी कब तक अपना प्राप्य पद पूर्ण रूप से प्राप्त कर सकेगी, यह अनिश्चयात्मक स्थिति में छोड़ दिया गया है। इसका अभिप्राय यह लगाया जा सकता है कि ऊपर उल्लिखित मंत्रालयों को काम करने या न करने के सम्बन्ध में छूट दे दी गयी है।

हम इस प्रसंग में स्पष्ट रूप से इसकी भी घोषणा कर देना चाहते हैं कि हमारी दृष्टि में हिंदी के तथा अन्य भारतीय भाषाओं के स्वार्थ में पूर्ण तादात्म्य है। हिंदी के विकास में अन्य भारतीय भाषाओं का तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में हिंदी का विकास सन्निहित है। हमारा यह निश्चित मत है कि यदि हमारी देशी भाषाओं के विकास में किसी भाषा की आशंका है, तो वह विदेशी भाषाओं से ही है, स्वदेशी हिंदी से कदापि नहीं। मद्रास में अंगरेजीवालों के द्वारा तमिल का विरोध इसका ज्वलंत उदाहरण है।

इसी प्रसंग में, हम यह भी अनुभव करते हैं कि हिंदी के विकास और उसे समुचित स्थान दिलाने में हम हिंदी भाषा-भाषियों का दायित्व भी कम नहीं है। इसके लिए सबसे पहले आवश्यक है कि हम ऐसी राज्य-सरकारों पर दबाव डालें, जिन्होंने हिंदी को राज्यभाषा स्वीकार तो कर लिया है, किन्तु उसमें कार्य नहीं कर रही हैं, कि वे अपना सम्पूर्ण काम शीघ्र से शीघ्र हिंदी में करना आरम्भ कर दें। इसके सम्बन्ध में हम अपने सम्मान्य सदस्य सेठ गोविंददासजी और उनके एतत्सम्बन्धी आंदोलन का पूर्ण समर्थन करते हैं। हमारा सुझाव है कि प्रमुख हिंदी संस्थाओं की ओर से एक सम्मेलन बुलाया जाय और उसमें इस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए कार्यक्रम बनाया जाय। इस विषय में यह आवश्यक है कि हम समस्त हिंदी भाषा-भाषियों को, वास्तविक स्थिति की जानकारी करायें और उनमें चेतना उत्पन्न करें कि वे अपना सारा काम हिंदी में ही करें और उसमें ही काम करने के लिए सरकार पर भी दबाव डालें। हमें यह ध्यान रखना है कि यह आंदोलन विशुद्ध रूप से भाषागत हो और रंच मात्र भी राजनैतिक न हो।

समाज-परिवर्तन के चार पहलू

अप्पासाहब पटवर्धन

राजकीय स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, पर सामाजिक स्वातन्त्र्य प्राप्त करना है। इस सामाजिक मुक्ति के चार मुख्य पहलू हैं : (१) भंगी-मुक्ति (२) गुरखा-मुक्ति (३) मद्य-मुक्ति और (४) पक्ष-मुक्ति।

'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'—याने जो काम अपने से नहीं बनता, उसे दूसरे से भी नहीं करवाना चाहिए। अगर मैं खुद भंगी नहीं होता, तो मुझे भंगी रखना भी नहीं चाहिए। मतलब यह कि हम अपना भंगी-काम आपस में बाँट कर करें। जैसे हम उसे कर सकें, इसलिए अपेक्षित सुधार भी करने चाहिए। इसीका नाम है स्वयं-सफाई और स्वयं-सफाई याने आत्मशुद्धि।

भंगी-मुक्ति याने सामाजिक समता, जाति-निर्मूलन या जाति-वैषम्य का निवारण। भंगीमुक्ति का मतलब यह नहीं है कि भंगियों को निकाल बाहर करना, बल्कि उन्हें अन्यान्य उद्योग-धन्धे देकर या नौकरी देकर सर्वसाधारण समाज से एकरूप कर लेना।

महाराष्ट्र में नेपाली गुरखे द्वारपाल, रक्षक या संरक्षक के रूप में गाँव-गाँव में हैं। गुरखा एक वीर और ईमानदार जाति है। उनके प्रति किसी को भी आदर ही रहेगा। लेकिन हमें उनकी आवश्यकता पड़ती है, इसका मतलब यह है कि हमें अपने पड़ोसियों से डर लगता है।

यह एक मूलभूत और गहन प्रश्न है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं, लेकिन हमारे परस्पर के आर्थिक व्यवहार दो प्रकार से पड़ोसी धर्म के लिए घातक होते हैं : जमीन की मालकियत और ब्याज-बट्टा। जमीन की मालकियत याने जोर-जबरदस्ती और ब्याज-बट्टा याने प्रतिबन्ध। अपने गाँव जब आबाद हुए, तब जो लोग पहले आये, वे हुए मालिक और जो बाद में आये वे हुए काश्तकार आधी फसल में उनका काम न चला, इसलिए वे मालिक से उधार अनाज माँगने आये। मालिक के घर का अनाज कृषक के ही परिश्रम का था और वह खतम होने वाला भी न था। बाकी बचा अनाज खराब ही हो जाता। कृषक पुराना अनाज ले जाकर उतना ही नया अनाज वापस करे, तो भी मालिक का फायदा ही था, क्योंकि उसकी खराब वस्तु तो कुछ ही जाती और किसान मुदगरज था। अतः उसकी मुसीबत का फायदा उठाकर मालिक धनी बन जाता। इस प्रकार मालिकों ने पहले आसामियों को चकमा दिया, रोता और चूसा। व्यापार याने तो खुल्लमखुल्ला खींचातानी! तब जमींदार, साहूकार, और व्यापारियों को आत्मरक्षण के लिए गुरखा को रखना पड़ा, इसमें आश्चर्य क्या है?

मतलब यह कि जमींदारी और ब्याज-बट्टेवाली भक्षक साहूकारी बन्द होनी चाहिए। केवल मूल धन वसूल करानेवाली पोषक-साहूकारी चलनी चाहिए। भाड़ा, डिविडेण्ड आदि पर भी मूलधन-वसूली की मर्यादा रहनी चाहिए। इससे निन्यानबे प्रतिशत नागरिकों का किसी तरह से भी नुकसान नहीं है। प्रत्युत उनके पड़ोसी सम्बन्ध जब अच्छे और इसलिए स्वाभाविकतः स्नेह के बनेंगे, तब हम लोगों को आत्मरक्षण के लिए गुरखों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। फिर वे गुरखे अपने खंजरों की कुदालें बनायेंगे और भूदान में उन्हें अधिकारपूर्वक जमीन मिलेगी, वे उसमें हम लोगों के साथ परिश्रम करेंगे। वह स्वर्ण दिवस जल्द से जल्द लाने का हम संकल्प करें।

मुझे लगता है कि मद्यनिषेध मूलतः निग्रह का विषय है। आत्मसंयम केवल शराबी ही करें, हम-आप मद्यमुक्त लोगों को आत्मसंयम की दिशा में प्रगति करने के लिए अवकाश ही नहीं रह गया है, ऐसी बात नहीं है। व्यसनी आदमी तलब आयी कि शराब पीता है और हम तलब आने पर चाय पानी करते हैं, या सिगरेट सुलगाते हैं! मैं समझता हूँ कि हम अपनी "सभ्य" तलब को रोक सकें, तो हमारा स्वास्थ्य सुधरेगा और आर्थिक बचत होगी। मगर इससे भी विशेष याने शराबी को अपनी "असभ्य" तलब रोकने की हिम्मत होगी। सरकार के पास दण्ड के बिना मद्यनिषेध के अन्य साधन नहीं हैं, पर हम पड़ोसियों के पास आत्मबल का कितना ज्यादा प्रभावी शस्त्र है! उसका प्रयोग कर हम सब मद्यमुक्त नागरिक सारे राष्ट्र को मद्यमुक्त करने के लिए कमर कसें। मद्यनिषेध के लिए हम अपने सौम्य व्यसनों को छोड़ें।

"कोई नहीं है गैर, बाबा कोई नहीं है गैर!" याने कोई पराया नहीं है, सब अपने ही हैं। "मत रख मन में बैर!" मन में किसी के प्रति दुश्मनी न रखें। मत-भेद गहरे दोस्तों में भी होते हैं। उसी तरह अपने में भी रहेंगे। किसी अकेले को पूर्ण सत्य नहीं मालूम होता। भिन्न-भिन्न मत परस्पर के पूरक ही ठहरते हैं। इसलिए मत-भेदों में हम मन भेद न होने दें। भिन्न मतवालों को दुश्मन न मानें। बहुमत वाले अल्पमत को अंगूठे पर न मारें। बहुमतवालों की जबरदस्ती याने लोकशाही नहीं है। भिन्न मतवालों को समझाने की हम पूर्ण चेष्टा करें। उनके समझ जाने तक हम धीरज भी रखें, यही सच्ची लोकशाही है। इस प्रकार स्वतंत्र बातचीत सम्भव भी होता है।

('सर्वोदय' से)

प्रांत-प्रांत के अंचल से

श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी की पटना जिले में यात्रा

बिहार के प्रमुख कार्यकर्ता श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने पटना जिला के पालीगंज तथा एकंगरसराय थाना में ता० १९ से २२ मई तक यात्रा की। पालीगंज गौर आश्रम में आयोजित पालीगंज थाना के ग्राम-पंचायतों तथा राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ताओं के द्विदिवसीय सर्वोदय के शिविर समापन-समारोह में भाषण के क्रम में आपने कहा कि हमारा अन्तिम लक्ष्य तो भारत में रामराज्य अर्थात् सर्वोदय-समाज की स्थापना था और यह कार्य सरकारी तंत्र द्वारा नहीं, वरन् उस जनशक्ति द्वारा ही सम्पन्न किया जा सकता है, जिसने देश को आजादी दिलायी। इसी उद्देश्य से गांधीजी ने स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् अ० भा० कांग्रेस कमिटी को लोकशक्ति जागृत करनेवाली संस्था 'लोकसेवक संघ' में परिणत करने का सुझाव दिया था।

इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए आपने समाज के हर तबके के लोगों से प्रतिमास आठ घंटा सार्वजनिक सेवा-कार्य में लगाने और अपने अपने घरों में सर्वोदय पात्र रखने का संकल्प कर सर्वोदय-मित्र बनने की अपील की।

अन्तिम दिन आपका कार्यक्रम पटना जिला सर्वोदय-मंडल का कार्यालय श्रीविनोबा आश्रम, एकंगरसराय में रहा। थाने भर के अनेकों प्रमुख सार्वजनिक सेवक तथा जिला के प्रायः सभी पूर्ण समय-दानी लोकसेवक इस अवसर पर उपस्थित थे।

आपने कार्यकर्ताओं की गोष्ठी में भाषण देते हुए कहा कि हमें सत्ता और सेवा के भेद को दूर कर तथा सेवा के अभिमान से मुक्त होकर सेवा करनी चाहिए। आपने ग्राम-पंचायत के अधिकारियों को गांव में कोर्ट और पुलिस की आवश्यकता न रहे तथा निर्विरोध तथा सर्वसम्मत चुनाव हो, ऐसी परिस्थिति निर्माण करने की सलाह दी।

●

जिला निवेदक कार्य-विवरण भेजें

सर्व सेवा संघ के कार्यालय में प्रत्येक जिला-निवेदक की मासिक रिपोर्ट नियमित रूप से पहुँचनी चाहिए। उस रिपोर्ट में काम का विवरण, कठिनाइयां, अनुभव इत्यादि का वर्णन रहे। सब जिलों से इस तरह की रिपोर्ट बिलकुल नियमित रूप से यद्यपि प्राप्त नहीं होती है, फिर भी कुछ जिलों से व्यवस्थित और कुछ जिलों से अव्यवस्थित रूप में प्राप्त होती रहती है।

रोहतक जिला, नागौर जिला, बरामती महाल तालुका आदि से नियमित विवरण प्राप्त होते हैं।

अभी मंदसौर जिले से सर्वोदय-कार्य का छहमाही प्रगति विवरण हमें मिला है। उसमें भूमि-प्राप्ति, वितरण, साहित्य-प्रचार, सार्वजनिक संस्थाओं से संपर्क, राजनैतिक पार्टियों से संपर्क इत्यादि काम की जानकारी दी गयी है।

मंदसौर के कुछ स्कूलों में सामूहिक सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हुई है, जिनमें प्रति सोमवार विद्यार्थी और अध्यापकगण नियमित रूप से एक नया पैसा डालते हैं।

नगर में सर्वोदय के सघन कार्य के लिए सभी वर्गों के २१ व्यक्तियों की एक समिति गठित की गयी है। विनोबाजी के इंदौर पहुँचने के पहले ही पाँच हजार सर्वोदय-पात्रों की स्थापना का संकल्प कार्यकर्ताओं ने तय किया है।

इस बीच लगभग २५०० बीघा भूमि का वितरण भूमिहीन कृषक मजदूरों में किया गया। २०० बीघा भूमि का नया दान भी प्राप्त हुआ। "भूदान-यज्ञ" के १२० ग्राहक बनाये गये।

सभी निवेदकों से अनुरोध है कि इसी तरह संक्षेप में अपने काम का विवरण सर्व सेवा संघ को नियमित रूप से भेजते रहें।

●

'खूब शराब पीओ।'

हमारे पास एक छपा हुआ पर्चा आया जिसके अनुसार श्री जगतसिंह नगर, प्रधान, कांग्रेस कमेटी, पौड़ी गढ़वाल (उ० प्र०) ने शराबबंदी के मामले में सरकार की नीति से भिन्न होकर स्थानीय लोगों को नीचे लिखे अनुसार सलाह दी है

'हम सब भारतवासियों ने चाहे हम किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के माननेवाले रहे हों, अभी तक यही माना है कि शराब पीना अधम है। पिछली राजनैतिक लड़ाई, जो अंग्रेजों के साथ लड़ी गयी, उसकी बागडोर एक ऐसे संत तथा महामानव के हाथ थी, जिसने मानव-धर्म और राजनीति का मेल करके यह नुस्खा निकाला कि शराब मानव-समाज के लिए विष से भी घातक है। हमारे संस्कारों ने उस वाणी को शिरोधार्य किया। आज्ञा हुई, बहिन भाइयों ने शराब की दुकानों पर पिकेटिंग किया, प्रसाद समझ खाना खाते रहे। आजतक ग्रामवासी भी शराब को बुरी-से-बुरी चीज समझ कर पीना था।

स्वराज्य मिला, आशा और उत्साह हुआ कि अब हम अपनी दुनिया में स्वर्ग ला सकेंगे। नशाबन्दी के लिए सरकार ने कानून बनाये, पर अब बारह साल के बाद और जिला कांग्रेस-कमेटी के प्रस्ताव को अवहेलना करके सरकार को जिले भर में शराब की दुकानें खोलनी पड़ी।

उस समय कांग्रेस की आज्ञा से धरना दिया इस समय कांग्रेस-सरकार की आज्ञा का पालन करते हुए मैं कांग्रेस-कमेटी के प्रधान के नाते आपको सलाह देता हूँ कि शराब पियो, खूब शराब पियो, परिवार-वालों को पिलाओ पड़ोसियों को पिलाओ, अपने दोस्तों के साथ शाम को घूमते हुए शराब की दुकान पर जाओ। वहाँ बेधड़क शराब पियो और पिलाओ। ग्रामवासियो! आपके नजदीक ही यात्रा-स्टेशन पर सरकारी शराब की दुकान है अपना दूध बाजार में बेच कर उसकी शराब पी जाओ। एक बोतल अपने प्यारे बच्चों तथा देश के भावी कर्णधारों के लिए भी ले जाओ। इसी तरह से आपकी तथा आपके दोस्तों की जेब का धन ठेकेदार तथा राज्य के कोष में जमा होता रहेगा और हमें या मुल्क को जहाँ जाना होगा बहुत जल्दी वहाँ चला जायेगा।'

उपरोक्त मार्मिक शब्दों में जो वेदना प्रगट हुई है वह आज कितने ही पुराने सेवकों की अन्तर्वेदना है आशा है उत्तर-प्रदेश सरकार का ध्यान इस ओर जायगा।

●

राजस्थान में ग्रामदान सम्मेलन

राजस्थान समग्र सेवा संघ के तत्वावधान में ता० ९-१० जून को डूंगरपुर जिले के सागवाड़ा नगर के पास मंडकोला ग्राम में ग्रामदान-सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसकी अध्यक्षता के लिए खादी ग्रामोद्योग कमीशन के मंत्री श्री प्राणलाल भाई कापड़िया ने अपनी स्वीकृति दी है। सम्मेलन में उनके साथ खादी-कमीशन के "स्वावलम्बन डाइरेक्टर श्री वैद्यनाथजी तथा राजस्थान के सघन अधिकारी श्री अजीत भाई भी आयेंगे। यह सम्मेलन प्रांत में अपने ढंग का पहला होगा। इसमें राजस्थान के विभिन्न जिलों के २४२ ग्रामदानी गाँवों के मुखियाओं के साथ ग्राम निर्माण के काम में लगे हुए तथा उनसे संबंधित कार्यकर्ताओं के भाग लेने की संभावना है।

सम्मेलन का उद्देश्य ग्रामदानी गाँवों में अब तक किये गये काम के सिंहावलोकन के और उनकी समस्याओं के अध्ययन के साथ-साथ आगे की कार्य दिशा पर विचार करके ग्रामस्वराज्य के काम को गति देना है। इस संदर्भ में स्वाभाविक तौर पर ग्रामदानी गाँवों की निर्माण-प्रवृत्तियों और लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के कार्यक्रम से परस्पर संबंध रखने वाले प्रश्नों पर भी विचार होगा। इस सम्मेलन के स्वरूप पर विचार करने के लिए ता० १ जून को ग्राम निर्माण समिति की सभा जयपुर में हो रही है।

●

गोपुरी-आश्रम

गोपुरी-आश्रम, रत्नागिरि में ता० ७ से १० मई तक वरसा शिविर का आयोजन किया गया था। इसमें गोपुरी की स्थापना का कारण आज तक के अनुभव श्री अप्पा-साहब पटवर्धन के मकान परिवर्तन के परिणाम तथा दृढ़ निष्ठा, गोपुरी के प्रयोग चालू रखने की आवश्यकता आदि प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ। अन्त में निम्न निर्णय लिये गये

(१) गोपुरी-आश्रम सामाजिक समता के आधार एवं प्रचार के केन्द्र रूप में चले।

(२) सर्वोदय-पात्र से प्रतिस्पर्धा न हो, इसके लिए १ रुपये से ३ रुपये तक भेंट देने वाले गोपुरी-सहायक बनाये जायें।

(३) गोपुरी-मंडल की स्थापना हो। सदस्यों के लिए प्रतिज्ञा-पत्रक हों।

(४) गोपुरी पुनर्व्यवस्था के संबंध में निवेदन-पत्रक निकाले जायें।

राजस्थान का भूमि-वितरण

राजस्थान में कुल २६ जिले हैं। इन सभी जिलों में भूदान में जमीन मिली है। ८,५५६ दाताओं द्वारा कुल ४,३२,५६१ एकड़ जमीन मिली। इसमें से १३,९२८ एकड़ जमीन बाँटने के अयोग्य होने के कारण अथवा वितरण प्राप्त न होने के कारण खारिज कर दी गयी। शेष ४,१८,६४१ एकड़ जमीन बची। उसमें से ८७,३९६ एकड़ जमीन बाँटी गयी और अभी ३,३१,२४५ एकड़ जमीन बाँटनी शेष है। राजस्थान के २६ जिलों में से १५ जिलों में ग्रामदान हुए हैं, जिनकी संख्या २४२ है। सबसे अधिक ग्रामदान डूंगरपुर जिले में मिले हैं, जिनकी संख्या १३० है।

नोट: इस तरह का अद्यतन विवरण अन्य प्रांतों की ओर से भी प्राप्त हो, ऐसी अपेक्षा है।

●

शान्ति-सेना शिविर

सीकर जिला खादी-ग्रामोदय समिति की ओर से २८, २९ और ३० मई को झुंझुनू और सीकर जिले के शांति-सैनिकों तथा सर्वोदय-मित्रों का एक शिविर सम्पन्न हुआ। राजस्थान प्रांतीय शांति-सेना समिति के संयोजक श्री बद्रीप्रसाद स्वामी ने सर्वोदय कल्पना का नया समाज कैसा होगा, ग्राम-स्वराज्य का स्वरूप कैसा होगा इत्यादि विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

●

'जा कारण जग ढूँढिया, सो तो घटही माहिं !'

जयप्रकाश नारायण

हमारे प्रधानमंत्री पंडित नेहरू एक महापुरुष हैं। उनकी योग्यता, चारित्र्य और उनके दर्जे के लोग इस दुनिया में शायद ही कोई होंगे। वैसे तो हर देश में प्रधान-मंत्री या राष्ट्रपति हैं, लेकिन पंडितजी का मुकाबला करने वाले दो-एक ही होंगे। उनका दिल आपके साथ है। वे जितनी मेहनत करते हैं, उतनी हममें से कोई नहीं कर सकता। वे दिन में सोलह-सत्रह घंटे काम करते हैं। तेरह साल हुए, वे कोशिश कर रहे हैं कि आपका उद्धार हो, फिर भी इन तेरह सालों में देश का नक्शा नहीं बदला। अब पंडितजी से बढ़कर योग्य और कौन प्रधानमंत्री हो सकता है? उस महापुरुष के यहाँ रहते हुए भी स्वराज्य गाँव-गाँव में नहीं पहुँचा। इसके मानी यही हैं कि यह काम राज्यशक्ति से नहीं, जनशक्ति से ही हो सकता है।

राज्य-शक्ति से तरक्की नहीं होने वाली है

अंग्रेजों के राज्य में जनता को कुछ करने ही नहीं दिया जाता था, इसलिए वह निष्क्रिय, निस्तेज बनी थी। लेकिन स्वराज्य के बाद भी हालत सुधरी नहीं, बल्कि लोगों ने तो समझा कि अब राज्य ही सब कुछ करेगा। पार्टी वालों ने हालत और बिगाड़ी। उन्होंने जनता से कहा कि हमें वोट दो, तो हम सब ठीक कर देंगे! हमें समझना चाहिए कि जितनी जल्दी हम इस भ्रम को निकाल देंगे, उतनी जल्दी हमारा उद्धार होगा। पं० नेहरू के तख्त पर कृपलानीजी, अशोक मेहता, राजाजी, नंबूद्रीपाद या और कोई बैठें, तो भी जनता संगठित रूप से मेहनत करने के लिए तैयार नहीं होगी, तो आपकी तरक्की नहीं होने वाली है, नहीं होने वाली है, नहीं होने वाली है!

कौनसा धन, जो हाथों से पैदा नहीं होता

दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है, जिसने केवल राज्यशक्ति से तरक्की की हो। जहाँ जनता जागृत होकर काम करती है, उसी देश की तरक्की होती है। लेकिन आप समझते हैं कि हम पिछड़े हुए हैं, निर्धन, साधनहीन हैं, हमारे पास कोई शक्ति नहीं है। लेकिन आपको समझना चाहिए कि आपके पास वह शक्ति है, जो सरकार के पास नहीं है। सरकारी कर्मचारी आधा करोड़ हैं, तो क्या साढ़े उनतालीस करोड़ जनता से आधा करोड़ की शक्ति अधिक है? राज्यशक्ति और जनशक्ति का वही संबंध है, जो थोड़े से जामन और हाँडी भर दूध का है। जो जर्मनी लड़ाई में तबाह हुआ था, उसने पन्द्रह साल में इतनी तरक्की की है कि दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। किसी भी जर्मन लड़के से पूछो कि क्या तुम्हारी तरक्की तुम्हारे प्रेसिडेंट ने की है, तो वह हँसेगा और वह गर्व के साथ कहेगा कि हमने मेहनत करके अपने देश को बनाया है। जापान ने भी इसी तरह आश्चर्यजनक प्रगति की है।

लेकिन हमारा यह हाल है कि गाँवों में ऊँच जाति के कहलाने वाले लोग मेहनत नहीं करते हैं, पढ़े-लिखे नौजवान ताश खेलते रहते हैं, हम आलसी बने हुए हैं। गाँव में नंगधड़ंग, गंदे बच्चे घूमते रहते हैं, जिनकी तरफ कोई ध्यान नहीं देता। यह शर्म की बात है। एक मानी में, चीन को छोड़ कर भारत दुनिया में सबसे बड़ा देश है। जिस देश के पास अस्सी करोड़ हाथ हैं, वह देश भूखा, नंगा क्यों रहता है? दुनिया का कौनसा धन है, जो हाथों से पैदा नहीं होता?

बेराई के अनुकरण से देश का उद्धार होगा

जनता जाग जाये तो एक साल में वह इतना काम करेगी, जितना पं० नेहरू और श्री बाबू बीस साल में नहीं कर सकेंगे, इसलिए नहीं कि वे करना नहीं चाहते, बल्कि इसलिए कि वे कर नहीं सकते। मुंगेर के बेराई गाँव के लोगों ने इस विचार को समझ लिया, ग्रामदान किया और दो साल में अद्भुत प्रगति की। वह ८३ घरों का, मजदूरों का एक गरीब गाँव था। लेकिन वहाँ के लोगों ने समझ लिया कि हम एक नाव पर सवार हैं। नाव पार लगेगी या डूबेगी, तो भी हम साथ ही रहने वाले हैं। उनके गाँव में सालाना ८३००रु० का कपड़ा बाहर से आता था, लेकिन उन्होंने गाँव में ही कपड़ा बनाने का संकल्प किया, तो उनका सारा रुपया बाहर जाना बंद हुआ। हाल ही में मैं उस गाँव में गया था। तो मैंने देखा, गाँव के एक-एक बच्चे के, बूढ़े के, स्त्री-पुरुष के बदन पर खद्दर के कपड़े थे। गाँववाले गरीब थे, उनके पास पूँजी नहीं थी, तो उन्होंने पेट के काम के अलावा रोज दो घंटा अधिक श्रमदान करके एक साल में दस हजार रु० की और दूसरे साल पंद्रह हजार रु० की पूँजी बनायी। नजदीक वाले पोस्ट ऑफिस में उस गाँव की पूँजी जमा है। क्या सरकार के पास या और किसीके पास यह ताकत है कि गाँव-गाँव में ऐसी पूँजी बनाये? आज पूँजी की समस्या देश की एक बहुत बड़ी समस्या है और पंडितजी को सब देशों के सामने हाथ फैलाना पड़ रहा है। यदि हिंदुस्तान के सब गाँव बेराई का अनुकरण करेंगे, तो देश में एक साल में ५५५ करोड़ रुपये की पूँजी बनेगी और देश कहाँ से कहाँ चला जायेगा। बेराई में ग्रामदान से पहले टूटे-फूटे घर थे। लेकिन गाँववालों ने पक्के घर बनाने के लिए एक पंचवार्षिक योजना बनायी। गाँव में ही ईंटें बनाना शुरू कर दिया और दो साल में योजना के अनुसार नये घर बनाये। हमें समझना चाहिए कि सर्वोदय के सिवाय देश की उन्नति का दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

पार्टियों का फीका खेल

हमें जनता को समझाना चाहिए कि तुम्हारी किस्मत तुम्हारे हाथ में है, तुम सब मिल कर सामूहिक शक्ति पैदा करोगे, तभी समस्याओं को हल कर सकोगे। लेकिन ये पार्टीवाले देश को तबाह कर रहे हैं। मैं भी किसी जमाने में एक पार्टी में था। मैं कभी चुनाव में खड़ा नहीं हुआ, वैसी लालसा ही कभी नहीं पैदा हुई। लेकिन मैंने चुनाव में बहुत काम किया है, पहले कांग्रेस का किया है और बाद में पी० एस० पी० का। मैं इन पार्टियों को बहुत नजदीक से जानता हूँ। मैं मानता हूँ कि आज देश में इस बात की बहुत आवश्यकता है कि सभी राजनैतिक पक्ष आपस में मेल करके, देश के निर्माण में योग दें। पार्टियाँ चुनाव में सारी शक्ति लगाती हैं, जिससे कुछ भी निष्पत्ति होने वाली नहीं है। मैं देख चुका हूँ, इन पार्टियों का खेल! इसीलिए मैं कहता हूँ कि वह बिलकुल फीका है, खोखला है।

तानाशाही को ग्रामराज्य ही रोकेगा

अभी हमने देखा कि तुर्की में क्या हुआ। हमें समझना चाहिए कि अगर लोकशाही बुनियाद—'ग्रामराज्य'—पक्की नहीं होगी, तो सब पार्टियों को कोई भी तानाशाह फेंक देगा और खुद आयेगा। यूनान, मिस्र और रूमा मिट गये, लेकिन भारत कायम रहा, इसका मुख्य कारण है, भारत के ग्रामराज्य। कुछ लोग समझते हैं कि कांग्रेस के बारे में असंतोष है, तो तानाशाही से बचने के लिए एक नयी पार्टी बनानी चाहिए और सत्ता हाथ में लेनी चाहिए। लेकिन जिन मुल्कों में, जैसे पाकिस्तान में, अभी तानाशाही आयी है, वहाँ क्या कम पार्टियाँ थीं? लेकिन एक दिन एक 'डिक्टेटर' आया और उसने सब पार्टियों को झाड़ू लगा कर फेंक दिया। क्या वहाँ की एक भी पार्टी उसके सामने खड़ी हो सकी? लेकिन अगर नीचे की बुनियाद पक्की होती, तो क्या कोई डिक्टेटर यह कर सकता था?

एकमेव मार्ग : शांति-सेना

अभी 'शिखर-संमेलन' निष्फल हुआ। उसमें किसका कितना दोष है, इसमें पड़ने में लाभ नहीं है। स्पष्ट ही है कि दोनों का दोष है। अब ऐसी खतरनाक हालत है कि गलती से भी किसी की उंगली किसी बटन पर पड़े, तो विश्वयुद्ध पैदा होगा। सब जानते हैं कि युद्ध से सर्वनाश होगा, फिर भी लोकसभा में विरोधी पक्षवाले पं० नेहरू की और बातों में आलोचना करते हैं। लेकिन सेना के खर्च के बारे में कुछ नहीं कहते हैं, बल्कि यह भी कह[ते] हैं कि खर्चा और बढ़ाओ। हमें समझ[ना] चाहिए कि दूसरा एक रास्ता निकला है, वह है शांति-सेना का। आज जनता [को] यह विश्वास नहीं है कि हम अहिंसा से दे[श] की रक्षा कर सकते हैं। इसी तरह [हम] भी जब नौजवान थे, तब गांधीजी [के] तरीके पर विश्वास नहीं करते थे। लेकि[न] इतिहास ने शांति से स्वराज्य हासिल कर दिखाया। हमें समझना चाहिए कि यु[द्ध] का रास्ता बंद है। अब हमारे साम[ने] दूसरा विकल्प नहीं है, एक ही रास्ता शांति-सेना का। विनोबाजी चाहते हैं [कि] भारत की जनता में यह आत्मविश्वा[स] पैदा हो कि हम अपनी रक्षा कर सकते हैं। बाहर से कोई आक्रामक आये, तो ह[म] उसके साथ सहयोग नहीं करेंगे, उसके लि[ए] न रेल चलायेंगे, न उसे अनाज देंगे, न [एक] एक भाई देंगे, न एक पाई देंगे। अगर यह संकल्प करे, तो भारत को कोई गुला[म] नहीं बना सकता है। आज रूस और अमेरिका जैसे बड़े-से-बड़े देश भी यह नहीं कह सकते कि हम सेना के बल प[र] जीतेंगे। लेकिन छोटे-से छोटा देश भी अहिं[सा] का व्रत लेकर यह कह सकता है कि ह[म] अपनी रक्षा करेंगे। इसीलिए मैं आप[से] प्रार्थना करता हूँ कि घर-घर में सर्वोद[य] पात्र रखिये, गाँव-गाँव में शांति-से[ना] बनाइये और फिर पं० नेहरू से कहिये कि हम आक्रामक के साथ असहयोग करने के लिए तैयार हैं, आप सेना का विघटन कर दीजिये।

फतेहपुर जिला (गया)
२९-५-'६०

• •

श्री बालूभाई मेहता की पदयात्रा

महाराष्ट्र के पश्चिम खानदेश जिले के भूतपूर्व प्रतिनिधि श्री बालूभाई मेहता पू० विनोबाजी के साथियों में से एक हैं। धुलिया-जेल में "गीता-प्रवचन" विनोबा के मुख से सुनने का सौभाग्य जिन महानुभावों को प्राप्त हुआ था, उनमें श्री बालूभाई एक हैं। आप सेवा, तपस्या तथा त्याग की मूर्ति हैं। विनोबाजी ने हाल ही में आपसे कहा था कि "अब आपकी आयु सत्तर साल से अधिक हुई है। शास्त्रों के आदेश के अनुसार आप संन्यासाश्रम में प्रवेश कर चुके हैं, तो अब आपको संस्थाओं के सब भारों से मुक्त होकर अखंड पदयात्रा करनी चाहिए।

इस आदेश के अनुसार श्री बालूभाई ने सर्व-सेवा-संघ के प्रतिनिधित्व से भी इस्तीफा दे दिया और गत २८ अप्रैल से पदयात्रा आरंभ कर दी है। पदयात्रा में आपको सिर्फ दो दफा छुट्टी लेनी पड़ी, जिसके लिए विनोबाजी की अनुमति थी। एक बार का कारण तो आपका ऑपरेशन ही था। इस वयोवृद्ध, तपोवृद्ध श्री बालूभाई की अखंड पदयात्रा सबके लिए प्रेरणाप्रद सिद्ध होगी।

•

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि •

सब पंथ मिटाने होंगे !

विनोबा

एक कहता है, सूर्य पूर्व में उगता है, प्रार्थना पूर्व की ओर मुँह करके करनी है। दूसरा कहता है, पश्चिम की ओर मुँह करके बैठना है, क्योंकि काबा पश्चिम में है। परमात्मा संस्कृत ही जानता है, इसलिए प्रार्थना संस्कृत में ही करनी है। भगवान को अरबी भाषा ही आती है, इसलिए प्रार्थना उसी में करनी चाहिए। अब इसमें क्या सही है, क्या गलत है, यह कौन बताये? इस तरह के छोटे-छोटे झगड़े चल रहे हैं। कुरान ने कहा है—"कुछ फिरके अपने-अपने रिवाजों पर फख्र करते हैं। वे सब अपने-अपने धर्म को आगे बढ़ाना चाहते हैं।" इसीलिए मैं कहता हूँ कि यह सब उचित नहीं है। ऐसे जो तरह-तरह के पंथ हैं, उन सबको मिटाना ही होगा।

जनेऊ को लीजिये। मैं जनेऊ नहीं पहनता। लोग पूछते हैं, क्यों? मैं कहता हूँ कि जनेऊ के साथ मैं पैदा नहीं हुआ, जैसा मैं पैदा हुआ हूँ, वैसा ही रहता हूँ। तब प्रश्न उठता है, तो फिर ये कपड़े क्यों पहनता हूँ? आप सब पहनते हैं, लज्जा धर्म का प्रतीक समझी जाती है, एक साधारण परंपरा है—कॉमन ट्रेडिशन है—इसलिए पहनता हूँ। जनेऊ को मैं 'यज्ञोपवीत' नहीं कहता, 'कुंजोपवीत' कहता हूँ। लोग जनेऊ का उपयोग कुंजी बाँधने के लिए करते हैं और ये कुंजियाँ बड़ों से छोटों को नहीं मिलतीं। बूढ़े खाट पर पड़े-पड़े मर जाते हैं और छोटे कुंजियों के लिए ताकते ही रहते हैं। मैंने तो यहाँ तक सुना है कि कुंजियाँ लाश के साथ श्मशान-भूमि तक पहुँची हैं और वहाँ मुर्दे के शरीर पर से उतारनी पड़ी हैं। कहा गया है कि 'धनवानों को अपने पुत्रों से डर रहता है।' यह शंकराचार्य ने कहा है, मैं नहीं कह रहा हूँ। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह धर्म की असलियत नहीं है। इसे हटाना होगा। इन सब धर्मों का सार रहे, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है।

अभी मेरे पास एक परचा आया है, जिसमें 'गीता-प्रवचन' में मैंने जो कुछ कहा है, उस पर टीका की गयी है। मैं कहता हूँ—"भाई, मैंने तो उसमें बहुत कुछ कहा है, पर जो आपकी समझ में न आये, उसे आप मत मानिये। किताबों की बातों को प्रमाणभूत नहीं मानना चाहिए। मानना वही चाहिए, जो समझ में आ जाये। चाहे बाइबिल हो, चाहे कुरान हो, चाहे वेद हो, चाहे महाभारत हो, चाहे मेरी पुस्तक 'गीता-प्रवचन' हो, जिसमें आपको जो सार मिले, जिसे आपकी बुद्धि कबूल करे, उसीको आप अपनाइये। विवेक से बढ़कर न कोई गुरु है और न कोई मार्गदर्शक। यह जरूरी नहीं है कि किताबों में हमेशा अच्छी बातें ही लिखी जाती हों। इसलिए किताबों में लिखी हर बात को मानना जरूरी नहीं।

(हापुड़, १७ अप्रैल, '६०)

लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ई ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

मिण्ड जेल में विनोबाजी

जेल हमारा आश्रम बने

[२३ मई को प्रातः विनोबाजी चार साथियों के साथ जेल के भीतर गये। वहाँ उन्होंने सभी कैदियों के सामने प्रवचन किया। ता० २२ को भेजे गये बागी भी उपस्थित थे।—सं०]

हमारी जिन्दगी के करीब पाँच साल जेल में बीते। १९२३ में, १९३२ में, १९४० और '४२ में, चार दफा मिल कर ५ साल हुए। हमें जेल-जीवन का पूरा अनुभव है। हिन्दुस्तान भर पहुँचने वाली कई पुस्तकें जेल में पैदा हुईं। "गीता-प्रवचन", जो कि सारे भारत की भाषाओं में और सारे भारत में जा रहा है, कैदियों के सामने किये गये भाषणों का संग्रह है। और भी दो-तीन किताबें हमारी वहाँ से निकली हैं।

हम जेल का कुछ काम पूरा करते थे। हम साथियों से कहते थे कि 'हम अपनी इच्छा से जेल में आये हैं और कानून भंग किया है। इसकी सजा खुशी से कबूल की है। इसलिए जेल के सब नियमों का इच्छा से पालन करना है।' हममें से कुछ लोगों को सादी सजा मिली थी। हमने समझाया कि बगैर काम किये खाना हमारा धर्म नहीं है। हम समाज पर भार-रूप क्यों बनें? तो हमने जेलवालों से काम माँग लिया। पहले उन्हें हिचक हुई। उन्होंने कहा—'बगैर हुक्म के हम ऐसा नहीं कर सकते।' फिर हमने उनके पास लिखित माँग की। धुलिया के जेल में मैं खुद चक्की पीसता था। हम सब राजनैतिक कैदियों ने जेल का सब आटा पीसने का जिम्मा उठा लिया। जेल में करीब ८०० लोग थे। सब लोग बड़े प्रेम और श्रद्धा से काम करते थे। हमें जो रोटियाँ मिलती थीं, कच्ची बनती थीं। तो उसका भी ठीका हमने ले लिया। फिर हमारे आठ दस आदमी रसोई में काम करने लगे। दूसरे कैदी तो थे ही। सारी चीजें सुन्दर बनने लगीं। अब भी पुराने कुछ कैदी मित्र मिलते हैं, तो कहते हैं, वैसी दाल कभी नहीं खायी।

जब हम जेल में जाते हैं, तो यही हमारा महल है, आश्रम है, ऐसा समझ कर भक्ति-भावना से हम काम करते हैं। जेल में सफाई तो रखने ही हैं। कल हम जहाँ रात में सोये थे, उससे यह जेल अधिक स्वच्छ है। आजकल जेल अच्छी जगह में, खुली हवा में होती है, क्योंकि वहाँ कई लोगों को रखा जाता है।

परिवर्तन अच्छा हो

हम सब साथी हैं ऐसा मानें। (याने पुराने कैदी और डाकू वाले नये) सब एक ही मानें। कोई विशेष है, ऐसा न मानें। सब भगवद्भक्त हैं ऐसा मानें। आप पश्चात्ताप करके यहाँ आये हैं। बड़े प्रेम से बहनों ने आपको राखी बाँधी और यहाँ भेजा है। अब आपको नम्र वाणी ही बोलनी चाहिए। गाली-गलौज न हो। और लोगों को लगे कि ये राह भूल गये थे, पर अब ठीक रास्ते पर आ गये हैं। पूरे जोर से इस राह पर चलिये।

बाहर जो आपके बाल-बच्चे हैं, सगे-सम्बन्धी हैं, उनकी चिंता भगवान पर छोड़ें। यहाँ के कलेक्टर वगैरह सरकारी अफसरों ने कानून को बाजू में रख कर आपको सत्संगति का मौका दिया, यह बड़ी बात है।

हम आशा करते हैं कि आपमें से भगवद्भक्त निकलेंगे। 'अपि चेत् सुदुराचारो भजते माम् अनन्यभाक्। साधुरेव स मंतव्यः' ऐसा गीता ने कहा है। जो (मेरी) अनन्यभक्ति करता है, वह पापी हो, तो भी साधु बन जाता है। यह भगवद्गीता का बड़ा भारी आश्वासन है। इसी के बल पर हम जीते हैं। 'पापोऽहं पापकर्माऽहं', ऐसा हम कहते हैं। सबसे कम-बेशी पाप होता है। आपमें और हममें कोई फरक नहीं है।

मूल दोष : गुस्सा

गुस्सा मूल चीज है—हाथ में जो औजार होता है, उसी के रूप में वह जाहिर होता है। तो सजा उस औजार को होनी चाहिए।

कसूर एक ही है : गुस्सा। मेरे जैसा गुस्सा करता है, तो जोर से बोलता है, जिससे सामने वाले का दिल दुखता है। जिसके हाथ में डंडा है, उसे गुस्सा आता है, तो सामने वाले का सिर फूटता है। जिसके पास बन्दूक और गोली है, वह गुस्सा करे, तो सामने वाला मरता है। सबमें कसूर एक ही गुस्सा। सरकार के दरबार में चाहे अलग-अलग गुनाह हों, लेकिन भगवान के दरबार में एक ही होगा। परिणाम जो कम-ज्यादा होता है, वह तो औजारों के कारण। सारा दोष औजारों के कारण। ऐसे औजारों का इस्तेमाल इस तरह की भावना बना देता है, जिससे जल्दी गुस्सा आ जाता है। औजारों का गुनाह मनुष्य पर क्यों लादते हैं?

आप-हम, ये दूसरे सारे कैदी सब भाई हैं। भाई के नाते ही मैं सबसे मिलने आया हूँ।

(भिण्ड, २१-५-'६०)

विनोबाजी सज्जनों के क्षेत्र में

रामप्रवेश शा

गौतम बुद्ध के सामने अंगुलिमाल डाकू के आत्म-समर्पण की कथा अपने बचपन में पढ़ी थी। जिस डाकू के आतंक के सामने सारे अस्त्र-शस्त्र बेकार सिद्ध हो चुके हों, उसके एक निहत्थे आदमी के सामने आत्म-समर्पण करने की घटना ने अपने अंदर आश्चर्यमिश्रित उत्सुकता पैदा की और उस निहत्थे आदमी के बारे में अनेक प्रश्नों के संदर्भ में उसके चरित्र की पूरी जानकारी प्राप्त कर सका। उसी समय शस्त्रबल और आत्मबल का भेद भी स्पष्ट हुआ।

सिपाही शस्त्रबल के सहारे और संत आत्मबल के द्वारा अपने कर्तव्य का पालन करता है। इन दोनों के दृष्टिकोणों में एक बुनियादी अंतर होता है और उसी अंतर के कारण दोनों की कार्य-प्रणालियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। सिपाही प्रत्येक आदमी को संदेह की दृष्टि से देखता है। वह सामान्यतः सबको चोर समझता है और संबद्ध व्यक्ति को उसके सामने यह सिद्ध करना पड़ता है कि वह चोर नहीं है। इसके विपरीत संत सबको विश्वास की दृष्टि से देखता है, प्रत्येक को साधु समझता है, तब तक साधु समझता है, जब तक संबद्ध व्यक्ति अपने आचरण और व्यवहार में यह सिद्ध न कर दे कि वह साधु नहीं, बल्कि चोर अथवा असामाजिक व्यक्ति है। सामान्यतः दोनों के सामने इनके अपने दृष्टिकोण के प्रतिकूल सिद्ध करना आसान काम नहीं है। सिपाही जिसको चोर समझ ले, उसे यह सिद्ध करना कठिन हो जाता है कि वह एक अच्छा आदमी है। इसी तरह संत के सामने भी यह सिद्ध करना टेढ़ी खीर है कि वह बुरा आदमी है।

गौतम बुद्ध के बाद इस तरह की अनेक घटनाएँ सुनने को मिलीं कि अमुक फौजी टुकड़ी अथवा अमुक पुलिस-कर्मचारी या अधिकारी ने डाकुओं के एक गिरोह को या किसी डाकूविशेष को, घेरा डाल कर गिरफ्तार कर लिया अथवा गोली के घाट उतार दिया। लेकिन ऐसी घटना स्वप्न में भी नहीं दिखाई पड़ी कि किसी पुलिस-अधिकारी अथवा देश के शासन के सामने किसी डाकू ने आत्मसमर्पण कर दिया हो। शायद कोई व्यक्ति ऐसा स्वप्न देखने की कल्पना भी न करता हो, क्योंकि बबूल के पेड़ से आम की आशा एक दुराशामात्र है!

लगभग २५०० साल बाद इतिहास ने अपनी पुनरावृत्ति की। युग के आयहक विचारक संत विनोबा भावे के अखंड पद-यात्रा-अभियान में यों तो बहुत-सी गुत्थियाँ अपने आप सुलझती गयीं, लेकिन अभी हाल की एक घटना ने सबको महान आश्चर्य में डाल दिया है। सर्वशक्ति-सम्पन्न तीन, चार प्रान्तीय सरकारों के सामूहिक प्रयास और इस प्रयास में प्रति-वर्ष लाखों के व्यय के बावजूद उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान में डकैतों और डकैतियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही थी। शक्ति और सम्पत्ति का बहुत बड़ा हिस्सा तथाकथित डकैतों को बंदी बनाने के प्रयास में बरबाद किया जा रहा था—गांधी के देश में। परिणाम-स्वरूप "मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की गयी।" और अब तो असाध्य हो चला था! करीब २५ साल से उसने बड़ा उग्र रूप धारण कर लिया था। इसी बीच विनोबाजी का इस डकैतीग्रस्त क्षेत्र में शुभागमन हुआ। लोगों की उत्सुकता बढ़ी और मन में आशा के अंकुर निकले। तरह-तरह की अटकलबाजियाँ लगाई जाने लगीं।

विनोबाजी की यात्रा इस उद्देश्य से नहीं हो रही थी कि वे डाकुओं का उन्मूलन करेंगे। उन्होंने तो अपने को यह निर्णय लेने से भी अलग रखा कि कौन डाकू है और कौन नहीं। अन्य लोग जिसको डाकुओं का क्षेत्र कहते थे, उसको उन्होंने सज्जनों का क्षेत्र बतलाया और करुणा, प्रेम तथा मैत्री का संदेश सुनाते हुए सदा की भाँति शान्ति का मार्ग प्रशस्त करते हुए अविराम बढ़ते रहे। मन की यह वाणी कि "यह जरूरी नहीं है कि जो डाकू माने जाते हैं, वे ही डाकू होते हैं। दूसरे भी बहुत से डाकू होते हैं और मुमकिन है कि परमेश्वर की निगाह में अधिक गुनहगार दूसरे ही साबित होंगे" उनकी सूक्ष्मदर्शिनी और दूरदर्शिनी दृष्टि द्वारा सामाजिक विषमता के शोषणस्वरूप की ओर संकेत तो है ही, साथ ही वह हमारी सामाजिक मान्यता के खोखलापन को भी इंगित करती है। जिस सर्वोदय की दृष्टि में चोर और डाकू का आशय ऐसे व्यक्ति अथवा वर्ग से लिया जाता है, जो बिना श्रम किये हुए भोजन करता है, उस सर्वोदय का प्रणेता थोड़े-से ऐसे व्यक्तियों को ही, जो समाज की आँख बचा कर कुछ लोगों की सम्पत्ति बलपूर्वक छीन लेते हों, कैसे डाकू मान सकता है, जब कि समाज के बहुसंख्यक लोग दूसरों के शोषण पर जीवन बिता रहे हों और श्रमिक दाने-दाने को मुँहताज हों।

पदयात्रा के चलते एक दिन वह भी आया, जब कि स्वेच्छा से तथाकथित एक डाकू ने विनोबाजी के सामने आत्म-समर्पण कर दिया और यह क्रम अभी तक लगा हुआ है। अब तक ऐसे बीसों आत्म-समर्पण हो चुके, जिनको पकड़ने के लिए सरकार ने भय और आतंक का भरपूर सहारा लिया, फिर भी उनका बाल बाँका न हो सका। ऐसे दुर्जेय लोगों ने सहज ही अपने को एक क्षीणकाय व्यक्ति के हाथ में सुनी से सौंप दिया और सहर्ष जेल की यातनाएँ भोगने को तैयार हो गये, यह कुछ लोगों के लिए आश्चर्य की बात हो सकती है, लेकिन वस्तुतः यह स्वाभाविक बात है। अन्य कई कारणों के साथ-साथ तथाकथित डाकुओं के निर्माण का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण आज की सामाजिक और आर्थिक विषमता है। जब तक यह विषमता दूर नहीं होती, तब तक समाजविरोधी तत्त्वों का उन्मूलन भी सम्भव नहीं है। ये तथाकथित डाकू उस रोग के रोगी हैं, जिसके कीटाणु समाज के हर क्षेत्र में मौजूद हैं। और यही कारण है कि विनोबाजी ने उस क्षेत्र को सज्जनों का क्षेत्र बतलाया, जिसको दूसरे लोग डाकुओं का क्षेत्र कहते हैं।

विनोबाजी जैसे विशाल हृदय और व्यापक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति के सामने, जो कि मानता हो कि बुरा से बुरा व्यक्ति भी संत बन सकता है, कौन अपनी भूल स्वीकारने में चूकेगा? क्या अच्छा होता, यदि आज की सामाजिक और आर्थिक विषमता के पोषक अपना हृदय खोल कर मानवता के उस पुजारी के सामने रख देते, जो घूम-घूम कर नवयुग का संदेश सुनाता चल रहा है। हमारा समाज रूढ़ियों से इस तरह जकड़ा हुआ है कि किसी गिरे हुए आदमी को उठने के सारे रास्ते अवरुद्ध हैं। यदि किसी ने भूल से कोई गलती कर दी, तो हमारा समाज उसे बार-बार वही गलती करने के लिए मजबूर कर देता है। जिन डाकुओं ने विनोबाजी के सामने आत्मसमर्पण किया है, वे भी आदमी हैं। यदि उन्हें पहले अवसर दिया गया होता, तो आज न तो उनकी इतनी संख्या बढ़ती और न उ[न्हें] इतना लाञ्छित होना पड़ता।

प्रेम और विश्वास पाकर आज अपनी जान तक देने में नहीं हिचकता। बड़े दुःख की बात है कि बापू के नेतृत्व में सत्य-अहिंसा का पाठ पढ़ने वालों का विश्वास उनके सिद्धान्तों में नहीं है। बहुत थोड़े-से लोग ऐसे हैं, जो विनोबाजी के नेतृत्व में बापू के मार्ग पर चलने का प्रयास कर रहे हैं। अगर सचमुच समाज को हम सुखी देखना चाहते हैं, तो बापू का ही रास्ता सहायक हो सकता है।

विनोबाजी के सामने डाकुओं के आत्म-समर्पण की घटना इस तथ्य का द्योतक है कि करुणा, प्रेम, मैत्री ही वास्तविक मानव मूल्य हैं। शस्त्र के द्वारा किसी की जान भले ले ली जाय, लेकिन उसे अपना सहयोगी नहीं बनाया जा सकता। घटना से अगर हमें आश्चर्य हो रहा है, तो यही मानना चाहिए कि हम अब भी भ्रम में हैं।

शरणागत डाकुओं के साथ सरकार कैसा व्यवहार करेगी, यह उसी पर निर्भर करता है। लेकिन उचित तो यही होगा कि उन्हें आदमी की तरह जीने का अवसर प्रदान किया जाय। उनके पिछले जीवन को भुला दिया जाय और प्राणपण से समाज की विषमताओं को मिटाने में जुट जाया जाय। इसी में अपना और सबका कल्याण है।

आसाम सर्वोदय-मंडल के कार्य का विवरण

आसाम में सर्वोदय-मंडल का निर्माण हुआ, जिसके सभापति के तौर पर श्री सर्वेश्वर बुढ़ागोहाईं सर्वानुमति से चुने गये। मंडल की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों में सर्वश्री अमलप्रभा दास, सोमेश्वर बरुआ, भुवनचन्द्र दास, माणिकचन्द्र शइकिया, रविकान्त सान्दिकै, शशिकान्त सइकिया, मदनचन्द्र बरुवा, शकुन्तला चौधरी, हेमकान्त हजारिका, टंकेश्वर मरोंधी, जीवराम दास, मथुरानाथ चौधानी और सोमेश्वर फुकन हैं। श्री सोमेश्वर बरुआ मंत्री तथा रविकान्त सान्दिकै और शकुन्तला चौधरी को सहमंत्री मनोनीत किया गया। विचार-प्रचार के लिए अखंड सामूहिक पदयात्रा, विचार-शिविर, लोकसेवकों के प्रशिक्षण के लिए चलते-फिरते शिविर आदि का भार श्री सोमेश्वर बरुआ पर सौंपा गया।

उत्तर लखीमपुर जिला और गौहाटी नगर शासन-मुक्ति के प्रयोग-क्षेत्र के तौर पर चुने गये। १ जून से ११ सितम्बर तक गौहाटी नगर में और २ अक्टूबर से चार महीने तक उत्तर लखीमपुर जिले में अखंड पदयात्रा का आयोजन किया गया। कस्तूरबा आश्रम में पूर्ण ग्राम-स्वराज्य का प्रयोग करने का दायित्व श्रीमती अमलप्रभा दास को दिया गया। आसाम के सभी ग्रामदानी गाँवों से सम्पर्क रखने की योजना भी बनायी गयी। हर प्राथमिक सर्वोदय-मण्डल का कम-से-कम सौ परिवारों का एक प्रेमक्षेत्र रहेगा, जिसमें सर्वोदय-पात्र, सूत्रांजलि, सर्वोदय-अध्ययन-गोष्ठी का काम चलेगा। साहित्य प्रचार के लिए हर महकमे में एक स्वतंत्र सर्वोदय-भंडार की स्थापना करने का तय हुआ। मंडल की बैठक में ट्रस्टी मंडल का गठन किया गया और ग्राम निर्माण समिति, ग्राम-स्वराज्य, नई तालीम-समिति, खादी ग्रामउद्योग-समिति तथा प्राकृतिक चिकित्सा-समिति का निर्माण किया गया। आन्दोलन का खर्च सम्पत्ति-दान, सर्वोदय-पात्र एवं लक्ष्मी-आधार पर चलाने का तय किया गया।

जिलाश चुनाव का प्रचार करने का तय हुआ है। राज्य के सभी बोर्ड इन उद्योगों के विकास ग्रामोद्योग खड़े करने के लिए प्रोत्साहन करने का भी प्रस्ताव किया।

प्रान्त के सभी प्राथमिक तथा जिला सर्वोदय-मंडलों के गठन के लिए श्री सोमेश्वर बरुआ सारे प्रान्त का दौरा कर रहे हैं। दरंग और शिवसागर जिले में पाँच-पाँच शान्ति-सैनिक स्वावलम्बन का प्रयोग कर रहे हैं।

स्वेच्छा से आज्ञापालन होगा, तभी सर्वोदय आयेगा

विनोबा

मैं आज आपसे एक विशेष बात कहना चाहता हूँ कि शांति सैनिक की यही पहचान है कि शांति-सैनिक की प्रतिज्ञा में यह बात है कि हमें जहाँ भी बुलाया जायगा, वहाँ पर अपना घर, सार्वजनिक काम आदि सब कुछ छोड़ कर जाने के लिए हम तैयार हैं। इस एक बात में दूसरे लोक-सेवकों में और उनमें फर्क है। बाकी बातें समान हैं। इस तरह शांति सैनिक का कार्य दुहरा रहेगा। हमेशा के लिए वह सेवा-सैनिक होगा और साथ-साथ शांति-सैनिक भी। जिस तरह सरकार में दो प्रकार की 'सर्विसेस्' होती हैं। मिलीटरी सर्विस, फौजी सेवा और सिविल सर्विस, नागरिक सेवा। वहाँ पर दोनों के अलग-अलग विभाग रहते हैं। हमारे यहाँ कुछ रचनात्मक काम करने वाले कार्यकर्ता हैं, जो अपने स्थान पर सेवा-कार्य करते रहेंगे और निर्माण-कार्य के साथ-साथ मौके पर अपने-अपने क्षेत्र में शांति की जिम्मेवारी भी उठायेंगे। वे यह नहीं कह सकते कि हम खादी-ग्रामोद्योग आदि के काम में हैं, इसलिए आस-पास के क्षेत्र में अगर अशांति है, तो हमें पता नहीं चलता और पता चले तो भी शांति-शमन के लिए हमारे पास समय नहीं है, वह हमारी जिम्मेवारी नहीं है। बल्कि जहाँ तक उस स्थान का ताल्लुक है, उन पर भी शांति की जिम्मेवारी है। जिस तरह सरकार अपनी दो सर्विसेस् में फर्क करती है, वैसा हम नहीं करते। लेकिन शांति-सैनिक हमेशा के लिए सेवा-सैनिक और विशेष मौके पर जहाँ भी बुलाया जायेगा, जाने के लिए तैयार रहेगा।

लोग समझते हैं कि इसके मानी यह है कि कहीं दंगा-फसाद, झगड़ा हुआ, तो उसे बुलाया जायेगा। यह गलत खयाल है। आग लगने के बाद पानी का इन्तजाम करना ठीक ही है, लेकिन आग लगने से पहले ही इन्तजाम करना होना है। इसलिए किसी दूसरे क्षेत्र में सेवा के लिए जाने का आदेश उसे मिलेगा, तो उसे जाना पड़ेगा।

हम ऐसा भेद नहीं कर सकते कि सेवा-कार्य कहाँ खतम होता है और शांति-कार्य कहाँ शुरू होता है। जो शांति-कार्य है, वही सेवा-कार्य है और जो सेवा-कार्य है, वही शांति-कार्य है।

शांति-सेना आज्ञा माननेवाली सेना होगी। हमने कश्मीर की मिसाल देते हुए कहा था कि वहाँ पर लड़ाई तो नहीं चल रही है, फिर भी साठ हजार सैनिकों की सेना खड़ी है। जहाँ खड़ा रहने के लिए कहा गया है, वहाँ पर वे लोग खड़े हैं। वे यह नहीं सोचते कि हर रोज तो लड़ने का काम नहीं करना पड़ता, दो-चार महीने में एकाध वारदात हो तो कुछ काम रहता है। बल्कि यही सोचते हैं कि देश-रक्षा के लिए हमें वहाँ रहना है, जहाँ रहने के लिए कहा गया है। मान लीजिये कि हमारे आफिस के लिए किसी मनुष्य की जरूरत है, तो शांति-सैनिकों में से किसी को भी आज्ञा दी जा सकती है कि वहाँ जाओ और उसे जाना पड़ेगा। उसी तरह किसी भी एक क्षेत्र को शासन-मुक्त क्षेत्र बनाने के काम के लिए किसी भी शांति-सैनिक को बुलाया जा सकता है और उसकी आने की जिम्मेवारी है। वह यह नहीं सोच सकता कि वहाँ से हमारा छुटकारा दो-चार महीने में होगा। हिंसा में नियंत्रण करने की यह जो वृत्ति है, वह जब अहिंसा में प्रकट होगी, तब ताकत बनेगी। जिसको जहाँ भी बुलाया जायगा, वहाँ पर जाना होगा और वह यह नहीं पूछ सकता है कि कितने दिन के लिए जाना होगा।

स्वेच्छा से आज्ञापालन हो

अहिंसा में सारे काम स्वेच्छा से किये जाते हैं। स्वेच्छा से आज्ञापालन कठिन हो जाता है, लेकिन स्वेच्छा भी हो और आज्ञा-पालन भी हो, ऐसा कठिन काम सफलता के साथ हमें करना है। तभी कभी-न-कभी हिंसा की जगह अहिंसा आयेगी। नहीं तो सार्वजनिक रक्षण का काम हिंसा ही करेगी और समाज में रुचि पैदा करनेवाले छोटे-मोटे काम अहिंसा करेगी। जैसे हिंसक समाज में भी मान्य है कि रुचि की जरूरत रहती है, और अहिंसा से जीवन में रुचि, स्वाद पैदा होता है बावजूद इसके कि रक्षण की देवता हिंसा है। ऐसे सर्व-साधारण प्रेम-कार्य के लिए अहिंसा जरूरी मानी जाती है। जख्मी सिपाहियों की सेवा करना दया का काम है। इतना प्रेम, अहिंसा और करुणा हिंसक समाज-रचना में भी मान्य है। परन्तु इतने से अहिंसा का काम नहीं बनेगा। जो हम चाहते हैं, उसके लिए तो सुव्यवस्थित रूप से किसी एक स्थान में, एक काम में सैकड़ों लोगों को हम इकट्ठा कर सकते हैं, यह दिखाना चाहिए।

सर्वोदय-पात्र के द्वारा राज्य आपके कब्जे में आयेगा

इस काम के लिए सर्वोदय-पात्र जरूरी है, ऐसा मैं बार-बार कहता हूँ, लेकिन लोगों में अभी तक इसके लिए झिझक है। कार्यकर्ता कहते हैं कि उसमें काफी समय देना पड़ेगा। उतना लाभदायक बनेगा या नहीं बनेगा? मैं कहता हूँ कि सरकार के पीछे 'टैक्स' की ताकत है और यह माना गया है कि यह चुनी हुई सरकार है, इसलिए वह टैक्स बिठायेगी और उसे टैक्स दिया जायेगा, नहीं तो कुर्की लाकर वसूल किया जायेगा। इस तरह जैसे सरकार को 'टैक्सेशन' का अधिकार मिला है, जिसके बल पर सरकार संरक्षण देती है, वैसे हमें 'वालंटरी टैक्स' चाहिए। सर्वोदय-पात्र, हमारे काम के लिए 'वालंटरी टैक्स' है। हिन्दुस्तान में सात करोड़ परिवार हैं। उनमें से एक करोड़ परिवार से आप इस प्रकार का 'वालंटरी टैक्स' हासिल करेंगे, तो बहुत बड़ा काम होगा। फिर आप हिन्दुस्तान में एक ऐसी शक्ति पैदा करेंगे, जैसी शक्ति दुनिया में कहीं नहीं पैदा हुई थी। एक करोड़ लोग एक मुट्ठी अनाज का अनुदान देने के बाद ही खायेंगे ऐसा बनेगा, तो आपके काम में ऐसी ताकत आयेगी, जो आज तक कहीं भी कभी भी नहीं आयी था। दुनिया में इस प्रकार का व्यापक आयोजन करने की ताकत या तो सरकार के क्षेत्र में है या व्यापारियों के क्षेत्र में है। दो क्षेत्रों के अलावा ऐसी व्यापक रचना का नमूना हम पेश करते हैं, तो देश में जिस किसी पार्टी का राज हो, वह राज आपके कब्जे में रहेगा चाहे हाथ में रहे न रहे क्योंकि कोई भी पार्टी इतने बड़े 'सपोर्ट' का दावा नहीं करेगी, जितना 'सपोर्ट' आपको हासिल होगा। आपको हर रोज दान दिया जायगा और पार्टियाँ तो पाँच साल में एक दफा लोगों से वोट माँगती हैं। अगर आप रोज दान देने का यह विचार हिन्दुस्तान में दृढ़ कर सकते हैं, तो आपको राज्य हाथ में लेने की तकलीफ उठाने की जरूरत नहीं रहेगी। राज्य आपके कब्जे में आयेगा।

बिना लालच और दंड के अच्छी क्रिया हो

आज भाई खेर (असेम्बली के स्पीकर) हम से कह रहे थे कि हम समाजवाद की जगह सर्वोदय का नाम ही क्यों न लें? समाजवाद के तरह-तरह के अर्थ होते हैं, इसलिए 'सर्वोदय' शब्द ही बेहतर है। उसकी धीरे-धीरे व्याख्या की जा सकती है। मैंने उनसे कहा कि मैं आपसे मुत्तफिक, सहमत हूँ। यदि सर्वोदय के पीछे ताकत खड़ी करेंगे तो जिस किसी पार्टी की सरकार हो, उसे सर्वोदय के निर्देश के पीछे ही चलना पड़ेगा। आज भी सर्वोदय की कुछ ताकत इसलिए है कि आपने कुछ लाख लोगों का दान, याने सम्मति हासिल की है। लेकिन आप हर रोज एक मुट्ठीवाली बात करके दिखायेंगे, तो वही काम होगा, जो धर्मों ने नित्य स्मरण से किया है। रामायण, जपुजी, बाइबिल का रोज पाठ होता है। समाज-हितकारिणी चित्तशुद्धि की क्रिया रोजमर्रा कराने की ताकत जो इन धर्म-सम्प्रदायों ने प्रकट की, वही आपको प्रकट करनी होगी। धर्मकार्य दण्ड के आधार पर नहीं किया जाता है। जपुजी पढ़ने वाला जानता है कि मैं पढूँगा तो मुझे कोई इनाम नहीं मिलने वाला है और नहीं पढ़ूँगा तो कोई सजा नहीं मिलने वाली है। वह चित्तशुद्धि के लिए पढ़ता है और सोचता है नहीं पढ़ूँगा तो मेरी अवनति होगी। अक्सर इनाम और लालच, ये दो प्रेरणाएँ दिखा कर अच्छा काम कराया जाता है। लेकिन धर्म-पंथों ने कुछ गलत काम किये, परन्तु उसके साथ-साथ एक अच्छा काम किया कि बिना दण्ड के समाज से हितकारी कार्य रोज कराया। इसी प्रकार हम समाज से बिना दण्ड और लालच के हितकारी कार्य हर रोज करायेंगे, तो बहुत बड़ी क्रान्ति कर डालेंगे। इस एक वस्तु से क्रान्ति हो जायगी। फिर आप उसका जो उपयोग करेंगे, उससे और क्रान्ति होगी।

सर्वोदय में एक ही क्रिया से भौतिक और नैतिक उन्नति

अभी भूदान-यज्ञ में एक खबर छपी है। किसी एक गाँव में सर्वोदय-पात्र में मुट्ठी भर अनाज डालने का जो आदेश था, उसके अनुसार साल भर काम हुआ और उसमें एक स्कूल चला। वैसे स्कूल चलाना मामूली बात है और सरकार भी स्कूल चला सकती है, लेकिन एक मुट्ठी अनाज जिस श्रद्धा से डाला गया, उस श्रद्धा से बहुत बड़ा स्कूल चलेगा—यह एक बहुत अच्छा काम हुआ। उस सर्वोदय-पात्र का पचास सर्व-सेवा-संघ को देना चाहिए और बाकी गाँव में खर्च किया जाय, तो अच्छा ही है। इस तरह के कितने ही काम हम कर सकते हैं। ऐच्छिक प्रयत्न से जो कार्य होता है, वह चाहे बाहर से भौतिक उन्नति का कार्य दीख पड़े, तो भी आध्यात्मिक उन्नति का कार्य है। आपने ऐच्छिक प्रयत्न से स्कूल चलाया, तो एक आध्यात्मिक कार्य हुआ। नारायणी शक्ति प्रकट की। वैसे तो आपने भौतिक काम किया, यह बाहर से दीखेगा। जिस भौतिक काम के लिए दुनिया में तरह-तरह की क्रान्तियाँ हुईं, वह भौतिक काम आपने अपने ढंग से किया, जिससे उसी काम से नैतिक उन्नति भी हुई, तो बहुत बड़ा काम किया। इस

अगर जिस काम में भौतिक और नैतिक उन्नति हो दोनों क्रियाएँ जुड़ जाती हैं, वह सर्वोदय का काम है। सर्वोदय की यही पहचान है कि उसमें एक ही कदम से भौतिक और नैतिक उन्नति होती है।

सरकारी कामों में सद्गुण-विकास नहीं होता

सरकार ने सेना बढ़ायी और देश का रक्षण किया, लेकिन हिम्मत नहीं बढ़ी, तो वह देश टिक नहीं सकता। निर्भयता को सरकार सेना नहीं दे सकती। दया भी सरकार दवाखाना नहीं दे सकता। दवाखाना एक अच्छी बात है, लेकिन दया का सद्गुण विकसित हुआ तो बहुत बड़ा काम होगा। लोगों ने दयाभाव से प्रेरित होकर दवाखाना खोला तो भौतिक काम के साथ-साथ आध्यात्मिक काम हुआ। सरकार ने दवाखाना खोला, तो कैसे खोला? उसके पास ज्यादा पैसा था और चूँकि पैसे पर टैक्स है, इसलिए सरकार को ज्यादा टैक्स मिला। फिर उसी पैसे से सरकार ने दवाखाने खोले। याने दवाखाने के लिए दया की जरूरत नहीं, पैसे की जरूरत है। इसलिए उस दवाखाने से दयावृत्ति का विकास नहीं हुआ। बाह्य वस्तु बनी, अन्तर की नहीं। जहाँ पर बाह्य काम के साथ-साथ अन्तर के गुणों का विकास होता है, वह सर्वोदय का काम है।

तब सर्वोदय होगा

अक्सर लोग मुझसे पूछते हैं कि 'को-आपरेटिव फार्मिंग' के बारे में आपकी क्या राय है? मैं कहता हूँ कि 'को-आपरेटिव फार्मिंग' एक बात है और 'को-आपरेशन' का गुण दूसरी बात। 'को-आपरेशन' का सद्गुण अत्यन्त अनिवार्य है। उस सद्गुण के साथ 'को-आपरेटिव' पद्धति भी हो, तो लाभ होगा। सद्गुण न हो और पद्धति हो तो उसमें लाभ नहीं होगा। अगर कोई समझेंगे कि जनता में 'को-आपरेशन' का गुण आये न आये तो भी 'को-आपरेटिव' की पद्धति लाने से उन्नति होगी, तो उन्हें समझना चाहिए कि उसमें उन्नति कतई नहीं होगी। जिस कदम से भौतिक उन्नति के साथ-साथ नैतिक उन्नति का काम होगा, वही सर्वोदय होगा। दान से जमीन का मसला हल होगा, कानून से नहीं, तभी सर्वोदय होगा। दवाखाना तो रूस और अमेरिका में भी कई बनते हैं, लेकिन दवाखाने के साथ-साथ दया बढ़ेगी, तो सर्वोदय होगा। अगर लोगों में हिम्मत बढ़ती है और उसके साथ-साथ फौज रखने की जरूरत पड़े तो रखी जाती है। न रखने की जरूरत हो, तो नहीं रखी जाती। तो वह सर्वोदय है। हिम्मत बढ़ने के साथ-साथ फौज बनती है, तो वह फौज सर्वोदय की है। वह फौज भी सर्वोदय करेगी। लेकिन हिम्मत न बढ़ी तो फौज क्या काम करेगी? इन दिनों लोग सरकार से कहते हैं कि सेना खूब बढ़ाओ, वही हमारी रक्षक है। इसके मानी यह है कि सेना रक्षक और हम रक्ष्य हैं। यह वीरों की भाषा नहीं, डर-पोकों की भाषा है। हम तो कहते हैं कि गाँव-गाँव का रक्षण हम करेंगे। गाँव में पूरा अनाज रखा जायेगा और कोई भी आक्रमण करने के लिए आयेगा, तो हम पराजित नहीं होंगे। इस तरह की अपराजित मनो-वृत्ति हो, तो वह सर्वोदय-मनोवृत्ति है।

मान लीजिये कि सरकार बजट बनाये और लोगों से कहे कि इतना दान दीजिये। बजट पेश करने पर लोग जो सुधार बताते हैं, उसमें सुधार कर के बजट पास होता है और फिर लोग दान देते हैं, यह होगा तब सर्वोदय होगा। यह असंभव वस्तु नहीं, निश्चय से संभव है। आपको समझना चाहिए कि हम जो भी बाहरी काम करते हैं उसके साथ सद्गुणवृद्धि हो सकती है या नहीं, उसके साथ नैतिक उन्नति होती है या नहीं?

बिना दबाव के प्रचार हो

सर्वोदय-पात्रवाला कदम इस प्रकार का कदम है कि उससे बाह्य मदद हासिल करने के साथ-साथ एक आध्यात्मिक वायु-मंडल स्थापित होगा। अगर आप इस काम को कर सकेंगे, तो कहना होगा कि आपने बहुत पराक्रम किया। आपके राष्ट्रपति ने अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखा। यह इशारा समझ कर हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा होता तो कितनी बड़ी ताकत बनती। लेकिन राष्ट्रपति के उस सर्वोदय-पात्र को हमने इशारा नहीं माना, बल्कि व्यक्तिगत पात्र ही माना। सर्वोदय तब आयेगा, जब बिना आज्ञा के आज्ञा चल रही है, बिना दबाव के प्रभाव बढ़ रहा है, ऐसा होगा।

सर्वोदय-कार्य : प्रकाश-निर्माण का कार्य

ज्ञान-मात्र से अज्ञान मिटता है। जैसे प्रकाश आने से अंधकार मिटता है—अंधकार को जोर-जबरदस्ती कर फेंक देने से वह नहीं मिटता है। प्रकाश के एक किरण से मिटता है—वैसे ही अन्तर में सच्चा ज्ञान उदित हो जाय तो एक क्षण में काम होता है जो लाख कोशिश से नहीं होता। सर्वोदय की प्रक्रिया में ज्ञान-प्रकाश फैलता है। लोग कहते हैं कि इसमें देरी होती है। लेकिन मैं कहता हूँ कि प्रकाश फैलने में देरी लगती है। 'श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः। ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥' गीता में कहा है कि श्रद्धा प्राप्त होते ही ज्ञान प्राप्त होता है, और ज्ञान प्राप्ति होने के बाद उसके फल की प्राप्ति के लिए बीच में काल की कोई जरूरत नहीं रहती। एक जमाने में प्रकाश पैदा करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती थी। काष्ठ पर काष्ठ घिस कर अग्नि पैदा की जाती थी। लेकिन अब प्रकाश पैदा करना आसान हो गया है। चाहे प्रकाश पैदा करने के लिए देरी लगे, तो भी प्रकाश पैदा होने के बाद अंधकार-निरसन के लिए एक क्षण भी नहीं लगेगा। कहा जाता है कि हमारे काम में देरी होती है, लेकिन अभी तो प्रकाश-निर्माण-कार्य हो रहा है। वह होने के बाद एक क्षण भी देर नहीं लगेगी। तुलसीदासजी ने कहा है कि "बिगरी जनम अनेक की सुधरत पल न लगे आधु"—अनेक जन्मों की बिगड़ी हुई बात हो, तो भी सुधरने में आधा पल भी नहीं लगता। यह श्रद्धा हममें होनी चाहिए कि अनेक जन्मों की बिगड़ी हुई बात हो, तो भी ज्ञान पहुँच जाये तो एक क्षण में बात सुधर जायेगी। किसी गुफा में दस हजार साल का अंधेरा है तो उसे मिटने में दो-चार साल नहीं लगते। लालटेन ले जाते हैं तो एक क्षण में प्रकाश हो जाता है। इसलिए सर्वोदय के काम में जो देरी हो रही है वह केवल मानसिक है। उसे समझने में ही देरी है। हम समझ जायें कि हमें किसी प्रकार की बाहरी मदद की कतई जरूरत नहीं है। अगर चित्त में यह बात हो कि हमारे काम में थोड़ा सा दबाव आये, तो झट काम होगा, तो हम गलत रास्ते पर जायेंगे।

सरकार के हाथ में चाहे मिलीटरी रहे, लेकिन तालीम न रहे

एक भाई ने हमसे कहा था कि हम चाहते हैं कि स्कूल के जरिये गांधी-विचार का प्रचार किया जाये तो झट प्रचार होगा। मैंने कहा कि वैसे सरकार गांधी-विचार का प्रचार करे, यह अच्छी चीज है लेकिन मुझे दुःख इसी बात का होगा कि सरकार के दबाव से अच्छा काम किया जा रहा है। गांधी-विचार किसी भी प्रकार की जबरदस्ती से नहीं लाया जा सकता। उसका स्वीकार ऐच्छिक तौर पर ही हो सकता है। कहा जाता है कि सरकार आज जो 'टेक्स्ट-बुक' बना रही है, वे अच्छी बनें तो झट काम होगा। लेकिन मैं समझता हूँ कि समाज के लिए यह बहुत खतरनाक चीज है कि सरकार के हाथ में वह सत्ता हो। चाहे मिलीटरी सरकार के हाथ में रहे, लेकिन तालीम सरकार के हाथ में रहेगी तो उससे बढ़कर खतरनाक कोई चीज नहीं है। फिर तो जिस रंग की सरकार होगी, उसी रंग की तालीम होगी। याने 'फ्री वोट' के कोई मानी ही नहीं होंगे। वैसे हिटलर भी दावा कर सकता है कि किसी भी प्रेसिडेंट से कम वोट से मैं नहीं चुना गया हूँ। लोकशाही में भी इतना दबाव आता है कि सारा समाज मेस्मराइज, मोहित होता है। प्रेसिडेंट रूजवेल्ट चार दफा चुने गये और पाँचवीं दफा इसलिए नहीं चुने गये, क्योंकि मर गये। इसलिए समझना चाहिए कि सरकार के हाथ में तालीम हो तो जैसे गांधीजी की किताब को चला कर वह दुनिया को सुधार सकती है, वैसे ही दूसरी किताब चलाकर दुनिया को बिगाड़ भी सकती है। इस तरह किसी एक व्यक्ति के हाथ में दुनिया को बनाने और बिगाड़ने की ताकत हो, यह खतरनाक बात है। इसलिए मैं कहता हूँ कि तालीम सरकार के हाथ में नहीं, ज्ञानियों के हाथ में होनी चाहिए।

भारत में तालीम कभी भी राजाश्रय में नहीं थी

हमारे देश में कभी भी तालीम पर राजसत्ता का हुक्म नहीं चलता था। यहाँ के ज्ञानी गाँव-गाँव घूमते और लोगों को ज्ञान देते थे। किसी एक जगह ज्ञान का भंडार नहीं था। लेकिन आज तो सारा ज्ञान विश्वविद्यालय में केन्द्रित हुआ है। तालीम सरकार के हाथ में है और शिक्षक नौकर की हैसियत में आ गये हैं—गुरु नहीं रहे हैं। शिक्षा भी कोई सोचे कि सरकार गांधीजी की शिक्षा चलाये, तो मैं खुश हूँगा, तो वह गलत सोचता है। किसी एक व्यक्ति के हाथ में ऐसी ताकत हो, यही गलत है। कहा जाता है कि जो अंग्रेजियत सिखाते हैं, उनका प्रभाव होना भी भयानक होता है। तालीम सरकार के हाथ में रहे तो लोक-शक्ति मन्द होगी। जहाँ लोक-शक्ति मन्द होगी, वहाँ जन-शक्ति नष्ट होगी।

एक करोड़ घरों में सर्वोदय-पात्र रखे जायें

इसलिए सर्वोदय पर बड़ी जिम्मेदारी है। आपको दिखाना होगा कि आपका ऐच्छिक प्रभाव पड़ रहा है, दबाव नहीं। सर्वोदय-पात्र के आधार पर आप यह काम कर सकेंगे। इसीलिए मैं कहता हूँ कि देश के एक करोड़ घरों में सर्वोदय-पात्र की स्थापना कीजिये। उसके साथ-साथ यह हो कि सारे शान्ति-सैनिक अपने को हुक्म-बरदार समझें। जहाँ जाने के लिए कहा जाये, वहाँ स्वेच्छा से जायें। स्वेच्छा को अंकुश में, नियमन में रखने की शक्ति जब सर्वोदय दिखायेगा, तब सर्वोदय को राज्य हाथ में लेने की जरूरत नहीं रहेगी, राज्य उसके कब्जे में आ जायेगा।

(आगरा, ७-५-'६०)

●

पवनार-आश्रम के तीन भाइयों की पदयात्रा

विनोबाजी के पवनार आश्रम वर्धा के कांचनमुक्ति के प्रयोग के तीन साथी—सर्वश्री राम म्हसकर, अजीत देसाई और मुरलीधरजी गत एक माह से मध्य प्रदेश के इन्दौर तथा निमाड़ क्षेत्र में साहित्य-प्रचार कर रहे हैं। मई में उन्होंने मध्य प्रदेश और पूर्व निमाड़ जिले में २०० मील की यात्रा की। व्यक्तिगत सम्पर्क और आम सभाओं के द्वारा विचार प्रचार किया। इस यात्रा में ३५० रु० की साहित्य-बिक्री हुई। उनका यह अनुभव रहा कि निष्ठा और लगन से यदि काम किया जाये, तो जनता सर्वोदय-विचार को स्वीकार करेगी। ●

विनोबाजी का पता

आचार्य विनोबाजी,
११२ स्नेहलता गंज
इन्दौर शहर (मध्य प्रदेश)

रोग और निदान !

पूर्णचन्द्र जैन

किसी भी राष्ट्र को यदि सर्वांगीण विकास करना है, तो जरूरत इस बात की है कि उस राष्ट्र की नागरिकता ऊँचे स्तर की हो। मगर भारत की मौजूदा नागरिकता का स्तर इतना अवैज्ञानिक और नीचा है कि अगर कोई व्यक्ति दूसरे देश की नागरिकता के साथ तुलनात्मक अध्ययन करेगा, तो इस देश की नागरिकता पर गौरवान्वित नहीं होगा। अतः नागरिकता का स्तर ऊँचा उठाने के लिए वैसी ही तालीम बने, जो कि उसके लिए प्रेरणादायी और पोषक हो, क्योंकि शिक्षा से ही संस्कार बनता है और संस्कार से ही सुधार एवं जीवन की रचना होती है।

आज की शिक्षा में बहुत सारी खामियाँ हैं, और उससे नागरिकता का स्तर हरगिज ऊँचा नहीं उठ सकता, क्योंकि इस तालीम का ध्येय कुछ और है, इसके पीछे एक लम्बा ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक कारण है। अतः इस दिशा में हमें गंभीरता के साथ सोचना चाहिए।

हमारे राष्ट्र के सामने आज एक और प्रमुख समस्या विद्यार्थियों और नौजवानों में अनुशासनहीनता की है। शायद भारत ही दुनिया में एक ऐसा देश होगा, जहाँ के विद्यार्थी और तरुण समाज अपने उसूलों का खून कर राजनैतिक नेताओं को गाली देना, गुटबंदियों में फँस कर भंडाफोड़ करना एवं राष्ट्रीय संपत्तियों को विनष्ट करना, हड़ताल करना अपने मुख्य विषय बना लेता है। आज इस मामले में समाज में चारों ओर चर्चा चल रही है। कहीं-कहीं तो स्कूल-कालेज बन्द कर दिये जा रहे हैं और विद्यार्थियों पर दोषारोपण किया जा रहा है कि विद्यार्थीगण खुद ही अनुशासनहीनता और अनीति के कारण हैं। मुझे लगता है कि यह एक एकांगी निर्णय है। आखिर ताली दोनों हाथों से बजती है। अतः विद्यार्थियों को दोष देने के पहले हमें समस्या की गहराई पर पहुँचना चाहिए। जब हम इसकी गहराई में प्रविष्ट होते हैं, तब हमें पता चलता है कि अनुशासनहीनता और अनीति का मूलाधार है वही आधुनिक शिक्षा-पद्धति, न कि विद्यार्थी-समाज। आखिर इस तालीम से विद्यार्थियों को पूरा ज्ञान नहीं मिलता है। पढ़ाई के साथ-साथ इन्हें अनुशासन, अहिंसा के बारे में शास्त्रीय ज्ञान नहीं मिलता और साथ ही साथ जीवन की शिक्षा नहीं मिलती तथा उनकी पूरी शक्तियों का, सर्वेन्द्रियों का सदुपयोग नहीं होता। इतना ही नहीं, बल्कि आज के विद्यार्थी और तरुण-समाज भौतिक विज्ञान का अंधानुसरण कर कभी-कभी ऐसा आचरण करने लगते हैं कि उनकी सभी इन्द्रियों का सर्वथा गलत उपयोग होता है। इसीलिए उन्हें शिक्षा के साथ यदि कोई उत्पादनात्मक श्रम, अहिंसा और अनुशासन एवं सर्वेन्द्रियों के उपयोग के बारे में नैतिक और आध्यात्मिक आधार पर आरंभ से ही शिक्षा दी जाय, तो भविष्य में जाकर, जब कि वे लोग बड़े बनेंगे और अपनी शिक्षण-अवधि में भी वे हमारे लिए घातक नहीं बनेंगे, और न विश्वविद्यालयों को बन्द करने का मौका ही मिलेगा। हो सकता है कि इसके लिए नया रास्ता अपनाना पड़े। मुझे लगता है कि हमें इस ओर कदम पर कदम बढ़ना है। आज हम तुरंत विश्वविद्यालयों और कालेजों को बन्द नहीं कर सकेंगे और न हम यह करना भी चाहेंगे, लेकिन हमें मंजिल तक पहुँचना भी है। अगर हम निम्नलिखित मुद्दों को कार्यान्वित कर पायेंगे तो अनुशासनहीनता का नाश आहिस्ता-आहिस्ता हो सकेगा।

समाजोपयोगी सेवाकार्य जरूरी

पढ़ाई के बाद मैट्रिक से बी० ए० एम० ए० तक की सीढ़ी में हम तय कर सकते हैं कि मैट्रिक के बाद ६ माह, बी० ए० के बाद एक साल और एम० ए० के बाद दो साल तक कड़ी मेहनत और कोई समाजोपयोगी सेवाकार्य के लिए उन्हें गाँव और कस्बों में विद्यालय की तरफ से भेजना चाहिए। जहाँ पर सामुदायिक तौर पर कार्य चलता हो—चाहे वह कारखाना भी हो सकता है और 'कलेक्टिव फार्मिंग' को भी शामिल किया जा सकता है अथवा ग्रामदानी गाँवों में जहाँ निर्माण का काम चलता है वह भी किया जा सकता है—ऐसे स्थानों पर उन्हें गहरी निष्ठा से काम करना चाहिए। यह भी होना चाहिए कि सरकार की ओर से कुछ ऐसे भी क्षेत्र रखे जायें, जहाँ नया काम करना हो, 'कालोनी' बसानी हो या 'सहकारी फार्म' बनाना हो। ऐसे क्षेत्र में भी इन्हें लिया जाये और इनके साथ समाज-सेवकगण भी रहें। सभी के सहयोग से ये विद्यार्थी-गण श्रम-प्रतिष्ठा की दीक्षा अपने जीवन में ग्रहण करें। आखिर इस अवधि के बाद वे लोग वहाँ के प्रमुख व्यक्ति से यह सिफारिशपत्र प्राप्त करें, जिसमें यह लिखा रहेगा कि सचमुच में ये विद्यार्थी-गण ईमानदार हैं, किसी भी काम को गौण नहीं समझते, मेहनत से घबराते नहीं, ईमानदारी से कड़ी-से कड़ी मेहनत करते हैं, इनमें राष्ट्रीयता की भावना ओतप्रोत है, ये विद्यार्थी-गण सच्चे मानों में इन्सानियत के सच्चे सिपाही बनने का पूरा अधिकार रखते हैं, ये लोग हमारे राष्ट्र के कार्य के उपयोग में आ सकते हैं। तभी उन्हें डिग्रियाँ प्रदान की जायें और उन्हें आगे बढ़ने का मौका दिया जाये, तो आज के समान कभी भी आइन्दा डिग्रियाँ क्रय-विक्रय की वस्तु नहीं रहेंगी; बल्कि ये डिग्रियाँ विद्यार्थियों के जीवन-विकास के लिए मापदण्ड बनेंगी और उनके व्यक्तित्व के सन्तुलित विकास में पूरक बन कर काम करेंगी। उनके चारित्र्य-निर्माण में ये आधारशिला बनेंगी।

आर्थिक संकट को टालने का तरीका

इसके साथ-साथ जब हम विद्यार्थियों के आर्थिक पहलू पर सोचते हैं, तब हमें स्पष्ट चित्र यह दिखाई देता है कि हमारे विद्यार्थियों की पढ़ाई का कुल खर्चा उनके माता-पिता और अभिभावक पर पड़ता है। नतीजा यह होता है कि विद्यार्थी-गण अपने कोर्स के दरमियान आर्थिक प्रश्न पर बिलकुल ही नहीं सोचते। वे लोग मौज उड़ाते हैं। परीक्षा का समय नजदीक आने पर जल्दबाजी करके परीक्षा के अभ्यास में लगते हैं। पास हो जाते हैं, तो ठीक, नहीं तो अगले साल देखा जायेगा, ऐसा वे मानते हैं, क्योंकि आर्थिक प्रश्न पर उन्हें कुछ सोचना नहीं है। यदि हम आर्थिक प्रश्न पर कुछ अंकुश लगा सकते हैं, तो विद्यार्थी-गण स्वभावतः रचनात्मक कार्य की तरफ बढ़ते रहेंगे। हम ऐसा निश्चित कर सकते हैं कि विद्यार्थी-गण घर से पैसा बिल्कुल ही न लायें। वे लोग अपनी पढ़ाई का कुल खर्च अपनी मेहनत से चलायें। चाहे वे इसके लिए कोई भी तरकीब अपनायें। ऐसा भी हो सकता है, क्योंकि हम जानते हैं कि दुनिया के कई देशों में नौजवान, जब विद्यार्थी-अवस्था में से गुजरते हैं, तब वे लोग अपनी मेहनत द्वारा अपनी पढ़ाई का खर्च चलाते हैं। अमेरिका के बारे में सुना गया है कि वहाँ के लड़के १६-१८ साल के बाद स्वयपूर्ण बने रहने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। पढ़ाई के दरमियान अपने खर्च की पूर्ति के लिए उनमें से अधिकांश होटल में काम करना, सड़क-निर्माण में सहयोग देना और इतर सामाजिक व राष्ट्रीय कार्य में भाग लेने का काम करते हैं। आज से ४ साल पहले जब हम भारत-यात्रा करते हुए दिल्ली में गुजर रहे थे, तब हम उस समय के भारत में स्थित अमेरिकन राजदूत श्री चेस्टर बोल्स की पत्नी से मिलने का मौका मिला था। प्रसंगवश उन्होंने सुनाया कि उनका छोटा लड़का, जब कि वे लोग भारत में हैं, तब वह अमेरिका में सड़क-निर्माण के काम द्वारा अपनी पढ़ाई का पूरा खर्च निकाल लेता था। अगर हम भारत में इस दिशा में नौजवानों को प्रेरित कर सकते हैं, तो भविष्य में श्रम-प्रतिष्ठा की बात, जो कि आज काल्पनिक मानी जा रही है, वह वास्तविक रूप ले सकेगी और पारिवारिक आर्थिक संकट को टालने का रास्ता भी निकल आयेगा।

जब-जब हम विद्यार्थियों की समस्या की गहराई में जाते हैं, तब तब हमें यह दर्शन होता है कि आज की परिस्थिति के मूलभूत कारणों में से एक कारण यह है कि शिक्षक और विद्यार्थी में समझौते की कमी और आपस में मेल नहीं है एवं भारत के विद्यार्थी-समाज वैज्ञानिक रूप से एकरूप नहीं है। इस भेद को पाटने का रास्ता एक ही हो सकता है कि हम एक अखिल भारतीय स्तर पर "स्टूडेन्ट एण्ड यूथ फेलोशिप" की स्थापना करें और वर्ष में दो बार भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में सम्मिलित होकर आपसी समस्या पर चर्चा करें, परस्पर को समझें, परस्पर को निभाने की जिम्मेवारी उठायें और आने वाले शिक्षा-जगत् की हर परिस्थिति का सामना शांति से अहिंसक और मानवीय मूल्यों के आधार पर उसके लिए रास्ता ढूँढ़ें। इस तरह फेलोशिप के जरिए अनुशासनहीनता से निराकरण का रास्ता ढूँढ़ा जा सकता है एवं विद्यार्थियों के अवकाश के समय का सदुपयोग इस 'फेलोशिप' के जरिए किया जा सकता है। 'फेलोशिप' का मुख्य उद्देश्य यह होगा कि भिन्न-भिन्न जगत् को एकरूप बनाने के लिए जो वैज्ञानिक ज्ञान की आवश्यकता है, उसे हासिल करने के लिए उस तरकीब को ढूँढ़ना। इस 'फेलोशिप' की सदस्यता भारत के हर कालेज और विश्वविद्यालयों एवं शांति-निकेतन, सेवाग्राम, साबरमती आदि संस्थाओं को भी प्राप्त रहेगी। हर स्थान से दो-दो प्रतिनिधि चुने जायें और इस फेलोशिप के द्वारा ही हम धीरे-धीरे विश्वशान्ति की स्थापना में सफलता पा सकेंगे।

सभी राजनैतिक पक्षों के नेताओं द्वारा विद्यार्थियों का किसी भी कार्य के लिए, चाहे वह चुनाव का हो अथवा पार्टी के विचार-प्रचार का कार्य हो, उपयोग बिलकुल ही नहीं होना चाहिए। आज हमें इस पर दुःख है कि जब कभी राजनैतिक कारणों को लेकर सरकार के विरोध में या और दूसरे कारणों को लेकर कहीं भी हड़ताल आदि का काम करना होता है, तो उसमें हमारे राजनैतिक पक्ष के नेतागण विद्यार्थियों द्वारा कराते हैं, दंगों और हड़तालों आदि में विद्यार्थियों को अगुआ बनाते हैं। अंतिम परिणाम यह होता है कि वे लोग नशे में

बनकर पुलिसों से लड़ते हैं, झगड़ते हैं और गोली का शिकार बन कर मरते हैं। राष्ट्रीय संपत्तियों को नष्ट करते हैं। मैं तो मानता हूँ कि हमारे ये नौजवान भारत के लिए अनमोल संपत्ति हैं। इनको इस तरह नष्ट होने देना किसी के लिए भी उचित नहीं होगा। आखिर आज के नौजवान कल के लिए कार्यकर्ता और देश को सँभालने वाले बनते हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि इसकी रोक-थाम के लिए आपका ही प्रभाव सभी पर पड़ सकता है। आपको इस मामले पर जबरदस्त कदम उठाना चाहिए। विद्यार्थियों को भी पागल सरीखे बन कर काम नहीं करना चाहिए। हमारे पास इतिहास पड़ा है, एक तरफ बापू हैं और सामने यह बीसवीं सदी पड़ी है। तो हम सभी नौजवानों का कर्तव्य है कि इन सभी का अध्ययन गंभीरता के साथ करें, इन सभी के सार-तत्त्व को जीवन में ग्रहण कर एक नयी दिशा में मोड़ लें और हम नये इतिहास की रचना में अपना-अपना पाठ अदा करें। साथ ही साथ हम सभी को सतत यह याद रखना आवश्यक है कि हम कौन हैं, हम क्यों बने हैं? हमें जाना कहाँ है और हम जा कहाँ रहे हैं?

शिक्षक चरित्रवान बनें

अनुशासनहीनता के निराकरण के लिए जैसा कि हमने विद्यार्थियों के बारे में सोचा है वैसा ही यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को पढ़ाने वाले शिक्षकगण, जो कि मनुष्य निर्माण-कार्य में बहुत बड़ा 'पार्ट' अदा करते हैं, उन्हें भी अत्यन्त आदर्शवादी और त्यागवादी बने रहना चाहिए। आज हमारी यही कमी कई शिक्षकों में दिखाई देती है, अगर हमारे शिक्षक नैतिक और चारित्र्य में ऊँचे होते, अगर उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली और विशाल होता, तो उनका प्रभाव अपने विद्यार्थियों पर हमेशा रहता। इसीलिए विद्यार्थियों को सुधारने के साथ-साथ, उनके लिए नया रास्ता ढूंढ़ने के साथ यह भी आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में चरित्रवान शिक्षकों को प्रवेश किया जाये और इनका एक नया संगठन ही हो। इसके साथ अनुशासन-हीनता के कारणों की खोज के लिए एक 'इन्क्वायरी कमेटी' बनायी जाये, जिसमें उन लोगों को रखा, जो कि दलबन्दी से मुक्त हों, राष्ट्र और शिक्षा से प्रेम करने वाले हों और जिनका प्रभाव विद्यार्थी से लेकर शिक्षक, उच्च अधिकारियों पर व्यापक तौर से पड़े। वे लोग मूल कारणों की खोज करें और उसे देश के सामने रखें। इसके पश्चात् एक निर्माण-कमेटी बनायी जाये, जो शिक्षा में सुधार कर नयी पद्धति को लाने में सहायक होने की तैयारी करें। इसके लिए [illegible] लोगों को लिया जाये। अन्त में विनोबाजी के समान एक अखिल भारतीय स्तर का एक शिक्षा-सम्मेलन बुलाया जाये, जिसमें पूरे हुए भारत के प्रमुख शिक्षा-

गया जिले में श्री जयप्रकाशजी की यात्रा

गया जिले के सदर और नवादा सबडिवीजन के क्षेत्र में शासन-मुक्त समाज-रचना का एक व्यावहारिक रूप प्रकट करने के हेतु आवश्यक वातावरण निर्माण करने के लिए श्री जयप्रकाश नारायण की पद-यात्रा गत १८ मई को शुरू हुई और ७ जून को समाप्त हुई। २९ मई तक के प्राप्त विवरणानुसार इस अवधि में श्री जयप्रकाशजी ने लगभग १५० मील की यात्रा की और १२ पड़ावों से गुजरे। हर पड़ाव पर क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं की बैठक तथा सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ। इस प्रकार कुल १२ बैठकें और १२ सभाएँ हुईं, जिनके द्वारा करीब ५०० गाँवों को शासन-मुक्त समाज के विचार समझाये गये।

प्रत्येक पड़ाव पर कार्यकर्ताओं की बैठक में संबद्ध क्षेत्र के सर्वोदय-खादी-कार्यकर्ताओं के अलावा विभिन्न राजनीतिक पक्षों के प्रतिनिधि, ग्राम-पंचायतों के मुखिया, विद्यालयों के शिक्षक, सामुदायिक विकास-विभाग के पदाधिकारी तथा अन्य लोग सम्मिलित हुए। सार्वजनिक सभाओं में निकटवर्ती गाँवों के हजारों लोग हर पड़ाव पर आये। दो स्थानों पर ग्रामीण महिलाओं की सभाएँ भी हुईं।

सभी बैठकों और सभाओं में श्री जयप्रकाशजी ने शासन-मुक्त समाज-रचना की दिशा में गया-जिला सर्वोदय-सम्मेलन द्वारा स्वीकृत पंचविध कार्यक्रम पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला, जो इस प्रकार है (१) प्रत्येक घर में सर्वोदय पात्र और प्रत्येक गाँव में सर्वोदय मित्र-मंडल की स्थापना करना, (२) प्रत्येक गाँव में अशान्ति का निवारण और शान्ति की स्थापना करना तथा गाँव के लोगों को यह एहसास कराना कि गाँव की शांति-सुरक्षा की जिम्मेवारी उनकी है, (३) गाँव का कोई झगड़ा अदालत में न आये और उसका निपटारा गाँव में ही हो, ऐसी स्थिति का निर्माण करना, (४) प्रत्येक गाँव-पंचायत का चुनाव निर्विरोध या सर्वसम्मति से हो, इसके लिए आवश्यक वातावरण का निर्माण करना और (५) गाँव में कोई भूखा न रहे, कोई बेकार न रहे, ऐसी व्यवस्था के लिए गाँव-समाज को तैयार करना।

इस पंचविध कार्यक्रम की कार्यान्विति के लिए गया जिले के दो सबडिविजन (सदर और नवादा), जिनमें कुल २४ थाने और करीब ४००० गाँव हैं, प्रयोग-क्षेत्र के रूप में चुने गये हैं। श्री जयप्रकाशजी की वर्तमान यात्रा से लगभग १००० गाँवों के लोगों तक शासन-मुक्त समाज का संदेश पहुँच सकेगा, ऐसी आशा है।

यह स्मरणीय है कि उपर्युक्त पंचविध कार्यक्रम के लिए चुने गये प्रयोग-क्षेत्र के हिस्सा में सर्वोदय के काम पिछले कई वर्षों से चल रहे हैं। श्री जयप्रकाशजी का सोखोदेवरा-आश्रम और ग्राम-निर्माण मंडल तथा समन्वय-आश्रम, बोधगया इसी क्षेत्र में है। पिछले वर्ष से इसी क्षेत्र के वारसलीगंज थाने के अन्तर्गत ग्राम-स्वावलंबन का सघन काम ४०० गाँवों के बीच चल रहा है। इस क्षेत्र में सामुदायिक विकास-योजना के मातहत अनेक प्रखंड भी हैं जहाँ सामुदायिक विकास के काम सरकार की ओर से चल रहे हैं।

पिछले ४२ दिनों की यात्रा में श्री जयप्रकाशजी इन थानों से गुजरे हैं—नवादा, वारसलीगंज, कौआकोल, पकरी, बरावाँ, रजौली, हिसुआ और फतहपुर। यात्रा के दौरान में श्री जयप्रकाशजी के

●

आह्वान पर अभी तक लगभग ३५० 'सर्वोदय-मित्र' और 'भूदान-यज्ञ' के अनेक ग्राहक बने हैं।

यात्रा के अनुभव

हर पड़ाव पर कार्यकर्ताओं की बैठकों में हुई चर्चाओं से यह प्रकट हुआ कि सर्वोदय और खादी-कार्यकर्ताओं के अलावा अन्य सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के जो कार्यकर्ता हैं, उनमें सर्वोदय-विचार के प्रति आस्था है और वे इसको मूर्त रूप देने के लिए उत्सुक हैं। राजनीतिक पक्षों में आम तौर पर हर जगह कांग्रेस तथा प्रजा-समाजवादी पक्षों के कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त हुआ। कहीं-कहीं कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं का भी सहयोग मिला। कुछ स्थानों पर कुछ कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं ने सर्वोदय-विचार का मखौल उड़ाने तथा जे० पी० की सभा में अशांति पैदा करने की कोशिश की।

सार्वजनिक सभाओं में हर जगह हजारों की संख्या में लोग इकट्ठे हुए और उन्होंने धैर्यपूर्वक श्री जयप्रकाशजी के विचारों को घंटों बैठ कर सुना। जहाँ-जहाँ सर्वोदय-मित्र बनने के लिए जे० पी० ने लोगों का आह्वान किया, वहाँ सैकड़ों की संख्या में लोग सर्वोदय-मित्र बनने के लिए उमड़ पड़े।

हर पड़ाव पर जे० पी० ने अपने भाषण में ग्राम-पंचायत के निर्विरोध चुनाव पर जोर डाला। अन्तिम तीन पड़ावों की पंचायतों के चुनाव अभी तक नहीं हुए थे, इसीलिए वहाँ जे० पी० की राय से निर्विरोध चुनाव कराने की खास कोशिश की गयी। पड़ाव (महिया–थाना वजीरगंज) पर स्थानीय पंचायत के दो परस्पर-विरोधी गुटों के नेता, अपने पुराने मतभेदों को भुलाकर निर्विरोध चुनाव के लिए तैयार हुए और दोनों ने जे० पी० की सभा में सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की कि वे अपनी पंचायत का निर्विरोध चुनाव कराने के लिए हार्दिक प्रयास करेंगे। इसके बाद के दो पड़ावों पर भी निर्विरोध चुनाव कराने की कोशिश हुई, जिसके फलस्वरूप एक अनुकूल वातावरण का निर्माण हुआ है। आशा की जाती है कि अगर कार्यकर्ताओं की ओर से प्रयास जारी रहा तो उपर्युक्त तीन स्थानों की पंचायतों का चुनाव निर्विरोध हो सकेगा।

श्री जयप्रकाशजी के साथ उनकी पत्नी श्रीमती प्रभावतीजी के अलावा बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद और गया जिला सर्वोदय मंडल के संयोजक तथा जिले के अनेक प्रमुख कार्यकर्ता यात्रा कर रहे हैं।

●

'चित-चकमक लागे नहीं'

"उत्तर प्रदेश और बिहार की गर्मी में यहाँ रहना ही स्वयमेव तपस्या है।"—एक बुजुर्ग ने विनोद में कहा था। गया जिले की दाहक धूप में गाँव के स्कूल के बरामदे में सौ-दो सौ ग्रामीण कार्यकर्ताओं के बीच जयप्रकाशजी बोल रहे थे—'विनोबाजी बार-बार गया जिले का जिक्र करके कहते हैं कि 'हमने यहाँ एक शक्ति देखी थी। यहाँ पर बुद्ध भगवान ने तपस्या करके एक तत्त्व की खोज की थी, उस गया जिले के एक-एक कण में आध्यात्मिक शक्ति छिपी हुई है। हमारे सामने जो हवा है, उसमें कितने गीत गाये जा रहे हैं, भाषण हो रहे हैं, जो "वैसे तो सुनाई नहीं देते हैं। लेकिन अपने पास रेडियो हो तो सुनाई देंगे। वैसे ही ढाई हजार साल पहले दिये गये बुद्ध भगवान के मंगल उपदेश इस हवा में नहीं हैं, ऐसा विज्ञान नहीं कह सकता।"

पन्द्रह दिन पहले ही 'वैशाखी पूर्णिमा' आयी थी। पौने तीन हजार साल बीत चुके हैं, लेकिन ये ही दिन थे, जब कि बोधिवृक्ष की छाया को छोड़कर, इसी भूमि में 'बुद्ध' बने हुए राजकुमार सिद्धार्थ, इसी भूमि को पावन बनाते हुए सारनाथ की ओर बढ़ रहे थे। हृदयाकाश में उनकी करुणा-वाणी सुनाई देने लगी। श्रद्धा के कानों में उस वाणी को पकड़ने की शक्ति होती है।

जयप्रकाशजी को गया जिले की तीन सप्ताह की यात्रा में एक दिन के लिए शरीक होने का अवसर मुझे अकस्मात् प्राप्त हुआ था। मैंने देखा कि जनता उनसे ज्ञानदान ले रही थी और उन्हें श्रद्धादान दे रही थी। उन्होंने एक साथी से कहा कि इस यात्रा से मुझमें विश्वास पैदा हुआ कि बाबा की अपेक्षाओं को पूरा करने की ताकत इस क्षेत्र में है।

आन्दोलन की गति पर संदेह करने वालों को जयप्रकाशजी ने भाषण में कहा 'अक्सर लोग कहते हैं कि भूदान का आन्दोलन खत्म हुआ सा लगता है। लेकिन सर्वोदय का काम विनोबाजी की यात्रा के दिनों में जितना होता था, उसके मुकाबले आज बहुत ही ज्यादा होता है। सारे बिहार में करीब तीन लाख एकड़ जमीन बँट चुकी है और इधर हमारे बिहार के मित्रों ने कहा कि सरकार कानून बनायेगी, तो एक लाख एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं मिलेगी। 'कानून से क्यों नहीं कर सकते' यह सवाल करने वालों के लिए इससे बेहतर जवाब और क्या होगा? लेकिन हाँ, सन् ५३-५४ में गया में तूफानी काम हुआ था। जिले के ६००० गाँवों में से ५३०० गाँवों से जमीन मिली।"

फतेहपुर थाने का (जहाँ पर पड़ाव था) इलाका जिला-प्रतिनिधि श्री दिवाकर बाबू ने सुनाया। उस एक थाने में १०,५५६ एकड़ जमीन प्राप्त हुई थी, जिसमें से बहुत सारी बँट चुकी है। थाने के अधिकतर गाँवों में भूमिहीनता मिट चुकी है। कई गाँवों में सब भूमिहीनों को जमीन देने के बाद बची हुई जमीन पाँच एकड़ से कम भूमिवाले छोटे किसानों को भी दी गयी। भूमिहीनों को जमीन के साथ बैल, बीज आदि साधन भी दिये गये। लेकिन थाने भर में एक भी पूरा समय देनेवाला कार्यकर्ता नहीं था।

जहाँ कार्यकर्ताओं की कमी है, उन गाँवों में जयप्रकाशजी 'सर्वोदय-मित्रों' की माँग करते थे। घर का काम करते हुए सर्वोदय के लिए समयदान देनेवाले को 'सर्वोदय मित्र' कहा जाता है। प्रतिदिन सुबह १० बजे कार्यकर्ता तथा प्रमुख ग्रामीणों की सभा में इस माँग पर पचासों भाई 'सर्वोदय-मित्र' बन जाते। फतेहपुर की सभा में तीस गाँव से आये हुए भाइयों में से बहुतों ने 'सर्वोदय-मित्र' की सूची में अपना नाम दर्ज कराया।

दोपहर में निकट के तीन-चार गाँवों के प्रमुख व्यक्ति जयप्रकाशजी के पास पहुँचे। उन गाँवों में चुनाव होने वाले थे, जो निर्विरोध हों, ऐसी कोशिश की जा रही थी। जयप्रकाशजी ने दो घंटों तक उनसे चर्चा की। सभी उम्मीदवार चिट्ठी डालने के लिए राजी हो गये, लेकिन उनमें से एक हिचकिचाने लगा, "मेरे अनुयायी क्या कहेंगे।" मामला रुका रहा। जयप्रकाशजी ने कहा, मैं नहीं चाहता कि मेरे कहने पर आप कुछ काम करें। यदि आप गाँव की भलाई चाहते हैं, तो इस सुझाव पर विचार करके फैसला कीजियेगा।"

आम सभा का समय हो चुका था। थाने भर के गाँवों से हजारों की तादाद में दूर दूर से आयी हुई जनता इन्तजार कर रही थी। सभा के आरंभ में बिहार सरकार की तरफ से आदाताओं को साधनदान के तौर पर दिया जाने वाला रुपया बाँटने का कार्यक्रम हुआ। आज तक जिनकी तरफ किसी का ध्यान नहीं गया था, उन पीड़ित उपेक्षित भूमिहीनों का सम्मान किया जा रहा था।

जयप्रकाशजी ने अपने भाषण में जनशक्ति का आवाहन किया। उन्होंने जनता को याद दिलाया कि हिरन जानता नहीं कि उसके पास कस्तूरी पड़ी है, शक्ति का केन्द्र देहली या पटना नहीं, गाँववाले स्वयं हैं, जिनके पास दिल हैं, दिमाग हैं, हाथ हैं। सूर्यास्त हो चुका था। दूर से आये हुये कुछ भाई उठ खड़े हुए। लेकिन अधिकांश बैठे ही रहे—अंधेरे में एक गैस की धीमी-सी रोशनी में सभा चल रही थी। वक्ता और श्रोता एक-दूसरे के चेहरे देख नहीं पा रहे थे। लेकिन वाणी बोल रही थी, कान सुन रहे थे। मुझे सन् ५३-५४ की विनोबा-यात्रा का स्मरण हुआ। वही भूमि, वही दृश्य, वही वाणी!

आसमान से अव्यक्त आवाज सुनाई दे रही थी, "पावकमी साईं। सब घट रह्या समाई। चित-चकमक लागे नहीं। ताते बुझि-बुझि जाई।"

[अग्नि के रूप में भगवान सबके हृदय में रहता है। लेकिन चित्त की एकाग्रता की चकमक के अभाव में वह बुझ जाती है।]

—निर्मला देशपांडे

•

कर्नाटक की अखंड पदयात्रा

कर्नाटक से विदा होते समय विनोबाजी ने मुझे और श्री अरेयरजी को कर्नाटक की अखंड पदयात्रा करने की सलाह दी और हम लोग अभी-अभी कर्नाटक की दूसरी पदयात्रा समाप्त कर तीसरी पदयात्रा की तैयारी कर रहे हैं।

विनोबाजी ने अपने एक पत्र में लिखा है : "मैं तुम लोगों को कहना चाहता हूँ कि उसका (पदयात्रा का) मेरे मन पर भी अच्छा असर पड़ा और मेरे दिल में संतोष रहा। इतना ही नहीं, मैंने यहाँ हमारे भाइयों से बात करते समय कई दफा कहा कि मैंने जब से कर्नाटक छोड़ा, तब अगर कोई सर्वोत्तम कार्य वहाँ हुआ है, तो वह कुट्टी और अरेयर की पदयात्रा।" आगे विनोबाजी ने हमें आशीर्वाद दिया कि "प्रभु आप लोगों का नैतिक बल बढ़ाये। आपका शरीर स्वस्थ रहे और जो अनुभव शंकर, रामानुज, नामदेव, कबीर, नानक और चैतन्य को हुए, उनकी झांकी परमेश्वर कृपा से आपको हो।"

अब तक की दो पदयात्राओं में हम लोग करीब ५००० मील चले हैं, ५०० एकड़ भूमि का वितरण हमने किया है। करीब १५००० रुपये की साहित्य-बिक्री हुई है और भूदान (कन्नड़) साप्ताहिक के ३५० ग्राहक बनाये। इसके पहले की दो पदयात्राओं में हम लोगों को तरह-तरह के अनुभव आये और लाभप्रद रहे। अतः अब हम लोग पहले से ज्यादा उत्साह से तीसरी पदयात्रा करने की तैयारी कर रहे हैं। और भी पदयात्राएँ हो सकती हैं। जैसा कि विनोबाजी ने हमें लिखा है, वह हम लोगों को बिलकुल ठीक लगता है। वे लिखते हैं

"सारा प्रदेश हमारे लिए भगवान का मंदिर है। उसकी प्रदक्षिणाएँ हम भक्त-जन कर रहे हैं। यह भक्तिभाव परमेश्वर को वश ही कर लेगा, इसमें कोई शंका नहीं। कर्नाटक की दो पदयात्राएँ तुम लोगों ने पूरी कर लीं और तीसरी की तैयारी कर रहे हो। हमारी भारत की एक यात्रा पूरी हो गयी। अब दूसरी शुरू हो रही है। देखें, कितनी प्रदक्षिणाएँ भगवान हम से कराता है।"

—कुट्टी

•

पूर्व खानदेश का दाता-आदाता संमेलन

महाराष्ट्र के पूर्व खानदेश जिले में नगरदेवला गाँव में जिले के दाता आदाताओं का एक सम्मेलन मई में हुआ, जिसके लिए १४८ दाता तथा आदाता उपस्थित थे, जिनमें से कई भाई पैदल आये थे। उन्हीं में से आध्यात्मिक वृत्ति वाले एक भाई को सभापति मनोनीत किया गया। जिला-प्रतिनिधि श्री नन्दलाल काबरा ने सबको आह्वान करते हुए कहा कि दाता तथा आदाता दोनों क्रांति के सन्देशवाहक बनें। सम्मेलन के लिए श्री बंग तथा सुमन बंग और उत्तर प्रदेश के श्री प्रेमभाई विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

आदाताओं ने अपना परिचय देते हुए जमीन के बारे में जानकारी भी दी। उनको भूदान में जो जमीन मिली थी, उसमें उन्होंने इस तरह मेहनत करके फसल पैदा की थी, उसका वृत्तान्त स्फूर्तिदायी रहा। उन्होंने अपनी दिक्कतें भी सबके सामने रखीं। बैल तथा अच्छे बीज की समस्या उनकी एक बड़ी समस्या थी। कुछ आदाताओं ने मेहनत करके कुएँ खोदने का प्रयास किया था। लेकिन अन्य मदद के अभाव में वह सफल न हो सका। कुछ आदाताओं ने यह भी कहा कि भूदान के द्वारा प्राप्त जमीन के वह मालिक नहीं बन सकते थे, इसीलिए उन्हें सरकारी सहायता नहीं मिली। दाताओं ने अपने-अपने विचार रखे। उनमें से कुछ भाइयों ने कहा कि हमने भूदान का मूल उद्देश्य स्वामित्व विसर्जन समझे बिना ही हमने दान दिया था। इसीलिए खराब जमीन भी दी थी, लेकिन अब हम विचार को समझ रहे हैं। हम लोगों में उदारता की कमी है, लेकिन त्याग करने से ही हमारा भला होगा। एक दाता ने कहा कि आदाताओं की साधनदान आदि की सहायता करना तथा अनाज की पैदावार बढ़ाने में उनसे सहयोग करना दाताओं का कर्तव्य है। वितरण की समस्याओं को हल करने की दृष्टि से सम्मेलन ने एक प्रस्ताव सर्वानुमति से स्वीकृत किया। यह सम्मेलन सफल रहा, जिसके कारण सबको प्रेरणा तथा उत्साह मिला।

•

बाँसवाड़ा जिले के काम की मासिक रिपोर्ट

ता० १५ अप्रैल से ता० १५ मई के अर्से में राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले में करीब २४०० बीघा जमीन का वितरण हुआ। इस सिलसिले में कार्यकर्ताओं का करीब १४ गाँवों से सम्पर्क हुआ। गाँवों में आम सभाओं के अलावा अम्बर-शिक्षण, सघन क्षेत्र-योजना आदि से सम्बद्ध सभाएँ भी की गयीं। कार्यकर्ताओं, छात्र, राजकर्मचारियों आदि की भी कुछ सभाएँ की गयीं। कार्यकर्ताओं की कताई भी नियमित जारी रही।

•

पाकिस्तान में विनोबा की जरूरत

[पाकिस्तान के सबसे अधिक लोकप्रिय उर्दू दैनिक "अंजाम" में विनोबाजी की डाकू-क्षेत्र के काम की सफलता पर लिखे गये अग्रलेख का हिंदी अनुवाद नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है। इस अग्रलेख को देहली के "दावत" पत्र ने भी प्रकाशित किया था। —संपादक]

आजादी के बाद से हिन्दुस्तान के कई सूबों, खासकर उत्तर प्रदेश, पूर्वी पंजाब, मध्यप्रदेश और राजस्थान में सशस्त्र डाकुओं का जोर इस कदर बढ़ गया कि भारतीय फौज और पुलिस वर्षों के अथाह संघर्ष और कई करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद उन्हें परास्त न कर सकी। खुले मुकाबले में अगर रूपा, मानसिंह और बशीर जैसे खूंखार डाकू मारे भी गये, तो उनकी जगह लेने वालों ने, जिनमें बेगम बशीर और पुतली भी शामिल थी, केवल यही नहीं कि कत्ल और लूट-मार का सिलसिला जारी रखा, बल्कि सरकार की फौज और पुलिस को भी अधिक तीव्रता और शक्ति से चैलेंज किया। अत्याचार और हिंसा की वह बहुतायत और उसके मुकाबले में शान्ति और कानून के रक्षकों की दुर्बलता आचार्य विनोबा भावे बर्दाश्त न कर सके। फलस्वरूप उन्होंने नैतिकता और रूहानी ताकत से हिन्दुस्तान को खौफनाक डाकुओं की मुसीबत से मुक्ति दिलाने का फैसला कर लिया। उन्होंने सरकार से सिर्फ इतनी मदद मांगी कि वह उनकी और डाकुओं की मुलाकात में रुकावट न बने। उसके बाद उन्होंने मशहूर डाकुओं के अड्डों का पता लगाया और उनसे संपर्क कायम किया। खतरनाक स्थानों और घने जंगलों में लम्बी यात्राएँ कीं। जान की परवाह न करके खून के प्यासे डाकुओं से अकेले मिले। उन्हें समझाया-बुझाया, ईश्वर के भय से डराया और अत्याचार से बाज आने का प्रवचन दिया। नतीजा यह हुआ कि अनेकों खौफनाक डाकुओं ने, जिन्हें हिंद-सरकार की फौज और पुलिस परास्त न कर सकी थी, आचार्य विनोबा भावे के प्रवचन से प्रभावित होकर गुनाहों से तोबा की और उनके माध्यम से अपने-आपको किसी शर्त के बगैर हुकूमत के सुपुर्द कर दिया।

विनोबा ने अखलाकी ताकत को जगाया

हिन्दुस्तान के फकीर मनुष्य बुजुर्ग आचार्य विनोबा भावे की इस काबिले तारीफ खिदमते खल्क (जनसेवा) में हमारे उलमा व मशायख (पण्डित और सूफी) के लिए सीखने लायक सबक निहित है। इस सचाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में जनता की बहुसंख्या को मजहब और रूहानियत से दिली लगाव है। अगर सिर्फ वर्तमान शताब्दी के इतिहास पर नजर डाली जाये, तो साबित होगा कि यहाँ मजहब के नाम पर बहुत से जबरदस्त आन्दोलन निर्माण हो चुके हैं, और बहुत से आश्चर्यजनक कारनामे अन्जाम दिये जा चुके हैं। आचार्य विनोबा भावे ने मजहब और रूहानियत को निजी स्वार्थ और सत्ता-प्राप्ति का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि उसे खुदा के बन्दों की निष्काम सेवा के लिए प्रभावशाली हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया और उसके फल हमारे सामने हैं। हिन्दुस्तान की जमींदारियाँ खत्म की जा चुकी हैं, लेकिन अब भी बहुत से पुराने बड़े-बड़े जमींदारों के पास हजारों एकड़ फालतू जमीन है। अगर उन्हें दबाव डाल कर जमीन का कुछ हिस्सा छोड़ने पर मजबूर किया जाता, तो अवश्य दिलों में कटुता बढ़ती और गरीब काश्तकारों को कोई फायदा न पहुँचता। लेकिन आचार्यजी के नैतिक अभियान का असर यह हुआ कि गरीबों और अमीरों के बीच कोई कटुता भी पैदा न हुई और सरकार के दबाव या किसी राजनैतिक 'एजीटेशन' के बगैर गरीब किसानों को कई लाख एकड़ जमीन मिल गयी। इसी तरह विनोबा भावे ने अखलाक व मजहब की ताकत से हिन्दुस्तान को डाकुओं के अजाब (अत्याचार) से चन्द हफ्तों में नजात (मुक्ति) दिला दी, सरकार की आसुरी शक्ति खाल्सा-राज को कोशिशों के बाद नीचा न दिखा सकी थी।

पाकिस्तान में आज भी अनैतिकता है!

इस किस्म के सवाल पैदा होते हैं कि क्या पाकिस्तान की धरती नैतिक जुल्म और बिगाड़ से बिल्कुल पाक हो चुकी है? क्या यहाँ नैतिकता और मजहब की ताकत निष्फल हो चुकी है? क्या पाकिस्तान में आलिम और सूफी नहीं हैं?

सवालों का जवाब बिल्कुल साफ है। शान्तिमय क्रान्ति के बाद हमारी सरकार ने हमारे राष्ट्रीय समाज को बुराइयों से पाक करने की जबरदस्त कोशिश जरूर की और बहुत-सी बुराइयों के दूर करने में उसे कामयाबी भी हुई, लेकिन ईमानदारी के साथ अभी यह नहीं कहा जा सकता है कि पाकिस्तान नैतिक गुनाहों और बुराइयों से बिल्कुल पाक हो चुका है और उसके ८ करोड़ बाशिन्दे फरिश्ते बन गये हैं। यहाँ पहिले के मुकाबले कम सही, 'स्मगलिंग' भी होती है, 'ब्लैक मार्केट' का व्यापार भी कायम है, रिश्वत का सिलसिला भी जारी है, खाने-पीने की चीजों में मिलावट भी की जाती है, जुआ और वेश्याओं के अड्डे भी कायम हैं। जरा-जरा-सी बात पर चाकू भी चलते हैं, लाठियाँ भी लहराती हैं, खून-खराबी भी होती है, डाके भी पड़ते हैं! बेगुनाह लड़के और लड़कियाँ भगायी भी जाती हैं और बेबस औरतों का सतीत्व भी लूटा जाता है। गरज कि बहुत-सी वह बुराइयाँ पायी जाती हैं, जो हिन्दुस्तान में भी हैं और जिन्हें कोई भी सरकार अपनी जनता के पूर्ण सहयोग के बिना जड़-मूल से खत्म नहीं कर सकती।

विनोबा सच्चे मुसलमान हैं

ईश्वर की कृपा से पाकिस्तान में मजहब और नैतिकता की शक्ति भी दुर्बल नहीं है। पाकिस्तान मजहब के नाम पर हासिल किया गया है और यहाँ मजहब बहुत जबरदस्त ताकत है। पाकिस्तानी अवाम को मजहब से जिस कदर लगाव है, उसका मुकाबला दुनिया की कोई कौम नहीं कर सकती।

हम दावे से कहते हैं कि पाकिस्तान पर मजहब के नाम पर हिन्दुस्तान से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कारनामे अन्जाम दिये जा सकते हैं। हमारे मुल्क में बड़े आलिमों और बड़े सूफियों की भी कमी नहीं।

जब बदकिस्मती से पाकिस्तान में भी राष्ट्रीय समाज को कलंक लगाने के लिए वही तमाम नैतिक बुराइयाँ मौजूद हैं, जो हिन्दुस्तान में पायी जाती हैं, जब पाकिस्तान के अवाम पर भी मजहब का बेपनाह असर है, जब पाकिस्तान में भी आलिमों और सूफियों की फौज मौजूद है, जब पाकिस्तान के मौलवी और पीर भी प्रभाव में हिन्दुस्तान के महन्तों, पण्डितों और साधुओं से किसी प्रकार भी कम नहीं, तो फिर स्वभावतः ही यह सवाल पैदा होता है कि आखिर पाकिस्तान में किसी मौलवी, किसी फकीर, किसी बन्दे को यह तौफीक (हिम्मत) क्यों नहीं होती कि वह मजहब व अखलाक की ताकत से समाज को बुराइयों से पाक करने के लिए आचार्य विनोबा भावे की तरह कमर कस ले। इस्लाम की तालीम पर आज हिन्दुस्तान में वह शख्स अमल कर रहा है, जिसका इस्लाम से कोई ताल्लुक नहीं और जिसे जन्नत और दोजख के बहुत से बेअमल (निष्क्रिय) ठीकेदार काफिर व मुशरिक (एक से अधिक ईश्वर को माननेवाला) कहने में हिचकेंगे नहीं।

जयपुर में पंचायती राज परिसंवाद

पंचायती राज (लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण) पर प्रान्त के प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ताओं का एक परिसंवाद गत १ व २ जून को राजस्थान समग्र सेवा संघ ने जयपुर में आयोजित किया।

राजस्थान में इस प्रयोग के जो अनुभव आये तथा पंचायत-अधिकारियों, पंचायत व परिषद के सदस्यों, राज्य सरकार, राजनैतिक दल व जनता आदि की जो धारणा या प्रतिक्रिया रही, उस पर विशेष रूप से १ व २ जून को चर्चा की गयी। दूसरे दिन इस कदम के संदर्भ में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का अपना क्या कर्तव्य व दायित्व है और उनको क्या करना है इसके बारे में चर्चा चली।

चर्चा के फलस्वरूप यह निष्कर्ष निकला कि सर्वोदय की दृष्टि से हम जो समाज-रचना लाना चाहते हैं, उसमें सत्ता के विकेन्द्रीकरण की भी बात है। हम चाहते हैं, कि गाँव-गाँव की जनता की शक्ति और अभिक्रम प्रकट हो तथा जीवन की आवश्यक बुनियादी बातों की व्यवस्था वह खुद कर ले। जो काम नीचे की इकाइयाँ न कर सकें, वे काम उत्तरोत्तर आगे की इकाइयों के जिम्मे रहें। अब स्पष्ट है कि इस प्रकार की रचना केवल शासन-संबंधी कुछ काम नीचे की इकाइयों को सौंप दिये जाने से संभव नहीं होगी, सारी आर्थिक रचना ही विकेन्द्रित करनी होगी।

सरकार द्वारा जो पंचायती राज का प्रयोग किया जा रहा है, वह जनता की अपनी शक्ति से पैदा हुई चीज नहीं है और इसलिए यह स्पष्ट है कि जब तक जनता की शक्ति जाग्रत नहीं होती, तब तक इस प्रकार के प्रयोग का नतीजा उल्टा भी हो सकता है और पार्टीबाजी, दलबंदी, भ्रष्टाचार, पक्षपात में दीर्घसूत्रता आदि खराबियाँ अधिक व्यापक रूप ले सकती हैं।

साथ ही यह भी महसूस किया गया कि यदि सरकार व राजनैतिक दल इस प्रयोग को किसी इच्छा से सफल बनाना चाहते हैं, तो उन्हें भी कुछ कदम उठाने होंगे। राजनैतिक दलों को यह निश्चय करना होगा कि वे इन संस्थाओं में दलगत राजनीति का प्रवेश नहीं होने देंगे और उनको अपने प्रभाव से मुक्त रखेंगे। इसी प्रकार सरकार को भी चाहिए कि इन संस्थाओं के फलस्वरूप गाँव-गाँव में झगड़े व मनोमालिन्य न बढ़ें। इसलिए इन संस्थाओं के चुनाव व निर्णय सर्वसम्मति से कराने पर जोर दिया जाय और इसके लिए आवश्यकतानुसार कानून में संशोधन भी किया जाय। दूसरी बात सरकार को यह करनी होगी कि जनता का इस योजना के साथ निकटतम गहरा संबंध रहे, केवल पंचों सरपंचों तक ही यह बंधन न रहे और इसलिए इन संस्थाओं के सारे निर्णय ग्राम सभाओं की अनुमति से कराने तथा पंचायतों के काम की जानकारी समय-समय पर ग्रामवासियों को देने की दृष्टि से साल में दो-तीन बार अनिवार्य ग्राम-सभा बुलाने के लिए कानूनन व्यवस्था की जाय। ग्राम-सभा का ठीक काम-काज बने।

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

'कीमकुर्वत संजय'

अीधर जब से हम चंबल-घाटी में आये हैं, तब से यह कहा जा रहा है की यहां डाकू-समस्या है।

"धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे
समवेता युयुत्सव।
पुलीसा डाकवाश्चैव
कीमकुर्वत संजय॥"

भींड-क्षेत्र में पुलीस और डाकू, दोनों में भींडंत हो रही है, दोनों से लोग तंग हैं। डाकुओं की आफत से बची करने के लीओ पुलीस आयी। अब अुसके कारण भी लोगों की मुसीबत अुठानी पड़ रही है। अीससे समस्या अुलझती है, सुलझती नहीं।

अभी कुछ लोग और बचे हुओ हैं। वे भी अगर आ जाते हैं, तो अच्छा होगा। अुनमें से अगर कुछ लोग यह सोचें की दो-चार महीना देख लेंगे, अुसके बाद जायेंगे, तो अैसा वीचार मूर्खता का होगा। गरम चूल्हे पर ही रोटी बनती है। अीसलीओ बाकी लोगों का जल्दी आ जाना अच्छा होगा। हमारी यात्रा के आठ दीन बढ़ाये गये हैं। आगरा से ग्वालीयर तक अेक महीना हमारा अीस काम में जा रहा है। अीससे ज्यादा और वक्त क्यों दीया जाय? महाभारत तो अठारह दीन में हो गया था। वीज्ञान के जमाने में जल्दी करनी चाहीओ। पश्चात्ताप धीरे-धीरे नहीं होता। बाबा पर वीश्वास रखकर जो लोग अभी तक नहीं आये हैं, वे भी आ जाय।

(२७-५-'६०) —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि=ी; ी=ी, ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

नई तालीम के काम को संगठित करना है

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ बाईस वर्षों से नई तालीम का काम करता आया है। सेवाग्राम में किये गये प्रयोगों के फलस्वरूप राष्ट्रीय शिक्षा का एक संपूर्ण ढाँचा तैयार हुआ। संघ ने अपने केन्द्र या शालाएँ किसी अन्य जगह नहीं खोलीं। *तालीम का काम वही सच्चा होता है, जो स्थानीय परिस्थिति और* परम्पराओं को सामने रखते हुए निर्मित हो। इसलिए शिक्षा-शास्त्र की दृष्टि से भी, किसी केन्द्रीय संस्था द्वारा शाखाएँ खोलकर नई तालीम को फैलाना ठीक नहीं होगा, इस विचार से बापू ने संघ के दायरे को सीमित रखा। सेवाग्राम में काम करना और देश के अन्य स्थानों पर सरकारी व गैरसरकारी ढंग से चलने वाले बुनियादी शिक्षा के काम का मार्गदर्शन करना, यही अपेक्षा तालीमी संघ से थी और संघ यह काम अपनी शक्ति के अनुसार श्रद्धापूर्वक करता रहा। इसके फलस्वरूप सरकार ने बुनियादी तालीम को राष्ट्रीय शिक्षा कह कर अपनाया। देश में कई ऐसे केन्द्रों की स्थापना हुई, जिनकी प्रेरणा नई तालीम थी और कार्यक्रम भी नई तालीम का ही था।

आज भी ये संस्थाएँ अपने काम में लगी हुई हैं। किन्तु यह सभी महसूस कर रहे हैं कि जितनी तेजस्विता के साथ देश में काम होना चाहिए, उतना नहीं हो पा रहा है। सन् १९५१ में भूदान-यज्ञ-*आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और उसका असर* सारे रचनात्मक कार्य पर हुआ। एक तरफ आन्दोलन ने रचनात्मक कार्यों के लिए अनुकूल वातावरण पैदा कर दिया। अब सभी यह महसूस कर रहे हैं कि आज जितनी अनुकूलता रचनात्मक कार्यों के लिए है, उतनी पिछले बारह वर्षों में नहीं थी। किन्तु दूसरी तरफ इन कार्यक्रमों की तात्कालिक गति को आन्दोलन ने कुछ धीमा सा कर दिया था। काफी कार्यकर्ता आन्दोलन के काम में लग गये थे। कुछ केन्द्रों के काम बन्द या कम कर दिये गये थे और उनकी शक्ति भूदान-ग्रामदान यज्ञ में लग गयी थी, जिसका नतीजा आज सघन काम के लिए अनुकूलता के रूप में दीखने लगा है।

नई तालीम का काम भी कुछ धीमा-सा पड़ गया था। पिछले नौ वर्षों के अनुभव के बाद आज यह मानना पड़ेगा कि इस संक्रमण-काल का असर अच्छा हुआ है। नई तालीम के ऊपर नये ढंग से चिन्तन होना प्रारम्भ हुआ है। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह हुई है कि सर्वोदय-परिवार के सभी साथी यह महसूस करने लगे हैं कि सारे रचनात्मक कार्य का आधार नई तालीम होना चाहिए। कुल-के-कुल रचनात्मक कार्य में "नये मोड़" की दृष्टि ने प्रवेश कर लिया है।

ऐसे अवसर पर नई तालीम के काम में *काम करने वाले साथियों* और केन्द्रों के सामने एक नयी परिस्थिति उपस्थित हो जाती है। अभी तक हम अलग-अलग रह कर काम करते आये हैं। *एकत्र मिलने* का मौका केवल बैठकों और सम्मेलनों में ही आया करता है। क्या अब भी काम इसी तरह चलेगा? रचनात्मक काम पर ही नहीं, बल्कि सारे आन्दोलन के ऊपर अगर "नई तालीम का रंग" चढ़ाना है, तो क्या हमारे छोटे-मोटे अलग-अलग *प्रयासों से वह संभव होगा? यह प्रश्न* आज हर काम को करते समय हमारे सामने खड़ा होता है।

इसका एक ही उत्तर है। देश भर के नई तालीम के कार्यकर्ता और उनके केन्द्र अपने-अपने परिवारों को व्यापक बना लें। सारा एक परिवार हो जाय। जिस तरह ग्रामदान के पीछे अनेक परिवारों को मिला कर एक परिवार बना लेने का सिद्धान्त है, उसी प्रकार सारे देश का एक नई तालीम परिवार बने। आज क्या हो रहा है? त्रिवेन्द्रम् में बैठा हुआ कुट्टी कृष्णन क्या कर रहा है इसकी खबर रामनारायण त्यागी को नहीं है और कालीपद चट्टोपाध्याय किस तरह अपने शिक्षा के प्रयोग कर रहा है, यह हरभजन बाकायदा जानता भी नहीं। इस एकान्त साधना के गुण चाहे कुछ भी हों, किन्तु उसका एक बुरा असर हो रहा है। हममें से अनेक साथी सरकारी या अर्ध सरकारी पिंजरे में प्रवेश करते जा रहे हैं। शिक्षा जैसे मुक्त विषय को सरकारी कायदे कानून के दबाव में रहना पड़े, क्या कोई सच्चा शिक्षक इसे सहन कर सकता है? स्वयं-साध्य एकान्त में पड़े-पड़े हमारे काम का गुणात्मक स्तर भी घटता जा रहा है।

क्या यह नहीं होना चाहिए कि कुट्टी कृष्णन् अपने केन्द्र के बारे में तो चिन्तन करे ही, किन्तु कालीपद, रामनारायण और हरभजन के केन्द्रों को भी अपना ही केन्द्र समझे, उसकी जानकारी रखे और जब उसे कोई नई बात सूझे या समस्या के रूप में पेश आये, तो उसकी जानकारी सबको दे, सबकी राय ले। इधर कालीपद का केन्द्र भी सबका केन्द्र हो और रामनारायण का भी। यह भार करना है तो हमें समय-बूझ कर उसके लिए जुटना होगा। उसके लिए कुछ मित्रों को देश के सब केन्द्रों की परिक्रमा करते रहना पड़ेगा। ऐसी परिस्थिति तैयार करनी होगी कि जिससे सब एकसाथ मिल कर सोचने के लिए तैयार हो जायँ। ऐसा भाईचारा तभी निर्मित होगा, जब कि इसकी आवश्यकता तीव्रता के साथ सबको महसूस होगी। हमारे बीच इस प्रकार की बात शुरू हो गयी है और आनन्द की बात है कि हमारे कुछ साथियों ने इस काम को उठा लेने का निर्णय भी ले लिया है। केवल भाईचारे से काम नहीं चलेगा। कुछ अधिक गहराई में जाना होगा। काम का गुणात्मक विकास हो और दृष्टि का ऐक्य भी निर्मित हो, इसके लिए कुछ कार्यक्रम बनाना पड़ेगा।

पिछले दिनों एक सुझाव आया है। पुरानी शिक्षा-पद्धति के अनुसार परीक्षाओं की परंपरा है। नई तालीम-शिक्षा में समीक्षा की पद्धति अपनायी गयी है। अभी हर संस्था अपनी-अपनी समीक्षाएँ कर लेती है। इस सुझाव के अनुसार समीक्षाओं को केन्द्रीय मान्यता होगी। शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद जो अन्तिम समीक्षा होती है, वह अखिल भारतीय मानी जाय, खास तौर पर उत्तर बुनियादी शिक्षा का प्रमाण-पत्र भी केंद्रीय हो। पद्धति और स्तर का सर्वमान्य स्वरूप पहले निर्धारित कर लिया जाय। समीक्षाएँ क्षेत्रीय समितियों के द्वारा स्थानीय परिस्थिति के आधार पर हों। समीक्षा के समय इन क्षेत्रीय समितियों में केन्द्रीय समीक्षा समिति के एक या दो सदस्य भी उपस्थित रह सकते हैं। ऐसा करने से दोनों बातें सधेंगी। शिक्षा का स्तर भी ऊँचा होगा और प्रमाण-पत्र का जो अखिल भारतीय स्वरूप होगा, उसकी शक्ति भी स्थानीय प्रमाण पत्रों से कहीं अधिक होगी।

अगर यह सुझाव मान लिया जाय और उसके बतौर काम भी शुरू किया जाय, तो जो प्रश्न मान्यता के बारे में उपस्थित है, उन्हें सुलझाने की शक्ति भी तैयार होगी। यदि ठीक ढंग से काम होगा और एक-दो साल में हमारी संस्थाओं से निकले हुए युवक-युवतियों के पीछे सब सेवा संघ का बल भी होगा, तो शायद ही कोई ऐसी शक्ति होगी, जो "प्रवेश नहीं" की पटिया उन्हें बिना संकोच दिखा सकेगी। पिछले कुछ दिनों से हम जिस नई तालीम के आंदोलन का जिक्र सुनते और करते आये हैं, यह कदम उसी आंदोलन का कारगर अंग होगा। यह सौम्य सत्याग्रह ही है। भाग करना नहीं, बल्कि अपनी जिम्मेदारियों को सच्चे रास्ते से निभाना सत्याग्रह है।

—देवीप्रसाद, सेवाग्राम

['नई तालीम' से]

जब अहिंसा नाच उठी !

कांता : हरविलास

[गुजरात की भूदान-कार्यकर्ती कांताबहन और हरविलासबहन चंबल-घाटी की यात्रा में विनोबाजी के साथ थीं। उन्होंने उस यात्रा के अनुभवों को लिपिबद्ध करने का प्रयास इस लेख में किया है। —सं०]

१८ अप्रैल, १९५१ के दिन पोचमपल्ली में बाबा ने भारत के सामाजिक क्षेत्र में अहिंसक आर्थिक क्रांति का प्रयोग प्रारम्भ किया। उनकी यह क्रान्ति-गंगा सारे देश में बहने लगी। उसके किनारे अनेक पुण्य-क्षेत्र बने। १९ मई, '६० के एक प्रवचन में बाबा ने कहा कि "तेलंगाना में भूदान-गंगा का जन्म हुआ, इसीलिए वह तीर्थ बना। उसके बाद जो बहुत बड़ा तीर्थक्षेत्र बना वह है बिहार, जहाँ २२ लाख एकड़ जमीन दान में प्राप्त हुई। उसके बाद का पुण्य क्षेत्र है उड़ीसा, जहाँ बड़े पैमाने पर ग्रामदान मिले। बाद का क्षेत्र आता है महाराष्ट्र, जहाँ पंढरीनाथ ने पारसी, मुसलमान, ईसाई, हरिजन, यूरोपियन सबको जाति-भेद के बिना दर्शन दिया और जहाँ दो-तीन सौ ग्रामों का अक्राणी महाल क्षेत्र ग्रामदान में मिला। उसके बाद कश्मीर, जहाँ मुहब्बत का पैगाम लोगों ने सुना और हिन्दू-मुस्लिम एकता का काम हुआ। वहाँ से बहती हुई भूदान-गंगा भिंड, मुरैना जिले में आयी है। अब यह डाकू-क्षेत्र भी तीर्थ-क्षेत्र बन रहा है।"

सत्वगुण की ताकत प्रकट करनी है

८ मई, '६० से आगरा जिले के बमरौली गाँव से बाबा ने डाकू-क्षेत्र की यात्रा प्रारम्भ की। ग्राम सभाओं का वातावरण सदैव भक्तिमय बनता रहा। भूदान की बातों के साथ डाकू-समस्या का विश्लेषण तथा रामायण की कथाएँ बाबा के मुँह से बारम्बार निकलती थीं। बमरौली में बाबा ने कहा कि "कुछ दिन उत्तर प्रदेश घूम कर अनुभव लेने पर मालूम हुआ कि यहाँ प्रत्येक जगह पर अच्छे लोग पड़े हैं, परन्तु वे खड़े नहीं हैं। हिन्दुस्तान में सत्वगुण के साथ तमोगुण मिला हुआ है। मुझे ऐसे देश का पता नहीं, जहाँ कि सत्वगुण के साथ रजोगुण मिला हुआ हो। कुछ देश ऐसे हैं कि जिनमें रजोगुण अधिक है, पर केवल सत्वगुण या केवल तमोगुण या रजोगुण के साथ तमोगुण मिला हो, ऐसे देश मैंने नहीं। सत्वगुण के साथ तमोगुण हो, तो सत्वगुण का

काम ऐसे मनुष्यों से होगा, जिनमें सत्वगुण भरा हो। लोहचुंबक लोहे को आकर्षित करता है, उसी प्रकार सात्विक पुरुष द्वारा यहाँ वहाँ पड़े हुए सात्विक लोगों को आकर्षित करना चाहिए। मेरी अकाल-यात्रा में ऐसे सात्विक लोगों से परिचय हुआ। ज्ञान-यात्रा में प्रांतीय नेताओं की हलचल होती है, इसलिए ऐसा परिचय कम होता है।"

पंतजी से मुलाकात

पदयात्रा में समय युवक और वृद्ध महानुभाव बाबा से भेंट करने आते हैं। आगरा में श्री गोविन्दवल्लभ पंत बाबा से मिलने आये, तब बाबा ने यह कहा :

"कितने ही छोटे-बड़े नेता मुझसे मिलने आते हैं। वृद्धों को मेरे पास आना होता है, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। ऐसे तो पहले मैं ही उनके पास जाता था पर अब मैं पदयात्रा करता हूँ, इसलिए उन्हें मेरे पास आना पड़ता है। वृद्ध मेरे पास आते हैं, इसमें मेरी शोभा नहीं है। परन्तु पद-यात्रा के कारण मैं लाचार हूँ। पदयात्रा इसलिए करता हूँ कि गाँववालों से प्रेम से बातचीत कर सकूँ, लोगों को भी उनके बीच का एक लगूँ, रास्ते में चलते समय छोटे-बड़े भाई-बहनों के साथ समय की मर्यादा रखे बिना निश्चिन्ततापूर्वक बातचीत कर सकूँ।"

मैं गंगा बन गया हूँ

बाबा कहते हैं कि "मैं अब गंगा बन गया हूँ। गंगा के पानी का उपयोग जिसे जिस प्रकार जितना करना होता है उस प्रकार उतना करता है। गंगा के पानी की तरह उसका ठेका देना नहीं पड़ता। बाबा की जरूरत हो तो लोग उन्हें धोबी-घाट बनायें या वहाँ जाकर स्नान करें। कोई छोटा विद्यार्थी आकर घंटों बातचीत करता है और एक वृद्ध पन्द्रह-बीस मिनिट में चला जाता है। गंगा में गोता लगाने गधे भी आते हैं! यह भावना करुणा की है, उपयोग की नहीं। करुणा हो, वहाँ बाबा उपयोग देखा नहीं जाता। मेरे पास दुःखी, पीड़ित, बागी, पुलिस, पार्टीवाले, भिन्न भिन्न धर्मोंवाले कोई भी किसी की रोकटोक के बिना आ सकते हैं। बाबा की जागीर, मानो आम की दरख्त है। इसका जैसे उपयोग करना हो उस प्रकार करें। मोमबत्ती को जैसे जलाना हो, वैसे जलायें। दोनों ओर से जलाना हो, तो दोनों ओर से जलायें। जल्दी समाप्त होगी, इतना ही। वह कामकी ही है। मैं आपके पास समय की मर्यादा बाँध कर नहीं आया हूँ। जिसे दिल से मेरे साथ जो बातचीत करना हो करे। लोगों से यह नहीं कहूँगा कि आप मेरा अधिक समय बिगाड़ रहे हैं। बड़े लोगों के साथ समय की मर्यादा अवश्य रखूँगा। परन्तु दुःखी, पीड़ित लोगों से समय की मर्यादा रख कर मिलना रहेगा। इस प्रदेश में मेरे आने का उद्देश्य इन लोगों को सहायता पहुँचाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। लोगों के दुःख को समझ कर उसका निवारण करने का प्रयत्न करूँ यही इच्छा है।"

महापापी और महापुण्यवान

जेल में था, तब कितने ही डाकू भाइयों के साथ मेरी मित्रता हुई थी। हमारे बीच बहुत ही मीठा प्रेम-सम्बन्ध हुआ था। हिन्दुस्तान में बड़ा पहाड़ कौनसा है? उसका एक ही उत्तर है हिमालय। उसी प्रकार हिन्दुस्तान में सबसे बड़ा महा-कवि कौन हो गया? तो उसका एक ही उत्तर है कि वाल्मीकि। वाल्मीकि, तुलसी, एकनाथ, गिरिधर इत्यादि ने अपनी-अपनी भाषा में रामायण लिखी है। रामायण भारत का महान् धार्मिक ग्रंथ है। इस रामायण का रचयिता वाल्मीकि पहले कौन था? एक डाकू था। ऐसे डाकू भाइयों में से कौन, किस प्रकार महापुरुष बनता है, इसका अनुमान करना कठिन है। पहाड़ी रास्ते में जो बहुत दूर दिखाई देते हैं, वे बहुत नजदीक होते हैं। जहाँ उच्च पुरुष होते हैं, वहाँ मंद पुरुष नहीं होते। महा-पापी अथवा महापुण्यवान के सिवाय कोई भी मंद पुरुष नहीं होता। बीच के कई पुण्यशाली दिखाई देते हैं, तो कई पापी। पर वे सच्चे दिल से न तो पुण्य करते हैं और न पाप। महापुरुष वे ही बनते हैं, जो महापापी होते हैं अथवा महापुण्यशाली होते हैं, जिनका बाह्य और आन्तरिक जीवन एकरूप होता है। बाहर भीतर एक ही जाना, यह तो मैंने अपनी श्रद्धा व्यक्त की। मैं आशा हूँ और अन्त मेरे हैं।"

रामायण का आरंभ

बाबा के अंतर की यह भाई वाली डाकू-क्षेत्र के अधिक-से-अधिक लोग सुनें, इस दृष्टि से पगार के आसपास के आठ-दस गाँवों में हम कुछ भाई-बहनों ने घूमना शुरू किया और उन्हें बाबा की सभा में आने के लिए समझाने लगे। संत की वाणी में श्रद्धा रखने वाली ग्रामीण जनता बड़ी संख्या में आने लगी। बाबा की इस क्षेत्र की यात्रा की निष्पक्षता के बारे में प्रारम्भ से कितने ही लोगों ने निराशा दी। परन्तु निष्पक्ष-सत्यता की चिन्ता रखे बिना संत अपने दृढ़निश्चय के साथ आगे बढ़ रहा था। उनकी इस यात्रा का तीसरा पड़ाव था फतेहाबाद, जहाँ से बाबा की फतह का डंका बजने की शुरुआत हुई। अवतार सिंह नामक डाकू ने बाबा को सर्वप्रथम आत्म-समर्पण करके नवीन अवतार प्राप्त किया। बाबा ने नामकरण-विधि करके उसका नाम रखा 'रामावतार।' मानो अवतार सिंह को समर्पण करने की प्रेरणा देने वाला भी राम, समर्पण करने वाला भी राम और समर्पण का स्वीकार करने वाला भी राम सबके प्रिय रामनाम से डाकू-क्षेत्र, की रामायण का पहला काण्ड प्रारम्भ हुआ। अहिंसा नाच उठी, मानवता प्रकाशित हुई!

रविशंकर महाराज का स्मरण

बाबा के कितने ही पड़ाव नदी की कगारों के निकटवर्ती गाँवों में हुए। छोटे गाँवों में तम्बू ताने जाते हैं। यहाँ की नदी के बड़े-बड़े कगार देख कर महीनदी के कगारों का स्मरण हो आया। वहाँ के बारैया डाकू और रविशंकर दादा का स्मरण हुआ। बाबा ने भी रविशंकर दादा का एक बार स्मरण किया और कहा कि "महाराज की तो ऐसे विस्तार में घूमने की रीति ही अलग थी। वे तो अकेले आते और बिछौना बगल में दबा कर चल देते, जब कि मैं तो अनेक व्यक्तियों को साथ लेकर आता हूँ।" यहाँ बवंडर का भी ठीक-ठीक अनुभव हुआ। नदी का किनारा होने से सारे दिन रेत तो उड़ कर आती ही रहती है। ऊपर से सूरज दादा आग बरसाते रहते हैं। तम्बू की छाया तो शायद ही मिलती है, उस पर भी दोपहर में बवंडर आकर तम्बू को उखाड़ डालता है, और सुबह तथा शाम को भोजन करते समय सबकी थालों में रेती मिट्टी पराग बन कर चला जाता है। पर ऐसे वैभव बवं-डर में सामने कौन था? इसलिए सब उसे आनन्द से निभा लेते।

दोष मेरे दिल का

उत्तर प्रदेश का अंतिम मुकाम था पीनाहट। उस दिन बाबा ने कहा कि "उत्तर प्रदेश के भाई यहाँ से वापस जायेंगे, पर मैं तो आगे बढ़ता रहूँगा। भगवान की शक्ति-प्रेरणा से मैं चलता हूँ। चारों ओर भगवान खड़ा है। वह हमारी परीक्षा करता है, तमाशा कर करता है, उसकी मदद पर सदा रहता है। वह हमारी और सब पर प्रेम करता। देखते यही प्रेम करते। इसके उत्तम होगी। शरीर के सब अंग पर सूरज पड़ती है, तो उससे केवल उस भाग का ही दोष नहीं होता है। इसी प्रकार इस चम्बल क्षेत्र में जो डाकू पकड़ते हैं, लूट होती है, उसका दोष केवल यहीं के लोगों का ही नहीं है, परन्तु सारे देश के दोष का प्रश्न है। दान और प्रेम की बातें इसका कर जाग्रत का अन्त होगा तो सब अच्छा ही हो जायगा।"

जेल के मीठे स्मरण

उस दिन संध्या को हमारे साथ बात-चीत करते समय बाबा ने धूलिया-जेल के अपने दिन याद किये। डाकू भी बाबा के 'गीता प्रवचन' सुनने आते थे, उस समय उनकी आँखों से अश्रुधारा बहती। "प्रवचन समाप्त होने पर सब डाकुओं ने जेल में मेहनत करके बचाये हुए पैसे में से दो आने लाकर एक आने की गीता खरीदी और एक आना बाबा को गुरुदक्षिणा में दिया था। इस प्रकार डाकुओं की धार्मिक वृत्ति का हमें परिचय कराया गया।"

सोई चरण केवट धोई लिन्हो

१२ तारीख को चम्बल नदी पार कर मध्यभारत में मुरैना जिले के रछेड गाँव में बाबा ने प्रवेश किया। भिंड और मुरैना जिले में डाकुओं ने अपने अड्डे जमा रखे हैं। डाकू-प्रदेश की सच्ची यात्रा यहीं से शुरू हुई। चम्बल नदी पार कर मध्यप्रदेश में बाबा प्रवेश करने वाले थे, तब दो नाविकों के बीच झगड़ा शुरू हुआ। उनमें से एक नाविक ने एक महीने पहले से ही नई नौका बनाना शुरू किया था। उसकी इच्छा थी कि बाबा के हाथों उसका उद्घाटन हो, वह स्वयं यह मानता था कि विनोबाजी रामचन्द्र के अवतार हैं और वह स्वयं वही नाविक है, जिसने कि बरसों पहले राम, लक्ष्मण और सीता को अपनी नौका पर बैठा कर सरयू नदी पार करवायी थी। दूसरा नाविक भी विनोबाजी को अपनी नौका में बिठा कर धन्य होना चाहता था। कार्यकर्ता इस झगड़े का निराकरण नहीं कर सके। बाबा ने उसका सर्वोदयी हल बताया। दोनों नौकाओं को एक-दूसरे के साथ बाँध देने के लिए कहा। उस दिन किनारे पहुँचे तो दोनों नौका इस तरह तैयार थी। इस प्रकार बाबा ने दोनों नाविकों को प्रसन्न किया।

नाव में से उतरने के बाद श्री दादा-भाई नाइक, मध्यभारत के गृहमंत्री तथा दूसरे कई एक नेताओं ने बाबा का स्वागत किया। उसके बाद किनारे पर बैठ कर बाबा बोले :

भक्ति का स्रोत बहता रहे

"यमुना पार कर उत्तर प्रदेश में आये थे और आज चम्बल पार कर मध्यप्रदेश में आये हैं। मेरे खयाल के अनुसार मेरे लिए अब बहुत नदी ही पार करना बाकी है। नदियों की मुझ पर निरंतर कृपा रही है। अखंड बहने वाली नदियाँ हमें निरन्तर भक्तिमय और कर्ममय रहने की शिक्षा देती रहती हैं। यह अखंडता देख कर मुझे लगता है कि हमारी यात्रा भी अखंड चलती है। एक मनुष्य अखंड आचरण कैसा करता है, तो उसे लगता होती है कि अखंड आचरण कैसा किस प्रकार हो सकती है। नर्मदा मैया इसकी कसौटी है। निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि शरीर के छूटने तक ही यात्रा बंद होगी। किसी घर में बीमार होकर, लाचार बन कर बर्तन, तो समझना कि भक्ति सच्ची नहीं थी, नकली थी। शरीर जब यात्रा करते-करते छूटेगा, तब समझना कि अंदर भक्ति का स्रोत बहता था, मैं भी समझूँगा कि मेरी भक्ति सच्ची भक्ति थी। आपके सहयोग से यह भक्ति चालू रहे, तो बेड़ापार है। लोग कहते हैं कि मेरा यह काम पारमार्थिक है, परन्तु इसमें भी मेरा स्वार्थ छिपा हुआ है। मुझमें अखंड भक्ति रहे और मेरी यह आशा ईश्वर सफल करे, ऐसी प्रार्थना करना।"

कंकणविहीन हाथ, कुंकुमविहीन ललाट

अंबाह के बाद के पड़ावों के बीच कितने ही डाकुओं के पड़ाव आये। डाकू-परिवार की बहनों के बीच जाकर उनकी स्थिति जानने का हम बहनों ने प्रयत्न किया। बहनों की हालत अत्यन्त करुणाजनक है। उनसे मिलने पर प्रतीत हुआ कि कई घर के आदमी बागी होकर जंगल में भाग गये हैं। कई डाकुओं के मुखबीर और कई पुलिस के मुखबीर द्वारा मरवाये गये हैं, तो कई पुलिस की गोलियों के शिकार हुए हैं। आठ-नौ सौ की बस्ती वाले एक गाँव में तो तीस-चालीस आदमी मारे गये हैं। एक गाँव में तो एक ही घर में से आठ-नौ आदमी मारे गये हैं। एक गाँव तो ऐसा है कि जहाँ प्रत्येक घर में से कम-से-कम एक आदमी गोली का शिकार हुआ है। कितने ही घर बिलकुल उजाड़ हो गये हैं, इस करुणाजनक स्थिति का प्रत्यक्ष दर्शन करने पर हमें प्रतीत हुआ कि कितनी ही उर्मिला-दुलारियाँ अपने राम के विरह में अश्रु बहा रही हैं, कितनी ही कौशल्या माताएँ राम, लक्ष्मण, भरत जैसे पराक्रमी पुत्रों को खोकर उनके वियोग में क्रंदन कर रही हैं। कितने ही लव-कुश पिता को पहचाने बिना ही माता की गोद में बड़े हो रहे हैं। कई बहनें भाई के पवित्र प्रेम के बिना दुःखी हो रही हैं। बागी भाइयों की पत्नियों के, बहनों के और माताओं के तेजोहीन चेहरे जब देख तब हमारा हृदय काँप उठा। वे कंकण-विहीन हाथ, कुंकुमविहीन उनके ललाट! पिता, पुत्र, पति, भाई के अलग हो जाने से उनके हृदय का क्रंदन पत्थर को भी पिघलाने के लिए पर्याप्त था। कितने ही लोगों के पास जमीन थी जायदाद थी, पैसा था धन था सब था और फिर भी कुछ नहीं था। अकेलापन दुःख दे रहा था खा रहा था। वह तो बागी बना, क्यों वह गुप हुआ, इस धरती का दूध पीने वाला, इस धरती की गोद में विचरण करने वाला, इस धरती की रक्षा करने वाला इस धरती का लाल। कितने ही लोगों ने तो जमीन-जायदाद के साथ अपना मकान तक बेच दिया था। कितने ही घरों में पुलिस ने अपने अड्डे जमा रखे हैं। परिणामस्वरूप कितनी ही बहनों को मायके और सगे-सम्बन्धियों के यहाँ बेकार होकर निराधार स्थिति में दर-दर भटकना पड़ता है। इन बहनों को बाबा के यहाँ आने का उद्देश्य समझा कर आश्वासन देती रहीं। कितनी ही बहनों को बाबा के पास ले जाकर उनके मुँह से उनकी करुण-कथा कहलाती। इससे वे तात्कालिक मानसिक समाधान का अनुभव करतीं। डाकू-परिवार की कितनी ही बहनों से बाबा स्वयं मिलने गये। वहाँ घूँघट रखने वाली बहनों के घूँघट बाबा स्वयं अपने हाथ से हटा कर कहते थे कि घूँघट हटा कर अब तुम्हें बहादुरी के साथ बाहर निकलना होगा। इनमें से कई बहनों को तो श्रद्धा हो गयी कि हमें तारने वाला अब यही है। उनके आँगन पर आते हुए इस तारणहार के कोई बहन पाँव पकड़ लेती, कोई हाथ पकड़ती और अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपनी आपबीती सुनाती। वह समय बड़ा दुःखद था। डाकू मानसिंह की वृद्ध पत्नी और उनकी पुत्रवधू के यहाँ बाबा गये—तब उन्होंने बहुत देर तक बाबा के पैर पकड़ रखे।

[भूदान]

सत्याग्रह का प्रयोग

● कन्हैयालाल ठक्कर

भावनगर के सर्वोदय-कार्यकर्ता श्री आत्माराम भाई भट्ट सत्याग्रह का एक प्रयोग कर रहे हैं। श्री आत्माराम भाई शांति-सैनिक भी हैं। उन्होंने चीनी का चोर-बाजार नष्ट करने के लिए भावनगर में सत्याग्रह शुरू किया है। पिछले अगस्त माह में भावनगर की जनता के लिए कंट्रोल्ड दर से आयी हुई चीनी कुछ व्यापारियों ने ज्यादा दाम लेकर चोर-बाजार में बेची और बहुत मुनाफा लूटा। कहा जाता है कि स्थानीय कलेक्टर साहब ने भी बाकायदा चीनी के दर निश्चित करके बेचने की इजाजत देकर इस चोर-बाजारी में साथ दिया। श्री आत्माराम भाई ने इसके बारे में जाँच-पड़ताल की, वे व्यापारी भाइयों से मिले। वे कलक्टर साहब से मिले और यहाँ के मिल-मालिक श्री भोगी भाई सेठ से भी, जिन्होंने अपने मुनाफे के लिए चीनी का कन्ट्रोल भाव से ज्यादा भाव निश्चित करने में कलक्टर साहब की मदद कर 'चोर-बाजारी' कराने में साथ दिया था, मिले। सारी हकीकत का पता चला और यह तय हुआ कि चोर-बाजारी हुई है, जिसमें जनता से हजारों रुपये लूटे गये हैं। इस लूट में कौन-कौन भागीदार बने हुए हैं, इसे परमात्मा जाने।

श्री आत्माराम भाई ने व्यापारियों, कलक्टर साहब तथा सेठ भोगी भाई को अपनी भूलें सुधार कर पश्चात्ताप जाहिर करने के लिए सूचित किया, मगर उन्होंने कुछ सुना नहीं। आखिर एक सत्याग्रही नागरिक के नाते से अन्याय का अहिंसक प्रतीकार करने का अनिवार्य कर्तव्य आ पड़ा, और श्री आत्माराम भाई ने उसे अदा किया। उन्होंने २१ दिसंबर, '५९ से सत्याग्रह शुरू किया। उसका स्वरूप कुछ नया-सा है। वे सुबह के समय व्यापारी भाइयों की जहाँ दुकानें हैं, वहाँ याने बाजार में दोपहर के एक बजे तक मौन रह कर फिरते हैं। वहीं से कलक्टर साहब के आफिस भी जाते हैं और वहाँ उनके 'चेम्बर' के पास मौन खड़े रह कर कलक्टर साहब को चिट्ठी भेज कर अपने आने की सूचना भेजते हैं। वहाँ से छह बजे श्री भोगी भाई के घर जाते हैं। वहाँ एक घंटा मौन अवस्था में ही टहलते हैं। सुबह से शाम तक इस तरह का उनका मौनपूर्वक सत्याग्रह चलता है। उपवास नहीं करते। सुबह नाश्ता करके निकलते हैं और शाम को घर जाकर खाते हैं। मन में किसी के भी प्रति कोई जबरदस्ती भी नहीं, किसी से किसी प्रकार का वैर, क्षोभ या संघर्ष भी नहीं करते। किसी को कोई तकलीफ नहीं देते।

मनुष्य को जब अपने दिल में सत्य की अवहेलना प्रतीत होती हो, तब उसको हल करने के लिए सत्याग्रह का कोई रूप हो सकता है, तो यही हो सकता है। मेरी राय में यही सौम्यतम सत्याग्रह का रूप हो सकता है। सत्याग्रह का हल यह है कि चोर-बाजार से प्राप्त किये मुनाफे का उपयोग जनहित कार्य में करके चोर-बाजार के पाप के लिए पश्चात्ताप किया जाय।

करीब पाँच महीनों से यह सत्याग्रह चल रहा है। श्री आत्माराम भाई की मानव-निष्ठा में गहरी श्रद्धा है। उनका कहना है कि "समय से मुझे मतलब नहीं, मुझे मतलब है सत्य से। मनुष्य स्वभाव से मूल रूप में सज्जन होने के कारण सत्य समझेगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।" इसका चमत्कारपूर्ण परिणाम भी नजर आ रहा है। अब व्यापारी भाइयों के दिल में विचार मंथन शुरू हुआ है। कड़ी धूप में श्री आत्माराम भाई को घूमते देख कर उनके दिल में दुःख भी होता है, मगर वर्षों से जिस संस्कार में वे पले हैं, वे संस्कार सत्य की प्रतिष्ठा करने में रुकावट डालते हैं। फिर भी "हमने यह भूल की है, हमने यह अच्छा नहीं किया," ऐसा दिल में जो दर्द होता है वह भी कुछ कम उत्साह-प्रेरक नहीं है। मानव-स्वभाव की जो अच्छी बुनियाद है, उसका यह ठोस परिचय दे रहा है। हम सर्वोदयवालों को सत्याग्रह के इस नये स्वरूप के प्रयोग को बड़ी दिलचस्पी से समझना चाहिए और उसको नैतिक बल देना चाहिए। ●

शांति-सैनिक का परिचय

[illegible] कुछ सैनिकों ने परिचय भेजा है, [illegible] रहा है। आशा है कि सब सैनिक [illegible]

१. नाम और मौजूदा पता :

२. आयु और स्वास्थ्य : मेरा जन्म मार्च सन् का है। इस हिसाब से इस समय उम्र वर्ष महीने करीब है। स्वास्थ्य जैसा होना चाहिए, वैसा नहीं है। शरीर कुछ कमजोर है, पर कोई खास बीमारी नहीं है। वैसे तो कठिन शारीरिक काम भी करने की आदत है, लेकिन वह थोड़े समय ही हो सकता है। कुल मिला कर दिन भर में १०-१२ घंटे आसानी से काम कर सकता हूँ और करता हूँ।

३. खानदान आदि : वह आगे जीवन-वृत्त के साथ दिया है।

४. शैक्षणिक योग्यता आदि : सन् में विश्वविद्यालय से राजनीति-शास्त्र में एम० ए० किया तथा सन् में कानून की परीक्षा (एल० एल० बी०) पास की। भाषाओं में हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती तीनों भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। कालेज में संस्कृत भी एक विषय था, इसलिए उस भाषा का भी ज्ञान है। उर्दू भाषा का बहुत सामान्य-ज्ञान है, लेकिन अभ्यास न रहने के कारण वह नहीं के बराबर ही मानना चाहिए।

५. प्रिय किताबें तथा प्रिय विषय : "गीता" और "गीता-प्रवचन" प्रिय पुस्तकें हैं। गीता को कंठस्थ करने का प्रयास भी किया था, पर वह पूरा नहीं हुआ। जीवन के शुरू में टाल्स्टाय की "हम क्या करें" और गांधीजी की "आत्मकथा" इन पुस्तकों तथा अन्य लेखों ने काफी प्रभावित किया। कुछ दिन बाद "विनोबा के विचार" के दोनों भाग पढ़े। इन लेखों ने विचारों को धार देने का काम किया।

कभी अध्ययन किया नहीं है, लेकिन खगोल का विषय प्रिय लगता है, वह पढ़ने की इच्छा रहती है। भूगोल और इतिहास में खूब रुचि है।

प्रिय कामों में खेती, बागवानी और सफाई है, इनमें खूब रस आता है।

६. खेल, योगासन आदि : खेलों में और व्यायाम में शुरू से काफी रुचि रही है। बचपन में अखाड़े में जाता था। दंड-बैठक आदि से व्यायाम की शुरुआत हुई। कालेज के दिनों में जिमनास्टिक का शौक था, उसी समय वालीबाल, टेनिस आदि भी रुचि के खेल थे। "टेनिस" और "गुल्ली-डंडा" आज भी प्रिय हैं, लेकिन शारीरिक स्थिति अब साथ नहीं देती। तैरना भी आता है और अच्छा लगता है, पर उसका भी अभ्यास कम हो गया है।

योगासनों में काफी रुचि रही है। आज भी बहुत नियमित तो नहीं, लेकिन करीब-करीब नियमित रूप से कुछ आसन रोज करता हूँ।

७. उद्योगों का ज्ञान : किसी उद्योग का व्यवस्थित शिक्षण नहीं लिया है, पर कताई करीब २५ वर्ष से करता हूँ। धुनाई, पूनी बनाने आदि का भी सामान्य ज्ञान है।

८. संक्षिप्त जीवन वृत्तांत : मेरा जन्म एक सम्भ्रांत, सुसंस्कृत और शिक्षित मध्यम वर्ग के घराने में हुआ, ऐसा कहा जा सकता है। हमारा कुटुम्ब एक शहरी कुटुम्ब रहा है। शहर में हमारा घर है।

मेरे पिताजी के मैं एक ही लड़का था। मेरे जीवन पर मेरे पिताजी के चाचाजी का बहुत प्रभाव पड़ा। उनके भी कोई पुत्र नहीं था और इसलिए पुरानी प्रथा के अनुसार मुझे उन्होंने भी अपना दत्तक-पुत्र बनाया। वे के करीब-करीब सर्वप्रथम "ग्रेजुएट्स" में से थे। उन्होंने सन् १८९० में विश्व-विद्यालय से अंग्रेजी में एम० ए० किया था। [illegible] जीवन में वे सरकारी रियासतों और गैरसरकारी ऊँचे पदों पर रहे। उनमें धार्मिक संस्कार प्रबल थे और समाज-सेवा की भी उनको अत्यधिक लगन थी। नौकरी से तो वे सन् '३० के आस पास में रिटायर हो गये थे, लेकिन '५३ तक, जब ८६ वर्ष की अवस्था में उनका देहांत हुआ, तब तक वे अनवरत सामाज-सेवा में लगे रहे। जाति और समाज में व अखिल भारतीय स्तर के व्यक्ति माने जाते थे और उनमें उनका काफी आदर था। उनका जीवन बहुत व्यवस्थित, संयमी और सादा था। बचपन से ही मुझ पर उनके व्यक्तित्व का काफी प्रभाव रहा।

ऐसे घराने में पैदा होने के कारण स्वाभाविक तौर पर ही मुझे तत्कालीन अच्छी-से-अच्छी शिक्षा का अवसर मिला। सन् '३० में मैंने एम० ए० किया। घरवालों की इच्छा थी कि मेरे बड़े पिताजी की तरह मैं भी सरकारी नौकरी में चला जाऊँ, पर शुरू से ही गांधीजी के विचारों ने आकृष्ट किया था, इसलिए कालेज में था, तभी "देश-सेवा" में लग जाने की प्रबल इच्छा हुई। स्वर्गीय सेठ जमनालालजी बजाज से इस विषय में सम्पर्क भी किया। सन् '३० के आंदोलन में विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय वातावरण बनाने में प्रमुख भाग लिया। पर इस समय तक उधर बड़े पिताजी अपनी नौकरी से रिटायर हो गये थे, संग्रह उन्होंने ज्यादा किया नहीं था। जितना-सा किया था, वह भी पिताजी ने व्यापार में खो दिया। इस प्रकार मैं पढ़ाई खतम करके कालेज से निकला, तब तक हमारा परिवार काफी कर्जदार हो गया था, इसलिए सेवा के क्षेत्र में जाना मजबूरन स्थगित रखना पड़ा।

कानून की परीक्षा पास की थी, शुरू में वकालत करना आरम्भ भी किया, पर अधिक दिन वह नहीं निभा। उधर कर्ज भी काफी था। रोजमर्रा के खर्च की भी तंगी थी, यह दो-तीन वर्ष का समय काफी तंगी से गुजरा। फिर मैं एक मित्र की दुकान में नौकरी की। वहाँ से सन १९३४ में इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स में सहायक मंत्री होकर गया। सन् १९४२ तक इंडियन चेम्बर के मंत्री के रूप में कलकत्ते में काम किया। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन, इंडियन पेपर मिल्स एसोसिएशन, इण्डियन केमिकल मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन आदि संस्थाओं का मंत्री भी रहा। तब तक कर्ज इत्यादि चुक गया था और इसलिए पहला मौका आते ही अगस्त १९४२ में मैंने चेम्बर से इस्तीफा दे दिया और आन्दोलन में आ गया।

जनवरी १९४३ में बनारस में पकड़ा गया। दो वर्ष बनारस जेल में रहा। सन् १९-४५ में छूटने के बाद [illegible] को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। एक राजनैतिक संस्था का मंत्री रहा। सन् १९४८ में दैनिक पत्र की स्थापना की तथा तीन वर्ष तक उसका सम्पादन किया। राजनीति के क्षेत्र में काम किया और कुछ दिनों तक एक पद को भी ग्रहण किया।

गांधीजी के समाज-क्रान्ति के विचारों का शुरू से ही आकर्षण था, अतः राजनैतिक कामों में रुचि कम थी। पूज्य काकासाहब, कुमारप्पाजी, किशोरलाल भाई, काका साहब आदि से इसी निमित्त परिचय हुआ और बाद में पूज्य विनोबा से मिले, जिन्हें राजनीति का क्षेत्र छोड़ने की प्रेरणा हुई। एक सर्वोदय-केन्द्र की स्थापना की। वहाँ रह कर खेती आदि के जरिये स्वावलम्बन और आस-पास के लोगों की सेवा का काम हाथ में लिया।

कुछ वर्षों बाद ही भूदान-आन्दोलन ने [illegible] प्रवेश किया। अपने प्रदेश के कुछ साथियों के साथ [illegible] भूदान-आन्दोलन की संयोजना का श्रीगणेश किया। फिर [illegible] भूदान काम में ही अधिक समय लगने लगा। [illegible] भूदान का ही काम चल रहा है। इस बार आन्दोलन की [illegible] के आदेश के अनुसार [illegible] काम भी [illegible] है।

जब वह खराब परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए सामने आये, तब दंगाइयों को वह ऐसा अजनबी न लगे, जिसे शक की नजर से देखा जाय या अवांछनीय व्यक्ति माना जाय।

६—यह कहने की जरूरत नहीं कि शान्ति-दूत का चरित्र निष्कलंक होना चाहिए और वह अपनी कठोर निष्पक्षता के लिए मशहूर होना चाहिए।

७—आम तौर पर आने वाले तूफानों की चेतावनी पहले से मिल जाती है। अगर चेतावनी मिल जाए तो शान्ति-सेना आग भड़क उठने तक बाट देखती न रहे, बल्कि पहले से ही स्थिति को संभालने की कोशिश करे।

८—अगर यह आन्दोलन फैल जाय तो पूरा समय लगाने वाले कुछ कार्यकर्ताओं का होना अच्छा रहेगा, लेकिन ऐसा होना [illegible] नहीं है। विचार यह है कि जितने अधिक अच्छे और सच्चे स्त्री-पुरुष मिल सकें [illegible]। वह तभी हो सकता है, जब स्वयंसेवक उन लोगों में से आवें, जो जीवन के विविध कामों में लगे हुए हैं, [illegible] कि वे अपने आसपास के लोगों के साथ मैत्री-सम्बन्ध कायम कर सकें और ऐसे गुण [illegible] रखते हों, जो शान्ति-सेना के सदस्य में होने चाहिए।

सेना के लोगों के पहनने की खास पोशाक होनी चाहिए, ताकि धीरे धीरे उन्हें जरा भी कठिनाई के बिना पहचाना जा सके। *

सन् १९३८ के इस विचार का प्रयोग कुछ स्थानों पर हुआ। एक लम्बी अवधि के पश्चात् सन् १९४६ में गांधीजी ने अनुभव पर आधारित कुछ सुझाव सामने रखा। जो कुछ प्रयत्न उस समय हुए, उनमें उतनी सफलता नहीं मिली क्योंकि राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण कुछ इस कदर राष्ट्रीयता की भावना से पग गया था कि शान्ति-दलों के व्यावहारिक प्रयोग के लिए समय देने का किसी को अवकाश ही न था। फिर भी, जो [illegible] उनके विषय में गांधीजी ने लिखा है—'शान्ति-दल बड़े पैमाने पर काम नहीं कर सकते। अहिंसक दल को यदि कारगर बनना है तो वह छोटा ही होना चाहिए। ऐसे दल सब जगह बिखरे हुए हो सकते हैं। [illegible] के लिए एक दल हो सकता है। दल के [illegible] एक-दूसरे से [illegible] परिचित होने चाहिए। प्रत्येक दल अपना मुखिया आप ही चुन लेगा। सब सदस्यों का दर्जा एक-सा होगा,

[शेष पृष्ठ-संख्या १२ पर]

* हरिजन १८-६-१९३८।

हमारा कार्य

दिवाकर, गया

अभी हम भूदान-आंदोलन से ग्राम-स्वराज्य तक पहुँचे हैं, इस बीच कई प्रकार के कार्यक्रम हमारे सामने आये और अब भी हैं, परन्तु किसी भी कार्यक्रम को लेकर सामूहिक शक्ति लगा कर आंदोलन का रूप देने का प्रयास नहीं हुआ, अर्थात् किसी भी क्षेत्र में किसी भी कार्यक्रम को प्रत्यक्ष रूप नहीं दे सके। इस दिशा में भिन्न-भिन्न स्थानों पर चिंतन तो हुआ, परन्तु स्थिरता नहीं रह सकी और अपने निर्णयों को बराबर बदलते रहे। इससे किसी काम का भी किसी क्षेत्र में दर्शन नहीं हो सका, जिससे मैं समझता हूँ कि आन्दोलन को काफी धक्का लगा। खुशी की बात है कि अब हर प्रान्त में इस दिशा में पुनः विचार होने लगा है।

भूदान-प्राप्ति के समय हम कार्यकर्ता गाँववालों के समक्ष यह विचार रखते थे कि भूमि किसी की नहीं है। इसका मालिक व्यक्ति नहीं, ईश्वर है, अर्थात् समाज है। गाँव-गाँव में भूमिहीनता को मिटाने के विचार भी हमने रखे। भूमिहीनों को आशा बँधी। भूमिवान भी समझने लगे कि अब मालकियत नहीं रहेगी, भूमि नहीं रहेगी आदि। लाखों व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। परन्तु इसके बाद ही ग्रामदान का विचार आया और सब ग्रामदान-प्राप्ति का प्रयास करने लगे और भूदान-प्राप्ति का काम बिल्कुल समाप्त हो गया। जो वातावरण बना था, वह भी धीरे-धीरे सब समाप्त होने लगा। ग्रामदान तो विशेष प्राप्त नहीं हुए। लेकिन जो काम हो रहा था, वह भी बंद हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि भूदान वितरण में भी कई प्रकार की कठिनाइयाँ आने लगीं। यहाँ तक हुआ कि भूदान दाताओं ने भी भूमि की सही स्थिति बताने से इनकार कर दिया और आज भी वितरण की यही समस्या है। हजारों की तादाद में दान-पत्र ऐसे हैं, जिन पर भूमि का विवरण नहीं है और न ही वे विवरण देने को तैयार हैं। दूसरी प्रतिक्रिया यह हुई कि भूदान की वितरित भूमि को भी बेदखली चलने लगी। कहीं दाताओं ने जमीन छीन ली, कहीं गलत कागजात की धमकी देकर बेदखल कर दिया और कहीं मारपीट कर भूमि को छीन लिया। इन सब प्रतिक्रियाओं का मुख्य कारण यह है कि भूदान का जो वातावरण था, वह प्रायः समाप्त-सा हो गया।

इसका कारण मुझे लगता है कि जो कार्यकर्ता भूदान में लगे थे, अब वे निर्माण के काम में लग गये। निर्माण-कार्य के लिए [illegible], उद्योग-[illegible] आदि से रकमें प्राप्त की गयी। जो कार्यकर्ता निर्माण में लगे थे, उनकी आर्थिक समस्या तो हल हुई साथ ही उनको जीवन के लिए निश्चिन्तता भी हो गयी। इसलिए कार्यकर्ता किसी संस्था का आधार लेकर काम करने का प्रयास करने लगे, जिससे गाँव में घूमने वाले कार्यकर्ताओं की संख्या में कमी हो गयी और [illegible] का [illegible] बन्द-सा हो गया।

जिन कार्यकर्ताओं को आर्थिक [illegible] नहीं दी जा सकी थी उनके मन पर यह प्रतिक्रिया हुई कि हमारे ही साथी [illegible] से रहते हैं, हम क्यों [illegible] भावना को बना करें। वे या तो घर बैठ गये या कुछ दूसरे कामों में लग गये।

निर्माण की दृष्टि से कुछ स्थानों पर बड़े-बड़े आश्रमों की स्थापना हुई। भिन्न-भिन्न संस्थाओं की आर्थिक सहायता भी प्राप्त की गयी और भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियाँ भी चलायी गयीं। उनका रूप धीरे-धीरे इतना विशाल हो गया कि वे एक प्रकार के कारखाने जैसे दिखाई देने लगे। काम बढ़ता गया, परन्तु उपयुक्त कार्यकर्ता मिले नहीं। स्थान की पूर्ति के लिए जैसे-तैसे कार्यकर्ताओं को रखा गया, इससे जिस आश्रमीय जीवन का दर्शन होना चाहिए था, वह उस आश्रम से उपलब्ध न हुआ और प्रतिक्रिया ही हुई। नये कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण भी इन आश्रमों में चलाये गये, जिससे कार्यकर्ताओं का निर्माण तो हुआ नहीं, लेकिन वे प्रतिक्रिया लेकर ही चले गये। इसका कारण यह था कि आश्रम में काम करने वाले कार्यकर्ताओं के जीवन को देख कर नये कार्यकर्ताओं की अपेक्षा बड़ी और उनकी पूर्ति न होने पर प्रतिक्रिया हुई। बड़े आश्रमों के आसपास के लोगों में सद्भावना नहीं बढ़ी, लेकिन इस क्षेत्र के लोगों में लेने की प्रवृत्ति की ही वृद्धि हुई।

हमारे सारे आंदोलन की बुनियाद कार्यकर्ता हैं। इसी विचार से प्रेरित होकर हम कार्यकर्ता एकसाथ रहने का प्रयास करते हैं, परन्तु इस कौटुम्बिक जीवन का कहीं भी दर्शन नहीं हुआ, बल्कि जहाँ अधिक कार्यकर्ता हैं, वहाँ परस्पर मत-भेद की समस्या है और बहुत-सा काम इसी-लिए पिछड़ जाता है कि उनका आपस में नहीं बनता। अगर इसकी बजाय कार्यकर्ताओं के मच (टीम) बनते तो सामूहिक शक्ति का निर्माण होता और किसी भी काम को चालना दे सकते, परन्तु इस भावना की हम सब कार्यकर्ताओं में कमी रही है।

हम जिस क्षेत्र को अपना प्रयोग स्थल घोषित करते हैं, उसमें हर प्रकार की शक्ति लगानी ही चाहिये। अगर काम की कुछ कठिनाई आती है, तो उस क्षेत्र को छोड़ने की बजाय पद्धति में अन्तर करना चाहिये। अभी तक यही रहा कि क्षेत्र घोषित हुआ या संकल्प हुआ, जनता के सामने भी वह विचार आया। इस प्रकार की घोषणाओं के पीछे हमारी जिम्मेवारी रहती है। अगर वह क्षेत्र छोड़ देते हैं, तो वहाँ प्रतिक्रिया ही होती है और हमारी बात का विश्वास कहीं नहीं होता।

लोग यही समझते हैं कि राजनैतिक पार्टियों की भाँति ये लोग भी बहुत-सी बातें करते हैं और उनकी पूर्ति कहीं भी नहीं होती। गया जिला अभी हमारे सामने है। उसके पीछे हम सबका संकल्प है। उसकी पूर्ति करना हम सबकी नैतिक जिम्मेवारी भी है। पुनः स्थानीय कार्यकर्ता इस दिशा में सोच रहे हैं। श्रद्धेय जयप्रकाश बाबू ने लगातार २२ दिन इस जिले को दिये हैं। हमें आशा है कि इस भ्रमण का कुछ निष्कर्ष निकलेगा और उसी आधार पर आगे के काम का दर्शन मिल सकेगा।

पारस और लोहा

उमड़-घुमड़ घन चले सूखने धान में, पारस घूम रहा लोहे की खान में।

वाल्मीकि से दस्यु बने कवि धूमते
कितने अंगुलिमाल चरण-रज चूमते।
मनु निरंतर नारायण का इतिहास है
अंतर क्या फिर मनुज और भगवान में॥

बापू की यह सही विरासत आज भी, अमृत-घट ढुलकाती है श्मशान में॥

चलता-फिरता राष्ट्र शान्ति का कुंज है
देख, क्रान्ति स्वयं बन जाती लुंज है।
संत विनोबा वह प्रकाश का पुंज है
देख जिसे तलवारें घुसतीं म्यान में॥

बदल गया नरभक्षी आशीर्वाद में, कौन मंत्र दे फूँका तूने कान में॥

कोई नाप रहा दूरी आकाश की
कोई नाप रहा है राग की, चाँद की।
पर नर से नर की दूरी जो नापता
नायक बनता वही पुराण कुरान में॥

उमड़-घुमड़ घन चले सूखने धान में, पारस घूम रहा लोहे की खान में।

—चन्द्रशेखर मिश्र

आसाम का 'दाघरा' गाँव

सन् १९५८ की २० मई का दिन। आसाम दाघरा के गाँववालों के लिए वह एक महत्त्वपूर्ण दिन था, जब उन्होंने सारी जमीन भगवान् को समर्पित करने का संकल्प किया। यह गाँव निकट की बेका नदी की बाढ़ से पीड़ित गाँव है। बाढ़ के कारण सारी फसल बरबाद हो जाती है, जिससे कई परिवारों को गाँव छोड़ना पड़ा था। बचे हुए १३ परिवारों ने ग्राम-स्वराज्य की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास किया।

गाँववालों ने सामूहिक खेती करने का तय किया। कटनी के बाद फी आदमी को समान रूप से फसल बाँटी गयी। बाढ़ के कारण साल भर के लिए पर्याप्त अनाज नहीं था। ग्राम-निर्माण समिति से कर्ज लेकर और कुछ धान भी खरीद कर सब परिवारों को बाँटा गया।

ग्रामदान के बाद ग्राम-सभा बनी और एक कृषि-समिति का भी गठन हुआ। एक सामूहिक खेत का अनाज बेच कर ग्राम-सभा के कार्यालय के लिए मकान बनाया गया। एक साल के बाद आधा कर्ज भी लौटाने का तय हुआ। ग्रामदानी गाँव का निर्माण कार्य देख कर बाहर के सात परिवार भी ग्रामदान में शामिल हुए।

स्वावलम्बन की दृष्टि से गुड़ गाँव में ही बनाने का तय किया और दो बीघा जमीन में गन्ना बोया गया। गाँव में बैलों की कमी थी, इसलिए ग्रामसभा द्वारा सबको किराये पर बैल-जोड़ी दी गयी। कम्पोस्ट खाद बनाने का भी इन्तजाम हुआ। गो-पालन की भी योजना बनी। एक आदर्श खेत बनाने की दृष्टि से ६ बीघा जमीन अलग रखी गयी।

गाँववालों ने वस्त्र-स्वावलंबी बनने का संकल्प किया। मिल का कपड़ा न खरीदने का संकल्प कर घर-घर जो करघे थे, उन्हें चलाने का तय हुआ। गाँववालों ने सोचा कि कुछ दिनों तक अभी खादी तैयार की जाय यानी जब तक गाँव में पर्याप्त कपास पैदा नहीं होती है, तब तक कुछ मिल का सूत भी लेकर गाँव में बुना जायगा। गाँव में पहले जो कुछ उद्योग चलते थे, वे सारे ग्राम-सभा द्वारा चलने लगे। उनके विकास की भी योजना बनायी गयी।

सप्ताह में एक दिन गाँव के सभी लोग मिल कर सामूहिक प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना के बाद गाँव की समस्याएँ, विकास आदि के बारे में चर्चा होती है। गाँव के बीमा घरों में सर्वोदय-पात्र हैं जो ठीक ढंग से चलते हैं। पात्र के अनाज का संग्रह करने का काम एक सर्वोदय मित्र करते हैं। गाँव में पहले शराब आदि मादक चीज चलती थी, लेकिन अब गाँववालों ने [illegible] नशाबंदी का संकल्प किया है। [illegible] कोई झगड़ा नहीं होगा और यदि हुआ, तो गाँव में ही उसे तय करने का भी संकल्प किया गया है।

—मणिचन्द्र शइकिया

आंदोलन के बढ़ते चरण

मंगरौठ में 'ग्रामदान-दिवस'

गत ता० २३, २४ और २५ मई को उ० प्र० के मंगरौठ में विनोबाजी का शुभागमन दिवस तथा 'ग्रामदान-दिवस' धूमधाम से मनाया गया। २३ मई को एक पदयात्री टोली, जिसमें सर्वश्री रानी राजेन्द्र कुमारी एम० एल० ए०, शकुन्तला पाण्डेय, रामगोपाल दीक्षित (जिला भूदान-निवेदक व प्रधान जिला हरिजन-सेवक-संघ), मुखलाल भाई वीरा और दीनदयालजी थे, मंगरौठ पधारी। ग्रामवासियों ने टोली का गाँव के बाहर ही स्वागत किया और उसीके साथ विनोबा-घाट पहुँच कर स्नान, प्रार्थना एवं कीर्तन किया। श्री दीक्षितजी का सर्वोदय विचार-धारा पर सारगर्भित प्रवचन हुआ।

सायंकाल ५ बजे श्री शकुन्तला पाण्डेय की अध्यक्षता में विराट सभा हुई। गाँव के भाई-बहनों के साथ आस-पास के लोग भी सम्मिलित हुए थे। श्री दीक्षितजी और श्री मुखलाल भाई के भाषण के बाद श्री दीवान साहब ने मंगरौठ के ग्राम-सेवक की हैसियत से मंगरौठ में रहने की सूचना दी। तत्पश्चात् श्री शकुन्तला पाण्डेय का भाषण हुआ।

ता० २४ को प्रातः से ही लोग ग्राम-कल्याण में जुट पड़े। शाम को ग्राम के अगले वर्ष का कार्यक्रम बनाने के लिए मण्डल की बैठक हुई। उसी समय सूबा भूदान-समिति के अध्यक्ष श्री करण भाई, अखिल भारत सर्व सेवा संघ के प्रधान मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन, श्री प्रकाश भाई तथा अन्य सहयोगी जन भिंड की चम्बल-घाटी के विनोबाजी के कैम्प से पधारे।

रात को सभा हुई। श्री दीक्षितजी की कहानी से प्रारम्भ होकर बेटियों के गीत और प्रहसन के बाद श्री करण भाई का प्रवचन हुआ। ग्राम की रिपोर्ट पेश हुई। मंगरौठ की सेवा का भार सँभालने वाले होनहार युवक श्री इन्द्रपाल भाई ने ग्राम की रूप-रेखा पेश करते हुए सबके कृपापूर्ण सहयोग की कामना की। रात अधिक हो जाने से सभा विसर्जित हुई।

ता० २५ मई को प्रातः श्री करण भाई अपनी टोली के साथ ग्राम-निरीक्षणार्थ निकले। गाँव की पूर्ण सफाई और घर-घर के आँगन में चौकपूरी हुई थी। फिर गाँव की सभा हुई, जिसमें गाँववालों की ओर से गत वर्ष के कार्य का सिंहावलोकन करते हुए प्रकाश डाला गया और अगले वर्ष का कार्यक्रम पूरा करने के लिए निश्चय किया गया। इसके बाद सर्व सेवा संघ के प्रधान मंत्री श्री पूर्णचन्द्रजी जैन तथा श्री करण भाई के भाषण हुए। दोपहर को घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखने का पुनीत कार्य सम्पन्न हुआ।

मुंगेर जिले के ग्रामदानी गाँव

मुंगेर जिले के ग्रामदानी गाँवों के निर्माण का दिसम्बर '५९ से अप्रैल '६० तक का यह संक्षिप्त विवरण है। ये तीनों गाँव जमुई सबडिविजन के लक्ष्मीपुर थाने में 'खादीग्राम' के पड़ोस में हैं। यह पहाड़ी क्षेत्र है, जहाँ सिंचाई की व्यवस्था नहीं है। अत: ग्रामदान के बाद खेती की प्रगति सहज ही आँकी जा सकती है।

लखमदिया: यहाँ गान्धी स्मारक निधि का एक ग्राम-सेवा केन्द्र है। इस वर्ष पूरे गाँव की धान की खेती कुल १५० एकड़ में हुई। यहाँ के दस परिवारों ने सामूहिक जीवन बिताने का निश्चय किया है, जिसके अनुसार इस वर्ष सामूहिक खेती हुई और इन परिवारों ने अपनी सारी चल और अचल सम्पत्ति एक में मिला दी है। लोग जो मजदूरी करते हैं, उसे भी एक साथ शामिल कर देते हैं। यहाँ के लोग हर शुक्रवार को श्रमदान करते हैं। एक रात्रि-पाठशाला चलती है।

सिरिया: मकान और कुआँ बनाने के लिए ईंटें बनायी जा रही हैं। इस वर्ष इस गाँव में कुल ६५ एकड़ में खेती हुई, जिसमें २५ बीघे में सामूहिक खेती हुई, जब कि ग्रामदान के प्रथम वर्ष में केवल ७० मन धान और २७ मन मकई की उपज हुई थी, इस वर्ष २७० मन धान और ११५ मन मकई की उपज हुई। एक पाठशाला चलायी जाती है, जिसमें ३५-४० की उपस्थिति रहती है। ५ एकड़ जमीन का सुधार हुआ। एक कुएँ की खुदाई हो रही है।

पेला: इस वर्ष १०० एकड़ में धान की खेती हुई, जिसमें ९०० मन की उपज हुई थी। .३ एकड़ में जापानी तरीके से धान की खेती हुई। पुराने ढंग की खेती में १० मन प्रति एकड़ और नये ढंग की खेती से १३ मन प्रति एकड़ धान की उपज हुई। घर-घर में सर्वोदय-पात्र स्थापित हुए। एक तालाब की खुदाई हो रही है।

आदर्श समारोह

सेवाग्राम से लौटते ही दो सज्जनों ने बिना माँगे १६७ एकड़ का भूदान दिया। उसमें से ६७ एकड़ का पट्टा परिवारों में वितरण भी हो चुका।

शिमोगा जिले के एक गाँव में, जो प्रान्तीय सर्वोदय-मंडल के एक सदस्य श्री मल्लिकार्जुन गौड़ा का गाँव था, एक सामूहिक विवाह-समारोह का आयोजन हुआ था। विभिन्न जातियों के लोगों ने अपने रस्म-रिवाजों को कायम रखते हुए एक ही स्थान पर विवाह समारोह करने का तय किया था। वहाँ पर ३१ शादियाँ हुईं, जिनमें दो मुसलमान परिवारों की थी। विवाह-समारोह होने पर भी वहाँ पर भूदान, ग्रामदान, खादी, सर्वोदय-पात्र आदि का वातावरण था। वर-वधुओं में अधिकतर भूदान-परिवार के थे। उस गाँव से ६० घरों में सर्वोदय-पात्र रखे गये थे, जिनके अनाज का उपयोग समारोह के लिए प्रसाद रूप में किया गया था। वर-वधू एक साथी चरखा चलाकर मंच पर बैठे थे। श्री कृष्णस्वामी ने सबको आशीर्वाद दिया और एक अंबर-परिश्रमालय का भी उद्घाटन किया। श्री गौड़ा ने भी उपस्थित समुदाय से कहा कि वे अपने दो गाँव ग्रामदान में अर्पण करेंगे तथा घर से मुक्त होकर जन-सेवा में पूरा समय देंगे। —गुंडाप्पा

तमसो मा ज्योतिर्गमय !

मोतीलाल केजरीवाल

मनुष्य प्रायः अपने को बुद्धिमान समझता है। कहावत है कि अपनी बुद्धि और दूसरे का धन सदा ही मनुष्य को ज्यादा दिखाई पड़ता है। अपने यौवन-काल में मैं जिस बात को अपनी बुद्धि के अनुसार उस समय बहुत अच्छी समझता था, उसको आज अनुभव प्राप्त हो जाने पर हास्यास्पद समझता हूँ। मन ही मन मैं अपने पर हँसता हूँ, जब कि आज हास्यास्पद मालूम देने वाली बात को उस समय सुनिश्चित और श्रेष्ठ समझ कर लोगों के सामने उसके बुद्धिसंगत होने का दावा करता था। अनुभव ने बताया कि 'बुद्धिमत्ता का दावा करने वाले मनुष्य, तुम्हारी सीमित बुद्धि को तुम व्यापक समझ कर जो कहते, बोलते या घोषित करते हो, वह ठीक नहीं भी हो सकता है। इसलिए तू अपने को बुद्धिमान समझ कर दूसरे की बात की अवहेलना न कर।'

बातों बुद्धि की कसौटी पर कस कर निम्नलिखित बातों पर मैं अपनी राय को प्रकट करता हूँ।

(१) सर्वोदय-समाज बनाने के लिए विचार-प्रचार के द्वारा एक वातावरण तैयार करना होगा, इसलिए कुछ कार्यकर्ता—मेरा मतलब यह है कि प्रत्येक जिले में दो-चार कार्यकर्ता—कम-से-कम एक वर्ष की अखण्ड पदयात्रा का संकल्प लें। विभिन्न संस्थाओं की बैठकों में शामिल होने, शिविरों में भाषण देने एवं सामाजिक समारोह में सम्मिलित होने के लिए न जायें। हाँ, अपनी पदयात्रा के मार्ग में ऐसा कार्यक्रम आ पड़े तो अवश्य कर लें। पदयात्रा भंग करके उनमें शामिल न हों।

(२) गांधी-स्मारक निधि के कोष का दुरुपयोग होता है। चन्दा उठाते समय, अर्थात् १९४८ और १९४९ में चन्दा उठाने वालों या उस कार्य में सहायता देने-वालों ने कभी भी यह कल्पना नहीं की थी कि इस चन्दे की रकम से कार्यकर्ता मोटी-मोटी तनख्वाह लेंगे और अपने रहने या कार्यालय के लिए लाखों की लागत की इमारतें तैयार करेंगे, वातानुकूलित डिब्बों या फर्स्ट क्लास डिब्बों में बैठ कर अथवा हवाई जहाज से यात्रा करेंगे। आज जो हो रहा है, उस निधि का दुरुपयोग हो रहा है।

(३) खादी का काम चलाने के लिए जिस नीति का अवलम्बन किया गया है, वह खादी को स्वावलम्बी नहीं बनने देगी। सरकारी तौर-तरीकों पर कागजों या परिश्रम की खानापूर्ति अमल को प्रश्रय देती है। इसी तरह मोटी-मोटी तनख्वाहें शोषणमुक्त समाज या सर्वोदय-समाज की भावना से लोगों को दूर ले जाती है।

(४) रचनात्मक काम का दावा करने वाली संस्थाओं में राजनैतिक संस्थाओं की तरह लोकैषणा और वित्तैषणा की वृत्ति में कार्यकर्ता आ गये हैं और कहीं-कहीं प्रयत्नपूर्वक अपना व्यक्तिगत और तथा-कथित दल का स्वार्थ साधते हैं।

(५) वर्तमान सरकार की सर्वांगीण नीति अनिष्ट सरकारी नौकरों की संख्या-वृद्धि मुद्रास्फीति एवं उपभोग-सामग्रियों की कमी के निराकरण के लिए सर्व सेवा संघ की ओर से प्रस्ताव उठाना अत्यन्त आवश्यक है। यह नहीं हो रहा है। इसका कारण सरकारी पदाधिकारियों की कृपा से वंचित हो जाने का डर ही मालूम देता है।

*   *   *

मेरी बुद्धि या तर्क की कसौटी पर कसी हुई मेरी राय ठीक ही है, ऐसा दावा करना उचित नहीं हो सकता है। मैं असंगत अथवा सामयिक रूप से न सोचता होऊँ। बुद्धि या तर्क के आधार पर नहीं, किन्तु श्रद्धा के आधार पर मेरा विश्वास है कि भगवद्कृपा से मनुष्य को निर्मल बुद्धि प्राप्त होती है। उपवास इसका एक साधन है। उपवास का शाब्दिक अर्थ आत्मदेव के निकट रहना ही है।

*   *   *

मैं १३ अप्रैल से पदयात्रा में ही हूँ। यह यात्रा कम-से-कम ३१ दिसंबर तक चले, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है। यह यात्रा किसी कार्यकर्ता, साथी, मित्र या सौजन्य के आकस्मिक विपत्ति-काल में मिलने या अपनी शारीरिक बीमारी के समय ही पाँच-सात दिन के लिए स्थगित हो सकती है अथवा प्रादेशिक सर्वोदय-मंडल के आदेशानुसार प्रान्त के दूसरे भाग में पदयात्रा के लिए ही क्षणिक रूप में हो सकती है। मेरी इस पदयात्रा में पूर्वतैयारी का उपाय नहीं है। जनता को आवाहन करना, साहित्य की फेरी लगाना, भाषण देना आदि सारे काम हमारे पाँच-सात साथियों की टोली को ही करना पड़ता है। कभी तपती हुई धूप में भी चलना पड़ता है। कभी अपना से भोजन बनाना, कहीं बिना भोजन के ही रहना पड़ता है। इन तथाकथित कठिनाइयों से ऊब न जाऊँ, इस हेतु मानसिक शक्ति चाहिए। अतएव भगवत्कृपा प्राप्त करने की अभिलाषा है।

*   *   *

यह सोच कर मैंने ४ दिन का मेरे लिए लंबा, किन्तु साधक अथवा सिद्ध के लिए एक अल्पकालीन उपवास करने का सोचा है। इसमें पानी, नमक, सोडा आदि चीजें ली जायेंगी। किन्तु तिथि और स्थान मैं इसलिए नहीं लिखता, ताकि मित्र एवं शुभ चिंतक मेरे पास न तो आ सकें और न रोक सकें। मेरा विश्वास है कि सच्चे मानी में उपवास करने पर भगवान् की कृपा से मुझे शक्ति और प्रकाश मिलेगा। हे प्रभु ! तमसो मा ज्योतिर्गमय !

सैनिक-शिक्षा के विरुद्ध विद्यार्थी द्वारा सत्याग्रह

'विकार आफ वेकफील्ड' का सुपुत्र मार्टिन ट्रेलीकार जिस पाठशाला में पढ़ता है, उसका अध्यक्ष सेना का एक बड़ा अफसर है। इंग्लैण्ड में सैनिक-शिक्षा अनिवार्य है, किन्तु उन्हें इसकी छूट दी जा सकती है, जो किसी धार्मिक या सैद्धान्तिक कारण से इसके खिलाफ हैं। उन्हें उसके पहले अन्य जनसेवा-कार्य करना पड़ता है। किन्तु यह बालक स्कूल में अपना प्रवेश तब तक स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुआ, जब तक उसे स्कूल-सैनिक-टुकड़ी को छोड़ देने की मंजूरी नहीं मिली। बहस हफ्तों तक चलती रही। आखिर अधमने ढंग से अधिकारियों ने मंजूरी दी। वह लिखता है :

"जब सेना में अनिवार्य रूप से भरती करने का कानून लागू था, तो यह दलील पेश की जाती थी कि छोटी उम्र के बच्चों को सैनिक-प्रशिक्षण या उसका विरोध करना, इन दोनों के बीच में चुनने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए। लेकिन उन लड़कों का क्या होता था, जो १४ साल की उम्र में स्कूल की सैनिक-टुकड़ी में ढकेल दिये जाते थे ? जब मैंने इसका विरोध किया तो मुझसे कहा गया कि मैं अभी छोटा हूँ और शांतिवादी बनने लायक उम्र का नहीं हूँ। शांति के ऊपर एक छोटी अध्ययन-मंडली के सामने बोलने से एक वक्ता रोका गया, लेकिन सैनिक पेशे के कई सारे व्याख्यान अनिवार्य रूप से रखे गये थे। इसलिए चार साल तक इन लड़कों को शांतिवादियों की बातें सुनने नहीं दी और इनमें से ४० प्रतिशत लड़के तो पुरोहित के थे।"

वह हर शांतिवादी माता-पिता से हार्दिक निवेदन करता है कि वे अपने बच्चों को निःशस्त्र और मुक्त शिक्षण देने की व्यवस्था करें।

सूरत में सत्याग्रह

गुजरात प्रजा-समाजवादी पार्टी ने पिछले सप्ताह हुई अपनी बैठक में यह तय किया है कि अगर आगामी सितम्बर तक सरकार की ओर से सूरत जिले के पार्डी तालुके के भूमिहीन किसानों की माँग का उचित समाधान नहीं हुआ, तो उस क्षेत्र में 'सत्याग्रह' शुरू किया जायगा। पार्डी तालुके में ५० हजार एकड़ जमीन जमींदारों द्वारा बम्बई शहर को दूध मुहैया करने वाले दुधारी जानवरों के उपयोग के लिए घास उगाने के काम में लायी जा रही है। तालुके के भूमिहीन किसानों की माँग है कि वह जमीन खेती के लिए उनको मिलनी चाहिए। वे खेती के साथ-साथ जानवर पाल कर बम्बई को दूध पहुँचाने का काम भी करने को तैयार हैं।

श्री 'कमल'जी की पदयात्रा

राजस्थान में उदयपुर और उसके आसपास श्री रामकुमार 'कमल' ने अपनी अखंड पदयात्रा, जो कि हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, पंजाब, राजस्थान आदि प्रान्तों में चालू रही है, जारी रखी। ता० २८ अप्रैल ६० से २ जून ६० के बीच इन्होंने करीब २५८ मील की पदयात्रा की, जिसमें विभिन्न स्थानों पर सर्वोदय पात्रों की स्थापना, जिनकी संख्या लगभग १५० के है, की गयी।

हिमाचल में सर्वोदय-कार्य

श्री प्यारेलाल शर्मा ने हिमाचल प्रदेश में अखंड पदयात्रा आरंभ की है। यात्रा में अच्छे अनुभव आ रहे हैं। शांति सेना के विचार का जनता सहर्ष स्वागत कर रही है। पंजाब के कार्यकर्ता श्री ब्रह्मानंद भी हिमाचल के गाँव-गाँव में खंजड़ी पर भजन गाकर सर्वोदय का संदेश सुना रहे हैं।

सन् '५८-'५९ में नीरा-बिक्री

राज्य	मात्रा (गैलन)	रुपये कीमत
आन्ध्र	१४,०७,९४०	११ ६४,७२३
बिहार	४,६४०	५,८००
बम्बई राज्य (पुराना)	२,२६,४१४	२,८७,९६९
मद्रास	१५ १२,०३८	५,८८,९६९
मध्य प्रदेश	३६६	२२८
उड़ीसा	३,९८७	४,८१०
पंजाब	६,०००	७,४३०
राजस्थान	२५,४१६	११,३२०
उत्तर प्रदेश	४,६६७	५,८०४
प. बंगाल	९३०	५१०
कुल	३१,९३०४३	२०,७१,८२०

शांति-सेना पर बापू के विचार

[पृष्ठ-संख्या ७ का शेष]

मगर जहाँ हरएक व्यक्ति वहीं काम करता हो, वहाँ एक आदमी ऐसा होना ही चाहिए, जिसके अनुशासन में सब रहें। नहीं तो काम की हानि होगी। जहाँ दो या अधिक दल हों, वहाँ नेताओं को आपस में सलाह करके काम की एक-सी दिशा तय करनी चाहिए। यही सफलता की कुंजी है।"*

अब स्वातंत्र्य-संग्राम में देश की जनता का ध्यान केन्द्रित नहीं है। समाज नव-निर्माण के लिए क्रियाशील है। फिर भी, कुछ असामाजिक तत्त्व इस विकराल रूप में समाज की नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में बाधक बन रहे हैं, जिनके निराकरण के बिना देश की वास्तविक समृद्धि बाधित है। ऐसे असामाजिक तत्त्वों का निराकरण अहिंसक उपायों से यदि किया जाय, तो उस निराकरण में स्थायित्व होगा, क्योंकि हिंसा का प्रतिकार या प्रतिरोध अहिंसा द्वारा ही अच्छी तरह हो सकता है। असामाजिक तत्त्व न तो आकाश से टपकते हैं और न धरती से उगते हैं। वे सामाजिक कुव्यवस्था के परिणाम हैं और समाज ही उनके हल की समुचित व्यवस्था करके उनका अन्त कर सकता है। शांति-सेना तो अहिंसक शान्ति का आह्वान-मात्र है। लेकिन समाज का उसे सच्चा सहयोग यदि मिला, तो यह असम्भव नहीं कि अपने प्रेमपूर्ण एवं निःस्वार्थ सेवा के द्वारा अस्त-व्यस्त सामाजिक ढाँचे को बदल कर यह सभ्य सुदृढ़ समाज का संयोजन कर दे।

---

* हरिजन ५-५-१९४६

●

बिहार प्रांतीय सम्मेलन का हिसाब

सारन जिला सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की एक सभा में यह तय किया गया है कि बिहार प्रांतीय चतुर्थ सर्वोदय-सम्मेलन, जो कि इसी जिले के सीवान गाँव में हुआ था, के आय-व्यय का विवरण जनता की जानकारी के लिए प्रकाशित कर दिया जाय।

●

रेलवे में सर्वोदय-प्रचार

प्रयाग स्टेशन पर ४ जून को रेलवे-कर्मचारियों के बीच सर्वोदय-विचार-प्रचार की दृष्टि से श्री सुरेशराम भाई ने चर्चा की और रेलवे-कर्मचारियों ने यह स्वीकार किया कि वे रेलवे-यूनियनों में व्याप्त विद्वेष को कम करके आपसी भाईचारे को बढ़ायेंगे और पार्टीबंदी तथा गुटबंदी से बचने का प्रयत्न करेंगे। कर्मचारियों ने अपने घरों में सर्वोदय-पात्र की स्थापना करने का भी निर्णय किया।

●

सूचनाएँ :

श्री धीरेन्द्र भाई की हीरक जयंती

पिछले कुछ वर्षों से 'श्रमभारती' पू० धीरेन्द्र भाई के जन्म-दिन को श्रम-जयन्ती के रूप में मनाती आयी है। इस साल १० सितम्बर, '६० को उनकी हीरक जयन्ती है। इस अवसर पर हम उनके विचार, व्यक्तित्व तथा जीवन से सम्बन्ध रखने वाले निबन्धों तथा अन्य रचनाओं का एक संग्रह प्रकाशित करना चाहते हैं। पू० धीरेन्द्र भाई के साथियों और शिष्यों की संख्या इतनी अधिक है कि सबको व्यक्तिगत रूप से लिखना हमारे लिए संभव नहीं है, इसलिए इस पत्र के माध्यम से हम उनसे परिचित सभी भाई-बहनों तक अपनी प्रार्थना लेकर पहुँचना चाहते हैं कि पू० भाईजी के जीवन के किसी पहलू पर लिखें और उनकी जीवन-साधना को समाज के लिए स्थायी बनाने में सहायक हों। बतौर सुझाव के हम कुछ विषयों के शीर्षक नीचे दे रहे हैं। अपनी इच्छानुसार आप स्वयं भी इस प्रकार का कोई शीर्षक चुन सकते हैं। हम ३१ जुलाई, '६० तक रचनाओं की प्रतीक्षा करेंगे।

विषय : जीवन, संस्मरण, शासनमुक्त, समग्र ग्राम-सेवा, तंत्रमुक्ति, वर्ग-निराकरण, श्रमनिष्ठा, नई तालीम, सफाई-विज्ञान, क्रान्तिकारी चरखा, स्वराज्य की समस्याएँ, ग्राम-स्वराज्य, सहजीवन, साम्य के प्रयोग।

'श्रमभारती,'
खादीग्राम

—राममूर्ति, आचार्य

●

श्री शिवाजी का लेख

ता० २० मई के 'भूदान-यज्ञ' के पृष्ठ-संख्या ५ पर 'पवनार में ब्रह्मविद्या मंदिर' शीर्षक श्री शिवाजी भावे के नाम से एक लेख प्रकाशित हुआ था। यह लेख श्री शिवाजी भावे का लिखा हुआ नहीं था, बल्कि कुछ कार्यकर्ताओं की उनसे बातें हुई थीं, उसके आधार पर उन कार्यकर्ताओं ने अपनी ओर से लिख कर भेजा था। श्री शिवाजी को यह लेख पहले दिखाया नहीं जा सका तथा वह उनके विचारों को सही प्रकट भी नहीं करता। हम इस असावधानी के लिए श्री शिवाजी के क्षमाप्रार्थी हैं।

—संपादक

●

एजेंटों व ग्राहकों को सूचना

प्रायः 'भूदान-यज्ञ' के व्यवस्था-कार्यालय में ऐसी शिकायतें आती रहती हैं कि "अमुक अंक हमें लेट मिला।" अतः इस सम्बन्ध में सभी बन्धुओं से निवेदन है कि जिन्हें अंक देर से मिले, वे उस अंक का पूरा रैपर कार्यालय को वापस भेज दें, जिससे अंक देर से मिलने के बारे में डाक-विभाग को शिकायत कर उचित व्यवस्था की जा सके।

—व्यवस्थापक

●

विनोबाजी का पता

आचार्य विनोबाजी, ११२ स्नेहलता गंज, इन्दौर शहर (मध्य प्रदेश)

●

इस अंक में

नीम का थाना तहसील में पदयात्रा तथा शिविर

राजस्थान के सीकर जिले में नीम का थाना एक ऐसी तहसील है, जहाँ की जनता में दलीय राजनीति का प्रभाव बहुत कम है और गाँवों में सद्भावना है। इस तहसील में १२३ गाँव हैं। तहसील के महावली गाँव के निवासी श्री बाबूलालजी एक जरायम-पेशा परिवार में पैदा होकर भी समाज-सेवा के लिए उत्साहित और सद्भावना वाले युवक हैं। पिछले वर्ष विनोबाजी की यात्रा में आप माल भर उनके साथ रहे। उसी समय आप शांति-सैनिक बने।

पिछले १८ अप्रैल, '६० को उन्होंने इस तहसील में एक पदयात्रा शुरू की। ३०० मील की पदयात्रा करके तहसील के १०१ गाँवों में सर्वोदय का सन्देश पहुँचाते हुए आप २८ मई, '६० को नीम का थाना पहुँचे। इस अवसर पर पदयात्रा में जिन-जिन सज्जनों से सम्पर्क आया और जो सर्वोदय-विचार के प्रति आकृष्ट हुए, उन सज्जनों, क्षेत्रीय पंचों, सरपंचों, पटवारियों, अध्यापकों व विधान सभा के सदस्य महोदय को भी आमंत्रित किया गया। इन सब लोगों का एक त्रिदिवसीय शिविर नागौर जिले के सर्वोदय सेवक तथा प्रांतीय शांति-सेना के संयोजक श्री बद्रीप्रसादजी स्वामी के कुशलत्व में हुआ। इस शिविर में खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, शिवदासपुरा के आचार्य श्री त्रिलोकचन्द जैन तथा मातृ-भाषा अक्षर-विद्यालय के आचार्य श्री दुर्गाप्रसादजी विद्यालय की छात्राओं के साथ सम्मिलित हुए। इनके अलावा सीकर और झुंझुनू जिले के शांति-सैनिक भी इस अवसर पर शिविर में शामिल हुए।

सर्वोदय-विचार की शक्ति किसी क्षेत्र में सघन कार्य करके पूर्ण रूप में प्रकट करने हेतु इस एकत्र हुए सज्जनों की राय, विचारों के सुझाव तथा योजना के आधार पर इस तहसील के दाता के गाँव पंचायत क्षेत्र को चुना गया। इस क्षेत्र में कुल तेरह गाँव हैं, आबादी पाँच हजार और परिवार-संख्या ११०६ के लगभग है।

●

इन्दौर में सर्वोदय-पात्र

विनोबाजी इसी महीने के आखिरी दिनों में इन्दौर पहुँच जायेंगे। शहर में पहले से ही उनके स्वागत की तैयारियाँ चल रही हैं। सबमें मुख्य तैयारी जन-संपर्क और सर्वोदय-पात्र की स्थापना है। अब तक लगभग २५०० सर्वोदय-पात्रों की स्थापना इन्दौर शहर में विभिन्न हो चुकी है।

●

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी–१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,६०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,३२६ एक प्रति १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रान्ति का संदेशवाहक साप्ताहिक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वर्ष ६ : अंक ३८ | वाराणसी, शुक्रवार, २४ जून, '६० | मूल्य : १३ नये पैसे

श्री रुस्तमजी के बयान पर एक दृष्टि

क्या सचमुच कानून और विनोबा के रास्ते में संघर्ष है ?

सिद्धराज ढड्ढा

भिण्ड-मुरैना के क्षेत्र में डाकुओं के आत्म-समर्पण को लेकर कुछ क्षेत्रों में जो प्रतिक्रिया हुई है, वह गम्भीरता से सोचने के लायक है। मध्य-प्रदेश के पुलिस-विभाग के इन्स्पेक्टर जनरल श्री के० एफ० रुस्तमजी ने एक लम्बा बयान अखबारों में दिया है, जिसमें उन्होंने उन "बहुत-सी नई समस्याओं" का जिक्र किया है, जो विनोबाजी की शांति-यात्रा के कारण उठ खड़ी हुई हैं। श्री रुस्तमजी द्वारा दिये गये बयान का बाद में मध्य-प्रदेश के मुख्य मंत्री डा० काटजू ने भी समर्थन किया है। भारत-सरकार के भूतपूर्व [illegible]मंत्री और अभी उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त पुलिस-कमीशन के अध्यक्ष, श्री अजितप्रसाद जैन ने यह जाहिर करते हुए कि "डाकुओं के आत्म-[illegible]

[illegible] को इस विषय पर पूरी चर्चा करके विनोबाजी के कार्य के बारे में "राष्ट्र का फैसला" सुनाना चाहिए। अन्य लोगों ने जो मुद्दे उठाये हैं, वे करीब-करीब [illegible] श्री रुस्तमजी [illegible] इसलिए [illegible]

श्री रुस्तमजी ने बहुत योग्यता के साथ अपनी बात रखी है। एक सरकारी अफसर को इस तरह नीति के मामले में अपनी राय जाहिर करनी चाहिए या नहीं, यह शंका उठायी गयी है। पर मूल प्रश्न की गम्भीरता को देखते हुए हमारे खयाल से यह बात बहुत महत्त्व नहीं रखती। श्री रुस्तमजी ने एक जिम्मेदार अफसर की हैसियत से अपना यह कर्तव्य समझा कि इस [प्रश्]न के उन पहलुओं पर जिन्हें वे महत्त्व का मानते हैं, अपनी राय ईमानदारी और निर्भयता के साथ जाहिर करें यह हम मान लेते हैं।

श्री रुस्तमजी के बयान में कुछ ऐसी बातें जरूर हैं, जो शायद आवेश में कही गयी हैं। उदाहरण के लिए, शायद कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति श्री रुस्तमजी की इस बात पर विश्वास नहीं करेगा कि विनोबाजी के इस शांति-प्रयास ने डाकुओं को खुश करने के लिए जान-बूझ कर शांति और सुरक्षा कायम रखने के पुलिस के काम को धक्का पहुँचाया' और डाकुओं के खिलाफ जो लोग लड़ रहे थे (यानी पुलिस), उनकी "कर्तव्य-परायणता और हिम्मत को अपमानित किया है।" श्री रुस्तमजी को इस बात की वेदना [illegible] कि पुलिस द्वारा इतनी कठिनाई के साथ [illegible] का मुकाबला करने और उसे काबू में ले आने के बाद कोई यह कहे कि कानून से [illegible] बाम में नहीं [illegible] चाहिए, वे और ऐसा करना [illegible] था।

हम लगता है कि श्री रुस्तमजी को [illegible] कुछ [illegible] हुई है।

श्री रुस्तमजी को अपने विभाग की ओर से उस सभा की रिपोर्ट जरूर मिली होगी, जिसमें विनोबा ने पुलिसवालों को सम्बोधन करके उनके और उनके काम के बारे में अपनी भावना प्रगट की थी। ता० १५ मई को मुरैना जिले की अम्बाह नाम की जगह में खुद डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल, पुलिस मध्य प्रदेश ने पुलिसवालों की एक सभा बुलायी थी और विनोबाजी से निवेदन किया था कि वे पुलिसवालों से कुछ कहें। विनोबाजी ने उस सभा में कहा था

> "पुलिस का काम कठिन है। उन्हें अपना दिल नरम रखना है और हाथ में सख्त काम करना है। पुलिस से संतों का काम आसान है। उनका दिल नरम रहता है, तो हाथ भी नरम ही रहते हैं। पुलिस को साथ-साथ मर्यादा का खयाल भी रखना होता है। फौज का काम इतना कड़ा नहीं है। उसमें कोई नहीं पूछेगा कि विरोधी पर इतना सख्त हमला क्यों किया? उसको जीतना भर काफी है। मगर जहाँ पाँच सेर ताकत लगाने की जरूरत है, वहाँ पुलिस साढ़े पाँच सेर ताकत का उपयोग नहीं कर सकती। अगर यह करे तो इसके लिए उसे सफाई देनी होगी। योग-साधना जैसा ही यह कठिन काम है—अन्तर में नरम, ऊपर सख्ती और बुद्धि में मर्यादा का ध्यान। माँ-बाप अपने बच्चों को ताड़ना देते समय ऐसा ही करते हैं। दण्ड, ताड़ना ज्यादा न हो, अन्दर से बहुत प्यार हो। नागरिकों की खिदमत में अपनी जान को जोखिम में डालने के लिए सदा तैयार रहना, लोक-पीडरों के साथ सख्ती से बरतना और उसमें भी ज्यादती न होने देना, यह योगी का-सा काम है।"

पुलिसवालों का काम कितना मुश्किल है, इसका एहसास और उसकी तारीफ इससे बढ़कर और किन शब्दों में की जा सकती थी? पुलिसवालों की कठिनाई उनकी बहादुरी और साहस आदि सब बातों को समझते हुए भी लोगों को जरूर विनोबा बार बार यही कहते थे कि उन्हें अपनी रक्षा खुद करनी चाहिए, और वह भी बिना हथियार के। पुलिस की रक्षा की जरूरत उन्हें नहीं होनी चाहिए। पर यह बात तो विनोबा भिण्ड मुरैना में ही नहीं आज कम-से-कम ९ साल से तो हिन्दुस्तान के गाँव-गाँव में और रोज बरोज कहते आये हैं। जनता को अपना सारा काम और व्यवस्था अपनी शक्ति से उठा लेनी चाहिए, यह सर्वोदय और ग्राम-स्वराज्य के विचार की बुनियाद है। यह बात कहने का सबसे अच्छा मौका भिण्ड-मुरैना में था। वहाँ की परिस्थिति के सदर्भ में विनोबा ने बार-बार यह बात लोगों को समझायी। पर उनका मतलब यह कभी नहीं था कि पुलिसवालों ने जो कुछ किया, वह गलत किया या उन्हें उस क्षेत्र से हटा दिया जाय। लेकिन उन [illegible] बाबा की बात आती थी।

तरह-तरह से अतिरंजित संवाद अखबारों के प्रतिनिधि अपने अखबारों को भेजते थे। एक अखबार में यह छपा कि "बाबा कहता है कि यहाँ से पुलिस हटा दी जाय।" उसी पुलिसवालों की सभा में जिसका जिक्र किया गया है, विनोबाजी ने इस बात का हवाला देते हुए खुलासा किया था कि 'बाबा भी कुछ अक्ल रखता है, वह ऐसी गलत बात कैसे करेगा? हाँ, लोग अपनी रक्षा खुद करें और मांग करें कि पुलिस की रक्षा की हमें जरूरत नहीं, हम कब तक पुलिस की रक्षा लेते रहेंगे, *हम अपने रक्षक स्वयं बनें—यह दूसरी बात है।*"

रुस्तमजी की मुख्य शिकायत

हमने थोड़े विस्तार से रुस्तमजी के बयान के उस पहलू की चर्चा इसलिए की है कि उस बयान से मालूम होता है कि उन पर इस बात का काफी असर रहा है। उनके बयान से जनता में भी विनोबा और सर्वोदयवालों के पुलिस के प्रति रुख के बारे में गलतफहमी हो सकती है, वह भी साफ होना जरूरी है। पर श्री रुस्तमजी की मुख्य शिकायत तो दूसरी ही है। उन्होंने कहा है कि विनोबा का जो उद्देश्य है और जो कानून का उद्देश्य है, इन दोनों में 'साफ संघर्ष' है और इसके कारण पुलिस का काम और कठिन हुआ है। यह बात गम्भीरता से सोचने लायक है।

कानून का उद्देश्य क्या है और विनोबा का उद्देश्य क्या है? क्या सचमुच दोनों के उद्देश्यों में कोई अन्तर है? कानून क्या चाहता है? कानून चाहता है कि अपराधी को सजा मिले। क्या विनोबाजी ने बार-बार इस बात को *स्पष्ट नहीं किया* कि वे डाकुओं को सजा से बचाना नहीं चाहते? बल्कि, विनोबाजी ने तो उल्टा "डाकुओं" को यह समझाया कि उन्हें अपने गुनाह मंजूर करने चाहिए और उनके बदले में जो सजा अदालत की ओर से उन्हें मिले, उसे खुशी से कबूल करना चाहिए।

श्री रुस्तमजी ने अपने बयान में एक

जगह कहा है कि जिस तरह से विनोबा के सामने डाकुओं ने समर्पण किया, उसकी वजह से इस्तगासे के काम में दिक्कत खड़ी होगी, क्योंकि कानून के नियमों के अनुसार जिस तरह से गवाह मिलने चाहिए, वे उन्हें अब नहीं मिलेंगे। पर अब अपराधी अपना अपराध स्वीकार कर लेता है, तब इस्तगासे का और अदालत का काम उल्टा आसान हो जाता है, गवाहों की जरूरत ही नहीं रहती और अपराधी को उचित सजा दी जा सकती है। डाकुओं के समर्पण के बाद हथियार रखने संबंधी कानून के अन्तर्गत उनका जो चालान हुआ और गुनाह कबूल कर लेने पर बिना किसी लम्बी कार्रवाई के अदालत तुरंत उन्हें सजा सुना सकी, यह घटना अपने आपमें इस बात का सबूत है।

तो, डाकुओं को सजा न मिले, यह बात विनोबाजी ने या सर्वोदय के कार्यकर्ताओं ने कभी नहीं चाही।

विनोबा ने जो किया है, वह इतना ही कि एक तो कानून का रास्ता साफ और सरल बना दिया और दूसरा सजा देने के पीछे कानून का जो उद्देश्य है, उसकी पूर्ति में उन्होंने मदद की।

अपराधी को सजा देने का उद्देश्य आखिर क्या है, यह हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। इसी अंक में पृष्ठ-संख्या छह पर दादा धर्माधिकारी ने इसी विषय पर काफी प्रकाश डाला है। आज तो यह बात सर्वमान्य है कि सजा का उद्देश्य अपराधी से बदला लेना, या उसे नाकाबिल बना देना, या उसे अपमानित करना नहीं है, न यह है कि सजा दूसरों के लिए आतंक का कारण बने, बल्कि यह है कि सजा भुगतने के बाद अपराधी सुधर कर निकले, ताकि समाज में वह अच्छे नागरिक की हैसियत से अपना योग दे सके। विनोबा ने डाकुओं में पश्चात्ताप की भावना जागृत करके सजा के इस उद्देश्य की पूर्ति पहले से ही कर दी है, हालांकि इस पर भी उन्होंने, या डाकुओं ने, या किसी दूसरे ने, यह नहीं चाहा कि डाकुओं को कानून के अनुसार सजा न मिले।

संघर्ष कहाँ है ?

तब फिर आखिरकार कानून और विनोबा के रास्तों में वह संघर्ष कहाँ है, जिसका श्री रुस्तमजी को इतनी उत्कटता के साथ भान हुआ ? हम नम्रतापूर्वक कहना चाहते हैं कि वह संघर्ष सिर्फ इसी बात में है कि रुस्तमजी को अपराधियों से पेश आने का एक ही तरीका मालूम है। सजा के उद्देश्य की बात उनको इतने महत्त्व की नहीं लगती, जितनी अपराधियों के प्रति व्यवहार की बात। इसी से उनको यह लगा है कि विनोबाजी ने चम्बल-घाटी के डाकू पीड़ित क्षेत्र में जो कुछ किया है, उससे पुलिस का काम अत्यन्त कठिन बन गया है और आगे के लिए उनकी उपयोगिता को धक्का पहुँचा है।

पुलिस की उपयोगिता अगर लोगों पर आतंक जमाने में ही है, तो निश्चित रूप उसे धक्का पहुँचा है और पहुँचना चाहिए।

पर श्री रुस्तमजी जैसे समझदार अफसर और काटजू साहब जैसे पुराने आजादी की लड़ाई के सिपाही इस बात को तो अच्छी तरह समझते होंगे कि

आखिरकार कानून की, पुलिस की अदालत की, और सजा की, सफलता इसी में है कि इन चीजों की आवश्यकता ही समाज में से खत्म हो जाय। इसमें कोई संदेह नहीं कि विनोबा ने चम्बल घाटी में जो प्रयोग हाथ में लिया, वह आज के प्रचलित तरीके से बिल्कुल मेल नहीं खाता। पर गांधी और विनोबा जैसे व्यक्ति पुरानी बातों और परम्पराओं को खत्म करके नई परम्पराओं और मूल्यों को कायम करने के लिए ही तो जन्म लेते हैं !

और अगर ये नई परम्पराएँ और नये मूल्य समाज के लिए हितकर हैं, तो जनता का, पुलिस का, सरकार का, डाकुओं का और हम सबका कर्तव्य है कि हम हमारे दिमाग को उन प्रयोगों के लिए खुले रखें और यथासंभव अपनी ओर से उनमें सहायता पहुँचायें। अगर हम समाज में पुराने मूल्यों को और जो स्थिति बनी हुई है, उसी को कायम रखना चाहते हैं तो बात दूसरी है।

खेती में सुधरे यंत्रों का उपयोग बनाम यंत्रीकरण

बनवारीलाल चौधरी

भारत में अन्न की कमी एक बड़ी राष्ट्रीय समस्या बतलायी जाती है। सन् '५१ में सरकारी घोषणा की गयी थी कि सन् '५२ के बाद विदेशों से अनाज का निर्यात बंद कर दिया जायेगा। दुर्भाग्य से यह नहीं हुआ, बल्कि हम और भी भटक गये। समस्या का हल पाने के लिए हमने दूसरे देशों का अनुकरण करना चाहा। हमारी सही स्थिति को ध्यान में न रख कर उन देशों की नकल में कई कागजी योजनाएँ बनीं। नतीजा यह हुआ कि कभी 'जापानी पद्धति' की खेती में तो कभी चीनी या रूसी या अमेरिकी तरीके की खेती में भारतीय खेती का हल हम ढूँढ़ने लगे। इसी खोज-बीन में एक आवाज उठी खेती के यंत्रीकरण की। फलस्वरूप बड़े-बड़े ट्रैक्टर, 'कम्बाइन्स' और थ्रेसर इत्यादि आये। करोड़ों की सम्पत्ति इसमें लगी। धीरे-धीरे यह विचार भी उत्पन्न हुआ कि अब बैलों से, हल से, खेती करने के दिन लद गये !

यह सब हमारे देश की खेती के स्वरूप को ध्यान में न रखने के सबब से हुआ है। खेती की हमारी नीति क्या हो, इसे तय करते समय भारतीय खेती की कुछ विशेष स्थितियों को नजर-अन्दाज नहीं करना चाहिए। उनमें से कुछ ये हैं :

(१) भारत में खेती सिर्फ व्यवसाय नहीं है, वह जीवन का एक तौर-तरीका है।

(२) खेती के लिए मानवीय इकाई एक परिवार है और क्षेत्रीय इकाई, छोटे रकबे वाला बिखरा हुआ कृषि-क्षेत्र।

(३) गाय भारतीय खेती की रीढ़ है। गाय हमारे यहाँ अन्य देशों के समान व्यावसायिक जानवर नहीं है। वह हमारे जीवन का, धर्म का, संस्कृति का एक अंग है। उसे दूध के अलावा और किसी रूप में भोजन का साधन बना कर हम उसका आर्थिक महत्त्व बढ़ाने को तैयार न होंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारी खेती की शक्ति (ड्राफ्ट-पॉवर) बैल ही रहेगी, वरना हमें गाय को भी छोड़ना होगा।

इन बातों को ध्यान में रख कर हमें विचार करना होगा कि हम खेती में किस प्रकार के यंत्रों का उपयोग करें।

खेती के काम में आने वाले यंत्रों को हम दो प्रकारों में बाँट सकते हैं :

(१) ऐसे यंत्र, जो किसान और बैल की क्षमता बढ़ाने में सहायक होते हैं।

(२) ऐसे यंत्र, जो बैलों को अनावश्यक बनाते हैं एवं जिन्हें काम में लेने से खेती का काम कम-से-कम आदमियों द्वारा पूरा किया जा सके। भारतीय खेती के विकास के लिए पहले प्रकार के आधुनिक, वैज्ञानिक यंत्रों का अधिक-से अधिक उपयोग होना अनिवार्य है। दूसरे प्रकार के यंत्रों को खेती में जगह देना विनाशकारी होगा।

कुछ लोगों का मत है कि विशेष परिस्थितियों और कार्यों के लिए भारत में ट्रैक्टर का उपयोग किया जा सकता है और करना चाहिए—जैसे भूमि तोड़ना, कांस उखाड़ना, गहरी जुताई एवं बाँध बनाना। इसी आधार पर कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) के फार्म पर ट्रैक्टर का उपयोग हुआ और सेवाग्राम के लिए भी अब यह सोचा जा रहा है। (देखें 'भूदान-यज्ञ' २० मई, १९६०, पृष्ठ-संख्या ८) इसके उपयोग से शुरू में बहुत सफलता भी मिली ऐसा लगता है, परन्तु बाद में फसल का उत्पादन क्रमशः कम हुआ। होशंगाबाद जिले में ट्रैक्टर से कांस उखाड़ने का काम लिया गया। ट्रैक्टर चलने के बाद पहले दो बरस अच्छी फसल मिली। उपज में २०% से ४०% की वृद्धि हुई। पर तीसरे बरस से उत्पादन गिरना शुरू हुआ और अब क्रमशः वह पहले के बराबर और कहीं-कहीं उससे भी कम हो गया है। ट्रैक्टर चलने से भूमि का कटाव बहुत बढ़ गया है और खेतों में नाले पड़ गये हैं। गहरी जुताई से कटाव बढ़ती है, क्योंकि मिट्टी ढीली हो जाती है।

कहा जाता है कि तीन-चार बरस में एक बार गहरी जुताई करनी चाहिए। पर यह आवश्यक भी है या नहीं, इसमें भी दो रायें हैं। यह काम लोहे के भारी हल से, दो जोड़ी बैलों से अच्छी तरह किया जा सकता है।

ट्रैक्टर द्वारा बंधान का काम जल्दी हो जाता है, परन्तु मनुष्यों द्वारा बाँध बँधाने की अपेक्षा घटिया दर्जे का होता है। मिट्टी ढीली-ढाली रहती है, इसलिए बरसात में बंधान जल्दी फूट जाते हैं। सबसे बड़ी हानि तो यह होती है कि खेत की ऊपरी सतह की उपजाऊ मिट्टी खिंच कर बाँध की पाल में लग जाती है, जिससे खेत की उपज मारी जाती है। मैंने इसका प्रयोग करके देखा है और अब अपने अनुभव से कह रहा हूँ।

तब हम क्या करें ? हमें गहरी जुताई करना है, कम श्रम से अधिक काम भी करना है और ट्रैक्टर जैसी दैत्य के पंजे से बचना है, जो हथेली पकड़ते-पकड़ते पहुँचा पकड़ लेता है। इसका एकमात्र उपाय बैल द्वारा चालित कृषि-यंत्रों में सुधार करना है। ऐसे यंत्रों का आविष्कार और निर्माण होना चाहिए :

(१) जो किसान और बैल की कार्यक्षमता बढ़ायें।

(२) जो हल्के हों, अर्थात् कम मेहनत लें और सरलता से चलें।

(३) जिनकी दैनिक कार्यक्षमता अधिक हो।

(४) जिनमें यांत्रिक सूक्ष्मता (मेकैनिकल प्रेसिजन) हो।

(५) जो बहु-उपयोगी (मल्टी-पर्पज) हों या जिनमें आवश्यकतानुसार विभिन्न काम लेने के लिए थोड़े से ही परिवर्तन (एडजस्टमेंट्स) की या सहायक यंत्र की आवश्यकता हो।

(६) जिनमें ट्रैक्टर द्वारा चालित यंत्रों की खूबियाँ हों।

(७) जिनमें बैल और किसान, दोनों की कार्य में अधिक दिनों तक विभिन्न काम उपलब्ध कराने की क्षमता हो।

यह सब प्राप्त करना असंभव नहीं है। आवश्यकता है अथक और निरन्तर के प्रयोग में लगाने की। खादीग्राम, सेवाग्राम एवं कस्तूरबाग्राम जैसे फार्मों व हमारे अपने फार्मों पर इस दिशा में प्रयोग होने चाहिए, बजाय इसके कि हम बाहरी देश के वातावरण से प्रभावित होकर या तात्कालिक आर्थिक दृष्टि से ट्रैक्टर आदि यंत्रों को स्थान दें।

• •

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्ति · जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

शांती-सैनीक का करतव्य

शांती-सैनीक को अपने काम की मरयादा समझ लेनी चाहीअे ! अुसे सामाजीक और राजनैतीक झगड़ों में नहीं पड़ना चाहीअे। समाज के सब प्रश्न हल करना शांती-सैनीक का काम नहीं। अुसका काम अीतना ही है की शारीरीक दुःखों में लोगों की मदद पहुंचाये और मानसीक दुःखों में भी मदद पहुंचाने की कोशीश करे। बाकी वह भूदान, ग्रामदान आदी का वीचार लोगों को समझाता रहे, साहीत्य का प्रचार करता रहे। जगह-जगह जो मसले पैदा होते हैं, अुन्हें हाथ में लेना शांती-सैनीक के करतव्य में नहीं आता। मान लीजीये, नहीं द्वीभाषीक का मसला है। अब शांती-सैनीक अुसमें पड़ेगा तो अपने को खो देगा। कहीं मालीक और मजदूर के झगड़े होते हैं। अुनके दावे कहां तक सही या गलत हैं, अीसमें वह पड़ेगा तो खो जायगा। मालीक और मजदूरों के बीच अशांती न हो, परस्पर प्रेम भाव रहे अीतनी ही कोशीश अुसकी होनी चाहीअे।

शांती-सैनीक लोगों के कारय में दखल देने वाला नहीं, बलकी शांती देने वाला है। अीसलीअे वह भूदान, ग्रामदान का ही वीचार रखता जाय। वह अैसा कोअी कारय न करे, जो अुसकी शकती के बाहर का हो। दुनीया में अशांती के कारण मौजूद रहते हुअे भी शांती-सैनीक बीच में खड़ा हो और अशांती को अपने अूपर ले।

(३०-१०-'५८) —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि=ी ; ी=ी, ख=ख़, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

खेती में यंत्र-शक्ति का उपयोग

भारतीय कृषि और उसके भविष्य के बारे में ता० २२ अप्रैल के "भूदान-यज्ञ" में मैंने एक लेख लिखा था, जिसमें यह बतलाया था कि हिंदुस्तान की परिस्थिति में मशीनों से खेती करना एक प्रकार का "प्रजा-द्रोह" ही है। निटाया (होशंगाबाद) के हमारे साथी श्री बनवारीलाल चौधरी, जिनको खेती के काम का अच्छा अनुभव है, उन्होंने उस विचार का समर्थन करते हुए इस बात पर खेद प्रगट किया कि हमारी ही संस्थाओं में खेती के लिए ट्रैक्टर आदि का उपयोग हुआ है और होता है। ता० २० मई के 'भूदान-यज्ञ' में अण्णासाहब द्वारा लिखा हुआ सेवाग्राम की उनकी योजना का खाका प्रकाशित हुआ है। अण्णासाहब ने उस लेख में लिखा है यांत्रिक उपकरणों का यहाँ किस हद तक उपयोग किया जायगा, "उसका साफ चित्र आज मेरे सामने नहीं है। यहाँ की जमीन को देखते हुए ऐसा लगता है कि पहले २-३ साल तक ट्रैक्टर का विशेष रूप से उपयोग करना पड़ेगा और मुख्यतः जमीन तोड़ने का और सुधारने का और उस पर बांध डालने का ही काम रहेगा, गहरी जुताई करनी पड़ेगी।'

इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित एक लेख में श्री बनवारीलालजी ने इस प्रकार के विशेष कामों के लिए भी ट्रैक्टर के उपयोग की हानियों का जिक्र किया है। उनके खयाल से सेवाग्राम, कस्तूरबाग्राम तथा खादीग्राम जैसे हमारे केन्द्रों में चाहे कुछ निश्चित कामों के लिए ही सही, हमें ट्रैक्टर का उपयोग नहीं करना चाहिए। यही केन्द्र हैं, जिनमें हम अपनी दृष्टि से औजारों के सुधार का प्रयोग कर सकते हैं। यह नहीं होना चाहिए कि जरा भी कठिनाई सामने आने पर हम तुरन्त प्रचलित यंत्रों का उपयोग करने लग।

सर्व सेवा संघ की पिछली सेवाग्राम की बैठक में कृषि-गोसेवा के बारे में जो निवेदन जाहिर किया गया था, उसमें निश्चित कामों के लिए और अमुक मर्यादा में ट्रैक्टर के उपयोग की बात स्वीकार की गयी है, पर बनवारीलालजी की इस बात में वजन है कि हमें हमारी संस्थाओं को प्रयोगशालाएँ मान कर वहाँ हमारी दृष्टि से प्रयोगों का काम आगे बढ़ाना चाहिए।

यंत्रों के सुधार की दिशा

खेती और ग्रामोद्योग में काम आने वाले औजारों और यंत्रों के बारे में सच-मुच हमारी ओर से कोई विशेष प्रयोग अभी नहीं हुए हैं। ४० साल पहले, जब गांधीजी ने इस देश में हाथ-कताई, हाथ-बुनाई-उद्योग को पुनर्जीवित किया, तब से कुछ लोगों ने, जिनमें आज श्री कृष्णदास गांधी मुख्य हैं, अपना जीवन ही इन उद्योगों में संबंधित औजारों के, खास करके चरखे के, सुधार के पीछे लगा दिया। सब जानते हैं कि गांधीजी ने 'सुधरे हुए चरखे' के लिए एक लाख रुपये का इनाम भी घोषित किया था—पर 'सुधरा हुआ' चरखा किसे माना जाय, इस बारे में उन्होंने अपनी कुछ कसौटियाँ और शर्तें रखी थीं। अम्बर चरखा इन्हीं प्रयोगों की श्रृंखला में से निकला है। आज भी श्री कृष्णदासभाई अम्बर चरखे में उत्तरोत्तर नये सुधार कर रहे हैं। अखिल भारत सर्व सेवा संघ ने इस काम के लिए खादी ग्रामोद्योग प्रयोग समिति के नाम से एक स्वतंत्र संस्था ही खड़ी की है, जिसका मुख्य केन्द्र अहमदाबाद में है।

खादी के अलावा खेती और दूसरे ग्रामोद्योगों के औजारों के बारे में भी इसी प्रकार स्वतंत्र रूप से प्रयोग चलें, यह आज अत्यन्त आवश्यक हो गया है। छोटे-छोटे गांवों में भी बिजली पहुंच रही है और औद्योगीकरण के नाम पर ग्रामोद्योग को मारने वाले, बिजली की शक्ति से चलने वाले छोटे छोटे कारखाने वहाँ खड़े हो रहे हैं। औजारों में सुधार के मामले में हमारी क्या कसौटियाँ हों, किस दिशा में हमारे प्रयोग चलें और हमारे यंत्रों में बिजली का उपयोग किस हद तक हो, इस संबंध में इसी अंक में श्री धीरेन्द्र भाई के दो पत्र भी हम प्रकाशित कर रहे हैं। श्री धीरेन्द्र भाई ने जो मुद्दे उठाये हैं, उन पर सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को गम्भीरता से सोचने की आवश्यकता है। हम उन्हें इन प्रश्नों पर अपनी राय प्रकट करने के लिए आमंत्रित करते हैं। सेवाग्राम के सम्मेलन के मण्डप मंच की सभा में श्री अण्णासाहब ने औजारों और साधनों में परिवर्तन करने की दलील देते हुए कहा था कि आज के औजारों से "एक आदमी ८ घंटे काम करके भी दो व्यक्तियों की रोजी नहीं निकाल सकता।" उन्होंने यह भी दलील दी कि "अगर जमीन से फी एकड़ ५० रुपये की आमदनी होती हो तो उसमें क्या हमारी आवश्यकताएँ पूरी होंगी?" हमारी दृष्टि से औजारों की क्षमता का मापदंड उत्पादन का परिमाण हो सकता है, पर उत्पादन से होने वाली आमदनी नहीं। पैसे का मूल्य बदलता जाता है, वह उत्तरोत्तर गिर रहा है, जो कि केन्द्रित औद्योगिक व्यवस्था में अनिवार्य है। किसानों को आज फी एकड़ अगर ५० रुपया मिलता है और १० वर्ष पहले १०० मिलता था, तो उसका कारण यह नहीं है कि उसके औजारों की क्षमता में कोई फर्क पड़ा है, बल्कि यह है कि ऊपर के वर्गों के द्वारा उसका शोषण बढ़ गया है। साधनों और औजारों में सुधार अवश्य होना चाहिए, लेकिन हम उन औजारों और साधनों से क्या चाहते हैं, इसके बारे में हमारी दृष्टि साफ होनी चाहिए। श्री धीरेन्द्र भाई ने इस बारे में कुछ विचारणीय मुद्दे उपस्थित किये हैं।

—सिद्धराज ढड्ढा

नये प्रकाशन

अफ्रीका में गांधी : ले० जोसेफ जे० डोक।

यह पुस्तक लगभग ४० वर्ष पहले 'एम० के० गांधी' नाम से प्रकाशित हुई थी। श्री डोक साहब की यह किताब अब हिन्दी पाठकों के लिए भी सुलभ हो गयी है। महात्मा बनने तथा भारतीय राजनीति में प्रवेश करने से पूर्व का गांधीजी का जीवन कैसा रहा उन्होंने अफ्रीका में कैसे, क्या जाग्रति की, इसका प्रत्यक्षदर्शी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िये। मूल्य रु० १—००

आहार और पोषण : ले० झवेरभाई पटेल

प्रश्नोत्तर के रूप में भोजन, आहार, सामग्री, स्वाद, विटामिन आदि विषयों की शास्त्रीय विवेचना सरल भाषा में है। पुस्तक हर परिवार में रहनी चाहिए। मूल्य ५० नये पैसे।

आगामी प्रकाशन

अगले महीने में नीचे लिखी पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं

१ मोहब्बत का पैगाम ले० विनोबा, दूसरा परिवर्धित संस्करण।
२. सर्वोदय-दर्शन ले० दादा धर्माधिकारी, तीसरा संस्करण।
३ बिल्ली की कहानी ले० महात्मा भगवानदीन, बालकोपयोगी सचित्र पुस्तक, तीन भाग।
४ स्त्री-शक्ति ले० विनोबा, तीसरा संशोधित, परिवर्धित संस्करण।
५ Why gramraj ले० गोरा।

विनोबा-प्रवचन (द्विदैनिक)

सन् १९५७, '५८ और '५९ की सजिल्द फाइलें प्राप्य।

एक वर्ष की फाइल का मूल्य मात्र पचीस रुपया।

विनोबाजी की पदयात्रा-रूपी भूदान-गंगा का अवगाहन करने तथा मानसिक शांति व तृप्ति के लिए ये प्रवचन प्रशस्त मार्गदर्शक हैं। बिना किसी और अतिरिक्त खर्च के २५) में फाइलें प्राप्त हो सकेंगी।

—अखिल भारत सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

बागियों के आत्म-समर्पण का आँखों देखा हाल

जब अहिंसा नाच उठी !

कांता : हरविलास

डाकू अपने को 'डाकू' कहलाना पसंद नहीं करते। वे अपनी पहचान बागी के रूप में कराते हैं। इस चीज को ध्यान में रख कर बाबा ने इन बागी भाइयों की ओर देख कर कहा : "भाइयो, अगर आप बागी हैं, तो मैं भी बागी ही हूँ। मैं आपका दोस्त हूँ। मैं भी बगावत का ही काम करता हूँ। समाज से छुआछूत मिटाना, बेजमीनों को जमीन दिलाना, ऊँच नीच के भेद मिटाने के लिए अमीरी और गरीबी को खत्म करना; यही मेरा काम है। मेरी बगावत की रीति आपसे भिन्न है। बगावत आत्मा की शक्ति के साथ करनी चाहिए। अगर ऐसी शक्ति के साथ बगावत होगी, तो समाज में न डाकू रहेंगे और न पुलिस ही रहेगी। सारे समाज में प्रेम और शांति फैलेगी और उसके फलस्वरूप एक स्वस्थ समाज की रचना होगी।"

दोपहर को जब सब भोजन के लिए एक पंगत में बैठे, तो कुछ बागी भाई कहने लगे कि इस तरह पत्तलें सामने रख कर भोजन करने का यह मौका हमें आज सालों बाद मिला है। हम तो हाथ में रोटी रख कर ही भोजन करते रहे हैं। उनमें से कुछ पत्तलों में भोजन किया और कुछ ने हाथ पर रोटी रख कर भोजन किया। बिना मिर्च-मसाले की और बिना घी की रसोई उन्हें फीकी और बेस्वाद लगी।

बागी भाइयों के दिल की थोड़ी थाह लेने के लिए हमने उनसे पूछा : "जंगल की आजाद जिन्दगी का आनन्द छोड़ कर आपने इस तरह आत्मसमर्पण करना क्यों पसंद किया ?" इस पर उन्होंने कहा कि "जीवन में घटी हुई घटनाओं के कारण आवेश में आकर हमने बगावत का रास्ता अपना लिया था। लेकिन अब हमारे ध्यान में यह बात आ रही है कि बगावत की हालत में निर्दोष लोगों की जानें लेने के लिए हम मजबूर थे। पर हमारा जीवन हमेशा संकट में घिरा रहता था। हमने सोचा कि इस तरह की खतरे से भरी जिन्दगी बिताते रहने से अच्छा यह है कि अपने कर्मों की सजा भुगत कर हम एक बार फिर नये इन्सान बन जायें और समाज में रह कर सच्चा, संतोषी और सुखी जीवन बितायें। बाबा के आने से हमें यह जो एक मौका मिला है, इसे हम क्यों हाथ से जाने दें ? इस तरह के मंथन और चिन्तन के बाद हमने बाबा की शरण में आने का निश्चय किया और हम यहाँ चले आये।"

प्रवचन के बाद प्रार्थना शुरू हुई। प्रारम्भ में तीन मिनिट का मौन रहा। फिर बाबा ने "राजा राम-राम, सीता राम-राम" की धुन बारी-बारी से बालकों, बहनों और भाइयों से गवायी। आखिर में, सबसे एक साथ धुन दुहराने को कहा। वातावरण राममय बन चुका था। सबके दिलों में मारे 'राजाराम' रम रहे थे। ठीक इसी समय श्री यदुनाथ सिंह उन ग्यारह बागी भाइयों को एक कतार में लेकर आये। अहिंसा, शांति, सत्य, प्रेम और करुणा का फरिश्ता शान्त, नम्र और प्रेम-भरी मुद्रा में बैठा था। श्री यदुनाथ सिंह ने इस टोली के मुखिया लुक्का को इशारा करके आगे आने को कहा। लुक्का अपनी सत्रह हजार की कीमत वाली दूरबीनी बन्दूक के साथ आगे आया। जो बन्दूक सैनिकों के पास ही रहती है, जिसे पाने के लिए पुलिस ने तन तोड़ मेहनत की थी, जिसे लुक्का एक क्षण के लिए भी अपने कंधे से नीचे नहीं उतारता था और उसे वह अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय मानता था, उसे लुक्का ने बाबा के चरणकमलों पर चढ़ा दिया ! इसके बाद एक-एक करके लुक्का के सब साथियों ने भी बाबा को प्रणाम किया और अपनी बन्दूकें उनको सौंप दीं। शस्त्र-समर्पण की इस विधि को पुलिस के मुख्य अधिकारी और जनता, सभी स्तब्ध भाव से एकटक देखते रहे। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो हिंसा अहिंसा के सामने झुकी, द्वेष और दंड को प्रेम ने जीता, नम्रता के सामने कठोरता पिघल गयी, निष्ठुरता करुणा में समा गयी, अशान्ति शान्ति की गोद में छिप कर बैठ गयी। अविश्वास विश्वास में समा गया, मानवता मानवता में आकर मिल गयी। वह देवों के लिए भी दुर्लभ ऐसा एक अद्भुत दृश्य था ! वह विजय थी अहिंसा, प्रेम और करुणा की। वह विजय थी विश्वास, शान्ति, निर्भयता और सत्य की। कैमेरा की आँखों ने इस दृश्य को पकड़ तो लिया, पर जिन्होंने अपनी आँखों से इस दृश्य को निहारा है, उनके लिए तो यह चिरस्मरणीय ही बना रहेगा। उस समय सब कोई यह अनुभव कर रहे थे, मानो हमारे खोये हुए भाई फिर हमारे बीच लौट आये हैं। ऐसा प्रतीत होता था, मानो इन लौटे हुए मानवों की मनुष्यता भी यह घोषणा कर रही है कि 'अब मैं बन्दूक हाथ में नहीं लूँगी, अशान्ति उत्पन्न नहीं करूँगी। मैं राह भूल चुकी थी, अब भटक कर वापस आपके पास आयी हूँ। आपने मुझे अपना कर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। अब मैं अपनी ज्योति को सदा ही प्रकाशित रखूँगी, उसे कलंक नहीं लगने दूँगी, धुंधली नहीं पड़ने दूँगी।'

तीन-चार दिन में ही उनके साथ हमारा गाढ़ा परिचय हो गया था। हम इस बात को भूल ही गयी थीं कि वे डाकू थे : कभी भूल से जबान पर 'डाकू' शब्द आता भी था, तो वह मुँह का मुँह में ही रह जाता था और हाथ अपने आप मुँह पर चला जाता था। हम तो अपने उन प्यारे भाइयों की छोटी बहनें ही बन गयी थीं। हमारे लिए यह, स्वाभाविक ही था कि हम इन भाइयों के बीते हुए जीवन के बारे में कुछ जानना चाहें। हमें उनसे पता चला कि वे जंगलों में किस प्रकार का जीवन बिताते थे, क्या खाते-पीते थे, पुलिस की आँखों से और उनकी पकड़ से किस तरह बचते थे। साधारणतया इन ग्यारह भाइयों की टोली हमेशा साथ ही रहती थी। मौका पड़ने पर एक-दूसरे से अलग भी होती थी। सामान आदि की दृष्टि से तो उनका अपरिग्रह साधु-सन्तों जैसा ही कहा जा सकता है। एक या दो जोड़े कपड़े, कंधों पर बन्दूक, पुस्तकों में रामायण, गीता, महाभारत और ज्योतिष की एकाध पुस्तक, खाने-पीने का थोड़ा सामान और बरसाती वगैरह कुछ जरूरी चीजें उनके पास रहती थीं। गेहूँ, चावल वगैरह तो रोज की जरूरत के हिसाब से रोज ही प्राप्त कर लिया करते थे। ये लोग माँस नहीं खाते, शराब नहीं पीते, जुआ नहीं खेलते, रोज नियम से रामायण, महाभारत जैसे धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करते हैं। उन्होंने हमें बताया कि साधारणतया डाका डालते समय वे दो-तीन बातों का ध्यान बराबर रखते थे। एक, गरीबों को न लूटना दो, सेठ-साहूकारों के यहाँ डाका डालना, उसमें भी लाख की हैसियत वाले से दो हजार, दो लाख वाले से चार हजार, इस तरह एक निश्चित मर्यादा में उनसे रकमें लेना तीन सर जाना, पर कभी पुलिस की शरण न जाना।

भाई गौतम बजाज को श्री यदुनाथ सिंह के साथ इन बागी भाइयों के बीच जंगल में और इनके अपने गाँवों में रहने का मौका मिला था।

भाई गौतम ने बताया कि एक बार जब वे इन बागी भाइयों के बीच बैठे थे, तब इनके कुछ सगे-संबंधी भी वहाँ इनसे मिलने आ पहुँचे। उनके साथ थोड़ी बातचीत हुई। बाद में एक बागी भाई ने कहा कि 'मेरा भाई आत्मसमर्पण तो करेगा, लेकिन अगर वहाँ उसे तकलीफ दी गयी या उसकी बेइज्जती की गयी, तो मैं खुद बागी बन जाऊँगा और मेरे भाई को हैरान करने वालों को मार डालूँगा।' अपने भाई के मुँह से ऐसी बात सुन कर पास ही बैठे हुए बागी भाई ने उसे डाँटते हुए कड़ी आवाज में कहा : 'अगर तुम ऐसा करोगे, तो मैं तुम्हें अपना भाई नहीं, दुश्मन समझूँगा।'

भाई गौतम ने बताया कि जिन जिन बागियों से उनके मुकामों पर मिलने और बातचीत करने का मौका मिला, उन सबके मुँह हमें यही सुनने को मिला कि "आज तक हमारे पास कई तरह के लोग आये हैं। लेकिन वे सब हमें भूने मारने और हम पर डंडे चलाने की बात करने वाले थे। आपकी तरह, समझाने वाला तो एक भी आदमी हमारे पास कभी आया नहीं था। मेजर श्री यदुनाथ सिंह से जान-पहचान होने के पहले, हमने कभी अपने लिए यह सोचा भी नहीं था कि इस जीवन में हम अपनी बन्दूकें कंधों से नीचे उतार सकेंगे।

हमने इस प्रदेश में बाबा के साथ पन्द्रह-सोलह दिन तक पदयात्रा की। इस बीच हमने इस बात का अध्ययन करने की कोशिश की कि यह प्रदेश डाकुओं का प्रदेश कैसे बना। हमें इसके कुछ कारण मालूम हुए। वे ये हैं :

(१) इस इलाके में दो जातियाँ मुख्य रूप से रहती हैं, ब्राह्मण और ठाकुर। इन दोनों में अपनी-अपनी जाति का अभिमान ठूँस-ठूँस कर भरा है। इसका परिणाम यह होता है कि प्रसंग आने पर छोटे छोटे झगड़े भी बड़े झगड़ों का रूप ले लेते हैं। उन झगड़ों के कारण लोग आपस में एक-दूसरे का खून कर देते हैं, और फिर कानून के चंगुल से बचने के लिए जंगलों में छिप-छिप कर रहते हैं। बस, इस तरह उनकी बगावत शुरू होती है और उसकी एक परम्परा चलती रहती है।

(२) शिक्षा का अभाव, बेकारी और अंधविश्वास ने भी इस क्षेत्र को डाकू क्षेत्र बनाने में महत्त्व का काम किया है। लोग किसी देवी को प्रसन्न करने के लिए १०१ नाक काटने की प्रतिज्ञा लेते हैं। इस इलाके में लोगों की एक ऐसी भी धारणा है कि चंबल नदी की मँझधार में किसी नर का बलिदान करने से देवी प्रसन्न होती है। बेकार और बिना पढ़े-लिखे लोग बड़ी आसानी से इन अंधविश्वासों के शिकार हो जाते हैं।"

(३) इस इलाके के लोगों पर यहाँ की आबहवा का भी गहरा असर है। उसके कारण ये लोग मिजाज के बहुत ही तीखे और बात-बात में उत्तेजित होने वाले बन गये हैं। मान-अपमान का ये बहुत ही ज्यादा ध्यान रखते हैं। थोड़ा भी अपमान होने पर ये गुस्से से बेकाबू हो जाते हैं, मारने-मरने को तैयार होते हैं और आखिर बागी बन जाते हैं !

(४) ये मूलतः क्षत्रिय कुल के हैं, इसलिए स्वभाव ही से बहादुर और लड़ाई-प्रिय होते हैं। महादजी सिंधिया के जमाने में इस इलाके के बहुत से लोग उनकी सेना के सैनिक थे। सिंधिया के अंग्रेजों से हार जाने पर उनकी सेना खत्म हो गयी, इसलिए इन लोगों की नौकरी छूट गयी और इनकी क्षात्र-वृत्ति की पुष्टि होने का अवसर नहीं रहा। फिर भी ये बन्दूक रखने का अपना पुराना धंधा करते रहे। बन्दूक का उपयोग डाका डालने के काम में होने लगा और इनकी वृत्ति का पालन भी किया जाता रहा।

गया जिले में जयप्रकाश

सच्चिदानंद

गया जिले में श्री जयप्रकाश नारायण की यात्रा, जो गत १८ मई '६० को प्रारंभ हुई थी, ६ जून '६० को समाप्त हुई।

इस अवधि में श्री जयप्रकाशजी ने देहातों की कठिन परिस्थितियों के बीच लगभग ५०० मीलों की यात्रा की और इस जिले के लगभग एक-तिहाई हिस्से को तय किया। इस यात्रा में आप २० पड़ावों से गुजरे और कुल २५ जन-सभाओं में भाषण किये। जनसभाओं के मार्फत लगभग एक लाख व्यक्तियों ने जे० पी० के विचार सुने। इन सभाओं के अलावा, कार्यकर्ताओं की २० बैठकें हुईं, जिनमें करीब १००० व्यक्तियों ने भाग लिया। इनमें सर्वोदय व भूदान-कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि, ग्राम-पंचायतों के मुखिया और पंच प्रखंड विकास-पदाधिकारी और उनके कर्मचारी, विद्यालयों के शिक्षक और अन्य सामाजिक कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

श्री जयप्रकाशजी की यात्रा का उद्देश्य, लोगों के सामने गया जिला सर्वोदय-मंडल द्वारा स्वीकृत पंचविध कार्यक्रम पेश करना था। यह पंचविध कार्यक्रम गत मार्च महीने में अरवल में हुए गया जिला सर्वोदय-सम्मेलन में संत विनोबाजी की इच्छानुसार गया जिले में "शासनमुक्त समाज" का स्वरूप प्रकट करने के हेतु स्वीकृत किया था। तदनुसार गया जिले के एक चुने हुए क्षेत्र (गया सदर और नवादा सबडिविजन) में सघन यात्रा करने के हेतु जे० पी० का २१ दिनों का समय प्राप्त किया गया। इस यात्रा के लिए यह गर्मी का मौसम अनुकूल नहीं था। गया जिले की गर्मी अपनी प्रचण्डता के लिए मशहूर है। फिर भी यह मौसम चुना गया, क्योंकि इसके पहले और बाद, जे० पी० का कार्यक्रम कुछ ऐसा था कि इसके लिए इतना समय वह निकाल नहीं सकते थे। दूसरी तरफ जे० पी० यह महसूस करते थे कि इस कार्य में और अधिक विलम्ब नहीं होना चाहिए।

अंत में १८ मई को यह यात्रा शुरू हुई। इस यात्रा के लिए जितनी तैयारी अपेक्षित थी, वह तो नहीं हो सकी। तथापि जे० पी० की यह यात्रा काफी सफल हुई। जनता के सभी वर्गों के लोगों का काफी 'रेसपान्स' मिला। जे० पी० की इस यात्रा में करीब ९०० व्यक्तियों ने सर्वोदय-मित्रों की सूची में अपने नाम दर्ज कराये। जैसा कि यात्रा की समाप्ति पर अपने अनुभव प्रकट करते हुए जयप्रकाशजी ने स्वयं कहा "जहाँ तक कि जनता का संबंध है, उसने हमारे विचारों का स्वागत किया है और उन विचारों पर अमल करने की तैयारी दिखायी है। अब अगर वह, वर्तमान प्रतिकूल भूमिका में हमारे कार्यक्रम के साथ बहुत दूर तक नहीं चल पाती है, तो यह अलग बात होगी।"

गत सभाओं तथा कार्यकर्ताओं की बैठकों में जे० पी० ने अपनी सुपरिचित, विशद शैली में अपने विचार जनता के सामने रखे। सर्वोदय के विचार अक्सर आदर्शवाद की भाषा में प्रकट किये जाते हैं। जे० पी० ने शुद्ध व्यावहारिकता की भाषा में सर्वोदय का विचार लोगों के सामने रखा। लोगों के मानस में यह बात बिठाने की आपने कोशिश की कि "सर्वोदय, अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण के बावजूद, जीवन की समस्याओं से अलग कोई वस्तु नहीं है बल्कि उसका संबंध मुख्यतः जन-जीवन की समस्याओं से है, जिनका एक व्यावहारिक समाधान वह पेश करता है।"

स्वराज्य के बाद सरकार की असफलताओं का जिक्र करते हुए जे० पी० ने कहा कि पंडित नेहरू अपनी महान योग्यताओं एवं ईमानदारी के बावजूद विगत तेरह वर्षों में जनता की समस्याएँ हल करने में असफल रहे हैं और अगर जनता इसी तरह सोती रही, तो नेहरू भविष्य में भी असफल रहेंगे।' अपनी हर सभा में जे० पी० ने जनता को खासकर नौजवानों को ललकारते हुए कहा 'आपका भविष्य आपके हाथों में है, न कि उनके हाथों में, जिन्हें आपने वोट देकर गद्दी पर बिठाया है या भविष्य में बिठाने वाले हैं।"

गया जिले की जनता के समक्ष जयप्रकाशजी ने जो पंचविध कार्यक्रम पेश किया, उसका एक महत्त्वपूर्ण अंग था—ग्रामपंचायतों का निर्विरोध चुनाव। जे० पी० ने अपने हर भाषण में इस बात पर विशेष जोर दिया और उनके इस विचार ने जिले की तथा जिले के बाहर की जनता का भी ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। अपनी यात्रा के दौरान में जहाँ-जहाँ जे० पी० गये, वहाँ की पंचायत का चुनाव निर्विरोध ढंग से कराने की कोशिश तत्क्षण की गयी, जो एक हद तक सफल भी हुई। वजीरगंज थाने के सढ़िया पड़ाव पर स्थानीय ग्राम-पंचायत के दो परस्पर-विरोधी गुटों के नेताओं ने, अपने पुराने मतभेद भुला कर, जे० पी० के आह्वान पर सार्वजनिक रूप से यह घोषित किया कि वे स्थानीय पंचायत का निर्विरोध चुनाव करने का हार्दिक प्रयास करेंगे। अन्य पड़ावों पर भी ऐसी कोशिशें हुईं, जो न्यूनाधिक रूप में सफल हुईं।

इस यात्रा में जिन गाँवों या गाँव-समूहों से जे० पी० गुजरे, वहाँ की जनता निर्विरोध चुनाव के विचार से बहुत प्रभावित हुई है और उस सारे क्षेत्र में निर्विरोध चुनाव का एक वातावरण निर्माण हुआ है।

अपने भाषणों में आम तौर पर जयप्रकाशजी ने विवादग्रस्त राजनीतिक विषयों की चर्चा नहीं की। लेकिन जहाँ भी श्रोताओं ने प्रश्न किया, वहाँ अपने विचार उन्होंने साफ-साफ प्रकट किये। सतानन्द ग्राम (थाना शेरघाटी) के पड़ाव पर एक प्रश्न के उत्तर में आपने एक महत्त्व की बात कही। हिमालय से दक्षिण के राष्ट्रों की सुरक्षा के सम्बन्ध में बोलते हुए आपने कहा कि 'अफगानिस्तान से लेकर हिंदेशिया तक के सारे देशों को आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रतिरक्षा के क्षेत्र में एक-दूसरे का अधिकाधिक सहयोग करना चाहिए, क्योंकि उनकी भौगोलिक स्थिति का यह तकाजा है। आपने आगे कहा कि 'केवल भारत और पाकिस्तान नहीं, नेपाल, बर्मा आदि सभी देशों को जो अफगानिस्तान से हिंदेशिया तक स्थित हैं, परस्पर संयुक्त प्रतिरक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।" आपने आगे कहा "लेकिन संयुक्त प्रतिरक्षा से मेरा मतलब संयुक्त कमान या 'सीटो, नाटो आदि की तरह कोई सामरिक संधि नहीं है। संयुक्त प्रतिरक्षा से मेरा मतलब केवल यह पारस्परिक समझौता है कि आवश्यकता पड़ने पर हम एक दूसरे की मदद करेंगे।"

भारत-चीन सीमाविवाद की चर्चा करते हुए आपने कहा कि "इस आणविक युग में बाह्य आक्रमण का सशस्त्र प्रतिकार करने की बात निरर्थक है। अतः भारत को अहिंसक प्रतिकार के लिए तैयार होना चाहिए।" "हमने जिस हथियार से आजादी हासिल की है, उसी हथियार से हम उसकी हिफाजत भी कर सकते हैं।"—आपने यह विश्वास प्रकट किया।

जयप्रकाशजी की अंतिम सभा गया नगर में हुई, जहाँ एक विशाल जनसमूह उनके विचार सुनने के लिए उपस्थित हुआ। गया के नागरिकों को सम्बोधित करते हुए जे० पी० ने उनसे अपील की कि वे अपने नगर को एक आदर्श नगर का रूप दें और उसे एक "मंगलकारी नगर राज्य" में परिवर्तित करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने नागरिकों के समक्ष एक पंचविध कार्यक्रम पेश किया, जिसका एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा "गया नगरपालिका का निर्विरोध चुनाव" करना है।

गया नगरपालिका के निर्विरोध निर्वाचन के लिए जोरदार तैयारियाँ शुरू हो गयी हैं, और आशा की जाती है कि गया के नागरिक जे० पी० के आह्वान पर अपनी नगरपालिका का निर्विरोध निर्वाचन करके देश के नागरिक जीवन को एक नया नेतृत्व और एक नया मोड़ देंगे।

(५) डाकू कोई जन्म से नहीं होता, लोगों को डाकू बनाने में पुलिस और मुखबिरों ने बहुत हाथ बँटाया है। यहाँ पुलिस और डाकू, दोनों की तरफ से मुखबिरी करने वाले लोग बड़ी संख्या में पाये जाते हैं और आजकल उनका यह धंधा ही बन गया है। अक्सर पुलिस कुछ परिवारों को सिर्फ शक की वजह से तंग करने लगती है। लोगों को मारती-पीटती है उनकी जमीनें जब्त करती है, पैसे खाती है और विश्वासघात करती है। नतीजा यह होता है कि इस तरह सताये जाने वाले परिवारों के लोग जब बहुत ही तंग हो जाते हैं तो वे बागियों की जमात में जाकर मिल जाते हैं। चूँकि मुखबिरों ने इसे पैसा कमाने का धंधा ही बना लिया है, इसलिए वे दोनों तरफ से पैसा खाते हैं और कभी शक की बिना पर लोगों को डाकुओं से मरवा देते हैं तो कभी पुलिस से। इसकी वजह से गाँव में आपस की दुश्मनी बढ़ती जाती है। कुछ लोग इस दुश्मनी के कारण डाकू बनते हैं और कुछ पुलिस और मुखबिरों की ज्यादतियों से बचने के लिए डाकू बन जाते हैं। [समाप्त]

विनोबाजी का कार्यक्रम

विनोबाजी ग्वालियर, शिवपुरी, गुना, राजगढ़, शाजापुर, देवास की पदयात्रा समाप्त कर जुलाई के द्वितीय सप्ताह में उज्जैन जिले के नरवल ग्राम से प्रवेश करेंगे तथा दूसरे ही दिन उज्जैन पहुँचेंगे। विनोबाजी का स्वागत करने हेतु इंदौर में सर्वोदय-समिति का गठन हुआ है तथा कार्यकर्तागण नगर में सम्पत्तिदान, भूदान तथा सर्वोदय-पात्र की स्थापना के काम में जुट गये हैं। विनोबाजी संभवतः उज्जैन दो दिन ठहरेंगे।

विनोबाजी के यात्रा-पड़ावों शिवपुरी और गुना में सहरिया सेवा-संघ के तत्त्वावधान में सहरिया-सम्मेलन होगा, जिसकी अध्यक्षता-संघ के मंत्री श्री लक्ष्मीचंदजी बैद करेंगे। वैसे ही राजगढ़ जिले के मऊ ग्राम में हरिजन-सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है, जिसकी तैयारी संसद सदस्य श्री कन्हैयालालजी मालवीय कर रहे हैं। उसी प्रकार देवास जिले के टाक नामक ग्राम में जरायमपेशा के नाम से जाने वाले कंजरों का भी एक सम्मेलन होगा।

विनोबाजी का पता :

मार्फत—मध्य प्रदेश सर्वोदय-मंडल,
११२ स्नेहलतागंज, इंदौर शहर
(म० प्र०)

उत्तर प्रदेश की चिट्ठी

- उ. प्र. में विनोबा की यात्रा
- आगे का कार्यक्रम
- कार्यकर्ताओं का आधार
- शांति-सेना का संयोजन
- तिब्बत-सीमा और चम्बल-घाटी में शक्ति लगे

[हमने हर प्रान्त के एक साथी से निवेदन किया है कि वे अपने-अपने प्रान्त के काम के बारे में एक चिट्ठी हर महीने लिख कर भेजें। यों तो विभिन्न कार्यक्रमों और घटनाओं की 'रिपोर्ट' और 'संवाद' तो जगह-जगह से आते ही रहते हैं और वे यथासमय छपते भी हैं, पर 'मासिक चिट्ठी' में किसी एक ही घटना की केवल 'रिपोर्ट' न होकर लिखने वाले को अपना दृष्टि से कुछ मिला कर हमारे कामों से पैदा होने वाले असर और परिणाम का जिक्र मुख्य होता है। महीने भर का एक सिंहावलोकन-सा हो जाता है। सीधे सर्वोदय से संबंधित बातों या घटनाओं के अलावा प्रान्त की अन्य महत्त्व की गतिविधि का जिक भी चिट्ठी में हो, यह भी अपेक्षित है।

उत्तर प्रदेश और बिहार की चिट्ठियाँ इस अंक में जा रही हैं, बारी-बारी से सब प्रांतों की चिट्ठियाँ हम प्रकाशित करते रह सकेंगे, ऐसी आशा है। —सं०]

सर्वोदय-सम्मेलन के लगभग दस दिन पहले मैं पूज्य बाबा के पास पहुँचा। बाबा की यात्रा उस समय पंजाब में चल रही थी। उस समय उनका चिन्तन इन्दौर जाने की ओर चल रहा था। उनके लिए दो मार्ग थे। वे पंजाब से राजस्थान होते हुए भी जा सकते थे और उत्तर प्रदेश के एक भाग का भ्रमण करते हुए भी जा सकते थे। मैंने उनसे उत्तर प्रदेश होकर उधर जाने की प्रार्थना की। इस प्रदेश में कार्यकर्ताओं की संख्या काफी है। क्रान्तिकारी जोश, और इस दुख भरे जमाने को बदलने की तमन्ना भी है। सिर्फ जरूरत है गणसेवकत्व की भूमिका तैयार होने की, कन्धों के बराबर होने की, एकसाथ जुटने की, कार्य की दिशा शुद्ध होने की, और कम-से-कम कोई एक तात्कालिक कार्यक्रम लेकर उठ खड़े होने की। बाबा ने इस आवश्यकता को महसूस किया, और उन्होंने स्वीकृति दी। साथियों को यह सूचना सम्मेलन में ही दी जा सकी। उनमें एक उत्साह की लहर दौड़ गयी। यात्रा का कार्यक्रम और अन्य तैयारियाँ प्रारम्भ हो गयीं। पूर्व-तैयारी का समय नहीं था। सम्मेलन समाप्त होते-न-होते अपना-अपना काम छोड़कर कार्यकर्ता जुट गये।

भूदान-यात्रा के सिलसिले में बाबा का उत्तर प्रदेश में यह दूसरा पदार्पण मेरठ जिले के बागपत गाँव में ८ अप्रैल को प्रातः सूर्योदयवेला में पुण्यसलिला यमुना नदी को पार करके हुआ।

बाबा की यात्रा इस प्रदेश में मेरठ, बुलन्दशहर, अलीगढ़, मथुरा, आगरा जिलों से होते हुए, भिन्ड के पास चम्बल के तट तक चली। उनकी यात्रा मुख्यतया कार्यकर्ताओं के लिए थी। इसलिए सम्पूर्ण यात्रा में बाबा ने कार्यकर्ताओं से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं को लेकर चर्चा की और विचार रखे। सर्वोदय-आन्दोलन का स्वरूप क्या है? हमें इस समय तात्कालिक कार्यक्रम क्या उठाना चाहिए? कार्यकर्ताओं के जीवन निर्वाह की व्यवस्था कैसे होनी चाहिए? प्रदेश में कार्य की व्यूहरचना क्या हो? इत्यादि विषयों पर चर्चा हुई और बाबा ने अपने निर्णय दिये।

मेरठ में दो दिन तक बाबा का निवास हुआ। श्री गान्धी आश्रम के कार्यकर्ताओं के बीच उनके प्रवचन हुए। रचनात्मक कार्यकर्ताओं के लिए उन्होंने तीन कार्यक्रम दिये -

(१) देश की भूमि-समस्या के हल में मदद।

(२) शान्ति-व्यवस्था में शान्ति-सैनिक बन कर मदद करना।

(३) साहित्य-प्रचार।

उत्तर प्रदेश की यात्रा में आगरा में उनका निवास विशेष महत्त्व का रहा। तीन दिन वे इस महानगर में रहे। और तीनों दिन एक-एक मिनट का उनके समय का हमने उपयोग किया। प्रदेश के सर्वोदय-भूदान के सब कार्यकर्ता वहाँ आये थे। उनका सम्मेलन बाबा के सान्निध्य में हुआ। प्रान्त भर में फैली हुई रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता और गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ता भी बाबा से मिले। डाकू क्षेत्र की यात्रा का निर्णय और निश्चय भी यहीं हुआ।

प्रदेश के सर्वोदय-मंडल की बैठक भी बाबा की उपस्थिति में हुई। उसको मान्यता और आगे काम करने की प्रेरणा उन्होंने दी। प्रदेशीय शान्ति-सेना की व्यवस्था और संचालन का जिम्मा उन्होंने मुझे सौंपा। प्रदेश में शान्ति सेना मण्डल जो पहले से काम कर रहा है, उसको भी यथावत काम करने की अनुमति उन्होंने दी। सर्वोदय-आन्दोलन में लगे हुए कार्यकर्ताओं का जीवन निर्वाह कैसे किस तरीके से होना चाहिए, यह सलाह उन्होंने दी

(१) सर्वजनाधार

(२) सम्पत्तिदानाधार

(३) श्रम दान

(४) बुद्धिदान और सूत्रदान

(५) सम्पत्ति दान

आगे के काम की इस प्रकार की योजना निश्चित हुई

(१) प्रदेश के चार महानगरों, मेरठ-आगरा, कानपुर, इलाहाबाद में—वाराणसी में—सघन कार्य किया जाय। वाराणसी में विशेष रूप से प्रदेश की अधिक-से-अधिक शक्ति लगे। शहर और जिला दोनों लिये जायें।

(२) तिब्बत-सीमा के तीन जिले: टिहरी, गढ़वाल और अल्मोड़ा में शान्ति सेना कार्य को विशेष चालना दी जाय।

(३) चम्बल-घाटी शान्ति-योजना में पूरी शक्ति लगायी जाय।

(४) प्रदेश में प्राप्त भूमि इस वर्ष वितरित हो जाय, इसकी व्यवस्था हो। इसके लिए कोई एक व्यक्ति जिम्मा उठायें, और वही पूरे वितरण की योजना बना कर कार्यान्वित करने में जुटे और पूरा समय इसमें लगायें।

(५) प्रान्तव्यापी साहित्य-प्रचार और पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने के लिए साल में दो विशेष अभियान प्रारम्भ करने का निश्चय हुआ। एक इसी अक्तूबर महीने में और दूसरा माघ में होगा।

बाबा की इस यात्रा का उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं पर बड़ा उत्साहवर्धक प्रभाव हुआ है। उनका संगम कायम हुआ है और काम की दिशा प्राप्त हुई है। नई उमंग और नित्य स्फूर्ति प्राप्त हुई है। कार्यकर्ताओं को बाबा के सान्निध्य के बाद का [illegible] आधार प्राप्त हुआ है। [illegible] है समस्याएँ [illegible] हल [illegible] हैं।

—[illegible] बाजपेयी

बिहार की चिट्ठी

- सर्वोदय-मित्र सम्मेलन
- गया जिले में सघन काम
- प्रांतीय शांति-सेना शिविर
- ग्राम-निर्माण
- अखंड पदयात्रा

सर्वोदय-सम्मेलन के बाद वे इस अर्से में बिहार में २-३ काम मुख्य हुए हैं। सर्वोदय के काम की जिम्मेवारी केवल पूरा समय देने वाले सेवकों पर ही न रहे, बल्कि आंशिक समय देने वाले व्यक्ति और जन-साधारण भी इस काम के लिए अपनी जिम्मेवारी समझें और कुछ करें, इस विचार से बिहार के कुछ जिलों में 'सर्वोदय-मित्र' बनाने की कोशिश खास तौर से की जा रही है। पूर्णियाँ जिले का जो सर्वोदय-सम्मेलन हुआ, उसके साथ एक "सर्वोदय-मित्र-सम्मेलन" भी वहाँ आयोजित किया गया। इस सम्मेलन से पूर्णियाँ जिले के सर्वोदय मित्रों को एक-दूसरे को जानने और समझने का अच्छा मौका मिला, उनको अपने उत्तरदायित्व का भान हुआ और सर्वोदय आन्दोलन में उनका भी स्थान है, ऐसा महसूस होने से आगे के काम के लिए उनको एक नई प्रेरणा मिली। पूर्णियाँ जिले की तरह दरभंगा जिले का सर्वोदय-सम्मेलन भी इस अर्से में हुआ। श्री जयप्रकाश नारायण इन सभी सम्मेलनों में उपस्थित थे और इस सबब से ये सम्मेलन विशेष आकर्षण के केंद्र बन गये। इन सम्मेलनों में आस-पास के जो लोग आये, उनको इस बात का भान हुआ कि उनको अपनी उन्नति के लिए अपनी शक्ति पर ही भरोसा करना है, बाहर की मदद से उनकी समस्याएँ हल नहीं हो सकेंगी।

विनोबाजी की प्रेरणा से गया और पूर्णियाँ, दो जिलों के कुछ सघन-क्षेत्र में शासन-मुक्ति की दिशा में प्रयोग शुरू किये गये हैं। दोनों जिलों में इस काम के लिए निश्चित कार्यक्रम बना लिये गये हैं। इन कार्यक्रमों का जिक्र "भूदान यज्ञ" के पिछले अंकों में आ चुका है। गया जिले के लिए जो कार्यक्रम बना है, उसके प्रचार के लिए श्री [illegible] का सघन दौरा ता० [illegible] मई से ७ जून तक गया जिले में हुआ। इस दौरे में हर दिन शाम को एक सार्वजनिक सभा होती थी और सवेरे या दोपहर में एक कार्यकर्ताओं की बैठक होती थी, जिसमें सर्वोदय के कार्यकर्ताओं के अलावा भिन्न-भिन्न राजनैतिक-दलों के कार्यकर्ता, ग्राम-पंचायतों के मुखिया, सरपंच और सदस्य, [illegible] तथा [illegible] प्रमुख व्यक्ति, [illegible] के अधिकारी और दूसरे कार्यकर्ता सभी उपस्थित रहते थे। इन चर्चाओं में सर्वोदय-पात्र, शान्ति-सेना, सर्वोदय मित्र और [illegible] के [illegible] चुनाव, इन बातों पर [illegible] किया गया। श्री [illegible] के इस दौरे से [illegible] सर्वोदय मित्र बने।

[illegible]

को उठा लिया है और उनकी कोशिश जारी है।

इस वर्ष की एक और मुख्य घटना बिहार के शान्ति-सैनिकों का शिविर थी। अप्रैल के अंत में मुजफ्फरपुर जिले के बैरगनियाँ गांव में बिहार के सारे शान्ति-सैनिकों का ३ दिन का शिविर हुआ। श्री शंकरराव देव विशेष निमंत्रण से इस शिविर में उपस्थित थे। शिविर के दूसरे दिन सारे शान्ति-सैनिक कूच करके ७ मील दूर गांव में गये। इस शिविर में शान्ति-सैनिकों के काम के सचालन और संयोजन के लिए "शान्ति-सेना-समिति" के नाम से एक संगठन बनाया गया। समिति का कार्यालय पटना में है।

बिहार में लगभग एक सौ ग्रामदान हुए। अधिकांश गांवों में, कहीं कम, कहीं ज्यादा, निर्माण-काम हाथ में लिया गया। कई कार्यकर्ता इस काम में लगे हुए हैं। पिछले वर्ष की तरह इस साल भी ग्रामदानी गांवों के कार्यकर्ताओं और वहाँ के कुछ चुने हुए व्यक्तियों का तीन दिन का एक शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर बोधगया में हुआ और इसमें ग्राम-निर्माण के विविध पहलुओं पर चर्चा हुई और काम के बारे में कुछ निर्णय लिये गये। इस शिविर में सर्व सेवा संघ के निर्माण-समिति के संयोजक श्री आर० के० पाटिल और खादी-ग्रामोद्योग कमीशन के "स्वावलम्बन विभाग" के संचालक श्री वैद्यनाथजी भी उपस्थित थे। शिविर के मौके पर बिहार सर्वोदय-मंडल की ग्राम निर्माण समिति की बैठक भी हुई, जिसमें यह तय किया गया कि मुंगेर के संथाल परगना और पलामू जिलों में ग्रामदान के विचार को समझाने और ग्रामदान प्राप्त करने का कार्यक्रम विशेष रूप से चलाया जाय।

अगस्त, १९५८ से स्व० श्री लक्ष्मी बाबू की स्मृति में बिहार में एक पदयात्री टोली निरंतर घूम रही है। टोली में लगभग १५ लोग स्थायी रूप से हैं और करीब इतने ही जिले के लोग हो जाते हैं। यह टोली एक बार बिहार के सभी जिलों की यात्रा समाप्त कर चुकी है। अब दूसरी बार यात्रा चल रही है। गत २ महीनों में सहर्षा और पूर्णियाँ जिलों में इस टोली की पदयात्रा हुई। टोली के साथ साहित्य, खादी, ग्रामोद्योगी चीजें और चल-चित्र दिखाने का इन्तजाम भी है।

पूसा-क्षेत्र में, जहाँ बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ की ओर से ग्राम-स्वराज्य की दिशा में सघन काम हो रहा है नई तालीम के काम को आगे बढ़ाने के लिए कार्यकर्ताओं की एक बैठक हुई। खादी-ग्रामोद्योग संघ के कार्यकर्ता तथा बुनियादी विद्यालय के शिक्षक मिल-जुल कर इस क्षेत्र में नयी तालीम का काम कर रहे हैं। पूर्णियाँ जिले में श्री धीरेन्द्रभाई पूरी शक्ति के साथ अपने प्रयोग में लग गये हैं। बाहर की मदद के बिना सर्वजन-आधार के बल पर कार्यकर्ता किस प्रकार खड़ा रह सकता है और अपने काम को आगे बढ़ा सकता है, यह श्री धीरेन्द्र भाई के प्रयोग का मुख्य विषय है।

कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि सर्वोदय-विचार और काम बिहार में जड़ पकड़ रहा है और गहराई में जा रहा है।

उत्तर-प्रदेश सर्वोदय-मंडल की कार्य-समिति के निर्णय

उत्तर प्रदेश के सर्वोदय-मंडल की कार्य-समिति की पिछली बैठक ता० १ व २ जून को आगरा में हुई थी। उसमें आगे के काम के बारे में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

श्री विनोबाजी ने सुझाया है कि काशी शहर और जिले में विशेष शक्ति लगानी चाहिए। सर्व सेवा संघ की मंत्री श्री निर्मला देशपाण्डे को इस काम में पूरा ध्यान देने के लिए उन्होंने कहा है। श्री करण भाई ने भी अपनी शक्ति इस काम में लगाने का विचार प्रगट किया है।

मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर चम्बल के 'डाकू-क्षेत्र' में शांति-कार्य के लिए एक अन्तर्प्रांतीय शान्ति-समिति बनायी गयी है। स्वामी कृष्णस्वरूपजी उसके अध्यक्ष हैं। इसी प्रकार श्री विनोबाजी ने हमारी उत्तरी सीमा के तीन पर्वतीय जिलों में भी शान्ति-सेना के काम को विशेष चालना देने का सुझाव दिया था। इन तीन जिलों के काम की पूरी जिम्मेदारी श्री सुन्दरलाल बहुगुणा (टेहरी) पर रहेगी।

कानपुर में श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी, इलाहाबाद में श्री सुरेशराम भाई और आगरा शहर में श्री ओमप्रकाश गौड़ अपनी अधिक से-अधिक शक्ति लगायेंगे। मेरठ में काम की पूरी जिम्मेदारी उठाने की प्रार्थना श्री गांधी-आश्रम से की जा रही है।

उत्तर प्रदेश सर्वोदय-मण्डल का कार्यालय फिलहाल आगरा में रखने का निश्चय हुआ है, क्योंकि आगरा से बाह तहसील (चम्बल घाटी) के शान्तिकार्य में मदद पहुँचाने की सहूलियत रहेगी। कार्यालय का पता है: उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल, मामूभांजा की घटिया, आगरा।

भीलवाड़ा जिले का उदाहरण

ता० ६-७ जून को भीलवाड़ा जिले के कार्यकर्ताओं का एक शिविर ग्रामविद्यालय सुवाणा में हुआ। जिले के करीब ३०-४० कार्यकर्ता शिविर में आये थे। पिछले वर्षों में राजस्थान में मेरा आना कम ही होता रहा, फिर भी समग्र सेवा संघ की सभाओं आदि के लिए जयपुर तो बराबर आना होता रहता था। भीलवाड़ा जिले में पिछले ३-४ वर्षों से मैं नहीं गया था। भीलवाड़ा राजस्थान प्रांत के उन जिलों में से है, जहाँ वर्षों से रचनात्मक काम की और जन-सेवा की परम्परा रही है। इस जिले में कई अच्छी-अच्छी संस्थाएँ और मँजे हुए कार्यकर्ता वर्षों से काम कर रहे हैं। अतः भीलवाड़ा जिले से हमेशा काफी अपेक्षा रही है, वैसा यहाँ काम भी हुआ है।

सूताजलि, सम्पत्ति-दान, सर्वोदय-पात्र और साहित्य-प्रचार के कार्यक्रम योजनापूर्वक हाथ में लेने का तय किया गया है। जिस प्रकार मालकियत-विसर्जन के उद्देश्य को ध्यान में रख कर भूदान का कार्यक्रम चलाया गया, उसी प्रकार सम्पत्ति के क्षेत्र में मालकियत-विसर्जन और ट्रस्टीशिप की भावना को प्रोत्साहन देने के लिए सम्पत्ति-दान के कार्यक्रम में विशेष शक्ति लगाने का तय किया गया है। जिले के कार्यकर्ता इस कार्यक्रम को कितनी गम्भीरता से देखते हैं और उठाना चाहते हैं, यह इस बात से जाहिर है कि शिविर में उपस्थित कार्यकर्ता भाई-बहनों ने खुद ने नये सिरे से अपने-अपने सम्पत्ति-दान का निश्चय किया। शिविर में उपस्थित भाई-बहनों का खुद का सम्पत्ति-दान कुल मिला कर करीब ५० रुपया मासिक हुआ है। अगले दो महीने में जिले के सब कार्यकर्ताओं तक, हर पंचायत-समिति अर्थात् तहसील के क्षेत्र में पहुँचने का कार्यक्रम बनाया गया है। अनुमान है कि कार्यकर्ताओं का निज का सम्पत्ति-दान ही करीब दो हजार रुपया साल तक हो जायगा। यह भी निश्चय किया है कि जिले में एक या दो क्षेत्र चुन कर वहाँ पर शांति-सेना और ग्राम स्वराज्य के कार्यक्रम पर शक्ति केंद्रित की जाय। जिले के विद्यार्थी समुदाय और अध्यापकों से भी काम करने की योजना सोची गयी है।

अपने बजट के सबंध में भी भीलवाड़ा जिला सर्वोदय संघ ने एक अनुकरणीय दृष्टिकोण अपनाया है। पूज्य विनोबा बराबर कहते हैं कि सर्व सेवा संघ का काम देश के जिले-जिले से प्राप्त सूताजलि, सम्पत्ति दान सर्वोदय-पात्र आदि के छठे हिस्से की रकम से चलना चाहिए। सामान्य तौर पर यह माना गया है कि हर जिले में संग्रहीत रकम का छठा हिस्सा केंद्रीय काम के लिए सर्व सेवा संघ को और छठा हिस्सा प्रांतीय काम के लिए प्रांतीय संगठन को मिले और बाकी दो तिहाई जिले के काम में खर्च हो। इस आधार को मान्य करते हुए भीलवाड़ा जिला सर्वोदय-संघ ने यह तय किया है कि जिले के काम के लिए जितना उनका खर्च है, उसका आधा प्रांतीय और केंद्रीय काम के लिए भी वे देंगे और इस प्रकार कुल मिलाकर जो रकम हो, वह जिले का पूरा बजट समझा जाय। इस हिसाब से करीब ७००० रु० जिले के खर्च के लिए और ३५०० रु० प्रांतीय और केंद्रीय अंश का मिला कर इस शिविर में जिले का कुल करीब १०,५०० रु० का बजट स्वीकार किया गया है। बजट का अधिकांश सूताजलि, सम्पत्तिदान और सर्वोदय-पात्र से प्राप्त करने की योजना बनायी गयी है।

सर्वोदय-विचार जीवन-परिवर्तन का क्रांतिकारी विचार है। भीलवाड़ा जिले के कार्यकर्ताओं ने यह महसूस किया है कि जब तक उनके खुद के दैनिक जीवन, रहन सहन, सामाजिक और आर्थिक संबंधों आदि में नये मूल्यों का दर्शन नहीं होगा, तब तक उनकी वाणी में शक्ति और प्रभाव नहीं आ सकता। जनता उनकी कथनी को उनकी करनी से जाँचेगी, इस बात को महसूस करते हुए यह सोचा गया है कि हर तीसरे महीने जब जिले के कार्यकर्ताओं का शिविर हो, उस समय कार्यकर्ताओं के जीवन से संबंधित एक-एक पहलू को लेकर चर्चा हो और कार्यकर्ताओं के रहन-सहन तथा सामाजिक-जीवन के संबंध में उत्तरोत्तर कुछ नियमों का विकास किया जाय, जिनके पालन की अपेक्षा हर सर्वोदय-कार्यकर्ता से रहे, उदाहरण के लिए खादी का व्यवहार, दैनिक कताई, सम्पत्ति-दान में योग, आदि। कार्यकर्ता इन नियमों के पालन में आगे बढ़ रहे हैं या नहीं, इस बारे में शिविर में आत्म-निरीक्षण हो।

—सिद्धराज ढड्ढा

ग्राम स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और उसे हम अवश्य प्राप्त करेंगे

श्री धीरेन्द्र भाई के दो पत्र

औज़ारों के सुधार की कसौटियाँ

पहला पत्र श्री नरहरि भाई परीख के सुपुत्र श्री मोहन परीख को लिखा गया है, जो इस समय बारडोली (सूरत) में सर्व सेवा संघ की ओर से खेती-औज़ारों में सुधार के काम में लगे हैं, और दूसरा पत्र श्री कृष्णदास गांधी को लिखा गया है। —सं०

प्रिय मोहन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम कुछ औज़ार बना रहे हो, यह जान कर खुशी हुई। यंत्रों के बारे में खोज का हमारा लक्ष्य क्या हो, इस बारे में मेरे विचार नीचे दे रहा हूँ। मेरी इन चार कसौटियों के अनुसार कुछ निकालो, तो यहाँ चलाने के लिए भेजना। मैं आजकल चार घण्टे प्रतिदिन खेती-बारी के काम का अभ्यास कर रहा हूँ। अब अपने हाथ से चला कर देखना चाहता हूँ। कृषि-औज़ार के अलावा आटा पीसने की चक्की भी महत्त्व की है, क्योंकि उसमें बहनों का सवाल है। उन्हें चक्की चलाने के काम से मुक्त कर देने से काम नहीं चलेगा। उसमें आनन्द और आराम देने की कोशिश करनी होगी।

सदियों से इन्सान अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए काम करता आया है। उसमें खेती का काम सबसे पुराना है। जैसे-जैसे बुद्धि बढ़ती गयी और श्रम टालने का विचार आया, वैसे-वैसे औज़ारों की खोज हुई और उसमें तरक्की हुई। औज़ारों की तरक्की के साथ-साथ औज़ार चलाने की शक्तियों का भी आविष्कार हुआ। उसी से स्टीम, बिजली, तेल, अणुशक्ति आदि निकली। शक्तियों की वृद्धि के साथ-साथ औज़ारों में भी गति बढ़ती गयी और वे अधिक जटिल होते गये।

साथ-साथ समाज-व्यवस्था का यंत्र भी जटिल होता गया। राजनीति भी अत्यन्त जटिल बन गयी, जिस कारण जनता की स्वतन्त्रता भी खतम हो गयी। अब सवाल यह है कि सर्वोदय की दृष्टि से यंत्रों की खोज का लक्ष्य क्या हो? श्रम कम हो, यह हम भी चाहते हैं, लेकिन हमारे कम श्रम का उद्देश्य श्रम को टालना नहीं, बल्कि यह है कि श्रम भार रूप न हो, आनन्द पैदा करने वाला हो। मैं तुमसे कहते आया हूँ कि आज के वैज्ञानिक युग में हरेक चीज़ वैज्ञानिक होनी चाहिए। ज्ञान की देवी सरस्वती है। उसके हाथ में वीणा ही रहती है। तो ज्ञान के साथ अगर उद्योग चलाना है, तो उसके औज़ार का स्वरूप भी वीणा जैसा होना चाहिए। यानी

— हमारे औज़ार ऐसे हों कि वे सरल हों, उन्हें चलाने में आराम मिलता हो और उनमें से सांस्कृतिक मूल्य निकले। अगर श्रम की प्रक्रिया में से संस्कृति का निर्माण नहीं होगा, तो बुद्धिमान व्यक्ति यानी सरस्वती के वरपुत्र उन औज़ारों को हाथ में नहीं लेंगे। फिर बुद्धिजीवी और श्रमजीवी, दो वर्ग रहेंगे ही। ऐसा हुआ तो अनन्त काल तक वर्ग-संघर्ष चलता रहेगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि अगर सर्वोदय का लक्ष्य वर्गों का निराकरण है तो सर्वोदय की दृष्टि से जो भी औज़ार बनें, उनमें सांस्कृतिक तत्त्व होना अनिवार्य है।

जैसा कि मैंने ऊपर कहा, कृषि और उद्योग के औज़ार चलाने में तबियत को उतनी ही प्रसन्नता मिलनी चाहिए जितनी वीणा के स्वरों से मिलती है।

इस प्रकार औज़ारों के बारे में मेरी कसौटियाँ ये हैं :

१ आज के आम मज़दूरों और किसानों का बौद्धिक स्तर जितना है, उतनी बुद्धि से वह उन औज़ारों को चला सके। यानी औज़ार अत्यन्त सादे होने चाहिए।

२ औज़ार काफी सस्ते होने चाहिए, ताकि किसान अपनी हैसियत की मर्यादा में व्यापक रूप से इस्तेमाल कर सकें।

३ औज़ार किसी केन्द्रित सत्ता या शक्ति के मुहताज न हों, ताकि शोषण युक्त न हो।

४ औज़ार आनन्ददायी हों, जिससे औद्योगिक प्रक्रिया से सांस्कृतिक मूल्य निकल सकें।

मैं अमेरिका वालों से कहूँगा कि उनके औज़ार भले ही सस्ते हों, लेकिन सादे अगर होने चाहिए, ताकि आम के मज़दूर-किसान विशेषज्ञों के मुहताज न हों। भारत को कहूँगा कि यहाँ के औज़ार केवल सादे हों, इतनी बात नहीं है, बल्कि सस्ते भी होने चाहिए।

मैंने जो तीसरी बात कही है, वह राजनैतिक है। मैं इस प्रश्न को औज़ार के साथ खास तौर से जोड़ता हूँ। बिजली आदि शक्तियों के खिलाफ नहीं हूँ, बिजली अगर विकेन्द्रित ढंग से बन सके—सूर्य की किरण से, पृथ्वी की गर्मी से या आकाश के पवन से कोई शक्ति निकल सके, तो उसका ज़रूर इस्तेमाल किया जा सकता है, क्योंकि ये तमाम शक्तियाँ विकेन्द्रित रूप से फैली हुई हैं।

मैं केन्द्रित शक्ति का विरोधी इसलिए हूँ कि उससे राजनैतिक शक्तियों का केन्द्रीकरण अनिवार्य होगा, जिससे जनतंत्र को खतरा है। दूसरी बात यह है कि औज़ार बनाने के लिए जहाँ तक हो सके, छोटे-छोटे विकेन्द्रित कारखाने काफी होने चाहिए, ताकि उनके लिए भी केन्द्रित शक्ति के भरोसे न रहना पड़े।

अब शक्तियों की दृष्टि से औज़ार को किस तरह से सोचना है। औज़ार चलाने के लिए आज इतनी शक्तियाँ हैं—एक मनुष्य-शक्ति, दूसरी पशु-शक्ति, तीसरी भौतिक शक्तियाँ, अर्थात् बिजली आदि की शक्तियाँ।

बिजली की बड़ी चर्चा है। लेकिन वह आज केन्द्रित ढंग से हमें मिलती है। वह विकेन्द्रित ढंग से कैसे प्राप्त हो, यह सोचना होगा। तब तक उसे न इस्तेमाल करना ही ठीक है। अभी हमने बताया कि हम विज्ञान में बहुत आगे जाना चाहते हैं, क्योंकि हम वैज्ञानिकों से सर्वव्यापी शक्तियों की मांग करते हैं। सूर्य-किरण आदि शक्तियों का भंडार तो अनन्त है। जब तक यह नहीं होता, तब तक हमारे पास मनुष्य और पशु-शक्ति ही है। तब तक यंत्र-शास्त्र को बारीकी से इस्तेमाल करना होगा, जिससे औज़ार चलाने के लिए आज जितनी शक्ति (ड्राफ्ट) की ज़रूरत है, उससे कम की ज़रूरत हो। हिन्दुस्तान के लिए तो इस पहलू पर और ज़्यादा ज़ोर देना होगा, क्योंकि यहाँ लोक-संख्या के अनुपात में ज़मीन इतनी कम है कि अधिक पशु रखने की भी ताकत इस देश की नहीं है। इसका मतलब यह है कि हमारा ज़ोर अधिक-से-अधिक मनुष्य-शक्ति से चले, ऐसी खोज करनी होगी। मैं तो 'ड्राफ्ट' कम करने की दिशा में हिन्दुस्तान कुछ पुर्ज़े विदेशों से भी लाना पसन्द करूँगा। लेकिन भरसक उसको टालने की कोशिश करूँगा।

आखिर में फिर से कहना चाहता हूँ कि औज़ार ऐसे हों कि उनमें सबको दिलचस्पी हो, जिससे बुद्धिमान और किसान को रस दे सके, नहीं तो समाजवाद यानी समतावाद नहीं होगा। संक्षेप में, औज़ार सादे होने चाहिए, ताकि मज़दूर अपनी बुद्धि से उन्हें चला सकें। औज़ार सस्ते होने चाहिए, जिससे हमारे अधिक किसान के अनुकूल हो सकें। 'ड्राफ्ट' कम-से-कम होना चाहिए, ताकि वह मनुष्य-शक्ति से आसानी से चल सके। औज़ार चलाने में आनन्द मिलना चाहिए, ताकि हरेक कोई के मनुष्य श्रम में दिलचस्पी ले सके।

तुम्हारा शुभचिन्तक,
—धीरेन्द्र भाई

* * *

प्रिय भाई कृष्णदास,

तुम्हें याद होगा, आज अरसा हो गया, छोटे औज़ारों में बिजली की शक्ति लगा कर ग्रामोद्योग चलाने की बात चली थी। उस समय मैंने अपना यह मत जाहिर किया था और बतायी थी कि हमें कृषि और ग्रामोद्योग औज़ार-सुधार में विशेष ध्यान न दे कर बिजली की जो बात सोचते हैं, उसमें हमारा पुरुषार्थ की पराजय है, ऐसा मानना चाहिए। पराजय दो प्रकार की होती है। एक तो लड़ कर लड़ाई की, फिर भी सफलता नहीं हुई और दूसरे, बिना लड़ाई किये ही हथियार उतार दिया। अभी २१ मई के "भूदान-यज्ञ" में मैंने पढ़ा कि देश भर में अपना साहस बिजली से आटा पीसने की चक्की चला रहे हैं। यह बात लड़ाई किये बिना ही हार मानने का है। खादी के लिए चरखे पर हमने चरखे के प्रयोग करना शुरू किया और आज अम्बर चरखा हमारे हाथ में है, जिसे तुम कुछ-न-कुछ सुधारते जा रहे हो। लेकिन ग्रामोद्योग के सरंजाम-सुधार में हम लोगों ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया है। उसमें ध्यान न दे कर आज हम लोग बिजली की बात कर रहे हैं। प्रश्न यह है कि ऐसी पराजित वृत्ति के लिए ज़िम्मेदार कौन है? मैं मानता हूँ कि यह तुम लोगों के लिए एक तरह की चुनौती है।

अम्बर चरखा निकाल कर चरखे की दिशा में सुधार करने की ज़िम्मेदारी तुम लोगों ने ली थी। उसी तरह से ग्रामोद्योग बिजली से चलाना हानिकारक है, ऐसा जो लोग मानते हैं, बिजली के बिना काम चल सके, यह खोज करने की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं की है। काम कर रहा था, मुझे एक सुधरी हुई चक्की मुझे दिखाई थी। उसमें काफी सम्भावना भरी थी। लेकिन किस तरह से एकाएक बिजली के काम शुरू करने के पीछे सब लोग पड़ गये, उसी तरह उस चक्की का फिर कोई ज़िक्र नहीं आया। अब तक अम्बर चरखा का आविष्कार नहीं हुआ था, जब तक बिजली नहीं लगनी चाहिए, कहने पर हमारा ज़ोर था। अब तो आमन्त्रण देना है। इसलिए अब अम्बर चरखे के साथ इस दिशा में कुछ काम होना चाहिए। देश में जहाँ-जहाँ सरंजाम में कुछ प्रयोग हो रहे हैं, उन सब प्रयोग-कर्त्ताओं की तरफ से चक्की के प्रयास का भी हाथ में लेना चाहिए।

तुम्हारा शुभचिन्तक,
—धीरेन्द्र भाई

खादी-ग्रामोद्योग समिति के निर्णय

[अखिल भारत सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति तथा प्रमुख खादी-संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक त्रिदिवसीय सम्मेलन गत २८, २९ और ३० मई को कोरा केन्द्र (बंबई) में हुआ था। सम्मेलन में ऐसी बहुत-सी समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया, जिनका सम्बन्ध भविष्य में "नया मोड़" के अनुसार होने वाले संगठन के स्वरूप से है। सम्मेलन ने काम की नीति और संगठन व कार्यक्रम की जो रूपरेखा स्वीकार की, वह नीचे दी जा रही है। खादी-ग्रामोद्योग समिति के अध्यक्ष, श्री ध्वजा प्रसाद साहू ने सब खादी-संस्थाओं और कार्यकर्ताओं से निवेदन किया है कि वे इन निर्णयों को अमल में लाने की कार्रवाई तुरन्त शुरू करें। —सं०]

चांगोलगांव में विनोबाजी की उपस्थिति में खादी और रचनात्मक कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर खादी के नव-संस्करण के रूप में गांधीजी ने जो कल्पना हमें दी थी, तथा भूदान और ग्रामदान-आन्दोलन से जो नयी शक्ति हमें मिली, उसे दृष्टि में रख कर सारे रचनात्मक कार्य को "नया मोड़" देने का विचार हुआ। उसके बाद सेवाग्राम, पूसा और काशी की खादी-समिति की बैठकों और सम्मेलनों में हमने भिन्न-भिन्न पहलुओं से चर्चा की। अब तक जैसा कुछ भी हमारे काम का विस्तार हुआ है, उस पर से सब लोगों को यह लग रहा है कि वर्तमान कार्यक्रम को क्रान्तिकारी मोड़ दिये बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते। खादी और रचनात्मक कार्य अहिंसक समाज रचना की एक गत्यात्मक शक्ति (डाइनेमिक फोर्स) बने और विनोबाजी आज हमसे जो अपेक्षा रखते हैं, उसे हम पूरी कर सकें, उसके लिए यह और भी आवश्यक है।

संगठन का स्वरूप

अब हम भविष्य का कार्यक्रम बनायें तब सबसे पहले हमारे संगठन का स्वरूप निश्चित कर लेना होगा। आज हमारे देश में तीन प्रकार के क्षेत्र हैं

(१) ऐसे क्षेत्र जो बिलकुल अछूते हैं, जहाँ नया काम आरम्भ करना है।

(२) ऐसे क्षेत्र जहाँ थोड़े दिनों से कार्य आरम्भ हुआ है और कार्य का विकास अभी हो ही रहा है। (अविकसित क्षेत्र)

(३) ऐसे क्षेत्र जहाँ हम पिछले बीस-तीस वर्षों से खादी और रचनात्मक काम कर रहे हैं और जहाँ काम काफी विकसित अवस्था में है। (विकसित क्षेत्र)

नये क्षेत्र में हमारे काम की इकाई ५००० (पाँच हजार) की आबादी वाले ग्राम एवं ग्राम-समूह में ग्राम-पंचायत, ग्राम-समिति या बहुधंधी सहकारी समितियाँ, स्थानीय परिस्थिति को देखते हुए जहाँ जैसा अनुकूल होगा, वैसी होंगी। आगे का सारा काम ग्राम-इकाई को ही आधार मान कर समग्र ग्राम विकास की दृष्टि से होगा। ऐसी ग्राम इकाइयों का संयोजन इस प्रकार का होगा कि सारा गाँव ग्राम परिवार के रूप में अपने कार्य का संयोजन करे। अपनी बुनियादी आवश्यकताओं—अन्न, वस्त्र, आवास और शिक्षण संरक्षण एवं आरोग्य—में सारा गाँव स्वावलम्बी और स्वाश्रयी हो। सब लोग एक-दूसरे के सुख-दुःख में हाथ बटायें। गाँव में सबको भोजन और रोजगार मिल सके, इसकी जिम्मेदारी गाँववाले समझें।

दूसरे प्रकार का क्षेत्र, जहाँ अभी कार्य आरम्भ ही हुआ है और अविकसित अवस्था में है, इसका भी संयोजन ग्राम इकाई के आधार पर हो। तीसरे प्रकार का क्षेत्र, जहाँ उत्पादन का कार्य वर्षों से चल रहा है और प्रदेश तथा देश भर में जहाँ के उत्पादित माल जाते हैं, ऐसे क्षेत्र में भी कार्यक्रम बना कर ग्राम-इकाइयाँ स्थापित की जायें। ग्राम-इकाइयों के द्वारा गाँव की आवश्यकता की पूर्ति समग्र ग्राम-विकास की दृष्टि से की जाये। इसमें उत्पादन और बिक्री का जो कार्यक्रम है वह तो कायम रहेगा ही, क्षेत्र में भी हम गहराई से जन-जीवन में प्रवेश कर सकेंगे।

क्षेत्र-समिति : साठ हजार से लेकर एक लाख तक की आबादी जो आज के क्षेत्र विकास की इकाई मानी जाती है, वह हमारे संगठन के क्षेत्र की भी इकाई मानी जायेगी। इस क्षेत्रीय स्तर पर सभी ग्राम समितियाँ मिल कर, क्षेत्र-स्वावलम्बन तथा क्षेत्र के समग्र-विकास की दृष्टि से काम करेंगी।

जिला-इकाई : हमारी अन्तिम इकाई, जिला-स्तर की इकाई होगी। इससे बड़ा स्वरूप हमारे संगठन का आगे नहीं होगा। नई संस्थाएँ ग्राम और क्षेत्र के संगठन को दृष्टि में रखते हुए अधिक-से अधिक जिला-स्तर तक की ही बनें।

पुरानी संस्थाएँ ग्राम-इकाई एवं क्षेत्र-इकाई का संगठन करते हुए अपने संगठन को निश्चित अवधि के अन्दर जिले के स्तर तक संगठित करने की व्यवस्थित योजना बनायें।

कार्यक्रम

हमारा कार्यक्रम ग्राम इकाई को परिपूर्ण करते हुए क्षेत्र विकास को दृष्टि में रख कर, जिले के स्तर तक हमारा प्रसार हो, ऐसा होगा। समग्र ग्राम विकास को जब हम दृष्टि में रखेंगे, तो खेती को प्रधान आधार देकर उसके साथ गोपालन, खादी और ग्रामोद्योग, चारों का कार्यक्रम अपनाना होगा।

गाँव-क्षेत्र या जिला-क्षेत्र, जहाँ भी हमारा कार्यविस्तार होने वाला हो, उसका सर्वेक्षण कर, उसकी आवश्यकताओं एवं संभावनाओं के आधार पर खेती के लिए पानी, सुधरे औजार और बिजाई की योजना एवं सालाना कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर लेनी होगी। मनुष्य-शक्ति का पूरा-पूरा सदुपयोग हो, उसे दृष्टि में रख कर खादी एवं रेशा-उद्योग, धान-कुटाई और हाथ-चक्की, मृत चर्म उद्योग और तेलघानी जैसे ग्रामोद्योग, जहाँ जैसा संभव हो, उनकी स्थापना करनी होगी।

अपनी दुकान : गाँव की अपनी सहकारी दुकान, जिसमें गाँव की आवश्यकता की चीजें मिलें, और सूत की गुंडी के द्वारा यथासंभव अदला-बदली का चलन चालू किया जाय।

ग्राम की पूँजी की योजना : गाँव वाले कम-से-कम महीने में एक दिन गाँव को श्रम शक्ति गाँव के सामूहिक कार्य के लिए लगायें। गाँव में जितने लोग मजदूरी करते हैं अथवा पैसा कमाते हैं उनका, कुछ अंश-सप्ताह में एक दिन अथवा महीने में एक दिन जितना भी संभव हो उतना-गाँव की सामूहिक पूँजी के लिए दें। खेती में जो पैदावार होती है उसका मन में सेर भर अथवा आधा सेर जितना-संभव हो, ग्राम-कोष में जमा करें।

सांस्कृतिक दृष्टि : घर-घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना एव उसका संचालन हो। ग्राम में सामूहिक प्रार्थना एव भजन-कीर्तन का आयोजन हो।

साहित्य-प्रचार : जिस प्रकार संस्थाएँ बिक्री तथा उत्पादन तथा ग्राम-इकाई के लिए लक्ष्य निर्धारित करती हैं, उसी तरह साहित्य-बिक्री तथा पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने के निश्चित लक्ष्य निर्धारित किये जायें। विशेष कर "भूदान-यज्ञ" के ग्राहक बनायें और उसका विस्तृत प्रचार करें।

सूत्रदान : कताई करने वाले अधिक-से-अधिक व्यक्तियों एव परिवारों से सम्पर्क स्थापित करके विशेष अवसरों पर उन्हें सामर्थ्य के अनुसार सूत्र-दान करने को प्रेरित किया जाये। कुछ व्यक्ति नियमित रूप से भी सूत्रदान दे सकते हैं।

सूत्रांजलि : प्रति वर्ष नियमित व सुसंगठित रूप से समय से काफी पहले ही इस सम्बन्ध में प्रयत्न किये जाया करें।

सम्पत्ति-दान : इसी प्रकार सम्पत्ति-दान प्राप्त करने के संबंध में भी सुनियोजित प्रयत्न आवश्यक है।

कार्यकर्ता-प्रशिक्षण

कार्यकर्ता के प्रशिक्षण का कार्यक्रम सभी संस्थाएँ निश्चित रूप से बनायें और सभी कार्यकर्ताओं को सर्वोदय-आन्दोलन तथा विशेष रूप से खादी-कार्य के 'नया मोड़' एवं ग्राम-इकाई का पूरा-पूरा भान हो जाय और इस काम की ओर उनकी प्रेरणा सजग हो। कार्यकर्ता-प्रशिक्षण के लिए खादी-ग्रामोद्योग समिति जो पाठ्यक्रम तैयार करे, उसे चालू किया जाय। खादी-कमीशन के प्रशिक्षण में भी इसका पूरा-पूरा स्थान हो, जिससे कमीशन के कार्यकर्ता इस 'नये मोड़' को सफल बनाने में सहायक हों।

हमारे बिक्री-भंडार तथा नगर कार्यक्रम

बिक्री-भण्डार हमारे विचार-प्रचार तथा नगर में सर्वोदय-आन्दोलन को ठोस रूप देने के बहुत बड़े केन्द्र हो सकते हैं। खादी की बिक्री के अलावा भण्डारों के द्वारा नीचे लिखा कार्यक्रम अपनाया जाय।

१. ग्रामोद्योगी चीजों की बिक्री का व्यवस्थित आयोजन।

२. सभी भण्डारों पर सर्वोदय-साहित्य की बिक्री का व्यवस्थित प्रबन्ध एक कार्यकर्ता को साहित्य बिक्री का कुशल शिक्षण देकर उसका प्रबन्ध रखा जाये और जिस प्रकार खादी-बिक्री का लक्ष्य निर्धारित रहता है, उसी प्रकार साहित्य-बिक्री का लक्ष्य निर्धारित रहे।

३ 'भूदान-यज्ञ' एवं सर्वोदय विचार संबंधी पत्र-पत्रिकाओं के बिक्री का निश्चित प्रबन्ध प्रत्येक भण्डार पर हो।

४ हर कार्यकर्ता, जो परिवार ... साथ है : (क) अपने अपने घर के सर्वोदय पात्र रखें। (ख) सर्वोदय-साहित्य का अध्ययन करें। हो सके तो 'भूदान-यज्ञ' का स्वयं ग्राहक बन कर पढ़ें। (ग) अपने हाथ का कता हुआ महीने में कम-से-कम एक गुण्डी सूत श्रमदान के रूप में सर्व सेवा संघ को अर्पण करें। (घ) स्वेच्छा से, जितना प्रेम हो, सम्पत्ति-दान दें और अपने मित्र एवं साथी एव नागरिक से दिलाने का प्रयास करें।

काशी में शांति सेना का कार्य

काशी शहर २७ वार्डों में विभक्त है। इन २७ वार्डों में १३ कार्यकर्ता जनसम्पर्क का कार्य कर रहे हैं। यह सम्पर्क १० जुलाई से १५ अगस्त, तक चलने वाले 'शांति-सेना यात्रा' की पूर्वतैयारी के रूप में हो रहा है। १० जुलाई से १५ अगस्त तक काशी नगर में कार्यकर्तागण सघन पदयात्रा करेंगे। इस पदयात्रा में कुछ समय श्री जयप्रकाशजी भी देंगे। अभी तो मोहल्ले-मोहल्ले के प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क करके उनके पास सर्वोदय-साहित्य, भूदान-यज्ञ तथा शांति-सेना का विचार पहुँचाने का कार्य चल रहा है।

श्री धीरेन्द्र भाई के दो पत्र

औजारों के सुधार की कसौटियाँ

पहला पत्र श्री नरहरि भाई परीख के सुपुत्र श्री मोहन परीख को लिखा गया है, जो इस समय बारडोली (सूरत) में सर्व सेवा संघ की ओर से खेती-औजारों में सुधार के काम में लगे हैं, और दूसरा पत्र श्री कृष्णदास गांधी को लिखा गया है। —सं०

प्रिय मोहन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम कुछ औजार बना रहे हो, यह जान कर खुशी हुई। यंत्रों के संबंध में खोज का हमारा लक्ष्य क्या हो, इस बारे में मेरे विचार नीचे दे रहा हूँ। मेरी इन चार कसौटियों के अनुसार कुछ निकालो, तो यहाँ चलाने के लिए भेजना। मैं आजकल चार घण्टे प्रतिदिन खेती-बारी के काम का अभ्यास कर रहा हूँ। अब अपने हाथ से चला कर देखना चाहता हूँ। कृषि-औजार के अलावा आटा पीसने की चक्की भी महत्त्व की है, क्योंकि उसमें बहनों का सवाल है। उन्हें चक्की चलाने के काम से मुक्त कर देने से काम नहीं चलेगा। उसमें आनन्द और आराम देने की कोशिश करनी होगी।

सदियों से इन्सान अपनी जरूरत पूरी करने के लिए काम करता आया है। उसमें खेती का काम सबसे पुराना है। जैसे-जैसे बुद्धि बढ़ती गयी और श्रम टालने का विचार आया, वैसे-वैसे औजारों की खोज हुई और उसमें तरक्की हुई। औजारों की तरक्की के साथ-साथ औजार चलाने की शक्तियों का भी आविष्कार हुआ। उसी से स्टीम, बिजली, तेल, अणु शक्ति आदि निकली। शक्तियों की वृद्धि के साथ-साथ औजारों में भी शक्ति बढ़ती गयी और वे अधिक जटिल होते गये।

साथ-साथ समाज व्यवस्था का यंत्र भी जटिल होता गया। राजनीति भी अत्यन्त जटिल बन गयी, जिस कारण जनता की स्वतंत्रता भी खतम हो गयी। अब सवाल यह है कि सर्वोदय की दृष्टि से यंत्रों की खोज का लक्ष्य क्या हो? श्रम कम हो, यह हम भी चाहते हैं, लेकिन हमारे कम श्रम का उद्देश्य श्रम को टालना नहीं, बल्कि यह है कि श्रम भार रूप न हो, आनन्द पैदा करने वाला हो। मैं तुमसे कहते आया हूँ कि आज के वैज्ञानिक युग में हरेक चीज वैज्ञानिक होनी चाहिए। ज्ञान की देवी सरस्वती है। उसके हाथ में वीणा ही रहती है। तो ज्ञान के साथ अगर उद्योग चलाना है, तो उसके औजार का स्वरूप भी वीणा जैसा होना चाहिए। यानी

हमारे औजार ऐसे हों कि वे सरल हों, उन्हें चलाने में आराम मिलता हो और उनमें से सांस्कृतिक मूल्य निकले। अगर श्रम की प्रक्रिया में से संस्कृति का निर्माण नहीं होगा, तो बुद्धिमान व्यक्ति यानी सरस्वती के वरदपुत्र उन औजारों को हाथ में नहीं लेंगे। फिर बुद्धिजीवी और श्रमजीवी, दो वर्ग रहेंगे ही। ऐसा हुआ तो अनन्त काल तक वर्ग-संघर्ष चलता रहेगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि अगर सर्वोदय का लक्ष्य वर्गों का निराकरण है तो सर्वोदय की दृष्टि से जो भी औजार बने, उनमें सांस्कृतिक तत्त्व होना अनिवार्य है।

जैसा कि मैंने ऊपर कहा, कृषि और उद्योग के औजार चलाने में तबियत को उतनी ही प्रसन्नता मिलनी चाहिए जितनी वीणा के स्वरों से मिलती है।

इस प्रकार औजारों के बारे में मेरी कसौटियाँ ये हैं

१. आज के आम मजदूरों और किसानों का बौद्धिक स्तर जितना है, उतनी बुद्धि से वह उन औजारों को चला सके। यानी औजार अत्यन्त सादे होने चाहिए।

२. औजार काफी सस्ते होने चाहिए, ताकि किसान अपनी हैसियत की मर्यादा में व्यापक रूप से इस्तेमाल कर सके।

३. औजार किसी केन्द्रित संस्था या शक्ति के मुहताज न हों, ताकि गणतंत्र कुंठित न हो।

४. औजार आनन्ददायी हों, जिससे औद्योगिक प्रक्रिया से सांस्कृतिक मूल्य निकल सके।

मैं अमेरिका वालों से कहूँगा कि उनके औजार भले ही महँगे हों, लेकिन सादे जरूर होने चाहिए, ताकि आम के मजदूर-किसान विशेषज्ञों के मुहताज न हों। भारत को कहूँगा कि यहाँ के औजार केवल सादे ही हों, ऐसी बात नहीं है, बल्कि सस्ते भी होने चाहिए।

मैंने जो तीसरी बात कही है, वह राजनैतिक है। मैं इस प्रश्न को औजार के साथ खास तौर से जोड़ता हूँ। बिजली आदि शक्तियों के खिलाफ नहीं हूँ, बिजली अगर विकेन्द्रित ढंग से बन सके-सूर्य की किरण से, पृथ्वी की गर्मी से या आकाश के कम्पन से कोई शक्ति निकल सके, तो उसका जरूर इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि ये तमाम शक्तियाँ विकेन्द्रित रूप से फैली हुई हैं।

मैं केन्द्रित शक्ति का विरोधी इसलिए हूँ कि उससे राजनीतिक शक्तियों का केन्द्रीकरण अनिवार्य होगा, जिससे जनतंत्र को खतरा है।

दूसरी बात यह है कि औजार बनाने के लिए जहाँ तक हो सके, छोटे-छोटे विकेन्द्रित कारखाने काफी होने चाहिए, ताकि उसके लिए भी केन्द्रित शक्ति के भरोसे न रहना पड़े।

अब शक्तियों की दृष्टि से औजार को दिशा क्या हो,' यह सोचना है। औजार चलाने के लिए आज इतनी शक्तियाँ हैं—एक मनुष्य-शक्ति, दूसरी पशु-शक्ति, तीसरी भौतिक शक्तियाँ, अर्थात् बिजली आदि की शक्तियाँ।

बिजली की बड़ी चर्चा है। लेकिन वह आज केन्द्रित ढंग से हमें मिलती है। वह विकेन्द्रित ढंग से कैसे प्राप्त हो, यह सोचना होगा। तब तक उसे न इस्तेमाल करना ही ठीक है। अभी हमने बताया कि हम विज्ञान में बहुत आगे जाना चाहते हैं, क्योंकि हम वैज्ञानिकों से सब प्रकार की शक्तियों की माँग करते हैं। सूर्य-किरण आदि शक्तियों का भंडार तो अनन्त है। जब तक यह नहीं होता, तब तक हमारे पास मनुष्य और पशु-शक्ति ही है। तब तक यंत्र-शास्त्र को बारीकी से इस्तेमाल करना होगा, जिससे औजार चलाने के लिए आज जितनी शक्ति (ड्राफ्ट) की जरूरत है, उससे कम की जरूरत हो। हिन्दुस्तान के लिए तो इस पहलू पर और ज्यादा जोर देना होगा, क्योंकि यहाँ लोक-संख्या के अनुपात में जमीन इतनी कम है कि अधिक पशु रखने की भी ताकत इस देश की नहीं है। इसका मतलब यह है कि हमारा यंत्र अधिक-से-अधिक मनुष्य-शक्ति से चले, ऐसी खोज करनी होगी। मैं तो ड्राफ्ट' कम करने की फिक्र में फिलहाल कुछ पुर्जे विदेशों से भी लाना पसन्द करूँगा। लेकिन भरसक उसको टालने की कोशिश करूँगा।

आखिर में फिर से कहना चाहता हूँ कि औजार ऐसे हों कि उनमें सबको दिलचस्पी हो, जिसमें बुद्धिमान और विद्वान भी रस ले सकें, नहीं तो समाजवाद यानी समतावाद नहीं होगा। संक्षेप में, औजार सादे होने चाहिए, ताकि मजदूर अपनी बुद्धि से उन्हें चला सकें। औजार सस्ते होने चाहिए, जिससे हमारी आर्थिक स्थिति के अनुकूल हो सके। 'ड्राफ्ट' कम-से-कम होना चाहिए, ताकि वह मनुष्य-शक्ति से आसानी से चल सके। औजार चलाने में आनन्द मिलना चाहिए, ताकि हरेक श्रेणी के मनुष्य श्रम में दिलचस्पी ले सकें।

सस्नेह तुम्हारा,
—धीरेन्द्र भाई

* * *

प्रिय भाई कृष्णदास,

कुछ अरसा हो गया, भाई अण्णा ने छोटे औजारों में बिजली की शक्ति लगा कर ग्रामोद्योग चलाने की बात कही थी। उस समय मैंने अण्णा को एक पत्र लिख कर अपनी राय बतायी थी कि ऐसा सोचना गलत है, इसमें हमारे काम को लाभ की बजाय हानि पहुँचेगी। इसमें मैंने यह बात बतायी थी कि हमें कृषि और ग्रामोद्योग के औजार-सुधार में विशेष ध्यान नहीं देकर बिजली की जो बात सोचते हैं, उसमें हमारे पुरुषार्थ की पराजय है, ऐसा मानना चाहिए। पराजय दो प्रकार की होती है। एक तो कस कर लड़ाई की, फिर भी सफलता नहीं हुई और दूसरी, बिना लड़ाई किये ही झण्डा उतार दिया। अभी २० मई के "भूदान-यज्ञ" में मैंने पढ़ा कि सेवाग्राम में अण्णा साहब बिजली से आटा पीसने की चक्की चला रहे हैं। यह काम लड़ाई किये बिना ही हार मानने का है। खादी के लिए चरखे पर हमने अरसे से प्रयोग करना शुरू किया और आज अम्बर चरखे हमारे हाथ में है, जिसे तुम कुछ-न-कुछ सुधारते जा रहे हो। लेकिन ग्रामोद्योग के सरंजाम-सुधार में हम लोगों ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया है। उसमें ध्यान न देकर आज हम लोग बिजली की बात करने लगे हैं। प्रश्न यह है कि ऐसी पराजित दृष्टि के लिए जिम्मेदार कौन है? मैं मानता हूँ कि यह तुम लोगों के लिए एक तरह से चुनौती है।

अम्बर चरखा निकाल कर चरखे की शक्ति में सुधार करने की जिम्मेदारी तुम लोगों ने ली थी। उसी तरह से ग्रामोद्योग बिजली से चलाना हानिकारक है, ऐसा जो लोग मानते हैं, बिजली के बिना वह चल सके, यह शोध करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की है। साल भर हो गया, तुमने एक सुधरी हुई चक्की मुझे दिखाई थी। उसमें काफी सम्भावना भरी थी। लेकिन जिस तरह से एकम्बरनाथ के बनाये हुए चरखे के पीछे सब लोग पड़ गये, उसी तरह उस चक्की को लेकर कोई बैठ नहीं गया। अब तक उसके पीछे पड़ कर आटा-पिसाई, धान-कुटाई के एक अत्यन्त सुलभ और सस्ते औजार का आविष्कार नहीं होता है, तब तक बिजली नहीं लगनी चाहिए, कहने पर हमारे लोग भी अब नहीं मानेंगे, ऐसा दीखता है। इसलिए अब अत्यन्त जोर के साथ इस दिशा में कुछ काम होना चाहिए। देश में जहाँ-जहाँ सरंजाम के कुछ प्रयोग हो रहे हैं, उन सब जगहों पर प्रयोग-समिति की तरफ से चक्की के प्रयोग का भी हाथ में लेना चाहिए।

सस्नेह तुम्हारा,
—धीरेन्द्र भाई

खादी-ग्रामोद्योग समिति के निर्णय

[अखिल भारत सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति तथा प्रमुख खादी-संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक त्रिदिवसीय सम्मेलन गत २८, २९ और ३० मई को कोरा केन्द्र (बंबई) में हुआ था। सम्मेलन में ऐसी बहुत-सी समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया, जिनका सम्बन्ध भविष्य में "नया मोड़" के अनुसार होने वाले संगठन के स्वरूप से है। सम्मेलन ने काम की नीति और संगठन व कार्यक्रम की जो रूपरेखा स्वीकार की, वह नीचे दी जा रही है। खादी-ग्रामोद्योग समिति के अध्यक्ष, श्री ध्वजा प्रसाद साहू ने सब खादी-संस्थाओं और कार्यकर्ताओं से निवेदन किया है कि वे इन निर्णयों को अमल में लाने की कार्रवाई तुरन्त शुरू करें। —सं०]

चांडीलगांव में विनोबाजी की उपस्थिति में खादी और रचनात्मक कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ। उस अवसर पर खादी के नव-संस्करण के रूप में गांधीजी ने जो कल्पना हमें दी थी, तथा भूदान और ग्रामदान आन्दोलन से जो नयी शक्ति हमें मिली, उसे दृष्टि में रख कर सारे रचनात्मक कार्य को "नया मोड़" देने का विचार हुआ। उसके बाद सेवाग्राम, पूसा और काशी की खादी-समिति की बैठकों और सम्मेलनों में इसके भिन्न-भिन्न पहलुओं से चर्चा की। अब तक जैसा कुछ भी हमारे काम का विस्तार हुआ है, उस पर से सब लोगों को यह लग रहा है कि वर्तमान कार्यक्रम को क्रान्तिकारी मोड़ दिये बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते। खादी और रचनात्मक कार्य अहिंसक समाज रचना की एक गत्यात्मक शक्ति (डाइनेमिक फोर्स) बने और विनोबाजी आज हमसे जो अपेक्षा रखते हैं, उसे हम पूरी कर सकें, उसके लिए यह और भी आवश्यक है।

संगठन का स्वरूप

जब हम भविष्य का कार्यक्रम बनायें तब सबसे पहले हमारे संगठन का स्वरूप निश्चित कर लेना होगा। आज हमारे देश में तीन प्रकार के क्षेत्र हैं

(१) ऐसे क्षेत्र जो बिल्कुल अछूते हैं, जहाँ नया काम आरम्भ करना है।

(२) ऐसे क्षेत्र जहाँ थोड़े दिनों से कार्य आरम्भ हुआ है और काम का विकास अभी हो ही रहा है। (अर्धविकसित क्षेत्र)

(३) ऐसे क्षेत्र जहाँ हम पिछले बीस-तीस वर्षों से खादी और रचनात्मक काम कर रहे हैं और जहाँ काम काफी विकसित अवस्था में है। (विकसित क्षेत्र)

नये क्षेत्र में हमारे काम की इकाई ५००० (पाँच हजार) की आबादी वाले ग्राम एवं ग्राम-समूह में ग्राम-पंचायत, ग्राम-समिति या बहुधंधी सहकारी समितियाँ, स्थानीय परिस्थिति को देखते हुए जहाँ जैसा अनुकूल होगा, वैसी होगी। आगे का सारा काम ग्राम-इकाई को ही आधार मान कर समग्र ग्राम विकास की दृष्टि से होगा। ऐसी ग्राम इकाइयों का आयोजन इस प्रकार का होगा कि सारा गाँव ग्राम परिवार के रूप में अपने काम का संयोजन करे। अपनी बुनियादी आवश्यकताओं—अन्न, वस्त्र, आवास और शिक्षण संरक्षण एवं आरोग्य—में सारा गाँव स्वावलंबी और स्वाश्रयी हो। सब लोग एक-दूसरे के सुख-दुःख में हाथ बटायें। गाँव में सबको भोजन और रोजगार मिल सके, इसकी जिम्मेदारी गाँववाले समझें।

दूसरे प्रकार का क्षेत्र, जहाँ अभी काम आरम्भ ही हुआ है और अर्धविकसित अवस्था में है, इसका भी संयोजन ग्राम ग्राम इकाई के आधार पर हो। तीसरे प्रकार का क्षेत्र, जहाँ उत्पादन का कार्य बरसों से चल रहा है और प्रदेश तथा देश भर में जहाँ के उत्पादित माल जाते हैं, ऐसे क्षेत्र में भी कार्यक्रम बना कर ग्राम-इकाइयाँ स्थापित की जायें। ग्राम-इकाइयों के द्वारा गाँव की आवश्यकता की पूर्ति समग्र ग्राम विकास की दृष्टि से की जाये। इससे उत्पादन और बिक्री का जो कार्यक्रम है वह तो कायम रहेगा ही, क्षेत्र में भी हम गहराई से जन-जीवन में प्रवेश कर सकेंगे।

क्षेत्र-समिति : साठ हजार से लेकर एक लाख तक की आबादी जो आज के क्षेत्र विकास की इकाई मानी जाती है, वह हमारे संगठन के क्षेत्र की भी इकाई मानी जायेगी। इस क्षेत्रीय स्तर पर सभी ग्राम-समितियाँ मिल कर, क्षेत्र-स्वावलम्बन तथा क्षेत्र के समग्र-विकास की दृष्टि से काम करेंगी।

जिला-इकाई : हमारी अन्तिम इकाई, जिला-स्तर की इकाई होगी। इससे बड़ा स्वरूप हमारे संगठन का आगे नहीं होगा। नई संस्थाएँ ग्राम और क्षेत्र के संगठन को दृष्टि में रखते हुए अधिक-से अधिक जिला-स्तर तक की ही बनें।

पुरानी संस्थाएँ ग्राम-इकाई एवं क्षेत्र-इकाई का संगठन करते हुए अपने संगठन को निश्चित अवधि के अन्दर जिले के स्तर तक संगठित करने की व्यवस्थित योजना बनायें।

कार्यक्रम

हमारा कार्यक्रम ग्राम-इकाई को परिपूर्ण करते हुए क्षेत्र-विकास को दृष्टि में रख कर, जिले के स्तर तक हमारा प्रभाव हो, ऐसा होगा। समग्र ग्राम विकास को जब हम दृष्टि में रखेंगे, तो खेती को प्रधान आधार देकर उसके साथ गोपालन, खादी और ग्रामोद्योग, चारों का कार्यक्रम अपनाना होगा।

गाँव-क्षेत्र या जिला-क्षेत्र, जहाँ भी हमारा कार्यविस्तार होने वाला हो, उसका सर्वेक्षण कर, उसकी आवश्यकताओं एवं संभावनाओं के आधार पर खेती के लिए खाद, सुधरे औजार और सिंचाई की योजना एवं साधना कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार कर लेनी होगी। मनुष्य-शक्ति का पूरा-पूरा सदुपयोग हो, उसे दृष्टि में रख कर खादी एवं रेशा-उद्योग, धान-कुटाई और हाथ-चक्की, मृत चर्म उद्योग और तेलघानी जैसे ग्रामोद्योग, जहाँ जैसा संभव हो, उनकी स्थापना करनी होगी।

अपनी दुकान : गाँव की अपनी सहकारी दुकान, जिसमें गाँव की आवश्यकता की चीजें मिलें, और सूत की गुंडी के द्वारा यथासंभव अदला-बदली का तरीका चालू किया जाय।

ग्राम की पूंजी की योजना : गाँव वाले कम-से-कम महीने में एक दिन गाँव की श्रम शक्ति गाँव के सामूहिक कार्य के लिए लगायें। गाँव में जितने लोग मजदूरी करते हैं अथवा पैसा कमाते हैं उनका, कुछ अंश-सप्ताह में एक दिन अथवा महीने में एक दिन जितना भी संभव हो उतना-गाँव की सामूहिक पूंजी के लिए दें। खेती में जो पैदावार होती है उसका मन में सेर भर अथवा आधा सेर जितना संभव हो, ग्राम कोष में जमा करें।

सांस्कृतिक दृष्टि : घर-घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना एवं उसका संयोजन हो। ग्राम में सामूहिक प्रार्थना एवं भजन-कीर्तन का आयोजन हो।

साहित्य-प्रचार : जिस प्रकार संस्थाएँ बिक्री तथा उत्पादन तथा ग्राम-इकाई के लिए लक्ष्य निर्धारित करती हैं, उसी तरह साहित्य-बिक्री तथा पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने के निश्चित लक्ष्य निर्धारित किये जायें। विशेष कर "भूदान-यज्ञ" के ग्राहक बनायें और उसका विस्तृत प्रचार करें।

सूत्रदान : कताई करने वाले अधिक-से-अधिक व्यक्तियों एवं परिवारों से संबंध स्थापित करके विशेष अवसरों पर उन्हें समर्थ के अनुसार सूत-दान करने को प्रेरित किया जाये। कुछ व्यक्ति नियमित रूप से भी सूत्रदान दे सकते हैं।

सूतांजलि : प्रति वर्ष नियमित व सुसंगठित रूप से समय से काफी पहले ही इस संबंध में प्रयत्न किये जाया करें।

सम्पत्ति-दान : इसी प्रकार सम्पत्ति-दान प्राप्त करने के संबंध में भी सुनियोजित प्रयत्न आवश्यक है।

कार्यकर्ता-प्रशिक्षण

कार्यकर्ता के प्रशिक्षण का कार्यक्रम सभी संस्थाएँ निश्चित रूप से बनायें और सभी कार्यकर्ताओं को सर्वोदय-आन्दोलन तथा विशेष रूप से खादी-कार्य के 'नया मोड़' एवं ग्राम-इकाई का पूरा-पूरा भान हो जाय और इस काम की ओर उनकी प्रेरणा सजग हो। कार्यकर्ता-प्रशिक्षण के लिए खादी-ग्रामोद्योग समिति जो पाठ्यक्रम तैयार करे, उसे चालू किया जाय। खादी-कमीशन के प्रशिक्षण में भी इसको पूरा-पूरा स्थान हो, जिससे कमीशन के कार्यकर्ता इस 'नये मोड़' को सफल बनाने में सहायक हों।

हमारे बिक्री-भंडार तथा नगर कार्यक्रम

बिक्री-भण्डार हमारे विचार-प्रचार तथा नगर में सर्वोदय-आन्दोलन को ठोस रूप देने के बहुत बड़े केन्द्र हो सकते हैं। खादी की बिक्री के अलावा भण्डारों के द्वारा नीचे लिखा कार्यक्रम अपनाया जाय।

१. ग्रामोद्योगी चीजों की बिक्री का व्यवस्थित आयोजन।

२ सभी भण्डारों पर सर्वोदय-साहित्य की बिक्री का व्यवस्थित प्रबन्ध एक कार्यकर्ता को साहित्य बिक्री का कुशल शिक्षण देकर उसका प्रबन्ध रखा जाये और जिस प्रकार खादी-बिक्री का लक्ष्य निर्धारित रहता है, उसी प्रकार साहित्य बिक्री का लक्ष्य निर्धारित रहे।

३. 'भूदान-यज्ञ' एवं सर्वोदय-विचार संबंधी पत्र-पत्रिकाओं के बिक्री का निश्चित प्रबन्ध प्रत्येक भण्डार पर हो।

४ हर कार्यकर्ता, जो परिवार [illegible] साथ हैं : (क) अपने अपने घर में सर्वो[illegible] पात्र रखें। (ख) सर्वोदय-साहित्य का अध्ययन करें। हो सके तो 'भूदान-यज्ञ' का स्वयं ग्राहक बन कर पढ़ें। (ग) अपने हाथ का कता हुआ महीने में कम-से-कम एक गुण्डी सूत श्रमदान के रूप में सर्व सेवा संघ को अर्पण करें। (घ) स्वेच्छा से, जितना प्रेम हो, सम्पत्ति-दान दें और अपने मित्र एवं साथी एवं नागरिक से दिलाने का प्रयास करें।

काशी में शांति सेना का कार्य

काशी शहर २७ वार्डों में विभक्त है। इन २७ वार्डों में १३ कार्यकर्ता लगभग का कार्य कर रहे हैं। यह सम्पर्क १० जुलाई से १५ अगस्त तक चलने वाले 'शांति-सेना यात्रा' की पूर्वतैयारी के रूप में हो रहा है। १० जुलाई से १५ अगस्त तक काशी नगर में कार्यकर्तागण सघन पदयात्रा करेंगे। इस पदयात्रा में कुछ समय श्री जयप्रकाशजी भी देंगे। अभी तो मोहल्ले-मोहल्ले के प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क करके उनके पास सर्वोदय-साहित्य, भूदान-यज्ञ, तथा शांति-सेना का विचार पहुँचाने का कार्य चल रहा है।

सप्ताह के समाचार

केन्द्रीय सरकार ने नशाबंदी के लिए ४४ सदस्यों की एक केन्द्रीय समिति बनाने का निर्णय किया है। यह समिति राज्यों के नशाबंदी-कार्यक्रमों पर विचार करेगी तथा जिन इलाकों में नशाबंदी लागू है और जिनमें नहीं है, उन इलाकों में भी नशाबंदी के विचार को फैलाने का प्रयत्न करेगी। शराब और नशीली वस्तुएँ बनाने में काम आने वाले कच्चे माल के अन्य उपयोग के बारे में अनुसंधान करना, और नशाबंदी से जिन परिवारों की रोजी खतम होगी, उन्हें दूसरा काम दिलाने में सहयोग करना भी इस समिति का काम होगा। इस समिति में स्वराष्ट्र-मंत्रालय, सामुदायिक विकास-मंत्रालय, सूचना-मंत्रालय और योजना-आयोग का एक-एक प्रतिनिधि होगा। इसके अलावा प्रांतों के आबकारी विभाग के प्रतिनिधि व राज्यों के नशाबंदी-मंडलों के प्रतिनिधि भी समिति में शामिल होंगे।

* * *

उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों की एक सभा ता० ८ से १० जून तक नैनीताल में हुई। सभी ने सिफारिश की है कि विश्वविद्यालयों और डिग्री-कालेजों के छात्र-छात्राओं के लिए फौजी तालीम अनिवार्य की जानी चाहिए। लगातार पूरे सत्र तक हफ्ते में चार दिन यह तालीम चलनी चाहिए।

१५-१६ जून को पूना में हिन्दुस्तान के सभी विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों का जो सम्मेलन हुआ, उसमें इस सिफारिश पर भी विचार हुआ। भारत सरकार के शिक्षा-विभाग की ओर से विद्यार्थियों के लिए 'राष्ट्रीय सेवा' की जो योजना सुझायी गयी है, उस पर तथा विद्यार्थियों में अनुशासन के प्रश्न पर भी इस सम्मेलन में विचार हुआ।

* * *

हिन्द महासागर के वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए एक गैरसरकारी ढंग की अन्तर्राष्ट्रीय योजना बनायी जा रही है। अमरीका की सरकार ने इसमें मदद करना मंजूर किया है। अन्वेषण में करीब पाँच बरस लगेंगे और समुद्र के गर्भ के बहुत से रहस्यों की जानकारी इससे मिलने की संभावना है। हिन्द महासागर पृथ्वी के एक बटा सातवें हिस्से में फैला हुआ है और यही समुद्र ऐसा बचा है, जिसके बारे में अभी तक सबसे कम जानकारी उपलब्ध है।

* * *

जापान और अमरीका के बीच होने वाली सुरक्षा-संधि के खिलाफ जापान में आन्दोलन जोर पकड़ रहा है। इस संधि में अमरीका को जापान में अपने सैनिक-अड्डे कायम करने का हक दिया गया है। विरोधियों का कहना है कि इस तरह किसी देश के साथ सैनिक गठबंधन जापान के हित में नहीं होगा। सरकारी पक्ष का कहना है कि अमरीका के साथ इस तरह की संधि न करने का मतलब जापान को रूस के हाथ में सौंप देना होगा। विरोध के बावजूद संधि स्वीकृत हो गयी है।

* * *

अफ्रीका और एशिया के मुल्कों की आपसी मित्रता के लिए संगठित भारतीय संस्था की अध्यक्षा श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने न्याय और स्वतंत्रता चाहने वाले सब संगठनों से अपील की है कि वे २६ जून को 'दक्षिण अफ्रिका' दिवस मनायें। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने एशिया और अफ्रीका के मुल्कों से यह प्रार्थना की है कि वे दक्षिण अफ्रीका से अपने कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छेद कर लें और उस मुल्क के माल के बहिष्कार की योजना भी बनायें। इस सम्बन्ध में घाना और मलाया के मुल्कों ने जो पहल की है, उसका श्रीमती रामेश्वरीजी ने अभिनंदन किया है।

* * *

भारत सरकार ने अपनी खाद्य-स्वावलम्बन की नीति के अंतर्गत एक नई योजना जारी करने का तय किया है। यह योजना, जो 'फोर्ड फाउन्डेशन' की सिफारिश से बनायी गयी है, भारत के १५ राज्यों में से हरेक के एक जिले में लागू की जायगी। इस योजना के अन्तर्गत उस क्षेत्र के सब किसानों को बीज, खाद, औजार इत्यादि के अलावा अपनी उत्पादन की योजना के अनुसार कर्ज भी मिलेगा। इस कर्ज के लिए किसानों की साख, यानी कर्ज लौटाने की उनकी क्षमता नहीं देखी जायगी।

* * *

केन्द्रीय व राज्य-सरकारों के मंत्रियों तथा विधान-सभाओं के सदस्यों के खिलाफ अपने अधिकारों के दुरुपयोग के आरोपों की जाँच करने के लिए कांग्रेस-दल ने अपने अध्यक्ष श्री संजीव रेड्डी को आवश्यक व्यवस्था करने का अधिकार दिया है। कांग्रेस के अध्यक्ष ५-६ मान्य व्यक्तियों की नामावली की घोषणा करेंगे, जिनमें से किसी को भी वे आरोपों की जाँच का काम सुपुर्द कर सकेंगे। कांग्रेस-दल ने अपने अध्यक्ष को यह भी अधिकार दिया है कि वे मंत्रियों तथा विधान-सभासदों से उनकी हालाना आमदनी, खर्च व सम्पत्ति का ब्योरा भी पूछ सकें।

नागोर जिले में आन्दोलन के बढ़ते कदम

मई मास में राजस्थान के नागोर जिले में भूमि-वितरण के लिए एक यात्रा आयोजित की गयी। परबतसर तहसील के निटवालिया, सर्फेड तथा भिन्चाला ग्राम के ७० भूमिहीन परिवारों को ७१० बीघा सरकारी काश्त-काबिल जमीन वितरित की गयी, जिसमें उक्त काश्तकारों ने सामूहिक कृषि करने का निश्चय किया है। मकराना नगर के सर्वोदय-पात्रधारियों से सम्पर्क करके सर्वोदय-पात्रों का अन्न संग्रहित किया गया। 'सर्वोदय-कॉलोनी' बसाने के लिए भी एक विचार-गोष्ठी का आयोजन हुआ। ग्रामदानी गाँवों के नवनिर्माण की योजना बनायी गयी।

बिहार सर्वोदय युवक-सम्मेलन

युवकों को सर्वोदय कार्य के क्षेत्र में संगठित करने की दृष्टि से पिछले वर्ष बिहार के कुछ युवकों ने श्री जयप्रकाशजी, श्री दादा धर्माधिकारी और श्री धीरेन्द्र भाई की उपस्थिति में सर्वोदय युवक-सम्मेलन की स्थापना की थी। इस युवक सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन ८ और ९ अगस्त को पटना में आयोजित करने का तय किया गया है।

युवक-सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने अन्य प्रांतों से भी ५-६ युवक प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया है।

लखीमपुर सर्वोदय-सम्मेलन

लखीमपुर क्षेत्रीय सर्वोदय-सम्मेलन गत ६ और ७ जून को मैगलगंज बाजार में सम्पन्न हुआ। इसमें सीतापुर, हरदोई व शाहजहाँपुर के लोकसेवकों के अलावा लगभग ५०० व्यक्तियों ने भाग लिया। श्री विश्वनारायण शर्मा, श्री कपिलेश मिश्र, श्री शंकरनाथ गुप्त और श्रीमती प्रेमवती ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

सुदामापुर में सर्वोदय-पात्र

लोकनायक पुस्तकालय-सुदामापुर, मुंगेर में एक जनसभा हुई, जिसमें सर्वोदय-पात्र की स्थापना के संबंध में विचार-विनिमय किया गया। खादीग्राम-आश्रम के कार्यकर्ता श्री रघुनाथ भाई ने इस सभा में सर्वोदय-पात्र का विचार समझाया।

लोकबंधु घूम इंदौर में

इंदौर नगर सर्वोदय सघन-क्षेत्र के तत्त्वावधान में इंग्लैंडनिवासी लोकबंधु डोनाल्ड ग्रूम शहर में सम्पर्क साधने का काम कर रहे हैं। वे यहाँ तीन माह का समय देने वाले हैं। उनका पता इस समय इस तरह है : गांधी तत्त्वप्रचार-केन्द्र, ११२, स्नेहलतागंज, इंदौर नगर (मध्य प्रदेश)।

रायपुर में शिक्षण-शिविर

मध्यप्रदेश के सीधी जिले में रायपुर कर्चुलियान ग्राम में २२ मई से २६ मई, '६० तक एक पंचदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। कुल ५० शिविरार्थियों ने पूरे समय तक भाग लिया। अंतिम दिन हरिजन-बस्ती रायपुर में २० गाँवों के हरिजन का एक सम्मेलन हुआ। शिविर व हरिजन सम्मेलन में जनता के अतिरिक्त सभी राजनैतिक पक्षों के लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

युवक-शिविर

उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय-मंडल की ओर से १५ युवकों का एक शिविर शिवानन्द आश्रम, टिहरी में ५ जून से प्रारंभ हुआ। इस शिविर में उड़ीसा के प्रो० विमल दास ने शिविर में भाग लेने वाले युवकों के बीच भूदान-आंदोलन की व्याख्या की।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४२८५

वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १०,३२६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १०,४२५ एक अंक ११ नये पैसे

गुजरात की चिट्ठी

गुजरात सर्वोदय-सम्मेलन के निवेदन को कार्यान्वित करने की दृष्टि से जो कार्य-क्रम तय हुआ था, उसके मुताबिक अलग-अलग स्थानों पर जो काम हुआ, वह आशा-जनक हुआ।

पारडी क्षेत्र की पदयात्रा

गुजरात के सूरत जिले में पारडी के इलाके में एक ओर भूमिहीनता तथा दूसरी ओर *भूमिवानों की घास की खेती से उनमें* परस्पर द्वंद्व संघर्ष है। प्रजा-समाजवादी पक्ष की ओर से भूमिहीनों के प्रति जो अन्याय है, वह दूर कराने की दृष्टि से सत्याग्रह का आंदोलन चलाया गया था। पर अभी तक श्री रविशंकर महाराज की इस प्रश्न की जाँच के बाद तटस्थ रिपोर्ट और व्यावहारिक अड़चनों के बावजूद भी आज *वहाँ खास फर्क नहीं पड़ा है। अगर नये* गुजरात राज्य में कुछ नहीं हुआ और हम जैसे कार्यकर्तागण यदि इस दिशा में कुछ मार्ग दिखाने में असमर्थ रहे, तो प्रजा-समाजवादी पक्ष ने तंग आकर फिर से सत्याग्रह करने का सोचा है। इस संदर्भ में गुजरात के वार्षिक सर्वोदय-सम्मेलन में हमने इस प्रश्न का प्रत्यक्ष अध्ययन करके उसको सुलझाने के लिए संभव प्रयत्न करने का जाहिर किया था। इसलिए ता० १ मई से श्री नारायण भाई देसाई ने बडोदा से पारडी की ओर पदयात्रा का आरंभ किया। बडोदा, सूरत और भरूच जिलों के देहात और नगरों में दिन में शिक्षित समाज का और रात को भूमिहीनों से संपर्क करते हुए सर्वोदय की दृष्टि से भूमिहीनता गुजरात में से दूर करने के लिए लोकमत तैयार करने की कोशिश की गयी। ता० २०मई को पारडी पहुँचे और इस बीच मार्ग में संबंधित कार्यकर्ताओं से मिल कर उनकी भूमिका *समझने और गुजरात सर्वोदय-मंडल की* भूमिका समझाने का काम किया। ता० २२ मई के रोज इसी तरह और भी कुछ साथियों ने पदयात्रा की। इस यात्रा के दौरान में दिन को भूमिवानों से संपर्क और रात को भूमिहीनों से संपर्क होता रहा। *सभाओं में शायद पहली बार* भूमिवान और भूमिहीन, दोनों साथ बैठते दिखाई दिये। एक दिन इस प्रदेश के भूमिवान लोगों की खास सभा बुलायी गयी। इनमें ज्यादातर मध्यम दर्जे के भूमिवान हैं और वे समझौते से इस प्रश्न का हल निकले, तो उसके लिए *ज्यादा अनुकूल* हैं, ऐसा लगा। ता० ३१ मई के दिन सारे पदयात्री फिर पारडी में मिले और अपने पारस्परिक अनुभवों के आधार पर एक निवेदन तैयार करके गुजरात के मुख्य मंत्री श्री जीवराज भाई से मिलने का तय किया।

और पदयात्राएँ

बडोदा जिले की पादरा तहसील में ता० १० से २४ मई तक दो टोलियों की एक पदयात्रा हुई। पदयात्रीगण २४ गाँवों में गये। उत्तर गुजरात की यात्रा में महेसाणा और बनासकाठा जिलों का प्रवास पूरा किया। यात्रा के बीच शिक्षित समाज के विविध मंडलों में सर्वोदय समाज-रचना की बातें रखी गयीं, साथ ही साहित्य-बिक्री और *ग्राहक बनाने का काम भी अच्छा* हुआ। खेडा जिले के बोरसद तालुका में ता० २७ मई से ५ जून तक १७ गाँवों में १० दिन की एक पदयात्रा हुई। यात्रा में विनोबा के शांति-मिशन की बातें खास तौर पर रखी गयीं। इस यात्रा के आरंभ में दो दिन का शिविर किया था।

शिविर

खेडा जिले के अलारसा गाँव में ता० २१ से २७ मई तक का ७ दिन का ३० विद्यार्थियों का शिविर किया, जिसमें स्वाध्याय और श्रम की ओर शिविरार्थी और गाँव के लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया। महेसाणा जिले में वडनगर में ता० ७ से २२ मई के बीच भारत सेवक समाज के सहयोग से ५० बहनों का एक-महिला-शिविर किया, जिसमें सफाई, आरोग्य आदि के बारे में गाँव में प्रत्यक्ष काम और प्रवचन के जरिये बहनों को और गाँव के लोगों को अच्छा लाभ मिला, जिससे उनकी सर्वोदय विचार की ओर अभिरुचि दिखाई दी।

अहमदाबाद में सर्वोदय-पात्र का काम श्री रविशंकर महाराज ने शुरू रूप से किया था। उस काम को सुव्यवस्थित बनाने *की ओर अब ध्यान दिया गया है तथा स्था*-नीय कार्यकर्तागण मुहल्ले-मुहल्ले में संपर्क एवं सफाई *का काम* कर रहे हैं। पिछले ४ महीनों *में सर्वोदय-पात्र की रकम एक* हजार रुपये एकत्रित हुई। यह रकम केवल ४५ मुहल्लों की है।

ग्रामदान और निर्माण

बनासकाठा के ग्रामदानी प्रदेश में ३ *नये ग्रामदान मिले हैं।* इस प्रदेश में चित्रासणी, इकबालगढ़ और अमीरगढ़ केन्द्रों में निर्माण-कार्य चालू है और वहाँ *मराणगढ़ केन्द्र नया बना है।* मराणगढ़ गाँव में ठाकरडा और बणमी कौम के बीच परस्पर द्वंद्व संघर्ष का वातावरण *था, जो पुलिस की कार्रवाई से बना* देखकर श्री जी० जी० मेहता, डॉ० जयन्ती भाई ठाकोर ने स्थानीय कार्यकर्ताओं *के सहयोग से प्रयत्न किया, जिससे संघर्ष* कम हुआ और दोनों पक्षों के लोगों ने अपनी सारी जमीन गाँव की ग्राम-स्वराज्य *मंडली के नाम करने की तैयारी बतायी है।* कच्छ में अंजार तालुका में पिछले दो महीनों में करीब ३५० एकड़ भूमि का वितरण *किया गया है।*

लोकनीति की दिशा में

लोकनीति के क्षेत्र में बडोदा शहर की नगरपालिका का चुनाव निष्पक्ष हो, इस-लिए वहाँ के संबंधित पक्षीय प्रमुख व्यक्तियों से संपर्क किया गया। खेडा जिले के बालासिनोर गाँव की १५ हजार *की आबादी में* नगरपालिका का चुनाव हो न हो और वहाँ निष्पक्ष व्यक्ति जायँ, इस दृष्टि से वहाँ *के कांग्रेस पक्ष के प्रमुख कार्यकर्ता को* प्रमुख बना कर सबका सहयोग लेने की दृष्टि से व्यवस्थित प्रयास किया गया और इस *काम में हमें काफी सफलता भी मिली।*

इसी गाँव में हाईस्कूल में एस० एस० सी० तक की पढ़ाई के लिए अलग-अलग बहनों के लिए और विशिष्ट मंडलों द्वारा वहाँ के विद्यार्थियों को पुस्तकें और निष्पवृत्ति आर्थिक स्थिति देखकर दी *जाती है।* इस साल वहाँ सारे मंडलों के मुख्य कार्यकर्ताओं की एक सभा हुई और सबने मिल कर तय किया कि जो छात्र और छात्रा इन मंडलों के आगे से बाहर रह जाते हों, ऐसे गरीब विद्यार्थियों को पुस्तक और फीस की मदद सब प्रतिनिधियों की यह समिति करेगी। इस तरह इस गाँव में अब ऐसा कोई भी पात्र विद्यार्थी ऐसी मदद के अभाव में हाईस्कूल तक शिक्षण से वंचित नहीं रहेगा।

—रमण त्रिवेदी

●

ग्रामदान-निर्माण-कार्य

बिहार सर्वोदय-मंडल की ग्राम निर्माण समिति की एक बैठक ता० १७ मई, १९६० को समन्वय-आश्रम, बोधगया में श्री जयप्रकाश नारायणजी की अध्यक्षता में हुई।

इस बैठक में प्रान्त के ग्रामदानी गाँवों के निर्माण सम्बन्धी कई प्रश्नों पर चर्चा हुई और जो निर्णय लिये गये उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है —

इस प्रान्त में १५२ घोषित ग्रामदानी गाँव हैं। इनमें से ११३ गाँवों की बिहार सर्वोदय मंडल द्वारा निर्धारित ग्रामदान की परिभाषा के आधार पर जाँच हो चुकी है जिसके अनुसार ७५ गाँव निश्चित तौर पर उक्त परिभाषा के अंतर्गत आ जाते हैं। पलामू, मुजफ्फरपुर और संथाल परगना जिलों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रतिवेदनों से ऐसा लगता है कि जाँच के समय के अनुपात से इस समय अधिकांश घोषित गाँवों में काफी अनुकूलता दीख रही है। इसलिए यह तय हुआ कि जिन्न के गाँवों को फिर से निश्चित करने का काम आरंभ किया जाय।

गाँव के लोगों को खेती के विकसित साधनों के सहकारी उपयोग के लिए ग्रामदानी गाँवों में सहयोग समिति के जरिये सुधरे बीज, सुधरे औजार, खाद की दवा आदि का प्रबन्ध करने में सरकारी संस्थाओं से सहायता प्राप्त की जाय।

हर ग्रामदानी गाँव के घर घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना के लिए ग्रामदानी गाँवों की जनता से अपील की जाय।

सभी ग्रामदानी गाँवों का सामाजिक एवं आर्थिक सघन सर्वेक्षण किया जाय, *जिसके आधार पर गाँव के भविष्य की* योजना बनायी जाय।

इस प्रान्त के सभी ग्रामदानी गाँवों के कार्यकर्ताओं तथा पाँच स्थानों में क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ग्रामदानी एवं ग्रामसंकल्पी गाँवों के प्रतिनिधियों का एक-एक शिविर और ग्रामदानी गाँवों के प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं का एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित हो।

●

विनोबाजी का कार्यक्रम

भिंड-मुरैना क्षेत्र में लगभग १५ दिन बिता कर पूज्य विनोबाजी जून के पहले सप्ताह में ग्वालियर पहुँचे। वहाँ से वे आगरा-बम्बई सड़क पर इंदौर की ओर बढ़ रहे थे।

"पर २२ जून को आगरा-बम्बई रोड छोड़ कर विनोबाजी ने राजस्थान के कोटा जिले में प्रवेश किया। राजस्थान के "कड़वा पाना" पड़ाव पर राजस्थान के कार्यकर्ताओं के स्वागत का उत्तर देते हुए पूज्य विनोबाजी ने थोड़े विनोद से और थोड़ी गम्भीरता से कहा "आगरा रोड तो इकेवायत रोड है। भूदान के लिए तो दूसरे रास्ते लेने पड़ते हैं। आगरा रोड से हम जाते तो जल्दी हो जाता। और एक बार हमारा अखिल भारत जुलूस हो चुका है। अब बीहड़ रास्ते से चलना हुआ, तो भी जायेंगे। हम जानते थे कि यह रास्ता कठिन है, बारिश के दिन हैं, रास्ते में नदी नाले बाकी हैं, पर अन्दर से लगा कि ठीक है जाना है, मुश्किलें हैं तो जाना चाहिए। सीधे रास्ते पर ऐसे ही चलते जाना अच्छा नहीं लगा।

राजस्थान में यह मेरा चौथी दफे आना हो रहा है। इच्छा हुई कि राजस्थान नजदीक है तो जरा मिल के चल दें। राजस्थान के साथ मेरा मैत्री का संबंध बहुत पुराना है। जमनालालजी, बापूजी, हरिभाऊजी, गोकुलभाई ये सारे मित्र बहुत वर्षों से सर्वोदय का काम कर रहे हैं।"

इन्दौर की तरफ बढ़ने के कार्यक्रम में या इन्दौर पहुँचने की तारीख में इस परिवर्तन से कोई फर्क पड़ने की संभावना नहीं है। अब तक सोचे हुए कार्यक्रम के अनुसार २२ जुलाई को या उसके आसपास विनोबाजी इन्दौर पहुँचेंगे। रास्ते में सिर्फ इतना ही परिवर्तन हुआ है कि आगरा और बम्बई राजमार्ग पर चलते रहने के बजाय वे अब राजस्थान के कोटा और झालावाड़ जिलों को पार करते हुए इन्दौर की तरफ बढ़ रहे हैं। राजस्थान में इन दो जिलों में करीब १५ पड़ाव विनोबाजी के होंगे, ऐसी कल्पना है।

●

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्ति: जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

मैं ओिन्दौर में

दादाभाओी कहते थे की ओिन्दौर के कार्यकर्ताओं में आपस का मेल नहीं है, अेकदीली नहीं है। यह सब तो चलता ही रहेगा। काम करते-करते सब ठीक हो जायेगा। मैं चाहता हूँ की हमारी दृष्टी कर्म-प्रधान न हो, वृत्ती-प्रधान हो। मान लीजीये की हमने अेक चर्मालय खोला और अुसके लीये 'अेक्सपर्ट' (वीशेषज्ञ) को रख लीया। अब अगर अुस वीशेषज्ञ की आस्था सत्य और अहींसा पर नहीं है, तो चर्मालय का सारा काम कर्म-प्रधान हो जायेगा और वृत्ती कृषीण होने लगेगी। अतअेव ओिन्दौर को सर्वोदयनगर बनाने के लीये हमें सद्वृत्ती पर ही अपना ध्यान केन्द्रीत करना होगा।

ओिन्दौर में मैं कब तक रहूँगा, ओिस पर अभी मैंने कुछ सोचा नहीं है। मैं वहां कोरा मन लेकर जाअूँगा। वहां पचास-साठ अच्छे कार्यकर्ता जुटने चाहीअे। आज लोगों को वीचार सुनने की और अुन्हें हजम कर जाने की आदत सी पड़ गयी है। अमल कोओी नहीं करता। बड़ी-बड़ी सभाओं में बोलने के बजाय मैं वहां छोटी-छोटी सभाओं में बोलना पसंद करूँगा। ओिससे लोगों के दीलों तक पहुँचा जा सकेगा। ओिन्दौर में रहते हुअे कार्यकर्ताओं के नीर्माण के लीअे आप मेरा जीतना भी अुपयोग करना चाहें, करें। ओिन्दौर में सुन्दरी शक्ती को जगाने की आम कोशीश होनी चाहीअे।

(७ जून, '६०) —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि=ी ; ी=ी, स=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

भूदान-यज्ञ, शुक्रवार, १ जुलाई, '६०

"छोटी बातें"

हम बड़ी-बड़ी बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि "छोटी" बातों की तरफ हमारा ध्यान बिलकुल नहीं जाता। पर हम भूल जाते हैं कि "छोटी छोटी" बातों से ही जीवन के संस्कार बनते हैं। "छोटी" बातों में जो लापरवाह होगा, वह कोई बड़ा मौका आने पर भी लापरवाह साबित होगा।

"छोटी" बात का एक छोटा-सा उदाहरण लीजिये।

आज के जमाने में डाक से हरएक का कुछ न कुछ वास्ता पड़ता है। चाहे व्यक्तिगत, चाहे सार्वजनिक काम से हम एक-दूसरे को चिट्ठियाँ लिखते हैं। सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का तो बहुत-सा काम आज "कागजी" होता ही है। जगह-जगह रिपोर्टें भेजनी पड़ती हैं, पत्र-व्यवहार करना पड़ता है। छोटे-बड़े सब लोगों के बारे में एक आम अनुभव यह आया है कि चिट्ठियाँ भेजते वक्त कभी यह खयाल नहीं करते कि वह पोस्टकार्ड में जानी चाहिए १० पैसे के इनलैंड (अन्तर्देशीय पत्र) में या १५ पैसे के लिफाफे में। आये दिन हमारे पास १५ पैसे के लिफाफे में चिट्ठियाँ आती हैं, जिनमें २-३, ४-४ लाइनें लिखी हुई होती हैं। इतना ही नहीं, इस प्रकार की मामूली चिट्ठियाँ छपे हुए 'लेटर-पैड' पर आती हैं। इससे भी आगे बढ़कर, एक ही दफ्तर में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के पास कुछ सन्देश भेजना होता है। झट से लेटर-पैड पर दो लाइन लिखकर एक पृष्ठ फाड़ कर भेज देता है। अखबारों में छपने के लिए जो संवाद या लेख आदि सामग्री भेजी जाती है उसके लिए डाक विभाग ने यह सुविधा रखी है कि वह 'बुक-पोस्ट' यानी सिर्फ ८ पैसे के लिफाफे में भेजी जा सकती है। हमारे पास रोज हमारे कार्यकर्ताओं तथा संस्थाओं के पास से ऐसे संवाद समाचार आते हैं, जो १५ पैसे के लिफाफे में भेजे जाते हैं। दूसरी ओर कुछ ऐसे भी भाई हैं जो संवाद या लेख आदि के साथ पत्र भी लिखकर डाल देते हैं और फिर उसे ८ ही पैसे में भेजते हैं। चाहिए कि अब "प्रेस मैटर" के साथ कोई खत होता है तो फिर वह १५ पैसे के लिफाफे में ही जा सकता है। छोटे-छोटे ८-१० लाइन के संवाद, समाचार भी अक्सर छपे हुए 'लेटर-पैड' पर और १५ पैसे के लिफाफे में आते हैं।

हमारे राष्ट्रीय और सार्वजनिक संस्थाओं में स्टेशनरी का जो दुरुपयोग होता है, वह भी गम्भीरता से सोचने की बात है। सार्वजनिक संस्थाएं सार्वजनिक पैसे से चलती हैं। हम सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने तो अपना स्वयं ही यह माना है कि हमारा काम "जन आधार" पर चलना चाहिए। हमारे देश के 'जन' की गरीबी के बारे में रोज हम व्याख्यान देते हैं और लेख लिखते हैं, पर उसी "जन" से आया हुआ पैसा जिस बेदर्दी के साथ हम खर्च करते हैं, वह अक्षम्य ही है। हमारा निजी अनुभव है कि अगर किसी भी दफ्तर में आने वाले कागजों आदि का ठीक तरह से उपयोग किया जाय, तो दफ्तर के अधिकांश कामों के लिए कागज खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

"पर ये बातें बहुत "छोटी" हैं। हमें तो समाज बदलना है, बड़े-बड़े काम करने हैं, इन छोटी बातों की चिन्ता में हम पड़ें, तो कैसे काम चले।"

पर इन "छोटी छोटी" बातों में हमारी लापरवाही के कारण हम अपने-आप पर और हमारी संस्थाओं पर अनावश्यक आर्थिक कठिनाई तो लादते ही हैं, लेकिन जिन नये मूल्यों की स्थापना की हम बात करते हैं, उनके भी अयोग्य अपने-आपको साबित करते हैं। आशा है हमारे साथी कार्यकर्ता तथा अन्य पाठक भी इन "छोटी-छोटी बातों" पर गहराई से सोचेंगे।

—सिद्धराज ढड्ढा

●

विदेशी कर्ज से राष्ट्र-निर्माण

विदेशी कर्ज से राष्ट्र-निर्माण करने का रास्ता भले ही सरल हो, पर उसका परिणाम किसी भी हालत में कल्याणकारी साबित नहीं हो सकता।

पिछले दिनों अमरिका के राष्ट्रपति श्री आइसनहावर जब भारत आये, तब उनके साथ एक अमरीकी पत्रकार भी थे। उन्होंने यहाँ का सतर्क अध्ययन किया और यहाँ की पंचवर्षीय योजनाएँ कितनी कमजोर बुनियाद पर खड़ी हैं, इसका उन्होंने विश्लेषण किया। इस पत्रकार की दृष्टि को यदि हम ध्यान से समझने की कोशिश करें तो काफी बातें हमारे ध्यान में आयेंगी।

भारत को अपने स्थानीय साधनों के भरोसे पर ही अपनी योजनाएँ बनानी चाहिए और पूँजी निर्माण के बुनियादी मार्ग का अवलम्ब लेना चाहिए।

भारत में केवल दो ही तरीकों से विशाल पूँजी खड़ी की जा सकती है खेती और ग्रामोद्योग। पर आज की नियोजित योजनाओं में इन दोनों की ओर जितना चाहिए, उतना ध्यान नहीं दिया गया है।

आज हमारे बजट का अधिकांश हिस्सा देश, नागरिक तैयारी, बड़े कारखाने बल्कि कर्ज पर ही अब हो गया है।

विदेशी कर्ज की क्या स्थिति है, उस पर अमरीकी पत्रकार के शब्दों के साथ हम विचार करें।

"हिन्दुस्तान को दूसरी पंचवर्षीय योजना के लिए विदेशी सहायता व कर्ज की काफी खुराक (इंजेक्शन) लेनी पड़ी है। १९५८ के अन्त तक तो यह रकम २५ अरब रुपये तक पहुँच गयी थी। ३१ मार्च, १९६१ तक प्राप्त सहायता पाँच सालों में ३४ अरब रुपये तक पहुँच जाती है। इसके अलावा १९६१-'६२ की शुरुआत की स्थिति को हिन्दुस्तान ने सोचा तक नहीं है, जिसमें इसको फिर से २ अरब रुपया प्रति वर्ष कर्ज लेना होगा।

अगस्त १९५९ के अन्त तक संयुक्त राष्ट्र की कर्ज, देन, निजी व सार्वजनिक क्षेत्रों में कुल विदेशी मदद १८ अरब रुपये तक आँकी गयी है। बिना अमरीकी मदद के अकाल व विदेशी विनिमय जैसी समस्या को सुलझाते हुए हिन्दुस्तान बरकरार नहीं रह सकता था। अमरीका ने हिन्दुस्तान को इस्पात, रेल्वे, यातायात के साधन, जूट और सीमेंट-उद्योग के लिए मशीनें तक कर्ज के रूप में दी हैं।

रूस ने भी वस्तु और सेवाओं के रूप में भारत को करीबन आधे अरब तक में से कुछ तो कर्ज दे दिया है और कुछ देने की प्रतिज्ञा की है। रूस द्वारा दी जाने वाली हर मदद एक कर्ज के रूप में है, जिसे १२ वर्ष में २॥ प्रतिशत ब्याज के साथ लौटा देना होगा, लौटाने का माध्यम रुपया व वस्तुएँ दोनों मान्य है।

हिन्दुस्तानियों ने अभी-अभी तीसरी योजना का अन्तिम ड्राफ्ट बनाना शुरू किया है। इसके लिए करीबन दो अरब डालर के नये कर्ज की आशा की जाती है, जिसमें से ४ अरब डालर यहाँ के निजी निर्यात व कम तथा सहायता के रूप में प्राप्त विदेशी मुद्रा होगी। हिन्दुस्तान का निर्यात यूँ तो घट ही रहा है, लेकिन पिछले दो वर्षों में इस तेजी के साथ घटा है कि बिना बाहरी मदद के विदेशी विनिमय की जरूरत को पूरा करने का और कोई चारा ही नहीं रह जाता।

रूस पहले से ही यहाँ की तीसरी पंचवर्षीय योजना में घुस गया है। मास्को ने भारी मशीनों, कोयला काटने की मशीनों की एक मिल, दो बिजली के कारखानों, कच्चे के काँच की एक मिल तथा टेकनिकल मदद के साथ कोरबा कोयला क्षेत्र व तरक्की में भी सहायता देने का वादा किया है। जन चिकित्सा के इन्तजाम के लिए दवाइयों के कारखाने बनाने के लिए रूस प्रयत्नशील है।

राँची में हथियार-कारखाने के लिए चेकोस्लोवाकिया ने करोड़ १० लाख डालर की पूँजी दे रहा है। रुमानिया व रूस गुजरात में तेल स्रोत निकालने का प्रयत्न करते हुए साथ-साथ आसाम व बिहार में तेल साफ करने के दो शोधनालय भी बैठा रहे हैं। पोलैंड मद्रास में चीनी साफ करने

"बेचहिं वेद धरम दुहि लेहीं"

गुसाईं तुलसीदास ने भरत के मुख से कहलाया था कि 'बेचहिं वेद धर्म दुहि लेहीं।' इसका बड़ा गहरा अर्थ है। शब्दार्थ तो इतना ही है कि जो लोग वेद को बेचते हैं और धर्म का दोहन करते हैं, वे पाप कमाते हैं। भरत ने शपथपूर्वक कौशल्या माता से कहा भी था कि यदि श्री राम को वन भेजने में मेरी सम्मति हो, तो मुझे वह घोर दुर्गति प्राप्त हो, जो वेद बेचने वाले और धर्म का दोहन करने वाले को होती है।

वेद का अर्थ चार मंत्र-संहिताओं के अन्दर सीमित नहीं करना चाहिए। असली आशय तो वेद का सम्पूर्ण सद्ज्ञान से है, जिसके सहारे मानव-जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य सफल होता है। तब ऐसा ज्ञान, ऐसा सद्विचार क्या बेचने की वस्तु है? जो वस्तु सिर के मोल से खरीदी जाती हो, उसे कोई कैसे बाजार में बेचने जायेगा? जो ज्ञान को बेचता है, वह घोर पाप का भागी होता है। इसी प्रकार जो सत्यमूलक धर्म का दोहन करता है, अर्थात् उससे अपना स्वार्थ साधना चाहता है, बेजा फायदा उठाना चाहता है, वह भी घोर पाप का भागी है।

की मिल बैठाने का काम कर रहा है, तो चेकोस्लोवाकिया आसाम में डटा है। पूर्वी जर्मनी ने कपड़े की मिलों को मशीनरी दी है।

अमेरिकी सहायता-फंड भी खुलने को है। पश्चिम जर्मनी तथा ब्रिटेन ने इस्पात कारखानों को मशीनरी दी है तथा बराबर मदद करते रहने का वादा किया है। जापान ने भी अब तक ६ करोड़ डालर तक की मदद दे दी है।

संसार के इतने शक्तिशाली राष्ट्रों से मदद मिलने के बाद तो हिन्दुस्तान को एक उन्नतिशील मुल्क हो जाना चाहिए था। लेकिन देश की आर्थिक उन्नति ऐसी कुलबुल रही है कि किसी भी क्षेत्र में कोई ठोस तरक्की नहीं हो पायी है। आयात और विदेशी विनिमय का लाइसेंस नयी दिल्ली से ही मिलने के कारण विदेशी विनिमय की कमी से उद्योगीकरण को निजी तथा सरकारी, दोनों ही क्षेत्रों में काफी धक्का पहुँचा है।

कुछ साल पहले तक हिन्दुस्तानी राजनीतिज्ञों की यह धारणा थी कि विदेशी पूँजी देश में साम्राज्यवाद के पैर जमा देगी। लेकिन भारत में अमरीकी पूँजी मात्रा में लग चुकी है और अभी भी लोग तहेदिल से इसका स्वागत करने को तैयार हैं। दो सालों में भारत में लगी अमेरिका की व्यक्तिगत पूँजी ग्यारह करोड़ से बीस करोड़ डालर तक पहुँच गयी है।

विदेशी पूँजी लगाने वालों की सुविधा के लिए यहाँ के करों में भी अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। अमरीका से समझौते के अनुसार इस देश में राष्ट्रीकरण से विदेशी पूँजी लगाने वालों को होने वाले तमाम घाटे को पूरा करने की जिम्मेदारी ली है। लेकिन रबर और टायर के क्षेत्र में जो सिर्फ सरकारी दायरे का था, दो अमरीकी कम्पनियों को व्यापार का इजाजत दे देना सोचने वालों को हैरत में डाल देता है।"

—चिन्तन-चयन—

तप और शील के साधनों से पाया हुआ विचार-अमृत अपने पास सेंत कर रखने की भी वस्तु नहीं है। वह तो दोनों हाथों उन सबको लुटा देने की वस्तु है, जो जान और अनजान में मृत्यु से सदा भयभीत रहते हैं। मृत्यु से याने भेद-भावना से, विषमता से, जिसका बुरे-से-बुरा रूप अस्पृश्यता है। ऐसों को सत्य-मूलक ज्ञान अर्थात् समता का संजीवन-रस पिलाना है, बिना मोल पिलाना है। उसका मोल कैसा? वह कभी खरीद-फरोख्त की चीज नहीं रही। माता का अनमोल दूध क्या कभी बेचा-खरीदा गया है? समत्व-विचार का पुण्यामृत तो माता के दूध से भी कहीं अधिक अनमोल है। यह समता-संचारक अमृत रस तप और जीवन-मंथन से ही प्राप्त हो सकता है। बुद्ध, महावीर और कबीर ने, और इसी प्रकार दयानन्द, ज्योतिबा और रामकृष्ण ने तथा गांधी ने भेद-भावना का मारक यह समता-संजीवन-रस प्राप्त किया और उसे मुक्तहस्त लुटाया। विनोबा भी आज वही विचार-अमृत जन-जन को बाँट रहा है। इसमें से किसने वेद को बेचा था?

"चौरासी वैष्णवन की वार्ता" में, जिसके रचयिता गुसाईं श्री गोकुलनाथजी थे, पद्मनाभदास नामक एक हरि-भक्त की वार्ता अर्थात् कथा आयी है। यह कन्नौज के एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। जब भारत-भ्रमण करते हुए महाप्रभु वल्लभाचार्यजी कन्नौज पधारे, तब वहाँ पद्मनाभदास ने श्री आचार्य का दर्शन किया और उनके मुख से श्रीमद्भागवत का एक प्रसंग भी सुना। पद्मनाभदास ऊँचे व्यासासन पर बैठ कर कथा पाठ करते और बहुत-से लोग उनकी कथा सुनने को आया करते थे। श्री आचार्यजी का महाप्रताप देख कर वे उनके शरणागत हो गये। एक दिन महाप्रभुजी के मुख से उन्होंने सुना कि श्रीमद्भागवत का जब पाठ किया जाय, तो उसमें किसी भी प्रकार का हेतु नहीं होना चाहिए। प्राण भी निकल रहे हों, तो भी भागवत का उपयोग उदर-पोषण के लिए नहीं करना चाहिए। महाप्रभुजी जब कथा कह रहे थे, तब पद्मनाभदास ने उनके आगे यह संकल्प कर डाला कि आज से हरिकथा कह कर मैं उदर-पोषण नहीं करूँगा।'

पद्मनाभदास के इस संकल्प पर श्री आचार्यजी ने कहा, "अरे यह तो तुम्हारी वृत्ति है, तुम ब्राह्मण हो, इसलिए महाभारत आदि की कथा बाँच कर अपना निर्वाह कर सकते हो। हाँ, श्रीमद्भागवत को उदर-पोषण का साधन नहीं बनाना।"

"पर महाराज! मैं तो कथामात्र का संकल्प कर चुका हूँ," पद्मनाभदास ने दृढ़ता से कहा।

"तो गृहस्थ होकर तुम अपनी जीविका कैसे चलाओगे?"

"महाराज! यजमानों के घर से जीविका चला लूँगा," पद्मनाभदास का विनीत उत्तर था।

पद्मनाभदास एक यजमान के घर पर पुरोहित-वृत्ति के लिए गये। यजमान ने उनका बहुत आदर किया। फिर भी पद्मनाभदास के मन में ग्लानि हुई कि इसके पहले तो मैंने कभी भिक्षा नहीं माँगी थी, और यह वैष्णव होकर भिक्षा माँगने के लिए निकला, यह मेरे लिए उचित नहीं है। पहले तो केवल जनेऊ ही गले में पड़ा रहता था, तब मैं भिक्षा माँग सकता था, पर अब तो गले में तुलसी की माला पहन रखी है, अब भिक्षा-वृत्ति से जीविका चलाना मेरे लिए अनुचित है। इसलिए उन्होंने पुनः संकल्प किया कि, 'भिक्षावृत्ति से भी मैं अपनी जीविका नहीं चलाऊँगा।'

श्री आचार्यजी ने पूछा, "तब कैसे तुम अपनी जीविका चलाओगे?"

पद्मनाभदास का उत्तर था "महाराज! कठवृत्ति से जीविका चला लूँगा।"

हरि-भक्त पद्मनाभदास अब लकड़ियाँ बेचते, जंगल से लकड़ियाँ काट कर लाते और इस प्रकार मेहनत-मजूरी करके अपनी जीविका चलाते। जीवन के अन्त तक पद्मनाभदास अपनी इस टेक पर दृढ़ रहे।

इस हरि-भक्त के कथा-प्रसंग से क्या यह शिक्षा नहीं मिलती है कि सद्विचार को, समत्व-प्रकाश को जीविका का साधन नहीं बनाना चाहिए? वेद का और श्रीमद्भागवत के एक-एक पद में समत्व-दर्शन के ही तो अबोधमूलक विचार भरे पड़े हैं।

—वियोगी हरि

धन को जरा सूंघ कर देखिये!

हम बाजार में घी या तेल लेने जाते हैं, तो लेने के पहले उसे सूंघते हैं। धान या अगरबत्ती खरीदते हैं, तो भी उसकी सुगंध लेते हैं। मिट्टी का घड़ा लेते हैं, तो भी उसको ठोक-बजा कर खरीदते हैं। इस तरह हम जिसे ठोक-बजा कर देख लेते हैं या सूंघ कर पहचान लेते हैं, उसी को खरीद कर घर में लाते हैं।

लेकिन हम घर में जो लक्ष्मी लाते हैं, उसे न तो सूंघते हैं, न चखते हैं, न ठोकते-बजाते हैं। वह तो चाहे जितनी, चाहे जहाँ से, चाहे जिस तरीके से आयी हो, तो भी कोई हर्ज नहीं मानते! सच तो यह है कि एक-एक कण की तरह एक-एक पैसा जो हम कमाते हैं, उसके बारे में हमें अपने-आपसे यह पूछना सीखना चाहिए कि वह कहाँ से और किस तरह से आया? वह नीति से, प्रामाणिकता से, धर्म से आया है या नहीं, यह सूंघ कर जानना सीखिये। पर हमने यह आदत डाली ही नहीं, जो कमाया, उसे झट से घर में दाखिल कर देते हैं। लेकिन जिस तरह से हम खराब या कच्चा माल घर में लेकर नहीं रखते हैं, उसी तरह अनीति, अधर्म, अप्रामाणिकता का मिला पैसा भी हमें घर में नहीं घुसाना चाहिए। लक्ष्मी को भी सूंघ कर ग्रहण करना हम सीख जायेंगे, तो सुख ही सुख हो जायगा।

—रविशंकर महाराज

भिण्ड जिला प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी द्वारा पारित प्रस्ताव

"भिण्ड जिला प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी की कार्य-समिति सत्य, अहिंसा और शांति के प्रतीक श्री संत विनोबाजी के भिण्ड जिले के उपद्रवग्रस्त क्षेत्र में पदयात्रा करने के लिए आभार प्रदर्शित करती है।

"....समिति की यह निश्चित मान्यता है कि गरीबी को नष्ट और उत्पादन कम देकर, अन्याय को नैतिक आधार पर नये समाज को जन्म देकर, न्याय को सही गुण देकर, शस्त्र और स्वाभिमान को राष्ट्र एवं मानव-कल्याण की दिशा देकर, ही इस समस्या को सुलझा कर के हल किया जा सकता है। इसके लिए संत विनोबाजी का सत्य, अहिंसा, प्रेम और निर्भयता के मिश्रित शान्ति-प्रयास ही स्वागत योग्य है।

पूज्य संत विनोबाजी के शान्ति-मिशन के जिन सिद्धान्तों और कार्यक्रमों का, कार्यकर्ताओं ने उपयोग किया है, स्वागत के पात्र हैं। प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी यह विश्वास दिलाती है कि इस प्रकार के शान्ति-प्रयासों में हमारे कार्यकर्ता सदा इस पर भी अन्य प्रदर्शनीय रहेंगे।"

पंचायती-राज्य और सर्वोदय-कार्यकर्ता

[ता० १ और २ जून को जयपुर में पंचायती-राज्य पर एक सेमीनार का आयोजन हुआ। उसका समाचार १७ जून के अंक में दिया जा चुका है। उस सेमीनार का स्वीकृत निवेदन नीचे प्रकाशित किया जा रहा है। राजस्थान वह प्रांत है, जहाँ विकेंद्रित पंचायतों का प्रयोग सबसे पहले आरंभ किया। —सं०]

सरकार की ओर से पंचायती-राज्य का एक बड़ा प्रयोग इस देश में लागू किया जा रहा है। इस प्रयोग के अन्तर्गत फिलहाल जिले के स्तर तक भिन्न-भिन्न प्रांतों में कुछ अधिकार पंचायतों, पंचायत-समितियों तथा जिला-परिषद आदि को दिये जा रहे हैं। एक प्रकार से 'सत्ता का विकेंद्रीकरण' किया जा रहा है।

सर्वोदय की दृष्टि से हम जो समाज-रचना लाना चाहते हैं, वह भी विकेंद्रित होगी। हम चाहते हैं कि गाँव गाँव में जनता की अपनी शक्ति और उसका अभिक्रम प्रकट हो तथा जीवन के लिए आवश्यक बुनियादी बातों की व्यवस्था वह खुद कर ले। जनता का जीवन स्वावलम्बी और स्वाश्रयी बने। जो काम नीचे की इकाइयाँ कर सकती हों, वह वे करें, वे न कर सकें, वही काम उत्तरोत्तर आगे ऊपर की इकाइयों के जिम्मे रहे। स्पष्ट है कि इस प्रकार की रचना राज्य या कानून द्वारा केवल विकास संबंधी कुछ काम नीचे की इकाइयों को सौंप दिये जाने से सम्भव नहीं हो सकता, उसके लिए लोक-शक्ति के जरिये बुनियाद से नयी व्यवस्था खड़ी करनी होगी।

सरकार की ओर से पंचायती-राज्य का जो प्रयोग किया जा रहा है, वह इस तरह जनता की अपनी शक्ति में से पैदा हुई चीज नहीं है, यह स्पष्ट है। इसी कारण उसमें से तरह-तरह की बुराइयों के पैदा होने का खतरा है। जब तक जनता की निज की शक्ति जागृत नहीं हुई है, तब तक इस प्रकार के कोई भी प्रयोग का नतीजा उल्टा यह भी हो सकता है कि पार्टीबाजी, दलबंदी, भ्रष्टाचार, पक्षपात, काम में दीर्घ-सूत्रता और अक्षमता आदि दोष और अधिक व्यापक रूप धारण कर लें। राजस्थान का पिछले कुछ महीनों का अनुभव इस बात की पुष्टि करता है। यहाँ दलगत राजनीति के हित में पंचायती-राज्य के इस प्रयोग का दुरुपयोग हो रहा है। अतः यह मान लेना सही नहीं होगा कि विभिन्न राज्य-सरकारें पंचायती-राज्य का जो प्रयोग हाथ में ले रही हैं, उसमें से ग्राम-स्वराज्य या सर्वोदय-समाज प्रगट होगा। लेकिन इतना अवश्य है कि पंचायती-राज्य के प्रयोग के अंतर्गत जिस प्रकार का ढाँचा खड़ा किया जा रहा है, उसका उपयोग ग्राम-स्वराज्य के लिए हो सकता है।

सर्वोदय-कार्यकर्ता जनता में काम करते हैं। गाँव-गाँव में उनका प्रवेश होता है। पंचायती राज्य का प्रयोग भी गाँव-गाँव को छूने वाला है, अतः उसके प्रति हम उदासीन नहीं रह सकते। एक बात और भी है। अगर पंचायती-राज्य के इस प्रयोग को हम ग्राम-स्वराज्य की दिशा में नहीं मोड़ सके तो इस देश में लोक-तन्त्र पर से लोगों की आस्था उठ जायगी। अतः सर्वोदय-कार्यकर्ता इस प्रयोग की मर्यादाओं को तो अवश्य ध्यान में रखें, पर इसके संदर्भ में ग्राम-स्वराज्य के अपने विचार को जनता तक पहुँचाने की ओर भी अधिक तीव्रता और वेग के साथ कोशिश करें, जिससे जनता की जागृत शक्ति से इस प्रयोग का ग्राम-स्वराज्य की दिशा में सही उपयोग हो सके।

हमारा बुनियादी काम ही लोक-शिक्षण का है, क्योंकि हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि किसी ऊपरी या बाहरी शक्ति के जरिये नहीं, लेकिन जनता की अपनी निज की शक्ति के जरिए ही नये समाज की रचना हो सकती है। अर्थात् यह काम समझ-बूझ कर स्वेच्छापूर्वक करने से ही हो सकेगा। पंचायती-राज्य के इस प्रयोग के संदर्भ में लोक-शिक्षण का हमारा बुनियादी काम गहराई और व्यापकता से करने का एक मौका हमें मिला है। लोक-शिक्षण की यह प्रक्रिया किसी अमुक वर्ग तक सीमित नहीं होनी चाहिए, उसमें समस्त लोगों का समावेश होता है, जिसमें खुद कार्यकर्ता भी शामिल हैं। इन लोक-शिक्षण के हमारे कार्यक्रम के नीचे लिखे अनुसार पहलू होंगे

१. कार्यकर्ताओं का निज का प्रशिक्षण।
२ पंचों, सरपंचों, पंचायत-समिति के सदस्यों आदि जनसेवियों का प्रशिक्षण।
३ आम जनता का शिक्षण।
४ पंचायती-राज्य के प्रयोग से संबंधित सरकारी कर्मचारियों और अफसरों में विचार-प्रचार।
५ व्यापक विचार-प्रचार और वातावरण-निर्माण।

ग्राम-स्वराज्य हमारा लक्ष्य है, इसी उद्देश्य से हमारे सारे कार्यक्रम चलते हैं और चलने चाहिए। इसी बुनियादी लक्ष्य को ध्यान में रख कर, सरकार द्वारा परिचालित पंचायती-राज्य के प्रयोग का इस दिशा में किस प्रकार उपयोग हो सकता है, इस हेतु से लोक शिक्षण और प्रचार की उपरोक्त पंचविध योजना बनानी चाहिए।

लोक-तांत्रिक विकेन्द्रीकरण की इस कल्पना का जन्म इस बात में से हुआ था कि सरकार द्वारा विकास के जो विभिन्न काम किये जा रहे हैं, उनमें जनता की दिलचस्पी किस प्रकार बढ़े और वह खुद इन कामों को अपना समझ कर उठा ले। आज की योजना में गाँव वालों द्वारा चुनी हुई ग्राम-पंचायत सबसे नीचे की इकाई है। पंचायत का चुनाव भी बहुमत के आधार पर होता है। नतीजा यह होता है कि दलबंदी और जोड़-तोड़ के आधार पर कुछ व्यक्ति पंचायतों पर कब्जा कर लेते हैं और फिर इन चन्द व्यक्तियों के हाथ में सारी शक्ति आ जाती है, जिसका दुरुपयोग वे अपने पद और प्रभाव को कायम रखने में करते हैं। इस प्रकार पंचायती-राज्य के मौजूदा प्रयोग से एक तरह से पक्षपात, भ्रष्टाचार और अन्याय का विकेन्द्रीकरण हुआ है।

जिस उद्देश्य से पंचायती-राज्य का यह प्रयोग हाथ में लिया गया है, उसे सफल करना हो, तो गाँव-गाँव में सब बालिग स्त्री-पुरुषों की बनी हुई ग्रामसभा के हाथ में अंतिम सत्ता और अधिकार सौंपना होगा तथा उसे ज्यादा सक्रिय करना होगा। पंचायत केवल ग्रामसभा के निर्णयों को कार्यान्वित करने वाला कार्यकारी-मंडल होना चाहिए। ग्रामसभा बार-बार मिले और सारे महत्त्व के प्रश्नों का निर्णय वह स्वयं करे। इसके साथ-साथ दूसरी बात जो उतनी ही आवश्यक है, वह यह है कि ग्राम-सभा के तथा पंचायत व पंचायत-समितियों आदि के सारे निर्णय सर्वानुमति से होने चाहिए, बहुमत के आधार पर नहीं। राज्य-सरकारों की ओर से पंचायती राज्य के संबंध में जो कानून बने हैं या बनाये जा रहे हैं, उनमें इन दोनों तत्त्वों का समावेश होना जरूरी है।

इस प्रयोग की सफलता के लिए यह भी जरूरी है कि जन-जीवन को स्पर्श करने वाले विकास के तथा दूसरे काम नौकरशाही के ढाँचे के मार्फत नहीं, बल्कि उत्तरोत्तर स्वयं लोगों के जरिये होने चाहिए। नीचे के स्तरों पर वैतनिक काम करने वाले रखने पड़ें तो उनकी नियुक्ति, नियंत्रण आदि भी उत्तरोत्तर उस स्तर की लोक-संस्थाओं के हाथ में जाना चाहिए।

पंचायती-राज्य के प्रयोग को अगर हम सही लोकतन्त्र की बुनियाद मानते हैं और उसके जरिये लोकतन्त्र को पनपते हुए देखना चाहते हैं, तो यह भी आवश्यक है कि इस काम को दलगत और पक्षगत राजनीति से दूर रखा जाय। जन-जीवन में पार्टीबंदी का जहर दाखिल करना अन्ततोगत्वा किसी के भी हित में नहीं है। इस तथ्य को मान कर कांग्रेस तथा कुछ अन्य राजनैतिक पक्षों ने नीचे के चुनावों में पार्टियों के आधार पर उम्मीदवार खड़े न करने का निर्णय किया था। मालूम हुआ है कि राजस्थान में कुछ लोग इस निर्णय को बदल कर पंचायतों तक के चुनावों में पार्टियों का आधार दाखिल करने के पक्ष में हैं। हम नम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहते हैं कि ऐसा करना खतरनाक और प्रतिगामी कदम होगा। हम सब राजनैतिक पार्टियों से अनुरोध करना चाहते हैं कि वे पंचायती-राज्य के प्रयोग को दलबंदी से दूर रखें—उसीमें इस प्रयोग की सफलता तथा लोक-हित निहित है। ● ●

शिक्षा-समिति की सिफारिशें

विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग द्वारा नियुक्त शिक्षा-शास्त्रियों की समिति ने वर्तमान शिक्षा के सुधार पर अपनी कुछ सिफारिशें पेश की हैं।

वर्तमान शिक्षा-पद्धति में परीक्षाओं को बहुत अधिक महत्त्व दिया जा रहा है, इसे इस समिति ने बुरा बताया है। आज ये परीक्षाएँ ही विद्यार्थियों के भाग्य का निर्णय करती हैं। विद्यार्थियों के मन और जीवन पर इनका बहुत ही अनिष्ट प्रभाव पड़ रहा है। समिति ने सुझाया है कि प्रत्येक कक्षा के शिक्षक अथवा अध्यापक को अपने हरएक विद्यार्थी की प्रतिदिन की प्रगति पर ध्यान देना चाहिए और उसका लेखा रखना चाहिए। वर्ष के अन्त में वार्षिक परीक्षा के परिणाम के साथ विद्यार्थी की दैनिक प्रगति के लेखे का भी विचार किया जाना चाहिए। जब परीक्षाएँ ही विद्यार्थियों की योग्यता के निर्णय की एकमात्र कसौटी बन जाती हैं, तो विद्यार्थी भी अपनी वास्तविक योग्यता बढ़ाने पर उतना ध्यान नहीं देते हैं, जितना जैसे भी बने, वैसे परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की खोज में रहते हैं और उनकी सारी शक्ति उन संभावित प्रश्नों के उत्तर रटने में खर्च होती है। मूल पुस्तकें तो वे पढ़ते ही नहीं। ज्ञान-प्राप्ति उनका लक्ष्य नहीं रहता। परीक्षा ही एक लक्ष्य बन जाती है। कम बुद्धिवाले या मेहनत से जी चुराने वाले विद्यार्थी अपनी ताकत या तो आने वाले प्रश्नों की तलाश में खर्च करते हैं या परीक्षा के समय नकल करने का रास्ता अपनाते हैं और इसमें बाधक बनने वालों को अपना दुश्मन समझने लगते हैं। परीक्षाओं के चलते निरीक्षकों को धमकाना, पीटना या जान से मार डालना आज साधारण बात हो गयी है। अगर पर्चे कुछ कठिन आये, तो विद्यार्थी उन्हें फाड़ कर फेंक देते हैं और परीक्षा-भवन से बाहर निकल आते हैं। परीक्षा के दिनों में इस तरह की घटनाएँ देश में जहाँ-तहाँ अक्सर होती ही रहती हैं। विद्यार्थियों की भाँति ही शिक्षकों और अध्यापकों में भी कई ऐसे लोग मौजूद हैं, जिन्होंने परीक्षाओं को पैसा कमाने का एक धन्धा बना लिया है। इस तरह आज की यह परीक्षा-प्रणाली अन्दर और बाहर से इतनी सड़ गल गयी है कि जिसका कोई हिसाब नहीं। इसलिए इसे कठोरतापूर्वक समाप्त करने में ही सबका कल्याण है।

परन्तु उक्त शिक्षा-समिति को अभी यह व्यावहारिक नहीं मालूम होता कि परीक्षाओं को एकदम उठा दिया जाये। जब तक सारी शिक्षा-पद्धति में मूलगामी फेरफार नहीं होगा, तब तक शिक्षा-समिति के द्वारा सुझाये गये इन सुधारों पर कितना अमल हो सकेगा, कहना कठिन ही है।

—वैजनाथ महोदय, इन्दौर

● ●

शान्तिसेना की स्थापना हो चुकी है। बापू उसके प्रथम सैनिक थे और प्रथम सेनापति भी। सेनापति के नाते उन्होंने आज्ञा दी और सैनिक के नाते उसका पालन करके वे चले गये

धन्य हैं वे, जो शांति की स्थापना करते हैं! वे ही भगवान की संतान कहलायेंगे।'

—बाइबिल

महाराष्ट्र-कर्नाटक सीमा-विवाद और सर्वोदय-कार्यकर्ता

बेलगाँव की समस्या के बारे में वहाँ के कार्यकर्ताओं से चर्चा करने के बाद मैं निम्नलिखित सुझाव रख रही हूँ।

'सीमा-विवाद के राजकीय पहलू पर हम कुछ भी न करें, तो भी—क्योंकि करने का सवाल उठता ही नहीं—उस प्रश्न को हल करने का प्रयत्न करने वालों से शान्ति भंग न हो, सार्वजनिक और निजी धन-सम्पत्ति नष्ट न हो, इस बारे में सावधान रह कर शान्ति की रक्षा में नागरिकों की मदद की जा सकती है, जो आवश्यक है। सीमा-प्रश्न को हल करने की कोशिश में *नागरिक लोकशाही के मूल्यों को कुचल न डालें*, इस ओर हमेशा ध्यान देते रहने की आवश्यकता है। सवाल के हल होने के पहले, हल होते समय, और हल होने पर भी भाषिक अल्पसंख्यक लोगों पर अन्याय न हो, उनके अधिकारों का संरक्षण हो और अन्याय होने पर उसका निराकरण निर्भयता-पूर्वक करलें, *ऐसा कर कर लोकशाही* का दीपक जलाये रखना हमारा कर्तव्य है। इस दृष्टि से सर्व सेवा संघ क्या कर सकता है, अखिल भारतीय शान्ति-सेना-समिति क्या कर सकती है और उसे क्या करना चाहिए, उसी प्रकार स्थानीय शान्ति-सेना केन्द्र का काम क्या हो सकता है, इस संबंध में मेरे कुछ *सुझाव हैं।*

अ० भा० शांति-सेना-समिति की भूमिका और कर्तव्य

(१) अ० भा० शान्तिसेना-समिति बेलगाँव जिले को 'इमरजेन्सी' का स्थान *मान कर सघन क्षेत्र (शान्ति-सेना के कार्य* के लिए) है, ऐसा निश्चय करे।

(२) शांति-सेना कार्य का प्रयोग और शान्ति-सेना केन्द्र, इसकी *जिम्मेदारी केवल* स्थानीय कार्यकर्ताओं पर न रखी जाय।

(३) उस काम के लिए पहले छह महीनों तक दो स्थानीय कार्यकर्ताओं को जनबल और धनबल दिया जाय।

जनबल : महाराष्ट्र के दो और कर्नाटक के दो *कार्यकर्ताओं को बेलगाँव जिले में* शान्ति-सेना कार्य की बुनियाद खड़ी करने के लिए भेजा जाय।

धनबल : इन चार कार्यकर्ताओं के *बेलगाँव में छह महीने रहने का खर्च* ७५ रु. × ४ का ० × ६ माह = १८०० रुपया पहले दे दिया जाय, जिससे स्थानीय कार्यकर्ताओं की बहुत बड़ी चिन्ता दूर होगी। बेलगाँव के कार्यकर्ताओं को यह अधिकार पहले के *छह महीनों तक रहेगा कि* वे आवश्यकतानुसार शान्तिसेना-केन्द्र की ओर से महाराष्ट्र और कर्नाटक के कार्यकर्ताओं को सहायता के लिए बुलायें, बशर्ते कि वे कार्यकर्ताओं का चुनाव और काल-मर्यादा का निश्चय कर सकें।

स्थानीय शांति-सेना केन्द्र की भूमिका और कार्य

(१) महाराष्ट्र और कर्नाटक के भूदान-कार्यकर्ताओं की एक संयुक्त बैठक यथाशीघ्र *बेलगाँव में* हो।

(क) *इस बैठक में* सीमा-प्रश्न के बारे में एक राय से जो वक्तव्य तैयार किया जा सके, वह करें। मतभेद के पहलू आपस में समझ लिये जायँ। (ख) सीमा-प्रश्न का निर्णय चाहे जो हो, उभयभाषियों में लोकशाही के मूल्यों की कद्र होनी चाहिए। भाषाभेद, विचारभेद या मतभेद के कारण नागरिक *किसी पर भी अन्याय न करें, अन्याय* करने में सरकार को मदद न दी जाय, जहाँ अन्याय होता हो, वहाँ शान्तिमय प्रतिकार करने में *परस्पर की मदद करें*, आदि मूलभूत विचारों का प्रचार करने का संकल्प संयुक्त बैठक कर सकेगी।

(२) संयुक्त बैठक के कारण दोनों प्रान्तों के *भूदान-कार्यकर्ताओं का आत्म*-विश्वास और एक-दूसरे के प्रति विश्वास बढ़ेगा। अकेलेपन की भावना नष्ट होगी। राजकीय *प्रश्नों की ओर तटस्थ भाव से* देखने की और उस संबंध में तटस्थ बुद्धि से चिन्तन करने की आदत लगेगी।

शान्ति-सेना-केंद्र बेलगाँव शहर के सर्वोदय-पात्र वाले घरों में सर्वोदय-पात्र की पृष्ठभूमि को समझा कर रखने का प्रयत्न करें। शहर में सर्वोदय-पात्र और शान्ति-सेना का *विचार व्यापक* रूप से समझाया जाय।

जिन ४०० घरों में आज सर्वोदय-पात्र हैं, उन घरों वाले लोगों के लिए 'ओपन-मार्केट' केन्द्र की स्थापना कर उसमें छोटे बालकों के लिए कथा-मेला, युवकों के लिए विचार-सभा नियमित रूप से आयोजित करने का प्रयत्न हो।

बेलगाँव जिले में जो ५ ग्रामदानी *गाँव हैं, उनमें* शान्ति-सेना केन्द्र के ५ सेवकों को महीने में एक बार तो अवश्य जाना चाहिए। ये गाँव सर्वोदय की भूमिका के साथ अगर प्रामाणिक रहें, तो आसपास के गाँवों पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

शान्ति-सेना के विचार-प्रचार के लिए मराठी और कन्नड़ भाषा में एक आधुनिक पुस्तिका तैयार की जाय।

शान्ति-रक्षण के काम में स्त्रियों को आगे आना किस कदर जरूरी और अनिवार्य है, यह समझाने के लिए एक विशेष शिविर लिया जाय। चार सौ घरों की बहनें और पाँच ग्राम-दानी गाँवों, जहाँ सर्वोदय-पात्र रखे हुए हों, की बहनों का यह विचार-शिविर तीन दिन का हो।

इस विषय पर थोड़े से समय में सूझे हुए ये विचार हैं। *इनमें समस्या का संपूर्ण और समग्र विचार हुआ है, ऐसी बात नहीं, फिर भी समस्या के चिन्तन में इनका उपयोग हो सकता है।*

—विमला ठकार

शांति-सैनिक और सर्वोदय-सेवक

शान्ति-सेना का कार्य आज की परि*स्थिति में बहुत ही आवश्यक हो गया है।* वैसे तो सर्वोदय-सेवक और शान्ति-सैनिक के बीच कोई फर्क नहीं दिखाई देता। दोनों की जीवन-निष्ठाएँ, जन-सेवाएँ एक-सी लगती हैं। फिर भी शान्ति-सेना की आवश्यकता अलग है। आजादी की लड़ाई में रचनात्मक कार्यकर्ता और कांग्रेस कार्यकर्ता, ऐसे दो विभाग थे। रचनात्मक कार्य बुनियादी मूल्य-परिवर्तन का काम था। *कांग्रेस का कार्य तत्कालीन प्रश्नों को हल* करना था, जिसमें प्रधान प्रश्न था देश की आजादी। अन्य प्रश्नों में भूकम्प, बाढ़ आदि दैवी प्रकोपों से पीड़ितों का दुःख-निवारण, अन्याय का प्रतिकार आदि था। ये दोनों कार्य एक-दूसरे के पूरक तो थे ही, लेकिन एक-दूसरे के लिए जरूरी भी थे। कांग्रेस एक 'फाइटिंग स्क्वैड' (लड़ाकू-दल) था और रचनात्मक संस्थाएँ अपने *तत्त्वचिन्तन और मूल्य-परिवर्तन से कांग्रेस* का पोषण करती थीं। इन मूल्यों को समाज में रूढ़ करने का अच्छा साधन था, *कांग्रेस। उसी तरह शान्ति-सेना को* "फाइटिंग स्क्वैड" (लड़ाकू-दल) बनना चाहिए। सर्वोदय-कार्यकर्ता मूल्य-चिन्तन, *मूल्य-परिवर्तन की दिशा में काम तथा प्रयोग करें। शान्ति-सैनिकों का काम* होगा, समाज के रोजमर्रा के प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न, अन्याय तथा *अनाचार के खिलाफ आवाज।* उसमें हमारी पद्धति सौम्य, सौम्यतर और सौम्यतम वाली होगी।

विचार की दृष्टि हमारे पास है, जिसका आचार और प्रचार हम सर्वोदय-सेवक करते हैं। हमने बुनियादी मूल्यों को पकड़ा है। *कांचन-मुक्ति, शासन-मुक्ति और लोकनीति आदि से हम समाज* के बुनियादी मूल्यों में परिवर्तन करना चाहते हैं। परन्तु आज शोषण, अन्याय, सत्ता का मद तथा राजनीति जैसे रोग देश को खोखला बना रहे हैं। उसका क्या होगा? *हम केवल दृष्टि का प्रचार करते रहेंगे, तो नये मूल्यों में स्थान भी बाकी नहीं* बचेगी। इसलिए सर्वोदय-सेवकों को द्विविध कार्य करना होगा, दृष्टि का प्रचार *और दृष्टि का विनियोग।*

शान्ति-सैनिकों का काम होगा सत्याग्रह-संरक्षण। *इस तरह शान्ति-सैनिक तथा सर्वोदय-सेवक, दोनों के काम से एक-दूसरे* को बल मिलेगा।

—दादा गुंडगानी

[पत्र से]

जापान की शिक्षाप्रद घटनाएँ!

जो *कुछ घटनाएँ आजकल जापान में* हो रही हैं, यद्यपि वे दुःखदायी हैं, परन्तु फिर भी कई दृष्टियों से भारत के लिए शिक्षाप्रद हैं। *विरोधी दल, विद्यार्थी और* श्रमिक संघ, सब मिल कर जापान के प्रधान *मंत्री किशी का उग्र विरोध कर रहे हैं।* [illegible]

लोकसभा के आसपास बैठ कर ऊँचे उद्घोष सरकार के विरोध में कर रहे हैं। छात्र हजार से अधिक दूसरे लोग उस सारे मैदान को घेरे हुए हैं। जब यह विरोधी प्रदर्शन तीव्र हो गया, तब उन्होंने सड़क पर खड़ी कीन ट्रकों को आग लगा दी। बहुत विद्यार्थियों के समूह ने जापानी लोकसभा के मैदान में हिंसात्मक प्रदर्शन किये और पुलिस से उनका संघर्ष हुआ। जब वहाँ पार्लियामेण्ट की बैठक हो रही थी, तब विद्यार्थियों और श्रमिक प्रदर्शकों का समूह उद्घोष करता हुआ चारों ओर से सभा-भवन को घेरे हुए था। यह भीड़ रात्रि में पाँच हजार से दस हजार तक बढ़ती चली गयी।

जापान की पुलिस ने किस प्रकार से व्यवहार किया? उन्होंने अपनी लाठियाँ घुमायीं और आग बुझाने वाले फुव्वारों का प्रहार विद्यार्थियों के प्रथम हमले पर किया एवं बाद में अश्रु-गैस का भी प्रहार किया। १९५२ से आज तक अश्रु-गैस का प्रहार इस प्रकार के नागरिक झगड़ों में नहीं किया गया था। अश्रु-गैस का उपयोग १९५२ के "मई दिन" के हिंसक दंगों में पहले-पहल हुआ था।

दूसरे दिन जब प्रदर्शक पाँच हजार से दस हजार तक सारे सभा-भवन को घेरे हुए थे, तब तीन हजार सिपाही उनको रोकने के लिए वहाँ उपस्थित थे, परन्तु उनके पास कोई हथियार नहीं थे, केवल लाठी, आग बुझाने के फुव्वारे एवं अश्रु-गैस के यन्त्र थे।

जापानी पुलिस एक लाख के क्रोधी समूह के प्रतिकार के लिए भी कोई हथियार लेकर वहाँ नहीं गयी। वह केवल लाठियों, आगबुझाने वाले फुव्वारों एवं अश्रु-गैस के यन्त्रों से ही सुसज्जित थी। हम इस बात की कल्पना करते हुए काँप उठते हैं कि ऐसी स्थिति में भारतीय पुलिस भारत में क्या करती? हम केवल विचारों को उत्तेजित करने के लिए ही यह लिख रहे हैं।

हमें सोचना चाहिए कि क्या हम इस देश में मानव जीवन को बहुत सस्ती वस्तु नहीं समझते।

एक और शिक्षा, जो हमारे लोकसेवकों और शान्ति-सैनिकों को लेनी चाहिए, वह घटना के वृत्तान्त से यह मिलती है कि जब प्रदर्शन ने बहुत उग्र रूप धारण किया था, तब पीले वस्त्रधारी एक सौ बौद्ध भिक्षु प्रदर्शनकारियों के बीच शान्ति रखने का अनुरोध करते वाले वचनों की तख्तियाँ लिये हुए अपने ढोल बजाते हुए घूम रहे थे।

—सिद्धराज ढड्ढा

उत्साह है। कहीं-कहीं गाँव में बहुत पार्टीबन्दी है।

तीसरी टोली को अनुभव आया कि गरीबी और छुआछूत के सवाल स्वराज्य के अन्दर भी कायम हैं। भूमिहीन मजदूरों को अभी भी पाँच पाव अनाज मजदूरी में मिलता है, जिससे गुजारा नहीं हो सकता है। तालाब और कूँओं का पानी कहीं-कहीं हरिजनों के लिए बन्द कर दिया जाता है। सरकार की तरफ से दी जाने वाली मदद में काफी धाधली चलती है। शिविरार्थियों के निवास और भोजन का सारा भार सारंगापुर ग्रामवासियों ने उठाया।

शिविर के अन्य खर्चों में शहर के अन्य मित्रों से सहायता मिली। शिविर के व्यवस्था का भार श्री देवता दीन मिश्र ने उठाया, जिसमें श्री सुरेन्द्र मिश्र ने भी योग दिया।

इलाहाबाद जिले की भीषण गर्मी में नौ दिन का यह छोटा-सा शिविर बहुत शिक्षाप्रद एवं उपयोगी रहा।

—सुरेशराम

उदयपुर डिविजन शान्ति-सेना-सम्मेलन, मडकोला

राजस्थान में डूँगरपुर जिले के मडकोला ग्रामदानी गाँव में ११ जून को प्रान्त के वयोवृद्ध शान्ति-सैनिक श्री गोकुलभाई भट्ट की अध्यक्षता में शान्तिसेना-सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें उदयपुर डिविजन व कुछ अन्य स्थानों के ४५ सैनिक सम्मिलित हुए।

इस सम्मेलन के अवसर पर जयपुर के तथा डूँगरपुर के ३ भाइयों ने शान्ति-सैनिक के निष्ठापत्र भरे। सम्मेलन की कार्यवाही प्रातः प्रार्थना के बाद सामूहिक श्रमदान से की गयी। सैनिक 'मार्चिंग' करते हुए श्रम-साधनों सहित मडकोला के सार्वजनिक कुएँ पर गये। वहाँ गंदा पानी व कीचड़ चारों तरफ फैला हुआ था, उसकी सफाई करके आने-जाने का मार्ग बनाया तथा पानी का गड्ढा बनाया गया। श्रम-कार्य १ घण्टे तक चला।

साढ़े आठ बजे श्री गोकुलभाई की अध्यक्षता में भजन-द्वारा सम्मेलन की कार्यवाही ग्राम के एक विशाल पेड़ के नीचे प्रारम्भ हुई। इसमें उक्त सैनिकों के अलावा आसपास के ग्रामीण भाई-बहिन भी सम्मिलित हुए। सर्वप्रथम प्रान्त में अभी तक हुए शान्ति-सेना के कार्य का विवरण उपस्थित लोगों को सुनाया गया। उसके बाद अध्यक्ष सहित सभी सैनिकों ने अपना-अपना परिचय दिया। परिचय से मालूम हुआ कि उक्त सभी सैनिक अधिकतर रचनात्मक प्रवृत्तियों में लगे हुए कार्यकर्तागण ही हैं। डूँगरपुर जिले के भाई श्री गौरीशंकरजी ने अपने जिले के शान्ति-सैनिकों की जानकारी देते हुए बताया कि जिले में काफी संख्या में शान्ति-सैनिक बने थे, उनमें से कई सैनिक राजनैतिक संगठन व सत्ता में पद प्रतिनिधि बन गये हैं। अब जिले में २७ सैनिक हैं। वे किसी पद पर नहीं हैं और न रहेंगे। उन्होंने अपने बारे में भी जाहिर किया कि वे किसी राजनैतिक संस्था के भी सदस्य नहीं हैं, परन्तु जिला-परिषद् के सर्वसम्मति से चुने गये प्रमुख अवश्य हैं, जिससे मुक्त होने का शीघ्र प्रयास करेंगे।

परिचय के बाद कई शान्ति-सैनिकों ने शान्ति-सेना के संगठन, शिक्षण और कार्यक्रम पर महत्त्वपूर्ण सुझाव रखे। उसके उपरान्त अध्यक्ष ने अपने भाषण में उनकी पुष्टि की तथा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रेरित करते हुए सभी शान्ति-सैनिकों को एकर से शकर बनने का यत्न किया। सम्मेलन में हुई चर्चा के आधार पर निम्न निर्णय व कार्यक्रम निश्चित किये गये :

(१) हर जिले में जिला सर्वोदय-मंडल शान्ति-सैनिकों की राय से जिला शान्ति-सेना के संगठन और संचालन के लिए एक संयोजक नियुक्त करे। डूँगरपुर जिलावालों ने उसी समय श्री धूलजी भाई को अपना संयोजक नियुक्त किया। बाँसवाड़ा के भाइयों ने बाद में निर्णय करके सूचना देने को कहा।

(२) हर सैनिक अपने स्वाध्याय के लिए 'गीता-प्रवचन', 'कार्यकर्ता-पाथेय', 'शान्ति-सेना' और 'सर्वोदय-पात्र' इन पुस्तकों को सर्वप्रथम पढ़ने में स्थान देगा।

(३) उपस्थित सैनिकों ने इस वर्ष के लिए पंचविध कार्यक्रम बनाया :

(१) हर शान्ति सैनिक अपने-अपने क्षेत्र में कम-से-कम १०० परिवारों में प्रेम संपर्क करे।

(२) हर सैनिक १० सर्वोदय-मित्र बनावेगा।

(३) सर्वोदय मित्रों की सहायता से १०० घरों में सर्वोदय-पात्र स्थापित करवायेगा।

(४) सर्वोदय-मित्रों की सहायता से अपने क्षेत्र के टंटे-झगड़ों को निपटायेगा।

(५) हर सप्ताह अपने क्षेत्र के लोगों को 'ग्रामराज' पत्र तथा सर्वोदय-साहित्य पढ़ कर सुनायेगा तथा सत्संग आयोजित करेगा।

उक्त कार्यक्रम के अलावा जिले के समस्त शान्ति-सैनिक कम-से-कम एक सप्ताह का श्रम व शिक्षण शिविर आयोजित करेंगे, जिसमें ४ घण्टे श्रम व बौद्धिक कार्य किया जायगा। जो श्रम-कार्य प्रारम्भ किया जायगा, उसे यथासंभवपूर्ण किया जायगा।

उपस्थित सभी सैनिकों ने उक्त कार्यक्रम को अपने-अपने क्षेत्र में शीघ्र शुरू करने का संकल्प किया तथा उत्साह व प्रेमपूर्ण वातावरण में सम्मेलन की कार्यवाही सूत्र-यज्ञ से समाप्त हुई। तब सैनिक 'शान्ति-सेना जिन्दाबाद' तथा 'जिन्दगानी शासन करेंगे' के उद्घोषों को बोलते हुए अपने-अपने स्थानों के लिए रवाना हुए।

इलाहाबाद छात्र शान्ति-सेना शिविर

दिनांक २१ मई से २९ मई तक इलाहाबाद जिले के सारंगापुर ग्राम में छात्र-शिविर हुआ, जिसमें विश्वविद्यालयों के चौदह छात्र तथा दो शिक्षकों ने हिस्सा लिया।

शिविर के पाठ्यक्रम के तीन हिस्से थे एक, पाँच दिन का विचार-विनिमय तथा चर्चा का दूसरा, तीन दिन का देहात की स्थिति अध्ययन का और तीसरा, अन्तिम दिन अनुभव सुनाना तथा समारोह। प्रथम पाँच दिनों में प्रातःकालीन श्रम-यज्ञ एक विशेष कार्यक्रम रहा। श्रम-यज्ञ में गाँव वालों की इच्छानुसार तालाब खोदने का काम किया गया। सारंगापुर में एक पुराना तालाब है, जो गर्मी में सूख जाता है, जिससे लोगों को काफी कष्ट उठाना पड़ता है। शिविरार्थियों ने प्रतिदिन दो घण्टे का समय तालाब को खोदने में दिया। ग्रामीणों के अलावा आस-पास के ग्रामवासियों ने भी बड़े उत्साह के साथ इसमें हिस्सा लिया।

अध्ययन में 'दादा की नजर से सोशलिज्म' पुस्तक को लिया था। उसका पठन तथा चर्चा चलती थी। चर्चा और विचार-विनिमय की दृष्टि से यह शिविर बहुत भाग्यवान रहा। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कई प्राध्यापकों का, जो अपने विषय के अच्छे एवं ज्ञानी हैं सहयोग मिला, जिनमें सर्वश्री अमरनाथ पंत, महेन्द्रनाथ सिंह, कौशलप्रसाद अग्रवाल, सत्यनारायण शर्मा आदि थे।

शिविर के पाठ्यक्रम में सर्वोदय विचार, उसका आधार और विकास, शान्ति-सेना, उसका अभिप्राय और महत्त्व, देश की आर्थिक परिस्थिति और दृष्टिकोण, लोकनीति और राजनीति, इतिहास की विभिन्न क्रान्तियाँ और भारत की अहिंसात्मक क्रान्ति आदि विषय थे। शिविर का उद्घाटन सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने किया। शिविर का समारोप श्री पूर्णचन्द्र जैन ने किया।

पाँच दिन तक विचार की भरपूर खुराक हासिल करने के बाद शिविरार्थियों की तीन टोलियों ने गाँव-गाँव घूम कर गाँवों की परिस्थिति का अध्ययन तथा शान्ति-सेना के विचार का प्रचार किया। शहर में पले विद्यार्थी प्रारम्भ में घबराते थे पर जब लौटे, तब सभी प्रसन्न थे। मानो कोई बड़ी कमाई करके लौटे हों।

सचमुच उन्होंने कमाई की थी, आत्म-विश्वास की, स्वावलम्बन की और लोक-शक्ति-अनुभव की। तीनों टोलियों के अनुभव बड़े प्रेरणादायी रहे। पहली टोली के नायक ने बताया कि हमें कई गाँवों में ग्रामदान के अनुकूल वातावरण लगा। साथ ही इस विचार के प्रति लोगों में उत्साह अधिक पाया। इस क्षेत्र में शिक्षा और स्वास्थ्य का अभाव भी देखा। दूसरी टोली के नायक प्रो० श्री बनवारीलाल शर्मा ने कहा कि इस यात्रा से यह स्पष्ट हो गया कि गाँवों में प्यार का स्रोत अभी भी मौजूद है। लोगों की धार्मिक वृत्ति सुरक्षित है। उसके अन्दर जिज्ञासा है और नये समाज के निर्माण के लिए

शिक्षक और निःशस्त्रीकरण

इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय शिक्षक संघ की निःशस्त्रीकरण-समिति ने हाल ही में एक सभा का आयोजन किया था। सभा ब्लैकपूल में हुई। सभा में जो विचार अलग-अलग वक्ताओं द्वारा रखे गये, इनमें से कुछ ऐसे वाक्य, जो हमें प्रेरणा दे सकते हैं, यहाँ दिये जा रहे हैं।

एक संसद-सदस्य कहते हैं :

"जिस क्षेत्र से मैं चुना गया हूँ, उनके आधे घरों में स्नानागार भी नहीं है। अगर सरकार सैनिक तैयारियों पर इतना खर्च न करे, तो उस पैसे का उपयोग कितने ही आवश्यक व भले कामों के लिए किया जा सकता है।"

ब्रिस्टल विश्वविद्यालय में विज्ञान के एक प्रोफेसर कहते हैं

"दुनिया और मानव की कहानी के काल की तुलना में लिखित इतिहास का युग तो ऐसा है कि मानो अभी-अभी ही प्रारम्भ हुआ हो। और वैज्ञानिक शोधों ने मानव-जीवन के उपर असर करना तो हाल ही में पिछले ३०० वर्षों में आरम्भ किया है। अभी हमारे सामने एक तरफ तो भयानक खतरा है और दूसरी तरफ एक सुनहरा मौका। किन्तु मानव द्वारा विज्ञान को युद्ध के लिए उपयोग करने के बावजूद भी आशा यही है कि मनुष्य की बुद्धि शुद्ध होगी और वह ईसा मसीह के रास्ते को अपनायेगा। एक समय आयेगा कि जब इन असीम शक्तियों का उपयोग मनुष्य की भलाई के लिये होगा। भोजन भरपूर होगा, सबको यथेष्ट अवकाश मिलेगा और मनुष्य को एक दूसरे की सेवा करने की शिक्षा मिलेगी।"

राष्ट्रीय शिक्षक संघ की कार्यकारिणी की एक सदस्या ने कहा–

"शिक्षकों के सामने बड़ी से बड़ी समस्याओं को हल करने की जिम्मेवारी है। शिक्षक होने के नाते हम उन्हें अनदेखा भी नहीं कर सकते और न उनके बारे में तटस्थ रह सकते हैं। हमारी जिम्मेवारी है कि हम बालकों को महत्त्वपूर्ण बातों के बारे में बतायें। आम तौर पर किशोर-अवस्था की समस्याओं के बारे में चर्चा होती है, किन्तु प्रौढ़ों के मानस को सुलझाना और भी आवश्यक है, क्योंकि प्रौढ़ों की मानसिक अवस्था और तनाव का असर किशोरों के मानस पर पड़ता है। वह उन्हें समरयात्मक बना देता है। बालकों और प्रौढ़ों, दोनों का मानसिक पुनर्गठन होना आवश्यक है। आशा है कि पश्चिमी राष्ट्र शीघ्र ही युद्ध को हमेशा के लिये त्याग देंगे।"

●

बरतानिया में पहला शांति कॉलेज

इसी वर्ष इंग्लैण्ड में एक कॉलेज खुलने जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य शांति पर शोध करना और उससे संबंधित विषयों का अध्ययन करना होगा। यह कॉलेज लिन्सेस्टर में, "स्कूल आफ सोशल स्टडीज" में खुलेगा, और इसका पहला सत्र सितम्बर से प्रारम्भ होगा। अपेक्षा यह है कि इसमें १५ विद्यार्थी लिये जा सकेंगे। ये छात्र लन्दन विश्वविद्यालय की समाज-शास्त्र की डिग्री के लिए तैयारी करेंगे। इन चालू डिग्रियों के लिए तैयारी करने का उद्देश्य केवल यही है कि तीन वर्ष की शिक्षा पूरी करने के समय विद्यार्थी किसी काम के लिए 'क्वालिफाई' करना चाहेंगे। यह व्यावहारिक दृष्टि से आवश्यक है। किन्तु सारे शिक्षण की दिशा शांति की ओर ही होगी।

इसके अलावा इस कॉलेज के द्वारा सारे देश में (बरतानिया) शांति-मंडलियों की स्थापना की जायेगी। अभी गार्थनवाइड आश्रम, श्री डेविड हागेट द्वारा स्थापित की गई संस्था, ने दक्षिण वेल्स में एक शांति-मंडली चलाने में सहयोग करना स्वीकार किया है। इसी प्रकार अन्यान्य स्थानों पर भी इस तरह की मंडलियाँ बनाने का प्रयत्न किया जायेगा।

इस कॉलेज को खोलने की प्रेरणा प्रोफेसर थियोडोर लैंड्स की पुस्तक "टोवर्डस ए साइन्स ऑफ पीस" से मिली। इस पुस्तक में शांति-स्थापना की पद्धति का जिक्र किया गया है। इस विषय के बारे में जो शोधें होंगी, उनमें स्वाभाविक ही मानस-शास्त्र, मानव-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धर्म, राजनीति और अर्थ-शास्त्र आ जाते हैं। असल कार्य तो इस विशाल अध्ययन के द्वारा इनमें से अत्यन्त आवश्यक और मूल्यवान विचारों को शोध निकालने का है।

●

शान्ति-सैनिक का दल सिक्किम की ओर

ता० १७ जून को शान्ति-सैनिकों का एक दल पटना से गैंगटाक (सिक्किम) के लिए रवाना हुआ। इन शान्ति सैनिकों का उद्देश्य सीमान्त लोगों की परिस्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन करना और यह देखना है कि किस प्रकार और किस हद तक वहाँ के लोगों की सेवा खादी तथा अन्य समग्र ग्रामोद्योगों एवं रचनात्मक कार्यक्रमों के द्वारा की जा सकती है।

शान्ति-सैनिकों के दल में बिहार राज्य शान्ति-सेना समिति के संयोजक श्री विद्यासागर सिंह, मुंगेर जिले के सर्वोदय कार्यकर्ता श्री गोवर्द्धन चौधरी तथा बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के कार्यकर्ता श्री जीवनेश्वर सिंह और श्री पूरन झा हैं।

ये शान्ति-सैनिक श्री जयप्रकाश नारायण के सुझाव पर बिहार राज्य शान्ति-सेना-समिति के द्वारा गत १६ मई को लिये गये निर्णय के अनुसार सिक्किम जा रहे हैं। सिक्किम में यह दल लगभग एक माह रह कर वापस आयेगा और तदुपरांत भूटान के लिए रवाना होगा।

●

"हूज हू" के लिए आये हुए प्रान्तवार जीवन-परिचय

(ता० २१-६-६० तक)

प्रान्त	संख्या
मैसूर	२
गुजरात	८
महाराष्ट्र	९
मध्यप्रदेश	३
बिहार	७
आंध्र	१
उत्कल	१
पंजाब	६
राजस्थान	४
बंगाल	३
उत्तर प्रदेश	२०
	कुल ६४

नोट : अब तक सिर्फ ६४ शान्ति-सैनिकों से जीवन-परिचय प्राप्त हुआ है। अन्य सभी भाई-बहनों से प्रार्थना है कि वे अपना जीवन-परिचय कार्यालय के पास शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

●

प्रान्तवार शांति-सैनिक

प्रान्त	शांति-सैनिक	शांति-सहायक
आसाम	३८	
आंध्र	७५	
उत्कल	१०४	
उत्तर प्रदेश	१७१	२
केरल	८	
तमिलनाड	२९	
दिल्ली	२६	४०
पंजाब-पेप्सू	८	
बंबई शहर	१९	८
महाराष्ट्र	७९	
गुजरात	१५१	
बंगाल	५८	५
मध्यप्रदेश	२७	
मैसूर	४८	
राजस्थान	१५२	
बिहार	३०२	१
कुल	१२९१	५६

नोट : यहाँ प्रधान कार्यालय से सभी प्रान्तों से शांति-सैनिकों की सूची प्राप्त करने के संबंध में परिपत्र भेजे गये थे। उपरोक्त प्रान्तों में से केरल, तमिलनाड, पंजाब-पेप्सू तथा मध्य-प्रदेश से कोई सूचना अभी तक नहीं मिल पायी है। इसलिए इन प्रान्तों के आँकड़े पुरानी सूची के आधार पर दिये जा रहे हैं। साथ ही यह निवेदन भी है कि इन प्रान्तों के संबंधित संगठन शीघ्र शांति-सैनिकों की नई सूची भेजने का कष्ट करें।

●

विदर्भ शान्ति-सैनिकों की बैठक

ता० ७ जून को सेवाग्राम में विदर्भ के कुछ प्रमुख शान्ति-सैनिकों की बैठक हुई, जिसमें सर्वश्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे, दोडेकी, राधाकृष्णन् तथा बैनर्जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। बैठक में नागपुर तथा विदर्भ के अन्य शहरों में शान्ति-सेना के कार्य के बारे में चर्चा हुई। प्रमुख शहरों की मौजूदा परिस्थिति का अध्ययन करने का तय हुआ, जिसका दायित्व वर्धा जिले के निवेदक श्री श्यामसुन्दर शुक्ल ने लिया।

जुलाई के अन्त में सेवाग्राम में विदर्भ के आठ जिलों के शान्ति-सैनिक, लोक सेवक तथा रचनात्मक संस्थाओं के कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं का एक शिविर लेने का तय हुआ। सितंबर में नागपुर में नगर-पदयात्रा करके शान्ति-सेना को संगठित रूप देने का तय हुआ।

श्री राधाकृष्णन्, सहमंत्री सर्व सेवा संघ विदर्भ शान्ति-सेना के कार्य की ओर विशेष ध्यान देने वाले हैं।

●

साहित्य-समादर

- **बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र**
- **बापू, बापा और सरदार**

प्रकाशक : कुटीर प्रकाशन, माडल टाउन, दिल्ली-९। लेखक : श्री वियोगी हरि, मूल्य : क्रमशः रु० १–५० नये पैसे और १ रुपया।

"बड़ों के प्रेरणा दायक कुछ पत्र" में बापू, महादेव देसाई, किशोरलाल मशरूवाला, ठक्कर बापा, विनोबा और पुरुषोत्तमदास टंडन के कतिपय महत्त्वपूर्ण पत्र हैं, जिनके संदर्भ का उल्लेख करते हुए उनसे लेखक को क्या, कब प्रेरणा मिली, यह बड़ी ही सीधी, सरल भाषा में लिपिबद्ध किया गया है, जिनमें स्नेह, जीवन-शुद्धि, त्याग और कर्तव्य-पालन की मंगल भावना की मनोहारी झाँकी स्थान-स्थान पर मिलती है।

जीवन को सजाने-सँवारने के साथ-साथ उसे मांजने की प्रक्रिया जीवन को नित नूतन चमकाती है। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ व्यक्ति को भी श्रेष्ठतर बनाती है। इस कला में बापू पारंगत थे। आत्म विकास के नौरत्नों को उन्होंने पहचान लिया था।

पुस्तक का हर पत्र प्रेरणा-जनक है और सेवापथ के दुर्बल पथिकों को सम्बल का संदेशवाहक व साधकों के लिए पथ-प्रदर्शक (लाइट हाउस) सरीखा है।

"बापू, बापा और सरदार" पुस्तक में उक्त तीनों महापुरुषों का भक्तिपूर्वक संस्मरण है। लेखक ने इसमें लिखने के लिए कलम न चला कर उनके साथ अपनी जीवन-साधना को आशीर्वादों और श्रद्धांजलि के रूप में व्यक्त किया है।

आज ये तीनों महापुरुष हमारे बीच नहीं हैं, पर आज की और आने वाली पीढ़ी की संस्कृति को इनके बारे में बताने के लिए यह पुस्तक उपयोगी होगी।

[illegible]

—गुरुशरण

●

दिल्ली की चिट्ठी

रैन-बसेरों में सर्वोदय-पात्र

पैसों के पीछे पागल इस राजधानी के शहर में सच्चे सर्वोदय-प्रेमी पाना कितना कठिन काम है, उसका सवाल हकीकत एवं आँकड़े पेश करके दिल्ली-निवासी एक निष्ठावान कार्यकर्ता ने एक बार विनोबाजी को दिया था। विनोबा ने जैसे वर्तमान का पर्दा चीर कर भावी में झाँकते हुए कहा "अरे ऐसा क्यों? आपके यहाँ दिल्ली में 'रैन-बसेरे' हैं न? आपको मेरे सच्चे अनुयायी उन बसेरों में मिलेंगे।"

और वह सही भी निकला! इन 'रैन-बसेरों' में रात भर आसरा पाने वाले गरीब मेहनतकशों ने पिछले दो वर्षों में विनोबा की बात को काफी पकड़ लिया है, और समय समय पर बाबा ने लोकसेवकों को जो आवाहन दिये, उनका भी काफी अच्छी तरह से जवाब दिया है।

सुबह से शाम तक कोलाहल भरे बाजारों में, अंधेरे और गंदे कारखानों में, सिर चकराने वाली गलियों में और गंदे, अंधेरे आवासों में ये लोग पैसों को खोद निकालने के लिए अपना पसीना बहाते हैं। फिर भी जिंदगी के बेहतरीन रास्तों के दरवाजे उनके लिए अवरुद्ध हैं।

चीथड़े हाल, बिखरे बाल और हतोत्साह वे अपने टूटे फूटे आवासों को व्यर्थ ही सुधारने की कोशिश में लगे रहते हैं। लेकिन इन्हीं गंदे आवासों में वे अपने इस जीवन-पथ के सहचर समदुखिया साथी पाते हैं। उनसे वे जीवन पाते हैं, खोये हुए मानव-मूल्यों को पुनः प्राप्त करते हैं और प्रेम तथा सेवा के सबक सीखते हैं। आराम और आनंद के उनके इन नये आवासों में विनोबा के विचार-बीज के लिए उपजाऊ धरती पायी जाती है। उत्साह से और तीव्रता से वे डाकूग्रस्त विस्तार में विनोबा की यात्रा के एक-एक छोटे-मोटे समाचार को सुनते हैं। भिंड और मुरैना के बहादुर बागियों के आत्म-समर्पण की गाथा सुन कर उनकी आँखों में से आँसू उमड़ आते हैं, क्योंकि इस संगदिल समाज के खिलाफ उनके दिल में भी अलगाव की एक अजीब भावना भरी हुई है।

इनमें से तीन रैन-बसेरों में सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। विनोबा के प्रति भक्ति-पूर्ण भाव से हर रात को वे उस पवित्र पात्र में एक या दो नये पैसे अर्पण करते हैं। वह दृश्य सचमुच दर्शनीय होता है! गत माह में केवल इन पात्रों में से ही आठ रुपये प्राप्त हुए थे।

चोर बदमाश कैसे बनते हैं?

पुलिसवालों से परेशान फुटपाथों के इन बाशिंदों के लिए शांति-सेना का संदेश एक आश्वासक मरहम-सा था। शौकों के ये भोले-भाले लोग केवल रोटी कमाने के लिए इस गुनहगारी से सदबदते हुए शहरी वातावरण में आ पड़ते हैं, और यहाँ के मलिन जीवन-जल की सतह पर कमल के भाँति तैरते हुए भटकते जाते हैं। अत्यंत भक्तिपूर्ण भाव से वे इस गला घोंटने वाली पापी हवा से बचने के लिए मथते हैं, लेकिन कानून के 'रखवालों' के निष्कारण कड़े हथकड़े उनको उसी गंदगी के तल में फिर ढकेल देते हैं। पुलिस की कोतवालियों में और जेलों में वे द्वेष और वैर के सबक सीखते हैं। मैंने ऐसे प्रामाणिक मजदूरों में से कइयों को निठुर पिटाई के कारण नीली-काली मार पड़े हुए, सूजे हुए हाथों को और लड़खड़ाते-लंगड़ाते पाँवों को लेकर आते हुए और गलत, अंधे न्याय के हाथों पायी हुई सजा की करुण कहानी सुनाते हुए देखा है! और इन्हीं लोगों में से शांति-सेना के लिए हमको अच्छे रंगरूट मिले हैं। मुहम्मद और मुन्नालाल, जोसेफ और एकनाथ सभी अलग-अलग सूबों से आये हुए ये लोग शांति के लिए काम करने के लिए कृत-निश्चय हैं।

अपने सत्कार और सुधार की शान बघारने वाली इस नगरी में शान्ति सेना की त्वरित आवश्यकता है। उसके लिए मानसिक वातावरण निर्माण हो सके, इसलिए काशी की भाँति यहाँ पर भी स्वच्छता के आन्दोलन से श्रीगणेश करना होगा। यहाँ उसके लिए काफी मसाला मौजूद है, सवाल है केवल उसकी योजना आवश्यकतानुसार गढ़ने का।

सेवा की भावना

"बाबूजी हम दिन भर और जिंदगी भर तो पेट पालने के लिए काम करते ही हैं, कम-से-कम एक दिन तो निस्वार्थ भाव से थोड़ा-सा सेवाकार्य करें।"—ऐसा जवाब मुझे उन नम्र सेवकों से मिला, जब कि मैंने 'विनोबा-जयंति के निमित्त थोड़ा-सा सफाई' काम करने का सुझाव कुछ झिझक के साथ उनके सामने पेश किया। बड़ी शान के साथ उन्होंने चाँदनी चौक में एक प्रभात फेरी निकाली। प्रभात के प्रहर में हाथ में विनोबाजी की फोटो लिये हुए इन मजदूरों की प्रभात फेरी निकली, तो वह चाँदनी चौक के आधी नींद-खुले हुए व्यापारियों के लिए देखने के काबिल दृश्य बन गया। वे गाते हुए निकले

> "नहीं यह तेरा, नहीं यह मेरा,
> ईश्वर का यह राज्य है।
> फोगट खावे चोर कहावे,
> गीता की आवाज है।"

उसके बाद एक घण्टे तक उन्होंने फतहपुरी से गांधी आश्रम तक की भीड़ वाली सड़क पर झाड़ू लगाया। रास्ते से हवाखोरी के लिए गुजरने वाले कुछ मजाकी युवकों ने पूछा भी, "आज मेहतर लोगों ने हड़ताल कर दी है क्या?" एक युवक ने, जो कि विनोबाजी की फोटू उठाये था। तपाक से गौरवपूर्ण जवाब दिया, "जी नहीं, आज 'विनोबा-जयंति के दिन हम और वे एक बने हैं।'

उस दिन उस श्रमदान के बाद जब हम म्युनिसिपल कारपोरेशन के दरवाजे के सामने सामूहिक प्रार्थना करने बैठे, तब बंधुता की एक गहरी भावना की अनुभूति हुई, जो आज भी जीवित है, बल्कि वह दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

* * *

डाकू-ग्रस्त विस्तारों में, विनोबाजी की पदयात्रा की हँसी उड़ाने वाले अश्रद्धालु लोग काफी तादाद में थे। लेकिन पिछले सप्ताह जब अखबारों में एक के बाद एक आत्म-समर्पण के समाचार चमकाये, तब इनकी शकाशील टोलियाँ तितर बितर हो गयीं, और अन्त में करीब शून्य रह गया! कुछ तो फिर विनोबा की सफलता की प्रार्थना करने लग गये। अखबार पढ़ने वालों में काफी चहल-पहल थी। शिखरवार्ता भंग के समाचार से जैसे लोग चौंके थे, उसी प्रकार इस समाचार से भी आश्चर्य में पड़ गये थे। कुछ लोगों के कहने के मुताबिक, "इस घटना ने तो इतिहास बनाया है।" सामान्य जन ने तो उसे ठीक ताड़ लिया था 'केवल विनोबा जैसा संत ही ऐसा कर सकता है।'

आजकल दिल्ली में गर्मियों का साम्राज्य छाया हुआ है। जब कि केवल ठंढे घरों में एवं वातानुकूलित दफ्तरों में ही प्रवृत्तियाँ चलती हुई पायी जाती हैं कुछ सर्वोदय कार्यकर्ता आज से आठ साल पहले भूदान में मिली हुई १५० एकड़ भूमि-वितरण करने के लिए देहातों में निकल पड़े हैं। प्रतिदिन बदलने वाले काल, कानून और मानव-मन के कारण काम काफी कठिन बन गया है। लेकिन 'शिकायत करने का अधिकार नहीं, काम करना ही तेरा धर्म है, किये जा।' जय जगत्।

—'व्यास'

आसाम का गाँव

कचारी गाँव आसाम के उत्तर लखीमपुर जिले का एक ग्रामदानी गाँव है। यहाँ के लोग आदिवासी हैं। यह गाँव "नेफा" यानी उत्तर-पूर्वी सीमा की पर्वतीय तलहटी में है। गाँववालों ने एक सर्वोदय कृषक-मंडल बनाया है, जिसमें गाँव के स्त्री-पुरुष सदस्य हैं। खेती के काम के साथ-साथ स्त्रियाँ परिवारों के कपड़ों की बुनाई का काम कर रही हैं। गाँववालों ने ग्राम-सभा के भवन के लिए सामूहिक श्रम से एक मकान तैयार किया है।

केरल की चिट्ठी

व्यापक पदयात्रा

केरल एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ के लोगों ने विभिन्न राजनैतिक दलों के शासन का अनुभव प्राप्त किया है तथा जहाँ के लोग काफी संख्या में शिक्षित हैं। ऐसे लोगों के बीच सर्वोदय-विचार को फैलाने का एवं उसे क्रियान्वित करने का प्रयत्न किस ढंग से हो, यह अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण बात है।

निष्काम सेवा की भावना से सतत घूम कर गांधीजी का संदेश फैलाने वाले सेवकों की जमात बने और उसका रूप शांति सेना का रूप हो, ऐसा विचार केरल-यात्रा के दौरान में श्री विनोबा ने दिया था और उसी शांति-सेना के कार्यक्रम को श्री केलप्पन जी और उनके साथियों ने उठा कर कार्य प्रारंभ किया।

१ मई से पूरे प्रदेश में इस तरह के निष्काम सेवकों की पदयात्रा चालू हुई। यह पदयात्रा एकसाथ ४४ तालुकों में प्रारंभ हुई। ७२ टोलियों में विभाजित होकर पदयात्रा करने वाले सेवकों ने अपना अभियान चालू किया। इस तरह की सुव्यवस्थित और सुनियोजित पदयात्रा का अनुभव स्फूर्तिदायक था। इन ७२ टोलियों में कार्यकर्ताओं की अच्छी संख्या थी। तीन-चार या छह व्यक्तियों की एक-एक टोली बनायी गयी थी।

१६ मई को त्रिचूर में इन पदयात्री-सेवकों की एक गोष्ठी हुई। इस गोष्ठी में ७२ टोलियों के एक-एक प्रतिनिधि ने हिस्सा लिया। इस गोष्ठी में केरल की स्थिति तथा उस संदर्भ में किये जाने वाले सर्वोदय-कार्य के बारे में विचार-विनिमय होने के बाद सब लोगों ने एक मत से यह निर्णय किया कि प्रदेश भर में शराब-बंदी के लिए एक सुव्यवस्थित अभियान चालू किया जाय। इसके लिए एक समिति श्री टी० वी० अनतन् के संयोजन में बनायी गयी।

श्री केलप्पन्जी ने शराबबंदी के बारे में कहा कि यद्यपि केरल-सरकार का यह कर्तव्य है कि वह अविलंब शराबबंदी लागू करे, पर हम, हमारे कार्यकर्ता और हमारे शांति-सैनिक सरकार की ओर से पहल हो, इस बात का इंतजार नहीं करेंगे, बल्कि व्यापक जनसंपर्क द्वारा मद्य-पान के खिलाफ वातावरण बनाने में हम लोग जुट जायेंगे।

यह तय किया गया कि सितंबर माह में केरल प्रदेशीय सर्वोदय-सम्मेलन का आयोजन किया जाय तथा प्रान्तभर के कार्यकर्ता एक साथ बैठकर प्रदेश में सर्वोदय-कार्य की गति बढ़ाने के लिए विचार-विनिमय करें। तवनूर में एक उत्तर बुनियादी शाला स्थापित करने के लिए सरकार की ओर स्वीकृति दी गयी है। आशा है कि इस शाला के माध्यम से शिक्षा-क्षेत्र में कुछ कार्य हो सकेगा।

शांति-यात्रा और पुलिस का मनोबल ?

प्रो० ठाकुरदास बंग

मध्यप्रदेश के इन्सपेक्टर जनरल ऑफ पुलिस श्री रुस्तमजी ने अखबार वालों को एक मुलाकात दी और विनोबा मिशन से पुलिस का मनोबल कम हुआ है एवं कानून का पालन करना कठिन हो रहा है, ऐसा उस मुलाकात में कहा है। पुलिस के मनोबल को शांति-यात्रा से कैसे खतरा लगा, यह समझ में नहीं आता। आत्मसमर्पण करना, जुर्म कबूल करना, पश्चात्ताप से सच बोलना, इससे पुलिस का मनोबल कैसे घटता है? विनोबाजी ने पुलिस की कई जगह प्रशंसा की है। मेरे काम से भी अधिक कठिन काम पुलिस का है, यह विनोबाजी ने आरम्भ में ही अम्बाह में कहा था। लेकिन हमारी तारीफ करो और डाकुओं की तारीफ मत करो, क्या रुस्तमजी के कहने का यह मतलब है? उन्हें बागी क्यों कहा गया? यह तो अजीब दलील होगी। डाकुओं ने जुर्म नहीं किये, ऐसा तो विनोबाजी ने कभी नहीं कहा। लेकिन हमारी तारीफ करो और डाकुओं की निन्दा करो, क्या रुस्तमजी की शान्तियात्रा से यह अपेक्षा थी? कोई सत्यनिष्ठ आदमी इसे कैसे पूरी करेगा? जिसने समाज-रचना बदलने का बीड़ा उठाया हो, वह यही कहेगा कि जैसे इन्होंने कानून तोड़ने का जुर्म किया है, वैसे ही समाज में अनेक और इनसे भी भयंकर डाकू हैं और भगवान के यहाँ सबका न्याय होगा। पुलिस के कुछ लोगों ने चम्बल-घाटी में जरूर उत्तम काम किया होगा। लेकिन इस घाटी में कइयों के मुख से यह भी सुना कि पुलिस ने जनता पर कुछ कम अत्याचार नहीं किये। लुक्का नामक डाकू ने तो यहाँ तक कहा कि पुलिस की गोली से पिछले तीन-चार सालों में कितने लोग मारे गये और हमने कितने मारे, इसकी जाँच के लिए कमीशन बैठेगा, तो पुलिस से मारे जाने वालों की संख्या अधिक होगी। कुछ तो यहाँ तक कहते हैं कि डाकुओं की कुछ पुलिस और राजकीय पक्षों से सांठगांठ रहती है। इसीलिए डाकुओं का भी धंधा चलता है और इनका धंधा भी चलता है। अपना यह धंधा कहीं समाप्त न हो जाय, इसके कारण स्थापित स्वार्थ पैदा होते हैं और डाकू-समस्या को हल नहीं होने देते। दूसरी ओर, डाकू स्त्रियों पर हाथ नहीं डालते हैं, गरीबों को नहीं लूटते हैं। अनेक गरीबों की शादियों में इन्होंने मदद की। डाकू अमीरों से भी एक हिस्सा ही मांगते हैं, ऐसे नियमों का पालन करने वाली डाकुओं की अनेक टोलियाँ थीं, ऐसा भी कहा जाता है। डाकुओं की इस लूटखसोट में, इस पागलपन में भी एक पद्धति थी। इनमें से कई प्रतिकूल परिस्थिति के कारण, उन पर किये गये अन्याय का निवारण आज की मौजूदा कानूनी पद्धति से न होने के कारण डाकू बने, यह भी सही है। इसलिए जिस पुलिस-अफसर ने एक डाकू को वचन-भंग कर कपट से पकड़ा था, उससे हाथ मिलाने में दूसरे डाकू ने आत्म-समर्पण के बाद इन्कार कर अपना हाथ पीछे खींच लिया। ऐसी स्थिति में सभी पुलिस निर्दोष नहीं थे, न सब डाकू ही पूर्ण रूप से बदमाश थे।

ऐसे डाकुओं को यदि इन्सान बनाना हो, तो क्या करना चाहिए? क्योंकि उन्हें गिरफ्तार कर कारावास में डालने से और छूटने के बाद वे नागरिक बन कर रह सकें, ऐसी परिस्थिति नहीं होने से समस्या का हल नहीं हो सकता। उन्हें मार डालना, यह तो समस्या का हल है ही नहीं, यह तो इन्सान की बुद्धि का दिवाला निकालने का परिचायक है। तो फिर उन्हें नागरिक बनाना हो, तो उनमें सोये हुए भगवान को जगाना चाहिए। "तुम डाकू हो, तुम बदमाश हो," ऐसा कहने से तो वे और भी बेशर्म और बेहया होंगे। वह काम तो पुलिस कर ही रही थी, फिर अन्य पद्धतियों की ओर विनोबा को क्या जरूरत थी? आज की शिक्षा-पद्धति ने दण्ड का उपयोग असफल माना है। आज का अपराध विज्ञान भी कहता है कि अपराधी को मानसिक रोगी मान कर उपचार करना चाहिए। डाकू में भी गुण होते हैं। उनमें साहस होता है। 'प्रत्येक सन्त का भूतकाल रहता है और प्रत्येक पापी का भविष्यकाल रहता है,' ऐसी अंग्रेजी में एक कहावत है। डाकुओं के साहस का उपयोग राष्ट्रहित में, मानवहित में क्यों न किया जाय? समाज-व्यवस्था से पीड़ित होकर जो डाकू बने हैं, वे डाकू न होकर वास्तव में 'बागी' ही हैं। आज अनेक लोग कानून के भीतर रह कर शोषण करते हैं। डाकू कानून का उल्लंघन करता है, इसका अर्थ कानून का उल्लंघन हो, यह नहीं। क्योंकि आज के ही कानून के एवं न्यायालय के सम्मुख डाकू आत्मसमर्पण करें और सजा आनन्द से भोगें, ऐसा विनोबाजी ने कहा।

और डाकुओं ने यह कबूल किया, इतना ही नहीं, लेकिन उसका आचरण भी किया। ८ जून को भिण्ड की अदालत में ऐसे आत्मसमर्पण करने वाले ९ डाकुओं पर मुकदमा चलाया गया था। उन्होंने कहा कि विनोबाजी को दिये हुए वचन के अनुसार हमें जुर्म कबूल है और एक दिन में अदालती कार्यवाही समाप्त कर इन सबको २-२ वर्ष की सजा हुई।

गुणों को बढ़ावा देना, सुप्त ईश्वरत्व जगाना, इसीसे मानव मानव होगा। पापी माने जाने वाले लोगों के गुणों का गौरव कर उन्हें आत्मसमर्पण करने को जगाना, इसके लिए विनोबाजी का गौरव होना चाहिए, क्योंकि उन्होंने एक सच्चे सिपाही का काम किया। बीसवीं सदी के विज्ञान के जमाने में पुलिस के भी काम करने के तरीकों में फर्क पड़ना चाहिए। और यह रास्ता विनोबाजी ने दिखाया है।

●

आज नगद, कल उधार!

रात का अँधेरा,
भय का दृढ़ घेरा!
पूरब की किरण एक
जाग उठी, कहती है
'कल है मेरा!'
अविश्वास-घृणा-द्वेष
हैं अशेष,
फिर क्या आधार?
किरण गयी हार।
आज नगद, कल उधार!
जुगनू की जोत नहीं!
ठगने का काम?
आँखों से देखो तो
सुबह है कि शाम!
मत हारो उठो, चलो,
पहुँचोगे पार,
आखिर बदलेगा ही
सारा संसार!
आज नगद, कल उधार!
युग-युग के हार लोग
मानी मानवता,
कण-कण में व्याप्त हुई
निर्ममता-अक्षमता!
आज बन गया प्रहार,
हिंसा से क्या प्यार!
किन्तु तू अबोध अभी
चाह रहा—चमत्कार!
आज नगद, कल उधार!

—सत्यव्रत सिंह

●

एक नया अध्याय

विनोबा की प्रेम शक्ति ने डाकुओं को आत्मसमर्पण की प्रेरणा देकर हृदय-परिवर्तन के रूप में हिंसा का एक जबरदस्त विकल्प पेश किया है। हर मनुष्य में दानवी और मानवी वृत्ति है। मनुष्य की मनुष्यता पर विश्वास कर मानवी वृत्ति के विकास का मौका दिया जाय तो दानवी वृत्ति निष्प्राण हो सकती है। इसी आधार पर हम लोक-तन्त्र की शक्ति सेना और दण्ड नहीं नागरिक तथा उनकी नागरिकता मानते हैं।

[illegible] आत्मसमर्पण की परिस्थिति पैदा होना लोकतन्त्र की सफलता का द्योतक है, इतिहास का एक नवीन अध्याय है। लेकिन सरकार के कुछ प्रमुख जिम्मेदार व्यक्तियों ने विनोबा और उनके सहकर्मियों के प्रयत्नों के प्रति अपनी जो प्रतिक्रिया पिछले दिनों व्यक्त की है, वह हर-एक नागरिक के लिए चिन्तनीय है। लोक-शक्ति और राज्य-शक्ति के संघर्ष के उदाहरण इतिहास में कम नहीं हैं। जब-जब लोकशक्ति ने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए नई दिशा की खोज की है, तब-तब निहित-स्वार्थ की समर्थक राज्य-शक्ति ने उसे दबाने का प्रयत्न किया है।

पिछले दो-तीन सालों में दुनिया के अनेक राष्ट्रों में सैनिक-शासन स्थापित हुए हैं और बराबर होते जा रहे हैं। हमें विश्वास है कि मुक्ति का शोधक मानव जानवरों की तरह दंड की शक्ति से अधिक दिनों तक नियंत्रित नहीं किया जा सकता। मनुष्य के जिस विवेक ने विज्ञान की इतनी बड़ी शक्ति खोज निकाली है, वही विवेक उसी शक्ति को अपने विनाश का साधन बनने देना कभी भी स्वीकार नहीं करेगा।

मनुष्य की सात्त्विक शक्ति ही उसकी अमानुषिकता को समाप्त कर सकती है, इसलिए शान्ति-सेना द्वारा हमारे जीवन में मानवीय मूल्यों का पोषण होगा, हमारे अन्दर की दैवी शक्ति को प्रोत्साहन मिलेगा, हमारी सांस्कृतिक चेतना दृढ़ होगी। ये बातें हवा की नहीं, व्यवहार की हैं, जिसका यह उदाहरण हमारे सामने है।

हमारी स्वतंत्रता की रक्षा शस्त्रधारी सेना से नहीं, प्रेम की शक्ति वाली शान्ति-सेना से संभव है। यह आश्वासन हमें विनोबा के चम्बल-घाटी के प्रवचन से मिलता है। हम सब नागरिक इस शक्ति को बढ़ाने के लिए अपना योग दें, यह हमारी जिम्मेदारी है।

—रामचन्द्र 'राही'

●

विनोबा के प्रति

यह युग-परिवर्तनकारी
मानव का महा पुजारी!!

कंकालमय पञ्जर-जर्जर
हड्डी का ढाँचा जर्जर
तन वस्त्र नहीं लेता जो
जनहित बना भिखारी
मानव का महा पुजारी!

बढ़ता ही जाता पथ पर,
पग अपनी लक्ष्य सिद्धि पर!
मानव को देव बनाने,
दानव को राह दिखाने।
यह युग-परिवर्तनकारी!

है निकल पड़ा जिसके हित,
जन-जन में करने वितरित।
बस नारा एक यही है—
हर जन की पृथ्वी सारी!!

जो दीप्त बन रहा तिल-तिल,
नवयुग को करने पल-पल।

समतामय ज्योति दिखाता—
चिर विपदाएँ सब हारी!!
यह युग-परिवर्तनकारी!
मानव का महा पुजारी!!

—रामचरण 'राम'

●

साहित्य-समादर

ना घर मेरा

प्रकाशक : कुटीर प्रकाशन,
माडल टाउन, दिल्ली ९
लेखक : श्री वियोगी हरि,
मूल्य : १ रु ७५ न.पै.

"ना घर मेरा" सीधी सादी शैली में लिखी गयी १९ कहानियों का संग्रह है, जिनकी कथावस्तु अस्पृश्यता-उन्मूलन और समता-स्थापन है। पात्र हैं गाँवों, कस्बों और बड़े-बड़े नगरों की गंदी बस्तियों के वे लोग, जिनकी आज भी उपेक्षा की जाती है। जहाँ मल-मूत्र की खुली गटरें दिन-रात बहती हैं, वहीं जंग लगे टीन के पत्तरों और काले चीथड़ों से लपेटे उनके घरौंदे हैं, वहाँ घूरों की गन्दगी पर चीलें और मक्खियाँ छीना-झपटी किया करते हैं। रोशनी के नाम पर डिबरियाँ टिमटिमाया करती हैं। पीने के गड्ढे के पानी में कीड़े बिलबिलाया करते हैं।

श्री वियोगी हरिजी हरिजन-कार्यकर्ता और हरिजन उद्योग-शाला के श्रमिक के साथ-साथ सिद्धहस्त कलाकार और भक्त लेखक हैं। उनकी अंगुलियों कुशल यन्त्रज्ञ की और आत्मा कलाकार की है। उन्होंने उपरोक्त मानवों में जहाँ-जहाँ सचाई और प्रेम की पावन सुगन्ध पायी है, उसे अपने अन्तर की अग्नि से प्रज्वलित कर उसकी सुरभि इन कहानियों में बिखेर दी है। कहानी-कला के समस्त तत्त्वों से समन्वित न होते हुए भी इनको कहानियाँ कहने में कोई हानि नहीं है। ना घर मेरा, पाव भर आटा, मोहना, सन्ध्या-आरती आदि कहानियाँ पढ़ते ही बनती हैं।

●

विराट (उपन्यास)

लेखक : स्टीफेन ज्विग
अनुवादक : श्री यशपाल जैन
प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली
मूल्य : १ रु. ५० न० पै०, पृष्ठ १०६

लगभग आधी सदी पहले ज्विग भारत आये थे। भारतीय विचारधारा ने उनके मन और उनकी लेखनी को ऐसा बाँधा कि उन्होंने गीता के निम्न श्लोक के आधार पर प्रस्तुत उपन्यास की रचना कर डाली।

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥
(अध्याय ४ : श्लोक १६)

"इस विषय में बड़े-बड़े विद्वानों को भी भ्रम हो जाता है कि कौन कर्म है और कौन अकर्म? अतः वैसा कर्म तुझे बतलाता हूँ, जिसके जान लेने से तू पाप-मुक्त हो जायगा।"

उपन्यास का नायक विराट यशस्वी योद्धा के रूप में ख्याति अर्जित करता है, पर अँधेरे में अनजाने बड़े भाई की हत्या से अभिभूत होकर सदैव के लिए युद्ध से विरत न्यायाधीश बनना स्वीकार कर लेता है, पर वहाँ भी अपराधियों को दण्ड देते देते एक अपराधी की आँखें उसके अन्तर में पैने तीर की तरह प्रविष्ट कर उसको इस तथ्य का भान कराती हैं कि जो शासन करता है, वह अपनी आत्मा को गुलाम बनाता है। वह महाराज से कह देता है "मैं किसी का भाग्यविधाता नहीं बनूँगा।" वह कोड़ों की मार, कारावास की घुटन, यातना की अनुभूति के लिए स्वेच्छा से एक मास कारावास की काली गर्द गुबार भरी कोठरी में जाता है, जो उसके मन के कलुष को धोकर उसे पाप मुक्त जीवन बिताने की प्रेरणा देती है और एक दिन वह घर छोड़ कर जंगल में अपने हाथों बनायी कुटिया में रहने लगता है। वन के पशु-पक्षी उसके प्रिय मित्र बन जाते हैं। एक शिकारी यह देख कर दंग रह जाता है और वह इसकी चर्चा राज्य भर में कर देता है। राजा, सेठ, साहूकार, सामंत उसकी कुटिया में आकर उसका अभिवादन करते हैं। नगर प्रवेश पर उसका पथ फूलों से ढँक जाता है, लेकिन एक परित्यक्ता के आँसू उसे अपलक्षित का भान फिर करा देते हैं।

विराट ने महसूस किया कि संसार के एकान्तवास की अपेक्षा कहीं अधिक सचाई दुःख की एक सिसकी में है।

विराट पुनः नगर में लौटा और उसने नौकरी की इच्छा प्रकट की। राजा और सभी पुरवासियों को लगा कि वह पथ-भ्रष्ट हो गया है। राजा ने उसे कुत्तों का संरक्षक नियुक्त किया। कई वर्ष कुत्तों की सेवा में आनन्द-लाभ करता हुआ वह एक दिन चल बसा और लोग विराट के नाम को भूल गये।

उपन्यास के पात्र, कथानक, विचार-धारा, वातावरण सब कुछ भारतीय है। पुस्तक पठनीय है। —गुरुशरण

●

विमला बहन का स्वास्थ्य

पिछले कुछ महीनों से सुश्री विमला बहन के कान में काफी तकलीफ थी। इसलिए पूना में आपरेशन तथा उपचार चलता रहा। रोग के विस्तार का जो भय था, अब आपरेशन के बाद वह नहीं रहा। फिर भी अभी भी बीमारी के लक्षण दूर नहीं हुए हैं। जून माह में वे अल्मोड़ा रहीं। अब जुलाई के प्रथम सप्ताह में काशी लौट आयेंगी। उनका स्थायी पता काशी का ही है।

पता : अखिल भारत सर्व सेवा संघ
साधना केन्द्र, राजघाट, काशी

●

स्पष्टीकरण

ता० १० जून के भूदान-यज्ञ में पृष्ठ ८ पर "रोग और निदान" शीर्षक जो लेख छपा है, उसके लेखक अ० भा० सर्व सेवा संघ के मंत्री, श्री पूर्णचन्द्रजी जैन नहीं हैं, बल्कि सेवाग्राम के कार्यकर्ता श्री पूर्णचन्द्र हैं। —सं०

खादी-ग्राहक सम्मेलन

भागलपुर जिले में तीन दिन की पदयात्रा करके सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति के अध्यक्ष श्री ध्वजा प्रसाद साहू ता० १० जून को राँची आये। राँची और हजारीबाग में क्रमशः १० और ११ जून को खादी ग्राहकों का सम्मेलन हुआ। ग्राहकों के सम्मेलन का यह एक नया विचार था। खादी पहनने के नाते सर्वोदय-विचार के प्रति इनकी सहानुभूति होगी, ऐसा मानना उचित ही था। इन सम्मेलनों में सर्वोदय-विचार समझाने का अच्छा मौका मिला। ता० १२ जून को हजारीबाग जिले का सर्वोदय सम्मेलन गिरीडीह में था। ता० १५ जून को जमशेदपुर में भी खादी-ग्राहकों का सम्मेलन रखा गया। खादी-ग्राहकों के नाते लोगों को आमंत्रित करने और उनके सम्मेलन करने के इस कार्यक्रम का अनुभव अच्छा रहा।

●

जन-सहयोग

ग्राम सारबन, जिला उन्नाव में अकस्मात् हुए भीषण अग्निकांड के समय जनसहयोग का अच्छा दर्शन मिला। दुर्घटनाग्रस्त लोगों को आर्थिक सहायता के लिए सरकार की ओर से तीन सौ रु० ही मिले, पर जनसहयोग और ग्राम-सहानुभूति के विचार के परिणामस्वरूप लोगों ने लगभग एक हजार रु० एकत्रित किया।

●

शराब का दुष्परिणाम!

हजारीबाग जिले में एक गाँव है। नाम है गरिया। जनसंख्या है केवल पंद्रह सौ। इनमें से पाँच सौ व्यक्ति नियमित रूप से शराब पीते हैं। प्रति व्यक्ति दस रु० मासिक शराब पर खर्च होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि पाँच हजार रु० मासिक यानी साठ हजार रु० सालाना की बरबादी का भार शराब के कारण व्यर्थ ही इस गाँव पर लदा हुआ है। यदि यह रुपया ग्रामविकास के काम में लगाया जाय, तो कितना लाभ होगा? भूदान-कार्यकर्ता इस गाँव में नशाबंदी के लिए वातावरण निर्माण कर रहे हैं।

●

तरुण कार्यकर्ता का देहावसान!

खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, मधुबनी के तरुण शिक्षक श्री महेश्वर मिश्र का ता० ११ जून, १९६० की रात को अचानक देहावसान हो गया। श्री महेश्वर मिश्र अभी पूरे ३० साल के भी नहीं हुए थे। सन् १९५६ में वे इस विद्यालय में कताई-विज्ञान के अध्ययन-क्रम में दाखिल हुए थे और बाद में यहीं शिक्षक हो गये। विद्यालय-परिवार तथा बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, मधुबनी के कार्यकर्ताओं ने श्री मिश्र के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

●

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,४२६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,३२६
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति ११ नये पैसे

अहिंसा का आश्रय लिये बिना चारा नहीं है!

डा० धनंजयराव गाडगिल

श्री धनंजयराव गाडगिल हिन्दुस्तान के प्रमुख सार्वजनिकों में से हैं और एक अर्थशास्त्री के नाते उनकी ख्याति देश के बाहर भी फैली हुई है। स्वर्गीय श्री गोपालकृष्ण गोखले की पुण्यस्मृति में स्थापित पूना की प्रसिद्ध संस्था "गोखले इन्स्टीट्यूट ऑफ पोलिटिक्स एण्ड इकनॉमिक्स" के वे संचालक हैं। प्रो० गाडगिल की विद्वत्ता के कारण इस संस्था की ख्याति भी देश-विदेश में फैल गयी है और कई विद्वान इसके अन्तर्गत समाज-शास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र के विषयों में अन्वेषण, अध्ययन करते हैं।

महाराष्ट्र के समूचे जीवन का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न पहलुओं से दर्शन कराने वाला एक ग्रन्थ "महाराष्ट्र जीवन-दर्शन" दो भागों में अभी हाल ही में मराठी भाषा में प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ की भूमिका में श्री धनंजयराव ने महाराष्ट्र की विशेषताओं और कमियों का तथा हिन्दुस्तान और विश्व की सेवा में महाराष्ट्र क्या योग दे सकता है, इस विषय पर विशद रूप से प्रकाश डाला है। प्रस्तुत लेख उसी भूमिका का एक अंश है। पाठकों को इस लेख में श्री धनंजयराव की सूक्ष्म बुद्धि और विश्लेषण-शक्ति का परिचय तो मिलेगा ही, इसके अलावा वे अपने चिन्तन और अनुभव से समाज-रचना और समाज-परिवर्तन की प्रक्रिया के बारे में किन नतीजों पर पहुँचे हैं, उसका भी दर्शन होगा।

इसी अंक में इस संबंध में पृष्ठ—३ पर प्रकाशित टिप्पणी की ओर भी हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

उत्पादन-व्यवस्था अगर व्यक्तिगत अधिकार में रही तो सत्ता केन्द्रित होगी, समानता दूर होती जायगी। यदि ये साधन शासन के हाथ में रहे, तो फौजी शासन की संभावना रहेगी।

सुरक्षा इसी में है
कि
उत्पादन के साधन विकेन्द्रित
और स्वशासित रहें।

● ●

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी, शुक्रवार ८ जुलाई, '६० वर्ष ६ : अंक ४०

"साधनानां अनेकता" वाली बात तो सही है, फिर भी मानव-समाज की आज की परिस्थिति ऐसी है कि किसी भी समाज की अंदरूनी व्यवस्था और अलग-अलग समाजों के बीच परस्पर व्यवहार में अहिंसा का आश्रय लिये बिना दूसरा चारा नहीं है। यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि यही आज का युगधर्म है।

समाज की अंदरूनी व्यवस्था में जब तक समग्र और सार्वत्रिक समानता स्थापित नहीं होती है और यह स्थायी नहीं होती है, तब तक समाज की स्थिति में परिवर्तन होता रहे और शासकों व धनिकों की सत्ता और संपत्ति में हिस्सा बंटाने का दूसरे लोग प्रयत्न करते रहें, यह तो अनिवार्य है। पर यदि अभीष्ट हो कि बार-बार होनेवाला यह परिवर्तन हिंसक क्रांति का जनक न हो, तो इसके लिए यह जरूरी है कि सारे लोग अहिंसा का व्रत लें और सत्याग्रह जैसा कोई-न-कोई अहिंसात्मक प्रतीकार का और परिवर्तन का मार्ग अपनायें।

अहिंसक मार्ग को अपनाने के लिए जितनी अनुकूल भूमिका आज बनती जा रही है, इतनी इससे पहले के मानव-इतिहास में कभी नहीं थी। मानव-जीवन की उत्क्रांति में हम मानते हैं, तो फिर यह स्वाभाविक ही है कि भौतिक संस्कृति की उन्नति के साथ ही साथ धर्म-विचार और नीति-विचार भी बदलें और जो बातें पहले असंभव-सी लगती थीं, वे अब संभव लगें।

शस्त्रास्त्रों में जो क्रांति हुई है, उसके कारण, खासकर अणुशक्ति के आविष्कार के बाद की प्रगति के कारण, अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों का स्वरूप बदला हुआ दीखता है। औद्योगिक क्रांति से सार्वजनिक समृद्धि संभव हुई, तो अब शस्त्रों की भयानक संहारक शक्ति के कारण स्थिति ऐसी बन रही है कि विश्वयुद्ध असंभव हो जाय। संसार के अनेक विचारवान लोग मानने लगे हैं कि इसके बाद यदि मानव को जीवित रहना है, तो अहिंसा व्रत का आत्यंतिक पालन करते रहना होगा।

अहिंसा के नये आविष्कार की आवश्यकता

आज की परिस्थिति अहिंसा को अपनाने के लिए अनुकूल है और भारत उसे यदि अपनाता है, तो यह पूर्वपरंपरा के अनुसार ही होगा। अशोक से लेकर गांधी तक विचारपूर्वक अहिंसा को अपनाने के कई उदाहरण हमारे यहाँ मौजूद हैं। हड़ताल करना, धरना देना आदि अहिंसक प्रतीकार की तथा दबाव डालने की प्रथा हमारे समाज में प्राचीन समय से ही चली आती है। पर इतना ही पर्याप्त नहीं है। किसी भी नये मार्ग का या नये मूल्यों का प्रतिपादन करनेवालों को इस रास्ते को हर तरह से स्वीकार करना होगा और यह दिखाना होगा कि नये मूल्यों से उनका सारा जीवन पूर्ण रूप से व्याप्त है। जब हम अपने प्रत्यक्ष उदाहरण से नये मार्ग की सफलता दूसरों को समझा सकें, तो ही हमने कुछ किया, ऐसा माना जा सकेगा। केवल घोषणा करने भर से कुछ होगा नहीं। तो, आज हमारा सही कर्तव्य यही है कि अपने आपस में तथा औरों के साथ होने वाले प्रत्येक व्यवहार में भरसक अहिंसा का आचरण करें।

इस दृष्टि से विचार करने से यह स्पष्ट दीखता है कि गत दस वर्षों में हम कुछ भी नहीं कर पाये हैं। यदि अहिंसा में हमेशा विश्वास होता, तो सहज ही दण्ड का उपयोग धीरे-धीरे कम हो जाता। परंतु क्या प्रांतीय सरकारें और क्या केंद्रीय सरकार, किसीने इस ओर कुछ प्रयत्न या कुछ विचारपूर्वक कदम नहीं उठाया है। उन्होंने इस दिशा में कुछ सोचा-विचारा हो, ऐसा भी दीखता नहीं है। दूसरा उदाहरण, पिछले जमाने में केवल कुछ कल्पनाओं के कारण मद्यसेवन बहुत प्रमाण में होता था, आज मद्यनिषेध के कारण शराब पीना कम होने की बजाय अपराधों की वृद्धि की खबरें सुनायी देती हैं। यह इसलिए कि हमने दंड के सिवाय अहिंसक उपाय का अर्थात् लोकशिक्षण का कोई प्रयत्न नहीं किया। इस संबंध में विशेष आश्चर्य की बात यह है कि जिन लोगों के कम्युनिस्टों को हिंसक माना जाता है उनके राज्य में भी अधिकांश परिवर्तन लोकशिक्षण के द्वारा किया जाता है। हमारे यहाँ तो समूची दारोमदार कानून और दण्ड पर ही खड़ी की जाती है।

आंतरिक मामलों में जो स्थिति है, वही विदेशी मामलों की भी है। कश्मीर, गोवा आदि किसी भी मामले में हमारी नीति आत्यंतिक अहिंसा की रही हो, सो नहीं है। बल्कि कश्मीर के बारे में तो अधिकांश विदेशी लोगों का भी यही विचार है कि हमारी स्थिति "पर-उपदेश कुशल बहुतेरे" जैसी ही है। प्राचीन परंपरा का और महात्मा गांधी का नाम लेकर ही संतोष कर लेना पर्याप्त समझें, तो बात अलग है, नहीं तो हमारे लिए यह जरूरी है कि उस प्राचीन परंपरा का कोई नया आविष्कार हम अपने अंदरूनी और विदेशी मामलों में करके दिखायें। यह कोई असंभव या बहुत कठिन हो, सो बात नहीं है। हमारी जनता की सामान्य मनोवृत्ति को देखते हुए यदि समुचित नेतृत्व मिले, तो यह कठिन नहीं है कि हम अपने अंदरूनी मामलों में विभिन्न प्रयोग करके देखें या विदेशी मामलों में भी अहिंसक भूमिका को समर्थन प्राप्त हो। लेकिन यह तभी होगा, जब नेता खास कर राजनैतिक नेता यह महसूस करें कि इस संबंध में हमें कुछ प्रयत्न जरूर करना चाहिए और उनको अपनी जनता पर विश्वास भी होना चाहिए।

समाजशिल्प की आवश्यकता

धर्म और नीति की कल्पना के बारे में केवल विशुद्ध विचार या केवल उद्देश्य मात्र को समाज के सामने प्रस्तुत कर देना काफी नहीं है। साधना के मार्ग के संबंध में सीढ़ी दर सीढ़ी रास्ता दिखाना भी जरूरी है—यह हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही मान्य हुआ है। पर इसमें भी 'नया मोड़' लाना आवश्यक है। वैज्ञानिक-भौतिक उन्नति की तरह समाज-व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था के बारे में अभी पर्याप्त जागृति नहीं हुई है और यह वर्तमान समय की एक बहुत बड़ी कमी मानी जाती है। भौतिक शास्त्र में विविध प्रकार से अध्ययन किया गया, विचारपूर्वक प्रयोग करके ज्ञान प्राप्त किया गया, तभी जड़ और चेतन सृष्टि के व्यवहार को नियंत्रित करके मानव की उत्पादक शक्ति में वृद्धि की जा सकी। यद्यपि मानव-समाज के अध्ययन और नियंत्रण के बारे में यह मार्ग पूर्ण रूप से अपनाया नहीं जा सकता, बावजूद इसके इन दिनों यह मान्य होता जा रहा है कि समाजशास्त्र में भी प्रयोग, वैज्ञानिक अध्ययन और अनुभव प्राप्त करने के लिए बहुत गुंजाइश है। यदि यह सही है, तो किसी भी सामाजिक और आर्थिक नियंत्रण के संबंध में प्रयोगशील वृत्ति अपना कर व्यावहारिक इष्टानिष्टता और शक्याशक्यता को परखना उचित होगा और इससे आगे का कदम मजबूत नींव पर खड़ा किया जा सकेगा। यह तो सही है कि कोई भी विचारवान मनुष्य पुराने अनुभवों की पूंजी पर ही आगे का कदम रखता है। पर यह कोरी मनगढ़त कल्पना से करना एक बात है और शास्त्रीय ढंग से विभिन्न प्रकार की रचनाओं के द्वारा अनुभव लेकर उन सबको विज्ञान की कसौटी पर कस कर करना बिल्कुल दूसरी बात है।

धर्म-नीति की कल्पना और सामाजिक मूल्यों की स्थापना में प्रायोगिक शास्त्रीय

पर्धा का उपयोग अधिक हो सकेगा, ऐसा तो नहीं दीखता, लेकिन स्वीकृत कल्पना और मूल्यों को मूर्त रूप देने में, इनको व्यवहार में लागू करने में, यह मार्ग निःसंशय हितकर सिद्ध होगा। साथ यह है कि

> समाज की प्रगति की सर्व-सामान्य दिशा मान्य करके विशिष्ट मर्यादा में हेतुपूर्वक प्रयोग करते हुए ही आगे के कार्य का स्वरूप निश्चित करना चाहिए। जैसे—तत्त्वतः अहिंसा को मान्य करने के बाद समाज के अंदरूनी मामलों में दण्ड का उपयोग क्रमशः कैसे कम किया जा सकता है, यह प्रयोग द्वारा अनुभव प्राप्त करते हुए निश्चित करना होगा। अथवा दान-कल्पना के प्रसार से आर्थिक परिवर्तन शांतिपूर्वक होता दीखे, तो उस संबंध में विभिन्न योजनाओं को तैयार करना चाहिए और उनकी व्यावहारिकता और उपयोगिता को जाँचना चाहिए। सामाजिक परिवर्तन लाने का काम केवल प्रचारकों का है, ऐसा मान कर चलने से काम नहीं होगा। और केवल प्रचार से या कानून के दबाव से जितना होगा, उतना ही होगा, इस प्रकार की लाचारी महसूस करने की भी आवश्यकता नहीं है। सामाजिक परिवर्तन के कार्य-क्षेत्र में अन्य किसी भी क्षेत्र की ही तरह देश भर में बिखरे हुए हर तरह के अध्ययनशील और कुशल अनेकों कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। और ऐसों के विचारपूर्वक किये गये प्रयत्नों से जो काम बनेगा, वह समाज के सभी स्तरों में व्याप्त होगा, स्थिर होगा और बाहर भी अपना प्रभाव डालेगा।

संग्रह की सीमा, संपत्ति और सत्ता का संयत उपयोग

अर्थोत्पादन-व्यवस्था की समस्या भी बहुत महत्त्वपूर्ण है और विश्वशान्ति से उसका निकट संबंध है। मनुष्य काम में क्यों लगता है? अपने किसी स्वार्थ के लिए। इसलिए आधुनिक पूंजीवादी अर्थ-शास्त्र का मूलभूत सिद्धान्त यही है कि तरह तरह के और विभिन्न श्रेणियों के प्रलोभनों की व्यवस्था करने से ही अर्थ-व्यवस्था ठीक चलेगी। कम्युनिस्टों ने भी अर्थ-व्यवस्था को बदलने और स्थिर करने के लिए बाहर से तो कुछ इलाज किया है, पर व्यवस्था के अंदरूनी व्यवहार में प्रलोभनों को काफी महत्त्व दिया है। जब व्यक्तिगत प्रलोभन पर अधिक जोर दिया जाता है, तब पूँजीवाद या कम्युनिज्म के स्थूल दोष टाले नहीं जा सकते। तब यह महत्त्व का प्रश्न हो जाता है कि यह प्रलोभन का काम आंशिक रूप से ही सही, क्या धर्म और नीति की कल्पना से भी होगा? संपत्ति-संचय के लिए किये जाने वाले व्यापार और उद्योगों की निकृष्टता देख कर ब्राह्मण, भिक्षु, योद्धा, राजनैतिक व्यक्ति आदि की उच्चता को भारतीय, चीनी आदि संस्कृतियों ने सिद्ध किया था। प्राचीन संस्कार के कारण संपत्ति-संग्रह के विषय में थोड़ी बहुत अलिप्त वृत्ति अभी भी हमारे समाज के कुछ वर्गों में बनी हुई है। हमें आज अर्थ-व्यवहार और संपत्ति-संचय का उचित महत्त्व मान कर ऐसा मानस निर्माण करना है कि व्यक्तिगत संचय और अमीरी का प्रलोभन बहुत महत्त्व न हो। यह सारा यदि कानून से करना हो, तो दण्ड का उपयोग जगह-जगह करना जरूरी होगा। उससे बचने के लिए नीति-कल्पना का आसरा लेना है। प्राचीन जातिधर्म में जो व्यवहार निहित नहीं था, वह कानूनी होने पर भी छोड़ ही दिया जाता था। उसी पद्धति से वर्तमान व्यवसाय-धर्म की कल्पना भी यदि रूढ़ की जा सके, उसके प्रति निष्ठा पैदा हो सके, तो विभिन्न व्यवसायों में इष्टानिष्ट आचरण की मर्यादा आँकने में सहायता होगी। यूरोपीय संस्कृति में इस कल्पना का थोड़ा बहुत विकास हुआ दीखता है।

इससे अधिक महत्त्व की बात यह है कि व्यक्तिगत संग्रह में सीमितता और संपत्ति व सत्ता के संयत उपयोग का महत्त्व समाज को मान्य करना चाहिए और इसके विपरीत आचरण को निंदनीय मानना चाहिए। हमारे यहाँ के सभी व्यवहारों में संयम और परिमितता का महत्त्व हर जगह वर्णन किया गया है, तो भी ब्राह्मण संस्कृति ने जो सिक्का जमा दिया है, उससे आर्थिक व्यवहार में इन गुणों का विचार हिंदू परम्परा में दीखता नहीं है। जैन-धर्म में श्रावकों (गृहस्थों) के दैनंदिन व्यवहार का नियंत्रण करने का विचार काफी बारीकी से किया हुआ दीखता है। जैनों में प्रमुख लोग व्यापार और महाजनी में पड़े हुए हैं। धनोपार्जन और धन-संग्रह के बारे में उन्होंने नियंत्रण के नियम चालू किये हैं। परिग्रह को सीमित रखना, उसका त्याग आदि बातों को अन्य व्रतों के समान ही महत्त्व दिया है और अभी तक इन व्रतों का निष्ठापूर्वक पालन करने के कई उदाहरण मिलते हैं। पूर्ण रूप से स्वामित्व-विसर्जन और सर्वस्वदान आदि अपवादरूप है। लेकिन उत्पादन के साधनों का और उससे पैदा होने वाली सत्ता और संपत्ति का उपयोग संयम से करने की कल्पना का महत्त्व यदि समाज में माना जाने लगे, तो कई आर्थिक झगड़ों का उन्मूलन हो जाय। आज ऐसा कहीं नहीं दीखता कि इस दृष्टि से विचार हो रहा हो। आज कोई ऐसा प्रतिपादन करता हुआ भी नहीं दीखता है कि रोजमर्रा के व्यवहार पर नीति-कल्पना का प्रभाव पड़ सकता है।

भूदान-ग्रामदान

> आर्थिक क्षेत्र में अहिंसक मार्ग से परिवर्तन लाने और अर्थनीति को नई बुनियाद पर खड़ी करने का एक ही प्रयत्न हो रहा है और वह है विनोबाजी का भूदान-ग्रामदान आंदोलन। यह सही है कि यह नया है। इसके आरंभ की अपनी विशेषता है। इसका काम अभी ठोस नहीं हुआ है, तो भी उसका मार्ग इतना क्रान्तिकारी है कि इस रास्ते से थोड़ी भी सफलता मिलना संभव है, तो हर तरह से उसका समर्थन करना जरूरी है।

विश्वशांति की तरह ही योग्य उत्पादन-व्यवस्था का निर्माण भी आज बहुत महत्त्व रखता है।

आधुनिक उत्पादन-व्यवस्था यदि व्यक्तिगत अधिकार में रही, तो सत्ता केन्द्रित होगी, समता दूर हो जायगी, और सामाजिक स्वास्थ्य बिगड़ेगा। इसके विपरीत ये साधन यदि सरकार, शासन-संस्था के हाथ में रहे तो फौजी शासन कायम होने की संभावना पैदा होगी। तब इस उलझन से छुटकारा पाने का यही एक उपाय हो सकता है कि उत्पादन के साधन कुछ हद तक खासगी व्यक्तियों के हाथों में रहें, एक खासा हिस्सा छोटे-मोटे सहकारी समूहों के हाथ में रहे, विकेंद्रित रहे, और अधिकांश स्वशासित रहे इस प्रकार की अर्थ-व्यवस्था पैदा करनी होगी और यह तब टिक सकेगा, जब कि यह काम शासन की ओर से न होकर जनता के स्व-निर्णय और स्व-संकल्प से हो।

व्यापक अर्थों में भूदान और ग्रामदान में जो कल्पना और भावना है, वह यही है, ऐसा कहा जा सकता है।

भूदान-ग्रामदान से कुछ ठोस काम होने के लिए सामने की परिस्थिति अनुकूल हो, तो भी इसमें समय अधिक लगेगा। लेकिन कम-से-कम यह आंदोलन सफलता के मार्ग पर है या नहीं, इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर देने में भी दो अड़चनें हैं। एक तो यह कि आज आंदोलन केवल ग्राम अथवा कृषि की अर्थ-व्यवस्था तक ही सीमित है। आज के युग में प्रमुख आर्थिक सत्ता और केंद्रीकरण शहरी इलाकों और उद्योग-व्यापारों में ही है। इस महत्त्व-पूर्ण हिस्से के सम्बन्ध में इस आंदोलन में कोई विचार नहीं किया गया है। उत्पादन के साधनों की मालिकी को हटाने में ग्रामदान का कार्यक्रम अपर्याप्त है। जिस प्रकार ग्रामदान में यह कल्पना की जाती है कि गाँव के सारे उत्पादन-साधन तत्त्वतः ग्राम-सत्ता के अधीन होते हैं और समय-समय पर उनके विनियोग करने का अधिकार ग्रामसत्ता के हाथों में रहेगा, उसी प्रकार शहरी उद्योग और व्यापार के सम्बन्ध में भी कुछ स्पष्ट कल्पना होनी चाहिए। यह कोई आसान नहीं है। इससे भी कठिन यह है कि आज जिस वर्ग के हाथों में यह संपत्ति है, वह धीरे-धीरे अपनी मालिकी छोड़ने को तैयार हो। लेकिन यदि इसका कोई रास्ता शीघ्र न निकला, तो भूदान-आंदोलन के पिछड़ जाने का बहुत बड़ा खतरा है। क्योंकि ऐसा न हुआ, तो भूदान माँगने वालों पर यह जबरदस्त आरोप आ सकता है कि ये गरीबों के लिए यमराज के समान हैं और असल सत्ताधारियों और 'स्वजातीय' शहरी लोगों से कुछ कहते नहीं हैं। दान-प्रक्रिया से परिवर्तन हो सकता है, यह दिखाना है, तो दरअसल शहरी अर्थ-व्यवस्था में किस प्रकार यह होगा, यह स्पष्ट करना होगा।

दूसरी अड़चन यह है कि भूदान और ग्रामदान आंदोलन में लगे हुए प्रमुख कार्य-कर्ताओं में इस मनोवृत्ति की कमी दीखती है कि कुछ ठोस और स्थायी काम हो और उसके लिए संगठित व व्यवस्थित प्रयोग किया जाय। उनमें बहुत तो ऐसे हैं, जो यह मानते हैं कि दान-संकल्प हुआ तो काम समाप्त हो गया। उनमें अधिक-तर संगठित कार्यपद्धति का विरोध करते हैं। पर यह साफ है कि पेचीदा समाज-व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए कइयों के सतत और संगठित परिश्रम की आवश्य-कता है। जिसपर जनता को समझा-बुझा कर उनकी स्वेच्छा से कुछ करा लेने में तो परिश्रम, सातत्य और समय बहुत ही अधिक चाहिए। आज तक कहीं यह अनुभव में नहीं आया कि मूल कल्पना छोड़ कर केवल ऊपरी बातों का प्रचार मात्र करने से परिवर्तन अपने आप हो गया हो। तो जब तक भूदान-ग्रामदान आंदोलन के पीछे भी कई कुशल कार्यकर्ताओं का संगठन खड़ा नहीं होगा, तब तक उससे कोई ठोस काम होगा, इसकी संभावना कम ही है।

●

अखंड पदयात्रा : बिहार

स्वर्गीय लक्ष्मी बाबू के स्मारक के रूप में चल रही बिहार प्रादेशिक अखंड पदयात्रा आजकल मुंगेर जिले में भ्रमण कर रही है। जून के पहले और दूसरे सप्ताह में इस टोली ने भागलपुर जिले में यात्रा की। मुंगेर जिले में प्रवेश करने पर बिहार के सुप्रसिद्ध ग्रामदानी गाँव बेरोई में २१ जून का पड़ाव रहा। ग्रामदानी भाइयों ने बड़े उत्साह के साथ टोली का स्वागत किया।

●

भूमि-वितरण के लिए प्रयास

१९ जून को रायपुर जिला सर्वोदय-मंडल की एक बैठक में जिले के लोक-सेवकों ने मिल कर वर्तमान और भविष्य के कार्यक्रम की स्थिति पर विचार विनि-मय किया। श्री रामानंदजी ने जिले में अवशिष्ट भूदान की जमीन का शीघ्र वितरण कर देने का प्रयास करने के लिए सभी लोक-सेवकों से अनुरोध किया।

●

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि *

हमारी खोज

शहर में लोगों के पास हम जाते हैं, जमीन मांगते हैं और बेजमीनों को, गरीबों को जमीन देते हैं। यह छोटा काम है। हमारा बड़ा काम तो यह है की हम भक्तों की तलाश में घूम रहे हैं। गांव में जो भक्त हैं, उनसे मीलना चाहते हैं। घंटा, डेढ़ घंटा गांव में घूम लीया तो हमने देखा, एक घर में भगवान की मूरती नहीं थी। लेकीन उस घरवाले भाईने कहा, "भगवान की मूरती नहीं है, फीर भी हम भगवान को याद करते हैं।" दूसरे घर में कृष्ण भगवान की मूरती थी। लेकीन घर में मूरती है, इस पर से कोई भक्त नहीं बनता है। भक्त तो सब पर प्यार करने वाला सबको मदद करने वाला होता है। वह सबकी सेवा करता है, मेहनत करता है। इसे हमने 'शांती-सैनीक' नाम दीया है। हम चाहते हैं की गांव-गांव में ऐसे शांती-सैनीक हों।

हमने कहा है की मौके पर शांती-सैनीक को मर-मीटने की तैयारी रखनी होगी। कहीं दंगा-फसाद हुआ, तो शांती-सैनीक वहां शांती करने के काम में अपनी जान जोखम में डाल देगा। वह मौके पर अपनी जान भी देगा, कभी गुस्सा नहीं करेगा। हमें इस प्रकार के शांती-सैनीक चाहीए। हम ऐसे भक्तों की खोज में घूम रहे हैं।

—वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी, ु = ू, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

विचारणीय मुद्दे

इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित एक विचार-प्रेरक लेख में डा० धनंजयराव गाडगिल ने कई मुद्दे पेश किये हैं, जिन पर गम्भीरता से सोचने की जरूरत है। मानव-समाज की आज की परिस्थिति में अहिंसा का आसरा लिये बिना दूसरा चारा नहीं है, *यह बात तो दुनिया के अधिकतर* तत्त्व-चिंतक मानने लगे हैं। पर जैसा श्री गाडगिल ने कहा है, केवल इसकी घोषणा करने मात्र से कुछ नहीं होगा। अगर परस्पर व्यवहार में अहिंसा आज का युगधर्म बना है, तो फिर हमें समझ-बूझ-पूर्वक जीवन के हर क्षेत्र में अहिंसा के प्रयोग हाथ में लेने होंगे। आजादी के बाद गत १०-१२ वर्षों में हम इस दिशा में कुछ नहीं कर पाये हैं, इसका जिक्र करते हुए डा० गाडगिल ने कहा है कि अगर अहिंसा में हमारा विश्वास होता, तो सहज ही आन्तरिक और विदेशी मामलों में हिंसा का उपयोग धीरे धीरे *कम हो जाता।* सार्वजनिक प्रदर्शन विरोध आदि हर मुल्क में होते रहते हैं। पिछले दिनों जापान में वहां की विरोधी पार्टियों ने और जनता ने बहुत जबरदस्त प्रदर्शन वहां की सरकार के खिलाफ किया। लाख-लाख आदमियों ने जापान की विधान-सभा के चारों ओर घेरा डाल दिया और उत्तेजनापूर्ण प्रदर्शन किये। पर यह सचमुच हमारे लिए आश्चर्य की की बात है कि ४-० दिन तक लगातार *चलने वाले इस प्रदर्शन के दौरान में* एक भी अवसर पर पुलिस ने गोली नहीं चलायी। अश्रु-गैस का प्रयोग भी ८ वर्ष में पहली बार किया गया। अगर हम भी सचमुच "प्राचीन परम्परा का और महात्मा गांधी का नाम लेकर सन्तोष करने" के बजाय अहिंसा में विश्वास रखते होते, तो क्या पिछले १० १२ वर्षों में *आन्तरिक* मामलों में दंड का इस तरह अमर्यादित उपयोग हमारे यहां होता रहता? सर्व सेवा संघ ने पिछले साल बहुत नम्रतापूर्वक सब राजनैतिक पार्टियों के सामने यह सुझाव रखा था कि वे सार्वजनिक प्रदर्शन और जन-आन्दोलनों इत्यादि के मामलों में एक सर्वमान्य आचार-परम्परा स्थिर करें और साथ ही सरकार से भी निवेदन किया था कि उसकी ओर से प्रदर्शनकारियों पर गोली नहीं चलेगी। देश के कई लोगों ने और तबकों ने इस सुझाव का समर्थन भी किया, लेकिन जैसा श्री गाडगिल ने कहा है, यह सब तभी सम्भव हो सकता है—जब देश के नेता 'खास कर राजनैतिक नेता, यह महसूस करें कि इस सम्बन्ध में कुछ प्रयत्न करना जरूरी है।" "समाज के अन्दरूनी मामलों में दंड का उपयोग *क्रमशः कैसे कम किया जा सकता है, यह* प्रयोग द्वारा अनुभव प्राप्त करते हुए *निश्चित करना होगा।"*

अर्थोत्पादन व्यवस्था, अर्थात् मनुष्य भरण-पोषण के लिए जो विविध काम करता है, इस विषय में भी श्री गाडगिल ने काफी बारीकी से विवेचन किया है। आधुनिक पूंजीवाद और कम्युनिज्म, दोनों ने प्रलोभन (इनसेन्टिव) को आदमी की काम करने की प्रेरणा का स्रोत माना है। इसलिए इन दोनों व्यवस्थाओं में दोष है। अगर अर्थोत्पादन-व्यवस्था के दोष टालने हैं, तो यह जरूरी है कि व्यक्तिगत संग्रह में सीमितता और सम्पत्ति व सत्ता के संयत उपयोग का महत्त्व समाज को मान्य करना होगा, और इसके विपरीत आचरण को 'निन्दनीय" मानना होगा।

आर्थिक क्षेत्र में अहिंसक मार्ग से *परिवर्तन लाने और अर्थनीति को नई* बुनियाद पर खड़ी करने का जो प्रयत्न भूदान-ग्रामदान आन्दोलन द्वारा हुआ है, उसकी विशेषता स्वीकार करते हुए डा० गाडगिल ने दो बातों की ओर खास तौर से ध्यान आकर्षित किया है। पहली बात तो यह कि शहरी जीवन और उद्योग-व्यापार के बारे में भी सर्वोदय-विचार की दृष्टि से कुछ स्पष्ट कल्पना पेश की जानी चाहिए। यह सही है कि जिस तरह जमीन के मामले में ग्रामदान के कारण व्यक्तिगत मालकियत के विसर्जन और ग्रामसत्ता के स्वीकार का स्पष्ट चित्र हमारे सामने आया है, *उस तरह उद्योग-व्यापार के बारे में हम* नहीं कर सके हैं। पर यह तो मानना होगा कि इस क्षेत्र में भी 'ट्रस्टीशिप' का विचार एक ध्येय के रूप में हमारे सामने गांधीजी के समय से ही रहा है। पिछले दो-तीन बरसों में ट्रस्टीशिप की कल्पना को ज्यादा विशद और स्पष्ट करने के लिए सर्व सेवा संघ ने दो परिसंवाद भी आयोजित किये थे, जिनमें देश के कुछ प्रमुख अर्थशास्त्री तथा उद्योगपति भी शामिल थे। फिर भी हम डा० गाडगिल के इस कथन का महत्त्व स्वीकार करते हैं कि इस विषय पर अधिक सातत्य से प्रयोगात्मक काम करने की आवश्यकता है।

भूदान-आन्दोलन की जिस दूसरी कमी की ओर श्री गाडगिल महोदय ने इशारा किया है, उसके बारे में इतना ही कहना है कि भूदान-आन्दोलन के शुरू के दौर (Phase) में व्यापक विचार-प्रचार शायद अनिवार्य था। अब ग्रामदान-क्षेत्रों में ग्रामस्वराज्य के निर्माण के ठोस और व्यवस्थित प्रयोग करने की आवश्यकता सर्वोदय-कार्यकर्ताओं तथा सर्व सेवा संघ ने भी महसूस की है। अभी पिछले मार्च में सेवाग्राम में जो अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन हुआ था, उस अवसर पर स्वीकृत कार्यक्रम के प्रस्ताव में संघ ने इस मुद्दे को कार्यक्रम में महत्त्व का स्थान दिया है। हम आशा करते हैं कि श्री धनंजयराव जैसे 'तटस्थ' और विद्वान चिन्तक ने जिन बातों की ओर ध्यान आकर्षित किया है, उन पर सर्वोदय-कार्यकर्ता तथा देश के अन्य लोग गंभीरता से विचार करेंगे।

—सिद्धराज ढड्ढा

●

सर्वोदय-दृष्टि से उद्योग-रचना

'भूदान-यज्ञ' के पिछले अंक में 'उद्योग-दान' के संबंध में एक लेख प्रकाशित *हुआ था।* जैसे *जमीन के बारे में हम कहते* हैं कि उस पर व्यक्तिगत मालकियत नहीं होनी चाहिए, उसका उपयोग सबके लिए समान रूप से खुला होना चाहिए, उसी तरह उद्योगों के जरिये होने वाला उत्पादन भी समाजहित के लिए ही होनी चाहिए और उत्पादन के इन साधनों पर भी व्यक्तिगत मालकियत नहीं होनी चाहिए, यह विचार न्यायसंगत ही है। गांधीजी ने इस को 'ट्रस्टीशिप' का नाम दिया था।

सवाल यह उठता है कि इस तरह 'ट्रस्ट' के तौर पर चलने वाले उद्योगों आदि का स्वरूप, उनकी रचना, संगठन और व्यवस्था किस तरह की हो, उनकी मालकियत आस-पास के या सम्बन्धित समाज' की या राष्ट्र की हो, *यह बात व्यवहार* और कानून में कैसे व्यक्त हो? इस बारे में व्यावहारिक और शास्त्रीय दोनों दृष्टियों से सोचने और कोई 'ढांचा' खोज निकालने की जरूरत है। यह सन्तोष की बात है कि सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का ध्यान इस ओर गया है और वे इस तरह की खोज में लगे हैं। श्री प्रबोध चोकसी की 'उद्योगदान' की कल्पना पिछले अंक में हम दे चुके हैं। उस लेख में श्री प्रबोध भाई ने पूरी *कल्पना के एक अंग के* तौर पर एक सीमित उद्देश्य के लिए 'श्रमिक ट्रस्टों' की कल्पना रखी है। इसी प्रकार राजस्थान के श्री छीतरमल गोयल ने 'राजस्थान खादी-पत्रिका' के मई के अंक में प्रकाशित एक लेख में खादी-संस्थाओं के संदर्भ में 'ट्रस्ट कोआपरेटिव' को *अपनी कल्पना प्रस्तुत की है।* वह भी ध्यान देने लायक है। वह इसी अंक में हम दे रहे हैं।

'भूदान-यज्ञ' के पाठकों में से जो लोग इन बातों के बारे में अनुभव रखते हैं तथा अर्थशास्त्र के अभ्यासी हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे सर्वोदय-विचार के अनुसार उद्योगों के व्यावहारिक संगठन और स्वरूप के बारे में गहराई से सोच कर अपने सुझाव रखें और 'श्रमिक ट्रस्ट' *या 'ट्रस्ट कोआपरेटिव' की इन कल्पनाओं* पर भी अपनी राय जाहिर करें।

—सिद्धराज ढड्ढा

●

"छोटी-छोटी बातें"

[हम बड़ी-बड़ी बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि "छोटी" बातों की तरफ हमारा ध्यान बिलकुल नहीं जाता। उनकी ओर ध्यान देना हमें हमारे बड़प्पन से ध्यान बँटाने जैसा मालूम होता है। पर हम भूल जाते हैं कि "छोटी छोटी" बातों से ही हमारी आदतें और जीवन के संस्कार बनते हैं। "छोटी" बात का एक छोटा-सा उदाहरण लीजियेः]

कोई अगर हमसे यह कहे कि हम झूठे हैं या कि हम गैर-जिम्मेदार हैं, तो हमें बहुत बुरा लगेगा और हम कहने वाले से शायद नाराज भी हो जायँगे। पर यह आम तौर पर देखा जाता है कि हम हमारे वचन या शब्द को निभाने का बहुत कम ध्यान रखते हैं, खास करके "छोटी-छोटी बातों" में।

अक्सर ऐसा होता है कि हम किसी से मिलने का समय तय करते हैं, पर फिर वक्त पर पहुँचते नहीं। जब दुबारा कभी संयोग से मिल गये और याद आ गयी तो इतना कह कर संतोष मान लेते हैं कि "अमुक दिन मैंने आने का वादा किया था, लेकिन अमुक-अमुक कारण हो गया, इसलिए मैं नहीं आ सका।" इस प्रकार की 'वादा-खिलाफी' इतनी सहज हो गयी है कि अक्सर सामने वाला भी उतने ही सहज रूप से हमारी सफाई को सुन और स्वीकार कर लेता है। पर हमारी इस गैर-जिम्मेदारी की आदत के कारण सामने वाले को हमने कितनी परेशानी में डाला होगा और उसका कितना समय खराब किया होगा, इसका हमें बिलकुल भान नहीं होता। हम अपने आपको संतोष दे लेते हैं कि "इस वादे को निभाने की हमारी मंशा जरूर थी, हम जाने वाले थे, लेकिन अमुक कारण हो गया, इसलिए हम नहीं जा सके।" हम नहीं जा सके, इसके लिए हमारे पास कारण तो जरूर होगा ही—हालाँकि वह भी बहुत करके हमें बाद में ही सूझता है—पर जिससे हमने समय तय किया था, उसको भी हमारे निश्चित समय पर न पहुँचने की सूचना ध्यान रख कर करनी ही चाहिए, यह हमें बिलकुल जरूरी नहीं मालूम होता। नतीजा यह होता है कि सामने वाले का सारा समय और चिंतन हमारी प्रतीक्षा में बीतता है और उसके अपने काम का हर्ज होता है। हम यह महसूस ही नहीं करते कि ऐसा करके हम झूठे और गैर जिम्मेदार साबित होते हैं, क्योंकि हम तो समझते हैं कि झूठ और गैर-जिम्मेदारी की बात तो बड़े-बड़े मामलों के संदर्भ में ही कही जा सकती है, ऐसी 'छोटी बातों' की क्या चिंता!

—सि०

सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल

सिद्धराज ढड्ढा

केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों की ओर से सरकार को यह सूचना दी गयी है कि वेतन, महँगाई भत्ते आदि के सम्बन्ध में उनकी जो माँगे हैं, वे अगर मंजूर नहीं की गयीं, तो सरकार के सारे कर्मचारी ता० ११ जुलाई की रात से अनिश्चित काल के लिए काम बंद कर देंगे। जिन कर्मचारियों की ओर से यह सूचना दी गयी है, उनमें रेल, डाक-तार, सामान्य प्रशासन और सुरक्षा विभाग के कर्मचारी शामिल हैं। सब मिल कर देश भर में करीब २२ लाख कर्मचारी हैं, जिनकी ओर से हड़ताल करने की धमकी दी गयी है। सरकार और कर्मचारियों के प्रतिनिधि दोनों में कुछ बातचीत जारी है और सम्भव है कि हड़ताल टल जाय, पर अगर वह न टली तो स्पष्ट है कि एक बार राष्ट्र का सारा कारोबार इस हड़ताल के कारण अस्त-व्यस्त हो जा सकता है और जनता को काफी परेशानी भुगतनी पड़ सकती है। इसमें कोई शक नहीं कि इस हड़ताल करने के पक्ष में कर्मचारियों की ओर से, और उनकी माँगों को यथावत मंजूर न कर सकने के लिए सरकार की ओर से अपनी-अपनी सफाई पेश की जायगी, और शायद दोनों की दलीलों में बहुत कुछ तथ्य भी रहेगा, पर इस सारे आरोप प्रत्यारोप में क्या सही है, क्या गलत, इस बात की छान-बीन करने की न जनता को जरूरत है, न उसके लिए वह सम्भव है, न उससे कोई लाभ होने वाला है। जहाँ तक आम जनता का सवाल है, उसकी तो दोनों ओर की लड़ाई में हर तरह से खराबी है।

हो सकता है कि हड़ताल के जो बादल आज मँडरा रहे हैं, वे कल बिखर जायँ, पर ऐसे प्रसंग बार-बार उठते रहते हैं और उनसे जनता के रोजमर्रा के जीवन और शान्ति में खलल पड़ता रहता है, इसलिए इस प्रश्न पर कुछ विचार कर लेना अप्रासंगिक नहीं होगा।

कहा जाता है कि जब तक मालिक-मजदूर का रिश्ता समाज में कायम है और मालिक को मजदूर के शोषण की छूट है, तब तक मजदूर के पास संगठन और हड़ताल का ही एक हथियार है, जिसके जरिए वह अपना बचाव कर सकता है। पिछले १५० वर्षों से, जब से कल-कारखानों का युग शुरू हुआ और पूँजीवाद के मौजूदा रूप का जन्म हुआ, तब से मजदूरों के अधिकारों की कल्पना शुरू हुई और Collective bargaining—यानी समूह-शक्ति द्वारा अपनी बात मनवाने के लिए 'मालिकों' से सौदा करने की बात धीरे-धीरे मजदूर के बुनियादी अधिकार के रूप में यह चीज समाज द्वारा मान्य हो गयी। मजदूरों के पास समूह-शक्ति का प्रभाव बतलाने का शान्तिमय तरीका एक ही था—काम बंद कर देना। जो आदमी खुद अपने और अपने कुटुम्ब के लिए काम करता है, उसके लिए काम बंद करने या हड़ताल करने का सवाल नहीं उठता। जैसे कुटुम्ब के लिए वैसे ही समाज के लिए भी काम करने की वृत्ति लोगों में पैदा की जा सकती है और तब काम बंद करने का सवाल नहीं उठेगा, पर जब तक 'मजदूर' किसी दूसरे व्यक्ति के लिए यानी 'मालिक' के लिए काम करता है, तब तक उस दूसरे के मुकाबले में अपनी शक्ति बतलाने के लिए काम बंद करने जैसा दूसरा कारगर शान्तिमय उपाय उसके पास नहीं है। इसीलिए हड़ताल करने के अधिकार को समाज की मान्यता मिली है।

पर हमारे खयाल से बदली हुई परिस्थिति को देखते हुए शायद वह समय आ गया है, जब हड़ताल जैसी चीज की इष्टानिष्टता पर व्यापक समाज-हित की दृष्टि से पूर्ण विचार किया जाय। मशीन युग की शुरुआत में जब पूँजीपतियों द्वारा मजदूर का शोषण चरम सीमा पर था और मजदूर की रक्षा के लिए शासन द्वारा हस्तक्षेप का विचार इतना मान्य नहीं हुआ था, ऐसी परिस्थिति में मजदूर के पास हड़ताल के सिवा अपने बचाव का दूसरा कोई साधन नहीं। आज जब कि कारखानेदार द्वारा मनमाना मुनाफा करने के तत्त्व (लैसे-फेयर) की मान्यता कायम नहीं रही है और प्रबुद्ध जनमत सामाजिक अन्याय और शोषण के खिलाफ काफी हद तक संगठित हुआ है, जिसके असर के कारण शासन को जिम्मेदारी की कल्पना में भी परिवर्तन हुआ है, ऐसी स्थिति में हड़ताल ही मजदूर के लिए एकमात्र उपाय हो सो बात नहीं है। इसके अलावा, १५० वर्ष पहले की और आज की परिस्थिति में एक और दूसरा बड़ा अंतर यह हुआ है कि जब कि उस जमाने में जनता का दैनन्दिन जीवन बहुत हद तक उसके अपने हाथ में था और यदा-कदा या कहीं-कहीं कारखानों की हड़तालों से उसके रोजमर्रा के जीवन पर कोई असर नहीं पड़ता था, आज जनता का सारा जीवन केन्द्रित उद्योगों और यातायात आदि पर ही निर्भर है। ऐसी स्थिति में हड़ताल के हथियार का उपयोग केवल संबंधित 'मालिक' पर ही असर डालता हो सो नहीं है, बल्कि वह समूचे जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर देता है। झगड़ा समाज के दो तबकों में होता है, जो संख्या की दृष्टि से समाज का नगण्य-सा हिस्सा होता है, पर उसका खमियाजा, उसका फल सारे समाज को भोगना पड़ता है। नतीजा यह होता है कि चंद संगठित मजदूर हमेशा समाज की गर्दन पर तलवार लटकाये रहते हैं और इस हथियार के आधार पर अपनी माँगें पूरी करवाते रहते हैं। हमने ऊपर कहा है कि जब तक समाज में मालिक-मजदूर का रिश्ता कायम है, तब तक मजदूर के इस अधिकार का कुछ औचित्य जरूर है। इसलिए इस परिस्थिति का असली इलाज तो यही है कि समाज-व्यवस्था में ऐसा बुनियादी परिवर्तन हो कि मालिक और मजदूर का सम्बन्ध खत्म होकर एक ऐसे स्वाश्रयी समाज का निर्माण हो, जिससे लोग सामान्य तौर पर अपने जीवन के खुद मालिक हों। पर ऐसा नहीं होता है, तब तक भी ऊपर जिन बदली हुई परिस्थितियों का जिक्र किया गया है, उन्हें ध्यान में रखते हुए हड़तालों के औचित्य पर पुनर्विचार करना जरूरी है। सरकार द्वारा चलाये जानेवाले उद्योगों में या सेवाकार्यों—सर्विसेज—में काम कर रहे लोगों के संबंध में तो यह प्रश्न और भी विचारणीय बन जाता है। सरकार में और व्यक्तिगत मालिक में फर्क तो है ही, खास कर जब सरकार लोगों के वोट पर आधारित हो और जनतंत्रीय व्यवस्था के अनुसार चलती हो। जनतंत्रीय व्यवस्था में खुद में दोष हो, वह प्रश्न स्वतंत्र रूप से विचारणीय है।

तो एक तरफ जब कि जीवन के दूसरे क्षेत्रों में मनुष्य उत्तरोत्तर परिष्कृत और विकसित साधन इस्तेमाल करने की ओर बढ़ रहा है, तब कोई वजह नहीं है कि मजदूरों के हितों की सुरक्षा के लिए हम हड़ताल जैसे "क्रूड"—अविकसित और भोंडे—हथियार को काम में लाते रहें। आज की परिस्थिति में हड़ताल एक समाज-विरोधी चीज हो गयी है। हम जानते हैं कि जब हड़तालें होती हैं, तो मामला सिर्फ दोनों संबंधित पक्षों के बीच तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सारे समाज पर उसकी प्रतिक्रिया होती है, शान्ति-भंग होने का भी खतरा पैदा होता है।

हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि मजदूर या नौकर समाज का अपेक्षाकृत कमजोर तबका होने के कारण हमारी सहानुभूति उनके साथ है। पर हमारा कहना इतना ही है कि उनके हित की रक्षा के लिए भी आज के युग की माँग और परिस्थिति के अनुकूल साधन हमें सोच कर निकालने और तैयार करने चाहिए। मनुष्य ने बहुत दिनों तक द्वेष, हिंसा, मत्सर, जोर-जबरदस्ती आदि पर भरोसा रखा है और उन्हीं को अपना त्राता माना है। पर आज सभी मानने लगे हैं कि अब विज्ञान के विकास के कारण वह समय आ गया है, जब अगर हम इन्हीं शक्तियों का भरोसा रखते रहे, तो समाज का सर्वनाश हो जायगा। आज के युग का तकाजा है कि मनुष्य-मनुष्य के बीच के आपसी संबंधों में और समाज की दूसरी समस्याओं के हल के लिए अहिंसा, प्रेम, परस्पर विश्वास, करुणा, सहानुभूति आदि शक्तियों का आविष्कार और प्रयोग किया जाय। ●

ट्रस्ट कोओपरेटिव की कल्पना

छीतरमल गोयल

परिस्थितियाँ इस बात का तकाजा कर रही हैं कि देश में अविलम्ब विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था का समुचित तंत्र खड़ा किया जाय। हम सभी विकेन्द्रीकरण की इकाई गाँव या ग्राम-समूह को मानते हैं, पर उसकी सफलता के लिए आवश्यक ग्राम-संकल्प और ग्रामदान किसी के आदेश पर नहीं हो सकते और उनके बिना किसी भी गाँव की इकाई का कार्य चलाने में काफी बाधाएँ आना स्वाभाविक है। इसी प्रकार कामगारों की सहकारी समितियों के ढाँचे में भी आज तत्काल लोगों का विश्वास नहीं जमेगा। कामगारों की शैक्षणिक, आर्थिक या सामाजिक स्थिति एवं उनकी मनोभूमिका में भी ऐसा परिवर्तन अभी तक नहीं आया है या कि लाया जा सका है कि तुरन्त वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

एक विकल्प यह हो सकता है कि छोटे-छोटे क्षेत्रों में—गाँवों या गाँव-समूहों में—'ट्रस्ट कोओपरेटिव' खड़ी की जायें। 'ट्रस्ट कोओपरेटिव' से मतलब एक ऐसी संस्था से है, जो वर्तमान सहकारी संगठनों के कानूनी स्वरूप से भिन्न होते हुए भी उसके वास्तविक सहकारिता के तत्त्वों का गांधी-विचार के आधार पर समावेश करती हो। बड़े-बड़े पूँजीपतियों की धान-दौलत को लालच भरी निगाह से देखने वाले छोटे-छोटे लोगों को मिल-जुल कर उनकी नकल कर सकने की शक्ति पैदा करने का सपना दिखा कर व्यक्तिगत पूँजी और मुनाफे के लालच के आधार पर आज के अधिकांश सहकारी संगठन बनाये जाते हैं। वे वास्तव में पूँजीवादी संगठन के ही दूसरे रूप होते हैं। गांधी विचार के आधार पर बनने वाले ट्रस्ट कोओपरेटिव इनसे भिन्न होंगे। ग्रामसमाज की भलाई चाहने वाले एक क्षेत्र के वे सब कामगार किसान ग्रामवासी या नागरिक उसके सदस्य बनने के लिए आमंत्रित किये जायें जो मिल-जुल कर पूँजीवादी उद्योगों के आक्रमण से गाँवों की रक्षा करना चाहते हैं और अपने आपको न केवल ट्रस्ट कोओपरेटिव के अन्य सभी सदस्यों का, बल्कि सम्पूर्ण ग्रामसमाज का ट्रस्टी मानते हैं और उसे निभाने के लिए कुछ सक्रिय योग देने के लिए 'वचन-बद्ध' होते हैं। इस संगठन की सदस्यता व्यक्ति के बजाय परिवार की होनी चाहिए। जो परिवार ट्रस्ट कोओपरेटिव के क्षेत्र में निश्चित चीजों को उसके मार्फत अपनी आवश्यकता के अमुक अंश या पूर्णतः खरीदने की या अपना उत्पादन उसके मार्फत बेचने की प्रतिज्ञा करें, उन्हें क्रय-संकल्प की ओर अग्रसर मान कर ट्रस्ट कोओपरेटिव का सदस्य बनाया जाय।

वास्तविक सहकारिता के अभाव में केवल धारा-पूर्ति से या अमुक प्रकार की संख्या के साथ चलने की वृत्ति लागू करके खड़े किये जाने वाले सहकारी संगठन अंततोगत्वा विकृत, परावलम्बी या क्षीण हुए बिना नहीं रह सकते। ट्रस्ट कोओपरेटिव के सदस्यों में जो कुछ समय उसके काम में योग देने की तैयारी रखते हों, उन्हें मंडल में लिया जाना चाहिए। स्थायित्व की दृष्टि से संचालक-मंडल की सदस्यता में परिवर्तन बारी-बारी से किया जाना चाहिए। इस प्रकार के संगठन से अमुक जाति या वर्ग के लोगों द्वारा स्वार्थ-साधन का सवाल उठने की संभावना कम-से-कम रह जाती है और सभी के कम या ज्यादा सहयोग का मार्ग खुला रहता है। ट्रस्ट कोओपरेटिव पूँजी व वर्गप्रधान नहीं, बल्कि सहकार एवं सरलतापधान बन जाती है। क्षेत्र की इस प्रकार की संस्था को उसके सभी मसलों पर विचार करके सर्वोदय-संयोजन का स्वतः हल प्राप्त हो जाता है।

इस दृष्टि से आज देहातों में काम कर रही खादी-संस्थाएँ अपने कार्य-क्षेत्र को छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित करके वहाँ की अस्थाई समितियाँ बना कर उनको अपने-अपने क्षेत्र में ट्रस्ट कोओपरेटिव बनाने का अभियान चलाने की जिम्मेदारी सौंप सकती हैं। इस नई व्यवस्था को सुचारु रूप से सम्भालने के लिए उनकी स्वाधीन अर्थ-व्यवस्था के साथ हिसाब-नवीसों, टकनिकी विशेषज्ञों, विचार-प्रचारकों तथा संयोजकों की एक-एक टुकड़ी रखनी होगी। जिस परिमाण में यह सब वे कर सकें, उतने ही क्षेत्र-विकास की जिम्मेदारी सम्भालना उनके लिए उचित होगा। अंततोगत्वा ये संस्थाएँ इन ट्रस्ट कोओपरेटिव के जिला या प्रांतीय स्तर के रूप में परिवर्तित होकर उनका नियमन करेंगी और यही उनकी सार्थकता होगी।

सौराष्ट्र का 'कर्ता-सम्मेलन'

बारह वर्ष पहले जब सौराष्ट्र रचनात्मक समिति की स्थापना हुई थी, तभी से सौराष्ट्र के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन हर वर्ष गर्मी के महीने में होता है। मूल कल्पना यह थी कि इस प्रदेश के सारे कार्यकर्ता गर्मी के दिनों में किसी एक स्थान पर इकट्ठे हों, कम-से-कम चार-पाँच दिन साथ रहें, निश्चिन्तता के साथ मिलें-जुलें, अपने काम और जीवन के विषय में चर्चा करें, अनुभवों का आदान-प्रदान करें और इस सबके फल-स्वरूप जो कुछ सोचें, वह फिर रचनात्मक समिति के सामने पेश करें।

पर वह कल्पना कल्पना ही रही! अब हर साल यह सम्मेलन कामकाजी सम्मेलन ही होता है। इस बार का सम्मेलन १०-११-१२ जून को चम्पा गाँव में हुआ। सम्मेलन में सौराष्ट्र के भिन्न-भिन्न भागों से करीब ४०० भाई-बहन इकट्ठे हुए। श्री ढेबरभाई सामान्य तौर पर सम्मेलन में आते ही हैं, इस बार श्री बलवन्तराय मेहता भी आये थे।

सम्मेलन की चर्चाओं से यह स्पष्ट लगता था कि हमारे कामों का आकार बढ़ता जाता हो, लेकिन हमारे काम कार्यकर्ताओं के दायरे के बाहर निकल कर जन-समाज के कार्यक्रम अभी नहीं बने हैं। प्रजा ने उनको अभी अपने जीवन में ग्रहण नहीं किया है। कार्यकर्ताओं को इसका तीव्र भान है और इसकी काफी चिंता भी है। जो काम चल रहा है वह प्रजा के लिए उपयोगी है, उससे लोगों को लाभ होता है, यह तो ठीक है। पर इतनी-सी बात से समाज का पुराना चौखटा बदलता नहीं है। दुनिया की सारी शक्तियाँ आज हमारे ध्येय के मार्ग में अवरोध रूप मालूम होती हैं। उन्हें कैसे दूर किया जाय और प्रजा रचनात्मक काम के द्वारा समाज की नई रचना करने के लिए किस प्रकार प्रेरित हो, यह चिंता सबके दिल में है। गांधीजी ने तत्त्वज्ञान दिया, विनोबाजी भूदान और ग्राम-स्वराज्य से लेकर विश्व-शान्ति तक के अनेक कार्यक्रमों के द्वारा उसको विकसित कर रहे हैं, यह सारा किस प्रकार अमल में आवे? चिन्तन के फलस्वरूप सब लोगों के मन में ये बातें अब स्पष्ट स्वरूप ले रही हैं कि खादी के काम को नई दिशा दिये बिना कोई चारा नहीं है। खादी, कृषि, गोसेवा, नई तालीम आदि सब कामों को एक-दूसरे का पूरक मान कर सर्वांगीण विकास की दृष्टि से ही उनकी योजना होनी चाहिए और लोग खुद इस सारे कार्यक्रम को उठा लें, यह होना चाहिए।

कार्यकर्ताओं ने अपने निज के जीवन के सम्बन्ध में भी आत्म निरीक्षण किया। सम्मेलन की कार्यवाही की तरह यहाँ की व्यवस्था भी काफी प्रेरणात्मक रही।

[मूल गुजराती, 'स्वराज धर्म' से]

'वातावरण तैयार है!'

संस्कृति और आध्यात्मिकता के जीवन का पवित्र संगम है—काशी।

काशी—विश्व प्रकाशी।

पर आदर्श और व्यवहार का समन्वय आज यहाँ नहीं सध पा रहा। जिस धरती पर ऋषियों, मुनियों, विद्वानों और तपस्वियों ने जीवन की तपस्या तथा साधना का रंग बिखेरा। उसी काशी की भूमि पर आज गरीबी आलस्य चरसी शराब, बेकारी इत्यादि न जाने कितने असांस्कृतिक तथा अशोभन दोष जहरीले फोड़ों की तरह कष्ट दे रहे हैं।

हम कुछ कार्यकर्ता एक दिन बैठे थे। योजना बन रही थी। निर्मला बहन भी थीं। सोचा जा रहा था कि किस तरह सारे शहर में काम किया जाय? श्री सिद्धराजजी ने कहा—एक ही काम है और वही सब कामों की कुंजी है। हम घर-घर जाय और सर्वोदय का यह मूल विचार लोगों को समझाय कि वे एक दूसरे के सुख-दुख में साझेदार बनें अपने पड़ोसी की चिन्ता करें। इसीमें से निकलेगा—स्वच्छ-काशी आंदोलन और इसीमें से निकलेगा—शराब बंदी आंदोलन या और कोई भी कार्यक्रम, जो लोग उठाना चाहेंगे।" बात सही थी और सबको जँची। श्री करणभाई उस दिन नहीं थे पर उनका भी आशीर्वाद इस काम के लिए मिला।

जुट पड़े हम लोग। सबेरे छह बजे निकलना और घर घर जाना। हम सेठ के घर गये, मजदूर के घर गये वकील के घर गये, डाक्टर के घर गये और रिक्शेवाले के घर गये। हिन्दू के घर गये, सिक्ख के घर गये और मुसलमान के घर भी गये।

"तुम लोग कौन हो?"

"हम सर्वोदय के कार्यकर्ता हैं!"

"कौनसा सर्वोदय? क्या वही, जो विनोबा ने घर घर फैलाया है?"

हम उत्तर देते हैं कि "हाँ वही! हम उन्हींके साथी हैं। वे हमारे नेता हैं।" बस, फिर क्या था? छिड़ जाती बाबुओं की कहानी। लोग बखान करते थकते नहीं। एक बुढ़िया ने तो कहा कि "कलियुग का अवतार है वह।"

एक दिन हमें मिला मिर्जा मनसूर। बड़ा चलता युवक था। बी॰ ए॰ पास किया था उसने। पूछ बैठा वह कि 'आप लोग शहर में क्या काम करेंगे?"

'काम तो हमें कुछ नहीं करना है।" मैंने उत्तर दिया पर बिचारा समझा नहीं, तो मैंने साफ किया कि 'काम तो आप लोगों को करना है हमारा काम केवल आपकी सेवा करना व सलाह देना मात्र है। बात उसको जँच गयी।

जनसंपर्क में जाते हैं तो बड़ा आनंद आता है। नये-नये महल्ले और नये-नये लोग। कहीं आलोचना, तो कहीं निंदा और गालियाँ। पर अधिकतर प्रेम स्वागत और सौहार्द ही मिलता है। लोग राजनीति से ऊब गये हैं। मौजूदा व्यवस्था से असंतुष्ट हैं। बेकारी बहुत है। आर्थिक तनाव सर्वत्र है। सरकार से इन समस्याओं के हल की आशा थी पर सबको निराशा ही मिली है। राजनैतिक पार्टियों के आपसी झगड़ों से जनता परेशान है। सर्वोदय वालों के प्रति जनमानस में एक प्रकार की आस्था है। वातावरण भी बना है। अब परीक्षा है हम लोगों की! जनता की तरफ से कोई कमी नहीं रहेगी। हमारी सेवा की और समझाने की योग्यता और तैयारी कितनी है यही सवाल है।

—मनीष कुमार

हमारी असफलताएँ : सामूहिक जीवन का एक प्रयोग

रवीन्द्रनाथ उपाध्याय

[श्री रवीन्द्र उपाध्याय, खादीग्राम के कुछ चुने हुए कार्यकर्ताओं में से हैं। श्री धीरेन्द्रभाई के प्रयोगों में वे हमेशा जी-जान से लगते रहे हैं। पिछले साल एक गाँव में, जहाँ भूदान-विचार के प्रचार के कारण कुछ सामूहिक भावना जागृत हुई थी, वहाँ सामाजिक जीवन का एक प्रयोग हाथ में लिया गया। साल भर बीतते-बीतते उस प्रयोग को बंद कर देने का निर्णय लेना पड़ा। श्री रवीन्द्रभाई ने इस "असफलता" का वर्णन प्रस्तुत लेख में किया है, और भी एक-दो गाँवों में इस प्रकार के प्रयोगों का जो नतीजा निकला, उसका संकेत रवीन्द्रभाई ने इस लेख में किया है।

निश्चय ही ये घटनाएँ सोच-विचार में डालने वाली हैं। श्री रवीन्द्रभाई ने अपनी "असफलताओं" का कारण ढूँढ़ते हुए एक बात यह बतायी है कि गाँवों के पूरे लोगों का साथ नहीं मिले, तब तक इस प्रकार के प्रयोग हाथ में न लिये जायँ। घोरने-स्थान में कुछ परिवारों ने ही "स्वामित्व-विसर्जन" किया था और इसीलिए रवीन्द्रभाई के खयाल से गाँवों में पहले से ही जाति, धर्म, राजनीति आदि के कारण जो विरोधी गुट रहते हैं, उनमें यह मालकियत-विसर्जन वाले और बिना विसर्जन वाले, ऐसा भेद और पड़ गया।

हम नम्रतापूर्वक कहना चाहते हैं कि इस प्रकार की "असफलताओं" का कारण बाहर ढूँढ़ने के बजाय भीतर ढूँढ़ना चाहिए। "पूरे गाँव का साथ नहीं मिला," मतलब क्या? एक गाँव का पूरा साथ मिलता तो फिर आस-पास के गाँवों का प्रश्न खड़ा नहीं होता क्या? गाँव भी आस-पास के क्षेत्र और समाज से कोई अलग चीज नहीं है। मंगरौठ में एक बार यही हुआ था। मंगरौठ के समूचे गाँव ने ग्रामदान किया, पर आस-पास वालों ने उसे मिटाने की कोशिश की।

इस तरह हमारी असफलताओं के कारणों की खोज बाहर की परिस्थिति में ही करते रहना हमारे लिए लाभदायी नहीं होगा। हमारा आन्दोलन केवल बाह्य परिवर्तन का नहीं है, बल्कि मुख्यतः आन्तरिक परिवर्तन का है। मालकियत-विसर्जन करते समय जरूर भावना ऊँची रहती है और रही होगी। पर मनुष्य के मन में जो वर्षों के और पीढ़ियों के संस्कार पड़े होते हैं, वे बार-बार जोर करते हैं। सो हमें देखना यह है कि हमारी उन भावनाओं के पीछे कहाँ-कहाँ चोर छिपे हुए हैं? हिसाब-किताब में परस्पर-अविश्वास इत्यादि की जो बात रवीन्द्रभाई ने लिखी है, वह भी इस बात को जाहिर करती है कि ये पुराने चोर मौका पाकर बीच-बीच में उभरते रहे। जो कार्यकर्ता उस गाँव में बैठे, उन्हें भी अपना आत्म-निरीक्षण करना चाहिए। क्या वे गाँव के जीवन में एकरूप हो सके थे? क्या उनके मन में धीरज की कमी थी? कहाँ-कहाँ उनकी स्थूल भूलें हुईं?—जैसे एक का जिक्र रवीन्द्रभाई ने किया है।

'विपन्नों' का संगठन जैसा जल्दी का रास्ता खोजना भी इसी प्रकार की भूल होगी। उसमें जो खतरा है, उसकी ओर रवीन्द्रभाई ने खुद इशारा किया है।

बाहरी कारणों में एक बड़ा कारण हमें यह लगता है कि कभी-कभी भावनाओं के वश होकर जितना हम लोग हजम कर सकते हैं, उससे ज्यादा बड़ा कदम उठा लेते हैं। सदियों से भेद के संस्कार जिस समाज में हैं, उन लोगों को लेकर एकाएक गाय, बैल, खेत इत्यादि सब एक करके सामूहिक खेती का प्रयोग करना, यह भी कहाँ तक उचित था, यह सोचना चाहिए। कुशल व्यक्ति एक-एक कदम को 'कंसालिडेट' करता हुआ आगे बढ़ता है। —सम्पादक]

खादीग्राम की विभिन्न प्रवृत्तियों का आधार शिक्षण था। अतएव प्रयोग के क्रम में जब कभी शिक्षण के क्षेत्र में परिवर्तन करना पड़ा, तो खादीग्राम के स्वरूप में ही बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ। जो अन्तिम स्वरूप सन् '५९ में बदला, उसका कारण था श्रमभारती के प्रयोगों में ग्रामभारती का जन्म। यह अनुभव आया कि आज यदि शिक्षण को क्रान्ति का माध्यम बनना है, तो उसे संस्था के नियन्त्रित अहाते से निकल कर गाँव के व्यापक और मुक्त वातावरण में जाना होगा, जहाँ सहज जीवन होगा, हर क्षेत्र में जीवन की वास्तविकता होगी, गाँव की समस्या होगी और उसके अनुरूप शिक्षण का स्वरूप होगा। अतः सन् '५९ में खादीग्राम से करीब २४ कार्यकर्ता भाई-बहन मुँगेर जिले के गाँवों में ग्रामभारती की स्थापना हेतु निकले। इसी योजना में रामकृपालु भाई १ जनवरी को घोरनेस्थान पहुँचे। घोरनेस्थान में ७ परिवारों ने पहले से ही व्यक्तिगत स्वामित्व का विसर्जन करने का सोच रखा था। अतः ग्रामभारती की भूमिका पहले से ही तैयार थी। मैं जब इजरायल से लौटा, तो वहाँ रामकृपालु भाई के साथ हो लिया। इस गाँव के ३ भूमिवान परिवारों ने अपनी ७५ एकड़ भूमि के साथ सामूहिक जीवन का प्रयोग करने का निर्णय किया। अपने-अपने मजदूर परिवारों को (जो पहले से इस भूमि पर मजदूरी करते चले आ रहे थे) तथा हम दोनों (रामकृपालु भाई तथा मुझे) को भी शामिल कर लिया। इस प्रकार हम ७ परिवार हुए। हमारी कुल संख्या ४६ थी। इसमें २२ काम करने की उम्र के स्त्री-पुरुष और बाकी बच्चे या बूढ़े थे।

तत्काल गाँव के सभी लोग इसमें शामिल होने को तैयार नहीं थे, पर सहानुभूति कम-बेशी सभी की थी। आशा थी कि धीरे-धीरे पूरा गाँव शामिल हो जायेगा।

इस भूमिका में काम शुरू किया गया। शामिल हुए परिवारों के मवेशी एक जगह कर दिये गये। खेती सबकी एक कर दी गयी। अपनी शक्ति भर सभी काम करेंगे तथा जन-संख्या के आधार पर उपज का वितरण होगा, यह तय हुआ।

घर की स्त्रियाँ, जो गाँव में एक घर से दूसरे घर विशेष मौकों पर भी रात को ही आती थीं, उन्होंने हाथ में फावड़ा लिया और खेतों में काम करने निकलीं। यह एक अद्भुत दृश्य था, जो देखने वालों को हैरान करता था कि यह कौनसी शक्ति है, जो इस प्रकार की सामाजिक क्रान्ति की प्रेरणा दे रही! कुछ लोगों ने आदर से, कुछ ने भय से तथा बाकी ने ईर्ष्या से यह दृश्य देखा! बहुतों को कुतूहल हुआ। पुरानी मान्यता के रूढ़िवादियों ने इसे समाज द्रोह भी कहा! कई पटवारी और रिश्तेदारों ने ऐसा करने से रोकने की भी कोशिश की। पर इन परिस्थितियों का मुकाबला प्रयोग में शामिल सदस्यों ने किया।

खेती से समय बचने पर आधार करघा का उद्योग शुरू किया गया। साथ-साथ बहनों के शिक्षण का भी कार्यक्रम रखा गया। ग्राम-सम्पर्क, सर्वोदय-पात्र, महीने में एक बार प्रभात फेरी आदि कार्यक्रम भी रखे गये। इस प्रकार समग्र ग्राम-सेवा की दृष्टि से अपनी शक्ति के मुताबिक काम की योजना बनी। धीरे-धीरे पास के गाँव में रात्रि-पाठशाला जैसा कार्यक्रम जोड़ा गया। इस प्रकार एक कदम के बाद दूसरा कदम उठा और बड़ी आशा से यह प्रयोग आगे बढ़ा।

पर ग्यारहवाँ महीना बीतते-बीतते सबको मिल कर यह निर्णय लेना पड़ा कि अब यह प्रयोग बन्द कर दिया जाय। फिर मवेशी अलग-अलग हुए और खेती भी सबकी अलग-अलग हो गयी। आपस का मेल-जोल बाद-बाद बना! अगर इस प्रयोग को आगे चलाने की आसक्ति रखी जाती और बन्द करने में देर की जाती, तो आपस का सम्बन्ध सदा के लिए बिगड़ जाता। सारी सम्भावनाओं के होते इस विफलता का कारण क्या था, यह हम लोगों के जानने की चीज है। आशा है, इस प्रकार के काम में लगे लोगों को "हमारी असफलता" से कुछ जानकारी मिलेगी। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत लेख आपके सामने दे रहा हूँ।

गाँव आज कितने विरोधी गुटों में बँटा है, इसका भी लेखा-जोखा बड़ा दिलचस्प होगा। पर अभी अपना विषय यह नहीं है। यहाँ यही कहना काफी होगा कि जाति, धर्म, राजनीति, शादी जैसे सामाजिक कृत्य, मालिक-मजदूर आदि जितने प्रकार के सम्बन्ध या प्रवृत्तियाँ गाँव में हैं, सभी आज गाँवों में रहने वालों को विरोधी गुटों में बाँटते हैं। और गुट बीच में एक मजबूत दीवार खड़ा कर एक-दूसरे में मेल न होने देने के लिए तुले हुए हैं। इसी में उपरोक्त प्रयोग भी पहुँचा, और वही काम किया, जो उपरोक्त प्रवृत्तियाँ कर रही हैं। गाँव के कुछ परिवारों ने सर्वोदय-आन्दोलन से प्रेरित होकर मालिक-मजदूर का भेद मिटाने तथा अपने श्रम पर जीने का प्रयोग शुरू किया। इसमें कोई शक नहीं कि बहुत ही शुद्ध भाव से यह अनुष्ठान हुआ।

इस अनुष्ठान ने भी गाँव को परिवार (इस प्रयोग का नाम परिवार रखा गया था) और परिवारेतर वालों में बाँट दिया। परिवार का प्रयोग शुरू करने के बदले खाईं या दीवार बन गया और गाँव में एक विरोधी वातावरण बन गया।

कुछ ही दिन पहले इसी गाँव के लोगों ने सर्वोदय के नाम पर अपूर्व उत्साह एवं पराक्रम दिखाया था। गाँव के अधिकांश वृद्ध सभी अपने पुराने विरोध को भूल कर आये और तथा देश का भला करने के लिए कृषि, शिक्षण तथा पोषण का कार्यक्रम एक साथ बैठ कर तय करते थे और एक होकर काम पर जुट जाते थे। उसी गाँव में दरवाजे-दरवाजे परस्पर-अविश्वास और अन्यायता भरी बातें होने लगीं।

यह हालत तो अब पूर्व खादीग्राम के पास वाले [illegible] (एक आदर्श ग्राम-दान) गाँव की हुई थी। भागलपुर के बटमानेह (दूसरा आदर्श ग्रामदान) में भी यही घटना घटी। [illegible] की भी यही हालत हुई।

इससे यह नतीजा निकलता है कि गाँव में कोई भी ऐसा काम न शुरू किया जाय, जिसमें गाँव भर का साथ न मिले।

दूसरा बहुत ही महत्वपूर्ण मोर्चा रिजल्ट-विभाग का था। चूँकि अभी कोई 'सामूहिक कोष' नहीं था और अपने-अपने परिवार के खर्च की व्यवस्था अलग-अलग थी, अतः उत्पादन-काल एक मास का माना गया। खेती तो सामूहिक हो गयी, पर उस पर होनेवाला उत्पादन अपनी-अपनी सामग्री और श्रम पर बाँट दिया गया। इस प्रकार काम-काज व्यवस्था चालू वर्ष की चलती रही। कई काम सामूहिक होते गये। इस प्रकार कुछ चीजें चालू वर्ष में छोड़नी पड़ीं और कुछ पूर्ण रूप से सामूहिक हुईं। इस दोहरे ढंग ने हिसाब-किताब को बड़ा ही पेचीदा बना दिया। इस पेचीदगी का हल यह माना गया कि आपस की बात है, थोड़ी-सी अनिवार्य अव्यवस्था होने वाली थी, उसे सभी समझ-बूझ कर सहेंगे। मनुष्य विवेकी है, पर संस्कार और आदत-वश विवेक के बावजूद अपने पर भी भरोसा खो बैठता है। दूसरों की तो बात ही क्या? यहाँ भी यही हुआ। कुछ कारण से, और बहुत अकारण एक-दूसरे पर अविश्वास शुरू हुआ। जो परिवार और परिवारान्तर के बीच दीवार खड़ी हो ही गयी थी, आपस में भी अविश्वास का वातावरण फैला, जिसने बाहर से दुरुस्त दिखाई देनेवाले परिवार को अन्दर से ऐसा खोखला कर दिया, मानो एक स्वस्थ पेड़ के तने को भीतर से दीमक खा गयी हो।

इन सारी परिस्थितियों के बावजूद कुछ आशा हो सकती थी। पर अन्तिम हथौड़ा मेरी अनुपस्थिति का पड़ा। अनेक कारणों से मुझे लम्बी अवधि के लिए कई बार बाहर जाना पड़ा। ऐसी परिस्थिति में जो यह प्रयोग एक साल तक चला, उसका श्रेय रामकृपालु भाई को बहुत अंश में है, जो करीब-करीब बराबर उपस्थित रहे। इस तरह हमने देखा कि शोरमस्थान का यह प्रयोग छोटी-छोटी भूलों के कारण बन्द कर देना पड़ा।

गाँवों में मध्यम वर्ग में थोड़ी समझ और ज्ञान है। आज विकास प्रखंड और पंचायतों के जरिये पद और धन का लालच सरकार द्वारा दिया जा रहा है। मन, बुद्धि और विवेक से सर्वोदय को आदर्श भी मान कर मध्यम वर्ग का कदम उठता है। विपक्षों का अलग से संगठन वर्ग-संघर्ष को जन्म देता है तथा आन्दोलन को सौम्य से बढ़ने उग्र बनाता है। ऐसी हालत में क्या हमें संगठन से अलग होकर केवल विचार-प्रचार ही करते जाना है? और तात्कालिक समस्याओं की ओर से आँख बन्द रखना है? या जनता पर विश्वास रख कर विपक्षों का संगठन करके थोड़े 'प्रेशर' का भी इस्तेमाल जायज होगा?

यह प्रश्न हमारे सभी साथियों के लिए गंभीरता पूर्वक विचारणीय है।

कहानी :

वरदी क्यों पहनी ?

सुनीभाई

बहुत पुराने जमाने की बात है। शुरू में जब भगवान ने कुदरत का और प्राणियों का सर्जन किया, उस समय की। उन्होंने कुछ दिन में रहने वाले तो कुछ जमीन पर चलने वाले, तो कुछ आसमान में उड़ने वाले प्राणी बनाये।

उसने सबके लिए खुराक बनायी। आसमान में उड़ने वालों के लिए फल-फूल बनाये, जमीन पर चलने वालों के लिए अनाज और घास बनाया और बिलों में रहने वालों के लिए कुछ और कंद बनाये।

यहाँ हम बिल में बसने वाले दो प्राणियों की कहानी कह रहे हैं। उनमें एक प्राणी का नाम 'सेगा' (या 'सेही') है। चूहे के कद और आकार का है। लेकिन सारे बदन पर कठोर तेज इंच लम्बे काँटों का कोट बना हुआ है। कछुए की भाँति अपना अंग को पूरा अन्दर समेट कर घुस पड़ा रहता है, तब लगता है कि काँटों की गठ पड़ी है।

चूहे विनायक (गणपति) के वाहन बने, उसके पहले की यह बात है।

कुछ चूहों ने अव्यवस्था पैदा कर दी, कुछ शरारती चूहे-बच्चों ने साँप को काट कर भाग जाने का खेल तक कर दिया तो साँपों को बड़ा क्रोध आ गया। बस, क्रोध क्रोध से उनका दिल भर गया। दिमाग गरम-गरम होकर घर्षे से भर गया। उसमें से जहर निर्माण हुआ और वह दाँतों के जरिये बाहर निकलने लगा। क्रोध व जहर से पागल साँपों ने अपनी खुराक छोड़ कर छोटे-छोटे प्राणियों का मार डालना चला था। काटना और खाना शुरू कर दिया।

चूहे तंग आ गये। उस समय बड़ी का राज्य था उसी का संरक्षण था। उन्होंने जाकर बड़ी के दरबार में पुकार की 'संरक्षण माँ! संरक्षण माँ!! संरक्षण माँ!!!'

बड़ी ने लाल आँखों से चूहों के प्रति देख कर पूछा, "क्या बात है?"

वहे घबड़ाये, कहीं माँ ही हमला न कर दे। लेकिन और चारा नहीं था, सारी रामकहानी सुनायी। माँ का पेट भरा हुआ था, इसलिए उसको न्याय की सूझी। उसने रक्षण देने की सोची।

बोली, 'कुछ लोग मेरे पास आओ।"

घबड़ाते हुए कुछ चूहे माँ के पास गये। माँ ने उनकी पीठ पर हाथ फेरा। तो उनकी पीठ पर काँटे फूट निकले। बन गये सेगे। चूहे घबड़ाये क्योंकि ऐसा तो नहीं चाहा था। लेकिन माँ के पास और क्या चल सकता था?

माँ ने गंभीर आवाज में ऐलान किया, 'ये लोग साँपों को खतम करेंगे।"

तब से सेगों का एक प्रिय व्यवसाय बन गया है साँप की दुम को पकड़ कर अपने बदन में घुस जाना। और एकदम गुच्छे में आकर इकट्ठा कर बाट लेता है, लेकिन काँटे मुँह में घुस जाते हैं। और ज्यों-ज्यों छटपटाता है, त्यों काँटे और भी गहरे घुस जाते हैं और अन्त में वह मर जाता है। लेकिन सामना न हुआ। कुछ ही साँप मरे, सब नहीं मरे। बैर और भी बढ़ गया।

इससे चूहों को भी कोई विशेष राहत नहीं पहुँची। बैर बढ़ा, तो आतंक भी बढ़ा। अपना इसमें सेगे अपने लिए खुराक नहीं ढूँढ़ते थे, चूहे जो कुछ लाते थे, उसी में से छीन लेते थे। कहते थे, "हम काँटेदार बने किसलिए? आप ही के लिए तो बने हैं। हमको खिलाना-पिलाना तुम्हारा जिम्मा है।' दोनों तंग थे, सेगे और चूहे।

अन्त में चूहों ने सोचा कि आजकल सृष्टि ने विनायक की शरण ली है। और वह है बलवान और क्रान्तिकारी आदमी। वह पुराने परम्परागत बैर को भुला सकेगा और नये सिर से नई व्यवस्था से शान्ति की स्थापना कर सकेगा। उसको जाकर कहें कि 'हम बड़ों को मारना छोड़ दें और सेगे हमको सताना छोड़ दें।'

विनायक को तो आप जानते ही हैं। वह क्रान्तिकारी था। समाज के पुराने परम्परागत अर्थों को वह बदल देता और उनमें नये अर्थ नई भावना भर देता था। पृथ्वी की परिक्रमा का उसी ने कैसा अर्थ घटाया था, सो तो आप जानते ही हैं।

उसने कहा, 'अच्छा मैं देखता हूँ। कैसे अव्यवस्था शुरू हुई, कैसे बैर बढ़ा, यह सब आपको भूल जाना चाहिए और ठीक ढंग से जीना चाहिए। मैं दोनों के सरदार को कहूँगा कि वह अपनी सेना विसर्जित कर दे। बड़ी को भी समझाऊँगा।"

लेकिन सेगों के सरदार ने कहा, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। साँप सौंप ही हैं, उनका विश्वास ही नहीं हो सकता। हम सेना विसर्जित नहीं करेंगे। और कुछ सेगे तो फुफकारने भी लगे और कहने लगे, हम सेगे बने हैं किसलिए?"

विनायक विचार में पड़ गया। विचार-शासन में मानने वाला वह जो था, उसने अपना आदर सेगों पर थोपने के बजाय समझाने लगा, 'देखो भैया, आपकी उत्पत्ति का कारण क्या था? साँप अगर दुश्मनी छोड़ देते हैं, तो आपको आपत्ति क्या है?"

लेकिन वे लोग बड़े गुस्से में थे। कहने लगे, "साँपों ने आज तक कितने खून किये हैं! बड़े भयंकर हैं वे! हम अगर यह कोट उतार देंगे, तो समाज में थोड़ा बहुत कानून, व्यवस्था और शान्ति है, वह भी नहीं रह पायेगी।"

वे इस प्रकार कुछ भी समझ नहीं पाये और विनायक की ओर घूरते हुए चल दिये।

बड़ी से बात हुई, समाज-व्यवस्था टिकाने का उसका जिम्मा था। उसने कहा, 'लेकिन आपका इसमें क्या संबंध? चूहों को चाहिए था कि सेगों से बात करें? सेगों को मैंने ही पैदा किया है।"

इन लोगों की बात मुझको नहीं जँची थी। लेकिन अभी भी काटजू साहब ने कहा कि डाकुओं को आत्मसमर्पण पुलिस को करना चाहिए था, विनोबा को क्यों किया? और श्री हनुमन्तैया ने भी वैसी ही बात की कि यह 'इंडियन पीनल कोड' बना है, उसका क्या? और इन अदालती कारवाइयों का क्या? तबसे मैं सोच में पड़ गया हूँ। पुलिस के लिए डंडा छोड़ना अनुचित है, तो सेगे अपने काँटों को क्यों छोड़ें?

जन-शक्ति राज्य शक्ति को चुनौती है !

मेरठ जिले में एक गाँव है—रुपासा नगला। इसकी आबादी २३४५ है। पिछले १० साल की अवधि में इस गाँव में २,१० २४१ रुपये का निर्माण-काम हुआ जिसमें जनता ने ८१ ३१० रुपये नकद चन्दे के रूप में दिये हैं और ग्राम-पंचायत ने अपने कोष से ३१ ८२१ रुपये खर्च किये हैं। ४६,१४८ रुपये का श्रमदान इस ग्राम-पंचायत में हुआ है। इस प्रकार जनता द्वारा १५९,२७९ रुपये का काम सम्पन्न हुआ। शासन की ओर से किये गये काम का मूल्य ५१०० रुपये है।

इन सब आँकड़ों के प्रकाश में यह जाहिर होता है कि गाँव यदि स्वयं प्रयत्न करे तथा अपने निर्माण के लिए स्वयं अग्रसर हो, तो बिना किसी खास सरकारी मदद के भी काफी आगे बढ़ सकता है।

इस गाँव के निर्माण की एक विशेषता यह भी है कि इन सारे कार्यों की योजना भी स्वयं ग्रामीणों ने ही बनायी और उन्होंने स्वयं ही उसे पूरा भी किया। जब योजना बाहर से बनती है और ऊपर से लादी जाती है, तब जनता का अभिक्रम प्रगट नहीं हो पाता।

वैसे देखा जाय, तो इस जनसहयोग के कारण लोगों पर कोई विशेष भार भी नहीं पड़ा। १० वर्ष में प्रति व्यक्ति चौवन रुपया पैंतीस नया पैसा पड़ा, यानी पूरे वर्ष में पाँच रुपया चौवालीस नया पैसा, या प्रतिमाह केवल पैंतालीस नये पैसे मात्र! ऊपर जो आँकड़े दिये गये हैं, वे स्वयं सरकार द्वारा प्रकाशित आँकड़े हैं।

—सतीश कुमार

विनोबा पदयात्री दल से

कुसुम देशपांडे

देश धधक उठा था, दिल धड़क उठे थे! क्रान्ति की ज्वालाएं फैल रही थीं। बरसों से गहरी सोई हुई आत्मा जाग उठी थी। आजादी का जंग छिड़ा था!

"तोड़ो ये जंजीरें! फेंक दो यह शृंखला!"—देश पुकार रहा था। रणचंडी का रूप लेकर मर्दानी झांसी की रानी लड़ रही थी। "और उसे साथ देने वाला था—बहादुर तात्या टोपे! देश में सर्वत्र स्वातंत्र्य की भूख पैदा हो गयी। लेकिन मंजिल काफी दूर थी। कंपनी-सरकार ने इसे 'बलवा' कह कर मिटाने की भरसक कोशिश की।" झांसी की रानी विजय प्राप्त नहीं कर सकी। वह शहीद बन गयी और 'तात्या टोपे' हंसते-हंसते फांसी के तख्त पर चढ़ा था!" काल आगे बढ़ता गया। भारत के इतिहास का उज्ज्वल अध्ययन इन वीरों की गाथा से भर गया। "बीच में देश मायूस बना, उदासी छायी!. लेकिन वह फिर से उठ खड़ा हुआ और आजादी हासिल करके ही शान्त हुआ। लेकिन आजादी के उन शूर सिपाहियों को देश नहीं भूला।

शिवपुरी शहर में प्रवेश करते ही विनोबाजी को किसी ने कहा, "यही वह स्थान है, जहां बहादुर तात्या टोपे को फांसी चढ़ाया गया था।" तात्या टोपे को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद मुकाम पर जब विनोबाजी जा रहे थे, तब किसी ने इशारा किया था—"यही वह स्थान है, जहां तात्या टोपे पर मुकदमा चला था।"

तात्या टोपे एक क्रांति के सेनापति थे। कालचक्र गति से घूम रहा है। आज देश में एक दूसरे स्वरूप की क्रांति हो रही है। यह क्रांति कहती है कि दूसरे के लिए जीना सीखो, बांट कर खाओ—"त्यक्तेन भुंजीथा।"

तात्या टोपे का स्मारक देख कर विनोबाजी ने कहा: "वेद भगवान की आज्ञानुसार स्मारक की जगह पर एक पेड़ लगा हुआ है और पास में एक पत्थर है। उस पर हमने फूलों की माला चढ़ादी। ऐसा सादा स्मारक देख कर हमें बहुत प्रसन्नता हुई। हमारे सारे स्मरण जागृत हुए।" "तात्या टोपे हिन्दुस्तान के सर्वोत्तम सेनापति थे। हिन्दुस्तान की फौजी हरकतों का इतिहास लिखा जायगा, तो एक बड़े 'जनरल' के नाम से उनका नाम अंकित होगा। इसके अलावा वे बहुत बड़े देश-भक्त थे। अंग्रेजी राज्य का विरोध सर्व-प्रथम जिन्होंने अपने बलिदान से किया, उनमें झांसी की रानी और तात्या टोपे अग्रगण्य हैं। उनका अन्तिम दिन, जिस दिन वे फांसी पर चढ़े थे, १८ अप्रैल था। मेरे ध्यान में वह रह गया। जो काम लेकर मैं घूम रहा हूं, वह उसी दिन शुरू हुआ था। १८ अप्रैल '५१ को तेलंगाना में पोचमपल्ली में पहला भूदान मिला था। तब से हम लगातार घूम रहे हैं। तात्या टोपे ने बहुत बड़ा पराक्रम देश के लिए किया। पराक्रम करने वाले दूसरे भी होते हैं, परन्तु स्वार्थ के लिए और दूसरे देश पर आक्रमण करने के लिए जो पराक्रम होता है, वह अलग बात है।"

लेकिन हम पूर्वजों का स्मरण करें, तो उनके स्थूल चरित्र के लिए नहीं, बल्कि उनके सूक्ष्म गुणों का अनुकरण करने के लिए। जमाना बदला है। इसलिए अब पुराने जमाने से हमारा दिल जुड़ना चाहिए, लेकिन हमारा दिमाग उससे जुड़ा हुआ नहीं, बल्कि कटा हुआ चाहिए। यह नहीं होगा तो समझ लीजिये कि हम इस जमाने के काबिल नहीं हैं। हमारा दिल पुराने जमाने से जुड़ा रहेगा, तो हमें वहां से रस मिलेगा। हम श्राद्ध करते हैं। उसके माने यह है कि हम श्रद्धा से उनके गुणों का चिंतन करते हैं।—हमारा दिल और दिमाग, दोनों कटे हुए रहेंगे तो भी खतरा है। कम्युनिस्ट बहुत सेवा करते हैं, गरीबों की भलाई का सोचते हैं। हमारे कई मित्र उनमें हैं। लेकिन उनका दिल और दिमाग, दोनों पुराने जमाने से जुड़े नहीं हैं। दिमाग जुड़ा नहीं है, यह ठीक है। लेकिन दिल जुड़ा हुआ न होने के कारण ताकत नहीं बनती है। वे कहते हैं कि "वह राजशाही, सामन्तशाही का इतिहास था। और गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, तुलसीदास ये सब उस-उस जमाने की आर्थिक व्यवस्था के गुलाम थे वे व्यवस्था बदलने में असमर्थ थे। बल्कि उन्होंने यथास्थिति कायम रखने की कोशिश की और उभार एक तत्त्वज्ञान बनाया। गरीबों को बगावत करने से रोकने वाले तथा गलत राह दिखाने वाले, उनके लिए शान्ति का तत्त्वज्ञान सुनाने वाले, ऐसे गुमराह वे थे।" इसलिए देश को प्रेरणा देने वाले स्रोत का, देश की ताकत का पता उनको नहीं होता है। इसलिए नई परिभाषा बनानी पड़ती है और जनता वह परिभाषा समझती नहीं है।

शिवपुरी के एक भाई कह रहे थे कि "इतनी बड़ी मीटिंग १९३८ के बाद आज यहां हो रही है! अट्ठाइस साल में इतनी बड़ी मीटिंग नहीं हुई थी।"

'चालित सेमिनार' में [विनोबाजी अपनी यात्रा को चलती-फिरती विचार-गोष्ठी या विद्यालय ही मानते हैं] इन दिनों एक बात हमेशा कही जाती है: "भ्रष्टाचार सब ओर बढ़ रहा है। नीतिमत्ता नहीं रही है।"

विनोबाजी हंसते हुए कहते हैं—"जो चीज सभी लोग करते हैं, वह खराब कैसे मानी जायेगी? शादी सभी लोग करते हैं, तो क्या वह खराब चीज है? 'करप्शन' (भ्रष्टाचार) के लिए तो एक नया शब्द इन दिनों चलता है: "दस्तूर।" प्रश्न पूछने वाला लाजवाब होता है, पर उसका समाधान तो नहीं होता है। फिर विनोबाजी आगे चल कर कहते हैं: "आपको इस बात का खयाल रखना होगा, कि आज दिल बिगड़ा नहीं है। नहीं तो इतने लोग हमारी बात सुनने के लिए क्यों आते? मैं तो त्याग की बात कहता हूं। त्याग की बात सुनने की चाह तो है। यही बताता है कि दिल बिगड़ा नहीं है। आज लोभ बढ़ा है। आज की अर्थ-व्यवस्था गलत है, इसलिए वह बढ़ा है। नीति-मत्ता में लोग गिरे नहीं हैं। लोभ जितना बढ़ा है, उतनी मात्रा में गिरावट हुई है।

प्रश्नकर्ता के मन में आशंका पैदा हुई। "सुनने के लिए लाखों लोग आते हैं लेकिन उनके आचार में तो बहुत अंतर रहता है।"

विनोबाजी "जी हां! सद्विचार और सदाचार में अंतर तो रहता ही है। वैसे सब तरह से हम लोग गिरे हैं। लेकिन दिल अच्छा है, इतनी बात लेकर हम आगे बढ़ें!"

देश के कोने-कोने में सेवा में लगे हुए सेवक कभी-कभी सलाह-मशविरा के लिए इस अखंड यात्रा में शामिल होते हैं। धार जिले में 'नीरा' का काम करने वाले बापू-राव वामन के साथ चर्चा हो रही थी। रचनात्मक कार्य देश में भिन्न-भिन्न स्थानों पर हो रहा है। विनोबाजी कह रहे थे "हमारे साथी दूसरे-तीसरे छोटे-छोटे कामों में फंसे हैं। उनको हम कहते हैं कि भाई, आप जरा इधर आइये। ईसा मसीह ने बाइबिल में कहा है: 'Come and follow me and I shall make you fishers of men!' हम कहते हैं, आइये भाइयो, हम आपको मछली कैसे पकड़ना यह सिखायेंगे, योजना अपने हाथ में कैसे लेना यह बतायेंगे। पर ये लोग फिशरमैन (मछुवा) के बदले फिशर (मछली) होना पसंद करते हैं!"

मध्य-प्रदेश के इस इलाके में भूदान तथा सर्वोदय का काम ज्यादा नहीं हुआ है। फिर भी कभी कहीं वकील, कभी सरकारी कर्मचारी या कहीं कोई सज्जन मिल ही जाते हैं, जो कहते हैं कि हमने 'गीता-प्रवचन' ग्रंथ पढ़ा है। हमारे जीवन पर उसका बहुत असर हुआ है। किसी को 'लोक-नीति' से, किसी को 'शांति-सेना' से स्फूर्ति मिली है। शिवपुरी के जिला-धीश साहब ने कहा, 'मैंने तिलक महाराज का 'गीता रहस्य' पढ़ा है। लेकिन 'गीता-प्रवचन' मुझे अधिक आसान मालूम हुआ।" वे अपने मित्रों में भी उसका प्रचार करते हैं।

ऐसे मौके पर विनोबाजी कहते हैं "सर्व सेवा संघ को व्यापक बनना है न! तो ऐसी सहानुभूति रखने वाले जो लोग हैं, जिन्होंने आपका साहित्य पढ़ा है उनको क्यों न कहा जाय कि आप अपने खर्चे से अपने घर पर 'अखिल भारत सर्व सेवा संघ' का साइनबोर्ड लगा दीजिये। इंदौर या ऐसे कोई भी शहर में मान लीजिये कि दो सौ सज्जन हों, तो सर्व सेवा संघ के दो सौ पते होंगे। जगह-जगह ऐसे सज्जन पड़े हैं। उनको खड़े करने की बात है।

अभी अजमेर-यात्रा में पंजाब से मुझे गंगानगर [राजस्थान] जाना था। तो मैंने क्या किया? मुझे कुछ भी मालूम नहीं था कि वहां सर्वोदय का काम करने वाला कोई है या नहीं? तो मैंने वहां के जिले के कांग्रेस के अध्यक्ष को तार दे दिया। वह भाई दूसरे दिन मुझसे मिलने आये। अब आप देखिये, कांग्रेस की यह खासियत है। देश के हर जिले में वह है। और कोई संस्था ऐसी फैली नहीं है। इसलिए कुछ मालूम न हो तो या तो कांग्रेस का अध्यक्ष, या कलेक्टर दो रहते हैं। इसी तरह सर्व सेवा संघ हर जिले में क्यों न फैल जाय? आज जितने सेवक हैं, वे सब हर जिले में क्यों न बंट जायें?

● ●

विनोबा राजस्थान में

विनोबाजी की यात्रा भिंड और मुरैना के बाद इंदौर की ओर बढ़ रही थी। यात्रा का मार्ग बम्बई-आगरा रोड पर था। ग्वालियर के बाद शिवपुरी जिले में प्रवेश होने वाला था और अकस्मात् एक दिन विनोबाजी ने जयदेव भाई से नक्शा मांगा। कई बार विनोबाजी को इस तरह नक्शा देखते हुए कश्मीर में एक फौजी अफसर ने कहा था, "हमारा जनरल लड़ाई के मौके पर इसी तरह नक्शा देखा करता है।"

उस दिन नक्शा देख कर विनोबाजी ने अपनी इच्छा प्रगट की "शिवपुरी जिला खत्म होने के बाद हम राजस्थान होकर इंदौर की तरफ जायेंगे।" बस! जयपुर में संदेशा भेजा गया,, और ता० २२ को विनोबाजी राजस्थान की ओर चल पड़े।

ग्रीष्म ऋतु खत्म हो ही रही है। विनोबाजी राजस्थान की ओर कदम बढ़ा रहे थे। प्रात काल की मंगल बेला में आसमान से आने वाली बारिश की बूंदें तप्त भूमि को शांत कर रही थी। दो-चार बूंदों के बाद ही बारिश शांत हुई। ऊपर आसमान में प्रभु की सुनहरी कमान चढ़ी थी। भक्त हृदय को लगा "यह मेरा स्वागत है। मैंने रास्ता बदला, उसने आशीर्वाद दिया। उसे लगा होगा कि आगरा रोड से यह अच्छा रास्ता है। इस रास्ते में नदियां हैं, बीहड़ रास्ता है, बारिश के दिन हैं। उसने कहा, अरे! तुम इधर आ जाओ, यही तुम्हारा रास्ता है। जहां कोई नहीं पहुंचता है, वही तुम्हारा रास्ता है। जहां-जहां कष्ट और दुःख सहना होगा, वही तुम्हारा स्थान है, वही तुम्हारा मार्ग है।

राजस्थान की सीमा पर श्री हरिभाऊ

दिल पुराना, दिमाग नया !

हमारे यहाँ वीरों, सन्तों, शास्त्रकारों और साहित्यकारों की परंपरा का इतिहास है और इन चारों परम्पराओं का असर भारत पर बहुत पड़ा है।

साहित्यकारों का असर तो हम पर निरन्तर बना हुआ है। वाल्मीकि और कालिदास जैसे ऋषियों को भूल सकना सम्भव नहीं। अपने देश का साहित्य बहुत ही गहरा है। वह जीवन के अन्तस्तम को स्पर्श करने वाला और हृदय की गाँठें खोलने वाला है।

शास्त्रकारों का भी ऐसा ही इतिहास है। इन्होंने हमें आचार-धर्म (कोड ऑफ कंडक्ट) दिया। मनु, याज्ञवल्क्य और पाराशर का नाम तो सब जानते ही हैं। आज यहाँ ताजीरात हिन्द (इंडियन पिनल कोड) लागू है, पर वह भी इन साहित्यकारों के नियमों को लेकर बना है।

तीसरी परम्परा सन्तों, ऋषियों और ज्ञानियों की है, जो अभी तक जारी है। इन्होंने समाज को सन्मार्ग दिखाया और उस पर टिके रहने में हमें मदद की।

विनोबा

इस देश में वीरों की भी एक लम्बी परम्परा है। हिन्दुस्तान की आजादी वीरता के अभाव के कारण नहीं गयी, उसके जाने के अन्य कारण हैं। जिस वीर पुरुष (तात्या टोपे) की समाधि के हमने आज दर्शन किये, वह दो वर्षों तक अविरत रूप से विशाल अंग्रेजी सेना का सामना करता रहा।

मगर इन चारों प्रकार के महापुरुषों की याद का अर्थ क्या है? यह स्मरण उनके अनुकरण के लिए है। किन्तु हमें उनके स्थूल चरित्र का नहीं, उनके गुणों का अनुकरण करना है। उदाहरण के लिए छत्रपति शिवाजी ने अपने समय में जहाँ-तहाँ किले बनाये और उनके आश्रय से राज्य की रक्षा की। यदि आज हम उनके स्थूल अनुकरण पर देश की रक्षा के लिए ऊँचे ऊँचे किले बनायें तो यह मूर्खता-पूर्ण कार्य होगा, क्योंकि ऐसा करके हम दुश्मन को अपने खास-खास स्थानों पर बम गिराने की सुविधा देंगे।

इसी प्रकार सन्त की जीवन-गाथा का भी स्थूल अनुकरण नहीं किया जाना चाहिए। हमारा दिल तो पुराने जमाने से जुड़ा रहे, मगर दिमाग का सम्बन्ध वर्तमान से रहे। यदि हमारे दिल और दिमाग दोनों पुराने जमाने से सम्बन्धित रहे, तो हममें और पुराने युग के खंडहरों में क्या अन्तर रहा? इसलिए इन दो बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—प्रथम, हम अपने मान्य पुरुषों के स्थूल कर्मों का अनुकरण न करें और दूसरा, उनके सूक्ष्म गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करें।

हम याद क्या करते हैं? इसलिए कि एक खास दिन हम उन पुरुषों के गुणों का श्रद्धा से श्रवण-मनन कर सकें, ताकि हमारा दिल उनसे जुड़ा रहे और श्रद्धा को पोषण मिलता रहे।

कम्युनिस्ट भाइयों का दिमाग अपने पूर्वजों से जुड़ा हुआ नहीं है। ठीक है। मगर उनका दिल भी उनसे नहीं जुड़ा है। उनका कहना है कि वे सब पूर्वज अपने जमाने की आर्थिक व्यवस्था के गुलाम थे। उनका शान्ति-सन्देश, उनका सारा तत्त्व-ज्ञान केवल गरीबों को शान्त रखने के लिए बनाया गया है और उनको मरने बाद पर ले जाने वाला है। वे सब 'स्टेटस-को' (यथास्थिति) को कायम रखने वाले तत्कालीन अर्थव्यवस्था के गुलाम थे। विश्व भर के महापुरुषों के सम्बन्ध में कम्युनिस्टों का यही मत है।

ऐसा क्या हुआ? पुराने जमाने से दिल का सम्बन्ध टूट जाने का परिणाम यह हुआ कि उनके दिमाग ऊटपटांग काम करने लगे। किसी देश के लिए जो प्रेरणा-स्थान रहते हैं, उनका उन्हें कोई पता नहीं होता।

देश के प्रेरणा-स्रोतों के साथ हमारे दिल का सम्बन्ध न हुआ, तो कोई बात यथार्थ रूप में समझ में कैसे आयेगी? बचपन से ही पाश्चात्य संस्कारों के बीच रहे हुए पं० जवाहरलाल नेहरू को भी 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' लिख कर ही सन्तोष मिला। श्री अरविन्द ने भी बचपन से अंग्रेजी तालीम पायी। १० साल की उम्र में वे इंग्लैंड गये थे। वहाँ परिणाम यह हुआ कि वे मातृभाषा बंगाली भूल गये और फिर इंग्लिश, ग्रीक, लैटिन आदि भाषाएँ सीखे। उन पर पाश्चात्य संस्कार के पुट पर पुट चढ़ने गये। आई० सी० एस०' की परीक्षा दी, तो सौभाग्य से घुड़सवारी में अनुत्तीर्ण हो गये और स्वदेश लौट आये। यहाँ उन्होंने बंगाली सीखी। फिर क्रमशः देश की अन्य भाषाएँ सीखीं और सारे प्रमुख भारतीय धर्मग्रन्थों पर भाष्य लिखे। मतलब यह है कि देश के उत्थान के प्रेरणा-स्थानों से जब तक दिल का सम्बन्ध न हो तब तक ज्ञान एकांगी ही रहता है।

हमने जब भूमि माँगना प्रारम्भ किया और इस कार्य का नाम भूदान-यज्ञ रखा, तो कुछ लोगों ने कहा कि यह तो भिखमंगापन हुआ। फिर हमने भूदान की व्याख्या की। दान से बढ़कर शब्द दुनिया में नहीं है। दादाभाई नौरोजी ने एक शब्द निकाला "स्वराज"। दो पीढ़ियों इस शब्द ने दिशा दी और स्वराज्य मिल कर रहा। अब यदि पुरानी परम्पराओं और संस्कारों के साथ दिल जुड़ा न रहा, तो हम बहुत खोयेंगे। फिर नये-नये शब्दों का निर्माण करना पड़ेगा, जो काम नहीं देंगे।

इसके साथ ही हमें इतिहास की मर्यादाएँ भी समझ लेनी चाहिए। यदि हमारा दिमाग भी इतिहास से जुड़ा रहा, तो प्रगति का मार्ग कुण्ठित हो जायगा और इतिहास भारस्वरूप हो जायगा। इसलिए हमें प्राचीन घटनाओं का स्थूल रूप देने के बजाय उनका सार ग्रहण करना चाहिए।

खेती में कलम लगाते हैं, 'ग्रैफ्टिंग' करते हैं। इसमें एक पेड़ की ताकत और दूसरे का रस मिला कर नया पेड़ पैदा किया जाता है। आज बाँस पर गन्ने की कलम लगाने के प्रयोग चल रहे हैं। गन्ने की मिठास और बाँस की विशालता के मेल से जो पेड़ तैयार होगा, वह उत्तम होगा। इसलिए पुराने जमाने का दिल और नये जमाने का दिमाग मिल कर पुराने जमाने की ताकत और नये युग का विचार देने वाला नया मानव बनेगा।

(शिवपुरी, १९-६-'६०)

वेतालार, श्री गोकुलभाई, समग्र सेवा संघ के श्री छीतरमलजी और अन्य सब कार्यकर्ता तथा जनता विनोबाजी के स्वागत के लिए खड़ी थी।

पहला मुकाम थाना-कमवा में था। इस गाँव को कुछ साल पहले डाकुओं ने लूटा था। गाँव के एक दुकानदार ने विनोबाजी को इसकी जानकारी देते हुए कहा कि "डाकू सुबह नौ बजे गाँव में घुसे। इतना धमाका मची। पुलिस भाग गयी और दो लाख रुपये लेकर बारह बजे डाकू भाग गये।" विनोबाजी ने हँसते हुए हिसाब लगाया—"तीन घंटे में दो लाख! हम तो आपके गाँव में सुबह आठ से लेकर कल सुबह चार बजे तक, याने बीस घंटा रहने वाले हैं। डाकुओं को तो डर से आपने दो लाख दिये, हमें प्यार के लिए बीस घंटे में कितने देंगे?"

राजस्थान में नहर से पानी दी हुई जमीन का विक्रय होने की बात चल रही है। इस बात पर अपना तीव्र दुःख प्रगट करते हुए विनोबाजी ने पहली सभा में कहा, 'आपके यहाँ पानी आया, उसके साथ प्रेम के बजाय लोभ आया। जमीन नीलाम हो रही है, मैंने यह चीज हिन्दुस्तान सरकार के प्रमुख लोगों के सामने रखी थी। नागपुर के प्रस्ताव के बाद भी हम भूमिहीनों को जमीन न दे सके, इसका मतलब यही हुआ कि हममें इमेजिनेशन' [चिन्तन] ही नहीं है। क्या आप यह समझते हैं कि मूर्ख, पागल हैं, तब तक आप राज करने वाले हैं। अगर ऐसा आप समझते हैं, तो आप गलतफहमी में हैं, यह खूब समझ लीजिये। और मुझे चीन के बारे में सवाल पूछा जाता है। मैं कहता हूँ कि चीन की कोई मजाल नहीं कि वह हिन्दुस्तान की तरफ टेढ़ी नजर से देखे, अगर आप गरीबों को मदद देते हैं। अगर आप उन्हें मदद नहीं पहुँचाते हैं, तो देश में अन्दर से ही ज्यादा खतरा है। लोगों की अपनी ताकत बननी चाहिये। मैं सरकार से कहता हूँ कि लोगों को यह स्पष्ट भान होना चाहिए कि सरकार हमारे लिए काम कर रही है।"

—कुसुम देशपांडे

राजधानी दिल्ली तरक्की पर !!

१९६० में राजधानी दिल्ली ने हर क्षेत्र में प्रगति (?) का रिकार्ड कायम करते हुए प्रवेश किया है। १९५९ के प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात हुआ है कि गत वर्ष दिल्ली की जनता ने अन्य वर्षों के मुकाबले में कहीं अधिक शराब पी, रेडियो खरीदे और फिल्में देखीं।

जहाँ १९५५ में केवल २,३६,२८४ गैलन शराब पी गयी, वहाँ १९५९ में २,५०,३८५ गैलन पर हाथ साफ किया गया है।

सिनेमा सम्बन्धी आँकड़ों से यह ज्ञात हुआ है कि यदि १९५५ में दिल्ली निवासियों ने प्रति माह १०० फिल्में देखीं, तो १९५९ में २६०।

१९५५ में ५६,०२० रेडियो लाइसेंस बनाये गये। १९५९ में ९९,४३२।

यह तो हुई शराब, सिनेमा और रेडियो की बात। अब जरा चोरियों, डकैतियों के आँकड़ों पर भी नजर डालिये।

१९५९ में ७० खून हुए, ५२ खून की कोशिशें हुईं, ५६०६ चोरियाँ हुईं। इसके मुकाबले में १९५५ में केवल ४२ खून हुए, ४० खून की कोशिशें हुईं और ४,२२३ चोरियाँ हुईं।

प्राप्त आँकड़ों से यह भी ज्ञात हुआ है कि प्रति माह जेल में दाखिल होने वाले मुजरिमों की तादाद भी लगातार बढ़ती जा रही है। १९५५ में ८६० से १९५९ में १,०६५ तक पहुँच गयी है।

—'हिन्दुस्तान टाइम्स' से

काशी नगर सर्वोदय-अभियान

१० जुलाई से ११ सितम्बर तक अखंड पदयात्रा

काशी के सर्वोदय-सेवकों ने १० जुलाई से नगर में एक अखंड पदयात्रा चलाने का तय किया है। पदयात्रा दो महीने तक चलेगी और ता० ११ सितम्बर को उसकी पूर्णाहुति होगी, ऐसा सोचा गया है। कार्यकर्ताओं की टोली रोज सवेरे एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले में जायेगी, दिन में उस मुहल्ले में घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क करने की कोशिश करेगी, शाम को मुहल्ले में आम-सभा करेगी और दूसरे दिन सवेरे फिर दूसरे मुहल्ले के लिए चल पड़ेगी। पिछले कई दिनों से इस काम की चर्चा और पूर्वतैयारी होती रही और जन-साधारण के मन में सम्भावित पदयात्रा के सबंध में उत्सुकता और कुतूहल निर्माण हुआ।

इस नगर-अभियान का लक्ष्य क्या है? दो महीने की इस पदयात्रा से क्या हासिल करना चाहते हैं, यह कार्यकर्ताओं के सामने भी स्पष्ट होना चाहिए और लोगों के सामने भी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की यह दिली तमन्ना है, उत्कट आकांक्षा है कि समाज की मौजूदा व्यवस्था सर्वोदय की दिशा में पलटनी चाहिए। विनोबाजी ने अपनी भाषा में और अपने तरीके से कहा है कि काशी 'सर्वोदयनगरी' बननी चाहिए। उन्होंने कार्यक्रम के तौर पर कुछ बातें भी सुझायी हैं। पर इसका मतलब यह हरगिज नहीं मानना चाहिए कि सर्वोदय कार्यकर्ता यह कार्यक्रम लेकर काशी नगर में घूमने वाले हैं और जनता से केवल उसमें "सहयोग" की अपेक्षा है।

सर्वोदय-विचार की यह बुनियादी मान्यता है कि सर्वोदय लोगों की अपनी प्रेरणा और अपनी खुद की कर्तृत्व शक्ति के आधार पर ही खड़ा हो सकता है। लोगों की अपनी प्रेरणा के बिना बाहर से आयी हुई चीज, चाहे वह सेवक की सेवा द्वारा ही क्यों न आयी हो, और कुछ भी हो, 'सर्वोदय' नहीं हो सकती। जनता की भलाई का दावा तो सभी करते हैं, और अपने-अपने ढंग से ईमानदारी के साथ उसकी कोशिश भी करने वाले लोग हैं, पर इन सारी कोशिशों का नतीजा जैसा चाहिए वैसा इसीलिए नहीं निकलता कि वे प्रयत्न या तो कानून की ताकत से या दबाव की ताकत से होते हैं, जनता के अपने अभिक्रम से नहीं। हम सर्वोदय-सेवक भी अगर कोई कार्यक्रम लेकर जनता के पास जाते हैं, तो उसका नतीजा बहुत भिन्न आने वाला नहीं है। जनता यही मानती रहेगी कि ये कार्यक्रम इनके हैं और हमें उसमें 'सहयोग' देना है।

काशी नगर में इस सप्ताह जो पदयात्रा शुरू होने वाली है, वह इस प्रकार का कार्यक्रम लेकर शुरू होने वाली नहीं है। "स्वच्छ काशी", शराब-बन्दी या शान्ति-स्थापना आदि का काम-ऐसी चीजें हैं, जो अच्छी हैं और आवश्यक हैं। पर स्पष्ट है कि अगर ये चीजें, और इसी प्रकार के दूसरे कार्यक्रम, अच्छे हैं और जरूरी हैं तो लोगों को खुद को वैसा महसूस होना चाहिए और उनको स्वयं ये काम उठा लेने चाहिएँ। यह भी स्पष्ट है कि इस तरह के अच्छे काम २-४ महीने करके बंद करने के नहीं होते, बल्कि सतत जारी रहने चाहिएँ।

पदयात्रा का उद्देश्य इतना ही है कि हम लोगों को सर्वोदय का विचार समझायें, उन्हें वह अच्छा और जरूरी मालूम हो, तो उस विचार के अनुसार काम करने की प्रेरणा उनमें जागृत करें और वे अगर कोई कार्यक्रम उठाते हैं, तो फिर एक नागरिक की हैसियत से उनके साथ-साथ हम भी अपना नम्र सहयोग उस काम में दें। सर्वोदय विचार किसी भी एक या एक से अधिक कार्यक्रमों तक सीमित नहीं है, वह तो जीवन का एक दृष्टिकोण है। विनोबा स्वयं अभी इन्दौर शहर की ओर जा रहे हैं। ता० २२-२३ जुलाई तक वे वहाँ पहुँचेंगे और इन्दौर शहर के लिए भी उन्होंने यह कहा है कि उसको सर्वोदय-नगर बनाना चाहिए। एक भाई के यह प्रश्न करने पर कि "सर्वोदय-नगर" से उनका क्या मतलब है, विनोबाजी ने जो जवाब दिया, वह काशी के लिए भी लागू होता है। विनोबाजी ने इतना ही कहा कि सर्वोदय-नगर का मतलब यह है कि "वहाँ के निवासी पहले दूसरों को खिला-कर फिर खुद खायेंगे, सबके भले में अपना भला समझेंगे।" आज समाज की अधिकांश समस्यायें इसीलिए खड़ी हुई हैं कि व्यक्ति-व्यक्ति अपने ही स्वार्थ की सोचता है, अपने और अपने कुटुम्ब के दायरे से बाहर की चिन्ता वह बिल्कुल नहीं करता। उसकी इस वृत्ति के कारण समाज की सारी व्यवस्था और परिस्थिति भी दूषित हो गयी है। सारा समाज परस्पर होड़ और "मैं मेरी बुझाऊँ, तुम तुम्हारी बुझाओ", इस आधार पर चल रहा है। नतीजा यह हुआ है कि हर व्यक्ति अपनी बुद्धि और शक्ति का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करना ही अपना चरम लक्ष्य मानता है और इस प्रकार जो सबसे ज्यादा ताकत-वर और ज्यादा बुद्धिमान है, वह या तो सीधा दूसरों का शोषण करके या उनकी उपेक्षा करके अपना व्यवहार चलाता है। इस प्रकार की व्यवस्था का नतीजा परस्पर-संघर्ष और विनाश का ही हो सकता है।

इस मौजूदा परिस्थिति को बदलना हो, तो उसका इलाज वही है, जो विनोबा ने ऊपर सुझाया है कि लोग सबके भले में अपना भला समझें और पड़ोसी के सुख-दुख में शरीक हों। यह भावना अगर समाज में जागृत हुई, तो फिर आगे के सारे काम उस विचार में अपने-आप निकलेंगे और हमारी आये दिन की समस्याएँ भी हल हो सकेंगी। काशी नगर में पद-यात्रा का जो अभियान चलने वाला है, उसका एकमात्र उद्देश्य यही है और होना चाहिए कि हम लोगों को सर्वोदय का मूल-विचार समझायें और उनको मिलजुल कर काम करने की प्रेरणा दें। उसके बाद फिर कार्यक्रम के बारे में हमें सोचने की जरूरत नहीं होगी, लोग स्वयं सोचेंगे, अपनी शक्ति और परिस्थिति के अनुसार कार्यक्रम बनाएँगे और हम नम्रतापूर्वक भरसक उसमें सहयोग करेंगे। लोग अगर इस विचार को ग्रहण नहीं करते हैं, तो हम उनको समझाने का अपना प्रयत्न जारी रखेंगे, बार-बार उनके पास पहुँचेंगे, उनकी सेवा करेंगे और उस दिन का इन्तजार करेंगे, जब उनके हृदयमें 'राम' जगेगा। इससे अधिक हमारा काम नहीं है, हमारा दावा भी नहीं है, यह हमको और काशी की जनता को भी अच्छी तरह समझ लेना है।

पिछले दिनों इस विचार को लेकर जनता के साथ जितना सम्पर्क आया है, उस पर से यह आशा और उत्साह बनता है कि काशी के लोग इस विचार को सुनने और समझने के लिए अनुकूल हैं। काशी सदा से तपोभूमि रही है। देश के कोने-कोने से आये हुए अध्यात्मी साधक यहाँ रहते हैं। विद्वानों और विद्यार्थियों की तो यह नगरी ही है। इतनी बड़ी चीज और विचार संपत्ति दूसरे शहर में शायद ही मिले। इसलिये काशी नगर में सर्वोदय विचार को ग्रहण करने की अनुकूल भूमिका हो यह स्वाभाविक ही है। हमें आशा है कि काशी नगर की पदयात्रा के इस प्रारंभिक अभियान में लोगों का पूरा सहयोग मिलेगा और काशी सचमुच एक सर्वोदय-नगरी बने इसके लिए आगे के काम का रास्ता प्रशस्त होगा।

सिद्धराज ढड्ढा

•

मासिक-चिट्ठियाँ

असम की चिट्ठी

विनोबाजी ने पिछले ९ वर्षों में पूरे भारत की परिक्रमा पूरी कर डाली है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक उन्होंने सर्वोदय-विचार का संदेश पहुँचाया है। केवल असम प्रदेश में ही वे अभी तक नहीं आ सके हैं। पर इस प्रदेश में भी उनके विचारों की गूँज पहुँच गयी है एवं सर्वोदय-विचार के संदेशवाहक कार्यकर्ताओं ने यहाँ पर भी भूदान-ग्रामदान, शान्ति-सेना आदि के रूप में सर्वोदय का अभियान चलाया है। लखीमपुर क्षेत्र में सघन रूप से ग्रामदानों का होना, इस बात का प्रमाण है।

१ जून से असम के प्रमुख व्यापार केन्द्र, गोहाटी में नगर-पदयात्रा का काम प्रारंभ किया गया है। जब पदयात्रा का आरंभ हुआ, उस समय नगर के अनेक नागरिक, कांग्रेस, पी० एस० पी०, साम्यवादी तथा सरकारी अधिकारी भी उपस्थित थे। पदयात्रियों के ठहरने का, भोजन का व उनकी सभाओं का आयोजन करने के लिए प्रमुख नागरिकों की एक समिति बनायी गयी है।

पदयात्रा के साथ ही नित्य सामूहिक अध्ययन का कार्यक्रम चलता है, इसलिए इस यात्रा को एक 'चलता-फिरता शिविर' ही कहा जा सकता है। इस शिविर में सर्वोदय और उसके विविध पहलुओं से संबंधित कुछ विषय चुन लिये गये हैं और इन विषयों पर विशिष्ट विद्वानों के भाषणों का कार्यक्रम रखा है।

१६ कार्यकर्ता इस पदयात्रा में स्थायी रूप से भाग ले रहे हैं और वैसे शहर के अनेक सर्वोदयप्रेमी इस यात्रा में आते रहते हैं। उल्लेखनीय बात यही है कि इस काम में नगर के हर वर्ग के लोगों का पर्याप्त सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त हो रही है।

•

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब कुछ उन दो-चार प्रान्तों में से एक है जिनमें विनोबाजी ने एक से अनेक बार पदयात्रा की। अशान्त-सवार का नया कार्यक्रम विनोबाजी को पंजाब में ही सूझा! पंजाब-यात्रा के समय रचनात्मक कार्यकर्ताओं का आपसी संपर्क बहुत मजबूत हुआ और खादी-संस्थाओं के विशेष प्रयत्न से हजारों की संख्या में सर्वोदय-पात्र स्थापित हुए।

कार्यकर्ताओं में विनोबाजी की यात्रा के बाद कुछ तो शिथिलता आने ही वाली थी, फिर भी मई माह में लगभग सौ रुपये सर्वोदय पात्र से और ८७५ रुपये संपत्ति-दान से प्राप्त हुए।

पंजाब में विनोबाजी ने मजहब और सियासत के खिलाफ और आत्मज्ञान एवं विज्ञान के समन्वय के बारे में विस्तार से विवेचन किया। सर्वोदय मंडल ने विनोबाजी के भाषणों को प्रकाशित करने की योजना की है। राजस्थान और पंजाब-यात्रा में विनोबाजी का विरोध करने वालों की ओर से एक मुख्य आक्षेप यह भी था कि वे गो-रक्षा विरोधी हैं। श्री ओमप्रकाश त्रिखा ने हाल ही में एक पुस्तक लिखी है : 'गो-भक्त विनोबा।' आशा है इस पुस्तक से लोगों का भ्रम दूर होने में सहायता मिलेगी।

विनोबाजी की यात्रा के बाद ग्रामदानी गाँवों की जाँच का काम भी हुआ।

बरनाला शहर (पंजाब) में एक सर्वोदय-विचार समिति की स्थापना की गयी है। इस समिति की बैठकें महीने में दो बार नियमित रूप से होती हैं। अभी तक शहर में ७५ सर्वोदय-पात्र रखे जा चुके हैं। १९ जून की एक बैठक में यह निर्णय किया गया कि सर्वोदय-पात्रों की स्थापना तथा साहित्य-प्रचार के काम पर विशेष रूप से ज़ोर दिया जाय।

•

गुजरात सर्वोदय-मंडल के निर्णय

भावी कार्यक्रम, आर्थिक परिस्थिति, शान्ति-सेना के संगठन जैसे आन्दोलन के महत्त्व के पहलुओं के बारे में सोचने के लिए गुजरात सर्वोदय-मंडल की सभा ता० ७-८ जून को हरिजन-आश्रम अहमदाबाद में हुई, जिसमें श्री रवि-शंकर महाराज ने भी एक दिन प्रदेश भर के कामों का विवरण सुना। गुजरात और सौराष्ट्र के अलग-अलग प्रदेशों से करीब ५० कार्यकर्ता भाई-बहन इसमें उपस्थित रहे।

पारडी के प्रश्न पर जो निवेदन उप-समिति ने बनाया है, उसे मुख्य मन्त्री की सेवा में पेश करके उस पर चर्चा उनसे होने के बाद आगे का काम निश्चित करने का जिम्मा सौंपा गया।

पदयात्राओं के बारे में खेड़ा जिले के बोरसद तालुका में २७ मई से आरंभ हुई पदयात्रा का ११ से २४ जून का दूसरा हिस्सा बोरसद से आरंभ करने का तय किया गया। उत्तर गुजरात की पदयात्रा ने महेसाणा, बनासकांठा जिलों का प्रवास पूरा किया है। आगे का कार्यक्रम बनाया गया। ता० १ से ३० जुलाई तक उस जिले के जंबुसर तालुका में पदयात्रा चलाने का निर्णय हुआ।

शान्ति-सेना संगठन की दृष्टि से प्रांतीय स्तर पर आयोजन करने के लिए गुजरात के सब शान्ति-सैनिकों की एक 'रैली' बड़ोदा में जुलाई के तीसरे सप्ताह में करने का निर्णय हुआ।

गुजरात सर्वोदय-मंडल की एक बैठक विनोबा जब इन्दौर के नजदीक आ रहे हैं, तब दो दिन उनके समक्ष मार्ग-दर्शन की दृष्टि से इन्दौर-यात्रा की अनुकूलता देख कर जुलाई के तीसरे सप्ताह में बुलाने का तय हुआ।

कार्यकर्ताओं के आर्थिक निर्वाह का प्रश्न संपत्तिदान की धारू आय के अभाव में और सर्वोदय पात्र के संग्रह के अभाव में दिन-प्रतिदिन नाजुक होता जा रहा है। इसलिए मित्रों और शुभेच्छुओं के पास से अभी वार्षिक नियत रकम जमा करने के लिए जुलाई में शहरों में विशेष संपर्क स्थापित करने का सोचा गया है।

उद्योग-दान के विचार को विकसित करने के लिए और लोगों तक विनिमय की दृष्टि से यह विचार पहुँचाने के लिए शिविर आदि का कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक समिति बनायी गयी, जिसके संयोजक श्री प्रबोध चोकसी हैं।

मंडल के पूरे समय के कार्यकर्ताओं की आर्थिक स्थिति से परिचित रहने के लिए और हरएक के काम की तथा आर्थिक जरूरत की जानकारी प्राप्त करके योग्य प्रबंध करने के लिए मंडल के प्रमुख श्री द्वारकादास भाई जोशी और श्री नारायण भाई देसाई को संपूर्ण जिम्मेवारी से यह काम सौंपा गया।

उद्योग-दान का विचार अभी यहाँ के कार्यकर्ताओं को कुछ नया-सा लगता है, इसलिए कार्यकर्ताओं में उसकी अच्छी जानकारी हो तथा परस्पर इस विषय पर विचार-विनिमय हो, इस दृष्टि से ता० ८-९ जून के बीच सर्वोदय मंडल की बैठक के साथ हरिजन आश्रम, अहमदाबाद में एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बाहर के संबंधित भागों के लोग भी निमंत्रित किये गये और जो हेतु, शिविर का रखा था वह काफी हद तक सफल हुआ और कार्यकर्ताओं की इस विषय में ज्यादा अध्ययन करने की वृत्ति हुई, जिसके लिए एक समिति भी बनायी गयी है।

—किसन त्रिवेदी

●

उत्तर प्रदेश का अखंड पद-यात्रा

प्रान्त-प्रान्त में अखंड पद-यात्रा चले, पू० विनोबाजी के इस विचार के अनुसार तथा बाबा राघवदासजी की पुण्य-स्मृति में १५ अगस्त, '५८ से मुरादाबाद से अखंड पद-यात्रा प्रारम्भ हुई। पद यात्रा चलते अब करीब दो वर्ष पूरे होने आये हैं।

टोली में तीन पद-यात्री शुरू से अब तक चले आ रहे हैं। सर्वश्री पुजारी रायजी, रूद्र प्रतापजी तथा अलख नारायणजी। इसके अलावा, पर्वतीय क्षेत्र के श्रवण कुमार, सुन्दर लाल, श्री मोहन लाल भू-भिक्षुक, श्री आनन्दी प्रसाद शर्मा (भूतपूर्व प्रिंसिपल, देहरादून कालेज) तथा श्री रामजी भाई भी अखंड पैदल चले।

टोली में माताओं का अभाव हो, ऐसा कम ही मौका रहा। सुश्री चन्द्रावती, बागमती तथा शशिबाला बहन ने अदम्य साहस के साथ सैकड़ों मील की पद-यात्रा करके स्त्री शक्ति में नवजागरण में योग दिया।

बीच-बीच में श्री ब्रह्मदेव बाजपेयी, श्री सुन्दर लाल, श्री ओमप्रकाश गौड़ तथा श्री करण भाई भी मिलते रहे। वे यथा-संभव टोली की पूर्वव्यवस्था आयोजित करते रहे। पद यात्रा के दौरान में राज-नीतिक पक्षों, सरकारी-गैरसरकारी संस्थाओं का योग भी मिला। श्री गांधी आश्रम का विशेष योग रहा। टोली में हर समय औसतन १२ आदमी रहे।

अतिरिक्त कार्यक्रम के अलावा श्रम व सफाई आदि का नियम रहा—अपवाद भी शामिल है।

सभा, सेमिनार, सम्मेलन के मार्फत लोगों में ग्राम स्वराज्य, नई तालीम तथा संपत्ति-दान से ट्रस्टीशिप तक के अलावा, अन्य कई विषयों पर सामान्य साधारण श्रेणी में मुख्य चर्चा होती थी।

उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर में श्री गांधी-स्मारक निधि के कार्यकर्ताओं के सहयोग से "आकाशवाणी" द्वारा टोली के नायक श्री पुजारी रायजी "विनोबा-मिशन" के बारे में "इवेंटेचुअल व्यूज" में बोले। इन पिछले २०-२२ महीनों में कुल ४,११२ मील की पदयात्रा हुई और करीब २ लाख आदमियों के पास सर्वोदय का संदेश पहुँचा। करीब ९ हजार रुपये की साहित्य-बिक्री के अलावा भूदान-प्राप्ति, सर्वोदय-पात्र आदि का काम भी हुआ। उत्तर प्रदेश के ५२ जिलों में से ४२ जिलों में टोली घूम चुकी है और इन अर्से में उसके ५८९ पड़ाव हुए।

●

यात्रा की एक रात !

२० जून को उत्तर काशी, टिहरी गढ़-वाल जिले के सिल्यारा आश्रम से चल कर रास्ते में पड़ने वाले गाँवों में सभाएँ कीं। बीहड़ मार्गों को पार करते हुए २१ जून को १८ मील दूर लम्बगाँव पहुँचे। शाम के समय बच्चों के साथ सर्वोदय-विचार के सम्बन्ध में बातचीत हुई। रात को टिकने के लिए लम्बगाँव से एक मील दूर, नौघर पहुँचे।

लगभग ६० परिवारों के इस गाँव में लोग खेती बाड़ी के अलावा सड़क व भवन-निर्माण में काम तथा कुछ लोग मैदानों में पूजन के लिए गंगाजल ले जाते हैं। गाँव में २-३ ठेकेदार व एक दुकान भी है। उनके पक्के मकानों को देख कर आसानी से आर्थिक स्थिति का अन्दाजा लगाया जा सकता है! परन्तु गाँव के बीच में स्कूल की इमारत, जहाँ पर हम टिके, जर्जर हालत में थी। दरवाजे तो दोनों कमरों के गायब थे। एक कमरे पर पुराने कनस्तरों की छवाई कभी की गयी होगी, जो अब झुक गयी है। अन्दर धूल और गर्द का यह हाल था कि ३ बार झाड़ू देने पर भी वह साफ न हुई! सार्वजनिक संपत्ति के प्रति उपेक्षा की यह वृत्ति हमारे लोक-शिक्षण के अभाव का स्पष्ट प्रमाण है।

हमारे भोजन के इंतजाम के बारे में मोरसिंहजी, जो इसी गाँव के हैं और लम्ब-गाँव स्कूल में शिक्षक हैं, को चिन्ता थी। इससे पहले कि वे अपनी चिन्ता प्रकट करते, मैंने उनके सामने तीन सुझाव प्राथमिकता के आधार पर रखे :

(१) घर-घर से, एक-एक रोटी इकट्ठी की जाय।

(२) नौ व्यक्तियों के लिए नौ परिवारों में प्रबन्ध हो।

(३) स्कूल में राशन मंगा कर खिचड़ी पकायी जाय।

हमारे साथ लड़कों की दोस्ती हो गयी थी। उन्होंने पहला सुझाव खुशी खुशी मंजूर किया। इसमें साग की कमी पड़ सकती थी। उसके लिए मोरसिंहजी गुड़ ले आये। लगभग १० बजे लड़के एक टोकरा भर कर रोटियाँ और एक पतीली में आलू-प्याज और चौलाई की मिली हुई सब्जी लेकर आ गये। हम सबने हाथ पर रोटियाँ और साग लेकर खाया। कमी पड़ने पर गुड़ के साथ रोटियाँ खायीं। भोजन में बड़ा आनन्द आया! घर-घर से अलग-अलग नमूने की रोटियाँ आयी थीं—कोई मोटी, कोई छोटी, पतली, तो कोई चौड़ी!

जितने घरों से रोटियाँ आयी थीं, उतने घरों में सर्वोदय की चर्चा हो रही थी।

आश्रम, सिल्यारा
उत्तर काशी,
टिहरी गढ़वाल

—सुन्दरलाल

●

धर्मपुरी क्षेत्र में सघन पदयात्रा

"१९३२ से ही मुझे मेरा 'विश्वनाथ' नाम खटकता रहा है। मैं 'विश्वनाथ' नहीं, अपितु 'विश्वदास' बनना चाहता हूँ। मेरी अंतिम इच्छा यही है कि इस क्षेत्र में सर्वोदय-विचार को अग्रसर करने वाली अनेक यात्राएँ हों तथा इस बीच जब कभी मेरा शरीर गिरे, तो उसकी राख उन यात्रियों के मार्ग में बिछा दी जाय।"—ये शब्द मध्यप्रदेश के सुपरिचित सर्वोदय-सेवक श्री वि० स० खोडे ने धर्मपुरी सामूहिक पदयात्रा की समाप्ति के अवसर पर कहे।

श्री ठाकुरदास बंग और श्री गंगाधर पाटणकर के संयोजन में मध्य प्रदेश के धर्मपुरी क्षेत्र में ६ दिनों तक ३९ पदयात्री टोलियों ने सघन पदयात्रा का कार्यक्रम आयोजित किया। लगभग ७५ कार्यकर्ताओं ने इस पदयात्रा में भाग लिया, जिसमें गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि कई प्रांतों के कार्यकर्ता शामिल थे।

१९ जून को एक शिविर महेश्वर स्थान में श्री अप्पासाहब पटवर्धन की अध्यक्षता में हुआ और वहाँ से ये पदयात्री इन्दौर के लिए रवाना हो गये, जहाँ १० दिन के शिविर के पश्चात् नगर-पदयात्रा का कार्यक्रम चल रहा है।

यह क्षेत्र आदिवासियों तथा हरिजनों का क्षेत्र है तथा वे घोर गरीबी एवं सामाजिक परेशानियों से घिरे हुए हैं।

●

सर्वोदय-आश्रम, गागोदे

विनोबाजी का जन्मस्थान, जो महाराष्ट्र प्रदेश के रत्नागिरी जिले में है, गागोदे गाँव में ता० ६ अप्रैल, '५९ को सर्वोदय-आश्रम की स्थापना हुई। उसी दिन से वहाँ लोगों के विकास का तथा ग्रामदान आदि के योग्य वातावरण निर्माण करने का कार्य चालू हो गया। लोगों को सर्वोदय-विचार समझाया गया। लोग यद्यपि निपट निरक्षर हैं, फिर भी विचार समझने के बाद उनकी प्रवृत्ति इस ओर काफी झुकी। आखिर यहाँ तक हुआ कि ३३ 'कातकरी' लोगों में से (यहाँ अधिकतर 'कातकरी' लोगों की ही बस्ती है) २ भाई आश्रम के कार्यकर्ताओं के पास आये और कहने लगे कि हमें पढ़ना सिखाइये। मतलब यह कि शिक्षा की ओर उनका झुकाव है।

गाँव के मराठा लोगों की हालत कातकरियों से बेहतर है। खुद की जमीन न रहने पर भी थोड़ी-बहुत जमीन सबके पास है। मगर बैल किसी के पास नहीं है, इसलिए भाड़े पर लाने पड़ते हैं! इस समस्या का हल करने के लिए गो-पालन का विचार सुझाया गया, जिससे बैलों की इफरात हो जाय। इसके बाद यह तय किया गया कि इस प्रकार जिन्हें बैल मिलेंगे, वे गाँव को धान्य का एक निश्चित अंश दें, उससे गाँव का भंडार समृद्ध होगा। इन सब कामों का प्रबंध आदि करने के लिए एक ग्रामसभा बनाने का विचार रखा गया।

लोगों की इस विचार में रुचि बढ़ रही है। कार्यकर्ताओं को सूत कातते देख कर उनकी प्रवृत्ति भी उस ओर हो रही है। कईएक ने तो कहा भी कि हम सूत कातेंगे। उन्हें बताया जाता है कि रोज ८ घंटे काम किया जाय, तो अंबर-चरखा ८-१० आने तक की कमाई प्रतिदिन के हिसाब से दे सकता है। इसे भी लोग समझ रहे हैं।

अन्य जगह की तरह यहाँ भी शराब चलती है। शराब-बन्दी की ओर भी कदम बढ़ाये गये हैं। ४-५ तरुण ऐसे दीखे, जो किसी भी तरह के व्यसन से एकदम मुक्त हैं। प्रयत्न चल रहे हैं, सफलता भी मिल रही है। कुल मिला कर देखा जाय, तो लोगों के दिल में श्रद्धा-भावना जग रही है और आश्रम के चारों ओर उसके अनुकूल सुन्दर वातावरण का निर्माण हो रहा है।

महाराष्ट्र समाचार

दक्षिण-सातारा :

दक्षिण-सातारा जिले, शिराले क्षेत्र में जो १५-२० ग्रामदान हुए, उनमें १३ ग्रामदानी गाँवों की ग्राम-स्वराज्य सहकारी सोसाइटियाँ कानूनी तौर से स्थापित हुईं।

पुसद तालुका :

यवतमाल जिले के पुसद तालुका में मध्यप्रदेश भूदान-यज्ञ मंडल की ओर से ११ टोलियाँ भू-वितरण के कार्य के लिए रवाना हुई हैं। कुल १५०० एकड़ भूमि का वितरण-कार्य इस बार सम्पन्न होगा, ऐसी आशा है।

नगरदेवले :

यहाँ हाल में ही आदाता-सम्मेलन हुआ। जिले में कुल ३,५१० एकड़ जमीन ८५३ दाताओं से प्राप्त हुई। ३७४ आदाताओं में २,१७५ एकड़ जमीन वितरित की गयी।

रत्नागिरी :

ओवालिया, माणगाँव के ग्रामीणों की एक सभा मई महीने में देवडा में हुई। ग्रामदानी गाँवों के विभिन्न प्रश्नों पर चर्चा के बाद यह तय किया गया कि आने वाले चार महीनों में ऐसी परिस्थिति निर्माण की जाय, जिससे ग्राम-स्वराज्य सोसाइटियों का काम पूरा हो और गाँव के लिए पुलिस की मदद की अपेक्षा न रह जाय।

दरभंगा पदयात्री दल

बिहार में एक टोली तो प्रांतीय स्तर पर अखंड पदयात्रा करती ही है, पर अलग-अलग जिलों में भी कुछ टोलियाँ निरन्तर पदयात्रा कर रही हैं। दरभंगा जिले में भी पदयात्रा सतत चल रही है और टोली के कार्यकर्ता गाँव-गाँव सर्वोदय का संदेश पहुँचा रहे हैं।

भू-वितरण, इलाहाबाद : वार्षिक विवरण

प्रदेशीय भू-वितरण टोली ५२५ गाँवों में पहुँची। टोली ने २०,९७४ बीघा १० बिस्वा ३ बिस्वान्सी का सर्वे किया। सर्वेक्षित भूमि में से २५०८ बीघा १२ बिस्वा १८ बिस्वान्सी का वितरण किया। शेष भूमि में से १३,०१८ बीघा १९ बिस्वान्सी कृषि के सर्वथा अयोग्य रही। १०,३३९ बीघा जंगल और पहाड़ है। ३,९६ बीघा १७ बिस्वान्सी भूमि पर लोगों का अनधिकार कब्जा है। पूर्ववितरित भूमि में से १८८० बीघा ३ बिस्वा १६ बिस्वान्सी पर भूमिहीनों को कब्जा दिलाया। तहसील के कागजों का मिलान करने पर ४९९ बीघा ११ बिस्वा भूमि खारिज हो गयी।

प्रदेशीय भू-वितरण टोली का संचालन श्री श्रीकान्त चौहान करते थे। उनके सहयोगी श्री कपिलदत्त अवस्थी, श्री जगदीश सिंह तथा श्री बेनबहादुर सिंह थे।

वीरभूम जिला सर्वोदय-सम्मेलन

ता० ११, १२ और १३ जून को विष्णुपुर ग्राम में वीरभूम जिला सर्वोदय-सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर एक सर्वोदय-प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

सम्मेलन का खुला अधिवेशन प्रतिदिन सायंकाल होता था। सभा में लगभग १० हजार स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री पंचानन बोस ने की।

विनोबाजी का पता :
मार्फत—मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल,
११२ स्नेहलतागंज, इन्दौर शहर
(म० प्र०)

झुंझनू जिले में ७ सप्ताह की पदयात्राएँ

जिला सर्वोदय-मंडल, झुंझनू की ओर से चिड़ावा पंचायत-समिति क्षेत्र में १५ जून से ८ अगस्त तक पदयात्रा का आयोजन किया गया है। पदयात्रा का आरंभ श्री गोकुलभाई भट्ट द्वारा हुआ। यात्रा के दौरान में ३ जुलाई को किशोरपुरा में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण पर एक गोष्ठी हुई, जिसमें इस क्षेत्र के तमाम ग्रामसेवकों व ग्राम-मुखियों ने भाग लिया।

निधन समाचार !

रायपुर के पुराने कार्यकर्ता और जीवन-दानी श्री रामाधारजी का निधन गत १२ जून, '६० को हो गया! वे पिछले काफी महीनों से अस्वस्थ थे। श्री रामाधारजी से सर्वोदय-कार्य के लिए जीवन-दान करने वाले निरन्तर प्रयत्नशील, उत्साही कार्यकर्ता थे। अनेक बार पदयात्राएँ करके आपने सर्वोदय घर-घर में संदेश पहुँचाया।

इसी तरह सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, काशी के कार्यकर्ता श्री रामू प्रसाद का निधन भी २५ जून को चेचक की बीमारी में अचानक हो गया! पिछले कुछ वर्षों से श्री रामप्रसाद प्रकाशन-विभाग में काम कर रहे थे।

मातृमंगल का विद्यालय-सत्र

मातृमंगल अम्बर-विद्यालय (केवल महिलाओं के लिए) सीकर का नये सत्र में प्रवेश करने के लिए आवेदन-पत्र भेजने की अंतिम तिथि १५ जुलाई, १९६० है। विद्यालय में खादी-कमीशन की योजना के अनुसार प्रत्येक छात्रा को पैंतालिस रुपये मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है। प्रशिक्षण-अवधि नौ माह की है। छात्राओं की शैक्षणिक योग्यता मिडिल या समकक्ष होनी चाहिए। हिन्दी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है तथा विद्यालय में खादी पहनना अनिवार्य है। १६ से ३५ साल तक की आयुवाली महिलाओं को अपना आवेदन-पत्र आचार्य, मातृमंगल अम्बर-विद्यालय, पो० सीकर (जि० सीकर) राजस्थान के पते पर शीघ्र भेज देने चाहिए।

क्षमा-याचना

ता० १० जून के "भूदान-यज्ञ" में पृष्ठ ५ पर 'सत्याग्रह का प्रयोग' शीर्षक से एक लेख छपा था। हमें खेद है कि हमारी असावधानी के कारण उस लेख में कुछ व्यक्तियों के बारे में ऐसी बातें छप गयी थीं, जो नहीं छपनी चाहिए थीं। हम उन व्यक्तियों से इस गलती के क्षमा-प्रार्थी हैं। —सं०

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा ... वाराणसी-१, फोन नं० ४१८५
वार्षिक मूल्य ६)
एक प्रति १३ नये पैसे

औजारों में बिजली के प्रयोग का सवाल

सिद्धराज ढड्ढा

चरखे या ग्रामोद्योग के औजारों में बिजली लगाने का प्रश्न सिर्फ यंत्रशास्त्र या अर्थशास्त्र का प्रश्न नहीं है, इसका बहुत बड़ा संबंध प्राकृतिक जीवन, समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र से आता है।

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा
वाराणसी, शुक्रवार १५ जुलाई, '६० वर्ष ६ : अंक ४१

श्री भारतानंद गांधीजी के व्यक्तित्व और विचार से आकर्षित होकर आये हुए उन विदेशियों में से एक हैं, जिन्होंने न सिर्फ गांधी-विचार को अपनाया, बल्कि हिंदुस्तान को भी अपना देश बना लिया। श्री मोरिस फिडमैन–जो भारतानंदजी का मूल नाम है–पोलैंड के निवासी और पेशे से इन्जीनियर हैं तथा वर्षों से खादी, ग्रामोद्योग आदि कामों में लगे हुए रहे हैं।

श्री भारतानंदजी ने अभी हाल ही में एक लेख लिखकर इस बात का जोरदार प्रतिपादन किया है कि अगर हमें मिलों से मुकाबला करना है और मिल के बने हुए कपड़े को हाथ से बने कपड़े के जरिये हटाना है, तो पुराने तरीके से अब काम नहीं चलेगा। अब हमें अम्बर चरखे में बिजली लगाकर उसके जरिये मिल के सूत का मुकाबला करना चाहिए। यह लेख इसी अंक में प्रकाशित हुआ है।

श्री भारतानन्दजी की दलील

चरखे में या दूसरे ग्रामोद्योगों के औजारों में बिजली लगाने की बात नयी नहीं है। गांधीजी के समय में भी, और बारबार, यह सवाल उठाया जाता रहा है। पर आज फिर से यह सवाल नये सदर्भ में खड़ा हुआ है। श्री भारतानन्दजी की मुख्य दलीलें यह हैं कि

१ बढ़ती हुई जनसंख्या के मुताबिक उत्पादन का बढ़ना अत्यंत आवश्यक है।

२ स्वावलम्बी तरीके की खादी थोड़ी ही चल सकती है, अधिकांश में लोगों को कपड़ा खरीद कर ही पहनना पड़ेगा।

३ इसका मुख्य कारण यह है कि मिल में कताई और बुनाई बिजली-शक्ति की मदद से होती है।

इसलिए अगर हम चाहते हैं कि लोग मिल का कपड़ा छोड़कर हाथ का बना हुआ कपड़ा इस्तेमाल करें, तो हमें चरखे में भी बिजली-शक्ति का उपयोग करना चाहिए, वरना चरखा मिल के मुकाबले में टिक नहीं सकेगा।

चरखे या ग्रामोद्योगों के औजारों में बिजली लगाने का प्रश्न सिर्फ यंत्र-शास्त्र या अर्थ-शास्त्र का प्रश्न नहीं है। इसका बहुत बड़ा संबंध समाज-शास्त्र और राजनीति-शास्त्र से आता है। केवल यांत्रिक या आर्थिक दृष्टि से ही विचार करें, तो बिजली लगाने पर भी चरखे से कातकर बनाया हुआ कपड़ा बड़े पैमाने पर चलनेवाले केंद्रित मिल उद्योगों के मुकाबले में "सस्ता" नहीं पड़ेगा। अगर खादी को टिकना ही है और अधिकांश लोग "कपड़ा खरीदकर ही पहनेंगे" हैं", जैसा श्री भारतानंदजी मानकर चले हैं, तो यांत्रिक दृष्टि से हम चरखे में कितना भी सुधार कर लें या उसमें बाहरी शक्ति लगा लें, वह मिल के मुकाबले में टिकने वाला नहीं है। खादी और ग्रामोद्योग अगर टिक सकते हैं, तो दो ही चीजों के आधार पर–स्वावलम्बन की भावना और संकल्प की शक्ति।

श्री भारतानंदजी ने भी अपने लेख के शुरू में इस बात का प्रतिपादन किया है कि विकेंद्रित अर्थ-व्यवस्था अहिंसक समाज-रचना के लिए आवश्यक है, पर श्री भारतानंदजी के लेख का कुल मिलाकर जो असर पड़ता है, वह यह है कि चरखे के साथ अगर हम बिजली-शक्ति जोड़ दें, तो फिर सारी मुसीबत दूर हो जायगी और हम मिलों की स्पर्धा सहन कर सकेंगे। हमारे खयाल से मुख्य बात बिजली लगाने न लगाने की उतनी नहीं है, जितनी यह है कि लोग केन्द्रित और विकेंद्रित अर्थ-रचना से होने वाले नुकसान और फायदे को अच्छी तरह समझ लें और स्वेच्छा पूर्वक एक रास्ता अपनायें। "खादी बनाम मिल," अर्थात् 'ग्रामोद्योग बनाम केंद्रित उद्योग"–इस प्रश्न का जवाब हमें यंत्र शास्त्र या अर्थ-शास्त्र से नहीं मिलेगा, बल्कि उसके लिए हमें समाज-शास्त्र और राजनीति-शास्त्र की गहराई में उतरना होगा।

केंद्रित अर्थ रचना और विकेंद्रित अर्थ-रचना इन दोनों का अंतर केवल सस्तेपन या महंगेपन तक सीमित नहीं है। ये दोनों चीजें दो भिन्न भिन्न जीवन-पद्धतियों की प्रतीक हैं। यंत्र-शास्त्र और अर्थ-शास्त्र की कसौटी पर ही हम कसेंगे, तो विकेंद्रित अर्थ-रचना न तो कुशल (एफीशिएन्ट) साबित होगी, न सस्ती। कलंक के ये दो धब्बे हमेशा उसके पीछे लगे रहेंगे। इसलिए हम नम्रता-पूर्वक कहना चाहते हैं कि खादी और ग्रामोद्योग की अर्थ-रचना अन्ततोगत्वा लोगों की संकल्प-शक्ति के बल पर ही टिक सकेगी और वह संकल्प तब होगा और उसमें बल तब आयेगा, जब लोग यह समझ लेंगे कि केंद्रित अर्थ-रचना अपने-आपमें कितनी भी "कुशल" और "सस्ती" क्यों न दिखायी देती हो, मानव की आजादी और उसके पूर्ण विकास की दृष्टि से वह किसी भी हालत में उपयोगी नहीं है।

दोष कहाँ है ?

दोष यंत्र में या बिजली आदि शक्ति में नहीं है। इन चीजों में दोष तब दाखिल होते हैं, जब इनका उपयोग बाजार के लिए होता है। बाजार और व्यापार का तत्त्व दाखिल होता है, चाहे वह व्यापार व्यक्तिगत मुनाफे के लिए हो, वहाँ परावलम्बन, शोषण और विषमता उसके पीछे आती है। इसीलिए गांधीजी ने केवल हिन्दुस्तान के लिए नहीं, केवल तत्काल के लिए नहीं, बल्कि एक सामाजिक सिद्धान्त के तौर पर इस बात का प्रतिपादन किया था कि मानव समाज में से अगर हिंसा, शोषण, विषमता और अन्याय को समाप्त करना है, तो मानव-समाज की रचना छोटी छोटी स्वावलम्बी और स्वायत्त इकाइयों के आधार पर ही होनी चाहिए। ऐसी इकाइयाँ खाने कपड़े जैसी बुनियादी आवश्यकताओं में स्वावलम्बी होनी चाहिए और इसलिए खादी के बाजार की या बिकने की वस्तु होकर टिकने का सवाल नहीं है (वह इस प्रकार टिक भी नहीं सकती) बल्कि वह एक स्वावलम्बी अर्थ रचना का अंग होना चाहिए।

इस तत्त्व को अगर हम स्वीकार करते हैं और गाँव-गाँव या क्षेत्र की योजना स्वावलम्बन के लिए बनती है तो फिर हम स्वावलम्बन के लिए औजार कैसे हों और उनमें किस शक्ति का उपयोग किया जाय, इन बातों का उत्तर परिस्थिति पर निर्भर करेगा। यह तो मान ही लिया गया है कि इस प्रकार की इकाइयाँ समृद्ध इकाइयाँ हाथी और बेकारी, शोषण आदि के सब पहलुओं पर विचार करके ही उनकी योजना बनेगी। यह भी देखना पड़ेगा कि बिजली का उपयोग जिस प्रकार की जीवन प्रणाली [वे आर शायक] हम रचना चाहते हैं, उसके प्रतिकूल तो नहीं पड़ता है। उदाहरण के लिए,

अगर हम प्रकृति को और उसके खजाने को लूट कर जिन्दा रहने की बजाय उसका आगे आने वाली पीढ़ियों की धरोहर के रूप में सावधान हो इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो हमारी सारी जीवन-पद्धति मनुष्य, पशु और वनस्पति की परस्पर पूरक और समन्वयकारी (Symbiotic) पद्धति ही हो सकती है।

अत बिजली या अन्य प्रकार की शक्ति का उपयोग उसी हद तक और उसी मात्रा में हम कर सकेंगे, जिस हद तक मनुष्य-शक्ति और पशु-शक्ति के पूरे उपयोग के साथ उसका मेल बैठता हो, अन्यथा नहीं।

बिजली किसके कब्जे में है ?

बिजली के उपयोग के सिलसिले में एक बात और सोचने की है, जिसका जिक्र चलते हुए ढंग से भारतानंदजी ने अपने लेख में किया है, लेकिन जो महत्त्व की बात है, वह यह कि जिस शक्ति का उपयोग हम अपने यंत्रों में करने वाले हैं, वह शक्ति किसके कब्जे में है ? क्या वह शक्ति गाँव-गाँव में या अमुक क्षेत्र में लोगों के कब्जे में होने से पहले ही हम अपने औजारों को उसके आधारित कर दें ?

अत चरखे में या दूसरे ग्रामोद्योगों के औजारों में बिजली शक्ति जोड़ने का सवाल केवल औजार-सुधार का या बाजार में मिल की चीजों के मुकाबले में टहर सकने का सवाल नहीं है, जैसा कि श्री भारतानंदजी के लेख से आभास होता है। गांधीजी ने केवल इसलिए चर्खे का और सादे औजारों का समर्थन नहीं किया था कि आजादी के पहले सरकार हमारे हाथ में न होने से हमें ऐसे ही औजारों की जरूरत थी, न सिर्फ इसलिए कि उस समय आम लोगों के पास पहुँचने का हमारे पास और कोई साधन नहीं था। श्री भारतानंदजी को मालूम है कि गांधीजी ने उनकी कल्पना का सुधरा हुआ चरखा कैसा होना चाहिए, इसकी कुछ कसौटियाँ निश्चित करके ऐसे चरखे के लिए एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया था। गांधीजी का वह स्वप्न आज तक पूरा नहीं हो सका है। पर उस पर से हम इतना मान सकते हैं कि गांधीजी किन दर्शनों के आधार पर और किस दिशा में समाज को ले जाना चाहते थे।

उद्योग-दान का विचार

सतीश कुमार

मनुष्य, उसका जीवन और यह समाज! यह त्रिकोण है और इस त्रिकोण की बुनियाद है कृषि तथा उद्योग! कृषि—मूलभूत जरूरतों का स्रोत है, तो उद्योग—उस स्रोत के परिष्कार का साधन!

ये दोनों साधन जीवन और समाज में गहरा सामंजस्य पैदा करने वाले होने चाहिए, हालांकि आजकल इन दोनों साधनों को शोषण का माध्यम बना लिया गया है। पर मानवीय संस्कृति, साहित्य, कला और आनन्द की आधार-शिला कृषि और उद्योग पर आधारित है।

आज 'उद्योग' का युग है। "औद्योगिक क्रांति" की बातें सर्वत्र सुनने में आती हैं। समाज परिवर्तन का आधार उद्योग और उससे संबंधित सारी परिस्थितियों को माना गया है। भारत में तो औद्योगिक क्रांति की बात बहुत नई नहीं है, पर योरप के देश तो उस प्रक्रिया से गुजर चुके हैं, गुजर रहे हैं। भारत के अनेक अर्थशास्त्री यहां पर भी औद्योगिक क्रांति का रास्ता देख रहे हैं। ऐसी दशा में सर्वोदय-विचारकों को भी औद्योगिक व्यवस्था के संबंध में विचार करना चाहिए।

श्री प्रबोध भाई ने अच्छे मौके पर उद्योग दान की कल्पना उपस्थित की है। ट्रस्टीशिप की बात काफी गहरी और अपने आप में पूर्ण है, यह मान लेने के बाद भी उद्योग-व्यवस्था के संबंध में सोचने के लिए काफी बातें बची रह जाती हैं। उद्योग पर समाज का स्वामित्व मान लेने के बाद निम्नोक्त बातें तो स्वयं तय हो जाती हैं (१) उद्योग समाजविरोधी न हो (२) उद्योग में लगे हुए कामगारों का उस उद्योग से विकास हो (३) जहाँ उद्योग चलता है, वहाँ के ग्राम समाज को उस उद्योग से लाभ मिले और (४) सारे समाज को भी उस उद्योग से कुछ न कुछ लाभ पहुँचे।

प्रबोध भाई ने जिसे 'उद्योग-दान' कहा है, वह आज की परिस्थिति में कैसे संभव है? सर्वप्रथम इसका प्रयोग खादी के उद्योग पर हो! खादी आज उद्योग के रूप में ही बनाई जाती है और बेची जाती है और साथ ही वह हमारे ही हाथ में भी है। पर उद्योग-दान की कल्पना के अनुसार उसका पूरा काम चलता है, ऐसा आज नहीं कहा जा सकता। यदि कोई एक खादी संस्था भी इस तरह का प्रयोग कर दिखाये, तो दूसरे उद्योग वालों को भी वैसा करने की प्रेरणा मिलेगी।

इस दृष्टि से पिछले अंक में प्रकाशित श्री छोटेमल गोयल के विचार काफी मननीय हैं। उन्होंने एक ट्रस्ट कोआपरेटिव की योजना उपस्थित की है। विस्तार में जाने पर कुछ मतभेद हो सकते हैं और कुछ नई बातें भी जोड़ी जा सकती हैं। पर साधारणतः यह योजना विचारणीय है।

खादी-संस्थाओं में उत्पत्ति का काम करने वाले, रंगाई छपाई का काम करने वाले और इसी तरह के दूसरे कामों पर लगे हुए मजदूरों में तथा कारखाने के मजदूरों में भावना की दृष्टि से, आर्थिक समानता की दृष्टि से एवं व्यवस्था की दृष्टि से यदि स्पष्ट अन्तर हो, तो फिर अन्य उद्योगपतियों के सामने अथवा सरकार के सामने—क्योंकि स्वयं सरकार भी अनेक उद्योगों का व व्यापार-संस्थाओं का प्रबंध संचालन करती है—एक उदाहरण होगा। वे इस दिशा में सोचने के लिए बाध्य होंगे। मजदूरों तथा मजदूर नेताओं के सामने भी एक विकल्प पैदा होगा।

खादी के उद्योग पर किसी व्यक्ति का स्वामित्व नहीं है। पर यह उद्योग भी कार्यकर्ताओं के एक निश्चित वर्ग के इर्द-गिर्द ही सीमित हो गया है। उस सीमा को तोड़ने की जरूरत है। आज और से उद्योग-दान के संदर्भ में यह और भी अधिक अनिवार्य हो गया है। यद्यपि 'नया मोड़' के रूप में इस सम्बन्ध में काफी सोचा जा रहा है, पर वह चिन्तन ग्रामरचना तथा स्वावलम्बन के विचार के संदर्भ में चल रहा है। वह तो हमारा लक्ष्य है ही, पर जब तक खादी उद्योग तथा व्यापार के रूप में चलती है, तब तक वह कैसे चले, यह प्रश्न तुरन्त सोचने लायक है।

सर्व सेवा संघ की खादी ग्रामोद्योग समिति इस सम्बन्ध में विशेष अनुसन्धान करने की जिम्मेदारी उठाये, ऐसा अनुरोध समिति से किया जाना चाहिए। उसमें क्या दिक्कतें हैं? आज की व्यवस्था को बदलने के बाद नई व्यवस्था का स्वरूप क्या होगा और उस व्यवस्था में कामगारों की व कार्यकर्ताओं की क्या स्थिति होगी, इस पर व्यावहारिक दृष्टि से सोचना होगा। कार्यकर्ताओं का मानस उसके लिए पूर्ण रूप से तैयार है, ऐसी बात नहीं है, इसलिए वैसी तैयारी भी करनी होगी।

यदि इस उद्योगदान का स्वरूप व्यावहारिक कसौटी पर स्पष्ट हो जाय, तो सरकार से भी यह कहा जा सकता है कि वह किसी एकाध कारखाने में 'ट्रस्टीशिप' का प्रयोग करे। उसके द्वारा गांधीजी के विचारों पर बार-बार आस्था व्यक्त की जाती है, इसलिए वह अपनी आस्था को शब्दों के बाद कर्म द्वारा भी साबित करे, ऐसा कहा जा सकता है। पर उससे पहले हमें अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि और व्यावहारिक कसौटी तैयार कर लेनी होगी।

●

भारत-तिब्बत सीमा पर

सुन्दरलाल बहुगुणा

२० जून की सुबह को प्रदेशीय सर्वोदय-मंडल के मंत्री श्री ओमप्रकाश गौड़ के नेतृत्व में हम आठ साथी सिल्यारा आश्रम से पदयात्रा करते हुए उत्तर काशी के लिए रवाना हुए। हमारे साथ महाराष्ट्र से उत्तरकाशी क्षेत्र में काम करने के लिए आये हुए एक शान्ति-सैनिक श्री ज्ञानेश्वर पटेल तथा सौराष्ट्र के एक तरुण विद्यार्थी भी थे, जो बद्रीनाथ की यात्रा के लिए निकले थे, लेकिन इस यात्रा में शामिल हुए।

हमारी पदयात्रा-टोली ने चार दिन में ४४ मील के पहाड़ी रास्ते पर पदयात्रा की। जहाँ-जहाँ गाँव मिलते, हम लोग रुक कर लोगों को सर्वोदय का शांति और प्रेम का संदेश सुनाते। ग्रामदान और डाकुओं के आत्मसमर्पण की कहानी लोग बड़ी दिलचस्पी से सुनते। यात्रा की दूसरी सुबह हम बेमरपट्टी के पटुड़गांव पहुँचे। छह हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित चालीस परिवार के इस गांव में लोग इतने संगठित हैं कि पिछले ४५ वर्षों में अदालत में उनका एक भी मुकदमा नहीं गया है। पांच साल पहले उन्होंने तीन एकड़ का एक सामुदायिक बाग लगाया है, जिसके चारों ओर पांच फुट ऊँची पत्थर की रक्षा दीवार है। इस बाग में लगभग ७०० सेब व खुमानी के पेड़ हैं। सिंचाई के लिए पक्की नाली व हौज भी उन्होंने बनाया है। इस बाग का प्रबंध ग्रामसहकारी समिति करती है। सहकारी समिति ने सस्ते अनाज की दूकान भी खोली है, जिसे एक नवयुवक बिना वेतन लिये चलाते हैं। गाँव का अपना वन, उसी से मिले हुए सरकारी वन जंगल के मुकाबले बहुत हरे-भरे हैं। इस जंगल में सारे गाँव की स्त्रियाँ खेती के काम से फुरसत पाने पर एक साथ घास काटने जाती हैं और प्रतिदिन घास काटने के बाद उसका समवितरण होता है। पर्वतीय प्रदेश में यह पहला गाँव है, जहाँ सहकारी समिति की। प्रबंधक समिति में दो महिला सदस्याएँ भी हैं।

दूसरे और तीसरे दिन की यात्रा हमने जलकूर नदी की घाटी में की, जहाँ पर अभी-अभी नया रास्ता बन रहा है। एक जगह पर तो यह भी समाप्त हो गया था। ऊपर पहाड़, सामने पहाड़ और नीचे नदी! फिर भी हमारे मैदानी साथी बड़ी हिम्मत के साथ इसे पार कर गये। चौथी सुबह को हम धारमण्डल पट्टी के सौड़ और डिगोठ गाँव पहुँचे। इस गाँव में तमेश्वर महादेव का मंदिर है। यह देवता गाँव के लोगों को गाँव की सीमा के अन्दर भैंसे नहीं बाँधने देता और इस विश्वास पर पीढ़ियों से लोग अमल कर रहे हैं।

बेमर से, जो बालगंगा की घाटी में बसा हुआ है, जलकूर की घाटी में प्रवेश करने के लिए हमने लगभग ७ हजार फुट ऊँचा 'कोटीगाड़' पार किया और जलकूर की घाटी से गंगा की घाटी में प्रवेश करने के लिए लगभग ८ हजार फुट ऊँचा चौरंगीखाल पार किया। पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर दूर-दूर के हिमशिखर और नीचे फैली हुई मनोरम घाटियों के दर्शन होते हैं। पाँच हजार से अधिक ऊँचाई पर बजांच बांज, बुरांस और मोरु के सघन छाया वाले पेड़ मिलते हैं। पेड़ किसानों के सबसे बड़े मित्र हैं। इनसे कृषि-यंत्रों के अलावा ईंधन व चारे की आवश्यकता की पूर्ति होती है और चीड़ तथा देवदार की पत्तियों के विपरीत इनकी पत्तियों से कीमती खाद बनती है। परन्तु हमें यह सुन कर दुःख हुआ कि देवदार की लकड़ी के व्यापारिक महत्त्व के कारण अब इन वनों में देवदार का प्रवेश होने लगा है।

२० जून की सायंकाल को हम उत्तर काशी पहुँचे। भागीरथी के तट पर असी-वरुणा के बीच बसी हुई यह पौराणिक नगरी आज भी नये आनेवालों को पर्वतों के मनोरम दृश्यों के बीच मैदानी भाग में बसे होने के कारण पहली ही नजर में आकृष्ट कर लेती है। पहले यहाँ का मुख्य आकर्षण एक छोटा, शांत बाजार, विश्वनाथ का मंदिर व गाँव थे। परन्तु नया जिला बनने व ऋषिकेश से सीधा मोटर-यातायात हो जाने के बाद उत्तरकाशी का तेजी से विकास हो रहा है। नगर के बाहर बनी हुई संन्यासियों की अपनी 'कुटिया' आज भी आध्यात्मिक जीवन बिताने के इच्छुक साधियों के आकर्षण का केन्द्र है। गंगोत्री यहाँ से ५० मील दूर है।

यहाँ पर हमारा पहला काम शांति-सहायकों को मांगने का है। दूसरा मुख्य कार्यक्रम साहित्य और संपर्क द्वारा विचार-प्रचार का है। इस यात्रा में हमने यह भी महसूस किया कि हमारे पास कुछ साधारण औषधियों की पेटी चाहिए।

(क्रमशः)

●

नैनीताल जिले के लोक-सेवक श्री [illegible] भूदान ने २४ मई से २० जून तक २६ दिन हल्द्वानी, रामनगर, नैनीताल, अल्मोड़ा आदि क्षेत्रों का [illegible] दौरा किया। इस दौरे में ६ [illegible] के [illegible] कुल यात्रा १०१ मील की हुई।

●

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

सर्वोदय-पात्र क्या, क्यों और कैसे ?

घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखने का अर्थ यह है की हरअेक घर को सर्वोदय के योग्य बनना है। सब कोअी यह भावना रखें की हमारे हाथों सबकी सेवा हो। जब बालक खाने की अिच्छा करेगा, तो मां अुससे पूछेगी, "क्या तूने दूसरों को खिलाने की फीकर रखी है ? क्या सर्वोदय-पात्र में अनाज डाला है ?"

हमें पहले समाज की चींता करके, अर्थात् भगवान को समर्पण करके ही खाने का अधीकार है, दूसरे कीसी प्रकार से नहीं; क्योंकी हमें जो भी शक्ती, बुद्धी और सम्पत्ती प्राप्त है, वह सब समाजरूपी परमेश्वर की ही देन है। यह अेक बुनीयादी वीचार है, जो बालक को ठेठ अुसके बचपन से ही सीखाने योग्य है। अिससे बड़ी भारी धर्म-स्थापना होगी।

लोग पूछते हैं की हम दूसरे ढंग से दान करते ही रहते हैं, तो फीर यह सर्वोदय-पात्र की झंझट क्यों ?

आज आप जो दानधर्म करते हैं, अुससे समाज का ढांचा नहीं बदलता। 'रेडक्रास' वाले घायल सीपाहीयों की सेवा-शुश्रूषा करते हैं, लेकीन वे लोग लड़ाअी को रोक नहीं पाते। आज का धर्म पैबंदबाजी का है। अब की सर्वोदय-पात्र के द्वारा हमें जड़-बुनीयाद से ही नअी अीमारत खड़ी करनी है, यही अुसका क्रांतीकारी लक्षण है। —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि=ी ; ी=ी, ख=ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

दूरदर्शिता से काम लें

सरकारी कर्मचारियों की 'सम्भावित' हड़ताल को लेकर जो विभिन्न प्रतिक्रियाएँ हुई हैं, उनमें दो बातें ऐसी हैं, जो विचारणीय हैं। जब से कर्मचारियों की ओर से हड़ताल की धमकी दी गयी है, तब से इन पिछले दिनों में भारत-सरकार की ओर से एक से अधिक समाचार इस आशय के प्रकाशित हुए हैं कि "सरकार 'पे-कमीशन' की अमुक-अमुक सिफारिशों पर गहराई से विचार कर रही है" और "तुरंत ही कुछ निर्णय करने वाली है।" रेलवे बोर्ड ने तो 'पे-कमीशन' की सिफारिशों पर इसी सप्ताह अपना निर्णय भी जाहिर किया है, जिसके अनुसार रेल-कर्मचारियों के वेतन और भत्तों में कुछ बढ़ोतरी उसने मंजूर की है। इस तरह की बातों का एक ही असर लोगों पर होता है कि सरकार हड़ताल की धमकियों पर ही काम करती है, वरना उसके कामों में ढिलाई चलती रहती है। पे-कमीशन को अपनी रिपोर्ट पेश किये हुए महीनों बीत चुके। क्या वजह है कि सरकार पे-कमीशन की सिफारिशों पर विचार और निर्णय नहीं कर सकी थी और अब तुरंत एक के बाद एक निर्णय की घोषणा वह कर रही है ? यह समझना कि लोग यह मान लेंगे कि हड़ताल की धमकी और सरकार के निर्णयों के बीच कोई संबंध नहीं है—पे-कमीशन की सिफारिशों पर विचार करने में इतना समय लगने ही वाला था और संयोग है कि वह विचार अब खत्म हुआ है—लोगों के भोलेपन में बहुत अधिक विश्वास करना होगा। महीनों और वर्षों तक किसी मसले पर निर्णय न लेकर हड़ताल आदि की धमकी के वक्त जल्दी में निर्णय लेना और उन्हें घोषित करना, यह अपने-आपमें ऐसी बात है जो हड़ताल की मनोवृत्ति को बढ़ावा देने वाली है।

दूसरी बात हड़ताल के कारण होने वाली असुविधाओं का मुकाबला करने के लिए किये जाने वाले गैर-सरकारी प्रयत्नों से संबंध रखती है। इसमें कोई शक नहीं कि अगर हड़ताल हुई और लम्बी चली, तो यातायात, डाक-तार आदि की सुविधाओं में तो खलल पड़ने ही वाला है, शासन के रोजमर्रा का काम-काज भी एक तरह से बन्द हो जाने की आशंका है। इस दृष्टि से इस सम्भावित हड़ताल का असर केवल हड़ताल से सम्बन्धित दोनों पक्षों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि आम जनता पर पड़ेगा। जिस माने में किसी कारखाने का मालिक और उसके मजदूर-ये दो पक्ष होते हैं, उस माने में सरकार एक 'पक्ष' भी नहीं है, वह समूचे देश की प्रतिनिधि संस्था है। अतः एक तरह से यह राष्ट्रीय विपत्ति ही होगी। ऐसी परिस्थिति के मुकाबले की बात पार्टी-विशेष के हित की दृष्टि से नहीं, बल्कि व्यापक दृष्टि से सोचनी चाहिए। पर खेद है कि कांग्रेस पार्टी ने इस मौके पर अपने संकुचित हितों से ऊपर उठने का परिचय नहीं दिया है। कांग्रेस देश का सबसे बड़ा राजनैतिक दल है, उसी दल की सरकार भी है, इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि कांग्रेस-संगठन की ओर से हड़ताल से पैदा होने वाली अव्यवस्था का मुकाबला करने के लिए लोगों को प्रेरित और संगठित करने की कोशिश की जाय। यह सराहनीय है कि कांग्रेस ने ऐसा कदम उठाया है, पर अब तक अखबारों में जो समाचार छपे हैं, उनसे यह जाहिर होता है कि कांग्रेस इस बारे में अपनी पार्टी के दायरे में ही सोच रही है। होना यह चाहिए था कि कांग्रेस की ओर से सब पार्टियों को और आम लोगों को, जो किसी पार्टी में नहीं हैं, सब को आह्वान किया जाता और सब लोग मिल-जुल कर परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए सम्मिलित प्रयत्न करते। कांग्रेस के महा-मंत्री ने प्रदेश कांग्रेस समितियों को इस संबंध में भेजे हुए अपने परिपत्र में जो यह कहा है कि "इस हड़ताल के पीछे ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका प्रजा-समाजवादी या कम्युनिस्ट पार्टियों की ओर झुकाव है" ऐसा होने पर भी ज्यादा समझदारी की बात यह होती कि कांग्रेस की ओर से सब पक्षों को परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए आह्वान किया जाता। अगर किसी पक्ष वाले इस काम में सहयोग न देते, तो जनता अपने-आप उसका निष्कर्ष निकाल लेती। पर इस प्रकार की दूरदर्शिता और उदारता से काम लेने और राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रगट करने का जो एक मौका उपस्थित हुआ है, उसका फायदा उठाने की बजाय शायद यह मनोवृत्ति अधिक काम कर रही है कि इस परिस्थिति का लाभ कांग्रेस-संगठन को कैसे मिले ?

पार्टियों के आधार पर होने वाले चुनाव आये दिन वैसे ही जनता में भेद पैदा करते रहते हैं। चुनावों से होने वाली इस खराबी को रोकने की अगर हममें हिम्मत नहीं है, तो कम-से-कम इतना तो हम जरूर कर सकते हैं कि दूसरे ज्यादा मौके ऐसे ढूँढ़ें, जिनमें पार्टियों के संकुचित भेद भुलाये जा सकें और लोग एक होकर राष्ट्रीय दृष्टि से सोच सकें और कुछ कर सकें।

—सिद्धराज ढड्ढा

"छोटी-छोटी बातें"

[हम बड़ी-बड़ी बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि "छोटी" बातों की तरफ हमारा ध्यान बिल्कुल नहीं जाता। उनकी ओर ध्यान देना हमें हमारे 'बड़े' कामों से ध्यान बँटाने जैसा लगता है। पर हम भूल जाते हैं कि छोटी-छोटी बातों से ही हमारी आदतें और जीवन में संस्कार बनते हैं।

"छोटी" बात का एक छोटा-सा उदाहरण लीजिये :]

बात वास्तव में बहुत छोटी है, पर हर छोटी बात की तरह उसका भी परिणाम बड़ा होता है। पानी के लिए नल और रोशनी के लिए बिजली की सुविधा आज हर शहर में और छोटे-छोटे कस्बों में भी उपलब्ध है। पर जितनी आसानी से यह चीजें मिलती हैं, उतना ही उनका दुरुपयोग भी बड़ा है। जहाँ बैठा हुआ ये पंक्तियाँ मैं लिख रहा हूँ, वहाँ सामने ही थोड़ी दूर पर एक प्रसिद्ध शिक्षा-संस्था का मुख्य द्वार है। दिन के चार बजे हैं। उस दरवाजे के ऊपर जो बिजली की बत्ती लगी है, वह सबेरे से ज्यों की त्यों जलती हुई देख रहा हूँ। कोई कहेगा, संस्था में हजारों रुपया पानी बिजली पर खर्च होता होगा, उसमें अगर रुपया-आठ आना ज्यादा हो गया, तो परेशानी क्या है ?

पर सोचने की बात है कि उन 'सैकड़ों हजारों' में ऐसे कितने 'रुपये-आठ आने' शामिल होंगे ? और फिर घर-घर और शहर-शहर का हिसाब लगाइये, तो कहाँ पहुँचेंगे ? चीज 'मुफ्त' में (जिसे हम मुफ्त कहते हैं, क्योंकि दर-असल कोई चीज दुनिया में 'मुफ्त' होती ही नहीं।) मिलती हो और उसकी कोई कमी न हो, तब भी अपनी जरूरत से ज्यादा उसका उपयोग करना या उसका और किसी तरह दुरुपयोग करना क्षम्य नहीं है।

हम आये दिन बात-बात में इस तरह समाज की और प्रकृति की 'चोरी' करते हैं। हालाँकि बिजली की बत्ती जलाने और बन्द करने में सिवा एक बटन दबाने के और कुछ नहीं करना पड़ता, पर हममें से कितने हैं, जो बटन दबाने का खयाल रखते हैं ? दफ्तरों में रात-दिन बत्तियाँ और पंखे खुले पड़े रहते हैं, यह आम अनुभव है। जरूरत पर ही उन्हें खोलना, जितनी जरूरत हो उतनी ही बत्तियाँ जलाना, जरूरत हो उतने ही वेग पर पंखा चालू करना—इन सबका कौन खयाल रखता है ? घर या दफ्तर में कमरे से बाहर जाते हैं, तो बिजली या पंखा बन्द करने का ध्यान नहीं रखते। समझते हैं अभी 'दो मिनट' में तो वापस आ रहे हैं। पर सिर्फ एक बटन दबाकर जब दो मिनट का दुरुपयोग भी रोका जा सकता है, तो क्यों न रोका जाय ? और अक्सर होता यह है कि वह 'दो' मिनट बीस पच्चीस या घंटा-दो घंटा हो जाते हैं। —सिद्धराज ढड्ढा

संस्थाओं में कौटुम्बिकता क्यों नहीं आती ?

• दादा धर्माधिकारी •

[सर्वोदय के विचार से प्रेरित हमारी संस्थाओं तथा आश्रमों वगैरह में सामूहिक जीवन के प्रयोग चलते रहते हैं। पर बार-बार इनमें शामिल होने वाले कार्यकर्ताओं के मन में यह प्रश्न उठता रहता है कि "सामूहिकता और कौटुम्बिकता लाने का काफी प्रयास करने के बाद भी हम अब तक असफल क्यों रहे हैं !" अभी ता० ५ जुलाई को सर्व सेवा संघ के कार्यकर्ताओं की सभा में इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पू० दादा ने बतलाया कि आखिर क्यों नहीं है ? यह भाषण संस्थाओं में काम करने वाले सभी कार्यकर्ताओं के लिए मननीय है। —सं०]

पहली बात तो यह है कि कौटुम्बिकता अलग चीज है और 'कलेक्टिविजम' (समुदायवाद) अलग चीज है। यह हमें समझ लेना चाहिए।

फिर जिसे हम कुटुम्ब कहते हैं, उसके स्वरूप का भी थोड़ा विश्लेषण हमें कर लेना चाहिए ! पहले की कुटुम्ब-व्यवस्था 'पेट्रिआर्कल' या 'मेट्रिआर्कल' थी, याने पिता या माता के हाथ में सत्ता थी और उनको इतनी स्वतंत्रता थी कि पिता अपने पुत्र या स्त्री को संपत्ति मानता था। इसलिए कुटुम्ब-संस्था में विकास नहीं हुआ। एक मनुष्य दूसरे की संपत्ति हो, यह बात व्यक्तित्व के विकास के लिए सबसे अधिक हानिकारक है, बहुत पुराने जमाने में योरप में 'रोमन ला' में विवाह का और जायदाद का कानून एक ही था। पुरुष अपनी स्त्री को या पुत्र को मार सकता था, बेच सकता था, दान दे सकता था, देवता को प्रसन्न करने के लिए अपने पुत्र का बलिदान भी दे सकता था।

हमारे देश में कानून के सामने सारे मनुष्य समान हैं, यह कल्पना अंग्रेजों के साथ आयी, जो उससे पहले नहीं थी। मनुष्य के नाते समानता, यह कल्पना आध्यात्मिक नहीं है, लेकिन अध्यात्म के निकट है। शरीर से मनुष्य-मनुष्य समान नहीं हो सकता है, बुद्धि और कला में भी नहीं हो सकता है। शरीर को लेकर जितनी चीजें हैं, उन पर सोचने से मनुष्य की समानता नहीं दिखाई देती है। फिर भी आज समानता मानी गयी है, इसका मूलभूत आधार मानवता है। लोकतंत्र के आधार स्वरूप जो मानवता है, वह आध्यात्मिकता के नजदीक है, यद्यपि आध्यात्मिकता नहीं है। लेकिन यहाँ पर यह कहा जाता रहा कि ब्राह्मण और भंगी में आत्मा एक ही है, लेकिन दोनों के शरीर अलग हैं, इसलिए दोनों को अलग सुविधाएँ दी जायँ। दोनों के मकान अलग तरह के, यहाँ तक कि बर्तन और गहने भी अलग प्रकार के माने गये। यह जो पुराना विचार था, उसमें व्यवसाय के कारण नहीं, बल्कि जन्म के कारण अलगपन माना गया था। यह आध्यात्मिक विचार नहीं है। यहाँ पर मनुष्य के शरीर को मनुष्य की आत्मा से बिलकुल भिन्न कर दिया है, इसीलिए आत्मा की भूमिका पर सारे मनुष्यों की समता और शरीर की भूमिका पर आत्यन्तिक भेद माना गया। आध्यात्मिक और शारीरिक भूमिकाओं में यह जो आत्यन्तिक भेद था, उससे नीतिमत्ता का विकास नहीं हुआ।

कौटुम्बिकता में यह जो बुराई थी, उसके कारण व्यक्तित्व का दमन होता था। हमारे यहाँ पहले जो संयुक्त कुटुम्ब था, उसमें व्यक्ति का विकास नहीं होता था, क्योंकि वह कौटुम्बिकता से सामुदायिकता (कलेक्टिविजम) की तरफ जा रहा था। नतीजा यह हुआ कि उसमें से ट्राइबैलिज्म—गोत्रवाद, कुलवाद आया और कुलीनता के नाम पर रक्त-शुद्धिवाद आया। कुलीन होना अलग है और रक्त शुद्ध होना अलग है। लेकिन कोई अशुद्ध रक्त का हो, तो यह माना गया कि यह असली औलाद नहीं है। जिसके रक्त में मिश्रण है, उसे पापी, पतित माना जाता था। इसी में से 'ऐंटरबोर' आया, जिसे आगे काले-गोरों का झगड़ा कहा जाता है। समझना चाहिए कि वर्णवाद, वर्ण-विद्वेष की जड़ यहीं है। गोरा आदमी डरता है कि काले आदमी के स्पर्श से मेरी संतान खराब हो जायगी, उसके मन में भय है कि उसमें मेरा वर्ण भी जायगा, कुलीनता भी जायगी और रक्त-शुद्धि भी नहीं रहेगी। तो, कुटुम्ब-संस्था की असफलता का एक कारण यह है कि उसमें कुलीनता के साथ रक्त-शुद्धि का विचार आया। कभी-कभी उसका परिणाम यह हुआ कि दो कुटुम्बों में पीढ़ियों तक वैमनस्य चलता रहा। यहाँ पर सदियों से और इंग्लैंड में बड़े-बड़े [illegible] में इस प्रकार वैमनस्य चलता था। हमारा परिवार श्रेष्ठ है, दूसरे का कनिष्ठ है, इस चीज को हम अब तक नहीं मिटा सके हैं। जब तक हम इसे नहीं मिटायेंगे, तब तक संयुक्त कुटुम्ब पद्धति में व्यक्तित्व का विकास नहीं होगा।

इसलिए जब हम [illegible] करते हैं कि पुराना संयुक्त कुटुम्ब था, उसमें लोग एक-दूसरे के काम आते थे। लेकिन क्या काम आते थे ? जो विधवा थे, वह [illegible] थी, उस पर [illegible] थी। उसमें उसे [illegible] होता, लेकिन [illegible] में [illegible] है। ऐसी हालत में [illegible] का विकास नहीं होता है। कुटुम्ब को [illegible] हो, तो उसकी [illegible] माननी चाहिए, क्योंकि उसमें [illegible] निकलने की आकांक्षा तो नहीं रहती है। इस तरह संयुक्त पद्धति में व्यक्तित्व की इतनी हानि हुई कि उस पद्धति से निकलने की आकांक्षा भी समाप्त हुई। हमने समझ लिया कि हम इस परिवार में आ गये, तो अब हमारा भाग्यविधाता इस कुटुम्ब का मुख्य व्यक्ति ही है।

अब संस्था और कुटुम्ब की तुलना करके देखें। आज जब हम संस्था में प्रयोग करते हैं, तो संस्था का मुख्य पुरुष कुटुम्ब के मुख्य पुरुष की जगह नहीं ले सकता, और फिर निराशा या 'फ्रस्ट्रेशन' न होता। प्रयत्न करने वाले पर्वतारोहियों की तरह यह कहना कि हम असफल तो हुए लेकिन २८ हजार फीट पर अगस्त हुए। सिर्फ एक ही हजार बाकी रहा। हम असफल रहे, लेकिन [illegible] नहीं रहे। इस तरह असफलता का भी पृथक्करण करने की आवश्यकता है।

आज हम ऐसे जमाने में आ गये हैं। जहाँ संस्था और कुटुम्ब दोनों के बारे में विचार करना बहुत आवश्यक हो गया है, नहीं तो अब समाज ऐसा बनेगा, जिसमें मनुष्य का स्थान कहीं नहीं रहेगा। वह किसी मामले में स्वतंत्र नहीं रहेगा। कुटुम्ब में विवशता के कारण मनुष्य अपने को परतंत्र मानता था, लेकिन दूसरी ओर स्नेह के कारण उसने मान लिया था कि कुटुम्ब छोड़ना कुलीनता का लक्षण नहीं है। घर छोड़ने में केवल मन की ही नहीं, तन की भी लाज वाली [illegible] थी। [illegible] होकर निकलना [illegible] है।

संस्था और कुटुम्ब का सीमारेखा को पहचान लेना आवश्यक है

इसे हम भूल गये। संस्था में [illegible] है, जो कुटुम्ब में नहीं है याने संस्था में [illegible] अपनी मर्जी से आते हैं, कुटुम्ब में नहीं। लेकिन हम इस बात को समझते नहीं कि जहाँ हम अपनी मर्जी से जाते हैं, वहाँ कुटुम्ब से भी अधिक [illegible] होगा। संस्था में हम अपनी इच्छा से प्रवेश करते हैं, अपनी इच्छा से नई जिम्मेदारियाँ कायम करते हैं, जिनके विधाता हम स्वयं हैं, इसको हम भूल जाते हैं। कुटुम्ब में तो हम मजबूर होते हैं। संस्था में मर्जी से आते हैं, यानी स्वतंत्र हैं। लेकिन समझना चाहिए कि जितनी स्वतंत्रता अधिक, उतनी जिम्मेदारी भी अधिक—इस बात को तो हम समझते नहीं हैं और संस्था को मन से अलग मानते हैं। [illegible] कि [illegible] को कुटुम्ब [illegible], लेकिन यह [illegible] ? [illegible] कि [illegible] है कि दूसरे [illegible] हुए। [illegible] है। [illegible] है कि [illegible] भी होगी, लेकिन [illegible] होगी, तो [illegible] होगी।

लेकिन हम [illegible] करके घर से निकले, तो लोग कहेंगे कि घर [illegible] गया। इस तरह संस्था को छोड़ने में [illegible] नहीं मालूम होती है। जो संस्था को छोड़ कर जाता है, वह कहता है कि उसमें [illegible] थी, लेकिन वे संस्था वाले [illegible] हैं। [illegible] हैं। कुटुम्ब के [illegible] कि दूसरे [illegible] तो भी लोग कहेंगे कि वह दूसरे को बुरा बताता है, लेकिन उसमें भी कुछ दोष रहे होंगे, कुछ [illegible] का झगड़ा होगा या उसकी [illegible] होगा। लेकिन जो संस्था को छोड़ कर जाता है, वह [illegible] है। वह समझता है कि मैं संस्था को छोड़ कर जा रहा हूँ तो [illegible] कुटुम्ब [illegible] है। [illegible] कुटुम्बीकरण [illegible]

[illegible]

भूदान-यज्ञ, [illegible], १५ जुलाई, [illegible]

गुणों को लेकर जीना सीखें !

पास खाना न हो, तो मैं कुछ इन्तजाम कर दूँगा। बाद में जब मैं जेल में था, तो वही शिकायत करने वाला भाई एक दिन मेरे पास आया और कहने लगा कि "मेरे भाई ने 'चोर-बाजारी' की है, लेकिन किसी तरह से उसे छुड़ाओ, नहीं तो हमारा परिवार टूटेगा। मुँह में कालिख लग जायगी ! हमारा परिवार ऐसा था, वैसा था, आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ। हम स्त्रियों के गहने बेच कर एक-एक पाई चुकायेंगे, लेकिन इस वक्त किसी तरह से इज्जत बचाइये।" इसके माने यह है कि कुटुम्ब की इज्जत थी, संस्था की इज्जत नहीं थी। कुटुम्ब में जो पाप होता है, उसमें हम अपने को हिस्सेदार मानते हैं, लेकिन संस्था के पाप के हिस्सेदार नहीं मानते।

मैंने जब कहा था कि एक-दूसरे के दोषों में हिस्सा बँटाओ, तो उसका अर्थ यह नहीं था कि दोषों का समर्थन किया जाय। लेकिन हमने कभी अपने से पूछा कि आपके भाई ने गलत काम किया, तब तो घर की इज्जत जाती है, लेकिन संस्था के बारे में हम क्या सोचते हैं ? संस्था को हमने हमेशा अपने से अलग माना है। उसके साथ तादात्म्य नहीं किया है और फिर हम शिकायत करते हैं कि संस्था का कुटुम्बीकरण नहीं हुआ ! वैसे तो कुटुम्ब का ही कुटुम्बीकरण नहीं हुआ है, उसमें मनुष्यता को स्थान नहीं रहा है, पारिवारिकता को मनुष्यता से अलग माना गया है। पर कुटुम्ब में मनुष्य की जो आत्मीयता थी, उतनी संस्था में नहीं रही है। किसी की आत्मीयता हो, तो वह समझता है कि संस्था को बचाना चाहिए, लेकिन हम उसकी नीयत पर शक करने लगते हैं।

इसके परिणामस्वरूप आज यह होता है कि जिसने अपराध किया, उसे संस्था से ही नहीं, बल्कि समाज से भी उठ जाना चाहिए, ऐसा हम समझते हैं। यह भयानक आसुरी मनोवृत्ति है। अपराधी को समाज से उठा देने में मार डालने से भी अधिक क्रूरता है। जो अपराधी को समाज से उठा देते हैं, वे उसके सारे परिवार को दाग देते हैं, ब्रैन्ड करते हैं। संस्था से अलग करना एक चीज है, जो मर्यादा की चीज है। किसी भी कारण से ही सही, हम साथ नहीं रह सकते हैं, तो अलग हो जाने में कोई हर्ज नहीं है। मान लीजिये कि आपने नियम बनाया कि संस्था में अंडा नहीं खाया जायगा। तब जो अंडा खाता है, वह संस्था में नहीं रहेगा। यह एक मर्यादा है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अंडा खाने वाला दुनिया में ही न रहे। लेकिन आज यह होता है कि संस्था से निकलने वाला भी संस्था के खिलाफ प्रचार करता है और संस्थावाले भी उसके खिलाफ प्रचार करते हैं। इसलिए संस्था का कुटुम्बीकरण नहीं होता।

और एक बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके घर में रसोई बन रही है और इधन गीला है, तो क्या आप अखबार में लिखेंगे ? किसी दिन दाल में पानी ज्यादा हुआ, तो आदमी घर में क्या करता है ? लेकिन वही चीज संस्था में हो, तो उन सबको वह शिकायतों का स्वरूप देता है। घर में इन सबको सुधारने की जिम्मेवारी वह अपनी मानता है। घर में भी वह गीली लकड़ी पसन्द नहीं करता है, लेकिन उस चीज को दूर करने की कोशिश करता है। संस्था में वह अपनी ऐसी कोई जिम्मेवारी नहीं मानता है, तो फिर संस्था का कुटुम्बीकरण कैसे होगा ? कुटुम्ब के मूल्यों को अपने मन से संस्था में दाखिल ही नहीं किया। तो संस्थाओं का कुटुम्ब कैसे बनेगा ? कुटुम्ब में हर कोई अपनी पूरी कमाई दे देता है। वहाँ पर यह माँग नहीं की जाती है कि हरएक की कमाई के हिसाब से उसे भोजन मिले। लेकिन संस्था में हम कहते हैं कि ये लोग पचास रुपया लेते हैं और फिर भी ऐसा भोजन क्यों देते हैं ? जेल में एक बहुत बड़े घर के और सज्जन आदमी को दूध बाँटने का काम सौंपा गया था। वे डर के मारे सारा दूध तकसीम कर देते थे। अपने हिस्से का भी नहीं रखते थे। लेकिन फिर भी जिसे थोड़ा-सा कम मिलता था वह समझता था कि वह आदमी हमारा दूध पी गया ! जिस देश में ऐसी नीतिमत्ता है, उसके बारे में क्या कहा जाय ? इस देश का आदमी यह सोच ही नहीं सकता है कि वह श्रीमान सज्जन भाई इतना-सा दूध क्यों पीयेगा ? जातीयता, प्रादेशिकता आदि की भावनाएँ हमारे मन में बहुत गहरी उतर गयी हैं। इसीलिए संस्था में कौटुम्बिकता नहीं आती है।

कभी हमने यह सोचा कि जैसे हम मन्दिर में जाते समय जूते बाहर छोड़ कर जाते हैं, वैसे इन सब विचारों को बाहर छोड़ कर संस्था में प्रवेश करें ! जातीयता, प्रादेशिकता आदि जो चीजें हमारे मन में हैं, वे हमारे साथ संस्थाओं में प्रवेश करती हैं, जिनके कारण संस्थाएँ पनपती नहीं हैं। क्रान्तिकारी मन और सत्व के अभाव में हमारा काम पनपता नहीं है।

हमारे सब प्रयत्नों के बावजूद संस्थाओं का कुटुम्बीकरण नहीं हो रहा है, क्योंकि संस्थाओं में हम अपने व्यक्तित्व के गुणों को लेकर नहीं जाते हैं, अहंकार को लेकर जाते हैं। कुटुम्ब से निकले इसीलिए कि उसमें व्यक्तित्व के गुणों का विकास नहीं होता है और गुण-विकास के लिए हम संस्था में जाते हैं। लेकिन अपेक्षा यह रहती है कि गुण-विकास नहीं, अहंकार का विकास हो ! तो न इधर के रहते हैं, न उधर के। 'सेन्स आफ बिलांगिंग', यानी किसी के हम कुछ लगते हैं, यह भावना नहीं रहती, जिसकी बहुत आवश्यकता है। हम समझते हैं कि संस्था में हम किसी के कुछ लगते नहीं, लेकिन हमारे कुछ हक हैं, जो मिलने चाहिए और उनका साधन संस्था है। इस तरह संस्था अगर हमारे अहंकार और उपभोग का साधन हो, तो अहंकार और उपभोग में टक्कर होने ही वाली है।

इसी में से संस्थाएँ टूटती हैं। होना तो यह चाहिए कि संस्था एक दूसरे की रिश्तेदारी का साधन हो। उसके लिए कुटुम्ब में जगह नहीं, क्योंकि कुटुम्ब में हम स्वेच्छा से नहीं गये। संस्था में स्वेच्छा से आते हैं, यह एक गुण है। लेकिन उसमें हमारी जिम्मेवारी भी है, यह कोई नहीं मानता। परिवार में हर कोई जिम्मेवारी मानता है। परिवार में बेटे को रोजगार न मिलता हो, लड़की की शादी न होती हो, तो आप चिंतित हो जाते हैं। लेकिन संस्था में किसी के लिए ऐसी चिन्ता नहीं होती है। इसका मतलब यह है कि संस्था 'इम्पर्सनल' है, उसमें व्यक्ति व्यक्ति नहीं है, वह सिर्फ एक

अहंकार और उपभोग में टक्कर होने ही वाली है !

यूनिट, इकाई है। वैसे एक हद तक कुटुम्ब भी 'इम्पर्सनल' है, लेकिन दूसरी दृष्टि से वह 'पर्सनल' है और इतना 'पर्सनल' है कि अपने कुटुम्ब के यश के लिए मनुष्य दोषों को, अपराधों को भी छिपा देता है।

अब तक कुटुम्ब में स्त्रियों के व्यक्तित्व के लिए कोई स्थान नहीं रहा। कुटुम्ब पुरुष का आश्रय-स्थान, बंदरगाह रहा है, लेकिन स्त्री का कारागार। कारागार से मतलब है, उसको बुराई से रोकने की जगह। जेल वह जगह है, जहाँ इन्सान बुराई करने से रोका जाता है। स्त्री भ्रष्ट न हो, इसलिए उसे कुटुम्ब के कैदखाने में रखा जाता है। इसलिए संस्था में अगर पारिवारिकता लानी है, तो स्त्रियों को इसमें पहल करनी चाहिए। मेरी स्त्री और आपकी स्त्री एक-दूसरे से कहें कि हमारी रसोई एक जगह बनेगी। फिर वह अपने पतियों से आकर अपना निश्चय कहें, तब सारा मामला उलटेगा। फिर स्त्रियाँ कहेंगी कि हम तो साथ रहना चाहती हैं लेकिन ये पुरुष लड़ते हैं, इसलिए हम साथ नहीं रह सकती हैं। आज कहा जाता है कि स्त्रियों के कारण परिवार टूटते हैं। "कौरव-पाण्डव वंश को कियो द्रौपदी नाश !" इस तरह आज तक कौटुम्बिक झगड़ों का कारण स्त्रियाँ मानी गयीं। इसलिए अब स्त्रियों को संकल्प करना चाहिए कि हमारा रसोड़ा एक होगा, फिर अगर पुरुष कहेगा कि हमसे नहीं बनता है, तो उसे घर फोड़नेवाला कहा जायगा। सामाजिक मूल्य-परिवर्तन के लिए इस चीज की जरूरत है। मैं इस परिणाम पर आ पहुँचा हूँ कि अगर संस्थाओं का कुटुम्बीकरण होगा, तो स्त्रियों से ही होगा।

इसलिए इन दिनों विनोबाजी स्त्री-शक्ति को जगाने के पीछे पड़े हैं। हो सकता है कि इसमें कई दोष पैदा होंगे। असफलता भी आयेगी, लेकिन ऐसी हिम्मत करने वाले आदमी की आज जरूरत है। समाज में बहुत बड़े-बड़े प्रयोग हुए, तब विवाह-संस्था कायम हुई। एकपत्नी व्रत स्थिर हुआ। इसलिए बड़े प्रयोगों में तो कुछ लोगों को बदनाम होना ही पड़ेगा। अपयश का टीका लगाना होगा।

शराब-बंदी के लिए सामूहिक तपस्या

अप्पासाहब पटवर्धन

शराब-बन्दी के कार्यक्रम के बारे में मेरी एक विशेष सूचना है। शराब-बन्दी के आन्दोलन को व्यापक व्यसन-मुक्ति का स्वरूप देने से शराबबन्दी-आन्दोलन भी सफल हो सकेगा। सिर्फ उपदेश से या निषेध से न शराबबन्दी होगी, न वह टिकेगी ही। यदि हम चाहते हैं कि शराबी शराब पीना छोड़ दें, तो आपको और हमारे जैसे को अपने सभ्य माने जाने वाले व्यसन भी छोड़ने होंगे। पान तम्बाकू, बीड़ी और चाय जैसी चीजें तो छोड़नी ही होंगी, लेकिन केवल सभ्यता के लिए खाना भी छोड़ना होगा। मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ कि हर चीज छोड़नी ही होगी, बल्कि यह कहना चाहता हूँ कि यदि हम मानसिक संयम की ओर पूरा कदम बढ़ायेंगे, तो उसका असर शराबियों पर भी जरूर होगा और उनमें भी संयम की तरफ झुकाव बढ़ेगा। शराबबन्दी के लिए दबाव डालने का रास्ता लेने की बजाय हमें सामूहिक तपस्या का मार्ग लेना होगा।

स्वच्छ काशी-आन्दोलन के लिए आवश्यक है कि हर मुहल्ले में झाड़ू मंडलों की स्थापना हो। हमें संडास-सफाई तक बढ़ना है और संडास-सफाई करते-करते संडास-सुधार की प्रेरणा भी स्वयंसेवकों को, बल्कि नागरिकों को भी मिलेगी।

भंगी-मुक्ति और स्वच्छ भारत के मेरे कामों में मैंने सुधारे हुए कमोड-संडास बनाये हैं, जो सबके लिए सुलभ हो सकते हैं। सार्वजनिक संडासों के साथ गैस प्लैन्ट जोड़ने की भी मेरी योजना है।

जिन शहरों में ड्रेनेज पद्धति नहीं है, वहाँ पर हमारी यह नई पद्धति सफल हो सकती है।

[एक पत्र से]

शान्तिसेना की स्थापना हो चुकी है। बापू उसके प्रथम सैनिक थे और प्रथम सेनापति भी। सेनापति के नाते उन्होंने आज्ञा दी और सैनिक के नाते उसका पालन करके वे चले गये

विनोबा

बापू—प्रथम सैनिक और सेनापति !

गोपाल कृष्ण मल्लिक

घटना उस समय की है, जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह कर रहे थे। एक अंग्रेज ने रोषपूर्वक कहा—"अगर गांधी मुझे कहीं मिल जाय, तो मैं उसे उसी समय गोली से उड़ा दूँ।" गांधीजी को यह बात उस रात को मालूम हुई और सुबह होने से पहले ही वे उक्त अंग्रेज महाशय के घर पहुँच गये। वह सोये थे। गांधीजी ने उन्हें जगाया और कहा—"मैं गांधी हूँ, आपने मुझे मारने की प्रतिज्ञा की थी, स्वयं मैं उपस्थित हूँ। मैं अकेला इसलिए चला आया कि आपकी प्रतिज्ञा पूरी हो सके।" पर वह अंग्रेज उन्हें मारने की बजाय उनका परम भक्त बन गया !

इसीलिए बापू ने कहा था—"जीवन को मृत्यु की शैया समझ कर चलें। अपने बिछौने में अकेले न सोयें। हमेशा यमदूत को साथ लेकर सोयें। मृत्यु-देवता से कहें कि अगर तू मुझे ले जाना चाहता है, तो ले जा, मैं तो तेरे मुँह में नाच रहा हूँ। जब तक नाचने देगा, नाचूँगा, नहीं तो तेरी गोद में सो जाऊँगा। अगर आपने इस तरह मृत्यु का भय जीत लिया, तो संघ अमर हो जायगा। अगर आप इस तरह के हैं, तो किसी संघ की क्या जरूरत है? तब तो आप खुद ही एक संघ हैं।" और फिर उन्होंने कहा—"हरएक मौत के भय से मुक्त पुरुष या स्त्री स्वयं मर कर अपनी और अपनों की रक्षा करे। सच तो यह है कि मरना हमें पसंद नहीं होता, इसलिए आखिर हम घुटने टेक देते हैं। कोई मरने के बदले सलाम करना पसंद करता है, कोई धन देकर जान छुड़ाता है, कोई मुँह में तिनका लेता है और कोई चींटी की तरह रेंगना पसन्द करता है। इसी तरह कोई स्त्री लाचार होकर जूझना छोड़ पुरुष की पशुता के वश में हो जाती है। सलामी लेकर सतीत्व-भंग तक की सभी क्रियाएँ एक ही चीज की सूचक हैं। जीवन का लोभ मनुष्य से क्या-क्या नहीं कराता? अतएव जो जीवन का लोभ छोड़कर जीता है, वह जीता है। 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः', प्रत्येक शांति-सैनिक को यह अनुपम श्लोक याद कर लेना चाहिए। किन्तु इसके प्रति केवल जबानी वफादारी से कोई काम नहीं हो सकता। इसे उसे अपने हृदय की गहराई में उतार लेना चाहिए।"

यह घटना बापू की शहादत से कुछ दिन पहले की है। दिल्ली के प्रांगण में साम्प्रदायिक खूँरेजी पराकाष्ठा पर थी। हजारों मुसलमान वहाँ से भाग रहे थे और गांधीजी कलकत्ता से दिल्ली आकर ठहरे थे। हिंदू और मुसलमानों का शिष्ट-मंडल उनसे रात दिन मिल रहा था। एक दिन दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी के सबसे पुराने बुजुर्ग मेम्बर खान बहादुर अब्दुल्ला कुछ मुसलमान नेताओं के साथ गांधीजी से मिले। खान बहादुर कट्टर सम्प्रदायवादी मुसलमानों में से थे, मगर वह दिल्ली छोड़कर नहीं जा पा रहे थे। उनका दिल दिल्ली में ही अटक रहा था। गांधीजी के सामने सबने शिकायत की और बताया कि मुसलमान यहाँ अरक्षित हैं, पुलिस भी हिंदुओं का ही पक्ष लेती है और तब उन्होंने गांधीजी से पूछा—"हमें बतायें, अब हम क्या करें?"

बापू उन दिनों बहुत ही दुखी थे। और यह सब सुन कर तो और भी दुखी हुए। लेकिन उन्हें सान्त्वना देते हुए बोले—"यदि आप मुझसे उपाय पूछते हैं, तो मेरे पास तो एक ही उपाय है, जो कभी असफल नहीं होता। वह यह है कि आप लोग निश्चय कर लें कि आप दिल्ली नहीं छोड़ेंगे आप अपना घर नहीं छोड़ेंगे और यदि आपको घर पर कोई मारने आयेगा, तो आप हँसते हुए उसके सामने अपनी गर्दन झुका देंगे। आप मारे जायेंगे, मुमकिन है बहुत मरें, लेकिन मरने वाले बहुतों को बचा जायेंगे। आप कहें, तो मैं भी आपके साथ आपके मुहल्लों में मिलकर रहने को और जो कुछ आफत आये, उसे सहने को तैयार हूँ।" सब ओर बिलकुल सन्नाटा छाया था।

शांति-सैनिक के एवं सेनापति या सैनिक के नाते बापू की यह साधना या खोज अथवा सेवा निरन्तर चलती रही। इसी उद्देश्य से वे नोआखाली, कलकत्ता, बिहार और दिल्ली के साम्प्रदायिक खूँरेजी की आग में कूदे और 'एकला चालोरे, यदि तोर डैऊ सुने न एक', का चरित्र चरितार्थ करते रहे और अहिंसा की उनकी यह अखंड साधना जारी ही थी कि अज्ञान और वैर की अग्नि ने अपनी तीन गोलियों से अहिंसा या प्रेम अथवा शांति के मर्म की महा-गौरवमयी ऐसी कथा लिखी कि उस महान् शांतिसैनिक की शहादत शांति-सैनिकों के लिए चिर प्रज्वलित प्रकाश बन गयी।

•

घर और गाँव

नीचे का प्रसंग गुजरात के एक गाँव का है।

व्यक्ति के जीवन में ऐसे कितने ही क्षण आते हैं, जब वह या तो पतन की खाई में गिरता है या उन्नति के शिखर पर चढ़ जाता है। समाज के जीवन में भी ऐसा होता है। अगर जीवन-मरण के ये क्षण सुधर जायँ, तो बेड़ा पार हो जाय। ऐसे अवसरों पर सुधार का निमित्त बनने का सौभाग्य किसी बिरले को ही मिलता है।

(१)

"खबरदार, बीच में कोई आया तो! सिर और धड़ अलग हो जायँगे।"

तलवार हिलाता हुआ एक मुसलमान भाई इस प्रकार बोल रहा था। वह जोश में आगे बढ़ता जा रहा था। उसके पीछे-पीछे उसके मुहल्ले के छोटे-बड़े कई स्त्री-पुरुष गाली-गुफ्ता करते हुए जोश में बढ़े चले आ रहे थे।

(२)

"अरे, जा-जा, तू बेचारा क्या मारेगा? बड़-बड़ मत कर हिम्मत हो तो आगे आ।"

ऐसा कहते हुए सामने की तरफ से कितने ही लोग लाठी और तलवारें लिये हुए दौड़े आ रहे थे।

ये दोनों दल भिन्न-भिन्न धंधे वालों के थे, पर जाति के सब मुसलमान थे।

दुनिया को भाईचारे का सन्देश देने वाले, इस्लाम-धर्म को मानने वाले, ये दोनों दल खून-खराबी के रास्ते पर उतर गये थे। 'पाक' अर्थात् पवित्र हुए बिना भाईचारा कैसे टिक सकता है?

एक दल का नायक शराब की नापाक बुराई में मस्त था, दूसरे दल का नेता ब्याज को नदी में डूबा हुआ था। इन चीजों में से खून-खराबी के सिवा और दूसरा निकलता भी क्या?

ऐसे मौकों पर बाकी के लोग या तो डरपोक बन कर घर में घुस जाते हैं या कहते हैं "होगा, मरे तो मरने दो, इसमें हम क्या करें?" ऐसा मान करके मुँह फेर कर देखा करते हैं। अन्य कुछ लोग किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं।

(३)

"हटो पीछे, यह क्या कर रहे हो! शर्म नहीं आती! सुबह बात करेंगे। इस वक्त रात में यह सब क्या लगाया है? घर जाकर सब चुपचाप सो जाओ।"

बीच में खड़े रह कर मीठा उलाहना देते हुए इस वीर-वाणी का जादू के चमत्कार-सा असर हुआ। दोनों तरफ के दल ढीले पड़ने लगे। जनून उतरने लगा। आखिर एक दल तो बिखर गया, दूसरा दल भी बिखरने लगा।

अंत में इस वीर नर ने आखिरी दाँव फेंका, "भाई, तुम को यह शोभा देता है क्या?"

वह शराबी बेचारा बहुत शरमा गया। पीठ फेर कर घर की ओर चल गया।

(४)

गाँव में एक बड़ा भयानक होता हुआ हादसा टल गया। "अभी का भूला [illegible] घर फिरे।" इस कहावत के अनुसार-सुबह तो सब लोग होश में आ गये थे।

लोग रात को अगर न जागे होते तो! ऐसा हुआ होता तो क्या इस मकान से दूसरे लोग बच जाते? यह तो सम्भव नहीं था। इसीलिए ज्ञानियों ने कहा है—"अपने में जागृति लाने में ही दूसरे लोगों की जागृति छिपी है।"

उस बहादुर व्यक्ति ने देखा कि "एक बार अगर गाँव में आग लगी और बढ़ गयी, तो फिर वे और मेरे कोई भी बचने वाले नहीं हैं, इसलिए दूसरे लोग इसको शांत करें या न करें, मुझे तो इस झगड़े को शान्त करना ही चाहिए।"

निःस्पृह सेवाभावना, कर्तव्य की सूझ-बूझ और सच्ची वीरता की हिम्मत, इन तीन बातों की त्रिपुटि क्या नहीं कर सकती! सचमुच ऐसे हिम्मत वाले लोगों के कन्धों पर ही समाज-रचना सुदृढ़ बनती है।

["[illegible]" से]

—अंतर्नाद

बेलगाँव की समस्या

मार्जरी साइक्स

[बेलगाँव शांति सेना शिविर की रिपोर्ट पढ़कर श्रीमती मार्जरी साइक्स ने अपने कुछ विचार व्यक्त किये, जिसका कुछ अंश यहाँ दिया जा रहा है।]

देश में जो नई प्रान्त-रचना बनी है, उसके अनुसार प्रान्तों की जो भी सीमा-रेखाएँ निश्चित हों, उसमें कुछ व्यक्तियों का अपनी भाषा वाले प्रदेश से अलग पड़ना अनिवार्य ही है और आज दुर्भाग्यवश यह भी सत्य है कि किसी भी प्रदेश में भाषा या संस्कृति की दृष्टि से जो भी अल्प-संख्या में रहेंगे, उनके मन में बराबर यह भय बना रहेगा कि शिक्षा, नौकरी आदि के मामले में उनके साथ पूरा न्याय नहीं किया जायगा और उन्हें केवल दोयम दर्जे का नागरिक ही बन कर रहना पड़ेगा। दुःख की बात है कि यह भय बेबुनियाद नहीं है। आज हम सबके मन में एक गलत खयाल पैदा हुआ है कि प्रजातन्त्र के मानी हैं बहुमत का राज। जिसमें अल्पमत वालों की इच्छाएँ, आवश्यकताएँ तथा कठिनाइयों की उपेक्षा कर बहुमत वाले उन पर अपना विचार लाद सकते हैं। इस भ्रामक विचार का खंडन किये बगैर समस्या का बुनियादी हल संभव नहीं होगा। इस समस्या का सही हल सर्वोदय, ग्रामराज्य के विचार में है। जिसमें समाज के सबसे दुर्बल तबके की भलाई की तरफ ध्यान देना प्रथम कर्तव्य माना जाता है। मैं इस विचार से सहमत हूँ कि बेलगाँव को सर्वोदय के प्रचार की दृष्टि से सघन क्षेत्र बनाकर काम करना अत्यन्त आवश्यक है। अल्पमत वालों के साथ न्यायोचित और शांतिपूर्ण व्यवहार हो, इसकी तरफ हमें विशेष ध्यान देना होगा।

बेलगाँव के शांति सेना शिविर की रिपोर्ट पढ़ी। बहुमत वाले दल की शांति सेना शिविर के बारे में जो प्रतिक्रियाएँ रहीं, उनमें मुझे बहुमत वालों के अहंकारी मनोवृत्ति की बू आई। यही एक कारण है, जिससे अल्प मत वालों के मन में भय पैदा होता है।

बेलगाँव में शांति-सेना कार्य

प्रभाकर मराठे

बेलगाँव में हमने कुछ थोड़ा-सा काम आरंभ किया है। जून में साने गुरुजी की पुण्यतिथि के अवसर पर नागरिकों की सभा बुलायी थी, जिसमें कन्नड और मराठी दोनों भाषा-भाषी नेताओं ने प्रेम से सहयोग दिया। उसी सभा में यह तय हुआ कि बेलगाँव में शीघ्र एक आन्तर-भारतीय केन्द्र स्थापित किया जाय, जिसमें दोनों भाषाओं के साहित्य के अध्ययन की सुविधा हासिल हो।

यह भी तय हुआ कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाय, जिससे दोनों भाषा-भाषी नागरिक एकत्र हो सकें।

महाराष्ट्र के विख्यात साहित्यकार स्वर्गीय साने गुरुजी बच्चों के बहुत ही प्रिय व्यक्ति थे। उन्होंने बच्चों के लिए सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ लिखी हैं, जिनके द्वारा मनोरंजन के साथ बच्चों को अच्छे संस्कार भी मिलते हैं, आज भी महाराष्ट्र का हर बच्चा गुरुजी की लिखी हुई कहानियाँ बड़े चाव से पढ़ता है। गुरुजी की मृत्यु के बाद उनके कुछ शिष्यों ने "साने गुरुजी की कथामाला" की योजना बनायी। उस योजना के अनुसार महाराष्ट्र के कई प्रमुख नगरों में कथामाला की शाखाएँ खुली हुई हैं। जहाँ पर बच्चों को हर रविवार को इकट्ठा करके कहानियाँ सुनायी जाती हैं और गीत, श्लोक आदि भी सिखाये जाते हैं। बच्चे उसको बहुत पसन्द करते हैं। उसकी एक विशेषता यह है कि कन्नड तथा मराठी स्कूलों के बच्चों को इकट्ठा करके उन्हें कोई अच्छी-सी कहानी सुनायी जाती है और उसका अनुवाद भी वहीं सुनाया जाता है। इस योजना का बहुत ही अच्छा स्वागत हुआ।

जन-सम्पर्क के लिए हमने दूध बाँटने का काम भी लेने का तय किया है।

(पत्र से)

सिर पर लाठी, सर्वत्र शांति

विनोबाजी का मुकाम ता० २६ जून १९६० को समरालिया (तहसील, लाटवारा, जिला-कोटा) में था। कार्यदल के एक भाई श्री केशवराव ठाकुर, जो १९१२ में विनोबाजी के साथ धूलिया जेल में रहे थे, धूप से राजस्थान की यात्रा में मिलने आये थे। उन्होंने घूमते-घूमते गाँव में एक जगह झगड़ा होते हुए देखा। दोनों तरफ से लाठियाँ चलने लगीं। श्री केशवराव बचाव के लिए आगे आये। इस बीच एक लाठी की हल्की सी चोट उनके सिर पर पड़ी। चोट लगते ही सर्वत्र शांति छा गई, झगड़ालू बिखर गये। सब कुछ शांत हो गया, जैसे कुछ हुआ ही न था!

इस भाई ने चश्मा खोया, लाठी खाई पर शान्ति लायी।

पर्वतों के अंचल से

रामजी

न ज्यादह शीत, न ज्यादह गर्मी—ऐसी है आबहवा पर्वतीय स्थानों की, जो ५॥ से ७॥ हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित हैं। अल्मोड़ा, नैनीताल, रानीखेत, भुवाली, मसूरी, केदार, बद्रीधाम, गंगोत्री, जमुनोत्री आदि ऐसे ही नगर और तीर्थक्षेत्र हैं, जो गर्मी में आधे पर्वतीय और आधे मैदानी लोगों के रहने की जगह बन जाते हैं। स्थानीय लोग होटल चलाने वाले, सामान ढोने वाले सेवक और मैदानी लोग, सैर करने वाले स्वामी, बस इससे अधिक इनका और कोई आपसी सम्बन्ध नहीं बनता। यहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में कुछ सुधार होना चाहिए, इसका लेशमात्र भी प्रयत्न करने की इच्छा इन लोगों में नहीं है। स्नान करना, साफ रहना, बीड़ी, तम्बाकू छोड़ना आदि किसी प्रकार का प्रयास नहीं।

यहाँ की गरीबी और लाचारी का वर्णन करना कठिन है। वह लेखनी में समा नहीं सकती। मैदान का कौन-सा ऐसा भारी नगर होगा, जहाँ सैकड़ों-हजारों की संख्या में बर्तन माँजने, रोटी बनाने तथा चौकीदारी करते हुए यहाँ के लोग नहीं मिलेंगे। मिलीटरी देखें, तो यहाँ के लोगों से भरी हुई और ये बाहर जाने वाले होते हैं नौजवान। अतः यहाँ के देहात नौजवानों से खाली मिलेंगे। थोड़ा संतोष केवल इसी बात का हो जाता है कि आधा पेट ही सही, रूखा-सूखा ही सही, पर मिल जाता है रोज। भुखमरी की नौबत बहुत कम आती है, पर इस साल तो भुखमरी के भी दर्शन मिले हैं। जाड़े के दिनों में भारी बर्फ गिरने के कारण फसल और फल दोनों प्रायः नष्ट हो गये हैं और ऐसे मौके पर देहातों में पूर्ति करना आसान नहीं। प्रकृति की ओर से जमीन भी कम और वह भी सीढ़ीनुमा। खाद का भारी अंश नीचे बह जाता है। जमींदारी-उन्मूलन न होने से कहीं-कहीं पर जमींदारी-प्रथा के दुष्परिणाम से लोग वंचित नहीं हैं। पटवारी यहाँ का सबसे अधिक भयानक कर्मचारी माना गया है। किसानों का वह थानेदार ही है। उसकी सौदेबाजी में गरीबी कोई रोक नहीं लगा सकती। अपढ़ सीधे-सादे किसान उसकी मार से बच नहीं सकते।

तम्बाकू, शराब, बीड़ी और चाय किसी भी मैदानी इलाके से यहाँ अधिक ही मिले। बेकारी औसत दर्जे की। भेड़-बकरियों का पालन कम। वह भी कहीं-कहीं। कताई-बुनाई उद्योग भी कम। जो कच्चा ऊन होता भी है, वह बाजारों में चला जाता है।

खेतों में खाद ले जाना, कटाई, निराई, पेड़ों से लकड़ी काटना, मवेशी-पालन, गृह-कार्य आदि स्त्रियों के जिम्मे है। हल चला कर पुरुष वर्ग घरों में बैठा रहता है, ताश खेलने वाले ताश खेलते रहते हैं। मादक वस्तुओं के सेवन की हद दर्जे की आदत और भयंकर दर्जे की गरीबी के बावजूद लोग जी रहे हैं। क्यों? इसलिए कि प्रकृति की सहानुभूति है, प्रभु की कृपा है और उसी की योजना है।

पर्वतीय लोगों के लिए उसने अनेक करुणा-स्रोत बहाये हैं और अपनी छटा का अक्षुण्ण कोष खोल रखा है। जो जितना चाहे उतना भर ले, पर प्रकृति का खजाना घटता नहीं! हिमाच्छादित पर्वत शृंग और पवनदेव को कैद किये हुए हरे-भरे वन-खण्ड दो-दो मनों का बोझ पीठ पर ढोनेवाले कुलियों को विश्रांति पहुँचाने का सेवाकार्य करते हैं। यदि कहीं इनमें मानव की भूख बुझाने की भी क्षमता होती!

पर्वतों के कण-कण में फैली प्रकृति की यह सुषमा दूर देशों से लोगों को अपनी ओर खींच लाती है। लाखों नर-नारी, बाल-वृद्ध यहाँ का सौंदर्यपान करने चले आते हैं, कुछ दिन रहते हैं और इस बहाने यहाँ के कुछ लोगों के रोजी-रोटी के सहायक बनते हैं।

अगणित ऋषि-मुनियों की तपस्या ने उस हिमाचल को तीर्थभूमि में बदल दिया है, जिसके आकर्षण से लाखों लोग प्रति वर्ष यहाँ आते हैं और मजदूरी के रूप में यहाँ के मजदूरों को कुछ बाँट जाते हैं। प्रकृति की यह दूसरी वरद योजना है। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि इनके बीच भी एजेण्ट घुस गये हैं। यात्रियों से मजदूरों द्वारा ढोने का (डण्डी से यानी ४ कन्धों की सवारी) तय करेंगे तीन सौ रुपये, मजदूरों को देंगे दो सौ और एक सौ रख लेंगे! वे असहाय मजदूर जानते हुए, देखते हुए भी कन्धे सहलाते रह जाते हैं। इसी में से स्वयं खाकर दूसरी सवारी को तैयार होते हैं और थोड़ा अपने मासूम बच्चों को बचाते रहते हैं। वाह रे एजेण्टो! कितना सख्त हो गया है, तुम्हारा दिल!!

देखा है, बातचीत भी की है, यहाँ की बहनों से, बहुओं और बच्चों से। राह चलते हुए, खेत में काम करते हुए। गोबर इकट्ठा करते हुए और लकड़ी तथा मवेशी के लिए चारा काटते हुए। इस गरीबी में भी ये लोग बहुत प्रसन्न दिखाई दिये। जैसे लाचारी नाम की कोई चीज ही नहीं है इनके मुख पर। पुरुषों में ऐसा क्यों नहीं है? सोचने पर समझ में आया कि उनको अपनी कुशलता और पुरुषार्थ पर भरोसा है गरीबी से लड़ने का। यद्यपि यहाँ के लोग मैदानी सम्पर्क में आने से यहाँ के दोषों को भी शरण देने लगे हैं, फिर भी अभी सभ्य आचरण में आगे हैं।

चरखे में बिजली का उपयोग ?

आज की 'शक्ति-हीन' खादी टिक नहीं सकेगी !

भारतानंद

खादी-ग्रामोद्योग आंदोलन लगभग आधी शताब्दी पूर्व प्रारंभ किया गया था। तब भारत में विदेशी शासन था और तत्कालीन सरकार रचनात्मक कार्य-क्रम के पक्ष में नहीं थी। इसलिए इस आन्दोलन को राजनीतिक महत्त्व मिल गया और चूँकि इसने हमारे देश के करोड़ों लोगों, देश की ग्रामीण जनता के जीवन को स्पर्श किया था, इसे स्वतंत्रता-प्राप्ति का एक साधन माना गया। उस समय के खादी-आन्दोलन के लिए सरल तथा स्थानीय कौशल से तैयार किये जा सकने वाले औजारों और सरंजामों की जरूरत थी, ताकि सरकार उन्हें नष्ट न कर सके। लेकिन अब वह जमाना नहीं रहा; अब भारत स्वतंत्र है। राष्ट्रीय सरकार को हमारे आन्दोलन से सहानुभूति है। आज हम खादी और ग्रामोद्योग-आन्दोलन सरकार के खिलाफ नहीं, बल्कि उसके लिए चला रहे हैं।

देश में जनता के कल्याणार्थ एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करने के लिए सरकार वचनबद्ध है। इस कल्याण-कारी राज्य की शकल कैसी होगी, यह कोई नहीं जानता। हर व्यक्ति उसके विषय में अपनी निजी कल्पना रखता है, लेकिन गांधीवादियों का कथन है कि यह एक विकेन्द्रित और अहिंसात्मक, राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था होगी। वे अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचने के लिए विकेन्द्री-करण और अहिंसा चाहते हैं, क्योंकि भय की स्थिति में मानवीय और मानवतापूर्ण जीवन असंभव हो जाता है। विकेन्द्रीकरण का मतलब कठोर संयम या अति संयमी जीवन नहीं है, उसमें आडम्बर के लिए भले ही स्थान न हो। विकेन्द्रित समाज-व्यवस्था के अन्तर्गत भी लोगों की कुछ जरूरतें होंगी और उन्हें विकेन्द्रित उत्पादन द्वारा पूरा करना होगा। जिस रफ्तार से आबादी बढ़ रही है, उसके मुताबिक इस शताब्दी के समाप्त होने तक यहाँ की आबादी ५० करोड़ या इससे ज्यादा हो सकती है। उतने लोगों के लिए सामान तथा सेवाओं की अपेक्षा होगी। उनके लिए भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य तथा शिक्षा की आवश्यकताएँ पूरी करनी होंगी। वे इंतजार नहीं कर सकते। यह कह कर कि चीजों की कमी है, उन्हें संतुष्ट नहीं किया जा सकता, चाहे ऐसी बात कितनी ही खूबसूरती और चतुराई से कही जाय। वे गांधीवादी कार्यक्रम का मूल्यांकन उसकी उत्पादन-क्षमता से करेंगे, यानी यह देख कर कि वह उनकी जरूरतें पूरी करने में कहाँ तक समर्थ है।

बीस गज औसत प्रति व्यक्ति के हिसाब से भारत को ८०० करोड़ गज कपड़े की प्रतिवर्ष जरूरत होगी। खादी द्वारा आत्म-निर्भर बनने का कार्यक्रम इस आवश्यकता को अल्पांश में ही पूरा कर सकता है। बाकी परिमाण पैसे से ही खरीदा जा सकता है। खादी-कार्य का विकास कितना भी क्यों न हो, यह भारत में पूरा करने के के लिए भी सर्वथा अपर्याप्त रहा है।

मिल-वस्त्र और खादी की अर्थ-व्यवस्थाओं की जाँच करने से हमें मालूम होता है कि हर कदम पर मिलों को असुविधा है। उनका सरंजाम महँगा होता है, वेतन वे ज्यादा देते हैं, उन्हें भारी पूँजी लगानी पड़ती है और उसके अतिरिक्त खर्च भी ज्यादा होता है। वे भारी कर चुकाते हैं और उन्हें सुदूर स्थानों से रूई मँगानी पड़ती है। फिर भी, इन तमाम असुविधाओं के बावजूद, वे हम लोगों के मुकाबले बहुत सस्ता कपड़ा तैयार करती हैं। क्यों? इसलिए कि वे बिजली-शक्ति का इस्तेमाल करती हैं। यदि उन्हें बिजली का इस्तेमाल न करने दिया जाय, तो वे दूसरे ही दिन बंद हो जायेंगी, लेकिन जब तक वे बिजली का इस्तेमाल करती हैं, तब तक "शक्तिहीन" खादी, "शक्ति-पूर्ण" मिलों के मुकाबले में टिक नहीं सकती।

खादी घर का बना वस्त्र मात्र नहीं है। इस व्यवसाय में कई तत्त्व शामिल हैं। खादी का उद्देश्य सिर्फ उत्पादन और बिक्री मात्र नहीं है। खादी को चार स्पष्ट वर्गों में रखा जा सकता है (१) यज्ञ-खादी, (२) स्वाव-लंबी खादी, (३) करुणा-खादी, (४) लोक-वस्त्र खादी।

पहले वर्ग के साथ जो समस्या है, वह सरल है। यह व्यक्ति और उसकी आत्मा के बीच का ही मामला है। स्वावलंबी खादी का संबंध प्रायः यज्ञ-खादी से होता है। सूत्रयज्ञ वाले सूत से यज्ञखादी तैयार की जाती है। केवल विशुद्ध आर्थिक कारणों से स्वावलम्बी कताई करना अधिक लोकप्रिय नहीं है। मिल का कपड़ा प्रायः सस्ता पड़ता है और लोगों को इस बात की व्यग्रता रहती है कि वे एक अल्पतम लाभ के लिए श्रम न करें। भूखों मर रहे हों, तो दूसरी बात है, वरना वे जीवन-वेतन से कम पर काम करना मंजूर नहीं करते। करुणा-खादी एक अनोखी और अनमोल चीज है। अभिप्राय यह है कि जिन लोगों के पास जीविका का कोई साधन नहीं है और उन्हें काम की तलाश है, उन्हें रोजगारी मुहैया की जाय। उन्हें भिक्षा देने की बजाय हम काम देते हैं और यह आश्वासन देते हैं कि वे रोटी कमा सकते हैं। यदि उन्हें पर्याप्त पारि-श्रमिक प्राप्त हो, तो बेकारी-निवारण का यह उपाय सर्वोत्तम जान पड़ता है। यह जनता के प्रति स्नेह और सम्मान का सूचक है।

उपभोक्ता के लिए करुणा-खादी को सबसे सस्ता बना कर सर्वाधिक लोकप्रिय बना दिया जाना चाहिए। सरकार को इस करुणा-खादी पर ५० प्रतिशत छूट (रिबेट) देनी चाहिए, ताकि वह सबसे सस्ता कपड़ा हो सके। छूट की इस रकम को पूरा करने के लिए मिल के वस्त्र पर उत्पादन कर (एक्साइज ड्यूटी) होना चाहिए। करुणा-खादी एक अमूल्य आविष्कार है, जिसे नष्ट नहीं होने देना चाहिए। इसकी रक्षा और विकास हर तरह किया जाना चाहिए और यह इतनी सस्ती होनी चाहिए कि इसके लिए वस्तुतः असीमित बाजार उपलब्ध हो।

अम्बर चरखे द्वारा खादी का उत्पादन एक दूसरा ही प्रस्ताव था। अम्बर चरखा कुछ भिन्न किस्म की एक छोटी-सी मिल है और कुछ सुधार के पश्चात् यह वैसा ही मजबूत और एक-सा सूत तैयार कर सकता है, जैसा मिलें तैयार करती हैं। एक हल यह भी है कि सहकारी सूत मिलें स्थापित हों, लेकिन विकेन्द्रीकरण की दिशा में उनके द्वारा बहुत आगे नहीं बढ़ा जा सकता। एकमात्र क्रांतिकारी हल है, शक्ति-चालित चरखे द्वारा घर में बना सूत। शक्ति-चालित चरखे का इस प्रकार का घर का बना अम्बर-सूत इतना सस्ता होगा कि वह

मेरी समझ में नहीं आता कि बिजली से कैसे बचा जा सकता है ?

मिल के सूत से प्रतिद्वंद्विता कर सकता है और वह एक झटके के साथ हाथ-करघा क्षेत्र को मिलों की अधीनता से मुक्त कर देगा। मेरे सुझाव ये हैं

(१) हाथ-कती करुणा-खादी पर दी जाने वाली छूट बढ़ा कर उसे बाजार में सबसे सस्ता कपड़ा बना देना चाहिए और उसकी रक्षा की जानी चाहिए।

(२) घरों में शक्ति-चालित चरखों पर काता गया सूत, हाथ-करघे के बुन-करों को दिया जाना चाहिए और उससे जो कपड़ा तैयार किया जाय, वह उसी प्रकार के मिल-वस्त्र की अपेक्षा सस्ता बेचा जाना चाहिए, क्योंकि मिल के कपड़े पर कर लगेगा। यह घर का बना कपड़ा लोकवस्त्र होगा। देखने में यह मिल के कपड़े की तरह ही होगा और उससे सस्ते भाव पर बिकेगा।

(३) मिलों के लिए वैभवशाली वस्त्र और निर्यात के लिए वस्त्र तैयार करने का अवसर रहेगा। हमने हिसाब लगाया है कि ४० करोड़ की आबादी के लिए ८०० करोड़-वर्गगज कपड़ा प्रतिवर्ष आवश्यक है। इस भारी परिमाण में स्वावलंबी और करुणा-खादी का अनुपात स्वाभाविक रूप से बहुत कम होगा। केवल बिजली इस्ते-माल से ही घर में बना वस्त्र जरूरत पूरी कर सकता है।

यह हिसाब भी लगाया गया है कि इस प्रकार का २० गज, घर का बना कपड़ा तैयार करने के लिए पाँच परिवारों को एक दिन काम करना पड़ता है :

	परिवार
ओटाई, धुनाई और पूनी-बनाई	एक
बिजली से कताई	एक
बुनाई	दो
रंगाई, छपाई और फिनिशिंग	एक

यदि एक वर्ष में २५० कार्य-दिन माने जायें, तो पाँच परिवारों का प्रत्येक समूह २० × २५० = ५,००० वर्गगज घर का बना वस्त्र प्रतिवर्ष तैयार करता है यानी १,००० वर्गगज प्रति परिवार प्रति-वर्ष उत्पादन होता है।

अतः ८०० करोड़ गज कपड़े के उत्पादन में ८० लाख परिवारों को काम मिलेगा और इन परिवारों के समस्त सदस्य, भारत की आबादी का दसवाँ भाग हैं।

मेरी समझ में नहीं आता कि लोक-वस्त्र के आधार के रूप में बिजली-चालित चरखे के इस्तेमाल से किस तरह बचा जा सकता है। राष्ट्रीय सरकार की जिम्मे-दारी है कि वह सर्वसाधारण का जीवन-स्तर ऊँचा उठाये। चूँकि इसके माने यह है कि उत्पादन अधिक हो, इसलिए सरकार को किसी भी तरह उत्पादन बढ़ाना ही होगा। सरकार ऐसी किसी भी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेगी, जो व्यवहार उत्पादन की दृष्टि से खरी नहीं उतरती। जिस व्यवस्था में अधिकतम उत्पादन की सम्भावना होगी, उसी को पसन्द किया जायगा। यह संभव नहीं है कि जितने कपड़े की जरूरत है, वह सब हाथ से तैयार किया जाय। इस प्रकार आवश्यक परिमाण में कपड़ा तैयार करने के लिए देश के सारे मेहनतकश लोगों के कम-से-कम २५ प्रति-शत को खादी के काम में पूरे समय लगाना होगा और ऐसा हो ही नहीं सकता, क्योंकि भोजन तथा अन्य आवश्यक चीजें मुहैया करने की भी जरूरत है।

हर योजना कभी-न-कभी अनिवार्य रूप से असफल हो जाती है, जिसे तर्कयुक्त निष्कर्षों की दृष्टि से देखने पर उसमें विरो-धाभास पाया जाता है। पूर्णतया हस्त-निर्मित वस्त्र के मामले में यही बात है। चूँकि यह सोचा भी नहीं जा सकता कि लोग अर्धनग्न या लगभग पूर्णतया नग्न रहना पसन्द करेंगे, इसलिए हाथ-बने कपड़े के उद्योग पर जोर देने का मतलब

चरखे को जीवन यापन की क्षमता वाला बनाना होगा !

(पिछले पृष्ठ से)

मिलों को कायम रखना ही होगा। इस प्रकार हम एक कुचक्र में फँस जाते हैं। यदि हम हस्त निर्मित खादी चाहते हैं, तो हमें मिलें भी रखनी होंगी, लेकिन यदि हम खादी की यह नयी परिभाषा स्वीकार कर लें कि यह "वह वस्त्र है, जो स्वतंत्र रूप से परिवारों द्वारा या सहकारी इकाइयों द्वारा तैयार किया जाता है," या दूसरे शब्दों में "खादी, विकेन्द्रित ढंग से बनाया गया कपड़ा है" तो मिलों की आवश्यकता समाप्त कर सकते हैं। दूसरा दृष्टिकोण मिलों को हमेशा बनाये रखने के पक्ष में होगा।

इस पद्धति में शोषण के लिए स्थान नहीं है। केवल हाथ से उत्पादन करने का भी यह अर्थ नहीं है कि शोषण से मुक्ति मिल जायगी। हाथ-कताई और हाथ-बुनाई में बड़ी आसानी से शोषण का समावेश हो सकता है। इस बात का सबूत यह है कि तमाम खादी के लिए प्रमाण-पत्र जरूरी होता है। अब भी हम कुछ ऐसे व्यापारियों से सस्ता हाथ-कता और हाथ-बना कपड़ा खरीद सकते हैं, जो सूतकारों और बुनकरों की गरीबी का फायदा उठा कर उनका शोषण करते हैं।

गांधीजी क्यों हाथ-कते और हाथ-बुने वस्त्र के पक्ष में थे? इसलिए कि विद्युत् शक्ति से काता और बुना गया कपड़ा मिलों और विदेशी सरकार के अधिकार में था। आर्थिक स्तर पर लोगों से सम्पर्क करना अभीष्ट था। वे इतने गरीब थे कि अन्य किसी भी स्तर पर उनसे सम्पर्क करना उचित न था। गांधीजी लोगों के लिए आमदनी का ऐसा जरिया प्रस्तुत करना चाहते थे, जो पूँजी और सरकार पर निर्भर न हो। वे ऐसी चीज चाहते थे, जिसे लेकर वे हर गाँव में जा सकें।

मैंने कई सूतकारों से पूछा कि वे अपनी निजी जरूरत के लिए क्यों नहीं कातते। मैंने सूत के बराबर वजन का कपड़ा देना स्वीकार किया, लेकिन वे चावल खरीदने के लिए पैसा चाहते थे। मैं चाहता था कि वे अपने लिए कुछ गज कपड़ा खरीदें, लेकिन उन्होंने कहा कि वे अपनी कताई की मजदूरी से बाजार में सस्ता कपड़ा खरीदना पसन्द करते हैं। कहने का मतलब यह है कि गरीब आदमी अपने काम के बदले में कुछ पाना भी चाहता है। वे या तो पूरे दिन की मजदूरी चाहते हैं या फिर दिनभर का विश्राम। यदि पूनी का दाम बढ़ जाय, तो वे कताई का काम अपना सकते हैं लेकिन यह बढ़ाया नहीं जा सकता। इसलिए यही एक रास्ता है कि उत्पादन बढ़ाया जाय और उत्पादन बढ़ाने के लिए हमें औजारों में सुधार करना होगा। संचालन विधि की सरलता और निम्न मूल्यों को कायम रखने के लिए जरूरी है कि मौजूदा ओटाई, धुनाई, कताई और बुनाई के औजारों से पूरी हद तक काम लिया जाय। केवल डिजाइन को परिष्कृत करने मात्र से उत्पादनशीलता ऊँची नहीं हो सकती। यदि हम अम्बर चरखे की उत्पादनशीलता बढ़ाना चाहते हैं, तो 'बाल बेयरिंग' के साथ खिलवाड़ करने से कुछ नहीं बनेगा। आखिर मिल में बना सारा सूत सुनिर्मित उच्चक्षमता वाले और कई तकुओंवाले 'अम्बर चरखों' द्वारा ही तो उत्पन्न किया जाता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा अम्बर चरखा अधिक उत्पादन करे, तो हमें बिजली का इस्तेमाल करना चाहिए। यदि कोई परिवार दस शक्ति-चालित चरखे चलाये, तो वह १०० रु० या इससे अधिक प्रति मास कमा सकता है और यह रकम सन् १९६० के स्तर के अनुसार एक परिवार के जीवन-यापन करने की दृष्टि से निम्नतम है।

आविष्कार और उपयोगिता की दृष्टि से अम्बर चरखा कितना ही प्रशंसनीय क्यों न हो, इस बात की आवश्यकता है कि करुणा-खादी के उत्पादन के लिए एक सर्वथा उपयुक्त सरंजाम हासिल करने के लिए और भी अनुसंधान किया जाय और वह सरंजाम ऐसा हो कि उसका उपयोग सरलता से सीखा जा सके और वह आसानी से बनाया जा सके। अम्बर चरखे का विकास इस तरह होना चाहिए कि वह एक शक्ति-चालित कताई-यंत्र के रूप में और सच्चे विकेन्द्रित ढंग से हाथ-करघे क्षेत्र के लिए सूत का उत्पादन कर सके। अपने वर्तमान रूप में अम्बर चरखा, करुणा-खादी के उत्पादन की दृष्टि से बहुत जटिल है और लोकवस्त्र खादी के लिए भी यह पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं है। मजे हुए सूतकार जरूर अम्बर चरखे के जरिये खासी कमाई कर सकते हैं लेकिन सभी सूतकार मजे हुए तो नहीं हैं।

लोकवस्त्र का उत्पादन उन क्षेत्रों में शुरू किया जाना चाहिए जहाँ बिजली की व्यवस्था हो गयी है। इससे काम का स्वरूप निर्धारित हो जायगा। जिन गाँवों में बिजली नहीं है, वहाँ स्वावलम्बी और करुणा-खादी का काम जारी रखा जा सकता है। इसी बीच शक्ति के दूसरे स्रोत भी खोजे जा सकते हैं। जिस तरह हम और सभी बातों में गाँवों को आत्म निर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं, उसी तरह शक्ति के मामले में भी गाँवों को आत्म-निर्भर बनाने की दिशा में प्रयास होना चाहिए। स्थानीय शक्ति-स्रोतों का पूर्ण उपयोग होना चाहिए। भारत के कुछ भागों में वायु-शक्ति काफी परिमाण में उपलब्ध है और जल-शक्ति हमारे यहाँ प्रचुरता से है। सूर्य-शक्ति इंजन भी कुछ संभावनाएँ रखते हैं, लेकिन वे अभी तक प्रयोग के स्तर में ही हैं। सभी इंजनों में भाप का इंजन सर्वाधिक सस्ता और सरल है। इसके लिए ईंधन स्थानीय स्रोतों से मिल सकता है और इसे चलाना बहुत आसान होता है। हमें गाँवों के निमित्त शक्ति प्राप्त करने के लिए बिजली का इन्तजार नहीं करना चाहिए। कुछ न होने से तो तेल से चलने वाले इंजन भी अच्छे हैं, यद्यपि वे विदेशों से मँगाये गये तेल से चलते हैं।

रोजगारी के प्रश्न को फिर लेते हुए हम पूछ सकते हैं कि क्या अम्बर चरखे में शक्ति का समावेश करने से रोजगारी की गुंजाइश कम नहीं हो जायगी? लोकवस्त्र का उत्पादन जितनी रोजगारी प्रस्तुत कर सकता है, वह उपलब्ध बाजार पर निर्भर है। अब मिलों के माल के लिए बाजार है और खादी-कार्य केवल किनारों को छू रहा है। लेकिन देश के भीतर जितना भी वस्त्र का उपयोग होता है, वह सब लोकवस्त्र के लिए संभावित बाजार प्रस्तुत कर सकता है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि लोकवस्त्र काफी सस्ता हो जाय। हम लोकवस्त्र के लिए छूट (रिबेट) और सहायता (सब्सिडी) की माँग नहीं करते; शक्ति-चालित औजारों को मिल-वस्त्र पर लगने वाले 'एक्साइज' कर की ही जरूरत है। जैसा हम पहले कह चुके हैं कि भारत की आबादी का १० प्रतिशत भाग लोकवस्त्र के उत्पादन में शांतिपूर्ण परवरिश का जरिया पा सकता है।

शक्ति के समावेश के साथ शोषण की संभावना का खतरा सचमुच मौजूद है, लेकिन खादी-कमीशन इतना संगठित है कि वह लोकवस्त्र के उत्पादन में कारगर तौर पर नियंत्रण रख सकता है। यह भी जरूरी है कि उन सभी शक्ति-चालित बुनाई तथा कताई के कारखानों पर वस्त्रोद्योग-संबंधी कर (एक्साइज) लगाये जायें, जो मजदूरी पर लोगों को नियुक्त करते हैं। इसके विपरीत परिवारों तथा स्वतंत्र कर्मचारियों की सहकारी समितियों द्वारा शक्ति के प्रयोग से उत्पादित लोकवस्त्र पर ये कर नहीं लगने चाहिए।

उपर्युक्त सारी योजना में शक्ति के उपयोग से स्वतंत्र रूप में धंधा चलाने की ही हिमायत की गयी है। यहाँ हमने केवल खादी की चर्चा की है, लेकिन जो बात खादी के संबंध में लागू होती है, वही दूसरे ग्रामोद्योगों के साथ भी ठीक बैठती है। ('खादी ग्रामोद्योग' से)

सुलभ पाखाने और हीराखाद मूत्री

सभ्यता, सफाई, स्वास्थ्य और खाद आदि की दृष्टि से गाँवों में पाखाने और मूत्रालयों का प्रसार होना आवश्यक है। गोपुरी-आश्रम, कनकवली में प्रयुक्त सुलभ पाखाने और हीराखाद मूत्री सबसे सस्ते, सादे और सुविधाजनक हैं। यहाँ उनकी जानकारी दी जा रही है।

सुलभ पाखाने का खर्च : इसमें मलपात्र, गड्ढा, चबूतरा, ढक्कन, आड़ और छप्पर, इसके अतिरिक्त निकासी के लिए नल—ये मुख्य चीजें हैं। इनके लिए खर्च कम ज्यादा, यह इनकी किस्म पर निर्भर करता है।

मलपात्र नया ढक्कन के साथ गोपुरी-आश्रम में २) रुपये ५० नये पैसे का, अलकतरा लगा हुआ ३) रुपये का और काँच से ग्लेज किया हुआ ५ रुपये का मिलता है। रत्नागिरी (गादी कारखाना, श्रीराम मंदिर) में इनका दाम १।।) रुपया अधिक पड़ेगा।

गड्ढा : ३।।' लंबा, X २।।' चौड़ा, X ३' गहरा गड्ढा और उसके तीनों ओर घेरा—इतना बनाने के लिए जमीन के नरम-कड़े प्रकार के अनुसार १।। से ३ रुपये तक खर्च आयेगा।

चबूतरा : जिसमें मलपात्र बिठाया जायगा, वह चबूतरा मिट्टी का होगा। खोदने के लिए एक रुपया खर्च होगा।

ढक्कन : गड्ढे पर का ढक्कन टाट का होगा, एक रुपये का मिल जायगा। बाँस के टट्टर या सिमेंट के पत्रे लगायेंगे, तो क्रमशः रुपये २ और ७ खर्च होंगे।

आड़ : टट्टर की आड़ लगायेंगे, तो ३ से ४ रुपये तक, पत्रों की लगायेंगे तो ३० से ४० रुपये तक, पक्की भीत खड़ी करेंगे तो १००-१५० रुपये खर्च होंगे। झाँप या खोज की आड़ बनायेंगे, तो बहुत कम खर्च होगा।

छप्पर : झाँद की घास का बरसात भर के लिए छप्पर १ रुपये में, सादे पत्रों का ५) रुपये में, गैल्व्हनाइज्ड पत्रों का १५ से २० रुपये तक में होगा। खपरैल का बनाने में ज्यादा खर्च आयेगा।

निकासी के लिए नल : बाँस का नल बहुत कम खर्च में हो जायगा और सिमेंट का ५ से ८ रुपये तक में होगा।

हीराखाद मूत्री (मोरी) : तीन फुट लंबा, चौड़ा और गहरा, कचरा से भरा हुआ और ऊपर से गोबर-मिट्टी से लीपा एक गड्ढा होगा। गड्ढे की एक तरफ बैठने की जगह और मूत्रपात्र। इस पात्र का मूत्र नाली में से एक नल में जाता है। इस नल का ऊपरी भाग बंद रहता है और नीचे का भाग कचरे में दबा हुआ रहता है। हीराखाद-मूत्री का यह स्वरूप है।

('नवजीवन,' ६ जून, '६० से)

नई तालीम के काम की आगे की दिशा

[१७ जून के 'भूदान-यज्ञ' में प्रकाशित लेख में श्री देवी भाई ने नई तालीम के काम को आगे किस प्रकार बढ़ाया जाय, इस बारे में कुछ चर्चा की थी। स्थापना से लगाकर पिछले वर्ष तक जब हिन्दुस्तानी तालीमी संघ और सर्व सेवा संघ का संगम हुआ, इन बाईस वर्षों में तालीमी संघ ने जो समग्रतीय प्रयोग सेवाग्राम में किया, उसके फलस्वरूप राष्ट्रीय शिक्षा का एक संपूर्ण ढाँचा तैयार हुआ।

नई तालीम का काम, जिसे हम शिक्षण-काल कहते हैं, उस अरसे में दी जाने वाली शिक्षा तक सीमित नहीं है। वह तो समूचे जीवन से संबंधित चीज है—बचपन से बुढ़ापे तक ही नहीं, बल्कि गर्भ से मृत्यु तक। 'शिक्षण-काल' का शिक्षण भी उसमें शामिल ही है। भूदान-ग्रामदान के आन्दोलन से नई तालीम के इस जीवन व्यापी कार्य के लिए एक नई भूमिका और अनुकूलता तैयार हुई है। नई तालीम ने एक नये युग में प्रवेश किया है। ऐसे समय में सर्व सेवा संघ के साथ तालीमी संघ का संगम हो जाना बहुत ही सामयिक कदम था।

इस संगम के बाद से स्वभावतः ही नई तालीम के काम के बारे में नया चिन्तन शुरू हुआ है और साथ ही नई अपेक्षा भी निर्माण हुई है। अब आगे समग्र तालीम का काम किस तरह चले, हमारे सारे काम पर नई तालीम का रंग कैसे चढ़े, या जैसे श्री शंकर रावजी ने कहा है, हमारा सारा काम ही नई तालीम में कैसे परिणत हो जाय, सर्व सेवा संघ का नई तालीम के बारे में क्या 'फंक्शन' है—इन सब प्रश्नों के बारे में विचारों का आदान-प्रदान जरूरी है। इसी संदर्भ में नीचे हम श्री धीरेन्द्र भाई तथा श्री शंकर रावजी [पृ० ११ पर] द्वारा अभी हाल ही में इस विषय पर सर्व सेवा संघ के सहमंत्री श्री राधाकृष्णन् को लिखे गये पत्रों से उनके विचार दे रहे हैं।—संपादक]

सर्व सेवा संघ का 'फंक्शन'

तालीम में उपयोगी उत्पादक श्रम दाखिल हो, यह विचार गांधीजी ने देश के सामने रखा था। इसके अलावा भी स्कूलों में 'मैन्युअल ट्रेनिंग' हुनर की तालीम आदि चलती थी, पर वह 'बाई दी वे' होती थी। गांधीजी ने उत्पादक श्रम को शिक्षा के केन्द्र में रखा। यह विचार सरकारों को समझाया जाय, यह एक मुख्य काम हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने अपने ऊपर लिया था। २० साल के लगातार सम्पर्क, चर्चा और प्रयोग से यह काम अब हो गया है। केन्द्रीय सरकार और विभिन्न राज्य-सरकारों ने बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त को मान्य कर लिया है तथा विभिन्न राज्य-सरकारों ने विभिन्न ढंग से इसको स्थान दिया है।

संघ नमूने का विद्यालय चलाये क्या ?

अब प्रश्न यह है कि जब कि सरकारों ने विचार को मान्य कर लिया है और वे उसे अमल में लाने की कोशिश भी कर रही हैं, तब सर्व सेवा संघ का क्या 'फंक्शन' होता है? एक मांग करीब-करीब हर बैठक में संघ के मित्रों की तरफ से यह होती है कि संघ नीचे से ऊपर तक एक नमूने का विद्यालय चलाकर मार्गदर्शन करे। आन्दोलन के संदर्भ में सर्व सेवा संघ का जो स्थान है, उसे देखते हुए यह 'फंक्शन' सर्व सेवा संघ का है क्या, यह सोचना चाहिए। सरकार जिस चीज को नहीं करती है या नहीं मानती है, उसे एक 'पायनियर' या विचार-प्रवर्तक की हैसियत से कर बताना एक चीज है और जब एक चीज सरकार को मान्य हो गयी है, उसी का एक नमूना चलाना, दूसरी चीज है। सर्व सेवा संघ ऐसा काम करे, जिसके द्वारा वह शिक्षा-प्रणाली या पद्धति में ऐसा कुछ 'कंट्रीब्यूशन' कर सके, जिसके जरिये सामाजिक परिवर्तन साध्य हो, तो वह सर्व सेवा संघ का काम है, ऐसा माना जा सकता है। सरकार ने जिस पद्धति को मान्य कर लिया है और जिसके अनुसार लाखों स्कूल चलाने की कोशिश वह कर रही है, सर्व सेवा संघ के उसी पद्धति का एक अच्छा स्कूल चलाने में कोई तथ्य है, ऐसा मुझे नहीं लगता है। चालू पद्धति के अच्छे स्कूल देश में रामकृष्ण मिशन और क्रिश्चियन मिशन द्वारा काफी चलते हैं और आगे भी चलेंगे। एक हमारा भी स्कूल चले, इसके कोई मानी नहीं हैं। इस पर लोग कह सकते हैं कि आप वही चीज क्यों चलायें? अपने विचार के अनुसार अपनी चीज चलायें। उनका ऐसा कहना सही है। लेकिन आज की परिस्थिति में वैसी शाला नहीं चल सकती है। शाला में ऐसे ही लोग अपने बच्चों को भेजेंगे, जिन्हें नौकरी करवानी है। पिछली बार जब सेवाग्राम में बैठक हुई थी, तो नयी तालीम के कार्यकर्ताओं की आम शिकायत यह थी कि सरकार उस शिक्षा को मान्य नहीं करती है, अतः उनके बच्चों को नौकरी नहीं मिलती है। इसलिए सरकारी स्वीकृति चाहिए, ऐसा विचार जाहिर किया गया था। मेरा अपना अनुभव भी यह है कि कहीं कितनी अच्छी शिक्षा की व्यवस्था की जाय, लोग बच्चे नहीं भेजते हैं। भेजते भी हैं, तो अधिकांश ऐसे बच्चों को भेजते हैं, जो उनके लिए समस्या बने हुए अर्थात् 'प्रॉब्लम चिल्ड्रेन' हैं, जिससे वे बच्चे हमारे पास आकर सुधर जायें। खादीग्राम की भी यही दशा थी। हरएक आदमी वहाँ के शिक्षण की तारीफ करते थे, लेकिन बच्चे नहीं भेजते थे। अब, जब सर्व सेवा संघ की ओर से एक पूरा स्कूल चलाया जायगा तथा उसे अपने ही ढंग से चलाना होगा, तो उसकी क्या दशा होगी? अब तक अत्यंत निष्ठापूर्वक चलाने वाले भी सरकारी स्वीकृति की मांग कर रहे थे, लेकिन सरकारी स्वीकृति अपने ढंग को नहीं मिलेगी, अब तक यही अनुभव आया है। सरकार ने जिस सिलेबस (पाठ्यक्रम) को बनाया है, उसके अनुसार चलकर उसकी परीक्षा दिलाने पर ही स्वीकृति मिल सकेगी। वेडछी जैसे सुव्यवस्थित केन्द्र को भी सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार ही परीक्षा दिलानी पड़ती है। तो फिर स्वीकृति लेकर सर्व सेवा संघ किस बात का मार्गदर्शन करेगा, जिसकी मांग मित्रों द्वारा इतने जोरों से हो रही है। हमें इस अत्यन्त स्पष्ट परिस्थिति को समझना चाहिए और सर्व सेवा संघ विभिन्न स्तर की बुनियादी शिक्षा की शालाएँ चला कर मार्गदर्शन करे, यह विचार छोड़ देना चाहिए।

अब, जब सरकार ने बुनियादी शिक्षा का सिद्धान्त मान लिया है, तो संघ को विभिन्न राज्यों में अनुभवी कार्यकर्ताओं को उसमें सुधार की चेष्टा में मदद करनी चाहिए। इस दिशा में सर्व सेवा संघ का इतना फंक्शन हो सकता है।

हर राज्य में सरकार अग्रगामी योजना बनाये

अब रही नमूने की शाला चलाने की बात। यह काम भी सरकार को ही करना चाहिए, जिसने बुनियादी शिक्षा को अपनी शिक्षा-नीति के रूप में मान्य किया है। सरकार को हर राज्य में एक अग्रगामी शाला चलानी चाहिए, जिसके द्वारा वह दूसरी शालाओं को मार्गदर्शन कर सके। अगर ऐसे विद्यालय गैर-सरकारी रूप से चलते हों, तो उन्हें मदद की जाय या सरकार की ओर से ऐसे विद्यालय चलें। ऐसे विद्यालयों में पुराने अनुभवी अच्छे शिक्षक नीचे से ऊपर तक हों।

बुनियादी शिक्षा की विशेषता यह है कि नीचे के वर्ग का शिक्षण ऊपर के वर्ग से कठिन है। लेकिन सरकार पुरानी परिपाटी के अनुसार सबसे कम योग्य शिक्षक बुनियादी शिक्षा के नीचे वर्गों में नियुक्त करती है। अगर बुनियादी शिक्षा को सफल बनाना है, तो सरकार के लिए यह आवश्यक है कि वह इस परिपाटी को बदले। बदलने की प्रक्रिया क्या हो, इसका अनुभव भी ऐसे 'पायलट' केन्द्र में हो सकेगा। सरकार की दूसरी भूल यह होती है कि अच्छे शिक्षक जब अधिक अच्छे हो जाते हैं, तो उन्हें शिक्षण के काम से छुड़ा कर दफ्तर या व्यवस्था के काम में लगा दिया जाता है। इस परिपाटी को भी बदलना होगा। ऐसे लोगों को दफ्तर में न भेज कर 'पायलट' योजनाओं में भेजना चाहिए यानी शिक्षा जगत् में यह वातावरण बने कि 'पायलट' योजना में जाना अच्छे काम का पुरस्कार है। वेतन ग्रेड के अनुसार अवश्य मिले, चाहे शिक्षण की जिम्मेदारी जूनियर बेसिक दर्जों की क्यों न हो। ऐसी 'पायलट' योजनाओं में संघ के सेवकों का सहयोग रहे, इसकी व्यवस्था की जा सकती है।

बुनियादी शाला के लिए उपर्युक्त 'फंक्शन' मात्र अपना कर संघ को नई तालीम का आगे का काम करना चाहिए। गांधीजी ने सन् १९४५ में चरखा संघ तथा तालीमी संघ के सामने इस आगे के काम की रूपरेखा समग्र सेवा तथा समग्र नयी तालीम के रूप में रखी थी। चरखा संघ या तालीमी संघ उसे तत्काल नहीं कर सके। लेकिन तालीमी संघ ने १९५० में दिल्ली-प्रस्ताव द्वारा तथा सर्व सेवा संघ ने १९५८ में कालीकट के प्रस्ताव द्वारा गांधीजी की उन दोनों सलाहों को अपनाने का संकल्प कर लिया है। अतः जिस तरह सर्व सेवा संघ खादी तथा ग्रामोद्योग के काम के बारे में कालीकट के प्रस्ताव के अनुसार 'नये मोड़' की दिशा में अपनी शक्ति लगा रहा है, उसी तरह तालीम के प्रश्न पर सर्व सेवा संघ को दिल्ली प्रस्ताव के अमल में अपनी शक्ति लगानी चाहिए। इस सिलसिले में जिस तरह संघ देश की सभी खादी और ग्रामोद्योग संस्थाओं को नई दिशा में मोड़ने की कोशिश कर रहा है, उसी तरह संघ को तमाम गैर-सरकारी नई तालीम-संस्थाओं को भी समग्र नयी तालीम की दिशा में मोड़ने की कोशिश करनी चाहिए।

जो गैर-सरकारी नई तालीम संस्थाएँ हैं, उन्हें दो में से एक या दोनों कार्यक्रम अपनाने चाहिए :

१—सरकार की पायलट योजना चलाना।

२—ग्रामदानी तथा ग्राम-संकल्पी गाँव में समग्र नयी तालीम का मार्ग ढूँढ़ना।

आज जिस तरह चल रहा है, उसमें से कुछ निष्पत्ति निकलेगी, ऐसा मुझको नहीं लग रहा है।

तुम्हारा
धीरेन्द्र भाई

अंबर चरखा-सुधार

मेरा सारा ध्यान अंबर-सुधार में है। अब अंबर-चरखा विशेष गति से प्रति-घंटा ढाई गुंडी सूत-उत्पादन तक पहुँचा है। उसमें परिश्रम कम हुआ है। पहले के 'अंबर सेट' की अपेक्षा कीमत भी बढ़ी नहीं है, बल्कि कुछ कम ही हुई है। मनुष्य-शक्ति से इतना क्रांतिकारी परिणाम आ सकेगा, ऐसी स्वप्न में भी मुझे आशा नहीं थी। इस परिणाम से हमारी श्रद्धा बढ़नी चाहिए कि हाथ के औजारों का वैज्ञानिक संशोधन बहुत बड़ी गुंजाइश रखता है।

मगर आज की आर्थिक स्पर्धा यह प्रलोभन पैदा करती है कि इन्हीं औजारों में अगर 'पावर' लगा दिया जाय, तो हम बहुत आगे बढ़ेंगे। पता नहीं कि यह 'आगे बढ़ना' अर्जुन की तरह होगा या अभिमन्यु की तरह होगा। हमारे जो साथी आयोजन के मोरचे पर काम कर रहे हैं, वे मनुष्य-शक्ति की अपेक्षा आर्थिक तुलना को ज्यादा महत्त्व देने लगे हैं। उन्हें अंबर चरखे की आज की बढ़ी हुई उत्पादन-मर्यादा से भी समाधान नहीं है, ऐसा दीख रहा है। अपने औजारों में पावर को जोड़ दें, तो केन्द्रित उद्योगों की आर्थिक स्पर्धा में अपने पैरों पर हम खड़े हो जायेंगे, ऐसा विचार उन्हें आ रहा है। 'पावर' को हम अपने हाथ में लें, पावर पर हम कब्जा करें, ऐसी भाषा भी प्रगट की जाने लगी है। इसमें पराजित मनोवृत्ति कितनी है, व्यावहारिकता कितनी है, तात्त्विक भूमिका कितनी है, इसके विश्लेषण में जाने के बदले मैं "पावर" सम्बन्धी जो विचार मेरे मन में आ रहे हैं, वे लिखता हूँ :

(१) हमें तय करना चाहिए कि हम कितना उत्पादन चाहते हैं ? अब अंबर चरखे के सहारे मनुष्य शक्ति से ८ घंटे में से २ वर्गगज यानी साल भर में काम के २५० दिन गिने जायँ, तो करीब ५०० वर्गगज कपड़ा बना लेना संभव हुआ है। अगर प्रति व्यक्ति २० वर्गगज की औसत आवश्यकता मानें (आज तो १६ वर्गगज है), तो १ मनुष्य २५ मनुष्य का कपड़ा बना सकेगा। यह भी संभव दीख रहा है कि औजार-सुधार एवं कारीगरी की अच्छी तालीम से ८ घंटे में २॥ वर्गगज कपड़ा भी मनुष्य-शक्ति से ही बन सकेगा। इस तरह हमारे आयोजन में ३ से ४ प्रतिशत मनुष्य वस्त्रोद्योग में लगेंगे। मनुष्य-शक्ति की इससे अधिक बचत करना जरूरी है क्या ? (हम हिसाब में यह ध्यान में रखना चाहिए कि ये प्रतिशत संपूर्ण जनसंख्या के आधार पर लिये हैं। अगर कार्यक्षम जनसंख्या कुल ६० प्रतिशत गिनी जाय और उसे आधार माना जाय, तो ये प्रतिशत ५ से ६ के करीब होंगे।)

(२) अगर मनुष्य-शक्ति में इससे भी अधिक बचत करनी हो, तो कितनी, यह तय किया जाय, तो उस आधार पर यह सोचना होगा कि उस की पूर्ति बिना 'पावर' के औजारों से हो सकेगी या नहीं ?

(३) 'पावर' घर में आने पर भी कुछ उद्योग हाथ के लिए रहना वांछनीय है या नहीं ! वे कौन से ?

(४) 'पावर' का उपयोग करना हो, तो भी किस पद्धति से ? अंबर में चूड़ी-पद्धति को हमने विकेन्द्रित किया। पावर को विकेन्द्रित करने से पहले ही हमारे औजारों को उसके आधारित करें क्या ?

(५) शोषण, शासन और विध्वंस (युद्ध आदि परिस्थिति) से बचने लायक 'पावर' का उत्पादन आज है क्या ? उनसे बच सकें, ऐसा पावर-उत्पादन का संशोधन पहले करें या आज के पावर को काबिज करने का और हमारे औजारों में उसे लगाने का पहले करें ?

(६) निकट भविष्य में पावर कितनों को मिल सकेगी ? हाथ के औजारों के लिए वैज्ञानिक संशोधन की जरूरत ज्यादा है या पावर के लिए ? हमारी शक्ति किस में लगनी चाहिए ?

केवल संस्कार या भावनावश पावर का विरोध मेरे मन में नहीं है। ऊपर लिखी बातों पर सोचने हुए चरखे में पावर के प्रयोगों में शक्ति लगाना मुझे जरूरी नहीं लगा है और वांछनीय भी नहीं लगा है।

—कृष्णदास गांधी

श्री भंसालीजी का मरणान्त उपवास

पुराने आश्रमवासी प्रोफेसर भंसाली ने ता० ४ जुलाई से वर्धा के गांधी प्राकृतिक चिकित्सालय में आमरण उपवास आरम्भ किया है। गत २१ जून को सेवाग्राम आश्रम से उन्हें इलाज के लिए वर्धा भेजा था। वहाँ डाक्टर ने उन्हें ७ दिन का उपवास कराया था। तबीयत सुधर रही थी, तभी उन्होंने १ जुलाई से आमरण उपवास करने का सोचा। समझाने-बुझाने से ता० ४ तक वह टला, पर उस दिन से आरम्भ कर ही दिया। ता० ५ मई की शाम को श्री भंसालीजी को नागपुर के पास उनके आश्रम टाकली ले गये हैं। पानी भी नहीं लेते हैं। एनिमा लेना स्वीकार किया है। अभी तक स्वस्थ और मन प्रसन्न है। इस प्रकार उपवास करके प्राणान्त करने का विचार कई दिनों से उनके मन में चल रहा था।

नई तालीम ही निर्माण की प्रक्रिया है

"...समग्र नई तालीम के प्रयोग के लिए आज जैसा अनुकूल समय पहले कभी नहीं आया था। क्योंकि आज सारा देश और हम भी, भूदान-ग्रामदान आंदोलन के जो परिणाम आये हैं, उनके कारण राष्ट्र या ग्राम-निर्माण का ही सोच रहे हैं और सर्वोदय या गांधीजी के विचारों में श्रद्धा रखने वाले हम लोगों के लिए राष्ट्र या ग्राम-निर्माण का शक्तिशाली साधन (डाइनामिक्स) नई तालीम ही हो सकता है। जब हमारे भाषणों में या हमारे निवेदन में या प्रस्ताव में यह विधान किया जाता है कि हमारे सारे निर्माण-काम में नयी तालीम का रंग चढ़ना चाहिए, तो उस समय मुझे वह कुछ अधूरा सा लगता है, क्योंकि रंग चढ़ता है दूसरी वस्तु पर। वह वस्तु रंग से रंगती है। लेकिन वस्तु रंग से भिन्न रहती है। हम तो मानते हैं कि नई तालीम ही निर्माण की प्रक्रिया है। इसका अर्थ यह है कि नयी तालीम यानी प्रौढ़ों की तालीम।"

बचपन से बुढ़ापे तक की तालीम

नई तालीम याने बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की तालीम। यह नई तालीम का सही अर्थ है, तो समाज में बच्चे से लेकर बूढ़े तक सारे लोग नई तालीम के लिए विषय हैं और उस प्रयोग के क्षेत्र हैं। मैं तो मानता हूँ कि किसी परिस्थिति के कारण अगर मुझे इस काम के लिए उन दोनों में से भी किसी एक का चुनाव करना है, तो मैं प्रौढ़ों का चुनाव करूँगा, क्योंकि उनके ही जरिये जीवन के सारे क्षेत्र में नई तालीम का प्रवेश हो सकता है। आज के, नई तालीम के काम के बारे में समाज का जिस हद तक विरोध या उदासीनता का हम अनुभव करते हैं, इसका कारण भी यही है कि जो प्रौढ़ हैं और जिनके हाथ में समाज-जीवन का नेतृत्व है, उनको अभी तक नई तालीम का महत्त्व हम समझा नहीं सके हैं। इसलिए हमारी राय में जिसको अंग्रेजी में "ग्रास दी अदर एण्ड" कहते हैं, काम की शुरुआत दूसरे छोर से होनी चाहिए। किसी नये क्रांतिकारी सामाजिक मूल्य का हम लोकमानस में यदि प्रवेश कराना चाहें, तो उसका प्रवेश सबसे पहले समाज के प्रौढ़ों के जीवन में ही कराना होगा। पानी ऊपर से नीचे की तरफ धीरे-धीरे रिसता जाता है। ऐसे विषयों के बारे में पानी नीचे से ऊपर उठ कर नहीं जाता है।

नई तालीम एक विचार है और उसको समाज में फैलना है, तो सर्व-प्रथम समाज में जो प्रौढ़ हैं, वे-इसको ग्रहण करें और उसका महत्त्व समझ कर जीवन में उसका प्रवेश करें, यह जरूरी है। नई तालीम की शाला में पढ़ने वाली लड़की या लड़का अपने घर में जो नई तालीम विरोधी वायुमण्डल आज है, उसे बदल देगा और अपने घर के बुजुर्गों के विचार और आचार पर प्रभाव डालेगा, ऐसी अपेक्षा करना मेरी दृष्टि से योग्य नहीं है। बच्चे अपने बुजुर्गों पर असर डालते हैं। पर मेरी नम्र राय से इसका क्षेत्र और विषय भिन्न हैं।

—शंकरराव देव

[श्री राधाकृष्णन् को लिखे पत्र से]

सूरत :

पी. एस. पी. का निर्णय

सूरत की प्रजा समाजवादी पार्टी ने निश्चय किया है कि उसकी पार्टी स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के चुनाव में पक्ष के आधार पर भाग नहीं लेगी। अपने निश्चय के ऊपर यह रोक लगाकर संतोष न मानते हुए पार्टी ने यह भी तय किया है कि आगामी और उसके बाद होने वाले चुनावों में उम्मीदवारों की छँटनी पक्ष-रहित आधार पर हो, इसके लिए वातावरण बनाने का काम भी पार्टी करेगी।

सूरत के प्रजा समाजवादी पक्ष का यह निर्णय स्वागत योग्य है और हम इस निर्णय के लिए उनका अभिनन्दन करते हैं। सर्व सेवा संघ ने पिछले साल हिन्दुस्तान की तमाम राजनैतिक पार्टियों से सार्वजनिक रूप से और व्यक्तिगत सम्पर्क करके भी प्रार्थना की थी कि वे कम से कम स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं के चुनावों में पार्टी-बन्दी को अलग रखें। पर जैसा हर क्षेत्र का अनुभव आता है, किसी भी केन्द्रीय संगठन या व्यवस्था की उच्चतम इकाई, चाहे वह उस व्यवस्था का सारा दैनन्दिन संचालन करती हो, पर उसमें सुधार का कोई भी नया और बुनियादी काम करने में हिचकती है। इस प्रकार के सुधार का काम जगह-जगह अपने खुद के अभिक्रम पर लोग स्वयं उठा लें, तो फिर अमुक हद तक वातावरण बन जाने पर केन्द्रीय इकाई भी उसे मान्य करने को तैयार हो जायगी। इसी आधार पर सर्व सेवा संघ ने यह माना था कि भिन्न-भिन्न पार्टियों के अखिल भारतीय संगठन स्थानीय संस्थाओं में पक्ष रहित आधार पर चुनावों के तत्त्व को मान्य न भी करें, तब भी जगह-जगह, जहाँ अनुकूलता हो, स्थानीय लोग अपने खुद के अभिक्रम पर इस कार्यक्रम को उठावें। उत्तर प्रदेश में पिछले साल पाँच बड़े-बड़े शहरों की नगर-पालिकाओं के जो चुनाव हुए, उनमें कहीं-कहीं ऐसे प्रयोग हुए भी। अब सूरत में प्रजा समाजवादी दल ने जो निर्णय किया है, वह वहाँ की अन्य पार्टियों को भी मान्य होगा, ऐसी हम आशा करते हैं।

कार्यकर्ताओं की ओर से

श्री भगवान दिघोलकर अहमदनगर जिले के पुराने कार्यकर्ता हैं। उम्र तो बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन कुछ अर्से से आँखें खराब हो गयी हैं। फिर भी सतत सेवा में लगे रहते हैं। गाँव-गाँव में सर्वोदय का संदेश पहुँचाते रहते हैं। जून महीने के काम की रिपोर्ट भेजते हुए वे लिखते हैं :

"मराठवाड़ा में दो मील पदयात्रा की। मोटर, बैलगाड़ी में भी बैठना पड़ा। आँख खराब होने से लाचार हूँ। जी तो पैदल घूमने का ही करता है।"

आँखें खराब होने से खुद पढ़ नहीं सकते, लेकिन हिन्दी-मराठी भूदान-पत्रिकाएँ दूसरों से पढ़वा कर बराबर सुनते हैं और उन विचारों को गाँव-गाँव पहुँचाते हैं। अभी भिण्ड-मुरैना क्षेत्र में विनोबा की जो यात्रा हुई, उस पर से वे अपने गाँव के बारे में लिखते हैं :

"दिघोल गाँव 'डाकुओं' का ही गाँव मानना चाहिए। कुल २०० परिवारों की बस्ती है, जिसमें ४० परिवार मेहतरों के हैं। गाँव के उच्च वर्ण के लोगों ने करीब १२ साल पहले उनके मकानों को उजाड़ कर उन्हें निराश्रित बना दिया था। 'डाकू' कहलाने वाले कुछ लोगों को हम दुर्जन मान लें, तो भी वे अधिकांश में सज्जन ही होते हैं। पर दिघोल के निवासियों ने जिस तरह मेहतरों की बस्ती को उजाड़ दिया और एक आश्रम को नष्ट किया, उस पर से हम क्या अनुमान लगायें कि डाकू कौन है ?"

●

"भूदान-यज्ञ" में "छोटी-छोटी बातें" शीर्षक से आपने जो लेख लिखकर कार्यकर्ताओं को सावधान किया है, वह बहुत ही महत्त्व की बात है। केवल कागज या पोस्ट के मामले में ही नहीं, पर एक-एक बात को अगर हम बारीकी से देखें, तो हम लोग बगैर समझे खूब ही फालतू खर्च करते हैं। कार्यकर्ता अपने आपको बहुत बड़ा मानता है, इसीलिए आज हमारे कामों में थोड़ी शिथिलता आई है। मैं अपने जिले की बात कहता हूँ। जिले के निवेदक महोदय को और दूसरे साथियों को भी मैंने कहा कि सर्वोदय के नाम से जो खर्च हो रहा है, उसका हिसाब जनता के समाधान के लिए प्रकाशित करना चाहिए। पिछले वर्ष एक सम्मेलन हुआ था। उस प्रसंग पर खाने-पीने आदि में काफी खर्च हुआ। खर्च कितना हुआ यह लोगों को अभी भी नहीं मालूम है। इस प्रसंग पर स्थानीय व्यापारी वर्ग, जिन्होंने इस काम में मदद की थी और साथ दिया था, आज दिल से नाराज है। जिले-जिले में काम की गति और जिले या तहसील के कार्यकर्ताओं की हालत को हमें परस्पर देखना, पूछना और जानना चाहिए। आज यह सारा काम 'मालिक बिना का' चल रहा है। काम में गति लानी है, तो बराबर सम्पर्क और पूछताछ होनी चाहिए।

—एक कार्यकर्ता के पत्र से

●

विनोबापुरी में शिविर

विनोबापुरी (देवरिया) में ३ दिन का एक शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में १३ व्यक्तियों ने भाग लिया। जिनमें जिले के लोकसेवकों के अतिरिक्त सर्वोदय-मित्र भी शामिल हैं। शिविर का सारा खर्च शिविरार्थियों ने स्वयं वहन किया। सर्वोदय-विचार के विविध पहलुओं पर खुल कर विचार-विनिमय हुआ।

●

खादी जगत्

अखिल भारत खादी-ग्रामोद्योग-मंडल ने पिछले दिनों एक उपसमिति गठित की। इस उपसमिति का काम खादी और ग्रामोद्योग का काम करने वाली देश की छोटी संस्थाओं से संपर्क करना और उनकी दिक्कतों व समस्याओं के समाधान सुझाने में मदद करना है। इस उपसमिति में श्री टी० एम० गोखले, श्री वीरेश्वर ऐयर, श्री करण भाई और श्री रामेश्वर अग्रवाल हैं।

उपसमिति ने अपना कार्यक्रम २६ जून से प्रारंभ किया है। सर्व प्रथम उत्तर प्रदेश की छोटी संस्थाओं से संपर्क किया जा रहा है।

●

काशी नगर पदयात्रा का आरंभ

ता० १० जुलाई को प्रातःकाल सूर्योदय से पहले ही साधना-केन्द्र के शान्त वातावरण में श्री दादा धर्माधिकारी के आशीर्वचन तथा प्रार्थना के साथ काशी नगर पदयात्रा का आरंभ हुआ। पूज्य दादा ने आशा व्यक्त की कि इस अभियान से काशी नगर में सर्वोदय-विचार घर-घर पहुँचने के साथ पदयात्रा में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं के जीवन में भी परस्पर स्नेह, प्रामाणिकता और पवित्रता का संचार होगा। जब पदयात्रा-टोली साधना-केन्द्र से निकली, तो आकाश मेघाच्छन्न था और बारिश हो रही थी। पदयात्रा में करीब १०० भाई-बहन शामिल थे। श्री [illegible] भाई, श्री निर्मला देशपांडे आदि व्यक्तियों की टोली दो महीने तक सतत की पदयात्रा करेगी। सबेरे एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले की पदयात्रा, मुहल्ले में [illegible] घर-घर सम्पर्क, तीसरे पहर मुहल्ले के खास-खास लोगों से विचार-विनिमय तथा शाम को [illegible], यह सारा दैनिक कार्यक्रम रहेगा। पदयात्रा के पहले दिन जिस मोहल्ले में टोली का पड़ाव था, उसमें करीब ५०० घरों से कार्यकर्ताओं ने सम्पर्क किया।

●

मन की तड़प !

५ मई '५७ को कालेज के अध्यापन-कार्य से मुक्ति लेकर मैं इस क्रांति में कूदा। तब से घर-गृहस्थी को एक तरफ छोड़ा—क्रांति को एक तरफ। श्री पुजारी रायजी के साथ आज ६००० मील, ३३ माह हुए, यू० पी० के ४९ जिलों को पार कर के गाँव-गाँव पैदल जाकर विनोबा का संदेश ग्रामस्वराज्य, शासन-मुक्ति, नई तालीम, इस्तीफा, कन्वर्ट के बारे में सुनाता जय-जगत् का मंत्र फूँकते चले जा रहे हैं, अखंड पदयात्री दल के साथ। टीम स्प्रिट के हम कुल ४ साथी १५ अगस्त '५८ मुरादाबाद, जहाँ इस टोली ने मार्च किया, चल रहे हैं। माताएँ, बहनें भी बीच-बीच में रहीं। अब तक करीब ५०० भूदान-ग्राहक तथा १०,००० रु० सर्वोदय-साहित्य गया। लाखों भाइयों बहनों, बहनों से संपर्क हुआ।

अतिरिक्त कार्यक्रम के अलावा रोज मैं औसत १ घंटा उत्पादक श्रम, सूत्रयज्ञ, स्वाध्याय चलता है टोली का। मैं तो इधर कई जिलों में जब शहरों में पड़ाव रहता है, तो भंगी-भाई के साथ होकर सरकारी, अर्ध-सरकारी से लेकर सामान्य परिवारों में जाकर पाखाने की सफाई करता रहता हूँ। अहंकार, लोभ से बचने में ऐसे कार्यक्रम सहायक होते हैं।

११ सितम्बर '६० को गनवत [illegible] अखंड पदयात्रा का समावर्तन काशी। होगा। इसके बाद अब तो कार्यक्रम भी देखना होगा ! "६२" इलेक्शन करीब आ रहा है। पू० बाबा के शब्दों शासन-मुक्ति का प्रयोग भी तत्काल हमारे सामने है। काशी, पंजाब, कानपुर में पूरी शक्ति लगानी है। सीमा-क्षेत्र की चुनौती सर्वोदय के लिए अलग ही है। आज लखनऊ में ८० हजार गैलन प्रति वर्ष देशी शराब तथा १० हजार गैलन बढ़िया किस्म की शराब खप रही है, जब कि आज से पूर्व केवल १५ हजार गैलन की माँग थी। तो मद्य-निषेध की समस्या एक तरफ है। 'बाबा' तो काशी के लिए विशेष जोर दे रहे हैं। क्योंकि तीन-तीन प्रान्तों के बीच विश्व विनाशी काशी स्थित है। देखिये, प्रभु किधर मुझे ले जाते हैं ?

[सुश्री निर्मला बहन को लिखे गये श्री [illegible]नारायणजी के एक पत्र का अंश]

●

राजपुरा में कुम्हारी काम का शिक्षण-वर्ग

ता० ३ जुलाई को खादी ग्रामोद्योग कमीशन के अध्यक्ष श्री वैकुंठलाल मेहता ने कस्तूरबा सेवा-मंदिर, राजपुरा, पंजाब में कुम्हारी उद्योग के 'शिक्षण-वर्ग' का उद्घाटन किया। सेवा-मंदिर के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए श्री वैकुंठभाई ने ग्रामोद्योग का और स्वावलम्बी अर्थ-रचना का संदेश घर-घर पहुँचाने की प्रेरणा दी।

●

सुधार

ता० ८ जुलाई के "भूदान-यज्ञ" में डा० धनंजयराव गाडगिल का जो लेख प्रकाशित हुआ है, वह जिस मूल मराठी ग्रंथ से लिया गया है, उसका नाम "महाराष्ट्र-जीवन" है, "महाराष्ट्र-जीवन-दर्शन" नहीं।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४२८५
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,४७६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०७६ एक प्रति १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)

शांति के रास्ते से जो क्रान्ति आयेगी, वही सच्ची क्रान्ति होगी !

'मिनिस्टरों के बंगलों के अहातों में जो इतनी जमीन पड़ी है, उसका उत्पादन के लिए इस्तेमाल क्यों न किया जाय ?'

विनोबा

अपना देश अधिकतर अशिक्षितों का देश है। यहाँ कुछ थोड़े ही लोग शिक्षित हैं। इसलिए शिक्षितों पर भारी जिम्मेदारी आती है। अपने अशिक्षित भाइयों को सब प्रकार की मदद पहुँचाना उनका कर्तव्य है। हमारा अशिक्षित समाज ही अधिक काम करने वाला समाज है। जीवन की लगभग सभी आवश्यक वस्तुएँ वही पैदा करता है। उसे शिक्षा का लाभ नहीं मिल रहा है, पर उसकी सेवा से हम सब लाभ उठा रहे हैं। आज शिक्षितों और अशिक्षितों के बीच एक दीवार-सी खड़ी हो गई है। शिक्षा के ढंग में परिवर्तन करने की बात सरकार और समाज ने मान ली है, पर अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अंग्रेजों को अपना राज्य चलाने के लिए नौकरवर्ग की जरूरत थी। उन्होंने अपनी शिक्षा-पद्धति के उद्देश्यों में यह बात साफ-साफ लिख कर भी रखी थी। आज ५५ लाख नौकर ऐसे हैं, जिन्हें सरकार ने देश की सेवा के लिए लगा रखा है। पचपन लाख नौकर यानी पचपन लाख परिवार। हिन्दुस्तान में कुल ७ करोड़ परिवार रहते हैं। इनकी सेवा के लिए पचपन लाख नौकर नियुक्त हैं। मतलब यह हुआ कि इस देश में १३ परिवारों पर एक सरकारी सेवक रखा गया है। इतना बड़ा सेवक-समाज शायद ही कहीं और हो। लेकिन असल सेवा करने वाले तो दूसरे ही हैं। जो अशिक्षित हैं, वे ही सेवा करते हैं। पर वे समझते हैं कि हम तो अपना पेट पालने के लिए मजदूरी कर रहे हैं। वे सेवक बनने का दावा नहीं करते। इधर सरकारी नौकर तो अपने को लोक-सेवक (पब्लिक सर्वेण्ट) कहते भी हैं। इस तरह हमारे देश में सेवक कहलाने वाला एक वर्ग है और सेवा करने वाला दूसरा। इन पचपन लाख सिविल सेवकों के अलावा पाँच लाख मिलिटरी सेवक और हैं। इनमें से ज्यादातर लोग उत्पादन का नहीं, विभाजन का काम करते हैं। रवीन्द्रनाथ टाकुर के शब्दों में वे 'मल्टिप्लिकेशन' नहीं, 'डिविजन' करते हैं। इनके रहन-सहन का दरजा मजदूरी करने वालों के दरजे से ऊँचा होता है।

इस तरह हमारे यहाँ जिनके पास विद्या है, उनके पास उत्पादन की शक्ति नहीं है और जिनके पास उत्पादन की शक्ति है, उनके पास विद्या नहीं है। नतीजा यह है कि मानो राहु और केतु की तरह समाज के दो टुकड़े हो गये हैं। ये दोनों ही जीवनहीन हैं। इनमें एक अन्धा है और दूसरा लंगड़ा। जहाँ कर्मशक्ति है, वहाँ ज्ञान नहीं है, जहाँ ज्ञान है, वहाँ कर्मशक्ति नहीं है। गाँवों के ज्यादातर लोग अंधे हैं और शहरों के ज्यादातर लोग लंगड़े हैं। सो अन्ध-पंगु-न्याय से शहरों के बहुत से लंगड़े गाँवों के बहुत से अन्धों के कन्धों पर बैठे हुए हैं। अंधे लंगड़े का बोझ ढोते हैं। दोनों अक्षम हैं। दोनों अक्षमों के सहयोग से समाज सक्षम बनेगा, इसकी कोई आशा नहीं है। जरूरत इस बात की है कि दोनों के आँखें हों और दोनों के पैर हों। दोनों एक-दूसरे के गुणों की पूर्ति करें, अक्षम होकर नहीं, सक्षम और समर्थ बन कर। आज तो हालत यह है कि आपस में सहयोग के बदले दोनों के बीच संघर्ष बना रहता है। लंगड़ा अपना हर समय कर अन्धे के कन्धे पर बैठा है और उतरने का नाम ही नहीं लेता। यहाँ मुझे एक कहानी याद आ रही है। जब घोड़े से आदमी की पहली मुलाकात हुई, तो आदमी ने घोड़े से कहा—"तू अपनी पीठ कुछ देर के लिए मुझे किराए पर दे-दे।" घोड़ा लगा दी, उस पर जीन कस दी और सवार हो गया। तब से आज तक काफी समय बीत चुका है, पर आदमी है कि घोड़े की पीठ छोड़ता ही नहीं। वह कहता है—"तुझे खाना खिलाऊँगा, पानी पिलाऊँगा, पर तेरी पीठ नहीं छोड़ूँगा।" अगर देश के शिक्षितों और अशिक्षितों के बीच भी यही हाल रहा, तो कयामत जारी रहेगी।

भारत में शान्ति के रास्ते क्रान्ति आनी चाहिए। 'भूतराष्ट्र' अक्सर अन्धे

हमारे समाज में दो वर्ग हैं। ये दोनों ही जीवनहीन हैं। एक अंधा है और दूसरा लंगड़ा। गाँवों के ज्यादातर लोग अंधे हैं। शहरों के ज्यादातर लोग लंगड़े हैं। लंगड़े अंधों के कंधों पर बैठे हैं। दोनों अक्षम हैं। इसलिए पूरा समाज कमजोर है। हमें दोनों को सक्षम बनाना है।

होते हैं। वे शान्ति चाहते हैं। उनकी इच्छा रहती है कि डाकू-समस्या हल हो, कम्युनिस्ट उपद्रव न करें, विद्यार्थियों में असन्तोष न बढ़े, मजदूर शिकायत न करें। लेकिन वे समाज में क्रान्ति नहीं चाहते। उधर क्रान्तिवादी चाहता है कि कैसे भी बने, समाज में क्रान्ति की आय।

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी, शुक्रवार २२ जुलाई, '६० वर्ष ६ : अंक ४२

यह स्मशान की-सी शान्ति किस काम की? मेरे-जैसा एक तीसरा व्यक्ति भी है, जो शान्तिमय क्रान्ति चाहता है। ऐसे व्यक्ति को दोनों ओर की मार सहनी पड़ती है। शान्तिवादी कहता है—"हमें ऐसी क्रान्ति-मिश्रित शान्ति नहीं चाहिए।" उसके विचार में डाकू नीच हैं। उनके लिए शरण या मरण दो ही रास्ते हो सकते हैं। राजी हो गया। आदमी ने घोड़े को लगाम शान्ति में क्रान्ति का भाव आ जाने से इन शान्तिवादियों का दबदबा या रौब घटता है, इसलिए वे उसे नापसन्द करते हैं। दूसरी तरफ से क्रान्तिवादियों की मार भी हम पर पड़ती है। वे कहते हैं—"आप तो थोड़ा-थोड़ा दान माँगते हैं। इससे क्रान्ति की धारा क्षीण होती है। उसमें जोश लाने के बजाय आप उसे कमजोर करते हैं।" इस तरह दोनों तरफ की मार खानी पड़ती है।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक करोड़ों लोगों ने जितने प्यार से और जिस शान्ति के साथ हमारी बात सुनी है, उसकी इस देश में कोई मिसाल नहीं है। इसका कारण यह है कि लोग शान्तिवादियों को ढोंगी और क्रान्तिवादियों को बेवकूफ समझते हैं। मैं साढ़े चार महीने केरल में घूमा। कम्युनिस्टों से मेरी बातें हुईं। चुनाव से पहले वे कहते थे कि बीस एकड़ का 'सीलिंग' करेंगे। मैंने पूछा—'इससे मिल्कियत कैसे मिटेगी? कम्युनिज्म या साम्यवाद कैसे कायम होगा? मैं तो व्यक्तिगत मिल्कियत मिटा देने की बात करता हूँ।" वे कहते थे—"बात तो आप ठीक ही करते हैं। पर आप सारा काम प्रेम के जरिए करना चाहते हैं। इसमें बहुत देर लगेगी।" मैंने पूछा—'आप कानून के जरिए जमीन की समस्या को कैसे हल करेंगे? उससे तो जमीन की निजी मिल्कियत और भी मजबूत होगी। मैं निजी मिल्कियत मिटा देने के पक्ष में हूँ।" इस तरह आप देखेंगे कि आज का कानूनवादी करुणावादी से बहुत पिछड़ा हुआ है।

उधर शान्तिवादियों की यह हालत है कि वे वादे पर वादे करते चले जाते हैं। पहले उन्होंने कहा कि दो सालों में हिन्दुस्तान अन्न की दृष्टि से अपने पाँवों पर खड़ा हो जायेगा। इस बात को आज दस साल हो गये हैं। अन्न के मामले में हिन्दुस्तान जहाँ का तहाँ पड़ा है। अब वे कहते हैं कि छह साल बाद देश जरूर स्वावलम्बी हो जायेगा। किसी ज्योतिषी से पूछना चाहिए कि छह साल के बाद यहाँ की स्थिति कैसी क्या रहेगी?

जब गाधीजी के जमाने में यह सवाल उठा था, तो उन्होंने कहा था कि गमलों में तरकारी बोइये। उनका इशारा यह था कि हम सामूहिक काम में हरएक की इच्छाशक्ति लगनी चाहिए। समूचे मानव-समाज में इस काम के लिए प्रबल भावना पैदा करना उनका उद्देश्य था। वेदों में भगवान् को 'सहस्र शीर्षा पुरुष' कहा गया है। जहाँ हजारों हाथ जुड़ जाते हैं, वहाँ भगवान् ही काम करता है। गोवर्धन पर्वत उठाते समय भगवान् ने सबसे सहारा देने के लिए कहा और खुद ने सिर्फ एक अँगुली लगायी। वेद में कहा गया है—'नहि श्रान्तस्य ऋते सख्याय देवाः।' मतलब यह कि जब आदमी खुद मेहनत करके थक जाता है, तभी भगवान् उसकी मदद के लिए आता है।

उपनिषद् में कहा है—अन्न खूब पैदा करो। इसे अपना व्रत समझो। वैसे, उपनिषद् ब्रह्मविद्या के ग्रन्थ हैं, पंचवर्षीय योजना के नहीं। पर हमारे ऋषि जानते थे कि यदि अन्न पैदा न हुआ, तो समाज में द्वेष बढ़ेगा और ब्रह्मविद्या के लिए वह घातक होगा, क्योंकि मत्सर रहित या द्वेष-रहित समाज ही ब्रह्मविद्या का आधार बन सकता है।

इस दृष्टि से अन्न पैदा करने के बारे में बापू ने राष्ट्रीय पैमाने पर एक प्रेम-भावना जगाने की कोशिश की थी। वे शान्तिवादी भाई यह नहीं कहते कि हम सब मिल कर इस काम को कर लेंगे। उल्टे, वे तो यह कहते हैं कि हम आपके लिए इसे कर देंगे। छह साल में राष्ट्र आत्मनिर्भर हो जायेगा। इसके विपरीत, गांधीजी के जमाने में लोक-भावना कुछ ऐसी बन गई थी कि सरकारी अफसर भी कहते थे कि इन मिनिस्टरों के बंगलों के अहातों में इतनी जमीन जो पड़ी है, उसमें ये लोग साग-तरकारी क्यों नहीं बोते?

ये दावा करने वाले लोग आजकल 'डिस्टरबेन्स' नहीं चाहते। गड़बड़ी से ये घबराते हैं। चाहते हैं कि जैसा चल रहा है, चलता चले। उधर क्रान्तिवादी हैं, जो किसी भी तरीके से क्रान्ति करना चाहते हैं। लेकिन जब शान्ति की रीति से क्रान्ति आयेगी, तभी सच्ची क्रान्ति हो सकेगी। अशान्ति से क्रान्ति आयी, तो वह झूठी क्रान्ति होगी।

इस विचार के चलते शिक्षित और अशिक्षित के बीच का भेद मिटेगा। आज जरूरत इस बात की है कि भारत का हर नागरिक शिक्षित और परिश्रमी बने। भगवान् ने हर आदमी को भूख दी है, तो हरएक को दो हाथ भी दिये हैं। दिमाग भी दिया है और दिल भी दिया है। सब अपनी-अपनी बुद्धि का विकास करें, सब शरीर-श्रम करें। इससे भारत में एकवर्ण समाज बनेगा। उसका नाम होगा-हंसीवर्ण —हंसवर्ण-समाज, नीर-क्षीर-विवेक करने वाला सन्तुलित समाज! ज्ञान और कर्म की निष्ठा के दो पंखों द्वारा वह पक्षी की तरह ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिए उड़ेगा।

(लश्कर, ७ जून, '६०)

"छोटी-छोटी" बातें

हम बड़ी-बड़ी बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि 'छोटी' बातों की तरफ हमारा ध्यान बिलकुल नहीं जाता। उनकी ओर ध्यान देना हमें हमारे 'बड़े बड़े' कामों से ध्यान बँटाने जैसा लगता है। पर हम भूल जाते हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों से ही हमारी आदतें और जीवन के संस्कार बनते हैं।

"छोटी" बात का एक छोटा-सा उदाहरण लीजिये :

जो बात बिजली की है, वही पानी के नल की है। उपयोग के बाद नल बंद करने का ध्यान, खासकर सार्वजनिक स्थानों में बहुत कम लोग रखते हैं। शहरों में लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके पानी के नलों की व्यवस्था की जाती है। राष्ट्र की संपत्ति, समय, शक्ति, साधन—सब उस काम में काफी मात्रा में खर्च होते हैं, तब हमारी गलियों में, बाजारों में और घरों में पानी पहुँचता है। नागरिकता का ही नहीं—मुझे थोड़ा कड़ा शब्द इस्तेमाल करने के लिए माफ करें—आदमियत का यह तकाजा है कि हम इस तरह मेहनत और खर्च करके मुहय्या की गई चीज का दुरुपयोग न करें, उसे व्यर्थ में बरबाद न करें। अक्सर शहरों में पानी की कमी ही रहती है। शायद ही किन्हीं शहरों में सबको पूरा पानी मिल पाता है। ऐसी हालत में उसे बरबाद करना अक्षम्य है। पर हम कभी इस पर ध्यान देते हैं या अपने बच्चों में भी इन चीजों के उपयोग के बारे में संस्कार डालने की जरूरत ही नहीं समझते!

सार्वजनिक स्थानों के नल तो अधिकांश में बिगड़े ही रहते हैं और उनमें से पानी बहता रहता है, घरों में भी हमारी लापरवाही से कितना बहुमूल्य पानी बरबाद होता है? बहुमूल्य इस माने में कि अगर उसका संयत इस्तेमाल हो तो उसकी कमी के कारण जो कठिनाई भुगतनी पड़ती है, वह न हो। दातुन-कुल्ला करते वक्त अक्सर हम लोग नल के पास खड़े हो जाते हैं और नल खोल कर दातुन करते रहते हैं। कपड़े धोने या नहाते वक्त भी उसका असंयत इस्तेमाल होता है। अगर दातुन आदि करते वक्त लोटे का और नहाने-धोने में बाल्टी-लोटे का इस्तेमाल करें या कम-से-कम नल को खोलने, बंद करने का उपयोग रखें और इसी तरह सार्वजनिक स्थानों के नल यदि खुले दिखाई पड़ें, तो उन्हें तुरन्त बन्द कर देने की आदत डालें, तो बहुत-सा दुरुपयोग बच सकता है।

पर इन 'छोटी' बातों की तरफ ध्यान देने की फुरसत हमें कहाँ है?

—सि०

गुजरात-पदयात्रा

विनोबाजी ने अखिल भारतीय पदयात्रा करके कार्यकर्ताओं के मन में पदयात्रा को कार्य और प्रेरणा का सूत्र बना दिया है। भू-क्रान्ति का सर्वोत्तम माध्यम और प्रतीक के रूप में आज पदयात्राएं चल रही हैं। प्रांत-प्रांत में अखंड पदयात्राओं का आयोजन किया गया है। उत्तर प्रदेश में कुमारी राधाजी निरंतर पदयात्रा कर रही हैं। स्वर्गीय लक्ष्मी बाबू की स्मृति में बिहार में व्यवस्थित और नियमित पदयात्रा चल रही है। इसी तरह अन्य प्रान्तों में भी पदयात्राओं का सिलसिला है।

इस दृष्टि से गुजरात-पदयात्रा का भी अपना महत्त्व है। लगभग ७ महीनों से चलने वाली इस पदयात्री टोली ने खेड़ा, अहमदाबाद, महेसाणा, बनासकांठा आदि जिलों में भ्रमण किया और अब आगे निरंतर चलती जा रही है।

इस पदयात्रा की विशेषता यह है कि छात्र, अध्यापक, किसान, व्यापारी आदि लोगों के साथ अलग-अलग वर्गीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। अलग-अलग वर्गों की अलग समस्याएं हैं। उनका किस तरह समाधान किया जाय, यह बताया जाता है। स्थान-स्थान पर श्रमदान का आयोजन किया जाता है। गंदगी-मुक्ति तथा ऋण-मुक्ति के अभियान चलाये जाते हैं। पालनपुर में तो न्याय कर्मचारियों ने अपनी आय में से ही एक हिस्सा देकर ग्राम-परिवार बनाने का तय किया है। इस यात्रा में लगभग ढाई सौ रुपये का साहित्य अब तक बिक चुका है और करीब साढ़े पाँच सौ ग्राहक 'भूमिपुत्र' के बने हैं।

टिप्पणियां

अनुकरणीय कदम

हमारे राष्ट्रपति श्रद्धेय श्री राजेन्द्रबाबू ने अपने वेतन में कमी करके न सिर्फ एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया, बल्कि यह भी साबित किया है कि उनका अंतरंग कितना संवेदनशील है। अंग्रेजी शासन के जमाने से चली आ रही परम्परा को तोड़ने का एक मौका १९४७ में आया था, जब देश आजाद हुआ। भारत के भूतपूर्व वित्त-मंत्री स्वर्गीय डा० जॉन मथाई ने अपने संस्मरणों में एक जगह लिखा था कि १९४७ में आजाद हिंदुस्तान के पहले मंत्रिमंडल में वित्तमंत्री का पद स्वीकार करने के लिए जब उनके पास संदेशा पहुँचा, तो उन्होंने तथा उनकी पत्नी ने गम्भीरतापूर्वक इस बात पर चर्चा की कि आजाद हिंदुस्तान में तो तनख्वाह ५०० रुपये से अधिक मिलने वाली नहीं है (कांग्रेस के कराची-अधिवेशन के प्रस्ताव के अनुसार), तो उन्हें कुछ तंगी में जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। उनकी पत्नी ने उन्हें उत्साहित करते हुए कहा कि देश के लिए थोड़ा-बहुत त्याग करना पड़े तो वह करने की तैयारी सबकी होनी चाहिए। इस प्रकार १९४७ में एक ऐसा मौका आया था, जब देश के पढ़े-लिखे लोग और नौजवान त्याग की एक-दूसरी यात्रा की शुरुआत कर सकते थे। पर जो कुछ हुआ, वह हमारे सामने है। अंग्रेजों की चलायी हुई वेतन और शान-शौकत की परम्परा इस देश में कायम रही। गांधीजी ने ३०-३५ वर्ष तक सादगी और संयम का जो पाठ देश को पढ़ाया था, उसको कार्यान्वित करने का मौका हमने हाथ से खोया।

राष्ट्रपति के लिए हमारे कानून के अनुसार १० हजार रुपये मासिक वेतन तय हुआ है। पिछले ८ वर्षों में श्रद्धेय राजेन्द्रबाबू ने यह तीसरी बार अपने वेतन में कटौती की है और आइन्दा मासिक २५ सौ रुपया ही लेने का उन्होंने तय किया है। हिंसा और अहिंसा की शक्ति की तुलना करते हुए एक दूसरे प्रसंग पर विनोबा ने कहा था कि अगर हम अहिंसक शक्ति में विश्वास करते हैं, तो हमारे देश का राष्ट्रपति जिस बात का गौरव करता है, वह बात देश के प्रत्येक व्यक्ति को उठा लेनी चाहिए। श्रद्धेय राजेन्द्रबाबू ने जो कदम उठाया है, उसका देश में कितना अनुकरण होगा, यह कहना मुश्किल है। कुछ अखबारों ने तो यह दलील देना शुरू कर दिया है कि मंत्रियों आदि को अपने पद के अनुसार कुछ 'प्रतिष्ठा' कायम रखनी पड़ती है और उसके लिए अमुक जीवन-स्तर जरूरी है। हिन्दुस्तान जैसे देश में इस तरह की दलील व्यावहारिक और सैद्धान्तिक, दोनों दृष्टियों से अनुचित है। इस देश में व्यक्ति की 'प्रतिष्ठा' उसके शान-शौकत और उसके जीवन-स्तर पर कभी निर्भर नहीं रही है, बल्कि हमेशा त्याग, संयम और तपस्या ने ही लोगों को आकर्षित किया है। व्यावहारिक दृष्टि से देखें तो भी जिस देश में लाखों आदमियों को दो बार भरपेट भोजन भी नहीं मिलता, उस देश में ऊँचे जीवन-स्तर के साथ "प्रतिष्ठा" को जोड़ना उचित नहीं होगा।

आशा है कि श्रद्धेय राजेन्द्रबाबू ने जो कदम उठाया है, उस पर केंद्रीय और प्रांतीय मंत्रिगण भी गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और उसका अनुसरण करने का प्रयत्न करेंगे, जिससे उनके और जनता के बीच और भी अधिक आत्मीयता का मेल बढ़े।

—सिद्धराज ढड्ढा

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लच्छी भगवान की प्रेरणा से आया !

अेक डाकू बंबओी में रहता था। लच्छी अुसका नाम था। अुसे पकड़ने पर ओिनाम था। लेकिन वह पुलीसवालों के हाथ आने वाला नहीं था। अुसने काफी पैसा ओिकट्ठा कीया था। अुसने सुना की बाबा ने डाकुओं से मांग की है की "बुरा रास्ता छोड़ो, अच्छे रास्ते को अपनाओ"—तो अुसके मन में आया की चलो, हम भी जायें। ओधर जो दूसरे डाकू थे, जहां हम घूमते थे, वहां अुनसे हमारे कार्यकर्ता साथी मीले। वे ही अुनके पास पहुंचे थे। अुन्होंने अुन डाकुओं को कुछ बातें समझाओीं। लेकीन लच्छी तो बंबओी से आया था, अुसे तो कीसीने भी कुछ नहीं समझाया था और वह बड़ा खतरनाक माना जाता था। पहले दीन वह अपने घर गया, दूसरे दीन हमसे पत्नी व बच्चों के साथ मीला और अुसने अपने हथीयार हमें सौंप दीये।

बहुत से लोग अैसी बात कहते हैं की डाकुओं को रीयायत मीली होगी, या पुलीस की वजह से काफी पीड़ीत होंगे, ओिसलीओे वे शरण में आये होंगे। अैसा ओिसलीओे बीचार चलता है की मनुष्य अपने मन में यह भाव देखता है की "हमारा परीवर्तन तो नहीं हुआ, हम पापों को छोड़ नहीं सकते।" लेकीन समझते हैं नहीं की अंदर का और बाहर का कारण ही दुनीया को बनाता है।

हर मनुष्य के मन में परमेश्वर की ज्योती रहती है, ओिसलीओे आज के डाकू कल के संत हो सकते हैं।

थानाकसबा, २२-६-'६० —वीनोबा

दो तस्वीरें !

सिद्धराज ढड्ढा

हमें कभी-कभी अचम्भा होता है कि हम आज के हिन्दुस्तान में रह रहे हैं या और किसी सम्पन्न देश में, या कि पुराने जमाने के उस हिन्दुस्तान में, जिसके बारे में दूध-दही की नदियों जैसी किंवदन्ती सुनते आये हैं। या, क्या हमारी समझ में कुछ फर्क है, या हमारा दृष्टिकोण विकृत हो गया है? क्योंकि जब हम आये दिन ऐसी खबर पढ़ते या सुनते हैं, जैसी मध्य प्रदेश की 'नई राजधानी' के बारे में पढ़ी, तो बुद्धि कुछ काम नहीं देती। राष्ट्र के बड़े-से-बड़े नेता से लगा कर छोटे-से-छोटे 'देवता' तक से रोज हमें यह सुनने को मिलता है कि हमारा देश बहुत गरीब है, उसके विकास के लिए न सिर्फ हमें कड़ी मेहनत करनी चाहिए, बल्कि आज जो कुछ हम पैदा कर पायें उसे, भूखे होते हुए भी, सबका सब पेट में न डाल कर कल के लिए भी कुछ बचा कर रखना चाहिए, जिससे देश के निर्माण में वह काम आ सके। रोज हम उपदेश सुनते हैं कि 'आराम हराम है' और हम खुद भी यह मानते हैं कि हर शख्स का यह धर्म है कि वह अपनी पूरी शक्ति और समय काम में लगाये। पर यह सब किसलिए? तो कहा जाता है कि आज मेहनत कीजिये, अपने पेट पर पट्टी बाँध कर रहिये, ताकि कल आपको आराम मिल सके या कम-से-कम आपकी संतान सुखी और समृद्ध हो सके।

यह भी बेजा नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति अपने जीवन में, घर में, कमो-बेश ऐसा करता ही है। लेकिन जब हम देखते हैं कि एक ओर तो यह उपदेश दिये जाते हैं और दूसरी ओर करोड़ों रुपया ऐसी योजनाओं पर खर्च किया जाता है, जो या तो आज की बजाय कल या परसों की जा सकती थीं या देश की हालत के अनुरूप कम खर्च में की जा सकती थी, तो बुद्धि चकरा जाती है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में है। भोपाल में जगह की कमी है और सारा काम ठीक से चल सके, इसलिए वहाँ कुछ विस्तार करना जरूरी है, यह भी सही है। पर योजना ऐसी है कि पुरानी बस्ती से दूर नये सिरे से ही राजधानी का नया शहर बसाया जा रहा है, जिसकी शायद बिल्कुल जरूरत नहीं थी। भोपाल के पुराने निवासियों को इस बात से असन्तोष भी है। इसके अलावा जिस परिमाण में इन सब बातों पर खर्च होने जा रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि हिन्दुस्तान जैसे देश की आज की हालत में यह सर्वथा अनुचित है। योजना के अनुसार पौने दो करोड़ रुपये की लागत से राज्य-सरकार का सचिवालय और उसके दफ्तरों के लिए मकान बनाये जायेंगे और ४ करोड़ रुपया राज्य-कर्मचारियों के रहने के मकानों पर खर्च होगा। एक करोड़ रुपया बिजली और पानी की सुविधाओं पर खर्च होगा और करीब २७ लाख सिर्फ राजधानी की सड़कों में। विधान-सभा के लिए नया भवन बनाया जा रहा है, जिसमें सब "नये-से-नये ढंग की सुविधाएँ" होंगी। इसकी लागत करीब १२ लाख रुपये होगी। कुल मिला कर इस नई राजधानी पर सवा तेरह करोड़ रुपया खर्च होगा।

इसी तरह अभी गुजरात की नई राजधानी के लिए १० करोड़ रुपये की योजना मंजूर हुई है। पंजाब में भी नई राजधानी बनी है, जिसका नक्शा फ्रांस के एक प्रसिद्ध शास्त्री ने बनाया था तथा जिसकी 'छटा' देखते ही बनती है। विदेशी लोग हिन्दुस्तान की शानशौकत से प्रभावित हों और यह न समझें कि यह मुल्क 'पिछड़ा हुआ' है, इसलिए दिल्ली में ढाई-तीन करोड़ रुपयों की लागत से अद्यतन सुविधाओं वाला "अशोक होटल" बनाया गया, जिसको चलाते रहने के लिए भी लाखों रुपया हर साल खर्च करना पड़ता है, और अभी-अभी बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली में तीनों जगह ४० लाख रुपया खर्च करके विदेशी विद्यार्थियों के लिए तीन छात्रावास बनाये जा रहे हैं। नये काम के लिए नये सिरे से कुछ न बनाया जाय या खर्च न हो, यह हमारा मतलब हरगिज नहीं है, पर इतना ही है कि इस सारे काम और खर्च का देश की परिस्थिति और हालत से कुछ मेल होना चाहिए। देश में अधिकांश लोग गरीब हैं, जिन्हें और सुविधाओं की बात तो दूर, दोनों वक्त पेट भर और स्वास्थ्यकर सन्तुलित भोजन भी नहीं मिलता है। पर्याप्त कपड़ा, सर्दी-गर्मी, बरसात से बचने लायक घर, बीमारी में इलाज का और बच्चों के लिए तालीम का इन्तजाम बावजूद सारी 'योजनाओं' के आज भी उनके लिए सपना है। ऐसे करोड़ों लोगों को जब हम आज न खाकर कल के लिए बचाने का उपदेश देते हैं और १०-२० बरस इन्तजार करने के लिए कहते हैं, तो क्या इन करोड़ों लोगों के 'प्रतिनिधियों' और 'सेवकों' के लिए नये-नये महल खड़े करने का, नई-से-नई अद्यतन सुविधाएँ देने का, बिजली, पानी, सड़क, सिनेमा, बाग-बगीचे, इन सबका इन्तजाम करने का काम थोड़े साधारण पैमाने पर नहीं हो सकता? या कि १०-२० बरस के लिए मुलतवी नहीं किया जा सकता?

पंजाब की नई राजधानी चण्डीगढ़, बेंगलौर का 'विधान-सौध', बम्बई और कलकत्ते के नये सचिवालय—ये सब हमने देखे हैं, दिल्ली में रोज एक-न-एक खड़ी होने वाली एक-से एक बढ़कर आलीशान इमारतों की बात तो हम छोड़ ही देते हैं। और इस देश के सैकड़ों-हजारों गाँवों में रहने वाले गरीबों, शहरों की सड़कों पर लावारिस की तरह पड़े हुए बे-घर-बार लोगों और भिखमंगों तथा नरक जैसी गंदी बस्तियों में रहने वाले आजाद हिन्दुस्तान के हजारों 'नागरिकों' को भी हमने देखा है और रोज देखते हैं।

अभी काश्मीर से लौट कर सरकारी कर्मचारियों की सम्भावित हड़ताल के बारे में रेडियो पर बोलते हुए श्रद्धास्पद पंडित जवाहरलालजी ने "दो तस्वीरों" का जिक्र किया था—एक हिमालय की बर्फीली चोटियों पर, निर्जन प्रदेश में, कड़ाके की सर्दी में देश के सन्तरी का काम करने वाले नौजवानों की और दूसरी तरफ अपनी तनख्वाह में चंद रुपयों की बढ़ोतरी और छोटी मोटी सुविधाओं के लिए काम बंद करने की धमकी देने वाले कर्मचारियों की। उन्हें ये 'दोनों तस्वीरें' देख कर दुख और ताज्जुब हुआ, जो स्वाभाविक था। हम वेदना भरे हृदय से, लेकिन नम्रतापूर्वक दूसरी "दो तस्वीरें"—एक ओर गरीबों की टूटी-फूटी झोंपड़ियों की, उनकी गरीबी और बेबसी की, तथा दूसरी ओर नई राजधानियों की तथा शानदार होटलों की, पंडितजी के सामने पेश करना चाहते हैं और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करना चाहते हैं कि वे इन दोनों का भी मेल बिठायें।

—

हड़ताल के बजाय वेतन-कटौती

केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों की हड़ताल के सिलसिले में स्वीकृत एक प्रस्ताव में गुजरात सर्वोदय-मंडल की कार्यकारिणी ने सुझाया है कि अगर कर्मचारियों को लगता है कि उनकी उचित मांगों पर सरकार ध्यान नहीं दे रही है, तो वे जरूर राष्ट्रीय नेताओं तथा समस्त जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित करने और लोगों का नैतिक समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें। पर वह प्रयत्न उनके विश्वास पर चलने वाले काम और सेवाओं में बाधा डालने के रूप में होने के बजाय "वेतन-हड़ताल" या प्रतीक स्वरूप वेतन में एक रुपये की स्वेच्छापूर्वक कटौती के रूप में हो सकता है। इस प्रकार के "सत्याग्रह" से जनता के समक्ष वे अपनी बात को ज्यादा रचनात्मक और कार्य-साधक तरीके से रख सकते हैं और सारे राष्ट्र की सहानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। ●

सर्वजन-आधार की ओर बढ़ने की प्रक्रिया

धीरेन्द्र भाई

[करीब दो वर्ष हुए सर्व सेवा संघ ने चालीसगांव में एक प्रस्ताव द्वारा भूदान-आन्दोलन को 'सर्वजन-आधारित' करने की ओर ध्यान आकर्षित किया था। संघ की आन्दोलन से संबंधित प्रवृत्तियाँ तभी से सूतांजली, सर्वोदय पात्र तथा संपत्ति-दान से प्राप्त रकम से चल रही हैं। पर साथ में शिक्षण-प्रयोग, रचनात्मक उपसमितियों आदि से संबंधित अन्य काम के लिए चन्दा करने की बात तय हुई थी। उसी सिलसिले में श्री धीरेन्द्र भाई ने श्री राधाकृष्ण बजाज और श्री सिद्धराज ढड्ढा को लिखे दो पत्रों में 'जनाधार' की नितान्त आवश्यकता और उसे प्राप्त करने के तरीकों की खोज के बारे में अपने विचार प्रकट किये हैं।

श्री धीरेन्द्र भाई खुद 'सर्वजनाधार' का प्रयोग करने की दृष्टि से बिहार के पूर्णिया जिले के एक गाँव-बलिया-में पिछले चार महीने से बैठे हैं। उनकी पक्की राय है कि जब तक सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में से मुख्य-मुख्य लोग खुद इस तरह के प्रयोगों में नहीं लगेंगे और स्वयं दूसरे कामों में चाहे वे कितने ही जरूरी क्यों न हों—लगे रह कर सर्वजनाधार का रास्ता ढूंढने का काम अपने 'छोटे' साथियों पर छोड़े रहेंगे, तब तक न सर्वजनाधार का रास्ता खुलेगा, न आन्दोलन आगे बढ़ेगा। श्री धीरेन्द्र भाई के पत्रों के संबंधित अंश नीचे दिये जा रहे हैं, ताकि कार्यकर्ताओं को इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करने में मदद मिले। —सं०]

श्री राधाकृष्णजी को

"वास्तव में हम चाहे जितनी जन-शक्ति और जन-आधार की बात करें, जब तक हमारा मुख्य ध्यान और शक्ति इसकी खोज में नहीं लगती है, तब तक आन्दोलन आगे नहीं बढ़ेगा। हरेक चीज का अपना स्वभाव होता है। हमारा ध्येय शोषणहीन और शासनमुक्त समाज का है। हमारा कार्यक्रम सैनिक-शक्ति के निराकरण तथा जन-शक्ति के अधिष्ठान का है। ऐसे कार्यक्रम को राज्य तथा संचित पूँजी-शक्ति के आधार पर चलाने पर लक्ष्य की प्राप्ति होगी क्या? इस प्रश्न पर सबको विचार करना होगा। फिलहाल भले ही चन्दा बटोर कर सर्व सेवा संघ का काम चलाया जाय, लेकिन सर्वजन-आधार की प्राप्ति के बिना यह अधिक दिनों तक चलने वाला नहीं है।

सर्वजन-आधार के लिए हमने हिसाब बहुत कुछ बना रखा है। सर्वोदय-पात्र, अन्नदान, श्रमदान, ये सब भाषाएँ हम बोलते हैं, लेकिन किस स्रोत में से ये चीजें निकलेंगी, इसका दर्शन हममें से किसी को नहीं हुआ है। कल्याणकारी राज्यवाद रूपी ज्वालामुखी की निकली राख से जन-आधार इस प्रकार सम्पूर्ण रूप से दब गया है कि इसकी छोर खोजना भी आज अत्यन्त कष्टसाध्य हो गया है। संचित-निधि से अत्यधिक काम चलाने के कारण, माँगने की हमारी हैसियत को जनता अन्तर-विरोध की दृष्टि से देखती है। वह देखती है कि ये ही लोग लाखों रुपये लाकर हमारे हाथ में देते हैं, हमारे में से हजारों आदमियों को वेतन से नियुक्त करते हैं, फिर एक सेवक के खर्च के लिए हमसे माँगते हैं। उनको यह सब कुछ अजीब-सा लगता है। इस प्रकार परिस्थिति अत्यन्त प्रतिकूल है। इस प्रतिकूलता में से अगर रास्ता निकालना है, तो कुछ लोगों को चिन्तन-सर्वस्व इसी ओर लगाना होगा। यही कारण है कि शायद तुम लोगों में से बहुत से मित्रों की सम्मति न होने पर भी मैंने अपने लिए इस काम को चुना है। सफलता और विफलता तो ईश्वर के हाथ में है।

श्री सिद्धराजजी को

"सर्वजन-आधार का मतलब क्या है? इसका मतलब यह है कि क्षेत्र के सब लोग लोकसेवक के लक्ष्य को समझें। समाज के लिए उसकी आवश्यकता है, ऐसा महसूस करें और जीवन के नियमित कार्यक्रम के रूप में सर्वोदय-पात्र या सम्पत्ति-दान को स्वीकार करें। चंदा बटोर कर संस्था चलाने या कार्यकर्ताओं का गुजारा करने की बात कोई नई नहीं है। उसमें से कोई नई क्रांति नहीं निकलेगी। यह प्रक्रिया प्राचीन है। दुनिया में 'चेरि-टेबल' (दानमय) संस्थाएँ काफी चलती हैं। राजनीतिक पार्टियाँ तथा धार्मिक प्रचारक मांग कर अपना काम चलाते हैं। तो क्या उसमें से कोई सामाजिक क्रांति निकलती है? विनोबाजी जो 'सर्वजन-आधार' की बात करते हैं, वह क्रांति की मूल प्रक्रिया है। उसमें लोग यह महसूस करें कि आज का संघर्ष सैनिक-शक्ति और जन-शक्ति के बीच में है। अगर जनशक्ति को विजयी होना है, तो उसका काम सैनिक शक्ति के आधार पर चले, यह नहीं हो सकता है। इसलिए जो लोग उस शक्ति के निराकरण का बीड़ा उठाते हैं, उनको पालना सारी जनशक्ति को परिपुष्ट करने वाले सिपाही को पालना है, ऐसा समझ कर उन्हें जो कुछ देना हो, दें। देना भी भिक्षा के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-दीक्षा के रूप में हो। अर्थात् लोग संकल्पपूर्वक कहें कि हमारी आमदनी का अमुक हिस्सा इस क्रांति के लिए है।

सर्वजन-आधार की परिस्थिति पर तुम लोगों को गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। करीब दो साल हुए चालीसगांव में हम लोगों ने संकल्प किया। पर मुझे कहना पड़ता है कि इस दिशा में विनोबाजी के सिवाय अपने समाज के लोगों में से किसी ने गम्भीरतापूर्वक चिन्तन तथा कोशिश नहीं की। आज हमारी परिस्थिति में इतने प्रकार के अंतर्विरोध हैं कि यह प्रश्न अत्यन्त जटिल बन गया है। मैंने पंढरपुर-सम्मेलन के अवसर पर विनोबाजी से कहा था कि देश भर के मुख्य-मुख्य कार्यकर्ताओं को हम सर्वजनाधार के लिए गाँवों में जाकर बैठना चाहिए। मैं मानता हूँ कि तुम सब साथी इसे पागलपन समझते होंगे। लेकिन कभी-कभी कुछ बातों के लिए फैसला करना पड़ता है। एक बार विनोबाजी ने यह फैसला किया था कि संस्थाएँ बंद कर के सब लोग पैदल यात्रा करें। बापू ने यह फैसला किया था कि चरखा-संघ शून्य बन कर भी नव-संस्करण की दिशा में चले। यद्यपि हम लोग मोहवश ऐसा नहीं कर सके, फिर भी क्रांति के आरोहण में ऐसे समय आते हैं, जब क्रांतिकारियों को इस प्रकार का फैसला करना पड़ता है। मैं मानता हूँ कि सर्वजनाधार को अगर वास्तविक बनाना है, तो केंद्र आदि के काम को अपेक्षाकृत गौण मान कर मुख्य कार्यकर्ताओं को उसी की सिद्धि के लिए आज निकलने की आवश्यकता है। विचार प्रचार आदि के लिए एक विनोबाजी, दूसरे जे० पी० काफी हैं, ऐसा कुछ दिनों के लिए मान लेना होगा।

मार्च में जब हम लोग विनोबाजी से मिले थे, तो सर्वजन-आधार की काफी चर्चा हुई थी। मैंने उनसे कहा था कि सर्वजनाधार के क्षेत्र में एक दुश्चक्र-सा बन गया है। जनता में सर्वजनाधार के संगठन के लिए कार्यकर्ता चाहिए और कार्यकर्ताओं को सर्वजनाधारित होना चाहिए। चूँकि ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं, अतः इसी परिस्थिति ने दुश्चक्र की सृष्टि की है। अगर सर्वजन-आधार के लिए कार्यकर्ता चाहिए, तो जब तक उनका संगठन नहीं कर लेते हैं, तब तक उनका गुजारा कहाँ से होगा? इसलिए आज हमको संचित निधि का सहारा लेना पड़ता है। वे कार्यकर्ता जनता के सामने गांधी निधि के सेवक, खादी के कार्यकर्ता या ऐसी ही कुछ संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के रूप में हाजिर होते हैं। जब वे इस रूप में हाजिर होते हैं, तब जनता पर जनाधार का असर नहीं कर पाते हैं। जनता कहती है कि आपको तो वेतन मिलता है, फिर क्यों माँगने निकले हैं। अगर कार्यकर्ता शुरू से ही जनाधारित होकर गाँव में चला जाता है, तो लोग समझते हैं कि आ गया माँगने खाने वाला। आज माँगने खाने वाले इतने हो गये हैं कि साधारण कार्यकर्ता अपने लिए माँगने की हिम्मत नहीं कर सकता। इस काम के लिए ऐसे कार्यकर्ता चाहिए, जो माँगने की हिम्मत रख सकते हों, जैसे पुराने जमाने के भिक्षु होते थे। पर ऐसे कार्यकर्ताओं को तुम लोगों ने हर प्रांत में संस्था और संगठन चलाने के काम में फँसा रखा है। तुम अपनी ही बात ले लो। तुम चाहते हो बैठने के लिए, लेकिन कोई इजाजत नहीं दे रहा है। इस तरह के त्यागी, शक्ति-शाली कार्यकर्ता, जिसे जनता प्रिय जन मानती है, जनाधार की प्रक्रिया को स्थापित करने के लिए जाते नहीं हैं, और साधारण कार्यकर्ता इस कल्याणकारी राज्यवाद तथा संचित निधि आधारित सेवा-व्यवसाय के युग में जनता को सर्वजनाधार की प्रेरणा दे नहीं सकता।

पार्डी के प्रश्न पर शिष्ट-मंडल

गुजरात सर्वोदय-मंडल की ओर से पाँच सदस्यों का एक शिष्ट-मंडल पार्डी जिले की भूमि-समस्या को लेकर गुजरात राज्य के मुख्य-मंत्री श्री जीवराज मेहता से मिला। इस अवसर पर गुजरात-सरकार के माल मंत्री श्री रसिकलाल पटेल और मुख्य सचिव आदि संबंधित अधिकारी भी उपस्थित थे।

बातचीत पर से ऐसा महसूस हुआ कि पार्डी तालुके के प्रश्न पर कुछ बातों में सर्वोदय-मंडल की विचारधारा और सरकार की विचार धारा में मुख्य अन्तर है। सर्वोदय-मंडल का मानना है कि तालुके में बसने वाले भूमिहीन लोगों को भूमि और उद्योग देने की जिम्मेदारी मान कर ही वहाँ की योजना बननी चाहिए, जब कि सरकार केवल इस दृष्टि से सोच रही है कि 'सीलिंग' [illegible] के जो कानून हैं, उनके आधार पर कितनी जमीन [illegible] के पास से लिया जा सकता है [illegible] कुछ लिया जा सकता है। सरकारी दृष्टिकोण के अनुसार जमीन का [illegible] [illegible] राष्ट्रीय [illegible] महत्त्व की बात है, पर सर्वोदय-मंडल का स्पष्ट ही साथ इस बात पर जोर है कि [illegible] पर बसे हुए लोगों का भी [illegible] रखना पड़ता है। [illegible] कि सब लोगों की पूरी [illegible] [illegible] किया उद्योग में [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] का [illegible] मिले।

एक व्यंगकथा

लाल…लाल…लाल !

चुनीभाई

दिल्ली मेल वैसे भी छूटने में देर थी, कोई दस-पन्द्रह मिनट होंगे। खिड़की के बाहर से तालबद्ध, लेकिन निर्लज्ज संगीत शुरू हुआ! तालियाँ बजती थीं, ताल जमता था। सांस्कृतिक कार्यक्रम में तालीम पाये हुए सुसंस्कृत कॉलेजियनों का समूह गा रहा था। गीत शुरू हुआ, 'इना मिना डेका'…सिनेमा की 'रॉक एण्ड रोल' की तर्ज थी! तालियों की आवाज का प्राबल्य बढ़ता गया। वातावरण तालियों से भर जाने लगा। तालियाँ भी वे विशेष प्रकार से बजा रहे थे—जैसे हिजड़े दोनों हथेलियों को मिला कर मटकाते हैं! रात के जागरण से थके हुए मेरे दिमाग के सामने तालियों की आवाज चक्कर काटती नाच रही थी और सर पर टकरा रही थी। तालियाँ बढ़ती गयीं, गीत के शब्दों की अब केवल आवाज सुनायी देती थी, समझ में कुछ नहीं आ रहा था। नाद ने जैसे मुझे घेर लिया था। सर पर तालियों की आवाज टक्कर मार रही थी—ताड़, ताड़, ताड़! उत्तेजना और भी बढ़ती गयी और पराकाष्ठा तो तब हुई, जब शुरू हुआ—'लाल लाल गाल, दिल पे रहे काबू'—जिस गीत की निर्लज्जता के कारण गाने वाला की अहमदाबाद में पिटाई हो जाती थी, वही यह गीत था। लेकिन सोच सकूँ, ऐसी चित्त की दशा ही नहीं थी। इतने में ही किसीको सूझा और उसने डिब्बे के लोहे की चद्दर पर थाप दी। बाकी ने उसका अविलम्ब अनुकरण किया। सारा डिब्बा थम-थमा उठा, 'थाम् थाम् थाम्, थम् थम् थाम्!' मेरा चित्त थमथमा उठा, आँखों से वह कॉलिजियनों समूह क्षण भर के लिये ओझल हो गया।

लेकिन सद्भाग्य था कि गाड़ी चल दी! वातावरण कुछ साफ होने लगा, आवाज की लहरें धीरे-धीरे छिन्न होती गयी। दिमाग में विचार-चक्र चलने लगा, हालाँकि वह ठीक चलने के बजाय गड़बड़ा गया और विचार का स्थान उलझन—'कन्फ्यूजन'—ने ले लिया। मैंने जबरदस्ती आँखें मूँद कर दिमाग के दरवाजे मूँदने की कोशिश की। नींद सी लग गयी, लेकिन नींद में भी वह आवाज गूँजती थी—'लाल लाल गाल!'

× × ×

गाड़ी मारवाड़-जंक्शन पहुँची, तब तक धूप लग चुकी थी। डिब्बे में ही एक रेलवे कर्मचारी अपनी वर्दी पहने हुए बैठे थे और जोर-जोर से केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों की माँगें और हड़ताल का समर्थन कर रहे थे। वे कह रहे थे, 'हमारे बच्चे भूखों मर रहे हैं, मिनिस्टरों को क्या है? वे अपनी 'एयर कण्डीशण्ड' आफिस में बैठे हैं, कारों में आराम करते हैं और बीस हजार की कारों में सफरी सैर करते हैं।" बड़ी-बड़ी मूछें, खून से भरा हुआ गोलमटोल शरीर और चेहरा। वजन कम-से-कम मुझसे दुगुना होगा। मेरे शरारती दिमाग को मजाक सूझा, इच्छा हुई कि कहूँ, 'घर में सारा खाना तो आप ही-!' लेकिन मैं थका हुआ भी था। और मजाक में से कहीं गंभीर चर्चा न छिड़ जाय, इस डर से चुप बैठा रहा। लेकिन दिमाग जो था, उसको याद आ गयी पारडी तहसील के उन आदिवासियों की, जिनको अन्न के अभाव में चूहे मार कर खाने पड़ते थे! मेरे मुँह का स्वाद बिगड़ गया। सारा कडुआ-कडुआ हो गया। मैंने मुँह फेर लिया। तब तक गाड़ी मारवाड़-जंक्शन में जा पहुँची थी। वह सज्जन उतर कर चल दिया। उधर आवाजें शुरू हो गयीं—'चाय,' 'गरम पूड़ी भाजी,' 'दूध'—'रबड़ी'। मैंने खिड़की में से झाँक कर पूड़ी का भाव पूछा और साथ-साथ सब्जी की ओर देखा। पूड़ी और सब्जी, दोनों की सूरत देख कर जी ऊब गया। नजदीक में ही 'रेस्टोरेन्ट कार' थी। लेकिन वह सवा रुपया ऐंठ लेगा और मैं केवल दो रोटियाँ खाता हूँ। दिल ढीला पड़ गया और मैं धीरे से अपनी जगह फिर से बैठ गया।

इतने में दूसरी ओर से आवाज आयी-'लाल मीठे टमाटर, दो आने पाव, मसालेदार, जायकेदार!' मैंने मुँह फेरा। एक शरणार्थी जवान सर पर मन भर टमाटर का टोकरा उठाये हुए था। सचमुच टमाटर सुंदर पके हुए थे। एक ने मांगा, "लाओ, एक पाव!" उसने टोकरी उतार कर नीचे रख दी। पलाश के हरे पत्ते में टमाटर की गोल-गोल लाल चकतियाँ कट कर गिरती थीं। उसकी छूरी तेज चलती थी—सप् सप् सप्। हाथ अद्भुत गति से चल रहे थे, छूरी भी तेज थी और जबान की चाल भी तेज थी, मिनट भर में पाव भर टमाटर की चकतियाँ पत्ते पर जमती थीं। मसाला छिड़का और "लो लीजिये बाबूजी, दो आने।" जैसे जीभ, छूरी और हाथों के बीच होड़ चली थी। देने वाला एक था, लेने वाले अनेक। मैंने भी दो आने देकर अपना हिस्सा ले लिया—'रेस्टोरेंट कार' से सस्ता, पूड़ी-भाजी से भी सस्ता और सेहतदायक, स्वादिष्ट भी!

× × ×

दूसरे जंक्शन पर भी उसकी आवाज आई, किसी ने उसको पुकारा। लेकिन वह कुछ रुक कर एकदम चल दिया। दो-तीन मिनट में ही मैंने देखा, वह जवान सर पर टोकरी लेकर डिब्बे में से उतर कर भाग रहा था।…एक, दो और तीन कदम में उसने सामने वाली पटरी को पार कर लिया और अब टोकरी के प्लेटफार्म पर चढ़ रहा था। उस प्लेटफार्म को लग कर ही एक तार की बाड़ थी। लेकिन किस्मत! वह चढ़ न पाया, पैर की नली प्लेटफार्म की धार से टकराई, संतुलन बिगड़ गया और टोकरी पकड़ते-पकड़ते प्लेटफार्म पर जा गिरी। लाल-लाल टमाटर ने धूल में गिर कर वर्तुल रचा। जवान के पैर को चोट पहुँची थी।

घबड़ायी हुई नजर से उसने पीछे मुड़ कर देखा…वह आ पहुँचा था—वही रेलवे कर्मचारी!

उसने आकर उस जवान का हाथ पकड़ा, 'चलो, टोकरी उठा लो!'

वह जवान आहत था—पैर से और दिल से! वह पकड़ा गया था रंगे हाथों, पसीना बहा कर रोटी कमाते हुए। उसका मुँह फीका था और ओठ सूखे हुए। उसके पास बेचने का 'लाइसेन्स' नहीं था। उसने कुछ कहा, सुनाई तो नहीं देता था। शायद वह घबड़ायी हुई आवाज में गिड़गिड़ा रहा था। छोड़ देने के लिये मिन्नतें कर रहा था।

अफसर ने एक ओर हाथ से इशारा किया और जोर से कड़ाई के साथ पुकारा, 'तुम भी इधर आओ!' और एक जवान उस तरफ से आया। लाल कमीज पहने हुए और लाल पके हुए टमाटर की टोकरी सर पर लिये हुए उसके भी पास 'लाइसेन्स' नहीं था।

अभी भी वह आहत जवान बीच-बीच में एकाध वाक्य बोल कर मिन्नतें कर रहा था, छोड़ देने के लिये। उसके पैर के घाव में से लाल खून की एक मोटी-सी लकीर बह कर नीचे की ओर चली थी। साँवले पैर पर गहरे लाल खून की धार!

अफसर अभी तक गुस्से के मारे लाल हो चुका था! वह जवान रंगे हाथों पकड़ा गया था, फिर भी बार-बार विनती करता था कि छोड़ दो! बदतमीजी की भी कोई हद होती है। उसने उसको कालर से पकड़ कर घसीटा, लाचार जवान ने टोकरी सर पर उठा ली और उसके साथ चल दिया।

मेरे दिल में आया कि कहूँ, "भैया, उसके भी माँ बाप और बाल-बच्चे भूखों मरते होंगे।" लेकिन उतना धीरज मुझमें बचा नहीं था।

मेहनत करने को राजी ऐसे सबको काम मिले ऐसी व्यवस्था तो नहीं कर सकते, बल्कि वैसी व्यवस्था को तोड़ देते हैं—कुछ लोगों को मेहनत और सच्चाई की रोटी कमाने से रोकने की सुविधा तो कानून में हमने जरूर रखी है। दो-दो पंचवर्षीय योजनाओं के बावजूद हम बेकारी को घटा नहीं पाये, वह बढ़ती ही चली आ रही है। गरीबी और असमानता भी बढ़ती जा रही है। बेकारी का कुछ हल हो सके और गांधी का नाम लिया जा सके, इसलिए खादी-ग्रामोद्योग की चटनी परोसी जा रही है। बाकी तो केन्द्रित उद्योग, केन्द्रित सत्ता, केन्द्रित प्लानिंग और केन्द्रित तंत्र, इतना सारा बोझ केन्द्र में! न हम बोझ सम्भाल पाते हैं और न जिम्मेवारी बाँट देने की सूझती है। सर पर की टोकरी बोझ से फटी जा रही है, तंत्र तितर-बितर होता जा रहा है। कभी यह हड़ताल! कभी वह हड़ताल! आसमान फट रहा है और नेहरू बेचारे…!

मेरी बुद्धि चकरा गयी, नजर के सामने आया!

'केन्द्रीय हड़ताली कर्मचारियों का जुलूस, नारे लगाता हुआ! बाप की कमाई पर गुलछर्रे उड़ाने वाले वह गैर-जिम्मेवार कालेजियन, गाते हुए 'लाल लाल गाल'…!'

…और सबसे सस्ते और सेहतमन्द 'लाल लाल टमाटर!

…और गुस्से से लाल आँखों वाला वह अफसर!

…और उस साँवले पाँव से बहती हुई लाल खून की धार!

लाल लाल लाल!

बेशर्म अमीरी! बेरहम स्वार्थी तंत्र! और बेकारी!! त्रिविध रसायन!

मुझे मनहूस याद आ गयी लाल चीन की। क्या चीन यों ही लाल बन गया होगा?

खादी-जगत् : बिहार

बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा खादी-कमीशन के सदस्य श्री ध्वजा प्रसाद साहू ने 'भूदान-यज्ञ' में एक लेख लिख कर खादी को नया मोड़ देने की अपील की थी।

मुंगेर जिला सर्वोदय मंडल की एक बैठक में उस पर विचार-विनिमय किया गया और जिले के ११ प्रमुख कार्यकर्ताओं की एक "मुंगेर जिला खादी-ग्रामोद्योग समिति" गठित की गयी। इस समिति पर यह भार सौंपा गया कि जिले में खादी-काम को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाय, इस पर वह विचार करके सर्वोदय मंडल को बताये।

बिहार में खादी के काम को विकेन्द्रित करने के लिए पिछले दो-तीन सालों से प्रयोग हो रहे हैं। यथा, संथाल परगना व पूर्णिया जिले में जिला-स्तर की संस्थाओं को खादी का काम सौंप दिया गया। अब अन्य जिलों के काम को भी विकेन्द्रित करने की योजना है। मुंगेर जिले में इस संबंध में विचार करने के लिए एक समिति बनायी गयी है। जून के प्रथम सप्ताह में भागलपुर जिले के लिए भी एक क्षेत्रीय कार्यालय का उद्घाटन हो गया है। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष श्री रामदेव बाबू ने जनता से अपील की है कि विकेन्द्रीकरण की इस योजना को सफल बनाने में सभी लोग सहयोग करें!

शान्तिसेना की स्थापना हो चुकी है। बापू उसके प्रथम सैनिक थे और प्रथम सेनापति भी। सेनापति के नाते उन्होंने आज्ञा दी और सैनिक के नाते उसका पालन करके वे चले गये।

—विनोबा

चंबल घाटी शान्ति-कार्य की प्रगति

चंबल घाटी शान्ति-समिति में कुल १० व्यक्ति नामजद हुए थे। कार्यों का विभाजन बागियों की पैरवी, पीड़ितों का पुनर्वास व शांति-स्थापन कार्य, इस प्रकार किया गया है।

बागियों के मुकदमे भिंड-मुरैना व आगरा में चालू हो गये हैं। पाँच कार्यकर्ता बराबर पुनर्वास के कार्य में ही लगे रहे हैं। शान्ति-स्थापन का विचार-प्रचार अभी नहीं हो रहा है। इसके लिए सितंबर माह में दो माह की सामूहिक पदयात्रा पूरे क्षेत्र में करना तय हुआ है।

भिंड-मुरैना, इटावा व आगरा क्षेत्र इस प्रकार क्षेत्र-विभाजन भी किया गया है, जिसकी जिम्मेदारी अलग-अलग लोगों [illegible] उठायी है। इस समय उत्तरप्रदेश [illegible] सर्वश्री कृष्णस्वरूप, भगवत सिंह व महावीर सिंह काम कर रहे हैं। महावीर सिंहजी भिंड में भी मुकदमों की पैरवी तथा शांति-स्थापन का कार्य श्री लल्लू सिंह दादा के साथ कर रहे हैं। श्री लल्लू सिंहजी, हेमदेवजी, श्रीराम गुप्ता और राजेन्द्र कुँवर-जी भिंड-क्षेत्र में व श्री [illegible]चन्द्रजी वैद्य मुरैना में काम कर रहे हैं।

यहाँ पर कार्यकर्ताओं की नितान्त कमी है। इतने बड़े क्षेत्र में निश्चय सैकड़ों सहायक शान्ति-सैनिकों की आवश्यकता थी, जो कि नहीं मिल सके हैं। इसका मुख्य कारण, अभी तक व्यापक विचार-प्रचार का काम नहीं हो पाया है।

इस समय बागियों के उजड़े परिवारों को बसाने और जमीनें जुतवाने का कार्य चल रहा है।

क्षेत्र में छोटे-छोटे मनमुटावों से कत्ल, फौजदारी हो जाती है और उसीसे लोग फरार होकर बागी बनते हैं। फरार (बागी) होना यहाँ बहादुरी का परिचायक है। इस मानस को बदलने के लिये तथा आपसी झगड़े बढ़ने न पायें, इसके लिये बराबर प्रयत्न चल रहा है।

अभी तक के कार्यों से क्षेत्र में आशा का वातावरण बना है।

शांतिवादी महिला का कर देने से इन्कार

"अमेरिका के 'पीस मेकर्स' समूह के द्वारा 'फेडरल' कर न देने का आन्दोलन चल रहा है। उनका कहना है कि जो कर जनता दे रही है, उसका अधिकांश युद्ध की सामग्री और सैनिक तैयारियों में चला जाता है। और क्योंकि युद्ध का विरोध करना हर शान्तिप्रिय व्यक्ति का कार्य है, वे उस कर को देने से इन्कार करते हैं। इस सदर्भ में 'पीस मेकर्स' समूह के कई सदस्य टैक्स के फार्म नहीं भरते, उसके लिये जेल जाते हैं और अदालतों में जाकर धरना भी देते हैं। पिछले दिनों इसी प्रकार एक बहन, कुमारी एरीमोना रॉबिन्सन को एक वर्ष की सजा दी गयी।

कुमारी रॉबिन्सन एक साहसी बहन हैं और अहिंसा में उनका पूरा विश्वास है। जब उनके पास 'सम्मन' आया, तो उन्होंने अदालत में स्वेच्छा से जाने से इन्कार किया। अदालत उन्हें उठा कर ले गयी। उसी प्रकार तीन बार उन्हें उठा कर ले जाया गया। आखिर २६ जनवरी, १९६० को उन्हें बन्दी बना दिया गया। उन्होंने अदालत को कहा, 'मैं कर इसलिये नहीं देती, क्योंकि मुझे मालूम है कि उसका अधिकांश सैनिक प्रवृत्तियों में जाता है। अधिकतर धन ऐटम और हाईड्रोजन बम पर खर्च होता है। इन शस्त्रों से मनुष्य को जान को भयानक नुकसान होते हैं, जैसे कि सिद्ध किया जा चुका है। अगर मैं कर दूँ तो मैं भी उसी विध्वंस के कार्य में हिस्सेदार बनूँगी। हमारा कर्तव्य तो मानव-जीवन को रचनात्मक सहायता करना है, न कि विध्वंसात्मक।

जिस दिन से उन्हें बन्दी बनाया गया, उस दिन से ही उन्होंने उपवास प्रारम्भ कर दिया था। अब खबर है कि उन्हें रिहा कर दिया गया है। उनका स्वास्थ्य तो ठीक है, पर बड़ी कमजोर हो गयी है। इस बहादुर बहन को हम सब नम्र होकर प्रणाम करते हैं।"

—'नई तालीम' से

दो पावन प्रसंग !

बिहार प्रान्तीय अखण्ड पद-यात्रा टोली तीसरी बार २० जून से मुंगेर जिले में भ्रमण कर रही है।

२४ जून को प्रातःकाल टोली जब सिमिया गाँव पहुँच रही थी, उसी समय गाँव के दो दलों में भीषण संघर्ष उपस्थित था। दोनों दल गँड़ासा-भाला तथा लाठी से लैस होकर मैदान में उतर आये थे और एक-दूसरे पर वार करना शुरू कर दिया था। संयोग से ग्रामीण जनता के साथ रामधुन करती हुई पदयात्रा टोली उसी समय उस रास्ते से पहुँची। दौड़ कर सर्वोदय-कार्यकर्तागण दोनों दलों के बीच में खड़े हो गये। फलस्वरूप चलते हुए हथियार रुक गये। गाँववालों ने भी साथ दिया। टोली के पहुँचने में अगर पाँच मिनट भी देर होती, तो सिमिया की धरती भाई-भाई के खून से लाल हो जाती।

२५ जून को [illegible] गाँव में पड़ाव था। टोली के पड़ाव पर पहुँचते ही स्थानीय सर्वोदय-मित्र श्री हरवंशभाई से जानकारी मिली कि यहाँ ग्राम-पंचायत के चुनाव को लेकर काफी तनातनी है। समझौते के सब प्रयत्न विफल हो चुके थे। शाम को श्री राममूर्ति भाई ने प्रार्थना-सभा में निर्विरोध चुनाव के लिये अपील की। सभा-समाप्ति के बाद दो बार पंचायत क्षेत्र के प्रमुख लोगों की गोष्ठी हुई, जिसमें शिक्षित युवकों ने विशेष रूप से भाग लिया। मुखिया-संघर्ष में मुखिया पद के लिये खड़े दोनों धनी और प्रभावशाली उम्मीदवार, श्री [illegible] महतो तथा श्री केदार मंडल ने सहर्ष अपनी-अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली। उपस्थित लोगों को तब बहुत आश्चर्य हुआ, जब उस पंचायत-क्षेत्र के पहले कभी जिले के [illegible] धनी युवक श्री [illegible]जी ने एक अत्यन्त गरीब हरिजन श्री [illegible] का नाम मुखिया के लिये प्रस्तावित किया। श्री [illegible] सर्वसम्मति से मुखिया चुने गये।

—रामनारायण [illegible]

अमरीका में अहिंसक प्रतीकार

नीग्रो छात्रों द्वारा सत्याग्रह

संयुक्त राज्य अमरीका के दक्षिणी हिस्सों में नीग्रो लोगों के प्रति गोरे लोगों की भेदभाव की प्रवृत्ति अब भी बनी हुई है। हब्शियों के प्रति दुर्व्यवहार के कुछ कांडों की गूँज तो विश्व भर में हुई। लेकिन नीग्रो लोग गोरे नागरिकों के समान ही अपने लिये अधिकारों व सुविधाओं के लिये निरन्तर आन्दोलन करते रहे हैं। इधर उन्होंने गांधीजी के बताये शान्त-प्रतिरोध के मार्ग को अपनाकर जो सफलता प्राप्त की है, उससे विश्व के अन्य देशों में भी गांधीजी के सिद्धान्तों तथा सत्याग्रह व सविनय अवज्ञा की कार्य-प्रणाली की ओर ध्यान आकर्षित होना स्वाभाविक है। कुछ दिन पहले तक अमरीका के आठ दक्षिणी नगरों में हब्शी लोगों को भोजनालयों में प्रवेश नहीं मिलता था, हालाँकि इन्हीं भोजनालयों से लगी हुई दुकानों के काउण्टरों पर वे गोरे लोगों के समान ही चीजें खरीद सकते थे। अचानक नीग्रो लोगों ने इसका प्रतिकार करने का [illegible] लिया। नीग्रो छात्र उन भोजनालयों में जाते थे, जहाँ उनका प्रवेश निषिद्ध था और मांग करते थे कि उन्हें भी भोजन परोसा जाये। जब नहीं दिया जाता, तो वहीं बैठ कर प्रार्थना करते, बाइबिल तथा अमरीकी संविधान पढ़ते, [illegible] को ध्यान नहीं दिया जाता है। [illegible] प्रार्थना-सभाओं में भी वे [illegible] के लिये प्रार्थना करते, जो कि [illegible] [illegible] भी [illegible] दिखाई देती। [illegible] [illegible] [illegible] हुए। [illegible] [illegible] नहीं। [illegible] [illegible] और १९०० के [illegible] के [illegible] हुए। [illegible] [illegible] है, जिन्हें 'नीग्रो [illegible]' [illegible] है और [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] करेंगे।

शांति-सैनिक परिचय

[पू० विनोबाजी के आदेश के अनुसार समस्त शान्ति-सैनिकों से प्रार्थना की थी कि वे अपना जीवन-परिचय शान्ति-सेना कार्यालय के पास भेजें। अब तक जो परिचय प्राप्त हुए हैं, उनमें से कुछ पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किये जा रहे हैं।]

१

अप्पासाहब पटवर्धन

सीताराम पुरुषोत्तम अपनी उन्मता के कारण आदर से 'अप्पा' कहलाने लगे और आज केवल महाराष्ट्र के ही नहीं, वरन् देश भर के रचनात्मक कार्यकर्ता उन्हें 'अप्पा पटवर्धन' के नाम से ही जानते हैं। वे आज से चालीस वर्ष पहले के एम० ए० पास कुलीन ब्राह्मण हैं इसलिए नहीं, वरन् लोग इसलिए उनको ज्यादा जानते हैं कि वे महाराष्ट्र के रत्नागिरी ग्राम में निष्ठा-पूर्वक भंगी-काम करते हैं, भंगी काम के औजारों और उपकरणों में नित्य नूतन वैज्ञानिक शोध करते रहते हैं और हृदय से चाहते हैं कि देश भर में भंगी-काम को प्रतिष्ठा मिले और भंगी का काम सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाय। निःस्वार्थ और निरपेक्ष राष्ट्र-सेवा के सम्बन्ध में बापू के विचारों को व्यावहारिक जीवन में उतार कर औरों को आकृष्ट करने वाले इने-गिने व्यक्तियों में वे एक हैं। कृतिशून्य विचार या अन्धश्रद्धायुक्त आचार, दोनों से परे वे उंगुलियों से कुशल कारीगर और मन से सच्चे कलाकार हैं। गोबर गैस-प्लेंट से उनकी बिजली की बत्तियाँ तथा कृषि व ग्राम्य जीवन संबंधी उनके विविध प्रयोगों को देख कर उनकी कला और कारीगरी के प्रति सहज ही श्रद्धा उत्पन्न होती है।

गांधीजी के बाद भूदान-ग्रामदान आन्दोलन ने आरोहण का रूप लिया, तो लोगों ने अप्पा को आगे पाया। आज की शोषणयुक्त आर्थिक रचना से उत्पन्न विषमता के निराकरण के लिए उन्होंने 'उदक शान्ति' की कल्पना सुझायी। 'गाँव का गोकुल', 'ब्याजबट्टा', व 'शोषण-मुक्ति और नवसमाज' उनके विचारों की प्रतिनिधि पुस्तकें हैं, जिनमें उन्होंने भूमि के सामुदायिक स्वामित्व, शोषण के प्रकार और उससे बचने के उपाय तथा सूदखोरी के विरुद्ध अनेक तर्कसंगत अकाट्य प्रमाण दिये हैं, सभी धर्मप्रवर्तकों ने अपनी-अपनी ओर से सूदखोरी का थोड़ा-बहुत निषेध किया है। अप्पासाहब ने उन सब विचारों को संकलित कर अपनी ओर से ब्याज-बट्टा और दलाली के विरुद्ध जो दलीलें दी हैं, वे सूदखोरी और उसके मुनाफे के प्रति गहरी अरुचि उत्पन्न करती हैं।

शरीर से दुबले-पतले इकहरा ६६ वर्षीय अप्पा को देख कर उनकी असाधारण [illegible] का सहज ही परिचय नहीं मिलता, पर जैसे जैसे उनसे घनिष्टता होती जाती है, उनकी जीवन-कला की मूर्त कल्पना उनकी ओर आकृष्ट करती है।

अप्पासाहब ने अपनी कलम से जो परिचय लिख भेजा है वह उन्हीं के शब्दों में दे रहे हैं—

"(१) नाम अप्पा पटवर्धन (सीताराम पुरुषोत्तम)

पता पो० गोपुरी, जि० रत्नागिरी (महाराष्ट्र)।

(२) उम्र ६६ साल, स्वास्थ्य अच्छा रहता है, लेकिन दुबला-पतला, अशक्त हूँ।

(३) परिवार महाराष्ट्र के कोकण प्रदेश में बिलकुल छोटे देहात में ब्राह्मण कुटुम्ब में पैदा हुआ, ग्रामीण जीवन का आदी और प्रेमी हूँ। कुटुम्ब में हम ११ भाई-बहन रहे। पिताजी की माली हालत कष्टमय थी। लेकिन हम भाइयों ने छात्र-वृत्तियों के और पुरस्कारों के सहारे उच्च शिक्षा हासिल की।

(४) शिक्षा एम० ए० (बंबई), मराठी (मातृभाषा)। अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती, हिन्दी, कन्नड का अल्प परिचय।

(५) प्रवाचन जवानी में रस्किन के "अनटु दिस लास्ट" किताब का गहरा परिणाम हुआ। तिलक, सावरकर, गांधी, विनोबा खास-खास अवस्था में अध्ययन के विषय रहे हैं। टॉल्स्टाय का भी बहुत प्रभाव रहा है।

चर्मोद्योग और सफाई मेरे खास विषय हैं।

(६) खेल, व्यायाम लड़कपन और जवानी में हर तरह के देशी-विदेशी खेल और व्यायाम साधन आजमाये। रस्किन के प्रभाव में आया, तब से उत्पादक श्रम ने उनकी जगह ले ली।

(७) उद्योगों की जानकारी खेती और चर्मोद्योग का अल्प ज्ञान, खादी-उद्योग का सामान्य ज्ञान, सफाई का कुछ खास ज्ञान।

(८) जीवन-वृत्तान्त १८९४ से १९१९ तक शिक्षा, सन् '१९ से '२२ तक सत्याग्रह-आश्रम, साबरमती, सन १९२२ से आज तक रत्नागिरी जिले में गांधीजी के विविध कामों में हिस्सा।"

२

नारायण देसाई

(१) नाम नारायण महादेव देसाई।
पता भूमिपुत्र, रावपुरा, बड़ौदा, गुजरात।

(२) उम्र जन्म २४ दिसम्बर, १९२४ (करीब ३५ साल)
स्वास्थ्य आम तौर पर ठीक रहता है।

(३) परिवार गुजरात की बुद्धिमान, मध्यवित्त, आलसी, नौकरीपरायण अनाविल ब्राह्मण जाति में जन्म।
पितामह और मातामह आजीवन शिक्षक। दोनों भक्त-स्वभाव के। नानी और दादी दोनों भक्त और दोनों निरक्षर।
पिता-महादेव देसाई, २५ वर्ष तक गांधीजी के मन्त्री। चरित्र में बुद्धि, भक्ति और कर्म का मधुर संयोग।
मां-दुर्गा बहन देसाई, भक्त।
अभी जीवित दोनों नहीं हैं।

वर्तमान परिवार धर्मपत्नी उत्तरा देसाई, आयु ३२। भूदान-आन्दोलन में आने के लिए मुझे प्रेरणा देनेवालों में से एक।
दो पुत्र और एक पुत्री है।

(४) शिक्षा पाठशाला या कालेज की शिक्षा शून्य। जो कुछ तालीम पायी, वह गांधीजी के साथ काम करते हुए।
प्रिय विषय शिक्षा-शास्त्र, दर्शन, साहित्य, भूगोल, संगीत।

(५) खेल जानकारी कम, दिलचस्पी खूब। बचपन में कुछ आसन सीखे थे। अभी अभ्यास नहीं। योग का ज्ञान नहीं, दिलचस्पी भी नहीं।

(७) उद्योगों का ज्ञान वस्त्र-विद्या संपूर्ण और अंग्रेजी टाइपिंग।

(८) जीवन-वृत्तान्त बचपन से ११ साल साबरमती आश्रम में। ११ साल वर्धा और सेवाग्राम में। विद्यार्थी ६ साल वेडछी आश्रम में। ८ साल भूदान-यज्ञ के काम में।

आश्रमी जीवन के लाभालाभ का भुक्त-भोगी। मुख्य लाभ सत्संगति, मुख्य अलाभ दमन।

जीवन पर मुख्य असर-गांधीजी, रवीन्द्रनाथ, विनोबा। परिवार में मुख्य असर-पिताजी, नरहरि भाई और माता।

गांधीजी ने एक बार पूछा था, 'आगे चल कर क्या करना चाहते हो?' मैंने कहा था, 'आपके दो प्रकार के साथी हैं राजनीतिज्ञ और रचनात्मक कार्यकर्ता। दोनों के बीच की खाई दूर करने में मुझे अपनी शक्ति लगानी है।' भूदान में उसी रचनात्मक राजनीति का दर्शन होता है।

जीवन का स्वप्न शिक्षक बनने का। बच्चों के साथ जैसी तन्मयता का अनुभव होता था, वैसा भूमिहीनों या भूमिवालों के साथ भी महसूस नहीं कर पाता हूँ।

फिलहाल मुख्य प्रवृत्ति संपादन की। बचपन में लिखने की जो अदम्य इच्छा थी, उससे कुछ संतोष मिलता है, किन्तु गुजरात में घूमने वगैरह के काम जो शुरू किये थे, उनमें उससे बाधा आती है। लिखने की इच्छा थी उपन्यास, कहानी आदि की रही है, लेखों की नहीं, पर आज लेख लिखना ही मुख्य काम हो गया है।

सार्वजनिक काम की मौजूदा जिम्मेवारियाँ कभी-कभी एक-दूसरे से टकराती हैं। इसलिए कई बार इनमें से प्रादेशिक स्तर से ऊपर की जिम्मेवारी छोड़ने और प्रादेशिक जिम्मेवारियों को कम करने का जी चाहता है।

लेकिन मेरे निर्णय मेरे हाथ में नहीं हैं। यही शायद मेरी सबसे बड़ी कमजोरी और ताकत, दोनों हैं। ●

पहले पानी, फिर वोट !

कुनैनी छोटा-सा गाँव था। सभा भी छोटी थी। मंदिर के अहाते में सारे लोग बैठे थे। उसी सभा में राजस्थान के छोटे-बड़े सेवक, असेम्बली के सदस्य और सरकारी कर्मचारी भी थे। लोगों के बीच घूमते हुए विनोबाजी गाँववालों से वार्तालाप कर रहे थे। उनकी नजर एक बच्चे पर गयी। उसके बदन पर कई महीनों से न धोया हुआ और जगह-जगह फटा हुआ कपड़ा था। उसे पास बुला कर और प्यार से उसकी पीठ थपथपा कर बोले : "क्यों रे, कितनी खिड़कियाँ हैं तुम्हारे कपड़े पर ?"—यों कह कर अपना ओढ़ा हुआ कपड़ा उसे ओढ़ाया। "देखो, अब कितना अच्छा रूप दीखता है इस बच्चे का? क्यों कलेक्टर साहब, आपके राज में ऐसा लड़का है !" उस सभा में बैठे हुए कितने ही लोग थे, उनकी ओर इशारा करते हुए विनोबाजी ने कहा "यह तो उस देश की हालत है, जिस देश से एक जमाने में हाथ का बना हुआ कपड़ा इग्लैंड जाता था। आप लोगों को गाँव में कपड़ा तैयार करना होगा। तभी यह हालत दूर होगी। गंदा कपड़ा कभी नहीं पहनना चाहिए। साबुन न हो, तो चलेगा, लेकिन पानी से रोज धोना चाहिए।"

यह सुनते ही गाँव के एक भाई खड़े हुए, "क्या करें, बाबा, यही तो दुख है हमारा। हमारे पास पानी नहीं है। पानी के लिए रोज दो-तीन मील दूर जाना पड़ता है। कपड़ा साफ कैसे रखें ?"

"पानी के लिए कितना खर्च आयेगा?"

"साठ हजार रुपया। हम श्रमदान के लिए तैयार हैं !"

'अच्छा, श्रमदान चाहे भी मालूम है! ठीक है, तुम लोग दस्तखत करके एक कागज दो। तुम्हारे दो सौ घर के दो गाँव मिल कर पानी पीयेंगे। हर घर के लिए तीन सौ रुपया खर्च आयेगा, तो हर साल दस रुपया दो। मंजूर है ?"

"जी हाँ, हम जरूर देंगे।"

"लेकिन दौलत बढ़ेगी, तो लोभ मत बढ़ाना। पानी आयेगा, तो जमीन वाले फसल बढ़ायेंगे। भूमिहीन क्या वैसे ही रोते रहेंगे? इसलिए पानी आने के पहले उनको जमीन दे दो, पानी के लिए श्रमदान को तैयार हो जाओ और अगर पानी का इन्तजाम नहीं हो, तो इस एम० एल० ए० को (सभा में बैठे हुए लोक के एम० एल० ए० महोदय की ओर इशारा करके) दुबारा मत चुनना। १९६२ में ये आपके पास फिर वोट मांगने आयेंगे, तब कहना, पहले पानी दो, फिर वोट मिलेंगे।" यह सुनते ही सारी सभा खिलखिला कर हँस पड़ी।

—कुसुम देशपांडे

गया जिले के काम के बारे में कुछ सुझाव

रविशंकर शर्मा

[विनोबाजी की प्रेरणा और सर्व सेवा संघ की सिफारिश के अनुसार हर प्रान्त में कम-से-कम एक क्षेत्र सर्वोदय के सघन काम के लिए चुनने की बात है। बिहार के कार्यकर्ताओं ने गया जिले को इस काम के लिए चुना है। एक तरह से स्वयं विनोबाजी ने ही उसे चुन लिया था। वे तो चाहते थे कि सारे देश की दृष्टि से यह सघन प्रयोग का क्षेत्र हो। श्री जयप्रकाश बाबू ने भी इस जिले में अपनी विशेष शक्ति लगाने का तय किया है। पिछले दिनों इस सिलसिले में उन्होंने यहाँ पदयात्रा भी की थी।

—सं०]

कुछ दिन पहले जब पू० बाबा से भेंट करने गया, तो अन्य बातों के साथ गया जिले के काम के बारे में भी विस्तार से बातें करने का मौका मिला। १७ जून के 'भूदान-यज्ञ' में श्री दिवाकर भाई ने गया के काम के बारे में अपना प्रकट चिंतन प्रकाशित किया है। पू० जयप्रकाश बाबू की २२ दिन की तूफानी यात्रा में भी कार्यकर्ताओं का हृदय-मंथन खूब हुआ है। जनता में जो उत्सुकता देखी गई, उस पर विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है। जयप्रकाश बाबू का आकर्षक व्यक्तित्व स्वयं में जन समुदाय को अपनी ओर खींचने में प्रभावी रूप से समर्थ रहा है। यों सर्वोदय की बातें भी लोगों को अच्छी लगती हैं; भले ही उसके कार्यक्रमों में लोग प्रमाद दिखायें। अक्सर देखा जाता है कि स्वयं जयप्रकाशजी के मुख से भी लोग विश्व की तथा देश की राजनैतिक घटनाओं पर जितना ज्यादा सुनना पसंद करते हैं, उतना भूदान, ग्रामदान, शान्ति-सेना, सर्वोदय-पात्र वगैरह पर नहीं पसंद करते। इस बार गया शहर में जो विशेष हलचल दिखाई दी, उसके पीछे नगर-पालिका की सरकार के हाथों से मुक्ति और उसके नये निर्वाचन का प्रश्न जितना काम कर रहा था, उतना सर्वोदय के ढंग और सिद्धांतों, कार्यक्रमों को समझने का नहीं।

काम का लेखा-जोखा

गया जिला भूदान आंदोलन की कर्म-भूमि बना। 'करो या मरो' का उद्घोष स्वयं विनोबा ने इस भूमि में किया। सारे देश की शक्ति कार्यकर्ताओं की यात्राओं के रूप में इस जिले में लगी है। मैं समझता हूँ, इतनी अधिक शक्ति देश में और कहीं नहीं लगी। उन सबके बाद सर्व सेवा संघ का प्रधान कार्यालय भी यहीं आया और बिहार प्रांतीय भूदान-समिति का दफ्तर भी। समन्वय आश्रम तथा सोखोदेवरा आश्रम जैसी संस्थाएँ भी इस जिले में काम कर रही हैं। पू० विनोबाजी से जो कुछ बातचीत की, उससे मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि, "गंगा मिलाली सागरी, परते नाहीं ब्रह्मगिरी"—गंगा तो आगे ही बहती है, पीछे की ओर मुड़ कर नहीं देखती। संयोजन के अनेक दोष कबूल करके भी आखिर आगे बढ़े बिना उसका कोई उपयोग नहीं हो सकता। मैं भी इस बात से सहमत हूँ कि भूमि के प्रश्न को हमें नहीं भूलना चाहिए। सर्वोदय-पात्र, शान्ति-सेना आदि काम भूमिहीनता को मिटाये बिना सफेद मात्र ही होकर रह जायेंगे। स्वयं विनोबाजी चाहे डाकुओं के क्षेत्र में हों या कश्मीर-समस्या को समझाने में लगे हों अथवा पंजाब की भाषा-समस्या उनके सामने लायी गई हो, वे भूदान की बात नहीं छोड़ते। सब प्रासंगिक बातों के साथ भूदान में मदद करने की बात कहते ही जाते हैं।

अब रही निर्माण की बात। मैं स्वयं भी निर्माण के काम में तो इन पिछले ५-६ वर्षों से लगा रहा। इसमें कोई शक नहीं कि हम लोगों ने इस क्षेत्र की उत्तम सेवा की है। गया जिले के सबसे ज्यादा पिछड़े इस कौआकोल क्षेत्र में जो खेती, उद्योग, आरोग्य तथा पुलिस, महाजन, सरकारी नौकरों के अत्याचार आदि की समस्याएँ थीं, उनमें बहुत सुधार हुआ है। सुधरी खेती का वातावरण तैयार हुआ है। ग्रामोद्योगों के प्रति रुचि और उत्साह निर्माण हुआ है। लोगों में निडरता पैदा हुई और चेतना आयी है। भूमिहीनता भी बहुत अंशों में मिटी है। भूमिहीनों में जो गुलामी की भावना थी, वह भी कम हुई है। किसान भी अब इनके हक को कबूल करने लगे हैं। स्वार्थों के गहरे और पुराने संस्कार ढीले पड़े हैं। स्वास्थ्य के मामले में हम लोगों के आने से पहले डाक्टरों, वैद्यों, हकीमों की ओर से जो शोषण होता था, वह तो बहुत टला है। इसमें सोखोदेवरा आश्रम का बड़ा योग मानना चाहिए। कुष्ठसेवा के काम से जो सेवा इस इलाके की हुई है, उसकी कीमत आँकड़ों में नहीं नापी जा सकती। सर्वोदय इस प्रकार के कामों से प्रतिष्ठित बना है। आशाओं की कड़ियाँ जो बनायी गईं, उनमें सच्चे अर्थ में 'अन्त्योदय' से प्रारम्भ का हमारा मूलमंत्र सिद्ध हुआ है। इतने कम अर्से में इतने प्रश्नों की ओर ध्यान देकर काम किया गया, यह कोई कम निष्पत्ति नहीं माननी चाहिए।

कार्यकर्ताओं का सवाल

विनोबाजी की स्पष्ट राय है कि हमें बहुधंधी होने का मोह त्यागने हुए है। केवल गया शहर के लिए वे पूरा समय देनेवाले २० कार्यकर्ताओं की माँग करते हैं और इनके लिए तथा शहर के अन्य कामों के लिए ४० हजार रुपये का वार्षिक संग्रह-दान एकत्रित होगा, तो काम होगा। फिर अधिक समय देनेवाले विशेषज्ञ लोगों का सहयोग काम आयेगा। उन विशेषज्ञों में से कोई आरोग्य में विशेष जानकारी रखता होगा, तो कोई उत्तम वक्ता होगा। कोई उत्तम लेखक होगा, तो कोई उत्तम उद्योग जानता होगा। आज हम लोगों की योजना में इस बात की कमी है। हमारे पास कार्यकर्ता बहुत कम हैं। जो हैं, वे भी अनेक विभिन्न उत्तरदायित्वों के भार से ऐसे दबे हैं कि गया शहर या जिले के काम के लिए भी वे समय दें, तो वह नाम मात्र का ही होता है। अब रही भाईचारे की बात। मैं समझता हूँ, इसमें अब उतना बाधक नहीं है, जितना अहंकार। यदि सच्चे अर्थ में हम लोगों में नम्रता आ जाय, तो अनेक मानसिक द्वन्द्व स्वतः ही गल कर गिर जा सकते हैं। केवल वाणी की मिठास भी काफी काम करती है। जो लोग इसमें आये हैं, किसी-न-किसी आदर्श से आकर्षित होकर ही आये हैं। फिर भले ही वह आकर्षण-बिन्दु कोई व्यक्ति-विशेष हो, विचार

बनेंगे।" इस बार भी बार-बार उन्होंने कहा कि ब्रह्मविद्या के बिना हमारा सारा काम निष्प्राण है।

कार्यक्रम

अब कार्य की बात। इसमें मुख्यतः यही दृष्टि होनी चाहिए कि "बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेय"। आज जो वातावरण इस जिले में निर्माण हुआ है उसका पूरा उपयोग हो, इसके लिए अधिक समय देकर योजनाबद्ध कार्य करने की आवश्यकता है। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि जिन सघन क्षेत्रों में कार्य की योजना बनी है, उसका और अधिक गहरा और सजीव संयोजन हो। इन सघन इकाइयों के संयोजकों को बार-बार आपस में मिलते रह कर विचार-विमर्श करते रहना होगा। मेरा दूसरा सुझाव है, जिस बुद्ध भगवान की भूमि की महिमा हम लोग अपने व्याख्यानों में प्रायः वर्णित किया करते हैं, उसका थोड़ा-सा दर्शन भी हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। विनोबाजी भी कई बार कह चुके हैं कि जिले के सब कार्यकर्ता प्रत्येक पूर्णिमा को बुद्ध के मुख्य साधना-स्थान बोधगया में इकट्ठा हों, दो दिन रहें, चर्चा करें और वापस जायँ। इस कार्यक्रम को शायद सम्मेलन के रूप में जिला सर्वोदय-मंडल ने चलाया भी था। लेकिन उसका स्वरूप और इसके स्वरूप में अन्तर है। इसमें बाहर का आकर्षण नहीं बन सकता। अन्दर की स्वतः की प्रेरणा ही

अब बहुधंधी होने का मोह छोड़ कर हमें अपनी शक्ति को संयोजित करना है!

हो अथवा काम हो। धन-संचय या सैर-सपाटा पूरे करने के अवसर यहाँ हैं भी नहीं और वैसा सोच कर लोग आते भी नहीं।

एक ध्यान देने लायक बात दिवाकर-जी ने अपने लेख में कही है। वह है, हम लोगों की बातों पर से भी लोगों का विश्वास उसी तरह उठता जा रहा है, जिस तरह राजनैतिक कार्यकर्ताओं की बातों पर से। [illegible] पर से लोगों का विश्वास उठ रहा है। इसकी विवेचना विनोबाजी ने भी अपने ढंग से की है। वे इसे लोकतंत्र के लिए बहुत बड़ा खतरा मानते हैं। "इस पर गहराई से सोचने की जरूरत है। सत्य का पूर्ण [illegible] करना, जितना बोलना उतना ही करना, अथवा जो कहना, उसे पूरा करना, मन में जो [illegible] उद्गार न करें, किसी के बड़े [illegible] का आदर करना, [illegible] न होना। यदि किसी काम को नहीं कर सके या [illegible] हो गयी, तो उसे कबूल करके प्रकट करना, [illegible] का त्याग, [illegible] का [illegible] आदि इन्हें यदि हम करते हैं, तो फिर इसे प्रमादी से यह सम्भव होगा। मैं समझता हूँ इस पर जोर देना चाहिए। कार्यकर्ता [illegible] आ सके तो और भी अच्छा, [illegible] से भी आ सकते हैं। उनकी व्यवस्था [illegible] की करनी चाहिए। [illegible] की, काम की और [illegible] की [illegible] वह करे। आने के लिए दो दिन का समय [illegible] काफी काम [illegible] हो सकता है। [illegible] [illegible] के अन्दर इसने यह [illegible] है कि [illegible] कहीं हमारी [illegible] है, [illegible] है, वे कर [illegible]। [illegible] भी [illegible] जा सकती है, लेकिन [illegible] का [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] होगा। इस [illegible] [illegible] और [illegible] है। [illegible] में काफी काम हो सकता है, यदि [illegible] [illegible] देते [illegible] हमें [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। इस [illegible] जिले की [illegible] इस [illegible] की [illegible] महत्त्वपूर्ण [illegible] [illegible] सकते हैं।

मासिक चिट्ठी

बिहार में नया उत्साह !

सच्चिदानंद

जून माह में कुछ विशेष हलचल बिहार में रही। कुछ नये निर्णय हुए, कुछ नये कदम भी उठे। क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर कुछ नया चिंतन भी हुआ। कुल मिला कर हमारी प्रगति में एक नयापन रहा और यह उम्मीद पैदा हुई कि यह नयापन हमारे आन्दोलन में कुछ नया रंग लायेगा।

गया जिले में श्री जयप्रकाशजी की जो यात्रा १८ मई से शुरू हुई थी, वह ६ जून तक जारी रही। १ और २ जून को जे०पी० के पडावों पर बर्मा के मशहूर समाजवादी नेता श्री ऊ च्याव नियें के महत्त्व के भाषण हुए। इजराइल को छोड़ बर्मा ही एकमात्र एशियाई देश है, जहाँ लगातार १९ वर्षों तक एक समाजवादी हुकूमत कायम रही। भूमि-समस्या हल करने के लिए उसने आवश्यक कानून बनाये। श्री ऊच्याव नियें उस समाजवादी हुकूमत के प्रमुख स्तंभों में थे। खुद कई वर्षों तक उसके उपप्रधान-मंत्री रहे थे। ता० १ और २ जून को उक्त समाजवादी नेता ने खुले-आम स्वीकार किया कि बर्मा में समाजवाद को अपेक्षित सफलता नहीं मिली और अब वह सर्वोदय की पद्धति से ही सफल हो सकता है। "भूमि-समस्या के हल का सर्वोत्तम मार्ग सर्वोदय का मार्ग है," ऐसा उन्होंने कहा। साथ ही उन्होंने यह विश्वास प्रकट किया कि "भारत में सर्वोदय-आंदोलन सफल होकर रहेगा और एशिया के अन्य देश, जैसे बर्मा, थाइलैण्ड, लंका, पाकिस्तान, हिंदेशिया आदि भी सर्वोदय की पद्धति का अनुकरण करेंगे।" श्री ऊ च्याव नियें जैसे समाजवादी विचारक और नेता की इस उक्ति से जहाँ एक ओर सर्वोदय-आंदोलन को बल मिला, वहाँ दूसरी ओर श्री जयप्रकाश नारायण ने सर्वोदय-आंदोलन के मार्फत भारतीय समाजवाद एवं एशियाई समाजवाद को जो नेतृत्व दिया है, उसकी पुष्टि हुई।

ता० ४ जून के पडाव पर श्री जे० पी० ने एक प्रश्न के उत्तर में अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व का एक वक्तव्य दिया। आपने कहा कि "चीनी विस्तारवाद का मुकाबला करने के लिए केवल भारत और पाकिस्तान को ही नहीं, अफगानिस्तान से लेकर हिन्देशिया तक के सारे देशों को एक हो जाना चाहिए।"

ता० ५ जून को बांके बाजार में जे० पी० का आखिरी पडाव था। यहाँ कार्यकर्ताओं की सभा में उनका बड़ा ही सारगर्भित व्याख्यान हुआ। सर्वोदय-विचार की व्याख्या करते हुए आपने कहा "सबका भला हो, यह विचार आधुनिक काल में गांधीजी की ही हिम्मत थी कि उन्होंने दुनिया के सामने रखा। आज हर कोई किसी न किसी वर्ग, राष्ट्र, जाति या धर्म की भलाई की बात करता है। सबका भला हो, यह आज के जमाने में कहनेवाले सबसे पहले व्यक्ति गांधीजी ही थे। अब प्रश्न है कि सबका भला हो कैसे? जाहिर है कि यह प्रेम के रास्ते से ही हो सकता है। हम बुरों को नहीं, उनकी बुराई को मिटाना चाहते हैं और यह प्रेम के रास्ते से ही सम्भव है।" यहाँ की सार्वजनिक सभा में भी अच्छी खासी भीड रही।

६ जून को गया शहर के नागरिकों की एक विशाल सभा हुई। गया जिला सर्वोदय-मंडल ने गाँवों के लिए एक पंचविध कार्यक्रम स्वीकार किया था। गया जैसे नगर के लिए उक्त पंचविध कार्यक्रम का क्या स्वरूप होगा, इसकी स्पष्ट कल्पना नहीं थी। उस दिन गया के नागरिकों की सभा में बोलने के लि जब जे० पी० खड़े हुए, तो अनायास उनके सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ और एक "मंगलकारी नगर राज्य—वेल्फेयर सिटी स्टेट" की कल्पना उनकी मुक्त चिंतन-धारा से प्रादुर्भूत हुई। नगरपालिका का निर्विरोध निर्वाचन हो, यह विचार तो आपने अपनी यात्रा शुरू होने के पूर्व ही गया के नागरिकों के समक्ष रखा था। यात्रा के अंत में उस विचार की परिणति "मंगलकारी नगर राज्य" की कल्पना में हुई।

गया जिले में जे० पी० की इस यात्रा का असर पूरे बिहार प्रदेश के लोगों पर, जो अखबारों से ताल्लुक रखते थे, पड़ा है। इस मौके पर इस प्रदेश के अखबारों का रुख भी अनुकूल रहा। अपनी समस्त यात्रा में जे० पी० ने आदर्शवाद की भाषा का इस्तेमाल नहीं किया। सर्वोदय का विचार जनता के आज के जीवन से संबंध रखता है, इस दृष्टिकोण से उन्होंने सर्वोदय-विचार की व्याख्या अपने भाषणों में की और उनकी यह व्याख्या प्रभावोत्पादक रही।

× × ×

१२ जून को हजारीबाग जिले का वार्षिक सर्वोदय-सम्मेलन गिरिडीह में हुआ। गिरिडीह हजारीबाग जिले का सबसे प्रबुद्ध और सम्पन्न नगर है। अभ्रक क्षेत्र के रूप में इस नगर की ख्याति विश्व भर में है। बिहार की राजनीति में एक मोड़ पैदा करने का श्रेय भी इस नगर को है। अभी हाल में एक बड़ी अभ्रक-हड़ताल यहाँ हुई थी, जिसमें अभ्रक उद्योग के मजदूरों के बजाय छोटे-छोटे अभ्रक-व्यापारियों ने हिस्सा लिया था। ऐसे नगर में और ऐसे समय में सर्वोदय का सम्मेलन करना विशेषता रखता था।

पश्चिम बंगाल के सर्वोदय-नेता श्री चारुचन्द्र भंडारी ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्यामसुंदर प्रसाद और खादी-ग्रामोद्योग आयोग के सदस्य श्री ध्वजाप्रसाद साहु भी इस सम्मेलन में शरीक हुए।

× × ×

१८ से २० जून तक मुजफ्फरपुर जिले के अंतर्गत 'विदुपुर' नामक स्थान पर तिरहुत डिवीजन के कार्यकर्ताओं का एक "स्नेह सम्मेलन" बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष श्री रामदेव ठाकुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। बिहार सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री श्यामबाबू, श्री ध्वजा बाबू और श्री बैद्यनाथ प्रसाद चौधरी इस सम्मेलन में शरीक हुए। कुल मिला कर लगभग १०० सर्वोदय, भूदान और खादी-कार्यकर्ताओं ने सम्मेलन में भाग लिया।

यह सम्मेलन अपने ढंग की एक निराली चीज इस सूबे के लिए थी। पिछले सेवाग्राम सम्मेलन के अवसर पर श्री धीरेन्द्रभाई ने कहा था कि "हमें कभी-कभी नाहक सम्मेलन भी करना चाहिए। धीरेन्द्र भाई की यही "नाहक सम्मेलन" की कल्पना यहाँ "स्नेह-सम्मेलन" के रूप में प्रकट हुई।

आम तौर पर सम्मेलनों में लोग कुछ निश्चित विषयों पर चर्चा करने के लिए एकत्र होते हैं और कुछ निर्णय करके चले जाते हैं। कार्यकर्ताओं के बीच जो स्नेह-संबंध और संघ-भावना का विकास होना चाहिए, वह नहीं हो पाता। जैसा श्री श्याम बाबू ने अपने उद्घाटन-भाषण में कहा: "गांधीजी के जमाने में कार्यकर्ताओं में संघ-भावना या 'टीम-स्पिरिट' का विकास जेल-जीवन में होता था। जाहिर है कि आज सेवा के क्षेत्र में ही कभी-कभी एकसाथ रहने और एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने के अवसर निकालने होंगे, जिससे संघ-भावना का विकास हो सके।" इस स्नेह-सम्मेलन की मार्फत कार्यकर्ताओं को इस तरह का संपर्क बढ़ाने का मौका मिला।

अंतिम दिन सामूहिक चर्चा भी हुई। इस चर्चा का कोई पूर्व निर्धारित विषय तो था नहीं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन के विषय पर चर्चा छेड़ने की छूट थी।

इस सम्मेलन के अवसर पर प्रतिदिन एक आम सभा हुई। सम्मेलन का आयोजन बिहार सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में हुआ था। एक आम सभा में भाषण करते हुए श्री ध्वजा बाबू ने कहा "आज हम सब एक ज्वालामुखी पर बैठे हुए हैं। कब यह ज्वालामुखी फूटेगा, नहीं कहा जा सकता। ... गरीब आज दबे हुए हैं, बोलते नहीं हैं। लेकिन जब मौका मिलेगा, तो वे चूकेंगे नहीं। इसलिए जरूरी है कि गाँव-गाँव में गरीबों के प्रति सहानुभूति की भावना पैदा होनी चाहिए, करुणा की दरिया बहनी चाहिए। अन्यथा, भयंकर विस्फोट हो सकता है।"

गाँवों की तरक्की की चर्चा करते हुए आपने कहा कि "आज पढ़े लिखे लोग गाँव छोड़ कर शहरों की तरफ भागे जा रहे हैं। देश के लिए यह एक घातक प्रवृत्ति है।"

२५ जून से २८ जून तक एक और स्नेह सम्मेलन मुजफ्फरपुर जिले के अन्तर्गत ही गांधी-आश्रम, हाजीपुर में हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन सर्वोदय युवक सम्मेलन (बिहार) की ओर से किया गया था और यह आयोजन प्रादेशिक स्तर पर हुआ था। आपसी चर्चाओं और संघ-भावना के विकास की दृष्टि से यह सम्मेलन विदुपुर के सम्मेलन से ज्यादा सफल रहा। इसका एक कारण तो शायद यह था कि इसमें आये हुए लोगों की संख्या अपेक्षाकृत कम थी। बड़े-बड़े सम्मेलनों में आपसी चर्चाएँ गहराई से नहीं हो पाती।

...नको तैयार करने की जिम्मेदारी लोक-...वकों और अन्य कार्यकर्ताओं पर आती है। उनसे संपर्क की योजना बनी है और ...न लोगों के शिविर वगैरह भी लिये जायेंगे।

निर्विरोध चुनाव पर्याप्त नहीं

जहाँ-जहाँ पंचायतों के निर्विरोध चुनाव हुए हैं, उनमें कई तरह के तत्त्वों ने काम किया है। सरकारी अधिकारियों ने भी कहीं-कहीं अच्छे प्रयास किये हैं। स्थानीय सज्जन लोगों ने भी काम किया है और कहीं-कहीं हमारे लोगों का भी प्रभाव पड़ा है। अब जरूरत इस बात की है कि इस निर्विरोध वातावरण का उपयोग किया जाय। केवल निर्विरोध चुनाव करा देना मात्र अभावात्मक काम ही होगा। इससे इतना ही होगा कि गाँव में चुनाव को लेकर जो झगड़े होते हैं, दलबंदी होती है, जात-पाँत में लोग और गहरे बँट जाते हैं, उन सब दोषों का निराकरण हो सकेगा। लेकिन उतने से हमें संतोष नहीं कर लेना चाहिए। यह जरूरी है कि तुरन्त इन पंचायतों के क्षेत्रों में हमारे कार्यकर्ता काम करने लगें। ग्राम-निर्माण, ग्राम-सेवा, शांति-सेना का संगठन, तालीम, स्वच्छता, स्वास्थ्य, ग्रामोद्योग का संगठन आदि अनेक काम इन ग्राम-पंचायतों की मदद से किये जा सकेंगे। गाँवों के लिए सरकारी मदद और जनता का सहयोग भी इनके माध्यम से प्राप्त करना आसान होगा।

सर्वोदय-पात्र के बारे में वातावरण तो अनुकूल है। लेकिन इसको प्रत्यक्ष सेवा के काम से अगर भी जोड़ देने से जो सफलता मिलती है, वह हमने तेनाली में देख ही लिया है। गया शहर में आज लोगों में बड़ी इच्छा है कि कोई सेवा का काम शहर में खड़ा है। सफाई भी वहाँ चल रहा है। कुष्ठसेवा के लिए अलग से प्रयास किये जा रहे हैं। तो ऐसी हालत में यदि डट कर काम किया जाय, तो आशा है कि इस कार्यक्रम में सफलता जरूर मिलेगी। शांति-सेना का काम भी सेवा में से ही निकल सकता है। आज जो सपर्क है, वो दलित है, वह अपर्याप्त है। इसके लिए और अधिक गहरी कसौटी पर हमारी साधना होगी, तो काम होगा।

सिक्किम में सर्वोदय-अध्ययन टोली

[सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति ने पिछली बैठक में निर्णय किया था कि भारत की उत्तरी सीमा की वस्तुस्थिति के अध्ययन के लिए लद्दाख, 'नेफा,' [उर्वसियम्] सिक्किम, भूटान आदि स्थानों पर कुछ सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को भेजा जाय। तदनुसार बिहार के शांति-सैनिकों की एक टोली पिछले माह सिक्किम के दौरे पर गयी थी। पटना के श्री विद्यासागर सिंह के पत्र से वहाँ की परिस्थिति की कुछ जानकारी नीचे दी जा रही है। —सं०]

हमारा शांति-दल गत १८ जून को सिक्किम की राजधानी गैंगटोक पहुँचा। हमने सिक्किम के राजनैतिक पक्षों के प्रमुख नेताओं, सिक्किम-महाराज के भारतीय दीवान श्री अप्पासाहब पंत तथा गैंगटोक में विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले भारतीय बन्धुओं से बातें कीं। इन मुलाकातों में हमारा पाँच दिन का समय गैंगटोक शहर में ही व्यतीत हुआ। अलावा इसके सिक्किम के सुदूरवर्ती अंतरंग भाग के प्रमुख स्थानों की यात्रा हमने एक सप्ताह तक की।

भारत की उत्तरी सीमा पर स्थित लद्दाख से उर्वसियम् तक के सभी पर्वतीय प्रदेशों की स्थिति करीब-करीब राजनैतिक व दूसरी दृष्टियों से भी एक-सी है। इस क्षेत्र के निवासी सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टियों से जुड़े हैं। भारत की आजादी के बाद सिक्किम व भूटान में नई हवा का प्रवेश हुआ। इसके पूर्व यहाँ के महाराज और जमींदारों (काजी) के विरोध में आवाज उठाने का साहस किसी में नहीं था। नई हवा के प्रवेश करते ही राजनैतिक पक्ष का गठन हो गया। आरंभ में एक ही पक्ष 'सिक्किम स्टेट कांग्रेस' था। अभी दो मुख्य शक्तिशाली पक्ष हैं, एक तो सत्ताधारी नेशनल पार्टी और दूसरी विरोधी नेशनल कांग्रेस पार्टी। प्रायः सभी प्रमुख नेता इन्हीं दो पक्षों में बँट गये हैं। यह सारा सत्ता-प्राप्ति के लिए है। सिक्किम राज्य और यहाँ की जनता के हितों का विचार इसमें खो-सा गया है। जो भी हो, इसके कारण यहाँ की जनता में राष्ट्रीयता की भावना निर्माण हुई है। साथ ही महाराज के शासन की जगह पर जनतंत्रीय शासन की भी प्रबल आकांक्षा पैदा हुई है। आज सिक्किम की सुरक्षा, यातायात और वैदेशिक संबंध १९५९ की भारत-सिक्किम संधि के अनुसार भारत सरकार को सुपुर्द है। भारत सरकार की ओर से सिक्किम की सप्तवर्षीय विकास-योजना के लिए चार करोड़ की सहायता दी जा रही है, तथापि भारत के प्रति यहाँ के लोग शंकाशील हैं।

यहाँ के जितने प्रमुख नेताओं से हम मिले सबने हमारे 'मिशन' का स्वागत किया, हमारे विचार का समर्थन और प्रशंसा की, और कार्यक्रम को यहाँ की जनता के लिए बहुत उपयोगी स्वीकार किया। हमने देखा कि प्रायः सभी लोग चंबल-घाटी में चल रही विनोबाजी की क्रान्तिकारी यात्रा के परिणामों से परिचित एवं प्रभावित हैं। हम लोगों की सिक्किम-यात्रा का समाचार भी उन्हें अखबारों के आधार पर पहले से ही मालूम था। कइयों ने तो कहा कि हम आप लोगों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। तथापि उन्होंने प्रत्यक्ष सहयोग देने का खुल कर आश्वासन नहीं दिया, क्योंकि उन्हें भय है कि कहीं सेवा के बहाने हम उन पर भारत की सत्ता तो नहीं जमाना चाहते हैं। हमने उनकी इस शंका का निराकरण करने की कोशिश की और उसका असर भी हुआ है। साथ ही हमने उन्हें पूज्य विनोबाजी व श्री जयप्रकाश नारायण से मिलने तथा संघ के मार्गदर्शन में चलने वाले कार्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए आमंत्रित भी किया। सुदूरवर्ती ग्रामीण अंचलों में हमें बहुत अधिक उत्साह और जीवन देखने को मिला। लोगों ने बहुत उत्साह से हमारा स्वागत-सत्कार भी किया, श्रद्धापूर्वक हमारी बातें सुनीं और सहयोग का आश्वासन भी दिया। एक स्थान पर तो एक भाई ने पाँच एकड़ जमीन देने तथा उस पर आश्रम निर्माण कर देने का भी वचन दिया। दो-तीन स्थानों पर सूती और ऊनी वस्त्र-उद्योग पनपने की बहुत अनुकूलता है, साथ ही सहयोगी व्यक्ति भी वहाँ उपलब्ध हैं।

यहाँ का आर्थिक जीवन मुख्य रूप से कृषि-प्रधान है। पहाड़ी क्षेत्रों में खेती करना यों ही कठिन है, उस पर जोरदार वर्षा के कारण ऊपर की कृषि योग्य मिट्टी प्रायः बह जाने से यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है। प्रायः हर वर्ष खेतों को नये सिरे से सुधारना पड़ता है। मुख्य खाद्यान्न में मकई, चावल, कोदो-मडुवा और कुछ दलहन यहाँ पैदा होता है। प्रति एकड़ पैदावार पाँच से आठ मन तक होती है। व्यापारिक फसल में इलायची, आलू, संतरा और नासपाती भी पैदा होती है। लोग बहुत परिश्रमी और सरल हृदय के हैं। भारत की तरह यहाँ गरीबी तो है, परन्तु बेकारी यहाँ नहीं है। प्रायः वर्ष भर सबको कुछ-न-कुछ काम मिल जाता है। जहाँ तक सिक्किम के व्यापार और बाजार का संबंध है, यह प्रायः पूर्ण रूप से भारतीयों के हाथ में है। सुदूर ग्रामीण अंचल के बाजारों में भी सर्वत्र भारतीय बन्धु छाये हुए हैं। वैसे यहाँ का मुख्य व्यापार तो तिब्बत से ऊन लाने का और भारत से तिब्बत खाद्यान्न और अन्य सामग्री भेजने का था। सिक्किम तो एक प्रकार से भारत के बीच व्यापारिक मार्ग रहा है। तिब्बत पर चीन के हमले से यह व्यापार ठप्प-सा हो गया है। फलस्वरूप यहाँ के बाजारों में मंदी आ गयी है और भारतीय व्यापारियों की हालत बुरी हुई है।

इन्दौर में विनोबाजी का कार्यक्रम और पूर्वतैयारी

इन्दौर शहर और आसपास के क्षेत्र में सर्वोदय का जो सघन कार्यक्रम चल रहा है, उस संबंध में श्री दादाभाई नाईक एक पत्र में लिखते हैं :

"इस बीच यहाँ सामूहिक पदयात्रा के तथा शिविर के दो आयोजन हुए। पहला महेश्वर का, जहाँ एक सप्ताह में २ हजार सर्वोदय-पात्र ३६ टोलियों ने रखे। दूसरा, इन्दौर का एक सप्ताह का। उसमें ६५०० सर्वोदय-पात्र रखे गये। २८७ सर्वोदय-मित्र, 'भूमिक्रान्ति' के १६५ ग्राहक और विभिन्न भूदान-पत्रों के ३७६ ग्राहक बने। २२०० रुपये की साहित्य-बिक्री हुई। ५० रुपये माहवार का एक संपत्तिदान मिला। इन्दौर में अब सर्वोदय-पात्र-संख्या कुल ९७०० के करीब पहुँच गयी है और पूज्य बाबा की प्रथम किश्त, १० हजार पात्रों की माँग, इस सप्ताह में हम पूरी कर देंगे।

इन्दौर में राजस्थान, बिहार, उत्तर-प्रदेश, गिरी (वर्धा), गुजरात, महाराष्ट्र से करीब ३० कार्यकर्ता आये थे और नगर तथा जिले के मिल कर १०० व्यक्ति ३० टोलियों में बँटे थे। इन्दौर नगर को ८ क्षेत्रों में विभाजित कर वहाँ एक-एक कार्यकर्ता अपना प्रेम-क्षेत्र बना रहा है और उसके साथ तीन-तीन साथी दिये हैं, जो उस क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में कार्य करते हैं।

पूज्य विनोबाजी ता० १० को मध्य-प्रदेश में प्रवेश करेंगे और ता० १९-२० को उज्जैन तथा ता० २४ जुलाई को इन्दौर नगर में प्रवेश करेंगे।

इन्दौर में कम-से-कम एक माह का कार्यक्रम फिलहाल सोचा जा रहा है। यहाँ स्त्रियों में भी उत्साह बढ़ रहा है। मजदूरों में अलग से हलचल प्रारंभ हो गयी है। अब स्कूलों तथा महाविद्यालयों के खुलने से युवकों से संपर्क साधा जा रहा है।

चारों ओर से सहानुभूति प्राप्त हो रही है। यह सारा नीरस वर्णन दे रहा हूँ। इसमें प्राप्त खट्टे-मीठे अनुभवों के लिए अवकाश कहाँ? देखिये, बाबा के आने पर क्या उमंगें उठेंगी? श्री अप्पासाहब पटवर्धन 'स्वच्छ इन्दौर' के लिए कटिबद्ध हैं। लोकबन्धु डोनाल्ड ग्रूम विश्व-बंधुत्व का और शांति का प्रचार कर रहे हैं।

इन्दौर में विनोबाजी अपनी पूरी शक्ति नगर के काम के लिए ही लगाना चाहते हैं। यहाँ सर्व सेवा संघ आदि कुछ अखिल भारतीय सभाएँ विनोबाजी की उपस्थिति में रखने का विचार था, पर इन सभाओं के कारण नगर के काम से ध्यान बँट जाने की सम्भावना होने से ये सभाएँ यहाँ नहीं करने का सोचा गया है।"

पहाड़ी क्षेत्र के लिए कार्यक्रम

उ० प्र० में टिहरी गढ़वाल क्षेत्र के लोगों की उन्नति के लिए अखिल भारत पदयात्री टोली ने निम्न कार्यक्रम सुझाया है :

(१) ग्रामराज्य का फैसला गाँव-गाँव में हो और जमीन की मालकियत गाँव की बने।

(२) भेड़-बकरी, पशु-पालन का प्रोत्साहन ग्राम-सहकारी संघों द्वारा हो।

(३) ऊन रोक कर स्थानीय कताई, बुनाई के उद्योग-धन्धे खोले जायँ।

(४) खेती में फल-बाग, सब्जी आदि अधिक लगायी जाय।

(५) मधुमक्खी-पालन के अधिक केन्द्र खुलने चाहिए।

(६) गाँव के पड़ोसी सभी वन-खण्डों पर सरकार के बदले गाँव की मालकियत हो और राष्ट्रीय तथा अन्तर-राष्ट्रीय महत्त्व के वृक्षों की उपयोगिता के लिए सरकार से सीधा सम्बन्ध रहे।

(७) 'लीसा' को स्थानीय प्रभावी उद्योग का साधन माना जाय और उसके अनुसार ग्राम उद्योग संघ काम करे और सरकार से सम्बन्ध रखे।

(८) मैदानी लोगों द्वारा और मैदानी सहकारी संघों द्वारा पर्वतीय पक्के माल की खरीद का पूरा आश्वासन होना चाहिए।

(९) देशी औषधियों की खोज, उत्पत्ति और उनके संशोधन पर विशेष जोर देना चाहिए।

अगर किसी बात का यहाँ के गाँवों में प्रचार करना हो, तो यहाँ के लोगों को ही निकलना होगा। अनुभव बताता है कि मैदानी कार्यकर्ताओं का यहाँ की चढ़ाई-उतराई, ठंडी-गर्मी में प्रचार करना बड़ा ही कठिन है। यहाँ के स्थानीय सर्वोदय-कार्यकर्ता, जिनकी संख्या थोड़ी है, लगन से काम कर रहे हैं। कुछ रचनात्मक संस्थाएँ भी अपनी कठोर नियम-साधना से लोगों की भूमि मांगने में लगी हुई हैं।

यहाँ नेपाली, लेपचा और भुटिया, तीन जातियों के लोग रहते हैं और जमींदार भी प्रायः सभी भुटिया हैं। नेपाली यहाँ के मुख्य कृषक हैं और लेपचा लोगों में ऊन का उद्योग और मवेशी-पालन प्रधान है। राजनैतिक हवा के साथ अब इन लोगों में साम्प्रदायिक भावना जोरों से काम करने लगी है। चोरी-डकैती, खून-खराबी और झगड़ा-टंटा की दृष्टि से यहाँ रामराज्य है परन्तु शराब, बीड़ी और तंबाकू का व्यसन बहुत व्यापक है।

—विद्यासागर

समाचार-सार

हिसार जिले में जनाधार

पंजाब प्रदेश की सीमा पर स्थित ार जिला राजस्थान, दिल्ली और र प्रदेश का भी पड़ोसी जिला है। जिले के निवेदक श्री दादा गणेशी लाल अपनी एकनिष्ठ तपस्या से न केवल ार जिले के काम को, बल्कि पूरे प्रदेश काम को प्रभावित किया है। इस जिले १० कार्यकर्ताओं के योगक्षेम की म्मेदारी जिला सर्वोदय-मडल ने उठायी और सपत्ति-दान, सर्वोदय-पात्र तथा दिय मित्रों के माध्यम से कार्यकर्ता- ंहू के लिये सहयोग प्राप्त किया जाता । इस जिले में ३,३०० सर्वोदय-पात्र मित रूप से चलते हैं ... जन ने के सग्रह से १४३ रुपये प्राप्त हुए। त्ति-दान सर्वोदय-मित्र और सर्वोदय- ों से हुई आमदनी का कुल योग लग- १४५० रुपये हैं। इस प्रकार सीधे ता से अपना योग-क्षेम प्राप्त करके ता की सेवा करने का उपक्रम विशेष र से उल्लेखनीय है।

इसके अलावा एक खास बात यह ी है कि अपनी आजीविका उपार्जन करते र मुक्त सेवा अर्पित करने वाले भी नेक मित्र मिले हैं। वे अपने खाली समय सर्वोदय और भूदान का काम करते हैं। अनुभव यह आया है कि सर्वोदय- त्र का काम बहिनें अधिक अच्छा कर रही हैं, जैसा कि बहिन विद्यावती जिला र्वोदय भूदान-मण्डल की ओर से हिसार नगर में कर रही हैं। यहाँ २७० सर्वोदय-पात्र नियमित चल रहे हैं।

× × ×

विनोबाजी के आगमन पर ऐलनाबाद में श्री ब्रह्मानन्दजी और श्री मुरलीधरजी ने सर्वोदय-आश्रम के लिए जो जमीन दी थी और विनोबाजी के कर-कमलों द्वारा आश्रम की नींव रखी गयी थी, उस स्थान पर सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के रहने के लिए भूमि-दाताओं ने एक कमरा बनवा दिया है।

पंजाब खादी-आश्रम तथा पजाब खादी-ग्रामोद्योग सघ से प्रार्थना की गई ... उन गाँवों में, जहाँ भूदान की जमीन तकसीम हुई है, ... का काम जल्द आरम्भ करें।

जिला करनाल में इस माह में ११५ सर्वोदय-पात्र की स्थापना हुई और विचार-प्रचार के लिए एक वाचनालय और एक पुस्तकालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। इस सारे कार्य में जिला खादी-कार्यकर्ताओं का अच्छा सहयोग मिला है।

कुरुक्षेत्र नगर में सर्वोदय-विचार समिति की स्थापना हुई है, जिसमें विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक सस्थाओं के कार्यकर्ता तथा नगर के प्रमुख व्यक्ति भाग लेते हैं। वहाँ अपने-अपने विचार स्वतन्त्र रूप से रख कर सर्वसम्मति से निर्णय लिया जाता है।

●

नागोर जिले का कार्य

जून मास में १६,१७५ बीघा भूमि का वितरण २६० परिवारों में किया गया, जिनमें से ८१६ बीघा नया भूदान प्राप्त हुआ। जिले में करीब-करीब भूदान में प्राप्त सभी भूमि का वितरण हो चुका है। १०० बीघा जमीन बकाया का वितरण अगले माह में हो जायगा। इस मास में त्रिलोकपुरा (लाडणूं) ग्रामदानी गाँव का भी वितरण-कार्य सपन्न हुआ। गाँववालों ने १०० बीघा जमीन स्कूल, आबादी, गोचर, तालाब आदि सार्वजनिक कार्यों के लिए रखी है तथा १२७ बीघा में सामूहिक कृषि करने का निश्चय किया है। बाकी जमीन आवश्यकतानुसार परिवारों में बाँटी गयी है। इस छोटे-से गाँव ने अपने बच्चों के शिक्षण के लिए स्वयं ने व्यवस्था कर रखी है।

बोरावड गाँव में शीघ्र ही वहाँ के वयोवृद्ध शांति-सैनिक श्री भैंरवप्रसादजी ... के प्रयास से सर्वोदय विचार केन्द्र प्रारम्भ होने वाला है।

●

शिविर : गांधी-निधि

गांधी स्मारक निधि अनेक गाँवों में अपने ग्राम-सेवक नियुक्त करके ग्राम-सेवा केन्द्र चलाती है। ऐसे ग्राम-सेवकों के शिविरों का कभी-कभी आयोजन हो और ग्रामसेवा के काम पर सभी सेवकों का सह-चिन्तन हो, यह आवश्यक है। इसी दृष्टि से पूर्णिया जिले के ग्राम-सेवकों का एक शिविर जून के अंतिम सप्ताह में सपन्न हुआ। श्री जगलाल चौधरी ने शिविर में उद्घाटन-भाषण दिया।

श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने ग्राम-सेवकों को सबोधित करते हुए कहा : 'विनोबाजी ने पूर्णिया जिले से कुछ विशेष अपेक्षाएँ रखी हैं। इसलिए हमारे ग्राम-सेवकों पर विशेष रूप से जिम्मेदारी है। जहाँ-जहाँ ग्रामसेवक बैठे हैं, वे अपने आपको शांति-सैनिक के योग्य बनायें और सेवा सैनिक के तौर पर काम करें। ग्राम सेवा का काम भी समग्र ग्राम-रचना की दृष्टि से करना है।'

यह शिविर कुरसेला 'गांधीग्राम' में संपन्न हुआ।

●

ग्रामस्वराज्य की दिशा में

बिहार के सथाल परगना जिले में मधुपुर थाना है। इस थाने के अन्तर्गत १६ ग्रामपचायतों का एक सगठित क्षेत्र बनाया गया और ८० हजार लोगों के इस क्षेत्र में ग्राम-स्वराज्य का प्रयोग करने की दृष्टि से काम किया गया। ५० ग्रामस्वराज्य-समितियों की स्थापना इस क्षेत्र में की गयी। १९५७ से यह काम आरम्भ हुआ था। १९५८ में इन ग्रामस्वराज्य-समितियों का एक सम्मेलन भी किया गया, जिसमें समितियों के लगभग चार सौ सदस्यों ने भाग लिया था।

यहाँ के लोगों में उत्साह बराबर बना हुआ है। मधुपुर में सर्वोदय-केन्द्र की स्थापना के लिए दो एकड़ जमीन भी मिली है और गांधी-निधि की ओर से एक ग्राम-सेवा केन्द्र चलाने की भी योजना है। चुनावों के कारण गाँवों में जो झगड़े खड़े होते हैं, उनको दूर करने के लिए ग्राम-करण का प्रयास ... चुनाव के निरा-

●

शारदापुरी-समाचार

उत्तर प्रदेश में कई स्थानों पर जमीन के काफी बड़े-बड़े टुकड़े प्राप्त हुए। इन बड़े टुकड़ों पर नये गाँव बसा कर नये सिरे से निर्माण प्रारंभ किया गया। उन्हीं में से पीलीभीत जिले में शारदापुरी एक है। यहाँ नया गाँव बसाया गया है।

गाँव के लोग नये सिरे से अब अपने जीवन का निर्माण करने जा रहे हैं, तो वे खेती के तरीके में भी सुधार करें और नई पद्धति एवं नये औजारों से खेती करें, यह विचार उन्हें समझाया जा रहा है। धान का बीज तैयार करना, उसके लिए खेत बनाना, खाद का इस्तेमाल करना, इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है और कृषि-सबंधी फिल्मों का भी प्रदर्शन किया जाता है।

जून महीने में उत्तर प्रदेशीय अखंड पदयात्री टोली का आगमन यहाँ हुआ। सभी ग्रामवासियों ने पदयात्रियों का स्वागत किया। बिना किसी कामना, स्वार्थ या राजनैतिक आकांक्षा के सर्वोदय-कार्यकर्ता गाँव-गाँव में पदयात्रा करके सर्वोदय-विचार फैला रहे हैं, यह लोगों के लिए कम आकर्षण का विषय नहीं है।

●

कोटा जिले का काम

२२ जून को कोटा जिलान्तर्गत 'थाना कस्बा' नामक ग्राम में प्रवेश करने के बाद से २९ जून को किशनगंज तक की पद-यात्रा के दौरान में विनोबाजी को १८९ बीघा भूमि भूदान में मिली। ३ ग्रामदान हुए, राजस्थान सर्वोदय-मण्डल के पाक्षिक पत्र 'ग्रामराज' के ३२ नये ग्राहक बने तथा ६ ग्रामों में सर्वोदय-साहित्य के भंडार रखने का निश्चय किया गया।

वाराणसी में 'सेमिनार'

ता० १६ जुलाई, '६० को प्रातःकाल अखिल भारत सर्व सेवा सघ की ओर से साधना-केन्द्र में एक 'सेमिनार'-परिसवाद आरम्भ हुआ। यह परिसवाद विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार-विमर्श करने के लिए आयोजित किया गया है। आर्थिक विकेन्द्रीकरण के व्यावहारिक मुद्दों पर विचार करते समय औद्योगिक व्यवस्था और उसके विकेन्द्रित स्वरूप के सम्बन्ध में भी चर्चा होगी। सुश्री माला मूँदड़ा के मधुरगीत के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ। श्री सिद्धराजजी ढड्ढा के प्रारंभिक निवेदन के बाद श्री जयप्रकाशजी ने सेमिनार के आयोजन की पूर्व-भूमि और विचारणीय मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए विषय-प्रवेश किया।

१६, १७ और १८ तारीख को नैतिक और सामाजिक मूल्यों पर आधारित अर्थ-व्यवस्था के मूल्यमापन पर बहस हुई। इस परिसवाद में सर्वश्री जे० पी०, शकरराव अण्णासाहब ... सिद्धराज ढड्ढा, पूर्णचन्द्र जैन, जवाहिरलाल जैन, ... बग विमला बहन, प्रभावती देवी आदि लोग तथा सघनक्षेत्र के कार्यकर्ता भाग ले रहे हैं।

●

रत्नागिरी जिले का कार्य

सन् १९५१ से रत्नागिरी जिले में भूदान-यज्ञ का काम शुरू हुआ था। अब तक ३६० गाँवों में ५,५८८ एकड़ २० गुंठा जमीन मिली है। जितनी जमीन अभी तक मिली है, उसमें से दो-तिहाई जमीन खेती की दृष्टि से उपयुक्त है और बाकी की एक-तिहाई जमीन वितरण की दृष्टि से निरुपयोगी है। २३२ दाताओं से प्राप्त १,५८३ एकड़ २६ गुंठा जमीन का वितरण हो चुका है।

●

कलकत्ता में साहित्य-प्रचार

कलकत्ते के कर्मठ कार्यकर्ता श्री दानारामजी, जो स्वयं सपत्तिदाता भी हैं, ने गत आठ महीनों में ४१०७ रु० की साहित्य-बिक्री की तथा भूदान-पत्रिकाओं के ६८ ग्राहक बनाये।

●

पदयात्रा

राजस्थान के रींगस-क्षेत्र में २० जुलाई से एक पदयात्री टोली ने अपनी पदयात्रा आरम्भ की है। यह पदयात्रा रींगस-मातृ-मगल खंबर विद्यालय की गृहमाता के नेतृत्व में चल रही है।

इसी तरह सीकर जिला खादी-ग्रामोदय समिति की ओर से नीमकाथाना तहसील में ७ जुलाई से एक पदयात्री दल घूम रहा है।

डाकू क्यों शरण आये ?

विनोबा

बहुत से लोग ऐसी बात करते हैं कि डाकुओं को रियायत मिली था मिलने का भरोसा हुआ, इसीलिए वे शरण आये होंगे। या, पुलिस की वजह से पीड़ित हुए होंगे, इसीलिए आये होंगे। ऐसा इसलिए होता है कि मनुष्य के मन में यह भाव रहता है कि "हमारा परिवर्तन तो नहीं हुआ, हम तो पापों को छोड़ नहीं सके, दूसरों ने ऐसा कैसे किया होगा ?" हम पापों को छोड़ सकते हैं, ऐसा एहसास उनको अपने लिए नहीं रहता। इसलिए दूसरों के बारे में भी वे लोग इसी तरह सोचते हैं। लेकिन वे समझते नहीं हैं कि अन्दर का, और बाहर का दोनों कारण मिल कर ही काम बनता है। महात्मा तुकाराम की जिंदगी के पहले २१ साल संसार में गये। उनकी पत्नी मर गई, तरह-तरह की आपत्तियों से वे गुजरे। लेकिन आज महाराष्ट्र की हर झोपड़ी में "ज्ञानबा-तुकाराम" का जप चलता है। भगवान के नाम से उनका नाम मिल गया है। लेकिन ये लोग क्या कहते हैं ? "तुकाराम ऐसा कहने वाले इसलिए वे संसार से... उनसे दस गुनी विपत्ति आने पर भी बेशर्मी से संसार में फंसे रहने वाले लोग भी हैं। तुकाराम जन्मजात सिद्ध पुरुष नहीं थे। लेकिन जैसा ये लोग कहते हैं, वैसा मान लिया जाय कि तुकाराम को आपत्ति ने परमेश्वर की तरफ ढकेल दिया। माना कि डाकुओं को आपत्ति ने प्रेरणा दी, मेरे पास आने की। गीता में भी भगवान ने कहा है, "तू दुःखमय संसार में आया है, तो तू क्यों नहीं मेरी भक्ति करता ?" दुःख का उपयोग पश्चात्ताप होने में हुआ, तो उस पश्चात्ताप की कीमत कम नहीं होती है। किसी का लड़का मर गया तो वह विरक्त होता है, भोगपरायणता छोड़ता है। लेकिन बहुत लोग ऐसे भी होते हैं, जिनका लड़का मर जाता है तो कहते हैं, "ठीक है, दूसरा होगा !" उनको तुरन्त विरक्ति नहीं होती। होता क्या है ? आज हम चाहते ही नहीं कि दुनिया में कोई सदाचारी बने। इसलिए दूसरे पर विश्वास नहीं रखना चाहते हैं।

भिंड-मुरैना में जो कुछ हुआ, वह सब परमेश्वर की कृपा है। जहाँ तक मेरा अनुभव है, इसका सोलह आने श्रेय परमेश्वर को है। पर अगर श्रेय बाँटना ही हो, तो पहला श्रेय उन डाकुओं को देना चाहिए, जो शरण आये हैं। दूसरा श्रेय पुलिस को है, अगर वे चाहते तो यह चीज नहीं बनने देते। तीसरा श्रेय मेरे साथियों को और कार्यकर्ताओं को है, जो दूर दूर जंगल में जाकर उनसे पहले मिले और उनको विचार समझाया और चौथा श्रेय मेरा है—वह रुपये में एक नये पैसे जितना। यानी एक सौ नये पैसे में एक पैसा मेरा। और वह भी भगवान के चरणों में रख कर—मुक्त होकर मैं आगे आया हूँ।

(थाना कसबा : २२-६-६०)

खादी-कार्य की दिशा

खादी-कार्य की नई दिशा के अन्वेषण में श्री ध्वजा बाबू का लेख 'भूदान-यज्ञ' के २० मई, '६० के अंक में छपा था। उसी आशय का एक परिपत्र उन्होंने सभी खादी-संस्थाओं को भेजा था। उस संबंध में विनोबाजी ने अपनी राय प्रकट करते हुए ध्वजा बाबू को एक पत्र में लिखा कि :

'खादी-ग्रामोद्योग संस्थाओं की सेवा में प्रेषित आपका १६ जून, '६० का पत्रक मैंने देखा। पहले कदम के तौर पर आपने जो तीन सुझाव पेश किये हैं :

१) प्रत्येक कार्यकर्ता अंबर चरखा-प्रवीण बने।

२) एक गुंडी सूत हर महीने सर्व सेवा संघ को समर्पण करे।

३) संबंधित ग्रामों में सर्वोदय-पात्र हर घर में रखे जायें।

मेरा एक सुझाव यह भी है कि सर्वोदय की एक-एक किताब कार्यकर्ताओं के अध्ययन के लिए रखी जाय, और उसमें उनकी परीक्षा ली जाय। इससे कार्यकर्ताओं को नई तालीम का रंग देने का जो सर्व सेवा संघ का प्रस्ताव है, उसके अमल का आरंभ होगा।"

गुजराती समाज में सर्वोदय-साहित्य-प्रचार

स्थानीय भूतपूर्व उपमेयर तथा सर्वोदय-मित्र श्री बाबूभाई देसाई के मार्गदर्शन में गुजरात की सुप्रसिद्ध भूदान-कार्यकर्त्री सुश्री कांता बहन शाह और श्री हरविलास बहन पिछले डेढ़ हफ्ते से नगर के गुजराती के भाई-बहनों के बीच सर्वोदय-साहित्य एवं विचार का प्रचार कर रही हैं। परिणामस्वरूप अब तक उन्होंने गुजराती दसवारिक "भूमि-पुत्र", हिन्दी साप्ताहिक "भूमि-क्रांति" आदि के कुल करीब ५०० ग्राहक बनाये। साथ ही ८५० रु० के सर्वोदय-साहित्य की बिक्री भी की।

दिल्ली के खादी-कार्यकर्ता

मई के आखिर में खादी-संस्थाओं की बैठक बोरा में हुई थी। उसके बाद दिल्ली के 'भवन' ने दो सौ कार्यकर्ताओं में से १८८ कार्यकर्ताओं ने प्रति मास एक गुंडी सूत सर्व सेवा संघ को देने का निश्चय किया और प्रथम मास में १८८ गुंडी सूत दिया भी। उन लोगों ने सर्वोदय-पात्र भी अपने-अपने घरों में रखे हैं, जिनसे ५७ रु० ३ नया पैसा जमा हो चुका है। १५० कार्यकर्ताओं ने 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक-पत्र लेना शुरू कर दिया है।

इस अंक में

-गुजरात के बनासकांठा विभाग में ३ गाँवों का ग्रामदान हुआ है।

अहमदनगर जिला : महाराष्ट्र

२० जून को अहमदनगर जिले के भूदान-कार्यकर्ताओं की एक सभा हुई जिसमें यह तय किया गया कि अगस्त में श्री जयप्रकाशजी महाराष्ट्र की यात्रा करेंगे, इस उपलक्ष्य में 'साम्ययोग' मराठी साप्ताहिक के एक हजार ग्राहक बनाये जायें तथा अहमदनगर शहर में एक हजार सर्वोदय-पात्र हों। यह भी तय किया गया कि जिन्हें जमीन दी गयी है, उन्हें हल और बैल भी दिये जायें।

जबलपुर नगर में सर्वोदय कार्य

जबलपुर में ११ सितम्बर, १९५९ से सर्वोदय-पात्र का कार्य शुरू हुआ। उस समय सारे नगर में पदयात्राएँ कर भिन्न-भिन्न मुहल्लों में कुल मिला कर लगभग १००० पात्रों की स्थापना हुई। महिलाश्रम (वर्धा) की छात्राओं के सहयोग से कार्य में विशेष प्रगति हुई। पात्र के अनाज-संग्रह का कार्य दो माह तक ठीक चला और फिर शिथिल पड़ गया। सिर्फ एक मुहल्ले में, जहाँ पर एक निष्ठावान् महिला कार्य करती रही, अनाज संग्रह तथा साहित्य-प्रचार का कार्य ठीक से चलता रहा। गत अप्रैल से फिर से इस काम को बढ़ाया दिया गया है। कुछ सर्वोदय-मित्र बने, जिनमें अधिकतर महिलाएँ हैं। अब अनाज-संग्रह का कार्य ठीक तरह से चल रहा है।

पाठकों की नजर से :

विदेशी कर्ज से निर्माण

"विदेशी कर्ज से निर्माण" संबंधी श्री मनोज कुमार की टिप्पणी आँखें खोलने वाली है। यदि इसी प्रकार बाहर से पूँजी कर्ज ली जायगी, तो भारत आर्थिक गुलामी का शिकार बन कर रहेगा। पहले राजनीतिक तौर पर गुलाम था, अब आर्थिक तौर पर गुलाम हो जायगा। ईश्वर हमारे नेताओं को सद्बुद्धि दे। कर्ज लेकर बनायी गई पोशाक, चाहे कितनी ही बढ़िया हो, उस पोशाक का मुकाबला नहीं कर सकती, जो अपनी कमाई से बनायी गयी हो। क्या कर्जदार राष्ट्र, राष्ट्रों की पंक्ति में अपनी स्वतंत्र आवाज निर्भयतापूर्वक व्यक्त कर सकेगा ?

—संग्राम सिंह, बड़ौदा

विनोबाजी का पता :

द्वारा-म. प्र. सर्वोदय-मंडल
११६, स्नेहलता गंज,
इन्दौरनगर [मध्यप्रदेश]

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४२८५
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,८०३ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,०२६ एक प्रति ११ नये पैसे

जो दो व्यक्तियों की समस्या है, वही विश्व की समस्या है !

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी, शुक्रवार , २९ जुलाई, '६० वर्ष ६ : अंक ४३

काशी नगर सच्चा तीर्थस्थान बने !

शंकरराव देव

विश्व अनेक परिवारों से और असंख्य व्यक्तियों से बना हुआ है, इसलिए व्यक्ति से विश्व अलग है, दोनों की समस्याएँ भिन्न भिन्न हैं, यह समझना गलत है। सृष्टि का धर्म है कि जो पिंड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। रूस और अमेरिका जैसे बड़े देशों का जो सवाल है, वही दो व्यक्तियों का भी सवाल है। सवाल है, 'पीसफुल को-एक्जिस्टन्स' का—दोनों शान्ति से साथ कैसे रह सकते हैं—का। आज दुनिया के सामने यही एक सवाल है, क्योंकि अब साथ रहे बगैर चारा नहीं है।

अभी चाँद पर जाने की कोशिश चल रही है। लेकिन जो सवाल पृथ्वी पर हल नहीं हुआ, वह वहाँ भी बना रहेगा, तो फिर हमें मंगल पर जाना पड़ेगा। इसलिए ऐसे काम में हमें कोई उत्साह नहीं मालूम होता है। अगर चाँद पर जानेवाला वही होगा, जो यहाँ रहता है, तो फिर केवल स्थानांतर से क्या लाभ होगा? इसलिए हम कहाँ जाते हैं, यह चीज महत्त्व की नहीं है, कैसे रहते हैं, इसका महत्त्व है।

हमारे मोहल्ले की गंदगी का जो सवाल है, वही सारे विश्व का सवाल है। दो आदमी साथ नहीं रह सकते हैं, यह सबसे बड़ी गंदगी है। शारीरिक गंदगी से मानसिक और आध्यात्मिक गंदगी ज्यादा खराब होती है। आज दुनिया में सबसे बड़ी गंदगी यही है कि दो समाज, दो वर्ण, दो धर्म, दो देश, शान्ति से, सुख से साथ नहीं रह सकते हैं। मानव जाति को यह जो मानसिक और आध्यात्मिक बीमारी लगी हुई है, उसी का नतीजा है, विश्वयुद्ध, लड़ाई झगड़े, रोज की मार काट!

आज मनुष्य का मन बीमार है। इसलिए वह दूसरे के साथ शांति से नहीं रह पाता। मन की सबसे बड़ी बीमारी है, 'मेरा-तेरा'। एक बहन कहती है कि यह लड़का मेरा है और वह लड़का अच्छा है, गुणवान, रूपवान, बुद्धिमान भी है, लेकिन वह 'मेरा' नहीं है, इसलिए उसके लिए मेरे मन में प्रेम नहीं है। उसको भूख, प्यास, ठंड सब लगते हैं, लेकिन वह 'मेरा' नहीं है, इसलिए उसके सुख-दुःख से मुझे कोई मतलब नहीं है। दूसरों के दुःखों के बारे में उदासीनता और दूसरों के सुखों के लिए ईर्ष्या, मत्सर, द्रोह, उन्हें गिराने की वृत्ति, यह सब 'मेरा-तेरा' की भावना का नतीजा है। जिस क्षण वह 'मेरा' होगा, उसी क्षण मेरी वृत्ति बदलेगी। 'मेरा' हो जाने पर, उसका सुख-दुःख भी मेरा बनेगा और तब मैं उसके लिए जान भी दे सकूँगा। और कल जब वह 'मेरा' नहीं था, तब उसकी जान भी ले सकता था।

दुनिया के बड़े-बड़े देशों के सामने इन दिनों सह-अस्तित्व का ही सवाल है। वह तभी हल होगा, जब पड़ोसी के और हमारे बीच प्रेम पैदा होगा। वह जिंदा रहे और हम भी जिंदा रहें, इतना काफी नहीं है। उसे जिंदा रखने के लिए मुझे मरना होगा। इसलिए विश्व की वही समस्या है, जो एक मोहल्ले के दो परिवारों की होती है। आप कहेंगे कि हमारे बीच कोई दुश्मनी नहीं है, मैत्री है। हम एक दूसरे पर पत्थर नहीं मारते हैं। लेकिन हम आपसे पूछना चाहते हैं कि क्या खाना खाते समय आपको पड़ोसी की याद आती है? उसके घर में कोई बीमार हो तो आप डॉक्टर के पास दौड़ कर जाते हैं? सिर्फ पत्थर न मारना इतने से मानवीय धर्म पूरा नहीं हो जाता। मानवता का आदर्श दूसरों के सुख दुःख में सहसंवेदना की अनुभूति से पूरा होता है। जब 'अहिंसा परमो धर्म' कहा जाता है, तब लोग उसका अर्थ ही सत्यानाश करने लगते हैं। लेकिन अहिंसा-धर्म के मानी है पड़ोसी धर्म। हमें सोचना चाहिये कि भगवान ने हमें साथ पैदा किया है, हम एक ही मोहल्ले में रहते हैं, तो हमारा यह कर्तव्य है कि एक दूसरे की सेवा करें।

काशी में सारे भारतवर्ष के यात्री आते हैं। कहा जाता है कि काशी में मरने से मुक्ति मिलेगी। बात ठीक है, क्योंकि यहाँ जीने में तो कोई लाभ नहीं दिखाई देता है। यहाँ आते ही पूछा जाता है कि आप दक्षिणा के लिए सवा रुपया लायें हैं या सवा सौ! क्या हमारे पितरों की मुक्ति सवा सौ रुपयों पर निर्भर है? लेकिन यहाँ दूसरी मुक्ति तो बाद में दी जाती है, पहले आपको धन मुक्ति मिलती है। क्या यही पावित्र्य है? यही तीर्थ का महत्त्व है? प्राचीन पावन काशी नगरी में गंगाजी के दर्शन करने से मन प्रसन्न हो जाता है। हमारी कितनी भी वैज्ञानिक दृष्टि हो, तो भी ये पुराने संस्कार मिटते नहीं। लेकिन आज तो यह हालत है कि सुबह गंगाजी के किनारे जाओ, तो अमंगल गंदगी का दर्शन होगा। क्या काशी के पंडों का यह धर्म नहीं है कि गंगाजल और गंगातट को स्वच्छ, मंगल, निर्मल रखें, जिससे कि दूर से आनेवालों में आकर्षण पैदा हो? वहाँ पर स्वच्छता होगी तो यात्रियों को ध्यान-चिंतन की प्रेरणा मिलेगी। क्या यहाँ के मुक्ति देनेवाले अपना यह फर्ज नहीं मानते हैं कि गंगाजी के किनारे गंदगी न हो? हम बातें तो वेदान्त की करेंगे, लेकिन गंगातट को गंदा बनायेंगे। इसी गंदगी के कारण संस्कार और इच्छा होते हुए भी मैंने अभी तक गंगा-स्नान नहीं किया है। मैं कहता हूँ कि गंगा का दर्शन पवित्र है, पर स्नान पवित्र नहीं है। अगर यहाँ घाट, गलियाँ, मंदिर, धर्मशाला स्वच्छ, निर्मल हों, तो जो कोई यहाँ आयेगा, वह सोचेगा कि 'धन्य है काशी नगरी के लोग, जो इतनी स्वच्छता रखते हैं। उनके हृदय कितने निर्मल होंगे, जब शहर इतना स्वच्छ है, तो यहाँ के निवासी लोगों का दर्शन कितना पवित्र होगा?" हम समझते ही नहीं कि गंदगी करने से हमारा धर्म जाता है। विदेशियों को हमारा यह जीवन देख कर लगता है कि ये मानव हैं या मानव-देहधारी और कोई? लेकिन हम समझते हैं कि संसार अनादि अनंत है, यह ऐसे ही चलने वाला है।

विश्व की ये ही सारी समस्याएँ हैं कि इंसान दूसरे के बारे में खयाल करना कब सीखेंगे। सर्वोदय में इसके सिवाय और कुछ नहीं है। सुबह उठते ही ईश्वर से प्रार्थना करो कि 'मुझसे जितना बन सके, काया-वाचा-मन से दूसरों के दुःख दूर करने की और सुख बढ़ाने की कोशिश हो,' तो इसमें सारे तीर्थ आ गये, तीर्थंकर आ गये, दुनिया की समस्याएँ आ गयीं, सब आ गये। यह होगा तो जैसा विनोबाजी चाहते हैं कि काशी सर्वोदयनगरी बने, वह जरूर बनेगी, शान्ति का धाम बनेगी। लेकिन जब तक नागरिक नहीं जागते हैं, तब तक गांधी-विनोबा से और उनके मुट्ठी भर कार्यकर्ताओं से क्या होगा? मानव ने आज तक हजारों महापुरुषों को, साधु संतों को हजम कर लिया है, फिर भी वह जैसा था, वैसा ही रहा है। अनाज को हजम करना कठिन है, लेकिन महापुरुष को हजम करना आसान है। महापुरुष की मूर्ति को सुबह माला पहनायी, शाम को साष्टांग दंडवत् कर दिया और बीच में चाहे जैसा व्यवहार! इसी तरह मानव जाति ने महापुरुषों की पूजा करके हजारों महापुरुषों को हजम कर लिया है। इससे सर्वोदय नहीं होगा। जो हजारों महात्माओं से नहीं हुआ, वह गांधी विनोबा से भी नहीं होगा। जब तक काशी के नागरिक अपने नगर को सर्वोदयनगर बनाना नहीं चाहते हैं, तब तक वह नहीं बनेगा। सर्वोदयनगरी बनाने के मानी हैं, यह संकल्प करना कि हमसे काया-वाचा-मन से ऐसी कृति न हो, जिससे दूसरों को दुःख पहुँचे।

आज तक दुनिया का यही न्याय रहा है कि मन और कृति में कोई संबंध नहीं हो सकता। इसमें परिवर्तन होना चाहिये, तभी नया युग आयेगा। 'नये युग का मानव' का अर्थ है, ऐसा मानव जो दूसरों के सुख के लिये अपना बलिदान भी देने को तैयार रहे।

[१३-७-६० 'काशी नगर सर्वोदय-

इस अंक में

इन्दौर को सर्वोदयनगर के लिए क्यों चुना ?

मणीन्द्र कुमार

जैसे-जैसे विनोबाजी इन्दौर के निकट पहुँच रहे थे, वैसे-वैसे इन्दौर के नागरिकों में उत्कंठा बढ़ रही थी। उज्जैन जिले में प्रवेश करने पर इन्दौर के प्रमुख नागरिक, सेवक, पत्रकार और राजनैतिक पार्टियों के नेता विभिन्न पड़ावों पर बाबा से मिलने के लिये आने लगे। सबके सामने एक ही सवाल था : बाबा ने इन्दौर को सर्वोदय-नगर के लिये क्यों चुना ? सर्वोदयनगर बनाने के लिये क्या करना चाहिए ?

उज्जैन जिले के झाड़ला पड़ाव की ओर जब बाबा की पदयात्रा बढ़ रही थी, तब रास्ते में मध्यप्रदेश सर्वोदय-मंडल के अध्यक्ष दादाभाई नाइक के साथ इन्दौर नगर-निगम के महापौर श्री के० सिंह और अन्य कार्यकर्ता बाबा से मिले। उनके साथ चर्चा करते हुए बाबा ने बताया कि इन्दौर को स्वच्छ नगर बनाना चाहिये। बाबा ने दुःख प्रकट करते हुए कहा, अक्सर विदेशी लोग मुझसे मिलने आते हैं, तो वे कहते हैं कि जब यूरोप छोड़ कर हम मिस्र में प्रवेश करते हैं, तब 'गंदा क्षेत्र' (डर्टी झोन) शुरू हो जाता है। हमारे लिये यह बड़ी लज्जा की बात है। कम-से-कम एक शहर ऐसा होना चाहिये, जहाँ हम विदेशी लोगों को बता सकें कि यह शहर सफाई के मुकाबले में लन्दन के बराबर है।

बाबा के पूछने पर महापौर महोदय ने बताया कि नगर निगम के पास मुख्य रूप से तीन काम हैं : सफाई, जल और प्रकाश की व्यवस्था। नगर-निगम का बजट सालाना ८५ लाख रुपये का है।

बाबा ने तुरन्त हिसाब लगाते हुए कहा—"अगर इन्दौर की आबादी ५ लाख की है, तो प्रति व्यक्ति १७ रुपया आता है। हम आपको एक योजना और देते हैं, जिससे ३० लाख रुपये की आमदनी और बढ़ जायगी। अगर आप मल-मूत्र की उचित व्यवस्था करके खाद बना सकें, तो प्रति व्यक्ति साल भर ६ रुपया का खाद बनता है, तो पाँच लाख की आबादी से तीस लाख रुपये का खाद आसानी से बन सकता है।"

महापौर ने बताया कि खाद तो हम अभी बनाते हैं। बाबा ने पूछा, कितने रुपये का खाद साल भर में बन जाता है। उन्होंने बताया कि ५०-६० हजार रुपये का खाद सालाना हो जाता है। बाबा ने कहा कि 'यह बहुत कम है, आप लोग मूत्र का खाद बनाने की ओर ध्यान नहीं देते हैं। मूत्र का खाद मल के खाद से कहीं ज्यादा कीमती है।"

इन्दौर से जितने भी लोग मिलने आते हैं, उनके सामने बाबा अप्पासाहब पटवर्धन का जिक्र करना कभी नहीं भूलते हैं। वे कहते हैं—अप्पा को मैंने इन्दौर में कुछ समय के लिये बुलाया है। अप्पा सफाई विज्ञान के निष्णात सेवक हैं। उन्होंने सफाई के लिये जिंदगी में कई यशस्वी प्रयोग किये हैं।

शिक्षकों और विद्यार्थियों के एक प्रतिनिधि द्वारा यह पूछने पर कि सर्वोदय-नगर के निर्माण में हम कैसे योग दें ?

बाबा ने कहा, "हमारे आने के पहले इन्दौर नगर में स्वच्छता के लिए समय लगाइये। शिक्षक, प्रोफेसर, नागरिक, भाई-बहन कारपोरेशन सब मिल कर अपनी शक्ति लगायेंगे, तो इन्दौर स्वच्छ होगा और समूह शक्ति प्रगट होगी।

उस भाई ने फिर पूछा, सफाई के बाद हमको क्या करना चाहिए ? बाबा ने कहा कि "सफाई पर हमको ज्यादा जोर देना है। आज लोग कितनी गंदी हालत में रहते हैं ? फिर आदत पड़ जाती है और गंदगी का भान नहीं होता है। पहले ऐसा प्रोग्राम लीजिये, जिसमें असंख्य लोग भाग ले सकें। इस काम में किसीका भी मतभेद नहीं होगा। फिर इससे कठिन मसला उठायेंगे, उसमें कुछ कम लोग भाग लेंगे। फिर और कठिन मसला उठायेंगे, और भी कम लोग भाग लेंगे। अगर शुरुआत में ही कठिन मसला उठायेंगे तो सब लोग कैसे भाग ले सकेंगे ? जिसमें चन्द लोग ही भाग लेंगे, उससे सर्वोदय नहीं आयेगा।"

अक्सर सब लोग पूछते हैं, बाबा आपने इन्दौर को सर्वोदय नगर के लिए क्यों चुना ?

बाबा ने कहा, "यह एक इल्हाम है, ऐसा मानिये। अकारण स्नेह है।"

आगे बातचीत के दौरान में बाबा ने कहा, "सर्वोदय के कई कामों के लिए इन्दौर सबसे अनुकूल नगर है। इन्दौर में काफी शिक्षित लोग हैं। शान्त और सौम्य शहर है। यहाँ की प्रकृति भी शान्त है। इन्दौर जिस प्रकार का शहर है, उत्तर भारत में शायद ही दूसरा शहर हो। तुलनात्मक दृष्टि से यह कम-से-कम तकलीफ देने वाला शहर है।"

सर्वोदय के लिए हमको कहाँ-कहाँ से सेवक मिल सकते हैं, इस पर बाबा का सतत चिन्तन चलता रहता है। पेन्शनयाफ्ता सर्वोदय के काम में अच्छा योग दे सकते हैं, ऐसा उनका खयाल है। पेन्शनर अगर कुछ काम उठा सकें, तो दो फायदे होंगे। एक तो उनकी खुद की आयु बढ़ जायगी, दूसरा देश को मुफ्त सेवा मिलेगी।

हड़ताल के बारे में बाबा ने कहा कि "हड़ताल क्यों होती है ? इसलिए न कि तनख्वाह बढ़ाओ ? तनख्वाह बढ़ाने से समस्या का समाधान नहीं होता। आज रुपये का कितना मूल्य कम हो गया है ! तनख्वाह बढ़ायेंगे। पैसे का मूल्य और कम होगा और मुद्रास्फीति होगी। मैंने एक सादी बात सुझायी है। सरकार अपने सेवकों को बुनियादी जरूरत के रूप में दो मन अनाज तो अवश्य दे। तनख्वाह चाहे ज्यादा हो या कम, इतना तो उनको मिलना चाहिए। हिसाब से आज प्रति व्यक्ति ६० रुपये का अनाज चाहिए। कुल भारत को २४०० करोड़ का अनाज भारत के लिए चाहिए। ५५ लाख सेवकों के परिवार के लिए २०० करोड़ रुपये की अनाज की आवश्यकता होगी। ५ लाख ऊँचे सरकारी अफसरों की बात छोड़ भी दें, तो १५० करोड़ रुपये का अनाज सरकार के पास होना चाहिए।

अभी भी सरकार १०० करोड़ रुपये का अनाज इकट्ठा करती ही है। इतना और करें। इसके लिए लगान अनाज के रूप में लें।"

●

"छोटी-छोटी" बातें

हम 'बड़ी-बड़ी' बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों की तरफ हमारा ध्यान बिलकुल नहीं जाता। उनकी ओर ध्यान देना हमें हमारे 'बड़े-बड़े' कामों से ध्यान बंटाने जैसा लगता है। पर हम भूल जाते हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों से ही हमारी आदतें और जीवन के संस्कार बनते हैं।

"छोटी" बात का एक छोटा-सा उदाहरण लीजिये.

आये दिन सभा-समारोह-मीटिंग आदि से हमारा वास्ता पड़ता है। सार्वजनिक क्षेत्र में काम करनेवालों के लिए ऐसे मौके खास तौर से बराबर आते हैं, जब "छोटी छोटी" सभाएँ उन्हें आयोजित करनी पड़ती हैं। अक्सर यह अनुभव आया है कि सभा की तारीख, स्थान, समय आदि जो मोटी-मोटी बातें हैं, वे तो तय कर ली जाती हैं, पर सभा के कार्यक्रम के बारे में या सभा में क्या-क्या काम किस प्रकार से चलेगा, इसके बारे में कोई तफसील नहीं सोची जाती। नतीजा यह होता है कि सभा के आयोजकों, सभा के संचालक और सभा में भाग लेने वाले व्यक्तियों को अक्सर असमंजस (एम्बैरेसमेंट) का सामना करना पड़ता है। यह अनुभव सभा के आयोजक या सभा में भाग लेने वाले के नाते हममें से हरेक को कई बार हुआ होगा। सभा की शुरुआत कैसे होगी, गायन-भजन आदि कोई कार्यक्रम हो तो वह कौन करेगा, सभा में किस विषय के बारे में चर्चा की पहल कौन करेगा, आदि बातें अक्सर हमारे आयोजन में से छूट जाती हैं। नतीजा यह होता है कि सभाओं, मीटिंगों आदि में समय भी ज्यादा खर्च होता है, भाग लेने वालों पर असर अच्छा नहीं पड़ता और सभा के उद्देश्य की पूर्ति में भी कुछ कमी रह जाती है। जिन्हें सभा का आयोजन करना हो, उन्हें पहले से उसकी सारी तफसील सोच लेना बहुत जरूरी है।

अक्सर यह अनुभव हुआ है कि जब किसी विषय पर चर्चा के लिए कोई मीटिंग बुलाते हैं, तो मोटे तौर पर तो उसका विषय निश्चित होता है, पर सारी चर्चा को किस दिशा में ले जाना है या उस चर्चा का क्या उद्देश्य है, इसकी तफसील अक्सर सोची हुई नहीं होती। नतीजा यह होता है कि जो काम घंटे-आध घंटे में पूरा हो सकता है, उसमें दुगुना-तिगुना समय लग जाता है। इस प्रकार हमारी व्यवस्था शक्ति के अभाव का दर्शन इन "छोटी-छोटी" बातों में अक्सर होता रहता है और चूँकि हम इन "छोटी" बातों पर ध्यान नहीं देते, इसलिए, व्यवस्था-शक्ति का जो विकास होना चाहिए, वह अक्सर हम लोगों में बहुत कम होता है।

सभाओं आदि में एक अनुभव सामान्य तौर पर यह आता है कि लोग ज्यों-ज्यों सभा में आते-जाते हैं, त्यों-त्यों अस्त-व्यस्त, इधर-उधर, चाहे जहाँ बैठ जाते हैं। अक्सर जो सभा-स्थल में प्रवेश करने वाले व्यक्ति अगर वह शिक्षित न हों और व्यवस्था करने वाले उन्हें ले जाकर अमुक स्थान पर न बैठायें, तो प्रवेश-द्वार या प्रवेश की जगह के पास ही बैठ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि सभा के कमरे या स्थान में आगे-पीछे, इधर उधर काफी जगह होते हुए भी प्रवेश का रास्ता रुक जाने से बाद में आने वालों को काफी दिक्कत होती है। अगर इस सामान्य नियम का पालन किया जाय कि जो पहले आता है, वह प्रवेश द्वार या मार्ग से जितना दूर आगे पीछे, अगल बगल बैठ सके, वहाँ से बैठता जाय, तो सभा भी व्यवस्थित दिखेगी और बाद में आने जाने वाले लोगों को भी परेशानी और असमंजस का सामना नहीं करना पड़ेगा।

—सि०

●

वस्त्र-स्वावलम्बी ग्राम : मलाडिहाली

कर्नाटक सर्वोदय-मंडल ने बिजापुर जिले के मलाडिहाली ग्राम को वस्त्र-स्वावलम्बी ग्राम बनाने के लिए चुना है। यह ग्राम खादी-उत्पादन के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ चुका है। यहाँ अहमदाबाद की अंबर चरखा रिसर्च-कमेटी के तत्त्वावधान में ५ अम्बर चरखे चल रहे हैं। १० दस बुनकर इन पर काम करते हैं और १० अन्य बुनकरों को बुनाई की शिक्षा देते हैं।

यहाँ प्रतिदिन एक बुनकर औसतन १२ से १४ गुण्डियाँ सूत कात लेता है। इसमें कई मीटरों से गुण्डियाँ बनाने तक की पूरी प्रक्रिया का समय शामिल है। इस प्रकार इनकी औसत आय प्रति व्यक्ति डेढ़ रुपये है।

●

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि *

'खादीवालों का राज्य हो तो ?'

—विनोबा

मान लीजिये, आज जो राज-कारोबार चलाते हैं, वे खादीवालों को राज्य सौंप देते हैं। हम सैद्धान्तिक राज्य नहीं लेना चाहते, वह बात अलग है। लेकिन अगर हम लेंगे, तो मैं नहीं मानता कि आज राज्य चलाने वालों में विचारों का जितना 'कन्फ्यूजन' है, उससे कम 'कन्फ्यूजन' हमारा होगा। बुद्धि और धुनी मिलकर नौका चलती है। जहाँ तक बुद्धि का ताल्लुक है, विचारों की सफाई हममें है, ऐसा मुझे अनुभव है। लेकिन जब आप राज्य हाथ में लेकर व्यवहार की सोचेंगे, तब गीता का ग्यारहवाँ अध्याय आपके सामने खड़ा होगा। फिर कई विचार आपके सामने आयेंगे। उनके उत्तर आपके सामने होने चाहिये। खादीवालों को पूछा जाय कि 'क्या आप देश की स्थिति देखकर मिल-उद्योग बंद करने के पक्ष में हैं? साफ जवाब दीजिये। देश की हालत देख लीजिये। मुझे विश्वास नहीं है कि हम लोग यह बात हिम्मत के साथ साफ-साफ कह सकें। हम पर जिम्मेदारी नहीं है, इसलिए हम व्याख्यान दे सकते हैं। जिम्मेदारी की कुर्सी पर बिठाकर हमसे पूछा जाय कि भारत के छत्तीस करोड़ लोगों को आप खादी पहना सकते हैं, तो हम निश्चित रूप से कह सकें कि हम ऐसी पाँच साला योजना बनायेंगे, जिसमें मिलें बंद करके खादी से पूरा काम होगा। ऐसा स्पष्ट उत्तर आपसे मिलेगा, ऐसा मुझे भरोसा नहीं है।

हमको नम्रता की जरूरत है और यह समझने की जरूरत है कि जो कुछ समस्याएँ हैं हिन्दुस्तान में, उनको हम सामने से 'फेस' करें। मान लीजिये, सरकार की तरफ से यह कहा जाय कि हमारे 'बजट' में तंगी है, इसलिए अब आप लोकाधार पर काम कीजिये। खादीवालों से मैंने पूछा कि कितनी खादी बिकती है? सरकारी मदद बंद कर दें, तो कितनी खप सकेगी? वे कहते हैं कि लोगों को आदत पड़ गयी है खादी को कम कीमत में खरीदने की। उस वस्तु की पूरी कीमत ली जाय, तो मदद के पहले जितनी खपती थी, उतनी भी नहीं खपेगी।

हम करोड़ों रुपया लगा रहे हैं और यह जवाब मिलता है, तो निश्चित है कि हमने देश का नुकसान किया है। लाभ पहुँचाया हो, यह बात नहीं। अर्थात् नुकसान करने के हेतु से नहीं किया; फिर भी हुआ नुकसान ही। तो देश के कपड़े का मसला, देश के अन्न का मसला, रक्षण का मसला, बढ़ती हुई जनसंख्या और देश के अंदर जो विद्यार्थियों के झगड़े हैं, उन सबके बारे में कभी हमारे हाथ में राज आ जाय, तो क्या हम यह कह सकते हैं कि ये झगड़े नहीं होंगे? इसका तभी हम हाँ में जवाब दे सकते हैं, जब कि हम आज जनता को 'फेस' करके, अपने विचारों से उसे तैयार करने की हिम्मत रखते। (झालरापाटन, ७-७-'६०)

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

नागरी लिपि

विनोबाजी ने यह 'आग्रह' किया है कि "हिन्दुस्तान की सब भाषाओं के लिए नागरी लिपि मान्य हो। यह लिपि भारतीय भाषाओं के लिए चल सकती है और चलनी चाहिए। भारत की राष्ट्रीय एकता और परस्पर व्यवहार के लिए एक लिपि का होना आवश्यक है। इसलिए नागरी लिपि के प्रचार का मेरा 'आग्रह' है।"

[देखिये 'भूदान-यज्ञ', २९ अप्रैल, '६०]

इसी बात की पुष्टि पिछले दिनों अपनी आसाम-यात्रा के दौरान में जोरहाट की एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए प० नेहरू ने भी की है। असमी और बंगाली विवाद को लेकर वहाँ जो दुखद घटनाएँ हुईं, उन पर बोलते हुए नेहरूजी ने कहा कि "असमी को नागरी लिपि में यदि लिखा जाय, तो यहाँ की भाषाई समस्या हल हो सकती है।" नेहरूजी ने यह बात तब कही, जब वहाँ के पहाड़ी नेताओं ने उनसे शिकायत की कि "यदि असमी को अनिवार्य बनाया गया, तो उन्हें तीन लिपियाँ और चार भाषाएँ सीखनी पड़ेंगी।" इसका सबसे आसान हल नेहरूजी ने असमी भाषा के लिए नागरी लिपि को स्वीकार करने के लिए बताते हुए कहा, "यदि हिन्दी और असमी की एक ही लिपि हो, तो दोनों को सीखने में अधिक कठिनाई नहीं होगी।"

विनोबा और नेहरू के इस 'एक लिपि सिद्धांत" की काफी चर्चा भी है। अनेक अखबारों ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। 'नवभारत टाइम्स" ने लिखा है कि 'हिंदी को राष्ट्र-भाषा का पद देकर भाषिक एकता के लिए जो प्रयत्न किया गया उसे बल मिलेगा, यदि संविधान में मान्य अन्य सभी भारतीय भाषाओं में लिपि की एकता स्थापित हो जाय। हिन्दी के समान ही मराठी की लिपि देवनागरी है। गुजरात राज्य ने गुजराती के लिए देवनागरी को स्वीकार कर लिया है। इसी तरह यदि अन्य भाषाएँ भी देवनागरी में लिखी जायँ, तो अपूर्व भावनात्मक एकता स्थापित हो सकेगी।"

प्रधान मंत्री के भाषण पर टिप्पणी करते हुए 'नवभारत टाइम्स" ने लिखा है कि "असमी भाषा की तरह ही बंगला भाषा के लिए भी देवनागरी लिपि को स्वीकार कर लिया जाय, तो असमी तथा बंगला बोलने वालों को इन दोनों भाषाओं की निकटता क्या अधिक स्पष्ट नहीं हो जायेगी ?"

"नवभारत टाइम्स" की तरह ही बनारस के "आज' दैनिक ने भी उन दिनों एक लम्बा सम्पादकीय लिखा था, जिन दिनों में "भूदान-यज्ञ" में विनोबा ने नागरी लिपि का सुझाव रखा था। "आज" ने लिखा था कि "थोड़ा प्रयास करने पर (न केवल भारत) समूचा पूर्वी एशिया वर्णमाला के साम्य के कारण और अधिक निकट आ सकता है। यदि लिपि की समानता स्थापित कर दी जाय।"

नागरी लिपि को स्वीकार करने के लिए अनेक तरह की युक्तियाँ इस सम्पादकीय में दी गयी थीं। इसी तरह इस विचार पर और कई अखबारों ने तथा भाषा शास्त्रियों ने टिप्पणियाँ की थीं।

एक बात साफ समझ लेने की है। विनोबाजी या दूसरे लोग नागरी लिपि स्वीकार कर लेने का जब आग्रह करते हैं, तो यह नहीं समझना चाहिए कि वे अन्य लिपियों के लिए निषेध करते हैं। अन्य लिपियाँ तो चलें ही, पर राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से कम-से-कम एक भाषा और एक लिपि ऐसी होनी चाहिए, जिसे सब जानते और समझते हों। इस दिशा में अब कुछ ठोस प्रयत्न करने की जरूरत है।

—मनीष कुमार

श्री विनोबाजी पुनः मध्यप्रदेश में

श्री विनोबा ने १० जुलाई को, १८ दिन राजस्थान में रहने के बाद, मध्यप्रदेश में पुनः प्रवेश किया।

प्राप्त सूचना के अनुसार विनोबा ने प्रातः ५ बजे राजस्थान से मध्यप्रदेश की सीमा में प्रवेश किया। राजस्थान के कई प्रमुख कार्यकर्ता बाबा को विदाई देने के लिए भूतपुर नामक पड़ाव पर एकत्रित हुए थे। राजस्थान से भावभीनी विदाई और म० प्र० की सीमा में प्रवेश करने पर प्रांत के वयोवृद्ध सर्वोदय-सेवक श्री वि० स० खोड़े के अतिरिक्त अनेक कार्यकर्ताओं ने बाबा का स्वागत किया। बाबा के स्वागत के लिए सोयत ग्राम के नागरिक भी काफी संख्या में उपस्थित थे, जिन्होंने पाँच मील तक आपके साथ पद-यात्रा की। सोयत पहुँचने पर विनोबाजी ने अपने प्रवेश-प्रवचन में कहा कि 'मालव-भूमि पर यह मेरा पहला पड़ाव है। मुझे इस प्रदेश से काफी अपेक्षा है। इस प्रदेश का अतीत काफी गौरवमय रहा है। परन्तु इससे यहाँ के लोग संतुष्ट न हों, अपितु वर्तमान में भी अपना पराक्रम करें।"

ग्राम-पंचायत और न्याय-व्यवस्था

बद्रीप्रसाद स्वामी

जब से देश में पंचायती राज की शुरूआत हुई है, गाँव-गाँव की गाँव-पंचायतों को अपने-अपने क्षेत्र में दीवानी, फौजदारी और माल के मुकदमों का न्याय करने का अधिकार काफी हद तक सौंपा गया है। इसके पीछे एकमात्र लक्ष्य यह था कि जनता को न्याय सस्ता, सुलभ और शीघ्र हासिल हो सके। परन्तु पिछले वर्षों के अनुभव से जनता और सरकार इस नतीजे पर पहुँची है कि न्याय सस्ता, सुलभ और शीघ्र होने की बजाय और भी मुश्किल और दुर्लभ हो गया है! दलगत और जातीयता के आधार पर बनी पंचायतों ने गाँवों के आपस के झगड़े प्रेमपूर्वक निपटाने की बजाय ठीक उसी प्रकार निपटाना शुरू कर दिया, जिस प्रकार की बड़ी अदालतों में! बड़ी अदालतों के दोषों का एक तरह से विकेन्द्रीकरण हो गया, बल्कि यों कहना चाहिए कि रिश्वतखोरी, बेईमानी और धड़ेबन्दी की भावना में इन पंचायतों ने अदालतों को भी मात कर दिया! सरकारी अदालतों के कर्मचारी कुछ निश्चित होने तथा अपनी नौकरी के खयाल से बेईमानी और मनमानी करने से कुछ डरते तो हैं, परन्तु चुने हुए पंचों को तो यह भी डर नहीं है। पंचायत व तहसील-पंचायत बनने के पूर्व गाँव में जहाँ मामूली झगड़े होते थे, उनमें से काफी अदालत में जाने से पूर्व ही निपट जाते थे। काफी मामले बड़े खर्च और विलंब से हैरान होकर भी समझौते कर लेते थे। परन्तु इन पंचायतों के निर्माण होने के बाद मुकदमेबाजी में अत्यधिक वृद्धि हुई है और जहाँ सरकारी कर्मचारी लुक-छिप कर रिश्वत लेते हैं, वहाँ पंच लोग खुलेआम रिश्वत अधिकतर लेते हैं। यहाँ तक कि दोनों तरफ से भी बाजे वक्त पैसा ऐंठ लेते हैं। इस प्रकार सारा न्याय पक्षपात, जातिवाद और पूँजीवाद के पक्ष में जा रहा है। बेगुनाह और गरीब पहले से भी अधिक बेमौत मारे जा रहे हैं। इस सारी परिस्थिति और इसके मूल कारणों पर समय रहते गंभीरतापूर्वक विचार करना है तथा उन दोषों को दूर करने का प्रयत्न भी करना आवश्यक है। अन्यथा पंचायती राज का सपना साकार और सफल होने की बजाय शुरुआत में ही समाप्त हो जायगा और पुनः सामन्तशाही जोर पकड़ेगी।

उक्त सारी परिस्थिति का दोष 'पंचायती-राज' का, नहीं है। सिर्फ पंचों का ही नहीं है और न जनता का ही है। अधिकतर दोष इस व्यवस्था को स्थापित करने वालों का है, जिन्होंने भारतीय परंपरा और संस्कृति के आधार पर पंचायतों का मौलिक स्वरूप क्या हो, इनकी कार्य-प्रणाली क्या हो, इनके कार्य के नियम क्या हों, न्याय के नियम क्या हों, आदि पर कोई विचार नहीं किया। सर्वप्रथम गाँव की सर्वसम्मत राय से जो 'पाँच पंच परमेश्वर' बनाने की परंपरा थी, उसकी बजाय बहुमत के आधार पर वोट द्वारा पंचायत बनाने की पाश्चात्य पद्धति को उन्होंने अपने गाँवों में प्रचलित करके भयंकर भूल की है। इसके बाद न्याय करने के जो अधिकार पंचायतों को सौंपे हैं, इनके कानून-कायदे जैसे के वैसे कायम रखे गये, जो कि बड़ी अदालतों में अंग्रेजों के समय सामन्तशाही के लिए बने थे। जिन कानून-कायदों की पेचीदगीपूर्ण शब्दावली एवं उसके अर्थ पर सैकड़ों वकील और हाकिम पढ़े बहस करके भी किसी एक निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते हैं, भला उन धाराओं को गाँव के अनपढ़ पंच कैसे समझ सकते हैं? दरअसल होना तो यह चाहिए था कि गाँव की पंचायतें न्याय करने के नियम, अपने गाँव द्वारा प्रचलित तथा उन्हीं द्वारा बनाये गये नियमों द्वारा बनाती अथवा गाँववालों की राय से न्याय और न्याय-व्यवस्था के नियम अत्यंत सरल व सूक्ष्म भारत की परंपरा एवं संस्कृति के आधार पर बनाये जाते। परन्तु ऐसा नहीं किया गया। इसके अलावा क्या आज के कानून की दण्ड देने की पद्धति भारतीय परंपरा, संस्कृति और गांधीजी के सिद्धांतों के अनुकूल है? पंचायत के ठीक दरवाजे के सामने और पंचों के मजमुए कई मामले होते हैं, परन्तु इन मामलों का निपटारा करने के लिए वही अर्जी, वही डिक्री, वही सवाल-जवाबी और जवाबदावी वही बहस और वही फैसले के तौर-तरीके, वही दो-दो महीनों की पेशियाँ जारी हैं, जैसे कि इन सरकारी अदालतों में जारी हैं! इसके अलावा गाँव-समाज और पंचों को शिक्षित करके उनका नैतिक स्तर उठाने के लिए भी कोई प्रयास नहीं किया गया। तो फिर, उनसे न्याय की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

आज देश में प्रचलित न्याय-व्यवस्था तथा नियमों में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। जबकि देश में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना करके अहिंसात्मक समाज रचना का विचार चल रहा है, उस हालत में हिंसा पर आधारित आज के कानून-कायदे अहिंसक समाज-रचना में बड़े बाधक साबित हो रहे हैं। आज की दूषित दण्ड-व्यवस्था के आधार पर चोर बन रहे हैं और सुधार को दण्ड दिया जा रहा है। या यों कहिये कि चोर को चोरी करने से मुक्त करने की बजाय और पक्का चोर बनाया जा रहा है! [illegible] के [illegible] सामयिक दोनों सरकारी कानून-कायदों में परिवर्तन तो अवश्य हुए हैं, पर वे पूर्णतया संतोषप्रद नहीं, क्योंकि इन नियमों का भी विकास नीचे से न होकर ऊपर के कुछ विदेशों व धारासभाओं द्वारा इधर-उधर के कानून-कायदों में तथा अपने पक्ष के निहित स्वार्थों का ध्यान रखते हुए सुधारवादी जामा पहनाने के लिए किया गया है, जिससे आम जनता में और भी ज्यादा पेचीदगियाँ हो गयी हैं। उदाहरण के तौर पर, जागीरदार की मालकियत समाप्त करके समाजवादी समाज-रचना करने वाली सरकार ने आज जन-जन की जमीन पर व्यक्तिगत मालकियत की भावना को मजबूत कर दिया है, जो आज स्वयं सरकार के लिए सहकारिता की ओर लोगों को बढ़ाने में बड़ा सिरदर्द साबित हो रही है! बाकी फौजदारी और दीवानी कानून-कायदे तो करीब-करीब ज्यों के त्यों ही चल रहे हैं।

खुशी की बात है कि राजस्थान-सरकार ने समय रहते इस पर कुछ विचार किया है और न्याय-पंचायतें अलग कायम करने का एक छोटा सा कदम भी उठाने की हिम्मत की है। इसमें कोई शक नहीं कि न्याय-पंचायतों का अलग गठन करना अत्यावश्यक था जो कि पंचायतों के निर्माण के प्रारंभ से ही किया जाना चाहिए था। परंतु अब जो कदम उठाया गया है उसको पूर्ण सफल बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करना होगा। इन न्याय-पंचायतों के निर्माण और संचालन को अगर दलगत राजनीति, जातीयता, बहुमत तथा आज की [illegible] न्याय की पद्धति से परे नहीं रखा गया, तो उनके सफल होने में कोई भी आशा नहीं रहेगी। अब इन पंचायतों ने पार्टीबाजी से परे रह कर अधिक-से-अधिक मामले बिना कानूनी कार्यवाही के प्रारंभ होने पर समझा-बुझा कर निपटाने तथा 'आर्बिट्रेशन' द्वारा समझौता कराने का प्रयत्न किया, तो जनता को अवश्य कुछ सुलभ और शीघ्र न्याय मिल सकेगा। न्याय-पंचायत अथवा प्रांत में एक क्षेत्र की सब न्याय-पंचायतों के लिए वकालत न करने वाला, कानून जानने वाला [illegible] 'लीगल एडवाइजर', कानूनी सलाहकार-समय-समय पर पंचों के शिक्षण और मार्गदर्शन के लिए हो, तो और भी उत्तम रहेगा। इन न्याय-पंचायतों के फैसलों की मुंसिफ और मैजिस्ट्रेट के पास निगरानी रद्द करने की [illegible] गयी है। [illegible] में 'स्टेट लेवल' तथा 'डिस्ट्रिक्ट लेवल' पर समाजसेवी [illegible] जूरी या जज की व्यवस्था होनी चाहिए थी, जो फिलहाल समिति या परिषद [illegible] राय से सरकार नियुक्त कर सकती है तथा आगे चल कर न्याय-पंचायतों के पंचों में से अथवा अन्य लोगों में से स्वयं समिति और परिषदें नियुक्त कर सकेंगी। इसके अलावा पाँच या सात पंचों के बीच एक न्याय-पंचायत बनाने का जो निर्णय किया गया है, वह भी आगे बढ़ाने की बजाय पंचायत-राज के लिए पीछे हटने का कदम है। वास्तव में होना तो यह चाहिए था कि हर पंचायत क्षेत्र में न्याय-पंचायत अलग से बनायी जाती। जो आगे चल कर पंचायत-क्षेत्र की ग्रामसभा का एक न्याय-विभाग अलग हो जाता। न्याय-पंचायत [illegible] में आज की तहसील को और एक [illegible] स्वरूप प्राप्त कर ले। अगर उक्त बातों का समय रहते ध्यान नहीं रखा गया, उनके निर्माण करने में बुनियादी भूल रह गयी, तो इसमें कोई शक नहीं कि इसका भविष्य भी आज की तहसीलों व तहसील-पंचायतों जैसा होगा। इसमें कोई शक नहीं कि राजस्थान-सरकार ने यह जो सराहनीय कदम उठाया है, उसे सफल बनाने में हम सबको पूर्ण सहयोग प्रदान करना चाहिए और इसका निर्माण सर्वसम्मति के आधार पर हो सके तथा आगे चल कर ये जनता द्वारा निर्मित [illegible] के आदर्श प्रस्तुत कर सकें।

इस संदर्भ में देश की अन्य [illegible] सरकारें सोच रही होंगी। उन्हें भी इस ओर शीघ्र ही कदम उठाने चाहिए तथा ऊपर उठाये गये सभी प्रश्नों के मुद्दों पर गहराई से विचार किया जाना चाहिए। [illegible] है, देश के सभी कार्यकर्ता, वकील और न्यायाधीश तथा विशेषज्ञ न्याय-व्यवस्था तथा इसके नियमों पर गहराई से [illegible] विचार करें, ताकि आज के देश की मौजूदा न्याय-व्यवस्था और उसके मौजूदा कानून-कायदों में स्वराज्य के संदर्भ में बुनियादी परिवर्तन किये जा सकें।

•

श्री मोतीबाबू की पदयात्रा

बिहार के एकनिष्ठ सर्वोदय-सेवक श्री [illegible] अनेक शारीरिक कठिनाइयों के बावजूद निरन्तर पद-यात्रा करके [illegible] जिले में सर्वोदय का संदेश पहुँचा रहे हैं। उनकी पदयात्रा का प्रारंभ ११ [illegible] को हुआ था। [illegible] १०० [illegible] पूरी है। [illegible]

•

सर्वोदय-अभियान की पृष्ठभूमि

प्रामाण्य बुद्धि के लिए उम्मीदवारी और मतयाचना के स्थान पर प्रतिनिधित्व और सम्मति की प्रतिष्ठा हो

क्या मनुष्य-मनुष्य के बीच निरपेक्ष स्नेहभाव हो सकता है, ऐसी सहानुभूति के लिए क्या मनुष्यता के सिवाय और कोई आधार या आलंबन की आवश्यकता नहीं है? आज संसार के सामने यही समस्या है। यों तो मनुष्य, स्वभाव से सहानुभूतिपूर्ण है; परन्तु दो मनुष्यों के बीच पर्दा वहाँ आता है, जहाँ विशिष्ट साधना, विशिष्ट विचार, विशिष्ट संप्रदाय, विशिष्ट संस्कृति आदि के घेरे हों। ये सब मनुष्य-मनुष्य के बीच दीवार—एक मनुष्य को दूसरे से दूर करने के कारण—बन जाते हैं। मानव-मानव के बीच इन सबसे परे क्या कोई हार्दिक तथा निरपेक्ष संबंध हो सकता है? ऐसा संबंध संस्थागत, संप्रदायगत और पक्षगत तो *नहीं हो सकता। इससे भी एक कदम आगे जाकर मैं कहना चाहता हूँ कि वह* संबंध विचारगत भी नहीं हो सकता।

विचार और साधना की प्रचलित पद्धति मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है। सर्वोदय भी एक विशिष्ट विचार हो और उस पर मुट्ठी भर आदमियों का ठेका हो, तो सर्वोदय भी मनुष्य को मनुष्य से अलग कर देगा। एक मनुष्य को दूसरे के साथ जोड़ने वाली वह कड़ी नहीं बनेगी। अब तक साधना का संबंध विरक्ति से था और विरक्ति याने

दादा धर्माधिकारी

जन-समुदाय के लिए अरुचि, मनुष्यों के बीच रहने में अरुचि। आज समाज की जो बहुत-सी व्याधियाँ हैं, उनमें एक है संस्थावाद और संगठनवाद। इनके प्रति अरुचि, मनुष्य के प्रति रुचि पैदा करती है। इसे मैंने निरपेक्ष स्नेहभावना कहा है।

आज दल में साथीपन तो है, लेकिन ये साथी तब तक हमारे साथ किसी पक्ष में हों, तभी तक साथी हैं। जिस दिन वे पक्ष छोड़ देते हैं, उस दिन से 'नो मोर कामरेड्स' यानी साथीपना टूट जाता है। आज तक जो साथी थे, वे अब गैर-साथी बन गये, क्योंकि अब वे हमारे मंदिर में उपासना करने नहीं आते हैं, इसलिए वे हमारी पंगत में भी नहीं बैठ सकते हैं।

अमेरिका और रूस, दोनों में से कोई युद्ध नहीं चाहता है। दोनों जानते हैं कि युद्ध में सर्वनाश होगा। दोनों शांति की बात करते हैं। उनमें दंभ या राजनैतिक चालबाजी नहीं है। लेकिन उनकी बुद्धि इस वक्त दो संप्रदायों में—दो प्रकार के विचारों में—कैद है और विचार ऐसी वस्तु है, जो मनुष्य को मानवद्रोही भी बना सकती है।

उनसे पूछता हूँ कि 'आप कहाँ गये थे?' क्या हम शांति-सैनिक और *आप अशांति-सैनिक हैं? क्या आपने यह समझा है कि आप अशांति करते जायेंगे और हम शांति?* होना तो यह चाहिए कि नागरिक यह कहें कि हमारे *यहाँ अशांति हुई थी, लेकिन* आपकी जरूरत नहीं थी। जैसे आज आप *कहेंगे कि अशांति हो गयी, लेकिन* पुलिस या फौज की जरूरत नहीं पड़ी। यह जिस प्रकार गर्व का विषय है, उसी प्रकार जब नागरिक कहेंगे कि अशांति हो गयी थी, लेकिन सर्वोदयवालों की जरूरत नहीं थी,

तथाकथित धार्मिकता मनुष्य को मानवता से वंचित कर देती है

आज विनोबा एक नई बात कह रहे हैं कि अब समाज को धर्म से भी परे जाना होगा। लौकिकता, भौतिकता अलग चीज *है और धर्मातीत मानवता अलग चीज है।* विनोबा यह नहीं कहते हैं कि मनुष्य को लौकिकता या भौतिकता की तरफ मुड़ना होगा, बल्कि यह कहते हैं कि जिस तरह राजनीति अब मृतकाल की वस्तु हो गयी है, मनुष्य की प्रगति में रुकावट करती है, उसी तरह पुरानी धार्मिकता भी मनुष्य की प्रगति में रुकावट करती है। वह तथाकथित धार्मिकता मनुष्य को मानवता से वंचित कर देती है, जो सहज सहृदयता, का स्रोत मनुष्य-मनुष्य के बीच अपने आप बगैर किसी कारण के उमड़ पड़ता है, उस स्रोत को जिस तरह राजनैतिक पक्षभेद सुखा देते हैं, उसी प्रकार धार्मिक सम्प्रदाय भी सुखा देते हैं। उन्हीं में आजकल के वैचारिक सम्प्रदायों का भी समावेश है। इसलिए यह धार्मिकता अब निरर्थक सिद्ध हो चुकी है। इसी धार्मिकता को हटाने के लिए विनोबा का प्रयत्न है।

सर्वोदय भी अगर उसी तरह का एक संप्रदाय बन जाय और कुछ मुट्ठी भर आदमी उसके ठेकेदार हों, तो जहाँ सर्वोदय का सवाल आयेगा, वहाँ लोग समझेंगे कि जैसे रक्षण करना फौज का काम है, आग बुझाना 'फायरब्रिगेड' वालों का काम है,

उसी तरह जहाँ-जहाँ अशांति हो, वहाँ शांति की स्थापना करना सर्वोदय के इन ठेकेदारों का काम है, जिन्होंने शांति-स्थापना का ठेका लिया है। बनारस में 'स्वच्छ काशी' आंदोलन चला था। गांधीजी ने भी वर्धा में 'स्वच्छ वर्धा' आंदोलन चलाया था। उस समय लोगों ने एक श्रम विभाग जैसा ही कर लिया था। गंदगी करना वे अपना काम समझते थे और सफाई करना गांधीजी तथा उनके साथियों का काम। और यह श्रम-विभाग व्यवस्थित चल रहा था।

बनारस में जो सर्वोदय-अभियान प्रारंभ हुआ है, वह अभियान तो है, लेकिन विशिष्ट विचार के लिए नहीं है, विशिष्ट कार्यक्रम के लिए नहीं है—केवल परिचय के लिए है। इसीलिए कि हम किसी एक विचार के या कार्यक्रम के ठेकेदार नहीं हैं। कहीं अशांति हुई, तो लोग हमसे पूछते हैं कि 'उस समय आप कहाँ गये थे?' मैं

सर्वोदय की दृष्टि

वह दिन सर्वोदयवालों के लिए मिठाई बाँटने का दिन होगा।

विशिष्ट साधना मानवता से विमुख बना देती है

हमारा एक मंत्र है कि 'सारा नगर हमारा परिवार होगा।' लोग पूछते हैं कि परिवार में तो आसक्ति होती है, इसलिए जिसने परिवार का त्याग किया, वही साधक है। जिसने त्याग नहीं किया, वह साधक नहीं है। हरिद्वार, ऋषिकेश या उत्तर काशी में गंगाजी के घाट पर जो साधक बैठे हैं, उन्हें मनुष्यों से कोई मतलब नहीं है। माना गया है कि भगवान के जितने नजदीक जा सको, उतने ही मनुष्य से दूर रहना होगा। लेकिन हमने उस वचन का दूसरा अर्थ लगाया है कि भगवान के जितने नजदीक

•

सर्वोदय के कोई ठेकेदार नहीं हैं, कोई पेशेवर शान्ति-स्थापक नहीं हैं। हमारी यह आकांक्षा है कि ऐसा समाज बने, जहाँ हमारी आवश्यकता ही नहीं होगी। *ऐसा समाज बनाने के लिए धार्मिक,* साम्प्रदायिक और राजनैतिक पक्षभेदों से ऊपर उठना होगा, जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करते हैं।

•

भजना हो, सम्प्रदाय से उतने दूर रहना पड़ेगा। नियरर टु गॉड, फादर फ्रॉम मैन'। विशिष्ट सम्प्रदाय, विशिष्ट विचार, विशिष्ट साधना मनुष्य को मनुष्य से अलग कर देती है, मानव विमुख बना देती है।

इस विचार को मैंने प्रामाण्य बुद्धि कहा है। समाज के नियमन में दो तरह के अधिकार होते हैं। एक सत्ता 'पावर' के अर्थ में और दूसरा प्रामाण्य 'अथारिटी' के अर्थ में। प्रामाण्य में जो मनुष्य प्रमाण मानता है, उसकी अपनी प्रेरणा होती है। मनुष्यों की स्वयं-प्रेरित सम्मति से जो अधिकार प्राप्त होता है, उसे प्रामाण्य कहते हैं। जहाँ मनुष्यों की सम्मति कम है, विधान और दंड अधिक है, उसे 'पावर', सत्ता कहते हैं। आज जहाँ-जहाँ लोकतंत्र है, वहाँ भी सत्ता अधिक है, प्रामाण्य कम, और जहाँ तानाशाही है, वहाँ तो सत्ता अधिक है ही। भारतवर्ष के समाज में कम-से-कम एक दिन ऐसा आये, जब इस समाज का नियमन, सुव्यवस्था सत्ता की अपेक्षा प्रामाण्य वृत्ति से अधिक हो।

सत्ता का प्रयोग कम होगा और मनुष्यों में परस्पर-विश्वास से उत्पन्न प्रामाण्य अधिक होगा और उस प्रामाण्य से व्यवस्था निष्पन्न होगी, यह बात विनोबाजी ने एक संकेत में व्यक्त की है। वह संकेत है, *सर्वोदय-पात्र।*

इसीलिए इस संकेत में से जो प्रतिनिधि *बनता है, वह उम्मीदवार नहीं है। आप* प्रतिनिधि बना कर किसी को भेज देते हैं। उसमें से जो कुछ निष्पन्न होता है, उसका परिणाम सत्ता के उत्कर्ष में होता है। इसके बदले क्या कोई ऐसी समाज व्यवस्था का आयोजन हो सकता है, जिसमें सत्ता क्षीण होगी और प्रामाण्य बढ़ता चला जायगा?

प्रामाण्य के लिए कोई विभूतिवाद की जरूरत नहीं है। प्रामाण्य में मसलन गुरुडम्, विभूतिपूजा, 'कल्ट आफ पर्सनैलिटी' नहीं है। प्रामाण्य हर प्रामाणिक मनुष्य के लिए हो सकता है। यदि मुझे घर का रास्ता मालूम नहीं है और मैं किसी व्यक्ति को पूछता हूँ और वह बताता है, तो मैं उस पर विश्वास करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह मुझे धोखा देना नहीं चाहता, उसकी नीयत धोखा देने की नहीं है। जहाँ भय, दबाव या प्रतिस्पर्धा नहीं है, वहाँ अविश्वास का कोई कारण नहीं है। अब सवाल यह है कि क्या मनुष्यों का आपस में विश्वास हो सकता है? केवल प्रतिनिधियों का ही नहीं, दमन रहनेवाला का ही नहीं—बल्कि आज तो मनुष्य एक-दूसरे के निकट रिश्ता

रहता है, उतना उसका अधिक होता है— पर मनुष्य-मनुष्य में।

राजनीति एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से अलग करती है। आज की चुनाव-पद्धति दलबन्दियों के द्वारा पैदा करती है, तो क्या उसे टालने का कोई तरीका है? तरीका यह है कि प्रतिनिधित्व हो, लेकिन उम्मीदवारी न हो। मनुष्यों की सम्मति हो, लेकिन सम्मति के लिए मत-याचना न हो। इस प्रकार के तरीके का एक संकेत, विनोबाजी ने सर्वोदय पात्र के रूप में बताया है, जिसे रामायण में 'सहदानी' (निशानी) कहा है, या शाकुंतल में 'अभिज्ञा' कहा है। 'ऐसी अभिज्ञा मनुष्यों की स्वय-प्रेरित सम्मति की सहदानी और हो भी क्या सकती है? वोट का कागज, मनुष्यों की स्वय-प्रेरित सम्मति की निशानी नहीं हो सकती। इसीलिए विनोबाजी ने सर्वोदय-पात्र को स्वयं-प्रेरित सम्मति का एक तरीका सुझाया है। एक मुट्ठी भर अनाज निशानी है। लेकिन किस बात की? इस बात की नहीं कि हम विनोबाजी का विचार पसन्द करते हैं, या इन सर्वोदय-यात्रियों का स्वागत करते हैं। यह तो मामूली चीजें हैं, जो इसमें आ ही जाती हैं, लेकिन वह इस बात की निशानी है कि अब मनुष्य मनुष्य में परस्पर प्रामाण्य बुद्धि हो, भिन्न भिन्न पक्षों के बड़े नेता भी अपनी-अपनी जगह खूब प्रामाणिक, ईमानदार हैं, लेकिन उनमें परस्पर प्रामाण्य बुद्धि नहीं है।

मेरा निवेदन यह है कि दुनिया के इतिहास में गांधीजी का पहला उदाहरण है कि जिसने प्रतिपक्षी के हृदय में प्रामाण्य बुद्धि का आलोक पैदा किया। किसी अंग्रेज ने कभी भी यह नहीं माना कि यह आदमी मैं धोखा दे सकता है। जैसे महाभारत में भीष्म के बारे में माना गया था कि वह शत्रुओं के साथ दगाबाजी नहीं करेगा। क्या ऐसे मनुष्यों का समूह—नहीं, एक तांता बिखरा हुआ—इस देश में पैदा हो सकता है? अगर हो सकता है, तो भ्रष्टाचार नहीं रहेगा। किसी औपचारिक पद्धति से भ्रष्टाचार नष्ट नहीं होने वाला है। भ्रष्टाचार के निवारण के लिए जितने वैधानिक प्रयत्न होंगे, उनमें से चोर-रास्ते निकालने के लिए उतने ही वैधानिक रास्ते निकाले जायेंगे।

मैं आपको एक चेतावनी देना चाहता हूँ कि आपका यह जो अभियान चल रहा है, यह कभी भी 'मास-मूवमेंट' नहीं हो सकता। 'मास-मूवमेंट' से मतलब सावजनिक आंदोलन नहीं, बल्कि भीड़ का आंदोलन है। भीड़ में लोग नहीं होते हैं। भीड़ की अपनी कोई प्रकृति, चारित्र्य, शील, व्यक्तित्व नहीं होता है। भीड़ अलग चीज है और जनता अलग चीज है। लोग कुलीन, शालीन, सभ्य, चिन्तनशील, नागर होते हैं। यह आंदोलन, जिसे मैं परस्पर प्रामाण्य बुद्धि के विकास का आन्दोलन कहता हूँ, यह 'मास एजिटेशन' (लोक क्षोभ का आन्दोलन) नहीं हो सकता है। यह तो लोक की पद्धति से होगा, जिससे काम हो रहा

[दान-यज्ञ, शुक्रवार, २९ जुलाई, '६०

है। याने व्यक्तिगत परिचय होगा और हर व्यक्ति अपने में महत्त्व रखेगा। व्यक्तिगत परिचय और स्नेह से जो वातावरण बनेगा, उसमें से आगे चल कर लोगों का मानस बनेगा, ऐसी हमें आशा है।

मैं आपके सामने यह रखना चाहता था कि हमारे इस प्रयास के पीछे कौनसा समाज-दर्शन है। आखिर हम क्या चाहते हैं? हम मनुष्यों के समुदाय इकट्ठा करना नहीं चाहते हैं। हम सदस्य बनाना नहीं चाहते हैं, कन्वर्ट करना नहीं चाहते हैं। यह कोई मिशनरियों का काम नहीं है। हमारा तो परिचय करने का काम और उसमें से स्नेह प्राप्त करने का काम है।

यह एक बहुत अलग आयोजन है। पहले परिचय हो और फिर उसकी परिणति स्नेह में हो। लेकिन अन्तर्योग का इसका परिणाम मूलतः भिन्न होने वाला है। सदस्यता की परिणति संख्या और संगठन में होती है, लेकिन सारे मनुष्यों का संगठन बनाना हमारा उद्देश्य नहीं है। इसलिए दोनों की अलग अलग प्रक्रियाएँ हैं। जो हमारे इस विचार में नहीं मानने वाला है, वह हमारा शत्रु नहीं है, इस प्रकार की व्यावर्तक भावना इसमें नहीं है।

लोकतन्त्र और अधिनायक तंत्र में आज जो सत्तावाद चलता है, उसके बदले प्रामाण्य बुद्धि की प्रतिष्ठा हो, इसकी तरफ कदम बढ़ाने के लिए औपचारिक मतदान नहीं, हार्दिक सम्मति चाहिए। हार्दिक सम्मति से प्रामाण्य का विकास होता है। औपचारिक मतदान से राज्य-सस्था बनती है। राज्य-सस्था का आधार सत्ता है, प्रामाण्य नहीं। हम प्रामाण्य को मौलिक बनाना चाहते हैं। उसके लिए एक साधन, अभिज्ञा, प्रतीक, उपलक्षण है—सर्वोदय पात्र। और उसके साथ परहेज, मर्यादा, पथ्य यह है कि प्रामाण्य बुद्धि के विकास के लिए प्रतिनिधित्व में से उम्मीदवारी को हटाना होगा और सम्मति में से मत-याचना को हटाना होगा। लोकतंत्र की शुद्धि के लिए यह बहुत जरूरी है।

[काशीनगर-पदयात्रा, १५-७-६०]

उत्तराखण्ड की सुरक्षा-पंक्ति को सुदृढ़ करने के लिए

जन-जीवन का विकास जरूरी

ओमप्रकाश गौड़

तिब्बत में चीन की दमनकारी और उसके भारतीय सीमा पर विवाद खड़ा करने के बाद से सारे देश का ध्यान भारत की सीमाओं को सुदृढ़ करने की ओर आकर्षित हुआ है। सरकार ने इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ कदम उठाये हैं। उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती भाग को उत्तराखण्ड—उत्तर काशी, चमोली और पिथौरागढ़—के नये जिलों के रूप में मान्य करके वहां सुरक्षा की दृष्टि से शासन और विकास का कार्य पुनर्गठित किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय मण्डल ने कुछ क्षेत्रों को सर्वोदय और शान्ति-सेना के सघन कार्य के लिए चुना है। उनमें उत्तराखण्ड विशेष स्थान रखता है। शान्ति सेना और सर्वोदय के कार्यक्रम पर विस्तार से चर्चा करने के लिए मैं उत्तराखण्ड के लिए नियुक्त शान्ति सेना के संगठक श्री सुन्दरलाल बहुगुणा, अन्य कुछ शान्ति-सैनिकों तथा सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के साथ उत्तर काशी के अन्दरूनी भाग की पद यात्रा पर निकला था। पद यात्रा के बीच जहां जन जीवन और जन मानस का अच्छा परिचय मिला वहां सरकार द्वारा किये जाने वाले विकास कार्यों और जनता की उन पर प्रतिक्रिया की जानकारी भी प्राप्त हुई।

उत्तर प्रदेश का यह सीमावर्ती भाग दुर्गम पहाड़ियों के बीच नदी नालों की घाटियों में सारे देश की आंखों से मुंह छिपाये पड़ा है। इस दुर्गम पहाड़ी प्रदेश की जनता भयंकर गरीबी अशिक्षा, अस्वच्छता, रूढ़िवादिता और रोगों की शिकार है। कठिन परिश्रम करने के बावजूद यहां के निवासी फटे, मैले कुचैले कपड़ों से ढंके नर-कंकाल से ज्यादा कुछ दिखाई नहीं पड़ते। विकास के लिए किये जाने वाले सरकारी प्रयास भी झांकी हमें मिली। किन्तु सारे प्रयास ऐसे ही लगे, जैसे सदियों से सूर्य के ताप से तपते पहाड़ पर पानी की दो बूंदें। सारे काम की गति इतनी मन्द है कि वह जनता के जीवन में कोई उल्लास पैदा करने में समर्थ नहीं हो सकती।

यातायात घर घर पहुंचने वाली चिकित्सा और शिक्षा की सुविधाओं के साथ सबसे बड़ी आवश्यकता इस क्षेत्र की चरम सीमा को पहुंची गरीबी को मिटाने की है। कृषि योग्य भूमि यहां बहुत कम है—लगभग ०.२५ एकड़ प्रति व्यक्ति। दो एकड़ से अधिक भूमि किसी के पास है ही नहीं। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों को व्यापक पैमाने पर खड़े किए बिना यहां की जनता की आर्थिक स्थिति सुधारना सम्भव नहीं। ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से गिरती छोटी-बड़ी नदियों से विद्युत शक्ति यहां खूब पैदा की जा सकती है। ऊन लकड़ी के उद्योग, मधुमक्खी-पालन तथा फलों के वृक्ष लगाने की ओर ध्यान दिया जाय, तो इस क्षेत्र की किस्मत बदल सकती है। बांध, सड़कों और इमारतों आदि के ठेके की आमदनी आज व्यक्तिगत मुनाफाखोर ठेकेदारों की जेब में जाती है। विकास से सम्बन्धित पैसा या तो उस क्षेत्र से बाहर चला जाता है या गड्ढे, टूटे-फूटे झोपड़ों के बीच कहीं-कहीं ऊंचे अच्छे मकानों और उनमें रहने वालों के रूप में आम जनता में असन्तोष और चिढ़ की भावना पैदा कर रहा है। लोकतांत्रिक पद्धति द्वारा प्राप्त अपने अधिकारों से अनजानकार और अशिक्षित जनता अपने को असहाय अनुभव करती है और दिन प्रतिदिन निराशा के गर्त की ओर बढ़ रही है। सभी जगह हमने लोगों की एक ही प्रतिक्रिया देखी, "क्या आजादी, क्या अपना राज, क्या पराया राज—सब एक-सा ही, है! सब अपना अपना घर भरने में लगे हैं। हमें और हमारी औलाद को तो इसी गरीबी में दिन काटने हैं।"

किसी प्रकार भी जनता की इस मानसिक स्थिति को शुभ नहीं माना जा सकता। सुरक्षा की दृष्टि से यह और भी खतरनाक है। यह सही है कि मरुभूमि में आग की तरह उभरने वाला (योजनाओं से लाभ उठाने वाला) नया वर्ग वोट दिलाने में सफल हो सकता है, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर देश की रक्षा के लिए आम जनता को अपनी जान की बाजी लगाने के लिए तैयार नहीं कर सकता। सरकार का काम है कि अपनी सहायता-योजनाओं को इस प्रकार कार्यान्वित करे कि उनका लाभ जो जितना गरीब है, उसे उतना ही अधिक मिले।

आज के युग में केवल सेनाएँ ही किसी राष्ट्र की सुरक्षा की गारण्टी नहीं हो सकतीं। यदि किसी राष्ट्र की आंतरिक स्थिति अच्छी है, वहाँ की जनता स्वतंत्रता की कीमत जानती है और स्वयं को अपने भाग्य का विधाता मानती है, तो उस राष्ट्र को कोई पराजित नहीं कर सकता। महान से महान देश को बुरे दिन देखने पड़ सकते हैं, किन्तु यदि उसने समय रहते जनता में आत्मविश्वास और दृढ़ता की भावना को भर दिया है, तो वह अजेय सिद्ध होगा, इसमें सन्देह नहीं। सर्वोदय कार्यकर्ता तथा शान्ति-सैनिक जनता में इसी आत्मविश्वास को भरने की कोशिश करेंगे। उनकी कोशिश होगी कि लोग सहयोगी जीवन बिताने की तैयारी करें, समाज में घुन की तरह व्याप्त बुराइयों से किनाराकशी करें, व्यक्तिगत झगड़ों को छोड़ें और मिल कर अपनी उन्नति की योजनाएं स्वयं बनायें। कार्यकर्ता उन्हें बतायेंगे कि लोकतांत्रिक शासन-पद्धति में वह अपने भाग्यविधाता स्वयं हैं। मिल कर जो योजनाएँ वह बनायेंगे, उन्हें टालने की शक्ति किसी में नहीं है।

हम चाहेंगे कि कम-से-कम देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार और अन्य राजनैतिक तथा गैरराजनैतिक दल, सब मिल कर कल्याणकारी आग्रह करने और उसे दृढ़ करने की इस मुहिम में अपना-अपना भाग अदा करें, ताकि इस पिछड़े प्रदेश की जनता का गरीबी, अशिक्षा और नैराश्य की स्थिति से उद्धार हो और आवश्यकता पड़ने पर सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए यह रक्षापंक्ति अजेय सिद्ध हो। ●

ग्राम-स्वावलंबन क्षेत्र : वारसलीगंज

केशव मिश्र

गया जिले में भूदान, ग्रामदान और सर्वोदय के जो काम होते हैं, उन्हें परखने और योजनाबद्ध चलाने के लिए श्री जयप्रकाश नारायणजी की प्रेरणा से प्रत्येक मास सभी कार्यकर्ताओं के परस्पर-मिलन की मासिक परंपरा शुरू है। क्योंकि भूदान-समितियाँ लोप हो चुकी थीं और आज की तरह सर्वोदय-मंडल का गठन नहीं हो पाया था। इसी परंपरा में जुलाई १९५८ में जिले के उपस्थित समस्त कार्यकर्ताओं की राय से भूदान-किसानों की हो रही बेदखलियों को बन्द करने के लिए पद-यात्रा के कार्यक्रम से दाताओं, आदाताओं और ग्रामीण जनों के पास जाकर समझने और उसे रोकने का विचार तय हुआ। इसी निर्णय के फलस्वरूप ६ साथी कार्यकर्ताओं का एक दल सोखोदेवरा-आश्रम से नवादा सर्वोदय-योजना की यात्रा पर निरंतर हो रही बारिश में निकला। यात्रा को आकर्षक और उपयोगी बनाने के लिए जापानी पद्धति से धान रोपने का दो घंटे का हमारा नियमित दैनिक कार्यक्रम था। धान खेतों की मोरी—पतली और फिसलती मेंडों—पर हम भूदान-नारों के साथ बढ़ रहे थे।

यह यात्रा, जब वारसलीगंज थाने में प्रारंभ हुई, तो १५ दिनों तक चली। जहाँ सर्वोदय-आन्दोलन की सराहना करने वाले लोग भी नहीं मिलते थे, वहीं आज तक इस आंदोलन से दूर रहने वाले यहाँ के राष्ट्रीय आंदोलन के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ज्वाला प्रसाद सिंह के परिश्रम से वारसलीगंज क्षेत्र में सघन रूप से काम करने की प्रेरणा मिली। हँसडीहा (संथाल परगना) के बिहार सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर स्वावलंबन के आधार पर विकेन्द्रित पद्धति से गया जिले के वारसलीगंज थाने में वस्त्र-स्वावलंबन के कार्यक्रम के जरिये ग्राम-निर्माण के सघन प्रयोग का निर्णय बिहार सर्वोदय-मंडल ने किया और गया जिले में ग्राम-निर्माण का काम करने वाली संस्था ग्राम-निर्माण मंडल के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश नारायण की प्रेरणा से ग्राम-निर्माण मंडल की खादी-ग्रामोद्योग समिति ने २४ मई, १९५९ को प्रस्ताव पारित कर इस योजना को कार्यान्वित करने का निश्चय किया।

क्षेत्र-परिचय

वारसलीगंज थाना गया जिले के पूर्वोत्तर छोर पर पटना और मुंगेर जिले की सीमा पर स्थित है। नहर से सिंचाई की सुविधा होने एवं गन्ने की खेती के बाहुल्य के कारण लोग अपेक्षाकृत अधिक खुशहाल हैं। आज जिसे हम सभ्यता कहते हैं, उस दृष्टि से साक्षरता का काफी प्रचार है तथा लोग जागरूक हैं। वारसलीगंज का पूरा क्षेत्र ७८ वर्गमील का है, जिसमें पकरी-बरावाँ थाने के उत्तरी सीमा स्थित दस गाँव कार्य-सुविधा की दृष्टि से सम्मिलित किये गये हैं। पूरे क्षेत्र की जनसंख्या १९५१ की जनगणना से ९७ हजार है और ९८ गाँव हैं, जिनकी कुटुम्ब-संख्या लगभग १२ हजार है। अधिकांश लोग खेतिहर किसान-मजदूर हैं। कुछ लोग बाहर नौकरी आदि पेशे में भी हैं। बुनकर परिवारों की संख्या ३०० है। परन्तु इसमें अधिकांश परिवार बुनाई को अलाभप्रद धंधा समझ कर और काम मिलने की अनिश्चितता के कारण इस धंधे को छोड़ चुके हैं। जो इस धंधे में लगे हैं, उनमें भी अधिक मिल-सूत की बुनाई करते हैं। खादी बुनकरों की संख्या तो नगण्य ही है।

खादी-ग्रामोद्योग समिति के प्रस्ताव के बाद स्थूल रूप से काम का आरंभ १७ अक्टूबर, १९५९ से अंबर चरखे के प्रसार-कार्य से हुआ। शुरू में साधनों के अभाव और बाद में धान काटने, कूटने आदि गृह-उद्योगों में महिलाओं के लगे रहने के कारण अप्रैल के अन्त तक सिर्फ ८ गाँवों में २९२ महिलाओं को प्रशिक्षित कर १९६ चरखे वितरित हुए हैं। इस योजना के पूर्व भी करीब १२ गाँवों अंबर चरखे में वितरित हुए हैं। इस तरह कुल ५७० अंबर चरखे वितरित हुए हैं। इसके अतिरिक्त करीब ढाई हजार परंपरागत चरखे क्षेत्र भर में चलते हैं। खादी-ग्रामोद्योग समिति ने दिसम्बर १९५९ से इस क्षेत्र का परंपरागत खादी-कार्य भी सघन क्षेत्र-योजना के हाथों में सौंप दिया है। खादी-कार्य का विकास उत्तरोत्तर हो रहा है। करीब ३० मन सूत और १० हजार रुपये की खादी का उत्पादन प्रति मास होने लग गया है। ६ हजार ६० की खादी-बिक्री प्रति मास है, जिसमें ८० प्रतिशत भाग है सूतकारों का।

कार्य-दिशा

३१ जनवरी, १९६० को वारसलीगंज क्षेत्र भर के मुखियों, सरपंचों, शिक्षकों और प्रमुख समाज-सेवियों की उपस्थिति में एक सघन क्षेत्र समन्वय-समिति का गठन हुआ, जिसका कार्य होगा ग्राम-स्वावलंबन के लिए योजना बनाना और कार्यान्वयन में परामर्श और सहयोग देना। समन्वय समिति के कुल २७ सदस्य हैं। इस समिति ने प्रथम बैठक में ही अपना ध्येय वस्त्र-स्वावलंबन के बजाय ग्राम-स्वावलंबन के आधार पर निर्मित ग्राम-स्वराज्य घोषित किया।

सर्वेक्षण और आयोजन

आज का युग आयोजन का है। हम भी अपना काम आयोजित ढंग से करना चाहते हैं। परन्तु हमारे आयोजन की विशेषता यह होगी कि जिनके लिए हम आयोजन करना चाहते हैं, उनके ही हाथों में आयोजन का अभिक्रम हम सौंप देंगे। फिलहाल सोखोदेवरा में चल रहे आयोग की ओर से क्षेत्र-आयोजन में हमारे दो कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। हम जल्दी ही क्षेत्र भर में दो तरह के आयोजन करना चाहते हैं। पहला होगा, ग्राम-स्वावलंबी गाँवों के समग्र विकास का और दूसरा होगा क्षेत्र भर में फैले हुए सूतकार और बुनकर परिवारों का वस्त्र-स्वावलंबन की दृष्टि से, कपास की खेती से वस्त्र-निर्माण की सभी प्रक्रियाओं का।

तात्कालिक समस्याएँ और उनके समाधान

ग्राम-स्वावलंबन के द्वारा ग्राम-स्वराज्य का चित्र खड़ा करने के प्रयोग में जहाँ बिना बुद्धिभेद के सभी तरह के लोगों के सहयोग की हम आकांक्षा रखते हैं, हम कह सकते हैं कि हमारी अपेक्षा से अधिक ही हमारी आकांक्षा की पूर्ति स्थानीय सहयोग से हुई है। हमने यह माना है कि ग्राम स्वावलंबन का काम करते हुए जिन गाँवों की हम सेवा करते हैं, उन गाँवों में आकस्मिक विपत्ति, जैसे बाढ़, आग लगना, डाकेजनी, झगड़े आदि मौके पर उनकी सहायता करना और उपस्थित किसी वर्ग, समुदाय या व्यक्ति विशेष के द्वारा किये गये जुल्मों का अहिंसात्मक प्रतिकार कर गाँव की जनशक्ति को प्रशिक्षित कर उसे जागरूक बनाना होगा। चुनाव आदि के समय भी निष्पक्ष रह कर ग्रामीणों को उचित सलाह देना होगा, जिससे ग्राम में भेद-बुद्धि पैदा नहीं हो और ग्रामशक्ति कमजोर नहीं होने पाये।

गया जिला सर्वोदय-सम्मेलन, अरवल में स्वीकृत पंचविध कार्यक्रम में निर्विरोध चुनाव का जिक्र विशेष रूप से आया है। अभी-अभी वारसलीगंज क्षेत्र के ७ ग्राम-पंचायतों के चुनाव संपन्न हुए हैं। हमारे पास समय और शक्ति की कमी जरूर थी, फिर भी ग्राम-पंचायतों के चुनाव के अवसर पर अपना अभिमत प्रकट करने के लिए ग्राम-पंचायतों के मनोनयन के अवसर पर २१ मार्च को अंचल-कार्यालय के समक्ष हम करीब ५० कार्यकर्ताओं ने निर्विरोध चुनाव के लिए दिन भर का प्रदर्शन कर समस्त क्षेत्र के लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। प्रदर्शन के अतिरिक्त चुनाव-क्षेत्रों के उम्मीदवारों से और मतदाताओं से मिल कर भी निर्विरोध चुनाव से होने वाले लाभों से उन्हें अवगत कराया। हमने देखा कि क्षेत्र के प्रमुख समाज-सेवी भी निर्विरोध चुनाव के प्रयत्न में संलग्न थे। फलस्वरूप मंजौर और कोचगाँव पंचायतों के चुनाव निर्विरोध हुए। निस्संदेह यह सफलता स्थानीय समाजसेवी महानुभावों की है। हमने तो उन्हें थोड़ा-सा बल पहुँचाया।

कृषि का विशेष स्थान

कुछ ही दिनों के काम के अनुभव से हमने देखा है कि गाँव में खादी और दूसरे उद्योगों को बढ़ावा देने की बात हम करते हैं, परन्तु कृषि-कार्य का हमारे कार्यक्रम में स्थान नहीं होने के कारण आम ग्रामीणों का रुझान जल्दी इधर नहीं हो पाता। एतदर्थ ग्राम-स्वावलंबी गाँवों में से कुछेक गाँव में संतुलित, सहयोगी कृषि का प्रयोग कर उत्तम खाद, उत्तम बीज और सुधरे औजार से उत्पादन-क्षमता बढ़ाने का प्रयत्न करना ठीक होगा। एतदर्थ कुछ नवयुवकों को कृषि-कार्य का आवश्यक प्रशिक्षण दिला कर इस कार्यक्रम को मुख्य स्थान देने की हमारी कोशिश रहेगी।

जन-सम्मति

पहले हमारी कल्पना थी कि जिन गाँवों में ८० प्रतिशत लोग ग्राम-संकल्प करेंगे ५० प्रतिशत घरों में सर्वोदय-पात्र होंगे उन्हीं गाँवों में हम कार्यारम्भ करेंगे। अनुभव से सीखा कि इसे बदलना होगा। हमारा आग्रह इस संबंध में बहुत नहीं हो। सिर्फ उचित दिशा में प्रयत्न होता रहे, तो हमें एक दिन जनता के द्वारा ही आग्रह प्रकट होते देखने को देर नहीं लगेगी। आज यहाँ के तीन गाँवों में घर घर सर्वोदय-पात्र तीन महीने से सतत चल रहे हैं और सामूहिक पुरुषार्थ की बात इन्हें सूझने लग गई है। यही हमारे कार्य की सच्ची जन-सम्मति है, हमारी राय है कि गाँवों में सेवा-कार्य करते हुए घर-घर से ऐसी जन-सम्मति प्राप्ति का हमारा प्रयत्न रहा तो, भविष्य में जनता ही स्वयं सारा कार्य-भार उठायेगी। ● ●

सर्वोदय-पात्र

उत्तर गुजरात के मेहसाना जिले का पीलोज गाँव व्यापार का केन्द्र है। तार, टेलीफोन, हाईस्कूल आदि आधुनिक सुविधाएँ वहाँ प्राप्त हैं। सन् १९५८ में विनोबा गुजरात में आये, उस समय वहाँ सर्वोदय-पात्र रखने का संकल्प हुआ था। शुरू में एक सौ पात्र से आरंभ हुआ। प्रार्थना सफाई आदि कार्यक्रम सर्वोदय मित्र-मण्डल द्वारा होते रहे। गाँव के अन्दरूनी झगड़े कोर्ट में न जायें, इसके लिए भी प्रयत्न किये जाते हैं और आज तक ऐसे चार 'केसेस' कोर्ट में जाते हुए रोकने में वे सफल हुए हैं। ज्यादातर लोगों का अनुभव है कि सर्वोदय-पात्र की स्थापना बड़ी उत्साह से और तेजी से होती है। पर उत्थापन भी इतनी ही तेजी से होता है। लेकिन पीलोज का अनुभव कुछ दूसरा ही है। स्थापना के बाद सर्वोदय-पात्रों की संख्या क्रमशः बढ़ती गई। २२५ तक पहुँच कर अब २०० पर स्थिर हुई है। अनाज नियमित ढंग से आता है और सर्वोदय मित्र मंडल स्नेह-सींचन का काम करता रहा है। ●

केरल की चिट्ठी

केरल भारत का वह छोटा-सा प्रदेश है, जहाँ विनोबाजी ने सर्वप्रथम शांति-सेना की स्थापना की और श्री केलप्पन तथा उनके अन्य साथियों ने इस शांति-सेना में अपना नाम दिया।

कण्णूर जिले में कासरगोड के नजदीक जब विनोबाजी की पदयात्रा हुई थी, तब कुछ ग्रामदान मिले थे। वहाँ के एक कार्यकर्ता श्री मेलेन नारायण नंबियार ने सरकार की मदद से अब १० हरिजन-परिवारों को नये मकान बना कर दिये हैं। पालघाट जिले के मंगलम् गाँव में गांधी-निधि का और खादी का काम देख कर खादी-कमीशन के स्वावलंबी विभाग के डाइरेक्टर श्री वैद्यनाथनजी खुश हुए हैं। ता० १३ जून को कोझिकोड में श्री राधाकृष्ण बजाज और श्री वल्लभस्वामी आये और उन्होंने भूदान-आंदोलन के बारे में कुछ चर्चा की।

ता० ४ जुलाई से श्री वैद्यनाथनजी, श्री धीरेन्द्रस्वामी, आर० श्री निवासन् और श्री दांडे जी केरल के विभिन्न ग्रामदानी

केलप्पन

गाँवों में घूमे और वहाँ की परिस्थिति समझने की उन्होंने कोशिश की।

ता० १४ जुलाई को त्रिवेंद्रम में केरल सर्वोदय-मंडल की एक बैठक बुलायी गयी, जिसमें खादी-कमीशन के विशिष्ट अतिथियों को भी आमंत्रित किया गया। यह आशा की जाती है कि ग्रामदानी गाँवों का निरीक्षण करने के बाद श्री वैद्यनाथनजी और श्री श्रीनिवासनजी केरल सर्वोदय-मंडल के सामने एक नया कार्यक्रम रखेंगे।

त्रिवेंद्रम के नजदीक 'विनोबा-निकेतन' मल्लयडी की हालत समझने और वहाँ की परिस्थिति को सुलझाने के लिए ता० १५ को श्री वल्लभस्वामीजी श्री केलप्पनजी के साथ वहाँ जायेंगे।

कॉलेजों के 'रागिंग'

पाठकों को शायद 'रागिंग' के बारे में मालूम नहीं होगा। आजकल कालेजों में—खासकर प्रोफेशनल कॉलेज-होस्टलों में और हाईस्कूल होस्टलों में भी—पुराने विद्यार्थियों द्वारा नये विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए परिचय बढ़ाने का एक कार्यक्रम है। समाज में मिलजुल कर रहने के लिए नये विद्यार्थियों को तैयार करना ही उस कार्यक्रम का उद्देश्य होता है। लेकिन आजकल उसके नाम पर कई तरह की अप्राकृतिक और कुसंस्कार की बातें चलती हैं। श्री केलप्पनजी को पिछले साल एक जूनियर मेडिकल विद्यार्थी ने अपना 'रागिंग' पूरा होने के बाद एक पत्र लिखा था, जिसमें उसने 'रागिंग' की सारी बातें विस्तार से लिखी थीं।

पिछले साल ही श्री केलप्पनजी ने उस खत की नकल यहाँ के मेडिकल कॉलेजों के प्राध्यापकों को भेजी थी। कुछ प्राध्यापकों का कहना है कि कॉलेज होस्टेलों में इससे भी ज्यादा बुरी बातें चलती हैं। एक प्राध्यापक ने कहा कि "हालत यहाँ तक पहुँच गयी है, यह मैं नहीं जानता था। अगले साल इसको रोकने की कोशिश करूँगा।"

श्री केलप्पनजी ने फिलहाल, उस विद्यार्थी के पत्र के आधार पर उस पत्र से कुछ अंश उद्धृत करके एक लेख लिखा था। उसके कारण कुछ सीनियर विद्यार्थियों में जरा नाराजी फैल गयी। लेकिन आम जनता की आँखें खुलीं। जिन सभ्य विद्यार्थियों ने अपने कटु अनुभव अपने दिल में छिपा रखे थे, वे एक-एक करके पत्रों में छपने लगे। श्री केलप्पनजी का वह लेख केरल के करीब २० दैनिक अखबारों में छापा गया। कुछ अखबार वालों ने 'रागिंग' के विरुद्ध अग्रलेख भी लिखे। हाँ, एकाध अखबार में केलप्पनजी के खिलाफ भी लिखा गया था।

कुछ भी हो, उसका परिणाम अच्छा ही निकला। सरकार ने 'रागिंग' बन्द कर दी। अगर कॉलेज-होस्टेलों में गंदी 'रागिंग' होती हो, तो विद्यार्थियों को गिरफ्तार करके उचित कार्रवाई की जायेगी। कॉलेज के प्राध्यापकों को खास निर्देश भी दिया गया है। अन्य प्रान्तों में भी 'रागिंग' के नाम पर बहुत ही भद्दी और अप्राकृतिक बातें चलती होंगी, जिनको रोकना अत्यन्त आवश्यक है।

सर्वोदयपुरम् पोस्ट बेसिक स्कूल (उत्तर बुनियादी) का औपचारिक उद्घाटन श्री परमेश्वरन् पिल्लै, डी० ई० ओ०, ओट्टपालम् के द्वारा हुआ और श्री के० श्रीमन् नायर, जो करीब १२ साल से केवल नई तालीम का ही काम करते आये हैं, उस सभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि केरल में ही नहीं, बल्कि सभी प्रान्तों में नई तालीम नाम मात्र के लिए रह गयी है। अब श्री केलप्पनजी ने यहाँ उत्तर बुनियादी शाला शुरू की है। इसलिए हम आशा करते हैं कि यह शाला उत्तरोत्तर विकास करेगी।

—गोविन्दन्

ग्राम-परिवार का एक प्रयोग

काफी चर्चा हुई और आखिर उन्होंने उसे अपनाया। कोई भी कार्यकर्ता वहाँ नहीं गया था। लोगों ने ही सोच-विचार कर यह निर्णय लिया।

ग्राम-परिवार में जो लोग शामिल हुए हैं, उनमें से एक की जमीन थी ४३ एकड़। दूसरे एक भाई की थी २४ एकड़। छह परिवारों की हरएक की ९ एकड़ जमीन थी। दूसरे दो परिवारों के पास ४ और १॥ एकड़ जमीन थी। बाकी छह परिवार भूमिहीन थे। सारी जमीन इकट्ठी की गयी और सब लोग मिल कर खेती करें, यह तय हुआ। इन लोगों ने जानवर और खेती के औजार भी इकट्ठे किये। पहले हर परिवार में एक लड़का या लड़की जानवरों को सम्हालने के लिये रहती थी। अब वह सारा काम सिर्फ दो लोगों पर सौंपा गया, जो यह अच्छी तरह से कर रहे हैं। परिणाम यह हुआ कि आज तक जो कई लड़के-लड़कियाँ अपने-अपने दो-चार जानवर सम्हालते हुए दिन गुजारते थे, वे सब अब पाठशाला में जाने लगे। खेती के काम में ज्यादा लोग मिल गये। सामूहिक जीवन अपना कर गाँव का विकास चाहने वाले सौ लोगों का एक परिवार बना। देश के पंचवर्षीय योजना बनानेवाले इस फिक्र में पड़े हैं कि लोगों में अभिक्रम कैसे पैदा हो। वास्तव में लोगों में वह है ही, लेकिन आर्थिक और सामाजिक गुलामी के कारण वह दिखाई नहीं देता।

सारा आर्थिक व्यवहार सामूहिक किया गया। परिवार के लिए जो चीजें हमेशा लगती हैं वे सप्ताह में एक बार सबके लिए एक साथ खरीदी जाती हैं। पहले हर परिवार में से एक आदमी सप्ताह में एक बार एक दिन बाजार जाता था। अब वह चिंता नहीं होती है। एक-दो आदमी वह काम करने के लिए काफी होते हैं, बाकी सारे खेतों में काम करते रहते हैं। सारे लोग कमर कस कर काम करते हैं। अपनी राह पर यशस्वी होने का लक्ष्य है। सफेद कपड़े पहनने वाले कुछ बाबू लोग भी खेती के काम में जुट जाते हैं।

लेकिन परिवार के पास अनाज तो बहुत कम था। गत साल हमेशा यह डर रहा कि ठीक खेती के मौसम में वह शायद खतम हो जाय। साहूकार तो कर्ज देने को राजी नहीं थे, क्योंकि वे तो राह ही देख रहे थे कि परिवार कब खतम हो। लेकिन परिवार के इन लोगों का प्रयास देख कर एक संपत्तिदाता ने अनाज खरीदने के लिये ५००रु० दे दिये, जिससे सब लोगों को अनाज मिल सका। खेती का उत्पादन भी उस साल डेढ़ गुना हुआ।

गाँव की खेती बस्ती से कुछ दूरी पर है। आने-जाने में बहुत समय लगता था। और एक परिवार तो बना, लेकिन सब लोगों में एकात्मता की भावना का बढ़ना जरूरी था। इसीलिए खेती के पास ही एक कच्चा मकान बाँधा गया। परिवार के सब लोग वहाँ दो महीने तक रहें, यह तय हुआ। सबके लिये एक ही रसोई-घर था। काम का बँटवारा हुआ। सब सामान, बच्चों के खिलौने, एक भंडार में रखे गये। रसोई कौन करे, बच्चों की देखभाल कौन करे, खेतों पर कितने आदमी-औरतें जायें, यह सब तय हुआ।

सामूहिक जीवन का एक प्रयोग वहाँ चल रहा था। और यह सब करता था, हर-एक के गुणदोष ध्यान में लेकर। जब हम आज का खंडित सामाजिक जीवन देखते हैं, तो इस प्रयोग का महत्त्व ध्यान में आता है। सब लोगों की यथाशक्ति अधिक-से-अधिक कैसे काम में लगे, इसका भी यह एक प्रयोग था। उस समय वह मकान ग्राम-उद्योग का एक केन्द्र बना। खेत में गन्ने पैदा किये गये। नदी को बाँध कर उसके पानी पर चावल की खेती की गयी। इस प्रयोग के बाद लोगों का आत्मविश्वास काफी बढ़ा।

वर्षा में सब लोगों को खेती में काम मिलता है। लेकिन उसके बाद खेत में कुछ काम नहीं होता। कई लोग जंगल में रोजी कमाने के लिये जाते हैं। लेकिन अपनी कमाई वे परिवार के खाते में जमा कर देते हैं। परिवार का एक सदस्य बम्बई में काम करता है, वह भी हर माह ३१ रु० परिवार के नाम भेजता है। परिवार में पहले दो आदमी शराबी थे, लेकिन अब उनका व्यसन छूट गया है। प्रसव के बाद औरतों को कुछ दिन काम से छुट्टी दी जाती है।

सामूहिक जीवन में सब लोगों को समाधान है। उसके फायदे वे महसूस करने लगे हैं। परिवार की 'श्री ग्राम-कल्याण सोसायटी (रजिस्टर्ड)' बनी है। खेती और उद्योग की उनकी एक पंचवर्षीय योजना कुछ अर्थशास्त्रियों की मदद से गोखले संस्था ने हाल ही में बनायी है। अम्बर चरखा और प्रौढ़ शिक्षा का काम पहले ही शुरू हुआ है।

महाराष्ट्र ग्रामदान नवनिर्माण-समिति

—गोविंद शिंदे

सिल्यारा-आश्रम

पर्वतराज हिमालय की गोद में बसे हुए टेहरी जिले में गगन-चुम्बी शिखरों के बीच लगभग साढ़े चार हजार फुट की ऊँचाई पर एक गांव है—"सिल्यारा।" इसी गांव में एक आश्रम है—"पर्वतीय नवजीवन मंडल।" इसी आश्रम में मुझे सर्वोदय-विचारधारा के क्रियात्मक स्वरूप का दर्शन मिला। इस आश्रम के भाई-बहन गांव वालों के साथ समरस हो गये हैं—इतने कि आश्रमवासियों एवं ग्रामवासियों का जीवन परस्पर में घुलमिल गया है। सभी की दिनचर्या एक दूसरे के लिए है—सभी परस्परावलम्बी हैं। परिश्रम के स्वेद-बिन्दुओं में आत्मा की पवित्र मुस्कान उनकी पुण्यार्थी मुखाकृतियों पर मैंने देखी है।

ब्राह्मवेला में जागरण, सामूहिक प्रार्थना, दिन भर के कार्यक्रम का निश्चय और उसी कार्यक्रम के अनुसार आचार। अपने निश्चित समय पर जलपान, श्रम, भोजन, अध्ययन, ग्राम-सम्पर्क और विश्राम, यही तो प्रतिदिन की दिनचर्या है उनकी।

चीड़ के ऊँचे वृक्षों के बीच आश्रम की जगह बड़ी सुहावनी है। वातावरण सजीव है—लगता है, प्रकृति का अप्रतिम सौंदर्य विधाता ने यहीं सँजो रखा है। एक क्षण भी न रुकने वाली शीतल वायु मन को सदैव नवजीवन देती रहती है। समीप ही एक छोटी-सी पहाड़ी पर से निर्मल जल का स्रोत निरन्तर प्रवाहित होता रहता है और इसी स्रोत के जल का उपयोग पीने तथा सिंचाई के लिए किया जाता है। उद्योगशाला, वाचनालय तथा छोटी लड़कियों की बुनियादी तालीम की व्यवस्था भी प्रशंसनीय है।

इस आश्रम में श्री सुंदरलालजी और उनकी पत्नी ने मिल कर जिस प्रकार का सात्विक और सौजन्यपूर्ण वातावरण का निर्माण किया है, वह प्रभावोत्पादक है। बहुगुणाजी की पत्नी, विमला देवी और एक और बहन एक दिन किसी किसान के खेत में धान की रोपाई करने जा रही थीं। मन में उत्सुकता जागी। पूछा—किसीने बुलाया है या अपनी ओर से ही जा रही है? मजदूरी भी मिलेगी क्या?

उत्तर मिला—हम लोग बिना बुलाये ही किसीके भी खेत में, जहाँ रोपाई आदि चल रही होती है, वहाँ काम करने चली जाती हैं। हम लोग मजदूरी की आशा से नहीं, बल्कि काम में हाथ बँटाने के उद्देश्य से ही जाती हैं, क्योंकि ग्राम-सम्पर्क बढ़ाने का यही सबसे उत्तम उपाय है।

मैंने पूछा—तब आप लोगों का निर्वाह कैसे होता है?

उत्तर मिला—हर साल हर किसान से लगभग दो सेर अन्न मिल जाता है। अगर हम किसी किसान के घर से अन्न लेना भूल जाते हैं, तो उस घर का स्वामी प्रेम भरे उलाहने के साथ आश्रम में अन्न पहुँचा जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ कपड़ों की सिलाई के काम से और बहुगुणाजी के लेखों के पारिश्रमिक से भी सहायता मिल जाती है।

यह सब बातें जान कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यह आश्रम जनाधारित है। "जनाधार" का वास्तविक रूप मुझे इस आश्रम में देखने को मिला।

—बद्री विशालदीक्षित

गया नगरपालिका का चुनाव

आज की चुनाव-पद्धति से जातिवाद, अनैतिकता, भ्रष्टाचार आदि समाज-विरोधी तत्त्वों को प्रोत्साहन मिला है, क्योंकि चुनाव का जोर भेद पर और चाहे जिस तरीके से विजय हासिल करने पर ही होता है। चुनाव चाहे ग्राम-पंचायत का हो, सहकारी समितियों का हो, या अन्य किसी का हो, उसकी पद्धति में बदल करना आवश्यक है। यह आवश्यक है कि हर प्रकार के चुनाव में निर्विरोध चुनाव-पद्धति लागू की जाये और इस विचार के अनुकूल जन-मानस हम तैयार करें।

श्री जयप्रकाशजी ने गया जिले की पिछली यात्रा के अवसर पर यह विचार दिया था कि गया में नगरपालिका का चुनाव निर्विरोध होना चाहिये। इस विचार के आधार पर निर्विरोध चुनाव के लिए गया नगर में काम चल रहा है। नगर के विश्वास-पात्र योग्य व्यक्तियों की एक 'नगर निर्विरोध चुनाव-समिति' का गठन किया गया है। जो सदस्य इस समिति में रहेंगे, उनके लिए एक मुख्य शर्त यह है कि वे स्वयं किसी वार्ड से खड़े नहीं होंगे। इस 'नगर निर्विरोध चुनाव-समिति' की ओर से प्रत्येक वार्ड में सभाएँ की जा रही हैं, और वार्डों में भी 'वार्ड निर्विरोध चुनाव-समिति' का निर्माण किया जा रहा है। इस समिति में ऐसे व्यक्ति लिये जाते हैं, जो इस विचार को पसन्द करते हैं तथा इस विचार के प्रचार में अपना समय देना चाहते हैं। इस समिति का मुख्य काम है कि प्रत्येक मोहल्ले में सभा करें और निर्विरोध चुनाव के लिए जनमानस तैयार करें। वार्ड-समिति कोई प्रतिनिधि समिति नहीं है, बल्कि काम करने वाले कार्यकर्ताओं की एक जमात है। इस समिति के सदस्यों को जनता खड़ा कर सकती है। इस प्रकार की समितियाँ प्रत्येक वार्ड में बन चुकी हैं। इस ढंग का कार्य पहली बार हुआ है। इसलिए सब प्रकार के वर्गों में काफी चर्चा है।

जन मानस तैयार होने पर छोटे-छोटे मोहल्लों में हम प्रतिनिधियों के चुनाव के लिए सभा बुलायेंगे। हर सभा से दो-चार व्यक्तियों के नाम उम्मीदवारों के तौर पर आ सकते हैं। इस प्रकार पूरे वार्ड से ५० व्यक्तियों के नाम आ सकते हैं। इन सब व्यक्तियों की सभा करेंगे। उनको समझायेंगे। इस प्रकार उनमें से कुछ लोग हट जा सकते हैं। उसके बाद जो भी व्यक्ति रहेंगे, उनमें निर्धारित स्थानों के लिए प्रतिनिधि चुनने के लिए या तो पाँच व्यक्तियों पर फैसला छोड़ दिया जाय, या गोटी (लॉटरी) के द्वारा निर्वाचन हो, यह पद्धति उन वार्डों में अपनायेंगे, जिनमें जनता का सक्रिय समर्थन हो। इन सब प्रयासों के बाद भी कोई व्यक्ति खड़ा होता है, तो ऐसा अन्दाज है कि जनता स्वयं ही उसे वोट नहीं देगी।

आज तक जितनी भी बैठकें हुईं तथा व्यक्तिगत चर्चाएँ हुईं, उनमें कभी किसी व्यक्ति ने इस विचार को गलत नहीं कहा है। कठिन अवश्य बताते हैं। कुल मिला कर नगर में इस विचार के अनुकूल वातावरण बन रहा है।

जिला सर्वोदय मंडल,
बुनियादगंज, गया

—दिवाकर

श्री राधाकृष्णजी का उपवास

सर्व सेवा संघ प्रकाशन विभाग, काशी के मंत्री, श्री राधाकृष्णजी बजाज ने ता० ४ जुलाई '६० से १७ जुलाई '६० तक, १४ दिन का उपवास किया। ता० १८ को उपवास की समाप्ति हुई। इस उपवास का निश्चय उन्होंने गत मई मास में ही किया था और विनोबाजी से स्वीकृति भी प्राप्त हो गयी थी। श्री राधाकृष्णजी इधर बहुत समय से अनुभव कर रहे थे कि जीवन परिवर्तन तथा आत्मशुद्धि के लिए उपवास करना जरूरी है। उनके ऊपर सर्व सेवा संघ, ग्राम-सेवा मंडल, महिलाश्रम आदि अनेक संस्थाओं की इतनी जिम्मेदारियाँ रही हैं कि वे अपने आपको व्यस्तता में डूबा हुआ महसूस करते थे। शारीरिक और मानसिक थकान भी महसूस करने लगे थे। ४ जुलाई को श्री राधाकृष्णजी को ५५ वर्ष पूरे हुए। यों तो श्री राधाकृष्णजी का जीवन अधिकाधिक सेवारत ही रहा है। गृहस्थी और घर के काम-धंधे के बारे में उन्होंने कभी चिंता नहीं की। फिर भी उनको ऐसा लगा कि जब उनको ५५ वर्ष पूरे हो रहे हैं, तो यह मौका है कि अगले जीवन पर कुछ चिंतन हो।

श्री राधाकृष्णजी का उपवास परम-धाम आश्रम, पवनार में सम्पन्न हुआ है। श्री बालकोबाजी ने उरली से प्राकृतिक उपचार के जानकार श्री अगमप्रसादजी को उनके पास वर्धा भेज दिया था। उपवास-काल में राधाकृष्णजी का वजन १४ पौंड घट गया है। राधाकृष्णजी की प्रकृति कुछ ऐसी रही है कि उनके लिए दो-तीन दिन का उपवास करना भी कठिन होता है। लेकिन स्नेही जनों तथा गुरुजनों के आशीर्वाद से यह उपवास निर्विघ्न समाप्त हुआ, यह हर्ष की बात है।

वाराणसी नगर सर्वोदय-अभियान पदयात्रा

ता० १० जुलाई को वाराणसी शहर में जो सर्वोदय अभियान आरम्भ हुआ था, उसका कार्य प्रगति पर है। औसत एक सौ व्यक्ति प्रायः पदयात्रा में शामिल रहते हैं। यह पदयात्रा प्रातःकाल साढ़े छह बजे से आठ बजे तक चलती है। गली-गली में सर्वोदय-गीत और नारों के साथ यह पदयात्रा जुलूस के रूप में परिक्रमा करती है।

लगभग १५-२० कार्यकर्ता स्थायी रूप से पूरे दिन मुहल्ले में रहते हैं और जन-सम्पर्क, साहित्य-प्रचार आदि करते हैं। शराबबंदी और 'स्वच्छ काशी', ये दो विचार प्रमुखतः सबको समझाये जाते हैं।

श्री करण भाई के नेतृत्व में यह पदयात्रा नियमित रूप से चल रही है।

ता० २१ जुलाई को श्री जयप्रकाशजी पदयात्रा में शामिल हुए। उन्होंने गलियों और सड़कों पर घूमते हुए पदयात्रा की। स्थान-स्थान पर उनका अभिवादन और स्वागत करने के लिए लोग उत्सुकता से खड़े रहते थे। इसी दिन सायंकाल श्री जे० पी० ने टाउनहाल की सार्वजनिक सभा में सर्वोदय-अभियान के बारे में भाषण किया।

ता० २३ और २४ जुलाई को उ० प्र० के स्वायत्त शासनमंत्री श्री विचित्र भाई पदयात्रा में शामिल हुए। श्री विचित्र भाई ने काशी को सर्वोदय-नगरी बनाने के व्यावहारिक पहलुओं पर दिलचस्पी से विचार किया और 'स्वच्छ काशी' तथा शराबबंदी की कठिनाइयों को दूर करने के संबंध में अपने विचार रखे। यह पदयात्रा ११ सितम्बर तक चलेगी।

दैनंदिनी : सन् १९६१

सन् '६१ की दैनंदिनी के संबंध में हम पाठकों का ध्यान पहले आकर्षित कर चुके हैं। इस बारे में जो सज्जन अपने सुझाव भेजना चाहते हैं, वे यथाशीघ्र भेज दें।

—अखिल भारत सर्व सेवा संघ [illegible]

भूदान-यज्ञ रजिस्टर्ड नंबर ए. ३५४ [पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त, लायसेन्स नं० ए. ३४] २९ जुलाई, '६०

विकेंद्रित अर्थ-व्यवस्था परिसंवाद

सर्व सेवा संघ की ओर से आयोजित विकेंद्रित अर्थ-व्यवस्था के विषय पर एक परिसंवाद ता० १७ जुलाई से २३ जुलाई तक साधना-केंद्र, काशी में श्री शंकरराव देव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। परिसंवाद में सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, दादा धर्माधिकारी, अण्णा सहस्रबुद्धे, वल्लभ पटवर्धन, सिद्धराज ढड्ढा, विमला बहन, लक्ष्मीचंद जैन, आर० के० पाटिल, ठाकुरदास बंग, पूर्णचन्द्र जैन, झवेरभाई पटेल, जवाहिरलाल जैन तथा खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड की सघन-क्षेत्र योजना के कार्यकर्ता श्री नाडकर्णी, दीक्षित व स्वामी इत्यादि ने भाग लिया। जीवन के जिन सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, नैतिक आदि मूल्यों की रक्षा के लिए विकेंद्रित अर्थ-व्यवस्था आवश्यक है, उन पर प्रारंभिक चर्चा होने के बाद परिसंवाद में विकेंद्रित रचना के विभिन्न व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा हुई। विकेंद्रित अर्थ-रचना के लिए ग्राम संकल्प के जरिये प्रगट होने वाली लोक शक्ति के अलावा मौजूदा परिस्थिति में शासन की ओर से क्या-क्या होना चाहिए, ऐसी रचना में उत्पादन के साधन की मालकियत का क्या चित्र रहेगा, आर्थिक रचना से ग्राम-पंचायत, पंचायत-समिति आदि इकाइयों का किस प्रकार का संबंध होगा, स्थानीय आवश्यकता-पूर्ति के आधार पर बनी हुई क्षेत्रीय योजनाओं का राष्ट्रीय योजनाओं के साथ किस प्रकार समन्वय होगा, यंत्रों में सुधार की क्या दिशा होनी चाहिए और बिजली-शक्ति का उपयोग विकेंद्रित उद्योगों में किस आधार पर होना चाहिए, इत्यादि प्रश्नों पर परिसंवाद में गहराई से चर्चा हुई। इन चर्चाओं का सार आगामी माह इंदौर में होने वाली सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति की बैठक में पेश किया जायगा और परिसंवाद की सिफारिशों पर बैठक में चर्चा होगी।

परिसंवाद का समारोप करते हुए श्री शंकररावजी ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि यह शायद पहला मौका था, जब सर्व सेवा संघ के तत्त्वावधान में किसी निर्धारित विषय पर एकसाथ सात दिन तक गहराई के साथ विचार-विनिमय और चर्चा हुई। सर्वोदय का उद्देश्य समाज में एक ऐसा बुनियादी परिवर्तन लाने का है, जिससे नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की रक्षा के साथ शोषण, विषमता, बेकारी, गरीबी आदि का अंत हो सके और समाज सुखी व समृद्ध हो।

श्री शंकररावजी ने कहा कि इस काम के लिए जहाँ विचारों की सफाई और उनका प्रकाशन आवश्यक है, वहाँ उन विचारों के आधार पर समाज में ऐसा आंदोलन पैदा करना भी जरूरी है, जिससे वे विचार अमल में लाये जा सकें। श्री शंकररावजी ने यह भी आशा प्रकट की कि जिस तरह सर्व सेवा संघ के विचार का क्षेत्र व्यापक बना है, उसी प्रकार उसकी कार्य-पद्धति और कार्य का स्वरूप भी व्यापक बनेगा, ताकि विकेंद्रित अर्थ-रचना के क्षेत्र में काम करने वाले विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं के साथ उसका संपर्क बढ़े और सब मिल-जुल कर योजनापूर्वक एक उद्देश्य की ओर बढ़ सकें।

हम सब भारतवासी एक परिवार के हैं

सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल ता० १६ की रात को बिना किसी शर्त के वापस ले ली गयी। आशा थी कि हड़ताल वापस ले लिये जाने के बाद कर्मचारियों के साथ उदारता का व्यवहार सरकार की ओर से होगा। परन्तु हम देखते हैं कि इससे कुछ उल्टा ही हो रहा है। कहीं-कहीं तो जुर्माना वसूल करने की धुन में घर का सामान और बर्तन भी लिये जा रहे हैं। एक बात स्पष्ट है कि कर्मचारियों ने जो हड़ताल की, वह उचित हो या अनुचित, व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए वह नहीं थी। जिन कर्मचारियों ने हड़ताल की, उनकी स्थिति का अगर विश्लेषण करें, तो उसमें कई प्रकार हम पाते हैं। एक तो वे हैं, जो हड़ताल में शरीक हुए ही नहीं। इनके बारे में तो कुछ कहना है नहीं। दूसरे वे, जिन्होंने हड़ताल में हिस्सा लिया। इनमें भी कई किस्म के हो जाते हैं। मोटे तौर से वे ये हैं –

१– वे जो दो दिन बाद काम पर लौट आये।

२– वे जो पाँचों दिन काम पर न आये और हड़ताल वापसी पर काम पर लौटे।

३– वे जो गिरफ्तार कर लिये गये और जेल भेजे गये।

४– वे जिन पर अगुआ होने के कारण मुकदमे चलाये गये और सजा दी गयी।

५– वे जिन्होंने तोड़-फोड़ की और देश की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया, जिसके लिए उन्हें सजा हुई या होगी।

उपर्युक्त श्रेणी १, २, ३ और ४ के बारे में होना यह चाहिए कि जो जितने दिन काम पर हाजिर नहीं रहा, केवल उतने दिन का वेतन कट जाये, ज्यादा कुछ नहीं। जिन्हें सजा हो गयी और जेल में हैं, उन्हें छोड़ दिया जाना चाहिए और सेवाएँ बहाल या 'कंटीन्यूड' समझी चाहिए। हड़ताल के कारण किसी को कोई नुकसान या दंड का शिकार न होना पड़े। अलबत्ता, अनुपस्थिति के दिनों का वेतन उन्हें भले न मिले।

अब रहे पाँचवीं श्रेणी के लोग। इस तोड़-फोड़ का जिम्मेवार उन्हें जरूर मानना चाहिए। लेकिन शायद पर्याप्त होना चाहिए कि वे तोड़-फोड़ से हुआ नुकसान खुद चुका दें। जितने दिन वे गैर-हाजिर रहे, उतने दिन का वेतन भी उनको न दिया जाय और उन्हें काम पर लौटने दिया जाय।

हड़ताल में शामिल होने वाली मजदूर-यूनियनों की मान्यता वापस ले लेना भी उचित नहीं है। हम मजदूर यूनियनों के आज के संगठन और स्वरूप के समर्थक व प्रशंसक नहीं हैं। उन्हें एक तरह से हानिकर भी समझते हैं, लेकिन वे तो यूनियन मात्र के बारे में हमारे विचार हैं। आज की जो स्थिति है, उसमें किसी तरह के मान्यता प्राप्त यूनियन को आगे मान्यता न देना न्यायपूर्ण नहीं होगा।

इसी तरह यह भी जरूरी है कि हड़ताल के पहले जो 'आर्डिनेंस' सरकार ने लागू किया था, उसे भी वापस ले ले। हड़ताल की समाप्ति के बाद उसकी कोई जरूरत नहीं रह जाती। हम यह चाहते हैं कि भारत के हम सभी निवासी एक सहयोगी परिवार की तरह रहें। आपस का स्नेह और विश्वास ही उसकी शक्ति है। अगर यह प्रेम टूटा और अविश्वास बढ़ा, तो परिवार सम्पन्न कैसे रहेगा? मन में दूर कभी भूल कर बुरा भाव न लायें। सरकार का फर्ज है कि हड़ताली कर्मचारियों के साथ न्याय और विश्वासपूर्वक पेश आये।

—सुरेशराम भाई

उत्तरप्रदेशीय सर्वोदय युवक-सम्मेलन

उत्तर प्रदेश के कुछ युवक कार्यकर्ताओं ने मिल कर प्रदेशीय सर्वोदय-सम्मेलन गोरखपुर में एक ढीलाढाला युवक-संगठन खड़ा किया। इस संगठन का नाम कोई संघ या मंडल न रख कर उत्तरप्रदेशीय सर्वोदय युवक सम्मेलन रखा गया। विचार यह था कि साल-छह महीने में युवक कार्यकर्ता मिलते रहेंगे और आन्दोलन में युवकों के योगदान पर सोचते-विचारते रहेंगे।

गोरखपुर-सम्मेलन के बाद से अब तक कुछ थोड़ा-बहुत काम इस सम्मेलन की ओर से चलता रहा। विद्यार्थियों में काम करने की ओर ही अधिक ध्यान रहा। आगरा में जब विनोबाजी आये थे, तब युवक सम्मेलन की एक बैठक हुई। उसमें सोचा गया कि युवक-साथियों को विचार-शिक्षण देने के लिए किसी सहअध्ययन शिविर का आयोजन होना चाहिए। उसी पृष्ठभूमि में ५ से २० जून तक पर्वतीय नवजीवन मंडल आश्रम, सिल्यारा (टिहरी) में नवयुवकों का एक शिविर सम्पन्न हुआ। भाई सुंदरलाल बहुगुणा के सौजन्य और प्रयत्न से ही इस शिविर का सम्यक् आयोजन हो सका।

शिविर चार भागों में बाँटा गया – बौद्धिक वर्ग, श्रम-कार्य, ग्राम-सम्पर्क और पदयात्रा। बौद्धिक वर्ग प्रातःकाल और सायंकाल बराबर चलते रहे। श्रम में भी सभी युवकों ने उत्साह से भाग लिया। इसी तरह ग्रामवासियों के पास जाने का कार्यक्रम भी चलता रहा। २० जून को शिविर समाप्त करने के बाद ९ साथी पदयात्रा पर निकले। १२ हजार फुट ऊँचाई तक हम लोग गये। गाँव में सम्पर्क करना और पहाड़ी लोगों में सर्वोदय विचार का प्रचार करना, यह कार्यक्रम ही मुख्य रूप से चलता था। इस तरह शिविर का कार्यक्रम बहुत ही उत्साहजनक और भविष्य के लिए आशादायक रहा। मन को ऐसा अनुभव हुआ कि हम साथियों को कभी-कभी इसी तरह साथ रहने का अवसर मिले।

–विजयशंकर टंडन

श्री भंसालीजी का उपवास समाप्त

ता० १५ जुलाई के "भूदान-यज्ञ" में श्री भंसालीजी के मर्यादित उपवास का समाचार छपा था। इस उपवास के निश्चय के पीछे श्री भंसालीजी के मन में एक बात यह भी थी कि सरकारी सर्व और राष्ट्र के नेताओं के वेतन इत्यादि का मेल देश की स्थिति से होना चाहिए। अभी हाल ही में राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू ने अपने वेतन में २५०० रुपये मासिक की कमी की है। अब आगे वे २५०० रुपया माहवार ही लेंगे। हमारे प्रधान-मंत्री श्री नेहरूजी पहले से ही २२५० रुपये से कुछ ही ऊपर वेतन ले रहे हैं। इन्कम टैक्स आदि काट कर दोनों का वास्तविक वेतन रुपये २००० मासिक के अंदर ही है। श्री राष्ट्रपतिजी द्वारा वेतन कम किये जाने की सूचना लेकर सेवाग्राम आश्रम के संचालक श्री [illegible] भाई भंसालीजी के पास गये। ९ जुलाई की शाम को ८ बजे श्री भंसालीजी ने अपना उपवास समाप्त कर दिया। अभी उनका स्वास्थ्य ठीक है।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४२८५
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,९३६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,४३६ एक प्रति १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी, शुक्रवार ५ अगस्त, '६० वर्ष ६ : अंक ४४

रेहन्द बाँध : एक तीर्थस्थान ?

कुछ दिन पहले भाखरा-नांगल बाँध की महिमा का वर्णन करते हुए पंडित जवाहरलालजी ने कहा था कि वह नये भारत का तीर्थ-स्थान है। उनके कहने का आशय यह था कि जगह-जगह नदियों को रोक कर जो विशाल बाँध बनाये जा रहे हैं, उनसे लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई होगी और लाखों किलोवाट बिजली-शक्ति भी पैदा होगी, जिससे देश की गरीबी दूर होगी, लोग खुशहाल होंगे। इसलिए ये बाँध हमारे लिए तीर्थ-स्थान जैसे ही हैं।

श्री विनोबा ने इस विचार के बारे में अपनी राय जाहिर करते हुए कहा था कि भाखरा-नांगल जैसी योजनाएँ तभी तीर्थ-स्थान हो सकेंगी, जब उनसे होने वाले लाभ में, सबसे पहला हिस्सेदार देश का सबसे गरीब व्यक्ति होगा।

उत्तर प्रदेश के मिरजापुर जिले में लगभग ४८ करोड़ की लागत से रेहन्द (रेणुका) नदी पर एक बड़ा बाँध बना है। इस साल बाँध करीब-करीब पूरा हो गया है और एक विशाल भूखण्ड उसके कारण जलमग्न हुआ है। बाँध की इस 'डूब' में छोटे-बड़े १०८ गाँव आये हैं। इन गाँवों में ८ हजार परिवार—करीब ४५ हजार लोग बसते थे। बाँध के कारण इन ४५ हजार लोगों को अपना घर-बार, जमीन सब छोड़ कर निकलना पड़ा है।

जब कोई इस तरह की बड़ी योजना बनती है, तो यह स्वाभाविक है कि उसके कारण से उस क्षेत्र में पहले से बसे हुए लोगों को वहाँ से हटना पड़ता है। पीढ़ियों से बसे हुए अपने घरबार और [illegible] छोड़ कर जाना अपने-आप में एक मानसिक-व्यथा का कारण बन जाता है, लेकिन उसका तो कोई इलाज नहीं होता। पर यह आवश्यक है कि ऐसी योजना के कारण विस्थापित होने वाले लोगों के पुनर्वास की पूरी योजना पहले से सोच ली जाय और सहृदयतापूर्वक उसको क्रियान्वित किया जाय। पुनर्वास की योजना और उसमें होने वाला सारा खर्च इस प्रकार की बाँध-योजनाओं का एक अंग जरूर माना जाता है, पर [illegible] जब कि बाँध के निर्माण कार्य की दुनिया भर तारीफ [illegible] और [illegible] योजना के [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] पर उन [illegible] के [illegible] [illegible] से बसने

हुए घर-बार छोड़ कर जाने वाले लोगों की व्यवस्था ठीक से हुई है या नहीं, इस बात की ओर शायद ही किसी का ध्यान जाता हो। यह सही है कि बाँध तैयार हो जाने पर आगे आने वाली पीढ़ियों को काफी फायदा होगा, पर आज इन योजनाओं के कारण जिनको तकलीफ भुगतनी पड़े, उनकी चिन्ता करना सबसे पहला कर्तव्य होना चाहिए।

अक्सर ऐसा होता है कि इन बाँध योजनाओं की 'डूब' में जो जमीन-जायदाद आदि आती है, उसका मुआवजा बहुत कंजूसी के साथ लगाया जाता है। पीढ़ियों से बसे हुए लोगों को अपने घरबार छोड़ कर जाने में जो मानसिक क्लेश होता है, उसका तो कोई मुआवजा नहीं हो सकता। पर मानवता का तकाजा है कि ऐसे मौकों पर हिसाब थोड़ी उदारता से लगाया जाय, ताकि घरबार छोड़ कर जाने वालों के उस मानसिक संताप में नई जगह जाकर बसने की कठिनाई का दुःख और न जुड़े। यह सही है कि आजकल लोगों की मनोवृत्ति इस तरह की बन गयी है कि जितना दिया जाय, उस पर भी संतोष नहीं होता तथा और अधिक पाने की माँग बनी रहती है। विरोधी राजनैतिक पार्टियों के लोग भी अक्सर ऐसी चीजों का फायदा उठाते हैं। पर अधिकतर अनुभव यही आता है कि मुआवजा नई जगह बसने के लिए बिलकुल अपर्याप्त साबित होता है और लोगों को काफी दुःख भुगतना पड़ता है।

यह मानवीय दृष्टि का प्रश्न है !

मिरजापुर जिले के इस रेहन्द बाँध को ही आप लें। इस बाँध के नीचे जो जमीन आयी है, उसका मुआवजा मालगुजारी के कुछ गुना के हिसाब से साढ़े सात रुपया बीघे से लगाकर ३० और ६० रुपया बीघे तक दिया जा रहा है, जब कि उस क्षेत्र में आज जमीन की कीमत ७-८ सौ रुपया बीघा बतलायी जाती है। पड़ोसी राज्य बिहार में रेलवे-विभाग की ओर से अभी कुछ जमीन ली गयी, उसका मुआवजा ९०० से लगा कर १५०० रुपया प्रति बीघा तक दिया गया है। घरों के लिए भी जो मुआवजे रेहन्द बाँध-योजना में दिये गये हैं, वे बिल्कुल ही अपर्याप्त हैं, ऐसा आम तौर पर लोगों का कहना है।

पर अपर्याप्त मुआवजे से ज्यादा गम्भीर बात उन लोगों की दर्दभरी हालत की है, जिनके पास उस क्षेत्र में पहले कोई जमीन नहीं थी और जो एक तरह से अकिंचन थे। रेहन्द बाँध की 'डूब' के कारण जो ८ हजार परिवार उखड़े हैं, उनमें करीब २ हजार परिवार ऐसे हैं, जो भूमिहीन थे, जिनके पास अपनी कोई जमीन-जायदाद नहीं थी और जो दूसरों की जमीन पर मजदूरी करके अपना पेट पालते थे। जिन लोगों की जमीन पर ये भूमिहीन मजदूरी करते थे, उन लोगों को भी पुनर्वास की योजना में ऊपर बताये गये अपर्याप्त मुआवजे के अलावा परिवार पीछे सिर्फ ५ या ६ एकड़ जमीन मिली है। इसलिए उस जमीन को बाहन के लिए मजदूर रखने का सवाल भी नहीं उठता। लोग भी सब तितर बितर हो गये हैं, इसलिए २२ हजार परिवार एक तरह से बिलकुल निराधार हो गये हैं। पहले से ये लोग गरीब थे ही, जो कुछ मामूली घरबार था, वह भी जहाँ का तहाँ रह गया। घर का मुआवजा इतना कम मिला कि दूसरी जगह नया घर बना लेना भी मुश्किल है और आजीविका का जरिया भी छिन गया। अगर यह कहा जाय तो अनुचित नहीं होगा कि ये २ हजार परिवार कुछ चंद दिनों के लिए 'दर दर के भिखारी' हो गये हैं। कहा जाता है कि न्याय अंधा होता है! उसके आँखें तो होती ही नहीं, हृदय भी नहीं होता। सरकार का जवाब है कि जिन लोगों के पास जमीन थी उन्हीं को मुआवजा मिल सकता था, जिनके पास कुछ नहीं था, उन्हें मुआवजा क्या मिलता? बात एक तरह से सही है, पर अगर भाखरा और रेहन्द जैसे बाँध हमारे लिए तीर्थस्थान बनने वाले हैं, तो हमें ज्यादा मानवीय दृष्टि से इन सब प्रश्नों को सोचना चाहिए। जिसके पास पहले भी कुछ नहीं था, जो मजदूरी का थोड़ा-बहुत सहारा था, वह भी जिसका छिन गया, उसको शायद मुआवजा सबसे ज्यादा मिलना चाहिए। जहाँ लगभग ५० करोड़ की योजना थी, वहाँ अगर १०-२० लाख रुपया योजना के कारण उखड़ने वाले बेजमीनों और गरीबों के पुनर्वास के लिए रखा जाता, तो बेजा नहीं था।

सबसे ज्यादा दुःख की बात तो यह है कि यह सारी परिस्थिति उत्तर प्रदेश सरकार के ऊँचे से-ऊँचे तबका के सामने रख दिये जाने पर भी अभी तक इन भूमिहीनों की कोई सुनवाई नहीं हुई। हमारे एक सम्माननीय साथी और उत्तर प्रदेश के सर्वोदय कार्यकर्ता के शब्दों में इस मामले में सरकार की ओर से "क्रिमिनल नेगलीजेंस"—अपराधयुक्त लापरवाही—बरती गयी है। जिन्होंने भी रेहन्द बाँध की 'डूब' से उखड़ कर जाने वाले गोद में बच्चा और सिर-कंधों पर सामान लादे हुए दुःखी और गरीब लोगों के झुंड के झुंड देखे हैं, वे बिना आँखों में आँसू लाये, उसका वर्णन नहीं कर सके हैं। कहने का मतलब यह नहीं है कि यह सब कुछ जान-बूझ कर हुआ है, पर इतना अवश्य है कि इस मामले को ओर से अत्यधिक लापरवाही और हृदय-हीनता का परिचय दिया गया है। अगर पहले से पुनर्वास की सारी योजना पर ध्यान दिया जाता, उसके लिए पर्याप्त खर्च की गुंजाइश रखी जाती और उस काम को व्यवस्थित की जाती, तो हजारों [illegible] को होने वाली यह अकारण परेशानी और तकलीफ टाली जा सकती थी। हम भी चाहते हैं कि हमारे देश में नये तीर्थस्थान बनें, पर उन तीर्थ-स्थानों का बनाना मानव की अवहेलना न हो। माननीय प्रधान मंत्री श्री नेहरूजी सन् १९५८ में जब इस क्षेत्र में गये और जब उनके सामने रेणुका सागर की 'डूब' में आने वाले किसानों के पुनर्वास का सवाल पेश किया गया, तो उन्होंने कहा था कि "इस महान निर्माण-कार्य में जो लोग त्याग करेंगे (अर्थात् जिनको यहाँ से हटना पड़ेगा, उन विस्थापितों को) पहले से जिस स्थिति में वे हैं, उससे अच्छी स्थिति में बसाया जायगा।" देर तो काफी हो चुकी है पर अभी भी इस आश्वासन को पूरा करने का [illegible] समय बचा है। आशा है, उत्तर-प्रदेश की सरकार इस ओर [illegible] ध्यान देगी।

—सिद्धराज ढड्ढा

इस अंक में

पाठकों की ओर से

मर्यादा का अतिक्रमण

दिल्ली से निकलने वाली हिन्दी मासिक पत्रिका 'सरिता' के जुलाई १९६० के अंक में सम्पादकीय टिप्पणियों के अंतर्गत लिखा है :

"आचार्य विनोबा भावे अपने आपको गांधीजी का शिष्य और उनका उत्तराधिकारी कहते हैं। इसी बात को लेकर विनोबाजी पिछले दस वर्ष से पदयात्रा कर रहे हैं और तरह-तरह के यज्ञों का आविष्कार कर रहे हैं। (पर) उन्होंने गांधीजी के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप देने के बजाय उनका कार्टून बना दिया है।"

बागियों के आत्म-समर्पण के बारे में लिखा है : "इन पंद्रह-बीस डाकुओं को जिस प्रकार रिझाया गया है, अगर वह कहानी सबको मालूम हो, तो पता चलेगा कि यह बड़ा महंगा सौदा पड़ा है।" इस प्रकार प्रलोभन देकर यदि डाकुओं से आत्म-समर्पण कराया गया, तो यह किस तरह का हृदय-परिवर्तन है ?"

अन्त में वे लिखते हैं : 'इस हृदय-परिवर्तन यात्रा में विनोबाजी ने कुछ ऐसी बेसिर पैर की और मूर्खता की बातें कही हैं कि आश्चर्य होता है। उन्होंने कहा कि जिन व्यक्तियों को डाकुओं ने मारा है, उनको तो भगवान ने मारना निश्चित कर लिया था, इसलिए उनकी हत्या की जिम्मेदारी डाकुओं की नहीं है। ऐसे संतों से तो देश को भगवान बचाये।"

हिन्दी की मासिक पत्रिकाओं में 'सरिता' का जो भी स्थान हो, उसमें प्रकट किये गये विचार उन पढ़े-लिखे लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो बातों की गहराई में जाने का प्रयत्न ही नहीं करते, जिनकी आंखों पर तथाकथित आधुनिकता का रंगीन चश्मा लगा रहता है और किसी भी वस्तु को, जो उनकी समझ में नहीं आती, ढोंग और धोखा कह कर टाल जाना और उसकी हँसी उड़ाना, जिनका फैशन हो गया है।

विनोबाजी एक संत पुरुष और विचारक हैं। भावना की उच्चता और पवित्रता के बल पर दुनिया को जिताने की अपेक्षा एकमात्र सत्य की आराधना उनका उद्देश्य है। सम्पादकीय टिप्पणी में जो यह कहा है कि 'विनोबाजी बोलते बहुत हैं, पर काम कम करते हैं," यह अज्ञानता का ही परिचायक है। लेखक महोदय को मालूम होना चाहिए कि विनोबा का जीवन कितना कठिन और तपस्यामय रहा है। जितना भी बोलते हैं वे कम जिम्मेदारी का काम नहीं है, पर लिखना ही जिनका काम रह गया है, वे अपनी मर्यादा के बाहर लिख कर भी क्या लिख रहे हैं, इसको समझने की कोशिश नहीं करते।

हमारे देश में पढ़े-लिखे लोगों का एक बड़ा दल ऐसा हो गया है, जो अपने स्वार्थ, नेताओं की राजनीति से भरी भाषा और लेबर-यूनियनों की हिंसा और कलुषित मनोवृत्तिपूर्ण बहस के सिवाय और कुछ समझ ही नहीं पाता है। यही कारण है कि गांधी-विनोबा के संदेश आज तक उन्हें छू नहीं पाये हैं। यही क्यों, इनमें से हजारों लाखों, जो जैन धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम, कबीर पंथ या सनातन धर्म को मानने वाले कहलाते हैं, अपने-अपने धर्मों के उन्नायकों और श्रेष्ठ संतों के उपदेशों को समझने का भी कभी प्रयास ही नहीं करते। ये सिर्फ अखबारों में जब-तब पढ़ लेते हैं कि फलां साधू ने ऐसा कुकर्म किया, फलां संत ने ऐसा धोखा दिया और अमुक तांत्रिक ने '१४ जुलाई को प्रलय होने' की घोषणा की है—और निर्णय दे देते हैं कि 'ऐसे संतों से तो भगवान ही बचाये।"

—रामकिशोर 'पाषाण,' गोंदिया

●

रेलवे मजदूरों के बीच

ता० १२ जुलाई को १० मील चल कर हमारी उ० प्र० अखंड पदयात्रा-टोली अटरिया पहुंची। रेलवे स्टेशन के पास पड़ाव था। नाश्ता आदि करने के बाद मैं रेलवे-मजदूरों के बीच कोयला ढोने के लिए चला गया, पर बात बनी नहीं। हड़ताल के कारण स्टेशनों पर पुलिस तैनात थी और कहीं अधिक बातचीत या गुटबंदी उन्हें दिखायी दे, तो लोगों को गिरफ्तारी का डर था। इसलिए मुझे मजदूरों ने साथ लेने से इनकार कर दिया। दूसरे मजदूर-गिरोह में गये, तो वहां भी मेट ने मना कर दिया कि बाहरी किसी भी आदमी को लेने के लिए सख्त मनाही है। मैंने समझाया, पर वह माना नहीं, क्योंकि उसे नौकरी छूट जाने का डर था। इतने में ट्रेन आयी। मेट ने ट्रेन में आये हुए एस० डी० आई० की ओर संकेत करके कहा कि इनसे बात कर लो। एस० डी० आई० को विनोबा के आन्दोलन और हमारी टोली के कार्य-क्रम की जानकारी देने पर और यह कहने पर कि रोज कुछ-न-कुछ श्रम करने का मेरा नियम है, उसने हँस कर इजाजत दे दी।

बातचीत एक सेकेंड क्लास के डिब्बे के बाहर चल रही थी। उस चर्चा को सुन कर डिब्बे में बैठे हुए एक प्रौढ़ नागरिक ने कहा—'अरे भाई, विनोबा तो बड़ा बड़ा काम कर रहा है देश में।" फिर मेरी तरफ मुखातिब होकर कहा—"इन मजदूरों में आप लोग 'डिसिप्लिन,' जिम्मेदारी की भावना भरिये, इन्हें समझाइये।" मैंने हँस कर जवाब दिया—'इन्हीं को नहीं, पढ़े-लिखे लोगों को भी यह समझाने की जरूरत है कि देश के प्रति उनकी क्या जिम्मेदारी है।" मैंने नौकरशाही, राजनैतिक पार्टियों के चंगुल से बचा कर लोगों में जन-शक्ति पैदा करने आदि की बात कही। वे बुजुर्ग सज्जन बहुत खुश हुए।

इतने में एक नौजवान ने पूछा—"आप लोग कब तक ऐसा करते रहेंगे ?' मैंने कहा—'जब तक जनता इसे उठा नहीं लेती।" फिर उस भाई ने पूछा कि 'आप लोगों को वेतन आदि कहां से मिलता है और आपका खर्च कैसे चलता है ?" मैंने उन्हें बतलाया कि किस तरह मैं कालेज की अपनी नौकरी छोड़ कर इस काम में आया और किस तरह जनाधार से काम चल रहा है। वे बड़े आश्चर्य में पड़े। अब तक करीब ३०-४० आदमी डिब्बे के आसपास इकट्ठे हो गये थे और इतने में ट्रेन भी रवाना हो गयी। मैं अब मजदूरों के साथ काम करने चला आया।

मैंने मजदूरों से कहा, "भाई, खुदगर्जी मिटा कर मालिक-मजदूर का भेद मिटाना होगा। यह हड़ताल से सम्भव नहीं है।" इतने में एक मजदूर ने कहा, "अरे पंडितजी, कौन का मुकाबला भी तो करना है! हमें मिल कर ही रहना है—प्रेम और प्यार से।

—अनन्त नारायण

उत्तर-प्रदेश पदयात्रा टोली

"छोटी-छोटी" बातें

हम 'बड़ी-बड़ी' बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों की तरफ हमारा ध्यान बिलकुल नहीं जाता। उनकी ओर ध्यान देना हमें हमारे 'बड़े-बड़े' कामों से ध्यान बँटाने जैसा लगता है। पर हम भूल जाते हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों से ही हमारी आदतें और जीवन के संस्कार बनते हैं।

"छोटी" बात का एक छोटा-सा उदाहरण लीजिये :

सभाओं के संबंध में "छोटी-छोटी" बातों की पूर्वतैयारी के सिलसिले में जो कुछ कहा गया था, वही प्रभातफेरी या नगर-पदयात्रा जैसे कार्यक्रमों पर लागू होता है। इन "छोटी-छोटी" बातों के बारे में पहले से न सोचने से कितना असर पड़ता है, यह जब कभी प्रभातफेरी, नगर-पदयात्रा या ऐसा ही कोई आयोजन हम करते हैं, तो बहुत स्पष्ट हो जाता है। प्रभातफेरी या पदयात्रा में जब हम कतार बांध कर चलते हैं, तो अक्सर यह अनुभव आता है कि बार-बार कतार भंग होती है, लोग इधर-उधर आगे-पीछे होते रहते हैं। इस तरह के आयोजन में शामिल होने वाला हर व्यक्ति अगर एक छोटा-सा नियम ध्यान में रखे कि उसे सामान्य तौर पर 'अपने आगे वाले के पीछे और बगल वाले के बराबर' रहना है, तो तो कतार में विघ्न नहीं आयेगा।

प्रभातफेरी या पदयात्रा में बहुत से लोग बीच-बीच में आकर भी शामिल होते रहते हैं। वे अगर एक सामान्य नियम का पालन करें कि जिसको भी बाद में शामिल होना हो, वह पीछे के छोर से शामिल हो, तो व्यवस्था बराबर बनी रहेगी। पर देखा यह जाता है कि देर से आनेवाला भी कहीं-न-कहीं कतार के बीच में घुस जाना चाहता है, और इस तरह बनी हुई पंक्ति और व्यवस्था को तोड़ता है।

प्रभातफेरी या नगर-फेरी में अक्सर गानों और नारों का इस्तेमाल होता है। वह सामान्य तौर पर जरूरी भी है। ये गाने और नारे हमारे विचार लोगों तक पहुँचाने के माध्यम हैं। पर अक्सर यह देखा है कि पहले से कुछ न सोचने के कारण इन पदयात्राओं में ऐसे नारे भी लगते हैं, जो हमारे विचार से मेल नहीं खाते हैं। उदाहरण के लिए आज भी हमारे इन कार्यक्रमों में कभी-कभी लोग नारा लगाते हैं—"धरती किसकी ? जोते जिसकी।" या "सम्पत्ति किसकी ? मेहनत जिसकी।" स्पष्ट है कि ये नारे सर्वोदय-विचार को ठीक से व्यक्त नहीं करते। सर्वोदय विचार की दृष्टि से मेहनत करना हमारा कर्तव्य है, उसके फल पर समाज का अधिकार है।

इसी तरह गानों की बात है। प्रभात-फेरियों तथा नगर-फेरियों के लिए हमारे गाने और नारे पहले से खूब सोच-समझ कर चुन लेने चाहिए और जहां तक हो सके शामिल होने वाले भाई-बहन सबको ऐसे चुने हुए गानों और नारों की एक-एक प्रति मिल जानी चाहिए। अक्सर यह होता है कि गाने वाला अगुआ कतार के एक सिरे पर होता है और कतार अगर लम्बी हुई तो उसकी आवाज ठीक से दूसरे सिरे तक नहीं पहुँचती। नतीजा यह होता है कि सब लोग गाने में शरीक नहीं हो सकते।

इस तरह की 'छोटी-छोटी" बातों पर अगर पूरा ध्यान दिया जाय और इनकी पूर्वतैयारी कर ली जाय, तो हमारे ये सारे आयोजन बहुत प्रभावकारी हो सकते हैं। इस प्रकार की पूर्वतैयारी के कारण एक तरह से कार्यकर्ताओं को व्यवस्था का अच्छा ज्ञान मिल सकता है और उनकी जिम्मेदारी की भावना बढ़ सकती है।

—सिद्धराज

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

टिप्पणियां

<u>लोकनागरी लिपि</u> *

राष्‌ट्‌रभाषा का सवाल • वीनोबा

हमारे राष्‌ट्‌रपती रूस में जाते हैं, तो हींदी में बोलते हैं, अीसलीअे वहां अुनकी अीज़्ज़त है। लेकीन वे अींग्‌लीश तो जानते ही हैं। यहां ख्‌रुश्‌चेव, चाअू अेनलाअी आते हैं तो अपनी भाषा में बोलते हैं। लेकीन हमारी सरकार का कारोबार केन्‌द्‌र में और प्‌रदेशों में अंग्‌रेजी में चलता है! अीससे दो गुनाह होते हैं। पहला, हमारे कीसान सरकार का कारोबार नहीं समझते हैं और दूसरा, अींग्‌लेंड के लोग घर-बैठे समझ सकते हैं। आज आप चीन और रूस का कारोबार नहीं जानते हैं। मैं अीस मत का नहीं हूं की कारोबार छीपाया जाये, लेकीन अंग्‌रेजी में कारोबार चलने से हम अेक तरह से खतरा अुठाते हैं। अंग्‌रेजी हटानी है, तो देश को अुसके लीअे तैयार करना पड़ेगा।

मैं दक्‌षीण भारत में गया था। तमीलनाड में ग्‌यारह महीने घूमा। दूसरा कोअी अुत्‌तर का शख्‌स अैसा नहीं घूमा है। "गीता-प्‌रवचन" (तमील भाषा) की अेक लाख प्‌रतीयां बीकी हैं। वहां मुझे कहा गया की फलाने शहर में हींदी का बहुत वीरोध है और शायद सभा में वे अपने वीरोध का प्‌रदर्‌शन करेंगे। मैं अुस शहर में गया। बहुत बड़ी सभा थी। मैं वहां हमेशा हींदी में बोलता था और अुसका पूरा तरजुमा तमील में होता था। अुस सभा में भी वही हुआ। मैंने यही कहा, "अब तक अुत्‌तर भारत की–'ओनींग'–बारी चली। दक्‌षीण और अुत्‌तर में क्‌रीकेट का खेल चल रहा है। जैन मुनी, बुद्‌ध, वैदीक ब्‌राह्‌मण अुत्‌तर भारत से दक्‌षीण भारत में आये। जैनों ने कन्‌नड साहीत्‌य का अनुवाद कीया। अुसके बाद दक्‌षीण के शंकर, रामानुज, मध्‌व दक्‌षीण से अुत्‌तर गये। अुनका असर अुत्‌तर भारत पर रहा। दक्‌षीण भारत की–ओनींग'–बारी हुअी। महाभक्‌त कबीर, तुलसीदास ये रामानुज के अनुयायी थे। चैतन्‌य महाप्‌रभु मध्‌व के अनुयायी थे। अीस तरह पुराने जमाने में दोनों की 'ओनींग' हुअी। महाकवी टैगोर, वीवेकानंद, रामकृष्‌ण, अरवींद, महात्‌मा गांधी अुत्‌तर भारत के थे। अब आपकी बारी आयी है। अुसके लीअे बैट और बॉल चाहीअें। याने क्‌या करना होगा? आपको मालूम है की शंकराचार्‌य की भाषा मलयालम थी, रामानुज की तमील, मध्‌व की कन्‌नड और वल्‌लभाचार्‌य की तेलगु। लेकीन अुन्‌होंने जो बड़े-बड़े ग्‌रंथ लीखे, वे <u>अच्‌छी संस्‌कृत</u> में लीखे और काशी के ब्‌राह्‌मणों को नीचा दीखाया। अुस जमाने में भारत की भाषा संस्‌कृत थी। अीसलीअे अब 'ओनींग' की बारी आपकी है। लेकीन वह तब बनेगा, जब आप <u>हींदी में</u> व्‌यवहार करेंगे, क्‌योंकी आज हींदी राष्‌ट्‌रभाषा है।"

(पालघाट, ३०-६-'६०)

* लिपि-संकेत: ि = ी; े = ै, क्ष = क्‌ष संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

पंजाब की भाषा-समस्या : नागरी लिपि!

पंजाब की भाषा-समस्या का सवाल भी आसाम की भाषा-समस्या से कम पेचीदा नहीं है। हमने जवाहरलालजी का भाषण जब अखबारों में पढ़ा कि आसाम के लोग नागरी लिपि को स्वीकार करके अपनी समस्या का समाधान करने की कोशिश करें, तो प्रसन्नता हुई। क्या यह उचित नहीं होगा कि वही 'फार्मूला' पंजाब की भाषा समस्या को समाप्त करने के लिए इस्तेमाल किया जाय? पंजाब में हिंदी और गुरुमुखी (पंजाबी) का जो झगड़ा है, वह देवनागरी लिपि को स्वीकार कर लेने से काफी दूर तक हल हो जायेगा, या हल होने में मदद मिलेगी, ऐसी उम्मीद की जा सकती है। पंजाबी भाषी लोगों को पंजाबी के लिए गुरुमुखी और हिंदी के लिए देवनागरी लिपियां सीखनी पड़ती हैं। यदि 'एक लिपि-सिद्धान्त' को मान्यता प्रदान कर दी जाय, तो लोगों को बहुत ज्यादा कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि हिंदी का आग्रह करने वाले पंजाबी लोग बोल-चाल में पंजाबी का काफी इस्तेमाल करते हैं। इसी तरह पंजाबी लोग भी हिंदी समझ लेते हैं।

'एक लिपि का सिद्धान्त' मान लेने से पंजाबी-भाषी और हिंदी-भाषी लोग एक-दूसरे के बहुत निकट आ जायेंगे। यदि पंजाबी सूबे की मांग के पीछे कोई राजनीतिक स्वार्थ-सिद्धि की आकांक्षा न हो, तो उन्हें यह प्रस्ताव स्वीकार होना चाहिए।

विनोबाजी ने अभी तक कभी किसी चीज का 'आग्रह' किया हो, ऐसा खयाल नहीं पड़ता। पर उन्होंने 'एक लिपि' के प्रचार के बारे में 'आग्रह' शब्द का इस्तेमाल किया है और वह आग्रह भी हिन्दुस्तान के लगभग सभी प्रान्तों में घूम लेने के बाद और सभी प्रांतों की जनता से निकट सम्पर्क साध लेने के बाद किया है। इसलिए इस 'आग्रह' पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए। विनोबाजी ने जो बात कही है, वह जन-मानस का प्रतिनिधित्व करने वाली बात है। वे सभी प्रान्तों की जनता का हृदय निकट से छू चुके हैं। इधर जवाहरलालजी ने भी चाहे छोटे पैमाने पर ही क्यों न हो, वही बात दोहरायी है। वे न केवल जनता के, बल्कि कांग्रेस और सरकार के भी प्रतिनिधि हैं। इसलिए इस बात का वजन बहुत बढ़ गया है।

महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध दैनिक 'तरुण भारत' ने २२ जुलाई के अंक में एक लम्बा संपादकीय लिख कर इस विचार की व्यावहारिकता को उपस्थित किया है और नेहरूजी से अनुरोध किया है कि वे केवल सूचन मात्र करने की अपेक्षा लोकसभा में विधेयक उपस्थित करने की व्यवस्था करें। संपादक ने आगे लिखा है कि यदि यह 'एक लिपि का सिद्धान्त' स्वीकार कर लिया जाय, तो अनेक छोटे-मोटे भाषा संबंधी विवाद और उससे पैदा होने वाले विविध वैमनस्य अपने आप नष्ट हो जायेंगे।

बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात में तो देवनागरी लिपि चलती ही है। इस तरह लगभग २१ करोड़ जनता में देवनागरी लिपि का प्रचार आज है। पंजाब, कलकत्ता और इसी तरह दूसरे स्थानों में इस लिपि को जानने वाले काफी हैं। पंजाबी भाषा बोलने वालों की संख्या डेढ़ करोड़ है, उसमें से गुरुमुखी का इस्तेमाल करने वाले केवल ५० हजार हैं। उन सबको यदि नम्रतापूर्वक समझाया जाय और बिना किसी राजनैतिक भावना के राष्ट्रीय एकता की बात कही जाय, तो वे नागरी लिपि सहर्ष स्वीकार कर लेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।

उर्दू के बारे में भी करीब-करीब यही बात है। हिंदी के सभी प्रतिष्ठित साहित्यकार उर्दू और फारसी शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। केवल उसकी लिपि सीखने में ही कठिनाई अनुभव की जाती है। उर्दू भाषा में काफी लोच और वजन है, इसलिए हिंदी के आधुनिक साहित्य में वह और भी लोकप्रिय हो सकती है, यदि उसकी लिपि नागरी हो जाय।

नागरी लिपि के प्रचार का विनोबाजी का 'आग्रह' बहुत ही सामयिक है और उस पर सभी क्षेत्रों में पूरा विचार किया जाना चाहिए। —सतीश कुमार

●

सरकारी नौकरियों के प्रति आकर्षण!

दिसम्बर, १९५९ में कामदिलाऊ दफ्तरों के चालू रजिस्टरों में १४ लाख २० हजार ९०१ लोगों के नाम दर्ज थे। इनमें से २ लाख ४८ हजार ४८९, यानी १७.५ प्रतिशत सरकारी नौकरी चाहते थे। केन्द्रशासित प्रदेश मणिपुर में ७,२१८ और पांडिचेरी में २,२९८ व्यक्तियों ने कामदिलाऊ दफ्तरों में अपना नाम दर्ज कराया। ये सब लोग केवल सरकारी नौकरी चाहते थे।

जम्मू-कश्मीर के कामदिलाऊ दफ्तरों में रजिस्टर्ड २,४३० व्यक्तियों में से २,२६१ और उड़ीसा के २०,९९२ में १८,९३३ सरकारी नौकरी चाहते थे। इनके अलावा आन्ध्र के ५६.७ प्रतिशत, मद्रास के ३९ प्रतिशत और राजस्थान के ५४.८ प्रतिशत रजिस्टरशुदा काम चाहने वाले सरकारी नौकरी चाहते थे।

—'आर्थिक समीक्षा' से

संपूर्ण भारत एक है : इसे टूटने नहीं देना है !

विनोबा

उज्जैन में एक 'आन्तर भारती सम्मेलन' हुआ, जिसमें भारत की नौ भाषाओं की प्रातिनिधिक रचनाएँ पढ़ी गयी। इसके बाद विनोबाजी ने अपने विचार व्यक्त किये, वे यहाँ दिये जा रहे हैं। —सं०

अभी आपने एक छोटा-सा कार्यक्रम सुना। वह एक अच्छा कार्यक्रम था। हिन्दुस्तान के नौ भाषाओं के गीत, संस्कृत के साथ आपने सुने। इसमें उर्दू का भी गीत आसानी से मिल सकता था, लेकिन वह नहीं हुआ। अगर वह मिलता, तो फिर केवल चार भाषाएँ रह जातीं : तमिल, उड़िया, असमी और कश्मीरी। भारत में राष्ट्र की मान्य चौदह भाषाएँ हैं। इसका मतलब यह नहीं कि दूसरी भाषाएँ अमान्य हैं। छोटी-मोटी दूसरी भी भाषाएँ हैं—जैसे सिन्धी है। मेरा मानना है कि सिन्धी को भी मान्य करना चाहिए। लेकिन ये जो चौदह-पन्द्रह भाषाएँ हैं, वे हिन्दुस्तान की साहित्यिक भाषाएँ हैं।

'आन्तर भारती' शब्द महाराष्ट्र के प्रज्ञ पुरुष साने गुरुजी का है। ऐसे रवि ठाकुर ने भी 'विश्व भारती' शब्द दिया था। उसमें भारत का सम्बन्ध कुल विश्व के साथ जोड़ने की बात थी। पर भारत में भी अपने अन्तर्गत जो अनेक भाषाएँ हैं, उनका भी परस्पर सम्बन्ध और समन्वय होना चाहिए, इसलिए साने गुरुजी ने 'आन्तर भारती' शब्द उठाया। यह एक बहुत अच्छा शब्द है। मेरा खयाल है, यह शब्द वहीं से चला है। हम पर यह उनका ऋण है। वे एक बहुत विशुद्ध हृदयवान पुरुष थे। पचास साल की आयु तक सतत अपने शरीर को सेवा में खपाते रहे। उनके प्रेम की सुगन्ध खास करके महाराष्ट्र के जवानों के चित्त पर अंकित है।

भारत = योरप

मैंने बहुत बार कहा है कि हिन्दुस्तान सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से योरप से बहुत आगे है। बहुतों का यह कहना है कि हम इन दोनों में बच्चे हैं, यह बात सही नहीं है। हमें जो खास बात पश्चिम से सीखनी है, वह है 'साइन्स'। उसके बिना हम तरक्की नहीं कर सकते हैं। जहाँ तक समाज-शास्त्र और राजनीति शास्त्र का ताल्लुक है, हमें वहाँ से ज्यादा नहीं सीखना है। दुनिया में हिन्दुस्तान ही एक-ऐसा देश है, जहाँ चौदह-पन्द्रह विकसित भाषाएँ एक साथ एक राष्ट्र में रहती हैं। इनमें से कुछ-भाषाएँ तो दो हजार साल से भी पुरानी हैं—जैसे तमिल का व्याकरण दो हजार साल पुराना है। उस भाषा में दो हजार साल से साहित्य चला आया है। उसी तरह कन्नड और तेलुगु का है। ये भाषाएँ पन्द्रह सौ वर्ष पुरानी हैं। उत्तर हिन्दुस्तान की भाषा सात सौ, आठ सौ साल से विकसित होती आयी है। संस्कृत, अरबी, फारसी की मदद से ये भाषाएँ समृद्ध हुई हैं।

चीन भी हिन्दुस्तान से बड़ा देश है। वहाँ भी छोटी-छोटी भाषाएँ हैं, किन्तु कुल मिला कर चीनी भाषा ही वहाँ की साहित्य और ग्रन्थों की भाषा है। दूसरी भाषा साहित्य के खयाल से, नहीं है। रशियन 'साम्राज्य' में (यह नाम मैं देता हूँ, वे लोग तो उसे 'सोवियत यूनियन' कहते हैं।) भी छोटी-छोटी अनेक भाषाएँ जरूर हैं। लेकिन वे विकसित नहीं हैं और वे सारी रशियन लिपि में ही लिखी जाती हैं। हिन्दुस्तान के जैसी स्थिति वहाँ नहीं है। योरप में १०-१५ भाषाएँ जरूर विकसित हैं। लेकिन योरप को अभी 'एक देश' बनना बाकी है। दोनों की तुलना तब होगी, जब योरप एक राष्ट्र होगा। वहाँ के लोगों को यह बताना होगा कि इस देश में गंगा का पानी ले जाकर रामेश्वर का अभिषेक करते हैं, और रामेश्वर के पानी से काशी विश्वेश्वर का अभिषेक किया जाता है, और कन्याकुमारी से पानी लेकर बद्री केदार या कैलाशनाथ का अभिषेक किया जाता है। सार यह है कि हमारा देश एक है, जहाँ किसी राजा को राज्याभिषेक करना होता, वहाँ कुल नदियों का पानी लाकर अभिषेक किया जाता था और जिस देश में गांधीजी की अस्थियों का विसर्जन भी कुल प्रान्तों में और कुल नदियों में किया गया। योरप में यह तब होगा, जब वोल्गा नदी के पानी का कलश भर कर वेस्ट मिनिस्टर अॅबे का अभिषेक किया जायेगा और टेम्स नदी का पानी लेकर लेनिनग्राड का, तब योरप हिन्दुस्तान की बराबरी करेगा। आज हम देखते हैं कि इस देश का एक सेवक सारे भारत में घूमता है—कश्मीर से कन्याकुमारी तक और हर प्रांत में उसका प्रेम से स्वागत होता है। और वह संकीर्णता विवक्षा की बात भी नहीं करता है। वह तो बात करता है भूमि-समस्या की और शान्ति-सेना की। योरप में ऐसा कोई सेवक नहीं है, जो इस प्रकार का मसाला लेकर मास्को से बर्लिन और बर्लिन से पेरिस, और पेरिस से लंदन जा रहा हो और हर राष्ट्र में उसका समान ढंग से स्वागत हो रहा हो ! क्या मजाल है कहीं किसी की कि बिना इजाजत के एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में जाय !

—लेकिन हम क्या समझते हैं? हम यह समझते हैं कि हमारे यहाँ आपस-आपस में लड़ाइयाँ होती हैं। हिन्दुस्तान में जब अंग्रेज आये, तो उनके इतिहासकारों ने लिखा कि यहाँ आपस-आपस में लड़ाइयाँ चलती थीं। मराठा और राजपूत, उड़िया और बंगाली, तमिल और कन्नड, इस तरह से आपस-आपस में सारा भारत लड़ता है, ऐसा आक्षेप पश्चिम के इतिहासकारों ने किया है। मैं उसे अभिमानपूर्वक कबूल करता हूँ। लेकिन इस संबंध में मुझे इतना ही कहना है कि उनसे १० गुना खतरनाक लड़ाइयाँ योरप में चलीं। लेकिन उनकी ये लड़ाइयाँ आपस-आपस की नहीं मानी गईं। इंग्लैंड और फ्रांस, जर्मनी और फ्रांस की लड़ाइयाँ 'नेशनल वार्स' मानी गईं। तो मराठा और राजपूतों की लड़ाइयाँ 'नेशनल वार' क्यों नहीं, 'सिविल वार' क्यों? क्योंकि हमने सारे भारत को एक माना। [और वे कमबख्त कबूल नहीं करते हैं।] फ्रांस और जर्मनी के बीच कोई पहाड़ भी नहीं है, जिससे दो देश अलग हों। फ्रेंच और जर्मन भाषाएँ ऐसी हैं, जो १५ दिन के अंदर सीख सकते हैं। एक ही लिपि है, काफी शब्द समान हैं, बहुत ही नजदीक की भाषाएँ हैं। ऐसे दो देशों के बीच बड़ा पहाड़ नहीं है, तो उन्हें बड़ा रंज होता है। और फिर एक 'मेजिनो' लाईन बनाता है, तो दूसरा 'सिगफ्रीड' लाईन बनाता है। ऐसा क्यों? क्योंकि भाषा के आधार पर वहाँ राष्ट्र बनाये गये हैं। हिन्दुस्तान में जो भाषाएँ हैं उनकी लिपियाँ अलग हैं। वहाँ की भाषाएँ नजदीक हैं। लिपि (रूसी को छोड़ कर) एक है फिर भी अलग-अलग राष्ट्र माने गये हैं। हॉलैंड मुश्किल से तीन करोड़ का होगा और यू. पी. जैसा हमारा एक प्रांत ही इतना बड़ा है कि उससे बड़े देश दुनिया में सिर्फ चार हैं चीन, भारत रूस और अमेरिका। लेकिन वे दुनिया के अलग-अलग राष्ट्र हैं। जहाँ धर्म एक है, लिपि-लिबास और भाषाएँ एक-दूसरे के नजदीक हैं, फिर भी वहाँ अनेक लड़ाइयाँ होती हैं और उसे उन्होंने 'नेशनल वार' माना है। और हमने भी यह मान लिया कि वहाँ 'नेशनल वार' चली और यहाँ 'सिविल वार'।

तात्पर्य, हिन्दुस्तान में एक अजब समाज-शास्त्र बना है, इसलिए इसे अलग ढंग से सोचना चाहिए। आज के जमाने में इस बात को समझना जरूरी है कि किस तरह हमारे पूर्वजों ने इसे 'एक राष्ट्र' माना था। अंग्रेज आने के पहले ही हम एक राष्ट्र थे। नहीं तो अंग्रेज हम पर यह 'आरोप' क्यों करते कि वे आपस-आपस में लड़ रहे हैं? लेकिन इसमें हम गौरव मानते हैं। हमने आइन्स्टाइन [illegible] हमने मान ली। 'आसिन्धो आसमुद्रात्' याने हिमालय की गुफा से समुद्र तक सारा देश एक है। यह ऋग्वेद ने कहा है। यह कोई अर्वाचीन ग्रंथ नहीं बोल रहा है। दस हजार साल पुराना ग्रंथ बोल रहा है।

मैंने कश्मीर में सिखाया कि तुम ज्यादा सावधान रहो, अलग-अलग खिचड़ी मत पकाओ। हम सब कहाँ तक एक हैं? 'ज्योमेट्री' में आता है। ए० बी० सी० एक त्रिकोण है। (A B C is a triangle) अफगानिस्तान, बर्मा और सिलोन—कम से कम इतनी भावना हमें बनानी होगी कि इनका हिस्सा एक हो जाय। एक संस्कृति है, भौगोलिक रचना से भी एक है। 'जय जगत्' हम कहते हैं, लेकिन कम से कम भारत तक तो एक मानो।

लेकिन कहने में दुःख होता है कि हम कदर जो प्रेम-भाव आपस में होना चाहिए, वह नहीं दीख रहा है। भिन्न भिन्न भाषाओं के झगड़े चल रहे हैं। यह शोचनीय है। लेकिन यह चीज जायेगी, क्योंकि वह यहाँ की सभ्यता के खिलाफ है। आज कहता है, आसाम और बंगाल के बीच लड़ाई चल रही है। दस-बीस हजार शरणार्थी हुए हैं, सिर्फ भाषा के लिए! यह बहुत बुरी बात है। मैंने जब सुना कि 'बार्डर' पर चीन खड़ा है; तो मुझे बहुत आनंद हुआ। आज तक जो हिमालय दो देशों को अलग करता था, वह कहता है कि विज्ञान के जमाने में मैं तो ओछा हूँ, चाहे आप फिर टूटो या फूटो; मैं काम नहीं आऊँगा। इन दिनों वह भी छोटा रहे हैं। जापान और अमेरिका के बीच आठ दस हजार मील का पैसिफिक महासागर है। ये दो देश पृथ्वी के दो सिरे पर हैं। एक जमाना था, जब उन दोनों में कोई ताल्लुक नहीं था, क्योंकि वह समुद्र बीच रहा था। आज वही समुद्र जोड़ रहा है। [illegible] भी जोड़ रहे हैं, [illegible] हैं, तो कैसे [illegible]? इसलिए जब मैंने सुना कि चीन सीमा पर खड़ा है, तो मुझे खुशी हुई। आज वे [illegible] इसलिए मैं [illegible] रहेंगे [illegible]। जो भी [illegible] लड़ाई [illegible] अगर [illegible], तो इसका अर्थ यह होगा कि दुनिया का बहुत बड़ा हिस्सा आपस में [illegible] है। ये दोनों बहुत बड़े राष्ट्र हैं। चीन भारत की कुल आबादी १०० करोड़ की है। इनकी लड़ाई का दुनिया पर असर होगा। [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] की तरह [illegible] थी, लेकिन इनकी लड़ाई के कारण दुनिया को [illegible] किया। [illegible] [illegible]। अगर चीन हिन्दुस्तान की इसी सीमा पर लड़ाई हुई, तो मैं [illegible] कि दुनिया को [illegible] की [illegible] है और [illegible] सीमा को [illegible] है।

कुछ भी हो, [illegible] [illegible] रहेंगे। [illegible]

मुजफ्फरनगर, [illegible], ५ [illegible], '६०

कभी मोटा होगा। अभी खड़ा हो रहा है। लेकिन इसका बहुत बड़ा लाभ यह है कि हिन्दुस्तान जाग रहा है और बोल रहा है कि खबरदार! अगर चीन का हमला होगा तो हम सब एक होंगे। कम्बख्त, क्या यह जरूरी है कि हमला हो, तभी हम एक हों! हमला होने ही न पाये, ऐसा क्यों न हो? अगर आप एक होते हैं, तो हमला नहीं होगा। लेकिन हमला हो, तब तक हम अगर बार-बार झगड़ते ही रहेंगे, तो इसके क्या माने है? इधर कश्मीर, गोआ, सीलोन, बर्मा, ये सवाल हैं और उधर चीन का सवाल खड़ा है। ऐसी हालत में हम एक-दूसरे के साथ लड़ें-झगड़ें, देश की ताकत एक-दूसरे के साथ टकराये, तो देश कमजोर हो जायगा, ताकत घटेगी। यह बिलकुल बेतुकी और बेहूदी बात है। इसलिए आज हमें एक होना ही चाहिए और छोटे-मोटे मतभेद छोड़ देने चाहिए।

अभी सारे भारत में एक हड़ताल हुई। परमेश्वर की कृपा से यह केवल चार-पाँच दिन ही चली। परमेश्वर ने सद्बुद्धि दी। लेकिन जहाँ हुई न हुई वहाँ फौरन चीन ने उसे आशीर्वाद दे दिया। अब इसके साथ चीन का कोई ताल्लुक था? यही कि हिन्दुस्तान और चीन के बीच झगड़ा है। और चीन के अखबारों ने पंडित नेहरू पर आक्षेप किया कि पं० नेहरू जनता को दबाने वाला एक जालिम है! अक्सर देश के महान नेता पर आक्षेप नहीं लगाया जाता है, क्योंकि उससे देश का दिल दुखता है। अगर आज आप ख्रुश्चेव और आईक पर आक्षेप करेंगे तो उन देशों के दिल कितने दुखेंगे! वे दोनों अपने-अपने देश के मान्यवर नेता हैं। देश के मान्यवर के नेताओं पर आक्षेप नहीं किया जाता। हिन्दुस्तान का नेता पं० नेहरू, जो चीन के साथ अधिक-से-अधिक दोस्ती रखना चाहता है, अपनी प्रतिष्ठा को सम्हालते हुए, लेकिन चीन के अखबार ने ऐसे पं० नेहरू की निंदा की और यह कहा कि वह जनता को दबाने वाला जालिम है। यह पढ़ कर हमारे मजदूर-नेताओं ने जवाब दिया कि 'हम एक हैं। आप हमारी स्थिति का लाभ नहीं उठा सकते हैं।'

इसलिए आज हमें 'फण्डामेण्टल डिफरेन्सेज' पर जोर देने की जरूरत नहीं है। वह तो है ही। 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना'। आज हमें जरूरत इस बात की है कि सारे पक्ष एक होकर सोचें, समन्वय बुद्धि से सोचें और कम-से-कम एक ऐसा सर्वसाधारण कार्यक्रम लें, जो सब मिल कर कर रहे हैं।

अभी आंतर भारती का एक छोटा-सा नाजुक कार्यक्रम हुआ। बहनों ने गाना गाया। हमारे देश की अंदरूनी एकता का एहसास उससे होता है। और हमें थोड़ा-सा बल मिलता है। लेकिन देश के नेता आपस में झगड़ें और कोई 'कामन प्रोग्राम' न निकले, तो देश आगे कैसे बढ़ेगा? हड़ताल करने वाले देशद्रोही हैं, ऐसा नहीं है। देश के लिए उनके दिल में प्रेम है। सारे देश का कारोबार ठप हो जाय, तो इसे कोई पसंद करेगा? लेकिन एक क्षोभ था, उस क्षोभ का प्रदर्शन कर दिया। मैं मानता हूँ कि ऐसे काम में सब की जरूरत है। हम कहना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान पर अधिक आपत्ति आये, ऐसा आप चाहते हैं क्या? यदि नहीं चाहते तो, आपस में मिल कर चर्चा करनी चाहिए।

आज हिन्दुस्तान में क्या हो रहा है, राजाजी गांधीजी के शिष्य, कृपलानीजी गांधीजी के शिष्य, जयप्रकाशजी, नेहरूजी चारों अगर एक-दूसरों के खिलाफ बातें करते रहेंगे, तो लोग क्या समझेंगे? लोग क्या तराजू में रख कर उनके विचारों को तौलेंगे? आखिरी निर्णय आम लोग करें, ऐसा आप चाहते हैं? इससे तो 'कन्फ्यूजन' होता है, क्या किया जाय सूझता नहीं। अगर मतभेद बड़े होते, तो भी समझ में आता। लेकिन यहाँ तो एक कहता है, "इनके पीछे जाते हो तो हिन्दुस्तान बरबाद होगा।" दूसरा इसके बारे में यही कहता है। और दोनों गांधीजी के शिष्य—एक ही झरने के पानी पिये हुए। इसलिए आज सख्त जरूरत इस बात की है कि हम एक होकर एक 'कॉमन प्रोग्राम' बनायें।

बड़े नेताओं को एक कमरे में बंद करके यह कह देना चाहिए कि जब तक आप लोग एकमत नहीं होते हैं, तब तक हम ताला नहीं खोलेंगे और आपको खाना नहीं खिलायेंगे!

ऐसे मौके आयेंगे और हमारा देश एक हो जायेगा, ऐसी हम आशा करते हैं। आंतर भारती का यह छोटा-सा कार्यक्रम दिलों को जोड़ने वाला है, इसलिए यह अमृतबिन्दु है। मेरा इसे पूरा आशीर्वाद है। ● ●

"आंतर भारती" : एक परिचय

उज्जैन में 'आन्तर भारती-सम्मेलन' में विनोबाजी ने जो भाषण दिया, उसे ऊपर प्रकाशित किया गया है। पाठक यह जानना चाहेंगे कि यह आन्तर भारती-सम्मेलन क्या है और उसकी योजना के पीछे किस तरह की पृष्ठभूमि है। इसलिए नीचे की की पंक्तियों में 'आंतर भारती' के विचार का उद्गम और विकास कैसे हुआ, इसका संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

साने गुरुजी ने जीवन के अंतिम दिनों में "आंतर भारती" की कल्पना लोगों के सामने प्रस्तुत की थी और उन्होंने अपनी कलम से या आम सभाओं में जहाँ-जहाँ मौका मिला, वहाँ-वहाँ बड़ी ही लगन के साथ "आंतर भारती" का प्रचार शुरू किया था। उस समय मराठी साप्ताहिक 'साधना' में प्रकाशित एक लेख में आपने कहा है, "कहीं अच्छी-सी जगह ली जाय वहाँ हर प्रदेश के विभिन्न भाषा-भाषी विद्यार्थियों के लिए होस्टेल हों भाषा-शिक्षा के साथ वहाँ चित्रकारी, नृत्य-संगीत आदि की शिक्षा दी जाय। वहीं श्रेष्ठ विचारकों और साहित्यिकों के विचारों का तथा साहित्य-कला का आदान-प्रदान हो।" इस तरह साने गुरुजी अपनी अंतिम साँस तक एक सुहावना सपना अपने मन में समाये बैठे थे। लेकिन बदकिस्मती से इसकी सफलता से पूर्व ही वे हमसे बिछुड़ गये।

गुरुजी के चले जाने के बाद महाराष्ट्र में रहने वाले आपके अनगिनत चाहनेवालों में उनके स्मारक की चर्चा शुरू हुई। उन्होंने सोचा कि स्मारक के रूप में आप ही की 'आंतर भारती' की कल्पना को साकार किया जाय। फिर महाराष्ट्र भर में साने गुरुजी स्मारक निधि के रूप में आंतर भारती के लिए निधि इकट्ठी की गयी। और इसके बाद सन् १९५६ में 'आंतर भारती ट्रस्ट' कायम किया गया। आज इस ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अण्णासाहब सहस्रबुद्धे और कार्याध्यक्ष श्री रावसाहब पटवर्धन हैं।

निधि इकट्ठा होते ही सन् १९५२ में कार्य शुरू हुआ। उस वक्त महाराष्ट्र के मशहूर विचारक आचार्य भागवत पूना में ही थे। आप ही के मार्गदर्शन के अनुसार काम शुरू हुआ। उस समय आचार्यजी स्वयं बंगला भाषा-शिक्षा के वर्ग चलाते थे। पूना जैसे ही नासिक, बंबई, जलगाँव आदि केंद्रों में भी आंतर भारती द्वारा बंगला के वर्ग आयोजित किये गये। लोगों ने इस कार्य को सराहा।

भाषा शिक्षा के साथ ही साथ हमारी पड़ोसी भाषाओं के साहित्य का परिचय भी कराया गया। उस समय बेंगलोर के एक महान साहित्यिक और विचारक श्री मास्ती व्यंकटेश अय्यंगार को पूना में निमंत्रित किया गया था। आंतर भारती के द्वारा आपके व्याख्यानों के कार्यक्रम वहाँ हुए।

इसके अलावा पूना में बसने वाले बंगाली भाइयों की सहायता से हर साल गुरुदेव रवीन्द्रनाथ पुण्यतिथि का कार्यक्रम आंतर भारती द्वारा आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम के कारण रवीन्द्र साहित्य और संगीत का आस्वाद पूना में रहने वाले नागरिक लेते हैं।

आंतर भारती ने कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित की है।

आंतर भारती द्वारा गत साल अक्तूबर और दिसंबर में दो बड़ी ही महत्त्वपूर्ण भाषण-मालाएँ आयोजित की गयी। एक माला गुजरात के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुलाबदास ब्रोकर ने गूँथी। विषय था, 'गुजरात प्रदेश, वहाँ के लोग और उसका प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य।' दूसरी माला कर्नाटक के साहित्यिक श्री र० श्री० मुगली ने गूँथी। विषय था—'कर्नाटक प्रदेश, प्रदेश के लोग तथा उसका प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य'।

इस वर्ष आंतर भारती द्वारा चार महीनों के लिये गुजराती भाषा-शिक्षा का वर्ग चलाया गया और अब बंगला भाषा का वर्ग शुरू किया गया है।

एक और उल्लेखनीय बात। इसी साल मार्च में 'आंतर भारती क्लब' की बुनियाद डाली गयी है। इस क्लब के कारण पूना में बसने वाले विभिन्न भाषा भाषी भाई हर माह एक बार इकट्ठा होते हैं और अपनी-अपनी बातें कह कर परस्पर-स्नेह बढ़ाते हैं। क्लब की कुछ बैठकें बहुत ही वैशिष्ट्यपूर्ण रहीं। बैठक में साहित्य-अकादमी की कार्यवाहक श्री कृष्णा कृपलानी उपस्थित थी तो दूसरी बैठक में पूना में उस समय विचार-गोष्ठी के लिये आये हुए कुछ 'क्वेकर' भाई भी मौजूद थे।

अपेक्षा है कि आंतर भारती का यह कार्यक्रम केवल महाराष्ट्र में नहीं, बल्कि भारत के सभी प्रमुख शहरों में शुरू हो। और इस दिशा में कोशिश भी जारी है। अभी-अभी हैदराबाद, औरंगाबाद, बीड, लातूर विभाग में आंतर भारती के केंद्र शुरू किये हैं। बेलगाँव, कोल्हापुर, सांगली, नासिक, कल्याण, ठाना आदि स्थानों पर भी शुरू होनेवाले हैं।

आंतर भारती क्लब, विभिन्न भाषा-शिक्षा आदि प्रवृत्तियों के साथ-साथ ही आंतर भारती द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये जाते हैं। ता० १ मई को महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों का निर्माण हुआ। भाषा-विकास और सहूलियत की दृष्टि से यह घटना महत्त्वपूर्ण होते हुए भी सांस्कृतिक और राष्ट्रीयता की दृष्टि से 'हम सब एक हैं', इस भावना को प्रसारित करने के हेतु आंतर भारती द्वारा उस समय महाराष्ट्र और गुजरात के सांस्कृतिक दर्शन का एक भव्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

विभिन्न भाषाओं के साहित्यों और विचारों की समीक्षा तथा श्रेष्ठ अनुवाद प्रस्तुत करने वाली हिंदी त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित करने का प्रयत्न जारी है। इसके अलावा आंतर भारती वसंत-शिविर, 'पत्र-मित्रता', 'विद्यार्थी मंडल' आदि प्रवृत्तियाँ शुरू करने का विचार और प्रयत्न है।

●

शान्तिसेना की स्थापना हो चुकी है। बापू अुसके प्रथम सैनिक थे और प्रथम सेनापति भी। सेनापति के नाते अुन्होंने आज्ञा दी और सैनिक के नाते अुसका पालन करके वे चले गये

—विनोबा

शांति-स्थापना का एक अनुभव

श्री मोहनलाल माडविया सौराष्ट्र के एक मूक रचनात्मक कार्यकर्ता और शांति-सैनिक हैं। व्यापार के क्षेत्र में काफी अनुभव प्राप्त किया और फिर वह छोड़ कर सेवा-कार्य को उन्होंने अंगीकार किया। वर्षों से खादी तथा अन्य रचनात्मक कामों के जरिये वे गांवों के लोगों की सेवा कर रहे हैं। भूदान-आन्दोलन शुरू होने के बाद से इस काम में जुट पड़े।

बीसावदर तालुका वर्षों से उनका कार्य-क्षेत्र रहा है। अभी कुछ दिन पहले स्कूल की फीस बढ़ाये जाने के विरोध में सौराष्ट्र में जगह-जगह लड़कों ने आन्दोलन किया। बीसावदर में भी यह हुआ। इस घटना की जानकारी देते हुए श्री मोहन लाल भाई ने लिखा है :

"बीसावदर में भी तूफान शुरू हुआ। जिस राहगीर के सिर पर सफेद टोपी दिखी कि तुरंत उसको उतार कर जलाना शुरू किया! विद्यार्थियों ने अपने ही हाईस्कूल के दरवाजे और खिड़कियों के कांच फोड़ दिये। एक भी खिड़की का कांच साबित नहीं बचा। इसी तरह नगरपालिका के सभा-भवन और रेलवे-स्टेशन आदि पर लड़कों ने तोड़-फोड़ की। स्टेशन मास्टर ने मना किया, तो उनको पीटा गया। पत्थरबाजी भी हुई। इसके अलावा दुकानें जबरदस्ती से बंद करायी, अशोभनीय नारे लगाये, अर्थियाँ निकालीं और जलायीं! इस प्रकार दो दिन तक चलता रहा। शहर के नागरिक सब परेशान थे, लेकिन दंगा करने वालों को कोई क्या और कैसे कहे? ता० १-२ जुलाई को यह सब कांड हुआ तब मैं बीसावदर में नहीं था, बाहर गया हुआ था। ता० २ को वापस लौटा और इस सारी दुःखद घटना की खबर मुझे लगी। रात को उसका विचार करते-करते सो गया। सवेरे उठ कर मैं स्वयं बाहर निकला, उसके पहले तो विद्यार्थी लोग ही मेरे पास पहुँच गये। उन पर अभी तक पागलपन सवार था। मुझे कहने लगे कि आपकी सफेद टोपी उतार कर हमको दे दीजिये। छोटे-बड़े करीब ३०० विद्यार्थी होंगे। जिस प्रकार वे किलकारियाँ मार रहे थे, उसमें एक-दूसरे की बात सुनना भी मुश्किल था। फिर भी मैंने 'थोड़ा शांत होने और मेरी बात समझने' की प्रार्थना की। थोड़ी देर शांत तो हुए, पर समझे नहीं और सफेद टोपी उतार कर दे देने की अपनी जिद पर अड़े रहे, मैंने भी शांति से, लेकिन दृढ़ता के साथ कहा कि टोपी तो नहीं मिलेगी, सो नहीं मिलेगी। उसके पहले रोज उनको करीब १५-२० टोपियाँ इस तरह से मिली होंगी और किसी ने उनका सामना नहीं किया, इसलिए उनका हौसला बढ़ गया था। वे मेरी बात से उत्तेजित हुए और एक पत्थर मेरे कंधे के पास से निकला। मैं चबूतरे पर चढ़ गया और कहा, "आप रुकते क्यों हैं? जितने पत्थर मारने हों, उतने जोर से और खुशी से मारिये, अगर उसी से आपको शांति मिलती हो, लेकिन यह आपको शोभा नहीं देता!" इस तरह अपने ढंग से मैंने उनको समझाया। कुछ ही क्षण में पत्थर फेंकना बंद हुआ और वह झुंड दूसरी जगह चला गया।

मैंने कस्बे में घूम कर सब विनाश-लीला देखी। मन बहुत अस्वस्थ हुआ। एक सत्याग्रही के नाते, शांति-सैनिक के नाते मेरा क्या कर्तव्य है, इस विषय में खूब मंथन चला। आखिरकार कुछ न सूझने से मन की और वातावरण की शांति के लिए उपवास करने का मैंने निश्चय किया और जाहिर किया कि मैं पाँच दिन का उपवास प्रारंभ कर रहा हूँ। हाईस्कूल के विद्यार्थियों को तथा गाँवों का, नागरिकों को पत्र लिख कर मैंने अपने निर्णय की सूचना दी। पहला दिन शांति से गुजरा। गाँव के प्रमुख लोग, वकील, डाक्टर तथा अन्य नागरिकों ने आकर के मेरे प्रति सहानुभूति और समर्थन बतलाया। सभी ने कहा, 'हम लोग सभी अपने-अपने मन से परेशान थे, लेकिन सूझता नहीं था कि क्या करना चाहिए। आपने रास्ता बतलाया है। इसका असर जरूर पड़ेगा।'

दूसरे दिन कस्बे के लोगों ने शांति के प्रयास प्रारंभ किये। विद्यार्थियों पर भी असर हुआ। उन्होंने महसूस किया कि वे किसी के सिखाने से गलत रास्ते पर चढ़ गये थे और उन्होंने कस्बे की सार्वजनिक सम्पत्ति को जो नुकसान पहुँचाया, वह उचित नहीं था। पश्चात्ताप-बुद्धि से उन्होंने अपनी भूल कबूल की और उपवास छोड़ने का आग्रह किया। दूसरे रोज शाम को विद्यार्थियों के हाथ से ही मैंने उपवास का पारण किया।"

—"स्वराज धर्म" से

शांति-सैनिक परिचय : २

रविशंकर महाराज

"शान्ति-सैनिक तो आप जीवन भर रहे हैं, फिर भी आज नाम दे रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि बापू-विचार का नमक खाये हुए हम जैसे सबको इससे स्फूर्ति मिलेगी," ये शब्द विनोबाजी ने रविशंकर महाराज के प्रति कहे, तो शांति-सैनिक के रूप में काम करने वाले सभी कर्मियों को शांति-सेना में नाम देने की महत्त्वमयी कल्पना का भान हुआ।

गत वर्ष अजमेर सर्वोदय-सम्मेलन के बाद अजमेर से नगवाना तक हुई शांति सेना रैली में ६ फुट ऊँचे ग्रामीण से लगने वाले ७५ वर्ष की आयु वाले व्यक्ति को 'शांति के सिपाही चले, क्रांति के सिपाही चले' के गगनभेदी गान के साथ कदम-कदम मिलाते हुए चलते देख कर जब किसी अपरिचित ने उत्कंठावश उनका नाम पूछा होगा, तो वह 'गुजरात के महाराज' शब्द सुन कर स्तब्ध रह गया होगा। वे सत्ता और शासन से राजाओं के महाराज नहीं, वरन् गुजरात के गाँव-गाँव के ग्रामीणों के दिलों पर प्रेम और करुणा का राज करने वाले महाराज हैं। १ मई, १९६० को बंबई राज्य जब महाराष्ट्र और गुजरात के रूप में दो राज्यों में विभक्त हुआ, तो गुजरात राज्य का उद्घाटन आपके हाथों होता हुआ देख वहाँ का जन-जन का मन एक नई आशा से लहर उठा!

७७ वर्ष की अवस्था में सर्वोदय-पात्र और शांति-सेना के लिए सतत घूमना उनकी एक अद्भुत तपस्या है। अपने सीधे-सादे और प्रेम भरे व्यवहार से उन्होंने कितने ही भूले-भटके चोर-डाकुओं को सन्मार्ग पर लगाया, उन्हें सच्चे गाहस्थ्य जीवन की राह दिखाई। आज तक आपने अपने को विविध प्रकार से ग्रामीणों की सेवा में तन्मय रखा और जब भूदान ग्रामदान का काम आरम्भ हुआ, तो उसमें अपने को समर्पित कर दिया।

विनोबा ने जब 'सर्वोदय-पात्र' का कार्यक्रम रखा तो उसे किसी ने उसे 'आसान' कहा, तो किसी ने 'असंभव'। लेकिन महाराज ने बिना कुछ कहे उसे उठा लिया और अहमदाबाद शहर में एक साल तक सर्वोदय-पात्र का प्रचार कर घर-घर पात्र रखवाये। अहमदाबाद में किसी भी घर पर आप चले जाइये, गृहिणी बड़ी श्रद्धा से कहेगी—'महाराज हमारे घर आये थे।'

उन्होंने स्वयं अपने बारे में लिखा है—

(१) नाम : श्री रविशंकर शिवराम व्यास,
पता : वल्लभ विद्यालय,
बोचासण (जि० खेड़ा)

(२) आयु : ७७

(३) जन्म : ता० २५-२-१८८४

स्वास्थ्य : अच्छा। २०-२५ मील आसानी से चल सकता हूँ।

(४) शिक्षण : गुजराती छह किताब तक। हिन्दी भाषा सामान्य तौर से जानता हूँ। मराठी समझ सकता हूँ, मगर बोल नहीं सकता।

(५) प्रिय किताबें : गीता और धार्मिक पुस्तकें, ऐतिहासिक पुस्तकें तथा जीवन-चरित्र।

(६) खेल : गाँव के सब खेल।

(७) उद्योग : खेती और कताई।

(८) संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त : मेरा जन्म गुजरात के एक छोटे गाँव में हुआ था। ३५ साल तक वहाँ रहा। जहाँ तक रहा, वहाँ पर खेती के साथ दूसरा ग्रामोपयोगी काम करता रहा। पिताजी शिक्षक थे। माता धार्मिक वृत्तिवाली और अधिक श्रमजीवी।

१९१९ में गृह छोड़ा और गांधीजी की लड़ाई में भाग लिया। कुटुम्ब का बोझ मुझ पर भी नहीं है। वे लोग अपना निर्वाह कर लेते हैं। मेरा बोझ उन लोगों पर भी नहीं है। मैं अनाथाश्रित ही हूँ। ग्रामोपयोगी कैसे बनूँ, इसका चिंतन करते-करते जीवन बिता रहा हूँ। १९५२ से भूदान का काम कर रहा हूँ।

शांति के काम के लिए शांति-सैनिक बनने में मुझे पूरा रस है। और वही मेरा स्वाभाविक धर्म है। यह मेरा प्रिय विषय होने से मैंने शांति-सेना में मेरा नाम दिया है।

"तिब्बत में जमीन बँट रही है!"

सुन्दरलाल बहुगुणा

प्रदेशीय सर्वोदय मण्डल के निश्चयानुसार मैंने २० जून से २६ जुलाई तक उत्तराखण्ड के तीन नवनिर्मित जिलों (उत्तर काशी, चमोली, पिथौरागढ़) और टिहरी गढ़वाल तथा अल्मोड़ा जिलों की ४० दिन की २२७ मील पैदल व २७३ मील मोटर से यात्रा की।

उत्तर काशी : उत्तर काशी जिले में देश के दो प्रमुख तीर्थ, गंगोत्री और यमुनोत्री के स्थित होने के कारण प्रति वर्ष हजारों तीर्थयात्री यहाँ आते हैं। समाज का एक बड़ा वर्ग इन पर आश्रित रहता है। इसलिए थोड़ी-बहुत खेती और भेड़-पालन के अलावा वे मेहनत-मजदूरी के दूसरे काम करते हैं। ऊन-उद्योग के विकास की यहाँ बड़ी सम्भावनाएँ हैं, परन्तु ऊन का आयात बन्द होने के कारण उसमें प्रगति नहीं हो पा रही है। यहाँ पर महाराष्ट्र से आये हुए श्री ज्ञानेश्वर पटेल शान्ति-सेना का कार्य कर रहे हैं। पूरा समय देने वाला कोई स्थानीय कार्यकर्ता नहीं है।

चमोली : उत्तर गढ़वाल के अलग जिले की स्थापना के लिये यहाँ की जनता पिछले १० वर्षों से माँग करती रही है। इसलिये नये चमोली जिले की स्थापना होने पर जनता में पर्याप्त उत्साह है। इस जिले में भी देश के दो प्रसिद्ध तीर्थ, बद्रीनाथ और केदारनाथ पड़ते हैं। इसलिये तीर्थयात्रा यहाँ की आम जनता की आजीविका का मुख्य साधन है। दूर तक मोटर सड़क के आने के कारण पुराने व्यापार व रोजगार प्रायः नष्ट हो गये हैं। विकास योजनाओं से होने वाला लाभ भी कुछ लोगों को ही मिल पा रहा है। यहाँ पर आंशिक समय देने वाले कार्यकर्ता हैं, लेकिन पूरा समय देने वाले एक भी नहीं हैं।

पिथौरागढ़ : पिथौरागढ़ के क्षेत्र में कौसानी आश्रम की तीन बहनें पूर्णतः अन्तर्भाविक होकर काम कर रही हैं। उनका अनशन के क्षेत्र पर बहुत अच्छा असर है।

सरकारी सहायता गरीबों को नहीं मिलती है : इस प्रदेश में नये कार्यकर्ताओं को तैयार करना, विचार प्रचार, [illegible] द्वारा निर्माण-कार्यों व [illegible] के ठेके लेने के लिये जनता को [illegible] आदि कार्य बहुत उपयोगी होगा। सरकार की ओर से विकास-कार्यों के लिये जो पैसा खर्च किया जाता है उसमें [illegible] ठेकेदारों का ही लाभ होता है। आम जनता की हालत में कोई [illegible] नहीं होता है। [illegible] गरीब और भूमिहीन लोगों में [illegible] की आवश्यकता है [illegible] का काम है।

तिब्बत की सीमा पर स्थित एक गाँव में एक सम्पन्न भाई ने गत तीन वर्षों में सरकार से अलग-अलग प्रकार से हजारों रुपया पा लिया है। भेड़ पालने वाले उसके मजदूरों ने हमसे कहा कि हम चीन का इन्तजार कर रहे हैं! सुना है कि तिब्बत में भेड़ पालने वाले मजदूर भेड़ों के मालिक बन गये हैं! इस यात्रा में हमने जगह-जगह पाया कि तिब्बत में गरीबों की हालत सुधारने के लिए तेजी से प्रयास किया जा रहा है। भूमिहीनों को जमीन मिल रही है आदि खबरें गाँव-गाँव में फैल गई हैं। परिणामस्वरूप गरीब और भूमिहीन चीन का इन्तजार भी करने लगे हैं। वे यह भी अनुभव कर रहे हैं कि भारत की सरकार तथा सम्पन्न वर्ग उनकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा है। क्या भारत की भलाई चाहने वाले हर नागरिक के लिये और किसी चुनौती की आवश्यकता है?

इस यात्रा में हमने यह भी देखा कि साम्यवादी कार्यकर्ता लगन से काम में जुटे हैं। यात्रा में हमें श्री विनोबा के एक एक वचन की सत्यता महसूस होती गई। हमने अनुभव किया कि राष्ट्र की रक्षा फौज से नहीं, जनता के नैतिक धैर्य से ही हो सकती है। हमने यह भी देखा कि जिस राष्ट्र में गरीबों की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता है, उसकी आजादी हमेशा खतरे में रहेगी।

●

हिसाब नहीं जमता!

कृष्णदास गांधी

ता० १५ जुलाई, १९६० के "भूदान-यज्ञ" में श्री भारतानन्दजी का एक लेख छपा है। अगर श्री भारतानन्दजी का कथन उस लेख में ठीक लिया गया है, तो उनके आँकड़े और उनके सुझाव दाहास्पद मालूम पड़ते हैं।

श्री भारतानन्दजी के कथन से ऐसा आभास होता है कि घरों में शक्तिचालित साधन से कताई करने पर ही परिवार में साल भर में १,००० वर्गगज कपड़ा बनेगा और वह कपड़ा मिल के कपड़े से सस्ता बिकेगा। वह परिवार प्रति मास निम्नतम १०० रु० के हिसाब से साल भर में १२०० रु० की आमदनी कर सकेगा। लेकिन अगर ठीक से सोचा जाय तो यह हिसाब मेल नहीं खाता ऐसा दीखता है। १००० वर्गगज में १२०० रुपये आमदनी देनी हो तो उसका साफ अर्थ यह होता है कि एक वर्गगज कपड़े के लिए १ रु० २० न० पै० मजदूरी देनी होगी। जिस कपड़े के १ रु० २० न० पै० प्रतिगज के हिसाब से केवल मजदूरी चुकानी पड़ेगी, वह कपड़ा मिल से सस्ता कैसे होगा यह समझ में नहीं आता है।

आज बाजार में मिल का धुला हुआ सफेद कपड़ा दस आने गज तक के आसपास बिकता है। कुछ किस्में इससे भी सस्ती बिकती हैं और कुछ महँगी भी। लेकिन [illegible] अंकों का सामान्य दर्जे का मिल-कपड़ा करीब दस आने वर्गगज बिकता है। [illegible] एक वर्गगज कपड़ा बनाने में [illegible] चार से साढ़े चार आने की रुई लगती है तथा धरखा, करघा, कंघी, [illegible] आदि की घिसाई, रुई का [illegible], [illegible] आदि का खर्च, [illegible] है। पावर से [illegible] साधनों का घिसाई-खर्च तथा [illegible] इससे कम नहीं, बल्कि इससे ज्यादा आता है। [illegible] पूरा ध्यान [illegible], ऐसा हो नहीं मानना चाहिए। बेचने के लिए प्रति वर्गगज आधे आने से एक आने तक खर्च सहज में आयेगा। यह सब खर्च जोड़कर जो बचत रहेगी, वही आखिर उत्पादक परिवार के पल्ले पड़ेगी। अगर मिल से सस्ते भावों में इन परिवारों का कपड़ा बिक जाय, ऐसा श्री भारतानन्दजी चाहते हैं, तो यह साफ है कि उत्पादक परिवार को उसकी मजदूरी की बचत प्रति वर्गगज केवल तीन आने के आसपास में ही रहेगी। अगर बहुत कुशलता से सारा व्यवहार चले तो संभव है कि बचत अधिक-से-अधिक चार आना वर्गगज तक भी रह सके। लेकिन चार आने की बचत गिनने पर भी एक परिवार को १,००० वर्गगज कपड़ा बनाने की औसत मजदूरी साल भर में ढाई सौ रुपये से ज्यादा नहीं मिल सकेगी, ऐसा हिसाब बतलाता है। श्री भारतानन्दजी ने पाँच परिवार में एक परिवार रंगाई छपाई, फिनिशिंग आदि के काम के लिए लिया है वह छोड़ दिया जाय और चार परिवार ही पाँच हजार वर्गगज कपड़ा बना लें, ऐसा माना जाय, तो भी साल भर में प्रति परिवार ज्यादा आमदनी रु० ३०० (तीन सौ) के ऊपर नहीं पड़ती, ऐसा हिसाब निकलता है। अगर मिल का कपड़ा दस आने वर्गगज से कुछ महँगा भी हो तो भी उस दाम से बेचने पर भी १२०० रु० की आमदनी मिलना तो असंभव ही है।

श्री भारतानन्दजी का दूसरा विचार भी गहराई से सोचने लायक है कि हाथों की शक्ति से देश भर का कपड़ा बनाने में देश के सारे [illegible] लोगों के कम-से-कम २५ प्रतिशत लोगों को [illegible] पूरा समय कताई में लगा देना होगा, जब कि वे चाहते हैं कि इस प्रतिशत से [illegible] इस पर आधारित न हों।

'अंबर' चरखा के संबंध में जानते हैं कि अंबर चरखे पर अब कातने से एक व्यक्ति के लिए रुई की पूनाई से लेकर सूत परखने तक १६ से २० गुंडियाँ सूत-उत्पादन करना संभव हुआ है। अच्छी तालीम से और अंबर के इस्तेमाल से यह भी संभव हुआ है कि आठ मनुष्य-घंटे में रुई की धुनाई से बुनाई तक की हाथ की प्रक्रियाओं में दो वर्गगज कपड़ा तैयार हो सकता है। इस हिसाब से एक व्यक्ति साल में २५० दिन काम करके ५०० वर्गगज और एक परिवार के दो व्यक्ति साल में १,००० वर्गगज कपड़ा तैयार कर सकते हैं। इसके लिए पावर की बिलकुल जरूरत नहीं रही है। बल्कि तालीम की, आदत बनाने की, अच्छे साधन की, अच्छी रुई मिल सके ऐसी और बने कपड़े की खपत होती रहे, इसकी व्यवस्था की जरूरत है। आज की हालत में इन सबकी कमी के कारण उत्पादन-क्षमता इससे कम रहना संभव है। मगर यह कमी पावर के अभाव के कारण नहीं है, यह भी ध्यान में रखना जरूरी है। इन कमियों के निवारण के बिना पावर के सहारे भी उत्पादन-क्षमता कम रह सकती है। ऊपर दिये गये हस्तचालित वस्त्रोद्योग के हिसाब में कपास की ओटाई तथा रंगाई, छपाई आदि का समय नहीं जोड़ा है। श्री भारतानन्दजी ने यह जोड़ कर पावर से प्रति परिवार १,००० वर्गगज कपड़ा-उत्पादन माना है, जबकि हमने ओटाई, रंगाई, छपाई छोड़ कर हाथ से प्रति परिवार १,००० वर्गगज उत्पादन की संभावना मानी है। खादी-सरंजाम प्रयोग का कार्य बगैर पावर के वैसा परिणाम दिखलाने लगा है। इसलिए हाथ से काम करना हो, तो हमारी २५ प्रतिशत जनशक्ति खादी काम में लग जायगी, ऐसा नहीं दीखता है। अगर श्री भारतानन्दजी देश की दस प्रतिशत आबादी का गुजर वस्त्रोद्योग के द्वारा यानी प्रत्यक्ष में करीबन ४ प्रतिशत जनसंख्या इस काम में लगे यह ठीक समझते हैं, तो उसके लिए पावर की जरूरत नहीं दीखती है। हस्तचालित अंबर चरखा भी उतने ही यानी चार प्रतिशत मनुष्यशक्ति से कपड़े की जरूरत पूरी कर सकता है।

अंत में श्री भारतानन्दजी ने पावर-चालित और हस्तचालित वस्त्रोद्योग में स्पर्धा एवं शोषण न हो, इसलिए उसका नियंत्रण खादी-कमीशन कर सकेगा, ऐसी आशा प्रकट की है। मगर मौजूदा हालत यह है कि हस्तचालित पारंपरिक चरखा के और अंबर चरखा के सूत के अलग अलग दामों का नियंत्रण करना भी कमीशन को कठिन महसूस हो रहा है। और इस स्थिति पर खादी-कमीशन ने पारंपरिक चरखे के सूत के दाम अंबर-सूत की बराबरी में लाने का प्रस्ताव रखा है, यानी पारंपरिक हस्तचालित चरखे की कताई-मजदूरी आज जो ज्यादा है, वह कम करके अंबर सूत की कम मजदूरी और कम करने का सोचा जा रहा है। ऐसी अवस्था में पारंपरिक हस्तचालित चरखे के सूत के और हस्तचालित चरखे के सूत के दाम अलग-अलग रहें ऐसा नियंत्रण कर सकेगा यह कल्पना [illegible] होगा और इस तरह का नियंत्रण करने का मौका आया, तो शायद वह उसकी मर्यादा के बाहर का होगा।

●

जब 'डाकुओं' ने राखी बँधवायी !

• श्रीकृष्णदत्त भट्ट

"मे बेन बहेनी मणि दगो दी ?"

[मैंने जिस मणि को "बहन" कहा, क्या उसने मुझे दगा दी ?]

गुजरात के कुख्यात डाकू बाबरदेवा के इस वाक्य में जो तीव्र वेदना छिपी पड़ी है, वह कितनी मार्मिक है ! भला बहन भी कभी दगा दे सकती है, फिर वह धर्म की बहन ही क्यों न हो !

सन् १९१८ से लेकर १९२४ तक बाबर देवा ने खेड़ा और भड़ौच जिलों में जो आतंक मचा रखा था, उससे जनता ही नहीं, पुलिस के बड़े-बड़े अधिकारी भी थर्रा उठे थे ! उसे पकड़ने का एक षड्यंत्र रचा गया, उसकी एक 'धर्म की बहन'—मणि के घर।

बत्तीस साल की कैद की सजा पाने वाले अपने एक साथी की बेटी के विवाह के लिए दो हजार रुपये दिलाने को बाबर देवा जब मणि के घर पहुँचा, तो उसे वहाँ अंधकार में मणि के कपड़े पहने पुलिस मिली, जिसने भीतर घुसते ही बाबर को पटक कर उसके शरीर पर अपना कब्जा कर लिया ! बेचारी मणि को तो पुलिस ने उसके पति के साथ पहले ही एक कमरे में बन्द कर दिया था।

गुजराती के स्वनामधन्य लेखक झवेरचन्द मेघाणी की अमर कृति "माणसाईना दीवा" में दिया गया बाबरदेवा की गिरफ्तारी का यह प्रसंग हमें बताता है कि डाकू भी जिसे बहन मान लेते हैं, जिसे अपना साथी या दोस्त मान लेते हैं, उसके लिए भारी से भारी खतरा उठा कर भी वे अपना पुण्य कर्तव्य पूरा करते हैं। साथी तो साथी, दोस्त तो दोस्त, बहन तो बहन !

× × ×

डाकुओं को बाबा 'दोस्त' कहते हैं। चार-पाँच दिन हमारे साथ रह कर आज विनोबा के ये १८-२० नये "दोस्त" जेल जा रहे हैं। हमारे यात्री-दल की बहनों ने प्रार्थना की कि 'इन भाइयों की विदाई के मौके पर हम इन्हें राखी बाँधना चाहती हैं।' बाबा ने मंजूरी दे दी।

सायंकालीन सभा के थोड़ा पहले रोली, अक्षत और भिण्ड के प्रसिद्ध केसरिया पेड़ों तथा खादी की रंगीन राखियों से भरा थाल लेकर जब सुमति बहन मंच के पास आयी, तो रक्षाबन्धन का यह आयोजन मुझे बड़ा ही अद्भुत और हृदयस्पर्शी लगा। पर थोड़ी ही देर में वह उस थाल को लौटा ले गयी। पता चला कि विदाई का समारोह सार्वजनिक सभा में नहीं होगा, वह होगा रात्रिकालीन प्रार्थना के समय।

तीन घण्टे बाद–रात के पौने आठ बज रहे हैं। हाईस्कूल के छात्रावास की विशाल छत पर नक्षत्रों की छाया में हम सब बैठे हैं। अन्तेवासी तो हैं ही, कुछ अतिथि भी हैं, थोड़े-से दर्शक भी।

बाबा की चौकी के बगल में एक ओर लम्बी जाजम बिछी है। उस पर एक किनारे बहनें बैठी हैं, बगल में बागी भाई। हम सब दूसरी ओर। एक ओर लालटेन रखी है, बहुत मंद करके, बाबा की ओर आड़ लगा कर।

प्रार्थना के पूर्व बागी भाइयों की ओर से माँग हुई—"बाबा, हम कीर्तन करना चाहते हैं।"

बाबा ने कहा—"ठीक है, पहले कीर्तन कर लो। बाद में प्रार्थना होगी।"

गले में कण्ठी पहने दाढ़ीवाले एक बागी–विद्याराम–ने खड़े होकर कीर्तन आरम्भ किया।

रघुपति राघव राजाराम।
पतित पावन सीताराम ॥

हम सब ताली बजा-बजा कर दुहराने लगे—रघुपति राघव राजाराम ! विद्याराम ने कीर्तन में पूरी राम कथा गा डाली.

दसरथ के घर जाये राम।
जनक सुता से ब्याहे राम।
अवधपुरी है उनका धाम ॥
पितु आज्ञा मानी इक छन में।
चौदह बरस बसे प्रभु बन में।
चित्रकूट पर किया मुकाम ॥
राम प्रवरषन गिरि पर छाये।
बालि अनुज सुग्रीव मिलाये।
पवन तनय किया सेवा काम ॥
भगत विभीषन शरन में आये।
लंकापुरी के राजा बनाये :
रावन को भेजा निज धाम ॥
रामनाम से मुख मति मोड़ो।
प्रीति सदा तुम प्रभु से जोड़ो।
"विद्याराम" भज पूरन काम ॥ पतित०

× × ×

कीर्तन के उपरान्त प्रति दिन की भाँति स्थितप्रज्ञ के श्लोकों का पाठ हुआ, पर आजकल वातावरण मानो प्रत्येक को पुकार-पुकार कर कह रहा था–'देखो तुम सबको, "दु:खेषु अनुद्विग्नमना:" बनना है, 'सुखेषु विगतस्पृह !"

'बाबा का आशीर्वाद लो, चलो-लुक्का।' मेजर जनरल यदुनाथ सिंह ने अपनी जंगली आवाज में पुकारा।

लुक्का उठा, बाबा को प्रणाम किया–"बाबा, आशीर्वाद दो।" बाबा बोले–"सद्भावना रखना। भगवान में भक्ति रखना। ठीक है न ?" "हाँ बाबा !"

कान्ता बहन ने लुक्का के माथे पर टीका किया, हरविलास बहन ने राखी बाँधी। कैमरे ने उस अंधकार में "फ्लैश मारा" और उस क्षण को अपने प्लेट पर कैद कर लिया !

× × ×

तेज सिंह और भगवान सिंह, भूपसिंह और कन्हई, विद्याराम और डकू, मटरी और जंगी, रामसनेही और दुर्जन, पतिया और थी विशन, लच्छी और परम, मोहरमन और बहन सिंह, राम दयाल और करन सिंह–सबके नाम एक-एक करके पुकारे गये।

सब बाबा को आ-आकर प्रणाम करते, बाबा सबसे कहते–"सद्भावना रखना। भगवान में भक्ति रखना। ठीक है न ?" सब कहते–"हाँ।" कान्ता बहन टीका लगाती, हरविलास बहन राखी बाँधती।

दुर्जन सिंह जब प्रणाम करने लगे तो बाबा ने उनसे कहा–"देखो, आज से तुम 'दुर्जन सिंह' नहीं रहे। अब तुम 'सज्जन सिंह' हो गये। ठीक है न ?"

"हाँ बाबा"

× × ×

रक्षाबन्धन के पुनीत पर्व पर बहनें टीका करती हैं, प्रसाद खिलाती हैं, राखी बाँधती हैं। भाई उन्हें प्रणाम करता है और कुछ-न-कुछ दक्षिणा देता है।

पर इन बागी भाइयों के पास इन धर्म की बहनों को देने के लिए था ही क्या ? वे प्रणाम करके प्रसाद लेकर बैठ जाते।

तभी हमने देखा कि हरविलास बहन को प्रणाम करने के साथ एक भाई जेब से नोट निकाल कर दे रहा है।

"नहीं भाई, नहीं। हमें नहीं चाहिए ये रुपये।"

"ऐसा नहीं हो सकता। आपने हमें राखी बाँधी है। ये रुपये तो आपको लेने ही होंगे।"

बाद में पता चला कि ये छ रुपये उसने जेल में बीड़ी पीने के लिए छिपा कर रख छोड़े थे। पर भ्रातृत्व के उद्रेक ने उसे विवश किया कि वह इन्हें बहनों के चरणों पर उत्सर्ग कर दे।

हाँ, एक बात तो रह ही गयी।

लुक्का ने बाबा से यह भी माँग की कि 'बाबा, हमें नेहरूजी का दर्शन मिले।'

बाबा ने कहा–"ठीक है। पण्डितजी का फोटो इन्हें दिला देना भाई।"

लुक्का बोला—"नहीं बाबा, फोटो तो हमारे पास है।"

बाबा—"तब कैसे दर्शन चाहते हो ?"

लुक्का—"वैसे ही, जैसे हमें आपके दर्शन मिले। उन्हें हम पुरुषोत्तम भगवान मानते हैं।"

बाबा ऐसा आश्वासन भला कैसे देते ? हाँ, उन्होंने जनरल यदुनाथ सिंह की ओर देख कर कहा–"जनरल साहब, इस भाई की बात पण्डितजी तक पहुँचा देना।"

जेल में भगवान की पूजा कर सकने की सुविधा की माँग ये बागी पहले ही कर चुके थे। इस बात का उन्हें आश्वासन मिल चुका है।

× × ×

और 'इसके' बाद आयी बागियों की विदाई की बेला !

अन्तेवासियों से, बहनों से, भाइयों से बागी लोग मिल रहे थे, अपने घर वालों को उन्होंने जान बूझ कर इस समय नहीं बुलाया था। फिर भी विदाई का समाँ बेटी की की विदाई का समाँ बन गया। सबकी आँखें छलछला रही थीं। बागियों की आँखें तो गंगा-जमुना बन रही थीं। सबको लगता था, मानों हम अपने ही घर वालों से आज विदाई ले रहे हैं ! प्रेम और करुणा का सागर मानो हिलोरें ले रहा था।

पुलिस की खुली गाड़ी में सब बागी बैठ गये। करण सिंह का वारण्ट नहीं था, इसलिए पुलिस उन्हें नहीं ले गयी। जनरल यदुनाथ सिंह इन लोगों को जेल तक पहुँचाने गये। कान्ता और हरविलास बहन भी साथ चली गयीं। मोटरें जब तक आँखों से ओझल नहीं गयीं, हम लोग खड़े-खड़े यह करुण दृश्य देखते रहे।

सामने श्रीमती शकुन्तला ललित को देख कर मैंने पूछा—"शोभना कहाँ है ?"

आँखों में गुबार भरे वे बोलीं—"वह भी तो गाड़ी पर बैठ कर जेल चली गयी है। ललित भी गया है।"

"छ साल की उस छोटी बच्ची को आपने नाहक ही भेज दिया। कहीं बारह बजे तक ये लोग लौटेंगे। तब तक सो न जायगी वह ? कमरौली कटारा के पड़ाव पर उस दिन मेरी गोद में वह आठ के बाद ही सो गयी थी !"

"क्या करती मैं ? वह मानी ही नहीं ! मचल गयी–आने दो।"

बहुत रात गये लोग लौटे। कान्ता तो यों ही भावुक लड़की ! हरविलास भी। बागियों की आत्मीयता दोनों को बुरी तरह छू गयी। एक भाई उनसे कहने लगा–"हमने जो पाप किये हैं, उनका फल तो हम भोगेंगे ही, पर तुम सबने हम पर जो इतना प्रेम बरसाया, उसे तो हम जिन्दगी भर भूल नहीं सकते। तुम भी बहन हमें कभी-कभी याद कर लेना। हमें चिट्ठी डालती रहना। बाबा के हाल चाल देती रहना। जेल से अगर छूटने का कभी दिन आया, तो हम बाबा का ही काम करेंगे।"

बम्बई के कालेजों में पढ़ी हुई ये लड़कियाँ जब सोचती कि इन चार-पाँच दिनों के भीतर इन बागी भाइयों ने उनके साथ जैसा सम्मानपूर्ण और आत्मीयता से भरा व्यवहार किया, उसकी क्या कभी उन 'सभ्य' तथा "प्रतिष्ठित" कहे जाने वाले तरुणों से भी अपेक्षा की जा सकती थी, जो उनके साथ पढ़ते थे, और जिनसे उन्हें पग-पग पर सतर्क रहना पड़ता था ?

तब तो उन 'सफेदपोश डाकुओं' से ये 'बदनाम डाकू' ही लाख दर्जे भले, जिन्होंने बाबा के आगे हथियार डाल कर खुले दिल से कह दिया–"बाबा, हमसे बड़ी गलती हुई। अब आयन्दा हम कभी ऐसा गलत काम नहीं करेंगे।"*

---

* लेखक की शीघ्र प्रकाशित होने वाली "चम्बल के बेहड़ों में"—पुस्तक से।

"स्वच्छ" काशी के लिए सुझाव

घर और बाहर की सफाई !

सर्वोदय समाज-रचना के उद्देश्य से गाँवों और नगरों के लिए कई प्रकार के कार्यक्रम हो सकते हैं। बुनियादी मूल्य-परिवर्तन के कार्य स्वाभाविक ही लंबी योजना पर आधारित होते हैं। लेकिन कुछ काम हैं, जिन्हें तत्काल हाथ में लिये जाने की जरूरत है। इन्हें थोड़े या अधिक लोग, यहाँ तक कि एक-एक व्यक्ति भी सहज शुरू कर सकता है। इनमें एक महत्त्व का, जरूरी और उपयोगी काम, स्वच्छता का है।

स्वच्छता के कार्यक्रम के दो मुख्य अंग हैं पहला, व्यक्तिगत या परिवार के निवास-स्थान की सफाई, दूसरा, सार्वजनिक स्थानों की सफाई, यानी घर और बाहर की सफाई।

व्यक्तिगत, परिवारगत अर्थात् घर की सफाई को लें। व्यक्ति यदि अपने घर की सफाई के जिम्मे को सचाई से और विवेक से निभाता है, तो सार्वजनिक या बाहर की सफाई का काम आधा निपट जाता है। गंदगी अक्सर व्यक्तियों की लापरवाही, गैरजिम्मेदारी, हठधर्मी, कर्तव्य के प्रति उदासीनता या प्रमाद के कारण होती है।

व्यक्ति या परिवार सहज ही अपने घर में यह कर सकते हैं —

(१) भगवत् भक्ति और भोजन की भाँति स्वच्छता को परलोक तथा इहलोक, दोनों के लिए अनिवार्य धर्म-कर्म मानें। अंग्रेजी में एक कहावत भी है—"स्वच्छता ईश्वरत्व के बिलकुल नजदीक है।" (क्लीनलीनेस इज नेक्स्ट टु गॉडलीनेस)

(२) रोजाना सुबह घर-आँगन को झाड़ने-बुहारने पर जो कूड़ा-कचरा निकले, वह घर के बाहर रास्ता, गली, नाली में इधर-उधर न डालो जाकर एक कचरा-पेटी या पीपे में बटोर लिया जाय और नगरपालिका की ओर से मुहल्ला या बस्ती में कूड़ा डालने के लिए जो स्थान, ढोल वगैरह निश्चित हो, वहाँ और उस बर्तन में वह कूड़ा-कचरा सावधानी से डाल दिया जाय। वहाँ भी ढोल के बाहर चारों तरफ या ढोल के अभाव में इधर-उधर फैला हुआ कम-से-कम अपने घर का कचरा न पड़े, यह हर परिवार ध्यान रखे। यदि मुहल्ले, क्षेत्र या बस्ती में नगरपालिका द्वारा कोई स्थान निर्धारित न हो, ढोल आदि की व्यवस्था न हो, तो अधिकारियों को उसके लिए कहा जाय, सामूहिक तौर से निवेदन किया जाय। हो सके तो मुहल्लेवाले मिल कर एक स्थान तय कर दें और नगरपालिका से उस जगह से कूड़ा-कचरा उठाने की प्रार्थना की जाय। एक मुहल्ले या बस्ती के नागरिक इस प्रकार अपना-अपना जिम्मा निभायेंगे, स्वयं चैतन्य होंगे और सार्वजनिक सफाई का ध्यान रखेंगे, तो ढोल वगैरह की व्यवस्था नगरपालिका को करनी ही होगी।

(३) दिन भर में साग सब्जी तराशने, बच्चों के खान-पान, अन्य कामकाज से जो कूड़ा-कचरा हो, उसे घर के किसी एक कोने में पीपे या कनस्तर में इकट्ठा किया जाय। रोजाना सुबह सफाई के समय उसे खाली किया जाय। चिथड़े, कागज, रस्सी वगैरह के टुकड़े, कील-कांटे घर में काम में लिये जा सकते हों, वह छाँट लिये जायँ या कबाड़ी व रद्दीवाले को बेच कर लाभ उठाया जाय।

(४) घर में पेशाब-पाखाने के लिए एक, या आवश्यकतानुसार अधिक स्थान निश्चित हों। छोटे बच्चों तक को उन्हीं के उपयोग के लिए प्रेरित किया जाय और वैसी उनकी आदत डाली जाय। फ्लश के पाखाने नहीं हों, वहाँ पाखाने पर डालने व आबदस्त लेने समय पाखाने पर पानी न पड़ कर अलग बहे, ऐसी कुछ व्यवस्था करने की ओर ध्यान दिया जाय। पाखाना जाने के बाद उसी पर पानी पड़ने से गंदगी बढ़ती है, भंगी को सफाई में दिक्कत होती है और जगह भी पूरी तरह साफ नहीं हो सकती है। पेशाब और पाखाने के स्थान पर हर रोज या हर तीसरे-चौथे रोज अथवा सप्ताह में एक बार फिनाइल या गरम पानी डाला जाय।

(५) पाखाना-पेशाब की भाँति ही कफ थूकने, दातून के बाद कुल्ला करने वगैरह के लिए भी निश्चित स्थान या नाली हो, उसे हर समय पानी से बहा कर साफ रखने की कोशिश की जाय। जहाँ तक संभव हो, पेशाब और अन्न के कण, खाद्य पदार्थ आदि एक जगह न गिरें, ऐसी कोशिश की जाय, क्योंकि दोनों के संयोग से नालियों में सबसे जल्दी और सबसे अधिक बदबू बढ़ती है।

(६) खाने-पीने की चीजों को मक्खी-मच्छर, रोशनी पर आनेवाले कीड़े, पतंगों से बचाने के लिये कपड़ा, जाली या अन्य चीज से ढाँक कर रखने की आदत घर में छोटे-बड़े सबको डालनी चाहिए।

सार्वजनिक सफाई

(१) हर बस्ती या मुहल्ले में सब परिवार मिल कर एक समिति बनायें। यह समिति मुहल्ले के घरों व सार्वजनिक स्थान गली, रास्ता, नाली वगैरह की सफाई की ओर ध्यान दे। समिति समय-समय पर मिले और एक छोटी कार्यवाहक उप-समिति बना ले। निरीक्षण का जिम्मा बाँट ले, सफाई के तरीके सीखने का प्रयत्न कर घर-घर को बतायें-सिखायें। नगरपालिका की ओर से मुहल्ले या बस्ती की सफाई में ध्यान न दिया जाता हो, तो समिति उनके लिए मुहल्ले की ओर से संपर्क करे, पत्र-व्यवहार करे और कार्रवाई कराये।

एक-एक व्यक्ति या परिवार के लिए नगरपालिका के अधिकारियों व कर्मचारियों से काम करा लेना कठिन हो सकता है। पर ऐसी समिति व मुहल्ले की सम्मिलित बात की ओर ध्यान न देना संभव नहीं रहेगा।

(२) हर व्यक्ति या प्रति परिवार कम से कम एक व्यक्ति बाहर की, अर्थात् सार्वजनिक स्थान की सफाई में भाग लेना अपना जिम्मा मानें। एक परिवार में से एक व्यक्ति को प्रतिदिन एक घंटा या जितना अनुकूल हो, सार्वजनिक सफाई में योग देने के लिए मुक्त किया जाय। कुछ मुहल्लों या बस्तियों की समितियाँ मिल कर अपने क्षेत्र के सार्वजनिक स्थानों की सफाई का कार्यक्रम, समय वगैरह तय करें और सप्ताह में एक बार सामूहिक सफाई का कार्यक्रम एक दो घंटा चलाया जाय।

भंगी-काम की तैयारी

यह मानना चाहिए कि देर या सबेर एक मनुष्य द्वारा पेट के लिए दूसरे का पाखाना ढोने का काम समाज में से उठेगा, अर्थात् भंगी का पेशा करने वाला कोई नहीं रहेगा। दरअसल यह एक बड़ा भारी पाप और बेरहमी का काम है कि एक भले, चंगे व्यक्ति का पाखाना दूसरा व्यक्ति उठाये, ढोये। नगरों को इसके लिए तैयारी शुरू करनी चाहिए। फ्लश के पाखाने न बने हों, वहाँ पाखानों में बाल्टी या दूसरा कोई बर्तन रखा जाना चाहिए। काम भंगी करता हो, तब भी बाल्टी रहना जरूरी है। धीरे धीरे भंगी न रहे, इस दृष्टि से किसी नियत समय नगरपालिका की ओर से पाखाना ढोने वाली गाड़ी मुहल्ले में या उसके किनारे पर आये, उस समय घर की पाखाने की बाल्टी गाड़ी में उँडेल दी जाय। घर के दो व्यक्ति या एक व्यक्ति लकड़ी या रस्सी से बाल्टी लटका कर ले जाने की आदत डाले। गंदगी बचाने की दृष्टि से बाल्टी ढाँप कर रखना ठीक होगा। बाल्टी में नीचे सूखी राख, मिट्टी, घास या कागज की कतरन डाल दी जायगी, तो बाल्टी की सफाई जल्दी होगी।

नगरों में घनी बस्ती व आबादी निरंतर बढ़ रही है। स्वच्छता की ओर ध्यान न देने पर ऐसी जगहों में कोई भी बीमारी जरा देर में चारों तरफ फैल सकती है। गंदगी से बीमारियाँ अपने आप पैदा हो जाती हैं और बढ़ती हैं। इसलिए नगर-स्वच्छता की ओर नगरवासियों को व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। सब सार्वजनिक संस्थाओं को बिना भेदभाव के इसमें योग देना चाहिए। नगरपालिकाओं व कारपोरेशन को सबके सहयोग के लिए विशेष प्रयत्न करना चाहिए।

काशी और इंदौर नगरों में आज इस सबंध में विशेष कार्यक्रम उठाये गये हैं। विनोबा का दोनों नगरों के कार्य पर विशेष जोर है। 'स्वच्छ काशी' का नारा बुलंद किया गया है। घर और बाहर की सफाई का उपर्युक्त कार्यक्रम इस काम में मददगार होगा, ऐसी आशा है।

—पूर्णचंद्र जैन

●

शांति-सेना

● उत्तर प्रदेशीय शांति-सेना मंडल तथा अखिल भारत शांति-सेना कार्यालय ने चंबलघाटी शांति-सेना-मंडल की माँग पर भिण्ड-मुरैना क्षेत्र में २५ शांति सैनिकों को भेजने का निश्चय किया है।

● दरभंगा के श्री ललितेश्वरी चरण सिन्हा सूचित करते हैं कि दरभंगा जिले के गोलाघाट ग्राम में गलतफहमी के कारण ता० ७-७-६० को हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगा छिड़ गया। इस दंगे को शान्त करने में ८-१० शांति-सैनिकों ने पूर्ण प्रयत्न किया। कचहरी में मुकदमा पहुँच जाने के बावजूद शांति-सैनिकों के प्रयास से दोनों पक्षों ने प्रेम से समझौता कर मुकदमे को कचहरी से उठा लिया है।

● आसाम राज्य की भाषा के प्रश्न को लेकर आसाम में जो अशांति पैदा हुई, उसके फलस्वरूप अ० भा० शांति-सेना मंडल की संयोजिका श्रीमती आशादेवी वहाँ की परिस्थिति के अवलोकनार्थ गोहाटी पहुँचीं। आसाम के शांति सैनिकों से आज की परिस्थिति में उनके कर्तव्य के बारे में चर्चा की। शांति-कार्य की योजना प्रस्तुत कर शांति-सैनिकों का मार्गदर्शन किया। इस समय स्थायी शांति-स्थापनार्थ शांति-सैनिक भाई-बहन घर-घर जाकर प्रयत्न कर रहे हैं।

●

छपरा जिले में सर्वोदय-पात्र

सर्वोदय-पात्र का काम व्यवस्थित ढंग से चल सके, तो जनाधारित सर्वोदय-शांति अवश्य सफल हो सकती है और सर्वोदय-कार्यकर्ता निधि-मुक्त होकर सेवा कर सकते हैं। छपरा जिले में जनवरी १९६० से जून १९६० तक कुल ७३४७ सर्वोदय-पात्र स्थापित हुए। इन पात्रों से ५११ रुपये की आमदनी हुई। वर्तमान में चालू सर्वोदय-पात्रों से औसत मासिक आय लगभग ९० रुपया है। जिला सर्वोदय मंडल, प्रांतीय सर्वोदय-मंडल और सर्व सेवा संघ का हिस्सा बराबर भेजा गया है।

●

राजस्थान की भूमि

राजस्थान भूदान-यज्ञ बोर्ड ने अपने प्रदेश में प्राप्त भूदान की जमीन का जून '६० के अंत तक का पूरा विवरण प्रकाशित किया है। इस विवरण में बताया गया है कि अभी तक पूरे प्रदेश में ४,३२,६३५ (चार लाख बत्तीस हजार छह सौ पैंतीस एकड़) जमीन मिली है, जिसमें २५,१४६ (पच्चीस हजार एक सौ छियालीस एकड़) जमीन बाँटने के लिए सर्वथा अयोग्य होने के कारण खारिज कर दी गयी है। प्राप्त भूमि में से ९५,५१९ एकड़ भूमि भूमिहीनों में बाँट दी गयी है। अभी भी ३,११,९७० एकड़ भूमि ऐसी है, जिसे बाँटना बाकी है।

●

विनोबाजी के यात्रा-प्रसंग का एक मनोहारी वर्णन

राष्ट्र-निर्माण के लिए सब दल एक हों !

कुसुम देशपांडे

चारों ओर फैला हुआ हराभरा विन्ध्याचल याद दिला रहा है। ठीक एक साल पहले इन्हीं दिनों में शुभ्रहिमकिरीटधारी पर्वतमाला की साक्षी में, सीलन के वैभवशाली प्रदेश में यात्रा हो रही थी। आज तक हिमाचल संतरी बन कर उत्तर की सीमा की रक्षा कर रहा था। आज वहाँ जो चहल-पहल हो रही है, उसने सारे विश्व का ध्यान खींच लिया है। जिन पहाड़ों में एक जमाने में शान्ति-मंत्रों का उच्चारण हो रहा था, क्या आज वहाँ से अशांति की आग विश्व में फैलेगी ?

"क्या आपकी शांति सेना यह सब शांति से देखेगी ?" "क्या आपके पास इसका इलाज है ?" "चीन के साथ मुकाबला करना है, तो नरमाई से काम नहीं चलेगा...।" इस तरह के विविध सवाल पूछे जा रहे हैं।

इन दिनों विनोबाजी गाँववालों को और शहरवालों को भी एक चीज बार-बार समझाते हैं : "पार्टियों ने तबाह किया है, टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं। इनसे आप सावधान रहिये, एहतियात से रहिये।"

सनोडिया की प्रार्थना-सभा में इसी तरह आगाह करते हुए विनोबा ने कहा 'अभी हिन्दुस्तान के सामने एक संकट खड़ा है। चीन के साथ मुकाबला होने जा रहा है। हिन्दुस्तान का कुछ हिस्सा चीन ने हाथ में ले लिया है। एक जमाने में पहाड़ों से रक्षण होता था। अब विज्ञान के जमाने में वह नहीं हो सकता है। हम पार्टी वालों से पूछना चाहते हैं कि आपको एक होने के लिए चीन के हमले की राह क्यों देखनी चाहिए ?"

× × ×

नदी में बहने वाला पानी नित्य निरंतर बदलता रहता है। विनोबाजी की टोली में नये-नये साथी शामिल होते हैं, पुराने जाते हैं। बीच-बीच में साथ चलने वाले साथियों के साथ परिचय करने की दृष्टि से उनसे विनोबाजी दिन में किसी वक्त मिलते हैं। महुडीया के डेरास्थान में एक बिलकुल ही छोटी-सी जगह में विनोबाजी के इर्दगिर्द मध्य-प्रदेश के सेवक-कार्यकर्ता तथा यात्री-दल के 'मेहमान' बैठे थे। इन सबके सामने चिंतन के लिए मसाला पेश हुआ।

"हम चाहते हैं कि हमारे कार्यकर्ता विचार अच्छी तरह समझ लें। कार्यकर्ता इकट्ठा होते हैं, तो उनमें मतभेद होता है, पीछे मनमुटाव होता है। सेना में ऐसा कभी नहीं होता, क्योंकि वहाँ दर्जे मान लिये गये हैं : कैप्टन, लेफ्टनेंट कर्नल, जनरल आदि। ऊपरवाले की आज्ञा का पालन वहाँ होता है। इस तरह से आज्ञावश वहाँ चलता है। हम क्या करते हैं ? हम न आज्ञा मानते हैं, न...। बाबा ने 'शासन मुक्ति' कह दिया। अब, हम 'मुक्त' हैं। लेकिन समझना चाहिये कि शासन-मुक्ति का अर्थ यह है कि आज्ञा से कोई विचार लादा नहीं जा सकता। लेकिन जहाँ आचरण का, योजना का सवाल आता है, वहाँ किसी एक का हुक्म कहना स्वीकार करके हमें चलना चाहिये। जर्मनी का मशहूर मार्शल रोमेल बहुत अच्छा सेनापति था। उस समय लड़ाई के मौके पर हिटलर की 'आर्मी कौन्सिल' थी। उसमें यह तय होता था कि किसको कितनी मदद दी जाय। रोमेल ने थोड़ी ज्यादा मदद मांगी—टैंक्स और सिपाहियों की। अगर उसे उनकी मदद मिलती, तो वह हिंदुस्तान तक पहुँच सकता था। वह बीच में इजिप्त की सीमा पर आया भी था। माना गया था कि अगर वह हिन्दुस्तान तक पहुँचता, तो विजय जर्मनी के पक्ष में होती। लेकिन 'आर्मी कौन्सिल' ने उसकी मांग कबूल नहीं की। फिर भी वह नाराज नहीं हुआ। देश की आज्ञा समझ कर वह उतने ही टैंक्स लेकर लड़ा। वे बिगड़ते थी, यह उनको दुरुस्त करता जाता और काम लेता था। वह हटा तो कुशलता से ही हटा। मार खाते-खाते हटा, लेकिन भागा नहीं। उसने देश के साथ विद्रोह नहीं किया। आगे के जमाने में इतिहासकार लिखेंगे कि 'आर्मी कौन्सिल' का निर्णय गलत था। यह मैं इसलिये कह रहा हूँ कि इसमें जो गुण है, वह हमें लेना चाहिये। रोमेल ने यह कबूल नहीं किया कि हिटलर का निर्णय ठीक था। उसने यह विचार से माना नहीं। आज्ञा से उसने वह विचार नहीं माना, लेकिन आज्ञा से आचरण माना। उसने यह समझ लिया कि इस निर्णय का मतलब यह हुआ कि इस लड़ाई में हमें हटना है और मरना है। फौजों में हथियार हाथ में लेने वालों में एक प्रकार की मैत्री होती है। हममें इस प्रकार की मैत्री कम होती है। अहिंसा के लिये यह बिलकुल ही अशोभनीय बात है। ऐसा चलेगा तो एकत्र होकर काम करना हमारे लिये असंभव होगा।"

मालवा भूमि की सुन्दरता निहारते हुए यात्रा इन्दौर की तरफ बढ़ रही थी। आँखें सृष्टि का विविध रूप देखती थीं, कान विविध चर्चा सुनते थे, पाँवों से तीर्थ-यात्रा तो होती ही थी। एक पुण्यभूमि से दूसरी पुण्यभूमि में, मीरा की भूमि से देवी अहिल्या की भूमि में भक्त के कदम बढ़ रहे थे। ऐसे ही एक प्रसन्न प्रभात में एक भाई ने कहा, "इधर के मुल्क में, खास कर के चमारों में ईसाई धर्म का प्रचार हो रहा है। दूसरे धर्म को वे लोग स्वीकार करते हैं, इसमें कुछ कहना नहीं है। पर वे लोग देवता की निंदा करते हैं, पूजा नहीं करते हैं।"

विनोबाजी : "मैं भी देवता की पूजा नहीं करता हूँ। हिन्दू-धर्म में यह तो नहीं कहा है कि जो देवता की पूजा नहीं करता है, वह हिन्दू नहीं है। आपको सोचना यह चाहिये कि आपने कभी उन चमारों को प्यार से नजदीक लाया है ? उनके नजदीक जाकर कभी उनकी सेवा की है ? इससे उलटे आपने उनको हीन, नीच माना। उनके काम से घृणा की, हमेशा उनको दूर रखा। जहाँ-जहाँ दारिद्र्य है, वहाँ अक्सर मिशनरी और कम्यूनिस्ट पहुँचते हैं। मिशनरी लोग ऐसे स्थानों पर दवाखाना खोलते हैं, प्यार से उनकी सेवा करते हैं। उनको अपने नजदीक प्यार से आकर्षित करते हैं। बाइबिल सिखाते हैं। धर्म दया में है, करुणा में है, किताब में नहीं है। आप भी बाइबिल पढ़ सकते हैं। सेंट मैथ्यू के समान आचरण करके दिखाइये। लेकिन आप कभी उनके पास किताब लेकर गये नहीं, उनको ज्ञान नहीं दिया, सेवा नहीं की। प्रेम नहीं दिया। वे लोग उनकी सेवा करते हैं, ज्ञान और प्रेम देते हैं। तुम लोग भी उनके पास सेवा, प्यार और ज्ञान लेकर पहुँचो, तो देखो क्या होता है।"

दूसरे एक भाई ने पूछा "ईश्वर है, यह किस आधार से माना जाय ?"

बाबा ने बहुत धीमी और गंभीर आवाज में कहा "हमें ग्रंथों के आधार पर सोचने की जरूरत नहीं है। अपने अनुभव के आधार पर सोचना चाहिए। साइंस में 'एक्सपेरिमेंट' के परिणाम को मानते हैं। हमें भी अपने जीवन में अपने अनुभवों से देखना चाहिये। अगर हमें यह अनुभव आता है कि अपनी पुरुषार्थ-शक्ति से काम बनता है, तो ठीक है। लेकिन अगर नहीं बनता है, तो बाहर की मदद की जरूरत है, तो आप ले सकते हैं। जब बच्चा महसूस करता है, तब माँ मदद करती है। जब तक माँ की मदद से काम बनता है, तब तक माँ से बढ़कर दूसरी ताकत को वह नहीं मानता है। लेकिन जब ध्यान में आता है कि माँ की ताकत पूरी नहीं पड़ती है, तब परमेश्वर की मदद की जरूरत महसूस होती है। जब मनुष्य उस ताकत की खोज करता है, तब वह ताकत उसे उपलब्ध होती है। ईश्वर नहीं है ऐसा सिद्ध करने के लिए भी सबूत नहीं है और वह है, ऐसा सिद्ध करने के लिए भी सबूत नहीं है। लेकिन साइन्स बहुत नम्र होकर कह रहा है कि 'ईश्वर नहीं है,' ऐसा हम नहीं कहते हैं। साइन्स तटस्थ है और हमारे पूजनीय पुरुष 'है' ऐसा कहते हैं, तो हमें मानना चाहिये कि ईश्वर है। वह होने पर भी उसकी जरूरत महसूस नहीं होती, तो अलग बात है। बच्चा अपने पाँव पर खड़ा है, तो अच्छी बात है, कोई बाप इससे नाराज नहीं होता। लेकिन कभी-कभी बाप यह कह सकता है कि बेटा हमें याद भी नहीं करता है। उसे दुख होता है, क्योंकि उसकी उसके साथ आसक्ति है। पर ईश्वर की तो आसक्ति भी नहीं होती। इसलिए ईश्वर कुछ नहीं कहेगा। मतलब, आप चाहें न चाहें, वह है ही। उसकी मदद जब लेनी है, तब लीजिये। जब जेब का पैसा खर्च हो जाता है, तब आप बैंक खोलते हैं। वह भी खत्म हुआ तो आप बैंक में जाते हैं। जेब का पैसा याने आपकी ताकत, बैंक का पैसा याने दुनिया की ताकत। दुनिया की ताकत आपको मुहय्या हो सकती है। बैंक में पैसा पड़ा है, उसका उपयोग चाहो तो करो या न करो। वैसे ही ईश्वरी ताकत पड़ी है, जैसे बैंक में पैसा पड़ा है।"

× × ×

विकास खंड के अधिकारियों के साथ बात करते हुए मनोडिया गाँव में विनोबाजी ने कहा, "आप गाँवों का विकास करने वाले हैं, गाँवों के लोगों का जीवन ऊँचा ऊपर उठाने वाले हैं, याने क्या कुटुम्बनियोजन पर आप उनको चढ़ायेंगे ? पैसा बढ़ाने से जीवन ऊपर नहीं उठता है। चित्त बढ़ने से जीवन ऊँचा होगा। कई दफा देखा गया है कि पैसा बढ़ा, तो बरबादी हुई है। उत्पादन नहीं बढ़ना चाहिये, ऐसा नहीं है। लेकिन साथ-साथ चित्त भी ऊँचा हो। सत्यनिष्ठा, प्रेम, करुणा, निर्भयता, सहयोग आदि सद्गुणों का विकास करना है। आपको अपना विकास करना है। फिर आपके द्वारा जनता का विकास होगा।"

●

भूदानयज्ञ मूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी, शुक्रवार १२ अगस्त, '६० वर्ष ६ : अंक ४५

सादगी ही ऊँचा जीवन-स्तर है !

विनोबा

स्वराज्य प्राप्ति के बाद सेवकों की बहुत बड़ी सेना बनायी गयी। सरकार के ५५ लाख सेवक हैं, उनमें शिक्षक भी हैं, रेल्वे में काम करनेवाले नौकर और पुलिस भी हैं। इनके अलावा मिलिटरी है। पाँच मनुष्यों के एक परिवार का भरण-पोषण सिपाहियों द्वारा सरकार से होता है। इस प्रकार मिलिटरी को मिला कर ६० लाख परिवारों का भरण-पोषण सरकार की तरफ से होता है। ६० लाख परिवार याने तीन करोड़ लोग। देश में कम-बेशी ४० करोड़ लोग हैं। ४० करोड़ की सेवा के लिए तीन करोड़ लोग हैं। याने १३ परिवार के पीछे १ परिवार का भरण-पोषण सरकार की तरफ से होता है। यह परिमाण बहुत बड़ा है। इसका मतलब, नौकर-वर्ग निकम्मा है, यह तो नहीं कह सकते, किन्तु यह वर्ग उत्पादन का काम नहीं करता। अपनी जिम्मेदारी का काम करते रहने के बावजूद इस वर्ग के लोगों की गिनती अनुत्पादक वर्ग में होती है। इसके अलावा डाक्टर, वकील, भक्त, योगी, सन्यासी भी इसमें आ जाते हैं। आप लोग मुझे भी अनुत्पादक, घुमक्कड़ कहेंगे ! इस प्रकार एक बड़ा अनुत्पादक वर्ग देश में खड़ा है।

सेवक को, जिनकी वह सेवा करता है, उनसे अधिक सुभीता मिलता है। बहुत ज्यादा नहीं मिलता। ५ मनुष्यों के परिवार को २०० रुपया मिलना बहुत ज्यादा नहीं है। किन्तु वह जिनकी सेवा करता है, उनसे उसकी हालत बेहतर है। अब देश में बड़ी हड़ताल हो रही है। माँग यही है कि वेतन बढ़ाया जाय। ज्यादा माँग करने वालों से भी कम वेतनवाले देश में हैं, फिर भी उनकी माँग गैरवाजिब है, ऐसा नहीं कह सकते। हिन्दुस्तान में गैरवाजिब कुछ भी नहीं है। अगर प्राथमिक शिक्षक १५० रुपये महीना माँगे, तो पाँच लोगों के परिवार के लिए गैरवाजिब नहीं है। दुःख की बात है कि देश इतना देने की स्थिति में नहीं है। सबको मिल कर उत्पादन बढ़ाना है। हमको थोड़ा त्याग करना है। मैं इतने सख्त दिलवाला हूँ कि आपको जो एक रोटी मिलती है, उसमें से भी माँग करता हूँ। एक एकड़वाले से भी माँगा है। उन लोगों ने दो कट्ठा में से एक कट्ठा भी दिया है ! साथियों ने कहा, कितना निठुर बाबा है ? पर मैं क्यों न लूँ ? क्योंकि मुझे दिल जोड़ना है। मैंने यह माना है कि गरीब देगा तो और लोगों को इससे प्रेरणा मिलेगी।

सरकारी नौकरों में शिक्षक की गिनती है। मैं उन्हें सेवक कहूँ तो वे इज्जत महसूस करेंगे, नौकर कहने से इज्जत नहीं मिलती है। दोनों में कोई भेद नहीं है। 'सेवक' संस्कृत भाषा का शब्द है और 'नौकर' हिन्दी का है। संस्कृत भाषा के शब्द में इज्जत क्यों है ? जिन लोगों ने 'सेवक' शब्द बनाया है, उन्होंने सेवकों की बड़ी इज्जत की है। पैसे से सेवा का मूल्य नहीं आंका है। "अपरिग्रहा ब्राह्मणा, निष्कांचना ब्राह्मणाः।" 'पोस्ट ग्रेजुएट' को पढ़ानेवाले ऐसे शास्त्रियों को मैंने देखा है, जो सुबह चार घंटे और शाम को चार घंटे पढ़ाते हैं। मधुकरी माँगते हैं, रहने के लिए छोटी-सी झोपड़ी है। एक सप्ताह में एक दिन छुट्टी मिलती है। कृष्ण-शुक्ल अष्टमी, पूर्णिमा और अमावस्या को छुट्टी होती है। शिष्टागमनमें—कोई सज्जन आते हैं, तब—छुट्टी होती है। वेदाभ्यास के लिए किसी दिन अनध्याय नहीं होता। इस तरह अध्ययन, अध्यापन होता है। उनका समाज पर कोई भार नहीं होता। इसीलिए उनकी योग्यता ज्यादा होती है। किन्तु आज जो जितना ज्यादा पढ़ा होता है उसका उतना भार होता है। योग्यता का पैसे से क्या सम्बन्ध है—मैंने बहुत सोचा, पर मैं समझ नहीं सका हूँ। क्या सामान्यतः ज्ञान के लिहाज से मेरी योग्यता साधारण लोगों से ज्यादा है, इसलिए मैं पेट में ज्यादा ठूँस लूँ ?

अभी राष्ट्रपति ने अपना वेतन एक-चौथाई कर लिया है। इतनी तनख्वाह रखी क्यों है ? सेवा की योग्यता के साथ तनख्वाह का बढ़ाना कहाँ तक ठीक है ? योग्यता और पैसे का कोई ताल्लुक नहीं है। ट्रेन को लाल हरी झंडी दिखाने का काम क्या कम महत्त्व का है ? कई लोगों की जिंदगी उसके हाथ में है ! फिर उसको कम तनख्वाह क्यों मिलती है ? क्या कहूँ ? कुछ समझ में नहीं आता। बुद्धि के साथ मेल ही नहीं बैठता। एक मिसाल देता हूँ—एक मनुष्य डूब रहा है, दूसरा उसे बचाने के लिए कूद पड़ता है। पाँच मिनट में बाहर निकाल कर उसे बचा लिया। यह शारीरिक श्रम हुआ। अब आठ घण्टे का एक रुपया देते हैं, तो एक घंटे का दो आना और पाँच मिनट का एक नया पैसा ! तो क्या उसे एक नया पैसा मजदूरी देंगे ? क्या इसकी कोई कीमत हो सकती है ? वहाँ किसी ग्रन्थ का अध्ययन नहीं है, सिर्फ हिम्मत है, करुणा है। कोई बीमार की सेवा करता है, तो उसके प्रेम की कीमत क्या पैसे में हो सकती है ? माँ बच्चे की सेवा करती है, क्या उसका पैसे में मूल्य हो सकता है ?

सेवक का जीवन-स्तर स्वामी से इतना ज्यादा क्यों है ? सेवक जरूरी होने पर भी उनका भार समाज पर ज्यादा है, क्योंकि सेवक-वर्ग आज अनुत्पादक है। प्रजा के सेवक हम हैं, ऐसा प्रजा को एहसास कराना पड़ेगा। हम शिक्षकों को चाहिए कि जो कुछ हमारे पास है, उसको हम लुटायें। ऐसी वृत्ति आयेगी, तो हम जनता के प्यारे बनेंगे। हमारा स्तर थोड़ा कम अवश्य होगा, किन्तु तकलीफ में असीम आनन्द है। मैं आशा करता हूँ कि हम प्रजा-सेवक बनेंगे। हमारी रहन-सहन, बोली सब उनके समान होगी। ये हमारे माता-पिता हैं, ऐसा उनको लगना चाहिए। ऐसा होगा, तो हम देश की सेवा बहुत कर सकेंगे।

सर्वोदय का विचार यह है कि सबको निरन्तर यह कोशिश करनी चाहिए कि हम लोक-जीवन में घुल-मिल जायें। इसका यह अर्थ नहीं कि लोग गन्दे रहें, तो हम भी गन्दे रहें। उनकी स्थिति में हम साफ-सुथरा रह कर उनको सिखायें,—जैसे भगवान गोपाल कृष्ण ने गोपालों के के बीच रह कर गाय की सेवा का महत्त्व सिखाया। बहुत कम लोग उनको 'गीता' के प्रवक्ता के रूप में जानते हैं, गोपाल के रूप में सब कोई जानते हैं। फिर, जनता के साथ हम गन्दे रहें तो भी चलेगा ! वैसे मैं सफाई का उपासक हूँ। किन्तु एक तरफ एकदम दूध के समान सफेद और दूसरी ओर गन्दगी रहेगी, तो दो श्रेणियाँ बनेंगी। हमारा सौभाग्य है कि हमारे राष्ट्रपति बहुत सादे हैं। वे बिहार में आते हैं तो किसान ही दीखते हैं। यह सब गांधीजी की कृपा से हुआ है। यह सिलसिला टूटेगा तो आगे जाकर गाँवों में यह स्मरण रहेगा कि इस तरह गांधी नाम का आदमी हो गया है। इसलिए जितना हो सके, हमें सादगी से रहना चाहिए।

आगर (शाजापुर), १४-७-'६०

हम आजाद हैं !

काशी नगर-पदयात्रा के सिलसिले में एक दिन हम संपर्क के लिए गलियों में घूम रहे थे। घरों में जाते थे, परिचय करते थे। एक घर में एक बूढ़े-से भाई से परिचय हुआ। दुबला-पतला शरीर, शरीर पर नेकर और बनियान, अस्त-व्यस्त दाढ़ी और सिर के बाल, तूलिका हाथ में लिये हुए कुछ काम कर रहे थे। साइनबोर्ड आदि बनाने का उनका काम था। मुहल्ले के एक भाई ने, जो हमारे साथ थे, उनसे परिचय कराया। थोड़ी बातचीत हुई। हम वापिस मुड़ कर घर के बाहर आये, तो बाहर की दीवारों पर बनाये हुए चित्रों पर नजर पड़ी।

पहला चित्र एक भिखारी का था। दुबला-पतला नंगा शरीर, बदन पर चिथड़े हाथ में भिक्षा का पात्र ! चित्र के ऊपर लिखा था—"हम आजाद हैं !"

दूसरा चित्र एक सजे-सजाये व्यक्ति का था। ऊपर से नीचे तक सुंदर और व्यवस्थित पोशाक, सिर पर साफा, या पगड़ी ऐसी कोई चीज, चेहरे पर सम्पन्नताजनित संतोष, अहंकार की झलक। चित्र के ऊपर शीर्षक था—"नमस्ते !" आजादी के बाद के इस युग के किसी धनीमानी का प्रतीक था—शब्दों में व्यंग्य, हावभाव में अहंकार !

तीसरे चित्र के ऊपर लिखा था—"जय हिंद !" सिर पर गांधी टोपी, मोटा हृष्ट-पुष्ट शरीर, बदन पर लम्बी शेरवानी, पाँवों में पतलून या पायजामा जैसी कोई चीज—चेहरे से सत्ता का मद टपकता था !

मैंने मुड़ कर उन बूढ़े महाशय की ओर देखा। हमें भित्तिचित्रों के सामने खड़े देखकर वे बाहर आ गये थे। तूलिका हाथ में थी। बोले—"हम आजाद हैं न ? उसी का चित्रण है !"

—सिद्धराज

काशी सर्वोदय नगरी कैसे बने ?

दादा धर्माधिकारी

हम लोग, काशी नगरी में एक अनोखी यात्रा कर रहे हैं। काशी नगरी यों तो तीर्थस्थान है ही। सारे भारतवर्ष के लोग यहाँ तीर्थ-यात्रा करने के लिए और गंगा-स्नान करने के लिए आते हैं। लेकिन ये सर्वोदय-पदयात्री, उस भगवान की खोज में पदयात्रा कर रहे हैं, जो इस नगरी के निवासियों के हृदय में बैठा हुआ है। जो भगवान गुरुद्वारों में, मसजिदों में, मंदिरों में, गिरजाघरों में बैठे हैं, उनका दर्शन सब करते हैं; लेकिन आज तक यह विचार नहीं हुआ था कि मनुष्य के हृदय में जो भगवान बैठे हुए हैं, उनसे भी परिचय किया जाय। इन पदयात्रियों को यह अनुभव हुआ है कि हर मनुष्य के भीतर दूसरे मनुष्य के लिए स्नेह की भावना है, प्रेम की भावना है। जिसमें मतलब नहीं है, स्वार्थ नहीं है—ऐसा प्रेम और स्नेह असल में भगवान का रूप है। वह कारण रहित कृपालु है। उसकी कृपा के लिए किसी कारण की जरूरत नहीं है। गंगाजी के बहाव के लिए किसी कारण की जरूरत नहीं है। सूर्य के निकलने के लिए और प्रकाश देने के लिए जैसे किसी कारण की जरूरत नहीं होती, उसी तरह भगवान की कृपालुता के लिए भी किसी कारण की जरूरत नहीं होती।

ये जो हमारे पदयात्री भाई घूम रहे हैं, वे किसी असेम्बली या पार्लियामेंट के मेम्बर नहीं हैं। काशी के कार्पोरेशन के भी मेम्बर नहीं हैं। इनके हाथ में कोई सत्ता नहीं है। ये आपको कोई आश्वासन नहीं दिला सकते। कोई यह कहे कि हमारे घर के सामने का रास्ता खराब हो गया है, दुरुस्त करा दीजिये, मुहल्ले की बत्ती वक्त पर जलती नहीं है, इसका कुछ इन्तजाम करा दीजिये, नाली साफ नहीं है, साफ करा दीजिये, तो ये आपसे कहेंगे कि नाली हम साफ कर सकते हैं, करा नहीं सकते। 'कराने' की कोई ताकत हमारे पास नहीं है। हमारे हाथ में हुकूमत नहीं है। हम ऐसे आदमी हैं, ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके पास कोई पैसा नहीं है, कोई संपत्ति नहीं है। ये आपसे यह भी नहीं कह सकते कि हम मंदिर बनवा देंगे, घाट बनवा देंगे, धर्मशाला बनवा देंगे, अस्पताल खुलवा देंगे या किसी स्कूल के लिए चंदा दे देंगे। यह भी इन लोगों के पास नहीं है। सत्ता नहीं है, संपत्ति नहीं है, हाथ में हथियार या शस्त्र भी नहीं है, जिनके बल पर ये कह सकें कि हम आप लोगों के लिए कुछ-न-कुछ कर दिखायेंगे।

सत्ता, संपत्ति शस्त्र-अस्त्र भी नहीं

सत्ता, संपत्ति, शस्त्र—तीनों [illegible] शक्तियों में से कोई भी शक्ति इनके पास नहीं है। किसी तरह का आश्वासन लेकर ये नहीं घूम रहे हैं। फिर भी प्रेम से इनका स्वागत हो रहा है, तो हमारे मन में यह आशा बढ़ती है कि मनुष्य अभी भी ईश्वर से वंचित नहीं हुआ है। जब तक मनुष्य के हृदय में मनुष्य के लिए आदर है, ऐसे इन्सान के लिए आदर है, जिसके पास हथियार, हुकूमत या सत्ता और संपत्ति इनमें से कुछ भी नहीं है, तब तक हमको यह समझ लेना चाहिए कि मनुष्य के हृदय में भगवान छिपे हुए हैं।

आज आपकी याने सामान्य जनता की कुछ ऐसी ही स्थिति है, जैसी हनुमानजी की थी। जब यह सवाल हुआ कि समुद्र कौन लाँघेगा ? तब वहाँ पर उपस्थित सबने अपनी-अपनी शक्ति का वर्णन किया। हनुमानजी चुप बैठे रहे। जाम्बवन्त ने कहा कि तुम चुपचाप क्यों बैठे हुए हो ? तो हनुमानजी ने कहा कि मैं क्या कहूँ ? आप लोगों ने अपनी-अपनी शक्ति का वर्णन किया। मेरे पास तो कोई शक्ति है नहीं। तब उन्होंने कहा कि तुम्हारे पास जो शक्ति है, वह हममें से किसी के पास नहीं है। उसका भान तुम्हें नहीं है।

पदयात्रा का मकसद

इसी तरह काशी नगरी का साधारण मनुष्य और सारे देश का साधारण नागरिक आज यह समझता है कि जिसके हाथों में हुकूमत है, उसके हाथ में ताकत है। जिसके पास दौलत है, उसके पास ताकत है। जिसके हाथों में हथियार है, उसके पास ताकत है। ताकत या तो सिपाही में है या तो साहूकार में है या तो राजा में है। ताकत हमारे भीतर नहीं है, ऐसा साधारण मनुष्य समझता है। जाम्बवान की तरह हम पदयात्री भाई केवल यह बताने आये हैं कि आपके अन्दर ताकत छिपी हुई है। जो छिपी हुई है, वह प्रेम की ताकत है। स्नेह का सूत्र एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के साथ बाँधता है, यह भगवान का सूत्र है।

श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं "मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।" माला के मणि जिस तरह एक सूत्र में पिरोये जाते हैं, उसी तरह सारे विश्व के प्राणी और मनुष्य मेरे हृदय में पिरोये गये हैं। मैं वह धागा हूँ, जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के साथ [illegible] है।" यह भगवान के निर्हेतुक प्रेम का जो सूत्र है उसको खोजने के लिए, उसका आविष्कार करने के लिए यह पदयात्रा हो रही है।

चुनाव का पुरुषार्थ

हम अक्सर कहते आये हैं कि [illegible] आपमें है। पुरुषार्थ आपमें है। वह कौन पुरुषार्थ है [illegible] पुरुषार्थ नहीं है। चुनाव में भी एक पुरुषार्थ [illegible] है, वह [illegible] होती है। जैसे साबुन बेचने वाले अपने-अपने साबुन को [illegible] करते हैं और कहते हैं कि मेरे साबुन के जैसा साबुन दूसरा कोई नहीं है। उसी तरह जो चुनाव में खड़े होते हैं, वे अपनी-अपनी तारीफ सुनाते हैं। एक तरह से अपने आपको बाजार में नीलाम के लिए खड़ा कर देते हैं। हनुमान की यह विशेषता थी कि अपने बारे में वह कुछ नहीं कह सका। दूसरों ने उसे याद दिलायी कि तुम में छिपी हुई शक्ति है। कौनसी शक्ति ? हनुमान में जो शक्ति छिपी हुई थी, राम की शक्ति थी।

'राम' शब्द का हमारी भाषाओं में एक दूसरा अर्थ है — सत्त्व। जिस चीज में कोई दम नहीं है, पुराने लोग कहते हैं, उसमें कोई राम नहीं। याने इसमें कोई [illegible] नहीं, सत्त्व नहीं। याने ऐसी चीज, जो [illegible] नहीं हो, [illegible]।

जिसमें 'राम' नहीं, 'उसका काम नहीं'

यह पुरुषार्थ हनुमानजी में कैसे आया ? एक दफा का जिक्र है, सीताजी ने [illegible] का, रत्नों का हार, हनुमानजी को पहनने के लिए [illegible] उपहार दे दिया और कहा कि हनुमान, तुमने बड़ी सेवा की है, बड़ा पराक्रम किया है इसलिए यह [illegible] का हार है, यह तुमको दे रही हूँ। हनुमानजी ने वह हार हाथ में लिया और दाँतों से एक-एक मणि को तोड़-तोड़ कर देखने लगे। सीताजी ने सोचा [illegible] है। [illegible] है कि मणियों का [illegible] है। उन्होंने हनुमान से कहा कि मणियों को क्यों [illegible] रहे हो ? क्या यह कोई खाने की चीज है ? इस पर हनुमानजी ने कहा, माताजी मैं इन मणियों को [illegible] के लिए नहीं तोड़ रहा हूँ। मैं यह देख रहा हूँ कि इन मणियों के भीतर राम है या नहीं। और मैं देख रहा हूँ कि यह [illegible] है, लेकिन इनमें 'राम' नहीं है। जिसमें राम नहीं है वह मेरे लिए [illegible] है। [illegible]

[illegible]

उसे अपनी शक्ति का भान नहीं हुआ, इतना ही नहीं कि वह आत्म-प्रशंसा भी नहीं करता था, परन्तु साथ-साथ यह भी था कि जिस शक्ति में राम न हो, उस शक्ति को वह हराम मानता था।

ईश्वर का कोई पक्ष नहीं है, क्योंकि वह विश्वनाथ है। जो विश्वनाथ है, जो सबका प्रभु है, उसका कोई पक्ष नहीं हो सकता। इसलिए सर्वोदय में एक [illegible] है। सर्वोदय का कोई पक्ष नहीं है। राम का जो राज है, वह सबका राज है। किसी सम्प्रदाय का नहीं, किसी पक्ष का नहीं, किसी संस्था, मन्दिर, मठ, गिरजाघर का नहीं, किसी मसजिद का नहीं, गुरुद्वारे का नहीं, सबका है। कांग्रेस का नहीं, पी० एस० पी० का नहीं, कम्युनिस्ट का नहीं, जनसंघ का नहीं। वह लोक-पक्ष है। लोक-पक्ष का मतलब, राम का पक्ष। यह एक मर्यादा हम लोगों की है। इसलिए वे [illegible] कहते हैं और जहाँ वहाँ जाते हैं, लोगों को समझाते हैं, हमारी कोई पार्टी नहीं, हमारा कोई सम्प्रदाय नहीं, हमारी कोई संस्था नहीं। जैसे आप हैं, वैसे हम हैं। अगर बुराई है, तो उसमें भी है। जितनी आपमें है। कुछ गुण हैं, तो वह भी उतने ही हैं, जितने आपमें हैं। आपसे हम कोई बड़े नहीं, [illegible], [illegible] नहीं और न [illegible] [illegible] है। [illegible] पदयात्रियों की [illegible] है।

[illegible]

काशी को सर्वोदय नगर के लिए [illegible] [illegible]

[[illegible]]

[illegible]

ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोकनागरी लिपि *

सर्वोदय-पात्र

वीनोबा

सर्वोदय-पात्र से देश की बहनों को बड़ा काम मीलेगा। शांती सैनीकों के लीअे यह अनाज काम आयेगा। अगर बहनें शांती की प्रतीज्ञा करेंगी, तो बड़ा काम होगा। सरकार को तो हम टैक्स देते हैं; कींतु जनशक्ती के काम में सबका स्वेच्छा से योग मीलना चाहीअे। अभी ईंदौर नगर के ८० हजार परीवारों में से १० हजार परीवारों में सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। जब तक बाकी के ७० हजार परीवारों में भी सर्वोदय-पात्र नहीं रखे जाते हैं, तब तक कोई चैन नहीं लेंगे। कोई सवाल पूछता है की अेक परीवार बहुत गरीब है, वह कैसे अनाज देगा? हम कहते हैं, अैसा परीवार सप्ताह में अेक मुट्ठी अनाज डाले और वह मुट्ठी अनाज उसके पड़ोसी डालें। ईस प्रकार नगर में या गांव में अेक भी अैसा परीवार नहीं रहना चाहीअे, जहां सर्वोदय-पात्र में अनाज न डाला जाता हो। अैसा करेंगे तो यह सर्वोदय के लीअे बहुत काम की बात होगी। अगर ईंदौर से मुझे रोज ८० हजार मुट्ठी अनाज मीलता है, तो मैं कहूंगा, वह सरकार को करना होगा। जब सब घरों में सर्वोदय-पात्र होगा, तो जीस कीसी भी पार्टी की सरकार बनेगी, उस पर सर्वोदय का असर होगा ही। राजनीती की जड़ें काटने की शक्ती सर्वोदय-पात्र में है। हम राज्य चलाने वाले नहीं हैं, पर राज्य हमारे बस में रहेगा। जीस प्रकार गाड़ी बैलों के कंधों पर रहती है और लगाम आदमी के हाथ में रहती है, उसी प्रकार सर्वोदय भी राज्य-यंत्र का भार खुद नहीं उठाता, क्योंकी वह अकलमंद है। ईस प्रकार वह राज्य के भार से दबा नहीं रहेगा, फीर भी राज्य उसके हाथ में रहेगा।

अक्सर लोग मुझसे पूछते हैं की आप पार्लीयामेंट में जाकर अपनी बात क्यों नहीं रखते? मैं उनसे पूछता हूं की मैं अगर पार्लीयामेंट का मेंबर होता, तो क्या मेरा जीतना असर आज है, उससे ज्यादा असर होता? ईस पर वे लोग कहते हैं, अभी आपका असर ज्यादा है, और शायद पार्लीयामेंट में जाने पर कम हो जाये। यह सोचने की बात है। कल का-कल योजना-कमीशन चर्चा के लीअे हमारे पास आया करता है, क्योंकी हमने काम कीया है। करीब १० लाख अेकड़ जमीन बंट गयी है। ४५ लाख अेकड़ प्राप्त हुई है। कहने का सार यह है की आप सर्वोदय की सरकार चाहते हैं, तो सर्वोदय को सरकार हाथ में नहीं लेनी चाहीअे, बल्की सरकार को अपने कब्जे में रखना चाहीअे और ईसकी युक्ती सर्वोदय-पात्र में है।

(ईंदौर, २५ जुलाई, '६०)

* लिपि-संकेत : ि = ी; े = ॆ, ख = ख संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

टिप्पणी :

और 'दो तस्वीरें'

ता० २२ जुलाई के अंक में मैंने एक लेख लिखा था, जिसका शीर्षक था "दो तस्वीरें।" इस संबंध में एक भाई लिखते हैं

" आपने सरकारी इमारतों में खर्च होने वाली राशि का जिक्र किया, वह ठीक है। अपने यहां भी 'दो तस्वीरें' हैं। हमने भी पहली तस्वीर में ही खूब रंग भरे हैं। कमीशन (खादी-ग्रामोद्योग कमीशन) ने हमारी-ज्यादा रुपया दिया और हमने भी बड़े-बड़े मकान बनाये हैं। जितना पैसा मिला, उस हिसाब से मकान बनाये हैं। अगर सरकार की तरह हमारे पास भी पैसे होते या कमीशन से लाखों की जगह करोड़ों मिलते, तो हम भी हमारी इमारतों को 'गुपर बिल्डिंग' बनाने में नहीं चूकते।

इसके लिए हम सफाई पेश कर सकते हैं, दलील दे सकते हैं। इतने मकान तो आवश्यक हैं, साधन तो होने ही चाहिए आदि। लेकिन सवाल यह है कि 'दूसरी तस्वीर' में हमने कितना रंग भरा? किस बूढ़ी माई (कत्तिन) के घर का छप्पर घास-फूस की जगह टीन का बना? किस बुनकर के घर टीन की जगह ईंट-पत्थर आया?"

ये भाई खादी-संस्था से संबंधित हैं, इसलिए इन्होंने खादी संस्थाओं को लक्ष्य करके ही लिखा है। पर उनका आशय सभी रचनात्मक संस्थाओं से है, यह स्पष्ट है। एक दूसरे पाठक ने भी इसी आशय का पत्र मुझे लिखा है। उन्होंने इस संदर्भ में सर्व सेवा संघ का भी जिक्र किया है"।

मैं समझता हूं कि ऊपर इस भाई ने जो बात कही है, वह सच है। थोड़ी या ज्यादा मात्रा में हम सभी इस अपराध के अपराधी हैं कि हमने 'दरिद्रनारायण' को अपने कामों और भावनाओं में वह स्थान नहीं दिया है, जो हमें देना चाहिए था। जैसा कि ऊपर के पत्र में लिखा है, हम अपनी सफाई में दलील भले ही दें, पर हमें यह मंजूर करना चाहिए कि कई बातों में हमने अपने 'मालिक' को भुला रखा है। हम सेवक हैं और हमारा सेव्य, यानी हमारा मालिक है दरिद्रनारायण, यह अगर हमें निरन्तर भान रहे, तो आज जो बहुत से काम हममें जिस ढंग से होते रहते हैं, वे न हों।

'दो तस्वीरें' वाला लेख लिखा गया था सरकारी खर्च के प्रसंग से, पर हम यह न समझें कि हम कार्यकर्ता उस प्रकार के दोष से बरी हैं। हम हमारे उन पाठकों के कृतज्ञ हैं, जिन्होंने इस संबंध में हमें आत्मनिरीक्षण की प्रेरणा दी है।

—सिद्धराज ढड्ढा

"छोटी-छोटी" बातें

[हम 'बड़ी-बड़ी' बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों की तरफ हमारा ध्यान बिलकुल नहीं जाता। उनकी ओर ध्यान देना हमें हमारे 'बड़े-बड़े' कामों से ध्यान बंटाने जैसा लगता है। पर हम भूल जाते हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों से ही हमारी आदत और जीवन के संस्कार बनते हैं। "छोटी" बात का एक छोटा-सा उदाहरण लीजिये।]

जो छोटे-मोटे बहुत से दोष हमारे समाज में घर कर गये हैं, उनमें एक बड़ा और व्यापक दोष भोजन के समय जूठन छोड़ने का है। कुछ वर्गों में तो यह माना जाता है कि खाने के लिए बैठ कर अगर आदमी ने जूठन न छोड़ी, तो वह असभ्य है। अमीरी के बिगड़ैल प्रदर्शन की यह भावना तो अब धीरे-धीरे खत्म हो रही है, परन्तु इससे भी बदतर बात यह देखने में आती है कि सभ्य कहलाने वाले अधिकांश लोग जूठन छोड़ने-न-छोड़ने के बारे में बिल्कुल बेदरकार हैं—इसका कुछ विचार ही नहीं करते। जान-बूझ कर—चाहे किसी गलत मूल्य के लिए हो या न हो—जूठन छोड़ने से भी ज्यादा निकृष्ट है बिना सोचे विचारे लापरवाही के कारण जूठन छोड़ना।"

अन्न पैदा करने में कितने प्राणियों का कितना श्रम लगता है, यह विचार करें, तो हमें इस अन्न का एक कण भी व्यर्थ जाने देने में जरूर शर्म मालूम होनी चाहिए। विनोबा ने अपनी विशिष्ट शैली में एक जगह कहा है कि जो व्यक्ति थाली में चावल का एक दाना भी छोड़ता है, उसकी पीठ पर खेत जोतने वाले बैल और किसान से लेकर, निन्दाई करने वाली बहन और आटा पीसने वाली व खाना बनाने वाली मां तक सबकी एक-एक लात लगनी चाहिए। पर हममें से अधिकांश लोग कभी इस बात पर सोचते भी नहीं। कोई कहे भी तो जवाब दे देते हैं कि भाया नहीं। उन्हें यह महसूस ही नहीं होता कि इसमें हमने कोई अपराध किया है। खाते समय हमेशा हमें चीज लेने में बहुत विवेक रखना है। जरूरत हो, उतना ही लें और परोसने वाले भी आग्रह न करें। जूठन छोड़ने वाले अक्सर यही दलील देते हैं कि परोसने वाले ने बिना मांगे रख दिया। हालांकि हमारा अनुभव है कि अधिकतर मामले में दोष लेने वाले का ही होता है।

आज देश में अन्न की कमी है और इसलिए जूठन छोड़ना एक तरह का पाप ही है। पर कमी हो या न हो, किसी भी चीज को बरबाद करना या होने देना हर हालत में लापरवाही का ही नहीं, असभ्यता का भी चिह्न है।

—सिद्धराज

को नष्ट नहीं होता है। गलतफहमी से, न समझने के कारण जो लिखा है, वह अलग बात है, लेकिन जान-बूझ कर विपरीत नहीं लिखा है। मेरी अखबारों से प्रार्थना है कि वे इस काम की टीका करें, अनुकूल-प्रतिकूल टीका करें, जैसा दीखता है, वैसा साफ-साफ लिखें, लेकिन प्रेम, और सत्य रखें ! इस वक्त हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा जरूरत एकता की है। आप जानते हैं, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच जैसा प्रेमभाव बनना चाहिए था, वैसा नहीं बना है। देश के अन्दर के कई मसले हैं। चीन के साथ उधर 'मतभेद' होते जा रहा है, इसलिए एकता की बहुत जरूरत है। एकता को बाधा पहुँचे, ऐसी कोई चीज हम न करें, ऐसी वाणी हम न बोलें। हम सारे—"सहस्रशीर्ष सहस्रपाद"—एक हैं, दुनिया को एक करने के लिए।

हमारा कार्यक्रम ऐसा होगा, जिसमें ज्यादा-से-ज्यादा लोगों का सहयोग होगा। बहुत ऊँचा कार्यक्रम लें और उसमें दस-बीस-तीस लोगों का ही सहयोग हो, तो इतना ऊँचा कार्यक्रम हम न लें। छोटा-सा कार्यक्रम हो, उसमें शत-प्रतिशत लोग सहयोग दें, ऐसा होना चाहिए। कहने में खुशी होती है कि यहाँ १० हजार घरों में सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। लेकिन भगवान को खुशी तब होगी और शान्ति तब होगी, जब ८० हजार घरों में सर्वोदय-पात्र रखे जायेंगे। गोकुल में भगवान ने अपनी उंगली गोवर्धन पर्वत पर तब लगायी, जब गोकुल के हर बच्चे और बहन ने अपनी लाठी लगायी। इसी तरह जब हम सब काम करेंगे, तभी भगवान मदद करेगा।

मैं इस नगरी से सेवकों की माँग कर रहा हूँ। घंटा भर काम देने वाले सेवकों की मेरी माँग है। छोटासा काम उन्हें पहले दिया है, वह सारे मिल कर पाँच-सात दिन करेंगे। उसीकी बुनियाद पर सारे इंदौर वाले काम करेंगे। वह काम कौनसा होगा—"भगवद्गीता" में कहा है: "शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।" अपना स्थान स्वच्छ, पवित्र रहे। देश को स्वच्छ बनाना होगा, निर्मल, पवित्र बनाना होगा। इसलिए हमने छोटा-सा काम लिया है—'स्वच्छ इन्दौर'। इसके बाद 'स्वच्छ भारत'। स्वच्छ इंदौर के काम में सब बच्चे, बहनें, भाई सहयोग देंगे। दूसरा काम होगा भारत का आसन स्थिर हो याने हम सब एक हों।

यह आरम्भ का मेरा मांगलिक होगा। मैं आपको अत्यन्त भक्तिभाव से प्रणाम करता हूँ। मेरे मुँह से अगर मंगलवाणी न निकले, तो आप मेरे लिए साक्षी रहें और आप मुझे सीधा करें। मुझे गुस्सा आ सकता है और अगर गुस्सा आये, तो आप मुझे रोकिये और कहिये कि तुम बात तो 'अविरोध' की करते हो और फिर गुस्सा करते हो? इस पर आप मुझे डाटें।
[इन्दौर, २४ जुलाई, '६०]

प्रेममयी वर्षा से सराबोर इन्दौर की एक सान्ध्य प्रार्थना-सभा का शब्दचित्र

यह क्या ! बाबा तो नाच रहा है !

ओ.. भाई !

आओ प्यारे भाई—ओ राम, ओ कृष्ण, ओ भरत यहाँ आओ—वहाँ—ओ झाड के नीचे बैठे हुए पाण्डवो, यहाँ आओ। मैं आपके दर्शन करना चाहता हूँ—ओ भाई—सीता—आओ यहाँ। आओ एकत्र होकर एकसाथ कीर्तन करें।

यह कोई हाँका नहीं, आचार्य विनोबा भावे के सायंकालीन प्रवचन का प्रारम्भ है। यह गांधी हाल का प्रांगण है और यह बूँदाबांदी हो रही है। लोग कहीं झाड के नीचे, कहीं हाल के बरामदे में, कहीं समाज-सेवा के कार्यालय में बिखरे हुए हैं। कुछ बाबा के मंच के आसपास भी खड़े हैं। बाबा मंच पर खड़ा है। माथे पर हरी टोपी है, शरीर पर लिपटी हुई खादी की श्वेत धोती भीग रही है—और वह बड़ी ऊँची मीठी आवाज में तन्मय होकर पुकार रहा है—मेरे प्यारे भाइयो, आओ—यहाँ एकत्र हो जाओ—वहाँ बरामदे में बैठे हुए लोगो—वहाँ झाड के नीचे खड़ी हुई बहनो—आओ। मैं दर्शनाभिलाषी हूँ। एकत्र रूप में आपके दर्शन करना चाहता हूँ। हम सब मिल कर यहाँ कीर्तन करेंगे। भजन गायेंगे, आओ।

—और जैसे सपेरे की पुंगी पर नागों के झुण्ड-के-झुण्ड झूमते हुए चले आ रहे हों। लोग बाबा के सामने इकट्ठे हो रहे हैं। कुछ लोग बाबा के सामने बैठे हुए हैं। कुछ दूर तक खड़े हैं। बाबा को असमानता पसन्द नहीं। लेकिन अपने कृष्णों-रामों और सीताओं को गीली जमीन पर बैठने कैसे दे सकता—गीली जमीन पर बैठो मत, सब खड़े हो जाओ। लो सब के सब खड़े हो गये। पानी गिर रहा है—रिमझिम—रिमझिम—पेड़ों की पत्तियाँ बोल रही हैं, टप टप और बाबा खड़ा है मंच पर माईक के सामने, कोई तीन हजार भाई-बहन उसके सामने खड़े हुए हैं। सब इकट्ठे हो गये—बाबा शुरू कर रहा है—उसकी पवित्र पूत मीठी—सिहरनें पैदा करने वाली आवाज गूँज रही है—ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्ति शान्ति-शान्ति।

हम सब एकत्र होकर पराक्रम के साथ काम करें। हमारे मन में मत्सर-भावना न हो, विद्वेष न हो। हम एकसाथ अब भजन करेंगे, मैं पहले तुलसीदास की एक चौपाई गाऊँगा। फिर बारिश के बारे में एक वेद-मंत्र। मैं आपकी तरफ देख रहा हूँ, आप मेरी तरफ देखिये, बिलकुल मेरी तरफ, मेरी आँखों में। मैं पहले चौपाई बोलूँगा। धीरे धीरे बोलूँगा। मेरे बाद आप सब बोलेंगे

बिनु सत्संग—बाबा की संगीतमयी वाणी फूट पड़ी

बिनु सत्संग—सबने दोहराया।

बिवेक न होई—

बिवेक न होई

राम कृपा बिनु—

राम कृपा बिनु

सुलभ न सोई ..!

सुलभ न सोई

हाँ, अब केवल बच्चियाँ मेरे साथ बोलेंगी।

बिनु सत्संग,

अब बच्चे बोलेंगे।

बिनु सत्संग...

अब पुरुष बोलेंगे

बिनु सत्संग।

अब महिलाएँ

बिनु सत्संग। !

अब सब एक साथ। अब मैं पूरी पंक्ति बोलूँगा

बिनु-सत्संग बिवेक न होई—

बाबा गा रहा है। सब गा रहे हैं—

बिनु सत्संग बिवेक न होई—

राम-कृपा बिनु सुलभ न सोई

समां बँध गया है। किसीको परवाह नहीं—पानी का! सामने बाबा मस्त है। सबकी नजर उसकी तरफ लगी हुई है, वह हाथ ऊँचे करके ठुमक रहा है तन्मय, तल्लीन, मध्ययुग का चैतन्य महाप्रभु उतर आया!

सच है! बिलकुल सच है—बिनु सत्संग बिवेक न होई, राम-कृपा बिनु सुलभ न सोई—बाबा चुप हो गया। सब चुप हो गये।

वह गूँजी! वह फिर गूँजी बाबा की पवित्र पूत संगीतमयी वाणी। यह वेद का मंत्र यह ऋषि गा रहा है। आसमान से भगवान की वृष्टि में भीगता हुआ गा रहा है—सुनो! यह वेद का मंत्र है। आसमान से हम पर वृष्टि। हमारा वेग कुंठित न हो।

सहो गति न पके, ओ राही सही गति न पके बाबा फिर गा उठा! समझा रहा है—हमारे पाँव चलते रहें। हमारी इच्छा-शक्ति "विल पावर" बढ़े। इन्दौर के लोगों की, भारत के लोगों की, विश्व के लोगों की इच्छाशक्ति विकसित हो, हजारगुनी बढ़े। इन्दौर का निवासी खूब काम करे। सर्वोदय-पात्र के लिए करे, स्वच्छता-सफाई के लिए करे, शांति सेना का काम बने। आप न खुद अशान्त हों, न दूसरे को अशांत होने दें। भगवान हम पर दिव्य दृष्टि करे।

अब पाँच मिनट मौन रह कर भगवान से हमारी प्रार्थना होगी। भगवान हमें सत्य दे, करुणा दे। हमारी इच्छाशक्ति बढ़ा! सावधान मौन शुरू होता है ॐ शान्ति शान्ति शान्ति...!

सन्नाटा छाया हुआ है। पवित्र सन्नाटा! सन्नाटा मंदिर की सौम्यता का, सन्नाटा मंदिर की भव्यता का, सन्नाटा मंदिर की पवित्र श्रद्धा का। बाबा मंच पर खड़ा है। आँखें मुँदी हैं। भगवान का ध्यान कर रहा है। सब ध्यान कर रहे हैं—

सबको प्रणाम।

जय जगत्।

मौन समाप्त हुआ। लोगों में सरगर्मी मची। जैसे किसी सामूहिक समाधि का ध्यान भंग हुआ हो। लोग बिखर रहे हैं। बातें कर रहे हैं—मन में शक्ति होती है। वाणी में शक्ति होती है। असर होता है। हमें पता नहीं, पानी कहाँ गिरता रहा। नहीं, हम पर पानी नहीं, प्रेम बरस रहा था। ['नई दुनिया' से]

राष्ट्र के युवकों के नाम अपील

ता० ८-९ अगस्त को पटना में होने वाले बिहार सर्वोदय युवक-सम्मेलन के अवसर पर श्री जयप्रकाशजी ने भारतीय युवकों के नाम नीचे लिखा सन्देश दिया है

"आपसे मेरा सदा से गहरा संपर्क रहा है और आपके लिए मेरे हृदय में सदा स्नेह। आपका भी बहुत स्नेह मुझे प्राप्त रहा है।

मैं आपकी सेवा में आज चन्द शब्द निवेदन करना चाहता हूँ। हमारा राष्ट्र आज एक ऐतिहासिक संकट की घड़ी से गुजर रहा है। ऐसी परिस्थिति में भारत के युवकों की जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई है। स्वतंत्रता-संग्राम में, भारत के युवकों ने त्याग और बलिदान का ज्वलन्त उदाहरण पेश किया था। आज फिर से त्याग और बलिदान की आवश्यकता आ पड़ी है। समाज में चारों तरफ मिथ्याचरण, असत्य और हिंसा का वातावरण कायम हो रहा है और ऐसी शक्तियाँ काम कर रही हैं, जो एक दिन मनुष्य को ऐसे गढे में ढकेल देंगी, जिससे शायद वह कभी बाहर निकल नहीं सकेगा।

"ऐसी हालत में हम सब लोगों को खासकर बुद्धि-जीवियों को, जो शिक्षा से कुछ सम्बन्ध रखते हैं, बहुत गहराई से सोचना चाहिए।

"मेरा विश्वास है कि युवक जो पहले था, आज भी वही है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि उसे निराशा के वातावरण से निकाला जाय और गुमराह होने से बचाया जाय।"

—जयप्रकाश नारायण

पर भारतीय सेना के दांतों को लेकर आने वाले हवाईजहाजों की आवाज दिन रात गूंजने लगी। खूबसूरत कश्मीरवैली ने मैदाने-जंग की शक्ल ले ली। गुलाबों और फूलों की लाली नहीं, खून की लाली नजर आने लगी। नौशेरा की मशहूर लड़ाई लड़ी जा रही थी। ब्रिगेडियर उस्मान शहीद हुए। भारतीय सेना के लिए कसौटी की वेला आयी थी। ब्रिगेडियर यदुनाथ सिंह ने साथी उस्मान की जगह ली। नये ब्रिगेडियर दिन रात मेहनत कर नौशेरा को बचाने की कोशिश कर रहे थे। जनता उनका साथ दे रही थी। उसने, नये ब्रिगेडियर में ऐसी चीज देखी, जिसको कोई सोच नहीं सकता था। नये ब्रिगेडियर की 'पूजा' का समय होते ही वे अपने तम्बू में अन्तर्धान हो जाते थे—फिर चाहे तम्बू पर गोले बरसते हों, तो भी उनकी पूजा में कोई खलल नहीं पहुँचता था। इसीलिए जब वह जनरल बन गये, तो फौजी साथी उन्हें, 'साधु जनरल' कहने लगे।

बाबा की यात्रा नौशेरा विभाग में चल रही थी। जनता तथा फौजी भाई बड़े प्रेम से साधु 'जनरल की कहानियाँ सुनाते थे। 'नौशेरा' के प्रवचन में इसका जिक्र करते हुए बाबा ने कहा, 'फौज की तरफ से इस इलाके को बचाने का काम मेजर जनरल यदुनाथ सिंह ने किया था। अब आपको सुन कर यह खुशी होगी और शायद आश्चर्य भी होगा कि उन्होंने शान्ति-सेना में अपना नाम दिया है। लेकिन अचरज की बात नहीं है। शान्ति सेना का काम बुजदिलों का, डरपोकों का नहीं है, निडरों का काम है। मैं मानता हूँ कि सिपाही अच्छे शान्ति-सैनिक बन सकते हैं क्योंकि उन्हें अनुशासन की आदत रहती है। जो समझता कि यह शरीर एक चोला है और इसे कोई मारेगा, तो परवाह नहीं वही सच्चा बहादुर होगा।"

जिस जनरल ने फौज में बहादुरी के लिए 'महावीर चक्र' प्राप्त किया उन्होंने शान्ति-सैनिक बन कर चम्बल घाटी में अहिंसक बहादुरी का नमूना पेश किया। अहिंसक पराक्रम के क्षेत्र में पदार्पण करने को जिसने एक महत्त्वपूर्ण काम किया उसके लिए भविष्य में कई आशाएँ पैदा हुई थीं। भगवान उन्हें अब तक उठा ले गया और चम्बलघाटी शान्ति समिति के एक सदस्य ने कहा 'प्यारे जनरल के बिना हम सिपाहियों की क्या हालत होगी? यहाँ की जनता, बागी, अफसर सबके दिल में उनके प्रति अटूट विश्वास था। उनकी हिम्मत, निर्भीकता और प्रेम ने सबको जीत लिया था।"

जनरल साहब चले गये, अपना काम करके चले गये। हमारे लिए काम छोड़ कर चले गये। कबीरदास ने हमें कल की चेतावनी दी थी।

'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होत है बहुरि करेगो कब।'

अतीत का सफल सेनानी : आज का आदर्श नागरिक

जनरल यदुनाथ सिंह के शोक में दादा के उद्‌गार

ता० २ अगस्त, १९६० को तीसरे पहर दिल्ली से फोन द्वारा जनरल यदुनाथ सिंहजी की अचानक मृत्यु की दुखद खबर मिली। इस खबर के मिलने पर सर्व-सेवा-संघ, प्रधान केन्द्र, काशी में शोक-सभा हुई। इस अवसर पर दादा धर्माधिकारीजी ने कहा :

भक्तियों ने, तत्त्वज्ञानियों ने, दार्शनिकों ने कई बार कहा और समझाया है कि मृत्यु को अपना मित्र समझो। अपनी स्वयं की मृत्यु के विषय में मनुष्य अपने मन की तैयारी करके इस अवस्था में पहुँच सकता है कि वह मृत्यु को अपना मित्र माने। लेकिन आज दुनिया में ऐसी आवश्यकता है कि दूसरे की मृत्यु को हम संकट मानें। दूसरे के जीवन को क्षुद्र मानें तुच्छ मानें, बिना मूल्य का मानें, इस प्रकार की स्थिति आज दुनिया में पैदा हो रही है।

सैनिक का काम अब तक यह माना जाता था कि अपनी जान बचा कर दूसरे की जान ले ले। अपनी जान खतरे में डाले, लेकिन जहाँ तक हो सके अपने को बचा ले। बहादुरी इसमें यह थी कि वह अपनी जान खतरे में डालता था लेकिन सिफत, रणकुशलता इसमें थी कि अपनी जान बचा कर दूसरे की जान ले ले। वही कुशल सैनिक कहलाता था। हजारों का सामना करने में बहादुरी जरूर है लेकिन हजारों को मार कर खुद अगर सही-सलामत आ जाय तो यह माना जाता था कि वह सिर्फ बहादुर ही नहीं है आदमी सिफतबाज भी है, चतुर है। ऐसे एक चतुर सैनिक और सेनानी यदुनाथ सिंह रहे।

उसके बाद जब विनोबा से उनका सम्पर्क हुआ तो वे शान्ति सैनिक बन गये। सच्चे सैनिक की बहादुरी थी, उसको बनाये रखा उसको बढ़ाया लेकिन उस सैनिक की जो कुशलता थी उससे इस्तीफा दे दिया। वह कुशलता इसमें थी कि हजारों को पराभूत करके स्वयं सुरक्षित लौट कर आओ। यह दूसरी चीज अपने जीवन से उन्होंने हटा दी और केवल जो मूल सैनिक की बहादुरी थी—अपनी जान खतरे में डालने की वह कायम रखी। लेकिन अपनी जान खतरे में क्या डालनी थी दूसरे को बचाने के लिए। पहले बचाने की बात नहीं थी। दूसरों को एक तरह के अपराधी जीवन से सभ्य नागरिकता की तरफ लाने के लिए ऐसे हिम्मतवार लोगों की जरूरत थी जो दूसरों को बचाने और उभारने के लिए अपनी जान खतरे में डाल सकें।

हमारे यहाँ पर साधारण नागरिक तटस्थ नहीं है वह अकर्मण्य है। वह उदासीन और अकर्मण्य इसलिए है कि वह हतवीर्य हो गया है। उसकी स्थिति ऐसी है कि एक तरफ डाकुओं से डरता है, दूसरी ओर पुलिस से भी घबराता है। डाकुओं का डर होता है तो पुलिस का शरण चाहता है पुलिस से जब डर होता है, तो डाकुओं की तारीफ कर लेता है कि इनसे भी लोहा लेने वाला कोई-न-कोई है माई का लाल। सैनिक-सेवा से निवृत्त होने के बाद यदुनाथसिंहजी ने साधारण नागरिक के इस दोष का परिमार्जन करने की चेष्टा की। साधारण नागरिक में अगर तटस्थता हो, तो पौरुषयुक्त सक्रिय तटस्थता होनी चाहिए। उसका आदर्श किसी-न-किसी को पेश करना चाहिए था। जो लोग चम्बल क्षेत्र में काम करने गये, उनमें से अनेक लोगों ने यह आदर्श अपनी-अपनी मर्यादा, अपनी-अपनी शक्ति और अपने-अपने गुण के परिमाण में उपस्थित करने की चेष्टा की, लेकिन इन सबमें इस भूतपूर्व सेनापति ने सभ्य नागरिक के इस आदर्श को अपने जीवन में उतारने की बहुत बड़ी कोशिश की।

इस दृष्टि से मैं समझता हूँ कि उनके जैसे पुरुष का हम लोगों में से चला जाना हम पर एक बहुत बड़ी आपत्ति है। एक बहुत बड़ा संकट है। ऐसे समय पर हम केवल शोक ही कर सकते हैं। उनके लिए बहुत प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं होगा। जिसने दुनिया में सत्कार्य किया है, उसको सद्‌गति मिलनी ही है। प्रार्थना तो हमें देश के लिए अपने लिए करनी चाहिए कि हमें उनके जीवन के आदर्श का जो दर्शन हुआ है, उस आदर्श को समाज में अधिक व्यापक करने की चेष्टा हम लोगों में से जिनके मन में उत्साह हो, स्फूर्ति हो, पुरुषार्थ का शक्ति हो, व लोग करें। ऐसे लोगों का एक अक्षुण्ण परंपरा कायम हो इस प्रकार की प्रार्थना आपको, हमको करनी चाहिए।

भारत में अन्तर्राष्ट्रीय शांतिवादी सम्मेलन

आगामी दिसम्बर में गांधीग्राम (दक्षिण भारत, जि० मदुराई) में शांतिवादियों का एक महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो रहा है। "युद्ध विरोधक अन्तर्राष्ट्रीय" शान्तिवादियों की एक प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। हर तीसरे वर्ष उसका एक विश्व-सम्मेलन होता है। इस बार दसवाँ सम्मेलन भारत में हो रहा है। गांधीजी की मृत्यु के बाद सन् १९४९ में शांतिवादियों का एक इसी प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन भारत में हुआ था। उसके बाद यह पहला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हो रहा है। लगभग ३० देशों के शांतिवादी लोगों के अलावा गांधी और विनोबा के विचारों से प्रेरित हिंदुस्तान के कई सर्वोदय कार्यकर्ता भी इस सम्मेलन में भा[illegible] और इस प्रकार विदेशों में होने वाले युद्ध-विरोधी कार्रवाई और हिन्दुस्तान में ह[illegible] वाले नवसमाज-रचना के प्रयत्नों के अनुभवों का आदान प्रदान इस सम्मेलन में हो सकेगा।

इस सम्मेलन में करीब एक सौ विदेशी प्रतिनिधियों के आने की सम्भावना है, जिनमें "इटली के गांधी" दनीलो दोल्ची और बर्टरंड रसेल आदि होंगे। 'युद्ध-विरोधक-अन्तर्राष्ट्रीय' के मंत्री श्री आरलो टेटम अगस्त के तीसरे सप्ताह में सम्मेलन की प्रारंभिक तैयारी के निमित्त हिन्दुस्तान आ रहे हैं। सम्मेलन की भारतीय स्वागत-समिति की एक सभा ता० २६ अगस्त को समिति के अध्यक्ष श्री जी० रामचंद्रन ने गांधीग्राम में बुलायी है, उसमें श्री आरलो टेटम भी उपस्थित रहेंगे। स्वागत-समिति की बैठक के बाद श्री आरलो विनोबाजी तथा राष्ट्रपति से मिलने के लिए उत्तर-भारत आयेंगे।

चम्बल-घाटी शान्ति-कार्य की प्रगति

चम्बल घाटी शान्ति-समिति में कुल १० व्यक्ति नामजद हुए थे। कार्यों का विभाजन बागियों की पैरवी पीड़ितों का पुनर्वास व शान्ति-स्थापन कार्य इस प्रकार किया गया है।

बागियों के मुकदमे भिंड-मुरैना व आगरा में चालू हो गए हैं। पाँच कार्यकर्ता बराबर पुनर्वास के काम में ही लग रहे हैं। शान्ति स्थापना का विचार-प्रचार अभी नहीं हो सका है। इसके लिए सितम्बर माह में दो माह की सामूहिक पदयात्रा पूरे क्षेत्र में करना तय हुआ है।

भिंड मुरैना, इटावा व आगरा क्षेत्र इस प्रकार क्षेत्र विभाजन भी किया गया है, जिसकी जिम्मेवारी अलग-अलग लोगों ने उठायी है। इस समय उत्तर प्रदेश में सर्वश्री कृष्णदत्त, भगवतसिंह व महावीर सिंह काम कर रहे हैं। श्री महावीरसिंहजी भिंड में भी मुकदमों की पैरवी तथा शान्ति-स्थापना का कार्य श्री लल्लूसिंहजी, हेमदेवजी, श्रीराम गुप्ता और राजेन्द्र कुँवरजी भिंड-क्षेत्र में व श्री लक्ष्मीचन्दजी वैद्य मुरैना में काम कर रहे हैं।

इस समय बागियों के उजड़े परिवारों को बसाने और जमीनें जुतवाने का कार्य चल रहा है। क्षेत्र में छोटे-छोटे मनमुटावों से कत्ल, फौजदारी हो जाती है और उसी से लोग फरार होकर बागी बनते हैं। फरार (बागी) होना यहाँ बहादुरी का परिचायक है। इस मानस को बदलने के लिए तथा आपसी झगड़े न बढ़ने पावें, इसके लिए बराबर प्रयत्न चल रहा है।

अभी तक के कार्यों से क्षेत्र में आशा का वातावरण बना है।

एकला चलो रे !

गेरहर्ड शानर्ल

[लेखक एक नौजवान यूरोपियन हैं। पेशे से इंजीनियर हैं, पर गांधीजी के विचार, सर्वोदय-आंदोलन और हिंदुस्तान की "आत्मा" को समझने की तीव्र इच्छा से वे पिछले दिसम्बर में आस्ट्रिया से यहाँ आये। तब से वे हिंदुस्तान के कई हिस्सों में घूम चुके हैं। शांति-निकेतन, समन्वय आश्रम, बोधगया, सोखोदेवरा आश्रम, साधना-केंद्र काशी, विश्वनीड़म्, बंगलोर आदि कई जगह रह चुके हैं। आजकल मैसूर राज्य में हैं, उस प्रदेश में एक सप्ताह की उनकी पदयात्रा का और खासकर वितरण के अनुभव का रोचक वर्णन पाठक इस लेख में पढ़ेंगे। एक 'बाहरी' दर्शक की हैसियत से जमीन के वितरण के बारे में उनके विचार मननीय हैं।

—सं०]

मैसूर से ३० मील उत्तर मेलकोट नाम का एक तीर्थ-स्थान है। ता० १५ जुलाई को बहुत सबेरे कुछ व्यक्तियों का एक छोटा-सा समूह मेलकोट के मंदिर के प्रांगण में एकत्रित हुआ। प्रार्थना के बाद श्री कुट्टी ने मन्दिर की प्रदक्षिणा के साथ कर्नाटक प्रांत की अपनी तीसरी प्रदक्षिणा शुरू की।

अभी दिन नहीं निकला था, उस छोटे कस्बे में लोग अभी सो रहे थे, जब कि हम लोग पदयात्रा के लिए मन्दिर से रवाना हुए। गाँव के जो लोग पहुँचाने के लिए आये थे, उन्होंने थोड़ी दूर जाकर विदा ली और फिर उस देहाती मार्ग पर मैं और कुट्टी, हम दो ही व्यक्ति रह गये।

हमारे कदम चुपचाप बढ़ रहे थे। चुप्पी को भंग करते हुए कुट्टी ने सहज ही कहा : "बड़े तड़के पदयात्रा में निकलना कितना सुखद होता है !" पर कुछ कहना था, इसीलिए यह बात कही गयी थी, बात का कोई विशेष महत्त्व नहीं था। सच तो यह था कि हम दोनों ही के मन में कुछ दूसरे ही विचार चक्कर काट रहे थे। मैं सोच रहा था कि मैं भी चंद दिन ही कुट्टी के साथ रहूँगा और फिर वह अकेला ही एक गाँव से दूसरे गाँव अपनी पदयात्रा बढ़ाता चला जायगा। एक साल भर में शायद मैसूर राज्य की प्रदक्षिणा, जो मेलकोट के मंदिर की प्रदक्षिणा से शुरू हुई थी, समाप्त होगी।

सन् १९५७-५८ में जब विनोबा इस प्रांत में पदयात्रा कर रहे थे, तब एक दिन उन्होंने श्री कुट्टी और श्री अरैयर को अपने पास बुलाया और कहा :

"जाओ, जिस तरह जैन साधु अखंड पदयात्रा करते रहते हैं, उसी प्रकार तुम लोग भूदान और सर्वोदय का संदेश लेकर कर्नाटक के सब जिलों में अखंड-विहार करो। जिस तरह शरीर में खून इधर-से-उधर दौड़ता रहता है, उसी तरह तुम लोग भी कर्नाटक में निरंतर संचार करते रहो।"

उस दिन का दिन है और आज का—ये लोग दो बार कर्नाटक की पदयात्रा कर चुके हैं।

इस बार श्री अरैयर भी नहीं आ पाये। कुट्टी अकेला रह गया। अकेले पदयात्रा पर जाने में जो कठिनाई होती है, उसको महसूस करते हुए भी कुट्टी ने तीसरी बार फिर कर्नाटक की यात्रा पर निकलना ही उचित समझा। उसने विनोबा को परिस्थिति की सूचना दी। विनोबा की ओर से जो जवाब मिला, वह प्रेरणादायी था। जैसे माँ प्यारभरे कोमल शब्दों में बच्चे को कहती है, उस प्रकार विनोबा ने पत्र में लिखा, "तुम यह मत समझो कि तुम अकेले हो, सर्वव्यापी जगदीश्वर तुम्हारे साथ है, वह तुम्हारे भीतर मौजूद है और तुम्हारे चारों तरफ सब जगह व्याप्त है। तुम कहीं भी जाओ, सब जगह वह मौजूद है। यह बात हमेशा ध्यान में रखोगे, तो तुम कभी भी अपने को अकेला महसूस नहीं करोगे।"

कार्यकर्ता की कसौटी

मैसूर राज्य के अधिकतर गाँवों से कुट्टी का परिचय हो गया है। एक बार विनोबा ने मजाक में उससे कहा : "तुम्हारे काम की कसौटी इस बात से होगी कि तुम कितने घरों में जाकर भिक्षा पा सकते हो।" पर एक भी ऐसा गाँव नहीं था, जहाँ से हमको भूखे आगे बढ़ना पड़ा हो। पिछले दिनों के बीसियों अनुभवों के कारण मैं भारतीय जनता की अतिथि-सत्कार की भावना को पहचान गया था। फिर भी इस प्रकार के आतिथ्य से मुझे आश्चर्य ही होता था।

हम पड़ाव पर पहुँचे और एक घर में गये। घर के मालिक ने नम्रतापूर्वक नमस्कार करके हमें अभिवादन किया और चटाई बिछा दी। हमारी यात्रा में हमें कष्ट तो नहीं हुआ ? इत्यादि कुशल प्रश्न के बाद हम पाँव धोकर चटाई पर आराम से बैठ गये। विनोबा की पदयात्रा, डाकुओं का समर्पण, गीता का उपदेश, बारिश में देरी, गाँव की स्थिति आदि तरह-तरह की बातें होती रहीं। भूदान-ग्रामदान या सर्वोदय के विचार की गहराई में जाने की जरूरत यहाँ नहीं थी, क्योंकि भोलाभाला किसान बनिस्बत हम जैसे पढ़े-लिखे शहरी लोगों के चीजों की गहराई को बहुत आसानी से समझ लेता है।

वितरण का महत्त्व

इस पदयात्रा का मुख्य उद्देश्य उस जमीन को बाँटने का है, जो पिछले सालों में भूदान में मिली है। अधिकांश दान एक एकड़ से कम के हैं और सामान्य तौर पर वे गरीब लोगों से ही मिले हैं। मुझे यह महसूस हुआ कि जमीन बाँटने का काम भूदान प्राप्त करने जितना ही महत्त्व का है। जमीन का दान हासिल करना और उसे बाँट न पाना वैसा ही है, जैसा कि कोई व्यक्ति नहाने का संकल्प करे, लेकिन उसके लिए पानी का इंतजाम न करे। नहाने का संकल्प अच्छी चीज है, पर केवल संकल्प से शरीर साफ नहीं हो सकता। इसी तरह दाता का भूदान का संकल्प वितरण के बिना पूरा नहीं हो सकता। जब बहुत अर्से तक संकल्पित दान का वितरण नहीं होता है, तो दाता निराश होकर मन ही मन सोचता है कि मैंने इन लोगों से सर्वोदय का विचार सुन कर जमीन दान में दे दी, पर अब उसे लेने वाला कोई नहीं आता।

इसके विपरीत, भूदान करते समय दाता के मन में जो अच्छी भावनाएँ पैदा होती हैं, उनको और ज्यादा आगे बढ़ाने का मौका हमें वितरण से मिलता है। वितरण के साथ दाता-आदाता में भाईचारे और सुख-दुःख के बँटवारे की भावना बढ़ती है। हमारी यात्रा में इसका प्रत्यक्ष प्रमाण भी हमको मिला। जब कभी हम ऐसे गाँव में पहुँचे, जहाँ जमीन का वितरण हो चुका था, तो गाँव के लोग हमारे पहुँचते ही हमसे कहते "आइये, देखिये, भूदान में जो जमीन बँटी थी, उसमें खेती हो रही है और फसल आ रही है।"—मानो वे हमसे कहना चाहते थे—'देखिये, भूदान का कितना लाभ हुआ है।'

भात के साथ दाल भी दो !

एक दिन एक गाँव में दो एकड़ जमीन हमें बाँटनी थी। इस सिलसिले में एक मजेदार घटना हुई। जमीन एक अविवाहित मजदूर और उसकी बहन को देना गाँव की सभा में तय हुआ। मजदूर ने जमीन जोतने की तो उत्सुकता बतायी, लेकिन उसके सामने समस्या यह थी कि बैलों के बिना वह क्या करे। जिस व्यक्ति ने जमीन दान में दी थी, उसने सुझाया कि गाँव के हर घर से एक-एक, दो-दो रुपया इकट्ठा करके बैल खरीद लेना चाहिए। यह सुन कर तुरंत ही एक किसान ने दाता से कहा, 'तुमने जमीन दी है, तो तुम्हें बैल भी देने चाहिए। अगर तुम किसीको भोजन करने के लिए अपने घर बुलाते हो, तो क्या उसकी थाली में सिर्फ भात परोस कर तुम यह कहते हो कि दाल पड़ोसियों के घर से मांग लाओ। भात के साथ दाल भी तो परोसते हो !"

हमारी पदयात्रा के ५ दिन में हमने ७ परिवारों को जमीन बाँटी। वर्षा आरंभ हो गयी थी, इसलिए अधिकतर किसान अपने-अपने खेतों में काम पर चले जाते थे और हमें कभी-कभी शाम को ही वितरण के लिए गाँव तक इंतजार करना पड़ता था। इनमें से एक दाता ने तो जमीन के साथ बीज भी दिये और बैलों से जुताई भी कर देने का वचन दिया। कोई-कोई दाता ने यह भी कहा कि जमीन तो देने को मैं तैयार हूँ, लेकिन वह अच्छी नहीं है। उसको देने से क्या फायदा होगा ? एक दाता ने तो इनकार ही कर दिया कि मैंने कोई दान-पत्र नहीं दिया था।

गाँव में जमीन की सबसे ज्यादा आवश्यकता किसको है, इसका पता लगाने के लिए हम हमेशा गाँव की सभा करते थे। कभी थोड़े ही लोग जुटते थे, कभी पूरा गाँव। सभा में कभी कोई अगर ऐसा सुझाव देता, जिसके पीछे उसका कुछ व्यक्तिगत स्वार्थ होता, तो गाँव वाले आपस में ही तुरंत बहस छेड़ देते। लेकिन हर बार मैंने यह देखा कि बिना हमारे कुछ सुझाव के हमेशा अपने आप ही निर्णय पर पहुँच जाते थे। अब फार्म इत्यादि भरने की औपचारिक कार्रवाई पूरी हो चुकती और जमीन पाने वाले, जो कि अधिकांश निरक्षर ही होते थे, प्राप्ति-पत्र पर अपने अंगूठे की निशानी कर देते, तब उस सारे वितरण-समारोह की वह सुन्दर घड़ी आ पहुँचती थी, जब कि दाता खड़ा होकर गम्भीरता और प्रसन्नता के साथ अपना दान-पत्र आदाता के हाथ में सौंपता था। उस समय सभा में जुटे हुए किसानों के चेहरे के भाव देखते ही बनते थे। ऐसा लगता था, मानो सर्वोदय की ज्योति का थोड़ा-सा प्रकाश उनके हृदय में पहुँचा है, जो उनके चेहरे और आँखों से प्रकट होता था। फिर कुट्टी जोर से "राम-राम" उच्चारण करता और धीरे-धीरे सभा बिखर जाती।

एक दिन इसी तरह वितरण होते-होते रात हो गयी। बादल उमड़ कर आ गये थे और जोर की बारिश आती देख कर हम लोग मकान के अंदर चले गये। जगह-जगह छत टपक रही थी। मैं लालटेन के धुंधले प्रकाश में "गीता-प्रवचन" का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ने की कोशिश कर रहा था। बाहर आने-जाने वालों से कुछ देर के सिलसिले वाले किसान [illegible] पर, जो [illegible] पानी का [illegible] हुआ दरिया बन गया था, दौड़ चले आ रहे थे। [illegible] पैरों पर थे और बैलों को हाँकने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि बैल भी अपने [illegible] पर पहुँचने के लिए उत्सुक थे। थोड़ी देर बाद हमारे मेजबान हमारे लिए गर्म काफी, चटनी और डोसा ले आये। दूसरे दिन सबेरे जल्दी ही सारे किसान [illegible] पर [illegible], जब कि बहुत दिनों की प्रतीक्षा के बाद बारिश हुई थी। हम फिर अपनी पदयात्रा के लिए अकेले निकल पड़े।

जब मैंने कुट्टी से पूछा कि वह क्या चीज है, जो उसको इस तरह मुश्किल झेल कर भी पदयात्रा करने के लिए प्रेरित कर रही है। [illegible] एक क्षण के लिए [illegible]। फिर तुरंत ही [illegible] उसने जवाब दिया—"जीवन का सच्चा आनंद देने में ही है। [illegible] के साथ [illegible] और उसके [illegible]"

(शेष अगले पृष्ठ पर)

दो गाँव

"ओवलिये"

महाराष्ट्र प्रदेश के दक्षिण रत्नागिरी का सह्याद्रि के पहाड़ों में व्याप्त ऊँचे निसर्गरम्य प्रदेश। वेंगुर्ला-सावंतवाड़ी मार्ग की गाड़ी आम्बोली घाट उतर कर सावंतवाड़ी की ओर चली जाती है और हम 'ओवलिये' गाँव की तरफ अपने कदम उठाते हैं। दो मील का फासला तय करने के बाद गाँव आता है। हरे-हरे पेड़-पौधों में से कई छोटे-मोटे मकान सिर ऊँचा कर हमारी तरफ देखने लगते हैं। गाँव की सीमा पर एक छोटा-सा नाला बहता रहता है। उस प्रशान्त वातावरण में सिर्फ वही एक गंभीर ध्वनि! वह सुहावना रूप देख कर मन प्रसन्न हो जाता है।

दो बरस हुए, श्री विनोबा की पदयात्रा रत्नागिरी जिले में हो रही थी। पड़ाव दाणोली गाँव में था, ओवलिये गाँव से सिर्फ दो मील। सारे लोग विनोबा का भाषण सुनने गये। बाबा के वहाँ आने के पहले भूदान कार्यकर्ता कई बार इस गाँव में जा चुके थे। उन्होंने ग्रामदान का विचार वहाँ पहुँचाया था। पदयात्रा आगे निकल गयी। लोग वापस लौट आये। एक सप्ताह तक काफी विचार-मंथन के बाद इन लोगों ने ग्रामदान का निर्णय लिया। गाँव के चार-पाँच बुजुर्ग फिर बाबा से मिले। अपना निर्णय जाहिर किया। अप्पासाहब पटवर्धन के आश्रम (गोपुरी) में पड़ाव था।

गाँव की सारी जमीन २१०० एकड़, जिसमें से १६६॥ एकड़ में चावल पैदा होता है। सालाना सरकारी महसूल ४४० रु० है। गाँव में ९४ परिवार हैं और आबादी ५४०। सारे के सारे परिवार ग्रामदान में शामिल हुए हैं।

ग्रामदान का निर्णय लेने के बाद गाँव की एक ग्रामसभा बनी। जमीन का समान बँटवारा हुआ। १० परिवार भूमिहीन थे। उन्हें जमीन दी गयी, जिसमें अच्छी तरह धान की उपज हो सकती है। भूमिहीनों में दो हरिजन परिवार थे। उन्हें चार एकड़ जमीन मिली, जिसमें दोनों मौसम में फसल ली जा सकती है।

इस गाँव में एकता और भाईचारे का वातावरण तो पहले से ही था। कई बार अनेक पेचीदे सवाल खड़े हुए। एक बार तो सारी जमीन साहूकार के पास जा रही थी। लेकिन सारे लोग एक हुए, अदालत में गये, फैसला उनकी तरफ हुआ और जमीन उन्हीं के पास रही। ग्रामदान के बाद खेती सुधार की तरफ विशेष ध्यान दिया गया। दो पहाड़ों के बीच में से बहने वाले एक नाले पर छोटे-बड़े बाँध डाले गये। बड़ी-बड़ी चट्टानें तोड़ी गयीं। बाँध डालने के कारण बारिश में पानी के साथ नीचे बहने वाली सारी मिट्टी वहीं जमा हो जाती है और ३-४ बरस में खेती के लायक और बड़ी उपजाऊ जमीन वहाँ तैयार होती है। ३८ परिवार १५ एकड़ जमीन पर सामूहिक ढंग से खेती करते हैं। गाँव की पश्चिम सीमा पर तेरेखोल नदी बहती है। गत साल बारिश के मौसम में बाढ़ कम हो जाने पर वहाँ एक कच्चा बाँध बाँधा गया। ३५०० फीट लम्बी एक नहर भी खोदी गयी। नदी का पानी इस तरह खेतों की जमीन में लाकर चावल की दूसरी फसल लेने का प्रयोग हुआ। लेकिन अभी तक पानी वहाँ तक ठीक ढंग से पहुँचने नहीं लगा है।

गाँव की बस्ती में हर मुहल्ले में जाने के लिए रास्ता नहीं था, अब वह बन गया है। पाठशाला और देवालय के लिए भी अच्छे रास्ते बनाये गये। पीने के लिए पानी का इन्तजाम नहीं था। अब एक पक्का कुआँ बनाया है। शराबबन्दी का कानून बम्बई राज्य में बनने के पहले ही इस गाँव में पूर्ण शराबबन्दी हो चुकी थी। वस्त्र-स्वावलम्बन का भी आरम्भ हुआ है। एक परिश्रमालय शुरू हुआ है। दवा-पानी का इन्तजाम गाँव में ही हुआ है। महिलाओं के लिए एक साक्षरता-वर्ग चलाया जाता है। हर रोज शाम को २५ महिलाएँ वहाँ आती हैं। लिखना-पढ़ना सीखती हैं। यहाँ के कुछ लोग बम्बई में रहते हैं। उनमें से कुछ मिलों में तो, कुछ पुलिस में तो कुछ रेलवे में काम करते हैं। उन्होंने वहाँ एक सर्वोदय मंडल बनाया है। रहते हैं बम्बई में, लेकिन गाँव के हरएक काम में सहायता देते हैं। गत साल कुडाल सावंतवाड़ी तहसीलों के ग्रामदानी गाँवों का एक शिविर इस गाँव में हुआ। इस साल भी सरकारी विकास-योजना की ओर से किसानों का शिविर यहाँ हुआ। पानी, खाद और अच्छे बीज का प्रबंध होने से अनाज का उत्पादन बढ़ा है।

—गोविंद शिंदे

(पिछले पृष्ठ से आगे)

तक पहुँचाना, इसमें आनंद का अनुभव होता है। इस काम में हमेशा अपने आपको परखने का और अपनी आदतों को सुधारने का मौका भी मिलता है। इस सर्वोदय-आंदोलन में ही मुझे इस प्रकार के काम में व्यापक क्षेत्र मिलता है। जरा सोचो— सबका उदय! कितनी भव्य कल्पना है!! कितनी आनंददायी! और आध्यात्मिक विकास की भी इसमें कितनी गुंजाइश है! यही कारण है कि मुझे दूसरी कोई चीज उतना आकृष्ट नहीं करती, जितना यह आंदोलन।

कुट्टी को अपनी पदयात्रा पर अकेला चलने के लिए छोड़ कर जब मैं बस में चढ़ा, तो मुझे कुट्टी से अलग होते हुए तुरत शर्म आयी। मैं उसे अकेला छोड़ रहा हूँ? पर इतने में बस रवाना हो गयी। मैंने देखा, कुट्टी हमेशा की तरह अपना सिर नीचा करके जमीन की तरफ देखता हुआ घुटना तक धोती और कंधे पर एक उत्तरीय डाले हुए चला जा रहा था। दोनों ओर के कंधों से दो थैले लटक रहे थे, जिनमें सर्वोदय-साहित्य भरा हुआ था। थैलों की पट्टियाँ कंधों पर एक ही जगह रगड़ खाती थीं और उससे कुट्टी के कंधे छिलने लगे थे। मैंने बस की खिड़की में से जोर से "जय-जगत्" पुकारा और देखते-देखते कुट्टी का आकार हमारे पीछे उस देहात की सड़क पर ओझल हो गया।

"कोड़"

राजस्थान के नागौर जिले की तहसील डेगाने में 'कोड़' नाम का एक छोटा-सा गाँव है। रेत के टीलों में स्थित यह सजल ग्राम एक प्रकार का नखलिस्तान-सा है और फिर इस नखलिस्तान को प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान करने में वहाँ के ठाकुर श्री कानसिंह का सबसे प्रमुख हाथ है। वे अपने स्वयं के जीवन को तथा गाँव-समाज के जीवन को प्रकृति के नियमों पर चलाने का अथक प्रयास कर रहे हैं।

श्री कानसिंहजी श्रमजीवी, सात्त्विक वृत्ति वाले एक भक्तिप्रधान सज्जन हैं, जिनका जीवन बड़ा संयमित व नियमित है। आपकी आध्यात्मिक साधना का प्रमुख साधन कृषि है। आपने अपनी बुद्धि व श्रम से करीब २५ बीघा के एक छोटे से खेत में एक सुन्दर बगीचा लगा रखा है, जिसमें विभिन्न साग-सब्जी, फल वगैरह का प्रयोग पिछले कई वर्षों से कर रहे हैं। आपके बगीचे में पपीता, गुलाब, नींबू की खेती का प्रयोग सफलतापूर्वक चल रहा है। आप खाद, बीज, पौधे की बीमारियाँ और उन सबका पूर्ण हिसाब आदि के पूरे आंकड़े भी रखते हैं।

कृषि के साथ-साथ वे अपने ग्रामवासियों को भी उतना ही उन्नत देखना चाहते हैं, जितना अपने आप को। दर असल वे अपने गाँव में ग्राम-परिवार की भावना से काम कर रहे हैं। गाँव में उन्होंने एक गाँवसभा की राय से एक प्रेम-पंचायत भी बना रखी है, जिसके जरिये वे गाँव के सब छोटे-मोटे झगड़े गाँव में ही प्रेम के जरिये निपटाते हैं तथा गाँव के विकास के लिए विभिन्न उपसमितियाँ भी बना रखी हैं। सर्वसम्मति से निर्णय करते हैं, यह सब कुछ हमको अभी हाल ही में श्री बद्रीप्रसाद स्वामी द्वारा की गयी यात्रा के दौरान में देखने को मिला। उनसे तथा ग्राम-वासियों से बात-चीत करने पर पता चला कि गाँव का कोई झगड़ा काफी अर्से से बाहर नहीं जाता है। पहले तो कोई झगड़ा होता ही नहीं है। ठाकुर साहब ने करीब-करीब अपनी कुल जमीन बाँट कर भूमिहीनों की भूमिहीनता मिटा दी है। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ कि गाँव में न भूदान-साहित्य पहुँचा है और न यह विचार ही। फिर भी गाँव ग्राम-स्वराज्य की ओर अहिंसक तरीके से आगे बढ़ रहा है और उसका एकमात्र कारण श्री कानसिंहजी का जीवन है, जिसमें कि भक्ति, ज्ञान और कर्म, तीनों का समन्वय हो रहा है।

गाँव में रात्रि को गाँव-सभा में ग्रामदान से लेकर ग्राम-स्वराज्य के सम्पूर्ण विचार को श्री बद्रीप्रसाद स्वामी ने समझाया, जो सभी को अत्यन्त प्रिय लगा और सबने एक स्वर से कहा कि हम तो इसी मार्ग पर आ रहे हैं और आना चाहते हैं। श्री कानसिंहजी ने सर्वोदय-साहित्य और पत्र-पत्रिकाएँ हमसे प्राप्त की तथा रवाना होते समय प्रेम भरे शब्दों में गाँव की तरफ से यह आश्वासन दिया कि हमको बराबर मार्ग-दर्शन मिलता रहा, तो हमारे गाँव को हम निकट भविष्य में 'गोकुल' बना कर रहेंगे और उसकी बुनियाद के रूप में हम गाँववाले आपस में पूर्ण चर्चा कर शीघ्र ही ग्रामदान की घोषणा करने का प्रयास करेंगे।

श्री कानसिंहजी का यह 'कोड़' गाँव नागौर एवं अन्य जिलों के लिए प्रेरणा का केन्द्र बनेगा, ऐसी आशा है।

—मोहनलाल शर्मा

एक आदर्श विवाह !

सर्वोदय विचार जीवन के प्रत्येक पहलू को छूता है। हमारा रहन-सहन, हमारे रीति रिवाज, हमारी विवाह-शादियाँ आदि यदि उन्हीं रूढ़िगत पुराने मूल्य को प्रश्रय देने वाले हों और केवल हम सर्वोदय की स्थापना का विचार फैलाते रहें, तो कुछ नहीं होगा। यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे जीवन-मूल्यों में आमूलचूल परिवर्तन हो।

पिछले दिनों टिहरी गढ़वाल क्षेत्र में स्थित सिल्यारा आश्रम में दो कार्यकर्ताओं का जीवन-साथी बनना इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। सुश्री उर्मिला और श्री सुरेन्द्र दत्त का पाणिग्रहण-संस्कार अत्यन्त सात्त्विक और क्रांतिकारी ढंग से सम्पन्न हुआ। आज शादियों में लेन-देन, खाना-पीना इत्यादि का जो आडंबर चलता है, उसने साधारण मानव-जीवन को दूभर बना दिया है। ऐसी स्थिति में यह विवाह एक आदर्श विवाह है। वर-वधू को आगन्तुकों ने सूत की मालाओं से लाद दिया। यही एकमात्र भेंट थी जो स्वीकार की गयी। और भी सारा कार्यक्रम बहुत आदर्श पद्धति से सम्पन्न हुआ।

सारे समाज में इसी तरह से विवाह-कार्य संपन्न होने चाहिए और खास तौर से सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को तो इस तरह की आदर्श विवाह-पद्धति का अनुसरण करना ही चाहिए।

दो भाव-चित्र

एल्युमिनियम का बर्तन !

पिताजी ने पुकारा, "वह नीबू का रस लाओ तो, देखें जरा।"

आलमारी में से बर्तन निकाल कर माताजी लायीं, पर वह बर्तन चू रहा था।

पिताजी के मुँह से शब्द निकल पड़े, "अरे, यह क्या कर दिया?"

बर्तन एल्युमिनियम का था। सप्ताह भर नीबू का रस रहने से उसमें छेद पड़ गये थे और रस चू रहा था।

पिताजी ने कहा, "खटाई एल्युमिनियम को खा जाती है।" होता भी ऐसा ही है।

परसों एक भाई मिले। सर्वोदय के प्रति आकर्षण था और शान्ति-सेना में काम करने के इच्छुक थे। लेकिन कुछ बातों में नहीं बन पायी, तो थोड़ा गुस्सा आ गया था। सबकी बुराई करने लगे। उसमें सत्य भी हो सकता है। कहने लगे, "यह सब ढोंग है। मैं एक चाय की दूकान करने वाला हूँ। उस पर बोर्ड लगाऊँगा 'असली सर्वोदय' और सब लोगों को बताऊँगा कि यह जो चल रहा है, सो नकली सर्वोदय है।"

मैंने उनको समझाने की कोशिश की। लेकिन उन्होंने कहा, "नहीं भाई, मेरा दिल खट्टा हो गया है।"

मैंने कहा, "खटाई ऐसी चीज है कि वह बर्तन को भी खा डालती है, इसलिए आपको दिल से खटाई निकाल देनी चाहिए।"

वे भाई राजी हुए। लेकिन ऐसे कई मित्रों से बातें होती हैं। ज्यादातर 'खटाई' छोड़ने को राजी नहीं होते और खटाई का स्वभाव है कि वह जिस बर्तन में हो, उसी को खा डाले! हाँ, कुछ बर्तन जरूर ऐसे होते हैं, जिनका वह कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। उसमें रह कर खटाई खुद बदल कर कल्याणकारी औषध बन जाती है। गांधी ऐसा ही बर्तन था, जिसमें सामाजिक विषमता के प्रति खटाई पैदा हुई और उसने सामाजिक क्रांति की। परतंत्रता के प्रति खटाई पैदा हुई और उसमें से स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई। उसमें शर्त यह होती है कि उसका पुण्यप्रकोप व्यक्ति या समाज के प्रति प्रकट नहीं होता। वह परिस्थिति के खिलाफ बगावत करता है, व्यक्ति और समाज के साथ का प्रेम बनाये रखता है और परिस्थिति को बदल देता है। लेकिन ऐसा काम करने के लिए शंकर-नीलकंठ बनना पड़ता है। बाकी मेरे जैसे एल्युमिनियम के पात्रवालों को तो चाहिए कि वे खटाई पैदा करने वाली परिस्थिति से अपने को बचाये रखें और यथाशक्ति भलाई, स्नेह-सिंचन करते रहें, ताकि और लोग भी खटाई से बचने पायें।

कामना की गोलियाँ !

महाराज की कहानी है। गोबर और मैले में रहने वाले 'गोबडौरा' को तो आपने देखा होगा! भौंरे के नाप और आकार का होता है वह। वैसे तो भौंरा और गोबडौरा होते हैं चचेरे भाई, लेकिन अतीत में जब झगड़ा हुआ था, तब से दोनों परिवारों ने अपना अलग-अलग क्षेत्र बना लिया था। भौंरा फूलों में भटकता है और रस चूसता है। गोबडौरा ने उड़ने की मेहनत बचायी और स्थल पर जो कुछ मिल गया, उस पर निर्वाह कर लेता था। आज भी वही करता है। मल या गोबर की गोलियाँ बना कर उनको लुढ़का कर ले जाते हुए आपने उसे देखा होगा।

एक बार दोनों भाइयों की भेंट हो गयी।

"जय रामजी की!"—भौंरे ने कहा।

"जय रामजी की!"—गोबडौरे ने जवाब दिया और अगली दोनों टाँगें गोली पर टिका कर रखा।

भौंरा नीचे उतरा। लेकिन फूलों में भटकने वाले भौंरे के लिए वहाँ की दुर्गंध और गंदगी दम घोटने वाली थी। उसने नाक सिकोड़ते हुए कहा, "ऐसी जगह में क्या पड़े हो? देखो, मेरे साथ चलो! स्वर्ग जैसी जगह में तुमको ले जाऊँगा।"

गोबडौरा राजी हो गया। दोनों चले। भौंरा जाकर एक कमल के फूल में उतरा। गोबडौरा भी उतरा। दृश्य बड़ा ही रम्य था। कोमल कमल-दल, धवल पंखुड़ियाँ, नीचे नीला निर्मल और पारदर्शक सरोवर का पानी और ताजी हवा।

गोबडौरा मुस्कराया। वास्तव में स्थान स्वर्गोपम ही था।

भौंरे ने पूछा, "क्यों जी, कैसा है? है न अनुपम सौंदर्य और सुगंधि?"

गोबडौरा ने मुस्करा कर ही जवाब दिया। कुछ देर रुकने के बाद वह बोला, "सौंदर्य अद्भुत है, लेकिन सुगंध कहाँ? मुझे तो गोबर की और घूर की ही गंध आती है।"

भौंरा जरा सोच में पड़ गया। दिमाग उसका ताजा था। फौरन पता चल गया। उसने गोबडौरे की नाक में झाँका। वह गोबर की छोटी-सी गोली नाक में लेकर आ गया था! रहस्य खुल गया!

हम शान्ति-सेना में आते हैं या लोक-सेवकत्व अपनाते हैं। लोगों को अपनी बुद्धि से, तर्क से, वाक्-पटुता से चकाचौंध कर डालूँ, मेरे वैशिष्ट्य का प्रभाव लोगों पर पड़े, मैं अगुआ बनूँ, मुझे बड़प्पन प्राप्त हो, मेरी नेतागिरी चले—आदि कामनाएँ आम समाज में तो होती हैं और उनके लिए होड़ भी चलती है। लेकिन शान्ति-सेना में या लोकसेवकत्व में आने पर भी यदि कामना की गोलियाँ दिमाग में रही होंगी, तो 'घूर' की ही दुर्गंध पायेंगे। कहा है—"अन्यक्षेत्रे कृतं पापं, तीर्थक्षेत्रे विनश्यति। तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।"—अन्य क्षेत्र में किये पाप तो तीर्थक्षेत्र में धुल जाते हैं, लेकिन तीर्थक्षेत्र में किये गये पाप की कालिमा मिटाये नहीं मिटती या मिटाई नहीं जा सकती। इसी तरह यदि हम शान्ति-सैनिक और लोक-सेवक की भूमिका में भी यशोलिप्सा अथवा कामना से ग्रस्त रहेंगे, तो हमारी क्या दशा होगी, यह कहना कठिन है, क्योंकि दूसरे क्षेत्र में यह सब चल सकता है, पर इस क्षेत्र को तो निर्दोष समझ कर ही हम आते हैं।

—[illegible]

एक संस्मरण

उन्होंने माँगा और उन्हें मिल गया !

[illegible] जिले का पहला पड़ाव था—घानला। रास्ते में विनोबा के स्वागत के लिए लोग फल, फूल, सूत ले आते थे। आज गाँव के भाई दूध लिये खड़े थे। लेकिन उनको पता चला कि यह संत पुरुष 'दूध' का भूखा नहीं है। विनोबा ने उस भाई से पूछा, "भाई! दूध तो तुम लाये हो। लेकिन मैं तो मिट्टी माँगने आया हूँ। दूध महँगा है या मिट्टी?" वह भाई बोला, "जी, मिट्टी महँगी है।" "तो क्या सस्ते में हमें विदा करना चाहते हो? जमीन दो, तभी मेरा स्वागत होगा।" और उस भाई ने ५ बीघा जमीन दी।

विनोबा पड़ाव पर पहुँचे। सुबह का काम खत्म करके यात्री-दल के भाई आराम कर रहे थे। उस वक्त विनोबा के कमरे के दरवाजे में बहुत अदब से बैठे हुए तीन-चार भाई कुछ संकोच से और बहुत नम्रता से आगे बढ़े। अन्त में बाबा के हाथ में अपनी अर्जी पेश की। हरिजनों के ६ परिवार उस गाँव में थे। उनको जमीन की जरूरत थी। बाबा ने दीपचंद भाई, जो मध्यप्रदेश में बाबा की यात्रा के संयोजक हैं और श्री तोमरजी को बुला कर कहा, 'आज मुझे पोचमपल्ली का स्मरण हो रहा है। हरिजन जमीन माँगने आये हैं। पोचमपल्ली में हरिजनों ने ८० एकड़ भूमि माँगी। हमने लोगों से जमीन माँगी, तो उन्हें ८० एकड़ का दान मिला। उस बात को ९ साल हो चुके हैं। इन परिवारों को जमीन मिलनी चाहिए।"

तीन बजे शिक्षक और गाँव के भाई मिलने आये। उनको आशा थी कि बाबा कुछ लंबी तकरीर करेंगे। बाबा ने उनसे कहा, "आज आप लोगों ने हमें खिलाया और साधन दान के तौर पर आप हमें पैसा भी देंगे। लेकिन मेरी मिट्टी की बात को आप नहीं टाल सकते। मेरा समाधान तभी होगा, चित्त तभी प्रसन्न होगा, जब आप उन हरिजनों को जमीन देंगे। माँगने के लिए भगवान आये हों और हम उन्हें खाली हाथ लौटा दें, यह हमें शोभा नहीं देता। आपको भी इस काम में योग देना चाहिए। अभी आप जाइये। घड़ी में तीन बजे हैं। पाँच बजे आम सभा है। दो घंटे में इतना काम कीजिये।"

वे भाई उठ कर बाहर आये। कार्यकर्ता और गाँव के भाइयों में चहल-पहल हुई। चर्चा चली, 'बाबा का समाधान कैसे करें?' थोड़ी देर बाद गाँव की बहुत सारी बहनें अपने बच्चों के साथ बाबा से मिलने और [illegible] सुनने आयीं। उनको बाबा ने आदेश दिया, "आप अभी घर पर जाइये और अपने घरवालों से कहिये कि अपने गाँव में हरिजन लोग जमीन माँग रहे हैं। बाबा उनके लिए जमीन माँगने आया है। उनको जमीन दीजिये। उसके बाद शाम को सभा में आइये।"

बुनियादी शाला के अहाते में पीपल का एक बड़ा वृक्ष खड़ा था। उसकी छाया में गाँववाले बैठे। सभा शुरू हो रही थी। सर्वप्रथम श्री तोमरजी (एम० एल० ए०) ने जाहिर किया कि 'बाबा की माँग हमने पूरी की है।' [illegible] खड़े हुए। गाँव के सारे परिवार के [illegible] को बाबा ने पास बुलाया। [illegible] सामने बाबा एकसाथ सभा में खड़े हुए। उनको जमीन मिल गयी। सबके चेहरे पर आनंद था, खुशी थी। सबका समाधान हो गया था। बाबा ने कहा, "यह काम तो अच्छा ही हुआ। लेकिन यह पहली किस्त के तौर पर हुआ है। शांति तो तब होगी, जब गाँव में कोई भूमिहीन नहीं रहेगा।"

—कुसुम देशपांडे

महाराष्ट्र की चिट्ठी

इस साल का सर्वोदय सम्मेलन सेवाग्राम में हुआ, अर्थात् महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं को सम्मेलन शिविर आदि सम्मेलन के सिलसिले में जो जिम्मेदारियाँ आती हैं, वे उठानी पड़ीं। श्री विनोबा सेवाग्राम में नहीं रह सके। सम्मेलन की चर्चाओं में अनेक छोटे-मोटे कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। यदि पंढरपुर का सम्मेलन अव्यवस्था के लिए, तो सेवाग्राम का सम्मेलन सुव्यवस्था के लिए याद रहेगा।

इधर जब सेवाग्राम में सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा था, ठीक उसी समय महाराष्ट्र-र सीमाविवाद के कारण सीमा क्षेत्र में अशान्त असुब्ध हो रहा था। बेलगाँव अशान्ति पैदा हो रही थी। महाराष्ट्र र मैसूर राज्यों के शान्ति सैनिकों की क सेवाग्राम में अ० भा० शान्ति सेना-ल की संयोजिका श्रीमती आशादेवी नायकम् की अध्यक्षता में हुई। इस क में तय हुआ कि बेलगाँव में एक ति-सेना शिविर लिया जाय तथा वहाँ क शान्ति-सेना केन्द्र की स्थापना हो।

सम्मेलन के बाद बेलगाँव और सीमा-त्र की तरफ हमने कदम उठाये। बेलगाँव शान्ति-सेना-शिविर हुआ, जिसमें महाराष्ट्र और कर्नाटक से दस शान्ति-सैनिक उपस्थित रहे। श्री अप्पासाहब पटवर्धन और श्री निजप्पा नाईक ने इस शिविर का संचालन किया। दोनों प्रान्तों के शान्ति-सैनिकों की उपस्थिति से और उनके जनसंपर्क से बेलगाँव का वातावरण कुछ बदला। महाराष्ट्रीय और कन्नड़ लोग इस शिविर में मिलने लगे। विद्वेष की भावना कम होने में इससे काफी मदद हुई। सर्व-सेवा-संघ के अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामी भी इस शिविर में आये। बेलगाँव में शान्ति-सेना केन्द्र शुरू हुआ है। वहाँ के स्थानीय कार्यकर्ताओं की मदद करने के लिए बाहर से श्री माधव क्षीरसागर, डा० यशवन्तराव कुलकर्णी आदि लोग वहाँ जा रहे हैं। महाराष्ट्र और कर्नाटक के लोग आपस में मिलें, एक-दूसरे की राय समझ लें, गलतफहमी अगर कुछ हो, तो वह दूर हो जाय और किसी भी अवस्था में शान्ति कायम रहे, अल्पभाषा भाषी लोगों पर कोई भी अन्याय न हो, इस दिशा में यह प्रयत्न जारी रहेगा।

माह अप्रैल, १९६० में रत्नागिरी और कोल्हापुर जिले के कार्यकर्ताओं ने एक सघन पदयात्रा का आयोजन किया। कुडाल, सावंतवाडी (रत्नागिरी जिला) और कागल, गडहिंग्लज (कोल्हापुर जिला) इन चार तहसीलों में पदयात्रा हुई। कुछ सौ गाँव पदयात्रा के लिए चुने थे। प्रचार करने के लिए ग्रामदानी गाँव के लोग भी निकल पड़े। कार्यकर्ता और ये ग्रामस्थ, ऐसे कुल मिला कर ७२ लोग थे। इसमें ग्रामदानी गाँवों की चार बहनें भी शामिल थीं। इसी समय महाराष्ट्र राज्य-स्थापना का समारोह हर जगह मनाया जा रहा था। इस पदयात्रा में छह नये गाँवों ने अपना ग्रामदान का निर्णय जाहिर किया। कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा। दोनों जिलों के कार्यकर्ताओं ने मिल कर यह तय किया है कि इन चार तहसीलों के इन सौ गाँवों का एक सघन क्षेत्र बनाया जाय। वहाँ का हर-एक गाँव ग्रामदानी हो। अनेक गाँव पहले ही ग्रामदान दे चुके हैं। दस कार्यकर्ता गत दो-तीन सालों से यहाँ काम कर रहे हैं। नवनिर्माण का काम चल रहा है। ग्रामदानी सघन क्षेत्र-समिति भी बन चुकी है। ग्रामदानी गाँवों की सहकारी सोसाइटियाँ बन रही हैं। श्रीमती विमला बहन ठकार स्वास्थ्य-लाभ के लिए मई और जून में दो सप्ताह रत्नागिरी जिले के आंबोली गाँव में रहीं। श्री दादा धर्माधिकारी भी उनके साथ थे। आप दोनों आंबोलिये और गवसे, इन दो गाँवों में गये। रत्नागिरी, कोल्हापुर जिलों के कार्यकर्ताओं की सभा हुई, आप दोनों का मार्गदर्शन मिला।

१२ मई, १९६० को श्री विनोबा के जन्म-गाँव गागोदा में ग्रामदानी गाँव वालों का एक मेला हुआ। इसी समय हेमडी गाँव में श्री शंकररावजी ने एक आदिवासी कॉलनी का उद्घाटन किया, जिसके सारे मकान वहाँ के गाँववालों ने श्रमदान से बनाये थे। इस मेले में इर्दगिर्द के सारे गाँववाले उत्साह से शामिल हुए। उन्होंने अपने गाँव की समस्याओं पर तथा भावी योजनाओं पर चर्चा की। हर विषय की चर्चा में इन लोगों ने भाग लिया। कुलाबा जिले के कार्यकर्ताओं ने गागोदा में एक सर्वोदय-आश्रम की स्थापना की है। गागोदा गाँव का एक भाग ग्रामदान हुआ है। सारा गाँव इस दिशा में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। इस विभाग में आदिम जाति के लोग अधिक हैं। आश्रम के कार्यकर्ता उनमें सेवा-कार्य कर रहे हैं। गागोदा गाँव की चार सौ एकड़ जमीन सामूहिक बन गयी है।

१ जुलाई, १९६० से मावळ (जिला पूना) में ग्रामदानी गाँवों में जाकर काम करने वाली महिलाओं के लिए कस्तूरबा सेवा-केन्द्र की ओर से एक शिक्षा-वर्ग शुरू हुआ। ग्रामीण विभाग में से दस महिलाएँ वहाँ दाखिल हुई हैं। एक बरस तक वे वहाँ ट्रेनिंग लेंगी। शिक्षा में प्राइमरी स्कूल चलाना, फर्स्टएड, ग्राम-संगठन, सफाई, अम्बर चरखा और खेती का सामान्य ज्ञान आता है। हिन्दी भाषा का ज्ञान देने का भी प्रबंध इस साल से किया है। ये बहनें आगे ग्रामदानी गाँव में जाकर काम करेंगी।

ग्रामसभा के सारे सदस्य हर महीने में दो बार एकादशी को देवालय में मिलते हैं। खेती और उद्योग के बारे में विचार होता है। नयी योजनाएँ बनती हैं। उन पर बहस होती है। ग्रामसभा के सेक्रेटरी यह काम करते हैं। अगर कोई आदमी कुछ कठिनाई में हो, तो उसे सहायता पहुँचाने में भी ग्रामसभा सतर्क रहती है। एक बार एक आदमी लकड़ी तोड़ते समय ऊँचे पेड़ पर से एकदम नीचे गिर पड़ा और थोड़ी ही देर में चल बसा। उसके परिवार के लोगों पर यह बड़ी आफत थी। लेकिन ग्रामसभा ने प्रस्ताव किया कि इस असहाय परिवार की यथाशक्ति सहायता की जाय। उस आदमी का घर जिसके लिए वह लकड़ी तोड़ रहा था, गाँववालों ने बनाया—यहाँ तक कि उसके बच्चों की शिक्षा का भी प्रबंध किया। दूसरा एक भाई बीमार पड़ गया। कॅन्सर के आसार दिखाई देते थे। दवा करना तो जरूरी था, लेकिन बहुत खर्चीला काम था, अकेला बेचारा कैसे कर सकता? ग्रामसभा ने चन्दा जमा करके उसकी भी मदद की। दवा-पानी का इन्तजाम हुआ। खुश-किस्मती से अब तक वह भाई तन्दुरुस्त होकर अच्छी तरह काम भी कर रहा है। इस गाँव में 'ग्रामस्वराज्य सहकारी सोसाइटी' का रजिस्ट्रेशन हुआ है। गाँव की सारी जमीन सोसायटी के नाम की गयी है। अब करजा, महसूल आदि सारा लेने-देने का व्यवहार व्यक्तिगत नहीं, होगा, बल्कि सोसाइटी की ओर से होगा।

ऐसा है, यह एक छोटा-सा गाँव, जहाँ के लोग समाजवाद और कम्यूनिज्म के नारे लगाना तो नहीं जानते, लेकिन उन्होंने उत्पादन के साधनों की व्यक्तिगत मालकियत छोड़ दी है। वह अधिकार गाँव-समाज को दे दिया है, आर्थिक जीवन सुधारने का उत्पादन बढ़ाने का प्रयास हो रहा है। लेकिन जो कुछ था, वह समाज ने *बाँट भी लिया है, खुशी से, बिना किसी* वर्गयुद्ध के या सघर्ष के।

—गोविंद शिंदे

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब सर्वोदय-मंडल के कार्यालय से प्राप्त विवरणों से पता चलता है कि पंजाब विनोबाजी के सन्देश को नहीं भूला। *जून मास का कार्य-विवरण काफी उत्साह-*वर्धक है। इस मास में सर्वोदय-पात्र से ११,७३४८० की आय रही। सम्पत्तिदान १,९८८ रु० का प्राप्त हुआ। साहित्य-बिक्री ५४८४ रु० की हुई। यह बिक्री *जिला सर्वोदय-मंडलों तथा पट्टीकल्याणा* पुस्तक-भंडार द्वारा की गयी। पंजाब के अन्य सात पुस्तक-भंडारों की बिक्री की रिपोर्ट अभी तक नहीं मिल सकी है। पत्र-पत्रिकाओं के ९९ ग्राहक बनाये गये। ४१ एकड़ का *भूमिदान प्राप्त हुआ।* ४०३० एकड़ भूमि का वितरण किया गया। १८७ विचार-सभाएँ की गयी, २७२ लोकसेवक बनाये गये।

सन १९६० में सूत्रांजलि में कुल प्राप्त आय रु० १३,३९३-२४ न० पै० रही। पंजाब सर्वोदय-मंडल ने तय किया कि इसका विनियोग निम्न प्रकार किया जाय: सर्वसेवा-संघ को षष्ठांश, पंजाब सर्वोदय-मंडल को षष्ठांश और सूत्रांजलि एकत्रित करने वाले जिले को तृतीयांश वितरित किया जाय और क्षेत्रीय तथा अन्य सघन क्षेत्रीय योजनाओं के लिए तृतीयांश सुरक्षित रखा जाय।

पंजाब के ५० सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का एक सप्ताह का शिविर ता० ८ अगस्त से विनोबाजी के मार्ग-दर्शन में करने का निश्चय किया गया। पंजाब सर्वोदय-मंडल द्वारा शिविर के लिए कार्यकर्ताओं का चुनाव किया गया।

ग्रामसेवा-प्रकाशन, पट्टीकल्याणा द्वारा छपी पुस्तक "गोभक्त विनोबा" का प्रेम तथा जनता द्वारा अच्छा स्वागत किया गया। पहले सप्ताह में ही १२०० पुस्तकों की बिक्री हुई।

—ओम्प्रकाश त्रिखा

अगर वे न होते....!

इस जमाने को सख्य भक्ति की भूख है। एक जमाने में दास्य-भक्ति चलती थी, किंतु इस जमाने में सख्य भक्ति की जरूरत है। मैं भी अकेला क्या कर सकता हूँ? मेरा कुल का कुल काम मेरे साथी ही करते हैं। कल मैंने खबर सुनी कि जनरल यदुनाथ सिंह हार्ट फेल से चले गये। अक्सर मुझे सदमा नहीं पहुँचता, लेकिन कल मुझे सदमा पहुँचा। भिंड-मुरैना का सारा काम उनके आधार पर खड़ा था। वहाँ उन्होंने बहुत बड़ा पराक्रम किया, काफी मेहनत की। सतर्कता से एक योजना बनायी। हिम्मत के साथ काम किया। हार्ट फेल से वे चले गये। मृत्यु का शोक करने की जरूरत नहीं होती। मैं मानता हूँ कि शरीर से उन्होंने जितना काम किया, उससे ज्यादा उनकी आत्मा कार्य करेगी। मुझे सदमा नहीं पहुँचना चाहिए, किंतु कल हमको लगा कि हमारी ताकत कम हुई थी।

मैं जानता हूँ कि वे एक साल से इस काम के लिए कोशिश कर रहे थे। कश्मीर में हमारे साथ थे। अगर वे नहीं होते, तो भिंड-मुरैना का काम हरगिज नहीं हो सकता था।"

—विनोबा

इन्दौर-समाचार

व्यापारियों से तीन माँगें

ता० २० जुलाई को इन्दौर के कुछ व्यापारियों ने विनोबा से भेंट की। उनमें गल्ले के थोक व मोटो व्यापारी थे। आढ़त तथा छोटी-छोटी फैक्ट्रीवाले व्यापारी भी सम्मिलित थे।

उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि "हमने घर में तो सर्वोदय-पात्र रखे ही हैं। गोदामों में भी पात्र रखना चाहते हैं।" बाबा ने कहा, "चाहे एक अत्यन्त धनी व्यापारी हो या कोई गरीब आदमी हो, हरएक को एक से अधिक व्होट देने का अधिकार नहीं है। उसी प्रकार आपको सर्वोदय-पात्र में भी एक ही मुट्ठी डालनी है। इसलिए गोदाम में सर्वोदय-पात्र यदि रखा हो, तो हटा दीजिये। सर्वोदय-पात्र आपके घर में रहे। आपकी गृहिणी प्रसन्नतापूर्वक उसमें सबसे छोटे बच्चे से एक मुट्ठी अनाज डलवायें या खुद डालें। इस काम में उसकी प्रसन्नता हमें चाहिए।

मोक्ष का आश्वासन

"मगर आपसे हमारी जो आशा है और आपका जो फर्ज है, वह यह है : हिन्दुस्तान की संस्कृति में एक महत्त्वपूर्ण बात है—यहाँ एक वेदपाठी सच्चरित्र ब्राह्मण को जो मोक्ष प्राप्त होता है, वही एक ईमानदार भक्ति-पूर्ण व्यापारी को भी प्राप्त हो सकता है, ऐसा माना गया है।

एक अन्य धर्म में कहा है—"सुई के छेद में से ऊँट निकल सकता है, पर एक धनवान व्यक्ति भगवान के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता।" वैसे यह सत्य है, क्योंकि पचासों आसक्तियों को लेकर हम भगवान् के राज्य में नहीं जा सकते। पर गीता कहती है—धनवान भी वहाँ पहुँच सकते हैं। कैसे? "स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः"—अपने अपने कार्यों में ईमानदारी से लगे रहने वाले सभी लोग "संसिद्धि" को पाते हैं।

गांधीजी ने यही बात दूसरे शब्दों में इस प्रकार कही थी कि "जो ट्रस्टी बन कर काम करेगा, वह उसी प्रकार मोक्ष पा सकेगा, जिस प्रकार एक संन्यासी पाता है।"

प्रारंभ कैसे करें ?

अब इससे बड़ी दौलत आपको और कौनसी मिल सकती है? इसे हासिल करना व्यापारियों का काम है। आप इसे प्रारम्भ कैसे करें, यह मैं बताता हूँ।

मान लीजिये, आपके परिवार में एक करोड़ रुपये की पूँजी है। आपके परिवार में दस व्यक्ति हैं, जिनके भरण-पोषण का जिम्मा आपका है—मुझे आप ग्यारहवाँ समझिये और मेरा हिस्सा दीजिये। हम इतना ही चाहते हैं कि हमें प्रेम से अपने घर में स्थान दीजिये। इतनी अत्यन्त अल्प माँग है। पर इसे उधार नहीं रखना है। नकद धर्म हो। आज गुड़ खाया और आठ दिन बाद मीठा लगे, यह उधारी हुई। मगर ऐसा होता है क्या?

प्यासे को आपने पानी पिलाया, इससे वह खुश हुआ। किन्तु उससे ज्यादा खुशी आपको हुई, क्योंकि आपको उससे मानसिक सुख मिला।

दूसरी बात यह है कि आपका व्यवहार शुद्ध एवं सरस हो। उसमें स्वार्थ की मिलावट न हो। व्यवहार-शुद्धि के परिणामस्वरूप आपका व्यापार बढ़ता है या घटता है, इसकी चिन्ता आप प्रारम्भ से ही न करें।

और तीसरी बात जो आपसे मैं कहना चाहता हूँ, वह यह है कि आपने मेरी इस बात को सुना और समझा है, तो आप इसके प्रचारक बनें और अपने भाइयों से यह बात कहें।

['सर्वोदय प्रेस सर्विस']

शिवदासपुरा में मद्यनिषेध-कार्य

ता० २७ जुलाई को राजस्थान के शिवदासपुरा ग्राम में मद्य निषेध-आन्दोलन की शुरुआत की गयी। ग्राम के मुखिया श्री भोरीलालजी नाटबरदार की अध्यक्षता में ग्राम-सभा हुई। विभिन्न जातियों के २० लोगों ने शराब न पीने के बारे में ग्राम-सभा में शपथ ली। इसके अलावा रैगर जाति ने शराब न पीने की सौगन्ध ली। ग्राम के घर-घर जाकर संकल्प-पत्र भरवाने का कार्यक्रम जारी है। सम्भवतः अगस्त माह के अन्त तक सारा गाँव शराब पीने से मुक्त हो जायगा।

पेन्शनयाफ्ता लोगों के लिए काम

जितने लोग मैट्रिक पास करते हैं, उन सबको शिक्षण-कला अनिवार्य रूप से सिखायी जानी चाहिए। उनके लिए 'टीचिंग' का विषय 'कम्पल्सरी' होना चाहिए। फिर जब वे सेवा-निवृत्त हों, तो कम से कम शिक्षा का काम तो कर ही सकेंगे।

अगर पेन्शनयाफ्ता लोग इस तरह के काम को उठा लें, तो उससे दो फायदे होंगे : एक तो उनकी उम्र बढ़ेगी, दूसरे देश को मुफ्त में उनकी सेवा मिलेगी।

—विनोबा

पाठकों की ओर से

काम का माप

जिला मथुरा (उत्तरप्रदेश) से श्री शिवनारायण पूरनचन्द ने पिछले तीन महीने के अपने काम की रिपोर्ट भेजी है। इस अर्से में प्राप्त भूदान, साधन-दान आदि का जिक्र रिपोर्ट में किया है। 'भूदान-यज्ञ' के १० ग्राहक भी बनाये और करीब २४ गाँवों से सम्पर्क किया। पर उनकी रिपोर्ट में मुख्य वस्तु कताई ही मालूम होती है। इस अर्से में करीब चार सेर सूत उन्होंने काता। खेती वगैरह उत्पादक कामों में भी परिश्रम किया। इस बारे में वे आगे लिखते हैं :

> "काम कितना हुआ, यह सार नहीं है, लेकिन किस वृत्ति से हुआ, यही हमारे लिए सच्ची कसौटी है। आँकड़े बहुत बड़े न हों, पर इस सारे काम के संबंध में बहुत पवित्र अनुभव आये, कई नवीन परिचय हुए। कहीं मान मिला, कहीं अपमान, कहीं विश्वास, तो कहीं संकीर्ण दृष्टि मिली। जितने लोग सम्पर्क में आये, उनके प्रश्नों का जब तक समाधान नहीं कर सके, तब तक हमें आत्म-समाधान भी नहीं हो पाता था।"

भूदान केवल आंदोलन नहीं है वह आरोहण है। आंदोलन में हमारी सिर्फ प्रेरणा रहती है, करने का काम बहुत कुछ दूसरों के लिए ही होता है। आरोहण में व्यक्ति खुद ऊँचा चढ़ता जाता है। अपने काम से आनंद, पवित्रता और संतोष का अनुभव होना, यही सच्चे आरोहण की कसौटी है।

पदयात्रा

● मध्यप्रदेश के रायपुर नगर में सर्वोदय-कार्य गहराई से हो, इस उद्देश्य से कुछ कार्यकर्ता नगर-पदयात्रा कर रहे हैं। मुहल्ले-मुहल्ले घूम कर जनसंपर्क स्थापित करने का कार्य अभी प्रारंभ हुआ है। गरीब बस्तियों में इन पदयात्रियों को विशेष सहयोग मिला है। हालाँकि कुछ लोग शक की निगाह से देखते हैं और राजनीतिक पार्टियों से जुड़े हुए होने के कारण ऐसा सोचते हैं कि सर्वोदय के नाम पर ये भी कहीं राजनैतिक स्वार्थ तो नहीं साधना चाहते हैं? लेकिन लोग ज्यों-ज्यों निकट सम्पर्क में आते हैं, त्यों-त्यों संदेह दूर होता जाता है।

विनोबाजी इस क्षेत्र में आयें इसके लिए क्षेत्र को तैयार करने की दिशा में प्रयत्न हो रहा है।

ग्राम-संकल्प की ओर

पंचोरा गाँव आगरा जिले की [illegible] तहसील में फिरोजाबाद से दाई [illegible] पर बसा है। इस गाँव में १०० से० परिवार निवास करते हैं। ता० [illegible] जून, '६० की शाम को मंदिर चौपाल पर गाँव के सभी बड़े जन [illegible] जमा हुए। एक स्वर से [illegible] सबकी निर्णय हुआ। तय हुआ [illegible] सारे सामूहिक कार्य पूरे गाँव की सहमति से होंगे, गाँव के झगड़े गाँव में होंगे। गाँव में कोई गरीब को सताये नहीं और निर्बल को दबायेगा नहीं।

जब श्री विमलचन्दजी ने सर्वोदय-विचार के प्रत्येक पहलू को सामने रखा और उस गाँव के ग्रामस्थ मुखिया के मत पर अमल करने के लिए आवाहन किया तो ९ निष्काम व्यक्ति सेवा-कार्य के लिए निकले। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि हम गाँव के झगड़े हल करने की दृष्टि से अत्याचारियों तथा गाँव की मर्यादा को तोड़ने वालों के उनकी ढोंगी और पैर छूकर भी प्रेम से हर प्रकार से समझायेंगे, ताकि गाँव में प्रेम रहे। अभी इस गाँव का कोई मुकदमा अदालत में नहीं है।

ग्राम संकल्प की दृष्टि से कौनसी बातें बाधक बन सकती हैं। इस पर भी विचार हुआ। क्योंकि ग्राम परिवार बनने के बाद भी यदि उसकी व्यवस्था का रूप [illegible] का नाम नहीं [illegible]। चुनाव [illegible] सामने आया। गाँव ने गाँव-सभा का चुनाव सर्वसम्मति से करने का निर्णय लिया। जिला-परिषद और एम० एल० ए० के चुनाव के लिए निर्णय हुआ कि हम राजनीतिक पार्टियों द्वारा गाँव-गाँव में फूट डालने वाला काम न होने देंगे, बल्कि पूरा गाँव मिल कर निर्णय करेगा कि किसको वोट दिया जाय। गाँव के सभी लोग एक दिन इकट्ठा होंगे और सभी उम्मीदवारों को उस दिन एक स्टेज पर बुलाकर तय कर लेंगे कि किसे चुनना है। तीसरा तरीका यह होगा कि इस क्षेत्र में गाँव-गाँव में सर्वोदय-विचार पर्याप्त फैल जायगा तो हम और पंचायतें सर्वसम्मति से अपना प्रतिनिधि गाँवों में ही खड़ा करेंगे। बाद में यह भी सुझाव पूरी तरह से मान्य किया गया। साधन सहकारी बैंक का कर्ज हर साल कम किया जायगा। गाँव की उन्नति के लिए कुआँ बनाना, सफाई, शादी-ब्याह आदि के बारे में सर्वोदय ग्राम-पंचायत योजना पूर्ण रूप से अपनी शक्ति के अनुसार अधिक-से-अधिक कार्य करेगी।

फिरोजाबाद के हम सर्वोदय-कार्यकर्ता भगवान से प्रार्थना करते हैं कि यह गाँव अपने संकल्प में निरन्तर ही हिम्मत बनाये रखे और आसपास के गाँवों के लिए प्रेरक बने।

सर्वोदय लोक-सेवक मंडल

फिरोजाबाद, जिला आगरा

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४०[illegible]
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,९३६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,८०६
एक प्रति : १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)

का अर्थ ही आर्थिक और सामाजिक विषमता का अन्त कर देना है। केवल हरिजनों और आदिवासियों के हित की बात आगे रख कर बाकी जनता के हित की हम उपेक्षा करें, तो अपने उद्देश्य में हम बहुत सफल नहीं हो सकेंगे। पर इस बात को हम न भुलायें कि सबका हित या भला करते हुए हरिजनों और आदिवासियों के हित को आगे रखा जाय, क्योंकि वे सैकड़ों वर्षों से सामाजिक और आर्थिक सुविधाओं से बहुत पिछड़े हुए और वंचित रहे हैं।

पर यदि खादी और ग्रामोद्योगों की प्रवृत्तियों में ऊँच नीच की और छुआछूत की भावना व्यवहार में दिखाई दे, तो सच्चे अर्थ में वह न तो खादी की प्रवृत्ति है और न ग्रामोद्योगों की, भले ही सरकारी सहायताओं से उनका फैलाव बहुत बढ़ गया हो। बुनियादी तालीम भी उसी क्षण अपना अर्थ खो देती है, जब कि वह किसी भी प्रकार की विषमता को आश्रय देती है। और सभी रचनात्मक प्रवृत्तियां का सहयोग न लेकर प्रेमपूर्ण समता-संस्थापन की मूल भावना को यदि अस्पृश्यता निवारण की प्रवृत्ति छोड़ देती है, तो उसका भी प्रायश्चित्तमूलक असली अर्थ उसी समय खत्म हो जाता है।

'हरिजन' साप्ताहिक पत्र में गांधीजी जब हरिजन-प्रवृत्ति के अलावा अनेक विषयों के लेख और टिप्पणियां—राजनैतिक भी—देने लगे, तब कई हरिजन-सेवकों को आश्चर्य हुआ था और कइयों ने तो शिकायत भी की थी। पर असल में तो गांधीजी ने ऐसा करके हरिजन-प्रवृत्ति को अधिक और व्यापक महत्त्व दिया था। उन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दिखा दिया था कि हरिजन-कार्य के साथ सारी ही रचनात्मक और राजनैतिक प्रवृत्तियों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो भी प्रवृत्ति और जो भी विषय हमारे अपने इष्ट-साधन में योग देता हो, उसका तो सदा स्वागत ही करना चाहिए।

इस प्रसंग में भक्ति-पक्ष का एक उदाहरण है। तुलसीदासजी ने 'विनय-पत्रिका' में गणेश, शिव, सूर्य, काली, हनुमान, गंगा, यमुना आदि अनेक देवी-देवताओं की स्तुति की है, पर हर स्तुति के अन्त में उन्होंने सबसे माँगी एक 'राम-भक्ति' ही है। समस्त देवी-देवताओं को तुलसीदास ने राम के ही विविध रूपों में देखा और अपनी अनन्यता को ज्यों-का-त्यों कायम रखा। क्या हम इसी प्रकार सारी ही रचनात्मक प्रवृत्तियों पर श्रद्धा रख कर उनसे अस्पृश्यता-निवारण में योग नहीं ले सकते और उन्हें भी अपना योग नहीं दे सकते?

●

निवेदन :

कई कारणों से 'छोटी-छोटी' बातों का स्तम्भ इस अंक में नहीं दिया जा सका। पाठक क्षमा करें।

दया नहीं, करुणा !

हर व्यक्ति को अपनी राय रखने का और उसे जाहिर करने का अधिकार है और इसलिए वह अधिकार श्री केशवदेव मालवीय को भी है। अभी पिछले सप्ताह इन मंत्री महोदय ने भोपाल की एक सभा में बोलते हुए यह कहा कि उनकी राय में "भूदान-आन्दोलन का भविष्य उतना उज्ज्वल नहीं है, जितना कि बतलाया जाता है।" भविष्य-वाणी करने के लिए किसी दलील की जरूरत नहीं होती है, और भविष्यवाणी की परख चूँकि भविष्य में ही हो सकती है, इसलिए उसके बारे में ज्यादा सोचने की भी जरूरत नहीं है। भूदान-आन्दोलन का भविष्य कैसा है, कैसा नहीं, इस बात की चिन्ता आज हमें नहीं है। आज हमें इतना ही देखना है कि आज जिस काम को हम आवश्यक मानते हैं, उसमें पूरी शक्ति लगा रहे हैं या नहीं। उसका नतीजा क्या होगा, इसकी चिन्ता भगवान पर या श्री मालवीयजी जैसों पर छोड़ देना काफी है।

पर जब मालवीयजी अपनी राय या भविष्यवाणी के समर्थन में दलील देते हैं, तब उसके बारे में चर्चा करना प्रासंगिक हो जाता है। अपने भाषण में श्री केशवदेवजी ने कहा है कि "इस आन्दोलन की दार्शनिक भूमिका में ही बहुत बड़ी खामी है। इस तरह के समाज-परिवर्तन का दावा करने वाले बड़े आन्दोलन दया की भीख पर सफल नहीं हो सकते। इस आन्दोलन का सारा आधार ही सपन्न या अमीर लोगों की गरीबों के प्रति दया की भावना पर है।" चूँकि श्री मालवीयजी ने अपने भाषण में यह भी कहा है कि "आचार्य विनोबा जीवन के व्यावहारिक पहलू को नहीं समझते हैं और—

> "उन्हें शासनकर्ताओं से (जिनमें श्री मालवीयजी भी शामिल हैं), जो रात-दिन देश की भलाई के काम में लगे हुए हैं, अभी बहुत-सी बातें सीखनी हैं,"

हम यह समझे थे कि मालवीयजी को भूदान-आन्दोलन की साधारण बातों का ज्ञान तो अवश्य होगा। पर हमें ताज्जुब है कि मालवीयजी, जो विनोबा को भी बहुत-सी बातें सिखाने की अपनी योग्यता मानते हैं, भूदान-आन्दोलन के बारे में वही पुरानी दकियानूसी दलील आज भी दे रहे हैं, जो शायद उसकी शुरुआत के समय, ९ बरस पहले भले ही कुछ अर्थ रखती हो। पिछले ९ बरसों में रोज-ब-रोज विनोबा इस आन्दोलन की भूमिका समझाते रहे हैं, फिर भी मालवीयजी जैसे ज्ञानी पुरुष की जानकारी के लिए, जो 'रात-दिन देश की भलाई के काम में लगे हुए हैं', और इसलिए शायद जिन्हें देश की भलाई के लिए चलने वाले एक आन्दोलन को समझने की फुरसत न मिली हो, हम यह फिर से बतला देना चाहते हैं कि भूदान-आन्दोलन का आधार दया की भावना नहीं, वरन् करुणा की भावना है। दया और करुणा का भेद तो मालवीयजी भी जरूर समझते होंगे?

भूदान आन्दोलन में जमीन वालों से जमीन जरूर माँगी जाती है—उनके लिये जिनके पास वह नहीं है, न मजदूरी के सिवा जिनका कोई सहारा है। पर वह केवल अमीरों से ही नहीं, बल्कि 'गरीबों' से भी, जिनके पास एकाध एकड़ ही हो उनसे भी माँगी जाती है, क्योंकि वह दया की भिक्षा नहीं है बल्कि समानता की और आपस में सुख-दुख के बँटवारे की दीक्षा है, जो अमीर-गरीब सबको लेनी है और अपनानी है। विनोबा की माँग दया के आधार पर ही होती तो गरीबों से, जिनके पास पहले से ही कम है, माँगने की जरूरत नहीं थी। पर विनोबा सारे समाज को 'करुणा' की दीक्षा देना चाहते हैं, यानी एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति की, हमदर्दी की, जिसकी आज समाज में अभाव सा हो गया है। दया से प्रेरित होकर दिये हुए दान में उपकार की बड़प्पन की भावना रहती है, जब कि करुणाप्रेरित दान में कर्तव्य-बुद्धि की, अत नम्रता की और कृतज्ञता की। श्री मालवीयजी ने कहा है कि गरीबी और असमानता समाजवाद की स्थापना से ही मिट सकती है, पर वे आज भी बीस पच्चीस बरस पुराने उस दकियानूसी भ्रम से ही चिपटे हुए मालूम होते हैं कि समाजवाद की स्थापना सरकार द्वारा कुछ कानून पास कर देने मात्र से हो जायगी। और किसीसे नहीं तो कम-से कम बीसवीं सदी के इतिहास से तो मालवीयजी को यह 'सीखना' चाहिये कि समाजवाद की स्थापना के लिए समाज में एक-दूसरे के प्रति कृतज्ञता, प्रेम और भाई-चारे की भावना होना अनिवार्य है। उसके बिना हजार कानून पास करने पर भी सच्चा और टिकाऊ समाजवाद कायम नहीं हो सकेगा। और इस प्रकार की भावना के लिये जन-जन के दिल में करुणा को जाग्रत किये बिना कोई चारा नहीं है।

अफसोस इस बात का है कि हमारे 'शासनकर्ता' देश की भलाई के काम में दिन-रात इतने व्यस्त हैं कि उन्हें नये विचार जानने-सुनने या समझने की फुरसत ही नहीं है। किताबों से सीखे या आसपास से सुने-सुनाये हुए पुराने, दकियानूसी विचारों को दोहराते रहना ही उनका काम है और इसीलिए "रात-दिन देश की भलाई के काम में" लगे रहने के बावजूद बेचारे भलाई कर नहीं पा रहे हैं।

—सिद्धराज ढड्ढा

लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण

राजस्थान समग्र सेवा संघ की लोक-शिक्षण समिति के तत्वावधान में ता० ३०-३१ जुलाई को खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, शिवदासपुरा में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण पर चर्चा के लिए परिसंवाद का आयोजन किया गया था।

परिसंवाद में इन बातों पर चर्चा हुई : पंचायत-समितियों व जिला-परिषदों के अब तक के अनुभव के आधार पर तत्सम्बन्धी अधिनियम पर विचार तथा उसके अपने सीमित उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए भी सफलता के लिए आवश्यक संशोधनों का सुझाव तथा ग्राम-स्वराज्य के विचार का प्रचार करने के संबंध में कार्यक्रम। पर्याप्त चर्चा के उपरान्त ये निर्णय किये गये—

(१) पंचायतें व पंचायत-समितियाँ अपने सारे निर्णय सर्वसम्मति अथवा सर्वानुमति के आधार पर करें।

(२) अधिनियम में ग्रामसभा पर जोर हो, जिसका प्रत्येक बालिग व्यक्ति सदस्य हो।

(३) जिला-परिषद् में विधान-सभा व लोकसभा के सदस्य पूर्ण सदस्य के रूप में न लिये जाकर सहयोगी सदस्य के रूप में सलाह के लिए, लिये जाने चाहिए।

(४) जिला-परिषद् व पंचायत समिति में नामजदगी से जो सदस्य लिये जायँ, वे सर्वसम्मति से लिये जाने चाहिए और उनकी संख्या कम-से-कम हो। इसमें यह भी निश्चय किया गया कि समग्र सेवा संघ की लोक-शिक्षण समिति इस पर विचार कर विस्तृत प्रारूप तैयार करे और उसे प्रसारित करे।

इस प्रकार के प्रचार-कार्य के साथ-साथ ग्रामदानी गाँवों के सघन क्षेत्रों में तथा खादी-क्षेत्रों में ग्रामस्वराज्य की कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए सक्रिय कदम उठाने की आवश्यकता भी महसूस की गई। अब इस काम में विशेष शक्ति लगने की संभावना है।

●

बिहार अखण्ड पदयात्रा की प्रगति

बिहार प्रादेशिक अखण्ड पदयात्रा-टोली ने ९ जुलाई से २ अगस्त तक दरभंगा जिले की यात्रा समाप्त करके ता० ३ अगस्त को मुजफ्फरपुर जिले में प्रवेश किया। ४ सितम्बर तक इस जिले की यात्रा समाप्त करके ता० ५ सितम्बर को टोली चंपारण में प्रवेश करेगी। आगामी १५ अगस्त को इस अखंड पदयात्रा के दो वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह पदयात्रा ता० १५ अगस्त १९५८ को स्वर्गीय श्री लक्ष्मी बाबू की स्मृति में, जो पदयात्रा करते हुए ही दिवंगत हुए थे, चालू की गई थी। इस बीच यह टोली एक बार समस्त बिहार प्रदेश की यात्रा पूरी कर चुकी है। अब इसकी दूसरी परिक्रमा चालू है।

●

टिप्पणियाँ

लोकनागरी लिपि *

व्यापारियों से !

अेक ओर व्यापारी समाज दयाधर्म से प्रेरीत होकर दवाखाना खोलता है, और दूसरी ओर कौन-कौन कारणों से समाज की सेहत बीगड़ती है, वे काम भी व्यापारी करते हैं। 'डालडा' व्यापारी बनाते हैं और चावल, दाल की मीलें भी वे खोलते हैं। अैसी दया या करुणा समाज में क्रांती नहीं कर सकती है। व्यापारीयों में लाभ की भावना ज्यादा है। दया और लोभ अनके कार्यों में वीरोध पैदा करते हैं। अीस प्रकार के दान या समाज-सेवा से कोअी बुनीयादी परीवर्तन नहीं होता है।

कुछ व्यापारीयों को दुःख अीस बात का है की पहले कपास बैलगाड़ीयों से आता था, अब अुसकी जगह ट्रकें ले रही हैं। मैं पूछता हूँ की ट्रकें कौन चलाता है? व्यापारी ही चलाते हैं न? ट्रैक्टर, डालडा आदी के गाय-बैल वीरोधी कार्य व्यापारी ही करते हैं। आज हींदुस्तान के सामने सवाल यह है की या तो वह अमरीका की तरह बैल खाये अथवा अपनी अर्थ-व्यवस्था में जो बैल और गाय का महत्वपूर्ण स्थान था, अुसको वह स्थान फीर से दीलाये। अीसमें व्यापारी अपने अीस तरीके से योग दे सकते हैं की वे गो-वीरोधी व्यापार-धंधों में न पड़ें।

(अीन्दौर, २०-७) —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

बंगाल-सरकार का अवांछनीय कदम

अंग्रेजी राज के जमाने में आजादी से हमने जो-जो आशाएँ रखी थी, वे सब पूरी हुई हों या न हुई हों, आजादी के बाद गरीबी और मुफलिसी तथा जनता की कठिनाइयाँ चाहे बढ़ी हों, पर इस बारे में किसी भी समझदार आदमी की दूसरी राय नहीं हो सकती कि विदेशी शासन से मुक्ति अपने-आप में हमारे देश के लिए बहुत बड़ी और शुभ घटना थी। हम आजादी के लायक साबित हुए हों या न हुए हों, यह दूसरी बात है, लेकिन यह अपने-आप में एक बड़ी बात है कि अपने भविष्य को बिगाड़ना या बनाना मुल्क के अपने हाथ में है। अत १५ अगस्त का दिन हरएक हिन्दुस्तानी के लिए विशेष महत्त्व रखता है। चाहे हम कितनी भी मुसीबत में हों, सरकार के प्रति या एक-दूसरे के प्रति हमको कितनी भी शिकायत हो, जहाँ तक स्वतन्त्रता-दिवस का सवाल है, हमारे सबके दिल में एक-सी भावनाएँ होनी चाहिए। राष्ट्र के जीवन में कुछ दिन और कुछ अवसर ऐसे होते हैं, जब कि सब भेद-भाव, दुःख-सुख भूल कर हमें एकता का अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति करनी चाहिए। हमारे आरम्भ के इतिहास की घटना को हमें कलुषित नहीं करना चाहिए।

बंगाल-सरकार ने १५ अगस्त के सब कार्यक्रमों को स्थगित करने का जो कदम उठाया है, वह इस दृष्टि से बहुत ही अदूरदर्शितापूर्ण और अवांछनीय है तथा संकुचित मनोवृत्ति का द्योतक है। आसाम के दंगों के कारण हजारों बंगाली-परिवार काफी मुसीबत में हैं यह ठीक है। इस प्रकार के दंगों से मुसीबतजदा लोगों के प्रति हरएक की सहानुभूति होनी चाहिए, पर इस कारण से १५ अगस्त का कार्यक्रम छोड़ देना जो हमारे राष्ट्र के इतिहास की एक मूल्यवान घटना की हमें याद दिलाता है किसी भी हालत में उचित नहीं कहा जा सकता। बंगाल-सरकार के इस कदम से मुसीबत में पड़े हुए लोगों को सहानुभूति कितनी मिलेगी, यह तो दूसरी बात है, लेकिन लोगों में दंगों की याद फिर से ताजी होकर वैमनस्य, उत्तेजना और तनाव जरूर बढ़ेगा, जब कि आवश्यकता इस बात की है कि हर सम्भव तरीके से शान्ति का वातावरण पैदा किया जाय। हम खुद १५ अगस्त या २६ जनवरी के मौकों पर भोज, रोशनी आदि में जो फजूलखर्ची होती है, उसको उचित नहीं मानते, फिर भी इन ऐतिहासिक दिवसों के प्रसंग से सारे राष्ट्र के लोग अपने में एकता की भावना महसूस करें और उसको बढ़ायें, आजाद होने के लिए कृतज्ञता महसूस करें, इसके अवसर उपलब्ध करना आवश्यक है। बंगाल-सरकार का यह कदम इस बात का प्रमाण है कि जिन्हें वोट पर निर्भर रहना पड़ता है, वे जनता को कभी सही नेतृत्व नहीं दे सकते, बल्कि उसके विकारों को पोषण देते हैं।

इसी प्रकार से १५ अगस्त को दिल्ली में अकालियों ने पंजाबी सूबे की माँग को लेकर जो प्रदर्शन करने का तय किया है, वह भी बहुत गलत कदम है। उनकी माँग और आन्दोलन सही हो या गलत, लेकिन आंदोलन के दौरान में भी इस प्रकार के अवसर अगर आते हैं, तो उनको टाल कर आंदोलन चलाया जाना चाहिए। आखिरकार राष्ट्र की आजादी की ऐतिहासिक घटना के सामने और उसकी पृष्ठ-भूमि में हमारे आजके सवाल बहुत छोटे और तात्कालिक हैं, आखिरकार वे संकुचित स्वार्थों के ही द्योतक हैं। ऐसे संकुचित स्वार्थों को व्यापक राष्ट्रहित के मार्ग में बाधक नहीं होना चाहिए।

भविष्य का संकेत !

हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका में अभी हाल ही में हुए चुनावों के फलस्वरूप श्रीमती भंडारनायक का प्रधान-मंत्री बनना आधुनिक इतिहास की महत्त्व की घटना है। कुछ महीने पहले श्रीलंका के प्रधान-मंत्री श्री भंडारनायक की हत्या के बाद उस देश में एक प्रकार की राजनैतिक उथल-पुथल मची, और फलस्वरूप वहाँ की संसद के लिए नये चुनाव करने पड़े। जैसा कि श्री विनोबा ने कहा है अगर इन चुनावों में श्रीमती भंडारनायक प्रधान-मंत्री बनी होतीं तो शायद यह समझा जाता कि उसमें उनका कर्तृत्व कुछ कम है, बल्कि उनका चुना जाना श्री भंडारनायक की हत्या से हुई प्रतिक्रिया मात्र है। पर उन चुनावों में श्री भंडारनायक का दल विजयी नहीं हो सका। किसी भी दल को पर्याप्त बहुमत प्राप्त नहीं हुआ और स्थायी सरकार नहीं बन सकी, इसलिए चार महीने के अन्दर-अन्दर ही नये चुनाव करने पड़े। दूसरी बार के चुनावों में श्रीमती भंडारनायक का दल काफी बड़े बहुमत से विजयी हुआ और वे प्रधान-मंत्री बनीं, यह उनकी लोकप्रियता और संगठन-शक्ति का द्योतक है।

पर श्रीमती भंडारनायक का अपने देश का प्रधान-मंत्री बनना केवल उनकी व्यक्तिगत विजय नहीं है। वैसे तो संसार के इतिहास में कई महिलाओं ने राज्य किया है और चलाया है लेकिन आज के युग में, जिसमें शासन का दायरा और जिम्मेदारी बहुत व्यापक हो गयी है, श्रीमती भंडारनायक पहली महिला हैं, जो किसी देश की प्रधान-मंत्री बनी हैं। जैसा विनोबा अक्सर कहते हैं, आने वाला युग अहिंसा का युग है और इसलिए उस युग में समाज का नेतृत्व महिलाओं के हाथ में आना उतना ही भला होगा, जितना आज पुरुषों के हाथ में। श्रीमती भंडारनायक का उदाहरण शायद उस आने वाले युग का संकेत है।

—सिद्धराज ढड्ढा

नये प्रकाशन

मोहब्बत का पैगाम

—विनोबा

इस पुस्तक में पूज्य विनोबाजी के वे प्रवचन हैं जो उन्होंने अपनी जम्मू-कश्मीर यात्रा के बीच किये थे। जम्मू-कश्मीर को उन्होंने मोहब्बत का जो पैगाम दिया है, वह सारे भारतवासियों के लिए भी दिल से उतारने की चीज है। नया संस्करण पहले से ड्योढ़ा है। पृष्ठ संख्या ४५०, मूल्य सिर्फ रु० २-५०।

शांति सेना

—विनोबा

'शांति-सेना' पुस्तक का यह नया संस्करण एकदम नये रूप में प्रकाशित हुआ है। सारी किताब का संपादन नये सिरे से हुआ है और अब इसमें वह सब सामग्री समाविष्ट हो गयी है, जो एक शांति-सैनिक की मानसिक जिज्ञासा की पूर्ति के लिए आवश्यक है। देश को अहिंसक ढंग से समृद्ध करने, बचाने के लिए यह पुस्तक हर व्यक्ति को पढ़नी चाहिए। मूल्य ७५ नये पैसे।

अ० भा० सर्व सेवासंघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

खादी-ग्रामोद्योग समिति का नया पता :

खादी-ग्रामोद्योग समिति का कार्यालय अब तक जिस मकान में था, वहाँ से बदल कर सर्व-सेवा-संघ के प्रधान केंद्र में ही अब आ गया है। अतः कृपया खादी-ग्रामोद्योग समिति के साथ का पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें : खादी-ग्रामोद्योग समिति, साधना केन्द्र, राजघाट, काशी

(उ० प्र०)

आन्दोलन जन-आधारित कैसे हो ?

धीरेन्द्र भाई

मैं यहाँ ६ अप्रैल को पहुँचा। ६ अप्रैल का दिन खास तौर से चुना था, क्योंकि ६ अप्रैल (१९१९) का दिन जन-शक्ति का दिन था। आज हम तंत्र-मुक्त तथा जन-आधारित आन्दोलन की बात करते हैं। जन-शक्ति से सारा काम हो, ऐसा स्वप्न देखते हैं। लेकिन एक भी काम जन-आधारित नहीं कर पाये हैं। काम को जन-आधारित करना तो दूर की बात है, कार्यकर्ता भी जन-आधारित नहीं हो सका है। लेकिन आज से ४१ साल पहले जब देश में राष्ट्रवादी संगठन वह कर कोई चीज नहीं थी, कांग्रेस भी एक कान्फ्रेंस मात्र थी, तब बापू ने ऐलान किया और सारे देश में एकसाथ हड़ताल हुई। देहातों में भी इसका अमल हुआ। गाँव-गाँव में हल आदि चलना भी बन्द हो गया था। असली जन शक्ति और जन-आधारित कार्यक्रम वही था। हमें आज भी वहाँ तक पहुँचना है, यह समझना चाहिए। फर्क इतना ही होगा कि जहाँ वह काम आकस्मिक था, वहाँ हमारे आगे के काम को व्यवस्थित, संगठित तथा स्थायी करना है।

जीवन का नया अध्याय

खैर! शाम को साढ़े छह बजे जीवन के नये अध्याय में कदम रखा। बलिया गाँव में प्रवेश किया। हमारे पहुँचने से पहले गाँववालों ने सामूहिक श्रम से ४ दिन के अन्दर रहने के लिए एक छोटी और सुन्दर झोपड़ी बना रखी थी। उसीके सामने उन्होंने हमारा स्वागत किया। मैंने उन्हें अपना उद्देश्य बताया। किसी भी समाज की रीढ़ महिला होती है। मानव परिवार में रहता है और परिवार स्त्री-केंद्रित होता है, क्योंकि वही परिवार की मुख्य संगठक होती है। इसलिए मैंने उन्हें कहा कि मैं सबसे पहले गाँव की बहुओं से मिलना चाहता हूँ, और उन्हें अपनी बात कहना चाहता हूँ, क्योंकि वे केवल समाज की रीढ़ हैं, इतना ही नहीं, बल्कि संतान की आदि-गुरु भी हैं।

नरेंद्रभाई* ने जब से इस योजना में आने की बात की थी, मुझसे बराबर पूछते थे कि कार्यकर्ता क्या कार्यक्रम लेकर गाँव में बैठे? कुछ योजना उनकी भी थी। वे कुछ ग्रामोद्योग आदि लेकर बैठने की बात करते थे। मैं उनसे हमेशा कहा करता था कि कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी गलती यही है कि वे पहले कार्यक्रम सोचते हैं। उनके लिए शायद ऐसा सोचना स्वाभाविक है। क्योंकि हम लोगों ने उनका नाम ही जो "कार्यकर्ता" रख दिया है। क्या कार्यक्रम लेकर गाँव में जायें, यह चिंता कार्यकर्ता को सही दिशा में ले जाने के बदले इधर-उधर भटका देती है, क्योंकि गाँव में क्या कार्य होना चाहिए, इसका अन्दाज किसी को नहीं है। हो भी कैसे? गाँव का कोई रूप है क्या? लोग कहते हैं कि गाँव का विकास करो, लेकिन मुझे तो कोई गाँव दिखाई ही नहीं देता। जिसे लोग गाँव कहते हैं, वह तो एक जंगल है। जंगल में जंगली जानवर रहते हैं और गाँव में मनुष्य नामधारी प्राणी रहता है। दोनों के पराक्रम में कोई फर्क नहीं है। जंगल में जो जानवर रहते हैं, वे अपनी-अपनी सोचते हैं, जंगल में जो कुछ साधन होते हैं, उन्हें अकेले-अकेले नोचते हैं और एक-दूसरे को भी खाते हैं! किसी से किसी का कोई नाता नहीं होता। इसी तरह गाँव में कुछ लोग रहते हैं। जो कुछ साधन मिलते हैं, उन्हें अकेले-अकेले ही जुटाते हैं, एक-दूसरे से कोई मतलब नहीं होता। अगर है भी तो अपनी जिन्दगी कायम रखने के लिए एक-दूसरे को हड़पने में।

जब तक समाज नहीं है, यानी परस्पर सहकार का संबंध नहीं है, तब तक गाँव एक जंगल जैसा ही है। जिस तरह गाँव में राजपूत-टोला, मुसहर-टोला आदि होते हैं, उसी तरह दुनिया के इस जंगल में कुछ जानवर टोला और कुछ आदमी-टोला है, इतना ही समझना चाहिए।

प्रेम करना, इतना ही कार्यक्रम

अतः मैं नरेंद्र को बराबर कहा करता था कि [illegible] र कार्यक्रम की बात करनी है तो गाँव में अपने लिए नहीं, गाँव के लिए रहना, इतना ही कार्यक्रम है। गाँव में रहना, गाँव का नागरिक बनना, सबका पड़ोसी बनना, सबसे प्रेम करना, इतना ही कार्यक्रम है। फिर जैसे-जैसे प्रसंग आयेगा, वैसे-वैसे कार्यक्रम बनेगा। जब तक विशिष्ट कार्यक्रम का प्रसंग नहीं आये, तब तक गाँव को प्रेमक्षेत्र बना कर परिश्रमी जीवन बिताना चाहिए।

यह बात धीरे धीरे नरेंद्र को जंचने लगी थी। मैं, नरेंद्र और विद्या, गाँव में जिनके पास सबसे अधिक जमीन है, उस भाई के घर गये। पहले दिन रात को बनाये कार्यक्रम के अनुसार बहुओं से मिलने के लिए उसी घर से शुरू किया। फूस के मकान के बीच आंगन था। उसमें दो भाइयों का परिवार रहता है। दोनों का घर एक, बैठक एक, आंगन एक, सब कुछ एक, लेकिन चूल्हे दो। देख कर मैंने पूछा, यह कैसी बात है? तो उन्होंने कहा कि इधर ऐसा ही चलता है। मैंने सोचा कि गाँव बनाने का विचार बताने का काम यहीं से शुरू किया जाय। दोनों भाइयों की स्त्रियों को हमने कहा—तुम लोग दिल जोड़ना चाहती हो या तोड़ना? उन्होंने जोड़ने की बात कही। मैंने कहा, बिना चूल्हा जोड़े दिल जोड़ना क्या? उन्होंने बताया कि चूल्हा जुड़ जायगा। नरेंद्र से मैंने कहा कि "देखो एक कार्यक्रम सामने आ गया। चलो, चूल्हा जोड़ने का आन्दोलन चलाया जाय।"

चूल्हा जोड़ें और बहुएँ पढ़ें

चूल्हा जोड़ने की बात के साथ-साथ मैंने उन्हें समझाया कि उन्हें पढ़ना चाहिए। आजकल नई स्त्रियों में पढ़ने की आकांक्षा बहुत बढ़ रही है। मैंने सोचा, पढ़ने की बात पर उनको दिलचस्पी है, तो साथ साथ दूसरी बातें भी बतायी जा सकेंगी। सबने पढ़ने की इच्छा जाहिर की। मैंने कहा, जो पढ़ी हैं वे औरों को पढ़ायेंगी और पढ़नेवाली को विद्या बहन पढ़ायेंगी। इस तरह पहले दिन का कार्यक्रम बना।

विनोबाजी लोकसेवक के लिए प्रेम-क्षेत्र बनाने को कहते हैं। प्रेम क्षेत्र कैसे बने? आखिर किसी कार्यक्रम को लेकर ही प्रेम का व्यवहार हो सकता है। इसलिए पहला कार्यक्रम यही ठीक समझा कि लोगों के घरों के भीतर घुसा जाय और स्त्रियों तथा बच्चों से स्नेह संबंध किया जाय। अगर हम परिवार में शामिल नहीं होते, तो दरवाजे के मेहमान रह जाते हैं। हम दरवाजे के मेहमान रह जाते हैं तो हम जिस विचार को लेकर जाते हैं, वह भी मेहमान ही रह जायेगा।

घरों में पहुँच कर हमने चरखे की बात नहीं की, भूदान और ग्रामदान की बात नहीं की, न ऐसे ही कुछ रचनात्मक काम का संदेश लेकर पहुँचे। अगर कोई संदेश लेकर पहुँचे, तो चूल्हा जोड़ने का और बहुओं के पढ़ने का। इससे इस इलाके के लोगों को अजीब-सा लगा। वे आशा करते थे कि हम भूदान-ग्रामदान की बात करेंगे, सर्वोदय-समाज की बात करेंगे और गांधी के रचनात्मक काम की बात करेंगे। लेकिन हमने यह सब नहीं किया। इस अजीब बात को लेकर गाँव भर में बहुत गरम चर्चा रही। गाँव में ही नहीं, बल्कि दूर दूर गाँवों में भी यह चर्चा फैल गयी। इस प्रचार का कुछ असर भी हुआ, सिर्फ दो दिन के अंदर दो घरों के चूल्हे एक हो गये। एक घर में चार चूल्हे थे और दूसरे घर में दो, वे सब मिल गये। चूल्हा मिलाने का काम इतने सहज रूप से हुआ कि उसकी जानकारी मुझको ५-६ दिनों बाद हुई—सो भी उस परिवार वालों के बिना कहे, दूसरों के द्वारा। इससे मुझे खुशी हुई। मैं सोचने लगा कि जनता ने जन-आधारित की प्रक्रिया अभी से शुरू कर दी है।

जन-आधार का मतलब

कार्यकर्ता जब गाँव में जाते हैं, तो गाँव के कार्यकर्ताओं की उनके स्वागत और

---

* श्री नरेंद्रभाई और उनकी पत्नी विद्या बहन, ये दोनों श्री धीरेंद्रभाई के साथ इस प्रयोग में शामिल हुए हैं।

श्री धीरेन्द्र भाई ने सेवाग्राम सम्मेलन से कुछ पहले जाहिर किया था कि विनोबा ने आन्दोलन को जन-आधारित करने की जो बात की है, उसका प्रत्यक्ष प्रयोग करने की दृष्टि से वे खुद किसी गाँव में जाकर बैठेंगे और अपने लिए या वहाँ के काम के लिए 'बाहर' से कोई मदद नहीं लेंगे। चूंकि सत्याग्रह यानी समाज-परिवर्तन की सौम्यतम प्रक्रिया तालीम ही हो सकती है, इसलिए उनका प्रयोग एक तरह से जन-आधारित समग्र नई तालीम का प्रयोग होगा, ऐसा उन्होंने जाहिर किया था।

किसी गाँव में बैठना इसके लिए उन्होंने गाँववालों के लिए कुछ कसौटियाँ रखी थीं। उनमें मुख्य यह थीं कि गाँववाले धीरेन्द्र भाई और उनके दो साथियों का निर्वाह-भार उठाने को तैयार हों तथा गाँव के सब लोग मिल कर सामूहिक और सहकारी पुरुषार्थ से करने के लिए कोई एक काम चुन लें। ये शर्तें पूरी करने की तैयारी बतलाने पर वे ता० ६ अप्रैल, १९६० को बिहार के पुर्णिया जिले के बलिया गाँव में रहने के लिए गये। उन्हीं के शब्दों में उस दिन उन्होंने "जीवन के नये अध्याय में कदम रखा।"

मैंने श्री धीरेन्द्र भाई से निवेदन किया था कि वे 'भूदान-यज्ञ' में जरूर पर पत्र लिख कर बतलाते रहें कि उनका प्रयोग किस तरह आगे बढ़ रहा है। क्योंकि धीरेन्द्र भाई जैसे सामाजिक क्रान्तिकारी और प्रयोगकार का एक-एक कदम और एक-एक काम आन्दोलन में काम करनेवालों के लिए मार्गदर्शक, प्रेरक और विचारोत्तेजक साबित होता है। लेकिन चूंकि उनका यह काम हमारे आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है, इसलिए वे आन्दोलन में लगे हुए कार्यकर्ताओं के लाभ के लिए समय-समय

इस बात की खुशी है कि श्री धीरेन्द्र भाई ने यह प्रार्थना मंजूर की है और समय-समय पर अपने काम के बारे में लिखते रहने का आश्वासन दिया है।

—सम्पादक

परस्पर-स्नेह के अधिष्ठान की चेष्टा सौम्यतम सत्याग्रह है

…स्था की जिम्मेदारी हमारी है, ऐसा …ने लगते हैं। जब 'जनाधारित' की …सोचते हैं, तो इतना ही सोचते हैं कि …रा गुजारा जनता से अनाज वगैरह …द कर हो जाय, तो जनाधारित सिद्ध …या। लेकिन मैं मानता हूँ कि

कार्यकर्ताओं का योगक्षेम उसी क्षेत्र की जनता के अन्नदान आदि से हो गया, इतने ही से आन्दोलन जन-आधारित नहीं होता, बल्कि कार्य जनाधारित होना चाहिए। कार्यकर्ताओं का काम सिर्फ विचार बताना और मांगने पर सलाह देना इतना मात्र होना चाहिए।

विचार के अनुसार गाँववाले खुद मिल कर कार्यक्रम बनायें और उसे चलायें। आवश्यकता इस बात की है कि कार्यकर्ताओं को अपने काम पर यकीन हो और उनके अपने जीवन में अमल विचार के अनुरूप हो। इसलिए जब मैंने देखा कि मेरे दो-तीन दिन घूमने से और चूल्हा जोड़ने की बात करने से दो परिवारों ने बिना मुझसे कहे अनायास ही वैसा कर दिया और उसकी सूचना भी किसी को नहीं दी तो मैंने समझा कि जन आधारित काम आरम्भ हो गया है।

गाँव में बैठने से पहले मैंने गाँव में आने के लिए कुछ शर्तें रखी थीं। उनमें से मुख्य शर्त हम लोगों के जन-आधारित होने की और गाँव भर के सब लोग मिल कर किसी एक काम को सामूहिक और सहकारी पुरुषार्थ से करें, इसकी थी। तदनुसार लोगों ने ८० एकड़ का एक प्लाट, जिसमें सब लोगों का हिस्सा है, साथ मिल कर खेती करने को रखा। मैंने गाँव के लोगों से कहा कि इसकी व्यवस्था उन्हीं को करनी है। इसलिए किस तरह व्यवस्था होगी, इस बात को सब मिल कर सोचें। सोचने के लिए ३-४ दिनों के अंदर उन्होंने गाँव भर की एक बैठक बुलायी। मुझको बुलाने आये। मैं नहीं गया। मैंने कहा, पहले आप लोग सोच कर कोई योजना बनायें, उसमें कुछ सलाह देनी होगी तो मैं दूँगा। उन्होंने निम्नलिखित तीन समितियाँ बनायीं: शिक्षा-समिति, श्रमदान-समिति और कृषि-समिति। शिक्षा के बारे में शुरू के ३-४ दिनों में मैंने अपने विचार कई मौकों पर बताये थे। 'सारा गाँव विद्यालय हो और गाँव का सारा कार्यक्रम शिक्षा का माध्यम हो। आजकल की शिक्षा से कोई … नहीं दिखने वाला है' इत्यादि बातें सब वे सुनते थे और बड़ी दिलचस्पी लेते थे। लेकिन शिक्षा-योजना पर मैंने कोई विशेष सलाह नहीं दी थी। श्रमदान और सहकारी खेती हो, यह योजना तो मैंने निश्चित रूप से उनके सामने रखी थी। फिर भी उन्होंने शिक्षा-समिति बना ली, यह देखकर मुझे खुशी हुई। मेरे कहे बिना शिक्षा-समिति बनाना भी जन-आधारित योजना तथा जन-आधारित कार्यक्रम का इजहार है, ऐसा मैंने समझा।

गलती कहाँ है?

केवल कार्यकर्ता ही जन-आधारित न हो, बल्कि कार्य भी कार्यकर्ता पर आधारित न होकर जन आधारित होना चाहिए, यह विचार मुझे हमेशा अपने साथियों के सामने रखना पड़ता है। जब चूल्हा जोड़ने का विचार बताया और दो घरों का चूल्हा जुड़ कर काम आगे नहीं बढ़ा, तो चर्चा के दौरान में मैंने नरेंद्र और विद्या से कहा कि अब इसके करने की फिक्र में मत पड़ो। किसी प्रसंग पर जब मौका मिले, विचार सामने रख देना चाहिए। धीरे-धीरे मानस पर असर होगा और जब विचार समझ में आयेगा, तब वे अपने आप करेंगे। कार्य की यही दृष्टि हम लोगों की होनी चाहिए। नरेंद्र ने कहा कि हम लोग ऐसे ही गप मारते रहेंगे, तो काम कैसे चलेगा? उसे एक बार संगठित करना चाहिए। मैंने कहा, "इसी चक्कर में हम जनता के अभिक्रम, नेतृत्व आदि गुणों का विकास नहीं कर पाते। हम लोगों में एक बड़ी कमजोरी है। हम लोग जल्दी से कुछ नतीजा देखना चाहते हैं। मन में होता है, कुछ नहीं होगा तो लोग क्या कहेंगे? हम यहाँ क्यों बैठे हैं? लेकिन हमें ऐसा सोचना नहीं चाहिए। लोगों से प्रेम-सम्बन्ध रखना चाहिए और विचार कहते जाना चाहिए।

विनोबाजी सौम्य, सौम्यतर और सौम्यतम सत्याग्रह की बात करते हैं। आखिर सत्याग्रह क्या चीज है? परिवर्तन के लिए सामाजिक शक्ति का नाम ही सत्याग्रह है। लोगों को कुछ करने के लिए कोई शक्ति चाहिए। प्राचीन काल में मार-पीट करके किसी से कुछ करा लेने की परिपाटी थी। यानी हिंसात्मक संघर्ष को सामाजिक शक्ति माना जाता था। उसे नियंत्रित करने के लिए राज शक्ति का आविष्कार हुआ। राज शक्ति अन्ततोगत्वा सैनिक-शक्ति ही है, जो हिंसा-शक्ति का ही एक संगठित रूप है। गांधीजी ने हिंसा-शक्ति के बदले में अहिंसा को सामाजिक शक्ति के रूप में सत्याग्रह के माध्यम से अधिष्ठित किया। लेकिन शुरू में सत्याग्रह का स्वरूप प्रथम कदम मात्र था, यानी वह स्थूल अहिंसक शक्ति के रूप में था। विज्ञान ने हिंसा के शस्त्र को भी अब इतना पराक्रमी बना दिया है कि आज हिंसा-जगत् में भी बल सामाजिक शक्ति के रूप में व्यावहारिक नहीं माना जा रहा है यानी वह 'आउट-आफ डेट' हो गया है।

इसलिए हिंसा को मानने वाले भी जगह जगह स्थूल सत्याग्रह, यानी दबाव वाला सत्याग्रह अपना रहे हैं। इस तरह स्थूल सत्याग्रह को लोग हिंसा के सौम्य रूप में इस्तेमाल करने लगे हैं। तो क्या अहिंसा को आगे नहीं बढ़ना होगा? जब हिंसा सौम्य और सौम्यतर की ओर जा रही है, तो अहिंसा को और द्रुत गति से उस ओर जाना होगा। अगर कार्यकर्ताओं को गाँव के लोगों को भ्रम से सत्य की ओर लाना है तो उन्हें सत्याग्रह ही करना होगा न?

अब सवाल यह है कि इस सत्याग्रह का स्वरूप क्या होगा? मैं मानता हूँ कि परस्पर-स्नेह के अधिष्ठान की चेष्टा सौम्यतम सत्याग्रह है। इसलिए कार्यकर्ताओं को अपने जीवन में साधना करके स्नेह की उस सामाजिक शक्ति को प्रकट करना होगा, ताकि नया समाज बनाने के लिए उस शस्त्र का इस्तेमाल किया जा सके। अतः मैंने नरेंद्र और विद्या से कहा कि लोगों से प्रेमसम्बन्ध रखो, विचार की बात करो, खुद उत्साह से दिन भर उनके सेवा में काम करो—अपने आप उनको उत्साह होगा। हुआ भी वैसा ही। धीरे-धीरे अब जिस उत्साह से काम हो रहा है, वैसा शुरू में नहीं था।

—

साहित्य-समादर

गोसेवा विनोबा:

पृष्ठ ८४, मूल्य ७५ नये पैसे।

सर्वधर्म एकता:

पृष्ठ ५५, मूल्य ४० नये पैसे।

लेखक: ओमप्रकाश त्रिखा।

प्रकाशक: ग्रामसेवा प्रकाशन पट्टीकल्याणा (पंजाब)।

(१) विनोबाजी ने गोरक्षा तथा गोसेवा का विचार अपने विशिष्ट ढंग से उपस्थित किया है। बहुत से लोगों का मानना है कि विनोबाजी गोरक्षा के समर्थक नहीं हैं। विनोबाजी का व्यावहारिक गोरक्षा के तरीके में मतभेद भी हो सकता है, पर उन्होंने गोरक्षा व गो-सेवा को अपने जीवन का अभिन्न अंग माना है।

श्री ओमप्रकाश त्रिखा की इस छोटी-सी किताब से उन सभी लोगों को समुचित उत्तर मिलेगा। इस किताब में विनोबा द्वारा गाय के संबंध में व्यक्त किये गए विचारों का तो संग्रह है ही, साथ ही उन्होंने इस दिशा में जो कुछ प्रयत्न किये हैं उनका भी समावेश कर दिया गया है। पुस्तक अत्युपयोगी है।

(२) दूसरी पुस्तक है—सर्वधर्म एकता। आज धर्मों के जो झगड़े चलते हैं, उसका एक मुख्य कारण दूसरे धर्म के बारे में अज्ञान है। इस दृष्टि से त्रिखाजी ने सभी धर्मों का थोड़ा-थोड़ा परिचय देकर साधारण पाठकों के लिए उपयोगी सेवा की है। इस पुस्तक के बारे में सेठ गोविन्ददास ने लिखा है

"श्री ओमप्रकाश त्रिखा सर्वधर्म एकता के मानने वाले एक …… साधक हैं। बरसों से सादगी जीवन बिता रहे हैं। पंजाब में सर्वोदय मण्डल के प्रथम सेवक हैं। उन्होंने सर्वधर्म एकता की थोड़े में जानकारी देने वाली एक छोटी-सी पुस्तक प्रकाशित की है। आम जनता को और खास कर विद्यार्थियों को उनकी यह पुस्तक सब धर्मों का आदर बढ़ाने में मददगार होगी ऐसी आशा कर सकता हूँ।

एक बात मैं यहाँ लिख दूँ। हिन्दू धर्म के संस्थापक के तौर पर महर्षि वेदव्यास का नाम इसमें दिया है। इसमें कोई शक नहीं कि आज के हिन्दू धर्म पर वेदव्यास की कृति का अमिट असर है। लेकिन हिन्दू धर्म जिसका नाम सनातन वैदिक धर्म है बहुत पुराना है और महर्षि व्यास हिन्दू धर्म के अनेक सेवकों में से एक महान सेवक हैं। उनके पहले वेद और उपनिषद मौजूद थे, जो कि हिन्दू धर्म के बुनियादी ग्रन्थ हैं। वेद और उपनिषद के अलावा गीता भी हिन्दूधर्म का मौलिक ग्रन्थ है, जिसके रचयिता वेदव्यास कहे जा सकते हैं। सब धर्मों में सनातन वैदिक धर्म की ही यह खूबी है कि वह किसी एक व्यक्ति के साथ जुड़ा नहीं है। इसलिए हिन्दू धर्म में अनेक दर्शनों का और उपासना के अनेक पन्थों का अविरोधेन समावेश हुआ है।

मनुस्मृति व धर्म … ……। के धर्म का और यहूदी धर्म का भी जिक्र इसमें होना चाहिए, जिससे किताब में पूर्णता आयेगी। इसकी अगली एडीशन में इतनी वृद्धि की जा सकती है। ऐसी सर्वोपयोगी किताब लिखने के लिए मैं ओमप्रकाशजी को धन्यवाद देता हूँ।"

समग्र ग्रामसेवा की ओर

खंड १ और २ संयुक्त: मूल्य रु. ३-५०

खंड ३: मूल्य रु. २-५०

प्रकाशक: अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी।

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी लिखते हैं:

"श्री धीरेन्द्रभाई सच्चे वैज्ञानिक की भाँति लिखते हैं, इसलिए उनकी प्रत्येक रचना में एक ताजगी होती है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। जब वे अपनी असफलताओं का जिक्र करते हैं, तो चित्त को यह बात कर संतोष होता है कि ऐसे सच्चे साधक कुछ तो हमारे बीच मौजूद हैं, जो अपनी त्रुटियों का जिक्र करने में संकोच नहीं करते। सुन्दर आन्दोलन, चाहे सहस्र वर्ष बाद चले, पर चलेगा वह ऐसे ही साधकों के द्वारा।"

—मनोज कुमार

गांधी-विनोबा के आदर्शों को पाना कठिन है !

रामाधार

भारतवासियों के लिए योरोप तीर्थ-रूप हो गया है। हमारा आर्थिक एवं राजनीतिक मक्का वही है ! अत. अनेक भारतीयों की तरह मेरी भी लालसा इस तीर्थ-यात्रा करने की थी। इसके लिए अनेक योजनाएँ बनीं, मित्रों में विचार-विमर्श हुआ। पर सन् '६० के मध्य तक इससे आगे गाड़ी नहीं बढ़ी। पर १९६० के जून के मध्य में अचानक नये सिरे से कार्यक्रम बना और इसके पहिले कि मैं यह समझ सकूँ कि इस यात्रा की सारी व्यवस्था क्यों और कैसे हुई, २५ जून को दोपहर को मैंने अपने को मास्को के हवाई अड्डे पर पाया। मेरे एक बुजुर्ग मित्र कृपापूर्वक पहले से ही वहाँ उपस्थित थे, इसलिये ठहरने वगैरह के मामले में कोई असुविधा नहीं हुई और मैं मास्को शहर की विभिन्न सड़कों से चक्कर खाती हुई गाड़ी में खोया हुआ-सा बैठा हुआ जिधर ही नजर जाती, देखता रह जाता था।

परन्तु यह भाव अधिक समय तक नहीं रहा। अगर यहाँ कुछ देखना सुनना, समझना है तो सतर्क होकर रहना होगा। नीना नाम की एक बहन हमारी सहायिका के रूप में साथ थीं। उन्होंने हिन्दी भाषा का अध्ययन किया था और अब हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री जैनेन्द्रकुमार पर अनुसन्धान का काम कर रही थीं। उनकी हिन्दी खासी संस्कृतमयी थी। हम लोगों को सुनने में अच्छी लगती थी और कभी-कभी हँसी भी आती थी। किताबी हिन्दी से कैसी हास्यास्पद परिस्थिति पैदा हो सकती है, इसका अनुभव कई बार हुआ। लेकिन उस बहिन का स्वभाव अत्यन्त मृदु और विनोदी था।

रूस में मैं केवल तीन दिन या साढ़े तीन दिन रहा। इतने विशाल देश में तीन दिन क्या है ? इसके अलावा मास्को तथा टाल्सटॉय महोदय के निवास-स्थान यास्नाया पोलियाना के अलावा मैं कहीं और गया भी तो नहीं। अत. यहाँ के बारे में मुझे क्या अनुभव हो सकता है, जिसके सम्बन्ध में कुछ लिख सकूँ ? फिर भी बिलकुल न जाने से तीन दिन के लिए जाना भी काफी है। कुछ-न-कुछ तो देखने को मिला ही। और अगर आदमी आँख बन्द करके न रखे और दिमाग भी बन्द न हो, तो इतने अल्पकाल में भी कुछ तो देख-समझ सकता है।

सबसे मुख्य प्रभाव जो मेरे ऊपर मास्को और उसके आस-पास के स्थानों को देखने से पड़ा, वह है वहाँ की आडम्बर-हीनता का, कहीं भी दिखावे का प्रयत्न नहीं है। स्त्री-पुरुष अच्छे, साफ-सुथरे कपड़े पहने थे, परन्तु उसके पीछे रुचि चाहे दिखे, फैशन और दिखावा नाम की चीज कम दिखी। बाद को योरोप में आकर यह फर्क और स्पष्ट रूप से स्मृति-पटल पर झलकने लगा। यही बात होटलों वगैरह में देखने में आई। रूस में आडम्बर और दिखावा बिलकुल नहीं, परन्तु योरोप के अन्य सभी असाम्यवादी देशों में इसकी भरमार थी। बड़ी-बड़ी दुकानों, स्टोरों और बाजारों आदि में भी यही अन्तर। रूस में हर तरह का सामान इस्तेमाल के लिये बनाया और बेचा जाता है और उसमें रुचि-वैचित्र्य आदि का प्रयत्न भी है। परन्तु योरोप के और सभी देशों में फैशन पहले है और व्यवहार की सुविधा-असुविधा अपेक्षाकृत गौण है। रूस में कोई वस्तु आम तौर पर 'आऊट ऑफ फैशन' नहीं हो सकती, किन्तु और सब देशों में, जो साम्यवाद की परिधि के बाहर माने जाते हैं, बहुत जल्दी-जल्दी फैशन बदलता है और वहाँ के आर्थिक ढाँचों में इसका बहुत अधिक महत्त्व बन गया है। परिणामस्वरूप वहाँ जिन वस्तुओं का सम्बन्ध फैशन आदि से जुड़ जाता है, उनमें अन्तत अपव्यय अत्यधिक है। कहा जाता है कि इस निमित्त का अपव्यय अमेरिका में तो और भी अधिक है। अगर ठीक से इसका पूरा हिसाब लगा कर देखा जाय तो हम जैसे दरिद्र देशों को यह बहुत बड़ी अंधेरगर्दी मालूम होगी, यद्यपि हमारे यहाँ भी शिक्षित वर्गों में यही अन्धेरगर्दी है।

रूस आदि में शायद यह अपव्यय बिलकुल नहीं है। सम्भवत यह उनकी व्यवस्था की भिन्नता के कारण है। कारण जो भी हो, यह छोटी बात नहीं है। सम्पन्न देश इस बात को सम्भव है, महत्त्व न देना चाहें। परन्तु एशिया और अफ्रीका के अधिकांश निवासी इसे सहज ही टालना पसन्द नहीं करेंगे। टालने लायक चीज भी नहीं है।

रूस आये हैं, तो महर्षि टाल्सटाय के निवास-स्थान, यास्नाया पोलियाना के दर्शन न करें यह कैसे सम्भव है ? अत हम लोग २६ जून को सुबह वहाँ के लिए रवाना हुए। मास्को से यह स्थान प्राय १५० मील दूर है। मास्को से बाहर निकलने पर ऐसी मनोरम और रमणीक हरियाली का विस्तार चारों ओर दिखाई दिया कि हृदय आनन्द और उल्लास से भर गया। हमारा देश जैसे बहुत सुन्दर है। और जैसे कालिदास से लेकर रवीन्द्रनाथ तक और कालिदास से भी बहुत पूर्व स्वयं व्यास देव ने भारत-भूमि के सौन्दर्य के बारे में जो कुछ कहा है, वैसे ही रूस में प्राकृतिक दृष्टि से कोई कमी नहीं है। सम्भव है, ग्रीष्म व वर्षाकाल वहाँ बहुत सुहावने होते हों और शीतकाल शोभा की दृष्टि से उतना उत्कृष्ट न माना जाता हो। जो हो, जून के अंतिम दिनों में हमने रूस के नव प्रदेश एवं कृषि-भूमि को देखा तो वे हमें अत्यधिक रमणीक लगे।

यास्नाया पोलियाना पहुँचे। वहाँ जो दृश्य देखा उससे आश्चर्य तो बहुत हुआ ही, आनन्द भी खूब हुआ। उस दिन रविवार के कारण छुट्टी का दिन था। अत. वहाँ हजारों लोग इकट्ठा थे। इसमें से काफी संख्या गैरमुल्क के लोगों की भी रही होगी, परन्तु ८० फी सदी से अधिक तो रूसी ही थे। ये सारे के सारे विभिन्न साधनों से यहाँ इतनी दूर पर महर्षि टाल्सटाय का निवास-स्थान और उनकी समाधि देखने आये हैं, यह देख कर अत्यन्त आनन्द हुआ।

यास्नाया पोलियाना एस्टेट को सोवियत सरकार ने उसी स्थिति में सुरक्षित रखा है, जैसी वह टाल्सटाय के जीवन-काल में थी। जिस मकान में वे रहते थे, वह वैसा का वैसा ही है, जैसा उनके जीवन-काल में था। वही फर्नीचर है, वही सामान है, वे ही पुस्तकें हैं और हर चीज की वही तरतीब है। मनुष्य थोड़ी देर शान्ति से किसी जगह बैठ कर अपना ध्यान केन्द्रित करे, तो उसे लगेगा टाल्सटाय स्वयं ही अभी बाहर निकल कर उससे मिलने वाले हैं।

उनकी समाधि देख कर तो अन्त करण एक विचित्र प्रकार की अनिर्वचनीय अगाध शान्ति से भर उठा। असाधारण सौन्दर्य-शीला वनश्री में स्थित घास की हरियाली और चन्द वनवृक्षों की शोभा से युक्त उनकी यह सामान्य सी सीधी सादी समाधि उस शान्ति और सादगी की घोषणा करती प्रतीत होती है, जिसकी उन्हें आजीवन तलाश रही, जिसे वह पाकर भी न पाते थे और अन्त में उसी की खोज में गृहत्यागी हुए। सोवियत सरकार उनकी समाधि के इस रूप को सुरक्षित रखने के लिए अत्यन्त सतर्क है और इसके लिये वह हम सभी के साधुवाद की पात्र है।

यहाँ हम लोग भारतीय पोशाक धोती कुर्ता-सदरी में आये थे। अत सारी भीड़ को इस बारे में बड़ा कौतूहल था। प्राय सभी लोग हमारी ओर देखते थे। उनकी आँखों में कौतूहल तो था ही, परन्तु साथ ही आनन्दमिश्रित मित्रभाव भी था।

२७ जून को दोपहर के बाद मेरे बुजुर्ग सम्मानित मित्र से मिलने के लिए रूस के एक प्रसिद्ध लेखक और कवि श्री सुरकोव आये। साथ में दुभाषिये के रूप में एक बहिन थीं। वह बहिन हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों ही भाषाएँ अच्छी तरह जानती थीं। परन्तु मुझे आश्चर्य हुआ, जब चर्चा अंग्रेजी और रूसी भाषा में हुई। हम भारतीयों में, जिसमें हिन्दी भाषा भाषी भी शामिल हैं, भाषा के बारे में एक विचित्र प्रकार का दैन्य है। खैर, चर्चा सचमुच ही बहुत दिलचस्प रही। श्री सुरकोव की बातें पाण्डित्यपूर्ण तो थीं ही, किन्तु इससे भी अधिक प्रभाव उनकी बातों का यह पड़ता था कि वे अत्यन्त सचेत व्यक्ति हैं, जैसा कि आम तौर पर एक कुशल राजनीतिज्ञ होता है। चर्चा ज्यों-ज्यों आगे बढ़ी, त्यों त्यों उसकी परिधि भी विस्तृत होती गई और उसका स्वरूप आकर्षक होता गया। लेकिन हम उसके विस्तार में नहीं जायेंगे। कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करना ही यथेष्ट होगा।

रूस के विचारकों के लिए गांधीजी तथा विनोबाजी के कार्य, उनकी पद्धति एवं उनके विचार तथा दर्शन को हृदयंगम करना दुष्कर है, यह प्रतिध्वनि श्री सुरकोव की बातों से स्पष्ट निकली। विनोबा और उनके कार्यक्रम की चर्चा आने पर उन्होंने कहा, यह तो समुद्र को चम्मच से उलीच-उलीच कर खाली करने का-सा प्रयत्न है। नेहरू को ये लोग अवश्य समझते हैं और उनके प्रशंसक भी हैं। उनकी प्रशंसा का यह भाव कितना स्वाभाविक और वास्तविक है और कितना कूटनीतिक, यह कहना कठिन है। निस्सन्देह उन्हें नेहरू की समाजवादी भाषा और तटस्थता की नीति पसन्द है, किन्तु नेहरू की सामर्थ्य कितनी है, [illegible] इस भाषा और नीति पर देश से कितना अमल करवा सकेंगे, इस सम्बन्ध में स्पष्ट भाषण करने की अवस्था [illegible] ये लोग नहीं समझते। श्री सुरकोव की एकाध बात से यह अवश्य झलका कि नेहरू की सामर्थ्य और योग्यता का वास्तविक मूल्य वे [illegible] नहीं समझते, परन्तु साथ ही इस भाव को उनकी शिष्ट प्रशंसा से उन्होंने ढक-सा दिया।

दर असल जवाहरलाल नेहरू का दृष्टिकोण और उनकी भाषा तथा सारे पश्चिम की विभिन्न समाज-व्यवस्थाओं के प्रयत्न में से निकले हैं और इसलिए ये बातें उनकी समझ में अच्छी तरह आती हैं। गांधीजी और विनोबा की बातें उनके प्रयत्नों के बिल्कुल बाहर पड़ती हैं, वह उनके प्रति [illegible] में पड़ जाते हैं। इस हद तक रूस के साम्यवादी और पश्चिम योरोप के जनतन्त्रवादी, दोनों एक हैं। दोनों अपने-अपने ढंग से जवाहरलाल नेहरू के प्रशंसक हैं और गांधी-विनोबा के विचारों के प्रति उदासीन हैं। यह अलग बात है कि जनतन्त्री देशों में अनेक विचारक ऐसे भी मिलते हैं, जो पश्चिम की समाज-व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था के बारे में आशा छोड़ चुके हैं, इसलिए पूर्व के प्रति अधिक झुके हुए हैं। उन्हें गांधी-विनोबा के विचार और दर्शन [illegible] करने जैसा [illegible] प्रतीत नहीं होता।

[शेष पृष्ठ १२ पर]

विनोबा यात्री-दल की चिट्ठी : कुसुम देशपांडे

चलता-फिरता विद्यापीठ

एक दिन यात्री-दल के साथियों के सामने प्रकट चिंतन करते हुए विनोबाजी ने कहा, "स्वराज्य-प्राप्ति के बाद समाज में कोई स्वतन्त्र प्रेरणा नहीं दीखती है, यह हालत मैं खतरनाक मानता हूँ। आप देखते हैं कि शिक्षण के क्षेत्र में खास नये प्रयोग, निरपेक्ष करने की प्रेरणा कहीं नहीं दीखती है। इन दिनों वक्तृत्व भी कुंठित हुआ है। इसलिए कोई विशेष वक्ता जो समाज पर असर डाल सके, नहीं दीखता है। साहित्य के क्षेत्र का भी यही हाल है।"

दूसरे दिन 'वर्किंग सेमीनार' में श्री गोकुल भाई ने सवाल किया, "ऐसा क्यों हुआ है? क्या आजादी के लिये हम लायक नहीं थे?" विनोबाजी का जवाब था, "हमें जो आजादी मिली, वह देश के विभाजन के साथ मिली है, यह इसका बहुत बड़ा कारण है। दूसरी बात यह है कि १९४२ के आंदोलन में 'तोड़-फोड़' की आदत हमें हो गयी। उस आदत का परिणाम आज दीखता है। और तीसरा कारण, जैसा आप कहते हैं, आजादी के लिए जो तपस्या करनी पड़ती है, वह हमारी तपस्या पूरी होने के पहले हमें आजादी हासिल हुई है।"

* * *

एक कार्यकर्ता भीलवाड़ा जिले की पदयात्रा का अनुभव सुनाते हुए कह रहे थे, "बाबा! हम गाँव में जाते हैं और ग्रामदान की बातें लोगों के सामने रखते हैं, तो वे अपनी छोटी-मोटी कई समस्याएँ हमारे सामने रखते हैं। हम उन्हें हल नहीं कर पाते हैं।"

विनोबाजी: "पहले तो आपको गाँव में उसकी भूमिका तैयार करनी होगी। अभी आप देखते हैं कि मैं इन दिनों इन गाँवों में 'ग्रामदान' की बात नहीं कर रहा हूँ। आप भूदान प्राप्ति की कोशिश करते हैं, इस दृष्टि से आपको यश मिल रहा है। इस पर भी मैं गाँववालों को कहता हूँ उनके दान से मुझे तो खुशी हुई। लेकिन भगवान को खुश करना है, तो छठा हिस्सा दान मिलना चाहिए। इस बात को आप समझेंगे, तो आपको और दान मिलेगा। ग्रामदान की भूमिका तैयार किये बिना वे बेचारे ग्रामदान की बातें क्या समझेंगे? कश्मीर में मैं वहाँ की समस्या का निरीक्षण करने के लिए गया था। फिर भी एक काम हाथ में लेकर गया था। अगर मैं वैसे ही निरीक्षण करने के लिए जाता, तो वहाँ के लोगों ने जिस ढंग से अपना दिल खोला, वैसा वे नहीं करते। फिर निरीक्षण करने का वह एक अलग ही काम होता। मैंने वहाँ भूदान माँगा। मेरे जाने के पहले वहाँ 'सीलिंग' हो गया था। २२॥ एकड़ से ज्यादा जमीन वहाँ किसीके भी पास नहीं है। फिर भी लोगों ने भूदान दिया। वहीं मैंने कहा था कि भूदान से दिल नरम होते हैं और ग्रामदान से दिल जुड़ जाते हैं। आपको यहाँ जमीन मिल रही है। वह जमीन बँटेगी, तो कुछ तो समस्या हल होगी उनकी। मैं गाँववालों से यही कहता रहूँगा कि जब तक तुम एक नहीं हो जाओगे, *तब तक* तुम्हारी समस्याएँ हल नहीं होने वाली हैं।"

एक भाई ने कहा, "बाबा! यह सब देखते हुए लगता है कि जनता का सहयोग सख्ती से ही मिलेगा। इसलिए आजादी के बाद दस साल तक 'डिक्टेटरशिप' रहती तो अच्छा होता।"

बाबा ने विनोद में कहा, "लेकिन डिक्टेटरशिप दस साल ही रहेगी, आगे नहीं चलेगी, इसका क्या भरोसा? *डिक्टेटरशिप को कोई खुद होकर छोड़ेगा?* क्या ऐसा कभी हुआ है?"

बाबा आगे सुझाते थे, "अगर आप 'डिक्टेटरशिप' चाहते हैं, तो जगह-जगह पुलिस के द्वारा 'रिप्रेशन' होने दो। दबाना शुरू करो और जनता की सहानुभूति खो बैठो। फिर बाहर से यदि किसी देश का हमला होगा, तो देखो, तुम्हें जनता सहयोग देगी या नहीं, देश की रक्षा में।"

"लेकिन बाबा, बाहर से हमला क्यों होगा?"

"जिस देश की जनता असंतुष्ट होती है, उस देश पर बाहर से हमला होना लाजमी है।"

"मेरा यह मतलब नहीं है बाबा! मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि थोड़ा-बहुत दबाव हो। पुलिस के द्वारा दबाने की बात मैं नहीं कर रहा हूँ।"

"याने आप यही चाहते हैं न कि गवर्नमेंट चलती नहीं है, वह जरा चले! अपने देश का यह दोष है डिलाई! दफ्तर में १० के बदले ११ बजे जायेंगे, बीच में चाय के टाइम में १५ मिनिट के बदले आधा घंटा गँवायेंगे, यह चलता है। इसलिए जिस किसीने अनुशासन सिखाया, उसका राज यहाँ चला। पंजाब में रणजीत सिंह, महाराष्ट्र में शिवाजी, फिर अकबर, अंग्रेज इनकी हुकूमत चली। यद्यपि नियमितता को मैं बहुत ज्यादा 'मॉरल' गुण नहीं मानता हूँ, फिर भी इस गुण का अपने देश में इतना अभाव है कि उसकी जरूरत मैं महसूस करता हूँ। नियमितता से ज्यादा निर्भयता को, सत्य को महत्त्व देता हूँ। बापू ने आश्रम में 'डिसिप्लिन' इसीलिए चलायी। वैसे वे भी अनुशासन को बहुत ज्यादा महत्त्व नहीं देते थे। लेकिन वह गुण हममें बिल्कुल नहीं है, इसलिए वे उसे चलाते थे। डाँडी-यात्रा के समय उन्होंने जाहिर किया था कि किसी की भी दो से ज्यादा गलतियाँ होंगी, उसे डाँडी-यात्रा में नहीं ले जायेंगे। गलती याने क्या?—कोई भोजन में दो मिनिट देरी से पहुँचा, प्रार्थना में एक मिनिट देरी से पहुँचा। यह इसलिए था कि हमें खुद को कसना चाहिए। जरा भी ढिलाई नहीं होनी चाहिए।"

* * *

'सीताबाड़ी' निसर्ग की गोद में बसा हुआ एक नयनरम्य स्थान है। कहा जाता है कि यह वही स्थान है, जहाँ पर सीतामाई को नाजुक हालत में अकेली छोड़ देने का कठोर कार्य लक्ष्मणजी को करना पड़ा था। *वहीं वाल्मिकि का आश्रम था और* लव-कुश का जन्म-स्थान भी। आज उस स्थान में अलग-अलग कुंड हैं: लक्ष्मण कुंड, सीता कुंड, सूर्य कुंड आदि। उसके चारों ओर घने वृक्ष हैं। आम का तो "जंगल" ही है। उसका कोई ठेका नहीं होता है और आम बेचा नहीं जाता है। 'लेकिन वहाँ से आम बाहर ले जाने से वह सड़ जाता है', यह भी वहाँ के लोगों ने बताया।

हरित वस्त्र परिधान की हुई सृष्टि की ओर नजर डालते हुए विनोबाजी ने कहा, "हम भिंड में घूमते थे। वहाँ कड़ी धूप थी, धूल भी बहुत थी। लेकिन वहाँ काम खूब *हुआ। इसलिये वहाँ की कड़ी धूप महसूस* नहीं होती थी। वहाँ के 'बागियों' के दिल में पश्चात्ताप हुआ और आँख बाहर की रूखी-सूखी सृष्टि देखती थी, फिर भी दिल को हरा-भरा, हरियाली की शांति महसूस होती थी। और यहाँ आँखों को तो हरा-भरा दीख रहा है। वैसे दिल को यदि महसूस नहीं होगा, तो बाहर 'शांत' होते हुए भी अंदर गरमी महसूस होगी, दुःख होगा। अगर खूब काम होगा, तो बाहर भी ठंडा और अंदर भी ठंडा होगा, खूब खुशी होगी।"

विनोबाजी कहते हैं, देहातों में लंबी तकरीरों का असर नहीं होता है। देहातों के दिल को छूती है—हरिचर्चा, रामकथा और गोकुल के आनंद का वर्णन, 'गोवर्धन' उठाने का पराक्रम। इस तरह की कहानी सुनाते-सुनाते गाँव को एक हो जाने की, मिल-जुल कर रहने की सिखावन वे देते हैं।

समराजीया गाँव में उन्होंने कहा, "जैसे हर गाँव में 'पटवारी' होता है, वैसे 'हरिकथा' सुनाने वाला हर गाँव में होना ही चाहिये।" यह कहकर उन्होंने तुलसीदासजी का एक श्लोक सभा को सिखाया। गाँव के भाई, बूढ़े बच्चे तो तालियाँ पीट कर गाते ही थे, लेकिन 'घूँघट' ओढ़ी हुई बहनें भी श्लोक गाने में पीछे नहीं रहीं।

दिन भर का काम खतम हुआ था, संध्या समय विनोबाजी निवास-स्थान में बरामदे में टहल रहे थे। बरामदे के एक कोने में गाँव के चार-पाँच बच्चे आपस-आपस में धीरे से बात कर रहे थे और विनोबाजी की ओर देख रहे थे। आपस-आपस में शायद वे कुछ राय-मशविरा करते होंगे। आखिर उनमें कुछ तय हुआ होगा। उनमें से दस-बारह साल का एक लड़का विनोबाजी के पास आया। विनोबाजी रुक गये। उस लड़के ने हिम्मत से पूछा, "बाबाजी, आज आपने कौनसा श्लोक सिखाया था?" बहुत प्यार से उसके दोनों कंधे पर हाथ रखते हुए बाबा ने श्लोक दुहराया। उसे गाते-गाते लड़का रुक गया, वह तो निर्भय बना था। संकोच टूटा था। उसने बाबा के पास अपनी माँग पेश की: "बाबाजी, याद नहीं रहेगा, लिख कर दे दीजियेगा!" 'ऑटोग्राफ बुक' पर हस्ताक्षर करने के लिये *या संदेश लिख कर देने के लिये हमेशा* इन्कार करने वाले बाबा ने प्यारे बेटे की माँग पूरी की। झट से एक कागज पर तुलसीदासजी के वचन उन्होंने लिख दिये।

"जिन्ह हरिकथा सुनी नहीं काना।
श्रवण-रन्ध्र अहि-भवन समाना।
जो नहीं करइ रामगुन गाना।
जीह सो दादुर जीह समाना।"

लड़का खुश होकर गया।

* * *

एक ओर से नदी के समान सतत नौ साल से पदयात्रा चल रही है, भूदान के सेवक गाँव-गाँव पहुँच रहे हैं—सरकार की ओर से भी *गाँववालों के पास पहुँचने की योजना* जारी है; फिर भी कितने ही देहात आज ऐसे मिलते हैं, जो अज्ञान के भयानक अँधेरे में पड़े हैं। विनोबाजी कभी-कभी गाँववालों को पूछते हैं, "महात्मा गांधी का नाम सुना है?"—वे कहते हैं, 'ना!' एक गाँव में तो विनोबाजी के प्रवेश के समय गाँववाले जयघोष करते थे, "महात्मा गांधी की जय!" एक-कतार में खड़े हुए एक भाई के पास जाकर विनोबाजी ने पूछा, "कौन थे महात्मा गांधी?"

उसने उनकी ओर इशारा करते हुए कहा, "आप ही हैं महात्माजी!" वह भाई *कोई मजाक नहीं कर रहा था, सचमुच ही उसे कोई ज्ञान नहीं था।*

आज मैं देख रहा हूँ कि गाँवों में यहाँ तक अज्ञान है कि "आज राज 'नेहरू' का है—नेहरू हमारा राजा है," यह कहते हैं। याने हमारा राज है, यह भान नहीं है। जिन चीजों की अखबारों में भी ज्यादा चिल्लाहट *होती है, हो-हल्ला होता है, उनकी जान-*कारी गाँववाले को नहीं होती है। चीन और हिंदुस्तान की सीमा की समस्या का सवाल लीजिये। गाँववाले कुछ भी नहीं जानते हैं। उनकी समस्या है—"यहाँ पानी नहीं है। डाकुओं से हम तंग आये हैं!" क्या आप समझते हैं कि चीन के देहाती *इस तरह अज्ञान में हैं? आपने यह समझा* होगा, तो आप जानते ही नहीं हैं कि दुनिया किधर जा रही है। वहाँ के देहातों में तो परचे बँटे होंगे। चीन और हिंदुस्तान की सीमा के नक्शे गाँव-गाँव बँटे होंगे, दीवार पर लगाये होंगे। और चीन के देहातियों को तिब्बत के मामले की, चीन हिंदुस्तान के मामले की *व्यवस्थित जानकारी होगी।*

कहते हैं कि 'सोशल एज्युकेशन' चलती है। लेकिन मैं लोगों के चेहरे देखता हूँ। एक-एक लफ्ज बोलते समय मुझे शंका होती है कि क्या यह समझे होंगे? सार यह है कि ये सारे देहात याने कोरा कागज है। उनके पास हमें जाना है।

सर्वजन-आधार के संबंध में श्री धीरेन्द्र भाई द्वारा उठाये गये प्रश्न !

मैंने जब यहाँ (बलिया, बिहार) आने का निश्चय किया, तो काम करने के लक्ष्य में दो बातें बनायी थीं। पहली, जन-शक्ति की खोज और दूसरी, समग्र नई तालीम का प्रयोग। इन दोनों ही लक्ष्यों के बारे में अभी भी अंधकार में ही टटोलने का काम हो रहा है। मेरे चिंतन में जो प्रश्न खड़े हुए हैं, वह तुम लोगों के सामने रख रहा हूँ।

पहली बात जन-शक्ति की खोज की है। आज असली संघर्ष सैनिक-शक्ति और जन-शक्ति के बीच में है। अगर जन-शक्ति को विजयी होना है, तो उसका काम सैनिक-शक्ति के आधार पर चले, यह नहीं हो सकता। इसलिए जो लोग सैनिक-शक्ति के निराकरण का बीड़ा उठाते हैं, उनको पालना, जन शक्ति को परिपुष्ट करने वाले सिपाही को पालना है, ऐसा समझ कर उन्हें जो कुछ देना हो, लोग दें। इस दृष्टि से हम सोचेंगे तो समझ जायेंगे कि विनोबाजी जो सर्वजन-आधार की बात करते हैं, वह क्रांति की मूलभूत प्रक्रिया है।

सर्वजन-आधार का मतलब यह है कि क्षेत्र के सब लोग लोक-सेवक के लक्ष्य को समझें। समाज के लिए उसकी आवश्यकता है, ऐसा महसूस करें यानी लोकसेवक का लक्ष्य उनका लक्ष्य बने। यह समझ कर जीवन के नियमित कार्यक्रम के रूप में सर्वोदय-पात्र या सम्पत्ति दान निकालें। यह देना भी भिक्षा के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-दीक्षा के रूप में हो। अर्थात् दाता के मन में यह संकल्प हो कि वह अपनी आमदनी का अमुक हिस्सा इस क्रांति के लिए देना है, इसलिए मैंने यहाँ लोगों से कहा कि शुरू-शुरू में भले ही किसान से खलिहान बटोर कर काम चलायें, लेकिन मैं यह चाहता हूँ कि ग्राम-लक्ष्मी का निर्माण हो। समाज को चलाने के लिए पूँजी की जरूरत पड़ती है, इसलिए पूँजी बनाने का प्रश्न आज के अर्थ-शास्त्र के सामने मुख्य प्रश्न होता है। सवाल यह है कि यह पूँजी बने किस जरिये से ? उद्योग के मुनाफे से और सैनिक-शक्ति के आधार पर टैक्स बटोर कर या जनता के विवेक-प्रेरित त्याग और प्रेम-शक्ति के जरिये ? अतः मैंने यहाँ गाँववालों से कहा है कि वे पूँजी-निर्माण के लिए संकल्प करें और एक मन की उपज में से एक सेर तथा दूसरी आमदनी में से रुपये में एक पैसा धर्मगोले में जमा करें। फिर हर गाँव के लोग सामूहिक संकल्प करें कि लोक-सेवकों के लिए धर्मगोले का छठा हिस्सा निकालना है। सर्वोदय-पात्र तो है ही।

यह तो हुआ सर्वजन-आधार के स्वरूप के बारे में मेरा विचार। लेकिन आज की जो हमारी परिस्थिति है, उसके कारण इस प्रकार के सर्वजन-आधार में बाधा आती है। सर्वजन-आधार के मामले में एक विषचक्र-सा बन गया है। जनता में सर्वजन-आधार के संगठन के लिए कार्यकर्ता चाहिए और कार्यकर्ताओं को सर्वजन-आधारित होना चाहिए। चूँकि ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं, अतः इस परिस्थिति ने विषचक्र की सृष्टि की है। अगर सर्वजन-आधार के संगठन के लिए कार्यकर्ता चाहिए और कार्यकर्ता को सर्वजन-आधारित होना चाहिए, तो जब तक जनाधार का संगठन नहीं हो जाता, तब तक कार्यकर्ता का गुजारा कहाँ से होगा ? आज हम इसके लिए संचित-निधि का सहारा लेते हैं। ये कार्यकर्ता जनता के सामने गांधी-निधि के सेवक, खादी के कार्यकर्ता या ऐसी ही कुछ संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के रूप में हाजिर होते हैं। जब वे इस रूप में हाजिर होते हैं, तब जनता में जनाधार का असर नहीं कर पाते हैं। जनता कहती है कि आपको तो वेतन मिलता है, फिर क्यों माँगते फिरते हैं ? अगर कार्यकर्ता शुरू में ही निधि-मुक्त होकर गाँव में जाता है, तो लोग समझते हैं कि आ गया माँगने खाने वाला ! आज माँगने-खाने वाले इतने हो गये हैं कि साधारण कार्यकर्ता अपने लिए माँगने की हिम्मत नहीं कर सकता। अतः यह विषचक्र तोड़ना हो, तो पहले ऐसे ही कार्यकर्ताओं को गाँवों में जाना चाहिए, जो माँगने की हिम्मत रखते हों। पर ऐसे कार्यकर्ताओं को तो हम लोगों ने केंद्र में, और हर प्रांत में, संस्था और संगठन चलाने के काम में फँसा रखा है। इस तरह स्वतंत्र शक्तिशाली कार्यकर्ता, जिन्हें जनता नियजन मानती है, जनाधार की प्रक्रिया को स्थापित करने के लिए आते नहीं और साधारण कार्यकर्ता कल्याणकारी राज्य-वाद तथा संचित निधि-आधारित सेवा-संस्थावाद के युग में जनता को सर्वजन-आधार की प्रेरणा दे नहीं सकता।

जब हम सरकारी तंत्र की टीका करते हैं, तो उसे "टाप हैवी" कहते हैं। क्या हमारा काम "टाप हैवी" नहीं है ? सरकार में जो सबसे योग्य पुरुष हैं, वे ऊपर बैठे हुए हैं और नीचे ग्रामीण स्तर में "विलेज लेवेल वर्कर," ग्राम-सेवक काम करता है। क्या हमारा काम भी इसी ढाँचे पर नहीं है ? आज के समाज का जब हम दर्शन करते हैं, तो कहते हैं कि आज के समाज में नियंत्रण तथा निर्देशन ऊपर से नीचे की ओर होता है। लेकिन हम ऐसा समाज बनाना चाहते हैं, जहाँ नियंत्रण तो रहेगा ही नहीं, परंतु निर्देशन नीचे से ऊपर की ओर जायगा। पर हम लक्ष्य की सिद्धि के लिए जो काम चला रहे हैं, उसमें भी निर्देशन ऊपर से नीचे की ओर ही भेजते हैं। हमको ऐसा इसलिए करना पड़ रहा है, क्योंकि योग्यतम व्यक्ति प्रांत या अखिल भारतीय स्तर में बैठे हुए हैं। मैं अगर निर्देशन के योग्य हूँ, तो लोग यहाँ से ही [जिस गाँव में मैं बैठा हूँ] वह नहीं ले सकते हैं क्या ? तुम्हें अगर अखबार चलाना है, तो किसी गाँव में बैठ कर नहीं चला सकते हो क्या ? लोग अगर काशी या पटना में अपना प्रधान केंद्र बना कर देहातों में जाकर मार्ग-दर्शन कर सकते हैं, तो किसी गाँव में बैठ कर काशी में जाकर दफ्तरवालों का मार्गदर्शन क्यों नहीं किया जा सकता ?

मैंने पढ़रपुर सम्मेलन के अवसर पर विनोबाजी से कहा था कि देश भर के मुख्य कार्यकर्ताओं को सर्वजनाधार सिद्ध करने के लिए गाँवों में जाकर बैठना चाहिए। तुम सब साथी लोग इसे पागलपन ही समझते हो। लेकिन कभी-कभी कुछ बातों के लिए फैसला करना पड़ता है। एक बार विनोबाजी ने यह फैसला सुनाया था कि सब संस्थाएँ बंद करके सब लोग पदयात्रा करें। बापू ने यह फैसला सुनाया था कि सत्याग्रह सब कुछ छोड़कर भी नव-सृजन की दिशा में चलें। पर हम लोग मोहवश ऐसा नहीं कर सके। फिर भी क्रांति के आरोहण में ऐसे समय आते हैं, जब क्रांति-कारियों को इस प्रकार के फैसले करने पड़ते हैं। मैं मानता हूँ कि सर्वजनाधार को अगर वास्तविक बनाना है तो केंद्र आदि के काम को अत्यंत गौण मान कर मुख्य कार्यकर्ताओं को उसकी सिद्धि के लिए निकल पड़ने की आज आवश्यकता है। विचार-प्रचार आदि के लिए एक विनोबाजी और एक 'जे० पी०' काफी हैं, ऐसा कुछ दिनों के लिए मान लेना होगा। पुराने मर्म के कारण इस "नये मोड़" में उसी तरह की दिक्कत आयेगी, जिस तरह खादी, नई तालीम और अन्य रचनात्मक कार्य के नये मोड़ में आ रही है। दिक्कत आयेगी, फिर भी खादी आदि के नये मोड़ की कोशिश जारी है, उसी तरह आंदोलन की कार्यशैली का यह नया मोड़ भी अत्यंत आवश्यक है।

हमारी परिस्थिति में एक दूसरा और भी विषम अन्तर्विरोध है। यह यहाँ आने के बाद मुझे स्पष्ट नजर आया है। वह यह कि एक ही एजेंसी दोनों काम करती है। मैं यहाँ आया। वैद्यनाथ बाबू, भोला बाबू आदि कार्यकर्ताओं ने मुझसे कहा कि सर्वजनाधार आपके लिए हम लोग कर देंगे। क्षेत्र के लोगों ने भी सम्मति दी। लेकिन लोगों को यह समझ में नहीं आता है कि जब वैद्यनाथ बाबू और भोला बाबू हमारे ही क्षेत्र में से १०-१५ नौजवानों को ६० से १०० रुपये तक के वेतन पर सर्वोदय-काम के लिए ही नौकरी देते हैं, तो फिर सर्वोदय के ही काम के लिए एक अन्य कार्यकर्ता का गुजारा क्यों नहीं चला सकते ? इसके लिए हमको देने को क्यों कहते हैं ? अगर उनको यह कहा जाय कि सर्वोदय का काम जनाधारित होना चाहिए, तो उनको यह समझ में नहीं आता कि फिर इतने लोगों को इस काम के लिए नौकर क्यों रखते हैं ? इस प्रकार एक ही एजेंसी सरकार, गांधी-निधि और अन्य स्थानों से लाखों रुपये हरिजनों को घर बनाने के लिए, बाँध और कुएँ खोदने के लिए लाकर बाँटे, और वे नौजवानों को वैतनिक काम दे, फिर अपना काम चलाने के लिए जनता से खलिहान माँगे, यह जो अन्तर्विरोध है, यह पहले वाले अन्तर्विरोध से भी अधिक बाधक है। तुम सब लोग मिलकर सोचो कि इस अन्तर्विरोध का निराकरण कैसे हो। मैं यहाँ बैठ कर यह नहीं कह सकता कि धनीगरीब आश्रम हमारा नहीं है और वह सर्वोदय क्रांति का साधन नहीं है। अगर नहीं कह सकता, तो लोगों से यह कहने के लिए मेरे लिए और साथियों के लिए खर्च का प्रबंध आप करिये, इसके पीछे जो बारीक दार्शनिक तत्व है, उसे साधारण जनता कैसे समझेगी ?

[श्री सिद्धराजजी को लिखे गये पत्र का आवश्यक अंश।]

आज सरकारी तंत्र के काम में और हमारे तंत्र के काम में बहुत अंतर नहीं है। हमारा सारा काम ऊपर से नीचे की ओर आता है। जैसे दिल्ली से गाँवों की ओर योजना जाती है, वैसे ही काशी और पटना से सर्वोदय-आंदोलन का मार्गदर्शन होता है। क्या हम गाँव में बैठ कर ये सब काम नहीं चला सकते ? हम रहें गाँव में और पटना या काशी में जाकर दफ्तर संबंधी जरूरी मार्गदर्शन करें, तो क्या काम नहीं चलेगा ? अब समय आ गया है, जब कि हमें अपनी कार्य-पद्धति को बदलने के बारे में गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए और आंदोलन की दिशा को नया मोड़ देना चाहिए। अखिल भारतीय स्तर पर विचार-प्रचार के लिए विनोबा और 'जे० पी०' को छोड़ दें तथा बाकी के सभी प्रमुख कार्यकर्ता जन-आधारित होकर गाँव में बैठें।

इन्दौर में विनोबा

मणीन्द्रकुमार

२४ जुलाई का दिन इन्दौर नगर के इतिहास में अविस्मरणीय माना जायगा। हमेशा जब नागरिक गहरी निद्रा में मग्न रहते थे, आज तीन-चार बजे रात को ही नगर और नगर-सीमा पर हलचल थी। विनोबाजी के स्वागत, उनके प्रथम दर्शन के लिए सारा इन्दौर उमड़ पड़ा था। नगर-सीमा से पड़ाव तक के लम्बे रास्ते में, जिधर नजर जाये, उधर अपार जनसमूह सड़कों, मकान की छतों और पेड़ों की शाखाओं पर परिलक्षित होता था। "जय जगत्" के मंत्र की गूंज सर्वत्र सुनाई दे रही थी। जगह-जगह स्वागत !

आखिर बाबा इन्दौर पहुँच गये, जिसकी रट वे ढाई साल से लगा रहे थे। भीड़ और रास्ते की लम्बी थकान के बावजूद बाबा अत्यन्त प्रसन्न और भाव-विभोर थे। पड़ाव पर पहुँच कर बाबा ने अपने प्रवेश-प्रवचन में कहा : "मैंने पंढरपुर में इन्दौर आने का जाहिर किया था, तब से इन्दौर का नाम जपता आया हूँ। ' जिस प्रेम से आपने हमारा स्वागत किया, उसके धन्यवाद के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।" इन्दौर के लिए बाबा के मन में क्यों आकर्षण हुआ, उसकी चर्चा करते हुए कहा, 'इन्दौर भारत के बीच मध्य स्थान है, आप जानते हैं कि शरीर ठंडा पड जाता है, तो आखिरी हिस्से जल्दी ठंडे पड़ते हैं, तब भी बीच का हिस्सा गरम रहता है। मुझे अन्दर से प्रेरणा मिली कि शायद इन्दौर में भारत की सभ्यता और संस्कृति का सर्वोत्तम अंश प्रकट हो सकता है।"

अहिल्या देवी की नगरी इन्दौर में मातृ-शक्ति जागृत हो, यह इच्छा प्रकट करते हुए आपने कहा कि "हमारे यहाँ मातृ-शक्ति का सर्वोच्च स्थान माना गया है। मैं चाहता हूँ कि यह मातृ-शक्ति इन्दौर में जागृत हो। इन्दौर के जरिये यह भारत में फैले और फिर सारे विश्व में। मातृ-शक्ति से मेरा मतलब है शांति की शक्ति और अहिंसा की ताकत।"

• दूसरे दिन दोपहर को कार्यकर्ताओं की बैठक में गहचिन्तन करते हुए बाबा ने कहा, "जैसे बैठे-बैठे एक जगह से दुनिया का विनाश किया जा सकता है, वैसे बैठे-बैठे दुनिया का रक्षण भी हो सकता है, यह प्रयोग हमको करना होगा। इससे अहिंसा में अव्यक्त 'फेक्टर' दाखिल होगा। अहिंसा में अव्यक्त की खोज यह एक स्वतंत्र चिन्तन का विषय है। इस पर मैं विचार करता हूँ, आप भी चिन्तन करें।"

मध्य प्रदेश के कार्यकर्ताओं को बाबा ने कहा कि अगर कार्यकर्ता बिखरे रहेंगे तो काम में जो उत्साह आना चाहिये और जो वातावरण बनना चाहिए, वह नहीं बनेगा। अपने-अपने क्षेत्र का मोह छोड कर कार्यकर्ता एक क्षेत्र विशेष में ५०-६० कार्यकर्ता बैठें।

सायंकाल यद्यपि बूंदा-बांदी थी, फिर भी प्रार्थना-सभा में ५० हजार से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। इस सभा में प्रार्थना-प्रवचन करते हुए बाबा ने सारी जागतिक परिस्थिति का अवलोकन करते हुए कहा, "जो कशमकश आज दुनिया में चल रही है, वह कशमकश न तो रूस और अमेरिका की कशमकश है, न साम्यवाद और पूंजीवाद की कशमकश है, वह दिल और दिमाग की कशमकश है। हमारा दिमाग बड़ा बन गया है, लेकिन दिल छोटा ही रह गया।"

आगे बाबा ने कहा कि हमको बड़ा दिल बनाना होगा। इस वक्त दुनिया में कोई मसला स्थानीय या छोटा नहीं रह गया। छोटा से-छोटा मसला भी अन्तर्राष्ट्रीय बन जाता है। इसलिए आज सबसे बड़ी आवश्यकता है अक्षोभ चिन्तन की। बाबा ने आगे एक संदर्भ में बताया कि साइन्स के जमाने में हम तब लायक बनेंगे, जब गाँव कुटुम्ब बने, प्रान्त जिले बनें, देश प्रान्त बनें और समूचा विश्व देश बने।

पहले दिन से ही इन्दौर पहुँचने हो बाबा से मिलने वालों की संख्या बहुत बढ़ गयी। मुलाकातियों में राज्य के मंत्रीगण, राजनीतिक पार्टी के नेता, व्यापारी, पेन्शनर, शिक्षक, मजदूरों आदि के प्रतिनिधि एवं सामान्य नागरिक हैं।

नगर में भी बाबा के प्रातःकालीन कार्यक्रम में कोई अन्तर नहीं पड़ा। ठीक चार बजे विनोबा पदयात्री-दल पदयात्रा के लिए निकल पड़ता है। अन्तर इतना ही है कि पहले रोज नये गाँव में पहुँचने और नित्य नये स्थान में निवास होता था और अब शहर के विभिन्न वार्ड और मोहल्लों में पदयात्रा होती है और निवास निश्चित एक स्थान पर है।

दूसरे दिन की पदयात्रा नगर के पूर्वी क्षेत्र, मल्हारगंज छावनी क्षेत्र में हुई। वहाँ पर सुबह ६ बजे आयोजित एक विशाल सभा में बाबा ने सर्वोदय-पात्र की महान् शक्ति को बताते हुए कहा— 'अगर इन्दौर से मुझे रोज ८० हजार मुट्ठी अनाज मिलता है, तो जो मैं कहूँगा, वह सरकार को करना होगा। जब सब घरों में सर्वोदय-पात्र होंगे, तो जिस किसी भी पार्टी की सरकार बनेगी, उस पर सर्वोदय का असर होगा ही। राजनीति की जड़ें काटने की शक्ति सर्वोदय-पात्र में है। हम राज्य चलाने वाले नहीं हैं, पर राज्य हमारे वश में रहेगा। जिस प्रकार गाड़ी बैलों के कन्धे पर रहती है और लगाम आदमी के हाथ में रहती है, उसी प्रकार सर्वोदय भी राज्य-यंत्र का भार खुद नहीं उठाता, क्योंकि वह अक्लमंद है। इस प्रकार वह राज्य के भार से दबा नहीं रहेगा, फिर भी राज्य उसके कहे में रहेगा।"

इस प्रकार नित्य पदयात्रा चलती रहती है। जहाँ लोग सवेरे आठ बजे तक नहीं उठ पाते हैं, वहाँ अब बाबा के दर्शन के लिए और श्रवण के लिए चार-पाँच बजे ही उठ जाते हैं। सुबह ५॥ या ६ बजे इतनी इतनी बड़ी सभाएँ इन्दौर के लिए अभूतपूर्व हैं। हमारा ऐसा मानना है कि बाबा के आने से इन्दौर के नागरिक औसत एक घंटा जल्दी उठने लगे हैं।

इन्दौर आने के पूर्व ही बाबा ने 'स्वच्छ इन्दौर' बनाने का कार्यक्रम यहाँ के नागरिकों को दिया। श्री अप्पासाहब पटवर्धन के योग्य मार्गदर्शन से 'स्वच्छ इन्दौर' आन्दोलन अपनी जड़ें मजबूत करने लगा। विनोबाजी की उपस्थिति में नगर के प्रमुख नागरिकों की एक बैठक हुई, जिसमें यह तय किया गया कि १ अगस्त को लोकमान्य की पुण्यतिथि से एक 'स्वच्छता-सप्ताह' मनाया जाय, जिसमें सब लोग भाग लें। इस कार्यक्रम के सचालन के लिए एक सफाई-समिति भी बनायी गयी। बाबा भी अपनी प्रत्येक सभा में 'स्वच्छ इन्दौर' आन्दोलन के बारे में कभी कहना नहीं भूलते हैं।

बाबा कहते हैं : "लोग कहते हैं, इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाने के लिए बाबा यहाँ आये हैं। अगर बाबा काम करेंगे, तो बाबा का उदय होगा, इन्दौर का उदय नहीं होगा, सर्वोदय नहीं होगा। अगर सब लोग थोड़ी-थोड़ी बारिश की बूंद के समान कार्य करेंगे, तो महान शक्ति प्रकट होगी। सफाई के कार्यक्रम बच्चे, बूढ़े, पुरुष, स्त्री सभी इसमें भाग ले सकते हैं। अगर मैं मुक्ति का बड़ा कार्यक्रम निकालूंगा, तो दस-पाँच लोग उसके लिए मिलेंगे। जिसमें सब लोग भाग ले सकें— "वह वीर्य करवावहै।" इसमें अति पराक्रम की बात नहीं है, सब करते हैं, वही विशेष है।"

सर्वोदय-पात्र से जो निधि एकत्रित होगी, उसका विनियोग स्थानीय कामों में होना चाहिये, ऐसा आग्रह कुछ लोगों में पाया जाता है। एक सभा में बाबा ने बताया, 'सर्वोदय-पात्र के अनाज का उपयोग हमारे यहाँ होना चाहिये, यह दान-भावना के खिलाफ है। यह कोई सौदा नहीं है। बल्कि ऐसा विचार आना चाहिये कि इसका उपयोग हमारे लिए न हो। इससे अप्रत्यक्ष लाभ चाहे हमें मिल जाये और मिलेगा ही, किन्तु प्रत्यक्ष लाभ लेने का विचार उचित नहीं है।"

इसी सन्दर्भ में बाबा ने अहिल्याबाई की उदारता का जिक्र करते हुए कहा, "कोई पाँच साल पहले मैं बंगाल में घूम रहा था। एक बार हमें यह बताया गया कि जिस रास्ते पर आप चल रहे हैं, एक तो उस पर चैतन्य महाप्रभु चल चुके हैं। दूसरा, इस रास्ते को इन्दौर की महारानी अहिल्या देवी ने बनाया है। कहाँ से पैसा आया है? उसके खजाने में जो पैसा था, वह तो इन्दौर या महेश्वर का था, किन्तु उसका उपयोग सारे भारत में हुआ था। किसीने इस पर उज्र नहीं किया। उनका दिल और दिमाग छोटा नहीं था।"

इन्दौर में जो पहले दिन प्रार्थना-सभा हुई थी, उसमें बाबा अत्यधिक प्रभावित हुए। कई बार उसका जिक्र किया। एक जगह बाबा ने कहा, "यहाँ के प्रथम दिन की सभा का दर्शन अभूतपूर्व ही है। कितने लोग थे ? पर जब मैंने कहा—बैठ जाओ, तो झटपट सब बैठ गये। मौन के लिए कहा, तो इतनी चुप्पी कि कहीं कोई आवाज नहीं कोई बच्चे तक की आवाज बीच में नहीं आई। इतने सौम्य है, यहाँ के लोग। मैंने सोचा, ऐसा क्यों ? तो मुझे लगा कि यहाँ की हवा ही सौम्य है।"

* * *

विनोबाजी आजकल अक्सर यह कहते हैं कि अगर मुझे राज्य मिले तो मैं टैक्स नहीं लगाऊँगा और दान माँगूंगा। अगर दान नहीं मिलता है, तो मैं समझूंगा, स्वराज्य नहीं आया है, गुलामी है। यही मेरी स्वराज्य की कसौटी है।

यहाँ की नवनिर्मित 'नन्दा नगर' बस्ती की एक सभा में शांति-सेना की उत्कट आवश्यकता महसूस करते हुए बाबा ने कहा, 'जो लोग गांधी-विचार को मानने वाले हैं, सबको अपने काम के साथ शांति-सेना का काम उठा लेना चाहिए। जो शांति-सेना का काम नहीं उठाते, वे नमकहराम हैं।'

इसी तरह बाबा ने कहा, "ऋतं सत्यं च" ... संस्थाओं को चाहिये कि इच्छुक कार्यकर्ताओं को शांति-सैनिक बनने के लिए अनुकूल सुविधाएँ एवं इजाजत दें।

पदयात्रा

• जयपुर जिले के रींगस क्षेत्र की मातृ-मगन कंवर विद्यालय की बहनें अपने क्षेत्र में जो पदयात्रा कर रही थीं, वह अत्यंत सफलतापूर्वक चल रही है। गाँव-गाँव में पदयात्रियों का हार्दिक स्वागत हुआ और सर्वोदय-पात्रों की स्थापना, सर्वोदय-मित्र बनने की प्रतिज्ञाएँ आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। विद्यालय की गृहमाता श्री सौरी देवी और विद्यालय के आचार्य श्री दुर्गाप्रसादजी ने इस पदयात्रा का संचालन किया। पदयात्रा में मुख्य रूप से ग्राम-स्वराज्य का विचार लोगों को समझाया जाता है और उस ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए भूदान-ग्रामदान, शांति-सेना, सर्वोदय-पात्र आदि कार्यक्रम आवश्यक हैं, यह बताया जाता है।

•

बिहार की चिट्ठी

सच्चिदानंद

[विभिन्न प्रदेशों की मासिक चिट्ठियों से भिन्न भिन्न स्थानों पर काम करने वाले न केवल अपने साथियों के काम की जानकारी मिलती है, बल्कि उससे प्रेरणा तथा उत्साह भी मिलता है। इसलिए हमने सभी प्रांतों में एक-एक व्यक्ति पर यह जिम्मेदारी सौंपी है कि वे अपने प्रांत के काम की मासिक चिट्ठी बराबर भेजा करें। कुछ साथियों ने ऐसा करना आरंभ भी कर दिया है। इन पृष्ठों में बिहार की चिट्ठी दी जा रही है। अन्य साथियों से निवेदन है कि वे इसी तरह की चिट्ठियाँ तैयार करके भेजें। —सं०]

जुलाई माह में सर्वोदय-आन्दोलन की विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रगति बिहार के अनेक मोर्चों पर देखी गयी।

पटना नगर में श्रीमती प्रभावतीजी के नेतृत्व में परिवार-सम्पर्क का विशेष कार्य हुआ। कदमकुआँ मुहल्ले में जहाँ अनेक रचनात्मक संस्थाओं के कार्यालय हैं, यह काम सघन रूप से करने का निश्चय किया गया था। नगरों में हमारे काम का क्या स्वरूप हो, यह अभी पूर्णतः स्पष्ट नहीं हुआ है, तथापि पटना नगर में कुछ करने का प्रयास एक अर्से से चल रहा है। लेकिन अब तक कुछ विशेष नहीं हो पाया है। छिटपुट सर्वोदय-पात्र रखने का प्रयास मात्र हुआ, लेकिन उसका कोई उल्लेखनीय परिणाम नहीं निकल पाया है। विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को अपने दफ्तरी कामों से अवकाश कहाँ कि वे यहाँ सातत्य के साथ कुछ कर सकें। लेकिन प्रभावतीजी की प्रेरणा से नगर में तात्पर्यपूर्वक कुछ करने का निश्चय किया गया और २७ जून से ८ जुलाई तक लगातार उनकी पदयात्रा कदमकुआँ में चली। उनकी रहनुमाई में प्रतिदिन दो टोलियाँ परिवार-सम्पर्क के लिए निकलती थीं। एक टोली में वह स्वयं रहती थीं और लोगों के घर-घर पहुँचती थीं। प्रभावतीजी की टोलियों ने प्रत्येक घर में सर्वोदय का संदेश पहुँचाया। ये टोलियाँ बिना कोई अग्रिम सूचना दिये लोगों के घरों पर जा पहुँचती थीं। प्रत्येक टोली में कुछ भाई होते थे और कुछ बहनें भी। बहनें तो बेधड़क घरों के अन्दर दाखिल हो जाती थीं और कुछ ही मिनटों में परिवार की स्त्रियों से जान पहचान कर लेती थीं। भाइयों को तो तर्क और दलील का सामना करना पड़ता था। गांधी, विनोबा और जयप्रकाश के विचार, पक्षविहीन लोकतंत्र, लोकनीति आदि विषयों के सम्बन्ध में चर्चाएँ अक्सर होती थीं, और कुछ ही देर में उनसे सर्वोदय समाज का एक वैचारिक सूत्र स्थापित हो जाता था। प्रायः सभी परिवारों ने सर्वोदय-पात्र रखना स्वीकार किया। बिहार सर्वोदय-मंडल की ओर से घर-घर में सर्वोदय-पात्र वितरित करने का प्रबन्ध हो रहा है और आशा है, इस कार्यक्रम में अगले कुछ महीनों में अच्छी प्रगति हो सकेगी।

बिहार के ग्रामदानी गाँवों में निर्माण का कार्य संगठित ढंग से चल रहा है। बिहार सर्वोदय-मंडल ने इस काम के लिए एक ग्राम-निर्माण समिति बनायी है, जिसके संयोजक इस प्रदेश के एक तरुण कार्यकर्ता श्री त्रिपुरारि शरण हैं।

पिछले महीने में ग्रामदानी गाँवों के प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं के शिविर संथाल परगना, गया, पूर्णियाँ और पलामू जिले में आयोजित हुए। इन शिविरों ने तय किया कि ग्रामदानी गाँवों का विकास बाहरी साधनों की कम-से-कम मदद लेकर, अधिकाधिक स्थानीय शक्ति एवं साधनों से करने का प्रयास होना चाहिए। कृषि का उत्पादन बढ़ाने तथा अन्य आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में विकास की एक द्विवार्षिक योजना बनाने का निश्चय किया गया है। इस योजना के पूरी होने तक सामूहिक जीवन का एक अच्छा खासा रूप सम्बन्धित गाँवों में देखने को मिल सकेगा, ऐसी आशा है।

संथाल परगना के २३ ग्रामदानी गाँवों में निर्माण के काम अभी तक चल रहे थे। तय हुआ कि अगस्त माह से अन्य ९ गाँवों में भी निर्माण-कार्य शुरू कर दिया जाय। निर्माण की दृष्टि से इन ३२ गाँवों के दो खंड बनेंगे और प्रत्येक खंड में १६ गाँव होंगे। अभी तक जिले की प्रमुख रचनात्मक संस्था 'संथाल परगना ग्रामोद्योग समिति' के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में निर्माण का काम चलता रहा है। अब तय हुआ है कि भविष्य में यह काम उक्त संस्था द्वारा नियुक्त जिला निर्माण समिति करेगी।

गया और पूर्णियाँ जिले के क्रमशः ८ और १४ गाँवों में निर्माण का काम अभी चल रहा है। संथाल परगना तथा इन जिलों के अधिकांश ग्रामदानी गाँवों में निर्माण की योजनाएँ कार्यान्वित करने के लिए सर्वोदय सहयोग-समितियाँ गठित की जा चुकी हैं। जिन गाँवों में ये समितियाँ अभी नहीं बनी हैं, वहाँ बनायी जा रही हैं।

पूर्णियाँ जिले के एक चुने हुए क्षेत्र में ग्राम-स्वराज्य का एक सघन प्रयोग करने के सम्बन्ध में एक नौ सूत्री प्रस्ताव गत अप्रैल माह में भवानीपुर राजधाम नामक स्थान पर आयोजित पूर्णियाँ जिला सर्वोदय-सम्मेलन ने स्वीकृत किया था। उक्त प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिए गत ९ और १० जुलाई को बनमनखी में एक सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन श्री धीरेन्द्र मजुमदार की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन में कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी, समाजवादी और साम्यवादी दलों के प्रतिनिधियों के अलावा विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता शामिल हुए। सर्वसम्मति से इस सम्मेलन ने पूर्णियाँ जिला सर्वोदय-सम्मेलन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया और सभी दलों ने प्रस्तावित ग्राम-स्वराज्य के प्रयोग में हार्दिक योगदान करने का वचन दिया। पूर्णियाँ जिले में कुल ३२ थाने हैं। इनमें से नौ थाने (पूर्णियाँ सदर, धमदाहा, रुपौली, बरारी, मनिहारी(?), रानीगंज, कोढ़ा, बनमनखी, नरपतगंज) उक्त प्रयोग के लिए चुने गये हैं। इन नौ थानों की जनसंख्या ९ लाख है। बनमनखी-सम्मेलन के निर्णयानुसार इस पूरे क्षेत्र में ९० ग्राम-स्वराज्य-समितियाँ गठित की जायँगी। इन्हीं स्थानीय समितियों के मार्फत ग्राम-स्वराज्य का सघन प्रयोग चलेगा। यह अभिनव प्रयोग बिहार के सुप्रसिद्ध सर्वोदय-सेवक श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी के मार्गदर्शन में चलने वाला है। गत २० जुलाई से २९ जुलाई तक श्री चौधरीजी ने इस प्रयोग का शुभारंभ करते हुए धमदाहा थाने में पदयात्रा की। पदयात्रा के दौरान में आप कुल दस पड़ावों से गुजरे। प्रत्येक पड़ाव पर स्थानीय लोगों की एक सभा की और कुल मिला कर लगभग १० हजार लोगों को चौधरीजी ने बनमनखी-सम्मेलन के निर्णय की व्याख्या करते हुए ग्रामस्वराज्य का विचार समझाया। दस पड़ावों पर कुल दस क्षेत्रीय ग्रामस्वराज्य-समितियाँ गठित हुईं। आशा है, आगामी दिसम्बर माह तक श्री चौधरीजी शेष आठ थानों की पदयात्रा पूरी कर लेंगे और इस प्रकार उक्त समय तक बाकी अस्सी क्षेत्रीय समितियों का गठन भी हो जायेगा। पूर्णियाँ जिले के सार्वजनिक जीवन में ग्रामस्वराज्य के इस प्रयोग ने एक हलचल पैदा कर दी है।

ता० २३ जुलाई से २५ जुलाई तक मुंगेर जिले के असरगंज नामक स्थान पर भागलपुर डिवीजन के कार्यकर्ताओं का एक 'स्नेह-सम्मेलन' बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद के सभापतित्व में आयोजित हुआ। भागलपुर, मुंगेर, पूर्णियाँ और सहरसा जिले के लगभग ४० कार्यकर्ता इस सम्मेलन में शरीक हुए। इस प्रदेश में अपने प्रकार का यह दूसरा सम्मेलन था।

प्रमुख लोगों में अध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर प्रसाद के अलावा 'समन्वयाश्रम' के आचार्य राममूर्तिजी भी उपस्थित थे। इस मौके पर असरगंज बाजार में एक खादी भंडार का उद्घाटन हुआ। सम्मेलन में आन्दोलन के सम्बन्ध में कुछ बहुत ही अच्छी चर्चाएँ हुईं। सम्मेलन की व्यवस्था मुंगेर जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से की गयी थी।

ता० २६ और २७ जुलाई को मुंगेर में बिहार सर्वोदय मंडल की बैठक श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में हुई। यह नवगठित बिहार सर्वोदय-मंडल की यह दूसरी बैठक थी। बैठक में सभी जिला सर्वोदय-मंडलों के संयोजक, अध्यक्ष और मंत्री, सर्व सेवा संघ के सभी जिला-प्रतिनिधि और लोकसेवकों द्वारा निर्वाचित मंडल के अन्य सदस्य तथा कार्यकर्ता शरीक हुए। प्रमुख लोगों में श्री जे० पी० के अलावा बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष श्री रामदेव ठाकुर, श्रीमती प्रभावती देवी, आचार्य राममूर्ति तथा मंडल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद उपस्थित थे। आरंभ में मंडल के संयोजक ने पिछले छह महीनों के कार्यों का एक प्रतिवेदन बैठक के समक्ष पेश किया। श्री जे० पी० के शब्दों में यह "एक सुंदर प्रतिवेदन" था। सर्वसम्मति से यह प्रतिवेदन स्वीकृत किया गया। इसके बाद बिहार शान्ति सेना-समिति के संयोजक श्री विद्यासागर सिंह ने अपनी सिक्किम यात्रा की एक लंबी रिपोर्ट पेश की। यह रिपोर्ट क्या थी, भोले-भाले सिक्किम-निवासियों के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन की एक जीती-जागती कहानी थी, जिसमें यात्रा के मीठे-मीठे अनुभव मनोमुग्धकारी भाषा में सजाये गये थे। इस रिपोर्ट को सुनने के बाद सिक्किम यात्रा की उपयोगिता सबने महसूस की और यह सोचा गया कि अन्य सीमांत प्रदेशों में भी बिहार सर्वोदय-मंडल की ओर से शांति-सैनिकों की टोलियाँ भेजी जानी चाहिए। सीमा-सुरक्षा का सबसे ठोस हल इन्हीं शांति-यात्राओं के माध्यम से निकलने वाला है।

बैठक का मुख्य विषय सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम कैसे आगे बढ़ाया जाय, इस पर विचार करना था। आवश्यक चर्चा के बाद यह तय हुआ कि भविष्य में छिटपुट सर्वोदय-पात्र न रखवाये जायँ। जहाँ हमारे आन्दोलन के कुछ काम हो रहे हैं या होने वाले हैं, वहीं सर्वोदय-पात्र रखवाने का कार्यक्रम चले, अन्यत्र नहीं। यह सोचा गया कि जब तक संगठित और सघन रूप से यह कार्यक्रम नहीं चलेगा, तब तक इससे कोई परिणाम नहीं निकलने वाला है।

अन्त में श्री जयप्रकाशजी ने अपनी विदेश-यात्रा के अनुभवों पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने बताया कि किस प्रकार भारत के लंदन स्थित मित्रों के द्वारा विद्रोही नागा नेता "फिजो" से उनकी मुलाकात लंदन में करायी गयी। इटली में "कांग्रेस फार कल्चरल फ्रीडम" नामक संस्था के दसवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन और बर्लिन में आयोजित १० वीं वर्षगाँठ-जयंती के कार्यक्रमों पर भी आपने प्रकाश डाला। श्री जे० पी० की विदेश-यात्रा का वर्णन रोचक और महत्त्वपूर्ण था। बैठक में उपस्थित लोगों का वैदेशिक मामलों में एक खासा अच्छा शिक्षण भी हो गया। २७ जुलाई की संध्या में मुंगेर में ही एक विशाल आमसभा आयोजित हुई, जिसमें श्री जे० पी० का एक महत्त्वपूर्ण भाषण हुआ।

●

सब प्रमाणित खादी-संस्थाओं के नाम

खादी-पक्ष का आयोजन

खादी के नये कार्यक्रम के संबंध में सर्व-सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति की ओर से प्रकाशित निवेदन का मुख्य तत्त्व यह है कि खादी को अब लोकशक्ति के माध्यम से लोक-जीवन में प्रवेश कराना है। प्रवेश ही नहीं कराना है, बल्कि खेती और पशुपालन के साथ मिला कर खादी को नई तालीम की धुरी बनाना है और नई तालीम को क्रांति के वाहन का रूप देना है। यह काम आसान नहीं है। लेकिन इसी में सर्वोदय-क्रांति का मुख्य तत्त्व छिपा हुआ है, यह भी स्पष्ट है। इसलिए कठिन और सरल का ध्यान छोड़ कर हम सबके क्रांति की सिद्धि में जुट जाने का समय आ गया है। बापू के स्वप्न की क्रांति की मुख्य जिम्मेदारी हम खादी कार्यकर्ताओं पर है। खादी, ग्राम-जीवन के सौर-मंडल का सूर्य है। सारे रचनात्मक कार्यों में अपने जीते जी बापू खादी को सबसे ज्यादा संगठित कर सके और जाने से पहले उसके भावी विकास की स्पष्ट दिशा भी बता गये। सबसे अधिक वे इसे लोकमानस में जो स्थान दे गये, वह आज भी हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। इस तरह यह हम लोगों का गौरव है कि हमें सर्वोदय की क्रांति में आगे चलने का अवसर मिला है। हमें दूसरों को अपने साथ लेना है, न कि दूसरों की प्रतीक्षा करनी है।

हमने खादी को 'नया मोड़' देने का निश्चय किया है। नये मोड़ में संगठन, प्रचार आदि की कई जटिल समस्याएँ हैं, लेकिन इन सबसे बढ़कर समस्या है लोक-शिक्षण की। स्वराज्य के पिछले वर्षों में हम ने ग्राम-निर्भरता की वृत्ति खो दी। आज जरूरत इस बात की है कि दोबारा केंद्र मान कर गाँव गाँव में पंचायत द्वारा, सहकारी समिति-अथवा ग्राम-राज्य समिति के द्वारा गाँव का सामूहिक संकल्प प्रकट किया जाय। खादी सबसे पहले विचार की भूखी है। उसे विचार मिल जाय, तो उसकी जो शक्ति स्वराज्य के लिए प्रकट हुई थी, वही ग्राम-स्वराज्य के लिए प्रकट हो सकती है। गाँव-गाँव विचार पहुँचाने की जिम्मेदारी हमारी है। हमें यह मान लेना चाहिए कि आज खादी की जो स्थिति हो गयी है, उसका एक मुख्य कारण यह है कि हमने खादी के शास्त्र और दर्शन का सही चित्र जनता के सामने नहीं रखा। लाखों की संख्या में कत्तिनें, बुनकर और दूसरे कारीगर हमारे साथ रहे हुए हैं। हमने उनसे काम लिया और थोड़ा-बहुत उनको पैसा दिया, लेकिन उन्हें क्रांति का सिपाही बनाने की बात हमारे मन में कभी नहीं आयी। यही कारण है कि आज हम खादी का थोड़ा-सा स्टाक भी नहीं बेच पा रहे हैं और हमारा मन खादी के संबंध में तरह-तरह की आशंकाओं से भरा रहता है। यहाँ तक कि हम कभी-कभी अपना आत्म विश्वास भी खोते हुए दिखायी देते हैं।

मेरे मन में एक बात आ रही है। मैं सोचता हूँ कि इस बार 'चरखा-जयंती' के अवसर का इस्तेमाल हम लोग विचार-प्रचार के लिए करें। खादी-ग्रामोद्योग का, ग्राम स्वावलंबन का नया विचार लोगों के पास कैसे पहुँचाया जाय, यह आपके सोचने की बात है। लेकिन जनमन जगाना है और उसे संगठित करना है, इसमें दो राय की गुंजाइश नहीं है। खादी-कमीशन ने ११ सितंबर से २१ अक्टूबर तक खादी पर विशेष छूट देने की सिफारिश सरकार से की है। छूटियाँ भी बेची जायेंगी। जनमन जागृत करने में इससे सहायता मिलेगी। सुझाव के तौर पर कुछ बातें नीचे लिख रहा हूँ :

(१) १७ सितंबर (चरखा-द्वादशी) से २ अक्टूबर (गांधी-जयंती) तक १५ दिन का खादी-पक्ष मनाया जाय।

(२) हर खादी भंडार और केंद्र इन १५ दिनों में अपने सेवा-क्षेत्र के हर गाँव या मुहल्ले में पहुँचने की कोशिश करें तथा व्यक्तिगत संबंधों, गोष्ठियों या सभाओं द्वारा जनता के सामने खादी का नया विचार रखें। यह लोकसम्मति प्राप्त करने की प्रक्रिया है। खादी को ग्राम-स्वराज्य की भूमिका में प्रस्तुत किया जाय और खादी के साथ साथ सर्वोदय का समग्र कार्यक्रम समझाया जाय। कहीं भी खादी को एकांगी कार्यक्रम का स्वरूप न दिया जाय।

(३) ग्रामीण क्षेत्र के केंद्र १७ सितम्बर* से समारोह के साथ खादी-यात्राएँ निकालें। जैसा छोटा बड़ा क्षेत्र चुना जाय, उसके अनुसार एक या दो बैलगाड़ियों पर खादी, साबुन, तेल, चरखा, रुई आदि तथा सर्वोदय-साहित्य रख लिया जाय और तीन से लेकर पाँच कार्यकर्ताओं की टोली उसके साथ हो ले। पहले से हम १५ दिनों का पड़ाव तय रखें। सुबह तड़के चल कर एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव पर पहुँचें। अगर समय रहे, तो पहुँचने के बाद दोपहर के पहले और नहीं तो तीसरे पहर कंधों पर खादी लेकर गाँव में परिवार संपर्क के लिए निकलें। शाम को पाँच बजे सभा हो, जिसमें प्रार्थना के बाद खादी का विचार समझाया जाय। वस्त्र स्वावलंबन के संकल्प पर विशेष जोर दिया जाय। गाँव के मुखिया, सरपंच तथा पंचायत के दूसरे सदस्यों से भी कहा जाय कि वे अपने विचार लोगों के सामने रखें।

(४) खादी-यात्रा के कारण मुख्य भंडार को बंद करने की जरूरत नहीं है, बल्कि जिस गाँव या शहर में भंडार हो, उसमें १५ दिन के अंदर भंडार अधिक-से-अधिक परिवारों से संपर्क करें और यह कोशिश की जाय कि अपने ग्राहकों में से कुछ उत्साही मित्र संपर्क, प्रचार और बिक्री के काम में सहयोग करें। अन्तिम दिन क्षेत्र की कत्तिनों, बुनकरों, खादी-प्रेमियों तथा अन्य मित्रों की बड़ी सभा बुलायी जा सकती है और स्थानीय खादी-ग्रामोद्योग-समितियों का गठन किया जाय।

(५) इस अवसर पर कुछ परचे, पोस्टर आदि भी छापे जा सकते हैं।

सभी संस्थाओं से मेरी प्रार्थना है कि आप "खादी-यात्रा" निकालने का आयोजन करें, और देश भर में हजारों टोलियाँ निकालें।

—ध्वजाप्रसाद साहू

*खादी-समिति की ओर से १२ अगस्त को भेजे गये परिपत्र में गलती से २ अक्टूबर से खादी-यात्रा निकालने का लिखा गया है। वास्तव में १७ सितम्बर से ही खादी यात्रा निकालनी है।

मासिक चिट्ठियाँ

असम प्रदेश की चिट्ठी

असम सर्वोदय-मंडल के निर्णय के अनुसार १ जून से गुवाहाटी शहर में सघन पदयात्रा के द्वारा सर्वोदय का संदेश घर-घर पहुँचाने की कोशिश की जा रही है। सबसे पहले शहर के प्रमुख लोगों को लेकर एक केन्द्रीय सर्वोदय-सहायक समिति का संगठन किया गया, जिसमें सभी राजनीतिक पक्षों के नेता और दूसरे प्रमुख नागरिक भी सदस्य हैं। इसके अलावा हर मुहल्ले में एक-एक मुहल्ला-सहायक समिति भी बनाई गयी। इन समितियों के जिम्मे विशेष काम याने पदयात्री टोली के भोजनादि की व्यवस्था तथा उन-उन मुहल्लों में सभा करने का प्रबन्ध करना आदि है। इस कार्यक्रम में कुल २१ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया है।

नगरपालिका के पदाधिकारियों के सहयोग से रोज एक घंटा सफाई का काम होता है। आधा घंटा सूत्र-यज्ञ करते हैं, एक घंटा शिविर। शिविरों में सर्वोदय के विभिन्न विषयों पर अलग-अलग लोगों के द्वारा कार्यकर्ताओं के लिए भाषण का आयोजन रहता है। सुबह तीन घंटे और शाम को दो घंटे जनसंपर्क। जनसम्पर्क के लिए जाते समय ३-४ कार्यकर्ताओं की एक-एक टोली बना ली जाती है। घर-घर जाकर पहले परिवार के सुख-दुःख की बातें, फिर उन दुःखों को दूर करने के बारे में सुझाव। भूदान, सम्पत्ति-दान, ग्राम-दान, शान्ति-सेना, सर्वोदय-पात्र वगैरह के बारे में समझाने पर जो भाई सर्वोदय-पात्र रखना चाहते हैं, उनसे सम्मति दान-पत्र भरवाते हैं। हर घर में एकाध ही पुस्तक क्यों न हो, सर्वोदय-साहित्य बेचने की कोशिश की जाती है और भूदान-यज्ञ के ग्राहक बनाने की भी कोशिशें चलती हैं।

एक-एक समर्थ परिवार ३ से ५ तक कार्यकर्ताओं को दोनों वक्त प्रेम से खिलाता है। कुल मिला कर यह अनुभव आता है कि सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को लोग प्यार और आदर की दृष्टि से देखते हैं।

एक एक वार्ड में हमको ५ से ७ दिन तक समय लगता है। हर मुहल्ले में रोज शाम को ६ बजे आम सभा होती है।

ता० २१ से २७ जून तक श्री दादा धर्माधिकारी के कार्यक्रम गुवाहाटी में रखे गये थे। उनके भाषणों का सब वर्गों के लोगों पर काफी असर पड़ा और गुवाहाटी में एक अच्छा वातावरण भी बन गया था। लेकिन राज्य भाषा सम्बन्धी प्रश्नों के कारण यहाँ जो झगड़ा चल रहा है, उसके लिए अपना काम कुछ दिनों तक बंद रख कर शहर में शान्ति कैसे स्थापित की जाय, इसकी कोशिश में हम रहे।

इस मास में हमने १२२४ परिवारों के साथ सम्पर्क किया। ७१९ रु० की सर्वोदय-साहित्य-बिक्री की। ३०० घरों में सर्वोदय-पात्र स्थापित किये। ३४ महिलाओं ने 'सर्वोदय-मित्र' की हैसियत से काम करने का वचन दिया।

इसके अलावा जहाज घाट के करीब हजार-मजदूरों ने मासिक तीस नये पैसे का 'वालन्टरी टैक्स' देने की इच्छा प्रकट की।

शिवसागर : २८ जून को शिवसागर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने मिल कर सारे क्षेत्र के २९ प्राथमिक सर्वोदय-मंडलों के बीच ७ प्रेमक्षेत्र बनाने का निश्चय किया। हर प्रेम-क्षेत्र में १०० परिवारों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क होगा। २ अक्टूबर से शिवसागर शहर में तीन मास के लिए एक सघन पदयात्रा का कार्यक्रम शुरू होने वाला है। उसके लिए पूर्वतैयारी करने के लिए एक समिति का भी संगठन किया गया। अब तक शिवसागर-क्षेत्र में प्राप्त की हुई जमीन का बँटवारा तीन मास के अन्दर समाप्त करने के लिए प्राथमिक सर्वोदय-मंडलों ने निर्णय किया।

उत्तर लखीमपुर : उत्तर लखीमपुर जिले में भी इसी प्रकार के रचनात्मक काम करने का निश्चय किया गया है। अब तक की प्राप्त जमीन का वितरण और सम्पत्ति दान संग्रहित करने का काम तीन कार्यकर्ताओं के जिम्मे किया गया। २ अक्टूबर से ४ मास तक चलने वाली प्रान्तीय सघन पदयात्रा की पूर्वतैयारी करने के लिए एक समिति बनाने का और एक पुस्तिका प्रकाशित करने का भी निर्णय किया गया।

जोरहाट : जोरहाट जिले में भी सर्वोदय पात्र तथा खादी-ग्रामोद्योग केन्द्र की स्थापना हो चुकी है। ग्राम-स्वावलम्बन की ओर भी कदम बढ़ाये गये हैं।

—खगेश्वर भुइयाँ

[पृष्ठ ६ का शेष]

रूस में नेहरू के प्रति प्रशंसा का भाव मुझे कूटनीतिक कारणों से अधिक लगा। मेरा खयाल है, रूसी नेतृत्व में विशिष्ट स्थान रखने वाले लोग यह समझते हैं कि भारतवर्ष में कांग्रेस के संगठन पर ऐसे लोगों का प्रभुत्व है, जो अमेरिका के साथ गाँठ-जोड़ रखने में यकीन रखते हैं। जवाहरलाल नेहरू की व्यक्तिगत लोकप्रियता है। इसी लोकप्रियता के कारण कांग्रेस उन्हें अपना नेता बना कर चलती है, यद्यपि नेतृत्व उनके नहीं देती और पंडित नेहरू इससे संतुष्ट हैं। इस माहौल में साम्यवादी देश नेहरू को पकड़ रखना चाहते हैं, ताकि तटस्थता का ऊपरी आवरण तो कम-से-कम बना रहे। यदि भारत आज स्पष्ट रूप से अमरीकी गुट में शामिल हो जाये, तो यह शीतयुद्ध में रूस के लिए बड़ी भारी हार होगी। यही वजह है कि पण्डित नेहरू गाहे-बगाहे भारतीय साम्यवादियों पर बिराबर प्रहार करते रहते हैं, किन्तु हिंदुस्तानी साम्यवादी दल कांग्रेस की निरन्तर गाली देते रहने पर भी पं० नेहरू की प्रशंसा के गीत गाता रहता है और उनकी नीति को एक महानतम नीति घोषित करता है।

श्री मुखर्जी के साथ भारत-चीन विग्रह का भी जिक्र हुआ। वे चीन हो आये हैं। उन्होंने बताया कि चीन में ऐसी असाधारण शक्ति प्रादुर्भूत हुई है कि देख कर दंग रह जाना पड़ता है। दर असल उन्हें वहाँ ऐसा प्रचण्ड योग देखने में आया, जिस पर आँखें ठहर नहीं पातीं, चौंधिया कर, छटक कर अलग हट जाती हैं। उनके मतानुसार चीन थोड़े ही काल में रूस से कहीं आगे बढ़ जायगा। इसी प्रसंग में उन्होंने भारत-चीन सीमा-विवाद को एक ऐसी सीमा-समस्या माना जो उनके विचार में शीघ्र ही ठीक हो जायगी। वे इस बात को विशेष महत्त्व नहीं देते।

अन्त में उन्होंने प्रसंगवश एक बात और कही, जिससे केवल श्रोता होते हुए भी मैं अचकचा-सा गया। उनके विचार से भारत को आजादी मिलने में परोक्ष रूप से रूस का मुख्य हाथ है। गत महायुद्ध में रूस के असाधारण पराक्रम के कारण साम्राज्यवादी ताकतों की कमर टूट गई। उन्हें चाहे वे किसी पक्ष में रहे हों, अपनी निर्बलता के कारण अनेक देशों से अपने शासन समेट लेने पड़े। यही भारत में भी हुआ। हम लोग, जो गांधीजी के अहिंसात्मक आन्दोलनों और उनकी अहिंसा की नीति को भारत की स्वतन्त्रता-प्राप्ति का श्रेय देते हैं, यह सही नहीं है और अवैज्ञानिक भी है। यह [illegible] लगा जैसे अचानक ही नई बात हो।

ग्राम-स्वराज्य की दिशा में

ग्राम-स्वराज्य आश्रम

११ सितम्बर, सन् १९५९ में 'ग्राम-स्वराज्य आश्रम' की स्थापना आजमगढ़ जिले की फूलपुर तहसील में हुई, जिसका ध्येय अहिंसक तरीकों से जन-जीवन को जागृत करने तथा उस मानस को ग्राम-स्वराज्य की ओर उन्मुख करने का रहा है। तदनुसार इस संस्था ने उपर्युक्त क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र मान कर वहाँ कार्य किया।

विचार-प्रचार की दृष्टि से इस क्षेत्र में अब तक ५ प्राथमिक सर्वोदय-मंडलों का संगठन किया गया है, जिसमें लगभग ५० लोक-सेवक संगठित रूप से कार्य कर रहे हैं। सभी केन्द्रों पर स्वाध्याय-मंडलों का भी संगठन हुआ है। सभी केन्द्रों पर 'भूदान-यज्ञ' पत्रिका लोक-सेवकों द्वारा मँगायी जाती है। कार्यकर्ताओं द्वारा सर्वोदय-विचार सम्बन्धी पुस्तकें भी अध्ययन करने की दृष्टि से बाँटी जाती हैं। अब तक ६०० सर्वोदय-पात्र केन्द्र के अन्तर्गत चल रहे हैं। इन सर्वोदय-पात्रों से पैंतालीस रुपये के अन्न की वसूली हुई। इसी तरह प्रयत्न होता रहा, तो निकट भविष्य में सर्वोदय-पात्रों में काफी प्रगति हो सकती है। माह अप्रैल से जुलाई, सन् १९६० तक कुल ६६ गुंडी सूत कताई हुआ।

सघन काम की दिशा में

राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, शिवदासपुरा ने खादी और ग्रामोद्योगों के काम को सघन रूप देने की दिशा में प्रयत्न आरम्भ किया है। अपने पास के चार गाँव—शिवदासपुरा, चंदलाई, बरखेड़ा और मालिया को अपने प्रायोगिक क्षेत्र के रूप में चुना है। सर्वेक्षण कार्य विद्यालय की ओर से चालू है। शिवदासपुरा गाँव का सर्वेक्षण किया जा चुका है।

शिवदासपुरा, ९८ कृषक परिवार, ३० मजदूरी पेशे वाले, २४ व्यापार करने वाले, १९ चर्म-उद्योग में लगे, १५ नौकरी पेशे वाले, ९ तेलघानी में लगे, ५ सिलाई पेशे वाले, ४ अन्य उद्योग वाले, ३ बढ़ई के काम वाले, २ गोपालन में लगे तथा ७ भिक्षा माँगने वाले, कुल २१८ परिवार में १४६६ व्यक्तियों का छोटा-सा गाँव है। गाँव के पास कुल २८१० बीघा १२ बिस्वा भूमि है, जिसमें से २,५१४ बीघा ५ बिस्वा भूमि में कृषि होती है। बाकी भूमि तालाब, कुएँ, बस्ती और रास्ते के अलावा गोचर है। सिंचाई के मुख्य साधन कुएँ और तालाब हैं। गाँव में कुल २७ परिवार भूमिहीन हैं।

कृषि और अन्य उद्योगों के जरिये गाँव की कुल सालाना आमदनी २,४५,१०० रुपये है। गाँव का सालाना कुल खर्च १,९५,२९० रु० है। इसके अलावा गाँव में ८९,३६५ रु० सालाना मिल-वस्त्र, १४८० रु० की खादी और प्रति व्यक्ति औसत ८ रुपया ब्याज पर खर्च होता है।

गाँव में ४ शिक्षण-संस्थाएँ काम कर रही हैं, जिनमें औद्योगिक प्रशिक्षण-केन्द्र राजस्थान खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, स्वास्थ्य-केन्द्र की दृष्टि से एक बाल-मन्दिर तथा ज्ञानार्जन की दृष्टि से एक माध्यमिक शाला और एक कन्या पाठशाला है।

इसके अलावा गाँव में एक महिला-उद्योगशाला है। एक सार्वजनिक पुस्तकालय, भारती खादी-ग्रामोद्योगों का उत्पादन और बिक्री-केन्द्र, राजकीय औषधालय आदि कल्याणकारी संस्थाएँ हैं।

घर घर में सर्वोदय-पात्र पहुँचा कर स्वावलम्बन, कताई और शिक्षण का सन्देश पहुँचाने [illegible] पदयात्राएँ हो चुकी हैं।

ग्राम-स्वराज्य की ओर

सीकर जिला खादी ग्रामोद्योग समिति के तत्वावधान में मडोली गाँव में एक सभा हुई। उसमें इस बात पर जोर दिया गया।

सीकर जिला खादी-ग्रामोद्योग समिति के अध्यक्ष श्री लादूराम जोशी ने मडोली गाँव में आयोजित एक सभा में कहा कि जो लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण आज यहाँ हो रहा है, यदि उसमें पार्टीबन्दी और दलगत राजनीति का विष घुल गया, तो इस देश के लिए प्रजातन्त्र का रास्ता ही बन्द हो जायेगा। आपने बताया कि पंचायतों के चुनाव निर्विरोध होने चाहिए, क्योंकि उन्हीं पंचायतों को [illegible] अधिकार दिये जायेंगे। [illegible] पार्टी न हो और विरोध न होगा।

जहाँ गाँव बसते हैं, वहाँ के लोग यदि [illegible] आगे आयेंगे, तो गाँवों का काम ज्यादा दिन नहीं टिक सकेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि कम-से-कम स्थानीय लोग उसे स्वराज्य अपनायेंगे।

इस अवसर पर ग्रामवासियों ने तय कर यह संकल्प किया कि पूरा गाँव दो वर्ष में वस्त्र-स्वावलम्बी हो जायेगा और यथासंभव ग्रामोद्योग वस्तुओं का उपयोग करेगा।

पदयात्रा

[illegible] क्षेत्र की पंचदिवसीय सर्वोदय-पदयात्रा १० जुलाई से आरम्भ हुई। इस बीच में १०० मील चल कर ३० गाँवों में पदयात्रा हुई। २३५ सर्वोदय-पात्रों की स्थापना हुई तथा गाँवों से ४० सर्वोदय-मित्र प्राप्त हुए।

इसके बाद एक सभा का आयोजन हुआ, जिसमें भूदान-कार्य की प्रगति, अनुशासनपूर्ण अहिंसक क्रान्ति के लिए शांति-सैनिकों तथा सर्वोदय की [illegible] योजना पर प्रकाश डाला गया।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,८८६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,९१६
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति : १३ नये पैसे

... के बिना स्वाधीनता सुरक्षित नहीं रहेगी!

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी, शुक्रवार २६ अगस्त, '६० वर्ष ६ : अंक ४७

पंजाब छोड़ने के बाद हम यहाँ पूर्वनिश्चय के अनुसार मिल रहे हैं, इससे बहुत ...री होती है। इस बीच कई घटनाएं भारत में हुईं, जिनका असर हिन्दुस्तान के ...वरण पर रहा है। कई घटनाएँ दुनिया में भी हुईं, जिनका असर काम कर रहा है। ...जाब छोड़ने के थोड़े ही दिनों बाद चंबल-घाटी में प्रवेश किया और रामायण की तरह ...क 'सुंदर कांड' हमारे जीवन में हुआ। इसका असर भारत पर हुआ, और हम जानते ...कि पंजाब पर विशेष हुआ; क्योंकि हमने अभी हाल ही में पंजाब छोड़ा था। इसके बाद ...न्ती-आंदोलन का एक नया रूप सामने आया, जो अभी चल ही रहा है। उसकी ...ना भी भारत में है। फिर असम में एक बहुत बड़ा कांड बना, जिससे हम सबको ...र्मिन्दा होना पड़ा है! इसके बहुत बुरे असर पड़े हैं। केवल असम और बंगाल पर ही नहीं, बल्कि सारे भारत पर उसका असर हुआ। उसकी भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाएँ ...देश भर में आज चल ही रही हैं। वहाँ पर अभी तक शांति-स्थापना नहीं हुई है। ...जो पहले का आवेश था, वह कुछ हद तक जरूर कम हुआ है, लेकिन मामला खड़ा है। ...फिर सारे देश में सरकारी कर्मचारियों की हड़ताल हुई। ईश्वर की कृपा थी कि वह पाँच दिन से ज्यादा नहीं चली। वैसे भी वह ज्यादा चलने वाली थी ही नहीं। उसने हमको खतरे के स्थान कहाँ-कहाँ हैं, उसका भान कराया। ये कुछ घटनाएँ हैं, जो ...पने देश में हुईं।

देश-दुनिया की समस्याएँ और हम

विनोबा

अभी नागाओं का एक प्रान्त बन रहा है, यह भी एक विशेष घटना है। ऐसे तो हिन्दुस्तान में नागा प्रदेश था ही। हिन्दुस्तान में जैसे अनेक सूबे बने हैं, वैसे वह भी बना है। इतना ही उसमें नहीं है, एक बहुत बड़ा कांड है। एक नागा प्रान्त बना और शांति की स्थापना होगी, तो अपने देश के लिए अच्छा रहेगा।

दुनिया में बड़ी-बड़ी घटनाएँ हुईं, जिनका असर भी भारत पर काफी हुआ है। शिखर-सम्मेलन टूट गया। उसके टूट जाने से दुनिया का बहुत सारा मनोरथ ही टूट पड़ा। यह दुःख की बात है कि चन्द लोगों की दिमागी हरकतों पर दुनिया की शान्ति और भलाई निर्भर हो। ऐसा नहीं होना चाहिए। लेकिन आज यह है। दुनिया की शान्ति की स्थापना को मजबूत बनाने वाली जो कुछ आशाएँ थीं, वह शिखर-सम्मेलन भंग होने से पूरी नहीं हो पायी। ...ज से हम बिल्कुल ज्वालामुखी पर ही बैठे हैं! किसी भी समय कुछ भी हो सकता है। फिर ये छोटी-छोटी और बातें हो रही हैं। अफ्रीका के देश जाग रहे हैं। दुनिया पर उन सबका असर पड़ता है। ...सके पुराने सपने तो कायम हैं ही। नये ...सपने पैदा हुए हैं और पुराने कायम हैं। ऐसी हालत में हम हैं, अब आपके सामने ...मने यह सारी बिल्कुल विश्व-व्यापक और भारत-व्यापक पृष्ठभूमि रखी है। वह इसलिए कि हम थोड़े हैं, बहुत ज्यादा तादाद में नहीं हैं, लेकिन फिर भी जिम्मेदारियाँ हम पर बहुत बड़ी हैं। और उन जिम्मेदारियों को अगर कुछ अंश में भी हमें पूरा करना है, तो इन सब चीजों पर हमारा चिंतन-मनन होना चाहिए तथा जो भी कदम हम उठायें, वह उस दिशा में उठना चाहिए।

"भूमि-समस्या जैसी समस्या भूदान से हल नहीं हो सकती। यह एक दया का काम है। दया की भावना पैदा करके यह काम नहीं हो सकता।"—इस प्रकार खुलेआम कुछ मिनिस्टर बोले, जिनके प्रतिनिधियों ने येलवाल-सम्मेलन में भूदान-ग्रामदान में श्रद्धा दिखायी थी। मैं पूछता हूँ कि मान लीजिये, दया और करुणा से समस्या हल नहीं होगी, तो क्या वह समस्या कानून और दंड के रास्ते से हल होगी? कतल न तो मैं चाहता हूँ और न आप। इस रास्ते से दुनिया का कल्याण नहीं होगा। क्या यह मसला कानून से हल किया जा रहा है? हो रहा है? यह आप मुझे बतलाइये। यह नहीं हो रहा है और नहीं होगा। प्लैनिंग कमीशन ने भी यही कहा था। फिर इस समस्या को हल करने का कौनसा रास्ता रह जाता है? करुणा की एक छोटी-सी राह है, इसीको चौड़ी बनायी जाय। देश के और दुनिया के कल्याण के लिए यही करुणा और दया की राह रह जाती है।

यह तो मानना ही पड़ेगा कि भूदान का काम एक हद तक रुक गया है। जिस हद तक हुआ है, यह सोचते हुए कि बहुत कम लोग थे, बहुत अच्छा काम हुआ, ऐसा कह सकते हैं। फिर भी यह कार्य एक हद तक आकर रुक गया, यह बात माननी पड़ेगी। यह बात हमारे लिए सोचने की हो जाती है। लोगों ने आशा की थी कि हम यह समस्या हल करेंगे। उन्होंने यह आशा इसलिए रखी थी, क्योंकि हमने वह आशा पैदा की थी। अब जब अपना काम ही रुका, ऐसा मालूम होता है, तो दूसरों की आशाएँ टूटेंगी और श्रद्धा कम होगी ही। यह हम सबके लिए सोचने की बात है कि हम पर क्या-क्या जिम्मेदारियाँ हैं। ऐसा देखा गया कि सर्वोदयवालों के लिए जितनी आज लोगों में मानसिक अनुकूलता है, वह आठ-दस साल पहले नहीं थी, यह तो स्पष्ट ही है। ऐसी हालत में जो जनता में सहानुभूति है, आशा है, उसके लायक हमको हो जाना चाहिए। ऐसा विचार हमको करना चाहिए कि हम एक विश्व-व्यापक मिशन के वाहन हैं। हम अगर यही समझें कि हममें ताकत कम है, लेकिन हम एक विश्व-व्यापक 'मिशन' के वाहन हैं, तो हम आगे बढ़ सकते हैं। जितनी ताकतें, जितने अंश में और जिस ढंग से हमको योग दे सकती हैं, उतनी ताकतों का उस अंश में और उस ढंग से हमको योग हासिल करना चाहिए।

पंजाब में मैंने यह समझाने की कोशिश की थी कि कुछ लोग गांधी-निधि, कुछ भूदान में और कुछ रचनात्मक या निर्माण-कार्य में हैं। इतने ही भाई दूसरी जगहों पर भी हैं : कोई सरकार में है, कोई म्युनिसिपालिटी में है, कोई अपना धन्धा भी करते हैं और कोई कोर्ट में है। ऐसे अलग-अलग जगह हमारे लोग पड़े हैं। उन सबका हमको योग हासिल करना चाहिए। पहले मानना चाहिए कि यह 'मिशन' है। इसके बजाय अगर हम यही मानें कि हम सारा कार्य कर रहे हैं और उसके लिहाज से सोचें, तो कुछ-न-कुछ हवा बनती जायेगी, लेकिन उस 'मिशन' के लायक हम साबित नहीं होंगे।

हमको यह महसूस करना चाहिए कि पंजाब में जो कुछ समस्याएँ हैं, उन समस्याओं के बावजूद पंजाब के दिल के टुकड़े न हों, इसकी जिम्मेवारी हम पर है। असल में जो कुछ हो रहा है, उससे पंजाब के साथ कोई ताल्लुक नहीं है, यह मानें तो वह गलती है। जिन कारणों से यह चीज हुई है, उसकी जिम्मेवारी हम पर भी है। इसी तरह जो-जो घटनाएँ हिन्दुस्तान में होती हैं – हड़ताल हुई तो यह सोचना चाहिए था कि हम लोग खड़े हैं जगह-जगह, और लोगों को मदद दे सकते हैं, दे रहे हैं, थोड़ा मार्गदर्शन भी दे रहे हैं – यह सब जिम्मेवारी हम पर थी और है। आपको मालूम हुआ होगा कि हमने उस समय एक विचार जाहिर किया था कि हड़ताल का जो विचार है, वह चलता ही रहेगा पैसा है तब तक। इसलिए एक परिवार के लिए जितना अनाज चाहिए, उतना अनाज और ऊपर से थोड़ी तनख्वाह दे देनी चाहिए। इससे जीवन में स्थिरता आती है। जैसे पैसे का भाव ऊँचा-नीचा होता चला जायगा, वैसे चीजों के भाव बढ़ते जाते हैं, तो मनुष्य को तकलीफ भोगनी पड़ती है। इसलिए कुल पचपन लाख सरकारी नौकरों को महीने में कुछ अनाज और कुछ तनख्वाह दी जाय, यह एक छोटा-सा प्रस्ताव है। लेकिन यह सुझाव जहाँ आया, वहाँ इस पर विचार कौन करे? सरकार, पार्टीवाले और हम भी इस पर विचार करें। इसलिए ऐसे प्रश्न जब देश के सामने आते हैं तो सोचना चाहिए। जहाँ-जहाँ हमारा कुछ चलना है, वहाँ-वहाँ क्या हो सकता है, उतना सोचें। यह मैंने एक मिसाल दी। इस प्रकार हर मसला जो खड़ा होगा, उस पर सोचने की हमारी

पत्रकारों की जिम्मेदारी

"इस समय हमारे देश में यदि सबसे अधिक किसी चीज की जरूरत है, तो एकता की है। इस एकता को कायम करने में अखबार और पत्रकार बहुत मदद कर सकते हैं। आज हमारे देश के बड़े-बड़े नेता आपस में बच्चों की तरह लड़ते हैं। पार्टियाँ भी बुरी तरह से आपस में लड़ती हैं। यदि पत्रकार भी लड़ाने का ही काम करेंगे, तो कैसे चलेगा? इन सबको जोड़ने का, एकता तथा प्रेम पैदा करने का उत्तरदायित्व अखबारों पर है। लोकतंत्र में अखबारों का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। मुझे अखबारों ने काफी सहयोग दिया है। मेरे बारे में वे अनुकूल, प्रतिकूल टीका अवश्य करें। लेकिन फूट पैदा न करें। इधर पाकिस्तान के साथ हमारा जैसा प्रेम-संबंध होना चाहिए, वैसा नहीं है। उधर चीन की समस्या है। देश के अंदर भी बहुत समस्याएँ हैं। इन सबका हल हम सबको मिल कर प्रेम से करना है। लड़ेंगे, तो टूटेंगे।"

—विनोबा

जिम्मेवारी है कि क्या उस मसले से हम कोई लाभ उठा सकते हैं ? उससे हम आगे बढ़ सकते हैं ?

रूहानियत आयेगी और सियासत जायेगी, ऐसा मैंने कहा था। पंजाब छोड़ने के बाद लोगों ने मुझसे पूछा कि सियासत जायगी याने क्या ? यह विचार ए गया कि बाबा ने एक ऐसी बात कही, जो सोचने के लायक है। पंजाब के लिए मजहब जायेंगे और रूहानियत आयेगी, ऐसा कहने से मसलों का हल मिलता है। वहाँ पर सिक्ख हैं, आर्य-समाजी हैं, जैन हैं, मुसलमान भी हैं—ये सारी कौमें हैं और पुराने काल से आज तक इन सारी कौमों का झमेला चल रहा है। इन सबका संबंध पंजाब से रहा है और यह सब चलता हो आ रहा है। हम तो रूहानियत को चाहते हैं, इसलिए मजहब को खत्म होना चाहिए। रूहानियत 'पॉजिटिव' है। हरएक मजहब को एक-एक स्थान दे दो, यह एक छोटी चीज है। रहना है, तो सबके साथ आदर से रहना चाहिए। इसलिए अब तो ब्रह्म विद्या के दिन आये हैं, रूहानियत के दिन आये हैं। इससे एक प्रेरणा मिलती है। आज ही एक सिक्ख भाई हमसे एक बात कहने के लिए आये थे। उन्होंने पंजाबी सूबे का प्रश्न हमारे सामने रखा। हमने कहा कि सारे मजहबों को जाना चाहिए।

चायना और हिन्दुस्तान का मसला है। आप क्या समझते हैं ? बीच में तीन हजार मील की सीमा आती है। हिमालय दोनों को रोकता था। अब उसने रोकने का वह काम कर देने से इन्कार किया। इस साइन्स के जमाने में वह यह काम नहीं कर सकता। अब तो आपको एक-दूसरे से संपर्क करना ही है, फिर चाहे प्रेम से करो या लड़कर। जब तक आप कायम हैं, तब तक वह संपर्क रहेगा। वहाँ पर अब लोग बसती करने लगे, इससे हमको और आप सबको खुशी होनी चाहिए कि हमारा संपर्क हो रहा है। भले ही उसमें थोड़ी कटुता आ रही है, लेकिन उससे हमारे दिमाग को नये सिरे से सोचने का मौका मिला। आज वे हैं तो हम हैं और हम हैं तो वे हैं। जज्बा पैदा करने से मसला हल नहीं होता। हमने हिम्मत के साथ एक चित्र रखा है देश के सामने। कम्युनिस्टों के पेपर में हमारे उस भाषण की फुल-की-फुल रिपोर्ट आई थी और अन्य पेपरों में हमारे उस भाषण का सारांश आया है। हमने निर्भय होकर यह बात बतायी। यह कम्युनिस्टों का झगड़ा नहीं है। अगर इसे आप कम्युनिस्टों का झगड़ा मानेंगे, तो रशिया से नाहक ही झगड़ा मोल लेंगे। कुछ लोग इसे 'चायनीज एक्सपेन्शनिज्म' (चीन का विस्तारवाद) मानते हैं, यह भी गलत है। पच्चीस हजार स्क्वेअर मील उनके हाथ में हैं और तीन हजार मील लम्बी रेखा है। वह सारा मुल्क पहाड़ों से भरा हुआ है। जब आप लोगों ने वहाँ पर रास्ता बनाया और जीप वहाँ पहुँची, तो वहाँ के लोगों ने समझा कि वह किस किस्म का जानवर है ? जब वहाँ नजदीक पहुँचे, तो उन्होंने उसे टटोला। तो फिर पता चला कि यह जानवर नहीं है, यह तो मनुष्य की ही करामात है ! अब तक तिब्बत से उनको नमक वगैरह मिलता था और इस तरह उनके बीच व्यापार वगैरह भी चलता था। लेकिन वह हिस्सा आपके क्षेत्र में आता है। आप वहाँ पर पहुँचे नहीं, लेकिन वे पहुँच गये। यह बात अगर पाँच हजार साल पहले होती, तो आपको पता भी नहीं चलता और आप अपना काम करते रहते। मेरे कहने का यह मतलब है कि इसमें सियासत नहीं आनी चाहिए, 'साइंटिफिक जजमेंट' (वैज्ञानिक निर्णय) होना चाहिए। चायना में साइन्स पैदा हुआ है, तिब्बत में नहीं हुआ; इसलिए चीन वाले उसको वहाँ पहुँचा रहे हैं। जिस किसी के जरिये साइन्स वहाँ पहुँचता है, वह वहाँ का अधिकारी हो जाता है। इससे कुछ असर होता है। इस पर हम सोचें। यानी 'क्लेम' छोड़ दें, ऐसी बात नहीं हिम्मत रखें। सारा देश एक बनायें, आपस-आपस के मत भेद को मिटा दें और पार्टी-भेदों को भी मिटायें। हड़ताल, हड़ताल, देशव्यापी हड़ताल करेंगे, दूसरे झगड़े भी करते रहेंगे, लेकिन चायना का हमला हुआ तो हम सब एक होकर डट कर विरोध करेंगे। तो भाइयो, फिर हम सब हमले के पहले ही क्यों न एक हो जायें ? हड़ताल किया—न—किया कि चायना के अखबारों ने आपको धन्यवाद दिया ! एक छोटा-सा किस्सा बना, उसका फौरन असर हुआ। भारत सरकार विरुद्ध भारत सरकार के नौकर ! अब इससे वे लोग फायदा उठाना चाहते थे, लेकिन नहीं उठा पाये। तो सार यह कि आप सियासत जहाँ-जहाँ करेंगे, वहाँ-वहाँ मार खायेंगे। इसलिए सियासत को बजाय हम साइन्स को बढ़ावा देना चाहते हैं। साइन्स को बढ़ावा देना तो हम ही चाहेंगे, क्योंकि अहिंसा में ही वह परिणाम होगा। हिंसा साइन्स को बढ़ावा दे नहीं सकती, क्योंकि उससे दुनिया नष्ट होगी।

[पंजाब कार्यकर्ता-शिविर,
इंदौर; ८ अगस्त, '६०]

पुलिस की आत्मीयता !

रामजी

जैसा हम पहले कभी नहीं अनुभव करते थे, पुलिस की निगाह में आज हमारे प्रति फरक पड़ा है। वे समझने लगे हैं और बड़ी श्रद्धापूर्वक मानने लगे हैं कि विनोबाजी का चम्बल-घाटी का शान्ति-कार्य सारे देश के लिए एक गौरव की बात है। निम्नलिखित कुछ प्रसंगों पर से ऐसी अनुभूति हुई है, अतः आपके सामने रख रहा हूँ।

"भुवाली" जिला नैनीताल में ८ जून को उत्तर प्रदेश अखण्ड सर्वोदय-पदयात्रा टोली का पड़ाव था। ३ या ४ बजे संध्या का समय रहा होगा, जब कि साहित्य-बिक्री के लिए शहर में हम लोग निकले थे। भुवाली का अच्छा-खासा खुला चौराहा, उस पर तैनात पुलिस का एक सिपाही। आवाज देकर मुझे बुलाया। अपनी ओर मुड़ने की खास इच्छा न पाकर दुबारा, तिबारा बुलाया और कहा कि 'भाई, हमें भी कुछ बताइये, कहाँ जा रहे हैं, क्या लिये हैं' आदि।

मैं रुका, बीच चौराहे पर खड़ा हो गया। परिचय के सिलसिले में जब विनोबाजी का नाम सुना, तो उसका चेहरा बदलने लगा। बहुत प्रसन्न मुद्रा में विनोबा के चम्बल-घाटी के शान्ति-कार्य की सराहना करते हुए उसने सहानुभूति प्रकट की और अपने एक दूसरे साथी (सिपाही) को भी बुलाया 'अरे भाई, आओ ये विनोबाजी के आदमी आये हुए हैं, इनसे कुछ बातें करो।' यह प्रसंग पहले से भी अधिक प्रभावित निकला। प्रश्नोत्तर चल ही रहे थे। इनकी वजह से मेरा काम आसान हो गया, क्योंकि इनके सवालों का बहुत कुछ उत्तर तो उन्हीं से मिल जाता था। बीच चौराहे पर बड़ी दिलचस्प चर्चा हुई। इसलिए लगभग आध घंटा समय दिया। फिर वापस लौटा।

दूसरा प्रसंग : १६ जून, जिला पीलीभीत का प्रथम पड़ाव। स्वागत में स्थानीय क्षेत्र-विकास अधिकारी और नागरिक वेश में थानेदार भी। स्वागत में सभाओं में वैसे तो अधिकारी और थानेदार आते रहे हैं, पर पुलिस की खुद की इच्छा से अपने ही आँगन में आयोजित गोष्ठी का इस पदयात्रा-काल में यह पहला ही मौका था, जिसमें हम लोगों को बुलाया गया।

संध्या की आम सभा करने के बाद थाने में गोष्ठी के लिए हम लोग चले। थाने का पूरा 'स्टाफ' अन्य ब्लाक के कुछ भाई और दो-चार नागरिक भी उपस्थित थे। बड़े प्रेम और सौहार्दपूर्ण वातावरण में गोष्ठी प्रारंभ हुई। प्रश्नोत्तर शुरू हुए।

प्रश्न : आज जनता और पुलिस के आपसी संबंध काफी बिगड़ चुके हैं। एक दूसरे का एक-दूसरे पर विश्वास नहीं रह गया है। इसलिए सही काम में मदद नहीं मिलती। बहुत फर्जी काम करने पड़ते हैं। निकट भविष्य में भी आपसी सम्बन्ध सुधरने के कोई लक्षण नहीं दीखते। ऐसी हालत में पुलिस का भविष्य क्या है ? हमारी 'सर्विस' का क्या होगा ?

उत्तर : बहुत ठीक सवाल है। इस पर पूरी सफाई होनी चाहिए। इस विभाग का भविष्य अन्धकारमय है, पर आप लोगों का भविष्य उज्ज्वल है। विभाग खत्म हो जायगा, पर आपकी 'सर्विस' की आवश्यकता कायम रहेगी।

बाबा ने शान्ति-सेना का एक नया काम दिया है। शान्ति-सेना का काम होगा, देश में शान्ति-स्थापना करना। जो काम आपको सौंपा गया है—शान्ति-स्थापना का, वही यह काम है। जो लोग शान्तिसैनिक बनेंगे, वे हर समय 'होल-टाइम' याने शान्ति-काल में जनसेवा का कार्य करेंगे, लोगों से संपर्क रखेंगे, उनकी हालतों से परिचित होंगे और उनकी आज की हालत में सुधार हो, इसका बराबर प्रयास करेंगे। इस प्रकार प्रेम का वातावरण पैदा करेंगे। जब अशान्ति का मौका आयेगा, यानी आपस में झगड़ा होगा, तो बीच में पड़ कर अपनी जान भी देकर झगड़े को शांत करेंगे।

इस काम में आज बहुतों की आवश्यकता है। आप लोग भी शान्ति-स्थापना के कार्य में अच्छी तरह काम दे सकते हैं। बाबा ने इसके लिए पुलिस और मिलिट्रीमेन का आवाहन किया है। विभाग से अलग होकर जब इस काम को उठायेंगे, तो आपकी इज्जत बढ़ेगी।

प्रश्न : यह तो बड़ा कठिन काम है। हम लोगों से यह कैसे होगा ?

उत्तर : कठिन जँचता है, तो कोई हर्ज नहीं। पर सही जँचना चाहिए। अगर आपको शान्ति-स्थापना का यह तरीका (शान्ति का तरीका) सही और व्यवहार्य जँच गया, तो आधी फतह हो गयी। ऐसा विश्वास हो जाने पर आपका अगला पाँव जगह पा गया, जम गया—ऐसा समझें। अब देर है केवल पिछला पाँव उठाने की।

अब तक शान्ति के लिए भय, कानून, डंडे और राइफल, सबका प्रयोग करके देख लिया और हर क्षेत्र में अच्छी तरह 'फेल' भी होकर देख लिया। अब सिद्धांत और अमल, दोनों में हमारा वह साधन नाकामयाब साबित हो चुका, तो हमारा विश्वास इस साधन से उखड़ना ही चाहिए और जब विश्वास उखड़ा, तो पिछला पाँव भी उठा, आगे के लिए। एक ओर से विश्वास हटाइये और दूसरी ओर विश्वास जमाइये।

इस प्रकार कई प्रश्न हुए, उत्तर भी दिये गये। काफी हद तक समाधान भी हुआ। अंत में उनकी पूरी सम्मति मिली। प्रश्नों से लगता है कि चम्बल की घटना से पुलिस सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के निकट आयी है। बड़े आत्मीय भाव से निःसंकोच कोई भी सवाल वह हमारे सामने रख सकती है। 'हाई लेवेल' पर जो अनुभव आया उससे यह अनुभव बिल्कुल भिन्न है। कहाँ एक तरफ आलोचना और कहाँ यह समर्थन ! मनुष्य जब तक अपने स्वार्थों और अधिकारों से अलग होकर किसी मसले पर नहीं सोचता, तब तक उसका सही हल वह ढूँढ़ नहीं सकता। श्री रामजी ने इस संबंध में जो वक्तव्य दिया है, उससे लोगों को सच्चाई में जाने का मौका मिला और सर्वोदय की ओर से सब बातों को खोल कर रख देने का एक अवसर प्राप्त हुआ है। इसमें हार-जीत का सवाल तो है ही नहीं। समस्या सुलझाने का सवाल है। यदि एक तरीके से वह नहीं सुलझी, तो दूसरे तरीके से सुलझायेंगे, तीसरे से सुलझायेंगे।

भूदानयज्ञ

अीन्दौर में !

सर्वोदय-वीचार अेक वीश्व-व्यापक वीचार है। जो काम हमने सोचा है, वह सब लोगों को कीस तरह ग्राह्य हो, अैसी योजना हमको करनी चाहीये। आप देखते हैं की अीन्दौर में मैं पड़ा हूँ। चातुर्मास में वीश्राम करने के लीये मैं यहां पर नहीं आया हूँ। चातुर्मास में वीश्राम करना चाहीये; तदनुसार पीछली बार दो महीना वर्धा और दो महीना काशी में मैं बैठा था। बारीश में कीस तरह से यह सब करूंगा, अीसका अनुभव अुस वक्त नहीं था, अीसलीये मैंने वीश्राम लीया था। अुसके बाद बारीश में कहीं भी नहीं रुका हूँ। चाहता हूँ की कोअी अेक शहर, कोअी अेक जीला या जीले का अेक हीस्सा हमारी पकड़ में आये और वहां हमारा जो शासन-मुक्ती का वीचार है, अुसका दर्शन हो। तुरंत ही शासन-मुक्ती नहीं होगी, पर अुसका दर्शन हो। कोर्ट, पुलीस आदी की जो बुनीयादी चीजें हैं, अुनकी जीम्मेवारी हम स्वयं अुठा लें। अपनी समीतीयां हैं और फैसले दीये जा रहे हैं, लोग अुन्हें मान रहे हैं, तो फीर लोगों को कोर्ट और पुलीस आदी की जरूरत नहीं पड़ेगी। अीसके लीये हमारी पकड़ में अेक शहर अीस तरह आना चाहीये की वहां सरकार की ओर से संरक्षण और न्याय की कोअी जरूरत बाकी नहीं रहती है।

(अीन्दौर, ८-अगस्त) —वीनोबा

*लिपि-संकेत: ि = ी; ु = ू; ए = अे; संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

"छोटी-छोटी" बातें

[हम 'बड़ी-बड़ी' बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों की तरफ हमारा ध्यान बिल्कुल नहीं जाता। उनकी ओर ध्यान देना हमें हमारे 'बड़े-बड़े' कामों से ध्यान बंटाने जैसा लगता है। पर हम भूल जाते हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों से ही हमारी आदत और जीवन के संस्कार बनते हैं। "छोटी" बात का एक छोटा-सा उदाहरण लीजिये।]

भूदान-पदयात्रा के सिलसिले में एक दिन तीसरे पहर हम लोग एक गाँव में पहुँचे। गाँव के स्कूल में हमारे टिकने का इन्तजाम था। स्कूल बस्ती के बीच में ही था—दो छोटे छोटे कमरे और एक बरामदा। हम पहुँचे तो अध्यापक महोदय ने हमारा अभिवादन किया और गाँव के छोटे-छोटे बालक हमें घेर कर खड़े हो गये। कुछ मिनट बाद मैंने एक लड़के से पूछा कि मुझे पेशाब करना है, उसका इन्तजाम कहाँ किया है? पहले तो वह लड़का समझा नहीं कि मैं क्या कह रहा हूँ। मैंने दुबारा समझा कर कहा और पेशाब करने के लिए कहाँ जाऊँ, यह पूछा। मेरे इस सवाल पर आसपास खड़े हुए लड़के एक-दूसरे की तरफ देख कर हँसने लगे। फिर एक ने कहा—'पेशाब यहीं बाहर कर लीजिये, पेशाब करने के लिये भी अलग जगह होती है क्या?' और फिर वे लड़के हँसने लगे।

उन लड़कों की बात ठीक थी। हमारे गाँवों में और गाँवों के घरों में शायद ही कहीं पेशाब के लिये कोई निश्चित स्थान या इंतजाम होता है। पाखाने के लिये भी बहुत कम जगह, कोई व्यवस्था होती है। अधिकांश गाँवों में लोग—स्त्री, पुरुष, बच्चे—घरों से निकल कर गाँव की गलियों में या रास्ते के आसपास कहीं भी शौच के या पेशाब के लिये बैठ जाते हैं। इसीलिये उन लड़कों से जब मैंने पूछा कि पेशाब कहाँ करूँ, तो उन्हें हँसी आई कि यह अजीब शख्स गाँव में आया है, जो पेशाब के लिये भी जगह पूछता है! टट्टी-पेशाब के लिये भी क्या कोई इंतजाम की जरूरत है?

यह छोटी-सी घटना जाहिर करती है कि हम जीवन के प्रति कितने लापरवाह हो गये हैं और कैसे जीवन की कला भूलते जा रहे हैं। पाखाना-पेशाब, खाने पीने जितनी ही महत्त्व की चीज है, इसका भान हमें नहीं रहा है। फलस्वरूप इन बातों का ठीक इंतजाम न होने से एक तरफ तो हमारे घरों में और आसपास गंदगी का साम्राज्य छाया रहता है, बीमारियाँ बढ़ती हैं और दूसरी तरफ, जो इससे भी ज्यादा चिन्ता की बात है वह यह कि चूँकि पाखाने-पेशाब का उचित उपयोग प्रकृति के जीवन-चक्र को चलाने के लिये अत्यन्त महत्त्व का है, इसलिये उसके इस उपयोग की व्यवस्था के अभाव में जमीन के उपजाऊपन और जीवन-चक्र कायम रहने के काम में बड़ी बाधा पड़ रही है। अभी उस दिन विनोबा ने इन्दौर नगर के 'महापौर' (नगर-पिता) से पूछा तो उन्होंने बतलाया कि करीब ५ लाख की आबादी वाले उस शहर की नगरपालिका का सालाना बजट ८५ लाख रुपये का है, जिसमें मल-मूत्र, कूड़े आदि का जो आर्थिक उपयोग खाद के रूप में होता है, उससे पालिका को करीब ५० हजार रुपये की आमदनी होती है। विनोबा ने उन्हें बतलाया कि अगर ५ लाख व्यक्तियों के मल-मूत्र का ठीक उपयोग खाद बनाने के काम में हो, तो प्रति व्यक्ति साल भर में छः रुपये के हिसाब से सिर्फ मल मूत्र से पालिका को ३० लाख रुपये सालाना आमदनी हो सकती है। जापान में आज इस तरह घर घर के मल-मूत्र का उपयोग करने की व्यवस्था है। शहरों में तो फिर भी मुश्किल हो, पर गाँवों में तो मल-मूत्र का खाद बनाने की व्यवस्था आसानी से हो सकती है। यह बात जाहिर करती है कि जबकि तो हम हमारे सार्वजनिक कामों के लिये और विकास-कार्यों के लिये दिन-ब-दिन टैक्स बढ़ाते जाते हैं पर जो लक्ष्मी सहज प्राप्त हो सकती है, उसके बारे में लापरवाह हैं।

पर इन छोटी-छोटी बातों की तरफ हमारा ध्यान जाय तब तो! —सिद्धराज

•

अपराधों का जिम्मेदार कौन?

मध्य प्रदेश पुलिस के सबसे बड़े अधिकारी श्री रुस्तमजी ने इस वर्ष के प्रथम तीन माह के अपराधों का लेखा-जोखा प्रकट करते हुए पत्रकारों से कहा कि सन् '६० के जनवरी, फरवरी, मार्च माह में सारे प्रान्त में १८,७७२ वारदातें पुलिस में दर्ज हुईं, जिनमें सेंध तथा चोरी की वारदातों की संख्या १०,९९८ थी। इसका अर्थ यह होता है कि ६० प्रतिशत अपराध इसी प्रकार के हैं। उन्होंने एक बात और भी इसी बैठक में कही—

"इस वर्ष में भाव बढ़ जाने से अपराध की स्थिति भी बढ़ी थी।"

यह बात बहुत महत्त्व की है। पिछले वर्ष फसल के पहले गेहूँ के भाव ३०-३२ रु० मन तक पहुँच गये थे, जब कि इस वर्ष २०-२२ रु० मन का भाव था। इस प्रकार अनाज के भावों पर अपराध की स्थिति बहुत अंश तक निर्भर रहती है। ऐसी स्थिति में अपराध किसका माना जाय? जो चोरी करते हैं, अथवा जो अन्न के भावों को ऊँचा करने के जिम्मेदार होते हैं?

सबक यह निकलता है कि समाज में अन्न और प्राथमिक आवश्यकता सुलभ भावों पर प्राप्त हो। इसका प्रयत्न करना सबका प्रथम कर्तव्य होना चाहिए, अन्यथा हम एक सामाजिक अपराध करने के जिम्मेदार होंगे, जिसका फल भुगतना पड़ता है, व्यक्तिगत अपराधियों को।

—देवेन्द्र कुमार गुप्त

•

जिद की पराकाष्ठा

जब किसी भी देश की सरकार सारी सभ्य दुनिया की बात मानने से इन्कार करके अपनी अन्यायपूर्ण और गलत नीति पर अड़ जाय, जैसे कि दक्षिण अफ्रीका की सरकार, तो दूसरे देशों के सामने सिवा असहकार के अपनी असहमति या नाराजगी प्रकट करने का दूसरा कोई सौम्य उपाय नहीं रहता है। इस असहकार के कई रूप हो सकते हैं। ऐसे राष्ट्र से व्यापार का सम्बन्ध विच्छेद कर लेना असहकार के सौम्य तरीके का भी एक सौम्य रूप है। जैसा पंडित जवाहरलालजी ने अभी याद दिलाया, हिन्दुस्तान की सरकार ने दक्षिण अफ्रीका की रंग-भेद की अन्यायपूर्ण और सभ्यताविरोधी नीति के खिलाफ आज से तेरह बरस पहले ही उस देश से अपने कूटनीतिक और व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ दिये थे। अभी पिछले मार्च में दक्षिण अफ्रीका में जो अत्याचार की घटनाएँ घटीं, उनके कारण फिर से सारी दुनिया में वहाँ की सरकार के खिलाफ तिरस्कार और नाराजी की एक लहर दौड़ गयी। मलाया और घाना, इन दो देशों ने भी दक्षिण अफ्रीका से सारे सम्बन्ध विच्छेद कर लिये हैं। घाना ने तो दक्षिण अफ्रीका से सारा व्यापार बंद करने के अलावा दक्षिण अफ्रीका के उन नागरिकों के लिये, जो अपनी सरकार की रंग भेद की नीति के खिलाफ घोषणा न करें, अपने बन्दरगाह और हवाई अड्डे भी बंद कर दिये हैं। पंडित जवाहरलालजी ने बतलाया है कि भारत सरकार ने दो महीने पहले अन्य देशों को भी सुझाव दिया है कि वे दक्षिण अफ्रीका की सरकार की नीति के खिलाफ अपना मत प्रकट करें और उस देश का व्यापारी बहिष्कार भी करें, जैसा घाना और मलाया ने किया है। आशा है, दक्षिण अफ्रीका की सरकार यह महसूस करेगी कि अपनी अन्यायपूर्ण नीति पर कायम रहने की उसकी जिद ने सारी सभ्य दुनिया की अन्तरात्मा को चोट पहुँचायी है और अगर वह इसी तरह अपनी जिद पर अड़ी रही, तो अपने आपको सभ्य समाज में बैठने के नाकाबिल साबित करेगी और दुनिया के देशों को इस बात के लिये मजबूर करेगी कि उसके खिलाफ सामूहिक बहिष्कार का भी कदम उठाया जाय।

—सिद्धराज ढड्ढा

पश्चिम का प्रभाव : एक विश्लेषण

डा० धनंजयराव गाडगिल

उन्नीसवीं शताब्दी में योरोप के लोगों ने संसार भर में जोरों से आक्रमण किया। इस आक्रमण के पीछे आर्थिक और वैज्ञानिक शक्ति का सहारा था, जो औद्योगिक क्रांति के कारण हर तरह से समृद्ध थी। इस औद्योगिक और आर्थिक विकास के कारण आक्रमण करना आसान हुआ और साथ ही इस विकास को आगे चालू रखने के लिये इस प्रकार का आक्रमण आवश्यक भी था और पोषक भी। यानी नई उत्पादन-शक्ति और विज्ञान-संबंधी जानकारी का अधिकाधिक उपयोग कर लेने के लिये यह जरूरी था कि समूचे संसार की अर्थ व्यवस्था उसे व्याप्त कर ले। जहाँ योरोपवासियों की राजनैतिक-सत्ता नहीं थी, वहाँ भी उनकी अर्थनीति प्रचलित थी। जापान राजनैतिक दृष्टि से तो स्वतंत्र था, परन्तु वह उस स्वतंत्रता को तभी टिका पाया, जब कि उसने योरोपियनों की अर्थनीति का अनुकरण किया और उनकी अर्थ-व्यवस्था में पूरी तरह शामिल हुआ। इस दृष्टि से योरोप के लोगों का व्यापक प्रभाव राजनैतिक पहलू की अपेक्षा आर्थिक पहलू में अधिक था और सर्वव्यापी था।

इन सबका मूल कारण था पाश्चात्यों की वैज्ञानिक प्रगति। इसीसे क्या शस्त्रास्त्रों में, क्या कृषि और औद्योगिक उत्पादन में तथा हर तरह के यातायात के साधनों में, इनमें बहुत बड़ा परिवर्तन हो पाया। इन मामलों में पाश्चात्य अधिक प्रभावशाली हुए, और वे स्वयं यह दावा करने लगे कि संसार भर की प्राकृतिक सम्पत्ति का उपयोग हम अधिक अच्छी तरह कर सकते हैं और इसलिए संसार के भले के लिये ही, सारी पृथ्वी पर हमारी ही सत्ता चलनी चाहिये। पश्चिम के देश गत दो शताब्दियों से बहुत शक्तिशाली और समृद्धिशाली हुए। यह सामर्थ्य और समृद्धि वहाँ की जनता के जीवन में, जीवन के सभी अंगों में दीखने लगी। विज्ञान की प्रगति के कारण उनके शस्त्रास्त्रों का पलड़ा भारी हुआ, उनकी धाक जमने लगी। आबादी की वृद्धि के साथ-साथ नई-नई उपभोग्य वस्तुओं का उत्पादन भी बड़े परिमाण में होने लगा, यातायात अधिक तेज रफ्तार से चलने लगा और सस्ता होने लगा। इससे हर जगह की चीजें आसानी से उपलब्ध होने लगीं। इसी वैज्ञानिक प्रगति के कारण शिक्षण, आरोग्य और मनोरंजन के साधनों में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। एक जमाने में जो सुविधाएँ बड़े बड़े रईसों के लिये दुर्लभ थीं, वे जनसाधारण के लिये उपलब्ध कराना अब आसान हुआ।

पाश्चात्यों की राजनैतिक सत्ता आज कम होती जा रही है। एशिया और अफ्रीका के छोटे-बड़े देश स्वतन्त्र होकर अपना राज्य अपनी बुद्धि से चलाने लगे हैं। फिर भी दूसरों के समूचे जीवन पर पाश्चात्यों का जो सिक्का जमा हुआ है, वह कोई घटा हो, ऐसा नहीं दीखता। इसका कारण यह है कि उन पाश्चात्यों का जो प्रभाव गत दो शताब्दियों से रहा था, वह उनकी राजनैतिक या आर्थिक सत्ता पर आधारित नहीं था। वैज्ञानिक प्रगति के कारण योरोपीय समाज और राष्ट्र सम्पन्न और शक्तिशाली हुए। असल में योरोपियन लोगों के प्रभाव की सही बुनियाद यही है। इसलिए वैज्ञानिक प्रगति को, मूल विज्ञान की तरक्की को ही इसकी मूल शक्ति माननी होगी। अर्थात् योरोपीय समाज की इस वैज्ञानिक प्रगति के भी मूल कारण की हम खोज करने लगें, तो उस समाज में कुछ विशिष्ट गुणों का विकास, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में नई कल्पनाओं का प्रादुर्भाव और उससे पैदा होने वाली नई व्यवस्था और संस्थाएँ आदि बातों का भी ध्यान रखना होगा। योरोपीय वैज्ञानिक विकास के प्रसार के साथ-साथ आर्थिक और राजनैतिक कल्पना और व्यवस्था का भी प्रसार काफी हुआ और संसार में वह स्वीकृत भी हुआ। इससे यह पता चलता है कि आधुनिक विज्ञान और आधुनिक समाज की कल्पना व व्यवस्था का बहुत निकट संबन्ध है।

यह मुमकिन नहीं कि पाश्चात्यों की राजनैतिक सत्ता आज भी ज्यों-की-त्यों बनी रहे बल्कि यह अधिक सम्भव है कि दूसरे देश जैसे-जैसे प्रगति करते जायँ, वैसे-वैसे पाश्चात्यों का आर्थिक प्रभाव भी कम होता जाय। परन्तु ऐसा नहीं दीखता है कि पाश्चात्यों के विज्ञान और संस्कृति का प्रभाव कहीं कम हो सकता हो। थोड़े में कहना हो, तो यही कहा जा सकता है कि दिन-ब-दिन इसका क्षेत्र तो बढ़ ही रहा है और अ-योरोपीय समाज-जीवन के सभी पहलुओं पर अधिकाधिक इन्हीं की सत्ता चलती आ रही है, यह भारत में अधिक साफ दीखता है। पाश्चात्यों के शास्त्रों को हमने पूरे तौर से अपनाया है। यातायात, कृषि और औद्योगिक उत्पादन आदि के मामले में, अपनी गरीबी को ध्यान में रखते हुए भी, हमसे जितना बन सकता था, उतना अनुकरण हम कर रहे हैं। रुपये-पैसे और बैंकों की व्यवस्था, उद्योगपतियों और मजदूरों का संगठन आदि में हम उनके कदम पर कदम रख कर चले हैं। हमारा शासन-तन्त्र भी ब्रिटिशों के बनाये ढाँचे के अनुसार ही चल रहा है। यही नहीं, बल्कि आजादी मिलने के बाद से, हमने अपने विधान का स्वरूप और उसमें निर्दिष्ट मूलतत्त्व आदि सभी कुछ पाश्चात्यों के पास से ही, उद्देश्य-पूर्वक उठा लिये हैं। हमारे रोजमर्रा के निजी जीवन में भी योरोपियनों की संस्कृति का ही सिक्का जमा हुआ है। हमारे घर, घरों के अन्दर के सामान, घरों की सजावट, हमारा खान-पान, हमारी पोशाक, ये सब भी दिनों दिन अधिकाधिक मात्रा में युरोपियनों के ही समान होता जा रहा है। अखबार और सिनेमा आदि मनोरंजन के साधन भी उधर से ही आये हैं। हमारी सारी शिक्षण-व्यवस्था भी पाश्चात्यों के रंगढंग व कल्पनाओं से ही व्याप्त है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उन्हीं की सत्ता हम पर बढ़ती जाने वाली है। हमारे साहित्य आदि ललित वाङ्मय, आलोचना-साहित्य, चित्र, शिल्प आदि कलाओं का पुनरुज्जीवन भी पाश्चात्यों से स्फूर्ति लेकर और उनके नये मतों व सिद्धान्तों को अपना कर ही हो रहा है।

इस प्रवृत्ति के कम होने के आसार तो कहीं नहीं दीखते। धीरे धीरे आवागमन के साधन—हर तरह के—सुधरते जा रहे हैं, अधिक प्रभावशाली होते जा रहे हैं। इससे देश-देश के बीच, जनता-जनता के बीच सभी प्रकार के संबंध स्थायी और निकट के हो रहे हैं। गत दस-बारह वर्षों में हवाई जहाजों के यातायात के कारण काफी बड़ा परिवर्तन दीख रहा है। आगे चल कर मनुष्य के लिए मानव-निर्मित वस्तुओं के लिए और लिखित या उच्चारित मान-वीय संदेशों के लिए भौगोलिक अन्तर को भी लाँघ जाना अधिक आसान होने वाला है। इससे संसार के विभिन्न प्रदेशों व समाजों के बीच आवागमन और लेन-देन में बराबर वृद्धि होती जायगी। पहले की अपेक्षा आज एक-दूसरे के अधिक निकट हम अपने को अनुभव करते हैं और हुए भी हैं। इस प्रकार संसार के विभिन्न समाजों के टुकड़े मिटते जा रहे हैं और इसलिए स्पष्ट है कि एक-दूसरे के बीच कल्पनाओं, पदार्थों और आचार-विचारों का आदान-प्रदान बढ़ता जाने वाला है और संसार के जन-जीवन में अधिक समानता आने वाली है।

साथ ही अभी तक पाश्चात्य समाज दूसरे सबकी अपेक्षा अधिक प्रगत, संपन्न और शक्तिशाली है। गत दो शताब्दियों में जिस मार्ग से और जिस दिशा में इस समाज ने प्रगति की है, वह रास्ता अभी खुला है। अभी ऐसा नहीं दीखता है कि वैज्ञानिक प्रगति का अन्त आ गया हो या प्रगति की आखिरी मंजिल सध गयी हो। दूसरे कुछ समाज भी योरोपियनों के अधिक निकट आ रहे हैं, तो भी तुलनात्मक दृष्टि से योरोपियन लोग अभी काफी आगे हैं और काफी शक्तिशाली हैं। इसलिए यह निश्चित लगता है कि अभी और कई दशाब्दियों तक ये आगे ही रहेंगे। और व्यावहारिक उत्पादन आदि के में विकास की प्रमुख दिशा की बतायेंगे। तब, हमारा हम पर उनका जो प्रभाव जीवन में पड़ा है, वह निरट कम होने वाला नहीं है।

इस प्रवृत्ति को हमारे समाज ने कुछ उद्देश्यपूर्वक अपनाया है। डेढ़ सौ साल तक ब्रिटिशों की हुकू-मत, शासकों की नीति और प्र- परिणाम होना स्वाभाविक है। ब्रिटिशों का, अर्थात् योरोपियनों हमारे यहाँ आरंभ हुआ। परन्तु समय-सुधारक बदलती हुई परिस्थि- सही स्वरूप समझने लगे, तब से र राममोहन राय के समय से लेकर आज तक इनमें से अधिकांश लोगों ने पश्चिमों के गुण, विद्या और आचार-विचार को अपनाने का ही समर्थन किया— ही किसी ने कुछ कम, तो किसी ने ज्यादा। सभी लोग कम-से-कम इस बात में तो एक राय हैं कि योरोपीय समाज विद्या, खासकर उसका विज्ञान सबसे ही उनकी उन्नति का आधार है और इस लिए हर सम्भव प्रयत्न करके उस ज्ञान कर लेना चाहिए। पाश्चात्यों आचार के संबंध में कुछ मतभेद रहा और आज भी है। फिर भी अनुभव यही आ रहा है कि प्रत्येक पीढ़ी जा अनजाने इसी ओर प्रयत्नशील है कि अधिकाधिक योरोपियनों के समान बनें।

पाश्चात्य विद्या और ज्ञान आज आ- निक वस्तु बनी है। मानवीय संस्कृ का प्रवाह प्राचीन समय से अखण्ड बह आया है। उसमें गत तीन-चार सौ वर्ष में पाश्चात्यों ने कुछ वृद्धि की है, इसलिए उसको कुछ समय के लिए "पाश्चात्य विद्या" का स्वरूप मिला। लेकिन अब परिस्थिति यह है कि इस विद्या का प्रसार और स्वीकार सारे संसार में हो गया है और इसकी उन्नति में संसार के सभी देशों का थोड़ा-बहुत हाथ लगा है, इसलिए यह मानने में कोई हर्ज नहीं है कि वह आज सार्वत्रिक विद्या हो गयी है।

भौतिक विज्ञान के संबंध में यह कहा जा सकता है कि वह किसी एक ही की विशेषता बनी रहे, यह सम्भव नहीं है। जिस ज्ञान की वृद्धि में परिस्थिति का सही और सूक्ष्म अध्ययन, सूझ-बूझ से किये जाने वाले प्रयोग और परीक्षणात्मक विश्लेषण आवश्यक हो, उसके लिए यह अनिवार्य है कि वह सर्वत्र समान हो जाय। विशिष्ट परिस्थिति के कारण किसी समाज में विशेष प्रगति हो गयी या विशिष्ट शास्त्र का अध्ययन अधिक समय तक सतत हुआ तो भी यह मानना होगा कि वह सामयिक परिस्थिति के कारण हुआ। विशिष्ट परिस्थिति के कारण कुछ विद्याओं की प्रगति की किसी दिशा का मूल्यांकन विभिन्न समाजों में भले ही कम ज्यादा होता हो भी सारा विज्ञान एक ही है। सूक्ष्म दृष्टि

बिहार में खादी के 'नये मोड़' की दिशा में प्रयत्न

खादी-ग्रामोद्योग संघ के द्वारा ही मुख्यतः सारे बिहार प्रान्त में खादी का [illegible] संचालित होता रहा है। सन् १९५७ के अपने निर्णय के अनुसार संघ [illegible] को जिला-क्षेत्र एवं ग्राम-संकल्प के आधार पर लाने में प्रयत्नशील है। इस [illegible] पहले कदम के स्वरूप पूर्णिया, गया, संथाल परगना और मुंगेर जिले में खादी [illegible] का भार जिलों के कार्यकर्ताओं के संगठन के सिपुर्द कर दिया गया है।

दरभंगा जिला के पूसा क्षेत्र में खादी के कार्य को ग्राम स्तर पर चलाने के प्रयत्न [illegible] है। तदनुसार ग्राम समितियाँ संगठित हो रही हैं। ४० गाँवों में ग्राम-समितियाँ [illegible] चुकी हैं, जो कि खादी-ग्रामोद्योग के कार्य को अपने गाँव में संचालित [illegible]।

जिला सर्वोदय-मण्डल, पूर्णियाँ की [illegible] से जिले में निम्नलिखित नव विध [illegible] अमल में लाने की एक योजना बनायी गयी है, जिसके अन्तर्गत जिले को [illegible] क्षेत्रों में बाँटा गया है। ९ थानों के [illegible] इन क्षेत्रों में काम होगा। इस [illegible] जिले की ९ लाख की आबादी लगभग दस-दस हजार के ९० क्षेत्रों में ग्राम-[illegible] के रूप में बँट जायेगी। २० जुलाई [illegible] दिसम्बर के अन्त तक प्रत्येक क्षेत्र में [illegible] कर वहाँ एक सार्वजनिक सभा का आयोजन होगा।

गाँवों में समग्र दृष्टि से काम की [illegible] बनाया गया हो, इस सम्बन्ध में नीचे [illegible] बातें सोची गयी हैं।

(१) गाँव में रक्षा और न्याय का [illegible] ग्रामीण स्वयं अपने ऊपर लें और [illegible] पुलिस और अदालत की आवश्यकता [illegible], ऐसा प्रयत्न किया जाय।

(२) पार्टियों की वजह से गाँव में फूट पैदा न होने पाये, ऐसा [illegible] हो।

(३) कार्यकर्ता हर घर से सम्पर्क [illegible] और उनके परिवारों का परिचय [illegible] करें।

(४) हर घर में सर्वोदय-पात्र रखे जायँ, उनमें प्रतिदिन मुट्ठी भर अनाज डालने और नियमित रूप से उसके अन्न संग्रह करने की व्यवस्था की जाय।

(५) प्रत्येक दस हजार की आबादी पर एक ऐसे कार्यकर्ता लोकसेवा में लगें, जिनके निर्वाह की व्यवस्था लोकाधार, सम्मित्राधार या श्रमाधार से हो।

(६) हर गाँव में सर्वोदय मित्र मण्डल बने।

(७) गाँव गाँव में धर्मगोला कायम किया जाय, जिसमें हर परिवार अपने उत्पादन पर मन में एक सेर अनाज और नकदी कमाई पर रुपये में दो नये पैसे ग्रामकोष में जमा करे। इस कोष का छठा भाग क्षेत्रीय कार्यकर्ता के निर्वाह में खर्च किया जाय। शेष भाग गाँव की पूँजी के रूप में जमा हो। जहाँ धर्मयोजना कोष न हो, वहाँ प्रत्येक परिवार अपने उत्पादन में से मन में एक पाव अनाज और नकदी पर रुपये में एक नया पैसा कार्यकर्ता-निर्वाह के लिए दे।

(८) ग्राम-संकल्प के द्वारा स्वावलम्बी समाज की स्थापना का प्रयत्न हो।

(९) भूदान की जो जमीन अब तक नहीं बँटी है, उसके वितरण एवं निस्तार का काम अगले वर्ष में पूरा किया जाय। पदयात्रा का कार्यक्रम इसमें सहायक हो सके, ऐसी योजना की जाय।

श्री धीरेन्द्र भाई ने इसी जिले के बलिया ग्राम को अपना प्रयोग क्षेत्र बनाया है। उनकी उपस्थिति और मार्गदर्शन से लाभ उठा कर इस प्रकार के सघन कार्य का प्रसार धमदहा, बनमनखी, रानीगंज, नरपतगंज, पूर्णियाँ सदर, सचाची हाट, कोढा और बरारी स्थानों में भी किया जाये। यह निश्चय जिला सर्वोदय मण्डल की ओर से किया गया है।

ऊपर कहे हुए ९ थानों के बीच प्रत्येक दस हजार की आबादी पर एक-एक केन्द्र होगा। उस केन्द्र का कार्यकर्ता क्षेत्रीय संगठक होगा। एक थाने के सभी केन्द्रों के बीच अनुबन्ध स्थापित करने तथा थाने भर के संगठन के लिए एक कार्यकर्ता होगा, जो थाना-संगठक कहलायेगा। इसी तरह ९ थानों के लिए एक संगठक होगा। संगठन के इस रूप के आधार पर सर्वोदय आन्दोलन का सारा काम इन थानों में करने का प्रयत्न होगा। इस प्रकार प्रेम और सद्भावना के आधार पर वहाँ के कार्यकर्ता ग्राम स्वराज्य की कल्पना को साकार रूप देने का प्रयत्न करेंगे, ऐसा निश्चय किया गया है।

'गृहलक्ष्मी' गाड़ियाँ

पूर्णियाँ जिले में सर्वोदय-आश्रम द्वारा विशेष रूप से निर्मित बैल-गाड़ियों को प्रयोग में लाया जा रहा है, जिन्हें 'गृहलक्ष्मी' गाड़ी कहते हैं। इस प्रकार की चार गाड़ियों पर खादी, सरंजाम, कुछ ग्रामोद्योगी वस्तुएँ तथा दो कार्यकर्ता रहते हैं, जिनमें से एक अम्बर-मिस्त्री होता है। पन्द्रह दिन का क्रम बना कर निश्चित कार्यक्रम के अनुसार ये गाड़ियाँ गाँवों में घूमती हैं। ग्रामीणों में खादी आदि की बिक्री करने के अतिरिक्त इनके द्वारा कत्तिनों का सूत भी संग्रह करने तथा उसके बदले में खादी एवं अन्य उपयोगी ग्रामोद्योग की वस्तुएँ देने की भी व्यवस्था है। साथ-साथ अम्बर-मिस्त्री चरखों की दुरुस्ती आदि भी जहाँ आवश्यक हो, करता जाता है।

इस प्रकार इन गाड़ियों से खादी और ग्रामोद्योग के प्रचार के साथ-साथ कत्तिनों के सूत-संग्रह, उसके बदलाने और चरखा-मरम्मत का काम भी होता जाता है। इस कारण ये 'गृहलक्ष्मी गाड़ियाँ' बहुत लाभदायक और जनप्रिय सिद्ध हो रही हैं।

अम्बर चरखे की क्षमता

अम्बर चरखे में कितनी क्षमता है, इसका एक उदाहरण ग्राम भवानीपुर, जिला पूर्णियाँ के एक परिवार में देखने को मिलता है। यह परिवार डेढ़ साल पहले गाँवों के हाटों में साग-सब्जी बेच कर कठिनाई से अपना निर्वाह कर पाता था। इस परिवार में एक युवक, उसकी विधवा माँ, उसकी पत्नी और उसका एक पुत्र है। दो अम्बर चरखे उनके पास हैं। युवक बुनाई और पट्टा बनाने की क्रिया करता है। उसकी माँ तथा पत्नी चरखा चलाती हैं और बालक कते हुए सूत को परेतने का काम करता है। हर समय कोई न-कोई प्रक्रिया ये लोग करते रहते हैं। कोई भी सदस्य कभी खाली हाथ बैठा नहीं देखा जाता। इस प्रकार यह परिवार न केवल पूर्ण रूप से वस्त्र-स्वावलम्बी हो गया है, बल्कि अपने काते हुए अतिरिक्त सूत को बेच कर इन्होंने अपने खेत पर दो कच्चे मकान भी बना लिये हैं। इतना ही नहीं, इस युवक का एक भाई जो बाहर रहता है, उसे इण्टर तक पढ़ाने का व्यय भी इन लोगों ने वहन किया है। अब उसे कालेज में भरती कराने की तैयारी में ये लोग हैं, जिसके खर्च के लिए अम्बर पर सूत कात कर अपने वस्त्र-स्वावलम्बन के बाद बचे हुए सूत को बेच कर १५० रुपया जमा कर लिए हैं। जून के माह में इस परिवार ने एक चरखे पर ३४१ गुण्डियाँ जमा की। अर्थात् ११ गुण्डी प्रति दिन की औसत से, जनवरी मास में दोनों चरखों पर १०२५ गुण्डियाँ जमा की थीं, अर्थात् १७ गुण्डियाँ प्रतिदिन। इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि इनकी औसत उत्पत्ति प्रति चरखा लगभग १४ गुण्डियाँ है।

यदि अम्बर पर परस्पर-सहयोग और निष्ठा से परिश्रमपूर्वक काम किया जाय, तो उससे कितना लाभ उठा सकते हैं, यह उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है।

[illegible] बात है कि प्रगति की सभी दिशाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं और सारा प्रवाह एक [illegible] दिशा में बढ़ता है तथा सबके लिए [illegible] समान सुलभ होता है।

उपर्युक्त विवेचन का सारांश यह है कि आधुनिक योरोप में जो वैज्ञानिक [illegible] हो रही है, उसका प्रभाव संसार भर में व्याप्त हुआ है और उससे उद्भूत विज्ञान, साहित्य, कला आदि के विकास की धारा [illegible] जागतिक रूप धारण कर रही है। [illegible] भारत सहभागी हो रहा है और कुछ समय के बाद पूर्ण रूप से समरस होगा। इसके बावजूद सभी क्षेत्रों में [illegible] के नेतृत्व के लिए, और वह [illegible] कर के अलग दीख सके, इसके लिए [illegible] गुंजाइश रहेगी ही। सी०वी० रमन ने योरोपीय वैज्ञानिकों की तरह महत्त्वपूर्ण खोज की, या तेनसिंह ने [illegible] साहसपूर्ण पराक्रम कर दिखाया, [illegible] भारतीयों के लिए गौरव और अभिमान की बात है और इसमें हम जागतिक [illegible] के साथ समरस हुए हैं ऐसा भी दीखता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता का उत्थान तब हुआ, जब बंगला साहित्य आंग्ल साहित्याभिमुख हुआ और उन पर उस आंग्ल साहित्य की शैली व मूल्यों ने जादू फेरा। कुछ समय पहले तुलनात्मक दृष्टि से हमारी अपनी हीनता हमें इतनी अधिक दीखती थी कि कोई व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से पाश्चात्यों के समान कोई काम कर पाता, तो वह हमारे लिए एक अद्भुत चीज लगती। यद्यपि आज यह स्थिति बदल गयी है, फिर भी जागतिक क्षेत्र में यदि हमें लगे कि हम भी अधिकाधिक सम्मान का स्थान प्राप्त करें, तो यह बिलकुल स्वाभाविक है। आज का स्थान बहुत सम्मान का नहीं है, हमारा हिस्सा अभी गौण ही है। तिस पर जब हमने अपनी कोई विशेषता न रखते हुए नये मूल्यों को अंगीकार किया, तो हमारा प्रभाव कैसे पड़े? हम अपना पुरुषार्थ–विशिष्ट पुरुषार्थ–कैसे करके दिखावें? ये विचार कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं।

(अपूर्ण)

इन्दौर के मजदूर-क्षेत्र में सर्वाधिक सर्वोदय-पात्र

इन्दौर नगर सर्वोदय सघन क्षेत्र कार्यालय द्वारा प्रसारित जानकारी के अनुसार इन्दौर के मजदूर-क्षेत्रों में अब तक ३,१४६ सर्वोदय पात्र स्थापित किये जा चुके हैं तथा १,३८२ सर्वोदय-पात्रों के अनाज एवं नकद-संग्रह से २१० रुपये की धनराशि प्राप्त हुई। यह धनराशि विनोबाजी की इच्छानुसार शान्ति-सेना के आयोजन में उपयोग में लायी जायेगी। मजदूर-क्षेत्र में नगर सर्वोदय-मण्डल की ओर से श्री नरेन्द्रसिंह तोमर, श्री दादा काले, श्रीमती सरयू बहन मण्डलोई तथा श्री नारायण स्वामी कार्य कर रहे हैं।

बहुत बार ऐसा होता है, आदमी को लगता है कि उसके प्रयत्न का कोई भी परिणाम नहीं आ रहा है, तब दो सवाल उठते हैं—एक तो यह कि क्या साधक की साधना में कोई कमी है? जब कुदरत का नियम है तो अहिंसा का परिणाम क्यों नहीं आता है? इस तरह साधक आत्म-परीक्षण करता है और समझता है कि मेरी साधना में जो कमी है, उसे ढूँढ़ने का अवसर आया है। वह कमी दूर होते ही अ-सफलता का परिवर्तन सफलता में होगा, ऐसी बात नहीं है। वह कमी कब दूर होती है, इसका पता नहीं चलता। जब सफलता नहीं हुई तो आदमी इतना ही समझ सकता है कि मेरे अन्दर और कुछ कमी रह गयी है। जैसे विज्ञान के प्रयोग में हमने बहुत मेहनत करके काम किया, उसकी जितनी शर्तें होती हैं, उन्हें पूरा किया, फिर भी जिस परिणाम की हम आशा करते थे, वह परिणाम नहीं आया तो हम समझते हैं कि कहीं गिनने में या वजन करने में गलती हुई होगी। लेकिन इसमें भी हमने एक किस्म के असत्य का आश्रय ले लिया। याने जिस चीज को हम सत्य मानते हैं, उसके समर्थन के लिए एक दलील ढूँढ निकाली और अपना सन्तोष किया। इसके बजाय शुद्ध सत्य की खोज करने से नई चीजों का दर्शन होता है। नाइट्रोजन गैस का वजन जितना निकलना चाहिए था, उसमें यदि कुछ फर्क पड़ा, तो उसे नार्मल ऐरर, यन्त्र का दोष माना गया। लेकिन एक ने कहा कि ऐसी बात नहीं है। इसमें कुछ मिलावट हो सकती है। फिर जब उसने उस गैस को सरदी देकर, दबाव बढ़ा कर उसका पानी बनाया, तो उसमें से चार गैसें निकलीं। उनमें से एक ऐसी थी, जो पृथ्वीमंडल में नहीं थी। उसे हेलियम कहते हैं। एक व्यक्ति को सत्य की खोज में भी कितना 'रिलेंटलेस' होकर काम करना पड़ता है, इसका यह उदाहरण है। अव्यक्त सत्य की खोज में तो उससे ज्यादा निष्ठा की जरूरत है।

शांति-सेना : कल और आज

प्यारेलाल

भगवान भक्त का भला ही चाहता है

जब हमारी अपेक्षा के अनुसार परिणाम नहीं आता है और दूसरा ही आता है, तो यह समझना चाहिए कि वह ईश्वर का *काम करने का रास्ता है। ईश्वर कहो या* कुदरत कहो, जो कुछ भी कहो, वह आदमी से भिन्न होता है। एक दन्तकथा है, जिसमें एक ऋषि के पास एक आदमी आया और कहने लगा कि मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें अमृतत्व का भेद बताऊँगा, परन्तु एक शर्त है, जो कुछ मैं करूँ तुम देखते जाना, पूछना नहीं। उन्होंने पहले देखा कि एक बड़ा गरीब आदमी था, उसके एक ही बच्चा था, उसके घर की दीवार गिर गई, जिसमें माँ-बाप मर गये और बच्चा ही जिन्दा रहा। यह देख कर ऋषि पूछ बैठा कि ईश्वर की दुनिया में ऐसा क्यों हुआ, तब उस आदमी ने याद दिलाया कि तुझे पूछना नहीं है। फिर दूसरा दृश्य देखा कि एक गरीब आदमी ईश्वर-भक्त था और नौका को लेकर दूसरे किनारे जा रहा था, तो वह नौका के साथ डूब गया। उसके घर में सारे अनाथ हो गये। तीसरा दृश्य यह देखा कि एक आदमी के एक ही बच्चा था, जिसे डाकुओं ने मार डाला। तीनों वक्त यह ऋषि बोल उठा, तो उस आदमी ने कहा कि तुमने शर्त पूरी नहीं की इसलिए अब तुम्हें आगे नहीं ले जाऊँगा। लेकिन इन घटनाओं का अर्थ क्या है, जरा देख लें। पहली घटना में उसने देखा कि वह बच्चा जब बड़ा हुआ, तो माँ-बाप ने जो सोना घर में दबा करके रखा था, उसके सहारे वह आगे बढ़ सकता। तब उस ऋषि को लगा कि ईश्वर ने दीवार गिराई, जिसमें सोना दब गया यह अच्छा ही हुआ। नौका से जाने वाला आदमी अगर दूसरे किनारे पहुँचता तो वहाँ डाकू उसे बहुत पीड़ा देते। जब यह दृश्य देखा तब पता चला कि ईश्वर ने उसे उससे बचाया। जिस आदमी का इकलौता बेटा मर गया, उसका भविष्य बड़ा काला था। वह बड़ा भारी राक्षस बननेवाला था और माँ-बाप को सताने वाला था। इसलिए भगवान ने कहा कि उसकी भक्ति को देख कर मैंने उस बच्चे को आसुरी देह से मुक्ति दी। हरिश्चन्द्र की किस तरह परीक्षा ली गई, यह हम सब जानते ही हैं। इस तरह आदमी की परीक्षा होती है, तो उसमें नियम का भंग नहीं होता। नियम तो अटल होता है, इसलिए आदमी को समझना चाहिए कि मेरी नजर में ही कुछ फेर है। आदमी की नजर डेढ़ इंच से आगे नहीं जाती है। कई दफा जिस चीज से हमें निराशा होती है, आगे चलकर पता चलता है कि उससे हमारा भला ही हुआ। वैसे ही कभी-कभी लगता है कि कुछ भी नहीं हो रहा है, तब बहुत कुछ होता है, जिसका आगे पता चलता है।

अंधेरे में भी उजाला

नोआखाली में बापू ने देखा कि कुछ परिणाम नहीं आ रहा है, तब उन्होंने कहा कि मुझे अन्तर्मुख होना चाहिए और मेरी पद्धति में कहीं दोष हो, तो उसकी खोज करनी चाहिए। जब बिहार में दंगे शुरू हुए, तब उन्होंने कहा—मुझे वहाँ जाने की जरूरत नहीं है। बिहार मेरा है, और मेरे ही मन्त्री हैं, जो मेरे इशारे पर चलने वाले हैं। लेकिन आखिर उनकी ओर से पुकार आयी और उनको वहाँ जाना पड़ा। यह तो ठीक वैसा ही हुआ कि राम को दूसरे दिन अभिषेक होने वाला था, उसके बजाय वनवास जाना पड़ा। नोआखाली के प्रयोग से जो हीरा निकलता, उससे हिन्दुस्तान के लिए एक चाबी मिल जाती। परन्तु उस प्रयोग को अधूरा छोड़ कर बापू को बिहार जाना पड़ा। वहाँ पर उन्होंने हिन्दुओं से वही कहा, जो वे नोआखाली में मुसलमानों से कहते थे। बिहार में गांधीजी का जो काम हुआ, उसके सामने माथा झुक जाता है। वहाँ लीग वालों ने भी कहा कि वे ठीक कह रहे हैं। इस तरह जब आँखों के सामने अँधेरा ही अँधेरा दिखाई देता था और ऐसा लगता था कि दीवार से सिर पटक रहे हैं, दिन-ब-दिन विरोध बढ़ता जा रहा है। ऐसी हालत में भी जब बिहार में लोगों ने देखा कि यहाँ के मुसलमानों को बापू वही चीज कह रहे हैं, जो वहाँ के हिन्दुओं को कह रहे थे, तब मुसलमान-हिन्दू सबको लगा कि उनकी बात ठीक है। वे जो कह रहे हैं, वह हमारी भलाई के लिए ही है। इससे लोगों की आँखें खुल गई थीं, इस तरह जब अन्धेरे का सामना हो, तब भी कैसे उजाला पैदा होता है, इसका यह उदाहरण है।

बापू ने अपना भजन छोड़ दिया

जब कलकत्ते में बापू के मकान में हुल्लड़ हुआ, तब लोगों ने वहाँ का सामान तोड़ना शुरू किया। बापू बंगला भाषा उतनी अच्छी नहीं जानते थे, इसलिए उन्होंने आभा से अनुवाद करने के लिए कहा। परन्तु वहाँ का सवाल दूसरा ही था। इसलिए बापू अन्दर चले गये और सोचने लगे कि क्या करें। क्या मैं बाहर जाऊँ और लोगों से कहूँ कि जो करना चाहते हो, करो। इस हालत में कुछ लोग मेरी रक्षा करेंगे और उन पर टूट पड़ेंगे। आग एक ही जगह पर नहीं लगी है बल्कि सारे शहर में लगी है। मैं हर जगह तो नहीं पहुँच सकता। इसलिए बापू ने दूसरे दिन से अनशन शुरू किया। उस वक्त सरकार में हमारे ही आदमी थे। प्रफुल्ल घोष मुख्यमंत्री बने थे। उन पर असर पड़े, तो वे उसे रोक सकते थे। [illegible] नहीं रोकते हैं, क्योंकि उन्हें गुस्सा आता है, और बदला लेने की भावना भी है। पुरानी कथा है कि जब निमि राजा यज्ञ [illegible] में बैठा, तब यज्ञ पूरा हुआ। इस तरह बापू ने अपना भजन [illegible] में डाल दिया। उसका नतीजा यह हुआ कि सारे लोग विचार में पड़ गये। उनमें पहले तूफान करने वालों से बापू की बातें हुई थीं। बापू ने उनसे कहा था कि मैं भी हिन्दुओं की सेवा करना चाहता हूँ। तुम यहाँ तूफान करोगे, तो मैं नोआखाली न जा पाऊँगा। एक ठीक काम हो तो उसका असर सब पर होता है। आप यहाँ [illegible] नहीं मचाओगे, तो उधर नोआखाली के हिन्दुओं की रक्षा होगी और इधर यहाँ के मुसलमानों को भी सन्तोष होगा। इस तरह यह प्रकरण पूरा हो जाता है।

इसके दो-तीन महीने पहले जब बापू देहली में थे और कलकत्ते से खबर आयी [illegible] कि वहाँ फसाद [illegible] हो रहा है, तब बापू ने एक पत्र में "[illegible] अन्धेरा दिखाई दे रहा है। [illegible] बरबादी की तैयारी हो रही है, मैं उसके अन्दर देख रहा हूँ कि [illegible] दिलों में एक अज्ञान आकांक्षा है [illegible] सब खत्म होना चाहिए।" उन्होंने [illegible] लिया जब कि उनके [illegible] दिखाई नहीं देते थे। परन्तु [illegible] के दिन हमने देखा कि कलकत्ते में [illegible] मुसलमान एक हो गये हैं। जैसे [illegible] के दिलों में कौमी एकता का दृश्य था, वैसा ही दृश्य कलकत्ते में [illegible] दिया। लेकिन उससे बापू को सन्तोष [illegible] हुआ। उन्होंने सोचा कि इतने जल्दी यह कैसे हो सकता है। इसमें जरूर कुछ कमी है। इस तरह न तो उन्होंने सफलता से अपने को आपे से बाहर होने दिया और न वे अन्धेरे में निराश हो गये। इस समता के कारण वे घोर रात्रि में भी जागते रहे और जब सबको लगा कि सूर्योदय हो रहा है, तब वे सावधान रहे। उस वक्त माउण्टबेटन ने कहा था कि "[illegible] एक आदमी का जो बल है, वह पचपन हजार सशस्त्र सैनिकों के बल से ज्यादा असरकारक है।"

बाद में बापू जब देहली आये, तो उन्होंने कुछ दूसरा ही तरीका अपनाया। समझने की बात है कि कल्याण में कोई चीज क्षणिक तौर पर दुहराई जा सकती है। पहले जैसी परिस्थिति थी, वैसी ही अब दिखाई दे रही है, इसलिए पहले जो उपाय किया था, वही अब भी करेंगे तो [illegible] ऐसा अहिंसा में नहीं होता है। [illegible] बापू के कारण पेट का दर्द होता था, इसलिये उस वक्त जो दवा ली, वही दवा यदि अब लेंगे तो अब [illegible] के कारण पेट का दर्द हो रहा है [illegible] की बजाय उसी उपचार से नुकसान ही होगा। बाहर लक्षण वही हैं, परन्तु रोग का मूल कारण भिन्न है। इसलिए अहिंसा [illegible] में कभी भी विधि-निषेध से काम नहीं चलता है। [illegible] ने कहा कि [illegible] अगर यह समझ ले कि [illegible] के चले पर चला है तो [illegible] जाएगा। ठीक यही बात अहिंसा के लिए होती है। हमें अपने व्यवहार के बारे में स्वतन्त्र सोचना है। अपने जीवन को कैसे बनाना है, कैसी साधना करनी है, इस पर सोचना है, जिससे कि जो भी अवसर आये, उसमें हमें रास्ता सूझ पड़े। [illegible] से अहिंसा [illegible] नहीं [illegible] है। [illegible] में कहा जाता है कि [illegible] फिर भी [illegible] हुआ तो और [illegible] की [illegible] है। अहिंसा [illegible] है, [illegible] है, परन्तु [illegible] है।

[शेष पृष्ठ [illegible] पर]

खादी की दृष्टि को समझना है

विचित्र नारायण शर्मा

[श्री गांधी-आश्रम की मासिकी 'आश्रम-पत्रिका' में सम्पादकीय पृष्ठों पर श्री विचित्रभाई ने जो विचार व्यक्त किये हैं, उनका सारांश यहाँ दिया जा रहा है। श्री गांधी-आश्रम के काम की पृष्ठभूमि में खादी के काम की नई दिशा और उसका दृष्टिकोण उपस्थित करते हुए इन पंक्तियों में जो विचार लिखे गये हैं, उन पर अन्य पाठकों के विचार भी सादर आमन्त्रित हैं। —स०]

श्री गांधी-आश्रम की सालाना बैठक में, जहाँ हम अपने काम का सालाना बजट बनाते हैं, वहाँ आश्रम, खादी, रचनात्मक कार्य आदि के पीछे, जो मौलिक धारणाएँ हैं, उन पर भी विचार करते हैं और अपने कार्य को उसी प्रकाश में ढालने और चलाने की कोशिश करते हैं। सब खादी-संस्थाओं की बात हम नहीं करते, पर जहाँ तक आश्रम का सम्बन्ध है, उसकी स्थापना किसी व्यापार या रोजगार को चलाने के लिए नहीं हुई थी। अगर हमने एक स्थिति में आकर खादी का काम हाथ में लिया और आज एक तरह से वह हमारा मुख्य काम-सा हो गया है, तो वह भी इसलिए कि हमारे मूल उद्देश्य की पूर्ति में वह सबसे अधिक सहायक है। उस मूल उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जब जब खादी के काम की उपेक्षा करनी आवश्यक हुई अथवा उसमें उसकी आहुति देनी भी आवश्यक हुई, तो किसी सोच-विचार की [illegible] नहीं हुई, उसमें कभी कोई संकोच नहीं हुआ।

खादी की दूसरी पुरानी संस्थाओं की बाबत हम अगर यह नहीं भी कह सकते हैं, तो भी उन्हें जो मुख्य कार्यकर्ता हैं, वे प्रायः तपे हुए स्वराज्य के सैनिक हैं और गांधीजी व देश ने जब जब पुकारा, कुर्बानी से पीछे नहीं रहे और वे भी अगर खादी-कार्य में पड़े हैं, तो इसीलिए कि अन्तिम उद्देश्य-प्राप्ति में वह सबसे उपयोगी साधन है। इस पहलू को हमारे कुछ वे नेता भूल जाते हैं, जिनका आशीर्वाद तो खादी तथा रचनात्मक कार्य के लिए उपलब्ध रहा, पर जो स्वयं दूसरे जरूरी कार्यों में व्यस्त रहे। इसलिए जब 'नये मोड़' आदि की बातें होती हैं, तो बहुधा यह समझा जाता है कि सचमुच में कोई नई बात कही जा रही है। परिणाम यह होता है कि आसानी से यह समझ लिया जाता है कि अगर यह बात लोगों को अच्छी तरह समझा दी गयी, तो सारा काम अपने-आप हो जायेगा और जब साल-दो साल बाद वे परिणाम नहीं आते हैं, जिनकी हम आशा लगाये बैठे थे, तो फिर यह समझा जाता है कि लोग मूल बात समझे ही नहीं थे और उसे फिर और सफाई से समझा दिया जाये।

हमारा अनुभव इस विषय में दूसरा है। एक तो यह कि हमारे साधारण कार्यकर्ता, जिनकी मार्फत हम यह काम कराना चाहते हैं, इस कार्य के लिए पर्याप्त योग्यता नहीं रखते। योग्यता सिर्फ समझने और समझाने ही की नहीं, बल्कि एक क्रान्तिकारी बात को लोगों के हृदय में इस तरह बैठा देने की कि उनका बाह्य आचरण भी उसके अनुकूल हो सके।

दूसरे में यह कि उस बेचारे पर हम जितना कार्य लादते हैं, उसे करने के बाद उसके पास इतना समय, इतनी शक्ति नहीं रह जाती कि इस कार्य को भी वह कर सके। आखिर खादी-संस्था को अपना खर्च भी स्वयं ही निकालना होता है। खादी का काम वही संस्थाएँ सिर्फ १५ प्रतिशत पर करने की कोशिश कर रही हैं। ये दोनों दिक्कतें वास्तव में इतनी प्रभावकारी रही हैं कि इस दिशा में बहुत कुछ नहीं हो सका।

नये मोड़, ग्राम-स्वराज्य आदि के पीछे जो तथ्य छिपे हैं, उन्हें लेकर कम-से-कम उत्तर प्रदेश के [illegible] गाँवों में श्री धीरेन्द्र भाई जैसे [illegible] व्यक्ति के नेतृत्व में [illegible] किया गया। [illegible] १० साल [illegible] दूसरे गाँव में [illegible] १० और [illegible] अधिक [illegible]। [illegible] काम कितना कठिन है [illegible] जो हुआ उससे [illegible] है। धन-जन की कमी नहीं रही। पर [illegible] परिणाम [illegible] आम तौर से ऐसे प्रयोगों को अनुकरणीय नहीं कहा जा सकेगा। वैसे [illegible] अनुभव प्राप्त करने को ऐसे प्रयोग अवश्य भी हुए हैं और आगे भी होते रहेंगे।

अगर ऐसे प्रयोगों को हम आम तौर से अपने कार्यक्रमों का अंग नहीं बना सकते, तो दूसरा रास्ता हम और हमारी जैसी संस्थाओं के लिए यही रह जाता है कि अपने साधारण कार्यकर्ताओं से ही यह काम लें। इसका प्रयत्न भी एकाधिक बार किया गया। लेकिन दुर्भाग्य से जितनी सफलता की आशा की जाती रही, वह नहीं मिली। ऐसा क्यों नहीं होता है, यह हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं।

खादी विवेक पूर्वक नहीं अपनायी गयी

कठिनाई को समझ लेना मात्र उसका हल नहीं है। आज भी हमारे सामने मूल प्रश्न बना ही हुआ है। अहिंसक क्रान्ति—[illegible]-खादी जिसके द्योतक हैं—कैसे [illegible] हो? इस देश तथा प्रतियोगिता से प्रेरित अर्थ-व्यवस्था में प्रेम, सहानुभूति और सहकारिता की नवीन [illegible]-व्यवस्था कैसे स्थापित हो? खादी के भी [illegible] है, यह नहीं कहा जा सकता कि उसने अपनी शक्ति से [illegible] है। जिन लोगों ने भी खादी को अपनाया है, उन्होंने स्वयं विवेकपूर्वक उसकी खूबी से प्रभावित होकर उसे अपनाया है, यह नहीं कहा जा सकता है। फिर खादी को अपनाने वाले ही कितने प्रतिशत हैं? यह हाल तो अपने देश में है, जहाँ खादी की प्रवृत्ति आज ४० साल से चल रही है। लेकिन यह हिंसा-अहिंसा की समस्या तो सारे विश्व की है। अहिंसा और शान्ति अगर विश्वव्यापक नहीं होती है, तो मानव को सुनिश्चित विनाश से बचाया जाना सम्भव नहीं होगा।

खादी-काम अपने अन्दर का है

इस तरह इस प्रश्न की व्यापकता और [illegible] को जब हम देखते हैं, तो यह प्रश्न बाह्य कार्यक्रमों और आन्दोलनों का न रह कर एकदम [illegible], आत्मसंयम, आत्मचिन्तन और आत्म निरीक्षण का रह जाता है। बाह्य जगत में हिंसा पर काबू पाने के लिए मानव को अपने अन्दर ही हिंसक प्रवृत्तियों पर विजय पानी होगी।

यह काम अत्यन्त कठिन है, पर इससे अधिक करणीय भी नहीं है। यही सच्ची साधना और सच्चा धर्म है। गांधीजी इसीलिए इसके अधिक जोर इसी पर देते थे और इसीलिए सबसे पहला अहिंसक सत्याग्रही विनोबा को उन्होंने चुना था। अपने बारे में इस पहलू की उपेक्षा हम करते रहे और इसीसे हमें सफलता ही नहीं मिल सकी! हम यहाँ तक इसमें सफल होंगे, यह हमारे हरएक के अपने हाथ में है और उसका निर्णय हम सब अपनी अपनी जगह पर कर सकते हैं। हमारे लिए कोई दूसरा उसका निर्णय नहीं कर सकेगा। हम सब मिल कर विचार कर सकते हैं, सलाह भी कर सकते हैं। पर अमल तो हमारे हरएक के अपने हाथ में है। उस पर किसी दूसरे का अधिकार नहीं।

●

खादीग्राम : अब आगे क्या ?

राममूर्ति

[श्री धीरेन्द्रभाई ने ग्रामयोग और [illegible] जीवन के प्रयोग का [illegible] खादीग्राम, [illegible] की स्थापना की थी। [illegible] ... [illegible] नहीं [illegible] ... ([illegible]) में [illegible] ... के प्रयोग करने के लिए [illegible]।

[illegible] कि [illegible] अब आगे क्या ?

[illegible] 'खादीग्राम' के [illegible] राममूर्ति के विचार [illegible] —सं०]

[illegible] हम [illegible] की [illegible] नहीं है। [illegible] इस समय [illegible] कि हमारे आन्दोलन का इस सन्दर्भ में [illegible] (परम्परा) क्या है और उसकी पूर्ति के लिये उसके पास साधन क्या है? १९५० से १९५४ तक हम [illegible] और [illegible] किया। [illegible] भी और [illegible] है कि [illegible] जहाँ भी है उसमें [illegible] जीवन की [illegible] रही है [illegible] अनुभव के रूप में खादीग्राम में [illegible] है। हम [illegible] हैं। १९५६ तक हमने [illegible] में [illegible] किया। १९५७ में हमने [illegible] और [illegible] के [illegible] आन्दोलन में अपने लिए [illegible] का [illegible]। [illegible] १९५८ का [illegible] और [illegible]। १९५९ में हमने [illegible] और [illegible] कि [illegible]

[illegible] अधिक [illegible] है। [illegible] के बाद १९६० [illegible] यह [illegible] हाथ [illegible] कि [illegible] नहीं है और [illegible] की [illegible] की [illegible] है। [illegible] की [illegible] है [illegible] है। [illegible]

[illegible] में १९५९ के [illegible] नई [illegible] का [illegible] किया। इस [illegible] हम [illegible] का [illegible] है। [illegible] गाँव [illegible] में [illegible] हो रहा है। और [illegible] के [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि के कुछ [illegible] है। [illegible] है [illegible] में कुछ [illegible] है। [illegible] है कि [illegible] की [illegible] है कि [illegible] के लिए [illegible] है। [illegible]

शान्ति-सेना : कल और आज

[पृष्ठ ६ का शेष]

भगवान अनेक अवतार लेकर जगत् का उद्धार करते हैं। एक ही चीज एक ही नाम से आगे नहीं आती है। दूसरे लोग हैं और दूसरा नाम लेकर वही काम चलाते हैं। आज हम अपने देश में देख रहे हैं कि बावजूद हमारे अट्ठाइस साल के अहिंसात्मक प्रयोग के, हम बहुत हद तक अहिंसा के मार्ग को छोड़ रहे हैं। वैसे आम तौर पर राज्य, बल पर ही चलता है। बल की कल्पना राज्य के गर्भ में पड़ी है। परन्तु हमने यहाँ कोशिश ही नहीं की कि पुराना राज्य बदला, तो पुरानी पद्धति को भी बदला जाय। यहाँ पद्धति पुरानी ही रही। गणतन्त्रवाद की एक पक्की निशानी है कि लोगों का पुलिस की तरफ क्या रुख है, यह देखा जाय। लोग पुलिस को अपना मित्र समझते हैं या शत्रु? क्या वे पुलिस से सहयोग करते हैं या डर कर भागते हैं, कोई पुलिसवालों को अपने-अपने घर पर प्रेम से बुलाता है या नहीं? इससे पहचान हो जाती है। आज हम देख रहे हैं कि पुलिस का वही पुराना रवैया है। अविभक्त हिंदुस्तान के बजट में सेना पर जितना खर्च होता था, उससे दुगुना आज अकेला हिंदुस्तान ही कर रहा है। मुझे नहीं मालूम कि 'ब्रिटिश इंडिया' को छोड़ कर हिंदुस्तान के इतिहास में किसी भी समय इतनी दफा गोली चली होगी, जितनी आज चल रही है, और जनता के आपस के फसाद इतने हुए हों। अपने ही लोगों के हाथ से इतने लोगों को जेल में भेजने की आवश्यकता आज तक कभी महसूस नहीं हुई थी। जितनी आज हो रही है।

अहिंसावाले कुछ करके दिखायें

राज्य की बात छोड़ दीजिये, उसमें तो सारा देश जेल जैसा बन जाता है। परन्तु अब हम देख रहे हैं कि जहाँ पर फसाद फूटने की अपेक्षा नहीं है, वहाँ भी फूट रहे हैं। अलाउद्दीन की कहानी है कि उसने एक महल बनाया, लेकिन एक खिड़की बाकी रखी, तो फिर बाद में उसे कोई पूरा नहीं कर सका। वैसे ही हमने सारे हिंदुस्तान को तो, आजाद बना लिया, लेकिन गोआ और कश्मीर जैसे छोटे-छोटे मामलों में हम अभी तक कुछ भी नहीं कर सके हैं। देह में इस तरह के शल्य रहने से क्या परिणाम होता है, हम देख रहे हैं। देश के अन्दर अराजकता बढ़ रही है। जहाँ देखो वहाँ हिंसा का ही प्रयोग हो रहा है। ऐसी अवस्था में हम सर्वोदय समाज की और अहिंसा की बात करें, तो वह व्यर्थ की हो जायगी। आज लोगों से पूछा जाय कि आप क्या चाहते हैं, तो वे कहेंगे कि हम चाहते हैं कि हमारे पास बड़ी जबरदस्त सेना हो और हो सके तो एटम बम भी हो। आज जनता यही चाहती है, क्योंकि उसके पास हमने ऐसी कोई चीज नहीं रखी है कि जो चीज वह चाहती है, वह हम उसे दूसरे तरीके से दे सकें। अगर कल कोई कम्युनिस्ट सरकार आई और उसने चार-पाँच काला-बाजार करने वालों को फाँसी पर चढ़ा दिया तो लोग उसकी पूजा करेंगे। लेकिन क्या उससे काला बाजार और दमन बंद होगा? काले बाजार को बन्द करने का कोई दूसरा उपाय भी है, यह हमें दिखाना होगा। उसी तरह हमें यह बताना है कि पुलिस के बिना भी चल सकता है। जब बापू ने नोआखाली में अपने साथियों से कहा कि तुम अकेले जाओ और मैं भी अकेला जाऊँगा तो उस वक्त जिसमें जितना समझ था, उतना उसने फायदा उठाया। आज अगर कोई कहे कि फौज को हटा दो, तो लोग उसे खा जायेंगे। इसलिए हमें यह बताना है कि किसी एक हिस्से में हमने बीस पुलिस कम किये याने ऐसी हालत पैदा की कि उनकी जरूरत न रहे, तो फिर हम सरकार से कह सकेंगे कि उस पुलिस के लिए जितना खर्च आप करते हैं, उतना हम इलाके के लिए दे दो। अभी तक हम यह भी नहीं कह सकते हैं कि अमुक इलाके में हमने मुकदमेबाजी या झगड़े बंद किये हैं। आज जब कि हमारे पास ग्रामदान आये हैं और साधनदान, शिक्षादान आ रहे हैं, तब हमें यह कह सकना चाहिए। कम-से-कम उतने हिस्से में तो हमें यह सब करके दिखाना चाहिए। अब काम का फैलाव करके हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं, बल्कि गहराई में जाकर इस काम की निहित शक्ति से बड़े वेग से आगे बढ़ सकते हैं। नहीं तो मुझे डर लगता है कि हमने जो कमाया है, उसे खो देंगे।

[सेवाग्राम, १९-१०-'५८]

गाँव की कहानी

ग्रामदानी गाँव : बिजूर

● गोविंद शिंदे

महाराष्ट्र प्रदेश के कोल्हापुर जिले में घटप्रभा नदी के किनारे पर ३०० आबादी का बिजूर गाँव है। गाँव का कुल क्षेत्र ९००२ एकड़ है। लगभग सौ एकड़ भूमि घटप्रभा की उपजाऊ मिट्टी से बनी हुई है, फिर भी गाँव में दरिद्रता क्यों है, इसका विचार गाँववालों में चल रहा था। इसी समय इस क्षेत्र में विनोबाजी की पदयात्रा शुरू हुई। स्वामित्व-विसर्जन का विनोबाजी का संदेश गाँववालों ने सुना और उन्होंने ग्रामदान का संकल्प किया।

ग्रामदान के बाद : ग्रामदान के बाद लोगों ने कुल जमीन का पुनर्वितरण किया। ग्रामसभा की स्थापना भी हुई। एक वर्ष अतिवृष्टि के कारण गाँव का बहुत नुकसान हुआ था इसलिये महाराष्ट्र निर्माण-समिति ने गाँव को कर्ज दिया। वह अब ठीक वक्त से वापस किया जा रहा है।

गाँववालों ने श्रमदान से एक रास्ता तैयार किया। हर घर में 'कम्पोस्ट' खाद की बनायी गयी। इस वर्ष की खेती में लोगों ने 'जापानी पद्धति' का प्रयोग किया है।

ग्रामदान के बाद सहकारी खेती के लिये २० परिवारों ने एक क्षेत्र चुना है। गाँव का एक परिवार बने, सहकारी खेती का एक नमूना लोगों के सामने हो, इस दृष्टि से ये २० परिवार मिल कर सामूहिक खेती कर रहे हैं।

'बिजूर ग्राम-स्वराज्य सोसाइटी' रजिस्टर्ड हुई है। सरकारी दफ्तर में गाँव की कुल जमीन की नोंद ग्राम-सभा के नाम पर हुई है।

आर्थिक विकास-योजना : गाँव को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बनाने के लिये एक योजना बनायी गयी, जिसमें कुल ग्रामस्थों ने अपना योग दिया है। इस योजना के मुद्दे इस प्रकार हैं।

(१) उपजाऊ भूमि से ज्यादा उत्पादन निकालने के लिये शास्त्रीय पद्धति का उपयोग किया जाय। खेती की फसल के अनुसार गेहूँ, चावल, चना आदि अनाज निकाला जाय।

(२) परंपरागत पद्धति छोड़ कर आधुनिक पद्धति का तथा नये औजारों का इस्तेमाल किया जाय।

(३) पानी का लाभ ज्यादा-से-ज्यादा जमीन को उपलब्ध हो।

(४) साग-तरकारी का उत्पादन बढ़ाया जाय।

(५) पड़ती भूमि पर काजू के पेड़ लगाये जायँ।

(६) निकृष्ट भूमि का सुधार करें।

(७) सार्वजनिक पद्धति से जमीन पर बाँध बाँधने का काम हो।

(८) मुर्गी-पालन तथा अन्य अन्य धंधों का उत्पादन बढ़ाने के प्रयत्न हों।

(९) कम्पोस्ट खाद अधिक मात्रा में बनायी जाय।

(१०) नदी के पानी-सिंचाई का क्षेत्र और बढ़ाया जाय।

[illegible] की आवश्यकता यह इस मुद्दों की योजना अमल में लाने के लिए [illegible], [illegible] पूँजी की जरूरत रहेगी। करीब ११००० रु० की पूँजी लगाने के बाद गाँव का [illegible] उत्पादन २३६ से ८४९ तक बढ़ सकता है। [illegible] उत्पादन-खर्च २४००० रु है। [illegible] के बाद गाँव का [illegible] ३७००० रु [illegible] बढ़ेगा। गाँव का [illegible] २५०० रु से कम रहा है। [illegible] ३३००० रु० तक बढ़े तो [illegible] [illegible] हुआ करें, [illegible] [illegible] १२००० रु० [illegible] [illegible], जिससे गाँव को [illegible] की [illegible] दूर हो सकेगी।

[illegible] ने २० एकड़ निकृष्ट भूमि में [illegible] पद्धति से ११० [illegible] [illegible]।

इस वर्ष का यह ज्यादा उत्पादन ऊपर की योजना का एक भाग कहा जा सकता है। अन्य ३३ एकड़ भूमि में गन्ने की फसल निकालने का विचार इस वर्ष छोड़ देना पड़ा, क्योंकि उसके लिये ज्यादा पानी की जरूरत थी। निर्माण-समिति ने अब इस 'हॉर्स पॉवर' का इंजिन खरीदने के लिये गाँव को कर्ज दिया है। गाँववालों ने जापानी पद्धति से इस वर्ष साढ़े बारह एकड़ में गन्ना और ढाई एकड़ों में मिर्च का उत्पादन किया है। यह उत्पादन और आमदनी कुल गाँव की आमदनी मानी जायेगी।

सांस्कृतिक विकास के लिये : गाँव में शिक्षा का ठीक इंतजाम उपलब्ध नहीं था। साक्षर फीसदी १ या १॥ है। अब 'जुलाई,' ५९ में निर्माण-समिति द्वारा एक कार्यकर्ता यहाँ रखा गया है। उसने ३० विद्यार्थियों का प्रौढ़ साक्षरता-वर्ग चलाया। 'अक्टूबर,' ५९ में जिला स्कूल-बोर्ड ने गाँव का पाठशाला के लिए [illegible] एक शिक्षक नियुक्त किया है।

शुरू-शुरू में [illegible] [illegible] की संख्या नहीं के बराबर थी। कार्यकर्ताओं ने घर घर जाकर लोगों को समझाया। अब ३० [illegible] [illegible] में नियमित आ रहे हैं। प्रौढ़ों के वर्ग में २५ से ३० तक लोग साक्षर हुए हैं। ग्रामसभा ने अब एक पुस्तकालय भी स्थापित किया है।

१५० एकड़ का जो क्षेत्र [illegible] हुआ है, उसमें सन् '५८ में काजू के पेड़ लगाये थे। उसमें से १००० पेड़ [illegible] हैं। इसी क्षेत्र में हर साल २५-२५ एकड़ भूमि में काजू के पेड़ लगाये जायेंगे।

ग्रामदान के पहले यहाँ '[illegible] मजदूर सोसाइटी' थी। अब 'ग्राम स्वराज्य सोसाइटी' और '[illegible] मजदूर सोसाइटी' का [illegible] हुआ है। उसका नाम अब 'ग्राम-स्वराज्य सोसाइटी' रहेगा और यही सब काम देखेगी।

सामूहिक भंडार : गाँव का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं रहता। मजदूरी के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सामूहिक कोठी (भंडार) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ८० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

गाँव के [illegible], [illegible] [illegible] गाँव के [illegible] है।

सर्वोदय युवक संमेलन, बिहार : द्वितीय वार्षिक अधिवेशन, पटना

सच्चिदानन्द

बिहार राज्य सर्वोदय युवक-सम्मेलन द्वितीय वार्षिक अधिवेशन श्रमभारती, खादीग्राम के आचार्य प्रो० राममूर्ति की अध्यक्षता में ऐतिहासिक तिथि ८ और ९ अगस्त को पटना नगर में एक अभूतपूर्व उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन सुप्रसिद्ध सर्वोदय कार्यकर्त्री श्री विमला ठकार ने किया। सर्वोदय आंदोलन के नेता श्री जयप्रकाश नारायण, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष और अब खादी ग्रामोद्योग आयोग के सदस्य श्री ध्वजाप्रसाद साहू, बिहार भूदान-यज्ञ कमिटी के मंत्री श्री वैद्यनाथप्रसाद चौधरी, गांधी स्मारक निधि, बिहार शाखा के संचालक श्री सरयूप्रसाद, बिहार हरिजन सेवक संघ के मंत्री श्री नगेन्द्र नारायण सिंह तथा बिहार सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री श्यामसुंदर प्रसाद भी सम्मेलन में शरीक हुए और युवकों का मार्गदर्शन किया।

सम्मेलन में बिहार के कोने-कोने से आये हुए लगभग २०० प्रतिनिधि शामिल हुए। इनमें ४० कालेज-छात्र और प्राध्यापक तथा शेष सर्वोदय, भूदान एवं खादी-आन्दोलन में आंशिक या पूरा समय देने वाले युवक कार्यकर्ता थे। कुछ ऐसे भी युवक थे जो न तो विद्यार्थी थे और न कार्यकर्ता, पर सर्वोदय विचार एवं सर्वोदय-आंदोलन खास कर युवक आंदोलन से प्रेम रखने वाले थे।

८ अगस्त को प्रातःकाल ८ बजे सम्मेलन का शुभारंभ पटना नगर के साइंस कालेज में हुआ। युवक-सम्मेलन के संयोजक श्री श्याम बहादुर सिंह ने अपना वार्षिक निवेदन पेश किया। वर्तमान राष्ट्रीय संकट की परिस्थिति में सर्वोदय-आंदोलन में लगे हुए युवकों की क्या जिम्मेवारी है, इसकी चर्चा करते हुए आपने कहा कि "आज देश की आजादी और लोकशाही पर जो खतरा है, उसका मुकाबला युवकों की संगठित शक्ति ही कर सकती है।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री विमलाबहन ने कहा कि जिस राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति की भूमिका में हम यहाँ आज मिल रहे हैं, उसका सम्यक् ज्ञान युवकों को होना चाहिए और तदनुसार अपना कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिए।

श्री विमलाबहन ने कहा "दुनिया तेजी से बदल रही है। पश्चिम में भी एक नई चेतना का उदय हो रहा है और लोग यह महसूस कर रहे हैं कि भौतिकवाद से मानवीय समस्याओं का हल सम्भव नहीं है। अमरीका के अलबामा राज्य में रंगभेदनीति के विरुद्ध श्री मार्टिन लूथर किंग का जबरदस्त अहिंसक आंदोलन, अफ्रीकी देशों की जनता द्वारा उपनिवेशवाद के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष, बड़े-बड़े सत्ताधारी राष्ट्रों के द्वारा मद्यनिषेध एवं निःशस्त्रीकरण के विचारों की स्वीकृति आदि कुछ ऐसी घटनाएँ हैं, जो विश्व-मानस पर गांधी-दर्शन के बढ़ते हुए असर की द्योतक हैं।" भारत की परिस्थिति की चर्चा करते हुए आपने कहा कि "स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद हमारी राष्ट्रीय एकता क्षीण होती जा रही है। भारत की सीमा पर चीन के आक्रमण ने एक नई परिस्थिति पैदा कर दी है। जाहिर है कि केवल सेना के भरोसे अपनी आजादी की सुरक्षा हम नहीं कर सकते। जनता को राष्ट्रीय रक्षण के लिए केवल आह्वान करना पर्याप्त नहीं। उसे अहिंसक प्रतिकार की ट्रेनिंग देनी होगी।" आपने कहा कि "वर्तमान परिस्थिति युवकों के लिए एक चुनौती है और युवकों के खून में इतनी गर्मी होनी चाहिए कि वह इस चुनौती का सामना कर सकें।" युवकों के संगठन का क्या स्वरूप हो, इसकी चर्चा करते हुए श्री विमला बहन ने कहा कि "आज तक अहिंसा के आधार पर कोई आदर्श संगठन नहीं बन पाया है। अहिंसक संगठन बनाने की टेक्निक क्या होगी, यह एक विचारणीय प्रश्न है और यह भी युवकों के लिए एक चुनौती है। मैं आशा करती हूँ, बिहार के युवक इस चुनौती को स्वीकार करेंगे।"

अध्यक्षपद से भाषण करते हुए आचार्य राममूर्ति ने कहा "अगस्त-क्रांति की याद की भूमिका में इस युवक सम्मेलन का आयोजन एक खास अर्थ रखता है। सन '४२ की क्रांति हमारी जवानी का इतिहास है। वह समय था, जब मुल्क के लिए मरने में जवानी थी, अब मुल्क के लिए जीने में जवानी है। विमला बहन की चुनौती का जवाब देने के लिए आज युवकों को जीने की जरूरत है। अब प्रश्न है कि इस जीने की पद्धति क्या होगी, जीने की कला क्या होगी? इन प्रश्नों का उत्तर हमें ढूँढ़ना है।" सर्वोदय-विचार की चर्चा करते हुए आपने कहा कि "कोई भी विचार, क्रांति की शक्ति तब पैदा कर सकता है, जब वह 'सोशल फोर्स' बन जाता है। हमें सर्वोदय-विचार को अपने जीवन में प्रत्यक्ष करके दिखाना होगा, और उसे 'सोशल फोर्स' बनाना होगा। स्वामित्व-विसर्जन की प्रक्रिया पर जोर देते हुए आपने कहा "गांधी की शर्त थी—जो जेल नहीं जाता, वह देशभक्त नहीं। आज सर्वोदय की शर्त होनी चाहिए कि स्वामित्व-विसर्जन के बिना सर्वोदय की क्रांति आगे नहीं बढ़ सकती। क्रांति का ख्वाब देखने वाले युवकों को यह शर्त पूरी करनी होगी।"

श्री ध्वजा प्रसाद साहू ने युवकों को आशीर्वाद देते हुए कहा "गांधी विनोबा की कल्पना का समाज बनाना कमजोर दिल वालों का काम नहीं है। यह काम वे ही युवक कर सकते हैं, जिनमें मस्ती हो। जब तक यह मस्ती नहीं आती, तब तक क्रांति नहीं हो सकती। क्रांतिकारी हमेशा खतरे को आमंत्रण देता है। परंपरा की लीक पर चलने वाला क्रांतिकारी नहीं हो सकता।"

गांधी स्मारक निधी के संचालक श्री सरयू प्रसाद ने युवकों को आह्वान करते हुए कहा, "जिस तरह आजादी प्राप्त करने के लिए आपने बलिदान किया था, उसी तरह आजादी की रक्षा के लिए आपको बलिदान करना होगा। लेकिन जब तक आपमें आत्मानुशासन का भाव पैदा नहीं होता, तब तक आप कुछ नहीं कर सकते। मैं आशा करता हूँ कि युवकों का यह संगठन बिहार के युवकों के चरित्र-निर्माण में सहायक होगा और इस प्रदेश के कोने-कोने में सत्य और प्रेम का संदेश पहुँचा सकेगा।"

अपराह्न के अधिवेशन में आगामी वर्ष के लिए हमारा क्या कार्यक्रम हो, इस विषय पर चर्चाएँ हुईं। युवक-सम्मेलन की प्रादेशिक सलाहकार-समिति की ओर से श्री त्रिपुरारी शरणजी ने एक पन्द्रह-सूत्री कार्यक्रम प्रस्तावित किया, जिसका अनुमोदन श्री रघुनाथ शर्मा ने किया। प्रतिनिधियों ने प्रस्तावित कार्यक्रम पर बड़ी गहराई से चर्चा की और अंत में एकाध संशोधन के साथ सर्वसम्मति से वह स्वीकृत किया गया।*

९ अगस्त को प्रातः ५॥ बजे युवकों का एक मौन जुलूस श्री विमला बहन के नायकत्व में अगस्त-क्रांति के शहीदों की याद में श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए रवाना हुआ और शहीदों की समाधि पर हुतात्मा पुष्पार्पणार्थ पहुँचा। सन् '४२ की ११ वीं अगस्त को पटना-सचिवालय पर राष्ट्रीय तिरंगा फहराने के निमित्त इस नगर के विद्यार्थी अंग्रेजों की गोली का निशाना बन कर शहीद हुए थे। उन्हीं शहीदों की समाधि पर सर्वोदय युवक-सम्मेलन ने अपनी पुष्पांजलि अर्पित की।

शहीद-समाधि स्थल पर से लौट कर सम्मेलन का कार्यक्रम प्रातःकाल ९ बजे शुरू हुआ। इस अवसर पर श्री जयप्रकाश नारायणजी भी, जो ८ अगस्त के अधिवेशन में शरीक नहीं हो सके थे, उपस्थित थे। इस अधिवेशन में, सर्वोदय युवक-सम्मेलन के संगठन का स्वरूप कैसा हो, इस प्रश्न पर चर्चाएँ हुईं। प्रादेशिक सलाहकार-समिति की ओर से श्री सच्चिदानन्दजी ने संगठन-संबंधी एक प्रस्ताव पेश करते हुए युवक-सम्मेलन के विधान में कतिपय बुनियादी परिवर्तनों की आवश्यकता बताई। प्रस्ताव का अनुमोदन डा० रामगोपाल जोशी ने किया। इस प्रस्ताव पर काफी गरम-गरम भाषण हुए। प्रस्ताव के पक्ष-विपक्ष में अनेक तर्क पेश किये गये। अनेक युवकों ने इस चर्चा में हिस्सा लिया। श्री द्वारको सुन्दरानी, श्री विमला ठकार और अंत में श्री जयप्रकाश नारायण ने भी इस चर्चा में दिलचस्पी ली। श्री जयप्रकाश नारायण के सुझाव पर यह तय हुआ कि चूंकि संगठन के प्रश्न पर और भी अधिक गहराई से विचार करने की जरूरत है, इसलिए अभी इस प्रस्ताव को स्थगित करके सम्मेलन की समाप्ति के बाद संशोधित विधान की प्रतियाँ प्रतिनिधियों के पास भेजी जायँ और तब फिर इस पर अंतिम रूप से विचार किया जाय।

९ अगस्त की सन्ध्या में सम्मेलन का खुला अधिवेशन पटना नगर के विशाल गांधी मैदान में हुआ, जहाँ हजारों की संख्या में कालेज-स्कूलों के छात्र, अध्यापक और नागरिक इकट्ठे हुए। इस अवसर पर श्री जयप्रकाश नारायण और श्री विमला बहन के ओजस्वी भाषण हुए। सम्मेलन के संयोजक ने सम्मेलन द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम तथा अन्य निर्णयों को पढ़ कर सुनाया। युवक-सम्मेलन के लिए राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद तथा अन्य महानुभावों से प्राप्त शुभकामनाओं के संदेश भी पढ़ कर सुनाये गये।

सम्मेलन अत्यंत सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

[रिपोर्ट विलंब से प्राप्त हो सकने के कारण हम युवक-सम्मेलन का समाचार समय पर नहीं दे सके, इसके लिए पाठक क्षमा करें। —सं०]

* स्वीकृत कार्यक्रम आगे दिया जाएगा।

महाकोशल में भूमि-वितरण

मध्य प्रदेश भूदान यज्ञ-मंडल ने सूचित किया है कि महाकोशल-शाखा के १७ जिलों में ३१ जुलाई तक कुल एक लाख अठारह हजार आठ सौ अड़सठ (१,१८,८६८) एकड़ भूमि भूदान-यज्ञ में प्राप्त हुई थी। उसमें से सत्तावन हजार सात सौ अट्ठाइस (५७,७२८) एकड़ भूमि का वितरण हुआ है। कुल प्राप्त भूमि में से पंद्रह हजार एकतालीस (१५,०४१) एकड़ जमीन बाँटने की दृष्टि से अयोग्य होने के कारण नामंजूर कर दी गयी है। अब वितरण के लिए केवल ४६,०९९ एकड़ भूमि बची है।

इस भू-वितरण के अनुष्ठान से सत्रह हजार पाँच सौ इक्यासी १७,५८१ भूमिहीन परिवार लाभान्वित हुए।

संपत्ति-दान के संकल्प

आचार्य श्री विनोबाजी के आह्वान पर इन्दौर के सुप्रसिद्ध वकील श्री कृष्णाजी अनन्त चितले एवं राज्य विधान-सभा के सदस्य व सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्री रामेश्वर दयाल तोतला और नगर-निगम के मनोनीत सदस्य श्री बाबू भाई देसाई ने संपत्ति-दान देना घोषित किया है।

भूदान-यज्ञ रजिस्टर्ड नंबर ए. ३५४ [पहले से डाक-महसूल दिये बिना भेजने का परवाना प्राप्त, लायसेन्स नं० ए ३४] २६ अगस्त, '६०

इन्दौर में विनोबा

मणीन्द्र कुमार

बाबा को इन्दौर आये एक पखवारा हो गया है। अब वे इन्दौर के लिए चिर-परिचित बन गये। सारा इन्दौर विनोबाजी को जानता है। अपनी पदयात्रा के दौरान में विनोबाजी का एक महीना इन्दौर ठहरना विशेषता रखता है। नौ साल की पदयात्रा में विनोबा ने पहले दो सालों में, पवनार और काशी में वर्षाकालीन चातुर्मास के निमित्त दो महीने बिताये थे। उसके बाद वे सतत चलते रहे। सात सालों में यह पहला मौका है कि वे इंदौर को इतना समय दे रहे हैं। अभी तक भूदान और ग्रामदान के माध्यम से हमारा प्रवेश गाँवों में ही ज्यादा हुआ, किन्तु अब समय आ गया है, जब कि आधुनिक सभ्यता के केन्द्र "नगरों" को भी सर्वोदय का कार्यक्रम स्पर्श करे।

बाबा ने इन्दौर में रोटरी क्लब के सदस्यों के बीच बोलते हुए कहा : "मैं आप लोगों के सामने पहली मर्तबा बोल रहा हूँ, यह आश्चर्य की बात नहीं है; क्योंकि मैं शहरों में कम ही रहा हूँ और रोटरी क्लब शहरों में ही होते हैं। बड़ौदा में पढ़ता था, तो छोटी उम्र थी। उसके बाद बापूजी के पास चला आया और तब से आश्रमों में ही रहा हूँ। उनके जाने के बाद निकलना पड़ा, यद्यपि मेरी वृत्ति बाहर निकलने की नहीं थी, किन्तु महज कर्तव्य घूमने का आया, तो निकला। सतत नौ साल से पदयात्रा चलती है, अधिकतर गाँव ही आते थे, बीच-बीच में शहर भी आये तो एक-दो दिन से ज्यादा नहीं ठहरा। यह पहला मौका है कि मैं सवा-डेढ़ मास इन्दौर में ठहर रहा हूँ। शहरों में कैसे काम किया जाय, यह अनुभव नहीं था, अब शहरों में कैसे काम करना, यह सीखने की कोशिश कर रहा हूँ।"

एक बार कार्यकर्ताओं की बैठक में विनोबाजी ने कहा : "इन्दौर में हमने देखा है कि ३०-४० कार्यकर्ता रोज-रोज मिलते हैं और देखते हैं कि कितना काम हुआ है और आगे काम की योजना बनाते हैं। रोज-रोज 'केबिनेट मीटिंग' होती है।"

इस पखवारे में सारे इन्दौर का जीवन विनोबा के विचारों से आलोकित हो उठा। विनोबाजी की उपस्थिति का एक सीधा असर इन्दौर में देखा जा सकता है। इन्दौर के चारों अखबारों में बाबा के प्रवचन और विचार निकलते ही हैं। एक "नई दुनिया" दैनिक पत्र निःशुल्क "विनोबा-दर्शन" परिशिष्ट भी नित्यप्रति निकलता है। इन्दौर का कोई ऐसा तबका नहीं है, जो इन दिनों बाबा से नहीं मिला हो और उनसे मार्ग-दर्शन नहीं प्राप्त किया हो।

१ अगस्त को तिलक पुण्य-तिथि के अवसर पर 'स्वच्छ इन्दौर सप्ताह' की शुरुआत बाबा ने हजारों नागरिकों के साथ की। बाबा ने स्वयं टट्टी-सफाई की। उस दिन सफाई के लिए अपेक्षित जोश और उत्साह नागरिकों में पाया गया। इतने लोग आये कि औजार बहुत कम पड़ गये।

उस दिन का वर्णन करते हुए एक दैनिक ने लिखा : "अप्पासाहब पटवर्धन के नेतृत्व में देखते-देखते दस-दस की अनेक टोलियाँ बनीं। सब सफाई के साधन लेने के लिए बड़े उतावले हो रहे थे। कोई बाँस की सींकों की लम्बी झाड़ू को यों उठा रहा था, मानो कोई झंडा ही फहराता हो, और कोई नाली साफ करने का पतरा ऐसा हाथ में उछाल रहा था, जैसे कोई गढ़ जीतने जा रहा, योद्धा हवा में अपना बल्लम चमकाता हो। इतना ही नहीं, बहनों ने अपनी शक्ति-प्रदर्शन करने में उस दिन पुरुषों से होड़ लगायी, वे भी टोकरी थामे, इधर-उधर सफाई करती हुई देखी जा सकती थीं। दूर से देखने पर सफाई के साधन लिये जाती हुई नागरिकों की टोलियाँ ऐसी लगती थीं, जैसे "पंचम की फैल" (इन्दौर का एक मजदूर-मोहल्ला) के गंदगी के गढ़ को फतह करने के लिए कोई सेना जा रही हो।" और सब के आगे सेनापति, नंगे बदन पर खादी की सफेद धोती, हाथों में काले दस्ताने और सिर पर हरी टोपी पहने-विनोबा!"

सफाई-सप्ताह के निमित्त विनोबा ने पातंजली के स्वांग जुगुप्सा, असंसर्ग, सत्व-शुद्धि, सौमनस्य, इन्द्रिय जय और आत्म-दर्शन योग्यता, इन सात सूत्रों पर सात दिन बड़ा सांगोपांग विवेचन किया। अपने ढंग की यह अनूठी चीज है।

अपने हाथों से नागरिकों की नगर-सफाई करने का यह पहला मौका नहीं था, कुछ साल पहले भंगियों ने हड़ताल की थी, तब नागरिकों ने सफाई की थी। किन्तु बिना किसी हड़ताल के स्वेच्छा से सफाई करने का यह पहला ही अवसर था। पत्रकारों की मुलाकात में बाबा ने बताया : "कल हमने एक बड़ा पराक्रम किया। टट्टी-सफाई करते वक्त जितनी हिम्मत थी, सबको इकट्ठा किया। कितनी खराब हालत है! टट्टी में डिब्बे रखे गये हैं, किन्तु वे भी फूटे हैं! टट्टी, पेशाब और पानी, तीनों का त्रिवेणी संगम हो जाता है। हमारे तो हाथ में रबर के दस्ताने थे, किन्तु रोज काम करने वाली बहनों के पास क्या दस्ताने होते हैं? क्या यह मनुष्यों के करने के काबिल काम है? आप लोग कहते हैं कि हड़ताल के दिनों में हमने काम किया, तब आपको ये दिक्कतें अवश्य आयी होंगी। आपको एक समिति बना कर इसमें सुधार करने की योजना बनानी चाहिए। अभी जो हालत है, क्या यह मानवीय है? मनुष्य ऐसे काम करें, यह हमें सहन नहीं होना चाहिए।"

इन्दौर के सभी राजनीतिक दलों के लोग बाबा से अलग-अलग मिले। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों ने बाबा से कहा कि 'वेतन में निश्चित अनाज देने की आपकी योजना हमें पसन्द आयी है, और उसका हम पूरा-पूरा समर्थन करेंगे।' इन्दौर के अन्य राजनीतिक दलों ने भी बाबा की यह बात मान्य की है। सभी पक्षों ने यह भी इच्छा प्रकट की कि नगर-निगम जैसी स्वायत्त शासन-संस्थाओं में राजनैतिक दलबंदी न रहे। उम्मीद की जाती है कि इन्दौर का नगर निगम पक्ष-मुक्त हो जायेगा।

इन्दौर के व्यापारी तीन-चार बार बाबा से मिले और उन्होंने आश्वासन दिया कि इन्दौर सर्वोदयनगर बनाने में व्यापारी भाई पीछे नहीं रहेंगे। बाबा ने व्यापारियों से कहा—"आप हमको अपने घर में दाखिल कीजिये। अगर आपके घर सात लोग हैं, तो आठवाँ मुझे मानें, अगर ग्यारह हैं, तो बारहवाँ मुझे मानें और घर के खर्च में भोजन, कपड़ा, चिकित्सा, यात्रा और बीमारी आदि में जो खर्च होता है, उसका हिस्सा हमें दें। अगर आपके घर ग्यारह लोग हैं और बारहवाँ मुझे मानते हैं तथा आपका सालाना खर्च बारह हजार रुपया आता है, तो एक हजार रुपये हमें दें। संपत्ति-दान से यह अधिक सरल है। इसमें हानि-लाभ में पड़ने की बात नहीं होती है।"

इन्दौर नगर के पेन्शनरों की एक सभा में बाबा ने वानप्रस्थाश्रम का आदर्श सामने रखा और कहा कि आपको देहासक्ति, विषयासक्ति, गृहासक्ति से मुक्त होकर समाज की निष्काम सेवा करनी चाहिए। ऐसा करेंगे, तो उम्र-वृद्धि के साथ बुद्धि एवं स्मरण-शक्ति भी तेज होगी और जीवन का सच्चा आनन्द प्राप्त करेंगे। नगर के पेन्शनरों ने एक समिति बनायी है, जो आगे इन्दौर में काम करने के लिए योजना बनायेगी।

श्री 'कमल'जी की पदयात्रा

श्री रामकुमार 'कमल' की पदयात्रा के समाचारों से पाठक समय-समय पर अवगत होते रहे हैं। उनका प्रवास अब राजस्थान के बाद गुजरात प्रदेश में प्रारंभ हो गया है। चित्तौड़, उदयपुर आदि शहरों में घूमने के बाद राजस्थान और गुजरात की सीमा के छोटे-छोटे गाँवों में विशेष रूप से काम किया गया।

गुजरात में अहमदाबाद, आणंद, राज-कोट आदि स्थानों की पदयात्रा हो चुकी है। अब यह पदयात्रा भिन्न क्षेत्र, गुजरात होते हुए महाराष्ट्र प्रदेश में आयगी। नासिक, पूना, सातारा, कोल्हापुर आदि जिलों की यात्रा का कार्यक्रम है। १ जून से २८ जुलाई तक के समय में ... मील की पदयात्रा हुई।

कानपुर में भू-वितरण

कानपुर जिला भूदान-यज्ञ कमेटी के कार्यकर्ताओं ने एक भू-वितरण पदयात्रा का आयोजन किया। १०८ मील की पद-यात्रा करके ११ गाँवों में लगभग ७० बीघा भूमि का वितरण १८ भूमिहीन परिवारों में किया गया।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
वार्षिक मूल्य ६) पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,९७६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,९७६ एक प्रति : १३ नये पैसे

भारत को समन्वय साधने का अपूर्व अवसर मिला है ! —विनोबा

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार २ सितम्बर '६० वर्ष ६ : अंक ४८

हमारे देश की परम्परा में समन्वय साधना का विचार कूट-कूट कर भरा है। "हरि और हर" याने विष्णु और हर, इनमें कोई भेद नहीं है। इस समन्वय के विचार को हमारे पूर्वजों ने बहुत अनुभव के बाद सीख लिया था।

यहाँ वैष्णव थे, विष्णु के उपासक, जो कि प्रेम प्रधान थे, अनुराग-प्रधान थे और शैव थे, शिवभक्त, जो वैराग्य-प्रधान थे। वैराग्य और अनुराग में पहले तो कशमकश रही, उपासना एक-दूसरे के मानो खिलाफ चलती हो, ऐसा उन भक्तजनों को भास हुआ, जो कि अक्सर एकांगी चिन्तन ही किया करते हैं और इसीलिए काफी कशमकश चली। शैवों और वैष्णवों के बीच आखिर में समन्वय का दर्शन हुआ, अभेद ध्यान में आया। एक सिखाता है, भगवान के लिए अनुराग और दूसरा सिखाता है, संसार के लिए वैराग्य। दोनों का विरोध नहीं हो सकता। दोनों एक ही वस्तु के दो पहलू हैं। संसार से अगर वैराग्य नहीं होगा, तो ईश्वर का अनुराग नामुमकिन है। ईश्वर के लिए अगर अनुराग नहीं रहा, तो संसार के लिए रुचि रहेगी ही, और वैराग्य नहीं आयेगा। इसलिए संसार-वैराग्य और परमेश्वर-अनुराग, ये परस्पर-पोषक वस्तुएँ हैं, विरोधी नहीं है और इन दोनों का समन्वय हो सकता है और करना ही चाहिए, तभी पूर्ण दर्शन होगा। इसका ख्याल हमारे पूर्वजों को आ गया था। यहाँ तक कि हरि-हर नाम की भी एक मूर्ति उन्होंने बना ली। हरि-हर मूर्ति याने उसमें हरि और हर, दोनों जुड़ जाते हैं।

दूसरी बात राम और कृष्ण को इकट्ठा करना भी एक बहुत अच्छी बात है। लेकिन इसका भी श्रेय हमारे पूर्वजों को है। रामचन्द्र मर्यादावतार हो गये, मर्यादनिष्ठा का प्रतीक हमने उनको माना था। उन्होंने सब प्रकार से धर्म-मर्यादा का पालन कर लोगों के सामने रखा। यही उनके जीवन का सार था। उसके बाद भगवान कृष्ण आये, जो प्रेम-मूर्ति थे और जिन्होंने सर्वत्र प्रेम बहाया। प्रेम के प्रवाह में मर्यादाएँ टूट जाती हैं, तो कोई हर्ज नहीं। प्रेम के अभाव में जो मर्यादाएँ टूट जाती हैं, वह अधम है, लेकिन प्रेम के कारण, भक्ति की मस्ती के कारण जो मर्यादाएँ टूट जाती हैं, उनका टूटना अमान्य नहीं, अनुकूल ही है। सो समन्वय जब करते हैं तो समझ में आता है। यदि समन्वय नहीं करते, तो दोनों में विरोध पैदा होता है। एक तो सत्यनिष्ठ, नीति नियमों का दृढ़ आग्रह रखने वाला, धर्मपरायण, मर्यादा-सम्पन्न और दूसरा उच्छृंखल, मस्त, मर्यादाओं को तोड़ने वाला और प्रतिज्ञाओं का भी परिस्थिति के अनुकूल अर्थ करने वाला। एक प्रतिज्ञापरायण, उसके अक्षर-अक्षर में अत्यंत निष्ठा रखने वाला, भावार्थ के साथ अक्षरार्थ का भी पालन करने वाला। और दूसरा, अक्षरार्थ को एक बाजू रखकर भावार्थ-प्रधान। इन दोनों में विरोध-सा प्रतीत होता है।

रामचन्द्र के चरित्र को तो आजकल हम 'राम-लीला' भी कहते हैं, लेकिन वह पीछे से बना हुआ शब्द है। पहले तो "रामस्य चरित महत्"। वाल्मीकि ने जब 'रामायण' लिखी, तो कहा कि 'मैं रामचरित लिखता हूँ।' चरित्र याने जिसे अंग्रेजी में 'लाइफ' कहते हैं, जीवनी। 'रामजी की जीवनी मैं लिख रहा हूँ,' ऐसा वाल्मीकि ने कहा, पर कृष्ण के बारे में 'कृष्ण की जीवनी लिख रहा हूँ', ऐसा भागवत में नहीं कहा। कृष्ण-लीला वर्णन कर रहा हूँ, ऐसा कहा। पहले राम-चरित्र और कृष्ण-लीला, ऐसे शब्द थे। समन्वय दोनों का नहीं हुआ था। एक थे राम चरित्र के भक्त और दूसरे थे कृष्ण-लीला के उपासक। एक मर्यादा में रहने वाले, मर्यादाओं की सीमा को पवित्र करने वाले, नीतिपरायण और दूसरे मस्त भक्त, जिनकी मर्यादाएँ टूटती हैं, जिसको वल्लभाचार्य ने 'पुष्टि' नाम दे दिया है। मर्यादा विरुद्ध अमर्यादा नहीं, मर्यादा विरुद्ध पुष्टि। तो एक विरोध का भास मालूम हुआ।

राम के उपासकों की मर्यादा आपको देखनी है तो तुलसीदासजी में देखिये। तुलसीदासजी की जितनी भक्ति है, वह कुल की कुल एक मर्यादा के अन्दर है। उनका कोई भी भक्ति का वचन ऐसा नहीं दिखेगा, जिसमें समाज मर्यादा का भंग होता है। अगर आपको मर्यादा से बाहर जाने वाली 'उन्मर्याद' (मर्यादा से नीचे गिरने वाली नहीं कहता हूँ—मर्यादा से ऊपर जाने वाली 'उन्मर्याद'।) ऐसी भक्ति देखना हो, तो सूरदास में देखनी चाहिए। सूरदास के पदों में आपको उन्मर्याद भक्ति दीख पड़ेगी। इन दोनों में आरम्भ काल में विरोध था। उसके बाद ध्यान में आया कि सत्य के साथ प्रेम का विरोध होना जरूरी नहीं, दोनों का समन्वय हो सकता है। राम और कृष्ण की मूर्ति बनी और इन दिनों तो मनुष्य के नाम भी रामकृष्ण होते हैं। याने राम और कृष्ण को इकट्ठा किया गया। जैसे हरि और हर को इकट्ठा करके हरि-हर बनाया, उसी प्रकार राम और कृष्ण को इकट्ठा करके 'रामकृष्ण' बनाया। यह समन्वय हमारे पूर्वज कर चुके हैं और यह मानी हुई बात है कि राम-भक्ति और कृष्ण भक्ति का मेल होता है और दोनों मिल कर के एक भक्ति है, ऐसा मानते हैं। हिन्दुस्तान की सभ्यता की रक्षा के लिए और जो हिन्दुस्तान का विश्वव्यापक कार्य है, जिसे करने का मौका अभी आया है, इस आजादी की प्राप्ति के बाद, उस लिहाज से और नया कार्य करने की जरूरत है। एक यह ऐसा मौका हमको मिला है, जो पहले नहीं मिला था। स्वराज्य प्राप्ति के बाद जो मौका हमको मिला है, उसको हमारे 'पालिटिक्स' वाले यह समझते है कि हमको सत्ता बाँटने का मौका मिला है। लेकिन वे समझते नहीं। दरअसल अभी मौका ऐसा मिला है, जो ढाई हजार साल पहले मिला था। इतने वर्षों के बीच में सारे भारत में एक राज्य कभी नहीं हुआ था। ऐसे आज भी भारत का एक हिस्सा अलग हुआ है, पर पाकिस्तान के नाम से। अशोक के जमाने में भी हिन्दुस्तान का एक हिस्सा पाण्ड्य, चेर, चोल ऐसे तीनों राजाओं के हाथ में था और अशोक के राज्य में शामिल नहीं था। आज वह दक्षिण वाला हिस्सा तो शामिल है लेकिन उत्तर वाला एक हिस्सा पाकिस्तान के नाम से कट गया है। फिर भी आज भारत का जितना हिस्सा एक राज्य में आया है, उतना इसके पहले कभी नहीं आया। इसी तरह साइन्स का आज हमको जो लाभ मिला है, वह अशोक के जमाने में भी नहीं मिला था।

अशोक ने क्या किया? तीन सिंहों को एकत्र किया। और तीन सिंह एक करके अपना एक अलग प्रतीक बनाया। अब यह क्या पागलपन उसने किया? आपने कभी सुना है कि सिंह इकट्ठे रहते हैं? बकरी, भेड़ वगैरह अपनी एक संस्था बना कर रहते हैं, वैसे सिंह नहीं रहते। वे तो अकेले-अकेले रहते हैं। चाहे उसके साथ उसका परिवार भले हो, सिंहनी हो, दो-चार बच्चे भी हों। लेकिन बाकी एक सिंह दूसरे सिंह के साथ मिलजुल कर रहेगा और तीन सिंह एकत्र होकर के मानो भाई भाई बन गये, इस तरह से एकत्र होंगे, यह नामुमकिन है। लेकिन ऐसा नामुमकिन चित्र अशोक ने बनाया। ऐसा सुझाने के लिए कि [illegible] तब बनती है, जब भेड़ों में जो समुदाय भावना है, और सिंह में जो पराक्रम भावना है वह इकट्ठी हो जाय। सिंहों की पराक्रम-शक्ति और भेड़ों की समूह शक्ति, जहाँ एकत्र हो जाती है, वहाँ अहिंसा पनपती है। हम पराक्रमी भी हैं और फिर भी एकत्र काम करते हैं। दुर्बल लोग एकत्र हो जाते हैं, क्योंकि दुर्बल हैं। पराक्रमी लोग एकत्र नहीं होते। अपने पराक्रम के घमंड में काम करते हैं। लेकिन पराक्रम भी हो और एकता की आवश्यकता महसूस करके सबके साथ मिलजुल कर काम करते हों, तभी अहिंसा बनती है। इस वास्ते अहिंसा का एक संकेत, चित्र बनाने के खयाल से तीन सिंहों को एकत्र किया। दरअसल वे चार सिंह हैं। ऐसा मैं कहना चाहता हूँ। वैसे फोटो में तीन दीखते हैं तीन बाजू के, लेकिन हैं वे चार। चारों दिशाओं में चार सिंह इकट्ठे हो रहे हैं, ऐसा उसने एक चित्र सोचा।

अशोक का जो अहिंसा का सपना था, वह स्वप्न उस जमाने में, विज्ञान-शक्ति के अभाव में सिद्ध नहीं भी हुआ। उन दिनों व्यापक प्रचार जल्दी हो ही नहीं सकता था। अब हम नौ साल घूम रहे हैं भारत में। बुद्ध भगवान कोई पैंतीस साल घूमे, लेकिन फिर भी हमारी बात दुनिया जानती है। बुद्ध भगवान को तो तीन सौ साल बाद जब अशोक पैदा हुआ, तब लोगों ने जाना। ईसा मसीह को किसने जाना था? सौ-सवा सौ साल के बाद, सेंट पॉल के बाद कुछ जानकारी हुई थी। फिर वह धीरे-धीरे फैला और आज वह दुनिया में व्याप्त है। इस तरह उस जमाने में जब वे पेलिस्टाइन में घूमते थे, तब तो उसी क्षेत्र में उनकी जानकारी थी। आज ज्ञान प्रचार के बहुत बड़े साधन हमारे हाथ में हैं। इसलिए अहिंसा की सिद्धि करके दुनिया को प्रेम सन्देश देने और प्रेम के रास्ते से मसले हल करने की राह दिखाने का एक मौका भारत को मिला है। यह जो मौका भारत को मिला है, इस वक्त, वह इसके पहिले कभी नहीं मिला था। अब इस दृष्टि से इस स्वराज्य का उपयोग करना चाहिए, न कि उसकी सत्ता के टुकड़े हम बाँट लें। और इस तरह से अपना-अपना स्वार्थ साधने के लिए एक मौका मिला है, ऐसा हमको नहीं समझना चाहिए। यह जो हिन्दुस्तान के सामने बड़ा मौका उपस्थित है और हिन्दुस्तान का अहिंसा का मिशन पूर्ण करना है। उसके लिए आपने यहाँ इतना समन्वय साधा। एक कदम और आगे जाकर और एक समन्वय साधने की जरूरत है। और वह यह कि भगवान गौतम बुद्ध को भी यहाँ स्थान देना चाहिए।

[गीता भवन, इंदौर ११–८–'६०]

योरोप-यात्रा के अनुभव : २.

रूस का वातावरण

• रामाधार

रूस में कुछ भारतीय भाई-बहिनों से भेंट हुई। उन लोगों से जो चर्चाएँ हुईं, उनके बारे में विचार करने से आश्चर्य तो होता ही है, निराशामिश्रित उदासीनता का भाव भी आता है। किन्हीं अव्यक्त सिद्धान्तों के बारे में विभिन्न व्यक्तियों में अत्यधिक मतभेद की बात तो समझ में आती है और वह स्वाभाविक भी लगती है। जो वस्तु सामने नहीं है, अनुभव में नहीं आ रही है और जिसे मस्तिष्क की पकड़ के सहारे देखने की कोशिश है, उसके बारे में विभिन्न मतभेद एवं मतवाद आदि चलते रहें, तो अचम्भे में आने की गुंजाइश कम लगती है। लेकिन जो कुछ सामने आँखों को स्पष्ट दीख रहा हो, आदमी जिसे छू सकता है, जिसकी नाप-तौल कर सकता है, उसके बारे में भी बिल्कुल विरोधी मत हो सकते हैं, यह मेरी समझ के बिल्कुल ही बाहर है। लेकिन सोवियत भूमि में विभिन्न भारतीयों के साथ चर्चा करने पर यह अनुभव हुआ।

वैसे वहीं यह अनुभव आया हो, यह बात नहीं है। भारतवर्ष में नित्य ही ऐसा होता है। परन्तु बाहर जाने वाले भारतीयों के बारे में मैंने कुछ भिन्न कल्पना की थी। मेरा खयाल था, लोग जब बाहर जाते हैं, तो उन देशों की आबहवा के प्रभाव के फलस्वरूप उनमें कुछ तो ताजगी आती होगी और वह अपने मस्तिष्क को अधिक खुला एवं ग्रहणशील रख सकते होंगे। परन्तु मास्को में मेरा यह भ्रम दूर हो गया।

सोवियत देश में नई व्यवस्था के फलस्वरूप लोगों की स्थिति क्या है, इसका विवेचन अलग-अलग भाई-बहिनों ने अलग-अलग तरीके से किया। उनमें कुछ के विचार तो एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं! एक बहिन जो अपने पति के साथ कई वर्षों से वहाँ रह रही हैं और रूसी भाषा अच्छी तरह जानती हैं, उन्होंने वहाँ की स्थिति इतनी भयंकर बतायी कि कुछ समझ में नहीं आया कि हम इनकी बातों का क्या अर्थ लगायें। उनका विचार है कि सारा देश गुलामी में जकड़ा हुआ है। सब लोगों को अत्यधिक काम करना पड़ता है। परिश्रम से उनका शरीर चूर-चूर हो जाता है और वे असमय में वृद्ध हो जाते हैं। रूस के साथ भारत की तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे देश की स्थिति हर प्रकार से अच्छी है। वहाँ आदमी चैन से रह सकता है, इच्छानुसार काम और मेहनत कर सकता है, रूस में अपनी कठिनाइयों की चर्चा भी उन्होंने की, जिससे लगता था स्वयं उन्हें भी बहुत मेहनत पड़ती है और मँहगाई के कारण गुजर कठिनाई से होती है। नौकर-चाकरों के अभाव की उन्हें विशेष शिकायत थी।

इसके विपरीत कुछ ऐसे थे, जिन्हें वहाँ का जीवन बहुत पसन्द है। उनके विचार से सोवियत देश ने बहुत उन्नति की है और उत्तरोत्तर यह प्रक्रिया तीव्रतर होती जा रही है। उन्होंने कुछ उदाहरण भी दिये। वहाँ पारिश्रमिक देने के नियमों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि इससे ही वहाँ की व्यवस्था की वैज्ञानिकता झलकती है। जिस मोटर में हम लोग जा रहे थे, उसके चालक का उदाहरण देते हुए उससे पूछ कर उन्होंने बताया कि प्रायः ग्यारह-बारह सौ रूबल (लगभग इतने ही रुपये) मासिक उसे मिलते हैं। मोटर-चालक का काम स्नायु-दौर्बल्य पैदा करता है, यह देखा जा चुका है, अतः उसका विचार करते हुए इस काम का पारिश्रमिक अधिक रखा गया है। यह दृष्टिकोण सब जगह है। सरकारी दफ्तरों में काम करने की पद्धति का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सुविधाएँ किसी पद-विशेष को नहीं दी जातीं—काम के प्रकार की दृष्टि से दी जाती हैं। मसलन किसी विभाग-विशेष में यदि मोटर होगी, तो वह विभागीय संचालक के लिए न होकर जो आदमी उस विभाग की डाक बाँटता होगा, उसके लिए होगी। एक और उदाहरण उन्होंने यह दिया कि ट्रेनों को चलाने की व्यवस्था इनके यहाँ यह है कि प्राथमिकता मालगाड़ी को दी जाती है। सवारी गाड़ी को मालगाड़ी के लिए मार्ग देकर तब जाना होता है। यदि कोई स्पेशल ट्रेन भी हो, तो उसके लिए भी यही नियम है। मालगाड़ी को मार्ग देकर उसके पीछे जाना होगा। उनके विचार से यह तौर-तरीका वर्ग-भेद के अभाव का सूचक है।

कुछ और भारतीय हैं, जो थोड़ी प्रशंसा करते हैं, थोड़ी निन्दा करते हैं। वह न इधर हैं, न उधर हैं। लेकिन यह उनकी तटस्थता जाहिर करती है ऐसी बात नहीं है। ऐसा विचारपूर्वक करते हैं। इसमें झंझट कम है। इस तरह सोवियत देश में दरअसल क्या स्थिति है, यह न बता कर ये लोग उसके बारे में अपने विचार प्रकट करते हैं।

रूसी लोगों से उनकी अपनी स्थिति पर चर्चा करने की सुविधा बहुत ही कम रही। भाषा की कठिनाई तो थी ही, समय की तंगी से भी यह नहीं हो सका। जिस किसी से बातचीत की सुविधा हो सकी, उससे यही मालूम हुआ कि वे सन्तुष्ट हैं और आगे के लिए बेहतर स्थिति की आशा करते हैं। दर असल हम लोग जो विचार-स्वातन्त्र्य आदि की चिल्ल-पों मचाये रहते हैं, वह सब झंझट वहाँ नहीं है। यह केवल अधिनायकी व्यवस्था के कारण नहीं है। रूस में जो भी पाबन्दियाँ हैं, राजनीति को लेकर हैं। राजनीति के अलावा और सभी प्रश्नों के सम्बन्ध में किसी प्रतिबन्ध की आवश्यकता नहीं है और राजनीति में जितने लोग गहरी दिलचस्पी रखते हैं, वह संख्या नगण्य-सी है। अन्य अधिकांश लोगों के लिए, जो राजनीति में दिलचस्पी नहीं रखते, उस तरह के प्रतिबन्धों से क्या अन्तर पड़ता है? जिनमें उनकी दिलचस्पी अथवा दिलचस्पियाँ हैं उनके बारे में वे पूर्ण स्वतन्त्र हैं और यह आभास वहाँ हमें मिला।

जो बहिन वहाँ की व्यवस्था के सम्बन्ध में बहुत असन्तुष्ट लगीं, उनकी विचार करने की परिधि उनकी अपनी व्यक्तिगत सुविधा-असुविधा से बाहर नहीं जा सकी यह स्पष्ट है। भारतवर्ष दरिद्र देश है, यहाँ असाधारण बेकारी है। अतः मामूली सम्पन्नता वाले लोग भी आसानी से कई नौकर-चाकर रख सकते हैं। इन बहिन को शायद यही अभ्यास होगा और रूस में इसकी सुविधा न पाकर वह उस देश से बहुत नाराज हैं। यह स्वाभाविक भी है।

वैसे हमारे देश के नेताओं में से अधिकांश लोग अपनी व्यक्तिगत चर्चाओं में कहते हैं कि देश की स्थिति अच्छी नहीं है। सार्वजनिक भाषणों में ही देश की तरक्की की बातें होती हैं, व्यक्तिगत चर्चाओं में नहीं। हाल में मेरे एक मित्र कह रहे थे कि उनकी एक अत्यन्त विशिष्ट एवं सम्मानित नेता से मुलाकात हुई थी। उन्होंने इनसे देश की वर्तमान अवस्था पर अत्यधिक असन्तोष प्रकट किया। वे बहुत ही चिन्तित थे। पर कहने लगे किसी का बस नहीं चलता। उनके अपने भ्रष्टाचार से कोई बचा हुआ नहीं है। सदस्यों के बारे में तो कहने लगे इनकी स्थिति भिखमंगों जैसी है। पर ये तो उनके व्यक्तिगत विचार हैं! सार्वजनिक सभा के लिए उनके विचार भिन्न हैं! यह स्थिति जब नेताओं की है, तो रूस में रहने वाली भारतीय बहिन के विचारों के बारे में हम क्यों माथापच्ची करें?

दरअसल रूस को मैंने देखा तो बहुत कम, परन्तु मुझे वहाँ अच्छा लगा। लोग खुशहाल हैं, प्रसन्न हैं और भविष्य के प्रति आशावान हैं। मेहनत खूब करते हैं, परन्तु यह उनकी आदत में शामिल है। सम्भव है 'स्टैण्डर्ड आफ लिविंग' के विचार से उनकी सम्पन्नता वह न हो, जो पश्चिमी योरोप की है। लेकिन अगर हम पश्चिमी योरोप की फैशनपरस्ती के कारण होने वाली बरबादी का ध्यान रखें, तो वहाँ और रूस में बहुत अन्तर निकलेगा, ऐसा मुझे नहीं लगता है। मेरे एक मित्र, जो पदाधिकारादि की दृष्टि से विशिष्ट स्थान रखते हैं, हाल में योरोप-भ्रमण से लौटे हैं। उनका आग्रह है "पश्चिमी योरोप के साथ रूस की तुलना नागरिक, सुविधाएँ और जीवन-मान आदि की दृष्टि से नहीं हो सकती। हाँ, सैनिक शक्ति रूस की विशिष्ट है। पर जीवन-मान पश्चिमी योरोप का कहीं अधिक है।" बाजारों, लोगों के पहिनावे एवं होटलों की व्यवस्था आदि को देखने से और तुलना करने से ऐसा ही लगता है। परन्तु गहराई में जाने से यह अन्तर अन्ततः बहुत नहीं रहेगा।

•

पुस्तक-समीक्षा

शांति-सेना : विनोबा

पाँचवाँ संस्करण, पृष्ठ : १३२, मूल्य : ७५ नये पैसे।

प्रकाशक : अ० भा० सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी।

"असम में इस समय शान्ति-सैनिकों की जितनी आवश्यकता थी, उस समय मैंने अपने मन पर बहुत काबू रखा, लेकिन मेरा मन अत्यन्त तीव्र वेदना से भरा हुआ था। वहाँ एक तरह का झगड़ा ही हुआ। देश में ही लोगों को शरणार्थी बनना पड़ा। हमारे सिद्धांतों को कसौटी पर कसने का यह समय था। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि अगर मेरे दो-चार शान्ति-सैनिक दंगे में मर जाते, तो मैं नाचता। शान्ति-सेना के बिना अब हम टिक नहीं सकेंगे।"

रेडियो पर विनोबा का यह संदेश मैं खाट पर लेटे हुए सुन रहा था और मेरे हाथ में अभी-अभी प्रकाशित 'शान्ति-सेना' पुस्तक का पाँचवाँ संस्करण था। कानों पर भी शान्ति-सेना और आँखों के सामने भी 'शान्ति-सेना' (पुस्तक)।

यह पुस्तक का पाँचवाँ संस्करण है। अब तक के संस्करणों से लगभग भिन्न। यानी विनोबा के अब तक के विचारों का समग्र संकलन। १३२ पृष्ठों में हमारे सामने अहिंसा और शान्ति के शास्त्र का निचोड़ रखा गया है। शान्ति-सेना की आवश्यकता, उसका स्वरूप, संगठन आदि के अलावा इस पुस्तक में उन सब प्रश्नों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है, जो आये दिन शान्ति-सेना के सम्बन्ध में उठते रहते हैं।

पुस्तक का आकार-प्रकार देख कर नहीं लगा कि पुस्तक पढ़ी जाय, पर जब पढ़ना प्रारंभ किया, तो उसे पूरी किये बिना नहीं रहा गया। पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ जाने के बाद लगा कि मुझे कुछ ऐसी चीज हासिल हुई है, जो अब तक हासिल नहीं थी।

यह पुस्तक आठ खंडों में विभक्त है। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आदमी इस नतीजे पर पहुँचता है कि आज के युग में समस्याओं के हल के लिये हिंसा का सहारा लेना निरर्थक तो है ही, अनावश्यक भी है। पर अहिंसा अभी तक संगठित नहीं है। इसलिए वह अपनी ताकत दिखा नहीं सकती। यदि शान्ति-सेना का निर्माण होगा, तो अहिंसा संगठित होगी और तब वह अपनी शक्ति दिखा सकेगी, यानी उसके द्वारा समस्या का स्थायी हल प्राप्त हो सकेगा।

—सतीश कुमार

स्मृतिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

लोक लिपि

सर्वोदयनगर !

'संता' यानी सत्पुरुषों की जमात। कुरान में कहा गया है की सत्पुरुषों की जमात अेक ही है। अिसको ध्यान में रख कर जो सहज वीचार आया, वह आपके सामने रख दीया। अिस वीचार का अिन्दौर नगर के सर्वोदयनगर बनने से क्या तालुक? तो मैं कहता हूं की अिन्दौर में सत्पुरुषों की अेक जमात बन जाय, तो अिन्दौर सर्वोदयनगर हो जायेगा। अेक और बात है—दीवारों से ये गंदे और भद्दे चीत्र बीलकुल हटा दीये जाने चाहीअे। नगर-नीगम और दूसरे घरवालों को मील कर अैसे सारे गंदे चीत्र और अिश्तहार मीटा देने चाहीअे, जो गंदी भावना पैदा करते हैं। गंदे चीत्रों के प्रदर्शन से संस्कारों पर बुरा असर पड़ता है तथा मन और मस्तीष्क में अुसकी बुरी प्रतीक्रीया होती है, अत: आप लोगों को चाहीअे कीअैसे अिश्तहारों का प्रदर्शन न करें। कहा गया है की जो अेक बार भी हरी नाम का अुच्चारण कर लेता है, अुसने भगवद् प्राप्ती के लीअे कमर कस ली है। तो अिन्दौर से अगर गंदे अिश्तहार और चीत्र मीटा दीये जायें, तो मैं समझ लूंगा की अिन्दौर ने सर्वोदयनगर बनने के लीअे कमर कस ली है। केवल यह की सर्वोदयनगर के लीअे सत्पुरुषों की जमात और गंदे चीत्रों और अिश्तहारों को हटाया जाना जरूरी है।

(अिन्दौर, १६ अगस्त) —वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; अ = अ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

"छोटी-छोटी" बातें

[हम 'बड़ी-बड़ी' बातें करने के इतने आदी हो गये हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों की तरफ हमारा ध्यान बिलकुल नहीं जाता। उनकी ओर ध्यान देना हमें हमारे 'बड़े-बड़े' कामों से ध्यान बँटाने जैसा लगता है। पर हम भूल जाते हैं कि 'छोटी-छोटी' बातों से ही हमारी आदत और जीवन के संस्कार बनते हैं।]

हममें से अधिकांश लोग रोज प्रार्थना में गीता के स्थितप्रज्ञ के श्लोक दुहराते हैं। गीता के उपदेश के उस गम्भीर अवसर पर भी अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछता है कि "मुझे यह बतलाइये कि स्थितप्रज्ञ व्यक्ति कैसे बोलता है, कैसे उठता-बैठता है, कैसे चलता है ?" अर्जुन को भी कृष्ण से इतनी गम्भीर चर्चा करते समय इन "छोटी-छोटी" बातों का खयाल आया, क्योंकि वह जानता था कि मनुष्य के निर्माण में इन 'छोटी-छोटी' बातों का असर बहुत गहरा होता है और मनुष्य किस स्तर पर पहुँचा है, उसका अंदाज भी जिस प्रकार वह उठता बैठता, चलता, बोलता है, उस पर से लगता है।

हम समाज परिवर्तन की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन हमारे अपने जीवन पर कभी हमने नजर डाली ? सभाओं में जब हम चर्चा करते हैं या भाषण देते हैं, उस समय जिन मूल्यों का हम प्रतिपादन करते हैं, क्या उनकी कुछ झलक हमारे जीवन में दिखाई देती है ? सभाओं और शिविरों को छोड़ कर कोई हमारे घर आये, तो क्या उसे दूसरे लोगों की अपेक्षा हमारे रहन सहन में कुछ भिन्न दर्शन होगा ? हमारा घर और उसके आसपास का वातावरण उसे स्वच्छ नजर आयेगा ? हमारे बाल-बच्चों के संस्कार कुछ भिन्न नजर आयेंगे ? कुछ नया जीवन हमारे आसपास उसे दिखायी देगा ? क्रांति एकांगी नहीं होती। क्रांति का अर्थ ही यह है कि वह जीवन के सारे मूल्यों को बदल देती है, उसका असर जीवन के हर क्षेत्र में प्रगट होता है। हम नये समाजवालों का घर का वातावरण, सामाजिक सम्बन्ध, आपस का व्यवहार क्या दूसरों से कुछ भिन्न है ? हम मालकियत-विसर्जन की बात करते हैं इसलिए हमने भूदान किया या सम्पत्ति-दान दिया, यह तो ठीक है, पर मालकियत-विसर्जन अपने आप में कोई स्वतंत्र चीज नहीं है, वह एक नये जीवन की शुरुआत है और उस नये जीवन की झलक हमारी हर छोटी-छोटी हरकत से जाहिर होनी चाहिए। यही अर्जुन के प्रश्न का अर्थ है। इस दृष्टि से अगर हम सोचेंगे तो जीवन की इन "छोटी-छोटी" बातों का महत्त्व हमारी समझ में आयेगा और फिर हम हमारी हर हरकत के ऊपर नजर रखेंगे।

—सिद्धराज

भूदान-आन्दोलन की कसौटी

गुजरात के प्रजा-समाजवादी आगेवान, श्री ईश्वरलाल देसाई ने भारतीय राष्ट्र के तत्त्वज्ञान विषय पर लिखते हुए भूदान-आंदोलन के सम्बन्ध में कुछ विचार व्यक्त किये हैं, जो इसी अंक में अन्यत्र दिये हैं। जैसा विनोबा ने एक बार कहा था, हम लोग जो आन्दोलन में काम करते हैं, उन्हें उन लोगों के विचारों को आदर से सुनना चाहिए, जो आन्दोलन से अलग होते हुए तटस्थ भाव से उसे देखते हैं और अपनी राय जाहिर करते हैं। ऐसे लोगों की राय पर हमें विचार भी करना चाहिए। श्री देसाई का कहना है कि भूदान-आन्दोलन "मात्र सुधारक रहने वाला है या क्रान्तिकारी" इस बात की कसौटी का समय आ गया है। वह इसलिए कि पंचवर्षीय योजनाओं के कारण देश ऐसी स्थिति में पहुँच गया है कि अगर इस समय भविष्य की हमारी दिशा के बारे में हमने गहराई से नहीं सोचा और मौजूदा धारा को रोकने की कोशिश नहीं की, तो शायद पीढ़ियों और सदियों के लिए फिर मुल्क गांधीजी के रास्ते पर नहीं लौट सकेगा। भूदान-आंदोलन अहिंसक समाज के निर्माण का दावा करता है, तो उसे इस चुनौती का जवाब देना होगा। अगर इस आन्दोलन का असर आज की धारा को पलटने में नहीं होता है, तो यह मौका बहुत अर्से के लिए हाथ से निकल जा सकता है।

श्री देसाई को दो कारणों से भूदान-आन्दोलन की इस प्रकार की क्षमता के बारे में शक होता है। उनके खयाल से इस आन्दोलन ने दो ऐसी मर्यादाएँ अपने ऊपर लगा ली हैं, जो उसके क्रांतिकारी होने के मार्ग में रुकावट डालती हैं। श्री देसाई का मानना है कि भूदान-आन्दोलन जनता का राजनैतिक संगठन नहीं चाहता। जहाँ तक राजनैतिक संगठन का मतलब जनता के अलग अलग पक्षों में संगठित होने से है, इसमें कोई संदेह नहीं कि भूदान-आन्दोलन इस प्रकार के पक्षगत संगठन के खिलाफ है। हमारा मानना है कि जनता के इस तरह पक्षों में बँट जाने से देश को नुकसान पहुँचता है और राष्ट्र में तनाव और बुराइयाँ बढ़ती हैं। पर इसका मतलब यह नहीं है कि भूदान-आन्दोलन जनता में राजनैतिक चेतना जागृत करने के खिलाफ है। श्री देसाई जानते हैं कि भूदान-आन्दोलन का मुख्य आधार ही लोकशक्ति है। हम चाहते हैं कि वह जागृत हो और अपने कब्जे को पहुँचाने। लोकशक्ति ही सच्ची राजनीति है और इस दृष्टि से भूदान-आन्दोलन राजनीति से अलग नहीं है। जनता के राजनैतिक संगठन के माने हमारी दृष्टि से यह है कि लोग संगठित होकर, मिलजुल कर, सहयोगपूर्वक अपनी सारी व्यवस्था खुद सम्हाल लें। अगर हम चाहते हैं कि सब लोग मिलजुल कर काम करें तो उनको पक्षों के रूप में संगठित करना गलत ही नहीं, घातक भी होगा। जो लक्ष्य हम सिद्ध करना चाहते हैं, उसी के विरुद्ध वह कदम पड़ेगा।

श्री देसाई ने दूसरी शंका यह उठायी है कि भूदान-आन्दोलन "प्रतिकारात्मक सत्याग्रह" के विरुद्ध है। उन्होंने एक जगह यह भी कहा है कि यह आन्दोलन 'प्रतिकार का निषेध' करता है। हमारे खयाल से इस मामले में भी कुछ गलतफहमी है। भूदान-आन्दोलन ने प्रतिकार का निषेध कभी नहीं किया। यह समूचा आन्दोलन ही एक प्रकार से समाज की मौजूदा परिस्थिति और गतिविधि का प्रतिकार कर रहा है, उसके विरोध में आवाज उठा रहा है। आज समाज में शासन या दूसरे जो बल काम कर रहे हैं, उनकी अवगणना भी भूदान-आन्दोलन नहीं करना चाहता। हम जानते हैं कि इन बलों का राष्ट्र के भविष्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है और इसलिए अगर इस प्रकार के बल गलत रास्ते पर जा रहे हों, तो उनका प्रतिकार अवश्य करना चाहिए। पर प्रतिकार का स्वरूप समय-समय की परिस्थिति के अनुसार होता है। जिस प्रकार के 'प्रतिकारात्मक सत्याग्रह' की कल्पना श्री देसाई के मन में है, उस प्रकार के प्रतिकार का भी भूदान-आन्दोलन ने निषेध नहीं किया है, पर उसमें लगे हुए लोगों में से बहुतों का ऐसा मानना जरूर है कि आज की परिस्थिति में सत्याग्रह के वे प्रकार शायद कारगर न हों और इसलिए हमें दूसरे तरीके ढूँढ़ने चाहिए। अगर हमें अहिंसा की शक्ति को समाज में प्रगट करना है, तो यह स्पष्ट है कि सत्याग्रह के हमारे तरीके सौम्य से सौम्यतर होने चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि 'सौम्य से सौम्यतर की इस ओर' में कहीं हम स्थितिपालक न बन जायँ। समाज में यही भूदान-आन्दोलन की सच्ची कसौटी है और इसका कुछ प्रमाण जब तक हम नहीं देते, तब तक श्री देसाई जैसे शुभचिन्तकों को चिंता होना स्वाभाविक है।

—सिद्धराज ढड्ढा

तीसरी पंचवर्षीय योजना फिर से बने !

"कहीं ऐसा तो नहीं है कि भारत में नौकरी करने के अतिरिक्त शिक्षित व्यक्तियों के लिए और कोई काम ही नहीं है ?" यह एक स्तम्भित कर देने वाला प्रश्न है, जो मेरे एक मित्र ने तृतीय पंचवर्षीय योजना पर लोकसभा में चल रही बहस का समाचार पढ़ते हुए पूछा। आज कॉलेज और विश्वविद्यालय तो मानो या तो नौकरी दिलाऊ दफ्तर हैं या बेकारों को पैदा करने के कारखाने ! इसीलिए हैदराबाद की एक आम सभा में भाषण करते हुए जयप्रकाश बाबू ने कहा कि 'जब भारत का शासन आज विदेशियों के हाथ में नहीं, बल्कि हमारे अपने लोगों के हाथ में है, तब शिक्षा-पद्धति विदेशी रहे, इसका क्या मतलब है ?" उन्होंने अपनी बात का सबंध बेकारी के साथ जोड़ते हुए कहा कि प्रत्येक विश्वविद्यालय के द्वार पर यह लिख दिया जाना चाहिए कि यहाँ 'डिगरी' नहीं दी जाती और यहाँ पर पढ़ने के बाद नौकरी भी नहीं दी जाती।"

जयप्रकाश बाबू की इस बात में काफी सार है। यदि हर पढ़े-लिखे को नौकरी करने की इच्छा होगी, तो एक दिन सारा देश ही नौकर बन जायगा, क्योंकि पूरे देश को शिक्षित तो करना ही है। आज तो हर साल द्रौपदी के चीर की तरह बेकारों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

अनुमान किया गया है कि तीसरी योजना के प्रारभ-काल में ही सरकार के सामने ९० लाख व्यक्तियों को काम देने की समस्या है। यह संख्या योजना काल में डेढ़ करोड़ से ऊपर चली जायगी। पिछली दो योजनाओं का अनुभव भी यही है कि जहाँ काम दिलाने की संख्या का लक्ष्य प्राप्त नहीं होता, वहाँ काम चाहने वालों की संख्या लक्ष्य से ऊपर पहुँच जाती है ! ये काम चाहने वाले भी अधिकांशत सरकारी नौकरी प्राप्त करने की तमन्ना रखते हैं। वहाँ की सुख-सुविधा का आकर्षण भला किसे नहीं होगा ?

इस भयानक बेकारी का सबसे बड़ा और पहला कारण निरर्थक शिक्षा-पद्धति है और दूसरा है, छोटे-छोटे उद्योग धन्धों का टूट जाना। इन रोजगारों के खतम हो जाने से सारी आबादी शहरों की तरफ खिंची चली आ रही है और काम चाहती है। आजकल शहरों में आपको २५-३० रुपये में आसानी से नौकर मिल जाते हैं ! रिक्शा चलाने वालों की भी भरमार हो रही है। गाँव उजड़ रहे हैं, आये दिन नई-नई राजधानियाँ बन रही हैं और शहर बढ़ रहे हैं। यह पश्चिमी फैशन का भूत न जाने हमें किस गड्ढे में ले जाकर गिरायेगा, मालूम नहीं !

दादा कृपलानी पार्लियामेंट में बहुत कम बोलते हैं, पर जब बोलते हैं, तो बहुत पते की बात कहते हैं। उन्होंने कहा कि "योजना बनाने वाले देश के सामने उपस्थित वास्तविक समस्याओं से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। वस्तुत इस योजना को फिर से तैयार किया जाना चाहिए और औद्योगीकरण की चकाचौंध में हमें नहीं डूबना चाहिए।" उनकी इन बातों में काफी सार है। पंचवर्षीय योजना का देश के निर्माण के साथ बहुत महत्त्व है और देश का अरबों रुपया उस पर खर्च होने वाला है, इसलिए ऐसी योजना का निर्माण करते समय बहुत ही सावधानी की आवश्यकता है।

—सतीश कुमार

शांति-सेना और नेहरूजी

कुछ दिन पहले विनोबाजी के एक भाषण में इस बात का जिक्र था कि पंडित जवाहरलालजी नेहरू ने शान्ति-सैनिक के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किये हैं। 'भूदान-यज्ञ' तथा दूसरे भूदान पत्रों में वह प्रवचन छपा था। इस खबर को लेकर स्वाभाविक ही सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में एक तरह की चर्चा है। हमारे पास कई कार्यकर्ताओं के पत्र आये हैं। 'शान्ति-सैनिक' के लिए कुछ शर्तें रखी गई हैं, जैसे अपना 'पूरा समय और मुख्य चिन्तन' अहिंसक क्रान्ति के सक्रिय काम में लगाने की तथा किसी भी पक्ष का सदस्य न होने आदि की। स्पष्ट है कि पंडित जवाहरलालजी के मामले में ये निष्ठाएँ पूरी होने की कल्पना नहीं की जा सकती। विनोबा के भाषण में इस बात का भी जिक्र था कि जब आन्ध्र के हमारे साथी श्री प्रभाकरजी ने शान्ति-सैनिक का प्रतिज्ञा-पत्र नेहरूजी के सामने रखा, तब उन्होंने कहा भी कि मैं इस प्रतिज्ञा-पत्र की शर्तों को पूरी नहीं कर सकता हूँ, इसलिए कैसे हस्ताक्षर करूँ। इस पर प्रभाकरजी ने पंडितजी से कुछ चर्चा की और फिर उन्होंने शान्ति-सैनिक के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किये।

यह सही है कि शान्ति-सैनिक के प्रतिज्ञा-पत्र में जो शर्तें रखी गयी हैं, वे सब पंडितजी के मामले में पूरी नहीं होतीं, इसलिए पंडितजी का उस प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करना एक प्रकार से सांकेतिक ही मानना चाहिए। पर शान्ति-सेना के काम के लिए यह एक बड़ा शुभ सकेत है। पंडितजी अक्षरार्थ में चाहे शान्ति-सैनिक के लिए मानी गयी निष्ठाओं को पूरी न करते हों, परन्तु जहाँ तक शान्ति सेना की कल्पना और उसकी आवश्यकता का सवाल है, उनका हृदय इसके साथ है, यही उनके हस्ताक्षर का आशय और सकेत हो सकता है। पंडितजी के शान्ति सेना के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने की बात को अगर हम उसके सही अर्थ में लें, तो यह जाहिर है कि शान्ति सेना के इतिहास में यह एक उल्लेखनीय घटना है।

—सिद्धराज ढड्ढा

मदिरालय का अंधकार !

सूरज डूब चुका था और अंधकार की कालिमा तेजी से फैलती जा रही थी, आसपास की घाटियाँ बड़ी भयानक और निर्जीव-सी लग रही थीं। हवा की सनसनाहट से पेड़ों के पत्ते काँपने लगे। हमारे चारों ओर विशाल गगनचुम्बी पर्वत चुपचाप खड़े थे, जैसे उन्हें लकवा मार गया हो ! तलहटी में एक नीरव सौन्दर्य बिखरा था। भैलंगना की तीव्रगामी जल धारा, घने वन, एकाध नर-नारी किसी विशेष कार्यवश इधर-उधर आते-जाते दिखाई पड़ते। हमारा हृदय शांति से भर गया।

एक कुली पहाड़ी का सहारा लिये विश्राम कर रहा था। उसकी पीठ पर एक यात्री का बोझा लदा था। हाथ में फलों से भरी टोकरी थी, जिसके अंगूरों की मादक सुगन्ध उसे बेचैन कर रही थी। उसका मुँह पसीने से लथपथ, धूल से सना हुआ, उसीके सौम्य रूप को छिपा रहा था, किन्तु उसका शरीर दुर्बल होते हुए भी श्रम की कसौटी पर कसा होने के कारण लोचयुक्त, पर कठोर था। उसने एक हाथ की आस्तीन से पसीना पोंछ डाला। फिर लम्बी साँस खींच कर "हाय राम" कह कर बोझा सँभाला और यात्री के साथ चल पड़ा !

इन्हीं लोगों के पीछे कुछ और कुली यात्रियों का सामान उठाये एक कतार में बँधे चले आ रहे थे। पहाड़ के किनारों को काट-काट कर लगभग ६-७ फुट चौड़ी सड़क बनी थी। उसीकी एक ओर भैलंगना नदी बह रही थी। कुछ वृद्ध श्रम-व्यस्त, कुछ भूखे कंकाल-मात्र, दो-एक तो बिलकुल अबोध बालक, वे पहाड़ के सहारे ही टेक लगा कर तनिक आराम करते, फिर लम्बी साँसें भर आगे बढ़ जाते।

हमारे साथी ने मौन भंग करते हुए कहा—"तुमने उस कुली को देख कर क्या अन्दाज लगाया ? कितना खूबसूरत नव जवान है ? लेकिन अब तो दीपक के बुझने वाले दिन आ गये हैं। शराब पीकर नशे में चूर हो, वह अपनी पत्नी की खूब कस कर पिटाई करता है। लड़के भूखों मरते हैं, पर इसकी कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।" हम बढ़ते चले जा रहे थे।

वे मुँह अँधेरे ही अपने मटमैले पहाड़ी गाँव से निकल कर प्रकृति की गोद में स्थित उस चोटी और धमाड़ी मोटर-अड्डे पर आ धमकते। दिन भर कठिन धूप में खड़े रह कर यात्रियों की प्रतीक्षा करते, जब कोई मोटर आकर खड़ी होती, तो दौड़ कर पच्चीसों कुली उसे घेर लेते और "बाबूजी, कुली होगा" की से उस शान्त वातावरण को तनिक देर के लिए कोलाहलमय बना देते !

शाम को अपनी कठिन कमाई के चन्द टुकड़ों में ही खाने का कुछ सामान खरीद कर तथा मदिरा की एक बोतल झोले में डाल, मन्द-थके पैर और शरीर लेकर लौट आते। घर पहुँचते ही धूल धूसरित बालक उनको घेर लेते ! कमल-सी पँखुड़ियों से भी गम्भीर पलकों वाली गृहदेवी स्वागत को आकुल रहती। परन्तु मीठे वचनों के स्थान पर मिलती उसकी सौतिन, मदिरा की बोतल ! और रात में अपनी दिन भर की थकान को भूलने के निष्फल प्रयास में वह पत्नी की दुर्दशा करता।

श्रम की प्रतिष्ठा श्रमिक ही करता है, मेहनती इसान—इसान है। पसीने की बूँदों-सा ढलता हुआ उसका अस्थिर-निराशामय जीवन, कन्धे पर कुल्हाड़ी और शरीर पर फटा हुआ कुरता, जिसके तन्तु छिन्न-भिन्न होकर शरीर के अवयवों का प्रदर्शन कर रहे थे। पर उसके मुँह पर प्रसन्नता न थी, उसकी सारी कांति-चमक समाप्त हो चुकी थी, जिसका एकमात्र कारण था मदिरालय की नियमित यात्रा ! वह कन्धे पर कुल्हाड़ी रखे लौट रहा था। आँखों में आँसू और मस्तिष्क में एक अजीब भयावह अंधकार छिपे। आज दिन भर में केवल एक रुपया साढ़े तीन आने पैसे मिले थे, जिसमें एक रुपये की वह शराब पी चुका था, साढ़े तीन आने ही उसकी थैली में थे। यही थी उसके सारे दिन की कमाई !

शराब के नशे में चूर वह अंधकार में छिपता-छिपता दबे पाँव घर आया, क्योंकि आज सबेरे ही पत्नी ने बता दिया था कि घर में खाने का एक दाना नहीं है। साथ ही छोटा बच्चा बहुत बीमार है, उसकी दवा लाने की भी बात कही थी, इसी दुविधा में उसने घर में प्रवेश किया, किन्तु अनायास सिसकियाँ रोने की आवाज ने उसे चौंका दिया ! उसके पाँव काँपने लगे, दिल धड़कने लगा। उसने देखा—उसका बच्चा भूख से तड़प-तड़प कर जीवन की अन्तिम साँसें ले रहा है। चार दिन से दूध की एक बूँद भी उसके मुँह में नहीं पड़ी है, माँ उसे छाती से चिपटाये रो रही है ! वह कुछ भी न कर सका।

उसके प्राण-पखेरू उड़ गये, जब उसके जीवन की सारी कमाई मदिरालय के अन्धकार की विभीषिका ने छीन ली थी !

—हरिश्चन्द्र अवस्थी

छपरा में सर्वोदय-पात्र

बिहार के छपरा शहर में २१-२२ और २३ अगस्त को कुल ७० सर्वोदय-पात्र रखे गये हैं। छपरा को सर्वोदय नगर बनाने का प्रयास चल रहा है। ११ से १७ सितम्बर तक यहाँ 'सफाई सप्ताह' मनाने का आयोजन किया जा रहा है। छपरा शहर की जनसंख्या लगभग ६५ हजार है। विनोबाजी के कथनानुसार १६ शान्ति-सैनिक यहाँ होने चाहिए। लेकिन अभी ८ शान्ति-सैनिक हैं। वे पूरा समय देकर काम करते हैं। एक शान्ति-सैनिक भाई आंशिक समय देते हैं।

नव-निर्माण की ओर

मुनिस्वामी

किसी भी एक बृहत् वस्तु का गुण हम ग्रहण कर लेना चाहते हैं, तब पहले उसका एक छोटा सा अंश हाथ में लेते हैं और उस छोटे से अंश में से विशाल वस्तु के भविष्य को हम ग्रहण करते हैं। ठीक इसी तरह भारत के गांव को लेकर एक 'यूनिट' के दायरे में जब हम सोचते हैं, तो मालूम हो जाता है कि सारे भारत का स्वरूप क्या है, उसके कौनसे गुण-दोष हैं, उसका निदान क्या है आदि।

नरसिंहपुरम् (कडप्पा जिला, आंध्र-प्रान्त) एक छोटा-सा गांव है। प्रान्तीय सरकार की आर्थिक सहायता से उसको एक 'यूनिट' बनाने की कोशिश आंध्र सर्वोदय मण्डल की ओर से चल रही है। यह गांव देश की हर समस्या को हमारे सामने पेश कर रहा है। और जो कुछ सुलझाने की कोशिश की गयी है, भारत के प्रगति-पथ में उसका भी अपना मूल्य जरूर है, ऐसा हमें मानना चाहिए।

अक्सर हम सोचते हैं कि पहले एक गांव में ग्राम स्वराज्य की लकीर खींच कर बाद में बारी-बारी से उसे बढ़ाते जायें।

आंध्र में बद्वेल तालुका, जो ग्रामदानी क्षेत्र कहलाता है, में नमूने के लिए दो गांव चुन लिए गये, जिनमें ग्राम-स्वराज्य की दिशा में नवनिर्माण कार्य दो साल से चल रहा है। अपने को ग्रामदानी गांव ऐलान करते हुए पहले इन दो गांवों को ऐसा लगा कि वे हमारे देश के वातावरण से एकदम अलग हो गये और कट गये हैं, लोग उनसे कहने लगे थे कि आपका पास अपना कोई हक नहीं है। जमीन, माल-असबाब को बेच नहीं सकते, आदि आदि। इन सवालों ने पहले ग्रामदानी गांवों को परेशान किया था। बहुत दिनों की तपस्या के बाद इन सवालों के जवाब मिल गये।

एक जवाब है, यहाँ के श्री साधु सुब्रह्मण्यम्जी के नेतृत्व में "गांधी-दण्डु" यानी गांधी-मार्ग को पुष्टि देने वाली एक सेना का निर्माण होना। गांवों के साधारण कुली और किसान लोग इसमें शामिल हो गये हैं। इनमें विशेष योग्यता और कुछ नहीं—वे मद्यपान नहीं करेंगे, दूसरे को शराब पीने से रोकेंगे, खादी पहनेंगे, गांव में लड़ाई झगड़े न हों, इसके लिए भरसक कोशिश करेंगे। विनोबाजी के शब्दों में यह सेवा-सेना होती है। तालुके भर में यह सेना फैल गयी है। मद्यपान निषेध की यात्राएँ करना, श्रमदान से ग्रामदानी गांवों को मदद पहुँचाना आदि कार्यक्रम यह सेना स्फूर्ति के साथ चलाने लगी है। अब तो जिले भर में इसका प्रसार हो गया। सेना के कामों को देख कर यहाँ के पदस्थी कहने लगे—"ऐसी सेना के जरिये आज तक जो काम सरकारी लोगों के जरिये नहीं हुए, उनके अब होने की आशा है। नमूने वाले दो गांव, नरसिंहपुरम् और नरसन्नपल्लि के वासी सोचने लगे कि "हम भी अकेले नहीं हैं। हमारा बन्धु-वर्ग सब जगह फैल गया है।" अब ये दो गांव अपने को अकेला महसूस नहीं कर रहे हैं।

दूसरा जवाब है, इन गांवों में ग्राम-सभा का निर्माण होना। सरकार से कर्ज लेना, उसका आवश्यकतानुसार वितरण कर लेना, विकास-योजना की ओर से अपनी सड़क बना लेना, सिंचाई के लिए आइल इंजिन रख लेना, बीज-खाद, खेती आदि बातों में अनुभव के साथ टेकनिकल बातों को अपनाना, इन सब बातों के कारण पैदावार बढ़ाने में ग्रामसभा को शक्ति और विश्वास महसूस हुआ है। ग्राम में एक सोसाइटी खुल गयी थी। थोड़ा प्रकाश, थोड़ा विज्ञान और थोड़ा अभ्युदय भी गांव को प्राप्त हुआ है। अब उन गांव वालों को अपना हक रहे न रहे, अन्यत्र आपको कर्ज मिले न मिले, अपनी सुरक्षितता के बारे में उनको कोई शक नहीं रहा है। भेड़ ज्यादा रखने में, शिक्षा ज्यादा हासिल करने में, घर-द्वार बनाने में सुरक्षितता इतनी नहीं दीखती है, जितनी गांव की व्यवस्था अच्छी बनाने में है। इस बात का लोगों को अनुभव हो गया। विकास-योजना बाकी सारे काम करा सकती है, मगर व्यवस्था बनाने के लिए उसके पास प्रत्यक्ष कोई साधन नहीं है।

अफसरों की ओर से जो टेकनिकल सहायता की जरूरत होती है, वह तो आसानी से मिलनेवाली चीज नहीं है। इसका बाजार गरम होता है। छोटी-सी चीज भी पाने के लिए बड़ा मूल्य चुकाना पड़ता है। फिर भी थोड़े ही क्षेत्र में उसका इस्तेमाल होता है। अधिक व्यय करके कमाई हुई शिक्षा है इसलिए इन पढ़े लिखे अफसरों को भी अधिक मूल्य मांगना पड़ता है। भौतिक मूल्य आवश्यकता से ज्यादा न लेकर आध्यात्मिक मूल्य को मानने वाला अफसर कोई ही हो सकता है। जिसके पास जितना विज्ञान अथवा टेकनिक है उसके पास उतना वेदान्त होना चाहिए। तभी वह नम्र होकर, हवा की तरह सस्ता बन कर अपने बहुमूल्य जीवन का फल दुनिया को दे सकता है। वह तो तभी सम्भव है जब कि आज की शिक्षण-पद्धति में आमूल परिवर्तन हो जाय।

बद्वेल तालुका के 'ब्लाक डी० ओ०' श्री वी० कृष्णमूर्ति ऊपर बताये हुए अफसरों से अलग हैं। ग्रामीण लोगों से बात करते हुए उनको कोई देखे, तो कहेंगे कि यह तो अफसर के वेश में कोई सर्वोदय कार्यकर्ता है। इस तालुके में और भी कुछ अफसर सेवाभावी हैं, नम्र हैं। एक्जिक्यूटिव इंजीनियर श्री के० मुत्तय्या नरसिंहपुरम् ग्रामदान-तालाब के काम के लिए उद्घाटन करने आये। हमें विश्वास करना पड़ता है कि भविष्य में हमारे सरकारी नौकरों में सेवा-भावना बढ़ जायगी और वे सेवक कहलायेंगे।

टेक्नालजी और साइन्स में दूसरे देश, जैसे अमेरिका, ब्रिटेन आदि हमारी मदद कर रहे हैं, लेकिन भारत के गांव में टेकनिक पहुँचे, विज्ञान का प्रवेश हो और ये दोनों वेदान्त को अपना लें इसके लिए हमें कितना तप करना पड़ेगा, इसकी हम थोड़ी-सी कल्पना कर सकते हैं। कई मुश्किलों को सहन करते हुए आखिर अहिंसा और सत्याग्रह के साधनों से ही हम यह काम कर सकते हैं।

अब अन्दरूनी बातों के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ, जो वास्तव में हमारे भारत की बातें हैं। पहले नरसिंहपुरम् गांव के लोग बैलों से पानी खींच लेते थे। इंजिन लगाने के बाद तेल के लिए पैसा ज्यादा खर्च होने लगा। रसायन-खाद तो अब तक खरीदी नहीं गयी, क्योंकि भेड़ें ज्यादा हैं। उनके मल-मूत्र की अच्छी खाद बनती है। पैदावार बढ़ाने के लिए, तेल का खर्च निकालने के लिए अब रसायन-खाद खरीदने की नौबत आ गयी है। गांव का कुछ 'इंडस्ट्रियलाइजेशन' भी करना पड़ रहा है। इसके साथ-साथ शहरी जीवन को भी अपनाना पड़ रहा है। अनुभव में आया कि इस प्रवाह से हम अलग नहीं रह सकते हैं।

नरसिंहपुरम् गांव में नाई, धोबी, चमार के परिवारों को शामिल कर लेना है। दूसरे गांवों में इन जातियों के लोग एक गली में मिल कर रहते हैं या तो इनका एक गांव ही होता है। ये लोग अपना धन्धा मिल कर करते हैं जो कुछ आता है, बांट कर लेते हैं। ये लोग अपनी जाति के अन्दर कई नियमों से जकड़े रहते हैं। इस तरह के सम्बन्ध से अलग करके उनके एक परिवार को हमारे गांव में बसाना टेढ़ी खीर है। उनको विश्वास नहीं होता है कि हमारी जाति को छोड़ कर कहीं उनके लिए जगह है और वहाँ उनको रक्षण मिल सकता है। उनको इसकी भी कल्पना नहीं होती है कि हमारे इस धंधे के अलावा दूसरा कोई धंधा अपना कर अपना कुछ सुधार कर सकते हैं। जाति-भेद हमें कहाँ तक खींच ले गये हैं, इसका हम एक उदाहरण यहाँ देख सकते हैं। हम ग्रामदानी लोगों की यह एक परीक्षा है कि इनको विश्वास दिला कर हमारे गांव में हम बसायें। उनके धंधे को इज्जत दें और सुसम्पन्न बनायें।

दुनिया की गतिविधि को पहचानते हुए उससे प्रेरित होकर आगे बढ़ने का स्वभाव भारत में बहुत कम है। ईर्ष्या, आलस्य आदि दुर्गुणों के कारण कितने विप्लव हो गये, यह हम जानते हैं। प्रजातन्त्र का प्रवाह कैसे चल रहा है, भारत की दरिद्रता क्यों है, उसकी सम्पदा कैसी है, पंचवर्षीय और सप्तवर्षीय योजनाएँ कैसे चल रही हैं, उनके फल कैसे निकल रहे हैं, इन सारी बातों के बारे में सोचने की आदत और अवकाश हमारे गांवों को नहीं के बराबर है। गांव के लोग हजारों साल के पीछे वाले स्वभाव के शिकार दीख पड़ते हैं। समाज में जो भी विप्लव चले, जो भी रोग फैले, उसे किसी ऋषि की महिमा कहेंगे या किसी देवता की अप्रसन्नता कहेंगे। आखिर उनके वास्तविक कारणों का चित्र उनके दिमाग पर उतरता ही नहीं। ऐसी परिस्थिति में क्रांति के लिए उनके पास बल बहुत कम रहता है। मूढ़ विश्वास ठीक समय पर ऐसा खिसक जाता है, जैसे कि भुजग से केंचुली। खुशी की बात है कि हमारे ग्रामदान के ग्रामीण लोग इन बातों के बारे में सोचने लगे हैं और दुनिया के बारे में चिंतन करने लगे हैं। अब ये लोग कहने लगे कि महर्षि या देवताओं के कहने से नहीं, बल्कि दुनिया की परिस्थितियाँ ही ऐसी चलती हैं, जिससे हमको भी वैसे ही चलना पड़ेगा।

गांवों के इन दो नमूनों को देखते हुए आस-पास के कई गांव बहुत कुछ सीख गये हैं। बद्वेल तालुके में, जहाँ एक लाख सात हजार की आबादी है, यहाँ ग्रामराज का वातावरण फैल गया है। चार सौ से ज्यादा ग्रामदान हो गये। ग्राम-सहायक ग्रामदान-कार्यकर्ता, 'गांधी-दण्डु' आदि मिल कर काम कर रहे हैं। हर गांव में एक कार्यकर्ता स्वयं वहीं से निकलेगा, ऐसी आशा की जाती है।

आंध्र-सरकार पंचायत राज को अमल में ला रही है। हर पंचायत को अपने कर्तव्य के बारे में सोचने का अवकाश मिल रहा है। हर गांव ग्रामदान की दिशा में आने की कोशिश करने को आया है। 'जिला नवनिर्माण-समिति' हर पंचायत से कुछ प्रस्ताव पास करा रही है। वे हैं, मद्यपान का निषेध, कोर्ट-कचहरी में न जाना, लड़ाई-झगड़ों का गांव में ही फैसला कर लेना। कुछ गांवों ने स्वावलंबन का संकल्प कर लिया है। इस तरह प्रांत भर में ग्रामराज का नारा ऊँचा हो रहा है। इस दिशा में थोड़ा आगे बढ़ते-बढ़ते हमारे ये दोनों गांव पूरी तरह तैयार हो जायंगे, ऐसी आशा हम करते हैं। अब राजस्थान में भी पंचायत राज चल रहा है। निकट भविष्य में सारा देश स्वावलंबी हो। ग्रामराज और विश्वदृष्टि कायम हो जाय। ग्रामदान आन्दोलन कोई आकाश-कल्पना नहीं है, ऐसा निरूपण हो जाय। आखिर हम सब साधारण लोगों में से ही तो हैं।

भारत का राष्ट्रीय तत्त्वज्ञान

ईश्वरलाल देसाई

[श्री ईश्वरलाल देसाई गुजरात के प्रजा-समाजवादी पक्ष के एक आगेवान और तत्त्वचिंतक हैं। प्रस्तुत लेख अहमदाबाद की 'हेराल्ड लास्की इन्स्टीट्यूट' में भारत के राष्ट्रीय तत्त्वज्ञान विषय पर दिये गये उनके भाषण पर आधारित है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत आज एक विषम परिस्थिति में से गुजर रहा है। राष्ट्र के निर्माण की जो दिशा पंचवर्षीय योजनाओं में पकड़ी गयी है, उसकी ओर बढ़ने वाला एक-एक कदम राष्ट्र को ऐसे पाश में जकड़ता जा रहा है, जिसके पंजे से उसका छूटना मुश्किल होगा। श्री देसाई के सब विचारों से हम सहमत न हों फिर भी उन्होंने जो प्रश्न उठाये हैं, उनके महत्त्व को स्वीकार करते हुए उन्हें विचारार्थ हम पाठकों के सामने रख रहे हैं। —सं०]

हिंदुस्तान को स्वराज्य मिले १३ वर्ष बीत गये, लेकिन अभी हम राष्ट्र के नव-निर्माण की दिशा निश्चित नहीं कर पाये हैं। हमारे राष्ट्र का तत्त्वज्ञान क्या है? यों तो देश में भिन्न-भिन्न विचारधारा वाले पक्ष मौजूद हैं, पर उन सबके मूल में समग्र राष्ट्र की विचारसरणी किस दर्शन के आधार पर निर्मित होती है, यह पक्ष की अपेक्षा भी ज्यादा महत्त्व की वस्तु है। हमारे देश में एक महान क्रांति हुई। उस क्रांति के बीज हमारे प्राचीन इतिहास और संस्कृति में थे, लेकिन गांधीजी ने उन *प्राचीन भावनाओं का आधुनिक संस्करण* करके स्वराज्य की लड़ाई के समय क्रांति का जो नेतृत्व किया, वह हमारी दृष्टि से आज के समूचे युग का और विश्व-संस्कृति का नेतृत्व था। हमारी राष्ट्रीय आजादी के क्रांति के मूल्य विश्व-क्रांति के अग्रिम रूप थे। हमारी लड़ाई सिर्फ अंग्रेजों के साम्राज्यवाद के विरुद्ध नहीं थी, बल्कि भारत की आत्मा को कुचलने वाली योरोप की औद्योगिक सभ्यता के आक्रमण के विरुद्ध थी। एक प्रकार से वह हमारा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आंदोलन था।

लेकिन गांधी-विचार ने क्रान्ति के जो मूल्य हमारे राष्ट्र को दिये थे, क्या वही मूल्य स्वराज्य के बाद के निर्माण-युग में भी हमारे राष्ट्र को प्रेरणा दे रहे हैं? क्या आज हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व इन मूल्यों को मध्य-बिंदु में रख कर राष्ट्र का निर्माण करना चाहता है? हर राष्ट्र का भविष्य उसकी क्रांति के तत्त्वज्ञान से निर्मित होता है। अमेरिका, फ्रांस, रूस और चीन की प्रजा के सामने उनकी क्रान्ति के आदर्श रहे हैं और उस क्रान्ति की दिशा में वह प्रजा प्रयाण कर रही है। लेकिन क्या हमारी क्रान्ति के मूल्य हमारे राष्ट्र के निर्माण में आज से ही 'आउट आफ डेट'—पुराने—नहीं पड़ गये हैं? क्या गांधी-विचार, सत्याग्रह, ग्राम-स्वराज्य, चरखा, आध्यात्मिकता, इन हमारे क्रांति के मूल्यों और मंत्रों का उपयोग राजनैतिक आजादी प्राप्त करने जितना ही था?

यों देखें, तो अहिंसा और शांति के हमारे आदर्शों की सीमाएँ दुनिया में दूर-दूर तक विस्तृत हो रही हैं, परन्तु साथ ही साथ हमारे देश में लोकशाही होते हुए भी स्वतन्त्रता की परिधि दिन-ब-दिन संकुचित होती जाती है। लोकशाही और स्वतन्त्रता के विचार-मात्र राजनीति तक ही मर्यादित नहीं रहे हैं, पर मनुष्य के राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के क्षेत्रों को भी वे अपने में घेर लेते हैं। विधान-रचना की दृष्टि से हमारे देश में लोकशाही लगभग सम्पूर्ण है, पर अभी भी सामाजिक और आर्थिक लोकशाही का तत्त्व और स्वरूप प्रगट नहीं हुआ है। हमारी सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति पार्लियामेंटरी पद्धति की लोकशाही की *चहारदीवारी के अन्दर अटक गयी है।* जिस गांधी-विचार के बल पर हमने राज-सत्ता हासिल की, उस गांधी-विचार पर हमारी श्रद्धा न जाने क्यों लुप्त होती जा रही है और नई कोई श्रद्धा उसका स्थान *ले नहीं रही है। इस कारण हमारे राष्ट्र* के मानस में एक प्रकार की शून्यता आती जा रही है।

सौ वर्ष पहले *कार्ल मार्क्स* ने विश्व को व्याप्त करने वाले यन्त्रवाद पर आरूढ़ पूँजीवाद के अनिष्ट का दर्शन किया, परन्तु हिटलरशाही और स्तालिनशाही के प्रादुर्भाव से उसकी अपेक्षा भी अधिक भयंकर अनिष्ट प्रकाश में आया। यह है सत्तावाद का अनिष्ट! समाज के लिए पूँजी का चंद हाथों में संग्रह होना जितना खतरनाक है, उससे ज्यादा खतरनाक समाज और मानवीय स्वतन्त्रता के लिए सत्ता का केंद्रीकरण है। गांधी-विचार ने इन दोनों अनिष्टों का उपाय ढूँढ़ निकाला। गांधी-विचार के साथ हमारे देश में *लोकतांत्रिक समाजवाद* का विचार भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से विकसित होता गया। समाजवाद के विचार का जन्म योरोप में हुआ, परन्तु आज के लोकतांत्रिक समाजवाद का नया रूपांतर *गांधी-विचार और संस्कार की परम्परा* में से ही विकसित हुआ है। दुनिया में समाजवाद ज्यों-ज्यों आतंकवाद और तानाशाही का रूप धारण करता गया, त्यों-त्यों समाजवाद के आदर्श की प्राप्ति के लिए लोकतांत्रिक मार्ग और पद्धति का आग्रह बढ़ता गया। योरोप के इतिहास में इस प्रणाली के अभ्यास और *अनुभव को गांधीजी के अहिंसा,* सत्याग्रह और विकेंद्रीकरण के विचारों से समर्थन मिला तथा इनके *कारण दुनिया के* लोकतांत्रिक विचार में महान परिवर्तन हुआ।

भारत में लोकतांत्रिक समाजवाद का विकास हमारे राष्ट्रीय विकास के साथ साथ मेल खाता रहा और इसका स्वरूप सैद्धांतिक तथा दार्शनिक प्रकार का रहा। फिर भी यह कबूल करना पड़ेगा कि इस आदर्श के पीछे जबरदस्त विचार और ऐतिहासिक तत्त्व होते हुए भी आज भारत का समाजवादी आंदोलन राष्ट्रव्यापी प्राणवान आंदोलन नहीं बना है। देश के अधिकतर पक्षों ने *समाजवाद का ध्येय जरूर स्वीकार* किया है। कांग्रेस जैसे देश के बड़े राजनैतिक पक्ष ने पाँच वर्ष हुए समाजवाद का ध्येय जाहिर किया, पर फिर भी देश का समाजवादी आंदोलन राष्ट्र में नई चेतना नहीं *प्रगट कर सका। यह एक बड़ी समस्या* है। इसका एक मुख्य कारण यह भी हो सकता है कि आम जनता के हृदय को स्पर्श कर सके, इस प्रकार मूलभूत राष्ट्रीय प्रश्नों के ऊपर समाजवादी विचार ने अभी *कोई बड़े आंदोलन नहीं खड़े किये हैं।*

स्वराज्य के बाद देश में अनेक छोटे-मोटे आंदोलन हुए। उनमें विनोबाजी का भूदान आंदोलन महत्त्व का माना जाता है। आज के राजनैतिक और आर्थिक परि-बलों को देखते हुए शायद इस आंदोलन के पक्ष-रहित लोकशाही और शासन-रहित समाज के *अति-उत्तम मतों के साथ हम* सहमत न हो सकें, तो भी इस आंदोलन ने जिन नये मानव मूल्यों को विकसित किया है, वे सारे देश के लिए समान रूप से एक भव्य विरासत हैं। इस आंदोलन ने भूमि न्याय के प्रश्न को आगे ला दिया। इतना ही नहीं, गांधी-विचार के विकास के लिए *नये चिंतन की दिशा भी खोल दी।* इस आंदोलन को काफी सफलता मिली है, फिर भी इसकी पहले की गतिशीलता अब मंद पड़ती जा रही है। यह आंदोलन-मात्र सुधारक रह जाने वाला है या क्रांतिकारी बनने वाला है इसकी कसौटी का समय नजदीक आया है।

हमारी दृष्टि से भूदान-आंदोलन की दो ऐसी मर्यादाएँ हैं, जो महत्त्व की हैं। भूदान-आंदोलन जन-शक्ति को जाग्रत करना चाहता है, फिर भी वह आम जनता का राजनैतिक संगठन नहीं चाहता। दूसरी मर्यादा यह है कि लोकशाही में सत्याग्रह का स्थान है, यह मानते हुए भी प्रतिकारात्मक सत्या-*ग्रह को अब स्थान नहीं है,* ऐसा वह जोर देकर कहता है। पर देश की परिस्थिति तेजी के साथ *बिगड़ती जा रही है।* एक ओर देश का आयोजन वेगवान औद्योगीकरण का रूप ले रहा है, जिसके कारण राष्ट्र में नये-नये विसंवाद खड़े हो रहे हैं और दूसरी तरफ लोकशाही एवं समाजवाद के विचारों के खिलाफ साम्प्रदायिक और रूढ़िवादी शक्तियाँ तथा अराजकतावादी तत्त्व खतरा पैदा कर रहे हैं। देश की परिस्थिति अब ऐसी जगह पर पहुँच गयी है कि पार्लियामेंटरी लोकशाही और दान-परम्परा की पद्धति से आगे जा-कर करोड़ों की जनशक्ति को क्रियाशील चेतनवान बनाने वाली किसी नयी प्रक्रिया की खोज करनी पड़ेगी। विनोबा-जी ने विज्ञान के विकास और देश की आजादी तथा लोकशाही के वातावरण को ध्यान में रखते हुए अहिंसा पर जो मर्यादा लगायी है, उसके बारे में फिर से सोचने की आवश्यकता मालूम होती है। यदि अहिंसा को गांधी विचार का *गतिशील* तत्त्व बनाना हो, तो प्रतिकार पर जो निषेध लगाया गया है, वह छोड़ना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होगा तो आगे जाकर यह आन्दोलन कन्फार्मिस्ट—स्थितिवादी—बन जाना सम्भव है।

लोकशाही के विचार को भी नये समन्वय की खोज करनी पड़ेगी, नहीं तो भारत में लोकशाही का प्रयोग भी आगे जाकर निर्माल्य साबित होगा। श्री जय-*प्रकाश ने राज्य-व्यवस्था की पुनर्रचना* संबंधी अपने निबंध में भारत के लिए लोकशाही की जो कल्पना पेश की है, वह एक भव्य आदर्श है। योरोप के ढंग की लोकशाही, वहाँ का विशालकाय उद्योगवाद और सत्ता के केन्द्रीकरण से समाज अन्दर ही अन्दर टूटता जा रहा है। उस रचना में से जीवन्त समाज प्रगट नहीं हो सकता। हमारे यहाँ अभी उद्योगवाद और सत्तावाद अपने उत्कर्ष पर नहीं पहुँचे हैं, तो भी वहाँ जैसे बुरे परिणाम यहाँ दिखायी देने लगे हैं। मनुष्य के अणुकरण—एटोमाइजेशन—*की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इसके खिलाफ* श्री जयप्रकाश ने ग्राम्य, विकेंद्रित, शोषण-रहित, कृषि-उद्योग स्वरूप के समूह जीवन की जो कल्पना पेश की है, वह मोहक है। परंतु सब प्रश्नों का प्रश्न यह है कि आज की परिस्थिति को बदल कर वहाँ पर पहुँचना किस तरह सम्भव है?

आज की परिस्थिति को बदलने पर सब तरह चिंतकों की और समाज-सुधारकों का ध्यान केंद्रित करना चाहिए। भारत के पास दर्शन तो है, परंतु उसको व्यापक करने के लिए श्रेष्ठ तत्त्वों को बाहर आना चाहिए। इसके अलावा राजनीति में भी प्रवेश करना पड़ सकता है। सत्ता के पदों पर कौन बैठता है, *यह गौण प्रश्न है, परंतु* राष्ट्र किन विचारों के आधार पर निर्मित होता है, यह महत्त्व का प्रश्न है। राजनीति केवल सत्ता-प्राप्ति के लिए है, यह विचार गलत है। गांधीजी राजनीति के बीच रहते थे, फिर भी सत्ता और पद से वे दूर रहे। हमारे दुर्भाग्य से आज देश में अनिष्ट तत्त्व *संगठित हो रहे हैं,* राजनीति में मध्यम कोटि के व्यक्ति पकड़ जमा रहे हैं, जब कि *श्रेष्ठ तत्त्व उससे अलग हट रहे हैं।* दुनिया और देश की आज की हालत में संघर्ष अनिवार्य है। गांधीवादी होने के नाते हमारा यह प्रयत्न अवश्य रहेगा कि संघर्ष अहिंसक हो, कटुता या रागद्वेष रहित हो, पर संघर्ष में सौम्यता हो या तीव्रता, यह परिस्थिति पर निर्भर रहेगा। गांधीजी ने *सत्याग्रह को 'सोल फोर्स'—आत्मबल—*का

श्री गांधी आश्रम, घाटेड़ा (सहारनपुर) के सघन क्षेत्र का द्वितीय चरण

'नये मोड़' द्वारा जनता का अभिक्रम जग रहा है !

बलराम भाई

'नये मोड़' की चर्चा जुलाई, १९५९ से विशेष रूप से चली। इसी महीने में श्री शंकरराव देव के मार्गदर्शन में घाटेड़ा में पश्चिमी जिलों के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का एक शिविर ३ दिन तक हुआ, जिसमें इस विषय पर खुल कर चर्चा हुई। तब से यह कोशिश रही कि गाँव में नये मोड़ की दृष्टि से काम किया जाय। उसके लिए इस सघन क्षेत्र के सात-आठ गाँवों में ग्रामोदय-केन्द्रों की स्थापना की गयी और वहाँ एक-एक ग्रामोदय-कार्यकर्ता बैठाया गया। इन्हीं गाँवों में ग्राम-निर्माण समिति की स्थापना की गयी, जो ग्राम-निर्माण की सारी जिम्मेवारी उठायेगी। ग्राम-निर्माण समिति के इन्हीं सदस्यों तथा जिले के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का एक शिविर श्री कपिल भाई के मार्गदर्शन में छारौड़ी, जिला सहारनपुर में २६ व २७ जनवरी १९६० को किया गया, जिसमें गाँववालों को प्रत्यक्ष रूप से यह प्रेरणा मिली कि अपने गाँव का प्रबन्ध स्वयं कैसे कर सकते हैं। इस शिविर का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

इस वर्ष के चिन्तन और ग्राम-सम्पर्क से कई बातों का अनुभव हुआ। गाँव को उठाने के लिए किन बातों को प्राथमिकता दी जाय और कहाँ से उसकी शुरुआत की जाय? ऐसा लगा कि गाँव की इतनी समस्याएँ हैं कि गाँव में एकांगी सेवा करने से गाँव की समस्या का हल नहीं हो सकता। उसके लिए गाँव की सारी समस्याओं को छूना पड़ेगा। ये समस्याएँ विभिन्न प्रकार की हैं—जैसे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक। ये तीनों ही समस्याएँ आपस में ऐसी मिली हुई हैं कि इनमें किसी एक को भी छोड़ कर बाकी के माध्यम से उत्थान की बात करना नामुमकिन है। अनुभव में आया है कि यदि गाँव में किसी की आमदनी बढ़ी है, तो उसके साथ शराब पीने की आदत, मुकदमेबाजी, ब्याह-शादी में फिजूलखर्ची, अपने को बड़ा समझने की भावना, खर्चीली आदत आदि सभी बढ़ी हैं। लड़ाई के जमाने में किसान की स्थिति कुछ सुधरी थी, पर इन्हीं दुर्गुणों के कारण आज उसकी हालत बहुत खराब है। लड़ाई के जमाने का पैसा स्वयं तो गया ही, बड़प्पन या ऊँचे रहन-सहन के नाम पर खर्चीली आदतों का अभिशाप भी छोड़ गया। इसलिए गाँव को उठाने में यह जरूरी है कि जहाँ गाँववालों की आर्थिक स्थिति में सुधार की कोशिश की जाय, वहाँ उनमें सद्विचार और सद्भावना भी पैदा की जाय, ताकि उस धन का उपयोग वे अच्छे कामों में कर सकें। लोग सर्वसम्मत-चुनाव कर सकें, ऐसी सद्बुद्धि उनमें पैदा की जाय। यानी भौतिक और आध्यात्मिक, दोनों बातों का निर्माण साथ-साथ हो, तभी समस्या का समाधान हो सकता है। दुर्भाग्य से सरकार भौतिक निर्माण तो कर सकती है, यानी शरीर की रचना कर सकती है, पर आत्मा का निर्माण नहीं कर सकती। आत्मा के निर्माण का काम ऋषि, महर्षि, देशभक्त और रचनात्मक कार्यकर्ता ही कर सकते हैं। इसलिए यह जरूरी हो गया है कि हमारे अच्छे-से-अच्छे रचनात्मक कार्यकर्ता गाँव में बैठें और आत्म-निर्माण का काम करें।

अनुभव में यह आया है कि बिना पुराने कार्यकर्ताओं के बैठे सेवा और पथ-प्रदर्शन का काम नहीं हो सकता है। जनता मार्गदर्शक को परख कर ही आगे कदम बढ़ाने को तैयार होती है।

गाँव की मुख्य समस्या खेती से सम्बन्धित है। इसलिए सबसे पहले गाँव का अपना बीजभंडार हो, यह समस्या हाथ में ली गयी है। इसके दो लाभ हैं।

(१) 'सविस' वाले लोगों का अपना कोष होता है। वो अपनी आमदनी का कुछ अंश जमा करते रहते हैं, उनके बुढ़ापे का वह सहारा होता है। किसान के पास ऐसा कोई साधन नहीं और न उसके पास पैसे की इस प्रकार बचत ही होती है। उसके पास अनाज ही एकमात्र उत्पत्ति का साधन है। अगर हर साल एक या दो मन अनाज हर किसान से लेकर सुरक्षित रखा जाय, तो इससे किसान के कारोबार में भी कोई फर्क नहीं पड़ता और इतनी निधि उसकी प्रत्येक वर्ष जमा होती रहेगी। इस प्रकार कुछ दिन में किसान के पास एक अच्छी पूँजी हो जायेगी।

(२) उस इकट्ठे हुए अनाज का उपयोग हो, इसके लिए यह सोचा गया है कि इसी अनाज का बीज-भंडार बनाया जाय। इसका नियम यह रखा गया है कि यदि किसी किसान ने एक मन अनाज दिया और अगले साल वही या अन्य कोई काश्तकार बोने के लिए ले जाय, तो प्रचलित नियमों के अनुसार वह एक मन का सवा मन देगा। इस अतिरिक्त दस सेर का बँटवारा दो हिस्सों में कर दिया जायेगा. पाँच सेर उस आदमी के खाते में जमा कर दिया जायेगा, जिसने एक मन अनाज दे रखा है और शेष पाँच सेर ग्राम-कोष में जमा होगा। कुछ दिनों तक इसी प्रकार चलते रहने पर जब ग्राम-कोष में इतना अनाज हो जाये कि अगर कोई आदमी अपना दिया हुआ गल्ला वापिस लेना चाहे, तो वापिस ले सकता है। वह जमा रखना चाहे, तो जमा रख सकता है।

पश्चिमी जिलों का सर्वे करने से ऐसा पता लगा है कि गाँव काफी कर्जदार हो चुके हैं और प्रत्येक गाँव ४०० मन से ५०० मन तक गल्ला बीज-भंडारों से लेता है तथा १०० मन से १२५ मन तक सूद के रूप में वापिस देता है। इस प्रकार डेढ़ हजार से दो हजार रुपये तक सूद के रूप में गाँव का पैसा बाहर जा रहा है। अगर इसे रोक दिया जाय, तो ग्राम-कोष की एक हजार रुपये की आमदनी प्रति वर्ष बढ़ जायगी। इससे गाँव के लोग उद्योग-धन्धे आदि का काम भी कर सकते हैं।

सोसाइटियों द्वारा कर्ज देने की समस्या भी वरदान के बजाय अभिशाप सिद्ध हो रही है। छोटे-छोटे क्षेत्रों में भी लाखों रुपये कर्ज हो चुका है। ये रुपये किसान कैसे दे सकेगा, यह उनके लिए एक समस्या हो गयी है। एक गाँव का मैंने सर्वे किया। उस पर बाईस हजार रुपये का कर्ज है। मैंने गाँव वालों से पूछा कि इस कर्ज के लेने से आपकी हालत में कुछ सुधार है क्या? उन्होंने उत्तर दिया कि सुधार तो कुछ भी नहीं हुआ, बल्कि अगर यह कर्ज न भी मिलता, तो भी हमारा काम चल जाता। पर चूँकि सोसाइटी से कर्ज मिलता है, इसलिए हम लोगों ने भी ले लिया। अब देना भारी हो रहा है।

गाँववालों का यह स्वभाव है कि अगर पैसा कहीं से मिलता हो, तो वे यह नहीं सोचते कि इसको लेना ठीक है या नहीं? वे अवश्य ले लेंगे, जो बाद में उनकी बर्बादी का कारण बन जाता है। पिछले दिनों में महाजनों द्वारा इसी तरह से इन लोगों की जमीनें नीलाम हुई थीं। वही स्थिति आज सोसाइटी ने पैदा की है। अगर इस प्रवाह को रोका न गया, तो सारे गाँव कर्ज के बोझ से इतनी बुरी तरह से दब जायेंगे कि उनका उद्धार मुश्किल हो जायेगा; क्योंकि कर्ज लिये हुए पैसे के उपयोग का कोई व्यवस्थित विचार इन किसानों के पास नहीं है। इधर कई वर्षों से मैं देख रहा हूँ कि जिस गाँव ने कर्ज लेना शुरू किया, उसकी मात्रा निरन्तर बढ़ रही है। एक गाँव का कर्ज सात सौ रुपये से शुरू हुआ। आज उस पर चौदह हजार रुपया कर्ज हो गया! इस तरह इन पश्चिम के गाँवों पर, जो खुशहाल जिले कहे जाते हैं, पचास हजार, चालीस हजार, तीस हजार इस तरह के कर्ज हैं और निरन्तर बढ़ रहे हैं। इस समस्या पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

हमारी ग्राम-निर्माण समितियों ने यह निश्चय किया है कि हम अपने गाँवों का बीज-भंडार बनायेंगे और उससे जो आमदनी होगी, उसको हम कर्ज के रूप में भी लोगों को देंगे। इसकी छान-बीन करेंगे कि वास्तव में जिसको जरूरत है, उसको ही मिले। जैसे यदि किसीको बैल लेना है, कुआँ या रहँट लगाना है, गाय या भैंस खरीदनी है, यानी उत्पादन का साधन जिससे बने, ऐसे कामों के लिए कर्ज देंगे। पैसे का दुरुपयोग करने के लिये नहीं। इस तरह से लोगों की जरूरत भी पूरी होगी और लोग बरबादी से भी बचेंगे। इन विचारों के सदर्भ में हमारे सघन क्षेत्र के गाँवों ने बीज-भंडार की शुरुआत की है। अगले साल इन बीज-भंडारों का बड़ा रूप हो जायेगा।

हमारी यह योजना है कि गाँव में सारा उद्योग ग्राम-निर्माण समितियों द्वारा ही चलाया जाय। इसलिए ग्राम-निर्माण समितियों ने निश्चय किया है कि आगे गाँव के उद्योग वह स्वयं चलायेंगी। कुछ समितियों ने इस साल सामूहिक 'क्रशर' लगाने की योजना बनायी है, जिसमें गाँव का सारा गन्ना पेरा जायेगा। लाभ-हानि भी पूरे गाँव की होगी। कुछ गाँवों में चर्म-उद्योग, धान-कुटाई, तेलघानी और भट्ठा-उद्योग चलाये जाने की भी योजना है। हमारे यहाँ तीन ग्राम-निर्माण समितियों ने 'क्रशर' और एक समिति ने भट्ठा लगाने का निश्चय किया है। इसके लिए धन-राशि भी एकत्र हो रही है। खादी-कमीशन द्वारा भी इन उद्योगों के लिए कर्ज और अनुदान मिलेगा। इस प्रकार ये उद्योग, इस वर्ष चल सकेंगे, ऐसी सम्भावना है। ग्राम-निर्माण समितियों ने यह भी निश्चय किया है कि पाँच वर्ष में कपड़े के मामले में स्वावलम्बी होने का प्रयत्न किया जाय।

●

...काम लिया था, वह किसलिए? उन्होंने आत्मबल से आगे जाने का प्रयत्न किया और सत्य को प्रगट करने के लिए सामूहिक आत्मबल की कल्पना पेश की। जगत् की विनाशक शक्तियों का मुकाबला शक्ति से ही करना पड़ेगा। गांधी विचार-दर्शन ने यह कल्पना पेश की है कि यह शक्ति शस्त्र की नहीं, आत्मबल की होनी चाहिए। इस विचार को हमें आगे विकसित करना है।

हमारे देश में हम गांधी-मार्ग की बातें करते हैं, परन्तु स्वराज्य के १२ वर्ष बाद भी मुट्ठी भर जमींदारों के पास से जमीन लेकर करोड़ों भूमिहीनों को बाँट देने की हमारी हिम्मत नहीं होती। हमारी योजनाएँ भी इंजीनियरों के सहारे के बिना आगे बढ़ नहीं सकती। राष्ट्र का मध्य-बिंदु गाँव होते हुए भी, और विकेंद्रीकरण का हमारा ध्येय होते हुए भी चरखा और ग्रामोद्योग हमारे आयोजन में लाचारी का स्थान भोग रहे हैं। इस सारे वातावरण के बदलने के लिए भारत की लोकशाही के प्रयोग को नया क्रांतिकारी कदम उठाना पड़ेगा।

●

पश्चिम का प्रभाव : एक विश्लेषण

डा० धनंजयराव गाडगिल

यह एक ज्वलंत प्रश्न है कि क्या भारत की अपनी कोई विशेषता अभी बनी हुई है ? उससे किसी विशिष्ट कार्य की अपेक्षा की जा सकती है तथा क्या यह संभव है ? पर हमारा यह आशय नहीं है कि यह दिखाने के लिए हम संसार से कुछ न्यारे हैं, खींचतान कर, आडंबरपूर्वक कुछ दिखायें। यह कोई सुज्ञता का लक्षण नहीं है। इष्ट और प्रचलित प्रवृत्तियों तथा जागतिक प्रवाह के साथ संघर्ष करना और उससे कट कर अलग रहना, किसी के लिए हितकर नहीं होगा। आखिर समूचे मानवीय इतिहास का प्रवाह एक ही है। उसमें अलग कोई नहीं रह सकता। भारतीय विचार-परंपरा की दृष्टि से भी यही श्रेयस्कर माना गया है कि विश्व के प्रयत्न में सहभागी हों और संसार के प्रवाह में विलीन हों। इसके बावजूद आधुनिक युग का अच्छा प्रबंध कहाँ हो पाया है? काले-गोरे, पाश्चात्य-पौरस्त्य आदि भेद आज भी कई क्षेत्रों में बने हुए हैं और शास्त्र आदि के मामले में समरसता दीखने पर भी वह अन्य अनेक कल्पनाओं और व्यवस्थाओं के कारण दीखती नहीं है। इस संक्रमण काल में, ऐसे काल में, जब कि नई रचना हो रही हो, क्या यह कहा जा सकता है कि हमारे अपने विशिष्ट इतिहास और परंपरा को देखते हुए कुछ काम हमारी बाट जोह रहे हैं ? यहाँ भारत के विशिष्ट कार्य का अर्थ है : भविष्य में मानवीय इतिहास को विशिष्ट मोड़ देने का कार्य !

यह एक स्पष्ट और महत्त्व की घटना है कि हिंदू नेताओं ने अपनी नई वैचारिक भूमिका का आधार मूल रूप से प्राचीन हिंदू धर्म की नीति के तत्त्वों का ही रखा। प्रत्येक व्यक्ति ने अपने स्वभाव के अनुरूप ही आधारभूत ग्रंथों का अर्थ नये ढंग से किया। परंतु अधिकांश ने तो जो कुछ कहना था, उसे मान्य करके ही कहा। इसी बारे में सनातनियों में और सुधारकों में कोई अंतर नहीं रहा। दयानंद सरस्वती कई मामलों में "सुधारक" की भूमिका अपनाते और वैदिक धर्म पर श्रद्धा रखते और उनके पुनरुत्थान के प्रयत्न में "प्रतिगामी" की भूमिका लेते। जिन-जिन नेताओं का प्रभाव जनता पर, शिक्षितों और अशिक्षितों पर भी पड़ा, वे सब हिंदू तत्त्व-चिंतन की बुनियाद पर ही खड़े रहे। विवेकानंद, तिलक और अरविंद की जो भूमिका थी, वही आगे गांधी और विनोबा की भी थी। हमारे सभी प्रमुख नेताओं ने इस प्रकार प्राचीन धर्म-नीतिग्रंथों के आधार से ही नया विचार प्रस्तुत किया। यही नहीं, इन सबके प्रयत्नों के फलस्वरूप आज एक सर्वसाधारण भूमिका भी तैयार हुई दीखती है और इसी बारे में कि पुराने में से क्या छोड़ा जाय और नये को कहाँ स्थापित किया जाय, काफी एकवाक्यता नजर आती है।

प्राचीन परंपरा को मान्य करके विचार करने से एक महत्त्वपूर्ण, बल्कि चिरंतन समय तक महत्त्व रखने वाली बात हुई है। वह यह कि सन्यास-मार्ग यद्यपि श्रेष्ठ न माना गया, तो भी एक प्रकार से सन्यास-वृत्ति छूटी नहीं है, अलिप्तता कायम हो रही है। आधुनिकों में कोई यह नहीं कहता है कि "अमुक सत्ता, संपत्ति, कीर्ति, समृद्धि आदि की प्राप्ति के मार्ग का समर्थन करो और उसे प्राप्त करने के लिए कमर कस कर उसके पीछे पड़ो।" बल्कि यही कहा जाता है कि चूंकि कर्म करना अनिवार्य है, इसलिए उसमें कर्तव्य-बुद्धि से लगे रहो। सभी ने फलाशा और फलासक्ति न रखने पर जोर दिया, इसलिए कर्म के सामने ऐहिक उद्देश्य-प्राप्ति का विचार बहुत सगत नहीं सिद्ध होता, बल्कि वह कर्म करते समय जो मनोवृत्ति आवश्यक है, वह अधिक महत्त्व की होती है। विश्वशांति, पुष्टि, तुष्टि यद्यपि सर्वमान्य उद्देश्य साबित हों, तो भी यह साबित नहीं होता कि उसे सिद्ध करने के लिए अमुक एक काम करना ही चाहिए। कर्तव्याकर्तव्य विचार करने पर इतना ही मार्गदर्शन मिलता है कि उचित कर्म प्रासंगिक अथवा "विहित" और परिस्थिति-वश प्राप्त है। प्रसंगोपात्त कर्म न हो, तो बहुत आगे का विचार करने से फलाशा और आसक्ति का दोष आने की संभावना रहती है और इसलिए उचित या विहित कर्म देश काल के अनुसार निश्चित होता है। सारांश यह कि सन्यास-मार्ग का विरोध करने वाले भी "अमुक काम करो," यह कहने की अपेक्षा "अमुक वृत्ति से करो," इस पर ही जोर देते हैं।

इसी प्रकार सामूहिक या सामाजिक विचार के संबंध में भी होता है। हमारे परंपरागत तत्त्व-विचार में विशिष्ट सामूहिक या सामाजिक कर्तव्य ही पैदा नहीं होता है। व्यक्ति की मुक्ति का अर्थ होता है, उसका विश्व-रूप में विलीन होना और फिर व्यक्ति और सारी चराचर सृष्टि के बीच कोई विशिष्ट समाज या समूह ही बनता नहीं है। इस मामले में विचार करना हो, तो वह तत्त्व-विचार में से नहीं निकलेगा, बल्कि विशिष्ट समाज या समय में विहित या उचित कर्म कौनसा, इसमें से निकल सकता है। सन्यास-मार्ग का विरोध करने वाले आधुनिक लोग भी यही कहते हैं कि "संसार में रह कर प्राप्त कर्म को अलिप्त भाव से करते रहना, यह हमारी वृत्ति हो और विश्वशान्ति ध्येय हो।" इसलिए हमारे देश, समाज या धर्म के संबंध में विशेष निष्ठा या कर्तव्यों पर किसी ने जोर नहीं दिया। हमारे परंपरागत विचार में से कोई ऐसा कट्टु आदेश नहीं निकल सकता कि स्वर्ग-प्राप्ति के लिए और धर्म-प्रसार के लिए लड़ाई करो अथवा अपने खुद के समाज के हित के लिए संसार को भूल कर चाहे जो करो।

उपर्युक्त विवेचन में दो शंकाएं उपस्थित हो सकती हैं। पहली शंका यह कि 'आधुनिक विचारकों की भूमिका के नाम से जिसका उल्लेख ऊपर किया है, उसके बारे में क्या यह कहा जा सकता है कि वह भारत में आज वास्तव में सर्वमान्य है ?" दूसरी यह कि "तात्त्विक विचार की नई भूमिका को सर्वमान्य मान भी लिया जाय, तो भी क्या यह माना जा सकता है कि उसके कारण प्रत्यक्ष जीवन और व्यवहार में कुछ परिणाम होगा ?" पहली शंका का समाधान करते समय मुख्यत राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक विचारों व आन्दोलनों के प्रवाह की ओर ध्यान देना चाहिए। कुछ वर्ष पहले मिल, स्पेन्सर आदि पाश्चात्य समाजशास्त्रियों अथवा ईसाई धर्म के आधार पर सामाजिक विचारों को हमारे यहाँ के नेता उपस्थित करते थे। उसका तात्कालिक परिणाम थोड़ा-बहुत हुआ भी हो, फिर भी आज वह टिका हुआ नहीं है। विभिन्न राजनैतिक पक्ष और समाज के क्रान्तिकारी नेता भी आज अपने विचारों को तिलक, अरविंद, गांधी या विनोबा की मूल भूमिका के ही आधार पर प्रस्तुत करते हैं। डा० आम्बेडकर ने अपने अनुयायियों को बौद्ध धर्म की ही दीक्षा दी। यह इस बात का सूचक है कि हमारे सारे विचारों पर हमारी प्राचीन परंपरा का कितना बड़ा प्रभाव है। एक अमरीकी समाजशास्त्री ने बौद्धिक क्षेत्र में काम करने वाले भारतीयों का सूक्ष्म निरीक्षण गत दो तीन वर्षों में किया। उसने यह लिख रखा है कि भारतीयों के इस वर्ग में अलिप्तता और वानप्रस्थाश्रम की कल्पना का आकर्षण अभी भी बहुत परिमाण में है।

नीति धर्म के विचारों का जीवन में कितना परिणाम होता है और प्रत्यक्ष व्यवहार में कितना उपयोग होता है, यह नापना यद्यपि कठिन है, फिर भी यह सही है कि परिणाम तो बहुत होता है। अलग अलग समाजों का स्वभाव-विशेष कुछ अंशों में अलग है, ऐसा माना जाता है और यह दिखाया जा सकता है कि इसका संबंध नीति-धर्म-विचार और सामाजिक मूल्यों के साथ है। ईसाई, इस्लाम, हिंदू बौद्ध आदि धर्मों के प्रसार के इतिहास की तुलना करके देखें, तो इनके अन्दर विद्यमान भिन्नता और मूल धार्मिक कल्पनाओं का संबंध दिखाई देगा। अलबेरूनी से लेकर मराठाशाही तक अनेक विदेशी प्रवासियों ने भारतीय परिस्थिति के संबंध में वर्णन किया है। उनमें बहुतों के वर्णन में मदिरा और मांस-सेवन के विषय में हिंदुओं की वृत्ति का उल्लेख है। अहिंसा-विचार का प्रभाव पड़ने से बौद्ध भिक्षु और जैन साधुओं की तरह ही ब्राह्मणों में भी मांसाहार कम होने लगा और यह निवृत्ति श्रेष्ठता का लक्षण मानी गयी। इसी प्रकार संयम, दमन आदि का महत्त्व समाज में विशेष रूप से माना जाने लगा। इसके कारण मदिरापान, कम-से-कम, उसका अतिरेक, सभी उच्च जातियों में त्याज्य समझा गया। इसलिए अन्य समाजों की अपेक्षा कुछ विशिष्ट आचार हिन्दुओं में पाये गये। इसके विपरीत अंग्रेजों के बारे में उच्चता की कल्पना ज्यों-ज्यों दृढ़ होती गयी, त्यों-त्यों मदिरापान और मांस भक्षण प्रगतिशीलों का लक्षण माना जाने लगा। हिंदुओं की दूसरी विशेषता है, परधर्म और परमत के प्रति सहिष्णुता। यह भी धर्म विचार से ही पैदा हुआ है। जो यह मानते हैं कि "ईश्वर एक ही है, एक ही पैगंबर है, एक ही धर्मग्रंथ है और यही सत्य है, इससे भिन्न सारा असत्य है।" और यह जो कहते हैं कि "कोई भी उपासना आखिर एक ही ईश्वर में जा मिलती है और किसी एक ही ऋषि का वचन प्रमाण नहीं माना जा सकता," इन दोनों की वृत्ति और व्यवहार में अन्तर का होना अनिवार्य है। अत नीति-धर्म विचारों का प्रत्यक्ष जीवन से साथ संबंध नहीं, ऐसा कहना सही नहीं है। हिंदुओं का सौम्य भाव और सहिष्णुता कोई उनका आनुवंशिक गुण नहीं है। इन्हीं में से जो मुसलमान बन गये, वे कठमुल्ला और मूर्तिभंजक हुए !

हमारे आधुनिक विचारकों ने परंपरागत आधार को मूलत छोड़ा नहीं। इसका अर्थ यही मानना चाहिए कि हमारी जनता की वृत्ति में ऐहिक जीवन के संबंध में थोड़ी कर्तव्य-बुद्धि उत्पन्न करने के अतिरिक्त कुछ परिवर्तन करने की आवश्यकता उन्हें नहीं लगी। आधुनिक युग में जितने प्रभावशाली विचार आये, उनमें से लोकतंत्र आदि कुछ विचारों को हमने अपनाया, पर और किसी को नहीं। उदाहरण के तौर पर, हमारे नेताओं में किसीने राष्ट्रवाद का खुला समर्थन नहीं किया। समूचे मानव-समाज की समस्या के संबंध में विचार करने की हमारी परंपरा में से ही विनोबा का नारा "जय जगत्" पैदा हुआ है। पूंजीवाद और कम्युनिज्म आदि की भी यही हालत है। प्रत्यक्ष रूप में हमारे यहाँ पूंजीवाद ही जारी है और हमारे पूंजीवादी लोग दूसरे किसी भी प्रदेश की अपेक्षा अधिक लोभी, स्वार्थी और नीति-बंधनों को न मानने वाले हैं। इसके बावजूद हमने पूंजीवादी तत्त्वज्ञान को स्वीकार नहीं किया है। न ही हमारे यहाँ वह विचारधारा मान्य हुई और आगे दीखती भी नहीं कि भौतिक व्यवहार एक आदर्श का ध्येय है। इसमें

गुजरात की चिट्ठी

किसन त्रिवेदी

सूरत जिले में पारडी की पदयात्रा में वहाँ की घासिया खेती और भूमिहीनता के प्रश्न का प्रत्यक्ष दर्शन करने के बाद मंडल की उपसमिति ने गुजरात राज्य के मुख्य मंत्री श्री जीवराजभाई और महसूल मंत्री श्री रसिकभाई परीख तथा अन्य संबंधित मंत्रियों के साथ मुलाकात की, पर दुःख के साथ पाया गया कि सरकार और मंडल की सोचने की बुनियाद ही अलग है। सरकार तो 'सीलिंग' के कानून से अधिक होने वाली जमीन से जो कुछ होगा, उसके अलावा और कुछ ज्यादा काम पारडी में करने के लिए तैयार नहीं है। मंडल का सुझाव वहाँ की भूमिहीनता की वजह से वर्ग संघर्ष का सवाल हल करने की दृष्टि से निश्चित जमीन बाँटनी होगी चाहिये, ऐसा था। मंडल का निवेदन इसी अंक में अन्यत्र दिया जा रहा है। इस स्थिति में पारडी में प्रजा-समाजवादी पक्ष की ओर से फिर से सत्याग्रह का आंदोलन होने की संभावना है।

गुजरात सर्वोदय-पदयात्रा

गुजरात प्रांतीय स्तर की पदयात्रा ता० १ जून से साबरकांठा जिले में चल रही है। शान्तिपूर्वक भूमि-वितरण कार्य को मुख्य काम मान कर पदयात्रा में विचार-प्रचार और साहित्य-प्रचार का काम भी अच्छा हो रहा है। ता० १ जून से ४ अगस्त के दरमियान ५० गाँवों की इस यात्रा में इस प्रकार काम हुआ है। साहित्य-प्रचार . १४६८ रु०; भूमि-वितरण ११२ एकड, ३८ गुंठा, "भूमिपुत्र" के ग्राहक १२१ और "क्षितिज" के ९२ ग्राहक बने। यात्रा में चार-पाँच भाई सतत रहे।

खेडा जिले की बोरसद तहसील में ता० ११ जून से २५ जून तक दो दो की दो टुकडियों में यात्रा का दूसरा हफ्ता पूरा हुआ। यात्रा में ता० २५ मई से २८ जून तक, २६ दिन में ४२ गाँवों में गये और व्यापक लोक-संपर्क के अलावा १० एकड भूमि बाँटी गयी। १४२ रु ५३ न. पै का साहित्य बिका तथा 'भूमिपुत्र' के ४९ ग्राहक बने। स्थानीय प्रश्नों को लेकर सर्वोदय की दृष्टि समझाने का यात्रा में अच्छा अनुभव आया।

अहमदाबाद शहर में सर्वोदय-पात्र

अहमदाबाद शहर में सर्वोदय-पात्र के काम का आयोजन विकसित हो रहा है। सर्वोदय-पात्र रखने वाले परिवारों से संपर्क करने और उसी काम को आगे चालू रखने के लिये स्थानीय सर्वोदय मित्रों को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से एक संपर्क-यात्रा ता० ११ मई से शुरू की है। उसमें ता० ११ जून से २६ जुलाई तक शहर के जागृत वार्ड, खाडिया रायपुर में सर्वोदय-पात्र रखने वाले करीब ५००० परिवारों से संपर्क किया, जिनमें से करीब २१९३ परिवारों से पिछले ४-५ मास की इकट्ठी सर्वोदय पात्र की रकम के रूप में रु० २४२८ न पै ५६ मिले। वार्ड में २७ मोहल्लों में सुबह सफाई, प्रार्थना आदि का आयोजन किया। शहर के इसी वार्ड में जिला सर्वोदय मंडल का नया कार्यालय खोला गया है। दूसरे ४ वार्डों में सर्वोदय-मित्रों के साप्ताहिक मिलन की दृष्टि से सर्वोदय साधना केन्द्र, प्रार्थना, प्रवचन या सफाई-कार्यक्रम नियमित शुरू किये हैं। अभी तक प्रत्यक्ष सेवा-कार्य शुरू नहीं किया है, मगर शहर की पिछडी हुई बस्ती में यह करने का विचार है। अब शहर में सर्वोदय-पात्र रखने वाले परिवारों से संपर्क साधने की जिम्मेवारी लेने वाले सब मित्रों से संबंध स्थापित रखने का काम १५ दिन में पूरा करना है। अभी अहमदाबाद शहर में सर्वोदय-पात्र रखने वाले परिवारों में रोजाना एक नया पैसा बच्चा के हाथों से डाला जाता है। इसके सिवा बाकी परिवार महीने की ३० दिनों की इकट्ठी रकम एकसाथ दे देते हैं।

शान्ति-सेना का कार्य

सौराष्ट्र की माध्यमिक शालाओं में गुजरात के और जिलों के अनुपात में छात्रों की फीस कुछ कम थी। मगर इस साल से सरकार ने संपूर्ण प्रान्त में एक ही समान नीति स्वीकार कर लिया, इससे सौराष्ट्रवालों को अब पहले से कुछ ज्यादा फीस देनी पड़ेगी। सौराष्ट्र के विद्यार्थियों ने उसका विरोध किया और आंदोलन चलाना तय किया। राजकोट शहर विद्यार्थियों के इस आंदोलन का उद्गम-स्थान रहा और वहाँ सत्याग्रह करने का सोचा गया। सौराष्ट्र के शांति-सैनिकों ने राजकोट में विद्यार्थी-नेता, छात्रावास और हाईस्कूलों के विद्यार्थी और उनका साथ देने वाले विरोधी पक्ष के नेताओं से संपर्क स्थापित किया। शान्तिपूर्ण मार्ग को अपनाने और समर्थन करने के लिये पत्रिकाएँ भी बाँटी गयी, स्थानीय अखबारों में लेख भी लिखे गये। जिस दिन विद्यार्थियों का जुलूस निकलने वाला था और जिस रास्ते पर से जुलूस जाने वाला था, वहाँ उसी दिन और उसी मार्ग पर शान्ति-सैनिकों ने सुबह चार बजे प्रभात-फेरी निकाली और शान्ति-गीत गाये। सौभाग्य से कुछ खास गड़बड़ नहीं हुई। मित्रों के इस नम्र कार्य का भी कुछ अच्छा असर वातावरण में हुआ। विसावदर में वहाँ के बुजुर्ग सेवक श्री मोहनभाई भाडविया, जो शान्ति-सैनिक भी हैं, की सूझ और उपवास ने विद्यार्थियों के दिल जीत लिये।

इन्दौर नगर में साहित्य प्रचार

विनोबाजी की इन्दौर नगर की यात्रा की पूर्वतैयारी में यहाँ से ३ बहनें और २ भाई १४ दिन वहाँ रहे। कार्यकर्ता-शिविर के दो दिन बाद वहाँ के गुजराती परिवारों से खास संपर्क साधने का काम शुरू हुआ और २९ जून तक विचार-विनिमय और साहित्य-प्रचार का काम अच्छा हुआ। साहित्य-बिक्री १८९४ रु० की हुई और 'भूमिपुत्र' के ८०९ और 'भूमि-क्रांति' के ९७ ग्राहक बनाये गये। सर्वोदय-पात्र के काम में भी इन भाई बहनों ने हिस्सा लिया।

सेवक-निर्वाह के लिये

मंडल के निर्णय के अनुसार जून-जुलाई में मित्रों और शुभेच्छकों से कार्यकर्ता-निर्वाह के लिये संपर्क साधने का काम बम्बई, अहमदाबाद और अन्य स्थानों में मंडल के कार्यकर्ताओं ने किया। उनकी ओर से अच्छी सहानुभूति और सहकार मिला। सेवक निर्वाह के लिए ३० हजार रुपये का एक साल का बजट मंडल ने बनाया है। उसमें से १९ हजार रुपये मिल चुके हैं और जो वचन मिले हैं, उनसे आशा है कि बाकी रकम भी मिल जायगी।

नये ग्रामदान

बनासकांठा जिले में डुंगरपुरा और शाकवाडा, दो नये ग्रामदान मिले हैं और महाणागढ में ग्राम-संकल्प हुआ है। डुंगरपुरा की खेती के लायक जमीन १३० एकड है। उसमें से ४११ एकड, अर्थात् ९७ प्रतिशत जमीन ग्रामदान में मिली है। गाँव की कुल आबादी १८४ है। उसमें से १५४, अर्थात् ८४ प्रतिशत ग्रामदान में शामिल हुए हैं। इस गाँव में सेवा सहकारी मंडली चलती है। और दूसरी सामुदायिक सहकारी खेती मंडली भी है।

शाकवाडा में खेती के लायक जमीन ३०९ एकड है, जिसमें से १८५ एकड, अर्थात् ६० प्रतिशत जमीन ग्रामदान में मिली है। गाँव की कुल आबादी २३७ है, जिसमें से २०९ अर्थात् ८८ प्रतिशत ग्रामदान में शामिल हुए हैं। गाँव में ग्राम-स्वराज्य सहकारी मंडली की ओर से १७८० रु० का कर्ज दिया गया है।

महाणागढ की ४२७४ एकड खेती के लायक जमीन में से ग्राम-संकल्प में १५३ एकड, अर्थात् ३९ प्रतिशत जमीन मिली है और ३०२५ की कुल बस्ती में से २००, अर्थात् ६६ प्रतिशत बस्ती ग्राम-संकल्प में शरीक हुई है। ग्रामस्वराज्य सहकारी मंडली की ओर से ८७९५ रु० का कर्ज दिया गया है।

मंडल के निर्णय

ता० ६-७ अगस्त के दिनों में हरिजन आश्रम अहमदाबाद में गुजरात सर्वोदय मंडल की कार्यवाहक समिति, जमीन मर्यादा समिति, पारडी अध्ययन-मंडल और लोकसेवकों की सभाएँ हुई, जिनमें गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ से ४० लोक-सेवक भाई-बहनें आये।

गुजरात सरकार भी जब जमीन-मर्यादा का कानून बना रही है, जिस पर लोग सर्वोदय मंडल का मन्तव्य जानने के लिये उत्सुक थे। अतः मंडल ने इस विषय में चर्चा करके एक निवेदन प्रगट किया है। ऐसे कानून कितने भूमिहीनों को जमीन पर बसाने में सफल होते हैं, उस पर से इसका मूल्यांकन हो सकता है। और इस दृष्टि से होने वाले कानून की प्राप्त जानकारी से ऐसी बिलकुल कम आशा है।

बाबा के समक्ष इन्दौर में गुजरात सर्वोदय मंडल की बैठक ता० २१-२२ और २३ अगस्त को हुई उस समय गुजरात के काम की स्थिति और देश की समग्र भूमिका में बाबा से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

गुजरात के बुजुर्ग लोकसेवक

पूज्य रविशंकर महाराज आजकल दो मास के लिए खेडा जिले में पेटलाद से नजदीक कासोर गाँव में स्थिर निवास कर रहे हैं। हर साल वर्षा में पूज्य महाराजश्री श्रावण और भाद्रपद मास में ऐसा करते आये हैं। पहले सप्ताह में सिर्फ पानी लेकर उपवास करते हैं। उनका कहना है कि अपने दैनिक जीवन में वे उन दिनों अधिक स्फूर्ति पाते हैं। पूज्य महाराजश्री का स्वास्थ्य अच्छा है। गुजरात के और सेवक सर्वश्री जुगतराम भाई, बबासाहब फडके, परीक्षित भाई, बबलभाई और दिलखुशभाई यहाँ के विविध रचनात्मक कामों में दिलचस्पी लेते हुए गुजरात के जीवन में सर्वोदय विचार के लिए श्रद्धा के स्रोत बन रहे हैं।

कानून की मर्यादा में रह कर प्रत्येक को अनाक्रमक-वृत्ति से व्यवहार करना चाहिए और इस संघर्ष में जो सबसे अधिक सहन होगा, वह श्रेष्ठ है तथा सामाजिक आदर पाने के योग्य है। इसके विपरीत साम्यवाद की हिंसात्मक प्रवृत्ति और संकुचित दृष्टि भी हमें नहीं जँची। आज हमने प्रत्यक्ष रूप से सहकार अथवा विकेंद्रीकरण की दिशा में कोई कदम नहीं उठाया है, यह सही है। परन्तु यह कहने में हर्ज नहीं है कि समाज को वह जँचता है, वरना ऐसा नहीं, यह नेता लोग जो घोषणा करते हैं उस पर से मालूम होता है।

ऊपर के विवेचन का सार यह है कि गत सौ डेढ सौ वर्षों में हमारे विचारशील लोगों ने बहुत बड़ा काम किया है। उन्होंने पाश्चात्य विज्ञान और संस्कृति के संपर्क से अस्वस्थ और भ्रमित समाज को स्वस्थ सोचना सिखा कर परंपरागत संस्कृति विचार को प्रकाश में लाकर और उसका नया भाष्य तैयार करके आधुनिक युग के अनुरूप एक भूमिका तैयार की है। यह किसी एक का कार्य नहीं है, किन्तु राजा राममोहन राय ने जैसा कहा कि एक ही कालखंड की अनेक मंडली का कार्य है। (समाप्त)

केरल की चिट्ठी

केरल की बरसात विख्यात है। एक दिन की बात है। शाम का समय था, मूसलधार बारिश हो रही थी। हमारा एक सर्वोदय-कार्यकर्ता डाक-घर की तरफ बढ़ा। तेज हवा चल रही थी। उसने 'भूदान-काहलम' पत्रिका का बंडल डाक-घर से छुड़ाने के बाद एक प्रति पोस्टमास्टर को दी। उसको उस दिन कई घर 'भूदान काहलम' पहुँचाना था। साथियों ने उसको ऐसी बारिश में जाने से रोका। उसने कहा, "ज्यादा दूर नहीं जाऊँगा। बस, 'नंब्रक्डी' तक ही जाना है।" वह आँधी और पानी की परवाह न करते हुए 'नंब्रक्डी' पहुँचा। बरामदे में एक बच्ची खड़ी थी। उसने उस बच्ची से पूछा, "क्यों, पिताजी है?" उस बच्ची ने मुस्कराते हुए जवाब दिया: "हाँ, ठंडी के कारण अन्दर बैठे हैं।"

हमारे कार्यकर्ता की आवाज सुन कर वह सज्जन स्वाभाविक मुस्कान के साथ बाहर आये और बोले, "मैं जानता हूँ, आज बुधवार है। लेकिन ऐसी बारिश में आप नहीं आयेंगे, ऐसा मैंने सोचा। कैसी आँधी है! ऐसे समय पर आप बाहर मत निकलिये।"

कार्यकर्ता ने "कोई बात नहीं" कह कर 'भूदान काहलम' आगे बढ़ा दिया। वह लेकर उन्होंने कहा, "थोड़ी देर बैठिये। बारिश का जोर कम होने के बाद जाइये। हम थोड़ी बातचीत करेंगे। मन और कर्म को पवित्र करने के उपदेशों से भरे हुए विनोबा-प्रवचन पढ़ने के लिए मैं ललचाता हूँ। उनके प्रवचन पढ़ते समय आँखों में आँसू भर जाते हैं।" आँसू पोंछ कर फिर वे बोले, "काश! 'भूदान काहलम' के प्यार की पुकार सबने सुनी होती!" अँधेरा फैल रहा था, इसलिए कार्यकर्ता को उनसे विदा लेनी पड़ी। वह एक नये उत्साह के साथ घर लौटा।

मुसक्वारों में पला हुआ एक नौजवान, संस्कृत-प्रेमी, सदा शांत और मुस्कराता चेहरा, कितना शुद्ध हृदय! कौन जाने ऐसे कितनी शुद्धात्माएँ अपने गाँवों में छिपी हैं!

तिरूर में श्री ए० बी० श्री कटपोनुवाल सर्वोदय-पात्र का कार्य करते हैं। साथ-ही-साथ वहाँ रोगियों की सेवा, मद्यपानियों की शराब छुड़ाना आदि काम भी करते हैं, जिसमें अच्छी सफलता मिल रही है। सर्वोदय-पात्र का अनाज आजकल नीलाम में बेचा जाता है। इसलिए बाजार-भाव से ज्यादा ही पैसे मिलते हैं।

कोझिकोड जिला सर्वोदय-मंडल की एक बैठक ता० १७ जून को श्री ए०सी० कुन्नुण्णि राजा (संपादक, 'भूदान काहलम') की अध्यक्षता में पनलायनी में हुई। इस जिले की जो भूमि बाँटने योग्य है, उसे तुरन्त बाँटने की व्यवस्था कर रहे हैं। मालाना १०० रुपये तक संपत्ति-दान देने वालों से रकम इकट्ठी करने का अधिकार केरल सर्वोदय-मंडल से माँगा गया है।

पालघाट जिले के परली हाईस्कूल के हरएक क्लास में एक-एक सर्वोदय पात्र रखा गया है। अपने-अपने क्लास के एक-एक विद्यार्थी बारी-बारी से एक-एक मुट्ठी अनाज रोजाना डाल रहे हैं।

रामनाट्टुकरा सेवा-मंदिर में ता० ९ अगस्त को कोझिकोड जिला सर्वोदय-मंडल की ओर एक बैठक हुई। ता० ११ जून को भी सर्वोदय-प्रेमियों की बैठक हुई, जिसमें वहाँ की दान-भूमि का बँटवारा ता० ११ सितंबर (विनोबा-जयंती) के पहले हो जाना चाहिए, ऐसा निर्णय लिया गया है। उसकी तैयारियाँ श्री डी० पंकजाद कुरुप कर रहे हैं।

खादी-कमीशन के 'नये मोड' के आधार पर कार्यारंभ करने के लिए तिरुवत्तरा खादी-ग्रामोदय संघ ने ता० १४ अगस्त से एक नया कार्यक्रम अमल में लाया है।

केलप्पनजी के डेढ़ साल के प्रयत्न से कोझिकोड (कालिकट) शहर में 'गांधी गृह' बनाने के लिए वहाँ की म्युनिसिपल कौन्सिल ने पर्याप्त जमीन दान दी है। वहाँ के भवन का शिलान्यास केरल के राज्यपाल श्री वी० वी० गिरी के हाथ से ता० १० अगस्त को श्री बी० एम० नायर की अध्यक्षता में हुआ।

विश्वशांति का रास्ता : गांधी-मार्ग

शिला-न्यास करते हुए श्री गिरिजी ने कहा, "गांधीजी द्वारा अपने जीवन में प्रयोग करके बताये हुए तत्त्वों को अमल में लाने से ही सच्ची विश्वशांति होगी और मानव वंश की भलाई के लिए दुनिया कायम रह सकेगी। एटम बम से कभी विश्व-शांति नहीं होगी। हथियारों से लड़ने वाले बड़े राष्ट्र से, जहाँ सूरज नहीं डूबता था, गांधीजी ने हिंदुस्तान को आजाद किया, हिंसक युद्ध से सच्ची डेमोक्रेसी नहीं ला सके। सत्य और अहिंसा के हथियार ही भारत को आजाद करने के लिए उपयुक्त हुए। गांधीजी ने यह हमें सिद्ध करके बता दिया। चारों तरफ जब युद्ध फैला हुआ था, तब गांधीजी की बात पर लोग हँसते थे! अगर गांधीजी आज जीवित होते, तो संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों से यह आशय स्वीकार कराते कि सत्य, अहिंसा और हथियार त्याग से ही विश्वशांति होगी।" श्री गिरिजी ने श्री विनोबाजी के कामों की प्रशंसा की और कहा, "गांधी गृह जैसी संस्थाएँ हमें साफ बता देंगी कि गांधी-तत्त्व ही शाश्वत है और यह बात जब सब कोई समझ कर जीने लगेंगे, तो यह दुनिया ही स्वर्ग बन जायगी।"

श्री गिरिजी और अन्य अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री केलप्पनजी ने (अध्यक्ष, गांधी स्मारक निधि, केरल शाखा) कहा, "कोझिकोड एक पुराना शहर है, जो अब कॉरपोरेशन बनने जा रहा है। यहाँ 'गांधी-घर' की अत्यंत आवश्यकता है। विश्वसौहार्द बढ़ाने का हमारा यत्न हो। हम सब ईश्वरांश हैं। अपने जैसे दूसरों को देखना, यह आर्ष सिद्धान्त है। गांधीजी की जिन्दगी इस सिद्धान्त के अनुसार थी। श्री विनोबाजी की पदयात्रा भी यह विश्वास लोगों में पैदा करने के लिए है। उम्मीद है, यह 'गांधी-गृह' कोझिकोड में गांधीजी का जिन्दा स्मारक होगा और गांधी-तत्त्वों का प्रकाश फैलाने वाला दीपस्तंभ होगा।" श्री केलप्पनजी ने जमीन-दाता का अभिनन्दन किया और सभी की मदद से यहाँ एक उत्तम 'गांधी-गृह' खड़ा करने की आशा प्रकट की।

१० अगस्त श्री गिरिजी (केरल के राज्यपाल) का जन्म दिन था। कोझिकोड टाउन हॉल में प्रार्थना के बाद एक सभा हुई, जिसमें बालक-बालिकाओं ने श्री गिरिजी को फूलों के हार और गुलदस्ते भेंट किये। श्री केलप्पनजी ने श्री गिरिजी का अनुमोदन करते हुए कहा "बारिस्टर के नाते मैं श्री गिरि को पहचानता नहीं हूँ। स्वातन्त्र्य की लड़ाई के एक अहिंसक सिपाही का आराम-गृह कारागृह है। श्री गिरि को मैंने ऐसे एक सिपाही के नाते एक कारागृह में पहचाना। अभी ६८ साल की उम्र में उनमें जो जोश दीखता है, उससे कई गुना ज्यादा जोश उस समय जेलखाने में दीखता था। भगवान उनको आयु व आरोग्य प्रदान करे।"

श्री केशव मेनन ने कहा, 'निष्कलंक हृदय, अत्युत्साह, किसीको भी सदा मदद करने की तैयारी, प्यार करने की क्षमता, ये श्री गिरिजी के गुण हैं।" श्री गिरीजी ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए बताया, "जन्म दिन हमें याद दिलाता है कि अपने पर अपने राष्ट्र की और समाज की क्या जवाबदारी है। अपनी गलतियों को दुरुस्त करने, और आगे ऐसी गलती से बचने के लिए जागृत रहने की जरूरत है। उसके लिए ज्यादा त्याग और सेवा करनी चाहिए। आज सेवा और त्याग की प्रतिज्ञा का दिन है।"

सर्वोदयपुरम्

सेवा-मंदिर, रामनाट्टुकरा और सर्वोदयपुरम् (तवनूर) में एक-एक नर्सरी स्कूल खोलने की इजाजत मिली है। सर्वोदयपुरम् उत्तर बुनियादी शाला और शिशुविहार के भावी कार्यक्रम के बारे में सोचने के लिये ता० १५ अगस्त को शान्ति कुटीर में एक बैठक होगी।

—गोविंदन्

पश्चिम बंगाल की चिट्ठी

सेवाग्राम सर्वोदय-सम्मेलन के बाद ७-८ अप्रैल को कलकत्ते में सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन की उपस्थिति में पश्चिम बंगाल के मुख्य कार्यकर्ता मिले और साथ-साथ प्रांतीय-मंडल की बैठक भी हुई। वहाँ यह तय किया गया कि जितनी जमीन बँटने की बाकी रह गयी है, वह सब अगले सर्वोदय-सम्मेलन तक बाँट देने की यथासाध्य कोशिश की जाय। तदनुसार अप्रैल के अंतिम सप्ताह से मेदिनीपुर, २४ परगना, मुर्शिदाबाद, प० दिनाजपुर, बाँकुड़ा और बर्दवान इन छह जिलों में कार्यकर्तागण पदयात्रा करते हुए जमीन बाँटने के लिये घूमने लगे। श्री चारुचन्द्र भंडारी ने बीच-बीच में एक-एक जिले में ७-८ दिनों के लिये पदयात्रा की। जून के अन्त तक यह क्रम चला। फिर बरसात के कारण वह स्थगित किया गया है।

कुल मिला कर लगभग दो हजार मील की पदयात्रा हुई है। श्री चारु बाबू की पदयात्रा के दौरान में जो सभाएँ हुईं, उनमें कुल ८९६६ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई। इस प्रांत में जो जमीन भूदान में मिली है, उसमें अधिकांश जमीन पक्की और अच्छी है। लेकिन जमीन छोटे छोटे टुकड़ों में बँटी है। दान भी बहुत छोटे-छोटे हैं। एक भी गाँव में ज्यादा जमीन नहीं मिली है। पश्चिम बंगाल में भूदान संबंधी कानून नहीं बन पाया है। इसलिए भूमि-वितरण में दाताओं की सम्मति लेनी पड़ती है। बहुत से दाता भूमि-वितरण में सम्मति नहीं देते हैं। उसमें इनकार करते हैं। इन सब कारणों से भूमि-वितरण में अधिक समय लग जाता है और कार्यकर्ताओं को परेशानी भी होती है। जून के अन्त तक २५२ गाँवों में ३५४ आदाताओं को २७९ एकड़ जमीन दी गयी है और ५२ एकड़ भूमि के २२९ दाताओं ने उनका भूमि-वितरण करने नहीं दिया। दूसरे कारणों से २०० दाताओं की २४५ एकड़ भूमि का वितरण नहीं हो पाया।

७ अप्रैल से २१ अप्रैल तक एक सप्ताह यहाँ सर्व-सेवा-संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन का दौरा हुआ। कलकत्ते में तीन दिन छोड़ कर आप मेदिनीपुर जिले में पाँच दिन घूमे। खड़गपुर की एक सभा में उनका भाषण हुआ। आलोक केन्द्र में उनकी उपस्थिति में श्री चारुचन्द्र भंडारी के सभापतित्व में मेदिनीपुर जिला कार्यकर्ता-सम्मेलन आयोजित हुआ और वहाँ एक आम सभा भी हुई।

२५ अप्रैल से २७ अप्रैल तक, तीन दिन वीरभूम जिले के ... सर्वोदय-आश्रम में श्री ... चौधरी के सभापतित्व में वीरभूम, मुर्शिदाबाद और मालदह, इन तीन जिलों के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के सम्मेलन हुए। सर्वोदय-विचार और सर्वोदय-आन्दोलन के विभिन्न

उत्तरी सीमान्त के चमोली-गढ़वाल जिले में निर्माण व सुरक्षा-योजना

राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से आज सीमान्त क्षेत्रों की ओर सबका ध्यान गया है। सर्वोदय सेवा के लिए भी इन क्षेत्रों में सघन कार्यक्रम की आवश्यकता अनुभव की गयी। उत्तराखंड के सीमान्त में शान्ति सेना के गठन के लिए विनोबाजी ने श्री सुन्दरलाल बहुगुणा को नियुक्त किया है। गढ़वाल में पिछले साढ़े पाँच वर्षों से सर्वोदय-सेवक के रूप में काम करते हुए अपने बड़ों से चमोली-गढ़वाल में अपनी शक्ति केन्द्रित करने का आदेश मिलने पर जुलाई-अगस्त में दो बार मैंने इस क्षेत्र की यात्रा की है।

चमोली गढ़वाल लगभग सारा ही ग्रामीण क्षेत्र है। गढ़वाल के अन्य भागों की अपेक्षा इस भाग में राजनैतिक गतिविधियाँ अधिक है, जिससे जनता में आपसी तनाव काफी बढ़ा है। इन दलबन्दियों के कारण भाई-भाई में मनमुटाव पैदा हुए हैं। निर्माण की चेतना की जगह पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष ने ले ली है।

राजनैतिक दलबन्दी के अतिरिक्त एक और बीमारी का भी प्रसार यहाँ हुआ है! जो ध्येयहीन कार्यकर्ता भी निकलते हैं, वे लगान, तकावी और टैक्सों के पीछे पड़ जाते हैं। इससे साधारण जनता में न किसी पर विश्वास रहा और न स्वयं में कोई उत्साह। ऐसे में स्वाभाविक ही "क्या स्वराज, क्या अंग्रेजी राज!" उनके मुँह से निकलता है। कुछ लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि "स्वराज्य तो लूट खाने वालों के लिए आया है। हम गरीबों को तो रोज की मार और खेती-पानी चौपट कर रोज 'टैक्स' की मारमार ही बहुत है।" किसी भी देश के लिए, और खास कर उस देश के लिए, जिसको अपनी बाहरी सुरक्षा का खतरा हो, यह अत्यन्त भयकर स्थिति है। इससे भी भयकर स्थिति उस समय लगती है, जब कोई कहता है, "चीन तो तिब्बत में सबको बराबर जमीन बाँट रहा है और अमीर-गरीब सबको बराबर बना रहा है। हमारे साथ भी न्याय तभी होगा।"

आज बाहरी शक्ति से खतरा उतना नहीं है, जितना हमें अपनी स्वार्थी मनोवृत्ति से, जनता में फैली उदासीनता से है। जैसे हम देश को, राज्य को अपना नहीं समझते। उसके प्रति कर्तव्य अनुभव नहीं करते। 'घर मेरा है, परिवार मेरा है, इसकी रक्षा के लिए मैं सब कुछ अर्पण कर सकता हूँ' की भावना देश के प्रति इन स्वतन्त्रता के तेरह वर्षों में बिलकुल लोप हो गयी है। बदले में आयी 'सरकार से अधिक-से-अधिक लेकर अपना घर भरने' की भावना, यही असली गुलामी की स्थिति है।

देश को इस खतरे की स्थिति से बचाने के लिए शासन की सीमा से अलग 'लोक-सेवकों' की एक सेना खड़ी करनी होगी। इसके लिए "मनुष्यों" की आवश्यकता है—ऐसे मनुष्य, जो खरीदे या बेचे न जा सकें, जो अन्दर से सच्चे और ईमानदार हो जो आसमान फट पड़ने की स्थिति में भी कर्तव्य और न्याय पर डटे रहें। देश खतरे से तभी बच सकता है। फिर भले ही ऐसे मुट्ठी भर सेवक क्यों न हों, वे सीमा की सबसे शक्तिशाली रक्षा-दीवार सिद्ध हो सकते है। ऐसे सेवकों को न पद की आवश्यकता होगी, न तकावी और अनुदान की और न ठेका-कारोबार की। ऐसे लोक-सेवक आज प्रत्येक गाँव में और कम-से-कम पाँच ग्राम-सभाओं के एक क्षेत्र में एक व्यक्ति आवश्यक है। वे निरंतर मूक और असहाय जनता की सेवा में अपने को खपायेंगे, आवश्यकता पड़ने पर शान्ति-स्थापनार्थ अपने प्राण तक देने को तैयार रहेंगे व सही मार्ग सुझायेंगे, गाँवों की स्थिति सुदृढ़ करने के लिए स्थानीय परिस्थिति में सामूहिक रूप से योजनाएँ बनायेंगे, जिसका लाभ किसी वर्ग को नहीं, जन साधारण को मिल सके।

इसी प्रकार शिक्षा-स्वास्थ्य कार्य, पशुपालन, ग्रामोद्योग और निर्माण-कार्य में सेवाएँ, सहयोग, परामर्श व प्रोत्साहन का काम करेंगे।

ऐसे कामों में सदा निस्वार्थ कार्यकर्ताओं के अभाव से ही असफलताएँ मिलती हैं और जनता में निरुत्साह की भावना फैलती है, जब कि निरन्तर और चरित्रवान सेवक सोयी हुई जनता में भी पूर्ण आत्मविश्वास, नवनिर्माण और आत्मगौरवयुक्त स्वावलम्बन की भावना भर कर उद्वेलित कर सकता है। ऐसी जनता परमुखापेक्षी न रह कर आत्मसम्मान और देश व राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सब कुछ अर्पण करने को तैयार होगी।

—मानसिंह रावत

मुद्दों पर चर्चा हुई। सम्मेलन में यह तय हुआ कि हर महीने में एक सप्ताह इन तीन जिलों के भूदान-कार्यकर्ता एक साथ एक-एक जिले में विचार-प्रचार, भूमि-वितरण, भूदान-संग्रह, साहित्य-प्रचार वगैरह के लिए, पदयात्रा करें। यह भी तय हुआ कि इन तीन जिलों के पंचायतों के निर्वाचन जहाँ तक हो सके, पक्ष निरपेक्ष और सर्वसम्मति से कराने की कोशिश की जाय।

गत ४-५ जून को मालदह जिले के लोकसेवक और रचनात्मक कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन हुआ। प्रांतीय सर्वोदय-मंडल के श्री शिशिरकुमार सेन उसमें उपस्थित थे। जिले के आगामी कार्यक्रम के बारे में चर्चा हुई। श्री हरिवदन ब्रह्मचारीजी ने तीन मास उस जिले में पदयात्रा करने का संकल्प जाहिर किया। भूमि-वितरण का भार श्री गणपति राय पर सौंपा गया।

२ जुलाई से ५ जुलाई तक श्री सतीशचन्द्र चौधरी और श्रीमती मालती देवी ने मेदिनीपुर जिले के नन्दीग्राम थाने में पदयात्रा की। स्थानीय कार्यकर्ता भी उनके साथ घूमे। उनकी पदयात्रा और भाषणों से जनता और कार्यकर्ताओं को बहुत प्रेरणा मिली। पदयात्रा के दिनों में बीच-बीच में कार्यकर्ताओं के साथ उन्होंने सर्वोदय-विचार और आन्दोलन के कई पहलुओं के बारे में चर्चा की। उससे कार्यकर्ताओं को बहुत प्रेरणा मिली।

गुजरात सर्वोदय-मंडल का निवेदन

भूमि सीमा-निर्धारण का प्रश्न

गुजरात सर्वोदय-मंडल की एक सभा ७ अगस्त को साबरमती आश्रम में हुई, जिसमें गुजरात सरकार द्वारा घोषित जमीन की एक परिवार को अधिकाधिक भूमि रखने सम्बन्धी नीति पर विचार हुआ। मंडल निम्न निष्कर्ष पर पहुँचा है:

"सरकार ने माना है कि प्रति परिवार ३६००रु. वार्षिक आय की जमीन (लगभग ९६ स्टैण्डर्ड एकड़) जोत के लिए रख सकता है। जमीन की मालकियत का वर्गीकरण और गुजरात में साधारणतः प्रचलित खेती की प्रथा को देखते इस नीति के परिणामस्वरूप भूमिहीनों में बाँटने योग्य कोई फालतू जमीन बचेगी, ऐसा नहीं दीखता। सर्वोदय-मण्डल और साधारणतः प्रदेश की विशाल ग्रामजनता जमीन की नीति सम्बन्धी किसी भी कदम का मूल्यांकन इसी बात पर कर सकती है कि वह भूमिहीनों को आवश्यक जमीन देने और उनके पुनर्वास का कार्यक्रम कितने अंशों में पूरा करता है।

इस दृष्टि से गुजरात-सरकार की 'सीलिंग' सम्बन्धी नीति से भूसमस्या के हल के भविष्य में कोई खास लाभ नहीं दीख पड़ता। 'सीलिंग' का विचार सरकार की तरफ से भूमिहीनों को बहुत बड़े लाभ के रूप में वर्षों से घोषित किया जा रहा है। भूमि-समस्या का हल निकालने वाले कार्यकर्ताओं और भूमिहीनों को उससे बड़ी आशाएँ बंधी थीं। सर्वोदय-मण्डल का विश्वास है कि गुजरात राज्य द्वारा घोषित सीलिंग की उक्त मर्यादा की कल्पना इन आशाओं पर पानी फेरने वाली है।

गुजरात सर्वोदय मण्डल निश्चयपूर्वक मानता है कि इस देश में 'सीलिंग' की मर्यादा निश्चित करना याने एक परिवार अधिक-से-अधिक कितनी जमीन रख सकता है, ऐसा सोचना उचित नहीं। किन्तु जमीन पर निर्वाह चाहने वाले हर परिवार को कम-से-कम जितनी जमीन दी जा सके, उतनी दिलाना हमारा धर्म है। याने जिसे पूज्य विनोबाजी निम्नतम मर्यादा कहते हैं, उसी पर सरकार और राष्ट्रनेताओं को विचार करना चाहिए।

हमारे देश में बहुत बड़ी संख्या में जनता बिना भूमि के निर्वाह चलाने की स्थिति में नहीं है और निकट भविष्य में न ऐसी स्थिति आने की सम्भावना ही है। ऐसी स्थिति में जमीन को किसी भी तरह व्यापार का साधन बनाना उचित नहीं। इसी तरह उसे किराये पर देकर या केवल प्रबन्ध (मैनेजमेण्ट) कर आसानी से कमाई करने का याने शोषण का साधन भी कभी न बनने देना चाहिए।

मण्डल का मत है कि यदि मर्यादा ही निश्चित करनी है, तो प्रति व्यक्ति ३०० रु वार्षिक आय तक की जमीन जोत के तौर पर निश्चित की जा सकती है। कानून द्वारा सरकार ऐसा न कर सकती हो, तो उसे 'सीलिंग' मर्यादा के विचार से जनता में झूठी आशा फैलाने का ढंग छोड़ देना चाहिए।"

विनोबा कस्तूरबाग्राम में

विनोबाजी अपना इन्दौर-प्रवास समाप्त कर, २५ अगस्त को कस्तूरबाग्राम में पहुँच गये। विनोबाजी ने अपने प्रथम प्रवचन में कहा कि "कस्तूरबाग्राम का अखिल भारतीय महत्त्व है। यह सर्वोदय-कार्य का तो तीर्थ ही है। मैं यहाँ केवल तीन काम करूँगा सुनना, देखना और सोचना। यहाँ पर मैं कम-से-कम बोलूँगा।"

कस्तूरबा-ट्रस्ट की ओर से देश भर में ग्राम-सेवा का काम करने वाली लगभग सौ सेविकाओं का एक शिविर भी विनोबाजी के सान्निध्य में चलेगा। आगे का कार्यक्रम पूछने पर विनोबाजी ने कहा कि "वह तो मैं स्वयं भी नहीं जानता!"

●

इलाहाबाद में गांधी स्वाध्याय-संस्थान

उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि की ओर से गांधी स्वाध्याय-संस्थान का काम विभिन्न नगरों में प्रारंभ हो गया है। २० अगस्त को इलाहाबाद गांधी स्वाध्याय-संस्थान का उद्घाटन श्री विचित्रभाई ने किया। इस अवसर पर श्री विचित्रभाई ने गांधी-विचार के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री कन्हैयालाल मिश्र एडवोकेट ने समारोह की अध्यक्षता की। इस समारोह में नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति और बुद्धिजीवी उपस्थित थे।

●

अखिल भारत सर्व सेवा संघ, प्रबंध-समिति बैठक

पूर्व निश्चयानुसार प्रबंध-समिति की बैठक इस बार श्री विनोबाजी के सान्निध्य में ता० १७, १८, १९ अगस्त,'६० को इन्दौर में श्री वल्लभस्वामी की अध्यक्षता में हुई। १९ सदस्यों तथा २५ निमंत्रित व्यक्तियों ने बैठक में भाग लिया।

बैठक ता० १७ अगस्त को मध्याह्न ढाई बजे से आरम्भ हुई। विनोबाजी के इन्दौर के आगे के कार्यक्रम की चर्चा में विनोबाजी ने साफ कहा कि उनकी पदयात्रा उनके चित्त-निर्माण की प्रवृत्ति है, इसलिए उस क्रम को छोड़ कर और कुछ अपनाना न शक्य है और न सम्भव। उनका अज्ञात संचार चिर-रूप में रहेगा। उनकी आकांक्षा है, शासनमुक्त समाज के स्वरूप-दर्शन की।

आगामी सर्वोदय-सम्मेलन आन्ध्र में हो, ऐसा श्री प्रभाकरजी का निमंत्रण मिला। गुजरात की चर्चा गत सम्मेलन के समय हुई थी। इस सम्बन्ध में निश्चय होकर सम्मेलन फरवरी, '६१ के अन्त में या मार्च, '६१ के प्रथम सप्ताह में होगा।

आगामी संघ-अधिवेशन बैंगलोर में २९ अक्टूबर, '६० से ३ नवम्बर, '६० तक होगा। इसके पूर्व संघ की प्रबंध-समिति की बैठक ता० २७ अक्टूबर, '६० से ही आरम्भ हो जायगी। इसी समय इजराइल के सामुदायिक जीवन और सहकारी कृषि-प्रशिक्षण से लौटे २७ कार्यकर्ताओं का शिविर होगा।

'इन्स्टीट्यूट आफ गांधियन स्टडीज' और उसके आगे के काम की जानकारी श्री जयप्रकाश नारायण ने दी और पहले से बनी समिति में श्री विमला ठकार को और शामिल कर श्री शंकरराव देव को अध्यक्ष और *श्री विमला ठकार* को मंत्री मनोनीत किया गया।

श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् ने प्रबंध-समिति को असम का आँखों देखा वर्णन सुनाया और प्रबंध-समिति ने महसूस किया कि असम में स्थायी शांति की स्थापना और विभिन्न भाषा-भाषी तथा धर्मानुयायी नागरिकों के बीच में परस्पर-विश्वास और मैत्री के सम्बन्ध का निर्माण *सर्वोदय-कार्यकर्ताओं का प्रथम कर्तव्य है।* इसमें असम के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की सहायता हेतु प्रदेश प्रदेश से अनुभवी शांति-सैनिक वहाँ जायँ और इस काम के लिए आवश्यक खर्च वहन करने के लिए सर्व सेवा संघ देश से अपील करे।

सेवाग्राम और वर्धा में गांधी स्मारक के लिए *'मगन संग्रहालय' स्मारक-संग्रहालय* समिति को सुपुर्द करना तथा सेवाग्राम में *बापूकुटी, आदि निवास, आखिरी निवास,* महादेव कुटी और किशोरलाल निवास को खाली रखने और उनमें कताई, पुस्तकालय व बच्चों की शाला आदि प्रवृत्तियों को चलाना उपयुक्त माना गया।

खादी पर 'रिबेट' व 'सबसिडी' देने न देने पर *विनोबाजी की उपस्थिति में* काफी चर्चा हुई और तय हुआ कि आगामी पाँच वर्षों के अन्दर खादी-ग्रामोद्योग आयोग धीरे धीरे 'रिबेट' बंद करे और विनोबाजी के सुझावानुसार १२ गज की बुनाई कताई-प्रशिक्षण, बिना सूद के कर्जे और साधन-सामग्री किश्त पर देने की व्यवस्था करे। बिजली का इस्तेमाल एक गाँव द्वारा दूसरे गाँव के शोषण और गाँव के भीतर परस्पर के शोषण और बेकारी न बढ़े, इस दृष्टि से हो।

संघ की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए श्रेयस्कर यही है कि अधिक से-अधिक लोगों तक पहुँचा जाय। फिर जिस प्रदेश में जैसी स्थिति हो, उसके अनुसार तय किया जा सकता है। सर्वोदय-पात्र और सूतांजलि की आय के साथ-साथ सम्पत्तिदान-कार्यक्रम को वेग देने पर बल दिया गया। सम्पत्तिदान की अवधि कम-से-कम ५ वर्ष मानी जाय। दाता एक-तिहाई स्वयं खर्च कर दो-तिहाई जिला-प्रदेश या सर्व सेवा संघ को सर्वोदय-सम्बन्धी कार्यों के विनियोग के लिए दे। कुल सम्पत्तिदान का पष्ठांश सर्व सेवा संघ को मिले और फार्म भरते समय कम-से-कम तीन मास का अंश अग्रिम रूप में दाता दें।

विचार-प्रचार की दृष्टि से सर्वोदय-विचारधारा पर छोटी छोटी फिल्में तैयार करने के लिए *योजना* बनाने हेतु श्री राधाकृष्णन् के संयोजकत्व में श्री देवी प्रसाद, श्री ए० बी० शरण और श्री अवंति मेहता की एक समिति बनायी गयी।

कानपुर के ग्राहकों से

प्रिय भाई-बहन,

गत वर्ष सितम्बर माह में कानपुर नगर में सर्वोदय कार्यकर्ताओं द्वारा एक अभियान चलाया गया था। हमारे कार्यकर्ताओं का सम्पर्क आपसे हुआ और आप हमारे 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक के ग्राहक भी बने।

हम आशा करते हैं कि हमारा पत्र आपको नियमित रूप से मिलता रहा होगा और एक वर्ष के *निरन्तर अध्ययन* के बाद निश्चय ही आपके विचार सर्वोदय-क्रांति को सफल बनाने के लिए परिपुष्ट हुए होंगे। आप एक वर्ष के लिए ग्राहक बने थे, जो कि सितम्बर महीने में पूरा हो जायगा। इसलिए हम आशा करते हैं कि इस वर्ष भी आप छः रुपये भेज कर ग्राहक बनने *की कृपा करेंगे।*

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी १ *सितम्बर से अभियान चलाया जायेगा,* इस अवसर पर हमारे कार्यकर्ता आपसे सम्पर्क करेंगे। हमें पूर्ण आशा है कि अभियान को सम्पन्न बनाने में आपका सक्रिय सहयोग मिलेगा।

नगर सर्वोदय समिति, कानपुर —संयोजक

दिल्ली में विनोबा-जयन्ती

दिल्ली के सर्वोदय मंडल ने आगामी ११ सितम्बर को विनोबा-जयन्ती के उपलक्ष्य में दिन भर का एक व्यापक कार्यक्रम बनाया है। सबेरे प्रभात फेरी और सफाई के बाद ९॥ बजे कान्स्टीट्यूशन क्लब में *एक सभा का आयोजन किया गया है,* जिसमें अमरीकन राजदूत, गांधी निधि के मंत्री श्री जी० रामचन्द्रन्, डॉ० सुशीला नैय्यर आदि विनोबा के व्यक्तित्व और सर्वोदय-विचार के विभिन्न पहलुओं पर बोलेंगे। पंडित जवाहरलालजी नेहरू भी अगर उन्हीं दिनों पाकिस्तान नहीं गये, तो इस सभा में शामिल होंगे। शाम को गांधी-मैदान में सामूहिक कताई-यज्ञ और बाद में वहीं पर *आम सभा का आयोजन किया* गया है, जिसमें राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र बाबू सम्मिलित होंगे।

प्रकाशन-समाचार

दैनंदिनी : १९६१

सन् १९६१ की दैनंदिनी ता० २ अक्टूबर को प्रकाशित करने का सोचा गया है, ताकि तीन माह ग्राहकों तक दैनंदिनी पहुँचने के लिए मिल सकें। आकार प्रकार *गत वर्ष का यही,* छिपाई ८ पेजी इस वर्ष भी रहेगा। कागज अधिक अच्छा, रॉयल बैंक पेपर रहेगा। कीमत दो रुपया रहेगी। लेकिन ३० सितंबर तक जितनी रकम पेशगी पहुँच जायेगी, उन्हें पौने दो रुपये में मिलेगी। जो लोग एकसाथ ५० डायरियों से अधिक मंगवायेंगे, उन्हें रेल किराया भी *नहीं लगेगा, 'फ्री डीलीवरी' मिलेगी।* दोनों रिआयतें मिलने पर गत वर्ष जो डेढ़ रुपया मूल्य था, लगभग उतना ही यह भी हो जाता है। ५० से कम मंगवाने वाले को रेल या पोस्टेज आदि खर्च अलग से *करना होगा। दैनंदिनियां जितनी जरूरत* हों, उतनी ही मंगवायी जायें, *वापिस नहीं* ली जा सकेंगी, क्योंकि दिसंबर के बाद बेच नहीं सकेंगे।

आर्डर के साथ रकम पेशगी आनी चाहिये और अपना व रेल्वे-स्टेशन का नाम-पता पूरा लिखना चाहिये।

—अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४१९१
एक प्रति : १३ नये पैसे
वार्षिक मूल्य ६)
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,९७६ : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,५५६

दक्षिण-यात्रा

सिद्धराज ढड्ढा

करीब करीब तीन वर्ष बाद दक्षिण भारत में आने का प्रसंग आया था। जब विनोबाजी दक्षिण के प्रांतों की यात्रा समाप्त करके उत्तर की ओर मुड़े, तब से उधर जाना नहीं हुआ था। हिन्दुस्तान में जब कभी पश्चिम से पूरब या उत्तर से दक्षिण लम्बी दूर जाने का मौका आता है, तब-तब हमारे इस देश की विशालता, इसकी विविधता और इसकी महानता के दर्शन होते हैं। ता० २३ अगस्त को सबेरे जब हम दिल्ली से चले तो मानो सारी सृष्टि जलमय हो रही थी। सारा आकाश काले-काले बादलों से घिरा हुआ था, सतत गिरने वाली जलधाराएं आकाश और पृथ्वी के बीच के असीम अंतर को मानों जोड़ रही थीं, पृथ्वी पर सब जगह पानी ही पानी था। दो दिन, दो रात सफर करने के बाद भी जब अभी हमारा लक्ष्य काफी दूर था, तब ता० २५ को सबेरे रेल में आंख खुली तो सारा वातावरण बदला हुआ था। आकाश में कहीं बादल का नाम नहीं था, पृथ्वी पर जल का निशान नहीं था। प्रकृति, रहन-सहन, भाषा सब बदली हुई थी। पर इस सारी बाह्य विविधता के बावजूद अंतरंग तो एक ही था। यों तो हम किसी भी देश में चले जायें—दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में, मनुष्य-मात्र की भावनाएं, उसके हावभाव, उसके चित्त की उथल-पुथल, उसकी चेष्टाएं सबके अंतर्गत एक ही सूत्र दिखाई देता है, फिर भी बाहरी विभिन्नताएं इतनी स्थूल और अधिक होती हैं कि सहसा उस एकता का भान नहीं होता। हिन्दुस्तान में बाहरी विभिन्नताओं के बावजूद परम्परा, संस्कृति और रहन सहन आदि की एकता भी स्पष्ट नजर आती है। इस अंतरंग एकता की पृष्ठभूमि में राजनैतिक नेताओं और पार्टियों द्वारा उभाड़े गये सीमा, भाषा आदि के झगड़े कितने क्षुद्र और अप्रासंगिक मालूम होते हैं, साथ ही कितने वेदनाजनक!

* * *

राष्ट्रीय आंदोलन से प्रेरित और गांधीजी के विचारों से अनुप्राणित संस्थाओं में दक्षिण के गांधीग्राम का एक खास स्थान है। डा० सौन्दरम्मा और उनके पति, एक समय अखिल भारत ग्रामोद्योग संघ के मंत्री और आजकल गांधी स्मारक निधि के मंत्री श्री जी० रामचन्द्रन् इस संस्था के प्राण हैं। आज तो संस्था का बाह्य कलेवर बहुत बड़ा हो गया है—सब मिला कर संस्था की जनसंख्या शायद १,००० के लगभग होगी—प्रवृत्तियां भी बहुत बढ़ गयी हैं और जैसा प्रवृत्तियां तथा संख्या बढ़ने के साथ अक्सर होता है, विचार का साम्राज्य और उसका तेज कुछ मंद पड़ा है। फिर भी गांधी-विचार की छाप संस्था की प्रवृत्तियों में स्पष्ट नजर आती है। दो तरफ ऊंचे-ऊंचे पर्वत-शिखरों के बीच में बसा हुआ गांधीग्राम प्राकृतिक दृष्टि से जितना सुरम्य मालूम होता है, उतनी ही उसकी मनुष्य-कृत आंतरिक व्यवस्था सुन्दर और सुघड़ मालूम होती है। इन सभी दृष्टियों से यह शुभसूचक है कि "युद्ध विरोधी अंतर्राष्ट्रीय"—वार रेसिस्टर्स इंटरनेशनल—जैसी संस्था का दसवां त्रैवार्षिक अधिवेशन, जो इस वर्ष के अंत में हिन्दुस्तान में होने जा रहा है, उसका स्थान गांधीग्राम होगा।

वार रेसिस्टर्स इन्टरनेशनल की स्थापना सन् १९२१ में योरोप में हुई थी। पिछली कुछ शताब्दियों में योरोप इस भूखंड के छोटे-छोटे राष्ट्रों के आपसी द्वेष और संघर्ष के कारण लगातार एक प्रकार का युद्ध-स्थल रहा है। लड़ाई के दुष्परिणाम यहां के लोगों को बार-बार प्रत्यक्ष भोगने पड़े हैं। दूसरी ओर ईसामसीह का प्रेम और अहिंसा का सिद्धान्त भी योरोप में लाखों-करोड़ों व्यक्तियों के जीवन का प्रेरणा स्रोत रहा है। इन कारणों से योरोप में सदा ही ऐसे आदर्शवादी लोग रहे हैं, जो युद्ध को मानवता के खिलाफ एक अपराध मानते हैं और इसलिए किसी भी तरह युद्ध के काम में अपना सहयोग देने से इनकार करते रहे हैं। इस प्रकार के कई छोटे-छोटे युद्ध-विरोधी शांतिवादी दल योरोप के देशों में हैं। योरोप के अधिकांश देशों में और अमेरिका में अनिवार्य सैनिक-सेवा—कान्सक्रिप्शन—के कानून बने हुए हैं और सैनिक-सेवा से इनकार करना उन देशों में दंडनीय अपराध है। इसलिए सैनिक सेवा से इनकार करने वाले व्यक्तियों को अक्सर वहां जेल भुगतनी पड़ती है, जो अधिकांश युद्ध विरोधियों ने खुशी के साथ एक से अधिक बार सहन की है। अन्तर्राष्ट्रीय वार रेसिस्टर्स के नौजवान मंत्री, श्री आरलो टेटम, जो दिसम्बर में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् की तैयारी के लिए हिन्दुस्तान आ गए हैं, स्वयं सैनिक-सेवा से इनकार करने के जुर्म में दो बार जेल की सजा भुगत चुके हैं।

"युद्ध विरोधी अन्तर्राष्ट्रीय" की सदस्यता तथा उसका संबंध इस समय दुनिया के ८२ देशों में और पांचों महाद्वीपों में है। हालांकि उसकी सदस्य-संख्या बहुत ज्यादा नहीं है, फिर भी उसका विस्तार इस बात को जाहिर करता है कि दुनिया के हर कोने में ऐसे लोग हैं, जो युद्ध को अपराध मानते हैं और जो शांति की स्थापना के इच्छुक हैं। इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का साधारण अधिवेशन हर तीसरे वर्ष होता है, जिसमें विभिन्न देशों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। अब तक इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के ९ ऐसे अधिवेशन हो चुके हैं, लेकिन वे सब अब तक योरोप में ही हुए हैं। ता० २१ दिसम्बर, १९६० से गांधीग्राम में जो दसवां साधारण अधिवेशन इस संस्था का होने जा रहा है, वह योरोप के बाहर पहला ही अधिवेशन होगा। अब तक जो सूचनाएं मिली हैं, उनके अनुसार भारत के अलावा करीब तीस देशों से एक सौ से ऊपर प्रतिनिधि आयेंगे। निमंत्रित तथा सदस्य मिला कर करीब-करीब इतने ही व्यक्ति भारत के भी इस परिषद् में भाग लेंगे। इससे पहले हिंदुस्तान में शांतिवादियों का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सन् १९४९ में हुआ था। इस सम्मेलन की एक बैठक शांति-निकेतन में और दूसरी सेवाग्राम में हुई थी। पर वह सम्मेलन किसी संस्था का अधिवेशन नहीं था, जैसा कि अब गांधीग्राम में होने जा रहा है, बल्कि विभिन्न देशों के शांतिवादी व्यक्तियों की सभा थी।

२६ अगस्त को गांधीग्राम में इस अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध-विरोधी परिषद् की भारतीय स्वागत-समिति की पहली बैठक थी। अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के मंत्री, श्री आरलो टेटम भी पूर्वतैयारी की दृष्टि से पहुंच गए थे। योरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया अफ्रीका, जापान आदि मुल्कों से आने वाले सौ से अधिक प्रतिनिधियों के निवास, भोजन, भ्रमण इत्यादि की व्यवस्था से संबंधित प्रश्न तो थे ही, श्री आरलो टेटम की उपस्थिति का लाभ उठा कर स्वागत-समिति ने, जो कि एक तरह से अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् की सभी प्रकार की पूर्वतैयारी के लिए जिम्मेवार है, परिषद् के विचारणीय विषयों के बारे में भी चर्चा की। पश्चिम के शांतिवादियों का जोर अधिकतर युद्ध-विरोध पर ही रहा है। युद्ध में भाग न लेना, सैनिक-सेवा से इनकार करना, उसके लिए कानून के अनुसार जो दंड हो वह भुगतना, यह मुख्य तौर पर पश्चिमी शांतिवादियों की प्रवृत्तियां रही हैं। पिछले वर्षों में अणु और हाइड्रोजन अस्त्रों का विरोध भी उनके कार्यक्रम का एक मुख्य अंग बना है। युद्ध से इनकार करने का सवाल तो युद्ध के दिनों में ही खड़ा होता है, इसलिए जब युद्ध न हो रहा हो, ऐसी साधारण स्थिति में प्रचार के अलावा शांतिवादियों के लिए सक्रिय काम पहले बहुत कम था। पर अणु-अस्त्रों के आविष्कार के बाद पिछले १५ वर्षों में अणु-अस्त्रों के निर्माण, उनके परीक्षण आदि का विरोध मुख्य कार्यक्रम बन जाने से इन वर्षों में पश्चिम के कई देशों में शांतिवादियों ने उल्लेखनीय "सीधी कार्रवाइयां" की हैं। पिछले वर्षों में अमेरिका तथा इंग्लैंड अणु-अस्त्रों के निर्माण की जगहों पर शांतिवादियों के कई जत्थों ने पिकेटिंग, सत्याग्रह आदि किये हैं, अणु अस्त्रों के खिलाफ बड़े-बड़े जुलूस भी निकाले हैं। अभी कुछ ही दिन पहले लंदन शहर में करीब ३० हजार प्रदर्शनकारियों का एक अभूतपूर्व जुलूस अणु अस्त्रों के खिलाफ निकला था। शांतिवादियों ने अणु-अस्त्रों के परीक्षण के खिलाफ भी सक्रिय आवाज उठायी है। करीब ३-४ वर्ष पहले प्रशांत महासागर में होने वाले अणु-परीक्षण के क्षेत्र में जहाज-द्वारा प्रवेश करके मृत्यु का वरण करने के लिए जाने वाले शांतिवादी दस्ते ने सारे संसार का ध्यान खींचा था। इसी प्रकार उत्तरी अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान में भी शांतिवादियों के जत्थों ने फ्रांस के अणु-परीक्षण के खिलाफ सत्याग्रह किया। सीधे युद्ध से संपर्क नहीं रखने वाले अन्य प्रकार के अन्याय और अत्याचारों के खिलाफ भी दुनिया के कई हिस्सों में सत्याग्रह हुए हैं और होते रहते हैं। सन् १९५५-५६ में अमेरिका के दक्षिणी राज्य अलबामा में वहां के काले लोगों के द्वारा बसों के बहिष्कार का जो आन्दोलन चलाया गया, वह जग-प्रसिद्ध हो चुका है।

गांधीग्राम में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् में हिंसा, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ अहिंसक प्रतिकार अर्थात् सत्याग्रह के तरीकों की चर्चा तो मुख्य होगी ही, पर पिछले वर्षों में पश्चिम के शांतिवादी इस बात को अधिकाधिक महसूस करने लगे हैं कि केवल प्रतिकारात्मक कार्रवाई करना काफी नहीं है, दुनिया में शांति चाहने वालों को आज की मौजूदा सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के खिलाफ भी आवाज उठानी होगी और उसे बदलने का प्रयत्न भी साथ-साथ करना पड़ेगा, क्योंकि आखिरकार युद्ध और अत्याचार की जड़ सामाजिक और आर्थिक शोषण में है। आधुनिक इतिहास में गांधीजी ने इस आमूल सामाजिक क्रांति की ओर संसार का ध्यान आकृष्ट किया। उनके बाद विनोबा आज पिछले १० वर्ष से उसी चीज को आगे बढ़ा रहे हैं। गांधी और विनोबा के नेतृत्व में भारत में हजारों व्यक्ति अहिंसक समाज-रचना के प्रयत्न में सक्रिय रूप से लगे हुए रहे हैं। जैसा श्री आरलो टेटम ने प्रेस कान्फ्रेंस में व्यक्त किया था, गांधीग्राम में होने वाली आगामी अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् का सबसे बड़ा महत्त्व इस बात में है कि युद्ध के प्रतिकार पर जोर देने वाले पश्चिमी शांतिवादी और समाज-परिवर्तन को विशेष महत्त्व देने वाले भारतीय अहिंसावादी, इन दोनों के लिए आपस में विचार-विनिमय का अच्छा मौका इस परिषद् में मिलेगा और शायद दुनिया में एक सर्वांगसम्पूर्ण अहिंसात्मक आन्दोलन का सूत्रपात होगा।

●

गांधी स्वाध्याय-संस्थान, काशी

प्रदेशीय गांधी स्मारक निधि के रचना-प्रचार विभाग की ओर से विभिन्न शहरों में गांधी स्वाध्याय-संस्थान के नये भवनों का उद्घाटन हो रहा है। २० अगस्त को वाराणसी के प्रमुख विद्वान्-नेता श्री [illegible] में श्री [illegible] भाई ने स्वाध्याय-संस्थान का उद्घाटन किया। गांधी विचार पर नियमित अध्ययन और परिचर्चा आदि की प्रक्रिया इस संस्थान से शुरू करने की योजना बनायी गयी है।

●

ग्राम-स्वराज्य का प्रयोग : दो अनुभव

धीरेन्द्र मजूमदार

[इन्हीं पृष्ठों में श्री धीरेन्द्र भाई के काम का कुछ अनुभव प्रकाशित किया गया था। वे एक विशेष प्रयोग लेकर बिहार के एक गाँव में बैठे हैं। उनकी हीरक जयन्ती के अवसर पर उनके दो और अनुभव नीचे दिये जा रहे हैं। —सं०]

चुनाव का जहर

हम गाँव में प्रेम-क्षेत्र बनाने की कोशिश कर रहे हैं। यही ग्राम-स्वराज्य का आधार हो सकता है। लोग उत्साह से मेरे सुझाव के अनुसार काम करने के लिए तैयार थे, आग्रह भी कर रहे थे। इस आग्रह में अमीर-गरीब दोनों शामिल थे, पर एक परिस्थिति ऐसी आयी, जिससे मालूम होता था कि आपसी प्रेम की सारी दुनिया टूट कर चूर चूर हो जाने वाली है। वह था सरपंच और मुखिया का चुनाव।

इधर कुछ दिनों से सत्ता-विकेन्द्रीकरण की चर्चा चल रही है। हम लोग भी इससे काफी प्रभावित हो रहे हैं। हम मान रहे हैं कि यह कदम सही दिशा में उठ रहा है। बिहार में भी नये कानून के अनुसार ग्राम-पंचायत और मुखिया का चुनाव इन दिनों चल रहा है। लेकिन जब विकेन्द्रीकरण की इस प्रक्रिया को कार्यरूप में देखते हैं, तब उसे हम सही दिशा में नहीं पा रहे हैं। देश में दलगत राजनीति का जो दलदल बढ़ रहा है, उसी का विकट रूप यह दिखाई दे रहा है। 'रोटी बड़ी चीज है, भात का दाना छोटा है। रोटी को टुकड़े टुकड़े कर देने से वह भात नहीं होगा। वह रोटी का ही टुकड़ा रहेगा। उसी तरह से देश की जो केन्द्रित राजनैतिक सत्ता है उसका जो स्वरूप है, उसे गाँव-गाँव में बाँट देने से हम ग्राम-स्वराज्य की ओर जा रहे हैं, ऐसा नहीं समझना चाहिए। वह उसी का छोटा रूप है और छोटा होने के कारण भद्दा भी है। जब देश भर का आम चुनाव होता है, तो उम्मीदवार दूर-दूर के होते हैं, उस समय भी पार्टीगत और जातिगत विभेद और विद्वेष का निर्माण होता है। लेकिन जब वही चीज गाँव के स्तर पर आती है, तो पार्टी और जाति के भेद के साथ-साथ पुराना, व्यक्तिगत बिरादरी का भेद भी जुड़ जाता है, और चुनाव में जो विद्वेष होता है, वह चिरस्थायी बन जाता है, क्योंकि दोनों पार्टियाँ निरंतर एक स्थान पर साथ रहती हैं। उनके आपसी विद्वेष का प्रभाव उनके बच्चों पर भी होता है और इस तरह से वह विद्वेष वंशगत हो जायेगा, इसकी भी पूर्ण सम्भावना रहती है। बिहार के इस चुनाव की रिपोर्ट अखबारों में भी छपी थी। रोज झगड़े, लाठी और खून तक की रिपोर्ट आ रही थी। ऐसी हालत में जब मुझको मालूम हुआ कि बलिया की पंचायत का चुनाव भी इस माह में ही होने वाला है, तो मैं घबरा गया।

पंचायत में ४ गाँव शामिल हैं। एक उम्मीदवार बलिया गाँव का और एक कर्मणचक का था, जो पुराना मुखिया था। ये भाई इस इलाके के काफी रईस आदमी हैं और घोर सामन्तवादी मनोवृत्ति के हैं, ऐसी शोहरत है। इलाके भर के छोटे लोग उनके खिलाफ और बाबू लोगों में से ज्यादा उनके माफिक हैं, ऐसा भान होता था। मैंने बलिया गाँव के लोगों से कहा कि आप लोगों को कोशिश करनी चाहिए कि चुनाव सर्व सम्मति से हो। गाँव के लोगों ने कहा, कुछ भी हो बलिया गाँव सारा का सारा एक तरफ रहेगा। मैंने सर्वसम्मति से चुनाव होने की आवश्यकता के बारे में चर्चा शुरू की। नरेन्द्र भाई से बलिया गाँव का अन्दाज लेने को कहा। मालूम हुआ कि चुनाव होगा, तो दो गुट जरूर बनेंगे।

एक दिन बलिया के भाई लोगों ने कहा, हमने चार गाँवों की मीटिंग बलिया में बुलायी है और कोशिश करेंगे कि चुनाव सर्वसम्मति से हो। बलिया गाँव के अमीर और गरीब दोनों वर्गों के लोग भी दूसरे-दूसरे गाँवों में जाकर इस विचार को समझाने लगे। फिर एक मीटिंग हुई। मीटिंग में हमने आधुनिक राजनीति की बुराई उससे गाँव-गाँव किस तरह से टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं और किस तरह से दूसरे लोग उन्हें लूट रहे हैं, यह सब बताया। कुछ लोगों ने कहा कि आप जिसको कहें, सब उसी को वोट देंगे। मैंने कहा कि 'मैं यह चुनाव कराने नहीं आया हूँ, विचार बताने आया हूँ। मैं यहाँ से जा रहा हूँ। आप लोगों में से जिनको जितनी गालियाँ जिसे देने की इच्छा हो, दे लीजिये, खूब झगड़ा कीजिये लेकिन मुखिया और सरपंच कमिटी का नाम तय करके ही उठिये। यहाँ सर्वसम्मति से चुनाव न हो, इसकी कोशिश दूसरे गाँव वाले भी चलाते रहे। कुछ लोग मीटिंग से पहले मुझसे मिल कर पुराने मुखियाजी के खिलाफ बातें करते रहे। लेकिन मैंने सबको समझाया। आखिर लोगों ने मेरी अनुपस्थिति में १०-११ बजे रात तक काफी विवाद के बाद नाम तय कर लिया। मुखिया के लिए कर्मणचक के पुराने मुखिया का नाम ही तय किया गया। एक गाँव के निम्न वर्ग के लोगों को इससे संतोष नहीं हुआ। फिर उन लोगों ने तय किया कि हम अपना आदमी खड़ा करेंगे और उम्मीदवारी के लिए उन्हीं का नाम तय किया, जो पहले बलिया गाँव के उम्मीदवार थे। पर बलिया गाँव के लोगों द्वारा काफी समझाने के बाद वे मान गये। इस प्रकार यहाँ का चुनाव सर्वसम्मति से हो गया।

दो-तीन दिनों के बाद जो लोग विरोध में दूसरे को खड़ा करना चाहते थे, उनके नेता हमसे मिले। कहने लगे कि आपके कारण एक जालिम मुखिया चुना गया। बड़ा नुकसान होगा। मैंने उनसे कहा कि 'दोनों हालत में नुकसान होता। हम दोनों में मिलान करें। आप यह बतायें कि चुनाव होने पर ४ गाँवों में जो दो दल हो जाते और स्थायी रूप से उनके परस्पर-विद्वेष के कारण जो नुकसान होता, क्या मुखियाजी इरादा करके भी नुकसान करना शुरू करें, तो भी उतना नुकसान हो सकेगा? वे भाई थोड़ी देर तक सोचते रहे। अन्त में माना कि चुनाव से नुकसान ज्यादा होता।

अत्यन्त हर्ष की बात है कि आज जो भाई मुखिया चुने गये हैं, उनके बारे में उनके विरोधी छोटे लोग भी कहने लगे हैं कि उनके स्वभाव में तो बड़ा परिवर्तन हो गया। मैंने उनसे कहा कि यही हृदय-परिवर्तन की प्रतिक्रिया है। विरोधी से प्रेम करो तो उसकी प्रतिक्रिया से वह भी तुमसे प्रेम करेगा। आज नहीं करेगा तो कल करेगा और कल नहीं करेगा तो परसों। इस तरह से इस क्षेत्र के प्रयोग का एक बहुत बड़ा खतरा टल गया, इतना ही नहीं, बल्कि प्रेम-साधना की दिशा में यही खतरा मददगार बन गया।

* * *

सहकारी खेती नहीं, सहकारी समाज

आज देश में सहकारी खेती की बात बहुत चलती है। मैं जब इस गाँव में आया, तो मैंने लोगों के सामने यह रखा था कि गाँव के सब लोग मिल कर किसी एक काम को सामूहिक और सहयोगी पुरुषार्थ से करें। तदनुसार इस गाँव के लोगों ने करीब ८० एकड़ का एक प्लाट, जिसमें सब लोगों का हिस्सा था, साथ मिल कर खेती करने के लिए रखा था। इसे लोग 'सहकारी खेती' का प्रयोग मानेंगे। लेकिन शुरू से ही जो विचार मैंने गाँव वालों के सामने रखा, वह भिन्न था। कभी कभी कोई सहकारी खेती के तरीके की बात करते थे, तो मैं उनसे कहता था कि "हमारा काम सहकारी खेती चलाना नहीं, बल्कि सहकारी समाज बनाना है।" खेत जो मिलाया गया है, वह वैसे समाज बनाने का माध्यम मात्र है। सहकार के बारे में मैंने जो विचार यहाँ रखा, वह वर्ग-संघर्ष के विकल्प की खोज का प्रयास है। मैंने गाँव वालों से कहा कि गाँव भर को हम प्रेम-क्षेत्र बनाना चाहते हैं, उसमें मालिक और मजदूर का रिश्ता नहीं रहेगा। "अन्न के उत्पादन में दो सामग्रियाँ लगती हैं—जमीन और मेहनत। गाँवों में कुछ लोगों के पास जमीन है और कुछ लोगों के पास मेहनत। तो दोनों ही मालिक हैं, एक जमीन के मालिक, तो दूसरे मेहनत के मालिक। अतः यह जो सम्मिलित खेती का काम हो रहा है, वह मालिकों के साझे का काम है। जमीन के मालिक और मेहनत के मालिक सब अपनी-अपनी सामग्री मिला कर खेती करेंगे और खर्च काट कर जो बचेगा, उसे सब लोग आपस में बाँट लेंगे।" ऐसा सोचा गया है कि मेहनत के मालिक को ६० प्रतिशत मिले और जमीन के मालिक को ३० प्रतिशत। बाकी का १० प्रतिशत भूमि की तरक्की के लिए रखा जाय।

इस तरह यहाँ जो प्रयोग हो रहा है, वह "कोआपरेटिव फार्म" का नहीं, बल्कि "कोआपरेटिव विलेज लाइफ" का है—यानी 'सहकारी खेती' का प्रयोग नहीं है, 'सहकारी समाज' बनाने का प्रयोग है। मालिक मजदूर रूपी दो वर्गों का भेद मिटा कर एक वर्ग के विचार पर सबको लाने का सक्रिय कदम है। इसमें फिलहाल अमीर-गरीब का भेद-भाव बाकी रहेगा, लेकिन वर्ग भेद नहीं रहेगा।

आम तौर से सहकारी खेती में एक मैनेजर होता है। वह कहीं से उधार लेकर बीज आदि खरीद कर, मजदूरी देकर और दूसरा खर्च करके काम करवाता है। कृषि का सारा काम तिजारत की तरह होता है और होने वाला मुनाफा जमीन वाले अपनी जमीन के अनुपात में बाँट लेते हैं। हमारे इस प्रयोग में सब लोग हल लेकर काम करते हैं, बीज देकर बोते हैं और उपज को हिसाब से बाँट लेते हैं। इस प्रकार सहकारी समाज की दृष्टि से लोगों के खेत को एक में मिलाना एक चीज है और उत्पादन बढ़ाने के लिए, संयोजित खेती करने के उद्देश्य से कुछ लोग खेत मिलायें, यह दूसरी चीज है। सहकारी समाज में किसी के पास खेत चाहे कम हो या बिल्कुल न हो, लेकिन गाँव के हर व्यक्ति को उसमें शामिल होना है। सहकारी खेती में कुछ लोग अपने खेत मिला कर संयुक्त कृषि की योजना बना सकते हैं। अर्थात्, हमारे प्रयोग में सब लोग मिल कर काम करें, यह मुख्य है, वहाँ सहकारी खेती की कल्पना में अधिक-से-अधिक जमीन मिला कर खेती हो, यह मुख्य है।

विनोबा के गाँव में

गोविन्द शिन्दे

गागोदा विनोबाजी का जन्म-गाँव है। उनका बचपन यहीं बीता। गत ८-९ वर्षों से गागोदा गाँव देखने की प्रबल इच्छा थी। एक साल पहले ग्राम गागोदा में सर्वोदय-आश्रम शुरू हुआ। भाई दक्षण और उनके सहकारी वहाँ काम करने लगे। गागोदा के आसपास सेवा-कार्य होने लगा। उनके काम से वहाँ जाने का अवसर आया। पेण तालुका में खालापुर-पेण मार्ग पर पहाड़ के बीच गागोदा बसा हुआ है। चारों ओर पर्वत हैं। विनोबाजी का मकान गाँव के मध्य भाग में है। अब वह बहुत ही पुराना हो गया है। लेकिन पहले उस मकान की शान कुछ और ही थी। घर के सामने का अहाता छोटा-सा ही था, पर पहले वह हमेशा जनाकीर्ण रहता। विनोबाजी के दादा के समय वहाँ बहुत-सी गाय-भैंसें थीं, घोड़े भी थे। मगर आज वह अस्तबल, घुड़साल, तरकारी का बगीचा, पेड़, फूलों का बगीचा, अनाज का भंडार, मन्दिर, किराना माल की दूकानें, वह विशाल आँगन, वह गाँव-भोजन, सब कुछ नहीं रहा! अब खाली मकान जैसे-तैसे खड़ा है।

विनोबाजी के बचपन के कुछ साथी मिले। अब वे भी बुड्ढे हो चुके हैं। उन्हें विनोबाजी के बचपन की कहानी पूछी। बहुत-सी स्मृतियाँ कुछ देर तक वे बताते रहे। विनोबाजी के दादा-दादी, काका-काकी, माता—इनकी जानकारी मिली। पिता साल में कभी एक बार आते रहे। श्री बालकोबा और शिवाजीराव बचपन में वहीं थे। घर में छुआछूत का काफी विचार था। दादा हमेशा देवपूजा में मग्न रहते। सब काम काका, गोपालराव देखते। बहुत अच्छे आदमी थे। घर का सब काम सँभाल कर गाँव का भी काम करते। कोई आफत में हो, तो उसको मदद करने, लड़ाई-झगड़ा निपटाते। किसानों का सुधार हो, यह उनकी तीव्र इच्छा थी। उनका उपदेश सतत चलता रहता। किसान सुधरें, इसके लिए उनका शराब का नशा बन्द होना चाहिए। उस समय तो शराब की दूकानें खूब चलती थीं।

साँझ होते ही किसानों के शराब के अड्डे की ओर जाते देख कर उन्हें बहुत दुःख होता। लोगों को समझा-बुझा कर शराब से निवृत्त कराने का उनका काम चलता रहता। 'शराब नहीं पीयेंगे', ऐसा कहने वाले को वे पैसे इनाम देते थे। गाँव-गाँव घूम-कर उनका यह प्रयास चलता, पर इसका बहुत उपयोग नहीं हुआ। लोग चोरी से जाते ही थे! आखिर उन्होंने शराब के अड्डे की ओर जाने के मार्ग पर पहाड़ के नीचे जंगल में ही अनशन करना शुरू किया। एक सप्ताह के बाद सब वह चला। अनेक लोग छटपटाये। उसका फल भी हुआ। पर इस अनशन से उनका स्वास्थ्य गिरा, वह हमेशा के लिए ही।

विनोबाजी के दादा का नाम शंभूराव था। वे बहुत ही देवभक्त थे। कोटेश्वर उनके भगवान थे। पोतों को वे ही सिखाते थे। दादी काशीजी चल गयीं। जाते समय वहीं मरने की उनकी इच्छा थी, ठीक वैसा ही हुआ भी। बालोबा नाम के एक अंधे सज्जन पुरुष विनोबाजी के घर थे। बहुत ही सात्त्विक व्यक्ति थे। घर के और गाँव के सब लोग उन्हें अपना मानते थे।

गाँव में मरहठा और कातकरी—दो जातियों के लोग हैं। गाँव की जमीन करीब सात सौ एकड़ है। जनसंख्या छह सौ के करीब। धान की खेती तीन सौ एकड़। सारे गाँव को अनाज मिल सके, इतनी खेती है; लेकिन लोग कर्जदार हैं। जरूरतमन्द किसान एक मन अनाज ले, तो फसल आने पर दो मन अनाज देना पड़ता है। पाँच रुपया ले, तो एक मन चावल देना पड़ता है। मौसम के समय जुताई के लिए अगर बैल लायें, तो छह मन अनाज किराये के रूप में देना पड़ता है! इसलिए किसान ऊपर सिर नहीं उठा सकता। कर्ज में सब दबे हैं।

गत वर्ष ६ अप्रैल को विनोबाजी के घर सर्वोदय-आश्रम की शुरुआत श्री नानासाहब बुटे और उनके मित्रों ने की। भाई दक्षण और उनके २-३ सहयोगी वहाँ काम करने लगे। आश्रम का एक ट्रस्ट है। श्री शंकरराव देव, श्री एम० आर० मसा। श्री नानासाहेब बुटे और श्री नारायण यशवन्त नेने—ये चारों उनके ट्रस्टी हैं।

पिछली बरसात के पहले आश्रम चालू हुआ। हर प्रकार का सेवा-कार्य करना, ऐसा कार्यकर्ताओं ने तय किया। गागोदा की कातकरी वाड़ी ने पहले ही ग्रामदान कर दिया था। वहाँ के लोगों ने साक्षर होने की इच्छा प्रदर्शित की। आश्रम की तरफ से साक्षरता-वर्ग शुरू हुआ। अठारह लोग साक्षर हुए। लकड़ी बेच कर उन्होंने स्लेट-पेन्सिलें खरीदीं। सबल लोगों का और मदद अपनी, पर भूमिका कार्यकर्ताओं ने पहले से ही अपना रखी थी। बरसात शुरू हुई। खेती का मौसम याने शादियों की-सी गड़बड़! हर प्रकार की सहायता उस समय लगती है। बोआई के समय आदमी बहुत लगते हैं। सभी काम समय पर होना चाहिए। कार्यकर्ताओं ने बोआई के मौसम में सबके घर एक-एक दिन कार्य किया। काम के बाद लोग भोजन कराते। इस प्रकार कार्यकर्ताओं का सब घरों के साथ संपर्क हुआ। वहाँ की परिस्थिति का उन्हें अच्छा ज्ञान भी हुआ।

एक दिन एक हरिजन परिवार का काम खेत में चल रहा था। उन्होंने भोजन के लिए आग्रह किया। उस किसान की पत्नी ने कहा कि मैंने नहा कर चौका लगा कर भोजन बनाया है। गाँव के कुल ६४ परिवारों में से ५७ परिवारों की जमीन पर कार्यकर्ताओं ने काम किया।

लोगों से परिचय होता गया। अंबर-चरखा शुरू हुआ। सूत निकलने लगा। हाथकरघा बैठाया गया। कपड़ा तैयार होने लगा। मद्य-निषेध की प्रतिज्ञा कई लोगों ने ली। गाँव की पंचायत शुरू हुई। वह अधिक कार्यक्षम होकर कार्य करने लगी।

पिछले ५ अप्रैल को गाँव ने मद्य-निषेध का निर्णय किया। गाँव की ४०२ एकड़ जमीन गाँव की हो जायगी। कुछ जमीन मवेशियों को चरने के लिए छोड़ दी जायगी।' इस साल गाँव में अनाज का एक संग्रह कर साहूकारों के चंगुल से यथाशीघ्र छूटा जाय, ऐसा लोगों का प्रयत्न है। गाँव में बाल-वाड़ी चालू है। स्कूल नहीं था, वह भी खुल गया है।

गागोदा की तरह आसपास के और गाँवों में भी काम चालू है। 'हेमटीची वाड़ी' और 'खडकोची वाड़ी'—इन दो वाड़ियों का ग्रामदान हुआ और वहाँ के लोग काम में लगे हैं। ग्राम-स्वराज्य समितियाँ बनी हैं। खेती सहकारी प्रणाली से जोती जायगी।

हेमटी में १४ परिवार हैं। जमीन ३४ एकड़ १६॥ गुंठा (३३ फुट लंबाई-चौड़ाई का एक टुकड़ा = १ गुंठा) है। उसमें से अभी ११ एकड़ धान की खेती है। वह २५ एकड़ हो सके ऐसा प्रयत्न गाँववालों ने शुरू किया है। गाँव के नाले का बाँध कर पानी रोका गया है और उसका पानी खेती के काम आये, इस रूप में उसे मोड़ा गया है। सभी लोग कातकरी जाति के हैं। कातकरी याने पहाड़ के नीचे या ऊपर कहीं भी रहने वाले। इसलिए उनका बस्ती इधर-उधर अस्त-व्यस्त है, लेकिन एक जगह इकट्ठा होकर काम करना, इसके लिए मकान भी तो आसपास चाहिए। इससे विचार विनिमय करने के लिए एक जगह जमा होने में सुविधा रहती है। पर यदि सहायता मिलती है। इसलिए उन मकान पास-पास लाने का निश्चय किया। काम आसान न था। पर निश्चय करने पर किस बात की कमी? ग्राम निश्चित हुआ, लोग काम में लगे। महीनों में मकान तैयार हुए। उन मकानों के लिए सरकार से प्रति मकान सौ रु० और बम्बई के गणतिदास से सौ रु० इस तरह दो सौ रुपया की मदद हुई। पर इतना सारा रुपया पत्थर और सीमेंट में ही खर्च हो गया। बाकी सब काम श्रमदान से पूर्ण हुआ। सभी लोग मिल कर एक-एक मकान को पूरा करते गये। अभी हाल में ही इस बस्ती का उद्घाटन श्री शंकरराव देव के हाथों हुआ।

खडकोची वाड़ी भी इसी तरह आगे बढ़ती जा रही है। खेडोसी का ग्रामदान हो चुका है। ४३ परिवार हैं। ग्राम-समिति बन रही है। आसपास के लोग भी इस विचार से सहमत होने लगे हैं। कार्यकर्ताओं को वे बुलाते रहते हैं।

●

शिवसागर सर्वोदय-मंडल

शिवसागर (असम) सर्वोदय-मंडल की संयोजिका श्रीमती रेणुप्रभा बरदलै सूचित करती हैं कि १८-१९ जून को शिवसागर सर्वोदय मंडल तथा जिले के लोकसेवकों की एक बैठक श्री तरुणचन्द्र बरुआ की अध्यक्षता में हुई। १०० लोकसेवकों ने भाग लिया। शिवसागर जिले की भूमि का वितरण तीन महीने के अंदर हो जाना चाहिए, इस बारे में श्री माणिकचन्द्र दाटरिया ने लोगों से अनुरोध किया।

सर्वोदय-साहित्य-भंडार' खोलने के बारे में भी चर्चा चली और इसके लिए पाँच व्यक्तियों की एक समिति गठित की गई।

●

राजस्थान में ग्रामस्वराज्य-पक्ष

राजस्थान समग्र सेवा संघ ने राजस्थान के सारे सर्वोदयी कार्यकर्ताओं, रचनात्मक संस्थाओं तथा पंचायतों को ११ सितम्बर, '६० से २ अक्तूबर, '६० तक 'ग्रामस्वराज्य-पक्ष' मनाने का आह्वान किया है। राजस्थान में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की दिशा में जो एक कदम सरकार ने लिया है और जिसके फलस्वरूप विकास-कार्यों के सारे विकास-कार्य लोगों के चुने प्रतिनिधियों से बनी पंचायत-समितियों और जिला-परिषदों को सौंपा गया है, उसके लिए शुभकामना व्यक्त करते हुए संघ ने "ग्रामस्वराज्य" की उन अपेक्षाओं पर बल दिया है, जिनके अभाव में "यह कदम ग्राम-स्वराज्य की कल्पना को साकार करने में असमर्थ साबित हो सकता है।

●

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि *

भूदान-यज्ञ का मंत्र !

तेलंगाना में हरिजनों ने मुझसे भूमि मांगी। मैंने कहा, मैं कहां से दूंगा? लेकिन आपकी मांग सरकार के पास रखूंगा।" उन्होंने कुल अस्सी एकड़ जमीन मांगी थी। मेरा ख्याल नहीं था कि इतनी जमीन कोई दे सकेगा, इसलिए मैंने सरकार का नाम बताया। लेकिन मुझे बुद्धि सूझी। मैंने डरते-डरते पूछा, तो परमेश्वर ने एक भाई को प्रेरणा दी। उसने कहा, 'मैं दे सकता हूं।' मैं समझ गया कि भगवान की इच्छा क्या है। इस तरह दूसरे दिन से वामनावतार का उदाहरण देकर मांगना शुरू कर दिया। जहां अशांति के बीज मौजूद हैं, वहां शांति नहीं हो सकती। बीज जमीन में हों, तो कभी-न-कभी उग ही आते हैं। अशांति के उन बीजों को निर्मूल करना है। इसीलिए भगवान ने यह भूदान-यज्ञ मुझे सुझाया है।

मुझे भूदान-यज्ञ का मंत्र कन्या मिला, भारत माता के मंदिर की परिक्रमा का पैगाम हो गया। कन्याकुमारी में कश्मीर तक घूमने के बाद मुझे यह लगता है कि इस देश को अभी सबसे अधिक जरूरत मेरे कहे की है। इसलिए मैंने फूट के सबसे बड़े कारण—मजहब और सियासत (धर्म और राजनीति) को दफना देने की बात कही है। —विनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; ग = ङ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

जिनका ११ सितम्बर को जन्मदिन है

एक प्रयोगवादी संत : विनोबा भावे

सतीश कुमार

विनोबा का नाम देश के उन चंद व्यक्तियों में है, जिन्हें यह शत-प्रतिशत विश्वास है कि किसी भी समस्या का हल केवल अहिंसा के रास्ते से ही हो सकता है। एक ऐसा व्यक्ति, जो हिंसा को निरर्थक समझता है, वह राजनीति में तो आ ही कैसे सकता है? क्योंकि उसका यह सिद्धान्त है कि आज जो राजनैतिक अखाड़ेबाजी चलती है, वह भी एक प्रकार की हिंसा ही है। लेकिन विनोबा की बातों को सुन कर आश्चर्य तो तब होता है, जब वे मजहब और मजहबी संगठनों को भी हिंसा की परिधि में ले आते हैं।

ऐसे महान् क्रांतिकारी का नाम हमने नहीं सुना, जो यह कहता है कि सारी दुनिया के शस्त्रास्त्रों को समुद्र में डुबो देना चाहिए, सारी सेना को विघटित करके सैनिकों को खेती में लगा देना चाहिए, सभी राजनैतिक पार्टियों को तोड़ देना चाहिए और सभी नेताओं को एक कमरे में तब तक बंद कर देना चाहिए, जब तक कि वे एकमत होकर राष्ट्र का मार्गदर्शन नहीं करते, सभी सरकारी फाइलों को होली के अवसर पर जला देनी चाहिए, सभी मजहबों को उसी तरह दफना देना चाहिए, जिस तरह अपने प्रिय पिता की मृत्यु के बाद उनके शरीर को दफना दिया जाता है।

ऐसी अजीबोगरीब घोषणाएँ जब कभी भी धोखा देती हैं। विनोबा की बातें सुन कर लगता है मानो वे आकाश में उड़ रहे हैं, उनके पैर धरती पर नहीं हैं। लेकिन विनोबा कहते हैं कि मैं जो कुछ बोल रहा हूँ, वह आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है। यदि मेरी बात नहीं मानी गयी, तो सारा देश टूट जायेगा। आज हमारे देश की भयानक हालत है। राजाजी भी गांधीजी के शिष्य हैं नेहरूजी गांधीजी के शिष्य, कृपलानीजी और जयप्रकाशजी भी गांधीजी के शिष्य पर चारों एक-दूसरे के खिलाफ बातें करते हैं। इस तरह यदि राष्ट्र का नेतृत्व जनता को 'कन्फ्यूजन' में डालेगा तो देश लड़गा ही। इसी तरह धर्म के नाम पर भी लोगों ने झगड़ा ही रचा है। वास्तविक आध्यात्म को भूल कर वे लोग अपनी दूकानदारी जमाने में लगे हैं। कोई धर्म मनुष्य का सारा लगा कर अपना बल प्राप्त करता है तो कोई धर्म की आड़ में अपने लिए विशेषाधिकार चाहता है। राजनीति और धर्म के दो पाटों के बीच मानव पिस रहा है। ऐसी दशा में देश तभी बचेगा, जब हम प्रेम के सूत्र में एक हो जायेंगे। बड़े-बड़े नेताओं की और पार्टियों की आपस में बच्चों की तरह लड़ाई देख कर मुझे हँसी आती है।

विनोबा ने चीन के बारे में भी बिल्कुल भिन्न बात कही है। विनोबा को केवल अहिंसा से प्रेम है। जिस तरह गांधी ने कहा था, आजादी और अहिंसा में से मुझे एक चुनना पड़े, तो मैं आजादी को छोड़ कर अहिंसा का चुनाव करूँगा, उसी तरह विनोबा भी चीन का मुकाबला अहिंसा से करने की बात करते हैं। वे कहते हैं कि समस्याओं के हल के लिए हिंसा निरर्थक साबित हो चुकी है।

विनोबा चीन के आक्रमण को 'हमला' न कह कर 'सर्प' कहते हैं। वे संकुचित राष्ट्रीयता या भावुकता के आधार पर न सोच कर इस संबंध में वैज्ञानिक दृष्टि से सोचते हैं। वे कहते हैं कि चीन और भारत भाई-भाई की तरह साथ-साथ रहेंगे, अभी संपर्क में जो कड़ुवापन आया है, वह बहुत दिन नहीं रहेगा।

विनोबा एक बहुत बड़े प्रयोगवादी व्यक्ति हैं। वे तरह-तरह के प्रयोग करते रहते हैं। जहां देश के लगभग सभी नेता यह मान बैठे हैं कि बिना सत्ता प्राप्त किये कोई भी काम नहीं हो सकता, वहाँ विनोबा ने पैदल यात्रा करके जनता को जगाने का नया प्रयोग शुरू किया। इसी तरह कानून और बल से जमीन की समस्या हल नहीं होगी, यह घोषित करके उन्होंने भूदान मांगना शुरू किया। सेना को विघटित कर दिया जाय, यह नारा लगाना तो बहुत आसान है; लेकिन उसका विकल्प उपस्थित करना बहुत कठिन है। पर विनोबा ने शांति सेना स्थापित करने का संकल्प लेकर हिंसक सेना को चुनौती दे डाली है। जहां अन्य बड़ी-बड़ी संस्थाएँ या तो सरकारी सहायता पर चलती हैं, या चंदे द्वारा एकत्रित किसी खास फंड के आधार पर। लेकिन घर-घर से एक-एक मुट्ठी अनाज प्राप्त कर एक देशव्यापी आंदोलन खड़ा कर देना कोई मामूली बात नहीं। आज पूरे देश में विनोबा के शिष्यों का जाल बिछ गया है तथा लगभग सभी सामाजिक तथा राजनैतिक नेताओं की सहानुभूति उन्हें प्राप्त हुई है। विनोबा जहां 'महान् रचनात्मक क्षेत्र के कार्यकर्ता हैं, वहाँ कटु आलोचक भी हैं। उन्होंने खादी-काम की आलोचना करते हुए कहा था कि आज की खादी सरकारी सहायता के 'ऑक्सीजन' पर जी रही है। इसी तरह उन्होंने सरकार की भी कड़ी-से-कड़ी आलोचना की है। उन्होंने आज के कल्याणकारी राज्य को विश्वकारी राज्य बताया और विनोबा की आलोचना सुन कर मंत्रियों के घबरा जाने पर विनोबा ने कहा कि हमारी सरकार छुईमुई या लाजवंती नारी की तरह है, जो उंगली दिखाने भर से या तो सिकुड़-सिमट कर लजा जाती है, या फिर बाल बिखेर कर और हाथ फेंक-फेंक कर शोर मचाने लगती है कि आओ, बचाओ मेरी इज्जत लुट रही है। विनोबा से जब कहा गया कि सरकार की खुले आम आलोचना न किया करें, तब उन्होंने उत्तर दिया कि मैं सरकार की न तो बीबी हूँ और न बेटी, जो उसे निजी या गुप्त पत्र लिखूं। मैं तो जनता का सेवक हूँ, इसीलिए अपने विचार जनता के सामने ही प्रकट करता हूँ।

विनोबा के जीवन का सबसे स्वर्णिम पृष्ठ है—उनकी डाकू-क्षेत्र की पदयात्रा। उन्होंने अपनी अहिंसा का यह एक सफलतम प्रयोग किया है, जब कि उन डाकुओं को भी अपना भाई बनाया और डाकुओं को 'डाकू' न कह कर केवल 'विद्रोही' कहा। विनोबा ने यह भी कहा कि इन कुख्यात डाकुओं से वे सफेदपोश डाकू अधिक खतरनाक है, जो सज्जनता की ओट में समाज को धोखा देते हैं। विनोबा के प्रेमाक्रमण की उस समय तो हद हो गयी, जब उन्होंने कहा कि ये डाकू भी बागी हैं, और मैं भी बागी हूँ।

भारत को एक ऐसा महान् संत मिला, यह उसका सद्भाग्य है। लन्दन के अखबारों ने यह मांग की कि योरोप और अमेरिका के देशों में शांति और प्रेम का विचार फैलाने के लिए तुरन्त ही विनोबा को यात्रा करनी चाहिए। इसी तरह पाकिस्तान के बहु प्रचलित पत्र "अंजाम" ने भी अपने एक अग्रलेख में लिखा कि 'क्या वजह है, जो पाकिस्तान भारत की तरह आचार्य विनोबा जैसा ऐक भी संत पैदा नहीं कर सका? विनोबा इस्लाम की तालीम पर पूरी तरह अमल कर रहा है। भले ही उस व्यक्ति का इस्लाम-धर्म से कोई ताल्लुक न हो। यदि विनोबा पाकिस्तान आयेंगे, तो यहाँ की जनता उनका स्वागत करेगी।'

इस महान् तत्वज्ञानी संत का जन्म महाराष्ट्र के कुलाबा जिले के गागोदा नामक छोटे से गांव में सन् १८९५ में हुआ। उनकी शिक्षा-दीक्षा बड़ौदा और काशी में हुई। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग गांधीजी के साथ वर्धा में बिताया। गांधीजी ने इन्हें प्रथम सत्याग्रही चुना था। गांधीजी के चले जाने के बाद 'ग्राम-स्वराज्य की स्थापना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', यह घोषणा लेकर वे भारत-भ्रमण पर निकल पड़े।

११ सितम्बर के इस पुनीत अवसर पर हम उनके चिरायु होने की कामना करते हैं।

व्यक्तिगत सत्याग्रह और उसके बाद

'भारत में अंग्रेजों के युद्ध प्रयत्न के खिलाफ व्यक्तिगत सत्याग्रह का आरम्भ करने के लिए गांधीजी ने सबसे प्रथम सत्याग्रही के रूप में विनोबा को चुना था। यह कोई तरीके की बात नहीं थी। उस समय विनोबा बहुत कम प्रकाश में आये थे। लेकिन बापू ने अपनी अचूक अन्तर्दृष्टि से विनोबा को सत्याग्रह का आरम्भ करने के लिए चुना।

—आचार्य कृपलानी

जन-जन की नजर में : धीरेन्द्र भाई

मैं उनकी हीरक जयंती पर अपनी हार्दिक बधाई और शुभ कामनाएँ भेजता हूँ।

—लालबहादुर

को स्वस्थ तथा दीर्घायु रखें, ताकि उनकी सेवा का उपयोग दुनिया कर सके !

—वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी

और ऐसा क्रांतिमय जीवन जीते वे सौ साल पूरा करें, यह शुभेच्छा व्यक्त करता हूँ।

—रविशंकर महाराज

'श्रमभारती' की ओर से–

जिसने पिता की तरह पाला, गुरु की तरह सिखाया, नेता की तरह बढ़ाया और साथी की तरह संभाला, उन धीरेन् भाई को हमारी श्रद्धा और स्नेह की अंजलि ! काश ! ऐसा हो सकता कि हममें से हरएक अपनी जिंदगी का एक-एक साल काट कर उन्हें दे सकता और वह क्रान्ति की अमर ज्योति जलाने के लिए हमारे बीच अभी बहुत-बहुत वर्ष बने रहते !

श्री धीरेन् भाई की हीरक-जयंती के अवसर पर बुजुर्गों और साथियों की जो शुभ कामनाएं आयी है, उन्हें "भूदान-यज्ञ" में प्रकाशित किया जा रहा है। पहले यह विचार था कि संस्मरणों, शुभ कामनाओं और निबन्धों को मिला कर एक ग्रन्थ प्रकाशित किया जाय। लेकिन कई बुजुर्गों की सलाह पर यह निर्णय किया गया है कि ग्रन्थ में मुख्यतः श्री धीरेन् भाई के ही विशिष्ट विचारों का संग्रह हो, क्योंकि उनका स्थायी महत्त्व है। ग्रंथ तैयार किया जा रहा है और समय पर पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जायेगा।

—राममूर्ति

सट्ठा सो पट्ठा

मैंने देखा है कि धीरेन्द्र भाई के कई विचार प्रारम्भ में साथियों को अटपटे लगे। पर वह अटल होकर साधना करते गये। अन्त में सभी को समर्थक बनना पड़ा। खादीग्राम में पत्थर पर अन्न उपजाना भी सबको असंभव लग रहा था। धीरेन्द्र भाई ने उसे संभव करके दिखा दिया। उनका उत्साह, परिश्रम और क्रांति की खोज में मिटने की तमन्ना जवानों के लिए ललकार है। तन से बूढ़े होते हुए भी वह मन से जवान हैं।
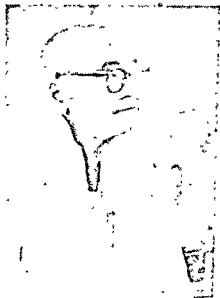
खेत में नित्य चार घंटे काम करके आज धीरेन्द्र भाई 'सट्ठा सो पट्ठा' की कहावत चरितार्थ कर रहे हैं। हम दुनिया-वासी सौभाग्यशाली हैं कि हमारे ही यहाँ धीरेन्द्र भाई ने ग्राम-स्वराज्य का स्वप्न साकार करने का निश्चय किया है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि धीरेन्द्र भाई

जनशक्ति के पुजारी

धीरेन्द्र भाई बुनियादी प्रयोग करने वाले एक प्रयोगवीर हैं। अहिंसक क्रान्ति करनी हो, तो उसकी शुरुआत अपने जीवन से करनी पड़ती है, इस बात को उन्होंने ठीक से पकड़ लिया है।

श्रम की और श्रमिक की प्रतिष्ठा बढ़नी चाहिए, हमारे जीवन में सादगी और श्रमपरायणता स्थापित होनी चाहिए, हमें खुद श्रमिक बन कर शासनमुक्त और शोषणमुक्त अहिंसक समाज की नींव डालनी चाहिए, इस बात को धीरेन्द्र भाई न सिर्फ आवृत्ति करते हैं, वरन् उसी मुताबिक जीवन भी जीते हैं।

उनको मैं असली अहिंसक क्रांतिकारी समझता हूँ। भूदानमूलक ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रांति के ऐसे सैनिक को, जब वे ६० साल पूरा करते हैं, मैं बधाई देता हूँ।

क्रान्तदर्शी

बापू ने सन् १९४५ में चरखा-संघ के नवसंस्करण का विचार रखा। उसका स्वरूप तभी प्रकट हुआ, जब धीरेन्द्र भाई चरखा-संघ के अध्यक्ष हुए। एकादश व्रतों में हम रोज शरीरश्रम का जप करते थे, उसी आधार पर 'श्रमभारती' जैसी संस्था खड़ी कर देना, कार्यकर्ताओं को उत्पादक बनने की प्रेरणा देना धीरेन्द्र भाई का ही काम था।

चरखा-संघ के अध्यक्ष रह कर धीरेन्द्र भाई ने कताई-मंडल संगठित किये और कराये। ये कताई मंडल आज के प्राथमिक सर्वोदय-मंडल के अग्रदूत थे। अब सर्व सेवा संघ के विधान में सबसे अधिक महत्त्व लोक-सेवक का है। ये जनाधार पर अपना काम खड़ा करें और चलायें, ऐसी अपेक्षा है। इस उम्र में और अस्वस्थ रहते हुए भी धीरेन्द्र भाई उसका रास्ता दिखाने में जुट गये हैं।

बलिया जाने के पूर्व जब धीरेन्द्र भाई को विनोबाजी की राय याद दिलायी जाती कि "आपको देश की विभिन्न संस्थाओं में थोड़े-थोड़े दिन रह कर कार्यकर्ताओं को प्रेरणा और विचार देना चाहिए," तो प्रश्न ही में उत्तर मिलता, 'मैं जो करते जा रहा हूँ, उसे करने वाला कौन है ?"

"कवि . क्रान्तदर्शी" की उक्ति भी धीरेन्द्र भाई चरितार्थ करते हैं। उन्होंने सर्वोदय-साहित्य को अलख मौलिक शब्द प्रदान किये हैं : हुजूर-मजूर, तंत्रमुक्ति संघमुक्ति नहीं है, समिति-पद्धति नहीं सम्मेलन-पद्धति, समवेतन, साम्ययोग, श्रमशाला, ग्रामशाला, ग्रामस्वराज्य-सम्मेलन, क्रान्ति-यात्रा, ग्रामस्वराज्य-प्रदर्शनी, कटनी-यात्रा, नाटक मिलन, अज्ञातवास आदि उनके कुछ नमूने हैं।

ईश्वर उन्हें स्वस्थ रख कर दीर्घायु बनाये !

—वल्लभस्वामी

श्रमकण-सिक्त, प्राणरस-सिंचित, मनुज कार्यरत, पुलकित हर्षित
ऐसे दिव्य श्रमिक-नारायण को जग आज प्रणाम करो हे !
जीवनपूरित काम करो हे !

—राजनाथ राय

उनका कार्य नमूने का

यद्यपि मैं श्री धीरेन्द्र भाई से गत २० सालों से परिचित हूँ एवं उनके प्रति श्रद्धा रखता हूँ, तथापि मुझे यह स्वीकार करना चाहिये कि मेरा प्रत्यक्ष सम्पर्क उनके साथ बहुत ही कम आ पाया है। परिणामतः उनके विचारों एवं सीखों के सम्बन्ध में कुछ लिखूँ, इसमें भी मैं संकोच अनुभव कर रहा हूँ। फिर भी खादीग्राम में उनके तेजस्वी कार्य का जो दर्शन अल्प-स्वल्प रूप में मैंने 'श्रमभारती' में पाया है, वह अपने ढंग का अनोखा कार्य ही है। प्रत्यक्ष एवं अपनत्व भरा संपर्क देहाती समाज के साथ स्थापित करके उन्होंने उनमें सहयोगी जीवन की जो प्रेरणा जगायी है, वह समाज-निर्माण कार्य में लगे लोगों के लिए वास्तव में एक उच्च नमूना साबित होगी, इसमें मुझे शक नहीं।

इस पावन अवसर पर प्रभु से यही प्रार्थना है कि वे दीर्घायु हों एवं सर्वोदय-जगत् के साथियों का सतत मार्गदर्शन करते रहें।

—वैकुंठ ल० मेहता

बेजोड़ संगठक

४० वर्ष से मैंने धीरेन् भाई को बहुत समीप से देखा है। उनमें काम करने की अद्भुत शक्ति है। साथ ही साथ वह सामाजिक और राजनैतिक विषयों पर अच्छा मनन करते हैं। वह जहाँ बैठते हैं, वहीं एक संस्था का रूप ले लेते हैं। अपने आसपास अनेक कार्यकर्ताओं को एकत्र कर लेना और उन्हें एक नई प्रेरणा देना, यह उनके लिये सरल-सी बात है। आज भी स्वास्थ्य बहुत अच्छा न रहते हुए, वह एक क्षण भी शान्त नहीं बैठते। उन्हें समाचार-पत्रों में अपने प्रकाशन का लालच नहीं। उनका समस्त ध्यान केवल रचनात्मक कार्यों की ओर ही रहता है। जिसने सब कुछ अपना गाँवों और किसानों के लिये दे दिया हो, वह परम आदर का पात्र है।

अकर्म में कर्म साध चुके

गांधीजी के जाने के बाद क्रान्ति-तत्त्व की खोज में जो थोड़े लोग वाचा-कर्मणा-मनसा निरंतर लगे हैं, उनमें धीरेन् भाई का एक विशेष स्थान है। वह नित्य-नूतन प्रयोग करते ही चले जाते हैं और चिन्तन-चक्र भी उनका अखंड चलता है।

इन दिनों उनका शरीर कुछ कमजोर हुआ है, लेकिन मुक्तचर्चा का "मूल्योद्योग" जो उन्होंने विकसित किया है, उसके जरिये वे जवानों के हृदय में प्रवेश पाते हैं और उनके अपने हृदय की अग्नि जवानों के हृदय में संक्रान्त हो जाती है। "अकर्म में कर्म" का यह प्राथमिक प्रादुर्भाव कह सकते हैं। यह अकर्म-दर्शन उत्तरोत्तर विकसित करने के लिये भगवान् उनको शतायु करे, यही उनकी हीरक जयन्ती के अवसर पर हमारी एकाह्निक हो सकती है।

—विनोबा का जय जगत्

अनासक्ति के अवतार

धीरेन् भाई गांधी-युग के सच्चे क्रांतिकारियों में हैं। वह अदम्य साहसी हैं। नये-नये विचारों, संस्थाओं और कार्यक्रमों का प्रयोग करना ही उनका व्यसन है। फिर भी उनमें से किसी के साथ वह बँधने वाले नहीं। वह अनासक्ति के अवतार हैं। उनकी इस विशेषता पर मैं ईर्ष्या करता हूँ। अनेक नवयुवकों ने मुझे बताया है कि धीरेन्द्र भाई ने ही उन्हें गांधीजी के रचनात्मक कार्यों का क्रांतिकारी तत्त्व समझाया। अहिंसा पर उनकी आस्था न जानने वाले मान बैठते हैं कि धीरेन्द्र भाई हल्का मसा देने को उत्सुक रहते हैं। एक बार एक प्रदेशीय मंत्री मेरे सामने ऐसा ही संदेह व्यक्त कर रहे थे। धीरेन्द्र भाई के भाषणों के कारण क्या उनका विचार में बदल नहीं पा रहा था।

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष होने के कारण ही वह ऐसे भाषण देने के उपरांत भी पुलिस और सी० आई० डी० की चौकसी से मुक्त थे। युवक क्रान्ति के आवेग से धीरेन्द्र भाई से बातें करने पहुँचते हैं, तो अपने ही तर्कों को धीरेन्द्र भाई के शास्त्र, अनुभव कर मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। दूसरों की बातें धैर्य के साथ सुन कर धीरेन्द्र भाई लोकतन्त्र-प्रेमी होने का अपने बारे में प्रमाण देते हैं। उनकी वाणी में प्रवाह के साथ ही साथ तर्क होता है। कथनी-करनी में भेद न रखने के कारण धीरेन्द्र भाई सहज ही विश्वास जगाते हैं। ईश्वर अधिकाधिक वर्षों तक उन्हें सक्रिय रखें!

—जी० रामचन्द्रन्

अलमस्त !

जो लोग धीरेन्द्र भाई के भाषण सुनते हैं, उन पर यह छाप पड़े बिना नहीं रहती कि वे एक गम्भीर विचारक हैं। रहन-सहन से वे तपस्वी ही हैं। पर उनका दूसरा पहलू भी है। मैं बरबस उसी ओर खिंच रहा हूँ।

असहयोग-आन्दोलन में हम लोग कालेज छोड़-छोड़ कर आये। २०—२५ वर्ष के बीच के हम कई थे। जीवन कठोर साधना का था। फिर भी हम बड़े खुश रहते थे। स्व० डाक्टर भगवानदास जैसे लोगों को इस पर आश्चर्य होता था।

हमारे इस खुश रहने की तह में था धीरेन्द्र भाई का हँसी-विनोद में नेतृत्व। मैं बार-बार यही सोचता हूँ कि वे कितने बेफिक्र और मस्त तबीयत के हैं! उन दिनों वे हमारे "बदमाशी क्लब" के संयोजक, संगठक आदि थे।

'खाओ-पिओ, मौज उड़ाओ, स्वार्थी मत' आदि क्लब के 'मोटो' थे! वे अपने अंग्रेजी रूपान्तर सहित क्लब की दीवारों पर टँगे रहते। नवागंतुक इन पर हैरान होते, तो हमारा भाग्य चलता। इस तरह हमारा एक पंथ चल पड़ा था। "उड़े-राम" उसका नाम था! धीरेन्द्र भाई ने इसके साथ अपना यहाँ तक तादात्म्य कर लिया था कि उनका नाम ही "उड़े" पड़ गया। अब भी अन्दर से धीरेन्द्र भाई शायद वैसे ही हैं।

आज भी बहुत से मसले धीरेन्द्र भाई "गप-शास्त्र" से हल करते हैं। कार्य-कर्ताओं के लिए आवश्यक मानते हैं आपसी गपशप। उनके निकट संकोच और परायापन फटकना नहीं। जहाँ हृदय से हृदय बोलता है, वहाँ हृदय-हृदय को खींच ही लेता है।

चिरकुमार तो वह हैं ही, मेरी कामना है कि चिरयुवा बने रहें और १९२० की मस्ती उन्हें कभी न छोड़े!

—विचित्र नारायण शर्मा

काश ! हम सभी 'धीरेन्' हो जाते !

धीरेन्द्र भाई बहुत कुछ हैं। उनको एक शब्द में कहना कठिन है। शुरू में गांधी आश्रम के छुटभइयों में ही थे थे। मुझसे भी ६ साल छोटे हैं। अतः छोटों के काम इन्होंने खूब किये। खादी के क्षेत्र में भी सूत खरीदने, कपास की खेती कराने के लिए बिनौला बाँटने, कपड़ा बुनवाने, बिक्री-भंडार संभालने, हिसाब लिखने आदि के काम उन्होंने किये।

सभी कामों में धीरेन्द्र भाई प्रयोग करते और क्रान्ति ढूँढते। बहुत पहले उन्होंने जाहिर कर दिया कि "आज जिस तरह खादी का काम चलता है, उसी तरह चलाने से उसकी नींव मजबूत नहीं होगी।" वह समग्र ग्राम सेवा के लिए रणीवाँ पहुँचे, ग्राम-निर्माण के काम के लिए सेवापुरी बैठे। गांधी-आश्रम से उन्हें सहयोग मिला, पर किसी को कुछ निष्पत्ति की आशा न थी। सारे देश को आज उनके अनुभवों का फल मिल रहा है।

धीरेन्द्र भाई अपने प्रयोगों में भी चिपके नहीं रहते। खादीग्राम में खेती के लिए, तो क्या पीने के लिए भी पानी का अभाव था। उनके प्रयोगों से आज आस-पास के गाँवों के कुँओं में भी पानी रहने लगा है। लेकिन धीरेन्द्र भाई वहाँ से निकल पड़े, अगले प्रयोग के लिए!

अद्भुत एकाग्रता की क्षमता धीरेन्द्र भाई को मिली है। एक बार हम लोगों ने योजना बनायी कि धीरेन्द्र भाई को सोते से जगाया जाय और रात भर गप चले। बलपूर्वक उनके हाथ-पाँव पकड़ कर हम लोग छत पर से नीचे लाये। तंग करने के सभी तरीके अजमाये। लेकिन वह न तो हँसे, न बोले और न उठे! हम लोगों के हार मान लेने पर उन्होंने कहा, "अब साध पूरी कर लो।" फिर हम लोगों ने पूरी रात उनकी गप का आनन्द लिया।

निस्संदेह वह बहुत बड़े विचारक हैं। लेकिन सबसे बढ़कर हमारे लिए वह वही "धीरेन्" हैं, जो पहले थे। काश! नई पीढ़ी के कार्यकर्ता आपस में खूब हँसते-खेलते, हम दिल खोल कर एक-दूसरे से बातें करते, मस्त होकर काम करते और मायूसी तथा मनोमालिन्य पास न फटकने देते! ऐसी प्रेरणा के स्रोत हमारे धीरेन्द्र भाई शतायु हों!

—ध्वजा प्रसाद साहु

लक्ष्य पर अटल

श्री धीरेन्द्र मजूमदार से मैं कोई ४० वर्ष हुए पहले मिला था। बनारस में हिन्दू युनिवर्सिटी को छोड़ कर वे कुछ साथियों के साथ असहयोग-आन्दोलन में शरीक हुए थे। उस समय मेरा-उनका काफी साथ रहा और बाद के वर्षों में भी उनसे कभी-कभी मिलता रहा।

इस लम्बे जमाने में मैंने देखा कि उनका जीवन देश के ही कामों में और जन-सेवा में लगा। बहुत कठिनाइयों का उन्होंने सामना किया। फिर भी अपने लक्ष्य से नहीं हटे। जो लोग धीरेन्द्रजी को जानते हैं, वे उनका आदर और उनसे प्रेम करते हैं। ६० वर्ष के अब वे हो गये। मैं आशा करता हूँ कि अभी बहुत वर्ष उनके जीवन में बाकी हैं। मेरा यह पूरा विश्वास है कि इन वर्षों में भी वे अपनी जन-सेवा जारी रखेंगे।

मैं उनको अपना प्रेम और बधाई भेजता हूँ। —जवाहरलाल नेहरू

प्रेरणा के पुंज

बातचीत करने, उठने-बैठने, व्यवहार आदि की धीरेन्द्र भाई की निराली रीति है। उन्हें देख कर कोई नहीं सोच सकता कि ठठो-सी आकृति में क्रांति की आग भरी होगी। वह ज्वालामुखी हैं, पर दिखाई देते हैं शान्त! कांग्रेस-अधिवेशनों की खादी-प्रदर्शनियों में जब देखता था, तो धीरेन्द्र भाई अलग रहने वाले स्वभाव के लगे। पर बाद में पाता हूँ कि उनमें अगाध आत्मीयता है।

आत्मविश्वास भी उनमें अपार है। जब कोई परिवर्तन करना आवश्यक समझते हैं तो दृढ़ता के साथ तत्काल कर डालते हैं। लाभ-हानि की चर्चा करें तो वे उछल कर फटकार बैठते हैं। ऐसा पागल ही तो दूसरों को दीवाना बना सकता है, उकसा सकता है, उभाड़ सकता है तथा संजीवनी पिला सकता है।

शरीर को उन्होंने कस लिया है। उनका मनोबल मजबूत और विचार की बेधकता अप्रतिम है। वाणी का स्रोत बहता ही रहता है। कहानी-किस्सों, नीति-वचनों आदि का उनके पास अक्षय भंडार है। महाभारत के वे अच्छे अभ्यासी हैं। कभी-कभी उनके शब्द कटु हो जाते हैं, पर स्वभाव मार्दव होने से उनसे खलने वाले नहीं होते। उनके व्यक्तित्व से सद्भावना छलकती रहती है। अतः श्रोता प्रसन्न ही रहते हैं।

शोषक चार प्रकार के—पतलून मार्का, पगड़ी मार्का, झोला मार्का और कमंडलु मार्का—बता कर वह कहते हैं, "इनके अलावा एक वर्ग और भी है, संख्या में यही सबसे बड़ा है, इसी में लोग ज्यादा हैं। ऊपर बताये गये वर्गों में स्थान न मिलने के कारण यह 'वेटिंग लिस्ट' में है। यह बेकारों वाला वर्ग है—"विदाउट पोर्ट फोलियो"! अद्भुत व्यंजना ऐसी उक्तियों में धीरेन्द्र भाई की होती है। कुछ चुने चुने शब्द उच्चरित होते हैं। व्यापारर संकेत चलता है। वर्णन करना मेरे लिए कठिन हो रहा है। उद्धरण ही दे सकता हूँ, पर कितनी उक्तियों के उद्धरण देना सम्भव है? धीरेन्द्र भाई के पास तो खजाना ही है, अक्षय भंडार है।

उनके प्रति मेरा आदर, पूज्य-भाव बढ़ता ही जाता है। यह सम्मानांजलि, प्रणामांजलि अर्पित करता हुआ मनाता हूँ कि वह वर्षों तक समाज-सेवियों का मार्गदर्शन करें।

—गोकुलभाई भट्ट

कृति के धनी

पू० बापू के बाद श्रम का आग्रह जितना धीरेन्द्र भाई का रहता है, उतना मैंने किसी का नहीं पाया। शब्दों से कोई करते भी हैं, तो कृति से नहीं। साथ ही धीरेन्द्र भाई की यह विशेषता है कि दूसरों को भी खींचे रखते हैं। ऐसे-ऐसे सरकारी की स्त्रियों तक ने धीरेन्द्र भाई के सम्पर्क में आकर मिट्टी खोदी और टोकरियाँ ढोयीं, जिनका तकाजा इन्हें नीचा काम मानने का रहता है। दूसरी ओर पुरुषों ने रसोई आदि के काम किये। अब 'श्रम-भारती' के प्रयोग से भी आगे धीरेन्द्र भाई जाना चाहते हैं।

गाँव का नवनिर्माण, प्रौढ़ शिक्षा, नई तालीम, क्या नहीं है उनका यह कदम? नये-नये साथी प्राप्त कर लेना भी धीरेन्द्र भाई के लिए सहज है। हँसते-हँसाते रहने और गपशप की उनकी पद्धति का ऐसा ही जादू है। अपने टूटे-फूटे शरीर में धीरेन्द्र भाई नवयुवकों को मात करने वाला उत्साह रखते हैं। उन्हें अपना स्वप्न 'याचि देहीं, याचि डोळा' (इसी देह द्वारा इसी दृष्टि से) साकार दीखे, यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।

—शान्ता नारूलकर

अद्भुत समाधानकर्ता

लगभग २० साल पहले धीरेन्द्र भाई को मैंने पहली बार देखा। भाषण के बाद उन्होंने लोगों से प्रश्न पूछने को कहा। काफी देर तक प्रश्नोत्तर चले। फिर तो प्रश्नोत्तरों में ही धीरेन्द्र भाई मेरे सामने मूर्तिमान होने लगे। धीरेन्द्र भाई की परीक्षा लेने के लिए, अपनी विद्वत्ता प्रद-र्शित करने के लिए अथवा जिज्ञासा-तृप्ति के लिए प्रश्न होते मैंने देखे हैं! सभी का समाधान धीरेन्द्र भाई अच्छी तरह करते हैं। मैं समझता हूँ कि इसका कारण है धीरेन्द्र भाई में पूर्ण बोध होना। सर्वथा निःसंशय होकर वे बोलते हैं। मौलिकता तथा कर्मठता की पुट से उनके उद्गार परम प्रभावप्रद हो जाते हैं।

निम्नलिखित सूत्रों में धीरेन्द्र भाई के विचार बाँध कर मैंने अपनी प्रेरणा के लिए रखे हैं।

(१) बिना सामाजिक मूल्य ग्रहण किये रचना का काम कठिन है।

(२) मानवीय मूल्यों के आधार पर रचना के लिए विचार-क्रान्ति ही सही क्रान्ति है।

(३) रचना का काम जनता की सतह पर रह कर, उसके ही बीच और उसके लिए ही जीने की आकांक्षा रख कर किया जा सकता है।

(४) गाँवों की रचना में बाहरी दखल कम-से-कम रहे।

—द्वारका सिंह

आत्मकहानी का एक पृष्ठ

उस दिन से मैं अपनी जिज्ञासा आश्रम में देखने लगा। मैंने प्राय महीनों मौन ही रखा। किसीको भी पता न था कि मैं कुछ जान सकता हूँ या पढ सकता हूँ। सारा दिन भर मैं मौन रह कर ही काम करता था। कुछ भाइयो से बातचीत भी होती थी। पर अधिक नही, मैं अपने काम में ही मग्न रहता, जब कि काम करने का मुझे कोई खास शौक नहीं था। फिर भी क पारमार्थिक दीक्षा के तौर पर मैं यह र रहा था। बापू जब भी बातें करते, । उनमें सत्यनिष्ठा, अहिंसा-शक्ति, ह्मचर्य आदि विषयो पर काफी विवेचन आ करता था। उसके साथ-साथ शाक लाने की बातें भी चलती थी। 'कौनसा शाक ले आये और वह किस भाव से मिला' आदि। रसोई, व्यवहार, राज्य, नीति, देश-हित और परमार्थ—सभी बातो की खिचडी रहा करती थी। सब विचार मिला कर देखे जायँ, तो परस्पर-विरोधी भी दीखते थे। लेकिन शरीर में नख से शिखा तक विभिन्न, विरुद्ध अवयव होते हुए भी एक ही जीवन के अंग हैं। पारमार्थिक जीवन का जो मूल्य है, वही साधारण कामो का भी मूल्य है। इसी तरह सारा काम चलता रहा।

फिर तो मेरा यह आकर्षण दिन-पर-दिन बढता ही गया। उसके बाद मेरी मूल कल्पना कुछ संस्कृत पढने की थी। इसलिए एक वर्ष की छुट्टी लेकर मैं आश्रम छोड कर चला गया।

मेरा निश्चय था कि वेदान्त और तत्वज्ञान का भी अभ्यास करूँ। वाई (महाराष्ट्र, जिला सातारा) में नारायण शास्त्री मराठे नामक एक आजन्म ब्रह्मचारी विद्वान् विद्यार्थियों को वेदान्त तथा दूसरे शास्त्र सिखाने का काम करते थे। उनके पास उपनिषदों का अध्ययन करने का लोभ मुझे हुआ। इस लोभ के कारण वाई में मैंने निम्नोक्त काम किये।

(१) उपनिषद, (२) गीता, (३) ब्रह्मसूत्र और शांकर भाष्य, (४) मनुस्मृति, (५) पातंजल योगदर्शन, इन ग्रन्थो का मैंने अभ्यास किया। इनके अलावा (१) न्यायसूत्र, (२) वैशेषिक सूत्र, (३) याज्ञवल्क्य स्मृति—इन ग्रन्थों को पढ गया। अब मुझे अधिक सीखने का मोह नहीं रहा। अपने आप ही जो पढना होगा, वह पढ लेगा।

दूसरा काम था स्वास्थ्य-सुधार का, जिसके लिए मैं वाई गया था, उस बारे में। स्वास्थ्य-सुधार के निमित्त पहले तो मैंने १०-१२ मील घूमना शुरू किया। बाद में छह से आठ सेर तक अनाज पीसना शुरू किया। तीन सौ सूर्य-नमस्कार और घूमना यह मेरा व्यायाम था। इससे मेरा स्वास्थ्य और ठीक हो गया।

आहार के विषय में—पहले छह महीनों तक तो नमक खाया, बाद में उसे छोड दिया, मसाले वगैरह बिल्कुल नहीं खाये। अस्वाद मसाले और नमक न खाने का व्रत लिया। दूध शुरू किया। बहुत प्रयोग करने के बाद यह सिद्ध हुआ कि दूध बिना बराबर चल नहीं सकता। फिर भी अगर इसे छोडा जा सकता हो, तो छोड देने की मेरी इच्छा थी। एक महीना केवल केले, दूध और नींबू पर बिताया। इससे ताकत कम हुई। तब मेरी खुराक नीचे लिखे अनुसार थी।

दूध (साठ तोला), भाखरी २ (बीस तोला ज्वार की), केले ४ या ५, नीबू १ (मिल जाय तो)।

ऊपर लिखा मेरा आहार बहुत अमीरी था, ऐसा महसूस करता था।

वहाँ मैंने ये कार्य किये—

(१) गीताजी का वर्ग चलाया—इसमें बिना कुछ लिये छह विद्यार्थियों को अर्थ सहित सारी गीता सिखाई।

(२) ज्ञानेश्वरी छह अध्याय—इस वर्ग में ४ विद्यार्थी थे।

(३) उपनिषद् नौ—इस वर्ग में दो विद्यार्थी रहे।

(४) हिन्दी प्रचार—मैं स्वयं अच्छी हिंदी नहीं जानता, फिर भी विद्यार्थियो को हिन्दी के समाचार-पत्र पढने-पढाने का क्रम रखा।

(५) अंग्रेजी—दो विद्यार्थियों को सिखायी।

(६) लगभग ४०० मील पैदल यात्रा की। राजगड, सिंहगढ, तोरणगढ आदि इतिहास-प्रसिद्ध किले देखे।

(७) प्रवास करते समय गीताजी पर प्रवचन करने का क्रम भी रखा था। ऐसे कोई ५० प्रवचन किये।

(८) वाई में विद्यार्थी-मंडल नामक एक संस्था की स्थापना की। उसमें एक वाचनालय खोला और उसकी सहायता के लिए चक्की पीसने वालों का एक वर्ग शुरू किया। उसमें मैं और दूसरे १५ विद्यार्थी चक्की पीसते थे। जो मशीन की चक्की पर पिसवाने ले जाते, उनका काम हम (एक पैसे में २ सेर के हिसाब से) करते और ये पैसे वाचनालय को देते। पैसेवालो के लड़के भी इस वर्ग में शामिल हुए थे। वाई पुराने विचार वालो का स्थान होने से और इस वर्ग में हम सब हाईस्कूलों में पढने वाले ब्राह्मणो के लडके होने के कारण सब हमें मूर्ख समझते थे। इतने पर भी यह वर्ग कोई दो मास चला और वाचनालय में ४०० पुस्तकें इकट्ठी हो गयी।

(९) सत्याग्रहाश्रम के तत्त्वो का प्रचार करने का मैंने काफी प्रयत्न किया।

जिस क्षण आश्रम छोडा, उस दिन से ठीक १ वर्ष २ मास पूरे कर पुन आश्रम में आ पहुँचा। बापू तो यह भूल ही गये थे, पर मैं समय पर आ पहुँचा, इसकी उन पर गहरी छाप पडी। वे समझ गये कि यह आदमी जो वचन देता है, उसका पूरी तरह पालन करता है। इसलिए इसमें कुछ तो सत्य-निष्ठा है ही। इसीलिए उन्होंने बडे प्रेम से मेरे दोष सहन किये। आखिर वे दोष मुझे छोड निराश होकर भाग गये। जिस तरह गरीबों को उनके सगे-संबंधी छोड जाते है, उसी तरह मुझसे काफी प्यार करने वाले मेरे दोष भी मुझे छोड कर चले गये। उसके बाद मैं चार बरस तक साबरमती आश्रम में रहा।

फिर ४३ साल तक कताई, बुनाई, धुनाई आदि के साथ मेरा अत्यन्त निकट संबंध रहा। मेरी जवानी के दिन इसके संशोधन में बीते। घंटों काता, घंटों बुना। बीच में तो यह हिसाब चला कि कताई की मजदूरी क्या होनी चाहिए, तो मैंने चार गुण्डी रोज कातना आरम्भ किया और उससे जो आय होती थी, उसी पर मैं रहता था। यह प्रयोग एक साल चला। उसमें एक भी दिन अपवाद नहीं गया।

भूदान-यज्ञ के संत के प्रति

किसी मनुज की पगध्वनि बन कर युग का गान चला आता है!
कोई मत नहीं है सचमुच! यह तूफान चला आता है॥
उठा बवंडर है सागर के मुक्त हृदय से ज्वार माँगने,
निकला है इन्सान अकेला, दुनियाँ का आधार माँगने।
यह न कहो बलि के दरवाजे, पर कोई भगवान खडा है,
या कि युधिष्ठिर दुर्योधन से आये है अधिकार माँगने॥
आज गरीबों की दुनिया में फिर दरिद्रनारायण के हित,
युग का भार धरे कन्धा पर हो इन्सान चला आता है,
जो श्रम करे दुनिया में यह निष्ठुर संसार उसीका
जो कोटा का ताज पहन ले फूलों का अभिसार उसीका!
मखमल के गद्दों पर सोने वालों की यह भूमि नहीं है,
खून पसीना कर सकता जो धरती पर अधिकार उसीका!!
बदला है इतिहास अभी तक हर धरा-कंचन के ऊपर,
किन्तु रौंदना अभिशापों को, अब वरदान चला आता है!!
उन्हें कडियों को हथकडियो को लहरा कर आज तोड दो,
कुरुक्षेत्र दियो न किन्तु भगीरथ बन सुरसरि की धार मोड दो।
धरती पर लहराए माता, की धारा सुख बनी बढ कर,
सर्वोदय की पृष्ठभूमि पर एक नया अध्याय जोड दो।
आज द्रौपदी की पुकार पर द्रोण झुकाये खडे पितामह,
किन्तु द्वारिका से पैदल ही, वह भगवान चला आता है॥

—'अमरेश'

योरोप-यात्रा के अनुभव : ३

इटली की जीवन-झाँकी

रामाधार

रूस से हम लोग वियेना होते हुए इटली पहुँचे। वेनिस में महर्षि टालस्टाय की पचासवीं पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में एक समारोह था। उसमें अनेक जगत्-विख्यात लेखक भाग लेने वाले थे। श्री हक्सले भी आने वाले थे। मुझे उनका भाषण सुनने का बड़ा चाव था। लेकिन पता नहीं क्या कारण हुआ, वह अन्त में नहीं आये। हमारे देश से भी श्री जयप्रकाश बाबू तथा श्री जैनेन्द्र कुमार इस समारोह में भाग लेने के लिए बुलाये गये थे। श्री जयप्रकाश बाबू का भाषण मालूम हुआ कि एक दूसरे सज्जन ने पढ़ा। शायद वे बीच में ही लन्दन चले गये थे। श्री जैनेन्द्र कुमार का भाषण अंग्रेजी में पढ़ा गया।

इस मौसम में योरोप में अमेरिकन बहुत आ जाते हैं। अतः यहाँ भी उनकी संख्या बहुत दिखाई दी। वृद्ध पुरुष और महिलाएँ विशेष रूप से भ्रमण करते दिखाई देती हैं। इनके पास पैसे की इफरात है, इसलिए खर्च करने में इन्हें विचार करने की आवश्यकता नहीं होती। परिणाम यह होता है कि होटल आदि की दरें आसमान पर चढ़ने लगती हैं! लगता है, होटलों का सब देशों में एक अपना अलग नीति-शास्त्र बन जाता है। योरोपीय देशों में व्यापार की दृष्टि से सामान्यतः वह अन्धेर-गर्दी नहीं है, जो हमारे देश में है, लेकिन होटल इस नियम के अपवाद हैं। उनके व्यवस्थापकों को अधिक रकम लेने का कोई बहाना मिलना चाहिए और वे झट से लम्बा-चौड़ा बिल बना देते हैं! दरअसल इनकी अपनी संस्कृति ही अलग बन जाती है, जिसका आराध्यदेव पैसा है! वह साधन नहीं, साध्य है। इस मूल्य-व्यवस्था में कृत्रिमता, आडम्बर, फैशनपरस्ती एवं कुरुचिपूर्ण हावभाव आदि प्रमुख रूप धारण कर लेते हैं। इस होटल-संस्कृति में सब देशों में असाधारण एकरूपता है। वह सचमुच ही अन्तर्राष्ट्रीय है! क्या नई दिल्ली, क्या वेनिस अथवा रोम, क्या जूरिक, क्या लंदन और क्या पेरिस, यह सर्वत्र समस्वरूपा है!

यह भी देखने में आया कि जो लोग अपने भ्रमण को इस होटल-संस्कृति और उससे सम्बद्ध व्यवस्था के साथ जोड़ लेते हैं, किसी भी देश के वास्तविक स्वरूप को नहीं देख पाते। हवाई जहाजों के सफर के कारण भी एक देश से दूसरे देश जाने में जो सम्पर्क सामान्यतः बन सकता है, वह नहीं हो पाता। एक देश की राजधानी से उड़े और चन्द घंटों में दूसरे देश की राजधानी में पहुँच गये। अतः होटल, हवाई अड्डे, हवाई जहाज की मुसाफिरी और कुछ इने-गिने स्थानों को देखने की व्यवस्था की संकीर्ण परिधि में यह देशाटन बँध जाता है। फलतः नाम भ्रमण अथवा देशाटन का अवश्य होता है, परन्तु उसकी सार्थकता उसमें से निकल जाती है। लेकिन इस ओर कोई ध्यान नहीं देता, जिनके पास यथेष्ट धन है, वे इस बारे में बिल्कुल उदासीन हैं।

कुल मिला कर मैं इटली के कुछ भागों में प्रायः १०-११ दिन रहा। योरोपीय देशों में इटली कम समृद्ध माना जाता है। अन्तर है भी। लेकिन भारतीयों को यह अन्तर नगण्य-सा ही दीखेगा। हमारे देश की दरिद्रता इतनी सम्पूर्ण है कि इटली की समृद्धि की त्रुटियाँ दृष्टिगोचर नहीं होतीं। यह क्या कम है कि वहाँ खाने-पीने, रहने की व्यवस्था और काम का अभाव नहीं है? अभाव और प्रचुरता का प्रश्न सापेक्ष है। योरोपीय सम्पन्नता के विचार से इटली में किन्हीं बातों का अभाव माना जा सकता है, परन्तु हमारे देश की तुलना में वहाँ कोई कमी नहीं है।

मैंने अपनी समझ के अनुसार सर्व-साधारण जनों के साथ अधिक-से-अधिक सम्पर्क में आने की कोशिश की। पर अनेक कठिनाइयों के कारण इसमें अधिक सफलता नहीं मिल सकती थी। प्रथम कठिनाई भाषा की थी। हम अपने देश में बैठ कर समझते हैं अंग्रेजी से सब जगह काम चल सकता है। पर यह कोरा भ्रम है! होटलों, हवाई अड्डों तथा टूरिस्ट एजंसियों में तो अंग्रेजी काम देती है, पर उससे आगे अथवा इधर-उधर नहीं। परिणाम यह है कि जैसे अलग-थलग-से हम किसी देश में, प्रवेश करते हैं, वैसे ही अलग-थलग-से वापस हो जाते हैं! उनके हृदय में प्रवेश कर सकने का मार्ग अवरुद्ध रहता है। आँखें जितना काम कर सकती हैं, उतना ही होता है। पर आँखों की सामर्थ्य कम कहाँ है, यदि हम उनका इस्तेमाल करें? लेकिन अक्सर हम उन्हें बन्द ही रखते हैं!

दूसरी कठिनाई जन सम्पर्क में न आ सकने की, ठहरने आदि की व्यवस्था से निकलती है। होटल चाहे कैसे भी हों, परन्तु और किसी व्यवस्था के अभाव में वहीं ठहरना होता है। भाषा की सुविधा के कारण भी होटल में रहना कुछ आव-श्यक हो जाता है। अतः सर्वसाधारण के साथ एक स्वतः निर्मित दूरी के हम शिकार रहते हैं। तीसरी बाधा, समय की रहती है। थोड़े समय के लिए जाने वाले भाग-दौड़ में ही रहते हैं और इसलिए उनके लिए व्यवस्थित-चित्त होना कठिन होता है। जल्दी-जल्दी में अधिक-से अधिक देखने की धुन में कुछ भी देख पाना संभव नहीं होता! लेकिन इन सब कठिनाइयों के बाव-जूद मैंने जितना कुछ देखा, उससे मुझे यह अनुभव हुआ कि इटालियनों के जीवन में जहाँ कृत्रिमता प्रवेश नहीं कर पायी, वहाँ उनका अन्तःकरण निष्कपट और सहज स्पन्दनशील है, वहाँ मानव-मानव में भेद करने की प्रवृत्ति नहीं है। वहाँ न जाति-भेद है, न रंगभेद; वहाँ भाषा-भेद चाहे बातचीत की सुविधा न पैदा कर सके, लेकिन आन्तरिकता आँखों से उमड़-उमड़ कर एक प्रवाह में बह निकलना चाहती है। हर मोड़ में यही अनुभूति होती है कि मनुष्य की मनुष्यता सार्वभौमिक है, वह सर्वत्र एक है। जो लोग भेद की बातें करते हैं, वे किसी मानसिक असन्तुलन के शिकार हैं, यही मानना पड़ता है। यह असन्तुलन ही उन्हें विशिष्ट बनाता है। जो साधारण और सामान्य हैं उनमें भेद-बुद्धि नहीं है, इसलिए सन्तुलन है, पर गाहे-बगाहे विशिष्ट लोगों का वर्ग उन्हें गुमराह करता रहता है, क्योंकि अपनी सहज सादगी के कारण वह उनका विश्वास कर लेते हैं। इसी से निरर्थक विवादों की सृष्टि होती है और वह विवाद फिर विनाश का रूप धारण कर लेते हैं।

इटालियन लोग सामान्यतः हँसमुख और खुले-दिल इन्सान हैं, सुन्दर और स्वस्थ हैं। योरोप के अन्य देशों की तुलना में कुछ कम परिश्रमशील लगते हैं और उतनी कड़ी अनुशासनप्रियता भी नहीं है, जो जर्मनी वगैरह में दिखती है। परन्तु सामान्यतः योरोपीय असाधारण रूप से परिश्रमशील हैं और उनका जीवन व्यवस्थित तथा सुशृंखल और अनुशासनपूर्ण है। इन्हीं गुणों के कारण वे इतने विनाशकारी युद्ध के बावजूद भी इतने थोड़े काल में असाधारण समृद्धि प्राप्त कर सके हैं। इस समृद्धि का रूप किन्हीं देशों में विशेष रूप से भव्य है और कहीं-कहीं वह तुलना में कुछ कम दिखती है। परन्तु दारिद्र्य नाम की चीज वहाँ कहीं नहीं है, दक्षिण इटली तथा दक्षिण फ्रांस में भी नहीं। हम लोगों के लिए यह आनन्द का विषय है। उन लोगों की खुशहाली देख कर दिल को ठंडक पहुँचती है।

लेकिन इतनी व्यापक सम्पन्नता के बावजूद भी शांति और सन्तोष की जिन्दगी उनकी नहीं है। जीवन की मुख्य आवश्य-कताएँ सब अच्छी तरह पूरी हो जाती हैं, चिकित्सा तथा बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबन्ध है—परन्तु 'स्टेण्डर्ड आफ लिविंग' नाम की वस्तु के पीछे वे पागल हैं। उसकी भाग-दौड़ बहुत है। इस भाग-दौड़ के कारण बेचैनी है। यह अन्तर्विरोध उनके जीवन में बहुत है। वहीं से वह हमारे शिक्षित वर्गों में आया है। इटली में यद्यपि लोग कुछ मस्ती लिये हुए दीखते हैं, परन्तु 'स्टैण्डर्ड आफ लिविंग' की भाग-दौड़ का असन्तुलन वहाँ भी खूब है। बुनियादी मूल्य-व्यवस्था वहाँ की भी वही है, जो समस्त योरोप की है। जिनका 'स्टेण्डर्ड आफ लिविंग' खूब ऊँचा है, वह और भी ऊँचे होना चाहते हैं, जिनका और अधिक है, वह उससे भी ऊँचा चढ़ना चाहते हैं।

रोम में एक सज्जन से भेंट हुई, जो अर्थशास्त्र के अच्छे पण्डित हैं। भारतवर्ष के बारे में उनकी दिलचस्पी थी और उनके कई मित्र यहाँ होने के कारण हमारे देश के बारे में कुछ जानकारी भी थी। उन्होंने यहाँ होने वाले उद्योगीकरण के प्रयत्न की सराहना की और आशा प्रकट की कि इससे भारत भी शीघ्र ही प्रगतिशील देशों की सूची में आ जायगा! उन्होंने कृष्ण मेनन की नीति और उनके भाषणों की निन्दा की और साथ ही पंडित नेहरू अपने देश की प्रगति के लिए जो प्रयत्न कर रहे हैं, उसकी प्रशंसा की। मैंने उनसे निवेदन किया कि भारतवर्ष की जनसंख्या प्रायः ४० करोड़ है। भारत आजाद होने के पहिले केंद्रित उद्योग लगभग २५ लाख लोगों को काम देता था और अब १२ वर्ष आजादी के बाद लगभग ३० लाख इन्सानों को काम देता है। यह संख्या भारत की कुल जनसंख्या का पौन प्रतिशत है। अब आप अपने अर्थशास्त्र की सहायता से हिसाब लगा कर मुझे यह बतायें कि केंद्रित उद्योग की सहायता से भारतवर्ष कितनी शताब्दियों के बाद सम्पन्न हो सकेगा? उनका अर्थशास्त्र बेचारा लड़-खड़ा गया और वह मेरे मुँह की ओर इस भाव से देखने लगे, जैसे मैंने उनका उपहास किया हो! लेकिन शिक्षित भारतीयों की मनोवृत्ति उनकी नहीं थी, अतः और चर्चा होने पर उन्हें हमारी विशिष्ट समस्याओं के बारे में एहसास होने लगा, और उसकी रोशनी में गांधीजी तथा विनोबा की बातें उन्हें कुछ संगत लगीं।

वर्ग-भेद वहाँ भी है। वैसे इन वर्गों में अन्तर है। हमारे यहाँ जैसा अन्तर नहीं है। लेकिन फिर भी वर्ग तो है ही। अतः अमीरों के आडम्बरयुक्त जीवन में कुरुचि-पूर्ण कार्य-कलापों की भरमार है। उनमें अत्यधिक फैशनपरस्ती है, जो अशोभन और कुत्सित रूप ग्रहण करती जा रही है। इस अमीरी में हमारी गरीबी से भी भयं-कर असन्तुलन है। अतः हम सभी को विभिन्न देशों और जातियों की समाज-व्यवस्था के बारे में गहरा और व्यापक विचार करना पड़ेगा। यहीं पर सर्वोदय एवं गांधीजी तथा विनोबा के जीवन-दर्शन की सार्थकता है। योरोप की समृद्धि में यदि इस जीवन-दृष्टि का समावेश न हुआ, तो वह पुनः हमें विनाश के पथ पर आरूढ़ कर देगी। पर अभी वहाँ प्रक्रिया वहाँ चल रही है। विचारशील लोग इससे काफी चिन्तित दीखते हैं, परन्तु उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा है। जो कुछ हो रहा है, वह ठीक नहीं है, यही भाव उनमें है।

•

राम और कृष्ण के साथ बुद्ध का समन्वय करें

विनोबा

गौतम बुद्ध के रूप में हिन्दुस्तान में करुणा अवतीर्ण हुई थी। आज कुल दुनिया महसूस करती है कि कारुण्य-अवतार शाक्य मुनि की जरूरत कुल दुनिया को है, ऐसा दुनिया महसूस करती है। गौतम बुद्ध के इस रूप को हमें समझना चाहिए, मानना चाहिए, कबूल करना चाहिए, इतनी अक्ल होनी चाहिए। समझने की जरूरत है कि वे हिन्दू थे और हिन्दी थे। उन्होंने किसी नये धर्म की स्थापना का खयाल नहीं किया था। जैसे कबीर ने एक सुधार पेश किया, वैसे ही उन्होंने भी हिन्दू धर्म में एक सुधार मात्र पेश किया था। उसके बाद धीरे-धीरे एक संघ बना। पंथ बना यह बाद की बात है। लेकिन वे तो एक उपासना के तौर पर अहिंसा का प्रचार करते थे और दीक्षा देते थे। ऐसे दीक्षा देते थे, जैसे हिन्दुस्तान में कई गुरु देते हैं। उनके अन्दर-अन्दर कई गुरु होते हैं और वे गुरु अपने-अपने विचार की दीक्षा, जो तैयार होते हैं दीक्षा लेने को, उन शिष्यों को देते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वे उस धर्म के बाहर चले जाते हैं। तो गौतम बुद्ध हिन्दू ही जन्मे थे, हिन्दू ही मरे थे और हिन्दी थे। ये बातें हमको भूलनी नहीं चाहिए और उनको फिर से 'रिक्लेम' करना चाहिए। आजकल 'लैण्ड रिक्लेमेशन' करते हैं—जो जमीन पड़ती है, उसको हम 'रिक्लेम' करते हैं। उसी तरह से गौतम बुद्ध को रिक्लेम करना चाहिए और कहना चाहिए कि उन पर दुनिया का अधिकार है। चीन जापान का तो है इसमें कोई शक नहीं, लेकिन हिन्दुस्तान का भी है, हिन्दुस्तान का कुछ अधिक ही है। इसलिए एक अवतार के नाते तो सारी दुनिया के साथ उनका ताल्लुक है। लेकिन उनका जन्म इस भूमि में हुआ था, अब उनके जन्म के साथ उनकी जो कामनाएँ यहाँ भारत में काम करती थीं, उनका लाभ भारत को ज्यादा मिल सकता है, मिलना चाहिए। इसलिए राम-कृष्ण के साथ बुद्ध को जोड़ दिया जाय, तो अच्छा रहेगा। लेकिन यह बिल्कुल नया कार्य हम करेंगे, ऐसा नहीं। यह काम भी एक तरह से हमारे पूर्वजों ने कर ही रखा है, क्योंकि राम का एक अवतार, कृष्ण का उनके बाद का अवतार और बुद्ध को लेकर अवतार मान ही रखा है।

आजकल हिन्दू जितने धार्मिक कार्य करते हैं, वे बुद्ध के युग 'बुद्धावतारे वैवस्वत मन्वंतरे' अब 'वैवस्वत मन्वंतर' में हम धर्म-कार्य कर रहे हैं। नर्मदा की दक्षिण में हम काम कर रहे हैं। जो दक्षिण में हैं, वे "नर्मदायाः दक्षिणे तीरे" कहते हैं। हमारा धर्म-कार्य कहाँ से चलता है, वह स्थान दिखाना पड़ता है। नदियों के साथ संबन्ध जोड़ कर 'फलानी नदी के उत्तर में, फलानी नदी के दक्षिण में काम कर रहे हैं,' ऐसा बोलना पड़ता है, संकल्प करना पड़ता है। जब हम कोई धर्म-कार्य करते हैं तब किस काल में हम कार्य कर रहे हैं, यह बताना पड़ता है कि 'वैवस्वत मन्वंतरे।' अब 'वैवस्वत मन्वंतर' चल रहा है। मनु चौदह हैं। छह मनु हो गये, सातवाँ वैवस्वत चल रहा है, इसके आगे और सात होंगे। कुल मिला कर करीब-करीब चार सौ करोड़ साल हो जाते हैं अन्दाजन। जो पुराण का इतिहास है, वह सात मन्वंतर याने दो सौ करोड़ साल अलग हो गये। तो पृथ्वी को बने हुए दो सौ करोड़ साल हुए, ऐसा अन्दाजा पुराणिकों ने लगाया। और मुझे कहने में खुशी होती है कि इत्तिफाक की बात है कि वैज्ञानिकों ने भी पृथ्वी को उत्पन्न हुए करीब दो सौ करोड़ साल हुए, ऐसा अन्दाजा लगाया है। अब पृथ्वी का लय होने में और दो सौ करोड़ लगेंगे। दो सौ करोड़ साल में पृथ्वी का लय होगा ऐसा अभी सायन्स बोल नहीं रहा है। अब हिन्दुओं की कल्पना यह है कि पृथ्वी को बने हुए दो सौ करोड़ साल हो गये हैं और करीब दो सौ करोड़ साल पृथ्वी और रहेगी, इसके बाद पृथ्वी का प्रलय होगा। हमारा धर्म-कार्य जो आज हम कर रहे हैं, वह किस काल में कर रहे हैं, तो 'वैवस्वत मन्वंतरे'। स्थल-निर्देश किया 'नर्मदाया उत्तरे तीरे,' फिर हम किस विचार के मातहत काम कर रहे हैं? जैसे हम सर्व सेवा संघ के मार्फत करते हैं, हम भारत सेवक समाज के मार्फत करते हैं। किस विचार के मातहत कार्य करते हैं, यह बताना पड़ता है। तो बताया जाता है, बुद्धावतारे। हिन्दू जो भी धर्म-कार्य करते हैं, दान का कार्य हो, चाहे श्राद्ध का कार्य हो या और कोई कार्य हो, जो भी हम कार्य करते हैं, जहाँ हम गंगा नदी के किनारे दान दे रहे हों ब्राह्मण को लेकिन लोग बोल क्या रहे हैं? बुद्धावतारे। बुद्ध के अवतार में हम कार्य कर रहे हैं। याने बुद्धावतार अभी चल रहा है और उसके मातहत हम कार्य कर रहे हैं। तो यह बात भी हमारे पूर्वजों ने समझ ली थी और काफी कशमकश के बाद मान भी ली थी।

जैसे हरि-हर की कशमकश हुई थी, शैव और वैष्णवों की—बाद में समन्वय हुआ, वैसे राम-कृष्ण की कशमकश हुई थी, बाद में समन्वय हुआ वैसे बौद्ध-विचार की और वैदिक विचार की कशमकश हुई थी और कुछ समन्वय कर लिया, लेकिन पूरा समन्वय उसका नहीं हुआ! जैसे हरिहर का पूरा समन्वय हो चुका, जैसे राम-कृष्ण का पूरा समन्वय हो चुका, वैसे वैदिक और बौद्ध विचार का पूरा समन्वय नहीं हुआ। जो कुछ किया, गौतम बुद्ध को अवतार समझ करके मान्य करके किया और करने का बाकी जो रहा है, वह हम अगर कर देते हैं, तो "सत्य-प्रेम-करुणा", तीनों का समागम होगा।

आप जानते हैं कि हम प्रार्थना में अक्सर कहते हैं—भगवान से प्रार्थना करते हैं। हमने रिवाज डाला है। अब करीब पाँच-छह साल हो चुके। प्रार्थना में हम भगवान से सत्य, प्रेम और करुणा की माँग करते हैं। तो ये तीन अवतार एक के बाद एक भारत में हुए। राम, कृष्ण, बुद्ध—सत्य, प्रेम, करुणा। और यही सत्य, प्रेम, करुणा सब धर्मों का सार है। सिर्फ भारत का नहीं। *सत्यनिष्ठा* उपनिषद् का विषय है, जैनों की सत्य-निष्ठा ही प्रमाण है। करुणा का विचार इस्लाम में और भक्ति मार्ग में प्रधान होता है। "रहमानुर् रहीम" कहते ही हैं। और प्रेम का विचार कुछ भक्ति मार्गों में और ईसाइयों में प्रधान है। जहाँ वे "गॉड इज लव्ह" कहते हैं। इस तरह से सत्य, प्रेम, करुणा में दुनिया के कुल धर्मों का सार आ जाता है। और सत्य, प्रेम, करुणा कहने में हिन्दुस्तान के इतिहास का सार आता है। इस तरह से भारतीय इतिहास का सार और दुनिया भर के सब धर्मों का सार मिल करके ये तीन गुण बनते हैं सत्य, प्रेम, करुणा। भगवान के तो अनंत गुण हैं। लेकिन तिस पर भी इन तीन गुणों का आवाहन हम करते हैं, ताकि हमारा भला हो।

अब गीता के विषय में दो शब्द कहता हूँ। गीता बड़ा विलक्षण ग्रंथ है। याने हर ग्रंथ को एक कवच होता है। छिलका होता है, जैसे कोई भी फल आपको छिलके बिना दिखते नहीं, कुछ-न-कुछ छिलका होता है। क्यों? 'प्रोटेक्शन' के लिए। बाहर की हवा का खराब असर उस पर न हो इस वास्ते, बचाव के लिए एक छिलका होता है। ऐसे ही धर्म-ग्रंथों पर एक छिलका हुआ करता है। केले का छिलका निकाल लेते हैं और अन्दर का खा लेते हैं। उसी तरह धर्म का छिलका होता है, धर्म-ग्रंथ पर एक छिलका, वह उतारना पड़ता है और अन्दर का खाना पड़ता है। अब गीता का जो छिलका है, वह बहुत कठिन और सख्त है। वह नारियल के जैसा है। गीता ग्रंथ नारियल के समान है। उसका ऊपर का छिलका हटाना बड़ा ही मुश्किल है। अगर बंदर के हाथ में आ जाय, तो क्या करेंगे। उनको पता ही नहीं चलेगा कि अन्दर क्या चीज है। तो जो उसको छीलना जानेगा, उसको पता चलेगा कि अन्दर सारगर्भ वस्तु भरी हुई है। जो लोग ऊपर का ही लेंगे, वे क्या सिर पर पटकेंगे उसको? क्या करेंगे वे नारियल को लेकर के। इस वास्ते गीता का जो ऊपर का छिलका है, उसमें युद्ध की समस्या खड़ी कर दी है और आमने-सामने भाई-भाई खड़े हैं, कुछ लड़ रहे हैं, पर लड़ने से बाज आ रहा है, परावृत्त हो रहा है अर्जुन। उसको भगवान लड़ने में प्रवृत्त कर रहे हैं और सारा तत्त्वज्ञान कह करके आत्मा की अमरता और देह की तुच्छता, योग-बुद्धि, भक्ति, ध्यानयोग और त्रिगुणातीत होने की वृत्ति और क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ को पृथक् करना—आदि पचास बातें उनके पीछे लगा करके उनको युद्ध में प्रवृत्त कर रहे हैं। अजीब-सी बात होती है कि एक भौतिक युद्ध में, जहाँ भाई-भाई लड़ रहे हैं, ऐसे युद्ध में यह ग्रंथ प्रेरणा दे रहा है। और इसलिए इस ग्रंथ के ऊपर के छिलके के कारण बहुत लोग बहक गये। लेकिन नारियल के अन्दर की चीज न जाने, उसको तो क्या-क्या मालूम हो जाय नारियल के लिए। तो इस तरह से हमको गीता के लिए क्या-क्या मालूम हुआ है। अनारकिस्टों ने उपयोग किया गीता का, यह आप जानते ही हैं! गीता के नाम से महात्मा गांधी काम करते थे और गीता के नाम से गोडसे ने महात्मा गांधी पर गोली चलाई थी! अभिमानी और प्रेमी, दोनों ही गीता के वाचक होते हैं। अब यह जो सारा होता है, वह इसलिए होता है कि गीता के ऊपर का जो छिलका है वह बहुत सख्त, बहुत मजबूत है। उसको निकालने में बड़ा परिश्रम होता है। और जो निकालना नहीं जानता, वह दाँतों से तोड़ने जाता है। उसको कोई दूसरा ही स्वाद लगता है। और कहता है कि गीता का यह स्वाद है। लेकिन गीता का स्वाद तब मालूम होता है, जब ऊपर का छिलका हटाया जाता है।

(इंदौर, ११ अगस्त, '६०)

●

झुंझनूँ जिले में पदयात्रा

राजस्थान के झुंझनूँ जिलान्तर्गत चिड़ावा क्षेत्र में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने पदयात्रा की। चिड़ावा में चल रहे प्राथमिक पाठशाला के अध्यापकों के शिविर में भी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

ऐसा सोचा गया है कि झुंझनूँ में एक नगर-पदयात्रा का आयोजन किया जाय।

कन्नौज नगर-पदयात्रा

११ अगस्त से २५ अगस्त तक कन्नौज नगर के सात मुहल्लों में सघन रूप से पदयात्रा की गयी। इस पदयात्रा में प्रभात-फेरी, सर्वोदय-पात्र स्थापना, साहित्य-प्रचार तथा आम सभा का कार्यक्रम रखा जाता था। पदयात्रा के दौरान में विद्यार्थियों और शिक्षकों से विशेष रूप से संपर्क किया गया। शिक्षकों की एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

●

क्रान्ति की मंजिल के चिर पथिक : धीरेन्द्र भाई

बड़ी कविता कि जो इस भूमि को सुन्दर बनाती है।
बड़ा वह ज्ञान जिससे व्यर्थ की चिन्ता नहीं होती।
बड़ा वह आदमी जो जिन्दगी भर काम करता है।
बड़ी वह रूह जो रोये बिना तन से निकलती है। —दिनकर

जब-जब मैं गाना गाता हूँ, भगवान प्यार बरसाते हैं।
जब-जब मैं मिहनत करता हूँ, वे आदर-भाव दिखाते हैं। —रवीन्द्रनाथ

धीरेन्द्र भाई के दिमाग में बापू की बातें बिल्कुल बैठ गयी हैं। चरखा ही शोषण मिटाने और अहिंसक समाज स्थापित करने का साधन है, गर्भ से मृत्यु तक तालीम का क्षेत्र हो और नई तालीम में युग-युग की समस्याओं के समाधान की शक्ति निहित रहे तथा समग्र ग्राम-सेवा का कार्यक्रम देश के सामने पेश किया जाय—धीरेन्द्र भाई के लिए महामन्त्र बन गये हैं। समग्र ग्राम-सेवा के प्रयोग उन्होंने रणीवाँ, घेराव, सेवापुरी और 'श्रमभारती' में किये। आपने निश्चयपूर्वक दोहराया है कि श्रमसाधना के बिना हमारी क्रान्ति एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकती।

धीरेन्द्र भाई की श्रद्धा है कि ईश्वर अपनी सृष्टि को एक निश्चित दिशा में और निश्चित गति से ले जाता है। उसके लिए वह योजना भी बनाता है। ऐसा न हो, तो विभिन्न व्यक्तियों के मन में एक ही बात क्यों आती है? इसी आस्था पर निमित्त मात्र बनने की साध लेकर सर्वथा निष्काम भाव से धीरेन्द्र भाई के प्रयोग चलते हैं। अनासक्त रहते हुए भी एकाग्रता में कोई कमी न रख कर वह क्रान्ति को चरितार्थ करना चाहते हैं। लोगों को धीरेन्द्र भाई के कार्यों में व्यवहार सुलभता की अपेक्षा असंभव आदर्श अधिक मिलता है, एक दुरूह पथ की ओर समाज को ले जाने की व्यर्थ चेष्टा करते हुए वे दिखाई देते हैं; फिर भी अपने प्रयोगों में जिस सचाई के साथ वे जुटते हैं और बराबर उनसे सम्बन्धित चिन्तन में निमग्न रहते हैं, उससे मैं आदरमुग्ध हूँ।

चार महत्त्व की बातें धीरेन्द्र भाई के जीवन से सीखनी चाहिए: (१) हर आदमी को अपना निजी और कौटुम्बिक जीवन पूर्णतः उद्यममय और विशुद्ध बनाना चाहिए। (२) सन्मार्ग में बढ़ते हुए विफलताएँ चाहे जितनी मिलें, विषण्ण न होना चाहिए, धैर्य अटूट रखना जरूरी है। (३) जीवन-गठन ऐसा हो कि प्रतिदिन, प्रतिघड़ी, प्रतिक्षण सत्‌चिन्तन और सत्कार्य के लिए झुकाव रहे तथा (४) कुछ नई चीज सीखने और सिखाने की उत्सुकता बराबर रहे।

धीरेन्द्र भाई की जयंती श्रम-जीवन पर अवलम्बित समाज-रचना के प्रयास की जयंती है। मैंने 'श्रमभारती' में मौलिक क्रान्ति का आरम्भ देखा था। उसका, क्रान्ति के नये चरण का तथा समाजसेवी नौजवानों का मार्गदर्शन करने के लिए धीरेन्द्र भाई को भगवान हमारे बीच शत-शत वर्षों तक रखें!

—उ० न० ढेबर

श्री धीरेन्द्र मजूमदार का जन्म सन् १८९९ में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर शहर में हुआ। आप छह भाई थे, जिनमें से दो की मृत्यु हो गयी है। आपकी दो बहनें थीं, जो अब इस संसार में नहीं हैं। सुश्री सुचेता कृपलानी आपकी चचेरी बहन हैं। आपके बड़े भाई श्री नृपेन्द्रनाथ मजूमदार कलकत्ते में वकालत करते थे। संप्रति उससे निवृत्त होकर दरभंगा, लहेरियासराय में भतीजे के साथ रह रहे हैं। उन्हीं से मिली जानकारी के आधार पर ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ। श्री धीरेन्द्र मजूमदार के पिता का नाम श्री नरेन्द्रनाथ मजूमदार था। जब ये ६ वर्ष के थे, पिता की मृत्यु हो गयी! इनके पूर्वजों का निवासस्थान बंगाल के नदिया जिलान्तर्गत जोसरा ग्राम है। इनके पिता नरेन्द्रनाथ मजूमदार का जन्म जोसरा में ही हुआ था। पितामह का नाम श्री दीनानाथ था। ये जमीन्दार थे। पारिवारिक स्थिति अच्छी थी। उस समय इनके पूर्वज सनातन-धर्मी थे। वे बंगाल में ब्रह्म समाज के संस्थापक स्वनामधन्य राजा राममोहन राय के शिष्य थे। केशवचन्द्र सेन से इनके पितामह श्री दीनानाथ मजूमदार का परिचय हुआ। ये समाज-सुधार के प्रबल पक्षपाती थे। अतएव इनके ऊपर श्री केशवचन्द्र सेन का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। फलस्वरूप ये ब्रह्मसमाज के सदस्य हो गये। इसके चलते इनके परिवार को सामाजिक विरोध तथा बहिष्कार का भी सामना करना पड़ा।

श्री केशवचन्द्र सेन ने इनके पितामह श्री दीनानाथ मजूमदार को ब्रह्म समाज के प्रचार के लिए बिहार का प्रभारी बना कर पटना भेजा। पटने में प्रधान कार्यालय बना कर इन्होंने ब्रह्म समाज का प्रचार बिहार में किया। उस समय इनके चाचा श्री जितेन्द्रनाथ मजूमदार दरभंगा नगरपालिका के इंजीनियर होकर आये। कुछ ही दिनों में इनकी पहुँच तत्कालीन महाराजाधिराज श्री रामेश्वर सिंह के यहाँ हुई और ये दरभंगा नगर-पालिका से हट कर दरभंगा राज में इंजीनियर के पद पर काम करने लगे। कुछ ही दिनों के बाद श्री दीनानाथ भी दरभंगा, लहेरियासराय चले आये। दीनानाथजी अपने चाचा के मार्गदर्शन में अपना निजी मकान बना कर लहेरिया-सराय में रहने लगे। श्री धीरेन्द्र मजूमदार के पिता भी इंजीनियर थे। उस समय बी० एन० डब्लू० रेलवे में, गोरखपुर में रह कर काम करते थे। कालान्तर में वर्तमान सहरसा जिला के निर्मली में भी बहुत दिनों तक रहे।

श्री धीरेन्द्र मजूमदार जब ४-५ वर्ष के हुए तो इनके पिताजी ने इन्हें गोरखपुर से लाकर "हेकोक मिडिल स्कूल" लहेरिया-सराय में इनका नाम लिखाया। उस समय यह स्कूल "बँगला स्कूल" के नाम से प्रसिद्ध था। बचपन से ही आप तीक्ष्ण बुद्धि के थे। कहावत मशहूर है, "होनहार बिरवान के होत चीकने पात।" आपको बचपन में अपर तथा मिडिल कक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में सरकार की ओर से छात्रवृत्ति मिली। उस समय इनकी गिनती सीधे-सादे लड़कों में होती थी। स्वभाव सरल था। किसी चहलपहल, खेलकूद में भाग नहीं लेते थे।

मिडिल पास करने के बाद आपका नाम "नोर्थब्रुक जिला स्कूल" दरभंगा में लिखाया गया। वहीं से सन् १९१८ में आपने प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा पास की। इसके बाद आप कलकत्ता-विश्वविद्यालय के "स्कौटिश चर्च कालेज" में नाम लिखा कर आई० एस० सी० परीक्षा पास करने की तैयारी करने लगे। इस परीक्षा में भी आपने अव्वल दर्जा हासिल किया। तदुपरान्त बनारस जाकर हिन्दू विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ भी अच्छे विद्यार्थियों में आपकी गणना होने लगी।

सन् १९२१ का असहयोग-आन्दोलन का जमाना था। हिन्दुस्तान के एक छोर से दूसरे छोर तक महात्मा गांधी के असहयोग-आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया। "वकील वकालत छोड़ें, विद्यार्थी स्कूल-कॉलेज छोड़ें"—गांधीजी का नारा बुलन्द हुआ। मजूमदारजी इस चपेट में आने से बचते रहे। विद्यार्थियों के 'पिकेटिंग' के बावजूद, उनके शरीर को लाँघ कर, आप कॉलेज जाते रहे, क्लास करते रहे। दिमाग में हलचल पैदा हो गयी थी और चिंतन जारी था। एक दिन की घटना है कि इन्होंने प्रिंसिपल के नाम से घर जाने के लिए दरखास्त लिखी। लिखते समय दरखास्त का मजमून आपसे आप बदल गया—"भारत माता की पुकार पर मैं सदा के लिए कॉलेज से जा रहा हूँ।" पढ़ने पर पता चला कि उल्टा लिखा गया, किन्तु इन्होंने इसको दैवी प्रेरणा माना और तदनुसार प्रिंसिपल के विशेष आग्रह करने पर भी अपने निश्चय से नहीं डिगे।

इसी सिलसिले में एक सहपाठी ने इनसे पूछा कि यह क्या कर रहे हो? क्या अपनी माँ से पूछा है? इन्होंने उत्तर दिया कि मेरी माँ के कई पुत्र हैं। उनसे उनका काम चलेगा, किन्तु अपनी माँ के बाद एक और बड़ी माँ है—"भारत माता"। उनकी माँग है, आह्वान है। मैं इसको नहीं रोक सकता। साथी अवाक् रह गया! सामान ताँगे पर रखा गया। लेकिन पता नहीं था कि जाना कहाँ है! ताँगे वाले ने ताड़ लिया और कहा कि "गांधीजी की ओर से एक कॉलेज खुला है, वहीं आप जैसे लोग पहुँच रहे हैं।" उसका कृपलानीजी के यहाँ से मतलब था। ताँगेवाले ने धीरेन्द्र भाई को वहीं पहुँचा दिया। तब से बहुत दिनों तक आप कृपलानीजी के साथ रहे और "गांधी आश्रम" नाम की संस्था का संगठन करके उसके द्वारा खादी के काम को आगे बढ़ाया। इस प्रकार सार्वजनिक क्षेत्र में अवतीर्ण धीरेन्द्र भाई के उत्तरकालीन कार्यकलाप से तो पाठक परिचित ही हैं।

—गोपाल झा, शास्त्री

श्री धीरेन् भाई से मैं पहली बार गुजरात में सूरत जिले के चिखली गाँव में मिला। हाथ में बाँस-चरखा लेकर वे वहाँ पधारे थे। उनके वक्तृत्व से उस समय मैं बहुत प्रभावित हुआ। अपने काम की अद्भुत धुन मैंने उनमें देखी है। उस काम के पीछे वे अपने को सर्वथा भूल जाते हैं। उनका अन्तःकरण उस विचार से व्याप्त रहता है एवं वे उस विचार को अमल में लाने की दृष्टि से अकेले ही सतत प्रयत्नशील नहीं रहते, बल्कि अपने साथियों को भी उसमें जुटाते रहते हैं। उन्होंने व्यक्तियों का निर्माण बड़ी आत्मीयता के साथ किया है। इसलिए वे अनेकों के 'दा', (धीरेन् दा) बन गये हैं।

शासन-मुक्ति एवं समग्र ग्राम-सेवा उनके दो मुख्य विचार हैं। इन्हें अमल में लाने की दृष्टि से उन्होंने अनेक जगह प्रयोग किये हैं।

एक ओर कर्मठ व्यक्तियों का संग्रह, दूसरी ओर आश्रमों का निर्माण एवं तीसरी ओर अपने विचारों का व्यापक प्रसार! इस तरह एक त्रिवेणी ही उन्होंने अपने जीवन का कण-कण देकर बहायी है। इस त्रिवेणी के पवित्र जल में स्नान किये हुए अनेक कार्यकर्ता आज जगह-जगह बिखरे हैं, जो उनका जलाया दीपक प्रज्वलित किये हुए हैं। उनकी हरएक संस्था आज फलती-फूलती नजर आ रही है। स्वयं 'श्रमभारती' खादीग्राम में अपने अन्य जीवन में हर क्रांति के समय तेजस्वी कदम आगे बढ़ाये हैं।

संपूर्ण रूप से जनाधारित बनने की दिशा में वे अपनी "वानप्रस्थायु" में जो कदम उठा रहे हैं, वह भारतीय संस्कृति की उज्ज्वल परम्परा के अनुकूल ही है। उनमें जो नवनिर्माण की आग धधक रही है, वही उन्हें इसकी ओर ले जा रही है। निस्संदेह वे अपने नये कार्य में सफल होंगे, क्योंकि संपूर्ण अनारंभ वृत्ति से इसमें लग रहे हैं। ग्राम-स्वराज्य लाने की दृष्टि से उनका यह जीवन—प्रयोग है। ग्राम-स्वराज्य उनका जीवन-लक्ष्य है।

हृदय में कार्य की तड़पन, मस्तिष्क में सर्वोदय का विचार एवं जीवन में सतत [illegible] तथा प्रयोग लेकर वे आगे बढ़ रहे हैं। प्रभु उनके अंगीकृत कार्य में उन्हें [illegible]।

—धीरूभाई मणिभाई देसाई

सामाजिक क्रान्तिकारी

हम लोगों ने जब कालेज छोड़ा, तो धीरेन्द्र भाई इन विचारों से उदासीन थे और इंजीनियरिंग कालेज में हड़ताल होने पर भी क्लास में जाने वाले विद्यार्थियों में से थे। श्री गांधी आश्रम में वह चुपचाप [illegible] और मूक श्रद्धा तथा निष्ठा से कार्य में संलग्न हो गये। इंजीनियरिंग के विद्यार्थी होने के नाते उन्हें शरीरश्रम में हिचक तो थी ही नहीं, बल्कि उसमें आनन्द अनुभव करते थे। सामाजिक क्रान्ति की भावना का पोषण उन्हें लगातार तीन पीढ़ियों के संस्कारों से मिला था। इसलिए उनके मन में जाति भेद, स्त्रियों की सामाजिक हीनता, पर्दा, अशिक्षण और ऊँच-नीच की [illegible] के प्रति स्वाभाविक विद्रोह था। [illegible] इसीको अपने जीवन का [illegible] बनाया। हम लोगों की दिलचस्पी [illegible] आन्दोलन के राजनैतिक पहलू में [illegible]। उन्होंने सामाजिक पहलू पर ही अपनी [illegible] की।

आश्रम में आने पर बढ़ईगीरी, सूत-कताई, [illegible] बेनाई-बुनाई प्रशिक्षण आदि कार्यक्रमों में वह लगे और इनके [illegible] का किस प्रकार सहयोग प्राप्त हो और [illegible] इसमें रस लें, इसी प्रकार की [illegible] पर निरन्तर चिन्तन व अभ्यास किया करते थे।

[illegible] भाई ने ग्रामसेवा का पहला [illegible] जिले के [illegible] ग्राम में स्थापित किया। इनकी यह वृत्ति दादा (आचार्य [illegible]) की पैनी दृष्टि से ओझल [illegible]। इसलिए उन्होंने अन्य प्रकार के [illegible] के बजाय इसीमें लगाने की स्वीकृति [illegible] के लिए सहज दी। [illegible] राजनैतिक चोट में आ गया। [illegible] में अस्वस्थता के कारण किसी ग्रामीण [illegible] में ही आराम करने की दृष्टि से [illegible] जिले के [illegible] ग्राम में धीरेन्द्र भाई ने और उत्पादक प्रारम्भ किया। कुछ ही समय में वे अपनी लगन व निष्ठा [illegible] के कारण वहाँ के ग्रामीण [illegible] के एक रचनात्मक नेता हो गये। [illegible] की उन्नति के लिए सर- [illegible] में कभी [illegible]। [illegible] उस समय [illegible] में अपनी [illegible] के लिए [illegible]' ([illegible]) का कार्यक्रम जारी किया, [illegible] का पद उन्होंने [illegible] कर लिया। सन् '४२ में [illegible] से [illegible], [illegible] और [illegible] में [illegible] ([illegible]) [illegible] की स्थापना [illegible] की। 'समग्र ग्राम-सेवा की ओर" पुस्तक की रचना उन्होंने जेल में ही की।

धीरेन्द्र भाई का शरीर सदा ही रोग-ग्रस्त रहा, पर मन सदैव सबल रहा और यही कारण है कि आज अस्वस्थ शरीर लेकर भी श्रम तथा समाज में सामूहिक जीवन की प्रतिष्ठा और आधार कायम करने के लिए सब तरफ से अपने को हटा कर एक ठेठ गाँव में बैठ गये हैं। ईश्वर उन्हें अपने आदर्श की प्राप्ति के लिए चिरायु करें।

—कपिल भाई

मौलिक मार्गदर्शक

धीरेन्द्र भाई वर्धा और सेवाग्राम से बहुत दूर रहते थे। हम लोग उनके लेख पढ़ते थे। उनकी 'समग्र ग्राम-सेवा की ओर' किताब को दुहराते और इस मौके की इन्तजार करते कि वे वर्धा आयें। उनके विचार बड़े स्पष्ट थे। जब हम सब अपने क्षेत्र के घरौंदे में फँसे थे—खादीवाले खादी को ही सब कुछ मानते, नई तालीम, गोसेवा या ग्रामोद्योग वाले भी वैसे ही अपने काम को सबसे बड़ा और महत्त्व का मानते—वैसे समय में धीरेन्द्र भाई समग्र-सेवा की बात सबके सामने रख रहे थे। दूसरे जब सस्थात्मक कामों में लगे थे, तब वे सीधे देहात में जाकर देहाती बनने की बात रख रहे थे। इस प्रकार उनके प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक ही था। बापू की मृत्यु के बाद वर्धा की संस्थाएँ उनसे अधिकाधिक मार्गदर्शन प्राप्त करने लगीं। उन्होंने चरखा-संघ की अध्यक्षता स्वीकार की और देश भर में कताई मंडलों की स्थापना करके बहुत से नौजवानों को ढूँढ निकाला। सारे देश में दौरा करके गांधीजी का अर्थशास्त्र पूरी तरह समझाया। बाद में मिल-बहिष्कार आन्दोलन का सूत्रपात किया, जिसके अनुसार खाने-पीने एवं पहनने में मिल की वस्तुओं का उपयोग न करने का संकल्प हजारों व्यक्तियों ने लिया। विनोबाजी द्वारा भूदान-यज्ञ आन्दोलन शुरू किये जाने के पहले धीरेन् दा ने देशव्यापी वातावरण बनाने में बड़ा योग दिया।

कुमारप्पाजी के ६८वें जन्म-दिन पर मगनवाड़ी में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था कि 'बापू वक्त के लोग यदि अपने कपड़े मिट्टी में मैले करने को तैयार नहीं हैं, तो आखिर उन्हें रक्त में मैले करने की तैयारी रखनी होगी।'

वे शुद्र और मजूर के भेद को मिटाने के लिए युग की हाँक सबको सुनाते ही नहीं रहे, अपने साथ बहुतों को लेकर उस साधना में निकल भी पड़े। 'श्रमभारती' की स्थापना और उसका विकास इसी प्रयोग का प्रतिष्ठान है। यह कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है पर धीरेन्द्र भाई का [illegible] है, जो युग की समस्या का निराकरण करेगा।

[illegible] प्रकार में अपने बढ़ने वाले धीरेन्द्र भाई को यह पता [illegible] देर न लगी कि व्यक्ति का विकास समाज के विकास के साथ ही सम्भव है और ग्राम-समाज को सचेतन बनाने के लिए संस्थात्मक कार्य असफल रहा है। जहाँ भी संस्था बनी और ग्राम-सेवा का काम उसने हाथ में लिया, जन-अभिक्रम स्वयमेव समाप्त हो जाता है और सेवा संस्था "दाताओं" के हाथ में चलती रहती है। इस सबके अनुभव के बाद उन्होंने गाँव में व्यक्तिगत अभिक्रम के आधार पर नागरिक की भूमिका से जाकर सेवा-कार्य का रास्ता ढूँढ निकालने का बीड़ा उठाया है। उम्र के साथ उनकी ताजगी भी बढ़ती ही जाती है, तभी तो वे हम सबके प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं।

—देवेन्द्र कुमार गुप्त

चिर-युवा क्रान्तिकारी

मेरा धीरेन्द्र भाई से वह पहला ही सम्पर्क था। रात को लगभग १० बजे लालटेन की रोशनी कम करके सोने के लिए लेट गये। पर गप शप में, जो बाद में मुझे उन्हींसे पता चला कि उनका मूलोद्योग ही है, धीरेन् दादा का पेट नहीं भरा था। लेटे-लेटे ही बात शुरू हो गयी। बात बहस में बदल गयी और बहस में वय[illegible]यस्की, उसने मुझे जीवन का एक पहला अनुभव दिया, जो हमेशा उत्साह और साहस देता रहा। धीरेन दादा मुझ जैसे छोकरे से, जो तब उनकी उम्र का आधा ही था, इस तरह बात कर रहे थे, जैसे कि *एक बराबरी के साथी के साथ कर रहे हों।* बीच-बीच में वे उत्तेजित हो जाते और बिछौने पर उठ बैठते। उस बहस में भी क्या गर्मी थी! उन्होंने उस दिन मुझे शानदार बहस करने का अनुभव दिया। पहली बार जाने से बड़े के साथ बराबरी *का स्नेहपूर्ण साथ अनुभव कर रहा था।* मैं धीरेन् दादा का कायल हुआ। अगले दिन तो हम पुराने मित्र बन गये और मेरे मन में उनके प्रति स्नेहपूर्ण श्रद्धा पैदा हो गयी।

उन्हीं धीरेन् दादा के साथ आज, लगभग १५ वर्ष बाद भी जब बातचीत छिड़ जाती है, तब वही १९४५ वाले धीरेन् दादा की फिर याद आ जाती है। ६० साल में भी वे मुझसे कहीं अधिक जवान हैं, ऐसी प्रतीति देते हैं। वे सचमुच चिरयुवा क्रान्तिकारी हैं। उन्हें उनकी हीरक जयन्ती पर मेरे शत-शत प्रणाम!

—देवी प्रसाद

असम की चुनौती

सुरेशराम

गत जुलाई के पहले-दूसरे हफ्तों में असम में बड़ी भयानक घटनाएँ हुईं। कोई नहीं उम्मीद कर सकता था कि वहाँ ऐसी बातें भी हो सकती हैं। हमारे देश में असमवासी से ज्यादा सरल, निश्छल और श्रद्धालु लोग कम ही हैं। वैसे गुण-अवगुण सबमें ही होते हैं, लेकिन असम के लोग अपेक्षाकृत दृष्टि से, औरों के मुकाबले अधिक सीधे-सादे, नम्र और शान्त स्वभाव के हैं। लेकिन वहाँ जो हुआ उसके लिए केवल उन्हें ही दोषी ठहराना अन्याय होगा। आज भावावेश के कारण, न तो वहाँ के, न पड़ोसी बंग भूमि के अखबारों से ही सही तसवीर मिल पाती है। यह भी कहना कठिन है कि उस दुःखदायी काण्ड का श्रीगणेश कैसे और कहाँ से हुआ। लेकिन यह एक चुनौती है, जिसे नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता। उसी पर हम यहाँ संक्षेप में विचार करेंगे।

असम की पृष्ठभूमि समझने के लिए चन्द बातों पर ध्यान देना अनुचित न होगा। इससे इस काण्ड के कारणों पर भी कुछ झलक पड़ जायेगी। हर कोई जानता है कि असम में अपने राज काज के काम के लिए अंग्रेजों ने बंगाल के शिक्षित समुदाय का उपयोग किया। शासन में अंग्रेजों के नीचे अनेक छोटे-बड़े पदों पर उनका जम जाना प्राकृतिक था। सरकारी नौकरी में, कचहरियों में, रेलवे आदि में, बंगला भाषा-भाषी ज्यादातर रहे। साथ ही, लेन देन और व्यापार का काम मारवाड़ के बन्धुओं ने बंगाल की तरह असम में भी अपने हाथ में ले लिया। इस प्रकार बैर असमी भाइयों के पास धन-सम्पत्ति का सबल होता [illegible], जिसमें असम-निवासियों का थोड़ा-बहुत शोषण होना स्वाभाविक था, जिसके उनको [illegible] ही मन ही मन क्षोभ होता था। मगर अधिकांश प्रवासी बंगला सज्जनों के सद्व्यवहार के कारण वातावरण में कोई तनातनी पैदा नहीं हो पाती थी।

लेकिन स्वराज्य के बाद हर भाषा-भाषी ने अपने अलग सूबे की माँग शुरू की। यह उचित और ठीक भी था। दुर्भाग्य से राजनीति के दाँव-पेंच और सत्ता की आकांक्षा ने इसे तीव्र और संकुचित कर दिया। सत्ता की प्राप्ति के लिए हर चीज सही मानी जाती है। अंग्रेजी में कहा भी है—प्रेम और बैर में जो करो सो ठीक है।' सत्ताधारी कांग्रेस दल ने देश के अन्य प्रदेशों की तरह, असम में भी, दलबन्दी या गुटबाजी ने और पकड़ा। [illegible] जो मुख्य मंत्री हैं, उनको हटाने की जोड़-तोड़ करने में, उनके ही दल के अन्दर, विरोधियों का एक गुट बन गया। दोनों गुट एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करते। असम के मुख्य मंत्री एक

लोग्य, कर्मण्यरायण और निराकार मनुष्य है। लेकिन सत्ता तो काजल की कोठरी है, जिसमें घुसने से सभी पर लीक लग ही जाती है। उनके विरोधी गुट ने उनके खिलाफ नथ-गूड़ का मार्ग लेना शुरू किया, जिसका हुन्नोद्देश्य उनके ध्याने हमदर्दों को देना ही पड़ता था। दो के ज्ञाव में चार से, चार का आठ से इत्यादि यह क्रम चला।

कांग्रेस के अन्दर की यह गुटबंदी और सौदेबाजी अन्य राजनैतिक दलों से छिपी नहीं रह सकती थी। न वह उसका लाभ उठाने का प्रयत्न कर सकते थे। उनका यह सोचना भी राजनीतिक दृष्टि से स्वाद-युक्त था कि शायद इन दोनों की आपसी कशमकश में हम इसकी जड़ ही साफ कर दें और फिर खुद अपना बहुमत बना कर सत्ता पा जायें। इस वास्ते प्रजा-समाजवादी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी, रेवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी (क्रांतिकारी समाजवादी) आदि सभी ने इसमें दिलचस्पी ली और आग में घी डालने लगे—किसीने ज्यादा, किसीने कम।

वातावरण जहरीला होता गया। आग तैयार हो गयी। चिनगारी की देर थी। वह चिनगारी शिलांग की एक विचित्र घटना से मिल गयी—असमी भाषा व साहित्य के अपमान में, बंगला-भाषियों का एक जुलूस और प्रदर्शन! इस अभिनय से सभी बंगाली भाई सहमत नहीं थे। अनेकों को उसका विचार तक नापसन्द था। लेकिन आज अपने देश में कहीं भी सज्जनों में इतनी शक्ति नहीं है कि दूसरा गलत काम करता हो, तो उसे रोक सकें। चार मनचले एक हजार की सभा को उखाड़ सकते हैं। यही हाल शिलांग में हुआ—जुलूस निकला और आग भड़क उठी। हो सकता है कि इस जुलूस के पीछे भी आपसी गुटबन्दी या पक्ष-द्वन्द्व, राजनीति की चालें रही हों। जो भी हो, एक मौका मिल गया और इसके जवाब में गौहाटी नगरी में योजना तैयारी की गयी, नवयुवकों का आवाहन किया गया और तदनुसार जिम्मेवारियाँ बाँटी गयीं। चार दिन के अन्दर क्या से क्या हो गया—असम में वह हुआ, जो न कभी देखा था, न सुना। देश के नाम सदा के लिए एक धब्बा लग गया।

इतना होने पर भी कुछ ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि मानवता की ज्योति अभी तक टिमटिमा रही है और मानव-हृदय पत्थर नहीं हो गया है। पीड़ित बंगाली नर नारियों को असमी भाई-बहनों ने कहीं-कहीं शरण दी है। कहने की जरूरत नहीं कि परिस्थिति से मजबूर होकर आदमी लाचारी में क्या से क्या कर बैठता है। मगर उससे उसका वास्तविक स्वरूप नहीं आँका जा सकता।

यह भी जाहिर है कि ऐसे काण्डों में भाग लेने वाले देहात के निवासी बिना सोचे-समझे ही फँस जाते हैं। जिनके हाथ में नेतृत्व होता है, वे इस तरह भड़काते हैं कि वे मजबूर हो जाते हैं। लेकिन यह क्यों? क्योंकि अभी तक आप गरीब भाई-बहनों को, देहात के लाखों-करोड़ों को हम स्वराज्य की हरारत महसूस नहीं करा सके हैं। स्वराज्य से उनको कोई स्पष्ट लाभ नहीं पहुँचा है। उल्टे, पढ़े-लिखे और व्यापार-कुशल लोगों ने उनके अज्ञान व दारिद्र्य का अपने ही स्वार्थ में दुरुपयोग किया है। भारत देश की भव्य तामनहल की नींव को—जिसमें यह दुखिया और मुखिया लोग हैं—मजबूत बनाने के लिए कोई कारगर कदम नहीं उठाया जा सका।

फिर सवाल उठता है कि हमारे नवयुवक क्यों ऐसे ऊटपटांग कामों में शामिल हो जाते हैं? क्योंकि उनके सामने कोई निश्चित उद्देश्य नहीं है, कोई अच्छा उदाहरण नहीं है, कोई स्फूर्तिप्रद प्रेरणा नहीं है। जिनके हाथ में शासन की बाग-डोर है, उनके जीवन से उनको कोई उत्साह नहीं मिलता। नेताओं की आपसी खींचातानी और ऐश्वर्य का उन पर गलत असर पड़ना लाजिमी है। न शिक्षा ही ऐसी है कि पराक्रम करने की उमंग पैदा हो। समाजवादी ढाँचे का उद्घोष वह सुनते जरूर हैं, मगर उसके लिए कोई त्याग या तपस्या नहीं दीखती। केवल कानून बनाने या टैक्स-वृद्धि के बल पर किसी आदर्श की सिद्धि नहीं की जा सकती। विपरीत आचरण और बढ़ती हुई विषमताएँ देख कर उन्हें वेदना होती है।

ऊपर के विवेचन की रोशनी में जब विचार करते हैं, तो असम की घटनाओं के तीन मुख्य कारण दीखते हैं (१) हमारी सियासत या राजनीति, (२) हमारी भयानक गरीबी और विषमता, (३) आदर्श के लिए त्याग का अभाव। ये ऐसी बातें हैं जो सारे देश में मौजूद हैं और जरा चिनगारी लगे, तो कहीं भी आग फैल सकती है। आज हमारे देश में जो शान्ति है वह ऊपर-ऊपर की है। नीचे-नीचे ज्वालामुखी तैयार हो रहा है, जो किसी भी समय, कहीं भी फट सकता है। इस वास्ते बहुत सावधानी की जरूरत है और अपनी नीति व ढंग में मौलिक परिवर्तन की जरूरत है।

जो हुआ सो हुआ, लेकिन अब आगे की सँभाल करनी है। स्वराज्य की ज्योति को सुदूर देहात की हर झोपड़ी में पहुँचाना होगा, ताकि जन-जीवन में प्राण का संचय हो। जो राजनीति या सियासत और सत्ता-मूलक संसदीय प्रजातंत्र चल रहा है, इसको आमूल बदलना होगा। पश्चिमी लोकतंत्र की यह कलम अपने देश को अनुकूल नहीं पड़ रही है। बहुमति और अल्पमति का आधार छोड़ कर सर्वसम्मति या सुमति की बुनियाद पर सारी इमारत खड़ी करनी होगी। आर्थिक और औद्योगिक तौर-तरीके भी बदलने होंगे, ताकि गाँव-गाँव के योग अपने ही बल पर अपने खाने-कपड़े-मकान, अपने पोषण शिक्षण-रक्षण की व्यवस्था कर सकें। साथ ही, सत्ता की आकांक्षा, सत्ता के द्वारा ही सेवा सम्भव मानना, सत्ता के बिना कुछ भी न कर सकना, ये खेदपूर्ण प्रवृत्तियाँ हैं, जिनको बढ़ने से रोकना होगा। असम के जैसे काण्ड इन प्रवृत्तियों के कारण ही पनपते हैं। इनको अगर रोका नहीं गया तो ये कभी भी, कहीं भी, ऐसा उग्र रूप ले सकती हैं कि देश की आजादी खतरे में पड़ जाये।

असम की घटनाएँ हमारे भीतरी रोग की पहचान हैं। इनका स्पष्ट संकेत है कि हम रोग विरोधियों की जड़ पर प्रहार करना जरूरी है और आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक, सभी दृष्टियों से देश का कायापलट करनी होगी। इन घटनाओं को हम एक चुनौती समझते हैं। ये हमें सोते से जगाने के लिए आती हैं। दृढ़ता और भक्ति के साथ, अगर हम लगेंगे तो व्यथित विषाद दूर होगा, लोक मानस का सही निर्माण होगा और हमारा दुःख दारिद्र्य भी मिटेगा।

बागी क्षेत्र की परिस्थिति

स्वामी कृष्णस्वरूप, अध्यक्ष, चम्बल घाटी शांति समिति

भिण्ड-मुरैना एवं आगरा जिले की बाह तहसील में बागियों और पुलिस द्वारा होने वाले अन्यायों के परिणाम न केवल इस क्षेत्र के रहने वालों को, बल्कि आस-पास के निवासियों को भी भुगतने पड़े हैं!

इस स्थिति का सामना अहिंसक शक्ति से किया जाय, इस तरह का प्रस्ताव बाबा राघवदासजी के सामने सन् '५६ के दिसम्बर मास में इटावा के लोकसेवक भाई महावीर सिंहजी ने रखा था। बाबाजी ने इसके बारे में आश्वासन भी दिया था। दुर्भाग्य से कुछ दिनों बाद ही बाबाजी का निधन हो गया। उधर यहाँ की स्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ती गई। सन् १९५९ में प्रांतीय शान्ति-सैनिक शिविर में, जो पसना, जिला इलाहाबाद में बहन मार्जरी साइक्स के मार्गदर्शन में हुआ था, आगरा जिले के निवेदक श्री चिम्मनलाल ने बाह क्षेत्र की समस्या प्रान्तीय शान्ति-सैनिकों के सामने रखी थी। उसके बाद बाबा के सान्निध्य में पठानकोट में एक बैठक हुई, जिसमें दूसरे पक्षों द्वारा किये गये शान्ति-प्रयासों की चर्चा भी बाबा के सामने आई। इस बैठक में भिण्ड जिले के श्री हरिसेवक मिश्र, अध्यक्ष जिला कांग्रेस कमेटी व शान्ति-सैनिक मेजर जनरल श्री यदुनाथ सिंहजी भी शामिल थे। इन प्रयासों के फलस्वरूप विनोबा ने इस क्षेत्र में आना तय किया, और मई १९६० के प्रथम सप्ताह में आगरा से यह शान्ति-यात्रा प्रारम्भ हुई, जिसके परिणामस्वरूप बागियों का आत्म-समर्पण हुआ।

आत्म-समर्पण की बाधक शक्तियाँ

इस पूरे क्षेत्र में बागियों का इतना प्रभाव है कि उनसे कोई राजनीतिक दल बचा हुआ नहीं है। कई वर्षों से ये लोग और इनके रिश्तेदार, मित्र आदि इनसे हर प्रकार का नाजायज लाभ उठाते रहे हैं। दुर्भाग्य से विभिन्न स्वार्थी लोग इस बागी वर्ग का इस्तेमाल करते रहे हैं। इस तरह विभिन्न स्वार्थी तत्त्वों के कारण ये लोग भाड़क अपराध भी किया करते थे। बागी जातीय आधार पर इन्हीं तत्त्वों द्वारा आपस में लड़ाये भी जाते रहे हैं, जिसका विषैला प्रभाव आज भी पूरे क्षेत्र में व्याप्त है। लोगों का यह भयमिश्रित प्रश्न कि ब्राह्मणों का गिरोह हाजिर हो गया है, पर ठाकुरों का अभी मौजूद है, इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है कि इस विष-वृक्ष की जड़ें कहाँ तक पहुँच गई हैं। हम लोगों के सामने यह समस्या एक चुनौती के रूप में है।

बागियों द्वारा भाड़क अपराधों की वृद्धि ज्यों-ज्यों होती गई, त्यों-त्यों पुलिस-हस्तक्षेप भी बढ़ता गया और यत्र-तत्र उनके द्वारा भी ऐसे काण्ड हुए कि जो बागियों से कम नहीं थे। धीरे-धीरे सारे क्षेत्र में दो वर्ग ही बन गये, एक पुलिस व उसके साथियों का, दूसरा बागी और उनके साथियों का। इन्हीं दोनों वर्गों के बीच सारा समाज भय, आतंक और उत्पीड़न से पिसता रहा है। यहाँ का लोकजीवन मृतप्राय हो चुका है। सर्वत्र इन्हीं वर्गों की चर्चा रहती है, सभी के मन आशंकाओं से भरे रहते हैं। इस समय हवा बदली है। सारे क्षेत्र में एक आशा भरा वातावरण बना है। लोगों के दिल दिमाग कुछ जीवन के बारे में भी सोचने-विचारने लगे हैं।

शांति-प्रयास के अनुभव

बाबा द्वारा घोषित १० व्यक्तियों की शांति-समिति ने इस क्षेत्र में अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इस समय उनके सामने हाजिर हुए लोगों की पैरवी का सवाल इतना जटिल बना है कि वे दूसरे कामों में (जैसे पुनर्वास तथा शांति-स्थापन) कुछ नहीं कर पा रहे हैं। हमारे पास कार्यकर्ता-शक्ति भी कम है। हम चाहते हैं कि पूरा समय देने वाले कम-से-कम २० कार्यकर्ता हों। वैसे मेरा विचार है कि इस क्षेत्र के पीड़ित ग्रामों में से प्रत्येक ग्राम में एक-एक कार्यकर्ता बैठे और थाने के स्तर पर करीब पाँच साथियों की टोली बैठे, जो समय-समय पर घूमती रहे, और वहाँ बैठ कर भी काम करे, गाँव में बैठे कार्यकर्ताओं को आवश्यक मदद भी दिया करे।

हमारा अनुभव है कि इस क्षेत्र में मानसिक शान्ति के लिए परिव्राजकों जैसी एक जमात खड़ी होनी चाहिए, जो घूम-घूम कर सर्वत्र धार्मिक विचारों के आधार पर शांति का विचार फैलायें। यहाँ पढ़े लिखे लोग बहुत कम हैं। रामायण, भागवत जैसे ग्रन्थ लोगों को प्रेरणा दे सकते हैं तथा भजन, कीर्तन-मण्डलियों से प्रचार किया जाय, तो अच्छा असर पड़ सकता है।

किशोरलाल भाई मशरूवाला की स्मृति में

नौ सितम्बर को हम उनका पुण्य-स्मरण करें !

गोपाल कृष्ण मल्लिक

जो यथासंभव सबके लिए निर्वैरता और अविरोध की नीति का अनुसरण जीवन भर निरन्तर करते हुए परम साधना में लीन रहे आज उन्हीं की पुण्यतिथि है। इस नीति के अनुसरण करने की इच्छा रखते हुए भी यह वृत्ति मनुष्य के स्वभाव की विशेषता बन पाना बड़ा ही कठिन होता है। विरोधी के प्रति मन में कोई-न-कोई गाँठ या शिकन रह ही जाती है। इसलिये मनुष्य विरोधी अथवा प्रतिपक्षियों से खुले दिल से मिल नहीं पाते, मिलने पर भी दिल खोल कर बोल नहीं सकते। किन्तु स्व० किशोरलाल भाई के जीवन और दर्शन में ऐसी त्रुटियाँ शायद ही किसी को दिख पायी हों, क्योंकि वे किसी को अपना विरोधी नहीं मानते थे। उन्हें कोई अपना विरोधी मानते भी हो, तो भी उनके प्रति उनका व्यवहार अत्यन्त ही स्नेह तथा उदारता का होता था। वे इस बात की हमेशा चिंता रखते थे कि छोटे माने जाने वाले व्यक्ति के प्रति उनके हाथ से कोई अन्याय न हो। विचार एवं व्यवहार में भी कदाचित् ऐसा अन्याय उनसे न हो, इसका सूक्ष्म विवेचन और आत्म-परीक्षण वे निरन्तर करते रहते थे। इसलिये उनका क्षणिक संपर्क भी किसी को आत्मीयता से भरा और ऊँचा ही उठाने वाला प्रतीत होता था।

किन्तु जिस प्रकार निर्वैरता की भावना उनके जीवन में सिद्ध हुई थी, सत्य-निष्ठा भी उनकी वैसी ही पक्की थी। अतः सत्य के लिये किसी भी व्यक्ति के *खिलाफ मत प्रकट करने में उन्हें कभी* संकोच या भय नहीं हुआ। जैसा ही सत्य निष्ठ और निर्भय तथा निर्वैर बनने के लिये खुद प्रयत्नशील रहते, दूसरों को भी वैसा ही सत्य निष्ठ, निर्भय एवं निर्वैर बनाने की कोशिश वे करते थे। खुशामद की भावना से उन्होंने अपनी राय कभी नहीं छिपायी। किसी के सामने कभी हाँ-जी, हाँ-जी भी नहीं करते थे। इतनी दृढ़ सत्य-निष्ठा रखते हुए भी जितनी बने उतनी मृदुता और नम्रता से अपना विरोध प्रकट करते थे। इस कारण किसी के मन में उनके प्रति द्वेष की भावना उठने के बजाय आदर ही पैदा होता था।

एक यह भी बड़ा गुण उनमें था कि *अपनी गलती का भान होते ही उसे कबूल* कर उसकी सफाई करने में उन्हें कभी हिचक और संकोच नहीं हुआ और जहाँ कहीं भी अनीति तथा दोष प्रतीत होता हो, उसे तुरन्त कहने तथा सच्चाई प्रकट करने को वे बेचैन हो जाते थे। चाहे खुद *हो या कोई* [illegible] *कोई दूसरा व्यक्ति हो,* वे सफाई चाहते थे। इतने वे स्पष्ट और निर्भीक थे, फिर भी मृदुता और सरलता के गुण के कारण स्पष्टवादी होते हुए भी सर्वप्रिय बने रहे। इस तरह सत्य-शोध की सच्ची लगन और ईश्वर-दया की अगाध श्रद्धा ने उन्हें सफलता [illegible] तथा हर विचार को शांति एवं संतोष के साथ सहने की क्षमता प्रदान की थी।

[illegible] सादे स्वभाव वाले सौम्य और सरल स्वभाव के वे ऐसे थे कि [illegible] उनके जीवन का स्वाभाविक गुण बना हुआ था। आत्म-संयम तथा कष्ट-सहन की क्षमता उनमें [illegible] अलौकिक थी। उनमें परिलक्षित होने वाले इन गुणों ने उनके जीवन में मानवता को वह विशेष महत्त्व एवं तत्त्व प्रदान किया था कि जो परम पुरुषार्थ की वस्तु जीवन-काल के बाद भी कायम रहती है। अपनी आत्मा की उदात्तता की सिद्धि के लिये किशोरलाल भाई युग-युग तक *याद किये जायेंगे। किन्तु अहिंसा की विरल* साधना तथा सत्य साधना की उनकी प्रखरता उनमें सबसे आगे रहेगी। सत्य की प्रखरता और मृदुता के लिये संत ज्ञानेश्वर ने *पानी के गुण से इनकी उपमा की* है। पानी की मृदुता आँख जैसे कोमल वस्तु को हानि नहीं पहुँचाती है, किन्तु उसकी प्रखरता ऐसी होती कि पहाड़-*पत्थर तक को तोड़ फोड़ कर कितनी खाइयाँ* पाट देती, कितनी चट्टानों को सुरंग बना डालती है। ऐसी प्रखरता, मृदुता, क्षमा और तेज, जो मनुष्य-जीवन के पुरुषार्थ की *विशेषता की सबसे बड़ी कसौटी है,* उनके जीवन तथा स्वभाव में सिद्ध हो चुकी थी।

सब मिला कर वे एक तेजपुंज थे। इसलिये वे *मार्ग-दर्शक* भी थे और मार्ग-दर्शक का गुण उनके स्वभाव का वह विलक्षण-पुट था कि वे सारे संसार में फैले गांधी विचारवालों का ही नहीं, वरन् कितने शराबी, जुआरी, साधु, चोर, संत, पूँजीपति, मजदूर, त्यागी, ईमानदार और बेईमानों के भी मार्गदर्शक बने थे। ऐसे तथा विभिन्न दलों के कितने सारे कार्यकर्ता, विचारक, सत्यशोधक, साधक तथा सेवकों से पत्राचार द्वारा निरन्तर उनका संबंध जुटा रहता था और विश्व भर के विशाल गांधी-कुटुम्ब को जोड़ने वाली वे मजबूत कड़ी ही बने थे।

वे किसी के मन-पसंद की बात नहीं करते, नहीं कहते, फिर भी सब उनकी ओर मुड़ते रहते, आकर्षित होते। निरन्तर दम घुटने वाला और पल-पल पर प्राण आने वाले इस *प्राण की साधना ही नहीं,* कार्य-शक्ति भी अद्भुत थी, जिसकी प्रशंसा गांधीजी भी किये बिना नहीं रह सके। "उन्होंने अपने स्वास्थ्य के प्रति पूरी लापरवाही रख कर सदा अपना द्वार सत्यशोधक के लिये खुला रखा। अनेक मित्रों के जीवन की समस्याओं को सुलझाने में उनका बहुत-सा समय बीत जाता है और दिन ढले वे लस्त होकर पड़ जाते हैं।" कमठ-से-कमठ और अत्यधिक शक्तिवान कार्यकर्ता भी इनकी बराबरी शायद ही कर सकते।

इस तरह वे बापू के मार्ग पर चलते *चंदन की तरह घिस-घिस कर* शुद्ध और निर्मल बनते रहे। सुगंध उनमें भरा था, जिसका परिमल सुवास वे चारों ओर बिखेरते रहे। वह महान् तत्त्वदर्शी, विचार-शील मनीषी अपनी ताकत से अधिक मानवता के लिए घिस-घिस कर खटते रहे। ऐसे आदर्श-जीवी श्रेष्ठ मानव, [illegible] साधक या सेवक का पुण्य-स्मरण कर हम क्या कभी अघायेंगे? संयमित और दृढ़ संकल्प से प्राप्त कर उन्हें अर्पित की गई हमारी श्रद्धांजलि स्वीकार्य हो।

बाबा के नाम और काम से देश की जनता काफी परिचित हुई है। इस समय [illegible] कर हमें काम को व्यापक रूप से बढ़ाना चाहिए। परिस्थिति ऐसी है कि यदि हमारे साथ पुलिस का अच्छा सहयोग नहीं रहा, तो हमें सफलता विलम्ब से मिलेगी। [illegible] में दोनों पक्ष एक दूसरे पर अविश्वास करते हैं, एक दूसरे से आतंकित हैं। और एक दूसरे को नुकसान पहुँचाने के प्रयत्न में रहते हैं। दोनों पक्षों ने ही एक-दूसरे के [illegible]-सम्बन्धियों तथा मित्रों को लूटा, [illegible] तथा कत्ल तक किये हैं। इन [illegible] से ही एक पक्ष दूसरे के पास आने से [illegible] है। यदि इन दोनों पक्षों के [illegible] समाज संगठित प्रेम एवं विश्वास का प्रयोग नहीं करेगा, तो यह स्थिति और [illegible] हुई है बिगड़ भी सकती है। इसलिए [illegible] की सबसे अधिक आवश्यकता [illegible] सज्जन शक्ति को जगाना तथा [illegible] को आपस में नजदीक लाने की है। [illegible] में सरकार (पुलिस) की सहायता [illegible] आवश्यक है। हम और हमारे [illegible] रहे हैं।

[illegible] क्षेत्र में कोई राजनैतिक दल [illegible] का नाजायज लाभ न उठा सके, [illegible] लिए हमें सजग रहना [illegible]। [illegible] क्षेत्र के पुराने विरोधों और [illegible] भावनाओं को उभाड़ कर ये [illegible] स्थिति को पुनः बिगाड़ सकते हैं। [illegible] होने पर इससे भी [illegible] को [illegible] है। क्षेत्र में मानसिक क्रान्ति के लिए विचार-प्रचार तथा आर्थिक क्रान्ति के लिए उद्योग-धंधों, रोजगार के साधनों और [illegible] के प्रसार [illegible] की नितांत आवश्यकता है।

अखण्ड पदयात्रा

उत्तर प्रदेश

बाबा राघवदास के निधन के बाद उनके सच्चे स्मारक के रूप में १५ अगस्त, '५८ से श्री पुजारी राय के नायकत्व में दो वर्षों से लगातार उत्तर प्रदेश के हर जिले में प्रदक्षिणा करती हुई विचार से विचार में परिवर्तन का संदेश फैलाती हुई अखण्ड पद-यात्रा टोली ३ सितम्बर को प्रातः मुगलसराय से काशी आयी। प्रातः ७ बजे राजघाट, पुल के समीपवर्ती अ० भा० सर्व सेवा संघ के साधना-केन्द्र में, साधना-केन्द्र के व्यवस्थापक श्री कृष्णराज मेहता और सर्व सेवा संघ के कार्यालय-मंत्री श्री श्यामाचरण शास्त्री तथा वहाँ के साधकों, कार्यकर्ताओं तथा नगर के सर्वोदयप्रेमियों द्वारा आगत जनों का स्वागत हुआ। स्वागत-कार्यक्रम बड़े ही भाव भीने वातावरण में मौन प्रार्थना के बाद कबीर के इस भजन से आरंभ हुआ "सब तीरथ हैं घट के भीतर।"

श्री करण भाई ने स्वागत-भाषण में कहा कि इन अखण्ड पदयात्रियों का समूह चित्त निर्माण पर व्यापक असर डालता है। तत्काल कोई असर न दीखे, पर बीज रूप में इसके अंकुर भविष्य में प्रकट होते हैं। श्री पुजारी रायजी ने कहा कि उनकी पद-यात्रा मूल रूप में स्वचित्त निर्माण की दिशा में बराबर चली है। किसी पर कोई एहसान की भावना न रखते हुए सबके प्रति समभाव और अनाग्रह की भावना प्रेरणा-स्रोत रही। जिस प्रकार श्रमिक काम करते-करते तन्मय हो जाता है, उसी तरह की उनकी तन्मयता रही।

इस पदयात्रा-टोली ने शाम को ५ बजे टाउन हाल में आयोजित नगर के सर्वोदय-प्रेमियों की सभा में भाग लिया। ११ सितम्बर 'विनोबा जयन्ती' के दिन इस अखण्ड पद-यात्रा की परिसमाप्ति होकर उसी के दूसरे दिन से दूसरी अखण्ड प्रादेशिक पदयात्रा आरंभ होगी, जिसमें नायक समय-समय पर बदलते रहेंगे।

जौनपुर में सर्वोदय-प्रचार

जौनपुर में उत्साही युवकों के प्रयास से एक सद्भाव-गोष्ठी की स्थापना की गयी है। हरएक रविवार को युवक-गण आध्यात्मिक और सामाजिक विषयों पर चर्चा कर सकें, यह इस गोष्ठी का उद्देश्य है। गोष्ठी के तत्त्वावधान में एक सार्व-जनिक वाचनालय भी चल रहा है, जहाँ सर्वोदय-विचार संबंधी पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती हैं। कार्यकर्ताओं ने यह तय किया है कि सर्वोदय-विचार प्रचार के लिए और सर्वोदय-पात्रों की स्थापना के लिए संगठन रूप में प्रयत्न करना चाहिए। इस गोष्ठी के कारण नगर में एक [illegible] का सौमनस्य निर्माण हो रहा है।

मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

ी : शुक्रवार १६ सितम्बर '६० वर्ष ६ : अंक ५०

। की छाया में बापू की राह !

निर्मला देशपांडे

"कस्तूरबाग्राम में अच्छी चर्चा हुई, बहुत अच्छे ढंग से हुई और कस्तूरबा ट्रस्ट ने बहुत ही अच्छे फैसले किये। उन्होंने शान्ति-सेना का काम उठाने की जो प्रस्ताव, वह एक बहुत बड़ा और अत्यन्त उचित प्रस्ताव है, क्योंकि अहिंसा के काम में स्त्रियाँ ही आगे आनी चाहिए। एक बहुत बड़ी चीज यह हुई कि उन्होंने सारे फैसले सर्वानुमति से किये।"—कस्तूरबाग्राम की २९ अगस्त की प्रार्थना-सभा में विनोबाजी ने यह कह कर ट्रस्ट को बधाई दी।

कस्तूरबाग्राम में विनोबाजी सात दिन रहे। ट्रस्ट की प्रान्तीय प्रतिनिधि कार्यकर्ताओं के सदस्य तथा देश भर की प्रमुख कार्यकर्त्री बहनें इकट्ठी हुई थीं। भविष्य के कार्य की दिशा निश्चित हुई। जो निर्णय लिये, उनसे विनोबाजी को बहुत संतोष हुआ। सबसे बड़ा निर्णय था शान्ति-सेना के काम को उठाने का। ट्रस्ट की तरफ से राजघाट वाराणसी में अखिल भारत शान्ति-सेना विद्यालय खोला जायगा, जहाँ ट्रस्ट की सेविकाएँ तथा अन्य सेविकाओं को प्रशिक्षण दिया जायगा। यह कार्य विनोबाजी तथा अ० भा० सर्व सेवा संघ के मार्गदर्शन में चलेगा, जिसकी विशेष जिम्मेवारी निर्मला देशपांडे उठायी है। श्री शंकरराव देव, दादा धर्माधिकारी, सिद्धराज ढड्ढा तथा विमला ठकार का, जो साधना केन्द्र वाराणसी में रहते हैं, विद्यालय को मार्गदर्शन प्राप्त होगा। प्रशिक्षण अवधि पाँच महीने की रहेगी और हर साल २५-३० की दो दो टोलियाँ प्रशिक्षण पायेंगी।

ट्रस्ट की तरफ से यह भी निर्णय हुआ कि इन्दौर की सेवा में पाँच सेविकाएँ भेजी जायेंगी। यह भी तय हुआ कि ट्रस्ट की ओर से करीब २५ सेविकाएँ आसाम में शान्ति-स्थापना के काम के लिए भेजी जायेंगी। यह भी तय किया गया कि ट्रस्ट की तरफ से शासनमुक्त अहिंसक समाज रचना की स्थापना के लिए प्रयोग क्षेत्र के तौर पर छह क्षेत्र चुने जायेंगे। सम्भवतः इन्दौर के अलावा अहमदाबाद (गुजरात) के निकटवर्ती कोचा क्षेत्र, कस्तूरबाग्राम, इरोड (तमिलनाड) का क्षेत्र, विदर्भ का आश्रम क्षेत्र तथा महाराष्ट्र का सर्वोदय क्षेत्र और कोरापुट (उड़ीसा) का क्षेत्र लिया जायगा।

कस्तूरबाग्राम में देश के कोने-कोने से आयी हुई बहनों का चार दिन का शान्ति-सेना शिविर इसी समय लेने का तय हुआ, जिसमें सभी बहनों ने उत्साह से भाग लिया। शिविर का संचालन निर्मला देशपांडे ने किया। ३० अगस्त को प्रातःकाल पाँच बजे शिविर का आरंभ हुआ। "शान्ति के सिपाही चले, क्रान्ति के सिपाही चले," यह गीत गाती हुई विनोबाजी के साथ कदम मिलाती हुई चार-चार की कतार में आगे बढ़ने वाली स्त्री-सेना का दृश्य बड़ा ही प्रेरणादायी था। सितारों की छाया में नीरव शान्ति की गंभीरता को बढ़ाने वाली धुन आरंभ हुई। 'भज मन राम-रहीम।' प्राची के मुख पर प्रथम प्रकाश-रेखा दिखाई देते ही कदम रुक गये। सभी की मिट्टी पर आसन लगाये बैठ गये। सारी बहनें उनके इर्दगिर्द आसनस्थ हो गयीं। उपोपासना का मौन संगीत तथा विनोबाजी का छोटा-सा प्रवचन समाप्त होते ही काफिला 'माचल' गाँव की तरफ आगे बढ़ा।

३० अगस्त से २ सितंबर तक कस्तूरबाग्राम की रमणीय प्रकृति की सन्निधि में 'शान्ति सेना-शिविर' में एकत्र रहने की बहनों के जीवन पर अमिट छाप रह गयी। शिविर में प्रतिदिन एक घंटा सामूहिक श्रम तथा सफाई का कार्यक्रम चलता था। प्रतिदिन दो बौद्धिक वर्ग होते थे, जिनमें शान्ति-सेना तथा सर्वोदय-दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा होती। शिविर-समाप्ति-समारोह, अमेरिका से आये हुए, विश्वशान्ति-आंदोलन के मंत्री श्री टैटम के भाषण से सम्पन्न हुआ, जिसमें उन्होंने गांधीविचार के पश्चिमी प्रयोगों की उद्बोधक जानकारी दी। अधिकतर बहनों ने 'स्थानिक शान्ति-सैनिक' बनने की इच्छा प्रकट की। विनोबाजी ने इंदौर में ही कहा था कि जो कार्यकर्ता शान्ति-सैनिक की सभी निष्ठाओं को मानता है और अपने स्थान की शान्ति की जिम्मेवारी उठाता है, वह यदि अपना स्थान छोड़ कर अन्यत्र नहीं जा सकता तो स्थानिक शान्ति-सैनिक बन सकता है।

विनोबाजी के कस्तूरबाग्राम के सात दिन के निवास की एक विशेषता थी, गीता के विभूतियोग में वर्णित नारी के सात गुणों पर सात प्रवचन। कीर्ति, श्री, वाणी, स्मृति, धृति, मेधा, क्षमा के प्रवचनों को बहनों ने पंचप्राणों को श्रवणेन्द्रिय में समेट कर ग्रहण किया। उसी तरह सन्ध्या-छाया में निकटवर्ती टीले की हरियाली पर, चारों ओर की मनोरम शोभा को निहारते हुए, विनोबा की अमृत वाणी को भी उन्होंने आकंठ प्राशन किया। ट्रस्ट की हर प्रदेश की प्रतिनिधि को विनोबाजी के साथ बारी-बारी से दिल खोल कर बातें करने का भी अवसर मिला था। सात दिनों के इस सुनियोजित निवास से सब बहनों को विनोबाजी के समीप जाने का अवसर मिला। बापू के साथ बरसों तक काम की हुई बहनों को वहाँ बीते हुए उस स्फूर्तिदायी जमाने की याद आयी, तो नई सेविकाओं को आनेवाले युग की झाँकी मिली।

कस्तूरबाग्राम के परिवार का परिचय देते हुए जब भूतपूर्व मन्त्री सुशीला पै ने कहा कि "यहाँ की विशेषता है प्रेममय वातावरण," तो विनोबाजी ने उन्हें बधाई देते हुए कहा, "प्रेम के बिना कोई भी प्राणी जी नहीं सकता। लेकिन हमें प्रेम की शक्ति को प्रकट करना है।" सुशीला बहन मंत्री न होते हुए भी उनके प्रेम की सत्ता बहुत चलती थी। सबका प्रेम तथा आदर हासिल कर उन्होंने सुयोग्य उत्तराधिकारी श्री राजलक्ष्मीजी को कारोबार सौंपा था, जिसे वे श्री श्यामलालजी तथा अन्य साथियों के सहयोग से सम्हाल रही थीं। कस्तूरबाग्राम की सेविकाओं के स्नेहशील आतिथ्य से सभी अतिथियों को महसूस होता था कि हम माँ के घर पहुँचे हैं।

बापू को अपने जीवन द्वारा सत्याग्रह के प्रथम पाठ पढ़ाने वाली माता कस्तूरबा की कन्याओं ने बापू के 'स्त्री अहिंसा की मूर्ति है।' इस वचन को साकार करने के लिए शान्ति-सैनिक बन अहिंसक वीरता का पथ अपनाने का जो निश्चय किया है, वह अहिंसा के इतिहास में नये अध्याय का आरम्भ करेगा। भविष्य के इतिहासकार लिखेंगे कि बापू नोआखाली के पथ पर अकेले ही आगे बढ़ते चले गये, लेकिन उनके चरण चिह्न ने कोटि-कोटि चरणों को चलाया।

कस्तूरबा-ट्रस्ट के निर्णय

अगस्त माह के आखिरी सप्ताह में विनोबाजी का कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) में सात दिन का पड़ाव रहा। उसी समय अखिल भारत कस्तूरबा-ट्रस्ट की प्रतिनिधि तथा सेविकाएँ वहाँ इकट्ठा हुई थीं। विनोबाजी के साथ ट्रस्ट की सभी बहनों ने सलाह-मशविरा, चर्चा आदि करके नीचे लिखे कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिये हैं।

(१) अखिल भारत कस्तूरबा-ट्रस्ट शान्ति-सेना का काम उठाने का निश्चय करता है।

(२) कस्तूरबा-ट्रस्ट ने यह निश्चय किया है कि ट्रस्ट की ओर से अ० भा० शान्ति-सेना विद्यालय, वाराणसी में प्रारम्भ किया जाय, जिसमें बहनों को प्रशिक्षण दिया जायगा। यह विद्यालय सम्भवतः दिसम्बर, '६० में शुरू होगा।

(३) कस्तूरबा-ट्रस्ट ने यह भी तय किया है कि ट्रस्ट की ओर से ६ क्षेत्रों में सघन रूप से कार्य किया जायगा। दो महाराष्ट्र में तथा गुजरात, तमिलनाड, उड़ीसा और मध्यप्रदेश में एक-एक स्थान शासनमुक्ति प्रयोग के लिए चुना जायेगा।

तारीख ३१ अगस्त से ३ सितम्बर तक चार दिन कस्तूरबाग्राम में शान्ति-सेना शिविर अखिल भारत शान्ति-सेना मण्डल की सहसंयोजिका सुश्री निर्मला देशपांडे के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। शिविर यशस्वी रहा। करीब-करीब सब सेविकाएँ, जिन्होंने इसमें भाग लिया, उन्होंने अपने नाम शान्ति-सेना में दर्ज कराये। इस प्रकार करीब १२५ बहनें शान्ति-सैनिक बनीं।

कस्तूरबा-ट्रस्ट की ओर से कुछ बहनें आसाम में शान्ति-सेना के काम के लिए रवाना हो गयी हैं।

इन्दौर शहर को सर्वोदय नगर बनाने का जो प्रयत्न हो रहा है, उसमें हिस्सा लेने के लिए भी कस्तूरबा-ट्रस्ट की ओर से कुछ बहनों को इन्दौर शहर में भेजा जा रहा है।

इस अंक में

इन्दौर में विनोबा : ३

मणीन्द्र कुमार

२४ जुलाई से ७ अगस्त तक का पूरा समय विनोबाजी ने इन्दौर में सर्वोदय की दिशा में कैसे काम हो, इस पर विभिन्न पहलुओं से विचार करने में दिया। विभिन्न व्यक्तियों और तबकों से मुलाकातें हुईं। बाबा कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन, सलाह आदि देते रहे। इस अवधि में पूरी एकाग्रता से इन्दौर की सेवा में बाबा लग गये, यहाँ तक कि पत्र-व्यवहार के लिए भी उन्हें समय नहीं मिला। वैसे वे २४ अगस्त तक इन्दौर में रहने वाले हैं, फिर भी जैसा उन्होंने स्वयं कहा था : "८ अगस्त से २४ अगस्त तक इन्दौर में मेरी उपस्थिति का जितना लाभ यहाँ के लोग उठा सकते हैं, उठायें।" ८ अगस्त से १४ अगस्त तक पंजाब के ४५ प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ताओं का शिविर सीधे बाबा के मार्गदर्शन में चला। फिर भी बाबा के दो कार्यक्रम इन्दौर के लिए निश्चित ही रहे। यद्यपि अब बाबा की प्रातःकालीन पदयात्रा और कार्यक्रम नगर के विभिन्न वार्डों में न होकर कुछ संस्थाओं में होते रहे। सायंकालीन प्रार्थना-प्रवचन 'विनोबा-निवास' सफेद कोठी पर नित्य चलता रहा, जिसमें इन्दौर के कुछ नागरिक जिज्ञासु भाव से नित्य भाग लेते रहे। इन दो कार्यक्रमों के अतिरिक्त चर्चाओं का लाभ इन्दौरवालों को सहज मिलता ही रहा।

पंजाब के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए बाबा ने कहा, "जितना जनमत आज हमारे अनुकूल है, उतना आठ-दस बरस पहले नहीं था और अब अनुकूलता के लायक हमें बनना है, इसलिए हमारी जिम्मेदारियाँ भारी बढ़ गयी हैं।" इसी सन्दर्भ में उन्होंने कहा, "पुलिस, सेना और कोर्ट—ये शासन के मुख्य अंग हैं, तथा इन्हीं के सहारे कानून व व्यवस्था की स्थापना होती है। मैं चाहता हूँ कि किसी भी जिले या जिले के डिवीजन, ग्राम में, शहर में या कहीं एक जगह तो ऐसी बनायी जाय, जहाँ का जीवन पुलिस और सेना—शासन के इन दोनों अंगों से मुक्त हो। वहाँ करुणा हो तथा नागरिक अपने झगड़े कोर्टों में न ले जाते हुए समझौते से समाधान कर लें।"

एक बार कार्यकर्ताओं से बाबा ने कहा, सर्वोदयनगर की एक कसौटी यह भी है कि यहाँ के झगड़े कोर्टों में न जायें। आज की न्याय-व्यवस्था में हो सकता है कि न्याय मिल जाये, किन्तु समाधान किसी का नहीं होता। न्याय तो भगवान ही कर सकता है। हमें चाहिए कि नगर के पाँच-सात सर्वमान्य व्यक्तियों का 'पैनल' बनाकर सारे झगड़ों का निपटारा करा लें, ताकि दोनों पक्षों को समाधान मिल सके।

आज दुनिया में विश्वास की बेहद कमी है। आजकल तरह-तरह की परिषदें व सम्मेलन आदि जागतिक स्तर पर होते रहते हैं, किन्तु वे विश्वास के अभाव में असफल रहते हैं। यही बात छोटी-छोटी संस्थाओं और आश्रमों पर भी लागू होती है। इसलिए आज बाबा 'सहचित्त' बनाने के लिए जोर देते हैं। एक दिन एकचित्त, समानचित्त और सहचित्त पर बोलते हुए उन्होंने बताया, 'ऋग्वेद में 'सहचित्त' शब्द आया है। 'सहचित्त' का अर्थ एक चित्त भी नहीं है और समान चित्त भी नहीं है। एकचित्त बनेगा तो विविधता, संशोधन और विकास का लाभ दुनिया को नहीं होगा। एकचित्त बना तो प्रलय की अवस्था आ जायगी। समान चित्त की बात मैं काफी दिनों से कर रहा हूँ। 'कामन प्रोग्राम' बनाया जाय, जिस पर लोग एक हो जायें, ऐसा न्यूनतम समान कार्यक्रम, जिस पर सभी सहमत हों एवं सभी कार्य करने के लिए जुट जायें। पर 'सहचित्त' एक विशिष्ट शब्द है। इसमें समान चित्त का निषेध नहीं है। हम और आप इकट्ठे रहते हैं, आपस में सलाह-मशविरा करते हैं, आपका चित्त मैं पूरी तरह से जानता हूँ, मेरा चित्त आप जानते हैं, इस तरह आपस में खुलापन रहेगा, सहचित्त बनेगा और इससे अन्योन्य विश्वास बढ़ेगा।"

इसी सन्दर्भ में बाबा ने कार्यकर्ताओं से कहा, "श्री धीरेन्द्र भाई ने 'गन्दीदान-समारोह' की युक्ति निकाली। दिन में एक बार अथवा सप्ताह में एक बार कार्यकर्ता बैठें और अपने-अपने दिलों को सबके सामने खुली तरह रखें। एक-दूसरे के गुण-दोषों की चर्चा करें और चित्त को पूरी तरह से धो लें। दूसरी बार जब मिलेंगे, तो पुरानी बातें नहीं आयेंगी, नयी बातें निकलेंगी। एक पर एक विकारों का स्तर न बन जाय, इसको बिना इसे विशेष रूप से रखनी है, नहीं तो हम पत्थर बन जायेंगे। आश्रम आदि संस्थाओं को इसका विशेष खयाल रखना चाहिए।"

नगरों का जीवन बड़ा अस्त-व्यस्त होता है। समय की कोई पाबन्दी न होती है। लोग रात को बारह-बारह बजे तक जगते हैं और दिन में नौ बजे तक सोते रहते हैं। विनोबा ने कई बार कहा कि शहरों में काल-नियमन होना चाहिए। रात को सिनेमा, होटल आदि दस बजे के बाद नहीं चलने चाहिए। नागरिक शांति से सोयें और सुबह चार-पाँच बजे उठ जायें। नागरिकों की दिनचर्या कैसी हो, इस पर एक बार बाबा ने कहा, 'यहाँ के लोगों को आश्चर्य होता है कि बाबा रात को आठ बजे सो जाता है। आठ बजे बीमार व बच्चे सोयेंगे और बाबा सोयेगा—। सचमुच तो नागरिकों की चर्या इस प्रकार होनी चाहिए। सुबह बड़ी फजर उठकर चिन्तन और प्रार्थना करें, दिन में विविध काम करें, इसको मैं साधना कहूँगा, होते ही पहले अपने सब कामों का समर्पण करें और रात को समाधि में चले जायें। इस प्रकार सुबह संकल्प, दिन में साधना, सायं समर्पण और रात को समाधि यह चतुर्विध दैनिक कार्यक्रम नागरिकों के होने चाहिए।" ऐसा नहीं करेंगे, तो जैसा बाबा ने १५ अगस्त को एक विशाल सभा में कहा, रात को एक बजे तक विषय-वासना से भरे सिनेमा देखते रहेंगे, रात को भी इसी के सपने आयेंगे। रात का समय गया, दिन में उत्साह घटा, तो लोग निर्वीर्य और पुरुषार्थहीन बनेंगे—ऐसी सुस्त, निर्वीर्य पुरुषार्थहीन प्रजा बाहरी आक्रमण का मुकाबला कैसे करेगी और देश के नवनिर्माण में योग देगी? बाबा ने नगर-निगम से माँग की कि रात को दस बजे के बाद कोई सिनेमा न चले।

इतने लम्बे अर्से तक एक बड़े शहर में रहना बाबा के लिए कई सालों के बाद पहला मौका था। इसलिए बाबा ने शहर को अच्छी तरह देखा। बाबा को जगह-जगह भद्दे और अशोभनीय विज्ञापन-इश्तहार देख कर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने बताया कि इन इश्तहारों और चित्रों का चित्त पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं मिलते हैं। ऐसे इश्तहारों को हटाने में नगर-निगम को सक्रिय होना चाहिए और नागरिकों को इसके लिए हवा तैयार करनी चाहिए। गंदे चित्रों और इश्तहारों की बजाय नगर में जगह-जगह, दीवारों पर सुन्दर अक्षरों में तुलसी, सूर, कबीर आदि के वचन और रामायण, गीता, कुरान, बाइबिल आदि उत्तम ग्रन्थों में से चुन-चुन कर वाक्य लिखे जायें, तो पूरा का पूरा नगर एक स्कूल बन जायगा।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर इन्दौर में दो बड़े काम हुए। एक तो प्रातःकाल बाबा ने इन्दौर के लिए एक आश्रम का उद्घाटन श्रमदान और वृक्षारोपण के साथ किया। इस आश्रम का नाम बाबा ने 'विसर्जन-आश्रम' रखा। विसर्जन-आश्रम नाम कैसे रखा, इसकी व्याख्या भी बाबा ने अपने उद्घाटन भाषण में की दी।

दूसरा काम यह हुआ कि इन्दौर नगर में वानप्रस्थों ने बाबा की प्रेरणा से 'सर्वोदय-वानप्रस्थ मण्डल' बनाया। इसका जिक्र करते हुए बाबा ने कहा, "यह इन्दौर नगरी के लिए एक गौरव की बात है। ऐसा वानप्रस्थ-मण्डल भारत में पहली बार इन्दौर में बना है। इसमें सारे वजनदार लोग हैं। इनमें नौकरी से निवृत्त लोग सेवा-प्रवृत्त होंगे। आजकल लोग गलत बोलते हैं, जब वे पेन्शनर को 'सेवा-निवृत्त' कहते हैं। वस्तुतः वे नौकरी से निवृत्त हुए और सेवा में प्रवृत्त होने का उन्हें मौका मिला।" आगे बाबा ने कहा, "सरकार पेन्शन देती है, तो लोग यह कोशिश करते हैं कि कब वे पेन्शनर बनें और देश का पैसा बचे। किन्तु जब वानप्रस्थ बनकर वे निष्काम सेवा करेंगे तो देश इनके युग-युग जीने की कामना करेगा।

●

"छोटी-छोटी बातों" का प्रवाह । रहा है! उसमें 'बड़ों' की छोटी बातें। शामिल हो रही हैं। पिछली बार बापू जीवन का प्रसंग दिया था। अब एक बहन ने बाइबिल में से ईसा का एक प्रसंग लिख भेजा है।

ईसा ने अपने अनुयायियों को एक किस्सा सुनाया—एक आदमी परदेश जा रहा था। उसने अपने विश्वास-पात्र नौकरों को बुलाया और अपना धन सुरक्षित रखने के लिए उनके हवाले किया। जैसी जिसकी क्षमता वह समझता था, उसके अनुसार उसने एक को ५ 'टेलेंट' (धनराशि का एक परिमाण), दूसरे को दो और तीसरे को एक सौंप दिया। काफी अर्से के बाद मालिक वापस आया और उन नौकरों से हिसाब माँगा। जिस व्यक्ति को उसने ५ टेलेंट दिये थे, वह आया और उसने मालिक द्वारा सौंपे हुए ५ टेलेंट के अलावा ५ और सामने रख दिये। नौकर ने कहा—"मालिक, आपने मुझे ५ टेलेंट दिये थे। मैंने उनका उचित उपयोग करके उनके द्वारा ५ और उपार्जन किये हैं।" मालिक ने उससे कहा—"शाबाश, मेरे भले और वफादार नौकर! चूँकि तुमने वफादारी से काम किया है, इसलिए मैं तुमको और बड़ी जिम्मेदारी का काम दूँगा।"

इसी तरह दूसरे नौकर ने भी उसको दी हुई धरोहर दुगुनी करके मालिक के सामने रख दी। मालिक ने उसको भी शाबाशी दी। तीसरा नौकर, जिसको केवल एक टेलेंट दिया था, उसने उससे कोई काम नहीं लिया और बेकार रखा। मालिक ने उसको अपने काम से अलग कर दिया।

यह कहानी सुनाने के बाद ईसा ने अपने श्रोताओं को सम्बोधित करके कहा :

"जो छोटी-छोटी बातों में विश्वास-पात्र हैं, उन पर बड़ी बातों के लिए भी भरोसा किया जा सकता है। जो छोटी रकम के मामले में असावधान है, वे बड़ी के मामले में भी असावधान होंगे। दूसरों का माल या कुछ चीजें हैं, उनका तुम ठीक से उपयोग नहीं कर सकते, तो तुम्हारे हाथ में उनसे बढ़िया चीजें कैसे दी जा सकती हैं?"

—शिवराम वर्मा

मालूम हो जाते हैं और अमल जीवन [illegible] है। फिर जीवन में नयी शक्ति और नये उत्साह का संचार है।

[illegible] नहीं होता

राजनैतिक क्षेत्र में इस तरह के उत्साह [illegible] नहीं होता, क्योंकि वहाँ बाहर [illegible] पर दारोमदार रहता है। किसी [illegible] का प्रचार करना है, तो लोग कहते कि सरकार द्वारा अपनी-अपनी किताब [illegible] में लाजिमी करवा लीजिये, तो हर [illegible] वह पढ़नी पड़ेगी। लेकिन क्या [illegible] ने अपनी रामायण सरकार के [illegible] लाजिमी करवायी थी? यह भी कोई [illegible] का ढंग है? प्रचार तो तब होता है जब आत्मा की बात आत्मा के पास [illegible] है। तुलसीदासजी ने पैंतालीस साल की उम्र में रामायण लिखी और फिर [illegible] साल तक जपते रहे "तुलसी तब [illegible] सुमिरत रघुबर बीर, बिचरत [illegible] देह धीर।" हे भगवान्! मुझे ऐसी [illegible] दे कि गंगा के किनारे तेरा नाम [illegible] रहूँ। इस तरह वे रामायण का [illegible] करते रहे। इन दिनों हर किसीको [illegible] सूझता है कि सरकार के द्वारा बच्चों के लिए किताब लाजिमी करवायी जाय, [illegible] लड़के ऐसे बेवकूफ नहीं होते कि [illegible] हुई चीज सर पर उठावें। परीक्षा [illegible] होते ही उन्हें ज्ञान का जुलाब हो [illegible] है। अगर उसी पेपर की परीक्षा [illegible] दिन ली जाये, तो आधे लड़के फेल [illegible]। सरकार के जरिये लादी हुई [illegible] से तेजस्विता पैदा नहीं होती।

सरकारी मदद से तेज घटता है

श्री प्रेमाबहन कंटक, जो इन दिनों [illegible] चिंतन में लगी हुई हैं, मुझे [illegible] है कि जहाँ सरकारी मदद आयी, [illegible] तेजस्विता कम हो जाती है। आपने [illegible] प्रयोग किये हैं। इसलिए आपको [illegible] अनुभव है। फिर भी हम खादी-[illegible], बुनियादी तालीम आदि के लिए [illegible] माँगने चले आते हैं और सरकार के [illegible] हमें मदद देते चले जाते हैं। लेकिन [illegible] हमसे कह रहे थे कि हम इन [illegible] को मदद देते तो हैं, पर मदद [illegible] ये लोग पीछे पड़ते हैं। मतलब यह कि [illegible] शक्ति की स्वाभाविक [illegible] का क्षेत्र नहीं रहा है, बल्कि [illegible] का क्षेत्र बन गया है। जिस [illegible] भगवान् [illegible] के बिछौने पर [illegible] रहते थे और [illegible] कहलाते थे, उस तरह कोई [illegible] स्थान में रह कर भी मन [illegible] कर सके, लेकिन [illegible] का बिछौना [illegible] का लक्षण नहीं माना जायगा। कोई [illegible] बाँध कर नदी तैरे, तो वह [illegible] एक विशेषता होगी। पर पत्थर [illegible] का लक्षण नहीं माना जायगा। [illegible] जायगा कि वह पत्थर के कारण [illegible], पत्थर के बावजूद नदी तैरा। [illegible] का लक्षण नहीं है। हाँ, सत्ता के बावजूद कोई महापुरुष वैराग्य-सम्पन्न रह सकता है।

हमारे पास पैसे के अभाव की शक्ति है

यह बात आपके ध्यान में आयेगी, तो कस्तूरबा ट्रस्ट का क्षेत्र कितना शक्तिशाली है, इसका अनुभव आप सबको होगा। सरकार की मदद कम हुई, तो हम कम ताकतवाले बन गये, जो इसे मानते हैं, वे समझते ही नहीं कि असल में ताकत किस क्षेत्र में होती है। हमें समझना चाहिए कि जब सरकारी मदद मिलती है, तो उससे हमारी तेजस्विता, बुद्धि शक्ति और प्रतिभा क्षीण होती है। इजराइल से आये हुए एक भाई हमसे कह रहे थे कि वहाँ पैसे की कोई कमी नहीं है। मैंने कहा कि हमारे यहाँ पैसे के अभाव की कोई कमी नहीं है। समझने की बात है कि उनके पास पैसे की शक्ति है, तो हमारे पास पैसे के अभाव की शक्ति है। जो इसे समझेगा, वह इस ढंग को विकसित करेगा। हमें समझना चाहिए कि जब स्वराज्य की प्राप्ति के पहले हम कांग्रेस के साथ रचनात्मक काम करते थे, तो उसमें हमें जेल जाना पड़ता था। लेकिन आज सरकार के साथ काम करें, तो हमारे लिए आलीशान मकान बनाये जाते हैं, जिनसे शक्ति बढ़ती नहीं, बल्कि घटती है। आज रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शांतिनिकेतन का रूपान्तर भी एक मामूली युनिवर्सिटी में हो गया है। अब वहाँ उनकी प्रतिभा का कोई चिह्न नहीं दिखाई देता। महात्मा मुंशीराम के गुरुकुल ने एक जमाने में अपनी स्वतंत्र परीक्षाएँ चलायीं, लेकिन आज वह भी युनिवर्सिटी के साथ जुड़ा हुआ है। जिस सोनगढ़ का नाम मैं बचपन से सुनता था, वहाँ के गुरुकुल में मैंने देखा कि बच्चे सुबह दस मिनट सन्ध्या-वन्दन करते हैं और फिर दिन भर वही सरकारी पढ़ाई चलती रहती है। वहाँ पर एक जैन होस्टेल था। वहाँ कुछ थोड़ा जैनों को संस्कार दिया जाता था और बाकी वही पढ़ाई चलती थी। इस तरह दस मिनट के लिए ऊपर-ऊपर से कुछ संस्कार दिये जायँ, तो उनको झटक देने में लड़कों को देर कितनी लगेगी?

नैतिक चीज के लिए सत्याग्रह क्यों नहीं?

इन्दौर में एक महीना रहने से मुझे बहुत ज्ञान मिला। मैंने वहाँ दीवालों पर ऐसे भद्दे चित्र देखे कि मुझे लगा कि उन्हें हटाना ही होगा। मेरे मन में विचार आया कि उनका प्रतीकार करने के लिए एक भी बहन सामने क्यों नहीं आती है? मैंने वहाँ कहा कि जो चित्र मालिक की सम्मति के बिना लगाये गये हैं, उनको हटाना होगा। जहाँ वे मालिक की सम्मति से लगाये गये हैं, वहाँ उन्हें मालिक को समझा कर हटाना होगा। कुछ चित्रों को हटाने के लिए अगर किसी की सम्मति लेनी होगी। सबको समझाने पर भी कोई न समझे, तो सत्याग्रह करना होगा। इस तरह की नैतिक चीज के लिए भी सत्याग्रह क्यों नहीं किया जाता? नागरिकों को कहना चाहिए कि हमारे गृहस्थ-धर्म की अपनी एक प्रतिष्ठा है। किसीको हमारी आँखों पर आक्रमण करने का हक नहीं है। जिनको ऐसे चित्रों का शौक है, वे उन्हें अपने रंगमहलों में भले ही लगायें। हम किसीकी आजादी को खंडित नहीं करना चाहते। उन चित्रों को देखकर मुझे लगा कि उनका डटकर विरोध करना ही होगा। मैंने कहा कि पहले सबको समझाओ और फिर देखो कि चित्र टिकते हैं या हम टिकते हैं। इस तरह के काम अब हमें उठाने होंगे।

हमें समझना चाहिए कि पुराने जमाने का सेवा का तरीका और आज का तरीका भिन्न है। आज जो सामाजिक क्षेत्र में रहेंगे, उन्हें त्याग का मौका मिलेगा, इसलिए शक्ति हासिल होगी। राजनीतिक क्षेत्र में रहनेवालों को वैसा मौका नहीं मिलेगा, इसलिए उन्हें शक्ति हासिल नहीं होगी। गंगाधरराव जी के निमित्त से मैंने आज आपको यह जो विचार समझाया है, उस पर सब बहनें मनन करें।

(इन्दौर, २५-८-'६०)

•

गया नगर में सर्वोदय-कार्य

गया नगर में विशेष रूप से नगरपालिका के निर्विरोध चुनाव के लिए प्रयास हो रहा है। निर्विरोध चुनाव के प्रचार के लिए प्रत्येक वार्ड में निर्विरोध चुनाव-समितियों का गठन हो चुका है। इन समितियों के द्वारा प्रत्येक मोहल्ले में सभाएँ हुईं और इस विचार को समझाया गया। सभी वार्ड व मुहल्लों में एक निर्विरोध चुनाव की सभा हुई। सारे नगर में वातावरण तैयार हो, इसलिए श्री जयप्रकाश बाबू का समय १२-१३ अगस्त को लिया गया। समिति ने यह भी तय किया कि श्री जयप्रकाश बाबू के आगमन के पूर्व हमें घर-घर विचार पहुँचाना चाहिए। अतः तय हुआ कि सर्वप्रथम हम १० हजार लोगों तक पहुँचें और उन्हें विचार समझायें। अगर वे इस विचार को मानें तो उनसे एक स्वीकृति-पत्र भी प्राप्त किया जाये। वार्डों की समितियों ने काफी प्रयास किया और सात हजार व्यक्तियों की स्वीकृति प्राप्त की। अर्थात् घर-घर में विचार प्रचार का काम हुआ। श्री जयप्रकाश बाबू की उपस्थिति में नगर के वार्ड संयोजकों की बैठक हुई, उसमें काम की गति विधि पर विचार हुआ तथा जो अनुभव आये, उस आधार पर चर्चा हुई। कुछ प्रश्न भी श्री जयप्रकाश बाबू के समक्ष रखे गये, जिनका समाधान हुआ। शाम को ऐसे सभी लोगों की सभा हुई, जो समिति के सदस्य हैं तथा सहयोगी सदस्य हैं तथा नगर के प्रमुख व्यक्ति हैं। हजारों की संख्या में लोग एकत्रित हुए। इस सभा के बाद नगर का वातावरण बहुत अच्छा हुआ है।

१३ अगस्त को नगरपालिका के जब्ती की अन्तिम तिथि थी। परन्तु इस प्रकार के वातावरण को समाप्त करने की दृष्टि से तारीख '६२ तक के लिए बढ़ा दी, जिससे आम लोगों का उत्साह भंग हो। जनता का मानस जितने प्रयास व उत्साह से इस विचार की ओर खींचा गया था, उस पर इस प्रकार की कार्रवाई से धक्का लगा है और अब लोग सोचने लगे हैं कि अभी चुनाव की तिथि काफी लम्बी है। अभी से इस काम को क्यों करें? इस वातावरण को कायम रखने की दृष्टि से प्रत्येक वार्ड में पदयात्राएँ करने का तय हुआ है। ये पदयात्राएँ पूर्व तैयारी के बाद ही शुरू की जायेंगी। एक वार्ड सघन कार्य के लिए चुना गया है। इस वार्ड के अभी दो मसले लिये हैं। एक यह कि वार्ड में कोई व्यक्ति दवाई के बिना न मरे तथा बिना शिक्षा के कोई बच्चा न रहे। वार्ड का सर्वे करेंगे और तदनुसार कार्य शुरू कर दिया जायगा। इस वार्ड की सफाई के लिए भी योजना बनायी जा रही है।

सभी संयोजक व कुछ विशेष व्यक्तियों के पास 'भूदान-यज्ञ' पत्रिका पहुँचे, यह भी प्रयास है। अभी ५० भूदान-यज्ञ पत्रिका बिक्री होती है, पर भूदान-यज्ञ पत्रिका के ५०० अंक इस नगर में मँगाने की कल्पना है। शान्ति-स्थापना की दृष्टि से १० हजार जनसंख्या में काम करने के लिए एक कार्यकर्ता नियुक्त करने का सोचा है। अभी जितने कार्यकर्ता मिले हैं, उसी हिसाब से क्षेत्र बाँट दिया गया है। दशहरा के बाद नगर के सभी प्राप्त सर्वोदय-मित्रों का शिविर होगा। आशा है, कार्यकर्ता इस शिविर में कुछ प्राप्त करेंगे।

—दिवाकर

•

बाढ़ में शांति-सैनिक शिविर

चंबल घाटी शान्ति-सेना समिति की ओर से चंबल क्षेत्र के 'बाढ़' कस्बे में दिनांक १ से ७ सितंबर तक शान्ति-सैनिक शिविर हुआ, जिसमें उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान के चालीस शान्ति-सैनिकों ने हिस्सा लिया। शिविर-संचालन श्री शान्ति-समिति के सदस्य तथा ओमप्रकाश गौड़, [illegible] बाजोरी ने किया। शिविर को श्री पूर्णचन्द्र जैन, निर्मला देशपांडे, सुरेशराम भाई तथा दादा साहब पंडित [मायान, महाराष्ट्र] का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था। ७ सितंबर को प्रातः शान्तिगीत गाते हुए चालीस शान्तिसैनिकों ने प्रेम का संदेश सुनाने के लिए चंबल-घाटी की तरफ कूच किया।

एक स्वतंत्र विचारक : धीरेन्द्र भाई

बनारसीदास चतुर्वेदी

आज कितने ही वर्षों से ग्राम-जीवन की ओर सुशिक्षित भारतीय जनता का ध्यान आकर्षित हो रहा है और हमारे नेता तथा हमारी सरकार ग्रामों के "उद्धार" के लिए बेहद चिन्तित हैं। बुनियादी तालीम के स्कूल खोले जा रहे हैं तथा बेसिक ट्रेनिंग कालेज भी और ग्राम विश्वविद्यालयों के खोले जाने की चर्चा जोरों पर है, ग्राम-विकास खंडों की आयोजनायें चालू हैं। पर ये कार्य प्रायः ऐसे व्यक्तियों द्वारा किये जा रहे हैं, जो स्वयं विदेशी शिक्षा द्वारा शिक्षित हैं और जिनके हृदय पर अब भी वे ही पुराने कुसंस्कार काबू किये हुए हैं!

महात्मा गांधीजी ने ग्राम-सेवक का जो आदर्श रखा था, वह ध्यान देने योग्य है :

ग्राम-सेवक का जीवन ग्राम-जीवन के साथ एकतान होगा। वह अपनी पुस्तकों में डूबा हुआ पण्डित बनने का ढोंग नहीं करेगा और उसे रोजमर्रा की जिन्दगी की छोटी-छोटी बातें सुनने से अरुचि नहीं होगी। इसके विपरीत लोग जब भी उससे मिलेंगे, तब उसे अपने औजारों से—चरखे, करघे, बसूले या फावड़े आदि से—काम करता हुआ और सदा उनके छोटे-से-छोटे प्रश्नों पर ध्यान देता हुआ पायेंगे। वह सदा अपनी रोजी के लिए काम करने का आग्रह रखे। ईश्वर ने सबको अपनी दैनिक आवश्यकताओं से अधिक उत्पन्न करने की शक्ति दी है और अगर वह केवल सूझ-बूझ से काम ले, तो उसे ऐसे धन्धे का अभाव नहीं रहेगा, जो उसकी योग्यता के अनुकूल होगा, चाहे वह योग्यता कितनी ही कम क्यों न हो।"

खेद है कि महात्माजी की इस कसौटी पर बहुत कम ग्रामसेवक खरे उतरेंगे। हमारे ग्राम-सेवक सौ-डेढ़ सौ वर्षों से प्रायः उपेक्षित ही रहे हैं और ग्रामीण समाज तथा पढ़े-लिखों के बीच की जो खाई है, वह इतनी चौड़ी हो गयी है कि उसका पार करना हनुमानजी जैसे पराक्रमी व्यक्ति के लिए ही सम्भव है। हर्ष की बात है कि श्री धीरेन्द्र भाई ने यह करिश्मा कर दिखाया है। धीरेन्द्र भाई जो कुछ लिखते हैं, अपनी अनुभूतियों के बल बूते पर लिखते हैं। उनका ज्ञान पुस्तकों की पढ़ाई से पैदा नहीं हुआ, बल्कि चलती-फिरती किताबों—साधारण आदमियों—के जीवन और ग्रामीण परिस्थितियों के अध्ययन से उत्पन्न हुआ है, इसलिए उसमें एक वैचित्र्य है, एक विशेषता है, एक ताजगी है।

आज से तेरह वर्ष पूर्व, जब साधना-सदन, प्रयाग से श्री धीरेन्द्र भाई की पुस्तक "समग्र ग्रामसेवा की ओर" प्रकाशित हुई थी, तो उस पुस्तक से हम इतने प्रभावित हुए थे कि उसकी दो प्रतियाँ खरीद कर हमने उसकी आलोचना "विन्ध्यवाणी" में की थी। अब उस पुस्तक का अगला भाग सर्व सेवा संघ की ओर से छापा गया है और वह आलोचनार्थ हमारे पास भेजा गया है।

श्री धीरेन्द्र भाई ने एक जगह लिखा था—

"भारतवर्ष के इस विस्तृत क्षेत्र में ग्राम-उद्योग और ग्राम-उत्थान सम्बन्धी कार्य के लिए कार्यकर्ताओं की समस्या जहाँ की तहाँ रह जाती है। क्षणिक जोश में नौजवान आग में कूद पड़ते हैं, बन्दूकों के सामने सीना तान देते हैं। सालों जेल में हँसते हँसते सड़ते हैं, लेकिन किसी स्थायी काम में आजीवन कष्ट सहने को तैयार नहीं होते। गोली के सामने आत्म-बलिदान करते शहीद हो जाते हैं, लेकिन बापू की भाषा में जिन्दा शहीद नहीं बन पाते।"

वस्तुतः स्वयं धीरेन्द्र भाई ने "जिन्दा शहीद' बनने का प्रयोग किया है और एक बार तो वे हैजे के शिकार होते होते बचे थे। उनके विचारों और परिणामों को पढ़ कर बार-बार यह खयाल आता है कि धीरेन्द्र भाई यदि किसी विज्ञान का अध्ययन करते, तो एक बहुत बड़े वैज्ञानिक हो गये होते। उनमें वैज्ञानिकों जैसी अमिट जिज्ञासा है, अचूक विश्लेषण शक्ति है और अपनी गलतियों को स्वीकार कर लेने की असाधारण मनोवृत्ति भी। वे ग्रामीण समाज के रोगों के कुशल डाक्टर हैं और उनका निदान करने में उन्हें कमाल हासिल है। पर साथ-ही-साथ मूल सिद्धान्तों का भी उन्होंने अध्ययन किया है और रोग की जड़ पहचान ली है। एक जगह पर उन्होंने लिखा था कि "जैसे-जैसे समाज की उत्पादन-प्रणाली में केन्द्रीकरण होता गया, वैसे-वैसे शासन की व्यवस्था में भी केन्द्रीकरण होता गया और क्रमशः सारे समाज-तंत्र के केन्द्रित हो जाने से आज संसार भर में तानाशाही का बोलबाला हो गया है। बापूजी ने मानव-समाज की इस गति को देखा, उन्होंने देखा कि शासन-तंत्र जितना ही केन्द्रित हो रहा है, उतना ही समाज का जीवन भी केन्द्रीभूत होता जा रहा है और मनुष्य की स्वतन्त्रता का यह लोप तथा उसके निर्दलन एवं शोषण की यह मात्रा-वृद्धि उसी केन्द्रीकरण का प्रतिफल है। ऐसी स्थिति प्रकृति विरुद्ध होने के कारण उसे स्थायी बनाये रखने में अधिकाधिक हिंसा और पशु बल का आश्रय लिया जाने लगा। इस दशा से मनुष्य का उद्धार करने के लिए बापूजी ने यही उपाय सोचा कि जिस मूल से यह अनर्थ का सिलसिला जारी हुआ है और इसमें वृद्धि होती गयी है, उसी का सर्वथा निराकरण कर दिया जाय। जिस दानव ने आकर जनतन्त्र को शैशवावस्था में ही गला घोंट कर मार दिया, उस दानव का नाश हुए बिना स्वतन्त्रता की स्थापना होना असम्भव है। वाष्प यन्त्र की उत्पादन प्रणाली से उद्भूत केन्द्रीकरण को विघटित किये बिना शासन-तंत्र की केन्द्रीभूत शक्ति नहीं हटेगी और जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक न हिंसा का लोप होगा, न मनुष्य शोषण तथा पराधीनता से मुक्त होगा। फलतः यह आवश्यक है कि उत्पादन की पद्धति का विकेन्द्रीकरण किया जाय और उसके आधार पर ऐसे स्वावलम्बी समाज की रचना की जाय, जिससे उत्पादन के साधन उत्पादक के हाथ में रहें और उत्पन्न पदार्थ उत्पादक की सम्पत्ति हो, न प्रणाली केन्द्रित हो और न सारी सम्पत्ति थोड़े से लोगों के हाथों में पड़ कर पूँजीवादी शोषण जारी रखे। मनुष्य अपने जीवन की आवश्यक वस्तुओं के लिए यथासम्भव किसी के परवश न होकर स्वतन्त्र रहे। ऐसे विकेन्द्रित आर्थिक समाज में वर्गों के हित परिवर्तित हो जायेंगे। फलतः न केन्द्रीभूत शासन-तंत्र की आवश्यकता रहेगी, न हिंसा की। केन्द्रतंत्र के विकेन्द्रीकरण बिना मनुष्य की स्वतंत्रता का अक्षुण्ण रहना और उसकी प्रगति सम्भव नहीं।

श्री धीरेन्द्र भाई अपने को कोई बड़ा साहित्यिक नहीं मानते, फिर भी उन्होंने जैसे ग्रन्थ लिख दिये हैं, जो किसी भी ग्राम-विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम के तौर पर पढ़ाये जाने की क्षमता रखते हैं। उनके वाक्यों के पीछे उनकी खुद की अखण्ड साधना है। "हुजूर को मजदूर' बनाने की उनकी कल्पना निःसन्देह महत्त्वपूर्ण है और इन दो शब्दों को गढ़ कर उन्होंने समाज-विज्ञान को एक अच्छा दान दिया है। यही नहीं, तदनुसार उनका स्वप्न भी कहीं-कहीं साकार रूप में उपस्थित हो गया है, सफल हो गया है। १५ अगस्त, १९५८ को चटमा ग्राम की उच्च जातीय राजपूत बहनों ने घर से निकल कर खेतों में धान की रोपाई की और नौ दिन तक यह क्रम जारी रहा।

वे लिखते हैं : "इस प्रकार १५ अगस्त, १९५८ को देश में एक बड़ी क्रान्ति की बुनियादी पड़ी। ग्राम-स्वराज्य का संकल्प हुआ। पिछले बारह साल से देश भर में "हुजूर" और "मजूर" की परिस्थिति समझाते हुए मैं यह आवाज बुलन्द करता रहा कि हुजूरों को मजूर बनना है। आज उस प्रक्रिया के प्रत्यक्ष श्रीगणेश से मुझे अत्यधिक आनन्द हुआ।"

कहीं-कहीं पर धीरेन्द्र भाई अपनी बात बड़े मौलिक ढंग पर कह देते हैं। सन् १९४८ के आसपास उन्होंने ग्रामीण जनता से कहा था :

"जैसे खेत के मुकदमे में अपने केस की अदालती डिगरी अपने हक में रहने पर भी कब्जा न मिलने का खतरा बना ही रहता है, उसी तरह इंग्लैंड की पार्लमेंट से आपके हक में स्वराज्य की डिगरी मिलने पर भी आपके लिए कब्जा न मिलने का खतरा बना हुआ है। अगर आप सतर्क नहीं होंगे, तो विदेशी पूँजीपति स्वदेशी पूँजीपतियों के साथ गुट बनायेंगे और गाँव-गाँव में मौजूद पुराने साम्राज्यवाद तथा पूँजीवाद के दलालों के साथ मिल कर अब तक जो आपके तरफदार देशभक्त रहे हैं, उन्हें खरीद कर या दूसरे उपायों से अपने चंगुल में फँसा लेंगे। फिर जब वह राक्षस अपनी चारों भुजाएँ आगे बढ़ा कर प्रेम से आपका आलिंगन करेगा, तो वह धृतराष्ट्र का ही आलिंगन होगा।"

सर्वसाधारण के लिए खतरे की यह घंटी बारह वर्ष पूर्व ही उन्होंने बजायी थी। उन्होंने 'किचिन' (रसोई) की व्युत्पत्ति "किचकिच" से की है : "दुनिया में जितने झगड़े होते हैं, उनका यदि विश्लेषण किया जाय, तो कुछ ही मामलों को छोड़ कर सभी भोजन की समस्या को लेकर होते हैं। सुन लोगों के संस्थाओं में तथा सम्मेलनों में देखा है कि सबसे अधिक टीका-टिप्पणी और कोप भोजन को लेकर ही होता है। जेल में भी उच्च आदर्श तथा लक्ष्य को लेकर कष्ट सहने के लिए पहुँचने वाले राजबन्दी भी भोजन की समस्या को लेकर निरन्तर झगड़ते रहते हैं। मैं तो अक्सर अपने साथियों से विनोद में कहता हूँ कि "किचकिच" का (बहुवचन) "किचिन" (रसोई) होता है। देहाती भाषा में "किचकिच" जब अधिक हो जाती है, तो उसे "किचाइन" कहते हैं। शायद इसी से "किचिन" निकला हो!"

पुस्तक के प्रथम भाग में साबुआ के लडुआ की बात पढ़ कर हँसी आये बिना नहीं रहती। वे इतने सख्त थे कि काफी प्रयत्न करने पर भी दाँतों से नहीं टूटे और इसलिए पत्थर पर रख कर पत्थर से ही तोड़े गये! साबुआ की यात्रा हमने भी एक बार की थी—वहाँ के जागीरदार राजकुमारों के अभिभावक की हैसियत से—इसलिए यह प्रसंग हमें खास तौर पर पसन्द आया।

सामूहिक खेती के प्रयोग में व्यवस्था-पकों के निर्माण तथा 'अधिकारवाद' की उत्पत्ति के खतरे की ओर उन्होंने हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

श्री धीरेन्द्र भाई के विचारों को पढ़ने के बाद हम सोचते रहे कि यदि उनके विचार समाज में घर कर जायँ, तो एक-न-एक दिन वर्तमान शासन से उसकी

... सर्वथा स्वाभाविक है। खुद ... भाई बड़े संकोचशील स्वभाव के ... और तो और, वे बहुत दिनों तक किशोरलाल भाई के निकट नहीं जा सके और एक बार सन् १९५६ में वे जवाहरलालजी के पास गये भी और किसानों की बेदखली के मामले की चर्चा करना चाहते थे, पर संकोचवश कर नहीं सके।

नेताओं के लिए जो 'धृष्टता' अनिवार्य रूप से आवश्यक है, उसका श्री धीरेन्द्र भाई में सर्वथा अभाव ही प्रतीत होता है। यह बात नहीं है कि धीरेन्द्र भाई में स्पष्ट बात कहने की क्षमता नहीं। बापू से उन्होंने ... कह दिया था, "आपका गुजरात ... शराब मुक्त है। गुजरात की स्त्रियाँ ... के लिए कुछ भी करना पसन्द नहीं करतीं और जैनियों के यहाँ तो किसी के खाने-पीने की कुछ सुनवाई नहीं होती।' पर धीरेन्द्र भाई की संकोचशीलता उनके अनुयायियों के लिए बहुत महँगी पड़ी।

इस पुस्तक का सबसे अधिक स्फूर्तिप्रद अंश हमें वह प्रतीत हुआ, जिसमें उन्होंने लेटे लेटे मुंगेर जिले की यात्रा करने का उल्लेख किया है। उनकी कमर में दर्द था और वे चल फिर नहीं सकते थे। फिर भी उनके साथी-संगियों ने उन पर ... "जुल्म" करके उनकी महीने भर की यात्रा का प्रोग्राम बना डाला। कभी तो उन्होंने मोटर पर लिटाया, कभी बैलगाड़ी में खाट पर बाँध दिया और ... में ले गये।

इसमें उन्हें कितना श्रम पड़ा होगा, इसका अनुमान किया जा सकता है, पर उन्होंने बड़ी सादगी के साथ अपनी यात्रा में सिर्फ इतना ही लिखा है, "लेट कर चलना, लेट कर लोगों से चर्चा करना और सार्वजनिक सभाओं में लेट कर ही भाषण करना, यह भी एक नया अनुभव था। तुम लोग होतीं, तो बड़ा मजा आता।"

श्री धीरेन्द्र भाई के इस ग्रन्थ को पढ़ने के बाद हम सोचते रहे कि हुजूरों की जिस पीढ़ी से धीरेन्द्र भाई मजूर बनाना चाहते हैं, वह मजूर नहीं बनेगी। हम लोग जुग-जुग से ... हैं और हमारी प्रमादरूपी बीमारी असाध्य रूप धारण कर चुकी है और हम लोगों ने अपनी सन्तान को जिस ... में डाल दिया है, उसके चंगुल से वे शायद ही छूट सकें। इसलिए धीरेन्द्र भाई को हुजूरों के पोतों से ही प्रारम्भ करना पड़ेगा।

पुस्तक के अन्त में श्री धीरेन्द्र भाई ने लिखा है : "मैंने कहा था कि आन्दोलन का यह समय अज्ञातवास का समय है और मैं मानता हूँ कि यह समय कम-से-कम ... साल तक रहेगा। मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि १९६२ के आम चुनाव के अवसर पर ... राजनीति का जो दर्शन मिलेगा उससे जनता परेशान होगी। वह रास्ता ... के लिए व्याकुल होगी। अज्ञातवास में हम लोगों को उस अवसर के लिए अपनी तैयारी करनी है। पिछले साल मैंने खादीग्राम के साथियों से कहा था कि क्रान्ति के आरोहण में अज्ञातवास की आवश्यकता होती है और उसका संयोजन करना पड़ता है। वैसे भी स्वाभाविक रूप से अज्ञातवास होता है। नेतृत्व की निपुणता इसी में है कि वह उसे संयोजित बनाये, नहीं तो अज्ञातवास का उग्र निराशावाद में परिणत होने का खतरा है।"

धीरेन्द्र भाई सम्भवत चालीस-पचास वर्ष आगे की बात सोच रहे हैं। भारत का इतिहास सहस्रों वर्ष पुराना है, उसके चालीस पचास वर्ष कोई बड़ी चीज नहीं। रूस में 'जनता की ओर' नामक जो आन्दोलन १८७० में प्रारम्भ हुआ था, उसका परिणाम सन् १९१७ की क्रान्ति के रूप में जाकर निकला और अब ४० वर्ष बाद वहाँ के ग्राम समृद्धिशाली बनते जा रहे हैं।

भारतवर्ष में यदि कभी ग्रामस्वराज्य स्थापित होगा, तो धीरेन्द्र भाई जैसे क्रान्तिकारी विचारकों और साधकों की दीर्घकालीन तपस्या के बल ही। ● ●

गाँव-गाँव : घंटे भर की शाला
गाँव-गाँव : विश्वविद्यालय भी

शालिग्राम पथिक

बाबा ने एक तूफान बन कर, एक महामानव बन कर अपने पुण्य-प्रभाव से अपनी यात्रा में ग्रामदान तक सम्भव बना दिया। अंगुलिमाल सरीखे दुःसाहसी डाकुओं को उपदेश लेने योग्य बना दिया। एक चमत्कार किया। असम्भव सम्भव हो गया। पर मनुष्य बड़े ही भुलक्कड़ स्वभाव का भी होता है। जो व्यक्ति या जो व्यक्ति-समूह एक बार सन् '४७ में, हिन्दू मुसलमान दंगों के दिनों में, खून के प्यासे हो गये थे, प्रलय हो रहा था, लगता था कभी भी यह आग बुझने वाली नहीं, वही सब दंगा खत्म होते ही, फिर घुल-मिल कर रहने लगे, मानो वैमनस्य कभी इन्हें छुआ नहीं। यह है इन्सान की विस्मृति!

यह विस्मृति मनुष्य-स्वभाव की (खासकर मनुष्य-समुदाय के स्वभाव और आचरण की) बड़ी ही स्थायी, पुख्ता, सुनिश्चित इकाई है। यह अपना काम जरूर करती है और दोनों तरह से काम करती है। (१) बुरी बात भी भूल जाना, उस पर परदा पड़ जाना। (२) भली बात भी भूल जाना, मेहनत व्यर्थ हो जाना। इसीलिए धर्म की बार-बार हानि होती है, भगवान को बार-बार अवतरित होना पड़ता है। एक ही 'सत्य' और 'तथ्य' बार-बार तरह तरह से कहना, बताना पड़ता है। बताते समय याद हो जाता है। फिर थोड़े दिनों में भूल जाता है। फिर वही के वही!

आदमी का यह स्वभाव तो स्थायी चीज है। भूलेगा वह जरूर। चाहे बुरी घटना, बुरी बात हो, या भली बात। चाहे उसे स्वयं त्रिलोकीनाथ ने ही मनुष्य-देह धारण करके, बताया, सिखाया, चलन चलाया क्यों न हो! मनुष्य-समाज उसे कभी-न-कभी भूल जरूर जायेगा। इस तथ्य से अवगत तुलसी ने व्यवस्था दी कि

जब जब होहिं धर्म की हानी,
बाढ़ें असुर अधम अभिमानी।
तब तब प्रभु धर मनुज शरीरा,
हरें सदा सज्जन भवपीरा॥

बाबा तो विस्मृति को जानते-मानते ही नहीं, कुछ दिनों उस पर मनोयोग भी कर चुके हैं। उन्हें पता था कि 'बाबा आया बाबा आया' की याद आदमी को भूलने ही वाली है। उसे तरह-तरह से और रोज-रोज, गाँव-गाँव में ताजा किये बिना, यह सब हवा काफूर हो जा सकती है। इसलिए आज से बहुत साल पहले, उसने एक गुर हमारे सामने रखा था। 'गाँव-गाँव घंटे भर की शाला' की। बात बड़े पते की थी। यह रिवाज खड़ा हो पाये तो विस्मृति अपना असर कर नहीं पायेगी। रोज मैला रोज धोया। रोज मुंह गन्दा, रोज दातौन। खाना खाया, बरतन गन्दा, जूठा हुआ, माँज लिया। ऐसी कुछ व्यवस्था, इस घंटे भर की शाला के जरिये, बाबा को सूझी थी। वह तो द्रष्टा हैं न!

हम अभी बटलागुण्डु क्षेत्र के ग्रामदानी क्षेत्र का अध्ययन करने, पुण्यार्जन करने गये थे। वहाँ आज भी बाबा के प्रति जो श्रद्धा देखी, वह बड़ी जीती-जागती तेजोमय थी। वहाँ विस्मृति ने अपना काम छोड़ दिया हो, ऐसी बात नहीं। वह तो रुक नहीं सकता, रुका नहीं। हाँ, वहाँ के कार्यकर्ताओं ने श्री जगन्नाथनजी के प्रबल नेतृत्व में बराबर अलख जगाये रखा है। पदयात्राएँ, लंबी-लंबी सभा-सम्मेलन, लोक-परिक्रमा की परम्परा। इसीकी बदौलत बाबा के प्रति लोगों की श्रद्धा खोयी नहीं। वहाँ हमें याद पड़ी घंटे भर की शाला की। वह अगर हुई होती तो उस क्षेत्र में कुछ-से-कुछ हो जाता!

हम स्वयं अपने को नयी तालीम का और विशेषकर इन दिनों जनशिक्षा, समाज-शिक्षा, प्रौढ़शिक्षा का एक कर्मयोगी मानते हैं। पिछले २२ वर्षों में यही एक काम यही एक चिन्तन किया है और इसी के खातिर भूदान के पुण्य-प्रवाह से भी दूर रहा, यह मान कर कि कल काम आऊँगा। पिछले दिनों कई बार मित्रों ने इसी दिशा में जुटने, कुछ करने की प्रेरणा भी दी। पर हर चीज का समय आता है। आज जाकर हमें अपने स्वधर्म का बोध हुआ है और उसके लिए जिम्मेदार है। (१) बटलागुण्डु की यात्रा और (२) मेरी एक खूब बड़ी बीमारी, जिसने मुझे यात्रा न करने के लिए मजबूर कर दिया है। मैं घूमता था, पचास गाँवों में उलझा रहता था। यहाँ बैठे-बैठे कुछ चिंतन करने का (ठीक कम्पोस्टर जैसा) अवसर मिला है। यही सब होगा।

मैं सोचता हूँ, मेरा खयाल एकांगी तो हो ही सकता है, यह काम खूब गहरा, बहुत ही खोज-बीन करने योग्य, हमेशा-हमेशा का काम है। नयी तालीम की रूपरेखा इसी में से निकलने वाली है। यह होगा नयी तालीम का पहला अगुआ, उसका उद्भव। बाबा ने गाँव-गाँव घंटे भर की शाला जैसी सरल, सुगम, सीधी-सादी बात के साथ एक भारी पत्थर भी तो बाँध दिया है 'गाँव-गाँव विश्व-विद्यालय भी।' यह जो लंकादहनी हनुमानजी की पूँछ हमारी इस घंटे भर की शाला के साथ बाबा ने जोड़ दी है, इसे भी हमें निभाना पड़ेगा। इसीलिए मैंने कहा है। यह काम हमेशा हमेशा का बड़े-से-बड़े विद्वानों, विचारकों तात्त्विकों का काम होगा। दूसरी ओर, बाबा के समग्र तप और पुण्य को स्थायी बनाने का भी और भूल न जाने देने का भी, व्यर्थ न हो जाने देने का भी, एक 'इन्स्ट्रूमेन्ट' होगा। और इससे भूदान-ग्रामदान का रामराजी बीज फल-फूल कर पूरे वटवृक्ष में विकसित हो सकेगा।

यह कार्यक्रम शुरू करने के लिए मैं नीचे पाँच प्रश्न इस सम्बन्ध में सबके सामने पेश करता हूँ। जिसे जो सूझता हो, जिसका जो अनुभव हो, वह लिख भेजें।

(१) यह घंटे भर की शाला चलायेगा कौन? ग्राम-नेता या ग्राम-सेवक?

(२) यदि ग्राम-सेवक हो, तो उसका वेतन कहाँ से लाना ठीक होगा? सिद्धान्त और व्यवहार का योग कैसे होगा?

(३) वह दिन भर क्या करता रहेगा?

(४) इसमें क्या बताना, सिखाना, प्रकट कराना, हृदयंगम कराना होगा? हमारा अंतिमतम मन्तव्य क्या होगा?

(५) शुरुआत किस तरह की जाय? पहले क्या, फिर क्या, अंत में क्या?

मैंने इन प्रश्नों पर जो कुछ सोचा, वह इस प्रकार है।

(१) यह शाला होगी रामराज्य-ज्ञान-आलय जैसी चीज।

(२) एक पूरे समय यही काम करने वाला कार्यकर्ता ही इसे चलायेगा, जो गाँव का स्कूल-शिक्षक हो जायेगा। कल माने तब, जब (क) समूचा गाँव समझ-बूझ कर, विवेकपूर्वक नयी सतयुगी जीवन-व्यवस्था, सर्वश्रेष्ठ और अनिवार्य मान ले। दूसरे सभी प्रलोभनों का निराकरण हो जाये। (ख) सबसे बड़ी बात यह कि गाँव पढ़े-लिखे लोगों के रहने लायक हो जायें, बल्कि इतना सुन्दर और समृद्ध कि माँ-बाप की आत्मा चाह करे कि उसका लाल वहीं रह पाये। (ग) ये कार्यकर्ता भाई गाँव में रहते हुए, देश-दुनिया का ज्ञान विज्ञान सीखने-समझने, प्राप्त करने में स्वावलम्बी प्रथा हासिल कर पायें। खुद इसका दिलो-दिमाग रामराज्य के ...

मासिक चिट्ठियाँ

बिहार की चिट्ठी

सच्चिदानन्द

अगस्त का महीना बिहार क्या, समस्त भारत के लिए एक उथल-पुथल का महीना रहा है। सन् '४२ की महाक्रान्ति इसी महीने में शुरू हुई थी। देश के हजारों युवक इस क्रान्ति की बलिवेदी पर विदेशी हुकूमत की गोलियाँ खाकर शहीद हुए थे! उन शहीदों की याद में ८ और ९ अगस्त को पटना में बिहार सर्वोदय युवक-सम्मेलन का दूसरा वार्षिक अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की यह तिथि जान-बूझ कर रखी गयी थी। आजादी के बाद देश के युवकों में यह भावना घर कर रही है कि अब उन्हें त्याग नहीं, केवल भोग ही करना है। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की आकांक्षा ने उनमें कुर्बानी और शहादत की जो आग जलायी थी, वह क्रमशः बुझती जा रही है! शहीद-दिवस के अवसर पर आयोजित सर्वोदय युवक-सम्मेलन ने युवकों का ध्यान भोग से बलिदान की तरफ मोड़ने का प्रयास किया है। ९ अगस्त की सन्ध्या में युवक-सम्मेलन का शानदार खुला अधिवेशन विशाल गांधी-मैदान में हुआ। अधिवेशन में हजारों युवक, विद्यार्थी, शिक्षक, प्रोफेसर और नागरिक शरीक हुए थे। युवकों और विद्यार्थियों की इतनी बड़ी संख्या सर्वोदय की सभाओं में शायद ही पहले कभी देखी गयी हो! इस सम्मेलन ने यह प्रकट कर दिया कि युवकों में देश-प्रेम, क्रान्ति और शहादत की आग बिलकुल ठंडी नहीं हुई है। उस आग को फिर से प्रज्वलित किया जा सकता है और युवकों को पुनः कुर्बानी के रास्ते पर लाया जा सकता है।

श्री धीरेन्द्र भाई की 'कटनी-यात्रा'

पूर्णियाँ जिले में श्री धीरेन्द्र भाई का एक नया प्रयोग चल रहा है। वैसे, अपने प्रयोग के लिए उन्होंने एक छोटा-सा गाँव (बलिया) चुना है, जहाँ वे स्वयं रहते हैं। लेकिन एक वृहत्तर पैमाने पर भी वह प्रयोग चले, इसके लिए पूर्णियाँ जिले के नौ थाने चुने गये हैं। अगस्त माह के आरम्भ से ही उस क्षेत्र में श्री धीरेन्द्र भाई की 'कटनी-यात्रा' चली और आगे भी चलने वाली है। बीच-बीच में केवल वर्षा और बाढ़ ने उनके अभियान को रोका। जिस गाँव में वे पहुँचे, वहाँ सभी वर्गों के लोगों ने, बूढ़ों, जवानों और बच्चों ने, स्त्रियों और पुरुषों ने, शिक्षितों और अशिक्षितों ने उनका अभिनन्दन किया और उनके कार्यक्रम में हाथ बँटाया। श्री धीरेन्द्र भाई का यह मूल्य-परिवर्तन का प्रयोग अपने-आप में अनूठा है। उनकी 'कटनी-यात्रा' जिले के अन्य हिस्सों में भी चलने वाली है। इस अभियान से जिले भर में, खासकर ग्राम-स्वराज्य के प्रयोगवाले क्षेत्र में, एक नई हवा तैयार हो सकेगी, जो उक्त प्रयोग को आगे बढ़ाने में सहायक होगी, ऐसी आशा है।

गया जिले की प्रगति

ता० १२-१३ अगस्त को गया नगर में जिला सर्वोदय-मंडल की कार्यकारिणी की एक बैठक बिहार सर्वोदय-मंडल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद की अध्यक्षता में हुई, जिसमें श्री जयप्रकाश नारायणजी भी उपस्थित थे। कार्यकारिणी ने तय किया कि गत मई-जून में श्री जयप्रकाशजी की यात्रा में प्राप्त हुए लगभग १००० सर्वोदय-मित्रों के अलग-अलग आठ शिविर आयोजित किये जायँ और उन्हें साम्ययुक्त समाज का स्वरूप प्रकट करने के निमित्त अपनाये गये पंचविध कार्यक्रम को अमल में लाने की योजना समझायी जाय। ये शिविर १० से १५ सितम्बर तक चुने गये प्रयोग-क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर होंगे।

ग्राम-निर्माण और नये ग्रामदान

बिहार में ग्रामदानी गाँवों के निर्माण-कार्य में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। साथ ही यह प्रयास किया जा रहा है कि जिन गाँवों में निर्माण के कुछ विशेष काम हुए हैं, उनके इर्दगिर्द के गाँवों में ग्रामदान का वातावरण तैयार किया जाय। संथाल परगना के सरौंजा और मुंगेर जिले के बेराई गाँव के आसपास क्रमशः दस और तेरह गाँवों में इस तरह की कोशिश विशेष रूप से चल रही है, और क्रमशः आठ एवं तीन गाँव ग्रामदान के लिए तैयार भी हो गये हैं। आशा है, शीघ्र ही ये गाँव ग्रामदान के संकल्प-पत्र भर कर ग्रामदान की घोषणा करेंगे। अन्य जिलों में भी नये ग्रामदान प्राप्त करने की चेष्टा हो रही है। अगस्त के प्रथम सप्ताह में मुजफ्फरपुर जिले के बेलसंड थाने के अन्तर्गत एक गाँव, घोड़हा ने ग्रामदान की घोषणा की है। इस गाँव में ५३ परिवार हैं, जिनमें ५१ परिवारों ने अपनी भूमि ग्राम-समाज को अर्पित की है। बिहार सर्वोदय-मंडल की ग्राम-निर्माण-समिति यथाशीघ्र इस गाँव का सर्वेक्षण करके वहाँ निर्माण का कार्य शुरू कराने वाली है।

संथाल परगना के जिन ३२ गाँवों में निर्माण के काम चल रहे हैं, उन गाँवों के कार्यकर्ताओं की दो बैठकें १२ और १८ अगस्त के बीच हुईं। तय हुआ कि आगामी १५ अक्तूबर तक इन सारे गाँवों का विस्तृत सर्वेक्षण (डिटेल्ड सर्वे) हो और इस सर्वेक्षण के निष्कर्षों के आधार पर उक्त गाँवों के विकास की एक पंचवर्षीय योजना बनायी जाय। सर्वेक्षण के काम में कार्यकर्ता तीन टोलियों में बँट कर लग गये हैं।

'संघर्ष नहीं होने देंगे!'

बिहार में शान्ति-सेना के कार्य भी छिट-पुट ढंग से चलते रहे हैं। जहाँ भी अपने जागरूक कार्यकर्ता हैं, वहाँ अशान्ति को रोकने का भरसक प्रयास उन्होंने किया है। गत माह मुंगेर जिले के बेराई गाँव के एक निकटवर्ती गाँव में दो दलों के बीच संघर्ष इतना बढ़ा कि दोनों तरफ से लाठियाँ और भाले-गड़ासे निकल आये! खबर पाते ही बेराई गाँव के दस नौजवान अपनी जान हथेली पर लेकर वहाँ पहुँचे और दोनों दलों के बीच खड़े होकर यह घोषणा की कि "शान्ति से सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं, इसलिए हम यह संघर्ष होने नहीं देंगे।" फिर क्या था, क्षण भर में समाँ बदल गयी और शान्ति का वातावरण छा गया। एक भयंकर दुर्घटना होते-होते बची! इस घटना का असर आस-पास के गाँवों पर भी पड़ा है और लोग अपने झगड़ों के निपटारे के लिए बेराई गाँव के कार्यकर्ताओं के पास आने लगे हैं।

आसाम की ओर

प्रादेशिक आधार पर शान्ति-सेनाकार्य का संयोजन करने के लिए बिहार शान्ति-सेना समिति की स्थापना कुछ महीने पूर्व हुई है। आसाम सर्वोदय-मंडल के बुलावे पर इस समिति की ओर से गत ८ अगस्त को पाँच शान्ति-सैनिकों की एक टोली वहाँ के उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में चल रहे शान्ति-कार्य में सहायता देने के लिए गोहाटी रवाना हुई। टोली में सर्वश्री रामेश्वर ठाकुर, सुरेश प्रसाद विकल, प्रेमचन्द सिन्हा, बृजानन्द सिंह और मेवालाल मेहता हैं। ये सारे कार्यकर्ता सर्वोदय-आश्रम, रानीपतरा (पूर्णियाँ) से संबंधित हैं। गोहाटी जाने के पूर्व उनके लिए एक विदाई समारोह का आयोजन आश्रम के सदस्यों ने किया और उनके शान्ति-अभियान की सफलता की कामना की। इस अवसर पर सर्वोदय-नेता श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी और बिहार शान्ति सेना समिति के संयोजक श्री विद्यासागर सिंह उपस्थित थे।

विकेंद्रीकरण की दिशा में

गत ९ अगस्त को पटने में बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ के नियामक मंडल और कार्यसमिति की संयुक्त बैठक श्री रामदेव ठाकुर की अध्यक्षता में हुई। निश्चय हुआ कि पूर्णियाँ, संथाल परगना और गया जिलों की तरह मुंगेर जिला भी बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ की केन्द्रीय व्यवस्था से मुक्त होकर खादी-ग्रामोद्योग-कार्य का स्वयं संचालन करे। खादी-कार्य के विकेन्द्रीकरण की दिशा में और खादी-कार्य के नये मोड़ की दृष्टि से संघ का यह कदम एक खास महत्त्व रखता है। पूर्णियाँ, संथाल परगना, गया और मुंगेर जिले सर्वोदय-आन्दोलन की दृष्टि से संगठित और बड़े जिले हैं। इनमें से तीन जिले गत तीन वर्षों से खादी-कार्य का सफलतापूर्वक संचालन स्वयं कर रहे हैं। अब मुंगेर को भी यह जिम्मेदारी सौंपी जा रही है। यह विकेन्द्रीकरण के प्रयोग की सफलता का द्योतक है।

पटना नगर में

पटना नगर की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं की सामूहिक शक्ति से नगर में सर्वोदय का कुछ कार्यक्रम चलाने के लिए उक्त संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक मंडल बना है। हर महीने इस मंडल की बैठक होती है और नगर में चल रहे सर्वोदय के कार्यक्रमों के सम्बन्ध में विचार विमर्श होता है। गत १३ अगस्त को इस मंडल की बैठक बिहार हरिजन-सेवक संघ के कार्यालय-भवन में हुई। तय हुआ कि मंडल की ओर से नगर के किसी एक मुहल्ले में सभी संस्थाओं की सम्मिलित शक्ति से कुछ सघन काम किये जायँ। इस दृष्टि से नगर का कदमकुआँ मुहल्ला, जहाँ बिहार सर्वोदय-मंडल, बिहार भूदान-यज्ञ कमेटी, महिला चरखा-समिति, गांधी-स्मारक निधि तथा बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ जैसी बड़ी-बड़ी संस्थाओं के कार्यालय हैं, चुना गया। यह निश्चय हुआ कि इस मुहल्ले में सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम सघन रूप से चलाया जाय और साथ ही विचार-प्रचार के भी कुछ गहरे काम किये जायँ। आशा है, सभी संस्थाओं के सहयोग से इन कामों में अपेक्षित प्रगति हो सकेगी।

भंगी-कष्ट मुक्ति

पटना नगर में भंगी-कष्ट मुक्ति की दिशा में कुछ प्रयास विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं की ओर से होते रहे हैं। इसके लिए एक भंगी-कष्ट-मुक्ति समिति भी बनी है, जिसमें अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि हैं। गत १९ अगस्त को बिहार हरिजन-सेवक संघ, गांधी स्मारक निधि और बिहार सर्वोदय-मंडल के कार्यकर्ताओं ने सामूहिक रूप से नगर के कुछ 'सर्विस लैट्रिनों' का सर्वेक्षण किया। सन्ध्या में उक्त समिति की बैठक हुई और तय हुआ कि 'सर्विस लैट्रिन' वाले घरों के लोगों से मिल कर, सफाई-कार्य में भंगियों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाय। नये घरों में 'सर्विस लैट्रिन' बनाने की इजाजत न दी जाय, ऐसा निवेदन बिहार सर्वोदय-मंडल की ओर से प्रांत की सभी नगरपालिकाओं से किया जा रहा है। पटना नगर-निगम ने तो निश्चय भी कर लिया है कि वह नये घरों में 'सर्विस लैट्रिन' बनाने की अनुमति नहीं देगा। पुराने 'सर्विस लैट्रिनों' को 'सैनिटरी लैट्रिन' का रूप देने की कोशिश भी हो रही है और रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ता इसमें दिलचस्पी ले रहे हैं।

कलाकारों की बैठक

१८ अगस्त को पटना नगर के कलाकारों की एक बैठक महिला चरखा समिति के प्रांगण में सर्वोदय युवक-सम्मेलन के आवाहन पर हुई। बैठक में अनेक कला-संस्थाओं के प्रतिनिधि, पटना आर्ट्स-कालेज के कलाकार तथा कुछ स्वतंत्र कलाकार और कलाप्रेमी उपस्थित थे। युवक-सम्मेलन की ओर से यह सुझाव पेश किया गया कि सभी कलाओं एवं कला-संस्थाओं के एक स्वतंत्र सम्मेलन का निर्माण किया जाय

और इसमें सभी कलाकारों का सहयोग प्राप्त किया जाय। बैठक में उपस्थित सभी कलाकारों ने, जिनकी संख्या करीब ३० थी, इस विचार का अनुमोदन किया और अपने हार्दिक सहयोग का आश्वासन दिया। इस विषय में सोचने-विचारने के निमित्त ११ कलाकारों तथा कलाप्रेमियों की एक समिति बनी और तय हुआ कि यह समिति समय-समय पर कलाकारों की गोष्ठियाँ करे और कला के माध्यम से लोकजीवन को कैसे सँवारा जा सकता है, इस सम्बन्ध में विचार विमर्श करे।

डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष

अगस्त के आखिरी दिनों में पश्चिम बंगाल के नेता और गांधी-तत्त्व चिंतक डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष की यात्रा बिहार में हुई। रांची, पटना, मुजफ्फरपुर और गया नगर में उनके भाषण गांधी-स्मारक निधि के तत्त्व-प्रचार विभाग की ओर से कराये गये। बंगाली होते हुए भी डा० घोष हर जगह हिन्दी में बोले। उनकी 'टूटी-फूटी हिन्दी' इतनी भी सुने लायक थी। अपने भाषणों में उन्होंने गांधी की अहिंसा की व्याख्या करते हुए कहा, 'हिंसा केवल किसी की हत्या करने में नहीं है। एक वर्ग का दूसरे वर्ग पर, एक धर्म का दूसरे धर्म पर और एक भाषा का दूसरी भाषा पर 'डामिनेशन' भी हिंसा है। इसलिए अगर बापू की अहिंसा कायम करनी है, तो इस 'डामिनेशन' को मिटाना होगा।" भाषा की समस्या का जिक्र करते हुए डा० घोष ने कहा, "यह समस्या प्रेम से ही हल होगी। एक भाषा, एक जाति और एक धर्म का नारा 'हिटलरी' नारा है। इस नारे से भारत टूट जायगा। भारत की एकता भारत की विविधता में निहित है। हमें भारत की सभी भाषाओं का समान रूप से आदर करना होगा और सभी धर्म-मतावलम्बियों के प्रति सहिष्णु बनना होगा, क्योंकि बापू का भारत भिन्न भिन्न [illegible] है।" डा० घोष के भाषणों से लोग बहुत प्रभावित हुए और सबने यह महसूस किया कि इस व्यक्ति के हृदय में बापू की आत्मा बोल रही थी।

मनु बहन की यात्रा

बिहार को बापू की याद दिलाने के लिए श्री मनु बहन गांधी की यात्रा भी गत मास इस प्रांत में हुई। अनेक स्कूल-कालेजों में उनके भाषण कराये गये। [illegible] यह यात्रा बड़ी प्रभावकारी रही। गत २० अगस्त को पटने में रचनात्मक कार्यकर्ताओं की एक सभा का आयोजन उनके लिए किया गया। मनु बहन के मुंह से बापू की [illegible], खासकर उनकी नोआखाली की यात्रा-कहानी सुन कर लोगों की आंखें भर आयीं। आज भारत को तोड़ने वाली [illegible] तेजी से काम कर रही हैं। बापू [illegible] भारत को टूटने से बचा सकती है। [illegible] मनु बहन की यात्रा का [illegible] महत्त्व है वह इसी को [illegible]। बिहार में सितम्बर के अन्त [illegible] यात्रा करने वाली हैं।

पंजाब की चिट्ठी

पंजाब में पूज्य बाबा की पदयात्रा करीब आठ महीनों तक चली। परिणामस्वरूप पंजाब के सर्वोदय-कार्यकर्ता प्रान्त के कोने-कोने में सर्वोदय-विचार को पहुँचाने में सफल हो सके। पुराने कार्यकर्ताओं को नयी स्फूर्ति और प्रेरणा मिली। कुछ नये कार्यकर्ता भी आगे आये। पूज्य बाबा के पंजाब से विदा होने पर पंजाब सर्वोदय-मंडल, जिला सर्वोदय-मंडल, गांधी-स्मारक निधि, पंजाब खादी-ग्रामोद्योग संघ, कस्तूरबा सेवा-मन्दिर और खादी-आश्रम द्वारा पूज्य बाबा की पदयात्रा से प्रान्त भर में सर्वोदय कार्य के लिए जो अनुकूल वातावरण बना था, उसे टिकाये रखने की पूरी कोशिश की गयी।

पिछले चार महीनों में पंजाब में ४९,१३० सर्वोदय-पात्र रखवाये गये। इन पात्रों से कुल २५,२०० रुपये की आमदनी हुई। ४,५०३ रुपये का सम्पत्ति-दान मिला।

जिन दिनों बाबा पंजाब पहुँचे थे, उन दिनों सर्वोदय-साहित्य की बिक्री के लिए केवल एक पुस्तक-भण्डार था। इस समय सारे पंजाब में आठ बड़े भंडार काम कर रहे हैं। सर्वोदय-कार्यकर्ता भी साहित्य बेचने का काम करते हैं। पिछले चार महीनों में ३१,५२० रुपये का साहित्य बिका है। 'बाबा विनोबा' 'सर्वोदय की सुनो कहानी', 'गीता प्रवचन' आदि १० नयी पुस्तकें पंजाबी और उर्दू में प्रकाशित की गयी हैं।

सर्वोदय-विचार के प्रचार के लिए प्रान्त में तीन पत्रिकाएँ प्रकाशित की जा रही हैं। 'सर्वोदय-विचार-पत्रिका' उर्दू में, 'भूदान' पंजाबी में और 'पंजाब सर्वोदय पत्रिका' हिन्दी में निकलती है। तीनों की कुल ग्राहक-संख्या ३,०४५ है। २६७ ग्राहक भारत के अन्य पत्र-पत्रिकाओं के बनाये गये हैं।

पूज्य बाबा की पदयात्रा करते समय कांगड़ा और होशियारपुर जिलों में १६ गांव ग्रामदान में मिले थे। इन ग्रामदानी गांवों की श्री ओंकार चन्द जिला प्रतिनिधि की देखरेख में जांच करायी गयी। लाला अचिन्तराम, लाला हरिराम चोपड़ा, महाशय तीर्थराम श्री रोशनलाल सोनी आदि व्यक्तियों ने इन गांवों में तीन दिन तक दौरा किया और लोगों को ग्रामदान का विचार समझाया। दो गांवों में रेशा-उद्योग जारी किया गया। दूसरे दो गांवों में गांव की अपनी दूकानें खोली गयी हैं। मधुमक्खी-पालन का काम शुरू किया गया है। इन सब गांवों में ग्राम निर्माण-समितियाँ बनायी जा रही हैं। एक ग्रामदान-दल तैयार किया गया है जो गांव-गांव घूम कर विचार-प्रचार का काम करता है। इन गांवों में [illegible] भेद [illegible] कम हो रहा है प्रेम बढ़ रहा है। यह सारा काम [illegible] के अपने पुरुषार्थ से हो रहा है।

१६३ एकड़ नयी जमीन भूदान में मिली है और ७०२ एकड़ जमीन २४३ [illegible] बाँटी गयी है।

इस समय पंजाब में २१८ लोक सेवक और ११ [illegible] सेवा-कार्य कर रहे हैं।

पंजाब के लोगों तथा सर्वोदय कार्यकर्ताओं पर बाबा की यात्रा का अच्छा असर पड़ा। पदयात्रा-काल में लगभग दो हजार एकड़ भूमि का वितरण किया गया। करीब पचास हजार सर्वोदय-पात्र रखवाये गये। जिलों में सर्वोदय-मंडल कायम किये गये। प्रदेशीय सर्वोदय-मंडल बनाया गया। इस प्रकार पूरे प्रान्त में सर्वोदय के काम के लिए एक वातावरण तैयार हुआ। जब बाबा पंजाब छोड़ने लगे, तब सर्वोदय-कार्यकर्ताओं की माँग पर बाबा ने पंजाब के पचास कार्यकर्ताओं का एक सप्ताह का एक शिविर इन्दौर में रखना मंजूर किया था। तदनुसार ८ से १४ अगस्त तक इन्दौर में बाबा के मार्गदर्शन में शिविर चला, जिसमें ४५ चुने हुए कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

पूज्य बाबा की प्रेरणा तथा आपसी चर्चाओं के आधार पर पंजाब के लिए आगे का जो कार्यक्रम सोचा गया है, वह इस प्रकार है :

(१) पटियाला, संगरूर, भटिंडा, कपूरथला, महेन्द्रगढ़, अम्बाला और गुड़गांव जिलों में सर्व-सेवा-संघ के विधान के आधार पर जिला-संगठन खड़े किये जायँ।

(२) काशी और इन्दौर नगर के लिए सर्वोदयनगर की जो कल्पना है, उसी के आधार पर पंजाब में जालन्धर नगर को सर्वोदयनगर बनाने के लिए सभी आवश्यक कार्यवाही की जाय और कार्यकर्ताओं की सामूहिक शक्ति वहाँ लगायी जाय।

(३) इस समय पंजाब में पचास हजार से कुछ कम सर्वोदय-पात्र चालू हैं। तय पाया कि इस वर्ष के अन्त तक दो लाख सर्वोदय-पात्र रखवाने का लक्ष्य पूरा किया जाय।

(४) कांगड़ा-होशियारपुर के ग्रामदानी-क्षेत्र में, जहाँ पहले कदम के तौर पर कार्यकर्ताओं की सामूहिक शक्ति से लोकमत तैयार हुआ है। ग्राम-निर्माण के कार्य को जनशक्ति के आधार पर खड़ा किया जाय।

(५) पंजाब में आन्दोलन की गतिविधि बढ़ाने के लिए हरियाना, पेप्सू और जालन्धर-क्षेत्र में कार्यकर्ताओं के चार-चार दिन के तीन शिविर आगामी अक्तूबर मास में किये जायँ।

गुरदासपुर में कार्यकर्ताओं का तीन दिन का एक शिविर रखा जाय और जिलों में पदयात्रा चलायी जाय।

वर्ष के अन्त तक एक लाख रुपयों की साहित्य-बिक्री का लक्ष्य पूरा किया जाय।

—ओमप्रकाश त्रिखा

अखता-पिपराही : एक परिचय

सन् १९५० की चैत्र रामनवमी उत्तर बिहार के सीतामढ़ी स्थान के लिए अभिशाप बन गयी। शहर से बाहर एक बड़े मैदान में जहाँ बैलों के क्रय विक्रय के लिए आने वाले असंख्य किसानों तथा व्यापारियों का जमघट लगा रहता, और प्रान्त के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों से भी लोग आते, वहीं दुर्भाग्य से दो भाइयों (हिन्दू-मुसलमान) के झगड़े ने साम्प्रदायिक दंगे का उग्र रूप ले लिया। उसकी लपट नेपाल के पश्चिमी सीमान्त तथा भारत के उत्तरी रेखा-पट पर अवस्थित सुरम्य बाग-बगीचों से लदी कुसुमाभरी मसनद की तरह फैली घरती पर बसे पिपराही-अखता गांव में भी दावाग्नि की तरह फैल भागती पहुँच गयी।

पिपराही अखता की दुर्घटना देश-विदेश में विस्तार से चार गुनी आग लगी। सर्वोदय के शान्तिसैनिकों से अब न रहा गया। जो जहाँ थे, वहीं से तत्काल चल पड़े और अपने पुरोहित भाइयों के पास पहुँच कर शान्त होने के लिए उनके आगे नतमस्तक होकर गिर पड़े। शान्तिसैनिकों के अहिंसक [illegible] ने उनके हृदय को हिला दिया। हिंसा पर अहिंसा की विजय की पुनरावृत्ति हुई।

अभी इस पिपराही-अखता में पूर्ण शान्ति है। गांधी-स्मारक निधि, बिहार शाखा, पटना की ओर से आश्रम की एक पर्णकुटी शान्ति-स्थापना के काम में पूर्ण योग दे रही है। अभी यह क्षेत्र बाढ़ की चपेट में पड़ कर दरिद्रता के दामन में फंस गया है। फिर भी यहाँ के नागरिक हतोत्साह न होकर दृढ़ता के साथ आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं।

अब भी पिपराही अखता में एक शान्ति-सैनिक निश्चल भाव से बैठा गांवों को सर्वोदय का सन्देश सुनाते हुए सत्य-अहिंसा का अलख जगा रहा है। गांधी-स्मारक निधि का प्रचार-प्रसारी निरन्तर गांवों में परिभ्रमण कर ग्रामीणों में एक नयी चेतना, एक नये स्फुरण का शंखनाद फूंक रहा है, जिसमें प्रेम से रह कर जीने का शुभ संकल्प है। प्रातःकाल प्रत्येक घरों में चरखे का सम्वेत घर-घर स्वर सुनायी पड़ने लगा है। इस दिशा में बिहार खादी ग्रामोद्योग की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी होगी। खादी के फटे-पुराने ही कपड़े सही, अधिकांश के बदन पर दीख पड़ता है। पूरे गांव के गांव को ग्रामोद्योगी जीवन में परिणत करने की योजना है।

—सिद्धेश्वरप्रसाद चौधरी 'मनु'

चलचित्रों पर प्रतिबंध लगाइये !

ब्योहार राजेन्द्र सिंह

भारत में हम अनुभव करते हैं कि चलचित्रों में अक्सर ऐसे चित्र प्रदर्शित किये जाते हैं, जिनमें नैतिकता को ठेस पहुँचती है। हिंसा और डकैती के रोमांचकारी दृश्य शृंगारिक प्रदर्शन, अश्लील हाव-भाव और इशारे तथा अमर्यादित परिधान पहने हुए स्त्रियों के चित्र, उत्तेजक गायन आदि सुनाना और दिखलाना आज मामूली-सी बात हो रही है। शिक्षित जनता की ओर से नित्य आवाज उठती है कि ऐसे चित्रों पर प्रतिबंध लगाया जाय। कम-से-कम नियंत्रक मण्डल (सेन्सर बोर्ड) द्वारा ऐसे भाग काट दिये जायँ। इतना भी न हो, तो कम-से-कम छोटी उम्र के बालकों को इन चित्रों को देखने से रोका जाय।

इसके विरुद्ध सिनेमासंबंधी पत्र-पत्रिकाएँ आवाज उठाती हैं कि सेन्सर के द्वारा उनके व्यवसाय को हानि हो रही है, सेन्सर कड़ाई का प्रयोग कर रहा है तथा सिनेमा-मालिकों को हानि उठानी पड़ती है। उनके संगठित विरोध और शायद प्रलोभन के वश होकर सेन्सर की कैंची काटती अवश्य है, किन्तु हानिकारक भागों को ज्यों-का-त्यों छोड़ कर साधारण से भागों को काटकर अपना कर्तव्य पूरा कर लेती है!

कुछ चित्रों को केवल 'वयस्कों के लिए' शब्द लिख कर पास कर देती है, किन्तु उन्हें देखने के लिए बालकों को टिकटें न दी जायँ, इसका कोई प्रबंध नहीं किया जाता। अतः यह प्रतिबंध भी क्रियात्मक नहीं हो पाता। दूसरे देशों में भी सेन्सर बोर्ड का भय है, किन्तु वह भारतीय बोर्ड की अपेक्षा सिनेमा-प्रदर्शकों के प्रति अधिक उदार है, क्योंकि जिस वस्तु को हम भारतीय मानदण्ड से अनैतिक समझते हैं, उन बातों को वे आपत्तिजनक नहीं समझते हैं। उनके द्वारा प्रकाशित प्रतिबन्ध लगाने के सिद्धान्तों की एक सूची देखने को मिली, जिसके कुछ मुद्दे इस प्रकार हैं :

(१) नग्न चित्रों के प्रदर्शन में 'सेन्सर' की यह नीति है कि उन्हें 'डाक्युमेंटरी' में दिखाने में कोई हानि नहीं। बाकी चित्रों में उनकी केवल झलक दिखाई जा सकती है। हाँ, मूर्तियों के रूप में वे दिखाये जा सकते हैं।

(२) हिंसात्मक दृश्य केवल ऐतिहासिक चित्रों में बच्चों को दिखाये जा सकते हैं। हिंसा अपने-आप में मनोरंजन के लिए उचित कही जा सकती है, किन्तु किसी खास उद्देश्य से उसका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

(३) सत्ताधारियों को आलोचना से परे समझना चाहिए। हाँ, इनका व्यंग्य मनोरंजन के लिए किया जा सकता है, किन्तु शासकीय परिवार को संरक्षण मिलना चाहिए। यह राजनीतिक प्रतिबंध से अलग समझना चाहिए।

(४) मुकदमों पर जो लोग अधिकार रखते हैं, उनकी किसी हालत में आलोचना न की जाय और मनगढ़न्त उनका विरोध करते हुए न चित्रित किये जायँ।

(५) धार्मिक संस्थाओं या दलों का दिल न दुखाने की काफी सावधानी रखी जाय।

(६) ईसा को प्रदर्शित करने वाले चित्रों को स्वीकृति न दी जाय।

(७) भयंकर चित्र, जिसका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है, केवल वयस्कों तक ही सीमित रखे जायँ। वे बिना रोक-टोक के हिंसा का प्रयोग कर सकते हैं।

(८) रोमांचकारी चित्रों में हिंसा, जो कि मानसिक या यौनसंबंधी कुरीतियों से संबंध रखती है, कभी पास नहीं की जाय।

(९) घाव अथवा रक्त के दृश्य भयंकर चित्रों में दिखाये जा सकते हैं, किन्तु युद्ध-संबंधी चित्रों में नहीं।

(१०) यौनसंबंधी विकृति के दृश्यों को देखना अनुचित है।

(११) स्त्री-पुरुषसंबंधी नैतिकता पर वाद-विवादों को अनुमति नहीं दी जा सकती।

(१२) समाज द्वारा स्वीकृत स्त्री-पुरुष संबंधी प्रथाओं को केवल ऊपरी तौर से प्रदर्शित किया जा सकता है।

(१३) चलचित्रों में पाप के दृश्य नहीं हो सकते, जो कि दर्शकों के लिए अनुकूल समझे जाते हैं।

(१४) विदेशी भाषाओं के संवादों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगेगा।

'एनकौन्टर' नामक विदेशी पत्र में एक लेख छपा है, जिसमें इनका सभी मुद्दों की कड़ी आलोचना की गयी है। किन्तु इनकी सूची को देखने से पता लगता है कि कई नियम बहुत अच्छे हैं। जैसे नियम क्रमांक ३, ४, ५, ६, ८, १० तथा ११। लेख से प्रकट होता है कि हिंसा तथा नैतिक शिथिलता पश्चिमी समाज में इतनी अधिक प्रवेश कर गयी है कि वह दैनिक जीवन की वस्तु बन गयी है। प्रत्येक समाज में नैतिक मानदण्ड अलग-अलग होते हैं। अब हमारा सबसे पहला आग्रह यह होगा कि इस प्रकार के विदेशी चलचित्रों पर भारत में सेन्सर द्वारा प्रतिबंध लगाया जाय। दूसरे स्वदेशी चित्रों में भी इस प्रकार के अनैतिक एवं हिंसात्मक दृश्यों का प्रदर्शन बंद करें। टेलिविजन में भी [illegible] को [illegible] के रूप पर न उतरने दें। [illegible] तथा गानों में अंगों के प्रदर्शन पर रोक लगायें। तीसरे, केवल वयस्कों के लिए बने चित्र-निर्माताओं को [illegible] स्वतंत्रता न दें। इन चित्रों के फलस्वरूप हमारा नैतिक स्तर उठने के बदले गिर रहा है।

चलचित्रों का प्रचार देश में इतना बढ़ रहा है कि उसका हमारा जीवन पर असर पड़े बिना नहीं रह सकता। जनता के मनोरंजन का दूसरा साधन ही नहीं रह गया है। हम यह मानने को तैयार नहीं कि मनोरंजन के साधनों को शिक्षा का साधन बनाना अनुचित है। इसके विपरीत हम यह मानते हैं कि जो शिक्षा मनोरंजन के साथ दी जाती है, वही लोगों के हृदयंगम होती है। हम देख रहे हैं कि विद्यार्थियों को जो शिक्षा दिन भर स्कूलों या घरों में दी जाती है, वह सब संध्या समय सिनेमा में जाकर धुल जाती है! यही कारण है कि समाज में हिंसा, चोरी, व्यभिचार तथा अन्य अनैतिक आचारों का चलन बढ़ रहा है। बालक और स्त्रियाँ भी अन्य हिंसक तथा अनैतिक कार्य करने में नहीं चूकते, जिनके समाचार हम दैनिक पत्रों में पढ़ा करते हैं। बहुधा चलचित्रों में ऐसे कार्य करनेवाले ही हीरो बनाये जाते हैं, जो दूसरों को धोखा देते, चोरी करते, बच निकलने वाले बुद्धिमान् और डाका डालने या हिंसा करनेवाले साहसी समझे जाते हैं। शराब पीने के दृश्य भी आम दिखाये जाते हैं, जिनसे हमारे मद्यनिषेध, जुआखोरी, शोषण, चोरी, डाका आदि बंद करने का लिया गया और नैतिकता का प्रचार करने के सारे प्रयत्न निष्फल होते दीखते हैं। किशोर के पुत्र स्कूल-कालेज के लड़के-लड़कियों के प्रेम तथा छिप कर मिलने और माता-पिता द्वारा निश्चित किये गये विवाह-संबंधों को ठुकरा कर प्रेमी या प्रेमिका से विवाह करने वाले को 'हीरो' बनाया जाता है। समाज में हम नित्य देखते हैं कि इस प्रकार के सामान्य प्रेम अन्त में असफल होते हैं। किन्तु चित्रपट पर वे ही सफल चित्रित किये जाते हैं।

हमारा यह मतलब नहीं कि अच्छे-वाले चित्रों का अभाव है। अब कुछ-कुछ उत्तम चित्र भी देखने को मिलते हैं, किन्तु उनमें भी बीच-बीच में ऐसे भद्दे नृत्य और गंदे गीत भर दिये जाते हैं, जो अच्छे दृश्यों पर पानी फेर देते हैं। हमारे छोटे-छोटे बालक इन्हीं गीतों को गाते हुए सुने जाते हैं। सिनेमा-व्यवसायक कहते हैं कि यदि हम इस प्रकार के दृश्य न रखें, तो वे चित्र लोकप्रिय न होंगे। यह सारी योजना (कायदा-कानून सहित) आमदनी की दृष्टि से बनाते हैं, क्योंकि निम्न श्रेणि के लिये ही उन आमदनी वाले, रिक्शावाले, मजदूर आदि लोगों को नीचे रखते हैं। इसका फल यह होता है कि जनता का नैतिक स्तर और भी नीचे गिरता जाता है।

चित्रों को देखने वाली दूसरी श्रेणी धार्मिक जनता है। उसके लिए भी चित्र बनाये जाते हैं, किन्तु उनमें ऐसा [illegible] करते उसी की श्रद्धा को ठेस पहुँचाती जाती है। शिव के सामने पार्वती और श्रीकृष्ण के सामने भी राधा को [illegible] के हृदय को चोट पहुँचाते हैं। [illegible] [illegible] का प्रदर्शन [illegible] सेन्सर ने बंद कर दिया है। [illegible] धार्मिक चित्रों में [illegible] चाहिए।

गर्भस्थ गाय तथा भेड़ के बच्चों की खालों का व्यापार

श्री हरदेव [illegible] मंत्री गोहत्या-निरोध-समिति, दिल्ली से लिखते हैं :

"२५ अगस्त को देहली [illegible] के प्रबन्ध में चलने वाले [illegible] में [illegible] बच्चों की खालों को प्राप्त करने के लिए दो सौ गर्भवती भेड़ें मारी गयीं। [illegible]

[illegible]

[illegible]"

असत्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

नागरी लिपि *

गुण-दोष-वीरहीत मनुष्य दुर्लभ

हमें यह समझ लेना चाहीओ की धान के ऊपर जो छीलका होता है, वह ऊसके बचाव के लीओ है। अगर आप ऊसे खाना चाहते हैं, तो छीलका हटा कर खाओीये। दुनीया में गुण-दोष-वीरहीत मनुष्य हो नहीं सकता। अैसा मनुष्य अव्यक्त ही होगा। लेकीन जीस तरह चीत्र खींचने में कागज पर काला करना ही पड़ता है—यो आजकल तो नाखून से भी चीत्र बनाये जाते हैं, ओनमें भी यह मीसाल कुछ कमजोर पड़ेगी—ऊसी तरह गुण प्रकाशन के लीओ दोषों की जरूरत है। अगर हम ओस तरह सोचेंगे, तो हर मनुष्य हमारे लीओ आदरणीय होगा। हमें ओक-दूसरे के प्रती आदर कभी खोना नहीं चाहीओ। सौमनस्य का यह ओक साधन है। जहां हम आदर खोते हैं, जहां अनादर का ऊत्पादन होता है, वहां ऊस मनुष्य के साथ मीलने के लीओ बीच में जो पुल होता है, वह टूट जाता है। फीर मीलन का कोओी आधार नहीं रहता। ऋग्वेद में प्राय सौमनस्य की चर्चा आती है। वेदों ने ओस बात पर बहुत जोर दीया है की हमारे आपस के व्यवहार में सौमनस्य होना चाहीओ। ओसके लीओ जरूरी है की हम हरओक के साथ भलमनसाहत से पेश आवें। यों स्वच्छता और दुनीया के लीओ सत्वशुद्धी के बाद आगे का कदम है, सौमनस्य।

ओन्दौर, ३-८-'६० —वीनोबा

* लिपि-संकेत : f = ी; ी = ि; ा = ø, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

स्वर्गीय डा० धावन

डा० गोपीनाथ धावन आधुनिक शिक्षा-प्राप्त विश्वविद्यालयों के उन चन्द प्रोफेसरों में से थे, जो गांधीजी के विचारों से और उनके तत्त्वज्ञान से आकर्षित हुए और जिन्होंने गांधी विचार को अपने अध्ययन-अध्यापन का मुख्य विषय बनाया। "पोलीटिकल फिलासफी आफ महात्मा गांधी"—गांधीजी के राजनैतिक तत्त्वज्ञान के विषय पर डा० धावन ने बहुत वर्ष पहले एक ग्रंथ लिखा था, जिस पर उन्हें 'डॉक्टरेट' की उपाधि मिली। डा० धावन पिछले कई वर्षों से मृत्यु पर्यन्त लखनऊ विश्वविद्यालय के राजनीति विभाग के अध्यक्ष रहे और अपने छात्रों को बराबर गांधी-विचार के अध्ययन की प्रेरणा देते रहे। पिछली जनवरी में बनारस में श्री जयप्रकाशजी के भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना के विषय पर जो परिसंवाद हुआ, उसमें भी डा० धावन ने भाग लिया था। दुर्भाग्य से डा० धावन का स्वास्थ्य पिछले कई वर्षों से अच्छा नहीं रहा। स्वर्गीय किशोरलाल भाई की तरह दमा उनका साथी था। पिछले २३ अगस्त को लखनऊ के अपने निवास-स्थान पर डा० धावन का जब निधन हुआ, तो उनकी उम्र केवल ५४ वर्ष की थी। हम सर्वोदय-परिवार की ओर से डा० गोपीनाथ धावन के प्रति अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करते हैं।

संतति-नियमन

पृथ्वी पर बढ़ती हुई मनुष्य संख्या आज के बहुत से विचारकों के लिए एक हौआ बन गयी है। इस विषय को लेकर आम लोगों के मानस में तरह-तरह का आतंक पैदा किया जाता है और आगे आने वाले अन्धकारमय भविष्य का चित्रण ये लोग करते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए कृत्रिम उपायों द्वारा संतति-नियमन से लेकर भ्रूण-हत्या तक का विधान भी ये लोग करते हैं और भविष्य की आशंका से अभिभूत होकर या किन्हीं निहित स्वार्थों के वश होकर इन बातों के पीछे रही हुई अनीति को भी देखना या समझना पसन्द नहीं करते। संतति नियमन के पक्षपातियों की एक मुख्य दलील यह है कि जिस तेजी के साथ मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है, उसके लिए पर्याप्त खाद्य भी कुछ वर्षों के बाद धरती माता से पाना असम्भव हो जायगा। पर अभी हाल ही में लंदन में पश्चिम के कुछ प्रमुख वैज्ञानिकों का एक परिसंवाद 'ब्रिटिश एसोसियेशन फार दि एडवान्समेंट आफ साइन्स" द्वारा आयोजित किया गया था। इन वैज्ञानिकों ने इस दलील को चुनौती दी है कि अगर मानव-जाति सन्तति नियमन के द्वारा अपनी बढ़ती हुई संख्या को नहीं रोक पायेगी तो उसे खाने की कमी, अकाल और युद्ध आदि प्राकृतिक विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा। इन वैज्ञानिकों ने आंकड़ों के आधार पर यह साबित किया है कि धरती की मौजूदा उर्वरा शक्ति न केवल तीन अरब की आज की जनसंख्या के लिए काफी मात्रा में खाद्य-सामग्री मुहैया कर सकती है, बल्कि आज की अपेक्षा दुगुना अन्न अभी देने की शक्ति उसमें है। इन वैज्ञानिकों का कहना है कि एक ओर जब कि दुनिया के सम्पन्न देश अपने यहाँ पैदा होने वाली उपज के लिए ऊँची कीमतें वसूल करने की दृष्टि से अतिरिक्त खाद्य-सामग्री को बहुत बड़ी तादाद में समुद्र में फेंक देते हैं या अन्न का अनावश्यक संग्रह करके दुनिया में उसकी कृत्रिम कमी पैदा करते रहते हैं, ऐसी हालत में गरीब मुल्कों के लोगों को संतति नियमन का उपदेश देना सर्वथा अनैतिक है।

स्वच्छंदतापूर्वक भोग विलास की वृत्ति पर अंकुश लगाना और संयमित जीवन बिताना शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक सभी दृष्टियों से मनुष्य के लिए वांछनीय है, इसमें संदेह नहीं, लेकिन अपनी संतान को धरती माता भविष्य में खिला नहीं सकेगी, यह डर लोगों में पैदा करके उन्हें संतति-नियमन के कृत्रिम उपायों की ओर प्रेरित करना सर्वथा भिन्न वस्तु है। इस प्रकार के उपायों के द्वारा बढ़ती हुई मनुष्य-संख्या को रोकने की कोशिश शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक सभी दृष्टियों से हानिकारक है।

ग्रामस्वराज्य-पदयात्राएँ

राजस्थान के कार्यकर्ताओं ने ता० ११ सितम्बर से २ अक्तूबर—"विनोबा-गांधी पक्ष" में ग्रामस्वराज्य-पदयात्राओं का एक विशेष कार्यक्रम सम्पन्न करने का तय किया है। पिछले २ अक्तूबर से राजस्थान प्रान्त में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण या 'पंचायती राज' का प्रयोग सरकार ने शुरू किया थी, जिसके अन्तर्गत ग्राम-पंचायतें, पंचायत-समितियाँ तथा जिला-परिषद् आदि बना कर विकास आदि के लिए काम उन्हें सौंपे जा रहे हैं। हालांकि ग्रामस्वराज्य की जो बापू या विनोबा की कल्पना है, उसमें और इस प्रयोग में बहुत अन्तर है, फिर भी चूँकि गाँव-गाँव में पंचायती राज की योजना को लेकर चुनाव आदि होने वाले हैं, अतः इस प्रयोग से ग्रामस्वराज्य का असली रूप लोगों को समझाना और उस ओर उन्हें प्रवृत्त करने का राजस्थान के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने तय किया है। सरकार की ओर से पंचायती राज का जो प्रयोग अमल में लाया जा रहा है, वह असली माने में ग्रामस्वराज्य न होते हुए भी उस ढाँचे का उपयोग लोग चाहें तो ग्राम स्वराज्य की ओर बढ़ने में कर सकते हैं। ११ सितम्बर से राजस्थान के कई क्षेत्रों में पदयात्राएँ आयोजित करके गाँव-गाँव में यह समझाने की कोशिश की जायगी कि गाँवों के चुनावों में झगड़े न हों, दलबंदी न हो, चुनाव सर्वसम्मति से हों और गाँव के सारे काम गाँव के समस्त बालिग स्त्री-पुरुषों की ग्रामसभा के निर्णयों के अनुसार हों। राजस्थान समग्र-सेवा-संघ ने ग्रामस्वराज्य का एक संकल्प-पत्र भी तैयार किया है, जो गाँवों की आम सभाओं में इन पदयात्राओं के दौरान में दुहराया जायगा। —सिद्धराज ढड्ढा

भला भलाई क्यों छोड़े ?

इस्लाम धर्म के सबसे बड़े नेता मुहम्मद साहब प्रतिदिन अपने घर से मसजिद में नमाज पढ़ने जाया करते थे। मसजिद के रास्ते में एक दुष्ट बुढ़िया रहती थी। उसको मुहम्मद साहब से इतनी चिढ़ थी कि जब वे उसके मकान के सामने से गुजरते, तो वह अपने छज्जे पर से उनके सिर पर कुछ-न-कुछ कूड़ा डाल देती थी। मुहम्मद साहब इसे चुपचाप सह लेते। वे भगवान से उस बुढ़िया को सुमति देने की प्रार्थना करते हुए चले जाते थे। प्रतिदिन यही चलता था। न तो बुढ़िया की दुष्टता छूटी और न मुहम्मद साहब की सहिष्णुता।

एक दिन मुहम्मद साहब के सिर पर कूड़ा नहीं पड़ा। उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह आज कैसे चूक गयी। जब वे नमाज पढ़ कर लौटने लगे, तो उन्हें फिर उसका ध्यान आया। लौटते समय भी उसको न देख कर मुहम्मद साहब उसका हालचाल जानने के लिए उसके घर में चले गये। वहाँ वह एक खाट पर बीमार पड़ी थी। उसकी दशा बहुत बुरी थी। घर में कोई पानी देने वाला भी नहीं था। बुढ़िया अकेली पड़ी कराह रही थी। मुहम्मद साहब को देखते ही उसके होश उड़ गये। उसने सोचा कि वे मौका देख कर बदला निकालने आये हैं। लेकिन क्षण भर में ही उसका भ्रम मिट गया।

मुहम्मद साहब ने उसका कष्ट पूछा, उसे दिलासा दिया। फिर वे उसकी सेवा-शुश्रूषा में लग गये। जब तक बुढ़िया चंगी नहीं हुई, तब तक वे वहाँ से नहीं टले। उस समय उन्हें उसके अपकारों का ध्यान भी नहीं आया। अपनी भलाई से उन्होंने पराये को भी अपना बना लिया।

बुढ़िया को अपने दुर्व्यवहार पर बड़ी लज्जा और ग्लानि हुई। स्वस्थ होने पर उसने मुहम्मद साहब से रो-रोकर अपने अपराधों के लिए क्षमा माँगी। मुहम्मद साहब उसके सारे दोषों को पहले ही भुला चुके थे। बुढ़िया सच्चे हृदय से उनके धर्म को मानने लगी।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हमें बताया—'बुरा 'बुराई' ना छोड़े तो भला भलाई क्यों छोड़े।' गांधीजी की यह सीख बड़े काम की है। —जयप्रकाश भारती

राजनीति निरर्थक साबित हो चुकी है !

विनोबा

नौ सालों से मैं निरन्तर बोलता आ रहा हूँ। अब इसके आगे अज्ञात-यात्रा में जाने की सोचता हूँ। ईश्वर-कृपा से यात्रा तो अखंड चलेगी, लेकिन मैं चाहता हूँ कि उसकी बहुत ज्यादा जानकारी दुनिया-भर में न फैले। मैं यह भी जानता हूँ कि बिलकुल ही अज्ञात-यात्रा मेरे लिए नामुमकिन है; क्योंकि परिस्थिति के कारण मैं ज्ञात हो चुका हूँ। ऐसी हालत में अज्ञान-यात्रा का विचार कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि अब तक नौ साल भारत में जो यात्रा चली, उसकी यहाँ समाप्ति हो और आगे नये ढंग से यात्रा चले, इसलिए अब मैं कुछ कम बोलना चाहता हूँ।

स्वराज्य-प्राप्ति के पहले जो ताकत थी, वह राजनीति के क्षेत्र में थी, क्योंकि उन दिनों उस क्षेत्र में जो भी कोई हिस्सा लेते थे, उनको बहुत त्याग करने का मौका मिलता था। जेल जाना पड़ता था, जुर्माना देना पड़ता था, कुटुम्ब का वियोग सहन करना पड़ता था, लाठियाँ पड़ती थीं और किसी-किसी को तो फाँसी पर भी चढ़ना पड़ता था! ऐसी सारी प्रणाली राजनीति के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए परमेश्वर ने बनायी थी। जिस क्षेत्र में त्याग का मौका रहता है, उसमें शक्ति रहती है। शक्ति का अधिष्ठान वहीं होता है, जहाँ त्याग का सहज मौका मिलता है, त्याग करना ही पड़ता है, मनुष्य से त्याग करवाया जाता है। यह नहीं कि मनुष्य त्याग करता है, बल्कि त्याग ही मनुष्य के पास आकर पहुँचता है। इस तरह जहाँ सहज त्याग का मौका रहता है, उस क्षेत्र में शक्ति का संचार होता है।

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद राजनीति का स्वरूप बदला है। उस समय कांग्रेस का चवन्निया सदस्य होने में भी अंग्रेजों का दुश्मन बनना पड़ता था और भारी कष्ट भुगतने पड़ते थे। अंग्रेजों का रोष सहन करना पड़ता था। लेकिन अब कांग्रेस में दाखिल होने से कुछ त्याग करने का नहीं, बल्कि पाने का ही मौका मिलता है। जिस क्षेत्र में त्याग करने के लिए मौका कम है, जो अधिकार का क्षेत्र है, उसमें शक्ति का संचार नहीं होता। इसका मतलब यह नहीं कि जो राज्य चलाते हैं, वे त्याग नहीं कर सकते। वे त्याग जरूर कर सकते हैं और उन्हें करना भी चाहिए। उनमें से कुछ करते भी हैं। ऐसे जो हैं, वे सब भारत के लिए गौरव माने जायेंगे। ऐसों से ही भारत की शक्ति बढ़ेगी। उदाहरण के लिए, भरत राज्य चलाता था, पर राम का स्मरण करते हुए अत्यन्त वैराग्यपूर्वक काम करता था। लेकिन असल में राज्य का क्षेत्र त्याग का क्षेत्र नहीं है। राज-सत्ता पर आरूढ़ होने के बाद भी कोई त्याग करे, तो वह बहुत बड़ी बात होगी, लेकिन राज-सत्ता का क्षेत्र सहज त्याग का क्षेत्र नहीं है। भरत का त्याग सहज त्याग नहीं था, हेतुपूर्वक किया हुआ त्याग था। राम का त्याग सहज त्याग था, क्योंकि जंगल का क्षेत्र सहज त्याग का क्षेत्र है। सत्ता पर आरूढ़ होकर हेतुपूर्वक त्याग करना पड़ता है। जैसे, राजा जनक राज्य पर आरूढ़ थे, लेकिन उन्हें उसका स्पर्श नहीं था। 'मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दह्यति किंचन'—यह जनक महाराज का एक प्रसिद्ध वचन है कि मिथिला को आग लगे तो लगे, उससे मेरा कुछ नहीं जलता! इस तरह का निर्लिप्त, वैराग्यसम्पन्न और त्यागमय जीवन वे बिताते थे, लेकिन यह उनकी अपनी विशेषता थी। विष्णु भगवान् लक्ष्मी के साथ रहते हुए भी अत्यन्त उदासीन थे, लक्ष्मी उनके साथ छाया-स्वरूप खड़ी रहती थी, परन्तु वे परम वैराग्य-सम्पन्न थे। विष्णु भगवान् का यह चित्र हेतु-पूर्वक त्याग का चित्र है। लक्ष्मी के साथ सहज त्याग नहीं होता। जिस क्षेत्र में सहज त्याग होता है, वहाँ शक्ति रहती है। शंकर भगवान् त्यागमय जीवन बिताते थे। उनका जीवन सहज त्याग का जीवन था। रामचन्द्र अरण्य में रहते थे, वहाँ उन्हें स्व-प्रयत्न से त्याग करना नहीं पड़ता था, त्याग होता ही था। जो क्षेत्र त्याग के लिए अनुकूल होता है, वहाँ शक्ति रहती है और जो त्याग के लिए अनुकूल नहीं होता, वहाँ शक्ति का क्षय होता है।

स्वराज्यप्राप्ति के बाद अब राजनीति का क्षेत्र सहज त्याग का क्षेत्र नहीं रहा। पहले वह था, क्योंकि स्वराज्य प्राप्ति एक धर्म हो गया था। उसके बिना हर प्रकार का विकास असंभव था। इसलिए पर-राज्य से जूझना पड़ता था। उन दिनों उस काम में संन्यासी, यति और मुनि भी दाखिल हो जाते थे। इसलिए उस क्षेत्र में शक्ति-संचार होता था। लेकिन स्वराज्य-प्राप्ति के बाद शक्ति सामाजिक क्षेत्र में आती है, राजनीति के क्षेत्र में नहीं। स्वराज्य-प्राप्ति के पहले की राजनीति दरअसल राजनीति नहीं थी, वह एक धर्म-क्षेत्र ही था। लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के बाद सामाजिक क्षेत्र में ऊँच-नीच का और मालिक-मजदूर का भेद मिटाने में, दबी हुई स्त्री-शक्ति को जगाने में, कुचले हुए हरिजनों को उठाने में और पीड़ित दुखियों की सेवा करने में शक्ति रहती है। सर्वोदय-समाज रचना के नवनिर्माण के क्षेत्र में त्याग का सहज मौका मिलता है। इसलिए वहाँ शक्ति का संचार होता है।

कुछ लोग मुझसे भी यह पूछने की हिम्मत करते हैं कि आप राजनीति में क्यों नहीं पड़ते? मैं कहता हूँ कि अगर मैं राजनीति में पड़ूँ, कांग्रेस में या उसके विरुद्ध काम करनेवाली पार्टियों में से किसी एक पार्टी में दाखिल हो जाऊँ या अपनी कोई स्वतन्त्र पार्टी बनाऊँ, तो ये तीनों काम मेरे लिए कठिन नहीं हैं। यदि मेरा दिल चाहे, तो मैं इन तीनों में से कोई भी काम कर सकता हूँ। मैं अपनी स्वतन्त्र पार्टी बनाऊँ, तो कुछ लोग मेरे पीछे भी आयेंगे और जैसे दूसरों को वोट मिलते हैं, मुझे भी मिलेंगे। अपने मन में मैं तुलना यह करता हूँ कि आज जिस तरह मुक्त मानव बनकर मैं काम करता हूँ और सत्य-वचन के लिए किसी भी प्रकार की कोई रुकावट महसूस नहीं करता हूँ, क्या राजनीति में पड़ने से यह संभव होगा? तब तो मुझे प्रत्येक शब्द बोलने के पहले यह सोचना पड़ेगा कि इसके बोलने से लोग राजी होंगे या नाराज? मुझे कितने वोट मिलेंगे और कितने नहीं? आदि-आदि। तब मैं मुक्त मानव बन कर सत्-प्रचार नहीं कर सकूँगा। जो ताकत मैं आज अपने में महसूस करता हूँ, वह आत्म-शक्ति मैं उस हालत में महसूस नहीं कर सकूँगा। फिर तो मैं जिला बनकर किसी प्रान्त के साथ जुड़ जाऊँगा या इंजन बनकर कुछ डिब्बों के साथ आगे बढ़ूँगा। उस हालत में आज के जैसी सिंह-गर्जना नहीं कर पाऊँगा। लाचारी से एक पटरी पर चलता रहूँगा। जिस तरह आज मैं आजादी से अपने विचार प्रकट करता हूँ, हर मनुष्य के साथ मनुष्य के नाते काम करता हूँ, उस तरह उस हालत में नहीं कर पाऊँगा। आज हिन्दुस्तान में मेरे अलावा दूसरा कोई व्यक्ति नहीं है, जिसके पास हर पार्टी का अधिक सहकार प्राप्त कर सकता है। यह एक दैविक शक्ति है। इसका कारण यह है कि जो समाज-सेवा के क्षेत्र में काम करते हैं, उन्हें निरंतर त्याग का मौका मिलता है। हर रोज नये त्याग का मौका मिलता है। हमें रोज अलग-अलग स्थान रहना है। बारिश में, ठंड में, धूप में, पहाड़ पर, [illegible] में घूमना पड़ता है। इससे बढ़कर त्याग का मौका और कौन-सा हो सकता है? हर रोज [illegible] जीवन [illegible] है। [illegible] बड़े-बड़े बंगले [illegible] हैं, [illegible] में [illegible] मकान [illegible] हैं, लेकिन मेरे तो १६५ मकान हैं। [illegible]

मैं आपको यह समझाना चाहता हूँ कि आत्मशक्ति का भान किस तरह होता है। मनुष्य बचपन में बच्चा रहता है, तब उसकी स्मरण-शक्ति भी तेज रहती है। गृहस्थी में पड़ने पर वह कुछ कम होती है और बुढ़ापे में और भी कम होती जाती है। यह दुनिया का एक आम अनुभव है। लेकिन मेरा अनुभव इससे उल्टा है। लोग कहते हैं, बचपन में मेरी स्मरण-शक्ति अच्छी थी, लेकिन आज उससे अधिक अच्छी है। उस समय श्लोक याद करने में दस मिनट लगते होंगे, तो आज दो मिनट ही लगते हैं और मैं अर्थ भी जान लेता हूँ। आप जरा इस पर सोचिए कि दिमाग की यह ताकत कहाँ से आती है? अब तक लोग मुझ पर बहुत दया करते थे और कहते थे कि बेचारे का शरीर क्षीण हो रहा है। लेकिन अपने देखा कि इधर मैं मजबूत बना हूँ। इसके लिए मैंने खास कुछ भी नहीं किया है। यह एक [illegible] है। अन्दर से [illegible] काम करता है। जब चाहे तब [illegible] — वह कुंजी हमारे पास है जिससे हम जब चाहें तब [illegible] सकते हैं। [illegible] जब बच्चा जन्मता है, तो उसका बीज नरम होता है, लेकिन जैसे-जैसे वह बढ़ने लगता है बीज मजबूत होता जाता है, फल के पकने पर तो बीज और भी मजबूत बन जाता है। कच्चा, पक्का, [illegible] और सड़ा हुआ, यह जो फल की प्रक्रिया है, वही शरीर की भी है। होना तो यह चाहिए कि जैसे-जैसे शरीर शिथिल होता जाय, वैसे-वैसे आत्मा का बीज मजबूत बनता जाय। विचार-शक्ति, स्मरण-शक्ति [illegible] का बीज है। लेकिन हमारे यहाँ तो कहा जाता है कि 'साठी बुद्धि नाठी'। होना तो यह चाहिए कि [illegible]

[illegible], [illegible], १० [illegible], '६४

दक्षिण-यात्रा : २.

सिद्धराज ढड्ढा

गांधीग्राम की मीटिंग में भाग लेकर लौटते हुए कुछ घंटे मदुराई में बिताने का मौका मिला। गांधीग्राम से मदुराई करीब १० मील दक्षिण है। मदुराई के नजदीक पहुँचने पर 'मीनाक्षी' देवालय के गगन-चुम्बी 'गोपुरम्' दूर से ही नजर आने लगे। अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध विरोधी संस्था के मंत्री आर्लो टैटम हमारे साथ मोटर में थे। वह समझे कि कोई 'स्काई-स्क्रेपर [कई मंजिल ऊँची आधुनिक इमारतें] हैं। दक्षिण के मंदिरों की विशालता और भव्यता तथा मंदिरों के चारों ओर के या एक ओर के प्रवेश द्वार पर बने हुए आकाश को छूने वाले विशाल 'गोपुरम्' उनकी अपनी विशेषता है, जो उत्तर भारत में नजर नहीं आती। मदुरा का यह प्रसिद्ध मंदिर, जो शायद एक पूरे गाँव जितना बड़ा है, शिव-पार्वती का देवालय है। यहाँ के शिव 'सुन्दरेश्वर' और पार्वती 'मीनाक्षी' हैं, जब कि अन्य तीर्थ-स्थानों में मुख्य देवता शिव या विष्णु आदि पुरुष-देव होते हैं और पार्वती, लक्ष्मी आदि गौण। मदुरा में मुख्य स्थान और मुख्य उपासना 'मीनाक्षी' की है। मंदिर भी 'मीनाक्षी' के नाम से ही प्रसिद्ध है, सुन्दरेश्वर के नाम से नहीं। जब हम मीनाक्षी के दर्शन करने पहुँचे तो शाम हो चुकी थी। मंदिर का प्रवेश-द्वार और सारा दीपमाला से जगमगा रहा था। हजारों यात्री स्त्री-पुरुष एक अनवरत प्रवाह की तरह एक ओर से प्रवेश करते और दर्शन करके दूसरी ओर से चले जा रहे थे। सारा वातावरण भक्तिमय था। उत्तर हो, चाहे दक्षिण, पूरब हो या पश्चिम, इस देश का हृदय एक ही है और एक ही-सी भावनाएँ उस हृदय को स्पंदित करती हैं।

मदुराई शहर और उसका सारा जीवन मीनाक्षी के मंदिर के चारों ओर गुंथा हुआ है। गांधी-स्मारक निधि की तमिलनाड शाखा के कार्यकर्ता श्री एम० विश्वनाथन ने, जो हमारे साथ थे, बतलाया कि शहर की रचना मंदिर को केंद्र मान कर हुई है। मंदिर के चारों ओर एक के बाद दूसरे चौड़े मार्ग इस दृष्टि से बनाये गये हैं कि वर्ष में समय-समय पर जब विशेष पर्व आते हैं, उन दिनों अलग-अलग पर्वों पर अलग-अलग पर निश्चित मार्ग से मीनाक्षी और सुन्दरेश्वर की सवारी निकले। इन विशाल देवालयों में देव-देवियों, ऋषि-मुनियों की असंख्य मूर्तियाँ जगह-जगह बनी हुई हैं। देवालय के रक्षक देवों के रूप में एक ओर गजानन और दूसरी ओर षडानन की मूर्तियाँ जगह-जगह विद्यमान हैं। श्री विश्वनाथन् ने बहुत बारीकी से सब चीजों का परिचय हमें कराया। एक दिलचस्प बात उन्होंने बतलायी कि यहाँ दक्षिण में शिव-पार्वती के पुत्रों में गणेश बड़े और षडानन कार्तिकेय, जिन्हें यहाँ 'षण्मुख स्वामी' कहते हैं, छोटे हैं। उत्तर-भारत में कार्तिकेय बड़े और गणेश छोटे माने जाते हैं। मदुराई का गांधी-संग्रहालय भी वहाँ के दर्शनीय स्थानों में से एक है। गांधी-स्मारक निधि की ओर से देश में पाँच जगह ऐसे संग्रहालय बनाये जा रहे हैं, जहाँ गांधीजी के जीवन का और उनके विचारों का कुछ दर्शन लोगों को हो सके। मदुराई का संग्रहालय इन पाँच में से एक है।

इस बार की दक्षिण यात्रा में एक मुख्य कार्यक्रम बहन मार्जरी साइक्स ने, जहाँ अपना निवास बनाया है, उस जगह को देखने का था। मार्जरी बहन करीब ३० साल पहले एक मिशनरी अध्यापिका बन कर हिन्दुस्तान में आयीं। फिर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ तथा गांधीजी के सम्पर्क में आकर सदा के लिए यहीं की हो गयीं। गांधीजी के विचारों और आदर्शों को उन्होंने जीवन में आत्मसात् किया और करीब १२ वर्ष हिन्दुस्तानी तालीमी संघ में काम करने के बाद अब वे सर्वोदय विचार के अनुरूप एक श्रमिक का-सा जीवन बिताने की दृष्टि से कोटगिरि (नीलगिरि) में बस गयी हैं। उनकी एक मित्र अंग्रेज महिला श्रीमती एलिस बार्न्स पहले से यहीं बसी हुई थीं। ७१ वर्ष की उम्र में भी श्रीमती बार्न्स जिस फुर्ती और मुस्तैदी के साथ घर के सारे काम-काज अतिथि के सत्कार आदि का भार निभाती हैं, वह प्रेरणादायी है। हम दो दिन कोटगिरि में रहे। ऐसा लगा मानों घर पर अपनी माँ और बड़ी बहन के पास ही हैं।

कोटगिरि समुद्रतल से करीब साढ़े छह हजार की ऊँचाई पर नीलगिरि पर्वत-माला में एक सुंदर स्थान है। ठंडा तो है ही। चाय, कॉफी और रबर के छोटे-बड़े सैकड़ों बगीचे नीलगिरि के पर्वत शिखर पर और उसकी उपत्यकाओं में अंग्रेजों ने खड़े किये हैं। कई विदेशी परिवार नील-गिरि में बस गये हैं। श्रीमती बार्न्स का भी कोटगिरि में छोटा-सा बंगला और करीब १० एकड़ जमीन है। मार्जरी और एलिस बार्न्स की गाढ़ मित्रता है और मार्जरी बहन ने भी अपना छोटा-सा मकान इसी जमीन पर बनाया है। उनकी कल्पना है कि उनके उस छोटे-से घर में हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न कोनों से ४-६ सर्वोदय-कार्यकर्ता भाई-बहन थोड़े-थोड़े समय के लिए उनके साथ रहें और श्रमिक जीवन तथा अपनी रुचि के विषय के अध्ययन आदि का लाभ उनके साथ रहकर उठायें। ६-८ महीने, १२ महीने, जैसी जिसकी आवश्यकता और इच्छा हो, मार्जरी बहन के साथ आकर रहें, तो अवश्य ही हमारे कार्यकर्ताओं को शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक लाभ होगा। अगली जनवरी से कोटगिरि में इस प्रकार के सहजीवन का अवसर उपलब्ध हो सकेगा। वहाँ खाने आदि का कुल मिलाकर खर्च ४५ रुपया मासिक से अधिक नहीं होगा।

●

गुजरात के कार्यकर्ताओं से

विनोबा

[इन्दौर में अपने निवास-काल में विनोबाजी ने २१ अगस्त से २३ अगस्त तक गुजरात के कार्यकर्ताओं का शिविर लिया, जिसमें उन्होंने गुजरात के कार्यकर्ताओं को जो मार्मिक मार्गदर्शन दिया, उसका सार इस प्रवचन में संकलित है। —सं०]

सर्वोदय की पाँच प्रतिष्ठाएँ

भूदान के निमित्त से हमने देश में बेजमीनों को जो ९ लाख एकड़ जमीन दी है, दुनिया की आज की हालत में उसका अपना खास महत्त्व है। उसमें एक नैतिक प्रेरणा प्रकट हुई है। यह सर्वोदय की पहली प्रतिष्ठा है। हमारी दूसरी प्रतिष्ठा इस बात में है कि हमने अम्बर चरखे के प्रयोग किये। इससे दुनिया को पता चला कि सर्वोदय वाले दकियानूस नहीं हैं, वे भी विज्ञान का स्वागत करते हैं। विकेन्द्रित राज्य-व्यवस्था की बात तो अब हमारी राज्य-सरकारें भी कबूल करने लगी हैं। यह हमारी तीसरी प्रतिष्ठा है। कोई विशेष पराक्रम न करने पर भी जो चौथी प्रतिष्ठा हमें प्राप्त हुई है, वह यह है कि हमें देश में शान्ति-सेना खड़ी करने का अधिकार मिल गया है। गुनहगारों से नम्रता का बरताव करने की सर्वोदय की अपनी जो रीति प्रकट हुई, वह उसकी पाँचवीं प्रतिष्ठा है।

प्रतिष्ठा काम की नहीं, विचार की

इतनी प्रतिष्ठाएँ पाने के बाद हमें यह अनुभव नहीं करना चाहिए कि हम पिछड़ रहे हैं या हमारा आन्दोलन पिछड़ रहा है। हमें अपनी आत्मा को इस प्रकार अप-मानित करने की कोई जरूरत नहीं है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे तो दूर-दूर तक कहीं निराशा का कोई दर्शन नहीं होता। मैं तो अपने में उत्साह ही अधिक पाता हूँ। अगर कहीं काम जोर-शोर से नहीं हो रहा है, तो हमें आत्म-परीक्षण द्वारा उसके कारणों की खोज करनी चाहिए। काम के परिणाम पर हमारा कोई आधार नहीं है। अगर कोई ढिलाई आयी है, तो वह व्यक्ति में आयी है। जहाँ तक शब्द का, विचार का सम्बन्ध है, उसमें कोई ढिलाई नहीं है। हम दुनिया को अपने काम की प्रतिष्ठा से नहीं, विचार की प्रतिष्ठा से जीतेंगे।

क्रान्ति होकर रहेगी

कार्यकर्ता अपने-अपने वासना-क्षेत्र को छोड़ कर प्रान्त के किसी एक क्षेत्र में, एक जिले में, रामभरोसे यानी भगवान् का नाम लेकर सामूहिक शक्ति लगायें। अहमदा-बाद, बड़ोदा या सूरत, इन तीन शहरों में से किसी एक शहर में वे अपनी शक्ति खर्च करें। गुजरात में रचनात्मक कार्य की जो अनेक संस्थाएँ हैं, उनका सेवा-क्षेत्र भी हमारा कार्य-क्षेत्र बन सकता है।

गुजरात के लोग और वहाँ की कांग्रेस गांधी-विचार को मानने वाली है। गुजरात एक छोटा-सा, पर ठोस राज्य है। उसके पास योजना शक्ति है और परमार्थ-वृत्ति भी है। गांधीजी के बाद गुजरात ने शिक्षा के बारे में भी सबसे अधिक चिन्तन किया है। मेरी श्रद्धा यह है कि गुजरात में हमारा यह काम होना ही चाहिए। हम इस निश्चय के साथ अपना काम शुरू करें कि या तो सफल होंगे या मर मिटेंगे। विश्वास रखें कि क्रान्ति होकर रहेगी।

बड़ों के प्रति अनुराग, स्नेह और आदर रहे

बड़ों और बुजुर्गों के प्रति हमारा व्यव-हार नम्रतापूर्ण रहना चाहिए। अपनी वैचारिक स्वतन्त्रता को कायम रखते हुए भी हमें उनके साथ प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। उनसे हमारे दिमाग का मेल चाहे न बैठे, पर उनके साथ हमारे दिल का मेल तो होना ही चाहिए। हम यह न मानें कि अकेले हम ही क्रान्तिकारी हैं और हमारे बड़े-बूढ़े स्थिति-स्थापक हैं यानी 'स्टेटस्को' में विश्वास मानने वाले हैं। अगर हममें अपने बड़ों के प्रति अनुराग, स्नेह और आदर न रहा, तो हम टिक नहीं सकेंगे।

कटे बँटे रहे, तो टिक नहीं पायेंगे

अगर हम कटे हुए और बँटे हुए रहेंगे, तो आज की इस दुनिया में हमारा भारत कहीं टिक नहीं सकेगा। एक व्यवस्थित आयोजन के साथ हमें सारे भारत में ओत-प्रोत हो जाना है। हमपर इसकी जिम्मेदारी है। हम अखिल भारत के नेतृत्व की बात छोड़ दें, पर अखिल भारतीय सेवकत्व का विकास तो हमें करना ही है। आज दुनिया में हिन्दुस्तान इतना आगे बढ़ा हुआ है— 'एडवान्स्ड' है कि हमारा एक छोटे-से-छोटा कार्यकर्ता भी भूमि के प्रश्न को लेकर सारे भारत में घूम सकता है। हर प्रान्त को चाहिए कि वह अपने पड़ोसी प्रान्त के लिए अपने सेवकों का छठा हिस्सा दे।

हमारी भूमिका कोरे कागज की रहे

चित्त पर सुसंस्कार और कुसंस्कार दोनों की स्मृतियाँ अंकित रहती हैं। सुसंस्कार से कुसंस्कार हटाये जा सकते हैं, लेकिन उनकी स्मृति बनी रहती है। साधक पुरुषार्थ द्वारा इस स्मृति को भी मिटा सकता है। अगर हमें सहविचार की साधना करनी है, तो जिन व्यक्तियों के सम्पर्क में हम आये हैं, उनकी पुरानी स्मृतियों को भुलाकर हमें 'फ्रेश-माइण्ड' से यानी ताजे दिमाग से उन्हें नया आदमी मानकर उनके साथ 'डील' करना होगा यानी पेश आना होगा। यहाँ हम कोरा कागज बन कर चलें।

इन्दौर में विनोबा : ४

मणीन्द्र कुमार

"आजकल हिन्दुस्तान में चरित्र-भ्रंश का आयोजन हो रहा है, उसमें अगर बहनें रक्षा नहीं करेंगी, तो भगवान ही करेगा।"

—विनोबा

o o o

विनोबाजी के इन्दौर प्रवास का चौथा और अंतिम सप्ताह अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण बन गया। १४ अगस्त को पंजाब के कार्यकर्ता विदा हुए। १५ और १६ को राजस्थान सेवक संघ के कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। १७, १८ और १९ अगस्त को सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध-समिति में देश भर के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और इसके तुरन्त बाद ता० २१, २२ और २३ अगस्त को गुजरात के कार्यकर्ताओं का शिविर हुआ। २४ अगस्त को विनोबाजी का निवास 'विसर्जन आश्रम' में रहा और २५ को प्रात: कस्तूरबाग्राम के लिए बाबा विदा हो गये। इस प्रकार यह सप्ताह बड़ा हलचल का रहा।

राजस्थान सेवक संघ के सदस्यों के सामने विचार रखते हुए बाबा ने यह बात दुहरायी कि सेवकों और साधकों के सामने दो बड़ी समस्याएँ हैं। एक तो कुसंस्कारों को काटना और अच्छे संस्कार बनाना। कुसंस्कारों को हटाने का काम बड़ा कठिन है। अच्छे संस्कारों के कारण कुसंस्कार कट भी गये तो भी उनका निशान स्मृति के रूप में रह जाता है। सबसे बड़ा काम इस स्मृति को खतम करना है, परन्तु स्मृति को हटाने की कोशिश करते हैं तो वह दुगुनी बढ़ती है। इसलिए कुस्मृतियों को काटने के लिए ही भगवान की आवश्यकता पड़ती है। बाबा ने विशेष तौर से कार्यकर्ताओं के लिए कहा, "कार्यकर्ताओं में प्रेम-सम्बन्ध तब तक नहीं बढ़ेगा, जब तक पूर्वस्मृतियाँ नष्ट न हो जायें।"

आज की हालत का जिक्र करते हुए बाबा ने बताया कि जिन पर हमारा प्रेम है, वे हमारे कार्य के साथी नहीं हैं और जो हमारे कार्य के साथी हैं, उन पर प्रेम नहीं है। अगर कार्य करने वाले साथियों में प्रेम बढ़ेगा तो धर्म-क्षेत्र बनेगा।

सरकारी सेवकों के लिए तीन बातें

सरकारी सेवकों के एक संघ को सम्बोधित करते हुए बाबा ने कहा कि "आप हमारे पक्षमुक्त समाज के प्रथम सदस्य हैं। इन दिनों यद्यपि लोकतंत्र में पक्षों की अनिवार्यता मानी गयी है, फिर भी कुछ मुख्य स्थानों में पक्ष-मुक्ति भी उतनी ही अनिवार्य मानी गयी है। राष्ट्रपति, न्यायाधीश, कर्मचारी, सेना आदि सब पक्ष-मुक्त होने चाहिए। इस तरह हर महत्त्व का काम पक्ष-मुक्ति की आवश्यकता महसूस कराता है।" सरकारी सेवकों के लिए तीन बातों पर बाबा ने विशेष जोर दिया। पहले तो "किसी भी पक्ष का कैसा दबाव आपको सहन नहीं करना है। इन दिनों पक्षों का दबाव आता है, पर आपको दृढ़ रहना चाहिए। हम किसी भी पक्ष का दबाव सहन नहीं करेंगे, इतना धैर्य और हिम्मत आपमें होनी चाहिए। दूसरी बात—"आप जो भी नौकरी करें, उसमें नियमितता और प्रामाणिकता बरतें। तीसरी बात—आपकी घर की महिलाएँ दो घंटे मुफ्त समाज की सेवा करें। इससे बहुत बड़ी तादाद में सेविकाएँ खड़ी होंगी। जहाँ आपका प्रवेश नहीं होता होगा, उनका प्रवेश होगा। इस प्रकार एक बहुत बड़ी गुप्त ताकत जो पड़ी है, खड़ी हो जायगी।"

शांति-सेना लोकमान्य है

१७ अगस्त को प्रबन्ध समिति की बैठक शुरू हुई। सर्व सेवा संघ को लक्ष्य में रख कर बाबा ने शांति-सेना की आवश्यकता पर जोर देते हुए शाम की प्रार्थना-सभा में कहा : "इस वक्त राष्ट्र को ज्यादा-से-ज्यादा जरूरत शांति-सेना की है। शांति-सेना से बाहर की सेना का मुकाबला करेंगे, ऐसा अभी नहीं होगा किन्तु अन्तर्गत अशांति को हम हटा सकते हैं। जहाँ मानवीय काम है, वहाँ सेना काम नहीं कर सकती। मजदूर, विद्यार्थी आदि के दंगों का शमन अगर शांति-सेना करती है, तो बड़ी प्रेरणा समाज को मिलेगी।" इसके पहले बाबा ने ने कहा "जिस काम में अनेक की श्रद्धाएँ होती हैं, उसे मैं ईश्वर-संकल्प मानता हूँ। किसी प्रेरणा के साथ ईश्वर अपना संकल्प जोड़ देता है, तो वह चीज लोकमान्य हो जाती है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि सबको ईश्वरीय प्रेरणा मिले और एक बार सब लोग शांति-सेना के काम में जी जान से जुट जायें।" शांति-सेना को देश में मान है और इस काम को सर्वोदय वाले ही कर सकते हैं, यह सब महसूस करते हैं। दूसरे लोगों के लिए पक्ष भेद मान्य है, पर शांति-सेना के लिए वह एक 'डिसएबिलिटी'-अयोग्यता-बन गयी है। बाबा के शब्दों में—"अगर कांग्रेस की ताकत बढ़ती है, तो राजाजी को तकलीफ होती है और राजाजी की पार्टी की ताकत बढ़ती है, तो कांग्रेस को तकलीफ होती है, किन्तु हमारे काम में, शांति-सेना के काम में सबका आशीर्वाद है, और सब इसको पूरक काम मानते हैं। राजनीतिक पक्षवाले कहते हैं कि 'हम पक्षों की 'डिसएबिलिटी' के कारण शांति-सैनिक नहीं बन सकते हैं, किन्तु शांति-सेना आवश्यक है' इसलिए सबको विविध काम छोड़ करके इसमें कूद पड़ना चाहिए। इससे सरकार की ताकत भी सही दिशा में लगेगी और गाँव-गाँव में हमारी ताकत बढ़ेगी।"

जीवन में संयम आवश्यक

बाबा बार-बार इस बात पर जोर देते रहे कि एक उम्र के बाद लोग घर-बार और विषय-वासना से ऊपर उठ कर समाज की निष्काम सेवा करें। १८ अगस्त को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने फिर कहा : "हमारे यहाँ अनुभव के आधार पर पूर्वजों ने ऐसी समाज-रचना की, जिसमें संयम की मात्रा हमेशा जीवन में कायम रहे, उत्तरोत्तर मनुष्य का जीवन विकसित हो। जैसे-जैसे मनुष्य वृद्ध होता जाता है, शारीरिक कमजोरियाँ आती हैं। बीमारी और का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि बीमारियाँ होती हैं, तो जीवन में कोई दोष है। शरीर का कमजोर होना आरोग्य के साथ भी लाजमी है। पर बुद्धि शक्ति में कमजोरी आती है, तो मानना चाहिए कि जीवन जीने के तरीके में गलती हुई है। अन्यथा बुढ़ापे में ज्ञान की, चिन्तन की शक्ति बढ़नी चाहिए। वस्तुत: बूढ़ों को जवानों के आश्रय-स्थान बनना चाहिए। एक प्रकार से बूढ़ों को जवानों के लिए सन्दर्भ-ग्रन्थ (रेफरेन्स बुक्स) बनना चाहिए।"

कृत्रिम विषय-वासना से बुद्धि-क्षय

इसी बात के सिलसिले में विनोबाजी ने लोकसंख्या-वृद्धि के सवाल को उठाते हुए कहा : "इन दिनों आप जानते हैं कि हिन्दुस्तान की लोकसंख्या बढ़ी है। सुनते हैं, सन् '६२ में ४२ करोड़ हो सकती है। सन् '५१ में ३६ करोड़ थी। अब यह आबादी बढ़ना भय प्रकट करता है, लेकिन संख्या बढ़ना उतना भयावह नहीं है, जितना कि संसार कि वासना और भोग-लिप्सता से होने वाला चिन्तन-बुद्धि का क्षय है।" जनसंख्या को कृत्रिम तरीके से रोकने का जो प्रयत्न चल रहा है, वह सामाजिक, नैतिक व आध्यात्मिक सब दृष्टियों से खतरनाक है। जीवन में संयम की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ सकती है, यह कोई बड़ा कठिन काम नहीं है। संयम को साइन्स बढ़ावा दे सकता है। बाबा ने अत्यन्त दृढ़ता और विश्वास के साथ कहा : "जितनी मेरी अहिंसा पर श्रद्धा है, उतनी साइन्स पर श्रद्धा है, अगर 'साइन्टिफिक' (वैज्ञानिक) वृत्ति बन जाये, तो मनुष्य विषय-वासना से सहज ही मुक्त हो सकता है।" दूसरे दिन फिर इन्दौर सचिवालय में ४५ (क्लास डेवलपमेंट ऑफीसर्स) सहविकास-अधिकारियों की सभा में एक प्रश्न का जवाब देते हुए बाबा ने इस विषय पर अत्यन्त गहराई और सूक्ष्मता से विचार किया : "बोया तो आम, किन्तु पैदा न आये, ऐसा काम करेंगे तो कितनी शक्ति बरबादी होगी? इसी तरह मनुष्य में निर्माण की जो शक्ति है, उसको बर्बाद करना कितना बड़ा गुनाह है!... तेल के रहने से लालटेन जलती है, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य तेल और बुद्धि प्रतिभा है।" भोग-प्रधान सभ्यता के हिमायतियों को चेतावनी देते हुए बाबा ने कहा "कृत्रिम विषय-वासनाओं से अज्ञान होता तो होगा, पर बुद्धिमत्ता मन्द होगी।"

इजराईल में सामूहिक जीवन के जो प्रयोग चल रहे हैं, उनमें एक प्रकार 'किबुत्स' का है। उसमें बच्चों को माता-पिता से अलग रखा जाता है। बाबा की राय में यह गलत प्रयोग है। "बच्चा अगर पति-पत्नी के साथ रहता है तो कोई-किस पर अंकुश होता है। ...लड़का दादी के पास, तो कृत्रिम उपायों के बजाय पति पत्नी

[शेष पृष्ठ १२ पर]

[पृष्ठ १ से आगे]

कार्यकर्ता शिविर से गुजरे हैं, यह होगा तो उसका अच्छा असर होगा।

शांति-सेना विद्यालय की बहुत ही जरूरत है। प्रशिक्षण-काल छह महीने, एक साल या डेढ़ साल का जो भी आप ठीक समझें, बनायें। विद्यालय के साथ प्रैक्टिसिंग स्कूल होना चाहिए याने काम के साथ विद्यालय जुड़ा है, ऐसा होना चाहिए। वाराणसी में शांति-सेना विद्यालय खुले, तो वाराणसी को सर्वोदय-नगर बनाने का काम उसको उठाना होगा। विद्यार्थी तालीम पाते हैं और साथ-साथ नगर में काम भी करते हैं, ऐसा होना चाहिए। फिर आप लंबी तालीम देंगे, तो भी कार्यकर्ता तालीम पाते हुए भी देश के काम में आयेंगे। तालीम पाने के बाद ही वे देश के काम में आयें, यह विचार ठीक नहीं है। इसलिए तालीम में सिर्फ 'सैद्धान्तिक' हिस्सा नहीं रहेगा, 'प्रायोगिक' भी रहेगा।

जिला, प्रदेश और अखिल भारतीय स्तरों के 'फंक्शन्स', कार्य अलग-अलग होंगे। मौके पर फौरन पहुँचना है, तो वह सारा कार्य जिले वालों को अपनी अक्ल से करना होगा। प्रत्यक्ष कार्य का संगठन जिले के तौर पर या प्रादेशिक तौर पर होगा। शांति-सेना का साहित्य सबके पास पहुँचाना, सब की शंकाओं का समुचित उत्तर देना, 'रेफरन्स' का काम करना और जिले के काम की जानकारी कुल प्रदेश में पहुँचाना आदि कार्य प्रदेश को करना होगा। अखिल भारतीय स्तर पर एक सर्वमान्य मार्गदर्शन करने वाली जमात रहे और जहाँ-जहाँ वजनदार शब्द की जरूरत है, वहाँ उस शब्द का उच्चारण उसके द्वारा हो। यह कार्य शांति-सेना-मंडल करे। इन लोगों ने मत जाहिर किया है, मार्गदर्शन दिया है, उससे देश में विचारों में स्थिरता आयी है, लोगों को भरोसा हुआ है, ऐसा होना चाहिए। अखिल भारतीय स्तर पर काम की जाँच का काम भी मंडल को करना होगा।

[अ० भा० शांति-सेना-मण्डल की बैठक, इन्दौर में १७-८-'६० को दिया हुआ भाषण]

स्यं जगत् स्फूर्तिः जीवनं सत्यशोधनम्

भूदान-यज्ञ

लोकनागरी लिपि *

नीत्य नूतन रहने का मंत्र

हमारी वाणी का अेक ही काम होना चाहीअे--भगवद्-गुण गान। भगवान का गुणगान करने का मतलब है, दूसरों का गुणगान करना। जब हम आपस में अेक-दूसरे के गुण गाते हैं, तो दोषों को याद भूल जाते हैं। अीस प्रक्रीया से चीत्त का भार हलका होगा। चीत्त ताजा और खाली रहेगा। अीससे अुसमें सतत नया नया ग्रहण करने की शक्ती बनी रहेगी। मनुष्य चाहे, तो वह नीत्य नूतन रह सकता है।

जवानी में योग की जरूरत रहती है। अगर हमें त्याग का ही अनुभव करना है, तो हम अुसमें संतुष्ट रह सकते हैं। चाहे त्याग हो, चाहे भोग हो, दोनों दशाओं में हमें समत्व-योग साधना चाहीअे। चीत्त में समत्व होगा, तो जीवन की रसधार कभी नहीं सूखेगी और शरीर सदा ताजा रहेगा। संन्यास कहने की चीज है, करने की नहीं। करने की चीज तो योग है।

मैं यह सुनना नहीं चाहता की हमारा कोअी भीती-संनीक बीमार पड़ा है। मन पर काम का बोझ मत रखो। हमें कोअी अुतावली नहीं है। करम की मात्रा चाहे कम ही रहे, वीश्राम रखो की अंत में अुसका परीणाम अधीक ही होगा। समाधान तो मन की चीज है। काम के साथ वाणी और सरस्वती की सेवा-अुपासना भी चलती रहनी चाहीअे।

(अीन्दौर; २१-२३ अगस्त)

—वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; अ = अ, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

चरित्र-भ्रंश का आयोजन

सिद्धराज ढड्ढा

कृत्रिम उपायों द्वारा सतति-नियमन के विषय पर पिछले अंक में हमने पश्चिम के कुछ विज्ञान शास्त्रियों की राय दी थी। इन्दौर के अपने प्रवास के दौरान में विनोबा ने दो-तीन मर्तबा इस विषय पर प्रकाश डाला। सन् '५१ में हिन्दुस्तान की आबादी ३६ करोड थी, सन् '६१ में शायद वह ४२ करोड तक हो जाय।

विनोबा ने कहा :

> "आबादी का यह बढ़ना लोगों में भय पैदा करता है, लेकिन सख्या का बढ़ना उतना भयावह नहीं है, जितना कि वासना और भोग लिप्सा से होने वाला चितन और बुद्धि की शक्ति का क्षय।"

हमारे यहाँ अनुभव के आधार पर पूर्वजो ने ऐसी समाज-रचना की थी, जिससे सयम की मात्रा हमेशा जीवन में कायम रहे और मनुष्य का जीवन उत्तरोत्तर विकसित हो। आज हमने उस व्यवस्था को तो छोड ही दिया है, बल्कि जान-बूझ कर जीवन में असयम की मात्रा बढाने के उपाय कर रहे हैं। कृत्रिम उपायों से सतति-नियमन करने का अर्थ यह है कि हमारा भोग-विलास तो जारी रहे लेकिन सन्तान के रूप में उसका परिणाम न हो, क्योंकि सन्तान बढ़ेगी तो हमारे अपने खाने-पीने में और आराम में कमी आयगी। सख्या-वृद्धि के भय से सतान न होने देने के लिए कृत्रिम उपायों का अवलम्बन करना, लेकिन विषय-वासना को जारी रखना, इसमें, जैसा विनोबा ने कहा,

> "सतान तो रुकेगी, लेकिन बुद्धिमत्ता नष्ट होगी'''बोया तो जाय, किन्तु फसल न आये, ऐसा आप करेंगे तो वह कितनी राष्ट्रीय बरबादी कही जायगी? इसी तरह मनुष्य में निर्माण की जो शक्ति है, उसको बरबाद करना कितना बड़ा गुनाह है? तेल के रहने से ही लालटेन जलती है, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य तेल है, जिससे बुद्धि की प्रतिभा प्रकट होती है।"

सयम की बात कही जाती है, तब सतति नियमन के पक्षपाती हँसते हैं और मजाक करते हैं। इसमें कोई सदेह नहीं कि *सयम मुश्किल है पर दुनिया में कौनसी* अच्छी चीज है, जो मुश्किल नहीं है? अगर आदमी हमेशा जीवन में आसानी को ही खोजता रहा, तो एक दिन वह सर्वनाश के गड्ढे में ही गिरेगा। पर वास्तव में सयम जितना समझा जाता है, उतना मुश्किल भी नहीं है। हर व्यक्ति का यह अनुभव है कि अगर वह जीवन में कुछ भी उल्लेखनीय काम करना चाहता है या किसी भी ध्येय को प्राप्त करना चाहता है तो उसे सयम करना ही पड़ता है। जिसको कीड़े-मकोड़े या पशु जैसी जी-को जिंदगी *बसर करनी हो, उसकी बात* दूसरी है। आज विज्ञान ने मानव-जाति की सुख-समृद्धि की असीम सम्भावनाएँ हमारे सामने खोल दी हैं। इन सम्भावनाओं का उपयोग या तो इन्द्रियों द्वारा अमर्यादित भोग-विलास में पड कर जीवन को नष्ट करने में हम कर सकते हैं या सयम को बढावा देकर जीवन को शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सब दृष्टियों से समृद्ध करने में। विनोबा ने अत्यन्त दृढ़ता और *विश्वास के साथ कहा है,* "जितनी मेरी अहिंसा पर श्रद्धा है, उतनी ही साइन्स पर है। अगर हमारी साइन्टिफिक (वैज्ञानिक) वृत्ति बन जाय तो मनुष्य विषय-वासना से सहज ही मुक्त हो सकता है।" पर जो काम आसान है, उसको हम अपने आप ही आज मुश्किल बना रहे हैं। सारे आयोजन हम ऐसे कर रहे हैं, जिससे जीवन में सयम रखना ही मुश्किल हो जाय। उदाहरण के लिए सिनेमा लीजिये। आज के सिनेमा और फिल्में कितनी तेजी के साथ हमारे जीवन के सारे अच्छे मूल्यों को नष्ट कर रही हैं, यह सचमुच भयावह है। पैसा कमाने के पीछे पागल लोग उत्तरोत्तर हीन और चरित्र-भ्रष्ट करने वाली फिल्में बनाते हैं, क्योंकि ऐसी फिल्मों को देखने के लिए लोग आसानी से प्रवृत्त होते हैं। विषय-वासना, चोरी-डकैती, जालसाजी, कत्ल आदि सब बातें किस प्रकार सफाई से और अच्छी-से-अच्छी तरह की जा सकती हैं, इसकी शिक्षा हमें आज की फिल्मों से मिलती है। कहने के लिए नाम-मात्र का उद्देश्य भी फिल्मों में रहता है पर वह भूसे के ढेर में अनाज के दाने की तरह खोया हुआ रहता है।

> शहर में रहने वाले हमारे जैसे सफेद-पोश बाबुओं को सिवा सिनेमा के मनोरजन का दूसरा साधन भी बेचारों को उपलब्ध नहीं होता। किसी भी बड़े शहर में चले जाइये, शनिवार-रविवार को बाबू लोगों के झुण्ड के झुण्ड बाल-बच्चों और बीवियों को लेकर सिनेमा के इर्दगिर्द भीड़ लगाये मिलेंगे। इन सिनेमाओं का कैसा असर हो रहा है, यह आप गली-गली और घर-घर में फिल्मी गानों के झरने सुन कर अदाज लगा सकते हैं। गन्दी फिल्मों पर रोक लगाने के लिए नाम-मात्र के सेंसर-बोर्ड भी हैं, पर उनके बारे में जितना कम कहा जाय, उतना ही अच्छा है। समाज के सारे प्रवाह के खिलाफ काम करने की उनकी शक्ति भी आखिरकार सीमित है।

फिल्में गदी होती हैं, यह एक बात, और आधी-आधी रात तक या उसके बाद तक भी सिनेमा चलता रहता है, यह दूसरी बात। रात में देर तक जागने से इन्द्रियाँ शिथिल होती हैं, स्नायु ढीले पड जाते हैं। इसका असर मन पर होता है और सयम की शक्ति उत्तरोत्तर नष्ट हो जाती है। आँखें और स्वास्थ्य खराब होता है, यह तो उसका स्थूल परिणाम स्पष्ट है ही। रात को देर तक जागना और सवेरे देर तक सोना, यह स्वास्थ्य और बुद्धि के लिए अत्यन्त हानिकारक है, यह सब जानते हैं। हिन्दुस्तान के "दकियानूसी" लोगों की नहीं, जिन्हें हम प्रगतिशील मानते आये हैं, उन लोगों की कहावत है—"Early to bed and early to rise; Makes a man healthy, wealthy and wise"—जल्दी सोने और जल्दी उठने से ही आदमी की बुद्धि और उसका स्वास्थ्य कायम रहता है और वह सम्पन्न होता है।

फिर इन सिनेमाओं को देखने के लिए लोगों को आकर्षित करने को शहरों में जगह-जगह बड़े-बड़े चित्र और पोस्टर लगाये जाते हैं, सिनेमाओं के भद्दे-भद्दे शीर्षक बड़े-बड़े हरफों में प्रदर्शित किये जाते हैं। विनोबा ने इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाने की बात कही थी। लोग सोचते थे कि सर्वोदयनगर बनाने के लिए मालूम नहीं क्या-क्या करना होगा—सब लोगों को ऋषि-मुनि बनना होगा या जगल और गुफाओं में जाना होगा? विनोबा ने इन्दौर नगर-महापालिका की ओर से बुलायी हुई एक विशाल सभा को सबोधित करते हुए कहा :

> "आपको सर्वोदयनगर बनाना है तो जाइये, इस शहर में जितने सिनेमाओं के पोस्टर लगे हैं, उन सबको हटा दीजिये। अपने घरों की दीवारों पर या अपने बाजारों में ऐसे गदे पोस्टर न लगने दीजिये, जिनको देख कर अगर बाजार में आपके साथ जाता हुआ आपका बच्चा पूछे कि पिताजी यह क्या है, तो आपको जवाब देने में भी शरम आये!"

अपने हाथों से हम समस्याएँ खड़ी करते जाते हैं, जीवन को गिराते जाते हैं और फिर समझते हैं कि सर्वोदय कितना मुश्किल है, सर्वोदय के लिए मालूम नहीं क्या-क्या करना होगा!

सिनेमा ही नहीं, जैसा हमने ऊपर कहा है, जीवन के हर क्षेत्र में हम इस प्रकार की चीजों को अपनाते जा रहे हैं, जिससे सयम उत्तरोत्तर मुश्किल हो जाय। और फिर हम ही दलील देते हैं कि सयम मुश्किल है, पर जनसख्या तो नहीं बढ़ाना है, इसलिए कृत्रिम उपायों का अवलम्बन करना चाहिए। हर शहर व कस्बे में गली-गली में चाय-पकौड़ी के होटल और पान-बीड़ी-सिगरेट की दुकानें खुलती जा रही हैं। दुनिया में और तरह के रोजगार तो मुश्किल हो रहे हैं, लेकिन सिनेमा, चाय-पकौड़ी की दुकान, पान-बीड़ी का व्यवसाय, डाक्टरों की डाक्टरी और दवाओं का व्यापार, ये उत्तरोत्तर बढ़ते जा रहे हैं। अखबार और पत्र-पत्रिकाओं में भी अधिकाश गदे साहित्य का प्रचार होता है।

नया मोड़ : क्या और कैसे ?

ध्वजाप्रसाद साहु

खादी का सम्पूर्ण दर्शन बापू इस एक छोटे से वाक्य में छोड़ गये हैं, "कातो, समझ-बूझ कर कातो, जो कातें वे पहनें और जो पहनें वे अवश्य कातें।"

जब बापू ने यह मंत्र दिया तो हमने इस पर ध्यान नहीं दिया। यह नहीं समझा कि खादी मिल के कपड़े के स्थान पर हाथ का बना कपड़ा मात्र नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन है। हमारे इस अज्ञान का परिणाम यह हुआ कि बापू के समय से लेकर आज तक हम खादी को जीवन से दूर करते चले गये, यहाँ तक कि वह पूरे तौर पर बाजार की चीज बन गयी!

बापू के जाने के तीन साल बाद, जब १९५१ में भूदान-यज्ञ आन्दोलन शुरू हुआ, तो हमारी समझ-बूझ को एक झटका लगा, जिसका परिणाम यह हुआ कि पिछले कुछ वर्षों में हम फिर अपने काम को बापू की दी हुई भूमिका में देखने लगे। हमारा यह मंथन १९५८ में प्रकट हुआ, जब कि हमने चालीसगाँव में विनोबाजी के समक्ष खादी के 'नये मोड' का प्रस्ताव पास किया। इस प्रस्ताव को हम 'बापू के मूलमंत्र का पुनरुद्धार' कह सकते हैं। चालीसगाँव के बाद खादी-जगत् में खादी के काम को नयी दिशा में ले जाने का विचार बराबर दृढ़ होता गया। अब खादी-संस्थाएँ समझने लगी हैं कि अधिक उत्पादन और अधिक बिक्री की जो प्रक्रिया आज चल रही है, उससे खादी का काम बहुत दूर तक नहीं जा सकेगा। चालीस करोड़ की खादी-बिक्री की जो योजना खादी-संस्थाओं के सामने रखी गयी है, अगर वह सफल भी हो गयी, तो भी यह नहीं कहा जा सकेगा कि खादी अपने पैरों पर खड़ी हो गयी। नये मोड़ और विकेन्द्रीकरण का अर्थ है, खादी को लोक शक्ति के माध्यम से जन-जीवन में प्रवेश कराना, उसे समाज की पुनर्रचना का आधार बनाना और गाँव में इतनी सहकार और व्यवस्था-शक्ति पैदा कर देना कि वह अपने बल पर उस काम को उठा ले। बड़ी संस्था को छोटी कर देना ही विकेन्द्रीकरण नहीं है। भले ही वह ग्राम-इकाई तक पहुँचने की एक प्रक्रिया हो। इतनी बात स्पष्ट है कि खादी अब संस्था की परिधि से बाहर निकल कर ही जन-जीवन में प्रवेश कर सकती है। जो काम जनता का है, उसे हम मुट्ठी भर कार्यकर्ता अपने हाथ में सीमित रखें और उसकी सफलता और व्यापकता का स्वप्न देखें, ये दोनों परस्पर असंगत बातें हैं। हम कार्यकर्ता उस मोहचक्र से निकल कर नये मोड़ और विकेन्द्रीकरण की ओर बढ़ेंगे, तभी हमारी खादी बापू के सपने की खादी बन सकेगी।

कोरा केन्द्र में हुए खादी-कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में नये मोड़ की आवश्यकता के सम्बन्ध में कुछ स्पष्टीकरण हुआ था, लेकिन इस पर और अधिक चर्चा और सफाई की आवश्यकता है। खादी-संस्थाएँ अभी तक जिस ढंग से काम करती आ रही हैं, उसमें अचानक उलट-फेर करने में स्वभावतः कठिनाई होती है। उस कठिनाई पर विजय पाने के लिए विचार की स्पष्टता तथा संकल्प-शक्ति की जरूरत होती है। कार्यकर्ता अपने को मोड़ें और उसके बाद जनता को मोड़ें, नये-मोड़ में यह दुहरा मोड़ है और कार्यकर्ता के सामने यह दुहरी साधना है।

भारत की राष्ट्रीय पुनर्रचना का अर्थ है गाँवों की पुनर्रचना। सदियों के निरन्तर ह्रास के कारण जनता अपनी सहज-स्फूर्ति खो चुकी है। निष्क्रियता उसके संस्कार में घुस गयी है। समुन्नत जीवन की कल्पना उसके अन्दर से निकल गयी है। वह कभी उठ सकेगी, यह आत्म-विश्वास उसमें नहीं रह गया है। गांधीजी ने चरखे में वह शक्ति देखी थी, जो जनता में नया जीवन भर सकती है। यह ठीक है कि हाथ-कताई का प्रारम्भ स्वराज्य के भावनात्मक नारे के साथ हुआ था, पर बापू के मन में शुरू से ही चरखे के द्वारा समग्र क्रान्ति का चित्र था। उनके लिए चरखा जन-क्रांति का प्रतीक था। उन्होंने कहा भी था कि चरखा अहिंसा का प्रतीक है। कोरा केन्द्र के सम्मेलन में खादी-संस्थाओं ने यह अच्छी तरह महसूस किया कि गहुत की खादी में, जो आज चल रही है, इस तरह की क्रान्तिकारी शक्ति नहीं है। उन्होंने यह भी महसूस किया कि चरखे में क्रान्ति की शक्ति नये मोड़ से ही आ सकती है। इसलिए उन्होंने वहीं नये मोड़ का एक कार्यक्रम भी तैयार किया, जिसमें यह सर्वमान्य हुआ कि जनता का पुरुषार्थ छोटी इकाई में ही प्रकट हो सकता है। हमने अब तक जिस तरह काम किया है, उससे जनता से सम्पर्क तो अवश्य हुआ है, लेकिन हम यह दावा नहीं कर सकते कि हम उसके जीवन में प्रवेश कर सके हैं।

नया मोड़ सही है, मान्य है, लेकिन उसकी ओर बढ़ा कैसे जाय, यही प्रश्न है। आज देश में जो छोटी-बड़ी संस्थाएँ खादी का काम कर रही हैं, उन सबका कार्य-क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। किसी भी संस्था ने गाँव के समग्र जीवन को अपनी कार्य-परिधि के अन्तर्गत नहीं लिया है। जब गाँव का मुख्य धंधा खेती है तो चरखे को लेकर गाँव के जीवन में प्रवेश करने का अर्थ यह है कि हम उसे खेती के पूरक धन्धे के रूप में इस तरह जोड़ दें कि वह उसके जीवन का सहज अंग बन जाय। साधन के साथ-साथ ग्राम-परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी का भान गाँव वालों को हो जाय, तो मान लेना चाहिए कि विकास की कुंजी हाथ आ गयी। अब हमें निडर होकर गाँव वालों को भूल करने की छूट देनी चाहिए। ग्राम-स्वराज्य की यह प्रक्रिया तत्काल शुरू होनी चाहिए।

संस्था बड़ी हो या छोटी, उसके द्वारा पचीस-पचास हजार जनसंख्या के क्षेत्र में काम तो होता ही है। जरूरत इस बात की है कि हर उत्पत्ति-केन्द्र में नयी दृष्टि के कार्यकर्ता रखे जायें। इसके बाद केन्द्र के क्षेत्र में जितने गाँव हों उनकी एक सम्मिलित समिति बनायी जाय, जो उस क्षेत्र में होने वाले खादी-कार्य को अपने ऊपर उठा लेने की तैयारी करे। केन्द्र का कार्यकर्ता ग्राम इकाई की तैयारी में समिति की सहायता करे, ताकि इसमें हिसाब किताब रखने और पूरे खादी-कार्य को चलाने की क्षमता आ जाय। मेरा अनुमान है कि दृष्टि वाले कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में इस तरह का वातावरण बना सकते हैं। अनुभव यह बताता है कि अभी कुछ दिन तक ग्रामीण इकाई को ऊपर की संस्था के मार्ग-दर्शन और सहायता की आवश्यकता रहेगी। यह काम देहात में फैले हुए हमारे केन्द्रों को करना चाहिए। यह काम जिला-इकाई के द्वारा भी हो सकता है लेकिन जो खादी-केन्द्र जनता के प्रत्यक्ष सम्पर्क में हैं वह निश्चित ही अधिक उपयोगी हो सकते हैं। इसलिए मेरी सलाह है कि बड़ी संस्थाएँ अब जिला-स्तर पर तथा सुविधानुसार उससे भी नीचे गाँव-स्तर पर काम करने की योजना बनायें। हमारे कदम सही दिशा में मुड़ेंगे तो निश्चित ही आ जायेंगे। ऐसी विकेन्द्रित व्यवस्था में जिले के ऊपर की संस्था का काम केवल शिक्षण तथा प्रचार आदि के द्वारा वातावरण अनुकूल बनाने का रहेगा। इस तरह वह स्वयं आज के असह्य बोझ से मुक्त हो सकेगी।

इसी दृष्टि को सामने रख कर बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ ने निर्णय किया है कि अगले पाँच वर्षों में वह अपने को जनता में विलीन कर देगा। तब उसकी संस्था की हैसियत नहीं रह जायगी। वह नीचे की इकाइयों के लिए बड़ा भाई मात्र रहेगा और सलाह-मशविरा से उनकी सहायता करेगा। अभी तक वह तीन जिलों के खादी-कार्य को विकेन्द्रित कर चुका है और चौथे को बहुत शीघ्र विकेन्द्रित करने जा रहा है। यह क्रम आगे जारी रहेगा। जिले में नया संगठन इसी ढंग से हो रहा है कि खादी-कार्य व्यापक सर्वोदय और ग्राम-स्वराज्य आन्दोलन का अंग बन कर चले और दोनों का सम्मिलित कार्यक्रम और नेतृत्व हो।

जिले को विकेन्द्रित करने के साथ-साथ बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ का ध्यान ग्राम-इकाइयों के विकास पर है। उसने तत्काल यह कदम उठाया है कि जो युवक खादी-कमीशन की ओर से 'ग्राम-सहायक' के काम के लिए प्रशिक्षित हो रहे हैं, उन्हें एक चुने हुए क्षेत्र में योग्य मार्ग-दर्शन के साथ जगह-जगह बिठाया जाय। वे मुख्यतः ऐसे ही गाँवों में बैठेंगे, जिनमें अम्बर चरखे बाँटे गये हैं। ये कार्यकर्ता सबसे पहले बैठे हुए चरखों को फिर जिन्दा करेंगे और धीरे-धीरे पाँच हजार के क्षेत्र को वस्त्र-स्वावलम्बन के आधार पर संगठित करेंगे, ताकि स्थानीय अभिक्रम जग जाय और खादी, संस्था की न रह कर जनता की बन जाय।

गांधी-जयन्ती के अवसर पर हमारी दृष्टि बाजार से ग्राम-परिवार की ओर आ जाय, यही मेरी कामना है। हम एक बार फिर यह नारा लेकर जनता के बीच जायें कि खादी उनकी मुक्ति का साधन है। खादी ने स्वराज्य प्राप्त किया है, इसमें ग्राम-स्वराज्य प्राप्त कराने की भी शक्ति है। वह सूर्य है, हम आँखें खोल कर उसकी आभा को देखें और उसकी जीवनी-शक्ति को भर-भर हाथों बटोर लें।

●

आधुनिक साहित्य के नाम से गंदी किताबों का प्रचार भी खूब हो रहा है।

जैसा विनोबाजी ने कहा है, "आजकल हिन्दुस्तान में चरित्र-भ्रंश का आयोजन हो रहा है।" हिन्दुस्तान की महिलाओं का आवाहन करते हुए उन्होंने दर्द भरे शब्दों में कहा कि "अगर बहनें हमारी रक्षा नहीं करेंगी तो भगवान ही करेगा।"

पर सबसे शर्म की बात तो यह है कि महिलाओं के ही कुछ संगठनों ने फॅमिली प्लानिंग, परिवार-नियोजन और सन्तानोत्पत्ति से होने वाले शारीरिक ह्रास से (वास्तव में तो गलत तरीके से हुई प्रसूति के कारण घटक-मटक के नाश से!) बचने की दुहाई देकर कृत्रिम उपाय द्वारा संतति-नियमन करने के कार्यक्रम को उठाया है और उसका प्रचार कर रहे हैं।

एक तरफ सारे आयोजन इस समाज को विनाश की ओर ले जाने के करते रहें और फिर इन योजनाओं के परिणामस्वरूप समाज में तरह-तरह की विषमताएँ, विग्रह और समस्याएँ खड़ी हों, तब कभी नौजवानों में "बढ़ती हुई अनुशासनहीनता" को या कभी कलियुग को दोष देकर मुक्त हो जायें, इससे बढ़कर अपने आप को धोखा देना और क्या हो सकता है? बहनों की और भाइयों की, सबकी जिम्मेदारी है कि जीवन के मूल्यों की तथा राष्ट्र के शील और संयम की रक्षा के लिए कदम उठायें।

—००—

पूँजी-शक्ति और सैनिक-शक्ति के बीच पिस रहे

मानव के त्राण का एकमात्र उपाय

धीरेन्द्र मजूमदार

विनोबा जैसे महापुरुषों को भगवान किसी खास काम के लिए ही भेजता है। उसने गांधी को भेजा था युग-समस्या के समाधान के लिए। गांधी ने समाधान का मंत्र-उच्चारण किया। कुछ ने सुना और बाकी दुनिया ने अपने नित्य के काम के शोर गुल में सुना ही नहीं। लेकिन सुनना जरूरी था, नहीं तो दुनिया खतरे से बच नहीं सकती थी। इसलिए विनोबा का आना जरूरी था, विश्व के सामने गांधी-मंत्र को पेश करने के लिए।

गांधी ने अपने जीवन-काल में देश की तात्कालिक समस्या तथा दुनिया की मूल समस्या का समाधान, बताया। गुलामी की तात्कालिक समस्या के लिए अविनय असहयोग का और मूल समस्या के लिए चरखे का सन्देश सुनाया। उसी परम्परा पर आज विनोबा देश की तात्कालिक समस्या और दुनिया की मूल समस्या के समाधान का संकेत कर रहे हैं।

आज देश की तात्कालिक समस्या अन्न की समस्या है और दुनिया की मूल समस्या विग्रह और संघर्ष की है। देश में अन्न नहीं है, क्यों नहीं है? इसलिए कि जमीन के सदर्भ में इस देश में दो प्रतिकूल परिस्थिति विद्यमान है। एक, जमीन पर अन्याय की परिस्थिति और इसके उत्पादन के लिए देश की मनुष्य शक्ति का दुरुपयोग। अन्याय इस बात में है कि भूमि पर पसीना बहा कर उत्पादन करने वाले जमीन के मालिक नहीं हैं, यानी श्रम के फल के उपभोग के अधिकारी नहीं हैं। फलस्वरूप जो जमीन का मालिक है, उसका दिल जमीन पर रहता है और हाथ-पैर जमीन के बाहर। जो मजदूर है, उसके हाथ-पैर जमीन पर रहते हैं और दिल बाहर। अर्थात् कुछ नगण्य संख्या को छोड़ कर किसी मनुष्य का दिल और हाथ-पैर, दोनों जमीन पर नहीं रहते। ऐसी परिस्थिति में भूमि पर पैदावार बढ़ा कर अन्न की समस्या का हल नहीं हो सकता। अतएव विनोबा ने सर्वप्रथम भूमि-मालिकों से सामाजिक न्याय के नाम पर भूदान का आवाहन किया।

उत्पादन के लिए मुख्यत दो सामग्रियों की आवश्यकता रहती है भूमि और श्रम। श्रम मनुष्य के अन्दर रहता है। भूमि दो प्रकार की होती है—कुछ उर्वर भूमि और कुछ ऊसर, बालू आदि। उसी तरह मनुष्य में भी कुछ बुद्धिमान, वैज्ञानिक के रूप में उर्वर मनुष्य होते हैं और कुछ अशिक्षित मजदूर-वर्ग के रूप में कम उर्वर मनुष्य होते हैं। जमीन के मामले में तो जो उर्वर जमीन है वह आबाद की जाती है और ऊसर, बालू, परती छोड़ दी जाती है। लेकिन इस देश में मनुष्य के बारे में यह नियम लागू नहीं है। यहाँ जो ज्यादा उपजाऊ मनुष्य हैं, वे ज्यादातर परती पड़े हुए हैं और कम उपजाऊ लोग आबाद हैं। ऐसी हालत में पैदावार कैसे बढ़ेगी? विनोबा शिक्षित और बौद्धिक वर्ग के लोगों को जमीन पर जाकर मेहनत करने को कहते हैं। वे कहते हैं कि देश के प्रधानमंत्री को भी जमीन पर जाकर मेहनत करने की जरूरत है, क्योंकि इस विज्ञान के युग में ऐसा किये बिना तरक्की नहीं हो सकती। इस तरह देश की तात्कालिक समस्या जो अन्न की है, उसके समाधान के लिए वे सामाजिक न्याय अधिष्ठित करने और मनुष्य-शक्ति के सदुपयोग करने के लिए मुल्क का आवाहन करते हैं।

विश्व की मूल समस्या गण-स्वतन्त्रता की समस्या है। केवल स्वतन्त्रता ही नहीं, बल्कि सह अस्तित्व की भी समस्या है। मानव ने अपने संरक्षण के लिए संग्रहीत संपत्तिवाद का आविष्कार किया। पर संग्रह के गर्भ से विग्रह पैदा होकर पुन संरक्षण की समस्या खड़ी हो गयी। इस समस्या के समाधान के लिए मानव ने फिर से सोच कर राजदंड शक्ति का आविष्कार किया। दंड शक्ति सैनिक-शक्ति में मूर्तिमान हुई।

> इस प्रकार मानव ने अपने संरक्षण की समस्या के प्रसंग में अपने अगल-बगल दो दीवारें खड़ी कर लीं—संग्रहीत संपत्ति यानी पूँजी-शक्ति और राजदंड यानी सैनिक शक्ति। प्रगति की आकांक्षा दोनों दीवारों को निरंतर मजबूत करती गयी। फलस्वरूप आज मनुष्य इन दो दीवारों के बीच उसी तरह पिस रहा है, जिस तरह चक्की में गेहूँ पिसता है।

जनता इन दोनों शक्तियों को बलिष्ठ करने के लिए धीरे धीरे अपने अन्दर की जन-शक्ति के हिस्से काट-काट कर देती गयी। उस शक्ति का ह्रास होते-होते आज वह शून्य हो गयी। फलत चक्की के दो पाटों के बीच पड़ कर पिसते रहने पर भी आत्मशक्ति के अभाव में वह बाहर नहीं निकल पा रही है।

विनोबा उसे बाहर निकलने के लिए प्रत्यक्ष जन-शक्ति उद्बोधित कर तथा उसे संगठित कर स्वतंत्र लोक शक्ति का अधिष्ठान करना चाहते हैं। इसके लिए वे व्यावहारिक और सयोजित कल्पना भी पेश करते हैं। वे इस जन शक्ति के अधिष्ठाता के रूप में लोक-सेवकों का आवाहन करते हैं। वे कहते हैं कि ये लोक सेवक अपना आधार पूँजी-शक्ति या सैनिक-शक्ति न रखें, बल्कि अपने लिए एकमात्र आधार प्रत्यक्ष जन-शक्ति मानें। उनका कहना है कि लोक सेवक सर्वजन आधारित हो। साथ ही साथ वे यह भी कहते हैं कि वह विशिष्ट जन-आधारित न हो। साधारणत विशिष्ट जन का मतलब खास-खास लोगों से है, ऐसा समझा जाता है। लेकिन लोक-सेवक अगर विशिष्ट वर्ग के ही आधार पर रहें, तब भी काम नहीं चलेगा। आज दुनिया मालिक और मजदूर के रूप में दो वर्गों में विभाजित है। हिन्दुस्तान में तो इस परिस्थिति के अन्दर भी एक विशेष दुष्ग्रह ने प्रवेश करके परिस्थिति को और जटिल बना दिया है। वह है वर्ण-भेद। लोक-सेवक इनमें से किसी एक वर्ग पर आधारित न होकर सबके आधार पर और सबके साथ रहेगा। नहीं तो वह एक-वर्गीय मानस का शिकार होकर वर्ग-संघर्ष का औजार बन सकता है। लोक-सेवक सर्वजन शक्ति का अधिष्ठान करे, ऐसा वे चाहते हैं। इस संगठन के लिए भी संचित निधि का आश्रय छोड़ कर सर्वोदय-पात्र, श्रमदान आदि के आश्रय लेने की बात वे करते हैं, ताकि समाज के संगठन में पूँजी-शक्ति की आवश्यकता का निराकरण हो।

दूसरी ओर वे सैनिक शक्ति के निराकरण के लिए शान्ति-सैनिक की बात करते हैं। आखिर सैनिक-शक्ति समाप्त होने पर भी मानव प्रकृति में संस्कृति के साथ विकृति का जो समावेश है, वह कतई तो नहीं मिट सकेगा। संस्कृति का विकास चाहे जिस पराकाष्ठा पर पहुँचे, मनुष्य को प्रकृति का अंग होने के कारण समाज में समय-समय पर विकृति का प्रकोप होता ही रहेगा। दंड-शक्ति की अनुपस्थिति में इनके शमन के लिए वैकल्पिक शक्ति का संगठन आवश्यक है। इसके लिए विनोबा शांति-सैनिक का मजबूत संगठन चाहते हैं। शान्ति-सैनिक का संगठन गांधी-विनोबा द्वारा कल्पित समाज के लिए व्यवस्थित योजना नहीं है, वह युग की अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति है।

मनुष्य ने मानव-विकार के शमन के लिए दंड-शक्ति यानी सैनिक-शिक्षण का आविष्कार किया था। सैनिक की शक्ति शस्त्र शक्ति है। विज्ञान की प्रगति ने इस शक्ति को संरक्षक शक्ति के बदले विनाशक शक्ति के रूप में परिणत किया। फलस्वरूप सैनिक-शक्ति के विकट संग्राहक रूस और अमेरिका के नेता उससे भयभीत होकर सारे शस्त्रों को समुद्र में फेंकने को कहते हैं। अब यह युग दो में से एक बात करके ही रहेगा। शस्त्रास्त्रों को समुद्र में फेंकेगा, या उन्हें इस्तेमाल करेगा। अनन्त काल तक उन्हें बना-बना कर गोदाम में बंद नहीं रख सकेगा। यानी दुनिया या तो शस्त्रहीन होगी या युद्धरत। अगर वह शस्त्रहीन होगी, तो सैनिक की बन्दूक समुद्र में जायगी, लेकिन नागरिक की लाठी उसके हाथ में रह जायगी। ऐसे समय में अनिवार्य आन्तरिक विग्रह की परिस्थिति का मुकाबला एकमात्र शांति-सैनिक ही कर सकेगा। अगर दुनिया युद्ध में उलझती है, तो आज के युग में वह "टोटल वार", यानी समग्र युद्ध होगा। समग्र युद्ध में सरकारों का समग्र ध्यान और सामर्थ्य युद्ध में ही लगेगा। ऐसी हालत में समाज में अन्तर विग्रह की आशंका भरपूर होगी। इस परिस्थिति में भी समाज का संरक्षण शान्ति-सैनिक द्वारा ही हो सकेगा। यही कारण है कि विनोबा कहते हैं कि हमारा आन्दोलन सुरक्षा का आन्दोलन है।

> इस तरह मानव ने आत्मरक्षा की चेष्टा में संग्रह की परिपाटी चलायी। संग्रह में से विग्रह निकल कर पुनः संरक्षण की समस्या पैदा कर दंड-शक्ति यानी सैनिक-शक्ति का आविष्कार किया। संग्रह और सैनिक ने मिल कर चक्की के दो पाट बन कर मानव के सामने आत्मरक्षा की समस्या खड़ी की। इस समस्या के निराकरण के लिए यानी आत्म-संरक्षण के लिए प्रेम और त्याग के आधार पर लोकसेवक और शांति-सैनिक के माध्यम से विनोबा प्रेम और त्याग-शक्ति का विकास और संगठन करना चाहते हैं। अर्थात् वे मानव की मूल आकांक्षा की समस्या यानी आत्मरक्षा की समस्या के स्थायी समाधान में ही लगे हुए हैं।

ऐसे महापुरुष की जन्म तिथि पर हम सब सच्चे लोक-सेवक और शान्ति सैनिक बन सकें, ईश्वर से यही प्रार्थना है।

---

* भू-जयन्ती के अवसर पर श्रमभारती, खादीग्राम में दिये गये भाषण से।—सं०

युद्ध, शांति-सेना और बापू !

गोपाल कृष्ण मल्लिक

घटना सन् '३२ की है ! भारत में बापू द्वारा छेड़ा गया सत्याग्रह चल रहा था और उधर चीन-जापान-युद्ध एक जटिल समस्या बनी हुई थी। बापू यरवदा जेल में बंदी थे, पर उन्होंने अहिंसा की सार्वभौम शक्ति के प्रयोग की जो घोषणा की थी, उसका विश्व-व्यापी प्रभाव पड़ रहा था।

एक शांतिवादी महिला मिस रोइडन अहिंसा के जरिये युद्ध के मुकाबले के लिए प्रयत्नशील थीं और वे इस प्रसंग में कई प्रमुख व्यक्तियों के दस्तखतों से राष्ट्र-संघ से पत्राचार भी कर रही थी। मि. हर्बर्ट ग्रे, एच. आर. एल. शेपर्ड और अपने दस्तखतों से उन्होंने राष्ट्रसंघ के प्रधानमंत्री को लिखा : "शान्ति-सेना में सेवा देने के लिए एक-मात्र सौ आदमियों की छोटी-सी टोली तैयार हुई है। उसमें बहुत-से तो पिछले युद्ध में लड़े हुए सिपाही हैं। उन्हें युद्ध में जो कटु अनुभव हुए हैं, उनके फिर से दुहराये जाने के ख्याल से भी उन्हें भय लगता है। दुनिया को फिर ऐसे युद्ध में फँसने से रोकने के लिए वे मरने को तैयार हैं। पिछली लड़ाई में मारे गये लोगों के रिश्तेदार भी हमारी टोली में हैं। हम मानते हैं कि हमारी दरख्वास्त पर राष्ट्र-संघ गंभीरता से विचार करे तो इस देश में और दूसरी जगहों में भी हजारों आदमी शांति-सैनिक बन कर इस टोली में शरीक होने को तैयार हो जायेंगे।"

मिस रोइडन ने इस पत्र की नकल भेजते हुए बापू को जेल में लिखा था "मैं आपसे यह पत्र-व्यवहार करती हुई हिचकिचा रही थी, क्योंकि मुझे यह डर-सा लगता था कि शायद आप यह सोचें कि हमें हिन्दुस्तान का ख्याल पहले रखना चाहिए। मगर मैं मानती हूँ कि दूर पूर्व में चीन और जापान के बीच जो लड़ाई हो रही है, उसके सिलसिले में कुछ-न-कुछ करना निहायत जरूरी है। हमारी यह भावना आप समझ सकेंगे और उसके प्रति सहानुभूति रखेंगे, ऐसी आशा है। आपकी जानकारी के लिए मैं पत्र भेज रही हूँ। हम इस फैसले पर पहुँचे हैं कि ऐसी हालत में कारगर साबित होने वाला एक ही मार्ग है, और वह यह है कि जिन स्त्री-पुरुषों को अपना यह कर्तव्य दीखे, वे लड़ने वालों के बीच स्वेच्छा से निहत्थे खड़े रहें।"

महादेव भाई ने अपनी डायरी में लिखा था - "मिस रोइडन, हर्बर्ट ग्रे और एच० आर० एल० शेपर्ड के दस्तखतों से राष्ट्र-संघ के प्रधानमंत्री सर एरिक ड्रमण्ड को लिखे गये पत्र के कितने ही वाक्य तो मानो बापू के वाक्यों जैसे ही हैं। संघ को जापान और चीन के बीच लड़ाई बंद कराने का भगीरथ प्रयत्न करना चाहिए। मगर यह सम्भव नहीं है।"

बापू ने इसका जवाब २६ अप्रैल, '३२ को मिस रोइडन को दिया "आपके पत्र के लिए मैं आभारी हूँ। सर एरिक ड्रमण्ड और सर जान साइमन के साथ हुआ आपका जो पत्रव्यवहार आपने मुझे भेजा है, वह मिल गया। आपकी हलचल के बारे में मैंने पढ़ा था। मुझे यह ख्याल तक नहीं हुआ कि आप किसी भी तरह हिन्दुस्तान की अपेक्षा चीन के साथ पक्षपात रखती हैं। जिस परिस्थिति से बड़े पैमाने पर रक्तपात होने की संभावना है, उस परिस्थिति को रोकने के लिए आपने अपनी तमाम ताकत एक जगह लगाने का जो सोचा है, वह बिलकुल ठीक है। फिर आप लोग यह बात सत्याग्रह के ढंग से करना चाहते हैं, यह तो उसकी विशेषता है।"

सरदार वल्लभभाई पटेल, जो जेल में उनके साथ थे, इस पर बोले : "बस, इतना ही लिखना है ?" तो बापू ने मुस्कराते हुए उन्हें कहा "तो क्या इसे लिखा जाय कि अब हिंदुस्तान के लिए भी कोई हलचल करो !" वातावरण गंभीरता में डूब गया ! भारत को तो खुद की अपनी कोशिश से अहिंसा की इस रोशनी से सारे संसार को रोशन करना है !

•

आसाम में शांति-सैनिकों की टोली

इन्दौर में हुई सर्व-सेवा-संघ की प्रबंध-समिति के निर्णय के आधार पर आसाम में शांति-स्थापना तथा राहत के काम में मदद पहुँचाने के लिए भिन्न-भिन्न प्रान्तों से शान्ति-सैनिकों की माँग की गयी थी। अभी तक प्राप्त सूचना के अनुसार विभिन्न प्रान्तों से नीचे लिखे शान्ति-सैनिक आसाम गये हैं। ये लोग वहाँ प्रांतीय सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में श्रीमती अमलप्रभा दास और आशादेवी आर्यनायकम् के मार्ग-दर्शन में काम करेंगे।

महाराष्ट्र : (१) श्री बद्रीनारायण गाडोदिया, (२) श्री माणिकचन्द दोशी, (३) श्री श्यामसुन्दर शुक्ल (४) श्री अनु-भाई सोनी और (५) श्री भारतीय स्वामी।

गुजरात : (१) श्री कान्ता बहन शाह, (२) श्री हरविलास बहन शाह और (३) श्री अरुण भट्ट।

बिहार : (१) श्री गोखले भाई, (२) श्री कर्मवीर प्रसाद सिंह, (३) श्री उदित नारायण चौधरी, (४) श्री प्रद्युम्न प्रसाद सिंह, (५) श्री दिनेशचन्द्र प्रसाद, (६) श्री रामेश्वर ठाकुर, (७) श्री सुरेशप्रसाद विमल, (८) प्रेमचन्द्र सिन्हा, (९) श्री कल्याणनन्द सिंह (१०) श्री मेवालाल मेहता।

बंगाल : श्री चारुचन्द्र भंडारी।

उड़ीसा : (१) श्री ईश्वरलाल व्यास, (२) श्री मनमोहन चौधरी, (३) श्री नवकृष्ण चौधरी (४) श्री मालती देवी चौधरी। •

अखिल भारत शान्ति-सेना मण्डल की बैठक

अखिल भारत शान्ति-सेना मण्डल की बैठक दिनांक १७, १८ और १९ अगस्त '६० को पूज्य विनोबाजी की उपस्थिति में इन्दौर में हुई। मण्डल के सदस्यों में से सर्वश्री जय-प्रकाश नारायण, शंकरराव देव, नवकृष्ण चौधरी, अप्पासाहब पटवर्धन, महादेव बाजपेयी, विमला ठकार, मारजरी साइक्स, आशादेवी आदि सदस्य उपस्थित थे। श्री धीरेन्द्र भाई, रविशंकर महाराज, केलप्प-नजी तथा अमलप्रभा दास कार्यव्यस्तता के कारण इन्दौर नहीं पहुँच सके। प्रबन्ध-समिति के अन्य प्रमुख सदस्य भी मण्डल की बैठक में उपस्थित थे।

प्रथम बैठक में शांति सैनिकों का प्रशिक्षण, शान्ति-सेना का अभिक्रम तथा मर्यादाएँ, सीमा-विवाद-समस्या आदि पर श्री विनोबाजी ने मार्ग-दर्शन किया। अन्य सदस्यों ने भी इस बारे में अपने विचार प्रकट किये।

दूसरी बैठक में पंजाब के श्री ओमप्रकाश त्रिखा ने वहाँ की परिस्थिति से सबको अवगत कराते हुए कहा कि परिस्थिति अत्यन्त स्फोटक है। उन्होंने यह भी कहा पंजाब सर्वोदय-मण्डल ने यह तय किया है कि सर्वोदय-कार्यकर्ता भाषा के आंदोलन में किसी तरह का हिस्सा नहीं लेंगे, बल्कि पंजाब भर में शांति और प्रेम का वातावरण बनाने की कोशिश करेंगे। श्री सत्यम् भाई ने बताया कि पंजाब में कुछ काम उठाये गये हैं। अमृतसर में गुरुमुखी और नागरी लिपि जानने वालों को एक-दूसरे की लिपि सिखाने का तथा सबको गुरु-वाणी सुनाने का काम चल रहा है। श्री नबबाबू ने कहा कि शान्ति-कार्य के लिए एलवाल-परिषद् जैसी दूसरी परिषद् बुलायी जाय। श्री विमला बहन ने कहा कि आसाम की समस्या का स्थायी हल ढूँढ़ना होगा। श्री बाजपेयीजी ने कहा कि लोगों के जीवन तथा संपत्ति की रक्षा करना एक बात है और समस्या का हल करना दूसरी बात। यदि हम पहला काम करने के लिए तैयार रहें और उसमें सफल हों जायँ तो आगे चलकर समस्याओं का हल भी निकल सकता है। श्री विनोबाजी ने इस विचार को पसन्द किया। श्रीमती सरला देवी ने उत्तराखंड की परिस्थिति से सबको अवगत कराते हुए कहा कि वहाँ पर इस समय आन्तरिक अशान्ति का खतरा नहीं दिखायी देता, लेकिन जनता उदासीन रहे तो बाहर से खतरा उपस्थित होने पर जनता का संगठन करना कठिन होगा। इसलिए जनता को जाग्रत करना हमारा कर्तव्य हो जाता है। श्री वैद्यनाथ बाबू ने बिहार के सीतामढ़ी विभाग के अशान्ति-निवारण कार्य का जिक्र करते हुए कहा कि उस समय भागे हुए लोग घर लौटते समय शान्ति-सैनिकों को साथ लेकर ही घर लौटते थे। लिहाजा बाँटने वाले भी शान्ति-सैनिकों को साथ लेकर जाते थे।

श्री विनोबाजी ने कहा कि अशान्ति के क्षेत्र उत्तरोत्तर बढ़ने वाले हैं, देश तथा दुनिया की परिस्थिति अत्यन्त स्फोटक है। हम चाहते हैं कि सारे देश भर में १००,०० की आबादी के लिए एक-एक शान्ति-सैनिक हो, जो उस क्षेत्र की शान्ति की जिम्मेदारी उठाये। खादी-ग्रामोद्योग, कस्तूरबा ट्रस्ट आदि रचनात्मक कार्यकर्ताओं के लिए शान्ति-सैनिक की छठी निष्ठा कठिन मालूम होती है। तो वे "स्थानीय शान्ति-सैनिक" बनें और अपने-अपने स्थान में अशान्ति-निवारण की जिम्मेवारी उठायें। मैं चाहता हूँ कि सारे रचनात्मक कार्यकर्ता इस तरह शान्ति-सैनिक बनें और उन सबकी सहायता से देश में हर १०,००० के लिए एक शान्ति-सैनिक खड़ा करने का काम हम उठायें।

तीसरी बैठक में विनोबाजी ने कहा कि अखिल भारत शान्ति-सेना मण्डल की तरफ से देश भर में ६ सघन क्षेत्र चुने जायें, जहाँ अधिक-से-अधिक ताकत लगायी जाय। आसाम, उत्तराखण्ड, इन्दौर, बनारस तथा बंगलौर और चम्बल घाटी का क्षेत्र सघन क्षेत्र के तौर पर लेने का आदेश उन्होंने दिया। आसाम को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाय और अखिल भारत की तरफ से शान्ति-सैनिक वहाँ पहुँचें, ऐसा विनोबाजी ने आदेश दिया। आसाम के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए सर्व सेवा संघ अपील निकाले, यह सलाह भी उन्होंने दी, जिसके अनुसार संघ के अध्यक्ष श्री वल्लभस्वामी ने तुरन्त एक अपील निकाली। पूना में सर्वोदय-पात्र का जो पैसा इकट्ठा हुआ था, उसमें से सर्व सेवा संघ का छठा हिस्सा ही छोड़ कर १३०४ रुपये ५७ नये पैसे आसाम भेजने के लिए उन्होंने कहा, जिसके अनुसार पूना के प्रमुख कार्यकर्ता डाक्टर दातार ने तुरन्त वह रुपया आसाम भेज दिया। बिहार सर्वोदय मण्डल की तरफ से श्री वैद्यनाथ बाबू ने आसाम के लिए भरसक सहायता करने का आश्वासन दिया और पहली किस्त के तौर पर बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ ने १००० रु० भेज दिया। गुजरात में सर्वोदय पात्र का जो पैसा इकट्ठा हुआ है, उसका भी आधा हिस्सा आसाम भेजने के लिए विनोबाजी ने कहा।

काशी के कार्य की जिम्मेदारी उत्तर प्रदेश सर्वोदय-मण्डल उठाये और मण्डल के अध्यक्ष श्री सुन्दरलालजी काशी में रह कर सर्वोदय-कार्य करायें, यह भी आदेश विनोबाजी ने दिया। काशी नगर शान्ति सेना विद्यालय का प्रशिक्षण स्थल हो, यह भी उन्होंने कहा। स्वर्गीय जनरल यदुनाथ सिंहजी के अभाव में चम्बल घाटी के कार्य की तरफ श्री करण भाई श्री दिवेकरजी सरकार से सम्पर्क का कार्य करें, यह भी उन्होंने सलाह दी।

शान्ति-सेना विद्यालय के बारे में श्री शंकरराव देव ने कहा कि इसमें कार्य करना समाज की परिस्थिति को सूक्ष्म रू

शांति-सैनिकों के पत्रों से

● हजारीबाग के कार्यकर्ता श्री राम-[illegible] भाई सूचित करते हैं कि १४ अगस्त को [illegible]पुर ग्राम में मंदिर और जमीन के मामले को लेकर हिंदू-मुस्लिम तनाव हुआ। हिन्दुओं का कहना था कि मुसलमानों ने हमारे मंदिर तोड डाले और वे एक गिरोह लेकर हम लोगों के घर तक आ धमके। मुसलमानों ने बताया कि यह झगडा जाति-वाद को लेकर नहीं, बल्कि जमीन का है। उस क्षेत्र के शांति-सैनिक भाई ने इस झगडे को निपटाने का प्रयास किया।

● लखनऊ से भाई श्री राधेश्यामजी [illegible] लिखते हैं

चारबाग रेलवे-स्टेशन पर टिकट-चेकर ने प्लेटफार्म टिकट मुझसे मांगा। टिकट मेरे मित्र के पास था। शंका के कारण टिकटचेकर ने मुझे अपशब्द कहे, धक्का दिया और अपने बचाव के लिए धारा १२०-१२१ की कार्रवाई की। मैंने सारा किस्सा पुलिस को सुनाया। मेरा मुकदमा १२०।३२३ लिखा गया। अदालत में उस भाई ने अपनी गलती मंजूर कर ली। नौकरी से बरखास्त होने की नौबत आयी। पर अदालत के कहने पर और उसकी रोजी का ध्यान रख कर, उसके हम लोगों ने माफी मांगने पर, अदालत में सुलहनामा दाखिल किया गया। सोचा गया कि जब अपराधी ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया तो उसे सजा नहीं मिलनी चाहिए। इस तरह कोर्ट में सुलह हो गयी।

● पूर्णिया जिले के अन्तर्गत रानीगंज थाने के [illegible]पुर ग्राम-पंचायत के सरपंच का चुनाव था। दोनों दलों में खूब तनातनी चल रही थी। पुलिस की उपस्थिति के बावजूद दोनों दल लाठी-भाले के साथ मैदान में आ डटे थे। इसकी खबर पाकर ग्राम-स्वराज सघन क्षेत्र के संगठक श्री रामदीप कुमार ने आ, निहत्थे दोनों दलों के बीच खडे हो कर कहा : "आप लोग आपस में लडने के पहले हम पर वार करें।" इन थोडे-से शब्दों ने ही दोनों दलों का जोश ठंडा कर दिया। मामला शान्त हो गया।

● भूदान सर्वोदय-कार्यालय, धूलिया-आगरा द्वारा मिली सूचना के अनुसार अरहेरा ग्राम में फौजदारी और दीवानी के बहुत से मुकदमे चल रहे थे। मालकियत हडपने के चलते कत्ल की भी सम्भावना चल रही थी। दो दलों में बडी तेजी से जमीन का झगडा था। उसी गांव को सर्वोदयी कार्यकर्ता मुंशी मुनीर दादा ने 'शासन-मुक्ति का संकल्प' कराने का निर्णय किया। उनके प्रयत्न से दोनों दलों का झगडा शांत हो गया। उस गांव वालों ने यह संकल्प लिया कि अब झगडा नहीं करेंगे, यदि करेंगे तो फैसले के लिए कचहरी नहीं जायेंगे, गांव में ही फैसला करेंगे। उन लोगों ने एक सर्वोदय-पंचायत भी बनायी है।

● महाराष्ट्र से श्री प्रभाकर लिखते हैं

सहजपुरवाडी में १२ जुलाई को मंदिर के सामने बकरे की बलि दी जाने वाली थी। संतवचनों का आधार लेकर यह काम न करने के बारे में गांव वालों को समझाया गया, पर वे अपनी जिद पर अडे रहे। पर मैंने भी इस काम को गलत मान कर विरोध करने का निश्चय किया और बलिदान के स्थान पर बलि चढाने के कुछ समय पहले जा डटा। मेरे पहुँचने के पहले एक मुर्गे की बलि वे लोग दे चुके थे, पर बकरे और भैंसे की बलि उस मंदिर पर न दे सके। सुनने में आया कि अन्यत्र जाकर बलि चढायी। मेरे विरोध का जन-मानस पर अच्छा-बुरा, दोनों तरह का प्रभाव पडा।

●

खादीग्राम में भू-जयंती और हीरक श्रम-जयंती

१० सितम्बर '६० को पूज्य धीरेन्द्र भाई की साठवीं वर्ष-गांठ 'श्रमभारती' खादीग्राम उत्साह के साथ मनायी गयी। प्रत्येक वर्ष उनकी वर्ष-गांठ यहां 'श्रम-जयंती' के रूप में मनायी जाती रही है। सवेरे प्रभातफेरी निकली। उसमें सम्मिलित बहनों, बच्चों तथा पुरुषों ने क्रमशः उनका अभिवादन किया। इस अवसर पर पधारे अतिथियों को मिला कर कुल संख्या लगभग २०० थी।

दूसरा कार्यक्रम श्रम का था। आस-पास के गांवों तथा आश्रम के लोगों ने मिल कर एक घंटे का श्रम-यज्ञ किया। लगभग ५०० व्यक्तियों ने १००० घनफुट से अधिक मिट्टी काट कर मेंड बांधी, जिसकी लम्बाई १५० फुट से अधिक है। श्रम-यज्ञ के उपरान्त मिट्टी काटने की प्रतियोगिता हुई। इसके लिए ५-५ व्यक्तियों की १२ टोलियां थीं। इन सबने मिल कर ४८० घनफुट मिट्टी काटी। प्रथम आने वाली टोली ने १० मिनिट में ४९ घनफुट मिट्टी काटी।

श्री ध्वजाप्रसाद साहु की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा हुई। आचार्य विनोबा भावे, प्रधानमंत्री नेहरूजी तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों के इस अवसर के लिए आये शुभकामना के संदेश सुनाये गये। 'श्रमभारती' के आचार्य राममूर्ति भाई, मुंगेर जिला सर्वोदय मण्डल के संयोजक श्री रामनारायण सिंह, बिहार सर्वोदय-मण्डल के संयोजक श्री श्यामसुन्दर प्रसाद, रणीवां के पं० लालताप्रसाद मिश्र आदि के भाषण हुए। लोककवि प्रेमदास, श्री रामचन्द्र राही और श्री सिद्धु भाई का कविता-पाठ हुआ।

लक्ष्मीसराय अम्बर विद्यालय की ओर से आचार्य निर्मलचन्द्र सिंह ने संयुक्त बेलनी और धुनाई मोढिया पूज्य धीरेन्द्र भाई को भेंट की। 'श्रमभारती' परिवार के विभिन्न सदस्यों ने ९५ गुण्डियां सूत अर्पित किया।

●

आसाम सर्वोदय-मंडल का शांति-कार्यक्रम

गत १-२ सितंबर, '६० को गुवाहाटी ग्राम-सेवक विद्यालय में श्री खगेश्वर मूर्या की अध्यक्षता में आसाम सर्वोदय-मंडल की कार्यकारिणी समिति की एक विशेष बैठक बुलायी गयी थी, जिसमें सारे आसाम प्रांत में शांति, सप्रीति और पुनर्वास का काम व्यापक रूप से करने के बारे में चर्चा हुई।

सर्वोदय मंडल के लोक-सेवकों ने दूसरे लोगों की मदद से कामरूप जिले के गोरेश्वर और नगांव के सोनारि में शांति का जो काम किया, उसमें होने वाले अनुभवों के आधार पर आगे के लिए एक निश्चित कार्यक्रम बनाया। इस कार्यक्रम के अनुसार गुवाहाटी और नगांव के उपरान्त डिब्रुगढ, शिवसागर, जोरहाट, उत्तर लखीमपुर, तेजपुर, मंगलदै और गोवालपारा वगैरह क्षेत्रों में जहां-जहां अशान्ति व हिंसक कार्य ज्यादा हुआ, वहां एक-एक शान्ति-सेवक शिविर स्थापित किया जायगा। इन शिविरों के द्वारा श्रीमती अमलप्रभा दास के मार्ग-दर्शन में आसाम सर्वोदय-मंडल के मातहत शान्ति-समिति शान्ति-कार्य करेगी।

एक प्रस्ताव के द्वारा जरूरत के अनुसार आर्थिक व नैतिक सहायता देने के लिए अखिल भारत सर्व सेवा संघ से निवेदन किया गया।

आसाम की घटनाओं की प्रतिक्रिया के रूप में पश्चिम बंगाल में असमीया लोगों पर चलने वाले अत्याचार और अखबारों में होने वाला अप-प्रचार शांति-स्थापना में बाधा दे रहा है। अत: अ० भा० सर्व-सेवा-संघ और पश्चिम बंगाल सर्वोदय-मंडल को अपील की गयी है कि वे पश्चिम बंगाल में होने वाले इस उत्तेजनापूर्ण काम को रोकने की कोशिश करें।

अभी सारे आसाम में शान्ति, सप्रीति तथा पुनर्वास का काम व्यापक रूप से करना जरूरी समझ कर मंडल ने गुवाहाटी नगर-पदयात्रा और उत्तर लखीमपुर की सघन पदयात्रा का कार्यक्रम अनिश्चित समय के लिए स्थगित किया है। जहां-जहां शान्ति और पुनर्वास का काम मंडल के द्वारा किया जायगा, वहां एक-एक "प्रेम-क्षेत्र" बनाने की कोशिश की जायेगी, जिसमें आगे के लिए अशान्ति न हो सके। प्रति शिविर में ५ से १० तक आसाम के और अन्य प्रान्तों के ऐसे कार्यकर्ताओं को रखा जायेगा, जो सेवा की दृष्टि से ही आयेंगे, न कि अध्ययन की दृष्टि से। उनका सेवानिष्ठ, श्रमनिष्ठ, तकलीफ सहन करने की आदत वाले और निष्पक्ष होना जरूरी है।

उपर्युक्त शान्ति और पुनर्वास के काम के लिए आसाम सर्वोदय मंडल की शान्ति-समिति के नाम पर एक कोष निर्माण करने का भी निश्चय किया गया। इस कोष के लिए मुक्तहस्त से दान करने के लिए सब शान्ति-प्रेमियों से निवेदन किया गया है।

●

श्री जयप्रकाश बाबू के निबन्ध पर विचार

जोधपुर में भाषण-माला का आयोजन

गांधी अध्ययन-केन्द्र, जोधपुर की ओर से पाक्षिक उसकी विचार-सभा में "भारतीय राज्य-व्यवस्था के पुनर्गठन" इस विषय पर एक भाषण-माला का उद्घाटन 'ग्रामराज'के सम्पादक श्री गोकुल भाई भट्ट ने किया। उन्होंने अपने भाषण में भारतीय संविधान के निर्माण के इतिहास से लेकर तृतीय पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा तक प्रकाश डालते हुए कहा कि देश का लोकतंत्र और देश की योजनाएं लोगों में उत्साह और अभिक्रम जागृत करने में असफल रहे हैं। जनता चार-पांच वर्ष में एक बार मतदान कर कुंभकर्णी निद्रा में सो जाती है। अब समय आ गया है कि हम जनता की साझेदारी में लोकतंत्रीय मूल्यों के संदर्भ में चुनाव की प्रणाली में परिवर्तन के बारे में सोचें।

विचार-सभा का प्रारम्भ जापान से आयी कुमारी किम्मी कियानो की बौद्ध धर्म-प्रार्थना से हुआ। चर्चा में प्रजा-समाजवादी दल के श्री रतनलाल पुरोहित, एडवोकेट, आई ए एम कालेज के प्रिंसिपल श्री विष्णुदत्त शर्मा, आई ए एम, एस एम के कालेज की योजना-परिषद् के परामर्शदाता प्रो भगवत स्वरूप माथुर, सार्वजनिक सम्पर्क-अधिकारी श्री प्राणनाथ पुरी, भारत-सरकार के पंच-वर्षीय योजनाओं के स्थानीय प्रचार-प्रसार-अधिकारी श्री राजेंद्र सिंह, जसवन्त कालेज की योजना-परिषद् के सलाहकार प्रो० राम-प्रसाद दाधीच आदि ने विशेष रूप से भाग लिया। इसी विषय पर लगभग दो माह तक विचार-सभाओं का आयोजन होता रहेगा।

●

अध्ययन नहीं करेंगे, तो काम नहीं चलेगा [illegible]भी विषय के गहराई में जाकर अध्ययन करने की वृत्ति हमारे कार्यकर्ताओं में नहीं रही है, जो अत्यन्त आवश्यक है।

जब एक सदस्य ने सुझाया कि शान्ति-सेना का नाम 'भक्ति-सेना' रखा जाय, तो विनोबाजी ने कहा :

'भक्ति-सेना' यह शब्द मैंने भी एक बार इस्तेमाल किया था। शायद 'शान्ति-सेना' शब्द अशान्ति की कल्पना कर लेता है। 'सेवा-सेना' शब्द में शान्ति की बात नहीं आती, नित्य सेवा कार्य और अशान्ति-निवारण कार्य, इन दोनों को पेट में लेने वाला शब्द आवश्यक है 'भक्ति-सेना' में नित्य सेवा और मौके पर बलिदान की तैयारी, ये दोनों बातें आ जाती हैं। चर्चा के अन्त में यह तय रहा कि शान्ति-सेना नाम ही चलाया।

●

उग्र राष्ट्रवाद भी एक संकीर्णता !

• रामाधार

स्विट्ज़रलैण्ड : एक विचार-मन्थन

ड्यूरी से मैं अकेला ही स्विट्ज़रलैण्ड गया। इस भूभाग के प्राकृतिक सौन्दर्य का बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता। सभी कुछ असाधारण है। योरोप में सामान्यत अतिथि-सत्कार आदि की प्रथा नहीं है। फिर भी नागरिकता की दृष्टि से परिपूर्ण शिष्टाचार है। नम्रता और व्यवहार उनमें बहुत विकसित है और उसके लिए वे हमारे लिए वन्दनीय हैं। किन्तु आतिथ्य का विचार नागरिक शिष्टाचार एवं नागरिक भावना के अन्दर निहित नहीं है। सम्भवत अतिथि-सत्कार की भावना और उसकी प्रथा का मूल सम्मिलित परिवार-व्यवस्था में है। यह व्यवस्था योरोप में सम्पूर्णत नष्ट हो चुकी है। अत उसके साथ अतिथि-सत्कार की भावना भी समाप्त हो गयी है। दरअसल शहरों में वह हमारे यहाँ भी नष्ट हो रही है, क्योंकि सम्मिलित परिवार की प्रथा धीरे-धीरे भारत के शहरों से भी लुप्त हो चली है। इस परिवर्तन में जो लोग क्रांति का दर्शन करते हैं, वे अपने को और दूसरों को भ्रम में डालते हैं। सम्भव है, यह परिवर्तन अवश्यम्भावी हो, किन्तु वह निश्चित रूप से प्रगति का सूचक है, ऐसा मानने की कोई वजह दिखाई नहीं देती। आतिथ्य के पीछे औदार्य एवं साम्य की भावना है। इतना ही क्यों, भारतीय संस्कृति की दृष्टि से आतिथ्य भगवान की पूजा है। अत आवश्यकता इस विचार और भावना को अधिक पुष्ट करने की है, न कि तोड़ने की। जो हो, योरोप में आतिथ्य के कर्तव्य का दायित्व न होते हुए भी उन लोगों ने जिस तरह मुझे अपने बीच स्वीकार किया, वह सचमुच ही आश्चर्य में डालने वाला है। 'सम्भव है, इसके मूल में प्रत्युपकार की भावना रही हो, क्योंकि वे लोग मेरे पास दिल्ली में ठहर चुके थे'—ऐसा सुझाव भी दिया गया, परन्तु मुझे ऐसा मानने की कोई वजह नहीं दीखती।

स्विट्ज़रलैण्ड को देश की संज्ञा प्राप्त है यह देख कर हँसी आती है। उसकी कुल आबादी लन्दन शहर से कम है। फिर भी उसके देश होने के सारे लक्षण वहाँ मिलते हैं। लोगों में राष्ट्रीय भावना परिपूर्ण मात्रा में मौजूद है। उन्हें इसकी फिक्र है कि वे गत महायुद्ध में भी अपने को उससे अलग रख सके थे। उनसे इसकी चर्चा करने पर वे निश्चयात्मक रूप से कहते हैं कि जर्मनी यदि हम पर हमला करता, तो उसे मुँह की खानी पड़ती। इसी डर से जर्मनी ने हमला नहीं किया, यह आग्रह उनके उत्कट राष्ट्रीयता का परिचायक है। इस हद तक तो इसमें बुराई नहीं। परन्तु थोड़ा और गहराई में जाने पर इस राष्ट्रवाद की संकीर्णता अनायास ही बाहर आ जाती है। स्विस लोग परम्परा की दृष्टि से एक कौम नहीं हैं। वे विभिन्न जातियों के हैं और उनका आपसी अन्तर उनकी भाषाओं से अनायास ही प्रकट होता है। फिर भी देश की इकाई का भाव उनके अन्दर भी इतना उग्र है, देखकर *आश्चर्य होता है। मानव-जीवन* अनेक प्रकार के अन्तर्विरोधों से भरा-पूरा है। जिन देशों में फूट है, जैसी कि हमारे देश में है, वहाँ राष्ट्रीयता का भाव आसानी से सफल नहीं होता। किन्तु जहाँ राष्ट्रीयता की भावना सूत्र है और वह संकीर्ण राष्ट्रवाद की द्योतक हो गयी है, जो उदार दृष्टि-*कोण के विकास में बाधक हो जाती है,* वहाँ वह रोके नहीं रुकती और उत्तरोत्तर और भी उग्र होती चलती है तथा विनाश का कारण बनती है। योरोप के प्राय सभी देशों में राष्ट्र-प्रेम उग्र राष्ट्रवाद के रूप में बदल गया है, जिससे अनेक तरह के खतरे पैदा होते रहते हैं।

योरोप के अनेक विचारकों ने संयुक्त योरोप का स्वप्न देखा है। उनमें से रोम्याँ रोलाँ प्रमुख थे। किन्तु आश्चर्य है कि राष्ट्रीयता के नाम पर ही दो विकराल युद्ध लड़ कर भी योरोपीय देश राष्ट्रवाद की *व्यर्थता को नहीं देख पा रहे हैं। यही* हाल स्विट्ज़रलैण्ड का भी है। इस प्रश्न को लेकर वहाँ कई लोगों से चर्चा भी हुई। अधिकांश लोगों को राष्ट्रवाद की परिधि से बाहर जाने में खतरा दीखता है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो इन संकीर्णताओं की व्यर्थताओं को मानने लगे हैं। किन्तु सारा योरोप एक इकाई कैसे बन सकता है, इसका मार्ग किसी को सूझ नहीं पाता। मैंने उनसे निवेदन किया कि जो कुछ मुझे देखने को मिला है, उसकी रोशनी में तो संयुक्त योरोप का विचार व्यवहारत बहुत कठिन नहीं लगता।

योरोप में प्राय सभी देशों में अनेक बातों में एकरूपता है। उनकी धार्मिक तथा नैतिक धारणाओं का मूल स्रोत भी एक ही है। कठिनाई है, वह केवल लोगों के दिल और दिमाग में खिंची हुई काल्पनिक रेखाओं के कारण। इन रेखाओं को प्रत्येक देश के राजनीतिज्ञ और भी गहरी करने के प्रयत्न में रहते हैं। उनका पेशा ही राष्ट्रवाद की हुंकार पर चलता है। जैसे वकील का पेशा मुकदमेबाजी की कुश्तियों पर चलता है, वैसे ही पेशेवर राजनीतिज्ञों का पेशा भी *राष्ट्र के नाम पर लोगों के आपसी मन-*मुटाव पर चलता है। योरोपवासियों के लिए राजनीतिज्ञों के ऐसे अकल्याणकारी प्रभावों से बचना कठिन नहीं है। काफी लोग इस विचार से सहमत दिखे।

मेरा ध्यान एकाएक अपने देश की ओर गया। भीतर ही भीतर ग्लानि-सी हुई। मैंने सोचा कि ये लोग कम-से-कम अच्छे राष्ट्रवादी नागरिक तो हैं। हम तो *वह भी नहीं हैं।* कौनसा सवाल है, जिसको लेकर हम आपस में लड़ न रहे हों ? इस दुर्भाग्य के कारण हमारी शताब्दियों पुरानी सांस्कृतिक एकता भी छिन्न-भिन्न हो रही है। लेकिन फिर सोचा, मानवीय दृष्टि से अन्तत हमारी स्थिति में क्या अन्तर है ? दोनों ही दो प्रकार की संकीर्णताओं के शिकार हैं, *जिनका परिणाम प्रकारान्तर से एक ही* होता है। दोनों ही मानवों को एक-दूसरे से विमुख करती हैं, तोड़ती हैं। ये लोग, जो अलग-अलग राष्ट्रवाद की गाँठ से जुड़े हुए दीखते हैं, वह स्वार्थ और भय से बनी गोंद है। उसका मूल्य ही कितना है ? फिर ख्याल आया कि हमारी समस्याएँ आखिर *राष्ट्रीय भावना के अभाव से निकली हैं।* इनकी समस्याएँ राष्ट्रीय भावना और राष्ट्र-प्रेम की उग्रता से निकली हैं। दोनों में अन्तर तो है ही। जहाँ ये हैं, हमें वहाँ पहुँचना है और उसकी उग्रता से बचते हुए *आगे बढ़ना है। उन्हें आज ही उससे* आगे बढ़ने की सुविधा है। लेकिन जब इनके इन तथाकथित राष्ट्रों पर नजर जाती है, तो फिर शंका होती है कि इन देशों में एक-एक मुट्ठी इन्सान रहते हैं, *इनकी अपनी-अपनी इकाई की एकता ऐसी* क्या बड़ी वस्तु है ? फिर भी उनके जीवन को निकट से देखने पर विशिष्टता तो दीखती ही है।

पर विचार करने की *यह सारी पद्धति* क्या वैज्ञानिक है ? इस तरह राष्ट्रवाद *आदि के द्वारा सीढ़ी-सीढ़ी* बढ़ने की कल्पना से समूहों के अलावा क्या इस समष्टि और व्यष्टि में भी विरोध नहीं पैदा कर देते ? व्यक्ति से समाज या राष्ट्र बड़ा दीखता है, यही तर्क हमें प्रकारान्तर से अल्पमत से बहुमत की श्रेष्ठता पर भी ले जाता है। किन्तु चिन्तन की यह प्रक्रिया हमें अमुक मंजिल पर ले जाकर छोड़ नहीं देती ? क्या उसके आगे का मार्ग अवरुद्ध नहीं हो जाता है ? दरअसल यह मानव-मानव में अथवा विभिन्न मानव-समूहों में भेद-बुद्धि पैदा करने *का मार्ग है। आगे* चल कर यह हमें मनुष्यत्व की व्यापक भावना से विमुख कर देता है। यही कारण है कि पश्चिमी देशों के राष्ट्रवाद एवं उनके लोकतन्त्र के विचार में भी गांधीजी की विशेष आस्था नहीं थी। विनोबाजी की भी नहीं है। लोकतन्त्र के लिए तो वे अनेक बार कह चुके हैं कि यह ५१ और ४९ का शास्त्र खोटा है। उग्र राष्ट्रवाद को भी अन्तत *तोड़ना है। अत* मानव को विशुद्ध मानव के रूप में ही हमें देखना चाहिए। तभी हम अन्तर्विरोध वाली उलझनों में बिना पड़े अपनी समस्याओं का हल पा सकेंगे। अमुक राष्ट्र अथवा अमुक दल या समूह के सदस्य के रूप में मनुष्य को देखने से तथा व्यक्ति से समूह की महत्ता अधिक मानने से हम घूम-फिर कर फिर वहीं आ पहुँचते हैं, जहाँ से चलना शुरू *किया था।* सर्वोदय-विचार का महत्त्व यही है। वह हमें कोल्हू *का बैल होने से बचाता है।* दरअसल अन्तर्राष्ट्रीयता भी एक बृहत् संकीर्णता का बड़ा-सा नाम बन गयी है। इसमें भी व्यक्ति ढक कर अयथार्थ हो जाता है। हम अपनी संकीर्णताओं को बड़े बड़े शब्दों से ढकने के अभ्यस्त हो गये हैं। फलत शब्दों की झंकार तो वातावरण में रह *जाती है, असली वस्तु हाथ में नहीं आती।* मानव का मानव रूप कितना ही लघु दीखता हो, परन्तु सार वस्तु वही है। सर्वोदय में मानव की इकाई ही उसका केन्द्र-बिन्दु है। उसकी बृहत् संख्या की अभ्यस्तता, चाहे कितना ही नाम बड़ा लेकर सामने आये, गौण है। इतिहास में व्यक्ति की महत्ता और समूह की क्षुद्रता के अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं और समूह की महत्ता तथा व्यक्ति की क्षुद्रता के उदाहरण भी भरे पड़े हैं। अत हम किसे बड़ा मानें ? दरअसल यह प्रश्न ही गलत है। दोनों *का महत्त्व समान है।* राष्ट्रवाद और लोकतन्त्र, दोनों भी अपने-अपने ढंग से इस सचाई को छोड़ देते हैं। अत मानव अथवा मानवता की समस्याओं को हल करने की बजाय उन दोनों ने उन्हें और भी *पेचीदा बनाया है।* स्विट्ज़रलैण्ड तथा योरोप के अन्य देशों में यही देखने को मिलता है।

(२) पंचायत का कोई भी काम बिना सबकी राय के नहीं होगा।

(३) गाँव के झगड़े पंचायत के बाहर नहीं जायेंगे।

(४) ग्राम-व्यवस्था हिंसा के बल से नहीं चलेगी।

(५) ग्रामवासी खाने-पीने, रहने, पहनने के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहेंगे।

(६) गाँव का कोई भी व्यक्ति बिना काम के नहीं रहेगा।

(७) लोग अनपढ़ नहीं रहेंगे।

(८) गाँव में न कोई शराब पीयेगा और न शराब की दूकान ही होगी।

गाँव के लोगों के सामने यह अष्ट-सूत्री कार्यक्रम रखते हुए थरमोल के दो सौ घरों में यह पदयात्रा होगी। दो टोलियाँ निकलेंगी और गाँवों में लोगों के पास जायेंगी। देखना है, हमारी कल्पना कहाँ तक सफल होती है !

रतनपुर —त्रिलोकचन्द्र जैन

देश के कोने-कोने में भू-जयंती समारोह

सफाई, श्रमदान और विचार-प्रचार का आयोजन—
—सर्वोदय-पात्र स्थापना के संकल्प, लोगों में जागृति

गत ११ सितम्बर को देश के कोने-कोने में पू० विनोबाजी का ६६ वाँ जन्म-दिवस 'भू-जयन्ती' के रूप में मनाया गया। सर्वत्र प्रभातफेरी, सफाई पदयात्रा, जनसंपर्क, सूत्रयज्ञ, सर्वोदय साहित्य-बिक्री, सभाओं का आयोजन एवं विनोबाजी के दीर्घायु के लिए शुभ-कामनाएँ प्रकट की गयीं। कई जगह यह समारोह तीन, सात और पन्द्रह दिनों तक भी विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया गया।

हमारे पास प्राप्त विभिन्न प्रदेशों के इस विषय के समाचारों में से कतिपय उल्लेखनीय कार्यक्रम नीचे दिये जा रहे हैं।

कानपुर : स्थानिक सर्वोदय कार्यकर्ताओं द्वारा किदवईनगर में सफाई का कार्यक्रम हुआ। घर-घर जाकर 'भूदान-यज्ञ' पत्रों के ग्राहक बनाये गये।

मिर्जापुर : गांधी-आश्रम की ओर से ११ सितम्बर से २ अक्तूबर तक पक्ष मनाया जा रहा है, जिसमें खादी-ग्रामोद्योगी वस्तुओं का प्रचार और सर्वोदय-पात्रों की स्थापना का कार्यक्रम चालू है।

आगरा : सर्वोदय-मण्डल, फिरोजाबाद में भू-जयन्ती मनायी गयी। ८ से १२ सितम्बर तक २२२ सर्वोदय-पात्र प्रतिष्ठित हुए।

मथुरा : सर्वोदय-आश्रम, सादाबाद में १२ घंटे अखण्ड चरखा-यज्ञ हुआ।

देवरिया : सर्वोदय स्वाध्याय-मंडल, गौरीबाजार की ओर से दिन भर १५ व्यक्तियों द्वारा सम्पत्ति दान प्राप्त किया गया, जिसमें कुल रु० ३७९-६८ न० पै० रकम प्राप्त हुई। पिछले साल के सभी सम्पत्ति-दानियों ने अपना-अपना संकल्प पूरा किया और दस व्यक्तियों ने ३१४ रुपयों की खादी खरीदी और १२० रुपये नगद प्राप्त हुए। शाम को रामायण प्रवचन भी हुआ। मंडल गत दो वर्षों से सर्वोदय-कार्य कर रहा है। ४० सर्वोदय-पात्र चल रहे हैं और १० लोक-सेवक हो गये हैं।

असरगंज, खड़गपुर, जिला मुंगेर में १० सितम्बर को आचार्य विनोबा भावे की वर्षगांठ उत्साह के साथ मनायी गयी। सार्वजनिक सभा में कई व्यक्तियों ने कविताओं और भाषणों द्वारा विनोबाजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री धीरेन्द्र भाई ने कहा कि 'विनोबाजी का जन्म युग की समस्याएँ हल करने के लिए हुआ है। सामाजिक समस्या भूमि की है, जिसका हल भूदान के रूप में प्रस्तुत किया और देश की समस्या शान्ति की रक्षा कर उसका हल शान्ति-सेना की स्थापना में सुझाया है।'

मुंगेर, मनोरंजन-कार्यक्रम आदि-कार्यक्रम 'भू-जयन्ती' की स्मृति में हुए।

कोरबा : कोरबा शान्ति-केन्द्र द्वारा श्री बनारसी भाई शान्ति-सैनिक के संयोजकत्व में भू-जयन्ती मनायी गयी। सर्वोदय-पात्र और ग्रामोद्योग संबंधी विषयों पर विभिन्न वक्ताओं के भाषण हुए। १०० सर्वोदय-पात्र स्थापना का संकल्प हुआ।

मुंगेर, जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से श्री श्यामसुन्दर प्रसाद की अध्यक्षता में भू-जयन्ती मनायी गयी। जिला कार्यकर्ताओं ने ६३०० सर्वोदय-पात्र रखवाने का संकल्प किया। लखीसराय और बेरामसराय से क्रमशः श्री निर्मलजी तथा श्री नवलभाई ने १५०० और २५०० सर्वोदय-पात्र रखवाने का संकल्प किया। जमालपुर नगर मित्र-मण्डल ने भी यह उत्सव मनाया। बरियारपुर में श्री राममूर्ति भाई का इस अवसर पर प्रवचन हुआ।

सारण : ब्रजकिशोर सर्वोदय-आश्रम की ओर से श्री विशुनप्रसादजी के सभापतित्व में सभा हुई। कार्यकर्ताओं ने संकल्प किया कि आज से गांधी जयन्ती तक २५०० सर्वोदय-पात्र प्रतिष्ठित करायेंगे। आज १०० सर्वोदय-पात्र प्रतिष्ठित हुए।

पलामू : डालटनगंज और हरिहरगंज में भी जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से सभा हुई।

धनबाद : गांधी-स्मारक निधि, बिहार-शाखा ग्राम-सेवा-केन्द्र एवं प्राथमिक सर्वोदय-मंडल, रघुनाथपुर की ओर से पहाड़ी प्रभातफेरी, सूत्रयज्ञ, गीता-प्रवचन-पाठ, सफाई कार्य हुए।

दुर्ग (मध्यप्रदेश) : दुर्ग जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से आयोजित भू जयन्ती में जिले के १७ लोकसेवकों ने भाग लिया। सेनी में श्रमदान, सूत्रयज्ञ के अतिरिक्त रामायण-कथा भी हुई। ता० १३ से १८ सितम्बर तक श्रीमती रानी सूर्यन कुंवर देवी डौंडी लोहारा द्वारा प्राप्त १००० एकड़ भूमि का वितरण-समारोह भी हुआ।

अमृतसर : गीता-आश्रम, लारेन्स रोड, अमृतसर की ओर से भू-जयन्ती मनायी गयी। जैनमुनि श्री रिषभजी ने विनोबाजी के व्यक्तित्व पर मार्मिक प्रकाश डाला। यहाँ जयन्ती में भजन, कीर्तन एवं रामायण-कथा के आयोजन विशेष उल्लेख्य हैं।

हिसार : गांधी-अध्ययन केन्द्र हिसार की ओर ९ से १२ सितम्बर तक भू-जयन्ती मनायी गयी। ९ को गवर्नमेंट गर्ल्स स्कूल में श्रीमती राज कौर द्वारा श्री गणितोनाथ के भाषण हुए। ता० १० को मॉडल टाउन में श्री प्रेमबन्धीजी की अध्यक्षता में महिला-सम्मेलन हुआ, जिसमें सत्यम भाई ने स्त्री-शक्ति के विकास पर जोर दिया। महन्त कॉलोनी में श्री बनारसीदास की अध्यक्षता में सभा हुई। ११ को मनमोहन धर्म हाई-स्कूल में बुद्धिजीवी-वर्ग की गोष्ठी में श्री सत्यम भाई ने राजनीति से लोकनीति पर आने पर आवाहन किया। कटनी रामलीला में विराट् सभा हुई। १२ को सी० ए० वी० हाई स्कूल में विद्यार्थियों के बीच सत्यम भाई ने सर्वोदय-विचार-प्रचार किया।

गांधी-अध्ययन केन्द्र, भिवानी की ओर से भी भू-जयन्ती मनायी गयी। सर्वोदय-मित्रों की गोष्ठी का आयोजन हुआ। रात्रि में श्री बनारसी गुप्त की अध्यक्षता में सभा हुई।

सिरसानगर में तहसील सर्वोदय-भूदान-मंडल की ओर से भू-जयन्ती मनायी गयी। जयन्ती-सप्ताह में ११ सम्पत्ति-दान, ३० व्यक्तिगत तथा ३ सामूहिक रूप में सर्वोदय-पात्रों की स्थापना की गयी। सप्ताह में विनोबाजी के जीवन की संक्षिप्त जीवनी भी छपवा कर बाँटी गयी। श्री परमानन्द भूदान लोकसेवक के कार्य से सभी में संतोष है। इस क्षेत्र में कांग्रेसी, पी० एस० पी० वाले और सरकारी अधिकारी सभी का सहयोग प्राप्त होता है।

कलकत्ता : स्थानीय तरुण-संघ पुस्तकालय में सर्वोदय-विचार-परिषद् के तत्त्वावधान में श्री सुधीरचन्द्र लाहा के सभापतित्व में भू-जयन्ती मनायी गयी। आज के प्रधान वक्ता कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रो० महन्तो ने विनोबाजी के व्यक्तित्व एवं युगकार्य पर विद्वत्तापूर्ण प्रकाश डाला।

●

बिहार अखंड पदयात्रा-टोली

बिहार प्रादेशिक अखंड सर्वोदय पदयात्रा-टोली द्वारा ३ अगस्त से ४ सितम्बर तक क्रमशः सर्वश्री ब्रजमोहन शर्मा, श्यामसुन्दर प्रसाद, वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी एवं मोतीलाल केजरीवाल के मार्गदर्शन में मुजफ्फरपुर जिले के ८ थानों में ३३ पड़ावों द्वारा १७३ मील की पदयात्रा हुई। पदयात्रा में १४५ ग्रामों से सम्पर्क हुआ। दो सौ रुपये की साहित्य बिक्री हुई। 'भूदान-यज्ञ' के ४७ ग्राहक बनाये गये। पंद्रह ग्रामों में एक सौ 'सर्वोदय-मित्र मंडल' बने।

मुजफ्फरपुर जिले के लालगंज और पास थाने में सर्वोदय-विचार के अनुकूल वातावरण बना है। गाँवों में निष्ठावान कार्यकर्ता हैं। ५ सितम्बर को पदयात्रा-टोली का प्रवेश चम्पारण जिले के केसरिया थाने में हुआ। ६ अक्तूबर को टोली सारण जिले में पहुँचेगी। स्मरण रहे कि यह अखंड पदयात्रा-दल स्व० जयन्ती बाबू की स्मृति में गत चौबीस महीनों से बिहार भर में सर्वोदय प्रचार कर रहा है और दूर अभी तक इसने करीब पाँच हजार मील की पदयात्रा की है। ●

अहमदाबाद शहर में सर्वोदय-सप्ताह

गुजरात सर्वोदय मंडल की ओर से अहमदाबाद शहर में ता० ११ से १८ सितम्बर के दिनों में 'सर्वोदय सप्ताह' का आयोजन किया गया है। सप्ताह का उद्घाटन गुजरात के पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता श्री जुगतराम भाई ने किया। उद्घाटन-समारोह के अध्यक्ष, श्री ढेबर भाई ने अपने भाषण में कहा कि "गांधी-विनोबा आदि महापुरुष हमारे सामने जो चीजें पेश करते हैं, उनका संबंध केवल उनके जीवन तक ही सीमित नहीं होता। ऐसा नहीं है कि वे बातें उनके जन्म के साथ आती हैं और उनके अवसान के साथ समाप्त हो जाती हैं। भूतकाल के खजाने में से अनुपम सत्य लेकर अपने जीवन द्वारा वे उन्हें हमारे सामने पेश करते हैं और भविष्य की ओर संकेत करके जिस तरह से एक माता अपने छोटे बालक को दूर से इशारा करके बुलाती है, उसी प्रकार वे हमें उस भविष्य की ओर बुलाते हैं। लेकिन हम लोग अपने-अपने कामों और व्यवहार में इतने रचे-पचे रहते हैं कि हम उस भविष्य की ओर जाने को तैयार नहीं होते। फिर भी हम ऐसे महापुरुषों की जयन्ती मनाते हैं। ऐसा करके क्या हम उनके प्रति अन्याय नहीं कर रहे हैं, यह हमें सोचना चाहिए।"

सर्वोदय-सप्ताह के कार्यक्रम के सिलसिले में रोज अलग-अलग वार्ड में शहर के कार्यकर्ता जाते हैं। सुबह प्रभातफेरी होती है। बाद में एक घंटा सफाई, दोपहर में विविध संस्थाओं से संबंध, स्कूलों आदि में व्याख्यान और रात में आठ बजे वार्ड की मीटिंग होती है। सप्ताह का उद्घाटन करते हुए श्री जुगतराम भाई ने कहा कि "स्वराज्य के बाद सुराज्य के लिए प्रजा में उत्साह और उमंग पैदा करके तथा प्रजा के नैतिक जीवन को ऊँचा उठाने का रास्ता प्रशस्त करके विनोबाजी ने देश की अनन्य सेवा की।" श्री जुगतराम भाई ने सुझाया कि आगामी अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन विनोबाजी की उपस्थिति में ही हो।

●

● पश्चिम महाराष्ट्र में अभी तक कुल ८००१ दाताओं से ४१,१६३ एकड़ भूमि प्राप्त हुई है। इसमें से २६,८९७ एकड़ जमीन बाँटने लायक है। रद्दी जमीन ५,१८५ एकड़ है तथा ४१६ एकड़ जमीन ऐसी है, जो ग्रामदान में शामिल है। इसके अतिरिक्त कुछ जमीन ऐसी है, जिस पर किसी की मालकियत ही नहीं है। कुछ जमीन दान देने के बाद वापस ले ली गयी है।

● नाग-विदर्भ चरखा-संघ की ओर से गत माह अगस्त, '५९ से मार्च, '६० तक कुल १२९७ लोगों ने १८,१७६ वर्गगज खादी बुनी।

●

[पृष्ठ २ से आगे]

उनके लालन-पालन पर ज्यादा ध्यान देंगे और इस प्रकार जीवन में सबका भी साथ बनेगी।" 'विकृत' वालों का यह प्रयोग बड़ा खतरनाक है। वे एक बड़ा खतरा खड़ा रहे हैं। उन्होंने इसके शारीरिक और नैतिक परिणामों के बारे में सोचा भी नहीं है। माता-पिता समाज को गुमनाम हैं, यह उनका परम धर्म है, इस पर बोलते हुए कहा : "सब निर्माण-कार्यों में सन्तान निर्माण से बढ़कर श्रेष्ठ निर्माण-कार्य दुनिया में नहीं है।"

अहिल्या देवी के स्मरण से बाबा गद्गद हो जाते हैं। इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाने के लिए बाबा को जो इलहाम हुआ, उसमें अहिल्याबाई का स्मरण भी कारण है। उनका जन्म-दिन हमेशा इन्दौर में धूम-धाम से मनाया जाता है। इस वर्ष यह तिथि २० अगस्त को आयी और बाबा भी इन्दौर में थे। अहिल्योत्सव की एक विराट सभा में बाबा ने कहा : "हिन्दुस्तान के इतिहास में यह बड़ा प्रयोग हुआ कि राज्य-कारोबार भी पूरा एक धर्मनिष्ठ स्त्री के हाथ में आयी। यह एक विक्रम ही कहा जायगा। तलवार चलाने वाली वीरांगनाएँ भी हुई हैं, निवृत्ति-भक्तिपरायण महिलाएँ भी हुई हैं, लेकिन जो निर्लिप्त हो, वह राज्य-कारोबार चला सके, यह खयाल तब नहीं था। यह प्रयोग मराठाओं ने किया। अहिल्याबाई ने राज्य अच्छी तरह उस वक्त चलाया, जब हिन्दुस्तान संकटकालीन परिस्थिति से गुजर रहा था—उत्तर में महादजी सिंधिया, दक्षिण में हैदर अली, पूना में माधवराव, नाना फड़नवीस का कब्जा था और अंग्रेजों का हिन्दुस्तान में प्रवेश हो चुका था। जहाँ-जहाँ हम घूमे, वहाँ-वहाँ अहिल्याबाई की कीर्ति हमने सुनी है।"

अहिल्याबाई ने जगह-जगह सड़क, मन्दिर और घाट बनाये। उनकी व्यापक दृष्टि का जिक्र करते हुए कहा : "यह जो व्यापक दृष्टि थी वह उस जमाने के लिहाज से अद्वितीय थी, उस जमाने में—जिसमें हमला करके दूसरों को अपने कब्जे में करने का काम चलता था। यह हमलावर जीत क्षणिक ही रहती है, किन्तु प्रेम से जीतने का असर कायम रहता है। अहिल्याबाई ने अपनी धर्म-बुद्धि से सारे भारत को जीत लिया।"

इस अवसर पर बाबा ने महिलाओं को आवाहन करते हुए कहा : "आजकल हिन्दुस्तान में चरित्र-भ्रंश का आयोजन हो रहा है, उसमें अगर बहनें रक्षा नहीं करेंगी, तो भगवान ही करेगा। इसलिए बहनों की मुख्य जिम्मेदारी है कि वे शील-रक्षा और शान्ति-स्थापना का दोहरा काम उठायें। यह काम बहनें बहुत अच्छी तरह कर सकती हैं।"

●

हमारा नया प्रकाशन

चम्बल के बीहड़ों में : बागियों का आत्मसमर्पण

ले० श्रीकृष्णदत्त भट्ट

[अहिंसा के चरणों में २० सशस्त्र बागियों के आत्म-समर्पण को चित्र को प्रस्तुत करने वाली आँखों देखी हृदयस्पर्शी कहानी।]

(१) इतिहास का नया मोड़
१. ये चम्बल के बीहड़
२. "बागी है भयो!"
३. मुगलों के राज में
४. अंग्रेजी अमलदारी में
५. स्वराज्य के बाद
६. अहिंसा की दिशा में

(२) डायरी के पन्नों से
१ वह बेचारा लुलुवा!
२ राम जाने डाकू कौन है?
३ भगवान तो हम नहीं, सब देखते हैं!
४ बाबा माने बाप की इज्जत
५. पकड़ न कर कोई मत कोई
६ वीर वह जो न डरे, न डराये
७ डर छोड़ो, डाकू को प्यार करो
८ डाकू तुम्हारा छोटा भाई
९ डाकुओं की पटरी बदल दो, बस!
१० रक्षक से रक्षा कौन करेगा?
११ पुलिस का काम योग जैसा कठिन
१२. मुझे तो डाकू भी प्यारे हैं, पुलिसवाले भी!
१३ तीन बागी बाबा के चरणों में
१४ बलगीरी काहे को की?
१५ आज तैं हमाई नयी जिंदगी है रही है!
१६ कसूर बहुत का, सजा आदमी को
१७ 'बाबा कछु कहे जाव!'
१८ चौसर्दा देवा लो भइया!
१९. सरकारी अधिकारी बाबा की जमात के
२० 'कबई नाय, पीछे आय'
२१ तब करो—'युद्ध पर्व समाप्तम्'
२२ सच्ची बहादुरी सीखो
२३ दोस्तों के पास बाबा का सन्देश पहुँचाओ
२४ बच्चों के झगड़े से महाभारत!
२५. समर्पण में अटका डालना गलत
२६ 'बनिया तो बना हो है चूमने लिए!'
२७ बुरे कामों का साफ इकरार करो
२८ सारी बन्दूकें लाकर रख दो मेरे पास
२९ भय मिटेगा—पाप को पुण्य बनाने से
३० चोर को जेल, तो संग्रही को भी जेल
३१ सरकार पहले, भगवान बाद में
३२ पुलिस को सोलह आने श्रेय, बशर्ते कि
३३ प्रेम के रास्ते से ज्ञान
३४ शान्तिवादी भी नाराज, क्रान्तिवादी भी
३५ बाबा बुरुण सौं अति नेह!

(३) आइये, कुछ सोचें
१. चम्बल-घाटी में आतंक का राज
२. लोग 'बागी' बनते क्यों हैं?
३ डंडा, जेल और फाँसी का रास्ता
४ प्रेम, दया और क्षमा का रास्ता
५ विनोबा का प्रेम-अभियान
६ अब हम करें क्या?

कोई चार सौ पृष्ठ की यह पुस्तक 'गांधी-जयन्ती' पर प्रकाशित हो रही है। मूल्य ढाई रुपया। —अ० भा० सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी

● ● ●

इस अंक में

आसाम की सहायता करें

अखिल भारत सर्व सेवा संघ की प्रबंध-समिति ने, जिसकी बैठक श्री विनोबाजी के पड़ाव पर ता १८-१९ अगस्त को इन्दौर में हुई थी, आसाम की हाल की दुर्घटनाओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया। आसाम सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में शान्ति-सैनिकों द्वारा वहाँ पर शान्ति-स्थापना का और लोगों को राहत पहुँचाने का जो काम चल रहा है, उसकी भी प्रबंध-समिति ने नोंध ली। प्रबंध समिति ने यह महसूस किया कि जो परिस्थिति आसाम में बनी है, उसमें काफी लम्बे समय तक ऐसा काम करने की आवश्यकता है, जिससे विस्थापित लोगों का भौतिक और मानसिक, दोनों रूप से पुनर्वास किया जा सके और शान्ति की बुनियाद फिर से डाली जा सके। आसाम में रहने वाले विभिन्न लोगों के बीच परस्पर विश्वास और मित्रता के सम्बन्ध कायम करना भी आवश्यक है। प्रबंध समिति ने यह महसूस किया कि यह काम केवल स्थानीय जिम्मेदारी का न मानना चाहिए, बल्कि यह एक अखिल भारतीय महत्त्व का प्रश्न है। अतः प्रबंध समिति ने यह निश्चय किया कि इस काम में सहयोग देने के लिए देश के विभिन्न राज्यों से शान्ति-सैनिक आसाम भेजे जायँ। अखिल भारतीय शान्ति-सेना मंडल ने एक दफ्तर आसाम में शुरू किया है। इसका मुख्य केन्द्र सरनिया आश्रम, गुवाहाटी में है।

सर्व सेवा संघ भारत के तमाम लोगों से अपील करता है कि वे शान्ति-स्थापना और पुनर्वास के काम में तन-मन से सहायता पहुँचायें। सहायता की रकम सर्व सेवा संघ, राजघाट, काशी के पते पर भेजने का अनुरोध है। —वल्लभस्वामी, अध्यक्ष, अ० भा० सर्व सेवा संघ, काशी

■

जयपुर में सर्वोदय-पात्र

इस वर्ष के प्रारम्भ में जयपुर में खादी-कमीशन के विभागीय कार्यालय के आस-पास रहने वाले अमीर, गरीब सभी तरह के लोगों से सम्पर्क करके आठ माह के अंदर में १४५ पात्र स्थापित हो चुके हैं। इनमें कुछ पहले के भी हैं, जो चालू हालत में हैं। इसके शहर के आस-पास का ग्रामीण बस्तियों में भी सर्वोदय पात्र की चर्चा प्रारम्भ हुई है और ५ सर्वोदय मित्र भी बने हैं, जो पात्र की व्यवस्था का संग्रह करने में सहायक साबित हो रहे हैं। जुलाई के आखिर तक ९० सर्वोदय पात्रों के अनाज से कुल १२५ रुपये, २५ नये पैसे की आय हुई है। ता २४ अगस्त को इसकी वर्षगाँठ सर्वोदय-पात्र परिवारों की एक गुप्त सभा उत्साहपूर्ण वातावरण में हुई।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१
पिछले अंक की छपी प्रतियाँ १२,९०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ १२,७२९
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति : १३ नये पैसे

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश वाहक

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार ३० सितम्बर '६० वर्ष ६ : अंक ५२

चरखा-जयन्ती

गांधीजी के समय से ही उनका जन्म दिन चरखा-जयन्ती के रूप में मनाया जाता रहा। सन् १९४६ की जयंती के अवसर पर बापू ने स्वयं 'हरिजन बन्धु' साप्ताहिक में अपने विचार लिखे थे कि उस दिन को मनाने के पीछे हमारी दृष्टि क्या होनी चाहिए। बापू का लेख हम ज्यों का त्यों नीचे उद्धृत कर रहे हैं। आगामी २ अक्तूबर को जब हम बापू का जन्मदिवस मनायें, तो स्वयं बापू की क्या अपेक्षा थी, यह इस पर से हम ध्यान करेंगे। –सं०

चरखा-जयन्ती का मतलब गांधी-जयन्ती है ही नहीं। यह सच है कि चरखा-जयन्ती को मेरी सालगिरह के साथ जोड दिया गया है। इसका सबब दीये की तरह साफ है। पिछले जमाने में आजादी के साथ चरखे का कोई ताल्लुक न था। जो ताल्लुक था, वह उसके साथ लगी हुई गुलामी का था। रोटी के सूखे टुकड़ों के लिये औरतों को कातने की मेहनत उठानी पड़ती थी। अगर तुम कातो, तो हुकूमत अपनी मर्जी के मुताबिक कौड़ी या पाई तुम्हारे सामने फेंक देती थी। बचपन में सौराष्ट्र-राज्य के दिन मैंने राजकोट के ठाकुर साहब को [illegible] के सामने पैसे फेंकते देखा था। बचपन की इस बात को मैं खेल समझता था, और उसमें मुझे मजा आता था। मेरा ख्याल है कि पहले इसी तरह कत्तिनों के सामने सूत के बदले में पैसे फेंके जाते होंगे और वे खुशी से उन्हें उठा लेती होंगी।

सन् १९०८ में जब मैं दक्षिण अफ्रीका में था, मुझे ख्याल आया कि अगर हिन्दुस्तान की कंगाल रिआया को आजाद होना है तो चरखे को कत्तिनों की गुलामी की निशानी समझने के बजाय उसे आजादी और अन्नपूर्णा की निशानी की शक्ल में देखना सीखना पड़ेगा। इस बात को पूरी तरह और इशारे में समझने वाले एक नारणदास गांधी मुझे मिले। इसीलिए वे चरखा-जयन्ती का रहस्य समझ गये। चरखे को भादों बदी १२ (गुजरात में भादों बदी बारस) के साथ जोड़ने से पहिले मेरी जान में उन्होंने या दूसरे किसीने मेरी बरस-गांठ मनायी नहीं थी। मैं दक्षिण अफ्रीका के लोगों में काफी मशहूर हो चुका था, तो मुझे याद नहीं कि वहाँ मेरी बरसगाँठ किसी ने मनायी हो। हिन्दुस्तान में ही इस दिन के साथ चरखा जोड़ा गया, और तब से चरखा जयन्ती मनाने का रिवाज चल पड़ा। अंग्रेजी तारीख भी उसी के साथ होनी चाहिये, इसलिये भादों बदी १२ और २ अक्तूबर, ये दो दिन चरखा-जयन्ती के दिन माने गये। इसमें नारणदास गांधी का खास हाथ रहा है। आज यह लिखते समय मुझे राजकोट में मनाये जाने वाले भादों बदी बारस से दो अक्तूबर तक के दिन याद आते हैं। सच्चा उत्सव तो तभी मनाया जायगा, जब अहिंसा और आजादी के प्रतीक के रूप में यह चरखा घर-घर गूँजेगा। अगर कुछ गरीब बहनें चाहे वे एक करोड़ ही क्यों न हों दो पैसे कमाने के लिये कातती हैं, तो उसका उत्सव क्या मनाया जाय? उसमें ऐसा बड़ा भारी भगीरथ काम भी क्या हुआ? ऐसा तो जालिम हुकूमत में भी हो सकता है। पूँजीवाद में तो ऐसा दिखावा नजर आता ही है। करोड़पति को अपना बड़प्पन बनाये रखने के लिये गरीबों को थोड़ा दान देना ही पड़ता है, फिर वह दान किसी मजदूरी के रूप में ही क्यों न हो? उत्सव तभी शोभा देगा, जब गरीब और अमीर, सब समझेंगे कि ईश्वर ने सबको बराबरी का समझा जाने के लिये पैदा किया है। ऊँची जगह पाने के लिये सबको मजदूरी करनी है। और, सबकी आजादी की हिफाजत बारूद-गोला नहीं, बल्कि सूत का गोला करेगा। हिंसा नहीं, अहिंसा करेगी। अपने आसपास की मौजूदा हवा को देखें, तो यह बात हँसी लाने वाली मालूम होगी। लेकिन गहराई से सोचने पर जान पड़ेगा कि यही बात सही है, यही बात अमर है। आज तो इसे साबित करने वाले श्रद्धा नारणदास-जैसे चरखा-भक्त दिखा रहे हैं। हम सब भी चरखा-द्वादशी और २ अक्तूबर को इसी रूप में मनायें!

('हरिजन बन्धु' से) —मो० क० गांधी

नई दिल्ली, १४-९-'४६

गांधी

'गांधीज्म' एक 'इज्म' है ऐसा जिन किसीने माना, वह समझा नहीं है। वे तो ऐसे पुरुष हो गये, जो बहुत व्यापक विचार करने वाले थे और व्यापक स्मृतिकारों की कोटि में आते हैं। किसीने उनकी तुलना ईसा के साथ की है, किसीने तिलक के साथ की है। मेरी राय में उनकी तुलना स्मृतिकारों के साथ हो सकती है। मनु और याज्ञवल्क्य के साथ हो सकती है, जिनका व्यापक विचार जीवन के सब पहलुओं को स्पर्श करता है। आध्यात्मिक प्रतिभा अन्दर में ही मिलती है। इसलिए उनकी तुलना किसीके साथ नहीं हो सकती। गांधीजी बहुत व्यापक स्मृतिकार थे। फिर भी मनु में और उनमें एक फर्क था। मनु चिन्तन-प्रधान थे और गांधीजी सेवा-प्रधान थे। जहाँ तक जीवन का सवाल आता है, वहाँ वे व्यापकता के साथ विचार करते हैं। उस हालत में संस्कृति का सवाल आता है। इस बारे में अगर सोचना है, तो टाल्स्टाय और रवीन्द्रनाथ ठाकुर काफी व्यापक विचारक थे, लेकिन गांधीजी 'एक्टिविस्ट' (कर्म-प्रधान) थे। विवेकानन्द 'मिस्टिक' (रहस्यवादी) थे। गांधीजी का वर्णन करता हूँ तो वे 'एक्टिविस्ट' प्रधान थे और 'मिस्टिक' गौण थे। विवेकानन्द 'मिस्टिक' प्रधान थे, 'एक्टिविस्ट' गौण थे। गांधीजी ने जो समाज ज्ञान, वह प्रचण्ड और अगाध भी है। उनके 'इन्स्पीरेशन' में संस्कृति का काफी स्थान है। मेरा मानना है कि अगर 'कल्चरल एप्रोच' (सांस्कृतिक दृष्टिकोण से) देखना है, तो किसके जीवन का उनके जीवन पर प्रभाव रहा, यह देखना होगा। इसलिए मैंने कहा था कि गांधीजी की खूबी यह थी कि वे अपने ग्रन्थों से ज्यादा बड़े थे और कवि शेक्सपीयर तथा मिल्टन अपने ग्रन्थों से छोटे थे—जीवन के सवाल में। उन्होंने बहुत प्रतिभावान ग्रन्थ लिखे, लेकिन गांधीजी का जीवन बहुत ऊँचा, अच्छा और उन्नत था, 'एक्स्प्रेशन'—विचार प्रकट करने में वे कमजोर थे। इसलिए विचार से भी उनके जीवन में अधिक प्रतिभा थी।

(मालवा, ३०-८-'६०)

विनोबा

इन्दौर में विनोबा : ५

मणीन्द्र कुमार

गुजरात के कार्यकर्ताओं के शिविर में बोलते हुए विनोबाजी ने कहा कि कुछ लोगों को लगता है कि हमारा आन्दोलन शिथिल पड़ रहा है और कार्यकर्ता मायूस होते जा रहे हैं। यह हमारे काम का सही मूल्यांकन नहीं है। उनके शब्दों में : "भूदान के लिए आपने काम किया है। लक्ष्यों से हमको १० प्रतिशत नंबर मिले। इसलिए इस परीक्षा में हम पास नहीं हुए हैं। जमीन भी हम नौ लाख एकड़ ही बाँट सके हैं। किन्तु जब पंजाब में मैं घूम रहा था, तब योजना कमीशन वाले मिले। उनका मत था कि पूरे भारत में 'सीलिंग' से नौ-दस लाख एकड़ जमीन मिलेगी। हमने कहा, इतनी तो हम बाँट चुके हैं। बिहार सरकार को अंदाजा है कि 'सीलिंग' से एक लाख एकड़ जमीन मिलेगी, वहाँ हम ढाई लाख एकड़ बाँट चुके हैं। एक तरफ इतनी पराक्रमशाली सरकार है, उसका काम नौ लाख एकड़ में ही समाप्त हो जाता है। उसमें भी मुकदमेबाजी होगी, रद्दी से रद्दी जमीन मिलेगी, मुआवजा देना होगा, उसमें भी कई अपवाद हैं, बड़े-बड़े फार्म, अच्छी व्यवस्था और सहकारी खेती। सहकारी खेती के बहाने लोगों ने अपने परिवार के सदस्यों की सहकारी समिति बना ली और ऊपर से एक-दो मित्रों के नाम दे दिये। जमीन की जमीन बचा लेते हैं और ऊपर से सहकारिता के नाम से सरकारी मदद भी प्राप्त कर लेते हैं। यह सरकार की हालत! कभी-कभी मैं कहता हूँ, तो हमारे वाक्यों से दुखी होकर मंत्री महोदय कह उठते हैं कि भूदान से कुछ नहीं होने वाला है। मैं पूछता हूँ, कौनसा रास्ता है? तो उनके पास जवाब नहीं है। इसलिए मैं कहता हूँ, अपनी आत्मा का हनन मत करो, भूदान के काम से आपकी इज्जत ही बढ़ी है।"

कार्यकर्तागण मायूस और निराश क्यों होते हैं, इसलिए न कि हमारे कार्यों का विस्तार नहीं होता है। बाबा ने इस पर मार्गदर्शन देते हुए कहा कि "आप दुनिया को विचार से ही जीत सकते हैं। अगर आप काम के 'वाल्यूम'-परिमाण-में जीतने की कोशिश करेंगे, तो मूर्ख बनेंगे कि सरकार को हाथ में न लिया। अगर कर्म परिमाण से ही दुनिया पर असर डालना है, तो सरकार जैसे यंत्र को हाथ में क्यों नहीं उठाते हैं? कोरापुट में सरकार की खिलाफत से काम सधा नहीं। अगर आप सरकार के सहयोग में दारोमदार रखते, तो क्यों नवबाबू को मुख्य मंत्री पद से इस्तीफा देने देते हैं? वे होते तो काम वहाँ अच्छा होता, किन्तु फिर भी नवबाबू वहाँ से हटे, तो आपने उनका गौरव किया! वस्तुतः काम का परिमाण हमारा आधार नहीं है।"

सर्वोदय-विचार को अद्यतन बनाने के लिए शोध-कार्य आवश्यक है। बिना शोध-कार्य के हम पिछड़ जायेंगे। कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए बाबा ने कहा "अभी इन्दौर में नगर के बारे में जो कुछ भी सोचा जा रहा है, उसे सर्वोदय के क्षेत्र में 'रिसर्च' (शोध) का काम मानना चाहिए।

इसमें मदद देने के लिए एकाध भाई हर प्रान्त से आये, तो यहाँ के काम में मदद मिलेगी और यहाँ के अनुभवों का लाभ हर प्रान्त को मिलेगा। 'रिसर्च' के बिना कोई काम आगे नहीं बढ़ता है। गुण भी एक शक्ति है, जिससे मनुष्य काम कर सकता है, किन्तु जब तक पाँच-पचास लोग इकट्ठे होकर काम नहीं करते, तब तक दिमाग तेज नहीं होता, विचार कुंठित हो जाता है। जब लोग ऊधम मचाते हैं और हम मसले हल नहीं कर सकते, तो हमको चैन नहीं पड़ता है। अतः प्रयोग और 'रिसर्च के अभाव में' हम अद्यतन नहीं बनेंगे और देखते-देखते पिछड़ जायेंगे।"

हमारे कार्य की दिशा क्या होनी चाहिए, इस संबंध में बाबा ने कहा : "छोटा-सा क्षेत्र लेकर कुल जीवन के हर पहलू को स्पर्श करें और उसके लिये अनेकों का सहयोग हासिल करें। क्षेत्र छोटा हो तो कार्य सर्वांगीण होना चाहिए और क्षेत्र बड़ा हो तो एक कार्य हाथ में लेना चाहिये, यह काम करने की प्रक्रिया है। यह एक 'एटीट्युड' (दृष्टिकोण) आपके सामने रख रहा हूँ।"

'अशोभनीय पोस्टर्स और विज्ञापन नगर की दीवारों से हटें और उनके बजाय सुन्दर हितकारी संत-वाक्य लिखे जायें' — विनोबा की इस सूचना को सर्वोदय वानप्रस्थ मंडल और नगर के अन्य कार्यकर्ताओं ने मुहिम के तौर पर उठा लिया। सारा काम ठीक ढंग से हुआ, किन्तु एक सिनेमा का पोस्टर बिना मालिक की आज्ञा से किसी व्यक्ति ने आवेश और जोश में फाड़ दिया। इस बात का जिक्र करते हुए २२ अगस्त के सायंकालीन प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा

"अहिंसा के सामूहिक आयोजन में बाहर से अनुशासन और अंकुश नहीं रहेगा। उसकी जगह अपने पर अंकुश रखने का एक सहज स्वाभाविक अनुशासन, व्यवस्था का पालन करना पड़ेगा। यह अनुशासन हिंसा से कम कड़ा नहीं होगा; बल्कि हिंसा में हीलो-हवाली की गुंजाइश हो सकती है, किन्तु अहिंसा में तो नहीं हो सकती।... अगर हम यह नहीं करेंगे, तो हम महान पुरुषार्थहीन साबित होंगे।... सब मिल कर मर्यादाओं में काम करेंगे तो शक्ति का प्रदर्शन होगा, अन्यथा शक्ति जाया जायेगी।"

आगे बाबा ने और स्पष्ट करते हुए कहा : "अगर कोई अनुशासन भंग कर रहा है, उसके लिए हमारी जिम्मेदारी नहीं है, ऐसा कहेंगे, तो हम सामूहिक उत्थान के कार्यक्रम के लिए नालायक साबित होंगे। आन्दोलन में अगर किसी भी एक व्यक्ति ने गलती की, तो उसकी जिम्मेदारी आन्दोलन करने वाले पर आती है।"

साहित्य बड़ी शक्ति है, किन्तु इन दिनों अच्छे साहित्य का सृजन नहीं हो रहा है। विनोबाजी ने गुजरात के कार्यकर्ताओं के शिविर में यह बात कह कर सबको आश्चर्य में डाल दिया कि सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को साहित्यिक बनना चाहिए। कार्यकर्ता क्यों अच्छे साहित्यिक बन सकते हैं, इसका जिक्र करते हुए बाबा ने कहा "आपका प्रकृति से प्रत्यक्ष संबंध है। विचारों में गुणग्राह है तथा तटस्थ होने से विश्वदर्शन होता है, इसलिए आपमें से उत्तम साहित्यकार निकल सकते हैं। इसलिए मैं अपेक्षा करता हूँ कि आप इस दिशा में साधना करें, अगर ऐसा नहीं हुआ तो हमारा कार्य लँगड़ा हो जायगा।" साथ ही बाबा ने इसके लिए नुस्खा भी बता दिया कि दिन भर में कोई समय ऐसा निकालो, शांत, निर्जन स्थान पर, नदी के किनारे पर जाओ, कुछ देर बैठो, चिंतन-मनन करो, गाओ खेलो-कूदो तथा साथ ही निद्रा में कंजूसी मत करो, गाढ़ निद्रा की फिक्र रखो। इससे जागृति होगी और दिमाग में स्फूर्ति आयेगी।"

२४ अगस्त को प्रातः सवा चार बजे कार्यकर्ताओं के वर्ग में बाबा ने कार्यकर्ताओं को विशेष सीख देते हुए कहा "कार्यकर्ताओं को सुझाना है कि निंदा किसीकी मत करो। अहिंसा आदि व्रतों के साथ अनिंदा व्रत भी अपनाओ। किसी भी मनुष्य की चर्चा, उसके दोषों की चर्चा, उसके पीठ पीछे नहीं करनी चाहिए। अगर कार्य की दृष्टि से किसी की दोष चर्चा मुख्य पुरुष के पास करना जरूरी हो तो, उसको भी लिखकर सूचित कर देना चाहिए। किसीके दोषों की चर्चा उसकी अनुपस्थिति में करना मैं जहर समझता हूँ। ईसा मसीह ने तो यहाँ तक लिखा है कि जो गन्दी चीज अन्दर जाती है उतनी बुरी नहीं जितनी कि गंदी चीज बाहर आती है, याने अपवित्र वस्तु खाना उतना बुरा नहीं है, जितना कि गन्दी वाणी बाहर निकालना।" इतना ही नहीं, बाबा ने आगे कहा : "अपनी बुराई भी किस किसीके सामने मत रखो। यह क्या प्रसाद है? बाँटने की चीज है? अगर रोग होता है तो डाक्टर के पास जाते हैं, उसी प्रकार खास विशेष पुरुष पर श्रद्धा रख कर अपने दोष खोल सकते हैं, तो खोल दें।"

२४ अगस्त का दिन बाबा का इन्दौर के लिए अन्तिम दिन और बड़ा व्यस्त दिन रहा। बाबा से विशेष मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए बहनें बड़े सबेरे भारी तादाद में विनोबा निवास पर पहुँच गयी। ५ बजे बहनों को संबोधित करते हुए बाबा ने बहनों से यह माँग दुहरायी कि शान्ति-स्थापना और शील-रक्षा की जिम्मेदारी आपकी है। जब बाबा सफेद कोठी को छोड़ कर विसर्जन आश्रम के लिए निकले तो बाबा के पीछे नगर की बहनें पदयात्रा में चल रही थीं।

बाबा ने इन्दौर जिले के पंचसम्मेलन में उस दिन कहा : 'ग्राम-स्वराज्य के संकल्प के बिना पंचायतों के कोई मायने नहीं है। बिना ग्राम स्वराज्य के आधार पर पंचायतें झगड़े बढ़ाने का ही काम करेंगी। एक प्रकार डिसेन्ट्रलाइज्ड शोषण योजना बनेगी। इसमें गाँव वालों का सम्यक्-व्यवस्थित शोषण होगा। इसलिए ग्राम-स्वराज्य का संकल्प जरूरी है, मात्र गाँवों का विकास करना है।"

२४ अगस्त की शाम को इन्दौर में अन्तिम-प्रार्थना प्रवचन में बाबा ने कहा, "इन्दौर छोड़कर चला जाऊँगा, किन्तु इन्दौर हृदय में अंकित रहेगा। आपका अखबार 'भूमि-क्रांति' मैं बारीकी से देखता रहूँगा। मैं यह पसन्द नहीं करूँगा कि कल मैं यहाँ से गया और काम ढीला पड़ा। आप लोग महीने भर हमारी और हमारे कारण बाहर से आये अतिथियों की सेवा में लगे रहे, इसलिए आपको समय कम मिला, किन्तु अब आपका काम तेजी से बढ़ना चाहिए।" "सबकी सहानुभूति और सबका सहयोग हासिल करना यह सर्वोदय का काम है।

दुनिया की सब समस्याएँ स्नेह और प्रेम से ही हल हो सकती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में तो स्नेह की सबसे अधिक आवश्यकता है। दूसरी ओर संकेत करते हुए बाबा ने कहा : "स्नेह को बड़ी शक्ति है, इससे दुनिया का काम होने वाला है। प्रेम से जमाने को जीतना चाहिए। यह चीन और कश्मीर का मामला है। इसके बारे में दावा पेश किया जाता है, किन्तु दावा दायर कर भी मसला हल नहीं होता वह तो स्नेह से ही हो सकता है। जिनका दिमाग पुराने जमाने में है वे कहते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में स्नेह क्या करेगा? उनका यह सोचना गलत है। अन्तर्राष्ट्रीय कामों में ज्यादा-से-ज्यादा स्नेह संबंध काम आने वाला है। अहिंसक तौर से परिवार में समझाया भी मार सकते हैं। उसका उतना भयंकर परिणाम नहीं होता। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इस तरह की मामूली बात भी सहन नहीं की जायेगी। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में स्नेह-विरोधी काम नहीं ही होना चाहिए अन्यथा उसका परिणाम कुल दुनिया को भुगतना पड़ेगा।

प्रेम को प्रकट करने के लिए विश्वास की जरूरत है। दुनिया में मानव प्रेम कम नहीं है। उसको प्रकट करने के लिए विश्वास की कमी है, इसलिए प्रेम की शक्ति का ठीक उपयोग नहीं होता है। इसको समझाते हुए किसी शायर ने कहा, 'प्रेम और स्नेह बिजली है, विश्वास बटन है। अगर बटन दबाने की कला मालूम नहीं हो तो बावजूद बिजली के अन्धकार में रहना।

आश्रमों में हमारी साधना दृढ़तर क्यों नहीं होती ?

विनोबा

माचला (कस्तूरबाग्राम) का यह स्थान पांच-सात साल से बना है, तो वैसे नया है। ऐसे ही हमारे कुछ पुराने स्थान हैं। उनमें एक साबरमती है, जहां गुजरान की थाना में एक दिन हमने बिताया। चालीस साल हम वहां रहे। १९१८ में जो स्थान , वह अब बदला है। उसका स्वरूप भी आज बदला है। एक कॉलोनी-सी बन गयी। इतने साल की वह संस्था हम देखते हैं और ऐसी ही दूसरी पुरानी संस्थाएं भी देखते हैं।

१९२१ में आश्रम की स्थापना हुई थी। इन चालीस सालों में मेरे पास कुछ साथी बचपन से आज तक रहे हैं। विद्यार्थी भी बहुत पुराने काल से रहे हैं। कुछ तो तीस-चालीस साल के साथी हैं। बचपन से लेकर आज तक हमारे साथ काम कर रहे हैं। ऐसी संस्था भी मैंने देखी। जब बड़ौदा में था, तब हम लोगों ने एक मित्र-मंडल बनाया था। लोग कहते हैं कि मेरे स्वभाव में समाज-संपर्क की पहले रुचि नहीं थी और आज है। मैं ऐसा नहीं मानता हूँ। मैं ऐसा मानता हूँ कि दोनों आभास ही हैं। रघुनाथ धोत्रे, जो गांधी निधि में काम करते थे, वे ४८ साल के मेरे साथी हैं। एक नाम मैंने सहज ले लिया, और भी कई नाम हैं। एक विद्यार्थी दस साल की उम्र में मेरे पास आया। उस समय मेरी चौबीस साल की उम्र थी, याने मैं एक जवान लड़का था, लेकिन बिलकुल अन्योन्य संबंध हमारा रहा है। ४१ साल से मेरे साथ ही वह रहा है। कुटुम्ब वगैरह सब छोड़ दिया है। यह सारा नहीं हो सकता है उस मनुष्य के जीवन में जिसमें समाज से अरुचि हो। समाज के साथ इस तरह घनिष्ठ संबंध ३०-४० साल के बने रहे, यह नामुमकिन है। आज भी यह माना जाय कि समाज-संपर्क की मुझे रुचि नहीं है, क्योंकि मैं अपने नियमों पर चलता हूँ, अगर कोई रात में मिलने के लिए आये, तो मैं ना कहता हूँ। मेरी नींद, मेरा खाना-पीना सब नियमित तौर पर चलता है। किसी को मेरी अपनी यह व्यवस्था मैं बिगाड़ने नहीं देता हूँ। लोगों के आग्रह के वश नहीं होता। बहुत नेता ऐसे हैं, जो लोगों के आग्रह के वश होते हैं, रात में जागते हैं, व्याख्यान देते हैं। लेकिन हमने तय किया है कि हम रात में नहीं बोलेंगे। इस साल तो हमने जाहिर कर दिया था कि सर्वोदय-सम्मेलन में हम नहीं जायेंगे।

यह नहीं होता, अगर समाज के लिए मेरे मन में आसक्ति होती, लेकिन हमारे चित्त में पहले से आज तक यह भावना विकसित होती आयी है। उसे हमने सामूहिक साधना का स्वरूप दिया है। अन्तःस्वरूप हमारा एक ही है। हम यह जानते हैं कि अगर अहंकार को हम मिटा देते हैं, तो सामूहिक साधना में तन्मय हो सकते हैं। नहीं तो अहंकार को लेकर सामूहिक साधना में हम दाखिल नहीं हो सकते हैं। मनुष्य की साधना का एक रूप होता है। उसके अनुरूप अपने को बनाना, ऐसा बचपन से हमने माना है और इन दिनों वह वस्तु बहुत साफ हुई है। हमें अनुभव यही आता है। हमारे मन में पेड़ से मत्सर कभी पैदा नहीं होता। हम एकान्त में रहें और अगर देखें कि वटवृक्ष बहुत ऊंचा चढ़ गया, मुझसे भी ऊंचा हो गया और मैं नाटा रह गया, तो भी उस पेड़ का मत्सर नहीं होता है। लेकिन एक योगी के मन में दूसरे योगी की कीर्ति बढ़ती है, तो मत्सर पैदा होता है। हम जानवरों का, पेड़ों का, सृष्टि का, गंगा नदी का, पहाड़ों का मत्सर नहीं करते हैं। काम-क्रोधादि विकार भी मनुष्य के लिए ही मनुष्य के मन में पैदा होते हैं। यह सारा समाज के अन्तर्गत है। इसलिए हमारी साधना का क्षेत्र समाज ही हो सकता है। अगर हम काम-क्रोध से मुक्त होना चाहते हैं, तो समाज में रह कर हमारी परीक्षा होगी। अगर हम समाज से अलग रहेंगे, तो हमारी परीक्षा उतनी नहीं होगी। अगर हम एकान्त में रहेंगे और साधना करेंगे तो काम-क्रोधादि विकारों से हम मुक्त हुए हैं, ऐसा हमें भास होगा, लेकिन हम जब समाज में रहेंगे, तब पता चलेगा और तब हमारी सही परीक्षा होगी। इसलिए साधना का क्षेत्र सामूहिक है और अन्तर की साधना करते हुए उस समूह की साधना में अपना समर्पण कर दें, उतनी हमारी व्यक्तिगत साधना होगी।

यह सारा मैं इसलिए कह रहा हूँ कि तीस-चालीस साल में जो संस्थाएं हमारे जीते-जी बनीं और यह नई संस्था बन रही है—इन संस्थाओं में कुछ कमी रह गयी है, जिसके कारण इनका जीवन भंगुर होता है। ऐसे मानव-जीवन ही क्षण-भंगुर है, कहीं-न-कहीं उसे मिटना ही है, फिर भी किसीको योग सधेगा तो लंबा चल सकता है। परन्तु हम कोई संस्था ऐसी नहीं देखते हैं, जो पांच सौ साल की पुरानी है। मंदिर-मसजिद छोड़ कर ऐसी संस्था हम नहीं दिखा सकते हैं सिवाय शंकर, रामानुज के मठ, कुछ मंदिर और मसजिद। आध्यात्मिक क्षेत्र में हम कुछ संस्थाएं ऐसी देखते हैं—मठ, मंदिर, मसजिद, भली-बुरी जैसी भी चल रही है। लेकिन हम यह नहीं बता सकते हैं कि समाज-सेवा की ये संस्थाएं चार सौ साल की पुरानी हैं, बल्कि हमारी संस्थाएं क्षीण होती हैं और थोड़े ही दिनों में स्फूर्ति कम हो जाती है। चालीस साल पहले जो स्फूर्ति साबरमती में थी, वह आज वहां नहीं है। ठीक है, एक बहुत बड़ा व्यक्तित्व वहां था, वह नहीं रहा। इसलिए शून्यत्व आया है। फिर भी एक विचार तो अपने पास है, जिससे हमें सतत स्फूर्ति मिलनी चाहिए। लेकिन ऐसा देखा गया है कि वह स्फूर्ति क्षय होती है। उसका कारण मुझे यह दीखता है कि साधना का बाह्य आकार सामूहिक होता है, इसका भान हमें नहीं होता। इसलिए थोड़ा-सा मतभेद हुआ, तो हम अलग-अलग हो जाते हैं और अपना नया स्थान शुरू कर देते हैं। एक स्थान में रहने वाले अलग अलग स्थानों में बँट जाते हैं—अगर इस कारण से वे बँटे हों कि यहां एक परिपूर्ण काम किया, उसे व्यापक करना है, इस खयाल से अगर हम अलग अलग चले जायं तो ठीक है, लेकिन ऐसा नहीं होता है। इसलिए एक में से दो और चार स्थान बनते हैं। अगर सहज ही विकास होते-होते समाज बढ़ सकता हो तो ठीक ही है। वैसे एक संस्था के इर्दगिर्द भी समाज बढ़ सकता है। बोधगया में एक वृक्ष था। उसकी टहनी लेकर लंका में लगायी गयी। यह हम समझ सकते हैं। लंका में बौद्ध विचार फैला, यह अच्छी बात है। लेकिन वह विचार गया के इर्द-गिर्द में न फैले और लंका में पहुँचे, तो समझना चाहिए कि कुछ मनमुटाव के कारण यह हुआ है। सहज विकास में स्थानान्तर और विस्तार हो, तो अलग बात है। सहज विकास के प्रवाह में यह हो सकता है। लेकिन दीखता यह है कि यहां पूर्ण विकास नहीं हुआ, इस क्षेत्र में समाधान नहीं हुआ, इसलिए खंडित समाज बना। इसका कारण यह है कि हमारी संस्थाओं में शक्ति-संचय के बदले, शक्ति कुंठित होती है। यह बात गलत है कि महात्मा गांधी के रहते जो काम और संस्था चली, वह संस्था और वह काम उनके जाने के बाद बंद पड़े या उनमें स्फूर्ति न रहे। यह गलत बात है। महापुरुष के अस्तित्व में जितना उपयोग उनका होना चाहिए, उससे ज्यादा उनकी अनुपस्थिति में काम बढ़ना चाहिए। मेरा अपना यह अनुभव है कि महात्मा गांधी का प्रभाव मुझ पर ज्यादा है। वे जब जीवित थे, तब तो उनके साथ सलाह-मशविरा करने के लिए थोड़ी देर लगती थी, उनके पास जाना पड़ता था, लेकिन आज प्रतिक्षण उनका 'प्राइम' हमें हासिल होता है। तो महापुरुष का व्यक्तित्व समूह में लीन हो जाता है—समाज में, सृष्टि में, समष्टि में लीन हो जाता है और ज्यादा असर करता है। तुलसीदासजी का असर उनके रहते नहीं था, जितना आज है। ईसा मसीह अगर आज होते तो उनको कोई 'क्रास' पर नहीं चढ़ाते। उनकी स्मृति आज ज्यादा काम दे रही है। जो अल्प-पुरुष होते हैं, उनके मरने के बाद उनके प्रभाव का क्षय होता है और महापुरुष के मरने के बाद उनका प्रभाव बढ़ता है। इसलिए यह मानना कि महापुरुष के जाने के बाद क्या होगा, यह मंद चिंतन है, गलत चिंतन है। कारण यही है कि समूह में हम इकट्ठा हुए हैं और जो भी सोचेंगे वह सामूहिक दृष्टि से सोचेंगे। एक दूसरे के साथ सहकार करेंगे, यह नहीं बनता है। सह-चिन्तन हम नहीं करते हैं, इसलिए इन दिनों मैं बार-बार कहता हूँ कि हमें सह-चित्त की जरूरत है और सह-चित्त तथा सह-चिंतन होना चाहिए, तो हमें सहकार्य भी मिलता चला जायगा। ऐसा जब तक नहीं होगा, तब तक हमारी कोई आध्यात्मिक परंपरा नहीं बनेगी।

[माचला के कार्यकर्ताओं से, माचला, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर, ३०-८-६०]

...येगा। प्रेम-शक्ति कुंठित हो जाती है, अन्योन्य विश्वास के अभाव में। मैं स्नेह की कुछ मात्रा देख रहा हूँ, किन्तु विश्वास की कमी मुझे दीखती है। अगर आपस में विश्वास बढ़े तो दुनिया की सारी समस्या हल हो जायगी।

विनोबाजी इन्दौर में आये और वे इन्दौर से चले गये। उन्होंने इन्दौर पर अकारण स्नेह किया। पूरे एक महीने रहे। इस अवधि में करीब डेढ़ सौ से ज्यादा व्याख्यान हुए। अगर ग्रंथ प्रकाशित किया जाये, तो दो-ढाई हजार पृष्ठों का ग्रन्थ बन सकता है। बाबा अक्सर अपने भाषणों में वही की वही बातें दुहराते नहीं हैं। उन्होंने जीवन के विविध पहलुओं पर अपने नये विचार रखे, कई बातों में सीधा मार्गदर्शन दिया। इतना सारा साहित्य बाबा के शब्दों में ही, 'जीवन-दीप्ति' के लिए पर्याप्त है। अब इन्दौर के नागरिकों और कार्यकर्ताओं की कसौटी है कि बाबा ने जो हमसे इतना स्नेह किया, हम उसके लायक बनें और इन्दौर को सर्वोदयनगर बनाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ें।

●

चंबल घाटी शान्ति-सेना शिविर

"शांति के सिपाही चले। शांति के सिपाही चले॥
लेके प्यार सिपाही चले। रोकने तबाही चले॥"

कवि ने सृजन किया था निराकार शब्द-सुमनों का! थके हुए सैनिकों के चरणों की आकृतियाँ चंबल की मिट्टी में अंकित हो रही थीं। लगा, उन आकृतियों ने शब्द-सुमनों को कृति-कुसुम बना दिया।

आगरा से चवालीस मील दूर, एक छोटा-सा कस्बा है, 'बाह'। चंबल घाटी की अशान्ति की लपटों में जला-भुना हुआ यह क्षेत्र शान्ति शिविर के लिये चुना गया। 'शिविर' शब्द 'सेना' के साथ जुड़ा हुआ है, जिसे अन्य क्षेत्रों में भी इस्तेमाल किया जाता है। बाह में शिविर हुआ सैनिकों का ही, लेकिन अनोखे ढंग के सैनिकों का, जिनके हथियार थे—प्रेम और विचार। जब दुनिया ने कहा कि चंबल घाटी में विनोबा की यात्रा से अहिंसा का चमत्कार हुआ, तब बुद्ध भगवान की बोधगया में आसनस्थ गंभीर मूर्ति भी मुस्कुरायी होगी।

"अक्रोध से क्रोध को जीतो", युग बीत गये यह सुनते-सुनते! फिर भी इसे 'चमत्कार' मानते हैं! गनीमत है कि पानी से आग बुझी तो उसे ये लोग 'चमत्कार' नहीं कहते हैं। बुद्ध मूर्ति भले ही मुस्कुराये, पर मानव-मन कहेगा कि 'विनोबा जैसे व्यक्ति के लिये सम्भव है अहिंसा, लेकिन क्या मानव मात्र के लिये वह सम्भव है?"

इसी सवाल का जवाब देना था उन शान्ति-सैनिकों को, जो 'बाह' के शिविर में इकट्ठे हुए थे। वे थे मिट्टी के पुतले, जन-साधारण के प्रतिनिधि! और उनकी 'सेना' भी न लाखों की थी, न हजारों की, बल्कि सिर्फ छत्तीस सैनिकों की थी। अधिकांश उत्तर प्रदेश के थे, पाँच राजस्थान के, दो-एक मध्य प्रदेश के। और वे करना भी क्या चाहते थे? सिर्फ प्यार! क्या प्यार करने के लिये भी तालीम देने की आवश्यकता है? भगवती शक्ति देवी बिना उपासना के प्रसन्न नहीं होती है। प्यार की ताकत प्रकट करनी हो, तो उसकी उपासना करनी होगी। उन सैनिकों को तालीम लेनी थी प्यार करने की, दुश्मन पर प्यार, पड़ोसी पर प्यार, एक-दूसरे पर प्यार करने की। उन्हें उस प्रेम-शक्ति को प्राप्त करना था, जो दुश्मन दोस्त बना सकती है।

उसीकी आराधना से उनके दिन का आरम्भ होता था और अन्त भी। जगदीश की अर्चना के बाद जगत् की उपासना। सैनिक टोलियाँ बना कर आसपास के गाँवों में घूमते थे, दुःख भरी कहानियाँ सुनते थे, प्यार भरे शब्द सुनाते थे। प्रतिदिन सौ-डेढ़ सौ मील की पदयात्रा हो जाती थी। इस बीच टोलियाँ मानसिंह, रूपा, लाखन आदि के गाँवों में हो आयीं। एक दिन 'बाह' कस्बे में ही घर-घर पहुँचने का कार्यक्रम रहा।

मध्याह्न तथा रात्रि का समय ज्ञान-चर्चा के लिये रखा था। सर्वोदय-समाज-रचना तथा आन्दोलन का स्वरूप सर्वोदय और राजनीति सर्वोदय-अर्थव्यवस्था, समाज-परिवर्तन और रचनात्मक प्रवृत्तियाँ, अपराध, न्याय और दंड-व्यवस्था, शान्ति-सेना उसकी आवश्यकता और कार्यक्रम, चंबल घाटी क्षेत्र का ऐतिहासिक और भौगोलिक परिचय, चंबल घाटी क्षेत्र की समस्याओं, उनका निराकरण तथा उस क्षेत्र में शान्ति-कार्य आदि विषयों पर भाषण तथा चर्चा हुई। विनोबाजी कहते हैं कि विचार हमारा शस्त्र है और विचार हमारा अस्त्र है। शान्ति-सैनिकों को शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करने का यह कार्य प्रशिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा था। सर्वश्री पूर्णचन्द्र जैन, सुरेश राम भाई, ओमप्रकाश गौड़, ब्रह्मदेव वाजपेयी तथा निर्मला देशपांडे ने विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला।

शिविर का श्रीगणेश स्व० जनरल यदुनाथ सिंहजी की भाभी और चंबल घाटी शान्ति सेना समिति की सदस्या रानी राजेन्द्र कुँवर ने दीप-ज्योति जला कर किया और स्व० जनरल साहब को श्रद्धांजलि अर्पण की। श्री पूर्णचन्द्र जैन ने शिविर में चार दिन उपस्थित रह कर शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया। शिविर-समाप्ति समारोह श्री निर्मला देशपांडे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उन्होंने शान्ति-सैनिक के इकतारेक चित्त-शुद्धि, मधुर वाणी, सेवा-वृत्ति, प्रेम भरा हृदय, विचार-निष्ठा आदि का विश्लेषण कर जनता से कहा कि "इन शान्ति-सैनिकों का काम है, आपकी आत्मशक्ति को जगाना। इनका काम तब सफल होगा, जब आपको इनकी जरूरत ही नहीं पड़ेगी, जब आप निर्भय तथा आत्मनिर्भर बन कर शान्तिमय क्रान्ति पर कार्य करने लगेंगे।" इस अवसर पर श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा, "यह सम्मान की फौज है, जो प्यार भरा दिल लेकर घर-घर जायेगी। आज के युग में ऐसे वीरों की जरूरत है, जो मारने में नहीं, बल्कि खुद मर कर दूसरों को जिलाने में वीरता दिखा दें।"

शिविर का आयोजन उ० प्र० सर्वोदय-मंडल के तत्त्वावधान में मंडल के मंत्री श्री ओमप्रकाश गौड़ ने किया। व्यवस्था-कार्य का भार श्री स्वामी कृष्णस्वरूप, श्री लल्लू सिंह, श्री महावीर सिंह और श्री भगवत सिंह ने उठाया।

आठ सितम्बर को प्रातः विनोबाजी के साथी महाराष्ट्र के कर्मठ कार्यकर्ता श्री दादासाहब पंडित ने शिविरार्थियों को आशीर्वचन कहे तथा निर्मला देशपांडे ने कुंकुम-तिलक किया और 'शान्ति के सिपाही चले' का गीत गाते हुए सैनिकों ने चम्बल घाटी क्षेत्र में पदयात्रा आरम्भ की।

शान्ति-सैनिकों की दो टोलियाँ भिंड तथा मुरैना के क्षेत्र में दो माह पदयात्रा करेंगी। ३० सितम्बर को दोनों टोलियाँ भिंड पहुँचेंगी, जहाँ पर तीन दिन रहेंगी। दोनों टोलियों में मिला कर ३६ शान्ति-सैनिक हैं।

शांति-सेना का काम केवल राहत पहुँचाने का एक सेवा का नहीं होना चाहिये। 'प्रिवेंटिव मॉरल फाम की हैसियत से शान्ति-सैनिक काम करें। अशान्ति के तात्कालिक कारणों को समझना, उनका विश्लेषण करना तथा उनमें निहित समस्याओं के लिए सर्वोदय की दृष्टि से उपाय सुझाना, यह सब शान्ति-सैनिक को करना चाहिये। सर्वोदयी उपाय-योजना का सर्वोपरि बुद्धि में साफ हो। उसको निर्भय होकर जनता के सामने प्रस्तुत करने का साहस एवं चतुराई हो। तब 'मॉरल फोर्स' बनेगा। सद्गुणों की तथा सज्जनता के गौरव की बनिस्बत शक्ति संगठित नैतिक शक्ति बन नहीं पाती और मौके पर अभिव्यक्त हो नहीं पाती, यही तो हमारी आम बीमारी है।

—विमला ठकार

आसाम में शान्ति-कार्य

आसाम में हिन्दू शान्ति-सेना तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने अभी-अभी शान्ति-स्थापना तथा विस्थापितों के पुनर्वास के लिए एक व्यापक योजना के अनुसार काम शुरू कर दिया है। अभी यह सारा काम "शान्ति-सेवक समिति" के मार्फत चलेगा, जिसके अध्यक्ष आसाम के भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री तथा गांधी-स्मारक निधि के आसाम शाखा के अध्यक्ष श्री अमिय कुमार दास हैं। आसाम की सर्वोदय-कार्यकर्ती श्रीमती अमल प्रभा दास इस समिति की मंत्री हैं। समिति के अन्य सदस्यों में निम्नलिखित व्यक्ति भी सम्मिलित हैं: श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम, सेवाग्राम के शान्ति-सेना-मंडल के संयोजक श्री नारायण देसाई, सेवाग्राम के गांधी-स्मारक निधि के संचालक श्री शक्ति रंजन वसु, आसाम सर्वोदय मंडल के श्री रमेश्वर भुइयाँ तथा आसाम निधि के श्री रामाचरण दास।

आसाम के शान्ति-सैनिकों के [illegible] माह से ही गौहाटी शहर में शान्ति-स्थापना करने का काम प्रारम्भ कर दिया था। आसाम में उनकी मदद में पश्चिम से साठ शान्ति-सैनिक आये तथा उनके से आज तक दोनों प्रान्तों के शान्ति-सैनिक मिलजुल कर काम कर रहे हैं। गोहाटी इलाका, जो कि अत्यन्त दंगा-पीड़ित है, शान्ति-सैनिकों ने सराहनीय काम किया। यहाँ बंगाल तथा आसाम के १४ शान्ति-सैनिक काम कर रहे थे तथा कुछ दिन बिहार के ५ शान्ति-सैनिक भी यहाँ गये। विस्थापितों को भरोसा दिला कर गाँव में वापस जाना तथा उनका से धान काट कर घर पहुँचा देने में शान्ति-सैनिकों का खासा हाथ रहा।

श्री शक्ति रंजन वसु तीन साथियों को लेकर ८ अगस्त को गौहाटी पहुँचे। सभी गोरेश्वर या रामनगर शिविर के काम में जुट गये। श्री चारुबाबू [illegible] बंगला तथा असमिया भाषा में बात करके दोनों पक्षों के लिये ग्रहणीय समाधान ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे हैं। काम में सर्वश्री क्षितिश राय चौधरी, [illegible] चन्द्र जाना तथा दुर्गाचरण दास मदद कर रहे हैं।

अगस्त १० से २२ तक श्री चारु ने नौगाँव, लखीमपुर तथा शिवसागर के दंगाग्रस्त इलाकों में यात्रा की। [illegible] साथ आसाम गांधी-निधि के मंत्री श्री जनार्दन पाठक तथा श्री [illegible] भी थे। श्री शक्ति रंजन वसु ने भी [illegible] जिले के दंगा-पीड़ित भागों में यात्रा [illegible] इन यात्राओं के कारण बंगाली भाइयों [illegible] [illegible] मन में फिर से सुरक्षा [illegible] भावना निर्माण होने में मदद मिली [illegible] पुनर्वास का काम भी जल्दी हुआ।

शान्ति-सैनिकों ने आसाम गांधी-स्मारक निधि तथा अन्य रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की [illegible] स्थापना के काम में अपूर्व मदद दी है। समग्र आसाम में ५० शान्ति-शिविर चलाने का निर्णय किया गया [illegible] प्रति शिविर में कम-से-कम ४ शान्ति-सैनिक रह कर आसपास [illegible] में [illegible] करेंगे। ४ शान्ति-[illegible] [illegible] [illegible] तथा [illegible] कामरूप (गोहाटी) [illegible] नौगाँव [illegible] [illegible] प्रकार कुल [illegible] शिविर [illegible] गये हैं।

हाल प्रकाशित
शांति-सेना
विनोबा
नये विचारों की प्रेरणादायी पुस्तक। मूल्य : ७५ नये पैसे।

सुचि सेवक और शांति-सैनिक

रामप्रवेश शास्त्री

[भारतवर्ष में 'रामायण' की बड़ी प्रतिष्ठा है। अति साधारण, अपढ़ आदमी भी रामायण को जानता है और उसमें रस लेता है। "सम्पति सब रघुपति के आही" का नारा रामायण से ही उद्धृत है। उसी रामायण में सुचि-सेवक के रूप में सेवक का जो वर्णन आया है, वह शांति-सैनिक का ही मानो वर्णन किया गया है। इस लेख में उसी रूप का विवेचन किया गया है। हमारे पाठकों के लिये यह एक रोचक और उपयोगी वर्णन होगा, इस आशा से इसे हम यहाँ दे रहे हैं। —स०]

तुलसीदासजी ने याज्ञवल्क्य ऋषि के मुँह से भारद्वाज ऋषि को राम का 'सुचि सेवक' कहलवाया है। उन्होंने लिखा है :

"प्रथमहि मैं कहि सिव चरित,
बूझा मरमु तुम्हार।
सुचि सेवक तुम्ह राम के,
रहित समस्त बिकार ॥"

इस दोहे से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि याज्ञवल्क्यजी भारद्वाजजी की परीक्षा ले रहे थे, मरम बूझ रहे थे। इस सदर्भ में कहना है कि भारद्वाजजी ने याज्ञवल्क्यजी से प्रश्न किया था कि :

"राम कवन प्रभु पूछउँ तोहीं।
कहिय बुझाइ कृपानिधि मोहीं।"

इसके उत्तर में याज्ञवल्क्यजी ने शिव-चरित कहना शुरू किया और भारद्वाजजी दत्तचित्त हो सुनने गये। वे यह भी सम्भवतः भूल गये कि मैंने राम-चरित सुनाने का आग्रह किया था और ये शिव-चरित सुनने लगे। इसका अन्तिम निष्कर्ष उपरोक्त दोहे से स्पष्ट हो जाता है कि भारद्वाजजी को 'राम का सुचि सेवक' की संज्ञा मिली। इस "सुचि सेवक" शब्द का तुलसीदासजी ने रामायण में और भी कई स्थलों पर प्रयोग किया है। उन स्थलों और परिस्थितियों पर विचार करने से "सुचि सेवक" का रूप समझमें आ सकता है।

सीता को विदा करते हुए जनकजी ने नारी धर्म की शिक्षा दी और कुल-मर्यादा की भी सीख दी, साथ ही कुछ सेवक भी दिये। तुलसीदासजी के शब्दों में

'दासी दास दीन्ह बहुतेरे,
सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे।"

यहाँ स्पष्ट है कि "सुचि सेवक" दास-दासियों से भिन्न कोई दूसरी श्रेणी है।

इससे पहले धनुष-यज्ञ के सम्बन्ध में भी यह शब्द प्रस्तुत हुआ है। जनकपुर में किसी तरह यह बात फैल गयी कि राम और लक्ष्मण रङ्गभूमि में आ गये हैं। परिणामस्वरूप नगर के आबाल-वृद्ध नर-नारी सभी सभा-मण्डप की ओर चल पड़े और भारी भीड़ एकत्र हो गयी। सम्भवतः भीड़ नियन्त्रण के बाहर थी। रामायण की चौपाई से ऐसा लगता है कि निश्चित समय से पहले ही, जब कि अभी सभा की पूरी व्यवस्था ठीक नहीं हो पायी थी, पुरवासियों की भीड़ उमड़ पड़ी—राम और लक्ष्मण के आने की खबर सुन कर। तुलसीदासजी के शब्दों में :

"रङ्गभूमि आए दोउ भाई।
असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई।
चले सकल गृह काज बिसारी।
बाल जुबान जरठ नर नारी।"

परिणामस्वरूप :

"देखी जनक भीर भइ भारी।
सुचि सेवक सब लिए हँकारी।"

इसलिए कि :

"तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू।
आसन उचित देहु सब काहू।"

सामान्यतः ऐसा समझा जा सकता है कि किसी आयोजन में निश्चित समय से बहुत पहले लोगों की भीड़ जुट जाये, तो व्यवस्थापक उस अप्रत्याशित और आकस्मिक भीड़ को देख कर किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में पड़ जाने पर भीड़ को नियन्त्रित करके सभी लोगों को यथोचित स्थान पर बैठाना हरएक के बस की बात नहीं होगी। निःसन्देह इसे करने वाले विशिष्ट लोग होंगे। ऐसा देखा जाता है कि भीड़ इकट्ठी हो जाती है, तो उसे नियन्त्रित करने के लिए डंडे का सहारा लिया जाता है और भय से लोग जहाँ-तहाँ बैठ जाते हैं। लेकिन जनकजी की सभा में सबको उचित आसन देना था और सुचि-सेवकों ने जिन हथियार का सहारा लिया, वह निम्नांकित दोहे से स्पष्ट है :

"कहि मृदु बचन बिनीत तिन
बैठारे सब लोग।"

निःसन्देह अति विनीत मृदु वचन कह कर भारी भीड़ को व्यवस्थित करना विशिष्टता पूर्ण है।

इसी प्रकार जब भरतजी ने अयोध्या-वासियों के साथ वन में रामचन्द्रजी से मिलने की तैयारी की, तब अयोध्या के सभी लोग जाने की तैयारी करने लगे। हालत यह हो गयी कि नगर में रहने के लिए कोई भी राजी नहीं था।

तुलसीदासजी के शब्दों में

"जेहि राखहि रहु घर रखवारी।
सो जानइ जनु गरदन मारी॥"

चूँकि राम सबको प्रिय थे। इसलिए सभी उनका दर्शन करना चाहते थे। राम की श्रद्धा पर मातृभूमि इतनी कमजोर हो गयी थी कि भरत के अलावा और कोई भी नहीं सोच सका कि राम के प्रति श्रद्धा का अर्थ है, राम के काम के प्रति श्रद्धा। परन्तु भरत ने विचार किया कि

"सम्पति सब रघुपति के आही।
जौं बिनु जतन चलौं तजि ताही।"
तौ परिनाम न मोरि भलाई ॥

इसलिए,

"अस बिचारि सुचि सेवक बोले।
जे सपनेहुँ निज धरम न डोले।।"

इस चौपाई में सुचि-सेवक के चरित्र का भी वर्णन है। सुचि-सेवक वह है, जो सपने में भी अपने धर्म से विचलित न हो। भरतजी ने ऐसे सेवकों को चुन कर रघुपति की सम्पत्ति की जिम्मेदारी सौंपी और वन के लिए प्रस्थान किया।

वस्तुतः रामायण का यही सुचि-सेवक शान्ति-सेना का शान्ति-सैनिक है, जिसके लिए सन्त विनोबा देश का कोना-कोना छान रहे हैं। शान्ति-सैनिक को भारद्वाज की तरह धैर्यवान होना चाहिए। हर बच्चे के चरित्र में रामचरित देखने की तन्मयता और साधना होना चाहिए। कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी विचलित न होकर विनयपूर्वक अपने कर्तव्यपालन की क्षमता होनी चाहिए और राम के समान ही राम के काम में निष्ठा होनी चाहिए, आस्था होनी चाहिए। करुणा और प्रेम से ओतप्रोत रह कर सारी वसुधा को उसमें सराबोर करने का विश्वास होना चाहिए, सक्रियता होनी चाहिए।

इस सदर्भ में अशोक और युधिष्ठिर का उदाहरण दिया जा सकता है, जिनमें प्रचलित सेना के सैनिक और शान्ति-सैनिक, दोनों का रूप दीखता है। कलिंग-विजय से पहले अशोक हथियारों से सुसज्जित रण-क्षेत्र में जाकर रक्तपात करने-कराने का कायल एक साधारण सैनिक था। लेकिन कलिंग-विजय के बाद का अशोक दया और करुणा के सहारे समाजहित के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाला शान्ति-सैनिक है। ऐसे ही महाभारत की विभीषिका देख कर पश्चात्ताप करता हुआ युधिष्ठिर तलवार उठाने वाला साधारण सैनिक नहीं, बल्कि साम्राज्य लुटाने वाला शान्ति-सैनिक है।

आज देश की विषम परिस्थितियों से जूझने के लिए शान्ति-सैनिकों की देश को अनिवार्य आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ जनमानस 'सम्पति सब रघुपति के आही" के अनुकूल बन सकेगा और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कल्पना साकार हो सकेगी।

चम्बल घाटी शांति-यात्रा

हमारी टोली आठ दिन में, जिला आगरा की बाह तहसील में घूमी और १४ सितम्बर से टोली ने इटावा जिले के थाना बढ़पुरा में प्रवेश किया। हम लोग रास्ते के हर छोटे-छोटे गाँव में ग्राम-फेरी करके लोगों से बात करते हैं और फिर उस गाँव में शान्ति बनाये रखने के लिए ऐसे लोगों की माँग करते हैं, जो स्वयं हिंसा में प्रवृत्त नहीं होंगे, किसी अगर हिंसा पर आमादा होगा, तो भी शान्त रहेंगे, गाँव के दो आदमियों के बीच हिंसा की सम्भावना हो तो बीच में पड़ कर समझायेंगे फिर भी न मानें तो शान्ति-समिति के कार्यालय में खबर करेंगे। समय-समय पर शान्ति-समिति के कार्यक्रम में भाग भी लेंगे। पहले तो लोग थोड़े झिझकते हैं, किन्तु फिर नाम लिखाने लगते हैं। हमारे दद्दा लल्लू सिंहजी तो हर प्रकार के लोगों के बीच आ बैठते हैं। विशेष करके बहनों को बाबा का सदेश सुनाते हैं 'माताएँ अब खड़ी हो जायें और अपने गाँव में पुरुषों को कह दें कि 'खबरदार ! अब हम तुम्हें लड़ने नहीं देंगी।' शान्ति-कार्य का जिम्मा बहनों को उठाना है। फिर तो बहनें खुशी से अपने नाम लिखाती हैं। बूढ़े लोग थोड़े झिझकते हैं, पर नौजवान उत्साह से लिखाते हैं।

एक गाँव में जब हमारी टोली पहुँची, तो दो आदमी आपस में लड़ रहे थे। टोली पहुँचते ही चालीस थी कि हम "आपस में नहीं लड़ेंगे" के घोष के साथ पहुँच गये। अलग-अलग बैठा कर दोनों की बातें सुनीं और फिर दोनों को मिलाया। छोटे भाई ने बड़े भाई के पैर छुए। दोनों ही शान्ति-मित्र बने।

एक गाँव में पुलिस का कैम्प था। पुलिस-अधिकारी से मिलने की इच्छा हम लोगों ने प्रकट की। अधिकारी महोदय ने बाहर आकर ही हमारी बात सुनी। साहित्य व भूदान-पत्रिका के लिए आग्रह किया। पहले तो उनके बात करने का ढंग ऐसा था कि वहम उठ गयी, किन्तु अन्त में तो वे इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने 'शान्ति-सेना' पुस्तक भी खरीद ली और प्रेम से नमस्कार करके विदा किया।

विनोबा-जयन्ती के दिन साथियों ने एक समय ही भोजन किया। पड़ाव के समीप वाले कुएँ की सफाई और गीता-प्रवचन के वाचन के साथ सूत-यज्ञ का कार्यक्रम दोपहर को रहा। रात को सभा में विनोबाजी की जीवनी पर प्रकाश डाला गया।

कुल आठ पड़ाव रात के हुए, जिनके अतिरिक्त दिन में अब तक लगभग २५ गाँवों में घूमे। सभी में ग्राम-फेरी व विचार-प्रचार हुआ। लगभग १५० शान्ति-मित्र बने, जिनमें बहन-भाई सभी हैं।

ऐसा लग रहा है कि यह क्षेत्र भावना-प्रधान है। हम जिधर से निकलते हैं, लोग हमारा सत्कार और स्वागत करते हैं। बीच-बीच में एक-आध कुतर्की भाई भी मिलते हैं। बीच-बीच में हम लोग रास्ते में बैठ कर चर्चा करते हैं, जिसमें प्रत्येक साथी खुले दिल से अपने विचार रखता है। एक-दूसरे की गलती निकालने की अपेक्षा गुण-ग्रहण की ही वृत्ति टोली में रहती है।

सवेरे की प्रार्थना में गृह वाचन भी चलता है। दो दिन 'शान्ति-सेना' तथा अब 'गीता प्रवचन' चलता है।

कश्मीर-यात्रा का वह दिन!

कुसुम देशपांडे

मील का पत्थर बता रहा था, ३३४० फीट की ऊँचाई पर हम पहुँच गये हैं! थोड़ी ही दूरी पर एक छोटा-सा पहाड़ था, जिसे चढ़ने के बाद हमारी मंजिल आने वाली थी। साथ में कर्नल साहब थे। उन्होंने मजाक किया, कहने लगे, "यह पहाड़ी आप चढ़ते हैं, तो पीर-पंजाल की रिहर्सल हो जायगी। आपकी 'टेस्ट' आज होने वाली है!" जब हम पहाड़ी चढ़ने लगे, तब बीच में एक स्थान पर बाबा रुक गये, और वहाँ एक त्रिकोण खींच कर बताया कि यहाँ तो हर दो-तीन फीट में हम एक फीट ऊपर चढ़ रहे हैं। लेकिन पीर-पंजाल में तो पाँच फीट में एक फीट ऊपर चढ़ना होगा, याने इस पहाड़ी से पीर-पंजाल चढ़ना आसान है। यह पहाड़ ज्यादा 'स्टिफ' है।

उस पहाड़ी पर छोटा-सा गाँव था। सामने भी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ दीखती थीं। हर बिखरी हुई बस्ती वहाँ दीखती थी। हरएक या-दो फर्लांग पर एक घर था और उसके पास छोटे छोटे खेत दिखाई दे रहे थे। बाबा ने कहा, 'ये लोग बादशाह के जैसे रहते हैं! मुझे तो इन लोगों का जीवन देख कर ईर्ष्या होती है।"

एक मुसलमान भाई ने बाबा से नसीहत माँगी। उन्होंने कहा, "बाबाजी, रूहानियत के मुतल्लिक कुछ नसीहत दीजिये। क्या खुदा और इल्म एक ही चीज है?"

बाबा ने कहा, "हम रूहानियत के बारे में किसीको नसीहत नहीं देते हैं। पहले तो यह बताइये कि यह खुदा आया कहाँ से? जिस शख्स की हस्ती के बारे में ही आपको शक है, उसके बारे में आप सवाल कैसे पूछते हैं? कुछ लोग कहते हैं कि वह नहीं है! अब खुदा की गरज आपको क्यों पैदा हुई, यह बताइये। क्या किताब पढ़ने से 'क्युरिऑसिटी' (जिज्ञासा) पैदा हुई? या अपनी जिंदगी में ही इसकी तलाश की गरज पैदा हुई? क्या उस तलाश के बिना आपका काम रुका है? अगर किताबें पढ़ने से यह सवाल उठा हो, तो समझ लीजिये कि किताबें पढ़-पढ़ कर उलझनें ही पैदा होती हैं।"

उस भाई ने कहा, : "हमारे वलियों, फकीरों ने और सन्तों ने यह बात समझायी है। उसकी एक फिजा है, जिसका रूह के दिल पर असर होता है।"

बाबा: "याने सत और फकीरों को देख कर यह सवाल पैदा हुआ। उन पागलों का पागलपन क्या है, यह आप जानना चाहते हैं, याने यह 'क्युरिऑसिटी' ही है। लेकिन अगर आपकी जिंदगी में ही खुदा की गरज पैदा हुई हो, तो उस बारे में मैं कुछ कहूँगा। लेकिन हमने देखा है कि मानव-मन में ये सवाल उठे हैं। मानव ने उस पर सोचा है और उसे कुछ तजुर्बे भी मिले हैं। पहले सवाल उठते हैं, मानव की जिंदगी में एक ऐसा मौका आता है, जब कि खुदा की तलाश के बिना मामला रुका रहता है। सवाल पैदा होने पर फिर 'स्पेक्युलेशन' (अंदाज) चलता है। फिर तजुर्बे होते हैं। उस तरह जैसे 'साइंस' में चलता है, वहाँ भी चलता है। उपनिषदों में 'स्पेक्युलेशन' है। उनमें अलग-अलग विचार पेश किये हैं। हर ऋषि ने अपने अपने तजुर्बे बताये हैं। उसके बाद में उलझनें पैदा हुईं और हिंदू धर्म बिखर-बिखर होने की हालत में आया। श्रद्धा के लिए आधार नहीं रहा, इसलिए उपनिषदों को सिरोने वाले ब्रह्मसूत्र निकले, जिनमें उपनिषद्-सार अनुस्यूत है। उसके बाद 'मिस्टिक्स' आये, जिन्होंने तजुर्बे लिये।

श्री मक्बाबू ने पूछा, "इसमें तजुर्बे हैं या सब 'इमेजिनेशन' याने कल्पना ही है?"

बाबा: "कुछ अनुभव और कुछ 'इमैजिनेशन' है। अनुभव से दिशा मालूम होती है और उस दिशा में 'इमैजिनेशन' आगे बढ़ती है। भक्तों में एक बड़ी बात है—"बोधयन्तः परस्परम"—एक दूसरे के अनुभव से सीखना। 'दर्शन' में जिस तरह खंडन-मंडन चलता है, वैसे भक्तों में नहीं होता है। दर्शन में मुख्य चीज शब्द होती है। शब्द से कुछ फहमी और कुछ गलतफहमी होती है। शब्द कुछ अर्थ को प्रगट करते हैं, तो कुछ गलत अर्थ ही प्रगट करते हैं। जहाँ शब्दों का आग्रह होता है, वहाँ दूसरों के शब्दों के साथ क्षोभ पैदा होता है, इसलिए फिर खंडन मंडन चलता है। 'फिलासॉफिकल डिस्कशन' में यह सब चलता है।"

श्री मक्बाबू: "कुछ लोग पश्चिम के दार्शनिकों के बारे में कहते हैं कि वह सारा शब्दों का जाल-सा है।"

बाबा: "उसे शब्दजाल नहीं कहा जा सकता। उसमें भी कुछ है, फिर भी शब्दों की मर्यादा है। ऋषियों को अनुभव होता है, जिसे वे शब्दों में प्रगट करते हैं। इसके बाद उनके अनुयायी शब्दों को ही पकड़े रहते हैं। इसलिए फिर नयी तपस्या, नये अनुभव, नया अर्थ, यह सिलसिला चलता है। अन्दर के अनुभव से दर्शन होता है। ऋषि द्रष्टा होते हैं। उन्हें एक दर्शन होता है।"

यात्रा रजौरी से पूँछ गाँव आने वाले रास्ते से जा रही है। यह दूसरा रास्ता था। पूँछ जाने के लिए और भी एक रास्ता है। किसीने कहा, "यह रास्ता 'सेकंड लाइन आफ डिफेन्स' है।

बाबा ने कहा: "अगर ग्रामदान हो जायगा तो 'थर्ड लाइन आफ डीफेन्स' होगा। दरअसल तो ग्रामदान 'फर्स्ट लाइन आफ डिफेन्स' ही है।"

बीच में ऊँची-नीची पगडंडी आयी। जब उतार आता है, तब बाबा को उस पर से दौड़ने की इच्छा होती है और वे साथियों का हाथ पकड़ कर दौड़े जाते हैं। हमारे साथ मिलीटरी के तथा पुलिस के अधिकारी थे। बाबा के साथ हम सब लोग भी दौड़ते थे। लेकिन वे अधिकारी धीरे-धीरे ही चलते थे। सहज उनसे पूछा, "क्यों, आपको दौड़ने में मजा नहीं आता?" तो उनमें से एक ने कहा, "बहनजी, हम तो पदयात्रा में शामिल होने के लिए आये, दौड़-यात्रा में नहीं।"

दूसरे दिन हम डेरा की गली नाम के स्थान पर जाने वाले थे, जो ७१९० फीट ऊँचाई पर है। पूरा रास्ता चढ़ाई का था। आठ मील में ढाई हजार फीट हम चढ़ने वाले थे। बाबा ने कहा, "हम आज सात हजार फीट से ऊपर रहेंगे याने आबू और नीलगिरि पहुँच गये, ऐसा होगा।

हम ऊपर चढ़ रहे थे। जैसे-जैसे स्थान नजदीक आने लगा, पूरब की तरफ दिखाई दिया—एक के पीछे एक ऐसी छह पहाड़ों की पंक्तियाँ खड़ी थीं। उन पहाड़ों पर हरियाली छायी थी और उन सबसे पीछे पीर-पंजाल की पहाड़ी थी। वह पहाड़ी तो मानो नीले रंग की है, ऐसा दिखाई दे रहा था। लेकिन उसके शिखर बर्फाच्छादित दीखते थे। वह मनोहर दृश्य देखने के लिए बाबा के कदम भी रुक गये। कहने लगे, "वही है न पीर-पंजाल, जो हमें लाँघना है? वह पहाड़ चौदह हजार फीट का है और 'एवरेस्ट' है उनतीस हजार फीट। हम पीर-पंजाल चढ़ेंगे, तो आधे तेनसिंग बन जायेंगे।"

उस शांत, हरे और नीले रंग की पहाड़ियों को देखते हुए यात्रा आगे बढ़ रही थी। किसीने शांति सेना के बारे में चर्चा छेड़ी। बाबा ने कहा, शांति के बारे में हम सोचते हैं, तो अंतर्गत शांति के लिए तीन बातें करनी चाहिए। फिर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शांति-स्थापना के लिए और काम करना होगा। अन्तर्गत शांति के लिए—(१) अशांति के कारणों को मिटाना। उसमें ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य और नई तालीम आती है। हमारा यह काम जितना बढ़ेगा, उतना असर होगा। (२) जिनको 'ट्रबल्ड स्पॉट्स' हैं, वहाँ पर शांति-सेना की स्थापना करना। ऐसे स्थानों में सर्वोदय पात्र हो रहे हैं, सेवा का काम चल रहा है। हर घर में सेवक जाते हैं। हर घर से परिचय प्राप्त करते हैं उनका कुछ असर है, ऐसा होना चाहिए फिर कहीं झगड़ा हुआ, तो ये सेवक बीच में पड़ कर मर-मिटते हैं, यह होना चाहिए (३) देश के भिन्न-भिन्न पक्ष के नेता की जिनका लोगों पर असर है, ऐसे हर जमात के प्रतिनिधि, उन सबकी एक बैठक बुला कर उसमें चर्चा कर के एक इकरार, 'एग्रिमेंट' कर लें कि कुछ भी काम करना हो, 'डेमान्स्ट्रेशन्स' आदि करना हो, तो इसमें किस ढंग से शांतिपूर्वक काम करना आदि बातें सब मिल कर तय करें।

पहला, ग्रामदान आदि का हमारा काम चल ही रहा है। शांति-सेना जैसी चाहिए, वैसी नहीं बनी है। फिर भी कुछ शांति-सैनिक बने हैं और वे जगह-जगह काम कर रहे हैं।

आन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में जब तक हिंदुस्तान-पाकिस्तान का मामला प्रेम से सुलझता नहीं और कुछ दोस्ती बनती नहीं, तब तक हम कुछ खास असर नहीं डाल सकेंगे। आज की हालत में जितना असर डाला जा सकता है उतना तो पंडितजी कर ही रहे हैं। लेकिन जब तक हिंदुस्तान का मामला सुलझता नहीं, तब तक हमसे आन्तरराष्ट्रीय शांति के लिए खास कुछ नहीं बनेगा। उसकी क्या तरकीब होगी, मैं ढूँढ़ रहा हूँ। संभव है, कुछ तरकीब मिल जायगी। वह नहीं मिली, तो भी अपना भूदान-ग्रामदान तो चलेगा ही और सर्वोदय विचार के लिए लोगों के मन में प्रीति भी पैदा होगी याने 'हनो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्'। वहाँ कोई तरकीब मिले तो ठीक है, नहीं तो धरती है ही। यानी हर हालत में हम कामयाब ही होंगे।"

कार्यकर्ताओं की ओर से

रोहतक जिले में बाढ़

"जिला रोहतक (पंजाब) में बाढ़ की सूचना तो आपको समाचार-पत्रों से मिली ही होगी। इस जिले की गोहाना तहसील में लगभग एक महीने तक बाढ़ रही। अभी भी बहुत से गाँव चारों तरफ पानी से घिरे पड़े हैं। इस तहसील में करीब-करीब सारी फसल नष्ट हो चुकी है। जानवरों को भी भारी हानि हुई है और बीमारी भी फैल रही है। रोहतक नगर तथा तहसील में भी भारी क्षति हुई है। रोहतक शहर में पानी ही पानी है! काम सब अस्त-व्यस्त हो गया है। यहाँ भी बीमारी फैल रही है। सांपला तहसील के आधे गाँव बाढ़ से प्रभावित हैं। सोनीपत तहसील के पचास गाँव कम-ज्यादा प्रभावित हैं।

सरकार तथा संस्थाओं की ओर से सहायता-कार्य जारी है। पर जनता और सरकारी अधिकारी अक्सर घटना का दोष एक दूसरे पर मढ़ते हैं। जनता सरकारी अधिकारियों की अयोग्यता के कारण इतनी हानि हुई, ऐसा कहती है, जब कि सरकारी अधिकारी जनता के सहयोग की कमी बताते हैं। हम गाँव-गाँव में घूम रहे हैं, शुरू से ही लोगों से सम्पर्क जारी है, एक-दूसरे की हर समय मदद करने के लिए लोगों को कहते हैं। एक दूसरे को कोसने के स्थान पर मिल-जुल कर संकट का मुकाबला और एक-दूसरे की मदद सब करें, ऐसी कोशिश कर रहे हैं। साथ ही बीमारी की रोक-थाम तथा सामूहिक स्वास्थ्य आदि के लिए विचार व औषधि प्रचार कर रहे हैं। इसमें मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, कलकत्ता का अच्छा सहयोग मिल रहा है।'

—जयनारायण, संयोजक
जिला सर्वोदय-मंडल, रोहतक

उत्तर प्रदेश की चिट्ठी

उत्तर प्रदेश में शान्ति-सेना-कार्य के अन्तर्गत अखिल भारतीय स्तर के दो काम ...गये हैं। एक है, चम्बल घाटी बागी क्षेत्र का और दूसरा है, प्रदेश का उत्तरी सीमा ..., जिसे हम 'उत्तरा खण्ड शान्ति-सेना क्षेत्र' कहते हैं।

चम्बल घाटी शान्ति-योजना के अन्तर्गत क्षेत्र तीन प्रान्तों में विस्तृत है। उत्तर ...में आगरा जिले की बाह तहसील और इटावा जिले का थोड़ा-सा भाग, मध्य ...श के भिण्ड और मुरैना जिले तथा कुछ राजस्थान का भाग। यह सारा क्षेत्र चम्बल ...के दोनों किनारों तथा उसके आस-पास का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कार्य व्यवस्था का ...सभा चम्बल घाटी शान्ति समिति का है। इसके अध्यक्ष स्वामी कृष्णस्वरूप हैं। ...सलाह और मार्गदर्शन तथा विशिष्ट राज्य सम्पर्क आदि का काम अ० भा० ...सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन तथा उत्तर प्रदेश शान्ति-सेना के सचालक, ...श्री ब्रह्मदेव बाजपेयी करते हैं।

इस क्षेत्र में पूज्य बाबा को आत्म-समर्पण करने वाले बागियों में से कुछ को मध्य प्रदेश की ओर कुछ को उत्तर प्रदेश की जेल में रखा गया है। सरकार की ओर से उन पर मुकदमा चलाने की योजना बन गयी है, और मुकदमे चलना प्रारम्भ हो गये हैं। समुचित न्याय में मदद देने के लिए इन बागियों को आवश्यक सहायता दी जा रही है।

इस क्षेत्र में अब तीन प्रमुख काम ...ने हैं। बाहर बचे हुए बागियों से सम्पर्क स्थापित करना। उन्हें अपने हिंसा-... तथा समाज विरोधी कृत्यों से ...मुख करके आत्म-समर्पण के लिए ...त करना। दूसरा, जिन बागियों ने ...-समर्पण कर दिया है, उनके उजड़े ... परिवारों के पुनर्वास की व्यवस्था ... तथा बागियों द्वारा सताये हुए ...वारों को भी व्यवस्थित रूप से ...देना। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र की ...पूर्ण जनता को जो बहुत भयभीत हो ...गी है उसको निर्भय बनाना और उनका ...म-बल जागृत करना। इसी के अन्त-... जनता द्वारा आत्म-रक्षा और सुरक्षा ...की व्यवस्था के लिए अभिक्रम जागृत ...करना भी आता है, जिसके फलस्वरूप स्थानीय अथवा बाहर से आयी हुई पी० ए० सी० पुलिस की आवश्यकता समाप्त हो जायेगी। इसके उपरान्त यह ग्राम-दान और ग्राम स्वराज्य की स्थापना के लिए बड़ा अनुकूल क्षेत्र बन जायेगा।

चम्बल घाटी क्षेत्र में काम करने वाले ...उत्तर प्रदेश के शान्ति-सैनिकों के प्रशिक्षण और जीवन-निर्वाह की व्यवस्था का जिम्मा प्रदेशीय सर्वोदय-मण्डल ने उठा लिया है। इसके अतिरिक्त पुनर्वास इत्यादि के लिए ...जनता से एकत्र करने के लिए अ० भा० सर्व सेवा संघ ने एक अपील निकालने का निर्णय किया है। पुनर्वास में मदद ...के लिए उत्तर प्रदेश शासन से भी ...स्वीकृत किया गया है। वहाँ से ...मदद मिलने की आशा है। हम ...की जनता के अभिक्रम को ...करना चाहते हैं। अतः, हमारा अधिक-से-अधिक प्रयास जनता-जनार्दन की ओर है। स्थानीय और प्रदेशीय पुलिस भी शान्ति-कार्य में हमारा सहयोग कर रही है।

इस क्षेत्र में काम करने के लिए प्रदेश के शान्ति-सैनिकों को आवाहन किया गया। उनके प्रशिक्षण तथा स्थानीय जानकारी और पूर्व तैयारी के उद्देश्य से बाद में एक शान्ति-सेना शिविर ता० १ से ७ सितम्बर तक हुआ। श्री पूर्णचन्द्र जैन ने इसका उद्घाटन किया और तीन दिन तक चर्चाओं में सम्मिलित रहे। शिविर का कुलपतित्व श्री ब्रह्मदेव बाजपेयी ने तथा समापवर्तन सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने किया। इसके अतिरिक्त श्री सुरेशराम भाई तथा ओमप्रकाश गौड़, मंत्री, सर्वोदय-मंडल और स्वामी कृष्णस्वरूप तथा लल्लू दद्दा भी उपस्थित रहे। इस शिविर में निम्न विषयों पर चर्चा हुई—

(१) चम्बल घाटी क्षेत्र का परिचय—ऐतिहासिक और भौगोलिक।

(२) चम्बलघाटी क्षेत्र की समस्याएँ और उनका निराकरण।

(३) चम्बल घाटी में शान्ति-कार्य।

(४) शान्ति-सेना की आवश्यकता और कार्यक्रम अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय शान्ति-व्यवस्था।

(५) अपराध, न्याय और दण्ड-व्यवस्था।

(६) समाज-परिवर्तन और रचनात्मक प्रवृत्तियाँ।

(७) सर्वोदय और राजनीति—सर्वोदय और विभिन्न राजनैतिक विचार-धाराएँ।

(८) सर्वोदय-आन्दोलन का आज का स्वरूप।

(९) सर्वोदय-समाज रचना और आन्दोलन का आध्यात्मिक आधार।

शिविर में प्रत्येक दिन के आधे भाग में ग्राम-सम्पर्क का कार्यक्रम होता था। मन या अन्य मील की दूरी तक के सब दिशाओं के गाँवों में सम्पर्क के लिए नित्य शान्ति-सैनिकों की टोलियाँ जाती थीं। इसके अतिरिक्त कुछ उन गाँवों में भी गये, जिन गाँवों में पहले बागी लोग रहते थे। वहाँ जो दर्शन हुआ और अनुभव हुआ, वह उल्लेखनीय है। गाँवों में प्रभात फेरी और ग्रामवासियों को शान्ति-सेना योजना का उद्देश्य बताया जाता था और निर्भय रहने की प्रेरणा दी जाती थी। शिविर में बौद्धिक वर्ग और चर्चाएँ चलती थीं। शिविर के समापवर्तन में बाह क्षेत्र के सभी सम्बन्धितों को निमन्त्रित किया गया था, जिसमें ग्रामीण और स्थानीय पुलिस और अन्य सरकारी अधिकारी उपस्थित हुए। सार्वजनिक सभा में सभी शान्ति-सैनिकों का परिचय दिया गया। प्रत्येक शान्ति-सैनिक के पास उसकी प्रामाणिकता व्यक्त करने के लिए उसकी फोटो क्षेत्रीय शान्ति-समिति द्वारा प्रमाणित कर दे दी गयी है, जिससे क्षेत्र में घूमते हुए इनको पुलिस द्वारा अथवा बागियों द्वारा गलतफहमी के कारण किसी प्रकार का खतरा न उठाना पड़े।

शिविर के अन्त में ८ सितम्बर को प्रातःकाल ३० शान्ति-सैनिक दो टोलियों में विभक्त होकर एक महीने का कार्यक्रम बना कर गाँव-गाँव घूमने के लिए निकल गये। ३० सितम्बर को मध्य प्रदेश के भिण्ड में एकत्र होंगे, जहाँ एक शिविर होगा। अनुभव के आधार पर मध्य प्रदेश और राजस्थान के क्षेत्र में पदयात्रा का कार्यक्रम बनेगा। शिविर में लगभग ४० शान्ति-सैनिकों ने भाग लिया। इनमें से तीन राजस्थान के और तीन ही मध्य प्रदेश के शान्ति-सैनिक थे।

पूज्य बाबा की उस क्षेत्र की यात्रा से तथा प्रमुख बागियों के आत्मसमर्पण से सारी जनता में बड़ा उत्साह, आनन्द और आत्मविश्वास जगा है। लोगों का कहना है कि इससे तो समस्या का तीन-चौथाई समाधान तो उत्तर प्रदेश में हो गया है। कई स्थानों से अब 'पी० ए० सी०' भी हटा ली गयी है। दोनों ओर की ज्यादतियाँ और धाँधलियाँ अब बहुत कम हो गयी हैं। गाँव वालों ने कई स्थानों में कहा कि अभी तक तो हम निराधार-से ही थे। हमारे बीच में मरने के बीच में खड़े होकर हिम्मत दिलाने वाला कोई नहीं था। हम दोनों ओर से मारे जाते थे। एक तरफ बागियों से, दूसरी तरफ कुछ गलत पुलिस कर्मचारियों और उनके हिमायतियों द्वारा। अब आप शान्ति-सैनिक के नाते हमारे मरने के समय हमारे साथ रहेंगे, तो हममें आत्मबल और नैतिकबल बढ़ेगा तथा आततायियों का दबाव भी धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगा। शिविर से तथा यात्राओं से बाह क्षेत्र की जनता में नया उत्साह जागृत हुआ है। जनता सरकारी अधिकारी और सभी से हमें पूरा सहयोग मिलने की आशा है।

उत्तरा खण्ड का क्षेत्र केवल राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तरराष्ट्रीय प्रमुखता का स्थान है। चीन तिब्बत सीमा पर का यह हमारे प्रदेश का हिमालय पर्वतस्थित उत्तर क्षेत्र है। सीमा के उस पार चीनी सेना है, उसके सामने भारतीय सेना की सुरक्षा-पंक्ति है। इसके बाद देश की अहिंसक सुरक्षा-व्यवस्था की व्यूह-रचना योजना खड़ी की जा रही है। क्या देश पर विदेशी आक्रमण होने पर अहिंसा-शक्ति द्वारा सुरक्षा की जा सकती है? यह हमारे सामने चुनौती है। भगवान शंकर की विहारस्थली और तपस्थली तथा अनादि काल से अगणित योगियों का साधना-स्थल, गंगा-यमुना-ब्रह्मपुत्र एवं पंजाब का सिंचन करने वाली नदियों का उद्गम-स्थान, असंख्य भारतीयों की उदात्त भावनाओं का प्रेरणा का स्रोत उत्तरा खण्ड, उत्तरा खण्ड, पर्वतराज हिमवान् की मनोरम गोद में ही अहिंसा का, उसकी अजेय शक्ति का, स्थिर मधुर, गम्भीर स्वरूप का उद्गम भी यहीं होगा। किन्तु इस पावन गंगा का अवतरण कराने वाला भगीरथ होगा विनोबा! हम सब शान्ति-सैनिक होंगे, उस महायज्ञ की पूर्व-तैयारी में दत्तचित्त समिद्पाणि शिष्य, सेवक, सहयोगी और सिपाही!

उत्तरा खण्ड शान्ति-सुरक्षा योजना की व्यवस्था की स्थानीय जिम्मेदारी श्री सुन्दरलाल बहुगुणा को दी गयी है। उनकी यात्रा उस क्षेत्र में चल रही है। गाँव-गाँव में संगठन खड़ा करने का सूत्रपात हो गया है। उत्तर प्रदेश सर्वोदय-मंडल के मंत्री, शान्ति सैनिक श्री ओमप्रकाश गौड़ का उस क्षेत्र में एक दौरा हो चुका है। दोनों के अनुभव प्रकाशित हो चुके हैं। अहिंसक सुरक्षा-योजना के लिए स्थानीय और अखिल भारतीय, और कोशिश यह भी होनी चाहिए कि अन्तर्राष्ट्रीय अभिक्रम जागृत हो। तीनों दिशाओं में कार्यारम्भ हो गया है। विस्तृत योजना बाद में प्रस्तुत की जायगी। उत्तरा खण्ड में काम करने वाले शान्ति-सैनिकों का पहला शिविर नवम्बर के द्वितीय सप्ताह में चमोली के आस-पास लिया जायगा।

शान्ति-व्यवस्था के अन्तर्गत हाल में लखनऊ विश्वविद्यालय में अशान्ति के अवसर पर शान्ति-प्रयास हुआ। विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थियों के प्रवेश-निषेध किये जाने पर अधिकारियों और विद्यार्थियों में संघर्ष का स्वरूप खड़ा हो गया, जिसमें अन्त में राज्य सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ा। विश्वविद्यालय में तथा उसके चारों ओर एवं शहर भर में कई स्थानों पर पी० ए० सी० पुलिस का पहरा बैठा दिया गया। कई आन्दोलनकारी विद्यार्थी पकड़ कर जेल में बन्द कर दिये गये। ऐसे अवसर पर तीन व्यक्ति—श्री ओमप्रकाश गौड़, श्री सुरेशराम भाई और ब्रह्मदेव बाजपेयी सम्बन्धित अधिकारियों मुख्य मंत्री, गृह मंत्री, और जेल तथा बाहर के विद्यार्थियों से मिले। सारी परिस्थिति का अध्ययन करके हमने प्रदेशीय सरकार से प्रार्थना की कि वे पी० ए० सी० को तुरन्त हटा लें और हम अपनी शान्ति-सेना के द्वारा शिक्षकों, अधिकारियों तथा विश्वविद्यालय की सम्पत्ति की सुरक्षा का जिम्मा उठायेंगे। हमने जेल में बन्द विद्यार्थियों को भी छोड़ने के लिए कहा। जेल में

संपादक : सिद्धराज ढड्ढा

वाराणसी : शुक्रवार | २४ फरवरी '६१ | वर्ष ७ : अंक २१

भूदान का सौम्यतर स्वरूप

विनोबा

[इस बार बिहार की पदयात्रा में विनोबा ने लोगों के सामने एक नया कार्यक्रम रखा है—"बीघे में कट्ठा", यानी हर जमीन-मालिक अपनी जमीन में से प्रति बीघा एक कट्ठा भूदान में दे। विनोबा ने जब भूदान आन्दोलन शुरू किया तो लोगों से छठे हिस्से की माँग की। अब वे बीघे में कट्ठा यानी बीसवें हिस्से की माँग कर रहे हैं, यह एक तरह से लोगों को पीछे हटने जैसा लगना स्वाभाविक था। पर विनोबा ने इस चीज को सौम्य से सौम्यतर की ओर बढ़ना कहा। यह क्यों—यह इस भाषण में उन्होंने बताया है। —सं०]

छह-सात वर्ष पहले हम बिहार में गये थे। वहाँ हमने लोगों के सामने दो बातें रखी थीं। एक तो मूल उद्देश्य यह बताया कि जमीन की मालकियत नहीं रहनी चाहिए। हम अहिंसक ढंग से उस मालकियत को मिटाना चाहते हैं। हम यानी आप-हम सब मिल कर। तो जमीन की मालकियत मिटाना यह हमारा लक्ष्य है। इसे सामने रख कर हमने कहा था कि छठा हिस्सा दान में दीजिये। कुछ लोगों ने अपना छठा हिस्सा दिया भी। काफी जमीन बिहार में मिली। लेकिन फिर भी अभी बहुत ज्यादा काम बाकी है।

इस बार की यात्रा में हमने बिहार से कहा कि आप हमें "बीघे में कट्ठा" यानी बीसवाँ हिस्सा दीजिये। इस पर एक कम्यूनिस्ट भाई ने हमें पत्र लिखा—'आपकी यह कैसी दुर्गति हुई है! आपने शुरू किया 'स्वामित्व-विसर्जन' के मंत्र से। उसके लिए शुरू किया छठे हिस्से से और अब आप बीसवाँ हिस्सा माँग रहे हैं। क्या यह आपकी अधोगति नहीं है ?" हमने उत्तर दिया कि भाई यह अधोगति नहीं है, यह ऊर्ध्वगति है। क्योंकि, हमने सिर्फ बीघे में कट्ठा नहीं माँगा है, हमारी एक और माँग है, हमने कहा है— "दान दो इकट्ठा, बीघे में कट्ठा" यानी कुल लोग दान दें। जितने मालिक हैं, उतने दान-पत्र ! आप ही सोचिये, इससे हवा नहीं बनेगी ? पहले हमारी जो माग थी, वह सौम्य थी। यह सौम्यतर माँग है। इसमें सक्रियता बढ़ी है या घटी ? क्योंकि अब इसमें तो हमें हरएक के पास जाना होगा और दान प्राप्त करना होगा। पहले क्या होता था ? एक भाई के पास हम गये। उसने दो सौ एकड़ दान दिया। बस हो गया ! दिन भर का काम हो गया। यह दान तो अच्छा है, लेकिन उससे ताकत नहीं पैदा होती। मान लीजिये, सारे गाँव के कुल किसानों ने दान दिया तो कितनी शक्ति प्रगट होगी ?

एक शर्त हमने और लगायी है। पहले हम 'पतित' जमीन लेते थे। जिसे बंगाल में 'पतित' कहते हैं, वैसी जमीन लेते थे। जिसको हम पहले 'पतितपावन' थे। अब पतितपावन नहीं हैं—इस बार हम अनुशासित बन गये हैं। इस बार हम खेत की जमीन का हिस्सा माँगते हैं, यानी खराब जमीन नहीं, अच्छी जमीन में आ रही, जमीन का बीसवाँ हिस्सा। एक तीसरी बात और है। इस बार हमने कहा है कि दाता ही बाँटेंगे, बीच में 'दलाल' नहीं रहेगा। भूदान का कार्यकर्ता आपको जिस काम में मदद जरूर करेगा, लेकिन देनेवाले आप ही। परिणामस्वरूप देने वाले और लेने वाले, दोनों के दिल जुड़ेंगे, एक होंगे। बीच में एजेंट रहता है तो दिल एक नहीं होता। इसलिए हमने उसे हटाया है। वह प्रचार के लिए आपके पास आयेगा, लेकिन दाता के हाथ से ही दान मिलेगा।

इसलिए मैं बीघे में कट्ठे वाली बात को सौम्यतर प्रक्रिया कहता हूँ। इसमें हरएक से लेना है, अच्छी जमीन लेना है और दाता को ही बाँटना है। परिणाम क्या होगा ? हवा बनेगी, जमीन अच्छी मिलेगी और क्रियाशीलता बढ़ेगी। इसे मैं सौम्यतर, सरलतर प्रक्रिया कहता हूँ।

कुछ लोगों ने हमसे पूछा कि क्या जिन्होंने दिया है, वह दुबारा देंगे ? मैंने कहा, यह कैसा सवाल है ? जिन्होंने पहले छठा हिस्सा दे दिया है, वे आज खाते हैं या नहीं ? खाते हैं तो देना भी चाहिए। और छठा हिस्सा दिया तो अब बीसवाँ हिस्सा देने में क्या तकलीफ होगी ? उन लोगों को बात जँच गयी। अभी बिहार में जो जमीन दान में मिली है, वह अधिकतर उन्होंने भी दी है, जिन्होंने पहले दी थी। जिन्होंने दान नहीं दिया, उनको देने का मौका दुबारा मिलता है। इसलिए वे दें। जिन्होंने दिया है, वे तो देंगे ही। इस तरह जिन्होंने दिया, वे भी देंगे और जिन्होंने नहीं दिया, वे भी देंगे। कुछ लोग पूछते हैं, आप तीसरी बार आयेंगे तो फिर माँगेंगे। हमने कहा, तीसरी बार आप खायेंगे न ? फिर भी इतना विश्वास दिलाता हूँ कि हम तीसरी बार भूदान नहीं माँगेंगे। तब हम ग्रामदान माँगेंगे। क्योंकि हर मनुष्य ने कट्ठा-कट्ठा जमीन दान में दी होगी तो गाँव में प्रेम तो बन गया। प्रेम बना तो ग्रामदान की बात कर सकते हैं।

हमारा आपसे निवेदन है कि छोटे-बड़े सब कार्यकर्ता, अलग-अलग पार्टी के लोग, सब मिल कर इसमें लगें। माँग बहुत थोड़ी है। बाबा ज्यादा माँगता नहीं है। प्रेम की माँग है। प्रेम से माँगा जाय तो कुल बंगाल देगा। ऐसे भ्रम में मत रहिये कि सरकार को जमीन दे दी है यानी "सीलिंग" हो गयी है, सो दान नहीं मिलेगा। हम कश्मीर में गये थे। वहाँ हमारे जाने से पहले "सीलिंग" हो गया था। साढ़े बारह एकड़ का 'सीलिंग' था, उसके बावजूद भी हमें वहाँ काफी दान मिला। दान और सीलिंग में फर्क है।

माँ बच्चे को सुलाती है और धीरे-धीरे थपथपाती है, इसका नाम है दान और बच्चे को तमाचा मार कर सुलाने की कोशिश, यह है 'सीलिंग'। तमाचा मारने से बच्चा सोयेगा नहीं, वह चिल्लायेगा। इसलिए सरकार को सीलिंग में जमीन मिलेगी तो भी दिल से दिल नहीं जुड़ेगा, बल्कि मुकदमेबाजी होगी। सार यह है कि दान और सीलिंग, दोनों की तुलना नहीं हो सकती। यह खूब ध्यान में रखना चाहिए।

कहते हैं कि सरकार को सीलिंग के बाद दो लाख एकड़ जमीन मिलेगी। इतना बड़ा काम करके सिर्फ दो लाख एकड़ जमीन मिलेगी !—इसे मैं "गुनाहबे-लज्जत" कहता हूँ। यानी नाहक तमाचा मारा ! मान लीजिये, सीलिंग के कारण ५० लाख एकड़ जमीन सरकार को मिलती है तो कुछ बात थी। हम कहते हैं कि चलो भाई तमाचा तो मारा, लेकिन परिणाम अच्छा आया। यहाँ दो करोड़ एकड़ जमीन है। बीघे में कट्ठे की माँग बहुत बड़ी नहीं है, पर वह पूरी हो तो बीसवाँ हिस्सा यानी १० लाख एकड़ जमीन मिलेगी और क्या फर्क होगा ! हमें जोत की जमीन मिलेगी। सीलिंग से सरकार को खराब जमीन मिलेगी और सरकार को मुआवजा भी देना पड़ेगा। हमें मुआवजा नहीं देना पड़ेगा। मुकदमेबाजी नहीं करनी पड़ेगी। सीलिंग के बाद तो 'लिटीगेशन'—मुकदमेबाजी चलेगी। और हम क्या करेंगे ? "अरे भैया, तुमने जमीन तो दी, अब पहले साल के लिए बीज भी दे दो।" ऐसा हम कहते भी हैं, लोग देते भी हैं। यानी कितना फर्क हो जाता है। सीलिंग के खिलाफ तो "स्वतंत्र पार्टी" खड़ी है। दान के खिलाफ कोई पार्टी बोलेगी ?

इसलिए हमारी अधोगति नहीं, ऊर्ध्वगति है। हमारी प्रक्रिया सौम्यतर है, उसमें क्रियाशीलता बढ़नी चाहिए, घटेगी नहीं।

[इस्लामपुर (बंगाल) ११-२-'६१]

कुरुचि का बहिष्कार और सुरुचि का निर्माण

दोहरा प्रयत्न करना होगा

हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार और 'धर्मयुग' साप्ताहिक के सम्पादक श्री धर्मवीर भारती ने पिछले १२ फरवरी के 'धर्मयुग' में 'कहनी-अनकहनी' स्तंभ के अन्तर्गत समाज में सिनेमा द्वारा व्याप्त अश्लीलता और कुरुचि की कड़ी आलोचना करते हुए लिखा है, "हर आदमी अश्लील पोस्टरों के विरोध से पूर्णतया सहमत होगा।" किन्तु साथ ही उन्होंने शंका व्यक्त की है कि इससे समस्या का समाधान नहीं होगा। आज यह कुरुचि समाज में गहरी जड़ पकड़ गयी। सिनेमा के पोस्टरों के साथ कैलेंडरों में देवी-देवताओं को अशोभनीय और अश्लील ढंग से चित्रित किया जाता है, यहाँ तक कि कथा पढ़ने वाले, कीर्तन करने वाले भी 'मोहे छोड़ गये बालम' की जगह 'मोहे छोड़ गये मोहन, हाय अकेला छोड़ गये' गाते सुने जाते हैं। श्री भारती के कहने के अनुसार केवल संघर्षात्मक आन्दोलन के बजाय समाज में सुरुचि जगाने का काम होना चाहिये—"इस ऊपरी समाधान के बजाय जरा धीरज, मेहनत और ध्यान से लोगों के मन में कलात्मक सुरुचि जमाने की कोशिश कीजिये, तो देखिये कि कुरुचि कैसे काई की तरह फट जाती है और निर्मल जल निखर आता है।"

जब विनोबाजी ने इन्दौर में अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ आवाज उठायी थी, तब वह एकाकी आवाज थी, किन्तु आज सर्वत्र इस पर चर्चा हो रही है। देश के विभिन्न शहरों में नागरिकों और खास तौर से महिलाओं ने इस आन्दोलन को उठा लिया है। सब लोग महसूस कर रहे हैं कि समाज में दिन-ब-दिन अभद्रता और कुरुचि बढ़ रही है, नैतिक मूल्यों की उपेक्षा की जा रही है। इन्दौर और अन्य स्थानों में विनोबाजी ने गहरी वेदना व्यक्त करते हुए मातृशक्ति को आवाहन किया कि वे 'शील-रक्षा' के लिए स्वयं आगे आयें। अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ जो आवाज उठायी जा रही है, वह केवल पोस्टरों तक सीमित है, ऐसा नहीं है। पोस्टर तो केवल प्रतीक मात्र है, यह तो समाज में व्याप्त समस्त अभद्रता और कुरुचि के खिलाफ आवाज है। आज हम देख रहे हैं, अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ इस हलचल ने समाज में फैली निष्क्रियता और जड़ता पर भी प्रहार किया है। सर्वत्र चर्चा, परिसंवाद, सभा और प्रस्तावों द्वारा यह माँग की जा रही है कि समाज में व्याप्त किसी भी प्रकार की अशोभनीयता सहन नहीं करना चाहिए। यह ठीक है कि केवल नकारात्मक आंदोलन से काम पूरा नहीं होगा। हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि समाज में सुरुचि जगाने की हर सम्भव कोशिश करनी चाहिए। इसके लिये देश के समस्त प्रबुद्ध और पढ़े-लिखे नागरिकों का कर्तव्य है कि वे इस अपना काम मानें और जनता में सुरुचि जगायें। अभद्रता और कुरुचि का बहिष्कार और कलात्मक सुरुचि पैदा करना, इस दुहरे प्रयत्न से ही समाज में सच्ची सौन्दर्य-दृष्टि जगेगी।

—मणीन्द्रकुमार

धरती का अभिशाप कटेगा

ऋषे !

तुम्हारी सतत साधना मंगलमय अभिलाषा।
करती है सँवरण मही का बन कर स्वर्णिम आशा॥
वह प्रकाश का पुंज, स्नेह, सौन्दर्य, सत्य का स्रोत।
प्रवहमान हो भर देगा धरती माता की गोद॥
भर जावेगी माँ धरती की गोद योग्य लालों से।
विहँस पड़ेगी धरा किलकते हुए मधुर बालों से॥
धरती का अभिशाप कटेगा वरद हस्त छायेगा।
प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त कर नया सूर्य आयेगा॥
बुद्धिवाद, आदर्शवाद, विज्ञानवाद का काल।
विभीषिका बन कर धरती का बना हुआ है भाल॥
छिन्न-भिन्न होकर बिखरेगा जब प्रकाश छायेगा।
भावपुंज रागात्म तत्त्व यह धीरे से आयेगा॥
हे यति प्रवर ! तुम्हारा मंगलमय अभियान प्रयाण।
मन्द-मन्द संचरित धरा पर यह अभय वरदान॥
पाने रहें सदा हम तेरा, यह संसार महान।
बने, सतत संघर्ष-पंथ पर चमक उठे 'भूदान'॥

—अमरनाथ पाण्डेय

नागरी लिपि द्वारा तेलुगु सीखिये : १३

पिछले पाठ में गुणवाचक और संख्यावाचक विशेषणों के उदाहरण दिये गये। अब यहाँ क्रियावाचक विशेषण के उदाहरण दे रहे हैं।

धातु के साथ 'चुन्न', 'चुन्नट्टि' आदि प्रत्यय जोड़ देने से क्रियावाचक विशेषण बनते हैं।

बोलता हुआ = (माटलाडु + चुन्न) = माटलाडुचुन्न,
(माटलाडु + चुन्नट्टि) = माटलाडुचुन्नट्टि

पढ़ती हुई = (चदुवु + चुन्न) = चदुवुचुन्न,
(चदुवु + चुन्नट्टि) = चदुवुचुन्नट्टि

सूचना : भूतकाल में 'इन' प्रत्यय लगाया जाता है।

खाया हुआ = (तिनु + इन) = तिनिन
गया हुआ = (वेल्लु + इन) = वेल्लिन
आया हुआ = (वच्चु + इन) = वच्चिन

सूचना : यह और ये के लिए 'ई' तथा वह और वे के लिए 'आ' का प्रयोग करते हैं।

हिन्दी	तेलुगु	हिन्दी	तेलुगु
यह पुस्तक	ई पुस्तकमु	वह कुर्सी,	आ कुर.
ये लोग	ई मनुष्युलु	वे औरतें	आ स्त्री
यह, ये	ई, ई	वह, वे	आ, (ति
ऊँचा	येत्तैन	मीठा	तिय्यनि
बुरा	चेड्ड	छोटा	चिन्न
अच्छा	मंचि	बड़ा	पेद्द, गोप्प
लंबा	पोड्वइन	चौड़ा	वेडल्पइन
नाटा	पोट्टि	पतला	सन्ननि, पलुचनि
गहरा	लोतैन	कड़ुवा	चेदुअइन

विहार-बंगाल की सीमा पर

१० फरवरी को विनोबाजी बिहार प्रदेश से बंगाल में प्रविष्ट हुए। बिदाई देने वाले बिहार के कार्यकर्ता और स्वागत करने वाले बंगाल के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए विनोबाजी ने कहा :

"यह अधिक बताने का अवसर नहीं है। यह तो प्रेम से अभिवादन करने का समय है। चारू बाबू ने कहा कि बंगाल पर हमारा प्रेम है। लेकिन केवल प्रेम ही नहीं, आदर और विश्वास भी है। आदर इसलिए है कि बंगाल के महापुरुषों का हमारे सिर पर बहुत ऋण है। बचपन में हम उधर दूर महाराष्ट्र में रहते थे, फिर भी हमारे हृदय को बनाने में बंगाल के महापुरुषों का बहुत ही उपकार रहा है। इसलिए हमें इस प्रदेश के लिए बहुत आदर है। विश्वास इसलिए है कि यहाँ के लोगों के दिल में भावना है। उस भावना को योग्य दिशा मिलेगी तो आश्चर्यजनक काम बंगाल कर सकता है ऐसा हमें विश्वास है। हम प्रेम, आदर और विश्वास तीनों लेकर यहाँ प्रवेश कर रहे हैं।

बिहार से हम विदा हो रहे हैं। लेकिन बिहार वाले जानते हैं कि हमने बिहार पर कितना प्यार किया है। उनके बीच हमने सवा दो साल बिताये हैं। इस मर्तबा की बिहार-यात्रा में जो दर्शन हमें हुआ, वह अद्भुत ही था। इसीलिए हमने कहा है कि बिहार हमारे बाप की इस्टेट है। यह वचन सिद्ध होगा, ऐसा हम मानते हैं। अभी हम किधर भी जायेंगे तो भी बिहार-बंगाल आदि पूर्व भारत का जो हिस्सा है, उसी में हमारी यात्रा होगी। काशी से हमने बिहार में प्रवेश किया। दरअसल काशी ही पूर्व भारत का आखिरी स्थान है। और काशी के इधर सारा पूर्व-भारत है। ऐसा ही हमारे पूर्वजों ने भी माना था। इसलिए वे किसी एक जिले में रहते थे, तो भी उसका असर दूसरे जिले पर होता था।

कल ही छपरा से हमें तार आया कि बीघे में कट्ठा की हिसाब से सो दान-पत्र द्वारा साठ एकड़ जमीन प्राप्त हुई है। अब हम छपरा तो नहीं गये थे, पर छपरा पर असर हुआ। मतलब, सारा बिहार एक ही है। उसी तरह से मैं यह भी कहूँगा कि पूर्व भारत और समग्र भारत एक ही प्रदेश है। लेकिन खैर। पूर्व भारत तो एक है ही। इसलिए एक-दो साल हमारी यात्रा कहीं भी हो, पूर्व भारत में ही हम रहेंगे। पूर्व भारत बिहार, बंगाल, असम, उड़ीसा तो है ही मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि पूर्व पाकिस्तान भी पूर्व भारत में है। हमारी आखिरी दृष्टि हम कहीं भी होते हैं, तो भी हम विश्व-ही होते हैं। इसलिए देश को हमने मंत्र दिया 'जय-जगत्'। आशा करते हैं उस मंत्र के लायक हम अपना जीवन बनें।"

जगत् स्फूर्तिः जीवन सत्यशोधनम्

भूदानयज्ञ

नागरी लिपि*

[स]र्वोदय के काम के लीअे [ग]हराअी में अुतरीये

सर्वोदय का काम गहराअी [में ग]ये बगैर नहीं बनेगा। अीस [लि]हाज से जब मैं सोचता हूं, [तो] आशा दीखाअी देती है की [दे]श के वातावरण में अेक अैसा [प्र]वाह गुप्तरूपेण वीद्यमान [है] की सारी चीजें आयेंगी और [जा]येंगी। लेकीन अीस पर कोअी [प्र]भाव नहीं पड़ने वाला है। [अ]नेक साम्राज्य आये और [ग]ये, अुनका कोअी पता नहीं, [अ]ुनका कोअी असर जनता के [हृ]दय पर नहीं पड़ा। हां, जीस [ज]माने में वे आये, अुस जमाने [मे]ं जनता को सुखी या दुःखी [क]र गये। सीकंदर से लेकर अंग्रेजों तक अनेक हमले हुअे, [ल]ेकीन कुछ अैसा अंतरप्रवाह [ह]ै की वे लोकहृदय को छू [न]हीं सके। आज लाखों लोग कुम्भ-मेले में आते और ठंडे [ज]ल में नहाते हैं। अुन्हें आप [क]ीतना ही समझाअीये की 'पानी [स]े पाप नहीं धुलते' आदी, पर [व]े नहीं मानेंगे। हां, यह बात [स]ही है की अगर हम समझायें [की] साबुन से मैल धुल जाता [ह]ै, तो साबुन से नहा लेंगे। [ल]ेकीन जब तक आप अुन्हें [दू]सरा रास्ता नहीं बताते, तब [त]क अुनपर अीसका कोअी असर [न]हीं पड़ता।

अगर हींदुस्तान के अीस [ग]हरे अंतरप्रवाह को पकड़ [स]कते हैं, तो काम बन [स]केगा और पकड़ नहीं आती, [तो] काम नहीं बनेगा।

—वीनोबा

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

साम्राज्यवाद के कफ़न की आख़िरी कील

गत सप्ताह कांगो में जो दुखद घटना घटी है, उस पर विचार करते समय कई बातें सामने आती हैं। जहाँ तक उस घटना के शिकार होने वाले मुख्य व्यक्ति लुमुम्बा का सवाल है, उसके बारे में और जो कुछ भी कहा जाय, कम-से-कम यह निर्विवाद है कि कांगो में राष्ट्रीय भावना जगाने का प्रमुख श्रेय उसी को था। गत जून में जब कांगो की आजादी की घोषणा हुई, तब से दुनिया का एक अत्यन्त दिल्चस्प, पर साथ ही अत्यन्त खेदजनक राजनैतिक नाटक उस देश के रंगमंच पर खेला गया। लुमुम्बा के खिलाफ शुरू से ही आंतरिक और बाहरी षड्यन्त्र रचे गये और आखिरकार षड्यन्त्रकारियों ने उसकी हत्या कर दी—और वह भी बड़े निर्मम ढंग से। दुर्भाग्यवश राजनैतिक हत्याएँ इतिहास में कम नहीं हुई हैं, पर लुमुम्बा की हत्या जिस तरह 'दिनदहाड़े' सारी दुनिया की आँखों के सामने और सारे सभ्य समाज के विरोध को जिस प्रकार चुनौती देकर की गयी, वह सचमुच आश्चर्यजनक है। पिछले दो-तीन सप्ताह से बराबर यह सम्भावना दुनिया के अखबारों में और दुनिया के राजनैतिक क्षेत्रों में प्रकट की जा रही थी कि लुमुम्बा की जान को खतरा है और षड्यन्त्रकारी की शायद उसकी हत्या कर देंगे। पर दुनिया असहाय की तरह खड़ी देखती रही और इस हत्या को न बचा सकी। शायद इसका यही कारण था कि कोई भी बाहरी शक्ति अगर इस मामले में दखल देती तो सारे विश्व में युद्ध की आग भड़क उठती, ऐसा सब महसूस करते थे। हत्या करने वाले षड्यन्त्रकारी इस सम्भावना से परिचित थे और उन्होंने इसका फायदा उठाया। लुमुम्बा की हत्या इस बात का सबक सिखाती है कि दुनिया में आज जो दो बड़े 'दानव' हैं, उनके आपसी झगड़े के बीच छोटे-छोटे राष्ट्र और उन राष्ट्रों के राजनैतिक पुरुष किस प्रकार पिस सकते हैं।

पर व्यक्तिगत या स्थानीय पहलू के अलावा लुमुम्बा की हत्या का एक दूसरा महत्त्व का पहलू और है। पिछले १२ महीनों में अफ्रीका में यह दूसरी बड़ी दुखद घटना है, जिसने सारी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है। गत वर्ष मार्च में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति की समर्थक वहाँ की सरकार ने जिस निर्दयता के साथ निहत्थे अफ्रीकन लोगों को मशीनगन से भूना, उससे रंगभेद या इस प्रकार की किसी भी संकुचित नीति की भयंकरता और वीभत्सता सारी दुनिया के सामने प्रकट हो गयी। आगे आने वाला इतिहास इस बात को साबित करेगा कि जोहान्सबर्ग के पास शार्पवील का वह हत्याकांड रंगभेद की संकुचित नीति के कफ़न की आख़िरी कील थी। इसी तरह अफ्रीका का यह दूसरा हत्याकांड, जिससे सारी दुनिया सिहर उठी है, शायद साम्राज्यवाद के कफ़न की आख़िरी कील साबित होगा। मानव-जाति के अब तक के इतिहास में न्याय और स्वतन्त्रता के लिए हजारों बलिदान हुए हैं और उन बलिदानों ने मानवता की ज्योति को जगाये रखा है। लुमुम्बा का बलिदान उसी परम्परा की सबसे ताजा कड़ी है।

—सिद्धराज

समाज-विरोधी कार्रवाइयों के खिलाफ जनमत

राजनैतिक दाँव-पेंच निर्दोष चीज को भी दूषित कर देते हैं। अभी हाल ही में जो जनगणना हुई है, उस अवसर पर पंजाब में सम्बन्धित दलों की ओर से इस बात का काफी प्रचार किया गया कि लोग अपनी मातृभाषा अमुक ही लिखायें। अपने-अपने राजनैतिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा को लेकर पंजाब में काफी विवाद पिछले दो-तीन सालों से चल रहा है। चूँकि आजकल फैसले अक्सर बहुमत-अल्पमत के आधार पर होते हैं, इसलिए अपना-अपना स्वार्थ साधने के लिए सम्बन्धित पार्टियाँ लोगों का बहुमत अपनी ओर खींचने की कोशिश करती हैं। जनगणना के मौके को भी इन लोगों ने अपना साधन बनाने की कोशिश की और तरह-तरह के प्रचार के द्वारा बेचारे अनपढ़ लोगों पर एक या दूसरी ओर से अपनी मातृभाषा पंजाबी या हिन्दी लिखवाने का दबाव डाला गया। जनगणना में जो आँकड़े या तथ्य इकट्ठे किये जाते हैं, उनके आधार पर आगे चल कर महत्त्वपूर्ण योजनाएँ बनती हैं और बड़े बड़े फैसले होते हैं। ये फैसले निष्पक्ष और सही हों, ऐसा अगर हम चाहते हों तो जनगणना जैसी चीजों में इस प्रकार असर डालने की कोशिश करना उचित नहीं है। एक तरह से यह समाज-विरोधी कार्य है। किसी की मातृभाषा क्या है, इसके लिए भी क्या किसी को कहने की या याद दिलाने की जरूरत है। 'मातृभाषा' शब्द से ही यह जाहिर है कि यह वह भाषा है, जो किसी व्यक्ति के साथ बचपन में उसकी माता बोलती थी अथवा परिवार में बोली जाती थी। पंजाब सर्वोदय-मण्डल ने उस प्रान्त के लोगों को यह चेतावनी देकर एक बड़ी सार्वजनिक सेवा की है कि वे किसी व्यक्ति या संस्था के दबाव में आकर अपनी मातृभाषा गलत न लिखायें। जैसा सर्वोदय-मण्डल ने अपने परचे में कहा है, मातृभाषा के मामले में 'न कोई किसी पर दबाव डाले, न कोई किसी के दबाव में आये।' जो लोग या दल इस मामले में दूसरों पर दबाव डालने की कोशिश करते हैं, वे एक तरह से नैतिक और सामाजिक अपराध के दोषी हैं। वे उन आँकड़ों को ही गलत करना चाहते हैं, जिनके आधार पर समाज महत्त्व के फैसले करता है। जाग्रत जनमत ही इस प्रकार की समाज-विरोधी कार्रवाइयों का मुकाबला कर सकता है, इसलिए पंजाब सर्वोदय-मण्डल ने सही दिशा में कदम उठाया है।

—सिद्धराज

शहरों के आकर्षण का दूसरा पहलू

आलीशान इमारतें, बढ़िया सड़कें, रोशनी की जगमगाहट, शानदार मोटरों का जमघट, सोने-चांदी के जेवरों और हर तरह के साज-सामान से भरी हुई चमचमाती दुकानें, समारोहों और मनोरंजनों की भरमार, खिलखिलाहट, मुस्कराहट, अभिवादन और शिष्टता का अतिरेक, भीमकाय कारखाने, व्यवसायगृह तथा कार्यालय, लाखों लोगों की व्यस्ततापूर्ण दौड़-भाग—ये शहरी जिंदगी के मोहक और मद भरे आकर्षण हैं, जो देश-विदेश के कोने-कोने से लोगों को अपनी ओर खींचते हैं। जितने खिंच कर आ जाते हैं, उनसे कई गुने शहरों में आने के लिए छटपटाते रहते हैं, वहाँ सपना देखते रहते हैं।

अभी हाल में बृहत्तर बंबई के जीवन का अध्ययन करने के लिए तियालीस लाख लोगों के, सारे देश की आबादी के दशमांश के जीवन की निकट से जानकारी करने के लिए-एक अध्ययन-मण्डल की नियुक्ति की गयी थी। उसने जो हाल ही में रिपोर्ट दी है, उसका एक अंश इस प्रकार है :—

"बालकों तथा नागरिक-समूह के खेल के मैदानों और मनोरंजन के लिए स्थानों का अत्यधिक अभाव; आगामी पीढ़ी के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त पाठशाला-भवन; सारी आबादी के एक-तिहाई भाग के लिए रहने के मकानों की कमी और इसी के कुप्रभाव, जो थोड़ी आमदनी वाले लोगों को ही पूरी तरह भुगतने पड़ते हैं; लाखों आदमियों के रहने की गंदी बस्तियों की अमानवीय और अपमानपूर्ण स्थिति; लाखों लोगों की जबर्दस्ती अपने परिवार तथा पारिवारिक जीवन से अलग और दूर रहने की परिस्थिति तथा सामाजिक जीवन पर इस अभाव के पड़ने वाले अनिवार्य कुप्रभाव; अन्तहीन झगड़े, मुकदमेबाजी और 'शीत-युद्ध' की लगातार परिस्थिति जो मकान-मालिकों और किरायेदारों में बनी रहती है, पानी के नलों और पेशाबघरों व पाखानों के सामने लगने वाली

चम्बल घाटी की समस्या

प्रेम का रास्ता विफल होता है, तो यह मानवता की असफलता है

पुलिस की ग़ैरकानूनी ज्यादतियाँ बंद हों

—जयप्रकाश नारायण

[गत ९ फरवरी, '६१ को भिण्ड की सार्वजनिक सभा में दिये गये जयप्रकाशजी के विचारप्रेरक भाषण के मुख्य अंश। —सं०]

मेरा मानना है कि चम्बल घाटी की समस्या पेचीदा और मुश्किल है। जब से यहाँ आया हूँ, तब से यहाँ की परिस्थिति समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ। चम्बल घाटी शांति-समिति के सदस्यों से और यहाँ के विभिन्न राजनैतिक दलों के लोगों व सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से अभी जो मैंने सुना, उस पर से कोई निश्चित राय तो नहीं दे सकता, पर इतना जरूर कहूँगा कि प्रेम और अहिंसा के रास्ते के लिए यहाँ का प्रश्न आज अन्तर्राष्ट्रीय कसौटी का है।

बाबा का जब यह काम शुरू हुआ, तब मैं योरोप में था। वहाँ के समाचार-पत्रों ने इस घटना को बड़ा ही महत्वपूर्ण और चमत्कारिक माना, पर यह देख कर अजीब लगा कि यहाँ इस घटना को विशेष महत्त्व नहीं दिया और कुछ लोगों ने बिना जानकारी और अध्ययन के भी इसकी आलोचना की है।

कुछ दिनों पहले मध्यप्रदेश के डी० आई० जी० पुलिस श्री रुस्तम का बयान अखबारों में छपा, जिससे काफी परेशानी बढ़ी। वह बयान भी नासमझदारी का एक नमूना ही था। आत्मसमर्पण की घटना मानव-इतिहास का एक नया परिच्छेद है। स्वराज्य की लड़ाई में हम गांधीजी के प्रेम और करुणा का रास्ता आँखों देख चुके हैं, फिर हाथ-कंगन को आरसी क्या? यह एक नई दिशा है, जो गांधीजी के अहिंसक आन्दोलन से साबित हो चुकी है। यदि यह मानव-कल्याण का मार्ग है तो वह आना चाहिए। यह भविष्य का आशा-मार्ग है, तो उसमें किसी किस्म की रुकावट डालना अन्याय है। आज दुनिया भर में चारों तरफ से शांति-शांति की बात जोरों से चल रही है। हमें तय करना होगा कि संहार की तरफ जाना है या सत्य, प्रेम, करुणा, अहिंसा और सहयोग की ओर।

यहाँ इस क्षेत्र में बीस बागियों ने आत्मसमर्पण किया, इक्कीसवाँ नहीं आया तो विनोबा असफल हुआ, ऐसा मैं नहीं मानता। ईसा और गांधीजी ने दुनिया को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया अगर ईसा की बात आज ईसाई और गांधी की बात हम अमल में नहीं लाते, तो इसमें उन महापुरुषों की असफलता नहीं है। उनका काम हम सबका है, सब सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का है। आज यदि प्रेम का रास्ता विफल होता है, तो यह मानवता की असफलता है।

यहाँ इस क्षेत्र में दमन काफी अरसे से चल रहा है। दण्ड-शक्ति से समस्या हल नहीं हो रही है। कोई जन्मजात डाकू नहीं होता। कुम्हार जिस तरह मिट्टी से तरह-तरह के बर्तन बनाता है, उसी तरह मौजूदा समाज आदमियों को बनाता है। मेरे एक अमेरिकन प्रोफेसर की 'थ्योरी' है कि बीमार को जेल होनी चाहिए और गुनहगार को अस्पताल भेजना चाहिए। आपका लड़का अगर बिगड़ जाता है, तो क्या आप उसे अपने हाथ से फाँसी देते हैं?

यहाँ भी समस्या को देखने की दृष्टि प्रबुद्ध और उन्नत होनी चाहिए। अठारहवीं सदी का दण्ड-शासन आज नहीं चलने वाला है। क्या आज दाँत के बदले दाँत और आँख के बदले आँख फोड़ना पसन्द करेंगे? परशुराम का अवतार हुआ, वे तो परशा रख कर चले गये, पर लगता है कि परशा अपनी जगह पर जहाँ का तहाँ है। सुधार, सजा और जेल से ही नहीं हो सकता। आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों ने कितना दमन किया, पर उन्हें यहाँ से जाना ही पड़ा। उसी तरह आज भी आतंक, दमन और दण्ड नहीं टिकने वाला है। यह नीति कब तक टिकेगी! जब तक जनता सोयी है, तभी तक टिकने वाली है। उसके जगते ही इसका खात्मा होने वाला है। आज रूस में केवल राजनैतिक कैदियों को छोड़ कर अन्य सब सामान्य कैदियों के साथ सज्जनता का व्यवहार किया जाता है, उन्हें उद्योग सिखाये जाते हैं। 'प्रोबेशन' पर घर पर भेजा जाता है, उन्हें एक भला नागरिक बनाने का हर सम्भव प्रयत्न किया जाता है, पर यहाँ भारत का अजीब हाल है और यह भी तब, जब कि यहाँ के शासकों पर गांधीजी की छाप भी है!

ऐसा समझना कि शासन के द्वारा समस्या नहीं सुलझी और विनोबाजी को अनायास श्रेय मिल गया, इससे पुलिस की कुछ प्रतिष्ठा कम हुई तो मैं इसे बेकार की बात समझता हूँ। यहाँ व्यक्ति का प्रश्न नहीं, विचार का प्रश्न है। शासन की नहीं, वरन् हिंसा और दमन की मर्यादा घटी है।

विनोबा तो महान् हैं ही, उनकी भलाई-छोटाई का क्या सवाल? उनका तो पीर तप है। वे वन में नहीं, जन-जन में जाकर काम कर रहे हैं, तपस्या कर रहे हैं।

पुलिस मर्यादा की बात करती है, तो मैं पूछना चाहूँगा कि क्या मार-पीट कर गवाह बनाना, झूठी गवाहियाँ दिलाना पुलिस की मर्यादा में है? किस 'पेनल कोड' में लिखा है कि सत्य को छिपाया जाय?

आत्मसमर्पण हुआ इसी को न बता कर कहा जाय कि विनोबाजी इस क्षेत्र में आये इसकी भी पुलिस के एक बड़े जिम्मेदार अफसर को जानकारी नहीं, जब कि उन दिनों उसकी 'ड्यूटी' उसी काम की देख-भाल में थी! भरी अदालत में कोई पुलिस अधिकारी ऐसी असत्य बात कह जाय, इसके लिए कोई दफा होनी चाहिए। जज को उस पर मुकदमा चलाना चाहिए। रुस्तमजी ने जो बयान प्रकाशित किया, उससे क्या लाभ हुआ? हर आदमी के अन्दर सद् और असद् का महाभारत मचा रहता है, देवासुर संग्राम छिड़ा रहता है। यदि किसी में पुण्य, धर्म, नेकी का विचार प्रकट हुआ तो पुलिस के मानी यह नहीं है कि उसे सता-सता कर मार डाले। सत्य से आँखें बंद करना तो किसी पुलिस-कोड में नहीं है। कानून में कम उम्र वाले को फाँसी नहीं होती। गुस्से में हुए गलत काम की सजा में रिआयत दी जाती है।

फिर इन आत्म-समर्पणकारियों का क्या यह कोई गुनाह है कि इन्होंने विनोबाजी के समक्ष आत्म-समर्पण किया? इनको एक मुकदमे से छूटने पर दूसरे में फँसाने के लिए बिजली के झटके लगाये जाते हैं। इनके पक्ष में आये गवाहों को मारा-पीटा जाता है। जिन्होंने जान हथेली पर रख कर बन्दूकें रख दीं, आत्म-समर्पण किया उनके साथ इन्सान का बर्ताव होना चाहिए। अन्य सब डाकुओं के जैसा उनके साथ पेश आना अहिंसा और विनोबा के मुँह पर थप्पड़ है। चाहे जिस तरह से काम निकालना कानून का गला घोंटना है।

मैं यह नहीं कहता कि विनोबा के चन्द लोग इस समस्या को हल कर लेंगे। मेरे कथन में कोई विरोधाभास नहीं है। मैं मानता हूँ कि विनोबा का मार्ग सही है, पर मुट्ठी भर शांति-सैनिक कहाँ-कहाँ क्या करेंगे? इसके लिए सबको इकट्ठा होना पड़ेगा। मिल कर इस समस्या पर भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से विचार करके इसे हल करना होगा।

यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान के टुकड़ों का ही नहीं, राष्ट्रीय महत्त्व का है। समस्या के हल के लिए और क्षेत्र विकास के लिए इन तीनों प्रदेशों के अलावा केन्द्र को भी सोचना होगा। यह कोई जादू का काम नहीं है, लोक-शक्ति और समाज-शक्ति का सवाल है। समाज में जो जादू की शक्ति है उसे जगाना होगा।

इसके लिए तीन बातें आवश्यक हैं :

(१) सब मिल कर विचार करके एक कार्यक्रम बनायें। मतभेद का प्रतिशत सदैव अधिक रहता है, पर विरोध का ढोल पीट-पीट कर हम कटुता बढ़ाते रहते हैं।

(२) इस समस्या का समाज-शास्त्र की दृष्टि से व्यापक अध्ययन हो।

(३) आत्म-समर्पणकारी बागियों के परिवारों की देखभाल की जाय। आदमी को दुश्मन नहीं बनाना उसकी बुराई को अच्छाई में बदलना है।

अन्त में मैं भिण्ड, लश्कर, अम्बाह, आगरा के उन वकीलों को धन्यवाद देता हूँ, जो अपनी कमाई छोड़ कर इनकी निःशुल्क पैरवी कर रहे हैं। जनता से प्रार्थना है, यहाँ उपस्थित लोगों से निवेदन है कि वे अपने घर में शांति-पात्र रखें और उसमें एक नया पैसा या एक-एक मुट्ठी अन्न डालें। जय-जगत्!

●

लम्बी कतारों और झगड़ों की शर्मनाक और भय पतनयुक्त हालत, लाखों लोगों का प्रति दिन काम पर आने-जाने के लिए डेढ़-डेढ़, दो-दो घण्टों तक भीड़ भरी रेलगाड़ियों में सफर; शहर भर में अत्यन्त अपर्याप्त सड़कों पर तेजी से आने-जाने के लिए प्रयत्नशील सवारियों और पैदल चलने वालों का विशाल समूह और उसमें सैकड़ों जगहों पर रुकावटों से होने वाली झुंझलाहटें और बदमजगियाँ—यह नंगा चित्र है उस जिंदगी का उस हालत का, जिसमें भारत के एक प्रधान शहर की ४२ लाख जनता को सामान्यतः रहना पड़ता है।"

यह हमें ठंडे दिल और दिमाग से सोचने के लिए चुनौती है कि हम किधर जाना चाहते हैं।

—जवाहिरलाल जैन

जन-जागृति और जन-संगठन के लिये क्या करें?

धीरेन्द्र मजूमदार

[अहिंसक क्रान्ति के लिए कटिबद्ध कार्यकर्ता के जीवन-निर्वाह का क्या जरिया हो, इस सवाल पर पिछले अंक में धीरेन्द्रभाई के पत्र का सबंधित अंश और उस पर अपने कुछ विचार हमने प्रकाशित किये थे।

कार्यकर्ता का मुख्य काम लोगों की अपनी शक्ति को जागृत करना और उसे सतत जागरूक रहने के लिए संगठित और ठोस बनाने का है, जिससे वह किसी प्रकार की बाहरी केन्द्रित सत्ता—चाहे वह शासन की हो या आर्थिक—के शोषण का शिकार न बन सकें। इसलिये तर्कसंगत और आदर्श स्थिति यही हो सकती है कि कार्यकर्ता नाम से भी कोई व्यक्ति या वर्ग सामान्य नागरिक से भिन्न समाज में न रह जाय। अगर कार्यकर्ता के रूप में कोई अलग वर्ग खड़ा होता है, तो समाज स्वावलम्बी न होकर कार्यकर्ता-आश्रित रह जायगा। इसलिये आखिरकार कार्यकर्ता जैसा कोई व्यक्ति अलग न रहे, यही इष्ट है। इसका फलित यही है कि आज जो अहिंसक क्रान्ति का कार्यकर्ता है उसे यह कोशिश करनी चाहिये कि वह जल्दी-से-जल्दी नागरिक की भूमिका में आ जाय—यानी यथासंभव अपने श्रम पर आधारित हो। बीच की स्थिति में या अपनी मेहनत में जो कमी रहे उसकी पूर्ति वह भले ही जनता के प्रेम से प्राप्त 'प्रसाद' से कर ले, पर उसका मुख्य प्रयत्न श्रम-आधारित स्वावलम्बी जीवन का ही होना चाहिये। इस तरह स्वावलम्बी जीवन की कोशिश में जनता को जागृत और संगठित करने के काम के लिये पर्याप्त अवकाश नहीं मिलेगा ऐसी शंका उठना वाजिब है। इसका उपाय जैसा विनोबा ने सुझाया है, यह है कि एक-एक क्षेत्र में दो-दो, चार-चार कार्यकर्ताओं की टोली हो जिनमें कुछ स्थावर हों, कुछ जंगम, या सब बारी-बारी से दोनों काम करें। मुख्य बात यह है कि जनता को यह भरोसा होना चाहिये कि ये लोग बाहर से वेतन पाकर 'सेवा' करने वाले 'कार्यकर्ता' नहीं हैं, हमारी ही तरह सामान्य नागरिक हैं, पर जिनका एक विशिष्ट ध्येय है।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि इस तरह जो कार्यकर्ता गांवों में बैठें वे जनशक्ति को जागृत और संगठित करने के लिए क्या करें। इस सवाल के जवाब में धीरेन्द्रभाई के पत्र का साथ का दूसरा अंश मददगार साबित होगा। धीरेन्द्रभाई ने सामूहिक 'कटनी (फसल-कटाई) यज्ञ' का जो कार्यक्रम उठाया है और जिसका प्रयोग उन्होंने पिछले बरस सफलता के साथ किया था, उसमें जन-जागृति, जन-संगठन और साथ ही पुराने सामाजिक मूल्यों के बदलने की बहुत संभावनाएं हैं। अपने पत्र के इस अंश में धीरेन्द्रभाई ने इन संभावनाओं की विस्तार से चर्चा की है। आशा है, इस प्रयोग को जगह-जगह कार्यकर्तागण उठायेंगे और अपने जो अनुभव हों वे हमारे साथ बांटेंगे। —सं०]

बिहार के देहातों की स्थिति ऐसी है कि करीब-करीब सारी जमीन बहुत थोड़े से लोगों के पास है, और बाकी सब भूमि-हीन हैं। इसलिए हम जो अन्न-संग्रह करते हैं, वह कुछ लोगों के पास से ही मिल सकता है। अतः अगर सर्व-जन-आधार सिद्ध करना है तो स्पष्ट है कि अन्नदान की अपेक्षा श्रमदान का कोई तरीका निकालना होगा। अपने गांव के विभिन्न निर्माण-कार्य के लिए तो गांव के लोगों का श्रमदान प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन क्षेत्र भर के लोगों से श्रमदान की प्राप्ति का स्वरूप क्या हो, यह सवाल है। मैंने फसल-कटनी के रूप में इसे संगठित करने का सोचा।

फसल-कटनी का विचार मेरे लिए नया नहीं है। यों तो पिछले ६-७ साल से मैं साथियों को, तथा अपने भाषणों में, इसके बारे में कहा करता था, लेकिन पिछले दो वर्षों से इसके लिए सक्रिय कार्यक्रम बनाने लग गया था। यहीं आकर इसको एक एक व्यवस्थित रूप दिया और पिछले अगस्त महीने में १८ पड़ावों पर १५ स्थानों में कटनी के लिए कुल २४०० नागरिकों का श्रमदान मिला। ३ पड़ावों पर वर्षा के कारण यह अनुष्ठान नहीं हो सका।

कटनी-यज्ञ की रूपरेखा

व्यवस्था यह रखी थी कि तीसरे पहर गांव में पहुंच कर जन-सभा में विचार समझाया जाय और रात को विशेष लोगों से उसकी चर्चा की जाय, ताकि सुबह काफी लोग श्रमदान में भाग ले सकें। मैं उनको जो विचार समझाता था, उसका सार इस प्रकार है :

चूंकि प्राचीन व्यवस्था के अनुसार विभिन्न वर्गों के लिए विशिष्ट कर्म सुरक्षित न रह कर आज हरएक के लिए हरएक काम का अवसर खुल गया है, इसलिए हर मनुष्य के लिए ऊंची-से-ऊंची शिक्षा प्राप्त करना इस युग की आकांक्षा तथा आवश्यकता दोनों ही बन गयी है। इसके बिना खुली प्रतियोगिता (ओपन कम्पीटीशन) में कामयाब नहीं हो सकते। दूसरे, चूंकि मताधिकार सार्वभौमिक हो, इसलिए भी आवश्यक है कि १८ वर्ष और उससे ऊपर के हरएक स्त्री-पुरुष को इतनी शिक्षा मिले कि वह विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के घोषणा-पत्रों में से उनके राष्ट्रीय तथा वैदेशिक नीति संबंधी आर्थिक तथा राजनैतिक विचार क्या हैं, यह अच्छी तरह से विश्लेषण कर सके। निःसंदेह काफी उच्च शिक्षा के बिना यह योग्यता हासिल नहीं हो सकती। सबको उच्च शिक्षा मिलने के लिए शिक्षा-पद्धति ऐसी होनी चाहिए कि जो जिस काम में लगा हुआ है, उसी धंधे से ज्ञान प्राप्ति का अवसर निर्माण हो। साथ ही तालीम के मूल तत्त्व भी वहीं तक जनता समझ सके, समझाने की कोशिश मैं करता था। इस प्रकार काफी विस्तार से ग्रामभारती का विचार बतला कर अन्त में उसके प्रयोग के लिए लोग श्रमदान दें, इसकी अपील करता था। इसके लिए कटनी ही क्यों इसके पीछे जो बुनियादी विचार है, उसे भी समझाता था।

मैं उनसे कहता था कि मैं मुख्यतः तीन प्रश्नों का हल करना चाहता हूं :

(१) स्वराज्य की समस्या : आज स्वराज्य यानी लोकशाही नहीं है, नौकरशाही है, यानी समाज के समस्त कार्य नौकरों के सहारे चलते हैं, जनता में संगठन नहीं है, वह बेहोश है। जब तक संगठित जनशक्ति प्रकट नहीं होगी, तब तक नौकरशाही के स्थान पर लोकशाही की स्थापना नहीं हो सकती। एक दिन के लिए ही सही, जब सौ-दो सौ या तीन सौ अमीर-गरीब एक लाइन से खड़े होकर एकसाथ फसल-कटनी के काम में लगते हैं, तो जनता को संगठित जनशक्ति की सम्भावना का प्रत्यक्ष दर्शन हो जाता है। इससे जनता को आत्म-शक्ति की एक झलक मिल जाती है। इसी को धीरे धीरे बढ़ाने पर जिस लोकशक्ति का निर्माण होगा, निःसंदेह वह नौकरशाही को पूर्ण रूप से बेकार और विघटित करने में समर्थ होगी।

(२) अन्न-समस्या : देश के राष्ट्रपति से लेकर साधारण नागरिक तक अन्न-संकट से परेशान हैं। हरएक के मुंह से 'उत्पादन बढ़ाओ" का नारा लग रहा है। पर जमीन के मामले में आज स्थिति यह है कि जमीन के मालिक का दिल तो जमीन पर है, लेकिन उसके हाथ-पैर घर पर रहते हैं, और जमीन के मजदूर के हाथ-पैर जमीन पर, लेकिन दिल घर पर रहता है। इस तरह की स्थिति रहते हुए चाहे जितने साधन मिलते रहें, उत्पादन में विशेष वृद्धि नहीं होगी। इसलिए मालिक-मजदूर सबको साथ मिल कर जमीन पर मेहनत करने की जरूरत है। साथ ही साथ मजदूरों को भी मालिक बनाने की आवश्यकता है। इसकी शुरुआत बाबू और मजदूर दोनों के साथ मिल कर कटनी के कार्यक्रम से होती है। अन्न-समस्या के हल के लिए दूसरी बात यह भी जरूरी है कि खेती में विज्ञान का सहारा लिया जाय, खेती वैज्ञानिक ढंग से हो, इसके लिए यह आवश्यक है कि बौद्धिक वर्ग अपने हाथ से खेती करे। चीन, जापान, इजराइल आदि देशों का विवरण देकर इसे समझाता था। इस विचार को मैं अपने विनोदी ढंग से पेश करता था। उन्हें कहता था—"आप लोगों के पास उर्वर और ऊसर दोनों प्रकार की जमीन होती है। अधिक अन्न हो, इसके लिए आप उर्वर जमीन जोतते हैं और ऊसर जमीन को परती छोड़ देते हैं। लेकिन आदमी के बारे में उलटा करते हैं। ऊसर (बुद्धिहीन) मनुष्य को तो जोतते हैं और उर्वर मनुष्य को परती छोड़ देते हैं। इस पद्धति से उत्पादन की वृद्धि नहीं हो सकती है। इसलिए मैं इस कटनी-अभियान द्वारा जो उर्वर मनुष्य-शक्ति 'परती' पड़ी हुई है, उसे जोतने का श्रीगणेश करना चाहता हूं।"

(३) वर्ग-संघर्ष की समस्या : आगे चल कर यह बताता था कि किस तरह वर्गहीन समाज इस युग की मांग है और उसकी पूर्ति के लिए वर्ग-संघर्ष तथा वर्ग-निराकरण में से एक प्रक्रिया अवश्य ही अपनानी पड़ेगी। इस सिलसिले में मैं अपना पुराना हजूर और मजूरवाला 'प्लेट' दुहराता था।

अन्त में मैं उन्हें कहता था कि यह तमाम विचार जो लोग समझते हैं, वे भी सामाजिक रूढ़ि के कारण शुरू करने की हिम्मत नहीं करते। कटनी-यज्ञ जैसे राष्ट्रीय-यज्ञ का अवसर आने पर सबके लिए इसमें शामिल होना आसान हो जाता है।

दो साल पहले इलाहाबाद जिले में जब मैंने कटनी-यात्रा की थी, तो हमारे बहुत से साथी कहते थे कि अगर श्रम का ही दान लेना है तो लोगों से श्रम-उत्पादित सामग्री अन्न-सूत आदि ले सकते हैं। उस प्रक्रिया से कम प्रयत्न से अधिक प्राप्ति हो सकेगी। लेकिन उससे उपरोक्त विचार-प्रचार का इतना अच्छा अवसर नहीं मिल सकेगा, यह स्पष्ट है। दूसरी बात यह है कि अन्न-दान, सूत-दान आदि से प्राचीन संस्कार के अनुसार भिक्षा की भावना बनी रहती है, लेकिन कटनी-अभियान में लोग हमारे साथ फसल काटते हैं तो वे हमारे सहकर्मी यानी साथी बनते हैं। सामुदायिक समाज के अधिष्ठान के लिए बुनियादी आवश्यकता सख्य-भावना के विकास की है, यह तो सभी समझ सकते हैं।

इस बार जिले के कार्यकर्ताओं के सामने कटनी का विचार नया था। घोर बरसात के बीच में मेरी यात्रा चल रही थी, इसलिए इसका उतना संगठित रूप नहीं बन पाया। आशा है, अगहन में धान-कटनी के लिए संगठन बेहतर हो सकेगा।

आज की सरकारी योजनाएँ और रचनात्मक कार्य

शंकरराव देव

[पिछले अंक में हमने 'रचनात्मक कार्यों का ध्येय' शीर्षक से कार्यकर्ताओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों के श्री शंकररावजी के दिये हुए उत्तर प्रकाशित किये थे। खुशी की बात है कि खादी-ग्रामोद्योग समिति के श्री नि० न० आत्रेय के प्रयत्नों से बीच-बीच में यह क्रम चलता रहेगा। —सं०]

प्रश्न : आज हमारी सरकार भी कल्याणकारी राज्य-स्थापना को अपना ध्येय मानती है और पंचवर्षीय योजनाएँ बना कर प्रत्येक नागरिक को खाना, शिक्षण आदि सारी सुविधाएँ प्राप्त कराने का प्रयत्न कर रही है, तब रचनात्मक कार्यों को साधने को बाकी क्या रह जाता है ?

उत्तर : हमने कहा ही है कि रचनात्मक कार्यक्रम में से जो स्वराज्य स्थापित होगा, वह आत्मराज्य यानी सही माने में लोकराज्य होगा। उस में लोगों को अन्न, वस्त्र आदि जो भौतिक आवश्यकताएँ मिलनी चाहिए वे तो मिलेंगी ही, लेकिन साथ-साथ उसमें मानवीय मूल्यों का भी विकास अवश्य होगा। मानवीय मूल्यों का मुख्य अर्थ है, लोगों में परस्पर स्नेह और स्नेह-जन्य सहयोग। जैसा हमने कहा है, लोग जहाँ स्नेह और सहयोग से अपनी सारी भौतिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक भूख मिटा लेते हैं और जहां मानवीय मूल्यों का राज्य है, वहाँ सही माने में लोकतंत्रीय राज्य है।

आज सारी दुनिया जिसे 'लोकराज्य' के नाम से पहचानती है, वह तो नाममात्र का लोकराज्य है। वह तो असल में मुट्ठी भर लोक-प्रतिनिधियों का राज्य है। लिंकन ने लोकराज्य की व्याख्या की है—लोगों का, लोगों के लिये और लोगों के द्वारा संचालित राज्य। आज पश्चिम में या पूर्व में कहीं भी जहाँ-जहाँ लोकराज्य है, वहाँ-वहाँ लोगों का राज्य और लोगों के लिये राज्य देखने में आता है, लेकिन लोगों के द्वारा चलाया जाने वाला राज्य तो अपने अभाव में ही प्रकट होने वाला है (कान्स्पीक्युअस बाइ इट्स एब्सेन्स), यानी कहीं नहीं दिखता है।

आज की यह जो परिस्थिति है, इसका दोष किसी व्यक्ति का या खुद लोकतंत्र के मूल तत्त्व का नहीं है। जिस तरह से अर्वाचीन युग में पश्चिमी देशों में लोकराज्य का विकास हुआ है, उसका यह गुण कहिये या दोष कहिये, है। जहां लोकशाही का विकास हुआ, वे तो बड़े-बड़े देश थे और लोकशाही के जन्म के साथ ही साथ पूंजीवाद भी प्रारम्भ हुआ। नतीजा यह आया कि राज्य-सत्ता और उद्योग, दोनों जिस तरह से बड़े और केन्द्रित होते गये, जिसके फलस्वरूप मुट्ठी भर लोगों के हाथ में सत्ता और संपत्ति केन्द्रित होती गयी और उसमें जैसा हमने ऊपर कहा है, मानवीय मूल्यों का ह्रास होता गया। ऐसा होना अपरिहार्य था, क्योंकि ये मानवीय मूल्य या लोकशाही छोटे-छोटे समाज में ही पनप सकती है और टिक सकती है। इसका कारण यह है कि आज के सर्व-साधारण मनुष्य के लिये छोटे-छोटे समूह में ही स्नेह और सहयोगपूर्वक व्यवहार करना संभव है। जहां बड़े-बड़े समाज हो जाते हैं, वहां जीवन का सारा कारोबार अप्रत्यक्ष और दूर का हो जाता है, जिसमें परिचय और परिचय-जन्य स्नेह तथा सहयोग के लिये अवसर या गुंजाइश नहीं रहती है।

अतः सारी दुनिया के सामने और खासकर उन लोगों के सामने जो अपने समाज को लोकतंत्रीय समाज कहते हैं, यह एक बड़ी जटिल समस्या खड़ी है कि वे सच्ची लोकशाही को किस तरह से कायम कर सकें और उन मानवीय मूल्यों की रक्षा कैसे कर सकें।

पिछली तीन-चार सदियों का अनुभव कहता है कि भौतिक जीवन को सम्पन्न और समृद्ध ही नहीं, बल्कि विलासी बनाने की होड़ में आज के सभ्य संसार ने जो तरीके अपनाये हैं, उनसे राजनैतिक और आर्थिक सत्ता का केन्द्रीकरण और बड़ी बड़ी बस्तियों का निर्माण एक अटल परिणाम बन कर आया है और इसके लिए मानव-समाज को अपने मानवीय मूल्यों की कीमत चुकानी पड़ती है। इसलिये मानवीय मूल्यों की रक्षा यदि करनी है तो जिस रास्ते पर आज तक दुनिया चली आयी है, उससे भिन्न कोई नया रास्ता हमें खोजना होगा।

इसके लिये आज की जो लोकशाही समाज-व्यवस्था है या जो साम्यवादी समाज-व्यवस्था है, वे दोनों ही काम नहीं दे सकतीं, क्योंकि साम्यवादी समाज ने पूंजीवाद को खत्म तो किया, लेकिन पूंजीवाद के जो अनिवार्य अंग हैं—सत्ता और अर्थ का केन्द्रीकरण व बड़ी-बड़ी बस्तियों का निर्माण—इनको भी ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। लोकशाही की तरह ही साम्यवादी समाज के भी ये दोनों अंग बने हुए हैं। इसका कारण यह है कि साम्यवाद ने उत्पादन के औजारों में व्यक्तिगत मालकियत को तो खत्म किया, लेकिन यंत्र और उत्पादन-पद्धति को बड़े पैमाने पर केन्द्रित ही रखा। मालिक को हटाया, पर यंत्र के रूप में कोई परिवर्तन नहीं किया। यही कारण है कि लोकशाही की तरह ही 'यथाइक्यानि माणयुः'-जैसी ही साम्यवाद की भी हालत है। इस मामले में दोनों में रत्ती भर भी फरक नहीं है।

इसके लिये नया रास्ता यह हो सकता है कि जहाँ मानवीय मूल्यों की रक्षा हो सकती है और जहाँ मानवीय मूल्य पनप सकते हैं, ऐसे छोटे-छोटे समाजों का निर्माण, कम-से-कम प्राथमिक इकाई के रूप में करना होगा और यंत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन करने होंगे। इसमें विज्ञान की मदद लेनी होगी।

दूसरी बात यह कि राज्य-सत्ता को एक अनिवार्य बुराई के रूप में मान कर उसका क्षेत्र न्यूनतम करना होगा और लोकनीति व लोक-व्यवहार का क्षेत्र अधिक-से-अधिक व्यापक करना होगा।

इतने विवेचन से आप समझ गये होंगे कि आज की योजनाएँ हमारे लक्ष्य की पूर्ति में नाकाम होंगी या कम-से-कम बाधक तो जरूर ही है, क्योंकि कल्याणकारी सरकार के माने यह है कि राज्य की सत्ता को कम करने के बजाय बढ़ाते जाना। आज राज्य-सत्ता ने करीब-करीब नागरिकों के समग्र जीवन को व्याप्त कर लिया है। इसके पहले लोग अपना-अपना व्यवहार शान्ति से और बेरोकटोक कर सकें, इसलिये पुलिस और फौज के आधार पर शांति और सुव्यवस्था को कायम रखने का ही सरकार का काम समझा जाता था। लेकिन पूंजीवाद ने ऐसी परिस्थिति का निर्माण किया कि जिससे सरकार के हाथ से अपनी रक्षा का अधिकार वापस अपने हाथ में लेने के बजाय उलटे जनता ने रक्षा के साथ-साथ अपनी रोटी का सवाल भी सरकार के सिपुर्द कर दिया। (यह आपके ध्यान में आया ही होगा कि यहां हमने 'रोटी' शब्द का उपयोग भौतिक आवश्यकता मात्र के अर्थ में उपयोग किया है।) इसका परिणाम यह आया कि जनता का परावलंबन कमजोरी बढ़ी। जैसा ईसा ने कहा, जिनके पास कुछ होता है, उनको और दिया जाता है और जिनके पास कुछ नहीं है, उनसे सब कुछ छीन लिया जाता है। ऐसी ही स्थिति जनता की है।

भूदान और 'सीलिंग'

ऐसे भ्रम में मत रहिये कि सरकार को जमीन दे दी है—याने सीलिंग हो गया है—तो दान नहीं मिलेगा। दान और सीलिंग में फर्क है। माँ बच्चे को सुलाती है, धीरे-धीरे थपथपाती है—इसका नाम है भूदान। और बच्चे को तमाचा मार के सुलाने की कोशिश—यह है सीलिंग। तमाचा मारने से बच्चा सोयेगा नहीं, वह चिल्लायेगा। इसलिये सीलिंग से सरकार को जमीन मिलेगी तो भी दिल से दिल नहीं जुड़ेगा। सार यह है कि दान और सीलिंग दोनों की तुलना ही नहीं हो सकती।

—विनोबा

प्रश्न : जनता ने अपनी स्वतंत्रता और अधिकार इस तरह क्यों छोड़ दिये ?

उत्तर : आपने यह सवाल ठीक पूछा। इसका कारण समझने लायक है। मानव समाज में हमेशा बलवान थोड़े होते हैं और दुर्बल अधिक। सनातन मानवीय समस्या यह रही है कि इन दुर्बलों की बलवानों से रक्षा कैसे की जाय। अभी तक शस्त्र आत्मरक्षा का एकमात्र साधन माना गया और शस्त्र के आधार पर बलवानों से दुर्बलों की रक्षा करना ही राज्यतंत्र का धर्म माना गया। इसी कारण एक अनिवार्य बुराई होते हुए भी सत्ता को अच्छा माना गया। "परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्" यह भगवद्वाक्य है। यही कारण है कि दुर्बलों ने हजारों बरस सत्ता के सामने केवल सिर ही नहीं झुकाया, बल्कि सत्ता की पूजा की। और इस पूजा में अनजान में अपनी स्वतंत्रता की बलि चढ़ायी। दुर्बलों के सामने आत्मरक्षा की एक समस्या खड़ी ही थी, उसके साथ पूंजीवाद ने एक समस्या और जोड़ दी—आर्थिक शोषण की। इस शोषण से अपने को बचाने के लिये दुर्बलों ने राज्यसत्ता से माँग की कि उनके जीवन का अन्य आर्थिक और सांस्कृतिक आदि अंगों को बागडोर राज्य सत्ता अपने हाथ में ले। यही कल्याणकारी राज्य के जन्म और विकास का मूल कारण है।

जहाँ तक हम जानते हैं, इसका प्रारम्भ अमरीका के अध्यक्ष रूजवेल्ट ने 'न्यू डील' के नाम से किया। 'न्यू डील' का अर्थ यह कि पूंजीपति और उद्योगपतियों पर कर लगा कर उनके पास से संपत्ति को सरकार के खजाने में लाना और उसका उपयोग जनता के यथाशक्ति आर्थिक व सामाजिक विकास के काम में करना। एक तरह से हम कह सकते हैं कि पूंजीपतियों ने दुर्बलों के शोषण का मुआवजा सरकार के द्वारा उन्हें चुकाया। यह न होता तो हमें लगता है कि शायद कल्याणकारी सरकार का उदय होता, साम्यवाद का उदय न हुआ होता, क्योंकि उसकी आवश्यकता नहीं थी।

इससे हुआ यह कि लोगों की स्वतंत्रता के साथ-साथ उनका अभिक्रम भी नष्ट हो गया और उनकी सेवा के लिये सरकारी नौकरों का एक बहुत बड़ा झुंड खड़ा हो गया और राज्य-सचालन के साथ-साथ अपने जीवन के कारोबार में भी लोगों का प्रत्यक्ष हिस्सा नहीं रह गया। इस तरह आप देखेंगे कि गांधीजी की लोकराज्य की जो कल्पना थी कि रचनात्मक कार्यक्रम में से स्वराज्य आये यानी लोग अपने सारे के सारे कारोबार खुद ही चलायें, उसमें यह बिलकुल विपरीत स्थिति है। आज सरकार की सत्ता और सरकारी नौकर वर्ग का ही राज्य चलता है।

प्रश्न : लेकिन आप यह भी इन्कार नहीं कर सकते कि आज सत्ता पण्डित जवाहरलाल नेहरू जैसे उन लोगों के हाथ में ही है, जो गांधीजी के विचारों को मानने वाले हैं और आज भी गांधीजी का नाम लेकर ही सारा काम किया जाता है।

उत्तर : इसमें कोई शक नहीं कि आज के सत्ताधारी ईमानदारी के साथ यह मानते हैं कि वे गांधीजी के विचारों को ही अमल में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन जैसा हमने ऊपर कहा है, उनके काम का परिणाम गांधीजी चाहते थे, बिल्कुल उसका उलटा हो रहा है। इसमें उनका दोष नहीं है। जिस तरह से वे देश का विकास कर रहे हैं, उससे गांधीजी के विचार साकार होंगे ऐसा ही वे मानते हैं। लेकिन कहा जा सकता है कि दो चीजें नजरअन्दाज करके वे बड़ी भूल कर रहे हैं। पहली यह कि गांधीजी के विचारों को अमल में लाने के लिये वे राज्यसत्ता का उपयोग कर रहे हैं, जो गांधीजी की अहिंसा की कल्पना के बिलकुल विपरीत है। रचनात्मक कार्य में से ही स्वराज्य—यह जो गांधीजी का, लोकतंत्र के निर्माण का बुनियादी विचार है उसमें रचना की शक्ति अहिंसा है। उसमें राज्यसत्ता कहीं नहीं आती। जिस मात्रा में राज्यसत्ता का उपयोग होगा उस हद तक लोकतन्त्र बाधित ही होगा, यह निसर्ग का अनिवार्य सत्य है। दूसरी यह कि जिस तरह से आज देश की आर्थिक योजना बन रही है, उसमें जिन कामों को प्रथम स्थान दिया जा रहा है, उसका अनिवार्य परिणाम यह है कि ग्रामोद्योग व ग्राम-विकास के बजाय बड़े-बड़े उद्योग और बड़े बड़े शहरों का ही निर्माण होगा। हम मन में कुछ भी चाहें, पर जैसा बीज बोयगे वैसा ही पेड़ उगेगा। मानवीय सदिच्छा निसर्ग के नियम को काट नहीं सकती। इसलिये आज के आर्थिक योजनाकारों के लक्ष्य और कार्यक्रम में फरक होना चाहिये।

समझ-बूझ कर हमारा आर्थिक नियोजन एक शहरी और बृहद् उद्योग-प्रधान संस्कृति का निर्माण करना चाहती है, ऐसा हम न कहें, पर हाँ, यह कह सकते हैं कि जो समाज वह निर्माण करना चाहती है, उसमें कहीं गांधीजी के चित्र का दर्शन नहीं होता है, वे जो चाहते थे उसकी थोड़ी-सी रूपरेखा भी नहीं दिखती है। आधा ग्रामोद्योग-आधा बृहद् उद्योग, आधा ग्रामीण-आधा शहरी, आधा समाजवादी-आधा पूंजीवादी, अर्धनारी नटेश्वर, और समाज का जो कोई भी चित्र हमारे योजनाकार चाहते हों, उनके जहाँ तक साधनों का प्रश्न है, अन्य योजनाकारों के साधनों में खास भेद हमें दिखा नहीं है। दोनों के साधन समान ही हैं—सरकारी कानून, सरकारी कर, सरकारी सबसिडी, सरकारी ठेका और सरकारी नियंत्रण। अब आप देख सकते हैं कि कहाँ वह गांधीजी की स्वराज्य की कल्पना और फिलासफिकल अनार्किज्म (सैद्धांतिक अराज्यवाद) और कहाँ यह आज की पंचवार्षिक योजनाएं और कल्याणकारी सरकार?

प्रश्न : हाँ, आपने जो कहा, जो दो प्रकार के चित्र खींचे और उन दोनों में जो भेद है, वह सत्य प्रतीत होता है। लेकिन इसका इलाज क्या? माना कि गाडी गलत रास्ते पर जा रही है, लेकिन उसको ठीक रास्ते पर किस तरह से लायें, लाना संभव है या नहीं?

उत्तर : संभव है या नहीं, यह निर्भर करता है हमारी श्रद्धा पर। 'यो यत्श्रद्धः स एव सः।' गांधीजी का चित्र आज एक काल्पनिक-सा चित्र लगता है, इसमें संदेह नहीं। लेकिन सच्चा लोकतंत्र कायम करना है और मानवीय मूल्यों की रक्षा करनी है तो जहाँ तक हो सकता है, उस हद तक गांधीजी की कल्पना को सगुण और साकार करने की कोशिश होनी चाहिये। तो हमने जैसे अभी कहा है, सच्ची लोकशाही और मानवीय मूल्यों की रक्षा छोटे-छोटे समाजों में ही हो सकती है, इसलिये हमारे नियोजन के केवल लक्ष्य ही नहीं, बल्कि कार्यक्रम और प्राथमिकता भी ऐसी होनी चाहिये, जिससे कम-से-कम बुनियादी इकाई के तौर पर छोटे-छोटे समाज का निर्माण होगा। और जैसे गांधीजी कहते थे (एवर वाइडनिंग नान-सेंट्रिक ओशनिक सर्किल)—एक समुद्रीय तरंगों के वर्तुल की तरह, जो एक केन्द्र से बराबर विस्तृत होता जाता है, के रूप में व्यापक बनाना होगा और इस सारी प्रक्रिया में राज्यसत्ता का स्थान कम-से-कम हो, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

प्रश्न : तो सर्व सेवा संघ की खादी-ग्रामोद्योग समिति ने पिछले दिनों यह जो प्रस्ताव स्वीकार किया है कि खादी-ग्रामोद्योगों के काम को ५-५ हजार की आबादी की छोटी-छोटी इकाइयों में फैला कर ग्राम की समग्र विकास-योजना बना कर काम किया जाय, वह आपकी दृष्टि से ठीक ही होगा?

उत्तर : कुछ विलम्ब से ही सही, पर इसका आरम्भ जो हुआ या हो रहा है, वह ठीक ही हुआ या हो रहा है।

और खादी-समिति के इस निर्णय को देश या कम-से-कम देश के सारे रचनात्मक कार्यकर्ता और संस्थाएं अमल में लाने की पूरी शक्ति से प्रयत्न करें, तो गांधीजी की जो कल्पना थी कि रचनात्मक कार्य की सिद्धि ही स्वराज्य है, उसकी यानी सच्चे लोकतंत्र की मजबूत नींव डाली जा सकेगी। हमें आशा है कि इससे देश में जो एक अहिंसात्मक और रचनात्मक शक्ति पैदा होगी उससे हमारे आज के योजनाकारों पर प्रभाव पड़ेगा और योजना पर पुनर्विचार करेंगे।

नये जमाने की गुलामी

आज दुनिया की कोई भी चीज या जीवन का कोई भी क्षेत्र व्यापार और 'बाजार' के दायरे से बाहर नहीं रहा है। हर चीज के दाम हैं, हर चीज बाजार में बिकती है और पैसे से खरीदी जा सकती है। कुछ अरसे पहले मैंने एक लेख में यह बताया था कि किस तरह क्रिकेट, फुटबाल आदि के खेल और ये बड़े-बड़े निर्दोष से दीखने वाले 'मैच' जिनका अखबार, रेडियो, टेलीवीजन आदि पर इतना प्रचार होता है और हजारों लाखों व्यक्ति जिनके कारण 'बेवकूफ' बनाये जाते हैं, अखबार वालों, तथाकथित राष्ट्रीय खेल-कूद की संस्थाओं और पूँजीपतियों के फायदे के लिए चलाये जाते हैं। इन खेलों में खेलने वाले 'खिलाड़ी', जो अपनी प्रसिद्धि के लिए इन लोगों के हाथ बिक जाते हैं, और हजारों-लाखों दर्शक इन चंद षड्यन्त्रकारियों की धन-लिप्सा के शिकार बन कर शोषित होते रहते हैं।

इंग्लैण्ड के एक सम्मान्य साप्ताहिक 'न्यू स्टेट्समैन' में अभी हाल ही में उस देश के नामी और संगठित खेल 'फुटबाल' के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें कुछ आँखें खोल देने वाले तथ्य दिये गये हैं। इंग्लैंड में 'फुटबाल लीग' के नाम से 'मैच' होते रहते हैं, जिनमें लाखों दर्शक टिकट देकर मनोरंजन के लिये जाते हैं। उस देश में ९२ 'लीग-क्लब' हैं। इन क्लबों में से जो छः सबसे बड़े और नामी क्लब हैं, उनमें से एक के मैनेजर ने बतलाया कि 'अखबार वाले अपने अखबार में कुछ सनसनीपूर्ण खबर छाप कर पाठकों को आकर्षित करने के लिये मेरे खिलाड़ियों को (यानी इस क्लब द्वारा किराये पर तय किये हुए खिलाड़ियों को। —स०) इस बात के लिये घूस देते हैं कि वे हमारा क्लब छोड़ कर दूसरे क्लब में जाने की मांग करें।' 'खिलाड़ी' के द्वारा ऐसी माग करने पर वह अखबार वाला फिर फौरन उस खबर को सनसनीपूर्ण ढंग से छापता है। इन्हीं अखबारों के कारण ये खिलाड़ी लाखों-करोड़ों लोगों में प्रसिद्धि पाये हुए होते हैं। खेलों में लाखों आदमी हारजीत लगाते हैं और करोड़ों रुपये का जुआ चलता है, इसलिये इन खिलाड़ियों के इधर से उधर जाने की खबर में लाखों लोगों की दिलचस्पी होती है और वे उस अखबार को खरीदने के लिये दौड़ते हैं। इस प्रकार 'परस्पर भावयन्त:' का खेल चलता है—अखबार खिलाड़ी को 'लोकप्रिय' बनाते हैं और ये 'लोकप्रिय खिलाड़ी' अखबार वालों से घूस देकर उनके लिये अच्छी खबर (गुड स्टोरी) मुहय्या करते हैं। आगे चल कर मैनेजर महोदय कहते हैं—"इससे भी बदतर बात यह है कि हर पहली और दूसरी श्रेणी के क्लब में से कम-से-कम एक खिलाड़ी को कोई-न-कोई अखबार वाले इसलिये पैसा देते रहते हैं कि वह उन्हें न केवल खबरें दे सके, बल्कि खेल के संबंध में उन क्लब में जो गुप्त दांवपेंच सोचे जाते हों, उनकी जानकारी भी दे सके। मैं अच्छे-अच्छे नौजवानों को छांट कर लेता हूं, लेकिन एक-दो बरस में वे भ्रष्ट हो जाते हैं।"

इन क्लबों में 'खिलाड़ियों' को नौकर रखा जाता है। वे उसी क्लब की तरफ से खेल सकते हैं—उसके अलावा नहीं। एक क्लब से दूसरे क्लब में जाना हो तो सामने वाले क्लब को कभी-कभी हजारों पौंड कीमत देनी पड़ती है, पर उसमें से 'खिलाड़ी' को कुछ नहीं मिलता। इस प्रकार गुलामों की तरह वे एक क्लब से दूसरे क्लब को बेचे जाते हैं। ऊपर जिस लेख का जिक्र है, उसमें बताया गया है कि इसी प्रकार के एक सौदे में एक क्लब को दूसरे क्लब से 'खिलाड़ी' लेने के लिये ५० हजार पौंड देने पड़े, पर 'खिलाड़ी' को उसमें से सिर्फ २० पौंड दिये गये।

क्लब वालों को अपनी 'टीम' मैच में दाखिल कराने के लिये लीग के अधिकारियों को सौ-सौ पौंड घूस देनी पड़ती है। कभी-कभी अच्छे खिलाड़ियों को क्लब में रखने के लिये क्लबों के मालिक पूँजीपति उनको अच्छी-अच्छी बेकाम की नौकरियों का लालच देकर रखते हैं।

इस तरह खेल-कूद और तथाकथित मनोरंजन भी आज व्यापार की, खरीद-बिक्री की चीज बन गयी है। अखबारों के, क्लबों के और खिलाड़ियों के भी मालिक, चंद पूँजीपति लाखों लोगों को बेवकूफ बना कर पैसा ऐंठते रहते हैं। अखबारवाले हवा बनाते हैं, खिलाड़ियों को 'लोकप्रिय' बनाते हैं और लोग शहद पर मक्खियों की तरह इन खेलों को देखने के लिये टूट पड़ते हैं। वे समझते हैं हमारा मनोरंजन हो रहा है।

—सिद्धराज

बिहार-केसरी श्री श्री बाबू का महान्, किन्तु गुप्त दान

पिछली ३१ जनवरी को बिहार के मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह का आकस्मिक अवसान हो गया! वे एक राजनेता के अलावा सुहृदय भावनावान मानव भी थे। श्री दामोदरदासजी के कलम से लिखे गये इस संस्मरण से उनकी विशाल व्यापक मानवता के सहज दर्शन होंगे। —सं०

—दामोदरदास मूँदड़ा

उन दिनों विनोबाजी घातक में प्राणघातक (मेलिग्नंट) मलेरिया से पीड़ित थे। पिछले कई वर्षों में औषधी का प्रयोग नहीं किया था। इसी बीच भगवान ने भूदान-आन्दोलन के लिये उन्हें अपना साधन बना लिया था और तत्पश्चात् पहली बार ही ऐसी खतरनाक बीमारी ने आक्रमण किया था, मामूली ज्वर कई बार आये और बिना औषधी-सेवन के चले भी गये थे, लेकिन इस बार कसौटी होने वाली थी—कसौटी सबकी, भक्त की ओर भगवान की, और साथियों की भी, जिन सबके द्वारा ही भगवान प्रकट होते हैं।

विनोबाजी की हालत तेजी से बिगड़ती जा रही थी। स्थिति ऐसी थी कि शायद काया उस कष्ट को अधिक बर्दाश्त न कर सके। दिल्ली से श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू तथा प्रधानमंत्रीजी के आग्रह भरे संदेश आये थे कि औषधी का सेवन किया जाय। औषधी ली या नहीं, इस बारे में फोन पर बार-बार पूछा भी जाता था। किन्तु औषधी-सेवन के लिये विनोबाजी को प्रेरणा नहीं हो रही थी, न लेने का आग्रह ही हो सकता था। परन्तु लेने की स्फूर्ति नहीं थी, जन्म-मृत्यु के क्षणों को कोई नहीं टाल सकता यह उनका विश्वास तब भी था, और अभी भी है। इसलिये "औषधीम् जाह्नवी तोयम् वैद्यो नारायणो हरि."—यही उनकी भावना तब भी थी, और अब भी है।

किन्तु विनोबा अब एक व्यक्ति नहीं रह गये थे। उनके शारीरिक, मानसिक आधि-व्याधियों से चिंतित व अस्वस्थ होने वाला एक बहुत बड़ा सुहृद् समुदाय इर्दगिर्द था, इसलिए समस्या ने गंभीर रूप धारण कर लिया था। किसी गंभीर क्षण की कल्पना से सभी काँप उठे थे, सब ओर चिंता का वातावरण था।

श्री श्री बाबू ने स्वयं कई बार आकर विनोबा से औषधी लेने के लिये विनय किया। हर बार वे कभी पटना से, तो कभी जमशेदपुर से, तो कभी दोनों जगह से और कभी-कभी तो कलकत्ते से भी डाक्टरों और तज्ञों को ले आया करते। हर बार नया उल्लास लेकर आते और निराश होकर लौटते, हिम्मत नहीं हारते, पर बढ़ते हुए दुःख व चिंता का अनुभव किये बिना नहीं रहते।

दोपहर के ठीक बारह बजे का समय था। श्री बाबू विनोबाजी से मिल कर हताश होकर पड़ोस के कमरे में चिंतामग्न मनःस्थिति में बैठे थे : "बिहार पर पहले एक कलंक लग ही चुका है, मगनलाल भाई गांधी के देहावसान से। अब अगर बाबा नहीं मानते हैं, तो हम तो कहीं के नहीं रहेंगे!" श्री बाबू के मुख से वेदना भरे शब्द प्रकट होने लगे, सारे प्रदेश की करुणा-मंथित मानो उनकी वाणी और आँखों में साकार हो उठी।

"एक बार फिर क्यों न चला जाय विनोबाजी के पास?" हमने अपने आपको व श्री बाबू को सांत्वना देने और पुनः एक बार प्रयत्न करने के ख्याल से कहा, "संभव है, वे इस बार मान भी लें, और मान लीजिये कि नहीं माना, तो भी हमें तो समाधान रहेगा कि आखिर तक प्रयत्न करते रहे।"

श्री बाबू तत्काल उठ खड़े हुए। मानो उस मलेरिया के कारण निर्मित संकट पर विजय पाने के लिये प्रभु-प्रेरणा ही उठ खड़ी हुई! श्री बाबू की वह वात्सल्यभरी चिंतामग्न वामन मूर्ति, मृत्यु-शय्या पर आखिरी क्षणों की प्रतीक्षा करती हुई त्रिभुवन विजयी वामन मूर्ति के सम्मुख मृत्युंजय की तरह जाकर खड़ी हो गयी। प्रेम ने मानो यमराज को ही ललकारा था उस समय। उधर विनोबाजी का सारा बदन भीतर ही भीतर अत्यधिक दाह के कारण अहरह जल हो रहा था। और उस असहाय अवस्था में भी वे एक विशिष्ट आनन्द का अनुभव कर रहे थे, जिसका वर्णन करना आज तक उन्हें शक्य नहीं हुआ है, उल्लेख तो वे आज भी कर देते हैं कि जैसे उन्होंने उस समय अपने को दयामय प्रभु के बाहुपाशों में ही पाया था, आज भी वह सगुण स्पर्श उनके आनन्द का विषय बना हुआ है।

लेकिन उस समय उस कमरे में वह गंभीर, किन्तु भयानक शांति का एक-एक क्षण, सबके लिए एक-एक युग के समान हो रहा था। विनोबा पूर्णरूपेण अंतर्मुख थे। उनकी वह ज्योति व्यापक तेज-तत्त्व की देहलीज पर खड़ी थी, मिट्टल का चोला छोड़ कर त्रिधाऊ में लुप्त होने के लिये, उस ज्योति के समाप्य अभाव की कल्पना भी असह्य थी। उस शांति को भंग करना आवश्यक था, विनोबाजी के कानों के पास धीरे से कहा गया 'विनोबा, श्री बाबू आये हैं।"

मानो प्रगाढ़ समाधि से योगी को जगाया गया। आँखों को प्रयत्नपूर्वक खोलते हुए और नमस्कार के लिये दोनों हाथ एकत्र लाते हुए धीमे स्वर में विनोबा ने हर्षित सहज पूछा :

"क्या कहते हैं श्री बाबू?"

विनोबा के मुँह से ये शब्द निकलने की ही थे कि पुनः श्रद्धा से जुड़े हुए हाथों को आगे किये अश्रुपूर्ण नयनों से और गद्गद होकर श्री बाबू ने कहा :

"महाराज, औषधी का सेवन किया जाय। हमारी इतनी प्रार्थना अब स्वीकार की जाय। हम आपको वचन देते हैं कि आपका काम हम करेंगे।"

विनोबाजी पुनः अंतर्मुख हो गये। कोई महान् मंथन वहाँ चलता दिखाई दिया। जीवन-मृत्यु के परिणामों की कल्पनाओं से वे सबके ऊपर उठ चुके थे। औषधी लेना, न लेना जीवन का साध्य तत्त्व नहीं हो सकता था। नम्रता व निरहंकारिता की उस मूर्ति पर श्री बाबू के शब्दों ने रामबाण का-सा असर करना शुरू कर दिया। जीवन और मजबूत होगी व प्रभु को अपना यह साधन सुरक्षित रखना ही होगा, तो वह किसी भी प्रकार से उसे संभाल लेगा, किन्तु फिर वह एक अद्भुत, किन्तु अननुकरणीय घटना बन जायगी। सामान्यों के लिए उसमें आश्वासन नहीं उपलब्ध होगा। क्षण भर पुनः गंभीर शान्ति छा गयी।

विनोबा ने सजल नैनों से श्री बाबू की ओर देखा : 'मैं देखता हूँ कि मित्रों को मेरी इस बीमारी के कारण मैंने बहुत चिन्ता में डाल दिया है, वह चिंता दूर होनी चाहिए।"

श्री बाबू के आनंद का पार नहीं रहा! जीवन भर का ही नहीं, जन्म-जन्म का पुण्य इस समय काम आया, ऐसा अनुभव उन्होंने किया, सारे कमरे में आनंद की आभा छा गयी।

डाक्टर लोग 'केमोक्वीन' लिये खड़े ही थे। पानी के अनुपान के साथ सिर्फ आधी गोली ही दी गयी। डाक्टरों को विश्वास था कि इतनी मात्रा ही काफी होगी, वैसा ही हुआ।

लोग उसी तरह परिणाम की प्रतीक्षा में शान्त, किन्तु आशा भरे मानस से खड़े थे। पाँच मिनिट भी पूरे नहीं हो पाये थे, ज्वरमान उतरना शुरू हुआ। क्षण में सारा वातावरण जादू की तरह बदल गया। श्री बाबू की और विनोबा की [illegible] के भावों से एकात्म थी। सबके हृदय कृतज्ञता से ओतप्रोत थे—कृतज्ञता विनोबा के लिए कि उन्होंने सबके चित्त से चिन्ता का बोझ हटा लिया, कृतज्ञता श्री बाबू के लिए कि वे इस महामानव के चित्त को चुराने में सफल हो सके, उनका पार्थिव पुनः पृथ्वी पर कुछ बरसों तक सचेतन सगुण विचरते रहने व इस तरह करोड़ों एवं हजारों की आशाओं को पुनः हरी-भरी कर देने के निमित्त बन सके।

और सबसे अधिक कृतज्ञता परमपिता परमात्मा के लिए कि सबको उचित प्रेरणा प्रदान की और एक महान् संकट टल गया; क्योंकि यदि उस समय श्री बाबू ने उस उत्कटता से विनोबाजी से आग्रह नहीं किया होता, तो क्या होता कहना कठिन है! उस कल्पना से आज भी शरीर सिहर उठता है। ईश्वरी इच्छाओं और दैवी संकेतों को हम जान नहीं सकते, परन्तु उस समय तो दैवी संकेत और ईश्वरी इच्छा श्री बाबू के मुख से ही प्रकट हुई थी, इसमें संदेह नहीं।

श्री बाबू का पार्थिव शरीर अब नहीं रहा, उनकी उनकी अनेकविध सेवाओं ने वैसे भी बिहार के व देश के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है, परन्तु उपरोक्त घटना के कारण श्री बाबू की स्मृति इतिहास में अमर रहेगी, इसमें संदेह नहीं।

और श्री बाबू ने अपना वचन भी निबाहने का पूरा प्रयत्न किया। बिहार की कुल जोतने योग्य भूमि का षष्ठांश भूदान से प्राप्त करने का संकल्प बिहार कांग्रेस ने स्वीकार किया व उसके लिए यथाशक्य प्रयत्न भी किया। क्या श्री बाबू के सहयोग के बिना यह संभव हो सकता था? स्वयं श्री बाबू ने प्रदेश के किसी ही [illegible] में यात्रा की व भूदान प्राप्त किया। इतना ही नहीं, भूदान-कार्यकर्ताओं की माँग पर विनोबाजी के बिहार छोड़ने के पूर्व विधान-सभा को एक सप्ताह की छुट्टी दे दी, ताकि सदस्य-गण अपने-अपने इलाके [illegible]

श्री बाबू बिहार के महान विभूति थे

श्री बाबू बिहार की महान् विभूति थे। उन्होंने ४० वर्ष से भी अधिक समय तक देश की सेवा की। वृद्धावस्था तथा निरन्तर बीमार रहने के बावजूद वह अन्तिम क्षणों तक देश-सेवा में रत रहे।

उनके हृदय में गरीब व्यक्तियों के लिए स्नेह तथा सहानुभूति थी। गरीबों की व्यथाओं का जिक्र करते-करते उनकी आँखें छलछला आती थीं। उनका हृदय एक स्वच्छ तालाब के साफ पानी की तरह था, जिसमें से कोई भी व्यक्ति झाँक कर यह स्पष्ट रूप से देख सकता था कि उसकी तलहटी में क्या है।

—विनोबा

भोग-विलास राष्ट्र को निर्वीर्य बनाते हैं

वैजनाथ महोदय

कुछ ही महीनों पूर्व इटली में खेलों की जागतिक प्रतियोगिता हुई थी। उसमें भाग लेने के लिये भारत ने भी अपने खिलाड़ियों को भेजा था। परन्तु इन प्रतियोगिताओं में भारत अत्यन्त पिछड़ा हुआ और कमजोर साबित हुआ। ऊपर से गिनती करने के बजाय नीचे से देखा जाय तो शायद उसका नंबर दूसरा या तीसरा था! खेलों से ज्ञात होता है कि राष्ट्र के युवकों का स्वास्थ्य कैसा है, उनमें कितना प्राण है। इन प्रतियोगिताओं में रूस सर्वश्रेष्ठ रहा। बहुत से महत्वपूर्ण और बड़े-बड़े पुरस्कार वही जीत कर ले गया। संयुक्त राज्य अमेरिका यों आजकल संसार में हर बात में अग्रणी माना जाता है। परन्तु खेलों और व्यायाम में वह भी रूस से पीछे रह गया। अमेरिका के नये राष्ट्रपति केनेडी ने इस पर बड़ी चिन्ता प्रकट की है और सारे राष्ट्र से अपील की है कि वह शरीर-स्वास्थ्य और शरीर-बल के बारे में उदासीन नहीं रहे। उन्होंने कहा है कि

"हमारी रहन-सहन संसार में सबसे ऊँची है। हमारी खुराक भी अच्छी है। खेल के अगणित मैदान हमारे यहाँ हैं। विद्यालयों में व्यायाम और खेलों की तरफ बहुत ध्यान दिया जाता है। परन्तु फिर भी इन प्रतियोगिताओं में यूरोप के युवकों के मुकाबले में हमारे अमेरिका के जवान बहुत पीछे रहे।"

स्नायविक बल की छह परीक्षाएँ ली गयी, जिनमें ५७.९ प्रतिशत अमेरिकन असफल रहे, जब कि यूरोप के केवल ८.७ प्रतिशत जवान ही असफल रहे।

शरीर-बल की परीक्षाओं में ३५.७ प्रतिशत अमेरिकन जवान असफल रहे, जब कि यूरोप के जवानों में केवल १.१ प्रतिशत ही असफल रहे। इनमें भी आस्ट्रिया और स्विटजरलैण्ड का प्रतिशत तो केवल .५ प्रतिशत ही था।

इन परीक्षाओं में भारत की तो कहीं गिनती ही (उल्लेखनीय) नहीं थी!

केनेडी ने लिखा है कि इस शोचनीय स्थिति को दूर करने के लिए भूतपूर्व राष्ट्रपति आइजेन हावर ने मंत्रीमण्डलीय स्तर पर एक और नागरिकों की भी एक कमेटी बना दी थी। और पिछले पाँच वर्षों से इनकी सिफारिशों के अनुसार ही युवकों को शारीरिक शिक्षण दिया जाता रहा है! फिर भी देश के आरोग्य और बल का यह हाल!

राष्ट्रपति केनेडी आगे कहते हैं—

"सबसे अधिक दुःख की बात तो यह है कि अमेरिका के अधिकाधिक नौजवान सुस्त, आराम-पसन्द और विलासी बनते जा रहे हैं। शरीर को बलवान बनाने की तरफ उनका कोई ध्यान ही नहीं है। नौजवान हमारे राष्ट्र का प्राण है। वही आराम-पसन्द कमजोर और निर्वीर्य बन गये तो संसार की दौड़ में हम कैसे टिक सकेंगे? संसार में हमारे सामने खड़ी अगणित चुनौतियों का मुकाबला हम कैसे करेंगे? अब तक अनेक बार हमारी स्वाधीनता पर खतरे आये हैं, परन्तु हमारे नौजवानों ने उन्हें हवा में उड़ा दिया है। उन्होंने युद्धों के कष्टों का और खतरों का बहादुरी के साथ मुकाबला किया है।

"परन्तु इसके लिए जिस दृढ़ता और बल की जरूरत होती है, वह दो-चार हफ्तों या महीने-दो-महीने के प्रशिक्षण से नहीं प्राप्त किया जा सकता। उसके लिए तो सम्पूर्ण जीवन भर अच्छी आदतों, व्यायामों और परिश्रम के कार्यों से शरीर को तैयार कर रखने और मन को भी मजबूत सिपाहियों को यह प्रशिक्षण और बल अपने खेल के मैदानों और निरन्तर के परिश्रमी जीवन में अभी-अभी तक मिलता रहा था। परन्तु अब हम ढीले और सुख-लोलुप होते जा रहे हैं। यह चिन्ता का विषय है।"

केनेडी जानते हैं कि कम्यूनिस्ट विचार-धारा ही केवल अमेरिका के जीवन-दर्शन के लिए एक महान् खतरा नहीं है, बल्कि सोवियत रूस शरीर-बल में भी अमेरिका को बुरी तरह मात दे रहा है। अमेरिका हर बात में सर्वश्रेष्ठ था, वह बात चली ही गयी। परन्तु केनेडी इसमें अपनी स्वाधीनता को भी खतरा महसूस करते हैं। वे कहते हैं, "बलवान शरीर केवल युद्धों में विजय पाने के लिए ही आवश्यक नहीं है, बल्कि शान्ति-काल की सफलताओं के लिए भी वह उतना ही आवश्यक है। बलवान शरीर में ही बलवान मन और बलवान मस्तिष्क का भी निवास होता है। इसलिए किसी भी हालत में उसकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।"

स्वाधीनता के बाद "अब हमने सब कुछ पा लिया", इस कृतार्थता का अनुभव करने वाले जो भारतीय अपने आपको विलासों में आकण्ठ डुबोये हुए हैं, क्या वे राष्ट्रपति केनेडी की चिन्ता के मर्म को समझने की कोशिश करेंगे?

यन्त्रों का पागलपन मानव-शरीर को किस प्रकार निकम्मा बनाता जा रहा है, इसके बारे में भी अमेरिका का यह नई रोशनी वाला यंत्र-विज्ञान-प्रेमी नौजवान राष्ट्रपति कहता है—

"फुरसत और विपुलता का यह युग हमारे शरीर को बड़ी तेजी से निकम्मा बनाता जा रहा है। आज शरीर-श्रम हमारे जीवन से बड़ी तेजी से घटता जा रहा है। और बहुत से अर्थशास्त्रियों तथा वैज्ञानिकों का कथन है कि सन् १९७० तक तो हाथों से काम करने वाले आदमी ढूंढे भी नहीं मिलेंगे! ऐसे बहुत से काम जिन्हें हमारे पुरखे अपने हाथों से करते थे, अब हमारे जीवन में से अदृश्य हो गये। मामूली-मामूली स्कूलों के सामने भी मोटरों की लम्बी-लम्बी कतारों को देख कर मैं तो हैरान हो जाता हूँ। कहाँ गया वह युग, जब हम अपने पाँवों से चल कर स्कूलों में जाया करते थे?

"शरीर-श्रम शरीर को निरोग और काम के लायक रखता है। परन्तु सिनेमा, टेलीविजन और आजकल के हजारों आविष्कारों ने हमारे युवकों के शरीरों को एकदम निकम्मा बना दिया है।"

"यह एक राष्ट्रव्यापी समस्या है और इसे हल करने के लिए सारे राष्ट्र को प्रयास करना होगा।"

इस प्रकार सारे राष्ट्र का ध्यान इस अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न की तरफ दिलाते हुए केनेडी ने केन्द्रीय मंत्री-मण्डल से लेकर ठेठ नीचे वाले शासकीय अधिकारियों, शिक्षा-संस्थाओं और नागरिकों तक को इसमें जुट जाने के लिए सावधान किया है।

जो बात इस विषय में संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे बलवान और सबसे अधिक समृद्ध राष्ट्र को लागू होती है, क्या वह हमारे लिए हजार गुनी अधिक जरूरी नहीं है?

अशोभनीय पोस्टरों के गन्दे चित्र यों देखने में एक बहुत छोटी चीज है। परन्तु वे हमारे युवकों को विलासी, कामुक और निर्वीर्य बनाने वाला वातावरण निर्माण करते हैं। इसलिए समस्त राष्ट्र के लिए अत्यन्त खतरनाक हैं। राष्ट्रपति केनेडी अपने राष्ट्र पर जो खतरा अनुभव कर रहे हैं, वह तो शायद उनकी सीमाओं से हजारों मील दूरी पर है। फिर भी वे इतने जागरूक और चिन्तित हैं। परन्तु हमारी तो प्रत्यक्ष सीमाएं भी दबा ली गयी हैं! इतने पर भी जो लोग विनोबा के इस ढोल को सुनने से इन्कार करते हैं और न केवल अपने कानों में उंगली डाले बैठे हैं, बल्कि उन्हें हास्यास्पद बता रहे हैं, उनकी बुद्धि को क्या कहा जाय?

('सर्वोदय प्रेस सर्विस', इन्दौर)

में अधिक-से-अधिक भूदान प्राप्त करके क्षेत्र-भूमि में सक्रिय सहयोग दे सके। लेकिन इन सबसे बढ़कर एक महान् दान, जो श्री बाबू की ओर से विनोबा को मिला है, उसका तो मूल्यमापन होना भी कठिन है। जब प्रदेश कांग्रेस की ओर से एक प्रभावी कार्यकर्ता की सेवा भूदान-कार्य के लिए देने का प्रश्न उपस्थित हुआ तो श्री बाबू ने श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी के लिये अपनी स्वीकृति सहर्ष प्रदान कर दी। बिहार की राजनीति में श्री वैद्यनाथ बाबू का महत्वपूर्ण स्थान तो था ही, परन्तु श्री बाबू के वे माने हुए आधार-स्तम्भ थे। ऐसे प्रभावी सक्रिय सहायक मित्र की सेवाओं से स्वयं वंचित होने के लिये तैयार होना, राजनैतिक नेता के लिए कम त्याग नहीं था। हो सकता है, उन्हें स्वयं इस त्याग में निहित परिणामों की पूरी कल्पना तब न आयी हो, पर ज्यों-ज्यों वैद्यनाथ बाबू भूदान की ओर अधिकाधिक आकर्षित होते गये, त्यों-त्यों उनका बिहार की दलबन्दी की राजनीति से सम्बन्ध टूटता ही गया। वे पिछले आठ वर्षों में कहाँ से कहाँ चले आये? क्रियाशील प्रभावी कांग्रेसी नेता से बदल कर आज वे उन्मुक्त सर्वोदयी सेवक बन गये हैं। बिहार की शान्ति-सेना के प्रमुख प्रेरक हैं, बिहार भूदान-यज्ञ बोर्ड के मंत्री हैं और उनके इन सारे बढ़ते हुए कदमों से श्री बाबू खुश होते रहे थे। आज वैद्यनाथ बाबू के बिना हम बिहार के भूदान-आन्दोलन के काम की कल्पना भी नहीं कर सकते। इतनी बड़ी देन श्री बाबू की दिये हुए हैं। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह सारी उनकी मूक देन है, देश को दी दुनिया को और मूक दान का महत्व हमारे यहाँ कौन नहीं जानता?

देश-विदेश में सफाई-कार्य कैसे होता है?

- बेल्जियम में सफाई-मजदूरों को दो रुपया प्रति घंटा मेहनताना दिया जाता है। झाड़ू लगाने और पाखाना-सफाई का काम वहाँ औरतें करती हैं।
- टर्की में अनुसूचित जातियाँ नहीं हैं। सफाई कार्य जन-साधारण द्वारा साधारण तौर पर किया जाता है।
- डेनमार्क में सफाई-काम अन्य धंधों के मुताबिक चलता है। उसका मेहनताना भी अन्य धंधों की तुलना में ठीक रहता है।
- कनाडा में मैला-सफाई और सड़क-सफाई-धुलाई मशीन से होती है।

विनोबा-यात्री दल से

—कुसुम देशपांडे

"हमारी यात्रा एक आश्रम से दूसरे आश्रम जा रही है।"—बाबा ने कहा था। काशी में वरुणा के किनारे 'साधना-केन्द्र', बुद्धगया में बुद्ध मंदिर के निकट 'समन्वयाश्रम', रमणीय निसर्ग की गोद में खड़ा श्री जयप्रकाशजी का सोखोदेवरा का 'सर्वोदय-आश्रम'—इस तरह यात्रा हो रही थी और अभी हाल में श्रद्धेय धीरेन्द्रभाई की प्रेरणा से चलने वाले खादीग्राम के 'श्रम-भारती' में बाबा पहुँचे थे। धीरेन्द्रभाई तो इन दिनों पूर्णिया जिले के एक गांव में 'लोकाधारित जीवन' का प्रयोग कर रहे हैं। उनके पीछे 'श्रम-भारती' की धुरा उठाने का जिम्मा आचार्य राममूर्तिजी ने ले लिया है। विनोबाजी का स्वागत करते हुए उन्होंने बताया कि "धीरेन्द्रभाई दूर है, फिर भी उनकी आत्यंतिक साधना हमें चुनौती देती रहती है कि सम्पूर्ण जीवन को क्रांतिमय बनाये बिना आरोहण की मंजिलें नहीं तय होंगी।"

मुंगेर जिला खादी-ग्रामोद्योग संघ का उद्घाटन करते हुए विनोबाजी ने कहा, "विकेंद्रीकरण के जैसे कई अच्छे काम बिहार में शुरू होते हैं। लेकिन उनका पूरा महत्त्व शायद बिहार के लोग नहीं जानते हैं और भारत को उसका संदेश नहीं पहुँचाते हैं। खादी का सम्बन्ध गांधीजी ने स्वराज्य के आंदोलन के साथ लगाया था। उन दिनों खादी को चालना देने के लिये देश की सर्वश्रेष्ठ शक्ति महात्मा गांधी के रूप में हमें मिली थी। इन ४० साल में हमने १ प्रतिशत खादी तैयार की है। हमें सौ प्रतिशत खादी बनानी है। उस लक्ष्य तक कैसे पहुँचेंगे? पहले गांव स्वावलम्बी बने और बाद में शहरों को कपड़ा दें। शहरों में दूसरे स्वतंत्र धंधे हों। खादीवालों के सामने यह सवाल है कि आज तक जैसे चली वैसी ही पद्धति रहेगी या दूसरी अपनानी होगी?

"लेकिन आज का जमाना खादी के लिये प्रतिकूल है और हम संकट-काल में हैं, इस विचार से मैं सहमत नहीं हूँ। इस वक्त तो मैं खादी के विचार के लिये देश में अत्यंत अनुकूलता देख रहा हूँ। हमें यह समझना चाहिये कि जन-मानस को आप किस तरह पकड़ सकते हैं।

हमारे कुछ काम ऐसे हैं, जो सरकार नहीं कर सकती। सरकार जो भी हो वह औसत होती है, उससे ऊपर वह सोच नहीं सकती। भिंड-मुरैना का काम सबको पसंद आया। वहाँ की सरकार ने पहले तो सहकार दिया। लेकिन बाद में उसे लगा कि उसके 'मोरल' पर प्रहार हो रहा है, तो उसने उस घटना का लाभ नहीं लिया। शरण आये हुए डाकुओं पर मुकदमे चल रहे हैं और सत्य की कसम खाकर वहाँ के पुलिस कोर्ट में कह रहे हैं कि हमने डाकुओं को इसलिये पकड़ा कि वे जेल के इर्द-गिर्द घूम रहे थे। और न्यायाधीश पूछते हैं कि क्या आपको मालूम नहीं कि विनोबाजी की यात्रा इधर हुई थी? तो कहते हैं "ना!" बात यह है कि नैतिक काम सरकार की शक्ति के बाहर का होता है।

अब इन दिनों पार्टी-पॉलिटिक्स से कुछ नहीं बनेगा, यह सबके ध्यान में आ रहा है। शांति सेना की आवश्यकता सब महसूस कर रहे हैं। यह काम बड़े-बड़े लोगों को, नेताओं को पसंद है। लेकिन कोई भी पार्टी यह काम करने के लिये अपने को असमर्थ मानती है। उसी तरह दान की प्रक्रिया का है। मतलब, यह काम हम ही कर सकते हैं, दूसरा कोई नहीं कर सकता ऐसी भावना देश में है। विकेन्द्रीकरण, शान्ति-सेना, नैतिक कार्य, दान-प्राप्ति इन कार्यों के लिये देश में अच्छा वातावरण है।"

खादीग्राम में पास को ग्रामदानी गांवों का सम्मेलन हुआ। उस वक्त मुंगेर जिले में ग्रामदान करने के बाद 'ग्रामदान' की प्राप्ति की घोषणा हुई और कुल बिहार के ग्रामदानी गांवों में वहाँ क्या काम हो रहा है, इसकी जानकारी दी गयी।

विनोबाजी ने कहा, "यह छोटा-सा आरम्भ है। लेकिन जैसे अग्नि की चिनगारी घास के बड़े ढेर को खाक कर सकती है, वैसे ही यह ग्रामदान का काम सारी दुनिया पर असर डाल सकता है।"

संध्या-समय श्री मोती बाबू अपने चंद साथियों के साथ विनोबाजी से मिले। उन्होंने बताया कि आज हम कार्यकर्ताओं ने तय किया है कि हम लोग अब 'वारबेसिस' (युद्ध-स्तर) पर काम करेंगे।

विनोबाजी ने सावधानी का इशारा दिया और कहा, "इसमें एक बात ध्यान में रखनी होगी। शिवाजी एक-एक किला फतह करता गया और उधर पहले का किला हारता भी गया। ऐसा न हो।

खादीग्राम में विनोबाजी की तबीयत अच्छी नहीं थी। उसके पहले दो दिन से रात में खांसी के कारण नींद में खलल पहुँची थी।

दूसरे दिन सुबह सवा चार बजे 'श्रमभारती' के परिवार के बीच विनोबाजी थोड़ी देर बैठे। उस वक्त आचार्य राममूर्ति ने विनोबाजी से कहा कि "श्रमभारती के सब कार्यकर्ता लोकाधार—जनाधार—बन, यह कल्पना अभी तक साकार नहीं हुई है। यद्यपि कुछ कार्यकर्ता जनाधार तथा मित्राधार बन रहे हैं। अब यहाँ (१) खेती, (२) खादी-कमीशन की ओर से कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण तथा (३) जिले के संगठन का कार्य चल रहा है। तेल, साबुन, सरंजाम का काम खादी-ग्रामोद्योग संघ पर सौंपा है।"

खादीग्राम से विदा होकर विनोबाजी अगले मुकाम की ओर जा रहे थे। रास्ते में खादीग्राम से ढाई-तीन मील पर 'भूदानपुरी' नाम की छोटी-सी बस्ती है, वहाँ वे ठहरे। यहाँ २६ परिवार बसे हैं, जिनमें १९२ व्यक्ति हैं। ये लोग मिल कर ७० एकड़ जमीन की खेती करते हैं। आवास के लिये हर परिवार को ३०० फीट लम्बी और ९० फीट चौड़ी जमीन मिली है। यहाँ कुआँ, तालाब, पाठशाला, मकान आदि का काम हुआ है। इन लोगों की अपनी सहयोग समिति है। इस समिति ने बाहरी महाजनों का कर्जा अदा कर दिया है। सामूहिक श्रमदान से इन्होंने अपने धर्म-गोले में १६०० रुपये जमा किये हैं। विवाह और श्राद्ध यहाँ सबकी सहायता से सपन्न होता है। "भूदानपुरी आज जैसी है, उससे कहीं अधिक खुशहाल दिखाई देगी, अगर जाड़े की खेती के लिये पानी का इन्तजाम हो जाय और पूरक उद्योग मिल जाय। अंबर और धानकुटाई का काम देने की योजना है।" यह जानकारी देते हुए राममूर्तिजी ने बताया कि इन लोगों ने शराब को आदत से अपना छुटकारा करने का महत्त्वपूर्ण काम किया है।

विनोबाजी ने गाँव के काम की सराहना करते हुए कहा, "ये छोटे-छोटे काम दीखने में छोटे, लेकिन परिणाम में बड़े हैं। आपने शराब छोड़ी, उससे जितना पाया उतना पानी आने से भी आप नहीं पाते। शराब छोड़ने से आपने सद्गुण पाया। पानी आता है तो जमीन नरम बनती है, लेकिन दिल सख्त बनता है। शराब छोड़ने में खतरा नहीं होगा। पानी आने से खतरा भी हो सकता है।"—यों कह कर विनोबाजी गांव-वालों को एक दिलचस्प कहानी सुनायी :

'तुलसीदासजी ने गांव बसाने की कोशिश की। उस गांव में उन्होंने 'राम', 'रघु', 'सुग्रीव', 'हनुमंत' को बसाया। लेकिन 'कलि' को वह पसंद नहीं आया तो उसने "नारी, अरि, धन" लेकर गांव में प्रवेश किया। यहाँ 'नारी' का मतलब है 'काम-वासना' ('स्त्री', नहीं) अरि याने क्रोध और धन लाया तो गांव चौपट हो गया। तुलसीदासजी फिर भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान! तू इस गांव पर कृपा कर। जहाँ पानी आया वहाँ यदि चारित्र्य, शील, परस्पर अनुराग बढ़ेगा, तो वह पानी कल्याणकारी होगा, अन्यथा गांव का नुकसान होगा।"

मुंगेर जिले के प्रसिद्ध ग्रामदानी गांव 'बेरई' में विनोबाजी का एक दिन विश्राम रहा। इस गांव के पीछे जिनकी प्रेरणा काम करती रही है "लक्ष्मी बाबू" 'स्मृति' रूप से उस गांव में उपस्थित थे, और उस दिन के आनन्द के समारोह में शामिल हो गये थे। गांव में प्रसन्नता छायी थी। विनोबाजी गांव में घूमने गये थे। गांव के हर व्यक्ति के बदन पर खादी थी। कई बहनें अंबर चरखा चला रही थीं। उस ग्रामदान में जो मालिक मालिक नहीं हुए थे, वे गांव के प्रमुख भाइयों के साथ विनोबाजी से मिले और उनसे कहा कि "इसमें शामिल होने की बात हम सोचेंगे।

अपने भाषण में विनोबाजी ने बेरई गांव के लोगों को धन्यवाद देते हुए कहा "आपने जो काम किया है वह दीखने में छोटा है, लेकिन अमृतबिंदु के समान है। जो बुद्धि आपको सूझी है वह जब तक दुनिया में नहीं फैलेगी हम चैन नहीं लेंगे।"

आगे चल कर यह सूचना भी दी कि "जो लोग आज आपसे अलग हैं, उनको प्यार से जीतना है। इस वास्ते यहाँ धर्म-शक्ति बढ़ानी होगी।"

गांव में छोटे और बड़े [illegible] लक्ष्मण-सा प्यार हो, यह कहते हुए विनोबा ने बड़े लोगों से कहा कि "ये लोग आपके बच्चे हैं। बच्चा माँ के स्तन को चूसते चूसते कभी काटता भी है, तो उसे थोड़ी देर अलग करके माँ उसे फिर पिलाती है। आपको समझना चाहिये कि ये आपके बच्चे हैं, मूरख हैं!"

अब से पूर्णिया जिले की यात्रा शुरू है। विनोबाजी कहने लगे हैं कि "इस जिले को स्वयं इंजिन लगा है—जहाँ धीरेन्द्रभाई और वैद्यनाथ बाबू बैठे हैं, वहाँ तो पूरा काम होना ही चाहिये।"

बलिया गांव में, जहाँ धीरेन्द्रभाई अपने परिवार के साथ 'लोकाधार-जीवन' का प्रयोग कर रहे हैं, विनोबाजी ने कहा "धीरेन्द्रभाई यहाँ लोकजीवन में एकरूप होने के लिये, सर्व-जन-आधार के लिये आये हैं। सर्वजन याने परमेश्वर। जन-जन को परमेश्वर है, उसकी सेवा करेंगे। वे जो कुछ खिलायेगा वह खायेंगे। वह भूखा होगा तो हम भी भूखे रहेंगे। वे यहाँ बैठे हैं, इसमें परीक्षा उनकी नहीं, हमारी और आपकी हो रही है। अब वे निश्चय करके यहाँ आये हैं तो जवानों को आगे आना चाहिये और उनके साथ उस मस्ती में आ जाना चाहिये।"

श्री धीरेन्द्रभाई का कठोर-व्रती जीवन मस्ती में चल रहा है। उन्होंने विनोबाजी से कहा कि "मैं तो अभी टटोल रहा हूँ, सो रहा हूँ। लेकिन लगता है कि अभी हम दंडशक्ति से भिन्न और हिंसा के विरोध में शक्ति खड़ा करने में पूरे कामयाब नहीं हुए हैं।

विनोबाजी ने कहा है कि अगस्त के बाद भारत-दर्शन पूरा होगा। फिर हमारी 'अथॉरिटी' होगी—जहाँ बाबा जायेगा, वहाँ शक्ति है—इस बात को उसके बाद आन्दोलन के बारे में और ज्यादा सोच सकेंगे।

पूर्णिया जिले में श्री वैद्यनाथ बाबू मार्गदर्शन में काम चल रहा है, वह देख कर विनोबाजी को इस जिले से अपेक्षा है। तीन दिन जिले के कार्यकर्ताओं का शिविर हुआ। उसमें विनोबाजी ने कहा कि अब सामूहिक प्रयत्न होना चाहिए। यह इस जमाने की माँग है। कार्यकर्ताओं के हाथ में हम दो शस्त्र दे रहे हैं: एक प्रेम, और दूसरा, शांति की भावना।

कुमारप्पा-स्मारक निधि

[३० दिसम्बर के 'भूदान-यज्ञ' में कुमारप्पा-स्मारक निधि के लिए [पा]ठकों के नाम अपील निकालते हुए हमने सुझाया था कि श्री कुमारप्पाजी के जन्म-[दि]वस, ४ जनवरी से उनके निधन दिवस, ३० जनवरी तक कुमारप्पा स्मारक निधि [के] लिए निधि संग्रह करने में विशेष शक्ति लगायी जाय। हर सप्ताह हमारे पास [नि]धि के लिए छोटी-बड़ी रकमें आ रही हैं। हालांकि ता० ३० जनवरी बीत चुकी, [प]र संग्रह का काम अभी जारी है, यह उचित ही है। जिन पाठकों तथा कार्यकर्ताओं [ने] अभी तक अपनी तथा अपने मित्रों से प्राप्त करके रकमें न भेजी हों, वे अब भी [भि]जवाने की कृपा करें। फिलहाल 'भूदान यज्ञ' में दाताओं की सूची प्रकाशित की [जा]ती रहेगी। —सं०]

	रु०—न०पै०
गत अंक में प्राप्ति-स्वीकार कुल	५२,६७२—२३

काशी में १८ फरवरी तक प्राप्त रकम

	रु०—न०पै०	
श्री मंत्री, पंजाब खादी-ग्रामोद्योग संघ, [पठान]कोट मदनपुर द्वारा, जालन्धर के कार्यकर्ताओं के द्वारा संकलित	१,०४२—०	
[खा]दी ग्रामोद्योग बोर्ड, चंडीगढ़ द्वारा संकलित	२६१—८७	
श्री रामशरणजी, सदस्य लोकसभा, दिल्ली	१०१—००	
श्री गांधी आश्रम, रामपुर मनिहारान (सहारनपुर) के कार्यकर्ताओं द्वारा संकलित	६०—००	
खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय, मनल्ला (करनाल) संकलित	५३—००	
सर्वोदय-मंडल क्षेत्र, अमरसिंहपुर (मेरठ) द्वारा संकलित	५१—००	
श्री जेठमल चौधरी, केकड़ी, अजमेर	२५—००	
डा० गोपीचन्द भार्गव, द्वारा पंजाब खा० ग्रा० संघ	२५—००	
सर्वोदय आश्रम, मादावाद (मथुरा) द्वारा संकलित	२१—००	
श्री केशरी और देवकी बहन, कस्तूरबा बालमंदिर, काशी	१५—००	
श्री कस्तूरभाई अम्बालाल शाह, अहमदाबाद	११—००	
श्री संयोजक, सर्वोदय मंडल, रोहतक (पंजाब)	८—२१	
श्री विलासराय कानोडिया, छपरा (बिहार)	५—००	
डा० एस० पी० वर्मा, राजहरा, दुर्ग (म० प्र०)	५—००	
प्रो० एच० सी० गुप्ता, पिलानी (राजस्थान)	५—००	
श्री वासुदेव नटवरलाल त्रिपाठी, अहमदाबाद	५—००	
श्री चुनीभाई भागवत, सोमाइटी स्टोर, अहमदाबाद	५—००	
श्री हिम्मतलाल, मदनलाल, मगनलाल, अहमदाबाद	५—००	
श्री हिम्मतलाल वेदावलाल शाह, अहमदाबाद	५—००	
श्री मूलचन्द, मार्फत-बद्रीदास मूलचन्द, कानपुर	५—००	
श्री द्वारका प्रसाद सिंह, एडवोकेट, सीधी (म० प्र०)	५—००	
श्री केशव प्रसाद सिंह, एडवोकेट, सीधी (म० प्र०)	५—००	
श्री रामबहादुर सिंह, मंत्री प्र० सो० पार्टी, सीधी (म० प्र०)	५—००	
श्री इन्द्रनाथ चोपरा, नई दिल्ली-५	४—००	
डा० वाजिद अली शाह, ग्राम पंच, पो० रदिपुर (बिहार)	२—००	
श्री जानकी प्रसाद, सदर भंडार, सीधी (म० प्र०)	१—२५	
श्री बलदेव कुमार भिवानी, करनाल	१—००	
श्री मुन्नालाल सिंह, प्र० अ०, आडन, पो० मीमा (गया)	१—००	
श्री कन्हैयालाल वर्मा, मार्फत-निर्माणोद्धार आश्रम, उरली कांचन	१—००	
श्री अज्ञात, सीधी (म० प्र०)	१—००	१,५४०— ३३
	कुल रकम	५४,२१२—५६

सर्वोदय-सम्मेलन की तैयारियाँ

तेरहवाँ अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन ता० १८,१९ और २० अप्रैल को चेबोलू में हो रहा है, उसके सम्बन्ध में श्री प्रभाकरजी एक पत्र में लिखते हैं —

"आंध्र में रचनात्मक अंग कम (मनुष्य-बल) कम होने पर भी ग्राम-बल पर निर्भर होकर ही हमने सम्मेलन को आवाहन दिया है। अंग-बल कम है, लेकिन दम है, ऐसा हमें प्रगट करना होगा।

सर्वोदय-सम्मेलन की व्यवस्था में होने वाले खर्च के लिए हमने 'लोक-सम्पत्ति यज्ञ' करने का तय किया है। ता० १ जनवरी से यह यज्ञ शुरू हुआ है। अप्रैल १८ तक १०८ दिन होते हैं। इस अवधि में एक लाख लोगों से सम्पत्ति के रूप में कम-से-कम एक लाख रुपये जमा करना चाहते हैं। आंध्र में खादी, भूदान, गांधीनिधि, हरिजन-गिरिजन कार्य, कस्तूरबा ट्रस्ट इत्यादि क्षेत्रों में काम करने वाले लगभग ५ हजार कार्यकर्ता हैं। सब मिल कर करीब इतने ही गाँवों में काम चल रहा है। एक-एक कार्यकर्ता २०—२० लोगों से सम्पर्क करे तो एक लाख लोगों से सम्पर्क होगा। इस प्रयोग का नतीजा १५ मार्च तक मालूम होगा।

पश्चिम गोदावरी जिले से, जहाँ सम्मेलन हो रहा है, करीब २ हजार बोरे धान के जमा करने का कार्य चालू है। पिछले १२ दिनों में करीब ५ सौ बोरे जमा हुए हैं। हमारा प्रयत्न रहेगा कि सम्मेलन में पूरा ग्रामोद्योगी चावल ही उपयोग में आये।

सम्मेलन जिस स्थान में हो रहा है, वह जगह नाम से 'रिजर्व्ड फारेस्ट' याने सुरक्षित जंगल है। पर इस भूमि पर वृक्ष नहीं हैं, छोटी-छोटी झाड़ियाँ ही हैं। इसमें से १०० एकड़ जमीन सम्मेलन के लिए सरकार दे रही है। यह झाड़ियों वाले वन ऋषिवन कैसे बनें, इसकी कल्पना हम कर रहे हैं। सम्मेलन का स्थान बेकार न जावे, इसके लिए यहाँ एक संस्था बना रहा हूँ। उसका नाम "ऋषिवनम्" याने ऋषिवन ऐसा होगा।

सर्वोदय-सम्मेलन के स्थान का नाम तेलुगु की दृष्टि से हमने 'सर्वोदयपुरम्' दिया है।"

इन्दौर का सर्वोदयनगर अभियान

इन्दौर के सर्वोदय प्रवृत्तियों के केन्द्र, विसर्जन-आश्रम से प्राप्त जानकारी के अनुसार माह जनवरी में २० कार्यकर्ताओं ने विभिन्न मोहल्लों के ६,११७ परिवारों से व्यक्तिगत सम्पर्क किया तथा उनके सुख-दुःख की कहानियाँ जानीं। १८५६ सर्वोदय-पात्रों से प्रति दिन परिवार के सबसे छोटे बालक के हाथ से डाले जाने वाले धान्य अथवा एक नये पैसे के रूप में ४४० रुपये २२ नये पैसे की रकम संग्रहित हुई। ६९३ परिवारों में सर्वोदय-पात्र स्थापित किये गये।

वार्डों में सत्साहित्य के पठन-पाठन की प्रवृत्ति बढ़ाने हेतु प्रारम्भ किये गये सर्वोदय चल-पुस्तकालयों से ७४७ पाठक-पाठिकाओं ने लाभ उठाया।

नगर के सार्वजनिक स्थानों पर लगे घोषित अशोभनीय फिल्म-पोस्टर को सभी उचित प्रयत्नों के बावजूद मालिक द्वारा निश्चित अवधि में न हटाये जाने पर माह में एक बार श्री दादासाहब शिम्पी के नेतृत्व में सत्याग्रही टोली को "सीधी कार्यवाही" द्वारा उसे हटाना पड़ा। व्यक्तिगत स्थानों पर लगे कुछ अशोभनीय पोस्टर भी समझा-बुझा कर हटाये गये। कुछ घरों से परिवारों ने स्वेच्छापूर्वक गंदे और भद्दे कैलेण्डर निकाल फेंकने के उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं।

"स्वच्छ दीवार-स्वच्छ विचार" मुहिम के अन्तर्गत मोहल्लों की कई दीवारें साफ की गयी और उन्हें "संत-वाणी" से विभूषित किया गया।

भूदान पत्र-पत्रिकाओं की ८१८ प्रतियों का फुटकर बिक्री की गयी।

वि-सर्जन आश्रम में प्रति रविवार को ३ से ५ बजे तक चिकित्सा अनुभवी एवं नगर के लोकप्रिय वैद्य श्री कन्हैयालालजी अजमेरा तथा श्री हरिनारायणजी लखनवी ने निःशुल्क चिकित्सा करने का संकल्प किया है।

घर-घर में 'कचरा-पात्र'

काशी नगरी सर्वोदय-अभियान प्रगति पर है। जब से काशी में शांति-सैनिक विद्यालय प्रारम्भ हुआ, तब से बहनें भी इस काम में मदद देने लगी हैं। स्वच्छ काशी हो, इस निमित्त घर-घर सर्वोदय-पात्र के साथ 'कचरा पात्र' भी रखा जा रहा है और निवासियों को समझाया जाता है कि घर का कूड़ा-करकट कचरा पात्र में ही डालें और महानगरपालिका की गाड़ी जब आवें तब डाल दें।

पाक्षिक डायरी : १५-२-६१ तक

संघ-प्रधान कार्यालय

[साधना केन्द्र, काशी]

● इस पक्ष में श्री आशादेवी आर्यनायकम् और श्री धीरेन्द्रभाई एक-एक दिन के लिए साधना-केन्द्र पर आ गये। श्री धीरेन्द्रभाई ने कार्यकर्ताओं से अपने जनाधार के प्रयोग के बारे में बातचीत की।

● श्री शंकररावजी राजस्थान-गुजरात के दौरे से ता० ९ को वापस आये। उसी दिन दादा भी बंबई से वापस आये। स्वास्थ्य पहले से ठीक है।

● श्री विमला बहन ठकार ता० १० को यहाँ से करीब २० दिन के लिए आसाम के दौरे पर गई हैं। उनके कान की तकलीफ मिटी नहीं है। शायद इलाज के लिए अगले अप्रैल माह में उन्हें इंग्लैण्ड जाना होगा।

● श्री कृष्णराज मेहता करीब दस दिन विनोबा के साथ पदयात्रा में रह आये। साधना-केन्द्र तथा संघ के कामकाज के बारे में विस्तार से चर्चा हुई।

● श्री निर्मला देशपांडे की तबीयत ठीक है ऐसे समाचार उनकी ओर से मिले हैं।

● सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री पूर्णचन्द जैन गत २९ जनवरी से प्रवास पर हैं। वे दिल्ली और राजस्थान, मद्रास और केरल प्रदेश होते हुए सम्प्रति आंध्र प्रदेश में दौरा कर रहे हैं। २८ फरवरी तक उनके काशी पहुँचने की संभावना है।

देश के कोने-कोने में सर्वोदय-पक्ष और सर्वोदय-मेले आयोजित

[गांधी-पुण्यतिथि ३० जनवरी से श्राद्ध-दिवस १२ फरवरी तक देश में सर्वत्र सर्वोदय-पक्ष, भूदान-पदयात्रा, साहित्य-प्रचार, सर्वोदय-पात्र, अशोभनीय पोस्टरों के खिलाफ मुहिम, सार्वजनिक सफाई, सूताजलि, सूत्रयज्ञ, सर्वोदय-मेला आदि विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा मनाया गया। कुछ स्थानों से प्राप्त विवरण हम नीचे दे रहे हैं। —सं०]

—३० जनवरी से १२ फरवरी सर्वोदय-पखवाडे के अन्तर्गत इन्दौर नगर में हुई पदयात्रा में ६० भाई-बहनों ने भाग लिया, जिसमें मायला परिवार के ४० भाई-बहनें थीं। पदयात्रा टोलियों ने ४०६४ घर से सम्पर्क कर सर्वोदय का विचार-प्रचार किया। १५१८ घरों में सर्वोदय-पात्र की स्थापना की। ५५५ घरों से सर्वोदय-पात्र से १३८ रुपये तथा छः मन अठारह सेर अनाज संग्रहित किया। 'भूमि-क्रांति' की १५० प्रतियाँ बिकीं एवं २२५ रुपये का सर्वोदय-साहित्य बेचा गया।

विसर्जन आश्रम इन्दौर के तत्वाधान में १२ फरवरी को सामूहिक रूप से सूताजली अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गयी। अखण्ड सूत्रयज्ञ, गुरुजनों के भाषण भी हुए।

—ता० ३१ जनवरी को परमकुडी से रामनाथपुरम् (तमिलनाड) जिले के सर्वोदय तथा भूदान-कार्यकर्ताओं की एक टोली धनुष्कोटी तथा रामेश्वर के सर्वोदय-मेले में १५ गाँवों में पदयात्रा द्वारा विचार-प्रचार करते हुए १२ फरवरी को पहुँची। इस पदयात्री दल में मैसूर राज्य के कार्यकर्ता श्री कुट्टी भी शामिल हुए। पदयात्रा में २१-५० एकड भूमि का वितरण किया गया। सर्वोदय की पत्र-पत्रिकाएँ और साहित्य की करीब १०० रु० की बिक्री हुई। संपत्तिदान और श्रम-दान भी मिला।

—जयप्रकाशजी की जन्म-भूमि सिताब दियारा गाँव में प्रतिवर्ष की तरह इस बार ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पक्ष मनाया गया। १२ फरवरी को इस बार सर्वोदय-मेला बड़े व्यापक पैमाने पर मनाया गया। खादी ग्रामोद्योग और पशु-प्रदर्शनी लगायी गयी। इस अवसर पर विशाल समुदाय के सम्मुख भाषण करते श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि आज लोकतंत्र खतरे में है। एशिया और अफ्रीका की राज्य व्यवस्था उल्टे खड़े पिरामिड की तरह है। ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के बिना सच्चा स्वराज्य नहीं आ सकता है। इस अवसर पर श्री चरणभाई और बिहार प्रजा-समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष श्री बसावन सिंह के भी भाषण हुए।

—जिला सर्वोदय-मंडल, चित्तौड़गढ़ की ओर से चित्तौड़गढ़ किले पर मीरा मंदिर में सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्र से ४५० गुंडियाँ संग्रहित करके गांधीजी को श्रद्धांजलि के रूप में अर्पित की गयी।

—दरभंगा जिले के प्रायः अधिकतर खादी और भूदान में लगे कार्यकर्ताओं की एक बैठक ता० १२ फरवरी को कुशेश्वर की खादी-प्रदर्शनी में विनोबाजी के चतुःसूत्री कार्यक्रम (१)—भू वितरण, (२)—बिघा में एक कट्ठा का दान लेना (३)—सर्वोदय-पात्र और (४) शान्ति-सेना-को जिले भर में पूर्ण रूप से चालू करने के लिये बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष श्री रामदेव ठाकुर के सभापतित्व में हुई। सभी कार्यकर्ताओं ने एक राय होकर इस काम को जोरों से चालू करने की सहमति प्रकट की और इसकी योजना पर चर्चा की। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री रामदेव ठाकुर ने किया।

—बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ शेरघाटी के कार्यकर्ताओं द्वारा ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पक्ष मनाया गया। इस पक्ष में व्यवस्थापक खादी-भण्डार, श्री सच्चिदेव शर्मा, श्री बाल्मीकिन्द प्रसाद आदि कार्यकर्ताओं ने ३५ मील पैदल यात्रा से १० गाँवों में पहुँच कर सर्वोदय-विचार समझाया। इस अवसर पर २५० रुपये की खादी-बिक्री हुई तथा भूदान पत्र-पत्रिका और भूदान-साहित्य बेचा गया और सूतांजलि में सूत तथा भूदान में 'बीघा में कट्ठा' जमीन देने का लोगों से आग्रह किया गया।

शेरघाटी के खादी भंडार में अखण्ड सूत्र-यज्ञ का समारोह किया गया, जिसमें स्थानीय महिलाओं का भी सहयोग मिला।

—ग्राम सेवा केन्द्र, सरौना (दुमका) के तत्वावधान में ता० १२ फरवरी को सरौना में प्रभात फेरी, ग्राम-सफाई, अखण्ड सूत्र-यज्ञ, सूतांजलि-समर्पण, आम सभा एवं प्रार्थना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शान्ति-सैनिकों की रैली की गयी। यह भी तय किया गया कि हर रविवार को रैली का आयोजन करके गाँव-गाँव में सर्वोदय, ग्रामदान-विचार का प्रचार किया जाय।

—नरसिंहपुर (म० प्र०) जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से सर्वोदय-पक्ष में लोक-सेवक श्री ज्वाला प्रसादजी ड्यूर, लक्ष्मीनारायण जैन और लक्ष्मीकान्त पाठक ने समनापुर सघन क्षेत्र में सामाजिक विषमता उन्मूलन के लिए १६ गाँवों में पदयात्रा की। १२ फरवरी को समनापुर में पदयात्रा के समाप्ति-समारोह में सघन क्षेत्र के सोलह गाँव के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

—रतलाम जिला सर्वोदय-मण्डल के तत्वाधान में १२ फरवरी को सूतांजलि समारोह में मध्यप्रदेश के योजना एवं [illegible] उपमंत्री श्री [illegible] और [illegible] प्रदेश के भूतपूर्व वित्तमंत्री श्री गोपालशरणजी ने गांधीजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। सूतांजलि-समारोह में ग्राम सेवा-केन्द्र, आम [illegible], सर्वोदय ग्राम सेवा संघ, [illegible] ग्राम [illegible], [illegible] बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय, रतलाम की ओर से सूतांजलि के रूप में [illegible] गुंडियाँ अर्पित की गयीं।

—[illegible]पुर के राजकीय बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय, गांधी स्मारक निधि, हरिजन सेवक संघ और खादी-भण्डार के कार्यकर्ताओं द्वारा ७३६ गुंडियाँ समर्पित की गयीं। अखण्ड सूत्रयज्ञ, प्रभात फेरी, हरिजन बस्ती में सामूहिक सफाई, साहित्य-बिक्री के कार्यक्रम हुए।

—पंजाब में रोहतक जिले के गोहाना नगर में हुई सफाई-प्रतियोगिता में २५ बहनों ने भाग लिया। सभा में अस्पृश्यता निवारण, अशोभनीय पोस्टर हटाना, सूतांजलि और सर्वोदय-पात्र के कार्य का प्रचार किया गया।

—भिवानी (हिसार) में गांधी पुण्यतिथि के अवसर पर गांधी अध्ययन-केन्द्र की ओर से आयोजित एक सभा में हिन्दी के वयोवृद्ध पत्रकार श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने कहा कि यह आत्म निरीक्षण का पर्व है।

राजस्थान में रचनात्मक कार्यकर्ता प्रशिक्षण-शिविर

राजस्थान की [illegible] रचनात्मक संस्थाओं की दृष्टि से कार्यकर्ताओं को समग्र दृष्टि से प्रशिक्षण देने हेतु राजस्थान समग्र सेवा संघ ने नई प्रवृत्ति के रूप में प्रशिक्षण शिविर [illegible] किये हैं। फरवरी के दूसरे और तीसरे सप्ताह में क्रमशः राजस्थान खादी संघ [illegible] खादीग्राम (चौमूँ) तथा [illegible] खादी-ग्रामोद्योग समिति, [illegible] में ता० १७ व ता० १९-२० को शिविर आयोजित किये गये हैं। अजमेर जिला सर्वोदय-मंडल की ओर से जिले के सब कार्यकर्ताओं का एक शिविर ता० २४, २५, २६ मार्च को हो रहा है। इसके [illegible] अजमेर, भीलवाड़ा व [illegible] जिले [illegible] शिविर करेंगे।

विनोबाजी की पदयात्रा

जिला जलपाईगुड़ी

तारीख	पड़ाव	स्टेशन
२५	[illegible]	[illegible]
२६	[illegible]	„
२७	[illegible]	„

जिला कूचबिहार

तारीख	पड़ाव	स्टेशन
२८	[illegible]	[illegible]
मार्च १-२	कूचबिहार	कूचबिहार
३	[illegible]	„
४	[illegible]	„

५ मार्च को असम में प्रवेश करेंगे।

इस अंक में

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व सेवा संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१, फोन नं० ४३९१ पिछले अंक की छपी प्रतियाँ ११,९०० : इस अंक की छपी प्रतियाँ ११,९०० एक प्रति : १३ नये पैसे वार्षिक मूल्य ६)